# ΒΙΒΛΟΣ ΜΕΛΕΤΗΣ

## ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΙΟΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28

## ΚΑΤΑ ΜΑΡΚΟΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16

## ΚΑΤΑ ΙΩΑΝΝΗΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21

## ΙΑΚΩΒΟΥ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5

## Α΄ ΠΕΤΡΟΥ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5

## Β΄ ΠΕΤΡΟΥ

| 1 | 2 | 3

## Α΄ ΙΩΑΝΝΟΥ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5

## ΓΕΝΕΣΙΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50

## ΕΞΟΔΟΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40

## ΑΡΙΘΜΟΙ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36

## ΔΕΥΤΕΡΟΝΟΜΙΟΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34

## ΙΗΣΟΥΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24

## ΚΡΙΤΕΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21

## ΡΟΥΘ

| 1 | 2 | 3 | 4

## Α΄ ΣΑΜΟΥΗΛ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31

## Β΄ ΣΑΜΟΥΗΛ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24

## ΨΑΛΜΟΙ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 | 109 | 110 | 111 | 112 | 113 | 114 | 115 | 116 | 117 | 118 | 119 | 120 | 121 | 122 | 123 | 124 | 125 | 126 | 127 | 128 | 129 | 130 | 131 | 132 | 133 | 134 | 135 | 136 | 137 | 138 | 139 | 140 | 141 | 142 | 143 | 144 | 145 | 146 | 147 | 148 | 149 | 150 | 151

## Α΄ ΒΑΣΙΛΕΩΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22

## Β΄ ΒΑΣΙΛΕΩΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25

## ΙΩΗΛ

| 1 | 2 | 3 | 4

## ΙΩΝΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4

## ΩΣΗΕ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14

## ΑΜΩΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9

## ΗΣΑΪΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66

## ΜΙΧΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7

## ΙΕΡΕΜΙΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52

## ΘΡΗΝΟΙ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5

## ΙΩΒ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42

## ΔΑΝΙΗΛ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12

## ΕΣΔΡΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23

## ΖΑΧΑΡΙΑΣ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14

## ΜΑΛΑΧΙΑΣ

| 1 | 2 | 3

## Α΄ ΜΑΚΚΑΒΑΙΩΝ

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16

# ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΙΟΝ

## 1

Βίβλος γενέσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ, υἱοῦ Δαυῒδ υἱοῦ Ἀβραάμ. Ἀβραὰμ ἐγέννησε τὸν Ἰσαάκ, Ἰσαὰκ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰακώβ, Ἰακὼβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰούδαν καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, Ἰούδας δὲ ἐγέννησε τὸν Φαρὲς καὶ τὸν Ζαρὰ ἐκ τῆς Θάμαρ, Φαρὲς δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐσρώμ, Ἐσρὼμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀράμ, Ἀρὰμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀμιναδάβ, Ἀμιναδὰβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ναασσών, Ναασσὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Σαλμών, Σαλμὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Βοὸζ ἐκ τῆς Ῥαχάβ, Βοὸζ δὲ ἐγέννησε τὸν Ὼβὴδ ἐκ τῆς Ῥούθ, Ὼβὴδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰεσσαί, Ἰεσσαὶ δὲ ἐγέννησε τὸν Δαυῒδ τὸν βασιλέα. Δαυῒδ δὲ ὁ βασιλεὺς ἐγέννησε τὸν Σολομῶνα ἐκ τῆς τοῦ Οὐρίου, Σολομὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Ῥοβοάμ, Ῥοβοὰμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀβιά, Ἀβιὰ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀσά, Ἀσὰ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσαφάτ, Ἰωσαφὰτ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωράμ, Ἰωρὰμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ὀζίαν, Ὀζίας δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωάθαμ, Ἰωάθαμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἄχαζ, Ἄχαζ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐζεκίαν, Ἐζεκίας δὲ ἐγέννησε τὸν Μανασσῆ, Μανασσῆς δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀμών, Ἀμὼν δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσίαν, Ἰωσίας δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰεχονίαν καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ ἐπὶ τῆς

μετοικεσίας Βαβυλῶνος. Μετὰ δὲ τὴν μετοικεσίαν Βαβυλῶνος Ἰεχονίας ἐγέννησε τὸν Σαλαθιήλ, Σαλαθιὴλ δὲ ἐγέννησε τὸν Ζοροβάβελ, Ζοροβάβελ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀβιούδ, Ἀβιοὺδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλιακείμ, Ἐλιακεὶμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀζώρ, Ἀζὼρ δὲ ἐγέννησε τὸν Σαδώκ, Σαδὼκ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀχείμ, Ἀχεὶμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλιούδ, Ἐλιοὺδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλεάζαρ, Ἐλεάζαρ δὲ ἐγέννησε τὸν Ματθάν, Ματθὰν δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰακώβ, Ἰακὼβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσὴφ τὸν ἄνδρα Μαρίας, ἐξ ἧς ἐγεννήθη Ἰησοῦς ὁ λεγόμενος Χριστός. Πᾶσαι οὖν αἱ γενεαὶ ἀπὸ Ἀβραὰμ ἕως Δαυῒδ γενεαὶ δεκατέσσαρες, καὶ ἀπὸ Δαυῒδ ἕως τῆς μετοικεσίας Βαβυλῶνος γενεαὶ δεκατέσσαρες, καὶ ἀπὸ τῆς μετοικεσίας Βαβυλῶνος ἕως τοῦ Χριστοῦ γενεαὶ δεκατέσσαρες. Τοῦ δὲ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἡ γέννησις οὕτως ἦν. μνηστευθείσης γὰρ τῆς μητρὸς αὐτοῦ Μαρίας τῷ Ἰωσήφ, πρὶν ἢ συνελθεῖν αὐτοὺς εὑρέθη ἐν γαστρὶ ἔχουσα ἐκ Πνεύματος Ἁγίου. Ἰωσὴφ δὲ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, δίκαιος ὢν καὶ μὴ θέλων αὐτὴν παραδειγματίσαι, ἐβουλήθη λάθρα ἀπολῦσαι αὐτήν. ταῦτα δὲ αὐτοῦ ἐνθυμηθέντος ἰδοὺ ἄγγελος Κυρίου κατ᾽ ὄναρ ἐφάνη αὐτῷ λέγων· Ἰωσὴφ υἱὸς Δαυῒδ, μὴ φοβηθῇς παραλαβεῖν Μαριὰμ τὴν γυναῖκά σου· τὸ γὰρ ἐν αὐτῇ γεννηθὲν ἐκ Πνεύματός ἐστιν Ἁγίου. τέξεται δὲ υἱὸν καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰησοῦν· αὐτὸς γὰρ σώσει τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν. Τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προφήτου λέγοντος· ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ ἕξει καὶ τέξεται υἱόν, καὶ καλέσουσι τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἐμμανουήλ, ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον μεθ᾽ ἡμῶν ὁ Θεός. Διεγερθεὶς δὲ ὁ Ἰωσὴφ ἀπὸ τοῦ ὕπνου ἐποίησεν ὡς προσέταξεν αὐτῷ ὁ ἄγγελος Κυρίου καὶ παρέλαβε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐγίνωσκεν αὐτὴν ἕως οὗ ἔτεκε τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν πρωτότοκον, καὶ

ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰησοῦν .

# 2

Τοῦ δὲ Ἰησοῦ γεννηθέντος ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας ἐν ἡμέραις Ἡρῴδου τοῦ βασιλέως, ἰδοὺ μάγοι ἀπὸ ἀνατολῶν παρεγένοντο εἰς Ἱεροσόλυμα λέγοντες· ποῦ ἐστιν ὁ τεχθεὶς βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; εἴδομεν γὰρ αὐτοῦ τὸν ἀστέρα ἐν τῇ ἀνατολῇ καὶ ἤλθομεν προσκυνῆσαι αὐτῷ. Ἀκούσας δὲ Ἡρῴδης ὁ βασιλεὺς ἐταράχθη καὶ πᾶσα Ἱεροσόλυμα μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ συναγαγὼν πάντας τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ γραμματεῖς τοῦ λαοῦ ἐπυνθάνετο παρ᾽ αὐτῶν ποῦ ὁ Χριστὸς γεννᾶται. οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· ἐν Βηθλεὲμ τῆς Ἰουδαίας· οὕτω γὰρ γέγραπται διὰ τοῦ προφήτου· καὶ σὺ Βηθλεέμ, γῆ Ἰούδα, οὐδαμῶς ἐλαχίστη εἶ ἐν τοῖς ἡγεμόσιν Ἰούδα· ἐκ σοῦ γὰρ ἐξελεύσεται ἡγούμενος, ὅστις ποιμανεῖ τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραήλ. Τότε Ἡρῴδης λάθρα καλέσας τοὺς μάγους ἠκρίβωσε παρ᾽ αὐτῶν τὸν χρόνον τοῦ φαινομένου ἀστέρος, καὶ πέμψας αὐτοὺς εἰς Βηθλεὲμ εἶπε· πορευθέντες ἀκριβῶς ἐξετάσατε περὶ τοῦ παιδίου, ἐπὰν δὲ εὕρητε, ἀπαγγείλατέ μοι, ὅπως κἀγὼ ἐλθὼν προσκυνήσω αὐτῷ. οἱ δὲ ἀκούσαντες τοῦ βασιλέως ἐπορεύθησαν· καὶ ἰδοὺ ὁ ἀστὴρ ὃν εἶδον ἐν τῇ ἀνατολῇ προῆγεν αὐτούς, ἕως ἐλθὼν ἔστη ἐπάνω οὗ ἦν τὸ παιδίον· ἰδόντες δὲ τὸν ἀστέρα ἐχάρησαν χαρὰν μεγάλην σφόδρα, καὶ ἐλθόντες εἰς τὴν οἰκίαν εἶδον τὸ παιδίον μετὰ Μαρίας τῆς μητρὸς αὐτοῦ, καὶ πεσόντες προσεκύνησαν αὐτῷ, καὶ ἀνοίξαντες τοὺς θησαυροὺς αὐτῶν προσήνεγκαν αὐτῷ δῶρα, χρυσὸν καὶ λίβανον καὶ σμύρναν· καὶ χρηματισθέντες κατ᾽ ὄναρ μὴ ἀνακάμψαι πρὸς Ἡρῴδην, δι᾽ ἄλλης ὁδοῦ ἀνεχώρησαν εἰς

τὴν χώραν αὐτῶν. Ἀναχωρησάντων δὲ αὐτῶν ἰδοὺ ἄγγελος Κυρίου φαίνεται κατ᾽ ὄναρ τῷ Ἰωσὴφ λέγων· ἐγερθεὶς παράλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ φεῦγε εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἴσθι ἐκεῖ ἕως ἂν εἴπω σοι· μέλλει γὰρ Ἡρῴδης ζητεῖν τὸ παιδίον τοῦ ἀπολέσαι αὐτό. Ὁ δὲ ἐγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ νυκτὸς καὶ ἀνεχώρησεν εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἦν ἐκεῖ ἕως τῆς τελευτῆς Ἡρῴδου, ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν ὑπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προφήτου λέγοντος· ἐξ Αἰγύπτου ἐκάλεσα τὸν υἱόν μου. Τότε Ἡρῴδης ἰδὼν ὅτι ἐνεπαίχθη ὑπὸ τῶν μάγων, ἐθυμώθη λίαν, καὶ ἀποστείλας ἀνεῖλε πάντας τοὺς παῖδας τοὺς ἐν Βηθλεὲμ καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῆς ἀπὸ διετοῦς καὶ κατωτέρω, κατὰ τὸν χρόνον ὃν ἠκρίβωσε παρὰ τῶν μάγων. τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Ἰερεμίου τοῦ προφήτου λέγοντος· φωνὴ ἐν Ῥαμᾷ ἠκούσθη, θρῆνος καὶ κλαυθμὸς καὶ ὀδυρμὸς πολύς· Ῥαχὴλ κλαίουσα τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ οὐκ ἤθελε παρακληθῆναι, ὅτι οὐκ εἰσίν. Τελευτήσαντος δὲ τοῦ Ἡρῴδου ἰδοὺ ἄγγελος Κυρίου κατ᾽ ὄναρ φαίνεται τῷ Ἰωσὴφ ἐν Αἰγύπτῳ λέγων· ἐγερθεὶς παράλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ πορεύου εἰς γῆν Ἰσραήλ· τεθνήκασι γὰρ οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχὴν τοῦ παιδίου. ὁ δὲ ἐγερθεὶς παρέλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ καὶ ἦλθεν εἰς γῆν Ἰσραήλ. ἀκούσας δὲ ὅτι Ἀρχέλαος βασιλεύει ἐπὶ τῆς Ἰουδαίας ἀντὶ Ἡρῴδου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἐφοβήθη ἐκεῖ ἀπελθεῖν· χρηματισθεὶς δὲ κατ᾽ ὄναρ ἀνεχώρησεν εἰς τὰ μέρη τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἐλθὼν κατῴκησεν εἰς πόλιν λεγομένην Ναζαρέτ, ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ τῶν προφητῶν ὅτι Ναζωραῖος κληθήσεται .

# 3

Ἐν δὲ ταῖς ἡμέραις ἐκείναις παραγίνεται Ἰωάννης ὁ βαπτιστὴς κηρύσσων ἐν τῇ ἐρήμῳ τῆς Ἰουδαίας καὶ λέγων· μετανοεῖτε· ἤγγικε γὰρ ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. οὗτος γάρ ἐστιν ὁ ῥηθεὶς ὑπὸ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου λέγοντος· φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ. Αὐτὸς δὲ ὁ Ἰωάννης εἶχε τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ ἀπὸ τριχῶν καμήλου καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, ἡ δὲ τροφὴ αὐτοῦ ἦν ἀκρίδες καὶ μέλι ἄγριον. Τότε ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν Ἱεροσόλυμα καὶ πᾶσα ἡ Ἰουδαία καὶ πᾶσα ἡ περίχωρος τοῦ Ἰορδάνου, καὶ ἐβαπτίζοντο ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ὑπ᾽ αὐτοῦ ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν. ἰδὼν δὲ πολλοὺς τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων ἐρχομένους ἐπὶ τὸ βάπτισμα αὐτοῦ εἶπεν αὐτοῖς· γεννήματα ἐχιδνῶν, τίς ὑπέδειξεν ὑμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλούσης ὀργῆς; ποιήσατε οὖν καρπὸν ἄξιον τῆς μετανοίας, καὶ μὴ δόξητε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς, πατέρα ἔχομεν τὸν Ἀβραάμ . λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι δύναται ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τούτων ἐγεῖραι τέκνα τῷ Ἀβραάμ. ἤδη δὲ καὶ ἡ ἀξίνη πρὸς τὴν ῥίζαν τῶν δένδρων κεῖται· πᾶν οὖν δένδρον μὴ ποιοῦν καρπὸν καλὸν ἐκκόπτεται καὶ εἰς πῦρ βάλλεται. ἐγὼ μὲν βαπτίζω ὑμᾶς ἐν ὕδατι εἰς μετάνοιαν· ὁ δὲ ὀπίσω μου ἐρχόμενος ἰσχυρότερός μού ἐστιν, οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς τὰ ὑποδήματα βαστάσαι· αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ καὶ πυρί. οὗ τὸ πτύον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ καὶ διακαθαριεῖ τὴν ἅλωνα αὐτοῦ, καὶ συνάξει τὸν σῖτον αὐτοῦ εἰς τὴν ἀποθήκην, τὸ δὲ ἄχυρον κατακαύσει πυρὶ ἀσβέστῳ. Τότε παραγίνεται ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἐπὶ τὸν Ἰορδάνην πρὸς τὸν Ἰωάννην τοῦ βαπτισθῆναι ὑπ᾽ αὐτοῦ. ὁ δὲ Ἰωάννης διεκώλυεν αὐτὸν λέγων· ἐγὼ χρείαν ἔχω ὑπὸ σοῦ βαπτισθῆναι, καὶ σὺ ἔρχῃ πρός με; ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς αὐτόν· ἄφες ἄρτι· οὕτω γὰρ πρέπον ἐστὶν

ἡμῖν πληρῶσαι πᾶσαν δικαιοσύνην. τότε ἀφίησιν αὐτόν· καὶ βαπτισθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἀνέβη εὐθὺς ἀπὸ τοῦ ὕδατος· καὶ ἰδοὺ ἀνεῴχθησαν αὐτῷ οἱ οὐρανοί, καὶ εἶδε τὸ Πνεῦμα τοῦ Θεοῦ καταβαῖνον ὡσεὶ περιστερὰν καὶ ἐρχόμενον ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῶν οὐρανῶν λέγουσα· οὗτός ἐστιν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ εὐδόκησα .

# 4

Τότε ὁ Ἰησοῦς ἀνήχθη εἰς τὴν ἔρημον ὑπὸ τοῦ Πνεύματος πειρασθῆναι ὑπὸ τοῦ διαβόλου, καὶ νηστεύσας ἡμέρας τεσσαράκοντα καὶ νύκτας τεσσαράκοντα ὕστερον ἐπείνασε. καὶ προσελθὼν αὐτῷ ὁ πειράζων εἶπεν· εἰ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, εἰπὲ ἵνα οἱ λίθοι οὗτοι ἄρτοι γένωνται. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε· γέγραπται, οὐκ ἐπ᾽ ἄρτῳ μόνῳ ζήσεται ἄνθρωπος, ἀλλ᾽ ἐπὶ παντὶ ῥήματι ἐκπορευομένῳ διὰ στόματος Θεοῦ. Τότε παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν, καὶ ἵστησιν αὐτὸν ἐπὶ τὸ πτερύγιον τοῦ ἱεροῦ καὶ λέγει αὐτῷ· εἰ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, βάλε σεαυτὸν κάτω· γέγραπται γὰρ ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, καὶ ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, μήποτε προσκόψῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου. ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· πάλιν γέγραπται, οὐκ ἐκπειράσεις Κύριον τὸν Θεόν σου. Πάλιν παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς ὄρος ὑψηλὸν λίαν, καὶ δείκνυσιν αὐτῷ πάσας τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου καὶ τὴν δόξαν αὐτῶν καὶ λέγει αὐτῷ· ταῦτα πάντα σοι δώσω, ἐὰν πεσὼν προσκυνήσῃς μοι. τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὕπαγε ὀπίσω μου, σατανᾶ· γέγραπται γάρ, Κύριον τὸν Θεόν σου προσκυνήσεις καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύσεις. Τότε ἀφίησιν αὐτὸν ὁ διάβολος, καὶ ἰδοὺ

ἄγγελοι προσῆλθον καὶ διηκόνουν αὐτῷ. Ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι Ἰωάννης παρεδόθη, ἀνεχώρησεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, καὶ καταλιπὼν τὴν Ναζαρὲτ ἐλθὼν κατῴκησεν εἰς Καπερναοὺμ τὴν παραθαλασσίαν ἐν ὁρίοις Ζαβουλὼν καὶ Νεφθαλείμ, ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου λέγοντος· γῆ Ζαβουλὼν καὶ γῆ Νεφθαλείμ, ὁδὸν θαλάσσης, πέραν τοῦ Ἰορδάνου, Γαλιλαία τῶν ἐθνῶν, ὁ λαὸς ὁ καθήμενος ἐν σκότει εἶδε φῶς μέγα, καὶ τοῖς καθημένοις ἐν χώρᾳ καὶ σκιᾷ θανάτου φῶς ἀνέτειλεν αὐτοῖς. Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς κηρύσσειν καὶ λέγειν· μετανοεῖτε· ἤγγικε γὰρ ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. Περιπατῶν δὲ παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας εἶδε δύο ἀδελφούς, Σίμωνα τὸν λεγόμενον Πέτρον καὶ Ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, βάλλοντας ἀμφίβληστρον εἰς τὴν θάλασσαν· ἦσαν γὰρ ἁλιεῖς· καὶ λέγει αὐτοῖς· δεῦτε ὀπίσω μου καὶ ποιήσω ὑμᾶς ἁλιεῖς ἀνθρώπων. οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα ἠκολούθησαν αὐτῷ. Καὶ προβὰς ἐκεῖθεν εἶδεν ἄλλους δύο ἀδελφούς, Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ζεβεδαίου καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ πλοίῳ μετὰ Ζεβεδαίου τοῦ πατρὸς αὐτῶν καταρτίζοντας τὰ δίκτυα αὐτῶν, καὶ ἐκάλεσεν αὐτούς. οἱ δὲ εὐθέως ἀφέντες τὸ πλοῖον καὶ τὸν πατέρα αὐτῶν ἠκολούθησαν αὐτῷ. Καὶ περιῆγεν ὅλην τὴν Γαλιλαίαν ὁ Ἰησοῦς διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν καὶ κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ. καὶ ἀπῆλθεν ἡ ἀκοὴ αὐτοῦ εἰς ὅλην τὴν Συρίαν, καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας ποικίλαις νόσοις καὶ βασάνοις συνεχομένους, καὶ δαιμονιζομένους καὶ σεληνιαζομένους καὶ παραλυτικούς, καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς· καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας καὶ Δεκαπόλεως καὶ Ἱεροσολύμων καὶ Ἰουδαίας καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου.

# 5

Ἰδὼν δὲ τοὺς ὄχλους ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος, καὶ καθίσαντος αὐτοῦ προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτοῦ ἐδίδασκεν αὐτοὺς λέγων· μακάριοι οἱ πτωχοὶ τῷ πνεύματι, ὅτι αὐτῶν ἐστιν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. μακάριοι οἱ πενθοῦντες, ὅτι αὐτοὶ παρακληθήσονται. μακάριοι οἱ πραεῖς, ὅτι αὐτοὶ κληρονομήσουσι τὴν γῆν. μακάριοι οἱ πεινῶντες καὶ διψῶντες τὴν δικαιοσύνην, ὅτι αὐτοὶ χορτασθήσονται. μακάριοι οἱ ἐλεήμονες, ὅτι αὐτοὶ ἐλεηθήσονται. μακάριοι οἱ καθαροὶ τῇ καρδίᾳ, ὅτι αὐτοὶ τὸν Θεὸν ὄψονται. μακάριοι οἱ εἰρηνοποιοί, ὅτι αὐτοὶ υἱοὶ Θεοῦ κληθήσονται. μακάριοι οἱ δεδιωγμένοι ἕνεκεν δικαιοσύνης, ὅτι αὐτῶν ἐστιν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. μακάριοί ἐστε ὅταν ὀνειδίσωσιν ὑμᾶς καὶ διώξωσι καὶ εἴπωσι πᾶν πονηρὸν ῥῆμα καθ᾽ ὑμῶν ψευδόμενοι ἕνεκεν ἐμοῦ. χαίρετε καὶ ἀγαλλιᾶσθε, ὅτι ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τοῖς οὐρανοῖς· οὕτω γὰρ ἐδίωξαν τοὺς προφήτας τοὺς πρὸ ὑμῶν. Ὑμεῖς ἐστε τὸ ἅλας τῆς γῆς· ἐὰν δὲ τὸ ἅλας μωρανθῇ, ἐν τίνι ἁλισθήσεται; εἰς οὐδὲν ἰσχύει ἔτι εἰ μὴ βληθῆναι ἔξω καὶ καταπατεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων. Ὑμεῖς ἐστε τὸ φῶς τοῦ κόσμου. οὐ δύναται πόλις κρυβῆναι ἐπάνω ὄρους κειμένη· οὐδὲ καίουσι λύχνον καὶ τιθέασιν αὐτὸν ὑπὸ τὸν μόδιον, ἀλλ᾽ ἐπὶ τὴν λυχνίαν, καὶ λάμπει πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ. οὕτω λαμψάτω τὸ φῶς ὑμῶν ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, ὅπως ἴδωσιν ὑμῶν τὰ καλὰ ἔργα καὶ δοξάσωσι τὸν πατέρα ὑμῶν τὸν ἐν τοῖς οὐρανοῖς. Μὴ νομίσητε ὅτι ἦλθον καταλῦσαι τὸν νόμον ἢ τοὺς προφήτας· οὐκ ἦλθον καταλῦσαι, ἀλλὰ πληρῶσαι. ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἕως ἂν παρέλθῃ ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ, ἰῶτα ἓν ἢ μία κεραία οὐ

μὴ παρέλθῃ ἀπὸ τοῦ νόμου ἕως ἂν πάντα γένηται. ὃς ἐὰν οὖν λύσῃ μίαν τῶν ἐντολῶν τούτων τῶν ἐλαχίστων καὶ διδάξῃ οὕτω τοὺς ἀνθρώπους, ἐλάχιστος κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν· ὃς δ᾽ ἂν ποιήσῃ καὶ διδάξῃ, οὗτος μέγας κληθήσεται ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν. λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι ἐὰν μὴ περισσεύσῃ ἡ δικαιοσύνη ὑμῶν πλεῖον τῶν γραμματέων καὶ Φαρισαίων, οὐ μὴ εἰσέλθητε εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν. Ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις, οὐ φονεύσεις· ὃς δ᾽ ἂν φονεύσῃ, ἔνοχος ἔσται τῇ κρίσει . Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν ὅτι πᾶς ὁ ὀργιζόμενος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ εἰκῇ ἔνοχος ἔσται τῇ κρίσει· ὃς δ᾽ ἂν εἴπῃ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ῥακά , ἔνοχος ἔσται τῷ συνεδρίῳ· ὃς δ᾽ ἂν εἴπῃ μωρέ , ἔνοχος ἔσται εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός. Ἐὰν οὖν προσφέρῃς τὸ δῶρόν σου ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον κἀκεῖ μνησθῇς ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἔχει τι κατὰ σοῦ, ἄφες ἐκεῖ τὸ δῶρόν σου ἔμπροσθεν τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ὕπαγε πρῶτον διαλλάγηθι τῷ ἀδελφῷ σου, καὶ τότε ἐλθὼν πρόσφερε τὸ δῶρόν σου. Ἴσθι εὐνοῶν τῷ ἀντιδίκῳ σου ταχὺ ἕως ὅτου εἶ ἐν τῇ ὁδῷ μετ᾽ αὐτοῦ, μήποτέ σε παραδῷ ὁ ἀντίδικος τῷ κριτῇ καὶ ὁ κριτής σε παραδῷ τῷ ὑπηρέτῃ, καὶ εἰς φυλακὴν βληθήσῃ· ἀμὴν λέγω σοι, οὐ μὴ ἐξέλθῃς ἐκεῖθεν ἕως οὖ ἀποδῷς τὸν ἔσχατον κοδράντην. Ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις, οὐ μοιχεύσεις. Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν ὅτι πᾶς ὁ βλέπων γυναῖκα πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι αὐτὴν ἤδη ἐμοίχευσεν αὐτὴν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ. εἰ δὲ ὁ ὀφθαλμός σου ὁ δεξιὸς σκανδαλίζει σε, ἔξελε αὐτὸν καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· συμφέρει γάρ σοι ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου καὶ μὴ ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν. καὶ εἰ ἡ δεξιά σου χεὶρ σκανδαλίζει σε, ἔκκοψον αὐτὴν καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· συμφέρει γάρ σοι ἵνα ἀπόληται ἓν τῶν μελῶν σου καὶ μὴ ὅλον τὸ σῶμά σου βληθῇ εἰς γέενναν. Ἐρρέθη δέ· ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ,

δότω αὐτῇ ἀποστάσιον. Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν ὅτι ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ παρεκτὸς λόγου πορνείας, ποιεῖ αὐτὴν μοιχᾶσθαι, καὶ ὃς ἐὰν ἀπολελυμένην γαμήσῃ, μοιχᾶται. Πάλιν ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις, οὐκ ἐπιορκήσεις, ἀποδώσεις δὲ τῷ Κυρίῳ τοὺς ὅρκους σου. Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν μὴ ὀμόσαι ὅλως· μήτε ἐν τῷ οὐρανῷ, ὅτι θρόνος ἐστὶ τοῦ Θεοῦ· μήτε ἐν τῇ γῇ, ὅτι ὑποπόδιόν ἐστι τῶν ποδῶν αὐτοῦ· μήτε εἰς Ἰεροσόλυμα, ὅτι πόλις ἐστὶ τοῦ μεγάλου βασιλέως· μήτε ἐν τῇ κεφαλῇ σου ὀμόσῃς, ὅτι οὐ δύνασαι μίαν τρίχα λευκὴν ἢ μέλαιναν ποιῆσαι. ἔστω δὲ ὁ λόγος ὑμῶν ναὶ ναί, οὒ οὔ· τὸ δὲ περισσὸν τούτων ἐκ τοῦ πονηροῦ ἐστιν. Ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη, ὀφθαλμὸν ἀντὶ ὀφθαλμοῦ καὶ ὀδόντα ἀντὶ ὀδόντος· Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν μὴ ἀντιστῆναι τῷ πονηρῷ· ἀλλ᾽ ὅστις σε ῥαπίσει ἐπὶ τὴν δεξιὰν σιαγόνα, στρέψον αὐτῷ καὶ τὴν ἄλλην· καὶ τῷ θέλοντί σοι κριθῆναι καὶ τὸν χιτῶνά σου λαβεῖν, ἄφες αὐτῷ καὶ τὸ ἱμάτιον· καὶ ὅστις σε ἀγγαρεύσει μίλιον ἕν, ὕπαγε μετ᾽ αὐτοῦ δύο· τῷ αἰτοῦντί σε δίδου καὶ τὸν θέλοντα ἀπὸ σοῦ δανείσασθαι μὴ ἀποστραφῇς. Ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη, ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου καὶ μισήσεις τὸν ἐχθρόν σου . Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ἀγαπᾶτε τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν, εὐλογεῖτε τοὺς καταρωμένους ὑμᾶς, καλῶς ποιεῖτε τοῖς μισοῦσιν ὑμᾶς καὶ προσεύχεσθε ὑπὲρ τῶν ἐπηρεαζόντων ὑμᾶς καὶ διωκόντων ὑμᾶς, ὅπως γένησθε υἱοὶ τοῦ πατρὸς ὑμῶν τοῦ ἐν οὐρανοῖς, ὅτι τὸν ἥλιον αὐτοῦ ἀνατέλλει ἐπὶ πονηροὺς καὶ ἀγαθοὺς καὶ βρέχει ἐπὶ δικαίους καὶ ἀδίκους. ἐὰν γὰρ ἀγαπήσητε τοὺς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, τίνα μισθὸν ἔχετε; οὐχὶ καὶ οἱ τελῶναι τὸ αὐτὸ ποιοῦσι; καὶ ἐὰν ἀσπάσησθε τοὺς φίλους ὑμῶν μόνον, τί περισσὸν ποιεῖτε; οὐχὶ καὶ οἱ τελῶναι οὕτω ποιοῦσιν; Ἔσεσθε οὖν ὑμεῖς τέλειοι, ὥσπερ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς τέλειός ἐστιν.

# 6

Προσέχετε τὴν ἐλεημοσύνην ὑμῶν μὴ ποιεῖν ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων πρὸς τὸ θεαθῆναι αὐτοῖς· εἰ δὲ μήγε, μισθὸν οὐκ ἔχετε παρὰ τῷ πατρὶ ὑμῶν τῷ ἐν τοῖς οὐρανοῖς. Ὅταν οὖν ποιῇς ἐλεημοσύνην, μὴ σαλπίσῃς ἔμπροσθέν σου, ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ ποιοῦσιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ ἐν ταῖς ῥύμαις, ὅπως δοξασθῶσιν ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀπέχουσι τὸν μισθὸν αὐτῶν. σοῦ δὲ ποιοῦντος ἐλεημοσύνην μὴ γνώτω ἡ ἀριστερά σου τί ποιεῖ ἡ δεξιά σου, ὅπως ᾖ σου ἡ ἐλεημοσύνη ἐν τῷ κρυπτῷ, καὶ ὁ πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ. Καὶ ὅταν προσεύχῃ, οὐκ ἔσῃ ὥσπερ οἱ ὑποκριταί, ὅτι φιλοῦσιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ ἐν ταῖς γωνίαις τῶν πλατειῶν ἑστῶτες προσεύχεσθαι, ὅπως ἂν φανῶσι τοῖς ἀνθρώποις· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἀπέχουσι τὸν μισθὸν αὐτῶν. σὺ δὲ ὅταν προσεύχῃ, εἴσελθε εἰς τὸ ταμιεῖόν σου, καὶ κλείσας τὴν θύραν σου πρόσευξαι τῷ πατρί σου τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ, καὶ ὁ πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ. Προσευχόμενοι δὲ μὴ βαττολογήσητε ὥσπερ οἱ ἐθνικοί· δοκοῦσι γὰρ ὅτι ἐν τῇ πολυλογίᾳ αὐτῶν εἰσακουσθήσονται. μὴ οὖν ὁμοιωθῆτε αὐτοῖς· οἶδε γὰρ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὧν χρείαν ἔχετε πρὸ τοῦ ὑμᾶς αἰτῆσαι αὐτόν. Οὕτως οὖν προσεύχεσθε ὑμεῖς· Πάτερ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς· ἁγιασθήτω τὸ ὄνομά σου· ἐλθέτω ἡ βασιλεία σου· γενηθήτω τὸ θέλημά σου, ὡς ἐν οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς· τὸν ἄρτον ἡμῶν τὸν ἐπιούσιον δὸς ἡμῖν σήμερον· καὶ ἄφες ἡμῖν τὰ ὀφειλήματα ἡμῶν, ὡς καὶ ἡμεῖς ἀφίεμεν τοῖς ὀφειλέταις ἡμῶν· καὶ μὴ εἰσενέγκῃς ἡμᾶς εἰς πειρασμόν, ἀλλὰ ῥῦσαι ἡμᾶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ. ὅτι σοῦ

ἐστιν ἡ βασιλεία καὶ ἡ δύναμις καὶ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας· ἀμήν. Ἐὰν γὰρ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, ἀφήσει καὶ ὑμῖν ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ οὐράνιος· ἐὰν δὲ μὴ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, οὐδὲ ὁ πατὴρ ὑμῶν ἀφήσει τὰ παραπτώματα ὑμῶν. Ὅταν δὲ νηστεύητε, μὴ γίνεσθε ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ σκυθρωποί· ἀφανίζουσι γὰρ τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὅπως φανῶσι τοῖς ἀνθρώποις νηστεύοντες· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἀπέχουσι τὸν μισθὸν αὐτῶν. σὺ δὲ νηστεύων ἄλειψαί σου τὴν κεφαλὴν καὶ τὸ πρόσωπόν σου νίψαι, ὅπως μὴ φανῇς τοῖς ἀνθρώποις νηστεύων, ἀλλὰ τῷ πατρί σου τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ, καὶ ὁ πατήρ σου ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ . Μὴ θησαυρίζετε ὑμῖν θησαυροὺς ἐπὶ τῆς γῆς, ὅπου σὴς καὶ βρῶσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου κλέπται διορύσσουσι καὶ κλέπτουσι· θησαυρίζετε δὲ ὑμῖν θησαυροὺς ἐν οὐρανῷ, ὅπου οὔτε σὴς οὔτε βρῶσις ἀφανίζει, καὶ ὅπου κλέπται οὐ διορύσσουσιν οὐδὲ κλέπτουσιν· ὅπου γάρ ἐστιν ὁ θησαυρὸς ὑμῶν, ἐκεῖ ἔσται καὶ ἡ καρδία ὑμῶν. Ὁ λύχνος τοῦ σώματός ἐστιν ὁ ὀφθαλμός· ἐὰν οὖν ὁ ὀφθαλμός σου ἁπλοῦς ᾖ, ὅλον τὸ σῶμά σου φωτεινόν ἔσται· ἐὰν δὲ ὁ ὀφθαλμός σου πονηρὸς ᾖ, ὅλον τὸ σῶμά σου σκοτεινὸν ἔσται. εἰ οὖν τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ σκότος ἐστί, τὸ σκότος πόσον; Οὐδεὶς δύναται δυσὶ κυρίοις δουλεύειν· ἢ γὰρ τὸν ἕνα μισήσει καὶ τὸν ἕτερον ἀγαπήσει, ἢ ἑνὸς ἀνθέξεται καὶ τοῦ ἑτέρου καταφρονήσει. οὐ δύνασθε Θεῷ δουλεύειν καὶ μαμωνᾷ. Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, μὴ μεριμνᾶτε τῇ ψυχῇ ὑμῶν τί φάγητε καὶ τί πίητε, μηδὲ τῷ σώματι ὑμῶν τί ἐνδύσησθε· οὐχὶ ἡ ψυχὴ πλεῖόν ἐστι τῆς τροφῆς καὶ τὸ σῶμα τοῦ ἐνδύματος; ἐμβλέψατε εἰς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, ὅτι οὐ σπείρουσιν οὐδὲ θερίζουσιν οὐδὲ συνάγουσιν εἰς ἀποθήκας, καὶ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ οὐράνιος τρέφει αὐτά· οὐχ ὑμεῖς μᾶλλον

διαφέρετε αὐτῶν; τίς δὲ ἐξ ὑμῶν μεριμνῶν δύναται προσθεῖναι ἐπὶ τὴν ἡλικίαν αὐτοῦ πῆχυν ἕνα; καὶ περὶ ἐνδύματος τί μεριμνᾶτε; καταμάθετε τὰ κρίνα τοῦ ἀγροῦ πῶς αὐξάνει· οὐ κοπιᾷ οὐδὲ νήθει· λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι οὐδὲ Σολομὼν ἐν πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτοῦ περιεβάλετο ὡς ἓν τούτων. Εἰ δὲ τὸν χόρτον τοῦ ἀγροῦ, σήμερον ὄντα καὶ αὔριον εἰς κλίβανον βαλλόμενον, ὁ Θεὸς οὕτως ἀμφιέννυσιν, οὐ πολλῷ μᾶλλον ὑμᾶς, ὀλιγόπιστοι; μὴ οὖν μεριμνήσητε λέγοντες, τί φάγωμεν ἢ τί πίωμεν ἢ τί περιβαλώμεθα; πάντα γὰρ ταῦτα τὰ ἔθνη ἐπιζητεῖ· οἶδε γὰρ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ οὐράνιος ὅτι χρῄζετε τούτων ἁπάντων. ζητεῖτε δὲ πρῶτον τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ καὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, καὶ ταῦτα πάντα προστεθήσεται ὑμῖν. Μὴ οὖν μεριμνήσητε εἰς τὴν αὔριον· ἡ γὰρ αὔριον μεριμνήσει τὰ ἑαυτῆς· ἀρκετὸν τῇ ἡμέρᾳ ἡ κακία αὐτῆς.

# 7

Μὴ κρίνετε, ἵνα μὴ κριθῆτε· ἐν ᾧ γὰρ κρίματι κρίνετε κριθήσεσθε, καὶ ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε μετρηθήσεται ὑμῖν. τί δὲ βλέπεις τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου, τὴν δὲ ἐν τῷ σῷ ὀφθαλμῷ δοκὸν οὐ κατανοεῖς; ἢ πῶς ἐρεῖς τῷ ἀδελφῷ σου, ἄφες ἐκβάλω τὸ κάρφος ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου, καὶ ἰδοὺ ἡ δοκὸς ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου; ὑποκριτά, ἔκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου, καὶ τότε διαβλέψεις ἐκβαλεῖν τὸ κάρφος ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ τοῦ ἀδελφοῦ σου. Μὴ δῶτε τὸ ἅγιον τοῖς κυσὶ μηδὲ βάλητε τοὺς μαργαρίτας ὑμῶν ἔμπροσθεν τῶν χοίρων, μήποτε καταπατήσωσιν αὐτοὺς ἐν τοῖς ποσὶν αὐτῶν καὶ στραφέντες ῥήξωσιν ὑμᾶς. Αἰτεῖτε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν, ζητεῖτε, καὶ εὑρήσετε,

κρούετε, καὶ ἀνοιγήσεται ὑμῖν· πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶν λαμβάνει καὶ ὁ ζητῶν εὑρίσκει καὶ τῷ κρούοντι ἀνοιγήσεται. ἢ τίς ἐστιν ἐξ ὑμῶν ἄνθρωπος, ὃν ἐὰν αἰτήσῃ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἄρτον, μὴ λίθον ἐπιδώσει αὐτῷ; καὶ ἐὰν ἰχθὺν αἰτήσῃ, μὴ ὄφιν ἐπιδώσει αὐτῷ; εἰ οὖν ὑμεῖς, πονηροὶ ὄντες, οἴδατε δόματα ἀγαθὰ διδόναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν, πόσῳ μᾶλλον ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς δώσει ἀγαθὰ τοῖς αἰτοῦσιν αὐτόν; Πάντα οὖν ὅσα ἂν θέλητε ἵνα ποιῶσιν ὑμῖν οἱ ἄνθρωποι, οὕτω καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐτοῖς· οὗτος γάρ ἐστιν ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται. Εἰσέλθετε διὰ τῆς στενῆς πύλης· ὅτι πλατεῖα ἡ πύλη καὶ εὐρύχωρος ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ἀπώλειαν, καὶ πολλοί εἰσιν οἱ εἰσερχόμενοι δι᾽ αὐτῆς. τί στενὴ ἡ πύλη καὶ τεθλιμμένη ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ζωήν, καὶ ὀλίγοι εἰσὶν οἱ εὑρίσκοντες αὐτήν Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν ψευδοπροφητῶν, οἵτινες ἔρχονται πρὸς ὑμᾶς ἐν ἐνδύμασι προβάτων, ἔσωθεν δέ εἰσι λύκοι ἅρπαγες. ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἐπιγνώσεσθε αὐτούς. μήτι συλλέγουσιν ἀπὸ ἀκανθῶν σταφυλὴν ἢ ἀπὸ τριβόλων σῦκα; οὕτω πᾶν δένδρον ἀγαθὸν καρποὺς καλοὺς ποιεῖ, τὸ δὲ σαπρὸν δένδρον καρποὺς πονηροὺς ποιεῖ. οὐ δύναται δένδρον ἀγαθὸν καρποὺς πονηροὺς ποιεῖν, οὐδὲ δένδρον σαπρὸν καρποὺς καλοὺς ποιεῖν. πᾶν δένδρον μὴ ποιοῦν καρπὸν καλὸν ἐκκόπτεται καὶ εἰς πῦρ βάλλεται. ἄραγε ἀπὸ τῶν καρπῶν αὐτῶν ἐπιγνώσεσθε αὐτούς. Οὐ πᾶς ὁ λέγων μοι Κύριε Κύριε, εἰσελεύσεται εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν, ἀλλ᾽ ὁ ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς. πολλοὶ ἐροῦσί μοι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ· Κύριε Κύριε, οὐ τῷ σῷ ὀνόματι προεφητεύσαμεν, καὶ τῷ σῷ ὀνόματι δαιμόνια ἐξεβάλομεν, καὶ τῷ σῷ ὀνόματι δυνάμεις πολλὰς ἐποιήσαμεν; καὶ τότε ὁμολογήσω αὐτοῖς ὅτι οὐδέποτε ἔγνων ὑμᾶς· ἀποχωρεῖτε ἀπ᾽ ἐμοῦ οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν. Πᾶς οὖν ὅστις ἀκούει μου τοὺς

λόγους τούτους καὶ ποιεῖ αὐτούς, ὁμοιώσω αὐτὸν ἀνδρὶ φρονίμῳ, ὅστις ᾠκοδόμησε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἐπὶ τὴν πέτραν· καὶ κατέβη ἡ βροχὴ καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ καὶ ἔπνευσαν οἱ ἄνεμοι καὶ προσέπεσον τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, καὶ οὐκ ἔπεσε· τεθεμελίωτο γὰρ ἐπὶ τὴν πέτραν. καὶ πᾶς ὁ ἀκούων μου τοὺς λόγους τούτους καὶ μὴ ποιῶν αὐτοὺς ὁμοιωθήσεται ἀνδρὶ μωρῷ, ὅστις ᾠκοδόμησε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἐπὶ τὴν ἄμμον· καὶ κατέβη ἡ βροχὴ καὶ ἦλθον οἱ ποταμοὶ καὶ ἔπνευσαν οἱ ἄνεμοι καὶ προσέκοψαν τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔπεσε, καὶ ἦν ἡ πτῶσις αὐτῆς μεγάλη. Καὶ ἐγένετο ὅτε συνετέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς λόγους τούτους, ἐξεπλήσσοντο οἱ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ· ἦν γὰρ διδάσκων αὐτοὺς ὡς ἐξουσίαν ἔχων, καὶ οὐχ ὡς οἱ γραμματεῖς.

# 8

Καταβάντι δὲ αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ὄρους ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί. Καὶ ἰδοὺ λεπρὸς ἐλθὼν προσεκύνει αὐτῷ λέγων· Κύριε, ἐὰν θέλῃς, δύνασαί με καθαρίσαι. καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα ἥψατο αὐτοῦ ὁ Ἰησοῦς λέγων· θέλω, καθαρίσθητι. καὶ εὐθέως ἐκαθαρίσθη αὐτοῦ ἡ λέπρα. καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὅρα μηδενὶ εἴπῃς, ἀλλὰ ὕπαγε σεαυτὸν δεῖξον τῷ ἱερεῖ καὶ προσένεγκε τὸ δῶρον ὃ προσέταξε Μωσῆς εἰς μαρτύριον αὐτοῖς. Εἰσελθόντι δὲ αὐτῷ εἰς Καπερναοὺμ προσῆλθεν αὐτῷ ἑκατόνταρχος παρακαλῶν αὐτὸν καὶ λέγων· Κύριε, ὁ παῖς μου βέβληται ἐν τῇ οἰκίᾳ παραλυτικός, δεινῶς βασανιζόμενος. καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἐγὼ ἐλθὼν θεραπεύσω αὐτόν. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἑκατόνταρχος ἔφη· Κύριε, οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς ἵνα μου ὑπὸ τὴν στέγην εἰσέλθῃς· ἀλλὰ

μόνον εἰπὲ λόγῳ, καὶ ἰαθήσεται ὁ παῖς μου. καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπός εἰμι ὑπὸ ἐξουσίαν, ἔχων ὑπ᾽ ἐμαυτὸν στρατιώτας, καὶ λέγω τούτῳ, πορεύθητι, καὶ πορεύεται, καὶ ἄλλῳ, ἔρχου, καὶ ἔρχεται, καὶ τῷ δούλῳ μου, ποίησον τοῦτο, καὶ ποιεῖ. ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐθαύμασε καὶ εἶπε τοῖς ἀκολουθοῦσιν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐδὲ ἐν τῷ Ἰσραὴλ τοσαύτην πίστιν εὗρον. λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι πολλοὶ ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμῶν ἥξουσι καὶ ἀνακλιθήσονται μετὰ Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν, οἱ δὲ υἱοὶ τῆς βασιλείας ἐκβληθήσονται εἰς τὸ σκότος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων. καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τῷ ἑκατοντάρχῳ· ὕπαγε, καὶ ὡς ἐπίστευσας γενηθήτω σοι. καὶ ἰάθη ὁ παῖς αὐτοῦ ἐν τῇ ὥρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν Πέτρου εἶδε τὴν πενθερὰν αὐτοῦ βεβλημένην καὶ πυρέσσουσαν· καὶ ἥψατο τῆς χειρὸς αὐτῆς, καὶ ἀφῆκεν αὐτὴν ὁ πυρετός, καὶ ἠγέρθη καὶ διηκόνει αὐτῷ. Ὀψίας δὲ γενομένης προσήνεγκαν αὐτῷ δαιμονιζομένους πολλούς, καὶ ἐξέβαλε τὰ πνεύματα λόγῳ καὶ πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας ἐθεράπευσεν, ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου λέγοντος· αὐτὸς τὰς ἀσθενείας ἡμῶν ἔλαβε καὶ τὰς νόσους ἐβάστασεν. Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς πολλοὺς ὄχλους περὶ αὐτὸν ἐκέλευσεν ἀπελθεῖν εἰς τὸ πέραν. Καὶ προσελθὼν εἷς γραμματεὺς εἶπεν αὐτῷ· διδάσκαλε, ἀκολουθήσω σοι ὅπου ἐὰν ἀπέρχῃ. καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· αἱ ἀλώπεκες φωλεοὺς ἔχουσι καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνώσεις, ὁ δὲ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἔχει ποῦ τὴν κεφαλὴν κλίνῃ. Ἕτερος δὲ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, ἐπίτρεψόν μοι πρῶτον ἀπελθεῖν καὶ θάψαι τὸν πατέρα μου. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· ἀκολούθει μοι, καὶ ἄφες τοὺς νεκροὺς θάψαι τοὺς ἑαυτῶν νεκρούς. Καὶ ἐμβάντι αὐτῷ εἰς τὸ πλοῖον ἠκολούθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ

αὐτοῦ. καὶ ἰδοὺ σεισμὸς μέγας ἐγένετο ἐν τῇ θαλάσσῃ, ὥστε τὸ πλοῖον καλύπτεσθαι ὑπὸ τῶν κυμάτων· αὐτὸς δὲ ἐκάθευδε. καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἤγειραν αὐτὸν λέγοντες· Κύριε, σῶσον ἡμᾶς, ἀπολλύμεθα. καὶ λέγει αὐτοῖς· τί δειλοί ἐστε, ὀλιγόπιστοι; τότε ἐγερθεὶς ἐπετίμησε τοῖς ἀνέμοις καὶ τῇ θαλάσσῃ, καὶ ἐγένετο γαλήνη μεγάλη. οἱ δὲ ἄνθρωποι ἐθαύμασαν λέγοντες· ποταπός ἐστιν οὗτος, ὅτι καὶ οἱ ἄνεμοι καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ; Καὶ ἐλθόντι αὐτῷ εἰς τὸ πέραν εἰς τὴν χώραν τῶν Γεργεσηνῶν ὑπήντησαν αὐτῷ δύο δαιμονιζόμενοι ἐκ τῶν μνημείων ἐξερχόμενοι, χαλεποὶ λίαν, ὥστε μὴ ἰσχύειν τινὰ παρελθεῖν διὰ τῆς ὁδοῦ ἐκείνης. καὶ ἰδοὺ ἔκραξαν λέγοντες· τί ἡμῖν καὶ σοί, Ἰησοῦ υἱὲ τοῦ Θεοῦ; ἦλθες ὧδε πρὸ καιροῦ βασανίσαι ἡμᾶς; ἦν δὲ μακρὰν ἀπ᾽ αὐτῶν ἀγέλη χοίρων πολλῶν βοσκομένη. οἱ δὲ δαίμονες παρεκάλουν αὐτὸν λέγοντες· εἰ ἐκβάλλεις ἡμᾶς, ἐπίτρεψον ἡμῖν ἀπελθεῖν εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ὑπάγετε. οἱ δὲ ἐξελθόντες ἀπῆλθον εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων· καὶ ἰδοὺ ὥρμησε πᾶσα ἡ ἀγέλη τῶν χοίρων κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν θάλασσαν καὶ ἀπέθανον ἐν τοῖς ὕδασιν. οἱ δὲ βόσκοντες ἔφυγον, καὶ ἀπελθόντες εἰς τὴν πόλιν ἀπήγγειλαν πάντα καὶ τὰ τῶν δαιμονιζομένων. καὶ ἰδοὺ πᾶσα ἡ πόλις ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν τῷ Ἰησοῦ, καὶ ἰδόντες αὐτὸν παρεκάλεσαν ὅπως μεταβῇ ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν.

# 9

Καὶ ἐμβὰς εἰς πλοῖον διεπέρασε καὶ ἦλθεν εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν. Καὶ ἰδοὺ προσέφερον αὐτῷ παραλυτικὸν ἐπὶ κλίνης βεβλημένον· καὶ

ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὴν πίστιν αὐτῶν εἶπε τῷ παραλυτικῷ· θάρσει, τέκνον· ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου. καὶ ἰδού τινες τῶν γραμματέων εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· οὗτος βλασφημεῖ. καὶ ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐτῶν εἶπεν· ἵνα τί ὑμεῖς ἐνθυμεῖσθε πονηρὰ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν; τί γάρ ἐστιν εὐκοπώτερον, εἰπεῖν, ἀφέωνταί σου αἱ ἁμαρτίαι, ἢ εἰπεῖν, ἔγειρε καὶ περιπάτει; ἵνα δὲ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς ἀφιέναι ἁμαρτίας τότε λέγει τῷ παραλυτικῷ· ἐγερθεὶς ἆρόν σου τὴν κλίνην καὶ ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου. καὶ ἐγερθεὶς ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. ἰδόντες δὲ οἱ ὄχλοι ἐθαύμασαν καὶ ἐδόξασαν τὸν Θεὸν τὸν δόντα ἐξουσίαν τοιαύτην τοῖς ἀνθρώποις. Καὶ παράγων ὁ Ἰησοῦς ἐκεῖθεν εἶδεν ἄνθρωπον καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον, Ματθαῖον λεγόμενον, καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκολούθει μοι. καὶ ἀναστὰς ἠκολούθησεν αὐτῷ. Καὶ ἐγένετο αὐτοῦ ἀνακειμένου ἐν τῇ οἰκίᾳ, καὶ ἰδοὺ πολλοὶ τελῶναι καὶ ἁμαρτωλοὶ ἐλθόντες συνανέκειντο τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ. καὶ ἰδόντες οἱ Φαρισαῖοι εἶπον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· διατί μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐσθίει ὁ διδάσκαλος ὑμῶν; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀκούσας εἶπεν αὐτοῖς· οὐ χρείαν ἔχουσιν οἱ ἰσχύοντες ἰατροῦ, ἀλλ᾽ οἱ κακῶς ἔχοντες. πορευθέντες δὲ μάθετε τί ἐστιν ἔλεον θέλω καὶ οὐ θυσίαν. οὐ γὰρ ἦλθον καλέσαι δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλοὺς εἰς μετάνοιαν. Τότε προσέρχονται αὐτῷ οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου λέγοντες· διατί ἡμεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι νηστεύομεν πολλά, οἱ δὲ μαθηταί σου οὐ νηστεύουσι; καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· μὴ δύνανται οἱ υἱοὶ τοῦ νυμφῶνος πενθεῖν ἐφ᾽ ὅσον χρόνον μετ᾽ αὐτῶν ἐστιν ὁ νυμφίος; ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ᾽ αὐτῶν ὁ νυμφίος, καὶ τότε νηστεύσουσιν. οὐδεὶς δὲ ἐπιβάλλει ἐπίβλημα ῥάκους ἀγνάφου ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· αἴρει γὰρ τὸ πλήρωμα αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ἱματίου, καὶ

χεῖρον σχίσμα γίνεται. οὐδὲ βάλλουσιν οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς παλαιούς· εἰ δὲ μήγε, ῥήγνυνται οἱ ἀσκοί, καὶ ὁ οἶνος ἐκχεῖται καὶ οἱ ἀσκοὶ ἀπολοῦνται· ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς βάλλουσιν καινούς, καὶ ἀμφότεροι συντηροῦνται. Ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος αὐτοῖς ἰδοὺ ἄρχων εἷς προσελθὼν προσεκύνει αὐτῷ λέγων ὅτι ἡ θυγάτηρ μου ἄρτι ἐτελεύτησεν· ἀλλὰ ἐλθὼν ἐπίθες τὴν χεῖρά σου ἐπ᾽ αὐτὴν καὶ ζήσεται. καὶ ἐγερθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἠκολούθησεν αὐτῷ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ. Καὶ ἰδοὺ γυνή, αἱμορροοῦσα δώδεκα ἔτη, προσελθοῦσα ὄπισθεν ἥψατο τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ. ἔλεγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ, ἐὰν μόνον ἅψωμαι τοῦ ἱματίου αὐτοῦ, σωθήσομαι. ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐπιστραφεὶς καὶ ἰδὼν αὐτὴν εἶπε· θάρσει, θύγατερ· ἡ πίστις σου σέσωκέ σε. καὶ ἐσώθη ἡ γυνὴ ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης. Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ ἄρχοντος καὶ ἰδὼν τοὺς αὐλητὰς καὶ τὸν ὄχλον θορυβούμενον, λέγει αὐτοῖς· ἀναχωρεῖτε· οὐ γὰρ ἀπέθανε τὸ κοράσιον, ἀλλὰ καθεύδει. καὶ κατεγέλων αὐτοῦ. ὅτε δὲ ἐξεβλήθη ὁ ὄχλος, εἰσελθὼν ἐκράτησε τῆς χειρὸς αὐτῆς, καὶ ἠγέρθη τὸ κοράσιον. καὶ ἐξῆλθεν ἡ φήμη αὕτη εἰς ὅλην τὴν γῆν ἐκείνην. Καὶ παράγοντι ἐκεῖθεν τῷ Ἰησοῦ ἠκολούθησαν αὐτῷ δύο τυφλοὶ κράζοντες καὶ λέγοντες· ἐλέησον ἡμᾶς, υἱὲ Δαυΐδ. ἐλθόντι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν προσῆλθον αὐτῷ οἱ τυφλοί, καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· πιστεύετε ὅτι δύναμαι τοῦτο ποιῆσαι; λέγουσιν αὐτῷ· ναί, Κύριε. τότε ἥψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν λέγων· κατὰ τὴν πίστιν ὑμῶν γενηθήτω ὑμῖν. καὶ ἀνεῴχθησαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοί· καὶ ἐνεβριμήσατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς λέγων· ὁρᾶτε μηδεὶς γινωσκέτω. οἱ δὲ ἐξελθόντες διεφήμισαν αὐτὸν ἐν ὅλῃ τῇ γῇ ἐκείνῃ. Αὐτῶν δὲ ἐξερχομένων ἰδοὺ προσήνεγκαν αὐτῷ ἄνθρωπον κωφὸν δαιμονιζόμενον· καὶ ἐκβληθέντος τοῦ δαιμονίου ἐλάλησεν ὁ κωφός, καὶ ἐθαύμασαν οἱ ὄχλοι λέγοντες ὅτι οὐδέποτε ἐφάνη

οὕτως ἐν τῷ Ἰσραήλ. οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἔλεγον· ἐν τῷ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια. Καὶ περιῆγεν ὁ Ἰησοῦς τὰς πόλεις πάσας καὶ τὰς κώμας διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν καὶ κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας καὶ θεραπεύων πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ. Ἰδὼν δὲ τοὺς ὄχλους ἐσπλαγχνίσθη περὶ αὐτῶν, ὅτι ἦσαν ἐκλελυμένοι καὶ ἐρριμμένοι ὡς πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα. τότε λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ὁ μὲν θερισμὸς πολύς, οἱ δὲ ἐργάται ὀλίγοι. δεήθητε οὖν τοῦ κυρίου τοῦ θερισμοῦ ὅπως ἐκβάλῃ ἐργάτας εἰς τὸν θερισμὸν αὐτοῦ.

# 10

Καὶ προσκαλεσάμενος τοὺς δώδεκα μαθητὰς αὐτοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς ἐξουσίαν πνευμάτων ἀκαθάρτων ὥστε ἐκβάλλειν αὐτὰ καὶ θεραπεύειν πᾶσαν νόσον καὶ πᾶσαν μαλακίαν. Τῶν δὲ δώδεκα ἀποστόλων τὰ ὀνόματά εἰσι ταῦτα· πρῶτος Σίμων ὁ λεγόμενος Πέτρος καὶ Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, Ἰάκωβος ὁ τοῦ Ζεβεδαίου καὶ Ἰωάννης ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, Φίλιππος καὶ Βαρθολομαῖος, Θωμᾶς καὶ Ματθαῖος ὁ τελώνης, Ἰάκωβος ὁ τοῦ Ἀλφαίου καὶ Λεββαῖος ὁ ἐπικληθεὶς Θαδδαῖος, Σίμων ὁ Κανανίτης καὶ Ἰούδας ὁ Ἰσκαριώτης ὁ καὶ παραδοὺς αὐτόν. Τούτους τοὺς δώδεκα ἀπέστειλεν ὁ Ἰησοῦς παραγγείλας αὐτοῖς λέγων· εἰς ὁδὸν ἐθνῶν μὴ ἀπέλθητε καὶ εἰς πόλιν Σαμαρειτῶν μὴ εἰσέλθητε· πορεύεσθε δὲ μᾶλλον πρὸς τὰ πρόβατα τὰ ἀπολωλότα οἴκου Ἰσραήλ. πορευόμενοι δὲ κηρύσσετε λέγοντες ὅτι ἤγγικεν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. ἀσθενοῦντας θεραπεύετε, λεπροὺς καθαρίζετε, νεκροὺς ἐγείρετε, δαιμόνια ἐκβάλλετε· δωρεὰν ἐλάβετε, δωρεὰν δότε. μὴ

κτήσησθε χρυσὸν μηδὲ ἄργυρον μηδὲ χαλκὸν εἰς τὰς ζώνας ὑμῶν, μὴ πήραν εἰς ὁδὸν μηδὲ δύο χιτῶνας μηδὲ ὑποδήματα μηδὲ ῥάβδον· ἄξιος γάρ ἐστιν ὁ ἐργάτης τῆς τροφῆς αὐτοῦ. εἰς ἣν δ᾽ ἂν πόλιν ἢ κώμην εἰσέλθητε, ἐξετάσατε τίς ἐν αὐτῇ ἄξιός ἐστι, κἀκεῖ μείνατε ἕως ἂν ἐξέλθητε. εἰσερχόμενοι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν ἀσπάσασθε αὐτὴν λέγοντες· εἰρήνη τῷ οἴκῳ τούτῳ. καὶ ἐὰν μὲν ᾖ ἡ οἰκία ἀξία, ἐλθέτω ἡ εἰρήνη ὑμῶν ἐπ᾽ αὐτήν· ἐὰν δὲ μὴ ᾖ ἀξία, ἡ εἰρήνη ὑμῶν πρὸς ὑμᾶς ἐπιστραφήτω. καὶ ὃς ἐὰν μὴ δέξηται ὑμᾶς μηδὲ ἀκούσῃ τοὺς λόγους ὑμῶν, ἐξερχόμενοι ἔξω τῆς οἰκίας ἢ τῆς πόλεως ἐκείνης ἐκτινάξατε τὸν κονιορτὸν τῶν ποδῶν ὑμῶν. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀνεκτότερον ἔσται γῇ Σοδόμων καὶ Γομόρρας ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς πρόβατα ἐν μέσῳ λύκων· γίνεσθε οὖν φρόνιμοι ὡς οἱ ὄφεις καὶ ἀκέραιοι ὡς αἱ περιστεραί. Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων· παραδώσουσι γὰρ ὑμᾶς εἰς συνέδρια καὶ ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν μαστιγώσουσιν ὑμᾶς· καὶ ἐπὶ ἡγεμόνας δὲ καὶ βασιλεῖς ἀχθήσεσθε ἕνεκεν ἐμοῦ εἰς μαρτύριον αὐτοῖς καὶ τοῖς ἔθνεσιν. ὅταν δὲ παραδώσουσιν ὑμᾶς, μὴ μεριμνήσητε πῶς ἢ τί λαλήσετε· δοθήσεται γὰρ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ τί λαλήσετε. οὐ γὰρ ὑμεῖς ἐστε οἱ λαλοῦντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τοῦ πατρὸς ὑμῶν τὸ λαλοῦν ἐν ὑμῖν. Παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς θάνατον καὶ πατὴρ τέκνον, καὶ ἐπαναστήσονται τέκνα ἐπὶ γονεῖς καὶ θανατώσουσιν αὐτούς· καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ τὸ ὄνομά μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὗτος σωθήσεται. ὅταν δὲ διώκωσιν ὑμᾶς ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, φεύγετε εἰς τὴν ἄλλην· ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ τελέσητε τὰς πόλεις τοῦ Ἰσραὴλ ἕως ἂν ἔλθῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου. Οὐκ ἔστι μαθητὴς ὑπὲρ τὸν διδάσκαλον οὐδὲ δοῦλος ὑπὲρ τὸν κύριον αὐτοῦ. ἀρκετὸν τῷ μαθητῇ ἵνα γένηται ὡς ὁ

διδάσκαλος αὐτοῦ, καὶ τῷ δούλῳ ὡς ὁ κύριος αὐτοῦ. εἰ τὸν οἰκοδεσπότην Βεελζεβοὺλ ἐκάλεσαν, πόσῳ μᾶλλον τοὺς οἰκιακοὺς αὐτοῦ; μὴ οὖν φοβηθῆτε αὐτούς· οὐδὲν γάρ ἐστι κεκαλυμμένον ὃ οὐκ ἀποκαλυφθήσεται, καὶ κρυπτὸν ὃ οὐ γνωσθήσεται. ὃ λέγω ὑμῖν ἐν τῇ σκοτίᾳ, εἴπατε ἐν τῷ φωτί, καὶ ὃ εἰς τὸ οὖς ἀκούετε, κηρύξατε ἐπὶ τῶν δωμάτων. καὶ μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τῶν ἀποκτεννόντων τὸ σῶμα, τὴν δὲ ψυχὴν μὴ δυναμένων ἀποκτεῖναι· φοβήθητε δὲ μᾶλλον τὸν δυνάμενον καὶ ψυχὴν καὶ σῶμα ἀπολέσαι ἐν γεέννῃ. οὐχὶ δύο στρουθία ἀσσαρίου πωλεῖται; καὶ ἓν ἐξ αὐτῶν οὐ πεσεῖται ἐπὶ τὴν γῆν ἄνευ τοῦ πατρὸς ὑμῶν. ὑμῶν δὲ καὶ αἱ τρίχες τῆς κεφαλῆς πᾶσαι ἠριθμημέναι εἰσί. μὴ οὖν φοβηθῆτε· πολλῶν στρουθίων διαφέρετε ὑμεῖς. Πᾶς οὖν ὅστις ὁμολογήσει ἐν ἐμοὶ ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, ὁμολογήσω κἀγὼ ἐν αὐτῷ ἔμπροσθεν τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς· ὅστις δ᾽ ἂν ἀρνήσηταί με ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, ἀρνήσομαι αὐτὸν κἀγὼ ἔμπροσθεν τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς. Μὴ νομίσητε ὅτι ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην ἐπὶ τὴν γῆν· οὐκ ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην, ἀλλὰ μάχαιραν. ἦλθον γὰρ διχάσαι ἄνθρωπον κατὰ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ καὶ θυγατέρα κατὰ τῆς μητρὸς αὐτῆς καὶ νύμφην κατὰ τῆς πενθερᾶς αὐτῆς· καὶ ἐχθροὶ τοῦ ἀνθρώπου οἱ οἰκιακοὶ αὐτοῦ. Ὁ φιλῶν πατέρα ἢ μητέρα ὑπὲρ ἐμὲ οὐκ ἔστι μου ἄξιος· καὶ ὁ φιλῶν υἱὸν ἢ θυγατέρα ὑπὲρ ἐμὲ οὐκ ἔστι μου ἄξιος· καὶ ὃς οὐ λαμβάνει τὸν σταυρὸν αὐτοῦ καὶ ἀκολουθεῖ ὀπίσω μου, οὐκ ἔστι μου ἄξιος. ὁ εὑρὼν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἀπολέσει αὐτήν, καὶ ὁ ἀπολέσας τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ εὑρήσει αὐτήν. Ὁ δεχόμενος ὑμᾶς ἐμὲ δέχεται, καὶ ὁ ἐμὲ δεχόμενος δέχεται τὸν ἀποστείλαντά με. ὁ δεχόμενος προφήτην εἰς ὄνομα προφήτου μισθὸν προφήτου λήψεται, καὶ ὁ δεχόμενος δίκαιον εἰς ὄνομα δικαίου μισθὸν δικαίου

λήψεται. καὶ ὃς ἐὰν ποτίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν τούτων ποτήριον ψυχροῦ μόνον εἰς ὄνομα μαθητοῦ, ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀπολέσῃ τὸν μισθὸν αὐτοῦ.

# 11

Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς διατάσσων τοῖς δώδεκα μαθηταῖς αὐτοῦ μετέβη ἐκεῖθεν τοῦ διδάσκειν καὶ κηρύσσειν ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτῶν. Ὁ δὲ Ἰωάννης ἀκούσας ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ τὰ ἔργα τοῦ Χριστοῦ, πέμψας δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος ἢ ἕτερον προσδοκῶμεν; καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· πορευθέντες ἀπαγγείλατε Ἰωάννῃ ἃ ἀκούετε καὶ βλέπετε· τυφλοὶ ἀναβλέπουσι καὶ χωλοὶ περιπατοῦσι, λεπροὶ καθαρίζονται καὶ κωφοὶ ἀκούουσι, νεκροὶ ἐγείρονται καὶ πτωχοὶ εὐαγγελίζονται· καὶ μακάριός ἐστιν ὃς ἐὰν μὴ σκανδαλισθῇ ἐν ἐμοί. Τούτων δὲ πορευομένων ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς λέγειν τοῖς ὄχλοις περὶ Ἰωάννου· τί ἐξήλθετε εἰς τὴν ἔρημον θεάσασθαι; κάλαμον ὑπὸ ἀνέμου σαλευόμενον; ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; ἄνθρωπον ἐν μαλακοῖς ἱματίοις ἠμφιεσμένον; ἰδοὺ οἱ τὰ μαλακὰ φοροῦντες ἐν τοῖς οἴκοις τῶν βασιλέων εἰσίν. ἀλλὰ τί ἐξήλθετε ἰδεῖν; προφήτην; ναὶ λέγω ὑμῖν, καὶ περισσότερον προφήτου. οὗτος γάρ ἐστι περὶ οὗ γέγραπται· ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου, ὃς κατασκευάσει τὴν ὁδόν σου ἔμπροσθέν σου. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ ἐγήγερται ἐν γεννητοῖς γυναικῶν μείζων Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ· ὁ δὲ μικρότερος ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν μείζων αὐτοῦ ἐστιν. ἀπὸ δὲ τῶν ἡμερῶν Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ ἕως ἄρτι ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν βιάζεται, καὶ βιασταὶ ἁρπάζουσιν αὐτήν.

πάντες γὰρ οἱ προφῆται καὶ ὁ νόμος ἕως Ἰωάννου προεφήτευσαν. καὶ εἰ θέλετε δέξασθαι, αὐτός ἐστιν Ἠλίας ὁ μέλλων ἔρχεσθαι. ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν ἀκουέτω. Τίνι δὲ ὁμοιώσω τὴν γενεὰν ταύτην; ὁμοία ἐστὶ παιδίοις καθημένοις ἐν ἀγοραῖς, ἃ προσφωνοῦντα τοῖς ἑταίροις αὐτῶν λέγουσιν· ηὐλήσαμεν ὑμῖν, καὶ οὐκ ὠρχήσασθε, ἐθρηνήσαμεν ὑμῖν, καὶ οὐκ ἐκόψασθε . ἦλθε γὰρ Ἰωάννης μήτε ἐσθίων μήτε πίνων, καὶ λέγουσι· δαιμόνιον ἔχει. ἦλθεν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐσθίων καὶ πίνων, καὶ λέγουσιν· ἰδοὺ ἄνθρωπος φάγος καὶ οἰνοπότης, τελωνῶν φίλος καὶ ἁμαρτωλῶν. καὶ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῆς Τότε ἤρξατο ὀνειδίζειν τὰς πόλεις ἐν αἷς ἐγένοντο αἱ πλεῖσται δυνάμεις αὐτοῦ, ὅτι οὐ μετενόησαν· οὐαί σοι, Χοραζίν, οὐαί σοι, Βηθσαϊδά· ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἐγενήθησαν αἱ δυνάμεις αἱ γενόμεναι ἐν ὑμῖν, πάλαι ἂν ἐν σάκκῳ καὶ σποδῷ καθήμεναι μετενόησαν. πλὴν λέγω ὑμῖν, Τύρῳ καὶ Σιδῶνι ἀνεκτότερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως ἢ ὑμῖν. καὶ σὺ Καπερναούμ, ἡ ἕως τοῦ οὐρανοῦ ὑψωθεῖσα, ἕως ᾅδου καταβιβασθήσῃ· ὅτι εἰ ἐν Σοδόμοις ἐγενήθησαν αἱ δυνάμεις αἱ γενόμεναι ἐν σοί, ἔμειναν ἂν μέχρι τῆς σήμερον. πλὴν λέγω ὑμῖν ὅτι γῇ Σοδόμων ἀνεκτότερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως ἢ σοί. Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· ἐξομολογοῦμαί σοι, πάτερ, κύριε τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν καὶ συνετῶν, καὶ ἀπεκάλυψας αὐτὰ νηπίοις· ναί, ὁ πατήρ, ὅτι οὕτως ἐγένετο εὐδοκία ἔμπροσθέν σου. Πάντα μοι παρεδόθη ὑπὸ τοῦ πατρός μου· καὶ οὐδεὶς ἐπιγινώσκει τὸν υἱὸν εἰ μὴ ὁ πατήρ, οὐδὲ τὸν πατέρα τις ἐπιγινώσκει εἰ μὴ ὁ υἱὸς καὶ ᾧ ἐὰν βούληται ὁ υἱὸς ἀποκαλύψαι. Δεῦτε πρός με πάντες οἱ κοπιῶντες καὶ πεφορτισμένοι, κἀγὼ ἀναπαύσω ὑμᾶς. ἄρατε τὸν ζυγόν μου ἐφ᾽ ὑμᾶς καὶ μάθετε ἀπ᾽ ἐμοῦ, ὅτι πρᾴός εἰμι καὶ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ,

καὶ εὑρήσετε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν· ὁ γὰρ ζυγός μου χρηστὸς καὶ τὸ φορτίον μου ἐλαφρόν ἐστιν.

# 12

Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἐπορεύθη ὁ Ἰησοῦς τοῖς σάββασι διὰ τῶν σπορίμων· οἱ δὲ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπείνασαν, καὶ ἤρξαντο τίλλειν στάχυας καὶ ἐσθίειν. οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἰδόντες εἶπον αὐτῷ· ἰδοὺ οἱ μαθηταί σου ποιοῦσιν ὃ οὐκ ἔξεστι ποιεῖν ἐν σαββάτῳ. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· οὐκ ἀνέγνωτε τί ἐποίησε Δαυῒδ ὅτε ἐπείνασεν αὐτὸς καὶ οἱ μετ᾽ αὐτοῦ; πῶς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ καὶ τοὺς ἄρτους τῆς προθέσεως ἔφαγεν, οὓς οὐκ ἐξὸν ἦν αὐτῷ φαγεῖν οὐδὲ τοῖς μετ᾽ αὐτοῦ, εἰ μὴ μόνοις τοῖς ἱερεῦσι; ἢ οὐκ ἀνέγνωτε ἐν τῷ νόμῳ ὅτι τοῖς σάββασιν οἱ ἱερεῖς ἐν τῷ ἱερῷ τὸ σάββατον βεβηλοῦσι, καὶ ἀναίτιοί εἰσι; λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι τοῦ ἱεροῦ μεῖζόν ἐστιν ὧδε. εἰ δὲ ἐγνώκειτε τί ἐστιν ἔλεον θέλω καὶ οὐ θυσίαν, οὐκ ἂν κατεδικάσατε τοὺς ἀναιτίους. κύριος γάρ ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ σαββάτου. Καὶ μεταβὰς ἐκεῖθεν ἦλθεν εἰς τὴν συναγωγὴν αὐτῶν. καὶ ἰδοὺ ἄνθρωπος ἦν ἐκεῖ τὴν χεῖρα ἔχων ξηράν· καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν λέγοντες· εἰ ἔξεστι τοῖς σάββασι θεραπεύειν; ἵνα κατηγορήσωσιν αὐτοῦ. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· τίς ἔσται ἐξ ὑμῶν ἄνθρωπος ὃς ἕξει πρόβατον ἕν, καὶ ἐὰν ἐμπέσῃ τοῦτο τοῖς σάββασιν εἰς βόθυνον, οὐχὶ κρατήσει αὐτὸ καὶ ἐγερεῖ; πόσῳ οὖν διαφέρει ἄνθρωπος προβάτου; ὥστε ἔξεστι τοῖς σάββασι καλῶς ποιεῖν. τότε λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· ἔκτεινόν σου τὴν χεῖρα· καὶ ἐξέτεινε, καὶ ἀποκατεστάθη ὑγιὴς ὡς ἡ ἄλλη. ἐξελθόντες δὲ οἱ Φαρισαῖοι συμβούλιον ἔλαβον κατ᾽ αὐτοῦ, ὅπως αὐτὸν

ἀπολέσωσιν. Ὁ δὲ Ἰησοῦς γνοὺς ἀνεχώρησεν ἐκεῖθεν· καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί, καὶ ἐθεράπευσεν αὐτοὺς πάντας, καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα μὴ φανερὸν ποιήσωσιν αὐτόν, ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου λέγοντος· ἰδοὺ ὁ παῖς μου, ὃν ᾑρέτισα, ὁ ἀγαπητός μου, εἰς ὃν εὐδόκησεν ἡ ψυχή μου· θήσω τὸ πνεῦμά μου ἐπ᾽ αὐτόν, καὶ κρίσιν τοῖς ἔθνεσιν ἀπαγγελεῖ· οὐκ ἐρίσει οὐδὲ κραυγάσει, οὐδὲ ἀκούσει τις ἐν ταῖς πλατείαις τὴν φωνὴν αὐτοῦ. κάλαμον συντετριμμένον οὐ κατεάξει καὶ λίνον τυφόμενον οὐ σβέσει, ἕως ἂν ἐκβάλῃ εἰς νῖκος τὴν κρίσιν· καὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἔθνη ἐλπιοῦσι. Τότε προσηνέχθη αὐτῷ δαιμονιζόμενος τυφλὸς καὶ κωφός, καὶ ἐθεράπευσεν αὐτόν, ὥστε τὸν τυφλὸν καὶ κωφὸν καὶ λαλεῖν καὶ βλέπειν· καὶ ἐξίσταντο πάντες οἱ ὄχλοι καὶ ἔλεγον· μήτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς Δαυΐδ; οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἀκούσαντες εἶπον· οὗτος οὐκ ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια εἰμὴ ἐν τῷ Βεελζεβούλ, ἄρχοντι τῶν δαιμονίων. εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐτῶν εἶπεν αὐτοῖς· πᾶσα βασιλεία μερισθεῖσα καθ᾽ ἑαυτὴν ἐρημοῦται, καὶ πᾶσα πόλις ἢ οἰκία μερισθεῖσα καθ᾽ ἑαυτὴν οὐ σταθήσεται. καὶ εἰ ὁ σατανᾶς τὸν σατανᾶν ἐκβάλλει, ἐφ᾽ ἑαυτὸν ἐμερίσθη· πῶς οὖν σταθήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ; καὶ εἰ ἐγὼ ἐν Βεελζεβοὺλ ἐκβάλλω τὰ δαιμόνια, οἱ υἱοὶ ὑμῶν ἐν τίνι ἐκβαλοῦσι; διὰ τοῦτο αὐτοὶ κριταὶ ἔσονται ὑμῶν. εἰ δὲ ἐγὼ ἐν Πνεύματι Θεοῦ ἐκβάλλω τὰ δαιμόνια, ἄρα ἔφθασεν ἐφ᾽ ὑμᾶς ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ. ἢ πῶς δύναταί τις εἰσελθεῖν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ ἰσχυροῦ καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ ἁρπάσαι, ἐὰν μὴ πρῶτον δήσῃ τὸν ἰσχυρόν; καὶ τότε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ διαρπάσει. ὁ μὴ ὢν μετ᾽ ἐμοῦ κατ᾽ ἐμοῦ ἐστι, καὶ ὁ μὴ συνάγων μετ᾽ ἐμοῦ σκορπίζει. Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, πᾶσα ἁμαρτία καὶ βλασφημία ἀφεθήσεται τοῖς ἀνθρώποις, ἡ δὲ τοῦ Πνεύματος βλασφημία οὐκ ἀφεθήσεται τοῖς

ἀνθρώποις· καὶ ὃς ἐὰν εἴπῃ λόγον κατὰ τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου, ἀφεθήσεται αὐτῷ· ὃς δ᾽ ἂν εἴπῃ κατὰ τοῦ Πνεύματος τοῦ Ἁγίου, οὐκ ἀφεθήσεται αὐτῷ οὔτε ἐν τῷ νῦν αἰῶνι οὔτε ἐν τῷ μέλλοντι. Ἢ ποιήσατε τὸ δένδρον καλόν, καὶ τὸν καρπόν αὐτοῦ καλόν, ἢ ποιήσατε τὸ δένδρον σαπρόν, καὶ τὸν καρπὸν αὐτοῦ σαπρόν· ἐκ γὰρ τοῦ καρποῦ τὸ δένδρον γινώσκεται. γεννήματα ἐχιδνῶν, πῶς δύνασθε ἀγαθὰ λαλεῖν πονηροὶ ὄντες; ἐκ γὰρ τοῦ περισσεύματος τῆς καρδίας τὸ στόμα λαλεῖ. ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ ἀγαθοῦ θησαυροῦ ἐκβάλλει ἀγαθά, καὶ ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ πονηροῦ θησαυροῦ ἐκβάλλει πονηρά. λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι πᾶν ῥῆμα ἀργὸν ὃ ἐὰν λαλήσωσιν οἱ ἄνθρωποι, ἀποδώσουσι περὶ αὐτοῦ λόγον ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως· ἐκ γὰρ τῶν λόγων σου δικαιωθήσῃ καὶ ἐκ τῶν λόγων σου καταδικασθήσῃ. Τότε ἀπεκρίθησάν τινες τῶν γραμματέων καὶ Φαρισαίων λέγοντες· διδάσκαλε, θέλομεν ἀπὸ σοῦ σημεῖον ἰδεῖν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· γενεὰ πονηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον ἐπιζητεῖ, καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ εἰμὴ τὸ σημεῖον Ἰωνᾶ τοῦ προφήτου. ὥσπερ γὰρ ἐγένετο Ἰωνᾶς ὁ προφήτης ἐν τῇ κοιλίᾳ τοῦ κήτους τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας, οὕτως ἔσται καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ καρδίᾳ τῆς γῆς τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας. ἄνδρες Νινευῖται ἀναστήσονται ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῆς γενεᾶς ταύτης καὶ κατακρινοῦσιν αὐτήν, ὅτι μετενόησαν εἰς τὸ κήρυγμα Ἰωνᾶ, καὶ ἰδοὺ πλεῖον Ἰωνᾶ ὧδε. βασίλισσα νότου ἐγερθήσεται ἐν τῇ κρίσει μετὰ τῆς γενεᾶς ταύτης καὶ κατακρινεῖ αὐτήν, ὅτι ἦλθεν ἐκ τῶν περάτων τῆς γῆς ἀκοῦσαι τὴν σοφίαν Σολομῶνος, καὶ ἰδοὺ πλεῖον Σολομῶνος ὧδε. Ὅταν δὲ τὸ ἀκάθαρτον πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, διέρχεται δι᾽ ἀνύδρων τόπων ζητοῦν ἀνάπαυσιν, καὶ οὐχ εὑρίσκει. τότε λέγει· εἰς τὸν οἶκόν μου ἐπιστρέψω ὅθεν ἐξῆλθον· καὶ ἐλθὸν εὑρίσκει

σχολάζοντα καὶ σεσαρωμένον καὶ κεκοσμημένον. τότε πορεύεται καὶ παραλαμβάνει μεθ᾽ ἑαυτοῦ ἑπτὰ ἕτερα πνεύματα πονηρότερα ἑαυτοῦ, καὶ εἰσελθόντα κατοικεῖ ἐκεῖ, καὶ γίνεται τὰ ἔσχατα τοῦ ἀνθρώπου ἐκείνου χείρονα τῶν πρώτων. οὕτως ἔσται καὶ τῇ γενεᾷ τῇ πονηρᾷ ταύτῃ. Ἔτι δὲ αὐτοῦ λαλοῦντος τοῖς ὄχλοις ἰδοὺ ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ εἱστήκεισαν ἔξω, ζητοῦντες λαλῆσαι αὐτῷ. εἶπε δέ τις αὐτῷ· ἰδοὺ ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἑστήκασιν ἔξω ζητοῦντές σε ἰδεῖν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε τῷ λέγοντι αὐτῷ· τίς ἐστιν ἡ μήτηρ μου καὶ τίνες εἰσὶν οἱ ἀδελφοί μου; καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ ἔφη· ἰδοὺ ἡ μήτηρ μου καὶ οἱ ἀδελφοί μου· ὅστις γὰρ ἂν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς, αὐτός μου ἀδελφὸς καὶ ἀδελφὴ καὶ μήτηρ ἐστίν.

# 13

Ἐν δὲ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς τῆς οἰκίας ἐκάθητο παρὰ τὴν θάλασσαν· καὶ συνήχθησαν πρὸς αὐτὸν ὄχλοι πολλοί, ὥστε αὐτὸν εἰς πλοῖον ἐμβάντα καθῆσθαι, καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν εἱστήκει. καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς πολλὰ ἐν παραβολαῖς λέγων· ἰδοὺ ἐξῆλθεν ὁ σπείρων τοῦ σπεῖραι. καὶ ἐν τῷ σπείρειν αὐτὸν ἃ μὲν ἔπεσε παρὰ τὴν ὁδόν, καὶ ἐλθόντα τὰ πετεινὰ κατέφαγεν αὐτά· ἄλλα δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὰ πετρώδη, ὅπου οὐκ εἶχε γῆν πολλήν, καὶ εὐθέως ἐξανέτειλε διὰ τὸ μὴ ἔχειν βάθος γῆς, ἡλίου δὲ ἀνατείλαντος ἐκαυματίσθη, καὶ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ῥίζαν ἐξηράνθη· ἄλλα δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὰς ἀκάνθας, καὶ ἀνέβησαν αἱ ἄκανθαι καὶ ἀπέπνιξαν αὐτά· ἄλλα δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν τὴν

καλὴν καὶ ἐδίδου καρπὸν ὃ μὲν ἑκατόν, ὃ δὲ ἑξήκοντα, ὃ δὲ τριάκοντα. ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν ἀκουέτω. Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ εἶπον αὐτῷ· διατί ἐν παραβολαῖς λαλεῖς αὐτοῖς; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· ὅτι ὑμῖν δέδοται γνῶναι τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν, ἐκείνοις δὲ οὐ δέδοται. ὅστις γὰρ ἔχει, δοθήσεται αὐτῷ καὶ περισσευθήσεται· ὅστις δὲ οὐκ ἔχει, καὶ ὃ ἔχει ἀρθήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ. διὰ τοῦτο ἐν παραβολαῖς αὐτοῖς λαλῶ, ἵνα βλέποντες μὴ βλέπωσι καὶ ἀκούοντες μὴ ἀκούωσι μηδὲ συνῶσι, μήποτε ἐπιστρέψωσι· καὶ τότε πληρωθήσεται αὐτοῖς ἡ προφητεία Ἠσαΐου ἡ λέγουσα· ἀκοῇ ἀκούσετε καὶ οὐ μὴ συνῆτε, καὶ βλέποντες βλέψετε καὶ οὐ μὴ ἴδητε· ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ τοῖς ὠσὶ βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἐκάμμυσαν, μήποτε ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς καὶ τοῖς ὠσὶν ἀκούσωσι καὶ τῇ καρδίᾳ συνῶσι καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσομαι αὐτούς. Ὑμῶν δὲ μακάριοι οἱ ὀφθαλμοί, ὅτι βλέπουσι, καὶ τὰ ὦτα ὑμῶν, ὅτι ἀκούουσιν. ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν ὅτι πολλοὶ προφῆται καὶ δίκαιοι ἐπεθύμησαν ἰδεῖν ἃ βλέπετε, καὶ οὐκ εἶδον, καὶ ἀκοῦσαι ἃ ἀκούετε, καὶ οὐκ ἤκουσαν. Ὑμεῖς οὖν ἀκούσατε τὴν παραβολὴν τοῦ σπείραντος. παντὸς ἀκούοντος τὸν λόγον τῆς βασιλείας καὶ μὴ συνιέντος, ἔρχεται ὁ πονηρὸς καὶ αἵρει τὸ ἐσπαρμένον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· οὗτός ἐστιν ὁ παρὰ τὴν ὁδὸν σπαρείς. ὁ δὲ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπαρείς, οὗτός ἐστιν ὁ τὸν λόγον ἀκούων καὶ εὐθέως μετὰ χαρᾶς δεχόμενος καὶ λαμβάνων αὐτόν· οὐκ ἔχει δὲ ῥίζαν ἐν ἑαυτῷ, ἀλλὰ πρόσκαιρός ἐστι, γενομένης δὲ θλίψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὸν λόγον εὐθὺς σκανδαλίζεται. ὁ δὲ εἰς τὰς ἀκάνθας σπαρείς, οὗτός ἐστιν ὁ τὸν λόγον ἀκούων, καὶ ἡ μέριμνα τοῦ αἰῶνος τούτου καὶ ἡ ἀπάτη τοῦ πλούτου συμπνίγει τὸν λόγον, καὶ ἄκαρπος γίνεται. ὁ δὲ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν καλὴν σπαρείς, οὗτός ἐστιν ὁ τὸν

λόγον ἀκούων καὶ συνιῶν· ὃς δὴ καρποφορεῖ καὶ ποιεῖ ὁ μὲν ἑκατόν, ὁ δὲ ἑξήκοντα, ὁ δὲ τριάκοντα. Ἄλλην παραβολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς λέγων· ὡμοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ σπείραντι καλὸν σπέρμα ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ· ἐν δὲ τῷ καθεύδειν τοὺς ἀνθρώπους ἦλθεν αὐτοῦ ὁ ἐχθρὸς καὶ ἔσπειρε ζιζάνια ἀνὰ μέσον τοῦ σίτου καὶ ἀπῆλθεν. ὅτε δὲ ἐβλάστησεν ὁ χόρτος καὶ καρπὸν ἐποίησε, τότε ἐφάνη καὶ τὰ ζιζάνια. προσελθόντες δὲ οἱ δοῦλοι τοῦ οἰκοδεσπότου εἶπον αὐτῷ· κύριε, οὐχὶ καλὸν σπέρμα ἔσπειρας ἐν τῷ σῷ ἀγρῷ; πόθεν οὖν ἔχει ζιζάνια; ὁ δὲ ἔφη αὐτοῖς· ἐχθρὸς ἄνθρωπος τοῦτο ἐποίησεν. οἱ δὲ δοῦλοι εἶπον αὐτῷ· θέλεις οὖν ἀπελθόντες συλλέξωμεν αὐτά; ὁ δὲ ἔφη· οὔ, μήποτε συλλέγοντες τὰ ζιζάνια ἐκριζώσητε ἅμα αὐτοῖς τὸν σῖτον· ἄφετε συναυξάνεσθαι ἀμφότερα μέχρι τοῦ θερισμοῦ, καὶ ἐν καιρῷ τοῦ θερισμοῦ ἐρῶ τοῖς θερισταῖς· συλλέξατε πρῶτον τὰ ζιζάνια καὶ δήσατε αὐτὰ εἰς δέσμας πρὸς τὸ κατακαῦσαι αὐτά, τὸν δὲ σῖτον συναγάγετε εἰς τὴν ἀποθήκην μου. Ἄλλην παραβολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς λέγων· ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν κόκκῳ σινάπεως, ὃν λαβὼν ἄνθρωπος ἔσπειρεν ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ· ὃ μικρότερον μέν ἐστι πάντων τῶν σπερμάτων, ὅταν δὲ αὐξηθῇ, μεῖζον πάντων τῶν λαχάνων ἐστὶ καὶ γίνεται δένδρον, ὥστε ἐλθεῖν τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ καὶ κατασκηνοῦν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ. Ἄλλην παραβολὴν ἐλάλησεν αὐτοῖς· ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ζύμῃ, ἣν λαβοῦσα γυνὴ ἐνέκρυψεν εἰς ἀλεύρου σάτα τρία, ἕως οὗ ἐζυμώθη ὅλον. Ταῦτα πάντα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν παραβολαῖς τοῖς ὄχλοις, καὶ χωρὶς παραβολῆς οὐδὲν ἐλάλει αὐτοῖς, ὅπως πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ τοῦ προφήτου λέγοντος· ἀνοίξω ἐν παραβολαῖς τὸ στόμα μου, ἐρεύξομαι κεκρυμμένα ἀπὸ καταβολῆς κόσμου. Τότε ἀφεὶς τοὺς ὄχλους ἦλθεν εἰς τὴν οἰκίαν

αὐτοῦ. Καὶ προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· φράσον ἡμῖν τὴν παραβολὴν τῶν ζιζανίων τοῦ ἀγροῦ. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· ὁ σπείρων τὸ καλὸν σπέρμα ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου· ὁ δὲ ἀγρός ἐστιν ὁ κόσμος· τὸ δὲ καλὸν σπέρμα, οὗτοί εἰσιν οἱ υἱοὶ τῆς βασιλείας· τὰ δὲ ζιζάνιά εἰσιν οἱ υἱοὶ τοῦ πονηροῦ· ὁ δὲ ἐχθρὸς ὁ σπείρας αὐτά ἐστιν ὁ διάβολος· ὁ δὲ θερισμὸς συντέλεια τοῦ αἰῶνός ἐστιν· οἱ δὲ θερισταὶ ἄγγελοί εἰσιν. ὥσπερ οὖν συλλέγεται τὰ ζιζάνια καὶ πυρὶ καίεται, οὕτως ἔσται ἐν τῇ συντελείᾳ τοῦ αἰῶνος τούτου. ἀποστελεῖ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ, καὶ συλλέξουσιν ἐκ τῆς βασιλείας αὐτοῦ πάντα τὰ σκάνδαλα καὶ τοὺς ποιοῦντας τὴν ἀνομίαν, καὶ βαλοῦσιν αὐτοὺς εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρός· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων. τότε οἱ δίκαιοι ἐκλάμψουσιν ὡς ὁ ἥλιος ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ πατρὸς αὐτῶν. ὁ ἔχων ὦτα ἀκούειν ἀκουέτω. Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν θησαυρῷ κεκρυμμένῳ ἐν τῷ ἀγρῷ, ὃν εὑρὼν ἄνθρωπος ἔκρυψε, καὶ ἀπὸ τῆς χαρᾶς αὐτοῦ ὑπάγει καὶ πάντα ὅσα ἔχει πωλεῖ καὶ ἀγοράζει τὸν ἀγρὸν ἐκεῖνον. Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ ἐμπόρῳ ζητοῦντι καλοὺς μαργαρίτας· ὃς εὑρὼν ἕνα πολύτιμον μαργαρίτην ἀπελθὼν πέπρακε πάντα ὅσα εἶχε καὶ ἠγόρασεν αὐτόν. Πάλιν ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν σαγήνῃ βληθείσῃ εἰς τὴν θάλασσαν καὶ ἐκ παντὸς γένους συναγαγούσῃ· ἣν, ὅτε ἐπληρώθη, ἀναβιβάσαντες αὐτὴν ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν καὶ καθίσαντες συνέλεξαν τὰ καλὰ εἰς ἀγγεῖα, τὰ δὲ σαπρὰ ἔξω ἔβαλον. οὕτως ἔσται ἐν τῇ συντελείᾳ τοῦ αἰῶνος. ἐξελεύσονται οἱ ἄγγελοι καὶ ἀφοριοῦσι τοὺς πονηροὺς ἐκ μέσου τῶν δικαίων, καὶ βαλοῦσιν αὐτοὺς εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρός· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· συνήκατε ταῦτα πάντα; λέγουσιν

αὐτῷ, ναί, Κύριε. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· διὰ τοῦτο πᾶς γραμματεὺς μαθητευθεὶς εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν ὅμοιός ἐστιν ἀνθρώπῳ οἰκοδεσπότῃ, ὅστις ἐκβάλλει ἐκ τοῦ θησαυροῦ αὐτοῦ καινὰ καὶ παλαιά. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τὰς παραβολὰς ταύτας μετῆρεν ἐκεῖθεν, καὶ ἐλθὼν εἰς τὴν πατρίδα αὐτοῦ ἐδίδασκεν αὐτοὺς ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν, ὥστε ἐκπλήττεσθαι αὐτοὺς καὶ λέγειν· πόθεν τούτῳ ἡ σοφία αὕτη καὶ αἱ δυνάμεις; οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ τοῦ τέκτονος υἱός; οὐχὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ λέγεται Μαριὰμ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ Ἰάκωβος καὶ Ἰωσῆς καὶ Σίμων καὶ Ἰούδας; καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ οὐχὶ πᾶσαι πρὸς ἡμᾶς εἰσι; πόθεν οὖν τούτῳ ταῦτα πάντα; καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν αὐτῷ. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· οὐκ ἔστι προφήτης ἄτιμος εἰ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ. καὶ οὐκ ἐποίησεν ἐκεῖ δυνάμεις πολλὰς διὰ τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν.

# 14

Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἤκουσεν Ἡρῴδης ὁ τετράρχης τὴν ἀκοὴν Ἰησοῦ καὶ εἶπε τοῖς παισὶν αὐτοῦ· οὗτός ἐστιν Ἰωάννης ὁ βαπτιστής· αὐτὸς ἠγέρθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν, καὶ διὰ τοῦτο αἱ δυνάμεις ἐνεργοῦσιν ἐν αὐτῷ. ὁ γὰρ Ἡρῴδης κρατήσας τὸν Ἰωάννην ἔδησεν αὐτὸν καὶ ἔθετο ἐν φυλακῇ διὰ Ἡρῳδιάδα τὴν γυναῖκα Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. ἔλεγε γὰρ αὐτῷ ὁ Ἰωάννης· οὐκ ἔξεστί σοι ἔχειν αὐτήν. καὶ θέλων αὐτὸν ἀποκτεῖναι ἐφοβήθη τὸν ὄχλον, ὅτι ὡς προφήτην αὐτὸν εἶχον. γενεσίων δὲ ἀγομένων τοῦ Ἡρῴδου ὠρχήσατο ἡ θυγάτηρ τῆς Ἡρῳδιάδος ἐν τῷ μέσῳ καὶ ἤρεσε τῷ Ἡρῴδῃ· ὅθεν μεθ᾽ ὅρκου ὡμολόγησεν αὐτῇ δοῦναι ὃ ἐὰν

αἰτήσηται. ἡ δέ, προβιβασθεῖσα ὑπὸ τῆς μητρὸς αὐτῆς, δός μοι, φησίν, ὧδε ἐπὶ πίνακι τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ. καὶ ἐλυπήθη ὁ βασιλεύς, διὰ δὲ τοὺς ὅρκους καὶ τοὺς συνανακειμένους ἐκέλευσε δοθῆναι, καὶ πέμψας ἀπεκεφάλισε τὸν Ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ. καὶ ἠνέχθη ἡ κεφαλὴ αὐτοῦ ἐπὶ πίνακι καὶ ἐδόθη τῷ κορασίῳ, καὶ ἤνεγκε τῇ μητρὶ αὐτῆς. καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἦραν τὸ σῶμα καὶ ἔθαψαν αὐτό, καὶ ἐλθόντες ἀπήγγειλαν τῷ Ἰησοῦ. Ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησεν ἐκεῖθεν ἐν πλοίῳ εἰς ἔρημον τόπον κατ᾽ ἰδίαν· καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι ἠκολούθησαν αὐτῷ πεζῇ ἀπὸ τῶν πόλεων. Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς εἶδε πολὺν ὄχλον, καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ᾽ αὐτοῖς καὶ ἐθεράπευσε τοὺς ἀρρώστους αὐτῶν. ὀψίας δὲ γενομένης προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· ἔρημός ἐστιν ὁ τόπος καὶ ἡ ὥρα ἤδη παρῆλθεν· ἀπόλυσον τοὺς ὄχλους, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κώμας ἀγοράσωσιν ἑαυτοῖς βρώματα. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· οὐ χρείαν ἔχουσιν ἀπελθεῖν· δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν. οἱ δὲ λέγουσιν αὐτῷ· οὐκ ἔχομεν ὧδε εἰ μὴ πέντε ἄρτους καὶ δύο ἰχθύας. ὁ δὲ εἶπε· φέρετέ μοι αὐτοὺς ὧδε. καὶ κελεύσας τοὺς ὄχλους ἀνακλιθῆναι ἐπὶ τοὺς χόρτους, λαβὼν τοὺς πέντε ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας, ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν εὐλόγησε, καὶ κλάσας ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς τοὺς ἄρτους, οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ὄχλοις. καὶ ἔφαγον πάντες καὶ ἐχορτάσθησαν, καὶ ἦραν τὸ περισσεῦον τῶν κλασμάτων δώδεκα κοφίνους πλήρεις. οἱ δὲ ἐσθίοντες ἦσαν ἄνδρες ὡσεὶ πεντακισχίλιοι χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδίων. Καὶ εὐθέως ἠνάγκασεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον καὶ προάγειν αὐτὸν εἰς τὸ πέραν, ἕως οὗ ἀπολύσῃ τοὺς ὄχλους. καὶ ἀπολύσας τοὺς ὄχλους ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος κατ᾽ ἰδίαν προσεύξασθαι. ὀψίας δὲ γενομένης μόνος ἦν ἐκεῖ. τὸ δὲ πλοῖον

ἤδη μέσον τῆς θαλάσσης ἦν, βασανιζόμενον ὑπὸ τῶν κυμάτων· ἦν γὰρ ἐναντίος ὁ ἄνεμος. τετάρτῃ δὲ φυλακῇ τῆς νυκτὸς ἀπῆλθε πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς περιπατῶν ἐπὶ τῆς θαλάσσης. καὶ ἰδόντες αὐτὸν οἱ μαθηταὶ ἐπὶ τὴν θάλασσαν περιπατοῦντα ἐταράχθησαν λέγοντες ὅτι φάντασμά ἐστι, καὶ ἀπὸ τοῦ φόβου ἔκραξαν. εὐθέως δὲ ἐλάλησεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς λέγων· θαρσεῖτε, ἐγώ εἰμι· μὴ φοβεῖσθε. ἀποκριθεὶς δὲ αὐτῷ ὁ Πέτρος εἶπε· Κύριε, εἰ σὺ εἶ, κέλευσόν με πρός σε ἐλθεῖν ἐπὶ τὰ ὕδατα. ὁ δὲ εἶπεν, ἐλθέ. καὶ καταβὰς ἀπὸ τοῦ πλοίου ὁ Πέτρος περιεπάτησεν ἐπὶ τὰ ὕδατα ἐλθεῖν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. βλέπων δὲ τὸν ἄνεμον ἰσχυρὸν ἐφοβήθη, καὶ ἀρξάμενος καταποντίζεσθαι ἔκραξε λέγων· Κύριε, σῶσόν με. εὐθέως δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐκτείνας τὴν χεῖρα ἐπελάβετο αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτῷ· ὀλιγόπιστε εἰς τί ἐδίστασας; καὶ ἐμβάντων αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος· οἱ δὲ ἐν τῷ πλοίῳ ἐλθόντες προσεκύνησαν αὐτῷ λέγοντες· ἀληθῶς Θεοῦ υἱὸς εἶ. Καὶ διαπεράσαντες ἦλθον εἰς τὴν γῆν Γεννησαρέτ. καὶ ἐπιγνόντες αὐτὸν οἱ ἄνδρες τοῦ τόπου ἐκείνου ἀπέστειλαν εἰς ὅλην τὴν περίχωρον ἐκείνην, καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας, καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα κἂν μόνον ἅψωνται τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· καὶ ὅσοι ἥψαντο διεσώθησαν.

# 15

Τότε προσέρχονται τῷ Ἰησοῦ οἱ ἀπὸ Ἱεροσολύμων γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι λέγοντες· διατί οἱ μαθηταί σου παραβαίνουσι τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων; οὐ γὰρ νίπτονται τὰς χεῖρας αὐτῶν ὅταν ἄρτον ἐσθίωσιν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· διατί καὶ ὑμεῖς

παραβαίνετε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ διὰ τὴν παράδοσιν ὑμῶν; ὁ γὰρ Θεὸς ἐνετείλατο λέγων· τίμα τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα· καί· ὁ κακολογῶν πατέρα ἢ μητέρα θανάτῳ τελευτάτω. ὑμεῖς δὲ λέγετε· ὃς ἂν εἴπῃ τῷ πατρὶ ἢ τῇ μητρί, δῶρον ὃ ἐὰν ἐξ ἐμοῦ ὠφεληθῇς , καὶ οὐ μὴ τιμήσῃ τὸν πατέρα αὐτοῦ ἢ τὴν μητέρα αὐτοῦ· καὶ ἠκυρώσατε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ διὰ τὴν παράδοσιν ὑμῶν. ὑποκριταί καλῶς προεφήτευσε περὶ ὑμῶν Ἡσαΐας λέγων· ἐγγίζει μοι ὁ λαὸς οὗτος τῷ στόματι αὐτῶν καὶ τοῖς χείλεσί με τιμᾷ, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ· μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες διδασκαλίας ἐντάλματα ἀνθρώπων. Καὶ προσκαλεσάμενος τὸν ὄχλον εἶπεν αὐτοῖς· ἀκούετε καὶ συνίετε· οὐ τὸ εἰσερχόμενον εἰς τὸ στόμα κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον, ἀλλὰ τὸ ἐκπορευόμενον ἐκ τοῦ στόματος τοῦτο κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον. τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἶπον αὐτῷ· οἶδας ὅτι οἱ Φαρισαῖοι ἐσκανδαλίσθησαν ἀκούσαντες τὸν λόγον; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε· πᾶσα φυτεία ἣν οὐκ ἐφύτευσεν ὁ πατήρ μου ὁ οὐράνιος ἐκριζωθήσεται. ἄφετε αὐτούς· ὁδηγοί εἰσι τυφλοὶ τυφλῶν· τυφλὸς δὲ τυφλὸν ἐὰν ὁδηγῇ, ἀμφότεροι εἰς βόθυνον πεσοῦνται. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ· φράσον ἡμῖν τὴν παραβολὴν ταύτην. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· ἀκμὴν καὶ ὑμεῖς ἀσύνετοί ἐστε; οὔπω νοεῖτε ὅτι πᾶν τὸ εἰσπορευόμενον εἰς τὸ στόμα εἰς τὴν κοιλίαν χωρεῖ καὶ εἰς ἀφεδρῶνα ἐκβάλλεται; τὰ δὲ ἐκπορευόμενα ἐκ τοῦ στόματος ἐκ τῆς καρδίας ἐξέρχεται, κἀκεῖνα κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον. ἐκ γὰρ τῆς καρδίας ἐξέρχονται διαλογισμοὶ πονηροί, φόνοι, μοιχεῖαι, πορνεῖαι, κλοπαί, ψευδομαρτυρίαι, βλασφημίαι. ταῦτά ἐστι τὰ κοινοῦντα τὸν ἄνθρωπον· τὸ δὲ ἀνίπτοις χερσὶ φαγεῖν οὐ κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον. Καὶ ἐξελθὼν ἐκεῖθεν ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησεν εἰς τὰ μέρη Τύρου καὶ Σιδῶνος. καὶ ἰδοὺ γυνὴ

Χαναναία ἀπὸ τῶν ὁρίων ἐκείνων ἐξελθοῦσα ἐκραύγασεν αὐτῷ λέγουσα· ἐλέησόν με, Κύριε, υἱὲ Δαυΐδ· ἡ θυγάτηρ μου κακῶς δαιμονίζεται. ὁ δὲ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῇ λόγον. καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἠρώτων αὐτὸν λέγοντες· ἀπόλυσον αὐτήν, ὅτι κράζει ὄπισθεν ἡμῶν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· οὐκ ἀπεστάλην εἰ μὴ εἰς τὰ πρόβατα τὰ ἀπολωλότα οἴκου Ἰσραήλ. ἡ δὲ ἐλθοῦσα προσεκύνησεν αὐτῷ λέγουσα· Κύριε, βοήθει μοι. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· οὐκ ἔστι καλὸν λαβεῖν τὸν ἄρτον τῶν τέκνων καὶ βαλεῖν τοῖς κυναρίοις. ἡ δὲ εἶπε· ναί, Κύριε· καὶ γὰρ τὰ κυνάρια ἐσθίει ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν πιπτόντων ἀπὸ τῆς τραπέζης τῶν κυρίων αὐτῶν. τότε ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· ὦ γύναι, μεγάλη σου ἡ πίστις γενηθήτω σοι ὡς θέλεις. καὶ ἰάθη ἡ θυγάτηρ αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης. Καὶ μεταβὰς ἐκεῖθεν ὁ Ἰησοῦς ἦλθε παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἀναβὰς εἰς τὸ ὄρος ἐκάθητο ἐκεῖ. καὶ προσῆλθον αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ ἔχοντες μεθ᾽ ἑαυτῶν χωλούς, τυφλούς, κωφούς, κυλλοὺς καὶ ἑτέρους πολλούς, καὶ ἔρριψαν αὐτοὺς παρὰ τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς, ὥστε τοὺς ὄχλους θαυμάσαι βλέποντας κωφοὺς ἀκούοντας, ἀλάλους λαλοῦντας, κυλλοὺς ὑγιεῖς, χωλοὺς περιπατοῦντας καὶ τυφλοὺς βλέποντας· καὶ ἐδόξασαν τὸν Θεὸν Ἰσραήλ. Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ εἶπε· σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τὸν ὄχλον, ὅτι ἤδη ἡμέραι τρεῖς προσμένουσί μοι καὶ οὐκ ἔχουσι τί φάγωσι· καὶ ἀπολῦσαι αὐτοὺς νήστεις οὐ θέλω, μήποτε ἐκλυθῶσιν ἐν τῇ ὁδῷ. καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· πόθεν ἡμῖν ἐν ἐρημίᾳ ἄρτοι τοσοῦτοι ὥστε χορτάσαι ὄχλον τοσοῦτον; καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· πόσους ἄρτους ἔχετε; οἱ δὲ εἶπον· ἑπτά, καὶ ὀλίγα ἰχθύδια. καὶ ἐκέλευσε τοῖς ὄχλοις ἀναπεσεῖν ἐπὶ τὴν γῆν. καὶ λαβὼν τοὺς ἑπτὰ ἄρτους καὶ τοὺς ἰχθύας, εὐχαριστήσας ἔκλασε

καὶ ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ὄχλοις. καὶ ἔφαγον πάντες καὶ ἐχορτάσθησαν, καὶ ἦραν τὸ περισσεῦον τῶν κλασμάτων ἑπτὰ σπυρίδας πλήρεις· οἱ δὲ ἐσθίοντες ἦσαν τετρακισχίλιοι ἄνδρες χωρὶς γυναικῶν καὶ παιδίων. καὶ ἀπολύσας τοὺς ὄχλους ἐνέβη εἰς τὸ πλοῖον καὶ ἦλθεν εἰς τὰ ὅρια Μαγδαλά.

# 16

Καὶ προσελθόντες οἱ Φαρισαῖοι καὶ Σαδδουκαῖοι πειράζοντες ἐπηρώτησαν αὐτὸν σημεῖον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐπιδεῖξαι αὐτοῖς. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· ὀψίας γενομένης λέγετε· εὐδία· πυρράζει γὰρ ὁ οὐρανός· καὶ πρωΐ· σήμερον χειμών· πυρράζει γὰρ στυγνάζων ὁ οὐρανός. ὑποκριταί, τὸ μὲν πρόσωπον τοῦ οὐρανοῦ γινώσκετε διακρίνειν, τὰ δὲ σημεῖα τῶν καιρῶν οὐ δύνασθε γνῶναι ; γενεὰ πονηρὰ καὶ μοιχαλὶς σημεῖον ἐπιζητεῖ, καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ εἰ μὴ τὸ σημεῖον Ἰωνᾶ τοῦ προφήτου. καὶ καταλιπὼν αὐτοὺς ἀπῆλθεν. Καὶ ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὸ πέραν ἐπελάθοντο ἄρτους λαβεῖν. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ὁρᾶτε καὶ προσέχετε ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων. οἱ δὲ διελογίζοντο ἐν ἑαυτοῖς λέγοντες ὅτι ἄρτους οὐκ ἐλάβομεν. γνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· τί διαλογίζεσθε ἐν ἑαυτοῖς, ὀλιγόπιστοι, ὅτι ἄρτους οὐκ ἐλάβετε; οὔπω νοεῖτε, οὐδὲ μνημονεύετε τοὺς πέντε ἄρτους τῶν πεντακισχιλίων καὶ πόσους κοφίνους ἐλάβετε; οὐδὲ τοὺς ἑπτὰ ἄρτους τῶν τετρακισχιλίων καὶ πόσας σπυρίδας ἐλάβετε; πῶς οὐ νοεῖτε ὅτι οὐ περὶ ἄρτου εἶπον ὑμῖν προσέχειν ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων; τότε συνῆκαν ὅτι οὐκ εἶπε προσέχειν ἀπὸ τῆς ζύμης τοῦ ἄρτου,

ἀλλ᾽ ἀπὸ τῆς διδαχῆς τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων. Ἐλθὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὰ μέρη Καισαρείας τῆς Φιλίππου ἠρώτα τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ λέγων· τίνα με λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου; οἱ δὲ εἶπον· οἱ μὲν Ἰωάννην τὸν βαπτιστήν, ἄλλοι δὲ Ἠλίαν, ἕτεροι δὲ Ἱερεμίαν ἢ ἕνα τῶν προφητῶν. λέγει αὐτοῖς· ὑμεῖς δὲ τίνα με λέγετε εἶναι; ἀποκριθεὶς δὲ Σίμων Πέτρος εἶπε· σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· μακάριος εἶ, Σίμων Βαριωνᾶ, ὅτι σὰρξ καὶ αἷμα οὐκ ἀπεκάλυψέ σοι, ἀλλ᾽ ὁ πατήρ μου ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς. κἀγὼ δέ σοι λέγω ὅτι σὺ εἶ Πέτρος, καὶ ἐπὶ ταύτῃ τῇ πέτρᾳ οἰκοδομήσω μου τὴν ἐκκλησίαν, καὶ πύλαι ᾅδου οὐ κατισχύσουσιν αὐτῆς. καὶ δώσω σοι τὰς κλεῖς τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν, καὶ ὃ ἐὰν δήσῃς ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται δεδεμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς, καὶ ὃ ἐὰν λύσῃς ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται λελυμένον ἐν τοῖς οὐρανοῖς. τότε διεστείλατο τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα μηδενὶ εἴπωσιν ὅτι αὐτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός. Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς δεικνύειν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ὅτι δεῖ αὐτὸν ἀπελθεῖν εἰς Ἱεροσόλυμα καὶ πολλὰ παθεῖν ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ ἀρχιερέων καὶ γραμματέων καὶ ἀποκτανθῆναι, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθῆναι. καὶ προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος ἤρξατο ἐπιτιμᾶν αὐτῷ λέγων· ἵλεώς σοι, Κύριε· οὐ μὴ ἔσται σοι τοῦτο. ὁ δὲ στραφεὶς εἶπε τῷ Πέτρῳ· ὕπαγε ὀπίσω μου, σατανᾶ· σκάνδαλόν μου εἶ· ὅτι οὐ φρονεῖς τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων. Τότε ὁ Ἰησοῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· εἴ τις θέλει ὀπίσω μου ἐλθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτὸν καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ καὶ ἀκολουθείτω μοι. ὃς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ᾽ ἂν ἀπολέσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἕνεκεν ἐμοῦ, εὑρήσει αὐτήν. τί γὰρ ὠφελεῖται ἄνθρωπος ἐὰν τὸν κόσμον ὅλον κερδήσῃ, τὴν δὲ ψυχὴν αὐτοῦ ζημιωθῇ; ἢ τί δώσει ἄνθρωπος

ἀντάλλαγμα τῆς ψυχῆς αὐτοῦ; μέλλει γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεσθαι ἐν τῇ δόξῃ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ, καὶ τότε ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὴν πρᾶξιν αὐτοῦ. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, εἰσί τινες τῶν ὧδε ἑστηκότων, οἵτινες οὐ μὴ γεύσωνται θανάτου ἕως ἂν ἴδωσι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ.

# 17

Καὶ μεθ᾽ ἡμέρας ἓξ παραλαμβάνει ὁ Ἰησοῦς τὸν Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψηλὸν κατ᾽ ἰδίαν· καὶ μετεμορφώθη ἔμπροσθεν αὐτῶν, καὶ ἔλαμψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος, τὰ δὲ ἱμάτια αὐτοῦ ἐγένετο λευκὰ ὡς τὸ φῶς. καὶ ἰδοὺ ὤφθησαν αὐτοῖς Μωσῆς καὶ Ἠλίας μετ᾽ αὐτοῦ συλλαλοῦντες. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος εἶπε τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, καλόν ἐστιν ἡμᾶς ὧδε εἶναι· εἰ θέλεις, ποιήσωμεν ὧδε τρεῖς σκηνάς, σοὶ μίαν καὶ Μωσεῖ μίαν καὶ μίαν Ἠλίᾳ. ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος ἰδοὺ νεφέλη φωτεινὴ ἐπεσκίασεν αὐτούς, καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης λέγουσα· οὗτός ἐστιν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ εὐδόκησα· αὐτοῦ ἀκούετε · καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα. καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἥψατο αὐτῶν καὶ εἶπεν· ἐγέρθητε καὶ μὴ φοβεῖσθε. ἐπάραντες δὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν οὐδένα εἶδον εἰ μὴ τὸν Ἰησοῦν μόνον. καὶ καταβαινόντων αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς λέγων· μηδενὶ εἴπητε τὸ ὅραμα ἕως οὗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ. Καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· τί οὖν οἱ γραμματεῖς λέγουσιν ὅτι

Ἠλίαν δεῖ ἐλθεῖν πρῶτον; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Ἠλίας μὲν ἔρχεται πρῶτον καὶ ἀποκαταστήσει πάντα· λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι Ἠλίας ἤδη ἦλθε, καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν αὐτόν, ἀλλ᾽ ἐποίησαν ἐν αὐτῷ ὅσα ἠθέλησαν· οὕτω καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει πάσχειν ὑπ᾽ αὐτῶν. τότε συνῆκαν οἱ μαθηταὶ ὅτι περὶ Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ εἶπεν αὐτοῖς. Καὶ ἐλθόντων αὐτῶν πρὸς τὸν ὄχλον προσῆλθεν αὐτῷ ἄνθρωπος γονυπετῶν αὐτὸν καὶ λέγων· Κύριε, ἐλέησόν μου τὸν υἱόν, ὅτι σεληνιάζεται καὶ κακῶς πάσχει· πολλάκις γὰρ πίπτει εἰς τὸ πῦρ καὶ πολλάκις εἰς τὸ ὕδωρ. καὶ προσήνεγκα αὐτὸν τοῖς μαθηταῖς σου, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν αὐτὸν θεραπεῦσαι. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· ὦ γενεὰ ἄπιστος καὶ διεστραμμένη ἕως πότε ἔσομαι μεθ᾽ ὑμῶν; ἕως πότε ἀνέξομαι ὑμῶν; φέρετέ μοι αὐτὸν ὧδε. καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐξῆλθεν ἀπ᾽ αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον καὶ ἐθεραπεύθη ὁ παῖς ἀπὸ τῆς ὥρας ἐκείνης. Τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ κατ᾽ ἰδίαν εἶπον· διατί ἡμεῖς οὐκ ἠδυνήθημεν ἐκβαλεῖν αὐτό; ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· διὰ τὴν ἀπιστίαν ὑμῶν. ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίστιν ὡς κόκκον σινάπεως, ἐρεῖτε τῷ ὄρει τούτῳ, μετάβηθι ἐντεῦθεν ἐκεῖ, καὶ μεταβήσεται, καὶ οὐδὲν ἀδυνατήσει ὑμῖν. τοῦτο δὲ τὸ γένος οὐκ ἐκπορεύεται εἰ μὴ ἐν προσευχῇ καὶ νηστείᾳ. Ἀναστρεφομένων δὲ αὐτῶν εἰς τὴν Γαλιλαίαν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· μέλλει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοσθαι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων καὶ ἀποκτενοῦσιν αὐτόν, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερθήσεται. καὶ ἐλυπήθησαν σφόδρα. Ἐλθόντων δὲ αὐτῶν εἰς Καπερναοὺμ προσῆλθον οἱ τὰ δίδραχμα λαμβάνοντες τῷ Πέτρῳ καὶ εἶπον· ὁ διδάσκαλος ὑμῶν οὐ τελεῖ τὰ δίδραχμα; λέγει, ναί. καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν, προέφθασεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς λέγων· τί σοι δοκεῖ, Σίμων; οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς ἀπὸ τίνων λαμβάνουσι τέλη ἢ

κῆνσον; ἀπὸ τῶν υἱῶν αὐτῶν ἢ ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων; λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων. ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἄραγε ἐλεύθεροί εἰσιν οἱ υἱοί. ἵνα δὲ μὴ σκανδαλίσωμεν αὐτούς, πορευθεὶς εἰς τὴν θάλασσαν βάλε ἄγκιστρον καὶ τὸν ἀναβάντα πρῶτον ἰχθὺν ἆρον, καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτοῦ εὑρήσεις στατῆρα· ἐκεῖνον λαβὼν δὸς αὐτοῖς ἀντὶ ἐμοῦ καὶ σοῦ.

# 18

Ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ προσῆλθον οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ λέγοντες· τίς ἄρα μείζων ἐστὶν ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν; καὶ προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς παιδίον ἔστησεν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν καὶ εἶπεν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ στραφῆτε καὶ γένησθε ὡς τὰ παιδία, οὐ μὴ εἰσέλθητε εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν. ὅστις οὖν ταπεινώσει ἑαυτὸν ὡς τὸ παιδίον τοῦτο, οὗτός ἐστιν ὁ μείζων ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν οὐρανῶν. καὶ ὃς ἐὰν δέξηται παιδίον τοιοῦτον ἓν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέχεται· ὃς δ᾽ ἂν σκανδαλίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν τούτων τῶν πιστευόντων εἰς ἐμέ, συμφέρει αὐτῷ ἵνα κρεμασθῇ μύλος ὀνικὸς εἰς τὸν τράχηλον αὐτοῦ καὶ καταποντισθῇ ἐν τῷ πελάγει τῆς θαλάσσης. Οὐαὶ τῷ κόσμῳ ἀπὸ τῶν σκανδάλων· ἀνάγκη γάρ ἐστιν ἐλθεῖν τὰ σκάνδαλα· πλὴν οὐαὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ δι᾽ οὗ τὸ σκάνδαλον ἔρχεται. εἰ δὲ ἡ χείρ σου ἢ ὁ πούς σου σκανδαλίζει σε, ἔκκοψον αὐτὰ καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· καλόν σοί ἐστιν εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν χωλὸν ἢ κυλλόν, ἢ δύο χεῖρας ἢ δύο πόδας ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον. καὶ εἰ ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίζει σε, ἔξελε αὐτὸν καὶ βάλε ἀπὸ σοῦ· καλόν σοί ἐστι μονόφθαλμον εἰς τὴν ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ δύο

ὀφθαλμοὺς ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός. Ὁρᾶτε μὴ καταφρονήσητε ἑνὸς τῶν μικρῶν τούτων· λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι οἱ ἄγγελοι αὐτῶν ἐν οὐρανοῖς διὰ παντὸς βλέπουσι τὸ πρόσωπον τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς. ἦλθε γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σῶσαι τὸ ἀπολωλός. Τί ὑμῖν δοκεῖ; ἐὰν γένηταί τινι ἀνθρώπῳ ἑκατὸν πρόβατα καὶ πλανηθῇ ἓν ἐξ αὐτῶν, οὐχὶ ἀφεὶς τὰ ἐνενήκοντα ἐννέα ἐπὶ τὰ ὄρη, πορευθεὶς ζητεῖ τὸ πλανώμενον; καὶ ἐὰν γένηται εὑρεῖν αὐτό, ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι χαίρει ἐπ᾽ αὐτῷ μᾶλλον ἢ ἐπὶ τοῖς ἐνενήκοντα ἐννέα τοῖς μὴ πεπλανημένοις. οὕτως οὐκ ἔστι θέλημα ἔμπροσθεν τοῦ πατρὸς ὑμῶν τοῦ ἐν οὐρανοῖς ἵνα ἀπόληται εἷς τῶν μικρῶν τούτων. Ἐὰν δὲ ἁμαρτήσῃ εἰς σὲ ὁ ἀδελφός σου, ὕπαγε καὶ ἔλεγξον αὐτὸν μεταξὺ σοῦ καὶ αὐτοῦ μόνου· ἐάν σου ἀκούσῃ, ἐκέρδησας τὸν ἀδελφόν σου· ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσῃ, παράλαβε μετὰ σοῦ ἔτι ἕνα ἢ δύο, ἵνα ἐπὶ στόματος δύο μαρτύρων ἢ τριῶν σταθῇ πᾶν ῥῆμα. ἐὰν δὲ παρακούσῃ αὐτῶν, εἰπὲ τῇ ἐκκλησίᾳ· ἐὰν δὲ καὶ τῆς ἐκκλησίας παρακούσῃ, ἔστω σοι ὥσπερ ὁ ἐθνικὸς καὶ ὁ τελώνης. Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐὰν δήσητε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται δεδεμένα ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ὅσα ἐὰν λύσητε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται λελυμένα ἐν τῷ οὐρανῷ. Πάλιν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἐὰν δύο ὑμῶν συμφωνήσωσιν ἐπὶ τῆς γῆς περὶ παντὸς πράγματος οὗ ἐὰν αἰτήσωνται, γενήσεται αὐτοῖς παρὰ τοῦ πατρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς. οὗ γάρ εἰσι δύο ἢ τρεῖς συνηγμένοι εἰς τὸ ἐμὸν ὄνομα, ἐκεῖ εἰμι ἐν μέσῳ αὐτῶν. Τότε προσελθὼν αὐτῷ ὁ Πέτρος εἶπε· Κύριε, ποσάκις ἁμαρτήσει εἰς ἐμὲ ὁ ἀδελφός μου καὶ ἀφήσω αὐτῷ; ἕως ἑπτάκις; λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· οὐ λέγω σοι ἕως ἑπτάκις, ἀλλ᾽ ἕως ἑβδομηκοντάκις ἑπτά. Διὰ τοῦτο ὡμοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ βασιλεῖ, ὃς ἠθέλησε συνᾶραι λόγον μετὰ τῶν δούλων αὐτοῦ. ἀρξαμένου δὲ αὐτοῦ συναίρειν προσηνέχθη αὐτῷ

εἷς ὀφειλέτης μυρίων ταλάντων. μὴ ἔχοντος δὲ αὐτοῦ ἀποδοῦναι ἐκέλευσεν αὐτὸν ὁ κύριος αὐτοῦ πραθῆναι καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ τὰ τέκνα καὶ πάντα ὅσα εἶχε, καὶ ἀποδοθῆναι. πεσὼν οὖν ὁ δοῦλος προσεκύνει αὐτῷ λέγων· κύριε, μακροθύμησον ἐπ᾽ ἐμοὶ καὶ πάντα σοι ἀποδώσω. σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου ἀπέλυσεν αὐτὸν καὶ τὸ δάνειον ἀφῆκεν αὐτῷ. ἐξελθὼν δὲ ὁ δοῦλος ἐκεῖνος εὗρεν ἕνα τῶν συνδούλων αὐτοῦ, ὃς ὤφειλεν αὐτῷ ἑκατὸν δηνάρια, καὶ κρατήσας αὐτὸν ἔπνιγε λέγων· ἀπόδος μοι εἴ τι ὀφείλεις. πεσὼν οὖν ὁ σύνδουλος αὐτοῦ εἰς τοὺς πόδας αὐτοῦ παρεκάλει αὐτὸν λέγων· μακροθύμησον ἐπ᾽ ἐμοὶ καὶ ἀποδώσω σοι. ὁ δὲ οὐκ ἤθελεν, ἀλλὰ ἀπελθὼν ἔβαλεν αὐτὸν εἰς φυλακὴν ἕως οὗ ἀποδῷ τὸ ὀφειλόμενον. ἰδόντες δὲ οἱ σύνδουλοι αὐτοῦ τὰ γενόμενα ἐλυπήθησαν σφόδρα, καὶ ἐλθόντες διεσάφησαν τῷ κυρίῳ ἑαυτῶν πάντα τὰ γενόμενα. τότε προσκαλεσάμενος αὐτὸν ὁ κύριος αὐτοῦ λέγει αὐτῷ· δοῦλε πονηρέ, πᾶσαν τὴν ὀφειλὴν ἐκείνην ἀφῆκά σοι, ἐπεὶ παρεκάλεσάς με. οὐκ ἔδει καὶ σὲ ἐλεῆσαι τὸν σύνδουλόν σου, ὡς καὶ ἐγώ σε ἠλέησα; καὶ ὀργισθεὶς ὁ κύριος αὐτοῦ παρέδωκεν αὐτὸν τοῖς βασανισταῖς ἕως οὗ ἀποδῷ πᾶν τὸ ὀφειλόμενον αὐτῷ. Οὕτω καὶ ὁ πατήρ μου ὁ ἐπουράνιος ποιήσει ὑμῖν, ἐὰν μὴ ἀφῆτε ἕκαστος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ἀπὸ τῶν καρδιῶν ὑμῶν τὰ παραπτώματα αὐτῶν.

# 19

Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς λόγους τούτους μετῆρεν ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας καὶ ἦλθεν εἰς τὰ ὅρια τῆς Ἰουδαίας πέραν τοῦ Ἰορδάνου. καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί, καὶ ἐθεράπευσεν

αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ προσῆλθον αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι πειράζοντες αὐτὸν καὶ λέγοντες αὐτῷ· εἰ ἔξεστιν ἀνθρώπῳ ἀπολῦσαι τὴν γυναῖκα αὐτοῦ κατὰ πᾶσαν αἰτίαν; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· οὐκ ἀνέγνωτε ὅτι ὁ ποιήσας ἀπ᾽ ἀρχῆς ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτοὺς καὶ εἶπεν, ἕνεκεν τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα καὶ κολληθήσεται τῇ γυναικὶ αὐτοῦ, καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν; ὥστε οὐκέτι εἰσὶ δύο, ἀλλὰ σὰρξ μία. ὃ οὖν ὁ Θεὸς συνέζευξεν, ἄνθρωπος μὴ χωριζέτω. λέγουσιν αὐτῷ· τί οὖν Μωσῆς ἐνετείλατο δοῦναι βιβλίον ἀποστασίου καὶ ἀπολῦσαι αὐτήν; λέγει αὐτοῖς· ὅτι Μωσῆς πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἐπέτρεψεν ὑμῖν ἀπολῦσαι τὰς γυναῖκας ὑμῶν· ἀπ᾽ ἀρχῆς δὲ οὐ γέγονεν οὕτω. λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ μὴ ἐπὶ πορνείᾳ καὶ γαμήσῃ ἄλλην, μοιχᾶται· καὶ ὁ ἀπολελυμένην γαμήσας μοιχᾶται. λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· εἰ οὕτως ἐστὶν ἡ αἰτία τοῦ ἀνθρώπου μετὰ τῆς γυναικός, οὐ συμφέρει γαμῆσαι. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· οὐ πάντες χωροῦσι τὸν λόγον τοῦτον, ἀλλ᾽ οἷς δέδοται· εἰσὶ γὰρ εὐνοῦχοι οἵτινες ἐκ κοιλίας μητρὸς ἐγεννήθησαν οὕτω. καὶ εἰσὶν εὐνοῦχοι οἵτινες εὐνουχίσθησαν ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ εἰσὶν εὐνοῦχοι οἵτινες εὐνούχισαν ἑαυτοὺς διὰ τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν. ὁ δυνάμενος χωρεῖν χωρείτω. Τότε προσηνέχθη αὐτῷ παιδία, ἵνα ἐπιθῇ αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ προσεύξηται· οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμησαν αὐτοῖς. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· ἄφετε τὰ παιδία καὶ μὴ κωλύετε αὐτὰ ἐλθεῖν πρός με· τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν. καὶ ἐπιθεὶς τὰς χεῖρας αὐτοῖς ἐπορεύθη ἐκεῖθεν. Καὶ ἰδοὺ εἷς προσελθὼν εἶπεν αὐτῷ· διδάσκαλε ἀγαθέ, τί ἀγαθὸν ποιήσω ἵνα ἔχω ζωὴν αἰώνιον; ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· τί με λέγεις ἀγαθόν; οὐδεὶς ἀγαθὸς εἰ μὴ εἷς ὁ Θεός. εἰ δὲ θέλεις εἰσελθεῖν εἰς

τὴν ζωήν, τήρησον τὰς ἐντολάς. λέγει αὐτῷ· ποίας; ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε· τὸ οὐ φονεύσεις, οὐ μοιχεύσεις, οὐ κλέψεις, οὐ ψευδομαρτυρήσεις, τίμα τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα, καὶ ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν. λέγει αὐτῷ ὁ νεανίσκος· πάντα ταῦτα ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου· τί ἔτι ὑστερῶ; ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· εἰ θέλεις τέλειος εἶναι, ὕπαγε πώλησόν σου τὰ ὑπάρχοντα καὶ δὸς πτωχοῖς, καὶ ἕξεις θησαυρὸν ἐν οὐρανῷ, καὶ δεῦρο ἀκολούθει μοι. ἀκούσας δὲ ὁ νεανίσκος τὸν λόγον ἀπῆλθε λυπούμενος· ἦν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά. Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι δυσκόλως πλούσιος εἰσελεύσεται εἰς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν. πάλιν δὲ λέγω ὑμῖν, εὐκοπώτερόν ἐστι κάμηλον διὰ τρυπήματος ῥαφίδος διελθεῖν ἢ πλούσιον εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν. ἀκούσαντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐξεπλήσσοντο σφόδρα λέγοντες· τίς ἄρα δύναται σωθῆναι; ἐμβλέψας δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· παρὰ ἀνθρώποις τοῦτο ἀδύνατόν ἐστι, παρὰ δὲ Θεῷ πάντα δυνατά ἐστι. Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ· ἰδοὺ ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα καὶ ἠκολουθήσαμέν σοι· τί ἄρα ἔσται ἡμῖν; ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ὑμεῖς οἱ ἀκολουθήσαντές μοι, ἐν τῇ παλιγγενεσίᾳ, ὅταν καθίσῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ θρόνου δόξης αὐτοῦ, καθίσεσθε καὶ ὑμεῖς ἐπὶ δώδεκα θρόνους κρίνοντες τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. καὶ πᾶς ὃς ἀφῆκεν οἰκίας ἢ ἀδελφοὺς ἢ ἀδελφὰς ἢ πατέρα ἢ μητέρα ἢ γυναῖκα ἢ τέκνα ἢ ἀγροὺς ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός μου, ἑκατονταπλασίονα λήψεται καὶ ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσει. Πολλοὶ δὲ ἔσονται πρῶτοι ἔσχατοι καὶ ἔσχατοι πρῶτοι.

# 20

Ὁμοία γάρ ἐστιν ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ οἰκοδεσπότῃ, ὅστις ἐξῆλθεν ἅμα πρωῒ μισθώσασθαι ἐργάτας εἰς τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ. καὶ συμφωνήσας μετὰ τῶν ἐργατῶν ἐκ δηναρίου τὴν ἡμέραν ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ. καὶ ἐξελθὼν περὶ τρίτην ὥραν εἶδεν ἄλλους ἑστῶτας ἐν τῇ ἀγορᾷ ἀργούς, καὶ ἐκείνοις εἶπεν· ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς εἰς τὸν ἀμπελῶνα, καὶ ὃ ἐὰν ᾖ δίκαιον δώσω ὑμῖν. οἱ δὲ ἀπῆλθον. πάλιν ἐξελθὼν περὶ ἕκτην καὶ ἐνάτην ὥραν ἐποίησεν ὡσαύτως. περὶ δὲ τὴν ἑνδεκάτην ὥραν ἐξελθὼν εὗρεν ἄλλους ἑστῶτας ἀργούς, καὶ λέγει αὐτοῖς· τί ὧδε ἑστήκατε ὅλην τὴν ἡμέραν ἀργοί; λέγουσιν αὐτῷ· ὅτι οὐδεὶς ἡμᾶς ἐμισθώσατο. λέγει αὐτοῖς· ὑπάγετε καὶ ὑμεῖς εἰς τὸν ἀμπελῶνα, καὶ ὃ ἐὰν ᾖ δίκαιον λήψεσθε. ὀψίας δὲ γενομένης λέγει ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος τῷ ἐπιτρόπῳ αὐτοῦ· κάλεσον τοὺς ἐργάτας καὶ ἀπόδος αὐτοῖς τὸν μισθόν, ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν ἐσχάτων ἕως τῶν πρώτων. καὶ ἐλθόντες οἱ περὶ τὴν ἑνδεκάτην ὥραν ἔλαβον ἀνὰ δηνάριον. ἐλθόντες δὲ οἱ πρῶτοι ἐνόμισαν ὅτι πλείονα λήψονται, καὶ ἔλαβον καὶ αὐτοὶ ἀνὰ δηνάριον. λαβόντες δὲ ἐγόγγυζον κατὰ τοῦ οἰκοδεσπότου λέγοντες ὅτι οὗτοι οἱ ἔσχατοι μίαν ὥραν ἐποίησαν, καὶ ἴσους ἡμῖν αὐτοὺς ἐποίησας τοῖς βαστάσασι τὸ βάρος τῆς ἡμέρας καὶ τὸν καύσωνα. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν ἑνὶ αὐτῶν· ἑταῖρε, οὐκ ἀδικῶ σε· οὐχὶ δηναρίου συνεφώνησάς μοι; ἆρον τὸ σὸν καὶ ὕπαγε· θέλω δὲ τούτῳ τῷ ἐσχάτῳ δοῦναι ὡς καὶ σοί· ἢ οὐκ ἔξεστί μοι ποιῆσαι ὃ θέλω ἐν τοῖς ἐμοῖς; εἰ ὁ ὀφθαλμός σου πονηρός ἐστιν ὅτι ἐγὼ ἀγαθός εἰμι; Οὕτως ἔσονται οἱ ἔσχατοι πρῶτοι καὶ οἱ πρῶτοι ἔσχατοι· πολλοὶ γάρ εἰσι κλητοί, ὀλίγοι δὲ ἐκλεκτοί. Καὶ

ἀναβαίνων ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἰεροσόλυμα παρέλαβε τοὺς δώδεκα μαθητὰς κατ᾽ ἰδίαν ἐν τῇ ὁδῷ καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἰδοὺ ἀναβαίνομεν εἰς Ἰεροσόλυμα, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδοθήσεται τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ γραμματεῦσι καὶ κατακρινοῦσιν αὐτὸν θανάτῳ, καὶ παραδώσουσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν εἰς τὸ ἐμπαῖξαι καὶ μαστιγῶσαι καὶ σταυρῶσαι, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται. Τότε προσῆλθεν αὐτῷ ἡ μήτηρ τῶν υἱῶν Ζεβεδαίου μετὰ τῶν υἱῶν αὐτῆς προσκυνοῦσα καὶ αἰτοῦσά τι παρ᾽ αὐτοῦ. ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· τί θέλεις; λέγει αὐτῷ· εἰπὲ ἵνα καθίσωσιν οὗτοι οἱ δύο υἱοί μου εἷς ἐκ δεξιῶν σου καὶ εἷς ἐξ εὐωνύμων σου ἐν τῇ βασιλείᾳ σου. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· οὐκ οἴδατε τί αἰτεῖσθε. δύνασθε πιεῖν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ μέλλω πίνειν, ἢ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι βαπτισθῆναι; λέγουσιν αὐτῷ· δυνάμεθα. καὶ λέγει αὐτοῖς· τὸ μὲν ποτήριόν μου πίεσθε, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι βαπτισθήσεσθε· τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δεξιῶν μου καὶ ἐξ εὐωνύμων μου οὐκ ἔστιν ἐμὸν δοῦναι, ἀλλ᾽ οἷς ἡτοίμασται ὑπὸ τοῦ πατρός μου . καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα ἠγανάκτησαν περὶ τῶν δύο ἀδελφῶν. ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐτοὺς εἶπεν· οἴδατε ὅτι οἱ ἄρχοντες τῶν ἐθνῶν κατακυριεύουσιν αὐτῶν καὶ οἱ μεγάλοι κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν. οὐχ οὕτως ἔσται ἐν ὑμῖν, ἀλλ᾽ ὃς ἐὰν θέλῃ ἐν ὑμῖν μέγας γενέσθαι, ἔσται ὑμῶν διάκονος, καὶ ὃς ἐὰν θέλῃ ἐν ὑμῖν εἶναι πρῶτος, ἔσται ὑμῶν δοῦλος· ὥσπερ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε διακονηθῆναι, ἀλλὰ διακονῆσαι καὶ δοῦναι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λύτρον ἀντὶ πολλῶν. Καὶ ἐκπορευομένων αὐτῶν ἀπὸ Ἰεριχὼ ἠκολούθησεν αὐτῷ ὄχλος πολύς. καὶ ἰδοὺ δύο τυφλοὶ καθήμενοι παρὰ τὴν ὁδόν, ἀκούσαντες ὅτι Ἰησοῦς παράγει, ἔκραξαν λέγοντες· ἐλέησον ἡμᾶς, Κύριε, υἱὸς Δαυΐδ. ὁ δὲ ὄχλος ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα σιωπήσωσιν· οἱ δὲ μεῖζον ἔκραζον λέγοντες· ἐλέησον ἡμᾶς, Κύριε, υἱὸς Δαυΐδ. καὶ

στὰς ὁ Ἰησοῦς ἐφώνησεν αὐτοὺς καὶ εἶπε· τί θέλετε ποιήσω ὑμῖν; λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἵνα ἀνοιχθῶσιν ἡμῶν οἱ ὀφθαλμοί. σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἥψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν, καὶ εὐθέως ἀνέβλεψαν αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοί, καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ.

# 21

Καὶ ὅτε ἤγγισαν εἰς Ἱεροσόλυμα καὶ ἦλθον εἰς Βηθσφαγῆ πρὸς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τότε ὁ Ἰησοῦς ἀπέστειλε δύο μαθητὰς λέγων αὐτοῖς· πορεύθητε εἰς τὴν κώμην τὴν ἀπέναντι ὑμῶν, καὶ εὐθέως εὑρήσετε ὄνον δεδεμένην καὶ πῶλον μετ᾽ αὐτῆς· λύσαντες ἀγάγετέ μοι. καὶ ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ τι, ἐρεῖτε ὅτι ὁ Κύριος αὐτῶν χρείαν ἔχει· εὐθέως δὲ ἀποστέλλει αὐτούς. τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ τοῦ προφήτου λέγοντος· εἴπατε τῇ θυγατρὶ Σιών, ἰδοὺ ὁ βασιλεύς σου ἔρχεταί σοι πραΰς καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ ὄνον καὶ πῶλον υἱὸν ὑποζυγίου. πορευθέντες δὲ οἱ μαθηταὶ καὶ ποιήσαντες καθὼς προσέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, ἤγαγον τὴν ὄνον καὶ τὸν πῶλον, καὶ ἐπέθηκαν ἐπάνω αὐτῶν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐπεκάθισεν ἐπάνω αὐτῶν. ὁ δὲ πλεῖστος ὄχλος ἔστρωσαν ἑαυτῶν τὰ ἱμάτια ἐν τῇ ὁδῷ, ἄλλοι δὲ ἔκοπτον κλάδους ἀπὸ τῶν δένδρων καὶ ἐστρώννυον ἐν τῇ ὁδῷ. οἱ δὲ ὄχλοι οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολουθοῦντες ἔκραζον λέγοντες· ὡσαννὰ τῷ υἱῷ Δαυΐδ · εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου· ὡσαννὰ ἐν τοῖς ὑψίστοις . καὶ εἰσελθόντος αὐτοῦ εἰς Ἱεροσόλυμα ἐσείσθη πᾶσα ἡ πόλις λέγουσα· τίς ἐστιν οὗτος; οἱ δὲ ὄχλοι ἔλεγον· οὗτός ἔστιν Ἰησοῦς ὁ προφήτης ὁ ἀπὸ Ναζαρὲτ τῆς Γαλιλαίας. Καὶ εἰσῆλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερὸν τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐξέβαλε πάντας τοὺς πωλοῦντας

καὶ ἀγοράζοντας ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ τὰς τραπέζας τῶν κολλυβιστῶν κατέστρεψε καὶ τὰς καθέδρας τῶν πωλούντων τὰς περιστεράς, καὶ λέγει αὐτοῖς· γέγραπται, ὁ οἶκός μου οἶκος προσευχῆς κληθήσεται· ὑμεῖς δὲ αὐτὸν ἐποιήσατε σπήλαιον λῃστῶν. Καὶ προσῆλθον αὐτῷ χωλοὶ καὶ τυφλοὶ ἐν τῷ ἱερῷ καὶ ἐθεράπευσεν αὐτούς. ἰδόντες δὲ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς τὰ θαυμάσια ἃ ἐποίησε καὶ τοὺς παῖδας κράζοντας ἐν τῷ ἱερῷ καὶ λέγοντας, ὡσαννὰ τῷ υἱῷ Δαυΐδ , ἠγανάκτησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· ἀκούεις τί οὗτοι λέγουσιν; ὁ δὲ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· ναί· οὐδέποτε ἀνέγνωτε ὅτι ἐκ στόματος νηπίων καὶ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶνον; καὶ καταλιπὼν αὐτοὺς ἐξῆλθεν ἔξω τῆς πόλεως εἰς Βηθανίαν καὶ ηὐλίσθη ἐκεῖ. Πρωΐας δὲ ἐπανάγων εἰς τὴν πόλιν ἐπείνασε· καὶ ἰδὼν συκῆν μίαν ἐπὶ τῆς ὁδοῦ ἦλθεν ἐπ᾽ αὐτήν, καὶ οὐδὲν εὗρεν ἐν αὐτῇ εἰ μὴ φύλλα μόνον, καὶ λέγει αὐτῇ· μηκέτι ἐκ σοῦ καρπὸς γένηται εἰς τὸν αἰῶνα. καὶ ἐξηράνθη παραχρῆμα ἡ συκῆ. καὶ ἰδόντες οἱ μαθηταὶ ἐθαύμασαν λέγοντες· πῶς παραχρῆμα ἐξηράνθη ἡ συκῆ; ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίστιν καὶ μὴ διακριθῆτε, οὐ μόνον τὸ τῆς συκῆς ποιήσετε, ἀλλὰ κἂν τῷ ὄρει τούτῳ εἴπητε, ἄρθητι καὶ βλήθητι εἰς τὴν θάλασσαν, γενήσεται· καὶ πάντα ὅσα ἐὰν αἰτήσητε ἐν τῇ προσευχῇ πιστεύοντες, λήψεσθε. Καὶ ἐλθόντι αὐτῷ εἰς τὸ ἱερὸν προσῆλθον αὐτῷ διδάσκοντι οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ λέγοντες· ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιεῖς, καὶ τίς σοι ἔδωκε τὴν ἐξουσίαν ταύτην; ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ἐρωτήσω ὑμᾶς κἀγὼ λόγον ἕνα, ὃν ἐὰν εἴπητέ μοι, κἀγὼ ὑμῖν ἐρῶ ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ. τὸ βάπτισμα Ἰωάννου πόθεν ἦν, ἐξ οὐρανοῦ ἢ ἐξ ἀνθρώπων; οἱ δὲ διελογίζοντο παρ᾽ ἑαυτοῖς λέγοντες· ἐὰν εἴπωμεν, ἐξ οὐρανοῦ, ἐρεῖ ἡμῖν, διατί οὖν οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ· ἐὰν δὲ εἴπωμεν, ἐξ

ἀνθρώπων, φοβούμεθα τὸν ὄχλον· πάντες γὰρ ἔχουσι τὸν Ἰωάννην ὡς προφήτην. καὶ ἀποκριθέντες τῷ Ἰησοῦ εἶπον· οὐκ οἴδαμεν. ἔφη αὐτοῖς καὶ αὐτός· οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ. Τί δὲ ὑμῖν δοκεῖ; ἄνθρωπός τις εἶχε τέκνα δύο, καὶ προσελθὼν τῷ πρώτῳ εἶπε· τέκνον, ὕπαγε σήμερον ἐργάζου ἐν τῷ ἀμπελῶνί μου. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· οὐ θέλω· ὕστερον δὲ μεταμεληθεὶς ἀπῆλθε. καὶ προσελθὼν τῷ δευτέρῳ εἶπεν ὡσαύτως. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· ἐγώ, κύριε· καὶ οὐκ ἀπῆλθε. τίς ἐκ τῶν δύο ἐποίησε τὸ θέλημα τοῦ πατρός; λέγουσιν αὐτῷ· ὁ πρῶτος. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι οἱ τελῶναι καὶ αἱ πόρναι προάγουσιν ὑμᾶς εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ. ἦλθε γὰρ πρὸς ὑμᾶς Ἰωάννης ἐν ὁδῷ δικαιοσύνης, καὶ οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ· οἱ δὲ τελῶναι καὶ αἱ πόρναι ἐπίστευσαν αὐτῷ· ὑμεῖς δὲ ἰδόντες οὐ μετεμελήθητε ὕστερον τοῦ πιστεῦσαι αὐτῷ. Ἄλλην παραβολὴν ἀκούσατε. ἄνθρωπός τις ἦν οἰκοδεσπότης, ὅστις ἐφύτευσεν ἀμπελῶνα καὶ φραγμὸν αὐτῷ περιέθηκε καὶ ὤρυξεν ἐν αὐτῷ ληνὸν καὶ ᾠκοδόμησε πύργον, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς καὶ ἀπεδήμησεν. ὅτε δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς τῶν καρπῶν, ἀπέστειλε τοὺς δούλους αὐτοῦ πρὸς τοὺς γεωργοὺς λαβεῖν τοὺς καρποὺς αὐτοῦ. καὶ λαβόντες οἱ γεωργοὶ τοὺς δούλους αὐτοῦ ὃν μὲν ἔδειραν, ὃν δὲ ἀπέκτειναν, ὃν δὲ ἐλιθοβόλησαν. πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους πλείονας τῶν πρώτων, καὶ ἐποίησαν αὐτοῖς ὡσαύτως. ὕστερον δὲ ἀπέστειλε πρὸς αὐτοὺς τὸν υἱὸν αὐτοῦ λέγων· ἐντραπήσονται τὸν υἱόν μου. οἱ δὲ γεωργοὶ ἰδόντες τὸν υἱὸν εἶπον ἐν ἑαυτοῖς· οὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος· δεῦτε ἀποκτείνωμεν αὐτὸν καὶ κατάσχωμεν τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. καὶ λαβόντες αὐτὸν ἐξέβαλον ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος καὶ ἀπέκτειναν. ὅταν οὖν ἔλθῃ ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος, τί ποιήσει τοῖς γεωργοῖς ἐκείνοις; λέγουσιν

αὐτῷ· κακοὺς κακῶς ἀπολέσει αὐτούς, καὶ τὸν ἀμπελῶνα ἐκδώσεται ἄλλοις γεωργοῖς, οἵτινες ἀποδώσουσιν αὐτῷ τοὺς καρποὺς ἐν τοῖς καιροῖς αὐτῶν. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· οὐδέποτε ἀνέγνωτε ἐν ταῖς γραφαῖς, λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας· παρὰ Κυρίου ἐγένετο αὕτη, καὶ ἔστι θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν; διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν ὅτι ἀρθήσεται ἀφ᾽ ὑμῶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ καὶ δοθήσεται ἔθνει ποιοῦντι τοὺς καρποὺς αὐτῆς· καὶ ὁ πεσὼν ἐπὶ τὸν λίθον τοῦτον συνθλασθήσεται· ἐφ᾽ ὃν δ᾽ ἂν πέσῃ, λικμήσει αὐτόν. καὶ ἀκούσαντες οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι τὰς παραβολὰς αὐτοῦ ἔγνωσαν ὅτι περὶ αὐτῶν λέγει· καὶ ζητοῦντες αὐτὸν κρατῆσαι ἐφοβήθησαν τοὺς ὄχλους, ἐπειδὴ ὡς προφήτην αὐτὸν εἶχον.

# 22

Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς πάλιν εἶπεν αὐτοῖς ἐν παραβολαῖς λέγων· ὡμοιώθη ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν ἀνθρώπῳ βασιλεῖ, ὅστις ἐποίησε γάμους τῷ υἱῷ αὐτοῦ. καὶ ἀπέστειλε τοὺς δούλους αὐτοῦ καλέσαι τοὺς κεκλημένους εἰς τοὺς γάμους, καὶ οὐκ ἤθελον ἐλθεῖν. πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους λέγων· εἴπατε τοῖς κεκλημένοις· ἰδοὺ τὸ ἄριστόν μου ἡτοίμασα, οἱ ταῦροί μου καὶ τὰ σιτιστὰ τεθυμένα, καὶ πάντα ἕτοιμα· δεῦτε εἰς τοὺς γάμους. οἱ δὲ ἀμελήσαντες ἀπῆλθον, ὁ μὲν εἰς τὸν ἴδιον ἀγρόν, ὁ δὲ εἰς τὴν ἐμπορίαν αὐτοῦ· οἱ δὲ λοιποὶ κρατήσαντες τοὺς δούλους αὐτοῦ ὕβρισαν καὶ ἀπέκτειναν. ἀκούσας δὲ ὁ βασιλεὺς ἐκεῖνος ὠργίσθη, καὶ πέμψας τὰ στρατεύματα αὐτοῦ ἀπώλεσε τοὺς φονεῖς ἐκείνους

καὶ τὴν πόλιν αὐτῶν ἐνέπρησε. τότε λέγει τοῖς δούλοις αὐτοῦ· ὁ μὲν γάμος ἕτοιμός ἐστιν, οἱ δὲ κεκλημένοι οὐκ ἦσαν ἄξιοι· πορεύεσθε οὖν ἐπὶ τὰς διεξόδους τῶν ὁδῶν, καὶ ὅσους ἐὰν εὕρητε καλέσατε εἰς τοὺς γάμους. καὶ ἐξελθόντες οἱ δοῦλοι ἐκεῖνοι εἰς τὰς ὁδοὺς συνήγαγον πάντας ὅσους εὗρον, πονηρούς τε καὶ ἀγαθούς· καὶ ἐπλήσθη ὁ γάμος ἀνακειμένων. εἰσελθὼν δὲ ὁ βασιλεὺς θεάσασθαι τοὺς ἀνακειμένους εἶδεν ἐκεῖ ἄνθρωπον οὐκ ἐνδεδυμένον ἔνδυμα γάμου, καὶ λέγει αὐτῷ· ἑταῖρε, πῶς εἰσῆλθες ὧδε μὴ ἔχων ἔνδυμα γάμου; ὁ δὲ ἐφιμώθη. τότε εἶπεν ὁ βασιλεὺς τοῖς διακόνοις· δήσαντες αὐτοῦ πόδας καὶ χεῖρας ἄρατε αὐτὸν καὶ ἐκβάλετε εἰς τὸ σκότος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων. πολλοὶ γάρ εἰσι κλητοί, ὀλίγοι δὲ ἐκλεκτοί. Τότε πορευθέντες οἱ Φαρισαῖοι συμβούλιον ἔλαβον ὅπως αὐτὸν παγιδεύσωσιν ἐν λόγῳ. καὶ ἀποστέλλουσιν αὐτῷ τοὺς μαθητὰς αὐτῶν μετὰ τῶν Ἡρῳδιανῶν λέγοντες· διδάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ καὶ τὴν ὁδὸν τοῦ Θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ διδάσκεις, καὶ οὐ μέλει σοι περὶ οὐδενός· οὐ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων· εἰπὲ οὖν ἡμῖν, τί σοι δοκεῖ; ἔξεστι δοῦναι κῆνσον Καίσαρι ἢ οὔ; γνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν πονηρίαν αὐτῶν εἶπε· τί με πειράζετε, ὑποκριταί; ἐπιδείξατέ μοι τὸ νόμισμα τοῦ κήνσου. οἱ δὲ προσήνεγκαν αὐτῷ δηνάριον. καὶ λέγει αὐτοῖς· τίνος ἡ εἰκὼν αὕτη καὶ ἡ ἐπιγραφή; λέγουσιν αὐτῷ· Καίσαρος. τότε λέγει αὐτοῖς· ἀπόδοτε οὖν τὰ Καίσαρος Καίσαρι καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ τῷ Θεῷ. καὶ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν, καὶ ἀφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον. Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ προσῆλθον αὐτῷ Σαδδουκαῖοι, οἱ λέγοντες μὴ εἶναι ἀνάστασιν, καὶ ἐπηρώτησαν αὐτὸν λέγοντες· διδάσκαλε, Μωσῆς εἶπεν, ἐάν τις ἀποθάνῃ μὴ ἔχων τέκνα, ἐπιγαμβρεύσει ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ ἀναστήσει σπέρμα τῷ ἀδελφῷ

αὐτοῦ. ἦσαν δὲ παρ᾽ ἡμῖν ἑπτὰ ἀδελφοί· καὶ ὁ πρῶτος γαμήσας ἐτελεύτησε, καὶ μὴ ἔχων σπέρμα ἀφῆκε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ· ὁμοίως καὶ ὁ δεύτερος καὶ ὁ τρίτος, ἕως τῶν ἑπτά. ὕστερον δὲ πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή. ἐν τῇ οὖν ἀναστάσει τίνος τῶν ἑπτὰ ἔσται ἡ γυνή; πάντες γὰρ ἔσχον αὐτήν. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· πλανᾶσθε μὴ εἰδότες τὰς γραφὰς μηδὲ τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ. ἐν γὰρ τῇ ἀναστάσει οὔτε γαμοῦσιν οὔτε ἐκγαμίζονται, ἀλλ᾽ ὡς ἄγγελοι Θεοῦ ἐν οὐρανῷ εἰσι. περὶ δὲ τῆς ἀναστάσεως τῶν νεκρῶν οὐκ ἀνέγνωτε τὸ ῥηθὲν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ λέγοντος, ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ; οὐκ ἔστιν ὁ Θεὸς Θεὸς νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων. καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ. Οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἀκούσαντες ὅτι ἐφίμωσε τοὺς Σαδδουκαίους, συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτό, καὶ ἐπηρώτησεν εἷς ἐξ αὐτῶν, νομικός, πειράζων αὐτὸν καὶ λέγων· διδάσκαλε, ποία ἐντολὴ μεγάλη ἐν τῷ νόμῳ; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔφη αὐτῷ· ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐν ὅλῃ τῇ καρδίᾳ σου καὶ ἐν ὅλῃ τῇ ψυχῇ σου καὶ ἐν ὅλῃ τῇ διανοίᾳ σου. αὕτη ἐστὶ πρώτη καὶ μεγάλη ἐντολή. δευτέρα δὲ ὁμοία αὐτῇ· ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν. ἐν ταύταις ταῖς δυσὶν ἐντολαῖς ὅλος ὁ νόμος καὶ οἱ προφῆται κρέμανται. Συνηγμένων δὲ τῶν Φαρισαίων ἐπηρώτησεν αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς λέγων· τί ὑμῖν δοκεῖ περὶ τοῦ Χριστοῦ; τίνος υἱός ἐστι; λέγουσιν αὐτῷ· τοῦ Δαυΐδ. λέγει αὐτοῖς· πῶς οὖν Δαυΐδ ἐν Πνεύματι Κύριον αὐτὸν καλεῖ λέγων, εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου, κάθου ἐκ δεξιῶν μου ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου; εἰ οὖν Δαυΐδ καλεῖ αὐτὸν Κύριον, πῶς υἱὸς αὐτοῦ ἐστι; καὶ οὐδεὶς ἐδύνατο αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον, οὐδὲ ἐτόλμησέ τις ἀπ᾽ ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἐπερωτῆσαι αὐτὸν οὐκέτι.

# 23

Τότε ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησε τοῖς ὄχλοις καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ λέγων· ἐπὶ τῆς Μωσέως καθέδρας ἐκάθισαν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι. πάντα οὖν ὅσα ἐὰν εἴπωσιν ὑμῖν τηρεῖν, τηρεῖτε καὶ ποιεῖτε, κατὰ δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν μὴ ποιεῖτε· λέγουσι γάρ, καὶ οὐ ποιοῦσι. δεσμεύουσι γὰρ φορτία βαρέα καὶ δυσβάστακτα καὶ ἐπιτιθέασιν ἐπὶ τοὺς ὤμους τῶν ἀνθρώπων, τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν οὐ θέλουσι κινῆσαι αὐτά. πάντα δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν ποιοῦσι πρὸς τὸ θεαθῆναι τοῖς ἀνθρώποις. πλατύνουσι γὰρ τὰ φυλακτήρια αὐτῶν καὶ μεγαλύνουσι τὰ κράσπεδα τῶν ἱματίων αὐτῶν, φιλοῦσι δὲ τὴν πρωτοκλισίαν ἐν τοῖς δείπνοις καὶ τὰς πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ τοὺς ἀσπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς καὶ καλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων ῥαββὶ ῥαββί . ὑμεῖς δὲ μὴ κληθῆτε ῥαββί · εἷς γὰρ ὑμῶν ἐστιν ὁ διδάσκαλος, ὁ Χριστός· πάντες δὲ ὑμεῖς ἀδελφοί ἐστε. καὶ πατέρα μὴ καλέσητε ὑμῶν ἐπὶ τῆς γῆς· εἷς γάρ ἐστιν ὁ πατήρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς. μηδὲ κληθῆτε καθηγηταί· εἷς γὰρ ὑμῶν ἐστιν ὁ καθηγητής, ὁ Χριστός. ὁ δὲ μείζων ὑμῶν ἔσται ὑμῶν διάκονος. ὅστις δὲ ὑψώσει ἑαυτὸν ταπεινωθήσεται, καὶ ὅστις ταπεινώσει ἑαυτὸν ὑψωθήσεται. Οὐαὶ δὲ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι κατεσθίετε τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν καὶ προφάσει μακρὰ προσευχόμενοι· διὰ τοῦτο λήψεσθε περισσότερον κρῖμα. Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι κλείετε τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων· ὑμεῖς γὰρ οὐκ εἰσέρχεσθε, οὐδὲ τοὺς εἰσερχομένους ἀφίετε εἰσελθεῖν. Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι περιάγετε τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηρὰν ποιῆσαι ἕνα προσήλυτον, καὶ ὅταν

γένηται, ποιεῖτε αὐτὸν υἱὸν γεέννης διπλότερον ὑμῶν. Οὐαὶ ὑμῖν, ὁδηγοὶ τυφλοί, οἱ λέγοντες· ὃς ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ ναῷ, οὐδέν ἐστιν, ὃς δ᾽ ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ χρυσῷ τοῦ ναοῦ, ὀφείλει. μωροὶ καὶ τυφλοί τίς γὰρ μείζων ἐστίν, ὁ χρυσὸς ἢ ὁ ναὸς ὁ ἁγιάζων τὸν χρυσόν; καί· ὃς ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, οὐδέν ἐστιν, ὃς δ᾽ ἂν ὀμόσῃ ἐν τῷ δώρῳ τῷ ἐπάνω αὐτοῦ, ὀφείλει. μωροὶ καὶ τυφλοί τί γὰρ μεῖζον, τὸ δῶρον ἢ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἁγιάζον τὸ δῶρον; ὁ οὖν ὀμόσας ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ ὀμνύει ἐν αὐτῷ καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἐπάνω αὐτοῦ· καὶ ὁ ὀμόσας ἐν τῷ ναῷ ὀμνύει ἐν αὐτῷ καὶ ἐν τῷ κατοικήσαντι αὐτόν· καὶ ὁ ὀμόσας ἐν τῷ οὐρανῷ ὀμνύει ἐν τῷ θρόνῳ τοῦ Θεοῦ καὶ ἐν τῷ καθημένῳ ἐπάνω αὐτοῦ. Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι ἀποδεκατοῦτε τὸ ἡδύοσμον καὶ τὸ ἄνηθον καὶ τὸ κύμινον, καὶ ἀφήκατε τὰ βαρύτερα τοῦ νόμου, τὴν κρίσιν καὶ τὸν ἔλεον καὶ τὴν πίστιν· ταῦτα δὲ ἔδει ποιῆσαι κἀκεῖνα μὴ ἀφιέναι. ὁδηγοὶ τυφλοί, οἱ διυλίζοντες τὸν κώνωπα, τὴν δὲ κάμηλον καταπίνοντες Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι καθαρίζετε τὸ ἔξωθεν τοῦ ποτηρίου καὶ τῆς παροψίδος, ἔσωθεν δὲ γέμουσιν ἐξ ἁρπαγῆς καὶ ἀδικίας. Φαρισαῖε τυφλέ, καθάρισον πρῶτον τὸ ἐντὸς τοῦ ποτηρίου καὶ τῆς παροψίδος, ἵνα γένηται καὶ τὸ ἐκτὸς αὐτῶν καθαρόν. Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι παρομοιάζετε τάφοις κεκονιαμένοις, οἵτινες ἔξωθεν μὲν φαίνονται ὡραῖοι, ἔσωθεν δὲ γέμουσιν ὀστέων νεκρῶν καὶ πάσης ἀκαθαρσίας. οὕτω καὶ ὑμεῖς ἔξωθεν μὲν φαίνεσθε τοῖς ἀνθρώποις δίκαιοι, ἔσωθεν δὲ μεστοί ἐστε ὑποκρίσεως καὶ ἀνομίας. Οὐαὶ ὑμῖν, γραμματεῖς καὶ Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι οἰκοδομεῖτε τοὺς τάφους τῶν προφητῶν καὶ κοσμεῖτε τὰ μνημεῖα τῶν δικαίων, καὶ λέγετε· εἰ ἦμεν ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πατέρων ἡμῶν, οὐκ ἂν ἦμεν κοινωνοὶ αὐτῶν ἐν τῷ αἵματι τῶν προφητῶν.

ὥστε μαρτυρεῖτε ἑαυτοῖς ὅτι υἱοί ἐστε τῶν φονευσάντων τοὺς προφήτας. καὶ ὑμεῖς πληρώσατε τὸ μέτρον τῶν πατέρων ὑμῶν. ὄφεις, γεννήματα ἐχιδνῶν πῶς φύγητε ἀπὸ τῆς κρίσεως τῆς γεέννης; διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς προφήτας καὶ σοφοὺς καὶ γραμματεῖς, καὶ ἐξ αὐτῶν ἀποκτενεῖτε καὶ σταυρώσετε, καὶ ἐξ αὐτῶν μαστιγώσετε ἐν ταῖς συναγωγαῖς ὑμῶν καὶ διώξετε ἀπὸ πόλεως εἰς πόλιν, ὅπως ἔλθῃ ἐφ᾽ ὑμᾶς πᾶν αἷμα δίκαιον ἐκχυνόμενον ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ τοῦ αἵματος Ἄβελ τοῦ δικαίου ἕως τοῦ αἵματος Ζαχαρίου υἱοῦ Βαραχίου, ὃν ἐφονεύσατε μεταξὺ τοῦ ναοῦ καὶ τοῦ θυσιαστηρίου. ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἥξει ταῦτα πάντα ἐπὶ τὴν γενεὰν ταύτην. Ἱερουσαλὴμ Ἱερουσαλήμ, ἡ ἀποκτέννουσα τοὺς προφήτας καὶ λιθοβολοῦσα τοὺς ἀπεσταλμένους πρὸς αὐτήν ποσάκις ἠθέλησα ἐπισυναγαγεῖν τὰ τέκνα σου ὃν τρόπον ἐπισυνάγει ὄρνις τὰ νοσσία ἑαυτῆς ὑπὸ τὰς πτέρυγας, καὶ οὐκ ἠθελήσατε. ἰδοὺ ἀφίεται ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος. λέγω γὰρ ὑμῖν, οὐ μή με ἴδητε ἀπ᾽ ἄρτι ἕως ἂν εἴπητε, εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου.

# 24

Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἐπορεύετο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ· καὶ προσῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπιδεῖξαι αὐτῷ τὰς οἰκοδομὰς τοῦ ἱεροῦ. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· οὐ βλέπετε ταῦτα πάντα; ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀφεθῇ ὧδε λίθος ἐπὶ λίθον, ὃς οὐ καταλυθήσεται. καθημένου δὲ αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ ὄρους τῶν ἐλαιῶν προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ κατ᾽ ἰδίαν λέγοντες· εἰπὲ ἡμῖν πότε ταῦτα ἔσται, καὶ τί τὸ σημεῖον τῆς σῆς παρουσίας καὶ τῆς συντελείας τοῦ αἰῶνος; καὶ ἀποκριθεὶς

ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· βλέπετε μή τις ὑμᾶς πλανήσῃ. πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου λέγοντες, ἐγώ εἰμι ὁ Χριστός, καὶ πολλοὺς πλανήσουσι. μελλήσετε δὲ ἀκούειν πολέμους καὶ ἀκοὰς πολέμων· ὁρᾶτε μὴ θροεῖσθε· δεῖ γὰρ πάντα γενέσθαι, ἀλλ᾽ οὔπω ἐστὶ τὸ τέλος. ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος ἐπὶ ἔθνος καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν, καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ λοιμοὶ καὶ σεισμοὶ κατὰ τόπους· πάντα δὲ ταῦτα ἀρχὴ ὠδίνων. τότε παραδώσουσιν ὑμᾶς εἰς θλῖψιν καὶ ἀποκτενοῦσιν ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων τῶν ἐθνῶν διὰ τὸ ὄνομά μου. καὶ τότε σκανδαλισθήσονται πολλοὶ καὶ ἀλλήλους παραδώσουσι καὶ μισήσουσιν ἀλλήλους. καὶ πολλοὶ ψευδοπροφῆται ἐγερθήσονται καὶ πλανήσουσι πολλούς, καὶ διὰ τὸ πληθυνθῆναι τὴν ἀνομίαν ψυγήσεται ἡ ἀγάπη τῶν πολλῶν. ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὗτος σωθήσεται. καὶ κηρυχθήσεται τοῦτο τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας ἐν ὅλῃ τῇ οἰκουμένῃ εἰς μαρτύριον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι, καὶ τότε ἥξει τὸ τέλος. Ὅταν οὖν ἴδητε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως τὸ ῥηθὲν διὰ Δανιὴλ τοῦ προφήτου ἑστὼς ἐν τόπῳ ἁγίῳ ὁ ἀναγινώσκων νοείτω τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φευγέτωσαν ἐπὶ τὰ ὄρη, ὁ ἐπὶ τοῦ δώματος μὴ καταβαινέτω ἆραι τὰ ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ ὁ ἐν τῷ ἀγρῷ μὴ ἐπιστρεψάτω ὀπίσω ἆραι τὰ ἱμάτια αὐτοῦ. οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις καὶ ταῖς θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις. προσεύχεσθε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ὑμῶν χειμῶνος μηδὲ σαββάτῳ. ἔσται γὰρ τότε θλῖψις μεγάλη, οἵα οὐ γέγονεν ἀπ᾽ ἀρχῆς κόσμου ἕως τοῦ νῦν οὐδ᾽ οὐ μὴ γένηται. καὶ εἰ μὴ ἐκολοβώθησαν αἱ ἡμέραι ἐκεῖναι, οὐκ ἂν ἐσώθη πᾶσα σάρξ· διὰ δὲ τοὺς ἐκλεκτοὺς κολοβωθήσονται αἱ ἡμέραι ἐκεῖναι. τότε ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ, ἰδοὺ ὧδε ὁ Χριστὸς ἢ ὧδε, μὴ πιστεύσητε· ἐγερθήσονται γὰρ ψευδόχριστοι καὶ ψευδοπροφῆται καὶ δώσουσι σημεῖα μεγάλα καὶ τέρατα, ὥστε πλανῆσαι, εἰ δυνατόν, καὶ τοὺς ἐκλεκτούς. ἰδοὺ

προείρηκα ὑμῖν. ἐὰν οὖν εἴπωσιν ὑμῖν, ἰδοὺ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐστί, μὴ ἐξέλθητε, ἰδοὺ ἐν τοῖς ταμείοις, μὴ πιστεύσητε· ὥσπερ γὰρ ἡ ἀστραπὴ ἐξέρχεται ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ φαίνεται ἕως δυσμῶν, οὕτως ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου· ὅπου γὰρ ἐὰν ᾖ τὸ πτῶμα, ἐκεῖ συναχθήσονται οἱ ἀετοί. Εὐθέως δὲ μετὰ τὴν θλῖψιν τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ὁ ἥλιος σκοτισθήσεται καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φέγγος αὐτῆς, καὶ οἱ ἀστέρες πεσοῦνται ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν σαλευθήσονται. καὶ τότε φανήσεται τὸ σημεῖον τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ τότε κόψονται πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς καὶ ὄψονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ μετὰ δυνάμεως καὶ δόξης πολλῆς. καὶ ἀποστελεῖ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ μετὰ σάλπιγγος φωνῆς μεγάλης, καὶ ἐπισυνάξουσι τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων ἀπ᾽ ἄκρων οὐρανῶν ἕως ἄκρων αὐτῶν. Ἀπὸ δὲ τῆς συκῆς μάθετε τὴν παραβολήν. ὅταν ἤδη ὁ κλάδος αὐτῆς γένηται ἁπαλὸς καὶ τὰ φύλλα ἐκφύῃ, γινώσκετε ὅτι ἐγγὺς τὸ θέρος· οὕτω καὶ ὑμεῖς ὅταν ἴδητε ταῦτα πάντα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ παρέλθῃ ἡ γενεὰ αὕτη ἕως ἂν πάντα ταῦτα γένηται. ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται, οἱ δὲ λόγοι μου οὐ μὴ παρέλθωσι. Περὶ δὲ τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ ὥρας οὐδεὶς οἶδεν, οὐδὲ οἱ ἄγγελοι τῶν οὐρανῶν, εἰ μὴ ὁ πατήρ μου μόνος. ὥσπερ δὲ αἱ ἡμέραι τοῦ Νῶε, οὕτως ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου. ὥσπερ γὰρ ἦσαν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρὸ τοῦ κατακλυσμοῦ τρώγοντες καὶ πίνοντες, γαμοῦντες καὶ ἐκγαμίζοντες, ἄχρι ἧς ἡμέρας εἰσῆλθε Νῶε εἰς τὴν κιβωτόν, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ἕως ἦλθεν ὁ κατακλυσμὸς καὶ ἦρεν ἅπαντας, οὕτως ἔσται καὶ ἡ παρουσία τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου. τότε δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ, ὁ εἷς παραλαμβάνεται

καὶ ὁ εἷς ἀφίεται· δύο ἀλήθουσαι ἐν τῷ μυλῶνι, μία παραλαμβάνεται καὶ μία ἀφίεται. γρηγορεῖτε οὖν, ὅτι οὐκ οἴδατε ποίᾳ ὥρᾳ ὁ Κύριος ὑμῶν ἔρχεται. Ἐκεῖνο δὲ γινώσκετε ὅτι εἰ ᾔδει ὁ οἰκοδεσπότης ποίᾳ φυλακῇ ὁ κλέπτης ἔρχεται, ἐγρηγόρησεν ἂν καὶ οὐκ ἂν εἴασε διορυγῆναι τὴν οἰκίαν αὐτοῦ. διὰ τοῦτο καὶ ὑμεῖς γίνεσθε ἕτοιμοι, ὅτι ᾗ ὥρᾳ οὐ δοκεῖτε ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται. Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πιστὸς δοῦλος καὶ φρόνιμος, ὃν κατέστησεν ὁ κύριος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θεραπείας αὐτοῦ τοῦ διδόναι αὐτοῖς τὴν τροφὴν ἐν καιρῷ; μακάριος ὁ δοῦλος ἐκεῖνος ὃν ἐλθὼν ὁ κύριος αὐτοῦ εὑρήσει ποιοῦντα οὕτως. ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἐπὶ πᾶσι τοῖς ὑπάρχουσιν αὐτοῦ καταστήσει αὐτόν. ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ κακὸς δοῦλος ἐκεῖνος ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, χρονίζει ὁ κύριός μου ἐλθεῖν, καὶ ἄρξηται τύπτειν τοὺς συνδούλους αὐτοῦ, ἐσθίῃ δὲ καὶ πίνῃ μετὰ τῶν μεθυόντων, ἥξει ὁ κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου ἐν ἡμέρᾳ ᾗ οὐ προσδοκᾷ καὶ ἐν ὥρᾳ ᾗ οὐ γινώσκει, καὶ διχοτομήσει αὐτόν, καὶ τὸ μέρος αὐτοῦ μετὰ τῶν ὑποκριτῶν θήσει· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

# 25

Τότε ὁμοιωθήσεται ἡ βασιλεία τῶν οὐρανῶν δέκα παρθένοις, αἵτινες λαβοῦσαι τὰς λαμπάδας αὐτῶν ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν τοῦ νυμφίου. πέντε δὲ ἦσαν ἐξ αὐτῶν φρόνιμοι καὶ αἱ πέντε μωραί. αἵτινες μωραὶ λαβοῦσαι τὰς λαμπάδας ἑαυτῶν οὐκ ἔλαβον μεθ᾽ ἑαυτῶν ἔλαιον· αἱ δὲ φρόνιμοι ἔλαβον ἔλαιον ἐν τοῖς ἀγγείοις αὐτῶν μετὰ τῶν λαμπάδων αὐτῶν. χρονίζοντος δὲ τοῦ νυμφίου ἐνύσταξαν πᾶσαι καὶ ἐκάθευδον. μέσης δὲ νυκτὸς κραυγὴ γέγονεν·

ἰδοὺ ὁ νυμφίος ἔρχεται, ἐξέρχεσθε εἰς ἀπάντησιν αὐτοῦ. τότε ἠγέρθησαν πᾶσαι αἱ παρθένοι ἐκεῖναι καὶ ἐκόσμησαν τὰς λαμπάδας αὐτῶν. αἱ δὲ μωραὶ ταῖς φρονίμοις εἶπον· δότε ἡμῖν ἐκ τοῦ ἐλαίου ὑμῶν, ὅτι αἱ λαμπάδες ἡμῶν σβέννυνται. ἀπεκρίθησαν δὲ αἱ φρόνιμοι λέγουσαι· μήποτε οὐκ ἀρκέσει ἡμῖν καὶ ὑμῖν· πορεύεσθε δὲ μᾶλλον πρὸς τοὺς πωλοῦντας καὶ ἀγοράσατε ἑαυταῖς. ἀπερχομένων δὲ αὐτῶν ἀγοράσαι ἦλθεν ὁ νυμφίος καὶ αἱ ἕτοιμοι εἰσῆλθον μετ᾽ αὐτοῦ εἰς τοὺς γάμους, καὶ ἐκλείσθη ἡ θύρα. ὕστερον δὲ ἔρχονται καὶ αἱ λοιπαὶ παρθένοι λέγουσαι· κύριε κύριε, ἄνοιξον ἡμῖν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ οἶδα ὑμᾶς. γρηγορεῖτε οὖν, ὅτι οὐκ οἴδατε τὴν ἡμέραν οὐδὲ τὴν ὥραν ἐν ᾗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἔρχεται. Ὥσπερ γὰρ ἄνθρωπος ἀποδημῶν ἐκάλεσε τοὺς ἰδίους δούλους καὶ παρέδωκεν αὐτοῖς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, καὶ ᾧ μὲν ἔδωκε πέντε τάλαντα, ᾧ δὲ δύο, ᾧ δὲ ἕν, ἑκάστῳ κατὰ τὴν ἰδίαν δύναμιν, καὶ ἀπεδήμησεν εὐθέως. πορευθεὶς δὲ ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν εἰργάσατο ἐν αὐτοῖς καὶ ἐποίησεν ἄλλα πέντε τάλαντα. ὡσαύτως καὶ ὁ τὰ δύο ἐκέρδησε καὶ αὐτὸς ἄλλα δύο. ὁ δὲ τὸ ἓν λαβὼν ἀπελθὼν ὤρυξεν ἐν τῇ γῇ καὶ ἀπέκρυψε τὸ ἀργύριον τοῦ κυρίου αὐτοῦ. μετὰ δὲ χρόνον πολὺν ἔρχεται ὁ κύριος τῶν δούλων ἐκείνων καὶ συναίρει μετ᾽ αὐτῶν λόγον. καὶ προσελθὼν ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν προσήνεγκεν ἄλλα πέντε τάλαντα λέγων· κύριε, πέντε τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε ἄλλα πέντε τάλαντα ἐκέρδησα ἐπ᾽ αὐτοῖς. ἔφη αὐτῷ ὁ κύριος αὐτοῦ· εὖ, δοῦλε ἀγαθὲ καὶ πιστέ ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστός, ἐπὶ πολλῶν σε καταστήσω· εἴσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ κυρίου σου. προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὰ δύο τάλαντα λαβὼν εἶπε· κύριε, δύο τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε ἄλλα δύο τάλαντα ἐκέρδησα ἐπ᾽ αὐτοῖς. ἔφη αὐτῷ ὁ κύριος αὐτοῦ· εὖ, δοῦλε ἀγαθὲ καὶ πιστέ ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστός, ἐπὶ

πολλῶν σε καταστήσω· εἴσελθε εἰς τὴν χαρὰν τοῦ κυρίου σου. προσελθὼν δὲ καὶ ὁ τὸ ἓν τάλαντον εἰληφὼς εἶπε· κύριε· ἔγνων σε ὅτι σκληρὸς εἶ ἄνθρωπος, θερίζων ὅπου οὐκ ἔσπειρας καὶ συνάγων ὅθεν οὐ διεσκόρπισας· καὶ φοβηθεὶς ἀπελθὼν ἔκρυψα τὸ τάλαντόν σου ἐν τῇ γῇ· ἴδε ἔχεις τὸ σόν. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ κύριος αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ· πονηρὲ δοῦλε καὶ ὀκνηρέ ᾔδεις ὅτι θερίζω ὅπου οὐκ ἔσπειρα καὶ συνάγω ὅθεν οὐ διεσκόρπισα ἔδει οὖν σε βαλεῖν τὸ ἀργύριόν μου τοῖς τραπεζίταις, καὶ ἐλθὼν ἐγὼ ἐκομισάμην ἂν τὸ ἐμὸν σὺν τόκῳ. ἄρατε οὖν ἀπ᾽ αὐτοῦ τὸ τάλαντον καὶ δότε τῷ ἔχοντι τὰ δέκα τάλαντα. τῷ γὰρ ἔχοντι παντὶ δοθήσεται καὶ περισσευθήσεται, ἀπὸ δὲ τοῦ μὴ ἔχοντος καὶ ὃ ἔχει ἀρθήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ. καὶ τὸν ἀχρεῖον δοῦλον ἐκβάλετε εἰς τὸ σκότος τὸ ἐξώτερον· ἐκεῖ ἔσται ὁ κλαυθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων. Ὅταν δὲ ἔλθῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ καὶ πάντες οἱ ἅγιοι ἄγγελοι μετ᾽ αὐτοῦ, τότε καθίσει ἐπὶ θρόνου δόξης αὐτοῦ, καὶ συναχθήσεται ἔμπροσθεν αὐτοῦ πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἀφοριεῖ αὐτοὺς ἀπ᾽ ἀλλήλων ὥσπερ ὁ ποιμὴν ἀφορίζει τὰ πρόβατα ἀπὸ τῶν ἐρίφων, καὶ στήσει τὰ μὲν πρόβατα ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, τὰ δὲ ἐρίφια ἐξ εὐωνύμων. τότε ἐρεῖ ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ· δεῦτε οἱ εὐλογημένοι τοῦ πατρός μου, κληρονομήσατε τὴν ἡτοιμασμένην ὑμῖν βασιλείαν ἀπὸ καταβολῆς κόσμου. ἐπείνασα γάρ, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν, ἐδίψησα, καὶ ἐποτίσατέ με, ξένος ἤμην, καὶ συνηγάγετέ με, γυμνός, καὶ περιεβάλετέ με, ἠσθένησα, καὶ ἐπεσκέψασθέ με, ἐν φυλακῇ ἤμην, καὶ ἤλθετε πρός με. τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ οἱ δίκαιοι λέγοντες· κύριε, πότε σε εἴδομεν πεινῶντα καὶ ἐθρέψαμεν, ἢ διψῶντα καὶ ἐποτίσαμεν; πότε δέ σε εἴδομεν ξένον καὶ συνηγάγομεν, ἢ γυμνὸν καὶ περιεβάλομεν; πότε δέ σε εἴδομεν ἀσθενῆ ἢ ἐν φυλακῇ, καὶ ἤλθομεν πρός σε; καὶ

ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς ἐρεῖ αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐφ᾽ ὅσον ἐποιήσατε ἑνὶ τούτων τῶν ἀδελφῶν μου τῶν ἐλαχίστων, ἐμοὶ ἐποιήσατε. τότε ἐρεῖ καὶ τοῖς ἐξ εὐωνύμων· πορεύεσθε ἀπ᾽ ἐμοῦ οἱ κατηραμένοι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον τὸ ἡτοιμασμένον τῷ διαβόλῳ καὶ τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ. ἐπείνασα γάρ, καὶ οὐκ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν, ἐδίψησα, καὶ οὐκ ἐποτίσατέ με, ξένος ἤμην, καὶ οὐ συνηγάγετέ με, γυμνός, καὶ οὐ περιεβάλετέ με, ἀσθενὴς καὶ ἐν φυλακῇ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθέ με. τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ καὶ αὐτοὶ λέγοντες· κύριε, πότε σε εἴδομεν πεινῶντα ἢ διψῶντα ἢ ξένον ἢ γυμνὸν ἢ ἀσθενῆ ἢ ἐν φυλακῇ, καὶ οὐ διηκονήσαμέν σοι; τότε ἀποκριθήσεται αὐτοῖς λέγων· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐφ᾽ ὅσον οὐκ ἐποιήσατε ἑνὶ τούτων τῶν ἐλαχίστων, οὐδὲ ἐμοὶ ἐποιήσατε. καὶ ἀπελεύσονται οὗτοι εἰς κόλασιν αἰώνιον, οἱ δὲ δίκαιοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.

# 26

Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς πάντας τοὺς λόγους τούτους εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· οἴδατε ὅτι μετὰ δύο ἡμέρας τὸ πάσχα γίνεται, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς τὸ σταυρωθῆναι. τότε συνήχθησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ἀρχιερέως τοῦ λεγομένου Καϊάφα, καὶ συνεβουλεύσαντο ἵνα τὸν Ἰησοῦν δόλῳ κρατήσωσι καὶ ἀποκτείνωσιν. ἔλεγον δέ· μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, ἵνα μὴ θόρυβος γένηται ἐν τῷ λαῷ. Τοῦ δὲ Ἰησοῦ γενομένου ἐν Βηθανίᾳ ἐν οἰκίᾳ Σίμωνος τοῦ λεπροῦ, προσῆλθεν αὐτῷ γυνὴ ἀλάβαστρον μύρου ἔχουσα βαρυτίμου, καὶ κατέχεεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ

ἀνακειμένου. ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἠγανάκτησαν λέγοντες· εἰς τί ἡ ἀπώλεια αὕτη; ἠδύνατο γὰρ τοῦτο τὸ μύρον πραθῆναι πολλοῦ καὶ δοθῆναι τοῖς πτωχοῖς. γνοὺς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· τί κόπους παρέχετε τῇ γυναικί; ἔργον γὰρ καλὸν εἰργάσατο εἰς ἐμέ. τοὺς πτωχοὺς γὰρ πάντοτε ἔχετε μεθ᾽ ἑαυτῶν, ἐμὲ δὲ οὐ πάντοτε ἔχετε. βαλοῦσα γὰρ αὕτη τὸ μύρον τοῦτο ἐπὶ τοῦ σώματός μου, πρὸς τὸ ἐνταφιάσαι με ἐποίησεν. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅπου ἐὰν κηρυχθῇ τὸ εὐαγγέλιον τοῦτο ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ, λαληθήσεται καὶ ὃ ἐποίησεν αὕτη εἰς μνημόσυνον αὐτῆς. Τότε πορευθεὶς εἷς τῶν δώδεκα, ὁ λεγόμενος Ἰούδας Ἰσκαριώτης, πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς εἶπε· τί θέλετέ μοι δοῦναι, καὶ ἐγὼ ὑμῖν παραδώσω αὐτόν; οἱ δὲ ἔστησαν αὐτῷ τριάκοντα ἀργύρια. καὶ ἀπὸ τότε ἐζήτει εὐκαιρίαν ἵνα αὐτὸν παραδῷ. Τῇ δὲ πρώτῃ τῶν ἀζύμων προσῆλθον οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ λέγοντες αὐτῷ· ποῦ θέλεις ἑτοιμάσωμέν σοι φαγεῖν τὸ πάσχα; ὁ δὲ εἶπεν· ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν πρὸς τὸν δεῖνα καὶ εἴπατε αὐτῷ· ὁ διδάσκαλος λέγει, ὁ καιρός μου ἐγγύς ἐστι· πρὸς σὲ ποιῶ τὸ πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν μου. καὶ ἐποίησαν οἱ μαθηταὶ ὡς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἡτοίμασαν τὸ πάσχα. Ὀψίας δὲ γενομένης ἀνέκειτο μετὰ τῶν δώδεκα. καὶ ἐσθιόντων αὐτῶν εἶπεν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν παραδώσει με. καὶ λυπούμενοι σφόδρα ἤρξαντο λέγειν αὐτῷ ἕκαστος αὐτῶν· μήτι ἐγώ εἰμι, Κύριε; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· ὁ ἐμβάψας μετ᾽ ἐμοῦ ἐν τῷ τρυβλίῳ τὴν χεῖρα, οὗτός με παραδώσει. ὁ μὲν υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ· οὐαὶ δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ δι᾽ οὗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται· καλὸν ἦν αὐτῷ εἰ οὐκ ἐγεννήθη ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος. ἀποκριθεὶς δὲ Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν εἶπε· μήτι ἐγώ εἰμι, ῥαββί; λέγει αὐτῷ, σὺ εἶπας. Ἐσθιόντων δὲ αὐτῶν λαβὼν ὁ Ἰησοῦς τὸν ἄρτον καὶ εὐχαριστήσας ἔκλασε καὶ

ἐδίδου τοῖς μαθηταῖς καὶ εἶπε· λάβετε φάγετε· τοῦτό ἐστι τὸ σῶμά μου· καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον καὶ εὐχαριστήσας ἔδωκεν αὐτοῖς λέγων· πίετε ἐξ αὐτοῦ πάντες· τοῦτο γάρ ἐστι τὸ αἷμά μου τὸ τῆς καινῆς διαθήκης τὸ περὶ πολλῶν ἐκχυνόμενον εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν. λέγω δὲ ὑμῖν ὅτι οὐ μὴ πίω ἀπ᾽ ἄρτι ἐκ τούτου τοῦ γενήματος τῆς ἀμπέλου ἕως τῆς ἡμέρας ἐκείνης ὅταν αὐτὸ πίνω μεθ᾽ ὑμῶν καινὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ πατρός μου. Καὶ ὑμνήσαντες ἐξῆλθον εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν. τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· πάντες ὑμεῖς σκανδαλισθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ· γέγραπται γάρ, πατάξω τὸν ποιμένα, καὶ διασκορπισθήσονται τὰ πρόβατα τῆς ποίμνης· μετὰ δὲ τὸ ἐγερθῆναί με προάξω ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ· εἰ πάντες σκανδαλισθήσονται ἐν σοί, ἐγὼ δὲ οὐδέποτε σκανδαλισθήσομαι. ἔφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν λέγω σοι ὅτι ἐν ταύτῃ τῇ νυκτὶ πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι τρὶς ἀπαρνήσῃ με. λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· κἂν δέῃ με σὺν σοὶ ἀποθανεῖν, οὐ μή σε ἀπαρνήσομαι. ὁμοίως δὲ καὶ πάντες οἱ μαθηταὶ εἶπον. Τότε ἔρχεται μετ᾽ αὐτῶν ὁ Ἰησοῦς εἰς χωρίον λεγόμενον Γεθσημανῆ, καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς· καθίσατε αὐτοῦ ἕως οὗ ἀπελθὼν προσεύξωμαι ἐκεῖ. καὶ παραλαβὼν τὸν Πέτρον καὶ τοὺς δύο υἱοὺς Ζεβεδαίου ἤρξατο λυπεῖσθαι καὶ ἀδημονεῖν. τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· περίλυπός ἐστιν ἡ ψυχή μου ἕως θανάτου· μείνατε ὧδε καὶ γρηγορεῖτε μετ᾽ ἐμοῦ. καὶ προελθὼν μικρὸν ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ προσευχόμενος καὶ λέγων· πάτερ μου, εἰ δυνατόν ἐστι, παρελθέτω ἀπ᾽ ἐμοῦ τὸ ποτήριον τοῦτο· πλὴν οὐχ ὡς ἐγὼ θέλω, ἀλλ᾽ ὡς σύ. καὶ ἔρχεται πρὸς τοὺς μαθητὰς καὶ εὑρίσκει αὐτοὺς καθεύδοντας, καὶ λέγει τῷ Πέτρῳ· οὕτως οὐκ ἰσχύσατε μίαν ὥραν γρηγορῆσαι μετ᾽ ἐμοῦ γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθητε εἰς πειρασμόν· τὸ

μὲν πνεῦμα πρόθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής. πάλιν ἐκ δευτέρου ἀπελθὼν προσηύξατο λέγων· πάτερ μου, εἰ οὐ δύναται τοῦτο τὸ ποτήριον παρελθεῖν ἀπ᾽ ἐμοῦ ἐὰν μὴ αὐτὸ πίω, γενηθήτω τὸ θέλημά σου. καὶ ἐλθὼν εὑρίσκει αὐτοὺς πάλιν καθεύδοντας· ἦσαν γὰρ αὐτῶν οἱ ὀφθαλμοὶ βεβαρημένοι. καὶ ἀφεὶς αὐτοὺς ἀπελθὼν πάλιν προσηύξατο ἐκ τρίτου τὸν αὐτὸν λόγον εἰπών· τότε ἔρχεται πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτοῖς· καθεύδετε τὸ λοιπὸν καὶ ἀναπαύεσθε ἰδοὺ ἤγγικεν ἡ ὥρα καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς χεῖρας ἁμαρτωλῶν. ἐγείρεσθε ἄγωμεν· ἰδοὺ ἤγγικεν ὁ παραδιδούς με. Καὶ ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος ἰδοὺ Ἰούδας εἷς τῶν δώδεκα ἦλθε, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ ὄχλος πολὺς μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων ἀπὸ τῶν ἀρχιερέων καὶ πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ. ὁ δὲ παραδιδοὺς αὐτὸν ἔδωκεν αὐτοῖς σημεῖον λέγων· ὃν ἂν φιλήσω, αὐτός ἐστι· κρατήσατε αὐτόν. καὶ εὐθέως προσελθὼν τῷ Ἰησοῦ εἶπε· χαῖρε, ῥαββί, καὶ κατεφίλησεν αὐτόν. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· ἑταῖρε, ἐφ᾽ ᾧ πάρει. τότε προσελθόντες ἐπέβαλον τὰς χεῖρας ἐπὶ τὸν Ἰησοῦν καὶ ἐκράτησαν αὐτόν. καὶ ἰδοὺ εἷς τῶν μετὰ Ἰησοῦ ἐκτείνας τὴν χεῖρα ἀπέσπασε τὴν μάχαιραν αὐτοῦ, καὶ πατάξας τὸν δοῦλον τοῦ ἀρχιερέως ἀφεῖλεν αὐτοῦ τὸ ὠτίον. τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἀπόστρεψόν σου τὴν μάχαιραν εἰς τὸν τόπον αὐτῆς· πάντες γὰρ οἱ λαβόντες μάχαιραν ἐν μαχαίρᾳ ἀποθανοῦνται. ἢ δοκεῖς ὅτι οὐ δύναμαι ἄρτι παρακαλέσαι τὸν πατέρα μου, καὶ παραστήσει μοι πλείους ἢ δώδεκα λεγεῶνας ἀγγέλων; πῶς οὖν πληρωθῶσιν αἱ γραφαὶ ὅτι οὕτω δεῖ γενέσθαι; Ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τοῖς ὄχλοις· ὡς ἐπὶ λῃστὴν ἐξήλθετε μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων συλλαβεῖν με· καθ᾽ ἡμέραν πρὸς ὑμᾶς ἐκαθεζόμην διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ οὐκ ἐκρατήσατέ με. τοῦτο δὲ ὅλον γέγονεν ἵνα πληρωθῶσιν αἱ γραφαὶ τῶν

προφητῶν. Τότε οἱ μαθηταὶ πάντες ἀφέντες αὐτὸν ἔφυγον. Οἱ δὲ κρατήσαντες τὸν Ἰησοῦν ἀπήγαγον πρὸς Καϊάφαν τὸν ἀρχιερέα, ὅπου οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι συνήχθησαν. ὁ δὲ Πέτρος ἠκολούθει αὐτῷ ἀπὸ μακρόθεν ἕως τῆς αὐλῆς τοῦ ἀρχιερέως, καὶ εἰσελθὼν ἔσω ἐκάθητο μετὰ τῶν ὑπηρετῶν ἰδεῖν τὸ τέλος. Οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ τὸ συνέδριον ὅλον ἐζήτουν ψευδομαρτυρίαν κατὰ τοῦ Ἰησοῦ ὅπως θανατώσωσιν αὐτόν, καὶ οὐχ εὗρον· καὶ πολλῶν ψευδομαρτύρων προσελθόντων, οὐχ εὗρον. ὕστερον δὲ προσελθόντες δύο ψευδομάρτυρες εἶπον· οὗτος ἔφη, δύναμαι καταλῦσαι τὸν ναὸν τοῦ Θεοῦ καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν οἰκοδομῆσαι αὐτόν. καὶ ἀναστὰς ὁ ἀρχιερεὺς εἶπεν αὐτῷ· οὐδὲν ἀποκρίνῃ; τί οὗτοί σου καταμαρτυροῦσιν; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐσιώπα. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἀρχιερεὺς εἶπεν αὐτῷ· ἐξορκίζω σε κατὰ τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος ἵνα ἡμῖν εἴπῃς εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· σὺ εἶπας· πλὴν λέγω ὑμῖν, ἀπ᾽ ἄρτι ὄψεσθε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου καθήμενον ἐκ δεξιῶν τῆς δυνάμεως καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ. τότε ὁ ἀρχιερεὺς διέρρηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ λέγων ὅτι ἐβλασφήμησε· τί ἔτι χρείαν ἔχομεν μαρτύρων; ἴδε νῦν ἠκούσατε τὴν βλασφημίαν αὐτοῦ· τί ὑμῖν δοκεῖ; οἱ δὲ ἀποκριθέντες εἶπον· ἔνοχος θανάτου ἐστί. τότε ἐνέπτυσαν εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ καὶ ἐκολάφισαν αὐτόν, οἱ δὲ ἐρράπισαν λέγοντες· προφήτευσον ἡμῖν, Χριστέ, τίς ἐστιν ὁ παίσας σε; Ὁ δὲ Πέτρος ἔξω ἐκάθητο ἐν τῇ αὐλῇ· καὶ προσῆλθεν αὐτῷ μία παιδίσκη λέγουσα· καὶ σὺ ἦσθα μετὰ Ἰησοῦ τοῦ Γαλιλαίου. ὁ δὲ ἠρνήσατο ἔμπροσθεν αὐτῶν πάντων λέγων· οὐκ οἶδα τί λέγεις. ἐξελθόντα δὲ αὐτὸν εἰς τὸν πυλῶνα εἶδεν αὐτὸν ἄλλη καὶ λέγει αὐτοῖς· ἐκεῖ καὶ οὗτος ἦν μετὰ Ἰησοῦ τοῦ Ναζωραίου. καὶ πάλιν ἠρνήσατο μεθ᾽ ὅρκου ὅτι οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον. μετὰ μικρὸν δὲ

προσελθόντες οἱ ἑστῶτες εἶπον τῷ Πέτρῳ· ἀληθῶς καὶ σὺ ἐξ αὐτῶν εἶ· καὶ γὰρ ἡ λαλιά σου δῆλόν σε ποιεῖ. τότε ἤρξατο καταθεματίζειν καὶ ὀμνύειν ὅτι οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον. καὶ εὐθέως ἀλέκτωρ ἐφώνησε. καὶ ἐμνήσθη ὁ Πέτρος τοῦ ῥήματος Ἰησοῦ εἰρηκότος αὐτῷ ὅτι πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι τρὶς ἀπαρνήσῃ με· καὶ ἐξελθὼν ἔξω ἔκλαυσε πικρῶς.

# 27

Πρωΐας δὲ γενομένης συμβούλιον ἔλαβον πάντες οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ κατὰ τοῦ Ἰησοῦ ὥστε θανατῶσαι αὐτόν· καὶ δήσαντες αὐτὸν ἀπήγαγον καὶ παρέδωκαν αὐτὸν Ποντίῳ Πιλάτῳ τῷ ἡγεμόνι. Τότε ἰδὼν Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν ὅτι κατεκρίθη, μεταμεληθεὶς ἀπέστρεψε τὰ τριάκοντα ἀργύρια τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς πρεσβυτέροις λέγων· ἥμαρτον παραδοὺς αἷμα ἀθῷον. οἱ δὲ εἶπον· τί πρὸς ἡμᾶς; σὺ ὄψει. καὶ ῥίψας τὰ ἀργύρια ἐν τῷ ναῷ ἀνεχώρησε, καὶ ἀπελθὼν ἀπήγξατο. οἱ δὲ ἀρχιερεῖς λαβόντες τὰ ἀργύρια εἶπον· οὐκ ἔξεστι βαλεῖν αὐτὰ εἰς τὸν κορβανᾶν, ἐπεὶ τιμὴ αἵματός ἐστι. συμβούλιον δὲ λαβόντες ἠγόρασαν ἐξ αὐτῶν τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμέως εἰς ταφὴν τοῖς ξένοις· διὸ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς ἐκεῖνος ἀγρὸς αἵματος ἕως τῆς σήμερον. τότε ἐπληρώθη τὸ ῥηθὲν διὰ Ἱερεμίου τοῦ προφήτου λέγοντος· καὶ ἔλαβον τὰ τριάκοντα ἀργύρια, τὴν τιμὴν τοῦ τετιμημένου ὃν ἐτιμήσαντο ἀπὸ υἱῶν Ἰσραήλ, καὶ ἔδωκαν αὐτὰ εἰς τὸν ἀγρὸν τοῦ κεραμέως, καθὰ συνέταξέ μοι Κύριος. Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔστη ἔμπροσθεν τοῦ ἡγεμόνος· καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ ἡγεμὼν λέγων· σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔφη αὐτῷ· σὺ λέγεις.

καὶ ἐν τῷ κατηγορεῖσθαι αὐτὸν ὑπὸ τῶν ἀρχιερέων καὶ τῶν πρεσβυτέρων οὐδὲν ἀπεκρίνατο. τότε λέγει αὐτῷ ὁ Πιλᾶτος· οὐκ ἀκούεις πόσα σου καταμαρτυροῦσι; καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ πρὸς οὐδὲ ἓν ῥῆμα, ὥστε θαυμάζειν τὸν ἡγεμόνα λίαν. Κατὰ δὲ ἑορτὴν εἰώθει ὁ ἡγεμὼν ἀπολύειν ἕνα τῷ ὄχλῳ δέσμιον, ὃν ἤθελον. εἶχον δὲ τότε δέσμιον ἐπίσημον λεγόμενον Βαραββᾶν. συνηγμένων οὖν αὐτῶν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· τίνα θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν; Βαραββᾶν ἢ Ἰησοῦν τὸν λεγόμενον Χριστόν; ᾔδει γὰρ ὅτι διὰ φθόνον παρέδωκαν αὐτόν. Καθημένου δὲ αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ βήματος ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν ἡ γυνὴ αὐτοῦ λέγουσα· μηδὲν σοὶ καὶ τῷ δικαίῳ ἐκείνῳ· πολλὰ γὰρ ἔπαθον σήμερον κατ᾽ ὄναρ δι᾽ αὐτόν. Οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἔπεισαν τοὺς ὄχλους ἵνα αἰτήσωνται τὸν Βαραββᾶν, τὸν δὲ Ἰησοῦν ἀπολέσωσιν. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἡγεμὼν εἶπεν αὐτοῖς· τίνα θέλετε ἀπὸ τῶν δύο ἀπολύσω ὑμῖν; οἱ δὲ εἶπον· Βαραββᾶν. λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· τί οὖν ποιήσω Ἰησοῦν τὸν λεγόμενον Χριστόν; λέγουσιν αὐτῷ πάντες· σταυρωθήτω. ὁ δὲ ἡγεμὼν ἔφη· τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν; οἱ δὲ περισσῶς ἔκραζον λέγοντες· σταυρωθήτω. ἰδὼν δὲ ὁ Πιλᾶτος ὅτι οὐδὲν ὠφελεῖ, ἀλλὰ μᾶλλον θόρυβος γίνεται, λαβὼν ὕδωρ ἀπενίψατο τὰς χεῖρας ἀπέναντι τοῦ ὄχλου λέγων· ἀθῷός εἰμι ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ δικαίου τούτου· ὑμεῖς ὄψεσθε. καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὁ λαὸς εἶπε· τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐφ᾽ ἡμᾶς καὶ ἐπὶ τὰ τέκνα ἡμῶν. τότε ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν Βαραββᾶν, τὸν δὲ Ἰησοῦν φραγελλώσας παρέδωκεν ἵνα σταυρωθῇ. Τότε οἱ στρατιῶται τοῦ ἡγεμόνος παραλαβόντες τὸν Ἰησοῦν εἰς τὸ πραιτώριον συνήγαγον ἐπ᾽ αὐτὸν ὅλην τὴν σπεῖραν· καὶ ἐκδύσαντες αὐτὸν περιέθηκαν αὐτῷ χλαμύδα κοκκίνην, καὶ πλέξαντες στέφανον ἐξ ἀκανθῶν ἐπέθηκαν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ καὶ κάλαμον ἐπὶ τὴν δεξιὰν αὐτοῦ, καὶ

γονυπετήσαντες ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἐνέπαιζον αὐτῷ λέγοντες· χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· καὶ ἐμπτύσαντες εἰς αὐτὸν ἔλαβον τὸν κάλαμον καὶ ἔτυπτον εἰς τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. καὶ ὅτε ἐνέπαιξαν αὐτῷ, ἐξέδυσαν αὐτὸν τὴν χλαμύδα καὶ ἐνέδυσαν αὐτὸν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ σταυρῶσαι. Ἐξερχόμενοι δὲ εὗρον ἄνθρωπον Κυρηναῖον ὀνόματι Σίμωνα· τοῦτον ἠγγάρευσαν ἵνα ἄρῃ τὸν σταυρὸν αὐτοῦ. Καὶ ἐλθόντες εἰς τόπον λεγόμενον Γολγοθᾶ, ὅ ἐστι λεγόμενος κρανίου τόπος , ἔδωκαν αὐτῷ πιεῖν ὄξος μετὰ χολῆς μεμιγμένον· καὶ γευσάμενος οὐκ ἤθελε πιεῖν. σταυρώσαντες δὲ αὐτὸν διεμερίσαντο τὰ ἱμάτια αὐτοῦ βαλόντες κλῆρον, καὶ καθήμενοι ἐτήρουν αὐτὸν ἐκεῖ. καὶ ἐπέθηκαν ἐπάνω τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ τὴν αἰτίαν αὐτοῦ γεγραμμένην· οὗτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων . Τότε σταυροῦνται σὺν αὐτῷ δύο λῃσταί, εἷς ἐκ δεξιῶν καὶ εἷς ἐξ εὐωνύμων. Οἱ δὲ παραπορευόμενοι ἐβλασφήμουν αὐτὸν κινοῦντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν καὶ λέγοντες· ὁ καταλύων τὸν ναὸν καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις οἰκοδομῶν σῶσον σεαυτόν· εἰ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, κατάβηθι ἀπὸ τοῦ σταυροῦ. ὁμοίως δὲ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἐμπαίζοντες μετὰ τῶν γραμματέων καὶ πρεσβυτέρων καὶ Φαρισαίων ἔλεγον· ἄλλους ἔσωσεν, ἑαυτὸν οὐ δύναται σῶσαι· εἰ βασιλεὺς Ἰσραήλ ἐστι, καταβάτω νῦν ἀπὸ τοῦ σταυροῦ καὶ πιστεύσωμεν ἐπ᾽ αὐτῷ· πέποιθεν ἐπὶ τὸν Θεόν, ῥυσάσθω νῦν αὐτόν, εἰ θέλει αὐτόν· εἶπε γὰρ ὅτι Θεοῦ εἰμι υἱός. τὸ δ᾽ αὐτὸ καὶ οἱ λῃσταὶ οἱ συσταυρωθέντες αὐτῷ ὠνείδιζον αὐτόν. Ἀπὸ δὲ ἕκτης ὥρας σκότος ἐγένετο ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἕως ὥρας ἐνάτης. περὶ δὲ τὴν ἐνάτην ὥραν ἀνεβόησεν ὁ Ἰησοῦς φωνῇ μεγάλῃ λέγων· ἠλὶ ἠλί, λιμᾶ σαβαχθανί; τοῦτ᾽ ἔστι, Θεέ μου Θεέ μου, ἱνατί με ἐγκατέλιπες; τινὲς δὲ τῶν ἐκεῖ ἑστώτων ἀκούσαντες ἔλεγον ὅτι Ἠλίαν φωνεῖ οὗτος. καὶ εὐθέως δραμὼν εἷς ἐξ αὐτῶν

καὶ λαβὼν σπόγγον πλήσας τε ὄξους καὶ περιθεὶς καλάμῳ ἐπότιζεν αὐτόν. οἱ δὲ λοιποὶ ἔλεγον· ἄφες ἴδωμεν εἰ ἔρχεται Ἠλίας σώσων αὐτόν. ὁ δὲ Ἰησοῦς πάλιν κράξας φωνῇ μεγάλῃ ἀφῆκε τὸ πνεῦμα. Καὶ ἰδοὺ τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο ἀπὸ ἄνωθεν ἕως κάτω, καὶ ἡ γῆ ἐσείσθη καὶ αἱ πέτραι ἐσχίσθησαν, καὶ τὰ μνημεῖα ἀνεῴχθησαν καὶ πολλὰ σώματα τῶν κεκοιμημένων ἁγίων ἠγέρθη, καὶ ἐξελθόντες ἐκ τῶν μνημείων, μετὰ τὴν ἔγερσιν αὐτοῦ εἰσῆλθον εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν καὶ ἐνεφανίσθησαν πολλοῖς. Ὁ δὲ ἑκατόνταρχος καὶ οἱ μετ᾽ αὐτοῦ τηροῦντες τὸν Ἰησοῦν, ἰδόντες τὸν σεισμὸν καὶ τὰ γενόμενα ἐφοβήθησαν σφόδρα λέγοντες· ἀληθῶς Θεοῦ υἱὸς ἦν οὗτος. Ἦσαν δὲ ἐκεῖ καὶ γυναῖκες πολλαὶ ἀπὸ μακρόθεν θεωροῦσαι, αἵτινες ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας διακονοῦσαι αὐτῷ· ἐν αἷς ἦν Μαρία ἡ Μαγδαληνή, καὶ Μαρία ἡ τοῦ Ἰακώβου καὶ Ἰωσῆ μήτηρ, καὶ ἡ μήτηρ τῶν υἱῶν Ζεβεδαίου. Ὀψίας δὲ γενομένης ἦλθεν ἄνθρωπος πλούσιος ἀπὸ Ἀριμαθαίας, τοὔνομα Ἰωσήφ, ὃς καὶ αὐτὸς ἐμαθήτευσε τῷ Ἰησοῦ· οὗτος προσελθὼν τῷ Πιλάτῳ ᾐτήσατο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ. τότε ὁ Πιλᾶτος ἐκέλευσεν ἀποδοθῆναι τὸ σῶμα. καὶ λαβὼν τὸ σῶμα ὁ Ἰωσὴφ ἐνετύλιξεν αὐτὸ σινδόνι καθαρᾷ, καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν τῷ καινῷ αὐτοῦ μνημείῳ ὃ ἐλατόμησεν ἐν τῇ πέτρᾳ, καὶ προσκυλίσας λίθον μέγαν τῇ θύρᾳ τοῦ μνημείου ἀπῆλθεν. Ἦν δὲ ἐκεῖ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ ἡ ἄλλη Μαρία, καθήμεναι ἀπέναντι τοῦ τάφου. Τῇ δὲ ἐπαύριον, ἥτις ἐστὶ μετὰ τὴν παρασκευήν, συνήχθησαν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι πρὸς Πιλᾶτον λέγοντες· κύριε, ἐμνήσθημεν ὅτι ἐκεῖνος ὁ πλάνος εἶπεν ἔτι ζῶν, μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἐγείρομαι. κέλευσον οὖν ἀσφαλισθῆναι τὸν τάφον ἕως τῆς τρίτης ἡμέρας, μήποτε ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νυκτὸς κλέψωσιν αὐτὸν καὶ εἴπωσι τῷ λαῷ, ἠγέρθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν· καὶ ἔσται ἡ

ἐσχάτη πλάνη χείρων τῆς πρώτης. ἔφη αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· ἔχετε κουστωδίαν· ὑπάγετε ἀσφαλίσασθε ὡς οἴδατε. οἱ δὲ πορευθέντες ἠσφαλίσαντο τὸν τάφον σφραγίσαντες τὸν λίθον μετὰ τῆς κουστωδίας.

# 28

Ὀψὲ δὲ σαββάτων, τῇ ἐπιφωσκούσῃ εἰς μίαν σαββάτων, ἦλθε Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ ἡ ἄλλη Μαρία θεωρῆσαι τὸν τάφον. καὶ ἰδοὺ σεισμὸς ἐγένετο μέγας· ἄγγελος γὰρ Κυρίου καταβὰς ἐξ οὐρανοῦ προσελθὼν ἀπεκύλισε τὸν λίθον ἀπὸ τῆς θύρας καὶ ἐκάθητο ἐπάνω αὐτοῦ. ἦν δὲ ἡ ἰδέα αὐτοῦ ὡς ἀστραπὴ καὶ τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ λευκὸν ὡσεὶ χιών. ἀπὸ δὲ τοῦ φόβου αὐτοῦ ἐσείσθησαν οἱ τηροῦντες καὶ ἐγένοντο ὡσεὶ νεκροί. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἄγγελος εἶπε ταῖς γυναιξί· μὴ φοβεῖσθε ὑμεῖς· οἶδα γὰρ ὅτι Ἰησοῦν τὸν ἐσταυρωμένον ζητεῖτε· οὐκ ἔστιν ὧδε· ἠγέρθη γὰρ καθὼς εἶπε. δεῦτε ἴδετε τὸν τόπον ὅπου ἔκειτο ὁ Κύριος. καὶ ταχὺ πορευθεῖσαι εἴπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ὅτι ἠγέρθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν, καὶ ἰδοὺ προάγει ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε· ἰδοὺ εἶπον ὑμῖν. καὶ ἐξελθοῦσαι ταχὺ ἀπὸ τοῦ μνημείου μετὰ φόβου καὶ χαρᾶς μεγάλης ἔδραμον ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ. ὡς δὲ ἐπορεύοντο ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ Ἰησοῦς ἀπήντησεν αὐταῖς λέγων· χαίρετε. αἱ δὲ προσελθοῦσαι ἐκράτησαν αὐτοῦ τοὺς πόδας καὶ προσεκύνησαν αὐτῷ. τότε λέγει αὐταῖς ὁ Ἰησοῦς· μὴ φοβεῖσθε· ὑπάγετε ἀπαγγείλατε τοῖς ἀδελφοῖς μου ἵνα ἀπέλθωσιν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, κἀκεῖ με ὄψονται. Πορευομένων δὲ αὐτῶν ἰδού τινες τῆς

κουστωδίας ἐλθόντες εἰς τὴν πόλιν ἀπήγγειλαν τοῖς ἀρχιερεῦσιν ἅπαντα τὰ γενόμενα. καὶ συναχθέντες μετὰ τῶν πρεσβυτέρων συμβούλιόν τε λαβόντες ἀργύρια ἱκανὰ ἔδωκαν τοῖς στρατιώταις λέγοντες· εἴπατε ὅτι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νυκτὸς ἐλθόντες ἔκλεψαν αὐτὸν ἡμῶν κοιμωμένων. καὶ ἐὰν ἀκουσθῇ τοῦτο ἐπὶ τοῦ ἡγεμόνος, ἡμεῖς πείσομεν αὐτὸν καὶ ὑμᾶς ἀμερίμνους ποιήσομεν. οἱ δὲ λαβόντες τὰ ἀργύρια ἐποίησαν ὡς ἐδιδάχθησαν. καὶ διεφημίσθη ὁ λόγος οὗτος παρὰ Ἰουδαίοις μέχρι τῆς σήμερον. Οἱ δὲ ἕνδεκα μαθηταὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, εἰς τὸ ὄρος οὗ ἐτάξατο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς. καὶ ἰδόντες αὐτὸν προσεκύνησαν αὐτῷ, οἱ δὲ ἐδίστασαν. καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησεν αὐτοῖς λέγων· ἐδόθη μοι πᾶσα ἐξουσία ἐν οὐρανῷ καὶ ἐπὶ γῆς. πορευθέντες μαθητεύσατε πάντα τὰ ἔθνη, βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Πατρὸς καὶ τοῦ Υἱοῦ καὶ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος, διδάσκοντες αὐτοὺς τηρεῖν πάντα ὅσα ἐνετειλάμην ὑμῖν· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ μεθ᾽ ὑμῶν εἰμι πάσας τὰς ἡμέρας ἕως τῆς συντελείας τοῦ αἰῶνος. ἀμήν.

# ΚΑΤΑ ΜΑΡΚΟΝ

## 1

Ἀρχὴ τοῦ εὐαγγελίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, υἱοῦ τοῦ Θεοῦ . Ὡς γέγραπται ἐν τοῖς προφήταις, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου, ὃς κατασκευάσει τὴν ὁδόν σου ἔμπροσθέν σου· φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους αὐτοῦ, ἐγένετο Ἰωάννης βαπτίζων ἐν τῇ ἐρήμῳ καὶ κηρύσσων βάπτισμα μετανοίας εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν. καὶ ἐξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν πᾶσα ἡ Ἰουδαία χώρα καὶ οἱ Ἱεροσολυμῖται, καὶ ἐβαπτίζοντο πάντες ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ποταμῷ ὑπ᾽ αὐτοῦ ἐξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν. ἦν δὲ ὁ Ἰωάννης ἐνδεδυμένος τρίχας καμήλου καὶ ζώνην δερματίνην περὶ τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἐσθίων ἀκρίδας καὶ μέλι ἄγριον. καὶ ἐκήρυσσε λέγων· ἔρχεται ὁ ἰσχυρότερός μου ὀπίσω μου, οὗ οὐκ εἰμὶ ἱκανὸς κύψας λῦσαι τὸν ἱμάντα τῶν ὑποδημάτων αὐτοῦ. ἐγὼ μὲν ἐβάπτισα ὑμᾶς ἐν ὕδατι, αὐτὸς δὲ βαπτίσει ὑμᾶς ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ. Καὶ ἐγένετο ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ Ναζαρὲτ τῆς Γαλιλαίας καὶ ἐβαπτίσθη ὑπὸ Ἰωάννου εἰς τὸν Ἰορδάνην. καὶ εὐθέως ἀναβαίνων ἀπὸ τοῦ ὕδατος εἶδε σχιζομένους τοὺς

οὐρανοὺς καὶ τὸ Πνεῦμα ὡς περιστερὰν καταβαῖνον ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ φωνὴ ἐγένετο ἐκ τῶν οὐρανῶν· σὺ εἶ ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός, ἐν σοὶ ηὐδόκησα . Καὶ εὐθέως τὸ Πνεῦμα αὐτὸν ἐκβάλλει εἰς τὴν ἔρημον· καὶ ἦν ἐκεῖ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἡμέρας τεσσαράκοντα πειραζόμενος ὑπὸ τοῦ σατανᾶ, καὶ ἦν μετὰ τῶν θηρίων, καὶ οἱ ἄγγελοι διηκόνουν αὐτῷ. Μετὰ δὲ τὸ παραδοθῆναι Ἰωάννην ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν Γαλιλαίαν κηρύσσων τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ καὶ λέγων ὅτι πεπλήρωται ὁ καιρὸς καὶ ἤγγικεν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ· μετανοεῖτε καὶ πιστεύετε ἐν τῷ εὐαγγελίῳ. Περιπατῶν δὲ παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας εἶδε Σίμωνα καὶ Ἀνδρέαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τοῦ Σίμωνος, βάλλοντας ἀμφίβληστρον ἐν τῇ θαλάσσῃ· ἦσαν γὰρ ἁλιεῖς· καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· δεῦτε ὀπίσω μου, καὶ ποιήσω ὑμᾶς γενέσθαι ἁλιεῖς ἀνθρώπων. καὶ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα αὐτῶν ἠκολούθησαν αὐτῷ. Καὶ προβὰς ἐκεῖθεν ὀλίγον εἶδεν Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ζεβεδαίου καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ αὐτοὺς ἐν τῷ πλοίῳ καταρτίζοντας τὰ δίκτυα, καὶ εὐθέως ἐκάλεσεν αὐτούς. καὶ ἀφέντες τὸν πατέρα αὐτῶν Ζεβεδαῖον ἐν τῷ πλοίῳ μετὰ τῶν μισθωτῶν ἀπῆλθον ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ εἰσπορεύονται εἰς Καπερναούμ· καὶ εὐθέως τοῖς σάββασιν εἰσελθὼν εἰς τὴν συναγωγὴν ἐδίδασκε. καὶ ἐξεπλήσσοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ· ἦν γὰρ διδάσκων αὐτοὺς ὡς ἐξουσίαν ἔχων, καὶ οὐχ ὡς οἱ γραμματεῖς. Καὶ ἦν ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν ἄνθρωπος ἐν πνεύματι ἀκαθάρτῳ, καὶ ἀνέκραξε λέγων· ἔα, τί ἡμῖν καὶ σοί, Ἰησοῦ Ναζαρηνέ; ἦλθες ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά σε τίς εἶ, ὁ ἅγιος τοῦ Θεοῦ. καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς λέγων· φιμώθητι καὶ ἔξελθε ἐξ αὐτοῦ. καὶ σπαράξαν αὐτὸν τὸ πνεῦμα τὸ ἀκάθαρτον καὶ κράξαν φωνῇ μεγάλῃ ἐξῆλθεν ἐξ αὐτοῦ. καὶ ἐθαμβήθησαν πάντες, ὥστε συζητεῖν πρὸς ἑαυτοὺς λέγοντας· τί ἐστι τοῦτο; τίς ἡ διδαχὴ

ἡ καινὴ αὕτη, ὅτι κατ᾽ ἐξουσίαν καὶ τοῖς πνεύμασι τοῖς ἀκαθάρτοις ἐπιτάσσει, καὶ ὑπακούουσιν αὐτῷ; καὶ ἐξῆλθεν ἡ ἀκοὴ αὐτοῦ εὐθὺς εἰς ὅλην τὴν περίχωρον τῆς Γαλιλαίας. Καὶ εὐθέως ἐκ τῆς συναγωγῆς ἐξελθόντες ἦλθον εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος καὶ Ἀνδρέου μετὰ Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου. ἡ δὲ πενθερὰ Σίμωνος κατέκειτο πυρέσσουσα. καὶ εὐθέως λέγουσιν αὐτῷ περὶ αὐτῆς. καὶ προσελθὼν ἤγειρεν αὐτὴν κρατήσας τῆς χειρὸς αὐτῆς, καὶ ἀφῆκεν αὐτὴν ὁ πυρετὸς εὐθέως, καὶ διηκόνει αὐτοῖς. Ὀψίας δὲ γενομένης, ὅτε ἔδυ ὁ ἥλιος, ἔφερον πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας καὶ τοὺς δαιμονιζομένους. καὶ ἦν ἡ πόλις ὅλη ἐπισυνηγμένη πρὸς τὴν θύραν· καὶ ἐθεράπευσε πολλοὺς κακῶς ἔχοντας ποικίλαις νόσοις, καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέβαλε, καὶ οὐκ ἤφιε λαλεῖν τὰ δαιμόνια, ὅτι ᾔδεισαν αὐτὸν Χριστὸν εἶναι. Καὶ πρωῒ ἔννυχα λίαν ἀναστὰς ἐξῆλθε καὶ ἀπῆλθεν εἰς ἔρημον τόπον, κἀκεῖ προσηύχετο. καὶ κατεδίωξαν αὐτὸν ὁ Σίμων καὶ οἱ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ εὑρόντες αὐτὸν λέγουσιν αὐτῷ ὅτι πάντες σε ζητοῦσι. καὶ λέγει αὐτοῖς· ἄγωμεν εἰς τὰς ἐχομένας κωμοπόλεις, ἵνα καὶ ἐκεῖ κηρύξω· εἰς τοῦτο γὰρ ἐξελήλυθα. καὶ ἦν κηρύσσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν εἰς ὅλην τὴν Γαλιλαίαν καὶ τὰ δαιμόνια ἐκβάλλων. Καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτὸν λεπρὸς παρακαλῶν αὐτὸν καὶ γονυπετῶν αὐτὸν καὶ λέγων αὐτῷ ὅτι ἐὰν θέλῃς, δύνασαί με καθαρίσαι. ὁ δὲ Ἰησοῦς σπλαγχνισθείς, ἐκτείνας τὴν χεῖρα ἥψατο αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτῷ· θέλω, καθαρίσθητι. καὶ εἰπόντος αὐτοῦ εὐθέως ἀπῆλθεν ἀπ᾽ αὐτοῦ ἡ λέπρα, καὶ ἐκαθαρίσθη. καὶ ἐμβριμησάμενος αὐτῷ εὐθέως ἐξέβαλεν αὐτὸν καὶ λέγει αὐτῷ· ὅρα μηδενὶ μηδὲν εἴπῃς, ἀλλ᾽ ὕπαγε σεαυτὸν δεῖξον τῷ ἱερεῖ καὶ προσένεγκε περὶ τοῦ καθαρισμοῦ σου ἃ προσέταξε Μωϋσῆς εἰς μαρτύριον αὐτοῖς. ὁ δὲ ἐξελθὼν ἤρξατο κηρύσσειν πολλὰ καὶ διαφημίζειν τὸν λόγον, ὥστε

μηκέτι αὐτὸν δύνασθαι φανερῶς εἰς πόλιν εἰσελθεῖν, ἀλλ᾽ ἔξω ἐν ἐρήμοις τόποις ἦν· καὶ ἤρχοντο πρὸς αὐτὸν πανταχόθεν.

# 2

Καὶ εἰσῆλθε πάλιν εἰς Καπερναοὺμ δι᾽ ἡμερῶν καὶ ἠκούσθη ὅτι εἰς οἶκόν ἐστι. καὶ εὐθέως συνήχθησαν πολλοί, ὥστε μηκέτι χωρεῖν μηδὲ τὰ πρὸς τὴν θύραν· καὶ ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον. καὶ ἔρχονται πρὸς αὐτὸν παραλυτικὸν φέροντες, αἰρόμενον ὑπὸ τεσσάρων· καὶ μὴ δυνάμενοι προσεγγίσαι αὐτῷ διὰ τὸν ὄχλον, ἀπεστέγασαν τὴν στέγην ὅπου ἦν, καὶ ἐξορύξαντες χαλῶσι τὸν κράβαττον, ἐφ᾽ ᾧ ὁ παραλυτικὸς κατέκειτο. ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν πίστιν αὐτῶν λέγει τῷ παραλυτικῷ· τέκνον, ἀφέωνταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου. ἦσαν δέ τινες τῶν γραμματέων ἐκεῖ καθήμενοι καὶ διαλογιζόμενοι ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν· τί οὗτος οὕτω λαλεῖ βλασφημίας; τίς δύναται ἀφιέναι ἁμαρτίας εἰ μὴ εἷς ὁ Θεός; καὶ εὐθέως ἐπιγνοὺς ὁ Ἰησοῦς τῷ πνεύματι αὐτοῦ ὅτι οὕτως αὐτοὶ διαλογίζονται ἐν ἑαυτοῖς, εἶπεν αὐτοῖς· τί ταῦτα διαλογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν; τί ἐστιν εὐκοπώτερον, εἰπεῖν τῷ παραλυτικῷ, ἀφέωνταί σου αἱ ἁμαρτίαι, ἢ εἰπεῖν, ἔγειρε καὶ ἆρον τὸν κράβαττόν σου καὶ περιπάτει; ἵνα δὲ εἰδῆτε ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀφιέναι ἐπὶ τῆς γῆς ἁμαρτίας λέγει τῷ παραλυτικῷ· σοὶ λέγω, ἔγειρε καὶ ἆρον τὸν κράβαττόν σου καὶ ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου. καὶ ἠγέρθη εὐθέως, καὶ ἄρας τὸν κράβαττον ἐξῆλθεν ἐναντίον πάντων, ὥστε ἐξίστασθαι πάντας καὶ δοξάζειν τὸν Θεὸν λέγοντας ὅτι οὐδέποτε οὕτως εἴδομεν. Καὶ ἐξῆλθε πάλιν παρὰ τὴν θάλασσαν· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἤρχετο πρὸς αὐτόν, καὶ ἐδίδασκεν αὐτούς. Καὶ παράγων

εἶδε Λευῒν τὸν τοῦ Ἀλφαίου, καθήμενον ἐπὶ τὸ τελώνιον, καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκολούθει μοι. καὶ ἀναστὰς ἠκολούθησεν αὐτῷ. καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κατακεῖσθαι αὐτὸν ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ, καὶ πολλοὶ τελῶναι καὶ ἁμαρτωλοὶ συνανέκειντο τῷ Ἰησοῦ καὶ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· ἦσαν γὰρ πολλοί, καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ. καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἰδόντες αὐτὸν ἐσθίοντα μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἔλεγον τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· τί ὅτι μετὰ τῶν τελωνῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐσθίει καὶ πίνει; καὶ ἀκούσας ὁ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· οὐ χρείαν ἔχουσιν οἱ ἰσχύοντες ἰατροῦ, ἀλλ᾽ οἱ κακῶς ἔχοντες· οὐκ ἦλθον καλέσαι δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλοὺς εἰς μετάνοιαν. Καὶ ἦσαν οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου καὶ οἱ τῶν Φαρισαίων νηστεύοντες. καὶ ἔρχονται καὶ λέγουσιν αὐτῷ· διατί οἱ μαθηταὶ Ἰωάννου καὶ οἱ τῶν Φαρισαίων νηστεύουσιν, οἱ δὲ σοὶ μαθηταὶ οὐ νηστεύουσι; καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· μὴ δύνανται οἱ υἱοὶ τοῦ νυμφῶνος, ἐν ᾧ ὁ νυμφίος μετ᾽ αὐτῶν ἐστι, νηστεύειν; ὅσον χρόνον μεθ᾽ ἑαυτῶν ἔχουσι τὸν νυμφίον, οὐ δύνανται νηστεύειν. ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ᾽ αὐτῶν ὁ νυμφίος, καὶ τότε νηστεύσουσιν ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις. οὐδεὶς ἐπίβλημα ῥάκους ἀγνάφου ἐπιρράπτει ἐπὶ ἱματίῳ παλαιῷ· εἰ δὲ μήγε, αἴρει τὸ πλήρωμα αὐτοῦ, τὸ καινὸν τοῦ παλαιοῦ, καὶ χεῖρον σχίσμα γίνεται. καὶ οὐδεὶς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς παλαιούς· εἰ δὲ μή, ῥήσσει ὁ οἶνος ὁ νέος τοὺς ἀσκούς, καὶ ὁ οἶνος ἐκχεῖται καὶ οἱ ἀσκοὶ ἀπολοῦνται· ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκοὺς καινοὺς βλητέον. Καὶ ἐγένετο παραπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν τοῖς σάββασι διὰ τῶν σπορίμων, καὶ ἤρξαντο οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὁδὸν ποιεῖν τίλλοντες τοὺς στάχυας. καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἔλεγον αὐτῷ· ἴδε τί ποιοῦσιν ἐν τοῖς σάββασιν ὃ οὐκ ἔξεστι. καὶ αὐτὸς ἔλεγεν αὐτοῖς· οὐδέποτε ἀνέγνωτε τί ἐποίησε Δαυῒδ ὅτε χρείαν ἔσχε καὶ ἐπείνασεν αὐτὸς

καὶ οἱ μετ᾽ αὐτοῦ; πῶς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐπὶ Ἀβιάθαρ ἀρχιερέως καὶ τοὺς ἄρτους τῆς προθέσεως ἔφαγεν, οὓς οὐκ ἔξεστι φαγεῖν εἰ μὴ τοῖς ἱερεῦσι, καὶ ἔδωκε καὶ τοῖς σὺν αὐτῷ οὖσι; καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· τὸ σάββατον διὰ τὸν ἄνθρωπον ἐγένετο, οὐχ ὁ ἄνθρωπος διὰ τὸ σάββατον· ὥστε κύριός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καὶ τοῦ σαββάτου.

# 3

Καὶ εἰσῆλθε πάλιν εἰς τὴν συναγωγήν· καὶ ἦν ἐκεῖ ἄνθρωπος ἐξηραμμένην ἔχων τὴν χεῖρα. καὶ παρετήρουν αὐτὸν εἰ τοῖς σάββασι θεραπεύσει αὐτόν, ἵνα κατηγορήσωσιν αὐτοῦ. καὶ λέγει τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἐξηραμμένην ἔχοντι τὴν χεῖρα· ἔγειρε εἰς τὸ μέσον. καὶ λέγει αὐτοῖς· ἔξεστι τοῖς σάββασιν ἀγαθοποιῆσαι ἢ κακοποιῆσαι; ψυχὴν σῶσαι ἢ ἀποκτεῖναι; οἱ δὲ ἐσιώπων. καὶ περιβλεψάμενος αὐτοὺς μετ᾽ ὀργῆς, συλλυπούμενος ἐπὶ τῇ πωρώσει τῆς καρδίας αὐτῶν, λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου. καὶ ἐξέτεινε, καὶ ἀποκατεστάθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ ὑγιὴς ὡς ἡ ἄλλη. καὶ ἐξελθόντες οἱ Φαρισαῖοι εὐθέως μετὰ τῶν Ἡρῳδιανῶν συμβούλιον ἐποίουν κατ᾽ αὐτοῦ, ὅπως αὐτὸν ἀπολέσωσι. Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησε μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς τὴν θάλασσαν· καὶ πολὺ πλῆθος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἠκολούθησαν αὐτῷ, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας καὶ ἀπὸ Ἱεροσολύμων καὶ ἀπὸ τῆς Ἰδουμαίας καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου καὶ οἱ περὶ Τύρον καὶ Σιδῶνα, πλῆθος πολύ, ἀκούσαντες ὅσα ἐποίει, ἦλθον πρὸς αὐτόν. καὶ εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα πλοιάριον προσκαρτερῇ αὐτῷ διὰ τὸν ὄχλον, ἵνα μὴ θλίβωσιν αὐτόν· πολλοὺς γὰρ ἐθεράπευσεν, ὥστε ἐπιπίπτειν αὐτῷ

ἵνα αὐτοῦ ἅψωνται ὅσοι εἶχον μάστιγας· καὶ τὰ πνεύματα τὰ ἀκάθαρτα, ὅταν αὐτὸν ἐθεώρουν, προσέπιπτον αὐτῷ καὶ ἔκραζον λέγοντα ὅτι σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ. καὶ πολλὰ ἐπετίμα αὐτοῖς ἵνα μὴ φανερὸν αὐτὸν ποιήσωσι. Καὶ ἀναβαίνει εἰς τὸ ὄρος, καὶ προσκαλεῖται οὓς ἤθελεν αὐτός, καὶ ἀπῆλθον πρὸς αὐτόν. καὶ ἐποίησε δώδεκα, ἵνα ὦσι μετ᾽ αὐτοῦ καὶ ἵνα ἀποστέλλῃ αὐτοὺς κηρύσσειν καὶ ἔχειν ἐξουσίαν θεραπεύειν τὰς νόσους καὶ ἐκβάλλειν τὰ δαιμόνια· καὶ ἐπέθηκεν ὄνομα τῷ Σίμωνι Πέτρον, καὶ Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ζεβεδαίου καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἰακώβου· καὶ ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὀνόματα Βοανεργές, ὅ ἐστιν υἱοὶ βροντῆς· καὶ Ἀνδρέαν καὶ Φίλιππον καὶ Βαρθολομαῖον καὶ Ματθαῖον καὶ Θωμᾶν καὶ Ἰάκωβον τὸν τοῦ Ἀλφαίου καὶ Θαδδαῖον καὶ Σίμωνα τὸν Κανανίτην καὶ Ἰούδαν Ἰσκαριώτην, ὃς καὶ παρέδωκεν αὐτόν. Καὶ ἔρχονται εἰς οἶκον· καὶ συνέρχεται πάλιν ὄχλος, ὥστε μὴ δύνασθαι αὐτοὺς μηδὲ ἄρτον φαγεῖν. καὶ ἀκούσαντες οἱ παρ᾽ αὐτοῦ ἐξῆλθον κρατῆσαι αὐτόν· ἔλεγον γὰρ ὅτι ἐξέστη. καὶ οἱ γραμματεῖς οἱ ἀπὸ Ἱεροσολύμων καταβάντες ἔλεγον ὅτι Βεελζεβοὺλ ἔχει, καὶ ὅτι ἐν τῷ ἄρχοντι τῶν δαιμονίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια. καὶ προσκαλεσάμενος αὐτοὺς ἐν παραβολαῖς ἔλεγεν αὐτοῖς· πῶς δύναται σατανᾶς σατανᾶν ἐκβάλλειν; καὶ ἐὰν βασιλεία ἐφ᾽ ἑαυτὴν μερισθῇ, οὐ δύναται σταθῆναι ἡ βασιλεία ἐκείνη· καὶ ἐὰν οἰκία ἐφ᾽ ἑαυτὴν μερισθῇ, οὐ δύναται σταθῆναι ἡ οἰκία ἐκείνη. καὶ εἰ ὁ σατανᾶς ἀνέστη ἐφ᾽ ἑαυτὸν καὶ μεμέρισται, οὐ δύναται σταθῆναι, ἀλλὰ τέλος ἔχει. οὐδεὶς δύναται τὰ σκεύη τοῦ ἰσχυροῦ εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ διαρπάσαι, ἐὰν μὴ πρῶτον τὸν ἰσχυρὸν δήσῃ, καὶ τότε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ διαρπάσει. Ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι πάντα ἀφεθήσεται τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων τὰ ἁμαρτήματα καὶ αἱ βλασφημίαι ὅσας ἐὰν βλασφημήσωσιν· ὃς δ᾽ ἂν βλασφημήσῃ εἰς

τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, οὐκ ἔχει ἄφεσιν εἰς τὸν αἰῶνα, ἀλλ᾽ ἔνοχός ἐστιν αἰωνίου κρίσεως· ὅτι ἔλεγον, πνεῦμα ἀκάθαρτον ἔχει. Ἔρχονται οὖν ἡ μήτηρ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ἔξω ἑστῶτες ἀπέστειλαν πρὸς αὐτὸν φωνοῦντες αὐτόν. καὶ ἐκάθητο περὶ αὐτὸν ὄχλος· εἶπον δὲ αὐτῷ· ἰδοὺ ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἔξω ζητοῦσί σε. καὶ ἀπεκρίθη αὐτοῖς λέγων· τίς ἐστιν ἡ μήτηρ μου ἢ οἱ ἀδελφοί μου; καὶ περιβλεψάμενος κύκλῳ τοὺς περὶ αὐτὸν καθημένους λέγει· ἴδε ἡ μήτηρ μου καὶ οἱ ἀδελφοί μου· ὃς γὰρ ἂν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, οὗτος ἀδελφός μου καὶ ἀδελφή μου καὶ μήτηρ ἐστί.

# 4

Καὶ πάλιν ἤρξατο διδάσκειν παρὰ τὴν θάλασσαν· καὶ συνήχθη πρὸς αὐτὸν ὄχλος πολύς, ὥστε αὐτὸν ἐμβάντα εἰς τὸ πλοῖον καθῆσθαι ἐν τῇ θαλάσσῃ· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος πρὸς τὴν θάλασσαν ἐπὶ τῆς γῆς ἦσαν. καὶ ἐδίδασκεν αὐτοὺς ἐν παραβολαῖς πολλά, καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδαχῇ αὐτοῦ· ἀκούετε. ἰδοὺ ἐξῆλθεν ὁ σπείρων τοῦ σπεῖραι. καὶ ἐγένετο ἐν τῷ σπείρειν ὃ μὲν ἔπεσεν ἐπὶ τὴν ὁδόν, καὶ ἦλθον τὰ πετεινὰ καὶ κατέφαγεν αὐτό· καὶ ἄλλο ἔπεσεν ἐπὶ τὸ πετρῶδες, ὅπου οὐκ εἶχε γῆν πολλήν, καὶ εὐθέως ἐξανέτειλε διὰ τὸ μὴ ἔχειν βάθος γῆς, ἡλίου δὲ ἀνατείλαντος ἐκαυματίσθη, καὶ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ῥίζαν ἐξηράνθη· καὶ ἄλλο ἔπεσεν εἰς τὰς ἀκάνθας, καὶ ἀνέβησαν αἱ ἄκανθαι καὶ συνέπνιξαν αὐτό, καὶ καρπὸν οὐκ ἔδωκε· καὶ ἄλλο ἔπεσεν εἰς τὴν γῆν τὴν καλὴν καὶ ἐδίδου καρπὸν ἀναβαίνοντα καὶ αὐξάνοντα, καὶ ἔφερεν ἐν τριάκοντα καὶ ἐν ἑξήκοντα καὶ ἐν ἑκατόν. καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ὁ

ἔχων ὦτα ἀκούειν ἀκουέτω. Ὅτε δὲ ἐγένετο κατὰ μόνας, ἠρώτησαν αὐτὸν οἱ περὶ αὐτὸν σὺν τοῖς δώδεκα τὴν παραβολήν. καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ὑμῖν δέδοται γνῶναι τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ· ἐκείνοις δὲ τοῖς ἔξω ἐν παραβολαῖς τὰ πάντα γίνεται, ἵνα βλέποντες βλέπωσι καὶ μὴ ἴδωσι, καὶ ἀκούοντες ἀκούωσι καὶ μὴ συνιῶσι, μήποτε ἐπιστρέψωσι καὶ ἀφεθῇ αὐτοῖς τὰ ἁμαρτήματα. καὶ λέγει αὐτοῖς· οὐκ οἴδατε τὴν παραβολὴν ταύτην, καὶ πῶς πάσας τὰς παραβολὰς γνώσεσθε; ὁ σπείρων τὸν λόγον σπείρει. οὗτοι δέ εἰσιν οἱ παρὰ τὴν ὁδὸν ὅπου σπείρεται ὁ λόγος, καὶ ὅταν ἀκούσωσιν, εὐθὺς ἔρχεται ὁ σατανᾶς καὶ αἴρει τὸν λόγον τὸν ἐσπαρμένον ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν. καὶ οὗτοι ὁμοίως εἰσὶν οἱ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπειρόμενοι, οἳ ὅταν ἀκούσωσι τὸν λόγον, εὐθὺς μετὰ χαρᾶς λαμβάνουσιν αὐτόν, καὶ οὐκ ἔχουσι ῥίζαν ἐν ἑαυτοῖς, ἀλλὰ πρόσκαιροί εἰσιν· εἶτα γενομένης θλίψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὸν λόγον, εὐθὺς σκανδαλίζονται. καὶ οὗτοί εἰσιν οἱ εἰς τὰς ἀκάνθας σπειρόμενοι, οἱ τὸν λόγον ἀκούοντες, καὶ αἱ μέριμναι τοῦ αἰῶνος τούτου καὶ ἡ ἀπάτη τοῦ πλούτου καὶ αἱ περὶ τὰ λοιπὰ ἐπιθυμίαι εἰσπορευόμεναι συμπνίγουσι τὸν λόγον, καὶ ἄκαρπος γίνεται. καὶ οὗτοί εἰσιν οἱ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν καλὴν σπαρέντες, οἵτινες ἀκούουσι τὸν λόγον καὶ παραδέχονται, καὶ καρποφοροῦσιν ἐν τριάκοντα καὶ ἐν ἑξήκοντα καὶ ἐν ἑκατόν. Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· μήτι ἔρχεται ὁ λύχνος ἵνα ὑπὸ τὸν μόδιον τεθῇ ἢ ὑπὸ τὴν κλίνην; οὐχ ἵνα ἐπὶ τὴν λυχνίαν ἐπιτεθῇ; οὐ γάρ ἐστι κρυπτὸν ὃ ἐὰν μὴ φανερωθῇ, οὐδὲ ἐγένετο ἀπόκρυφον ἀλλ᾽ ἵνα ἔλθῃ εἰς φανερόν. εἴ τις ἔχει ὦτα ἀκούειν, ἀκουέτω. Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· βλέπετε τί ἀκούετε. ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε, μετρηθήσεται ὑμῖν, καὶ προστεθήσεται ὑμῖν τοῖς ἀκούουσιν. ὃς γὰρ ἂν ἔχῃ, δοθήσεται αὐτῷ· καὶ ὃς οὐκ ἔχει, καὶ ὃ ἔχει ἀρθήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἔλεγεν· οὕτως ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ

Θεοῦ, ὡς ἂν ἄνθρωπος βάλῃ τὸν σπόρον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ καθεύδῃ καὶ ἐγείρηται νύκτα καὶ ἡμέραν, καὶ ὁ σπόρος βλαστάνῃ καὶ μηκύνηται ὡς οὐκ οἶδεν αὐτός. αὐτομάτη γὰρ ἡ γῆ καρποφορεῖ, πρῶτον χόρτον, εἶτα στάχυν, εἶτα πλήρη σῖτον ἐν τῷ στάχυϊ. ὅταν δὲ παραδῷ ὁ καρπός, εὐθέως ἀποστέλλει τὸ δρέπανον, ὅτι παρέστηκεν ὁ θερισμός. Καὶ ἔλεγε· πῶς ὁμοιώσωμεν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ; ἢ ἐν τίνι παραβολῇ παραβάλωμεν αὐτήν; ὡς κόκκον σινάπεως, ὃς ὅταν σπαρῇ ἐπὶ τῆς γῆς, μικρότερος πάντων τῶν σπερμάτων ἐστὶ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ὅταν σπαρῇ, ἀναβαίνει καὶ γίνεται μείζων πάντων τῶν λαχάνων, καὶ ποιεῖ κλάδους μεγάλους, ὥστε δύνασθαι ὑπὸ τὴν σκιὰν αὐτοῦ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνοῦν. Καὶ τοιαύταις παραβολαῖς πολλαῖς ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον, καθὼς ἠδύναντο ἀκούειν, χωρὶς δὲ παραβολῆς οὐκ ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον· κατ᾽ ἰδίαν δὲ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἐπέλυε πάντα. Καὶ λέγει αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὀψίας γενομένης· διέλθωμεν εἰς τὸ πέραν. καὶ ἀφέντες τὸν ὄχλον παραλαμβάνουσιν αὐτὸν ὡς ἦν ἐν τῷ πλοίῳ· καὶ ἄλλα δὲ πλοῖα ἦν μετ᾽ αὐτοῦ. καὶ γίνεται λαῖλαψ ἀνέμου μεγάλη, τὰ δὲ κύματα ἐπέβαλλεν εἰς τὸ πλοῖον, ὥστε ἤδη αὐτὸ βυθίζεσθαι. καὶ ἦν αὐτὸς ἐπὶ τῇ πρύμνῃ ἐπὶ τὸ προσκεφάλαιον καθεύδων· καὶ διεγείρουσιν αὐτὸν καὶ λέγουσιν αὐτῷ· διδάσκαλε, οὐ μέλει σοι ὅτι ἀπολλύμεθα; καὶ διεγερθεὶς ἐπετίμησε τῷ ἀνέμῳ καὶ εἶπε τῇ θαλάσσῃ· σιώπα, πεφίμωσο. καὶ ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος, καὶ ἐγένετο γαλήνη μεγάλη. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· τί δειλοί ἐστε οὕτω; πῶς οὐκ ἔχετε πίστιν; καὶ ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν καὶ ἔλεγον πρὸς ἀλλήλους· τίς ἄρα οὗτός ἐστιν, ὅτι καὶ ὁ ἄνεμος καὶ ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ;

# 5

Καὶ ἦλθον εἰς τὸ πέραν τῆς θαλάσσης εἰς τὴν χώραν τῶν Γεργεσηνῶν. καὶ ἐξελθόντος αὐτοῦ ἐκ τοῦ πλοίου εὐθέως ἀπήντησεν αὐτῷ ἐκ τῶν μνημείων ἄνθρωπος ἐν πνεύματι ἀκαθάρτῳ, ὃς τὴν κατοίκησιν εἶχεν ἐν τοῖς μνήμασι, καὶ οὔτε ἁλύσεσιν οὐδεὶς ἠδύνατο αὐτὸν δῆσαι, διὰ τὸ αὐτὸν πολλάκις πέδαις καὶ ἁλύσεσι δεδέσθαι, καὶ διεσπάσθαι ὑπ᾽ αὐτοῦ τὰς ἁλύσεις καὶ τὰς πέδας συντετρῖφθαι, καὶ οὐδεὶς ἴσχυεν αὐτὸν δαμάσαι· καὶ διὰ παντὸς νυκτὸς καὶ ἡμέρας ἐν τοῖς μνήμασι καὶ ἐν τοῖς ὄρεσιν ἦν κράζων καὶ κατακόπτων ἑαυτὸν λίθοις. ἰδὼν δὲ τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ μακρόθεν ἔδραμε καὶ προσεκύνησεν αὐτόν, καὶ κράξας φωνῇ μεγάλῃ λέγει· τί ἐμοὶ καὶ σοί, Ἰησοῦ, υἱὲ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου; ὁρκίζω σε τὸν Θεόν, μή με βασανίσῃς. ἔλεγε γὰρ αὐτῷ· ἔξελθε τὸ πνεῦμα τὸ ἀκάθαρτον ἐκ τοῦ ἀνθρώπου. καὶ ἐπηρώτα αὐτόν· τί ὄνομά σοι; καὶ ἀπεκρίθη λέγων· λεγεὼν ὄνομά μοι, ὅτι πολλοί ἐσμεν. καὶ παρεκάλει αὐτὸν πολλὰ ἵνα μὴ ἀποστείλῃ αὐτοὺς ἔξω τῆς χώρας. ἦν δὲ ἐκεῖ ἀγέλη χοίρων μεγάλη βοσκομένη πρὸς τῷ ὄρει· καὶ παρεκάλεσαν αὐτὸν πάντες οἱ δαίμονες λέγοντες· πέμψον ἡμᾶς εἰς τοὺς χοίρους, ἵνα εἰς αὐτοὺς εἰσέλθωμεν. καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς εὐθέως ὁ Ἰησοῦς. καὶ ἐξελθόντα τὰ πνεύματα τὰ ἀκάθαρτα εἰσῆλθον εἰς τοὺς χοίρους· καὶ ὥρμησεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνοῦ εἰς τὴν θάλασσαν· ἦσαν δὲ ὡς δισχίλιοι· καὶ ἐπνίγοντο ἐν τῇ θαλάσσῃ. καὶ οἱ βόσκοντες τοὺς χοίρους ἔφυγον καὶ ἀπήγγειλαν εἰς τὴν πόλιν καὶ εἰς τοὺς ἀγρούς· καὶ ἐξῆλθον ἰδεῖν τί ἐστι τὸ γεγονός. καὶ ἔρχονται πρὸς τὸν Ἰησοῦν, καὶ θεωροῦσι τὸν δαιμονιζόμενον καθήμενον καὶ ἱματισμένον καὶ

σωφρονοῦντα, τὸν ἐσχηκότα τὸν λεγεῶνα, καὶ ἐφοβήθησαν. καὶ διηγήσαντο αὐτοῖς οἱ ἰδόντες πῶς ἐγένετο τῷ δαιμονιζομένῳ καὶ περὶ τῶν χοίρων. καὶ ἤρξαντο παρακαλεῖν αὐτὸν ἀπελθεῖν ἀπὸ τῶν ὁρίων αὐτῶν. καὶ ἐμβαίνοντος αὐτοῦ εἰς τὸ πλοῖον παρεκάλει αὐτὸν ὁ δαιμονισθεὶς ἵνα μετ᾽ αὐτοῦ ᾖ. καὶ οὐκ ἀφῆκεν αὐτόν, ἀλλὰ λέγει αὐτῷ· ὕπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου πρὸς τοὺς σοὺς καὶ ἀνάγγειλον αὐτοῖς ὅσα σοι ὁ Κύριος πεποίηκε καὶ ἠλέησέ σε. καὶ ἀπῆλθε καὶ ἤρξατο κηρύσσειν ἐν τῇ Δεκαπόλει ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, καὶ πάντες ἐθαύμαζον. Καὶ διαπεράσαντος τοῦ Ἰησοῦ ἐν τῷ πλοίῳ πάλιν εἰς τὸ πέραν συνήχθη ὄχλος πολὺς ἐπ᾽ αὐτόν, καὶ ἦν παρὰ τὴν θάλασσαν. Καὶ ἔρχεται εἷς τῶν ἀρχισυναγώγων, ὀνόματι Ἰάειρος, καὶ ἰδὼν αὐτὸν πίπτει πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ καὶ παρεκάλει αὐτὸν πολλά, λέγων ὅτι τὸ θυγάτριόν μου ἐσχάτως ἔχει, ἵνα ἐλθὼν ἐπιθῇς αὐτῇ τὰς χεῖρας, ὅπως σωθῇ καὶ ζήσεται. καὶ ἀπῆλθε μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἠκολούθει αὐτῷ ὄχλος πολύς, καὶ συνέθλιβον αὐτόν. Καὶ γυνή τις οὖσα ἐν ῥύσει αἵματος ἔτη δώδεκα, καὶ πολλὰ παθοῦσα ὑπὸ πολλῶν ἰατρῶν καὶ δαπανήσασα τὰ παρ᾽ ἑαυτῆς πάντα, καὶ μηδὲν ὠφεληθεῖσα, ἀλλὰ μᾶλλον εἰς τὸ χεῖρον ἐλθοῦσα, ἀκούσασα περὶ τοῦ Ἰησοῦ, ἐλθοῦσα ἐν τῷ ὄχλῳ ὄπισθεν ἥψατο τοῦ ἱματίου αὐτοῦ· ἔλεγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ ὅτι ἐὰν ἅψωμαι κἂν τῶν ἱματίων αὐτοῦ, σωθήσομαι. καὶ εὐθέως ἐξηράνθη ἡ πηγὴ τοῦ αἵματος αὐτῆς, καὶ ἔγνω τῷ σώματι ὅτι ἴαται ἀπὸ τῆς μάστιγος. καὶ εὐθέως ὁ Ἰησοῦς ἐπιγνοὺς ἐν ἑαυτῷ τὴν ἐξ αὐτοῦ δύναμιν ἐξελθοῦσαν, ἐπιστραφεὶς ἐν τῷ ὄχλῳ ἔλεγε· τίς μου ἥψατο τῶν ἱματίων; καὶ ἔλεγον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· βλέπεις τὸν ὄχλον συνθλίβοντά σε, καὶ λέγεις τίς μου ἥψατο; καὶ περιεβλέπετο ἰδεῖν τὴν τοῦτο ποιήσασαν. ἡ δὲ γυνὴ φοβηθεῖσα καὶ τρέμουσα, εἰδυῖα ὃ γέγονεν ἐπ᾽ αὐτῇ, ἦλθε καὶ προσέπεσεν αὐτῷ καὶ εἶπεν αὐτῷ

πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν. ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· θύγατερ, ἡ πίστις σου σέσωκέ σε· ὕπαγε εἰς εἰρήνην, καὶ ἴσθι ὑγιὴς ἀπὸ τῆς μάστιγός σου. Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος ἔρχονται ἀπὸ τοῦ ἀρχισυναγώγου λέγοντες ὅτι ἡ θυγάτηρ σου ἀπέθανε· τί ἔτι σκύλλεις τὸν διδάσκαλον; ὁ δὲ Ἰησοῦς εὐθέως ἀκούσας τὸν λόγον λαλούμενον λέγει τῷ ἀρχισυναγώγῳ· μὴ φοβοῦ, μόνον πίστευε. καὶ οὐκ ἀφῆκεν αὐτῷ οὐδένα συνακολουθῆσαι εἰ μὴ Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν Ἰακώβου. καὶ ἔρχεται εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀρχισυναγώγου, καὶ θεωρεῖ θόρυβον, καὶ κλαίοντας καὶ ἀλαλάζοντας πολλά, καὶ εἰσελθὼν λέγει αὐτοῖς· τί θορυβεῖσθε καὶ κλαίετε; τὸ παιδίον οὐκ ἀπέθανεν, ἀλλὰ καθεύδει. καὶ κατεγέλων αὐτοῦ. ὁ δὲ ἐκβαλὼν πάντας παραλαμβάνει τὸν πατέρα τοῦ παιδίου καὶ τὴν μητέρα καὶ τοὺς μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ εἰσπορεύεται ὅπου ἦν τὸ παιδίον ἀνακείμενον, καὶ κρατήσας τῆς χειρὸς τοῦ παιδίου λέγει αὐτῇ· ταλιθά, κοῦμι· ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον, τὸ κοράσιον, σοὶ λέγω, ἔγειρε. καὶ εὐθέως ἀνέστη τὸ κοράσιον καὶ περιεπάτει· ἦν γὰρ ἐτῶν δώδεκα. καὶ ἐξέστησαν ἐκστάσει μεγάλῃ. καὶ διεστείλατο αὐτοῖς πολλὰ ἵνα μηδεὶς γνῷ τοῦτο· καὶ εἶπε δοθῆναι αὐτῇ φαγεῖν.

# 6

Καὶ ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν καὶ ἦλθεν εἰς τὴν πατρίδα ἑαυτοῦ· καὶ ἀκολουθοῦσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ. καὶ γενομένου σαββάτου ἤρξατο ἐν τῇ συναγωγῇ διδάσκειν· καὶ πολλοὶ ἀκούοντες ἐξεπλήσσοντο λέγοντες· πόθεν τούτῳ ταῦτα; καὶ τίς ἡ σοφία ἡ δοθεῖσα αὐτῷ, καὶ δυνάμεις τοιαῦται διὰ τῶν χειρῶν αὐτοῦ

γίνονται; οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ τέκτων, ὁ υἱὸς τῆς Μαρίας, ἀδελφὸς δὲ Ἰακώβου καὶ Ἰωσῆ καὶ Ἰούδα καὶ Σίμωνος; καὶ οὐκ εἰσὶν αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ ὧδε πρὸς ἡμᾶς; καὶ ἐσκανδαλίζοντο ἐν αὐτῷ. ἔλεγε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς ὅτι οὐκ ἔστι προφήτης ἄτιμος εἰ μὴ ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ καὶ ἐν τοῖς συγγενέσι καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ. καὶ οὐκ ἠδύνατο ἐκεῖ οὐδεμίαν δύναμιν ποιῆσαι, εἰ μὴ ὀλίγοις ἀρρώστοις ἐπιθεὶς τὰς χεῖρας ἐθεράπευσε. καὶ ἐθαύμαζε διὰ τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν. Καὶ περιῆγε τὰς κώμας κύκλῳ διδάσκων. Καὶ προσκαλεῖται τοὺς δώδεκα, καὶ ἤρξατο αὐτοὺς ἀποστέλλειν δύο δύο, καὶ ἐδίδου αὐτοῖς ἐξουσίαν τῶν πνευμάτων τῶν ἀκαθάρτων, καὶ παρήγγειλεν αὐτοῖς ἵνα μηδὲν αἴρωσιν εἰς ὁδὸν εἰ μὴ ῥάβδον μόνον, μὴ πήραν, μὴ ἄρτον, μὴ εἰς τὴν ζώνην χαλκόν, ἀλλ᾽ ὑποδεδεμένους σανδάλια, καὶ μὴ ἐνδεδύσθαι δύο χιτῶνας. καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ὅπου ἐὰν εἰσέλθητε εἰς οἰκίαν, ἐκεῖ μένετε ἕως ἂν ἐξέλθητε ἐκεῖθεν· καὶ ὅσοι ἐὰν μὴ δέξωνται ὑμᾶς μηδὲ ἀκούσωσιν ὑμῶν, ἐκπορευόμενοι ἐκεῖθεν ἐκτινάξατε τὸν χοῦν τὸν ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν εἰς μαρτύριον αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀνεκτότερον ἔσται Σοδόμοις ἢ Γομόρροις ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ. Καὶ ἐξελθόντες ἐκήρυσσον ἵνα μετανοήσωσι, καὶ δαιμόνια πολλὰ ἐξέβαλλον, καὶ ἤλειφον ἐλαίῳ πολλοὺς ἀρρώστους καὶ ἐθεράπευον. Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἡρῴδης· φανερὸν γὰρ ἐγένετο τὸ ὄνομα αὐτοῦ· καὶ ἔλεγεν ὅτι Ἰωάννης ὁ βαπτίζων ἐκ νεκρῶν ἠγέρθη, καὶ διὰ τοῦτο ἐνεργοῦσιν αἱ δυνάμεις ἐν αὐτῷ. ἄλλοι ἔλεγον ὅτι Ἠλίας ἐστίν· ἄλλοι δὲ ἔλεγον ὅτι προφήτης ἐστὶν ὡς εἷς τῶν προφητῶν. ἀκούσας δὲ ὁ Ἡρῴδης εἶπεν ὅτι ὃν ἐγὼ ἀπεκεφάλισα Ἰωάννην, οὗτός ἐστιν· αὐτὸς ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν. αὐτὸς γὰρ ὁ Ἡρῴδης ἀποστείλας ἐκράτησε τὸν Ἰωάννην καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν φυλακῇ διὰ Ἡρῳδιάδα τὴν γυναῖκα Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὅτι

αὐτὴν ἐγάμησεν. ἔλεγε γὰρ ὁ Ἰωάννης τῷ Ἡρῴδῃ ὅτι οὐκ ἔξεστί σοι ἔχειν τὴν γυναῖκα τοῦ ἀδελφοῦ σου. ἡ δὲ Ἡρῳδιὰς ἐνεῖχεν αὐτῷ καὶ ἤθελεν αὐτὸν ἀποκτεῖναι, καὶ οὐκ ἠδύνατο· ὁ γὰρ Ἡρῴδης ἐφοβεῖτο τὸν Ἰωάννην, εἰδὼς αὐτὸν ἄνδρα δίκαιον καὶ ἅγιον, καὶ συνετήρει αὐτόν, καὶ ἀκούσας αὐτοῦ πολλὰ ἐποίει καὶ ἡδέως αὐτοῦ ἤκουε. καὶ γενομένης ἡμέρας εὐκαίρου, ὅτε Ἡρῴδης τοῖς γενεσίοις αὐτοῦ δεῖπνον ἐποίει τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ καὶ τοῖς χιλιάρχοις καὶ τοῖς πρώτοις τῆς Γαλιλαίας, καὶ εἰσελθούσης τῆς θυγατρὸς αὐτῆς τῆς Ἡρῳδιάδος καὶ ὀρχησαμένης καὶ ἀρεσάσης τῷ Ἡρῴδῃ καὶ τοῖς συνανακειμένοις, εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ κορασίῳ· αἴτησόν με ὃ ἐὰν θέλῃς, καὶ δώσω σοι. καὶ ὤμοσεν αὐτῇ ὅτι ὃ ἐάν με αἰτήσῃς δώσω σοι, ἕως ἡμίσους τῆς βασιλείας μου. ἡ δὲ ἐξελθοῦσα εἶπε τῇ μητρὶ αὐτῆς· τί αἰτήσομαι; ἡ δὲ εἶπε· τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ. καὶ εἰσελθοῦσα εὐθέως μετὰ σπουδῆς πρὸς τὸν βασιλέα ᾐτήσατο λέγουσα· θέλω ἵνα μοι δῷς ἐξαυτῆς ἐπὶ πίνακι τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ βαπτιστοῦ. καὶ περίλυπος γενόμενος ὁ βασιλεύς, διὰ τοὺς ὅρκους καὶ τοὺς συνανακειμένους οὐκ ἠθέλησεν αὐτὴν ἀθετῆσαι. καὶ εὐθέως ἀποστείλας ὁ βασιλεὺς σπεκουλάτωρα ἐπέταξεν ἐνεχθῆναι τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. ὁ δὲ ἀπελθὼν ἀπεκεφάλισεν αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ, καὶ ἤνεγκε τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἐπὶ πίνακι καὶ ἔδωκεν αὐτὴν τῷ κορασίῳ, καὶ τὸ κοράσιον ἔδωκεν αὐτὴν τῇ μητρὶ αὐτῆς. καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἦλθον καὶ ἦραν τὸ πτῶμα αὐτοῦ, καὶ ἔθηκαν αὐτὸ ἐν μνημείῳ. Καὶ συνάγονται οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ πάντα, καὶ ὅσα ἐποίησαν καὶ ὅσα ἐδίδαξαν. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· δεῦτε ὑμεῖς αὐτοὶ κατ᾽ ἰδίαν εἰς ἔρημον τόπον, καὶ ἀναπαύεσθε ὀλίγον· ἦσαν γὰρ οἱ ἐρχόμενοι καὶ οἱ ὑπάγοντες πολλοί, καὶ οὐδὲ φαγεῖν εὐκαίρουν. καὶ ἀπῆλθον εἰς

ἔρημον τόπον ἐν πλοίῳ κατ᾽ ἰδίαν. καὶ εἶδον αὐτοὺς ὑπάγοντας, καὶ ἐπέγνωσαν αὐτοὺς πολλοί, καὶ πεζῇ ἀπὸ πασῶν τῶν πόλεων συνέδραμον ἐκεῖ καὶ προῆλθον αὐτοὺς καὶ συνῆλθον πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς εἶδε πολὺν ὄχλον καὶ ἐσπλαγχνίσθη ἐπ᾽ αὐτοῖς, ὅτι ἦσαν ὡς πρόβατα μὴ ἔχοντα ποιμένα, καὶ ἤρξατο διδάσκειν αὐτοὺς πολλά. Καὶ ἤδη ὥρας πολλῆς γενομένης προσελθόντες αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγουσιν ὅτι ἔρημός ἐστιν ὁ τόπος καὶ ἤδη ὥρα πολλή· ἀπόλυσον αὐτούς, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τοὺς κύκλῳ ἀγροὺς καὶ κώμας ἀγοράσωσιν ἑαυτοῖς ἄρτους· τί γὰρ φάγωσιν οὐκ ἔχουσιν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· δότε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν. καὶ λέγουσιν αὐτῷ· ἀπελθόντες ἀγοράσωμεν δηναρίων διακοσίων ἄρτους καὶ δῶμεν αὐτοῖς φαγεῖν; ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· πόσους ἄρτους ἔχετε; ὑπάγετε καὶ ἴδετε. καὶ γνόντες λέγουσι· πέντε, καὶ δύο ἰχθύας. καὶ ἐπέταξεν αὐτοῖς ἀνακλῖναι πάντας συμπόσια συμπόσια ἐπὶ τ�ῳ χλωρῷ χόρτῳ. καὶ ἀνέπεσον πρασιαὶ πρασιαὶ ἀνὰ ἑκατὸν καὶ ἀνὰ πεντήκοντα. καὶ λαβὼν τοὺς πέντε ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν εὐλόγησε, καὶ κατέκλασε τοὺς ἄρτους καὶ ἐδίδου τοῖς μαθηταῖς ἵνα παραθῶσιν αὐτοῖς, καὶ τοὺς δύο ἰχθύας ἐμέρισε πᾶσι. καὶ ἔφαγον πάντες καὶ ἐχορτάσθησαν, καὶ ἦραν κλασμάτων δώδεκα κοφίνους πλήρεις, καὶ ἀπὸ τῶν ἰχθύων. καὶ ἦσαν οἱ φαγόντες τοὺς ἄρτους πεντακισχίλιοι ἄνδρες. Καὶ εὐθέως ἠνάγκασε τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον καὶ προάγειν εἰς τὸ πέραν πρὸς Βηθσαϊδάν, ἕως αὐτὸς ἀπολύσῃ τὸν ὄχλον· καὶ ἀποταξάμενος αὐτοῖς ἀπῆλθεν εἰς τὸ ὄρος προσεύξασθαι. καὶ ὀψίας γενομένης ἦν τὸ πλοῖον ἐν μέσῳ τῆς θαλάσσης, καὶ αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῆς γῆς. καὶ ἰδὼν αὐτοὺς βασανιζομένους ἐν τῷ ἐλαύνειν· ἦν γὰρ ὁ ἄνεμος ἐναντίος αὐτοῖς· καὶ περὶ τετάρτην φυλακὴν τῆς νυκτὸς ἔρχεται πρὸς αὐτοὺς

περιπατῶν ἐπὶ τῆς θαλάσσης, καὶ ἤθελε παρελθεῖν αὐτούς. οἱ δὲ ἰδόντες αὐτὸν περιπατοῦντα ἐπὶ τῆς θαλάσσης ἔδοξαν φάντασμα εἶναι, καὶ ἀνέκραξαν· πάντες γὰρ αὐτὸν εἶδον καὶ ἐταράχθησαν. καὶ εὐθέως ἐλάλησε μετ᾽ αὐτῶν καὶ λέγει αὐτοῖς· θαρσεῖτε, ἐγώ εἰμι, μὴ φοβεῖσθε. καὶ ἀνέβη εἰς τὸ πλοῖον πρὸς αὐτούς, καὶ ἐκόπασεν ὁ ἄνεμος· καὶ λίαν ἐκ περισσοῦ ἐν ἑαυτοῖς ἐξίσταντο καὶ ἐθαύμαζον. οὐ γὰρ συνῆκαν ἐπὶ τοῖς ἄρτοις, ἀλλ᾽ ἦν αὐτῶν ἡ καρδία πεπωρωμένη. Καὶ διαπεράσαντες ἀπῆλθον ἐπὶ τὴν γῆν Γεννησαρὲτ καὶ προσωρμίσθησαν. καὶ ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ τοῦ πλοίου εὐθέως ἐπιγνόντες αὐτὸν περιέδραμον ὅλην τὴν περίχωρον ἐκείνην καὶ ἤρξαντο ἐπὶ τοῖς κραβάττοις τοὺς κακῶς ἔχοντας περιφέρειν ὅπου ἤκουον ὅτι ἐκεῖ ἐστι· καὶ ὅπου ἂν εἰσεπορεύετο εἰς κώμας ἢ πόλεις ἢ ἀγρούς, ἐν ταῖς ἀγοραῖς ἐτίθεσαν τοὺς ἀσθενοῦντας καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα κἂν τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ ἅψωνται· καὶ ὅσοι ἂν ἥπτοντο αὐτοῦ, ἐσῴζοντο.

# 7

Καὶ συνάγονται πρὸς αὐτὸν οἱ Φαρισαῖοι καί τινες τῶν γραμματέων ἐλθόντες ἀπὸ Ἱεροσολύμων· καὶ ἰδόντες τινὰς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ κοιναῖς χερσί, τοῦτ᾽ ἔστιν ἀνίπτοις, ἐσθίοντας ἄρτους, ἐμέμψαντο· οἱ γὰρ Φαρισαῖοι καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι, ἐὰν μὴ πυγμῇ νίψωνται τὰς χεῖρας, οὐκ ἐσθίουσι, κρατοῦντες τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων· καὶ ἀπὸ ἀγορᾶς, ἐὰν μὴ βαπτίσωνται, οὐκ ἐσθίουσι· καὶ ἄλλα πολλά ἐστιν ἃ παρέλαβον κρατεῖν, βαπτισμοὺς ποτηρίων καὶ ξεστῶν καὶ χαλκίων καὶ κλινῶν· ἔπειτα ἐπερωτῶσιν αὐτὸν οἱ Φαρισαῖοι καὶ οἱ γραμματεῖς· διατί οὐ

περιπατοῦσιν οἱ μαθηταί σου κατὰ τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων, ἀλλ᾽ ἀνίπτοις χερσὶν ἐσθίουσι τὸν ἄρτον; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς ὅτι καλῶς προεφήτευσεν Ἡσαΐας περὶ ὑμῶν τῶν ὑποκριτῶν, ὡς γέγραπται· οὗτος ὁ λαὸς τοῖς χείλεσί με τιμᾷ, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ· μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες διδασκαλίας ἐντάλματα ἀνθρώπων. ἀφέντες γὰρ τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ κρατεῖτε τὴν παράδοσιν τῶν ἀνθρώπων, βαπτισμοὺς ξεστῶν καὶ ποτηρίων, καὶ ἄλλα παρόμοια τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε. καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· καλῶς ἀθετεῖτε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ ἵνα τὴν παράδοσιν ὑμῶν τηρήσητε. Μωϋσῆς γὰρ εἶπε· τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου· καί ὁ κακολογῶν πατέρα ἢ μητέρα θανάτῳ τελευτάτω· ὑμεῖς δὲ λέγετε· ἐὰν εἴπῃ ἄνθρωπος τῷ πατρὶ ἢ τῇ μητρί, κορβᾶν, ὅ ἐστι δῶρον , ὃ ἐὰν ἐξ ἐμοῦ ὠφεληθῇς, καὶ οὐκέτι ἀφίετε αὐτὸν οὐδὲν ποιῆσαι τῷ πατρὶ αὐτοῦ ἢ τῇ μητρὶ αὐτοῦ, ἀκυροῦντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ τῇ παραδόσει ὑμῶν ᾗ παρεδώκατε· καὶ παρόμοια τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε. Καὶ προσκαλεσάμενος πάντα τὸν ὄχλον ἔλεγεν αὐτοῖς· ἀκούετέ μου πάντες καὶ συνίετε. οὐδέν ἐστιν ἔξωθεν τοῦ ἀνθρώπου εἰσπορευόμενον εἰς αὐτὸν ὃ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι, ἀλλὰ τὰ ἐκπορευόμενά ἐστι τὰ κοινοῦντα τὸν ἄνθρωπον. Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς οἶκον ἀπὸ τοῦ ὄχλου, ἐπηρώτων αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ περὶ τῆς παραβολῆς. καὶ λέγει αὐτοῖς· οὕτω καὶ ὑμεῖς ἀσύνετοί ἐστε; οὔπω νοεῖτε ὅτι πᾶν τὸ ἔξωθεν εἰσπορευόμενον εἰς τὸν ἄνθρωπον οὐ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι; ὅτι οὐκ εἰσπορεύεται αὐτοῦ εἰς τὴν καρδίαν, ἀλλ᾽ εἰς τὴν κοιλίαν, καὶ εἰς τὸν ἀφεδρῶνα ἐκπορεύεται, καθαρίζον πάντα τὰ βρώματα. ἔλεγε δὲ ὅτι τὸ ἐκ τοῦ ἀνθρώπου ἐκπορευόμενον, ἐκεῖνο κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον. ἔσωθεν γὰρ ἐκ τῆς καρδίας τῶν ἀνθρώπων οἱ διαλογισμοὶ οἱ κακοὶ

ἐκπορεύονται, μοιχεῖαι, πορνεῖαι, φόνοι, κλοπαί, πλεονεξίαι, πονηρίαι, δόλος, ἀσέλγεια, ὀφθαλμὸς πονηρός, βλασφημία, ὑπερηφανία, ἀφροσύνη· πάντα ταῦτα τὰ πονηρὰ ἔσωθεν ἐκπορεύεται καὶ κοινοῖ τὸν ἄνθρωπον. Καὶ ἐκεῖθεν ἀναστὰς ἀπῆλθεν εἰς τὰ μεθόρια Τύρου καὶ Σιδῶνος. καὶ εἰσελθὼν εἰς οἰκίαν οὐδένα ἤθελε γνῶναι, καὶ οὐκ ἠδυνήθη λαθεῖν. ἀκούσασα γὰρ γυνὴ περὶ αὐτοῦ, ἧς εἶχε τὸ θυγάτριον αὐτῆς πνεῦμα ἀκάθαρτον, ἐλθοῦσα προσέπεσε πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ γυνὴ ἦν Ἑλληνίς, Συροφοινίκισσα τῷ γένει· καὶ ἠρώτα αὐτὸν ἵνα τὸ δαιμόνιον ἐκβάλῃ ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐτῆς. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· ἄφες πρῶτον χορτασθῆναι τὰ τέκνα· οὐ γάρ ἐστι καλὸν λαβεῖν τὸν ἄρτον τῶν τέκνων καὶ τοῖς κυναρίοις βαλεῖν. ἡ δὲ ἀπεκρίθη καὶ λέγει αὐτῷ· ναί, Κύριε· καὶ τὰ κυνάρια ὑποκάτω τῆς τραπέζης ἐσθίουσιν ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν παιδίων. καὶ εἶπεν αὐτῇ· διὰ τοῦτον τὸν λόγον ὕπαγε· ἐξελήλυθε τὸ δαιμόνιον ἐκ τῆς θυγατρός σου. καὶ ἀπελθοῦσα εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς εὗρε τὸ παιδίον βεβλημένον ἐπὶ τὴν κλίνην καὶ τὸ δαιμόνιον ἐξεληλυθός. Καὶ πάλιν ἐξελθὼν ἐκ τῶν ὁρίων Τύρου καὶ Σιδῶνος ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας ἀνὰ μέσον τῶν ὁρίων Δεκαπόλεως. καὶ φέρουσιν αὐτῷ κωφὸν μογιλάλον καὶ παρακαλοῦσιν αὐτὸν ἵνα ἐπιθῇ αὐτῷ τὴν χεῖρα. καὶ ἀπολαβόμενος αὐτὸν ἀπὸ τοῦ ὄχλου κατ᾽ ἰδίαν ἔβαλε τοὺς δακτύλους αὐτοῦ εἰς τὰ ὦτα αὐτοῦ, καὶ πτύσας ἥψατο τῆς γλώσσης αὐτοῦ, καὶ ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν ἐστέναξε καὶ λέγει αὐτῷ· ἐφφαθά, ὅ ἐστι διανοίχθητι. καὶ εὐθέως διηνοίχθησαν αὐτοῦ αἱ ἀκοαὶ καὶ ἐλύθη ὁ δεσμὸς τῆς γλώσσης αὐτοῦ, καὶ ἐλάλει ὀρθῶς. καὶ διεστείλατο αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ εἴπωσιν· ὅσον δὲ αὐτὸς αὐτοῖς διεστέλλετο, μᾶλλον περισσότερον ἐκήρυσσον. καὶ ὑπερπερισσῶς ἐξεπλήσσοντο λέγοντες· καλῶς πάντα πεποίηκε·

καὶ τοὺς κωφοὺς ποιεῖ ἀκούειν καὶ τοὺς ἀλάλους λαλεῖν.

# 8

Ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις πάλιν πολλοῦ ὄχλου ὄντος καὶ μὴ ἐχόντων τί φάγωσι, προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ λέγει αὐτοῖς· σπλαγχνίζομαι ἐπὶ τὸν ὄχλον, ὅτι ἤδη ἡμέραι τρεῖς προσμένουσί μοι καὶ οὐκ ἔχουσι τί φάγωσι· καὶ ἐὰν ἀπολύσω αὐτοὺς νήστεις εἰς οἶκον αὐτῶν, ἐκλυθήσονται ἐν τῇ ὁδῷ· τινὲς γὰρ αὐτῶν ἀπὸ μακρόθεν ἥκασι. καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· πόθεν τούτους δυνήσεταί τις ὧδε χορτάσαι ἄρτων ἐπ᾽ ἐρημίας; καὶ ἐπηρώτα αὐτούς· πόσους ἔχετε ἄρτους; οἱ δὲ εἶπον· ἑπτά. καὶ παρήγγειλε τῷ ὄχλῳ ἀναπεσεῖν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ λαβὼν τοὺς ἑπτὰ ἄρτους εὐχαριστήσας ἔκλασε καὶ ἐδίδου τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα παρατιθῶσι· καὶ παρέθηκαν τῷ ὄχλῳ. καὶ εἶχον ἰχθύδια ὀλίγα· καὶ αὐτὰ εὐλογήσας εἶπε παρατιθέναι καὶ αὐτά. ἔφαγον δὲ καὶ ἐχορτάσθησαν, καὶ ἦραν περισσεύματα κλασμάτων ἑπτὰ σπυρίδας. ἦσαν δὲ ὡς τετρακισχίλιοι· καὶ ἀπέλυσεν αὐτούς. Καὶ ἐμβὰς εὐθὺς εἰς τὸ πλοῖον μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἦλθεν εἰς τὰ μέρη Δαλμανουθά. Καὶ ἐξῆλθον οἱ Φαρισαῖοι καὶ ἤρξαντο συζητεῖν αὐτῷ, ζητοῦντες παρ᾽ αὐτοῦ σημεῖον ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, πειράζοντες αὐτόν. καὶ ἀναστενάξας τῷ πνεύματι αὐτοῦ λέγει· τί ἡ γενεὰ αὕτη σημεῖον ἐπιζητεῖ; ἀμὴν λέγω ὑμῖν, εἰ δοθήσεται τῇ γενεᾷ ταύτῃ σημεῖον. καὶ ἀφεὶς αὐτοὺς εἰς τὸ πλοῖον ἀπῆλθε πάλιν. Καὶ ἐπελάθοντο λαβεῖν ἄρτους, καὶ εἰ μὴ ἕνα ἄρτον οὐκ εἶχον μεθ᾽ ἑαυτῶν ἐν τῷ πλοίῳ. καὶ διεστέλλετο αὐτοῖς λέγων· ὁρᾶτε, βλέπετε ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρισαίων καὶ

τῆς ζύμης Ἡρῴδου. καὶ διελογίζοντο πρὸς ἀλλήλους λέγοντες ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχομεν. καὶ γνοὺς ὁ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· τί διαλογίζεσθε ὅτι ἄρτους οὐκ ἔχετε; οὔπω νοεῖτε οὐδὲ συνίετε; ἔτι πεπωρωμένην ἔχετε τὴν καρδίαν ὑμῶν; ὀφθαλμοὺς ἔχοντες οὐ βλέπετε, καὶ ὦτα ἔχοντες οὐκ ἀκούετε; καὶ οὐ μνημονεύετε; ὅτε τοὺς πέντε ἄρτους ἔκλασα εἰς τοὺς πεντακισχιλίους, καὶ πόσους κοφίνους κλασμάτων πλήρεις ἤρατε; λέγουσιν αὐτῷ· δώδεκα. ὅτε δὲ τοὺς ἑπτὰ εἰς τοὺς τετρακισχιλίους, πόσων σπυρίδων πληρώματα κλασμάτων ἤρατε; οἱ δὲ εἶπον· ἑπτά. καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· οὔπω συνίετε; Καὶ ἔρχεται εἰς Βηθσαϊδά. καὶ φέρουσιν αὐτῷ τυφλὸν καὶ παρακαλοῦσιν αὐτὸν ἵνα αὐτοῦ ἅψηται. καὶ ἐπιλαβόμενος τῆς χειρὸς τοῦ τυφλοῦ ἐξήγαγεν αὐτὸν ἔξω τῆς κώμης, καὶ πτύσας εἰς τὰ ὄμματα αὐτοῦ, ἐπιθεὶς τὰς χεῖρας αὐτῷ ἐπηρώτα αὐτὸν εἴ τι βλέπει. καὶ ἀναβλέψας ἔλεγε· βλέπω τοὺς ἀνθρώπους ὡς δένδρα περιπατοῦντας. εἶτα πάλιν ἐπέθηκε τὰς χεῖρας ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ καὶ ἐποίησεν αὐτὸν ἀναβλέψαι, καὶ ἀποκατεστάθη, καὶ ἐνέβλεψε τηλαυγῶς ἅπαντας. καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ λέγων· μηδὲ εἰς τὴν κώμην εἰσέλθῃς μηδὲ εἴπῃς τινὶ ἐν τῇ κώμῃ. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὰς κώμας Καισαρείας τῆς Φιλίππου· καὶ ἐν τῇ ὁδῷ ἐπηρώτα τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ λέγων αὐτοῖς· τίνα με λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι; οἱ δὲ ἀπεκρίθησαν· Ἰωάννην τὸν βαπτιστήν, καὶ ἄλλοι Ἠλίαν, ἄλλοι δὲ ἕνα τῶν προφητῶν. καὶ αὐτὸς λέγει αὐτοῖς· ὑμεῖς δὲ τίνα με λέγετε εἶναι; ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος λέγει αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ Χριστός. καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ λέγωσι περὶ αὐτοῦ. Καὶ ἤρξατο διδάσκειν αὐτοὺς ὅτι δεῖ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν, καὶ ἀποδοκιμασθῆναι ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων καὶ τῶν ἀρχιερέων καὶ τῶν γραμματέων, καὶ

ἀποκτανθῆναι, καὶ μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀναστῆναι· καὶ παρρησίᾳ τὸν λόγον ἐλάλει. καὶ προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος ἤρξατο ἐπιτιμᾶν αὐτῷ. ὁ δὲ ἐπιστραφεὶς καὶ ἰδὼν τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ ἐπετίμησε τῷ Πέτρῳ λέγων· ὕπαγε ὀπίσω μου, σατανᾶ· ὅτι οὐ φρονεῖς τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων. Καὶ προσκαλεσάμενος τὸν ὄχλον σὺν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ εἶπεν αὐτοῖς· ὅστις θέλει ὀπίσω μου ἀκολουθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτὸν καὶ ἀράτω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθείτω μοι. ὃς γὰρ ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ᾽ ἂν ἀπολέσῃ τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ εὐαγγελίου, οὗτος σώσει αὐτήν. τί γὰρ ὠφελήσει ἄνθρωπον ἐὰν κερδήσῃ τὸν κόσμον ὅλον, καὶ ζημιωθῇ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ; ἢ τί δώσει ἄνθρωπος ἀντάλλαγμα τῆς ψυχῆς αὐτοῦ; ὃς γὰρ ἐὰν ἐπαισχυνθῇ με καὶ τοὺς ἐμοὺς λόγους ἐν τῇ γενεᾷ ταύτῃ τῇ μοιχαλίδι καὶ ἁμαρτωλῷ, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαισχυνθήσεται αὐτὸν ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀγγέλων τῶν ἁγίων.

# 9

Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι εἰσί τινες τῶν ὧδε ἑστηκότων, οἵτινες οὐ μὴ γεύσωνται θανάτου ἕως ἂν ἴδωσι τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ἐληλυθυῖαν ἐν δυνάμει. Καὶ μεθ᾽ ἡμέρας ἓξ παραλαμβάνει ὁ Ἰησοῦς τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰάκωβον καὶ τὸν Ἰωάννην καὶ ἀναφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψηλὸν κατ᾽ ἰδίαν μόνους· καὶ μετεμορφώθη ἔμπροσθεν αὐτῶν, καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐγένετο στίλβοντα, λευκὰ λίαν ὡς χιών, οἷα γναφεὺς ἐπὶ τῆς γῆς οὐ δύναται οὕτω λευκᾶναι. καὶ ὤφθη αὐτοῖς Ἠλίας σὺν Μωϋσεῖ, καὶ

ἦσαν συλλαλοῦντες τῷ Ἰησοῦ. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος λέγει τῷ Ἰησοῦ· ῥαββί, καλόν ἐστιν ἡμᾶς ὧδε εἶναι· καὶ ποιήσωμεν σκηνὰς τρεῖς, σοὶ μίαν καὶ Μωϋσεῖ μίαν καὶ Ἠλίᾳ μίαν. οὐ γὰρ ᾔδει τί λαλήσῃ· ἦσαν γὰρ ἔκφοβοι. καὶ ἐγένετο νεφέλη ἐπισκιάζουσα αὐτοῖς, καὶ ἦλθε φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης λέγουσα· οὗτός ἐστιν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός· αὐτοῦ ἀκούετε . καὶ ἐξάπινα περιβλεψάμενοι οὐκέτι οὐδένα εἶδον, ἀλλὰ τὸν Ἰησοῦν μόνον μεθ᾽ ἑαυτῶν. καταβαινόντων δὲ αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους διεστείλατο αὐτοῖς ἵνα μηδενὶ διηγήσωνται ἃ εἶδον, εἰ μὴ ὅταν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐκ νεκρῶν ἀναστῇ. καὶ τὸν λόγον ἐκράτησαν, πρὸς ἑαυτοὺς συζητοῦντες τί ἐστι τὸ ἐκ νεκρῶν ἀναστῆναι. καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν λέγοντες, ὅτι λέγουσιν οἱ γραμματεῖς ὅτι Ἠλίαν δεῖ ἐλθεῖν πρῶτον. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Ἠλίας μὲν ἐλθὼν πρῶτον ἀποκαθιστᾷ πάντα· καὶ πῶς γέγραπται ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἵνα πολλὰ πάθῃ καὶ ἐξουδενωθῇ; ἀλλὰ λέγω ὑμῖν ὅτι καὶ Ἠλίας ἐλήλυθε, καὶ ἐποίησαν αὐτῷ ὅσα ἠθέλησαν, καθὼς γέγραπται ἐπ᾽ αὐτόν. Καὶ ἐλθὼν πρὸς τοὺς μαθητὰς εἶδεν ὄχλον πολὺν περὶ αὐτούς, καὶ γραμματεῖς συζητοῦντας αὐτοῖς. καὶ εὐθέως πᾶς ὁ ὄχλος ἰδόντες αὐτὸν ἐξεθαμβήθησαν, καὶ προστρέχοντες ἠσπάζοντο αὐτόν. καὶ ἐπηρώτησε τοὺς γραμματεῖς· τί συζητεῖτε πρὸς ἑαυτούς; καὶ ἀποκριθεὶς εἷς ἐκ τοῦ ὄχλου εἶπε· διδάσκαλε, ἤνεγκα τὸν υἱόν μου πρός σε, ἔχοντα πνεῦμα ἄλαλον. καὶ ὅπου ἂν αὐτὸν καταλάβῃ, ῥήσσει αὐτόν, καὶ ἀφρίζει καὶ τρίζει τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ, καὶ ξηραίνεται· καὶ εἶπον τοῖς μαθηταῖς σου ἵνα αὐτὸ ἐκβάλωσι, καὶ οὐκ ἴσχυσαν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς αὐτῷ λέγει· ὦ γενεὰ ἄπιστος, ἕως πότε πρὸς ὑμᾶς ἔσομαι; ἕως πότε ἀνέξομαι ὑμῶν; φέρετε αὐτὸν πρός με. καὶ ἤνεγκαν αὐτὸν πρὸς αὐτόν. καὶ ἰδὼν αὐτὸν εὐθέως τὸ πνεῦμα ἐσπάραξεν αὐτόν, καὶ πεσὼν ἐπὶ τῆς γῆς

ἐκυλίετο ἀφρίζων. καὶ ἐπηρώτησε τὸν πατέρα αὐτοῦ· πόσος χρόνος ἐστὶν ὡς τοῦτο γέγονεν αὐτῷ; ὁ δὲ εἶπε· παιδιόθεν. καὶ πολλάκις αὐτὸν καὶ εἰς πῦρ ἔβαλε καὶ εἰς ὕδατα, ἵνα ἀπολέσῃ αὐτόν· ἀλλ᾽ εἴ τι δύνασαι, βοήθησον ἡμῖν σπλαγχνισθεὶς ἐφ᾽ ἡμᾶς. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ τὸ εἰ δύνασαι πιστεῦσαι, πάντα δυνατὰ τῷ πιστεύοντι . καὶ εὐθέως κράξας ὁ πατὴρ τοῦ παιδίου μετὰ δακρύων ἔλεγε· πιστεύω, κύριε· βοήθει μου τῇ ἀπιστίᾳ. ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐπισυντρέχει ὄχλος, ἐπετίμησε τῷ πνεύματι τῷ ἀκαθάρτῳ λέγων αὐτῷ· τὸ πνεῦμα τὸ ἄλαλον καὶ κωφόν, ἐγώ σοι ἐπιτάσσω, ἔξελθε ἐξ αὐτοῦ καὶ μηκέτι εἰσέλθῃς εἰς αὐτόν. καὶ κράξαν καὶ πολλὰ σπαράξαν αὐτὸν ἐξῆλθε, καὶ ἐγένετο ὡσεὶ νεκρός, ὥστε πολλοὺς λέγειν ὅτι ἀπέθανεν. ὁ δὲ Ἰησοῦς κρατήσας αὐτὸν τῆς χειρὸς ἤγειρεν αὐτόν, καὶ ἀνέστη. Καὶ εἰσελθόντα αὐτὸν εἰς οἶκον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπηρώτων αὐτὸν κατ᾽ ἰδίαν, ὅτι ἡμεῖς οὐκ ἠδυνήθημεν ἐκβαλεῖν αὐτό. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· τοῦτο τὸ γένος ἐν οὐδενὶ δύναται ἐξελθεῖν εἰ μὴ ἐν προσευχῇ καὶ νηστείᾳ. Καὶ ἐκεῖθεν ἐξελθόντες παρεπορεύοντο διὰ τῆς Γαλιλαίας, καὶ οὐκ ἤθελεν ἵνα τις γνῷ· ἐδίδασκε γὰρ τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, καὶ ἀποκτενοῦσιν αὐτόν, καὶ ἀποκτανθεὶς τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται. οἱ δὲ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα, καὶ ἐφοβοῦντο αὐτὸν ἐπερωτῆσαι. Καὶ ἦλθεν εἰς Καπερναούμ· καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ γενόμενος ἐπηρώτα αὐτούς· τί ἐν τῇ ὁδῷ πρὸς ἑαυτοὺς διελογίζεσθε; οἱ δὲ ἐσιώπων· πρὸς ἀλλήλους γὰρ διελέχθησαν ἐν τῇ ὁδῷ τίς μείζων. καὶ καθίσας ἐφώνησε τοὺς δώδεκα καὶ λέγει αὐτοῖς· εἴ τις θέλει πρῶτος εἶναι, ἔσται πάντων ἔσχατος καὶ πάντων διάκονος. καὶ λαβὼν παιδίον ἔστησεν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ ἐναγκαλισάμενος αὐτὸ εἶπεν αὐτοῖς· ὃς ἐὰν ἓν τῶν τοιούτων

παιδίων δέξηται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμὲ δέχεται· καὶ ὃς ἐὰν ἐμὲ δέξηται, οὐκ ἐμὲ δέχεται, ἀλλὰ τὸν ἀποστείλαντά με. Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰωάννης λέγων· διδάσκαλε, εἴδομέν τινα ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐκβάλλοντα δαιμόνια, ὃς οὐκ ἀκολουθεῖ ἡμῖν, καὶ ἐκωλύσαμεν αὐτόν, ὅτι οὐκ ἀκολουθεῖ ἡμῖν. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε· μὴ κωλύετε αὐτόν· οὐδεὶς γάρ ἐστιν ὃς ποιήσει δύναμιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου καὶ δυνήσεται ταχὺ κακολογῆσαί με. ὃς γὰρ οὐκ ἔστι καθ᾽ ὑμῶν, ὑπὲρ ὑμῶν ἐστιν. ὃς γὰρ ἂν ποτίσῃ ὑμᾶς ποτήριον ὕδατος ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὅτι Χριστοῦ ἐστε, ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀπολέσῃ τὸν μισθὸν αὐτοῦ. Καὶ ὃς ἂν σκανδαλίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν τούτων τῶν πιστευόντων εἰς ἐμέ, καλόν ἐστιν αὐτῷ μᾶλλον εἰ περίκειται λίθος μυλικὸς περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ καὶ βέβληται εἰς τὴν θάλασσαν. καὶ ἐὰν σκανδαλίζῃ σε ἡ χείρ σου, ἀπόκοψον αὐτήν· καλόν σοί ἐστι κυλλὸν εἰς τὴν ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ τὰς δύο χεῖρας ἔχοντα ἀπελθεῖν εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἄσβεστον, ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται. καὶ ἐὰν ὁ πούς σου σκανδαλίζῃ σε, ἀπόκοψον αὐτόν· καλόν σοί ἐστιν εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν χωλόν, ἢ τοὺς δύο πόδας ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἄσβεστον, ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται. καὶ ἐὰν ὁ ὀφθαλμός σου σκανδαλίζῃ σε, ἔκβαλε αὐτόν· καλόν σοί ἐστι μονόφθαλμον εἰσελθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, ἢ τοὺς δύο ὀφθαλμοὺς ἔχοντα ἀπελθεῖν εἰς τὴν γέενναν τοῦ πυρός, ὅπου ὁ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ καὶ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται. πᾶς γὰρ πυρὶ ἁλισθήσεται, καὶ πᾶσα θυσία ἁλὶ ἁλισθήσεται. καλὸν τὸ ἅλας· ἐὰν δὲ τὸ ἅλας ἄναλον γένηται, ἐν τίνι αὐτὸ ἀρτύσετε; ἔχετε ἐν ἑαυτοῖς ἅλας καὶ εἰρηνεύετε ἐν ἀλλήλοις.

# 10

Καὶ ἐκεῖθεν ἀναστὰς ἔρχεται εἰς τὰ ὅρια τῆς Ἰουδαίας διὰ τοῦ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, καὶ συμπορεύονται πάλιν ὄχλοι πρὸς αὐτόν, καὶ ὡς εἰώθει, πάλιν ἐδίδασκεν αὐτούς. καὶ προσελθόντες οἱ Φαρισαῖοι ἐπηρώτων αὐτὸν εἰ ἔξεστιν ἀνδρὶ γυναῖκα ἀπολῦσαι, πειράζοντες αὐτόν. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· τί ὑμῖν ἐνετείλατο Μωϋσῆς; οἱ δὲ εἶπον· ἐπέτρεψε Μωϋσῆς βιβλίον ἀποστασίου γράψαι καὶ ἀπολῦσαι. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἔγραψεν ὑμῖν τὴν ἐντολὴν ταύτην· ἀπὸ δὲ ἀρχῆς κτίσεως ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτοὺς ὁ Θεός· ἕνεκεν τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν. ὥστε οὐκέτι εἰσὶ δύο, ἀλλὰ μία σάρξ· ὃ οὖν ὁ Θεὸς συνέζευξεν, ἄνθρωπος μὴ χωριζέτω. καὶ εἰς τὴν οἰκίαν πάλιν οἱ μαθηταὶ περὶ τούτου ἐπηρώτων αὐτόν, καὶ λέγει αὐτοῖς· ὃς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ γαμήσῃ ἄλλην, μοιχᾶται ἐπ᾽ αὐτήν· καὶ ἐὰν γυνὴ ἀπολύσασα τὸν ἄνδρα γαμηθῇ ἄλλῳ, μοιχᾶται. Καὶ προσέφερον αὐτῷ παιδία, ἵνα αὐτῶν ἅψηται· οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμων τοῖς προσφέρουσιν. ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ἠγανάκτησε καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἄφετε τὰ παιδία ἔρχεσθαι πρός με, καὶ μὴ κωλύετε αὐτά· τῶν γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὃς ἐὰν μὴ δέξηται τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παιδίον, οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτήν. καὶ ἐναγκαλισάμενος αὐτὰ κατηυλόγει τιθεὶς τὰς χεῖρας ἐπ᾽ αὐτά. Καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ εἰς ὁδὸν προσδραμὼν εἷς καὶ γονυπετήσας αὐτὸν ἐπηρώτα αὐτόν· διδάσκαλε ἀγαθέ, τί ποιήσω ἵνα ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσω; ὁ δὲ

Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· τί με λέγεις ἀγαθόν; οὐδεὶς ἀγαθὸς εἰμὴ εἷς ὁ Θεός. τὰς ἐντολὰς οἶδας· μὴ μοιχεύσῃς, μὴ φονεύσῃς, μὴ κλέψῃς, μὴ ψευδομαρτυρήσῃς, μὴ ἀποστερήσῃς , τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα. ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτῷ· διδάσκαλε, ταῦτα πάντα ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου. ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐμβλέψας αὐτῷ ἠγάπησεν αὐτὸν καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἕν σε ὑστερεῖ· εἰ θέλεις τέλειος εἶναι, ὕπαγε, ὅσα ἔχεις πώλησον καὶ δὸς πτωχοῖς, καὶ ἕξεις θησαυρὸν ἐν οὐρανῷ, καὶ δεῦρο ἀκολούθει μοι, ἄρας τὸν σταυρόν σου. ὁ δὲ στυγνάσας ἐπὶ τῷ λόγῳ ἀπῆλθε λυπούμενος· ἦν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά. Καὶ περιβλεψάμενος ὁ Ἰησοῦς λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· πῶς δυσκόλως οἱ τὰ χρήματα ἔχοντες εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελεύσονται οἱ δὲ μαθηταὶ ἐθαμβοῦντο ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐτοῦ. ὁ δὲ Ἰησοῦς πάλιν ἀποκριθεὶς λέγει αὐτοῖς· τέκνα, πῶς δύσκολόν ἐστι τοὺς πεποιθότας ἐπὶ χρήμασιν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν· εὐκοπώτερόν ἐστι κάμηλον διὰ τρυμαλιᾶς ῥαφίδος εἰσελθεῖν ἢ πλούσιον εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελθεῖν. οἱ δὲ περισσῶς ἐξεπλήσσοντο λέγοντες πρὸς ἑαυτούς· καὶ τίς δύναται σωθῆναι; ἐμβλέψας αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς λέγει· παρὰ ἀνθρώποις ἀδύνατον, ἀλλ᾽ οὐ παρὰ Θεῷ· πάντα γὰρ δυνατά ἐστι παρὰ τῷ Θεῷ. Ἤρξατο ὁ Πέτρος λέγειν αὐτῷ· ἰδοὺ ἡμεῖς ἀφήκαμεν πάντα καὶ ἠκολουθήσαμέν σοι. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐδείς ἐστιν ὃς ἀφῆκεν οἰκίαν ἢ ἀδελφοὺς ἢ ἀδελφὰς ἢ πατέρα ἢ μητέρα ἢ γυναῖκα ἢ τέκνα ἢ ἀγροὺς ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ ἕνεκεν τοῦ εὐαγγελίου, ἐὰν μὴ λάβῃ ἑκατονταπλασίονα νῦν ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ οἰκίας καὶ ἀδελφοὺς καὶ ἀδελφὰς καὶ πατέρα καὶ μητέρα καὶ τέκνα καὶ ἀγροὺς μετὰ διωγμῶν, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ ζωὴν αἰώνιον. πολλοὶ δὲ ἔσονται πρῶτοι ἔσχατοι καὶ ἔσχατοι πρῶτοι. Ἦσαν δὲ ἐν τῇ ὁδῷ ἀναβαίνοντες εἰς

Ἱεροσόλυμα· καὶ ἦν προάγων αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐθαμβοῦντο, καὶ ἀκολουθοῦντες ἐφοβοῦντο. καὶ παραλαβὼν πάλιν τοὺς δώδεκα ἤρξατο αὐτοῖς λέγειν τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμβαίνειν, ὅτι ἰδοὺ ἀναβαίνομεν εἰς Ἱεροσόλυμα καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδοθήσεται τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ γραμματεῦσι, καὶ κατακρινοῦσιν αὐτὸν θανάτῳ καὶ παραδώσουσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐμπαίξουσιν αὐτῷ καὶ μαστιγώσουσιν αὐτὸν καὶ ἐμπτύσουσιν αὐτῷ καὶ ἀποκτενοῦσιν αὐτόν, καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται. Καὶ προσπορεύονται αὐτῷ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης υἱοὶ Ζεβεδαίου λέγοντες· διδάσκαλε, θέλομεν ἵνα ὃ ἐὰν αἰτήσωμεν ποιήσῃς ἡμῖν. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· τί θέλετε ποιῆσαί με ὑμῖν; οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· δὸς ἡμῖν ἵνα εἷς ἐκ δεξιῶν σου καὶ εἷς ἐξ εὐωνύμων σου καθίσωμεν ἐν τῇ δόξῃ σου. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· οὐκ οἴδατε τί αἰτεῖσθε. δύνασθε πιεῖν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι βαπτισθῆναι; οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· δυνάμεθα. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· τὸ μὲν ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω πίεσθε, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι βαπτισθήσεσθε· τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δεξιῶν μου καὶ ἐξ εὐωνύμων οὐκ ἔστιν ἐμὸν δοῦναι, ἀλλ᾽ οἷς ἡτοίμασται. Καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα ἤρξαντο ἀγανακτεῖν περὶ Ἰακώβου καὶ Ἰωάννου. ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐτοὺς λέγει αὐτοῖς· οἴδατε ὅτι οἱ δοκοῦντες ἄρχειν τῶν ἐθνῶν κατακυριεύουσιν αὐτῶν καὶ οἱ μεγάλοι αὐτῶν κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν· οὐχ οὕτω δὲ ἔσται ἐν ὑμῖν, ἀλλ᾽ ὃς ἐὰν θέλῃ γενέσθαι μέγας ἐν ὑμῖν, ἔσται ὑμῶν διάκονος, καὶ ὃς ἐὰν θέλῃ ὑμῶν γενέσθαι πρῶτος, ἔσται πάντων δοῦλος· καὶ γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου οὐκ ἦλθε διακονηθῆναι, ἀλλὰ διακονῆσαι, καὶ δοῦναι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ λύτρον ἀντὶ πολλῶν. Καὶ ἔρχονται εἰς Ἱεριχώ. καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ ἀπὸ Ἱεριχὼ καὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ καὶ

ὄχλου ἱκανοῦ, ὁ υἱὸς Τιμαίου Βαρτιμαῖος τυφλὸς ἐκάθητο παρὰ τὴν ὁδὸν προσαιτῶν. καὶ ἀκούσας ὅτι Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖός ἐστιν, ἤρξατο κράζειν καὶ λέγειν· υἱὲ Δαυῒδ Ἰησοῦ, ἐλέησόν με. καὶ ἐπετίμων αὐτῷ πολλοὶ ἵνα σιωπήσῃ· ὁ δὲ πολλῷ μᾶλλον ἔκραζεν· υἱὲ Δαυῒδ, ἐλέησόν με. καὶ στὰς ὁ Ἰησοῦς εἶπε· φωνήσατε αὐτόν· καὶ φωνοῦσι τὸν τυφλὸν λέγοντες αὐτῷ· θάρσει, ἔγειρε· φωνεῖ σε. ὁ δὲ ἀποβαλὼν τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ ἀναστὰς ἦλθε πρὸς τὸν Ἰησοῦν. καὶ ἀποκριθεὶς λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· τί σοι θέλεις ποιήσω; ὁ δὲ τυφλὸς εἶπεν αὐτῷ· ῥαββουνί, ἵνα ἀναβλέψω. καὶ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· ὕπαγε, ἡ πίστις σου σέσωκέ σε. καὶ εὐθέως ἀνέβλεψε, καὶ ἠκολούθει τῷ Ἰησοῦ ἐν τῇ ὁδῷ.

# 11

Καὶ ὅτε ἐγγίζουσιν εἰς Ἰερουσαλὴμ εἰς Βηθσφαγῆ καὶ Βηθανίαν πρὸς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, ἀποστέλλει δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτοῖς· ὑπάγετε εἰς τὴν κώμην τὴν κατέναντι ὑμῶν, καὶ εὐθέως εἰσπορευόμενοι εἰς αὐτὴν εὑρήσετε πῶλον δεδεμένον, ἐφ᾽ ὃν οὐδεὶς ἀνθρώπων κεκάθικε· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε. καὶ ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ· τί ποιεῖτε τοῦτο; εἴπατε ὅτι ὁ Κύριος αὐτοῦ χρείαν ἔχει, καὶ εὐθέως αὐτὸν ἀποστέλλει πάλιν ὧδε. ἀπῆλθον δὲ καὶ εὗρον τὸν πῶλον δεδεμένον πρὸς τὴν θύραν ἔξω ἐπὶ τοῦ ἀμφόδου, καὶ λύουσιν αὐτόν. καί τινες τῶν ἐκεῖ ἑστηκότων ἔλεγον αὐτοῖς· τί ποιεῖτε λύοντες τὸν πῶλον; οἱ δὲ εἶπον αὐτοῖς καθὼς ἐνετείλατο ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀφῆκαν αὐτούς. καὶ ἤγαγον τὸν πῶλον πρὸς τὸν Ἰησοῦν καὶ ἐπέβαλον αὐτῷ τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐκάθισεν ἐπ᾽ αὐτῷ. πολλοὶ δὲ τὰ ἱμάτια αὐτῶν ἔστρωσαν εἰς τὴν ὁδόν, ἄλλοι δὲ

στοιβάδας ἔκοπτον ἐκ τῶν δένδρων καὶ ἐστρώννυον εἰς τὴν ὁδόν. καὶ οἱ προάγοντες καὶ οἱ ἀκολουθοῦντες ἔκραζον λέγοντες· ὡσαννά, εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου. εὐλογημένη ἡ ἐρχομένη βασιλεία ἐν ὀνόματι Κυρίου τοῦ πατρός ἡμῶν Δαυΐδ· ὡσαννὰ ἐν τοῖς ὑψίστοις. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς καὶ εἰς τὸ ἱερόν· καὶ περιβλεψάμενος πάντα, ὀψίας ἤδη οὔσης τῆς ὥρας, ἐξῆλθεν εἰς Βηθανίαν μετὰ τῶν δώδεκα. Καὶ τῇ ἐπαύριον ἐξελθόντων αὐτῶν ἀπὸ Βηθανίας ἐπείνασε· καὶ ἰδὼν συκῆν ἀπὸ μακρόθεν ἔχουσαν φύλλα, ἦλθεν εἰ ἄρα τι εὑρήσει ἐν αὐτῇ· καὶ ἐλθὼν ἐπ᾽ αὐτὴν οὐδὲν εὗρεν εἰ μὴ φύλλα· οὐ γὰρ ἦν καιρὸς σύκων. καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτῇ· μηκέτι ἐκ σοῦ εἰς τὸν αἰῶνα μηδεὶς καρπὸν φάγοι. καὶ ἤκουον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ. Καὶ ἔρχονται πάλιν εἰς Ἱεροσόλυμα· καὶ εἰσελθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερὸν ἤρξατο ἐκβάλλειν τοὺς πωλοῦντας καὶ τοὺς ἀγοράζοντας ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ τὰς τραπέζας τῶν κολλυβιστῶν καὶ τὰς καθέδρας τῶν πωλούντων τὰς περιστερὰς κατέστρεψε, καὶ οὐκ ἤφιεν ἵνα τις διενέγκῃ σκεῦος διὰ τοῦ ἱεροῦ, καὶ ἐδίδασκε λέγων αὐτοῖς· οὐ γέγραπται ὅτι ὁ οἶκός μου οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν; ὑμεῖς δὲ αὐτὸν ἐποιήσατε σπήλαιον λῃστῶν. καὶ ἤκουσαν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι καὶ οἱ ἀρχιερεῖς, καὶ ἐζήτουν πῶς αὐτὸν ἀπολέσωσιν· ἐφοβοῦντο γὰρ αὐτόν, ὅτι πᾶς ὁ ὄχλος ἐξεπλήσσετο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ. καὶ ὅτε ὀψὲ ἐγένετο, ἐξεπορεύετο ἔξω τῆς πόλεως. Καὶ παραπορευόμενοι πρωΐ εἶδον τὴν συκῆν ἐξηραμμένην ἐκ ῥιζῶν. καὶ ἀναμνησθεὶς ὁ Πέτρος λέγει αὐτῷ· ῥαββί, ἴδε ἡ συκῆ ἣν κατηράσω ἐξήρανται. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· ἔχετε πίστιν Θεοῦ. ἀμὴν γὰρ λέγω ὑμῖν ὅτι ὃς ἂν εἴπῃ τῷ ὄρει τούτῳ, ἄρθητι καὶ βλήθητι εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ μὴ διακριθῇ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἀλλὰ πιστεύσει ὅτι ἃ λέγει γίνεται, ἔσται αὐτῷ ὃ

ἐὰν εἴπῃ. διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, πάντα ὅσα ἂν προσευχόμενοι αἰτεῖσθε, πιστεύετε ὅτι λαμβάνετε, καὶ ἔσται ὑμῖν. καὶ ὅταν στήκητε προσευχόμενοι, ἀφίετε εἴ τι ἔχετε κατά τινος, ἵνα καὶ ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἀφῇ ὑμῖν τὰ παραπτώματα ὑμῶν. εἰ δὲ ὑμεῖς οὐκ ἀφίετε, οὐδὲ ὁ πατὴρ ὑμῶν ἀφήσει τὰ παραπτώματα ὑμῶν. Καὶ ἔρχονται πάλιν εἰς Ἱεροσόλυμα· καὶ ἐν τῷ ἱερῷ περιπατοῦντος αὐτοῦ ἔρχονται πρὸς αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ λέγουσιν αὐτῷ· ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιεῖς; ἢ τίς σοι ἔδωκε τὴν ἐξουσίαν ταύτην ἵνα ταῦτα ποιῇς; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· ἐπερωτήσω ὑμᾶς κἀγὼ ἕνα λόγον, καὶ ἀποκρίθητέ μοι, καὶ ἐρῶ ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ. τὸ βάπτισμα Ἰωάννου ἐξ οὐρανοῦ ἦν ἢ ἐξ ἀνθρώπων; ἀποκρίθητέ μοι. καὶ ἐλογίζοντο πρὸς ἑαυτοὺς λέγοντες· ἐὰν εἴπωμεν, ἐξ οὐρανοῦ, ἐρεῖ· διατί οὖν οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ; ἀλλὰ εἴπωμεν, ἐξ ἀνθρώπων; ἐφοβοῦντο τὸν λαόν· ἅπαντες γὰρ εἶχον τὸν Ἰωάννην ὅτι προφήτης ἦν. καὶ ἀποκριθέντες λέγουσι τῷ Ἰησοῦ· οὐκ οἴδαμεν. καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς λέγει αὐτοῖς· οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιῶ.

# 12

Καὶ ἤρξατο αὐτοῖς ἐν παραβολαῖς λέγειν· ἀμπελῶνα ἐφύτευσεν ἄνθρωπος καὶ περιέθηκε φραγμὸν καὶ ὤρυξεν ὑπολήνιον καὶ ᾠκοδόμησε πύργον, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς καὶ ἀπεδήμησε. καὶ ἀπέστειλε πρὸς τοὺς γεωργοὺς τῷ καιρῷ δοῦλον, ἵνα παρὰ τῶν γεωργῶν λάβῃ ἀπὸ τοῦ καρποῦ τοῦ ἀμπελῶνος. καὶ λαβόντες αὐτὸν ἔδειραν καὶ ἀπέστειλαν κενόν. καὶ πάλιν ἀπέστειλε πρὸς

αὐτοὺς ἄλλον δοῦλον· κἀκεῖνον λιθοβολήσαντες ἐκεφαλαίωσαν καὶ ἀπέστειλαν ἠτιμωμένον. καὶ πάλιν ἄλλον ἀπέστειλε· κἀκεῖνον ἀπέκτειναν, καὶ πολλοὺς ἄλλους, οὓς μὲν δέροντες, οὓς δὲ ἀποκτέννοντες. ἔτι οὖν ἕνα υἱὸν ἔχων, ἀγαπητὸν αὐτοῦ, ἀπέστειλε καὶ αὐτὸν ἔσχατον πρὸς αὐτοὺς λέγων ὅτι ἐντραπήσονται τὸν υἱόν μου. ἐκεῖνοι δὲ οἱ γεωργοί, θεασάμενοι αὐτὸν ἐρχόμενον, πρὸς ἑαυτοὺς εἶπον ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος· δεῦτε ἀποκτείνωμεν αὐτόν, καὶ ἡμῶν ἔσται ἡ κληρονομία. καὶ λαβόντες ἀπέκτειναν αὐτὸν καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος. τί οὖν ποιήσει ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος; ἐλεύσεται καὶ ἀπολέσει τοὺς γεωργοὺς τούτους, καὶ δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις. οὐδὲ τὴν γραφὴν ταύτην ἀνέγνωτε, λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας· παρὰ Κυρίου ἐγένετο αὕτη, καὶ ἔστι θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν; Καὶ ἐζήτουν αὐτὸν κρατῆσαι, καὶ ἐφοβήθησαν τὸν ὄχλον· ἔγνωσαν γὰρ ὅτι πρὸς αὐτοὺς τὴν παραβολὴν εἶπε. καὶ ἀφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον. Καὶ ἀποστέλλουσι πρὸς αὐτόν τινας τῶν Φαρισαίων καὶ τῶν Ἡρῳδιανῶν ἵνα αὐτὸν ἀγρεύσωσι λόγῳ. οἱ δὲ ἐλθόντες λέγουσιν αὐτῷ· διδάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ καὶ οὐ μέλει σοι περὶ οὐδενός· οὐ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων, ἀλλ᾽ ἐπ᾽ ἀληθείας τὴν ὁδὸν τοῦ Θεοῦ διδάσκεις. εἶπον οὖν ἡμῖν· ἔξεστι δοῦναι κῆνσον Καίσαρι ἢ οὔ; δῶμεν ἢ μὴ δῶμεν; ὁ δὲ εἰδὼς αὐτῶν τὴν ὑπόκρισιν εἶπεν αὐτοῖς· τί με πειράζετε; φέρετέ μοι δηνάριον ἵνα ἴδω. οἱ δὲ ἤνεγκαν. καὶ λέγει αὐτοῖς· τίνος ἡ εἰκὼν αὕτη καὶ ἡ ἐπιγραφή; οἱ δὲ εἶπον· Καίσαρος. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ἀπόδοτε τὰ Καίσαρος Καίσαρι καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ τῷ Θεῷ· καὶ ἐθαύμασαν ἐπ᾽ αὐτῷ. Καὶ ἔρχονται Σαδδουκαῖοι πρὸς αὐτόν, οἵτινες λέγουσιν ἀνάστασιν μὴ εἶναι, καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν λέγοντες· διδάσκαλε,

Μωϋσῆς ἔγραψεν ἡμῖν ὅτι ἐάν τινος ἀδελφὸς ἀποθάνῃ καὶ καταλίπῃ γυναῖκα, καὶ τέκνα μὴ ἀφῇ, ἵνα λάβῃ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ ἐξαναστήσῃ σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ. ἑπτὰ οὖν ἀδελφοὶ ἦσαν. καὶ ὁ πρῶτος ἔλαβε γυναῖκα, καὶ ἀποθνῄσκων οὐκ ἀφῆκε σπέρμα. καὶ ὁ δεύτερος ἔλαβεν αὐτήν, καὶ ἀπέθανε, καὶ οὐδὲ αὐτὸς οὐκ ἀφῆκε σπέρμα. καὶ ὁ τρίτος ὡσαύτως. καὶ ἔλαβον αὐτὴν οἱ ἑπτά, καὶ οὐκ ἀφῆκαν σπέρμα. ἐσχάτη πάντων ἀπέθανε καὶ ἡ γυνή. ἐν τῇ οὖν ἀναστάσει, ὅταν ἀναστῶσι, τίνος αὐτῶν ἔσται γυνή; οἱ γὰρ ἑπτὰ ἔσχον αὐτὴν γυναῖκα. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· οὐ διὰ τοῦτο πλανᾶσθε, μὴ εἰδότες τὰς γραφὰς μηδὲ τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ; ὅταν γὰρ ἐκ νεκρῶν ἀναστῶσιν, οὔτε γαμοῦσιν οὔτε γαμίζονται, ἀλλ᾽ εἰσὶν ὡς ἄγγελοι οἱ ἐν τοῖς οὐρανοῖς. περὶ δὲ τῶν νεκρῶν ὅτι ἐγείρονται, οὐκ ἀνέγνωτε ἐν τῇ βίβλῳ Μωϋσέως, ἐπὶ τοῦ βάτου πῶς εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεὸς λέγων, ἐγὼ ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ; οὐκ ἔστιν ὁ Θεὸς νεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων· ὑμεῖς οὖν πολὺ πλανᾶσθε. Καὶ προσελθὼν εἷς τῶν γραμματέων, ἀκούσας αὐτῶν συζητούντων, ἰδὼν ὅτι καλῶς αὐτοῖς ἀπεκρίθη, ἐπηρώτησεν αὐτόν· ποία ἐστὶ πρώτη πάντων ἐντολή; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίθη αὐτῷ ὅτι πρώτη πάντων ἐντολή · ἄκουε, Ἰσραήλ, Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν Κύριος εἷς ἐστι· καὶ ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου καὶ ἐξ ὅλης τῆς διανοίας σου καὶ ἐξ ὅλης τῆς ἰσχύος σου. αὕτη πρώτη ἐντολή. καὶ δευτέρα ὁμοία, αὕτη· ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς ἑαυτόν. μείζων τούτων ἄλλη ἐντολὴ οὐκ ἔστι. καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ γραμματεύς· καλῶς, διδάσκαλε, ἐπ᾽ ἀληθείας εἶπας ὅτι εἷς ἐστι καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν αὐτοῦ· καὶ τὸ ἀγαπᾶν αὐτὸν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας καὶ ἐξ ὅλης τῆς συνέσεως καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς καὶ ἐξ

ὅλης τῆς ἰσχύος, καὶ τὸ ἀγαπᾶν τὸν πλησίον ὡς ἑαυτὸν πλεῖόν ἐστι πάντων τῶν ὁλοκαυτωμάτων καὶ θυσιῶν. καὶ ὁ Ἰησοῦς ἰδὼν ὅτι νουνεχῶς ἀπεκρίθη, εἶπεν αὐτῷ· οὐ μακρὰν εἶ ἀπὸ τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ· καὶ οὐδεὶς οὐκέτι ἐτόλμα αὐτὸν ἐπερωτῆσαι. Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἔλεγε διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ· πῶς λέγουσιν οἱ γραμματεῖς ὅτι ὁ Χριστὸς υἱὸς Δαυΐδ ἐστι; αὐτὸς γὰρ Δαυΐδ εἶπεν ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ· λέγει ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου, κάθου ἐκ δεξιῶν μου ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου. αὐτὸς οὖν Δαυΐδ λέγει αὐτὸν Κύριον· καὶ πόθεν υἱὸς αὐτοῦ ἐστι; καὶ ὁ πολὺς ὄχλος ἤκουεν αὐτοῦ ἡδέως. Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδαχῇ αὐτοῦ· βλέπετε ἀπὸ τῶν γραμματέων τῶν θελόντων ἐν στολαῖς περιπατεῖν καὶ ἀσπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς καὶ πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς συναγωγαῖς καὶ πρωτοκλισίας ἐν τοῖς δείπνοις. οἱ κατεσθίοντες τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν καὶ προφάσει μακρὰ προσευχόμενοι οὗτοι λήψονται περισσότερον κρῖμα. Καὶ καθίσας ὁ Ἰησοῦς κατέναντι τοῦ γαζοφυλακίου ἐθεώρει πῶς ὁ ὄχλος βάλλει χαλκὸν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον. καὶ πολλοὶ πλούσιοι ἔβαλλον πολλά· καὶ ἐλθοῦσα μία χήρα πτωχὴ ἔβαλε λεπτὰ δύο, ὅ ἐστι κοδράντης. καὶ προσκαλεσάμενος τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ εἶπεν αὐτοῖς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἡ χήρα ἡ πτωχὴ αὕτη πλεῖον πάντων ἔβαλε τῶν βαλλόντων εἰς τὸ γαζοφυλάκιον· πάντες γὰρ ἐκ τοῦ περισσεύοντος αὐτοῖς ἔβαλον· αὕτη δὲ ἐκ τῆς ὑστερήσεως αὐτῆς πάντα ὅσα εἶχεν ἔβαλεν, ὅλον τὸν βίον αὐτῆς.

# 13

Καὶ ἐκπορευομένου αὐτοῦ ἐκ τοῦ ἱεροῦ λέγει αὐτῷ εἷς τῶν

μαθητῶν αὐτοῦ· διδάσκαλε, ἴδε ποταποὶ λίθοι καὶ ποταπαὶ οἰκοδομαί. καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτῷ· βλέπεις ταύτας τὰς μεγάλας οἰκοδομάς; οὐ μὴ ἀφεθῇ ὧδε λίθος ἐπὶ λίθον ὃς οὐ μὴ καταλυθῇ. Καὶ καθημένου αὐτοῦ εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν κατέναντι τοῦ ἱεροῦ, ἐπηρώτων αὐτὸν κατ᾽ ἰδίαν Πέτρος καὶ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης καὶ Ἀνδρέας· εἰπὲ ἡμῖν πότε ταῦτα ἔσται, καὶ τί τὸ σημεῖον ὅταν μέλλῃ πάντα ταῦτα συντελεῖσθαι; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς ἤρξατο λέγειν αὐτοῖς· βλέπετε μή τις ὑμᾶς πλανήσῃ. πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου λέγοντες ὅτι ἐγώ εἰμι, καὶ πολλοὺς πλανήσουσιν. ὅταν δὲ ἀκούσητε πολέμους καὶ ἀκοὰς πολέμων, μὴ θροεῖσθε· δεῖ γὰρ γενέσθαι, ἀλλ᾽ οὔπω τὸ τέλος. ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος ἐπὶ ἔθνος καὶ βασιλεία ἐπὶ βασιλείαν, καὶ ἔσονται σεισμοὶ κατὰ τόπους, καὶ ἔσονται λιμοὶ καὶ ταραχαί. ἀρχαὶ ὠδίνων ταῦτα. Βλέπετε δὲ ὑμεῖς ἑαυτούς. παραδώσουσι γὰρ ὑμᾶς εἰς συνέδρια καὶ ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν δαρήσεσθε, καὶ ἐπὶ ἡγεμόνων καὶ βασιλέων σταθήσεσθε ἕνεκεν ἐμοῦ εἰς μαρτύριον αὐτοῖς. καὶ εἰς πάντα τὰ ἔθνη δεῖ πρῶτον κηρυχθῆναι τὸ εὐαγγέλιον. ὅταν δὲ ἀγάγωσιν ὑμᾶς παραδιδόντες, μὴ προμεριμνᾶτε τί λαλήσητε, μηδὲ μελετᾶτε, ἀλλ᾽ ὃ ἐὰν δοθῇ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ, τοῦτο λαλεῖτε· οὐ γὰρ ὑμεῖς ἐστε οἱ λαλοῦντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον. παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς θάνατον καὶ πατὴρ τέκνον, καὶ ἐπαναστήσονται τέκνα ἐπὶ γονεῖς καὶ θανατώσουσιν αὐτούς. καὶ ἔσεσθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ τὸ ὄνομά μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, οὗτος σωθήσεται. Ὅταν δὲ ἴδητε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως τὸ ῥηθὲν ὑπὸ Δανιὴλ τοῦ προφήτου ἑστὼς ὅπου οὐ δεῖ ὁ ἀναγινώσκων νοείτω τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φευγέτωσαν εἰς τὰ ὄρη, ὁ δὲ ἐπὶ τοῦ δώματος μὴ καταβάτω εἰς τὴν οἰκίαν μηδὲ εἰσελθέτω ἆραί τι ἐκ τῆς οἰκίας

αὐτοῦ, καὶ ὁ εἰς τὸν ἀγρὸν ὢν μὴ ἐπιστρεψάτω εἰς τὰ ὀπίσω ἆραι τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ. οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις καὶ ταῖς θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις. προσεύχεσθε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ὑμῶν χειμῶνος. ἔσονται γὰρ αἱ ἡμέραι ἐκεῖναι θλῖψις, οἵα οὐ γέγονε τοιαύτη ἀπ᾽ ἀρχῆς κτίσεως ἧς ἔκτισεν ὁ Θεὸς ἕως τοῦ νῦν καὶ οὐ μὴ γένηται. καὶ εἰ μὴ ἐκολόβωσε Κύριος τὰς ἡμέρας, οὐκ ἂν ἐσώθη πᾶσα σάρξ· ἀλλὰ διὰ τοὺς ἐκλεκτοὺς οὓς ἐξελέξατο ἐκολόβωσε τὰς ἡμέρας. καὶ τότε ἐάν τις ὑμῖν εἴπῃ, ἰδοὺ ὧδε ὁ Χριστός, ἰδοὺ ἐκεῖ, μὴ πιστεύετε. ἐγερθήσονται γὰρ ψευδόχριστοι καὶ ψευδοπροφῆται καὶ δώσουσι σημεῖα καὶ τέρατα πρὸς τὸ ἀποπλανᾶν, εἰ δυνατόν, καὶ τοὺς ἐκλεκτούς. ὑμεῖς δὲ βλέπετε· ἰδοὺ προείρηκα ὑμῖν ἅπαντα. Ἀλλ᾽ ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, μετὰ τὴν θλῖψιν ἐκείνην ὁ ἥλιος σκοτισθήσεται, καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φέγγος αὐτῆς, καὶ οἱ ἀστέρες ἔσονται ἐκ τοῦ οὐρανοῦ πίπτοντες, καὶ αἱ δυνάμεις αἱ ἐν τοῖς οὐρανοῖς σαλευθήσονται. καὶ τότε ὄψονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν νεφέλαις μετὰ δυνάμεως πολλῆς καὶ δόξης. καὶ τότε ἀποστελεῖ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ καὶ ἐπισυνάξει τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων, ἀπ᾽ ἄκρου τῆς γῆς ἕως ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ. Ἀπὸ δὲ τῆς συκῆς μάθετε τὴν παραβολήν. ὅταν αὐτῆς ὁ κλάδος ἤδη γένηται ἁπαλὸς καὶ ἐκφύῃ τὰ φύλλα, γινώσκετε ὅτι ἐγγὺς τὸ θέρος ἐστίν· οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ἴδητε ταῦτα γινόμενα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἐπὶ θύραις. ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι οὐ μὴ παρέλθῃ ἡ γενεὰ αὕτη μέχρις οὗ πάντα ταῦτα γένηται. ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελεύσονται, οἱ δὲ ἐμοὶ λόγοι οὐ μὴ παρελεύσονται. Περὶ δὲ τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἢ τῆς ὥρας οὐδεὶς οἶδεν, οὐδὲ οἱ ἄγγελοι ἐν οὐρανῷ, οὐδὲ ὁ υἱός, εἰ μὴ ὁ πατήρ. Βλέπετε, ἀγρυπνεῖτε καὶ προσεύχεσθε· οὐκ οἴδατε γὰρ πότε ὁ καιρός ἐστιν.

ὡς ἄνθρωπος ἀπόδημος, ἀφεὶς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, καὶ δοὺς τοῖς δούλοις αὐτοῦ τὴν ἐξουσίαν, καὶ ἑκάστῳ τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ τῷ θυρωρῷ ἐνετείλατο ἵνα γρηγορῇ. γρηγορεῖτε οὖν· οὐκ οἴδατε γὰρ πότε ὁ κύριος τῆς οἰκίας ἔρχεται, ὀψὲ ἢ μεσονυκτίου ἢ ἀλεκτοροφωνίας ἢ πρωΐ· μὴ ἐλθὼν ἐξαίφνης εὕρῃ ὑμᾶς καθεύδοντας. ἃ δὲ ὑμῖν λέγω, πᾶσι λέγω· γρηγορεῖτε.

# 14

Ἦν δὲ τὸ πάσχα καὶ τὰ ἄζυμα μετὰ δύο ἡμέρας. καὶ ἐζήτουν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ γραμματεῖς πῶς αὐτὸν ἐν δόλῳ κρατήσαντες ἀποκτείνωσιν. ἔλεγον δὲ μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, μήποτε θόρυβος ἔσται τοῦ λαοῦ. Καὶ ὄντος αὐτοῦ ἐν Βηθανίᾳ ἐν τῇ οἰκίᾳ Σίμωνος τοῦ λεπροῦ, κατακειμένου αὐτοῦ ἦλθε γυνὴ ἔχουσα ἀλάβαστρον μύρου νάρδου πιστικῆς πολυτελοῦς, καὶ συντρίψασα τὸ ἀλάβαστρον κατέχεεν αὐτοῦ κατὰ τῆς κεφαλῆς. ἦσαν δέ τινες ἀγανακτοῦντες πρὸς ἑαυτοὺς λέγοντες· εἰς τί ἡ ἀπώλεια αὕτη τοῦ μύρου γέγονεν; ἠδύνατο γὰρ τοῦτο τὸ μύρον πραθῆναι ἐπάνω τριακοσίων δηναρίων καὶ δοθῆναι τοῖς πτωχοῖς· καὶ ἐνεβριμῶντο αὐτῇ. ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· ἄφετε αὐτήν· τί αὐτῇ κόπους παρέχετε; καλὸν ἔργον εἰργάσατο ἐν ἐμοί. πάντοτε γὰρ τοὺς πτωχοὺς ἔχετε μεθ᾽ ἑαυτῶν, καὶ ὅταν θέλητε δύνασθε αὐτοὺς εὖ ποιῆσαι· ἐμὲ δὲ οὐ πάντοτε ἔχετε. ὃ ἔσχεν αὕτη ἐποίησε· προέλαβε μυρίσαι μου τὸ σῶμα εἰς τὸν ἐνταφιασμόν. ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅπου ἐὰν κηρυχθῇ τὸ εὐαγγέλιον τοῦτο εἰς ὅλον τὸν κόσμον, καὶ ὃ ἐποίησεν αὕτη λαληθήσεται εἰς μνημόσυνον αὐτῆς. Καὶ Ἰούδας ὁ Ἰσκαριώτης, εἷς τῶν δώδεκα, ἀπῆλθε πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς ἵνα παραδῷ αὐτὸν

αὐτοῖς. οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐχάρησαν, καὶ ἐπηγγείλαντο αὐτῷ ἀργύρια δοῦναι· καὶ ἐζήτει πῶς εὐκαίρως αὐτὸν παραδῷ. Καὶ τῇ πρώτῃ ἡμέρᾳ τῶν ἀζύμων, ὅτε τὸ πάσχα ἔθυον, λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ποῦ θέλεις ἀπελθόντες ἑτοιμάσωμεν ἵνα φάγῃς τὸ πάσχα; καὶ ἀποστέλλει δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ καὶ λέγει αὐτοῖς· ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἀπαντήσει ὑμῖν ἄνθρωπος κεράμιον ὕδατος βαστάζων· ἀκολουθήσατε αὐτῷ, καὶ ὅπου ἐὰν εἰσέλθῃ, εἴπατε τῷ οἰκοδεσπότῃ ὅτι ὁ διδάσκαλος λέγει· ποῦ ἐστι τὸ κατάλυμά μου ὅπου τὸ πάσχα μετὰ τῶν μαθητῶν μου φάγω; καὶ αὐτὸς ὑμῖν δείξει ἀνώγαιον μέγα ἐστρωμένον ἕτοιμον· ἐκεῖ ἑτοιμάσατε ἡμῖν. καὶ ἐξῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ καὶ ἦλθον εἰς τὴν πόλιν, καὶ εὗρον καθὼς εἶπεν αὐτοῖς, καὶ ἡτοίμασαν τὸ πάσχα. Καὶ ὀψίας γενομένης ἔρχεται μετὰ τῶν δώδεκα· καὶ ἀνακειμένων αὐτῶν καὶ ἐσθιόντων εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν παραδώσει με, ὁ ἐσθίων μετ᾽ ἐμοῦ. οἱ δὲ ἤρξαντο λυπεῖσθαι καὶ λέγειν αὐτῷ εἷς καθ᾽ εἷς· μήτι ἐγώ; καὶ ἄλλος· μήτι ἐγώ; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· εἷς ἐκ τῶν δώδεκα, ὁ ἐμβαπτόμενος μετ᾽ ἐμοῦ εἰς τὸ τρυβλίον. ὁ μὲν υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπάγει καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ· οὐαὶ δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ, δι᾽ οὗ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται· καλὸν ἦν αὐτῷ εἰ οὐκ ἐγεννήθη ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος. Καὶ ἐσθιόντων αὐτῶν λαβὼν ὁ Ἰησοῦς ἄρτον εὐλογήσας ἔκλασε καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς καὶ εἶπε· λάβετε φάγετε · τοῦτό ἐστι τὸ σῶμά μου. καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον εὐχαριστήσας ἔδωκεν αὐτοῖς, καὶ ἔπιον ἐξ αὐτοῦ πάντες. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· τοῦτό ἐστι τὸ αἷμά μου τὸ τῆς καινῆς διαθήκης τὸ περὶ πολλῶν ἐκχυνόμενον. ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι οὐκέτι οὐ μὴ πίω ἐκ τοῦ γενήματος τῆς ἀμπέλου ἕως τῆς ἡμέρας ἐκείνης ὅταν αὐτὸ πίνω καινὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ. Καὶ ὑμνήσαντες ἐξῆλθον εἰς τὸ

ὄρος τῶν ἐλαιῶν. καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντες σκανδαλισθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ· ὅτι γέγραπται, πατάξω τὸν ποιμένα καὶ διασκορπισθήσονται τὰ πρόβατα· ἀλλὰ μετὰ τὸ ἐγερθῆναί με προάξω ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν. ὁ δὲ Πέτρος ἔφη αὐτῷ· καὶ εἰ πάντες σκανδαλισθήσονται, ἀλλ᾽ οὐκ ἐγώ. καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν λέγω σοι ὅτι σὺ σήμερον ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ πρὶν ἢ δὶς ἀλέκτορα φωνῆσαι τρὶς ἀπαρνήσῃ με. ὁ δὲ Πέτρος ἐκ περισσοῦ ἔλεγε μᾶλλον· ἐάν με δέῃ συναποθανεῖν σοι, οὐ μή σε ἀπαρνήσομαι. ὡσαύτως δὲ καὶ πάντες ἔλεγον. Καὶ ἔρχονται εἰς χωρίον οὗ τὸ ὄνομα Γεθσημανῆ, καὶ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· καθίσατε ὧδε ἕως προσεύξωμαι. καὶ παραλαμβάνει τὸν Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην μεθ᾽ ἑαυτοῦ, καὶ ἤρξατο ἐκθαμβεῖσθαι καὶ ἀδημονεῖν καὶ λέγειν αὐτοῖς· περίλυπός ἐστιν ἡ ψυχή μου ἕως θανάτου· μείνατε ὧδε καὶ γρηγορεῖτε. καὶ προελθὼν μικρὸν ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ προσηύχετο ἵνα, εἰ δυνατόν ἐστι, παρέλθῃ ἀπ᾽ αὐτοῦ ἡ ὥρα, καὶ ἔλεγεν· ἀββᾶ ὁ πατήρ, πάντα δυνατά σοι· παρένεγκε τὸ ποτήριον ἀπ᾽ ἐμοῦ τοῦτο· ἀλλ᾽ οὐ τί ἐγὼ θέλω, ἀλλ᾽ εἴ τι σύ. καὶ ἔρχεται καὶ εὑρίσκει αὐτοὺς καθεύδοντας, καὶ λέγει τῷ Πέτρῳ· Σίμων, καθεύδεις; οὐκ ἰσχύσατε μίαν ὥραν γρηγορῆσαι; γρηγορεῖτε καὶ προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθητε εἰς πειρασμόν· τὸ μὲν πνεῦμα πρόθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής. καὶ πάλιν ἀπελθὼν προσηύξατο τὸν αὐτὸν λόγον εἰπών. καὶ ὑποστρέψας εὗρεν αὐτοὺς πάλιν καθεύδοντας· ἦσαν γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν καταβαρυνόμενοι, καὶ οὐκ ᾔδεισαν τί ἀποκριθῶσιν αὐτῷ. καὶ ἔρχεται τὸ τρίτον καὶ λέγει αὐτοῖς· καθεύδετε λοιπὸν καὶ ἀναπαύεσθε ἀπέχει· ἦλθεν ἡ ὥρα· ἰδοὺ παραδίδοται ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἁμαρτωλῶν· ἐγείρεσθε, ἄγωμεν· ἰδοὺ ὁ παραδιδούς με ἤγγικε. Καὶ

εὐθέως, ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος, παραγίνεται Ἰούδας ὁ Ἰσκαριώτης, εἷς τῶν δώδεκα, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ ὄχλος πολὺς μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων, ἀπεσταλμένοι παρὰ τῶν ἀρχιερέων καὶ γραμματέων καὶ τῶν πρεσβυτέρων. δεδώκει δὲ ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν σύσσημον αὐτοῖς λέγων· ὃν ἂν φιλήσω, αὐτός ἐστι· κρατήσατε αὐτὸν καὶ ἀπαγάγετε ἀσφαλῶς. καὶ ἐλθὼν εὐθέως προσελθὼν αὐτῷ λέγει· χαῖρε, ῥαββί, καὶ κατεφίλησεν αὐτόν. οἱ δὲ ἐπέβαλον ἐπ᾽ αὐτὸν τὰς χεῖρας αὐτῶν καὶ ἐκράτησαν αὐτόν. Εἷς δέ τις τῶν παρεστηκότων σπασάμενος τὴν μάχαιραν ἔπαισε τὸν δοῦλον τοῦ ἀρχιερέως καὶ ἀφεῖλεν αὐτοῦ τὸ ὠτίον. καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· ὡς ἐπὶ λῃστὴν ἐξήλθετε μετὰ μαχαιρῶν καὶ ξύλων συλλαβεῖν με· καθ᾽ ἡμέραν πρὸς ὑμᾶς ἤμην ἐν τῷ ἱερῷ διδάσκων, καὶ οὐκ ἐκρατήσατέ με. ἀλλ᾽ ἵνα πληρωθῶσιν αἱ γραφαί. καὶ ἀφέντες αὐτὸν ἔφυγον πάντες. Καὶ εἷς τις νεανίσκος ἠκολούθησεν αὐτῷ, περιβεβλημένος σινδόνα ἐπὶ γυμνοῦ· καὶ κρατοῦσιν αὐτὸν οἱ νεανίσκοι. ὁ δὲ καταλιπὼν τὴν σινδόνα γυμνὸς ἔφυγεν ἀπ᾽ αὐτῶν. Καὶ ἀπήγαγον τὸν Ἰησοῦν πρὸς τὸν ἀρχιερέα· καὶ συνέρχονται αὐτῷ πάντες οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ γραμματεῖς. καὶ ὁ Πέτρος ἀπὸ μακρόθεν ἠκολούθησεν αὐτῷ ἕως ἔσω εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ἀρχιερέως, καὶ ἦν συγκαθήμενος μετὰ τῶν ὑπηρετῶν καὶ θερμαινόμενος πρὸς τὸ φῶς. Οἱ δὲ ἀρχιερεῖς καὶ ὅλον τὸ συνέδριον ἐζήτουν κατὰ τοῦ Ἰησοῦ μαρτυρίαν εἰς τὸ θανατῶσαι αὐτόν, καὶ οὐχ εὕρισκον· πολλοὶ γὰρ ἐψευδομαρτύρουν κατ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἴσαι αἱ μαρτυρίαι οὐκ ἦσαν. καί τινες ἀναστάντες ἐψευδομαρτύρουν κατ᾽ αὐτοῦ λέγοντες ὅτι ἡμεῖς ἠκούσαμεν αὐτοῦ λέγοντος, ὅτι ἐγὼ καταλύσω τὸν ναὸν τοῦτον τὸν χειροποίητον καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν ἄλλον ἀχειροποίητον οἰκοδομήσω. καὶ οὐδὲ οὕτως ἴση ἦν ἡ μαρτυρία αὐτῶν. καὶ ἀναστὰς ὁ ἀρχιερεὺς εἰς τὸ μέσον ἐπηρώτα

τὸν Ἰησοῦν λέγων· οὐκ ἀποκρίνῃ οὐδέν; τί οὗτοί σου καταμαρτυροῦσιν; ὁ δὲ ἐσιώπα καὶ οὐδὲν ἀπεκρίνατο. πάλιν ὁ ἀρχιερεὺς ἐπηρώτα αὐτὸν καὶ λέγει αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ εὐλογητοῦ; ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· ἐγώ εἰμι· καὶ ὄψεσθε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐκ δεξιῶν καθήμενον τῆς δυνάμεως καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ. ὁ δὲ ἀρχιερεὺς διαρρήξας τοὺς χιτῶνας αὐτοῦ λέγει· τί ἔτι χρείαν ἔχομεν μαρτύρων; ἠκούσατε πάντως τῆς βλασφημίας· τί ὑμῖν φαίνεται; οἱ δὲ πάντες κατέκριναν αὐτὸν εἶναι ἔνοχον θανάτου. Καὶ ἤρξαντό τινες ἐμπτύειν αὐτῷ καὶ περικαλύπτειν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ καὶ κολαφίζειν αὐτὸν καὶ λέγειν αὐτῷ· προφήτευσον ἡμῖν τίς ἐστιν ὁ παίσας σε. καὶ οἱ ὑπηρέται ῥαπίσμασιν αὐτὸν ἔβαλον. Καὶ ὄντος τοῦ Πέτρου κάτω ἐν τῇ αὐλῇ ἔρχεται μία τῶν παιδισκῶν τοῦ ἀρχιερέως, καὶ ἰδοῦσα τὸν Πέτρον θερμαινόμενον ἐμβλέψασα αὐτῷ λέγει· καὶ σὺ μετὰ τοῦ Ἰησοῦ τοῦ Ναζαρηνοῦ ἦσθα. ὁ δὲ ἠρνήσατο λέγων· οὐκ οἶδα οὐδὲ ἐπίσταμαι τί σὺ λέγεις. καὶ ἐξῆλθεν ἔξω εἰς τὸ προαύλιον, καὶ ἀλέκτωρ ἐφώνησε. καὶ ἡ παιδίσκη ἰδοῦσα αὐτὸν πάλιν ἤρξατο λέγειν τοῖς παρεστηκόσιν ὅτι οὗτος ἐξ αὐτῶν ἐστιν. ὁ δὲ πάλιν ἠρνεῖτο. καὶ μετὰ μικρὸν πάλιν οἱ παρεστῶτες ἔλεγον τῷ Πέτρῳ· ἀληθῶς ἐξ αὐτῶν εἶ· καὶ γὰρ Γαλιλαῖος εἶ καὶ ἡ λαλιά σου ὁμοιάζει. ὁ δὲ ἤρξατο ἀναθεματίζειν καὶ ὀμνύναι ὅτι οὐκ οἶδα τὸν ἄνθρωπον τοῦτον ὃν λέγετε. καὶ ἐκ δευτέρου ἀλέκτωρ ἐφώνησε. καὶ ἀνεμνήσθη ὁ Πέτρος τὸ ῥῆμα ὃ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς ὅτι πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι δίς, ἀπαρνήσῃ με τρίς· καὶ ἐπιβαλὼν ἔκλαιε.

# 15

Καὶ εὐθέως ἐπὶ τὸ πρωῒ συμβούλιον ποιήσαντες οἱ ἀρχιερεῖς μετὰ τῶν πρεσβυτέρων καὶ γραμματέων καὶ ὅλον τὸ συνέδριον, δήσαντες τὸν Ἰησοῦν ἀπήνεγκαν καὶ παρέδωκαν τῷ Πιλάτῳ. καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ Πιλᾶτος· σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτῷ· σὺ λέγεις. καὶ κατηγόρουν αὐτοῦ οἱ ἀρχιερεῖς πολλά, αὐτὸς δὲ οὐδὲν ἀπεκρίνατο. ὁ δὲ Πιλᾶτος πάλιν ἐπηρώτα αὐτὸν λέγων· οὐκ ἀποκρίνῃ οὐδέν; ἴδε πόσα σου καταμαρτυροῦσιν. ὁ δὲ Ἰησοῦς οὐκέτι οὐδὲν ἀπεκρίθη, ὥστε θαυμάζειν τὸν Πιλᾶτον. Κατὰ δὲ ἑορτὴν ἀπέλυεν αὐτοῖς ἕνα δέσμιον, ὅνπερ ᾐτοῦντο. ἦν δὲ ὁ λεγόμενος Βαραββᾶς μετὰ τῶν συστασιαστῶν δεδεμένος, οἵτινες ἐν τῇ στάσει φόνον πεποιήκεισαν. καὶ ἀναβοήσας ὁ ὄχλος ἤρξατο αἰτεῖσθαι καθὼς ἀεὶ ἐποίει αὐτοῖς. ὁ δὲ Πιλᾶτος ἀπεκρίθη αὐτοῖς λέγων· θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν τὸν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων; ἐγίνωσκε γὰρ ὅτι διὰ φθόνον παραδεδώκεισαν αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς. οἱ δὲ ἀρχιερεῖς ἀνέσεισαν τὸν ὄχλον ἵνα μᾶλλον τὸν Βαραββᾶν ἀπολύσῃ αὐτοῖς. ὁ δὲ Πιλᾶτος ἀποκριθεὶς πάλιν εἶπεν αὐτοῖς· τί οὖν θέλετε ποιήσω ὃν λέγετε τὸν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων; οἱ δὲ πάλιν ἔκραξαν· σταύρωσον αὐτόν. ὁ δὲ Πιλᾶτος ἔλεγεν αὐτοῖς· τί γὰρ ἐποίησε κακόν; οἱ δὲ περισσοτέρως ἔκραξαν· σταύρωσον αὐτόν. ὁ δὲ Πιλᾶτος βουλόμενος τῷ ὄχλῳ τὸ ἱκανὸν ποιῆσαι, ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν Βαραββᾶν, καὶ παρέδωκε τὸν Ἰησοῦν φραγελλώσας ἵνα σταυρωθῇ. Οἱ δὲ στρατιῶται ἀπήγαγον αὐτὸν ἔσω τῆς αὐλῆς, ὅ ἐστι πραιτώριον, καὶ συγκαλοῦσιν ὅλην τὴν σπεῖραν· καὶ ἐνδύουσιν αὐτὸν πορφύραν καὶ περιτιθέασιν αὐτῷ πλέξαντες ἀκάνθινον στέφανον, καὶ ἤρξαντο ἀσπάζεσθαι αὐτόν. χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· καὶ ἔτυπτον αὐτοῦ τὴν κεφαλὴν καλάμῳ καὶ ἐνέπτυον αὐτῷ, καὶ τιθέντες τὰ γόνατα προσεκύνουν αὐτῷ. καὶ ὅτε

ἐνέπαιξαν αὐτῷ, ἐξέδυσαν αὐτὸν τὴν πορφύραν καὶ ἐνέδυσαν αὐτὸν τὰ ἱμάτια τὰ ἴδια, καὶ ἐξάγουσιν αὐτὸν ἵνα σταυρώσωσιν αὐτόν. Καὶ ἀγγαρεύουσι παράγοντά τινα Σίμωνα Κυρηναῖον, ἐρχόμενον ἀπ᾽ ἀγροῦ, τὸν πατέρα Ἀλεξάνδρου καὶ Ῥούφου, ἵνα ἄρῃ τὸν σταυρὸν αὐτοῦ. Καὶ φέρουσιν αὐτὸν ἐπὶ Γολγοθᾶ τόπον, ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον κρανίου τόπος . καὶ ἐδίδουν αὐτῷ πιεῖν ἐσμυρνισμένον οἶνον· ὁ δὲ οὐκ ἔλαβε. καὶ σταυρώσαντες αὐτὸν διαμερίζονται τὰ ἱμάτια αὐτοῦ βάλλοντες κλῆρον ἐπ᾽ αὐτὰ τίς τί ἄρῃ. ἦν δὲ ὥρα τρίτη καὶ ἐσταύρωσαν αὐτόν. καὶ ἦν ἡ ἐπιγραφὴ τῆς αἰτίας αὐτοῦ ἐπιγεγραμμένη· ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων . Καὶ σὺν αὐτῷ σταυροῦσι δύο λῃστάς, ἕνα ἐκ δεξιῶν καὶ ἕνα ἐξ εὐωνύμων αὐτοῦ. καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφὴ ἡ λέγουσα· καὶ μετὰ ἀνόμων ἐλογίσθη. Καὶ οἱ παραπορευόμενοι ἐβλασφήμουν αὐτὸν κινοῦντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν καὶ λέγοντες· οὐά, ὁ καταλύων τὸν ναὸν καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις οἰκοδομῶν σῶσον σεαυτὸν καὶ κατάβα ἀπὸ τοῦ σταυροῦ. ὁμοίως δὲ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἐμπαίζοντες πρὸς ἀλλήλους μετὰ τῶν γραμματέων ἔλεγον· ἄλλους ἔσωσεν, ἑαυτὸν οὐ δύναται σῶσαι. ὁ Χριστὸς ὁ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραὴλ καταβάτω νῦν ἀπὸ τοῦ σταυροῦ, ἵνα ἴδωμεν καὶ πιστεύσωμεν αὐτῷ. καὶ οἱ συνεσταυρωμένοι αὐτῷ ὠνείδιζον αὐτόν. Γενομένης δὲ ὥρας ἕκτης σκότος ἐγένετο ἐφ᾽ ὅλην τὴν γῆν ἕως ὥρας ἐνάτης· καὶ τῇ ὥρᾳ τῇ ἐνάτῃ ἐβόησεν ὁ Ἰησοῦς φωνῇ μεγάλῃ λέγων· Ἐλωΐ Ἐλωΐ, λιμᾶ σαβαχθανί; ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον, ὁ Θεός μου ὁ Θεός μου, εἰς τί με ἐγκατέλιπες; καί τινες τῶν παρεστηκότων ἀκούσαντες ἔλεγον· ἴδε Ἠλίαν φωνεῖ. δραμὼν δὲ εἷς καὶ γεμίσας σπόγγον ὄξους περιθείς τε καλάμῳ ἐπότιζεν αὐτὸν λέγων· ἄφετε ἴδωμεν εἰ ἔρχεται Ἠλίας καθελεῖν αὐτόν. ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀφεὶς φωνὴν μεγάλην ἐξέπνευσε. Καὶ τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο ἀπὸ

ἄνωθεν ἕως κάτω. Ἰδὼν δὲ ὁ κεντυρίων ὁ παρεστηκὼς ἐξ ἐναντίας αὐτοῦ ὅτι οὕτω κράξας ἐξέπνευσεν, εἶπεν· ἀληθῶς ὁ ἄνθρωπος οὗτος υἱὸς ἦν Θεοῦ. Ἦσαν δὲ καὶ γυναῖκες ἀπὸ μακρόθεν θεωροῦσαι, ἐν αἷς ἦν καὶ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ Μαρία ἡ τοῦ Ἰακώβου τοῦ μικροῦ καὶ Ἰωσῆ μήτηρ, καὶ Σαλώμη, αἳ καὶ ὅτε ἦν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ ἠκολούθουν αὐτῷ καὶ διηκόνουν αὐτῷ, καὶ ἄλλαι πολλαὶ αἱ συναναβᾶσαι αὐτῷ εἰς Ἱεροσόλυμα. Καὶ ἤδη ὀψίας γενομένης, ἐπεὶ ἦν παρασκευή, ὅ ἐστι προσάββατον, ἐλθὼν Ἰωσὴφ ὁ ἀπὸ Ἀριμαθαίας, εὐσχήμων βουλευτής, ὃς καὶ αὐτὸς ἦν προσδεχόμενος τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, τολμήσας εἰσῆλθε πρὸς Πιλᾶτον καὶ ᾐτήσατο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ. ὁ δὲ Πιλᾶτος ἐθαύμασεν εἰ ἤδη τέθνηκε, καὶ προσκαλεσάμενος τὸν κεντυρίωνα ἐπηρώτησεν αὐτὸν εἰ πάλαι ἀπέθανε· καὶ γνοὺς ἀπὸ τοῦ κεντυρίωνος ἐδωρήσατο τὸ σῶμα τῷ Ἰωσήφ. καὶ ἀγοράσας σινδόνα καὶ καθελὼν αὐτὸν ἐνείλησε τῇ σινδόνι καὶ κατέθηκεν αὐτὸν ἐν μνημείῳ, ὃ ἦν λελατομημένον ἐκ πέτρας, καὶ προσεκύλισε λίθον ἐπὶ τὴν θύραν τοῦ μνημείου. ἡ δὲ Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ Μαρία Ἰωσῆ ἐθεώρουν ποῦ τίθεται.

# 16

Καὶ διαγενομένου τοῦ σαββάτου Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ καὶ Μαρία ἡ τοῦ Ἰακώβου καὶ Σαλώμη ἠγόρασαν ἀρώματα ἵνα ἐλθοῦσαι ἀλείψωσιν αὐτόν. καὶ λίαν πρωΐ τῆς μιᾶς σαββάτων ἔρχονται ἐπὶ τὸ μνημεῖον, ἀνατείλαντος τοῦ ἡλίου. καὶ ἔλεγον πρὸς ἑαυτάς· τίς ἀποκυλίσει ἡμῖν τὸν λίθον ἐκ τῆς θύρας τοῦ μνημείου; καὶ ἀναβλέψασαι θεωροῦσιν ὅτι ἀποκεκύλισται ὁ λίθος· ἦν γὰρ μέγας

σφόδρα. καὶ εἰσελθοῦσαι εἰς τὸ μνημεῖον εἶδον νεανίσκον καθήμενον ἐν τοῖς δεξιοῖς, περιβεβλημένον στολὴν λευκήν, καὶ ἐξεθαμβήθησαν. ὁ δὲ λέγει αὐταῖς· μὴ ἐκθαμβεῖσθε· Ἰησοῦν ζητεῖτε τὸν Ναζαρηνὸν τὸν ἐσταυρωμένον· ἠγέρθη, οὐκ ἔστιν ὧδε· ἴδε ὁ τόπος ὅπου ἔθηκαν αὐτόν. ἀλλ᾽ ὑπάγετε εἴπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ καὶ τῷ Πέτρῳ ὅτι προάγει ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἐκεῖ αὐτὸν ὄψεσθε, καθὼς εἶπεν ὑμῖν. καὶ ἐξελθοῦσαι ἔφυγον ἀπὸ τοῦ μνημείου· εἶχε δὲ αὐτὰς τρόμος καὶ ἔκστασις, καὶ οὐδενὶ οὐδὲν εἶπον· ἐφοβοῦντο γάρ. Ἀναστὰς δὲ πρωῒ πρώτῃ σαββάτου ἐφάνη πρῶτον Μαρίᾳ τῇ Μαγδαληνῇ, ἀφ᾽ ἧς ἐκβεβλήκει ἑπτὰ δαιμόνια. ἐκείνη πορευθεῖσα ἀπήγγειλε τοῖς μετ᾽ αὐτοῦ γενομένοις, πενθοῦσι καὶ κλαίουσι. κἀκεῖνοι ἀκούσαντες ὅτι ζῇ καὶ ἐθεάθη ὑπ᾽ αὐτῆς, ἠπίστησαν. Μετὰ δὲ ταῦτα δυσὶν ἐξ αὐτῶν περιπατοῦσιν ἐφανερώθη ἐν ἑτέρᾳ μορφῇ, πορευομένοις εἰς ἀγρόν. κἀκεῖνοι ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν τοῖς λοιποῖς· οὐδὲ ἐκείνοις ἐπίστευσαν. Ὕστερον ἀνακειμένοις αὐτοῖς τοῖς ἕνδεκα ἐφανερώθη, καὶ ὠνείδισε τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν καὶ σκληροκαρδίαν, ὅτι τοῖς θεασαμένοις αὐτὸν ἐγηγερμένον οὐκ ἐπίστευσαν. καὶ εἶπεν αὐτοῖς· πορευθέντες εἰς τὸν κόσμον ἅπαντα κηρύξατε τὸ εὐαγγέλιον πάσῃ τῇ κτίσει. ὁ πιστεύσας καὶ βαπτισθεὶς σωθήσεται, ὁ δὲ ἀπιστήσας κατακριθήσεται. σημεῖα δὲ τοῖς πιστεύσασι ταῦτα παρακολουθήσει· ἐν τῷ ὀνόματί μου δαιμόνια ἐκβαλοῦσι· γλώσσαις λαλήσουσι καιναῖς· ὄφεις ἀροῦσι· κἂν θανάσιμόν τι πίωσιν, οὐ μὴ αὐτοὺς βλάψει· ἐπὶ ἀρρώστους χεῖρας ἐπιθήσουσι, καὶ καλῶς ἕξουσιν. Ὁ μὲν οὖν Κύριος μετὰ τὸ λαλῆσαι αὐτοῖς ἀνελήφθη εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ ἐκάθισεν ἐκ δεξιῶν τοῦ Θεοῦ. ἐκεῖνοι δὲ ἐξελθόντες ἐκήρυξαν πανταχοῦ, τοῦ Κυρίου συνεργοῦντος καὶ τὸν λόγον βεβαιοῦντος διὰ τῶν

ἐπακολουθούντων σημείων. ἀμήν.

# ΚΑΤΑ ΙΩΑΝΝΗΝ

## 1

Ἐν ἀρχῇ ἦν ὁ Λόγος, καὶ ὁ Λόγος ἦν πρὸς τὸν Θεόν, καὶ Θεὸς ἦν ὁ Λόγος. Οὗτος ἦν ἐν ἀρχῇ πρὸς τὸν Θεόν. πάντα δι᾽ αὐτοῦ ἐγένετο, καὶ χωρὶς αὐτοῦ ἐγένετο οὐδὲ ἓν ὃ γέγονεν. ἐν αὐτῷ ζωὴ ἦν, καὶ ἡ ζωὴ ἦν τὸ φῶς τῶν ἀνθρώπων. καὶ τὸ φῶς ἐν τῇ σκοτίᾳ φαίνει, καὶ ἡ σκοτία αὐτὸ οὐ κατέλαβεν. Ἐγένετο ἄνθρωπος ἀπεσταλμένος παρὰ Θεοῦ, ὄνομα αὐτῷ Ἰωάννης· οὗτος ἦλθεν εἰς μαρτυρίαν, ἵνα μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός, ἵνα πάντες πιστεύσωσι δι᾽ αὐτοῦ. οὐκ ἦν ἐκεῖνος τὸ φῶς, ἀλλ᾽ ἵνα μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ φωτός. Ἦν τὸ φῶς τὸ ἀληθινόν, ὃ φωτίζει πάντα ἄνθρωπον ἐρχόμενον εἰς τὸν κόσμον. ἐν τῷ κόσμῳ ἦν, καὶ ὁ κόσμος δι᾽ αὐτοῦ ἐγένετο, καὶ ὁ κόσμος αὐτὸν οὐκ ἔγνω. εἰς τὰ ἴδια ἦλθε, καὶ οἱ ἴδιοι αὐτὸν οὐ παρέλαβον. ὅσοι δὲ ἔλαβον αὐτόν, ἔδωκεν αὐτοῖς ἐξουσίαν τέκνα Θεοῦ γενέσθαι, τοῖς πιστεύουσιν εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, οἳ οὐκ ἐξ αἱμάτων, οὐδὲ ἐκ θελήματος σαρκός, οὐδὲ ἐκ θελήματος ἀνδρός, ἀλλ᾽ ἐκ Θεοῦ ἐγεννήθησαν. Καὶ ὁ Λόγος σὰρξ ἐγένετο καὶ ἐσκήνωσεν ἐν ἡμῖν, καὶ ἐθεασάμεθα τὴν δόξαν αὐτοῦ, δόξαν ὡς μονογενοῦς παρὰ πατρός, πλήρης χάριτος καὶ ἀληθείας.

Ἰωάννης μαρτυρεῖ περὶ αὐτοῦ καὶ κέκραγε λέγων· οὗτος ἦν ὃν εἶπον, ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος ἔμπροσθέν μου γέγονεν, ὅτι πρῶτός μου ἦν. Καὶ ἐκ τοῦ πληρώματος αὐτοῦ ἡμεῖς πάντες ἐλάβομεν, καὶ χάριν ἀντὶ χάριτος· ὅτι ὁ νόμος διὰ Μωϋσέως ἐδόθη, ἡ χάρις καὶ ἡ ἀλήθεια διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐγένετο. Θεὸν οὐδεὶς ἑώρακε πώποτε· ὁ μονογενὴς υἱὸς ὁ ὢν εἰς τὸν κόλπον τοῦ πατρός, ἐκεῖνος ἐξηγήσατο. Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Ἰωάννου, ὅτε ἀπέστειλαν οἱ Ἰουδαῖοι ἐξ Ἱεροσολύμων ἱερεῖς καὶ Λευΐτας ἵνα ἐρωτήσωσιν αὐτόν· σὺ τίς εἶ; καὶ ὡμολόγησε, καὶ οὐκ ἠρνήσατο· καὶ ὡμολόγησεν ὅτι οὐκ εἰμὶ ἐγὼ ὁ Χριστός. καὶ ἠρώτησαν αὐτόν· τί οὖν; Ἠλίας εἶ σύ; καὶ λέγει· οὐκ εἰμί. ὁ προφήτης εἶ σύ; καὶ ἀπεκρίθη, οὔ. εἶπον οὖν αὐτῷ· τίς εἶ; ἵνα ἀπόκρισιν δῶμεν τοῖς πέμψασιν ἡμᾶς· τί λέγεις περὶ σεαυτοῦ; ἔφη· ἐγὼ φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, εὐθύνατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, καθὼς εἶπεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης. καὶ οἱ ἀπεσταλμένοι ἦσαν ἐκ τῶν Φαρισαίων· καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν καὶ εἶπον αὐτῷ· τί οὖν βαπτίζεις, εἰ σὺ οὐκ εἶ ὁ Χριστὸς οὔτε Ἠλίας οὔτε ὁ προφήτης; ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰωάννης λέγων· ἐγὼ βαπτίζω ἐν ὕδατι· μέσος δὲ ὑμῶν ἕστηκεν ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε. αὐτός ἐστιν ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος, ὃς ἔμπροσθέν μου γέγονεν, οὗ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἄξιος ἵνα λύσω αὐτοῦ τὸν ἱμάντα τοῦ ὑποδήματος. Ταῦτα ἐν Βηθανίᾳ ἐγένετο πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὅπου ἦν Ἰωάννης βαπτίζων. Τῇ ἐπαύριον βλέπει ὁ Ἰωάννης τὸν Ἰησοῦν ἐρχόμενον πρὸς αὐτὸν καὶ λέγει· ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν τοῦ κόσμου. οὗτός ἐστι περὶ οὗ ἐγὼ εἶπον· ὀπίσω μου ἔρχεται ἀνὴρ ὃς ἔμπροσθέν μου γέγονεν, ὅτι πρῶτός μου ἦν. κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν, ἀλλ᾽ ἵνα φανερωθῇ τῷ Ἰσραήλ, διὰ τοῦτο ἦλθον ἐγὼ ἐν τῷ ὕδατι βαπτίζων. καὶ ἐμαρτύρησεν Ἰωάννης λέγων ὅτι τεθέαμαι τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον ὡς περιστερὰν ἐξ

οὐρανοῦ, καὶ ἔμεινεν ἐπ᾽ αὐτόν. κἀγὼ οὐκ ᾔδειν αὐτόν, ἀλλ᾽ ὁ πέμψας με βαπτίζειν ἐν ὕδατι, ἐκεῖνός μοι εἶπεν· ἐφ᾽ ὃν ἂν ἴδῃς τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον καὶ μένον ἐπ᾽ αὐτόν, οὗτός ἐστιν ὁ βαπτίζων ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ. κἀγὼ ἑώρακα καὶ μεμαρτύρηκα ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ. Τῇ ἐπαύριον πάλιν εἱστήκει ὁ Ἰωάννης καὶ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο, καὶ ἐμβλέψας τῷ Ἰησοῦ περιπατοῦντι λέγει· ἴδε ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ. καὶ ἤκουσαν αὐτοῦ οἱ δύο μαθηταὶ λαλοῦντος, καὶ ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ. στραφεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ θεασάμενος αὐτοὺς ἀκολουθοῦντας λέγει αὐτοῖς· τί ζητεῖτε; οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· ῥαββί· ὃ λέγεται ἑρμηνευόμενον διδάσκαλε · ποῦ μένεις; λέγει αὐτοῖς· ἔρχεσθε καὶ ἴδετε. ἦλθον οὖν καὶ εἶδον ποῦ μένει, καὶ παρ᾽ αὐτῷ ἔμειναν τὴν ἡμέραν ἐκείνην· ὥρα ἦν ὡς δεκάτη. ἦν Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου εἷς ἐκ τῶν δύο τῶν ἀκουσάντων παρὰ Ἰωάννου καὶ ἀκολουθησάντων αὐτῷ. εὑρίσκει οὗτος πρῶτος τὸν ἀδελφὸν τὸν ἴδιον Σίμωνα καὶ λέγει αὐτῷ· εὑρήκαμεν τὸν Μεσσίαν· ὅ ἐστι μεθερμηνευόμενον Χριστός · καὶ ἤγαγεν αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. ἐμβλέψας αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς εἶπε· σὺ εἶ Σίμων ὁ υἱὸς Ἰωνᾶ, σὺ κληθήσῃ Κηφᾶς , ὃ ἑρμηνεύεται Πέτρος . Τῇ ἐπαύριον ἠθέλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐξελθεῖν εἰς τὴν Γαλιλαίαν· καὶ εὑρίσκει Φίλιππον καὶ λέγει αὐτῷ· ἀκολούθει μοι. ἦν δὲ ὁ Φίλιππος ἀπὸ Βηθσαϊδά, ἐκ τῆς πόλεως Ἀνδρέου καὶ Πέτρου. εὑρίσκει Φίλιππος τὸν Ναθαναὴλ καὶ λέγει αὐτῷ· ὃν ἔγραψε Μωϋσῆς ἐν τῷ νόμῳ καὶ οἱ προφῆται, εὑρήκαμεν, Ἰησοῦν τὸν υἱὸν τοῦ Ἰωσὴφ τὸν ἀπὸ Ναζαρέτ. καὶ εἶπεν αὐτῷ Ναθαναήλ· ἐκ Ναζαρὲτ δύναταί τι ἀγαθὸν εἶναι; λέγει αὐτῷ Φίλιππος· ἔρχου καὶ ἴδε. εἶδεν ὁ Ἰησοῦς τὸν Ναθαναὴλ ἐρχόμενον πρὸς αὐτὸν καὶ λέγει περὶ αὐτοῦ· ἴδε ἀληθῶς Ἰσραηλίτης, ἐν ᾧ δόλος οὐκ ἔστι. λέγει αὐτῷ Ναθαναήλ· πόθεν με γινώσκεις; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· πρὸ τοῦ σε

Φίλιππον φωνῆσαι, ὄντα ὑπὸ τὴν συκῆν εἶδόν σε. ἀπεκρίθη Ναθαναὴλ καὶ λέγει αὐτῷ· ῥαββί, σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραήλ. ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ὅτι εἶπόν σοι, εἶδόν σε ὑποκάτω τῆς συκῆς, πιστεύεις; μείζω τούτων ὄψει. καὶ λέγει αὐτῷ· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀπ᾽ ἄρτι ὄψεσθε τὸν οὐρανὸν ἀνεῳγότα, καὶ τοὺς ἀγγέλους τοῦ Θεοῦ ἀναβαίνοντας καὶ καταβαίνοντας ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου.

# 2

Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ γάμος ἐγένετο ἐν Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἦν ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ ἐκεῖ· ἐκλήθη δὲ καὶ ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὸν γάμον. καὶ ὑστερήσαντος οἴνου λέγει ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ πρὸς αὐτόν· οἶνον οὐκ ἔχουσι. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· τί ἐμοὶ καὶ σοί, γύναι; οὔπω ἥκει ἡ ὥρα μου. λέγει ἡ μήτηρ αὐτοῦ τοῖς διακόνοις· ὅ τι ἂν λέγῃ ὑμῖν, ποιήσατε. ἦσαν δὲ ἐκεῖ ὑδρίαι λίθιναι ἓξ κείμεναι κατὰ τὸν καθαρισμὸν τῶν Ἰουδαίων, χωροῦσαι ἀνὰ μετρητὰς δύο ἢ τρεῖς. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· γεμίσατε τὰς ὑδρίας ὕδατος. καὶ ἐγέμισαν αὐτὰς ἕως ἄνω. καὶ λέγει αὐτοῖς· ἀντλήσατε νῦν καὶ φέρετε τῷ ἀρχιτρικλίνῳ. καὶ ἤνεγκαν. ὡς δὲ ἐγεύσατο ὁ ἀρχιτρίκλινος τὸ ὕδωρ οἶνον γεγενημένον καὶ οὐκ ᾔδει πόθεν ἐστίν· οἱ δὲ διάκονοι ᾔδεισαν οἱ ἠντληκότες τὸ ὕδωρ φωνεῖ τὸν νυμφίον ὁ ἀρχιτρίκλινος καὶ λέγει αὐτῷ· πᾶς ἄνθρωπος πρῶτον τὸν καλὸν οἶνον τίθησι, καὶ ὅταν μεθυσθῶσι, τότε τὸν ἐλάσσω· σὺ τετήρηκας τὸν καλὸν οἶνον ἕως ἄρτι. Ταύτην ἐποίησε τὴν ἀρχὴν τῶν σημείων ὁ Ἰησοῦς ἐν Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας καὶ ἐφανέρωσε τὴν δόξαν αὐτοῦ, καὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ. Μετὰ

τοῦτο κατέβη εἰς Καπερναοὺμ αὐτὸς καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ ἐκεῖ ἔμειναν οὐ πολλὰς ἡμέρας. Καὶ ἐγγὺς ἦν τὸ πάσχα τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἀνέβη εἰς Ἰεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς. καὶ εὗρεν ἐν τῷ ἱερῷ τοὺς πωλοῦντας βόας καὶ πρόβατα καὶ περιστεράς, καὶ τοὺς κερματιστὰς καθημένους. καὶ ποιήσας φραγέλλιον ἐκ σχοινίων πάντας ἐξέβαλεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ, τά τε πρόβατα καὶ τοὺς βόας, καὶ τῶν κολλυβιστῶν ἐξέχεε τὸ κέρμα καὶ τὰς τραπέζας ἀνέστρεψε, καὶ τοῖς τὰς περιστερὰς πωλοῦσιν εἶπεν· ἄρατε ταῦτα ἐντεῦθεν· μὴ ποιεῖτε τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου οἶκον ἐμπορίου. ἐμνήσθησαν δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὅτι γεγραμμένον ἐστίν, ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου καταφάγεταί με. ἀπεκρίθησαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι καὶ εἶπον αὐτῷ· τί σημεῖον δεικνύεις ἡμῖν ὅτι ταῦτα ποιεῖς; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· λύσατε τὸν ναὸν τοῦτον, καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερῶ αὐτόν. εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· τεσσαράκοντα καὶ ἓξ ἔτεσιν ᾠκοδομήθη ὁ ναὸς οὗτος, καὶ σὺ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερεῖς αὐτόν; ἐκεῖνος δὲ ἔλεγε περὶ τοῦ ναοῦ τοῦ σώματος αὐτοῦ. ὅτε οὖν ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν, ἐμνήσθησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὅτι τοῦτο ἔλεγε, καὶ ἐπίστευσαν τῇ γραφῇ καὶ τῷ λόγῳ ᾧ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς. Ὡς δὲ ἦν ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις ἐν τῷ πάσχα ἐν τῇ ἑορτῇ, πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, θεωροῦντες αὐτοῦ τὰ σημεῖα ἃ ἐποίει. αὐτὸς δὲ ὁ Ἰησοῦς οὐκ ἐπίστευεν ἑαυτὸν αὐτοῖς διὰ τὸ αὐτὸν γινώσκειν πάντας, καὶ ὅτι οὐ χρείαν εἶχεν ἵνα τις μαρτυρήσῃ περὶ τοῦ ἀνθρώπου· αὐτὸς γὰρ ἐγίνωσκε τί ἦν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ.

# 3

Ἦν δὲ ἄνθρωπος ἐκ τῶν Φαρισαίων, Νικόδημος ὄνομα αὐτῷ, ἄρχων τῶν Ἰουδαίων. οὗτος ἦλθε πρὸς αὐτὸν νυκτὸς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ῥαββί, οἴδαμεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐλήλυθας διδάσκαλος· οὐδεὶς γὰρ ταῦτα τὰ σημεῖα δύναται ποιεῖν ἃ σὺ ποιεῖς, ἐὰν μὴ ᾖ ὁ Θεὸς μετ᾽ αὐτοῦ. ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, ἐὰν μή τις γεννηθῇ ἄνωθεν, οὐ δύναται ἰδεῖν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ. λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ Νικόδημος· πῶς δύναται ἄνθρωπος γεννηθῆναι γέρων ὤν; μὴ δύναται εἰς τὴν κοιλίαν τῆς μητρὸς αὐτοῦ δεύτερον εἰσελθεῖν καὶ γεννηθῆναι; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, ἐὰν μή τις γεννηθῇ ἐξ ὕδατος καὶ Πνεύματος, οὐ δύναται εἰσελθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ. τὸ γεγεννημένον ἐκ τῆς σαρκὸς σάρξ ἐστι, καὶ τὸ γεγεννημένον ἐκ τοῦ Πνεύματος πνεῦμά ἐστι. μὴ θαυμάσῃς ὅτι εἶπόν σοι, δεῖ ὑμᾶς γεννηθῆναι ἄνωθεν. τὸ πνεῦμα ὅπου θέλει πνεῖ, καὶ τὴν φωνὴν αὐτοῦ ἀκούεις, ἀλλ᾽ οὐκ οἶδας πόθεν ἔρχεται καὶ ποῦ ὑπάγει· οὕτως ἐστὶ πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τοῦ Πνεύματος. ἀπεκρίθη Νικόδημος καὶ εἶπεν αὐτῷ· πῶς δύναται ταῦτα γενέσθαι; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ διδάσκαλος τοῦ Ἰσραὴλ καὶ ταῦτα οὐ γινώσκεις; ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι ὅτι ὃ οἴδαμεν λαλοῦμεν καὶ ὃ ἑωράκαμεν μαρτυροῦμεν, καὶ τὴν μαρτυρίαν ἡμῶν οὐ λαμβάνετε. εἰ τὰ ἐπίγεια εἶπον ὑμῖν καὶ οὐ πιστεύετε, πῶς ἐὰν εἴπω ὑμῖν τὰ ἐπουράνια πιστεύσετε; καὶ οὐδεὶς ἀναβέβηκεν εἰς τὸν οὐρανὸν εἰ μὴ ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβάς, ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὁ ὢν ἐν τῷ οὐρανῷ. καὶ καθὼς Μωϋσῆς ὕψωσε τὸν ὄφιν ἐν τῇ ἐρήμῳ, οὕτως ὑψωθῆναι δεῖ τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν μὴ ἀπόληται, ἀλλ᾽ ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον. οὕτω γὰρ ἠγάπησεν ὁ Θεὸς τὸν κόσμον, ὥστε τὸν υἱὸν αὐτοῦ τὸν μονογενῆ ἔδωκεν, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν μὴ ἀπόληται, ἀλλ᾽ ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον. οὐ γὰρ

ἀπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸν υἱὸν αὐτοῦ εἰς τὸν κόσμον ἵνα κρίνῃ τὸν κόσμον, ἀλλ᾽ ἵνα σωθῇ ὁ κόσμος δι᾽ αὐτοῦ. ὁ πιστεύων εἰς αὐτὸν οὐ κρίνεται, ὁ δὲ μὴ πιστεύων ἤδη κέκριται, ὅτι μὴ πεπίστευκεν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ μονογενοῦς υἱοῦ τοῦ Θεοῦ. αὕτη δέ ἐστιν ἡ κρίσις, ὅτι τὸ φῶς ἐλήλυθεν εἰς τὸν κόσμον, καὶ ἠγάπησαν οἱ ἄνθρωποι μᾶλλον τὸ σκότος ἢ τὸ φῶς· ἦν γὰρ πονηρὰ αὐτῶν τὰ ἔργα. πᾶς γὰρ ὁ φαῦλα πράσσων μισεῖ τὸ φῶς καὶ οὐκ ἔρχεται πρὸς τὸ φῶς, ἵνα μὴ ἐλεγχθῇ τὰ ἔργα αὐτοῦ· ὁ δὲ ποιῶν τὴν ἀλήθειαν ἔρχεται πρὸς τὸ φῶς, ἵνα φανερωθῇ αὐτοῦ τὰ ἔργα, ὅτι ἐν Θεῷ ἐστιν εἰργασμένα. Μετὰ ταῦτα ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὴν Ἰουδαίαν γῆν, καὶ ἐκεῖ διέτριβε μετ᾽ αὐτῶν καὶ ἐβάπτιζεν. ἦν δὲ καὶ Ἰωάννης βαπτίζων ἐν Αἰνὼν ἐγγὺς τοῦ Σαλείμ, ὅτι ὕδατα πολλὰ ἦν ἐκεῖ, καὶ παρεγίνοντο καὶ ἐβαπτίζοντο· οὔπω γὰρ ἦν βεβλημένος εἰς τὴν φυλακὴν ὁ Ἰωάννης. Ἐγένετο οὖν ζήτησις ἐκ τῶν μαθητῶν Ἰωάννου μετὰ Ἰουδαίου περὶ καθαρισμοῦ. καὶ ἦλθον πρὸς τὸν Ἰωάννην καὶ εἶπον αὐτῷ· ῥαββί, ὃς ἦν μετὰ σοῦ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ᾧ σὺ μεμαρτύρηκας, ἴδε οὗτος βαπτίζει καὶ πάντες ἔρχονται πρὸς αὐτόν. ἀπεκρίθη Ἰωάννης καὶ εἶπεν· οὐ δύναται ἄνθρωπος λαμβάνειν οὐδέν, ἐὰν μὴ ᾖ δεδομένον αὐτῷ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ. αὐτοὶ ὑμεῖς μοι μαρτυρεῖτε ὅτι εἶπον· οὐκ εἰμὶ ἐγὼ ὁ Χριστός, ἀλλ᾽ ὅτι ἀπεσταλμένος εἰμὶ ἔμπροσθεν ἐκείνου. ὁ ἔχων τὴν νύμφην νυμφίος ἐστίν· ὁ δὲ φίλος τοῦ νυμφίου, ὁ ἑστηκὼς καὶ ἀκούων αὐτοῦ, χαρᾷ χαίρει διὰ τὴν φωνὴν τοῦ νυμφίου. αὕτη οὖν ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ πεπλήρωται. ἐκεῖνον δεῖ αὐξάνειν, ἐμὲ δὲ ἐλαττοῦσθαι. ὁ ἄνωθεν ἐρχόμενος ἐπάνω πάντων ἐστίν. ὁ ὢν ἐκ τῆς γῆς ἐκ τῆς γῆς ἐστι καὶ ἐκ τῆς γῆς λαλεῖ· ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐρχόμενος ἐπάνω πάντων ἐστί, καὶ ὃ ἑώρακε καὶ ἤκουσε, τοῦτο μαρτυρεῖ, καὶ τὴν μαρτυρίαν αὐτοῦ οὐδεὶς λαμβάνει. ὁ λαβὼν

αὐτοῦ τὴν μαρτυρίαν ἐσφράγισεν ὅτι ὁ Θεὸς ἀληθής ἐστιν. ὃν γὰρ ἀπέστειλεν ὁ Θεός, τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ λαλεῖ· οὐ γὰρ ἐκ μέτρου δίδωσιν ὁ Θεὸς τὸ Πνεῦμα. ὁ πατὴρ ἀγαπᾷ τὸν υἱὸν καὶ πάντα δέδωκεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. ὁ πιστεύων εἰς τὸν υἱὸν ἔχει ζωὴν αἰώνιον· ὁ δὲ ἀπειθῶν τῷ υἱῷ οὐκ ὄψεται ζωήν, ἀλλ᾽ ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ μένει ἐπ᾽ αὐτόν.

# 4

Ὡς οὖν ἔγνω ὁ Κύριος ὅτι ἤκουσαν οἱ Φαρισαῖοι ὅτι Ἰησοῦς πλείονας μαθητὰς ποιεῖ καὶ βαπτίζει ἢ Ἰωάννης καίτοιγε Ἰησοῦς αὐτὸς οὐκ ἐβάπτιζεν, ἀλλ᾽ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀφῆκε τὴν Ἰουδαίαν καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν. Ἔδει δὲ αὐτὸν διέρχεσθαι διὰ τῆς Σαμαρείας. ἔρχεται οὖν εἰς πόλιν τῆς Σαμαρείας λεγομένην Συχάρ, πλησίον τοῦ χωρίου ὃ ἔδωκεν Ἰακὼβ Ἰωσὴφ τῷ υἱῷ αὐτοῦ· ἦν δὲ ἐκεῖ πηγὴ τοῦ Ἰακώβ. ὁ οὖν Ἰησοῦς κεκοπιακὼς ἐκ τῆς ὁδοιπορίας ἐκαθέζετο οὕτως ἐπὶ τῇ πηγῇ· ὥρα ἦν ὡσεὶ ἕκτη. ἔρχεται γυνὴ ἐκ τῆς Σαμαρείας ἀντλῆσαι ὕδωρ. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· δός μοι πιεῖν. οἱ γὰρ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀπεληλύθεισαν εἰς τὴν πόλιν ἵνα τροφὰς ἀγοράσωσι. λέγει οὖν αὐτῷ ἡ γυνὴ ἡ Σαμαρεῖτις· πῶς σὺ Ἰουδαῖος ὢν παρ᾽ ἐμοῦ πιεῖν αἰτεῖς, οὔσης γυναικὸς Σαμαρείτιδος; οὐ γὰρ συγχρῶνται Ἰουδαῖοι Σαμαρείταις. ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῇ· εἰ ᾔδεις τὴν δωρεὰν τοῦ Θεοῦ, καὶ τίς ἐστιν ὁ λέγων σοι, δός μοι πιεῖν, σὺ ἂν ᾔτησας αὐτόν, καὶ ἔδωκεν ἄν σοι ὕδωρ ζῶν. λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· Κύριε, οὔτε ἄντλημα ἔχεις, καὶ τὸ φρέαρ ἐστὶ βαθύ· πόθεν οὖν ἔχεις τὸ ὕδωρ τὸ ζῶν; μὴ σὺ μείζων εἶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἰακώβ, ὃς ἔδωκεν ἡμῖν τὸ φρέαρ, καὶ αὐτὸς ἐξ αὐτοῦ ἔπιε καὶ οἱ

υἱοὶ αὐτοῦ καὶ τὰ θρέμματα αὐτοῦ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῇ· πᾶς ὁ πίνων ἐκ τοῦ ὕδατος τούτου διψήσει πάλιν· ὃς δ᾽ ἂν πίῃ ἐκ τοῦ ὕδατος οὗ ἐγὼ δώσω αὐτῷ, οὐ μὴ διψήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα, ἀλλὰ τὸ ὕδωρ ὃ δώσω αὐτῷ, γενήσεται ἐν αὐτῷ πηγὴ ὕδατος ἁλλομένου εἰς ζωὴν αἰώνιον. λέγει πρὸς αὐτὸν ἡ γυνή· Κύριε, δός μοι τοῦτο τὸ ὕδωρ, ἵνα μὴ διψῶ μηδὲ ἔρχωμαι ἐνθάδε ἀντλεῖν. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· ὕπαγε φώνησον τὸν ἄνδρα σου καὶ ἐλθὲ ἐνθάδε. ἀπεκρίθη ἡ γυνὴ καὶ εἶπεν· οὐκ ἔχω ἄνδρα. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· καλῶς εἶπας ὅτι ἄνδρα οὐκ ἔχω· πέντε γὰρ ἄνδρας ἔσχες, καὶ νῦν ὃν ἔχεις οὐκ ἔστι σου ἀνήρ· τοῦτο ἀληθὲς εἴρηκας. λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· Κύριε, θεωρῶ ὅτι προφήτης εἶ σύ. οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν τῷ ὄρει τούτῳ προσεκύνησαν· καὶ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἐν Ἱεροσολύμοις ἐστὶν ὁ τόπος ὅπου δεῖ προσκυνεῖν. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· γύναι, πίστευσόν μοι ὅτι ἔρχεται ὥρα ὅτε οὔτε ἐν τῷ ὄρει τούτῳ οὔτε ἐν Ἱεροσολύμοις προσκυνήσετε τῷ πατρί. ὑμεῖς προσκυνεῖτε ὃ οὐκ οἴδατε, ἡμεῖς προσκυνοῦμεν ὃ οἴδαμεν· ὅτι ἡ σωτηρία ἐκ τῶν Ἰουδαίων ἐστίν. ἀλλ᾽ ἔρχεται ὥρα, καὶ νῦν ἐστιν, ὅτε οἱ ἀληθινοὶ προσκυνηταὶ προσκυνήσουσι τῷ πατρὶ ἐν πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ· καὶ γὰρ ὁ πατὴρ τοιούτους ζητεῖ τοὺς προσκυνοῦντας αὐτόν. πνεῦμα ὁ Θεός, καὶ τοὺς προσκυνοῦντας αὐτὸν ἐν πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ δεῖ προσκυνεῖν. λέγει αὐτῷ ἡ γυνή· οἶδα ὅτι Μεσσίας ἔρχεται ὁ λεγόμενος Χριστός· ὅταν ἔλθῃ ἐκεῖνος, ἀναγγελεῖ ἡμῖν πάντα. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· ἐγώ εἰμι ὁ λαλῶν σοι. καὶ ἐπὶ τούτῳ ἦλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ ἐθαύμασαν ὅτι μετὰ γυναικὸς ἐλάλει· οὐδεὶς μέντοι εἶπε, τί ζητεῖς ἢ τί λαλεῖς μετ᾽ αὐτῆς; Ἀφῆκεν οὖν τὴν ὑδρίαν αὐτῆς ἡ γυνὴ καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ λέγει τοῖς ἀνθρώποις· δεῦτε ἴδετε ἄνθρωπον ὃς εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα· μήτι οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός; ἐξῆλθον οὖν ἐκ τῆς πόλεως καὶ

ἤρχοντο πρὸς αὐτόν. Ἐν δὲ τῷ μεταξὺ ἠρώτων αὐτὸν οἱ μαθηταὶ λέγοντες· ῥαββί, φάγε. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· ἐγὼ βρῶσιν ἔχω φαγεῖν, ἣν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε. ἔλεγον οὖν οἱ μαθηταὶ πρὸς ἀλλήλους· μή τις ἤνεγκεν αὐτῷ φαγεῖν; λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐμὸν βρῶμά ἐστιν ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με καὶ τελειώσω αὐτοῦ τὸ ἔργον. οὐχ ὑμεῖς λέγετε ὅτι ἔτι τετράμηνός ἐστι καὶ ὁ θερισμὸς ἔρχεται; ἰδοὺ λέγω ὑμῖν, ἐπάρατε τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν καὶ θεάσασθε τὰς χώρας, ὅτι λευκαί εἰσι πρὸς θερισμὸν ἤδη. καὶ ὁ θερίζων μισθὸν λαμβάνει καὶ συνάγει καρπὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον, ἵνα καὶ ὁ σπείρων ὁμοῦ χαίρῃ καὶ ὁ θερίζων. ἐν γὰρ τούτῳ ὁ λόγος ἐστὶν ὁ ἀληθινός, ὅτι ἄλλος ἐστὶν ὁ σπείρων καὶ ἄλλος ὁ θερίζων. ἐγὼ ἀπέστειλα ὑμᾶς θερίζειν ὃ οὐχ ὑμεῖς κεκοπιάκατε· ἄλλοι κεκοπιάκασι, καὶ ὑμεῖς εἰς τὸν κόπον αὐτῶν εἰσεληλύθατε. Ἐκ δὲ τῆς πόλεως ἐκείνης πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτὸν τῶν Σαμαρειτῶν διὰ τὸν λόγον τῆς γυναικός, μαρτυρούσης ὅτι εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα. ὡς οὖν ἦλθον πρὸς αὐτὸν οἱ Σαμαρεῖται, ἠρώτων αὐτὸν μεῖναι παρ᾽ αὐτοῖς· καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ δύο ἡμέρας. καὶ πολλῷ πλείους ἐπίστευσαν διὰ τὸν λόγον αὐτοῦ, τῇ τε γυναικὶ ἔλεγον ὅτι οὐκέτι διὰ τὴν σὴν λαλιὰν πιστεύομεν· αὐτοὶ γὰρ ἀκηκόαμεν, καὶ οἴδαμεν ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ σωτὴρ τοῦ κόσμου ὁ Χριστός. Μετὰ δὲ τὰς δύο ἡμέρας ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν. αὐτὸς γὰρ ὁ Ἰησοῦς ἐμαρτύρησεν ὅτι προφήτης ἐν τῇ ἰδίᾳ πατρίδι τιμὴν οὐκ ἔχει. ὅτε οὖν ἦλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἐδέξαντο αὐτὸν οἱ Γαλιλαῖοι, πάντα ἑωρακότες ἃ ἐποίησεν ἐν Ἰεροσολύμοις ἐν τῇ ἑορτῇ· καὶ αὐτοὶ γὰρ ἦλθον εἰς τὴν ἑορτήν. Ἦλθεν οὖν πάλιν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας, ὅπου ἐποίησε τὸ ὕδωρ οἶνον. καὶ ἦν τις βασιλικός, οὗ ὁ υἱὸς ἠσθένει ἐν Καπερναούμ· οὗτος ἀκούσας ὅτι Ἰησοῦς ἥκει ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν,

ἀπῆλθε πρὸς αὐτὸν καὶ ἠρώτα αὐτὸν ἵνα καταβῇ καὶ ἰάσηται αὐτοῦ τὸν υἱόν· ἤμελλε γὰρ ἀποθνήσκειν. εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτόν· ἐὰν μὴ σημεῖα καὶ τέρατα ἴδητε, οὐ μὴ πιστεύσητε. λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλικός· Κύριε, κατάβηθι πρὶν ἀποθανεῖν τὸ παιδίον μου. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· πορεύου· ὁ υἱός σου ζῇ. καὶ ἐπίστευσεν ὁ ἄνθρωπος τ�ῳ̣ λόγῳ̣ ᾧ̣ εἶπεν αὐτῷ̣ ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐπορεύετο. ἤδη δὲ αὐτοῦ καταβαίνοντος οἱ δοῦλοι αὐτοῦ ἀπήντησαν αὐτῷ̣ καὶ ἀπήγγειλαν λέγοντες ὅτι ὁ παῖς σου ζῇ. ἐπύθετο οὖν παρ᾽ αὐτῶν τὴν ὥραν ἐν ᾗ̣ κομψότερον ἔσχε. καὶ εἶπον αὐτῷ̣ ὅτι χθὲς ὥραν ἑβδόμην ἀφῆκεν αὐτὸν ὁ πυρετός. ἔγνω οὖν ὁ πατὴρ ὅτι ἐν ἐκείνῃ τῇ̣ ὥρᾳ̣ ἐν ᾗ̣ εἶπεν αὐτῷ̣ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ὁ υἱός σου ζῇ̣· καὶ ἐπίστευσεν αὐτὸς καὶ ἡ οἰκία αὐτοῦ ὅλη. Τοῦτο πάλιν δεύτερον σημεῖον ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς ἐλθὼν ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

# 5

Μετὰ ταῦτα ἦν ἡ ἑορτὴ τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἰεροσόλυμα. ἔστι δὲ ἐν τοῖς Ἰεροσολύμοις ἐπὶ τῇ̣ προβατικῇ̣ κολυμβήθρα, ἡ ἐπιλεγομένη Ἑβραϊστὶ Βηθεσδά, πέντε στοὰς ἔχουσα. ἐν ταύταις κατέκειτο πλῆθος πολὺ τῶν ἀσθενούντων, τυφλῶν, χωλῶν, ξηρῶν, ἐκδεχομένων τὴν τοῦ ὕδατος κίνησιν. ἄγγελος γὰρ κατὰ καιρὸν κατέβαινεν ἐν τῇ̣ κολυμβήθρᾳ̣, καὶ ἐταράσσετο τὸ ὕδωρ· ὁ οὖν πρῶτος ἐμβὰς μετὰ τὴν ταραχὴν τοῦ ὕδατος ὑγιὴς ἐγίνετο ᾧ̣ δήποτε κατείχετο νοσήματι. ἦν δέ τις ἄνθρωπος ἐκεῖ τριάκοντα καὶ ὀκτὼ ἔτη ἔχων ἐν τῇ̣ ἀσθενείᾳ̣ αὐτοῦ. τοῦτον ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς κατακείμενον, καὶ γνοὺς ὅτι πολὺν

ἤδη χρόνον ἔχει, λέγει αὐτῷ· θέλεις ὑγιὴς γενέσθαι; ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἀσθενῶν· Κύριε, ἄνθρωπον οὐκ ἔχω, ἵνα ὅταν ταραχθῇ τὸ ὕδωρ, βάλῃ με εἰς τὴν κολυμβήθραν· ἐν ᾧ δὲ ἔρχομαι ἐγώ, ἄλλος πρὸ ἐμοῦ καταβαίνει. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἔγειρε, ἆρον τὸν κράβαττόν σου καὶ περιπάτει. καὶ εὐθέως ἐγένετο ὑγιὴς ὁ ἄνθρωπος, καὶ ἦρε τὸν κράβαττον αὐτοῦ καὶ περιεπάτει. ἦν δὲ σάββατον ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ. ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι τῷ τεθεραπευμένῳ· σάββατόν ἐστιν· οὐκ ἔξεστί σοι ἆραι τὸν κράβαττον. ἀπεκρίθη αὐτοῖς· ὁ ποιήσας με ὑγιῆ, ἐκεῖνός μοι εἶπεν· ἆρον τὸν κράβαττόν σου καὶ περιπάτει. ἠρώτησαν οὖν αὐτόν· τίς ἐστιν ὁ ἄνθρωπος ὁ εἰπών σοι, ἆρον τὸν κράβαττόν σου καὶ περιπάτει; ὁ δὲ ἰαθεὶς οὐκ ᾔδει τίς ἐστιν· ὁ γὰρ Ἰησοῦς ἐξένευσεν ὄχλου ὄντος ἐν τῷ τόπῳ. μετὰ ταῦτα εὑρίσκει αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἴδε ὑγιὴς γέγονας· μηκέτι ἁμάρτανε, ἵνα μὴ χεῖρόν σοί τι γένηται. ἀπῆλθεν ὁ ἄνθρωπος καὶ ἀνήγγειλε τοῖς Ἰουδαίοις ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ ποιήσας αὐτὸν ὑγιῆ. Καὶ διὰ τοῦτο ἐδίωκον τὸν Ἰησοῦν οἱ Ἰουδαῖοι καὶ ἐζήτουν αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ὅτι ταῦτα ἐποίει ἐν σαββάτῳ. ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς· ὁ πατήρ μου ἕως ἄρτι ἐργάζεται, κἀγὼ ἐργάζομαι. διὰ τοῦτο οὖν μᾶλλον ἐζήτουν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι, ὅτι οὐ μόνον ἔλυε τὸ σάββατον, ἀλλὰ καὶ πατέρα ἴδιον ἔλεγε τὸν Θεόν, ἴσον ἑαυτὸν ποιῶν τῷ Θεῷ. Ἀπεκρίνατο οὖν ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ δύναται ὁ υἱὸς ποιεῖν ἀφ᾽ ἑαυτοῦ οὐδέν, ἐὰν μή τι βλέπῃ τὸν πατέρα ποιοῦντα· ἃ γὰρ ἂν ἐκεῖνος ποιῇ, ταῦτα καὶ ὁ υἱὸς ὁμοίως ποιεῖ. ὁ γὰρ πατὴρ φιλεῖ τὸν υἱὸν καὶ πάντα δείκνυσιν αὐτῷ ἃ αὐτὸς ποιεῖ, καὶ μείζονα τούτων δείξει αὐτῷ ἔργα, ἵνα ὑμεῖς θαυμάζητε. ὥσπερ γὰρ ὁ πατὴρ ἐγείρει τοὺς νεκροὺς καὶ ζωοποιεῖ, οὕτω καὶ ὁ υἱὸς οὓς θέλει ζωοποιεῖ. οὐδὲ γὰρ ὁ πατὴρ κρίνει

οὐδένα, ἀλλὰ τὴν κρίσιν πᾶσαν δέδωκε τῷ υἱῷ, ἵνα πάντες τιμῶσι τὸν υἱὸν καθὼς τιμῶσι τὸν πατέρα. ὁ μὴ τιμῶν τὸν υἱὸν οὐ τιμᾷ τὸν πατέρα τὸν πέμψαντα αὐτόν. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ὁ τὸν λόγον μου ἀκούων καὶ πιστεύων τῷ πέμψαντί με ἔχει ζωὴν αἰώνιον, καὶ εἰς κρίσιν οὐκ ἔρχεται, ἀλλὰ μεταβέβηκεν ἐκ τοῦ θανάτου εἰς τὴν ζωήν. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἔρχεται ὥρα, καὶ νῦν ἐστιν, ὅτε οἱ νεκροὶ ἀκούσονται τῆς φωνῆς τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ οἱ ἀκούσαντες ζήσονται· ὥσπερ γὰρ ὁ πατὴρ ἔχει ζωὴν ἐν ἑαυτῷ, οὕτως ἔδωκε καὶ τῷ υἱῷ ζωὴν ἔχειν ἐν ἑαυτῷ· καὶ ἐξουσίαν ἔδωκεν αὐτῷ καὶ κρίσιν ποιεῖν, ὅτι υἱὸς ἀνθρώπου ἐστί. μὴ θαυμάζετε τοῦτο· ὅτι ἔρχεται ὥρα ἐν ᾗ πάντες οἱ ἐν τοῖς μνημείοις ἀκούσονται τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ ἐκπορεύσονται οἱ τὰ ἀγαθὰ ποιήσαντες εἰς ἀνάστασιν ζωῆς, οἱ δὲ τὰ φαῦλα πράξαντες εἰς ἀνάστασιν κρίσεως. Οὐ δύναμαι ἐγὼ ποιεῖν ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ οὐδέν. καθὼς ἀκούω κρίνω, καὶ ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ δικαία ἐστίν· ὅτι οὐ ζητῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμόν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με πατρός. Ἐὰν ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ ἐμαυτοῦ, ἡ μαρτυρία μου οὐκ ἔστιν ἀληθής. ἄλλος ἐστὶν ὁ μαρτυρῶν περὶ ἐμοῦ, καὶ οἶδα ὅτι ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία ἣν μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ. ὑμεῖς ἀπεστάλκατε πρὸς Ἰωάννην, καὶ μεμαρτύρηκε τῇ ἀληθείᾳ· ἐγὼ δὲ οὐ παρὰ ἀνθρώπου τὴν μαρτυρίαν λαμβάνω, ἀλλὰ ταῦτα λέγω ἵνα ὑμεῖς σωθῆτε. ἐκεῖνος ἦν ὁ λύχνος ὁ καιόμενος καὶ φαίνων, ὑμεῖς δὲ ἠθελήσατε ἀγαλλιαθῆναι πρὸς ὥραν ἐν τῷ φωτὶ αὐτοῦ. ἐγὼ δέ ἔχω τὴν μαρτυρίαν μείζω τοῦ Ἰωάννου· τὰ γὰρ ἔργα ἃ ἔδωκέ μοι ὁ πατὴρ ἵνα τελειώσω αὐτά, αὐτὰ τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ, μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ ὅτι ὁ πατήρ με ἀπέσταλκε. καὶ ὁ πέμψας με πατήρ, αὐτὸς μεμαρτύρηκε περὶ ἐμοῦ. οὔτε φωνὴν αὐτοῦ ἀκηκόατε πώποτε οὔτε εἶδος αὐτοῦ ἑωράκατε, καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ οὐκ ἔχετε μένοντα ἐν

ὑμῖν, ὅτι ὃν ἀπέστειλεν ἐκεῖνος, τούτῳ ὑμεῖς οὐ πιστεύετε. ἐρευνᾶτε τὰς γραφάς, ὅτι ὑμεῖς δοκεῖτε ἐν αὐταῖς ζωὴν αἰώνιον ἔχειν· καὶ ἐκεῖναί εἰσιν αἱ μαρτυροῦσαι περὶ ἐμοῦ· καὶ οὐ θέλετε ἐλθεῖν πρός με ἵνα ζωὴν ἔχητε. δόξαν παρὰ ἀνθρώπων οὐ λαμβάνω· ἀλλ᾽ ἔγνωκα ὑμᾶς ὅτι τὴν ἀγάπην τοῦ Θεοῦ οὐκ ἔχετε ἐν ἑαυτοῖς. ἐγὼ ἐλήλυθα ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ πατρός μου, καὶ οὐ λαμβάνετέ με· ἐὰν ἄλλος ἔλθῃ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἰδίῳ, ἐκεῖνον λήψεσθε. πῶς δύνασθε ὑμεῖς πιστεῦσαι, δόξαν παρὰ ἀλλήλων λαμβάνοντες, καὶ τὴν δόξαν τὴν παρὰ τοῦ μόνου Θεοῦ οὐ ζητεῖτε; μὴ δοκεῖτε ὅτι ἐγὼ κατηγορήσω ὑμῶν πρὸς τὸν πατέρα· ἔστιν ὁ κατηγορῶν ὑμῶν Μωϋσῆς, εἰς ὃν ὑμεῖς ἠλπίκατε. εἰ γὰρ ἐπιστεύετε Μωϋσεῖ, ἐπιστεύετε ἂν ἐμοί· περὶ γὰρ ἐμοῦ ἐκεῖνος ἔγραψεν. εἰ δὲ τοῖς ἐκείνου γράμμασιν οὐ πιστεύετε, πῶς τοῖς ἐμοῖς ῥήμασι πιστεύσετε;

# 6

Μετὰ ταῦτα ἀπῆλθεν ὁ Ἰησοῦς πέραν τῆς θαλάσσης τῆς Γαλιλαίας τῆς Τιβεριάδος· καὶ ἠκολούθει αὐτῷ ὄχλος πολύς, ὅτι ἑώρων αὐτοῦ τὰ σημεῖα ἃ ἐποίει ἐπὶ τῶν ἀσθενούντων. ἀνῆλθε δὲ εἰς τὸ ὄρος ὁ Ἰησοῦς καὶ ἐκεῖ ἐκάθητο μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ. ἦν δὲ ἐγγὺς τὸ πάσχα, ἡ ἑορτὴ τῶν Ἰουδαίων. ἐπάρας οὖν ὁ Ἰησοῦς τοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ θεασάμενος ὅτι πολὺς ὄχλος ἔρχεται πρὸς αὐτόν, λέγει πρὸς τὸν Φίλιππον· πόθεν ἀγοράσωμεν ἄρτους ἵνα φάγωσιν οὗτοι; τοῦτο δὲ ἔλεγε πειράζων αὐτόν· αὐτὸς γὰρ ᾔδει τί ἔμελλε ποιεῖν. ἀπεκρίθη αὐτῷ Φίλιππος· διακοσίων δηναρίων ἄρτοι οὐκ ἀρκοῦσιν αὐτοῖς ἵνα ἕκαστος αὐτῶν βραχύ τι λάβῃ. λέγει

αὐτῷ εἷς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου· ἔστι παιδάριον ἓν ὧδε, ὃς ἔχει πέντε ἄρτους κριθίνους καὶ δύο ὀψάρια· ἀλλὰ ταῦτα τί ἐστιν εἰς τοσούτους; εἶπε δὲ ὁ Ἰησοῦς· ποιήσατε τοὺς ἀνθρώπους ἀναπεσεῖν· ἦν δὲ χόρτος πολὺς ἐν τῷ τόπῳ. ἀνέπεσον οὖν οἱ ἄνδρες τὸν ἀριθμὸν ὡσεὶ πεντακισχίλιοι. ἔλαβε δὲ τοὺς ἄρτους ὁ Ἰησοῦς καὶ εὐχαριστήσας διέδωκε τοῖς μαθηταῖς, οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ἀνακειμένοις· ὁμοίως καὶ ἐκ τῶν ὀψαρίων ὅσον ἤθελον. ὡς δὲ ἐνεπλήσθησαν, λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· συναγάγετε τὰ περισσεύσαντα κλάσματα, ἵνα μή τι ἀπόληται. συνήγαγον οὖν καὶ ἐγέμισαν δώδεκα κοφίνους κλασμάτων ἐκ τῶν πέντε ἄρτων τῶν κριθίνων ἃ ἐπερίσσευσε τοῖς βεβρωκόσιν. Οἱ οὖν ἄνθρωποι, ἰδόντες ὃ ἐποίησε σημεῖον ὁ Ἰησοῦς, ἔλεγον ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ προφήτης ὁ ἐρχόμενος εἰς τὸν κόσμον. Ἰησοῦς οὖν γνοὺς ὅτι μέλλουσιν ἔρχεσθαι καὶ ἁρπάζειν αὐτὸν ἵνα ποιήσωσιν αὐτὸν βασιλέα, ἀνεχώρησε πάλιν εἰς τὸ ὄρος αὐτὸς μόνος. Ὡς δὲ ὀψία ἐγένετο, κατέβησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἐμβάντες εἰς τὸ πλοῖον ἤρχοντο πέραν τῆς θαλάσσης εἰς Καπερναούμ. καὶ σκοτία ἤδη ἐγεγόνει καὶ οὐκ ἐληλύθει πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, ἥ τε θάλασσα ἀνέμου μεγάλου πνέοντος διηγείρετο. ἐληλακότες οὖν ὡς σταδίους εἴκοσι πέντε ἢ τριάκοντα θεωροῦσι τὸν Ἰησοῦν περιπατοῦντα ἐπὶ τῆς θαλάσσης καὶ ἐγγὺς τοῦ πλοίου γινόμενον, καὶ ἐφοβήθησαν. ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· ἐγώ εἰμι· μὴ φοβεῖσθε. ἤθελον οὖν λαβεῖν αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον, καὶ εὐθέως τὸ πλοῖον ἐγένετο ἐπὶ τῆς γῆς εἰς ἣν ὑπῆγον. Τῇ ἐπαύριον ὁ ὄχλος ὁ ἑστηκὼς πέραν τῆς θαλάσσης ἰδὼν ὅτι πλοιάριον ἄλλο οὐκ ἦν ἐκεῖ εἰ μὴ ἓν ἐκεῖνο εἰς ὃ ἐνέβησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ ὅτι οὐ συνεισῆλθε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ πλοιάριον, ἀλλὰ μόνοι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ

ἀπῆλθον· ἄλλα δὲ ἦλθε πλοιάρια ἐκ Τιβεριάδος ἐγγὺς τοῦ τόπου, ὅπου ἔφαγον τὸν ἄρτον εὐχαριστήσαντος τοῦ Κυρίου· ὅτε οὖν εἶδεν ὁ ὄχλος ὅτι Ἰησοῦς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ οὐδὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἐνέβησαν αὐτοὶ εἰς τὰ πλοῖα καὶ ἦλθον εἰς Καπερναοὺμ ζητοῦντες τὸν Ἰησοῦν. καὶ εὑρόντες αὐτὸν πέραν τῆς θαλάσσης εἶπον αὐτῷ· ῥαββί, πότε ὧδε γέγονας; ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ζητεῖτέ με, οὐχ ὅτι εἴδετε σημεῖα, ἀλλ᾽ ὅτι ἐφάγετε ἐκ τῶν ἄρτων καὶ ἐχορτάσθητε. ἐργάζεσθε μὴ τὴν βρῶσιν τὴν ἀπολλυμένην, ἀλλὰ τὴν βρῶσιν τὴν μένουσαν εἰς ζωὴν αἰώνιον, ἣν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑμῖν δώσει· τοῦτον γὰρ ὁ πατὴρ ἐσφράγισεν ὁ Θεός. εἶπον οὖν πρὸς αὐτόν· τί ποιῶμεν ἵνα ἐργαζώμεθα τά ἔργα τοῦ Θεοῦ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· τοῦτό ἐστι τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ, ἵνα πιστεύσητε εἰς ὃν ἀπέστειλεν ἐκεῖνος. εἶπον οὖν αὐτῷ· τί οὖν ποιεῖς σὺ σημεῖον ἵνα ἴδωμεν καὶ πιστεύσωμέν σοι; τί ἐργάζῃ; οἱ πατέρες ἡμῶν τὸ μάννα ἔφαγον ἐν τῇ ἐρήμῳ, καθώς ἐστι γεγραμμένον· ἄρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν. εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ Μωϋσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸν ἄρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ἀλλ᾽ ὁ πατήρ μου δίδωσιν ὑμῖν τὸν ἄρτον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τὸν ἀληθινόν. ὁ γὰρ ἄρτος τοῦ Θεοῦ ἐστιν ὁ καταβαίνων ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καὶ ζωὴν διδοὺς τῷ κόσμῳ. εἶπον οὖν πρὸς αὐτόν· Κύριε, πάντοτε δὸς ἡμῖν τὸν ἄρτον τοῦτον. εἶπε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος τῆς ζωῆς· ὁ ἐρχόμενος πρός με οὐ μὴ πεινάσῃ, καὶ ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ οὐ μὴ διψήσῃ πώποτε. ἀλλ᾽ εἶπον ὑμῖν ὅτι καὶ ἑωράκατέ με καὶ οὐ πιστεύετε. Πᾶν ὃ δίδωσί μοι ὁ πατήρ, πρὸς ἐμὲ ἥξει, καὶ τὸν ἐρχόμενον πρός με οὐ μὴ ἐκβάλω ἔξω· ὅτι καταβέβηκα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ οὐχ ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τὸ ἐμόν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με. τοῦτο δέ ἐστι τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με πατρός,

ἵνα πᾶν ὃ δέδωκέ μοι μὴ ἀπολέσω ἐξ αὐτοῦ, ἀλλὰ ἀναστήσω αὐτὸ ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ. τοῦτο δέ ἐστι τὸ θέλημα τοῦ πέμψαντός με, ἵνα πᾶς ὁ θεωρῶν τὸν υἱὸν καὶ πιστεύων εἰς αὐτὸν ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον, καὶ ἀναστήσω αὐτὸν ἐγὼ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ. Ἐγόγγυζον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι περὶ αὐτοῦ ὅτι εἶπεν, ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ καταβὰς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἔλεγον· οὐχ οὗτός ἐστιν Ἰησοῦς ὁ υἱὸς Ἰωσήφ, οὗ ἡμεῖς οἴδαμεν τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα; πῶς οὖν λέγει οὗτος ὅτι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβέβηκα; ἀπεκρίθη οὖν ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· μὴ γογγύζετε μετ᾽ ἀλλήλων. οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρός με, ἐὰν μὴ ὁ πατὴρ ὁ πέμψας με ἑλκύσῃ αὐτόν, καὶ ἐγὼ ἀναστήσω αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ. ἔστι γεγραμμένον ἐν τοῖς προφήταις· καὶ ἔσονται πάντες διδακτοὶ Θεοῦ. πᾶς ὁ ἀκούων παρὰ τοῦ πατρὸς καὶ μαθὼν ἔρχεται πρός με· οὐχ ὅτι τὸν πατέρα τις ἑώρακεν, εἰ μὴ ὁ ὢν παρὰ τοῦ Θεοῦ, οὗτος ἑώρακε τὸν πατέρα. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ ἔχει ζωὴν αἰώνιον. ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος τῆς ζωῆς. οἱ πατέρες ὑμῶν ἔφαγον τὸ μάννα ἐν τῇ ἐρήμῳ καὶ ἀπέθανον· οὗτός ἐστιν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβαίνων, ἵνα τις ἐξ αὐτοῦ φάγῃ καὶ μὴ ἀποθάνῃ. ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ ζῶν ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβάς· ἐάν τις φάγῃ ἐκ τούτου τοῦ ἄρτου, ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα. καὶ ὁ ἄρτος δὲ ὃν ἐγὼ δώσω, ἡ σάρξ μού ἐστιν, ἣν ἐγὼ δώσω ὑπὲρ τῆς τοῦ κόσμου ζωῆς. Ἐμάχοντο οὖν πρὸς ἀλλήλους οἱ Ἰουδαῖοι λέγοντες· πῶς δύναται οὗτος ἡμῖν δοῦναι τὴν σάρκα φαγεῖν; εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ φάγητε τὴν σάρκα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου καὶ πίητε αὐτοῦ τὸ αἷμα, οὐκ ἔχετε ζωὴν ἐν ἑαυτοῖς. ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα καὶ πίνων μου τὸ αἷμα ἔχει ζωὴν αἰώνιον, καὶ ἐγὼ ἀναστήσω αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ. ἡ γὰρ σάρξ μου ἀληθῶς ἐστι βρῶσις, καὶ τὸ αἷμά μου ἀληθῶς ἐστι πόσις. ὁ τρώγων μου τὴν σάρκα καὶ πίνων μου τὸ

αἷμα ἐν ἐμοὶ μένει, κἀγὼ ἐν αὐτῷ. καθὼς ἀπέστειλέ με ὁ ζῶν πατὴρ κἀγὼ ζῶ διὰ τὸν πατέρα, καὶ ὁ τρώγων με κἀκεῖνος ζήσεται δι᾽ ἐμέ. οὗτός ἐστιν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβάς, οὐ καθὼς ἔφαγον οἱ πατέρες ὑμῶν τὸ μάννα καὶ ἀπέθανον· ὁ τρώγων τοῦτον τὸν ἄρτον ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα. Ταῦτα εἶπεν ἐν συναγωγῇ διδάσκων ἐν Καπερναούμ. Πολλοὶ οὖν ἀκούσαντες ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶπον· σκληρός ἐστιν οὗτος ὁ λόγος· τίς δύναται αὐτοῦ ἀκούειν; εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐν ἑαυτῷ ὅτι γογγύζουσι περὶ τούτου οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· τοῦτο ὑμᾶς σκανδαλίζει; ἐὰν οὖν θεωρῆτε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἀναβαίνοντα ὅπου ἦν τὸ πρότερον; τὸ πνεῦμά ἐστι τὸ ζωοποιοῦν, ἡ σὰρξ οὐκ ὠφελεῖ οὐδέν· τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν, πνεῦμά ἐστι καὶ ζωή ἐστιν. ἀλλ᾽ εἰσὶν ἐξ ὑμῶν τινες οἳ οὐ πιστεύουσιν. ᾔδει γὰρ ἐξ ἀρχῆς ὁ Ἰησοῦς τίνες εἰσὶν οἱ μὴ πιστεύοντες καὶ τίς ἐστιν ὁ παραδώσων αὐτόν. καὶ ἔλεγε· διὰ τοῦτο εἴρηκα ὑμῖν ὅτι οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρός με, ἐὰν μὴ ᾖ δεδομένον αὐτῷ ἐκ τοῦ πατρός μου. Ἐκ τούτου πολλοὶ ἀπῆλθον ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω καὶ οὐκέτι μετ᾽ αὐτοῦ περιεπάτουν. εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς τοῖς δώδεκα· μὴ καὶ ὑμεῖς θέλετε ὑπάγειν; ἀπεκρίθη οὖν αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, πρὸς τίνα ἀπελευσόμεθα; ῥήματα ζωῆς αἰωνίου ἔχεις· καὶ ἡμεῖς πεπιστεύκαμεν καὶ ἐγνώκαμεν ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος. ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· οὐκ ἐγὼ ὑμᾶς τοὺς δώδεκα ἐξελεξάμην; καὶ ἐξ ὑμῶν εἷς διάβολός ἐστιν. ἔλεγε δὲ τὸν Ἰούδαν Σίμωνος Ἰσκαριώτην· οὗτος γὰρ ἔμελλεν αὐτὸν παραδιδόναι, εἷς ὢν ἐκ τῶν δώδεκα.

# 7

Καὶ περιεπάτει ὁ Ἰησοῦς μετὰ ταῦτα ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ· οὐ γὰρ ἤθελεν ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ περιπατεῖν, ὅτι ἐζήτουν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτεῖναι. ἦν δὲ ἐγγὺς ἡ ἑορτὴ τῶν Ἰουδαίων ἡ σκηνοπηγία. εἶπον οὖν πρὸς αὐτὸν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· μετάβηθι ἐντεῦθεν καὶ ὕπαγε εἰς τὴν Ἰουδαίαν, ἵνα καὶ οἱ μαθηταί σου θεωρήσωσι τὰ ἔργα σου ἃ ποιεῖς· οὐδεὶς γὰρ ἐν κρυπτῷ τι ποιεῖ καὶ ζητεῖ αὐτὸς ἐν παρρησίᾳ εἶναι. εἰ ταῦτα ποιεῖς, φανέρωσον σεαυτὸν τῷ κόσμῳ. οὐδὲ γὰρ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπίστευον εἰς αὐτόν. λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ὁ καιρὸς ὁ ἐμὸς οὔπω πάρεστιν, ὁ δὲ καιρὸς ὁ ὑμέτερος πάντοτέ ἐστιν ἕτοιμος. οὐ δύναται ὁ κόσμος μισεῖν ὑμᾶς· ἐμὲ δὲ μισεῖ, ὅτι ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ αὐτοῦ ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ πονηρά ἐστιν. ὑμεῖς ἀνάβητε εἰς τὴν ἑορτὴν ταύτην· ἐγὼ οὔπω ἀναβαίνω εἰς τὴν ἑορτὴν ταύτην, ὅτι ὁ καιρὸς ὁ ἐμὸς οὔπω πεπλήρωται. ταῦτα δὲ εἰπὼν αὐτοῖς ἔμεινεν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ. Ὡς δὲ ἀνέβησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, τότε καὶ αὐτὸς ἀνέβη εἰς τὴν ἑορτήν, οὐ φανερῶς, ἀλλ᾽ ὡς ἐν κρυπτῷ. οἱ οὖν Ἰουδαῖοι ἐζήτουν αὐτὸν ἐν τῇ ἑορτῇ καὶ ἔλεγον· ποῦ ἐστιν ἐκεῖνος; καὶ γογγυσμὸς πολὺς περὶ αὐτοῦ ἦν ἐν τοῖς ὄχλοις. οἱ μὲν ἔλεγον ὅτι ἀγαθός ἐστιν· ἄλλοι ἔλεγον, οὔ, ἀλλὰ πλανᾷ τὸν ὄχλον. οὐδεὶς μέντοι παρρησίᾳ ἐλάλει περὶ αὐτοῦ διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων. Ἤδη δὲ τῆς ἑορτῆς μεσούσης ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερὸν καὶ ἐδίδασκε. καὶ ἐθαύμαζον οἱ Ἰουδαῖοι λέγοντες· πῶς οὗτος γράμματα οἶδε μὴ μεμαθηκώς; ἀπεκρίθη οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν· ἡ ἐμὴ διδαχὴ οὐκ ἔστιν ἐμή, ἀλλὰ τοῦ πέμψαντός με· ἐάν τις θέλῃ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιεῖν, γνώσεται περὶ τῆς διδαχῆς, πότερον ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστιν ἢ ἐγὼ ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ λαλῶ. ὁ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ λαλῶν τὴν δόξαν τὴν ἰδίαν ζητεῖ, ὁ δὲ ζητῶν τὴν δόξαν τοῦ πέμψαντος αὐτόν, οὗτος ἀληθής ἐστι, καὶ ἀδικία ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστιν. οὐ Μωϋσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὸν νόμον; καὶ οὐδεὶς ἐξ

ὑμῶν ποιεῖ τὸν νόμον. τί με ζητεῖτε ἀποκτεῖναι; ἀπεκρίθη ὁ ὄχλος καὶ εἶπε· δαιμόνιον ἔχεις· τίς σε ζητεῖ ἀποκτεῖναι; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἓν ἔργον ἐποίησα, καὶ πάντες θαυμάζετε διὰ τοῦτο. Μωϋσῆς δέδωκεν ὑμῖν τὴν περιτομήν, οὐχ ὅτι ἐκ τοῦ Μωϋσέως ἐστίν, ἀλλ᾽ ἐκ τῶν πατέρων, καὶ ἐν σαββάτῳ περιτέμνετε ἄνθρωπον. εἰ περιτομὴν λαμβάνει ἄνθρωπος ἐν σαββάτῳ ἵνα μὴ λυθῇ ὁ νόμος Μωϋσέως, ἐμοὶ χολᾶτε ὅτι ὅλον ἄνθρωπον ὑγιῆ ἐποίησα ἐν σαββάτῳ μὴ κρίνετε κατ᾽ ὄψιν, ἀλλὰ τὴν δικαίαν κρίσιν κρίνατε. Ἔλεγον οὖν τινες ἐκ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν· οὐχ οὗτός ἐστιν ὃν ζητοῦσιν ἀποκτεῖναι; καὶ ἴδε παρρησίᾳ λαλεῖ, καὶ οὐδὲν αὐτῷ λέγουσι. μήποτε ἀληθῶς ἔγνωσαν οἱ ἄρχοντες ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ Χριστός; ἀλλὰ τοῦτον οἴδαμεν πόθεν ἐστίν· ὁ δὲ Χριστὸς ὅταν ἔρχηται, οὐδεὶς γινώσκει πόθεν ἐστίν. ἔκραξεν οὖν ἐν τῷ ἱερῷ διδάσκων ὁ Ἰησοῦς καὶ λέγων· κἀμὲ οἴδατε, καὶ οἴδατε πόθεν εἰμί· καὶ ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλήλυθα, ἀλλ᾽ ἔστιν ἀληθινὸς ὁ πέμψας με, ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε· ἐγὼ οἶδα αὐτόν, ὅτι παρ᾽ αὐτοῦ εἰμι κἀκεῖνός με ἀπέστειλεν. Ἐζήτουν οὖν αὐτὸν πιάσαι, καὶ οὐδεὶς ἐπέβαλεν ἐπ᾽ αὐτὸν τὴν χεῖρα, ὅτι οὔπω ἐληλύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ. πολλοὶ δὲ ἐκ τοῦ ὄχλου ἐπίστευσαν εἰς αὐτὸν καὶ ἔλεγον ὅτι ὁ Χριστὸς ὅταν ἔλθῃ, μήτι πλείονα σημεῖα τούτων ποιήσει ὧν οὗτος ἐποίησεν; ἤκουσαν οἱ Φαρισαῖοι τοῦ ὄχλου γογγύζοντος περὶ αὐτοῦ ταῦτα, καὶ ἀπέστειλαν ὑπηρέτας οἱ Φαρισαῖοι καὶ οἱ ἀρχιερεῖς ἵνα πιάσωσιν αὐτόν. εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς· ἔτι μικρὸν χρόνον μεθ᾽ ὑμῶν εἰμι καὶ ὑπάγω πρὸς τὸν πέμψαντά με. ζητήσετέ με καὶ οὐχ εὑρήσετε· καὶ ὅπου εἰμὶ ἐγώ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν. εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς ἑαυτούς· ποῦ οὗτος μέλλει πορεύεσθαι, ὅτι ἡμεῖς οὐχ εὑρήσομεν αὐτόν; μὴ εἰς τὴν διασπορὰν τῶν Ἑλλήνων μέλλει πορεύεσθαι καὶ

διδάσκειν τοὺς Ἕλληνας; τίς ἐστιν οὗτος ὁ λόγος ὃν εἶπε, ζητήσετέ με καὶ οὐχ εὑρήσετε, καὶ ὅπου εἰμὶ ἐγώ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν; Ἐν δὲ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ τῇ μεγάλῃ τῆς ἑορτῆς εἱστήκει ὁ Ἰησοῦς καὶ ἔκραξε λέγων· ἐάν τις διψᾷ, ἐρχέσθω πρός με καὶ πινέτω. ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, καθὼς εἶπεν ἡ γραφή, ποταμοὶ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτοῦ ῥεύσουσιν ὕδατος ζῶντος . τοῦτο δὲ εἶπε περὶ τοῦ Πνεύματος οὗ ἔμελλον λαμβάνειν οἱ πιστεύοντες εἰς αὐτόν· οὔπω γὰρ ἦν Πνεῦμα Ἅγιον, ὅτι Ἰησοῦς οὐδέπω ἐδοξάσθη. πολλοὶ οὖν ἐκ τοῦ ὄχλου ἀκούσαντες τὸν λόγον ἔλεγον· οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ προφήτης· ἄλλοι ἔλεγον· οὗτός ἐστιν ὁ Χριστός· ἄλλοι ἔλεγον· μὴ γὰρ ἐκ τῆς Γαλιλαίας ὁ Χριστὸς ἔρχεται; οὐχὶ ἡ γραφὴ εἶπεν ὅτι ἐκ τοῦ σπέρματος Δαυῒδ καὶ ἀπὸ Βηθλεὲμ τῆς κώμης, ὅπου ἦν Δαυῒδ, ὁ Χριστὸς ἔρχεται; σχίσμα οὖν ἐν τῷ ὄχλῳ ἐγένετο δι᾽ αὐτόν. τινὲς δὲ ἤθελον ἐξ αὐτῶν πιάσαι αὐτόν, ἀλλ᾽ οὐδεὶς ἐπέβαλεν ἐπ᾽ αὐτὸν τὰς χεῖρας. Ἦλθον οὖν οἱ ὑπηρέται πρὸς τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ Φαρισαίους, καὶ εἶπον αὐτοῖς ἐκεῖνοι· διατί οὐκ ἠγάγετε αὐτόν; ἀπεκρίθησαν οἱ ὑπηρέται· οὐδέποτε οὕτως ἐλάλησεν ἄνθρωπος, ὡς οὗτος ὁ ἄνθρωπος. ἀπεκρίθησαν οὖν αὐτοῖς οἱ Φαρισαῖοι· μὴ καὶ ὑμεῖς πεπλάνησθε; μή τις ἐκ τῶν ἀρχόντων ἐπίστευσεν εἰς αὐτὸν ἢ ἐκ τῶν Φαρισαίων; ἀλλ᾽ ὁ ὄχλος οὗτος ὁ μὴ γινώσκων τὸν νόμον ἐπικατάρατοί εἰσι λέγει Νικόδημος πρὸς αὐτούς, ὁ ἐλθὼν νυκτὸς πρὸς αὐτόν, εἷς ὢν ἐξ αὐτῶν· μὴ ὁ νόμος ἡμῶν κρίνει τὸν ἄνθρωπον, ἐὰν μὴ ἀκούσῃ παρ᾽ αὐτοῦ πρότερον καὶ γνῷ τί ποιεῖ; ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· μὴ καὶ σὺ ἐκ τῆς Γαλιλαίας εἶ; ἐρεύνησον καὶ ἴδε ὅτι προφήτης ἐκ τῆς Γαλιλαίας οὐκ ἐγήγερται. Καὶ ἀπῆλθεν ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ.

# 8

Ἰησοῦς δὲ ἐπορεύθη εἰς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν· ὄρθρου δὲ πάλιν παρεγένετο εἰς τὸ ἱερόν, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἤρχετο πρὸς αὐτόν· καὶ καθίσας ἐδίδασκεν αὐτούς. ἄγουσι δὲ οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι γυναῖκα ἐπὶ μοιχείᾳ κατειλημμένην, καὶ στήσαντες αὐτὴν ἐν μέσῳ λέγουσιν αὐτῷ· διδάσκαλε, αὕτη ἡ γυνὴ κατείληπται ἐπ᾽ αὐτοφώρῳ μοιχευομένη· καὶ ἐν τῷ νόμῳ ἡμῶν Μωϋσῆς ἐνετείλατο τὰς τοιαύτας λιθάζειν. σὺ οὖν τί λέγεις; τοῦτο δὲ εἶπον ἐκπειράζοντες αὐτόν, ἵνα σχῶσι κατηγορίαν κατ᾽ αὐτοῦ. ὁ δὲ Ἰησοῦς κάτω κύψας τῷ δακτύλῳ ἔγραφεν εἰς τὴν γῆν. ὡς δὲ ἐπέμενον ἐρωτῶντες αὐτόν, ἀνέκυψε καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ὁ ἀναμάρτητος ὑμῶν πρῶτος βαλέτω λίθον ἐπ᾽ αὐτήν. καὶ πάλιν κάτω κύψας ἔγραφεν εἰς τὴν γῆν. οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐξήρχοντο εἷς καθ᾽ εἷς, ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων, καὶ κατελείφθη ὁ Ἰησοῦς καὶ ἡ γυνὴ ἐν μέσῳ οὖσα. ἀνακύψας δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῇ· γύναι, ποῦ εἰσιν; οὐδείς σε κατέκρινεν; ἡ δὲ εἶπεν· οὐδείς, Κύριε. εἶπε δὲ ὁ Ἰησοῦς· οὐδὲ ἐγώ σε κατακρίνω· πορεύου καὶ ἀπὸ τοῦ νῦν μηκέτι ἁμάρτανε . Πάλιν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησε λέγων· ἐγώ εἰμι τὸ φῶς τοῦ κόσμου· ὁ ἀκολουθῶν ἐμοὶ οὐ μὴ περιπατήσῃ ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀλλ᾽ ἕξει τὸ φῶς τῆς ζωῆς. εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι· σὺ περὶ σεαυτοῦ μαρτυρεῖς· ἡ μαρτυρία σου οὐκ ἔστιν ἀληθής. ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτοῖς· κἂν ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ ἐμαυτοῦ, ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία μου, ὅτι οἶδα πόθεν ἦλθον καὶ ποῦ ὑπάγω· ὑμεῖς δὲ οὐκ οἴδατε πόθεν ἔρχομαι ἢ ποῦ ὑπάγω. ὑμεῖς κατὰ τὴν σάρκα κρίνετε· ἐγὼ οὐ κρίνω οὐδένα. καὶ ἐὰν κρίνω δὲ ἐγώ, ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ ἀληθής ἐστιν, ὅτι μόνος οὐκ

εἰμί, ἀλλ᾽ ἐγὼ καὶ ὁ πέμψας με πατήρ. καὶ ἐν τῷ νόμῳ δὲ τῷ ὑμετέρῳ γέγραπται ὅτι δύο ἀνθρώπων ἡ μαρτυρία ἀληθής ἐστιν. ἐγώ εἰμι ὁ μαρτυρῶν περὶ ἐμαυτοῦ, καὶ μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ ὁ πέμψας με πατήρ. ἔλεγον οὖν αὐτῷ· ποῦ ἐστιν ὁ πατήρ σου; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· οὔτε ἐμὲ οἴδατε οὔτε τὸν πατέρα μου· εἰ ἐμὲ ᾔδειτε, καὶ τὸν πατέρα μου ᾔδειτε ἄν. Ταῦτα τὰ ῥήματα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ γαζοφυλακίῳ, διδάσκων ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ οὐδεὶς ἐπίασεν αὐτόν, ὅτι οὔπω ἐληλύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ. Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐγὼ ὑπάγω καὶ ζητήσετέ με, καὶ ἐν τῇ ἁμαρτίᾳ ὑμῶν ἀποθανεῖσθε· ὅπου ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν. ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· μήτι ἀποκτενεῖ ἑαυτόν, ὅτι λέγει, ὅπου ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν; καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ὑμεῖς ἐκ τῶν κάτω ἐστέ, ἐγὼ ἐκ τῶν ἄνω εἰμί· ὑμεῖς ἐκ τοῦ κόσμου τούτου ἐστέ, ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ κόσμου τούτου. εἶπον οὖν ὑμῖν ὅτι ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν· ἐὰν γὰρ μὴ πιστεύσητε ὅτι ἐγώ εἰμι, ἀποθανεῖσθε ἐν ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν. ἔλεγον οὖν αὐτῷ· σὺ τίς εἶ; καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· τὴν ἀρχὴν ὅ τι καὶ λαλῶ ὑμῖν. πολλὰ ἔχω περὶ ὑμῶν λαλεῖν καὶ κρίνειν· ἀλλ᾽ ὁ πέμψας με ἀληθής ἐστι, κἀγὼ ἃ ἤκουσα παρ᾽ αὐτοῦ, ταῦτα λέγω εἰς τὸν κόσμον. οὐκ ἔγνωσαν ὅτι τὸν πατέρα αὐτοῖς ἔλεγεν. εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ὅταν ὑψώσητε τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου, τότε γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι, καὶ ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ ποιῶ οὐδέν, ἀλλὰ καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ πατήρ μου, ταῦτα λαλῶ. καὶ ὁ πέμψας με μετ᾽ ἐμοῦ ἐστιν· οὐκ ἀφῆκέ με μόνον ὁ πατήρ, ὅτι ἐγὼ τὰ ἀρεστὰ αὐτῷ ποιῶ πάντοτε. Ταῦτα αὐτοῦ λαλοῦντος πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν. Ἔλεγεν οὖν ὁ Ἰησοῦς πρὸς τοὺς πεπιστευκότας αὐτῷ Ἰουδαίους· ἐὰν ὑμεῖς μείνητε ἐν τῷ λόγῳ τῷ ἐμῷ, ἀληθῶς μαθηταί μού ἐστε, καὶ γνώσεσθε τὴν ἀλήθειαν, καὶ ἡ ἀλήθεια ἐλευθερώσει ὑμᾶς.

ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· σπέρμα Ἀβραάμ ἐσμεν καὶ οὐδενὶ δεδουλεύκαμεν πώποτε· πῶς σὺ λέγεις ὅτι ἐλεύθεροι γενήσεσθε; ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν δοῦλός ἐστι τῆς ἁμαρτίας. ὁ δὲ δοῦλος οὐ μένει ἐν τῇ οἰκίᾳ εἰς τὸν αἰῶνα· ὁ υἱὸς μένει εἰς τὸν αἰῶνα. ἐὰν οὖν ὁ υἱὸς ὑμᾶς ἐλευθερώσῃ, ὄντως ἐλεύθεροι ἔσεσθε. οἶδα ὅτι σπέρμα Ἀβραάμ ἐστε· ἀλλὰ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ὅτι ὁ λόγος ὁ ἐμὸς οὐ χωρεῖ ἐν ὑμῖν. ἐγὼ ὃ ἑώρακα παρὰ τῷ πατρί μου λαλῶ· καὶ ὑμεῖς οὖν ὃ ἑωράκατε παρὰ τῷ πατρὶ ὑμῶν ποιεῖτε. ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· ὁ πατὴρ ἡμῶν Ἀβραάμ ἐστι. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· εἰ τέκνα τοῦ Ἀβραὰμ ἦτε, τὰ ἔργα τοῦ Ἀβραὰμ ἐποιεῖτε. νῦν δὲ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ἄνθρωπον ὃς τὴν ἀλήθειαν ὑμῖν λελάληκα, ἣν ἤκουσα παρὰ τοῦ Θεοῦ· τοῦτο Ἀβραὰμ οὐκ ἐποίησεν. ὑμεῖς ποιεῖτε τὰ ἔργα τοῦ πατρὸς ὑμῶν. εἶπον οὖν αὐτῷ· ἡμεῖς ἐκ πορνείας οὐ γεγεννήμεθα· ἕνα πατέρα ἔχομεν, τὸν Θεόν. εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· εἰ ὁ Θεὸς πατὴρ ὑμῶν ἦν, ἠγαπᾶτε ἂν ἐμέ· ἐγὼ γὰρ ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐξῆλθον καὶ ἥκω· οὐδὲ γὰρ ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ ἐλήλυθα, ἀλλ᾽ ἐκεῖνός με ἀπέστειλε. διατί τὴν λαλιὰν τὴν ἐμὴν οὐ γινώσκετε; ὅτι οὐ δύνασθε ἀκούειν τὸν λόγον τὸν ἐμόν. ὑμεῖς ἐκ τοῦ πατρὸς τοῦ διαβόλου ἐστέ, καὶ τὰς ἐπιθυμίας τοῦ πατρὸς ὑμῶν θέλετε ποιεῖν. ἐκεῖνος ἀνθρωποκτόνος ἦν ἀπ᾽ ἀρχῆς καὶ ἐν τῇ ἀληθείᾳ οὐχ ἕστηκεν, ὅτι οὐκ ἔστιν ἀλήθεια ἐν αὐτῷ· ὅταν λαλῇ τὸ ψεῦδος, ἐκ τῶν ἰδίων λαλεῖ, ὅτι ψεύστης ἐστὶ καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ. ἐγὼ δὲ ὅτι τὴν ἀλήθειαν λέγω, οὐ πιστεύετέ μοι. τίς ἐξ ὑμῶν ἐλέγχει με περὶ ἁμαρτίας; εἰ δὲ ἀλήθειαν λέγω, διατί ὑμεῖς οὐ πιστεύετέ μοι; ὁ ὢν ἐκ τοῦ Θεοῦ τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ ἀκούει· διὰ τοῦτο ὑμεῖς οὐκ ἀκούετε, ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἐστέ. ἀπεκρίθησαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι καὶ εἶπον αὐτῷ· οὐ καλῶς λέγομεν ἡμεῖς ὅτι

Σαμαρείτης εἶ σὺ καὶ δαιμόνιον ἔχεις; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· ἐγὼ δαιμόνιον οὐκ ἔχω, ἀλλὰ τιμῶ τὸν πατέρα μου, καὶ ὑμεῖς ἀτιμάζετέ με. ἐγὼ δὲ οὐ ζητῶ τὴν δόξαν μου· ἔστιν ὁ ζητῶν καὶ κρίνων. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐάν τις τὸν λόγον τὸν ἐμὸν τηρήσῃ, θάνατον οὐ μὴ θεωρήσῃ εἰς τὸν αἰῶνα. εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· νῦν ἐγνώκαμεν ὅτι δαιμόνιον ἔχεις. Ἀβραὰμ ἀπέθανε καὶ οἱ προφῆται, καὶ σὺ λέγεις, ἐάν τις τὸν λόγον μου τηρήσῃ, οὐ μὴ γεύσηται θανάτου εἰς τὸν αἰῶνα; μὴ σὺ μείζων εἶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἀβραάμ, ὅστις ἀπέθανε; καὶ οἱ προφῆται ἀπέθανον· τίνα σεαυτὸν σὺ ποιεῖς; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· ἐὰν ἐγὼ δοξάζω ἐμαυτόν, ἡ δόξα μου οὐδέν ἐστιν· ἔστιν ὁ πατήρ μου ὁ δοξάζων με, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι Θεὸς ὑμῶν ἐστι, καὶ οὐκ ἐγνώκατε αὐτόν· ἐγὼ δὲ οἶδα αὐτόν. καὶ ἐὰν εἴπω ὅτι οὐκ οἶδα αὐτόν, ἔσομαι ὅμοιος ὑμῶν ψεύστης· ἀλλ᾽ οἶδα αὐτὸν καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ τηρῶ. Ἀβραὰμ ὁ πατὴρ ὑμῶν ἠγαλλιάσατο ἵνα ἴδῃ τὴν ἡμέραν τὴν ἐμήν, καὶ εἶδε καὶ ἐχάρη. εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς αὐτόν· πεντήκοντα ἔτη οὔπω ἔχεις καὶ Ἀβραὰμ ἑώρακας; εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, πρὶν Ἀβραὰμ γενέσθαι ἐγώ εἰμι. ἦραν οὖν λίθους ἵνα βάλωσιν ἐπ᾽ αὐτόν. Ἰησοῦς δὲ ἐκρύβη, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ἱεροῦ διελθὼν διὰ μέσου αὐτῶν, καὶ παρῆγεν οὕτως.

# 9

Καὶ παράγων εἶδεν ἄνθρωπον τυφλὸν ἐκ γενετῆς. καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ λέγοντες· ῥαββί, τίς ἥμαρτεν, οὗτος ἢ οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ἵνα τυφλὸς γεννηθῇ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· οὔτε οὗτος ἥμαρτεν οὔτε οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ἀλλ᾽ ἵνα φανερωθῇ τὰ ἔργα τοῦ

Θεοῦ ἐν αὐτῷ. ἐμὲ δεῖ ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα τοῦ πέμψαντός με ἕως ἡμέρα ἐστίν· ἔρχεται νὺξ ὅτε οὐδεὶς δύναται ἐργάζεσθαι. ὅταν ἐν τῷ κόσμῳ ὦ, φῶς εἰμι τοῦ κόσμου. ταῦτα εἰπὼν ἔπτυσε χαμαὶ καὶ ἐποίησε πηλὸν ἐκ τοῦ πτύσματος, καὶ ἐπέχρισε τὸν πηλὸν ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ καὶ εἶπεν αὐτῷ· ὕπαγε νίψαι εἰς τὴν κολυμβήθραν τοῦ Σιλωάμ, ὃ ἑρμηνεύεται ἀπεσταλμένος . ἀπῆλθεν οὖν καὶ ἐνίψατο, καὶ ἦλθε βλέπων. Οἱ οὖν γείτονες καὶ οἱ θεωροῦντες αὐτὸν τὸ πρότερον ὅτι τυφλὸς ἦν, ἔλεγον· οὐχ οὗτός ἐστιν ὁ καθήμενος καὶ προσαιτῶν; ἄλλοι ἔλεγον ὅτι οὗτός ἐστιν· ἄλλοι δὲ ὅτι ὅμοιος αὐτῷ ἐστιν. ἐκεῖνος ἔλεγεν ὅτι ἐγώ εἰμι. ἔλεγον οὖν αὐτῷ· πῶς ἀνεῴχθησάν σου οἱ ὀφθαλμοί; ἀπεκρίθη ἐκεῖνος καὶ εἶπεν· ἄνθρωπος λεγόμενος Ἰησοῦς πηλὸν ἐποίησε καὶ ἐπέχρισέ μου τοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ εἶπέ μοι· ὕπαγε εἰς τὴν κολυμβήθραν τοῦ Σιλωὰμ καὶ νίψαι· ἀπελθὼν δὲ καὶ νιψάμενος ἀνέβλεψα. εἶπον οὖν αὐτῷ· ποῦ ἐστιν ἐκεῖνος; λέγει· οὐκ οἶδα. Ἄγουσιν αὐτὸν πρὸς τοὺς Φαρισαίους, τόν ποτε τυφλόν. ἦν δὲ σάββατον ὅτε τὸν πηλὸν ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς καὶ ἀνέῳξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμούς. πάλιν οὖν ἠρώτων αὐτὸν καὶ οἱ Φαρισαῖοι πῶς ἀνέβλεψεν. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· πηλὸν ἐπέθηκέ μου ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμούς, καὶ ἐνιψάμην, καὶ βλέπω. ἔλεγον οὖν ἐκ τῶν Φαρισαίων τινές· οὗτος ὁ ἄνθρωπος οὐκ ἔστι παρὰ τοῦ Θεοῦ, ὅτι τὸ σάββατον οὐ τηρεῖ. ἄλλοι ἔλεγον· πῶς δύναται ἄνθρωπος ἁμαρτωλὸς τοιαῦτα σημεῖα ποιεῖν; καὶ σχίσμα ἦν ἐν αὐτοῖς. λέγουσι τῷ τυφλῷ πάλιν· σὺ τί λέγεις περὶ αὐτοῦ, ὅτι ἤνοιξέ σου τοὺς ὀφθαλμούς; ὁ δὲ εἶπεν ὅτι προφήτης ἐστίν. οὐκ ἐπίστευσαν οὖν οἱ Ἰουδαῖοι περὶ αὐτοῦ ὅτι τυφλὸς ἦν καὶ ἀνέβλεψεν, ἕως ὅτου ἐφώνησαν τοὺς γονεῖς αὐτοῦ τοῦ ἀναβλέψαντος καὶ ἠρώτησαν αὐτοὺς λέγοντες· οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς ὑμῶν, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι

τυφλὸς ἐγεννήθη; πῶς οὖν ἄρτι βλέπει; ἀπεκρίθησαν δὲ αὐτοῖς οἱ γονεῖς αὐτοῦ καὶ εἶπον· οἴδαμεν ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς ἡμῶν καὶ ὅτι τυφλὸς ἐγεννήθη· πῶς δὲ νῦν βλέπει οὐκ οἴδαμεν, ἢ τίς ἤνοιξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἡμεῖς οὐκ οἴδαμεν· αὐτὸς ἡλικίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε, αὐτὸς περὶ ἑαυτοῦ λαλήσει. ταῦτα εἶπον οἱ γονεῖς αὐτοῦ, ὅτι ἐφοβοῦντο τοὺς Ἰουδαίους· ἤδη γὰρ συνετέθειντο οἱ Ἰουδαῖοι ἵνα, ἐάν τις αὐτὸν ὁμολογήσῃ Χριστόν, ἀποσυνάγωγος γένηται. διὰ τοῦτο οἱ γονεῖς αὐτοῦ εἶπον ὅτι ἡλικίαν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε. ἐφώνησαν οὖν ἐκ δευτέρου τὸν ἄνθρωπον ὃς ἦν τυφλός, καὶ εἶπον αὐτῷ· δὸς δόξαν τῷ Θεῷ· ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι ὁ ἄνθρωπος οὗτος ἁμαρτωλός ἐστιν. ἀπεκρίθη οὖν ἐκεῖνος καὶ εἶπεν· εἰ ἁμαρτωλός ἐστιν οὐκ οἶδα· ἓν οἶδα, ὅτι τυφλὸς ὢν ἄρτι βλέπω. εἶπον δὲ αὐτῷ πάλιν· τί ἐποίησέ σοι; πῶς ἤνοιξέ σου τοὺς ὀφθαλμούς; ἀπεκρίθη αὐτοῖς· εἶπον ὑμῖν ἤδη, καὶ οὐκ ἠκούσατε· τί πάλιν θέλετε ἀκούειν; μὴ καὶ ὑμεῖς θέλετε αὐτοῦ μαθηταὶ γενέσθαι; ἐλοιδόρησαν αὐτὸν καὶ εἶπον· σὺ εἶ μαθητὴς ἐκείνου· ἡμεῖς δὲ τοῦ Μωϋσέως ἐσμὲν μαθηταί. ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι Μωϋσεῖ λελάληκεν ὁ Θεός· τοῦτον δὲ οὐκ οἴδαμεν πόθεν ἐστίν. ἀπεκρίθη ὁ ἄνθρωπος καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἐν γὰρ τούτῳ θαυμαστόν ἐστιν, ὅτι ὑμεῖς οὐκ οἴδατε πόθεν ἐστί, καὶ ἀνέῳξέ μου τοὺς ὀφθαλμούς. οἴδαμεν δὲ ὅτι ἁμαρτωλῶν ὁ Θεὸς οὐκ ἀκούει, ἀλλ᾽ ἐάν τις θεοσεβὴς ᾖ καὶ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιῇ, τούτου ἀκούει. ἐκ τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκούσθη ὅτι ἤνοιξέ τις ὀφθαλμοὺς τυφλοῦ γεγεννημένου. εἰ μὴ ἦν οὗτος παρὰ Θεοῦ, οὐκ ἠδύνατο ποιεῖν οὐδέν. ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· ἐν ἁμαρτίαις σὺ ἐγεννήθης ὅλος, καὶ σὺ διδάσκεις ἡμᾶς; καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω. Ἤκουσεν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐξέβαλον αὐτὸν ἔξω, καὶ εὑρὼν αὐτὸν εἶπεν αὐτῷ· σὺ πιστεύεις εἰς τὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ; ἀπεκρίθη ἐκεῖνος καὶ εἶπε· καὶ τίς

ἐστι, Κύριε, ἵνα πιστεύσω εἰς αὐτόν; εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· καὶ ἑώρακας αὐτὸν καὶ ὁ λαλῶν μετὰ σοῦ ἐκεῖνός ἐστιν. ὁ δὲ ἔφη· πιστεύω, Κύριε· καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ. καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· εἰς κρῖμα ἐγὼ εἰς τὸν κόσμον τοῦτον ἦλθον, ἵνα οἱ μὴ βλέποντες βλέπωσι καὶ οἱ βλέποντες τυφλοὶ γένωνται. καὶ ἤκουσαν ἐκ τῶν Φαρισαίων ταῦτα οἱ ὄντες μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ εἶπον αὐτῷ· μὴ καὶ ἡμεῖς τυφλοί ἐσμεν; εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· εἰ τυφλοὶ ἦτε, οὐκ ἂν εἴχετε ἁμαρτίαν· νῦν δὲ λέγετε ὅτι βλέπομεν· ἡ οὖν ἁμαρτία ὑμῶν μένει.

# 10

Ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ μὴ εἰσερχόμενος διὰ τῆς θύρας εἰς τὴν αὐλὴν τῶν προβάτων, ἀλλὰ ἀναβαίνων ἀλλαχόθεν, ἐκεῖνος κλέπτης ἐστὶ καὶ λῃστής· ὁ δὲ εἰσερχόμενος διὰ τῆς θύρας ποιμήν ἐστι τῶν προβάτων. τούτῳ ὁ θυρωρὸς ἀνοίγει, καὶ τὰ πρόβατα τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούει, καὶ τὰ ἴδια πρόβατα καλεῖ κατ᾽ ὄνομα καὶ ἐξάγει αὐτά. καὶ ὅταν τὰ ἴδια πρόβατα ἐκβάλῃ, ἔμπροσθεν αὐτῶν πορεύεται, καὶ τὰ πρόβατα αὐτῷ ἀκολουθεῖ, ὅτι οἴδασι τὴν φωνὴν αὐτοῦ· ἀλλοτρίῳ δὲ οὐ μὴ ἀκολουθήσωσιν, ἀλλὰ φεύξονται ἀπ᾽ αὐτοῦ, ὅτι οὐκ οἴδασι τῶν ἀλλοτρίων τὴν φωνήν. Ταύτην τὴν παροιμίαν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐκεῖνοι δὲ οὐκ ἔγνωσαν τίνα ἦν ἃ ἐλάλει αὐτοῖς. Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ἐγώ εἰμι ἡ θύρα τῶν προβάτων. πάντες ὅσοι ἦλθον πρὸ ἐμοῦ, κλέπται εἰσὶ καὶ λῃσταί· ἀλλ᾽ οὐκ ἤκουσαν αὐτῶν τὰ πρόβατα. ἐγώ εἰμι ἡ θύρα· δι᾽ ἐμοῦ ἐάν τις εἰσέλθῃ, σωθήσεται, καὶ εἰσελεύσεται καὶ ἐξελεύσεται, καὶ νομὴν εὑρήσει. ὁ κλέπτης οὐκ ἔρχεται εἰ μὴ ἵνα κλέψῃ καὶ θύσῃ καὶ ἀπολέσῃ· ἐγὼ ἦλθον ἵνα ζωὴν

ἔχωσι καὶ περισσὸν ἔχωσιν. ἐγώ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός. ὁ ποιμὴν ὁ καλὸς τὴν ψυχὴν αὐτοῦ τίθησιν ὑπὲρ τῶν προβάτων· ὁ μισθωτὸς δὲ καὶ οὐκ ὢν ποιμήν, οὗ οὐκ εἰσὶ τὰ πρόβατα ἴδια, θεωρεῖ τὸν λύκον ἐρχόμενον καὶ ἀφίησι τὰ πρόβατα καὶ φεύγει· καὶ ὁ λύκος ἁρπάζει αὐτὰ καὶ σκορπίζει τὰ πρόβατα. ὁ δὲ μισθωτὸς φεύγει, ὅτι μισθωτός ἐστι καὶ οὐ μέλει αὐτῷ περὶ τῶν προβάτων. ἐγώ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός, καὶ γινώσκω τὰ ἐμὰ καὶ γινώσκομαι ὑπὸ τῶν ἐμῶν, καθὼς γινώσκει με ὁ πατὴρ κἀγὼ γινώσκω τὸν πατέρα, καὶ τὴν ψυχήν μου τίθημι ὑπὲρ τῶν προβάτων. καὶ ἄλλα πρόβατα ἔχω, ἃ οὐκ ἔστιν ἐκ τῆς αὐλῆς ταύτης· κἀκεῖνά με δεῖ ἀγαγεῖν, καὶ τῆς φωνῆς μου ἀκούσουσι, καὶ γενήσεται μία ποίμνη, εἷς ποιμήν. διὰ τοῦτο ὁ πατήρ με ἀγαπᾷ, ὅτι ἐγὼ τίθημι τὴν ψυχήν μου, ἵνα πάλιν λάβω αὐτήν. οὐδεὶς αἴρει αὐτὴν ἀπ᾽ ἐμοῦ, ἀλλ᾽ ἐγὼ τίθημι αὐτὴν ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ· ἐξουσίαν ἔχω θεῖναι αὐτήν, καὶ ἐξουσίαν ἔχω πάλιν λαβεῖν αὐτήν· ταύτην τὴν ἐντολὴν ἔλαβον παρὰ τοῦ πατρός μου. Σχίσμα οὖν πάλιν ἐγένετο ἐν τοῖς Ἰουδαίοις διὰ τοὺς λόγους τούτους. ἔλεγον δὲ πολλοὶ ἐξ αὐτῶν· δαιμόνιον ἔχει καὶ μαίνεται· τί αὐτοῦ ἀκούετε; ἄλλοι ἔλεγον· ταῦτα τὰ ῥήματα οὐκ ἔστι δαιμονιζομένου· μὴ δαιμόνιον δύναται τυφλῶν ὀφθαλμοὺς ἀνοίγειν; Ἐγένετο δὲ τὰ ἐγκαίνια ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις, καὶ χειμὼν ἦν· καὶ περιεπάτει ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ ἐν τῇ στοᾷ τοῦ Σολομῶνος. ἐκύκλωσαν οὖν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι καὶ ἔλεγον αὐτῷ· ἕως πότε τὴν ψυχὴν ἡμῶν αἴρεις; εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστός, εἰπὲ ἡμῖν παρρησίᾳ. ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· εἶπον ὑμῖν, καὶ οὐ πιστεύετε· τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ πατρός μου, ταῦτα μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ· ἀλλ᾽ ὑμεῖς οὐ πιστεύετε· οὐ γάρ ἐστε ἐκ τῶν προβάτων τῶν ἐμῶν, καθὼς εἶπον ὑμῖν. τὰ πρόβατα τὰ ἐμὰ τῆς φωνῆς μου ἀκούει, κἀγὼ γινώσκω αὐτά, καὶ ἀκολουθοῦσί μοι, κἀγὼ ζωὴν

αἰώνιον δίδωμι αὐτοῖς, καὶ οὐ μὴ ἀπόλωνται εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ οὐχ ἁρπάσει τις αὐτὰ ἐκ τῆς χειρός μου. ὁ πατήρ μου, ὃς δέδωκέ μοι, μείζων πάντων ἐστί, καὶ οὐδεὶς δύναται ἁρπάζειν ἐκ τῆς χειρὸς τοῦ πατρός μου. ἐγὼ καὶ ὁ πατὴρ ἕν ἐσμεν. Ἐβάστασαν οὖν πάλιν λίθους οἱ Ἰουδαῖοι ἵνα λιθάσωσιν αὐτόν. ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· πολλὰ καλὰ ἔργα ἔδειξα ὑμῖν ἐκ τοῦ πατρός μου· διὰ ποῖον αὐτῶν ἔργον λιθάζετέ με; ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι λέγοντες· περὶ καλοῦ ἔργου οὐ λιθάζομέν σε, ἀλλὰ περὶ βλασφημίας, καὶ ὅτι σὺ ἄνθρωπος ὢν ποιεῖς σεαυτὸν Θεόν. ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· οὐκ ἔστι γεγραμμένον ἐν τῷ νόμῳ ὑμῶν, ἐγὼ εἶπα, θεοί ἐστε; εἰ ἐκείνους εἶπε θεούς, πρὸς οὓς ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἐγένετο, καὶ οὐ δύναται λυθῆναι ἡ γραφή, ὃν ὁ πατὴρ ἡγίασε καὶ ἀπέστειλεν εἰς τὸν κόσμον, ὑμεῖς λέγετε ὅτι βλασφημεῖς, ὅτι εἶπον, υἱὸς τοῦ Θεοῦ εἰμι; εἰ οὐ ποιῶ τὰ ἔργα τοῦ πατρός μου, μὴ πιστεύετέ μοι· εἰ δὲ ποιῶ, κἂν ἐμοὶ μὴ πιστεύητε, τοῖς ἔργοις πιστεύσατε, ἵνα γνῶτε καὶ πιστεύσητε ὅτι ἐν ἐμοὶ ὁ πατὴρ κἀγὼ ἐν αὐτῷ. Ἐζήτουν οὖν πάλιν πιάσαι αὐτόν· καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τῆς χειρὸς αὐτῶν. Καὶ ἀπῆλθε πάλιν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, εἰς τὸν τόπον ὅπου ἦν Ἰωάννης τὸ πρῶτον βαπτίζων, καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ. καὶ πολλοὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν καὶ ἔλεγον ὅτι Ἰωάννης μὲν σημεῖον ἐποίησεν οὐδέν, πάντα δὲ ὅσα εἶπεν Ἰωάννης περὶ τούτου, ἀληθῆ ἦν. καὶ ἐπίστευσαν πολλοὶ ἐκεῖ εἰς αὐτόν.

# 11

Ἦν δέ τις ἀσθενῶν Λάζαρος ἀπὸ Βηθανίας, ἐκ τῆς κώμης Μαρίας καὶ Μάρθας τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς. ἦν δὲ Μαρία ἡ ἀλείψασα τὸν

Κύριον μύρῳ καὶ ἐκμάξασα τοὺς πόδας αὐτοῦ ταῖς θριξὶν αὐτῆς, ἧς ὁ ἀδελφὸς Λάζαρος ἠσθένει. ἀπέστειλαν οὖν αἱ ἀδελφαὶ πρὸς αὐτὸν λέγουσαι· Κύριε, ἴδε ὃν φιλεῖς ἀσθενεῖ. ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· αὕτη ἡ ἀσθένεια οὐκ ἔστι πρὸς θάνατον, ἀλλ᾽ ὑπὲρ τῆς δόξης τοῦ Θεοῦ, ἵνα δοξασθῇ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ δι᾽ αὐτῆς. ἠγάπα δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν Μάρθαν καὶ τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς καὶ τὸν Λάζαρον. ὡς οὖν ἤκουσεν ὅτι ἀσθενεῖ, τότε μὲν ἔμεινεν ἐν ᾧ ἦν τόπῳ δύο ἡμέρας· ἔπειτα μετὰ τοῦτο λέγει τοῖς μαθηταῖς· ἄγωμεν εἰς τὴν Ἰουδαίαν πάλιν. λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταί· ῥαββί, νῦν ἐζήτουν σε λιθάσαι οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ πάλιν ὑπάγεις ἐκεῖ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· οὐχὶ δώδεκά εἰσιν ὧραι τῆς ἡμέρας; ἐάν τις περιπατῇ ἐν τῇ ἡμέρᾳ, οὐ προσκόπτει, ὅτι τὸ φῶς τοῦ κόσμου τούτου βλέπει· ἐὰν δέ τις περιπατῇ ἐν τῇ νυκτί, προσκόπτει, ὅτι τὸ φῶς οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ. ταῦτα εἶπε, καὶ μετὰ τοῦτο λέγει αὐτοῖς· Λάζαρος ὁ φίλος ἡμῶν κεκοίμηται· ἀλλὰ πορεύομαι ἵνα ἐξυπνίσω αὐτόν. εἶπον οὖν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Κύριε, εἰ κεκοίμηται, σωθήσεται. εἰρήκει δὲ ὁ Ἰησοῦς περὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ἐκεῖνοι δὲ ἔδοξαν ὅτι περὶ τῆς κοιμήσεως τοῦ ὕπνου λέγει. τότε οὖν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παρρησίᾳ· Λάζαρος ἀπέθανε, καὶ χαίρω δι᾽ ὑμᾶς, ἵνα πιστεύσητε, ὅτι οὐκ ἤμην ἐκεῖ· ἀλλ᾽ ἄγωμεν πρὸς αὐτόν. εἶπεν οὖν Θωμᾶς ὁ λεγόμενος Δίδυμος τοῖς συμμαθηταῖς· ἄγωμεν καὶ ἡμεῖς ἵνα ἀποθάνωμεν μετ᾽ αὐτοῦ. Ἐλθὼν οὖν ὁ Ἰησοῦς εὗρεν αὐτὸν τέσσαρας ἡμέρας ἤδη ἔχοντα ἐν τῷ μνημείῳ. ἦν δὲ ἡ Βηθανία ἐγγὺς τῶν Ἱεροσολύμων ὡς ἀπὸ σταδίων δεκαπέντε, καὶ πολλοὶ ἐκ τῶν Ἰουδαίων ἐληλύθεισαν πρὸς τὰς περὶ Μάρθαν καὶ Μαρίαν ἵνα παραμυθήσωνται αὐτὰς περὶ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν. ἡ οὖν Μάρθα ὡς ἤκουσεν ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἔρχεται, ὑπήντησεν αὐτῷ· Μαρία δὲ ἐν τῷ οἴκῳ ἐκαθέζετο. εἶπεν οὖν ἡ Μάρθα πρὸς τὸν Ἰησοῦν· Κύριε, εἰ

ἧς ὧδε, ὁ ἀδελφός μου οὐκ ἂν ἐτεθνήκει. ἀλλὰ καὶ νῦν οἶδα ὅτι ὅσα ἂν αἰτήσῃ τὸν Θεόν, δώσει σοι ὁ Θεός. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· ἀναστήσεται ὁ ἀδελφός σου. λέγει αὐτῷ Μάρθα· οἶδα ὅτι ἀναστήσεται ἐν τῇ ἀναστάσει ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ. εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· ἐγώ εἰμι ἡ ἀνάστασις καὶ ἡ ζωή. ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, κἂν ἀποθάνῃ, ζήσεται· καὶ πᾶς ὁ ζῶν καὶ πιστεύων εἰς ἐμὲ οὐ μὴ ἀποθάνῃ εἰς τὸν αἰῶνα. πιστεύεις τοῦτο; λέγει αὐτῷ· ναί, Κύριε, ἐγὼ πεπίστευκα ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ὁ εἰς τὸν κόσμον ἐρχόμενος. καὶ ταῦτα εἰποῦσα ἀπῆλθε καὶ ἐφώνησε Μαρίαν τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς λάθρᾳ εἰποῦσα· ὁ διδάσκαλος πάρεστι καὶ φωνεῖ σε. ἐκείνη ὡς ἤκουσεν, ἐγείρεται ταχὺ καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτόν. οὔπω δὲ ἐληλύθει ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν κώμην, ἀλλ᾽ ἦν ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ὑπήντησεν αὐτῷ ἡ Μάρθα. οἱ οὖν Ἰουδαῖοι οἱ ὄντες μετ᾽ αὐτῆς ἐν τῇ οἰκίᾳ καὶ παραμυθούμενοι αὐτήν, ἰδόντες τὴν Μαρίαν ὅτι ταχέως ἀνέστη καὶ ἐξῆλθεν, ἠκολούθησαν αὐτῇ, λέγοντες ὅτι ὑπάγει εἰς τὸ μνημεῖον ἵνα κλαύσῃ ἐκεῖ. ἡ οὖν Μαρία ὡς ἦλθεν ὅπου ἦν ὁ Ἰησοῦς, ἰδοῦσα αὐτὸν ἔπεσεν αὐτοῦ εἰς τοὺς πόδας λέγουσα αὐτῷ· Κύριε, εἰ ἦς ὧδε, οὐκ ἂν ἀπέθανέ μου ὁ ἀδελφός. Ἰησοῦς οὖν ὡς εἶδεν αὐτὴν κλαίουσαν καὶ τοὺς συνελθόντας αὐτῇ Ἰουδαίους κλαίοντας, ἐνεβριμήσατο τῷ πνεύματι καὶ ἐτάραξεν ἑαυτόν, καὶ εἶπε· ποῦ τεθείκατε αὐτόν; λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἔρχου καὶ ἴδε. ἐδάκρυσεν ὁ Ἰησοῦς. ἔλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· ἴδε πῶς ἐφίλει αὐτόν· τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν εἶπον· οὐκ ἠδύνατο οὗτος, ὁ ἀνοίξας τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ, ποιῆσαι ἵνα καὶ οὗτος μὴ ἀποθάνῃ; Ἰησοῦς οὖν, πάλιν ἐμβριμώμενος ἐν ἑαυτῷ, ἔρχεται εἰς τὸ μνημεῖον· ἦν δὲ σπήλαιον, καὶ λίθος ἐπέκειτο ἐπ᾽ αὐτῷ. λέγει ὁ Ἰησοῦς· ἄρατε τὸν λίθον. λέγει αὐτῷ ἡ ἀδελφὴ τοῦ τεθνηκότος Μάρθα· Κύριε, ἤδη ὄζει· τεταρταῖος γάρ ἐστι. λέγει

αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· οὐκ εἶπόν σοι ὅτι ἐὰν πιστεύσῃς, ὄψει τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ; ἦραν οὖν τὸν λίθον οὗ ἦν ὁ τεθνηκὼς κείμενος. ὁ δὲ Ἰησοῦς ἦρε τοὺς ὀφθαλμοὺς ἄνω καὶ εἶπε· πάτερ, εὐχαριστῶ σοι ὅτι ἤκουσάς μου. ἐγὼ δὲ ᾔδειν ὅτι πάντοτέ μου ἀκούεις· ἀλλὰ διὰ τὸν ὄχλον τὸν περιεστῶτα εἶπον, ἵνα πιστεύσωσιν ὅτι σύ με ἀπέστειλας. καὶ ταῦτα εἰπὼν φωνῇ μεγάλῃ ἐκραύγασε· Λάζαρε, δεῦρο ἔξω. καὶ ἐξῆλθεν ὁ τεθνηκὼς δεδεμένος τοὺς πόδας καὶ τὰς χεῖρας κειρίαις, καὶ ἡ ὄψις αὐτοῦ σουδαρίῳ περιεδέδετο. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· λύσατε αὐτὸν καὶ ἄφετε ὑπάγειν. Πολλοὶ οὖν ἐκ τῶν Ἰουδαίων, οἱ ἐλθόντες πρὸς τὴν Μαρίαν καὶ θεασάμενοι ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν. τινὲς δὲ ἐξ αὐτῶν ἀπῆλθον πρὸς τοὺς Φαρισαίους καὶ εἶπον αὐτοῖς ἃ ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς. συνήγαγον οὖν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι συνέδριον καὶ ἔλεγον· τί ποιοῦμεν, ὅτι οὗτος ὁ ἄνθρωπος πολλὰ σημεῖα ποιεῖ; ἐὰν ἀφῶμεν αὐτὸν οὕτω, πάντες πιστεύσουσιν εἰς αὐτόν, καὶ ἐλεύσονται οἱ Ῥωμαῖοι καὶ ἀροῦσιν ἡμῶν καὶ τὸν τόπον καὶ τὸ ἔθνος. εἷς δέ τις ἐξ αὐτῶν Καϊάφας, ἀρχιερεὺς ὢν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου, εἶπεν αὐτοῖς· ὑμεῖς οὐκ οἴδατε οὐδέν, οὐδὲ διαλογίζεσθε ὅτι συμφέρει ἡμῖν ἵνα εἷς ἄνθρωπος ἀποθάνῃ ὑπὲρ τοῦ λαοῦ καὶ μὴ ὅλον τὸ ἔθνος ἀπόληται. τοῦτο δὲ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ οὐκ εἶπεν, ἀλλὰ ἀρχιερεὺς ὢν τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου προεφήτευσεν ὅτι ἔμελλεν ὁ Ἰησοῦς ἀποθνήσκειν ὑπὲρ τοῦ ἔθνους, καὶ οὐχ ὑπὲρ τοῦ ἔθνους μόνον, ἀλλ᾽ ἵνα καὶ τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ τὰ διεσκορπισμένα συναγάγῃ εἰς ἕν. ἀπ᾽ ἐκείνης οὖν τῆς ἡμέρας συνεβουλεύσαντο ἵνα ἀποκτείνωσιν αὐτόν. Ἰησοῦς οὖν οὐκέτι παρρησίᾳ περιεπάτει ἐν τοῖς Ἰουδαίοις, ἀλλὰ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν εἰς τὴν χώραν ἐγγὺς τῆς ἐρήμου, εἰς Ἐφραὶμ λεγομένην πόλιν, κἀκεῖ διέτριβε μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ. ἦν δὲ ἐγγὺς τὸ πάσχα τῶν Ἰουδαίων, καὶ

ἀνέβησαν πολλοὶ εἰς Ἰεροσόλυμα ἐκ τῆς χώρας πρὸ τοῦ πάσχα ἵνα ἁγνίσωσιν ἑαυτούς. ἐζήτουν οὖν τὸν Ἰησοῦν καὶ ἔλεγον μετ᾽ ἀλλήλων ἐν τῷ ἱερῷ ἑστηκότες· τί δοκεῖ ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ ἔλθῃ εἰς τὴν ἑορτήν; δεδώκεισαν δὲ καὶ οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἐντολὴν ἵνα ἐάν τις γνῷ ποῦ ἐστι, μηνύσῃ, ὅπως πιάσωσιν αὐτόν.

# 12

Ὁ οὖν Ἰησοῦς πρὸ ἓξ ἡμερῶν τοῦ πάσχα ἦλθεν εἰς Βηθανίαν, ὅπου ἦν Λάζαρος ὁ τεθνηκώς, ὃν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν. ἐποίησαν οὖν αὐτῷ δεῖπνον ἐκεῖ, καὶ ἡ Μάρθα διηκόνει· ὁ δὲ Λάζαρος εἷς ἦν τῶν ἀνακειμένων σὺν αὐτῷ. ἡ οὖν Μαρία, λαβοῦσα λίτραν μύρου νάρδου πιστικῆς πολυτίμου, ἤλειψε τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ καὶ ἐξέμαξε ταῖς θριξὶν αὐτῆς τοὺς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ οἰκία ἐπληρώθη ἐκ τῆς ὀσμῆς τοῦ μύρου. λέγει οὖν εἷς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, Ἰούδας Σίμωνος Ἰσκαριώτης, ὁ μέλλων αὐτὸν παραδιδόναι· διατί τοῦτο τὸ μύρον οὐκ ἐπράθη τριακοσίων δηναρίων καὶ ἐδόθη πτωχοῖς; εἶπε δὲ τοῦτο οὐχ ὅτι περὶ τῶν πτωχῶν ἔμελεν αὐτῷ, ἀλλ᾽ ὅτι κλέπτης ἦν, καὶ τὸ γλωσσόκομον εἶχε καὶ τὰ βαλλόμενα ἐβάσταζεν. εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς· ἄφες αὐτήν, εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ ἐνταφιασμοῦ μου τετήρηκεν αὐτό. τοὺς πτωχοὺς γὰρ πάντοτε ἔχετε μεθ᾽ ἑαυτῶν, ἐμὲ δὲ οὐ πάντοτε ἔχετε. Ἔγνω οὖν ὄχλος πολὺς ἐκ τῶν Ἰουδαίων ὅτι ἐκεῖ ἐστι, καὶ ἦλθον οὐ διὰ τὸν Ἰησοῦν μόνον, ἀλλ᾽ ἵνα καὶ τὸν Λάζαρον ἴδωσιν ὃν ἤγειρεν ἐκ νεκρῶν. ἐβουλεύσαντο δὲ οἱ ἀρχιερεῖς ἵνα καὶ τὸν Λάζαρον ἀποκτείνωσιν, ὅτι πολλοὶ δι᾽ αὐτὸν ὑπῆγον τῶν Ἰουδαίων καὶ ἐπίστευον εἰς τὸν Ἰησοῦν. Τῇ ἐπαύριον ὄχλος πολὺς ὁ ἐλθὼν εἰς τὴν ἑορτήν,

ἀκούσαντες ὅτι ἔρχεται Ἰησοῦς εἰς Ἰεροσόλυμα, ἔλαβον τὰ βαΐα τῶν φοινίκων καὶ ἐξῆλθον εἰς ὑπάντησιν αὐτῷ, καὶ ἔκραζον· ὡσαννά, εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου, βασιλεὺς τοῦ Ἰσραήλ . εὑρὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὀνάριον ἐκάθισεν ἐπ᾽ αὐτό, καθώς ἐστι γεγραμμένον· μὴ φοβοῦ, θύγατερ Σιών· ἰδοὺ ὁ βασιλεύς σου ἔρχεται καθήμενος ἐπὶ πῶλον ὄνου. Ταῦτα δὲ οὐκ ἔγνωσαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ τὸ πρῶτον, ἀλλ᾽ ὅτε ἐδοξάσθη ὁ Ἰησοῦς, τότε ἐμνήσθησαν ὅτι ταῦτα ἦν ἐπ᾽ αὐτῷ γεγραμμένα, καὶ ταῦτα ἐποίησαν αὐτῷ. Ἐμαρτύρει οὖν ὁ ὄχλος ὁ ὢν μετ᾽ αὐτοῦ ὅτε τὸν Λάζαρον ἐφώνησεν ἐκ τοῦ μνημείου καὶ ἤγειρεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν. διὰ τοῦτο καὶ ὑπήντησεν αὐτῷ ὁ ὄχλος, ὅτι ἤκουσαν τοῦτο αὐτὸν πεποιηκέναι τὸ σημεῖον. οἱ οὖν Φαρισαῖοι εἶπον πρὸς ἑαυτούς· θεωρεῖτε ὅτι οὐκ ὠφελεῖτε οὐδέν; ἴδε ὁ κόσμος ὀπίσω αὐτοῦ ἀπῆλθεν. Ἦσαν δέ τινες Ἕλληνες ἐκ τῶν ἀναβαινόντων ἵνα προσκυνήσωσιν ἐν τῇ ἑορτῇ. οὗτοι οὖν προσῆλθον Φιλίππῳ τῷ ἀπὸ Βηθσαϊδὰ τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἠρώτων αὐτὸν λέγοντες· κύριε, θέλομεν τὸν Ἰησοῦν ἰδεῖν. ἔρχεται Φίλιππος καὶ λέγει τῷ Ἀνδρέᾳ, καὶ πάλιν Ἀνδρέας καὶ Φίλιππος λέγουσι τῷ Ἰησοῦ· ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο αὐτοῖς λέγων· ἐλήλυθεν ἡ ὥρα ἵνα δοξασθῇ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ ὁ κόκκος τοῦ σίτου πεσὼν εἰς τὴν γῆν ἀποθάνῃ, αὐτὸς μόνος μένει· ἐὰν δὲ ἀποθάνῃ, πολὺν καρπὸν φέρει. ὁ φιλῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἀπολέσει αὐτήν, καὶ ὁ μισῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν τῷ κόσμῳ τούτῳ, εἰς ζωὴν αἰώνιον φυλάξει αὐτήν. ἐὰν ἐμοὶ διακονῇ τις, ἐμοὶ ἀκολουθείτω, καὶ ὅπου εἰμὶ ἐγώ, ἐκεῖ καὶ ὁ διάκονος ὁ ἐμὸς ἔσται· καὶ ἐάν τις ἐμοὶ διακονῇ, τιμήσει αὐτὸν ὁ πατήρ. Νῦν ἡ ψυχή μου τετάρακται, καὶ τί εἴπω; πάτερ, σῶσόν με ἐκ τῆς ὥρας ταύτης. ἀλλὰ διά τοῦτο ἦλθον εἰς τὴν ὥραν ταύτην. πάτερ, δόξασόν σου τὸ ὄνομα. ἦλθεν οὖν φωνὴ

ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐδόξασα καὶ πάλιν δοξάσω. ὁ οὖν ὄχλος ὁ ἑστὼς καὶ ἀκούσας ἔλεγε βροντὴν γεγονέναι· ἄλλοι ἔλεγον· ἄγγελος αὐτῷ λελάληκεν. ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν· οὐ δι᾽ ἐμὲ αὕτη ἡ φωνὴ γέγονεν, ἀλλὰ δι᾽ ὑμᾶς. νῦν κρίσις ἐστὶ τοῦ κόσμου τούτου, νῦν ὁ ἄρχων τοῦ κόσμου τούτου ἐκβληθήσεται ἔξω· κἀγὼ ἐὰν ὑψωθῶ ἐκ τῆς γῆς, πάντας ἑλκύσω πρὸς ἐμαυτόν. τοῦτο δὲ ἔλεγε σημαίνων ποίῳ θανάτῳ ἤμελλεν ἀποθνήσκειν. ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ὄχλος· ἡμεῖς ἠκούσαμεν ἐκ τοῦ νόμου ὅτι ὁ Χριστὸς μένει εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ πῶς σὺ λέγεις, δεῖ ὑψωθῆναι τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου; τίς ἐστιν οὗτος ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου; εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἔτι μικρὸν χρόνον τὸ φῶς μεθ᾽ ὑμῶν ἐστι· περιπατεῖτε ἕως τὸ φῶς ἔχετε, ἵνα μὴ σκοτία ὑμᾶς καταλάβῃ· καὶ ὁ περιπατῶν ἐν τῇ σκοτίᾳ οὐκ οἶδε ποῦ ὑπάγει. ἕως τὸ φῶς ἔχετε, πιστεύετε εἰς τὸ φῶς, ἵνα υἱοὶ φωτὸς γένησθε. Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀπελθὼν ἐκρύβη ἀπ᾽ αὐτῶν. Τοσαῦτα δὲ αὐτοῦ σημεῖα πεποιηκότος ἔμπροσθεν αὐτῶν οὐκ ἐπίστευον εἰς αὐτόν, ἵνα ὁ λόγος Ἡσαΐου τοῦ προφήτου πληρωθῇ ὃν εἶπε· Κύριε, τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; καὶ ὁ βραχίων Κυρίου τίνι ἀπεκαλύφθη; διὰ τοῦτο οὐκ ἠδύναντο πιστεύειν, ὅτι πάλιν εἶπεν Ἡσαΐας· τετύφλωκεν αὐτῶν τοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ πεπώρωκεν αὐτῶν τὴν καρδίαν, ἵνα μὴ ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς καὶ νοήσωσι τῇ καρδίᾳ καὶ ἐπιστραφῶσι, καὶ ἰάσομαι αὐτούς. ταῦτα εἶπεν Ἡσαΐας ὅτε εἶδε τὴν δόξαν αὐτοῦ καὶ ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ. ὅμως μέντοι καὶ ἐκ τῶν ἀρχόντων πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν, ἀλλὰ διὰ τοὺς Φαρισαίους οὐχ ὡμολόγουν, ἵνα μὴ ἀποσυνάγωγοι γένωνται· ἠγάπησαν γὰρ τὴν δόξαν τῶν ἀνθρώπων μᾶλλον ἤπερ τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ. Ἰησοῦς δὲ ἔκραξε καὶ εἶπεν· ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ οὐ πιστεύει εἰς ἐμέ, ἀλλ᾽ εἰς τὸν πέμψαντά με, καὶ ὁ θεωρῶν ἐμὲ θεωρεῖ τὸν πέμψαντά

με. ἐγὼ φῶς εἰς τὸν κόσμον ἐλήλυθα, ἵνα πᾶς ὁ πιστεύων εἰς ἐμὲ ἐν τῇ σκοτίᾳ μὴ μείνῃ. καὶ ἐάν τίς μου ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων καὶ μὴ πιστεύσῃ, ἐγὼ οὐ κρίνω αὐτόν· οὐ γὰρ ἦλθον ἵνα κρίνω τὸν κόσμον, ἀλλ᾽ ἵνα σώσω τὸν κόσμον. ὁ ἀθετῶν ἐμὲ καὶ μὴ λαμβάνων τὰ ῥήματά μου, ἔχει τὸν κρίνοντα αὐτόν· ὁ λόγος ὃν ἐλάλησα, ἐκεῖνος κρινεῖ αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ· ὅτι ἐγὼ ἐξ ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλάλησα, ἀλλ᾽ ὁ πέμψας με πατὴρ αὐτός μοι ἐντολὴν ἔδωκε τί εἴπω καὶ τί λαλήσω· καὶ οἶδα ὅτι ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ ζωὴ αἰώνιός ἐστιν. ἃ οὖν λαλῶ ἐγώ, καθὼς εἴρηκέ μοι ὁ πατήρ, οὕτω λαλῶ.

# 13

Πρὸ δὲ τῆς ἑορτῆς τοῦ πάσχα εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐλήλυθεν αὐτοῦ ἡ ὥρα ἵνα μεταβῇ ἐκ τοῦ κόσμου τούτου πρὸς τὸν πατέρα, ἀγαπήσας τοὺς ἰδίους τοὺς ἐν τῷ κόσμῳ, εἰς τέλος ἠγάπησεν αὐτούς. καὶ δείπνου γενομένου, τοῦ διαβόλου ἤδη βεβληκότος εἰς τὴν καρδίαν Ἰούδα Σίμωνος Ἰσκαριώτου ἵνα αὐτὸν παραδῷ, εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα δέδωκεν αὐτῷ ὁ πατὴρ εἰς τὰς χεῖρας, καὶ ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐξῆλθε καὶ πρὸς τὸν Θεὸν ὑπάγει, ἐγείρεται ἐκ τοῦ δείπνου καὶ τίθησι τὰ ἱμάτια, καὶ λαβὼν λέντιον διέζωσεν ἑαυτόν. εἶτα βάλλει ὕδωρ εἰς τὸν νιπτῆρα, καὶ ἤρξατο νίπτειν τοὺς πόδας τῶν μαθητῶν καὶ ἐκμάσσειν τῷ λεντίῳ ᾧ ἦν διεζωσμένος. ἔρχεται οὖν πρὸς Σίμωνα Πέτρον, καὶ λέγει αὐτῷ ἐκεῖνος· Κύριε, σύ μου νίπτεις τοὺς πόδας; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ὃ ἐγὼ ποιῶ, σὺ οὐκ οἶδας ἄρτι, γνώσῃ δὲ μετὰ ταῦτα. λέγει αὐτῷ Πέτρος· οὐ μὴ νίψῃς τοὺς πόδας μου εἰς τὸν αἰῶνα. ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἐὰν

μὴ νίψω σε, οὐκ ἔχεις μέρος μετ᾽ ἐμοῦ. λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, μὴ τοὺς πόδας μου μόνον, ἀλλὰ καὶ τὰς χεῖρας καὶ τὴν κεφαλήν. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὁ λελουμένος οὐ χρείαν ἔχει ἢ τοὺς πόδας νίψασθαι, ἀλλ᾽ ἔστι καθαρὸς ὅλος· καὶ ὑμεῖς καθαροί ἐστε, ἀλλ᾽ οὐχὶ πάντες. ᾔδει γὰρ τὸν παραδιδόντα αὐτόν· διὰ τοῦτο εἶπεν· οὐχὶ πάντες καθαροί ἐστε. Ὅτε οὖν ἔνιψε τοὺς πόδας αὐτῶν καὶ ἔλαβε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, ἀναπεσὼν πάλιν εἶπεν αὐτοῖς· γινώσκετε τί πεποίηκα ὑμῖν; ὑμεῖς φωνεῖτέ με, ὁ Διδάσκαλος καὶ ὁ Κύριος , καὶ καλῶς λέγετε· εἰμὶ γάρ. εἰ οὖν ἐγὼ ἔνιψα ὑμῶν τοὺς πόδας, ὁ Κύριος καὶ ὁ Διδάσκαλος, καὶ ὑμεῖς ὀφείλετε ἀλλήλων νίπτειν τοὺς πόδας. ὑπόδειγμα γὰρ δέδωκα ὑμῖν, ἵνα καθὼς ἐγὼ ἐποίησα ὑμῖν, καὶ ὑμεῖς ποιῆτε· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐκ ἔστι δοῦλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, οὐδὲ ἀπόστολος μείζων τοῦ πέμψαντος αὐτόν. εἰ ταῦτα οἴδατε, μακάριοί ἐστε ἐὰν ποιῆτε αὐτά. οὐ περὶ πάντων ὑμῶν λέγω· ἐγὼ οἶδα οὓς ἐξελεξάμην· ἀλλ᾽ ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ, ὁ τρώγων μετ᾽ ἐμοῦ τὸν ἄρτον ἐπῆρεν ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν πτέρναν αὐτοῦ. ἀπ᾽ ἄρτι λέγω ὑμῖν πρὸ τοῦ γενέσθαι, ἵνα ὅταν γένηται πιστεύσητε ὅτι ἐγώ εἰμι. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ λαμβάνων ἐάν τινα πέμψω, ἐμὲ λαμβάνει, ὁ δὲ ἐμὲ λαμβάνων λαμβάνει τὸν πέμψαντά με. Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐταράχθη τῷ πνεύματι, καὶ ἐμαρτύρησε καὶ εἶπεν· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι εἷς ἐξ ὑμῶν παραδώσει με. ἔβλεπον οὖν εἰς ἀλλήλους οἱ μαθηταί, ἀπορούμενοι περὶ τίνος λέγει. ἦν δὲ ἀνακείμενος εἷς ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ ἐν τῷ κόλπῳ τοῦ Ἰησοῦ, ὃν ἠγάπα ὁ Ἰησοῦς· νεύει οὖν τούτῳ Σίμων Πέτρος πυθέσθαι τίς ἂν εἴη περὶ οὗ λέγει. ἐπιπεσὼν δὲ ἐκεῖνος ἐπὶ τὸ στῆθος τοῦ Ἰησοῦ λέγει αὐτῷ· Κύριε, τίς ἐστιν; ἀποκρίνεται ὁ Ἰησοῦς· ἐκεῖνός ἐστιν ᾧ ἐγὼ βάψας τὸ ψωμίον ἐπιδώσω. καὶ ἐμβάψας τὸ ψωμίον δίδωσιν Ἰούδᾳ Σίμωνος

Ἰσκαριώτῃ. καὶ μετὰ τὸ ψωμίον τότε εἰσῆλθεν εἰς ἐκεῖνον ὁ σατανᾶς. λέγει οὖν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὃ ποιεῖς, ποίησον τάχιον. τοῦτο δὲ οὐδεὶς ἔγνω τῶν ἀνακειμένων πρὸς τί εἶπεν αὐτῷ· τινὲς γὰρ ἐδόκουν, ἐπεὶ τὸ γλωσσόκομον εἶχεν ὁ Ἰούδας, ὅτι λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, ἀγόρασον ὧν χρείαν ἔχομεν εἰς τὴν ἑορτήν, ἢ τοῖς πτωχοῖς ἵνα τι δῷ. λαβὼν οὖν τὸ ψωμίον ἐκεῖνος εὐθέως ἐξῆλθεν· ἦν δὲ νύξ. Ὅτε οὖν ἐξῆλθε, λέγει ὁ Ἰησοῦς· νῦν ἐδοξάσθη ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου, καὶ ὁ Θεὸς ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ. εἰ ὁ Θεὸς ἐδοξάσθη ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ Θεὸς δοξάσει αὐτὸν ἐν ἑαυτῷ, καὶ εὐθὺς δοξάσει αὐτόν. τεκνία, ἔτι μικρὸν μεθ᾽ ὑμῶν εἰμι. ζητήσετέ με, καὶ καθὼς εἶπον τοῖς Ἰουδαίοις ὅτι ὅπου ὑπάγω ἐγώ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε ἐλθεῖν, καὶ ὑμῖν λέγω ἄρτι. ἐντολὴν καινὴν δίδωμι ὑμῖν ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους, καθὼς ἠγάπησα ὑμᾶς ἵνα καὶ ὑμεῖς ἀγαπᾶτε ἀλλήλους. ἐν τούτῳ γνώσονται πάντες ὅτι ἐμοὶ μαθηταί ἐστε, ἐὰν ἀγάπην ἔχητε ἐν ἀλλήλοις. λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, ποῦ ὑπάγεις; ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὅπου ἐγὼ ὑπάγω, οὐ δύνασαί μοι νῦν ἀκολουθῆσαι, ὕστερον δὲ ἀκολουθήσεις μοι. λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κύριε, διατί οὐ δύναμαί σοι ἀκολουθῆσαι ἄρτι; τὴν ψυχήν μου ὑπὲρ σοῦ θήσω. ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· τὴν ψυχήν σου ὑπὲρ ἐμοῦ θήσεις ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, οὐ μὴ ἀλέκτωρ φωνήσει ἕως οὗ ἀπαρνήσῃ με τρίς.

# 14

Μὴ ταρασσέσθω ὑμῶν ἡ καρδία· πιστεύετε εἰς τὸν Θεόν, καὶ εἰς ἐμὲ πιστεύετε. ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ πατρός μου μοναὶ πολλαί εἰσιν· εἰ δὲ μή, εἶπον ἂν ὑμῖν· πορεύομαι ἑτοιμάσαι τόπον ὑμῖν· καὶ ἐὰν

πορευθῶ καὶ ἑτοιμάσω ὑμῖν τόπον, πάλιν ἔρχομαι καὶ παραλήψομαι ὑμᾶς πρὸς ἐμαυτόν, ἵνα ὅπου εἰμὶ ἐγώ, καὶ ὑμεῖς ἦτε. καὶ ὅπου ἐγὼ ὑπάγω οἴδατε, καὶ τὴν ὁδὸν οἴδατε. Λέγει αὐτῷ Θωμᾶς· Κύριε, οὐκ οἴδαμεν ποῦ ὑπάγεις· καὶ πῶς δυνάμεθα τὴν ὁδὸν εἰδέναι; λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἐγώ εἰμι ἡ ὁδὸς καὶ ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ ζωή· οὐδεὶς ἔρχεται πρὸς τὸν πατέρα εἰ μὴ δι᾽ ἐμοῦ. εἰ ἐγνώκειτέ με, καὶ τὸν πατέρα μου ἐγνώκειτε ἄν. καὶ ἀπ᾽ ἄρτι γινώσκετε αὐτὸν καὶ ἑωράκατε αὐτόν. Λέγει αὐτῷ Φίλιππος· Κύριε, δεῖξον ἡμῖν τὸν πατέρα καὶ ἀρκεῖ ἡμῖν. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· τοσοῦτον χρόνον μεθ᾽ ὑμῶν εἰμι, καὶ οὐκ ἔγνωκάς με, Φίλιππε; ὁ ἑωρακὼς ἐμὲ ἑώρακε τὸν πατέρα· καὶ πῶς σὺ λέγεις, δεῖξον ἡμῖν τὸν πατέρα; οὐ πιστεύεις ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πατρὶ καὶ ὁ πατὴρ ἐν ἐμοί ἐστι; τὰ ῥήματα ἃ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν, ἀπ᾽ ἐμαυτοῦ οὐ λαλῶ· ὁ δὲ πατὴρ ὁ ἐν ἐμοὶ μένων αὐτὸς ποιεῖ τὰ ἔργα. πιστεύετέ μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πατρὶ καὶ ὁ πατὴρ ἐν ἐμοί· εἰ δὲ μή, διὰ τὰ ἔργα αὐτὰ πιστεύετέ μοι. ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποιῶ κἀκεῖνος ποιήσει, καὶ μείζονα τούτων ποιήσει, ὅτι ἐγὼ πρὸς τὸν πατέρα μου πορεύομαι, καὶ ὅ τι ἂν αἰτήσητε ἐν τῷ ὀνόματί μου, τοῦτο ποιήσω, ἵνα δοξασθῇ ὁ πατὴρ ἐν τῷ υἱῷ. ἐάν τι αἰτήσητε ἐν τῷ ὀνόματί μου, ἐγὼ ποιήσω. Ἐὰν ἀγαπᾶτέ με, τὰς ἐντολὰς τὰς ἐμὰς τηρήσατε, καὶ ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πατέρα καὶ ἄλλον παράκλητον δώσει ὑμῖν, ἵνα μένῃ μεθ᾽ ὑμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ ὁ κόσμος οὐ δύναται λαβεῖν, ὅτι οὐ θεωρεῖ αὐτὸ οὐδὲ γινώσκει αὐτό· ὑμεῖς δὲ γινώσκετε αὐτό, ὅτι παρ᾽ ὑμῖν μένει καὶ ἐν ὑμῖν ἔσται. οὐκ ἀφήσω ὑμᾶς ὀρφανούς· ἔρχομαι πρὸς ὑμᾶς. ἔτι μικρὸν καὶ ὁ κόσμος με οὐκέτι θεωρεῖ, ὑμεῖς δὲ θεωρεῖτέ με, ὅτι ἐγὼ ζῶ καὶ ὑμεῖς ζήσεσθε. ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ γνώσεσθε ὑμεῖς ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ πατρί μου καὶ ὑμεῖς ἐν ἐμοὶ κἀγὼ ἐν

ὑμῖν. ὁ ἔχων τὰς ἐντολάς μου καὶ τηρῶν αὐτάς, ἐκεῖνός ἐστιν ὁ ἀγαπῶν με· ὁ δὲ ἀγαπῶν με ἀγαπηθήσεται ὑπὸ τοῦ πατρός μου, καὶ ἐγὼ ἀγαπήσω αὐτὸν καὶ ἐμφανίσω αὐτῷ ἐμαυτόν. Λέγει αὐτῷ Ἰούδας, οὐχ ὁ Ἰσκαριώτης· Κύριε, καὶ τί γέγονεν ὅτι ἡμῖν μέλλεις ἐμφανίζειν σεαυτὸν καὶ οὐχὶ τῷ κόσμῳ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ἐάν τις ἀγαπᾷ με, τὸν λόγον μου τηρήσει, καὶ ὁ πατήρ μου ἀγαπήσει αὐτόν, καὶ πρὸς αὐτὸν ἐλευσόμεθα καὶ μονὴν παρ᾽ αὐτῷ ποιήσομεν. ὁ μὴ ἀγαπῶν με τοὺς λόγους μου οὐ τηρεῖ· καὶ ὁ λόγος ὃν ἀκούετε οὐκ ἔστιν ἐμός, ἀλλὰ τοῦ πέμψαντός με πατρός. Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν παρ᾽ ὑμῖν μένων· ὁ δὲ παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον ὃ πέμψει ὁ πατὴρ ἐν τῷ ὀνόματί μου, ἐκεῖνος ὑμᾶς διδάξει πάντα καὶ ὑπομνήσει ὑμᾶς πάντα ἃ εἶπον ὑμῖν. Εἰρήνην ἀφίημι ὑμῖν, εἰρήνην τὴν ἐμὴν δίδωμι ὑμῖν· οὐ καθὼς ὁ κόσμος δίδωσιν, ἐγὼ δίδωμι ὑμῖν. μὴ ταρασσέσθω ὑμῶν ἡ καρδία μηδὲ δειλιάτω. ἠκούσατε ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν, ὑπάγω καὶ ἔρχομαι πρὸς ὑμᾶς· εἰ ἠγαπᾶτέ με, ἐχάρητε ἂν ὅτι εἶπον, πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα· ὅτι ὁ πατήρ μου μείζων μού ἐστι· καὶ νῦν εἴρηκα ὑμῖν πρὶν γενέσθαι, ἵνα ὅταν γένηται πιστεύσητε. οὐκέτι πολλὰ λαλήσω μεθ᾽ ὑμῶν· ἔρχεται γὰρ ὁ τοῦ κόσμου ἄρχων, καὶ ἐν ἐμοὶ οὐκ ἔχει οὐδέν· ἀλλ᾽ ἵνα γνῷ ὁ κόσμος ὅτι ἀγαπῶ τὸν πατέρα, καὶ καθὼς ἐνετείλατό μοι ὁ πατήρ, οὕτω ποιῶ. ἐγείρεσθε, ἄγωμεν ἐντεῦθεν.

# 15

Ἐγώ εἰμι ἡ ἄμπελος ἡ ἀληθινή, καὶ ὁ πατήρ μου ὁ γεωργός ἐστι. πᾶν κλῆμα ἐν ἐμοὶ μὴ φέρον καρπόν, αἴρει αὐτό, καὶ πᾶν τὸ καρπὸν φέρον, καθαίρει αὐτό, ἵνα πλείονα καρπὸν φέρῃ. ἤδη ὑμεῖς

καθαροί ἐστε διὰ τὸν λόγον ὃν λελάληκα ὑμῖν. μείνατε ἐν ἐμοί, κἀγὼ ἐν ὑμῖν. καθὼς τὸ κλῆμα οὐ δύναται καρπὸν φέρειν ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, ἐὰν μὴ μείνῃ ἐν τῇ ἀμπέλῳ, οὕτως οὐδὲ ὑμεῖς, ἐὰν μὴ ἐν ἐμοὶ μείνητε. ἐγώ εἰμι ἡ ἄμπελος, ὑμεῖς τὰ κλήματα. ὁ μένων ἐν ἐμοὶ κἀγὼ ἐν αὐτῷ, οὗτος φέρει καρπὸν πολύν, ὅτι χωρὶς ἐμοῦ οὐ δύνασθε ποιεῖν οὐδέν. ἐὰν μή τις μείνῃ ἐν ἐμοί, ἐβλήθη ἔξω ὡς τὸ κλῆμα καὶ ἐξηράνθη, καὶ συνάγουσιν αὐτὰ καὶ εἰς τὸ πῦρ βάλλουσι, καὶ καίεται. ἐὰν μείνητε ἐν ἐμοὶ καὶ τὰ ῥήματά μου ἐν ὑμῖν μείνῃ, ὃ ἐὰν θέλητε αἰτήσασθε, καὶ γενήσεται ὑμῖν. ἐν τούτῳ ἐδοξάσθη ὁ πατήρ μου, ἵνα καρπὸν πολὺν φέρητε, καὶ γενήσεσθε ἐμοὶ μαθηταί. καθὼς ἠγάπησέ με ὁ πατήρ, κἀγὼ ἠγάπησα ὑμᾶς· μείνατε ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ ἐμῇ. ἐὰν τὰς ἐντολάς μου τηρήσητε, μενεῖτε ἐν τῇ ἀγάπῃ μου, καθὼς ἐγὼ τὰς ἐντολὰς τοῦ πατρός μου τετήρηκα καὶ μένω αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγάπῃ. Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ ἐν ὑμῖν μείνῃ καὶ ἡ χαρὰ ὑμῶν πληρωθῇ. αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ ἡ ἐμή, ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους καθὼς ἠγάπησα ὑμᾶς. μείζονα ταύτης ἀγάπην οὐδεὶς ἔχει, ἵνα τις τὴν ψυχὴν αὐτοῦ θῇ ὑπὲρ τῶν φίλων αὐτοῦ. ὑμεῖς φίλοι μού ἐστε, ἐὰν ποιῆτε ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν. οὐκέτι ὑμᾶς λέγω δούλους, ὅτι ὁ δοῦλος οὐκ οἶδε τί ποιεῖ αὐτοῦ ὁ κύριος· ὑμᾶς δὲ εἴρηκα φίλους, ὅτι πάντα ἃ ἤκουσα παρὰ τοῦ πατρός μου ἐγνώρισα ὑμῖν. οὐχ ὑμεῖς με ἐξελέξασθε, ἀλλ᾽ ἐγὼ ἐξελεξάμην ὑμᾶς, καὶ ἔθηκα ὑμᾶς ἵνα ὑμεῖς ὑπάγητε καὶ καρπὸν φέρητε, καὶ ὁ καρπὸς ὑμῶν μένῃ, ἵνα ὅ τι ἂν αἰτήσητε τὸν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δῷ ὑμῖν. ταῦτα ἐντέλλομαι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους. Εἰ ὁ κόσμος ὑμᾶς μισεῖ, γινώσκετε ὅτι ἐμὲ πρῶτον ὑμῶν μεμίσηκεν. εἰ ἐκ τοῦ κόσμου ἦτε, ὁ κόσμος ἂν τὸ ἴδιον ἐφίλει· ὅτι δὲ ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ ἐστέ, ἀλλ᾽ ἐγὼ ἐξελεξάμην ὑμᾶς ἐκ τοῦ κόσμου, διὰ τοῦτο μισεῖ ὑμᾶς ὁ κόσμος. μνημονεύετε τοῦ λόγου οὗ ἐγὼ εἶπον

ὑμῖν· οὐκ ἔστι δοῦλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ. εἰ ἐμὲ ἐδίωξαν, καὶ ὑμᾶς διώξουσιν· εἰ τὸν λόγον μου ἐτήρησαν, καὶ τὸν ὑμέτερον τηρήσουσιν. ἀλλὰ ταῦτα πάντα ποιήσουσιν ὑμῖν διὰ τὸ ὄνομά μου, ὅτι οὐκ οἴδασι τὸν πέμψαντά με. εἰ μὴ ἦλθον καὶ ἐλάλησα αὐτοῖς, ἁμαρτίαν οὐκ εἶχον· νῦν δὲ πρόφασιν οὐκ ἔχουσι περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτῶν. ὁ ἐμὲ μισῶν καὶ τὸν πατέρα μου μισεῖ. εἰ τὰ ἔργα μὴ ἐποίησα ἐν αὐτοῖς ἃ οὐδεὶς ἄλλος πεποίηκεν, ἁμαρτίαν οὐκ εἶχον· νῦν δὲ καὶ ἑωράκασι καὶ μεμισήκασι καὶ ἐμὲ καὶ τὸν πατέρα μου. ἀλλ᾽ ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὁ γεγραμμένος ἐν τῷ νόμῳ αὐτῶν, ὅτι ἐμίσησάν με δωρεάν. ὅταν δὲ ἔλθῃ ὁ παράκλητος ὃν ἐγὼ πέμψω ὑμῖν παρὰ τοῦ πατρός, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας ὃ παρὰ τοῦ πατρὸς ἐκπορεύεται, ἐκεῖνος μαρτυρήσει περὶ ἐμοῦ· καὶ ὑμεῖς δὲ μαρτυρεῖτε, ὅτι ἀπ᾽ ἀρχῆς μετ᾽ ἐμοῦ ἐστε.

# 16

Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα μὴ σκανδαλισθῆτε. ἀποσυναγώγους ποιήσουσιν ὑμᾶς· ἀλλ᾽ ἔρχεται ὥρα ἵνα πᾶς ὁ ἀποκτείνας ὑμᾶς δόξῃ λατρείαν προσφέρειν τῷ Θεῷ. καὶ ταῦτα ποιήσουσιν, ὅτι οὐκ ἔγνωσαν τὸν πατέρα οὐδὲ ἐμέ. ἀλλὰ ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ὅταν ἔλθῃ ἡ ὥρα, μνημονεύητε αὐτῶν ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν. ταῦτα δὲ ὑμῖν ἐξ ἀρχῆς οὐκ εἶπον, ὅτι μεθ᾽ ὑμῶν ἤμην. νῦν δὲ ὑπάγω πρὸς τὸν πέμψαντά με, καὶ οὐδεὶς ἐξ ὑμῶν ἐρωτᾷ με ποῦ ὑπάγεις ἀλλ᾽ ὅτι ταῦτα λελάληκα ὑμῖν, ἡ λύπη πεπλήρωκεν ὑμῶν τὴν καρδίαν. ἀλλ᾽ ἐγὼ τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν· συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω. ἐὰν γὰρ ἐγὼ μὴ ἀπέλθω, ὁ παράκλητος οὐκ ἐλεύσεται πρὸς ὑμᾶς· ἐὰν δὲ πορευθῶ, πέμψω αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς· καὶ ἐλθὼν ἐκεῖνος

ἐλέγξει τὸν κόσμον περὶ ἁμαρτίας καὶ περὶ δικαιοσύνης καὶ περὶ κρίσεως. περὶ ἁμαρτίας μέν, ὅτι οὐ πιστεύουσιν εἰς ἐμέ· περὶ δικαιοσύνης δέ, ὅτι πρὸς τὸν πατέρα μου ὑπάγω καὶ οὐκέτι θεωρεῖτέ με· περὶ δὲ κρίσεως, ὅτι ὁ ἄρχων τοῦ κόσμου τούτου κέκριται. Ἔτι πολλὰ ἔχω λέγειν ὑμῖν, ἀλλ᾽ οὐ δύνασθε βαστάζειν ἄρτι. ὅταν δὲ ἔλθῃ ἐκεῖνος, τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὁδηγήσει ὑμᾶς εἰς πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν· οὐ γὰρ λαλήσει ἀφ᾽ ἑαυτοῦ, ἀλλ᾽ ὅσα ἂν ἀκούσῃ λαλήσει, καὶ τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν. ἐκεῖνος ἐμὲ δοξάσει, ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. πάντα ὅσα ἔχει ὁ πατὴρ ἐμά ἐστι· διὰ τοῦτο εἶπον ὅτι ἐκ τοῦ ἐμοῦ λήψεται καὶ ἀναγγελεῖ ὑμῖν. μικρὸν καὶ οὐ θεωρεῖτέ με, καὶ πάλιν μικρὸν καὶ ὄψεσθέ με, ὅτι ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν πατέρα. Εἶπον οὖν ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς ἀλλήλους· τί ἐστι τοῦτο ὃ λέγει ἡμῖν, μικρὸν καὶ οὐ θεωρεῖτέ με, καὶ πάλιν μικρὸν καὶ ὄψεσθέ με, καὶ ὅτι ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν πατέρα; ἔλεγον οὖν· τοῦτο τί ἐστιν ὃ λέγει τὸ μικρόν; οὐκ οἴδαμεν τί λαλεῖ. ἔγνω οὖν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἤθελον αὐτὸν ἐρωτᾶν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· περὶ τούτου ζητεῖτε μετ᾽ ἀλλήλων ὅτι εἶπον, μικρὸν καὶ οὐ θεωρεῖτέ με, καὶ πάλιν μικρὸν καὶ ὄψεσθέ με; ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι κλαύσετε καὶ θρηνήσετε ὑμεῖς, ὁ δὲ κόσμος χαρήσεται· ὑμεῖς δὲ λυπηθήσεσθε, ἀλλ᾽ ἡ λύπη ὑμῶν εἰς χαρὰν γενήσεται· ἡ γυνὴ ὅταν τίκτῃ, λύπην ἔχει, ὅτι ἦλθεν ἡ ὥρα αὐτῆς· ὅταν δὲ γεννήσῃ τὸ παιδίον, οὐκέτι μνημονεύει τῆς θλίψεως διὰ τὴν χαρὰν ὅτι ἐγεννήθη ἄνθρωπος εἰς τὸν κόσμον. καὶ ὑμεῖς οὖν λύπην μὲν νῦν ἔχετε· πάλιν δὲ ὄψομαι ὑμᾶς καὶ χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία, καὶ τὴν χαρὰν ὑμῶν οὐδεὶς αἴρει ἀφ᾽ ὑμῶν. καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐμὲ οὐκ ἐρωτήσετε οὐδέν· ἀμὴν ἀμὴν λέγω ὑμῖν ὅτι ὅσα ἂν αἰτήσητε τὸν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δώσει ὑμῖν. ἕως ἄρτι οὐκ ᾐτήσατε οὐδὲν ἐν τῷ ὀνόματί μου· αἰτεῖτε

καὶ λήψεσθε, ἵνα ἡ χαρὰ ὑμῶν ᾖ πεπληρωμένη. Ταῦτα ἐν παροιμίαις λελάληκα ὑμῖν· ἀλλ᾽ ἔρχεται ὥρα ὅτε οὐκέτι ἐν παροιμίαις λαλήσω ὑμῖν, ἀλλὰ παρρησίᾳ περὶ τοῦ πατρὸς ἀναγγελῶ ὑμῖν. ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐν τῷ ὀνόματί μου αἰτήσεσθε· καὶ οὐ λέγω ὑμῖν ὅτι ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν πατέρα περὶ ὑμῶν· αὐτὸς γὰρ ὁ πατὴρ φιλεῖ ὑμᾶς, ὅτι ὑμεῖς ἐμὲ πεφιλήκατε, καὶ πεπιστεύκατε ὅτι ἐγὼ παρὰ τοῦ Θεοῦ ἐξῆλθον. ἐξῆλθον παρὰ τοῦ πατρὸς καὶ ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον· πάλιν ἀφίημι τὸν κόσμον καὶ πορεύομαι πρὸς τὸν πατέρα. Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· ἴδε νῦν παρρησίᾳ λαλεῖς, καὶ παροιμίαν οὐδεμίαν λέγεις. νῦν οἴδαμεν ὅτι οἶδας πάντα καὶ οὐ χρείαν ἔχεις ἵνα τίς σε ἐρωτᾷ. ἐν τούτῳ πιστεύομεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐξῆλθες. ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἄρτι πιστεύετε· ἰδοὺ ἔρχεται ὥρα, καὶ νῦν ἐλήλυθεν, ἵνα σκορπισθῆτε ἕκαστος εἰς τὰ ἴδια καὶ ἐμὲ μόνον ἀφῆτε· καὶ οὐκ εἰμὶ μόνος, ὅτι ὁ πατὴρ μετ᾽ ἐμοῦ ἐστι. ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἐν ἐμοὶ εἰρήνην ἔχητε. ἐν τῷ κόσμῳ θλῖψιν ἔξετε· ἀλλὰ θαρσεῖτε, ἐγὼ νενίκηκα τὸν κόσμον.

# 17

Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐπῆρε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ εἶπε· πάτερ, ἐλήλυθεν ἡ ὥρα· δόξασόν σου τὸν υἱόν, ἵνα καὶ ὁ υἱός σου δοξάσῃ σε, καθὼς ἔδωκας αὐτῷ ἐξουσίαν πάσης σαρκός, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκας αὐτῷ δώσει αὐτοῖς ζωὴν αἰώνιον. αὕτη δέ ἐστιν ἡ αἰώνιος ζωή, ἵνα γινώσκωσί σε τὸν μόνον ἀληθινὸν Θεὸν καὶ ὃν ἀπέστειλας Ἰησοῦν Χριστόν. ἐγώ σε ἐδόξασα ἐπὶ τῆς γῆς, τὸ ἔργον ἐτελείωσα ὃ δέδωκάς μοι ἵνα ποιήσω· καὶ νῦν

δόξασόν με σύ, πάτερ, παρὰ σεαυτῷ τῇ δόξῃ ᾗ εἶχον πρὸ τοῦ τὸν κόσμον εἶναι παρὰ σοί. Ἐφανέρωσά σου τὸ ὄνομα τοῖς ἀνθρώποις οὓς δέδωκάς μοι ἐκ τοῦ κόσμου. σοὶ ἦσαν καὶ ἐμοὶ αὐτοὺς δέδωκας, καὶ τὸν λόγον σου τετηρήκασι. νῦν ἔγνωκαν ὅτι πάντα ὅσα δέδωκάς μοι παρὰ σοῦ ἐστιν· ὅτι τὰ ῥήματα ἃ δέδωκάς μοι δέδωκα αὐτοῖς, καὶ αὐτοὶ ἔλαβον, καὶ ἔγνωσαν ἀληθῶς ὅτι παρὰ σοῦ ἐξῆλθον, καὶ ἐπίστευσαν ὅτι σύ με ἀπέστειλας. Ἐγὼ περὶ αὐτῶν ἐρωτῶ· οὐ περὶ τοῦ κόσμου ἐρωτῶ, ἀλλὰ περὶ ὧν δέδωκάς μοι, ὅτι σοί εἰσι, καὶ τὰ ἐμὰ πάντα σά ἐστι καὶ τὰ σὰ ἐμά, καὶ δεδόξασμαι ἐν αὐτοῖς. καὶ οὐκέτι εἰμὶ ἐν τῷ κόσμῳ, καὶ οὗτοι ἐν τῷ κόσμῳ εἰσί, καὶ ἐγὼ πρὸς σὲ ἔρχομαι. πάτερ ἅγιε, τήρησον αὐτοὺς ἐν τῷ ὀνόματί σου ᾧ δέδωκάς μοι, ἵνα ὦσιν ἓν καθὼς ἡμεῖς. ὅτε ἤμην μετ᾽ αὐτῶν ἐν τῷ κόσμῳ, ἐγὼ ἐτήρουν αὐτοὺς ἐν τῷ ὀνόματί σου· οὓς δέδωκάς μοι ἐφύλαξα, καὶ οὐδεὶς ἐξ αὐτῶν ἀπώλετο εἰ μὴ ὁ υἱὸς τῆς ἀπωλείας, ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ. νῦν δὲ πρὸς σὲ ἔρχομαι, καὶ ταῦτα λαλῶ ἐν τῷ κόσμῳ ἵνα ἔχωσι τὴν χαρὰν τὴν ἐμὴν πεπληρωμένην ἐν αὐτοῖς. ἐγὼ δέδωκα αὐτοῖς τὸν λόγον σου, καὶ ὁ κόσμος ἐμίσησεν αὐτούς, ὅτι οὐκ εἰσὶν ἐκ τοῦ κόσμου, καθὼς ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ κόσμου. οὐκ ἐρωτῶ ἵνα ἄρῃς αὐτοὺς ἐκ τοῦ κόσμου, ἀλλ᾽ ἵνα τηρήσῃς αὐτοὺς ἐκ τοῦ πονηροῦ. ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ εἰσί, καθὼς ἐγὼ ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ εἰμί. ἁγίασον αὐτοὺς ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου· ὁ λόγος ὁ σὸς ἀλήθειά ἐστι. καθὼς ἐμὲ ἀπέστειλας εἰς τὸν κόσμον, κἀγὼ ἀπέστειλα αὐτοὺς εἰς τὸν κόσμον. καὶ ὑπὲρ αὐτῶν ἐγὼ ἁγιάζω ἐμαυτόν, ἵνα καὶ αὐτοὶ ὦσιν ἡγιασμένοι ἐν ἀληθείᾳ. Οὐ περὶ τούτων δὲ ἐρωτῶ μόνον, ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν πιστευόντων διὰ τοῦ λόγου αὐτῶν εἰς ἐμέ, ἵνα πάντες ἓν ὦσι, καθὼς σύ, πάτερ, ἐν ἐμοὶ κἀγὼ ἐν σοί, ἵνα καὶ αὐτοὶ ἐν ἡμῖν ἓν ὦσιν, ἵνα ὁ κόσμος πιστεύσῃ ὅτι σύ με ἀπέστειλας. καὶ ἐγὼ τὴν

δόξαν ἣν δέδωκάς μοι δέδωκα αὐτοῖς, ἵνα ὦσιν ἓν καθὼς ἡμεῖς ἕν ἐσμεν, ἐγὼ ἐν αὐτοῖς καὶ σὺ ἐν ἐμοί, ἵνα ὦσι τετελειωμένοι εἰς ἕν, καὶ ἵνα γινώσκῃ ὁ κόσμος ὅτι σύ με ἀπέστειλας καὶ ἠγάπησας αὐτοὺς καθὼς ἐμὲ ἠγάπησας. πάτερ, οὓς δέδωκάς μοι, θέλω ἵνα ὅπου εἰμὶ ἐγὼ κἀκεῖνοι ὦσι μετ᾽ ἐμοῦ, ἵνα θεωρῶσι τὴν δόξαν τὴν ἐμὴν ἣν δέδωκάς μοι, ὅτι ἠγάπησάς με πρὸ καταβολῆς κόσμου. πάτερ δίκαιε, καὶ ὁ κόσμος σε οὐκ ἔγνω, ἐγὼ δέ σε ἔγνων, καὶ οὗτοι ἔγνωσαν ὅτι σύ με ἀπέστειλας· καὶ ἐγνώρισα αὐτοῖς τὸ ὄνομά σου καὶ γνωρίσω, ἵνα ἡ ἀγάπη ἣν ἠγάπησάς με ἐν αὐτοῖς ᾖ, κἀγὼ ἐν αὐτοῖς.

# 18

Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐξῆλθε σὺν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ πέραν τοῦ χειμάρρου τῶν Κέδρων, ὅπου ἦν κῆπος, εἰς ὃν εἰσῆλθεν αὐτὸς καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ. ᾔδει δὲ καὶ Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν τὸν τόπον, ὅτι πολλάκις συνήχθη καὶ ὁ Ἰησοῦς ἐκεῖ μετὰ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ. ὁ οὖν Ἰούδας λαβὼν τὴν σπεῖραν καὶ ἐκ τῶν ἀρχιερέων καὶ Φαρισαίων ὑπηρέτας ἔρχεται ἐκεῖ μετὰ φανῶν καὶ λαμπάδων καὶ ὅπλων. Ἰησοῦς οὖν εἰδὼς πάντα τὰ ἐρχόμενα ἐπ᾽ αὐτόν, ἐξελθὼν εἶπεν αὐτοῖς· τίνα ζητεῖτε; ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· Ἰησοῦν τὸν Ναζωραῖον. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐγώ εἰμι. εἱστήκει δὲ καὶ Ἰούδας ὁ παραδιδοὺς αὐτὸν μετ᾽ αὐτῶν. ὡς οὖν εἶπεν αὐτοῖς ὅτι ἐγώ εἰμι, ἀπῆλθον εἰς τὰ ὀπίσω καὶ ἔπεσον χαμαί. πάλιν οὖν αὐτοὺς ἐπηρώτησε· τίνα ζητεῖτε; οἱ δὲ εἶπον· Ἰησοῦν τὸν Ναζωραῖον. ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· εἶπον ὑμῖν ὅτι ἐγώ εἰμι. εἰ οὖν ἐμὲ ζητεῖτε, ἄφετε τούτους ὑπάγειν· ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὃν εἶπεν, ὅτι οὓς δέδωκάς

μοι, οὐκ ἀπώλεσα ἐξ αὐτῶν οὐδένα. Σίμων οὖν Πέτρος ἔχων μάχαιραν εἵλκυσεν αὐτήν, καὶ ἔπαισε τὸν τοῦ ἀρχιερέως δοῦλον καὶ ἀπέκοψεν αὐτοῦ τὸ ὠτίον τὸ δεξιόν· ἦν δὲ ὄνομα τῷ δούλῳ Μάλχος. εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς τῷ Πέτρῳ· βάλε τὴν μάχαιραν εἰς τὴν θήκην· τὸ ποτήριον ὃ δέδωκέ μοι ὁ πατήρ, οὐ μὴ πίω αὐτό; Ἡ οὖν σπεῖρα καὶ ὁ χιλίαρχος καὶ οἱ ὑπηρέται τῶν Ἰουδαίων συνέλαβον τὸν Ἰησοῦν καὶ ἔδησαν αὐτόν, καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν πρὸς Ἄνναν πρῶτον· ἦν γὰρ πενθερὸς τοῦ Καϊάφα, ὃς ἦν ἀρχιερεὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐκείνου. ἦν δὲ Καϊάφας ὁ συμβουλεύσας τοῖς Ἰουδαίοις ὅτι συμφέρει ἕνα ἄνθρωπον ἀπολέσθαι ὑπὲρ τοῦ λαοῦ. Ἠκολούθει δὲ τῷ Ἰησοῦ Σίμων Πέτρος καὶ ὁ ἄλλος μαθητής. ὁ δὲ μαθητὴς ἐκεῖνος ἦν γνωστὸς τῷ ἀρχιερεῖ, καὶ συνεισῆλθε τῷ Ἰησοῦ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ ἀρχιερέως· ὁ δὲ Πέτρος εἱστήκει πρὸς τῇ θύρᾳ ἔξω. ἐξῆλθεν οὖν ὁ μαθητὴς ὁ ἄλλος, ὃς ἦν γνωστὸς τῷ ἀρχιερεῖ, καὶ εἶπε τῇ θυρωρῷ, καὶ εἰσήγαγε τὸν Πέτρον. λέγει οὖν ἡ παιδίσκη ἡ θυρωρὸς τῷ Πέτρῳ· μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν μαθητῶν εἶ τοῦ ἀνθρώπου τούτου; λέγει ἐκεῖνος· οὐκ εἰμί. εἱστήκεισαν δὲ οἱ δοῦλοι καὶ οἱ ὑπηρέται ἀνθρακιὰν πεποιηκότες, ὅτι ψῦχος ἦν, καὶ ἐθερμαίνοντο· ἦν δὲ μετ᾽ αὐτῶν ὁ Πέτρος ἑστὼς καὶ θερμαινόμενος. Ὁ οὖν ἀρχιερεὺς ἠρώτησε τὸν Ἰησοῦν περὶ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ καὶ περὶ τῆς διδαχῆς αὐτοῦ. ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἐγὼ παρρησίᾳ ἐλάλησα τῷ κόσμῳ· ἐγὼ πάντοτε ἐδίδαξα ἐν συναγωγῇ καὶ ἐν τῷ ἱερῷ, ὅπου πάντοτε οἱ Ἰουδαῖοι συνέρχονται, καὶ ἐν κρυπτῷ ἐλάλησα οὐδέν. τί με ἐπερωτᾷς; ἐπερώτησον τοὺς ἀκηκοότας τί ἐλάλησα αὐτοῖς· ἴδε οὗτοι οἴδασιν ἃ εἶπον ἐγώ. ταῦτα δὲ αὐτοῦ εἰπόντος εἷς τῶν ὑπηρετῶν παρεστηκὼς ἔδωκε ῥάπισμα τῷ Ἰησοῦ εἰπών· οὕτως ἀποκρίνῃ τῷ ἀρχιερεῖ; ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· εἰ κακῶς ἐλάλησα, μαρτύρησον περὶ τοῦ κακοῦ· εἰ δὲ καλῶς, τί με

δέρεις; ἀπέστειλεν αὐτὸν ὁ Ἄννας δεδεμένον πρὸς Καϊάφαν τὸν ἀρχιερέα. Ἦν δὲ Σίμων Πέτρος ἑστὼς καὶ θερμαινόμενος. εἶπον οὖν αὐτῷ· μὴ καὶ σὺ ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶ; ἠρνήσατο οὖν ἐκεῖνος καὶ εἶπεν· οὐκ εἰμί. λέγει εἷς ἐκ τῶν δούλων τοῦ ἀρχιερέως, συγγενὴς ὢν οὗ ἀπέκοψε Πέτρος τὸ ὠτίον· οὐκ ἐγώ σε εἶδον ἐν τῷ κήπῳ μετ᾽ αὐτοῦ; πάλιν οὖν ἠρνήσατο ὁ Πέτρος, καὶ εὐθέως ἀλέκτωρ ἐφώνησεν. Ἄγουσιν οὖν τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ τοῦ Καϊάφα εἰς τὸ πραιτώριον· ἦν δὲ πρωΐ· καὶ αὐτοὶ οὐκ εἰσῆλθον εἰς τὸ πραιτώριον, ἵνα μὴ μιανθῶσιν, ἀλλ᾽ ἵνα φάγωσι τὸ πάσχα. ἐξῆλθεν οὖν ὁ Πιλᾶτος πρὸς αὐτοὺς καὶ εἶπε· τίνα κατηγορίαν φέρετε κατὰ τοῦ ἀνθρώπου τούτου; ἀπεκρίθησαν καὶ εἶπον αὐτῷ· εἰ μὴ ἦν οὗτος κακοποιός, οὐκ ἄν σοι παρεδώκαμεν αὐτόν. εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· λάβετε αὐτὸν ὑμεῖς καὶ κατὰ τὸν νόμον ὑμῶν κρίνατε αὐτόν. εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· ἡμῖν οὐκ ἔξεστιν ἀποκτεῖναι οὐδένα· ἵνα ὁ λόγος τοῦ Ἰησοῦ πληρωθῇ ὃν εἶπε σημαίνων ποίῳ θανάτῳ ἤμελλεν ἀποθνήσκειν. Εἰσῆλθεν οὖν εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν ὁ Πιλᾶτος καὶ ἐφώνησε τὸν Ἰησοῦν καὶ εἶπεν αὐτῷ· σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἀφ᾽ ἑαυτοῦ σὺ τοῦτο λέγεις ἢ ἄλλοι σοι εἶπον περὶ ἐμοῦ; ἀπεκρίθη ὁ Πιλᾶτος· μήτι ἐγὼ Ἰουδαῖός εἰμι; τὸ ἔθνος τὸ σὸν καὶ οἱ ἀρχιερεῖς παρέδωκάν σε ἐμοί· τί ἐποίησας; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ κόσμου τούτου· εἰ ἐκ τοῦ κόσμου τούτου ἦν ἡ βασιλεία ἡ ἐμή, οἱ ὑπηρέται ἂν οἱ ἐμοὶ ἠγωνίζοντο, ἵνα μὴ παραδοθῶ τοῖς Ἰουδαίοις· νῦν δὲ ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ οὐκ ἔστιν ἐντεῦθεν. εἶπεν οὖν αὐτῷ ὁ Πιλᾶτος· οὐκοῦν βασιλεὺς εἶ σύ; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· σὺ λέγεις ὅτι βασιλεύς εἰμι ἐγώ. ἐγὼ εἰς τοῦτο γεγέννημαι καὶ εἰς τοῦτο ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον, ἵνα μαρτυρήσω τῇ ἀληθείᾳ. πᾶς ὁ ὢν ἐκ τῆς ἀληθείας ἀκούει μου τῆς φωνῆς. λέγει αὐτῷ ὁ Πιλᾶτος·

τί ἐστιν ἀλήθεια; καὶ τοῦτο εἰπὼν πάλιν ἐξῆλθε πρὸς τοὺς Ἰουδαίους καὶ λέγει αὐτοῖς· ἐγὼ οὐδεμίαν αἰτίαν εὑρίσκω ἐν αὐτῷ· ἔστι δὲ συνήθεια ὑμῖν ἵνα ἕνα ὑμῖν ἀπολύσω ἐν τῷ πάσχα· βούλεσθε οὖν ὑμῖν ἀπολύσω τὸν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων; ἐκραύγασαν οὖν πάλιν πάντες λέγοντες· μὴ τοῦτον, ἀλλὰ τὸν Βαραββᾶν. ἦν δὲ ὁ Βαραββᾶς λῃστής.

# 19

Τότε οὖν ἔλαβεν ὁ Πιλᾶτος τὸν Ἰησοῦν καὶ ἐμαστίγωσε. καὶ οἱ στρατιῶται πλέξαντες στέφανον ἐξ ἀκανθῶν ἐπέθηκαν αὐτοῦ τῇ κεφαλῇ, καὶ ἱμάτιον πορφυροῦν περιέβαλον αὐτὸν καὶ ἔλεγον· χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· καὶ ἐδίδουν αὐτῷ ῥαπίσματα. ἐξῆλθεν οὖν πάλιν ἔξω ὁ Πιλᾶτος καὶ λέγει αὐτοῖς· ἴδε ἄγω ὑμῖν αὐτὸν ἔξω, ἵνα γνῶτε ὅτι ἐν αὐτῷ οὐδεμίαν αἰτίαν εὑρίσκω. ἐξῆλθεν οὖν ὁ Ἰησοῦς ἔξω φορῶν τὸν ἀκάνθινον στέφανον καὶ τὸ πορφυροῦν ἱμάτιον, καὶ λέγει αὐτοῖς· ἴδε ὁ ἄνθρωπος. ὅτε οὖν εἶδον αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ ὑπηρέται, ἐκραύγασαν λέγοντες· σταύρωσον σταύρωσον αὐτόν. λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· λάβετε αὐτὸν ὑμεῖς καὶ σταυρώσατε· ἐγὼ γὰρ οὐχ εὑρίσκω ἐν αὐτῷ αἰτίαν. ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· ἡμεῖς νόμον ἔχομεν, καὶ κατὰ τὸν νόμον ἡμῶν ὀφείλει ἀποθανεῖν, ὅτι ἑαυτὸν Θεοῦ υἱὸν ἐποίησεν. Ὅτε οὖν ἤκουσεν ὁ Πιλᾶτος τοῦτον τὸν λόγον, μᾶλλον ἐφοβήθη, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν καὶ λέγει τῷ Ἰησοῦ· πόθεν εἶ σύ; ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπόκρισιν οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ. λέγει οὖν αὐτῷ ὁ Πιλᾶτος· ἐμοὶ οὐ λαλεῖς; οὐκ οἶδας ὅτι ἐξουσίαν ἔχω σταυρῶσαί σε καὶ ἐξουσίαν ἔχω ἀπολῦσαί σε; ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· οὐκ εἶχες

ἐξουσίαν οὐδεμίαν κατ᾽ ἐμοῦ, εἰ μὴ ἦν σοι δεδομένον ἄνωθεν· διὰ τοῦτο ὁ παραδιδούς μέ σοι μείζονα ἁμαρτίαν ἔχει. ἐκ τούτου ἐζήτει ὁ Πιλᾶτος ἀπολῦσαι αὐτόν· οἱ δὲ Ἰουδαῖοι ἔκραζον λέγοντες· ἐὰν τοῦτον ἀπολύσῃς, οὐκ εἶ φίλος τοῦ Καίσαρος. πᾶς ὁ βασιλέα ἑαυτὸν ποιῶν ἀντιλέγει τῷ Καίσαρι. ὁ οὖν Πιλᾶτος ἀκούσας τοῦτον τὸν λόγον ἤγαγεν ἔξω τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τοῦ βήματος εἰς τόπον λεγόμενον Λιθόστρωτον , Ἑβραϊστὶ δὲ Γαββαθᾶ · ἦν δὲ παρασκευὴ τοῦ πάσχα, ὥρα δὲ ὡσεὶ ἕκτη· καὶ λέγει τοῖς Ἰουδαίοις· ἴδε ὁ βασιλεὺς ὑμῶν. οἱ δὲ ἐκραύγασαν· ἆρον ἆρον, σταύρωσον αὐτόν. λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλᾶτος· τὸν βασιλέα ὑμῶν σταυρώσω; ἀπεκρίθησαν οἱ ἀρχιερεῖς· οὐκ ἔχομεν βασιλέα εἰ μὴ Καίσαρα. τότε οὖν παρέδωκεν αὐτὸν αὐτοῖς ἵνα σταυρωθῇ. Παρέλαβον δὲ τὸν Ἰησοῦν καὶ ἤγαγον· καὶ βαστάζων τὸν σταυρὸν αὐτοῦ ἐξῆλθεν εἰς τὸν λεγόμενον κρανίου τόπον , ὃς λέγεται Ἑβραϊστὶ Γολγοθᾶ , ὅπου αὐτὸν ἐσταύρωσαν, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ ἄλλους δύο ἐντεῦθεν καὶ ἐντεῦθεν, μέσον δὲ τὸν Ἰησοῦν. ἔγραψε δὲ καὶ τίτλον ὁ Πιλᾶτος καὶ ἔθηκεν ἐπὶ τοῦ σταυροῦ· ἦν δὲ γεγραμμένον· Ἰησοῦς ὁ Ναζωραῖος ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων. τοῦτον οὖν τὸν τίτλον πολλοὶ ἀνέγνωσαν τῶν Ἰουδαίων, ὅτι ἐγγὺς ἦν τῆς πόλεως ὁ τόπος ὅπου ἐσταυρώθη ὁ Ἰησοῦς· καὶ ἦν γεγραμμένον Ἑβραϊστί, Ἑλληνιστί, Ῥωμαϊστί. ἔλεγον οὖν τῷ Πιλάτῳ οἱ ἀρχιερεῖς τῶν Ἰουδαίων· μὴ γράφε, ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων , ἀλλ᾽ ὅτι ἐκεῖνος εἶπε, βασιλεύς εἰμι τῶν Ἰουδαίων. ἀπεκρίθη ὁ Πιλᾶτος· ὃ γέγραφα, γέγραφα. Οἱ οὖν στρατιῶται ὅτε ἐσταύρωσαν τὸν Ἰησοῦν, ἔλαβον τὰ ἱμάτια αὐτοῦ καὶ ἐποίησαν τέσσαρα μέρη, ἑκάστῳ στρατιώτῃ μέρος, καὶ τὸν χιτῶνα· ἦν δὲ ὁ χιτὼν ἄρραφος, ἐκ τῶν ἄνωθεν ὑφαντὸς διʼ ὅλου. εἶπον οὖν πρὸς ἀλλήλους· μὴ σχίσωμεν αὐτόν, ἀλλὰ λάχωμεν περὶ αὐτοῦ τίνος

ἔσται· ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ ἡ λέγουσα· διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου ἑαυτοῖς, καὶ ἐπὶ τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον. Οἱ μὲν οὖν στρατιῶται ταῦτα ἐποίησαν. εἱστήκεισαν δὲ παρὰ τῷ σταυρῷ τοῦ Ἰησοῦ ἡ μήτηρ αὐτοῦ καὶ ἡ ἀδελφὴ τῆς μητρὸς αὐτοῦ, Μαρία ἡ τοῦ Κλωπᾶ καὶ Μαρία ἡ Μαγδαληνή. Ἰησοῦς οὖν ἰδὼν τὴν μητέρα καὶ τὸν μαθητὴν παρεστῶτα ὃν ἠγάπα, λέγει τῇ μητρὶ αὐτοῦ· γύναι, ἴδε ὁ υἱός σου. εἶτα λέγει τῷ μαθητῇ· ἰδοὺ ἡ μήτηρ σου. καὶ ἀπ᾽ ἐκείνης τῆς ὥρας ἔλαβεν ὁ μαθητὴς αὐτὴν εἰς τὰ ἴδια. Μετὰ τοῦτο εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα ἤδη τετέλεσται, ἵνα τελειωθῇ ἡ γραφή, λέγει· διψῶ. σκεῦος οὖν ἔκειτο ὄξους μεστόν· οἱ δὲ πλήσαντες σπόγγον ὄξους καὶ ὑσσώπῳ περιθέντες προσήνεγκαν αὐτοῦ τῷ στόματι. ὅτε οὖν ἔλαβε τὸ ὄξος ὁ Ἰησοῦς εἶπε, τετέλεσται , καὶ κλίνας τὴν κεφαλὴν παρέδωκε τὸ πνεῦμα. Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι, ἵνα μὴ μείνῃ ἐπὶ τοῦ σταυροῦ τὰ σώματα ἐν τῷ σαββάτῳ, ἐπεὶ παρασκευὴ ἦν· ἦν γὰρ μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνου τοῦ σαββάτου· ἠρώτησαν τὸν Πιλᾶτον ἵνα κατεαγῶσιν αὐτῶν τὰ σκέλη, καὶ ἀρθῶσιν. ἦλθον οὖν οἱ στρατιῶται, καὶ τοῦ μὲν πρώτου κατέαξαν τὰ σκέλη καὶ τοῦ ἄλλου τοῦ συσταυρωθέντος αὐτῷ· ἐπὶ δὲ τὸν Ἰησοῦν ἐλθόντες ὡς εἶδον αὐτὸν ἤδη τεθνηκότα, οὐ κατέαξαν αὐτοῦ τὰ σκέλη, ἀλλ᾽ εἷς τῶν στρατιωτῶν λόγχῃ αὐτοῦ τὴν πλευρὰν ἔνυξε, καὶ εὐθέως ἐξῆλθεν αἷμα καὶ ὕδωρ. καὶ ὁ ἑωρακὼς μεμαρτύρηκε, καὶ ἀληθινὴ αὐτοῦ ἐστιν ἡ μαρτυρία, κἀκεῖνος οἶδεν ὅτι ἀληθῆ λέγει, ἵνα καὶ ὑμεῖς πιστεύσητε. ἐγένετο γὰρ ταῦτα, ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ, ὀστοῦν οὐ συντριβήσεται αὐτοῦ. καὶ πάλιν ἑτέρα γραφὴ λέγει· ὄψονται εἰς ὃν ἐξεκέντησαν. Μετὰ δὲ ταῦτα ἠρώτησε τὸν Πιλᾶτον Ἰωσὴφ ὁ ἀπὸ Ἀριμαθαίας, ὢν μαθητὴς τοῦ Ἰησοῦ, κεκρυμμένος δὲ διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων, ἵνα ἄρῃ τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ· καὶ ἐπέτρεψεν ὁ Πιλᾶτος. ἦλθεν οὖν καὶ ἦρε τὸ

σῶμα τοῦ Ἰησοῦ. ἦλθε δὲ καὶ Νικόδημος ὁ ἐλθὼν πρὸς τὸν Ἰησοῦν νυκτὸς τὸ πρῶτον, φέρων μῖγμα σμύρνης καὶ ἀλόης ὡς λίτρας ἑκατόν. ἔλαβον οὖν τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ καὶ ἔδησαν αὐτὸ ἐν ὀθονίοις μετὰ τῶν ἀρωμάτων, καθὼς ἔθος ἐστὶ τοῖς Ἰουδαίοις ἐνταφιάζειν. ἦν δὲ ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ἐσταυρώθη κῆπος, καὶ ἐν τῷ κήπῳ μνημεῖον καινόν, ἐν ᾧ οὐδέπω οὐδεὶς ἐτέθη· ἐκεῖ οὖν διὰ τὴν παρασκευὴν τῶν Ἰουδαίων, ὅτι ἐγγὺς ἦν τὸ μνημεῖον, ἔθηκαν τὸν Ἰησοῦν.

# 20

Τῇ δὲ μιᾷ τῶν σαββάτων Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ ἔρχεται πρωΐ σκοτίας ἔτι οὔσης εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ βλέπει τὸν λίθον ἠρμένον ἐκ τοῦ μνημείου. τρέχει οὖν καὶ ἔρχεται πρὸς Σίμωνα Πέτρον καὶ πρὸς τὸν ἄλλον μαθητὴν ὃν ἐφίλει ὁ Ἰησοῦς, καὶ λέγει αὐτοῖς· ἦραν τὸν Κύριον ἐκ τοῦ μνημείου, καὶ οὐκ οἴδαμεν ποῦ ἔθηκαν αὐτόν. ἐξῆλθεν οὖν ὁ Πέτρος καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς καὶ ἤρχοντο εἰς τὸ μνημεῖον. ἔτρεχον δὲ οἱ δύο ὁμοῦ· καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς προέδραμε τάχιον τοῦ Πέτρου καὶ ἦλθε πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ παρακύψας βλέπει κείμενα τὰ ὀθόνια, οὐ μέντοι εἰσῆλθεν. ἔρχεται οὖν Σίμων Πέτρος ἀκολουθῶν αὐτῷ, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ μνημεῖον καὶ θεωρεῖ τὰ ὀθόνια κείμενα, καὶ τὸ σουδάριον, ὃ ἦν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, οὐ μετὰ τῶν ὀθονίων κείμενον, ἀλλὰ χωρὶς ἐντετυλιγμένον εἰς ἕνα τόπον. τότε οὖν εἰσῆλθε καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς ὁ ἐλθὼν πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον, καὶ εἶδε καὶ ἐπίστευσεν· οὐδέπω γὰρ ᾔδεισαν τὴν γραφὴν ὅτι δεῖ αὐτὸν ἐκ νεκρῶν ἀναστῆναι. ἀπῆλθον οὖν πάλιν πρὸς ἑαυτοὺς οἱ μαθηταί. Μαρία

δὲ εἱστήκει πρὸς τῷ μνημείῳ κλαίουσα ἔξω. ὡς οὖν ἔκλαιε, παρέκυψεν εἰς τὸ μνημεῖον καὶ θεωρεῖ δύο ἀγγέλους ἐν λευκοῖς καθεζομένους, ἕνα πρὸς τῇ κεφαλῇ καὶ ἕνα πρὸς τοῖς ποσίν, ὅπου ἔκειτο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ. καὶ λέγουσιν αὐτῇ ἐκεῖνοι· γύναι, τί κλαίεις; λέγει αὐτοῖς· ὅτι ἦραν τὸν Κύριόν μου, καὶ οὐκ οἶδα ποῦ ἔθηκαν αὐτόν. καὶ ταῦτα εἰποῦσα ἐστράφη εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ θεωρεῖ τὸν Ἰησοῦν ἑστῶτα, καὶ οὐκ ᾔδει ὅτι Ἰησοῦς ἐστι. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· γύναι, τί κλαίεις; τίνα ζητεῖς; ἐκείνη δοκοῦσα ὅτι ὁ κηπουρός ἐστι, λέγει αὐτῷ· κύριε, εἰ σὺ ἐβάστασας αὐτόν, εἰπέ μοι ποῦ ἔθηκας αὐτόν, κἀγὼ αὐτὸν ἀρῶ. λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρία. στραφεῖσα ἐκείνη λέγει αὐτῷ· ῥαββουνί, ὃ λέγεται, διδάσκαλε . λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· μή μου ἅπτου· οὔπω γὰρ ἀναβέβηκα πρὸς τὸν πατέρα μου· πορεύου δὲ πρὸς τοὺς ἀδελφούς μου καὶ εἰπὲ αὐτοῖς· ἀναβαίνω πρὸς τὸν πατέρα μου καὶ πατέρα ὑμῶν, καὶ Θεόν μου καὶ Θεὸν ὑμῶν. ἔρχεται Μαρία ἡ Μαγδαληνὴ ἀπαγγέλλουσα τοῖς μαθηταῖς ὅτι ἑώρακε τὸν Κύριον, καὶ ταῦτα εἶπεν αὐτῇ. Οὔσης οὖν ὀψίας τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τῇ μιᾷ τῶν σαββάτων, καὶ τῶν θυρῶν κεκλεισμένων ὅπου ἦσαν οἱ μαθηταὶ συνηγμένοι διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον, καὶ λέγει αὐτοῖς· εἰρήνη ὑμῖν. καὶ τοῦτο εἰπὼν ἔδειξεν αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ τὴν πλευρὰν αὐτοῦ. ἐχάρησαν οὖν οἱ μαθηταὶ ἰδόντες τὸν Κύριον. εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς πάλιν· εἰρήνη ὑμῖν. καθὼς ἀπέσταλκέ με ὁ πατήρ, κἀγὼ πέμπω ὑμᾶς. καὶ τοῦτο εἰπὼν ἐνεφύσησε καὶ λέγει αὐτοῖς· λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον· ἄν τινων ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς· ἄν τινων κρατῆτε, κεκράτηνται. Θωμᾶς δὲ εἷς ἐκ τῶν δώδεκα, ὁ λεγόμενος Δίδυμος, οὐκ ἦν μετ᾽ αὐτῶν ὅτε ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς. ἔλεγον οὖν αὐτῷ οἱ ἄλλοι μαθηταί· ἑωράκαμεν τὸν Κύριον. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· ἐὰν μὴ ἴδω ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ τὸν

τύπον τῶν ἥλων, καὶ βάλω τὸν δάκτυλόν μου εἰς τὸν τύπον τῶν ἥλων, καὶ βάλω τὴν χεῖρά μου εἰς τὴν πλευρὰν αὐτοῦ, οὐ μὴ πιστεύσω. Καὶ μεθ᾽ ἡμέρας ὀκτὼ πάλιν ἦσαν ἔσω οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ καὶ Θωμᾶς μετ᾽ αὐτῶν. ἔρχεται ὁ Ἰησοῦς τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον καὶ εἶπεν· εἰρήνη ὑμῖν. εἶτα λέγει τῷ Θωμᾷ· φέρε τὸν δάκτυλόν σου ὧδε καὶ ἴδε τὰς χεῖράς μου, καὶ φέρε τὴν χεῖρά σου καὶ βάλε εἰς τὴν πλευράν μου, καὶ μὴ γίνου ἄπιστος, ἀλλὰ πιστός. καὶ ἀπεκρίθη Θωμᾶς καὶ εἶπεν αὐτῷ· ὁ Κύριός μου καὶ ὁ Θεός μου. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ὅτι ἑώρακάς με, πεπίστευκας· μακάριοι οἱ μὴ ἰδόντες καὶ πιστεύσαντες. Πολλὰ μὲν οὖν καὶ ἄλλα σημεῖα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς ἐνώπιον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, ἃ οὐκ ἔστι γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ· ταῦτα δὲ γέγραπται ἵνα πιστεύσητε ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, καὶ ἵνα πιστεύοντες ζωὴν ἔχητε ἐν τῷ ὀνόματι αὐτοῦ.

# 21

Μετὰ ταῦτα ἐφανέρωσεν ἑαυτὸν πάλιν ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῆς Τιβεριάδος· ἐφανέρωσε δὲ οὕτως. ἦσαν ὁμοῦ Σίμων Πέτρος, καὶ Θωμᾶς ὁ λεγόμενος Δίδυμος, καὶ Ναθαναὴλ ὁ ἀπὸ Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας, καὶ οἱ τοῦ Ζεβεδαίου, καὶ ἄλλοι ἐκ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο. λέγει αὐτοῖς Σίμων Πέτρος· ὑπάγω ἁλιεύειν. λέγουσιν αὐτῷ· ἐρχόμεθα καὶ ἡμεῖς σὺν σοί. ἐξῆλθον καὶ ἐνέβησαν εἰς τὸ πλοῖον εὐθύς, καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ νυκτὶ ἐπίασαν οὐδέν. πρωΐας δὲ ἤδη γενομένης ἔστη ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸν αἰγιαλόν· οὐ μέντοι ᾔδεισαν οἱ μαθηταὶ ὅτι Ἰησοῦς ἐστι. λέγει οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· παιδία, μή τι προσφάγιον ἔχετε; ἀπεκρίθησαν

αὐτῷ· οὔ. ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· βάλετε εἰς τὰ δεξιὰ μέρη τοῦ πλοίου τὸ δίκτυον, καὶ εὑρήσετε. ἔβαλον οὖν, καὶ οὐκέτι αὐτὸ ἑλκύσαι ἴσχυσαν ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἰχθύων. λέγει οὖν ὁ μαθητὴς ἐκεῖνος, ὃν ἠγάπα ὁ Ἰησοῦς, τῷ Πέτρῳ· ὁ Κύριός ἐστι. Σίμων οὖν Πέτρος ἀκούσας ὅτι ὁ Κύριός ἐστι, τὸν ἐπενδύτην διεζώσατο· ἦν γὰρ γυμνός· καὶ ἔβαλεν ἑαυτὸν εἰς τὴν θάλασσαν· οἱ δὲ ἄλλοι μαθηταὶ τῷ πλοιαρίῳ ἦλθον· οὐ γὰρ ἦσαν μακρὰν ἀπὸ τῆς γῆς, ἀλλ᾽ ὡς ἀπὸ πηχῶν διακοσίων, σύροντες τὸ δίκτυον τῶν ἰχθύων. ὡς οὖν ἀπέβησαν εἰς τὴν γῆν, βλέπουσιν ἀνθρακιὰν κειμένην καὶ ὀψάριον ἐπικείμενον καὶ ἄρτον. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἐνέγκατε ἀπὸ τῶν ὀψαρίων ὧν ἐπιάσατε νῦν. ἀνέβη Σίμων Πέτρος καὶ εἵλκυσε τὸ δίκτυον ἐπὶ τῆς γῆς, μεστὸν ἰχθύων μεγάλων ἑκατὸν πεντήκοντα τριῶν· καὶ τοσούτων ὄντων οὐκ ἐσχίσθη τὸ δίκτυον. λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· δεῦτε ἀριστήσατε. οὐδεὶς δὲ ἐτόλμα τῶν μαθητῶν ἐξετάσαι αὐτὸν σὺ τίς εἶ, εἰδότες ὅτι ὁ Κύριός ἐστιν. ἔρχεται οὖν ὁ Ἰησοῦς καὶ λαμβάνει τὸν ἄρτον καὶ δίδωσιν αὐτοῖς, καὶ τὸ ὀψάριον ὁμοίως. Τοῦτο ἤδη τρίτον ἐφανερώθη ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν. Ὅτε οὖν ἠρίστησαν, λέγει τῷ Σίμωνι Πέτρῳ ὁ Ἰησοῦς· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀγαπᾷς με πλεῖον τούτων; λέγει αὐτῷ· ναί, Κύριε, σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε. λέγει αὐτῷ· βόσκε τὰ ἀρνία μου. λέγει αὐτῷ πάλιν δεύτερον· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀγαπᾷς με; λέγει αὐτῷ· ναί, Κύριε, σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε. λέγει αὐτῷ· ποίμαινε τὰ πρόβατά μου. λέγει αὐτῷ τὸ τρίτον· Σίμων Ἰωνᾶ, φιλεῖς με; ἐλυπήθη ὁ Πέτρος ὅτι εἶπεν αὐτῷ τὸ τρίτον, φιλεῖς με, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, σὺ πάντα οἶδας, σὺ γινώσκεις ὅτι φιλῶ σε. λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· βόσκε τὰ πρόβατά μου. ἀμὴν ἀμὴν λέγω σοι, ὅτε ἦς νεώτερος, ἐζώννυες σεαυτὸν καὶ περιεπάτεις ὅπου ἤθελες· ὅταν δὲ γηράσῃς, ἐκτενεῖς τὰς χεῖράς σου, καὶ ἄλλος σε

ζώσει, καὶ οἴσει ὅπου οὐ θέλεις. τοῦτο δὲ εἶπε σημαίνων ποίῳ θανάτῳ δοξάσει τὸν Θεόν. καὶ τοῦτο εἰπὼν λέγει αὐτῷ· ἀκολούθει μοι. ἐπιστραφεὶς δὲ ὁ Πέτρος βλέπει τὸν μαθητὴν ὃν ἠγάπα ὁ Ἰησοῦς ἀκολουθοῦντα, ὃς καὶ ἀνέπεσεν ἐν τῷ δείπνῳ ἐπὶ τὸ στῆθος αὐτοῦ καὶ εἶπε· Κύριε, τίς ἐστιν ὁ παραδιδούς σε; τοῦτον ἰδὼν ὁ Πέτρος λέγει τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, οὗτος δὲ τί; λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἐὰν αὐτὸν θέλω μένειν ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σέ; σὺ ἀκολούθει μοι. ἐξῆλθεν οὖν ὁ λόγος οὗτος εἰς τοὺς ἀδελφοὺς ὅτι ὁ μαθητὴς ἐκεῖνος οὐκ ἀποθνήσκει· καὶ οὐκ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς ὅτι οὐκ ἀποθνήσκει, ἀλλ᾽ ἐὰν αὐτὸν θέλω μένειν ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σέ; Οὗτός ἐστιν ὁ μαθητὴς ὁ μαρτυρῶν περὶ τούτων καὶ γράψας ταῦτα, καὶ οἴδαμεν ὅτι ἀληθής ἐστιν ἡ μαρτυρία αὐτοῦ. ἔστι δὲ καὶ ἄλλα πολλὰ ὅσα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἅτινα ἐὰν γράφηται καθ᾽ ἕν, οὐδὲ αὐτὸν οἶμαι τὸν κόσμον χωρῆσαι τὰ γραφόμενα βιβλία. ἀμήν.

# ΙΑΚΩΒΟΥ

## 1

Ἰάκωβος, Θεοῦ καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ δοῦλος, ταῖς δώδεκα φυλαῖς ταῖς ἐν τῇ διασπορᾷ χαίρειν. Πᾶσαν χαρὰν ἡγήσασθε, ἀδελφοί μου, ὅταν πειρασμοῖς περιπέσητε ποικίλοις, γινώσκοντες ὅτι τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆς πίστεως κατεργάζεται ὑπομονήν· ἡ δὲ ὑπομονὴ ἔργον τέλειον ἐχέτω, ἵνα ἦτε τέλειοι καὶ ὁλόκληροι, ἐν μηδενὶ λειπόμενοι. Εἰ δέ τις ὑμῶν λείπεται σοφίας, αἰτείτω παρὰ τοῦ διδόντος Θεοῦ πᾶσιν ἁπλῶς καὶ οὐκ ὀνειδίζοντος, καὶ δοθήσεται αὐτῷ· αἰτείτω δὲ ἐν πίστει, μηδὲν διακρινόμενος· ὁ γὰρ διακρινόμενος ἔοικε κλύδωνι θαλάσσης ἀνεμιζομένῳ καὶ ῥιπιζομένῳ. μὴ γὰρ οἰέσθω ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος ὅτι λήψεταί τι παρὰ τοῦ Κυρίου. ἀνὴρ δίψυχος ἀκατάστατος ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ. καυχάσθω δὲ ὁ ἀδελφὸς ὁ ταπεινὸς ἐν τῷ ὕψει αὐτοῦ, ὁ δὲ πλούσιος ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτοῦ, ὅτι ὡς ἄνθος χόρτου παρελεύσεται. ἀνέτειλε γὰρ ὁ ἥλιος σὺν τῷ καύσωνι καὶ ἐξήρανε τὸν χόρτον, καὶ τὸ ἄνθος αὐτοῦ ἐξέπεσε, καὶ ἡ εὐπρέπεια τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἀπώλετο. οὕτω καὶ ὁ πλούσιος ἐν ταῖς πορείαις αὐτοῦ μαρανθήσεται. Μακάριος ἀνὴρ ὃς ὑπομένει πειρασμόν· ὅτι

δόκιμος γενόμενος λήψεται τὸν στέφανον τῆς ζωῆς, ὃν ἐπηγγείλατο ὁ Κύριος τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν. Μηδεὶς πειραζόμενος λεγέτω ὅτι ἀπὸ Θεοῦ πειράζομαι· ὁ γὰρ Θεὸς ἀπείραστός ἐστι κακῶν, πειράζει δὲ αὐτὸς οὐδένα. ἕκαστος δὲ πειράζεται ὑπὸ τῆς ἰδίας ἐπιθυμίας ἐξελκόμενος καὶ δελεαζόμενος· εἶτα ἡ ἐπιθυμία συλλαβοῦσα τίκτει ἁμαρτίαν, ἡ δὲ ἁμαρτία ἀποτελεσθεῖσα ἀποκύει θάνατον. Μὴ πλανᾶσθε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί· πᾶσα δόσις ἀγαθὴ καὶ πᾶν δώρημα τέλειον ἄνωθέν ἐστι καταβαῖνον ἀπὸ τοῦ πατρὸς τῶν φώτων, παρ᾽ ᾧ οὐκ ἔνι παραλλαγὴ ἢ τροπῆς ἀποσκίασμα. βουληθεὶς ἀπεκύησεν ἡμᾶς λόγῳ ἀληθείας εἰς τὸ εἶναι ἡμᾶς ἀπαρχήν τινα τῶν αὐτοῦ κτισμάτων. Ὥστε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἔστω πᾶς ἄνθρωπος ταχὺς εἰς τὸ ἀκοῦσαι, βραδὺς εἰς τὸ λαλῆσαι, βραδὺς εἰς ὀργήν· ὀργὴ γὰρ ἀνδρὸς δικαιοσύνην Θεοῦ οὐ κατεργάζεται. διὸ ἀποθέμενοι πᾶσαν ῥυπαρίαν καὶ περισσείαν κακίας ἐν πραΰτητι δέξασθε τὸν ἔμφυτον λόγον τὸν δυνάμενον σῶσαι τὰς ψυχὰς ὑμῶν. Γίνεσθε δὲ ποιηταὶ λόγου καὶ μὴ μόνον ἀκροαταί, παραλογιζόμενοι ἑαυτούς. ὅτι εἴ τις ἀκροατὴς λόγου ἐστὶ καὶ οὐ ποιητής, οὗτος ἔοικεν ἀνδρὶ κατανοοῦντι τὸ πρόσωπον τῆς γενέσεως αὐτοῦ ἐν ἐσόπτρῳ· κατενόησε γὰρ ἑαυτὸν καὶ ἀπελήλυθε, καὶ εὐθέως ἐπελάθετο ὁποῖος ἦν. ὁ δὲ παρακύψας εἰς νόμον τέλειον τὸν τῆς ἐλευθερίας καὶ παραμείνας, οὗτος οὐκ ἀκροατὴς ἐπιλησμονῆς γενόμενος, ἀλλὰ ποιητὴς ἔργου, οὗτος μακάριος ἐν τῇ ποιήσει αὐτοῦ ἔσται. Εἴ τις δοκεῖ θρῆσκος εἶναι ἐν ὑμῖν μὴ χαλιναγωγῶν γλῶσσαν αὐτοῦ, ἀλλ᾽ ἀπατῶν καρδίαν αὐτοῦ, τούτου μάταιος ἡ θρησκεία. θρησκεία καθαρὰ καὶ ἀμίαντος παρὰ τῷ Θεῷ καὶ πατρὶ αὕτη ἐστίν, ἐπισκέπτεσθαι ὀρφανοὺς καὶ χήρας ἐν τῇ θλίψει αὐτῶν, ἄσπιλον ἑαυτὸν τηρεῖν ἀπὸ τοῦ κόσμου.

# 2

Ἀδελφοί μου, μὴ ἐν προσωποληψίαις ἔχετε τὴν πίστιν τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ τῆς δόξης. ἐὰν γὰρ εἰσέλθῃ εἰς τὴν συναγωγὴν ὑμῶν ἀνὴρ χρυσοδακτύλιος ἐν ἐσθῆτι λαμπρᾷ, εἰσέλθῃ δὲ καὶ πτωχὸς ἐν ῥυπαρᾷ ἐσθῆτι, καὶ ἐπιβλέψητε ἐπὶ τὸν φοροῦντα τὴν ἐσθῆτα τὴν λαμπρὰν καὶ εἴπητε αὐτῷ, σὺ κάθου ὧδε καλῶς, καὶ τῷ πτωχῷ εἴπητε, σὺ στῆθι ἐκεῖ ἢ κάθου ὧδε ὑπὸ τὸ ὑποπόδιόν μου, καὶ οὐ διεκρίθητε ἐν ἑαυτοῖς καὶ ἐγένεσθε κριταὶ διαλογισμῶν πονηρῶν; Ἀκούσατε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί. οὐχ ὁ Θεὸς ἐξελέξατο τοὺς πτωχοὺς τοῦ κόσμου πλουσίους ἐν πίστει καὶ κληρονόμους τῆς βασιλείας ἧς ἐπηγγείλατο τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν; ὑμεῖς δὲ ἠτιμάσατε τὸν πτωχόν. οὐχ οἱ πλούσιοι καταδυναστεύουσιν ὑμῶν, καὶ αὐτοὶ ἕλκουσιν ὑμᾶς εἰς κριτήρια; οὐκ αὐτοὶ βλασφημοῦσι τὸ καλὸν ὄνομα τὸ ἐπικληθὲν ἐφ᾽ ὑμᾶς; εἰ μέντοι νόμον τελεῖτε βασιλικὸν κατὰ τὴν γραφήν, ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτόν, καλῶς ποιεῖτε· εἰ δὲ προσωποληπτεῖτε, ἁμαρτίαν ἐργάζεσθε, ἐλεγχόμενοι ὑπὸ τοῦ νόμου ὡς παραβάται. ὅστις γὰρ ὅλον τὸν νόμον τηρήσῃ, πταίσῃ δὲ ἐν ἑνί, γέγονε πάντων ἔνοχος. ὁ γὰρ εἰπὼν μὴ μοιχεύσῃς, εἶπε καὶ μὴ φονεύσῃς· εἰ δὲ οὐ μοιχεύσεις, φονεύσεις δέ, γέγονας παραβάτης νόμου. οὕτω λαλεῖτε καὶ οὕτω ποιεῖτε, ὡς διὰ νόμου ἐλευθερίας μέλλοντες κρίνεσθαι· ἡ γὰρ κρίσις ἀνέλεος τῷ μὴ ποιήσαντι ἔλεος· κατακαυχᾶται ἔλεος κρίσεως. Τί τὸ ὄφελος, ἀδελφοί μου, ἐὰν πίστιν λέγῃ τις ἔχειν, ἔργα δὲ μὴ ἔχῃ; μὴ δύναται ἡ πίστις σῶσαι αὐτόν; ἐὰν δὲ ἀδελφὸς ἢ ἀδελφὴ γυμνοὶ ὑπάρχωσι καὶ λειπόμενοι ὦσι τῆς ἐφημέρου τροφῆς, εἴπῃ δέ τις αὐτοῖς ἐξ ὑμῶν, ὑπάγετε ἐν

εἰρήνῃ, θερμαίνεσθε καὶ χορτάζεσθε, μὴ δῶτε δὲ αὐτοῖς τὰ ἐπιτήδεια τοῦ σώματος, τί τὸ ὄφελος; οὕτω καὶ ἡ πίστις, ἐὰν μὴ ἔργα ἔχῃ, νεκρά ἐστι καθ᾽ ἑαυτήν. ἀλλ᾽ ἐρεῖ τις· σὺ πίστιν ἔχεις, κἀγὼ ἔργα ἔχω· δεῖξόν μοι τὴν πίστιν σου ἐκ τῶν ἔργων σου, κἀγὼ δείξω σοι ἐκ τῶν ἔργων μου τὴν πίστιν μου. σὺ πιστεύεις ὅτι ὁ Θεὸς εἷς ἐστι· καλῶς ποιεῖς· καὶ τὰ δαιμόνια πιστεύουσι καὶ φρίσσουσι. θέλεις δὲ γνῶναι, ὦ ἄνθρωπε κενέ, ὅτι ἡ πίστις χωρὶς τῶν ἔργων νεκρά ἐστιν; Ἀβραὰμ ὁ πατὴρ ἡμῶν οὐκ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη, ἀνενέγκας Ἰσαὰκ τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον; βλέπεις ὅτι ἡ πίστις συνήργει τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῶν ἔργων ἡ πίστις ἐτελειώθη, καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφὴ ἡ λέγουσα· ἐπίστευσε δὲ Ἀβραὰμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην, καὶ φίλος Θεοῦ ἐκλήθη. ὁρᾶτε τοίνυν ὅτι ἐξ ἔργων δικαιοῦται ἄνθρωπος καὶ οὐκ ἐκ πίστεως μόνον. ὁμοίως δὲ καὶ Ῥαὰβ ἡ πόρνη οὐκ ἐξ ἔργων ἐδικαιώθη, ὑποδεξαμένη τοὺς ἀγγέλους καὶ ἑτέρᾳ ὁδῷ ἐκβαλοῦσα; ὥσπερ γὰρ τὸ σῶμα χωρὶς πνεύματος νεκρόν ἐστιν, οὕτω καὶ ἡ πίστις χωρὶς τῶν ἔργων νεκρά ἐστι.

# 3

Μὴ πολλοὶ διδάσκαλοι γίνεσθε, ἀδελφοί μου, εἰδότες ὅτι μεῖζον κρῖμα ληψόμεθα· πολλὰ γὰρ πταίομεν ἅπαντες. εἴ τις ἐν λόγῳ οὐ πταίει, οὗτος τέλειος ἀνήρ, δυνατὸς χαλιναγωγῆσαι καὶ ὅλον τὸ σῶμα. ἴδε τῶν ἵππων τοὺς χαλινοὺς εἰς τὰ στόματα βάλλομεν πρὸς τὸ πείθεσθαι αὐτοὺς ἡμῖν, καὶ ὅλον τὸ σῶμα αὐτῶν μετάγομεν. ἰδοὺ καὶ τὰ πλοῖα, τηλικαῦτα ὄντα καὶ ὑπὸ σκληρῶν ἀνέμων ἐλαυνόμενα, μετάγεται ὑπὸ ἐλαχίστου πηδαλίου ὅπου ἂν ἡ ὁρμὴ

τοῦ εὐθύνοντος βούληται. οὕτω καὶ ἡ γλῶσσα μικρὸν μέλος ἐστὶ καὶ μεγαλαυχεῖ. ἰδοὺ ὀλίγον πῦρ ἡλίκην ὕλην ἀνάπτει καὶ ἡ γλῶσσα πῦρ, ὁ κόσμος τῆς ἀδικίας. οὕτως ἡ γλῶσσα καθίσταται ἐν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν ἡ σπιλοῦσα ὅλον τὸ σῶμα καὶ φλογίζουσα τὸν τροχὸν τῆς γενέσεως καὶ φλογιζομένη ὑπὸ τῆς γεέννης. πᾶσα γὰρ φύσις θηρίων τε καὶ πετεινῶν ἑρπετῶν τε καὶ ἐναλίων δαμάζεται καὶ δεδάμασται τῇ φύσει τῇ ἀνθρωπίνῃ, τὴν δὲ γλῶσσαν οὐδεὶς δύναται ἀνθρώπων δαμάσαι· ἀκατάσχετον κακόν, μεστὴ ἰοῦ θανατηφόρου. ἐν αὐτῇ εὐλογοῦμεν τὸν Θεὸν καὶ πατέρα, καὶ ἐν αὐτῇ καταρώμεθα τοὺς ἀνθρώπους τοὺς καθ᾽ ὁμοίωσιν Θεοῦ γεγονότας· ἐκ τοῦ αὐτοῦ στόματος ἐξέρχεται εὐλογία καὶ κατάρα. οὐ χρή, ἀδελφοί μου, ταῦτα οὕτω γίνεσθαι. μήτι ἡ πηγὴ ἐκ τῆς αὐτῆς ὀπῆς βρύει τὸ γλυκὺ καὶ τὸ πικρόν; μὴ δύναται, ἀδελφοί μου, συκῆ ἐλαίας ποιῆσαι ἢ ἄμπελος σῦκα; οὕτως οὐδεμία πηγὴ ἁλυκὸν καὶ γλυκὺ ποιῆσαι ὕδωρ. Τίς σοφὸς καὶ ἐπιστήμων ἐν ὑμῖν; δειξάτω ἐκ τῆς καλῆς ἀναστροφῆς τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν πραΰτητι σοφίας. εἰ δὲ ζῆλον πικρὸν ἔχετε καὶ ἐριθείαν ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν, μὴ κατακαυχᾶσθε καὶ ψεύδεσθε κατὰ τῆς ἀληθείας. οὐκ ἔστιν αὕτη ἡ σοφία ἄνωθεν κατερχομένη, ἀλλ᾽ ἐπίγειος, ψυχική, δαιμονιώδης. ὅπου γὰρ ζῆλος καὶ ἐριθεία, ἐκεῖ ἀκαταστασία καὶ πᾶν φαῦλον πρᾶγμα. ἡ δὲ ἄνωθεν σοφία πρῶτον μὲν ἁγνή ἐστιν, ἔπειτα εἰρηνική, ἐπιεικής, εὐπειθής, μεστὴ ἐλέους καὶ καρπῶν ἀγαθῶν, ἀδιάκριτος καὶ ἀνυπόκριτος. καρπὸς δὲ τῆς δικαιοσύνης ἐν εἰρήνῃ σπείρεται τοῖς ποιοῦσιν εἰρήνην.

# 4

Πόθεν πόλεμοι καὶ μάχαι ἐν ὑμῖν; οὐκ ἐντεῦθεν, ἐκ τῶν ἡδονῶν ὑμῶν τῶν στρατευομένων ἐν τοῖς μέλεσιν ὑμῶν; ἐπιθυμεῖτε, καὶ οὐκ ἔχετε· φονεύετε καὶ ζηλοῦτε, καὶ οὐ δύνασθε ἐπιτυχεῖν· μάχεσθε καὶ πολεμεῖτε, καὶ οὐκ ἔχετε, διὰ τὸ μὴ αἰτεῖσθαι ὑμᾶς· αἰτεῖτε καὶ οὐ λαμβάνετε, διότι κακῶς αἰτεῖσθε, ἵνα ἐν ταῖς ἡδοναῖς ὑμῶν δαπανήσητε. μοιχοὶ καὶ μοιχαλίδες οὐκ οἴδατε ὅτι ἡ φιλία τοῦ κόσμου ἔχθρα τοῦ Θεοῦ ἐστιν; ὃς ἂν οὖν βουληθῇ φίλος εἶναι τοῦ κόσμου, ἐχθρὸς τοῦ Θεοῦ καθίσταται. ἢ δοκεῖτε ὅτι κενῶς ἡ γραφὴ λέγει, πρὸς φθόνον ἐπιποθεῖ τὸ πνεῦμα ὃ κατῴκησεν ἐν ἡμῖν ; μείζονα δὲ δίδωσι χάριν· διὸ λέγει· ὁ Θεὸς ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, ταπεινοῖς δὲ δίδωσι χάριν. Ὑποτάγητε οὖν τῷ Θεῷ. ἀντίστητε τῷ διαβόλῳ, καὶ φεύξεται ἀφ᾽ ὑμῶν· ἐγγίσατε τῷ Θεῷ, καὶ ἐγγιεῖ ὑμῖν. καθαρίσατε χεῖρας ἁμαρτωλοὶ καὶ ἁγνίσατε καρδίας δίψυχοι. ταλαιπωρήσατε καὶ πενθήσατε καὶ κλαύσατε· ὁ γέλως ὑμῶν εἰς πένθος μεταστραφήτω καὶ ἡ χαρὰ εἰς κατήφειαν. ταπεινώθητε ἐνώπιον τοῦ Κυρίου, καὶ ὑψώσει ὑμᾶς. Μὴ καταλαλεῖτε ἀλλήλων, ἀδελφοί. ὁ καταλαλῶν ἀδελφοῦ καὶ κρίνων τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ καταλαλεῖ νόμου καὶ κρίνει νόμον· εἰ δὲ νόμον κρίνεις, οὐκ εἶ ποιητὴς νόμου, ἀλλὰ κριτής. εἷς ἐστιν ὁ νομοθέτης καὶ κριτής, ὁ δυνάμενος σῶσαι καὶ ἀπολέσαι· σὺ δὲ τίς εἶ ὃς κρίνεις τὸν ἕτερον; Ἄγε νῦν οἱ λέγοντες· σήμερον καὶ αὔριον πορευσόμεθα εἰς τήνδε τὴν πόλιν καὶ ποιήσομεν ἐκεῖ ἐνιαυτὸν ἕνα καὶ ἐμπορευσόμεθα καὶ κερδήσομεν· οἵτινες οὐκ ἐπίστασθε τὸ τῆς αὔριον· ποία γὰρ ἡ ζωὴ ὑμῶν; ἀτμὶς γάρ ἔσται ἡ πρὸς ὀλίγον φαινομένη, ἔπειτα δὲ καὶ ἀφανιζομένη· ἀντὶ τοῦ λέγειν ὑμᾶς, ἐὰν ὁ Κύριος θελήσῃ, καὶ ζήσομεν καὶ ποιήσομεν τοῦτο ἢ ἐκεῖνο. νῦν δὲ καυχᾶσθε ἐν ταῖς ἀλαζονείαις ὑμῶν· πᾶσα καύχησις τοιαύτη πονηρά ἐστιν. εἰδότι οὖν καλὸν ποιεῖν καὶ μὴ ποιοῦντι, ἁμαρτία

αὐτῷ ἐστιν.

# 5

Ἄγε νῦν οἱ πλούσιοι, κλαύσατε ὀλολύζοντες ἐπὶ ταῖς ταλαιπωρίαις ὑμῶν ταῖς ἐπερχομέναις· ὁ πλοῦτος ὑμῶν σέσηπε καὶ τὰ ἱμάτια ὑμῶν σητόβρωτα γέγονεν, ὁ χρυσὸς ὑμῶν καὶ ὁ ἄργυρος κατίωται, καὶ ὁ ἰὸς αὐτῶν εἰς μαρτύριον ὑμῖν ἔσται καὶ φάγεται τὰς σάρκας ὑμῶν. ὡς πῦρ ἐθησαυρίσατε ἐν ἐσχάταις ἡμέραις. ἰδοὺ ὁ μισθὸς τῶν ἐργατῶν τῶν ἀμησάντων τὰς χώρας ὑμῶν ὁ ἀπεστερημένος ἀφ᾽ ὑμῶν κράζει, καὶ αἱ βοαὶ τῶν θερισάντων εἰς τὰ ὦτα Κυρίου Σαβαὼθ εἰσεληλύθασιν. ἐτρυφήσατε ἐπὶ τῆς γῆς καὶ ἐσπαταλήσατε, ἐθρέψατε τὰς καρδίας ὑμῶν ὡς ἐν ἡμέρᾳ σφαγῆς. κατεδικάσατε, ἐφονεύσατε τὸν δίκαιον· οὐκ ἀντιτάσσεται ὑμῖν. Μακροθυμήσατε οὖν, ἀδελφοί, ἕως τῆς παρουσίας τοῦ Κυρίου. ἰδοὺ ὁ γεωργὸς ἐκδέχεται τὸν τίμιον καρπὸν τῆς γῆς, μακροθυμῶν ἐπ᾽ αὐτῷ ἕως λάβῃ ὑετὸν πρώϊμον καὶ ὄψιμον. μακροθυμήσατε καὶ ὑμεῖς, στηρίξατε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι ἡ παρουσία τοῦ Κυρίου ἤγγικε. μὴ στενάζετε κατ᾽ ἀλλήλων, ἀδελφοί, ἵνα μὴ κριθῆτε· ἰδοὺ ὁ κριτὴς πρὸ τῶν θυρῶν ἕστηκεν. ὑπόδειγμα λάβετε, ἀδελφοί μου, τῆς κακοπαθείας καὶ τῆς μακροθυμίας τοὺς προφήτας, οἳ ἐλάλησαν τῷ ὀνόματι Κυρίου. ἰδοὺ μακαρίζομεν τοὺς ὑπομένοντας· τὴν ὑπομονὴν Ἰὼβ ἠκούσατε, καὶ τὸ τέλος Κυρίου εἴδετε, ὅτι πολύσπλαγχνός ἐστιν ὁ Κύριος καὶ οἰκτίρμων. Πρὸ πάντων δέ, ἀδελφοί μου, μὴ ὀμνύετε μήτε τὸν οὐρανὸν μήτε τὴν γῆν μήτε ἄλλον τινὰ ὅρκον· ἤτω δὲ ὑμῶν τὸ ναὶ ναί, καὶ τὸ οὒ οὔ, ἵνα μὴ εἰς ὑπόκρισιν πέσητε. Κακοπαθεῖ τις ἐν ὑμῖν; προσευχέσθω·

εὐθυμεῖ τις; ψαλλέτω. ἀσθενεῖ τις ἐν ὑμῖν; προσκαλεσάσθω τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἐκκλησίας, καὶ προσευξάσθωσαν ἐπ᾽ αὐτὸν ἀλείψαντες αὐτὸν ἐλαίῳ ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου· καὶ ἡ εὐχὴ τῆς πίστεως σώσει τὸν κάμνοντα, καὶ ἐγερεῖ αὐτὸν ὁ Κύριος· κἂν ἁμαρτίας ᾖ πεποιηκώς, ἀφεθήσεται αὐτῷ. ἐξομολογεῖσθε ἀλλήλοις τὰ παραπτώματα, καὶ εὔχεσθε ὑπὲρ ἀλλήλων, ὅπως ἰαθῆτε· πολὺ ἰσχύει δέησις δικαίου ἐνεργουμένη. Ἠλίας ἄνθρωπος ἦν ὁμοιοπαθὴς ἡμῖν, καὶ προσευχῇ προσηύξατο τοῦ μὴ βρέξαι, καὶ οὐκ ἔβρεξεν ἐπὶ τῆς γῆς ἐνιαυτοὺς τρεῖς καὶ μῆνας ἕξ· καὶ πάλιν προσηύξατο, καὶ ὁ οὐρανὸς ὑετὸν ἔδωκε καὶ ἡ γῆ ἐβλάστησε τὸν καρπὸν αὐτῆς. Ἀδελφοί, ἐάν τις ἐν ὑμῖν πλανηθῇ ἀπὸ τῆς ἀληθείας, καὶ ἐπιστρέψῃ τις αὐτόν, γινωσκέτω ὅτι ὁ ἐπιστρέψας ἁμαρτωλὸν ἐκ πλάνης ὁδοῦ αὐτοῦ σώσει ψυχὴν ἐκ θανάτου καὶ καλύψει πλῆθος ἁμαρτιῶν.

# Α΄ ΠΕΤΡΟΥ

## 1

Πέτρος, ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐκλεκτοῖς παρεπιδήμοις διασπορᾶς Πόντου, Γαλατίας, Καππαδοκίας, Ἀσίας καὶ Βιθυνίας, κατὰ πρόγνωσιν Θεοῦ πατρός, ἐν ἁγιασμῷ Πνεύματος, εἰς ὑπακοὴν καὶ ῥαντισμὸν αἵματος Ἰησοῦ Χριστοῦ· χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη πληθυνθείη. Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς καὶ πατὴρ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ κατὰ τὸ πολὺ αὐτοῦ ἔλεος ἀναγεννήσας ἡμᾶς εἰς ἐλπίδα ζῶσαν δι᾽ ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐκ νεκρῶν, εἰς κληρονομίαν ἄφθαρτον καὶ ἀμίαντον καὶ ἀμάραντον, τετηρημένην ἐν οὐρανοῖς εἰς ὑμᾶς τοὺς ἐν δυνάμει Θεοῦ φρουρουμένους διὰ πίστεως εἰς σωτηρίαν ἑτοίμην ἀποκαλυφθῆναι ἐν καιρῷ ἐσχάτῳ· ἐν ᾧ ἀγαλλιᾶσθε, ὀλίγον ἄρτι, εἰ δέον ἐστί, λυπηθέντες ἐν ποικίλοις πειρασμοῖς, ἵνα τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆς πίστεως πολυτιμότερον χρυσίου τοῦ ἀπολλυμένου διὰ πυρὸς δὲ δοκιμαζομένου εὑρεθῇ εἰς ἔπαινον καὶ τιμὴν καὶ δόξαν ἐν ἀποκαλύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὃν οὐκ εἰδότες ἀγαπᾶτε, εἰς ὃν ἄρτι μὴ ὁρῶντες, πιστεύοντες δὲ ἀγαλλιᾶσθε χαρᾷ ἀνεκλαλήτῳ καὶ δεδοξασμένῃ, κομιζόμενοι τὸ τέλος τῆς πίστεως ὑμῶν, σωτηρίαν

ψυχῶν. περὶ ἧς σωτηρίας ἐξεζήτησαν καὶ ἐξηρεύνησαν προφῆται οἱ περὶ τῆς εἰς ὑμᾶς χάριτος προφητεύσαντες, ἐρευνῶντες εἰς τίνα ἢ ποῖον καιρὸν ἐδήλου τὸ ἐν αὐτοῖς Πνεῦμα Χριστοῦ προμαρτυρόμενον τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα καὶ τὰς μετὰ ταῦτα δόξας· οἷς ἀπεκαλύφθη ὅτι οὐχ ἑαυτοῖς, ὑμῖν δὲ διηκόνουν αὐτά, ἃ νῦν ἀνηγγέλη ὑμῖν διὰ τῶν εὐαγγελισαμένων ὑμᾶς ἐν Πνεύματι Ἁγίῳ ἀποσταλέντι ἀπ᾽ οὐρανοῦ, εἰς ἃ ἐπιθυμοῦσιν ἄγγελοι παρακύψαι. Διὸ ἀναζωσάμενοι τὰς ὀσφύας τῆς διανοίας ὑμῶν, νήφοντες, τελείως ἐλπίσατε ἐπὶ τὴν φερομένην ὑμῖν χάριν ἐν ἀποκαλύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὡς τέκνα ὑπακοῆς μὴ συσχηματιζόμενοι ταῖς πρότερον ἐν τῇ ἀγνοίᾳ ὑμῶν ἐπιθυμίαις, ἀλλὰ κατὰ τὸν καλέσαντα ὑμᾶς ἅγιον καὶ αὐτοὶ ἅγιοι ἐν πάσῃ ἀναστροφῇ γενήθητε, διότι γέγραπται· ἅγιοι γίνεσθε, ὅτι ἐγὼ ἅγιός εἰμι. καὶ εἰ πατέρα ἐπικαλεῖσθε τὸν ἀπροσωπολήπτως κρίνοντα κατὰ τὸ ἑκάστου ἔργον, ἐν φόβῳ τὸν τῆς παροικίας ὑμῶν χρόνον ἀναστράφητε, εἰδότες ὅτι οὐ φθαρτοῖς, ἀργυρίῳ ἢ χρυσίῳ, ἐλυτρώθητε ἐκ τῆς ματαίας ὑμῶν ἀναστροφῆς πατροπαραδότου, ἀλλὰ τιμίῳ αἵματι ὡς ἀμνοῦ ἀμώμου καὶ ἀσπίλου Χριστοῦ, προεγνωσμένου μὲν πρὸ καταβολῆς κόσμου, φανερωθέντος δὲ ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν χρόνων δι᾽ ὑμᾶς τοὺς δι᾽ αὐτοῦ πιστεύοντας εἰς Θεὸν τὸν ἐγείραντα αὐτὸν ἐκ νεκρῶν καὶ δόξαν αὐτῷ δόντα, ὥστε τὴν πίστιν ὑμῶν καὶ ἐλπίδα εἶναι εἰς Θεόν. Τὰς ψυχὰς ὑμῶν ἡγνικότες ἐν τῇ ὑπακοῇ τῆς ἀληθείας διὰ Πνεύματος εἰς φιλαδελφίαν ἀνυπόκριτον, ἐκ καθαρᾶς καρδίας ἀλλήλους ἀγαπήσατε ἐκτενῶς, ἀναγεγεννημένοι οὐκ ἐκ σπορᾶς φθαρτῆς, ἀλλὰ ἀφθάρτου, διὰ λόγου ζῶντος Θεοῦ καὶ μένοντος εἰς τὸν αἰῶνα· διότι πᾶσα σὰρξ ὡς χόρτος, καὶ πᾶσα δόξα ἀνθρώπου ὡς ἄνθος χόρτου· ἐξηράνθη ὁ χόρτος, καὶ τὸ ἄνθος αὐτοῦ ἐξέπεσε· τὸ δὲ ῥῆμα Κυρίου μένει εἰς

τὸν αἰῶνα. τοῦτο δέ ἐστι τὸ ῥῆμα τὸ εὐαγγελισθὲν εἰς ὑμᾶς.

# 2

Ἀποθέμενοι οὖν πᾶσαν κακίαν καὶ πάντα δόλον καὶ ὑποκρίσεις καὶ φθόνους καὶ πάσας καταλαλιάς, ὡς ἀρτιγέννητα βρέφη τὸ λογικὸν ἄδολον γάλα ἐπιποθήσατε, ἵνα ἐν αὐτῷ αὐξηθῆτε εἰς σωτηρίαν , εἴπερ ἐγεύσασθε ὅτι χρηστὸς ὁ Κύριος. Πρὸς ὃν προσερχόμενοι, λίθον ζῶντα, ὑπὸ ἀνθρώπων μὲν ἀποδεδοκιμασμένον, παρὰ δὲ Θεῷ ἐκλεκτόν, ἔντιμον, καὶ αὐτοὶ ὡς λίθοι ζῶντες οἰκοδομεῖσθε οἶκος πνευματικός, ἱεράτευμα ἅγιον, ἀνενέγκαι πνευματικὰς θυσίας εὐπροσδέκτους τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ· διότι περιέχει ἐν τῇ γραφῇ· ἰδοὺ τίθημι ἐν Σιὼν λίθον ἀκρογωνιαῖον, ἐκλεκτόν, ἔντιμον, καὶ ὁ πιστεύων ἐπ᾽ αὐτῷ οὐ μὴ καταισχυνθῇ. ὑμῖν οὖν ἡ τιμὴ τοῖς πιστεύουσιν, ἀπειθοῦσι δὲ λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας καὶ λίθος προσκόμματος καὶ πέτρα σκανδάλου. οἳ προσκόπτουσι τῷ λόγῳ ἀπειθοῦντες, εἰς ὃ καὶ ἐτέθησαν. ὑμεῖς δὲ γένος ἐκλεκτόν, βασίλειον ἱεράτευμα, ἔθνος ἅγιον, λαὸς εἰς περιποίησιν, ὅπως τὰς ἀρετὰς ἐξαγγείλητε τοῦ ἐκ σκότους ὑμᾶς καλέσαντος εἰς τὸ θαυμαστὸν αὐτοῦ φῶς· οἵ ποτε οὐ λαός, νῦν δὲ λαὸς Θεοῦ, οἱ οὐκ ἠλεημένοι, νῦν δὲ ἐλεηθέντες. Ἀγαπητοί, παρακαλῶ ὡς παροίκους καὶ παρεπιδήμους, ἀπέχεσθε τῶν σαρκικῶν ἐπιθυμιῶν, αἵτινες στρατεύονται κατὰ τῆς ψυχῆς, τὴν ἀναστροφὴν ὑμῶν ἔχοντες καλὴν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἵνα ἐν ᾧ καταλαλοῦσιν ὑμῶν ὡς κακοποιῶν, ἐκ τῶν καλῶν ἔργων ἐποπτεύσαντες δοξάσωσι τὸν Θεὸν ἐν ἡμέρᾳ ἐπισκοπῆς. Ὑποτάγητε οὖν πάσῃ ἀνθρωπίνῃ κτίσει διὰ τὸν Κύριον,

εἴτε βασιλεῖ, ὡς ὑπερέχοντι, εἴτε ἡγεμόσιν, ὡς δι᾽ αὐτοῦ πεμπομένοις εἰς ἐκδίκησιν μὲν κακοποιῶν, ἔπαινον δὲ ἀγαθοποιῶν· ὅτι οὕτως ἐστὶ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, ἀγαθοποιοῦντας φιμοῦν τὴν τῶν ἀφρόνων ἀνθρώπων ἀγνωσίαν· ὡς ἐλεύθεροι, καὶ μὴ ὡς ἐπικάλυμμα ἔχοντες τῆς κακίας τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ᾽ ὡς δοῦλοι Θεοῦ. πάντας τιμήσατε, τὴν ἀδελφότητα ἀγαπᾶτε, τὸν Θεὸν φοβεῖσθε, τὸν βασιλέα τιμᾶτε. Οἱ οἰκέται ὑποτασσόμενοι ἐν παντὶ φόβῳ τοῖς δεσπόταις, οὐ μόνον τοῖς ἀγαθοῖς καὶ ἐπιεικέσιν, ἀλλὰ καὶ τοῖς σκολιοῖς. τοῦτο γὰρ χάρις, εἰ διὰ συνείδησιν Θεοῦ ὑποφέρει τις λύπας, πάσχων ἀδίκως. ποῖον γὰρ κλέος, εἰ ἁμαρτάνοντες καὶ κολαφιζόμενοι ὑπομενεῖτε; ἀλλ᾽ εἰ ἀγαθοποιοῦντες καὶ πάσχοντες ὑπομενεῖτε, τοῦτο χάρις παρὰ Θεῷ. εἰς τοῦτο γὰρ ἐκλήθητε, ὅτι καὶ Χριστὸς ἔπαθεν ὑπὲρ ἡμῶν, ὑμῖν ὑπολιμπάνων ὑπογραμμὸν ἵνα ἐπακολουθήσητε τοῖς ἴχνεσιν αὐτοῦ· ὃς ἁμαρτίαν οὐκ ἐποίησεν, οὐδὲ εὑρέθη δόλος ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ· ὃς λοιδορούμενος οὐκ ἀντελοιδόρει, πάσχων οὐκ ἠπείλει, παρεδίδου δὲ τῷ κρίνοντι δικαίως· ὃς τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν αὐτὸς ἀνήνεγκεν ἐν τῷ σώματι αὐτοῦ ἐπὶ τὸ ξύλον, ἵνα ταῖς ἁμαρτίαις ἀπογενόμενοι τῇ δικαιοσύνῃ ζήσωμεν· οὗ τῷ μώλωπι αὐτοῦ ἰάθητε. ἦτε γὰρ ὡς πρόβατα πλανώμενα, ἀλλ᾽ ἐπεστράφητε νῦν ἐπὶ τὸν ποιμένα καὶ ἐπίσκοπον τῶν ψυχῶν ὑμῶν.

# 3

Ὁμοίως αἱ γυναῖκες ὑποτασσόμεναι τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ἵνα καὶ εἴ τινες ἀπειθοῦσι τῷ λόγῳ, διὰ τῆς τῶν γυναικῶν ἀναστροφῆς ἄνευ λόγου κερδηθήσονται, ἐποπτεύσαντες τὴν ἐν φόβῳ ἁγνὴν

ἀναστροφὴν ὑμῶν. ὧν ἔστω οὐχ ὁ ἔξωθεν ἐμπλοκῆς τριχῶν καὶ περιθέσεως χρυσίων ἢ ἐνδύσεως ἱματίων κόσμος, ἀλλ᾽ ὁ κρυπτὸς τῆς καρδίας ἄνθρωπος ἐν τῷ ἀφθάρτῳ τοῦ πραέος καὶ ἡσυχίου πνεύματος, ὅ ἐστιν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ πολυτελές. οὕτω γάρ ποτε καὶ αἱ ἅγιαι γυναῖκες αἱ ἐλπίζουσαι ἐπὶ τὸν Θεὸν ἐκόσμουν ἑαυτάς, ὑποτασσόμεναι τοῖς ἰδίοις ἀνδράσιν, ὡς Σάρρα ὑπήκουσε τῷ Ἀβραάμ, κύριον αὐτὸν καλοῦσα· ἧς ἐγενήθητε τέκνα· ἀγαθοποιοῦσαι καὶ μὴ φοβούμεναι μηδεμίαν πτόησιν. Οἱ ἄνδρες ὁμοίως συνοικοῦντες κατὰ γνῶσιν, ὡς ἀσθενεστέρῳ σκεύει τῷ γυναικείῳ ἀπονέμοντες τιμήν, ὡς καὶ συγκληρονόμοι χάριτος ζωῆς, εἰς τὸ μὴ ἐγκόπτεσθαι τὰς προσευχὰς ὑμῶν. Τὸ δὲ τέλος πάντες ὁμόφρονες, συμπαθεῖς, φιλάδελφοι, εὔσπλαγχνοι, φιλόφρονες, μὴ ἀποδιδόντες κακὸν ἀντὶ κακοῦ ἢ λοιδορίαν ἀντὶ λοιδορίας, τοὐναντίον δὲ εὐλογοῦντες, εἰδότες ὅτι εἰς τοῦτο ἐκλήθητε, ἵνα εὐλογίαν κληρονομήσητε. ὁ γὰρ θέλων ζωὴν ἀγαπᾶν καὶ ἰδεῖν ἡμέρας ἀγαθὰς παυσάτω τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ ἀπὸ κακοῦ καὶ χείλη αὐτοῦ τοῦ μὴ λαλῆσαι δόλον, ἐκκλινάτω ἀπὸ κακοῦ καὶ ποιησάτω ἀγαθόν, ζητησάτω εἰρήνην καὶ διωξάτω αὐτήν. ὅτι ὀφθαλμοὶ Κυρίου ἐπὶ δικαίους καὶ ὦτα αὐτοῦ εἰς δέησιν αὐτῶν, πρόσωπον δὲ Κυρίου ἐπὶ ποιοῦντας κακά. Καὶ τίς ὁ κακώσων ὑμᾶς, ἐὰν τοῦ ἀγαθοῦ μιμηταὶ γένησθε; ἀλλ᾽ εἰ καὶ πάσχοιτε διὰ δικαιοσύνην, μακάριοι. τὸν δὲ φόβον αὐτῶν μὴ φοβηθῆτε μηδὲ ταραχθῆτε, Κύριον δὲ τὸν Θεὸν ἁγιάσατε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, ἕτοιμοι δὲ ἀεὶ πρὸς ἀπολογίαν παντὶ τῷ αἰτοῦντι ὑμᾶς λόγον περὶ τῆς ἐν ὑμῖν ἐλπίδος μετὰ πραΰτητος καὶ φόβου, συνείδησιν ἔχοντες ἀγαθήν, ἵνα ἐν ᾧ καταλαλοῦσιν ὑμῶν ὡς κακοποιῶν, καταισχυνθῶσιν οἱ ἐπηρεάζοντες ὑμῶν τὴν ἀγαθὴν ἐν Χριστῷ ἀναστροφήν. κρεῖττον γὰρ ἀγαθοποιοῦντας, εἰ θέλοι τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, πάσχειν ἢ

κακοποιοῦντας. ὅτι καὶ Χριστὸς ἅπαξ περὶ ἁμαρτιῶν ἔπαθε, δίκαιος ὑπὲρ ἀδίκων, ἵνα ἡμᾶς προσαγάγῃ τῷ Θεῷ, θανατωθεὶς μὲν σαρκί, ζωοποιηθεὶς δὲ πνεύματι· ἐν ᾧ καὶ τοῖς ἐν φυλακῇ πνεύμασι πορευθεὶς ἐκήρυξεν, ἀπειθήσασί ποτε, ὅτε ἀπεξεδέχετο ἡ τοῦ Θεοῦ μακροθυμία ἐν ἡμέραις Νῶε κατασκευαζομένης κιβωτοῦ, εἰς ἣν ὀλίγαι, τοῦτ᾽ ἔστιν ὀκτὼ ψυχαί, διεσώθησαν δι᾽ ὕδατος. ὃ ἀντίτυπον νῦν καὶ ἡμᾶς σῴζει βάπτισμα, οὐ σαρκὸς ἀπόθεσις ῥύπου, ἀλλὰ συνειδήσεως ἀγαθῆς ἐπερώτημα εἰς Θεόν, δι᾽ ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅς ἐστιν ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ πορευθεὶς εἰς οὐρανόν, ὑποταγέντων αὐτῷ ἀγγέλων καὶ ἐξουσιῶν καὶ δυνάμεων.

# 4

Χριστοῦ οὖν παθόντος ὑπὲρ ἡμῶν σαρκὶ καὶ ὑμεῖς τὴν αὐτὴν ἔννοιαν ὁπλίσασθε, ὅτι ὁ παθὼν ἐν σαρκὶ πέπαυται ἁμαρτίας, εἰς τὸ μηκέτι ἀνθρώπων ἐπιθυμίαις, ἀλλὰ θελήματι Θεοῦ τὸν ἐπίλοιπον ἐν σαρκὶ βιῶσαι χρόνον. ἀρκετὸς γὰρ ὑμῖν ὁ παρεληλυθὼς χρόνος τοῦ βίου τὸ θέλημα τῶν ἐθνῶν κατεργάσασθαι, πεπορευμένους ἐν ἀσελγείαις, ἐπιθυμίαις, οἰνοφλυγίαις, κώμοις, πότοις καὶ ἀθεμίτοις εἰδωλολατρείαις. ἐν ᾧ ξενίζονται μὴ συντρεχόντων ὑμῶν εἰς τὴν αὐτὴν τῆς ἀσωτίας ἀνάχυσιν, βλασφημοῦντες· οἳ ἀποδώσουσι λόγον τῷ ἑτοίμως ἔχοντι κρῖναι ζῶντας καὶ νεκρούς. εἰς τοῦτο γὰρ καὶ νεκροῖς εὐηγγελίσθη, ἵνα κριθῶσι μὲν κατὰ ἀνθρώπους σαρκί, ζῶσι δὲ κατὰ Θεὸν πνεύματι. Πάντων δὲ τὸ τέλος ἤγγικε. σωφρονήσατε οὖν καὶ νήψατε εἰς τὰς προσευχάς· πρὸ πάντων δὲ τὴν εἰς ἑαυτοὺς

ἀγάπην ἐκτενῆ ἔχοντες, ὅτι ἡ ἀγάπη καλύψει πλῆθος ἁμαρτιῶν· φιλόξενοι εἰς ἀλλήλους ἄνευ γογγυσμῶν· ἕκαστος καθὼς ἔλαβε χάρισμα, εἰς ἑαυτοὺς αὐτὸ διακονοῦντες ὡς καλοὶ οἰκονόμοι ποικίλης χάριτος Θεοῦ· εἴ τις λαλεῖ, ὡς λόγια Θεοῦ· εἴ τις διακονεῖ, ὡς ἐξ ἰσχύος, ὡς χορηγεῖ ὁ Θεός· ἵνα ἐν πᾶσι δοξάζηται ὁ Θεὸς διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ᾧ ἐστιν ἡ δόξα καὶ τὸ κράτος εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων· ἀμήν. Ἀγαπητοί, μὴ ξενίζεσθε τῇ ἐν ὑμῖν πυρώσει πρὸς πειρασμὸν ὑμῖν γινομένῃ, ὡς ξένου ὑμῖν συμβαίνοντος, ἀλλὰ καθὸ κοινωνεῖτε τοῖς τοῦ Χριστοῦ παθήμασι, χαίρετε, ἵνα καὶ ἐν τῇ ἀποκαλύψει τῆς δόξης αὐτοῦ χαρῆτε ἀγαλλιώμενοι. εἰ ὀνειδίζεσθε ἐν ὀνόματι Χριστοῦ, μακάριοι, ὅτι τὸ τῆς δόξης καὶ δυνάμεως καὶ τὸ τοῦ Θεοῦ Πνεῦμα ἐφ᾽ ὑμᾶς ἀναπαύεται· κατὰ μὲν αὐτοὺς βλασφημεῖται, κατὰ δὲ ὑμᾶς δοξάζεται. μὴ γάρ τις ὑμῶν πασχέτω ὡς φονεὺς ἢ κλέπτης ἢ κακοποιὸς ἢ ὡς ἀλλοτριοεπίσκοπος· εἰ δὲ ὡς Χριστιανός, μὴ αἰσχυνέσθω, δοξαζέτω δὲ τὸν Θεὸν ἐν τῷ μέρει τούτῳ. ὅτι ὁ καιρὸς τοῦ ἄρξασθαι τὸ κρῖμα ἀπὸ τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ· εἰ δὲ πρῶτον ἀφ᾽ ἡμῶν, τί τὸ τέλος τῶν ἀπειθούντων τῷ τοῦ Θεοῦ εὐαγγελίῳ; καὶ εἰ ὁ δίκαιος μόλις σῴζεται, ὁ ἀσεβὴς καὶ ἁμαρτωλὸς ποῦ φανεῖται; ὥστε καὶ οἱ πάσχοντες κατὰ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, ὡς πιστῷ κτίστῃ παρατιθέσθωσαν τὰς ψυχὰς αὐτῶν ἐν ἀγαθοποιΐᾳ.

# 5

Πρεσβυτέρους τοὺς ἐν ὑμῖν παρακαλῶ ὁ συμπρεσβύτερος καὶ μάρτυς τῶν τοῦ Χριστοῦ παθημάτων, ὁ καὶ τῆς μελλούσης ἀποκαλύπτεσθαι δόξης κοινωνός, ποιμάνατε τὸ ἐν ὑμῖν ποίμνιον

τοῦ Θεοῦ, ἐπισκοποῦντες μὴ ἀναγκαστῶς, ἀλλ᾽ ἑκουσίως, μηδὲ αἰσχροκερδῶς, ἀλλὰ προθύμως, μηδ᾽ ὡς κατακυριεύοντες τῶν κλήρων, ἀλλὰ τύποι γινόμενοι τοῦ ποιμνίου· καὶ φανερωθέντος τοῦ ἀρχιποίμενος κομιεῖσθε τὸν ἀμαράντινον τῆς δόξης στέφανον. Ὁμοίως νεώτεροι ὑποτάγητε πρεσβυτέροις, πάντες δὲ ἀλλήλοις ὑποτασσόμενοι τὴν ταπεινοφροσύνην ἐγκομβώσασθε· ὅτι ὁ Θεὸς ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, ταπεινοῖς δὲ δίδωσι χάριν. Ταπεινώθητε οὖν ὑπὸ τὴν κραταιὰν χεῖρα τοῦ Θεοῦ, ἵνα ὑμᾶς ὑψώσῃ ἐν καιρῷ. πᾶσαν τὴν μέριμναν ὑμῶν ἐπιρρίψαντες ἐπ᾽ αὐτόν, ὅτι αὐτῷ μέλει περὶ ὑμῶν, νήψατε, γρηγορήσατε· ὁ ἀντίδικος ὑμῶν διάβολος ὡς λέων ὠρυόμενος περιπατεῖ ζητῶν τίνα καταπίῃ. ᾧ ἀντίστητε στερεοὶ τῇ πίστει, εἰδότες τὰ αὐτὰ τῶν παθημάτων τῇ ἐν κόσμῳ ὑμῶν ἀδελφότητι ἐπιτελεῖσθαι. Ὁ δὲ Θεὸς πάσης χάριτος, ὁ καλέσας ὑμᾶς εἰς τὴν αἰώνιον αὐτοῦ δόξαν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ ὀλίγον παθόντας, αὐτὸς καταρτίσει ὑμᾶς, στηρίξει, σθενώσει, θεμελιώσει· αὐτῷ ἡ δόξα καὶ τὸ κράτος εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων· ἀμήν. Διὰ Σιλουανοῦ ὑμῖν τοῦ πιστοῦ ἀδελφοῦ, ὡς λογίζομαι, δι᾽ ὀλίγων ἔγραψα, παρακαλῶν καὶ ἐπιμαρτυρῶν ταύτην εἶναι ἀληθῆ χάριν τοῦ Θεοῦ, εἰς ἣν ἑστήκατε. Ἀσπάζεται ὑμᾶς ἡ ἐν Βαβυλῶνι συνεκλεκτὴ καὶ Μᾶρκος ὁ υἱός μου. ἀσπάσασθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀγάπης. Εἰρήνη ὑμῖν πᾶσι τοῖς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ· ἀμήν.

# Β΄ ΠΕΤΡΟΥ

## 1

Συμεὼν Πέτρος, δοῦλος καὶ ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ, τοῖς ἰσότιμον ἡμῖν λαχοῦσι πίστιν ἐν δικαιοσύνῃ τοῦ Θεοῦ ἡμῶν καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ· χάρις ὑμῖν καὶ εἰρήνη πληθυνθείη ἐν ἐπιγνώσει τοῦ Θεοῦ καὶ Ἰησοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν. Ὡς πάντα ἡμῖν τῆς θείας δυνάμεως αὐτοῦ τὰ πρὸς ζωὴν καὶ εὐσέβειαν δεδωρημένης διὰ τῆς ἐπιγνώσεως τοῦ καλέσαντος ἡμᾶς διὰ δόξης καὶ ἀρετῆς, δι᾽ ὧν τὰ τίμια ἡμῖν καὶ μέγιστα ἐπαγγέλματα δεδώρηται, ἵνα διὰ τούτων γένησθε θείας κοινωνοὶ φύσεως ἀποφυγόντες τῆς ἐν κόσμῳ ἐν ἐπιθυμίᾳ φθορᾶς. καὶ αὐτὸ τοῦτο δὲ σπουδὴν πᾶσαν παρεισενέγκαντες ἐπιχορηγήσατε ἐν τῇ πίστει ὑμῶν τὴν ἀρετήν, ἐν δὲ τῇ ἀρετῇ τὴν γνῶσιν, ἐν δὲ τῇ γνώσει τὴν ἐγκράτειαν, ἐν δὲ τῇ ἐγκρατείᾳ τὴν ὑπομονήν, ἐν δὲ τῇ ὑπομονῇ τὴν εὐσέβειαν, ἐν δὲ τῇ εὐσεβείᾳ τὴν φιλαδελφίαν, ἐν δὲ τῇ φιλαδελφίᾳ τὴν ἀγάπην. ταῦτα γὰρ ὑμῖν ὑπάρχοντα καὶ πλεονάζοντα οὐκ ἀργοὺς οὐδὲ ἀκάρπους καθίστησιν εἰς τὴν τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐπίγνωσιν· ᾧ γὰρ μὴ πάρεστι ταῦτα, τυφλός ἐστι, μυωπάζων, λήθην λαβὼν τοῦ καθαρισμοῦ τῶν πάλαι

αὐτοῦ ἁμαρτιῶν. διὸ μᾶλλον, ἀδελφοί, σπουδάσατε βεβαίαν ὑμῶν τὴν κλῆσιν καὶ ἐκλογὴν ποιεῖσθαι· ταῦτα γὰρ ποιοῦντες οὐ μὴ πταίσητέ ποτε. οὕτω γὰρ πλουσίως ἐπιχορηγηθήσεται ὑμῖν ἡ εἴσοδος εἰς τὴν αἰώνιον βασιλείαν τοῦ Κυρίου ἡμῶν καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ. Διὸ οὐκ ἀμελήσω ἀεὶ ὑμᾶς ὑπομιμνήσκειν περὶ τούτων, καίπερ εἰδότας καὶ ἐστηριγμένους ἐν τῇ παρούσῃ ἀληθείᾳ. δίκαιον δὲ ἡγοῦμαι, ἐφ᾽ ὅσον εἰμὶ ἐν τούτῳ τῷ σκηνώματι, διεγείρειν ὑμᾶς ἐν ὑπομνήσει, εἰδὼς ὅτι ταχινή ἐστιν ἡ ἀπόθεσις τοῦ σκηνώματός μου, καθὼς καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἐδήλωσέ μοι. σπουδάσω δὲ καὶ ἑκάστοτε ἔχειν ὑμᾶς μετὰ τὴν ἐμὴν ἔξοδον τὴν τούτων μνήμην ποιεῖσθαι. Οὐ γὰρ σεσοφισμένοις μύθοις ἐξακολουθήσαντες ἐγνωρίσαμεν ὑμῖν τὴν τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ δύναμιν καὶ παρουσίαν, ἀλλ᾽ ἐπόπται γενηθέντες τῆς ἐκείνου μεγαλειότητος. λαβὼν γὰρ παρὰ Θεοῦ πατρὸς τιμὴν καὶ δόξαν φωνῆς ἐνεχθείσης αὐτῷ τοιᾶσδε ὑπὸ τῆς μεγαλοπρεποῦς δόξης, οὗτός ἐστιν ὁ υἱός μου ὁ ἀγαπητός, εἰς ὃν ἐγὼ εὐδόκησα , καὶ ταύτην τὴν φωνὴν ἡμεῖς ἠκούσαμεν ἐξ οὐρανοῦ ἐνεχθεῖσαν, σὺν αὐτῷ ὄντες ἐν τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ. καὶ ἔχομεν βεβαιότερον τὸν προφητικὸν λόγον, ᾧ καλῶς ποιεῖτε προσέχοντες ὡς λύχνῳ φαίνοντι ἐν αὐχμηρῷ τόπῳ, ἕως οὗ ἡμέρα διαυγάσῃ καὶ φωσφόρος ἀνατείλῃ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, τοῦτο πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι πᾶσα προφητεία γραφῆς ἰδίας ἐπιλύσεως οὐ γίνεται. οὐ γὰρ θελήματι ἀνθρώπου ἠνέχθη ποτὲ προφητεία, ἀλλ᾽ ὑπὸ Πνεύματος Ἁγίου φερόμενοι ἐλάλησαν ἅγιοι Θεοῦ ἄνθρωποι.

# 2

Ἐγένοντο δὲ καὶ ψευδοπροφῆται ἐν τῷ λαῷ, ὡς καὶ ἐν ὑμῖν ἔσονται ψευδοδιδάσκαλοι, οἵτινες παρεισάξουσιν αἱρέσεις ἀπωλείας, καὶ τὸν ἀγοράσαντα αὐτοὺς δεσπότην ἀρνούμενοι, ἐπάγοντες ἑαυτοῖς ταχινὴν ἀπώλειαν· καὶ πολλοὶ ἐξακολουθήσουσιν αὐτῶν ταῖς ἀσελγείαις, δι᾽ οὓς ἡ ὁδὸς τῆς ἀληθείας βλασφημηθήσεται· καὶ ἐν πλεονεξίᾳ πλαστοῖς λόγοις ὑμᾶς ἐμπορεύσονται, οἷς τὸ κρῖμα ἔκπαλαι οὐκ ἀργεῖ, καὶ ἡ ἀπώλεια αὐτῶν οὐ νυστάξει. εἰ γὰρ ὁ Θεὸς ἀγγέλων ἁμαρτησάντων οὐκ ἐφείσατο, ἀλλὰ σειραῖς ζόφου ταρταρώσας παρέδωκεν εἰς κρίσιν τηρουμένους, καὶ ἀρχαίου κόσμου οὐκ ἐφείσατο, ἀλλὰ ὄγδοον Νῶε δικαιοσύνης κήρυκα ἐφύλαξε, κατακλυσμὸν κόσμῳ ἀσεβῶν ἐπάξας, καὶ πόλεις Σοδόμων καὶ Γομόρρας τεφρώσας καταστροφῇ κατέκρινεν, ὑπόδειγμα μελλόντων ἀσεβεῖν τεθεικώς, καὶ δίκαιον Λὼτ καταπονούμενον ὑπὸ τῆς τῶν ἀθέσμων ἐν ἀσελγείᾳ ἀναστροφῆς ἐρρύσατο· βλέμματι γὰρ καὶ ἀκοῇ ὁ δίκαιος, ἐγκατοικῶν ἐν αὐτοῖς, ἡμέραν ἐξ ἡμέρας ψυχὴν δικαίαν ἀνόμοις ἔργοις ἐβασάνιζεν· οἶδε Κύριος εὐσεβεῖς ἐκ πειρασμοῦ ῥύεσθαι, ἀδίκους δὲ εἰς ἡμέραν κρίσεως κολαζομένους τηρεῖν, μάλιστα δὲ τοὺς ὀπίσω σαρκὸς ἐν ἐπιθυμίᾳ μιασμοῦ πορευομένους καὶ κυριότητος καταφρονοῦντας. τολμηταί, αὐθάδεις δόξας οὐ τρέμουσι βλασφημοῦντες, ὅπου ἄγγελοι, ἰσχύϊ καὶ δυνάμει μείζονες ὄντες, οὐ φέρουσι κατ᾽ αὐτῶν παρὰ Κυρίῳ βλάσφημον κρίσιν. οὗτοι δέ, ὡς ἄλογα ζῷα φυσικὰ γεγενημένα εἰς ἅλωσιν καὶ φθοράν, ἐν οἷς ἀγνοοῦσι βλασφημοῦντες, ἐν τῇ φθορᾷ αὐτῶν καταφθαρήσονται, κομιούμενοι μισθὸν ἀδικίας, ἡδονὴν ἡγούμενοι τὴν ἐν ἡμέρᾳ τρυφήν, σπίλοι καὶ μῶμοι, ἐντρυφῶντες ἐν ταῖς ἀπάταις αὐτῶν, συνευωχούμενοι ὑμῖν, ὀφθαλμοὺς ἔχοντες μεστοὺς μοιχαλίδος καὶ ἀκαταπαύστους ἁμαρτίας, δελεάζοντες

ψυχὰς ἀστηρίκτους, καρδίαν γεγυμνασμένην πλεονεξίας ἔχοντες, κατάρας τέκνα καταλιπόντες εὐθεῖαν ὁδὸν ἐπλανήθησαν, ἐξακολουθήσαντες τῇ ὁδῷ τοῦ Βαλαὰμ τοῦ Βοσόρ, ὃς μισθὸν ἀδικίας ἠγάπησεν, ἔλεγξιν δὲ ἔσχεν ἰδίας παρανομίας· ὑποζύγιον ἄφωνον ἐν ἀνθρώπου φωνῇ φθεγξάμενον ἐκώλυσε τὴν τοῦ προφήτου παραφρονίαν. οὗτοί εἰσι πηγαὶ ἄνυδροι, νεφέλαι ὑπὸ λαίλαπος ἐλαυνόμεναι, οἷς ὁ ζόφος τοῦ σκότους εἰς αἰῶνα τετήρηται. ὑπέρογκα γὰρ ματαιότητος φθεγγόμενοι δελεάζουσιν ἐν ἐπιθυμίαις σαρκὸς ἀσελγείαις τοὺς ὄντως ἀποφυγόντας τοὺς ἐν πλάνῃ ἀναστρεφομένους, ἐλευθερίαν αὐτοῖς ἐπαγγελλόμενοι, αὐτοὶ δοῦλοι ὑπάρχοντες τῆς φθορᾶς· ᾧ γάρ τις ἥττηται, τούτῳ καὶ δεδούλωται. εἰ γὰρ ἀποφυγόντες τὰ μιάσματα τοῦ κόσμου ἐν ἐπιγνώσει τοῦ Κυρίου καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ, τούτοις δὲ πάλιν ἐμπλακέντες ἡττῶνται, γέγονεν αὐτοῖς τὰ ἔσχατα χείρονα τῶν πρώτων. κρεῖττον γὰρ ἦν αὐτοῖς μὴ ἐπεγνωκέναι τὴν ὁδὸν τῆς δικαιοσύνης ἢ ἐπιγνοῦσιν ἐπιστρέψαι ἐκ τῆς παραδοθείσης αὐτοῖς ἁγίας ἐντολῆς. συμβέβηκε δὲ αὐτοῖς τὸ τῆς ἀληθοῦς παροιμίας, κύων ἐπιστρέψας ἐπὶ τὸ ἴδιον ἐξέραμα , καί, ὗς λουσαμένη εἰς κύλισμα βορβόρου .

# 3

Ταύτην ἤδη, ἀγαπητοί, δευτέραν ὑμῖν γράφω ἐπιστολήν, ἐν αἷς διεγείρω ὑμῶν ἐν ὑπομνήσει τὴν εἰλικρινῆ διάνοιαν, μνησθῆναι τῶν προειρημένων ῥημάτων ὑπὸ τῶν ἁγίων προφητῶν καὶ τῆς τῶν ἀποστόλων ὑμῶν ἐντολῆς τοῦ Κυρίου καὶ σωτῆρος, τοῦτο πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι ἐλεύσονται ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν

ἐμπαῖκται, κατὰ τὰς ἰδίας ἐπιθυμίας αὐτῶν πορευόμενοι καὶ λέγοντες· ποῦ ἐστιν ἡ ἐπαγγελία τῆς παρουσίας αὐτοῦ; ἀφ᾽ ἧς γὰρ οἱ πατέρες ἐκοιμήθησαν, πάντα οὕτω διαμένει ἀπ᾽ ἀρχῆς κτίσεως. λανθάνει γὰρ αὐτοὺς τοῦτο θέλοντας ὅτι οὐρανοὶ ἦσαν ἔκπαλαι καὶ γῆ ἐξ ὕδατος καὶ δι᾽ ὕδατος συνεστῶσα τῷ τοῦ Θεοῦ λόγῳ, δι᾽ ὧν ὁ τότε κόσμος ὕδατι κατακλυσθεὶς ἀπώλετο· οἱ δὲ νῦν οὐρανοὶ καὶ ἡ γῆ τῷ αὐτοῦ λόγῳ τεθησαυρισμένοι εἰσὶ πυρὶ τηρούμενοι εἰς ἡμέραν κρίσεως καὶ ἀπωλείας τῶν ἀσεβῶν ἀνθρώπων. Ἓν δὲ τοῦτο μὴ λανθανέτω ὑμᾶς, ἀγαπητοί, ὅτι μία ἡμέρα παρὰ Κυρίῳ ὡς χίλια ἔτη, καὶ χίλια ἔτη ὡς ἡμέρα μία. οὐ βραδύνει ὁ Κύριος τῆς ἐπαγγελίας, ὥς τινες βραδυτῆτα ἡγοῦνται, ἀλλὰ μακροθυμεῖ εἰς ἡμᾶς, μὴ βουλόμενός τινας ἀπολέσθαι, ἀλλὰ πάντας εἰς μετάνοιαν χωρῆσαι. Ἥξει δὲ ἡ ἡμέρα Κυρίου ὡς κλέπτης ἐν νυκτί, ἐν ᾗ οὐρανοὶ ῥοιζηδὸν παρελεύσονται, στοιχεῖα δὲ καυσούμενα λυθήσονται, καὶ γῆ καὶ τὰ ἐν αὐτῇ ἔργα κατακαήσεται. Τούτων οὖν πάντων λυομένων ποταποὺς δεῖ ὑπάρχειν ὑμᾶς ἐν ἁγίαις ἀναστροφαῖς καὶ εὐσεβείαις, προσδοκῶντας καὶ σπεύδοντας τὴν παρουσίαν τῆς τοῦ Θεοῦ ἡμέρας, δι᾽ ἣν οὐρανοὶ πυρούμενοι λυθήσονται καὶ στοιχεῖα καυσούμενα τήκεται καινοὺς δὲ οὐρανοὺς καὶ γῆν καινὴν κατὰ τὸ ἐπάγγελμα αὐτοῦ προσδοκῶμεν, ἐν οἷς δικαιοσύνη κατοικεῖ. Διό, ἀγαπητοί, ταῦτα προσδοκῶντες σπουδάσατε ἄσπιλοι καὶ ἀμώμητοι αὐτῷ εὑρεθῆναι ἐν εἰρήνῃ, καὶ τὴν τοῦ Κυρίου ἡμῶν μακροθυμίαν σωτηρίαν ἡγεῖσθε, καθὼς καὶ ὁ ἀγαπητὸς ἡμῶν ἀδελφὸς Παῦλος κατὰ τὴν αὐτῷ δοθεῖσαν σοφίαν ἔγραψεν ὑμῖν, ὡς καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἐπιστολαῖς λαλῶν ἐν αὐταῖς περὶ τούτων, ἐν οἷς ἐστι δυσνόητά τινα, ἃ οἱ ἀμαθεῖς καὶ ἀστήρικτοι στρεβλοῦσιν ὡς καὶ τὰς λοιπὰς γραφὰς πρὸς τὴν ἰδίαν αὐτῶν ἀπώλειαν. Ὑμεῖς οὖν, ἀγαπητοί, προγινώσκοντες

φυλάσσεσθε, ἵνα μὴ τῇ τῶν ἀθέσμων πλάνῃ συναπαχθέντες ἐκπέσητε τοῦ ἰδίου στηριγμοῦ, αὐξάνετε δὲ ἐν χάριτι καὶ γνώσει τοῦ Κυρίου ἡμῶν καὶ σωτῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ. αὐτῷ ἡ δόξα καὶ νῦν καὶ εἰς ἡμέραν αἰῶνος· ἀμήν.

# Α΄ ΙΩΑΝΝΟΥ

## 1

Ὃ ἦν ἀπ᾽ ἀρχῆς, ὃ ἀκηκόαμεν, ὃ ἑωράκαμεν τοῖς ὀφθαλμοῖς ἡμῶν, ὃ ἐθεασάμεθα καὶ αἱ χεῖρες ἡμῶν ἐψηλάφησαν, περὶ τοῦ λόγου τῆς ζωῆς· καὶ ἡ ζωὴ ἐφανερώθη, καὶ ἑωράκαμεν καὶ μαρτυροῦμεν καὶ ἀπαγγέλλομεν ὑμῖν τὴν ζωὴν τὴν αἰώνιον, ἥτις ἦν πρὸς τὸν πατέρα καὶ ἐφανερώθη ἡμῖν· ὃ ἑωράκαμεν καὶ ἀκηκόαμεν, ἀπαγγέλλομεν ὑμῖν, ἵνα καὶ ὑμεῖς κοινωνίαν ἔχητε μεθ᾽ ἡμῶν· καὶ ἡ κοινωνία δὲ ἡ ἡμετέρα μετὰ τοῦ πατρὸς καὶ μετὰ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ. καὶ ταῦτα γράφομεν ὑμῖν, ἵνα ἡ χαρὰ ἡμῶν ᾖ πεπληρωμένη. Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπ αγγελία ἣν ἀκηκόαμεν ἀπ᾽ αὐτοῦ καὶ ἀναγγέλλομεν ὑμῖν, ὅτι ὁ Θεὸς φῶς ἐστι καὶ σκοτία ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστιν οὐδεμία. ἐὰν εἴπωμεν ὅτι κοινωνίαν ἔχομεν μετ᾽ αὐτοῦ καὶ ἐν τῷ σκότει περιπατῶμεν, ψευδόμεθα καὶ οὐ ποιοῦμεν τὴν ἀλήθειαν· ἐὰν δὲ ἐν τῷ φωτὶ περιπατῶμεν, ὡς αὐτός ἐστιν ἐν τῷ φωτί, κοινωνίαν ἔχομεν μετ᾽ ἀλλήλων, καὶ τὸ αἷμα Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ καθαρίζει ἡμᾶς ἀπὸ πάσης ἁμαρτίας. ἐὰν εἴπωμεν ὅτι ἁμαρτίαν οὐκ ἔχομεν, ἑαυτοὺς πλανῶμεν καὶ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἔστιν ἐν ἡμῖν. ἐὰν ὁμολογῶμεν τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν,

πιστός ἐστι καὶ δίκαιος, ἵνα ἀφῇ ἡμῖν τὰς ἁμαρτίας καὶ καθαρίσῃ ἡμᾶς ἀπὸ πάσης ἀδικίας. ἐὰν εἴπωμεν ὅτι οὐχ ἡμαρτήκαμεν, ψεύστην ποιοῦμεν αὐτόν, καὶ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἐν ἡμῖν.

# 2

Τεκνία μου, ταῦτα γράφω ὑμῖν ἵνα μὴ ἁμάρτητε· καὶ ἐάν τις ἁμάρτῃ, παράκλητον ἔχομεν πρὸς τὸν πατέρα, Ἰησοῦν Χριστὸν δίκαιον· καὶ αὐτὸς ἱλασμός ἐστι περὶ τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν, οὐ περὶ τῶν ἡμετέρων δὲ μόνον, ἀλλὰ καὶ περὶ ὅλου τοῦ κόσμου. καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐγνώκαμεν αὐτόν, ἐὰν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν. ὁ λέγων, ἔγνωκα αὐτόν, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ μὴ τηρῶν, ψεύστης ἐστί, καὶ ἐν τούτῳ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἔστιν· ὃς δ᾽ ἂν τηρῇ αὐτοῦ τὸν λόγον, ἀληθῶς ἐν τούτῳ ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ τετελείωται. ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐν αὐτῷ ἐσμεν. ὁ λέγων ἐν αὐτῷ μένειν ὀφείλει, καθὼς ἐκεῖνος περιεπάτησε, καὶ αὐτὸς οὕτω περιπατεῖν. Ἀδελφοί, οὐκ ἐντολὴν καινὴν γράφω ὑμῖν, ἀλλ᾽ ἐντολὴν παλαιάν, ἣν εἴχετε ἀπ᾽ ἀρχῆς· ἡ ἐντολὴ ἡ παλαιά ἐστιν ὁ λόγος ὃν ἠκούσατε ἀπ᾽ ἀρχῆς. πάλιν ἐντολὴν καινὴν γράφω ὑμῖν, ὅ ἐστιν ἀληθὲς ἐν αὐτῷ καὶ ἐν ὑμῖν, ὅτι ἡ σκοτία παράγεται καὶ τὸ φῶς τὸ ἀληθινὸν ἤδη φαίνει. ὁ λέγων ἐν τῷ φωτὶ εἶναι, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ μισῶν, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶν ἕως ἄρτι. ὁ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐν τῷ φωτὶ μένει, καὶ σκάνδαλον ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστιν· ὁ δὲ μισῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶ καὶ ἐν τῇ σκοτίᾳ περιπατεῖ, καὶ οὐκ οἶδε ποῦ ὑπάγει, ὅτι ἡ σκοτία ἐτύφλωσε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ. Γράφω ὑμῖν, τεκνία, ὅτι ἀφέωνται ὑμῖν αἱ ἁμαρτίαι διὰ τὸ ὄνομα αὐτοῦ. γράφω ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε

τὸν ἀπ᾽ ἀρχῆς. γράφω ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι νενικήκατε τὸν πονηρόν. ἔγραψα ὑμῖν, παιδία, ὅτι ἐγνώκατε τὸν πατέρα. ἔγραψα ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε τὸν ἀπ᾽ ἀρχῆς. ἔγραψα ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι ἰσχυροί ἐστε καὶ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἐν ὑμῖν μένει καὶ νενικήκατε τὸν πονηρόν. μὴ ἀγαπᾶτε τὸν κόσμον μηδὲ τὰ ἐν τῷ κόσμῳ. ἐάν τις ἀγαπᾷ τὸν κόσμον, οὐκ ἔστιν ἡ ἀγάπη τοῦ πατρὸς ἐν αὐτῷ· ὅτι πᾶν τὸ ἐν τῷ κόσμῳ, ἡ ἐπιθυμία τῆς σαρκὸς καὶ ἡ ἐπιθυμία τῶν ὀφθαλμῶν καὶ ἡ ἀλαζονεία τοῦ βίου, οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ πατρός, ἀλλ᾽ ἐκ τοῦ κόσμου ἐστί. καὶ ὁ κόσμος παράγεται καὶ ἡ ἐπιθυμία αὐτοῦ· ὁ δὲ ποιῶν τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα. Παιδία, ἐσχάτη ὥρα ἐστί, καὶ καθὼς ἠκούσατε ὅτι ὁ ἀντίχριστος ἔρχεται, καὶ νῦν ἀντίχριστοι πολλοὶ γεγόνασιν· ὅθεν γινώσκομεν ὅτι ἐσχάτη ὥρα ἐστὶν. ἐξ ἡμῶν ἐξῆλθον, ἀλλ᾽ οὐκ ἦσαν ἐξ ἡμῶν· εἰ γὰρ ἦσαν ἐξ ἡμῶν, μεμενήκεισαν ἂν μεθ᾽ ἡμῶν· ἀλλ᾽ ἵνα φανερωθῶσιν ὅτι οὐκ εἰσὶ πάντες ἐξ ἡμῶν. καὶ ὑμεῖς χρῖσμα ἔχετε ἀπὸ τοῦ ἁγίου, καὶ οἴδατε πάντα. οὐκ ἔγραψα ὑμῖν ὅτι οὐκ οἴδατε τὴν ἀλήθειαν, ἀλλ᾽ ὅτι οἴδατε αὐτήν, καὶ ὅτι πᾶν ψεῦδος ἐκ τῆς ἀληθείας οὐκ ἔστι. τίς ἐστιν ὁ ψεύστης εἰ μὴ ὁ ἀρνούμενος ὅτι Ἰησοῦς οὐκ ἔστιν ὁ Χριστός; οὗτός ἐστιν ὁ ἀντίχριστος, ὁ ἀρνούμενος τὸν πατέρα καὶ τὸν υἱόν. πᾶς ὁ ἀρνούμενος τὸν υἱὸν οὐδὲ τὸν πατέρα ἔχει. Ὑμεῖς οὖν ὃ ἠκούσατε ἀπ᾽ ἀρχῆς, ἐν ὑμῖν μενέτω. ἐὰν ἐν ὑμῖν μείνῃ ὃ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἠκούσατε, καὶ ὑμεῖς ἐν τῷ υἱῷ καὶ ἐν τῷ πατρὶ μενεῖτε. καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία ἣν αὐτὸς ἐπηγγείλατο ἡμῖν, τὴν ζωὴν τὴν αἰώνιον. Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν περὶ τῶν πλανώντων ὑμᾶς. καὶ ὑμεῖς, τὸ χρῖσμα ὃ ἐλάβετε ἀπ᾽ αὐτοῦ, ἐν ὑμῖν μένει, καὶ οὐ χρείαν ἔχετε ἵνα τις διδάσκῃ ὑμᾶς, ἀλλ᾽ ὡς τὸ αὐτὸ χρῖσμα διδάσκει ὑμᾶς περὶ πάντων, καὶ ἀληθές ἐστι καὶ οὐκ ἔστι ψεῦδος, καὶ καθὼς ἐδίδαξεν ὑμᾶς μενεῖτε ἐν αὐτῷ. Καὶ νῦν,

τεκνία, μένετε ἐν αὐτῷ, ἵνα ὅταν φανερωθῇ ἔχωμεν παρρησίαν καὶ μὴ αἰσχυνθῶμεν ἀπ᾽ αὐτοῦ ἐν τῇ παρουσίᾳ αὐτοῦ. ἐὰν εἰδῆτε ὅτι δίκαιός ἐστι, γινώσκετε ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν δικαιοσύνην ἐξ αὐτοῦ γεγέννηται.

# 3

Ἴδετε ποταπὴν ἀγάπην δέδωκεν ἡμῖν ὁ πατὴρ ἵνα τέκνα Θεοῦ κληθῶμεν. διὰ τοῦτο ὁ κόσμος οὐ γινώσκει ὑμᾶς, ὅτι οὐκ ἔγνω αὐτόν. Ἀγαπητοί, νῦν τέκνα Θεοῦ ἐσμεν, καὶ οὔπω ἐφανερώθη τί ἐσόμεθα· οἴδαμεν δὲ ὅτι ἐὰν φανερωθῇ, ὅμοιοι αὐτῷ ἐσόμεθα, ὅτι ὀψόμεθα αὐτὸν καθώς ἐστι. καὶ πᾶς ὁ ἔχων τὴν ἐλπίδα ταύτην ἐπ᾽ αὐτῷ ἁγνίζει ἑαυτόν, καθὼς ἐκεῖνος ἁγνός ἐστι. Πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν καὶ τὴν ἀνομίαν ποιεῖ, καὶ ἡ ἁμαρτία ἐστὶν ἡ ἀνομία. καὶ οἴδατε ὅτι ἐκεῖνος ἐφανερώθη ἵνα τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν ἄρῃ, καὶ ἁμαρτία ἐν αὐτῷ οὐκ ἔστι. πᾶς ὁ ἐν αὐτῷ μένων οὐχ ἁμαρτάνει· πᾶς ὁ ἁμαρτάνων οὐχ ἑώρακεν αὐτὸν οὐδὲ ἔγνωκεν αὐτόν. Τεκνία, μηδεὶς πλανάτω ὑμᾶς· ὁ ποιῶν τὴν δικαιοσύνην δίκαιός ἐστι, καθὼς ἐκεῖνος δίκαιός ἐστιν· ὁ ποιῶν τὴν ἁμαρτίαν ἐκ τοῦ διαβόλου ἐστίν, ὅτι ἀπ᾽ ἀρχῆς ὁ διάβολος ἁμαρτάνει. εἰς τοῦτο ἐφανερώθη ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἵνα λύσῃ τὰ ἔργα τοῦ διαβόλου. Πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τοῦ Θεοῦ ἁμαρτίαν οὐ ποιεῖ, ὅτι σπέρμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ μένει· καὶ οὐ δύναται ἁμαρτάνειν, ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ γεγέννηται. ἐν τούτῳ φανερά ἐστι τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ καὶ τὰ τέκνα τοῦ διαβόλου. πᾶς ὁ μὴ ποιῶν δικαιοσύνην οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ Θεοῦ, καὶ ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφόν αὐτοῦ. ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ ἀγγελία ἣν ἠκούσατε ἀπ᾽ ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, οὐ καθὼς Κάϊν ἐκ

τοῦ πονηροῦ ἦν καὶ ἔσφαξε τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ· καὶ χάριν τίνος ἔσφαξεν αὐτόν; ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ πονηρὰ ἦν, τὰ δὲ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ δίκαια. Μὴ θαυμάζετε, ἀδελφοί μου, εἰ μισεῖ ὑμᾶς ὁ κόσμος. ἡμεῖς οἴδαμεν ὅτι μεταβεβήκαμεν ἐκ τοῦ θανάτου εἰς τὴν ζωήν, ὅτι ἀγαπῶμεν τοὺς ἀδελφούς· ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν μένει ἐν τῷ θανάτῳ. πᾶς ὁ μισῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἀνθρωποκτόνος ἐστί, καὶ οἴδατε ὅτι πᾶς ἀνθρωποκτόνος οὐκ ἔχει ζωὴν αἰώνιον ἐν ἑαυτῷ μένουσαν. ἐν τούτῳ ἐγνώκαμεν τὴν ἀγάπην, ὅτι ἐκεῖνος ὑπὲρ ἡμῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἔθηκε· καὶ ἡμεῖς ὀφείλομεν ὑπὲρ τῶν ἀδελφῶν τὰς ψυχὰς τιθέναι. ὃς δ᾽ ἂν ἔχῃ τὸν βίον τοῦ κόσμου καὶ θεωρῇ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ χρείαν ἔχοντα καὶ κλείσῃ τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ ἀπ᾽ αὐτοῦ, πῶς ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ μένει ἐν αὐτῷ; Τεκνία μου, μὴ ἀγαπῶμεν λόγῳ μηδὲ τῇ γλώσσῃ, ἀλλ᾽ ἐν ἔργῳ καὶ ἀληθείᾳ. καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐκ τῆς ἀληθείας ἐσμέν, καὶ ἔμπροσθεν αὐτοῦ πείσομεν τὰς καρδίας ἡμῶν, ὅτι ἐὰν καταγινώσκῃ ἡμῶν ἡ καρδία, ὅτι μείζων ἐστὶν ὁ Θεὸς τῆς καρδίας ἡμῶν καὶ γινώσκει πάντα. ἀγαπητοί, ἐὰν ἡ καρδία ἡμῶν μὴ καταγινώσκῃ ἡμῶν, παρρησίαν ἔχομεν πρὸς τὸν Θεόν, καὶ ὃ ἐὰν αἰτῶμεν λαμβάνομεν παρ᾽ αὐτοῦ, ὅτι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηροῦμεν καὶ τὰ ἀρεστὰ ἐνώπιον αὐτοῦ ποιοῦμεν. καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ, ἵνα πιστεύσωμεν τῷ ὀνόματι τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ καὶ ἀγαπῶμεν ἀλλήλους καθὼς ἔδωκεν ἐντολήν. καὶ ὁ τηρῶν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ ἐν αὐτῷ μένει καὶ αὐτὸς ἐν αὐτῷ. καὶ ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι μένει ἐν ἡμῖν, ἐκ τοῦ Πνεύματος οὗ ἡμῖν ἔδωκεν.

# 4

Ἀγαπητοί, μὴ παντὶ πνεύματι πιστεύετε, ἀλλὰ δοκιμάζετε τὰ πνεύματα εἰ ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστιν, ὅτι πολλοὶ ψευδοπροφῆται ἐξεληλύθασιν εἰς τὸν κόσμον. ἐν τούτῳ γινώσκετε τὸ πνεῦμα τοῦ Θεοῦ· πᾶν πνεῦμα ὃ ὁμολογεῖ Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστι· καὶ πᾶν πνεῦμα ὃ μὴ ὁμολογεῖ τὸν Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἔστι· καὶ τοῦτό ἐστι τὸ τοῦ ἀντιχρίστου ὃ ἀκηκόατε ὅτι ἔρχεται, καὶ νῦν ἐν τῷ κόσμῳ ἐστὶν ἤδη. Ὑμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστε, τεκνία, καὶ νενικήκατε αὐτούς, ὅτι μείζων ἐστὶν ὁ ἐν ὑμῖν ἢ ὁ ἐν τῷ κόσμῳ. αὐτοὶ ἐκ τοῦ κόσμου εἰσί· διὰ τοῦτο ἐκ τοῦ κόσμου λαλοῦσι καὶ ὁ κόσμος αὐτῶν ἀκούει. ἡμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν· ὁ γινώσκων τὸν Θεὸν ἀκούει ἡμῶν. ὃς οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἀκούει ἡμῶν. ἐκ τούτου γινώσκομεν τὸ πνεῦμα τῆς ἀληθείας καὶ τὸ πνεῦμα τῆς πλάνης. Ἀγαπητοί, ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὅτι ἡ ἀγάπη ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστι, καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν ἐκ τοῦ Θεοῦ γεγέννηται καὶ γινώσκει τὸν Θεόν. ὁ μὴ ἀγαπῶν οὐκ ἔγνω τὸν Θεόν, ὅτι ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστίν. ἐν τούτῳ ἐφανερώθη ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ ἐν ἡμῖν, ὅτι τὸν υἱὸν αὐτοῦ τὸν μονογενῆ ἀπέσταλκεν ὁ Θεὸς εἰς τὸν κόσμον ἵνα ζήσωμεν δι᾽ αὐτοῦ. ἐν τούτῳ ἐστὶν ἡ ἀγάπη, οὐχ ὅτι ἡμεῖς ἠγαπήσαμεν τὸν Θεόν, ἀλλ᾽ ὅτι αὐτὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς καὶ ἀπέστειλε τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἱλασμὸν περὶ τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν. Ἀγαπητοί, εἰ οὕτως ὁ Θεὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, καὶ ἡμεῖς ὀφείλομεν ἀλλήλους ἀγαπᾶν. Θεὸν οὐδεὶς πώποτε τεθέαται· ἐὰν ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν μένει καὶ ἡ ἀγάπη αὐτοῦ τετελειωμένη ἐστὶν ἐν ἡμῖν. ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἐν αὐτῷ μένομεν καὶ αὐτὸς ἐν ἡμῖν, ὅτι ἐκ τοῦ Πνεύματος αὐτοῦ δέδωκεν ἡμῖν. Καὶ ἡμεῖς τεθεάμεθα καὶ μαρτυροῦμεν ὅτι ὁ πατὴρ ἀπέσταλκε τὸν υἱὸν σωτῆρα τοῦ κόσμου. ὃς ἂν ὁμολογήσῃ ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ

μένει καὶ αὐτὸς ἐν τῷ Θεῷ. καὶ ἡμεῖς ἐγνώκαμεν καὶ πεπιστεύκαμεν τὴν ἀγάπην ἣν ἔχει ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν. Ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστί, καὶ ὁ μένων ἐν τῇ ἀγάπῃ ἐν τῷ Θεῷ μένει καὶ ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ. Ἐν τούτῳ τετελείωται ἡ ἀγάπη μεθ᾽ ἡμῶν, ἵνα παρρησίαν ἔχωμεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς κρίσεως, ὅτι καθὼς ἐκεῖνός ἐστι, καὶ ἡμεῖς ἐσμεν ἐν τῷ κόσμῳ τούτῳ. φόβος οὐκ ἔστιν ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἀλλ᾽ ἡ τελεία ἀγάπη ἔξω βάλλει τὸν φόβον, ὅτι ὁ φόβος κόλασιν ἔχει, ὁ δὲ φοβούμενος οὐ τετελείωται ἐν τῇ ἀγάπῃ. Ἡμεῖς ἀγαπῶμεν αὐτόν, ὅτι αὐτὸς πρῶτος ἠγάπησεν ἡμᾶς. ἐάν τις εἴπῃ ὅτι ἀγαπῶ τὸν Θεόν, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ μισῇ, ψεύστης ἐστίν· ὁ γὰρ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν ὃν ἑώρακε, τὸν Θεὸν ὃν οὐχ ἑώρακε πῶς δύναται ἀγαπᾶν; καὶ ταύτην τὴν ἐντολὴν ἔχομεν ἀπ᾽ αὐτοῦ, ἵνα ὁ ἀγαπῶν τὸν Θεὸν ἀγαπᾷ καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ.

# 5

Πᾶς ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ Χριστός, ἐκ τοῦ Θεοῦ γεγέννηται, καὶ πᾶς ὁ ἀγαπῶν τὸν γεννήσαντα ἀγαπᾷ καὶ τὸν γεγεννημένον ἐξ αὐτοῦ. ἐν τούτῳ γινώσκομεν ὅτι ἀγαπῶμεν τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ, ὅταν τὸν Θεὸν ἀγαπῶμεν καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν. αὕτη γάρ ἐστιν ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, ἵνα τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ τηρῶμεν· καὶ αἱ ἐντολαὶ αὐτοῦ βαρεῖαι οὐκ εἰσίν, ὅτι πᾶν τὸ γεγεννημένον ἐκ τοῦ Θεοῦ νικᾷ τὸν κόσμον· καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ νίκη ἡ νικήσασα τὸν κόσμον, ἡ πίστις ἡμῶν. τίς ἐστιν ὁ νικῶν τὸν κόσμον εἰ μὴ ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστιν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ; Οὗτός ἐστιν ὁ ἐλθὼν δι᾽ ὕδατος καὶ αἵματος, Ἰησοῦς Χριστός· οὐκ ἐν τῷ ὕδατι μόνον, ἀλλ᾽ ἐν τῷ ὕδατι καὶ τῷ αἵματι· καὶ τὸ Πνεῦμά ἐστι τὸ

μαρτυροῦν, ὅτι τὸ Πνεῦμά ἐστιν ἡ ἀλήθεια. ὅτι τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῷ οὐρανῷ, ὁ Πατήρ, ὁ Λόγος καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα, καὶ οὗτοι οἱ τρεῖς ἕν εἰσι· καὶ τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῇ γῇ , τὸ Πνεῦμα καὶ τὸ ὕδωρ καὶ τὸ αἷμα, καὶ οἱ τρεῖς εἰς τὸ ἕν εἰσιν. εἰ τὴν μαρτυρίαν τῶν ἀνθρώπων λαμβάνομεν, ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ μείζων ἐστίν· ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία τοῦ Θεοῦ ἣν μεμαρτύρηκε περὶ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. ὁ πιστεύων εἰς τὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ ἔχει τὴν μαρτυρίαν ἐν αὐτῷ· ὁ μὴ πιστεύων τῷ Θεῷ ψεύστην πεποίηκεν αὐτόν, ὅτι οὐ πεπίστευκεν εἰς τὴν μαρτυρίαν ἣν μεμαρτύρηκεν ὁ Θεὸς περὶ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία, ὅτι ζωὴν αἰώνιον ἔδωκεν ἡμῖν ὁ Θεός, καὶ αὕτη ἡ ζωὴ ἐν τῷ υἱῷ αὐτοῦ ἐστιν. ὁ ἔχων τὸν υἱὸν ἔχει τὴν ζωήν· ὁ μὴ ἔχων τὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ τὴν ζωὴν οὐκ ἔχει. Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν τοῖς πιστεύουσιν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ, ἵνα εἰδῆτε ὅτι ζωὴν αἰώνιον ἔχετε, καὶ ἵνα πιστεύητε εἰς τὸ ὄνομα τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ. καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ παρρησία ἣν ἔχομεν πρὸς αὐτόν, ὅτι ἐάν τι αἰτώμεθα κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, ἀκούει ἡμῶν. καὶ ἐὰν οἴδαμεν ὅτι ἀκούει ἡμῶν ὃ ἂν αἰτώμεθα, οἴδαμεν ὅτι ἔχομεν τὰ αἰτήματα ἃ ᾐτήκαμεν παρ᾽ αὐτοῦ. Ἐάν τις ἴδῃ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἁμαρτάνοντα ἁμαρτίαν μὴ πρὸς θάνατον, αἰτήσει, καὶ δώσει αὐτῷ ζωήν, τοῖς ἁμαρτάνουσι μὴ πρὸς θάνατον. ἔστιν ἁμαρτία πρὸς θάνατον· οὐ περὶ ἐκείνης λέγω ἵνα ἐρωτήσῃ. πᾶσα ἀδικία ἁμαρτία ἐστίν· καὶ ἔστιν ἁμαρτία οὐ πρὸς θάνατον. Οἴδαμεν ὅτι πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τοῦ Θεοῦ οὐχ ἁμαρτάνει, ἀλλ᾽ ὁ γεννηθεὶς ἐκ τοῦ Θεοῦ τηρεῖ ἑαυτόν, καὶ ὁ πονηρὸς οὐχ ἅπτεται αὐτοῦ. οἴδαμεν ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν, καὶ ὁ κόσμος ὅλος ἐν τῷ πονηρῷ κεῖται. οἴδαμεν δὲ ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ἥκει καὶ δέδωκεν ἡμῖν διάνοιαν ἵνα γινώσκωμεν τὸν ἀληθινόν· καί ἐσμεν ἐν τῷ ἀληθινῷ, ἐν τῷ υἱῷ

αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστῷ. οὗτός ἐστιν ὁ ἀληθινὸς Θεὸς καὶ ζωὴ αἰώνιος. Τεκνία, φυλάξατε ἑαυτοὺς ἀπὸ τῶν εἰδώλων· ἀμήν.

# ΓΕΝΕΣΙΣ

## 1

Ἐν ἀρχῇ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Ἡ δὲ γῆ ἦν ἀόρατος καὶ ἀκατασκεύαστος, καὶ σκότος ἐπάνω τῆς ἀβύσσου· καὶ πνεῦμα Θεοῦ ἐπεφέρετο ἐπάνω τοῦ ὕδατος. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, γενηθήτω φῶς· καὶ ἐγένετο φῶς. Καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς τὸ φῶς, ὅτι καλόν· καὶ διεχώρισεν ὁ Θεὸς ἀνὰ μέσον τοῦ φωτὸς, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σκότους. Καὶ ἐκάλεσεν ὁ Θεὸς τὸ φῶς ἡμέραν, καὶ τὸ σκότος ἐκάλεσε νύκτα. Καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα μία. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, γενηθήτω στερέωμα ἐν μέσῳ τοῦ ὕδατος· καὶ ἔστω διαχωρίζον ἀνὰ μέσον ὕδατος καὶ ὕδατος· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τὸ στερέωμα· καὶ διεχώρισεν ὁ Θεὸς ἀνὰ μέσον τοῦ ὕδατος, ὃ ἦν ὑποκάτω τοῦ στερεώματος, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ ὕδατος, τοῦ ἐπάνω τοῦ στερεώματος. Καὶ ἐκάλεσεν ὁ Θεὸς τὸ στερέωμα οὐρανόν· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλόν· καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα δευτέρα. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, συναχθήτω τὸ ὕδωρ τὸ ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ εἰς συναγωγὴν μίαν, καὶ ὀφθήτω ἡ ξηρά· καὶ ἐγένετο οὕτως· καὶ συνήχθη τὸ ὕδωρ τὸ ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ εἰς τὰς συναγωγὰς αὐτῶν, καὶ ὤφθη ἡ ξηρά.

Καὶ ἐκάλεσεν ὁ Θεὸς τὴν ξηρὰν, γῆν· καὶ τὰ συστήματα τῶν ὑδάτων ἐκάλεσε θαλάσσας· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλόν. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, βλαστησάτω ἡ γῆ βοτάνην χόρτου, σπεῖρον σπέρμα κατὰ γένος καὶ καθ ὁμοιότητα, καὶ ξύλον κάρπιμον ποιοῦν καρπὸν, οὗ τὸ σπέρμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ κατὰ γένος ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ ἐξήνεγκεν ἡ γῆ βοτάνην χόρτου, σπεῖρον σπέρμα κατὰ γένος καὶ καθ ὁμοιότητα, καὶ ξύλον κάρπιμον ποιοῦν καρπὸν, οὗ τὸ σπέρμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ κατὰ γένος ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλόν. Καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα τρίτη. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, γενηθήτωσαν φωστῆρες ἐν τῷ στερεώματι τοῦ οὐρανοῦ εἰς φαῦσιν ἐπὶ τῆς γῆς, τοῦ διαχωρίζειν ἀνὰ μέσον τῆς ἡμέρας καὶ ἀνὰ μέσον τῆς νυκτός· καὶ ἔστωσαν εἰς σημεῖα, καὶ εἰς καιροὺς, καὶ εἰς ἡμέρας, καὶ εἰς ἐνιαυτούς. Καὶ ἔστωσαν εἰς φαῦσιν ἐν τῷ στερεώματι τοῦ οὐρανοῦ, ὥστε φαίνειν ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τοὺς δύο φωστῆρας τοὺς μεγάλους· τὸν φωστῆρα τὸν μέγαν εἰς ἀρχὰς τῆς ἡμέρας, καὶ τὸν φωστῆρα τὸν ἐλάσσω εἰς ἀρχὰς τῆς νυκτὸς, καὶ τοὺς ἀστέρας. Καὶ ἔθετο αὐτοὺς ὁ Θεὸς ἐν τῷ στερεώματι τοῦ οὐρανοῦ, ὥστε φαίνειν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἄρχειν τῆς ἡμέρας καὶ τῆς νυκτὸς, καὶ διαχωρίζειν ἀνὰ μέσον τοῦ φωτὸς, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σκότους· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλόν. Καὶ ἐγένετο ἑσπέρα καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα τετάρτη. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, ἐξαγαγέτω τὰ ὕδατα ἑρπετὰ ψυχῶν ζωσῶν, καὶ πετεινὰ πετόμενα ἐπὶ τῆς γῆς κατὰ τὸ στερέωμα τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τὰ κήτη τὰ μεγάλα, καὶ πᾶσαν ψυχὴν ζώων ἑρπετῶν, ἃ ἐξήγαγε τὰ ὕδατα κατὰ γένη αὐτῶν, καὶ πᾶν πετεινὸν πτερωτὸν κατὰ γένος· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλά. Καὶ εὐλόγησεν αὐτὰ ὁ Θεὸς, λέγων, αὐξάνεσθε καὶ πληθύνεσθε, καὶ πληρώσατε τὰ ὕδατα ἐν ταῖς θαλάσσαις, καὶ τὰ

πετεινὰ πληθυνέσθωσαν ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα πέμπτη. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, ἐξαγαγέτω ἡ γῆ ψυχὴν ζῶσαν κατὰ γένος, τετράποδα, καὶ ἑρπετὰ, καὶ θηρία τῆς γῆς κατὰ γένος· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τὰ θηρία τῆς γῆς κατὰ γένος, καὶ τὰ κτήνη κατὰ γένος αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ ἑρπετὰ τῆς γῆς κατὰ γένος· καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς ὅτι καλά. Καὶ εἶπεν ὁ Θεός, Ποιήσωμεν ἄνθρωπον κατ εἰκόνα ἡμετέραν καὶ καθ ὁμοίωσιν· καὶ ἀρχέτωσαν τῶν ἰχθύων τῆς θαλάσσης, καὶ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τῶν κτηνῶν, καὶ πάσης τῆς γῆς, καὶ πάντων τῶν ἑρπετῶν τῶν ἑρπόντων ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐποιήσεν ὁ Θεὸς τὸν ἄνθρωπον· κατ εἰκόνα Θεοῦ ἐποίησεν αὐτόν· ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτούς. Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς ὁ Θεὸς, λέγων, αὐξάνεσθε καὶ πληθύνεσθε, καὶ πληρώσατε τὴν γῆν, καὶ κατακυριεύσατε αὐτῆς· καὶ ἄρχετε τῶν ἰχθύων τῆς θαλάσσης, καὶ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πάντων τῶν κτηνῶν, καὶ πάσης τῆς γῆς, καὶ πάντων τῶν ἑρπετῶν τῶν ἑρπόντων ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεός, Ἰδοὺ δέδωκα ὑμῖν πάντα χόρτον σπόριμον σπεῖρον σπέρμα, ὅ ἐστιν ἐπάνω πάσης τῆς γῆς· καὶ πᾶν ξύλον, ὃ ἔχει ἐν ἑαυτῷ καρπὸν σπέρματος σπορίμου, ὑμῖν ἔσται εἰς βρῶσιν, καὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τῆς γῆς, καὶ πᾶσι τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ παντὶ ἑρπετῷ ἕρποντι ἐπὶ τῆς γῆς, ὃ ἔχει ἐν ἑαυτῷ ψυχὴν ζωῆς, καὶ πάντα χόρτον χλωρὸν εἰς βρῶσιν· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς τὰ πάντα, ὅσα ἐποίησε, καὶ ἰδοὺ καλὰ λίαν· καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ ἐγένετο πρωΐ, ἡμέρα ἕκτη.

# 2

Καὶ συνετελέσθησαν ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ, καὶ πᾶς ὁ κόσμος αὐτῶν. Καὶ συνετέλεσεν ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ τὰ ἔργα αὐτοῦ, ἃ ἐποίησε· καὶ κατέπαυσε τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἀπὸ πάντων τῶν ἔργων αὐτοῦ, ὧν ἐποίησε. Καὶ εὐλόγησεν ὁ Θεὸς τὴν ἡμέραν τὴν ἑβδόμην, καὶ ἡγίασεν αὐτήν, ὅτι ἐν αὐτῇ κατέπαυσεν ἀπὸ πάντων τῶν ἔργων αὐτοῦ, ὧν ἤρξατο ὁ Θεὸς ποιῆσαι. Αὕτη ἡ βίβλος γενέσεως οὐρανοῦ καὶ γῆς, ὅτε ἐγένετο, ᾗ ἡμέρᾳ ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, καὶ πᾶν χλωρὸν ἀγροῦ πρὸ τοῦ γενέσθαι ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πάντα χόρτον ἀγροῦ πρὸ τοῦ ἀνατεῖλαι· οὐ γὰρ ἔβρεξεν ὁ Θεὸς ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἦν ἐργάζεσθαι αὐτήν. Πηγὴ δὲ ἀνέβαινεν ἐκ τῆς γῆς, καὶ ἐπότιζε πᾶν τὸ πρόσωπον τῆς γῆς. Καὶ ἔπλασεν ὁ Θεὸς τὸν ἄνθρωπον, χοῦν ἀπὸ τῆς γῆς· καὶ ἐνεφύσησεν εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ πνοὴν ζωῆς, καὶ ἐγένετο ὁ ἄνθρωπος εἰς ψυχὴν ζῶσαν. Καὶ ἐφύτευσεν ὁ Θεὸς παράδεισον ἐν Ἐδὲμ κατὰ ἀνατολάς· καὶ ἔθετο ἐκεῖ τὸν ἄνθρωπον, ὃν ἔπλασε. Καὶ ἐξανέτειλεν ὁ Θεὸς ἔτι ἐκ τῆς γῆς πᾶν ξύλον ὡραῖον εἰς ὅρασιν, καὶ καλὸν εἰς βρῶσιν, καὶ τὸ ξύλον τῆς ζωῆς ἐν μέσῳ τοῦ παραδείσου, καὶ τὸ ξύλον τοῦ εἰδέναι γνωστὸν καλοῦ καὶ πονηροῦ. Ποταμὸς δὲ ἐκπορεύεται ἐξ Ἐδὲμ ποτίζειν τὸν παράδεισον· ἐκεῖθεν ἀφορίζεται εἰς τέσσαρας ἀρχάς. Ὄνομα τῷ ἑνὶ, Φισῶν· οὗτος ὁ κυκλῶν πᾶσαν τὴν γῆν Εὐιλάτ· ἐκεῖ οὗ ἐστι τὸ χρυσίον. Τὸ δὲ χρυσίον τῆς γῆς ἐκείνης καλόν· καὶ ἐκεῖ ἐστιν ὁ ἄνθραξ, καὶ ὁ λίθος ὁ πράσινος. Καὶ ὄνομα τῷ ποταμῷ τῷ δευτέρῳ, Γεῶν· οὗτος ὁ κυκλῶν πᾶσαν τὴν γὴν Αἰθιοπίας. Καὶ ὁ ποταμὸς ὁ τρίτος, Τίγρις· οὗτος ὁ προπορευόμενος κατέναντι Ἀσσυρίων· ὁ δὲ ποταμὸς ὁ τέταρτος, Εὐφράτης. Καὶ ἔλαβε Κύριος ὁ Θεὸς τὸν ἄνθρωπον ὃν ἔπλασε, καὶ ἔθετο αὐτὸν ἐν τῷ παραδείσῳ τῆς τρυφῆς, ἐργάζεσθαι αὐτὸν καὶ φυλάσσειν. Καὶ

ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς τῷ Ἀδὰμ, λέγων, ἀπὸ παντὸς ξύλου τοῦ ἐν τῷ παραδείσῳ βρώσει φαγῇ. Ἀπὸ δὲ τοῦ ξύλου τοῦ γινώσκειν καλὸν καὶ πονηρὸν, οὐ φάγεσθε ἀπ αὐτοῦ· ᾗ δ ἂν ἡμέρᾳ φάγητε ἀπ αὐτοῦ, θανάτῳ ἀποθανεῖσθε. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς, οὐ καλὸν εἶναι τὸν ἄνθρωπον μόνον· ποιήσωμεν αὐτῷ βοηθὸν κατ αὐτόν. Καὶ ἔπλασεν ὁ Θεὸς ἔτι ἐκ τῆς γῆς πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἤγαγεν αὐτὰ πρὸς τὸν Ἀδὰμ, ἰδεῖν τί καλέσει αὐτά· καὶ πᾶν ὃ ἐὰν ἐκάλεσεν αὐτὸ Ἀδὰμ ψυχὴν ζῶσαν, τοῦτο ὄνομα αὐτῷ. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀδὰμ ὀνόματα πᾶσι τοῖς κτήνεσι, καὶ πᾶσι τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τοῦ ἀγροῦ· τῷ δὲ Ἀδὰμ οὐχ εὑρέθη βοηθὸς ὅμοιος αὐτῷ. Καὶ ἐπέβαλεν ὁ Θεὸς ἔκστασιν ἐπὶ τὸν Ἀδὰμ, καὶ ὕπνωσε· καὶ ἔλαβε μίαν τῶν πλευρῶν αὐτοῦ, καὶ ἀνεπλήρωσε σάρκα ἀντ αὐτῆς. Καὶ ᾠκοδόμησεν ὁ Θεὸς τὴν πλευρὰν, ἣν ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ Ἀδὰμ εἰς γυναῖκα· καὶ ἤγαγεν αὐτὴν πρὸς τὸν Ἀδάμ. Καὶ εἶπεν Ἀδάμ· τοῦτο νῦν ὀστοῦν ἐκ τῶν ὀστέων μου, καὶ σὰρξ ἐκ τῆς σαρκός μου· αὕτη κληθήσεται γυνὴ, ὅτι ἐκ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς ἐλήφθη. Ἕνεκεν τούτου καταλείψει ἄνθρωπος τὸν πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν. Καὶ ἦσαν οἱ δύο γυμνοὶ, ὅ, τε Ἀδὰμ καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ᾐσχύνοντο.

# 3

Ὁ δὲ ὄφις ἦν φρονιμώτατος πάντων τῶν θηρίων τῶν ἐπὶ τῆς γῆς, ὧν ἐποίησε Κύριος ὁ Θεός· καὶ εἶπεν ὁ ὄφις τῇ γυναικὶ, τί ὅτι εἶπεν ὁ Θεός, οὐ μὴ φάγητε ἀπὸ παντὸς ξύλου τοῦ παραδείσου; Καὶ

εἶπεν ἡ γυνὴ τῷ ὄφει, ἀπὸ καρποῦ τοῦ ξύλου τοῦ παραδείσου φαγούμεθα· Ἀπὸ δὲ τοῦ καρποῦ τοῦ ξύλου, ὅ ἐστιν ἐν μέσῳ τοῦ παραδείσου, εἶπεν ὁ Θεός, οὐ φάγεσθε ἀπ αὐτοῦ, οὐδὲ μὴ ἅψησθε αὐτοῦ, ἵνα μὴ ἀποθάνητε. Καὶ εἶπεν ὁ ὄφις τῇ γυναικί· οὐ θανάτῳ ἀποθανεῖσθε· Ἤδει γὰρ ὁ Θεὸς, ὅτι ᾗ ἂν ἡμέρᾳ φάγητε ἀπ αὐτοῦ, διανοιχθήσονται ὑμῶν οἱ ὀφθαλμοί, καὶ ἔσεσθε ὡς θεοί, γινώσκοντες καλὸν καὶ πονηρόν. Καὶ εἶδεν ἡ γυνὴ, ὅτι καλὸν τὸ ξύλον εἰς βρῶσιν, καὶ ὅτι ἀρεστὸν τοῖς ὀφθαλμοῖς ἰδεῖν, καὶ ὡραῖόν ἐστι τοῦ κατανοῆσαι· καὶ λαβοῦσα ἀπὸ τοῦ καρποῦ αὐτοῦ, ἔφαγε· καὶ ἔδωκε καὶ τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς μετ αὐτῆς, καὶ ἔφαγον. Καὶ διηνοίχθησαν οἱ ὀφθαλμοὶ τῶν δύο, καὶ ἔγνωσαν ὅτι γυμνοὶ ἦσαν· καὶ ἔῤῥαψαν φύλλα συκῆς, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς περιζώματα. Καὶ ἤκουσαν τὴς φωνὴς Κυρίου τοῦ Θεοῦ περιπατοῦντος ἐν τῷ παραδείσῳ τὸ δειλινόν· καὶ ἐκρύβησαν ὅ, τε Ἀδὰμ καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἐν μέσῳ τοῦ ξύλου τοῦ παραδείσου. Καὶ ἐκάλεσεν Κύριος ὁ Θεὸς τὸν Ἀδὰμ, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀδὰμ ποῦ εἶ; Καὶ εἶπεν αὐτῷ· τὴς φωνῆς σου ἤκουσα περιπατοῦντος ἐν τῷ παραδείσῳ, καὶ ἐφοβήθην ὅτι γυμνός εἰμι, καὶ ἐκρύβην. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, τὶς ἀνήγγειλέ σοι ὅτι γυμνὸς εἶ, εἰ μὴ ἀπὸ τοῦ ξύλου, οὗ ἐνετειλάμην σοι τούτου μόνου μὴ φαγεῖν, ἀπ αὐτοῦ ἔφαγες; Καὶ εἶπεν ὁ Ἀδάμ· ἡ γυνή, ἣν ἔδωκας μετ ἐμοῦ, αὕτη μοι ἔδωκεν ἀπὸ τοῦ ξύλου, καὶ ἔφαγον. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῇ γυναικί· τί τοῦτο ἐποιήσας; καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, ὁ ὄφις ἠπάτησέ με, καὶ ἔφαγον. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῷ ὄφει· ὅτι ἐποίησας τοῦτο, ἐπικατάρατος σὺ ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν θηρίων τῶν ἐπὶ τῆς γῆς· ἐπὶ τῷ στήθει σου καὶ τῇ κοιλίᾳ πορεύσῃ, καὶ γῆν φαγῃ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου. Καὶ ἔχθραν θήσω ἀνὰ μέσον σοῦ καὶ ἀνὰ μέσον τῆς γυναικὸς, καὶ

ἀνὰ μέσον τοῦ σπέρματός σου, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σπέρματος αὐτῆς· αὐτός σοῦ τηρήσει κεφαλὴν, καὶ σὺ τηρήσεις αὐτοῦ πτέρναν. Καὶ τῇ γυναικὶ εἶπε· πληθύνων πληθυνῶ τὰς λύπας σου, καὶ τὸν στεναγμόν σου· ἐν λύπαις τέξῃ τέκνα, καὶ πρὸς τὸν ἄνδρα σου ἡ ἀποστροφή σου· καὶ αὐτός σου κυριεύσει. Τῷ δὲ Ἀδὰμ εἶπεν· ὅτι ἤκουσας τῆς φωνῆς τῆς γυναικός σου, καὶ ἔφαγες ἀπὸ τοῦ ξύλου, οὗ ἐνετειλάμην σοι τούτου μόνου μὴ φαγεῖν, ἀπ αὐτοῦ ἔφαγες, ἐπικατάρατος ἡ γῆ ἐν τοῖς ἔργοις σου· ἐν λύπαις φάγῃ αὐτὴν πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου. Ἀκάνθας καὶ τριβόλους ἀνατελεῖ σοι, καὶ φαγῇ τὸν χόρτον τοῦ ἀγροῦ. Ἐν ἱδρῶτι τοῦ προσώπου σου φαγῃ τὸν ἄρτον σου, ἕως τοῦ ἀποστρέψαι σε εἰς τὴν γῆν ἐξ ἧς ἐλήμφθης· ὅτι γῆ εἶ, καὶ εἰς γῆν ἀπελεύσῃ. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀδὰμ τὸ ὄνομα τῆς γυναικὸς αὐτοῦ Ζωή, ὅτι μήτηρ πάντων τῶν ζώντων. Καὶ ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς τῷ Ἀδὰμ, καὶ τῇ γυναικὶ αὐτοῦ χιτῶνας δερματίνους, καὶ ἐνέδυσεν αὐτούς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεός, ἰδοὺ Ἀδὰμ γέγονεν ὡς εἷς ἐξ ἡμῶν, τοῦ γινώσκειν καλὸν καὶ πονηρόν· καὶ νῦν μή ποτε ἐκτείνῃ τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ λάβῃ τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς καὶ φάγῃ, καὶ ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτὸν Κύριος ὁ Θεὸς ἐκ τοῦ παραδείσου τῆς τρυφῆς, ἐργάζεσθαι τὴν γῆν ἐξ ἧς ἐλήμφθη. Καὶ ἐξέβαλεν τὸν Ἀδὰμ, καὶ κατῴκισεν αὐτὸν ἀπέναντι τοῦ παραδείσου τῆς τρυφῆς· καὶ ἔταξε τὰ χερουβὶμ· καὶ τὴν φλογίνην ῥομφαίαν τὴν στρεφομένην, φυλάσσειν τὴν ὁδὸν τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς.

# 4

Ἀδὰμ δὲ ἔγνω Εὔαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκε τὸν

Κάϊν· καὶ εἶπεν, ἐκτησάμην ἄνθρωπον διὰ τοῦ Θεοῦ. Καὶ προσέθηκε τεκεῖν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν Ἄβελ· καὶ ἐγένετο Ἄβελ ποιμὴν προβάτων, Κάϊν δὲ ἦν ἐργαζόμενος τὴν γῆν. Καὶ ἐγένετο μεθ ἡμέρας ἤνεγκε Κάϊν ἀπὸ τῶν καρπῶν τῆς γῆς θυσίαν τῷ Κυρίῳ· Καὶ Ἄβελ ἤνεγκε καὶ αὐτὸς ἀπὸ τῶν πρωτοτόκων τῶν προβάτων αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ τῶν στεάτων αὐτῶν· καὶ ἐπεῖδεν ὁ Θεὸς ἐπὶ Ἄβελ, καὶ ἐπὶ τοῖς δώροις αὐτοῦ. Ἐπὶ δὲ Κάϊν, καὶ ἐπὶ ταῖς θυσίαις αὐτοῦ, οὐ προσέσχε· καὶ ἐλυπήθη Κάϊν λίαν, καὶ συνέπεσε τῷ προσώπῳ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῷ Κάϊν, ἵνα τί περίλυπος ἐγένου, καὶ ἵνα τί συνέπεσε τὸ πρόσωπόν σου; Οὐκ ἐὰν ὀρθῶς προσενέγκῃς, ὀρθῶς δὲ μὴ διέλῃς, ἥμαρτες; ἡσυχασον· πρός σὲ ἡ ἀποστροφὴ αὐτοῦ, καὶ σὺ ἄρξεις αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Κάϊν πρὸς Ἄβελ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, διέλθωμεν εἰς τὸ πεδίον· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτοὺς ἐν τῷ πεδίῳ, ἀνέστη Κάϊν ἐπὶ Ἄβελ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτόν. Καὶ εἶπε Κύπιος ὁ Θεὸς πρὸς Κάϊν· ποῦ ἔστιν Ἄβελ ὁ ἀδελφός σου; καὶ εἶπεν, οὐ γινώσκω· μὴ φύλαξ τοῦ ἀδελφοῦ μου εἰμὶ ἐγώ; Καὶ εἶπε Κύριος, τί πεποίηκας; φωνὴ αἵματος τοῦ ἀδελφοῦ σου βοᾷ πρός με ἐκ τῆς γῆς. Καὶ νῦν ἐπικατάρατος σὺ ἀπὸ τῆς γῆς, ἣ ἔχανε τὸ στόμα αὐτῆς δέξασθαι τὸ αἷμα τοῦ ἀδελφοῦ σου ἐκ τῆς χειρός σου. Ὅτε ἐργᾷ τὴν γῆν, καὶ οὐ προσθήσει τὴν ἰσχὺν αὐτῆς δοῦναί σοι· στένων καὶ τρέμων ἐσῃ ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ εἶπε Κάϊν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν, μείζων ἡ αἰτία μου τοῦ ἀφεθῆναί με. Εἰ ἐκβάλλεις με σήμερον ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, καὶ ἀπὸ τοῦ προσώπου σου κρυβήσομαι, καὶ ἔσομαι στένων καὶ τρέμων ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἔσται πᾶς ὁ εὑρίσκων με, ἀποκτενεῖ με. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Κύριος ὁ Θεὸς, οὐχ οὕτω· πᾶς ὁ ἀποκτείνας Κάϊν, ἑπτὰ ἐκδικούμενα παραλύσει. Καὶ ἔθετο Κύριος ὁ Θεὸς σημεῖον τῷ Κάϊν, τοῦ μὴ ἀνελεῖν αὐτὸν πάντα τὸν εὑρίσκοντα αὐτόν. Ἐξῆλθεν

δὲ Κάϊν ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ ᾤκησεν ἐν γῇ Ναὶδ κατέναντι Ἐδέμ. Καὶ ἔγνω Κάϊν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκε τὸν Ἐνώχ. Καὶ ἦν οἰκοδομῶν πόλιν· καὶ ἐπῳνόμασε τὴν πόλιν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, Ἐνώχ. Ἐγενήθη δὲ τῷ Ἐνὼχ Γαϊδάδ· καὶ Γαϊδὰδ ἐγέννησε τὸν Μαλελεὴλ· καὶ Μαλελεὴλ ἐγέννησε τὸν Μαθουσάλα· καὶ Μαθουσάλα ἐγέννησε τὸν Λάμεχ. Καὶ ἔλαβεν ἑαυτῷ Λάμεχ δύο γυναῖκας· ὄνομα τῇ μιᾷ, Ἀδά· καὶ ὄνομα τῇ δευτέρᾳ, Σελλά. Καὶ ἔτεκεν Ἀδὰ τὸν Ἰωβήλ· οὗτος ἦν πατὴρ οἰκούντων ἐν σκηναῖς κτηνοτρόφων. Καὶ ὄνομα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, Ἰουβάλ· οὗτος ἦν ὁ καταδείξας ψαλτήριον καὶ κιθάραν. Σελλὰ δὲ καὶ αὐτὴ ἔτεκε τὸν Θόβελ· καὶ ἦν σφυροκόπος χαλκεὺς χαλκοῦ καὶ σιδήρου. ἀδελφὴ δὲ Θόβελ, Νοεμά. Εἶπε δὲ Λάμεχ ταῖς ἑαυτοῦ γυναιξίν, Ἀδὰ καὶ Σελλὰ, ἀκούσατέ μου τῆς φωνῆς, γυναῖκες Λάμεχ, ἐνωτίσασθέ μου τοὺς λόγους· ὅτι ἄνδρα ἀπέκτεινα εἰς τραῦμα ἐμοὶ, καὶ νεανίσκον εἰς μώλωπα ἐμοί. Ὅτι ἑπτάκις ἐκδεδίκηται ἐκ Κάϊν· ἐκ δὲ Λάμεχ, ἑβδομηκοντάκις ἑπτά. Ἔγνω δὲ Ἀδὰμ Εὔαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκεν υἱόν· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Σὴθ, λέγουσα, ἐξανέστησε γάρ μοι ὁ Θεὸς σπέρμα ἕτερον ἀντὶ Ἄβελ, ὃν ἀπέκτεινε Κάϊν. Καὶ τῷ Σὴθ ἐγένετο υἱός· ἐπωνόμασε δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἐνώς· οὗτος ἤλπισεν ἐπικαλεῖσθαι τὸ ὄνομα Κυρίου τοῦ Θεοῦ.

# 5

Αὕτη ἡ βίβλος γενέσεως ἀνθρώπων· ᾗ ἡμέρᾳ ἐποίησεν ὁ Θεὸς τὸν Ἀδὰμ, κατ εἰκόνα Θεοῦ ἐποίησεν αὐτόν· Ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν

αὐτούς· καὶ εὐλόγησεν αὐτούς· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἀδὰμ, ᾗ ἡμέρᾳ ἐποίησεν αὐτούς. Ἔζησεν δὲ Ἀδὰμ τριάκοντα καὶ διακόσια ἔτη, καὶ ἐγέννησε κατὰ τὴν ἰδέαν αὐτοῦ, καὶ κατὰ τὴν εἰκόνα αὐτοῦ, καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Σήθ. Ἐγένοντο δὲ αἱ ἡμέραι Ἀδὰμ, ἃς ἔζησε μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Σὴθ, ἔτη ἑπτακόσια· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Ἀδὰμ, ἃς ἔζησε, τριάκοντα καὶ ἐννακόσια ἔτη· καὶ ἀπέθανεν. Ἔζησε δὲ Σὴθ πέντε καὶ διακόσια ἔτη· καὶ ἐγέννησε τὸν Ἐνώς. Καὶ ἔζησε Σὴθ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ἐνὼς, ἑπτὰ ἔτη καὶ ἑπτακόσια· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Σὴθ δώδεκα καὶ ἐννακόσια ἔτη· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Ἐνὼς ἔτη ἑκατὸν ἐννεήκοντα· καὶ ἐγέννησε τὸν Καϊνᾶν. Καὶ ἔζησεν Ἐνὼς μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Καϊνᾶν, πεντεκαίδεκα ἔτη καὶ ἑπτκόσια· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Ἐνὼς πέντε ἔτη καὶ ἐννακόσια· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Καϊνᾶν ἑβδομήκοντα καὶ ἑκατὸν ἔτη· καὶ ἐγέννησε τὸν Μαλελεήλ. Καὶ ἔζησε Καϊνᾶν μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Μαλελεὴλ, τεσσεράκοντα καὶ ἑπτακόσια ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Καϊνᾶν δέκα ἔτη καὶ ἐννακόσια· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Μαλελεὴλ πέντε καὶ ἑξήκοντα καὶ ἑκατὸν ἔτη· καὶ ἐγέννησε τὸν Ἰάρεδ. Καὶ ἔζησε Μαλελεὴλ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ἰάρεδ, ἔτη τριάκοντα καὶ ἑπτακόσια· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Μαλελεὴλ, ἔτη πέντε καὶ ἐννενήκοντα καὶ ὀκτακόσια· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Ἰάρεδ δύο καὶ ἑξήκοντα ἔτη καὶ ἑκατὸν· καὶ ἐγέννησε τὸν Ἐνώχ. Καὶ ἔζησεν Ἰάρεδ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ἐνὼχ, ὀκτακόσια ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι

Ἰάρεδ, δύο καὶ ἑξήκοντα καὶ ἐννακόσια ἔτη· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Ἐνὼχ πέντε καὶ ἑξήκοντα καὶ ἑκατὸν ἔτη· καὶ ἐγέννησε τὸν Μαθουσάλα. Εὐηρέστησε δὲ Ἐνὼχ τῷ Θεῷ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Μαθουσάλα, διακόσια ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Ἐνὼχ, πέντε καὶ ἑξήκοντα καὶ τριακόσια ἔτη. Καὶ εὐηρέστησεν Ἐνὼχ τῷ Θεῷ· καὶ οὐχ εὑρίσκετο, ὅτι μετέθηκεν αὐτὸν ὁ Θεός. Καὶ ἔζησε Μαθουσάλα ἑπτὰ ἔτη καὶ ἑξήκοντα καὶ ἑκατόν· καὶ ἐγέννησε τὸν Λάμεχ. Καὶ ἔζησε Μαθουσάλα μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Λάμεχ, δύο καὶ ὀκτακόσια ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Μαθουσάλα ἃς ἔζησεν, ἐννέα καὶ ἑξήκοντα καὶ ἐννακόσια ἔτη· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Λάμεχ ὀκτὼ καὶ ὀγδοήκοντα καὶ ἑκατὸν ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱόν. Καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Νῶε, λέγων, οὗτος διαναπαύσει ἡμᾶς ἀπὸ τῶν ἔργων ἡμῶν, καὶ ἀπὸ τῶν λυπῶν τῶν χειρῶν ἡμῶν, καὶ ἀπὸ τῆς γῆς, ἧς κατηράσατο Κύριος ὁ Θεός. Καὶ ἔζησε Λάμεχ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Νῶε, πεντακόσια καὶ ἑξήκοντα καὶ πέντε ἔτη· καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Λάμεχ, ἑπτακόσια καὶ πεντήκοντα τρία ἔτη· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἦν Νῶε ἐτῶν πεντακοσίων· καὶ ἐγέννησε τρεῖς υἱοὺς, τὸν Σὴμ, τὸν Χὰμ, τὸν Ἰάφεθ.

# 6

Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἤρξαντο οἱ ἄνθρωποι πολλοὶ γίνεσθαι ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ θυγατέρες ἐγεννήθησαν αὐτοῖς. Ἰδόντες δὲ υἱοὶ τοῦ Θεοῦ τὰς θυγατέρας τῶν ἀνθρώπων, ὅτι καλαί εἰσιν, ἔλαβον ἑαυτοῖς

γυναῖκας ἀπὸ πασῶν, ὧν ἐξελέξαντο. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς, οὐ μὴ καταμείνῃ τὸ πνεῦμά μου ἐν τοῖς ἀνθρώποις τούτοις εἰς τὸν αἰῶνα, διὰ τὸ εἶναι αὐτοὺς σάρκας· ἔσονται δὲ αἱ ἡμέραι αὐτῶν, ἑκατὸν εἴκοσιν ἔτη. Οἱ δὲ γίγαντες ἦσαν ἐπὶ τῆς γῆς ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ μετ ἐκεῖνο, ὡς ἂν εἰσεπορεύοντο οἱ υἱοὶ τοῦ Θεοῦ πρὸς τὰς θυγατέρας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ἐγεννῶσαν αὐτοῖς· ἐκεῖνοι ἦσαν οἱ γίγαντες οἱ ἀπ αἰῶνος, οἱ ἄνθρωποι οἱ ὀνομαστοί. Ἰδὼν δὲ Κύριος ὁ Θεὸς, ὅτι ἐπληθύνθησαν αἱ κακίαι τῶν ἀνθρώπων ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πᾶς τις διανοεῖται ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ ἐπιμελῶς ἐπὶ τὰ πονηρὰ πάσας τὰς ἡμέρας· Καὶ ἐνεθυμήθη ὁ Θεὸς, ὅτι ἐποίησε τὸν ἄνθρωπον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ διενοήθη. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς, ἀπαλείψω τὸν ἄνθρωπον, ὃν ἐποίησα, ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, καὶ ἀπὸ ἑρπετῶν ἕως πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ· ὅτι ἐνεθυμήθην, ὅτι ἐποίησα αὐτούς. Νῶε δὲ εὗρε χάριν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ. Αὗται δὲ αἱ γενέσεις Νῶε. Νῶε ἄνθρωπος δίκαιος, τέλειος ὢν ἐν τῇ γενεᾷ αὐτοῦ, τῷ Θεῷ εὐηρέστησε Νῶε. Ἐγέννησε δὲ Νῶε τρεῖς υἱοὺς, τὸν Σὴμ, τὸν Χὰμ, τὸν Ἰάφεθ. Ἐφθάρη δὲ ἡ γῆ ἐναντίον τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπλήσθη ἡ γῆ ἀδικίας. Καὶ εἶδε Κύριος ὁ Θεὸς τὴν γῆν, καὶ ἦν κατεφθαρμένη· ὅτι κατέφθειρε πᾶσα σὰρξ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῷ Νῶε, καιρὸς παντὸς ἀνθρώπου ἥκει ἐναντίον μου, ὅτι ἐπλήσθη ἡ γῆ ἀδικίας ἀπ αὐτῶν· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ καταφθείρω αὐτοὺς καὶ τὴν γῆν. Ποίησον οὖν σεαυτῷ κιβωτὸν ἐκ ξύλων τετραγώνων· νοσσιὰς ποιήσεις τὴν κιβωτόν· καὶ ἀσφαλτώσεις αὐτὴν ἔσωθεν καὶ ἔξωθεν τῇ ἀσφάλτῳ. Καὶ οὕτω ποιήσεις τὴν κιβωτόν· τριακοσίων πήχεων τὸ μῆκος τῆς κιβωτοῦ, καὶ πεντήκοντα πήχεων τὸ πλάτος, καὶ τριάκοντα πήχεων τὸ ὕψος αὐτῆς. Ἐπισυνάγων ποιήσεις τὴν κιβωτὸν, καὶ εἰς πῆχυν

συντελέσεις αὐτὴν ἄνωθεν· τὴν δὲ θύραν τῆς κιβωτοῦ ποιήσεις ἐκ πλαγίων· κατάγαια διώροφα καὶ τριώροφα ποιήσεις αὐτήν. Ἐγὼ δὲ ἰδοὺ ἐπάγω τὸν κατακλυσμὸν, ὕδωρ ἐπὶ τὴν γῆν, καταφθεῖραι πᾶσαν σάρκα, ἐν ᾗ ἐστι πνεῦμα ζωῆς ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ὅσα ἂν ᾖ ἐπὶ τῆς γῆς, τελευτήσει. Καὶ στήσω τὴν διαθήκην μου μετά σου· εἰσελεύσῃ δὲ εἰς τὴν κιβωτὸν σὺ, καὶ οἱ υἱοί σου, καὶ ἡ γυνή σου, καὶ αἱ γυναῖκες τῶν υἱῶν σου μετά σου. Καὶ ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν ἑρπετῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν θηρίων, καὶ ἀπὸ πάσης σαρκὸς δύο δύο ἀπὸ πάντων εἰσάξεις εἰς τὴν κιβωτὸν, ἵνα τρέφῃς μετὰ σεαυτοῦ· ἄρσεν καὶ θῆλυ ἔσονται. Ἀπὸ πάντων τῶν ὀρνέων τῶν πετεινῶν κατὰ γένος, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν κατὰ γένος, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν ἑρπετῶν τῶν ἑρπόντων ἐπὶ τῆς γῆς κατὰ γένος αὐτῶν, δύο δύο ἀπὸ πάντων εἰσελεύσονται πρὸς σὲ τρέφεσθαι μετά σου, ἄρσεν καὶ θῆλυ. Σὺ δὲ λήψῃ σεαυτῷ ἀπὸ πάντων τῶν βρωμάτων ἃ ἔδεσθε, καὶ συνάξεις πρὸς σεαυτὸν, καὶ ἔσται σοι καὶ ἐκείνοις φαγεῖν. Καὶ ἐποίησε Νῶε πάντα ὅσα ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος ὁ Θεὸς, οὕτως ἐποίησε.

# 7

Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς πρὸς Νῶε, εἴσελθε σὺ καὶ πᾶς ὁ οἶκός σου εἰς τὴν κιβωτὸν, ὅτι σὲ εἶδον δίκαιον ἐναντίον μου ἐν τῇ γενεᾷ ταύτῃ. Ἀπὸ δὲ τῶν κτηνῶν τῶν καθαρῶν εἰσάγαγε πρὸς σὲ ἑπτὰ ἑπτὰ ἄρσεν καὶ θῆλυ, ἀπὸ δὲ τῶν κτηνῶν τῶν μὴ καθαρῶν δύο δύο ἄρσεν καὶ θῆλυ. Καὶ ἀπὸ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ τῶν καθαρῶν ἑπτὰ ἑπτὰ ἄρσεν καὶ θῆλυ, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν πετεινῶν τῶν μὴ καθαρῶν δύο δύο ἄρσεν καὶ θῆλυ, διαθρέψαι

σπέρμα ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Ἔτι γὰρ ἡμερῶν ἑπτὰ ἐγὼ ἐπάγω ὑετὸν ἐπὶ τὴν γῆν, τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας· καὶ ἐξαλείψω πᾶν τὸ ἀνάστημα, ὃ ἐποίησα ἀπὸ προσώπου πάσης τῆς γῆς. Καὶ ἐποίησε Νῶε πάντα, ὅσα ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος ὁ Θεός. Νῶε δὲ ἦν ἐτῶν ἑξακοσίων, καὶ ὁ κατακλυσμὸς τοῦ ὕδατος ἐγένετο ἐπὶ τῆς γῆς. Εἰσῆλθε δὲ Νῶε καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ αἱ γυναῖκες τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ εἰς τὴν κιβωτὸν, διὰ τὸ ὕδωρ τοῦ κατακλυσμοῦ. Καὶ ἀπὸ τῶν πετεινῶν τῶν καθαρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν πετεινῶν τῶν μὴ καθαρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν κτηνῶν τῶν καθαρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν κτηνῶν τῶν μὴ καθαρῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν ἑρπόντων ἐπὶ τῆς γῆς, δύο δύο εἰσῆλθον πρὸς Νῶε εἰς τὴν κιβωτὸν ἄρσεν καὶ θῆλυ, καθὰ ἐνετείλατο ὁ Θεὸς τῷ Νῶε. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰς ἑπτὰ ἡμέρας, καὶ τὸ ὕδωρ τοῦ κατακλυσμοῦ ἐγένετο ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐν τῷ ἑξακοσιοστῷ ἔτει ἐν τῇ ζωῇ τοῦ Νῶε, τοῦ δευτέρου μηνὸς, ἑβδόμῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἐῤῥάγησαν πᾶσαι αἱ πηγαὶ τῆς ἀβύσσου, καὶ οἱ καταῤῥάκται τοῦ οὐρανοῦ ἠνεῴχθησαν. Καὶ ἐγένετο ὁ ὑετὸς ἐπὶ τῆς γῆς τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ εἰσῆλθε Νῶε, Σὴμ, Χὰμ, Ἰάφεθ, οἱ υἱοὶ Νῶε, καὶ ἡ γυνὴ Νῶε, καὶ αἱ τρεῖς γυναῖκες τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ, εἰς τὴν κιβωτόν. Καὶ πάντα τὰ θηρία κατὰ γένος, καὶ πάντα τὰ κτήνη κατὰ γένος, καὶ πᾶν ἑρπετὸν κινούμενον ἐπὶ τῆς γῆς κατὰ γένος, καὶ πᾶν ὄρνεον πετεινὸν κατὰ γένος αὐτοῦ, εἰσῆλθον πρὸς Νῶε εἰς τὴν κιβωτὸν, δύο δύο ἄρσεν καὶ θῆλυ ἀπὸ πάσης σαρκὸς, ἐν ᾧ ἐστι πνεῦμα ζωῆς. Καὶ τὰ εἰσπορευόμενα ἄρσεν καὶ θῆλυ ἀπὸ πάσης σαρκὸς εἰσῆλθε, καθὰ ἐνετείλατο ὁ Θεὸς τῷ Νῶε· καὶ ἔκλεισε Κύριος ὁ Θεὸς τὴν κιβωτὸν ἔξωθεν αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ὁ κατακλυσμὸς τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας ἐπὶ

τῆς γῆς· καὶ ἐπεπληθύνθη τὸ ὕδωρ· καὶ ἐπῆρε τὴν κιβωτὸν, καὶ ὑψώθη ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἐπεκράτει τὸ ὕδωρ, καὶ ἐπληθύνετο σφόδρα ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἐπεφέρετο ἡ κιβωτὸς ἐπάνω τοῦ ὕδατος. Τὸ δὲ ὕδωρ ἐπεκράτει σφόδρα σφόδρα ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἐκάλυψε πάντα τὰ ὄρη τὰ ὑψηλὰ, ἃ ἦν ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ. Πεντεκαίδεκα πήχεις ὑπεράνω ὑψώθη τὸ ὕδωρ· καὶ ἐπεκάλυψε πάντα τὰ ὄρη τὰ ὑψηλά. Καὶ ἀπέθανε πᾶσα σὰρξ κινουμένη ἐπὶ τῆς γῆς τῶν πετεινῶν, καὶ τῶν κτηνῶν, καὶ τῶν θηρίων· καὶ πᾶν ἑρπετὸν κινούμενον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πᾶς ἄνθρωπος. Καὶ πάντα ὅσα ἔχει πνοὴν ζωῆς, καὶ πᾶν ὃ ἦν ἐπὶ τῆς ξηρᾶς, ἀπέθανε. Καὶ ἐξήλειψε πᾶν τὸ ἀνάστημα, ὃ ἦν ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς, ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, καὶ ἑρπετῶν, καὶ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐξηλείφησαν ἀπὸ τῆς γῆς· καὶ κατελείφθη μόνος Νῶε, καὶ οἱ μετ αὐτοῦ ἐν τῇ κιβωτῷ. Καὶ ὑψώθη τὸ ὕδωρ ἐπὶ τῆς γῆς ἡμέρας ἑκατὸν πεντήκοντα.

# 8

Καὶ ἀνεμνήσθη ὁ Θεὸς τοῦ Νῶε, καὶ πάντων τῶν θηρίων, καὶ πάντων τῶν κτηνῶν, καὶ πάντων τῶν πετεινῶν, καὶ πάντων τῶν ἑρπετῶν τῶν ἑρπόντων, ὅσα ἦν μετ αὐτοῦ ἐν τῇ κιβωτῷ· καὶ ἐπήγαγεν ὁ Θεὸς πνεῦμα ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐκόπασε τὸ ὕδωρ. Καὶ ἐπεκαλύφθησαν αἱ πηγαὶ τῆς ἀβύσσου, καὶ οἱ καταῤῥάκται τοῦ οὐρανοῦ, καὶ συνεσχέθη ὁ ὑετὸς ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ ἐνεδίδου τὸ ὕδωρ πορευόμενον ἀπὸ τῆς γῆς· καὶ ἠλαττονοῦτο τὸ ὕδωρ μετὰ πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν ἡμέρας. Καὶ ἐκάθισεν ἡ κιβωτὸς ἐν μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, ἑβδόμῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἐπὶ τὰ ὄρη τὰ Ἀραράτ. Τὸ δὲ

ὕδωρ ἠλαττονοῦτο ἕως τοῦ δεκάτου μηνός. Καὶ ἐν τῷ δεκάτῳ μηνὶ, τῇ πρώτῃ τοῦ μηνὸς, ὤφθησαν αἱ κεφαλαὶ τῶν ὀρέων. Καὶ ἐγένετο μετὰ τεσσαράκοντα ἡμέρας ἠνέῳξε Νῶε τὴν θυρίδα τῆς κιβωτοῦ, ἣν ἐποίησε. Καὶ ἀπέστειλε τὸν κόρακα· καὶ ἐξελθὼν, οὐκ ἀνέστρεψεν ἕως τοῦ ξηρανθῆναι τὸ ὕδωρ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἀπέστειλε τὴν περιστερὰν ὀπίσω αὐτοῦ, ἰδεῖν εἰ κεκόπακε τὸ ὕδωρ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ οὐχ εὑροῦσα ἡ περιστερὰ ἀνάπαυσιν τοῖς ποσὶν αὐτῆς, ἀνέστρεψε πρὸς αὐτὸν εἰς τὴν κιβωτὸν, ὅτι ὕδωρ ἦν ἐπὶ πᾶν τὸ πρόσωπον τῆς γῆς· καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ εἰσήγαγεν αὐτὴν πρὸς ἑαυτὸν εἰς τὴν κιβωτόν. Καὶ ἐπισχὼν ἔτι ἡμέρας ἑπτὰ ἑτέρας, πάλιν ἐξαπέστειλε τὴν περιστερὰν ἐκ τῆς κιβωτοῦ. Καὶ ἀνέστρεψε πρὸς αὐτὸν ἡ περιστερὰ τὸ πρὸς ἑσπέραν· καὶ εἶχε φύλλον ἐλαίας κάρφος ἐν τῷ στόματι αὐτῆς· καὶ ἔγνω Νῶε, ὅτι κεκόπακε τὸ ὕδωρ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἐπισχὼν ἔτι ἡμέρας ἑπτὰ ἑτέρας, πάλιν ἐξαπέστειλε τὴν περιστερὰν, καὶ οὐ προσέθετο τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς αὐτὸν ἔτι. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑνὶ καὶ ἑξακοσιοστῷ ἔτει ἐν τῇ ζωῇ τοῦ Νῶε, τοῦ πρώτου μηνὸς, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐξέλιπε τὸ ὕδωρ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἀπεκάλυψε Νῶε τὴν στέγην τῆς κιβωτοῦ, ἣν ἐποίησε· καὶ εἶδεν ὅτι ἐξέλιπε τὸ ὕδωρ ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς. Ἐν δὲ τῷ δευτέρῳ μηνὶ ἐξηράνθη ἡ γῆ, ἑβδόμῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνός. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς πρὸς Νῶε, λέγων, Ἔξελθε ἐκ τῆς κιβωτοῦ σὺ, καὶ ἡ γυνή σου, καὶ οἱ υἱοί σου, καὶ αἱ γυναῖκες τῶν υἱῶν σου μετὰ σοῦ, Καὶ πάντα τὰ θηρία ὅσα ἐστὶ μετὰ σοῦ, καὶ πᾶσα σὰρξ ἀπὸ πετεινῶν ἕως κτηνῶν, καὶ πᾶν ἑρπετὸν κινούμενον ἐπὶ τῆς γῆς, ἐξάγαγε μετὰ σεαυτοῦ. καὶ αὐξάνεσθε καὶ πληθύνεσθε ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐξῆλθε Νῶε, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ γυναῖκες τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ· Καὶ πάντα τὰ θηρία, καὶ πάντα τὰ κτήνη, καὶ πᾶν πετεινὸν,

καὶ πᾶν ἑρπετὸν κινούμενον ἐπὶ τῆς γῆς κατὰ γένος αὐτῶν, ἐξήλθοσαν ἐκ τῆς κιβωτοῦ. Καὶ ᾠκοδόμησε Νῶε θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ· καὶ ἔλαβεν ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν τῶν καθαρῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν πετεινῶν τῶν καθαρῶν, καὶ ἀνήνεγκεν εἰς ὁλοκάρπωσιν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον. Καὶ ὠσφράνθη Κύριος ὁ Θεὸς ὀσμὴν εὐωδίας. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς διανοηθείς, οὐ προσθήσω ἔτι καταράσασθαι τὴν γῆν διὰ τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων· ὅτι ἔγκειται ἡ διάνοια τοῦ ἀνθρώπου ἐπιμελῶς ἐπὶ τὰ πονηρὰ ἐκ νεότητος αὐτοῦ· οὐ προσθήσω οὖν ἔτι πατάξαι πᾶσαν σάρκα ζῶσαν, καθὼς ἐποίησα. Πάσας τὰς ἡμέρας τῆς γῆς, σπέρμα καὶ θερισμὸς, ψύχος καὶ καῦμα, θέρος καὶ ἔαρ, ἡμέραν καὶ νύκτα, οὐ καταπαύσουσι.

# 9

Καὶ εὐλόγησεν ὁ Θεὸς τὸν Νῶε, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ· καὶ εἶπεν αὐτοῖς· αὐξάνεσθε καὶ πληθύνεσθε, καὶ πληρώσατε τὴν γῆν, καὶ κατακυριεύσατε αὐτῆς. Καὶ ὁ τρόμος, καὶ ὁ φόβος ὑμῶν, ἔσται ἐπὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τῆς γῆς, ἐπὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ κινούμενα ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης· ὑπὸ χεῖρας ὑμῖν δέδωκα. Καὶ πᾶν ἑρπετὸν, ὅ ἐστι ζῶν, ὑμῖν ἔσται εἰς βρῶσιν· ὡς λάχανα χόρτου δέδωκα ὑμῖν τὰ πάντα. Πλὴν κρέας ἐν αἵματι ψυχῆς οὐ φάγεσθε. Καὶ γὰρ τὸ ὑμέτερον αἷμα τῶν ψυχῶν ὑμῶν ἐκ χειρὸς πάντων τῶν θηρίων ἐκζητήσω αὐτό· καὶ ἐκ χειρὸς ἀνθρώπου ἀδελφοῦ ἐκζητήσω τὴν ψυχὴν τοῦ ἀνθρώπου. Ὁ ἐκχέων αἷμα ἀνθρώπου, ἀντὶ τοῦ αἵματος αὐτοῦ ἐκχυθήσεται, ὅτι ἐν εἰκόνι Θεοῦ ἐποίησα τὸν ἄνθρωπον.

Ὑμεῖς δὲ αὐξάνεσθε, καὶ πληθύνεσθε, καὶ πληρώσατε τὴν γῆν, καὶ κατακυριεύσατε αὐτῆς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς τῷ Νῶε καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, μετ αὐτοῦ λέγων, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἀνίστημι τὴν διαθήκην μου ὑμῖν, καὶ τῷ σπέρματι ὑμῶν μεθ ὑμᾶς, καὶ πάσῃ ψυχῇ ζώσῃ μεθ ὑμῶν, ἀπὸ ὀρνέων, καὶ ἀπὸ κτηνῶν· καὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τῆς γῆς, ὅσα ἐστὶ μεθ ὑμῶν ἀπὸ πάντων τῶν ἐξελθόντων ἐκ τῆς κιβωτοῦ. Καὶ στήσω τὴν διαθήκην μου πρὸς ὑμᾶς· καὶ οὐκ ἀποθανεῖται πᾶσα σὰρξ ἔτι ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ κατακλυσμοῦ· καὶ οὐκ ἔτι ἔσται κατακλυσμὸς ὕδατος, καταφθεῖραι πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς πρὸς Νῶε· τοῦτο τὸ σημεῖον τῆς διαθήκης, ὃ ἐγὼ δίδωμι ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ ὑμῶν, καὶ ἀνὰ μέσον πάσης ψυχῆς ζώσης, ἥ ἐστι μεθ ὑμῶν εἰς γενεὰς αἰωνίους. Τὸ τόξον μου τίθημι ἐν τῇ νεφέλῃ, καὶ ἔσται εἰς σημεῖον διαθήκης ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ἐν τῷ συννεφεῖν με νεφέλας ἐπὶ τὴν γῆν, ὀφθήσεται τὸ τόξον ἐν τῇ νεφέλῃ. Καὶ μνησθήσομαι τῆς διαθήκης μου, ἥ ἐστιν ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ ὑμῶν, καὶ ἀνὰ μέσον πάσης ψυχῆς ζώσης ἐν πάσῃ σαρκί· καὶ οὐκ ἔσται ἔτι τὸ ὕδωρ εἰς κατακλυσμὸν, ὥστε ἐξαλεῖψαι πᾶσαν σάρκα. Καὶ ἔσται τὸ τόξον μου ἐν τῇ νεφέλῃ· καὶ ὄψομαι τοῦ μνησθῆναι διαθήκην αἰώνιον ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ τῆς γῆς, καὶ ἀνὰ μέσον ψυχῆς ζώσης ἐν πάσῃ σαρκὶ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς τῷ Νῶε, τοῦτο τὸ σημεῖον τῆς διαθήκης, ἧς διεθέμην ἀνὰ μέσον ἐμοῦ, καὶ ἀνὰ μέσον πάσης σαρκὸς, ἥ ἐστιν ἐπὶ τῆς γῆς. Ἦσαν δὲ οἱ υἱοὶ Νῶε, οἱ ἐξελθόντες ἐκ τῆς κιβωτοῦ, Σὴμ, Χὰμ, Ἰάφεθ. Χὰμ δὲ ἦν πατὴρ Χαναάν. Τρεῖς οὗτοί εἰσιν υἱοὶ Νῶε· ἀπὸ τούτων διεσπάρησαν ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ ἤρξατο Νῶε ἄνθρωπος γεωργὸς γῆς, καὶ ἐφύτευσεν ἀμπελῶνα. Καὶ ἔπιεν ἐκ τοῦ οἴνου, καὶ ἐμεθύσθη, καὶ ἐγυμνώθη ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Καὶ εἶδε Χὰμ ὁ πατὴρ Χαναὰν τὴν γύμνωσιν τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ

ἐξελθὼν ἀνήγγειλε τοῖς δυσὶν ἀδελφοῖς αὐτοῦ ἔξω. Καὶ λαβόντες Σὴμ καὶ Ἰάφεθ τὸ ἱμάτιον, ἐπέθεντο ἐπὶ τὰ δύο νῶτα αὐτῶν, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπισθοφανῶς, καὶ συνεκάλυψαν τὴν γύμνωσιν τοῦ πατρὸς αὐτῶν· καὶ τὸ πρόσωπον αὐτῶν ὀπισθοφανῶς, καὶ τὴν γύμνωσιν τοῦ πατρὸς αὐτῶν οὐκ εἶδον. Ἐξένηψε δὲ Νῶε ἀπὸ τοῦ οἴνου, καὶ ἔγνω ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ὁ νεώτερος. Καὶ εἶπεν, ἐπικατάρατος Χαναὰν παῖς· οἰκέτης ἔσται τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ Σήμ· καὶ ἔσται Χαναὰν παῖς οἰκέτης αὐτοῦ. Πλατύναι ὁ Θεὸς τῷ Ἰάφεθ, καὶ κατοικησάτω ἐν τοῖς οἴκοις τοῦ Σήμ· καὶ γενηθήτω Χαναὰν παῖς αὐτοῦ. Ἔζησε δὲ Νῶε μετὰ τὸν κατακλυσμὸν ἔτη τριακόσια πεντήκοντα. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Νῶε ἐννακόσια πεντήκοντα ἔτη· καὶ ἀπέθανεν.

# 10

Αὗται δὲ αἱ γενέσεις τῶν υἱῶν Νῶε, Σὴμ, Χὰμ, Ἰάφεθ· καὶ ἐγεννήθησαν αὐτοῖς υἱοὶ μετὰ τὸν κατακλυσμόν. Υἱοὶ Ἰάφεθ, Γαμὲρ, καὶ Μαγὼγ, καὶ Μαδοὶ, καὶ Ἰωύαν, καὶ Ἐλισὰ, καὶ Θοβὲλ, καὶ Μοσὸχ, καὶ Θείρας. Καὶ υἱοὶ Γαμὲρ, Ἀσχανὰζ, καὶ Ῥιφὰθ, καὶ Θοργαμά. Καὶ υἱοὶ Ἰωύαν, Ἐλισὰ, καὶ Θάρσεις, Κήτιοι, Ῥόδιοι. Ἐκ τούτων ἀφωρίσθησαν νῆσοι τῶν ἐθνῶν ἐν τῇ γῇ αὐτῶν· ἕκαστος κατὰ γλῶσσαν ἐν ταῖς φυλαῖς αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσιν αὐτῶν. Υἱοὶ δὲ Χὰμ, Χοὺς, καὶ Μεσραΐν, Φοὺδ, καὶ Χαναάν. Υἱοὶ δὲ Χοὺς, Σαβὰ, καὶ Εὐϊλὰ, καὶ Σαβαθὰ, καὶ Ῥεγμὰ, καὶ Σαβαθακά· υἱοὶ δὲ Ῥεγμὰ, Σαβὰ, καὶ Δαδάν. Χοὺς δὲ ἐγέννησε τὸν Νεβρώδ· οὗτος ἤρξατο εἶναι γίγας ἐπὶ τῆς γῆς. Οὗτος ἦν γίγας κυνηγὸς ἐναντίον

Κυρίου τοῦ Θεοῦ· διὰ τοῦτο ἐροῦσιν, ὡς Νεβρὼδ γίγας κυνηγὸς ἐναντίον Κυρίου. Καὶ ἐγένετο ἀρχὴ τῆς βασιλείας αὐτοῦ Βαβυλὼν, καὶ Ὀρὲχ, καὶ Ἀρχὰδ, καὶ Χαλάννη, ἐν τῇ γῇ Σεναάρ. Ἐκ τῆς γῆς ἐκείνης ἐξῆλθεν Ἀσσούρ· καὶ ᾠκοδόμησε τὴν Νινευΐ, καὶ τὴν Ῥοωβὼθ πόλιν, καὶ τὴν Χαλὰχ, καὶ τὴν Δασὴ ἀνὰ μέσον Νινευΐ, καὶ ἀνὰ μέσον Χαλάχ· αὕτη ἡ πόλις μεγάλη. Καὶ Μεσραΐν ἐγέννησε τοὺς Λουδιεὶμ, καὶ τοὺς Νεφθαλεὶμ, καὶ τοὺς Ἐνεμετιεὶμ, καὶ τοὺς Λαβιεὶμ, καὶ τοὺς Πατροσωνιεὶμ, καὶ τοὺς Χασμωνιεὶμ, ὅθεν ἐξῆλθε Φυλιστιεὶμ, καὶ τοὺς Γαφθοριείμ. Χαναὰν δὲ ἐγέννησε τὸν Σιδῶνα πρωτότοκον αὐτοῦ, καὶ τὸν Χετταῖον, καὶ τὸν Ἰεβουσαῖον, καὶ τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ τὸν Γεργεσαῖον, καὶ τὸν Εὐαῖον, καὶ τὸν Ἀρουκαῖον, καὶ τὸν Ἀσενναῖον, καὶ τον Ἀράδιον, καὶ τὸν Σαμαραῖον, καὶ τὸν Ἀμαθί. Καὶ μετὰ τοῦτο διεσπάρησαν αἱ φυλαὶ τῶν Χαναναίων. Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια τῶν Χαναναίων ἀπὸ Σιδῶνος ἕως ἐλθεῖν εἰς Γεραρὰ καὶ Γαζὰν, ἕως ἐλθεῖν ἕως Σοδόμων καὶ Γομόῤῥας, Ἀδαμὰ καὶ Σεβωΐμ ἕως Δασά. Οὗτοι υἱοὶ Χὰμ, ἐν ταῖς φυλαῖς αὐτῶν, κατὰ γλώσσας αὐτῶν, ἐν ταῖς χώραις αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσιν αὐτῶν. Καὶ τῷ Σὴμ ἐγεννήθη καὶ αὐτῷ πατρὶ πάντων τῶν υἱῶν Ἔβερ, ἀδελφῷ Ἰάφεθ τοῦ μείζονος. Υἱοὶ Σὴμ, Ἐλὰμ, καὶ Ἀσσοὺρ, καὶ Ἀρφαξὰδ, καὶ Λοὺδ, καὶ Ἀρὰμ, καὶ Καϊνᾶν. Καὶ υἱοὶ Ἀρὰμ, Οὖζ, καὶ Οὖλ, καὶ Γατὲρ, καὶ Μοσόχ. Καὶ Ἀρφαξὰδ ἐγέννησε τὸν Καϊνᾶν, καὶ Καϊνᾶν ἐγέννησε τὸν Σαλά· Σαλὰ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἔβερ. Καὶ τῷ Ἔβερ ἐγεννήθησαν δύο υἱοί· ὄνομα τῷ ἑνὶ, Φαλὲγ, ὅτι ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ διεμερίσθη ἡ γῆ· καὶ ὄνομα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ Ἰεκτάν. Ἰεκτὰν δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλμωδὰδ, καὶ Σαλὲθ, καὶ τὸν Σαρμὼθ, καὶ Ἰαρὰχ, καὶ Ὁδορῥὰ, καὶ Αἰβὴλ, καὶ Δεκλὰ, καὶ Εὐὰλ, καὶ Ἀβιμαὲλ, καὶ Σαβὰ, καὶ Οὐφεὶρ, καὶ Εὐεϊλὰ, καὶ Ἰωβάβ· πάντες οὗτοι υἱοὶ Ἰεκτάν. Καὶ ἐγένετο ἡ κατοίκησις αὐτῶν, ἀπὸ Μασσῆ

ἕως ἐλθεῖν εἰς Σαφηρὰ ὄρος ἀνατολῶν. Οὗτοι υἱοὶ Σὴμ, ἐν ταῖς φυλαῖς αὐτῶν, κατὰ γλώσσας αὐτῶν, ἐν ταῖς χώραις αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσιν αὐτῶν. Αὗται αἱ φυλαὶ υἱῶν Νῶε κατὰ γενέσεις αὐτῶν, κατὰ ἔθνη αὐτῶν· ἀπὸ τούτων διεσπάρησαν νῆσοι τῶν ἐθνῶν ἐπὶ τῆς γῆς μετὰ τὸν κατακλυσμόν.

# 11

Καὶ ἦν πᾶσα ἡ γῆ χεῖλος ἓν, καὶ φωνὴ μία πᾶσι. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κινῆσαι αὐτοὺς ἀπὸ ἀνατολῶν, εὗρον πεδίον ἐν γῇ Σεναὰρ, καὶ κατῴκησαν ἐκεῖ. Καὶ εἶπεν ἄνθρωπος τῷ πλησίον αὐτοῦ, δεῦτε πλινθεύσωμεν πλίνθους, καὶ ὀπτήσωμεν αὐτὰς πυρί· καὶ ἐγένετο αὐτοῖς ἡ πλίνθος εἰς λίθον, καὶ ἄσφαλτος ἦν αὐτοῖς ὁ πηλός. Καὶ εἶπαν, δεῦτε οἰκοδομήσωμεν ἑαυτοῖς πόλιν καὶ πύργον, οὗ ἔσται ἡ κεφαλὴ ἕως τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ποιήσωμεν ἑαυτοῖς ὄνομα, πρὸ τοῦ διασπαρῆναι ἡμᾶς ἐπὶ προσώπου πάσης τῆς γῆς. Καὶ κατέβη Κύριος ἰδεῖν τὴν πόλιν καὶ τὸν πύργον, ὃν ᾠκοδόμησαν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων. Καὶ εἶπε Κύριος, ἰδοὺ γένος ἓν, καὶ χεῖλος ἓν πάντων, καὶ τοῦτο ἤρξαντο ποιῆσαι, καὶ νῦν οὐκ ἐκλείψει ἀπ αὐτῶν πάντα ὅσα ἂν ἐπιθῶνται ποιεῖν. Δεῦτε, καὶ καταβάντες συγχέωμεν αὐτῶν ἐκεῖ τὴν γλῶσσαν, ἵνα μὴ ἀκούσωσιν ἕκαστος τὴν φωνὴν τοῦ πλησίον. Καὶ διέσπειρεν αὐτοὺς Κύριος ἐκεῖθεν ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς· καὶ ἐπαύσαντο οἰκοδομοῦντες τῆν πόλιν καὶ τὸν πύργον. Διὰ τοῦτο ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτῆς, Σύγχυσις, ὅτι ἐκεῖ συνέχεε Κύριος τὰ χείλη πάσης τῆς γῆς, καὶ ἐκεῖθεν διέσπειρεν αὐτοὺς Κύριος ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς. Καὶ αὗται αἱ γενέσεις Σήμ· καὶ ἦν Σὴμ υἱὸς ἑκατὸν ἐτῶν, ὅτε ἐγέννησε τὸν Ἀρφαξὰδ,

δευτέρου ἔτους μετὰ τὸν κατακλυσμόν. Καὶ ἔζησε Σὴμ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ἀρφαξὰδ, ἔτη πεντακόσια, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Ἀρφαξὰδ ἑκατὸν τριακονταπέντε ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Καϊνᾶν. Καὶ ἔζησεν Ἀρφαξὰδ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Καϊνᾶν, ἔτη τετρακόσια, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Καϊνᾶν ἑκατὸν καὶ τριάκοντα ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Σαλά· καὶ ἔξησε Καϊνᾶν, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Σαλὰ, ἔτη τριακόσια τριάκοντα, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Σαλὰ ἑκατὸν τριάκοντα ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Ἔβερ. Καὶ ἔζησε Σαλὰ μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ἔβερ, τριακόσια τριάκοντα ἔτη, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας· καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησεν Ἔβερ ἑκατὸν τριάκοντα τέσσαρα ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Φαλέγ. Καὶ ἔξησεν Ἔβερ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Φαλὲγ, ἔτη διακόσια ἑβδομήκοντα, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Φαλὲγ τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Ῥαγαῦ. Καὶ ἔζησε Φαλὲγ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ῥαγαῦ, ἐννέα καὶ διακόσια ἔτη, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς και θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Ῥαγαὺ ἑκατὸν τριάκοντα καὶ δύο ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Σερούχ. Καὶ ἔζησε Ῥαγαῦ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Σεροὺχ, διακόσια ἑπτὰ ἔτη, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Σεροὺχ ἑκατὸν τριάκοντα ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Ναχώρ. Καὶ ἔζησε Σεροὺχ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Ναχὼρ, ἔτη διακόσια, καὶ ἐγέννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Ναχὼρ ἔτη ἑκατὸν ἑβδομηκονταεννέα, καὶ ἐγέννησε τὸν Θάῤῥα. Καὶ ἔζησε Ναχὼρ, μετὰ τὸ γεννῆσαι αὐτὸν τὸν Θάῤῥα, ἔτη ἑκατὸν εἰκοσιπὲντε, καὶ ἐγεννησεν υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἔζησε Θάῤῥα

ἑβδομήκοντα ἔτη, καὶ ἐγέννησε τὸν Ἄβραμ, καὶ τὸν Ναχὼρ, καὶ τὸν Ἀῤῥάν. Αὗται δὲ αἱ γενέσεις Θάῤῥα· Θάῤῥα ἐγέννησε τὸν Ἄβραμ, καὶ τὸν Ναχὼρ, καὶ τὸν Ἀῤῥάν· καὶ Ἀῤῥὰν ἐγέννησε τὸν Λώτ. Καὶ ἀπέθανεν Ἀῤῥὰν ἐνώπιον Θάῤῥα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐν τῇ γῇ ᾗ ἐγενήθη, ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Χαλδαίων. Καὶ ἔλαβον Ἄβραμ καὶ Ναχὼρ ἑαυτοῖς γυναῖκας· ὄνομα τῇ γυναικὶ Ἄβραμ, Σάρα, καὶ ὄνομα τῇ γυναικὶ Ναχὼρ, Μελχά, θυγάτηρ Ἀῤῥάν· καὶ πατὴρ Μελχὰ, καὶ πατὴρ Ἰεσχά. Καὶ ἦν Σάρα στεῖρα, καὶ οὐκ ἐτεκνοποίει. Καὶ ἔλαβε Θάῤῥα τὸν Ἄβραμ υἱὸν αὐτοῦ, καὶ τὸν Λὼτ υἱὸν Ἀῤῥάν, υἱὸν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, καὶ τὴν Σάραν τὴν νύμφην αὐτοῦ, γυναῖκα Ἄβραμ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐκ τῆς χώρας τῶν Χαλδαίων, πορευθῆναι εἰς γῆν Χαναάν· καὶ ἦλθον ἕως Χαῤῥὰν, καὶ κατῴκησεν ἐκεῖ. Καὶ ἐγένοντο πᾶσαι αἱ ἡμέραι Θάῤῥα ἐν γῇ Χαῤῥὰν, διακόσια πέντε ἔτη· καὶ ἀπέθανε Θάῤῥα ἐν Χαῤῥάν.

# 12

Καὶ εἶπε Κύριος τῷ Ἄβραμ, ἔξελθε ἐκ τῆς γῆς σου, καὶ ἐκ τῆς συγγενείας σου, καὶ ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου, καὶ δεῦρο εἰς τὴν γῆν, ἣν ἄν σοι δείξω. Καὶ ποιήσω σε εἰς ἔθνος μέγα, καὶ εὐλογήσω σε, καὶ μεγαλυνῶ τὸ ὄνομά σου, καὶ ἔσῃ εὐλογημένος. Καὶ εὐλογήσω τοὺς εὐλογοῦντάς σε, καὶ τοὺς καταρωμένους σε καταράσομαι, καὶ ἐνευλογηθήσονται ἐν σοὶ πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐπορεύθη Ἄβραμ, καθάπερ ἐλάλησεν αὐτῷ Κύριος, καὶ ᾤχετο μετ αὐτοῦ Λώτ· Ἄβραμ δὲ ἦν ἐτῶν ἑβδομηκονταπέντε, ὅτε ἐξῆλθεν ἐκ Χαῤῥάν. Καὶ ἔλαβεν Ἄβραμ Σάραν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ τὸν Λὼτ υἱὸν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα

αὐτῶν ὅσα ἐκτήσαντο, καὶ πᾶσαν ψυχὴν ἣν ἐκτήσαντο, ἐκ Χαῤῥάν, καὶ ἐξήλθοσαν πορευθῆναι εἰς γῆν Χανάαν. Καὶ διώδευσεν Ἄβραμ τὴν γῆν εἰς τὸ μῆκος αὐτῆς ἕως τοῦ τόπου Συχέμ, ἐπὶ τὴν δρῦν τὴν ὑψηλήν· οἱ δὲ Χαναναῖοι τότε κατῴκουν τὴν γῆν. Καὶ ὤφθη Κύριος τῷ Ἄβραμ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τῷ σπέρματί σου δώσω τὴν γῆν ταύτην· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ Ἄβραμ θυσιαστήριον Κυρίῳ τῷ ὀφθέντι αὐτῷ. Καὶ ἀπέστη ἐκεῖθεν εἰς τὸ ὄρος κατὰ ἀνατολὰς Βαιθήλ· καὶ ἔστησεν ἐκεῖ τὴν σκηνὴν αὐτοῦ ἐν Βαιθὴλ κατὰ θάλασσαν, καὶ Ἀγγαὶ κατὰ ἀνατολάς· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐπεκαλέσατο ἐπὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου. Καὶ ἀπῆρεν Ἄβραμ, καὶ πορευθεὶς ἐστρατοπέδευσεν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ ἐγένετο λιμὸς ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ κατέβη Ἄβραμ εἰς Αἴγυπτον παροικῆσαι ἐκεῖ, ὅτι ἐνίσχυσεν ὁ λιμὸς ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἤγγισεν Ἄβραμ εἰσελθεῖν εἰς Αἴγυπτον, εἶπεν Ἄβραμ Σάρα τῇ γυναικὶ, γινώσκω ἐγὼ, ὅτι γυνὴ εὐπρόσωπος εἶ. Ἔσται οὖν ὡς ἂν ἴδωσί σε οἱ Αἰγύπτιοι, ἐροῦσιν ὅτι γυνὴ αὐτοῦ ἐστιν αὐτὴ, καὶ ἀποκτενοῦσί με, σὲ δὲ περιποιήσονται. Εἶπον οὖν, ὅτι ἀδελφὴ αὐτοῦ εἰμι, ὅπως ἄν εὖ μοι γένηται διὰ σὲ, καὶ ζήσεται ἡ ψυχή μου ἕνεκέν σου. Ἐγένετο δὲ, ἡνίκα εἰσῆλθεν Ἄβραμ εἰς Αἴγυπτον, ἰδόντες οἱ Αἰγύπτιοι τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, ὅτι καλὴ ἦν σφόδρα. Καὶ ἴδον αὐτὴν οἱ ἄρχοντες Φαραὼ, καὶ ἐπῄνεσαν αὐτὴν πρὸς Φαραὼ, καὶ εἰσήγαγον αὐτὴν εἰς τὸν οἶκον Φαραώ. Καὶ τῷ Ἄβραμ εὖ ἐχρήσαντο δι αὐτήν· καὶ ἐγένοντο αὐτῷ πρόβατα, καὶ μόσχοι, καὶ ὄνοι, καὶ παῖδες, καὶ παιδίσκαι, καὶ ἡμίονοι, καὶ κάμηλοι. Καὶ ἤτασεν ὁ Θεὸς τὸν Φαραὼ ἐτασμοῖς μεγάλοις καὶ πονηροῖς, καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ, περὶ Σάρας τῆς γυναικὸς Ἄβραμ. Καλέσας δὲ Φαραὼ τὸν Ἄβραμ, εἶπεν, τί τοῦτο ἐποίησάς μοι, ὅτι οὐκ ἀπήγγειλάς μοι, ὅτι γυνή σου ἐστίν; Ἵνατί

εἶπας ὅτι ἀδελφή μου ἐστίν; καὶ ἔλαβον αὐτὴν ἐμαυτῷ γυναῖκα· καὶ νῦν ἰδοὺ ἡ γυνή σου ἔναντί σου, λαβὼν ἀπότρεχε. Καὶ ἐνετείλατο Φαραὼ ἀνδράσι περὶ Ἄβραμ συμπροπέμψαι αὐτὸν, καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ πάντα ὅσα ἦν αὐτῷ.

# 13

Ἀνέβη δὲ Ἄβραμ ἐξ Αἰγύπτου αὐτὸς, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, καὶ Λὼτ μετ αὐτοῦ, εἰς τὴν ἔρημον. Ἄβραμ δὲ ἦν πλούσιος σφόδρα κτήνεσι, καὶ ἀργυρίῳ, καὶ χρυσίῳ. Καὶ ἐπορεύθη ὅθεν ἦλθεν εἰς τὴν ἔρημον ἕως Βαιθὴλ, ἕως τοῦ τόπου οὗ ἦν ἡ σκηνὴ αὐτοῦ τὸ πρότερον, ἀνὰ μέσον Βαιθὴλ καὶ ἀνὰ μέσον Ἀγγαί, εἰς τὸν τόπον τοῦ θυσιαστηρίου, οὗ ἐποίησεν ἐκεῖ τὴν ἀρχὴν, καὶ ἐπεκαλέσατο ἐκεῖ Ἄβραμ τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου. Καὶ Λὼτ τῷ συμπορευομένῳ μετὰ Ἄβραμ ἦν πρόβατα, καὶ βόες, καὶ σκηναί. Καὶ οὐκ ἐχώρει αὐτοὺς ἡ γῆ κατοικεῖν ἅμα, ὅτι ἦν τὰ ὑπάρχοντα αὐτῶν πολλά· καὶ οὐκ ἐχώρει αὐτοὺδ ἡ γῆ κατοικεῖν ἅμα. Καὶ ἐγενετο μάχη ἀνὰ μέσον τῶν ποιμένων τῶν κτηνῶν τοῦ Ἄβραμ, καὶ ἀνὰ μέσον τῶν ποιμένων τῶν κτηνῶν τοῦ Λὼτ· οἱ δὲ Χαναναῖοι καὶ οἱ Φερεζαῖοι τότε κατῴκουν τὴν γῆν. Εἶπε δὲ Ἄβραμ τῷ Λὼτ, μὴ ἔστω μάχη ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ, καὶ ἀνὰ μέσον τῶν ποιμένων μου καὶ ἀνὰ μέσον τῶν ποιμένων σοῦ, ὅτι ἄνθρωποι ἀδελφοὶ ἐσμὲν ἡμεῖς. Οὐκ ἰδοὺ πᾶσα ἡ γῆ ἐναντίον σου ἐστί; διαχωρίσθητι ἀπ ἐμοῦ· εἰ σὺ εἰς ἀριστερὰ, ἐγὼ εἰς δεξιά· εἰ δὲ σὺ εἰς δεξιὰ, ἐγὼ εἰς ἀριστερά. Καὶ ἐπάρας Λὼτ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, ἐπεῖδε πᾶσαν τὴν περίχωρον τοῦ Ἰορδάνου, ὅτι πᾶσα ἦν ποτιζομένη, πρὸ τοῦ καταστρέψαι τὸν Θεὸν Σόδομα καὶ Γόμορῥα,

ὡς ὁ παράδεισος τοῦ Θεοῦ, καὶ ὡς ἡ γῆ Αἰγύπτου, ἕως ἐλθεῖν εἰς Ζόγορα. Καὶ ἐξελέξατο ἑαυτῷ Λὼτ πᾶσαν τὴν περίχωρον τοῦ Ἰορδάνου· καὶ ἀπῆρε Λὼτ ἀπὸ ἀνατολῶν· καὶ διεχωρίσθησαν ἕκαστος ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Ἄβραμ δὲ κατῴκησεν ἐν γῇ Χαναάν· Λὼτ δὲ κατῴκησεν ἐν πόλει τῶν περιχώρων, καὶ ἐσκήνωσεν ἐν Σοδόμοις. Οἱ δὲ ἄνθρωποι οἱ ἐν Σοδόμοις πονηροὶ καὶ ἁμαρτωλοὶ ἐναντίον τοῦ Θεοῦ σφόδρα. Ὁ δὲ Θεὸς εἶπε τῷ Ἄβραμ μετὰ τὸ διαχωρισθῆναι τὸν Λὼτ ἀπ αὐτοῦ, ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἴδε ἀπὸ τοῦ τόπου οὗ νῦν σὺ εἶ πρὸς βορρᾶν καὶ λίβα καὶ ἀνατολὰς καὶ θάλασσαν· ὅτι πᾶσαν τὴν γῆν, ἣν σὺ ὁρᾷς, σοὶ δώσω αὐτὴν καὶ τῷ σπέρματί σου ἕως αἰῶνος. Καὶ ποιήσω τὸ σπέρμα σου, ὡς τὴν ἄμμον τῆς γῆς· εἰ δύναταί τις ἐξαριθμῆσαι τὴν ἄμμον τῆς γῆς, καὶ τὸ σπέρμα σου ἐξαριθμηθήσεται. Ἀναστὰς διόδευσον τὴν γῆν εἴς τε τὸ μῆκος αὐτῆς καὶ εἰς τὸ πλάτος· ὅτι σοι δώσω αὐτὴν καὶ τῷ σπέρματί σου εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἀποσκηνώσας Ἄβραμ, ἐλθὼν κατῴκησε παρὰ τὴν δρῦν τὴν Μαμβρῆ, ἣ ἦν ἐν Χεβρὼμ, καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ.

# 14

Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ βασιλείᾳ τῇ Ἀμαρφὰλ βασιλέως Σενναὰρ, καὶ Ἀριὼχ βασιλέως Ἑλλασὰρ, Χοδολλογομὸρ βασιλεὺς Ἐλὰμ, καὶ Θαργὰλ βασιλεὺς ἐθνῶν, ἐποίησαν πόλεμον μετὰ Βαλλὰ βασιλέως Σοδόμων, καὶ μετὰ Βαρσὰ βασιλέως Γομόρρας, καὶ μετὰ Σενναὰρ βασιλέως Ἀδαμὰ, καὶ μετὰ Συμοβὸρ βασιλέως Σεβωεὶμ, καὶ βασιλέως Βαλάκ· αὕτη ἐστὶ Σηγώρ. Πάντες οὗτοι συνεφώνησαν

ἐπὶ τὴν φάραγγα τὴν ἁλυκήν· αὕτη ἡ θάλασσα τῶν ἁλῶν. Δώδεκα ἔτη αὐτοὶ ἐδούλευσαν τῷ Χοδολλογομόρ· τῷ δὲ τρισκαιδεκάτῳ ἔτει ἀπέστησαν. Ἐν δὲ τῷ τεσσαρεσκαιδεκάτῳ ἔτει ἦλθε Χοδολλογομὸρ καὶ οἱ βασιλεῖς μετ αὐτοῦ, καὶ κατέκοψαν τοὺς γίγαντας τοὺς ἐν Ἀσταρὼθ, καὶ Καρναΐν, καὶ ἔθνη ἰσχυρὰ ἅμα αὐτοῖς, καὶ τοὺς Ὀμμαίους τοὺς ἐν Σαυῇ τῇ πόλει. Καὶ τοὺς Χορρ̣αίους τοὺς ἐν τοῖς ὄρεσι Σηειρ, ἕως τῆς τερεβίνθου τῆς Φαρὰν, ἥ ἐστιν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ ἀναστρέψαντες ἦλθον ἐπὶ τὴν πηγὴν τῆς κρίσεως· αὕτη ἐστὶ Κάδης· καὶ κατέκοψαν πάντας τοὺς ἄρχοντας Ἀμαλὴκ, καὶ τοὺς Ἀμορρ̣αίους τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ασασονθαμὰρ Ἐξῆλθε δὲ βασιλεὺς Σοδόμων, καὶ βασιλεὺς Γομόρρ̣ας, καὶ βασιλεὺς Ἀδαμὰ, καὶ βασιλεὺς Σεβωεὶμ, καὶ βασιλεὺς Βαλάκ· αὕτη ἐστὶ Σηγώρ· καὶ παρετάξαντο αὐτοῖς εἰς πόλεμον ἐν τῇ κοιλάδι, τῇ ἁλυκῇ, πρὸς Χοδολλογομὸρ βασιλέα Ἐλὰμ, καὶ Θαπγὰλ βασιλέα ἐθνῶν, καὶ Ἀμαρφὰλ βασιλέα Σενναὰρ, καὶ Ἀριὼχ βασιλέα Ἑλλασὰρ, οἱ τέσσαρες βασιλεῖς πρὸς τοὺς πέντε. Ἡ δὲ κοιλὰς ἡ ἁλυκὴ, φρέατα ἀσφάλτου· ἔφυγε δὲ βασιλεὺς Σοδόμων καὶ βασιλεὺς Γομόρρ̣ας, καὶ ἐνέπεσαν ἐκεῖ· οἱ δὲ καταλειφθέντες εἰς τὴν ὀρεινὴν ἔφυγον. Ἔλαβον δὲ τὴν ἵππον πᾶσαν τὴν Σοδόμων καὶ Γομόρρ̣ας, καὶ πάντα τὰ βρώματα αὐτῶν, καὶ ἀπῆλθον. Ἔλαβον δὲ καὶ τὸν Λὼτ τὸν υἱὸν τοῦ ἀδελφοῦ Ἄβραμ, καὶ τὴν ἀποσκευὴν αὐτοῦ, καὶ ἀπῴχοντο· ἦν γὰρ κατοικῶν ἐν Σοδόμοις. Παραγενόμενος δὲ τῶν ἀνασωθέντων τις ἀπήγγειλεν Ἄβραμ τῷ περάτῃ· αὐτὸς δὲ κατῴκει παρὰ τῇ δρυῒ τῇ Μαμβρῇ Ἀμορρ̣αίου τοῦ ἀδελφοῦ Ἐσχὼλ, καὶ τοῦ ἀδελφοῦ Αὐνὰν, οἳ ἦσαν συνωμόται τοῦ Ἄβραμ. Ἀκούσας δὲ Ἄβραμ ὅτι ᾐχμαλώτευται Λὼτ ὁ ἀδελφοῦς αὐτοῦ, ἠρίθμησε τοὺς ἰδίους οἰκογενεῖς αὐτοῦ τριακοσίους δέκα καὶ ὀκτώ· καὶ κατεδίωξεν ὀπίσω αὐτῶν ἕως Δάν.

Καὶ ἐπέπεσεν ἐπ αὐτοὺς τὴν νύκτα αὐτὸς, καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς, καὶ κατεδίωξεν αὐτοὺς ἕως Χοβὰ, ἥ ἐστιν ἐν ἀριστερᾷ Δαμασκοῦ. Καὶ ἀπέστρεψε πᾶσαν τὴν ἵππον Σοδόμων· καὶ Λὼτ τὸν ἀδελφιδοῦν αὐτοῦ ἀπέστρεψε, καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὸν λαόν. Ἐξῆλθε δὲ βασιλεὺς Σοδόμων εἰς συνάντησιν αὐτῷ, μετὰ τὸ ὑποστρέψαι αὐτὸν ἀπὸ τῆς κοπῆς τοῦ Χοδολλογομὸρ, καὶ τῶν βασιλέων τῶν μετ αὐτοῦ εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ Σαβύ· τοῦτο ἦν τὸ πεδίον τῶν βασιλέων. Καὶ Μελχισεδὲκ βασιλεὺς Σαλὴμ ἐξήνεγκεν ἄρτους καὶ οἶνον· ἦν δὲ ἱερεὺς τοῦ Θεοῦ τοῦ ὑψίστου. Καὶ εὐλόγησε τὸν Ἄβραμ, καὶ εἶπεν, εὐλογημένος Ἄβραμ τῷ Θεῷ τῷ ὑψίστῳ, ὃς ἔκτισε τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Καὶ εὐλογητὸς ὁ Θεὸς ὁ ὕψιστος, ὃς παρέδωκε τοὺς ἐχθρούς σου ὑποχειρίους σοι· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Ἄβραμ δεκάτην ἀπὸ πάντων. Εἶπε δὲ βασιλεὺς Σοδόμων πρὸς Ἄβραμ, δός μοι τοὺς ἄνδρας, τὴν δὲ ἵππον λάβε σεαυτῷ. Εἶπε δὲ Ἄβραμ πρὸς τὸν βασιλέα Σοδόμων, ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν τὸν ὕψιστον, ὃς ἔκτισε τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, εἰ ἀπὸ σπαρτίου ἕως σφυρωτῆρος ὑποδήματος λήψομαι ἀπὸ πάντων τῶν σῶν, ἵνα μὴ εἴπῃς, ὅτι ἐγὼ ἐπλούτισα τὸν Ἄβραμ. Πλὴν ὧν ἔφαγον οἱ νεανίσκοι, καὶ τῆς μερίδος τῶν ἀνδρῶν τῶν συμπορευθέντων μετ ἐμοῦ Ἐσχὼλ, Αὐνᾶν, Μαμβρῆ· οὗτοι λήψονται μερίδα.

# 15

Μετὰ δὲ τὰ ῥήματα ταῦτα ἐγενήθη ῥῆμα Κυρίου πρὸς Ἄβραμ ἐν ὁράματι, λέγων, μὴ φοβοῦ Ἄβραμ· ἐγὼ ὑπερασπίζω σου· ὁ μισθός

σου πολὺς ἔσται σφόδρα. Δέγει δὲ Ἄβραμ, Δέσποτα Κύριε, τί μοι δώσεις; ἐγὼ δὲ ἀπολύομαι ἄτεκνος· ὁ δὲ υἱὸς Μασὲκ τῆς οἰκογενοῦς μου, οὗτος Δαμασκὸς Ἐλιέζερ. Καὶ εἶπεν Ἄβραμ, ἐπειδὴ ἐμοὶ οὐκ ἔδωκας σπέρμα, ὁ δὲ οἰκογενής μου κληρονομήσει με. Καὶ εὐθὺς φωνὴ Κυρίου ἐγένετο πρὸς αὐτὸν, λέγουσα, οὐ κληρονομήσει σε οὗτος· ἀλλ ὃς ἐξελεύσεται ἐκ σοῦ, οὗτος κληρονομήσει σε. Ἐξήγαγε δὲ αὐτὸν ἔξω, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀνάβλεψον δὴ εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἀρίθμησον τοὺς ἀστέρας, εἰ δυνήσῃ ἐξαριθμῆσαι αὐτούς· καὶ εἶπεν, οὕτως ἔσται τὸ σπέρμα σου. Καὶ ἐπίστευσεν Ἄβραμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην. Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν, ἐγὼ ὁ Θεὸς ὁ ἐξαγαγών σε ἐκ χώρας Χαλδαίων, ὥστε δοῦναί σοι τὴν γῆν ταύτην κληρονομῆσαι. Εἶπε δέ, Δέσποτα Κύριε, κατὰ τί γνώσομαι, ὅτι κληρονομήσω αὐτήν; Εἶπε δὲ αὐτῷ, λάβε μοι δάμαλιν τριετίζουσαν, καὶ αἶγα τριετίζουσαν, καὶ κριὸν τριετίζοντα, καὶ τρυγόνα, καὶ περιστεράν. Ἔλαβε δὲ αὐτῷ πάντα ταῦτα, καὶ διεῖλεν αὐτὰ μέσα, καὶ ἔθηκεν αὐτὰ ἀντιπρόσωπα ἀλλήλοις· τὰ δὲ ὄρνεα οὐ διεῖλε. Κατέβη δὲ ὄρνεα ἐπὶ τὰ σώματα, ἐπὶ τὰ διχοτομήματα αὐτῶν· καὶ συνεκάθισεν αὐτοῖς Ἄβραμ. Περὶ δὲ ἡλίου δυσμὰς ἔκστασις ἐπέπεσε τῷ Ἄβραμ, καὶ ἰδοὺ φόβος σκοτεινὸς μέγας ἐπιπίπτει αὐτῷ. Καὶ ἐῤῥέθη πρὸς Ἄβραμ· γινώσκων γνώσῃ ὅτι πάροικον ἔσται τὸ σπέρμα σου ἐν γῇ οὐκ ἰδίᾳ, καὶ δουλώσουσιν αὐτοὺς, καὶ κακώσουσιν αὐτοὺς, καὶ ταπεινώσουσιν αὐτοὺς, τετρακόσια ἔτη. Τὸ δὲ ἔθνος, ᾧ ἐὰν δουλεύσωσι, κρινῶ ἐγώ· μετὰ δὲ ταῦτα, ἐξελεύσονται ὧδε μετὰ ἀποσκευῆς πολλῆς. Σὺ δὲ ἀπελεύσῃ πρὸς τοὺς πατέρας σου ἐν εἰρήνῃ, ταφεὶς ἐν γήρᾳ καλῷ. Τετάρτῃ δὲ γενεᾷ ἀποστραφήσονται ὧδε· οὔπω γὰρ ἀναπεπλήρωνται αἱ ἁμαρτίαι τῶν Ἀμορῥαίων ἕως τοῦ νῦν. Ἐπεὶ δὲ ὁ ἥλιος ἐγένετο

πρὸς δυσμὰς, φλὸξ ἐγένετο· καὶ ἰδοὺ κλίβανος καπνιζόμενος καὶ λαμπάδες πυρός, αἳ διῆλθον ἀνὰ μέσον τῶν διχοτομημάτων τούτων. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ διέθετο Κύριος τῷ Ἄβραμ διαθήκην, λέγων, τῷ σπέρματί σου δώσω τὴν γῆν ταύτην, ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ Αἰγύπτου ἕως τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου Εὐφράτου· Τοὺς Κεναίους, καὶ τοὺς Κενεζαίους, καὶ τοὺς Κεδμωναίους, καὶ τοὺς Χετταίους, καὶ τοὺς Φερεζαίους, καὶ τοὺς Ραφαεὶν, καὶ τοὺς Ἀμορῥαίους, καὶ τοὺς Χαναναίους, καὶ τοὺς Εὐαίους, καὶ τοὺς Γεργεσαίους, καὶ τοὺς Ἰεβουσαίους.

# 16

Σάρα δὲ ἡ γυνὴ Ἄβραμ οὐκ ἔτικτεν αὐτῷ· ἦν δὲ αὐτῇ παιδίσκη Αἰγυπτία, ᾗ ὄνομα Ἄγαρ. Εἶπε δὲ Σάρα πρὸς Ἄβραμ, ἰδοὺ συνέκλεισέ με Κύριος τοῦ μὴ τίκτειν· εἴσελθε οὖν πρὸς τὴν παιδίσκην μου, ἵνα τεκνοποιήσωμαι ἐξ αὐτῆς· ὑπήκουσελ δὲ Ἄβραμ τῆς φωνῆς Σάρας. Καὶ λαβοῦσα Σάρα ἡ γυνὴ Ἄβραμ Ἄγαρ τὴν Αἰγυπτίαν τὴν ἑαυτῆς παιδίσκην, μετὰ δέκα ἔτη τοῦ οἰκῆσαι Ἄβραμ ἐν γῇ Χαναὰν, ἔδωκεν αὐτὴν τῷ Ἄβραμ ἀνδρὶ αὐτῆς αὐτῷ γυναῖκα. Καὶ εἰσῆλθε πρὸς Ἄγαρ, καὶ συνέλαβε· καὶ εἶδεν ὅτι ἐν γαστρὶ ἔχει, καὶ ἠτιμάσθη ἡ κυρία ἐναντίον αὐτῆς. Εἶπε δὲ Σάρα πρὸς Ἄβραμ, ἀδικοῦμαι ἐκ σοῦ· ἐγὼ δέδωκα τὴν παιδίσκην μου εἰς τὸν κόλπον σου, ἰδοῦσα δὲ ὅτι ἐν γαστρὶ ἔχει, ἠτιμάσθην ἐναντίον αὐτῆς. κρίναι ὁ Θεὸς ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σου. Εἶπε δὲ Ἄβραμ πρὸς Σάραν, ἰδοὺ ἡ παιδίσκη σου ἐν ταῖς χερσί σου, χρῶ αὐτῇ ὡς ἄν σοι ἀρεστὸν ᾖ. καὶ ἐκάκωσεν αὐτὴν Σάρα, καὶ ἀπέδρα ἀπὸ προσώπου αὐτῆς. Εὗρε δὲ αὐτὴν ἄγγελος Κυρίου ἐπὶ τῆς πηγῆς τοῦ ὕδατος ἐν

τῇ ἐρήμῳ, ἐπὶ τῆς πηγῆς ἐν τῇ ὁδῷ Σούρ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ ἄγγελος Κυρίου, Ἄγαρ παιδίσκη Σάρας, πόθεν ἔρχῃ; καὶ ποῦ πορεύῃ; καὶ εἶπεν· ἀπὸ προσώπου Σάρας τῆς κυρίας μου ἐγὼ ἀποδιδράσκω. Εἶπε δὲ αὐτῇ ὁ ἄγγελος Κυρίου, ἀποστράφηθι πρὸς τὴν κυρίαν σου, καὶ ταπεινώθητι ὑπὸ τὰς χεῖρας αὐτῆς. Καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ ἄγγελος Κυρίου, πληθύνων πληθυνῶ τὸ σπέρμα σου, καὶ οὐκ ἀριθμηθήσεται ὑπὸ τοῦ πλήθους. Καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ ἄγγελος Κυρίου, ἰδοὺ σὺ ἐν γαστρὶ ἔχεις, καὶ τέξῃ υἱὸν, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰσμαὴλ, ὅτι ἐπήκουσε Κύριος τῇ ταπεινώσει σου. Οὗτος ἔσται ἄγροικος ἄνθρωπος· αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἐπὶ πάντας, καὶ αἱ χεῖρες πάντων ἐπ αὐτόν· καὶ κατὰ πρόσωπον πάντων τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ κατοικήσει. Καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα Κυρίου τοῦ λαλοῦντος πρὸς αὐτὴν, σὺ ὁ Θεὸς ὁ ἐτιδών με· ὅτι εἶπε, καὶ γὰρ ἐνώπιον εἶδον ὀφθέντα μοι. Ἕνεκεν τούτου ἐκάλεσε τὸ φρέαρ, φρέαρ οὗ ἐνώπιον εἶδον· ἰδοὺ ἀνὰ μέσον Κάδης καὶ ἀνὰ μέσον Βαράδ. Καὶ ἔτεκεν Ἄγαρ τῷ Ἄβραμ υἱὸν, καὶ ἐκάλεσεν Ἄβραμ τὸ ὄνομα τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ὃν ἔτεκεν αὐτῷ Ἄγαρ, Ἰσμαήλ. Ἄβραμ δὲ ἦν ἐτῶν ὀγδοηκονταὲξ, ἡνίκα ἔτεκεν Ἄγαρ τῷ Ἄβραμ τὸν Ἰσμαήλ.

# 17

Ἐγένετο δὲ Ἄβραμ ἐτῶν ἐννενηκονταεννέα. Καὶ ὤφθη Κύριος τῷ Ἄβραμ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἐγώ εἰμι ὁ Θεός σου· εὐαρέστει ἐνώπιον ἐμοῦ, καὶ γίνου ἄμεμπτος. Καὶ θήσομαι τὴν διαθήκην μου ἀνὰ μέσον ἐμοῦ, καὶ ἀνὰ μέσον σου, καὶ πληθυνῶ σε σφόδρα. Καὶ ἔπεσεν Ἄβραμ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ. Καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, λέγων, Καὶ ἐγὼ ἰδοὺ ἡ διαθήκη μου μετὰ σοῦ· καὶ ἔσῃ πατὴρ

πλήθους ἐθνῶν. Καὶ οὐ κληθήσεται ἔτι τὸ ὄνομά σου Ἄβραμ, ἀλλ ἔσται τὸ ὄνομά σου Ἀβραὰμ, ὅτι πατέρα πολλῶν ἐθνῶν τέθεικά σε. Καὶ αὐξανῶ σε σφόδρα σφόδρα, καὶ θήσω σε εἰς ἔθνη· καὶ βασιλεῖς ἐκ σοῦ ἐξελεύσονται. Καὶ στήσω τὴν διαθήκην μου ἀνὰ μέσον σου, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σπέρματός σου μετὰ σὲ εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν, εἰς διαθήκην αἰώνιον εἶναί σου Θεὸς, καὶ τοῦ σπέρματός σου μετὰ σέ. Καὶ δώσω σοι καὶ τῷ σπέρματί σου μετὰ σὲ τὴν γῆν, ἣν παροικεῖς, πᾶσαν τὴν γῆν Χαναὰν, εἰς κατάσχεσιν αἰώνιον· καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεόν. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πρὸς Ἀβραὰμ, σὺ δὲ τὴν. διαθήκην μου διατηρήσεις, σὺ καὶ τὸ σπέρμα σου μετὰ σὲ εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν. Καὶ αὕτη ἡ διαθήκη, ἣν διατηρήσεις, ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ ὑμῶν, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σπέρματός σου μετὰ σὲ εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν· περιτμηθήσεται ὑμῶν πᾶν ἀρσενικόν. Καὶ περιτμηθήσεσθε τὴν σάρκα τῆς ἀκροβυστίας ὑμῶν, καὶ ἔσται εἰς σημεῖον διαθήκης ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ ὑμῶν. Καὶ παιδίον ὀκτὼ ἡμερῶν περιτμηθήσεται ὑμῖν, πᾶν ἀρσενικὸν εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν· καὶ οἰκογενὴς καὶ ὁ ἀργυρώνητος ἀπὸ παντὸς υἱοῦ ἀλλοτρίου, ὃς οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ σπέρματός σου, Περιτομῇ περιτμηθήσεται ὁ οἰκογενὴς τῆς οἰκίας σου, καὶ ὁ ἀργυρώνητος· καὶ ἔσται ἡ διαθήκη μου ἐπὶ τῆς σαρκὸς ὑμῶν εἰς διαθήκην αἰώνιον. Καὶ ἀπερίτμητος ἄρσην, ὃς οὐ περιτμηθήσεται τὴν σάρκα τῆς ἀκροβυστίας αὐτοῦ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ τοῦ γένους αὐτῆς, ὅτι τὴν διαθήκην μου διεσκέδασε. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς τῷ Ἀβραὰμ, Σάρα ἡ γυνή σου, οὐ κληθήσεται τὸ ὄνομα αὐτῆς Σάρα, Σάῤῥα ἔσται τὸ ὄνομα αὐτῆς. Εὐλογήσω δὲ αὐτὴν, καὶ δώσω σοι ἐξ αὐτῆς τέκνον, καὶ εὐλογήσω αὐτὸ, καὶ ἔσται εἰς ἔθνη, καὶ βασιλεῖς ἐθνῶν ἐξ αὐτοῦ ἔσονται. Καὶ ἔπεσεν Ἀβραὰμ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ ἐγέλασε· καὶ εἶπεν ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτοῦ,

λέγων, εἰ τῷ ἑκατονταετεῖ γενήσεται υἱός; καὶ εἰ ἡ Σάῤῥα ἐννενήκοντα ἐτῶν τέξεται; Εἶπε δὲ Ἀβραὰμ πρὸς τὸν Θεόν· Ἰσμαὴλ οὗτος ζήτω ἐναντίον σου. Εἶπε δὲ ὁ Θεὸς πρὸς Ἀβραὰμ, ναί· ἰδοὺ Σάῤῥα ἡ γυνή σου τέξεταί σοι υἱὸν, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰσαάκ· καὶ στήσω τὴν διαθήκην μου πρὸς αὐτὸν, εἰς διαθήκην αἰώνιον, εἶναι αὐτῷ Θεὸς καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ μετ αὐτόν. Περὶ δὲ Ἰσμαὴλ ἰδοὺ ἐπήκουσά σου· καὶ ἰδοὺ εὐλόγηκα αὐτὸν, καὶ αὐξανῶ αὐτὸν, καὶ πληθυνῶ αὐτὸν σφόδρα δώδεκα ἔθνη γεννήσει, καὶ δώσω αὐτὸν εἰς ἔθνος μέγα. Τὴν δὲ διαθήκην μου στήσω πρὸς Ἰσαὰκ, ὃν τέξεταί σοι Σάῤῥα εἰς τὸν καιρὸν τοῦτον, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ ἑτέρῳ. Συνετέλεσε δὲ λαλῶν πρὸς αὐτὸν, καὶ ἀνέβη ὁ Θεὸς ἀπὸ Ἀβραάμ. Καὶ ἔλαβεν Ἀβραὰμ Ἰσμαὴλ τὸν υἱὸν ἑαυτοῦ, καὶ πάντας τοὺς οἰκογενεῖς αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἀργυρωνήτους, καὶ πᾶν ἄρσεν τῶν ἀνδρῶν τῶν ἐν τῷ οἴκῳ Ἀβραὰμ, καὶ περιέτεμε τὰς ἀκροβυστίας αὐτῶν, ἐν τῷ καιρῷ τῆς ἡμέρας ἐκείνης, καθὰ ἐλάλησεν αὐτῷ ὁ Θεός. Ἀβραὰμ δὲ ἐννενηκονταεννέα ἦν ἐτῶν, ἡνίκα περιετέμετο τὴν σάρκα τῆς ἀκροβυστίας αὐτοῦ. Ἰσμαὴλ δὲ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἦν ἐτῶν δεκατριῶν, ἡνίκα περιετέμετο τὴν σάρκα τῆς ἀκροβυστίας αὐτοῦ. Ἐν δὲ τῷ καιρῷ τῆς ἡμέρας ἐκείνης, περιετμήθη Ἀβραὰμ, καὶ Ἰσμαὴλ ὁ υἱὸς αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ οἱ οἰκογενεῖς αὐτοῦ, καὶ οἱ ἀργυρώνητοι ἐξ ἀλλογενῶν ἐθνῶν.

# 18

Ὤφθη δὲ αὐτῷ ὁ Θεὸς πρὸς τῇ δρυῒ τῇ Μαμβρῇ, καθημένου αὐτοῦ ἐπὶ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς αὐτοῦ μεσημβρίας. Ἀναβλέψας δὲ τοῖς

ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ εἶδε, καὶ ἰδοὺ τρεῖς ἄνδρες εἱστήκεισαν ἐπάνω αὐτοῦ· καὶ ἰδὼν, προσέδραμεν εἰς συνάντησιν αὐτοῖς ἀπὸ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ εἶπε, Κύριε, εἰ ἄρα εὗρον χάριν ἐναντίον σου, μὴ παρέλθῃς τὸν παῖδά σου. Ληφθήτω δὴ ὕδωρ, καὶ νιψάτωσαν τοὺς πόδας ὑμῶν, καὶ καταψύξατε ὑπὸ τὸ δένδρον. Καὶ λήψομαι ἄρτον, καὶ φάγεσθε. Καὶ μετὰ τοῦτο παρελεύσεσθε εἰς τὴν ὁδὸν ὑμῶν, οὗ ἕνεκεν ἐξεκλίνατε πρὸς τὸν παῖδα ὑμῶν. Καὶ εἶπεν, οὕτω ποίησον, καθὼς εἴρηκας. Καὶ ἔσπευσεν Ἀβραὰμ ἐπὶ τὴν σκηνὴν πρὸς Σάῤῥαν, καὶ εἶπεν αὐτῇ, σπεῦσον, καὶ φύρασον τρία μέτρα σεμιδάλεως, καὶ ποίησον ἐγκρυφίας. Καὶ εἰς τὰς βόας ἔδραμεν Ἀβραὰμ, καὶ ἔλαβεν ἁπαλὸν μοσχάριον καὶ καλὸν, καὶ ἔδωκε τῷ παιδὶ, καὶ ἐτάχυνε τοῦ ποιῆσαι αὐτό. Ἔλαβε δὲ βούτυρον, καὶ γάλα, καὶ τὸ μοσχάριον ὃ ἐποίησε, καὶ παρέθηκεν αὐτοῖς, καὶ ἔφαγον· αὐτὸς δὲ παρειστήκει αὐτοῖς ὑπὸ τὸ δένδρον. Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν, ποῦ Σάῤῥα ἡ γυνή σου; ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν, ἰδοὺ ἐν τῇ σκηνῇ. Εἶπε δὲ, ἐπαναστρέφων ἥξω πρὸς σὲ κατὰ τὸν καιρὸν τοῦτον εἰς ὥρας, καὶ ἕξει υἱὸν Σάῤῥα ἡ γυνή σου. Σάῤῥα δὲ ἤκουσε πρὸς τῇ θύρᾳ τῆς σκηνῆς οὖσα ὄπισθεν αὐτοῦ. Ἀβραὰμ δὲ καὶ Σάῤῥα πρεσβύτεροι προβεβηκότες ἡμερῶν· ἐξέλιπε δὲ τῇ Σάῤῥᾳ γίνεσθαι τὰ γυναικεια. Ἐγέλασε δὲ Σάῤῥα ἐν ἑαυτῇ λέγουσα, οὔπω μέν μοι γέγονεν ἕως τοῦ νῦν· ὁ δὲ κύριός μου πρεσβύτερος. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἀβραὰμ, τί ὅτι ἐγέλασε Σάῤῥα ἐν ἑαυτῇ, λέγουσα, ἆρά γε ἀληθῶς τέξομαι; ἐγὼ δὲ γεγήρακα. Μὴ ἀδυνατήσει παρὰ τῷ Θεῷ ῥῆμα; εἰς τὸν καιρὸν τοῦτον ἀναστρέψω πρὸς σὲ εἰς ὥρας, καὶ ἔσται τῇ Σάῤῥᾳ υἱός. Ἠρνήσατο δὲ Σάῤῥα, λέγουσα, οὐκ ἐγέλασα· ἐφοβήθη γάρ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, οὐχὶ, ἀλλὰ ἐγέλασας. Ἐξαναστάντες δὲ ἐκεῖθεν οἱ ἄνδρες κατέβλεψαν ἐπὶ πρόσωπον Σοδόμων καὶ Γομόῤῥας.

Ἀβραὰμ δὲ συνεπορεύετο μετ αὐτῶν, συμπροπέμπων αὐτούς. Ὁ δὲ Κύριος εἶπε, οὐ μὴ κρύψω ἐγὼ ἀπὸ Ἀβραὰμ τοῦ παιδός μου ἃ ἐγὼ ποιῶ. Ἀβραὰμ δὲ γινόμενος ἔσται εἰς ἔθνος μέγα καὶ πολὺ, καὶ ἐνευλογηθήσονται ἐν αὐτῷ πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς. Ἤδειν γὰρ ὅτι συντάξει τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, καὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ μετ αὐτὸν, καὶ φυλάξουσι τὰς ὁδοὺς Κυρίου, ποιεῖν δικαιοσύνην καὶ κρίσιν, ὅπως ἂν ἐπαγάγῃ Κύριος ἐπὶ Ἀβραὰμ πάντα ὅσα ἐλάλησε πρὸς αὐτόν. Εἶπε δὲ Κύριος, κραυγὴ Σοδόμων καὶ Γομόῤῥας πεπλήθυνται πρὸς μὲ, καὶ αἱ ἁμαρτίαι αὐτῶν μεγάλαι σφόδρα. Καταβὰς οὖν ὄψομαι, εἰ κατὰ τὴν κραυγὴν αὐτῶν τὴν ἐρχομενεην πρὸς μὲ, συντελοῦνται· εἰ δὲ μὴ, ἵνα γνῶ. Καὶ ἀποστρέψαντες ἐκεῖθεν οἱ ἄνδρες, ἦλθον εἰς Σόδομα· Ἀβραὰμ δὲ ἔτι ἦν ἑστηκὼς ἐναντίον Κυρίου. Καὶ ἐγγίσας Ἀβραὰμ, εἶπε, μὴ συναπολέσῃς δίκαιον μετὰ ἀσεβοῦς· καὶ ἔσται ὁ δίκαιος ὡς ὁ ἀσεβής. Ἐὰν ὦσι πεντήκοντα δίκαιοι ἐν τῇ πόλει, ἀπολεῖς αὐτούς; οὐκ ἀνήσεις πάντα τὸν τόπον ἕνεκεν τῶν πεντήκοντα δικαίων, ἐὰν ὦσιν ἐν αὐτῇ; Μηδαμῶς σὺ ποιήσεις ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο, τοῦ ἀποκτεῖναι δίκαιον μετὰ ἀσεβοῦς, καὶ ἔσται ὁ δίκαιος ὡς ὁ ἀσεβής· μηδαμῶς· ὁ κρίνων πᾶσαν τὴν γῆν, οὐ ποιήσεις κρίσιν; Εἶπε δὲ Κύριος, ἐὰν ὦσιν ἐν Σοδόμοις πεντήκοντα δίκαιοι ἐν τῇ πόλει, ἀφήσω ὅλην τὴν πόλιν, καὶ πάντα τὸν τόπον δι αὐτούς. Καὶ ἀποκριθεὶς Ἀβραὰμ εἶπε, νῦν ἠρξάμην λαλῆσαι πρὸς τὸν Κύριόν μου· ἐγὼ δὲ εἰμὶ γῆ καὶ σποδός. Ἐὰν δὲ ἐλαττονωθῶσιν οἱ πεντήκοντα δίκαιοι εἰς τεσσαρακονταπέντε, ἀπολεῖς ἕνεκεν τῶν πέντε πᾶσαν τὴν πόλιν; καὶ εἶπεν, οὐ μὴ ἀπολέσω, ἐὰν εὕρω ἐκεῖ τεσσαρακονταπέντε. Καὶ προσέθηκεν ἔτι λαλῆσαι πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἐὰν δὲ εὑρεθῶσιν ἐκεῖ τεσσαράκοντα· καὶ εἶπεν, οὐ μὴ ἀπολέσω ἕνεκεν τῶν τεσσαράκοντα. Καὶ εἶπε, μή τι Κύριε ἐὰν λαλήσω; ἐὰν δὲ

εὑρεθῶσιν ἐκεῖ τριάκοντα; καὶ εἶπεν, οὐ μὴ ἀπολέσω ἕνεκεν τῶν τριάκοντα. Καὶ εἶπεν, ἐπειδὴ ἔχω λαλῆσαι πρὸς τὸν Κύριον, ἐὰν δὲ εὑρεθῶσιν ἐκεῖ εἴκοσι; καὶ εἶπεν, οὐ μὴ ἀπολέσω, ἐὰν εὕρω ἐκεῖ εἴκοσι. Καὶ εἶπε, μή τι Κύριε ἐὰν λαλήσω ἔτι ἅπαξ; ἐὰν δὲ εὑρεθῶσιν ἐκεῖ δέκα; καὶ εἶπεν, οὐ μὴ ἀπολέσω ἕνεκεν τῶν δέκα. Ἀπῆλθε δὲ ὁ Κύριος, ὡς ἐπαύσατο λαλῶν τῷ Ἀβραάμ· καὶ Ἀβραὰμ ἀπέστρεψεν εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ.

# 19

Ἦλθον δε οἱ δύο ἄγγελοι εἰς Σόδομα ἑσπέρας. Λὼτ δὲ ἐκάθητο παρὰ τὴν πύλην Σοδόμων· ἰδὼν δὲ Λὼτ, ἐξανέστη εἰς συνάντησιν αὐτοῖς, καὶ προσεκύνησε τῷ προσώπῳ ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ εἶπεν, ἰδοὺ, Κύριοι, ἐκκλίνατε εἰς τὸν οἶκον τοῦ παιδὸς ὑμῶν, καὶ καταλύσατε, καὶ νίψασθε τοὺς πόδας ὑμῶν, καὶ ὀρθρίσαντες ἀπελεύσεσθε εἰς τὴν ὁδὸν ὑμῶν. Καὶ εἶπαν, οὐχὶ, ἀλλ ἐν τῇ πλατείᾳ καταλύσομεν. Καὶ κατεβιάσατο αὐτοὺς, καὶ ἐξέκλιναν πρὸς αὐτὸν, καὶ εἰσῆλθον εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ ἐποίησεν αὐτοῖς πότον, καὶ ἀζύμους ἔπεψεν αὐτοῖς, καὶ ἔφαγον. Πρὸ τοῦ κοιμηθῆναι δὲ, οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως, οἱ Σοδομῖται περιεκύκλωσαν τὴν οἰκίαν, ἀπὸ νεανίσκου ἕως πρεσβυτέρου, ἅπας ὁ λαὸς ἅμα. Καὶ ἐξεκαλοῦντο τὸν Λὼτ, καὶ ἔλεγον πρὸς αὐτὸν, ποῦ εἰσιν οἱ ἄνδρες οἱ εἰσελθόντες πρὸς σὲ τὴν νύκτα; ἐξάγαγε αὐτοὺς πρὸς ἡμᾶς, ἵνα συγγενώμεθα αὐτοῖς. Ἐξῆλθε δὲ Λὼτ πρὸς αὐτοὺς πρὸς τὸ πρόθυρον, τὴν δὲ θύραν προσέῳξεν ὀπίσω αὐτοῦ. Εἶπε δὲ πρὸς αὐτοὺς, μηδαμῶς ἀδελφοὶ μὴ πονηρεύσησθε. Εἰσὶ δέ μοι δύο θυγατέρες, αἳ οὐκ ἔγνωσαν ἄνδρα· ἐξάξω αὐτὰς πρὸς ὑμᾶς, καὶ χρᾶσθε αὐταῖς καθὰ ἂν

ἀρέσκοι ὑμῖν· μόνον εἰς τοὺς ἄνδρας τούτους μὴ ποιήσητε ἄδικον, οὗ εἵνεκεν εἰσῆλθον ὑπὸ τὴν σκέπην τῶν δοκῶν μου. Εἶπαν δὲ αὐτῷ, ἀπόστα ἐκεῖ· εἰσῆλθες παροικεῖν, μὴ καὶ κρίσιν κρίνειν; νῦν οὖν σε κακώσωμεν μᾶλλον ἢ ἐκείνους. Καὶ παρεβιάζοντο τὸν ἄνδρα τὸν Λὼτ σφόδρα, καὶ ἤγγισαν συντρίψαι τὴν θύραν. Ἐκτείναντες δὲ οἱ ἄνδρες τὰς χεῖρας εἰσεσπάσαντο τὸν Λὼτ πρὸς ἑαυτοὺς εἰς τὸν οἶκον, καὶ τὴν θύραν τοῦ οἴκου ἀπέκλεισαν. Τοὺς δὲ ἄνδρας τοὺς ὄντας ἐπὶ τῆς θύρας τοῦ οἴκου ἐπάταξαν ἐν ἀορασίᾳ ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου· καὶ παρελύθησαν ζητοῦντες τὴν θύραν. Εἶπαν δὲ οἱ ἄνδρες πρὸς τὸν Λὼτ, εἰσί σοι ὧδε γαμβροὶ, ἢ υἱοὶ, ἢ θυγατέρες; ἢ εἴτις σοι ἄλλος ἐστὶν ἐν τῇ πόλει, ἐξάγαγε ἐκ τοῦ τόπου τούτου, Ὅτι ἡμεῖς ἀπόλλυμεν τὸν τόπον τοῦτον· ὅτι ὑψώθη ἡ κραυγὴ αὐτῶν ἔναντι Κυρίου, καὶ ἀπέστειλεν ἡμᾶς Κύριος ἐκτρίψαι αὐτήν. Ἐξῆλθε δὲ Λῶτ, καὶ ἐλάλησε πρὸς τοὺς γαμβροὺς αὐτοῦ τοὺς εἰληφότας τὰς θυγατέρας αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἀνάστητε, καὶ ἐξέλθετε ἐκ τοῦ τόπου τούτου, ὅτι ἐκτρίβει Κύριος τὴν πόλιν· ἔδοξε δὲ γελοιάζειν ἐναντίον τῶν γαμβρῶν αὐτοῦ. Ἡνίκα δὲ ὄρθρος ἐγένετο, ἐσπούδαζον οἱ ἄγγελοι τὸν Λὼτ, λέγοντες, ἀναστὰς λάβε τὴν γυναῖκά σου, καὶ τὰς δύο θυγατέρας σου, ἃς ἔχεις, καὶ ἔξελθε, ἵνα μὴ καὶ σὺ συναπόλῃ ταῖς ἀνομίαις τῆς πόλεως. Καὶ ἐταράχθησαν, καὶ ἐκράτησαν οἱ ἄγγελοι τῆς χειρὸς αὐτοῦ, καὶ τῆς χειρὸς τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, καὶ τῶν χειρῶν τῶν δύο θυγατέρων αὐτοῦ, ἐν τῷ φείσασθαι Κύριον αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἐξήγαγον αὐτοὺς ἔξω, καὶ εἶπαν, σώζων σῶζε τὴν σεαυτοῦ ψυχήν· μὴ περιβλέψῃ εἰς τὰ ὀπίσω, μηδὲ στῇς ἐν πάσῃ τῇ περιχώρῳ· εἰς τὸ ὄρος σώζου, μή ποτε συμπαραληφθῇς. Εἶπε δὲ Λὼτ πρὸς αὐτοὺς, δέομαι Κύριε, ἐπειδὴ εὗρεν ὁ παῖς σου ἔλεος ἐναντίον σου, καὶ ἐμεγάλυνας τὴν δικαιοσύνην σου, ὃ ποιεῖς ἐπ

ἐμὲ, τοῦ ζῆν τὴν ψυχήν μου· ἐγὼ δὲ οὐ δυνήσομαι διασωθῆναι εἰς τὸ ὄρος, μή ποτε καταλάβῃ με τὰ κακὰ, καὶ ἀποθάνω. Ἰδοὺ πόλις αὕτη ἐγγὺς τοῦ καταφυγεῖν με ἐκεῖ, ἥ ἐστι μικρά· καὶ ἐκεῖ διασωθήσομαι· οὐ μικρά ἐστι; καὶ ζήσεται ἡ ψυχή μου ἕνεκέν σου. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἰδοὺ ἐθαύμασά σου τὸ πρόσωπον καὶ ἐπὶ τῷ ῥήματι τούτῳ, τοῦ μὴ καταστρέψαι τὴν πόλιν περὶ ἧς ἐλάλησας. Σπεῦσον οὖν τοῦ σωθῆναι ἐκεῖ, οὐ γὰρ δυνήσομαι ποιῆσαι πρᾶγμα, ἕως τοῦ ἐλθεῖν σε ἐκεῖ. διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τῆς πόλεως ἐκείνης, Σηγώρ. Ὁ ἥλιος ἐξῆλθεν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ Λὼτ εἰσῆλθεν εἰς Σηγώρ. Καὶ Κύριος ἔβρεξεν ἐπὶ Σόδομα καὶ Γόμορῥα θεῖον καὶ πῦρ παρὰ Κυρίου ἐξ οὐρανοῦ. Καὶ κατέστρεψε τὰς πόλεις ταύτας, καὶ πᾶσαν τὴν περίχωρον, καὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν ταῖς πόλεσι, καὶ τὰ ἀνατέλλοντα ἐκ τῆς γῆς. Καὶ ἐπέβλεψεν ἡ γυνὴ αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ἐγένετο στήλη ἁλός. Ὤρθρισε δὲ Ἀβραὰμ τῷ πρωῒ εἰς τὸν τόπον, οὗ εἱστήκει ἐναντίον Κυρίου. Καὶ ἐπέβλεψεν ἐπὶ πρόσωπον Σοδόμων καὶ Γομόῥρας, καὶ ἐπὶ πρόσωπον τῆς περιχώρου, καὶ εἶδε, καὶ ἰδοὺ ἀνέβαινεν φλὸξ ἐκ τῆς γῆς, ὡσεὶ ἀτμὶς καμίνου. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐκτρίψαι τὸν Θεὸν πάσας τὰς πόλεις τῆς περιοίκου, ἐμνήσθη ὁ Θεὸς τοῦ Ἀβραάμ· καὶ ἐξαπέστειλε τὸν Λὼτ ἐκ μέσου τῆς καταστροφῆς, ἐν τῷ καταστρέψαι Κύριον τὰς πόλεις, ἐν αἷς κατῴκει ἐν αὐταῖς Λώτ. Ἀνέβη δὲ Λὼτ ἐκ Σηγὼρ, καὶ ἐκάθητο ἐν τῷ ὄρει αὐτὸς, καὶ αἱ δύο θυγατέρες αὐτοῦ μετ αὐτοῦ· ἐφοβήθη γὰρ κατοικῆσαι ἐν Σηγώρ· καὶ κατῴκησεν ἐν τῷ σπηλαίῳ αὐτὸς, καὶ αἱ δύο θυγατέρες αὐτοῦ μετ αὐτοῦ. Εἶπε δὲ ἡ πρεσβυτέρα πρὸς τὴν νεωτέραν, ὁ πατὴρ ἡμῶν πρεσβύτερος, καὶ οὐδείς ἐστιν ἐπὶ τῆς γῆς, ὃς εἰσελεύσεται πρὸς ἡμᾶς, ὡς καθήκει πάσῃ τῇ γῇ. Δεῦρο καὶ ποτίσωμεν τὸν πατέρα ἡμῶν οἶνον, καὶ κοιμηθῶμεν μετ αὐτοῦ, καὶ

ἐξαναστήσωμεν ἐκ τοῦ πατρὸς ἡμῶν σπέρμα. Ἐπότισαν δὲ τὸν πατέρα αὐτῶν οἶνον ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ εἰσελθοῦσα ἡ πρεσβυτέρα ἐκοιμήθη μετὰ τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ· καὶ οὐκ ᾔδει ἐν τῷ κοιμηθῆναι αὐτὸν, καὶ ἐν τῷ ἀναστῆναι. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἐπαύριον, καὶ εἶπεν ἡ πρεσβυτέρα πρὸς τὴν νεωτέραν, ἰδοὺ ἐκοιμήθην χθὲς μετὰ τοῦ πατρὸς ἡμῶν· ποτίσωμεν αὐτὸν οἶνον καὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ, καὶ εἰσελθοῦσα κοιμήθητι μετ αὐτοῦ, καὶ ἐξαναστήσωμεν ἐκ τοῦ πατρὸς ἡμῶν σπέρμα. Ἐπότισαν δὲ καὶ ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ τὸν πατέρα αὐτῶν οἶνον, καὶ εἰσελθοῦσα ἡ νεωτέρα ἐκοιμήθη μετὰ τοῦ πατρὸς αὐτῆς· καὶ οὐκ ᾔδει ἐν τῷ κοιμηθῆναι αὐτὸν, καὶ ἀναστῆναι. Καὶ συνέλαβον αἱ δύο θυγατέρες Λὼτ ἐκ τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Καὶ ἔτεκεν ἡ πρεσβυτέρα υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Μωὰβ, λέγουσα, ἐκ τοῦ πατρός μου· οὗτος πατὴρ Μωαβιτῶν ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Ἔτεκε δὲ καὶ ἡ νεωτέρα υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἀμμὰν, λέγουσα, υἱὸς γένους μου· οὗτος πατὴρ Ἀμμανιτῶν ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας.

# 20

Καὶ ἐκίνησεν ἐκεῖθεν Ἀβραὰμ εἰς γῆν πρὸς Λίβα· καὶ ᾤκησεν ἀνὰ μέσον Κάδης, καὶ ἀνὰ μέσον Σούρ· καὶ παρῴκησεν ἐν Γεράροις. Εἶπε δὲ Ἀβραὰμ περὶ Σάῤῥας τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, ὅτι ἀδελφή μου ἐστίν· ἐφοβήθη γὰρ εἰπεῖν ὅτι γυνή μου ἐστὶ, μή ποτε ἀποκτείνωσιν αὐτὸν οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως δι αὐτήν· ἀπέστειλε δὲ Ἀβιμέλεχ βασιλεὺς Γεράρων, καὶ ἔλαβε τὴν Σάῤῥαν. Καὶ εἰσῆλθεν ὁ Θεὸς πρὸς Ἀβιμέλεχ ἐν ὕπνῳ τὴν νύκτα, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ σὺ ἀποθνήσκεις περὶ τῆς γυναικὸς, ἧς ἔλαβες· αὕτη δέ ἐστι συνῳκηκυῖα ἀνδρί.

Ἀβιμέλεχ δὲ οὐχ ἥψατο αὐτῆς· καὶ εἶπε, Κύριε, ἔθνος ἀγνοοῦν καὶ δίκαιον ἀπολεῖς; Οὐκ αὐτός μοι εἶπεν, ἀδφή μου ἐστί; καὶ αὕτη μοι εἶπεν, ἀδελφός μου ἐστίν; ἐν καθαρᾷ καρδίᾳ καὶ ἐν δικαιοσύνῃ χειρῶν ἐποίησα τοῦτο. Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Θεὸς καθ ὕπνον, κἀγὼ ἔγνων ὅτι ἐν καθαρᾷ καρδίᾳ ἐποίησας τοῦτο, καὶ ἐφεισάμην σου τοῦ μὴ ἁμαρτεῖν σε εἰς ἐμέ· ἕνεκα τούτου οὐκ ἀφῆκά σε ἅψασθαι αὐτῆς. Νῦν δὲ ἀπόδος τὴν γυναῖκα τῷ ἀνθρώπῳ, ὅτι προφήτης ἐστὶ, καὶ προσεύξεται περὶ σοῦ, καὶ ζήσῃ· εἰ δὲ μὴ ἀποδίδως, γνώσῃ ὅτι ἀποθανῇ σὺ καὶ πάντα τὰ σὰ. Καὶ ὤρθρισεν Ἀβιμέλεχ τῷ πρωΐ, καὶ ἐκάλεσε πάντας τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ ἐλάλησε πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα εἰς τὰ ὦτα αὐτῶν· ἐφοβήθησαν δὲ πάντες οἱ ἄνθρωποι σφόδρα. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀβιμέλεχ τὸν Ἀβραὰμ καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί τοῦτο ἐποίησας ἡμῖν; μήτι ἡμάρτομεν εἰς σὲ, ὅτι ἐπήγαγες ἐπ ἐμὲ καὶ ἐπὶ τὴν βασιλείαν μου ἁμαρτίαν μεγάλην; ἔργον ὃ οὐδεὶς ποιήσει, πεποίηκάς μοι. Εἶπε δὲ Ἀβιμέλεχ τῷ Ἀβραὰμ, τί ἐνιδὼν ἐποίησας τοῦτο; Εἶπε δὲ Ἀβραὰμ, εἶπα γὰρ, ἄρα οὐκ ἔστι θεοσέβεια ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, ἐμέ τε ἀποκτενοῦσιν ἕνεκεν τῆς γυναικός μου. Καὶ γὰρ ἀληθῶς, ἀδελφή μου ἐστὶν ἐκ πατρὸς, ἀλλ οὐκ ἐκ μητρός· ἐγενήθη δέ μοι εἰς γυναῖκα. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἐξήγαγέ με ὁ Θεὸς ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου, καὶ εἶπα αὐτῇ, ταύτην τὴν δικαιοσύνην ποιήσεις εἰς ἐμὲ, εἰς πάντα τόπον οὗ ἐὰν εἰσέλθωμεν ἐκεῖ, εἶπον ἐμὲ, ὅτι ἀδελφός μου ἐστίν. Ἔλαβε δὲ Ἀβιμέλεχ χίλια δίδραγμα, καὶ πρόβατα, καὶ μόσχους, καὶ παῖδας, καὶ παιδίσκας, καὶ ἔδωκε τῷ Ἀβραάμ· καὶ ἀπέδωκεν αὐτῷ Σάῤῥαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀβιμέλεχ τῷ Ἀβραὰμ, ἰδοὺ ἡ γῆ μου ἐναντίον σου· οὗ ἄν σοι ἀρέσκῃ, κατοίκει. Τῇ δὲ Σάῤῥᾳ εἶπεν, ἰδοὺ δέδωκα χίλια δίδραγμα τῷ ἀδελφῷ σου· ταῦτα ἔσται σοι εἰς τιμὴν τοῦ προσώπου σου, καὶ πάσαις ταῖς μετὰ σοῦ· καὶ πάντα

ἀλήθευσον. Προσηύξατο δὲ Ἀβραὰμ πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ ἰάσατο ὁ Θεὸς τὸν Ἀβιμέλεχ, καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ τὰς παιδίσκας αὐτοῦ· καὶ ἔτεκον. Ὅτι συγκλείων συνέκλεισε Κύριος ἔξωθεν πᾶσαν μήτραν ἐν τῷ οἴκῳ Ἀβιμέλεχ, ἕνεκεν Σάῤῥας τῆς γυναικὸς Ἀβραάμ.

# 21

Καὶ Κύριος ἐπεσκέψατο τὴν Σάῤῥαν, καθὰ εἶπε· καὶ ἐποίησε Κύριος τῇ Σάῤῥᾳ, καθὰ ἐλάλησε. Καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκε τῷ Ἀβραὰμ υἱὸν εἰς τὸ γῆρας, εἰς τὸν καιρὸν καθὰ ἐλάλησεν αὐτῷ Κύριος. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀβραὰμ τὸ ὄνομα τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ τοῦ γενομένου αὐτῷ, ὃν ἔτεκεν αὐτῷ Σάῤῥα, Ἰσαάκ· Περιέτεμε δὲ Ἀβραὰμ τὸν Ἰσαὰκ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ, καθὰ ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ Θεός. Καὶ Ἀβραὰμ ἦν ἑκατὸν ἐτῶν, ηνίκα ἐγένετο αὐτῷ Ἰσαὰκ ὁ υἱὸς αὐτοῦ. Εἶπε δὲ Σάῤῥα, γέλωτά μοι ἐποίησε Κύριος· ὃς γὰρ ἂν ἀκούσῃ συγχαρεῖταί μοι. Καὶ εἶπε τίς ἀναγγελεῖ τῷ Ἀβραὰμ ὅτι θηλάζει παιδίον Σάῤῥα; ὅτι ἔτεκον υἱὸν ἐν τῷ γήρᾳ μου. Καὶ ηὐξήθη τὸ παιδίον, καὶ ἀπεγαλακτίσθη· καὶ ἐποίησεν Ἀβραὰμ δοχὴν μεγάλην, ᾗ ἡμέρᾳ ἀπεκγαλακτίσθη Ἰσαὰκ ὁ υἱὸς αὐτοῦ. Ἰδοῦσα δὲ Σάῤῥα τὸν υἱὸν Ἄγαρ τῆς Αἰγυπτίας, ὃς ἐγένετο τῷ Ἀβραὰμ, παίζοντα μετὰ Ἰσαὰκ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς, καὶ εἶπε τῷ Ἀβραὰμ, ἔκβαλε τὴν παιδίσκην ταύτην, καὶ τὸν υἱὸν αὐτῆς· οὐ γὰρ μὴ κληρονομήσει ὁ υἱὸς τῆς παιδίσκης ταύτης μετὰ τοῦ υἱοῦ μου Ἰσαάκ. Σκληρὸν δὲ ἐφάνη τὸ ῥῆμα σφόδρα ἐνατίον Ἀβραὰμ περὶ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. Εἶπε δὲ ὁ Θεὸς τῷ Ἀβραὰμ, μὴ σκληρὸν ἔστω ἐναντίον σου περὶ τοῦ παιδίου, καὶ περὶ τῆς παιδίσκης· πάντα ὅσα

ἂν εἴπῃ σοι Σάῤῥα, ἄκουε τῆς φωνῆς αὐτῆς· ὅτι ἐν Ἰσαὰκ κληθήσεταί σοι σπέρμα. Καὶ τὸν υἱὸν δὲ τῆς παιδίσκης ταύτης εἰς ἔθνος μέγα ποιήσω αὐτὸν, ὅτι σπέρμα σόν ἐστιν. Ἀνέστη δὲ Ἀβραὰμ τὸ πρωΐ, καὶ ἔλαβεν ἄρτους καὶ ἀσκὸν ὕδατος, καὶ ἔδωκεν τῇ Ἄγαρ· καὶ ἐπέθηκεν ἐπὶ τὸν ὦμον αὐτῆς τὸ παιδίον, καὶ ἀπέστειλεν αὐτήν· Ἀπελθοῦσα δὲ ἐπλανᾶτο κατὰ τὴν ἔρημον, κατὰ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου. Ἐξέλιπε δὲ τὸ ὕδωρ ἐκ τοῦ ἀσκου· καὶ ἔῤῥιψε τὸ παιδίον ὑποκάτω μιᾶς ἐλάτης· Ἀπελθοῦσα δὲ ἐκάθητο ἀπέναντι αὐτοῦ μακρόθεν, ὡσεὶ τόξου βολήν· εἶπε γὰρ, οὐ μὴ ἴδω τὸν θάνατον τοῦ παιδίου μου. καὶ ἐκάθισεν ἀπέναντι αὐτοῦ· ἀναβοῆσαν δὲ τὸ παιδίον ἔκλαυσεν. Εἰσήκουσε δὲ ὁ Θεὸς τῆς φωνῆς τοῦ παιδίου ἐκ τοῦ τόπου οὗ ἦν· καὶ ἐκάλεσεν ἄγγελος Θεοῦ τὴν Ἄγαρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, τί ἐστιν Ἄγαρ; μὴ φοβοῦ· ἐπακήκοε γὰρ ὁ Θεὸς τῆς φωνῆς τοῦ παιδίου ἐκ τοῦ τόπου οὗ ἐστιν. Ἀνάστηθι καὶ λάβε τὸ παιδίον, καὶ κράτησον τῇ χειρί σου αὐτό· εἰς γὰρ ἔθνος μέγα ποιήσω αὐτό. Καὶ ἀνέῳξεν ὁ Θεὸς τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῆς· καὶ εἶδε φρέαρ ὕδατος ζῶντος, καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἔπλησε τὸν ἀσκὸν ὕδατος, καὶ ἐπότισε τὸ παιδίον. Καὶ ἦν ὁ Θεὸς μετὰ τοῦ παιδίου· καὶ ηὐξήθη, καὶ κατῴκησεν ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἐγένετο δὲ τοξότης. Καὶ κατῴκησεν ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ ἔλαβεν αὐτῷ ἡ μήτηρ γυναῖκα ἐκ Φαρὰν Αἰγύπτου. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ εἶπεν Ἀβιμέλεχ, καὶ Ὀχοζὰθ ὁ νυμφαγωγὸς αὐτοῦ, καὶ Φιχὸλ ὁ ἀρχιστράτηγος τῆς δυνάμεως αὐτοῦ, πρὸς Ἀβραὰμ, λέγων, ὁ Θεὸς μετὰ σοῦ ἐν πᾶσιν, οἷς ἐὰν ποιῇς. Νῦν οὖν ὄμοσόν μοι τὸν Θεὸν μὴ ἀδικήσειν με, μηδὲ τὸ σπέρμα μου, μηδὲ τὸ ὄνομά μου· ἀλλὰ κατὰ τὴν δικαιοσύνην ἣν ἐποίησα μετὰ σοῦ, ποιήσεις μετ ἐμοῦ, καὶ τῇ γῇ, ᾗ σὺ παρῴκησας ἐν αὐτῇ. Καὶ εἶπεν Ἀβραὰμ, ἐγὼ ὀμοῦμαι. Καὶ ἤλεγξεν Ἀβραὰμ τὸν Ἀβιμέλεχ περὶ τῶν

φρεάτων τοῦ ὕδατος, ὧν ἀφείλοντο οἱ παῖδες τοῦ Ἀβιμέλεχ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἀβιμέλεχ, οὐκ ἔγνων τίς ἐποίησέ σοι τὸ ῥῆμα τοῦτο· οὐδὲ σύ μοι ἀπήγγειλας, οὐδὲ ἐγὼ ἤκουσα, ἀλλ ἢ σήμερον. Καὶ ἔλαβεν Ἀβραὰμ πρόβατα καὶ μόσχους, καὶ ἔδωκε τῷ Ἀβιμέλεχ· καὶ διέθεντο ἀμφότεροι διαθήκην. Καὶ ἔστησεν Ἀβραὰμ, ἑπτὰ ἀμνάδας προβάτων μόνας. Καὶ εἶπεν Ἀβιμέλεχ τῷ Ἀβραὰμ, τί εἰσιν αἱ ἑπτὰ ἀμνάδες τῶν προβάτων τούτων, ἃς ἔστησας μόνας; Καὶ εἶπεν Ἀβραὰμ, ὅτι τὰς ἑπτὰ ἀμνάδας λήψῃ παρ ἐμοῦ, ἵνα ὦσι μοι εἰς μαρτύριον, ὅτι ἐγὼ ὤρυξα τό φρέαρ τοῦτο. Διὰ τοῦτο ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Φρέαρ ὁρκισμοῦ· ὅτι ἐκεῖ ὤμοσαν ἀμφότεροι. Καὶ διέθεντο διαθήκην ἐν τῷ φρέατι τοῦ ὁρκισμου· ἀνέστη δὲ Ἀβιμέλεχ, Ὀχοζὰθ ὁ νυμφαγωγὸς αὐτοῦ, καὶ Φίχολ ὁ ἀρχιστράτηγος τῆς δυνάμεως αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψαν εἰς τὴν γῆν τῶν Φυλιστιείμ. Καὶ ἐφύτευσεν Ἀβραὰμ ἄρουραν ἐπὶ τῷ φρέατι τοῦ ὅρκου· καὶ ἐπεκαλέσατο ἐκεῖ τὸ ὄνομα Κυρίου, Θεὸς αἰώνιος. Παρῴκησε δὲ Ἀβραὰμ ἐν τῇ γῇ τῶν Φυλιστιεὶμ ἡμέρας πολλάς.

# 22

Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα ὁ Θεὸς ἐπείρασε τὸν Ἀβραὰμ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Ἀβραὰμ, Ἀβραάμ· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ εἶπε, λάβε τὸν υἱόν σου τὸν ἀγαπητὸν, ὃν ἠγάπησας, τὸν Ἰσαὰκ, καὶ πορεύθητι εἰς τὴν γῆν τὴν ὑψηλὴν, καὶ ἀνένεγκε αὐτὸν ἐκεῖ εἰς ὁλοκάρπωσιν ἐφ ἓν τῶν ὀρέων ὧν ἄν σοι εἴπω. Ἀναστὰς δὲ Ἀβραὰμ τὸ πρωΐ, ἐπέσαξε τὴν ὄνον αὐτοῦ· παρέλαβε δὲ μεθ ἑαυτοῦ δύο παῖδας, καὶ Ἰσαὰκ τὸν υἱὸν αὐτοῦ· καὶ σχίσας ξύλα εἰς

ὁλοκάρπωσιν, ἀναστὰς ἐπορεύθη, καὶ ἦλθεν ἐπὶ τὸν τόπον, ὃν εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ. Καὶ ἀναβλέψας Ἀβραὰμ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ, εἶδε τὸν τόπον μακρόθεν. Καὶ εἶπεν Ἀβραὰμ τοῖς παισὶν αὐτοῦ, καθίσατε αὐτοῦ μετὰ τῆς ὄνου· ἐγὼ δὲ καὶ τὸ παιδάριον διελευσόμεθα ἕως ὧδε· καὶ προσκυνήσαντες ἀναστρέψομεν πρὸς ὑμᾶς. Ἔλαβε δὲ Ἀβραὰμ τὰ ξύλα τῆς ὁλοκαρπώσεως, καὶ ἐπέθηκεν Ἰσαὰκ τῷ υἱῷ αὐτοῦ· ἔλαβε δὲ μετὰ χεῖρας καὶ τὸ πῦρ καὶ τὴν μάχαιραν, καὶ ἐπορεύθησαν οἱ δύο ἅμα. Εἶπε δὲ Ἰσαὰκ πρὸς Ἀβραὰμ τὸν πατέρα αὐτοῦ, πάτερ· ὁ δὲ εἶπε, τί ἐστι, τέκνον; εἶπε, δὲ, ἰδοὺ τὸ πῦρ καὶ τὰ ξύλα, ποῦ ἐστὶ τὸ πρόβατον τὸ εἰς ὁλοκάρπωσιν; Εἶπε δὲ Ἀβραὰμ, ὁ Θεὸς ὄψεται ἑαυτῷ πρόβατον εἰς ὁλοκάρπωσιν, τέκνον. πορευθέντες δὲ ἀμφότεροι ἅμα, ἦλθον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃν εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεός· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ Ἀβραὰμ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐπέθηκε τὰ ξύλα· καὶ συμποδίσας Ἰσαὰκ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, ἐπέθηκεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐπάνω τῶν ξύλων. Καὶ ἐξέτεινεν Ἀβραὰμ τὴν χεῖρα αὐτοῦ λαβεῖν τὴν μάχαιραν, σφάξαι τὸν υἱὸν αὐτοῦ. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν Ἄγγελος Κυρίου ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εἶπεν, Ἀβραὰμ, Ἀβραάμ· ὁ δὲ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ εἶπε, μὴ ἐπιβάλῃς τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὸ παιδάριον, μηδὲ ποιήσῃς αὐτῷ μηδέν· νῦν γὰρ ἔγνων, ὅτι φοβῇ σὺ τὸν Θεόν· καὶ οὐκ ἐφείσω τοῦ υἱοῦ σου τοῦ ἀγαπητοῦ δι ἐμέ. Καὶ ἀναβλέψας Ἀβραὰμ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ εἶδε, καὶ ἰδοὺ κριὸς εἷς κατεχόμενος ἐν φυτῷ Σαβὲκ τῶν κεράτων. Καὶ ἐπορεύθη Ἀβραὰμ, καὶ ἔλαβε τὸν κριὸν, καὶ ἀνήνεγκεν αὐτὸν εἰς ὁλοκάρπωσιν ἀντὶ Ἰσαὰκ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀβραὰμ τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Κύριος εἶδεν· ἵνα εἴπωσιν σήμερον, ἐν τῷ ὄρει Κύριος ὤφθη. Καὶ ἐκάλεσεν Ἄγγελος Κυρίου τὸν Ἀβραὰμ δεύτερον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, λέγων, Κατ ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει Κύριος, οὗ εἵνεκεν

ἐποίησας τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ οὐκ ἐφείσω τοῦ υἱοῦ σου τοῦ ἀγαπτοῦ δι ἐμὲ, ⸀Ἡ μὴν εὐλογῶν εὐλογήσω σε, καὶ πληθύνων πληθυνῶ τὸ σπέρμα σου, ὡς τοὺς ἀστέρας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ὡς τὴν ἄμμον τὴν παρὰ τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης· καὶ κληρονομήσει τὸ σπέρμα σου τὰς πόλεις τῶν ὑπεναντίων. Καὶ ἐνευλογηθήσονται ἐν τῷ σπέρματί σου πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς, ἀνθ ὧν ὑπήκουσας τῆς ἐμῆς φωνῆς. Ἀπεστράφη δὲ Ἀβραὰμ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ· καὶ ἀναστάντες ἐπορεύθησαν ἅμα ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου. Καὶ κατῴκησεν Ἀβραὰμ ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου. Ἐγένετο δὲ μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ ἀνηγγέλη τῷ Ἀβραὰμ, λέγοντες, ἰδοὺ τέτοκε Μελχὰ καὶ αὐτὴ υἱοὺς τῷ Ναχὼρ τῷ ἀδελφῷ σου, τὸν Οὖζ πρωτότοκον, καὶ τὸν Βαὺξ ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ τὸν Καμουὴλ πατέρα Σύρων, καὶ τὸν Χαζὰδ, καὶ Ἀζαῦ, καὶ τὸν Φαλδὲς, καὶ τὸν Ἰελδὰφ, καὶ τὸν Βαθουήλ. Βαθουὴλ δὲ ἐγέννησε τὴν Ῥεβέκκαν. ὀκτὼ οὗτοι υἱοὶ, οὓς ἔτεκε Μελχὰ τῷ Ναχὼρ τῷ ἀδελφῷ Ἀβραάμ. Καὶ ἡ παλλακὴ αὐτοῦ, ᾗ ὄνομα Ῥεύμα, ἔτεκε καὶ αὐτὴ τὸν Ταβὲκ, καὶ τὸν Ταὰμ, καὶ τὸν Τοχός, καὶ τὸν Μοχά.

# 23

Ἐγένετο δὲ ἡ ζωὴ Σάῤῥας, ἔτη ἑκατὸν εἰκοσιεπτά. Καὶ ἀπέθανε Σάῤῥα ἐν πόλει Ἀρβὸκ, ἥ ἐστιν ἐν τῷ κοιλώματι· αὕτη ἔστι Χεβρὼν ἐν τῇ γῇ Χαναάν ἦλθε δὲ Ἀβραὰμ κόψασθαι Σάῤῥαν, καὶ πενθῆσαι. Καὶ ἀνέστη Ἀβραὰμ ἀπὸ τοῦ νεκροῦ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν Ἀβραὰμ τοῖς υἱοῖς τοῦ Χὲτ, λέγων, Πάροικος καὶ παρεπίδημος ἐγώ εἰμι μεθ ὑμῶν· δότε μοι οὖν κτῆσιν τάφου μεθ ὑμῶν, καὶ θάψω τὸν νεκρόν μου ἀπ ἐμοῦ. Ἀπεκρίθησαν δὲ οἱ υἱοὶ Χὲτ πρὸς Ἀβραὰμ, λέγοντες,

μὴ, κύριε. Ἄκουσον δὲ ἡμῶν· βασιλεὺς παρὰ Θεοῦ σὺ εἶ ἐν ἡμῖν· ἐν τοῖς ἐκλεκτοῖς μνημείοις ἡμῶν θάψον τὸν νεκρόν σου· οὐδεὶς γὰρ ἡμῶν οὐ μὴ κωλύσει τὸ μνημεῖον αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, τοῦ θάψαι τὸν νεκρόν σου ἐκεῖ. Ἀναστὰς δὲ Ἀβραὰμ προσεκύνησε τῷ λαῷ τῆς γῆς, τοῖς υἱοῖς τοῦ Χέτ. Καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτοὺς Ἀβραὰμ, λέγων, εἰ ἔχετε τῇ ψυχῇ ὑμῶν, ὥστε θάψαι τὸν νεκρόν μου ἀπὸ προσώπου μου, ἀκούσατέ μου, καὶ λαλήσατε περὶ ἐμοῦ Ἐφρὼν τῷ τοῦ Σαάρ. Καὶ δότω μοι τὸ σπήλαιον τὸ διπλοῦν, ὅ ἐστιν αὐτῷ, τὸ ὂν ἐν μέρει τοῦ ἀγροῦ αὐτοῦ· ἀργυρίου τοῦ ἀξίου δότε μοι αὐτὸ ἐν ὑμῖν εἰς κτῆσιν μνημείου. Ἐφρὼν δὲ ἐκάθητο ἐν μέσῳ τῶν υἱῶν Χέτ· ἀποκριθεὶς δὲ Ἐφρὼν ὁ Χετταῖος πρὸς Ἀβραὰμ εἶπεν, ἀκουόντων τῶν υἱῶν Χὲτ, καὶ τῶν εἰσπορευομένων εἰς τὴν πόλιν πάντων, λέγων, Παρ ἐμοὶ γενοῦ, κύριε, καὶ ἄκουσόν μου· τὸν ἀγρὸν, καὶ τὸ σπήλαιον τὸ ἐν αὐτῷ, σοὶ δίδωμι· ἐναντίον πάντων τῶν πολιτῶν μου δέδωκά σοι· θάψον τὸν νεκρόν σου. Καὶ προσεκύνησεν Ἀβραὰμ ἐναντίον τοῦ λαοῦ τῆς γῆς. Καὶ εἶπε τῷ Ἐφρὼν εἰς τὰ ὦτα ἐναντίον τοῦ λαοῦ τῆς γῆς, ἐπειδὴ πρὸς ἐμοῦ εἶ, ἄκουσόν μου· τὸ ἀργύριον τοῦ ἀγροῦ λάβε παρ ἐμοῦ, καὶ θάψω τὸν νεκρόν μου ἐκεῖ. Ἀπεκρίθη δὲ Ἐφρὼν τῷ Ἀβραὰμ, λέγων, Οὐχὶ, κύριε· ἀκήκοα γὰρ, γῆ τετρακοσίων διδράχμων ἀργύριου· ἀλλὰ τί ἂν εἴη τοῦτο ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ; σὺ δὲ τὸν νεκρόν σου θάψον. καὶ ἤκουσεν Ἀβραὰμ τοῦ Ἐφρών· καὶ ἀπεκατέστησεν Ἀβραὰμ τῷ Ἐφρὼν τὸ ἀργύριον, ὃ ἐλάλησεν εἰς τὰ ὦτα τῶν υἱῶν Χὲτ, τετρακόσια δίδραχμα ἀργυρίου δοκίμου ἐμπόροις. Καὶ ἔστη ὁ ἀγρὸς Ἐφρών, ὃς ἦν ἐν τῷ διπλῷ σπηλαίῳ, ὅς ἐστι κατὰ πρόσωπον Μαμβρῆ, ὁ ἀγρὸς καὶ τὸ σπήλαιον, ὃ ἦν ἐν αὐτῷ, καὶ πᾶν δένδρον, ὃ ἦν ἐν τῷ ἀγρῷ, καὶ πᾶν ὅ ἐστιν ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτοῦ κύκλῳ, τῷ Ἀβραὰμ, εἰς κτῆσιν ἐναντίον τῶν υἱῶν Χὲτ, καὶ πάντων τῶν εἰσπορευομένων

εἰς τὴν πόλιν. Μετὰ ταῦτα ἔθαψεν Ἀβραὰμ Σάῤῥαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἐν τῷ σπηλαίῳ τοῦ ἀγροῦ τῷ διπλῷ, ὅ ἐστιν ἀπέναντι Μαμβρῆ· αὕτη ἐστὶ Χεβρὼν ἐν τῇ γῇ Χαναάν. Καὶ ἐκυρώθη ὁ ἀγρὸς καὶ τὸ σπήλαιον ὃ ἦν ἐν αὐτῷ τῷ Ἀβραὰμ εἰς κτῆσιν τάφου, παρὰ τῶν υἱῶν Χέτ.

# 24

Καὶ Ἀβραὰμ ἦν πρεσβύτερος προβεβηκὼς ἡμερῶν· καὶ Κύριος ηὐλόγησε τὸν Ἀβραὰμ κατὰ πάντα. Καὶ εἶπεν Ἀβραὰμ τῷ παιδὶ αὐτοῦ τῷ πρεσβυτέρῳ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, τῷ ἄρχοντι πάντων τῶν αὐτοῦ, θὲς τὴν χεῖρά σου ὑπὸ τὸν μηρόν μου. Καὶ ἐξορκιῶ σε Κύριον τὸν Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ καὶ τὸν Θεὸν τῆς γῆς, ἵνα μὴ λάβῃς γυναῖκα τῷ υἱῷ μου Ἰσαὰκ ἀπὸ τῶν θυγατέρων τῶν Χαναναίων, μεθ ὧν ἐγὼ οἰκῶ ἐν αὐτοις. Ἀλλ ἢ εἰς τὴν γῆν μου, οὗ ἐγεννήθην, πορεύσῃ, καὶ εἰς τὴν φυλήν μου, καὶ λήψῃ γυναῖκα τῷ υἱῷ μου Ἰσαὰκ ἐκεῖθεν. Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ παῖς, μή ποτε οὐ βούληται ἡ γυνὴ πορευθῆναι μετ ἐμοῦ ὀπίσω εἰς τὴν γῆν ταύτην, ἀποστρέψω τὸν υἱόν σου εἰς τὴν γῆν, ὅθεν ἐξῆλθες ἐκεῖθεν; Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν Ἀβραάμ, πρόσεχε σεαυτῷ μὴ ἀποστρέψῃς τὸν υἱόν μου ἐκεῖ. Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ οὐρανοῦ καὶ ὁ Θεὸς τῆς γῆς, ὃς ἔλαβέ με ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου, καὶ ἐκ τῆς γῆς ἧς ἐγεννήθην, ὃς ἐλάλησέ μοι, καὶ ὃς ὤμοσέ μοι, λέγων, σοὶ δώσω τὴν γῆν ταύτην καὶ τῷ σπέρματί σου, αὐτὸς ἀποστελεῖ τὸν Ἄγγελον αὐτοῦ ἔμπροσθέν σου, καὶ λήψῃ γυναῖκα τῷ υἱῷ μου ἐκεῖθεν. Ἐὰν δὲ μὴ θέλῃ ἡ γυνὴ πορευθῆναι μετὰ σοῦ εἰς τὴν γῆν ταύτην, καθαρὸς ἔσῃ ἀπὸ τοῦ ὅρκου μου· μόνον τὸν υἱόν μου μὴ ἀποστρέψῃς ἐκεῖ. Καὶ ἔθηκεν ὁ

παῖς τὴν χεῖρα αὐτοῦ ὑπὸ τὸν μηρὸν Ἀβραὰμ τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ ὤμοσεν αὐτῷ περὶ τοῦ ῥήματος τούτου. Καὶ ἔλαβεν ὁ παῖς δέκα καμήλους ἀπὸ τῶν καμήλων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν ἀγαθῶν τοῦ κυρίου αὐτοῦ μεθ ἑαυτοῦ· καὶ ἀναστὰς ἐπορεύθη εἰς τὴν Μεσοποταμίαν εἰς τὴν πόλιν Ναχώρ. Καὶ ἐκοίμησε τὰς καμήλους ἔξω τῆς πόλεως παρὰ τὸ φρέαρ τοῦ ὕδατος τὸ πρὸς ὀψέ, ἡνίκα ἐκπορεύονται αἱ ὑδρευόμεναι. Καὶ εἶπε, Κύριε ὁ Θεὸς τοῦ κυρίου μου Ἀβραάμ, εὐόδωσον ἐναντίον ἐμοῦ σήμερον, καὶ ποίησον ἔλεος μετὰ τοῦ κυρίου μου Ἀβραάμ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἕστηκα ἐπὶ τῆς πηγῆς τοῦ ὕδατος· αἱ δὲ θυγατέρες τῶν οἰκούντων τὴν πόλιν ἐκπορεύονται ἀντλῆσαι ὕδωρ. Καὶ ἔσται ἡ παρθένος ᾗ ἂν ἐγὼ εἴπω, ἐπίκλινον τὴν ὑδρίαν σου, ἵνα πίω, καὶ εἴπῃ μοι, πίε σύ, καὶ τὰς καμήλους σου ποτιῶ, ἕως ἂν παύσωνται πίνουσαι, ταύτην ἡτοίμασας τῷ παιδί σου τῷ Ἰσαάκ· καὶ ἐν τούτῳ γνώσομαι, ὅτι ἐποίησας ἔλεος μετὰ τοῦ κυρίου μου Ἀβραάμ. Καὶ ἐγένετο πρὸ τοῦ συντελέσαι αὐτὸν λαλοῦντα ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ Ῥεβέκκα ἐξεπορεύετο ἡ τεχθεῖσα Βαθουήλ, υἱῷ Μελχὰς τῆς γυναικὸς Ναχώρ, ἀδελφοῦ δὲ Ἀβραάμ, ἔχουσα τὴν ὑδρίαν ἐπὶ τῶν ὤμων αὐτῆς. Ἡ δὲ παρθένος ἦν καλὴ τῇ ὄψει σφόδρα· παρθένος ἦν, ἀνὴρ οὐκ ἔγνω αὐτήν· καταβᾶσα δὲ ἐπὶ τὴν πηγὴν, ἔπλησε τὴν ὑδρίαν αὐτῆς, καὶ ἀνέβη. Ἐπέδραμε δὲ ὁ παῖς εἰς συνάντησιν αὐτῆς, καὶ εἶπε, Πότισόν με μικρὸν ὕδωρ ἐκ τῆς ὑδρίας σου. Ἡ δὲ εἶπε, πίε, κύριε· καὶ ἔσπευσε καὶ καθεῖλε τὴν ὑδρίαν ἐπὶ τὸν βραχίονα αὐτῆς, καὶ ἐπότισεν αὐτὸν, ἕων ἐπαύσατο πίνων. Καὶ εἶπε, καὶ ταῖς καμήλοις σου ὑδρεύσομαι, ἕως ἂν πᾶσαι πίωσι. Καὶ ἔσπευσε καὶ ἐξεκένωσε τὴν ὑδρίαν εἰς τὸ ποτιστήριον· καὶ ἔδραμεν ἐπὶ τὸ φρέαρ ἀντλῆσαι πάλιν· καὶ ὑδρεύσατο πάσαις ταῖς καμήλοις. Ὁ δὲ ἄνθρωπος κατεμάνθανεν αὐτήν· καὶ παρεσιώπα

τοῦ γνῶναι εἰ εὐώδωκε Κύριος τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, ἢ οὔ. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἐπαύσαντο πᾶσαι αἱ κάμηλοι πίνουσαι, ἔλαβεν ὁ ἄνθρωπος ἐνώτια χρυσᾶ ἀνὰ δραχμὴν ὁλκῆς, καὶ δύο ψέλλια ἐπὶ τὰς χεῖρας αὐτῆς, δέκα χρυσῶν ὁλκὴ αὐτῶν. Καὶ ἐπηρώτησεν αὐτὴν, καὶ εἶπε, θυγάτηρ τίνος εἶ; ἀνάγγειλόν μοι, εἰ ἔστι παρὰ τῷ πατρί σου τόπος ἡμῖν του καταλῦσαι. Ἡ δὲ εἶπεν αὐτῷ, θυγάτηρ Βαθουήλ εἰμι τοῦ Μελχάς, ὃν ἔτεκε τῷ Ναχώρ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, Καὶ ἄχυρα καὶ χορτάσματα πολλὰ παρ ἡμῖν, καὶ τόπος τοῦ καταλῦσαι. Καὶ εὐδοκήσας ὁ ἄνθρωπος προσεκύνησε τῷ Κυρίῳ Καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ κυρίου μου Ἀβραάμ, ὃς οὐκ ἐγκατέλειπε τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, καὶ τὴν ἀλήθειαν, ἀπὸ τοῦ κυρίου μου· ἐμὲ τ’ εὐώδωκε Κύριος εἰς οἶκον τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ κυρίου μου. Καὶ δραμοῦσα ἡ παῖς ἀνήγγειλεν εἰς τὸν οἶκον τῆς μητρὸς αὐτῆς, κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα. Τῇ δὲ Ῥεβέκκᾳ ἀδελφὸς ἦν, ᾧ ὄνομα Λάβαν· καὶ ἔδραμε Λάβαν πρὸς τὸν ἄνθρωπον ἔξω ἐπὶ τὴν πηγήν. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα εἶδε τὰ ἐνώτια, καὶ τὰ ψέλλια ἐν ταῖς χερσὶ τῆς ἀδελφῆς αὐτοῦ, καὶ ὅτε ἤκουσε τὰ ῥήματα Ῥεβέκκας τῆς ἀδελφῆς αὐτοῦ, λεγούσης, οὕτω λελάληκέ μοι ὁ ἄνθρωπος, καὶ ἦλθε πρὸς τὸν ἄνθρωπον, ἑστηκότος αὐτοῦ ἐπὶ τῶν καμήλων ἐπὶ τῆς πηγῆς. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, δεῦρο εἴσελθε, εὐλογητὸς Κυροίυ· ἱνατί ἔστηκας ἔξω; ἐγὼ δὲ ἡτοίμασα τὴν οἰκίαν, καὶ τόπον ταῖς καμήλοις. Εἰσῆλθε δὲ ὁ ἄνθρωπος εἰς τὴν οἰκίαν, καὶ ἀπέσαξε τὰς καμήλους· καὶ ἔδωκεν ἄχυρα καὶ χορτάσματα ταῖς καμήλοις, καὶ ὕδωρ νίψασθαι τοῖς ποσὶν αὐτοῦ, καὶ τοῖς ποσὶ τῶν ἀνδρῶν τῶν μετ αὐτοῦ. Καὶ παρέθηκεν αὐτοῖς ἄρτους φαγεῖν· καὶ εἶπεν, οὐ μὴ φάγω, ἕως τοῦ λαλῆσαί με τὰ ῥήματά μου· καὶ εἶπεν, λάλησον. Καὶ εἶπε, παῖς Ἀβραὰμ ἐγώ εἰμι. Κύριος δὲ ηὐλόγησε τὸν κύριόν μου σφόδρα, καὶ ὑψώθη· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ πρόβατα, καὶ μόσχους, καὶ

ἀργύριον, καὶ χρυσίον, παῖδας, καὶ παιδίσκας, καμήλους, καὶ ὄνους. Καὶ ἔτεκε Σάῤῥα ἡ γυνὴ τοῦ κυρίου μου υἱὸν ἕνα τῷ κυρίῳ μου μετὰ τὸ γηράσαι αὐτόν· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὅσα ἦν αὐτῷ. Καὶ ὥρκισέ με ὁ κύριός μου, λέγων, οὐ λήμψῃ γυναῖκα τῷ υἱῷ μου ἀπὸ τῶν θυγατέρων τῶν Χαναναίων, ἐν οἷς ἐγὼ παροικῶ ἐν τῇ γῇ αὐτῶν. Ἀλλ εἰς τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου πορεύσῃ, καὶ εἰς τὴν φυλήν μου, καὶ λήψῃ γυναῖκα τῷ υἱῷ μου ἐκεῖθεν. Εἶπα δὲ τῷ κυρίῳ μου, μήποτε οὐ πορεύσεται ἡ γυνὴ μετ ἐμοῦ. Καὶ εἶπέ μοι, Κύριος ὁ Θεὸς ᾧ εὐηρέστησα ἐναντίον αὐτοῦ, αὐτὸς ἐξαποστελεῖ τὸν Ἄγγελον αὐτοῦ μετὰ σοῦ, καὶ εὐοδώσει τὴν ὁδόν σου· καὶ λήψῃ γυναῖκα τῷ υἱῷ μου ἐκ τῆς φυλῆς μου, καὶ ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου. Τότε ἀθῷος ἔσῃ ἀπὸ τῆς ἀρᾶς μου· ἡνίκα γὰρ ἐὰν ἔλθῃς εἰς τὴν φυλήν μου, καὶ μή σοι δῶσι, καὶ ἔσῃ ἀθῷος ἀπὸ τοῦ ὁρκισμοῦ μου. Καὶ ἐλθὼν σήμερον ἐπὶ τὴν πηγὴν εἶπα, Κύριε ὁ Θεὸς τοῦ κυρίου μου Ἀβραὰμ, εἰ σὺ εὐοδοῖς τὴν ὁδόν μου, ἐν ᾗ νῦν ἐγὼ πορεύομαι ἐν αὐτῇ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐφέστηκα ἐπὶ τῆς πηγῆς τοῦ ὕδατος, καὶ αἱ θυγατέρες τῶν ἀνθρώπων τῆς πόλεως ἐκπορεύονται ἀντλῆσαι ὕδωρ· καὶ ἔσται ἡ παρθένος, ᾗ ἂν ἐγὼ εἴπω, πότισόν με ἐκ τῆς ὑδρίας σου μικρὸν ὕδωρ, καὶ εἴπῃ μοι, καὶ σὺ πίε, καὶ ταῖς καμήλοις σου ὑδρεύσομαι, αὕτη ἡ γυνὴ ἣν ἡτοίμασε Κύριος τῷ ἑαυτοῦ θεράποντι Ἰσαάκ· καὶ ἐν τούτῳ γνώσομαι, ὅτι πεποίηκας ἔλεος τῷ κυρίῳ μου Ἀβραάμ. Καὶ ἐγένετο πρὸ τοῦ συντελέσαι με λαλοῦντα ἐν τῇ διανοίᾳ μου, εὐθὺς Ῥεβέκκα ἐξεπορεύετο, ἔχουσα τὴν ὑδρίαν ἐπὶ τῶν ὤμων· καὶ κατέβη ἐπὶ τὴν πηγὴν, καὶ ὑδρεύσατο· εἶπα δὲ αὐτῇ, πότισόν με. Καὶ σπεύσασα καθεῖλε τὴν ὑδρίαν ἐπὶ τὸν βραχίονα αὐτῆς ἀφ ἑαυτῆς, καὶ εἶπε, πίε σὺ, καὶ τὰς καμήλους σου ποτιῶ· καὶ ἔπιον, καὶ τὰς καμήλους ἐπότισε. Καὶ ἠρώτησα αὐτὴν, καὶ εἶπα, θυγάτηρ τίνος εἶ, ἀναγγειλόν μοι· ἡ δὲ

ἔφη, θυγάτηρ Βαθουὴλ εἰμὶ υἱοῦ τοῦ Ναχὼρ, ὃν ἔτεκεν αὐτῷ Μελχά· καὶ περιέθηκα αὐτῇ τὰ ἐνώτια, καὶ τὰ ψέλλια περὶ τὰς χεῖρας αὐτῆς. Καὶ εὐδοκήσας προσεκύνησα τῷ Κυρίῳ, καὶ εὐλόγησα Κύριον τὸν Θεὸν τοῦ κυρίου μου Ἀβραὰμ, ὃς εὐώδωσέ με ἐν ὁδῷ ἀληθείας λαβεῖν τὴν θυγατέρα τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ κυρίου μου τῷ υἱῷ αὐτοῦ. Εἰ οὖν ποιεῖτε ὑμεῖς ἔλεος καὶ δικαιοσύνην πρὸς τὸν κύριόν μου· εἰ δὲ μὴ, ἀπαγγείλατέ μοι, ἵνα ἐπιστρέψω εἰς δεξιὰν ἢ ἀριστεράν. Ἀποκριθεὶς δὲ Λάβαν καὶ Βαθουὴλ εἶπαν, παρὰ κυρίου ἐξῆλθε τὸ πρᾶγμα τοῦτο· οὐ δυνησόμεθά σοι ἀντειπεῖν κακὸν ἢ καλόν. Ἰδοὺ Ῥεβέκκα ἐνώπιόν σου· λαβὼν ἀπότρεχε· καὶ ἔστω γυνὴ τῷ υἱῷ τοῦ κυρίου σου, καθὰ ἐλάλησε Κύριος. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ἀκοῦσαι τὸν παῖδα τοῦ Ἀβραὰμ τῶν ῥημάτων αὐτῶν, προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν τῷ κυρίῳ. καὶ ἐξενέγκας ὁ παῖς σκεύη ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ καὶ ἱματισμὸν, ἔδωκε τῇ Ῥεβέκκᾳ· καὶ δῶρα ἔδωκε τῷ ἀδελφῷ αὐτῆς, καὶ τῇ μητρὶ αὐτῆς. Καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον καὶ αὐτὸς καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ αὐτοῦ ὄντες, καὶ ἐκοιμήθησαν· καὶ ἀναστὰς τὸ πρωῒ εἶπεν, ἐκπέμψατέ με, ἵνα ἀπέλθω πρὸς τὸν κύριόν μου. Εἶπαν δὲ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῆς, καὶ ἡ μήτηρ, μεινάτω ἡ παρθένος μεθ ἡμῶν ἡμέρας ὡσεὶ δέκα, καὶ μετὰ ταῦτα ἀπελεύσεται. Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, μὴ κατέχετέ με· καὶ Κύριος εὐώδωσε τὴν ὁδόν μου ἐν ἐμοί· ἐκπέμψατέ με, ἵνα ἀπέλθω πρὸς τὸν κύριόν μου. Οἱ δὲ εἶπαν, Καλέσωμεν τὴν παῖδα, καὶ ἐρωτήσωμεν τὸ στόμα αὐτῆς. Καὶ ἐκάλεσαν τὴν Ῥεβέκκαν, καὶ εἶπαν αὐτῇ, πορεύσῃ μετὰ τοῦ ἀνθρώπου τούτου; ἡ δὲ εἶπε, πορεύσομαι. Καὶ ἐξέπεμψαν Ῥεβέκκαν τὴν ἀδελφὴν αὐτῶν, καὶ τὰ ὑπάρχοντα αὐτῆς, καὶ τὸν παῖδα τοῦ Ἀβραὰμ, καὶ τοὺς μετ αὐτοῦ. Καὶ εὐλόγησαν Ῥεβέκκαν, καὶ εἶπαν αὐτῇ, ἀδελφὴ ἡμῶν εἶ, γίνου εἰς χιλιάδας μυριάδων, καὶ κληρονομησάτω τὸ σπέρμα σου τὰς

πόλεις τῶν ὑπεναντίων. Ἀναστᾶσα δὲ Ῥεβέκκα καὶ αἱ ἄβραι αὐτῆς, ἐπέβησαν ἐπὶ τὰς καμήλους, καὶ ἐπορεύθησαν μετὰ τοῦ ἀνθρώπου· καὶ ἀναλαβὼν ὁ παῖς τὴν Ῥεβέκκαν ἀπῆλθεν. Ἰσαὰκ δὲ διεπορεύετο διὰ τῆς ἐρήμου κατὰ τὸ φρέαρ τῆς ὁράσεως· αὐτὸς δὲ κατῴκει ἐν τῇ γῇ τῇ πρὸς Λίβα. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰσαὰκ ἀδολεσχῆσαι εἰς τὸ πεδίον τὸ πρὸς δείλης, καὶ ἀναβλέψας τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ εἶδε καμήλους ἐρχομένας. Καὶ ἀναβλέψασα Ῥεβέκκα τοῖς ὀφθαλμοῖς εἶδε τὸν Ἰσαάκ· καὶ κατεπήδησεν ἀπὸ τῆς καμήλου. Καὶ εἶπε τῷ παιδὶ, τίς ἐστιν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος ὁ πορευόμενος ἐν τῷ πεδίῳ εἰς συνάντησιν ἡμῖν; εἶπε δὲ ὁ παῖς, οὗτός ἐστιν ὁ κύριός μου· ἡ δὲ λαβοῦσα τὸ θέριστρον, περιεβάλετο. Καὶ διηγήσατο ὁ παῖς τῷ Ἰσαὰκ πάντα τὰ ῥήματα, ἃ ἐποίησεν. Εἰσῆλθε δὲ Ἰσαὰκ εἰς τὸν οἶκον τῆς μητρὸς αὐτοῦ, καὶ ἔλαβε τὴν Ῥεβέκκαν, καὶ ἐγένετο αὐτοῦ γυνὴ, καὶ ἠγάπησεν αὐτήν· καὶ παρεκλήθη Ἰσαὰκ περὶ Σάῤῥας τῆς μητρὸς αὐτοῦ.

# 25

Προσθέμενος δὲ Ἀβραὰμ ἔλαβε γυναῖκα, ᾗ ὄνομα Χεττούρα. Ἔτεκε δὲ αὐτῷ τὸν Ζομβρᾶν, καὶ τὸν Ἰεζὰν, καὶ τὸν Μαδὰλ, καὶ τὸν Μαδιὰμ, καὶ τὸν Ἰεσβὼκ, καὶ τὸν Σωίε. Ἰεζὰν δὲ ἐγέννησε τὸν Σαβὰ, καὶ τὸν Δεδάν· υἱοὶ δὲ Δεδὰν Ἀσσουριεὶμ, καὶ Λατουσιεὶμ, καὶ Λαωμείμ. Υἱοὶ δὲ Μαδιὰμ Γεφὰρ, καὶ Ἀφεὶρ, καὶ Ἐνὼχ, καὶ Ἀβειδὰ, καὶ Ἐλδαγά· πάντες οὗτοι ἦσαν υἱοὶ Χεττούρας. Ἔδωκε δὲ Ἀβραὰμ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ Ἰσαὰκ τῷ υἱῷ αὐτοῦ. Καὶ τοῖς υἱοῖς τῶν παλλακῶν αὐτοῦ ἔδωκεν Ἀβραὰμ δόματα, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς ἀπὸ Ἰσαὰκ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ἔτι ζῶντος αὐτοῦ, πρὸς

ἀνατολὰς εἰς γῆν ἀνατολῶν. Ταῦτα δὲ τὰ ἔτη ἡμερῶν τῆς ζωῆς Ἀβραὰμ ὅσα ἔζησεν, ἑκατὸν ἑβδομηκονταπεντε ἔτη. Καὶ ἐκλείπων ἀπέθανεν Ἀβραὰμ ἐν γήρᾳ καλῷ πρεσβύτης, καὶ πλήρης ἡμερῶν, καὶ προσετέθη πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ. Καὶ ἔθαψαν αὐτὸν Ἰσαὰκ καὶ Ἰσμαὴλ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ εἰς τὸ σπήλαιον τὸ διπλοῦν, εἰς τὸν ἀγρὸν Ἐφρων τοῦ Σαὰρ τοῦ Χετταίου, ὅς ἐστιν ἀπέναντι Μαμβρῆ, τὸν ἀγρὸν καὶ τὸ σπήλαιον, ὃ ἐκτήσατο Ἀβραὰμ παρὰ τῶν υἱῶν τοῦ Χέτ· ἐκεῖ ἔθαψαν Ἀβραὰμ, καὶ Σάῤῥαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ. Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Ἀβραὰμ, εὐλόγησεν ὁ Θεὸς τὸν Ἰσαὰκ υἱὸν αὐτοῦ· καὶ κατῴκησεν Ἰσαὰκ παρὰ τὸ φρέαρ τῆς ὁράσεως. Αὗται δὲ αἱ γενέσεις Ἰσμαὴλ τοῦ υἱοῦ Ἀβραὰμ, ὃν ἔτεκεν Ἄγαρ ἡ Αἰγυπτία, ἡ παιδίσκη Σάῤῥας, τῷ Ἀβραάμ. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσμαὴλ, κατ ὀνόματα τῶν γενεῶν αὐτοῦ· πρωτότοκος Ἰσμαὴλ, καὶ Ναβαϊὼθ, καὶ Κηδὰρ, καὶ Ναβδεὴλ, καὶ Μασσὰμ, καὶ Μασμὰ, καὶ Δουμὰ, καὶ Μασσῆ, καὶ Χοδδὰν, καὶ Θαιμὰν, καὶ Ἰετοὺρ, καὶ Ναφὲς, καὶ Κεδμά. οὗτοί εἰσιν οἱ υἱοὶ Ἰσμαὴλ, καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἐν ταῖς σκηναῖς αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἐπαύλεσιν αὐτῶν· δώδεκα ἄρχοντες κατὰ ἔθνη αὐτῶν. Καὶ ταῦτα τὰ ἔτη τῆς ζωῆς Ἰσμαὴλ, ἑκατὸν τριακονταεπτὰ ἔτη· καὶ ἐκλείπων ἀπέθανε, καὶ προσετέθη πρὸς τὸ γένος αὐτοῦ. Κατῴκησε δὲ ἀπὸ Εὐϊλὰτ ἕως Σοὺρ, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον Αἰγύπτου ἕως ἐλθεῖν πρὸς Ἀσσυρίους· κατὰ πρόσωπον πάντων τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ κατῴκησε. Καὶ αὗται αἱ γενέσεις Ἰσαὰκ τοῦ υἱοῦ Ἀβραάμ· Ἀβραάμ ἐγέννησε τὸν Ἰσαάκ. Ἦν δὲ Ἰσαὰκ ἐτῶν τεσσαράκοντα ὅτε ἔλαβε τὴν Ῥεβέκκαν θυγατέρα Βαθουὴλ τοῦ Σύρου ἐκ τῆς Μεσοποταμίας Συρίας, ἀδελφὴν Λάβαν τοῦ Σύρου, ἑαυτῷ εἰς γυναῖκα. Ἐδέετο δὲ Ἰσαὰκ Κυρίου περὶ Ῥεβέκκας τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, ὅτι στεῖρα ἦν· ἐπήκουσε δὲ αὐτοῦ ὁ Θεὸς, καὶ συνέλαβεν ἐν γαστρὶ Ῥεβέκκα ἡ

γυνὴ αὐτοῦ. Ἐσκίρτων δὲ τὰ παιδία ἐν αὐτῇ· εἶπε δὲ, εἰ οὕτω μοι μέλλει γίνεσθαι, ἵνα τί μοι τοῦτο; ἐπορεύθη δὲ πυθέσθαι παρὰ Κυρίου. Καὶ εἶπε Κύριος αὐτῇ, δύο ἔθνη ἐν γαστρί σου εἰσὶ, καὶ δύο λαοὶ ἐκ τῆς κοιλίας σου διασταλήσονται· καὶ λαὸς λαοῦ ὑπερέξει, καὶ ὁ μείζων δουλεύσει τῷ ἐλάσσονι. Καὶ ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι τοῦ τεκεῖν αὐτήν· καὶ τῇδε ἦν δίδυμα ἐν τῇ κοιλίᾳ αὐτῆς. Ἐξῆλθε δὲ ὁ πρωτότοκος πυῤῥάκης· ὅλος, ὡσεὶ δορὰ, δασύς· ἐπωνόμασε δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἡσαῦ. Καὶ μετὰ τοῦτο ἐξῆλθεν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ ἐπειλημμένη τῆς πτέρνης Ἡσαῦ· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἰακώβ. Ἰσαὰκ δὲ ἦν ἐτῶν ἑξήκοντα, ὅτε ἔτεκεν αὐτοὺς Ῥεβέκκα. Ηὐξήθησαν δὲ οἱ νεανίσκοι· καὶ ἦν Ἡσαῦ ἄνθρωπος εἰδὼς κυνηγεῖν, ἄγροικος· Ἰακὼβ δὲ ἄνθρωπος ἄπλαστος, οἰκῶν οἰκίαν. Ἠγάπησε δὲ Ἰσαὰκ τὸν Ἡσαῦ, ὅτι ἡ θήρα αὐτοῦ βρῶσις αὐτῷ· Ῥεβέκκα δὲ ἠγάπα τὸν Ἰακώβ. Ἥψησε δὲ Ἰακὼβ ἕψημα· ἦλθε δὲ Ἡσαῦ ἐκ τοῦ πεδίου ἐκλείπων. Καὶ εἶπεν Ἡσαῦ τῷ Ἰακὼβ, γεῦσόν με ἀπὸ τοῦ ἑψήματος πυῤῥοῦ τούτου, ὅτι ἐκλείπω· διὰ τοῦτο ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἐδώμ. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ τῷ Ἡσαῦ, ἀπόδου μοι σήμερον τὰ πρωτοτόκιά σου ἐμοί. Καὶ εἶπεν Ἡσαῦ, ἰδοὺ ἐγὼ πορεύομαι τελευτᾶν· καὶ ἵνα τί μοι ταῦτα τὰ πρωτοτόκια; Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰακὼβ, ὄμοσόν μοι σήμερον· καὶ ὤμοσεν αὐτῷ· ἀπέδοτο δὲ Ἡσαῦ τὰ πρωτοτόκια τῷ Ἰακώβ. Ἰακὼβ δὲ ἔδωκε τῷ Ἡσαῦ ἄρτον, καὶ ἕψημα φακοῦ· καὶ ἔφαγε καὶ ἔπιε, καὶ ἀναστὰς ᾤχετο· καὶ ἐφαύλισεν Ἡσαῦ τὰ πρωτοτόκια.

# 26

Ἐγένετο δὲ λιμὸς ἐπὶ τῆς γῆς, χωρὶς τοῦ λιμοῦ τοῦ πρότερον, ὃς

ἐγένετο ἐν τῷ καιρῷ τοῦ Ἀβραάμ· ἐπορεύθη δὲ Ἰσαὰκ πρὸς Ἀβιμέλεχ βασιλέα Φυλιστιεὶμ εἰς Γέραρα. Ὤφθη δὲ αὐτῷ Κύριος, καὶ εἶπε, μὴ καταβῇς εἰς Αἴγυπτον· κατοίκησον δὲ ἐν τῇ γῇ, ᾗ ἄν σοι εἴπω. Καὶ παροίκει ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, καὶ ἔσομαι μετὰ σοῦ, καὶ εὐλογήσω σε· σοὶ γὰρ καὶ τῷ σπέρματί σου δώσω πᾶσαν τὴν γῆν ταύτην· καὶ στήσω τὸν ὅρκον μου, ὃν ὤμοσα τῷ Ἀβραὰμ τῷ πατρί σου. Καὶ πληθυνῶ τὸ σπέρμα σου, ὡς τοὺς ἀστέρας τοῦ οὐρανοῦ· καὶ δώσω τῷ σπέρματί σου πᾶσαν τὴν γῆν ταύτην· καὶ εὐλογηθήσονται ἐν τῷ σπέρματί σου πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς. Ἀνθ ὧν ὑπήκουσεν Ἀβραὰμ ὁ πατήρ σου τῆς ἐμῆς φωνῆς, καὶ ἐφύλαξε τὰ προστάγματά μου, καὶ τὰς ἐντολάς μου, καὶ τὰ δικαιώματά μου, καὶ τὰ νόμιμά μου. Κατῴκησε δὲ Ἰσαὰκ ἐν Γεράροις. Ἐπηρώτησαν δὲ οἱ ἄνδρες τοῦ τόπου περὶ Ῥεβέκκας τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἀδελφή μου ἐστίν· ἐφοβήθη γὰρ εἰπεῖν, ὅτι γυνή μου ἐστὶ, μή ποτε ἀποκτείνωσιν αὐτὸν οἱ ἄνδρες τοῦ τόπου περὶ Ῥεβέκκας, ὅτι ὡραία τῇ ὄψει ἦν. Ἐγένετο δὲ πολυχρόνιος ἐκεῖ· καὶ παρακύψας Ἀβιμέλεχ ὁ βασιλεὺς Γεράρων διὰ τῆς θυρίδος, εἶδε τὸν Ἰσαὰκ παίζοντα μετὰ Ῥεβέκκας τῆς γυναικὸς αὐτοῦ. Ἐκάλεσε δὲ Ἀβιμέλεχ τὸν Ἰσαὰκ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἆρά γε γυνή σου ἐστί; τί ὅτι εἶπας, ἀδελφή μου ἐστίν; εἶπε δὲ αὐτῷ Ἰσαὰκ, εἶπα γὰρ, μή ποτε ἀποθάνω δι αὐτήν. Εἶπε δὲ αὐτῷ Ἀβιμέλεχ, τί τοῦτο ἐποίησας ἡμῖν; μικροῦ ἐκοιμήθη τις ἐκ τοῦ γένους μου μετὰ τῆς γυναικός σου, καὶ ἐπήγαγες ἂν ἐφ ἡμᾶς ἄγνοιαν. Συνέταξε δὲ Ἀβιμέλεχ παντὶ τῷ λαῷ αὐτοῦ, λέγων, πᾶς ὁ ἁψάμενος τοῦ ἀνθρώπου τούτου καὶ τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, θανάτῳ ἔνοχος ἔσται. Ἔσπειρε δὲ Ἰσαὰκ ἐν τῇ γῇ ἐκείνῃ, καὶ εὗρεν ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐκείνῳ ἑκατοστεύουσαν κριθήν· εὐλόγησε δὲ αὐτὸν Κύριος. Καὶ ὑψώθη ὁ ἄνθρωπος, καὶ προβαίνων μείζων ἐγένετο, ἕως οὗ μέγας ἐγένετο

σφόδρα. Ἐγένετο δὲ αὐτῷ κτήνη προβάτων, καὶ κτήνη βοῶν, καὶ γεώργια πολλά. ἐζήλωσαν δὲ αὐτὸν οἱ Φυλιστιείμ. Καὶ πάντα τὰ φρέατα, ἃ ὤρυξαν οἱ παῖδες τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐν τῷ χρόνῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἐνέφραξαν αὐτὰ οἱ Φυλιστιεὶμ, καὶ ἔπλησαν αὐτὰ γῆς. Εἶπε δὲ Ἀβιμέλεχ πρὸς Ἰσαὰκ, ἄπελθε ἀφ ἡμῶν, ὅτι δυνατώτερος ἡμῶν ἐγένου σφόδρα. Καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν Ἰσαάκ· καὶ κατέλυσεν ἐν τῇ φάραγγι Γεράρων, καὶ κατῴκησεν ἐκεῖ. Καὶ πάλιν Ἰσαὰκ ὤρυξε τὰ φρέατα τοῦ ὕδατος, ἃ ὤρυξαν οἱ παῖδες Ἀβραὰμ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐνέφραξαν αὐτὰ οἱ Φυλιστιεὶμ μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Ἀβραὰμ τὸν πατέρα αὐτοῦ· καὶ ἐπωνόμασεν αὐτοῖς ὀνόματα κατὰ τὰ ὀνόματα, ἃ ὠνόμασεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ὤρυξαν οἱ παῖδες Ἰσαὰκ ἐν τῇ φάραγγι Γεράρων· καὶ εὗρον ἐκεῖ φρέαρ ὕδατος ζῶντος. Καὶ ἐμαχέσαντο οἱ ποιμένες Γεράρων μετὰ τῶν ποιμένων Ἰσαὰκ, φάσκοντες αὐτῶν εἶναι τὸ ὕδωρ· καὶ ἐκάλεσαν τὸ ὄνομα τοῦ φρέατος, Ἀδικία· ἠδίκησαν γὰρ αὐτόν. Ἀπάρας δὲ ἐκεῖθεν ὤρυξε φρέαρ ἕτερον· ἐκρίνοντο δὲ καὶ περὶ ἐκείνου· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἐχθρία. Ἀπάρας δὲ ἐκεῖθεν ὤρυξε φρέαρ ἕτερον· καὶ οὐκ ἐμαχέσαντο περὶ αὐτοῦ· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Εὐρυχωρία, λέγων, διότι νῦν ἐπλάτυνε Κύριος ἡμῖν, καὶ ηὔξησεν ἡμᾶς ἐπὶ τῆς γῆς. Ἀνέβη δὲ ἐκεῖθεν ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου. Καὶ ὤφθη αὐτῷ Κύριος ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ τοῦ πατρός σου· μὴ φοβοῦ, μετὰ σοῦ γάρ εἰμι, καὶ εὐλογήσω σε, καὶ πληθυνῶ τὸ σπέρμα σου δι Ἀβραὰμ τὸν πατέρα σου. Καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον, καὶ ἐπεκαλέσατο τὸ ὄνομα Κυρίου, καὶ ἔπηξεν ἐκεῖ τὴν σκηνὴν αὐτοῦ· ὤρυξαν δὲ ἐκεῖ οἱ παῖδες Ἰσαὰκ φρέαρ ἐν τῇ φάραγγι Γεράρων. Καὶ Ἀβιμέλεχ ἐπορεύθη πρὸς αὐτὸν ἀπὸ Γεράρων, καὶ Ὀχοζὰθ ὁ νυμφαγωγὸς αὐτοῦ, καὶ Φιχὼλ ὁ ἀρχιστράτηγος τῆς δυνάμεως

αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἰσαὰκ, ἵνα τί ἤλθετε πρός με; ὑμεῖς δὲ ἐμισήσατέ με, καὶ ἐξαπεστείλατέ με ἀφ ὑμῶν. Οἱ δὲ εἶπαν, ἰδόντες ἑωράκαμεν ὅτι ἦν Κύριος μετὰ σοῦ· καὶ εἴπαμεν, γενέσθω ἀρὰ ἀνὰ μέσον ἡμῶν καὶ ἀνὰ μέσον σου, καὶ διαθησόμεθα μετὰ σοῦ διαθήκην, Μὴ ποιήσαι μεθ ἡμῶν κακὸν, καθότι οὐκ ἐβδελυξάμεθά σε ἡμεῖς, καὶ ὃν τρόπον ἐχρησάμεθά σοι καλῶς, καὶ ἐξαπεστείλαμέν σε μετ εἰρήνης· καὶ νῦν εὐλογημένος σὺ ὑπὸ Κυρίου. Καὶ ἐποίησεν αὐτοῖς δοχὴν, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον. Καὶ ἀναστάντες τὸ πρωΐ, ὤμοσεν ἕκαστος τῷ πλησίον· καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς Ἰσαάκ· καὶ ἀπῴχοντο ἀπ αὐτοῦ μετὰ σωτηρίας. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ παραγενόμενοι οἱ παῖδες Ἰσαὰκ ἀπήγγειλαν αὐτῷ περὶ τοῦ φρέατος οὗ ὤρυξαν, καὶ εἶπαν, οὐχ εὕρομεν ὕδωρ. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸ, Ὅρκος· διὰ τοῦτο ἐκάλεσεν ὄνομα τῇ πόλει ἐκείνῃ, Φρέαρ Ὅρκου, ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Ἦν δὲ Ἡσαῦ ἐτῶν τεσσαράκοντα, καὶ ἔλαβε γυναῖκα Ἰουδὶθ, θυγατέρα Βεὼχ τοῦ Χετταίου, καὶ τὴν Βασεμὰθ, θυγατέρα Ἑλὼν Χετταίου. Καὶ ἦσαν ἐρίζουσαι τῷ Ἰσαὰκ καὶ τῇ Ῥεβέκκᾳ.

# 27

Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ γηράσαι τὸν Ἰσαὰκ, καὶ ἠμβλύνθησαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τοῦ ὁρᾷν, καὶ ἐκάλεσεν Ἡσαῦ τὸν υἱὸν αὐτοῦ τὸν πρεσβύτερον, καὶ εἶπεν αὐτῷ, υἱέ μου· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ εἶπεν, ἰδοὺ γεγήρακα, καὶ οὐ γινώσκω τὴν ἡμέραν τῆς τελευτῆς μου. Νῦν οὖν λάβε τὸ σκεῦός σου, τήν τε φαρέτραν, καὶ τὸ τόξον, καὶ ἔξελθε εἰς τὸ πεδίον, καὶ θήρευσόν μοι θήραν. Καὶ ποίησόν μοι ἐδέσματα, ὡς φιλῶ ἐγὼ, καὶ ἔνεγκέ μοι, ἵνα φάγω, ὅπως εὐλογήσῃ

σε ἡ ψυχή μου πρὶν ἀποθανεῖν με. Ῥεβέκκα δὲ ἤκουσε λαλοῦντος Ἰσαὰκ πρὸς Ἡσαῦ τὸν υἱὸν αὐτοῦ· ἐπορεύθη δὲ Ἡσαῦ εἰς τὸ πεδίον θηρεῦσαι θήραν τῷ πατρὶ αὐτοῦ. Ῥεβέκκα δὲ εἶπε πρὸς τὸν Ἰακὼβ τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν ἐλάσσω, ἴδε, ἤκουσα τοῦ πατρός σου λαλοῦντος πρὸς Ἡσαῦ τὸν ἀδελφόν σου, λέγοντος, Ἔνεγκόν μοι θήραν, καὶ ποίησόν μοι ἐδέσματα, ἵνα φαγὼν εὐλογήσω σε ἐναντίον Κυρίου πρὸ τοῦ ἀποθανεῖν με. Νῦν οὖν, υἱέ μου, ἄκουσόν μου, καθὰ ἐγώ σοι ἐντέλλομαι. Καὶ πορευθεὶς εἰς τὰ πρόβατα, λάβε μοι ἐκεῖθεν δύο ἐρίφους ἁπαλοὺς καὶ καλοὺς, καὶ ποιήσω αὐτοὺς ἐδέσματα τῷ πατρί σου, ὡς φιλεῖ. Καὶ εἰσοίσεις τῷ πατρί σου, καὶ φάγεται, ὅπως εὐλογήσῃ σε ὁ πατήρ σου πρὸ τοῦ ἀποθανεῖν αὐτόν. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ πρὸς Ῥεβέκκαν τὴν μητέρα αὐτοῦ, ἔστιν Ἡσαῦ ὁ ἀδελφός μου ἀνὴρ δασὺς, ἐγὼ δὲ ἀνὴρ λεῖος. Μή ποτε ψηλαφήσῃ με ὁ πατὴρ, καὶ ἔσομαι ἐναντίον αὐτοῦ ὡς καταφρονῶν, καὶ ἐπάξω ἐπ ἐμαυτὸν κατάραν, καὶ οὐκ εὐλογίαν. Εἶπε δὲ αὐτῷ ἡ μήτηρ, ἐπ ἐμὲ ἡ κατάρα σου, τέκνον· μόνον ἐπάκουσόν μου τῆς φωνῆς, καὶ πορευθεὶς ἔνεγκέ μοι. Πορευθεὶς δὲ ἔλαβε, καὶ ἤνεγκε τῇ μητρί· καὶ ἐποίησεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ ἐδέσματα, καθὰ ἐφίλει ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ λαβοῦσα Ῥεβέκκα τὴν στολὴν Ἡσαῦ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς τοῦ πρεσβυτέρου τὴν καλὴν, ἣ ἦν παρ αὐτῇ ἐν τῷ οἴκῳ, ἐνέδυσεν αὐτὴν Ἰακὼβ τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν νεώτερον. Καὶ τὰ δέρματα τῶν ἐρίφων περιέθηκεν ἐπὶ τοὺς βραχίονας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὰ γυμνὰ τοῦ τραχήλου αὐτοῦ. Καὶ ἔδωκε τὰ ἐδέσματα, καὶ τοὺς ἄρτους οὓς ἐποίησεν, εἰς τὰς χεῖρας Ἰακὼβ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς. Καὶ εἰσήνεγκε τῷ πατρὶ αὐτοῦ· εἶπε δὲ, πάτερ· ὁ δὲ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ· τίς εἶ σὺ, τέκνον; Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ τῷ πατρὶ, ἐγὼ Ἡσαῦ ὁ πρωτότοκός σου πεποίηκα καθὰ ἐλάλησάς μοι· ἀναστὰς κάθισον, καὶ φάγε ἀπὸ τῆς θήρας μου, ὅπως εὐλογήσῃ με ἡ ψυχή σου. Εἶπε

δὲ Ἰσαὰκ τῷ υἱῷ αὐτοῦ, τί τοῦτο, ὃ ταχὺ εὗρες, ὦ τέκνον; ὁ δὲ εἶπεν, ὃ παρέδωκε Κύριος ὁ Θεός σου ἐναντίον μου. Εἶπε δὲ Ἰσαὰκ τῷ Ἰακὼβ, ἔγγισόν μοι, καὶ ψηλαφήσω σε, τέκνον, εἰ σὺ εἶ ὁ υἱός μου Ἡσαῦ, ἢ οὔ. Ἤγγισε δὲ Ἰακὼβ πρὸς Ἰσαὰκ τὸν πατέρα αὐτοῦ· καὶ ἐψηλάφησεν αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἡ μὲν φωνὴ, φωνὴ Ἰακὼβ, αἱ δὲ χεῖρες, χεῖρες Ἡσαῦ. Καὶ οὐκ ἐπέγνω αὐτὸν, ἦσαν γὰρ αἱ χεῖρες αὐτοῦ, ὡς αἱ χεῖρες Ἡσαῦ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, δασεῖαι· καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν, καὶ εἶπε, σὺ εἶ ὁ υἱός μου Ἡσαῦ; ὁ δὲ εἶπεν, ἐγώ. Καὶ εἶπε, προσάγαγέ μοι, καὶ φάγομαι ἀπὸ τῆς θήρας σου, τέκνον, ἵνα εὐλογήσῃ σε ἡ ψυχή μου· καὶ προσήνεγκεν αὐτῷ, καὶ ἔφαγε· καὶ εἰσήνεγκεν αὐτῷ οἶνον, καὶ ἔπιε. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰσαὰκ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, ἔγγισόν μοι, καὶ φίλησόν με, τέκνον. Καὶ ἐγγίσας ἐφίλησεν αὐτόν· καὶ ὠσφράνθη τὴν ὀσμὴν τῶν ἱματίων αὐτοῦ, καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ὀσμὴ τοῦ υἱοῦ μου, ὡς ὀσμὴ ἀγροῦ πλήρους, ὃν εὐλόγησε Κύριος. Καὶ δῴη σοι ὁ Θεὸς ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἀπὸ τῆς πιότητος τῆς γῆς, καὶ πλῆθος σίτου καὶ οἴνου. Καὶ δουλευσάτωσάν σοι ἔθνη, καὶ προσκυνησάτωσάν σοι ἄρχοντες· καὶ γίνου κύριος τοῦ ἀδελφοῦ σου, καὶ προσκυνήσουσί σοι οἱ υἱοὶ τοῦ πατρός σου· ὁ καταρώμενός σε, ἐπικατάρατος· ὁ δὲ εὐλογῶν σε, εὐλογημένος. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὸ παύσασθαι Ἰσαὰκ εὐλογοῦντα Ἰακὼβ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, καὶ ἐγένετο, ὡς ἂν ἐξῆλθεν Ἰακὼβ ἀπὸ προσώπου Ἰσαὰκ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ Ἡσαῦ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἦλθεν ἀπὸ τῆς θήρας. Καὶ ἐποίησε καὶ αὐτὸς ἐδέσματα, καὶ προσήνεγκε τῷ πατρὶ αὐτοῦ· καὶ εἶπε τῷ πατρὶ, ἀναστήτω ὁ πατήρ μου, καὶ φαγέτω ἀπὸ τῆς θήρας τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ὅπως εὐλογήσῃ με ἡ ψυχή σου. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰσαὰκ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, τίς εἶ σύ; ὁ δὲ εἶπεν, ἐγώ εἰμι ὁ υἱός σου ὁ πρωτότοκος Ἡσαῦ. Ἐξέστη δὲ Ἰσαὰκ ἔκστασιν μεγάλην

σφόδρα, καὶ εἶπε, τίς οὖν ὁ θηρεύσας μοι θήραν καὶ εἰσενέγκας μοι, καὶ ἔφαγον ἀπὸ πάντων πρὸ τοῦ ἐλθεῖν σε; καὶ εὐλόγησα αὐτὸν, καὶ εὐλογημένος ἔσται. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἤκουσεν Ἡσαῦ τὰ ῥήματα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ Ἰσαὰκ, ἀνεβόησε φωνὴν μεγάλην καὶ πικρὰν σφόδρα· καὶ εἶπεν, εὐλόγησον δὴ κἀμὲ, πάτερ. Εἶπε δὲ αὐτῷ, ἐλθὼν ὁ ἀδελφός σου μετὰ δόλου ἔλαβε τὴν εὐλογίαν σου. Καὶ εἶπε, δικαίως ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰακὼβ, ἐπτέρνικε γάρ με ἰδοὺ δεύτερον τοῦτο· τά τε πρωτοτόκιά μου εἴληφε, καὶ νῦν ἔλαβε τὴν εὐλογίαν μου· καὶ εἶπεν Ἡσαῦ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, οὐχ ὑπελίπου μοι εὐλογίαν, πάτερ; Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰσαὰκ εἶπε τῷ Ἡσαῦ, εἰ κύριον αὐτὸν πεποίηκά σου, καὶ πάντας τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ πεποίηκα αὐτοῦ οἰκέτας· σίτῳ καὶ οἴνῳ ἐστήριξα αὐτόν· σοὶ δὲ τί ποιήσω, τέκνον; Εἶπε δὲ Ἡσαῦ πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ, μὴ εὐλογία μία σοι ἔστι, πάτερ; εὐλόγησον δὴ κἀμὲ, πάτερ· κατανυχθέντος δὲ Ἰσαὰκ, ἀνεβόησε φωνῇ Ἡσαῦ, καὶ ἔκλαυσεν. Ἀποκοιθεὶς δὲ Ἰσαὰκ ὁ πατὴρ αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ, ἰδοὺ ἀπὸ τῆς πιότητος τῆς γῆς ἔσται ἡ κατοίκησίς σου, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ ἄνωθεν. Καὶ ἐπὶ τῇ μαχαίρᾳ σου ζήσῃ, καὶ τῷ ἀδελφῷ σου δουλεύσεις· ἔσται δὲ ἡνίκα ἐὰν καθέλῃς καὶ ἐκλύσῃς τὸν ζυγὸν αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ τραχήλου σου. Καὶ ἐνεκότει Ἡσαῦ τῷ Ἰακὼβ περὶ τῆς εὐλογίας, ἧς εὐλόγησεν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ· εἶπε δὲ Ἡσαῦ ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτοῦ, ἐγγισάτωσαν αἱ ἡμέραι τοῦ πένθους τοῦ πατρός μου, ἵνα ἀποκτείνω Ἰακὼβ τὸν ἀδελφόν μου. Ἀπηγγέλη δὲ Ῥεβέκκᾳ τὰ ῥήματα Ἡσαῦ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς τοῦ πρεσβυτέρου· καὶ πέμψασα ἐκάλεσεν Ἰακὼβ τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν νεώτερον, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἰδοὺ Ἡσαῦ ὁ ἀδελφός σου ἀπειλεῖ σοι τοῦ ἀποκτεῖναί σε. Νῦν οὖν, τέκνον, ἄκουσόν μου τῆς φωνῆς, καὶ ἀναστὰς ἀπόδραθι εἰς τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς Λάβαν τὸν ἀδελφόν μου εἰς Χαῤῥάν. Καὶ

οἴκησον μετ αὐτοῦ ἡμέρας τινὰς, ἕως τοῦ ἀποστρέψαι τὸν θυμὸν, καὶ τὴν ὀργὴν τοῦ ἀδελφοῦ σου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐπιλάθηται ἃ πεποίηκας αὐτῷ· καὶ ἀποστείλασα μεταπέμψομαί σε ἐκεῖθεν, μή ποτε ἀποτεκνωθῶ ἀπὸ τῶν δύο ὑμῶν ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ. Εἶπε δὲ Ῥεβέκκα πρὸς Ἰσαὰκ, προσώχθικα τῇ ζωῇ μου διὰ τὰς θυγατέρας τῶν υἱῶν Χέτ· εἰ λήψεται Ἰακὼβ γυναῖκα ἀπὸ τῶν θυγατέρων τῆς γῆς ταύτης, ἵνα τί μοι τὸ ζῆν;

# 28

Προσκαλεσάμενος δὲ Ἰσαὰκ τὸν Ἰακὼβ, εὐλόγησεν αὐτὸν, καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ, λέγων, οὐ λήψῃ γυναῖκα ἐκ τῶν θυγατέρων τῶν Χαναναίων. Ἀναστὰς ἀπόδραθι εἰς τὴν Μεσοποταμίαν, εἰς τὸν οἶκον Βαθουὴλ τοῦ πατρὸς τῆς μητρός σου, καὶ λάβε σεαυτῷ ἐκεῖθεν γυναῖκα ἐκ τῶν θυγατέρων Λάβαν τοῦ ἀδελφοῦ τῆς μητρός σου. Ὁ δὲ Θεός μου εὐλογήσαι σε, καὶ αὐξήσαι σε, καὶ πληθύναι σε· καὶ ἔσῃ εἰς συναγωγὰς ἐθνῶν. Καὶ δῴη σοι τὴν εὐλόγιαν Ἀβραὰμ τοῦ πατρός μου, σοὶ καὶ τῷ σπέρματί σου μετὰ σὲ, κληρονομῆσαι τὴν γῆν τῆς παροικήσεώς σου, ἣν ἔδωκεν ὁ Θεὸς τῷ Ἀβραάμ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰσαὰκ τὸν Ἰακώβ· καὶ ἐπορεύθη εἰς τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς Λάβαν τὸν υἱὸν Βαθουὴλ τοῦ Σύρου, ἀδελφὸν Ῥεβέκκας τῆς μητρὸς Ἰακὼβ καὶ Ἠσαῦ. Ἴδε δὲ Ἠσαῦ ὅτι εὐλόγησεν Ἰσαὰκ τὸν Ἰακὼβ, καὶ ἀπέστειλεν εἰς τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας, λαβεῖν ἑαυτῷ γυναῖκα ἐκεῖθεν, ἐν τῷ εὐλογεῖν αὐτόν· καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ, λέγων, οὐ λήψῃ γυναῖκα ἐκ τῶν θυγατέρων τῶν Χαναναίων. Καὶ ἤκουσεν Ἰακὼβ τοῦ πατρὸς καὶ τῆς μητρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐπορεύθη εἰς τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας. Ἰδὼν δὲ καὶ Ἠσαῦ ὅτι

πονηραί εἰσιν αἱ θυγατέρες Χαναὰν ἐναντίον Ἰσαὰκ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἐπορεύθη Ἡσαῦ πρὸς Ἰσμαήλ· καὶ ἔλαβε τὴν Μαελὲθ, θυγατέρα Ἰσμαὴλ τοῦ υἱοῦ Ἀβραὰμ, ἀδελφὴν Ναβεὼθ, πρὸς ταῖς γυναιξὶν αὐτοῦ γυναῖκα. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰακὼβ ἀπὸ τοῦ φρέατος τοῦ ὅρκου, καὶ ἐπορεύθη εἰς Χαῤῥάν. Καὶ ἀπήντησε τόπῳ, καὶ ἐκοιμήθη ἐκεῖ, ἔδυ γὰρ ὁ ἥλιος· καὶ ἔλαβεν ἀπὸ τῶν λίθων τοῦ τόπου, καὶ ἔθηκε πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ· καὶ ἐκοιμήθη ἐν τῷ τόπῳ ἐκείνῳ. Καὶ ἐνυπνιάσθη· καὶ ἰδοὺ κλίμαξ ἐστηριγμένη ἐν τῇ γῇ, ἧς ἡ κεφαλὴ ἀφικνεῖτο εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ οἱ ἄγγελοι τοῦ θεοῦ ἀνέβαινον καὶ κατέβαινον ἐπ αὐτῇ. Ὁ δὲ Κύριος ἐπεστήρικτο ἐπ αὐτῆς· καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ τοῦ πατρός σου, καὶ ὁ Θεὸς Ἰσαάκ· μὴ φοβοῦ· ἡ γῆ ἐφ ἧς σὺ καθεύδεις ἐπ αὐτῆς, σοὶ δώσω αὐτὴν, καὶ τῷ σπέρματί σου. Καὶ ἔσται τὸ σπέρμα σου ὡς ἡ ἄμμος τῆς γῆς, καὶ πλατυνθήσεται ἐπὶ θάλασσαν, καὶ Λίβα, καὶ Βοῤῥὰν, καὶ ἐπὶ ἀνατολάς· καὶ ἐνευλογηθήσονται ἐν σοὶ πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς γῆς, καὶ ἐν τῷ σπέρματί σου. Καὶ ἰδοὺ ἐγώ εἰμι μετὰ σοῦ, διαφυλάσσων σε ἐν τῇ ὁδῷ πάσῃ, οὗ ἂν πορευθῇς· καὶ ἀποστρέψω σε εἰς τὴν γῆν ταύτην· ὅτι οὐ μή σε ἐγκαταλίπω, ἕως τοῦ ποιῆσαί με πάντα ὅσα ἐλάλησά σοι. Καὶ ἐξηγέρθη Ἰακὼβ ἐκ τοῦ ὕπνου αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ὅτι ἔστι Κύριος ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, ἐγὼ δὲ οὐκ ᾔδειν. Καὶ ἐφοβήθη, καὶ εἶπεν, ὡς φοβερὸς ὁ τόπος οὗτος· οὐκ ἔστι τοῦτο ἀλλ ἢ οἶκος Θεοῦ, καὶ αὕτη ἡ πύλη τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ ἀνέστη Ἰακὼβ τὸ πρωΐ, καὶ ἔλαβε τὸν λίθον, ὃν ὑπέθηκεν ἐκεῖ πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ἔστησεν αὐτὸν στήλην, καὶ ἐπέχεεν ἔλαιον ἐπὶ τὸ ἄκρον αὐτῆς. Καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, οἶκος Θεοῦ· καὶ Οὐλαμλοὺζ ἦν ὄνομα τῇ πόλει τὸ πρότερον. Καὶ ηὔξατο Ἰακὼβ εὐχὴν, λέγων, ἐὰν ᾖ Κύριος ὁ Θεὸς μετ ἐμοῦ, καὶ διαφυλάξῃ με ἐν τῇ ὁδῷ ταύτῃ, ᾗ ἐγὼ πορεύομαι, καὶ δῷ μοι ἄρτον φαγεῖν,

καὶ ἱμάτιον περιβαλέσθαι, καὶ ἀποστρέψῃ με μετὰ σωτηρίας εἰς τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου, καὶ ἔσται Κύριός μοι εἰς Θεόν. Καὶ ὁ λίθος οὗτος, ὃν ἔστησα στήλην, ἔσται μοι οἶκος Θεοῦ· καὶ πάντων ὧν ἐάν μοι δῷς, δεκάτην ἀποδεκατώσω αὐτά σοι.

# 29

Καὶ ἐξῆρας Ἰακὼβ τοὺς πόδας ἐπορεύθη εἰς γῆν ἀνατολῶν, πρὸς Λάβαν τὸν υἱὸν Βαθουὴλ τοῦ Σύρου, ἀδελφὸν δὲ Ῥεβέκκας, μητρὸς Ἰακὼβ καὶ Ἠσαῦ. Καὶ ὁρᾷ, καὶ ἰδοὺ φρέαρ ἐν τῷ πεδίῳ· ἦσαν δὲ ἐκεῖ τρία ποίμνια προβάτων ἀναπαυόμενα ἐπ αὐτοῦ· ἐκ γὰρ τοῦ φρέατος ἐκείνου ἐπότιζον τὰ ποίμνια· λίθος δὲ ἦν μέγας ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ φρέατος. Καὶ συνήγοντο ἐκεῖ πάντα τὰ ποίμνια· καὶ ἀπεκύλιον τὸν λίθον ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ φρέατος, καὶ ἐπότιζον τὰ πρόβατα, καὶ ἀπεκαθίστων τὸν λίθον ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ φρέατος εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰακὼβ, ἀδελφοὶ, πόθεν ἐστὲ ὑμεῖς; οἱ δὲ εἶπαν, ἐκ Χαῤῥὰν ἐσμέν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς, γινώσκετε Λάβαν τὸν υἱὸν Ναχώρ; οἱ δὲ εἶπαν, γινώσκομεν· Εἶπε δὲ αὐτοῖς, ὑγιαίνει; οἱ δὲ εἶπαν, ὑγιαίνει· καὶ ἰδοὺ Ῥαχὴλ ἡ θυγάτηρ αὐτοῦ ἤρχετο μετὰ τῶν προβάτων. Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ, ἔτι ἐστὶν ἡμέρα πολλὴ· οὔπω ὥρα συναχθῆναι τὰ κτήνη· ποτίσαντες τὰ πρόβατα, ἀπελθόντες βόσκετε. Οἱ δὲ εἶπαν, οὐ δυνησόμεθα, ἕως τοῦ συναχθῆναι πάντας τοὺς ποιμένας, καὶ ἀποκυλίσουσι τὸν λίθον ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ φρέατος, καὶ ποτιοῦμεν τὰ πρόβατα. Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος αὐτοῖς, καὶ ἰδοὺ Ῥαχὴλ ἡ θυγάτηρ Λάβαν ἤρχετο μετὰ τῶν προβάτων τοῦ πατρὸς αὐτῆς· αὐτὴ γὰρ ἔβοσκε τὰ πρόβατα τοῦ πατρὸς αὐτῆς. Ἐγένετο δὲ ὡς εἶδεν Ἰακὼβ τὴν Ῥαχὴλ

τὴν θυγατέρα Λάβαν, τοῦ ἀδελφοῦ τῆς μητρὸς αὐτοῦ, καὶ τὰ πρόβατα Λάβαν τοῦ ἀδελφοῦ τῆς μητρὸς αὐτοῦ, καὶ προσελθὼν Ἰακὼβ ἀπεκύλισε τὸν λίθον ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ φρέατος, καὶ ἐπότιζε τὰ πρόβατα Λάβαν τοῦ ἀδελφοῦ τῆς μητρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἐφίλησεν Ἰακὼβ τὴν Ῥαχὴλ, καὶ βοήσας τῇ φωνῇ αὐτοῦ ἔκλαυσε. Καὶ ἀπήγγειλε τῇ Ῥαχὴλ, ὅτι ἀδελφὸς τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἐστι, καὶ ὅτι υἱὸς Ῥεβέκκας ἐστί· καὶ δραμοῦσα ἀπήγγειλε τῷ πατρὶ αὐτῆς κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα. Ἐγένετο δὲ ὡς ἤκουσε Λάβαν τὸ ὄνομα Ἰακὼβ τοῦ υἱοῦ τῆς ἀδελφῆς αὐτοῦ, ἔδραμεν εἰς συνάντησιν αὐτῷ, καὶ περιλαβὼν αὐτὸν ἐφίλησε, καὶ εἰσήγαγεν αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ διηγήσατο τῷ Λάβαν πάντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Λάβαν, ἐκ τῶν ὀστῶν μου καὶ ἐκ τῆς σαρκός μου εἶ σύ· καὶ ἦν μετ αὐτοῦ μῆνα ἡμερῶν. Εἶπε δὲ Λάβαν τῷ Ἰακὼβ, ὅτι γὰρ ἀδελφός μου εἶ, οὐ δουλεύσεις μοι δωρεάν· ἀπάγγειλόν μοι τίς ὁ μισθός σου ἐστί; Τῷ δὲ Λάβαν ἦσαν δύο θυγατέρες· ὄνομα τῇ μείζονι, Λεία, καὶ ὄνομα τῇ νεωτέρᾳ, Ῥαχήλ. Οἱ δὲ ὀφθάλμοὶ Λείας, ἀσθενεῖς· Ῥαχῆλ δὲ ἦν καλὴ τῷ εἴδει, καὶ ὡραία τῇ ὄψει σφάδρα. Ἠγάπησε δὲ Ἰακὼβ τὴν Ῥαχήλ· καὶ εἶπε, δουλεύσω σοι ἑπτὰ ἔτη περὶ τῆς Ῥαχὴλ τῆς θυγατρός σου τῆς νεωτέρας. Εἶπε δὲ αὐτῷ Λάβαν, βέλτιον δοῦναί με αὐτήν σοι, ἢ δοῦναί με αὐτὴν ἀνδρὶ ἑτέρῳ· οἴκησον μετ ἐμοῦ. Καὶ ἐδούλευσεν Ἰακὼβ περὶ Ῥαχὴλ ἑπτὰ ἔτη· καὶ ἦσαν ἐναντίον αὐτοῦ ὡς ἡμέραι ὀλίγαι, παρὰ τὸ ἀγαπᾷν αὐτὸν αὐτήν. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ τῷ Λάβαν, δός μοι τὴν γυναῖκά μου, πεπλήρωνται γὰρ αἱ ἡμέραι ὅπως εἰσέλθω πρὸς αὐτήν. Συνήγαγε δὲ Λάβαν πάντας τοὺς ἄνδρας τοῦ τόπου, καὶ ἐποίησε γάμον. Καὶ ἐγένετο ἑσπέρα, καὶ λαβὼν Λείαν τὴν θυγατέρα αὐτοῦ, εἰσήγαγεν πρὸς Ἰακὼβ, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὴν Ἰακώβ. Ἔδωκε δὲ Λάβαν Λείᾳ τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ Ζελφὰν τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, αὐτῇ

παιδίσκην. Ἐγένετο δὲ πρωΐ, καὶ ἰδοὺ ἦν Λεία· εἶπε δὲ Ἰακὼβ τῷ Λάβαν, τί τοῦτο ἐποίησάς μοι; οὐ περὶ Ῥαχὴλ ἐδούλευσα παρὰ σοι; καὶ ἱνατί παρελογίσω με; Ἀπεκρίθη δὲ Λάβαν, οὐκ ἔστιν οὕτως ἐν τῷ τόπῳ ἡμῶν, δοῦναι τὴν νεωτέραν πρινὴ τὴν πρεσβυτέραν. Συντέλεσον οὖν τὰ ἕβδομα ταύτης, καὶ δώσω σοι καὶ ταύτην ἀντὶ τῆς ἐργασίας, ἧς ἐργᾷ παρ ἐμοὶ ἔτι ἑπτὰ ἔτη ἕτερα. Ἐποίησε δὲ Ἰακὼβ οὕτως, καὶ ἀνεπλήρωσε τὰ ἕβδομα ταύτης· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Λάβαν Ῥαχὴλ τὴν θυγατέρα αὐτοῦ αὐτῷ γυναῖκα. Ἔδωκε δὲ Λάβαν τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ Βαλλὰν τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, αὐτῇ παιδίσκην. Καὶ εἰσῆλθε πρὸς Ῥαχήλ· ἠγάπησε δὲ Ῥαχὴλ μᾶλλον ἢ Λείαν· καὶ ἐδούλευσεν αὐτῷ ἑπτὰ ἔτη ἕτερα. Ἰδὼν δὲ Κύριος ὁ Θεὸς ὅτι ἐμισεῖτο Λεία, ἤνοιξε τὴν μήτραν αὐτῆς· Ῥαχὴλ δὲ ἦν στεῖρα. Καὶ συνέλαβε Λεία, καὶ ἔτεκεν υἱὸν τῷ Ἰακώβ· ἐκάλεσε δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ῥουβὴν, λέγουσα, διότι εἶδέ μου Κύριος τὴν ταπείνωσιν, καὶ ἔδωκέ μοι υἱόν· νῦν οὖν ἀγαπήσει με ὁ ἀνήρ μου. Καὶ συνέλαβε πάλιν, καὶ ἔτεκεν υἱὸν δεύτερον τῷ Ἰακὼβ, καὶ εἶπεν, ὅτι ἤκουσε Κύριος ὅτι μισοῦμαι, καὶ προσέδωκέ μοι καὶ τοῦτον· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Συμεών. Καὶ συνέλαβεν ἔτι, καὶ ἔτεκεν υἱὸν, καὶ εἶπεν, ἐν τῷ νῦν καιρῷ πρὸς ἐμοῦ ἔσται ὁ ἀνήρ μου, τέτοκα γὰρ αὐτῷ τρεῖς υἱούς· διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Λευεί. Καὶ συλλαβοῦσα ἔτι ἔτεκεν υἱὸν, καὶ εἶπε, νῦν ἔτι τοῦτο ἐξομολογήσομαι Κυρίῳ· διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἰούδαν· καὶ ἔστη τοῦ τίκτειν.

# 30

Ἰδοῦσα δὲ Ῥαχὴλ, ὅτι οὐ τέτοκε τῷ Ἰακώβ· καὶ ἐζήλωσε Ῥαχὴλ τὴν

ἀδελφὴν αὐτῆς· καὶ εἶπε τῷ Ἰακὼβ, δός μοι τέκνα· εἰ δὲ μὴ, τελευτήσω ἐγώ. Θυμωθεὶς δὲ Ἰακὼβ τῇ Ῥαχὴλ εἶπεν αὐτῇ, μὴ ἀντὶ Θεοῦ ἐγώ εἰμι, ὃς ἐστέρησέ σε καρπὸν κοιλίας; Εἶπε δὲ Ῥαχὴλ τῷ Ἰακὼβ, ἰδοὺ ἡ παιδίσκη μου Βαλλά· εἴσελθε πρὸς αὐτήν· καὶ τέξεται ἐπὶ τῶν γονάτων μου, καὶ τεκνοποιήσομαι κἀγὼ ἐξ αὐτῆς. Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Βαλλὰν τὴν παιδίσκην αὐτῆς, αὐτῷ γυναῖκα· καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὴν Ἰακώβ. Καὶ συνέλαβε Βαλλὰ ἡ παιδίσκη Ῥαχὴλ, καὶ ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ υἱόν. Καὶ εἶπε Ῥαχὴλ, ἔκρινέ μοι ὁ Θεὸς, καὶ ἐπήκουσε τῆς φωνῆς μου, καὶ ἔδωκε μοι υἱόν· διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Δάν. Καὶ συνέλαβεν ἔτι Βαλλὰ ἡ παιδίσκη Ῥαχὴλ, καὶ ἔτεκεν υἱὸν δεύτερον τῷ Ἰακώβ. Καὶ εἶπε Ῥαχὴλ, συναντελάβετό μου ὁ Θεὸς, καὶ συνανεστράφην τῇ ἀδελφῇ μου, καὶ ἠδυνάσθην· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Νεφθαλεί. Εἶδε δὲ Λεία ὅτι ἔστη τοῦ τίκτειν· καὶ ἔλαβε Ζελφὰν τὴν παιδίσκην αὐτῆς, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν τῷ Ἰακὼβ γυναῖκα· καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν. Καὶ συνέλαβε Ζελφὰ ἡ παιδίσκη Λείας, καὶ ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ υἱόν. Καὶ εἶπε Λεία, ἐν τύχῃ· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Γάδ. Καὶ συνέλαβεν ἔτι Ζελφὰ ἡ παιδίσκη Λείας, καὶ ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ υἱὸν δεύτερον. Καὶ εἶπε Λεία, μακαρία ἐγὼ, ὅτι μακαριοῦσί με αἱ γυναῖκες· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἀσήρ. Ἐπορεύθη δὲ Ῥουβὴν ἐν ἡμέρᾳ θερισμοῦ πυρῶν, καὶ εὗρε μῆλα μανδραγορῶν ἐν τῷ ἀγρῷ, καὶ ἤνεγκεν αὐτὰ πρὸς Λείαν τὴν μητέρα αὐτοῦ· εἶπε δὲ Ῥαχὴλ τῇ Λείᾳ τῇ ἀδελφῇ αὐτῆς, δός μοι τῶν μανδραγορῶν τοῦ υἱοῦ σου. Εἶπε δὲ Λεία, οὐχ ἱκανόν σοι ὅτι ἔλαβες τὸν ἄνδρα μου; μὴ καὶ τοὺς μανδραγόρας τοῦ υἱοῦ μου λήψῃ; εἶπε δὲ Ῥαχὴλ, οὐχ οὕτως· κοιμηθήτω μετὰ σοῦ τὴν νύκτα ταύτην ἀντὶ τῶν μανδραγορῶν τοῦ υἱοῦ σου. Εἰσῆλθεν δὲ Ἰακὼβ ἐξ ἀγροῦ ἑσπέρας· καὶ ἐξῆλθε Λεία εἰς συνάντησιν αὐτῷ, καὶ εἶπε, πρὸς ἐμὲ εἰσελεύσῃ

σήμερον· μεμίσθωμαι γάρ σε ἀντὶ τῶν μανδραγορῶν τοῦ υἱοῦ μου· καὶ ἐκοιμήθη μετ αὐτῆς τὴν νύκτα ἐκείνην. Καὶ ἐπήκουσεν ὁ Θεὸς Λείας· καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ υἱὸν πέμπτον. Καὶ εἶπε Λεία, δέδωκέ μοι ὁ Θεὸς τὸν μισθόν μου, ἀνθ οὗ ἔδωκα τὴν παιδίσκην μου τῷ ἀνδρί μου· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἰσσάχαρ, ὅ ἐστι μισθός. Καὶ συνέλαβεν ἔτι Λεία, καὶ ἔτεκεν υἱὸν ἕκτον τῷ Ἰακώβ. Καὶ εἶπε Λεία, δεδώρηταί ὁ Θεός μοι δῶρον καλὸν ἐν τῷ νῦν καιρῷ· αἱρετιεῖ με ὁ ἀνήρ μου, τέτοκα γὰρ αὐτῷ υἱοὺς ἕξ· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ζαβουλών. Καὶ μετὰ τοῦτο ἔτεκε θυγατέρα, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτῆς, Δεῖνα. Ἐμνήσθη δὲ ὁ Θεὸς τῆς Ῥαχὴλ, καὶ ἐπήκουσεν αὐτῆς ὁ Θεός· καὶ ἀνέῳξεν αὐτῆς τὴν μήτραν. Καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ υἱόν· εἶπε δὲ Ῥαχὴλ, ἀφεῖλεν ὁ Θεός μου τὸ ὄνειδος. Καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωσὴφ, λέγουσα, προσθέτω ὁ Θεός μοι υἱὸν ἕτερον. Ἐγένετο δὲ ὡς ἔτεκε Ῥαχὴλ τὸν Ἰωσὴφ, εἶπεν Ἰακὼβ τῷ Λάβαν, ἀπόστειλόν με, ἵνα ἀπέλθω εἰς τὸν τόπον μου, καὶ εἰς τὴν γῆν μου. Ἀπόδος τὰς γυναῖκας μου, καὶ τὰ παιδία μου, περὶ ὧν δεδούλευκά σοι, ἵνα ἀπέλθω· σὺ γὰρ γινώσκεις τὴν δουλείαν, ἣν δεδούλευκά σοι. Εἶπε δὲ αὐτῷ Λάβαν, εἰ εὗρον χάριν ἐναντίον σου, οἰωνισάμην ἄν· εὐλόγησε γάρ με ὁ Θεὸς ἐπὶ τῇ σῇ εἰσόδῳ. Διάστειλον τὸν μισθόν σου πρός με, καὶ δώσω. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ, σὺ γινώσκεις ἃ δεδούλευκά σοι, καὶ ὅσα ἦν κτήνη σου μετ ἐμοῦ. Μικρὰ γὰρ ἦν ὅσα σοι ἐναντίον ἐμοῦ, καὶ ηὐξήθη εἰς πλῆθος· καὶ εὐλόγησέ σε Κύριος ὁ Θεὸς ἐπὶ τῷ ποδί μου· νῦν οὖν πότε ποιήσω κἀγὼ ἐμαυτῷ οἶκον; Καὶ εἶπεν αὐτῷ Λάβαν, τί σοι δώσω; Εἶπε δὲ αὐτῷ Ἰακὼβ, οὐ δώσεις μοι οὐθὲν, ἐὰν ποιήσῃς μοι τὸ ῥῆμα τοῦτο, πάλιν ποιμανῶ τὰ πρόβατά σου, καὶ φυλάξω. Παρελθέτω πάντα τὰ πρόβατά σου σήμερον, καὶ διαχώρισον ἐκεῖθεν πᾶν πρόβατον φαιὸν ἐν τοῖς

ἄρνασι, καὶ πᾶν διάλευκον καὶ ῥαντὸν ἐν ταῖς αἰξῖν, ἔσται μοι μισθός. Καὶ ἐπακούσεταί μοι ἡ δικαιοσύνη μου ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐπαύριον, ὅτι ἐστὶν ὁ μισθός μου ἐνώπιόν σου· πᾶν ὃ ἐὰν μὴ ᾖ ῥαντὸν καὶ διάλευκον ἐν ταῖς αἰξῖ, καὶ φαιὸν ἐν τοῖς ἄρνασι, κεκλεμμένον ἔσται παρ ἐμοί. Εἶπε δὲ αὐτῷ Λάβαν, ἔστω κατὰ τὸ ῥῆμά σου. Καὶ διέστειλεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τοὺς τράγους τοὺς ῥαντοὺς καὶ τοὺς διαλεύκους, καὶ πάσας τὰς αἶγας τὰς ῥαντὰς καὶ τὰς διαλεύκους, καὶ πᾶν ὃ ἦν φαιὸν ἐν τοῖς ἄρνασι, καὶ πᾶν ὃ ἦν λευκὸν ἐν αὐτοῖς, καὶ ἔδωκε διὰ χειρὸς τῶν υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστησεν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν, καὶ ἀνὰ μέσον αὐτῶν καὶ ἀνὰ μέσον Ἰακώβ· Ἰακὼβ δὲ ἐποίμαινε τὰ πρόβατα Λάβαν τὰ ὑπολειφθέντα. Ἔλαβε δὲ ἑαυτῷ Ἰακὼβ ῥάβδον στυρακίνην χλωρὰν καὶ καρυΐνην καὶ πλατάνου· καὶ ἐλέπισεν αὐτὰς Ἰακὼβ λεπίσματα λευκά· καὶ περισύρων τὸ χλωρὸν, ἐφαίνετο ἐπὶ ταῖς ῥάβδοις τὸ λευκὸν, ὃ ἐλέπισε, ποικίλον. Καὶ παρέθηκε τὰς ῥάβδους, ἃς ἐλέπισεν, ἐν τοῖς ληνοῖς τῶν ποτιστηρίων τοῦ ὕδατος, ἵνα ὡς ἂν ἔλθωσι τὰ πρόβατα πιεῖν, ἐνώπιον τῶν ῥάβδων ἐλθόντων αὐτῶν εἰς τὸ πιεῖν, ἐγκισσήσωσι τὰ πρόβατα εἰς τὰς ῥάβδους. Καὶ ἐνεκίσσων τὰ πρόβατα εἰς τὰς ῥάβδους· καὶ ἔτικτον τὰ πρόβατα διάλευκα καὶ ποικίλα καὶ σποδοειδῆ ῥαντά. Τοὺς δὲ ἀμνοὺς διέστειλεν Ἰακὼβ, καὶ ἔστησεν ἐναντίον τῶν προβάτων κριὸν διάλευκον, καὶ πᾶν ποικίλον ἐν τοῖς ἀμνοῖς· καὶ διεχώρισεν ἑαυτῷ ποίμνια καθ ἑαυτὸν, καὶ οὐκ ἔμιξεν αὐτὰ εἰς τὰ πρόβατα Λάβαν. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ᾧ ἐνεκίσσων τὰ πρόβατα ἐν γαστρὶ λαμβάνοντα, ἔθηκεν Ἰακὼβ τὰς ῥάβδους ἐναντίον τῶν προβάτων ἐν τοῖς ληνοῖς, τοῦ ἐγκισσῆσαι αὐτὰ κατὰ τὰς ῥάβδους. Ἡνίκα δ ἂν ἔτεκε τὰ πρόβατα, οὐκ ἐτίθει· ἐγένετο δὲ τὰ μὲν ἄσημα τοῦ Λάβαν, τὰ δὲ ἐπίσημα τοῦ Ἰακώβ. Καὶ ἐπλούτησεν ὁ

ἄνθρωπος σφόδρα σφόδρα· καὶ ἐγένετο αὐτῷ κτήνη πολλὰ, καὶ βόες, καὶ παῖδες, καὶ παιδίσκαι, καὶ κάμηλοι, καὶ ὄνοι.

# 31

Ἤκουσε δὲ Ἰακὼβ τὰ ῥήματα τῶν υἱῶν Λάβαν, λεγόντων, εἴληφεν Ἰακὼβ πάντα τὰ τοῦ πατρὸς ἡμῶν, καὶ ἐκ τῶν τοῦ πατρὸς ἡμῶν πεποίηκε πᾶσαν τὴν δόξαν ταύτην. Καὶ εἶδεν Ἰακὼβ τὸ πρόσωπον τοῦ Λάβαν, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν πρὸς αὐτὸν ὡσεὶ χθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Ἰακὼβ, ἀποστρέφου εἰς τὴν γῆν τοῦ πατρός σου, καὶ εἰς τὴν γενεάν σου, καὶ ἔσομαι μετὰ σοῦ. Ἀποστείλας δὲ Ἰακὼβ ἐκάλεσε Λείαν καὶ Ῥαχὴλ εἰς τὸ πεδίον, οὗ ἦν τὰ ποίμνια. Καὶ εἶπεν αὐταῖς, ὁρῶ ἐγὼ τὸ πρόσωπον τοῦ πατρὸς ὑμῶν, ὅτι οὐκ ἔστι πρὸς ἐμοῦ, ὡς ἐχθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν· ὁ δὲ Θεὸς τοῦ πατρός μου ἦν μετ ἐμοῦ. Καὶ αὐταὶ δὲ οἴδατε, ὅτι ἐν πάσῃ τῇ ἰσχύϊ μου δεδούλευκα τῷ πατρὶ ὑμῶν. Ὁ δὲ πατὴρ ὑμῶν παρεκρούσατό με, καὶ ἤλλαξε τὸν μισθόν μου τῶν δέκα ἀμνῶν· καὶ οὐκ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ Θεὸς κακοποιῆσαί με. Ἐὰν οὕτως εἴπῃ, τὰ ποικίλα ἔσται σου μισθὸς, καὶ τέξεται πάντα τὰ πρόβατα ποικίλα· ἐὰν δὲ εἴπῃ, τὰ λευκὰ ἔσται σου μισθὸς, καὶ τέξεται πάντα τὰ πρόβατα λευκά. Καὶ ἀφείλετο ὁ Θεὸς πάντα τὰ κτήνη τοῦ πατρὸς ὑμῶν, καὶ ἔδωκέ μοι αὐτά. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἐνεκίσσων τὰ πρόβατα ἐν γαστρὶ λαμβάνοντα, καὶ εἶδον τοῖς ὀφθαλμοῖς μου ἐν τῷ ὕπνῳ· καὶ ἰδοὺ οἱ τράγοι καὶ οἱ κριοὶ ἀναβαίνοντες ἐπὶ τὰ πρόβατα καὶ τὰς αἶγας, διάλευκοι καὶ ποικίλοι καὶ σποδοειδεῖς ῥαντοί. Καὶ εἶπέ μοι ὁ Ἄγγελος τοῦ Θεοῦ καθ ὕπνον, Ἰακώβ· ἐγὼ δὲ εἶπα, τί ἐστι; Καὶ εἶπεν, ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἴδε

τοὺς τράγους καὶ τοὺς κριοὺς ἀναβαίνοντας ἐπὶ τὰ πρόβατα καὶ τὰς αἶγας διαλεύκους καὶ ποικίλους καὶ σποδοειδεῖς ῥαντούς· ἑώρακα γὰρ ὅσα σοι Λάβαν ποιεῖ. Ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς ὁ ὀφθείς σοι ἐν τόπῳ Θεοῦ, οὗ ἤλειψάς μοι ἐκεῖ στήλην, καὶ ηὔξω μοι ἐκεῖ εὐχήν· νῦν οὖν ἀνάστηθι, καὶ ἔξελθε ἐκ τῆς γῆς ταύτης, καὶ ἄπελθε εἰς τὴν γῆν τῆς γενέσεώς σου, καὶ ἔσομαι μετὰ σοῦ. Καὶ ἀποκριθεῖσαι Ῥαχὴλ καὶ Λεία εἶπαν αὐτῷ, μὴ ἔστιν ἡμῖν ἔτι μερὶς ἢ κληρονομία ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς ἡμῶν; Οὐχ ὡς αἱ ἀλλότριαι λελογίσμεθα αὐτῷ; πέπρακε γὰρ ἡμᾶς, καὶ καταβρώσει κατέφαγε τὸ ἀργύριον ἡμῶν. Πάντα τὸν πλοῦτον καὶ τὴν δόξαν, ἣν ἀφείλετο ὁ Θεὸς τοῦ πατρὸς ἡμῶν, ἡμῖν ἔσται καὶ τοῖς τέκνοις ἡμῶν· νῦν οὖν ὅσα σοι εἴρηκεν ὁ Θεὸς, ποίει. Ἀναστὰς δὲ Ἰακὼβ ἔλαβε τὰς γυναῖκας αὐτοῦ καὶ τὰ παιδία αὐτοῦ ἐπὶ τὰς καμήλους· Καὶ ἀπήγαγε πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτῷ, καὶ πᾶσαν τὴν ἀποσκευὴν αὐτοῦ, ἣν περιεποιήσατο ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ, καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, ἀπελθεῖν πρὸς Ἰσαὰκ τὸν πατέρα αὐτοῦ εἰς γῆν Χαναάν. Λάβαν δὲ ᾤχετο κεῖραι τὰ πρόβατα αὐτοῦ· ἔκλεψε δὲ Ῥαχὴλ τὰ εἴδωλα τοῦ πατρὸς αὐτῆς. Ἔκρυψε δὲ Ἰακὼβ Λάβαν τὸν Σύρον, τοῦ μὴ ἀναγγεῖλαι αὐτῷ, ὅτι ἀποδιδράσκει. Καὶ ἀπέδρα αὐτὸς, καὶ τὰ αὐτοῦ πάντα, καὶ διέβη τὸν ποταμὸν, καὶ ὥρμησεν εἰς τὸ ὄρος Γαλαάδ. Ἀνηγγέλη δὲ Λάβαν τῷ Σύρῳ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, ὅτι ἀπέδρα Ἰακώβ. Καὶ παραλαβὼν τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ μεθ ἑαυτοῦ, ἐδίωξεν ὀπίσω αὐτοῦ ὁδὸν ἡμερῶν ἑπτά· καὶ κατέλαβεν αὐτὸν ἐν τῷ ὄρει Γαλαάδ. Ἦλθε δὲ ὁ Θεὸς πρὸς Λάβαν τὸν Σύρον καθ ὕπνον τὴν νύκτα, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Φύλαξαι σεαυτὸν μή ποτε λαλήσῃς μετὰ Ἰακὼβ πονηρά. Καὶ κατέλαβε Λάβαν τὸν Ἰακώβ· Ἰακὼβ δὲ ἔπηξεν τὴν σκηνὴν αὐτοῦ ἐν τῷ ὄρει· Λάβαν δὲ ἔστησε τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ ἐν τῷ ὄρει Γαλαάδ. Εἶπε δὲ Λάβαν τῷ Ἰακὼβ, τί ἐποίησας; ἱνατί

κρυφῇ ἀπέδρας, καὶ ἐκλοποφόρησάς με, καὶ ἀπήγαγες τὰς θυγατέρας μου, ὡς αἰχμαλώτιδας μαχαίρᾳ; Καὶ εἰ ἀνήγγειλάς μοι, ἐξαπέστειλα ἄν σε μετ εὐφροσύνης, καὶ μετὰ μουσικῶν, καὶ τυμπάνων, καὶ κιθάρας. Καὶ οὐκ ἠξιώθην καταφιλῆσαι τὰ παιδία μου, καὶ τὰς θυγατέρας μου· νῦν δὲ ἀφρόνως ἔπραξας. Καὶ νῦν ἰσχύει ἡ χείρ μου κακοποιῆσαί σε· ὁ δὲ Θεὸς τοῦ πατρός σου χθὲς εἶπε πρός με, λέγων, Φύλαξαι σεαυτὸν μή ποτε λαλήσῃς μετὰ Ἰακὼβ πονηρά. Νῦν οὖν πεπόρευσαι· ἐπιθυμίᾳ γὰρ ἐπεθύμησας ἀπελθεῖν εἰς τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου· ἱνατί ἔκλεψας τοὺς θεούς μου; Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰακὼβ εἶπε τῷ Λάβαν, ὅτι ἐφοβήθην· εἶπα γὰρ, μή ποτε ἀφέλῃ τὰς θυγατέρας σου ἀπ ἐμοῦ, καὶ πάντα τὰ ἐμά. Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ, παρ ᾧ ἂν εὕρῃς τοὺς θεούς σου, οὐ ζήσεται ἐναντίον τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν· ἐπίγνωθι τί ἐστι παρ ἐμοὶ τῶν σῶν, καὶ λάβε· καὶ οὐκ ἐπέγνω παρ αὐτῷ οὐθέν· οὐκ ᾔδει δὲ Ἰακὼβ, ὅτι Ῥαχὴλ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἔκλεψεν αὐτούς. Εἰσελθὼν δὲ Λάβαν ἠρεύνησεν εἰς τὸν οἶκον Λείας, καὶ οὐχ εὗρεν· καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ οἴκου Λείας, καὶ ἠρεύνησε τὸν οἶκον Ἰακὼβ, καὶ ἐν τῷ οἴκῳ τῶν δύο παιδισκῶν, καὶ οὐχ εὗρεν· εἰσῆλθε δὲ καὶ εἰς τὸν οἶκον Ῥαχήλ. Ῥαχὴλ δὲ ἔλαβε τὰ εἴδωλα, καὶ ἐνέβαλεν αὐτὰ εἰς τὰ σάγματα τῆς καμήλου, καὶ ἐπεκάθισεν αὐτοῖς. Καὶ εἶπε τῷ πατρὶ αὐτῆς, μὴ βαρέως φέρε, κύριε· οὐ δυνάμαι ἀναστῆναι ἐνώπιόν σου, ὅτι τὰ κατ ἐθισμὸν τῶν γυναικῶν μοι ἐστίν· ἠρεύνησε Λάβαν ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ, καὶ οὐχ εὗρε τὰ εἴδωλα. Ὠργίσθη δὲ Ἰακὼβ, καὶ ἐμαχέσατο τῷ Λάβαν· ἀποκριθεὶς δὲ Ἰακὼβ εἶπε τῷ Λάβαν, τί τὸ ἀδίκημά μου; καὶ τί τὸ ἁμάρτημά μου, ὅτι κατεδίωξας ὀπίσω μου, καὶ ὅτι ἠρεύνησας πάντα τὰ σκεύη τοῦ οἴκου μου; τί εὗρες ἀπὸ πάντων τῶν σκευῶν τοῦ οἴκου σου; θὲς ὧδε ἐνώπιον τῶν ἀδελφῶν σου καὶ τῶν ἀδελφῶν μου, καὶ ἐλεγξάτωσαν ἀνὰ μέσον τῶν δύο ἡμῶν. Ταῦτά

μοι εἴκοσι ἔτη ἐγώ εἰμι μετὰ σοῦ· τὰ πρόβατά σου καὶ αἱ αἶγές σου οὐκ ἠτεκνώθησαν· κριοὺς τῶν προβάτων σου οὐ κατέφαγον. Θηριάλωτον οὐκ ἐνήνοχά σοι· ἐγὼ ἀπετίννυον παρ ἐμαυτοῦ κλέμματα ἡμέρας, καὶ κλέμματα νυκτός. Ἐγενόμην τῆς ἡμέρας συγκαιόμενος τῷ καύματι, καὶ τῷ παγετῷ τῆς νυκτός· καὶ ἀφίστατο ὁ ὕπνος μου ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν μου. Ταῦτά μοι εἴκοσι ἔτη ἐγώ εἰμι ἐν τῇ οἰκίᾳ σου· ἐδούλευσά σοι δεκατέσσαρα ἔτη ἀντὶ τῶν δύο θυγατέρων σου, καὶ ἓξ ἔτη ἐν τοῖς προβάτοις σου, καὶ παρελογίσω τὸν μισθόν μου δέκα ἀμνάσιν. Εἰ μὴ ὁ Θεὸς τοῦ πατρός μου Ἀβραὰμ, καὶ ὁ φόβος Ἰσαὰκ, ἦν μοι, νῦν ἂν κενόν με ἐξαπέστειλας· τὴν ταπείνωσίν μου, καὶ τὸν κόπον τῶν χειρῶν μου, εἶδεν ὁ Θεός· καὶ ἤλεγξέ σε χθές. Ἀποκριθεὶς δὲ Λάβαν εἶπε τῷ Ἰακὼβ, αἱ θυγατέρες, θυγατέρες μου, καὶ υἱοὶ, υἱοί μου, καὶ τὰ κτήνη, κτήνη μου· καὶ πάντα ὅσα σὺ ὁρᾷς, ἐμά ἐστι, καὶ τῶν θυγατέρων μου· τί ποιήσω ταύταις σήμερον ἢ τοῖς τέκνοις αὐτῶν, οἷς ἔτεκον; Νῦν οὖν δεῦρο διαθῶμαι διαθήκην ἐγώ τε καὶ σύ· καὶ ἔσται εἰς μαρτύριον ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ· εἶπε δὲ αὐτῷ, ἰδοὺ οὐθεὶς μεθ ἡμῶν ἐστιν· ἴδε ὁ Θεὸς μάρτυς ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ. Λαβὼν δὲ Ἰακὼβ λίθον, ἔστησεν αὐτὸν στήλην. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ, συλλέγετε λίθους· καὶ συνέλεξαν λίθους, καὶ ἐποίησαν βουνόν· καὶ ἔφαγον ἐκεῖ ἐπὶ τοῦ βουνοῦ· καὶ εἶπεν αὐτῷ Λάβαν, ὁ βουνὸς οὗτος μαρτυρεῖ ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ σήμερον. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν Λάβαν, βουνὸς τῆς μαρτυρίας· Ἰακὼβ δὲ ἐκάλεσεν αὐτὸν, βουνὸς μάρτυς. Εἶπε δὲ Λάβαν τῷ Ἰακὼβ, ἰδοὺ ὁ βουνὸς οὗτος καὶ ἡ στήλη, ἣν ἔστησα ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ· μαρτυρεῖ ὁ βουνὸς οὗτος, καὶ μαρτυρεῖ ἡ στήλη αὕτη· διὰ τοῦτο ἐκλήθη τὸ ὄνομα, βουνὸς μαρτυρεῖ. Καὶ ἡ ὅρασις, ἣν εἶπεν, ἐπίδοι ὁ Θεὸς ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ· ὅτι ἀποστησόμεθα ἕτερος ἀφ

ἑτέρου. Εἰ ταπεινώσεις τὰς θυγατέρας μου, εἰ λάβῃς γυναῖκας πρὸς ταῖς θυγατράσι μου, ὅρα, οὐθεὶς μεθ ἡμῶν ἐστιν ὁρῶν· Θεὸς μάρτυς μεταξὺ ἐμοῦ καὶ μεταξὺ σοῦ. Ἐάν τε γὰρ ἐγὼ μὴ διαβῶ πρός σε, μήτε σὺ διαβῇς πρός με τὸν βουνὸν τοῦτον καὶ τὴν στήλην ταύτην ἐπὶ κακίᾳ. Ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ καὶ ὁ Θεὸς Ναχὼρ κρίναι ἀνὰ μέσον ἡμῶν· καὶ ὤμοσεν Ἰακὼβ κατὰ τοῦ φόβου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ Ἰσαάκ. Καὶ ἔθυσεν θυσίαν ἐν τῷ ὄρει· καὶ ἐκάλεσε τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον, καὶ ἐκοιμήθησαν ἐν τῷ ὄρει.

# 32

Ἀναστὰς δὲ Λάβαν τὸ πρωΐ, κατεφίλησε τοὺς υἱοὺς καὶ τὰς θυγατέρας αὐτοῦ, καὶ εὐλόγησεν αὐτούς· καὶ ἀποστραφεὶς Λάβαν ἀπῆλθεν εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ Ἰακὼβ ἀπῆλθεν εἰς τὴν ὁδὸν ἑαυτοῦ· καὶ ἀναβλέψας εἶδε παρεμβολὴν Θεοῦ παρεμβεβληκυῖαν· καὶ συνήντησαν αὐτῷ οἱ Ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ, ἡνίκα εἶδεν αὐτοὺς, παρεμβολὴ Θεοῦ αὕτη· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Παρεμβολαί. Ἀπέστειλε δὲ Ἰακὼβ ἀγγέλους ἔμπροσθεν αὐτοῦ πρὸς Ἡσαῦ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ εἰς γῆν Σηεὶρ, εἰς χώραν Ἐδώμ. Καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς, λέγων, οὕτως ἐρεῖτε τῷ κυρίῳ μου Ἡσαῦ· οὕτως λέγει ὁ παῖς σου Ἰακώβ· μετὰ Λάβαν παρῴκησα, καὶ ἐχρόνισα ἕως τοῦ νῦν. Καὶ ἐγένοντό μοι βόες, καὶ ὄνοι, καὶ πρόβατα, καὶ παῖδες, καὶ παιδίσκαι· καὶ ἀπέστειλα ἀναγγεῖλαι τῷ κυρίῳ μου Ἡσαῦ, ἵνα εὕρῃ ὁ παῖς σου χάριν ἐναντίον σου. Καὶ ἀνέστρεψαν οἱ ἄγγελοι πρὸς Ἰακὼβ, λέγοντες, ἤλθομεν πρὸς τὸν ἀδελφόν σου Ἡσαυ· καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἔρχεται εἰς

συνάντησίν σου, καὶ τετρακόσιοι ἄνδρες μεθ αὐτοῦ. Ἐφοβήθη δὲ Ἰακὼβ σφόδρα, καὶ ἠπορεῖτο· καὶ διεῖλε τὸν λαὸν τὸν μεθ ἑαυτοῦ, καὶ τοὺς βόας, καὶ τὰς καμήλους, καὶ τὰ πρόβατα, εἰς δύο παρεμβολάς. Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ, ἐὰν ἔλθῃ Ἡσαῦ εἰς παρεμβολὴν μίαν, καὶ κόψῃ αὐτὴν, ἔσται ἡ παρεμβολὴ ἡ δευτέρα εἰς τὸ σώζεσθαι. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ, ὁ Θεὸς τοῦ πατρός μου Ἀβραὰμ, καὶ ὁ Θεὸς τοῦ πατρός μου Ἰσαὰκ, Κύριε σὺ ὁ εἰπών μοι, ἀπότρεχε εἰς τὴν γῆν τῆς γενέσεώς σου, καὶ εὖ σε ποιήσω· Ἱκανούσθω μοι ἀπὸ πάσης δικαιοσύνης, καὶ ἀπὸ πάσης ἀληθείας, ἧς ἐποίησας τῷ παιδί σου· ἐν γὰρ τῇ ῥάβδῳ μου ταύτῃ διέβην τὸν Ἰορδάνην τοῦτον· νυνὶ δὲ γέγονα εἰς δύο παρεμβολάς. Ἐξελοῦ με ἐκ χειρὸς τοῦ ἀδελφοῦ μου, ἐκ χειρὸς Ἡσαῦ· ὅτι φοβοῦμαι ἐγὼ αὐτὸν, μή ποτε ἐλθὼν πατάξῃ με, καὶ μητέρα ἐπὶ τέκνοις. Σὺ δὲ εἶπας, εὐ σε ποιήσω, καὶ θήσω τὸ σπέρμα σου ὡς τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης, ἣ οὐκ ἀριθμηθήσεται ὑπὸ τοῦ πλήθους. Καὶ ἐκοιμήθη ἐκεῖ τὴν νύκτα ἐκείνην· καὶ ἔλαβεν ὧν ἔφερεν δῶρα· καὶ ἐξαπέστειλεν Ἡσαῦ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, αἶγας διακοσίας, τράγους εἴκοσι, πρόβατα διακόσια, κριοὺς εἴκοσι, καμήλους θηλαζούσας καὶ τὰ παιδία αὐτῶν τριάκοντα, βόας τεσσαράκοντα, ταύρους δέκα, ὄνους εἴκοσι, καὶ πώλους δέκα. Καὶ ἔδωκεν αὐτὰ τοῖς παισὶν αὐτοῦ ποίμνιον κατὰ μόνας· εἶπε δὲ τοῖς παισὶν αὐτοῦ, προπορεύεσθε ἔμπροσθέν μου, καὶ διάστημα ποιεῖτε ἀνὰ μέσον ποίμνης καὶ ποίμνης. Καὶ ἐνετείλατο τῷ πρώτῳ, λέγων, ἐάν σοι συναντήσῃ Ἡσαῦ ὁ ἀδελφός μου, καὶ ἐρωτᾷ σε, λέγων, τίνος εἶ; καὶ ποῦ πορεύῃ; καὶ τίνος ταῦτα τὰ προπορευόμενά σου; Ἐρεῖς, τοῦ παιδός σου Ἰακώβ· δῶρα ἀπέσταλκε τῷ κυρίῳ μου Ἡσαῦ· καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ὀπίσω ἡμῶν. Καὶ ἐνετείλατο τῷ πρώτῳ, καὶ τῷ δευτέρῳ, καὶ τῷ τρίτῳ, καὶ πᾶσι τοῖς προπορευομένοις ὀπίσω τῶν ποιμνίων

τούτων, λέγων, κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο λαλήσατε Ἡσαῦ ἐν τῷ εὑρεῖν ὑμᾶς αὐτόν· Καὶ ἐρεῖτε, ἰδοὺ ὁ παῖς σου Ἰακὼβ παραγίνεται ὀπίσω ἡμῶν· εἶπε γὰρ, ἐξιλάσομαι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν τοῖς δώροις τοῖς προπορευομένοις αὐτοῦ, καὶ μετὰ τοῦτο ὄψομαι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ· ἴσως γὰρ προσδέξεται τὸ πρόσωπόν μου. Καὶ προεπορεύετο τὰ δῶρα κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ· αὐτὸς δὲ ἐκοιμήθη τὴν νύκτα ἐκείνην ἐν τῇ παρεμβολῇ. Ἀναστὰς δὲ τὴν νύκτα ἐκείνην, ἔλαβε τὰς δύο γυναῖκας, καὶ τὰς δύο παιδίσκας, καὶ τὰ ἕνδεκα παιδία αὐτοῦ, καὶ διέβη τὴν διάβασιν τοῦ Ἰαβώχ. Καὶ ἔλαβεν αὐτοὺς, καὶ διέβη τὸν χειμάῤῥουν, καὶ διεβίβασε πάντα τὰ αὐτοῦ. Ὑπελείφθη δὲ Ἰακὼβ μόνος· καὶ ἐπάλαιεν ἄνθρωπος μετ αὐτοῦ ἕως πρωΐ. Εἶδε δὲ ὅτι οὐ δύναται πρὸς αὐτόν· καὶ ἥψατο τοῦ πλάτους τοῦ μηροῦ αὐτοῦ, καὶ ἐνάρκησε τὸ πλάτος τοῦ μηροῦ Ἰακὼβ ἐν τῷ παλαίειν αὐτὸν μετ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀπόστειλόν με, ἀνέβη γὰρ ὁ ὄρθρος. ὁ δὲ εἶπεν, οὐ μή σε ἀποστείλω, ἐὰν μή με εὐλογήσῃς. Εἶπε δὲ αὐτῷ, τί τὸ ὄνομά σου ἐστίν; ὁ δὲ εἶπεν, Ἰακώβ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, οὐ κληθήσεται ἔτι τὸ ὄνομά σου Ἰακὼβ, ἀλλ Ἰσραὴλ ἔσται τὸ ὄνομά σου· ὅτι ἐνίσχυσας μετὰ Θεοῦ, καὶ μετὰ ἀνθρώπων δυνατὸς ἔσῃ. Ἠρώτησε δὲ Ἰακὼβ, καὶ εἶπεν, ἀνάγγειλόν μοι τὸ ὄνομά σου· καὶ εἶπεν, ἱνατί τοῦτο ἐρωτᾷς σὺ τὸ ὄνομά μου; καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν ἐκεῖ. Καὶ ἐκάλεσεν Ἰακὼβ τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, εἶδος Θεοῦ· εἶδον γὰρ Θεὸν πρόσωπον πρὸς πρὸσωπον, καὶ ἐσώθη μου ἡ ψυχή. Ἀνέτειλεν δὲ αὐτῷ ὁ ἥλιος, ἡνίκα παρῆλθε τὸ εἶδος τοῦ Θεοῦ· αὐτὸς δὲ ἐπέσκαζε τῷ μηρῷ αὐτοῦ. Ἕνεκεν τούτου οὐ μὴ φάγωσιν υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ νεῦρον, ὃ ἐνάρκησεν, ὅ ἐστιν ἐπὶ τοῦ πλάτους τοῦ μηροῦ, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ὅτι ἥψατο τοῦ πλάτους τοῦ μηροῦ Ἰακὼβ τοῦ νεύρου, ὃ ἐνάρκησεν.

# 33

Ἀναβλέψας δὲ Ἰακὼβ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ εἶδε· καὶ ἰδοὺ Ἡσαῦ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐρχόμενος, καὶ τετρακόσιοι ἄνδρες μετ αὐτοῦ· καὶ διεῖλεν Ἰακὼβ τὰ παιδία ἐπὶ Λείαν, καὶ ἐπὶ Ῥαχὴλ, καὶ τὰς δύο παιδίσκας. Καὶ ἔθετο τὰς δύο παιδίσκας καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν πρώτοις, καὶ Λείαν καὶ τὰ παιδία αὐτῆς ὀπίσω, καὶ Ῥαχὴλ καὶ Ἰωσὴφ ἐσχάτους. Αὐτὸς δὲ προῆλθεν ἔμπροσθεν αὐτῶν· καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν ἑπτάκις, ἕως τοῦ ἐγγίσαι τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ. Καὶ προσέδραμεν Ἡσαῦ εἰς συνάντησιν αὐτῷ· καὶ περιλαβὼν αὐτὸν προσέπεσεν ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ κατεφίλησεν αὐτόν· καὶ ἔκλαυσαν ἀμφότεροι. Καὶ ἀναβλέψας Ἡσαῦ εἶδε τὰς γυναῖκας καὶ τὰ παιδία· καὶ εἶπε, τί ταῦτά σοι ἐστίν; ὁ δὲ εἶπε, τὰ παιδία, οἷς ἠλέησεν ὁ Θεὸς τὸν παῖδά σου. Καὶ προσήγγισαν αἱ παιδίσκαι καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν. Καὶ προσήγγισε Λεία καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ προσεκύνησαν· καὶ μετὰ ταῦτα προσήγγισε Ῥαχὴλ καὶ Ἰωσὴφ, καὶ προσεκύνησαν. Καὶ εἶπε, τί ταῦτά σοι ἐστὶν, πᾶσαι αἱ παρεμβολαὶ αὗται, αἷς ἀπήντηκα; ὁ δὲ εἶπεν, ἵνα εὕρῃ ὁ παῖς σου χάριν ἐναντίον σου, κύριε. Εἶπε δὲ Ἡσαῦ, ἔστι μοι πολλὰ, ἀδελφέ· ἔστω σοι τὰ σά. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ, εἰ εὗρον χάριν ἐναντίον σου, δέξαι τὰ δῶρα διὰ τῶν ἐμῶν χειρῶν· ἕνεκεν τούτου εἶδον τὸ πρόσωπόν σου, ὡς ἄν τις ἴδοι πρόσωπον Θεοῦ, καὶ εὐδοκήσεις με. Λάβε τὰς εὐλογίας μου, ἃς ἤνεγκά σοι, ὅτι ἠλέησέ με ὁ Θεὸς, καὶ ἔστι μοι πάντα· καὶ ἐβιάσατο αὐτὸν, καὶ ἔλαβε. Καὶ εἶπεν, ἀπάραντες πορευσώμεθα ἐπ εὐθεῖαν. Εἶπε δὲ αὐτῷ, ὁ κύριός μου γινώσκει, ὅτι τὰ παιδία ἁπαλώτερα, καὶ τὰ πρόβατα καὶ αἱ βόες λοχεύονται ἐπ ἐμέ· ἐὰν οὖν καταδιώξω αὐτὰ

ἡμέραν μίαν, ἀποθανοῦνται πάντα τὰ κτήνη. Προελθέτω ὁ κύριός μου ἔμπροσθεν τοῦ παιδὸς αὐτοῦ· ἐγὼ δὲ ἐνισχύσω ἐν τῇ ὁδῷ κατὰ σχολὴν τῆς πορεύσεως τῆς ἐναντίον μου, καὶ κατὰ πόδα τῶν παιδαρίων, ἕως τοῦ ἐλθεῖν με πρὸς τὸν κύριόν μου εἰς Σηείρ. Εἶπε δὲ Ἠσαῦ, καταλείψω μετὰ σοῦ ἀπὸ τοῦ λαοῦ τοῦ μετ ἐμοῦ· ὁ δὲ εἶπεν, ἱνατί τοῦτο; ἱκανὸν ὅτι εὗρον χάριν ἐναντίον σου, κύριε. Ἀπέστρεψε δὲ Ἠσαῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τὴν ὁδὸν αὐτοῦ εἰς Σηείρ. Καὶ Ἰακὼβ ἀπαίρει εἰς σκηνὰς, καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ ἐκεῖ οἰκίας, καὶ τοῖς κτήνεσιν αὐτοῦ ἐποίησε σκηνάς· διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Σκηναί. Καὶ ἦλθεν Ἰακὼβ εἰς Σαλὴμ, πόλιν Σηκίμων, ἥ ἐστιν ἐν γῇ Χαναὰν, ὅτε ἐπανῆλθεν ἐκ τῆς Μεσοποταμίας Συρίας· καὶ παρενέλαβε κατὰ πρόσωπον τῆς πόλεως. Καὶ ἐκτήσατο τὴν μερίδα τοῦ ἀγροῦ, οὗ ἔστησεν ἐκεῖ τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, παρὰ Ἐμμὼρ πατρὸς Συχὲμ, ἑκατὸν ἀμνῶν. Καὶ ἔστησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον, καὶ ἐπεκαλέσατο τὸν Θεὸν Ἰσραήλ.

# 34

Ἐξῆλθε δὲ Δείνα, ἡ θυγάτηρ Λείας, ἣν ἔτεκε τῷ Ἰακώβ, καταμαθεῖν τὰς θυγατέρας τῶν ἐγχωρίων. Καὶ εἶδεν αὐτὴν Συχὲμ ὁ υἱὸς Ἐμμὼρ ὁ Εὐαῖος, ὁ ἄρχων τῆς γῆς· καὶ λαβὼν αὐτὴν, ἐκοιμήθη μετ αὐτῆς, καὶ ἐταπείνωσεν αὐτήν. Καὶ προσέσχε τῇ ψυχῇ Δείνας τῆς θυγατρὸς Ἰακώβ· καὶ ἠγάπησε τὴν παρθένον· καὶ ἐλάλησε κατὰ τὴν διάνοιαν τῆς παρθένου αυτῇ. Εἶπε Συχὲμ πρὸς Ἐμμὼρ τὸν πατέρα αὐτοῦ, λέγων, λάβε μοι τὴν παῖδα ταύτην εἰς γυναῖκα. Ἰακὼβ δὲ ἤκουσεν, ὅτι ἐμίανεν ὁ υἱὸς Ἐμμὼρ Δείναν τὴν θυγατέρα αὐτοῦ· οἱ δὲ υἱοὶ αὐτοῦ ἦσαν μετὰ τῶν κτηνῶν αὐτοῦ ἐν τῷ πεδίῳ·

παρεσιώπησε δὲ Ἰακὼβ, ἕως τοῦ ἐλθεῖν αὐτούς. Ἐξῆλθε δὲ Ἐμμὼρ ὁ πατὴρ Συχὲμ πρὸς Ἰακὼβ, λαλῆσαι αὐτῷ. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰακὼβ ἦλθον ἐκ τοῦ πεδίου· ὡς δὲ ἤκουσαν, κατενύγησαν οἱ ἄνδρες, καὶ λυπηρὸν ἦν αὐτοῖς σφόδρα· ὅτι ἄσχημον ἐποίησεν ἐν Ἰσραὴλ, κοιμηθεὶς μετὰ τῆς θυγατρὸς Ἰακώβ· καὶ οὐχ οὕτως ἔσται. Καὶ ἐλάλησεν Ἐμμὼρ αὐτοῖς, λέγων, Συχὲμ ὁ υἱός μου προείλετο τῇ ψυχῇ τὴν θυγατέρα ὑμῶν· δότε οὖν αὐτὴν αὐτῷ γυναῖκα, καὶ ἐπιγαμβρεύσασθε ἡμῖν· τὰς θυγατέρας ὑμῶν δότε ἡμῖν, καὶ τὰς θυγατέρας ἡμῶν λάβετε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν. Καὶ ἐν ἡμῖν κατοικεῖτε· καὶ ἡ γῆ ἰδοὺ πλατεῖα ἐναντίον ὑμῶν· κατοικεῖτε, καὶ ἐμπορεύεσθε ἐπ αὐτῆς, καὶ ἐγκτᾶσθε ἐν αὐτῇ. Εἶπε δὲ Συχὲμ πρὸς τὸν πατέρα αὐτῆς, καὶ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς, εὕροιμι χάριν ἐναντίον ὑμῶν· καὶ ὃ ἐὰν εἴπητε, δώσομεν. Πληθύνατε τὴν φερνὴν σφόδρα, καὶ δώσω καθότι ἂν εἴπητέ μοι, καὶ δώσετέ μοι τὴν παῖδα ταύτην εἰς γυναῖκα. Ἀπεκρίθησαν δὲ οἱ υἱοὶ Ἰακὼβ τῷ Συχὲμ, καὶ Ἐμμὼρ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, μετὰ δόλου· καὶ ἐλάλησαν αὐτοῖς, ὅτι ἐμίαναν Δείναν τὴν ἀδελφὴν αὐτῶν. Καὶ εἶπαν αὐτοῖς Συμεὼν καὶ Λευὶ οἱ ἀδελφοὶ Δείνας, οὐ δυνησόμεθα ποιῆσαι τὸ ῥῆμα τοῦτο, δοῦναι τὴν ἀδελφὴν ἡμῶν ἀνθρώπῳ, ὃς ἔχει ἀκροβυστίαν· ἔστι γὰρ ὄνειδος ἡμῖν. Μόνον ἐν τούτῳ ὁμοιωθησόμεθα ὑμῖν, καὶ κατοικήσομεν ἐν ὑμῖν, ἐὰν γένησθε ὡς ἡμεῖς καὶ ὑμεῖς, ἐν τῷ περιτμηθῆναι ὑμῶν πᾶν ἀρσενικόν. Καὶ δώσομεν τὰς θυγατέρας ἡμῶν ὑμῖν, καὶ ἀπὸ τῶν θυγατέρων ὑμῶν ληψόμεθα ἡμῖν γυναῖκας, καὶ οἰκήσομεν παρ ὑμῖν, καὶ ἐσόμεθα ὡς γένος ἕν. Ἐὰν δὲ μὴ εἰσακούσητε ἡμῶν τοῦ περιτεμέσθαι, λαβόντες τὴν θυγατέρα ἡμῶν ἀπελευσόμεθα. Καὶ ἤρεσαν οἱ λόγοι ἐναντίον Ἐμμὼρ, καὶ ἐναντίον Συχὲμ τοῦ υἱοῦ Ἐμμώρ. Καὶ οὐκ ἐχρόνισεν ὁ νεανίσκος τοῦ ποιῆσαι τὸ ῥῆμα τοῦτο· ἐνέκειτο γὰρ τῇ θυγατρὶ Ἰακώβ· αὐτὸς δὲ ἦν

ἐνδοξότατος πάντων τῶν ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Ἦλθε δὲ Ἐμμὼρ καὶ Συχὲμ ὁ υἱὸς αὐτοῦ πρὸς τὴν πύλην τῆς πόλεως αὐτῶν, καὶ ἐλάλησαν πρὸς τοὺς ἄνδρας τῆς πόλεως αὐτῶν, λέγοντες, Οἱ ἄνθρωποι οὗτοι εἰρήνικοί εἰσι, μεθ ἡμῶν οἰκείτωσαν επὶ τῆς γῆς, καὶ ἐμπορευέσθωσαν αὐτήν· ἡ δὲ γῆ ἰδοὺ πλατεῖα ἐναντίον αὐτῶν· τὰς θυγατέρας αὐτῶν ληψόμεθα ἡμῖν γυναῖκας, καὶ τὰς θυγατέρας ἡμῶν δώσομεν αὐτοῖς. Ἐν τούτῳ μόνον ὁμοιωθήσονται ἡμῖν οἱ ἄνθρωποι τοῦ κατοικεῖν μεθ ἡμῶν, ὥστε εἶναι λαὸν ἕνα, ἐν τῷ περιτεμέσθαι ἡμῶν πᾶν ἀρσενικὸν, καθὰ καὶ αὐτοὶ περιτέτμηνται. Καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ τὰ τετράποδα, καὶ τὰ ὑπάρχοντα αὐτῶν, οὐχ ἡμῶν ἔσται; μόνον ἐν τούτῳ ὁμοιωθῶμεν αὐτοῖς, καὶ οἰκήσουσι μεθ ἡμῶν. Καὶ εἰσήκουσαν Ἐμμὼρ καὶ Συχὲμ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ πάντες οἱ ἐμπορευόμενοι τὴν πύλην τῆς πόλεως αὐτῶν· καὶ περιετέμοντο τὴν σάρκα τῆς ἀκροβυστίας αὐτῶν πᾶς ἄρσην. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, ὅτε ἦσαν ἐν τῷ πόνῳ, ἔλαβον οἱ δύο υἱοὶ Ἰακὼβ Συμεὼν καὶ Λευὶ, ἀδελφοὶ Δείνας, ἕκαστος τὴν μάχαιραν αὐτοῦ, καὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν πόλιν ἀσφαλὼς, καὶ ἀπέκτειναν πᾶν ἀρσενικόν. Τόν τε Ἐμμὼρ καὶ Συχὲμ τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἀπέκτειναν ἐν στόματι μαχαίρας· καὶ ἔλαβον τὴν Δείναν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ Συχὲμ, καὶ ἐξῆλθον. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰακὼβ εἰσῆλθον ἐπὶ τοὺς τραυματίας, καὶ διήρπασαν τὴν πόλιν, ἐν ᾗ ἐμίαναν Δείναν τὴν ἀδελφὴν αὐτῶν. Καὶ τὰ πρόβατα αὐτῶν, καὶ τοὺς βόας αὐτῶν, καὶ τοὺς ὄνους αὐτῶν, ὅσα τε ἦν ἐν τῇ πόλει, καὶ ὅσα ἦν ἐν τῷ πεδίῳ, ἔλαβον. Καὶ πάντα τὰ σώματα αὐτῶν, καὶ πᾶσαν τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν ἠχμαλώτευσαν· καὶ διήρπασαν ὅσα τε ἦν ἐν τῇ πόλει, καὶ ὅσα ἦν ἐν ταῖς οἰκίαις. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ πρὸς Συμεὼν καὶ Λευὶ, μισητόν με πεποιήκατε, ὥστε πονηρόν με εἶναι πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι τὴν γῆν, ἔν τε τοῖς

Χαναναίοις, καὶ ἐν τοῖς Φερεζαίοις· ἐγὼ δὲ ὀλιγοστός εἰμι ἐν ἀριθμῷ· καὶ συναχθέντες ἐπ ἐμὲ συγκόψουσί με, καὶ ἐκτριβήσομαι ἐγὼ, καὶ ὁ οἶκός μου. Οἱ δὲ εἶπαν, ἀλλ ὡσεὶ πόρνῃ χρήσονται τῇ ἀδελφῇ ἡμῶν;

# 35

Εἶπε δὲ ὁ Θεὸς πρὸς Ἰακὼβ, ἀναστὰς ἀνάβηθι εἰς τὸν τόπον Βαιθὴλ, καὶ οἴκει ἐκεῖ· καὶ ποίησον ἐκεῖ θυσιαστήριον τῷ Θεῷ τῷ ὀφθέντι σοι, ἐν τῷ ἀποδιδράσκειν σε ἀπὸ προσώπου Ἠσαῦ τοῦ ἀδελφοῦ σου. Εἶπε δὲ Ἰακὼβ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ πᾶσι τοῖς μετ αὐτοῦ, ἄρατε τοὺς θεοὺς τοὺς ἀλλοτρίους τοὺς μεθ ὑμῶν ἐκ μέσου ὑμῶν, καὶ καθαρίσθητε, καὶ ἀλλάξατε τὰς στολὰς ὑμῶν. Καὶ ἀναστάντες ἀναβῶμεν εἰς Βαιθὴλ, καὶ ποιήσωμεν ἐκεῖ θυσιαστήριον τῷ Θεῷ τῷ ἐπακούσαντί μου ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, ὃς ἦν μετ ἐμοῦ, καὶ διέσωσέ με ἐν τῇ ὁδῷ, ᾗ ἐπορεύθην. Καὶ ἔδωκαν τῷ Ἰακὼβ τοὺς θεοὺς τοὺς ἀλλοτρίους, οἳ ἦσαν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν, καὶ τὰ ἐνώτια τὰ ἐν τοῖς ὠσὶν αὐτῶν· καὶ κατέκρυψεν αὐτὰ Ἰακὼβ ὑπὸ τὴν τερέβινθον τὴν ἐν Σηκίμοις· καὶ ἀπώλεσεν αὐτὰ, ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Καὶ ἐξῆρεν Ἰσραὴλ ἐκ Σηκίμων· καὶ ἐγένετο φόβος Θεοῦ ἐπὶ τὰς πόλεις τὰς κύκλῳ αὐτῶν, καὶ οὐ κατεδίωξαν ὀπίσω τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Ἦλθε δὲ Ἰακὼβ εἰς Λουζὰ ἥ ἐστιν ἐν γῇ Χαναὰν, ἥ ἐστι Βαιθὴλ, αὐτὸς, καὶ πᾶς ὁ λαὸς, ὃς ἦν μετ αὐτοῦ. Καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου, Βαιθήλ· ἐκεῖ γὰρ ἐφάνη αὐτῷ ὁ Θεὸς, ἐν τῷ ἀποδιδράσκειν αὐτὸν ἀπὸ προσώπου Ἠσαῦ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Ἀπέθανε δὲ Δεβόῤῥα, ἡ τρόφος Ῥεβέκκας, καὶ ἐτάφη κατώτερον

Βαιθὴλ ὑπὸ τὴν βάλανον· καὶ ἐκάλεσεν Ἰακὼβ τὸ ὄνομα αὐτῆς, βάλανος πένθους. Ὤφθη δὲ ὁ Θεὸς τῷ Ἰακὼβ ἔτι ἐν Λουζᾷ, ὅτε παρεγένετο ἐκ Μεσοποταμίας τῆς Συρίας· καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν ὁ Θεὸς. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεὸς, τὸ ὄνομά σου οὐ κληθήσεται ἔτι Ἰακὼβ, ἀλλ Ἰσραὴλ ἔσται τὸ ὄνομά σου· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰσραήλ. Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Θεὸς, ἐγὼ ὁ Θεός σου· αὐξάνου, καὶ πληθύνου· ἔθνη καὶ συναγωγαὶ ἐθνῶν ἔσονται ἐκ σοῦ, καὶ βασιλεῖς ἐκ τῆς ὀσφύος σου ἐξελεύσονται. Καὶ τὴν γῆν, ἣν ἔδωκα Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ, σοὶ δέδωκα αὐτήν· σοὶ ἔσται· καὶ τῷ σπέρματί σου μετὰ σὲ δώσω τῆν γῆν ταύτην. Ἀνέβη δὲ ὁ Θεὸς ἀπ αὐτοῦ ἐκ τοῦ τόπου, οὗ ἐλάλησε μετ αὐτοῦ. Καὶ ἔστησεν Ἰακὼβ στήλην ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἐλάλησε μετ αὐτοῦ ὁ Θεὸς, στήλην λιθίνην· καὶ ἔσπεισεν ἐπ αὐτὴν σπονδὴν, καὶ ἐπέχεεν ἐπ αὐτὴν ἔλαιον. Καὶ ἐκάλεσεν Ἰακὼβ τὸ ὄνομα τοῦ τόπου, ἐν ᾧ ἐλάλησε μετ αὐτοῦ ἐκεῖ ὁ Θεὸς, Βαιθήλ. Ἀπάρας δὲ Ἰακὼβ ἐκ Βαιθὴλ, ἔπηξε τὴν σκηνὴν αὐτοῦ ἐπέκεινα τοῦ πύργου Γαδέρ· ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἤγγισεν εἰς Χαβραθὰ τοῦ ἐλθεῖν εἰς τὴν Ἐφραθᾶ, ἔτεκε Ῥαχήλ· καὶ ἐδυστόκησεν ἐν τῷ τοκετῷ. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ σκληρῶς αὐτὴν τίκτειν, εἶπεν αὐτῇ ἡ μαῖα, θάρσει, καὶ γὰρ οὗτός σοι ἐστὶν υἱός. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ἀφιέναι αὐτὴν τὴν ψυχὴν, ἀπέθνησκε γὰρ, ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, υἱὸς ὀδύνης μου· ὁ δὲ πατὴρ ἐκάλεσεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Βενιαμίν. Ἀπέθανε δὲ Ῥαχὴλ, καὶ ἐτάφη ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἱπποδρόμου Ἐφραθᾶ· αὕτη ἐστὶ Βηθλεέμ. Καὶ ἔστησεν Ἰακὼβ στήλην ἐπὶ τοῦ μνημείου αὐτῆς· αὕτη ἐστὶν ἡ στήλη ἐπὶ τοῦ μνημείου Ῥαχὴλ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα κατῴκησεν Ἰσραὴλ ἐν τῇ γῇ ἐκείνῃ, ἐπορεύθη Ῥουβὴν, καὶ ἐκοιμήθη μετὰ Βαλλὰς, τῆς παλλακῆς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ Ἰακώβ· καὶ ἤκουσεν Ἰσραὴλ, καὶ πονηρὸν ἐφάνη ἐναντίον αὐτοῦ. Ἦσαν δὲ οἱ υἱοὶ Ἰακὼβ, δώδεκα.

Υἱοὶ Λείας, πρωτότοκος Ἰακὼβ, Ῥουβὴν, Συμεὼν, Λευὶ, Ἰούδας, Ἰσσάχαρ, Ζαβουλών. Υἱοὶ δὲ Ῥαχὴλ, Ἰωσὴφ, καὶ Βενιαμίν. Υἱοὶ δὲ Βαλλᾶς παιδίσκης Ῥαχὴλ, Δαν, καὶ Νεφθαλείμ. Υἱοὶ δὲ Ζελφᾶς παιδίσκης Λείας, Γὰδ, καὶ Ἀσήρ· οὗτοι υἱοὶ Ἰακὼβ, οἳ ἐγένοντο αὐτῷ ἐν Μεσοποταμίᾳ τῆς Συρίας. Ἦλθε δὲ Ἰακὼβ πρὸς Ἰσαὰκ τὸν πατέρα αὐτοῦ εἰς Μαμβρῆ, εἰς πόλιν τοῦ πεδίου· αὕτη ἐστὶ Χεβρὼν ἐν γῇ Χαναὰν, οὗ παρῴκησεν Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαάκ. Ἐγένοντο δὲ αἱ ἡμέραι Ἰσαὰκ, ἃς ἔζησεν, ἔτη ἑκατὸν ὀγδοήκοντα. Καὶ ἐκλείπων Ἰσαὰκ ἀπέθανε, καὶ προσετέθη πρὸς τὸ γένος αὐτοῦ πρεσβύτερος καὶ πλήρης ἡμερῶν· καὶ ἔθαψαν αὐτὸν Ἡσαῦ καὶ Ἰακὼβ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ.

# 36

Αὗται δὲ αἱ γενέσεις Ἡσαῦ· αὐτός ἐστιν Ἐδώμ. Ἡσαῦ δὲ ἔλαβε τὰς γυναῖκας ἑαυτῷ ἀπὸ τῶν θυγατέρων τῶν Χαναναίων· τὴν Ἀδὰ, θυγατέρα Αἰλὼμ τοῦ Χετταίου· καὶ τὴν Ὁλιβεμὰ, θυγατέρα Ἀνὰ τοῦ υἱοῦ Σεβεγὼν τοῦ Εὐαίου. Καὶ τὴν Βασεμὰθ, θυγατέρα Ἰσμαὴλ, ἀδελφὴν Ναβαιώθ. Ἔτεκε δὲ αὐτῷ Ἀδὰ τὸν Ἐλιφάς· καὶ Βασεμὰθ ἔτεκε τὸν Ῥαγουήλ. Καὶ Ὁλιβεμὰ ἔτεκε τὸν Ἰεοὺς, καὶ τὸν Ἰεγλὸμ, καὶ τὸν Κορέ· οὗτοι υἱοὶ Ἡσαῦ, οἳ ἐγένοντο αὐτῷ ἐν γῇ Χαναάν. Ἔλαβε δὲ Ἡσαῦ τὰς γυναῖκας αὐτοῦ, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ σώματα τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ κτήνη, καὶ πάντα ὅσα ἐκτήσατο, καὶ πάντα ὅσα περιεποιήσατο ἐν γῇ Χαναάν· καὶ ἐπορεύθη Ἡσαῦ ἐκ τῆς γῆς Χαναὰν ἀπὸ προσώπου Ἰακὼβ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Ἦν γὰρ αὐτῶν τὰ ὑπάρχοντα πολλὰ, τοῦ οἰκεῖν

ἅμα· καὶ οὐκ ἠδύνατο ἡ γῆ τῆς παροικήσεως αὐτῶν φέρειν αὐτοὺς, ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ὑπαρχόντων αὐτῶν. Κατῴκησε δὲ Ἡσαῦ ἐν τῷ ὄρει Σηείρ· Ἡσαῦ αὐτός ἐστιν Ἐδώμ. Αὗται δὲ αἱ γενέσεις Ἡσαῦ πατρὸς Ἐδὼμ ἐν τῷ ὄρει Σηείρ. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἡσαῦ· Ἐλιφὰς υἱὸς Ἀδὰς γυναικὸς Ἡσαῦ· καὶ Ῥαγουὴλ υἱὸς Βασεμὰθ γυναικὸς Ἡσαῦ. Ἐγένοντο δὲ Ἐλιφὰς υἱοὶ, Θαιμὰν, Ὠμὰρ, Σωφὰρ, Γοθὼμ, καὶ Κενέζ. Θαμνὰ δὲ ἦν παλλακὴ Ἐλιφὰς τοῦ υἱοῦ Ἡσαῦ· καὶ ἔτεκε τῷ Ἐλιφὰς τὸν Ἀμαλήκ· οὗτοι υἱοὶ Ἀδὰς γυναικὸς Ἡσαῦ. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ῥαγουὴλ, Ναχὼθ, Ζαρὲ, Σομὲ, καὶ Μοζέ· οὗτοι ἦσαν υἱοὶ Βασεμὰθ γυναικὸς Ἡσαῦ. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ὀλιβεμὰς θυγατρὸς Ἀνὰ τοῦ υἱοῦ Σεβεγὼν, γυναικὸς Ἡσαῦ· ἔτεκε δὲ τῷ Ἡσαῦ τὸν Ἰεοὺς, καὶ τὸν Ἰεγλὸμ, καὶ τὸν Κορέ. Οὗτοι ἡγεμόνες υἱοὶ Ἡσαῦ· υἱοὶ Ἐλιφὰς πρωτοτόκου Ἡσαῦ· ἡγεμὼν Θαιμὰν, ἡγεμὼν Ὠμὰρ, ἡγεμὼν Σωφὰρ, ἡγεμὼν Κενὲζ, ἡγεμὼν Κορὲ, ἡγεμὼν Γοθὼμ, ἡγεμὼν Ἀμαλήκ· οὗτοι ἡγεμόνες Ἐλιφὰς ἐν γῇ Ἰδουμαίᾳ· οὗτοι υἱοὶ Ἀδάς. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Ῥαγουὴλ υἱοῦ Ἡσαῦ· ἡγεμὼν Ναχὼθ, ἡγεμὼν Ζαρὲ, ἡγεμὼν Σομὲ, ἡγεμὼν Μοζέ· οὗτοι ἡγεμόνες Ῥαγουὴλ ἐν γῇ Ἐδώμ· οὗτοι υἱοὶ Βασεμὰθ γυναικὸς Ἡσαῦ. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ὀλιβεμὰς γυναικὸς Ἡσαῦ· ἡγεμὼν Ἰεοὺς, ἡγεμὼν Ἰεγλὸμ, ἡγεμὼν Κορέ· οὗτοι ἡγεμόνες Ὀλιβεμὰς θυγατρὸς Ἀνὰ γυναικὸς Ἡσαῦ. Οὗτοι υἱοὶ Ἡσαῦ, καὶ οὗτοι ἡγεμόνες αὐτῶν· οὗτοί εἰσιν υἱοὶ Ἐδώμ. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Σηεὶρ τοῦ Χορῥαίου, τοῦ κατοικοῦντος τὴν γῆν· Λωτὰν, Σωβὰλ, Σεβεγὼν, Ἀνὰ, καὶ Δησὼν, καὶ Ἀσὰρ, καὶ Ῥισών· οὗτοι ἡγεμόνες τοῦ Χορῥαίου, τοῦ υἱοῦ Σηεὶρ ἐν τῇ γῇ Ἐδώμ. Ἐγένοντο δὲ υἱοὶ Λωτάν· Χορῥὶ, καὶ Αἱμάν· ἀδελφὴ δὲ Λωτὰν, Θαμνά. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Σωβάλ· Γωλὰμ, καὶ Μαναχὰθ, καὶ Γαιβὴλ, καὶ Σωφὰρ, καὶ Ὠμάρ. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Σεβεγὼν, Ἀϊὲ, καὶ Ἀνά· οὗτός ἐστιν Ἀνὰ, ὃς εὗρε τὸν Ἰαμεὶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτε ἔνεμε τὰ

ὑποζύγια Σεβεγὼν τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ἀνά· Δησὼν, καὶ Ὀλιβεμὰ θυγάτηρ Ἀνά. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Δησών· Ἀμαδὰ, καὶ Ἀσβὰν, καὶ Ἰθρὰν, καὶ Χαῤῥάν. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ἀσάρ· Βαλαὰμ, καὶ Ζουκὰμ, καὶ Ἰουκάμ. Οὗτοι δὲ υἱοὶ Ῥισὼν, Ὧς, καὶ Ἀράν. Οὗτοι δὲ ἡγεμόνες Χοῤῥί· ἡγεμὼν Λωτὰν, ἡγεμὼν Σωβὰλ, ἡγεμὼν Σεβεγὼν, ἡγεμὼν Ἀνὰ, ἡγεμὼν Δησὼν, ἡγεμὼν Ἀσὰρ, ἡγεμὼν Ῥισών· οὗτοι ἡγεμόνες Χοῤῥὶ ἐν ταῖς ἡγεμονίαις αὐτῶν ἐν γῇ Ἐδώμ. Καὶ οὗτοι οἱ βασιλεῖς οἱ βασιλεύσαντες ἐν Ἐδὼμ, πρὸ τοῦ βασιλεῦσαι βασιλέα ἐν Ἰσραήλ. Καὶ ἐβασίλευσεν ἐν Ἐδὼμ Βαλὰκ υἱὸς Βεὼρ· καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ, Δενναβά. Ἀπέθανε δὲ Βαλὰκ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Ἰωβὰβ υἱὸς Ζαρὰ ἐκ Βοσόῤῥας. Ἀπέθανε δὲ Ἰωβὰβ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Ἀσὼμ ἐκ τῆς γῆς Θαιμανών. Ἀπέθανε δὲ Ἀσὼμ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Ἀδὰδ υἱὸς Βαρὰδ ὁ ἐκκόψας Μαδιὰμ ἐν τῷ πεδίῳ Μωάβ· καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ Γετθαίμ. Ἀπέθανε δὲ Ἀδὰδ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Σαμαδὰ ἐκ Μασσεκκάς. Ἀπέθανε δὲ Σαμαδὰ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Σαοὺλ ἐκ Ῥοωβὼθ τῆς παρὰ ποταμόν. Ἀπέθανε δὲ Σαοὺλ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Βαλλενὼν υἱὸς Ἀχοβώρ. Ἀπέθανε δὲ Βαλλενὼν υἱὸς Ἀχοβὼρ, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ αὐτοῦ Ἀρὰδ υἱὸς Βαράδ· καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ Φογώρ· ὄνομα δὲ τῇ γυναικὶ αὐτοῦ Μετεβεὴλ, θυγάτηρ Ματραΐθ, υἱοῦ Μαιζοώβ. Ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν ἡγεμόνων Ἡσαῦ, ἐν ταῖς φυλαῖς αὐτῶν, κατὰ τόπον αὐτῶν, ἐν ταῖς χώραις αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσιν αὐτῶν· ἡγεμὼν Θαμνὰ, ἡγεμὼν Γωλὰ, ἡγεμὼν Ἰεθὲρ, ἡγεμὼν Ὀλιβεμὰς, ἡγεμὼν Ἠλὰς, ἡγεμὼν Φινὼν, ἡγεμὼν Κενὲζ, ἡγεμὼν Θαιμὰν, ἡγεμὼν Μαζὰρ, ἡγεμὼν Μαγεδιὴλ, ἡγεμὼν Ζαφωίν· οὗτοι ἡγεμόνες Ἐδὼμ, ἐν ταῖς κατῳκοδομημέναις ἐν τῇ γῇ τῆς κτήσεως αὐτῶν· οὗτος Ἡσαῦ πατὴρ Ἐδώμ.

# 37

Κατῴκει δὲ Ἰακὼβ ἐν τῇ γῇ, οὗ παρῴκησεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἐν γῇ Χαναάν· αὗται δὲ αἱ γενέσεις Ἰακώβ. Ἰωσὴφ δὲ δέκα καὶ ἑπτὰ ἐτῶν ἦν, ποιμαίνων τὰ πρόβατα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, ὢν νέος, μετὰ τῶν υἱῶν Βαλλᾶς, καὶ μετὰ τῶν υἱῶν Ζελφᾶς, τῶν γυναικῶν τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· κατήνεγκαν δὲ Ἰωσὴφ ψόγον πονηρὸν πρὸς Ἰσραὴλ τὸν πατέρα αὐτῶν. Ἰακὼβ δὲ ἠγάπα τὸν Ἰωσὴφ παρὰ πάντας τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, ὅτι υἱὸς γήρως ἦν αὐτῷ· ἐποίησε δὲ αὐτῷ χιτῶνα ποικίλον. Ἰδόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὸν ὁ πατὴρ φιλεῖ ἐκ πάντων τῶν υἱῶν αὐτοῦ, ἐμίσησαν αὐτὸν, καὶ οὐκ ἠδύναντο λαλεῖν αὐτῷ οὐδὲν εἰρηνικόν. Ἐνυπνιασθεὶς δὲ Ἰωσὴφ ἐνύπνιον, ἀπήγγειλεν αὐτὸ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἀκούσατε τοῦ ἐνυπνίου τούτου, οὗ ἐνυπνιάσθην. Ὥμην ὑμᾶς δεσμεύειν δράγματα ἐν μέσῳ τῷ πεδίῳ· καὶ ἀνέστη τὸ ἐμὸν δράγμα, καὶ ὠρθώθη· περιστραφέντα δὲ τὰ δράγματα ὑμῶν, προσεκύνησαν τὸ ἐμὸν δράγμα. Εἶπαν δὲ αὐτῷ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, μὴ βασιλεύων βασιλεύσεις ἐφ ἡμᾶς, ἢ κυριεύων κυριεύσεις ἡμῶν, καὶ προσέθεντο ἔτι μισεῖν αὐτὸν ἕνεκεν τῶν ἐνυπνίων αὐτοῦ, καὶ ἕνεκεν τῶν ῥημάτων αὐτοῦ. Εἶδε δὲ ἐνύπνιον ἕτερον, καὶ διηγήσατο αὐτὸ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, καὶ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐνυπνιασάμην ἐνύπνιον ἕτερον· ὥσπερ ὁ ἥλιος, καὶ ἡ σελήνη, καὶ ἕνδεκα ἀστέρες προσεκύνουν με. Καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί τὸ ἐνύπνιον τοῦτο, ὃ ἐνυπνιάσθης; ἆρά γε ἐλθόντες ἐλευσόμεθα ἐγώ τε καὶ ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου προσκυνῆσαί σοι ἐπὶ τὴν γῆν; Ἐζήλωσαν δὲ αὐτὸν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· ὁ δὲ πατὴρ αὐτοῦ

διετήρησε τὸ ῥῆμα. Ἐπορεύθησαν δὲ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ βόσκειν τὰ πρόβατα τοῦ πατρὸς αὐτῶν εἰς Συχέμ. Καὶ εἶπεν Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσὴφ, οὐχὶ οἱ ἀδελφοί σου ποιμαίνουσιν εἰς Συχέμ; δεῦρο ἀποστείλω σε πρὸς αὐτούς· εἶπε δὲ αὐτῷ, ἰδοὺ ἐγώ. Εἶπε δὲ αὐτῷ Ἰσραὴλ, πορευθεὶς ἴδε, εἰ ὑγιαίνουσιν οἱ ἀδελφοί σου, καὶ τὰ πρόβατα, καὶ ἀνάγγειλόν μοι· καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν ἐκ τῆς κοιλάδος τῆς Χεβρών· καὶ ἦλθεν εἰς Συχέμ. Καὶ εὗρεν αὐτὸν ἄνθρωπος πλανώμενον ἐν τῷ πεδίῳ· ἠρώτησε δὲ αὐτὸν ὁ ἄνθρωπος, λέγων, τί ζητεῖς; Ὁ δὲ εἶπε, τοὺς ἀδελφούς μου ζητῶ· ἀπάγγειλόν μοι ποῦ βόσκουσιν. Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ ἄνθρωπος, ἀπῄρκασιν ἐντεῦθεν· ἤκουσα γὰρ αὐτῶν λεγόντων, πορευθῶμεν εἰς Δωθαείμ· καὶ ἐπορεύθη Ἰωσὴφ κατόπισθε τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ εὗρεν αὐτοὺς ἐν Δωθαείμ. Προεῖδον δὲ αὐτὸν μακρόθεν πρὸ τοῦ ἐγγίσαι αὐτὸν πρὸς αὐτούς· καὶ ἐπονηρεύοντο τοῦ ἀποκτεῖναι αὐτόν. Εἶπε δὲ ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἰδοὺ ὁ ἐνυπνιαστὴς ἐκεῖνος ἔρχεται. Νῦν οὖν δεῦτε ἀποκτείνωμεν αὐτὸν, καὶ ῥίψωμεν αὐτὸν εἰς ἕνα τῶν λάκκων· καὶ ἐροῦμεν, θηρίον πονηρὸν κατέφαγεν αὐτόν· καὶ ὀψόμεθα, τί ἔσται τὰ ἐνύπνια αὐτοῦ. Ἀκούσας δὲ Ῥουβὴν, ἐξείλετο αὐτὸν ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν· καὶ εἶπεν, οὐ πατάξωμεν αὐτὸν εἰς ψυχήν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ῥουβὴν, μὴ ἐκχέητε αἷμα· ἐμβάλλετε αὐτὸν εἰς ἕνα τῶν λάκκων τούτων τῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, χεῖρα δὲ μὴ ἐπενέγκητε αὐτῷ· ὅπως ἐξέληται αὐτὸν ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ ἀποδῷ αὐτὸν τῷ πατρὶ αὐτοῦ. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἦλθεν Ἰωσὴφ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἐξέδυσαν Ἰωσὴφ τὸν χιτῶνα τὸν ποικίλον τὸν περὶ αὐτόν. Καὶ λαβόντες αὐτὸν, ἔῤῥιψαν εἰς τὸν λάκκον· ὁ δὲ λάκκος κενὸς, ὕδωρ οὐκ εἶχε. Ἐκάθισαν δὲ φαγεῖν ἄρτον· καὶ ἀναβλέψαντες τοῖς ὀφθαλμοῖς εἶδον, καὶ ἰδοὺ ὁδοιπόροι Ἰσμαηλῖται ἤρχοντο ἐκ

Γαλαάδ· καὶ αἱ κάμηλοι αὐτῶν ἔγεμον θυμιαμάτων καὶ ῥητίνης καὶ στακτῆς. ἐπορεύοντο δὲ καταγαγεῖν εἰς Αἴγυπτον. Εἶπε δὲ Ἰούδας πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, τί χρήσιμον, ἐὰν ἀποκτείνωμεν τὸν ἀδελφὸν ἡμῶν, καὶ κρύψωμεν τὸ αἷμα αὐτοῦ; Δεῦτε ἀποδώμεθα αὐτὸν τοῖς Ἰσμαηλίταις τούτοις· αἱ δὲ χεῖρες ἡμῶν μὴ ἔστωσαν ἐπ αὐτὸν, ὅτι ἀδελφὸς ἡμῶν καὶ σὰρξ ἡμῶν ἐστίν. Ἤκουσαν δὲ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ. Καὶ παρεπορεύοντο οἱ ἄνθρωποι οἱ Μαδιηναῖοι ἔμποροι, καὶ ἐξείλκυσαν καὶ ἀνεβίβασαν τὸν Ἰωσὴφ ἐκ τοῦ λάκκου· καὶ ἀπέδοντο τὸν Ἰωσὴφ τοῖς Ἰσμαηλίταις εἴκοσι χρυσῶν. Καὶ κατήγαγον τὸν Ἰωσὴφ εἰς Αἴγυπτον. Ἀνέστρεψε δὲ Ῥουβὴν ἐπὶ τὸν λάκκον, καὶ οὐχ ὁρᾷ τὸν Ἰωσὴφ ἐν τῷ λάκκῳ· καὶ διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ. Καὶ ἐπέστρεψε πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ εἶπε, τὸ παιδάριον οὐκ ἔστιν· ἐγὼ δὲ ποῦ πορεύομαι ἔτι; Λαβόντες δὲ τὸν χιτῶνα τοῦ Ἰωσὴφ, ἔσφαξαν ἔριφον αἰγῶν, καὶ ἐμόλυναν τὸν χιτῶνα τῷ αἵματι. Καὶ ἀπέστειλαν τὸν χιτῶνα τὸν ποικίλον, καὶ εἰσήνεγκαν τῷ πατρὶ αὐτῶν· καὶ εἶπαν, τοῦτον εὕρομεν, ἐπίγνωθι εἰ χιτὼν τοῦ υἱοῦ σου ἐστὶν, ἢ οὔ. Καὶ ἐπέγνω αὐτὸν, καὶ εἶπε, χιτὼν τοῦ υἱοῦ μου ἐστί· θηρίον πονηρὸν κατέφαγεν αὐτόν· θηρίον ἥρπασε τὸν Ἰωσήφ. Διέῤῥηξε δὲ Ἰακὼβ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἐπέθετο σάκκον ἐπὶ τὴν ὀσφῦν αὐτοῦ, καὶ ἐπένθει τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἡμέρας πολλάς. Συνήχθησαν δὲ πάντες οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ αἱ θυγατέρες, καὶ ἦλθον παρακαλέσαι αὐτόν· καὶ οὐκ ἤθελε παρακαλεῖσθαι, λέγων, ὅτι καταβήσομαι πρὸς τὸν υἱόν μου πενθῶν εἰς ᾅδου· καὶ ἔκλαυσεν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Οἱ δὲ Μαδιηναῖοι ἀπέδοντο τὸν Ἰωσὴφ εἰς Αἴγυπτον τῷ Πετεφρῇ τῷ σπάδοντι Φαραὼ ἀρχιμαγείρῳ.

# 38

Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, κατέβη Ἰούδας ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ ἀφίκετο ἕως πρὸς ἄνθρωπον τινὰ Ὀδολλαμίτην, ᾧ ὄνομα Εἰράς. Καὶ εἶδεν ἐκεῖ Ἰούδας θυγατέρα ἀνθρώπου Χαναναίου, ᾗ ὄνομα Σαυά· καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν. Καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκεν υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ἤρ. Καὶ συλλαβοῦσα ἔτεκεν υἱὸν ἔτι, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Αὐνάν. Καὶ προσθεῖσα ἔτεκεν υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Σηλώμ· αὕτη δὲ ἦν ἐν Χασβὶ, ἡνίκα ἔτεκεν αὐτούς. Καὶ ἔλαβεν Ἰούδας γυναῖκα Ἤρ τῷ πρωτοτόκῳ αὐτοῦ, ᾗ ὄνομα Θάμαρ. Ἐγένετο δὲ Ἤρ πρωτότοκος Ἰούδα πονηρὸς ἔναντι Κυρίου· καὶ ἀπέκτεινεν αὐτὸν ὁ Θεός. Εἶπε δὲ Ἰούδας τῷ Αὐνάν· εἴσελθε πρὸς τὴν γυναῖκα τοῦ ἀδελφοῦ σου, καὶ ἐπιγάμβρευσαι αὐτὴν, καὶ ἀνάστησον σπέρμα τῷ ἀδελφῷ σου. Γνοὺς δὲ Αὐνὰν, ὅτι οὐκ αὐτῷ ἔσται τὸ σπέρμα, ἐγένετο ὅταν εἰσήρχετο πρὸς τὴν γυναῖκα τοῦ ἀδελφοῦ αὐτου, ἐξέχεεν ἐπὶ τὴν γῆν, τοῦ μὴ δοῦναι σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ. Πονηρὸν δὲ ἐφάνη ἐναντίον τοῦ Θεοῦ, ὅτι ἐποίησε τοῦτο· καὶ ἐθανάτωσε καὶ τοῦτον. Εἶπε δὲ Ἰούδας Θάμαρ τῇ νύμφῃ αὐτοῦ, κάθου χήρα ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός σου, ἕως μέγας γένηται Σηλὼμ ὁ υἱός μου· εἶπε γάρ, μή ποτε ἀποθάνῃ καὶ οὗτος, ὥσπερ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ. Ἀπελθοῦσα δὲ Θάμαρ ἐκάθητο ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτῆς. Ἐπληθύνθησαν δὲ αἱ ἡμέραι, καὶ ἀπέθανε Σαυὰ ἡ γυνὴ Ἰούδα· καὶ παρακληθεὶς Ἰούδας ἀνέβη ἐπὶ τοὺς κείροντας τὰ πρόβατα αὐτοῦ, αὐτὸς καὶ Εἰρὰς ὁ ποιμὴν αὐτοῦ ὁ Ὀδολλαμίτης εἰς Θαμνά. Καὶ ἀπηγγέλε Θάμαρ τῇ νύμφῃ αὐτοῦ, λέγοντες, ἰδοὺ ὁ πενθερός σου ἀναβαίνει εἰς Θαμνὰ, κεῖραι τὰ

πρόβατα αὐτοῦ. Καὶ περιελομένη τὰ ἱμάτια τῆς χηρεύσεως ἀφ ἑαυτῆς, περιέβαλε τὸ θέριστρον, καὶ ἐκαλλωπίσατο, καὶ ἐκάθισε πρὸς ταῖς πύλαις Αἰνὰν, ἥ ἐστιν ἐν παρόδῳ Θαμνά· ἴδε γὰρ ὅτι μέγας γέγονε Σηλὼμ, αὐτὸς δὲ οὐκ ἔδωκεν αὐτὴν αὐτῷ γυναῖκα. Καὶ ἰδὼν αὐτὴν Ἰούδας ἔδοξεν αὐτὴν πόρνην εἶναι· κατεκαλύψατο γὰρ τὸ πρόσωπον αὐτῆς καὶ οὐκ ἐπέγνω αὐτήν. Ἐξέκλινε δὲ πρὸς αὐτὴν τὴν ὁδόν· καὶ εἶπεν αὐτῇ, ἔασόν με εἰσελθεῖν πρός σε· οὐ γὰρ ἔγνω, ὅτι νύμφη αὐτοῦ ἐστίν· ἡ δὲ εἶπε, τί μοι δώσεις, ἐὰν εἰσέλθῃς πρός με; Ὁ δὲ εἶπεν, ἐγώ σοι ἀποστελλῶ ἔριφον αἰγῶν ἐκ τῶν προβάτων μον· ἡ δὲ εἶπεν, ἐὰν δῷς μοι ἀῤῥαβῶνα, ἕως τοῦ ἀποστεῖλαί σε. Ὁ δὲ εἶπε, τίνα τὸν ἀῤῥαβῶνά σοι δώσω; ἡ δὲ εἶπε, τὸν δακτύλιόν σου, καὶ τὸν ὁρμίσκον, καὶ τὴν ῥάβδον τὴν ἐν τῇ χειρίσου. Καὶ ἔδωκεν αὐτῇ, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν· καὶ ἐν γαστρὶ ἔλαβεν ἐξ αὐτοῦ. Καὶ ἀναστᾶσα ἀπῆλθε, καὶ περιείλετο τὸ θέριστρον αὐτῆς ἀφ ἑαυτῆς, καὶ ἐνεδύσατο τὰ ἱμάτια τῆς χηρεύσεως αὐτῆς. Ἀπέστειλε δὲ Ἰούδας τὸν ἔριφον ἐξ αἰγῶν ἐν χειρὶ τοῦ ποιμένος αὐτοῦ τοῦ Ὀδολλαμείτου, κομίσασθαι παρὰ τῆς γυναικὸς τὸν ἀῤῥαβῶνα· καὶ οὐχ εὗρεν αὐτήν. Ἐπηρώτησε δὲ τοὺς ἄνδρας τοὺς ἐκ τοῦ τόπου, ποῦ ἐστιν ἡ πόρνη ἡ γενομένη ἐν Αἰνὰν ἐπὶ τῆς ὁδοῦ; καὶ εἶπαν, οὐκ ἦν ἐνταῦθα πόρνη. Καὶ ἀπεστράφη πρὸς Ἰούδαν, καὶ εἶπεν, οὐχ εὗρον· καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ ἐκ τοῦ τόπου λέγουσι, μὴ εἶναι ὧδε πόρνην. Εἶπε δὲ Ἰούδας, ἐχέτω αὐτά· ἀλλὰ μή ποτε καταγελασθῶμεν· ἐγὼ μὲν ἀπέσταλκα τὸν ἔριφον τοῦτον, σὺ δὲ οὐχ εὕρηκας. Ἐγένετο δὲ μετὰ τρίμηνον ἀνηγγέλη τῷ Ἰούδα, λέγοντες, ἐκπεπόρνευκε Θάμαρ ἡ νύμφη σου, καὶ ἰδοὺ ἐν γαστρὶ ἔχει ἐκ πορνείας· Εἶπε δὲ Ἰούδας, ἐξαγάγετε αὐτὴν, καὶ κατακαυθήτω. Αὐτὴ δὲ ἀγομένη ἀπέστειλε πρὸς τὸν πενθερὸν αὐτὴς, λέγουσα, ἐκ τοῦ ἀνθρώπου οὗτινος ταῦτά ἐστιν, ἐγὼ ἐν

γαστρὶ ἔχω· καὶ εἶπεν, ἐπίγνωθι τίνος ὁ δακτύλιος, καὶ ὁ ὁρμίσκος καὶ ἡ ῥάβδος αὕτη. Ἐπέγνω δὲ Ἰούδας, καὶ εἶπε, δεδικαίωται Θάμαρ ἢ ἐγώ· οὗ ἕνεκεν οὐκ ἔδωκα αὐτὴν Σηλὼμ τῷ υἱῷ μου· Καὶ οὐ προσέθετο ἔτι τοῦ γνῶναι αὐτήν. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἔτικτε, καὶ τῇδε ἦν δίδυμα ἐν τῇ γαστρὶ αὐτῆς. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ τίκτειν αὐτὴν, ὁ εἷς προεξήνεγκεν τὴν χεῖρα· λαβοῦσα δὲ ἡ μαῖα, ἔδησεν ἐπὶ τὴν χεῖρα αὐτοῦ κόκκινον, λέγουσα, οὗτος ἐξελεύσεται πρότερος. Ὡς δὲ ἐπισυνήγαγε τὴν χεῖρα, καὶ εὐθὺς ἐξῆλθεν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ· ἡ δὲ εἶπε, τί διεκόπη διὰ σὲ φραγμός; καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Φαρές. Καὶ μετὰ τοῦτο ἐξῆλθεν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, ἐφ ᾧ ἦν ἐπὶ τῇ χειρὶ αὐτοῦ τὸ κόκκινον· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ζαρά.

# 39

Ἰωσὴφ δὲ κατήχθη εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἐκτήσατο αὐτὸν Πετεφρὴς ὁ εὐνοῦχος Φαραὼ, ὁ ἀρχιμάγειρος, ἀνὴρ Αἰγύπτιος, ἐκ χειρῶν τῶν Ἰσμαηλιτῶν, οἳ κατήγαγον αὐτὸν ἐκεῖ. Καὶ ἦν Κύριος μετὰ Ἰωσήφ· καὶ ἦν ἀνὴρ ἐπιτυγχάνων· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ οἴκῳ παρὰ τῷ κυρίῳ αὐτοῦ τῷ Αἰγυπτίῳ. Ἤδει δὲ ὁ κύριος αὐτοῦ, ὅτι ὁ Κύριος ἦν μετ αὐτοῦ, καὶ ὅσα ἐὰν ποιῇ, Κύριος εὐοδοῖ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ. Καὶ εὗρεν Ἰωσὴφ χάριν ἐναντίον τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ εὐηρέστησεν αὐτῷ. Καὶ κατέστησε αὐτὸν ἐπὶ τοῦ οἴκου αὐτοῦ· καὶ πάντα ὅσα ἦν αὐτῷ, ἔδωκε διὰ χειρὸς Ἰωσήφ. Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ καταστῆναι αὐτὸν ἐπὶ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ πάντα ὅσα ἦν αὐτῷ, καὶ ηὐλόγησε Κύριος τὸν οἶκον τοῦ Αἰγυπτίου διὰ Ἰωσήφ· καὶ ἐγενήθη εὐλογία Κυρίου ἐν πᾶσι τοῖς ὑπάρχουσιν αὐτῷ ἐν τῷ οἴκῳ, καὶ ἐν

τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ. Καὶ ἐπέτρεψε πάντα ὅσα ἦν αὐτῷ, εἰς χεῖρας Ἰωσήφ· καὶ οὐκ ᾔδει τῶν καθ αὐτὸν οὐδὲν, πλὴν τοῦ ἄρτου, οὗ ἤσθιεν αὐτός. Καὶ ἦν Ἰωσὴφ καλὸς τῷ εἴδει, καὶ ὡραῖος τῇ ὄψει σφόδρα. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ ἐπέβαλεν ἡ γυνὴ τοῦ κυρίου αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῆς ἐπὶ Ἰωσήφ· καὶ εἶπεν, κοιμήθητι μετ ἐμοῦ. Ὁ δὲ οὐκ ἤθελεν· εἶπε δὲ τῇ γυναικὶ τοῦ κυρίου αὐτοῦ, εἰ ὁ κύριός μου οὐ γινώσκει δι ἐμὲ οὐδὲν ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτῷ ἔδωκεν εἰς τὰς χεῖράς μου, καὶ οὐχ ὑπερέχει ἐν τῇ οἰκίᾳ ταύτῃ οὐθὲν ἐμοῦ, οὐδὲ ὑπεξῄρηται ἀπ ἐμοῦ οὐδὲν, πλὴν σοῦ, διὰ τὸ σὲ γυναῖκα αὐτοῦ εἶναι, καὶ πῶς ποιήσω τὸ ῥῆμα τὸ πονηρὸν τοῦτο, καὶ ἁμαρτήσομαι ἐναντίον τοῦ Θεοῦ; Ἡνίκα δὲ ἐλάλει τῷ Ἰωσὴφ ἡμέραν ἐξ ἡμέρας, καὶ οὐχ ὑπήκουεν αὐτῇ καθεύδειν μετ αὐτῆς, τοῦ συγγενέσθαι αὐτῇ. Ἐγένετο δὲ τοιαύτη τις ἡμέρα, καὶ εἰσῆλθεν Ἰωσὴφ εἰς τὴν οἰκίαν ποιεῖν τὰ ἔργα αὐτοῦ, καὶ οὐθεὶς ἦν τῶν ἐν τῇ οἰκίᾳ ἔσω. Καὶ ἐπεσπάσατο αὐτὸν τῶν ἱματίων, λέγουσα, κοιμήθητι μετ ἐμοῦ· καὶ καταλιπὼν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῆς ἔφυγε, καὶ ἐξῆλθεν ἔξω. Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδεν ὅτι καταλιπὼν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῆς ἔφυγε, καὶ ἐξῆλθεν ἔξω, καὶ ἐκάλεσε τοὺς ὄντας ἐν τῇ οἰκίᾳ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, λέγουσα, ἴδετε, εἰσήγαγε ἡμῖν παῖδα Ἑβραῖον, ἐμπαίζειν ἡμῖν· εἰσῆλθε πρός με, λέγων, κοιμήθητι μετ ἐμοῦ· καὶ ἐβόησα φωνῇ μεγάλῃ. Ἐν δὲ τῷ ἀκοῦσαι αὐτὸν, ὅτι ὕψωσα τὴν φωνήν μου καὶ ἐβόησα, καταλιπὼν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ παρ ἐμοὶ ἔφυγε, καὶ ἐξῆλθεν ἔξω. Καὶ καταλιμπάνει τὰ ἱμάτια παρ ἑαυτῇ, ἕως ἦλθεν ὁ κύριος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, λέγουσα, εἰσῆλθε πρός με ὁ παῖς ὁ Ἑβραῖος, ὃν εἰσήγαγες πρὸς ἡμᾶς, ἐμπαῖξαί μοι· καὶ εἶπέ μοι, κοιμηθήσομαι μετὰ σοῦ. Ὡς δὲ ἤκοῦσεν, ὅτι ὕψωσα τὴν φωνήν μου καὶ ἐβόησα,

καταλιπὼν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ παρ ἐμοὶ ἔφυγε, καὶ ἐξῆλθεν ἔξω. Ἐγένετο δὲ, ὡς ἤκουσεν ὁ κύριος τὰ ῥήματα τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, ὅσα ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, λέγουσα, οὕτως ἐποίησέ μοι ὁ παῖς σου, καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ. Καὶ λαβὼν ὁ κύριος Ἰωσὴφ, ἐνέβαλε αὐτὸν εἰς τὸ ὀχύρωμα, εἰς τὸν τόπον ἐν ᾧ οἱ δεσμῶται τοῦ βασιλέως κατέχονται ἐκεῖ ἐν τῷ ὀχυρώματι. Καὶ ἦν Κύριος μετὰ Ἰωσὴφ, καὶ κατέχεεν αὐτοῦ ἔλεος· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ χάριν ἐναντίον τοῦ ἀρχιδεσμοφύλακος. Καὶ ἔδωκεν ὁ ἀρχιδεσμοφύλαξ τὸ δεσμωτήριον διὰ χειρὸς Ἰωσὴφ, καὶ πάντας τοὺς ἀπηγμένους ὅσοι ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ, καὶ πάντα ὅσα ποιοῦσιν ἐκεῖ, αὐτὸς ἦν ποιῶν. Οὐκ ἦν ὁ ἀρχιδεσμοφύλαξ τοῦ δεσμωτηρίου γινώσκον δι αὐτὸν οὐθέν· πάντα γὰρ ἦν διὰ χειρὸς Ἰωσὴφ, διὰ τὸ τὸν Κύριον μετ αὐτοῦ εἶναι· καὶ ὅσα αὐτὸς ἐποίει, ὁ Κύριος εὐώδο ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ.

# 40

Ἐγένετο δὲ μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, ἥμαρτεν ὁ ἀρχιοινοχόος τοῦ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ ὁ ἀρχισιτοποιὸς, τῷ κυρίῳ αὐτῶν βασιλεῖ Αἰγύπτου. Καὶ ὠργίσθη Φαραὼ ἐπὶ τοῖς δυσὶν εὐνούχοις αὐτοῦ, ἐπὶ τῷ ἀρχιοινοχόῳ, καὶ ἐπὶ τῷ ἀρχισιτοποιῷ· Καὶ ἔθετο αὐτοὺς ἐν φυλακῇ εἰς τὸ δεσμωτήριον, εἰς τὸν τόπον, οὗ Ἰωσὴφ ἀπῆκτο ἐκεῖ. Καὶ συνέστησεν ὁ ἀρχιδεσμώτης τῷ Ἰωσὴφ αὐτούς· καὶ παρέστη αὐτοῖς· ἦσαν δὲ ἡμέρας ἐν τῇ φυλακῇ. Καὶ εἶδον ἀμφότεροι ἐνύπνιον ἐν μιᾷ νυκτί· ἡ δὲ ὅρασις τοῦ ἐνυπνίου τοῦ ἀρχιοινοχόου καὶ ἀρχισιτοποιοῦ, οἳ ἦσαν τῷ βασιλεῖ Αἰγύπτου, οἱ ὄντες ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ, ἦν αὕτη. Εἰσῆλθε πρὸς αὐτοὺς Ἰωσὴφ τὸ πρωΐ, καὶ

εἶδεν αὐτοὺς, καὶ ἦσαν τεταραγμένοι. Καὶ ἠρώτα τοὺς εὐνούχους Φαραὼ, οἳ ἦσαν μετ αὐτοῦ ἐν τῇ φυλακῇ παρὰ τῷ κυρίῳ αὐτοῦ, λέγων, τί ὅτι τὰ πρόσωπα ὑμῶν σκυθρωπὰ σήμερον; Οἱ δὲ εἶπαν αὐτῷ, ἐνύπνιον εἴδομεν, καὶ ὁ συγκρίνων οὐκ ἔστιν αὐτό· εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰωσὴφ, οὐχὶ διὰ τοῦ Θεοῦ ἡ διασάφησις αὐτῶν ἐστι; διηγήσασθε οὖν μοὶ. Καὶ διηγήσατο ὁ ἀρχιοινοχόος τὸ ἐνύπνιον αὐτοῦ τῷ Ἰωσήφ· καὶ εἶπεν, ἐν τῷ ὕπνῳ μου ἦν ἄμπελος ἐναντίον μου. Ἐν δὲ τῇ ἀμπέλῳ τρεῖς πυθμένες, καὶ αὐτὴ θάλλουσα, ἀνενηνοχυῖα βλαστούς· πέπειροι οἱ βότρυες σταφυλῆς. Καὶ τὸ ποτήριον Φαραὼ ἐν τῇ χειρί μου· καὶ ἔλαβον τὴν σταφυλὴν, καὶ ἐξέθλιψα αὐτὴν εἰς τὸ ποτήριον, καὶ ἔδωκα τὸ ποτήριον εἰς τὴν χεῖρα Φαραώ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰωσὴφ, τοῦτο ἡ σύγκρίσις αὐτοῦ· οἱ τρεῖς πυθμένες, τρεῖς ἡμέραι εἰσίν. Ετι τρεῖς ἡμέραι, καὶ μνησθήσεται Φαραὼ τῆς ἀρχῆς σου, καὶ ἀποκαταστήσει σε ἐπὶ τὴν ἀρχιοινοχοΐαν σου, καὶ δώσεις τὸ ποτήριον Φαραὼ εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ κατὰ τὴν ἀρχήν σου τὴν προτέραν, ὡς ἦσθα οἰνοχοῶν. Ἀλλὰ μνήσθητί μου διὰ σεαυτοῦ, ὅταν εὖ γενηταί σοι· καὶ ποιήσεις ἐν ἐμοὶ ἔλεος· καὶ μνησθήσῃ περὶ ἐμοῦ πρὸς Φαραὼ, καὶ ἐξάξεις με ἐκ τοῦ ὀχυρώματος τούτου. Ὅτι κλοπῇ ἐκλάπην ἐκ γῆς Ἑβραίων, καὶ ὧδε οὐκ ἐποίησα οὐδὲν, ἀλλ ἐνέβαλόν με εἰς τὸν λάκκον τοῦτον. Καὶ εἶδεν ὁ ἀρχισιτοποιὸς ὅτι ὀρθῶς συνέκριεν· καὶ εἶπε τῷ Ἰωσὴφ, κἀγὼ εἶδον ἐνύπνιον· καὶ ᾤμην τρία κανᾶ χονδριτῶν αἴρειν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς μου· Ἐν δὲ κανῷ τῷ ἐπάνω ἀπὸ πάντων τῶν γενῶν, ὧν Φαραὼ ἐσθίει, ἔργον σιτοποιοῦ, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανου κατήσθιεν αὐτὰ ἀπὸ τοῦ κανοῦ τοῦ ἐπάνω τῆς κεφαλῆς μου. Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰωσὴφ εἶπεν αὐτῷ, αὕτη ἡ σύγκρισις αὐτοῦ· τὰ τρία κανᾶ, τρεῖς ἡμέραι εἰσίν· Ἔτι τριῶν ἡμερῶν, καὶ ἀφελεῖ Φαραὼ τὴν κεφαλήν σου ἀπὸ σου· καὶ

κρεμάσει σε ἐπὶ ξύλου, καὶ φάγεται τὰ ὄρνεα τοῦ οὐρανοῦ τὰς σάρκας σου ἀπὸ σοῦ. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, ἡμέρα γενέσεως ἦν Φαραὼ, καὶ ἐποίει πότον πᾶσι τοῖς παισὶν αὐτοῦ· καὶ ἐμνήσθη τῆς ἀρχῆς τοῦ οἰνοχόου καὶ τῆς ἀρχῆς τοῦ σιτοποιοῦ ἐν μέσῳ τῶν παίδων αὐτοῦ. Καὶ ἀποκατέστησε τὸν ἀρχιοινοχόον ἐπὶ τὴν ἀρχὴν αὐτοῦ· καὶ ἔδωκε τὸ ποτήριον εἰς τὴν χεῖρα Φαραώ. Τὸν δὲ ἀρχισιτοποιὸν ἐκρέμασεν, καθὰ συνέκρινεν αὐτοῖς Ἰωσήφ. Καὶ οὐκ ἐμνήσθη ὁ ἀρχιοινοχόος τοῦ Ἰωσὴφ, ἀλλα ἐπελάθετο αὐτοῦ.

# 41

Ἐγένετο δὲ μετὰ δύο ἔτη ἡμερῶν, Φαραὼ εἶδεν ἐνύπνιον· ᾧετο ἑστάναι ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ. Καὶ ἰδοὺ ὥσπερ ἐκ τοῦ ποταμοῦ ἀνέβαινον ἑπτὰ βόες, καλαὶ τῷ εἴδει, καὶ ἐκλεκταὶ ταῖς σαρξὶ, καὶ ἐβόσκοντο ἐν τῷ Ἄχει. Ἄλλαι δὲ ἑπτὰ βόες ἀνέβαινον μετὰ ταύτας ἐκ τοῦ ποταμοῦ, αἰσχραὶ τῷ εἴδει, καὶ λεπταὶ ταῖς σαρξὶ, καὶ ἐνέμοντο παρὰ τὰς βόας ἐπὶ τὸ χεῖλος τοῦ ποταμοῦ. Καὶ κατέφαγον αἱ ἑπτὰ βόες αἱ αἰσχραὶ καὶ λεπταὶ ταῖς σαρξὶ τὰς ἑπτὰ βόας τὰς καλὰς τῷ εἴδει καὶ τὰς ἐκλεκτὰς ταῖς σαρξί· ἠγέρθη δὲ Φαραώ. Καὶ ἐνυπνιάσθη τὸ δεύτερον· καὶ ἰδοὺ ἑπτὰ στάχυες ἀνέβαινον ἐν τῷ πυθμένι ἑνὶ ἐκλεκτοὶ καὶ καλοί. Καὶ ἰδοὺ ἑπτὰ στάχυες λεπτοὶ καὶ ἀνεμόφθοροι ἀνεφύοντο μετ αὐτούς. Καὶ κατέπιον οἱ ἑπτὰ στάχυες οἱ λεπτοὶ καὶ ἀνεμόφθοροι τοὺς ἑπτὰ στάχυας τοὺς ἐκλεκτοὺς καὶ τοὺς πλήρεις· ἠγέρθη δὲ Φαραὼ, καὶ ἦν ἐνύπνιον. Ἐγένετο δὲ πρωΐ, καὶ ἐταράχθη ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἀποστείλας ἐκάλεσε πάντας τοὺς ἐξηγητὰς Αἰγύπτου, καὶ πάντας τοὺς σοφοὺς αὐτῆς· καὶ διηγήσατο αὐτοῖς Φαραὼ τὸ ἐνύπνιον

αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀπαγγέλλων αὐτὸ τῷ Φαραώ. Καὶ ἐλάλησεν ὁ ἀρχιοινοχόος πρὸς Φαραὼ, λέγων, τὴν ἁμαρτίαν μου ἀναμιμνήσκω σήμερον. Φαραὼ ὠργίσθη τοῖς παισὶν αὐτοῦ, καὶ ἔθετο ἡμᾶς ἐν φυλακῇ, ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ ἀρχιμαγείρου, ἐμέ τε καὶ τὸν ἀρχισιτοποιόν. Καὶ εἴδομεν ἐνύπνιον ἀμφότεροι ἐν νυκτὶ μιᾷ ἐγὼ καὶ αὐτὸς, ἕκαστος κατὰ τὸ αὐτοῦ ἐνύπνιον εἴδομεν. Ἦν δὲ ἐκεῖ μεθ ἡμῶν νεανίσκος παῖς Ἑβραῖος τοῦ ἀρχιμαγείρου, καὶ διηγησάμεθα αὐτῷ, καὶ συνέκρινεν ἡμῖν. Ἐγενήθη δὲ, καθὼς συνέκρινεν ἡμῖν οὕτω καὶ συνέβη, ἐμέ τε ἀποκατασταθῆναι ἐπὶ τὴν ἀρχήν μου, ἐκεῖνον δὲ κρεμασθῆναι. Ἀποστείλας δὲ Φαραὼ ἐκάλεσε τὸν Ἰωσήφ· καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν ἀπὸ τοῦ ὀχυρώματος, καὶ ἐξύρησαν αὐτὸν, καὶ ἤλλαξαν τὴν στολὴν αὐτοῦ· καὶ ἦλθε πρὸς Φαραώ. Εἶπε δὲ Φαραὼ πρὸς Ἰωσὴφ, ἐνύπνιον ἑώρακα, καὶ ὁ συγκρίνων οὐκ ἔστιν αὐτό· ἐγὼ δὲ ἀκήκοα περὶ σοῦ λεγόντων, ἀκούσαντά σε ἐνύπνια, συγκρῖναι αὐτά. Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰωσὴφ τῷ Φαραὼ εἶπεν, ἄνευ τοῦ Θεοῦ οὐκ ἀποκριθήσεται τὸ σωτήριον Φαραώ. Ἐλάλησε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, λέγων, ἐν τῷ ὕπνῳ μου ᾤμην ἑστάναι παρὰ τὸ χεῖλος τοῦ ποταμοῦ. Καὶ ὥσπερ ἐκ τοῦ ποταμοῦ ἀνέβαινον ἑπτὰ βόες καλαὶ τῷ εἴδει καὶ ἐκλεκταὶ ταῖς σαρξὶ, καὶ ἐνέμοντο ἐν τῷ Ἄχει. Καὶ ἰδοὺ ἑπτὰ βόες ἕτεραι ἀνέβαινον ὀπίσω αὐτῶν ἐκ τοῦ ποταμοῦ, πονηραὶ καὶ αἰσχραὶ τῷ εἴδει, καὶ λεπταὶ ταῖς σαρξὶν, οἵας οὐκ εἶδον τοιαύτας ἐν ὅλῃ γῇ Αἰγύπτου αἰσχροτέρας. Καὶ κατέφαγον αἱ ἑπτὰ βόες αἱ αἰσχραὶ καὶ λεπταὶ τὰς ἑπτὰ βόας τὰς πρώτας τὰς καλὰς καὶ τὰς ἐκλεκτάς. Καὶ εἰσῆλθον εἰς τὰς κοιλίας αὐτῶν· καὶ οὐ διάδηλοι ἐγένοντο, ὅτι εἰσῆλθον εἰς τὰς κοιλίας αὐτῶν· καὶ αἱ ὄψεις αὐτῶν αἰσχραὶ, καθὰ καὶ τὴν ἀρχήν· ἐξεγερθεὶς δὲ ἐκοιμήθην. Καὶ εἶδον πάλιν ἐν τῷ ὕπνῳ μου, καὶ ὥσπερ ἑπτὰ στάχυες ἀνέβαινον ἐν πυθμένι ἑνὶ

πλήρεις καὶ καλοί· Ἄλλοι δὲ ἑπτὰ στάχυες λεπτοὶ καὶ ἀνεμόφθοροι ἀνεφύοντο ἐχόμενοι αὐτῶν. Καὶ κατέπιον οἱ ἑπτὰ στάχυες οἱ λεπτοὶ καὶ ἀνεμόφθοροι τοὺς ἑπτὰ στάχυας τοὺς καλοὺς καὶ τοὺς πλήρεις· εἶπα οὖν τοῖς ἐξηγηταῖς, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀπαγγέλλων μοι αὐτό. Καὶ εἶπεν Ἰωσὴφ τῷ Φαραὼ, τὸ ἐνύπνιον Φαραὼ ἕν ἐστιν· ὅσα ὁ Θεὸς ποιεῖ, ἔδειξε τῷ Φαραώ. Αἱ ἑπτὰ βόες αἱ καλαὶ, ἑπτὰ ἔτη ἐστί· καὶ οἱ ἑπτὰ στάχυες οἱ καλοὶ, ἑπτὰ ἔτη ἐστί· τὸ ἐνύπνιον Φαραὼ ἕν ἐστι. Καὶ αἱ ἑπτὰ βόες αἱ λεπταὶ, αἱ ἀναβαίνουσαι ὀπίσω αὐτῶν, ἑπτὰ ἔτη ἐστί· καὶ οἱ ἑπτὰ στάχυες οἱ λεπτοὶ καὶ ἀνεμόφθοροι, ἑπτὰ ἔτη ἐστί· ἔσονται ἑπτὰ ἔτη λιμοῦ. Τὸ δὲ ῥῆμα ὃ εἴρηκα Φαραὼ, ὅσα ὁ Θεὸς ποιεῖ, ἔδειξε τῷ Φαραώ. Ἰδοὺ ἑπτὰ ἔτη ἔρχεται εὐθηνία πολλὴ ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Ἥξει δὲ ἑπτὰ ἔτη λιμοῦ μετὰ ταῦτα· καὶ ἐπιλήσονται τῆς πλησμονῆς τῆς ἐσομένης ἐν ὅλῃ Αἰγύπτῳ· καὶ ἀναλώσει ὁ λιμὸς τὴν γῆν. Καὶ οὐκ ἐπιγνωσθήσεται ἡ εὐθηνία ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ τοῦ λιμοῦ τοῦ ἐσομένου μετὰ ταῦτα· ἰσχυρὸς γὰρ ἔσται σφόδρα. Περὶ δὲ τοῦ δευτερῶσαι τὸ ἐνύπνιον Φαραὼ δὶς, ὅτι ἀληθὲς ἔσται τὸ ῥῆμα τὸ παρὰ τοῦ Θεοῦ· καὶ ταχυνεῖ ὁ Θεὸς τοῦ ποιῆσαι αὐτό. Νῦν οὖν σκέψαι ἄνθρωπον φρόνιμον καὶ συνετὸν, καὶ κατάστησον αὐτὸν ἐπὶ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ποιησάτω Φαραὼ καὶ καταστησάτω τοπάρχας ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἀποπεμπτωσάτωσαν πάντα τὰ γεννήματα τῆς γῆς Αἰγύπτου τῶν ἑπτὰ ἐτῶν τῆς εὐθηνίας, καὶ συναγαγέτωσαν πάντα τὰ βρώματα τῶν ἑπτὰ ἐτῶν τῶν ἐρχομένων τῶν καλῶν τούτων· καὶ συναχθήτω ὁ σῖτος ὑπὸ χεῖρα Φαραώ· βρώματα ἐν ταῖς πόλεσι φυλαχθήτω. Καὶ ἔσται τὰ βρώματα τὰ πεφυλαγμένα τῇ γῇ εἰς τὰ ἑπτὰ ἔτη τοῦ λιμοῦ, ἃ ἔσονται ἐν γῇ Αἰγύπτου, καὶ οὐκ ἐκτριβήσεται ἡ γῆ ἐν τῷ λιμῷ. Ἤρεσε δὲ τὸ ῥῆμα ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον πάντων τῶν

παίδων αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Φαραὼ πᾶσι τοῖς παισὶν αὐτοῦ, μὴ εὑρήσομεν ἄνθρωπον τοιοῦτον, ὃς ἔχει πνεῦμα Θεοῦ ἐν αὐτῷ; Εἶπε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, ἐπειδὴ ἔδειξεν ὁ Θεός σοι πάντα ταῦτα, οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος φρονιμώτερος καὶ συνετώτερός σου. Σὺ ἔσῃ ἐπὶ τῷ οἴκῳ μου, καὶ ἐπὶ τῷ στόματί σου ὑπακούσεται πᾶς ὁ λαός μου· πλὴν τὸν θρόνον ὑπερέξω σου ἐγώ. Εἶπε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, ἰδοὺ καθίστημί σε σήμερον ἐπὶ πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Καὶ περιελόμενος Φαραὼ τὸν δακτύλιον ἀπὸ τῆς χειρὸς αὐτοῦ, περίεθηκεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν χεῖρα Ἰωσὴφ, καὶ ἐνέδυσεν αὐτὸν στολὴν βυσσίνην, καὶ περιέθηκε κλοιὸν χρυσοῦν περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ. Καὶ ἀνεβίβασεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ ἅρμα τὸ δεύτερον τῶν αὐτοῦ· καὶ ἐκήρυξεν ἔμπροσθεν αὐτοῦ κήρυξ· καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἐφ ὅλης γῆς Αἰγύπτου. Εἶπε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, ἐγὼ Φαραώ· ἄνευ σοῦ οὐκ ἐξαρεῖ οὐθεὶς τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ πάσης γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἐκάλεσε Φαραὼ τὸ ὄνομα Ἰωσὴφ, Ψονθομφανήχ· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ τὴν Ἀσενὲθ θυγατέρα Πετεφρῆ ἱερέως Ἡλιουπόλεως αὐτῷ εἰς γυναῖκα. Ἰωσὴφ δὲ ἦν ἐτῶν τριάκοντα, ὅτε ἔστη ἐναντίον Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου· ἐξῆλθε δὲ Ἰωσὴφ ἀπὸ προσώπου Φαραὼ, καὶ διῆλθε πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου. Καὶ ἐποίησεν ἡ γῆ ἐν τοῖς ἑπτὰ ἔτεσι τῆς εὐθηνίας δράγματα. Καὶ συνήγαγε πάντα τὰ βρώματα τῶν ἑπτὰ ἐτῶν, ἐν οἷς ἦν ἡ εὐθηνία ἐν τῇ γῇ Αἰγύπτου· καὶ ἔθηκε τὰ βρώματα ἐν ταῖς πόλεσι· βρώματα τῶν πεδίων τῆς πόλεως τῶν κύκλῳ αὐτῆς ἔθηκεν ἐν αὐτῇ. Καὶ συνήγαγεν Ἰωσὴφ σῖτον ὡσεὶ τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης πολὺν σφόδρα, ἕως οὐκ ἠδύνατο ἀριθμηθῆναι, οὐ γὰρ ἦν ἀριθμός. Τῷ δὲ Ἰωσὴφ ἐγένοντο υἱοὶ δύο πρὸ τοῦ ἐλθεῖν τὰ ἑπτὰ ἔτη τοῦ λιμοῦ, οὓς ἔτεκεν αὐτῷ Ἀσενὲθ ἡ θυγάτηρ Πετεφρῆ ἱερέως Ἡλιουπόλεως. Ἐκάλεσε δὲ Ἰωσὴφ τὸ ὄνομα τοῦ πρωτοτόκου, Μανασσῆ· ὅτι

ἐπιλαθέσθαι με ἐποίησεν ὁ Θεὸς πάντων τῶν πόνων μου, καὶ πάντων τῶν τοῦ πατρός μου· Τὸ δὲ ὄνομα τοῦ δευτέρου ἐκάλεσεν, Ἐφραίμ· ὅτι ηὔξησέ με ὁ Θεὸς ἐν γῇ ταπεινώσεώς μου. Παρῆλθον δὲ τὰ ἑπτὰ ἔτη τῆς εὐθηνίας, ἃ ἐγένοντο ἐν τῇ γῇ Αἰγύπτου. Καὶ ἤρξατο τὰ ἑπτὰ ἔτη τοῦ λιμοῦ ἔρχεσθαι, καθὰ εἶπεν Ἰωσήφ· καὶ ἐγένετο λιμὸς ἐν πάσῃ τῇ γῇ· ἐν δὲ πάσῃ τῇ γῇ Αἰγύπτου ἦσαν ἄρτοι. Καὶ ἐπείνασε πᾶσα ἡ γῆ Αἰγύπτου· ἔκραξε δὲ ὁ λαὸς πρὸς Φαραὼ περὶ ἄρτων· εἶπε δὲ Φαραὼ πᾶσι τοῖς Αἰγυπτίοις, πορεύεσθε πρὸς Ἰωσὴφ, καὶ ὃ ἐὰν εἴπῃ ὑμῖν, ποιήσατε. Καὶ ὁ λιμὸς ἦν ἐπὶ προσώπου πάσης τῆς γῆς· ἀνέῳξε δὲ Ἰωσὴφ πάντας τοὺς σιτοβολῶνας, καὶ ἐπώλει πᾶσι τοῖς Αἰγυπτίοις. Καὶ πᾶσαι αἱ χῶραι ἦλθον εἰς Αἴγυπτον, ἀγοράζειν πρὸς Ἰωσήφ· ἐπεκράτησε γὰρ ὁ λιμὸς ἐν πάσῃ τῇ γῇ·

# 42

Ἰδὼν δὲ Ἰακὼβ ὅτι ἐστὶ πράσις ἐν Αἰγύπτῳ, εἶπε τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, ἱνατί ῥαθυμεῖτε; Ἰδοὺ ἀκήκοα, ὅτι ἐστὶ σῖτος ἐν Αἰγύπτῳ· κατάβητε ἐκεῖ, καὶ πρίασθε ἡμῖν μικρὰ βρώματα, ἵνα ζήσωμεν καὶ μὴ ἀποθάνωμεν. Κατέβησαν δὲ οἱ ἀδελφοὶ Ἰωσὴφ οἱ δέκα, πρίασθαι σῖτον ἐξ Αἰγύπτου· Τὸν δὲ Βενιαμὶν, τὸν ἀδελφὸν Ἰωσὴφ, οὐκ ἀπέστειλε μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ· εἶπε γὰρ, μή ποτε συμβῇ αὐτῷ μαλακία. Ἦλθον δὲ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀγοράζειν μετὰ τῶν ἐρχομένων· ἦν γὰρ ὁ λιμὸς ἐν γῇ Χαναάν. Ἰωσὴφ δὲ ἦν ὁ ἄρχων τῆς γῆς· οὗτος ἐπώλει παντὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς· ἐλθόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ Ἰωσὴφ προσεκύνησαν αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν. Ἰδὼν δὲ Ἰωσὴφ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἐπέγνω· καὶ ἠλλοτριοῦτο ἀπ

αὐτῶν, καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς σκληρά· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, πόθεν ἥκατε; οἱ δὲ εἶπον, ἐκ γῆς Χαναὰν, ἀγοράσαι βρώματα. Ἐπέγνω δὲ Ἰωσὴφ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ· αὐτοὶ δὲ οὐκ ἐπέγνωσαν αὐτόν· Καὶ ἐμνήσθη Ἰωσὴφ τῶν ἐνυπνίων αὐτοῦ, ὧν εἶδεν αὐτός· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, κατάσκοποί ἐστε, κατανοῆσαι τὰ ἴχνη τῆς χώρας ἥκατε. Οἱ δὲ εἶπαν, οὐχὶ, κύριε· οἱ παῖδές σου ἤλθομεν πρίασθαι βρώματα. Πάντες ἐσμὲν υἱοὶ ἑνὸς ἀνθρώπου· εἰρηνικοί ἐσμεν, οὐκ εἰσιν οἱ παῖδές σου κατάσκοποι. Εἶπε δὲ αὐτοῖς, οὐχί· ἀλλὰ τὰ ἴχνη τῆς γῆς ἤλθετε ἰδεῖν. Οἱ δὲ εἶπαν, δώδεκά ἐσμεν οἱ παῖδές σου ἀδελφοὶ ἐν γῇ Χαναάν· καὶ ἰδοὺ ὁ νεώτερος μετὰ τοῦ πατρὸς ἡμῶν σήμερον· ὁ δὲ ἕτερος οὐχ ὑπάρχει. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰωσὴφ, τοῦτό ἐστιν ὃ εἴρηκα ὑμῖν, λέγων, ὅτι κατάσκοποί ἐστε. Ἐν τούτῳ φανεῖσθε· νὴ τὴν ὑγίειαν Φαραὼ, οὐ μὴ ἐξέλθητε ἐντεῦθεν, ἐὰν μὴ ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν ὁ νεώτερος ἔλθῃ ὧδε. Ἀποστείλατε ἐξ ὑμῶν ἕνα, καὶ λάβετε τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν· ὑμεῖς δὲ ἀπάχθητε ἕως τοῦ φανερὰ γενέσθαι τὰ ῥήματα ὑμῶν, εἰ ἀληθεύετε ἢ οὔ· εἰ δὲ μὴ, νὴ τὴν ὑγίειαν Φαραὼ, ἦ μὴν κατάσκοποί ἐστε. Καὶ ἔθετο αὐτοὺς ἐν φυλακῇ ἡμέρας τρεῖς. Εἶπε δὲ αὐτοῖς τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, τοῦτο ποιήσατε, καὶ ζήσεσθε· τὸν Θεὸν γὰρ ἐγὼ φοβοῦμαι. Εἰ εἰρηνικοί ἐστε, ἀδελφὸς ὑμῶν κατασχεθήτω εἷς ἐν τῇ φυλακῇ· αὐτοὶ δὲ βαδίσατε, καὶ ἀπαγάγετε τὸν ἀγορασμὸν τῆς σιτοδοσίας ὑμῶν. Καὶ τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν τὸν νεώτερον ἀγάγετε πρός με, καὶ πιστευθήσονται τὰ ῥήματα ὑμῶν· εἰ δὲ μὴ, ἀποθανεῖσθε. Ἐποίησαν δὲ οὕτως. Καὶ εἶπεν ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ναὶ, ἐν ἁμαρτίαις γάρ ἐσμεν περὶ τοῦ ἀδελφοῦ ἡμῶν, ὅτι ὑπερίδομεν τὴν θλίψιν τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, ὅτε κατεδέετο ἡμῶν, καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν αὐτοῦ· καὶ ἕνεκεν τούτου ἐπῆλθεν ἐφ ἡμᾶς ἡ θλίψις αὕτη. Ἀποκριθεὶς δὲ Ῥουβὴν εἶπεν αὐτοῖς, οὐκ ἐλάλησα ὑμῖν, λέγων, μὴ ἀδικήσητε τὸ παιδάριον, καὶ

οὐκ εἰσηκούσατέ μου; καὶ ἰδοὺ τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐκζητεῖται. Αὐτοὶ δὲ οὐκ ᾔδεισαν, ὅτι ἀκούει Ἰωσήφ· ὁ γὰρ ἑρμηνευτὴς ἀνὰ μέσον αὐτῶν ἦν· Ἀποστραφεὶς δὲ ἀπ αὐτῶν ἔκλαυσεν Ἰωσήφ· καὶ πάλιν προσῆλθε πρὸς αὐτοὺς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· καὶ ἔλαβε τὸν Συμεὼν ἀπ αὐτῶν, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐναντίον αὐτῶν. Ἐνετείλατο δὲ Ἰωσὴφ ἐμπλῆσαι τὰ ἀγγεῖα αὐτῶν σίτου, καὶ ἀποδοῦναι τὸ ἀργύριον αὐτῶν ἑκάστῳ εἰς τὸν σάκκον αὐτοῦ, καὶ δοῦναι αὐτοῖς ἐπισιτισμὸν εἰς τὴν ὁδόν· καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς οὕτως. Καὶ ἐπιθέντες τὸν σῖτον ἐπὶ τοῦς ὄνους αὐτῶν, ἀπῆλθον ἐκεῖθεν. Λύσας δὲ εἷς τὸν μάρσιππον αὐτοῦ, δοῦναι χορτάσματα τοῖς ὄνοις αὐτοῦ, οὗ κατέλυσαν, καὶ εἶδε τὸν δεσμὸν τοῦ ἀργυρίου αὐτοῦ, καὶ ἦν ἐπάνω τοῦ στόματος τοῦ μαρσίππου. Καὶ εἶπε τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ, ἀπεδόθη μοι τὸ ἀργύριον, καὶ ἰδοὺ τοῦτο ἐν τῷ μαρσίππῳ μου· καὶ ἐξέστη ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ ἐταράχθησαν πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες, τί τοῦτο ἐποίησεν ὁ Θεὸς ἡμῖν; Ἦλθον δὲ πρὸς Ἰακὼβ τὸν πατέρα αὐτῶν εἰς γὴν Χαναὰν, καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ πάντα τὰ συμβάντα αὐτοῖς, λέγοντες, Λελάληκεν ὁ ἄνθρωπος ὁ κύριος τῆς γῆς πρὸς ἡμᾶς σκληρὰ, καὶ ἔθετο ἡμᾶς ἐν φυλακῇ, ὡς κατασκοπεύοντας τὴν γῆν. Εἴπαμεν δὲ αὐτῷ, εἰρήνικοί ἐσμεν, οὐκ ἐσμὲν κατάσκοποι. Δώδεκα ἀδελφοί ἐσμεν, υἱοὶ τοῦ πατρὸς ἡμῶν· ὁ εἷς οὐχ ὑπάρχει· ὁ δὲ μικρὸς μετὰ τοῦ πατρὸς ἡμῶν σήμερον ἐν γῇ Χαναάν. Εἶπε δὲ ἡμῖν ὁ ἄνθρωπος ὁ κύριος τῆς γῆς, ἐν τούτῳ γνώσομαι, ὅτι εἰρηνικοί ἐστε· ἀδελφὸν ἕνα ἄφετε ὦδε μετ ἐμοῦ· τὸν δὲ ἀγορασμὸν τῆς σιτοδοσίας τοῦ οἴκου ὑμῶν λαβόντες ἀπέλθατε. Καὶ ἀγάγετε πρός με τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν τὸν νεώτερον· καὶ γνώσομαι ὅτι οὐ κατάσκοποί ἐστε, ἀλλ ὅτι εἰρηνικοί ἐστε· καὶ τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν ἀποδώσω ὑμῖν, καὶ τῇ γῇ ἐμπορεύσεσθε. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ κατακενοῦν αὐτοὺς τοὺς σάκκους αὐτῶν, καὶ ἦν

ἑκάστου ὁ δεσμὸς τοῦ ἀργυρίου ἐν τῷ σάκκῳ αὐτῶν· καὶ εἶδον τοὺς δεσμοὺς τοῦ ἀργυρίου αὐτῶν αὐτοὶ, καὶ ὁ πατὴρ αὐτῶν, καὶ ἐφοβήθησαν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰακὼβ ὁ πατὴρ αὐτῶν, ἐμὲ ἠτεκνώσατε· Ἰωσὴφ οὐκ ἔστι, Συμεὼν οὐκ ἔστι, καὶ τὸν Βενιαμὶν λήψεσθε; ἐπ ἐμὲ ἐγένετο ταῦτα πάντα. Εἶπε δὲ Ῥουβὴν τῷ πατρὶ αὐτῶν, λέγων, τοὺς δύο υἱούς μου ἀπόκτεινον, ἐὰν μὴ ἀγάγω αὐτὸν πρὸς σέ· δὸς αὐτὸν εἰς τὴν χεῖρά μου, κἀγὼ ἀνάξω αὐτὸν πρὸς σέ. Ὁ δὲ εἶπεν, οὐ καταβήσεται ὁ υἱός μου μεθ ὑμῶν, ὅτι ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἀπέθανε, καὶ αὐτὸς μόνος καταλέλειπται· καὶ συμβήσεται αὐτὸν μαλακισθῆναι ἐν τῇ ὁδῷ, ᾗ ἐὰν πορεύησθε, καὶ κατάξετέ μου τὸ γῆρας μετὰ λύπης εἰς ᾅδοῦ.

# 43

Ὁ δὲ λιμὸς ἐνίσχυσεν ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα συνετέλεσαν καταφαγεῖν τὸν σῖτον, ὃν ἤνεγκαν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ πατὴρ αὐτῶν, πάλιν πορευθέντες πρίασθε ἡμῖν μικρὰ βρώματα. Εἶπε δὲ αὐτῷ Ἰούδας, λέγων, διαμαρτυρίᾳ μεμαρτύρηται ἡμῖν ὁ ἄνθρωπος ὁ κύριος τῆς γῆς, λέγων, οὐκ ὄψεσθε τὸ πρόσωπόν μου, ἐὰν μὴ ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν ὁ νεώτερος μεθ ὑμῶν ᾖ. Εἰ μὲν οὖν ἀποστέλλῃς τὸν ἀδελφὸν ἡμῶν μεθ ἡμῶν, καταβησόμεθα, καὶ ἀγοράσομέν σοι βρώματα. Εἰ δὲ μὴ ἀποστέλλῃς τὸν ἀδελφὸν ἡμῶν μεθ ἡμῶν, οὐ πορευσόμεθα· ὁ γὰρ ἄνθρωπος εἶπεν ἡμῖν, λέγων, οὐκ ὄψεσθέ μου τὸ πρόσωπον, ἐὰν μὴ ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν ὁ νεώτερος μεθ ὑμῶν ᾖ. Εἶπε δὲ Ἰσραὴλ, τί ἐκακοποιήσατέ με, ἀναγγείλαντες τῷ ἀνθρώπῳ ὅτι ἐστὶν ὑμῖν ἀδελφός; Οἱ δὲ εἶπαν, ἐρωτῶν ἐπηρώτησεν ἡμᾶς ὁ ἄνθρωπος καὶ τὴν γενεὰν ἡμῶν,

λέγων, εἰ ἔτι ὁ πατὴρ ὑμῶν ζῇ, καὶ εἰ ἔστιν ὑμῖν ἀδελφός· καὶ ἀπηγγείλαμεν αὐτῷ κατὰ τὴν ἐπερώτησιν ταύτην· μὴ ᾔδειμεν ὅτι ἐρεῖ ἡμῖν, ἀγάγετε τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν; Εἶπε δὲ Ἰούδας πρὸς Ἰσραὴλ τὸν πατέρα αὐτοῦ, ἀπόστειλον τὸ παιδάριον μετ ἐμοῦ· καὶ ἀναστάντες πορευσόμεθα, ἵνα ζῶμεν καὶ μὴ ἀποθάνωμεν καὶ ἡμεῖς, καὶ σὺ, καὶ ἡ ἀποσκευὴ ἡμῶν. Ἐγὼ δὲ ἐκδέχομαι αὐτόν· ἐκ χειρός μου ζήτησον αὐτόν· ἐὰν μὴ ἀγάγω αὐτὸν πρός σε, καὶ στήσω αὐτὸν ἐναντίον σου, ἡμαρτηκὼς ἔσομαι εἰς σὲ πάσας τὰς ἡμέραν. Εἰ μὴ γὰρ ἐβραδύναμεν, ἤδη ἂν ὑπεστρέψαμεν δίς. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰσραὴλ ὁ πατὴρ αὐτῶν, εἰ οὕτως ἐστὶ, τοῦτο ποιήσατε· λάβετε ἀπὸ τῶν καρπῶν τῆς γῆς ἐν τοῖς ἀγγείοις ὑμῶν, καὶ καταγάγετε τῷ ἀνθρώπῳ δῶρα τῆς ῥητίνης, καὶ τοῦ μέλιτος, θυμίαμά τε καὶ στακτὴν, καὶ τερέινθον, καὶ κάρυα. Καὶ τὸ ἀργύριον δισσὸν λάβετε ἐν ταῖς χερσὶν ὑμῶν· τὸ ἀργύριον τὸ ἀποστραφὲν ἐν τοῖς μαρσίπποις ὑμῶν ἀποστρέψατε μεθ ὑμῶν· μή ποτε ἀγνόημά ἐστι. Καὶ τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν λάβετε· καὶ ἀναστάντες κατάβητε πρὸς τὸν ἄνθρωπον. Ὁ δὲ Θεός μου δώῃ ὑμῖν χάριν ἐναντίον τοῦ ἀνθρώπου καὶ ἀποστείλαι τὸν ἀδελφὸν ὑμῶν τὸν ἕνα, καὶ τὸν Βενιαμίν· ἐγὼ μὲν γὰρ καθάπερ ἠτέκνωμαι, ἠτέκνωμαι. Λαβόντες δὲ οἱ ἄνδρες τὰ δῶρα ταῦτα καὶ τὸ ἀργύριον διπλοῦν, ἔλαβον ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν καὶ τὸν Βενιαμείν· καὶ ἀναστάντες κατέβησαν εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἔστησαν ἐναντίον Ἰωσήφ. Εἶδε δὲ Ἰωσὴφ αὐτοὺς, καὶ τὸν Βενιαμὶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν ὁμομήτριον· καὶ εἶπε τῷ ἐπὶ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, εἰσάγαγε τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὴν οἰκίαν, καὶ σφάξον θύματα, καὶ ἑτοίμασον· μετ ἐμοῦ γὰρ φάγονται οἱ ἄνθρωποι ἄρτους τὴν μεσημβρίαν. Ἐποίησε δὲ ὁ ἄνθρωπος καθὰ εἶπεν Ἰωσήφ· καὶ εἰσήγαγε τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὸν οἶκον Ἰωσήφ. Ἰδόντες δὲ οἱ ἄνδρες ὅτι εἰσήχθησαν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Ἰωσήφ,

εἶπαν, διὰ τὸ ἀργύριον τὸ ἀποστραφὲν ἐν τοῖς μαρσίπποις ἡμῶν τὴν ἀρχὴν, ἡμεῖς εἰσαγόμεθα, τοῦ συκοφαντῆσαι ἡμᾶς καὶ ἐπιθέσθαι ἡμῖν, τοῦ λαβεῖν ἡμᾶς εἰς παῖδας, καὶ τοὺς ὄνους ἡμῶν. Προσελθόντες δὲ πρὸς τὸν ἄνθρωπον τὸν ἐπὶ τοῦ οἴκου τοῦ Ἰωσὴφ, ἐλάλησαν αὐτῷ ἐν τῷ πυλῶνι τοῦ οἴκου, λέγοντες, δεόμεθα, κύριε· κατέβημεν τὴν ἀρχὴν πρίασθαι βρώματα. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἤλθομεν εἰς τὸ καταλῦσαι, καὶ ἠνοίξαμεν τοὺς μαρσίππους ἡμῶν, καὶ τόδε τὸ ἀργύριον ἑκάστου ἐν τῷ μαρσίππῳ αὐτοῦ· τὸ ἀργύριον ἡμῶν ἐν σταθμῷ ἀπεστρέψαμεν νῦν ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν. Καὶ ἀργύριον ἕτερον ἠνέγκαμεν μεθ ἑαυτῶν, ἀγοράσαι βρώματα· οὐκ οἴδαμεν τίς ἐνέβαλεν τὸ ἀργύριον εἰς τοὺς μαρσίππους ἡμῶν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς, ἵλεως ὑμῖν, μὴ φοβεῖσθε· ὁ Θεὸς ὑμῶν, καὶ ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν, ἔδωκεν ὑμῖν θησαυροὺς ἐν τοῖς μαρσίπποις ὑμῶν· καὶ τὸ ἀργύριον ὑμῶν εὐδοκιμοῦν ἀπέχω· καὶ ἐξήγαγε πρὸς αὐτοὺς τὸν Συμεών. Καὶ ἤνεγκεν ὕδωρ νίψαι τοὺς πόδας αὐτῶν· καὶ ἔδωκε χορτάσματα τοῖς ὄνοις αὐτῶν. Ἡτοίμασαν δὲ τὰ δῶρα, ἕως τοῦ ἐλθεῖν τὸν Ἰωσὴφ μεσημβρίας· ἤκουσαν γὰρ ὅτι ἐκεῖ μέλλει ἀριστᾷν. Εἰσῆλθε δὲ Ἰωσὴφ εἰς τὴν οἰκίαν, καὶ προσήνεγκαν αὐτῷ τὰ δῶρα, ἃ εἶχον ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν, εἰς τὸν οἶκον· καὶ προσεκύνησαν αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν. Ἠρώτησε δὲ αὐτοὺς, πῶς ἔχετε; καὶ εἶπεν αὐτοῖς, εἰ ὑγιαίνει ὁ πατὴρ ὑμῶν ὁ πρεσβύτης, ὃν εἴπατε; ἔτι ζῇ; Οἱ δὲ εἶπαν, ὑγιαίνει ὁ παῖς σου ὁ πατὴρ ἡμῶν, ἔτι ζῇ. Καὶ εἶπεν, εὐλογημένος ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος τῷ Θεῷ· καὶ κύψαντες προσεκύνησαν αὐτῷ. Ἀναβλέψας δὲ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ Ἰωσὴφ, εἶδε Βενιαμὶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν ὁμομήτριον· καὶ εἶπεν, οὗτος ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν ὁ νεώτερος, ὃν εἴπατε πρός με ἀγαγεῖν; καὶ εἶπεν, ὁ Θεὸς ἐλεήσαι σε, τέκνον. Ἐταράχθη δὲ Ἰωσήφ· συνεστρέφετο γὰρ τὰ ἔγκατα

αὐτοῦ ἐπὶ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, καὶ ἐζήτει κλαῦσαι· εἰσελθὼν δὲ εἰς τὸ ταμεῖον, ἔκλαυσεν ἐκεῖ. Καὶ νιψάμενος τὸ πρόσωπον, ἐξελθὼν ἐνεκρατεύσατο· καὶ εἶπε, παράθετε ἄρτους. Καὶ παρέθηκαν αὐτῷ μόνῳ, καὶ αὐτοῖς καθ ἑαυτούς, καὶ τοῖς Αἰγυπτίοις τοῖς συνδειπνοῦσι μετ αὐτοῦ καθ ἑαυτούς· οὐ γὰρ ἐδύναντο οἱ Αἰγύπτιοι συνεσθίειν μετὰ τῶν Ἑβραίων ἄρτους· βδέλυγμα γάρ ἐστι τοῖς Αἰγυπτίοις. Ἐκάθισαν δὲ ἐναντίον αὐτοῦ, ὁ πρωτότοκος κατὰ τὰ πρεσβεῖα αὐτοῦ, καὶ ὁ νεώτερος κατὰ τὴν νεότητα αὐτοῦ· ἐξίσταντο δὲ οἱ ἄνθρωποι ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ. Ἦραν δὲ μερίδα παρ αὐτοῦ πρὸς ἑαυτούς· ἐμεγαλύνθη δὲ ἡ μερὶς Βενιαμεὶν παρὰ τὰς μερίδας πάντων πενταπλασίως πρὸς τὰς ἐκείνων· ἔπιον δὲ καὶ ἐμεθύσθησαν μετ αὐτοῦ.

# 44

Καὶ ἐνετείλατο ὁ Ἰωσὴφ τῷ ὄντι ἐπὶ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, λέγων, πλήσατε τοὺς μαρσίππους τῶν ἀνθρώπων βρωμάτων, ὅσα ἐὰν δύνωνται ἆραι· καὶ ἐμβάλετε ἑκάστου τὸ ἀργύριον ἐπὶ τοῦ στόματος τοῦ μαρσίππου. Καὶ τὸ κόνδυ μου τὸ ἀργυροῦν ἐμβάλετε εἰς τὸν μάρσιππον τοῦ νεωτέρου, καὶ τὴν τιμὴν τοῦ σίτου αὐτοῦ· ἐγενήθη δὲ κατὰ τὸ ῥῆμα Ἰωσὴφ, καθὼς εἶπε. Τὸ πρωῒ διέφαυσε· καὶ οἱ ἄνθρωποι ἀπεστάλησαν, αὐτοὶ καὶ οἱ ὄνοι αὐτῶν. Ἐξελθόντων δὲ αὐτῶν τὴν πόλιν, οὐκ ἀπέσχον μακράν· καὶ Ἰωσὴφ εἶπε τῷ ἐπὶ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, ἀναστὰς ἐπιδίωξον ὀπίσω τῶν ἀνθρώπων, καὶ καταλήμψῃ αὐτοὺς, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς τί ὅτι ἀνταπεδώκατε πονηρὰ ἀντὶ καλῶν; Ἰνατί ἐκλέψατέ μου τὸ κόνδυ τὸ ἀργυροῦν; οὐ τοῦτό ἐστιν, ἐν ᾧ πίνει ὁ κύριός μου; αὐτὸς δὲ

οἰωνισμῷ οἰωνίζεται ἐν αὐτῷ. πονηρὰ συντετελέκατε ἃ πεποιήκατε. Εὑρὼν δὲ αὐτοὺς, εἶπεν αὐτοῖς κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα. Οἱ δὲ εἶπαν αὐτῷ, ἱνατί λαλεῖ ὁ κύριος κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα; μὴ γένοιτο τοῖς παισίν σου ποιῆσαι κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο. Εἰ τὸ μὲν ἀργύριον, ὃ εὕρομεν ἐν τοῖς μαρσίπποις ἡμῶν, ἀπεστρέψαμεν πρὸς σὲ ἐκ γῆς Χαναὰν, πῶς ἂν κλέψαιμεν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ κυρίου σου ἀργύριον ἢ χρυσίον; Παρ ᾧ ἂν εὕρῃς τὸ κόνδυ τῶν παιδων σου, ἀποθνησκέτω· καὶ ἡμεῖς δὲ ἐσόμεθα παῖδες τῷ κυρίῳ ἡμῶν. Ὁ δὲ εἶπε, καὶ νῦν, ὡς λέγετε, οὕτως ἔσται· παρ ᾧ ἂν εὑρεθῇ τὸ κόνδυ, ἔσται μου παῖς ὑμεῖς δὲ ἔσεσθε καθαροί. Καὶ ἔσπευσαν, καὶ καθεῖλαν ἕκαστος τὸν μάρσιππον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἤνοιξαν ἕκαστος τὸν μάρσιππον αὐτοῦ. Ἠρεύνησε δὲ ἀπὸ τοῦ πρεσβυτέρου ἀρξάμενος, ἕως ἦλθεν ἐπὶ τὸν νεώτερον. καὶ εὗρε τὸ κόνδυ ἐν τῷ μαρσίππῳ τοῦ Βενιαμίν. Καὶ διέῤῥηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐπέθηκαν ἕκαστος τὸν μαρσίππον αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ὄνον αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψαν εἰς τὴν πόλιν. Εἰσῆλθε δὲ Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ πρὸς Ἰωσὴφ ἔτι αὐτοῦ ὄντος ἐκεῖ, καὶ ἔπεσον ἐναντίον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰωσὴφ, τί τὸ πρᾶγμα τοῦτο ἐποιήσατε; οὐκ οἴδατε ὅτι οἰωνισμῷ οἰωνιεῖται ὁ ἄνθρωπος, οἷος ἐγώ; Εἶπε δὲ Ἰούδας, τί ἀντεροῦμεν τῷ κυρίῳ, ἢ τί λαλήσομεν, ἢ τί δικαιωθῶμεν; ὁ Θεὸς δὲ εὗρε τὴν ἀδικίαν τῶν παίδων σου· ἰδού ἐσμεν οἰκέται τῷ κυρίῳ ἡμῶν, καὶ ἡμεῖς, καὶ παρ ᾧ εὑρέθη τὸ κόνδυ. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ, μή μοι γένοιτο ποιῆσαι τὸ ῥῆμα τοῦτο· ὁ ἄνθρωπος παρ ᾧ εὑρέθη τὸ κόνδυ, αὐτὸς ἔσται μου παῖς· ὑμεῖς δὲ ἀνάβητε μετὰ σωτηρίας πρὸς τὸν πατέρα ὑμῶν. Ἐγγίσας δὲ αὐτῷ Ἰούδας εἶπε, δέομαι, κύριε· λαλησάτω ὁ παῖς σου ῥῆμα ἐναντίον σου, καὶ μὴ θυμωθῇς τῷ παιδί σου, ὅτι σὺ εἶ μετὰ Φαραώ. Κύριε, σὺ ἠρώτησας τοὺς παῖδάς σου, λέγων, εἰ ἔχετε πατέρα ἢ ἀδελφόν.

Καὶ εἴπαμεν τῷ κυρίῳ, ἔστιν ἡμῖν πατὴρ πρεσβύτερος, καὶ παιδίον γήρως νεώτερον αὐτῷ, καὶ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἀπέθανεν, αὐτὸς δὲ μόνος ὑπελείφθη τῇ μητρὶ αὐτοῦ, ὁ δὲ πατὴρ αὐτὸν ἠγάπησεν· Εἶπας δὲ τοῖς παισί σου, καταγάγετε αὐτὸν πρὸς μέ, καὶ ἐπιμελοῦμαι αὐτοῦ. Καὶ εἴπαμεν τῷ κυρίῳ, οὐ δυνήσεται τὸ παιδίον καταλιπεῖν τὸν πατέρα αὐτοῦ· ἐὰν δὲ καταλείπῃ τὸν πατέρα, ἀποθανεῖται. Σὺ δὲ εἶπας τοῖς παισί σου, ἐὰν μὴ καταβῇ ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν ὁ νεώτερος μεθ ὑμῶν, οὐ προσθήσεσθε ἰδεῖν τὸ πρόσωπόν μου. Ἐγένετο δὲ ἡνίκα ἀνέβημεν πρὸς τὸν παῖδά σου πατέρα ἡμῶν, ἀπηγγείλαμεν αὐτῷ τὰ ῥήματα τοῦ κυρίου ἡμῶν. Εἶπε δὲ ὁ πατὴρ ἡμῶν, βαδίσατε πάλιν καὶ ἀγοράσατε ἡμῖν μικρὰ βρώματα. Ἡμεῖς δὲ εἴπομεν, οὐ δυνησόμεθα καταβῆναι· ἀλλ εἰ μὲν ὁ ἀδελφὸς ἡμῶν ὁ νεώτερος καταβαίνει μεθ ἡμῶν, καταβησόμεθα· οὐ γὰρ δυνησόμεθα ἰδεῖν τὸ πρόσωπον τοῦ ἀνθρώπου, τοῦ ἀδελφοῦ ἡμῶν τοῦ νεωτέρου μὴ ὄντος μεθ ἡμῶν. Εἶπε δὲ ὁ παῖς σου πατὴρ ἡμῶν πρὸς ἡμᾶς, ὑμεῖς γινώσκετε ὅτι δύο ἔτεκέ μοι ἡ γυνὴ, καὶ ἐξῆλθεν ὁ εἷς ἀπ ἐμοῦ· καὶ εἴπατε ὅτι θηριόβρωτος γέγονεν, καὶ οὐκ ἴδον αὐτὸν ἄχρι νῦν. Ἐὰν οὖν λάβητε καὶ τοῦτον ἐκ τοῦ προσώπου μου, καὶ συμβῇ αὐτῷ μαλακία ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ κατάξετέ μου τὸ γῆρας μετὰ λύπης εἰς ᾅδου. Νῦν οὖν ἐὰν εἰσπορεύωμαι πρὸς τὸν παῖδά σου, πατέρα δὲ ἡμῶν, καὶ τὸ παιδίον μὴ ᾖ μεθ ἡμῶν, ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ ἐκκρέμαται ἐκ τῆς τούτου ψυχῆς, καὶ ἔσται ἐν τῷ ἰδεῖν αὐτὸν μὴ ὂν τὸ παιδίον μεθ ἡμῶν, τελευτήσει, καὶ κατάξουσιν οἱ παῖδές σου τὸ γῆρας τοῦ παιδός σου, πατρὸς δὲ ἡμῶν, μετὰ λύπης εἰς ᾅδου. Ὁ γὰρ παῖς σου παρὰ τοῦ πατρὸς ἐκδέδεκται τὸ παιδίον, λέγων, ἐὰν μὴ ἀγάγω αὐτὸν πρὸς σὲ, καὶ στήσω αὐτὸν ἐνώπιόν σου, ἡμαρτηκὼς ἔσομαι εἰς τὸν πατέρα πάσας τὰς ἡμέρας. Νῦν οὖν παραμενῶ σοι παῖς ἀντὶ τοῦ

παιδίου, οἰκέτης τοῦ κυρίου· τὸ δὲ παιδίον ἀναβήτω μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ. Πῶς γὰρ ἀναβήσομαι πρὸς τὸν πατέρα, τοῦ παιδίου μὴ ὄντος μεθ ἡμῶν; ἵνα μὴ ἴδω τὰ κακὰ, ἃ εὑρήσει τὸν πατέρα μου.

# 45

Καὶ οὐκ ἠδύνατο Ἰωσὴφ ἀνέχεσθαι πάντων τῶν παρεστηκότων αὐτῷ, ἀλλ εἶπεν, ἐξαποστείλατε πάντας ἀπ ἐμοῦ· καὶ οὐ παρειστήκει οὐδεὶς τῷ Ἰωσὴφ, ἡνίκα ἀνεγνωρίζετο τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. Καὶ ἀφῆκε φωνὴν μετὰ κλαυθμοῦ· ἤκουσαν δὲ πάντες οἱ Αἰγύπτιοι, καὶ ἀκουστὸν ἐγένετο εἰς τὸν οἶκον Φαραώ. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἐγώ εἰμι Ἰωσήφ· ἔτι ὁ πατήρ μου ζῇ; καὶ οὐκ ἠδύναντο οἱ ἀδελφοὶ ἀποκριθῆναι αὐτῷ· ἐταράχθησαν γάρ. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἐγγίσατε πρὸς μέ· καὶ ἤγγισαν· καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι Ἰωσὴφ ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν, ὃν ἀπέδοσθε εἰς Αἴγυπτον. Νῦν οὖν μὴ λυπεῖσθε, μηδὲ σκληρὸν ὑμῖν φανήτω, ὅτι ἀπέδοσθέ με ὧδε· εἰς γὰρ ζωὴν ἀπέστειλέ με ὁ Θεὸς ἔμπροσθεν ὑμῶν. Τοῦτο γὰρ δεύτερον ἔτος λιμὸς ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἔτι λοιπὰ πέντε ἔτη, ἐν οἷς οὐκ ἔσται ἀροτρίασις, οὐδὲ ἀμητός· Ἀπέστειλε γάρ με ὁ Θεὸς ἔμπροσθεν ὑμῶν, ὑπολείπεσθαι ὑμῶν κατάλειμμα ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐκθρέψαι ὑμῶν κατάλειψιν μεγάλην. Νῦν οὖν οὐχ ὑμεῖς με ἀπεστάλκατε ὧδε, ἀλλὰ ὁ Θεός· καὶ ἐποίησέ με ὡς πατέρα Φαραὼ, καὶ κύριον παντὸς τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ ἄρχοντα πάσης γῆς Αἰγύπτου. Σπεύσαντες οὖν ἀνάβητε πρὸς τὸν πατέρα μου, καὶ εἴπατε αὐτῷ, τάδε λέγει ὁ υἱός σου Ἰωσήφ· ἐποίησέ με ὁ Θεὸς κύριον πάσης γῆς Αἰγύπτου·

κατάβηθι οὖν πρός με, καὶ μὴ μείνῃς· Καὶ κατοικήσεις ἐν γῇ Γεσὲμ Ἀραβίας· καὶ ἔσῃ ἐγγύς μου σὺ, καὶ οἱ υἱοί σου, καὶ οἱ υἱοὶ τῶν υἱῶν σου, τὰ πρόβατά σου, καὶ αἱ βόες σου, καὶ ὅσα σοι ἐστί. Καὶ ἐκθρέψω σε ἐκεῖ· ἔτι γὰρ πέντε ἔτη λιμός· ἵνα μὴ ἐκτριβῇς σὺ, καὶ οἱ υἱοί σου, καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντά σου. Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν βλέπουσι, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ Βενιαμεὶν τοῦ ἀδελφοῦ μου, ὅτι τὸ στόμα μου τὸ λαλοῦν πρὸς ὑμᾶς. Ἀπαγγείλατε οὖν τῷ πατρί μου πᾶσαν τὴν δόξαν μου τὴν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ὅσα ἴδετε· καὶ ταχύναντες καταγάγετε τὸν πατέρα μου ὧδε. Καὶ ἐπιπεσὼν ἐπὶ τὸν τράχηλον Βενιαμὶν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ἔκλαυσεν ἐπ αὐτῷ· καὶ Βενιαμὶν ἔκλαυσεν ἐπὶ τῷ τραχήλῳ αὐτοῦ. Καὶ καταφιλήσας πάντας τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἔκλαυσεν ἐπ αὐτοῖς· καὶ μετὰ ταῦτα ἐλάλησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ πρὸς αὐτόν. Καὶ διεβοήθη ἡ φωνὴ εἰς τὸν οἶκον Φαραὼ, λέγοντες, ἥκασιν οἱ ἀδελφοὶ Ἰωσήφ· ἐχάρη δὲ Φαραὼ καὶ ἡ θεραπεία αὐτοῦ. Εἶπε δὲ Φαραὼ πρὸς Ἰωσὴφ, εἰπον τοῖς ἀδελφοῖς σου, τοῦτο ποιήσατε, γεμίσατε τὰ φορεῖα ὑμῶν, καὶ ἀπέλθετε εἰς γῆν Χαναάν. Καὶ ἀναλαβόντες τὸν πατέρα ὑμῶν, καὶ τὰ ὑπάρχοντα ὑμῶν, ἥκετε πρός με· καὶ δώσω ὑμῖν πάντων τῶν ἀγαθῶν Αἰγύπτου, καὶ φάγεσθε τὸν μυελὸν τῆς γῆς. Σὺ δὲ ἔντειλαι ταῦτα· λαβεῖν αὐτοῖς ἁμάξας ἐκ γῆς Αἰγύπτου τοῖς παιδίοις ὑμῶν, καὶ ταῖς γυναιξὶν ὑμῶν· καὶ ἀναλαβόντες τὸν πατέρα ὑμῶν παραγίνεσθε. Καὶ μὴ φείσησθε τοῖς ὀφθαλμοῖς τῶν σκευῶν ὑμῶν· τὰ γὰρ πάντα ἀγαθὰ Αἰγύπτου ὑμῖν ἔσται. Ἐποίησαν δὲ οὕτως οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· ἔδωκε δὲ Ἰωσὴφ αὐτοῖς ἁμάξας κατὰ τὰ εἰρημένα ὑπὸ Φαραὼ τοῦ βασιλέως· καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ἐπισιτισμὸν εἰς τὴν ὁδόν· Καὶ πᾶσιν ἔδωκε δισσὰς στολάς· τῷ δὲ Βενιαμὶν ἔδωκε τριακοσίους χρυσοὺς, καὶ πέντε ἐξαλλασσούσας στολάς. Καὶ τῷ πατρὶ αὐτοῦ ἀπέστειλε κατὰ τὰ αὐτά· καὶ δέκα ὄνους, αἴροντας

ἀπὸ πάντων τῶν ἀγαθῶν Αἰγύπτου, καὶ δέκα ἡμιόνους, αἰρούσας ἄρτους τῷ πατρὶ αὐτοῦ εἰς ὁδόν. Ἐξαπέστειλε δὲ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύθησαν· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, μὴ ὀργίζεσθε ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ ἀνέβησαν ἐξ Αἰγυπτου, καὶ ἦλθον εἰς γῆν Χαναὰν πρὸς Ἰακὼβ τὸν πατέρα αὐτῶν. Καὶ ἀνήγγειλαν αὐτῷ λέγοντες, ὅτι ὁ υἱός σου Ἰωσὴφ ζῇ, καὶ αὐτὸς ἄρχει πάσης γῆς Αἰγύπτου· καὶ ἐξέστη τῇ διανοίᾳ Ἰακὼβ, οὐ γὰρ ἐπίστευσεν αὐτοῖς. Ἐλάλησαν δὲ αὐτῷ πάντα τὰ ῥηθέντα ὑπὸ Ἰωσὴφ, ὅσα εἶπεν αὐτοῖς. Ἰδὼν δὲ τὰς ἁμάξας, ἃς ἀπέστειλεν Ἰωσὴφ ὥστε ἀναλαβεῖν αὐτὸν, ἀνεζωπύρησε τὸ πνεῦμα Ἰακὼβ τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Εἶπε δὲ Ἰσραὴλ, μέγα μοι ἐστὶν, εἰ ἔτι Ἰωσὴφ ὁ υἱός μου ζῇ· πορευθεὶς ὄψομαι αὐτὸν πρὸ τοῦ ἀποθανεῖν με.

# 46

Ἀπάρας δὲ Ἰσραὴλ, αὐτὸς καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, ἦλθεν ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου· καὶ ἔθυσε θυσίαν τῷ Θεῷ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ Ἰσαάκ. Εἶπε δὲ ὁ Θεὸς τῷ Ἰσραὴλ ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς, εἰπὼν, Ἰακὼβ, Ἰακώβ· ὁ δὲ εἶπε, τί ἐστιν; Ὁ δὲ λέγει αὐτῷ, ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σου· μὴ φοβοῦ καταβῆναι εἰς Αἴγυπτον· εἰς γὰρ ἔθνος μέγα ποιήσω σε ἐκεῖ. Καὶ ἐγὼ καταβήσομαι μετὰ σοῦ εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἐγὼ ἀναβιβάσω σε εἰς τέλος· καὶ Ἰωσὴφ ἐπιβαλεῖ τὰς χεῖρας ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμούς σου. Ἀνέστη δὲ Ἰακὼβ ἀπὸ τοῦ φρέατος τοῦ ὅρκου· καὶ ἀνέλαβον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸν πατέρα αὐτῶν, καὶ τὴν ἀποσκευὴν, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν, ἐπὶ τὰς ἁμάξας, ἃς ἀπέστειλεν Ἰωσὴφ ἆραι αὐτόν. Καὶ ἀναλαβόντες τὰ ὑπάρχοντα αὐτῶν, καὶ πᾶσαν τὴν κτῆσιν, ἣν ἐκτήσαντο ἐκ γῆ Χαναὰν,

εἰσῆλθον εἰς Αἴγυπτον, Ἰακὼβ, καὶ πᾶν τὸ σπέρμα αὐτοῦ μετ αὐτοῦ. Υἱοὶ, καὶ υἱοὶ τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ· θυγατέρες, καὶ θυγατέρες τῶν θυγατέρων αὐτοῦ· καὶ πᾶν τὸ σπέρμα αὐτοῦ ἤγαγεν εἰς Αἴγυπτον· Ταῦτα δὲ τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ τῶν εἰσελθόντων εἰς Αἴγυπτον ἅμα Ἰακὼβ τῷ πατρὶ αὐτῶν. Ἰακὼβ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ· πρωτότοκος Ἰακὼβ, Ῥουβήν. γἱοὶ δὲ Ῥουβὴν, Ἐνὼχ, καὶ Φαλλὸς, Ἀσρὼν, καὶ Χαρμί. Υἱοὶ δὲ Συμεὼν, Ἰεμουὴλ, καὶ Ἰαμεὶν, καὶ Ἀὼδ, καὶ Ἀχεὶν, καὶ Σαὰρ, καὶ Σαοὺλ υἱὸς τῆς Χανανίτιδος. Υἱοὶ δὲ Λευὶ, Γηρσὼν, Κὰθ, καὶ Μεραρί. Υἱοὶ δὲ Ἰούδα, Ἦρ, καὶ Αὐνὰν, καὶ Σηλὼμ, καὶ Φαρὲς, καὶ Ζαρά· ἀπέθανε δὲ Ἦρ καὶ Αὐνὰν ἐν γῇ Χαναάν· ἐγένοντο δὲ υἱοὶ Φαρὲς, Ἐσρὼν, καὶ Ἰεμουήλ. Υἱοὶ δὲ Ἰσσάχαρ, Θωλὰ, καὶ Φουὰ, καὶ Ἀσοὺμ, καὶ Σαμβράν. Υἱοὶ δὲ Ζαβουλὼν, Σερὲδ, καὶ Ἀλλὼν, καὶ Ἀχοήλ. Οὗτοι υἱοὶ Λείας, οὓς ἔτεκε τῷ Ἰακὼβ ἐν Μεσοποταμίᾳ τῆς Συρίας, καὶ Δείναν τὴν θυγατέρα αὐτοῦ· πᾶσαι αἱ ψυχαί, υἱοὶ καὶ θυγατέρες, τριάκοντα τρεῖς. Υἱοὶ δὲ Γάδ, Σαφὼν, καὶ Ἀγγὶς, καὶ Σαννὶς, καὶ Θασοβὰν, καὶ Ἀηδεὶς, καὶ Ἀροηδεὶς, καὶ Ἀρεηλείς. Υἱοὶ δὲ Ἀσὴρ, Ἰεμνα, Ἰεσσουὰ, καὶ Ἰεοὺλ, καὶ βαριὰ, καὶ Σάρα ἀδελφὴ αὐτῶν. Υἱοὶ δὲ βαριὰ, Χοβὸρ, καὶ Μελχιῒλ. Οὗτοι υἱοὶ Ζελφᾶς, ἣν ἔδωκε Λάβαν Λείᾳ τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ, ἣ ἔτεκε τούτους τῷ Ἰακὼβ, δεκαὲξ ψυχάς. Υἱοὶ δὲ Ῥαχὴλ γυναικὸς Ἰακὼβ, Ἰωσὴφ, καὶ Βενιαμείν. Ἐγένοντο δὲ υἱοὶ Ἰωσὴφ ἐν γῇ Αἰγύπτου, οὓς ἔτεκεν αὐτῷ Ἀσενὲθ θυγάτηρ Πετεφρῆ ἱερέως Ἡλιουπόλεως, τὸν Μανασσῆ, καὶ τὸν Ἐφραίμ· ἐγένοντο δὲ υἱοὶ Μανασσῆ, οὓς ἔτεκεν αὐτῷ ἡ παλλακὴ ἡ Σύρα, τὸν Μαχίρ· Μαχὶρ δὲ ἐγέννησε τὸν Γαλαάδ· υἱοὶ δὲ Ἐφραὶμ ἀδελφοῦ Μανασσῆ, Σουταλαὰμ, καὶ Ταάμ· υἱοὶ δὲ Σουταλαὰμ, Ἐδώμ. Υἱοὶ δὲ Βενιαμεὶν, Βαλὰ καὶ Βοχὸρ, καὶ Ἀσβήλ. Ἐγένοντο δὲ υἱοὶ Βαλὰ, Γηρὰ, καὶ Νοεμὰν, καὶ Ἀγχὶς, καὶ Ῥὼς, καὶ Μαμφίμ· Γηρὰ

δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀράδ. Οὗτοι υἱοὶ Ῥαχὴλ, οὓς ἔτεκε τῷ Ἰακώβ· πᾶσαι αἱ ψυχαὶ δεκαοκτώ. Υἱοὶ δὲ Δὰν, Ἀσόμ. Καὶ υἱοὶ Νεφθαλὶ, Ἀσιὴλ, καὶ Γωνὶ, καὶ Ἰσσάαρ, καὶ Σολλήμ. Οὗτοι υἱοὶ Βαλλὰς, ἣν ἔδωκε Λάβαν Ῥαχὴλ τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ, ἣ ἔτεκε τούτους τῷ Ἰακὼβ, πᾶσαι αἱ ψυχαὶ ἑπτά. Πᾶσαι δὲ ψυχαὶ αἱ εἰσελθοῦσαι μετὰ Ἰακὼβ εἰς Αἴγυπτον, οἱ ἐξελθόντες ἐκ τῶν μηρῶν αὐτοῦ, χωρὶς τῶν γυναικῶν υἱῶν Ἰακὼβ, πᾶσαι αἱ ψυχαὶ, ἑξηκονταέξ· Υἱοὶ δὲ Ἰωσὴφ οἱ γενόμενοι αὐτῷ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ψυχαὶ ἐννέα. Πᾶσαι ψυχαὶ οἴκου Ἰακὼβ, αἱ εἰσελθοῦσαι μετὰ Ἰακὼβ εἰς Αἴγυπτον, ψυχαὶ ἑβδομηκονταπέντε. Τὸν δὲ Ἰούδαν ἀπέστειλεν ἔμπροσθεν αὐτοῦ πρὸς Ἰωσὴφ, συναντῆσαι αὐτῷ καθ Ἡρώων πόλιν, εἰς γῆν Ῥαμεσσῆ. Ζεύξας δὲ Ἰωσὴφ τὰ ἅρματα αὐτοῦ, ἀνέβη εἰς συνάντησιν Ἰσραὴλ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, καθ’ Ἡρώων πόλιν· καὶ ὀφθεὶς αὐτῷ ἐπέπεσεν ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ ἔκλαυσε κλαυθμῷ πίονι. Καὶ εἶπεν Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσὴφ, ἀποθανοῦμαι ἀπὸ τοῦ νῦν, ἐπεὶ ἑώρακα τὸ πρόσωπόν σου· ἔτι γὰρ σὺ ζῇς. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, ἀναβὰς ἀπαγγελῶ τῷ Φαραῷ, καὶ ἐρῶ αὐτῷ, οἱ ἀδελφοί μου, καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός μου, οἳ ἦσαν ἐν γῇ χαναὰν, ἥκασι πρός με. Οἱ δὲ ἄνδρες εἰσὶ ποιμένες· ἄνδρες γὰρ κτηνοτρόφοι ἦσαν· καὶ τὰ κτήνη, καὶ τοὺς βόας, καὶ πάντα τὰ αὐτῶν ἀγηόχασιν. Ἐὰν οὖν καλέσῃ ὑμᾶς Φαραὼ, καὶ εἴπῃ ὑμῖν, τί τὸ ἔργον ὑμῶν ἐστι; Ἐρεῖτε, ἄνδρες κτηνοτρόφοι ἐσμὲν οἱ παῖδές σου ἐκ παιδὸς ἕως τοῦ νῦν, καὶ ἡμεῖς, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν· ἵνα κατοικήσητε ἐν γῇ Γεσὲμ Ἀραβίας· βδέλυγμα γάρ ἐστιν Αἰγυπτίοις πᾶς ποιμὴν προβάτων.

# 47

Ἐλθῶν δὲ Ἰωσὴφ ἀπήγγειλε τῷ Φαραῶ, λέγων, ὁ πατὴρ μου, καὶ οἱ ἀδελφοί μου, καὶ τὰ κτήνη, καὶ οἱ βόες αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ αὐτῶν, ἦλθον ἐκ γῆς Χαναάν· καὶ ἰδού εἰσιν ἐν γῇ Γεσέμ. Ἀπὸ δὲ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ παρέλαβε πέντε ἄνδρας, καὶ ἔστησεν αὐτοὺς ἐναντίον Φαραώ. Καὶ εἶπε Φαραὼ τοῖς ἀδελφοῖς Ἰωσὴφ, Τί τὸ ἔργον ὑμῶν; οἱ δὲ εἶπαν τῷ Φαραῷ, ποιμένες προβάτων οἱ παῖδές σου, καὶ ἡμεῖς καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν. Εἶπαν δὲ τῷ Φαραῷ, παροικεῖν ἐν τῇ γῇ ἥκαμεν, οὐ γάρ ἐστι νομὴ τοῖς κτήνεσι τῶν παιδων σου, ἐνίσχυσε γὰρ ὁ λιμὸς ἐν γῇ Χανάαν· νῦν οὖν κατοικήσομεν ἐν γῇ Γεσέμ. Εἶπε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, Κατοικείτωσαν ἐν γῇ Γεσέμ· εἰ δὲ ἐπίστῃ, ὅτι εἰσὶν ἐν αὐτοῖς ἄνδρες δυνατοὶ, κατάστησον αὐτοὺς ἄρχοντας τῶν ἐμῶν κτηνῶν. Ἦλθον δὲ εἰς Αἴγυπτον πρὸς Ἰωσὴφ Ἰακὼβ, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ· καὶ ἤκουσε Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου. Καὶ εἶπε Φαραὼ πρὸς Ἰωσὴφ, λέγων, ὁ πατήρ σου, καὶ οἱ ἀδελφοί σου, ἥκασι πρὸς σέ. Ἰδοὺ ἡ γῆ Αἰγύπτου ἐναντίον σου ἐστίν· ἐν τῇ βελτίστῃ γῇ κατοίκισον τὸν πατέρα σου, καὶ τοὺς ἀδελφούς σου. Εἰσήγαγε δὲ Ἰωσὴφ Ἰακὼβ τὸν πατέρα αὐτοῦ, καὶ ἔστησεν αὐτὸν ἐναντίον Φαραώ· καὶ ηὐλόγησεν Ἰακὼβ τὸν Φαραώ. Εἶπε δὲ Φαραὼ τῷ Ἰακὼβ, πόσα ἔτη ἡμερῶν τῆς ζωῆς σου; Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ τῷ Φαραῷ, αἱ ἡμέραι τῶν ἐτῶν τῆς ζωῆς μου, ἃς παροικῶ, ἑκατὸν τριάκοντα ἔτη· μικραὶ καὶ πονηραὶ γεγόνασιν αἱ ἡμέραι τῶν ἐτῶν τῆς ζωῆς μου· οὐκ ἀφίκοντο εἰς τὰς ἡμέρας τῶν ἐτῶν τῆς ζῶης τῶν πατέρων μου, ἃς ἡμέρας παρῴκησαν. Καὶ εὐλογήσας Ἰακὼβ τὸν Φαραὼ, ἐξῆλθεν ἀπ αὐτοῦ. Καὶ κατῴκισεν Ἰωσὴφ τὸν πατέρα αὐτοῦ, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς κατάσχεσιν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν τῇ βελτίστῃ γῇ, ἐν γῇ Ῥαμεσσῆ, καθὰ προσέταξε Φαραώ. Καὶ ἐσιτομέτρει Ἰωσὴφ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, καὶ τοῖς ἀδελφοῖς, καὶ παντὶ τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, σῖτον κατὰ

σῶμα. Σῖτος δὲ οὐκ ἦν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, ἐνίσχυσε γὰρ ὁ λιμὸς σφόδρα· ἐξέλιπε δὲ ἡ γῆ Αἰγύπτου καὶ ἡ γῆ Χαναὰν ἀπὸ τοῦ λιμοῦ. Συνήγαγε δὲ Ἰωσὴφ πᾶν τὸ ἀργύριον τὸ εὑρεθὲν ἐν γῇ Αἰγύπτου καὶ ἐν γῇ Χαναὰν, τοῦ σίτου, οὗ ἠγόραζον, καὶ ἐσιτομέτρει αὐτοῖς, καὶ εἰσήνεγκεν Ἰωσὴφ πᾶν τὸ ἀργύριον εἰς τὸν οἶκον Φαραώ. Καὶ ἐξέλιπε πᾶν τὸ ἀργύριον ἐκ γῆς Αἰγύπτου καὶ ἐκ γῆς Χαναάν· ἦλθον δὲ πάντες οἱ Αἰγύπτιοι πρὸς Ἰωσὴφ, λέγοντες, δὸς ἡμῖν ἄρτους, καὶ ἱνατί ἀποθνήσκομεν ἐναντίον σου; ἐκλέλοιπε γὰρ τὸ ἀργύριον ἡμῶν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς Ἰωσὴφ, φέρετε τὰ κτήνη ὑμῶν, καὶ δώσω ὑμῖν ἄρτους, ἀντὶ τῶν κτηνῶν ὑμῶν, εἰ ἐκλέλοιπε τὸ ἀργύριον ὑμῶν. Ἤγαγον δὲ τὰ κτήνη αὐτῶν πρὸς Ἰωσήφ· καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς Ἰωσὴφ ἄρτους ἀντὶ τῶν ἵππων, καὶ ἀντὶ τῶν προβάτων, καὶ ἀντὶ τῶν βοῶν, καὶ ἀντὶ τῶν ὄνων· καὶ ἐξέθρεψεν αὐτοὺς ἐν ἄρτοις ἀντὶ πάντων τῶν κτηνῶν αὐτῶν ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐκείνῳ. Ἐξῆλθε δὲ τὸ ἔτος ἐκεῖνο, καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν ἐν τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, μή ποτε ἐκτριβῶμεν ἀπὸ τοῦ κυρίου ἡμῶν; εἰ γὰρ ἐκλέλοιπε τὸ ἀργύριον ἡμῶν, καὶ τὰ ὑπάρχοντα καὶ τὰ κτήνη πρός σε τὸν κύριον, καὶ οὐχ ὑπολέλειπται ἡμῖν ἐναντίον τοῦ κυρίου ἡμῶν, ἀλλ ἢ τὸ ἴδιον σῶμα καὶ ἡ γῆ ἡμῶν, ἵνα οὖν μὴ ἀποθάνωμεν ἐναντίον σου, καὶ ἡ γῆ ἐρημωθῇ, κτῆσαι ἡμᾶς καὶ τὴν γῆν ἡμῶν ἀντὶ ἄρτων, καὶ ἐσόμεθα ἡμεῖς καὶ ἡ γῆ ἡμῶν παῖδες τῷ Φαραώ· δὸς σπέρμα, ἵνα σπείρωμεν, καὶ ζῶμεν καὶ μὴ ἀποθάνωμεν, καὶ ἡ γῆ οὐκ ἐρημωθήσεται. Καὶ ἐκτήσατο Ἰωσὴφ πᾶσαν τὴν γῆν τῶν Αἰγυπτίων τῷ Φαραώ· ἀπέδοντο γὰρ οἱ Αἰγύπτιοι τὴν γῆν αὐτῶν τῷ Φαραώ· ἐπεκράτησε γὰρ αὐτῶν ὁ λιμός· καὶ ἐγένετο ἡ γῆ τῷ Φαραώ. Καὶ τὸν λαὸν κατεδουλώσατο αὐτῷ εἰς παῖδας, ἀπ ἄκρων ὁρίων Αἰγύπτου ἕως τῶν ἄκρων, χωρὶς τῆς γῆς τῶν ἱερέων μόνον· οὐκ ἐκτήσατο ταύτην Ἰωσήφ· ἐν δόσει

γὰρ ἔδωκε δόμα τοῖς ἱερεῦσι Φαραὼ, καὶ ἤσθιον τὴν δόσιν, ἣν ἔδωκεν αὐτοῖς Φαραώ· διὰ τοῦτο οὐκ ἀπέδοντο τὴν γῆν αὐτῶν. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ πᾶσι τοῖς Αἰγυπτίοις, ἰδοὺ κέκτημαι ὑμᾶς καὶ τὴν γῆν ὑμῶν σήμερον τῷ Φαραῷ· λάβετε ἑαυτοῖς σπέρμα, καὶ σπείρατε τὴν γῆν. Καὶ ἔσται τὰ γεννήματα αὐτῆς· καὶ δώσετε τὸ πεμπτὸν μέρος τῷ Φαραώ· τὰ δὲ τέσσαρα μέρη ἔσται ὑμῖν αὐτοῖς εἰς σπέρμα τῇ γῇ, καὶ εἰς βρῶσιν ὑμῖν, καὶ πᾶσι τοῖς ἐν τοῖς οἴκοις ὑμῶν. Καὶ εἶπαν, σέσωκας ἡμᾶς· εὕρομεν χάριν ἐναντίον τοῦ κυρίου ἡμῶν, καὶ ἐσόμεθα παῖδες τῷ Φαραώ. Καὶ ἔθετο αὐτοῖς Ἰωσὴφ εἰς πρόσταγμα ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ἐπὶ γῆς Αἰγύπτου τῷ Φαραὼ ἀποπεμπτοῦν, χωρὶς τῆς γῆς τῶν ἱερέων μόνον· οὐκ ἦν τῷ Φαραώ. Κατῴκησε δὲ Ἰσραὴλ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἐπὶ γῆς Γεσὲμ, καὶ ἐκληρονόμησαν ἐπ αὐτῆς· καὶ ηὐξήθησαν καὶ ἐπληθύνθησαν σφόδρα. Ἐπέζησε δὲ Ἰακὼβ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ δεκαεπτὰ ἔτη· καὶ ἐγένοντο αἱ ἡμέραι Ἰακὼβ ἐνιαυτῶν τῆς ζωῆς αὐτοῦ ἑκατὸν τεσσαρακονταεπτὰ ἔτη. Ἤγγισαν δὲ αἱ ἡμέραι Ἰσραὴλ τοῦ ἀποθανεῖν· καὶ ἐκάλεσε τὸν υἱὸν αὐτοῦ Ἰωσὴφ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, εἰ εὕρηκα χάριν ἐναντίον σου, ὑπόθες τὴν χεῖρά σου ὑπὸ τὸν μηρόν μου, καὶ ποιήσεις ἐπ ἐμὲ ἐλεημοσύνην, καὶ ἀλήθειαν, τοῦ μή με θάψαι ἐν Αἰγύπτῳ· Ἀλλὰ κοιμηθήσομαι μετὰ τῶν πατέρων μου· καὶ ἀρεῖς με ἐξ Αἰγύπτου, καὶ θάψεις με ἐν τῷ τάφῳ αὐτῶν· ὁ δὲ εἶπεν, ἐγὼ ποιήσω κατὰ τὸ ῥῆμά σου. Εἶπε δὲ, ὄμοσόν μοι· καὶ ὤμοσεν αὐτῷ· καὶ προσεκύνησεν Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸ ἄκρον τῆς ῥάβδου αὐτοῦ.

# 48

Ἐγένετο δὲ μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ ἀπηγγέλη τῷ Ἰωσὴφ, ὅτι ὁ πατήρ σου ἐνοχλεῖται· καὶ ἀναλαβὼν τοὺς δύο υἱοὺς αὐτοῦ τὸν Μανασσῆ καὶ τὸν Ἐφραὶμ, ἦλθε πρὸς Ἰακώβ. Ἀπηγγέλη δὲ τῷ Ἰακὼβ, λέγοντες, ἰδοὺ ὁ υἱός σου Ἰωσὴφ ἔρχεται πρὸς σέ· καὶ ἐνισχύσας Ἰσραὴλ ἐκάθισεν ἐπὶ τὴν κλίνην. Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ τῷ Ἰωσὴφ, ὁ Θεός μου ὤφθη μοι ἐν Λουζᾷ ἐν γῇ Χαναὰν, καὶ εὐλόγησέ με, καὶ εἶπέ μοι, ἰδοὺ ἐγὼ αὐξανῶ σε, καὶ πληθυνῶ σε, καὶ ποιήσω σε εἰς συναγωγὰς ἐθνῶν· καὶ δώσω σοι τὴν γῆν ταύτην, καὶ τῷ σπέρματί σου μετὰ σὲ, εἰς κατάσχεσιν αἰώνιον. Νῦν οὖν οἱ δύο υἱοί σου, οἱ γενόμενοί σοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ πρὸ τοῦ με ἐλθεῖν πρός σε εἰς Αἴγυπτον, ἐμοί εἰσιν, Ἐφραὶμ καὶ Μανασσῆ· ὡς Ῥουβὴν καὶ Συμεὼν ἔσονταί μοι. Τὰ δὲ ἔκγονα, ἃ ἐὰν γεννήσῃς μετὰ ταῦτα, ἔσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν· κληθήσονται ἐπὶ τοῖς ἐκείνων κλήροις. Ἐγὼ δὲ ἡνίκα ἠρχόμην ἐκ Μεσοποταμίας τῆς Συρίας, ἀπέθανε Ῥαχὴλ ἡ μήτηρ σου ἐν γῇ Χαναὰν, ἐγγίζοντός μου κατὰ τὸν ἱππόδρομον Χαβραθὰ τῆς γῆς, τοῦ ἐλθεῖν Ἐφραθά· καὶ κατώρυξα αὐτὴν ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἱπποδρόμου· αὕτη ἐστὶ Βηθλεέμ. Ἰδὼν δὲ Ἰσραὴλ τοὺς υἱοὺς Ἰωσὴφ, εἶπε, τίνες σοι οὗτοι; Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, υἱοί μου εἰσὶν, οὓς ἔδωκε μοι ὁ Θεὸς ἐνταῦθα. Καὶ εἶπεν Ἰακὼβ, προσάγαγέ μοι αὐτοὺς, ἵνα εὐλογήσω αὐτούς. Οἱ ὀφθαλμοὶ δὲ Ἰσραὴλ ἐβαρυώπησαν ἀπὸ τοῦ γήρως, καὶ οὐκ ἠδύνατο βλέπειν· καὶ ἤγγισεν αὐτοὺς πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐφίλησεν αὐτοὺς, καὶ περιέλαβεν αὐτους. Καὶ εἶπεν Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσὴφ, ἰδοὺ τοῦ προσώπου σου οὐκ ἐστερήθην, καὶ ἰδοὺ ἔδειξέ μοι ὁ Θεὸς καὶ τὸ σπέρμα σου. Καὶ ἐξήγαγεν αὐτοὺς Ἰωσὴφ ἀπὸ τῶν γονάτων αὐτοῦ· καὶ προσεκύνησαν αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τῆς γῆς. Λαβὼν δὲ Ἰωσὴφ τοὺς δύο υἱοὺς αὐτοῦ, τόν τε Ἐφραὶμ ἐν τῇ δεξιᾷ, ἐξ ἀριστερῶν δὲ Ἰσραὴλ, τὸν δὲ Μανασσῆ ἐξ ἀριστερῶν, ἐκ δεξιῶν δὲ

Ἰσραὴλ, ἤγγισεν αὐτοὺς αὐτῷ. Ἐκτείνας δὲ Ἰσραὴλ τὴν χεῖρα τὴν δεξιὰν, ἐπέβαλεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν Ἐφραὶμ, οὗτος δὲ ἦν ὁ νεώτερος, καὶ τὴν ἀριστερὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν Μανασσῆ, ἐναλλὰξ τὰς χεῖρας. Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς, καὶ εἶπεν, ὁ Θεὸς, ᾧ εὐηρέστησαν οἱ πατέρες μου ἐνώπιον αὐτοῦ, Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ, ὁ Θεὸς ὁ τρέφων με ἐκ νεότητος ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ὁ Ἄγγελος ὁ ῥυόμενός με ἐκ πάντων τῶν κακῶν, εὐλογήσαι τὰ παιδία ταῦτα· καὶ ἐπικληθήσεται ἐν αὐτοις τὸ ὄνομά μου, καὶ τὸ ὄνομα τῶν πατέρων μου Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαάκ· καὶ πληθυνθείησαν εἰς πλῆθος πολὺ ἐπὶ τῆς γῆς. Ἰδὼν δὲ Ἰωσὴφ ὅτι ἐπέβαλεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ τὴν χεῖρα τὴν δεξιὰν αὐτοῦ ἐπὶ τὴν κεφαλὴν Ἐφραὶμ, βαρὺ αὐτῷ κατεφάνη· καὶ ἀντελάβετο Ἰωσὴφ τῆς χειρὸς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἀφελεῖν αὐτὴν ἀπὸ τῆς κεφαλῆς Ἐφραὶμ ἐπὶ τὴν κεφαλὴν Μανασσῆ. Εἶπε δὲ Ἰωσὴφ τῷ πατρὶ αὐτοῦ, οὐχ οὕτως, πατὴρ, οὗτος γὰρ ὁ πρωτότοκος· ἐπίθες τὴν δεξιάν σου ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ οὐκ ἠθέλησεν, ἀλλ εἶπεν, οἶδα, τέκνον, οἶδα· καὶ οὗτος ἔσται εἰς λαὸν, καὶ οὗτος ὑψωθήσεται· ἀλλ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ὁ νεώτερος μείζον αὐτοῦ ἔσται, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ ἔσται εἰς πλῆθος ἐθνῶν. Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, ἐν ὑμῖν εὐλογηθήσεται Ἰσραὴλ, λέγοντες, ποιήσαι σε ὁ Θεὸς ὡς Ἐφραὶμ καὶ ὡς Μανασσῆ· καὶ ἔθηκε τὸν Ἐφραὶμ ἔμπροσθεν τοῦ Μανασσῆ. Εἶπε δὲ Ἰσραὴλ τῷ Ἰωσὴφ, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποθνήσκω· καὶ ἔσται ὁ Θεὸς μεθ ὑμῶν, καὶ ἀποστρέψει ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν τῶν πατέρων ὑμῶν. Ἐγὼ δὲ δίδωμί σοι Σίκιμα ἐξαίρετον ὑπὲρ τοὺς ἀδελφούς σου, ἣν ἔλαβον ἐκ χειρὸς Ἀμορῥαίων ἐν μαχαίρᾳ μου καὶ τόξῳ.

# 49

Ἐκάλεσε δὲ Ἰακὼβ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, συνάχθητε, ἵνα ἀναγγείλω ὑμῖν, τί ἀπαντήσει ὑμῖν ἐπ ἐσχάτων τῶν ἡμέρων. Συνάχθητε, καὶ ἀκούσατέ μου, υἱοὶ Ἰακώβ· ἀκούσατε Ἰσραὴλ, ἀκούσατε τοῦ πατρὸς ὑμῶν. Ῥουβὴν πρωτότοκός μου, σὺ ἰσχύς μου, καὶ ἀρχὴ τέκνων μου, σκληρὸς φέρεσθαι, καὶ σκληρὸς αὐθάδης. Ἐξύβρισας ὡς ὕδωρ, μὴ ἐκζέσῃς, ἀνέβης γὰρ ἐπὶ τὴν κοίτην τοῦ πατρός σου· τότε ἐμίανας τὴν στρωμνὴν, οὗ ἀνέβης. Συμεὼν καὶ Λευὶ ἀδελφοὶ συνετέλεσαν ἀδικίαν ἐξαιρέσεως αὐτῶν· Εἰς βουλὴν αὐτῶν μὴ ἔλθοι ἡ ψυχή μου, καὶ ἐπὶ τῇ συστάσει αὐτῶν μὴ ἐρίσαι τὰ ἥπατά μου· ὅτι ἐν τῷ θυμῷ αὐτῶν ἀπέκτειναν ἀνθρώπους, καὶ ἐν τῇ ἐπιθυμίᾳ αὐτῶν ἐνευροκόπησαν ταῦρον. Ἐπικατάρατος ὁ θυμὸς αὐτὼν, ὅτι αὐθάδης· καὶ ἡ μῆνις αὐτῶν, ὅτι ἐσκληρύνθη· διαμεριῶ αὐτοὺς ἐν Ἰακὼβ, καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν Ἰσραήλ. Ἰούδα, σὲ αἰνέσαισαν οἱ ἀδελφοί σου· αἱ χεῖρές σου ἐπὶ νώτου τῶν ἐχθρῶν σου· προσκυνήσουσί σοι οἱ υἱοὶ τοῦ πατρός σου. Σκύμνος λέοντος Ἰούδα· ἐκ βλαστοῦ, υἱέ μου, ἀνέβης· ἀναπεσὼν ἐκοιμήθης ὡς λέων καὶ ὡς σκύμνος· τίς ἐγερεῖ αὐτόν; Οὐκ ἐκλείψει ἄρχων ἐξ Ἰούδα, καὶ ἡγούμενος ἐκ τῶν μηρῶν αὐτοῦ, ἕως ἐὰν ἔλθῃ τὰ ἀποκείμενα αὐτῷ· καὶ αὐτὸς προσδοκία ἐθνῶν. Δεσμεύων πρὸς ἄμπελον τὸν πῶλον αὐτοῦ, καὶ τῇ ἕλικι τὸν πῶλον τῆς ὄνου αὐτοῦ, πλυνεῖ ἐν οἴνῳ τὴν στολὴν αὐτοῦ, καὶ ἐν αἵματι σταφυλῆς τὴν περιβολὴν αὐτοῦ. Χαροποιοὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ὑπὲρ οἶνον· καὶ λευκοὶ οἱ ὀδόντες αὐτοῦ ἢ γάλα. Ζαβουλὼν παράλιος κατοικήσει καὶ αὐτὸς παρ ὅρμον πλοίων, καὶ παρατενεῖ ἕως Σιδῶνος. Ἰσσάχαρ τὸ καλὸν ἐπεθύμησεν, ἀναπαυόμενος ἀνὰ μέσον τῶν κλήρων. Καὶ

ἰδὼν τὴν ἀνάπαυσιν ὅτι καλὴ, καὶ τὴν γῆν ὅτι πίων, ὑπέθηκε τὸν ὦμον αὐτοῦ εἰς τὸ πονεῖν, καὶ ἐγενήθη ἀνὴρ γεωργός. Δὰν κρινεῖ τὸν λαὸν αὐτοῦ, ὡσεὶ καὶ μία φυλὴ ἐν Ἰσραήλ. Καὶ γενηθητω Δὰν ὄφις ἐφ ὁδοῦ, ἐγκαθήμενος ἐπὶ τρίβου, δάκνων πτέρναν ἵππου· καὶ πεσεῖται ὁ ἱππεὺς εἰς τὰ ὀπίσω, τὴν σωτηρίαν περιμένων Κυρίου. Γὰδ, πειρατήριον πειρατεύσει αὐτόν· αὐτὸς δὲ πειράτεύσει αὐτὸν κατὰ πόδας. Ἀσὴρ, πίων αὐτοῦ ὁ ἄρτος· καὶ αὐτὸς δώσει τρυφὴν ἄρχουσι. Νεφθαλὶ στέλεχος ἀνειμένον, ἐπιδιδοὺς ἐν τῷ γεννήματι κάλλος. Υἱὸς ηὐξημένος Ἰωσὴφ, υἱὸς ηὐξημένος μου ζηλωτὸς, υἱός μου νεώτατος· πρός με ἀνάστρεψον. Εἰς ὃν διαβουλευόμενοι ἐλοιδόρουν, καὶ ἐνεῖχον αὐτῷ κύριοι τοξευμάτων. Καὶ συνετρίβη μετὰ κράτους τὰ τόξα αὐτῶν· καὶ ἐξελύθη τὰ νεῦρα βραχιόνων χειρὸς αὐτῶν, διὰ χεῖρα δυνάστου Ἰακώβ· ἐκεῖθεν ὁ κατισχύσας Ἰσραὴλ παρὰ Θεοῦ τοῦ πατρός σου. Καὶ ἐβοήθησέ σοι ὁ Θεὸς ὁ ἐμὸς, καὶ εὐλόγησέ σε εὐλογίαν οὐρανοῦ ἄνωθεν, καὶ εὐλογίαν γῆς ἐχούσης πάντα, εἵνεκεν εὐλογίας μαστῶν καὶ μήτρας, εὐλογίας πατρός σου καὶ μητρός σου· ὑπερίσχυσεν ὑπὲρ εὐλογίας ὀρέων μονίμων, καὶ ἐπ εὐλογίαις θινῶν ἀενάων· ἔσονται ἐπὶ κεφαλὴν Ἰωσὴφ, καὶ ἐπὶ κορυφῆς ὧν ἡγήσατο ἀδελφῶν. Βενιαμὶν λύκος ἅρπαξ, τὸ πρωϊνὸν ἔδεται ἔτι, καὶ εἰς τὸ ἑσπέρας δίδωσι τροφήν. Πάντες οὗτοι υἱοὶ Ἰακὼβ δώδεκα· καὶ ταῦτα ἐλάλησεν αὐτοῖς ὁ πατὴρ αὐτῶν· καὶ εὐλόγησεν αὐτούς· ἕκαστον κατὰ τὴν εὐλογίαν αὐτοῦ εὐλόγησεν αὐτούς. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἐγὼ προστίθεμαι πρὸς τὸν ἐμὸν λαόν· θάψτέ με μετὰ τῶν πατέρων μου ἐν τῷ σπηλαίῳ, ὅ ἐστιν ἐν τῷ ἀγρῷ Ἐφρὼν τοῦ Χετταίου, ἐν τῷ σπηλαίῳ τῷ διπλῷ, τῷ ἀπέναντι Μαμβρῆ, ἐν γῇ Χαναὰν, ὃ ἐκτήσατο Ἀβραὰμ τὸ σπήλαιον παρὰ Ἐφρὼν τοῦ Χετταίου ἐν κτήσει μνημείου. Ἐκεῖ ἔθαψαν Ἀβραὰμ καὶ Σάῤῥαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· ἐκεῖ ἔθαψαν

Ἰσαὰκ καὶ Ῥεβέκκαν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· ἐκεῖ ἔθαψαν Λείαν· Ἐν κτήσει τοῦ ἀγροῦ καὶ τοῦ σπηλαίου τοῦ ὄντος ἐν αὐτῷ, παρὰ τῶν υἱῶν Χέτ. Καὶ κατέπαυσεν Ἰακὼβ ἐπιτάσσων τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ· καὶ ἐξᾶρας τοὺς πόδας αὐτοῦ ἐπὶ τὴν κλίνην, ἐξέλιπε· καὶ προσετέθη πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ.

# 50

Καὶ ἐπιπεσὼν Ἰωσὴφ ἐπὶ πρόσωπον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἔκλαυσεν αὐτὸν, καὶ ἐφίλησεν αὐτόν. Καὶ προσέταξεν Ἰωσὴφ τοῖς παισὶν αὐτοῦ τοῖς ἐνταφιασταῖς, ἐνταφιάσαι τὸν πατέρα αὐτοῦ· καὶ ἐνεταφίασαν οἱ ἐνταφιασταὶ τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπλήρωσαν αὐτοῦ τεσσαράκοντα ἡμέρας· οὕτω γὰρ καταριθμοῦνται αἱ ἡμέραι τῆς ταφῆς· καὶ ἐπένθησεν αὐτὸν Αἴγυπτος ἑβδομήκοντα ἡμέρας. Ἐπεὶ δὲ παρῆλθον αἱ ἡμέραι τοῦ πένθους, ἐλάλησεν Ἰωσὴφ πρὸς τοὺς δυνάστας Φαραὼ, λέγων, εἰ εὗρον χάριν ἐναντίον ὑμῶν, λαλήσατε περὶ ἐμοῦ εἰς τὰ ὦτα Φαραὼ, λέγοντες, ὁ πατήρ μου ὥρκισέ με, λέγων, ἐν τῷ μνημείῳ, ᾧ ὤρυξα ἐμαυτῷ ἐν γῇ Χαναὰν, ἐκεῖ με θάψεις· νῦν οὖν ἀναβὰς· θάψω τὸν πατέρα μου, καὶ ἐπανελεύσομαι· Καὶ εἶπε Φαραὼ τῷ Ἰωσὴφ, ἀνάβηθι, θάψον τὸν πατέρα σου, καθάπερ ὥρκισέ σε. Καὶ ἀνέβη Ἰωσὴφ θάψαι τὸν πατέρα αὐτοῦ· καὶ συνανέβησαν μετ αὐτοῦ πάντες οἱ παῖδες Φαραὼ, καὶ οἱ πρεσβύτεροι τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ πρεσβύτεροι τῆς γῆς Αἰγύπτου, καὶ πᾶσα ἡ πανοικία Ἰωσὴφ, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ οἰκία ἡ πατρικὴ αὐτοῦ, καὶ ἡ συγγένεια αὐτοῦ· καὶ τὰ πρόβατα, καὶ τοὺς βόας ὑπελίποντο ἐν γῇ Γεσέμ. Καὶ συνανέβησαν μετ αὐτοῦ καὶ ἅρματα καὶ ἱππεῖς, καὶ ἐγένετο ἡ

παρεμβολὴ μεγάλη σφόδρα. Καὶ παρεγένοντο εἰς ἅλωνα Ἀτὰδ, ὅ ἐστι πέραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν κοπετὸν μέγαν καὶ ἰσχυρὸν σφόδρα· καὶ ἐποίησε τὸ πένθος τῷ πατρὶ αὐτοῦ ἑπτὰ ἡμέρας. Καὶ εἶδον οἱ κάτοικοι τῆς γῆς Χαναὰν τὸ πένθος ἐπὶ ἅλωνι Ἀτὰδ, καὶ εἶπαν, πένθος μέγα τοῦτό ἐστι τοῖς Αἰγυπτίοις· διὰ τοῦτο ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Πένθος Αἰγύπτου, ὅ ἐστι πέραν τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἐποίησαν αὐτῷ οὕτως οἱ υἱοὶ αὐτοῦ. Καὶ ἀνέλαβον αὐτὸν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ εἰς γῆν Χαναάν· καὶ ἔθαψαν αὐτὸν εἰς τὸ σπήλαιον τὸ διπλοῦν, ὃ ἐκτήσατο Ἀβραὰμ τὸ σπήλαιον ἐν κτήσει μνημείου παρὰ Ἐφρὼν τοῦ Χετταίου, κατέναντι Μαμβρή. Καὶ ὑπέστρεψεν Ἰωσὴφ εἰς Αἴγυπτον, αὐτὸς καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ οἱ συναναβάντες θάψαι τὸν πατέρα αὐτοῦ. Ἰδόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ Ἰωσὴφ, ὅτι τέθνηκεν ὁ πατὴρ αὐτῶν, εἶπαν, μή ποτε μνησικακήσῃ ἡμῖν Ἰωσὴφ, καὶ ἀνταπόδομα ἀνταποδῷ ἡμῖν πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐνεδειξάμεθα εἰς αὐτὸν. Καὶ παραγενόμενοι πρὸς Ἰωσὴφ εἶπαν, ὁ πατήρ σου ὥρκισε πρὸ τοῦ τελευτῆσαι αὐτὸν, λέγων, οὕτως εἴπατε Ἰωσήφ· ἄφες αὐτοῖς τὴν ἀδικίαν καὶ τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν, ὅτι πονηρά σοι ἐνεδείξαντο· καὶ νῦν δέξαι τὴν ἀδικίαν τῶν θεραπόντων τοῦ Θεοῦ τοῦ πατρός σου· καὶ ἔκλαυσεν Ἰωσὴφ λαλούντων αὐτῶν πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐλθόντες πρὸς αὐτὸν εἶπαν, οἵδε ἡμεῖς σοὶ οἰκέται. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἰωσὴφ, μὴ φοβεῖσθε, τοῦ γὰρ Θεοῦ εἰμι ἐγώ. Ὑμεῖς ἐβουλεύσασθε κατ ἐμοῦ εἰς πονηρὰ, ὁ δὲ Θεὸς ἐβουλεύσατο περὶ ἐμοῦ εἰς ἀγαθὰ, ὅπως ἂν γενηθῇ ὡς σήμερον, καὶ τραφῇ λαὸς πολύς. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, μὴ φοβεῖσθε· ἐγὼ διαθρέψω ὑμᾶς, καὶ τὰς οἰκίας ὑμῶν· καὶ παρεκάλεσεν αὐτοὺς, καὶ ἐλάλησεν αὐτῶν εἰς τὴν καρδίαν. Καὶ κατῴκησεν Ἰωσὴφ ἐν Αἰγύπτῳ, αὐτὸς καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ πανοικία τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἔζησεν Ἰωσὴφ ἔτη ἑκατὸν δέκα. Καὶ εἶδεν

Ἰωσὴφ Ἐφραὶμ παιδία, ἕως τρίτης γενεᾶς· καὶ οἱ υἱοὶ Μαχεὶρ τοῦ υἱοῦ Μανασσῆ ἐτέχθησαν ἐπὶ μηρῶν Ἰωσήφ. Καὶ εἶπεν Ἰωσὴφ τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ, λέγων, ἐγὼ ἀποθνήσκω· ἐπισκοπῇ δὲ ἐπισκέψεται ὁ Θεὸς ὑμᾶς, καὶ ἀνάξει ὑμᾶς ἐκ τῆς γῆς ταύτης εἰς τὴν γῆν, ἣν ὤμοσεν ὁ Θεὸς τοῖς πατράσιν ἡμῶν, Ἀβραὰμ, Ἰσαὰκ, καὶ Ἰακώβ. Καὶ ὥρκισεν Ἰωσὴφ τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐν τῇ ἐπισκοπῇ ᾗ ἐπισκέψηται ὁ Θεὸς ὑμᾶς, καὶ συνανοίσετε τὰ ὀστᾶ μου ἐντεῦθεν μεθ ὑμῶν. Καὶ ἐτελεύτησεν Ἰωσὴφ ἐτῶν ἑκατὸν δέκα· καὶ ἔθαψαν αὐτὸν, καὶ ἔθηκαν ἐν τῇ σορῷ ἐν Αἰγύπτῳ.

# ΕΞΟΔΟΣ

## 1

ΤΑΥΤΑ τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ τῶν εἰσπεπορευμένων εἰς Αἴγυπτον ἅμα Ἰακὼβ τῷ πατρὶ αὐτῶν, ἕκαστος πανοικὶ αὐτῶν εἰσήλθοσαν. Ῥουβὴν, Συμεών, Λευὶ, Ἰούδας, Ἰσσάχαρ, Ζαβουλὼν, Βενιαμὶν, Δὰν, καὶ Νεφθαλὶ, Γὰδ, καὶ Ἀσήρ. Ἰωσὴφ δὲ ἦν ἐν Αἰγύπτῳ· ἦσαν δὲ πᾶσαι ψυχαὶ ἐξ Ἰακὼβ, πέντε καὶ ἑβδομήκοντα. Ἐτελεύτησε δὲ Ἰωσὴφ, καὶ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ γενεὰ ἐκείνη. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ηὐξήθησαν, καὶ ἐπληθύνθησαν, καὶ χυδαῖοι ἐγένοντο, καὶ κατίσχυον σφόδρα σφόδρα· ἐπλήθυνε δὲ ἡ γῆ αὐτούς. Ἀνέστη δὲ βασιλεὺς ἕτερος ἐπ Αἴγυπτον, ὃς οὐκ ᾔδει τὸν Ἰωσήφ. Εἶπε δὲ τῷ ἔθνει αὐτοῦ, ἰδοὺ τὸ γένος τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ μέγα πλῆθος, καὶ ἰσχύει ὑπὲρ ἡμᾶς. Δεῦτε οὖν κατασοφισώμεθα αὐτοὺς, μήποτε πληθυνθῇ, καὶ ἡνίκα ἂν συμβῇ ἡμῖν πόλεμος, προστεθήσονται καὶ οὗτοι πρὸς τοὺς ὑπεναντίους, καὶ ἐκπολεμήσαντες ἡμᾶς, ἐξελεύσονται ἐκ τῆς γῆς. Καὶ ἐπέστησεν αὐτοῖς ἐπιστάτας τῶν ἔργων, ἵνα κακώσωσιν αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔργοις. Καὶ ᾠκοδόμησαν πόλεις ὀχυρὰς τῷ Φαραῷ, τήν τε Πειθὼ, καὶ Ῥαμεσσῆ, καὶ Ὼν, ἥ ἐστιν Ἡλιού πολις. Καθότι δὲ αὐτοὺς

ἐταπείνουν, τοσούτῳ πλείους ἐγίνοντο, καὶ ἴσχυον σφόδρα σφόδρα· καὶ ἐβδελύσσοντο οἱ Αἰγύπτιοι ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ κατεδυνάστευον οἱ Αἰγύπτιοι τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ βίᾳ. Καὶ κατωδύνων αὐτῶν τὴν ζωὴν ἐν τοῖς ἔργοις τοῖς σκληροῖς, τῷ πηλῷ καὶ τῇ πλινθείᾳ, καὶ πᾶσι τοῖς ἔργοις τοῖς ἐν τοῖς πεδίοις, κατὰ πάντα τὰ ἔργα, ὧν κατεδουλοῦντο αὐτοὺς μετὰ βίας. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῶν Αἰγυπτίων ταῖς μαίαις τῶν Ἑβραίων, τῇ μιᾷ αὐτῶν ὄνομα Σεπφώρα, καὶ τὸ ὄνομα τῆς δευτέρας Φουά· Καὶ εἶπεν, ὅταν μαιοῦσθε τὰς Ἑβραίας, καὶ ὦσι πρὸς τῷ τίκτειν, ἐὰν μὲν ἄρσεν ᾖ, ἀποκτείνατε αὐτό· ἐὰν δὲ θῆλυ, περιποιεῖσθε αὐτό. Ἐφοβήθησαν δὲ αἱ μαῖαι τὸν Θεὸν, καὶ οὐκ ἐποίησαν καθότι συνέταξεν αὐταῖς ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ ἐζωογόνουν τὰ ἄρσενα. Ἐκάλεσε δὲ ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου τὰς μαίας, καὶ εἶπεν αὐταῖς, τί ὅτι ἐποιήσατε τὸ πρᾶγμα τοῦτο, καὶ ἐζωογονεῖτε τὰ ἄρσενα; Εἶπαν δὲ αἱ μαῖαι τῷ Φαραῷ, οὐχ ὡς γυναῖκες Αἰγύπτου αἱ Ἑβραῖαι· τίκτουσι γὰρ πρὶν ἢ εἰσελθεῖν πρὸς αὐτὰς τὰς μαίας· καὶ ἔτικτον. Εὖ δὲ ἐποίει ὁ Θεὸς ταῖς μαίαις· καὶ ἐπλήθυνεν ὁ λαὸς, καὶ ἴσχυε σφόδπα. Ἐπεὶ δὲ ἐφοβοῦντο αἱ μαῖαι τὸν Θεὸν, ἐποίησαν ἑαυταῖς οἰκίας. Συνέταξε δὲ Φαραὼ παντὶ τῷ λαῷ αὐτοῦ, λέγων, πᾶν ἄρσεν, ὃ ἐὰν τεχθῇ τοῖς Ἑβραίοις, εἰς τὸν ποταμὸν ῥίψατε, καὶ πᾶν θῆλυ, ζωογονεῖτε αὐτό.

# 2

Ἦν δέ τις ἐκ τῆς φυλῆς Λευὶ, ὃς ἔλαβεν τῶν θυγατέρων Λευί. Καὶ ἐν γαστρὶ ἔλαβε, καὶ ἔτεκεν ἄρσεν· ἰδόντες δὲ αὐτὸ ἀστεῖον, ἐσπέπασαν αὐτὸ μῆνας τρεῖς. Ἐπεὶ δὲ οὐκ ἐδύναντο αὐτὸ ἔτι

κρύπτειν, ἔλαβεν αὐτῷ ἡ μήτηρ αὐτοῦ θῖβιν, καὶ κατέχρισεν αὐτὴν ἀσφαλτοπίσσῃ, καὶ ἐνέβαλε τὸ παιδίον εἰς αὐτήν, καὶ ἔθηκεν αὐτὴν εἰς τὸ ἕλος παρὰ τὸν ποταμόν. Καὶ κατεσκόπευεν ἡ ἀδελφὴ αὐτοῦ μακρόθεν, μαθεῖν τί τὸ ἀποβησόμενον αὐτῷ. Κατέβη δὲ ἡ θυγάτηρ Φαραὼ λούσασθαι ἐπὶ τὸν ποταμὸν, καὶ αἱ ἄβραι αὐτῆς παρεπορεύοντο παρὰ τὸν ποταμόν· καὶ ἰδοῦσα τὴν θίβιν ἐν τῷ ἕλει, ἀποστείλασα τὴν ἄβραν, ἀνείλατο αὐτήν. Ἀνοίξασα δὲ ὁρᾷ παιδίον κλαῖον ἐν τῇ θίβει· καὶ ἐφείσατο αὐτοῦ ἡ θυγάτηρ Φαραὼ, καὶ ἔφη, ἀπὸ τῶν παιδίων τῶν Ἑβραίων τοῦτο. Καὶ εἶπεν ἡ ἀδελφὴ αὐτοῦ τῇ θυγατρὶ Φαραὼ, θέλεις καλέσω σοι γυναῖκα τροφεύουσαν ἐκ τῶν Ἑβραίων, καὶ θηλάσει σαι τὸ παιδὶον σοι τὸ παιδίον; Ἡ δὲ εἶπεν ἡ θυγάτηρ Φαραὼ, πορεύου· ἐλθοῦσα δὲ νεᾶνις ἐκάλεσε τὴν μητέρα τοῦ παιδίου. Εἶπεν δὲ πρὸς αὐτὴν ἡ θυγάτηρ Φαραὼ, διατήρησόν μοι τὸ παιδίον τοῦτο, καὶ θήλασόν μοι αὐτὸ, ἐγὼ δὲ δώσω σοι τὸν μισθόν· ἔλαβε δὲ ἡ γυνὴ τὸ παιδίον, καὶ ἐθήλαζεν αὐτό. Ἀδρυνθέντος δὲ τοῦ παιδίου, εἰσήγαγεν αὐτὸ πρὸς τὴν θυγατέρα Φαραὼ, καὶ ἐγενήθη αὐτῇ εἰς υἱόν· ἐπωνόμασε δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ Μωυσῆν, λέγουσα, ἐκ τοῦ ὕδατος αὐτὸν ἀνειλόμην. Ἐγένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πολλαῖς ἐκείναις μέγας γενόμενος Μωυσῆς, ἐξῆλθε πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ· κατανοήσας δὲ τὸν πόνον αὐτῶν, ὁρᾷ ἄνθρωπον Αἰγύπτιον τύπτοντα τινὰ Ἑβραῖον, τῶν ἑαυτοῦ ἀδελφῶν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Περιβλεψάμενος δὲ ὧδε καὶ ὧδε οὐχ ὁρᾷ οὐδένα, καὶ πατάξας τὸν Αἰγύπτιον, ἔκρυψεν αὐτὸν ἐν τῇ ἄμμῳ. Ἐξελθὼν δὲ τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ, ὁρᾷ δύο ἄνδρας Ἑβραίους διαπληκτιζομένους· καὶ λέγει τῷ ἀδικοῦντι, διὰ τί σὺ τύπτεις τὸν πλησίον; Ὁ δὲ εἶπε, τίς σε κατέστησεν ἄρχοντα καὶ δικαστὴν ἐφ ἡμῶν; μὴ ἀνελεῖν με σὺ θέλεις, ὃν τρόπον ἀνεῖλες χθὲς τὸν Αἰγύπτιον; ἐφοβήθη δὲ

Μωυσῆς, καὶ εἶπεν, εἰ οὕτως ἐμφανὲς γέγονε τὸ ῥῆμα τοῦτο. Ἤκουσε δὲ Φαραὼ τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ ἐζήτει ἀνελεῖν Μωυσῆν. Ἀνεχώρησε δὲ Μωυσῆς ἀπὸ προσώπου Φαραὼ, καὶ ᾤκησεν ἐν γῇ Μαδιάμ· ἐλθὼν δὲ εἰς γῆν Μαδιὰμ, ἐκάθισεν ἐπὶ τοῦ φρέατος. Τῷ δὲ ἱερεῖ Μαδιὰμ ἦσαν ἑπτὰ θυγατέρες, ποιμαίνουσαι τὰ πρόβατα τοῦ πατρὸς αὐτῶν Ἰοθόρ· παραγενόμεναι δὲ ἤντλουν, ἕως ἔπλησαν τὰς δεξαμενάς, ποτίσαι τὰ πρόβατα τοῦ πατρὸς αὐτῶν Ἰοθόρ. Παραγενόμενοι δὲ οἱ ποιμένες ἐξέβαλλον αὐτάς· ἀναστὰς δὲ Μωυσῆς ἐῤῥύσατο αὐτὰς, καὶ ἤντλησεν αὐταῖς, καὶ ἐπότισε τὰ πρόβατα αὐτῶν. Παρεγένοντο δὲ πρὸς Ῥαγουὴλ τὸν πατέρα αὐτῶν· ὁ δὲ εἶπεν αὐταῖς, διατί ἐταχύνατε τοῦ παραγενέσθαι σήμερον; Αἱ δὲ εἶπαν, ἄνθρωπος Αἰγύπτιος ἐῤῥύσατο ἡμᾶς ἀπὸ τῶν ποιμένων, καὶ ἤντλησεν ἡμῖν, καὶ ἐπότισε τὰ πρόβατα ἡμῶν. Ὁ δὲ εἶπε ταῖς θυγατράσιν αὐτοῦ, καὶ ποῦ ἐστιν; καὶ ἱνατί καταλελοίπατε τὸν ἄνθρωπον; καλέσατε οὖν αὐτὸν, ὅπως φάγῃ ἄρτον. Κατῳκίσθη δὲ Μωυσῆς παρὰ τῷ ἀνθρώπῳ· καὶ ἐξέδοτο Σεπφώραν τὴν θυγατέρα αὐτοῦ Μωυσῇ γυναῖκα. Ἐν γαστρὶ δὲ λαβοῦσα ἡ γυνὴ ἔτεκεν υἱόν· καὶ ἐπωνόμασε Μωυσῆς τὸ ὄνομα αὐτοῦ Γηρσάμ, λέγων, ὅτι παροικός εἰμι ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ. Μετὰ δὲ τὰς ἡμέρας τὰς πολλὰς ἐκείνας, ἐτελεύτησεν ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ κατεστέναξαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀπὸ τῶν ἔργων, καὶ ἀνεβόησαν· καὶ ἀνέβη ἡ βοὴ αὐτῶν πρὸς τὸν Θεὸν ἀπὸ τῶν ἔργων. Καὶ εἰσήκουσεν ὁ Θεὸς τὸν στεναγμὸν αὐτῶν· καὶ ἐμνήσθη ὁ Θεὸς τῆς διαθήκης αὐτοῦ τῆς πρὸς Ἀβραὰμ, καὶ Ἰσαὰκ, καὶ Ἰακώβ. Καὶ ἐπεῖδεν ὁ Θεὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἐγνώσθη αὐτοῖς.

# 3

Καὶ Μωυσῆς ἦν ποιμαίνων τὰ πρόβατα Ἰοθὸρ τοῦ γαμβροῦ αὐτοῦ, τοῦ ἱερέως Μαδιὰμ, καὶ ἤγαγεν τὰ πρόβατα ὑπὸ τὴν ἔρημον, καὶ ἦλθεν εἰς τὸ ὄρος Χωρήβ. Ὤφθη δὲ αὐτῷ Ἄγγελος Κυρίου ἐν πυρὶ φλογὸς ἐκ τοῦ βάτου· καὶ ὁρᾷ ὅτι ὁ βάτος καίεται πυρί, ὁ δὲ βάτος οὐ κατεκαίετο. Εἶπε δὲ Μωυσῆς, παρελθὼν ὄψομαι τὸ ὅραμα τὸ μέγα τοῦτο, ὅτι οὐ κατακαίεται ὁ βάτος. Ὡς δὲ εἶδεν Κύριος ὅτι προσάγει ἰδεῖν, ἐκάλεσεν αὐτὸν Κύριος ἐκ τοῦ βάτου, λέγων, Μωυσῆ, Μωυσῆ· ὁ δὲ εἶπε, τί ἐστιν; Ὁ δὲ εἶπε, μὴ ἐγγίσῃς ὧδε· λύσαι τὸ ὑπόδημα ἐκ τῶν ποδῶν σου, ὁ γὰρ τόπος. ἐν ᾧ σὺ ἕστηκας, γῆ ἁγία ἐστί. Καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς τοῦ πατρός σου, Θεὸς Ἀβραὰμ, καὶ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ Θεὸς Ἰακώβ· ἀπέστρεψε δὲ Μωυσῆς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, εὐλαβεῖτο γὰρ κατεμβλέψαι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἰδὼν εἶδον τὴν κάκωσιν τοῦ λαοῦ μου τοῦ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ τῆς κραυγῆς αὐτῶν ἀκήκοα ἀπὸ τῶν ἐργοδιωκτῶν· οἶδα γὰρ τὴν ὀδύνην αὐτων, καὶ κατέβην ἐξελέσθαι αὐτοὺς ἐκ χειρὸς τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς ἐκ τῆς γῆς ἐκείνης, καὶ εἰσαγαγεῖν αὐτοὺς εἰς γῆν ἀγαθὴν καὶ πολλήν, εἰς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι, εἰς τὸν τόπον τῶν Χαναναίων, καὶ Χετταίων, καὶ Ἀμορῥαίων, καὶ Φερεζαίων, καὶ Γεργεσαὶων, καὶ Εὐαίων, καὶ Ἰεβουσαίων. Καὶ νῦν ἰδοὺ κραυγὴ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἥκει πρὸς με· κἀγὼ ἑώρακα τὸν θλιμμὸν, ὃν οἱ Αἰγύπτιοι θλίβουσιν αὐτούς. Καὶ νῦν δεῦρο, ἀποστείλω σε πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἐξάξεις τὸν λαόν μου τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς τὸν Θεὸν, τίς εἰμι ἐγὼ, ὅτι πορεύσομαι πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ὅτι ἐξάξω τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου; Εἶπε δὲ ὁ Θεὸς Μωυσῇ, λέγων, ὅτι ἔσομαι μετὰ σοῦ· καὶ τοῦτό σοι τὸ σημεῖον ὅτι ἐγώ σε ἐξαποστελῶ, ἐν τῷ ἐξαγαγεῖν σε τὸν λαόν μου ἐξ Αἰγύπτου, καὶ

λατρεύσετε τῷ Θεῷ ἐν τῷ ὄρει τοῦτῳ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς τὸν Θεὸν, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξελεύσομαι πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτοὺς, ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς· ἐρωτήσουσί με, τί ὄνομα αὐτῷ; τί ἐρῶ πρὸς αὐτούς; Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐγώ εἰμι ὁ Ὤν· καὶ εἶπεν, οὕτως ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὁ Ὢν ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πάλιν πρὸς Μωυσῆν, οὕτως ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν, Θεὸς Ἀβραὰμ, καὶ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ Θεὸς Ἰακὼβ, ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς· τοῦτό μου ἐστὶν ὄνομα αἰώνιον, καὶ μνημόσυνον γενεῶν γενεαῖς. Ἐλθὼν οὖν συνάγαγε τὴν γερουσίαν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμων ὤπταί μοι, Θεὸς Ἀβραὰμ, καὶ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ Θεὸς Ἰακὼβ, λέγων, ἐπισκοπῇ ἐπέσκεμμαι ὑμᾶς, καὶ ὅσα συμβέβηκεν ὑμῖν ἐν Αἰγύπτῳ. Καὶ εἶπεν, ἀναβιβάσω ὑμᾶς ἐκ τῆς κακώσεως τῶν Αἰγυπτίων, εἰς τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, καὶ Χετταίων, καὶ Ἀμορῥαίων, καὶ Φερεζαίων, καὶ Γεργεσαίων, καὶ Εὐαίων, καὶ Ἰεβουσαίων, εἰς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Καὶ εἰσακούσονταί σου τῆς φωνῆς· καὶ εἰσελεύσῃ σὺ, καὶ ἡ γερουσία Ἰσραὴλ, πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων προσκέκληται ἡμᾶς· πορευσόμεθα οὖν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν εἰς τὴν ἔρημον, ἵνα θύσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν. Ἐγὼ δὲ οἶδα ὅτι οὐ προήσεται ὑμᾶς Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου πορευθῆναι, ἐὰν μὴ μετὰ χειρὸς κραταιᾶς. Καὶ ἐκτείνας τὴν χεῖρα, πατάξω τοὺς Αἰγυπτίους ἐν πᾶσι τοῖς θαυμασίοις μου, οἷς ποιήσω ἐν αὐτοῖς· καὶ μετὰ ταῦτα ἐξαποστελεῖ ὑμᾶς. Καὶ δώσω χάριν τῷ λαῷ τούτῳ ἐναντίον τῶν Αἰγυπτίων· ὅταν δὲ ἀποτρέχητε, οὐκ ἀπελεύσεσθε κενοί· Ἀλλὰ αἰτήσει γυνὴ παρὰ γείτονος καὶ συσκήνου αὐτῆς σκεύη ἀργυρᾶ, καὶ χρυσᾶ, καὶ ἱματισμόν· καὶ

ἐπιθήσετε ἐπὶ τοὺς υἱοὺς ὑμῶν, καὶ ἐπὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν, καὶ σκυλεύσατε τοὺς Αἰγυπτίους.

# 4

Ἀπεκρίθη δὲ Μωυσῆς, καὶ εἶπεν, ἐὰν μὴ πιστεύσωσί μοι, μηδὲ εἰσακούσωσι τῆς φωνῆς μου, ἐροῦσι γὰρ, ὅτι οὐκ ὤπταί σοι ὁ Θεὸς, τί ἐρῶ πρὸς αὐτούς; Εἶπε δὲ αὐτῳ Κύριος, τί τοῦτό ἐστι τὸ ἐν τῇ χειρί σου; ὁ δὲ εἶπε, ῥάβδος. Καὶ εἶπε, ῥίψον αὐτὴν ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὴν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐγένετο ὄφις· καὶ ἔφυγε Μωυσῆς ἀπ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἔκτεινον τῆν χεῖρα, καὶ ἐπιλαβοῦ τῆς κέρκου· ἐκτείνας οὖν τὴν χεῖρα ἐπελάβετο τῆς κέρκου· καὶ ἐγένετο ῥάβδος ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Ἵνα πιστεύσωσί σοι, ὅτι ὤπταί σοι ὁ Θεὸς τῶν πατέρων αὐτῶν, Θεὸς Ἀβραὰμ, καὶ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ Θεὸς Ἰακώβ. Εἶπε δὲ αὐτῷ Κύριος πάλιν, εἰσένεγκον τὴν χεῖρά σου εἰς τὸν κόλπον σου· καὶ εἰσήνεγκε τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς τὸν κόλπον αὐτοῦ· καὶ ἐξήνεγκεν τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐκ τοῦ κόλπου αὐτοῦ, καὶ ἐγενήθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ ὡσεὶ χιών. Καὶ εἶπεν πάλιν, εἰσένεγκον τὴν χεῖρά σου εἰς τὸν κόλπον σου· καὶ εἰσήνεγκε τὴν χεῖρα εἰς τὸν κόλπον αὐτοῦ· καὶ ἐξήνεγκεν αὐτὴν ἐκ τοῦ κόλπου αὐτοῦ, καὶ πάλιν ἀπεκατέστη εἰς τὴν χρόαν τῆς σαρκὸς αὐτῆς. Ἐὰν δὲ μὴ πιστεύσωσί σοι, μηδὲ εἰσακούσωσι τῆς φωνῆς τοῦ σημείου τοῦ πρώτου, πιστεύσουσί σοι τῆς φωνῆς τοῦ σημείου τοῦ δετέρου. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ πιστεύσωσί σοι τοῖς δυσὶ σημείοις τούτοις, μηδὲ εἰσακούσωσι τῆς φωνῆς σου, λήψῃ ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ, καὶ ἐκχεεῖς ἐπὶ τὸ ξηρόν· καὶ ἔσται τὸ ὕδωρ, ὃ ἐὰν λάβῃς ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ, αἷμα ἐπὶ τοῦ ξηροῦ. Εἶπε δὲ Μωυσῆς

πρὸς Κύριον, δέομαι, Κύριε· οὐχ ἱκανός εἰμι πρὸ τῆς χθὲς οὐδὲ πρὸ τῆς τρίτης ἡμέρας, οὐδὲ ἀφ οὗ ἤρξω λαλεῖν τῷ θεράποντί σου· ἰσχνόφωνος καὶ βραδύγλωσσος ἐγώ εἰμι. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, τίς ἔδωκε στόμα ἀνθρώπῳ; καὶ τίς ἐποιήσε δύσκωφον καὶ κωφὸν, βλέποντα καὶ τυφλόν; οὐκ ἐγὼ ὁ Θεός; Καὶ νῦν πορεύου, καὶ ἐγὼ ἀνοίξω τὸ στόμα σου, καὶ συμβιβάσω σε ὃ μέλλεις λαλῆσαι. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, δέομαι, Κύριε· προχείρισαι δυνάμενον ἄλλον, ὃν ἀποστελεῖς. Καὶ θυμωθεὶς ὀργῇ Κύριος ἐπὶ Μωυσῆν, εἶπεν, οὐκ ἰδοὺ Ἀαρὼν ὁ ἄδελφός σου ὁ Λευίτης; ἐπίσταμαι ὅτι λαλῶν λαλήσει αὐτός σοι· καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐξελεύσεται εἰς συνάντησίν σοι, καὶ ἰδών σε χαρήσεται ἐν ἑαυτῷ. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, καὶ δώσεις τὰ ῥήματά μου εἰς τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ ἐγὼ ἀνοίξω τὸ στόμα σου καὶ τὸ στόμα αὐτοῦ, καί συμβιβάσω ὑμᾶς ἃ ποιήσετε. Καὶ αὐτός σοι λαλήσει πρὸς τὸν λαὸν, καὶ αὐτὸς ἔσται σου στόμα· σὺ δὲ αὐτῷ ἔσῃ τὰ πρὸς τὸν Θεόν. Καὶ τὴν ῥάβδον ταύτην, τὴν στραφεῖσαν εἰς ὄφιν, λήψῃ ἐν τῇ χειρί σου, ἐν ᾗ ποιήσεις ἐν αὐτῇ τὰ σημεῖα. Ἐπορεύθη δὲ Μωυσῆς, καὶ ἀπέστρεψε πρὸς Ἰοθὸρ τὸν γαμβρὸν αὐτοῦ, καὶ λέγει, πορεύσομαι καὶ ἀποστρέψω πρὸς τοὺς ἀδελφούς μου τοὺς ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ὄψομαι εἰ ἔτι ζῶσι· καὶ εἶπεν Ἰοθὸρ Μωυσῇ, βάδιζε ὑγιαίνων· μετὰ δὲ τὰς ἡμέρας τὰς πολλὰς ἐκείνας ἐτελεύτησεν ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐν Μαδιὰμ, βάδιζε, ἄπελθε εἰς Αἴγυπτον, τεθνήκασι γὰρ πάντες οἱ ζητοῦντες σου τὴν ψυχήν. Ἀναλαβὼν δὲ Μωυσῆς τὴν γυναῖκα καὶ τὰ παιδία, ἀνεβίβασεν αὐτὰ ἐπὶ τὰ ὑποζύγια, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Αἴγυπτον· ἔλαβε δὲ Μωυσῆς τὴν ῥάβδον τὴν παρὰ τοῦ Θεοῦ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, πορευομένου σου καὶ ἀποστρέφοντος εἰς Αἴγυπτον, ὅρα πάντα τὰ τέρατα ἃ δέδωκα ἐν

ταῖς χερσί σου, ποιήσεις αὐτὰ ἐναντίον Φαραώ· ἐγὼ δὲ σκληρυνῶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ ἐξαποστείλῃ τὸν λαόν. Σὺ δὲ ἐρεῖς τῷ Φαραώ, τάδε λέγει Κύριος, υἱὸς πρωτότοκός μου Ἰσραήλ. Εἶπα δέ σοι, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι λατρεύσῃ· εἰ μὲν οὖν μὴ βούλει ἐξαποστεῖλαι αὐτούς, ὅρα οὖν, ἐγὼ ἀποκτένῶ τὸν υἱόν σου τὸν πρωτότοκον. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ὁδῷ ἐν τῷ καταλύματι συνήντησεν αὐτῷ Ἄγγελος Κυρίου, καὶ ἐζήτει αὐτὸν ἀποκτεῖναι. Καὶ λαβοῦσα Σεπφώρα ψῆφον, περιέτεμε τὴν ἀκροβυστίαν τοῦ υἱοῦ αὐτῆς· καὶ προσέπεσε πρὸς τοὺς πόδας αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἔστη τὸ αἷμα τῆς περιτομῆς τοῦ παιδίου μου. Καὶ ἀπῆλθεν ἀπ αὐτοῦ, διότι εἶπεν, ἔστη τὸ αἷμα τῆς περιτομῆς τοῦ παιδίου μου. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Ἀαρὼν, πορεύθητι εἰς συνάντησιν Μωυσῇ εἰς τὴν ἔρημον· καὶ ἐπορεύθη, καὶ συνήντησεν αὐτῷ ἐν τῷ ὄρει τοῦ Θεοῦ, καὶ κατεφίλησαν ἀλλήλους. Καὶ ἀνήγγειλε Μωυσῆς τῷ Ἀαρὼν πάντας τοὺς λόγους Κυρίου, οὓς ἀπέστειλε, καὶ πάντα τὰ ῥήματα, ἃ ἐνετείλατο αὐτῷ. Ἐπορεύθη δὲ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν, καὶ συνήγαγον τὴν γερουσίαν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐλάλησεν Ἀαρὼν πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα, ἃ ἐλάλησεν ὁ Θεὸς πρὸς Μωυσῆν, καὶ ἐποίησε τὰ σημεῖα ἐναντίον τοῦ λαοῦ. Καὶ ἐπίστευσεν ὁ λαὸς καὶ ἐχάρη, ὅτι ἐπεσκέψατο ὁ Θεὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ὅτι εἶδεν αὐτῶν τὴν θλίψιν· κύψας δὲ ὁ λαὸς προσεκύνησε.

# 5

Καὶ μετὰ ταῦτα εἰσῆλθε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν πρὸς Φαραὼ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι ἑορτάσωσιν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ εἶπε Φαραὼ, τίς

ἐστιν οὗ εἰσακούσομαι τῆς φωνῆς αὐτοῦ, ὥστε ἐξαποστεῖλαι τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ; οὐκ οἶδα τὸν Κύριον, καὶ τὸν Ἰσραὴλ οὐκ ἐξαποστέλλω. Καὶ λέγουσιν αὐτῷ, ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων προσκέκληται ἡμᾶς· πορευσόμεθα οὖν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν εἰς τὴν ἔρημον, ὅπως θύσωμεν Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν, μή ποτε συναντήσῃ ἡμῖν θάνατος ἢ φόνος. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου, ἱνατί Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διαστρέφετε τὸν λαὸν ἀπὸ τῶν ἔργων; ἀπέλθατε ἕκαστος ὑμῶν πρὸς τὰ ἔργα αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Φαραὼ, ἰδοὺ νῦν πολυπληθεῖ ὁ λαὸς, μὴ οὖν καταπαύσωμεν αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἔργων. Συνέταξε δὲ Φαραὼ τοῖς ἐργοδιώκταις τοῦ λαοῦ, καὶ τοῖς γραμματεῦσι, λέγων, οὐκέτι προστεθήσεσθε διδόναι ἄχυρον τῷ λαῷ εἰς τὴν πλινθουργίαν, καθάπερ χθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν· ἀλλ αὐτοὶ πορευέσθωσαν καὶ συναγαγέτωσαν ἑαυτοῖς ἄχυρα. Καὶ τὴν σύνταξιν τῆς πλινθείας, ἧς αὐτοὶ ποιοῦσι, καθ ἑκάστην ἡμέραν ἐπιβαλεῖς αὐτοῖς· οὐκ ἀφελεῖς οὐδέν· σχολάζουσι γάρ· διὰ τοῦτο κεκράγασι, λέγοντες, ἐγερθῶμεν, καὶ θύσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν. Βαρυνέσθω τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων τούτων, καὶ μεριμνάτωσαν ταῦτα, καὶ μὴ μεριμνάτωσαν ἐν λόγοις κενοῖς. Κατέσπευδον δὲ αὐτοὺς οἱ ἐργοδιῶκται καὶ οἱ γραμματεῖς, καὶ ἔλεγον πρὸς τὸν λαὸν, λέγοντες, τάδε λέγει Φαραὼ, οὐκέτι δίδωμι ὑμῖν ἄχυρα. Αὐτοὶ ὑμεῖς πορευόμενοι συλλέγετε ἑαυτοῖς ἄχυρα, ὅθεν ἐὰν εὕρητε· οὐ γὰρ ἀφαιρεῖται ἀπὸ τῆς συντάξεως ὑμῶν οὐθέν. Καὶ διεσπάρη ὁ λαὸς ἐν ὅλῃ γῇ Αἰγύπτῳ συναγαγεῖν καλάμην εἰς ἄχυρα. Οἱ δὲ ἐργοδιῶκται κατέσπευδον αὐτοὺς, λέγοντες, συντελεῖτε τὰ ἔργα τὰ καθήκοντα καθ ἡμέραν, καθάπερ καὶ ὅτε τὸ ἄχυρον ἐδίδοτο ὑμῖν. Καὶ ἐμαστιγώθησαν οἱ γραμματεῖς τοῦ γένους τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, οἱ κατασταθέντες ἐπ αὐτοὺς, ὑπὸ τῶν ἐπιστατῶν τοῦ Φαραὼ, λέγοντες, διατί οὐ συνετελέσατε τὰς

συντάξεις ὑμῶν τῆς πλινθείας καθάπερ χθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν, καὶ τὸ τῆς σήμερον; Εἰσελθόντες δὲ οἱ γραμματεῖς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατεβόησαν πρὸς Φαραὼ, λέγοντες, ἱνατί σὺ οὕτως ποιεῖς τοῖς σοῖς οἰκέταις; Ἄχυρον οὐ δίδοται τοῖς οἰκέταις σου, καὶ τὴν πλίνθον ἡμῖν λέγουσι ποιεῖν· καὶ ἰδοὺ οἱ παῖδές σου μεμαστίγωνται, ἀδικήσεις οὖν τὸν λαόν σου. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, σχολάζετε, σχολασταί ἐστε· διὰ τοῦτο λέγετε, πορευθῶμεν, θύσωμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν. Νῦν οὖν πορευθέντες, ἐργάζεσθε· τὸ γὰρ ἄχυρον οὐ δοθήσεται ὑμῖν, καὶ τὴν σύνταξιν τῆς πλινθείας ἀποδώσετε. Ἑώρων δὲ οἱ γραμματεῖς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἑαυτοὺς ἐν κακοῖς, λέγοντες, οὐκ ἀπολείψετε τῆς πλινθείας τὸ καθῆκον τῇ ἡμέρᾳ. Συνήντησαν δὲ Μωυσῇ καὶ Ἀαρὼν ἐρχομένοις εἰς συνάντησιν αὐτοῖς, ἐκπορευομένων αὐτῶν ἀπὸ Φαραώ, Καὶ εἶπαν αὐτοῖς, ἴδοι ὁ Θεὸς ὑμᾶς καὶ κρίναι, ὅτι ἐβδελύξατε τὴν ὀσμὴν ἡμῶν ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, δοῦναι ῥομφαίαν εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ἀποκτεῖναι ἡμᾶς. Ἐπέστρεψε δὲ Μωυσῆς πρὸς Κύριον, καὶ εἶπε, δέομαι, Κύριε· τί ἐκάκωσας τὸν λαὸν τοῦτον; καὶ ἱνατί ἀπέσταλκάς με; Καὶ ἀφ οὗ πεπόρευμαι πρὸς Φαραὼ, λαλῆσαι ἐπὶ τῷ σῷ ὀνόματι, ἐκάκωσε τὸν λαὸν τοῦτον· καὶ οὐκ ἐῤῥύσω τὸν λαόν σου.

# 6

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἤδη ὄψει ἃ ποιήσω τῷ Φαραῷ· ἐν γὰρ χειρὶ κραταίᾳ ἐξαποστελεῖ αὐτούς, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ ἐκβαλεῖ αὐτοὺς ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. Ἐλάλησε δὲ ὁ Θεὸς πρὸς Μωυσῆν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἐγὼ Κύριος. Καὶ ὤφθην πρὸς

Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ, Θεὸς ὢν αὐτῶν· καὶ τὸ ὄνομά μου Κύριος οὐκ ἐδήλωσα αὐτοῖς. Καὶ ἔστησα τὴν διαθήκην μου πρὸς αὐτοὺς, ὥστε δοῦναι αὐτοῖς τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, τὴν γῆν ἣν παρῳκήκασιν, ἐν ᾗ καὶ παρῴκησαν ἐπ αὐτῆς. Καὶ ἐγὼ εἰσήκουσα τὸν στεναγμὸν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, ὃν οἱ Αἰγύπτιοι καταδουλοῦνται αὐτούς, καὶ ἐμνήσθην τῆς διαθήκης ὑμῶν. Βάδιζε, εἶπον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐγὼ Κύριος· καὶ ἐξάξω ὑμᾶς ἀπὸ τῆς δυναστείας τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ῥύσομαι ὑμᾶς ἐκ τῆς δουλείας, καὶ λυτρώσομαι ὑμᾶς ἐν βραχίονι ὑψηλῷ καὶ κρίσει μεγάλῃ· Καὶ λὴψομαι ἐμαυτῷ ὑμᾶς λαὸν ἐμοὶ, καὶ ἔσομαι ὑμῶν Θεός· καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, ὁ ἐξαγαγὼν ὑμᾶς ἐκ τῆς καταδυναστείας τῶν Αἰγυπτίων. Καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν, εἰς ἣν ἐξέτεινα τὴν χεῖρά μου, δοῦναι αὐτὴν τῷ Ἀβραὰμ, καὶ Ἰσαὰκ, καὶ Ἰακὼβ, καὶ δώσω ὑμῖν αὐτὴν ἐν κληρῷ· ἐγὼ Κύριος. Ἐλάλησε δὲ Μωυσῆς οὕτω τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ οὐκ εἰσήκουσαν Μωυσῇ ἀπὸ τῆς ὀλιγοψυχίας, καὶ ἀπὸ τῶν ἔργων τῶν σκληρῶν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν λέγων, εἴσελθε, λάλησον Φαραῷ βασιλεῖ Αἰγύπτου, ἵνα ἐξαποστείλῃ τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. Ἐλάλησε δὲ Μωυσῆς ἔναντι Κυρίου, λέγων, ἰδοὺ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ οὐκ εἰσήκουσάν μου, καὶ πῶς εἰσακούσεταί μου Φαραώ; ἐγὼ δὲ ἄλογός εἰμι. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ συνέταξεν αὐτοῖς πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, ὥστε ἐξαποστεῖλαι τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ οὗτοι ἀρχηγοὶ οἴκων πατριῶν αὐτῶν· υἱοὶ Ῥουβὴν, πρωτοτόκου Ἰσραήλ· Ἐνὼχ, καὶ Φαλλοὺς, Ἀσρὼν, καὶ Χαρμεί· αὕτη ἡ συγγένεια Ῥουβήν. Καὶ υἱοὶ Συμεών· Ἰεμουὴλ, καὶ Ἰαμεὶμ, καὶ Ἀὼδ, καὶ Ἰαχεὶν, καὶ Σαὰρ, καὶ Σαοὺλ ὁ ἐκ τῆς Φοινίσσης· αὗται αἱ πατριαὶ τῶν υἱῶν Συμεών. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Λευὶ κατὰ συγγενείας αὐτῶν· Γεδσὼν, Καὰθ, καὶ

Μεραρεί· καὶ τὰ ἔτη τῆς ζωῆς Λευὶ ἑκατὸν τριάκοντα ἑπτά. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Γεδσών· Λοβενεὶ, καὶ Σεμεεί· οἶκοι πατριᾶς αὐτῶν. Καὶ υἱοὶ Καάθ· Ἀμβρὰμ, καὶ Ἰσσαάρ, Χεβρὼν, καὶ Ὀζειήλ· καὶ τὰ ἔτη τῆς ζωῆς Καὰθ ἑκατὸν τριάκοντα τρία ἔτη. Καὶ υἱοὶ Μεραρεί· Μοολεὶ, καὶ Ὀμουσεί. οὗτοι οἱ οἶκοι πατριῶν Λευὶ κατὰ συγγενείας αὐτῶν. Καὶ ἔλαβεν Ἀμβρὰν τὴν Ἰωχαβὲδ, θυγατέρα τοῦ ἀδελφοῦ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἑαυτῷ εἰς γυναῖκα· καὶ ἐγέννησεν αὐτῷ τόν τε Ἀαρὼν καὶ τὸν Μωυσῆν, καὶ Μαριὰμ τὴν ἀδελφὴν αὐτῶν· τὰ δὲ ἔτη τῆς ζωῆς Ἀμβρὰμ, ἑκατὸν τριάκοντα δύο ἔτη. Καὶ υἱοὶ Ἰσσαάρ· Κορὲ, καὶ Ναφὲκ, καὶ Ζεχρεί. Καὶ υἱοὶ Ὀζειήλ· Μισαὴλ, καὶ Ἐλισαφὰν, καὶ Σεγρεί. Ἔλαβε δὲ Ἀαρὼν τὴν Ἐλισαβὲθ θυγατέρα Ἀμιναδὰβ, ἀδελφὴν Ναασσὼν, αὐτῷ γυναῖκα· καὶ ἔτεκεν αὐτῷ τόν τε Ναδὰβ, καὶ Ἀβιοὺδ, καὶ τὸν Ἐλεάζαρ, καὶ Ἰθάμαρ. Υἱοὶ δὲ Κορέ· Ἀσεὶρ, καὶ Ἑλκανὰ, καὶ Ἀβιασάρ· αὗται αἱ γενέσεις Κορέ. Καὶ Ἐλεάζαρ ὁ τοῦ Ἀαρὼν ἔλαβε τῶν θυγατέρων Φουτιὴλ αὐτῷ γυναῖκα· καὶ ἔτεκεν αὐτῷ τὸν Φινεές· αὗται αἱ ἀρχαὶ πατριᾶς Λευιτῶν, κατὰ γενέσεις αὐτῶν. Οὗτος Ἀαρὼν καὶ Μωυσῆς, οἷς εἶπεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς ἐξαγαγεῖν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου σὺν δυνάμει αὐτῶν. Οὗτοί εἰσιν οἱ διαλεγόμενοι πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου· καὶ ἐξήγαγον τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου αὐτὸς Ἀαρὼν καὶ Μωυσῆς, ᾗ ἡμέρᾳ ἐλάλησε Κύριος Μωυσῇ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐγὼ Κύριος· λάλησον πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου ὅσα ἐγὼ λέγω πρὸς σέ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς ἐναντίον Κυρίου, ἰδοὺ ἐγὼ ἰσχνόφωνός εἰμι, καὶ πῶς εἰσακούσεταί μου Φαραώ,

# 7

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἰδοὺ δέδωκά σε θεὸν Φαραὼ, καὶ Ἀαρὼν ὁ ἀδελφός σου ἔσται σου προφήτης. Σὺ δὲ λαλήσεις αὐτῷ πάντα ὅσα σοι ἐντέλλομαι· ὁ δὲ Ἀαρὼν ὁ ἀδελφός σου λαλήσει πρὸς Φαραὼ, ὥστε ἐξαποστεῖλαι τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ σκληρυνῶ τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ πληθυνῶ τὰ σημεῖά μου καὶ τὰ τέρατα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Καὶ οὐκ εἰσακούσεται ὑμῶν Φαραώ· καὶ ἐπιβαλῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ Αἴγυπτον, καὶ ἐξάξω σὺν δυνάμει μου τὸν λαόν μου τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου σὺν ἐκδικήσει μεγάλῃ. Καὶ γνώσονται πάντες οἱ Αἰγύπτιοι ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος, ἐκτείνων τὴν χεῖρά μου ἐπ Αἴγυπτον, καὶ ἐξάξω τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ μέσον αὐτῶν. Ἐποίησε δὲ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καθάπερ ἐνετείλατο αὐτοῖς Κύριος, οὕτως ἐποίησαν. Μωυσῆς δὲ ἦν ἐτῶν ὀγδοήκοντα, Ἀαρὼν δὲ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐτῶν ὀγδοήκοντατριῶν, ἡνίκα ἐλάλησεν πρὸς Φαραώ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, καὶ ἐὰν λαλήσῃ πρὸς ὑμᾶς Φαραὼ, λέγων, δότε ἡμῖν σημεῖον ἢ τέρας, καὶ ἐρεῖς Ἀαρὼν τῷ ἀδελφῷ σου, λάβε τὴν ῥάβδον, καὶ ῥίψον ἐπὶ τὴν γῆν ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, καὶ ἔσται δράκων. Εἰσῆλθε δὲ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐναντίον Φαραὼ, καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ· καὶ ἐποίησαν οὕτως, καθάπερ ἐνετείλατο αὐτοῖς Κύριος· καὶ ἔῤῥιψεν Ἀαρὼν τὴν ῥάβδον ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραποντων αὐτοῦ, καὶ ἐγένετο δράκων. Συνεκάλεσε δὲ Φαραὼ τοὺς σοφιστὰς Αἰγύπτου, καὶ τοὺς φαρμακούς· καὶ ἐποίησαν καὶ οἱ ἐπαοιδοὶ τῶν Αἰγυπτίων ταῖς φαρμακίαις αὐτῶν ὡσαύτως. Καὶ ἔῤῥιψαν ἕκαστος τὴν ῥάβδον αὐτῶν, καὶ ἐγένοντο δράκοντες· καὶ κατέπιεν ἡ ῥάβδος ἡ Ἀαρὼν τὰς ἐκείνων ῥάβδους. Καὶ κατίσχυσεν ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτῶν, καθάπερ ἐνετείλατο αὐτοῖς Κύριος. Εἶπε δὲ

Κύριος πρὸς Μωυσῆν, βεβάρηται ἡ καρδία Φαραὼ, τοῦ μὴ ἐξαποστεῖλαι τὸν λαόν. Βάδισον πρὸς Φαραὼ τὸ πρωΐ· ἰδοὺ αὐτὸς ἐκπορεύεται ἐπὶ τὸ ὕδωρ, καὶ ἔσῃ συναντῶν αὐτῷ ἐπὶ τὸ χεῖλος τοῦ ποταμοῦ· καὶ τὴν ῥάβδον τὴν στραφεῖσαν εἰς ὄφιν λήψῃ ἐν τῇ χειρί σου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, Κύριος ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων ἀπέσταλκέ με πρὸς σὲ, λέγων, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι λατρεύσῃ ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ ἰδοὺ οὐκ εἰσήκουσας ἕως τούτου. Τάδε λέγει Κύριος, ἐν τούτῳ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ Κύριος· ἰδοὺ ἐγὼ τύπτω τῇ ῥάβδῳ τῇ ἐν τῇ χειρί μου ἐπὶ τὸ ὕδωρ τὸ ἐν τῷ ποταμῷ, καὶ μεταβαλεῖ εἰς αἷμα. Καὶ οἱ ἰχθύες οἱ ἐν τῷ ποταμῷ τελευτήσουσι· καὶ ἐποζέσει ὁ ποταμὸς, καὶ οὐ δυνήσονται οἱ Αἰγύπτιοι πιεῖν ὕδωρ ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἶπὸν Ἀαρὼν τῷ ἀδελφῷ σου, λάβε τὴν ῥάβδον σου ἐν τῇ χειρί σου, καὶ ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὰ ὕδατα Αἰγύπτου, καὶ ἐπὶ τοὺς ποταμοὺς αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰς διώρυγας αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἕλη αὐτῶν, καὶ ἐπὶ πᾶν συνεστηκὸς ὕδωρ αὐτῶν, καὶ ἔσται αἷμα· καὶ ἐγένετο αἷμα ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου, ἔν τε τοῖς ξύλοις καὶ ἐν τοῖς λίθοις. Καὶ ἐποίησαν οὕτως Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν, καθάπερ ἐνετείλατο αὐτοῖς Κύριος· καὶ ἐπάρας τῇ ῥάβδῳ αὐτοῦ ἐπάταξε τὸ ὕδωρ τὸ ἐν τῷ ποταμῷ ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραπόντων αὐτοῦ· καὶ μετέβαλε πᾶν τὸ ὕδωρ τὸ ἐν τῷ ποταμῷ εἰς αἷμα. Καὶ οἱ ἰχθύες οἱ ἐν τῷ ποταμῷ ἐτελεύτησαν· καὶ ἐπώζεσεν ὁ ποταμὸς, καὶ οὐκ ἠδύναντο οἱ Αἰγύπτιοι πιεῖν ὕδωρ ἐκ τοῦ ποταμοῦ· καὶ ἦν τὸ αἷμα ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Ἐποίησαν δὲ ὡσαύτως καὶ οἱ ἐπαοιδοὶ τῶν Αἰγυπτίων ταῖς φαρμακίαις αὐτῶν· καὶ ἐσκληρύνθη ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτῶν, καθάπερ εἶπε Κύριος. Ἐπιστραφεὶς δὲ Φαραὼ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἐπέστησε τὸν νοῦν αὐτοῦ οὐδὲ ἐπὶ τούτῳ. Ὤρυξαν δὲ πάντες οἱ

Αἰγύπτιοι κύκλῳ τοῦ ποταμοῦ, ὥστε πιεῖν ὕδωρ· καὶ οὐκ ἠδύναντο πιεῖν ὕδωρ ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ. Καὶ ἀνεπληρώθησαν ἑπτὰ ἡμέραι, μετὰ τὸ πατάξαι Κύριον τὸν ποταμόν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσὴν, εἴσελθε πρὸς Φαραὼ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, τάδε λεγέι Κύριος, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι λατρεύσωσιν. Εἰ δὲ μὴ βούλει σὺ ἐξαποστεῖλαι, ἰδοὺ ἐγὼ τύπτω πάντα τὰ ὅριά σου τοῖς βατράχοις. Καὶ ἐξερεύξεται ὁ ποταμὸς βατράχους· καὶ ἀναβάντες εἰσελεύσονται εἰς τοὺς οἴκους σου, καὶ εἰς τὰ ταμιεῖα τῶν κοιτώνων σου, καὶ ἐπὶ τῶν κλινῶν σου, καὶ ἐπὶ τοὺς οἴκους τῶν θεραπόντων σου, καὶ τοῦ λαοῦ σου, καὶ ἐν τοῖς φυράμασί σου, καὶ ἐν τοῖς κλιβάνοις σου. Καὶ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐπὶ τοὺς θεράποντάς σου, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου, ἀναβήσονται οἱ βάτραχοι.

# 8

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἶπον Ἀαρὼν τῷ ἀδελφῷ σου, ἔκτεινον τῇ χειρὶ τὴν ῥάβδον σου ἐπὶ τοὺς ποταμοὺς, καὶ ἐπὶ τὰς διώρυγας, καὶ ἐπὶ τὰ ἕλη, καὶ ἀνάγαγε τοὺς βατράχους. Καὶ ἐξέτεινεν Ἀαρὼν τὴν χεῖρα ἐπὶ τὰ ὕδατα Αἰγύπτου, καὶ ἀνήγαγε τοὺς βατράχους· καὶ ἀνεβιβάσθη ὁ βάτραχος, καὶ ἐκάλυψε τὴν γῆν Αἰγύπτου. Ἐποίησαν δὲ ὡσαύτως καὶ οἱ ἐπαοιδοὶ τῶν Αἰγυπτίων ταῖς φαρμακίαις αὐτῶν, καὶ ἀνήγαγον τοὺς βατράχους ἐπὶ γῆν Αἰγύπτου. Καὶ ἐκάλεσε Φαραὼ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ εἶπεν, εὔξασθε περὶ ἐμοῦ πρὸς Κύριον, καὶ περιελέτω τοὺς βατράχους ἀπ ἐμοῦ, καὶ ἀπὸ τοῦ ἐμοῦ λαοῦ· καὶ ἐξαποστελῶ αὐτοὺς, καὶ θύσωσι τῷ Κυρίῳ. Εἶπε δὲ Μωυσῆς πρὸς Φαραὼ, τάξαι πρὸς με πότε εὔξομαι περὶ σοῦ, καὶ περὶ τῶν θεραπόντων σου, καὶ τοῦ λαοῦ σου,

ἀφανίσαι τοὺς βατράχους ἀπὸ σοῦ, καὶ ἀπὸ τοῦ λαοῦ σου, καὶ ἐκ τῶν οἰκιῶν ὑμῶν, πλὴν ἐν τῷ ποταμῷ ὑπολειφθήσονται. Ὁ δὲ εἶπεν, εἰς αὔριον· εἶπεν οὖν, ὡς εἴρηκας· ἵνα εἰδῇς ὅτι οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν Κυρίου· Καὶ περιαιρεθήσονται οἱ βάτραχοι ἀπὸ σοῦ, καὶ ἀπὸ τῶν οἰκιῶν ὑμῶν, καὶ ἀπὸ τῶν ἐπαύλεων, καὶ ἀπὸ τῶν θεραπόντων σου, καὶ ἀπὸ τοῦ λαοῦ σου, πλὴν ἐν τῷ ποταμῷ ὑπολειφθήσονται. Ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἀπὸ Φαραώ· καὶ ἐβόησε Μωυσῆς πρὸς Κύριον περὶ τοῦ ὁρισμοῦ τῶν βατράχων, ὡς ἐτάξατο Φαραώ. Ἐποιήσε δὲ Κύριος καθάπερ εἶπε Μωυσῆς· καὶ ἐτελεύτησαν οἱ βάτραχοι ἐκ τῶν οἰκιῶν, καὶ ἐκ τῶν ἐπαύλεων, καὶ ἐκ τῶν ἀγρῶν. Καὶ συνήγαγον αὐτοὺς, θημωνίας θημωνίας· καὶ ὤζεσεν ἡ γῆ. Ἰδὼν δὲ Φαραὼ ὅτι γέγονεν ἀνάψυξις, ἐβαρύνθη ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτῶν, καθάπερ ἐλάλησε Κύριος. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἶπον Ἀαρὼν, ἔκτεινον τῇ χειρὶ τὴν ῥάβδον σου, καὶ πάταξον τὸ χῶμα τῆς γῆς· καὶ ἔσονται σκνίφες ἔν τε τοῖς ἀνθρώποις, καὶ ἐν τοῖς τετράποσι, καὶ ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Ἐξέτεινεν οὖν Ἀαρὼν τῇ χειρὶ τὴν ῥάβδον, καὶ ἐπάταξε τὸ χῶμα τῆς γῆς· καὶ ἐγένοντο οἱ σκνίφες ἐν τοῖς ἀνθρώποις, ἔν τε τοῖς τετράποσι, καὶ ἐν παντὶ χώματι τῆς γῆς ἐγένοντο οἱ σκνίφες. Ἐποίησαν δὲ ὡσαύτως καὶ οἱ ἐπαοιδοὶ ταῖς φαρμακίαις αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν τὸν σκνῖφα, καὶ οὐκ ἠδύναντο· καὶ ἐγένοντο οἱ σκνίφες ἔν τε τοῖς ἀνθρώποις, καὶ ἐν τοῖς τετράποσιν. Εἶπαν οὖν οἱ ἐπαοιδοὶ τῷ Φαραῷ, δάκτυλος Θεοῦ ἐστι τοῦτο· καὶ ἐσκληρύνθη ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτῶν, καθάπερ ἐλάλησε Κύριος. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ὄρθρισον τὸ πρωΐ, καὶ στῆθι ἐναντίον Φαραώ· καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐξελεύσεται ἐπὶ τὸ ὕδωρ· καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι λατρεύσωσιν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Ἐὰν δὲ μὴ βούλει

ἐξαποστεῖλαι τὸν λαόν μου, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω ἐπὶ σὲ, καὶ ἐπὶ τοὺς θεράποντάς σου, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου, καὶ ἐπὶ τοὺς οἴκους ὑμῶν, κυνόμυιαν· καὶ πλησθήσονται αἱ οἰκίαι τῶν Αἰγυπτίων τῆς κυνομυίης, καὶ εἰς τὴν γῆν ἐφ ἧς εἰσιν ἐπ αὐτῆς. Καὶ παραδοξάσω ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τὴν γῆν Γεσὲμ, ἐφ ἧς ὁ λαός μου ἔπεστιν ἐπ αὐτῆς, ἐφ ἧς οὐκ ἔσται ἐκεῖ ἡ κυνόμυια· ἵνα εἰδῇς ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ Θεὸς πάσης τῆς γῆς. Καὶ δώσω διαστολὴν ἀνὰ μέσον τοῦ ἐμοῦ λαοῦ, καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ σου λαοῦ· ἐν δὲ τῇ αὔριον ἔσται τοῦτο ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐποίησε δὲ Κύριος οὕτως· καὶ παρεγένετο ἡ κυνόμυια πλῆθος εἰς τοὺς οἴκους Φαραὼ, καὶ εἰς τοὺς οἴκους τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, καὶ εἰς πᾶσαν τὴν γῆν Αἰγύπτου· καὶ ἐξωλοθρεύθη ἡ γῆ ἀπὸ τῆς κυνομυίης. Ἐκάλεσε δὲ Φαραὼ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἐλθόντες θύσατε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν ἐν τῇ γῇ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, οὐ δυνατὸν γενέσθαι οὕτως· τὰ γὰρ βδελύγματα τῶν Αἰγυπτίων θύσομεν Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν· ἐὰν γὰρ θύσωμεν τὰ βδελύγματα τῶν Αἰγυπτίων ἐναντίον αὐτῶν, λιθοβοληθησόμεθα. Ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν πορευσόμεθα εἰς τὴν ἔρημον· καὶ θύσομεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, καθάπερ εἶπεν Κύριος ἡμῖν. Καὶ εἶπε Φαραὼ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς, καὶ θύσατε τῷ Θεῷ ὑμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἀλλ οὐ μακρὰν ἀποτενεῖτε πορευθῆναι· εὔξασθε οὖν περὶ ἐμοῦ πρὸς Κύριον. Εἶπε δὲ Μωυσῆς, ὁ δὲ ἐγὼ ἐξελεύσομαι ἀπὸ σοῦ, καὶ εὔξομαι πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ ἀπελεύσεται ἡ κυνόμυια καὶ ἀπὸ τῶν θεραπόντων σου, καὶ ἀπὸ τοῦ λαοῦ σου αὔριον· μὴ προσθῇς ἔτι Φαραὼ ἐξαπατῆσαι, τοῦ μὴ ἐξαποστεῖλαι τὸν λαὸν θῦσαι Κυρίῳ. Ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς ἀπὸ Φαραὼ, καὶ ηὔξατο πρὸς τὸν Θεόν. Ἐποίησε δὲ Κύριος καθάπερ εἶπε Μωυσῆς· καὶ περιεῖλε τὴν κυνόμυιαν ἀπὸ Φαραὼ, καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, καὶ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ οὐ κατελείφθη οὐδεμία. Καὶ ἐβάρυνε Φαραὼ τὴν

καρδίαν αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τοῦ καιροῦ τούτου, καὶ οὐκ ἠθέλησεν ἐξαποστεῖλαι τὸν λαόν.

# 9

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἴσελθε πρὸς Φαραὼ, καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα μοι λατρεύσωσι. Εἰ μὲν οὖν μὴ βούλει ἐξαποστεῖλαι τὸν λαόν μου, ἀλλὰ ἔτι ἐγκρατεῖς αὐτοῦ, Ἰδοὺ, χεὶρ Κυρίου ἐπέσται ἐν τοῖς κτήνεσί σου τοῖς ἐν τοῖς πεδίοις, ἔν τε τοῖς ἵπποις, καὶ ἐν τοῖς ὑποζυγίοις, καὶ ταῖς καμήλοις, καὶ βουσὶ, καὶ προβάτοις, θάνατος μέγας σφόδρα. Καὶ παραδοξάσω ἐγὼ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀνὰ μέσον τῶν κτηνῶν τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἀνὰ μέσον τῶν κτηνῶν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· οὐ τελευτήσει ἀπὸ πάντων τῶν τοῦ Ἰσραὴλ υἱῶν ῥητόν. Καὶ ἔδωκεν ὁ Θεὸς ὅρον, λέγων, ἐν τῇ αὔριον ποιήσει Κύριος τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐποίησε Κύριος τὸ ῥῆμα τοῦτο τῇ ἐπαύριον· καὶ ἐτελεύτησε πάντα τὰ κτήνη τῶν Αἰγυπτίων· ἀπὸ δὲ τῶν κτηνῶν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ οὐκ ἐτελεύτησεν οὐδέν. Ἰδὼν δὲ Φαραὼ ὅτι οὐκ ἐτελεύτησεν ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ οὐδὲν, ἐβαρύνθη ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ οὐκ ἐξαπέστειλε τὸν λαόν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, λάβετε ὑμεῖς πληρεῖς τὰς χεῖρας αἰθάλης καμιναίας, καὶ πασάτω Μωυσῆς εἰς τὸν οὐρανὸν ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραπόντων αὐτοῦ. Καὶ γενηθήτω κονιορτὸς ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν Αἰγύπτου· καὶ ἔσται ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπὶ τὰ τετράποδα, ἕλκη, φλυκτίδες ἀναζέουσαι ἔν τε τοῖς ἀνθρώποις, καὶ ἐν τοῖς τετράποσιν, ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Καὶ ἔλαβεν τὴν αἰθάλην

τῆς καμιναίας ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἔπασεν αὐτὴν Μωυσῆς εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ ἐγένετο ἕλκη, φλυκτίδες ἀναζέουσαι, ἔν τε τοῖς ἀνθρώποις, καὶ ἐν τοῖς τετράποσι. Καὶ οὐκ ἠδύναντο οἱ φαρμακοὶ στῆναι ἐναντίον Μωυσῆ διὰ τὰ ἕλκη· ἐγένετο γὰρ τὰ ἕλκη ἐν τοῖς φαρμακοῖς, καὶ ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Ἐσκλήρυνε δὲ Κύριος τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτῶν, καθὰ συνέταξε Κύριος. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ὄρθρισον τὸ πρωΐ, καὶ στῆθι ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων, ἐξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα λατρεύσωσί μοι. Ἐν τῷ γὰρ νῦν καιρῷ ἐγὼ ἐξαποστέλλω πάντα τὰ συναντήματά μου εἰς τὴν καρδίαν σου, καὶ τῶν θεραπόντων σου, καὶ τοῦ λαοῦ σου, ἵνα εἰδῇς ὅτι οὐκ ἔστιν, ὡς ἐγὼ, ἄλλος ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Νῦν γὰρ ἀποστείλας τὴν χεῖρα πατάξω σε, καὶ τὸν λαόν σου θανατώσω, καὶ ἐκτριβήσῃ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἕνεκεν τούτου διετηρήθης, ἵνα ἐνδείξωμαι ἐν σοὶ τὴν ἰσχύν μου, καὶ ὅπως διαγγελῇ τὸ ὄνομά μου ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Ἔτι οὖν σὺ ἐνποιῇ τοῦ λαοῦ μου, τοῦ μὴ ἐξαποστεῖλαι αὐτούς; Ἰδοὺ ἐγὼ ὕω ταύτην τὴν ὥραν αὔριον χάλαζαν πολλὴν σφόδρα, ἥτις τοιαύτη οὐ γέγονεν ἐν Αἰγύπτῳ, ἀφ ἧς ἡμέρας ἔκτισται, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Νῦν οὖν κατάσπευσον συναγαγεῖν τὰ κτήνη σου, καὶ ὅσα σοι ἐστὶν ἐν τῷ πεδίῳ· πάντες γὰρ οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰ κτήνη, ὅσα σοί ἐστιν ἐν τῷ πεδίῳ· πὰντες γὰρ οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰ κτήνη, ὅσα ἐὰν εὑρεθῇ ἐν τοῖς πεδίοις, καὶ μὴ εἰσέλθῃ εἰς οἰκίαν, πεσῇ δὲ ἐπ αὐτὰ ἡ χάλαζα, τελευτήσει. Ὁ φοβούμενος τὸ ῥῆμα Κυρίου τῶν θεραπόντων Φαραὼ, συνήγαγε τὰ κτήνη αὐτοῦ εἰς τοὺς οἴκους. Ὃς δὲ μὴ πρόσεσχεν τῇ διανοίᾳ εἰς τὸ ῥῆμα Κυρίου, ἀφῆκε τὰ κτήνη ἐν τοῖς πεδίοις. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἔσται χάλαζα ἐπὶ πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου, ἐπί τε τοὺς ἀνθρώπους, καὶ τὰ

κτήνη, καὶ ἐπὶ πᾶσαν βοτάνην τὴν ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐξέτεινε δὲ Μωυσῆς τὴν χεῖρα εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ Κύριος ἔδωκε φωνὰς καὶ χάλαζαν· καὶ διέτρεχε τὸ πῦρ ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἔβρεξε Κύριος χάλαζαν ἐπὶ πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου. Ἦν δὲ ἡ χάλαζα καὶ τὸ πῦρ φλογίζον ἐν τῇ χαλάζῃ· ἡ δὲ χάλαζα πολλὴ σφόδρα, ἥτις τοιαύτη οὐ γέγονεν ἐν Αἰγύπτῳ, ἀφ ἧς ἡμέρας γεγένηται ἐπ αὐτῆς ἔθνος. Ἐπάταξε δὲ ἡ χάλαζα ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου, ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους· καὶ πᾶσαν βοτάνην τὴν ἐν τῷ πεδίῳ ἐπάταξεν ἡ χάλαζα· καὶ πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν τοῖς πεδίοις συνέτριψεν ἡ χάλαζα. Πλὴν ἐν γῇ Γεσὲμ, οὗ ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οὐκ ἐγένετο ἡ χάλαζα. Ἀποστείλας δὲ Φαραὼ ἐκάλεσε Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἡμάρτηκα τὸ νῦν· ὁ Κύριος δίκαιος, ἐγὼ δὲ καὶ ὁ λαός μου ἀσεβεῖς. Εὔξασθε οὖν περὶ ἐμοῦ πρὸς Κύριον, καὶ παυσάσθω τοῦ γενηθῆναι φωνὰς Θεοῦ, καὶ χάλαζαν, καὶ πῦρ· καὶ ἐξαποστελῶ ὑμᾶς, καὶ οὐκέτι προστεθήσεσθε μένειν. Εἶπε δὲ αὐτῷ Μωυσῆς, ὡς ἂν ἐξέλθω τὴν πόλιν, ἐκπετάσω τὰς χεῖράς μου πρὸς τὸν Κύριον, καὶ αἱ φωναὶ παύσονται, καὶ ἡ χὰλαζα καὶ ὁ ὑετὸς οὐκ ἔσται ἔτι, ἵνα γνῷς ὅτι τοῦ Κυρίου ἡ γῆ. Καὶ σὺ καὶ οἱ θεράποντές σου, ἐπίσταμαι ὅτι οὐδέπω πεφόβησθε τὸν Κύριον. Τὸ δὲ λίνον καὶ ἡ κριθὴ ἐπλήγη· ἡ γὰρ κριθὴ παρεστηκυῖα, τὸ δὲ λίνον σπερματίζον. Ὁ δὲ πυρὸς καὶ ἡ ὀλύρα οὐκ ἐπληγησαν, ὄψιμα γὰρ ἦν. Ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς ἀπὸ Φαραὼ ἐκτὸς τῆς πόλεως, καὶ ἐξέτεινε τὰς χεῖρας πρὸς Κύριον· καὶ αἱ φωναὶ ἐπαύσαντο, καὶ ἡ χάλαζα καὶ ὁ ὑετὸς οὐκ ἔσταξεν ἔτι ἐπὶ τὴν γῆν. Ἰδὼν δὲ Φαραὼ ὅτι πέπαυται ὁ ὑετὸς καὶ ἡ χάλαζα καὶ αἱ φωναὶ, προσέθετο τοῦ ἁμαρτάνειν· καὶ ἐβάρυνεν αὐτοῦ τὴν καρδίαν, καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ. Καὶ ἐσκληρύνθη ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ οὐκ ἐξαπέστειλε τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καθάπερ ἐλάλησε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 10

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, εἴσελθε πρὸς Φαραὼ, ἐγὼ γὰρ ἐσκλήρυνα αὐτοῦ τὴν καρδίαν καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, ἵνα ἐξῆς ἐπέλθῃ τὰ σημεῖα ταῦτα ἐπ αὐτούς· ὅπως διηγήσησθε εἰς τὰ ὦτα τῶν τέκνων ὑμῶν, καὶ τοῖς τέκνοις τῶν τέκνων ὑμῶν, ὅσα ἐμπέπαιχα τοῖς Αἰγυπτίοις, καὶ τὰ σημεῖά μου, ἃ ἐποίησα ἐν αὐτοῖς· καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ Κύριος. Εἰσῆλθε δὲ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐναντίον Φαραὼ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τῶν Ἑβραίων, ἕως τίνος οὐ βούλει ἐντραπῆναί με; ἔξαπόστειλον τὸν λαόν μου, ἵνα λατρεύσωσί μοι. Ἐὰν δὲ μὴ θέλῃς σὺ ἐξαποστεῖλαι τὸν λαόν μου, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ταύτην τὴν ὥραν αὔριον ἀκρίδα πολλὴν ἐπὶ πάντα τὰ ὅριά σου. Καὶ καλύψει τὴν ὄψιν τῆς γῆς, καὶ οὐ δυνήσῃ κατιδεῖν τὴν γῆν· καὶ κατέδεται πᾶν τὸ περισσὸν τῆς γῆς τὸ καταλειφθὲν, ὃ κατέλιπεν ὑμῖν ἡ χάλαζα, καὶ κατέδεται πᾶν ξύλον τὸ φυόμενον ὑμῖν ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ πλησθήσονταί σου αἱ οἰκίαι, καὶ αἱ οἰκίαι τῶν θεραπόντων σου, καὶ πᾶσαι αἱ οἰκίαι ἐν πάσῃ γῇ τῶν Αἰγυπτίων· ἃ οὐδέποτε ἑωράκασιν οἱ πατέρες σου, οὐδ οἱ πρόπαπποι αὐτῶν, ἀφ ἧς ἡμέρας γεγόνασιν ἐπὶ τῆς γῆς, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ ἐκκλίνας Μωυσῆς ἐξῆλθεν ἀπὸ Φαραώ. Καὶ λέγουσιν οἱ θεράποντες Φαραὼ πρὸς αὐτὸν, ἕως τίνος ἔσται τοῦτο ἡμῖν σκῶλον; ἐξαπόστειλον τοὺς ἀνθρώπους, ὅπως λατρεύσωσι τῷ Θεῷ αὐτῶν· ἢ εἰδέναι βούλει ὅτι ἀπόλωλεν Αἴγυπτος; Καὶ ἀπέστρεψαν τόν τε Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν πρὸς Φαραὼ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, πορεύεσθε καὶ λατρεύσατε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν· τίνες δὲ καὶ τίνες εἰσιν οἱ πορευόμενοι; Καὶ λέγει Μωυσῆς, σὺν τοῖς νεανίσκοις καὶ πρεσβυτέροις πορευσόμεθα, σὺν

τοῖς υἱοῖς καὶ θυγατράσι, καὶ προβάτοις, καὶ βουσὶν ἡμῶν· ἔστι γὰρ ἑορτὴ Κυρίου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἔστω οὕτω Κύριος μεθ ὑμῶν· καθότι ἀποστέλλω ὑμᾶς, μὴ καὶ τὴν ἀποσκευὴν ὑμῶν; ἴδετε ὅτι πονηρία πρόσκειται ὑμῖν. Μὴ οὕτως· πορευέσθωσαν δὲ οἱ ἄνδρες, καὶ λατρευσάτωσαν τῷ Θεῷ· τοῦτο γὰρ αὐτοὶ ἐκζητεῖτε· ἐξέβαλον δὲ αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου Φαραώ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἔκτεινον τὴν χεῖρα ἐπὶ γῆν Αἰγύπτου· καὶ ἀναβήτω ἀκρὶς ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ κατέδεται πᾶσαν βοτάνην τῆς γῆς, καὶ πάντα τὸν καρπὸν τῶν ξύλων, ὃν ὑπελίπετο ἡ χάλαζα. Καὶ ἐπῆρε Μωυσῆς τὴν ῥάβδον εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ Κύριος ἐπήγαγεν ἄνεμον νότον ἐπὶ τὴν γῆν, ὅλην τὴν ἡμέραν ἐκείνην, καὶ ὅλην τὴν νύκτα· τὸ πρωῒ ἐγενήθη, καὶ ὁ ἄνεμος ὁ νότος ἀνέλαβεν τὴν ἀκρίδα, καὶ ἀνήγαγεν αὐτὴν ἐπὶ πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου· καὶ κατέπαυσεν ἐπὶ πάντα τὰ ὅρια Αἰγύπτου πολλὴ σφόδρα· προτέρα αὐτῆς οὐ γέγονε τοιαύτη ἀκρὶς, καὶ μετὰ ταῦτα οὐκ ἔσται οὕτως. Καὶ ἐκάλυψε τὴν ὄψιν τῆς γῆς, καὶ ἐφθάρη ἡ γῆ· καὶ κατέφαγε πᾶσαν βοτάνην τῆς γῆς, καὶ πάντα τόν καρπὸν τῶν ξύλων, ὃς ὑπελείφθη ἀπὸ τῆς χαλάζης· οὐχ ὑπελείφθη χλωρὸν οὐδὲν ἐν τοῖς ξύλοις, καὶ ἐν πάσῃ βοτάνῃ τοῦ πεδίου, ἐν πάσῃῃ γῇ Αἰγύπτου. Κατέσπευδε δὲ Φαραὼ καλέσαι Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἡμάρτηκα ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ εἰς ὑμᾶς. Προσδέξασθε οὖν μου τὴν ἁμαρτίαν ἔτι νῦν, καὶ προσεύξασθε πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν, καὶ περιελέτω ἀπ ἐμοῦ τὸν θάνατον τοῦτον. Ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς ἀπὸ Φαραὼ, καὶ ηὔξατο πρὸς τὸν Θεόν. Καὶ μετέβαλε Κύριος ἄνεμον ἀπὸ θαλάσσης σφοδρὸν, καὶ ἀνέλαβε τὴν ἀκρίδα, καὶ ἔβαλεν αὐτὴν εἰς τὴν ἐρυθρὰν θαλάσσαν· καὶ οὐχ ὑπελείφη ἀκρὶς μία ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτου. Καὶ ἐσκλήρυνε Κύριος τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ οὐκ ἐξαπέστειλε τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν,

ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ γενηθήτω σκότος ἐπὶ γῆς Αἰγύπτου, ψηλαφητὸν σκότος. Ἐξέτεινε δὲ Μωυσῆς τὴν χεῖρα εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ ἐγένετο σκότος γνόφος, θύελλα ἐπὶ πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου τρεῖς ἡμέρας· Καὶ οὐκ εἶδεν οὐδεὶς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τρεῖς ἡμέρας· καὶ οὐκ ἐξανέστη οὐδεὶς ἐκ τῆς κοίτης αὐτοῦ τρεῖς ἡμέρας· πᾶσι δὲ τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ φῶς ἦν ἐν πᾶσιν οἷς κατεγίνοντο. Καὶ ἐκάλεσε Φαραὼ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, Βαδίζετε, λατρεύσατε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν, πλὴν τῶν προβάτων καὶ τῶν βοῶν ὑπολείπεσθε· καὶ ἡ ἀποσκευὴ ὑμῶν ἀποτρεχέτω μεθ ὑμῶν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἀλλὰ καὶ σὺ δώσεις ἡμῖν ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας, ἃ ποιήσομεν Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν. Καὶ τὰ κτήνη ἡμῶν πορεύσεται μεθ ἡμῶν, καὶ οὐχ ὑπολειψόμεθα ὁπλήν· ἀπ αὐτῶν γὰρ ληψόμεθα λατρεῦσαι Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν· ἡμεῖς δὲ οὐκ οἴδαμεν τί λατρεύσομεν Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν, ἕως τοῦ ἐλθεῖν ἡμᾶς ἐκεῖ. Ἐσκλήρυνε δὲ Κύριος τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ οὐκ ἐβουλήθη ἐξαποστεῖλαι αὐτούς. Καὶ λέγει Φαραὼ, ἄπελθε ἀπ ἐμοῦ· πρόσεχε σεαυτῷ ἔτι προσθεῖναι ἰδεῖν μου τὸ πρόσωπον· ᾗ δ ἂν ἡμέρᾳ ὀφθῇς μοι, ἀποθανῇ. Λέγει δὲ Μωυσῆς, εἴρηκας· οὐκ ἔτι ὀφθήσομαί σοι εἰς πρόσωπον.

# 11

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἔτι μίαν πληγὴν ἐγὼ ἐπάξω ἐπὶ Φαραὼ, καὶ ἐπ Αἴγυπτον, καὶ μετὰ ταῦτα ἐξαποστελεῖ ὑμᾶς ἐντεῦθεν· ὅταν δὲ ἐξαποστέλλῃ ὑμᾶς σὺν παντὶ, ἐκβαλεῖ ὑμᾶς ἐκβολῇ. Λάλησον οὖν κρυφῇ εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ, καὶ αἰτησάτω ἕκαστος παρὰ τοῦ πλησίον σκεύη ἀργυρᾶ καὶ χρυσὰ καὶ ἱματισμόν.

Κύριος δὲ ἔδωκε τὴν χάριν τῷ λαῷ αὐτοῦ ἐναντίον τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἔχρησαν αὐτοῖς· καὶ ὁ ἄνθρωπος Μωυσῆς μέγας ἐγενήθη σφόδρα ἐναντίον τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἐναντίον Φαραὼ, καὶ ἐναντίον τῶν θεραπόντων ἀτοῦ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, τάδε λέγει Κύριος, περὶ μέσας νύκτας ἐγὼ εἰσπορεύομαι εἰς μέσον Αἰγύπτου· Καὶ τελευτήσει πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἀπὸ πρωτοτόκου Φαραὼ, ὃς κάθηται ἐπὶ τοῦ θρόνου, καὶ ἕως πρωτοτόκου τῆς θεραπαίνης τῆς παρὰ τὸν μύλον, καὶ ἕως πρωτοτοκου παντος κτήνους. Καὶ ἔσται κραυγὴ μεγάλη κατὰ πᾶσαν γῆν Αἰγύπτου, ἥτις τοιαύτη οὐ γέγονε, καὶ τοιαύτη οὐκ ἔτι προστεθήσεται. Καὶ ἐν πᾶσι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ οὐ γρύξει κύων τῇ γλώσσῃ αὐτοῦ, ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους· ὅπως εἰδῇς ὅσα παραδοξάσει Κύριος ἀνὰ μέσον τῶν Αἰγυπτίων καὶ τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ καταβήσονται πάντες οἱ παῖδές σου οὗτοι πρός με, καὶ προσκυνήσουσί με, λέγοντες, ἔξελθε σὺ, καὶ πᾶς ὁ λαός σου, οὗ σὺ ἀφηγῇ· καὶ μετὰ ταῦτα ἐξελεύσομαι· ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς ἀπὸ Φαραὼ μετὰ θυμοῦ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, οὐκ εἰσακούσεται ὑμῶν Φαραὼ, ἵνα πληθύνων πληθυνῶ μου τὰ σημεῖα, καὶ τὰ τέρατα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Μωσῆς δὲ καὶ Ἀαρὼν ἐποίησαν πάντα τὰ σημεῖα καὶ τὰ τέρατα ταῦτα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἐναντίον Φαραώ· ἐσκλήρυνε δὲ Κύριος τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ οὐκ εἰσήκουσεν ἐξαποστεῖλαι τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου.

# 12

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μευσῆν καὶ Ἀαρὼν ἐν γῇ Αἰγύπτου, λέγων, ὁ μὴν οὗτος ὑμῖν ἀρχὴ μηνῶν· πρῶτός ἐστιν ὑμῖν ἐν τοῖς μησὶ τοῦ ἐνιαυτοῦ. Λάλησον πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, λέγων,

τῇ δεκάτῃ τοῦ μηνὸς τούτου λαβέτωσαν ἕκαστος πρόβατον κατ οἴκους πατριῶν, ἕκαστος πρόβατον κατ οἰκίαν. Ἐὰν δὲ ὀλιγοστοὶ ὦσιν ἐν τῇ οἰκίᾳ, ὥστε μὴ εἶναι ἱκανοὺς εἰς πρόβατον, συλλήψεται μεθ ἑαυτοῦ τὸν γείτονα τὸν πλησίον αὐτοῦ· κατὰ ἀριθμὸν ψυχῶν, ἕκαστος τὸ ἀρκοῦν αὐτῷ συναριθμήσεται εἰς πρόβατον. Πρόβατον τέλειον, ἄρσεν, ἐνιαύσιον ἔσται ὑμῖν· ἀπὸ τῶν ἀρνῶν καὶ τῶν ἐρίφων λὴψεσθε. Καὶ ἔσται ὑμῖν διατετηρημένον ἕως τῆς τεσσαρεσκαιδεκάτης τοῦ μηνὸς τούτου· καὶ σφάξουσιν αὐτὸ πᾶν τὸ πλῆθος συναγωγῆς υἱῶν Ἰσραὴλ πρὸς ἑσπέραν. Καὶ λήψονται ἀπὸ τοῦ αἵματος, καὶ θήσουσιν ἐπὶ τῶν δύο σταθμῶν καὶ ἐπὶ τὴν φλιὰν, ἐν τοῖς οἴκοις ἐν οἷς ἐὰν φάγωσιν αὐτὰ ἐν αὐτοῖς. Καὶ φάγονται τὰ κρέα τῇ νυκτὶ ταύτῃ ὀπτὰ πυρὶ, καὶ ἄζυμα ἐπὶ πικρίδων ἔδονται. Οὐκ ἔδεσθε ἀπ αὐτῶν ὠμὸν, οὐδὲ ἡψημένον ἐν ὕδατι, ἀλλ ἢ ὀπτὰ πυρὶ, κεφαλὴν σὺν τοῖς ποσὶ καὶ τοῖς ἐνδοσθίοις. Οὐκ ἀπολείψεται ἀπ αὐτοῦ ἕως πρωΐ· καὶ ὀστοῦν οὐ συντρίψετε ἀπ αὐτοῦ· τὰ δὲ καταλειπόμενα ἀπ αὐτοῦ ἕως πρωΐ ἐν πυρὶ κατακαύσετε. Οὕτω δὲ φάγεσθε αὐτό· αἱ ὀσφύες ὑμῶν περιεζωσμέναι, καὶ τὰ ὑποδήματα ἐν τοῖς ποσὶν ὑμῶν, καὶ αἱ βακτηρίαι ἐν ταῖς χερσὶν ὑμῶν· καὶ ἔδεσθε αὐτὸ μετὰ σπουδῆς· Πάσχα ἐστὶ Κυρίῳ. Καὶ διελεύσομαι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ, καὶ πατάξω πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους· καὶ ἐν πᾶσι τοῖς θεοῖς τῶν Αἰγυπτίων ποιήσω τὴν ἐκδίκησιν· ἐγὼ Κύριος. Καὶ ἔσται τὸ αἷμα ὑμῖν ἐν σημείῳ ἐπὶ τῶν οἰκιῶν, ἐν αἷς ὑμεῖς ἔστε ἐκεῖ· καὶ ὄψομαι τὸ αἷμα, καὶ σκεπάσω ὑμᾶς, καὶ οὐκ ἔσται ἐν ὑμῖν πληγὴ τοῦ ἐκτριβῆναι ὅταν παίω ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Καὶ ἔσται ἡ ἡμέρα ὑμῖν αὕτη μνημόσυνον, καὶ ἑορτάσετε αὐτὴν ἑορτὴν Κυρίῳ εἰς πάσας τὰς γενεὰς ὑμῶν· νόμιμον αἰώνιον ἑορτάσετε αὐτήν. Ἑπτὰ ἡμέρας ἄζυμα ἔδεσθε· ἀπὸ δὲ τῆς ἡμέρας

τῆς πρώτης, ἀφανιεῖτε ζύμην ἐκ τῶν οἰκιῶν ὑμῶν· πᾶς ὃς ἂν φάγῃ ζύμην, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐξ Ἰσραήλ, ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς πρώτης ἕως τῆς ἡμέρας τῆς ἑβδόμης. Καὶ ἡ ἡμέρα ἡ πρώτη, κληθήσεται ἁγία· καὶ ἡ ἡμέρα ἡ ἑβδόμη, κλητὴ ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε ἐν αὐταῖς, πλὴν ὅσα ποιηθήσεται πάσῃ ψυχῇ, τοῦτο μόνον ποιηθήσεται ὑμῖν. Καὶ φυλάξετε τὴν ἐντολὴν ταύτην· ἐν γὰρ τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἐξάξω τὴν δύναμιν ὑμῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ποιήσετε τὴν ἡμέραν ταύτην εἰς γενεὰς ὑμῶν νόμιμον αἰώνιον, ἐναρχόμενοι τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου, ἀφ ἑσπέρας ἔδεσθε ἄζυμα, ἕως ἡμέρας μίας καὶ εἰκάδος τοῦ μηνὸς, ἕως ἑσπέρας. Ἑπτὰ ἡμέρας ζύμη οὐχ εὑρεθήσεται ἐν ταῖς οἰκιαῖς ὑμῶν· πᾶς ὃς ἂν φάγῃ ζυμωτὸν, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ συναγωγῆς Ἰσραήλ· ἔν τε τοῖς γειώραις, καὶ αὐτόχθοσι τῆς γῆς. Πᾶν ζυμωτὸν οὐκ ἔδεσθε, ἐν παντὶ δὲ κατοικητηρίῳ ὑμῶν ἔδεσθε ἄζυμα. Ἐκάλεσε δὲ Μωυσῆς πᾶσαν γερουσίαν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀπελθόντες λάβετε ὑμῖν αὐτοῖς πρόβατον κατὰ συγγενείας ὑμῶν, καὶ θύσατε τὸ πάσχα. Λήψεσθε δὲ δέσμην ὑσσώπου, καὶ βάψαντες ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ παρὰ τὴν θύραν, καθίξετε τῆς φλιᾶς, καὶ ἐπ ἀμφοτέρων τῶν σταθμῶν, ἀπὸ τοῦ αἵματος ὅ ἐστι παρὰ τὴν θύραν· ὑμεῖς δὲ οὐκ ἐξελεύσεσθε ἕκαστος τὴν θύραν τοῦ οἴκου αὐτοῦ ἕως πρωΐ. Καὶ παρελεύσεται Κύριος πατάξαι τοὺς Αἰγυπτίους, καὶ ὄψεται τὸ αἷμα ἐπὶ τῆς φλιᾶς, καὶ ἐπ ἀμφοτέρων τῶν σταθμῶν· καὶ παρελεύσεται Κύριος τὴν θύραν, καὶ οὐκ ἀφήσει τὸν ὀλοθρεύοντα εἰσελθεῖν εἰς τὰς οἰκίας ὑμῶν πατάξαι. Καὶ φυλάξασθε τὸ ῥῆμα τοῦτο νόμιμον σεαυτῷ, καὶ τοῖς υἱοῖς σου, ἕως αἰῶνος. Ἐὰν δὲ εἰσέλθητε εἰς τὴν γῆν, ἣν ἂν δῷ Κύριος ὑμῖν, καθότι ἐλάλησε, φυλάξασθε τὴν λατρείαν ταύτην.

Καὶ ἐσται ἐὰν λέγωσι πρὸς ὑμᾶς οἱ υἱοὶ ὑμῶν, τίς ἡ λατρεία αὕτη; Καὶ ἐρεῖτε αὐτοῖς, θυσία τὸ πάσχα τοῦτο Κυρίῳ, ὡς ἐσκέπασε τοὺς οἴκους τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν Αἰγύπτῳ, ἡνίκα ἐπάταξε τοὺς Αἰγυπτίους, τοὺς δὲ οἴκους ἡμῶν ἐῤῥύσατο· καὶ κύψας ὁ λαὸς προσεκύνησε. Καὶ ἀπελθόντες ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καθὰ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ καὶ Ἀαρῶν, οὕτως ἐποίησαν. Ἐγενήθη δὲ μεσούσης τῆς νυκτὸς, καὶ Κύριος ἐπάταξε πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἀπὸ πρωτοτόκου Φαραὼ τοῦ καθημένου ἐπὶ τοῦ θρόνου, ἕως πρωτοτόκου τῆς αἰχμαλωτίδος τῆς ἐν τῷ λάκκῳ, καὶ ἕως πρωτοτόκου παντὸς κτήνους. Καὶ ἀναστὰς Φαραὼ νυκτὸς, καὶ οἱ θεράποντες αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ Αἰγύπτιοι, καὶ ἔγενήθη κραυγὴ μεγάλη ἐν πάσῃ γῇ Αἰγύπτῳ· οὐ γὰρ ἦν οἰκία, ἐν ᾗ οὐκ ἦν ἐν αὐτῇ τεθνηκώς. Καὶ ἐκάλεσε Φαραὼ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν νυκτὸς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἀνάστητε, καὶ ἐξέλθατε ἐκ τοῦ λαοῦ μου, καὶ ὑμεῖς, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· βαδίζετε καὶ λατρεύσατε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν, καθὰ λέγετε. Καὶ τὰ πρόβατα καὶ τοὺς βόας ὑμῶν ἀναλαβόντες πορεύεσθε· εὐλογήσατε δὴ κἀμέ. Καὶ κατεβιάζοντο οἱ Αἰγύπτιοι τὸν λαὸν σπουδῇ ἐκβαλεῖν αὐτοὺς ἐν τῆς γῆς· εἶπαν γὰρ, ὅτι πάντες ἡμεῖς ἀποθνήσκομεν. Ἀνέλαβε δὲ ὁ λαὸς τὸ σταῖς αὐτῶν, πρὸ τοῦ ζυμωθῆναι τὰ φυράματα αὐτῶν, ἐνδεδεμένα ἐν τοῖς ἱματίοις αὐτῶν ἐπὶ τῶν ὤμαν. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐποίησαν, καθὰ συνέταξεν αὐτοῖς Μωυσῆς, καὶ ᾔτησαν παρὰ τῶν Αἰγυπτίων σκεύη ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ καὶ ἱματισμόν. Καὶ ἔδωκε Κύριος τὴν χάριν τῷ λαῷ αὐτοῦ ἐναντίον τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἔχρησαν αὐτοῖς· καὶ ἐσκύλευσαν τοὺς Αἰγυπτίους. Ἀπάραντες δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐκ Ῥαμεσσῆ εἰς Σοκχὼθ εἰς ἑξακοσίας χιλιάδας πεζῶν, οἱ ἄνδρες, πλὴν τῆς ἀποσκευῆς. Καὶ ἐπίμικτος πολὺς συνανέβη αὐτοῖς, καὶ

πρόβατα, καὶ βόες, καὶ κτήνη πολλὰ σφόδρα. Καὶ ἔπεψαν τὸ σταῖς ὃ ἐξήνεγκαν ἐξ Αἰγύπτου, ἐγκρυφίας ἀζύμους, οὐ γὰρ ἐζυμώθη· ἐξέβαλον γὰρ αὐτοὺς οἱ Αἰγύπτιοι, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν ἐπιμεῖναι, οὐδὲ ἐπισιτισμὸν ἐποίησαν ἑαυτοῖς εἰς τὴν ὁδόν. Ἡ δὲ κατοίκησις τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἣν κατῴκησαν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ καὶ ἐν γῇ Χαναὰν, ἔτη τετρακόσια τριάκοντα. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰ τετρακόσια τριάκοντα ἔτη, ἐξῆλθε πᾶσα ἡ δύναμις Κυρίου ἐκ γῆς Αἰγύπτου νυκτός. Προφυλακή ἐστι τῷ Κυρίῳ, ὥστε ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου· ἐκείνη ἡ νὺξ αὕτη, προφυλακὴ Κυρίῳ, ὥστε πᾶσι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ εἶναι εἰς γενεὰς αὐτῶν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, οὗτος ὁ νόμος τοῦ πάσχα· πᾶς ἀλλογενὴς οὐκ ἔδεται ἀπ αὐτοῦ· Καὶ πάντα οἰκέτην ἢ ἀργυρώνητον περιτεμεῖς αὐτόν· καὶ τότε φάγεται ἀπ αὐτοῦ. Πάροικος ἢ μισθωτὸς οὐκ ἔδεται ἀπ αὐτοῦ. Ἐν οἰκίᾳ μιᾷ βρωθήσεται, καὶ οὐκ ἐξοίσετε ἐκ τῆς οἰκίας τῶν κρεῶν ἔξω· καὶ ὀστοῦν οὐ συντρίψετε ἀπ αὐτοῦ. Πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ ποιήσει αὐτό. Ἐὰν δέ τις προσέλθῃ πρὸς ὑμᾶς προσήλυτος ποιῆσαι τὸ πάσχα Κυρίῳ, περιτεμεῖς αὐτοῦ πᾶν ἀρσενικόν, καὶ τότε προσελεύσεται ποιῆσαι αὐτό· καὶ ἔσται ὥσπερ καὶ ὁ αὐτόχθων τῆς γῆς· πᾶς ἀπερίτμητος οὐκ ἔδεται ἀπ αὐτοῦ. Νόμος εἷς ἔσται τῷ ἐγχωρίῳ, καὶ τῷ προσελθόντι προσηλύτῳ ἐν ὑμῖν. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καθὰ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ καὶ Ἀαρὼν πρὸς αὐτούς, οὕτως ἐποίησαν. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἐξήγαγε Κύριος τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου σὺν δυνάμει αὐτῶν.

# 13

Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἁγίασόν μοι πᾶν πρωτότοκον πρωτογενὲς διανοῖγον πᾶσαν μήτραν ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, ἐμοί ἐστιν. Εἶπε δὲ Μωυσῆς πρὸς τὸν λαὸν, μνημονεύετε τὴν ἡμέραν ταύτην, ἐν ᾗ ἐξήλθατε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας· ἐν γὰρ χειρὶ κραταιᾷ ἐξήγαγεν ὑμᾶς Κύριος ἐντεῦθεν· καὶ οὐ βρωθήσεται ζύμη. Ἐν γὰρ τῇ σήμερον ὑμεῖς ἐκπορεύεσθε ἐν μηνὶ τῶν νέων. Καὶ ἔσται ἡνίκα ἐὰν εἰσαγάγῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, καὶ Χετταίων, καὶ Ἀμορῥαίων, καὶ Εὐαίων, καὶ Ἰεβουσαίων, καὶ Γεργεσαίων, καὶ Φερεζαίων, ἣν ὤμοσε τοῖς πατράσι σου, δοῦναί σοι γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· καὶ ποιήσεις τὴν λατρείαν ταύτην ἐν τῷ μηνὶ τούτῳ. Ἓξ ἡμέρας ἔδεσθε ἄζυμα, τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἑορτὴ Κυρίου. Ἄζυμα ἔδεσθε ἑπτὰ ἡμέρας· οὐκ ὀφθήσεταί σοι ζυμωτὸν, οὐδὲ ἔσται σοι ζύμη ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις σου. Καὶ ἀναγγελεῖς τῷ υἱῷ σου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, διὰ τοῦτο ἐποίησε Κύριος ὁ Θεός μοι, ὡς ἐξεπορευόμην ἐξ Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται σοι σημεῖον ἐπὶ τῆς χειρός σου, καὶ μνημόσυνον πρὸ ὀφθαλμῶν σου, ὅπως ἂν γένηται ὁ νόμος Κυρίου ἐν τῷ στόματί σου· ἐν γὰρ χειρὶ κραταιᾷ ἐξήγαγέ σε Κύριος ὁ Θεὸς ἐξ Αἰγύπτου. Καὶ φυλάξασθε τὸν νόμον τοῦτον κατὰ καιροὺς ὡρῶν, ἀφ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας. Καὶ ἔσται ὡς ἂν εἰσαγάγῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, ὃν τρόπον ὤμοσε τοῖς πατράσι σου, καὶ δώσει σοι αὐτήν. Καὶ ἀφελεῖς πᾶν διανοῖγον μήτραν, τὰ ἀρσενικὰ τῷ Κυρίῳ· πᾶν διανοῖγον μήτραν ἐκ βουκολίων ἢ ἐν τοῖς κτήνεσί σου, ὅσα ἐὰν γένηταί σοι, τὰ ἀρσενικὰ ἁγιάσεις τῷ Κυρίῳ. Πᾶν διανοῖγον μήτραν ὄνου, ἀλλάξεις προβάτῳ· ἐὰν δὲ μὴ ἀλλάξῃς, λυτρώσῃ αὐτό· πᾶν πρωτότοκον ἀνθρώπου τῶν υἱῶν σου λυτρώσῃ. Ἐὰν δὲ ἐρωτήσῃ σε ὁ υἱός σου μετὰ ταῦτα, λέγων, τί

τοῦτο; καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, ὅτι ἐν χειρὶ κραταιᾷ ἐξήγαγεν Κύριος ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας. Ἡνίκα δὲ ἐσκλήρυνε Φαραὼ ἐξαποστεῖλαι ἡμᾶς, ἀπέκτεινε πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἀπὸ πρωτοτόκων ἀνθρώπων ἕως πρωτοτόκων κτηνῶν· διὰ τοῦτο ἐγὼ θύω πᾶν διανοῖγον μήτραν, τὰ ἀρσενικὰ τῷ Κυρίῳ, καὶ πᾶν πρωτότοκον τῶν υἱῶν μου λυτρώσομαι. Καὶ ἔσται εἰς σημεῖον ἐπὶ τῆς χειρός σου, καὶ ἀσαλευτον πρὸ ὀφθαλμων σου· ἐν γὰρ χειρὶ κραταιᾷ ἐξήγαγέ σε Κύριος ἐξ Αἰγύπτου. Ὡς δὲ ἐξαπέστειλε Φαραὼ τὸν λαὸν, οὐχ ὡδήγησεν αὐτοὺς ὁ Θεὸς ὁδὸν γῆς· Φυλιστιεὶμ, ὅτι ἐγγὺς ἦν· εἶπε γὰρ ὁ Θεὸς, μήποτε μεταμελήσῃ τῷ λαῷ ἰδόντι πόλεμον, καὶ ἀποστρέψῃ εἰς Αἴγυπτον. Καὶ ἐκύκλωσεν ὁ Θεὸς τὸν λαὸν ὁδὸν τὴν εἰς τὴν ἔρημον, εἰς τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν· πέμπτῃ δὲ γενεᾷ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς τὰ ὀστᾶ Ἰωσὴφ μεθ ἑαυτοῦ· ὅρκῳ γὰρ ὥρκισεν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐπισκοπῇ ἐπισκέψεται ὑμᾶς Κύριος, καὶ συνανοίσετε μου τὰ ὀστᾶ ἐντεῦθεν μεθ ὑμῶν. Ἐξάραντες δὲ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐκ Σοκχὼθ, ἐστρατοπέδευσαν ἐν Ὀθὼμ παρὰ τὴν ἔρημον. Ὁ δὲ Θεὸς ἡγεῖτο αὐτῶν, ἡμέρας μὲν ἐν στύλῳ νεφέλης, δεῖξαι αὐτοῖς τὴν ὁδόν· τὴν δὲ νύκτα ἐν στύλῳ πυρός. Οὐκ ἐξέλιπεν δὲ ὁ στύλος τῆς νεφέλης ἡμέρας, καὶ ὁ στύλος τοῦ πυρὸς νυκτὸς, ἐναντίον τοῦ λαοῦ παντός.

# 14

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, Λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἀποστρέψαντες στρατοπεδευσάτωσαν ἀπέναντι τῆς ἐπαύλεως, ἀνὰ μέσον Μαγδώλου καὶ ἀνὰ μέσον τῆς θαλάσσης,

ἐξεναντίας Βεελσεπφῶν· ἐνώπιον αὐτῶν στρατοπεδεύσεις ἐπὶ τῆς θαλάσσης. Καὶ ἐρεῖ Φαραὼ τῷ λαῷ αὐτοῦ, οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πλανῶνται οὗτοι ἐν τῇ γῇ, συγκέκλεικε γὰρ αὐτοὺς ἡ ἔρημος. Ἐγὼ δὲ σκληρυνῶ τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ καταδιώξεται ὀπίσω αὐτῶν· καὶ ἐνδοξασθήσομαι ἐν Φαραῷ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ στρατίᾳ αὐτοῦ· καὶ γνώσονται πάντες οἱ Αἰγύπτιοι ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος· καὶ ἐποίησαν οὕτως. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ βασιλεῖ τῶν Αἰγυπτίων ὅτι πέφευγεν ὁ λαός· καὶ μετεστράφη ἡ καρδία Φαραὼ, καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, ἐπὶ τὸν λαὸν, καὶ εἶπαν, τί τοῦτο ἐποιήσαμεν, τοῦ ἐξαποστεῖλαι τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, τοῦ μὴ δουλεύειν ἡμῖν; Ἔζευξεν οὖν Φαραὼ τὰ ἅρματα αὐτοῦ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ συναπήγαγε μεθ ἑαυτοῦ, καὶ λαβὼν ἑξακόσια ἅρματα ἐκλεκτὰ, καὶ πᾶσαν τὴν ἵππον τῶν Αἰγυπτίων, καὶ τριστάτας ἐπὶ πάντων. Καὶ ἐσκλήρυνε Κύριος τὴν καρδίαν Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ τῶν θεραπόντων αὐτοῦ, καὶ κατεδίωξεν ὀπίσω τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐξεπορεύοντο ἐν χειρὶ ὑψηλῇ. Καὶ κατεδίωξαν οἱ Αἰγύπτιοι ὀπίσω αὐτῶν, καὶ εὕροσαν αὐτοὺς παρεμβεβληκότας παρὰ τὴν θάλασσαν· καὶ πᾶσα ἡ ἵππος καὶ τὰ ἅρματα Φαραὼ, καὶ οἱ ἱππεῖς, καὶ ἡ στρατιὰ αὐτοῦ ἀπέναντι τῆς ἐπαύλεως, ἐξεναντίας Βεελσεπφῶν. Καὶ Φαραὼ προσῆγε· καὶ ἀναβλέψαντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τοῖς ὀφθαλμοῖς ὁρῶσι, καὶ οἱ Αἰγύπτιοι ἐστρατοπέδευσαν ὀπίσω αὐτῶν· καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα· ἀνεβόησαν δὲ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον. Καὶ εἶπαν πρὸς Μωυσῆν, παρὰ τὸ μὴ ὑπάρχειν μνήματα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐξήγαγες ἡμᾶς θανατῶσαι ἐν τῇ ἐρήμῳ· τί τοῦτο ἐποίησας ἡμῖν, ἐξαγαγὼν ἐξ Αἰγύπτου; Οὐ τοῦτο ἦν τὸ ῥῆμα, ὃ ἐλαλήσαμεν πρὸς σὲ ἐν Αἰγύπτῳ, λέγοντες, πάρες ἡμᾶς, ὅπως δουλεύσωμεν τοῖς Αἰγυπτίοις; κρεῖσσον γὰρ ἡμᾶς δουλεύειν τοῖς Αἰγυπτίοις, ἢ ἀποθανεῖν ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτῃ. Εἶπε δὲ

Μωυσῆς πρὸς τὸν λαὸν, θαρσεῖτε, στῆτε καὶ ὁρᾶτε τὴν σωτηρίαν τὴν παρὰ τοῦ Κυρίου, ἣν ποιήσει ἡμῖν σήμερον· ὃν τρόπον γὰρ ἑωράκατε τοὺς Αἰγυπτίους σήμερον, οὐ προσθήσεσθε ἔτι ἰδεῖν αὐτοὺς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον· Κύριος πολεμήσει περὶ ὑμῶν, καὶ ὑμεῖς σιγήσετε. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, τί βοᾷς πρός με; λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἀναζευξάτωσαν. Καὶ σὺ ἔπαρον τῇ ῥάβδῳ σου, καὶ ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ῥῆξον αὐτήν· καὶ εἰσελθάτωσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς μέσον τῆς θαλάσσης κατὰ τὸ ξηρόν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ σκληρυνῶ τὴν καρδίαν Φαραὼ, καὶ τῶν Αἰγυπτίων πάντων, καὶ εἰσελεύσονται ὀπίσω αὐτῶν· καὶ ἐνδοξασθήσομαι ἐν Φαραῷ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ στρατιᾷ αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς ἅρμασι, καὶ ἐν τοῖς ἵπποις αὐτοῦ. Καὶ γνώσονται πάντες οἱ Αἰγύπτιοι ὅτι ἐγώ εἰμὶ Κύριος, ἐνδοξαζομένου μου ἐν Φαραῷ, καὶ ἐν τοῖς ἅρμασι, καὶ ἵπποις αὐτοῦ. Ἐξῆρε δὲ ὁ Ἄγγελος τοῦ Θεοῦ ὁ προπορευόμενος τῆς παρεμβολῆς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἐπορεύθη ἐκ τῶν ὄπισθεν· ἐξῆρε δὲ καὶ ὁ στύλος τὴς νεφέλης ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ ἔστη ἐκ τῶν ὀπίσω αὐτῶν. Καὶ εἰσῆλθεν ἀνὰ μέσον τῆς παρεμβολῆς τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἀνὰ μέσον τῆς παρεμβολῆς τῶν Αἰγυπίων, καὶ ἀνὰ μέσον τῆς παρεμβολῆς Ἰσραὴλ, καὶ ἔστη· καὶ ἐγένετο σκότος καὶ γνόφος· καὶ διῆλθεν ἡ νύξ· καὶ οὐ συνέμιξαν ἀλλήλοις ὅλην τὴν νύκτα. Ἐξέτεινε δὲ Μωυσῆς τὴν χεῖρα ἐπὶ τὴν θάλασσαν· καὶ ὑπήγαγε Κύριος τὴν θάλασσαν ἐν ἀνέμῳ νότῳ βιαίῳ ὅλην τὴν νύκτα, καὶ ἐποίησε τὴν θάλασσαν ξηράν· καὶ ἐσχίσθη τὸ ὕδωρ. Καὶ εἰσῆλθον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς μέσον τῆς θαλάσσης κατὰ τὸ ξηρόν· καὶ τὸ ὕδωρ αὐτῆς τεῖχος ἐκ δεξιῶν, καὶ τεῖχος ἐξ εὐωνύμων. Καὶ κάτεδίωξαν οἱ Αἰγύπτιοι, καὶ εἰσῆλθον ὀπίσω αὐτῶν καὶ πᾶς ἵππος Φαραὼ, καὶ τὰ ἅρματα, καὶ οἱ ἀναβάται, εἰς μέσον τῆς θαλάσσης. Ἐγενήθη δὲ ἐν

τῇ φυλακῇ τῇ ἐωθινῇ, καὶ ἐπίβλεψε Κύριος ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν τῶν Αἰγυπτίων ἐν στύλῳ πυρὸς καὶ νεφέλης, καὶ συνετάραξε τὴν παρεμβολὴν τῶν Αἰγυπτίων, καὶ συνέδησε τοὺς ἄξονας τῶν ἁρμάτων αὐτῶν, καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς μετὰ βίας· καὶ εἶπαν οἱ Αἰγύπτιοι, φυγωμεν ἀπὸ προσώπου Ἰσραήλ· ὁ γὰρ Κύριος πολεμεῖ περὶ αὐτῶν τοὺς Αἰγυπτίους. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἀποκαταστήτω τὸ ὕδωρ, καὶ ἐπικαλυψάτω τοὺς Αἰγυπτίους, ἐπί τε τὰ ἅρματα καὶ τοὺς ἀναβάτας. Ἐξέτεινε δὲ Μωυσῆς τὴν χεῖρα ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἀπεκατέστη τὸ ὕδωρ πρὸς ἡμέραν ἐπὶ χώρας· οἱ δὲ Αἰγύπτιοι ἔφυγον ὑπὸ τὸ ὕδωρ· καὶ ἐξετίναξε Κύριος τοὺς Αἰγυπτίους μέσον τῆς θαλάσοης. Καὶ ἐπαναστραφὲν τὸ ὕδωρ ἐκάλυψε τὰ ἅρματα καὶ τοὺς ἀναβάτας, καὶ πᾶσαν τὴν δύναμιν Φαραὼ, τοὺς εἰσπεπορευμένους ὀπίσω αὐτῶν εἰς τὴν θάλασσαν· καὶ οὐ κατελείφθη ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπορεύθησαν διὰ ξηρᾶς ἐν μέσῳ τῆς θάλασσης· τὸ δὲ ὕδωρ αὐτοῖς τεῖχος ἐκ δεξιῶν, καὶ τεῖχος ἐξ εὐωνύμων. Καὶ ἐῤῥύσατο Κύριος τὸν Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ χειρὸς τῶν Αἰγυπτίων· καὶ εἶδεν Ἰσραὴλ τοὺς Αἰγυπτίους τεθνηκότας παρὰ τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης. Εἶδε δὲ Ἰσραὴλ τὴν χεῖρα τὴν μεγάλην, ἃ ἐποίησε Κύριος τοῖς Αἰγυπτίοις· ἐφοβήθη δὲ ὁ λαὸς τὸν Κύριον, καὶ ἐπίστευσαν τῷ Θεῷ, καὶ Μωυσῇ τῷ θεράποντι αὐτοῦ.

# 15

Τότε ᾖσε Μωυσῆς καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὴν ᾠδὴν ταύτην τῷ Θεῷ, καὶ εἶπαν, λέγοντες, ᾄσωμεν τῷ Κυρίῳ, ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται·

ἵππον καὶ ἀναβάτην ἔῤῥιψεν εἰς θάλασσαν. Βοηθὸς καὶ σκεπαστὴς ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν· οὗτός μου Θεὸς, καὶ δοξάσω αὐτόν· Θεὸς τοῦ πατρός μου, καὶ ὑψώσω αὐτόν. Κύριος συντρίβων πολέμους, Κύριος ὄνομα αὐτῷ. Ἅρματα Φαραὼ, καὶ τὴν δύναμιν αὐτοῦ, ἔῤῥιψεν εἰς θάλασσαν, ἐπιλέκτους ἀναβάτας τριστάτας· κατεπόθησαν ἐν ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ· Πόντῳ ἐκάλυψεν αὐτούς· κατέδυσαν εἰς βυθὸν ὡσεὶ λίθος. Ἡ δεξιά σου, Κύριε, δεδόξασται ἐν ἰσχύϊ· ἡ δεξιά σου χεὶρ, Κύριε, ἔθραυσεν ἐχθρούς. Καὶ τῷ πλήθει τῆς δόξης σου συνέτριψας τοὺς ὑπεναντίους· ἀπέστειλας τὴν ὀργήν σου κατέφαγεν αὐτοὺς ὡς καλάμην. Καὶ διὰ πνεύματος τοῦ θυμοῦ σου διέστη τὸ ὕδωρ· ἐπάγη ὡσεὶ τεῖχος τὰ ὕδατα· ἐπάγη τὰ κύματα ἐν μέσῳ τῆς θαλάσσης. Εἶπεν ὁ ἐχθρὸς, διώξας καταλήψομαι, μεριῶ σκῦλα· ἐμπλήσω ψυχήν μου, ἀνελῶ τῇ μαχαίρῃ μου, κυριεύσει ἡ χείρ μου. Ἀπέστειλας τὸ πνεῦμά σου· ἐκάλυψεν αὐτοὺς θάλασσα· ἔδυσαν ὡσεὶ μόλιβος ἐν ὕδατι σφοδρῷ. Τίς ὅμοιός σοι ἐν θεοῖς, Κύριε; τίς ὅμοιός σοι; δεδοξασμένος ἐν ἁγίοις, θαυμαστὸς ἐν δόξαις, ποιῶν τέρατα. Ἐξέτεινας τὴν δεξιάν σου· κατέπιεν αὐτοὺς γῆ. Ὡδήγησας τῇ δικαιοσύνῃ σου τὸν λαόν σου τοῦτον, ὃν ἐλυτρώσω· παρεκάλεσας τῇ ἰσχύϊ σου εἰς κατάλυμα ἅγιόν σου. Ἤκουσαν ἔθνη, καὶ ὠργίσθησαν· ὠδῖνες ἔλαβον κατοικοῦντας Φυλιστιείμ. Τότε ἔσπευσαν ἡγεμόνες Ἐδὼμ, καὶ ἄρχοντες Μωαβιτῶν· ἔλαβεν αὐτοὺς τρόμος· ἐτάκησαν πάντες οἱ κατοικοῦντες Χαναάν. Ἐπιπέσοι ἐπ αὐτοὺς τρόμος καὶ φόβος· μεγέθει βραχίονός σου ἀπολιθωθήτωσαν, ἕως ἂν παρέλθῃ ὁ λαός σου, Κύριε· ἕως ἂν παρέλθῃ ὁ λαός σου οὗτος, ὃν ἐκτήσω. Εἰσαγαγὼν καταφύτευσον αὐτοὺς εἰς ὄρος κληρονομίας σου, εἰς ἕτοιμον κατοικητήριόν σου, ὃ κατηρτίσω, Κύριε, ἁγίασμα, Κύριε, ὃ ἡτοίμασαν αἱ χεῖρές σου.

Κύριος βασιλεύων τὸν αἰῶνα, καὶ ἐπ αἰῶνα, καὶ ἔτι. Ὅτι εἰσῆλθεν ἵππος Φαραὼ σὺν ἅρμασιν καὶ ἀναβάταις εἰς θάλασσαν, καὶ ἐπήγαγεν ἐπ αὐτοὺς Κύριος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης· οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπορεύθησαν διὰ ξηρᾶς ἐν μέσῳ τῆς θαλάσσης. Λαβοῦσα δὲ Μαριὰμ ἡ προφῆτις ἡ ἀδελφὴ Ἀαρὼν τὸ τύμπανον ἐν τῇ χειρὶ αὐτῆς, καὶ ἐξῆλθοσαν πᾶσαι αἱ γυναῖκες ὀπίσω αὐτῆς μετὰ τυμπάνων καὶ χορῶν. Ἐξῆρχε δὲ αὐτῶν Μαριὰμ, λέγουσα, ᾄσωμεν τῷ Κυρίῳ, ἐνδόξως γὰρ δεδόξασται· ἵππον καὶ ἀναβάτην ἔῤῥιψεν εἰς θάλασσαν. Ἐξῆρε δὲ Μωυσῆς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἀπὸ θαλάσσης ἐρυθρᾶς, καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς εἰς τὴν ἔρημον Σούρ· καὶ ἐπορεύοντο τρεῖς ἡμέρας ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ οὐχ ηὕρισκον ὕδωρ, ὥστε πιεῖν. Ἦλθον δὲ εἰς Μεῤῥᾶ, καὶ οὐκ ἠδύναντο πιεῖν ἐκ Μεῤῥᾶς· πικρὸν γὰρ ἦν· διὰ τοῦτο ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Πικρία. Καὶ διεγόγγυζεν ὁ λαὸς ἐπὶ Μωυσῇ, λέγοντες, τί πιόμεθα; Ἐβόησε δὲ Μωυσῆς πρὸς Κύριον· καὶ ἔδειξεν αὐτῷ Κύριος ξύλον, καὶ ἐνέβαλεν αὐτὸ εἰς τὸ ὕδωρ, καὶ ἐγλυκάνθη τὸ ὕδωρ· ἐκεῖ ἔθετο αὐτῷ δικαιώματα καὶ κρίσεις· καὶ ἐκεῖ αὐτὸν ἐπείρασε, καὶ εἶπεν, ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ τὰ ἀρεστὰ ἐναντίον αὐτοῦ ποιήσῃς, καὶ ἐνωτίσῃ ταῖς ἐντολαῖς αὐτοῦ, καὶ φυλάξῃς πάντα τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, πᾶσαν νόσον, ἣν ἐπήγαγον τοῖς Αἰγυπτίοις, οὐκ ἐπάξω ἐπὶ σέ· ἐγὼ γάρ εἰμι Κύριος ὁ Θεός σου ὁ ἰώμενός σε. Καὶ ἦλθοσαν εἰς Αἰλείμ· καὶ ἦσαν ἐκεῖ δώδεκα πηγαὶ ὑδάτων, καὶ ἑβδομήκοντα στελέχη φοινίκων· παρενέβαλον δὲ ἐκεῖ παρὰ τὰ ὕδατα.

# 16

Ἀπῆραν δὲ ἐξ Αἰλεὶμ, καὶ ἦλθοσαν πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ εἰς τὴν ἔρημον Σὶν, ὅ ἐστιν ἀνὰ μέσον Αἰλεὶμ, καὶ ἀνὰ μέσον Σινά. τῇ δὲ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ, τῷ μηνὶ τῷ δευτέρῳ ἐξεληλυθότων αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, διεγόγγυζε πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπὶ Μωυσὴν καὶ Ἀαρών. Καὶ εἶπεν πρὸς αὐτοὺς οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ, ὄφελον ἀπεθάνομεν πληγέντες ὑπὸ Κυρίου ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ὅταν ἐκαθίσαμεν ἐπὶ τῶν λεβήτων τῶν κρεῶν, καὶ ἠσθίομεν ἄρτους εἰς πλησμονήν· ὅτι ἐξηγάγετε ἡμᾶς εἰς τὴν ἔρημον ταύτην, ἀποκτεῖναι πᾶσαν τὴν συναγωγὴν ταύτην ἐν λιμῷ. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἰδοὺ ἐγὼ ὕω ὑμῖν ἄρτους ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐξελεύσεται ὁ λαὸς, καὶ συλλέξουσι τὸ τῆς ἡμέρας εἰς ἡμέραν, ὅπως πειράσω αὐτοὺς εἰ πορεύσονται τῷ νόμῳ μου, ἢ οὔ· Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ, καὶ ἑτοιμάσουσιν ὃ ἐὰν εἰσενέγκωσι· καὶ ἔσται διπλοῦν ὃ ἐὰν συναγάγωσι τὸ καθ ἡμέραν εἰς ἡμέραν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν πρὸς πάσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἐσπέρας γνώσεσθε, ὅτι Κύριος ἐξήγαγεν ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ πρωῒ ὄψεσθε τὴν δόξαν Κυρίου ἐν τῷ εἰσακοῦσαι τὸν γογγυσμὸν ὑμῶν ἐπὶ τῷ Θεῷ· ἡμεῖς δὲ τί ἐσμεν, ὅτι διαγογγύζετε καθ ἡμῶν; Καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἐν τῷ διδόναι Κύριον ὑμῖν ἐσπέρας κρέα φαγεῖν, καὶ ἄρτους τὸ πρωῒ εἰς πλησμονὴν, διὰ τὸ εἰσακοῦσαι Κύριον τὸν γογγυσμὸν ὑμῶν, ὃν ὑμεῖς διαγογγύζετε καθ ἡμῶν· ἡμεῖς δὲ τί ἐσμεν; οὐ γὰρ καθ ἡμῶν ἐστιν ὁ γογγυσμὸς ὑμῶν, ἀλλ ἢ κατὰ τοῦ Θεοῦ. Εἶπε δὲ Μωυσῆς πρὸς Ἀαρὼν, εἶπον πάσῃ συναγωγῇ υἱῶν Ἰσραὴλ, προσέλθετε ἐναντίον τοῦ Θεοῦ· εἰσακήκοε γὰρ τὸν γογγυσμὸν ὑμῶν. Ἡνίκα δὲ ἐλάλει Ἀαρὼν πάσῃ συναγωγῇ υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἐπεστράφησαν εἰς τὴν ἔρημον, καὶ ἡ δόξα Κυρίου ὤφθη ἐν νεφέλῃ. καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, εἰσακήκοα τὸν γογγυσμὸν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· λάλησον πρὸς

αὐτοὺς, λέγων, τὸ πρὸς ἑσπέραν ἔδεσθε κρέα, καὶ τὸ πρωῒ πλησθήσεσθε ἄρτων· καὶ γνώσεσθε, ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν. Ἐγένετο δὲ ἑσπέρα· καὶ ἀνέβη ὀρτυγομήτρα, καὶ ἐκάλυψε τὴν παρεμβολήν· τὸ πρωῒ ἐγένετο καταπαυομένης τῆς δρόσου κύκλῳ τῆς παρεμβολῆς. Καὶ ἰδοὺ ἐπὶ πρόσωπον τῆς ἐρήμου λεπτὸν ὡσεὶ κόριον λευκὸν, ὡσεὶ πάγος ἐπὶ τῆς γῆς. Ἰδόντες δὲ αὐτὸ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, εἶπαν ἕτερος τῷ ἑτέρῳ, τί ἐστι τοῦτο; οὐ γὰρ ᾔδεισαν τί ἦν· εἶπε δὲ Μωυσῆς αὐτοῖς, οὗτος ὁ ἄρτος, ὃν ἔδωκε Κύριος ὑμῖν φαγεῖν. Τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ συνέταξε Κύριος· συναγάγετε ἀπ αὐτοῦ ἕκαστος εἰς τοὺς καθήκοντας γομὸρ, κατὰ κεφαλὴν κατὰ ἀριθμὸν ψυχῶν ὑμῶν, ἕκαστος σὺν τοῖς συσκηνίοις ὑμῶν συλλέξατε. Ἐποίησαν δὲ οὕτως οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ συνέλεξαν ὁ τὸ πολὺ καὶ ὁ τὸ ἔλαττον. Καὶ μετρήσαντες γομὸρ, οὐκ ἐπλεόνασεν ὁ τὸ πόλυ, καὶ ὁ τὸ ἔλαττον οὐκ ἠλαττόνησεν· ἕκαστος εἰς τοὺς καθήκοντας παρ ἑαυτῷ συνέλεξαν. Εἶπε δὲ Μωυσῆς πρὸς αὐτοὺς, μηδεὶς καταλειπέτω ἀπ αὐτοῦ εἰς τὸ πρωῒ. Καὶ οὐκ εἰσήκουσαν Μωυσῆ, ἀλλὰ κατέλιπόν τινες ἀπ αὐτοῦ εἰς τὸ πρωῒ· καὶ ἐξέζεσε σκώληκας, καὶ ἐπώζεσε· καὶ ἐπικράνθη ἐπ αὐτοῖς Μωυσῆς. Καὶ συνέλεξαν αὐτὸ πρωῒ πρωῒ, ἕκαστος τὸ καθῆκον αὐτῷ· ἡνίκα δὲ διεθέρμαινεν ὁ ἥλιος, ἐτήκετο. Ἐγένετο δὲ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ, συνέλεξαν τὰ δέοντα διπλᾶ, δύο γομὸρ τῷ ἑνί· εἰσήλθοσαν δὲ πάντες οἱ ἄρχοντες τῆς συναγωγῆς, καὶ ἀνήγγειλαν Μωυσῇ. Εἶπε δὲ Μωυσῆς πρὸς αὐτούς, οὐ τοῦτο τὸ ῥῆμά ἐστιν ὃ ἐλάλησε Κύριος; σάββατα ἀνάπαυσις ἁγία τῷ Κυρίῳ αὔριον· ὅσα ἐὰν πέσσητε, πέσσετε· καὶ ὅσα ἐὰν ἕψητε, ἕψετε· καὶ πᾶν τὸ πλεονάζον καταλείπετε αὐτὸ εἰς ἀποθήκην εἰς τὸ πρωῒ. Καὶ κατελίποσαν ἀπ αὐτοῦ εἰς ἕως πρωῒ, καθὼς συνέταξεν αὐτοῖς Μωυσῆς· καὶ οὐκ ἐπώζεσεν, οὐδὲ σκώληξ ἐγένετο ἐν αὐτῷ. Εἶπε δὲ Μωυσῆς, φάγετε σήμερον· ἔστι γὰρ

σάββατα αήμερον τῷ Κυρίῳ· οὐχ εὑρεθήσεται ἐν τῷ πεδίῳ. Ἓξ ἡμέρας συλλέξετε· τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ σάββατα, ὅτι οὐκ ἔσται ἐν αὐτῇ. Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἐξῆθλοσάν τινες ἐκ τοῦ λαοῦ συλλέξαι, καὶ οὐχ εὗρον. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἕως τίνος οὐ βούλεσθε εἰσακούειν τὰς ἐντολάς μου, καὶ τὸν νόμον μου; Ἴδετε, ὁ γὰρ Κύριος ἔδωκεν ὑμῖν σάββατα τὴν ἡμέραν ταύτην· διὰ τοῦτο αὐτὸς ἔδωκεν ὑμῖν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ ἄρτους δύο ἡμερῶν· καθίσεσθε ἕκαστος εἰς τοὺς οἴκους ὑμῶν· μηδεὶς ἐκπορευέσθω ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ. Καὶ ἐσαββάτισεν ὁ λαὸς τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ. Καὶ ἐπωνόμασαν αὐτὸ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Μάν· ἦν δὲ ὡσεὶ σπέρμα κορίου λευκόν· τὸ δὲ γεῦμα αὐτοῦ ὡς ἐγκρὶς ἐν μέλιτι. Εἶπε δὲ Μωυσῆς, τοῦτο τὸ ῥῆμα, ὃ συνέταξε Κύριος, πλήσατε τὸ γομὸρ τοῦ μὰν, εἰς ἀποθήκην εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν· ἵνα ἴδωσι τὸν ἄρτον, ὃν ἐφάγετε ὑμεῖς ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὡς ἐξήγαγεν ὑμᾶς Κύριος ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Ἀαρὼν, λάβε στάμνον χρυσοῦν ἕνα, καὶ ἔμβαλε εἰς αὐτὸν πλῆρες τὸ γομὸρ τοῦ μὰν, καὶ ἀποθήσεις αὐτὸ ἐναντίον τοῦ Θεοῦ, εἰς διατήρησιν εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· καὶ ἀπέθηκεν Ἀαρὼν ἐναντίον τοῦ μαρτυρίου εἰς διατήρησιν. Οἱ δὲ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἔφαγον τὸ μὰν ἔτη τεσσαράκοντα, ἕως ἦλθον εἰς τὴν οἰκουμένην ἐφάγοσαν τὸ μὰν, ἕως παρεγένοντο εἰς μέρος τῆς Φοινίκης. Τὸ δὲ γομὸρ τὸ δέκατον τῶν τριῶν μέτρων ἦν.

# 17

Καὶ ἀπῆρε πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ ἐκ τῆς ἐρήμου Σὶν κατὰ

παρεμβολὰς αὐτῶν, διὰ ῥήματος Κυρίου· καὶ παρενεβάλοσαν ἐν Ῥαφιδείν· οὐκ ἦν δὲ ὕδωρ τῷ λαῷ πιεῖν. Καὶ ἐλοιδορεῖτο ὁ λαὸς πρὸς Μωυσῆν, λέγοντες, δὸς ἡμῖν ὕδωρ, ἵνα πίωμεν· καὶ εἶπεν αὐτοῖς Μωυσῆς, τί λοιδορεῖσθέ μοι, καὶ τί πειράζετε Κύριον; Ἐδίψησε δὲ ἐκεῖ ὁ λαὸς ὕδατι· καὶ διεγόγγυσεν ἐκεῖ ὁ λαὸς πρὸς Μωυσῆν, λέγοντες, ἱνατί τοῦτο; ἀνεβίβασας ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου ἀποκτεῖναι ἡμᾶς καὶ τὰ τέκνα ἡμῶν καὶ τὰ κτήνη τῷ δίψει; Ἐβόησε δὲ Μωυσῆς πρὸς Κύριον, λέγων, τί ποιήσω τῷ λαῷ τούτῳ; ἔτι μικρὸν, καὶ καταλιθοβολήσουσί με. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, προπορεύου τοῦ λαοῦ τούτου· λάβε δὲ σεαυτῷ ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ· καὶ τὴν ῥάβδον, ἐν ᾗ ἐπάταξας τὸν ποταμὸν, λάβε ἐν τῇ χειρί σου, καὶ πορεύσῃ. Ὅδε ἐγὼ ἕστηκα ἐκεῖ πρὸ τοῦ σὲ ἐπὶ τῆς πέτρας ἐν Χωρήβ· καὶ πατάξεις τὴν πέτραν, καὶ ἐξελεύσεται ἐξ αὐτῆς ὕδωρ, καὶ πίεται ὁ λαός. Ἐποίησε δὲ Μωυσῆς οὕτως ἐναντίον τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Πειρασμὸς, καὶ Λοιδόρησις, διὰ τὴν λοιδορίαν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ διὰ τὸ πειράζειν Κύριον, λέγοντας, εἰ ἔστι Κύριος ἐν ἡμῖν, ἢ οὔ; Ἦλθε δὲ Ἀμαλὴκ καὶ ἐπολέμει Ἰσραὴλ ἐν Ῥαφιδείν. Εἶπε δὲ Μωυσῆς τῷ Ἰησοῖ, Ἐπίλεξον σεαυτῷ ἄνδρας δυνατοὺς, καὶ ἐξελθὼν παράταξαι τῷ Ἀμαλὴκ αὔριον· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἕστηκα ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ βουνοῦ, καὶ ἡ ῥάβδος τοῦ Θεοῦ ἐν τῇ χειρί μου. Καὶ ἐποίησεν Ἰησοῦς καθάπερ εἶπεν αὐτῷ Μωυσῆς, καὶ ἐξελθὼν παρετάξατο τῷ Ἀμαλήκ· καὶ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ Ὢρ ἀνέβησαν ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ βουνοῦ. Καὶ ἐγένετο ὅταν ἐπῇρε Μωυσῆς τὰς χεῖρας, κατίσχυεν Ἰσραήλ· ὅταν δὲ καθῆκε τὰς χεῖρας, κατίσχυεν Ἀμαλήκ. Αἱ δὲ χεῖρες Μωυσῆ βαρεῖαι· καὶ λαβόντες λίθον ὑπέθηκαν ὑπ αὐτὸν, καὶ ἐκάθητο ἐπ αὐτοῦ· καὶ Ἀαρὼν καὶ Ὢρ ἐστήριζον τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐντεῦθεν εἷς, καὶ ἐντεῦθεν εἷς· καὶ

ἐγένοντο αἱ χεῖρες Μωυσῆ ἐστηριγμέναι ἕως δυσμῶν ἡλίου. Καὶ ἐτρέψατο Ἰησοῦς τὸν Ἀμαλὴκ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν φόνῳ μαχαίρας. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, Κατάγραψον τοῦτο εἰς μνημόσυνον εἰς βιβλίον, καὶ δὸς εἰς τὰ ὦτα Ἰησοῦ· ὅτι ἀλοιφῇ ἐξαλείψω τὸ μνημόσυνον Ἀμαλὴκ ἐκ τῆς ὑπὸ τὸν οὐρανόν. Καὶ ᾠκοδόμησε Μωυσῆς θυσιαστήριον Κυρίῳ· καὶ ἐπωνόμασε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Κύριος καταφυγή μου. Ὅτι ἐν χειρὶ κρυφαίᾳ πολεμεῖ Κύριος ἐπὶ Ἀμαλὴκ ἀπὸ γενεῶν εἰς γενεάς.

# 18

Ἤκουσε δὲ Ἰοθὸρ ἱερεὺς Μαδιὰμ ὁ γαμβρὸς Μωυσῆ πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος Ἰσραὴλ τῷ ἑαυτοῦ λαῷ· ἐξήγαγε γὰρ Κύριος τὸν Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου. Ἔλαβε δὲ Ἰοθὸρ ὁ γαμβρὸς Μωυσῆ Σεπφώραν τὴν γυναῖκα Μωυσῆ μετὰ τὴν ἄφεσιν αὐτῆς, καὶ τοὺς δύο υἱοὺς αὐτῆς· ὄνομα τῷ ἑνὶ αὐτῶν Γηρσάμ, λέγων, πάροικος ἤμην ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ· καὶ τὸ ὄνομα τοῦ δευτέρου Ἐλίεζερ, λέγων, ὁ γὰρ Θεὸς τοῦ πατρός μου βοηθός μου, καὶ ἐξείλατό με ἐκ χειρὸς Φαραώ. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰοθὸρ ὁ γαμβρὸς Μωυσῆ καὶ οἱ υἱοὶ καὶ ἡ γυνὴ πρὸς Μωυσῆν εἰς τὴν ἔρημον, οὗ παρενέβαλεν ἐπ ὄρους τοῦ Θεοῦ. Ἀνηγγέλη δὲ Μωυσῇ, λέγοντες, ἰδοὺ ὁ γαμβρός σου Ἰοθὸρ παραγίνεται πρὸς σέ, καὶ ἡ γυνὴ καὶ οἱ δύο υἱοί σου μετ αὐτοῦ. Ἐξῆλθε δὲ Μωυσῆς εἰς συνάντησιν τῷ γαμβρῷ, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ, καὶ ἐφίλησεν αυτὸν, καὶ ἠσπάσαντο ἀλλήλους, καὶ εἰσήγαγεν αὐτοὺς εἰς τὴν σκηνήν. Καὶ διηγήσατο Μωυσῆς τῷ γαμβρῷ πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος τῷ Φαραῷ καὶ πᾶσι τοῖς Αἰγυπτίοις ἕνεκεν τοῦ Ἰσραήλ, καὶ πάντα τὸν μόχθον τὸν

γενόμενον αὐτοῖς ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ὅτι ἐξείλατο αὐτοὺς Κύριος ἐκ χειρὸς Φαραὼ, καὶ ἐκ χειρὸς τῶν Αἰγυπτίων. Ἐξέστη δὲ Ἰοθὸρ ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἀγαθοῖς οἷς ἐποίησεν αὐτοῖς Κύριος, ὅτι ἐξείλατο αὐτοὺς ἐκ χειρὸς Αἰγυπτίων καὶ ἐκ χειρὸς Φαραώ. Καὶ εἶπεν Ἰοθὸρ, εὐλογητὸς Κύριος, ὅτι ἐξείλατο αὐτοὺς ἐκ χειρὸς Αἰγυπτίων καὶ ἐκ χειρὸς Φαραώ. Νῦν ἔγνων ὅτι μέγας Κύριος παρὰ πάντας τοὺς θεούς ἕνεκεν τούτου, ὅτι ἐπέθεντο αὐτοῖς. Καὶ ἔλαβεν Ἰοθὸρ ὁ γαμβρὸς Μωυσῆ ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας τῷ Θεῷ· παρεγένετο δὲ Ἀαρὼν καὶ πάντες οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραὴλ συμφαγεῖν ἄρτον μετὰ τοῦ γαμβροῦ Μωυσῆ, ἐναντίον τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὴν ἐπαύριον συνεκάθισε Μωυσῆς κρίνειν τὸν λαόν· παρειστήκει δὲ πᾶς ὁ λαὸς Μωυσῇ ἀπὸ πρωΐθεν ἕως δείλης. Καὶ ἰδὼν Ἰοθὸρ πάντα ὅσα ποιεῖ τῷ λαῷ, λέγει, τί τοῦτο ὃ σὺ ποιεῖς τῷ λαῷ; διατί σὺ κάθησαι μόνος, πᾶς δὲ ὁ λαὸς παρέστηκέ σοι ἀπὸ πρωΐθεν ἕως δείλης; Καὶ λέγει Μωυσῆς τῷ γαμβρῷ, Ὅτι παραγίνεται πρός με ὁ λαὸς ἐκζητῆσαι κρίσιν παρὰ τοῦ Θεοῦ. Ὅταν γὰρ γένηται αὐτοῖς ἀντιλογία, καὶ ἔλθωσι πρός με, διακρίνω ἕκαστον, καὶ συμβιβάζω αὐτοὺς τὰ προστάγματα τοῦ Θεοῦ καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ. Εἶπε δὲ ὁ γαμβρὸς Μωυσῆ πρὸς αὐτὸν, οὐκ ὀρθῶς σὺ ποιεῖς τὸ ῥῆμα τοῦτο. Φθορᾷ καταφθαρήσῃ ἀνυπομονήτῳ καὶ σὺ, καὶ πᾶς ὁ λαὸς οὗτος, ὅς ἐστι μετὰ σοῦ· βαρύ σοι τὸ ῥῆμα τοῦτο· οὐ δυνήσῃ ποιεῖν σὺ μόνος. Νῦν οὖν ἄκουσόν μου, καὶ συμβουλεύσω σοι, καὶ ἔσται ὁ Θεὸς μετὰ σοῦ· γίνου σὺ τῷ λαῷ τὰ πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ ἀνοίσεις τοὺς λόγους αὐτῶν πρὸς τὸν Θεόν. Καὶ διαμαρτύρῃ αὐτοῖς τὰ προστάγματα τοῦ Θεοῦ καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ, καὶ σημανεῖς αὐτοῖς τὰς ὁδοὺς ἐν αἷς πορεύσονται ἐν αὐταῖς, καὶ τὰ ἔργα ἃ ποιήσουσι. Καὶ σὺ σεαυτῷ σκέψαι ἀπὸ παντὸς τοῦ λαοῦ ἄνδρας δυνατοὺς, θεοσεβεῖς, ἄνδρας δικαίους, μισοῦντας ὑπερηφανίαν, καὶ

καταστήσεις ἐπ αὐτῶν χιλιάρχους καὶ ἑκατοντάρχους καὶ πεντηκοντάρχους καὶ δεκαδάρχους. Καὶ κρινοῦσι τὸν λαὸν πᾶσαν ὥραν· τὸ δὲ ῥῆμα τὸ ὑπέρογκον ἀνοίσουσιν ἐπὶ σὲ· τὰ δὲ βραχέα τῶν κριμάτων κρινοῦσιν αὐτοί· καὶ κουφιοῦσιν ἀπὸ σοῦ, καὶ συναντιλήψονταί σοι. Ἐὰν τὸ ῥῆμα τοῦτο ποιήσῃς, κατισχύσει σε ὁ Θεὸς, καὶ δυνήσῃ παραστῆναι, καὶ πᾶς ὁ λαὸς οὗτος εἰς τὸν ἑαυτοῦ τόπον μετ εἰρήνης ἥξει. Ἤκουσε δὲ Μωυσῆς τῆς φωνῆς τοῦ γαμβροῦ, καὶ ἐποίησεν ὅσα εἶπεν αὐτῷ. Καὶ ἐπέλεξε Μωυσῆς ἄνδρας δυνατοὺς ἀπὸ παντὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἐποίησεν αὐτοὺς ἐπ αὐτῶν χιλιάρχους καὶ ἑκατοντάρχους καὶ πεντηκοντάρχους καὶ δεκαδάρχους. Καὶ ἐκρίνοσαν τὸν λαὸν πᾶσαν ὥραν· πᾶν δὲ ῥῆμα ὑπέρογκον ἀνεφέροσαν ἐπὶ Μωυσῆν· πᾶν δὲ ῥῆμα ἐλαφρὸν ἐκρίνοσαν αὐτοί. Ἐξαπέστειλε δὲ Μωυσῆς τὸν ἑαυτοῦ γαμβρὸν, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ.

# 19

Τοῦ δὲ μηνὸς τοῦ τρίτου τῆς ἐξόδου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, ἦλθοσαν εἰς τὴν ἔρημον τοῦ Σινά. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥαφιδεὶν, καὶ ἦλθοσαν εἰς τὴν ἔρημον τοῦ Σινὰ, καὶ παρενέβαλεν ἐκεῖ Ἰσραὴλ κατέναντι τοῦ ὄρους. Καὶ Μωυσῆς ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος τοῦ Θεοῦ· καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν ὁ Θεὸς ἐκ τοῦ ὄρους, λέγων, τάδε ἐρεῖς τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ, καὶ ἀναγγελεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Αὐτοὶ ἑωράκατε ὅσα πεποίηκα τοῖς Αἰγυπτίοις, καὶ ἀνέλαβον ὑμᾶς ὡσεὶ ἐπὶ πτερύγων ἀετῶν, καὶ προσηγαγόμην ὑμᾶς πρὸς ἐμαυτόν. Καὶ νῦν ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσητε τῆς ἐμῆς φωνῆς, καὶ φυλάξητε τὴν διαθήκην μου, ἔσεσθέ μοι λαὸς περιούσιος ἀπὸ

πάντων τῶν ἐθνῶν· ἐμὴ γάρ ἐστι πᾶσα ἡ γῆ. Ὑμεῖς δὲ ἔσεσθέ μοι βασίλειον ἱεράτευμα καὶ ἔθνος ἅγιον· ταῦτα τὰ ῥήματα ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Ἦλθε δὲ Μωυσῆς, καὶ ἐκάλεσεν τοὺς πρεσβυτέρους τοῦ λαοῦ· καὶ παρέθηκεν αὐτοῖς πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ Θεός. Ἀπεκρίθη δὲ πᾶς ὁ λαὸς ὁμοθυμαδὸν, καὶ εἶπαν, πάντα ὅσα εἶπεν ὁ Θεὸς, ποιήσομεν καὶ ἀκουσόμεθα· ἀνήνεγκε δὲ Μωυσῆς τοὺς λόγους τούτους πρὸς τὸν Θεόν. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἰδοὺ ἐγὼ παραγίνομαι πρὸς σὲ ἐν στύλῳ νεφέλης, ἵνα ἀκούσῃ ὁ λαὸς λαλοῦντός μου πρὸς σὲ, καὶ σοὶ πιστεύσωσιν εἰς τὸν αἰῶνα· ἀνήγγειλε δὲ Μωυσῆς τὰ ῥήματα τοῦ λαοῦ πρὸς Κύριον. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, Καταβὰς διαμάρτυραι τῷ λαῷ, καὶ ἅγνισον αὐτοὺς σήμερον καὶ αὔριον, καὶ πλυνάτωσαν τὰ ἱμάτια, καὶ ἔστωσαν ἕτοιμοι εἰς τὴν ἡμέραν τὴν τρίτην· τῇ γὰρ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ καταβήσεται Κύριος ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σινὰ, ἐναντίον παντὸς τοῦ λαοῦ. Καὶ ἀφοριεῖς τὸν λαὸν κύκλῳ, λέγων, προσέχετε ἑαυτοῖς τοῦ ἀναβῆναι εἰς τὸ ὄρος, καὶ θίγειν τι αὐτοῦ· πᾶς ὁ ἁψάμενος τοῦ ὄρους, θανάτῳ τελευτήσει. Οὐχ ἅψεται αὐτοῦ χείρ· ἐν γὰρ λίθοις λιθοβοληθήσεται, ἢ βολίδι κατατοξευθήσεται· ἐάν τε κτῆνος ἐάν τε ἄνθρωπος, οὐ ζήσεται· ὅταν αἱ φωναὶ καὶ αἱ σάλπιγγες καὶ ἡ νεφέλη ἀπέλθῃ ἀπὸ τοῦ ὄρους, ἐκεῖνοι ἀναβήσονται ἐπὶ τὸ ὄρος. Κατέβη δὲ Μωυσῆς ἐκ τοῦ ὄρους πρὸς τὸν λαὸν, καὶ ἡγίασεν αὐτούς· καὶ ἔπλυναν τὰ ἱμάτια. Καὶ εἶπε τῷ λαῷ, γίνεσθε ἕτοιμοι, τρεῖς ἡμέρας μὴ προσέλθητε γυναικί. Ἐγένετο δὲ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ γενηθέντος πρὸς ὄρθρον, καὶ ἐγένοντο φωναὶ καὶ ἀστραπαὶ καὶ νεφέλη γνοφώδης ἐπ ὄρους Σινά· φωνὴ τῆς σάλπιγγος ἦχει μέγα· καὶ ἐπτοήθη πᾶς ὁ λαὸς ὁ ἐν τῇ παρεμβολῇ. Καὶ ἐξήγαγε Μωυσῆς τὸν λαὸν εἰς συνάντησιν τοῦ Θεοῦ ἐκ τῆς παρεμβολῆς· καὶ

παρέστησαν ὑπὸ τὸ ὄρος. Τὸ ὄρος τὸ Σινὰ ἐκαπνίζετο ὅλον, διὰ τὸ καταβεβηκέναι ἐπ αὐτὸ τὸν Θεὸν ἐν πυρί· καὶ ἀνέβαινεν ὁ καπνὸς, ὡσεὶ καπνὸς καμίνου· καὶ ἐξέστη πᾶς ὁ λαὸς σφόδρα. Ἐγίνοντο δὲ αἱ φωναὶ τῆς σάλπιγγος προβαίνουσαι ἰσχυρότεραι σφόδρα. Μωυσῆς ἐλάλησεν, ὁ δὲ Θεὸς ἀπεκρίνατο αὐτῷ φωνῇ. Κατέβη δὲ Κύριος ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σινὰ ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους· καὶ ἐκάλεσε Κύριος Μωυσῆν ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους· καὶ ἀνέβη Μωυσῆς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πρὸς Μωυσῆν, λέγων, καταβὰς διαμάρτυραι τῷ λαῷ, μή ποτε ἐγγίσωσι πρὸς τὸν Θεὸν κατανοῆσαι, καὶ πέσωσιν ἐξ αὐτῶν πλῆθος· Καὶ οἱ ἱερεῖς οἱ ἐγγίζοντες Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἁγιασθήτωσαν, μήποτε ἀπαλλάξῃ ἀπ αὐτῶν Κύριος. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς τὸν Θεὸν, οὐ δυνήσεται ὁ λαὸς προσαναβῆναι πρὸς τὸ ὄρος τὸ Σινά· σὺ γὰρ διαμεμαρτύρησαι ἡμῖν, λέγων, ἀφόρισαι τὸ ὄρος, καὶ ἁγίασαι αὐτό. Εἶπε δὲ αὐτῷ Κύριος, βάδιζε, κατάβηθι, καὶ ἀνάβηθι σὺ καὶ Ἀαρὼν μετὰ σοῦ· οἱ δὲ ἱερεῖς καὶ ὁ λαὸς μὴ βιαζέσθωσαν ἀναβῆναι πρὸς τὸν Θεὸν, μὴ ποτε ἀπολέσῃ ἀπ αὐτῶν Κύριος. Κατέβη δὲ Μωυσῆς πρὸς τὸν λαὸν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς.

# 20

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πάντας τοὺς λόγους τούτους, λέγων, ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ Θεός σου, ὅστις ἐξήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας. Οὐκ ἔσονταί σοι θεοὶ ἕτεροι πλὴν ἐμοῦ. Οὐ ποιήσεις σεαυτῷ εἴδωλον, οὐδὲ παντὸς ὁμοίωμα, ὅσα ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω, καὶ ὅσα ἐν τῇ γῇ κάτω, καὶ ὅσα ἐν τοῖς ὕδασιν ὑποκάτω τῆς γῆς. Οὐ προσκυνήσεις αὐτοῖς, οὐδὲ μὴ λατρεύσεις αὐτοῖς· ἐγὼ γάρ εἰμι

Κύριος ὁ Θεός σου, Θεὸς ζηλωτὴς, ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας πατέρων ἐπὶ τέκνα, ἕως τρίτης καὶ τετάρτης γενεᾶς τοῖς μισοῦσί με, καὶ ποιῶν ἔλεος εἰς χιλιάδας τοῖς ἀγαπῶσί με, καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰ προστάγματά μου. Οὐ λήψῃ τὸ ὄνομα Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐπὶ ματαίῳ· οὐ γὰρ μὴ καθαρίσῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὸν λαμβάνοντα τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶ ματαίῳ. Μνήσθητι τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων ἁγιάζειν αὐτήν. Ἓξ ἡμέρας ἐργᾷ, καὶ ποιήσεις πάντα τὰ ἔργα σου. Τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, σάββατα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· οὐ ποιήσεις ἐν αὐτῇ πᾶν ἔργον σὺ, καὶ ὁ υἱός σου, καὶ ἡ θυγάτηρ σου, ὁ παῖς σου, καὶ ἡ παιδίσκη σου, ὁ βοῦς σου, καὶ τὸ ὑποζύγιόν σου, καὶ πᾶν κτῆνός σου, καὶ ὁ προσήλυτος ὁ παροικῶν ἐν σοί. Ἐν γὰρ ἓξ ἡμέραις ἐποίησε Κύριος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θὰλασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς, καὶ κατέπαυσε τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ· διὰ τοῦτο εὐλόγησε Κύριος τὴν ἡμέραν τὴν ἑβδόμην, καὶ ἡγίασεν αὐτήν. Τίμα τὸν πατέρα σου, καὶ τὴν μητέρα σου, ἵνα εὖ σοι γένηται, καὶ ἵνα μακροχρόνιος γένῃ ἐπὶ τῆς γῆς τῆς ἀγαθῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Οὐ μοιχεύσεις. Οὐ κλέψεις. Οὐ φονεύσεις. Οὐ ψευδομαρτυρήσεις κατὰ τοῦ πλησίον σου μαρτυρίαν ψευδῆ. Οὐκ ἐπιθυμήσεις τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον σου· οὐκ ἐπιθυμήσεις τὴν οἰκίαν τοῦ πλησίον σου, οὔτε τὸν ἀγρὸν αὐτοῦ, οὔτε τὸν παῖδα αὐτοῦ, οὔτε τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, οὔτε τοῦ βοὸς αὐτοῦ, οὔτε τοῦ ὑποζυγίου αὐτοῦ, οὔτε παντὸς κτήνους αὐτοῦ, οὔτε ὅσα τῷ πλησίον σου ἐστί. Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἑώρα τὴν φωνὴν, καὶ τὰς λαμπάδας, καὶ τὴν φωνὴν τῆς σάλπιγγος, καὶ τὸ ὄρος τὸ καπνίζον· φοβηθέντες δὲ πᾶς ὁ λαὸς ἔστησαν μακρόθεν. Καὶ εἶπαν πρὸς Μωυσῆν, λάλησον σὺ ἡμῖν, καὶ μὴ λαλείτω πρὸς ἡμᾶς ὁ Θεὸς, μὴ ἀποθάνωμεν. Καὶ λέγει αὐτοῖς Μωυσῆς, θαρσεῖτε· ἕνεκεν γὰρ τοῦ πειράσαι ὑμᾶς παρεγενήθη ὁ Θεὸς πρὸς ὑμᾶς, ὅπως ἂν

γένηται ὁ φόβος αὐτοῦ ἐν ὑμῖν, ἵνα μὴ ἁμαρτάνητε. Εἱστήκει δὲ ὁ λαὸς μακρόθεν, Μωυσῆς δὲ εἰσῆλθεν εἰς τὸν γνόφον, οὗ ἦν ὁ Θεός. Εἶπε δὲ Κύριος πρὸς Μωυσῆν, τάδε ἐρεῖς τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ, καὶ ἀναγγελεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· ὑμεῖς ἑωράκατε, ὅτι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ λελάληκα πρὸς ὑμᾶς. Οὐ ποιήσετε ὑμῖν αὐτοῖς θεοὺς ἀργυροῦς, καὶ θεοὺς χρυσοῦς οὐ ποιήσετε ὑμῖν αὐτοῖς. Θυσιαστήριον ἐκ γῆς ποιήσετέ μοι, καὶ θύσετε ἐπ αὐτοῦ τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν, καὶ τὰ σωτήρια ὑμῶν, καὶ τὰ πρόβατα, καὶ τοὺς μόσχους ὑμῶν ἐν παντὶ τόπῳ, οὗ ἐὰν ἐπονομάσω τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ, καὶ ἥξω πρὸς σὲ, καὶ εὐλογήσω σε. Ἐὰν δὲ θυσιαστήριον ἐκ λίθων ποιῇς μοι, οὐκ οἰκοδομήσεις αὐτοὺς τμητούς· τὸ γὰρ ἐγχειρίδιόν σου ἐπιβέβληκας ἐπ αὐτοὺς, καὶ μεμίανται. Οὐκ ἀναβήσῃ ἐν ἀναβαθμίσιν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν μου, ὅπως ἂν μὴ ἀποκαλύψῃς τὴν ἀσχημοσύνην σου ἐπ αὐτοῦ.

# 21

Καὶ ταῦτα τὰ δικαιώματα, ἃ παραθήσῃ ἐνώπιον αὐτῶν. Ἐὰν κτήσῃ παῖδα Ἑβραῖον, ἓξ ἔτη δουλεύσει σοι· τῷ δὲ ἑβδόμῳ ἔτει ἀπελεύσεται ἐλεύθερος δωρεάν. Ἐὰν αὐτὸς μόνος εἰσέλθῃ, καὶ μόνος ἐξελεύσεται· ἐὰν δὲ γυνὴ συνεισέλθῃ μετ αὐτοῦ, ἐξελεύσεται καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ. Καὶ ἐὰν δὲ ὁ κύριος δῷ αὐτῷ γυναῖκα, καὶ τέκῃ αὐτῷ υἱοὺς ἢ θυγατέρας, ἡ γυνὴ καὶ τὰ παιδία ἔσται τῷ κυρίῳ αὐτοῦ, αὐτὸς δὲ μόνος ἐξελεύσεται. Ἐὰν δὲ ἀποκριθεὶς εἴπῃ ὁ παῖς, ἠγάπηκα τὸν κύριόν μου, καὶ τὴν γυναῖκα, καὶ τὰ παιδία, οὐκ ἀποτρέχω ἐλεύθερος· προσάξει αὐτὸν ὁ κύριος αὐτοῦ πρὸς τὸ κριτήριον τοῦ Θεοῦ, καὶ τότε προσάξει αὐτὸν ἐπὶ τὴν θύραν ἐπὶ τὸν

σταθμὸν, καὶ τρυπήσει ὁ κύριος αὐτοῦ τὸ οὖς τῷ ὀπητίῳ, καὶ δουλεύσει αὐτῷ εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐὰν δέ τις ἀποδῶται τὴν ἑαυτοῦ θυγατέρα οἰκέτιν, οὐκ ἀπελεύσεται, ὥσπερ ἀποτρέχουσιν αἱ δοῦλαι. Ἐὰν μὴ εὐαρεστήσῃ τῷ κυρίῳ αὐτῆς, ἢ αὐτῷ καθωμολογήσατο, ἀπολυτρώσει αὐτήν· ἔθνει δὲ ἀλλοτρίῳ οὐ κύριός ἐστι πωλεῖν αὐτὴν, ὅτι ἠθέτησεν ἐν αὐτῇ. Ἐὰν δὲ τῷ υἱῷ καθομολογήσηται αὐτὴν, κατὰ τὸ δικαίωμα τῶν θυγατέρων ποιήσει αὐτῇ. Ἐὰν δὲ ἄλλην λάβῃ ἑαυτῷ, τὰ δέοντα καὶ τὸν ἱματισμὸν καὶ τὴν ὁμιλίαν αὐτῆς οὐκ ἀποστερήσει. Ἐὰν δὲ τὰ τρία ταῦτα μὴ ποιήσῃ αὐτῇ, ἐξελεύσεται δωρεὰν ἄνευ ἀργυρίου. Ἐὰν δὲ πατάξῃ τις τινὰ, καὶ ἀποθάνῃ, θανάτῳ θανατούσθω. Ὁ δὲ οὐχ ἑκὼν, ἀλλὰ ὁ Θεὸς παρέδωκεν εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, δώσω σοι τόπον οὗ φεύξεται ἐκεῖ ὁ φονεύσας. Ἐὰν δέ τις ἐπιθῆται τῷ πλησίον ἀποκτεῖναι αὐτὸν δόλῳ, καὶ καταφύγῃ, ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου μου λήψῃ αὐτὸν θανατῶσαι. Ὃς τύπτει πατέρα αὐτοῦ ἢ μητέρα αὐτοῦ, θανάτῳ θανατούσθω. Ὁ κακολογῶν πατέρα αὐτοῦ ἢ μητέρα αὐτοῦ, τελευτήσει θανάτῳ. Ὃς ἐὰν κλέψῃ τις τινὰ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ καταδυναστεύσας αὐτὸν ἀποδῶται, καὶ εὑρεθῇ ἐν αὐτῷ, θανάτῳ τελευτάτω. Ἐὰν δὲ λοιδορῶνται δύο ἄνδρες, καὶ πατάξωσι τὸν πλησίον λίθῳ ἢ πυγμῇ, καὶ μὴ ἀποθάνῃ, κατακλιθῇ δὲ ἐπὶ τὴν κοίτην, ἐὰν ἐξαναστὰς ὁ ἄνθρωπος περιπατήσῃ ἔξω ἐπὶ ῥάβδου, ἀθῶος ἔσται ὁ πατάξας· πλὴν τῆς ἀργείας αὐτοῦ ἀποτίσει, καὶ τὰ ἰατρεῖα. Ἐὰν δέ τις πατάξῃ τὸν παῖδα αὐτοῦ ἢ τὴν παιδίσκην αὐτοῦ ἐν ῥάβδῳ, καὶ ἀποθάνῃ ὑπὸ τὰς χεῖρας αὐτοῦ, δίκῃ ἐκδικηθήσεται. Ἐὰν δὲ διαβιώσῃ ἡμέραν μίαν ἢ δύο, οὐκ ἐκδικηθήτω· τὸ γὰρ ἀργύριον αὐτοῦ ἐστιν. Ἐὰν δὲ μάχωνται δύο ἄνδρες, καὶ πατάξωσι γυναῖκα ἐν γαστρὶ ἔχουσαν, καὶ ἐξέλθῃ τὸ παιδίον αὐτῆς μὴ ἐξεικονισμένον, ἐπιζήμιον

ζημιωθήσεται· καθότι ἂν ἐπιβάλῃ ὁ ἀνὴρ τῆς γυναικὸς, δώσει μετὰ ἀξιώματος. Ἐὰν δὲ ἐξεικονισμένον ᾖ, δώσει ψυχὴν ἀντὶ ψυχῆς, Ὀφθαλμὸν ἀντὶ ὀφθαλμοῦ, ὀδόντα ἀντὶ ὀδόντος, χεῖρα ἀντὶ χειρὸς, πόδα ἀντὶ ποδὸς, κατάκαυμα ἀντὶ κατακαύματος, τραῦμα ἀντὶ τραύματος, μώλωπα ἀντὶ μώλωπος. Ἐὰν δέ τις πατάξῃ τὸν ὀφθαλμὸν τοῦ οἰκέτου αὐτοῦ, ἢ τὸν ὀφθαλμὸν τῆς θεραπαίνης αὐτοῦ, καὶ ἐκτυφλώσῃ, ἐλευθέρους ἐξαποστελεῖ αὐτοὺς ἀντὶ τοῦ ὀφθαλμοῦ αὐτῶν. Ἐὰν δὲ τὸν ὀδόντα τοῦ οἰκέτου, ἢ τὸν ὀδόντα τῆς θεραπαίνης αὐτοῦ ἐκκόψῃ, ἐλευθέρους ἐξαποστελεῖ αὐτοὺς ἀντὶ τοῦ ὀδόντος αὐτῶν. Ἐὰν δὲ κερατίσῃ ταῦρος ἄνδρα ἢ γυναῖκα καὶ ἀποθάνῃ, λίθοις λιθοβοληθήσεται ὁ ταῦρος, καὶ οὐ βρωθήσεται τὰ κρέα αὐτοῦ· ὁ δὲ κύριος τοῦ ταύρου ἀθῶος ἔσται. Ἐὰν δὲ ὁ ταῦρος κερατιστὴς ᾖ πρὸ τῆς χθὲς καὶ πρὸ τῆς τρίτης, καὶ διαμαρτύρωνται τῷ κυρίῳ αὐτοῦ, καὶ μὴ ἀφανίσῃ αὐτὸν, ἀνέλῃ δὲ ἄνδρα ἢ γυναῖκα, ὁ ταῦρος λιθοβοληθήσεται, καὶ ὁ κύριος αὐτοῦ προσαποθανεῖται. Ἐὰν δὲ λύτρα ἐπιβληθῇ αὐτῷ, δώσει λύτρα τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ὅσα ἐὰν ἐπιβάλωσιν αὐτῷ. Ἐὰν δὲ υἱὸν ἢ θυγατέρα κερατίσῃ, κατὰ τὸ δικαίωμα τοῦτο ποιήσωσιν αὐτῷ. Ἐὰν δὲ παῖδα κερατίσῃ ὁ ταῦρος ἢ παιδίσκην, ἀργυρίου τριάκοντα δίδραχμα δώσει τῷ κυρίῳ αὐτῶν, καὶ ὁ ταῦρος λιθοβοληθήσεται. Ἐὰν δέ τις ἀνοίξῃ λάκκον ἢ λατομήσῃ λάκκον, καὶ μὴ καλύψῃ αὐτὸν, καὶ ἐμπέσῃ ἐκεῖ μόσχος ἢ ὄνος, ὁ κύριος τοῦ λάκκου ἀποτίσει, ἀργύριον δώσει τῷ κυρίῳ αὐτῶν· τὸ δὲ τετελευτηκὸς αὐτῷ ἔσται. Ἐὰν δὲ κερατίσῃ τινὸς ταῦρος τόν ταῦρον τοῦ πλησίον, καὶ τελευτήσῃ, ἀποδώσονται τὸν ταῦρον τὸν ζῶντα, καὶ διελοῦνται τὸ ἀργύριον αὐτοῦ, καὶ τὸν ταῦρον τὸν τεθνηκότα διελοῦνται. Ἐὰν δὲ γνωρίζηται ὁ ταῦρος ὅτι κερατιστής ἐστι πρὸ τῆς χθὲς καὶ πρὸ τῆς τρίτης ἡμέρας, καὶ διαμεμαρτυρημένοι ὦσι

τῷ κυρίῳ αὐτοῦ· καὶ μὴ ἀφανίσῃ αὐτὸν, ἀποτίσει ταῦρον ἀντὶ ταύρου, ὁ δὲ τετελευτηκὼς αὐτῷ ἔσται. Ἐὰν δέ τις κλέψῃ μόσχον ἢ πρόβατον, καὶ σφάξῃ ἢ ἀποδῶται, πέντε μόσχους ἀποτίσει ἀντὶ τοῦ μόσχου, καὶ τέσσερα πρόβατα ἀντὶ τοῦ προβάτου.

# 22

Ἐὰν δὲ ἐν τῷ διορύγματι εὑρεθῇ ὁ κλέπτης, καὶ πληγεὶς ἀποθάνῃ, οὐκ ἔστιν αὐτῷ φόνος. Ἐὰν δὲ ἀνατείλῃ ὁ ἥλιος ἐπ αὐτῷ, ἔνοχός ἐστιν, ἀνταποθανεῖται· ἐὰν δὲ μὴ ὑπάρχῃ αὐτῷ, πραθήτω ἀντὶ τοῦ κλέμματος. Ἐὰν δὲ καταλειφθῇ καὶ εὑρεθῇ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ τὸ κλέμμα ἀπό τε ὄνου ἕως προβάτου ζῶντα, διπλᾶ αὐτὰ ἀποτίσει. Ἐὰν δὲ καταβοσκήσῃ τις ἀγρὸν ἢ ἀμπελῶνα, καὶ ἀφῇ τὸ κτῆνος αὐτοῦ καταβοσκῆσαι ἀγρὸν ἕτερον, ἀποτίσει ἐκ τοῦ ἀγροῦ αὐτοῦ κατὰ τὸ γέννημα αὐτοῦ· ἐὰν δὲ πάντα τὸν ἀγρὸν καταβοσκήσῃ, τὰ βέλτιστα τοῦ ἀγροῦ αὐτοῦ καὶ τὰ βέλτιστα τοῦ ἀμπελῶνος αὐτοῦ ἀποτίσει. Ἐὰν δὲ ἐξελθὸν πῦρ εὕρῃ ἀκάνθας, καὶ προσεμπρήσῃ ἅλωνας ἢ στάχυς ἢ πεδίον, ἀποτίσει ὁ τὸ πῦρ ἐκκαύσας. Ἐὰν δέ τις δῷ τῷ πλησίον ἀργύριον ἢ σκεύη φυλάξαι, καὶ κλαπῇ ἐκ τῆς οἰκίας τοῦ ἀνθρώπου, ἐὰν εὑρεθῇ ὁ κλέψας, ἀποτίσει τὸ διπλοῦν. Ἐὰν δὲ μὴ εὑρεθῇ ὁ κλέψας, προσελεύσεται ὁ κύριος τῆς οἰκίας ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, καὶ ὀμεῖται ἦ μὴν μὴ αὐτὸν πεπονηρεῦσθαι ἐφ ὅλης τῆς παρακαταθήκης τοῦ πλησίον, κατὰ πᾶν ῥητὸν ἀδίκημα, περί τε μόσχου, καὶ ὑποζυγίου, καὶ προβάτου, καὶ ἱματίου, καὶ πάσης ἀπωλίας τῆς ἐνκαλουμένης· ὅ, τι οὖν ἂν ᾖ, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐλεύσεται ἡ κρίσις ἀμφοτέρων, καὶ ὁ ἁλοὺς διὰ τοῦ Θεοῦ, ἀποτίσει διπλοῦν τῷ πλησίον. Ἐὰν δέ τις δῷ τῷ πλησίον ὑποζύγιον ἢ

μόσχον ἢ πρόβατον ἢ πᾶν κτῆνος φυλάξαι, καὶ συντριβῇ ἢ τελευτήσῃ ἢ αἰχμάλωτον γένηται, καὶ μηδεὶς γνῷ, ὅρκος ἔσται τοῦ Θεοῦ ἀνὰ μέσον ἀμφοτέρων, ἦ μὴν μὴ αὐτὸν πεπονηρεῦσθαι καθόλου τῆς παρακαταθήκης τοῦ πλησίον· καὶ οὕτως προσδέξεται ὁ κύριος αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἀποτίσει. Ἐὰν δὲ κλαπῇ παρ αὐτοῦ, ἀποτίσει τῷ κυρίῳ· Ἐὰν δὲ θηριάλωτον γένηται, ἄξει αὐτὸν ἐπὶ τὴν θήραν, καὶ οὐκ ἀποτίσει. Ἐὰν δὲ αἰτήσῃ τις παρὰ τοῦ πλησίον, καὶ συντριβῇ ἢ ἀποθάνῃ ἢ αἰχμάλωτον γένηται, ὁ δὲ κύριος μὴ ᾖ μετ αὐτοῦ, ἀποτίσει. Ἐὰν δὲ ὁ κύριος ᾖ μετ αὐτοῦ, οὐκ ἀποτίσει· ἐὰν δὲ μισθωτὸς ᾖ, ἔσται αὐτῷ ἀντὶ τοῦ μισθοῦ αὐτοῦ. Ἐὰν δὲ ἀπατήσῃ τις παρθένον ἀμνήστευτον, καὶ κοιμηθῇ μετ αὐτῆς, φερνῇ φερνιεῖ αὐτὴν αὐτῷ γυναῖκα. Ἐὰν δὲ ἀνανεύων ἀνανεύσῃ, καὶ μὴ βούληται ὁ πατὴρ αὐτῆς δοῦναι αὐτὴν αὐτῷ γυναῖκα, ἀργύριον ἀποτίσει τῷ πατρὶ καθ ὅσον ἐστὶν ἡ φερνὴ τῶν παρθένων. Φαρμακοὺς οὐ περιποιήσετε. Πᾶν κοιμώμενον μετὰ κτήνους θανάτῳ ἀποκτενεῖτε αὐτούς. Ὁ θυσιάζων θεοῖς θανάτῳ ἐξολοθρευθήσεται, πλὴν Κυρίῳ μόνῳ. Καὶ προσήλυτον οὐ κακώσετε, οὐδὲ μὴ θλίψητε αὐτόν· ἦτε γάρ προσήλυτοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Πᾶσαν χήραν καὶ ὀρφανὸν οὐ κακώσετε. Ἐὰν δὲ κακίᾳ κακώσητε αὐτοὺς, καὶ κεκράξαντες καταβοήσωσι πρός με, ἀκοῇ εἰσακούσομαι τῆς φωνῆς αὐτῶν, καὶ ὀργισθήσομαι θυμῷ, καὶ ἀποκτενῶ ὑμᾶς μαχαίρᾳ, καὶ ἔσονται αἱ γυναῖκες ὑμῶν χῆραι, καὶ τὰ παιδία ὑμῶν ὀρφανά. Ἐὰν δὲ ἀργύριον ἐκδανείσῃς τῷ ἀδελφῷ τῷ πενιχρῷ παρὰ σοὶ, οὐκ ἔσῃ αὐτὸν κατεπείγων, οὐκ ἐπιθήσεις αὐτῷ τόκον. Ἐὰν δὲ ἐνεχύρασμα ἐνεχυράσῃς τὸ ἱμάτιον τοῦ πλησίον, πρὸ δυσμῶν ἡλίου ἀποδώσεις αὐτῷ· Ἔστι γὰρ τοῦτο περιβόλαιον αὐτοῦ, μόνον τοῦτο τὸ ἱμάτιον ἀσχημοσύνης αὐτοῦ· ἐν τίνι κοιμηθήσεται; Ἐὰν οὖν καταβοήσῃ πρός μέ, εἰσακούσομαι

αὐτοῦ· ἐλεήμων γάρ εἰμι. Θεοὺς οὐ κακολογήσεις, καὶ ἄρχοντα τοῦ λαοῦ σου οὐ κακῶς ἐρεῖς. Ἀπαρχὰς ἅλωνος καὶ ληνοῦ σου οὐ καθυστερήσεις· τὰ πρωτότοκα τῶν υἱῶν σου δώσεις ἐμοί. Οὕτω ποιήσεις τὸν μόσχον σου καὶ τὸ πρόβατόν σου καὶ τὸ ὑποζύγιόν σου· ἑπτὰ ἡμέρας ἔσται ὑπὸ τὴν μητέρα, τῇ δὲ ὀγδόῃ ἡμέρᾳ ἀποδώσεις μοι αὐτό. Καὶ ἄνδρες ἅγιοι ἔσεσθέ μοι· καὶ κρέας θηριάλωτον οὐκ ἔδεσθε, τῷ κυνὶ ἀπορρίψατε αὐτό.

# 23

Οὐ παραδέξῃ ἀκοὴν ματαίαν· οὐ συγκαταθήσῃ μετὰ τοῦ ἀδίκου γενέσθαι μάρτυς ἄδικος. Οὐκ ἔσῃ μετὰ πλειόνων ἐπὶ κακίᾳ· οὐ προστεθήσῃ μετὰ πλήθους ἐκκλῖναι μετὰ τῶν πλειόνων, ὥστε ἐκκλεῖσαι κρίσιν. Καὶ πένητα οὐκ ἐλεήσεις ἐν κρίσει. Ἐὰν δὲ συναντήσῃς τῷ βοῒ τοῦ ἐχθροῦ σου, ἢ τῷ ὑποζυγίῳ αὐτοῦ πλανωμένοις, ἀποστρέψας ἀποδώσεις αὐτῷ. Ἐὰν δὲ ἴδῃς τὸ ὑποζύγιον τοῦ ἐχθροῦ σου πεπτωκὸς ὑπὸ τὸν γόμον αὐτοῦ, οὐ παρελεύσῃ αὐτό, ἀλλὰ συναρεῖς αὐτὸ μετ αὐτοῦ. Οὐ διαστρέψεις κρίμα πένητος ἐν κρίσει αὐτοῦ. Ἀπὸ παντὸς ῥήματος ἀδίκου ἀποστήσῃ· ἀθῷον καὶ δίκαιον οὐκ ἀποκτενεῖς· καὶ οὐ δικαιώσεις τὸν ἀσεβῆ ἕνεκεν δώρων. Καὶ δῶρα οὐ λήψῃ· τὰ γὰρ δῶρα ἐκτυφλοῖ ὀφθαλμοὺς βλεπόντων, καὶ λυμαῖνεται ῥήματα δίκαια. Καὶ προσήλυτον οὐ θλίψετε· ὑμεῖς γὰρ οἴδατε τὴν ψυχὴν τοῦ προσηλύτου· αὐτοὶ γὰρ προσήλυτοι ἦτε ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Ἓξ ἔτη σπερεῖς τὴν γῆν σου, καὶ συνάξεις τὰ γεννήματα αὐτῆς. Τῷ δὲ ἑβδόμῳ ἄφεσιν ποιήσεις, καὶ ἀνήσεις αὐτὴν, καὶ ἔδονται οἱ πτωχοὶ τοῦ ἔθνους σου· τὰ δὲ ὑπολειπόμενα ἔδεται τὰ ἄγρια θηρία· οὕτως

ποιήσεις τὸν ἀμπελῶνά σου, καὶ τὸν ἐλαιῶνά σου. Ἓξ ἡμέρας ποιήσεις τὰ ἔργα σου, τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, ἀνάπαυσις· ἵνα ἀναπαύσηται ὁ βοῦς σου, καὶ τὸ ὑποζύγιόν σου, καὶ ἵνα ἀναψύξῃ ὁ υἱὸς τῆς παιδίσκης σου καὶ ὁ προσήλυτος. Πάντα ὅσα εἴρηκα πρὸς ὑμᾶς, φυλάξασθε· καὶ ὄνομα θεῶν ἑτέρων οὐκ ἀναμνησθήσεσθε, οὐδὲ μὴ ἀκουσθῇ ἐκ τοῦ στόματος ὑμῶν. Τρεῖς καιροὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ἑορτάσατέ μοι. Τὴν ἑορτὴν τῶν ἀζύμων φυλάξασθε ποιεῖν· ἑπτὰ ἡμέρας ἔδεσθε ἄζυμα, καθάπερ ἐνετειλάμην σοι κατὰ τὸν καιρὸν τοῦ μηνὸς τῶν νέων· ἐν γὰρ αὐτῷ ἐξῆλθες ἐξ Αἰγύπτου· οὐκ ὀφθήσῃ ἐνώπίον μου κενός. Καὶ ἑορτὴν θερισμοῦ πρωτογεννημάτων ποιήσεις τῶν ἔργων σου, ὧν ἐὰν σπείρῃς ἐν τῷ ἀγρῷ σου, καὶ ἑορτὴν συντελείας ἐπ ἐξόδου τοῦ ἐνιαυτοῦ ἐν τῇ συναγωγῇ τῶν ἔργων σου τῶν ἐκ τοῦ ἀγροῦ σου. Τρεῖς καιροὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ὀφθήσεται πᾶν ἀρσενικόν σου ἐνώπιον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Ὅταν γὰρ ἐκβάλω τὰ ἔθνη ἀπὸ προσώπου σου, καὶ ἐμπλατύνω τὰ ὅριά σου, οὐ θύσεις ἐπὶ ζύμῃ αἷμα θυμιάματός μου, οὐδὲ μὴ κοιμηθῇ στέαρ τῆς ἑορτῆς μου ἕως πρωΐ. Τὰς ἀπαρχὰς τῶν πρωτογενημάτων τῆς γνς σου εἰσοίσεις εἰς τὸν οἶκον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου· οὐχ ἑψήσεις ἄρνα ἐν γάλακτι μητρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου, ἵνα φυλάξῃ σε ἐν τῇ ὁδῷ, ὅπως εἰσαγάγῃ σε εἰς τὴν γῆν, ἣν ἡτοίμασά σοι. Πρόσεχε σεαυτῷ, καὶ εἰσάκουε αὐτοῦ, καὶ μὴ ἀπείθει αὐτῷ, οὐ γὰρ μὴ ὑποστείληταί σε· τὸ γὰρ ὄνομά μου ἐστὶν ἐπ αὐτῷ. Ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσητε τῆς ἐμῆς φωνῆς, καὶ ποιήσῃς πάντα ὅσα ἂν ἐντείλωμαί σοι, καὶ φυλάξητε τὴν διαθήκην μου, ἔσεσθέ μοι λαὸς περιούσιος ἀπὸ πάντων τῶν ἐθνῶν· ἐμὴ γάρ ἐστι πᾶσα ἡ γῆ· ὑμεῖς δὲ ἔσεσθέ μοι βασίλειον ἱεράτευμα, καὶ ἔθνος ἅγιον· ταῦτα τὰ ῥήματα ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσητε τῆς φωνῆς

μου, καὶ ποιήσητε πάντα ὅσα ἂν εἴπω σοι, ἐχθρεύσω τοῖς ἐχθροῖς σου, καὶ ἀντικείσομαι τοῖς ἀντικειμένοις σοι. Πορεύσεται γὰρ ὁ ἄγγελός μου ἡγούμενός σου, καὶ εἰσάξει σε πρὸς τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ Χετταῖον, καὶ Φερεζαῖον, καὶ Χαναναῖον, καὶ Γεργεσαῖον, καὶ Εὐαῖον, καὶ Ἰεβουσαῖον, καὶ ἐκτρίψω αὐτούς. Οὐ προσκυνήσεις τοῖς θεοῖς αὐτῶν, οὐδὲ μὴ λατρεύσῃς αὐτοῖς· οὐ ποιήσεις κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν· ἀλλὰ καθαιρέσει καθελεῖς, καὶ συντρίβων συντρίψεις τὰς στήλας αὐτῶν. Καὶ λατρεύσεις Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· καὶ εὐλογήσω τὸν ἄρτον σου καὶ τὸν οἶνόν σου καὶ τὸ ὕδωρ σου, καὶ ἀποστρέψω μαλακίαν ἀφ ὑμῶν. Οὐκ ἔσται ἄγονος, οὐδὲ στεῖρα ἐπὶ τῆς γῆς σου· τὸν ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν σου ἀναπληρῶν ἀναπληρώσω. Καὶ τὸν φόβον ἀποστελῶ ἡγούμενόν σου, καὶ ἐκστήσω πάντα τὰ ἔθνη, εἰς οὓς σὺ εἰσπορεύῃ εἰς αὐτούς· καὶ δώσω πάντας τοὺς ὑπεναντίους σου φυγάδας. Καὶ ἀποστελῶ τὰς σφηκίας προτέρας σου· καὶ ἐκβαλεῖς τοὺς Ἀμορῥαίους, καὶ τοὺς Εὐαίους, καὶ τοὺς Χαναναίους, καὶ τοὺς Χετταίους ἀπὸ σοῦ. Οὐκ ἐκβαλῶ αὐτοὺς ἐν ἐνιαυτῷ ἑνὶ, ἵνα μὴ γένηται ἡ γῆ ἔρημος, καὶ πολλὰ γένηται ἐπὶ σὲ τὰ θηρία τῆς γῆς. Κατὰ μικρὸν ἐκβαλῶ αὐτοὺς ἀπὸ σοῦ, ἕως ἂν αὐξηθῇς καὶ κληρονομήσῃς τὴν γῆν. Καὶ θήσω τὰ ὅριά σου ἀπὸ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης, ἕως τῆς θαλάσσης τῆς Φυλιστιείμ· καὶ ἀπὸ τῆς ἐρήμου, ἕως τοῦ μεγάλου ποταμοῦ Εὐφράτου· καὶ παραδώσω εἰς τὰς χεῖρας ὑμῶν τοὺς ἐγκαθημένους ἐν τῇ γῇ, καὶ ἐκβαλῶ αὐτοὺς ἀπὸ σοῦ. Οὐ συγκαταθήσῃ αὐτοῖς καὶ τοῖς θεοῖς αὐτῶν διαθήκην. Καὶ οὐκ ἐνκαθήσονται ἐν τῇ γῇ σου, ἵνα μὴ ἁμαρτεῖν σε ποιήσωσι πρὸς μέ· ἐὰν γὰρ δουλεύσῃς τοῖς θεοῖς αὐτῶν, οὗτοι ἔσονταί σοι πρόσκομμα.

# 24

Καὶ Μωυσῇ εἶπεν, ἀνάβηθι πρὸς τὸν Κύριον σὺ καὶ Ἀαρὼν, καὶ Ναδὰβ, καὶ Ἀβιοὺδ, καὶ ἑβδομήκοντα τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραήλ· καὶ προσκυνήσουσι μακρόθεν τῷ Κυρίῳ. Καὶ ἐγγιεῖ Μωσῆς μόνος πρὸς τὸν Θεὸν, αὐτοὶ δὲ οὐκ ἐγγιοῦσιν, ὁ δὲ λαὸς οὐ συναναβήσεται μετ αὐτῶν. Εἰσῆλθε δὲ Μωυσῆς, καὶ διηγήσατο τῷ λαῷ πάντα τὰ ῥήματα τοῦ Θεοῦ καὶ τὰ δικαιώματα· ἀπεκρίθη δὲ πᾶς ὁ λαὸς φωνῇ μιᾷ, λέγοντες, πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἐλάλησε Κύριος, ποιήσομεν, καὶ ἀκουσόμεθα. Καὶ ἔγραψε Μωυσῆς πάντα τὰ ῥήματα Κυρίου· ὀρθρίσας δὲ Μωυσῆς τὸ πρωῒ ᾠκοδόμησε θυσιαστήριον ὑπὸ τὸ ὄρος, καὶ δώδεκα λίθους εἰς τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἐξαπέστειλε τοὺς νεανίσκους τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, καὶ ἀνήνεγκαν ὁλοκαυτώματα· καὶ ἔθυσαν θυσίαν σωτηρίου τῷ Θεῷ μοσχάρια. Λαβὼν δὲ Μωυσῆς τὸ ἥμισυ τοῦ αἵματος, ἐνέχεεν εἰς κρατῆρας, τὸ δὲ ἥμισυ τοῦ αἵματος προσέχεε πρὸς τὸ θυσιαστήριον. Καὶ λαβὼν τὸ βιβλίον τῆς διαθήκης, ἀνέγνω εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ· καὶ εἶπαν, πάντα ὅσα ἐλάλησε Κύριος, ποιήσομεν καὶ ἀκουσόμεθα. Λαβὼν δὲ Μωυσῆς τὸ αἷμα, κατεσκέδασε τοῦ λαοῦ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ τὸ αἷμα τῆς διαθήκης, ἧς διέθετο Κύριος πρὸς ὑμᾶς περὶ πάντων τῶν λόγων τούτων. Καὶ ἀνέβη Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν, καὶ Ναδὰβ, καὶ Ἀβιοῦδ, καὶ ἑβδομήκοντα τῆς γερουσίας Ἰσραήλ. Καὶ εἶδον τὸν τόπον οὗ εἱστήκει ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραήλ· καὶ τὰ ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ, ὡσεὶ ἔργον πλίνθου σαπφείρου, καὶ ὥσπερ εἶδος στερεώματος τοῦ οὐρανοῦ τῇ καθαριότητι. Καὶ τῶν ἐπιλέκτων τοῦ Ἰσραὴλ οὐ διεφώνησεν οὐδὲ εἷς· καὶ ὤφθησαν ἐν τῷ τόπῳ τοῦ Θεοῦ, καὶ

ἔφαγον καὶ ἔπιον. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἀνάβηθι πρὸς με εἰς τὸ ὄρος, καὶ ἴσθι ἐκεῖ· καὶ δώσω σοι τὰ πυξία τὰ λίθινα, τὸν νόμον καὶ τὰς ἐντολας, ἃς ἔγραψα νομοθετῆσαι αὐτοῖς. Καὶ ἀναστὰς Μωυσῆς καὶ Ἰησοῦς ὁ παρεστηκὼς αὐτῷ, ἀνέβησαν εἰς τὸ ὄρος τοῦ Θεοῦ. Καὶ τοῖς πρεσβυτέροις εἶπαν, ἡσυχάζετε αὐτοῦ, ἕως ἀναστρέψωμεν πρὸς ὑμᾶς· καὶ ἰδοὺ Ἀαρὼν καὶ Ὢρ μεθ ὑμῶν· ἐάν τινι συμβῇ κρίσις, προσπορευέσθωσαν αὐτοῖς. Καὶ ἀνέβη Μωυσῆς καὶ Ἰησοῦς εἰς τὸ ὄρος· καὶ ἐκάλυψεν ἡ νεφέλη τὸ ὄρος. Καὶ κατέβη ἡ δόξα τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σινὰ, καὶ ἐκάλυψεν αὐτὸ ἡ νεφέλη ἓξ ἡμέρας· καὶ ἐκάλεσε Κύριος τὸν Μωυσῆν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἐκ μέσου τῆς νεφέλης. Τὸ δὲ εἶδος τῆς δόξης Κυρίου, ὡσεὶ πῦρ φλέγον ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους, ἐναντίον τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ εἰσῆλθε Μωυσῆς εἰς τὸ μέσον τῆς νεφέλης, καὶ ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος· καὶ ἦν ἐκεῖ ἐν τῷ ὄρει τεσσεράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας.

# 25

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, εἶπον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ λάβετε ἀπαρχὰς παρὰ πάντων, οἷς ἂν δόξῃ τῇ καρδίᾳ, καὶ λήψεσθε τὰς ἀπαρχάς μου. Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἀπαρχὴ, ἣν λήψεσθε παρ αὐτῶν· χρυσίον, καὶ ἀργύριον, καὶ χαλκὸν, καὶ ὑάκινθον, καὶ πορφύραν, καὶ κόκκινον διπλοῦν, καὶ βύσσον κεκλωσμένην, καὶ τρίχας αἰγείας, καὶ δέρματα κριῶν ἠρυθροδανωμένα, καὶ δέρματα ὑακίνθινα, καὶ ξύλα ἄσηπτα, καὶ λίθους Σαρδίου, καὶ λίθους εἰς τὴν γλυφὴν εἰς τὴν ἐπωμίδα, καὶ τὸν ποδήρη. Καὶ ποιήεις μοι ἁγίασμα, καὶ ὀφθήσομαι ἐν ὑμῖν. Καὶ ποιήσεις μοι κατὰ πάντα ὅσα σοι

δεικνύω ἐν τῷ ὄρει, τὸ παράδειγμα τῆς σκηνῆς, καὶ τὸ παράδειγμα πάντων τῶν σκευῶν αὐτῆς· οὕτω ποιήσεις. Καὶ ποιήσεις κιβωτὸν μαρτυρίου ἐκ ξύλων ἀσήπτων, δύο πήχεων καὶ ἡμίσους τὸ μῆκος, καὶ πήχεος καὶ ἡμίσους τὸ πλάτος, καὶ πήχεως καὶ ἡμίσους τὸ ὕψος. Καὶ καταχρυσώσεις αὐτὴν χρυσίῳ καθαρῷ, ἔσωθεν καὶ ἔξωθεν χρυσώσεις αὐτήν· καὶ ποιήσεις αὐτῇ κυμάτια χρυσᾶ στρεπτὰ κύκλῳ. Καὶ ἐλάσεις αὐτῇ τέσσαρας δακτυλίους χρυσοῦς, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὰ τέσσαρα κλίτη· δύο δακτυλίους ἐπὶ τὸ κλίτος τὸ ἓν, καὶ δύο δακτυλίους ἐπὶ τὸ κλίτος τὸ δεύτερον. Ποιήσεις δὲ ἀναφορεῖς ξύλα ἄσηπτα, καὶ καταχρυσώσεις αὐτὰ χρυσίῳ· Καὶ εἰσάξεις τοὺς ἀναφορεῖς εἰς τοὺς δακτυλίους τοὺς ἐν τοῖς κλίτεσι τῆς κιβωτοῦ, αἴρειν τὴν κιβωτὸν ἐν αὐτοῖς. Ἐν τοῖς δακτυλίοις τῆς κιβωτοῦ ἔσονται οἱ ἀναφορεῖς ἀκίνητοι. Καὶ ἐμβαλεῖς εἰς τὴν κιβωτὸν τὰ μαρτύρια, ἃ ἂν δῶ σοι. Καὶ ποιήσεις ἱλαστήριον ἐπίθεμα χρυσίου καθαροῦ, δύο πήχεων καὶ ἡμίσους τὸ μῆκος, καὶ πήχεως καὶ ἡμίσους τὸ πλάτος. Καὶ ποιήσεις δύο χερουβὶμ χρυσοτορευτὰ, καὶ ἐπιθήσεις αὐτὰ ἐξ ἀμφοτέρων τῶν κλιτῶν τοῦ ἱλαστηρίου. Ποιηθήσονται χεροὺβ εἷς ἐκ τοῦ κλίτους τούτου, καὶ χεροὺβ εἷς ἐκ τοῦ κλίτους τοῦ δευτέρου τοῦ ἱλαστηρίου· καὶ ποιήσεις τοὺς δύο χερουβὶμ ἐπὶ τὰ δύο κλίτη. Ἔσονται οἱ χερουβὶμ ἐκτείνοντες τὰς πτέρυγας ἐπάνωθεν, συσκιάζοντες ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτῶν ἐπὶ τοῦ ἱλαστηρίου, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν εἰς ἄλληλα, εἰς τὸ ἱλαστήριον ἔσονται τὰ πρόσωπα τῶν χερουβίμ. Καὶ ἐπιθήσεις τὸ ἱλαστήριον ἐπὶ τὴν κιβωτὸν ἄνωθεν, καὶ εἰς τὴν κιβωτὸν ἐμβαλεῖς τὰ μαρτύρια, ἃ ἂν δῶ σοι. Καὶ γνωσθήσομαί σοι ἐκεῖθεν, καὶ λαλήσω σοι ἄνωθεν τοῦ ἱλαστηρίου ἀνὰ μέσον τῶν δύο χερουβὶμ, τῶν ὄντων ἐπὶ τῆς κιβωτοῦ τοῦ μαρτυρίου, καὶ κατὰ πάντα ὅσα ἐὰν ἐντείλωμαί σοι πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ

ποιήσεις τράπεζαν χρυσῆν χρυσίου καθαροῦ, δύο πήχεων τὸ μῆκος, καὶ πήχεως τὸ εὖρος, καὶ πήχεως καὶ ἡμίσους τὸ ὕψος. Καὶ ποιήσεις αὐτῇ στρεπτὰ κυμάτια χρυσᾶ κύκλῳ· καὶ ποιήσεις αὐτῇ στεφάνην παλαιστοῦ κύκλῳ· Καὶ ποιήσεις στρεπτὸν κυμάτιον τῇ στεφάνῃ κύκλῳ. Καὶ ποιήσεις τέσσαρας δακτυλίους χρυσοῦς, καὶ ἐπιθήσεις τοὺς τέσσαρας δακτυλίους ἐπὶ τὰ τέσσαρα μέρη τῶν ποδῶν αὐτῆς ὑπὸ τὴν στεφάνην. Καὶ ἔσονται οἱ δακτύλιοι εἰς θήκας τοῖς ἀναφορεῦσιν, ὥστε αἴρειν ἐν αὐτοῖς τὴν τράπεζαν. Καὶ ποιήσεις τοὺς ἀναφορεῖς ἐκ ξύλων ἀσήπτων, καὶ καταχρυσώσεις αὐτοὺς χρυσίῳ καθαρῷ, καὶ ἀρθήσεται ἐν αὐτοῖς ἡ τράπεζα. Καὶ ποιήσεις τὰ τρυβλία αὐτῆς, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ τὰ σπονδεῖα, καὶ τοὺς κυάθους, ἐν οἷς σπείσεις ἐν αὐτοῖς, ἐκ χρυσίου καθαροῦ ποιήσεις αὐτά. Καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὴν τράπεζαν ἄρτους ἐνωπίους ἐναντίον μου διαπαντός. Καὶ ποιήσεις λυχνίαν ἐκ χρυσίου καθαροῦ, τορευτὴν ποιήσεις τὴν λυχνίαν· ὁ καυλὸς αὐτῆς, καὶ ὁ καλαμίσκοι, καὶ οἱ κρατῆρες, καὶ οἱ σφαιρωτῆρες, καὶ τὰ κρίνα ἐξ αὐτῆς ἔσται. Ἓξ δὲ καλαμίσκοι ἐκπορευόμενοι ἐκ πλαγίων, τρεῖς καλαμίσκοι τῆς λυχνίας ἐκ τοῦ κλίτους τοῦ ἑνὸς αὐτῆς, καὶ τρεῖς καλαμίσκοι τῆς λυχνίας ἐκ τοῦ κλίτους τοῦ δευτέρου. Καὶ τρεῖς κρατῆρες ἐκτετυπωμένοι καρυΐσκους· ἐν τῷ ἑνὶ καλαμίσκῳ σφαιρωτὴρ καὶ κρίνον· οὕτω τοῖς ἓξ καλαμίσκοις τοῖς ἐκπορευομένοις ἐκ τῆς λυχνίας. Καὶ ἐν τῇ λυχνίᾳ τέσσαρες κρατῆρες ἐκτετυπωμένοι καρυΐσκους· ἐν τῷ ἑνὶ καλαμίσκῳ σφαιρωτῆρες, καὶ τὰ κρίνα αὐτῆς. Ὁ σφαιρωτὴρ ὑπὸ τοὺς δύο καλαμίσκους ἐξ αὐτῆς· καὶ σφαιρωτὴρ ὑπὸ τοὺς τέσσαρας καλαμίσκους ἐξ αὐτῆς· οὕτω τοῖς ἓξ καλαμίσκοις τοῖς ἐκπορευομένοις ἐκ τῆς λυχνίας· καὶ ἐν τῇ λυχνίᾳ τέσσαρες κρατῆρες ἐκτετυπωμένοι καρυΐσκους. Οἱ σφαιρωτῆρες καὶ οἱ

καλαμίσκοι ἐξ αὐτῆς ἔστωσαν· ὅλη τορευτὴ ἐξ ἑνὸς χρυσίου καθαροῦ. Καὶ ποιήσεις τοὺς λύχνους αὐτῆς ἑπτά· καὶ ἐπιθήσεις τοὺς λύχνους, καὶ φανοῦσιν ἐκ τοῦ ἑνὸς προσώπου. Καὶ τὸν ἐπαρυστῆρα αὐτῆς, καὶ τὰ ὑποθέματα αὐτῆς ἐκ χρυσίου καθαροῦ ποιήσεις. Πάντα τὰ σκεύη ταῦτα τάλαντον χρυσίου καθαροῦ. Ὅρα, ποιήσεις κατὰ τὸν τύπον τὸν δεδειγμένον σοι ἐν τῷ ὄρει.

# 26

Καὶ τὴν σκηνὴν ποιήσεις, δέκα αὐλαίας ἐκ βύσσου κεκλωσμένης, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου κεκλωσμένου χερουβὶμ· ἐργασίᾳ ὑφάντου ποιήσεις αὐτάς. Μῆκος τῆς αὐλαίας τῆς μιᾶς ὀκτὼ καὶ εἴκοσι πήχεων, καὶ εὖρος τεσσάρων πήχεων ἡ αὐλαία ἡ μία ἔσται· μέτρον τὸ αὐτὸ ἔσται πάσαις ταῖς αὐλαίαις. Πέντε δὲ αὐλαῖαι ἔσονται ἐξ ἀλλήλων ἐχόμεναι ἡ ἑτέρα ἐκ τῆς ἑτέρας· καὶ πέντε αὐλαῖαι ἔσονται συνεχόμεναι ἑτέρα τῇ ἑτέρᾳ. Καὶ ποιήσεις αὐταῖς ἀγκύλας ὑακινθίνας ἐπὶ τοῦ χείλους τῆς αὐλαίας τῆς μιᾶς, ἐκ τοῦ ἑνὸς μέρους εἰς τὴν συμβολήν· καὶ οὕτω ποιήσεις ἐπὶ τοῦ χείλους τῆς αὐλαίας τῆς ἐξωτέρας πρὸς τῇ συμβολῇ τῇ δευτέρᾳ. Πεντήκοντα ἀγκύλας ποιήσεις τῇ αὐλαίᾳ τῇ μιᾷ, καὶ πεντήκοντα ἀγκύλας ποιήσεις ἐκ τοῦ μέρους τῆς αὐλαίας κατὰ τὴν συμβολὴν τῆς δευτέρας, ἀντιπρόσωποι ἀντιπίπτουσαι ἀλλήλαις εἰς ἑκάστην. Καὶ ποιήσεις κρίκους πεντήκοντα χρυσοῦς· καὶ συνάψεις τὰς αὐλαίας ἑτέραν τῇ ἑτέρα τοῖς κρίκοις· καὶ ἔσται ἡ σκηνὴ μία. Καὶ ποιήσεις δέῤῥεις τριχίνας σκέπην ἐπὶ τῆς σκηνῆς, ἕνδεκα δέῤῥεις ποιήσεις αὐτάς. Τὸ μῆκος τῆς δέῤῥεως τῆς μιᾶς, τριάκοντα πήχεων, καὶ τεσσάρων πήχεων τὸ εὖρος τῆς δέῤῥεως τῆς μιᾶς· τὸ

αὐτὸ μέτρον ἔσται ταῖς ἕνδεκα δέῤῥεσι. Καὶ συνάψεις τὰς πέντε δέῤῥεις ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ τὰς ἓξ δέῤῥεις ἐπὶ τὸ αὐτό· καὶ ἐπιδιπλώσεις τὴν δέῤῥιν τὴν ἔκτην κατὰ πρόσωπον τῆς σκηνῆς. Καὶ ποιήσεις ἀγκύλας πεντήκοντα ἐπὶ τοῦ χείλους τῆς δέῤῥεως τῆς μιᾶς, τῆς ἀναμέσον κατὰ συμβολήν· καὶ πεντήκοντα ἀγκύλας ποιήσεις ἐπὶ τοῦ χείλους τῆς δέῤῥεως, τῆς συναπτούσης τῆς δευτέρας. Καὶ ποιήσεις κρίκους χαλκοῦς πεντήκοντα· καὶ συνάψεις τοὺς κρίκους ἐκ τῶν ἀγκυλῶν, καὶ συνάψεις τὰς δέῤῥεις, καὶ ἔσται ἕν. Καὶ ὑποθήσεις τὸ πλεονάζον ἐν ταῖς δέῤῥεσι τῆς σκηνῆς· τὸ ἥμισυ τῆς δέῤῥεως τὸ ὑπολελειμμένον ὑποκαλύψεις εἰς τὸ πλεονάζον τῶν δέῤῥεων τῆς σκηνῆς, ὑποκαλύψεις ὀπίσω τῆς σκηνῆς. Πῆχυν ἐκ τούτου, καὶ πῆχυν ἐκ τούτου, ἐκ τοῦ ὑπερέχοντος τῶν δέῤῥεων, ἐκ τοῦ μήκους τῶν δέῤῥεων τῆς σκηνῆς· ἔσται συγκαλύπτον ἐπὶ τὰ πλάγια τῆς σκηνῆς ἔνθεν καὶ ἔνθεν, ἵνα καλύπτῃ. Καὶ ποιήσεις κατακάλυμμα τῇ σκηνῇ δέρματα κριῶν ἠρυθροδανωμένα, καὶ ἐπικαλύμματα δέρματα ὑακίνθινα ἐπάνωθεν. Καὶ ποιήσεις στύλους τῆς σκηνῆς ἐκ ξύλων ἀσήπτων. Δέκα πήχεων ποιήσεις τὸν στύλον τὸν ἕνα, καὶ πήχεως ἑνὸς καὶ ἡμίσους τὸ πλάτος τοῦ στύλου τοῦ ἑνός. Δύο ἀγκωνίσκους τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ, ἀντιπίπτοντας ἕτερον τῷ ἑτέρῳ· οὕτω ποιήσεις πᾶσι τοῖς στύλοις τῆς σκηνῆς. Καὶ ποιήσεις στύλους τῇ σκηνῇ, εἴκοσι στύλους ἐκ τοῦ κλίτους τοῦ πρὸς Βοῤῥᾶν. Καὶ τεσσαράκοντα βάσεις ἀργυρᾶς ποιήσεις τοῖς εἴκοσι στύλοις· δύο βάσεις τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ εἰς ἀμφότερα τὰ μέρη αὐτοῦ· και δύο βάσεις τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ εἰς ἀμφοτέρα τὰ μέρη αὐτοῦ. Καὶ τὸ κλίτος τὸ δεύτερον τὸ πρὸς Νότον, εἴκοσι στύλους, καὶ τεσσαράκοντα βάσεις αὐτῶν ἀργυρᾶς· δύο βάσεις τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ εἰς ἀμφότερα τὰ μέρη αὐτοῦ, καὶ δύο βάσεις τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ εἰς ἀμφότερα τὰ μέρη

αὐτοῦ. Καὶ ἐκ τῶν ὀπίσω τῆς σκηνῆς κατὰ τὸ μέρος τὸ πρὸς θάλασσαν ποιήσεις ἓξ στύλους. Καὶ δύο στύλους ποιήσεις ἐπὶ τῶν γωνιῶν τῆς σκηνῆς ἐκ τῶν ὀπισθίων. Καὶ ἔσται ἐξ ἴσου κάτωθεν· κατὰ τὸ αὐτὸ ἔσονται ἴσοι ἐκ τῶν κεφαλῶν εἰς σύμβλησιν μίαν· οὕτω ποιήσεῖς ἀμφοτέραις ταῖς δυσὶ γωνίαις· ἴσαι ἔστωσαν. Καὶ ἔσονται ὀκτὼ στύλοι, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν ἀργυραῖ δεκαέξ· δύο βάσεις τῷ ἑνὶ στύλῳ εἰς ἀμφότερα τὰ μέρη αὐτοῦ, καὶ δύο βάσεις τῷ στύλῳ τῷ ἑνί. Καὶ ποιήσεις μοχλοὺς ἐκ ξύλων ἀσήπτων· πέντε τῷ ἑνὶ στύλῳ ἐκ τοῦ ἑνὸς μέρους τῆς σκηνῆς, καὶ πέντε μοχλοὺς τῷ στύλῳ τῷ ἑνὶ κλίτει τῆς σκηνῆς τῷ δευτέρῳ, καὶ πέντε μοχλοὺς τῷ στύλῳ τῷ ὀπισθίῳ τῷ κλίτει τῆς σκηνῆς τῷ πρὸς θάλασσαν. Καὶ ὁ μοχλὸς ὁ μέσος ἀναμέσον τῶν στύλων διϊκνείσθω ἀπὸ τοῦ ἑνὸς κλίτους εἰς τὸ ἕτερον κλίτος. Καὶ τοὺς στύλους καταχρυσώσεις χρυσίῳ· καὶ τοὺς δακτυλίους ποιήσεις χρυσοῦς, εἰς οὓς εἰσάξεις τούς μοχλούς· καὶ καταχρυσώσεις τοὺς μοχλοὺς χρυσίῳ. Καὶ ἀναστήσεις τὴν σκηνὴν κατὰ τὸ εἶδος τὸ δεδειγμένον σοι ἐν τῷ ὄρει. Καὶ ποιήσεις καταπέτασμα ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου κεκλωσμένου, καὶ βύσσου νενησμένης· ἔργον ὑφαντὸν ποιήσεις αὐτὸ χερουβίμ. Καὶ ἐπιθήσεις αὐτὸ ἐπὶ τεσσάρων στύλων ἀσήπτων κεχρυσωμένων χρυσίῳ· καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν χρυσαῖ, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τέσσαρες ἀργυραῖ. Καὶ θήσεις τὸ καταπέτασμα ἐπὶ τῶν στύλων· καὶ εἰσοίσεις ἐκεῖ ἐσώτερον τοῦ καταπετάσματος τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου· καὶ διοριεῖ τὸ καταπέτασμα ὑμῖν ἀναμέσον τοῦ ἁγίου καὶ ἀναμέσον τοῦ ἁγίου τῶν ἁγίων. Καὶ κατακαλύψεις τῷ καταπετάσματι τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου ἐν τῷ ἁγίῳ τῶν ἁγίων. Καὶ ἐπιθήσεις τὴν τράπεζαν ἔξωθεν τοῦ καταπετάσματος, καὶ τὴν λυχνίαν ἀπέναντι τῆς τραπέζης ἐπὶ μέρους τῆς σκηνῆς τὸ πρὸς Νότον· καὶ τὴν

τράπεζαν θήσεις ἐπὶ μέρους τῆς σκηνῆς τὸ πρὸς Βορρᾶν. Καὶ ποιήσεις ἐπίσπαστρον τῇ θύρᾳ τῆς σκηνῆς ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου κεκλωσμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης, ἔργον ποικιλτοῦ. Καὶ ποιήσεις τῷ καταπετάσματι πέντε στύλους, καὶ χρυσώσεις αὐτοὺς χρυσίῳ· καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν χρυσαῖ· καὶ χωνεύσεις αὐτοῖς πέντε βάσεις χαλκᾶς.

# 27

Καὶ ποιήσεις θυσιαστήριον ἐκ ξύλων ἀσήπτων, πέντε πήχεων τὸ μῆκος, καὶ πέντε πήχεων τὸ εὖρος· τετράγωνον ἔσται τὸ θυσιαστήριον, καὶ τριῶν πήχεων τὸ ὕψος αὐτοῦ. Καὶ ποιήσεις τὰ κέρατα ἐπὶ τῶν τεσσάρων γωνιῶν· ἐξ αὐτοῦ ἔσται τὰ κέρατα, καὶ καλύψεις αὐτὰ χαλκῷ. Καὶ ποιήσεις στεφάνην τῷ θυσιαστηρίῳ· καὶ τὸν καλυπτῆρα αὐτοῦ, καὶ τὰς φιάλας αὐτοῦ, καὶ τὰς κρεάγρας αὐτοῦ, καὶ τὸ πυρεῖον αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτοῦ ποιήσεις χαλκᾶ. Καὶ ποιήσεις αὐτῷ ἐσχάραν ἔργῳ δικτυωτῷ χαλκῆν· καὶ ποιήσεις τῇ ἐσχάρᾳ τέσσαρες δακτυλίους χαλκοῦς ὑπὸ τὰ τέσσαρα κλίτη. Καὶ ὑποθήσεις αὐτοὺς ὑπὸ τὴν ἐσχάραν τοῦ θυσιαστήριου κάτωθεν· ἔσται δὲ ἡ ἐσχάρα ἕως τοῦ ἡμίσους τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ ποιήσεις τῷ θυσιαστηρίῳ ἀναφορεῖς ἐκ ξύλων ἀσήπτων, καὶ περιχαλκώσεις αὐτοὺς χαλκῷ. Καὶ εἰσάξεις τοὺς ἀναφορεῖς εἰς τοὺς δακτυλίους· καὶ ἔστωσαν ἀναφορεῖς κατὰ πλευρὰ τοῦ θυσιαστηρίου ἐν τῷ αἴρειν αὐτό. Κοῖλον συνιδωτὸν ποιήσεις αὐτό· κατὰ τὸ παραδειχθέν σοι ἐν τῷ ὄρει, οὕτω ποιήσεις αὐτό. Καὶ ποιήσεις αὐλὴν τῇ σκηνῇ· εἰς τὸ κλίτος τὸ πρὸς Λίβα ἱστία τῆς αὐλῆς ἐκ βύσσου κεκλωσμένης· μῆκος ἑκατὸν πήχεων τῷ

ἐνὶ κλίτει. Καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν εἴκοσι, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν εἴκοσι χαλκαῖ, καὶ οἱ κρίκοι αὐτῶν καὶ αἱ ψαλίδες ἀργυραῖ. Οὕτως τῷ κλίτει τῷ πρὸς ἀπηλιώτην ἱστία ἑκατὸν πήχεων μῆκος· καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν εἴκοσι, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν εἴκοσι χαλκαῖ· καὶ οἱ κρίκοι καὶ αἱ ψαλίδες τῶν στύλων, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν περιηργυρωμέναι ἀργυρίῳ. Τὸ δὲ εὖρος τῆς αὐλῆς τὸ κατὰ θάλασσαν ἱστία πεντήκοντα πήχεων· στύλοι αὐτῶν δέκα, καὶ βάσεις αὐτῶν δέκα. Καὶ εὖρος τῆς αὐλῆς τῆς πρὸς Νότον ἱστία πεντήκοντα πήχεων· στύλοι αὐτῶν δέκα, καὶ βάσεις αὐτῶν δέκα. Καὶ πεντεκαίδεκα πήχεων τὸ ὕψος τῶν ἱστίων τῷ κλίτει τῷ ἑνί· στύλοι αὐτῶν τρεῖς, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τρεῖς. Καὶ τὸ κλίτος τὸ δεύτερον δεκαπέντε πήχεων τῶν ἱστίων τὸ ὕψος· στύλοι αὐτῶν τρεῖς, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τρεῖς. Καὶ τῇ πύλῃ τῆς αὐλῆς κάλυμμα· εἴκοσι πήχεων τὸ ὕψος ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου κεκλωσμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης τῇ ποικιλίᾳ τοῦ ῥαφιδευτοῦ· στύλοι αὐτῶν τέσσαρες, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τέσσαρες. Πάντες οἱ στύλοι τῆς αὐλῆς κύκλῳ κατηργυρωμένοι ἀργυρίῳ, καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν ἀργυραῖ, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν χαλκαῖ. Τὸ δὲ μῆκος τῆς αὐλῆς ἑκατὸν ἐφ ἑκατόν· καὶ εὖρος πεντήκοντα ἐπὶ πεντήκοντα· καὶ ὕψος πέντε πήχεῶν ἐκ βύσσου κεκλωσμένης, καὶ βάσεις αὐτῶν χαλκαῖ. Καὶ πᾶσα ἡ κατασκευὴ καὶ πάντα τὰ ἐργαλεῖα καὶ οἱ πάσσαλοι τῆς αὐλῆς χαλκοῖ. Καὶ σὺ σύνταξον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ λαβέτωσάν σοι ἔλαιον ἐξ ἐλαιῶν ἀτρυγον καθαρὸν κεκομμένον εἰς φῶς καῦσαι, ἵνα καίηται λύχνος διαπαντός ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου· ἔξωθεν τοῦ καταπετάσματος τοῦ ἐπὶ τῆς διαθήκης καύσει αὐτὸ Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἀφ ἑσπέρας ἕως πρωΐ, ἐναντίον Κυρίου, νόμιμον αἰώνιον εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.

# 28

Καὶ σὺ προσαγάγου πρὸς σεαυτὸν τόν τε Ἀαρὼν τὸν ἀδελφόν σου, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἱερατεύειν μοι Ἀαρὼν, καὶ Ναδὰβ, καὶ Ἀβιοὺδ, καὶ Ἐλεάζαρ, καὶ Ἰθάμαρ, υἱοὺς Ἀαρών. Καὶ ποιήσεις στολὴν ἁγίαν Ἀαρὼν τῷ ἀδελφῷ σου εἰς τιμὴν καὶ δόξαν. Καὶ σύ λάλησον πᾶσι τοῖς σοφοῖς τῇ διανοίᾳ, οὓς ἐνέπλησα πνεύματος σοφίας καὶ αἰσθήσεως· καὶ ποιήσουσι τὴν στολὴν τὴν ἁγίαν Ἀαρὼν εἰς τὸ ἅγιον, ἐν ᾗ ἱερατεύσει μοι. Καὶ αὗται αἱ στολαὶ, ἃς ποιησουσι· τὸ περιστήθιον, καὶ τὴν ἐπωμίδα, καὶ τὸν ποδήρη, καὶ χιτῶνα κοσυμβωτὸν, καὶ κίδαριν, καὶ ζώνην· καὶ ποιήσουσι στολὰς ἁγίας Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ εἰς τὸ ἱερατεύειν μοι. Καὶ αὐτοὶ λήψονται τὸ χρυσίον, καὶ τὸν ὑάκινθον, καὶ τὴν πορφύραν, καὶ τὸ κόκκινον, καὶ τὴν βύσσον. Καὶ ποιήσουσι τὴν ἐπωμίδα ἐκ βύσσου κεκλωσμένης, ἔργον ὑφαντὸν ποικιλτοῦ. Δύο ἐπωμίδες συνέχουσαι ἔσονται αὐτῷ ἑτέρα τὴν ἑτέραν, ἐπὶ τοῖς δυσὶ μέρεσιν ἐξηρτισμέναι. Καὶ τὸ ὕφασμα τῶν ἐπωμίδων ὅ ἐστιν ἐπ αὐτῷ, κατὰ τὴν ποίησιν ἐξ αὐτοῦ ἔσται ἐκ χρυσίου καθαροῦ, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου διανενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης. Καὶ λήψῃ τοὺς δύο λίθους, λίθους σμαράγδου, καὶ γλύψεις ἐν αὐτοῖς τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Ἓξ ὀνόματα ἐπὶ τὸν λίθον τὸν ἕνα, καὶ τὰ ἕξ ὀνόματα τὰ λοιπὰ ἐπὶ τὸν λίθον τὸν δεύτερον κατὰ τὰς γενέσεις αὐτῶν. Ἔργον λιθουργικῆς τέχνης· γλύμμα σφραγίδος διαγλύψεις τοὺς δύο λίθους ἐπὶ τοῖς ὀνόμασι τῶς υἱῶν Ἰσρσήλ. Καὶ θήσεις τοὺς δύο λίθους ἐπὶ τῶς ὤμων τῆς ἐπωμίδος· λίθοι μνημοσύνου εἰσὶ τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ ἀναλήψεται Ἀαρὼν τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἔναντι Κυρίου

ἐπὶ τῶν δύο ὤμων αὐτοῦ, μνημόσυνον περὶ αὐτῶν. Καὶ ποιήσεις ἀσπιδίσκας ἐκ χρυσίου καθαροῦ. Καὶ ποιήσεις δύο κροσωτὰ ἐκ χρυσίου καθαροῦ, καταμεμιγμένα ἐν ἄνθεσιν, ἔργον πλοκῆς· καὶ ἐπιθήσεις τὰ κροσσωτὰ τὰ πεπλεγμένα ἐπὶ τὰς ἀσπιδίσκας, κατὰ τὰς παρωμίδας αὐτῶν ἐκ τῶν ἐμπροσθίων. Καὶ ποιήσεις λογεῖον τῶν κρίσεων, ἔργον ποικιλτοῦ· κατὰ τὸν ῥυθμὸν τῆς ἐπωμίδος ποιήσεις αὐτὸ ἐκ χρυσίου, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου κεκλωσμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης. Ποιήσεις αὐτό τετράγωνον· ἔσται διπλοῦν, σπιθαμῆς τὸ μῆκος αὐτοῦ, καὶ σπιθαμῆς τὸ εὖρος. Καὶ καθυφανεῖς ἐν αὐτῷ ὕφασμα κατάλιθον τετράστιχον· στίχος λίθων ἔσται, σάρδιον, τοπάζιον, καὶ σμαράγδος, ὁ στίχος ὁ εἷς. Καὶ ὁ στίχος ὁ δεύτερος, ἄνθραξ, καὶ σάπφειρος, καὶ ἴασπις. Καὶ ὁ στίχος ὁ τρίτος, λιγύριον, ἀχάτης, ἀμέθυστος. Καὶ ὁ στίχος ὁ τέταρτος, χρυσόλιθος, καὶ βηρύλλιον, καὶ ὀνύχιον, περικεκαλυμμένα χρυσίῳ, συνδεδεμένα ἐν χρυσίῳ· ἔστωσαν κατὰ στίχον αὐτῶν. Καὶ οἱ λίθοι ἔστωσαν ἐκ τῶν ὀνομάτων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ δεκαδύο κατὰ τὰ ὀνόματα αὐτῶν· γλυφαὶ σφραγίδων, ἕκαστος κατὰ τὸ ὄνομα ἔστωσαν εἰς δεκαδύο φυλάς. Καὶ ποιήσεις ἐπὶ τὸ λογιον κρωσσοὺς συμπεπλεγμένους, ἔργον ἁλυσιδωτὸν ἐκ χρυσίου καθαροῦ. Καὶ λήψεται Ἀαρὼν τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ λογείου τῆς κρίσεως ἐπὶ τοῦ στήθους, εἰσιόντι εἰς τὸ ἅγιον μνημόσυνου ἐναντίον τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὸ λογεῖον τῆς κρίσεως τὴν δήλωσιν καὶ τὴν ἀλήθειαν· καὶ ἔσται ἐπὶ τοῦ στήθους Ἀαρὼν, ὅταν εἰσπορεύεται εἰς τὸ ἅγιον ἔναντὶ Κυρίου· καὶ οἴσει Ἀαρὼν τὰς κρίσεις τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ στήθους ἔναντι Κυρίου διαπαντός. Καὶ ποιήσεις ὑποδύτην ποδήρη ὅλον ὑακίνθινον. Καὶ ἔσται τὸ περιστόμιον ἐξ αὐτοῦ μέσον, ὥαν ἔχον κύκλῳ τοῦ περιστομίου, ἔργον ὑφαντου,

τὴν συμβολὴν συνυφασμένην ἐξ αὐτοῦ, ἵνα μὴ ῥαγῇ. Καὶ ποιήσεις ὑπὸ τὸ λῶμα τοῦ ὑποδύτου κάτωθεν, ὡσεὶ ἐξανθούσης ῥόας ῥοΐσκους ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου διανενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης, ὑπὸ τοῦ λώματος τοῦ ὑποδύτου κύκλῳ· τὸ αὐτὸ εἶδος ῥοΐσκους χρυσοῦς, καὶ κώδωνας ἀναμέσον τούτων περικύκλῳ. Παρὰ ῥοΐσκον χρυσοῦν δώδωνα, καὶ ἄνθινον ἐπὶ τοῦ λώματος τοῦ ὑποδύτου κύκλῳ· Καὶ ἔσται Ἀαρὼν ἐν τῷ λειτουργεῖν ἀκουστὴ ἡ φωνὴ αὐτοῦ, εἰσιόντι εἰς τὸ ἅγιον ἔναντι Κυρίου, καὶ ἐξιόντι, ἵνα μὴ ἀποθάνῃ. Καὶ ποιήσεις πέταλον χρυσοῦν καθαρόν· καὶ ἐκτυπώσεις ἐν αὐτῷ ἐκτύπωμα σφραγίδος, Ἁγίασμα Κυρίου. Καὶ ἐπιθήσεις αὐτὸ ἐπὶ ὑακίνθου κεκλωσμένης· καὶ ἔσται ἐπὶ τῆς μίτρας, κατὰ πρόσωπον τῆς μίτρας ἔσται. Καὶ ἔσται ἐπὶ τοῦ μετώπου Ἀαρών· καὶ ἐξαρεῖ Ἀαρὼν τὰ ἁμαρτήματα τῶν ἁγίων, ὅσα ἂν ἁγιάσωσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ παντὸς δόματος τῶν ἁγίων αὐτῶν· καὶ ἔσται ἐπὶ τοῦ μετώπου Ἀαρὼν διαπαντὸς δεκτὸν αὐτοῖς ἔναντι Κυρίου. Καὶ οἱ κοσυμβωτοὶ τῶν χιτώνων ἐκ βύσσου· καὶ ποιήσεις κίδαριν βυσσίνην· καὶ ζώνην ποιήσεις, ἔργον ποικιλτοῦ. Καὶ τοῖς υἱοῖς Ἀαρὼν ποιήσεις χιτῶνας καὶ ζώνας, καὶ κιδάρεις ποιήσεις αὐτοῖς εἰς τιμὴν καὶ δόξαν. Καὶ ἐνδύσεις αὐτὰ Ἀαρὼν τὸν ἀδελφόν σου, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ μετ’ αὐτοῦ· καὶ χρίσεις αὐτοὺς, καὶ ἐμπλήσεις αὐτῶν τὰς χεῖρας· καὶ ἁγιάσεις αὐτοὺς, ἵνα ἱερατεύωσί μοι. Καὶ ποιήσεις αὐτοῖς περισκελῆ λινᾶ καλύψαι ἀσχημοσύνην χρωτὸς αὐτῶν, ἀπὸ ὀσφύος ἕως μηρῶν ἔσται. Καὶ ἔξει Ἀαρὼν αὐτὰ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, ὅταν εἰσπορεύωνται εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, ἢ ὅταν προσπορεύωνται λειτουργεῖν πρὸς τὸ θυσιαστήριον τοῦ ἁγίου· καὶ οὐκ ἐπάξονται πρὸς ἑαυτοὺς ἁμαρτίαν, ἵνα μὴ ἀποθάνωσι· νόμιμον αἰώνιον αὐτῷ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ μετ’ αὐτόν.

# 29

Καὶ ταῦτά ἐστιν, ἃ ποιήσεις αὐτοῖς· ἁγιάσεις αὐτοὺς, ὥστε ἱερατεύειν μοι αὐτούς· λήψῃ δὲ μοσχάριον ἐκ βοῶν ἓν, καὶ κριοὺς ἀμώμους δύο, καὶ ἄρτους ἀζύμους πεφυραμένους ἐν ἐλαίῳ, καὶ λάγανα ἄζυμα κεχρισμένα ἐν ἐλαίῳ· σεμίδαλιν ἐκ πυρῶν ποιήσεις αὐτά. Καὶ ἐπιθήσεις αὐτὰ ἐπὶ κανοῦν ἕν· καὶ προσοίσεις αὐτὰ ἐπὶ τῷ κανῷ· καὶ τὸ μοσχάριον, καὶ τοὺς δύο κριούς. Καὶ Ἀαρὼν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ προσάξεις ἐπὶ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ λούσεις αὐτοὺς ἐν ὕδατι. Καὶ λαβὼν τὰς στολὰς, ἐνδύσεις Ἀαρὼν τὸν ἀδελφόν σου καὶ τὸν χιτῶνα τὸν ποδήρη, καὶ τὴν ἐπωμίδα, καὶ τὸ λογεῖον· καὶ συνάψεις αὐτῷ τὸ λογεῖον πρὸς τὴν ἐπωμίδα. Καὶ ἐπιθήσεις τὴν μίτραν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσεις τὸ πέταλον τὸ ἁγίασμα ἐπὶ τὴν μίτραν. Καὶ λήψῃ τοῦ ἐλαίου τοῦ χρίσματος· καὶ ἐπιχεεῖς αὐτὸ ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ χρίσεις αὐτόν. Καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ προσάξεις, καὶ ἐνδύσεις αὐτοὺς χιτῶνας. Καὶ ζώσεις αὐτοὺς ταῖς ζωναῖς, καὶ περιθήσεις αὐτοῖς τὰς κιδάρεις· καὶ ἔσται αὐτοῖς ἱερατῖα μοι εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ τελειώσεις Ἀαρὼν τὰς χεῖρας αὐτοῦ, καὶ τὰς χεῖρας τῶν υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ προσάξεις τὸν μόσχον ἐπὶ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἐπιθήσουσιν Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ μόσχου, ἔναντι Κυρίου, παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ σφάξεις τὸν μόσχον ἔναντι Κυρίου, παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ λήψῃ ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ μόσχου, καὶ θήσεις ἐπὶ τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου τῷ δακτύλῳ σου· τὸ δὲ λοιπὸν πᾶν αἷμα ἐκχεεῖς παρὰ τὴν βάσιν τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ λήψῃ πᾶν τὸ στέαρ τὸ ἐπὶ

τῆς κοιλίας, καὶ τὸν λοβὸν τοῦ ἥπατος, καὶ τοὺς δύο νεφροὺς, καὶ τὸ στέαρ τὸ ἐπ αὐτῶν, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον. Τὰ δὲ κρέατα τοῦ μόσχου, καὶ τὸ δέρμα, καὶ τὴν κόπρον κατακαύσεις πυρὶ ἔξω τῆς παρεμβολῆς· ἁμαρτίας γάρ ἐστι. Καὶ τὸν κριὸν λήψῃ τὸν ἕνα, καὶ ἐπιθήσουσιν Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ κριοῦ. Καὶ σφάξεις αὐτὸν, καὶ λαβὼν τὸ αἷμα προσχεεῖς πρὸς τὸ θυσιαστήριον κύκλῳ. Καὶ τὸν κριὸν διχοτομήσεις κατὰ μέλη· καὶ πλυνεῖς τὰ ἐνδόσθια καὶ τοὺς πόδας ὕδατι, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὰ διχοτομήματα σὺν τῇ κεφαλῇ. Καὶ ἀνοίσεις ὅλον τὸν κριὸν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, ὁλοκαύτωμα τῷ Κυρίῳ εἰς ὀσμὴν εὐωδίας· θυμίαμα Κυρίῳ ἐστί. Καὶ λήψῃ τὸν κριὸν τὸν δεύτερον, καὶ ἐπιθήσει Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ κριοῦ. Καὶ σφάξεις αὐτὸν, καὶ λήψῃ τοῦ αἵματος αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὸν λοβὸν τοῦ ὠτὸς Ἀαρὼν τοῦ δεξιοῦ, καὶ ἐπὶ τὸ ἄκρον τῆς δεξιᾶς χειρὸς, καὶ ἐπὶ τὸ ἄκρον τοῦ ποδὸς τοῦ δεξιοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς λοβοὺς τῶν ὤτων τῶν υἱῶν αὐτοῦ τῶν δεξιῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἄκρα τῶν χειρῶν αὐτῶν τῶν δεξιῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἄκρα τῶν ποδῶν αὐτῶν τῶν δεξιῶν. Καὶ λήψῃ ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἀπὸ τοῦ ἐλαίου τῆς χρίσεως, καὶ ῥανεῖς ἐπὶ Ἀαρὼν καὶ ἐπὶ τὴν στολὴν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τὰς στολὰς τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ· καὶ ἁγιασθήσεται αὐτὸς καὶ ἡ στολὴ αὐτοῦ, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ αἱ στολαὶ τῶν υἱῶν αὐτοῦ μετ αὐτοῦ· τὸ δὲ αἷμα τοῦ κριοῦ προσχεεῖς πρὸς τὸ θυσιαστήριον κύκλῳ. Καὶ λήψῃ ἀπὸ τοῦ κριοῦ τὸ στέαρ αὐτοῦ, καὶ τὸ στέαρ τὸ κατακαλύπτον τὴν κοιλίαν, καὶ τὸν λοβὸν τοῦ ἥπατος, καὶ τοὺς δύο νεφροὺς, καὶ τὸ στέαρ τὸ ἐπ αὐτῶν, καὶ τὸν βραχίονα τὸν δεξιόν· ἔστι γὰρ τελείωσις αὕτη. Καὶ ἄρτον ἕνα ἐξ ἐλαίου, καὶ λάγανον ἓν ἀπὸ τοῦ κανοῦ τῶν ἀζύμων τῶν

προτεθειμένων ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἐπιθήσεις τὰ πάντα ἐπὶ τὰς χεῖρας Ἀαρὼν, καὶ ἐπὶ τὰς χεῖρας τῶν υἱῶν αὐτοῦ· καὶ ἀφοριεῖς αὐτὰ ἀφόρισμα ἔναντι Κυρίου. Καὶ λήψῃ αὐτὰ ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ ἀνοίσεις ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τῆς ὁλοκαυτώσεως εἰς ὀσμὴν εὐωδίας ἔναντι Κύριου· κάρπωμά ἐστι Κυρίῳ. Καὶ λήψῃ τὸ στηθύνιον ἀπὸ τοῦ κριοῦ τῆς τελειώσεως, ὅ ἐστιν Ἀαρών· καὶ ἀφοριεῖς αὐτὸ ἀφόρισμα ἔναντι Κυρίου· καὶ ἔσται σοι ἐν μερίδι. Καὶ ἁγιάσεις τὸ στηθύνιον ἀφόρισμα, καὶ τὸν βραχίονα τοῦ ἀφαιρέματος, ὃς ἀφώρισται, καὶ ὃς ἀφῄρηται ἀπὸ τοῦ κριοῦ τῆς τελειώσεως ἀπὸ τοῦ Ἀαρὼν, καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ ἔσται Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ νόμιμον αἰώνιον παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· ἔστι γὰρ ἀφόρισμα τοῦτο· καὶ ἀφαίρεμα ἔσται παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἀπὸ τῶν θυμάτων τῶν σωτηρίων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἀφαίρεμα Κυρίῳ. Καὶ ἡ στολὴ τοῦ ἁγίου, ἥ ἐστιν Ἀαρὼν, ἔσται τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ μετ αὐτὸν, χρισθῆναι αὐτοὺς ἐν αὐτοῖς, καὶ τελειῶσαι τὰς χεῖρας αὐτῶν. Ἑπτὰ ἡμέρας ἐνδύσεται αὐτὰ ὁ ἱερεὺς ὁ ἀντ αὐτοῦ ἐκ τῶν υἱῶν αὐτοῦ, ὃς εἰσελεύσεται εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου λειτουργεῖν ἐν τοῖς ἁγίοις. Καὶ τὸν κριὸν τῆς τελειώσεως λήψῃ· καὶ ἐψήσεις τὰ κρέα ἐν τόπῳ ἁγίῳ. Καὶ ἔδονται Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰ κρέα τοῦ κριοῦ, καὶ τοὺς ἄρτους τοὺς ἐν τῷ κανῷ, παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Ἔδονται αὐτὰ ἐν οἷς ἡγιάσθησαν ἐν αὐτοῖς τελειῶσαι τὰς χεῖρας αὐτῶν, ἁγιάσαι αὐτούς· καὶ ἀλλογενὴς οὐκ ἔδεται ἀπ αὐτῶν· ἔστι γὰρ ἅγια. Ἐὰν δὲ καταλειφθῇ ἀπὸ τῶν κρεῶν τῆς θυσίας τῆς τελειώσεως καὶ τῶν ἄρτων ἕως πρωΐ, κατακαύσεις τὰ λοιπὰ πυρί· οὐ βρωθήσεται· ἁγίασμα γάρ ἐστι. Καὶ ποιήσεις Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ οὕτω κατὰ πάντα ὅσα ἐνετειλάμην σοι· ἑπτὰ ἡμέρας τελειώσεις τὰς χεῖρας αὐτῶν. Καὶ τὸ μοσχάριον τῆς ἁμαρτίας

ποιήσεις τῇ ἡμέρᾳ τοῦ καθαρισμοῦ· καὶ καθαριεῖς τὸ θυσιαστήριον ἐν τῷ ἁγιάζειν σε ἐπ αὐτῷ· καὶ χρίσεις αὐτὸ ὥστε ἁγιάσαι αὐτό. Ἑπτὰ ἡμέρας καθαριεῖς τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἁγιάσεις αὐτό· καὶ ἔσται τὸ θυσιαστήριον, ἅγιον τοῦ ἁγίου· πᾶς ὁ ἁπτόμενος τοῦ θυσιαστηρίου, ἁγιασθήσεται. Καὶ ταῦτά ἐστιν, ἃ ποιήσεις ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου· ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἀμώμους δύο τὴν ἡμέραν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐνδελεχῶς, κάρπωμα ἐνδελεχισμοῦ. Τὸν ἀμνὸν τὸν ἕνα ποιήσεις τὸ πρωΐ, καὶ τὸν ἀμνὸν τὸν δεύτερον ποιήσεις τὸ δειλινόν. Καὶ δέκατον σεμιδάλεως πεφυραμένης ἐν ἐλαίῳ κεκομμένῳ τῷ τετάρτῳ τοῦ εἶν· καὶ σπονδὴν τὸ τέταρτον τοῦ εἶν οἴνου τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνί. Καὶ τὸν ἀμνὸν τὸν δεύτερον ποιήσεις τὸ δειλινὸν, κατὰ τὴν θυσίαν τὴν πρωϊνὴν, καὶ κατὰ τὴν σπονδὴν αὐτοῦ· ποιήσεις εἰς ὀσμὴν εὐωδίας κάρπωμα Κυρίῳ, θυσίαν ἐνδελεχισμοῦ εἰς γενεὰς ὑμῶν, ἐπὶ θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου ἔναντι Κυρίου, ἐν οἷς γνωσθήσομαί σοι ἐκεῖθεν, ὥστε λαλῆσαί σοι. Καὶ τάξομαι ἐκεῖ τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἁγιασθήσομαι ἐν δόξῃ μου. Καὶ ἁγιάσω τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὸ θυσιαστήριον· καὶ Ἀαρὼν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ἁγιάσω, ἱερατεύειν μοι. Καὶ ἐπικληθήσομαι ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἔσομαι αὐτῶν Θεός. Καὶ γνώσονται, ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ Θεὸς αὐτῶν, ὁ ἐξαγαγὼν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐπικληθῆναι αὐτοῖς, καὶ εἶναι αὐτῶν Θεός.

# 30

Καὶ ποιήσεις θυσιαστήριον θυμιάματος ἐκ ξύλων ἀσήπτων. Καὶ ποιήσεις αὐτὸ πήχεος τὸ μῆκος, καὶ πήχεος τὸ εὖρος· τετράγωνον

ἔσται· καὶ δύο πήχεων τὸ ὕψος· ἐξ αὐτοῦ ἔσται τὰ κέρατα αὐτοῦ. Καὶ καταχρυσώσεις χρυσίῳ καθαρῷ τὴν ἐσχάραν αὐτοῦ, καὶ τοὺς τοίχους αὐτοῦ κύκλῳ, καὶ τὰ κέρατα αὐτοῦ· καὶ ποιήσεις αὐτῷ στρεπτὴν στεφάνην χρυσῆν κύκλῳ. Καὶ δύο δακτυλίους χρυσοῦς καθαροὺς ποιήσεις ὑπὸ τὴν στρεπτὴν στεφάνην αὐτοῦ, εἰς τὰ δύο κλίτη ποιήσεις ἐν τοῖς δυσὶ πλευροῖς· καὶ ἔσονται ψαλίδες ταῖς σκυτάλαις, ὥστε αἴρειν αὐτὸ ἐν αὐταῖς. Καὶ ποιήσεις σκυτάλας ἐκ ξύλων ἀσήπτων, καὶ καταχρυσώσεις αὐτὰς χρυσίῳ. Καὶ θήσεις αὐτὸ ἀπέναντι τοῦ καταπετάσματος, τοῦ ὄντος ἐπὶ τῆς κιβωτοῦ τῶν μαρτυρίων, ἐν οἷς γνωσθήσομαί σοι ἐκεῖθεν. Καὶ θυμιάσει ἐπ αὐτοῦ Ἀαρὼν θυμίαμα σύνθετον λεπτὸν τὸ πρωῒ πρωΐ· ὅταν ἐπισκευάζῃ τοὺς λύχνους, θυμιάσει ἐπ αὐτοῦ. Καὶ ὅταν ἐξάπτῃ Ἀαρὼν τοὺς λύχνους ὀψὲ, θυμιάσει ἐπ αὐτοῦ. θυμίαμα ἐνδελεχισμοῦ διαπαντὸς ἔναντι Κυρίου εἰς γενεὰς αὐτῶν. Καὶ οὐκ ἀνοίσει ἐπ αὐτοῦ θυμίαμα ἕτερον· κάρπωμα, θυσίαν, και σπονδὴν οὐ σπείσεις ἐπ αὐτοῦ. Καὶ ἐξιλάσεται ἐπ αὐτοῦ Ἀαρὼν ἐπὶ τῶν κεράτων αὐτοῦ ἅπαξ τοῦ ἐνιαυτοῦ· ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ καθαρισμοῦ καθαριεῖ αὐτὸ εἰς γενεὰς αὐτῶν· ἅγιον τῶν ἁγίων ἐστὶ Κυρίῳ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐὰν λάβῃς τὸν συλλογισμὸν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐπισκοπῇ αὐτῶν, καὶ δώσουσιν ἕκαστος λύτρα τῆς ψυχῆς αὐτοῦ Κυρίῳ, καὶ οὐκ ἔσται ἐν αὐτοῖς πτῶσις ἐν τῇ ἐπισκοπῇ αὐτῶν. Καὶ τοῦτό ἐστιν ὅ δώσουσιν ὅσοι ἂν παραπορεύωνται τὴν ἐπίσκεψιν· τὸ ἥμισυ τοῦ διδράχμου ὅ ἐστιν κατὰ τὸ δίδραχμον τὸ ἅγιον, εἴκοσι ὀβολοὶ τὸ δίδραχμον, τὸ δὲ ἥμισυ τοῦ διδράχμου εἰσφορὰ Κυρίῳ. Πᾶς ὁ παραπορευόμενος εἰς τὴν ἐπίσκεψιν ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, δώσουσι τὴν εἰσφορὰν Κυρίῳ. Ὁ πλουτῶν οὐ προσθήσει, καὶ ὁ πενόμενος οὐκ ἐλαττονήσει ἀπὸ τοῦ ἡμίσεως τοῦ διδράχμου ἐν τῷ διδόναι τὴν

εἰσφορὰν Κυρίῳ, ἐξιλάσασθαι περὶ τῶν ψυχῶν ὑμῶν. Καὶ λήψῃ τὸ ἀργύριον τῆς εἰσφορᾶς παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, καὶ δώσεις αὐτὸ εἰς τὸ κάτεργον τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἔσται τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ μνημόσυνον ἔναντι Κυρίου, ἐξιλάσασθαι περὶ τῶν ψυχῶν ὑμῶν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ποίησον λουτῆρα χαλκοῦν, καὶ βάσιν αὐτῷ χαλκῆν, ὥστε νίπτεσθαι· καὶ θήσεις αὐτὸν ἀνὰ μέσον τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου καὶ ἀνὰ μέσον τοῦ θυσιαστηρίου· καὶ ἐκχεεῖς εἰς αὐτὸν ὕδωρ. Καὶ νίψεται Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ τὰς χεῖρας, καὶ τοὺς πόδας ὕδατι. Ὅταν εἰσπορεύωνται εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, νίψονται ὕδατι, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνωσιν, ὅταν προσπορεύωνται πρὸς τὸ θυσιαστήριον λειτουργεῖν καὶ ἀναφέρειν τὰ ὁλοκαυτώματα Κυρίῳ. Νίψονται τὰς χεῖρας καὶ τοὺς πόδας ὕδατι, ὅταν εἰσπορεύωνται εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, νίψονται ὕδατι, ἵνα μὴ ἀποθάνωσι· καὶ ἔσται αὐτοῖς νόμιμον αἰώνιον, αὐτῷ καὶ ταῖς γενεαῖς αὐτοῦ μετ αὐτόν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, καὶ σὺ λάβε ἡδύσματα, τὸ ἄνθος σμύρνης ἐκλεκτῆς πεντακοσίους σίκλους, καὶ κινναμώμου εὐώδους τὸ ἥμισυ τούτου διακοσίους πεντήκοντα, καὶ καλάμου εὐώδους διακοσίους πεντήκοντα, καὶ ἴρεως πεντακοσίους σίκλους τοῦ ἁγίου, καὶ ἔλαιον ἐξ ἐλαιῶν εἶν. Καὶ ποιήσεις αὐτὸ ἔλαιον χρίσμα ἅγιον, μύρον μυρεψικὸν τέχνῃ μυρεψοῦ· ἔλαιον χρίσμα ἅγιον ἔσται. Καὶ χρίσεις ἐξ αὐτοῦ τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὴν κιβωτὸν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὴν λυχνίαν καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὸ θυσιαστήριον τοῦ θυμιάματος, καὶ τὸ θυσιαστήριον τῶν ὁλοκαυτωμάτων καὶ πάντα αὐτοῦ τὰ σκεύη, καὶ τὴν τράπεζαν καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὸν λουτῆρα. Καὶ ἁγιάσεις αὐτά· καὶ ἔσται ἅγια τῶν ἁγίων· πᾶς ὁ ἁπτόμενος αὐτῶν, ἁγιασθήσεται. Καὶ

Ἀαρὼν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ χρίσεις, καὶ ἁγιάσεις αὐτοὺς ἱερατεύειν μοι. Καὶ τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ λαλήσεις, λέγων, ἔλαιον ἄλειμμα χρίσεως ἅγιον ἔσται τοῦτο ὑμῖν εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν. Ἐπὶ σάρκα ἀνθρώπου οὐ χρισθήσεται· καὶ κατὰ τὴν σύνθεσιν ταύτην οὐ ποιήσετε ὑμῖν ἑαυτοῖς ὡσαύτως· ἅγιόν ἐστιν, καὶ ἁγίασμα ἔσται ὑμῖν. Ὃς ἂν ποιήσῃ ὡσαύτως, καὶ ὃς ἂν δῷ ἀπ αὐτοῦ ἀλλογενεῖ, ἐξολοθρευθήσεται ἐκ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λάβε σεαυτῷ ἡδύσματα, στακτήν, ὄνυχα, χαλβάνην ἡδυσμοῦ καὶ λίβανον διαφανῆ· ἴσον ἴσῳ ἔσται. Καὶ ποιήσουσιν ἐν αὐτῷ θυμίαμα μυρεψικὸν ἔργον μυρεψοῦ μεμιγμένον, καθαρὸν ἔργον ἅγιον. Καὶ συνκόψεις ἐκ τούτων λεπτόν, καὶ θήσεις ἀπέναντι τῶν μαρτυρίων ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, ὅθεν γνωσθήσομαί σοι ἐκεῖθεν· ἅγιον τῶν ἁγίων ἔσται ὑμῖν θυμίαμα. Κατὰ τὴν σύνθεσιν ταύτην οὐ ποιήσετε ὑμῖν ἑαυτοῖς· ἁγίασμα ἔσται ὑμῖν Κυρίῳ· Ὃς ἂν ποιήσῃ ὡσαύτως ὥστε ὀσφραίνεσθαι ἐν αὐτῷ, ἀπολεῖται ἐκ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ.

# 31

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἰδοὺ ἀνακέκλημαι ἐξ ὀνόματος τὸν Βεσελεὴλ τὸν τοῦ Οὐρείου τὸν Ὢρ, ἐκ τῆς φυλῆς Ἰούδα. Καὶ ἐνέπλησα αὐτὸν πνεῦμα θεῖον σοφίας καὶ συνέσεως καὶ ἐπιστήμης, ἐν παντὶ ἔργῳ διανοεῖσθαι, καὶ ἀρχιτεκτονῆσαι, ἐργάζεσθαι τὸ χρυσίον, καὶ τὸ ἀργύριον, καὶ τὸν χαλκὸν, καὶ τὴν ὑάκινθον, καὶ τὴν πορφύραν, καὶ τὸ κόκκινον τὸ νηστὸν, καὶ τὰ λιθουργικὰ, καὶ εἰς τὰ ἔργα τὰ τεκτονικὰ τῶν ξύλων, ἐργάζεσθαι κατὰ πάντα τὰ ἔργα. Καὶ ἐγὼ ἔδωκα αὐτὸν καὶ τὸν Ἐλιὰβ τὸν τοῦ

Ἀχισαμὰχ ἐκ φυλῆς Δάν· καὶ παντὶ συνετῷ καρδίᾳ δέδωκα σύνεσιν· καὶ πονήσουσι πάντα ὅσα συνέταξά σοι, τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης, καὶ τὸ ἱλαστήριον τὸ ἐπ αὐτῆς, καὶ τὴν διασκευὴν τῆς σκηνῆς, καὶ τὰ θυσιαστήρια, καὶ τὴν τράπεζαν καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὴν λυχνίαν τὴν καθαρὰν καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς καὶ τὸν λουτῆρα καὶ τὴν βάσιν αὐτοῦ, καὶ τὰς στολὰς τὰς λειτουργικὰς Ἀαρὼν, καὶ τὰς στολὰς τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἱερατεύειν μοι, καὶ τὸ ἔλαιον τῆς χρίσεως, καὶ τὸ θυμίαμα τῆς συνθέσεως τοῦ ἁγίου· κατὰ πάντα ὅσα ἐγὼ ἐνετειλάμην σοι, ποιήσουσι. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, Καὶ σὺ σύνταξον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, Ὁρᾶτε, καὶ τὰ σάββατά μου φυλάξεσθε· σημεῖόν ἐστι παρ ἐμοὶ καὶ ἐν ὑμῖν εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν, ἵνα γνῶτε ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ ἁγιάξων ὑμᾶς. καὶ φυλάξεσθε τὰ σάββατα, ὅτι ἅγιον τοῦτό ἐστι Κυρίῳ ὑμῖν· ὁ βεβηλῶν αὐτὸ, θανάτῳ θανατωθήσεται· πᾶς ὃς ποιήσει ἐν αὐτῷ ἔργον, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. ἓξ ἡμέρας ποιήσεις ἔργα, τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ σάββατα, ἀνάπαυσις ἁγία τῷ κυρίῳ· πᾶς ὃς ποιήσει ἔργον τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ θανατωθήσεται. Καὶ φυλάξουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὰ σάββατα, ποιεῖν αὐτὰ εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν· Διαθήκη αἰώνιος ἐν ἐμοὶ καὶ τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, σημεῖόν ἐστιν ἐν ἐμοὶ αἰώνιον· ὅτι ἓξ ἡμεραις ἐποίησε Κύριος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ κατέπαυσε, καὶ ἐπαύσατο. Καὶ ἔδωκε Μωυσῇ ἡνίκα κατέπαυσε λαλῶν αὐτῷ ἐν τῷ ὄρει τῷ Σινὰ, τὰς δύο πλάκας τοῦ μαρτυρίου, πλάκας λιθίνας γεγραμμένας τῷ δακτύλῳ τοῦ Θεοῦ.

# 32

Καὶ ἰδὼν ὁ λαὸς, ὅτι κεχρόνικε Μωυσῆς καταβῆναι ἐκ τοῦ ὄρους, συνέστη ὁ λαὸς ἐπὶ Ἀαρὼν, καὶ λέγουσιν αὐτῷ ἀνάστηθι, καὶ ποίησον ἡμῖν θεοὺς, οἳ προπορεύσονται ἡμῶν· ὁ γὰρ Μωυσῆς οὗτος ὁ ἄνθρωπος ὃς ἐξήγαγεν ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, οὐκ οἴδαμεν τί γέγονεν αὐτῷ. Καὶ λέγει αὐτοῖς Ἀαρὼν Περιέλεσθε τὰ ἐνώτια τὰ χρυσᾶ τὰ ἐν τοῖς ὠσὶ τῶν γυναικῶν ὑμῶν καὶ θυγατέρων, καὶ ἐνέγκατε πρός με. Καὶ περιείλαντο πᾶς ὁ λαὸς τὰ ἐνώτια τὰ χρυσᾶ τὰ ἐν τοῖς ὠσὶν αὐτῶν, καὶ ἤνεγκαν πρὸς Ἀαρών. Καὶ ἐδέξατο ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ ἔπλασεν αὐτὰ ἐν τῇ γραφίδι· καὶ ἐποίησεν αὐτὰ μόσχον χωνευτὸν καὶ εἶπεν, Οὗτοι οἱ θεοί σου Ἰσραὴλ, οἵτινες ἀνεβίβασάν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἰδὼν Ἀαρὼν ᾠκοδόμησε θυσιαστήριον κατέναντι αὐτοῦ· καὶ ἐκήρυξεν Ἀαρὼν λέγων, ἑορτὴ τοῦ κυρίου αὔριον. Καὶ ὀρθρίσας τῇ ἐπαύριον ἀνεβίβασεν ὁλοκαυτώματα, καὶ προσήνεγκε θυσίαν σωτηρίου· καὶ ἐκάθισεν ὁ λαὸς φαγεῖν καὶ πιεῖν, καὶ ἀνέστησαν παίζειν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, βάδιζε τὸ τάχος, κατάβηθι ἐντεύθεν· ἠνόμησε γὰρ ὁ λαός σου ὃν ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Παρέβησαν ταχὺ ἐκ τῆς ὁδοῦ, ἧς ἐνετείλω αὐτοῖς· ἐποίησαν ἑαυτοῖς μόσχον, καὶ προσκεκυνήκασιν αὐτῷ, καὶ τεθύκασιν αὐτῷ, καὶ εἶπαν, Οὗτοι οἱ θεοί σου Ἰσραὴλ, οἵτινες ἀνεβίβασάν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου. καὶ νῦν ἔασόν με, καὶ θυμωθεὶς ὀργῇ εἰς αὐτοὺς, ἐκτρίψω αὐτούς· καὶ ποιήσω σὲ εἰς ἔθνος μέγα. καὶ ἐδεήθη Μωυσῆς ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ, καὶ εἶπεν, ἱνατί, Κύριε, θυμοῖ ὀργῇ εἰς τὸν λαόν σου, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν ἰσχύϊ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ; Μή ποτε εἴπωσιν οἱ Αἰγύπτιοι λέγοντες Μετὰ πονηρίας ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἀποκτεῖναι ἐν τοῖς ὄρεσιν καὶ ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς ἀπὸ τῆς γῆς. παῦσαι τῆς ὀργῆς τοῦ θυμοῦ σου, καὶ ἵλεως γενοῦ ἐπὶ τῇ κακίᾳ τοῦ λαοῦ σου, μνησθεὶς Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ τῶν

σῶν οἰκετῶν, οἷς ὤμοσας κατὰ σεαυτοῦ, καὶ ἐλάλησας πρὸς αὐτοὺς, λέγων, πολυπληθυνῶ τὸ σπέρμα ὑμῶν ὡσεὶ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει· καὶ πᾶσαν τὴν γῆν ταύτην ἣν εἶπας δοῦναι αὐτοῖς, καὶ καθέξουσιν αὐτὴν εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἱλάσθη Κύριος περιποιῆσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ. Καὶ ἀποστρέψας Μωυσῆς, κατέβη ἀπὸ τοῦ ὄρους· καὶ αἱ δύο πλάκες τοῦ μαρτυρίου ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, πλάκες λίθιναι καταγεγραμμέναι ἐξ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν αὐτῶν, ἔνθεν καὶ ἔνθεν ἦσανς γεγραμμέναι· καὶ αἱ πλάκες ἔργον Θεοῦ ἦσαν, καὶ ἡ γραφὴ γραφὴ Θεοῦ κεκολαμμένη ἐν ταῖς πλαξί. καὶ ἀκούσας Ἰησοῦς τῆς φωνῆς τοῦ λαοῦ κραζόντων, λέγει πρὸς Μωυσὴν, Φωνὴ πολέμου ἐν τῇ παρεμβολῇ. καὶ λέγει Οὐκ ἔστι φωνὴ ἐξαρχόντων κατ ἰσχὺν, οὐδὲ φωνὴ ἐξαρχόντων τροπῆς, ἀλλὰ φωνὴν ἐξαρχόντων οἴνου ἐγὼ ἀκούω. καὶ ἡνίκα ἤγγιζε τῇ παρεμβολῇ, ὁρᾷ τὸν μόσχον καὶ τοὺς χορούς· καὶ ὀργισθεὶς θυμῷ Μωυσῆς ἔῤῥιψεν ἀπὸ τῶν χειρῶν αὐτοῦ τὰς δύο πλάκας, καὶ συνέτριψεν αὐτὰς ὑπὸ τὸ ὄρος· καὶ λαβὼν τὸν μόσχον ὃν ἐποίησαν, κατέκαυσεν αὐτὸν ἐν πυρὶ, καὶ κατήλεσεν αὐτὸν λεπτὸν, καὶ ἔσπειρεν αὐτὸν ὑπὸ τὸ ὕδωρ, καὶ ἐπότισεν αὐτὸ τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. καὶ εἶπε Μωυσῆς τῷ Ἀαρὼν, Τί ἐποίησέ σοι ὁ λαὸς οὗτος, ὅτι ἐπήγαγες ἐπ αὐτοὺς ἁμαρτίαν μεγάλην; καὶ εἶπεν Ἀαρὼν πρὸς Μωυσῆν, μὴ ὀργίζου, κύριε· σὺ γὰρ οἶδας τὸ ὅρμημα τοῦ λαοῦ τούτου. Λέγουσι γάρ μοι, ποιήσον ἡμῖν θεοὺς, οἳ προπορεύσονται ἡμῶν· ὁ γὰρ Μωυσῆς οὗτος ὁ ἄνθρωπος, ὃς ἐξήγαγεν ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου, οὐκ οἴδαμεν τί γέγονεν αὐτῷ. καὶ εἶπα αὐτοῖς, εἴ τινι ὑπάρχει χρυσία, περιέλεσθε· καὶ ἔδωκάν μοι· καὶ ἔῤῥιψα εἰς τὸ πῦρ· καὶ ἐξῆλθεν ὁ μόσχος οὗτος. Καὶ ἰδὼν Μωυσῆς τὸν λαὸν ὅτι διεσκέδασται· διεσκέδασε γὰρ αὐτοὺς Ἀαρών ἐπίχαρμα τοῖς ὑπεναντίοις αὐτῶν ἔστη δὲ Μωυσῆς ἐπὶ τῆς πύλης τῆς

παρεμβολῆς, καὶ εἶπε, τίς πρὸς Κύριον; ἴτω πρός με. Συνῆλθον οὖν πρὸς αὐτὸν πάντες οἱ υἱοὶ Λευί. Καὶ λέγει αὐτοῖς τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ θέσθε ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ ῥομφαίαν ἐπὶ τὸν μηρὸν, καὶ διέλθατε καὶ ἀνακάμψατε ἀπὸ πύλης ἐπὶ πύλην διὰ τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἀποκτείνατε ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸν ἔγγιστα αὐτοῦ. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Λευεὶ καθὰ ἐλάλησεν αὐτοῖς Μωυσῆς· καὶ ἔπεσαν ἐκ τοῦ λαοῦ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ εἰς τρισχιλίους ἄνδρας. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Μωυσῆς, ἐπληρώσατε τὰς χεῖρας ὑμῶν σήμερον Κυρίῳ ἕκαστος ἐν τῷ υἱῷ ἢ ἐν τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, δοθῆναι ἐφ ὑμᾶς εὐλογίαν. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὴν αὔριον εἶπε Μωυσῆς πρὸς τὸν λαὸν, ὑμεῖς ἡμαρτήκατε ἁμαρτίαν μεγάλη· καὶ νῦν ἀναβήσομαι πρὸς τὸν Θεὸν, ἵνα ἐξιλάσωμαι περὶ τῆς ἁμαρτίας ὑμῶν. Ὑπέστρεψε δὲ Μωυσῆς πρὸς Κύριον, καὶ εἶπε, δέομαι, κύριε· ἡμάρτηκεν ὁ λαὸς οὗτος ἁμαρτίαν μεγάλην, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς θεοὺς χρυσοῦς. Καὶ νῦν εἰ μὲν ἀφεῖς αὐτοῖς τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν, ἄφες· εἰ δὲ μή, ἐξάλειψόν με ἐκ τῆς βίβλου σου, ἧς ἔγραψας. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἴ τις ἡμάρτηκεν ἐνώπιόν μου, ἐξαλείψω αὐτοὺς ἐκ τῆς βίβλου μου. Νυνὶ δὲ βάδιζε, κατάβηθι, καὶ ὁδήγησον τὸν λαὸν τοῦτον εἰς τὸν τόπον, ὃν εἶπά σοι· ἰδοὺ ὁ ἄγγελός μου προπορεύσεται πρὸ προσώπου σου· ᾗ δ ἂν ἡμέρᾳ ἐπισκέπτωμαι, ἐπάξω ἐπ αὐτοὺς τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν Καὶ ἐπάταξε Κύριος τὸν λαὸν περὶ τῆς ποιήσεως τοῦ μόσχου, οὗ ἐποίησεν Ἀαρών.

# 33

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆς, προπορεύου, ἀνάβηθι ἐντεῦθεν σὺ καὶ ὁ λαός σου, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου, εἰς τὴν γῆν, ἣν ὤμοσα τῷ Ἀβραὰμ, καὶ Ἰσαὰκ, καὶ Ἰακὼβ, λέγων, Τῷ σπέρματι ὑμῶν δώσω αὐτήν. Καὶ συναποστελῶ τὸν ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου· καὶ ἐκβαλεῖ τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ Χετταῖον, καὶ Φερεζαῖον, καὶ Γεργεσαῖον, καὶ Εὐαῖον, καὶ Ἰεβουσαῖον, καὶ Χαναναῖον. Καὶ εἰσάξω σε εἰς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· οὐ γὰρ μὴ συναναβῶ μετὰ σου, διὰ τὸ λαὸν σκληροτράχηλόν σε εἶναι, ἵνα μὴ ἐξαναλώσω σε ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ ἀκούσας ὁ λαὸς τὸ ῥῆμα τὸ πονηρὸν τοῦτο, κατεπένθησεν ἐν πενθικοῖς. Καὶ εἶπε Κύριος τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὑμεῖς λαὸς σκληροτράχηλος· ὁρᾶτε, μὴ πληγὴν ἄλλην ἐπάξω ἐγὼ ἐφ ὑμᾶς, καὶ ἐξαναλώσω ὑμᾶς· νῦν οὖν ἀφέλεσθε τὰς στολὰς τῶν δοξῶν ὑμῶν, καὶ τὸν κόσμον, καὶ δείξω σοι ἃ ποιήσω σοι. Καὶ περιέλαντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸν κόσμον αὐτῶν, καὶ τὴν περιστολὴν ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Χωρήβ. Καὶ λαβὼν Μωυσῆς τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, ἔπηξεν ἔξω τῆς παρεμβολῆς, μακρὰν ἀπὸ τῆς παρεμβολῆς· καὶ ἐκλήθη Σκηνὴ μαρτυρίου· καὶ ἐγένετο, πᾶς ὁ ζητῶν Κύριον ἐξεπορεύετο εἰς τὴν σκηνὴν τὴν ἔξω τῆς παρεμβολῆς. Ἡνίκα δ ἂν εἰσεπορεύετο Μωυσῆς εἰς τὴν σκηνὴν ἔξω τῆς παρεμβολῆς, εἱστήκει πᾶς ὁ λαὸς σκοπεύοντες ἕκαστος παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς αὐτοῦ· καὶ κατενοοῦσαν ἀπιόντος Μωυσῆ ἕως τοῦ εἰσελθεῖν αὐτὸν εἰς τὴν σκηνὴν. Ὡς δ ἂν εἰσῆλθε Μωσῆς εἰς τὴν σκηνήν, κατέβαινεν ὁ στύλος τῆς νεφέλης, καὶ ἵστατο ἐπὶ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς, καὶ ἐλάλει Μωσῆ· καὶ ἐλάλει Μωυσῆ. Καὶ ἑώρα πᾶς ὁ λαὸς τὸν στύλον τῆς νεφέλης ἑστῶτα ἐπὶ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς· καὶ στάντες πᾶς ὁ λαὸς, προσεκύνησαν ἕκαστος ἀπὸ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς αὐτοῦ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἐνώπιος ἐνωπίῳ, ὡς εἴτις λαλήσει πρὸς τὸν ἑαυτοῦ

φίλον· καὶ ἀπελύετο εἰς τὴν παρεμβολήν· ὁ δὲ θεράπων Ἰησοῦς υἱὸς Ναυὴ νέος οὐκ ἐξεπορεύετο ἐκ τῆς σκηνῆς. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, πρὸς Κύριον, Ἰδοὺ σύ μοι λέγεις, ἀνάγαγε τὸν λαὸν τοῦτον, σὺ δὲ οὐκ ἐδήλωσάς μοι, ὃν συναποστελεῖς μετ ἐμοῦ· σὺ δέ μοι εἶπας, Οἶδά σε παρὰ πάντας, καὶ χάριν ἔχεις παρ ἐμοί. Εἰ οὖν εὕρηκα χάριν ἐναντίον σου, ἐμφάνισόν μοι σεαυτόν· γνωστῶς ἴδω ἴδω σε, ὅπως ἂν ὦ εὑρηκὼς χάριν ἐναντίον σου,, καὶ ἵνα γνῶ, ὅτι λαός σου τὸ ἔθνος τὸ μέγα τοῦτο. Καὶ λέγει, αὐτὸς προπορεύσομαί σου, καὶ καταπαύσω σε. Καὶ λέγει πρὸς αὐτόν, εἰ μὴ αὐτὸς σὺ συμπορεύῃ, μή με ἀναγάγῃς ἐντεῦθεν. Καὶ πῶς γνωστὸν ἔσται ἀληθῶς, ὅτι εὕρηκα χάριν παρὰ σοί ἐγώ τε καὶ ὁ λαός σου, ἀλλ ἢ συμπορευομένου σου μεθ ἡμῶν; καὶ ἐνδοξασθήσομαι ἐγώ τε καὶ ὁ λαός σου παρὰ πάντα τὰ ἔθνη, ὅσα ἐπὶ τῆς γῆς ἐστί. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, Καὶ τοῦτόν σοι τὸν λόγον, ὃν εἴρηκας ποιήσω· εὕρηκας, ποιήσω· εὕρηκας γὰρ χάριν ἐνώπιον ἐμοῦ, καὶ οἶδά σε παρὰ πάντας. Καὶ λέγει, ἐμφάνισόν μοι σεαυτόν. Καὶ εἶπεν, ἐγὼ παρελεύσομαι πρότερός σου τῇ δόξῃ μου, καὶ καλέσω τῷ ὀνόματί μου, Κύριος ἐναντίον σου· καὶ ἐλεήσω, ὃν ἂν ἐλεῶ, καὶ οἰκτειρήσω, ὃν ἂν οἰκτείρῶ. Καὶ εἶπε, οὐ δυνήσῃ ἰδεῖν τὸ πρόσωπόν μου· οὐ γὰρ μὴ ἴδῃ ἄνθρωπος τὸ πρόσωπόν μου, καὶ ζήσεται. Καὶ εἶπεν Κύριος, Ἰδοὺ τόπος παρ ἐμοί, στήσῃ ἐπὶ τῆς πέτρας· Ἡνίκα δ ἂν παρέλθηνῇ ᾗ δόξα μου, καί θήσω σε εἰς ὀπὴν τῆς πέτρας, καὶ σκεπάσω τῇ χειρί μου ἐπὶ σὲ, ἕως ἂν παρέλθω. Καὶ ἀφελῶ τὴν χεῖρα, καὶ τότε ὄψει τὰ ὀπίσω μου· τὸ δὲ πρόσωπόν μου οὐκ ὀφθήσεταί σοι.

# 34

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν λαξευσον σεαυτῷ δύο πλάκας λιθίνας, καθὼς καὶ αἱ πρῶται, καὶ ἀνάβηθι πρὸς μὲ εἰς τὸ ὄρος, καὶ γράψω ἐπὶ τῶν πλακῶν τὰ ῥήματα ἃ ἦν ἐν ταῖς πλαξὶ ταῖς πρώταις, αἷς συνέτριψας. Καὶ γίνου ἕτοιμος εἰς τὸ πρωί, καὶ ἀναβήσῃ ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σινά, καὶ στήσῃ μοι ἐκεῖ ἐπ ἄκρου τοῦ ὄρους. Καὶ μηδεὶς ἀναβήτω μετὰ σοῦ μηδὲ ὀφθήτω ἐν παντὶ τῷ ὄρει· καὶ τὰ πρόβατα καὶ βόες μὴ νεμέσθωσαν πλησίον τοῦ ὄρους ἐκείνου. Καὶ ἐλάξευσε δύο πλάκας λιθίνας, καθάπερ καὶ αἱ πρῶται· καὶ ὀρθρίσας Μωυσῆς, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος τὸ Σινὰ, καθότι συνέταξεν αὐτῷ Κύριος· καὶ ἔλαβε Μωυσῆς τὰς δύο πλάκας τὰς λιθίνας. Καὶ κατέβη Κύριος ἐν νεφέλῃ, καὶ παρέστη αὐτῷ ἐκεῖ, καὶ ἐκάλεσε τῷ ὀνόματι Κυρίου. Καὶ παρῆλθε Κύριος πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἐκάλεσε κύριος ὁ Θεὸς οἰκτείρμων καὶ ἐλεήμων, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος καὶ ἀληθινός, καὶ δικαιοσύνην διατηρῶν καὶ ἔλεος εἰς χιλιάδας, ἀφαιρῶν ἀνομίας καὶ ἀδικίας καὶ ἁμαρτίας, καὶ οὐ καθαριεῖ τὸν ἔνοχον, ἐπάγων ἀνομίας πατέρων ἐπὶ τέκνα καὶ ἐπὶ τέκνα τέκνων ἐπὶ τρίτην καὶ τετάρτην γενεάν. Καὶ σπεύσας Μωσῆς κύψας ἐπὶ τὴν γῆν προσεκύνησε· καὶ εἶπεν, εἰ εὕρηκα χάριν ἐνώπιόν σου, συμπορευθήτω ὁ Κύριός μου μεθ ἡμῶν· ὁ λαὸς γὰρ σκληροτράχηλός ἐστι, καὶ ἀφελεῖς σὺ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, καὶ τὰς ἀνομίας ἡμῶν, καὶ ἐσόμεθά σοι. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, Ἰδοὺ, ἐγὼ τίθημί σοι διαθήκην ἐνώπιον παντὸς τοῦ λαοῦ σοῦ, ποιήσω ἔνδοξα, ἃ οὐ γέγονεν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, καὶ ἐν παντὶ ἔθνει· καὶ ὄψεται πᾶς ὁ λαὸς, ἐν οἷς εἶ σὺ, τὰ ἔργα Κυρίου, ὅτι θαυμαστά ἐστιν, ἃ ἐγὼ ποιήσω σοι. Πρόσεχε σὺ πάντα ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι· ἰδοὺ ἐγὼ ἐκβάλλω πρὸ προσώπου ὑμῶν τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ Χαναναῖον, καὶ Φερεζαῖον, καὶ Χετταῖον, καὶ Εὐαῖον, καὶ Γεργεσαῖον, καὶ Ἰεβουσαῖον. Πρόσεχε σεαυτῷ, μή ποτε

θῇς διαθήκην τοῖς ἐγκαθημένοις ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ εἰς αὐτὴν, μή σοι γένηται πρόσκομμα ἐν ὑμῖν. Τοὺς βωμοὺς αὐτῶν καθελεῖτε, καὶ τὰς στήλας αὐτῶν συντρίψετε, καὶ τὰ ἄλση αὐτῶν ἐκκόψετε, καὶ τὰ γλυπτὰ τῶν θεῶν αὐτῶν κατακαύσετε ἐν πυρί. Οὐ γὰρ μὴ προσκυνήσητε θεοῖς ἑτέροις· ὁ γὰρ Κύριος ὁ Θεὸς, ζηλωτὸν ὄνομα, Θεὸς ζηλωτής ἐστι. Μή ποτε θῇς διαθήκην τοῖς ἔγκαθημένοις ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐκπορνεύσωσιν ὀπίσω τῶν θεῶν αὐτῶν, καὶ θύσωσι τοῖς θεοῖς αὐτῶν, καὶ καλέσωσίν σε, καὶ φάγῃς τῶν αὐτῶν, καὶ λάβῃς τῶν θυγατέρων αὐτῶν τοῖς υἱοῖς σου, καὶ τῶν θυγατέρων σου δῷς τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, καὶ ἐκπορνεύσωσιν αἱ θυγατέρες σου ὀπίσω τῶν θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐκπορνεύσωσιν οἱ υἱοί σου ὀπίσω τῶν θεῶν αὐτῶν. Καὶ θεοὺς χωνευτοὺς οὐ ποιήσεις σεαυτῷ. Καὶ τὴν ἑσρτὴν τῶν ἀζύμων φυλάξῃ· ἑπτὰ ἡμέρας φαγῃ ἄζυμα, καθάπερ ἐντέταλμαί σοι, εἰς τὸν καιρὸν ἐν μηνὶ τῶν νέων· ἐν γὰρ μηνὶ τῶν νέων ἐξῆλθες ἐξ Αἰγύπτου. Πᾶν διανοῖγον μήτραν, ἐμοὶ τὰ ἀρσενικὰ, πᾶν πρωτότοκον μόσχου, καὶ πρωτότοκον προβάτου. Καὶ πρωτότοκον ὑποζυγίου λυτρώσῃ προβάτῳ· ἐὰν δὲ μὴ λυτρώσῃ αὐτὸ, τιμὴν δώσεις. πᾶν πρωτότοκον τῶν υἱῶν σου λυτρώσῃ· οὐκ ὀφθήσῃ ἐνώπιόν μου κενός. Ἓξ ἡμέρας ἐργᾷ, τῇ δὲ ἑβδόμῃ καταπαύσεις· τῷ σπόρῳ καὶ τῷ ἀμητῷ κατάπαυσις. Καὶ ἑορτὴν ἑβδομάδων ποιήσεις μοι, ἀρχὴν θερισμοῦ πυροῦ· καὶ ἑορτὴν συναγωγῆς μεσοῦντος τοῦ ἐνιαυτοῦ. Τρεῖς καιροὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ὀφθήσεται πᾶν ἀρσενικόν σου ἐνώπιον Κυρίου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ. Ὅταν γὰρ ἐκβάλω τὰ ἔθνη πρὸ προσώπου σου, καὶ πλατυνῶ τὰ ὅριά σου, οὐκ ἐπιθυμήσει οὐδεὶς τῆς γῆς σου, ἡνίκα ἂν ἀναβαίνῃς ὀφθῆναι ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, τρεῖς καιροὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ. Οὐ σφάξεις ἐπὶ ζύμῃ αἷμα θυμιαμάτων μου, καὶ οὐ κοιμηθήσεται εἰς τὸ πρωῒ θύματα ἑορτῆς τοῦ πάσχα. Τὰ

πρωτογεννήματα τῆς γῆς σου θήσεις εἰς τὸν οἶκον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου· οὐχ ἑψήσεις ἄρνα ἐν γάλακτι μητρὸς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, γράψον σεαυτῷ τὰ ῥήματα ταῦτα· ἐπὶ γὰρ τῶν λόγων τούτων τέθειμαί σοι διαθήκην, καὶ τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἦν ἐκεῖ Μωυσῆς ἐναντίον Κυρίου τεσσεράκοντα ἡμέρας, καὶ τεσσεράκοντα νύκτας· ἄρτον οὐκ ἔφαγε, καὶ ὕδωρ οὐκ ἔπιε· καὶ ἔγραψεν ἐπὶ τῶν πλακῶν τὰ ῥήματα ταῦτα τῆς διαθήκης, τοὺς δέκα λόγους. Ὡς δὲ κατέβαινε Μωυσῆς ἐκ τοῦ ὄρους, καὶ αἱ δύο πλάκες ἐπὶ τῶν χειρῶν Μωυσῆ· καταβαίνοντος δὲ αὐτοῦ ἐκ τοῦ ὄρους, Μωυσῆς οὐκ ᾔδει ὅτι δεδόξασται ἡ ὄψις τοῦ χρώματος τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἐν τῷ λαλεῖν αὐτὸν αὐτῷ. Καὶ εἶδεν Ἀαρὼν καὶ πάντες οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραὴλ τὸν Μωυσῆν, καὶ ἦν δεδοξασμένη ἡ ὄψις τοῦ χρώματος τοῦ προσώπου αὐτοῦ. καὶ ἐφοβήθησαν ἐγγίσαι αὐτῷ. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτοὺς Μωυσῆς, καὶ ἐπεστράφησαν πρὸς αὐτὸν Ἀαρὼν καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῆς συναγωγῆς· καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς Μωυσῆς. Καὶ μετὰ ταῦτα προσῆλθον πρὸς αὐτὸν πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς πάντα, ὅσα ἐνετείλατο Κύριος πρὸς αὐτὸν ἐν τῷ ὄρει Σινά. Καὶ ἐπειδὴ κατέπαυσε λαλῶν πρὸς αὐτοὺς, ἐπέθηκεν ἐπὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ κάλυμμα. Ἡνίκα δ ἂν εἰσεπορεύετο Μωυσῆς, ἔναντι Κυρίου λαλεῖν αὐτῷ, περιῃρεῖτο τὸ κάλυμμα ἕως τοῦ ἐκπορεύεσθαι· καὶ ἐξελθὼν ἐλάλει πᾶσι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ὅσα ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος. Καὶ εἶδον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πρόσωπον Μωυσέως, ὅτι δεδόξασται· καὶ περιέθηκε Μωυσῆς κάλυμμα ἐπὶ τὸ πρόσωπον ἑαυτοῦ, ἕως ἂν εἰσέλθῃ συλλαλεῖν αὐτῷ.

# 35

Καὶ συνήθροισε Μωυσῆς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ εἶπεν, οὗτοι οἱ λόγοι, οὓς εἶπε Κύριος ποιῆσαι αὐτούς. Ἓξ ἡμέρας ποιήσεις ἔργα, τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ κατάπαυσις· ἅγια, σάββατα· ἀνάπαυσις Κυρίῳ· πᾶς ὁ ποιῶν ἔργον ἐν αὐτῇ, τελευτάτω. Οὐ καύσετε πῦρ ἐν πάσῃ κατοικίᾳ ὑμῶν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων· ἐγὼ Κύριος. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, λέγων, τοῦτο τὸ ῥῆμα, ὃ συνέταξε Κύριος, λέγων, λάβετε παρ ὑμῶν αὐτῶν ἀφαίρεμα Κυρίῳ· πᾶς ὁ καταδεχόμενος τῇ καρδίᾳ, οἴσουσι τὰς ἀπαρχὰς Κυρίῳ, χρυσίον, ἀργύριον, χαλκὸν, ὑάκινθον, πορφύραν, κόκκινον διπλοῦν διανενησμένον, καὶ βύσσον κεκλωσμένην, καὶ τρίχας αἰγείας, καὶ δέρματα κριῶν ἠρυθροδανωμένα, καὶ δέρματα ὑακινθινα, καὶ ξύλα ἄσηπτα, καὶ λίθους σαρδίου, καὶ λίθους εἰς τὴν γλυφὴν εἰς τὴν ἐπωμίδα καὶ τὸν ποδήρη. Καὶ πᾶς σοφὸς τῇ καρδίᾳ ἐν ὑμῖν, ἐλθὼν ἐργαζέσθω πάντα ὅσα συνέταξε Κύριος· Τὴν σκηνὴν, καὶ τὰ παραρύματα, καὶ τὰ κατακαλύμματα, καὶ τὰ διατόνια, καὶ τοὺς μοχλοὺς, καὶ τοὺς στύλους, καὶ τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου, καὶ τοὺς ἀναφορεῖς αὐτῆς, καὶ τὸ ἱλαστήριον αὐτῆς, καὶ τὸ καταπέτασμα, καὶ τὴν τράπεζαν καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὴν λυχνίαν τοῦ φωτὸς καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὸ θυσιαστήριον καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτοῦ, καὶ τὰς στολὰς τὰς ἁγίας Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως, καὶ τὰς στολὰς ἐν αἷς λειτουργήσουσιν ἐν αὐταῖς, καὶ τοὺς χιτῶνας τοῖς υἱοῖς Ἀαρὼν τῆς ἱερατίας, καὶ τὸ ἔλαιον τοῦ χρίσματος, καὶ τὸ θυμίαμα τῆς συνθέσεως. Καὶ ἐξῆλθε πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ ἀπὸ Μωυσῆ. Καὶ ἤνεγκαν ἕκαστος, ὧν ἔφερεν ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ ὅσοις ἔδοξε τῇ ψυχῇ αὐτῶν, ἀφαίρεμα· καὶ ἤνεγκαν ἀφαίρεμα Κυρίῳ εἰς πάντα τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ εἰς πάντα τὰ κάτεργα αὐτῆς καὶ εἰς πάσας τὰς στολὰς τοῦ ἁγίου. Καὶ

ἤνεγκαν οἱ ἄνδρες παρὰ τῶν γυναικῶν, πᾶς ᾧ ἔδοξε τῇ διανοίᾳ, ἤνεγκαν σφραγίδας, καὶ ἐνώτια, καὶ δακτυλίους, καὶ ἐμπλόκια, καὶ περιδέξια, πᾶν σκεῦος χρυσοῦν. Καὶ πάντες ὅσοι ἤνεγκαν ἀφαιρέματα χρυσίου Κυρίῳ, καὶ παρ᾽ ᾧ εὑρέθη βύσσος· καὶ δέρματα ὑακίνθινα καὶ δέρματα κριῶν ἠρυθροδανωμένα ἤνεγκαν. Καὶ πᾶς ὁ ἀφαιρῶν ἀφαίρεμα, ἤνεγκαν ἀργύριον καὶ χαλκὸν, τὰ ἀφαιρέματα Κυρίῳ· καὶ παρ᾽ οἷς εὑρέθη ξύλα ἄσηπτα· καὶ εἰς πάντα τὰ ἔργα τῆς παρασκευῆς ἤνεγκαν. Καὶ πᾶσα γυνὴ σοφὴ τῇ διανοίᾳ ταῖς χερσὶ νήθειν, ἤνεγκαν νενησμένα, τὴν ὑάκινθον, καὶ τὴν πορφύραν, καὶ τὸ κόκκινον, καὶ τὴν βύσσον. Καὶ πᾶσαι αἱ γυναῖκες, αἷς ἔδοξε τῇ διανοίᾳ αὐτῶν ἐν σοφίᾳ, ἔνησαν τὰς τρίχας τὰς αἰγείας. Καὶ οἱ ἄρχοντες ἤνεγκαν τοὺς λίθους τῆς σμαράγδου, καὶ τοὺς λίθους τῆς πληρώσεως εἰς τὴν ἐπωμίδα, καὶ τὸ λογεῖον, καὶ τὰς συνθέσεις, καὶ εἰς τὸ ἔλαιον τῆς χρίσεως, καὶ τὴν συνθεσιν τοῦ θυμιάματος. Καὶ πᾶς ἀνὴρ καὶ γυνὴ, ὧν ἔφερεν ἡ διάνοια αὐτῶν εἰσελθόντας ποιεῖν πάντα τὰ ἔργα, ὅσα συνέταξε Κύριος ποιῆσαι αὐτὰ διὰ Μωυσῆ, ἤνεγκαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, ἀφαίρεμα Κυρίῳ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἀνακέκληκεν ὁ Θεὸς ἐξ ὀνόματος τὸν Βεσελεὴλ τὸν τοῦ Οὐρείου τὸν Ὢρ, ἐκ τῆς φυλῆς Ἰούδα, καὶ ἐνέπλησεν αὐτὸν πνεῦμα θεῖον σοφίας καὶ συνέσεως, καὶ ἐπιστήμης πάντων, ἀρχιτεκτονεῖν κατὰ πάντα τὰ ἔργα τῆς ἀρχιτεκτονίας, ποιεῖν τὸ χρυσίον καὶ τὸ ἀργύριον καὶ τὸν χαλκόν, καὶ λιθουργῆσαι τὸν λίθον, καὶ κατεργάζεσθαι τὰ ξύλα, καὶ ποιεῖν ἐν παντὶ ἔργῳ σοφίας. Καὶ προβιβάσαι γε ἔδωκεν ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτῷ τε, καὶ τῷ Ἐλιὰβ τῷ τοῦ Ἀχισαμὰκ, ἐκ φυλῆς Δάν· Καὶ ἐνέπλησεν αὐτοὺς σοφίας, συνέσεως, διανοίας, πάντα συνιέναι ποιῆσαι τὰ ἔργα τοῦ ἁγίου, καὶ τὰ ὑφαντὰ καὶ ποικιλτὰ ὑφάναι τῷ κοκκίνῳ, καὶ τῇ βύσσῳ, ποιεῖν πᾶν ἔργον ἀρχιτεκτονίας, ποικιλίας.

# 36

Καὶ ἐποίησε Βεσελεὴλ καὶ Ἐλιὰβ, καὶ πᾶς σοφὸς τῇ διανοίᾳ, ᾧ ἐδόθη σοφία καὶ ἐπιστήμη ἐν αὐτοῖς, συνιέναι ποιεῖν πάντα τὰ ἔργα, κατὰ τὰ ἅγια καθήκοντα, κατὰ πάντα ὅσα συνέταξε Κύριος. Καὶ ἐκάλεσε Μωυσῆς Βεσελεὴλ καὶ Ἐλιὰβ, καὶ πάντας τοὺς ἔχοντας τὴν σοφίαν, ᾧ ἔδωκεν ὁ Θεὸς ἐπιστήμην ἐν τῇ καρδίᾳ, καὶ πάντας τοὺς ἑκουσίως βουλομένους προσπορεύεσθαι πρὸς τὰ ἔργα, ὥστε συντελεῖν αὐτά. Καὶ ἔλαβον παρὰ Μωσῆ πάντα τὰ ἀφαιρέματα, ἃ ἤνεγκαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς πάντα τὰ ἔργα τοῦ ἁγίου ποιεῖν αὐτά· καὶ αὐτοὶ προσεδέχοντο ἔτι τὰ προσφερόμενα παρὰ τῶν φερόντων τὸ πρωΐ. Καὶ παρεγίνοντο πάντες οἱ σοφοὶ οἱ ποιοῦντες τὰ ἔργα τοῦ ἁγίου, ἕκαστος κατὰ τὸ αὐτοῦ ἔργον, ὃ εἰργάζοντο αὐτοί. Καὶ εἶπε πρὸς Μωυσῆν, ὅτι πλῆθος φέρει ὁ λαὸς κατὰ τὰ ἔργα ὅσα συνέταξε Κύριος ποιῆσαι. Καὶ προσέταξε Μωυσῆς, καὶ ἐκήρυξεν ἐν τῇ παρεμβολῇ, λέγων, ἀνὴρ καὶ γυνὴ μηκέτι ἐργαζέσθωσαν εἰς τάς ἀπαρχὰς τοῦ ἁγίου· καὶ ἐκωλύθη ὁ λαὸς ἔτι προσφέρειν. Καὶ τὰ ἔργα ἦν αὐτοῖς ἱκανὰ εἰς τὴν κατασκευὴν ποιῆσαι, καὶ προσκατέλιπον. Καὶ ἐποίησε πᾶς σοφὸς ἐν τοῖς ἐργαζομένοις τὰς στολὰς τῶν ἁγίων, αἵ εἰσιν Ἀαρὼν τῷ ἱερεῖ, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησε τὴν ἐπωμίδα ἐκ χρυσίου, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης· καὶ ἐτμήθη τὰ πέταλα τοῦ χρυσίου τρίχες, ὥστε συνυφάναι σὺν τῇ ὑακίνθῳ, καὶ τῇ πορφύρᾳ, καὶ σὺν τῷ κοκκίνῳ τῷ διανενησμένῳ, καὶ τῇ βύσσῳ τῇ κεκλωσμένῃ· ἔργον ὑφαντὸν ἐποίησαν αὐτό· ἐπωμίδας συνεχούσας ἐξ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν, ἔργον ὑφαντὸν εἰς ἄλληλα συμπεπλεγμένα

καθ ἑαυτό. Ἐξ αὐτοῦ ἐποίησαν αὐτὸ κατὰ τὴν αὐτοῦ ποίησιν, ἐκ χρυσίου, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου διανενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· καὶ ἐποίησαν ἀμφοτέρους τοὺς λίθους τῆς σμαράγδου συνπεπορπημένους καὶ περισεσιαλωμένους χρυσίῳ, γεγλυμμένους καὶ ἐκκεκολαμμένους ἐγκόλαμμα σφραγίδος ἐκ τῶν ὀνομάτων τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἐπέθηκεν αὐτοὺς ἐπὶ τοὺς ὤμους τῆς ἐπωμίδος, λίθους μνημοσύνου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησαν λογεῖον, ἔργον ὑφαντὸν ποικιλίᾳ κατὰ τὸ ἔργον τῆς ἐπωμίδος, ἐκ χρυσίου, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου διανενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης· τετράγωνον διπλοῦν ἐπόησαν τὸ λογεῖον· σπιθαμῆς τὸ μῆκος, καὶ σπιθαμῆς τὸ εὖρος διπλοῦν. Καὶ συνυφάνθη ἐν αὐτῷ ὕφασμα κατάλιθον τετράστιχον· στίχος λίθων, σάρδιον καὶ τοπάζιον καὶ σμάραγδος, ὁ στίχος ὁ εἷς· καὶ ὁ στίχος ὁ δεύτερος, ἄνθραξ καὶ σάπφειρος καὶ ἴασπις· καὶ ὁ στίχος ὁ τρίτος, λιγύριον καὶ ἀχάτης καὶ ἀμέθυστος· καὶ ὁ στίχος ὁ τέταρτος, χρυσόλιθος καὶ βηρύλλιον καὶ ὀνύχιον περικεκυκλωμένα χρυσίῳ, καὶ συνδεδεμένα χρυσίῳ. Καὶ οἱ λίθοι ἦσαν ἐκ τῶν ὀνομάτων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ δώδεκα, ἐκ τῶν ὀνομάτων αὐτῶν ἐγγεγλυμμένα εἰς σφραγίδας, ἕκαστος ἐκ τοῦ ἑαυτοῦ ὀνόματος εἰς τὰς δώδεκα φυλάς. Καὶ ἐποίησαν ἐπὶ τὸ λογεῖον κρωσσοὺς συμπεπλεγμένους, ἔργον ἐμπλοκίου, ἐκ χρυσίου καθαροῦ. Καὶ ἐποίησαν δύο ἀσπιδίσκας χρυσᾶς, καὶ δύο δακτυλίους χρυσοῦς· καὶ ἐπέθηκαν τοὺς δύο δακτυλίους τοὺς χρυσοῦς ἐπ ἀμφοτέρας τὰς ἀρχὰς τοῦ λογείου. Καὶ ἐπέθηκαν τὰ ἐμπλόκια ἐκ χρυσίου ἐπὶ τοὺς δακτυλίους ἐπ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν τοῦ λογείου· καὶ εἰς τὰς δύο συμβολὰς τὰ δύο ἐμπλόκια. Καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὰς δύο ἀσπιδίσκας· καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τοὺς ὤμους

τῆς ἐπωμίδος ἐξεναντίας κατὰ πρόσωπον. Καὶ ἐποίησαν δύο δακτυλίους χρυσοῦς, καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὰ δύο πτερύγια ἐπ ἄκρου τοῦ λογείου, καὶ ἐπὶ τὸ ἄκρον τοῦ ὀπισθίου τῆς ἐπωμίδος ἔσωθεν· Καὶ ἐποίησαν δύο δακτυλίους χρυσοῦς, καὶ ἐπέθηκαν ἐπ ἀμφοτέρους τοὺς ὤμους τῆς ἐπωμίδος κάτωθεν αὐτοῦ, κατὰ πρόσωπον κατὰ τὴν συμβολὴν ἄνωθεν τῆς συνυφῆς τῆς ἐπωμίδος· καὶ συνέσφιγξε τὸ λογεῖον ἀπὸ τῶν δακτυλίων τῶν ἐπ αὐτοῦ εἰς τοὺς δακτυλίους τῆς ἐπωμίδος, συνεχομένους ἐκ τῆς ὑακίνθου, συμπεπλεγμένους εἰς τὸ ὕφασμα τῆς ἐπωμίδος, ἵνα μὴ χαλᾶται τὸ λογεῖον ἀπὸ τῆς ἐπωμίδος, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησαν τὸν ὑποδύτην ὑπὸ τὴν ἐπωμίδα, ἔργον ὑφαντὸν, ὅλον ὑακίνθινον· τὸ δὲ περιστόμιον τοῦ ὑποδύτου ἐν τῷ μέσῳ διυφασμένον συμπλεκτὸν, ὥαν ἔχον κύκλῳ τὸ περιστόμιονν ἀδιάλυτον· Καὶ ἐποίησαν ἐπὶ τοῦ λώματος τοῦ ὑποδύτου κάτωθεν ὡς ἐξανθούσης ῥόας ῥοΐσκους, ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης. Καὶ ἐποίησαν κώδωνας χρυσοῦς, καὶ ἐπέθηκαν τοὺς κώδωνας ἐπὶ τὸ λῶμα τοῦ ὑποδύτου κύκλῳ ἀνὰ μέσον τῶν ῥοΐσκων· κώδων χρυσοῦς καὶ ῥοΐσκος ἐπὶ τοῦ λώματος τοῦ ὑποδύτου κύκλῳ, εἰς τὸ λειτουργεῖν, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησαν χιτῶνας βυσσίνους, ἔργον ὑφαντὸν, Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, καὶ τὰς κιδάρεις ἐκ βύσσου, καὶ τὴν μίτραν ἐκ βύσσου, καὶ τὰ περισκελῆ ἐκ βύσσου κεκλωσμένης, καὶ τὰς ζώνας αὐτῶν ἐκ βύσσου, καὶ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, ἔργον ποικιλτοῦ, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησαν τὸ πέταλον τὸ χρυσοῦν, ἀφόρισμα τοῦ ἁγίου, χρυσίου καθαροῦ· καὶ ἔγραψεν ἐπ αὐτοῦ γράμματα ἐκτετυπωμένα, σφραγίδος, Ἁγίασμα Κυρίῳ· Καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὸ λῶμα ὑακίνθινον, ὥστε

ἐπικεῖσθαι ἐπὶ τὴν μίτραν ἄνωθεν, ὅν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 37

Καὶ ἐποίησαν τῇ σκηνῇ δέκα αὐλαίας· ὀκτὼ καὶ εἴκοσι πήχεων μῆκος τῆς αὐλαίας τῆς μιᾶς· τὸ αὐτὸ ἦν πάσαις· καὶ τεσσάρων πήχεων τὸ εὖρος τῆς αὐλαίας τῆς μιᾶς. καὶ ἐποίησαν τὸ καταπέτασμα ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης, ἔργον ὑφαντὸν χερουβείμ· καὶ ἐπέθηκαν αὐτὸ ἐπὶ τέσσαρας στύλους ἀσήπτους κατακεχρυσωμένους ἐν χρυσίῳ· καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν χρυσαῖ, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τέσσαρες ἀργυραῖ. καὶ ἐποίησαν τὸ καταπέτασμα τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης, ἔργον ὑφαντὸντοῦ χερουβείμ· καὶ τοὺς στύλους αὐτῶν πέντε, καὶ τοὺς κρίκους· καὶ τὰς κεφαλίδας αὐτῶν, καὶ τὰς ψαλίδας αὐτῶν κατεχρύσωσαν χρυσίῳ· καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν πέντε χαλκαῖ. Καὶ ἐποίησαν τὴν αὐλῆν τὰ πρὸς Λίβα, ἱστία τῆς αὐλῆς ἐκ βύσσου κεκλωσμένης ἑκατὸν ἐφ ἑκατόν· καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν εἴκοσι, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν εἴκοσι. καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς Βορῤᾶν, ἑκατὸν ἐφ ἑκατόν· καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς Νότον, ἑκατὸν ἐφ ἑκατόν· καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν εἴκοσι, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν εἴκοσι· Καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς θάλασσαν αὐλαῖαι πεντήκοντα πήχεων· στύλοι αὐτῶν δέκα, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν δέκα· Καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς ἀνατολὰς πεντήκοντα πήχεων ἱστία, πεντεαίδεκα πήχεων τὸ κατὰ νώτου· καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν τρεῖς, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τρεῖς· Καὶ ἐπὶ τοῦ

νώτου τοῦ δευτέρου ἔνθεν καὶ ἔνθεν κατὰ τὴν πύλην τῆς αὐλῆς, αὐλαῖαι πεντεκαίδεκα πήχεων· στύλοι αὐτῶν τρεῖς, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τρεῖς· πᾶσαι αἱ αὐλαῖαι τῆς σκηνῆς ἐκ βύσσου κεκλωσμένης. Καὶ αἱ βάσεις τῶν στύλων αὐτῶν χαλκαῖ, καὶ αἱ ἀγκύλαι αὐτῶν ἀργυραῖ, καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν περιηργυρωμέναι ἀργυρίῳ, καὶ οἱ στύλοι περιηργυρωμένοι ἀργυρίῳ πάντες οἱ στύλοι τῆς αὐλῆς· καὶ τὸ καταπέτασμα τῆς πύλης τῆς αὐλῆς ἔργον ποικιλτοῦ ἐξ ὑακίνθου, καὶ πορφύρας, καὶ κοκκίνου νενησμένου, καὶ βύσσου κεκλωσμένης· εἴκοσι πήχεων τὸ μῆκος, καὶ τὸ ὕψος καὶ τὸ εὖρος πέντε πήχεων ἐξισούμενον τοῖς ἱστίοις τῆς αὐλῆς· καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν τέσσαρες, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν τέσσαρες χαλκαῖ, καὶ αἱ ἀγκύλαι αὐτῶν ἀργυραῖ, καὶ αἱ κεφαλίδες αὐτῶν περιηργυρωμέναι ἀργυρίῳ. Καὶ πάντες οἱ πάσσαλοι τῆς αὐλῆς κύκλῳ χαλκοῖ, καὶ αὐτοὶ περιηργυρωμένοι ἀργυρίῳ. Καὶ αὕτη ἡ σύνταξις τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καθὰ συνετάγη Μωυσῇ, τὴν λειτουργίαν εἶναι τῶν Λευιτῶν διὰ Ἰθάμαρ τοῦ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως. Καὶ Βεσελεὴλ ὁ τοῦ Οὐρείου, ἐκ φυλῆς Ἰούδα, ἐποίησε καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, καὶ Ἐλιὰβ ὁ τοῦ Ἀχισαμὰχ ἐκ φυλῆς Δὰν, ὅς ἠρχιτεκτόνησε τὰ ὑφαντὰ καὶ τὰ ῥαφιδευτὰ καὶ ποικιλτικά, ὑφάναι τῷ κοκκίνῳ καὶ τῇ βύσσῳ.

# 38

Καὶ ἐποίησε Βεσελεὴλ τὴν κιβωτόν, καὶ κατεχρύσωσεν αὐτὴν χρωσίῳ καθαρῷ ἔσωθεν καὶ ἔξωθεν· καὶ ἐχώνευσεν αὐτῇ τέσσαρας δακτυλίους χρυσοῦς· δύο ἐπὶ τὸ κλίτος τὸ ἓν, καὶ δύο ἐπὶ τὸ κλίτος τὸ δεύτερον, εὐρεῖς τοῖς διωστῆρσιν, ὥστε αἴρειν αὐτὴν

ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἐποίησε τὸ ἱλαστήριον ἐπάνωθεν τῆς κιβωτοῦ ἐκ χρυσίου καθαροῦ, καὶ τοὺς δύο χερουβεὶμ χρυσοῦς· χεροὺβ ἕνα ἐπὶ τὸ ἄκρον τοῦ ἱλαστηρίου τὸ ἓν, καὶ χεροὺβ ἕνα ἐπὶ τὸ ἄκρον τοῦ ἱλαστηρίου τὸ δεύτερον, σκιάζοντα ταῖς πτέρυξιν αὐτῶν ἐπὶ τὸ ἱλαστήριον. Καὶ ἐποίησε τὴν τράπεζαν τὴν προκειμένην ἐκ χρυσίου καθαροῦ, καὶ ἐχώνευσεν αὐτῇ τέσσαρας δακτυλίους, δύο ἐπὶ τοῦ κλίτους τοῦ ἑνὸς, καὶ δύο ἐπὶ τοῦ κλίτους τοῦ δευτέρου, εὐρεῖς, ὥστε αἴρειν τοῖς διωστῆρσιν ἐν αὐτοῖς. Καὶ τοὺς διωστῆρας τῆς κιβωτοῦ καὶ τῆς τραπέζης ἐποίησε, καὶ κατεχρύσωσεν αὐτοὺς χρυσίῳ. Καὶ ἐποίησε τὰ σκεύη τῆς τραπέζης, τά τε τρυβλία, καὶ τὰς θυίσκας, καὶ τοὺς κυάθους, καὶ τὰ σπονδεῖα, ἐν οἷς σπείσει ἐν αὐτοῖς, χρυσᾶ. Καὶ ἐποίησε τὴν λυχνίαν ἣ φωτίζει, χρυσῆν, στερεὰν τὸν καυλόν, καὶ τοὺς καλαμίσκους ἐξ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν αὐτῆς· ἐκ τῶν καλαμίσκων αὐτῆς οἱ βλαστοὶ ἐκ τῶν καλαμίσκων αὐτῆς οἱ βλαστοὶ ἐξέχοντες· τρεῖς ἐκ τούτου, καὶ τρεῖς ἐκ τούτου, ἐξισούμενοι ἀλλήλοις. Καὶ τὰ λαμπάδια αὐτῶν, ἅ ἐστιν ἐπὶ τῶν ἄκρων, καρυωτὰ ἐξ αὐτῶν· καὶ τὰ ἐνθέμια ἐξ αὐτῶν, ἵνα ὦσιν οἱ λύχνοι ἐπ αὐτῶν· καὶ τὸ ἐνθέμιον τὸ ἕβδομον, τὸ ἐπ ἄκρου τοῦ λαμπαδίου, ἐπὶ τῆς κορυφῆς ἄνωθεν, στερεὸν ὅλον χρυσοῦν· Καὶ ἑπτὰ λύχνους ἐπ αὐτῆς χρυσοῦς, καὶ τὰς λαβίδας αὐτῆς χρυσᾶς, καὶ τὰς ἐπαρυστρίδας αὐτῶν χρυσᾶς. Οὗτος περιηργύρωσε τοὺς στύλους, καὶ ἐχώνευσε τῷ στύλῳ δακτυλίους χρυσοῦς, καὶ ἐχρύσωσε τοὺς μοχλοὺς χρυσίῳ, καὶ κατεχρύσωσε τοὺς στύλους τοῦ καταπετάσματος χρυσίῳ, καὶ ἐποίησε τὰς ἀγκύλας χρυσᾶς. Οὗτος ἐποίησε καὶ τοὺς κρίκους τῆς σκηνῆς χρυσοῦς, καὶ τοὺς κρίκους τῆς αὐλῆς, καὶ κρίκους εἰς τὸ ἐκτείνειν τὸ κατακάλυμμα ἄνωθεν χαλκοῦς· Οὗτος ἐχώνευσε τὰς κεφαλίδας τὰς ἀργυρᾶς τῆς σκηνῆς, καὶ τὰς κεφαλίδας τὰς χαλκᾶς τῆς θύρας

τῆς σκηνῆς, καὶ τὴν πύλην τῆς αὐλῆς· καὶ ἀγκύλας ἐποίησε τοῖς στύλοις ἀργυρᾶς, ἐπὶ τῶν στύλων οὗτος περιηργύρωσεν αὐτάς· Οὗτος ἐποίησε τοὺς πασσάλους τῆς σκηνῆς, καὶ τοὺς πασσάλους τῆς αὐλῆς χαλκοῦς· Οὗτος ἐποίησε τὸ θυσιαστήριον τὸ χαλκοῦν ἐκ τῶν πυρείων τῶν χαλκῶν, ἃ ἦσαν τοῖς ἀνδράσιν τοῖς καταστασιάσασι μετὰ τῆς Κορὲ συναγωγῆς· Οὗτος ἐποίησε πάντα τὰ σκεύη τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ τὸ πυρεῖον αὐτοῦ, καὶ τὴν βάσιν, καὶ τὰς φιάλας, καὶ τὰς κρεάγρας τὰς χαλκᾶς· Οὗτος ἐποίησε θυσιαστηρίῳ παράθεμα, ἔργον δικτυωτὸν κάτωθεν τοῦ πυρείου ὑπὸ αὐτὸ ἕως τοῦ ἡμίσους αὐτοῦ· καὶ ἐπέθηκεν αὐτῷ τέσσαρας δακτυλίους ἐκ τῶν τεσσάρων μερῶν τοῦ παραθέματος τοῦ θυσιαστηρίου χαλκοῦς, εὐρεῖς τοῖς μοχλοῖς, ὥστε αἴρειν ἐν αὐτοῖς τὸ θυσιαστήριον· Οὗτος ἐποίησε τὸ ἔλαιον τῆς χρίσεως τὸ ἅγιον, καὶ τὴν σύνθεσιν τοῦ θυμιάματος καθαρὸν ἔργον μυρεψοῦ· Οὗτος ἐποίησε τὸν λουτῆρα τὸν χαλκοῦν, καὶ τὴν βάσιν αὐτοῦ χαλκῆν ἐκ τῶν κατόπτρων τῶν νηστευσασῶν, αἳ ἐνήστευσαν παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἔπηξεν αὐτήν. Καὶ ἐποίησε τὸν λουτῆρα, ἵνα νίπτωνται ἐξ αὐτοῦ Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰς χεῖρας αὐτῶν καὶ τοὺς πόδας, εἰσπορευομένων αὐτῶν εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, ἢ ὅταν προσπορεύωνται πρὸς τὸ θυσιαστήριον λειτουργεῖν, ἐνίπτοντο ἐξ αὐτοῦ, καθάπερ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 39

Πᾶν τὸ χρυσίον, ὃ κατειργάσθη εἰς τὰ ἔργα κατὰ πᾶσαν τὴν ἐργασίαν τῶν ἁγίων, ἐγένετο χρυσίου τοῦ τῆς ἀπαρχῆς, ἐννέα καὶ

εἴκοσι τάλαντα, καὶ ἑπτακόσιοι εἴκοσι σίκλοι κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· Καὶ ἀργυρίου ἀφαίρεμα παρὰ τῶν ἐπεσκεμμένων ἀνδρῶν τῆς συναγωγῆς ἑκατὸν τάλαντα, καὶ χίλιοι ἑπτακόσιοι ἑβδομηκονταπέντε σίκλοι· δραχμὴ μία τῇ κεφαλῇ τὸ ἥμισυ τοῦ σίκλου, κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· Πᾶς ὁ παραπορευόμενος τὴν ἐπίσκεψιν ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω εἰς τὰς ἑξήκοντα μυριάδας, καὶ τρισχίλιοι πεντακόσιοι καὶ πεντήκοντα. Καὶ ἐγενήθη τὰ ἑκατὸν τάλαντα τοῦ ἀργυρίου εἰς τὴν χώνευσιν τῶν ἑκατὸν κεφαλίδων τῆς σκηνῆς, καὶ εἰς τὰς κεφαλίδας τοῦ καταπετάσματος, ἑκατὸν κεφαλίδες εἰς τὰ ἑκατὸν τάλαντα, τάλαντον τῇ κεφαλίδι· Καὶ τοὺς χιλίους ἑπτακοσίους ἑβδομηκοντα πέντε σίκλους ἐποίησεν εἰς τὰς ἀγκύλας τοῖς στύλοις· καὶ κατεχρύσωσε τὰς κεφαλίδας αὐτῶν, καὶ κατεκόσμησεν αὐτούς. Καὶ ὁ χαλκὸς τοῦ ἀφαιρέματος ἑβδομήκοντα τάλαντα, καὶ χίλιοι πεντακόσιοι σίκλοι· Καὶ ἐποίησαν ἐξ αὐτον τὰς βάσεις τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὰς βάσεις τῆς αὐλῆς κύκλῳ, καὶ τὰς βάσεις τῆς πύλης τῆς αὐλῆς, καὶ τοὺς πασσάλους τῆς σκηνῆς, καὶ τοὺς πασσάλους τῆς αὐλῆς κύκλῳ, καὶ τὸ παράθεμα τὸ χαλκοῦν τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ πάντα τὰ σκεύη τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ πάντα τὰ ἐργαλεῖα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν· Τὸ δὲ λοιπὸν χρυσίον τοῦ ἀφαιρέματος ἐποίησαν σκεύη εἰς τὸ λειτουργεῖν ἐν αὐτοῖς ἔναντι Κυρίου· Καὶ τὴν καταλειφθεῖσαν ὑάκινθον, καὶ πορφύραν, καὶ τὸ κόκκινον ἐποίησαν στολὰς λειτουργικὰς Ἀαρών, ὥστε λειτουργεῖν ἐν αὐταῖς ἐν τῷ ἁγίῳ· Καὶ ἤνεγκαν τὰς στολὰς πρὸς Μωυσῆν, καὶ τὴν σκηνὴν, καὶ τὰ σκεύη αὐτῆς, τὰς βάσεις καὶ τοὺς μοχλοὺς αὐτῆς, καὶ τοὺς στύλους· καὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ τὸ ἔλαιον τῆς χρίσεως, καὶ τὸ θυμίαμα

τῆς συνθέσεως, καὶ τὴν λυχνίαν τὴν καθαρὰν, καὶ τοὺς λύχνους αὐτῆς, λύχνους τῆς καύσεως, καὶ τὸ ἔλαιον τοῦ φωτός· Καὶ τὴν τράπεζαν τῆς προθέσεως, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς· καὶ τοὺς ἄρτους τοὺς προκειμένους· Καὶ τὰς στολὰς τοῦ ἁγίου, αἵ εἰσιν Ἀαρών, καὶ τὰς στολὰς τῶν υἱῶν αὐτοῦ, εἰς τὴν ἱερατείαν· Καὶ τὰ ἱστία τῆς αὐλῆς, καὶ τοὺς στύλους· καὶ τὸ καταπέτασμα τῆς θύρας τῆς σκηνῆς, καὶ τῆς πύλης τῆς αὐλῆς· Καὶ πάντα τὰ σκεύη τῆς σκηνῆς, καὶ πάντα τὰ ἐργαλεῖα αὐτῆς· καὶ τὰς διφθέρας δέρματα κριῶν ἠρυθροδανωμένα, καὶ τὰ καλύμματα ὑακίνθινα, καὶ τῶν λοιπῶν τὰ ἐπικαλύμματα· καὶ τοὺς πασσάλους, καὶ πάντα τὰ ἐργαλεῖα τὰ εἰς τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· Ὅσα συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πᾶσαν τὴν ἀποσκευήν· Καὶ εἶδε Μωυσῆς πάντα τὰ ἔργα, καὶ ἦσαν πεποιηκότες αὐτὰ ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν αὐτὰ, καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς Μωυσῆς.

# 40

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου νουμηνίᾳ, στήσεις τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου. Καὶ θήσεις τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου, καὶ σκεπάσεις τὴν κιβωτὸν τῷ καταπετάσματι. Καὶ εἰσοίσεις τὴν τράπεζαν, καὶ προθήσεις τὴν πρόθεσιν αὐτῆς· καὶ εἰσοίσεις τὴν λυχνίαν, καὶ ἐπιθήσεις τοὺς λύχνους αὐτῆς. Καὶ θήσεις τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν, εἰς τὸ θυμιᾶν ἐναντίον τῆς κιβωτοῦ· καὶ ἐπιθήσεις κάλυμμα καταπετάσματος ἐπὶ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ τὸ θυσιαστήριον τῶν καρπωμάτων θήσεις παρὰ τὰς θύρας τῆς

σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ περιθήσεις τὴν σκηνήν, καὶ πάντα τὰ αὐτῆς ἁγιάσεις κύκλῳ. Καὶ λήψῃ τὸ ἔλαιον τοῦ χρίσματος, καὶ χρίσεις τὴν σκηνὴν, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ ἁγιάσεις αὐτὴν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ ἔσται ἁγία. Καὶ χρίσεις τὸ θυσιαστήριον τῶν καρπωμάτων, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτοῦ· καὶ ἁγιάσεις τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἔσται τὸ θυσιαστήριον ἅγιον τῶν ἁγίων. Καὶ προσάξεις Ἀαρὼν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ἐπὶ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ λούσεις αὐτοὺς ὕδατι. Καὶ ἐνδύσεις Ἀαρὼν τὰς στολὰς τὰς ἁγίας, καὶ χρίσεις αὐτὸν, καὶ ἁγιάσεις αὐτὸν, καὶ ἱερατεύει μοι. Καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ προσάξεις, καὶ ἐνδύσεις αὐτοὺς χιτῶνας. Καὶ ἀλείψεις αὐτοὺς ὃν τρόπον ἤλειψας τὸν πατέρα αὐτῶν, καὶ ἱερατεύσουσί μοι· καὶ ἔσται, ὥστε εἶναι αὐτοῖς χρίσμα ἱερατείας εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς πάντα, ὅσα ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος, οὕτως ἐποίησε. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ μηνὶ τῷ πρώτῳ, τῷ δευτέρῳ ἔτει, ἐκπορευομένων αὐτῶν ἐξ Αἰγύπτου, νουμηνίᾳ ἐστάθη ἡ σκηνή. Καὶ ἔστησε Μωυσῆς τὴν σκηνὴν, καὶ ἐπέθηκε τὰς κεφαλιδας, καὶ διενέβαλε τοὺς μοχλοὺς, καὶ ἔστησε τοὺς στύλους. Καὶ ἐξέτεινε τὰς αὐλαίας ἐπὶ τὴν σκηνὴν, καὶ ἐπέθηκε τὸ κατακάλυμμα τῆς σκηνῆς ἐπ αὐτὴν ἄνωθεν, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ λαβὼν τὰ μαρτύρια ἐνέβαλεν εἰς τὴν κιβωτόν· καὶ ὑπέθηκε τοὺς διωστῆρας ὑπὸ τὴν κιβωτὸν, καὶ εἰσήνεγκε τὴν κιβωτὸν εἰς τὴν σκηνὴν, καὶ ἐπέθηκε τὸ κατακάλυμμα τοῦ καταπετάσματος, καὶ ἐσκέπασε τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· Καὶ ἐπέθηκε τὴν τράπεζαν εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, τὸ πρὸς Βορῤᾶν ἔξωθεν τοῦ καταπετάσματος τῆς σκηνῆς. Καὶ προσέθηκεν ἐπ αὐτῆς ἄρτους τῆς προθέσεως ἔναντι Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἔθηκε τὴν

λυχνίαν εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, εἰς τὸ κλίτος τῆς σκηνῆς τὸ πρὸς Νότον. Καὶ ἐπέθηκε τοὺς λύχνους αὐτῆς ἔναντι Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἔθηκε τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου ἀπέναντι τοῦ καταπετάσματος, καὶ ἐθυμίασεν ἐν αὐτοῦ θυμίαμα τῆς συνθέσεως, καθάπερ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ τὸ θυσιαστήριον τῶν καρπωμάτων ἔθηκε παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς. Καὶ ἔστησε τὴν αὐλὴν κύκλῳ τῆς σκηνῆς, και τοῦ θυσιαστηρίου· καὶ συνετέλεσε Μωυσῆς πάντα τὰ ἔργα. Καὶ ἐκάλυψεν ἡ νεφέλη τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου· καὶ δόξης Κυρίου ἐπλήσθη ἡ σκηνή. Καὶ οὐκ ἠδυνάσθη Μωυσῆς εἰσελθεῖν εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, ὅτι ἐπεσκίαζεν ἐπ’ αὐτὴν ἡ νεφέλη, καὶ δόξης Κυρίου ἐνεπλήσθη ἡ σκηνή. Ἡνίκα δ’ ἂν ἀνέβη ἡ νεφέλη ἀπὸ τῆς σκηνῆς, ἀνεζεύγνυσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ σὺν τῇ ἀπαρτίᾳ αὐτῶν. Εἰ δὲ μὴ ἀνέβη ἡ νεφέλη, οὐκ ἀνεζεύγνυσαν ἕως ἡμέρας, ἧς ἀνέβη ἡ νεφέλη. Νεφέλη γὰρ ἦν ἐπὶ τῆς σκηνῆς ἡμέρας, καὶ πῦρ ἦν ἐπ’ αὐτῆς νυκτὸς ἐναντίον παντὸς Ἰσραὴλ, ἐν πάσαις ταῖς ἀναζυγαῖς αὐτῶν.

# ΑΡΙΘΜΟΙ

## 1

ΚΑΙ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐν τῇ ἐρήμῳ τῇ Σινᾷ, ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, ἐν μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ δευτέρου, ἔτους δευτέρου ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, λέγων, λάβετε ἀρχὴν πάσης συναγωγῆς Ἰσραὴλ κατὰ συγγενείας, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ἐξ ὀνόματος αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν· πᾶς ἄρσην ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν δυνάμει Ἰσραήλ, ἐπισκέψασθε αὐτοὺς σὺν δυνάμει αὐτῶν· σὺ καὶ Ἀαρὼν ἐπισκέψασθε αὐτούς. Καὶ μεθ ὑμῶν ἔσονται ἕκαστος κατὰ φυλὴν ἑκάστου ἀρχόντων, κατ οἴκους πατριῶν ἔσονται. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν, οἵτινες παραστήσονται μεθ ὑμῶν· τῶν Ῥουβὴν, Ἐλισοὺρ υἱὸς Σεδιούρ· Τῶν Συμεὼν, Σαλαμιὴλ υἱὸς Σουρισαδαί. Τῶν Ἰούδα, Ναασσὼν υἱὸς Ἀμιναδάβ. Τῶν Ἰσσάχαρ, Ναθαναὴλ υἱὸς Σωγάρ· Τῶν Ζαβουλὼν, Ἐλιὰβ υἱὸς Χαιλών· Τῶν υἱῶν Ἰωσὴφ τῶν Ἐφραὶμ, Ἐλισαμὰ υἱὸς Ἐμιούδ· τῶν Μανασσῆ, Γαμαλιὴλ υἱὸς Φαδασούρ. Τῶν Βενιαμὶν, Ἀβιδὰν υἱὸς Γαδεωνί. Τῶν Δὰν, Ἀχιέζερ υἱὸς Ἀμισαδαΐ. Τῶν Ἀσὴρ, Φαγαϊὴλ, υἱὸς Ἐχράν. Τῶν Γὰδ, Ἐλισὰφ υἱὸς Ῥαγουήλ. Τῶν

Νεφθαλὶ, Ἀχιρὲ υἱὸς Αἰνάν. Οὗτοι ἐπίκλητοι τῆς συναγωγῆς, ἄρχοντες τῶν φυλῶν κατὰ πατριὰς αὐτῶν, χιλίαρχοι Ἰσραήλ εἰσι. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν τοὺς ἄνδρας τούτους τοὺς ἀνακληθέντας ἐξ ὀνόματος. Καὶ πᾶσαν τὴν συναγωγὴν συνήγαγον ἐν μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ δευτέρου ἔτους· καὶ ἐπηξονοῦσαν κατὰ γενέσεις αὐτῶν, κατὰ πατριὰς αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶν ἀρσενικὸν κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· καὶ ἐπεσκέπησαν ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ Σινά. Καὶ ἐγένοντο οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν πρωτοτόκου Ἰσραὴλ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Ῥουβὴν, ἓξ καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Συμεὼν κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Συμεὼν, ἐννέα καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τριακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Ἰούδα κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Ἰούδα, τέσσαρες καὶ ἑβδομήκοντα χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Ἰσσάχαρ κατὰ συγγενίας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς

Ἰσσάχαρ, τέσσαρες καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Ζαβουλὼν κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Ζαβουλὼν, ἑπτὰ καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Ἰωσὴφ υἱοῖς Ἐφραὶμ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκέψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Ἐφραὶμ, τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Μανασσὴ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ, ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Μανασσὴ, δύο καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ διακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Βενιαμὶν κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Βενιαμὶν, πέντε καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Γὰδ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν· ἐκ τῆς φυλῆς Γὰδ, πέντε καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι καὶ πεντήκοντα. Τοῖς υἱοῖς Δὰν κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων

αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Δὰν, δύο καὶ ἑξήκοντα χιλιάδες καὶ ἑπτακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Ἀσὴρ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Ἀσὴρ, μία καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Τοῖς υἱοῖς Νεφθαλὶ κατὰ συγγενείας αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ ἀριθμὸν ὀνομάτων αὐτῶν, κατὰ κεφαλὴν αὐτῶν, πάντα ἀρσενικὰ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος ἐν τῇ δυνάμει, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν ἐκ τῆς φυλῆς Νεφθαλὶ, τρεῖς καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις, ἣν ἐπεσκέψαντο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ οἱ ἄρχοντες Ἰσραὴλ δώδεκα ἄνδρες· ἀνὴρ εἷς κατὰ φυλὴν μίαν, κατὰ φυλὴν οἴκων πατριᾶς ἦσαν. Καὶ ἐγένετο πᾶσα ἡ ἐπίσκεψις υἱῶν Ἰσραὴλ σὺν δυνάμει αὐτῶν ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος παρατάξασθαι ἐν Ἰσραὴλ ἑξακόσιαι χιλιάδες καὶ τρισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι καὶ πεντήκοντα. Οἱ δὲ Λευῖται ἐκ τῆς φυλῆς πατριᾶς αὐτῶν οὐκ ἐπεσκέπησαν ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ὅρα, τὴν φυλὴν Λευὶ οὐ συνεπισκέψῃ, καὶ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν οὐ λήμῃ, ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ σὺ ἐπίστησον τοὺς Λευίτας ἐπὶ τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ ἐπὶ πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτῇ· ἀροῦσιν αὐτοὶ τὴν σκηνὴν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς· καὶ αὐτοὶ λειτουργήσουσιν ἐν αὐτῇ, καὶ κύκλῳ τῆς σκηνῆς παρεμβαλοῦσι. Καὶ ἐν τῷ ἐξαίρειν τὴν σκηνὴν, καθελοῦσιν αὐτὴν οἱ Λευῖται, καὶ ἐν τῷ παρεμβάλλειν τὴν σκηνὴν, ἀναστήσουσι· καὶ

ὁ ἀλλογενῆς ὁ προσπορευόμενος ἀποθανέτω. Καὶ παρεμβαλοῦσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, ἀνὴρ ἐν τῇ ἑαυτοῦ τάξει, καὶ ἀνὴρ κατὰ τὴν ἑαυτοῦ ἡγεμονίαν, σὺν δυνάμει αὐτῶν. Οἱ δὲ Λευῖται παρεμβαλλέτωσαν ἐναντίοι κύκλῳ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ οὐκ ἔσται ἁμάρτημα ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ. καὶ φυλάξουσιν οἱ Λευῖται αὐτοὶ τὴν φυλακὴν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ καὶ Ἀαρὼν, οὕτως ἐποίησαν.

# 2

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἄνθρωπος ἐχόμενος αὐτοῦ κατὰ τάγμα, κατὰ σημαίας, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, παρεμβαλλέτωσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ ἐναντίοι· κύκλῳ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου παρεμβαλοῦσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες πρῶτοι κατὰ ἀνατολὰς, τάγμα παρεμβολῆς Ἰούδα σὺν δυνάμει αὐτῶν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἰούδα, Ναασσὼν υἱὸς Ἀμιναδάβ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, τέσσαρες καὶ ἑβδομήκοντα χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι φυλῆς Ἰσσάχαρ, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἰσσάχαρ, Ναθαναὴλ υἱὸς Σωγάρ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, τέσσαρες καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι φυλῆς Ζαβουλὼν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ζαβουλὼν, Ἐλιὰβ υἱὸς Χαιλών. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, ἑπτὰ καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Πάντες οἱ ἐπεσκεμμένοι ἐκ τῆς παρεμβολῆς Ἰούδα, ἑκατὸν ὀγδοήκοντα χιλιάδες καὶ ἑξακισχίλιοι καὶ τετρακόσιοι, σὺν δυνάμει αὐτῶν πρῶτον ἐξαροῦσι.

Τάγματα παρεμβολῆς Ῥουβὴν, πρὸς λίβα δύναμις αὐτῶν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ρουβὴν, Ἐλισοὺρ υἱὸς Σεδιούρ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, ἓξ καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι αὐτοῦ φυλῆς Συμεὼν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Συμεὼν, Σαλαμιὴλ υἱὸς Σουρισαδαί. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, ἐννέα καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τριακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλοντες ἐχόμενοι αὐτοῦ φυλὴ Γὰδ, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Γὰδ, Ἐλισὰφ υἱὸς Ῥαγουήλ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, πέντε καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι καὶ πεντήκοντα. Πάντες οἱ ἐπεσκεμμένοι τῆς παρεμβολῆς Ῥουβὴν, ἑκατὸν πεντήκοντα μία χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι καὶ πεντήκοντα, σὺν δυνάμει αὐτῶν δεύτεροι ἐξαροῦσι. Καὶ ἀρθήσεται ἡ σκηνὴ τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἡ παρεμβολὴ τῶν Λευιτῶν μέσον τῶν παρεμβολῶν· ὡς καὶ παρεμβαλοῦσιν, οὕτω καὶ ἐξαροῦσιν ἕκαστος ἐχόμενος καθ ἡγεμονίας. Τάγμα παρεμβολῆς Ἐφραὶμ παρὰ θάλασσαν σὺν δυνάμει αὐτῶν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἐφραὶμ, Ἐλισαμὰ υἱὸς Ἐμιούδ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι φυλῆς Μανασσῆ, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Μανασσῆ, Γαμαλιὴλ υἱὸς Φαδασσούρ. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, δύο καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ διακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι φυλῆς Βενιαμὶν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Βενιαμὶν, Ἀβιδὰν υἱὸς Γαδεωνί. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, πέντε καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Πάντες οἱ ἐπεσκεμμένοι τῆς παρεμβολῆς Ἐφραὶμ, ἑκατὸν χιλιάδες καὶ ὀκτακισχίλιοι καὶ ἑκατὸν· σὺν δυνάμει αὐτῶν τρίτοι ἐξαροῦσι. Τάγμα παρεμβολῆς Δὰν πρὸς βοῤῥᾶν σὺν δυνάμει αὐτῶν, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Δὰν, Ἀχιέζερ υἱὸς Ἀμισαδαί. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, δύο καὶ ἑξήκοντα χιλιάδες καὶ ἑπτακόσιοι.

Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι αὐτοῦ φυλὴ Ἀσὴρ, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἀσὴρ, Φαγεὴλ υἱὸς Ἐχράν. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, μία καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Καὶ οἱ παρεμβάλλοντες ἐχόμενοι φυλῆς Νεφθαλί, καὶ ὁ ἄρχων τῶν υἱῶν Νεφθαλὶ, Ἀχιρὲ υἱὸς Αἰνάν. Δύναμις αὐτοῦ οἱ ἐπεσκεμμένοι, τρεῖς καὶ πεντήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Πάντες οἱ ἐπεσκεμμένοι τῆς παρεμβολῆς Δὰν, ἑκατὸν καὶ πεντηκονταεπτὰ χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι· ἔσχατοι ἐξαροῦσι κατὰ τάγμα αὐτῶν. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν· πᾶσα ἡ ἐπίσκεψις τῶν παρεμβολῶν σὺν ταῖς δυνάμεσιν αὐτῶν, ἑξακόσιαι χιλιάδες καὶ τρισχίλιοι πεντακόσιοι πεντήκοντα. Οἱ δὲ Λευῖται οὐ συνεπεσκέπησαν ἐν αὐτοῖς, καθὰ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πάντα ὅσα συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· οὕτω παρενέβαλον κατὰ τάγμα αὐτῶν, καὶ οὕτως ἐξῇρον ἕκαστος ἐχόμενοι κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν.

# 3

Καὶ αὗται αἱ γενέσεις Ἀαρὼν καὶ Μωυσῆ, ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐλάλησε Κύριος τῷ Μωυσῇ ἐν ὄρει Σινᾷ. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἀαρών· πρωτότοκος Ναδάβ, καὶ Ἀβιοὺδ, Ἐλεάζαρ, καὶ Ἰθάμαρ. Ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Ἀαρὼν, οἱ ἱερεῖς οἱ ἠλειμμένοι, οὓς ἐτελείωσαν τὰς χεῖρας αὐτῶν ἱερατεύειν. Καὶ ἐτελεύτησε Ναδὰβ καὶ Ἀβιοὺδ ἔναντι Κυρίου, προσφερόντων αὐτῶν πῦρ ἀλλότριον ἔναντι Κυρίου, ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾷ, καὶ παιδία οὐκ ἦν αὐτοῖς· καὶ ἱεράτευσεν Ἐλεάζαρ καὶ Ἰθάμαρ μετὰ Ἀαρὼν τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε τὴν φυλὴν Λευὶ,

καὶ στήσεις αὐτοὺς ἐναντίον Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως, καὶ λειτουργήσουσιν αὐτῷ, καὶ φυλάξουσι τὰς φυλακὰς αὐτοῦ, καὶ τὰς φυλακὰς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἔναντι τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς. Καὶ φυλάξουσι πάντα τὰ σκεύη τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὰς φυλακὰς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατὰ πάντα τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς. Καὶ δώσεις τοὺς Λευίτας Ἀαρὼν, καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ τοῖς ἱερεῦσι· δεδομένοι δόμα οὗτοί μοι εἰσὶν ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ Ἀαρὼν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καταστήσεις ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ φυλάξουσι τὴν ἱερατείαν αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ κατὰ τὸν βωμὸν, καὶ ἔσω τοῦ καταπετάσματος· καὶ ὁ ἀλλογενὴς ὁ ἁπτόμενος ἀποθανεῖται. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ εἴληφα τοὺς Λευίτας ἐκ μέσου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἀντὶ παντὸς πρωτοτόκου διανοίγοντος μήτραν παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· λύτρα αὐτῶν ἔσονται, καὶ ἔσονται ἐμοὶ οἱ Λευῖται. Ἐμοὶ γὰρ πᾶν προτότοκον· ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐπάταξα πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτου, ἡγίασα ἐμοὶ πᾶν πρωτότοκον ἐν Ἰσραήλ· ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους ἐμοὶ ἔσονται· ἐγὼ Κύριος. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾷ, λέγων, ἐπίσκεψαι τοὺς υἱοὺς Λευὶ κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν· πᾶν ἀρσενικὸν ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω, ἐπισκέψασθε αὐοτύς. Καὶ ἐπεσκέψαντο αὐτοὺς Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διὰ φωνῆς Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξεν αὐτοῖς Κύριος. Καὶ ἦσαν οὗτοι οἱ υἱοὶ Λευὶ ἐξ ὀνομάτων αὐτῶν· Γεδσὼν, Καὰθ, καὶ Μεραρί. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν Γεδσὼν κατὰ δήμους αὐτῶν· Λοβενὶ καὶ Σεμεΐ. Καὶ υἱοὶ Καὰθ κατὰ δήμους αὐτῶν· Ἀμρὰμ καὶ Ἰσσαὰρ, Χεβρὼν καὶ Ὀζιήλ. Καὶ υἱοὶ Μεραρὶ κατὰ δήμους αὐτῶν· Μοολὶ καὶ Μουσί· οὗτοί εἰσι δῆμοι τῶν Λευιτῶν κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν. Τῷ Γεδσὼν δῆμος τοῦ Λοβενὶ, καὶ δῆμος

τοῦ Σεμεΐ· οὗτοι δῆμοι τοῦ Γεδσών. Ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν κατὰ ἀριθμὸν παντὸς ἀρσενικοῦ ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω, ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν, ἑπτακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι. Καὶ οἱ υἱοὶ Γεδσὼν ὀπίσω τῆς σκηνῆς παρεμβαλοῦσι παρὰ θάλασσαν. Καὶ ὁ ἄρχων οἴκου πατριᾶς τοῦ δήμου τοῦ Γεδσὼν, Ἐλισὰφ υἱὸς Δαήλ. Καὶ ἡ φυλακὴ υἱῶν Γεδσὼν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, ἡ σκηνὴ καὶ τὸ κάλυμμα, καὶ τὸ κατακάλυμμα τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὰ ἱστία τῆς αὐλῆς, καὶ τὸ καταπέτασμα τῆς πύλης τῆς αὐλῆς τῆς οὔσης ἐπὶ τῆς σκηνῆς, καὶ τὰ κατάλοιπα πάντων τῶν ἔργων αὐτοῦ. Τῷ Καὰθ δῆμος ὁ Ἀμρὰμ εἷς, καὶ δῆμος ὁ Ἰσσαὰρ εἷς, καὶ δῆμος ὁ Χεβρων εἷς, καὶ δῆμος ὁ Ὀζιὴλ εἷς· οὗτοί εἰσιν οἱ δῆμοι τοῦ Καὰθ, κατὰ ἀριθμόν. Πᾶν ἀρσενικὸν ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω, ὀκτακισχίλιοι καὶ ἑξακόσιοι, φυλάσσοντες τὰς φυλακὰς τῶν ἁγίων. Οἱ δῆμοι τῶν υἱῶν Καὰθ παρεμβαλοῦσιν ἐκ πλαγίων τῆς σκηνῆς κατὰ Λίβα. Καὶ ὁ ἄρχων οἴκου πατριῶν τῶν δήμων τοῦ Καὰθ, Ἐλισαφὰν υἱὸς Ὀζιήλ. Καὶ ἡ φυλακὴ αὐτῶν ἡ κιβωτὸς, καὶ ἡ τράπεζα, καὶ ἡ λυχνία, καὶ τὰ θυσιαστήρια, καὶ τὰ σκεύη τοῦ ἁγίου ὅσα λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς, καὶ τὸ κατακάλυμμα, καὶ πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν. Καὶ ὁ ἄρχων ἐπὶ τῶν ἀρχόντων τῶν Λευιτῶν, Ἐλεάζαρ ὁ υἱὸς Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως, καθεσταμένος φυλάσσειν τὰς φυλακὰς τῶν ἁγίων. Τῷ Μεραρὶ δῆμος ὁ Μοολὶ, καὶ δῆμος ὁ Μουσί· οὗτοί εἰσι δῆμοι τοῦ Μεραρί. Ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν κατὰ ἀριθμὸν, πᾶν ἀρσενικὸν ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω, ἑξακισχίλιοι καὶ πεντήκοντα. Καὶ ὁ ἄρχων οἴκου πατριῶν τοῦ δήμου τοῦ Μεραρὶ, Σουριὴλ υἱὸς Ἀβιχαίλ· ἐκ πλαγίων τῆς σκηνῆς παρεμβαλοῦσι πρὸς βοῤῥᾶν. Ἡ ἐπίσκεψις τῆς φυλακῆς υἱῶν Μεραρὶ, τὰς κεφαλίδας τῆς σκηνῆς, καὶ τοὺς μοχλοὺς αὐτῆς, καὶ τοὺς στύλους αὐτῆς, καὶ τὰς βάσεις αὐτῆς, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν,

καὶ τοὺς στύλους τῆς αὐλῆς κύκλῳ, καὶ τὰς βάσεις αὐτῶν, καὶ τοὺς πασσάλους, καὶ τοὺς κάλους αὐτῶν. Οἱ παρεμβάλλοντες κατὰ πρόσωπον τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου ἀπὸ ἀνατολῆς, Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, φυλάσσοντες τὰς φυλακὰς τοῦ ἁγίου εἰς τὰς φυλακὰς τῶν υἱῶν Ἰηραήλ· καὶ ὁ ἀλλογενὴς ὁ ἁπτόμενος, ἀποθανεῖται. Πᾶσα ἡ ἐπίσκεψις τῶν Λευιτῶν, οὓς ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διὰ φωνῆς Κυρίου κατὰ δήμους αὐτῶν, πᾶν ἀρσενικὸν ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω, δύο καὶ εἴκοσι χιλιάδες. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐπίσκεψαι πᾶν πρωτότοκον ἄρσεν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω· καὶ λάβετε τὸν ἀριθμὸν ἐξ ὀνόματος. Καὶ λήψῃ τοὺς Λευίτας ἐμοί, ἐγὼ Κύριος, ἀντὶ πάντων τῶν πρωτοτόκων τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, καὶ τὰ κτήνη τῶν Λευιτῶν ἀντὶ πάντων τῶν πρωτοτόκων ἐν τοῖς κτήνεσι τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπεσκέψατο Μωυσῆς ὃν τρόπον ἐνετείλατο Κύριος πᾶν πρωτότοκον ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένοντο πάντα τὰ πρωτότοκα τὰ ἀρσενικὰ κατὰ ἀριθμὸν ἐξ ὀνόματος ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω ἐκ τῆς ἐπισκέψεως αὐτῶν, δύο καὶ εἴκοσι χιλιάδες καὶ τρεῖς καὶ ἑβδομήκοντα καὶ διακόσιοι. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε τοὺς Λευίτας ἀντὶ πάντων τῶν πρωτοτόκων υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ τὰ κτήνη τῶν Λευιτῶν ἀντὶ τῶν κτηνῶν αὐτῶν, καὶ ἔσονται ἐμοὶ οἱ Λευῖται· ἐγὼ Κύριος. Καὶ τὰ λύτρα τριῶν καὶ ἑβδομήκοντα καὶ διακοσίων οἱ πλεονάζοντες παρὰ τοὺς Λευίτας ἀπὸ τῶν πρωτοτόκων τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· Καὶ λήψῃ πέντε σίκλους κατὰ κεφαλὴν, κατὰ τὸ δίδραχμον τὸ ἅγιον λήψῃ, εἴκοσι ὀβολοὺς τοῦ σίκλου. Καὶ δώσεις τὸ ἀργύριον Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, λύτρα τῶν πλεοναζόντων ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς τὸ ἀργύριον τὰ λύτρα τῶν πλεοναζόντων εἰς τὴν ἐκλύτρωσιν τῶν Λευιτῶν. Παρὰ τῶν πρωτοτόκων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἔλαβε τὸ

ἀργύριον, χιλίους τριακοσίους ἑξηκονταπέντε σίκλους, κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον. Καὶ ἔδωκε Μωυσῆς τὰ λύτρα τῶν πλεοναζόντων Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, διὰ φωνῆς Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 4

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγεν, λάβε τὸ κεφάλαιον τῶν υἱῶν Καὰθ ἐκ μέσου υἱῶν Λευὶ, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἀπὸ εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν καὶ ἐπάνω ἕως πεντήκοντα ἐτῶν, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν, ποιῆσαι πάντα τὰ ἔργα ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ταῦτα τὰ ἔργα τῶν υἱῶν Καὰθ ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου· ἅγιον τῶν ἁγίων. Καὶ εἰσελεύσεται Ἀαρὼν καὶ υἱοὶ αὐτοῦ, ὅταν ἐξαίρῃ ἡ παρεμβολὴ, καὶ καθελοῦσι τὸ καταπέτασμα τὸ συσκιάζον, καὶ κατακαλύψουσιν ἐν αὐτῷ τὴν κιβωτὸν τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπ αὐτὸ κατακάλυμμα δέρμα ὑακίνθινον, καὶ ἐπιβαλοῦσιν ἐπ αὐτὴν ἱμάτιον ὅλον ὑακίνθινον ἄνωθεν, καὶ διεμβαλοῦσι τοὺς ἀναφορεῖς. Καὶ ἐπί τὴν τράπεζαν τὴν προκειμένην ἐπιβαλοῦσιν ἐπ αὐτὴν ἱμάτιον ὁλοπόρφυρον, καὶ τὰ τρυβλία, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ τοὺς κυάθους, καὶ τὰ σπονδεῖα ἐν οἷς σπένδει, καὶ οἱ ἄρτοι οἳ διαπαντὸς ἐπ αὐτῆς ἔσονται. Καὶ ἐπιβαλοῦσιν ἐπ αὐτὴν ἱμάτιον κόκκινον, καὶ καλύψουσιν αὐτὴν καλύμματι δερματίνῳ ὑακινθίνῳ, καὶ διεμβαλοῦσι δι αὐτῆς τοὺς ἀναφορεῖς. Καὶ λήψονται ἱμάτιον ὑακίνθινον, καὶ καλύψουσι τὴν λυχνίαν τὴν φωτίζουσαν, καὶ τοὺς λύχνους αὐτῆς, καὶ τὰς λαβίδας αὐτῆς, καὶ τὰς ἐπαρυστρίδας αὐτῆς, καὶ πάντα τὰ ἀγγεῖα τοῦ ἐλαίου οἷς λειτουργοῦσιν ἐν

αὐτοῖς. Καὶ ἐμβαλοῦσιν αὐτὴν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, εἰς κάλυμμα δερμάτινον ὑακίνθινον, καὶ ἐπιθήσουσιν αὐτὴν ἐπ ἀναφορέων. Καὶ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν ἐπικαλύψουσιν ἱμάτιον ὑακίνθινον, καὶ καλύψουσιν αὐτὸ καλύμματι δερματίνῳ ὑακινθίνῳ, καὶ διεμβαλοῦσι τοὺς ἀναφορεῖς αὐτοῦ. καὶ λήψονται πάντα τὰ σκεύη τὰ λειτουργικὰ ὅσα λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς ἐν τοῖς ἁγίοις· καὶ ἐμβαλοῦσιν εἰς ἱμάτιον ὑακίνθινον, καὶ καλύψουσιν αὐτὰ καλύμματι δερματίνῳ ὑακινθίνῳ, καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπὶ ἀναφορεῖς. Καὶ τὸν καλυπτῆρα ἐπιθήσει ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐπικαλύψουσιν ἐπ αὐτὸ ἱμάτιον ὁλοπόρφυρον. Καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπ αὐτὸ πάντα τὰ σκεύη ὅσοις λειτουργοῦσιν ἐπ αὐτῷ ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ πυρεῖα, καὶ τὰς κρεάγρας, καὶ τὰς φιάλας, καὶ τὸν καλυπτῆρα, καὶ πάντα τὰ σκεύη τοῦ θυσιαστηρίου· καὶ ἐπιβαλοῦσιν ἐπ αὐτὸ κάλυμμα δερμάτινον ὑακίνθινον, καὶ διεμβαλοῦσι τοὺς ἀναφορεῖς αὐτοῦ· καὶ λήψονται ἱμάτιον πορφυροῦν, καὶ συγκαλύψουσι τὸν λουτῆρα καὶ τὴν βάσιν αὐτοῦ, καὶ ἐμβαλοῦσιν αὐτὸ εἰς κάλυμμα δερμάτινον ὑακίνθινον, καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπὶ ἀναφορεῖς, καὶ συντελέσουσιν Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καλύπτοντες τὰ ἅγια, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἅγια, ἐν τῷ ἐξαίρειν τὴν παρεμβολήν· καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσονται υἱοὶ Καὰθ αἴρειν, καὶ οὐχ ἅψονται τῶν ἁγίων, ἵνα μὴ ἀποθάνωσι· ταῦτα ἀροῦσιν οἱ υἱοὶ Καὰθ ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Ἐπίσκοπος Ἐλεάζαρ υἱὸς Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως, τὸ ἔλαιον τοῦ φωτὸς, καὶ τὸ θυμίαμα τῆς συνθέσεως, καὶ ἡ θυσία ἡ καθ ἡμέραν, καὶ τὸ ἔλαιον τῆς χρίσεως, ἡ ἐπισκοπὴ ὅλης τῆς σκηνῆς, καὶ ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτῇ ἐν τῷ ἁγίῳ, ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, μὴ ὀλοθρεύσητε τῆς φυλῆς τὸν δῆμον τὸν Καὰθ ἐκ μέσου τῶν Λευιτῶν. Τοῦτο ποιήσατε αὐτοῖς, καὶ ζήσονται καὶ οὐ μὴ ἀποθάνωσι, προσπορευομένων

αὐτῶν πρὸς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων· Ἀαρὼν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ προσπορεύεσθωσαν, καὶ καταστήσουσιν αὐτοὺς ἕκαστον κατὰ τὴν ἀναφορὰν αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ εἰσέλθωσιν ἰδεῖν ἐξάπινα τὰ ἅγια, καὶ ἀποθανοῦνται. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε τὴν ἀρχὴν τῶν υἱῶν Γεδσὼν, καὶ τούτους κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς ἐπίσκεψαι αὐτοὺς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν, ποιεῖν τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Αὕτη ἡ λειτουργία τοῦ δήμου τοῦ Γεδσὼν, λειτουργεῖν καὶ αἴρειν. Καὶ ἀρεῖ τὰς δέῤῥεις τῆς σκηνῆς, καὶ τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὸ κάλυμμα αὐτῆς, καὶ τὸ κατακάλυμμα τὸ ὑακίνθινον τὸ ὂν ἐπ αὐτῆς ἄνωθεν, καὶ τὸ κάλυμμα τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὰ ἱστία τῆς αὐλῆς, ὅσα ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ τὰ περισσὰ, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ λειτουργικὰ ὅσα λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς ποιήσουσι. Κατὰ στόμα Ἀαρὼν καὶ τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἔσται ἡ λειτουργία τῶν υἱῶν Γεδσὼν κατὰ πάσας τὰς λειτουργίας αὐτῶν, καὶ κατὰ πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν· καὶ ἐπισκέψῃ αὐτοὺς ἐξ ὀνόματος πάντα τὰ ἀρτὰ ὑπ αὐτῶν. Αὕτη ἡ λειτουργία τῶν υἱῶν Γεδσὼν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἡ φυλακὴ αὐτῶν ἐν χειρὶ Ἰθάμαρ τοῦ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως. Οἱ υἱοὶ Μεραρὶ κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἐπισκέψασθε αὐτοὺς, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς ἐπισκέψασθε αὐτοὺς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ταῦτα τὰ φυλάγματα τῶν αἱρομένων ὑπ αὐτῶν κατὰ πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου· τὰς κεφαλίδας τῆς σκηνῆς, καὶ τοὺς μοχλοὺς, καὶ τοὺς στύλους αὐτῆς, καὶ τὰς βάσεις αὐτῆς, καὶ τὸ κατακάλυμμα, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν, καὶ οἱ στύλοι αὐτῶν, καὶ τὸ κατακάλυμμα τῆς θύρας

τῆς σκηνῆς, καὶ τοὺς στύλους τῆς αὐλῆς κύκλῳ, καὶ αἱ βάσεις αὐτῶν, καὶ τοὺς στύλους τοῦ καταπετάσματος τῆς πύλης τῆς αὐλῆς, καὶ τὰς βάσεις αὐτῶν, καὶ τοὺς πασσάλους αὐτῶν, καὶ τοὺς κάλους αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ λειτουργήματα αὐτῶν· ἐξ ὀνομάτων ἐπισκέψασθε αὐτοὺς, καὶ πάντα τὰ σκεύη τῆς φυλακῆς τῶν αἱρομένων ὑπ αὐτῶν. Αὕτη ἡ λειτουργία δήμου υἱῶν Μεραρὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου ἐν χειρὶ Ἰθάμαρ τοῦ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως. Καὶ ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ οἱ ἄρχοντες Ἰσραὴλ τοὺς υἱοὺς Καὰθ κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν καὶ ποιεῖν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐγένετο ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν κατὰ δήμους αὐτῶν, δισχίλιοι ἑπτακόσιοι πεντήκοντα. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις δήμου Καάθ, πᾶς ὁ λειτουργῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, καθὰ ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διὰ φωνῆς Κυρίου, ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Καὶ ἐπεσκέπησαν υἱοὶ Γεδσὼν κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν καὶ ποιεῖν τὰ ἔργα ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐγένετο ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν, κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, δισχίλιοι ἑξακόσιοι τριάκοντα. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις δήμου υἱῶν Γεδσὼν, πᾶς ὁ λειτουργῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, οὓς ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διὰ φωνῆς Κυρίου, ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Ἐπεσκέπησαν δὲ καὶ δῆμος υἱῶν Μεραρὶ κατὰ δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος λειτουργεῖν πρὸς τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐγενήθη ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν κατὰ

δήμους αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, τρισχίλιοι καὶ διακόσιοι. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις δήμου υἱῶν Μεραρὶ, οὓς ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν διὰ φωνῆς Κυρίου, ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Πάντες οἱ ἐπεσκεμμένοι, οὓς ἐπεσκέψατο Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ οἱ ἄρχοντες Ἰσραὴλ τοὺς Λευίτας, κατὰ δήμους καὶ κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἕως πεντηκονταετοῦς, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος πρὸς τὸ ἔργον τῶν ἔργων, καὶ τὰ ἔργα τὰ αἰρόμενα ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐγενήθησαν οἱ ἐπισκεπέντες, ὀκτακισχίλιοι πεντακόσιοι ὀγδοήκοντα. Διὰ φωνῆς Κυρίου ἐπεσκέψατο αὐτοὺς ἐν χειρὶ Μωυσῆ, ἄνδρα κατὰ ἄνδρα ἐπὶ τῶν ἔργων αὐτῶν, καὶ ἐπὶ ὧν αἴρουσιν αὐτοί· καὶ ἐπεσκέπησαν, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 5

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, πρόσταξον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐξαποστειλάτωσαν ἐκ τῆς παρεμβολῆς πάντα λεπρὸν, καὶ πάντα γονορῥυῆ, καὶ πάντα ἀκάθαρτον ἐπὶ ψυχῇ. Ἀπὸ ἀρσενικοῦ ἕως θηλυκοῦ, ἐξαποστείλατε ἔξω τῆς παρεμβολῆς, καὶ οὐ μὴ μιανοῦσι τὰς παρεμβολὰς αὐτῶν, ἐν οἷς ἐγὼ καταγίνομαι ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἐποίησαν οὕτως οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐξαπέστειλαν αὐτοὺς ἔξω τῆς παρεμβολῆς· καθὰ ἐλάλησε Κύριος Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, ἀνὴρ ἢ γυνὴ, ὅστις ἂν ποιήσῃ ἀπὸ πασῶν τῶν ἁμαρτιῶν τῶν ἀνθρωπίνων, καὶ παριδὼν παρίδῃ καὶ πλημμελήσῃ ἡ ψυχὴ ἐκείνη, ἐξαγορεύσει τὴν ἁμαρτίαν,

ἣν ἐποίησε, καὶ ἀποδώσει τὴν πλημμέλειαν· τὸ κεφάλαιον, καὶ τὸ ἐπίπεμπτον αὐτοῦ προσθήσει ἐπ αὐτὸ, καὶ ἀποδώσει τίνι ἐπλημμέλησεν αὐτῷ. Ἐὰν δὲ μὴ ᾖ τῷ ἀνθρώπῳ ὁ ἀγχιστεύων, ὥστε ἀποδοῦναι αὐτῷ τὸ πλημμέλημα πρὸς αὐτὸν, τὸ πλημμέλημα τὸ ἀποδιδόμενον Κυρίῳ, τῷ ἱερεῖ ἔσται, πλὴν τοῦ κριοῦ τοῦ ἱλασμοῦ, δι οὗ ἐξιλάσεται ἐν αὐτῷ περὶ αὐτοῦ. Καὶ πᾶσα ἀπαρχὴ κατὰ πάντα τὰ ἁγιαζόμενα ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὅσα ἐὰν προσφέρωσι κυρίῳ, τῷ ἱερεῖ αὐτῷ ἔσται· Καὶ ἑκάστου τὰ ἡγιασμένα, αὐτοῦ ἔσται· καὶ ἀνὴρ, ὃς ἂν δῷ τῷ ἱερεῖ, αὐτῷ ἔσται. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ἀνδρὸς ἀνδρὸς ἐὰν παραβῇ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ ὑπεριδοῦσα παρίδῃ αὐτὸν, καὶ κοιμηθῇ τις μετ αὐτῆς κοίτην σπέρματος, καὶ λάθῃ ἐξ ὀφθαλμῶν τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς, καὶ κρύψῃ, αὐτὴ δὲ ᾖ μεμιασμένη, καὶ μάρτυς μὴ ἦν μετ αὐτῆς, καὶ αὐτὴ μὴ ᾖ συνειλημμένη, καὶ ἐπέλθῃ αὐτῷ πνεῦμα ζηλώσεως, καὶ ζηλώσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, αὐτὴ δὲ μεμίανται, ἢ ἐπέλθῃ αὐτῷ πνεῦμα ζηλώσεως, καὶ ζηλώσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, αὐτὴ δὲ μὴ ᾖ μεμιασμένη, καὶ ἄξει ὁ ἄνθρωπος τὴν γυναῖκα αὐτοῦ πρὸς τὸν ἱερέα, καὶ προσοίσει τὸ δῶρον περὶ αὐτῆς, τὸ δέκατον τοῦ οἰφὶ ἄλευρον κρίθινον· οὐκ ἐπιχεεῖ ἐπ αὐτὸ ἔλαιον, οὐδὲ ἐπιθήσει ἐπ αὐτὸ λίβανον· ἔστι γὰρ θυσία ζηλοτυπίας, θυσία μνημοσύνου, ἀναμιμνήσκουσα ἁμαρτίαν. Καὶ προσάξει αὐτὴν ὁ ἱερεὺς, καὶ στήσει αὐτὴν ἔναντι Κυρίου. Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς ὕδωρ καθαρὸν ζῶν ἐν ἀγγείῳ ὀστρακίνῳ, καὶ τῆς γῆς τῆς οὔσης ἐπὶ τοῦ ἐδάφους τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ λαβὼν ὁ ἱερεὺς ἐμβαλεῖ εἰς τὸ ὕδωρ. Καὶ στήσει ὁ ἱερεὺς τὴν γυναῖκα ἔναντι Κυρίου, καὶ ἀποκαλύψει τὴν κεφαλὴν τῆς γυναικὸς, καὶ δώσει ἐπὶ τὰς χεῖρας αὐτῆς τὴν θυσίαν τοῦ μνημοσύνου, τὴν θυσίαν τῆς ζηλοτυπίας· ἐν

δὲ τῇ χειρὶ τοῦ ἱερέως ἔσται τὸ ὕδωρ τοῦ ἐλεγμοῦ τοῦ ἐπικαταρωμένου τούτου. Καὶ ὁρκιεῖ αὐτὴν ὁ ἱερεὺς, καὶ ἐρεῖ τῇ γυναικὶ, εἰ μὴ κεκοίμηταί τις μετὰ σοῦ, εἰ μὴ παραβέβηκας μιανθῆναι ὑπὸ τὸν ἄνδρα τὸν σεαυτῆς, ἀθῶα ἴσθι ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐλεγμοῦ τοῦ ἐπικαταρωμένου τούτου. Εἰ δὲ σὺ παραβέβηκας ὕπανδρος οὖσα, ἢ μεμίανσαι, καὶ ἔδωκέ τις τὴν κοίτην αὐτοῦ ἐν σοὶ, πλὴν τοῦ ἀνδρός σου· Καὶ ὁρκιεῖ ὁ ἱερεὺς τὴν γυναῖκα ἐν τοῖς ὅρκοις τῆς ἀρᾶς ταύτης, καὶ ἐρεῖ ὁ ἱερεὺς τῇ γυναικὶ, δῴη σε Κύριος ἐν ἀρᾷ καὶ ἐνόρκιον ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ σου, ἐν τῷ δοῦναι Κύριον τὸν μηρόν σου διαπεπτωκότα, καὶ τὴν κοιλίαν σου πεπρησμένην. Καὶ εἰσελεύσεται τὸ ὕδωρ τὸ ἐπικαταρώμενον τοῦτο εἰς τὴν κοιλίαν σου πρῆσαι γαστέρα, καὶ διαπεσεῖν μηρόν σου· καὶ ἐρεῖ ἡ γυνὴ, γένοιτο, γένοιτο. Καὶ γράψει ὁ ἱερεὺς τὰς ἀρὰς ταύτας εἰς βιβλίον, καὶ ἐξαλείψει εἰς τὸ ὕδωρ τοῦ ἐλεγμοῦ τοῦ ἐπικαταρωμένου. Καὶ ποτιεῖ τὴν γυναῖκα τὸ ὕδωρ τοῦ ἐλεγμοῦ τοῦ ἐπικαταρωμένου· καὶ εἰσελεύσεται εἰς αὐτὴν τὸ ὕδωρ τὸ ἐπικαταρώμενον τοῦ ἐλεγμοῦ. Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς ἐκ χειρὸς τῆς γυναικὸς τὴν θυσίαν τῆς ζηλοτυπίας, καὶ ἐπιθήσει τὴν θυσίαν ἔναντι Κυρίου, καὶ προσοίσει αὐτὴν πρὸς τὸ θυσιαστήριον. Καὶ δράξεται ὁ ἱερεὺς ἀπὸ τῆς θυσίας τὸ μνημόσυνον αὐτῆς, καὶ ἀνοίσεται αὐτὸ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ μετὰ. ταῦτα ποτιεῖ τὴν γυναῖκα τὸ ὕδωρ. Καὶ ἔσται ἐὰν ᾖ μεμιασμένη καὶ λήθῃ λάθῃ τὸν ἄνδρα αὐτῆς, καὶ εἰσελεύσεται εἰς αὐτὴν τὸ ὕδωρ τοῦ ἐλεγμοῦ τὸ ἐπικαταρώμενον, καὶ πρησθήσεται τὴν κοιλίαν, καὶ διαπεσεῖται ὁ μηρὸς αὐτῆς, καὶ ἔσται ἡ γυνὴ εἰς ἀρὰν τῷ λαῷ αὐτῆς. Ἐὰν δὲ μὴ μιανθῇ ἡ γυνὴ, καὶ καθαρὰ ᾖ, καὶ ἀθῶα ἔσται καὶ ἐκσπερματιεῖ σπέρμα. Οὗτος ὁ νόμος τῆς ζηλοτυπίας, ᾧ ἂν παραβῇ ἡ γυνὴ ὕπανδρος οὖσα, καὶ μιανθῇ. Ἢ ἄνθρωπος ὃς ἐὰν ἐπέλθῃ ἐπ αὐτὸν

πνεῦμα ζηλώσεως, καὶ ζηλώσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ στήσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἔναντι Κυρίου, καὶ ποιήσει αὐτῇ ὁ ἱερεὺς πάντα τὸν νόμον τοῦτον, καὶ ἀθῶος ἔσται ὁ ἄνθρωπος ἀπὸ ἁμαρτίας· καὶ γυνὴ ἐκείνη λήψεται τὴν ἁμαρτίαν αὐτῆς.

# 6

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ἀνὴρ ἢ γυνὴ, ὃς ἂν μεγάλως εὔξηται εὐχὴν ἀφαγνίσασθαι ἁγνείαν Κυρίῳ, ἀπὸ οἴνου καὶ σίκερα ἁγνισθήσεται· καὶ ὅξος ἐξ οἴνου καὶ ὅξος ἐκ σίκερα οὐ πίεται· καὶ ὅσα κατεργάζεται ἐκ σταφυλῆς οὐ πίεται· καὶ σταφυλὴν πρόσφατον καὶ σταφίδα οὐ φάγεται πάσας τὰς ἡμέρας τῆς εὐχῆς αὐτοῦ· ἀπὸ πάντων ὅσα γίνεται ἐξ ἀμπέλου, οἶνον ἀπὸ στεμφύλων ἕως γιγάρτου οὐ φάγεται πάσας τὰς ἡμέρας τοῦ ἁγνισμοῦ· ξυρὸν οὐκ ἐπελεύσεται ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, ἕως ἂν πληρωθῶσιν αἱ ἡμέραι, ὅσας ηὐξατο Κυρίῳ· ἅγιος ἔσται τρέφων κόμην τρίχα κεφαλῆς πάσας τὰς ἡμέρας τῆς εὐχῆς Κυρίῳ· ἐπὶ πάσῃ ψυχῇ τετελευτηκυίᾳ οὐκ εἰσελεύσεται ἐπὶ πατρὶ καὶ μητρὶ, καὶ ἐπ ἀδελφῷ καὶ ἐπ ἀδελφῇ, οὐ μιανφήσεται ἐπ αὐτοὶς ἀποφανόντων αὐτῶν, ὅτι εὐχὴ Θεοῦ αὐτοῦ ἐπ αὐτῷ ἐπὶ κεφαλῆς αὐτοῦ· Πάσας τὰς ἡμέρας τῆς εὐχῆς αὐτοῦ ἅγιος ἔσται Κυρίῳ. Ἐὰν δέ τις ἀποθάνῃ ἐπ αὐτῷ ἐξάπινα, παραχρῆμα μιανθήσεται ἡ κεφαλὴ εὐχῆς αὐτοῦ· καὶ ξυρήσεται τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ᾗ ἂν ἡμέρᾳ καθαρισθῇ· τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ξυρηθήσεται. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ οἴσει δύο τρυγόνας, ἢ δύο νοσσοὺς περιστερῶν πρὸς τὸν ἱερέα, ἐπὶ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ποιήσει ὁ

ἱερεὺς μίαν περὶ ἁμαρτίας, καὶ μίαν εἰς ὁλοκαύτωμα· καὶ ἐξιλάσεται περὶ αὐτοῦ ὁ ἱερεὺς περὶ ὧν ἥμαρτε περὶ τῆς ψυχῆς· καὶ ἁγιάσει τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἡγιάσθη Κυρίῳ, τὰς ἡμέρας τῆς εὐχῆς· καὶ προσάξει ἀμνὸν ἐνιαύσιον εἰς πλημμέλειαν· καὶ αἱ ἡμέραι αἱ πρότεραι ἄλογοι ἔσονται, ὅτι ἐμιάνθη ἡ κεφαλὴ εὐχῆς αὐτοῦ. Καὶ οὗτος ὁ νόμος τοῦ εὐξαμένου· ᾗ ἂν ἡμέρᾳ πληρώσῃ ἡμέρας εὐχῆς αὐτοῦ, προσοίσει αὐτὸς παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ προσάξει τὸ δῶρον αὐτοῦ Κυρίῳ ἀμνὸν ἐνιαύσιον ἄμωμον ἕνα εἰς ὁλοκαύτωσιν, καὶ ἀμνάδα ἐνιαυσίαν μίαν ἄμωμον εἰς ἁμαρτίαν, καὶ κριὸν ἕνα ἄμωμον εἰς σωτήριον, καὶ κανοῦν ἀζύμων σεμιδάλεως ἄρτους ἀναπεποιημένους ἐν ἐλαίῳ, καὶ λάγανα ἄζυμα κεχρισμένα ἐν ἐλαίῳ, καὶ θυσίαν αὐτῶν, καὶ σπονδὴν αὐτῶν. Καὶ προσοίσει ὁ ἱερεὺς ἔναντι Κυρίου, καὶ ποιήσει τὸ περὶ ἁμαρτίας αὐτοῦ, καὶ τὸ ὁλοκαύτωμα αὐτοῦ. Καὶ τὸν κριὸν ποιήσει θυσίαν σωτηρίου τῷ Κυρίῳ ἐπὶ τῷ κανῷ τῶν ἀζύμων· καὶ ποιήσει ὁ ἱερεὺς τὴν θυσίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν σπονδὴν αὐτοῦ. Καὶ ξυρήσεται ὁ ἡγύμενος παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου τὴν κεφαλὴν τῆς εὐχῆς αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσει τὰς τρίχας ἐπὶ τὸ πῦρ, ὅ ἐστιν ὑπὸ τὴν θυσίαν τοῦ σωτηρίου. Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς τὸν βραχίονα ἐφθὸν ἀπὸ τοῦ κριοῦ, καὶ ἄρτον ἕνα ἄζυμον ἀπὸ τοῦ κανοῦ, καὶ λάγανον ἄζυμον ἕν, καὶ ἐπιθήσει ἐπὶ τὰς χεῖρας τοῦ ἡγύμενου μετὰ τὸ ξυρήσασθαι αὐτὸν τὴν εὐχὴν αὐτοῦ, καὶ προσοίσει αὐτὰ ὁ ἱερεὺς ἐπίθεμα ἔναντι Κυρίου· ἅγιον ἔσται τῷ ἱερεῖ ἐπὶ τοῦ στηθηνίου τοῦ ἐπιθέματος, καὶ ἐπὶ τοῦ βραχίονος τοῦ ἀφαιρέματος· καὶ μετὰ ταῦτα πίεται ὁ ἡγύμενος οἶνον. Οὗτος ὁ νόμος τοῦ εὐξαμένου, ὃς ἂν εὔξηται Κυρίῳ δῶρον αὐτοῦ Κυρίῳ περὶ τῆς εὐχῆς, χωρὶς ὧν ἂν εὕρῃ ἡ χεὶρ αὐτοῦ, κατὰ δύναμιν τῆς εὐχῆς αὐτοῦ, ἣν ἂν εὔξηται

κατὰ νόμον ἀγνείας. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, λέγων, οὕτως εὐλογήσετε τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, λέγοντες αὐτοῖς, εὐλογήσαι σε Κύριος, καὶ φυλάξαι, σε. Ἐπιφάναι Κύριος τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐλεήσαι σε. Ἐπάραι Κύριος τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ σὲ, καὶ δῴη σοι εἰρήνην. Καὶ ἐπιθήσουσι τὸ ὄνομά μου ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἐγὼ Κύριος εὐλογήσω αὐτούς.

# 7

Καὶ ἐγένετο ᾗ ἡμέρᾳ συνετέλεσε Μωυσῆς, ὥστε ἀναστῆσαι τὴν σκηνήν, καὶ ἔχρισεν αὐτὴν, καὶ ἡγίασεν αὐτὴν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτοῦ, καὶ ἔχρισεν αὐτὰ, καὶ ἡγίασεν αὐτά. Καὶ προσήνεγκαν οἱ ἄρχοντες Ἰσραὴλ, δώδεκα ἄρχοντες οἴκων πατριῶν αὐτῶν· οὗτοι οἱ ἄρχοντες φυλῶν, οὗτοι οἱ παρεστηκότες ἐπὶ τῆς ἐπισκοπῆς. Καὶ ἤνεγκαν τὸ δῶρον αὐτῶν ἔναντι Κυρίου, ἓξ ἁμάξας λαμπηνίκας, καὶ δώδεκα βόας· ἅμαξαν παρὰ δύο ἀρχόντων, καὶ μόσχον παρὰ ἑκάστου· καὶ προσήγαγον ἐναντίον τῆς σκηνῆς. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε παρ αὐτῶν, καὶ ἔσονται πρὸς τὰ ἔργα τὰ λειτουργικὰ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ δώσεις αὐτὰ τοῖς Λευίταις, ἑκάστῳ κατὰ τὴν αὐτοῦ λειτουργίαν. Καὶ λαβὼν Μωυσῆς τὰς ἁμάξας καὶ τοὺς βόας, ἔδωκεν αὐτὰ τοῖς Λευίταις. Καὶ τὰς δύο ἁμάξας καὶ τοὺς τέσσαρας βόας ἔδωκε τοῖς υἱοῖς Γεδσὼν κατὰ τὰς λειτουργίας αὐτῶν. Καὶ τὰς τέσσαρας ἁμάξας καὶ τοὺς ὀκτὼ βόας ἔδωκε τοῖς υἱοῖς Μεραρὶ κατὰ τὰς λειτουργίας αὐτῶν, διὰ Ἰθάμαρ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως. Καὶ τοῖς υἱοῖς Καὰθ οὐ δέδωκεν, ὅτι τὰ

λειτουργήματα τοῦ ἁγίου ἔχουσιν· ἐπ ὤμων ἀροῦσι. Καὶ προσήνεγκαν οἱ ἄρχοντες εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τοῦ θυσιαστηρίου, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἔχρισεν αὐτὸ, καὶ προσήνεγκαν οἱ ἄρχοντες τὰ δῶρα αὐτῶν ἀπέναντι τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἄρχων εἷς καθ ἡμέραν, ἄρχων καθ ἡμέραν προσοίσουσι τὰ δῶρα αὐτῶν εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ ἦν ὁ προσφέρων ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ πρώτῃ τὸ δῶρον αὐτοῦ, Ναασσὼν υἱὸς Ἀμιναδὰβ, ἄρχων τῆς φυλῆς Ἰούδα. Καὶ προσήνεγκε τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἕν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφοτέρα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο δῶρον Ναασσὼν υἱοῦ Ἀμιναδάβ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ προσήνεγκε Ναθαναὴλ υἱὸς Σωγὰρ, ὅ ἄρχων τῆς φυλῆς Ἰσσάχαρ. Καὶ προσήνεγκε τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ναθαναὴλ υἱοῦ Σωγάρ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Σαβουλὼν, Ἐλιὰβ υἱὸς Χαιλών. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἕν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν

ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν· Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἐλιὰβ υἱοῦ Χαιλών. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Ῥουβὴν, Ἐλισοῦρ υἱὸς Σεδιούρ. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν· Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἐλισοὺρ υἱοῦ Σεδιούρ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ πέμπτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Συμεὼν, Σαλαμιὴλ υἱὸς Σουρισαδαί. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἐναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Σαλαμιὴλ υἱοῦ Σουρισαδαί. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Γὰδ, Ἐλεισὰφ υἱὸς Ῥαγουήλ. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν

ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἐλισὰφ υἱοῦ Ῥαγουήλ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἐφραὶμ, Ἐλισαμὰ υἱὸς Ἐμιούδ. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἐλισαμὰ υἱοῦ Ἐμιούδ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Μανασσῆ, Γαμαλιὴλ υἱὸς Φαδασσούρ. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Γαμαλιὴλ υἱοὺ Φαδασσούρ. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐνάτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Βενιαμὶν, Ἀβιδὰν υἱὸς Γαδεωνί. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἓν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην, μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς

θυσίαν· Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἀβιδὰν υἱοῦ Γαδεωνί. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ δεκάτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Δὰν, Ἀχιέζερ υἱὸς Ἀμισαδαί. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἕν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἀχιέζερ υἱοῦ Ἀμισαδαί. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐνδέκατῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Ἀσὴρ, Φαγεὴλ υἱὸς Ἐχράν. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἕν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἐνιαύσιον ἕνα εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Φαγεὴλ υἱοῦ Ἐχράν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ δωδεκάτῃ ἄρχων τῶν υἱῶν Νεφθαλί, Ἀχιρὲ υἱὸς Αἰνάν. Τὸ δῶρον αὐτοῦ, τρυβλίον ἀργυροῦν ἕν, τριάκοντα καὶ ἑκατὸν ὁλκὴ αὐτοῦ· φιάλην μίαν ἀργυρᾶν, ἑβδομήκοντα σίκλων κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον· ἀμφότερα πλήρη σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν. Θυΐσκην μίαν δέκα χρυσῶν, πλήρη θυμιάματος. Μόσχον

ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνὸν ἕνα ἐνιαύσιον εἰς ὁλόκαύτωμα, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ εἰς θυσίαν σωτηρίου δαμάλεις δύο, κριοὺς πέντε, τράγους πέντε, ἀμνάδας ἐνιαυσίας πέντε· τοῦτο τὸ δῶρον Ἀχιρὲ υἱοῦ Αἰνάν. Οὗτος ὁ ἐγκαινισμὸς τοῦ θυσιαστηρίου ᾗ ἡμέρᾳ ἔχρισεν αὐτὸ, παρὰ τῶν ἀρχόντων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ· τρυβλία ἀργυρᾶ δώδεκα, φιάλαι ἀργυραῖ δώδεκα, θυΐσκαι χρυσαῖ δώδεκα. Τριάκοντα καὶ ἑκατὸν σίκλων, τὸ τρυβλίον τὸ ἕν, καὶ ἑβδομήκοντα σίκλων ἡ φιάλη ἡ μία· πᾶν τὸ ἀργύριον τῶν σκευῶν, δισχίλιοι καὶ τετρακόσιοι σίκλοι· σίκλοι, ἐν τῷ σίκλῳ τῷ ἁγίῳ. Θυΐσκαι χρυσαῖ δώδεκα πλήρεις θυμιάματος· πᾶν τὸ χρυσίον τῶν θυϊσκῶν, εἴκοσι καὶ ἑκατὸν χρυσοῖ. Πᾶσαι αἱ βόες αἱ εἰς ὁλοκαύτωσιν, μόσχοι δώδεκα, κριοὶ δώδεκα, ἀμνοὶ ἐνιαύσιοι δώδεκα, καὶ αἱ θυσίαι αὐτῶν, καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν· καὶ χίμαροι ἐξ αἰγῶν δώδεκα περὶ ἁμαρτίας. Πᾶσαι αἱ βόες εἰς θυσίαν σωτηρίου, δαμάλεις εἰκοσιτέσσαρες, κριοὶ ἑξήκοντα, τράγοι ἑξήκοντα ἐνιαύσιαι, ἀμνάδες ἑξήκοντα ἐνιαύσιοι ἄμωμοι· αὕτη ἡ ἐγκαίνωσις τοῦ θυσιαστηρίου, μετὰ τὸ πληρῶσαι τὰς χεῖρας αὐτοῦ, καὶ μετὰ τὸ χρίσαι αὐτόν. Ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι Μωυσῆν εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου λαλῆσαι αὐτῷ, καὶ ἤκουσε τὴν φωνὴν Κυρίου λαλοῦντος πρὸς αὐτὸν ἄνωθεν τοῦ ἱλαστηρίου, ὅ ἐστιν ἐπὶ τῆς κιβωτοῦ τοῦ μαρτυρίου, ἀναμέσον τῶν δύο χερουβίμ· καὶ ἐλάλει πρὸς αὐτόν.

# 8

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τῷ Ἀαρὼν, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, ὅταν ἐπιτιθῇς τοὺς λύχνους ἐκ μέρους, κατὰ

πρόσωπον τῆς λυχνίας φωτιοῦσιν οἱ ἑπτὰ λύχνοι. Καὶ ἐποίησεν οὕτως Ἀαρών· ἐκ τοῦ ἑνὸς μέρους κατὰ πρόσωπον τῆς λυχνίας ἐξῆψε τοὺς λύχνους αὐτῆς, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· Καὶ αὕτη ἡ κατασκευὴ τῆς λυχνίας· στερεὰ, χρυσῆ, ὁ καυλὸς αὐτῆς, καὶ τὰ κρίνα αὐτῆς, στερεὰ ὅλη· κατὰ τὸ εἶδος ὃ ἔδειξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησε τὴν λυχνίαν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν λέγων, λάβε τοὺς Λευίτας ἐκ μέσου υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἀφαγνιεῖς αὐτούς. Καὶ οὕτω ποιήσεις αὐτοῖς τὸν ἁγνισμὸν αὐτῶν· περιῤῥανεῖς αὐτοὺς ὕδωρ ἁγνισμοῦ· καὶ ἐπελεύσεται ξυρὸν ἐπὶ πᾶν τὸ σῶμα αὐτῶν, καὶ πλυνοῦσι τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ καθαροὶ ἔσονται. Καὶ λήμψονται μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, καὶ τούτου θυσίαν σεμίδαλιν ἀναπεποιημένην ἐν ἐλαίῳ· καὶ μόσχον ἐνιαύσιον ἐκ βοῶν λήψῃ περὶ ἁμαρτίας. Καὶ προσάξεις τοὺς Λευίτας ἔναντι τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ συνάξεις πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραήλ· Καὶ προσάξεις τοὺς Λευίτας ἔναντι Κυρίου, καὶ ἐπιθήσουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τοὺς Λευίτας· Καὶ ἀφοριεῖ Ἀαρὼν τοὺς Λευίτας ἀπόδομα ἔναντι Κυρίου παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἔσονται ὥστε ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα Κυρίου. Οἱ δὲ Λευῖται ἐπιθήσονσι τὰς χεῖρας ἐπὶ τὰς κεφαλὰς τῶν μόσχων· καὶ ποιήσεις τὸν ἕνα περὶ ἁμαρτίας, καὶ τὸν ἕνα εἰς ὁλοκαύτωμα Κυρίῳ, ἐξιλάσασθαι περὶ αὐτῶν. Καὶ στήσεις τοὺς Λευίτας ἔναντι Κυρίου, καὶ ἔναντι Ἀαρὼν, καὶ ἔναντι τῶν υἱῶν αὐτοῦ, καὶ ἀποδώσεις αὐτοὺς ἀπόδομα ἔναντι Κυρίου· Καὶ διαστελεῖς τοὺς Λευίτας ἐκ μέσου υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἔσονταί μοι. Καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσονται οἱ Λευῖται ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίον· καὶ καθαριεῖς αὐτοὺς, καὶ ἀποδώσεις αὐτοὺς ἔναντι Κυρίου. ὅτι ἀπόδομα ἀποδεδομένοι οὗτοί μοι εἰσὶν ἐκ μέσου υἱῶν Ἰσραήλ· ἀντὶ τῶν διανοιγόντων πᾶσαν μήτραν πρωτοτόκων

πάντων ἐκ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ εἴληφα αὐτοὺς ἐμοί. Ὅτι ἐμοὶ πᾶν πρωτότοκον ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ ἀπὸ ἀνθρώπων ἕως κτήνους· ᾗ ἡμέρᾳ ἐπάταξα πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτου, ἡγίασα αὐτοὺς ἐμοὶ, καὶ ἔλαβον τοὺς Λευίτας ἀντὶ παντὸς πρωτοτόκου ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἀπέδωκα τοὺς Λευίτας ἀπόδομα δεδομένους Ἀαρὼν καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ ἐκ μέσου υἱῶν Ἰσραὴλ, ἐργάζεσθαι τὰ ἔργα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἐξιλάσκεσθαι περὶ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ οὐκ ἔσται ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ προσεγγίζων πρὸς τὰ ἅγια. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν καὶ πᾶσα ἡ συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ τοῖς Λευίταις καθὰ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ περὶ τῶν Λευιτῶν, οὕτως ἐποίησαν αὐτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ ἠγνίσαντο οἱ Λευῖται, καὶ ἐπλύναντο τὰ ἱμάτια· καὶ ἀπέδωκεν αὐτοὺς Ἀαρὼν ἀπόδομα ἔναντι Κυρίου, καὶ ἐξιλάσατο περὶ αὐτῶν Ἀαρὼν ἀφαγνίσασθαι αὐτούς. Καὶ μετὰ ταῦτα εἰσῆλθον οἱ Λευῖται λειτουργεῖν τὴν λειτουργίαν αὐτῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου ἔναντι Ἀαρὼν, καὶ ἔναντι τῶν υἱῶν αὐτοῦ· καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ περὶ τῶν Λευιτῶν, οὕτως ἐποίησαν αὐτοῖς. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, τοῦτό ἐστι τὸ περὶ τῶν Λευιτῶν· ἀπὸ πέντε καὶ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, εἰσελεύσονται ἐνεργεῖν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου· Καὶ ἀπὸ πεντηκονταετοῦς ἀποστήσεται ἀπὸ τῆς λειτουργίας, καὶ οὐκ ἐργᾶται ἔτι. Καὶ λειτουργήσει ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου φυλάσσειν φυλακὰς, ἔργα δὲ οὐκ ἐργᾶται· οὕτως ποιήσεις τοῖς Λευίταις ἐν ταῖς φυλακαῖς αὐτῶν.

# 9

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾷ ἐν τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ, ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐν τῷ μηνὶ τῷ πρώτῳ, λέγων, εἶπον, καὶ ποιείτωσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πάσχα καθ ὥραν αὐτοῦ, τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου πρὸς ἑσπέραν, ποιήσεις αὐτὸ κατὰ καιρούς· κατὰ τὸν νόμον αὐτοῦ, καὶ κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ποιήσεις αὐτό. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ποιῆσαι τὸ πάσχα ἐναρχομένου τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ Σινᾶ. καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ παρεγένοντο οἱ ἄνδρες οἳ ἦσαν ἀκάθαρτοι ἐπὶ ψυχῇ ἀνθρώπου, καὶ οὐκ ἠδύναντο ποιῆσαι τὸ πάσχα ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· καὶ προσῆλθον ἐναντίον Μωυσῆ καὶ Ἀαρὼν ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ· Καὶ εἶπαν οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι πρὸς αὐτὸν, ἡμεῖς ἀκάθαρτοι ἐπὶ ψυχῇ ἀνθρώπου· μὴ οὖν ὑστερήσωμεν προσενέγκαι τὸ δῶρον Κυρίῳ κατὰ καιρὸν αὐτοῦ ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραήλ; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Μωυσῆς, στῆτε αὐτοῦ, καὶ ἀκούσομαι τί ἐντελεῖται Κύριος περὶ ὑμῶν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, ἄνθρωπος ἄνθρωπος, ὃν ἐὰν γένηται ἀκάθαρτος ἐπὶ ψυχῇ, ἀνθρώπου, ἢ ἐν ὁδῷ μακρὰν ὑμῖν, ἢ ἐν ταῖς γενεαῖς ὑμῶν, καὶ ποιήσει τὸ πάσχα Κυρίῳ ἐν τῷ μηνὶ τῷ δευτέρῳ ἐν τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ· τὸ πρὸς ἑσπέραν ποιήσουσιν αὐτὸ, ἐπ ἀζύμων καὶ πικρίδων φάγονται αὐτό. Οὐ καταλείψουσιν ἀπ αὐτοῦ εἰς τὸ πρωΐ, καὶ ὀστοῦν οὐ συντρίψουσιν ἀπ αὐτοῦ· κατὰ τὸν νόμον τοῦ πάσχα ποιήσουσιν αὐτό. Καὶ ἄνθρωπος ὃς ἐὰν καθαρὸς ᾖ, καὶ ἐν ὁδῷ μακρὰν οὐκ ἔστι, καὶ ὑστερήσῃ ποιῆσαι τὸ πάσχα, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ τοῦ λαοῦ αὐτῆς, ὅτι τὸ δῶρον Κυρίῳ οὐ προσήνεγκε κατὰ τὸν καιρὸν αὐτοῦ· ἁμαρτίαν αὐτοῦ λήψεται ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος. Ἐὰν δὲ προσέλθῃ πρὸς ὑμᾶς

προσήλυτος ἐν τῇ γῇ ὑμῶν, καὶ ποιήσῃ τὸ πάσχα Κυρίῳ, κατὰ τὸν νόμον τοῦ πάσχα, καὶ κατὰ τὴν σύνταξιν αὐτοῦ ποιήσει αὐτό· νόμος εἷς ἔσται ὑμῖν καὶ τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ αὐτόχθονι τῆς γῆς. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐστάθη ἡ σκηνὴ, ἐκάλυψεν ἡ νεφελη τὴν σκηνὴν, τὸν οἶκον τοῦ μαρτυρίου· καὶ τὸ ἑσπέρας ἦν ἐπὶ τῆς σκηνῆς ὡς εἶδος πυρὸς ἕως πρωΐ. Οὕτως ἐγίνετο διαπαντός· ἡ νεφέλη ἐκάλυπτεν αὐτὴν ἡμέρας, καὶ εἶδος πυρὸς τὴν νύκτα. Καὶ ἡνίκα ἀνέβη ἡ νεφέλη ἀπὸ τῆς σκηνῆς, καὶ μετὰ ταῦτα ἀπῆραν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ ἐν τῷ τόπῳ οὗ ἂν ἔστη ἡ νεφέλη, ἐκεῖ παρενέβαλον οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Διὰ προστάγματος Κυρίου παρεμβαλοῦσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ διὰ προστάγματος Κυρίου ἀπαροῦσι· πάσας τὰς ἡμέρας ἐν αἷς σκιάζει ἡ νεφέλη ἐπὶ τῆς σκηνῆς, παρεμβαλοῦσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ ὅταν ἐφέλκηται ἡ νεφέλη ἐπὶ τῆς σκηνῆς ἡμέρας πλείους, καὶ φυλάξονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὴν φυλακὴν τοῦ Θεοῦ, καὶ οὐ μὴ ἐξάρωσι. Καὶ ἔσται ὅταν σκεπάζῃ ἡ νεφέλη ἡμέρας ἀριθμῷ ἐπὶ τῆς σκηνῆς, διὰ φωνῆς Κυρίου παρεμβαλοῦσι, καὶ διὰ προστάγματος Κυρίου ἀπαροῦσι. Καὶ ἔσται ὅταν γένηται ἡ νεφέλη ἀφ ἑσπέρας ἕως πρωΐ, καὶ ἀναβῇ ἡ νεφέλη τοπρωΐ, καὶ ἀπαροῦσιν ἡμέρας ἢ νυκτός. Μηνὸς ἡμέρας πλεοναζούσης τῆς νεφέλης σκιαζούσης ἐπ αὐτῆς, παρεμβαλοῦσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ οὐ μὴ ἀπάρωσιν. Ὅτι διὰ προστάγματος Κυρίου ἀπαροῦσι· τὴν φυλακὴν Κυρίου ἐφυλάξαντο διὰ προστάγματος Κυρίου ἐν χειρὶ Μωυσῆ.

# 10

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ποίησον σεαυτῷ δύο σάλπιγγας ἀργυρᾶς· ἐλατὰς ποιήσεις αὐτάς· καὶ ἔσονταί σοι

ἀνακαλεῖν τὴν συναγωγὴν, καὶ ἐξαίρειν τὰς παρεμβολάς. Καὶ σαλπιεῖς ἐν αὐταῖς, καὶ συναχθήσεται πᾶσα ἡ συναγωγὴ ἐπὶ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· Ἐὰν δὲ ἐν μιᾷ σαλπίσωσι, προσελεύσονται πρὸς σὲ πάντες οἱ ἄρχοντες ἀρχηγοὶ Ἰσραήλ. καὶ σαλπιεῖτε σημασίαν, καὶ ἐξαροῦσιν αἱ παρεμβάλλουσαι αἱ παρεμβαλοῦσαι ἀνατολάς· καὶ σαλπιεῖτε σημασίαν δευτέραν, καὶ ἐξαροῦσιν αἱ παρεμβολαὶ αἱ παρεμβάλλουσαι Λίβα· καὶ σαλπιεῖτε σημασίαν τρίτην, καὶ ἐξαροῦσιν αἱ παρεμβολαὶ αἱ παρεμβάλλουσαι παρὰ θάλασσαν· καὶ σαλπιεῖτε σημασίαν τετάρτην, καὶ ἐξαροῦσιν αἱ παρεμβολαὶ αἱ παρεμβάλλουσαι πρὸς Βοῤῥᾶν· σημασίᾳ σαλπιοῦσιν ἐν τῇ ἐξάρσει αὐτῶν. καὶ ὅταν συναγάγητε τὴν συναγωγὴν, σαλπιεῖτε, καὶ οὐ σημασίᾳ. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἀαρὼν οἱ ἱερεῖς σαλπιοῦσι ταῖς σάλπιγξι· καὶ ἔσται ὑμῖν νόμιμον αἰώνιον εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν. Ἐὰν δὲ ἐξέλθητε εἰς πόλεμον ἐν τῇ γῇ ὑμῶν πρὸς τοὺς ὑπεναντίους τοὺς ἀνθεστηκότας ὑμῖ, καὶ σημανεῖτε ταῖς σάλπιγξιν, καὶ ἀναμνησθήσεσθε ἔναντι Κυρίου, καὶ διασωθήσεσθε ἀπὸ τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν. Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς εὐφροσύνης ὑμῶν, καὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς ὑμῶν, καὶ ἐν ταῖς νουμηνίαις ὑμῶν, σαλπιεῖτε ταῖς σάλπιγξιν ἐπὶ τοῖς ὁλοκαυτώμασι, καὶ ἐπὶ ταῖς θυσίαις τῶν σωτηρίων ὑμῶν· καὶ ἔσται ὑμῖν ἀνάμνησις ἔναντι τοῦ Θεοῦ ὑμῶν· ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ δευτέρῳ ἐν τῷ μηνὶ τῷ δευτέρῳ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἀνέβη ἡ νεφέλη ἀπὸ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. καὶ ἐξῆραν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ σὺν ἀπαρτίαις αὐτῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾶ· καὶ ἔστη ἡ νεφέλη ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ Φαράν. Καὶ ἐξῆραν πρῶτοι διὰ φωνῆς Κυρίου ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Καὶ ἐξῆραν τάγμα παρεμβολῆς υἱῶν Ἰούδα πρῶτοι σὺν δυνάμει αὐτῶν· καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως αὐτῶν, Ναασσὼν υἱὸς Ἀμιναδάβ. καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Ἰσσάχαρ, Ναθαναὴλ υἱὸς Σωγάρ. καὶ ἐπὶ τῆς

δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Ζαβουλὼν, Ἐλιὰβ, υἱὸς Χαιλών. Καὶ καθελοῦσι τὴν σκηνὴν, καὶ ἐξαροῦσιν οἱ υἱοὶ Γεδσὼν, καὶ οἱ υἱοὶ Μεραρὶ, οἱ αἴροντες τὴν σκηνήν. Καὶ ἐξῆραν τάγμα παρεμβολῆς Ῥουβὴν σὺν δυνάμει αὐτῶν· καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως αὐτῶν, Ἐλισοὺρ υἱὸς Σεδιούρ· Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Συμεὼν, Σαλαμιὴλ υἱὸς Σουρισαδαΐ. Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Γὰδ, Ἐλισὰφ ὁ τοῦ Ῥαγουήλ. Καὶ ἐξαροῦσιν οἱ υἱοὶ Καὰθ αἴροντες τὰ ἅγια· καὶ στήσουσι τὴν σκηνὴν ἕως παραγένωνται. Καὶ ἐξαροῦσι τάγμα παρεμβολῆς Ἐφραὶμ σὺν δυνάμει αὐτῶν· καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως αὐτῶν, Ἐλισαμὰ υἱὸς Σμιούδ. Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Μανασσῆ, Γαμαλιὴλ ὁ τοῦ Φαδασσούρ. Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Βενιαμὶν, Ἀβιδὰν ὁ τοῦ Γαδεωνί. Καὶ ἐξαροῦσι τάγμα παρεμβολῆς υἱῶν Δὰν, ἔσχατοι πασῶν τῶν παρεμβολῶν, σὺν δυνάμει αὐτῶν· καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως αὐτῶν, Ἀχιέζερ ὁ τοῦ Ἀμισαδαΐ. Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Ἀσὴρ, Φαγεὴλ υἱὸς Ἐχράν. Καὶ ἐπὶ τῆς δυνάμεως φυλῆς υἱῶν Νεφθαλὶ, Ἀχιρὲ υἱὸς Αἰνάν. Αὗται αἱ στρατιαὶ υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἐξῆραν σὺν δυνάμει αὐτῶν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς τῷ Ὀβὰβ υἱῷ Ῥαγουὴλ τῷ Μαδιανίτῃ τῷ γαμβρῷ Μωυσῆ, ἐξαίρομεν ἡμεῖς εἰς τὸν τόπον ὃν εἶπε Κύριος, τοῦτον δώσω ὑμῖν· δεῦρο μεθ ἡμῶν, καὶ εὖ σε ποιήσομεν, ὅτι Κύριος ἐλάλησε καλὰ περὶ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν, οὐ πορεύσομαι, ἀλλὰ εἰς τὴν γῆν μου, καὶ εἰς τὴν γενεάν μου. Καὶ εἶπε, μὴ ἐγκαταλίπῃς ἡμᾶς, οὗ ἕνεκεν ἦσθα μεθ ἡμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἔσῃ ἐν ἡμῖν πρεσβύτης. Καὶ ἔσται ἐὰν πορευθῇς μεθ ἡμῶν, καὶ ἔσται τὰ ἀγαθὰ ἐκεῖνα ὅσα ἂν ἀγαθοποιήσῃ Κύριος ἡμᾶς, καὶ εὖ σε ποιήσομεν. Καὶ ἐξῆραν ἐκ τοῦ ὄρους Κυρίου ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν· καὶ ἡ κιβωτὸς τῆς διαθήκης Κυρίου προεπορεύετο προτέρα αὐτῶν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν κατασκέψασθαι αὐτοῖς

ἀνάπαυσιν. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐξαίρειν τὴν κιβωτὸν, καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἐξεγέρθητι Κύριε, καὶ διασκορπισθήτωσαν οἱ ἐχθροί σου, φυγέτωσαν πάντες οἱ μισοῦντές σε. Καὶ ἐν τῇ καταπαύσει εἶπεν, ἐπίστρεφε Κύριε χιλιάδας μυριάδας ἐν τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἡ νεφέλη ἐγένετο σκιάζουσα ἐπ αὐτοῖς ἡμέρας, ἐν τῷ ἐξαίρειν αὐτοὺς ἐκ τῆς παρεμβολῆς.

# 11

Καὶ ἦν ὁ λαὸς γογγύζων πονηρὰ ἔναντι Κυρίου· καὶ ἤκουσε Κύριος, καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ· καὶ ἐξεκαύθη ἐν αὐτοῖς πῦρ παρὰ Κυρίου, καὶ κατέφαγε μέρος τι τῆς παρεμβολῆς. Καὶ ἐκέκραξεν ὁ λαὸς πρὸς Μωυσῆν· καὶ ηὔξατο Μωυσῆς πρὸς Κύριον, καὶ ἐκόπασε τὸ πῦρ. Καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Ἐμπυρισμός· ὅτι ἐξεκαύθη ἐν αὐτοῖς παρὰ Κυρίου. Καὶ ὁ ἐπίμικτος ὁ ἐν αὐτοῖς ἐπεθύμησεν ἐπιθυμίαν· καὶ καθίσαντες ἔκλαιον καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ εἶπαν, τίς ἡμᾶς ψωμιεῖ κρέα; Ἐμνήσθημεν τοὺς ἰχθύας, οὓς ἠσθίομεν ἐν Αἰγύπτῳ δωρεὰν. καὶ τοὺς σικύας, καὶ τοὺς πέπονας, καὶ τὰ πράσα, καὶ τὰ κρόμμυα, καὶ τὰ σκόρδα. Νυνὶ δὲ ἡ ψυχὴ ἡμῶν κατάξηρος· οὐδὲν πλὴν εἰς τὸ μάννα οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. Τὸ δὲ μάννα ὡσεὶ σπέρμα κορίου ἐστὶ, καὶ τὸ εἶδος αὐτοῦ εἶδος κρυστάλλου. Καὶ διεπορεύετο ὁ λαὸς, καὶ συνέλεγον, καὶ ἤλεθον αὐτὸ ἐν τῷ μύλῳ, καὶ ἔτριβον ἐν τῇ θυΐᾳ, καὶ ἤψουν αὐτὸ ἐν τῇ χύτρᾳ, καὶ ἐποίουν αὐτὸ ἐνκρυφίας· καὶ ἦν ἡ ἡδονὴ αὐτοῦ ὡσεὶ γεῦμα ἐγκρὶς ἐξ ἐλαίου. Καὶ ὅταν κατέβη ἡ δρόσος ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν νυκτὸς, κατέβαινε τὸ μάννα ἐπ αὐτῆς. Καὶ ἤκουσε Μωυσῆς κλαιόντων αὐτῶν κατά δήμους αὐτῶν, ἕκαστον ἐπὶ τῆς θύρας αὐτοῦ· καὶ

ἐθυμώθη ὀργῇ Κύριος σφόδρα· καὶ ἔναντι Μωυσῆ ἦν πονηρόν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Κύριον, ἱνατί ἐκάκωσας τὸν θεράποντά σου, καὶ διατί οὐχ εὕρηκα χάριν ἐναντίον σου, ἐπιθεῖναι τὴν ὁρμὴν τοῦ λαοῦ τούτου ἐπ ἐμέ; Μὴ ἐγὼ ἐν γαστρὶ ἔλαβον πάντα τὸν λαὸν τοῦτον, ἢ ἐγὼ ἔτεκον αὐτούς; ὅτι λέγεις μοι, λάβε αὐτὸν εἰς τὸν κόλπον σου, ὡσεὶ ἄραι τιθηνὸς τὸν θηλάζοντα, εἰς τὴν γῆν ἣν ὤμοσας τοῖς πατράσιν αὐτῶν; Πόθεν μοι κρέα, δοῦναι παντὶ τῷ λαῷ τούτῳ; ὅτι κλαίουσιν ἐπ ἐμοὶ, λέγοντες, δὸς ἡμῖν κρέα, ἵνα φάγωμεν. Οὐ δυνήσομαι ἐγὼ μόνος φέρειν τὸν λαὸν τοῦτον, ὅτι βαρύτερόν μοι ἐστὶ τὸ ῥῆμα τοῦτο. Εἰ δ οὕτω σὺ ποιεῖς μοι, ἀπόκτεινόν με ἀναιρέσει, εἰ εὕρηκα ἔλεος παρὰ σοὶ, ἵνα μὴ ἴδω τὴν κάκωσίν μου. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆς, συνάγαγέ μοι ἑβδομήκοντα ἄνδρας ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραήλ, οὓς αὐτὸς σὺ οἶδας, ὅτι οὗτοί εἰσι πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ καὶ γραμματεῖς αὐτῶς· καὶ ἄξεις αὐτοὺς πρὸς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ στήσονται ἐκεῖ μετὰ σοῦ. Καὶ καταβήσομαι, καὶ λαλήσω ἐκεῖ μετὰ σοῦ· καὶ ἀφελῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματος τοῦ ἐπὶ σοὶ, καὶ ἐπιθήσω ἐπ αὐτούς· καὶ συναντιλήψονται μετὰ σοῦ τὴν ὁρμὴν τοῦ λαοῦ, καὶ οὐκ οἴσεις αὐτὸς σὺ μόνος. Καὶ τῷ λαῷ ἐρεῖς, ἁγνίσασθε εἰς αὔριον, καὶ φάγεσθε κρέα· ὅτι ἐκλαύσατε ἔναντι Κυρίου, λέγοντες, τίς ἡμᾶς ψωμιεῖ κρέα; ὅτι καλὸν ἡμῖν ἐστιν ἐν Αἰγυπτῳ· καὶ δώσει Κύριος ὑμῖν φαγεῖν κρέα, καὶ φάγεσθε κρέα. Οὐχ ἡμέραν μίαν φάγεσθε, οὐ δὲ δύο, οὐ δὲ πέντε ἡμέρας, οὐ δὲ δέκα ἡμέρας, οὐ δὲ εἴκοσι ἡμέρας, ἕως μηνὸς ἡμερῶν φάγεσθε, ἕως ἂν ἐξέλθῃ ἐκ τῶν μυκτήρων ὑμῶν· καὶ ἔσται ὑμῖν εἰς χολέραν, ὅτι ἠπειθήσατε Κυρίῳ, ὅς ἐστιν ἐν ὑμῖν, καὶ ἐκλαύσατε ἐναντίον αὐτοῦ, λέγοντες, ἱνατί ἡμῖν ἐξελθεῖν ἐξ Αἰγύπτου; Καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἑξακόσιαι χιλιάδες πεζῶν ὁ λαὸς, ἐν οἷς εἰμι ἐν αὐτοῖς· καὶ σὺ εἶπας, κρέα δώσω αὐτοῖς

φαγεῖν, καὶ φάγονται μῆνα ἡμερῶν· Μὴ πρόβατα καὶ βόες σφαγήσονται αὐτοῖς, καὶ ἀρκέσει αὐτοῖς; ἢ πᾶν τὸ ὄψος τῆς θαλάσσης συναχθήσεται αὐτοῖς, καὶ ἀρκέσει αὐτοῖς; Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, μὴ χεὶρ Κυρίου οὐκ ἐξαρκέσει; ἤδη γνώσῃ εἰ ἐπικαταλήμψεταί σε ὁ λόγος μου ἢ οὔ. Καὶ ἐξῆλθε Μωυσῆς, καὶ ἐλάλησε πρὸς τὸν λαὸν τὰ ῥήματα Κυρίου· καὶ συνήγαγεν ἑβδομήκοντα ἄνδρας ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ, καὶ ἔστησεν αὐτὸς κύκλῳ τῆς σκηνῆς. Καὶ κατέβη Κύριος ἐν νεφέλῃ, καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτόν· καὶ παρείλατο ἀπὸ τοῦ πνεύματος τοῦ ἐπ αὐτῷ, καὶ ἐπέθηκεν ἐπὶ τοὺς ἑβδομήκοντα ἄνδρας τοὺς πρεσβυτέρους· ὡς δὲ ἐπανεπαύσατο πνεῦμα ἐπ αὐτοὺς, καὶ ἐπροφήτευσαν, καὶ οὐκ ἔτι προσέθεντο. Καὶ κατελείφθησαν δύο ἄνδρες ἐν τῇ παρεμβολῇ, ὄνομα τῷ ἑνὶ Ἐλδὰδ, καὶ ὄνομα τῷ δευτέρῳ Μωδάδ· καὶ ἐπανεπαύσατο ἐπ αὐτοὺς πνεῦμα· καὶ οὗτοι ἦσαν τῶν καταγεγραμμένων, καὶ οὐκ ἦλθον πρὸς τὴν σκηνήν· καὶ ἐπροφήτευσαν ἐν τῇ παρεμβολῇ. Καὶ προσδραμὼν ὁ νεανίσκος, ἀπήγγειλε Μωυσῇ· καὶ εἶπε, λέγων, Ἐλδὰδ καὶ Μωδὰδ προφητεύουσιν ἐν τῇ παρεμβολῇ. Καὶ ἀποκριθεὶς Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυὴ, ὁ παρεστηκὼς Μωυσῇ, ὁ ἐκλεκτὸς, εἶπε, κύριε Μωυσῆ, κώλυσον αὐτούς. Καὶ εἶπε Μωυσῆς αὐτῷ, μὴ ζηλοῖς ἐμέ; καὶ τίς δῴη πάντα τὸν λαὸν Κυρίου προφήτας, ὅταν δῷ Κύριος τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἐπ αὐτούς; Καὶ ἀπῆλθε Μωυσῆς εἰς τὴν παρεμβολὴν αὐτὸς καὶ οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραήλ. Καὶ πνεῦμα ἐξῆλθε παρὰ Κυρίου, καὶ ἐξεπέρασεν ὀρτυγομήτραν ἀπὸ τῆς θαλάσσης· καὶ ἐπέβαλεν ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν ὁδὸν ἡμέρας ἐντεῦθεν, καὶ ὁδὸν ἡμέρας ἐντεῦθεν, κύκλῳ τῆς παρεμβολῆς, ὡσεὶ δίπηχυ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἀναστὰς ὁ λαὸς ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ ὅλην τὴν νύκτα, καὶ ὅλην τὴν ἡμέραν τὴν ἐπαύριον, καὶ συνήγαγον τὴν ὀρτυγομήτραν· ὁ τὸ

ὀλίγον, συνήγαγε δέκα κόρους· καὶ ἔψυξαν ἑαυτοῖς ψυγμοὺς κύκλῳ τῆς παρεμβολῆς. Τὰ κρέα ἔτι ἦν ἐν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν πρινὴ ἐκλείπειν, καὶ Κύριος ἐθυμώθη εἰς τὸν λαὸν, καὶ ἐπάταξε Κύριος τὸν λαὸν πληγὴν μεγάλην σφόδρα. Καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Μνήματα τῆς ἐπιθυμίας· ὅτι ἐκεῖ ἔθαψαν τὸν λαὸν τὸν ἐπιθυμητήν. Ἀπὸ Μνημάτων ἐπιθυμίας ἐξῆρεν ὁ λαὸς εἰς Ἀσηρώθ· καὶ ἐγένετο ὁ λαὸς ἐν Ἀσηρώθ.

# 12

Καὶ ἐλάλησε Μαριὰμ καὶ Ἀαρὼν κατὰ Μωυσῆ, ἕνεκεν τῆς γυναικὸς τῆς Αἰθιοπίσσης ἣν ἔλαβε Μωυσῆς, ὅτι γυναῖκα Αἰθιόπισσαν ἔλαβε, καὶ εἶπαν, μὴ Μωυσῇ μόνῳ λελάληκε Κύριος; οὐχὶ καὶ ἡμῖν ἐλάλησε; καὶ ἤκουσε Κύριος. Καὶ ὁ ἄνθρωπος Μωυσῆς πραΰς σφόδρα παρὰ πάντας τοὺς ἀνθρώπους τοὺς ὄντας ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ εἶπε Κύριος παραχρῆμα πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν καὶ Μαριὰμ, ἐξέλθετε ὑμεῖς οἱ τρεῖς εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐξῆλθον οἱ τρεῖν εἰν τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου· καὶ κατέβη Κύριος ἐν στύλῳ νεφέλης, καὶ ἔστη ἐπὶ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἐκλήθησαν Ἀαρὼν καὶ Μαριάμ· καὶ ἐξῆλθοσαν ἀμφότεροι. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀκούσατε τῶν λόγων μου· ἐὰν γένηται προφήτης ὑμῶν Κυρίῳ, ἐν ὁράματι αὐτῷ γυωσθήσομαι, καὶ ἐν ὕπνῳ λαλήσω αὐτῷ. Οὐχ οὕτως ὁ θεράπων μου Μωυσῆς, ἐν ὅλῳ τῷ οἴκῳ μου πιστός ἐστι· Στόμα κατὰ στόμα λαλήσω αὐτῶ, ἐν εἴδει, καὶ οὐ δι αἰνιγμάτων, καὶ τὴν δόξαν Κυρίου εἶδε· καὶ διατί οὐκ ἐφοβήθητε καταλαλῆσαι κατὰ τοῦ θεράποντός μου Μωυσῆ; Καὶ ὀργὴ θυμοῦ Κυρίου ἐπ αὐτοῖς, καὶ ἀπῆλθε. Καὶ ἡ νεφέλη ἀπέστη

ἀπὸ τῆς σκηνῆς· καὶ ἰδοὺ Μαριὰμ λεπρῶσα ὡσεὶ χιών· καὶ ἐπέβλεψεν Ἀαρὼν ἐπὶ Μαριὰμ, καὶ ἰδοὺ λεπρῶσα. Καὶ εἶπεν Ἀαρὼν πρὸς Μωυσῆν, δέομαι κύριε, μὴ συνεπιθῇ ἡμῖν ἁμαρτίαν, διότι ἠγνοήσαμεν καθ ὅτι ἡμάρτομεν· Μὴ γένηται ὡσεὶ ἴσον θανάτῳ, ὡσεὶ ἔκτρωμα ἐκπορευόμενον ἐκ μήτρας μητρὸς, καὶ κατεσθίει τὸ ἥμισυ τῶν σαρκῶν αὐτῆς. Καὶ ἐβόησε Μωυσῆς πρὸς Κύριον, λέγων, ὁ Θεὸς δέομαί σου, ἴασαι αὐτήν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, εἰ ὁ πατὴρ αὐτῆς πτύων ἐνέπτυσεν εἰς τὸ πρόσωπον αὐτῆς οὐκ ἐντραπήσεται ἑπτὰ ἡμέρας; ἀφορισθήτω ἑπτὰ ἡμέρας ἔξω τῆς παρεμβολῆς, καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσεται. Καὶ ἀφωρίσθη Μαριὰμ ἔξω τῆς παρεμβολῆς ἑπτὰ ἡμέρας· καὶ ὁ λαὸς οὐκ ἐξῆρεν, ἕως ἐκαθαρίσθη Μαριάμ. Καὶ μετὰ ταῦτα ἐξῆρεν ὁ λαὸς ἐξ Ἀσηρὼθ, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ ἐρήμῳ τοῦ Φαράν.

# 13

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἀπόστειλον σεαυτῷ ἄνδρας, καὶ κατασκεψάσθωσαν τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, ἣν ἐγὼ δίδωμι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ εἰς κατάσχεσιν· ἄνδρα ἕνα κατὰ φυλήν, κατὰ δήμους πατριῶν αὐτῶν ἀποστελεῖς αὐτοὺς, πάντα ἀρχηγὸν ἐξ αὐτῶν. Καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς Μωυσῆς ἐκ τῆς ἐρήμου Φαρὰν διὰ φωνῆς Κυρίου· πάντες ἄνδρες ἀρχηγοὶ υἱῶν Ἰσραὴλ οὗτοι. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα αὐτῶν· τῆς φυλῆς Ῥουβὴν, Σαμουὴλ υἱὸς Ζαχούρ. Τῆς φυλῆς Συμεὼν, Σαφὰτ υἱὸς Σουρί. Τῆς φυλῆς Ἰούδα, Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννή. Τῆς φυλῆς Ἰσσάχαρ, Ἰλαὰλ υἱὸς Ἰωσήφ. Τῆς φυλῆς Ἐφραὶμ, Αὐσὴ υἱὸς Ναυή. Τῆς φυλῆς Βενιαμὶν, Φαλτὶ υἱὸς Ῥαφοῦ. Τῆς φυλῆς Ζαβουλὼν, Γουδιὴλ υἱὸς Σουδί. Τῆς φυλῆς

Ἰωσὴφ τῶν υἱῶν Μανασσῆ, Γαδδὶ υἱὸς Σουσί. Τῆς φυλῆς Δὰν, Ἀμιὴλ υἱὸς Γαμαλί. Τῆς φυλῆς Ἀσὴρ, Σαθοὺρ υἱὸς Μιχαήλ. Τῆς φυλῆς Νεφθαλὶ, Ναβὶ υἱὸς Σαβί. Τῆς φυλῆς Γὰδ, Γουδιὴλ υἱὸς Μακχί. Ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν, οὓς ἀπέστειλε Μωυσῆς κατασκέψασθαι τὴν γῆν· καὶ ἐπωνόμασε Μωυσῆς τὸν Αὐσὴ υἱὸν Ναυὴ, Ἰησοῦν. Καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς Μωυσῆς κατασκέψασθαι τὴν γῆν Χαναὰν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀνάβητε ταύτῃ τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἀναβήσεσθε εἰς τὸ ὄρος, καὶ ὄψεσθε τὴν γῆν τίς ἐστι, καὶ τὸν λαὸν τὸν ἐγκαθήμενον ἐπ αὐτῆς, εἰ ἰσχυρός ἐστιν ἢ ἀσθενὴς, ἢ ὀλίγοι εἰσὶν ἢ πολλοί. Καὶ τίς ἡ γῆ εἰς ἣν οὗτοι ἐγκάθηνται ἐπ αὐτῆς, ἢ καλή ἐστιν ἢ πονηρά· καὶ τίνες αἱ πόλεις ἃς οὗτοι κατοικοῦσιν ἐν αὐταῖς, εἰ ἐν τειχήρεσιν ἢ ἐν ἀτειχίστοις. Καὶ τίς ἡ γῆ, ἢ πίων ἢ παρειμένη· εἰ ἔστιν ἐν αὐτῇ δένδρα, ἢ οὔ· καὶ προσκαρτερήσαντες λήψεσθε ἀπὸ τῶν καρπῶν τῆς γῆς. καὶ αἱ ἡμέραι, ἡμέραι ἔαρος, πρόδρομοι σταφυλῆς. Καὶ ἀναβάντες κατεσκέψαντο τὴν γῆν ἀπὸ τῆς ἐρήμου Σὶν ἕως Ῥοὸβ, εἰσπορευομένων Αἰμάθ. Καὶ ἀνέβησαν κατὰ τὴν ἔρημον, καὶ ἀπῆλθον ἕως Χεβρὼν, καὶ ἐκεῖ Ἀχιμὰν, καὶ Σεσσὶ, καὶ Θελαμὶ, γενεαὶ Ἐνάχ· καὶ Χεβρὼν ἑπτὰ ἔτεσιν ᾠκοδομήθη πρὸ τοῦ Τανὶν Αἰγύπτου. Καὶ ἦλθοσαν ἕως φάραγγος βότρυος, καὶ κατεσκέψαντο αὐτήν· καὶ ἔκοψαν ἐκεῖθεν κλῆμα καὶ βότρυν σταφυλῆς ἕνα ἐπ αὐτοῦ, καὶ ᾖραν αὐτὸν ἐπ ἀναφορεύσι, καὶ ἀπὸ τῶν ῥοῶν, καὶ ἀπὸ τῶν συκῶν. Καὶ τὸν τόπον ἐκεῖνον ἐπωνόμασαν Φάραγξ βότρυος, διὰ τὸν βότρυν, ὃν ἔκοψαν ἐκεῖθεν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ ἀπέστρεψαν ἐκεῖθεν κατασκεψάμενοι τὴν γῆν μετὰ τεσσαράκοντα ἡμέρας. Καὶ πορευθέντες ἦλθον πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν καὶ πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, εἰς τὴν ἔρημον Φαρὰν Κάδης· καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτοῖς ῥῆμα καὶ πάσῃ συναγωγῇ, καὶ ἔδειξαν τὸν

καρπὸν τῆς γῆς, καὶ διηγήσαντο αὐτῷ, καὶ εἶπαν, ἤλθαμεν εἰς τὴν γῆν εἰς ἣν ἀπέστειλας ἡμᾶς, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· καὶ οὗτος ὁ καρπὸς αὐτῆς. Ἀλλ ἢ ὅτι θρασὺ τὸ ἔθνος τὸ κατοικοῦν ἐπ αὐτῆς, καὶ πόλεις ὀχυραὶ τετειχισμέναι μεγάλαι σφόδρα· καὶ τὴν γενεὰν Ἐνὰχ ἑωράκαμεν ἐκεῖ. Καὶ Ἀμαλὴκ κατοικεῖ ἐν τῇ γῇ τῇ πρὸς Νότον· καὶ ὁ Χετταῖος, καὶ ὁ Εὐαῖος, καὶ ὁ Ἰεβουσαῖος, καὶ ὁ Ἀμορῥαῖος κατοικεῖ ἐν τῇ ὀρεινῇ· καὶ ὁ Χαναναῖος κατοικεῖ παρὰ θάλασσαν, καὶ παρὰ τὸν Ἰορδάνην ποταμόν. Καὶ κατεσιώπησε Χάλεβ τὸν λαὸν πρὸς Μωυσῆν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, οὐχὶ, ἀλλὰ ἀναβάντες ἀναβησόμεθα, καὶ κατακληρονομήσομεν αὐτὴν, ὅτι δυνατοὶ δυνησόμεθα πρὸς αὐτούς. Καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ συναναβάντες μετ αὐτοῦ, εἶπαν, οὐκ ἀναβαίνομεν, ὅτι οὐ μὴ δυνώμεθα ἀναβῆναι πρὸς τὸ ἔθνος, ὅτι ἰσχυρότερον ἡμῶν ἐστι μᾶλλον. Καὶ ἐξήνεγκαν ἔκστασιν τῆς γῆς ἣν κατεσκέψαντο αὐτὴν πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, λέγοντες, τὴν γῆς ἣν παρήλθομεν αὐτὴν κατασκέψασθαι, γῆ κατέσθουσα τοὺς κατοικοῦντας ἐπ αὐτῆς ἐστι· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὃν ἑωράκαμεν ἐν αὐτῇ, ἄνδρες ὑπερμήκεις. Καὶ ἐκεῖ ἑωράκαμεν τοὺς γίγαντας, καὶ ἦμεν ἐνώπιον αὐτῶν ὡσεὶ ἀκρίδες· ἀλλὰ καὶ οὕτως ἦμεν ἐνώπιον αὐτῶν.

# 14

Καὶ ἀναλαβοῦσα πᾶσα ἡ συναγωγὴ, ἐνέδωκε φωνήν· καὶ ἔκλαιεν ὁ λαὸς ὅλην τὴν νύκτα ἐκείνην. Καὶ διεγόγγυζον ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ εἶπαν πρὸς αὐτοὺς πᾶσα ἡ συναγωγὴ, Ὄφελον ἀπεθάνομεν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἢ ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτῃ, εἰ ἀπεθάνομεν· καὶ ἱνατί Κύριος εἰσάγει ἡμᾶς εἰς τὴν γῆν

ταύτην πεσεῖν ἐν πολέμῳ; αἱ γυναῖκες ἡμῶν καὶ τὰ παιδία ἔσονται εἰς διαρπαγήν· νῦν οὖν βέλτιόν ἐστιν ἀποστραφῆναι εἰς Αἴγυπτον. Καὶ εἶπαν ἕτερος τῷ ἑτέρῳ, δῶμεν ἀρχηγὸν, καὶ ἀποστρέψωμεν εἰς Αἴγυπτον. Καὶ ἔπεσε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐπὶ πρόσωπον ἐναντίον πάσης συναγωγῆς υἱῶν Ἰσραήλ. Ἰησοῦς δὲ ὁ τοῦ Ναυὴ, καὶ Χάλεβ ὁ τοῦ Ἰεφοννὴ τῶν κατασκεψαμένων τὴν γῆν, διέῤῥηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ εἶπαν πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραὴλ, λέγοντες, ἡ γῆ ἣν κατεσκεψάμεθα αὐτὴν, ἀγαθή ἐστι σφόδρα σφόδρα. Εἰ αἱρετίζει ἡμᾶς Κύριος, εἰσάξει ἡμᾶς εἰς τὴν γῆν ταύτην, καὶ δώσει αὐτὴν ἡμῖν· γῆ ἥτις ἐστὶ ῥέουσα γάλα καὶ μέλι. Ἀλλὰ ἀπὸ τοῦ Κυρίου μὴ ἀποστάται γίνεσθε· ὑμεῖς δὲ μὴ φοβηθῆτε τὸν λαὸν τῆς γῆς, ὅτι κατάβρωμα ὑμῖν ἐστιν· ἀφέστηκε γὰρ ὁ καιρὸς ἀπ αὐτῶν· ὁ δὲ Κύριος ἐν ἡμῖν· μὴ φοβηθήτε αὐτούς. Καὶ εἶπε πᾶσα ἡ συναγωγὴ καταλιθοβολῆσαι αὐτοὺς ἐν λίθοις· καὶ ἡ δόξα Κυρίου ὤφθη ἐν τῇ νεφέλῃ ἐπὶ τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου πᾶσι τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἕως τίνος παροξύνει με ὁ λαὸς οὗτος; καὶ ἕως τίνος οὐ πιστεύουσί μοι ἐπὶ πᾶσι τοῖς σημείοις, οἷς ἐποίησα ἐν αὐτοῖς; Πατάξω αὐτοὺς θανάτῳ, καὶ ἀπολῶ αὐτούς· καὶ ποιήσω σε καὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου εἰς ἔθνος μέγα, καὶ πολὺ μᾶλλον ἢ τοῦτο. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Κύριον, καὶ ἀκούσεται Αἴγυπτος, ὅτι ἀνήγαγες τῇ ἰσχύϊ σου τὸν λαὸν τοῦτον ἐξ αὐτῶν. Ἀλλὰ καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς ταύτης ἀκηκόασιν, ὅτι σὺ εἶ Κύριος ἐν τῷ λαῷ τούτῳ, ὅστις ὀφθαλμοῖς κατ ὀφθαλμοὺς ὀπτάζῃ Κύριε, καὶ ἡ νεφέλη σου ἐφέστηκεν ἐπ αὐτῶν, καὶ ἐν στύλῳ νεφέλης σὺ πορεύῃ πρότερος αὐτῶν τὴν ἡμέραν, καὶ ἐν στύλῳ πυρὸς τὴν νύκτα. Καὶ ἐκτρίψεις τὸν λαὸν τοῦτον ὡσεὶ ἄνθρωπον ἕνα· καὶ ἐροῦσι τὰ ἔθνη ὅσοι ἀκηκόασι τὸ ὄνομά σου, λέγοντες, παρὰ τὸ μὴ δύνασθαι Κύριον

εἰσαγαγεῖν τὸν λαὸν τοῦτον εἰς τὴν γῆν ἣν ὤμοσεν αὐτοῖς, κατέστρωσεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ νῦν ὑψωθήτω ἡ ἰσχύς σου Κύριε, ὃν τρόπον εἶπας, λέγων, Κύριος μακρόθυμος, καὶ πολυέλεος, καὶ ἀληθινὸς, ἀφαιρῶν ἀνομίας καὶ ἀδικίας καὶ ἁμαρτίας, καὶ καθαρισμῷ οὐ καθαριεῖ τὸν ἔνοχον, ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας πατέρων ἐπὶ τέκνα ἕως τρίτης καὶ τετάρτης γενεᾶς. Ἄφες τὴν ἁμαρτίαν τῷ λαῷ τούτῳ κατὰ τὸ μέγα ἔλεός σου, καθάπερ ἵλεως ἐγένου αὐτοῖς ἀπ Αἰγύπτου ἕως τοῦ νῦν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἵλεως αὐτοῖς εἰμι κατὰ τὸ ῥῆμά σου. Ἀλλὰ ζῶ ἐγὼ καὶ ζῶν τὸ ὄνομά μου, καὶ ἐμπλήσει ἡ δόξα Κυρίου πᾶσαν τὴν γῆν. Ὅτι πάντες οἱ ἄνδρες οἱ ὁρώντες τὴν δόξαν μου, καὶ τὰ σημεῖα ἃ ἐποίησα ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἐπείρασάν με τοῦτο δέκατον, καὶ οὐκ εἰσήκουσαν τῆς φωνῆς μου, ἦ μὴν οὐκ ὄψονται τὴν γῆν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν αὐτῶν· ἀλλ ἢ τὰ τέκνα αὐτῶν ἅ ἐστι μετ ἐμοῦ ὧδε, ὅσοι οὐκ οἴδασιν ἀγαθὸν οὐδὲ κακὸν, πᾶς νεώτερος ἄπειρος, τούτοις δώσω τὴν γῆν· πάντες δὲ οἱ παροξύναντές με, οὐκ ὄψονται αὐτήν. Ὁ δὲ παῖς μου Χάλεβ, ὅτι πνεῦμα ἕτερον ἐν αὐτῷ, καὶ ἐπηκολούθησέ μοι, εἰσάξω αὐτὸν εἰς τὴν γῆν εἰς ἣν εἰσῆλθεν ἐκεῖ, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ κληρονομήσει αὐτήν. Ὁ δὲ Ἀμαλὴκ καὶ ὁ Χαναναῖος κατοικοῦσιν ἐν τῇ κοιλάδι· αὔριον ἐπιστράφητε καὶ ἀπάρατε ὑμεῖς εἰς τὴν ἔρημον, ὁδὸν θάλασσαν ἐρυθρᾶν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἕως τίνος τὴν συναγωγὴν τὴν πονηρὰν ταύτην; ἃ αὐτοὶ γογγύζουσιν ἐναντίον μου, τὴν γόγγυσιν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἣν ἐγόγγυσαν περὶ ὑμῶν, ἀκήκοα. Εἶπον αὐτοῖς, ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος· ἦ μὴν ὃν τρόπον λελαλήκατε εἰς τὰ ὦτά μου, οὕτω ποιήσω ὑμῖν. Ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτῃ πεσεῖται τὰ κῶλα ὑμῶν· καὶ πᾶσα ἡ ἐπισκοπὴ ὑμῶν, καὶ οἱ κατηριθμημένοι ὑμῶν ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, ὅσοι ἐγόγγυσαν ἐπ ἐμοί· εἰ ὑμεῖς

εἰσελεύσεσθε εἰς τὴν γῆν ἐφ ἣν ἐξέτεινα τὴν χεῖρά μου κατασκηνῶσαι ὑμᾶς ἐπ αὐτῆς· ἀλλ ἢ Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννὴ, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυὴ. Καὶ τὰ παιδία, ἃ εἴπατε ἐν διαρπαγῇ ἔσεσθαι, εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν· καὶ κληρονομήσουσι τὴν γῆν, ἣν ὑμεῖς ἀπέστητε ἀπ αὐτῆς. Καὶ τὰ κῶλα ὑμῶν πεσεῖται ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτῃ. Οἱ δὲ υἱοὶ ὑμῶν ἔσονται νεμόμενοι ἐν τῇ ἐρήμῳ τεσσαράκοντα ἔτη· καὶ ἀνοίσουσι τὴν πορνείαν ὑμῶν, ἕως ἂν ἀναλωθῇ τὰ κῶλα ὑμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, κατὰ τὸν ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν ὅσας κατεσκέψασθε τὴν γῆν, τεσσαράκοντα ἡμέρας, ἡμέραν τοῦ ἐνιαυτοῦ, λήμψεσθε τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν τεσσαράκοντα ἔτη· καὶ γνώσεσθε τὸν θυμὸν τῆς ὀργῆς μου. Ἐγὼ Κύριος ἐλάλησα, ἦ μὴν οὕτω ποιήσω τῇ συναγωγῇ τῇ πονηρᾷ ταύτῃ, τῇ ἐπισυνισταμένῃ ἐπ ἐμέ· ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτη ἐξαναλωθήσονται, καὶ ἐκεῖ ἀποθανοῦνται. Καὶ οἱ ἄνθρωποι, οὓς ἀπέστειλεν Μωυσῆς κατασκέψασθαι τὴν γῆν, καὶ παραγενηθέντες διεγόγγυσαν κατ αὐτῆς πρὸς τὴν συναγωγὴν ἐξενέγκαι ῥήματα πονηρὰ περὶ τῆς γῆς, καὶ ἀπέθανον οἱ ἄνθρωποι οἱ κατείπαντες πονηρὰ κατὰ τῆς γῆς ἐν τῇ πληγῇ ἔναντι Κυρίου. Καὶ Ἰησοῦς υἱὸς Ναυὴ καὶ Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννὴ ἔζησαν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων τῶν πεπορευμένων κατασκέψασθαι τὴν γῆν. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς τὰ ῥήματα ταῦτα πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραήλ· καὶ ἐπενθησεν ὁ λαὸς σφόδρα. Καὶ ὀρθρίσαντες τοπρωΐ ἀνέβησαν εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους, λέγοντες, ἰδοὺ, οἵδε ἡμεῖς ἀναβησόμεθα εἰς τὸν τόπον ὃν εἶπε Κύριος, ὅτι ἡμάρτομεν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἱνατί ὑμεῖς παραβαίνετε τὸ ῥῆμα Κυρίου; οὐκ εὔοδα ἔσται ὑμῖν. Μὴ ἀναβαίνετε, οὐ γάρ ἐστι Κύριος μεθ ὑμῶν· καὶ πεσεῖσθε πρὸ προσώπου τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν. Ὅτι ὁ Ἀμαλὴκ καὶ ὁ Χαναναῖος ἐκεῖ ἔμπροσθεν ὑμῶν, καὶ πεσεῖσθε μαχαίρᾳ, οὗ εἵνεκεν ἀπεστράφητε

ἀπειθοῦντες Κυρίῳ, καὶ οὐκ ἔσται Κύριος ἐν ὑμῖν. Καὶ διαβιασάμενοι, ἀνέβησαν ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους· ἡ δὲ κιβωτὸς τῆς διαθήκης Κυρίου καὶ Μωυσῆς οὐκ ἐκινήθησαν ἐκ τῆς παρεμβολῆς. Καὶ κατέβη ὁ Ἀμαλὴκ καὶ ὁ Χαναναῖος ὁ ἐνκαθήμενος ἐν τῷ ὄρει ἐκείνῳ, καὶ ἐτρέψαντο αὐτοὺς, καὶ κατέκοψαν αὐτοὺς ἕως Ἑρμάν· καὶ ἀπεστράφησαν εἰς τὴν παρεμβολήν.

# 15

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς ὑοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, ὅταν εἰσέλθητε εἰς τὴν γῆν τῆς κατοικήσεως ὑμῶν, ἣν ἐγὼ δίδωμι ὑμῖν, καὶ ποιήσεις ὁλοκαυτώματα Κυρίῳ, ὁλοκάρπωμα ἢ θυσίαν, μεγαλῦναι εὐχὴν, ἢ καθ ἑκούσιον, ἢ ἐν ταῖς ἑορταῖς ὑμῶν ποιῆσαι ὀσμὴν εὐωδίας τῷ Κυρίῳ, εἰ μὲν ἀπὸ τῶν βοῶν ἢ ἀπὸ τῶν προβάτων. Καὶ προσοίσει ὁ προσφέρων τὸ δῶρον αὐτοῦ Κυρίῳ, θυσίαν σεμιδάλεως δέκατον τοῦ οἰφί ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ ἐν τετάρτῳ τοῦ ἵν. Καὶ οἶνον εἰς σπονδὴν τὸ τέταρτον τοῦ ἵν ποιήσετε ἐπὶ τῆς ὁλοκαυτώσεως, ἢ ἐπὶ τῆς θυσίας· τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ ποιήσεις τοσοῦτο, κάρπωμα ὀσμὴν εὐωδίας τῷ Κυρίῳ. Καὶ τῷ κριῷ, ὅταν ποιῆτε αὐτὸν εἰς ὁλοκαύτωμα ἢ εἰς θυσίαν, ποιήσεις θυσίαν σεμιδάλεως δύο δέκατα ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ τὸ τρίτον τοῦ ἵν· Καὶ οἶνον εἰς σπονδὴν τὸ τρίτον τοῦ ἵν προσοίσετε εἰς ὀσμὴν εὐωδίς Κυρίῳ. Ἐὰν δὲ ποιῆτε ἀπὸ τῶν βοῶν εἰς ὁλοκαύτωσιν ἤ εἰς θυσίαν μεγαλῦναι εὐχὴν, ἢ εἰς σωτήριον Κυρίῳ, καὶ προσοίσει ἐπὶ τοῦ μόσχου θυσίαν σεμιδάλεως τρία δέκατα ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ ἥμισυ τοῦ ἵν.

Καὶ οἶνον εἰς σπονδὴν τὸ ἥμιου τοῦ ἵν, κάρπωμα ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ. Οὕτω ποιήσεις τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, ἢ τῷ κριῷ τῷ ἑνὶ, ἢ τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ ἐκ τῶν προβάτων ἢ ἐκ τῶν αἰγῶν· Κατὰ τὸν ἀριθμὸν ὧν ἐὰν ποιήσντε, οὕτως ποιήσετε τῷ ἑνὶ, κατὰ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν. Πᾶς ὁ αὐτόχθων ποιήσει οὕτως τοιαῦτα προσενέγκαι καρπώματα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ. Ἐὰν δὲ προσήλυτος ἐν ὑμῖν προσγένηται ἐν τῇ γῇ ὑμῶν, ἢ ὃς ἂν γένηται ἐν ὑμῖν ἐν ταῖς γενεαῖς ὑμῶν, καὶ ποιήσει κάρπωμα ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, ὃν τρόπον ποιεῖτε ὑμεῖς, οὕτω ποιήσει ἡ συναγωγὴ Κυρίῳ. Νόμος εἷς ἔσται ὑμῖν καὶ τοῖς προσηλύτοις τοῖς προσκειμένοις ἐν ὑμῖν, νόμος αἰώνιος εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν· ὡς ὑμεῖς, καὶ ὁ προσήλυτος ἔσται ἔναντι Κυρίου. Νόμος εἷς ἔσται καὶ δικαίωμα ἓν ἔσται ὑμῖν καὶ τῷ προσηλύτῳ τῷ προσκειμένῳ ἐν ὑμῖν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν, εἰς ἣν ἐγὼ εἰσάγω ὑμᾶς ἐκεῖ, καὶ ἔσται ὅταν ἔσθητε ὑμεῖς ἀπὸ τῶν ἄρτων τῆς γῆς, ἀφελεῖτε ἀφαίρεμα ἀφόρισμα Κυρίῳ, ἀπαρχὴν φυράματον ὑμῶν. Ἄρτον ἀφοριεῖτε ἀφαίρεμα αὐτό· ὡς ἀφαίρεμα ἀπὸ ἅλω, οὕτως ἀφελεῖτε αὐτὸν, ἀπαρχὴν φυράματος ὑμῶν, καὶ δώσετε Κυρίῳ ἀφαίρεμα εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν. Ὅταν δὲ διαμάρτητε καὶ μὴ ποιήσητε πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας, ἅς ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, καθὰ συνέταξε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐν χειρὶ Μωυσῆ, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ᾗ συνέταξε Κύριος πρὸς ὑμᾶς καὶ ἐπέκεινα εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν, καὶ ἔσται ἐὰν ἐξ ὀφθαλμῶν τῆς συναγωγῆς γενηθῇ ἀκουσίως, καὶ ποιήσει πᾶσα ἡ συναγωγὴ μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν ἄμωμον εἰς ὁλοκαύτωμα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, καὶ θυσίαν τούτου καὶ σπονδὴν αὐτοῦ κατὰ τὴν σύνταξιν, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας. Καὶ ἐξιλάσεται ὁ ἱερεὺς περὶ πάσης

συναγωγῆς υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἀφεθήσεται αὐτοῖς, ὅτι ἀκούσιόν ἐστι· καὶ αὐτοὶ ἤνεγκαν τὸ δῶρον αὐτῶν κάρπωμα Κυρίῳ περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτῶν ἔνατι Κυρίου, περὶ τῶν ἀκουσίων αὐτῶν. Καὶ ἀφεθήσεται κατὰ πᾶσαν συναγωγην υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ τῷ προσηλύτῳ τῷ προσκειμένῳ πρὸς ὑμᾶς, ὅτι παντὶ τῷ λαῷ ἀκούσιον. Ἐάν τε ψυχὴ μία ἁμάρτῃ ἀκουσίως, προσάξει αἶγα μίαν ἐνιαυσίαν περὶ ἁμαρτίας. Καὶ ἐξιλάσεται ὁ ἱερεὺς περὶ τῆς ψυχῆς τῆς ἀκουσιασθείσης, καὶ ἁμαρτούσης ἀκουσίως ἔναντι Κυρίου, ἐξιλάσασθαι περὶ αὐτοῦ. Τῷ ἐγχωρίῳ ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ τῷ προσηλύτῳ τῷ προσκειμένῳ ἐν αὐτοῖς νόμος εἷς ἔσται αὐτοῖς, ὃς ἐὰν ποιήσῃ ἀκουσίως. Καὶ ψυχὴ ἥτις ποιήσῃ ἐν χειρὶ ὑπερηφανίας ἀπὸ τῶν αὐτοχθόνων ἢ ἀπὸ τῶν προσηλύτων, τὸν Θεὸν οὗτος παροξυνεῖ, ἐξόλοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ τοῦ λαοῦ αὐτῆς, ὅτι τὸ ῥῆμα Κυρίου ἐφαύλισε, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ διεσκέδασεν· ἐκτρίψει ἐκτριβήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη, ἡ ἁμαρτία αὐτῆς ἐν αὐτῇ. Καὶ ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ εὗρον ἄνδρα συλλέγοντα ξύλα τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων. Καὶ προσήγαγον αὐτὸν οἱ εὑρόντες συλλέγοντα ξύλα τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἀπέθεντο αὐτὸν εἰς φυλακὴν, οὐ γὰρ συνέκριναν τί ποιήσωσιν αὐτόν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, θανάτῳ θανατούσθω ὁ ἄνθρωπος· λιθοβολήσατε αὐτὸν λίθοις πᾶσα ἡ συναγωγή. Καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν πᾶσα ἡ συναγωγὴ ἔξω τῆς παρεμβολῆς· καὶ ἐλιθοβόλησεν αὐτὸν πᾶσα ἡ συναγωγὴ λίθοις ἔξω τῆς παρεμβολῆς, καθὰ συνέταξε Κύπιος τῷ Μωυσῇ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, καὶ ποιησάτωσαν ἑαυτοῖς κράσπεδα ἐπὶ τὰ πτερύγια τῶν ἱματίων αὐτῶν εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν· καὶ ἐπιθήσετε ἐπὶ τὰ

κράσπεδα τῶν πτερυγίων κλῶσμα ὑακίνθινον. Καὶ ἔσται ὑμῖν ἐν τοῖς κρασπέδοις, καὶ ὄψεσθε αὐτά· καὶ μνησθήσεσθε πασῶν τῶν ἐντολῶν Κυρίου, καὶ ποιήσετε αὐτάς· καὶ οὐ διαστραφήσεσθε ὀπίσω τῶν διανοιῶν ὑμῶν, καὶ τῶν ὀφθαλμῶν ἐν οἷς ὑμεῖς ἐκπορνεύετε ὀπίσω αὐτῶν, ὅπως ἂν μνησθῆτε καὶ ποιήσητε πάσας τὰς ἐντολάς μου, καὶ ἔσεσθε ἅγιοι τῷ Θεῷ ὑμῶν. Ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ὁ ἐξαγαγὼν ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, εἶναι ὑμῶν Θεός· ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν.

# 16

Καὶ ἐλάλησε Κορὲ υἱὸς Ἰσαὰρ υἱοῦ Καὰθ υἱοῦ Λευί, καὶ Δαθὰν καὶ Ἀβειρὼν υἱοὶ Ἐλιάβ, καὶ Αὼν υἱὸς Φαλὲθ υἱοῦ Ῥουβήν· καὶ ἀνέστησαν ἔναντι Μωυσῆ, καὶ ἄνδρες τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ πεντήκοντα καὶ διακόσιοι, ἀρχηγοὶ συναγωγῆς, σύγκλητοι βουλῆς, καὶ ἄνδρες ὀνομαστοί. Συνέστησαν ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ εἶπαν, ἐχέτω ὑμῖν ὅτι πᾶσα ἡ συναγωγὴ πάντες ἅγιοι, καὶ ἐν αὐτοῖς Κύριος· καὶ διατί κατανίστασθε ἐπὶ τὴν συναγωγὴν Κυρίου; Καὶ ἀκούσας Μωυσῆς, ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον. Καὶ ἐλάλησε πρὸς Κόρε καὶ πρὸς πᾶσαν αὐτοῦ τὴν συναγωγὴν, λέγων, ἐπέσκεπται καὶ ἔγνω ὁ Θεὸς τοὺς ὄντας αὐτοῦ καὶ τοὺς ἁγίους, καὶ προσηγάγετο πρὸς ἑαυτόν· καὶ οὓς ἐξελέξατο ἑαυτῷ, προσηγάγετο πρὸς ἑαυτόν. Τοῦτο ποιήσατε· λάβετε ὑμῖν αὐτοῖς πυρεῖα Κορὲ, καὶ πᾶσα ἡ συναγωγὴ αὐτοῦ, καὶ ἐπίθετε ἐπ αὐτὰ πῦρ, καὶ ἐπίθετε ἐπ αὐτὰ θυμίαμα ἔναντι Κυρίου αὔριον· καὶ ἔσται ὁ ἀνὴρ ὃν ἐκλέλεκται Κύριος, οὗτος ἅγιος· ἱκανούσθω ὑμῖν υἱοὶ Λευί. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Κορὲ, εἰσακούσατέ μου υἱοὶ Λευί. Μὴ μικρόν ἐστι τοῦτο ὑμῖν,

ὅτι διέστειλεν ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ὑμᾶς ἐκ συναγωγῆς Ἰσραὴλ, καὶ προσηγάγετο ὑμᾶς πρὸς ἑαυτὸν λειτουργεῖν τᾶς λειτουργίας τῆς σκηνῆς Κυρίου, καὶ παρίστασθαι ἔναντι τῆς σκηνῆς λατρεύειν αὐτοῖς; καὶ προσηγάγετό σε καὶ πάντας τοὺς ἀδελφούς σου υἱοὺς Λευὶ μετὰ σοῦ, καὶ ζητεῖτε καὶ ἱερατεύειν; Οὕτως σὺ καὶ πᾶσα ἡ συναγωγή σου ἡ συνηθροισμένη πρὸς τὸν Θεόν· καὶ Ἀαρὼν τίς ἐστιν, ὅτι διαγογγύζετε κατ αὐτοῦ; Καὶ ἀπέστειλε Μωυσῆς καλέσαι Δαθὰν καὶ Ἀβειρὼν υἱοὺς Ἐλιάβ· καὶ εἶπαν, οὐκ ἀναβαίνομεν. Μὴ μικρὸν τοῦτο, ὅτι ἀνήγαγες ἡμᾶς εἰς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι, ἀποκτεῖναι ἡμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι κατάρχεις ἡμῶν; Ἀρχων εἶ· καὶ σὺ εἰς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι εἰσήγαγες ἡμᾶς, καὶ ἔδωκας ἡμῖν κλῆρον ἀγροῦ καὶ ἀμπελῶνας; τοὺς ὀφθαλμοὺς τῶν ἀνθρώπων ἐκείνων ἄν ἐξέκοψας; οὐκ ἀναβαίνομεν. Καὶ ἐβαρυθύμησε Μωυσῆς σφόδρα, καὶ εἶπε πρὸς Κύριον, μὴ πρόσχῃς εἰς τὴν θυσίαν αὐτῶν· οὐκ ἐπιθύμημα οὐδενὸς αὐτῶν εἴληφα, οὐδὲ ἐκάκωσα οὐδένα αὐτῶν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Κορὲ, ἁγίασον τὴν συναγωγήν σου, καὶ γίνεσθε ἕτοιμοι ἔναντι Κυρίου σὺ καὶ Ἀαρὼν καὶ αὐτοὶ αὔριον· Καὶ λάβετε ἕκαστος τὸ πυρεῖον αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσετε ἐπ αὐτὰ θυμίαμα, καὶ προσάξετε ἔναντι Κυρίου ἕκαστος τὸ πυρεῖον αὐτοῦ, πεντήκοντα καὶ διακόσια πυρεῖα, καὶ σὺ καὶ Ἀαρὼν ἕκαστος τὸ πυρεῖον αὐτοῦ. Καὶ ἔλαβεν ἕκαστος τὸ πυρεῖον αὐτοῦ, καὶ ἐπέθηκαν ἐπ αὐτὰ πῦρ, καὶ ἐπέβαλον ἐπ αὐτὰ θυμίαμα· καὶ ἔστησαν παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου Μωυσῆς καὶ Ἀαρών. Καὶ ἐπισυνέστησεν ἐπ αὐτοὺς Κορὲ τὴν πᾶσαν αὐτοῦ συναγωγὴν παρὰ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ὤφθη ἡ δόξα Κυρίου πάσῃ τῇ συναγωγῇ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἀποσχίσθητε ἐκ μέσου τῆς συναγωγῆς ταύτης, καὶ ἐξαναλώσω αὐτοὺς εἰσάπαξ. Καὶ ἔπεσαν ἐπὶ

πρόσωπον αὐτῶν, καὶ εἶπαν, Θεὸς, Θεὸς τῶν πνευμάτων καὶ πάσης σαρκὸς, εἰ ἄνθρωπος εἷς ἥμαρτεν, ἐπὶ πᾶσαν τὴν συναγωγὴν ὀργὴ Κυρίου; Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τῇ συναγωγῇ, λέγων, ἀναχωρήσατε κύκγῳ ἀπὸ τῆς συναγωγῆς Κορὲ. Καὶ ἀνέστη Μωυσῆς, καὶ ἐπορεύθη πρὸς Δαθὰν καὶ Ἀβειρὼν, καὶ συνεπορεύθησαν μετ αὐτοῦ πάντες οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραήλ. Καὶ ἐλάλησε πρὸς τὴν συναγωγὴν, λέγων, ἀποσχίσθητε ἀπὸ τῶν σκηνῶν τῶν ἀνθρώπων τῶν σκληρῶν τούτων, καὶ μὴ ἅπτεσθε ἀπὸ πάντων ὧν ἐστιν αὐτοῖς, μὴ συναπόλησθε ἐν πάσῃ τῇ ἁμαρτίᾳ αὐτῶν. Καὶ ἀπέστησαν ἀπὸ τῆς σκηνῆς Κορὲ κύκλῳ· καὶ Δαθὰν καὶ Ἀβειρὼν ἐξῆλθον, καὶ εἱστήκεισαν παρὰ τὰς θύρας τῶν σκηνῶν αὐτῶν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν, καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ ἡ ἀποσκευὴ αὐτῶν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς, ἐν τούτῳ γνώσεσθε ὅτι Κύριος ἀπέστειλέ με ποιῆσαι πάντα τὰ ἔργα ταῦτα, ὅτι οὐκ ἀπ ἐμαυτοῦ. Εἰ κατὰ θάνατον πάντων ἀνθρώπων ἀποθανοῦνται οὗτοι, εἰ καὶ κατ ἐπίσκεψιν πάντων ἀνθρώπων ἐπισκοπὴ ἔσται αὐτῶν, οὐχὶ Κύριος ἀπέσταλκέ με. Ἀλλ ἢ ἐν φάσματι δείξει Κύριος, καὶ ἀνοίξασα ἡ γῆ τὸ στόμα αὐτῆς καταπίεται αὐτοὺς, καὶ τοὺς οἴκους αὐτῶν, καὶ τὰς σκηνὰς αὐτῶν, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτοῖς, καὶ καταβήσονται ζῶντες εἰς ᾅδου, καὶ γνώσεσθε, ὅτι παρώξυναν οἱ ἄνθρωποι οὗτοι τὸν Κύριον. Ὡς δὲ ἐπαύσατο λαλῶν πάντας τοὺς λόγους τούτους, ἐῤῥάγη ἡ γῆ ὑποκάτω αὐτῶν. Καὶ ἠνοίχθη ἡ γῆ, καὶ κατέπιεν αὐτοὺς, καὶ τοὺς οἴκους αὐτῶν, καὶ πάντας τοὺς ἀνθρώπους τοὺς ὄντας μετὰ Κορὲ, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν. Καὶ κατέβησαν αὐτοὶ, καὶ ὅσα ἐστὶν αὐτῶν ζῶντα εἰς ᾅδου, καὶ ἐκάλυψεν αὐτοὺς ἡ γῆ, καὶ ἀπώλοντο ἐκ μέσου τῆς συναγωγῆς. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ οἱ κύκλῳ αὐτῶν ἔφυγον ἀπὸ τῆς φωνῆς αὐτῶν, ὅτι λέγοντες, μή ποτε καταπίῃ ἡμᾶς ἡ γῆ. Καὶ πῦρ

ἐξῆλθε παρὰ Κυρίου, καὶ κατέφαγε τοὺς πεντήκοντα καὶ διακοσίους ἄνδρας τοὺς προσφέροντας τὸ θυμίαμα.

# 17

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, καὶ πρὸς Ἐλεάζαρ τὸν υἱὸν Ἀαρὼν τὸν ἱερέα, ἀνέλεσθε τὰ πυρεῖα τὰ χαλκᾶ ἐκ μέσου τῶν κατακεκαυμένων, καὶ τὸ πῦρ τὸ ἀλλότριον τοῦτο σπεῖρον ἐκεῖ, ὅτι ἡγίασαν τὰ πυρεῖα τῶν ἁμαρτωλῶν τούτων ἐν ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν, καὶ ποίησον αὐτὰ λεπίδας ἐλατὰς περίθεμα τῷ θυσιαστηρίῳ, ὅτι προσηνέχθησαν ἔναντι Κυρίου καὶ ἡγιάσθησαν· καὶ ἐγένοντο εἰς σημεῖον τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἔλαβεν Ἐλεάζαρ υἱοὶς Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως τὰ πυρεῖα τὰ χαλκᾶ, ὅσα προσήνεγκαν οἱ κατακεκαυμένοι, καὶ προσέθηκαν αὐτὰ περίθεμα τῷ θυσιαστηρίῳ, μνημόσυνον τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, ὅπως ἂν μὴ προσέλθῃ μηδὶς ἀλλογενής, ὃς οὐκ ἔστιν ἐκ τοῦ σπέρματος Ἀαρὼν, ἐπιθεῖναι θυμίαμα ἔναντι Κυρίου· καὶ οὐκ ἔσται ὥσπερ Κορὲ, καὶ ἡ ἐπισύστασις αὐτοῦ, καθὰ ἐλάλησε Κύριος ἐν χειρὶ Μωυσῆ αὐτῷ. Καὶ ἐγόγγυσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τῇ ἐπαύριον ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγοντες, ὑμεῖς ἀπεκτάγκατε τὸν λαὸν Κυρίου. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐπισυστρέφεσθαι τὴν συναγωγὴν ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, καὶ ὥρμησαν ἐπὶ τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου· καὶ τήνδε ἐκάλυψεν αὐτὴν ἡ νεφέλη, καὶ ὤφθη ἡ δόξα Κυρίου. Καὶ εἰσῆλθε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν κατὰ πρόσωπον τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, ἐκχωρήσατε ἐκ μέσου τῆς συναγωγῆς ταύτης, καὶ ἐξαναλώσω αὐτοὺς εἰσάπαξ· καὶ ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Ἀαρὼν, λάβε τὸ πυρεῖον, καὶ ἐπίθες ἐπ αὐτὸ

πῦρ ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἐπίβαλε ἐπ αὐτὸ θυμίαμα, καὶ ἀπένεγκε τοτάχος εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἐξίλασαι περὶ αὐτῶν· ἐξῆλθε γὰρ ὀργὴ ἀπὸ προσώπου Κυρίου, ἤρκται θραύειν τὸν λαόν. Καὶ ἔλαβεν Ἀαρὼν καθάπερ ἐλάλησεν αὐτῷ Μωυσῆς, καὶ ἔδραμεν εἰς τὴν συναγωγήν· καὶ ἤδη ἐνῆρκτο ἡ θραῦσις ἐν τῷ λαῷ· καὶ ἐπέβαλε τὸ θυμίαμα καὶ ἐξιλάσατο περὶ τοῦ λαοῦ. Καὶ ἔστη ἀναμέσον τῶν τεθνηκότων καὶ τῶν ζώντων, καὶ ἐκόπασεν ἡ θραῦσις. Καὶ ἐγένοντο οἱ τεθνηκότες ἐν τῇ θραύσει τεσσαρεσκαίδεκα χιλιάδες καὶ ἑπτακόσιοι, χωρὶς τῶν τεθνηκότων ἕνεκεν Κορέ. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἀαρὼν πρὸς Μωυσῆν ἐπὶ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἐκόπασεν ἡ θραῦσις. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ λάβε παρ αὐτῶν ῥάβδον, ῥάβδον κατ οἴκους πατριῶν παρὰ πάντων τῶν ἀρχόντων αὐτῶν, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, δώδεκα ῥάβδους, καὶ ἑκάστου τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶγραψον ἐπὶ τῆς ῥάβδου. Καὶ τὸ ὄνομα Ἀαρὼν ἐπίγραψον ἐπὶ τῆς ῥάβδου Λευί· ἔστι γὰρ ῥάβδος μία· κατὰ φυλὴν οἴκου πατριῶν αὐτῶν δώσουσι. Καὶ θήσεις αὐτὰς ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου, κατέναντι τοῦ μαρτυρίου, ἐν οἷς γνωσθήσομαί σοι ἐκεῖ. Καὶ ἔσται ὁ ἄνθρωπος ὃν ἂν ἐκλέξωμαι αὐτὸν, ἡ ῥάβδος αὐτοῦ ἐκβλαστήσει· καὶ περιελῶ ἀπ ἐμοῦ τὸν γογγυσμὸν υἱῶν Ἰσραήλ, ἃ αὐτοὶ γογγύζουσιν ἐφ ὑμῖν. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ ἔδωκαν αὐτῷ πάντες οἱ ἄρχοντες αὐτῶν ῥάβδον· τῷ ἄρχοντι τῷ ἑνὶ ῥάβδον κατ ἄρχοντα, κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, δώδεκα ῥάβδους· καὶ ἡ ῥάβδος Ἀαρὼν ἀναμέσον τῶν ῥάβδων αὐτῶν. Καὶ ἀπέθηκε Μωυσῆς τὰς ῥάβδους ἔναντι Κυρίου ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἐγενετο τῇ ἐπαύριον, καὶ εἰσῆλθε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἰδοὺ ἐβλάστησεν ἡ ῥάβδος Ἀαρὼν εἰς οἶκον Λευί, καὶ ἐξήνεγκε βλαστὸν,

καὶ ἐξήνθησεν ἄνθη, καὶ ἐβλάστησε κάρυα. Καὶ ἐξήνεγκε Μωυσῆς πάσας τὰς ῥάβδους ἀπὸ προσώπου Κυρίου πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραήλ· καὶ εἶδον, καὶ ἔλαβον ἕκαστος τὴν ῥάβδον αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἀπόθες τὴν ῥάβδον Ἀαρὼν ἐνώπιον τῶν μαρτυρίων εἰς διατήρησιν, σημεῖον τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνηκόων· καὶ παυσάσθω ὁ γογγυσμὸς αὐτῶν ἀπ ἐμοῦ, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνωσι. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν, καθὰ συνέταξε κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Μωυσῆν, λέγοντες, ἰδοὺ ἐξανηλώμεθα, ἀπολώλαμεν, παρανηλώμεθα. Πᾶς ὁ ἁπτόμενος τῆς σκηνῆς Κυρίου, ἀποθνήσκει· ἕως εἰς τέλος ἀποθάνωμεν;

# 18

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἀαρὼν, λέγων, σὺ καὶ οἱ υἱοί σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου λήψεσθε τὰς ἁμαρτίας τῶν ἁγίων, καὶ σὺ καὶ οἱ υἱοί σου λήψεσθε τὰς ἁμαρτίας τῆς ἱερατείας ὑμῶν. Καὶ τοὺς ἀδελφούς σου φυλὴν Λευὶ, δῆμον τοῦ πατρός σου προσαγάγου πρὸς σεαυτὸν, καὶ προστεθήτωσάν σοι, καὶ λειτουργείτωσάν σοι· καὶ σὺ καὶ οἱ υἱοί σου μετὰ σοῦ ἀπέναντι τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ φυλάξονται τὰς φυλακάς σου, καὶ τὰς φυλακὰς τῆς σκηνῆς. πλὴν πρὸς τὰ σκεύη τὰ ἅγια, καὶ πρὸς τὸ θυσιαστήριον οὐ προσελεύσονται, καὶ οὐκ ἀποθανοῦνται καὶ οὗτοι καὶ ὑμεῖς. Καὶ προστεθήσονται πρὸς σέ, καὶ φυλάξονται τὰς φυλακὰς τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, κατὰ πάσας τὰς λειτουργίας τῆς σκηνῆς· καὶ ὁ ἀλλογενὴς οὐ προσελεύσεται πρὸς σέ. Καὶ φυλάξεσθε τὰς φυλακὰς τῶν ἁγίων, καὶ τὰς φυλακὰς τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ οὐκ

ἔσται θυμὸς ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἐγὼ εἴληφα τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν τοὺς Λευίτας ἐκ μέσου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ δόμα δεδομένον Κυρίῳ, λειτουργεῖν τὰς λειτουργίας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ σὺ καὶ οἱ υἱοί σου μετὰ σοῦ διατηρήσετε τὴν ἱερατείαν ὑμῶν, κατὰ πάντα τρόπον τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ τὸ ἔνδοθεν τοῦ καταπετάσματος· καὶ λειτουργήσετε τὰς λειτουργίας δόμα τῆς ἱερατείας ὑμῶν· καὶ ὁ ἀλλογενὴς ὁ προσπορευόμενος ἀποθανεῖται. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Ἀαρὼν, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα ὑμῖν τὴν διατήρησιν τῶν ἀπαρχῶν ἀπὸ πάντων τῶν ἡγιασμένων μοι παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· σοὶ δέδωκα αὐτὰ εἰς γέρας, καὶ τοῖς υἱοῖς σου μετὰ σὲ νόμιμον αἰώνιον. Καὶ τοῦτο ἔστω ὑμῖν ἀπὸ τῶν ἡγιασμένων ἁγίων τῶν καρπωμάτων, ἀπὸ πάντων τῶν δώρων αὐτῶν, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν θυσιασμάτων αὐτῶν, καὶ ἀπὸ πάσης πλημμελείας αὐτῶν, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν, ὅσα ἀποδιδόασί μοι ἀπὸ πάντων τῶν ἁγίων, σοὶ ἔσται καὶ τοῖς υἱοῖς σου. Ἐν τῷ ἁγίῳ τῶν ἁγίων φάγεσθε αὐτά· πᾶν ἀρσενικὸν φάγεται αὐτά· σὺ καὶ οἱ υἱοί σου· ἅγια ἔσται σοι. Καὶ τοῦτο ἔσται ὑμῖν ἀπαρχῶν δομάτων αὐτῶν, ἀπὸ πάντων τῶν ἐπιθεμάτων τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· σοὶ δέδωκα αὐτὰ καὶ τοῖς υἱοῖς σου καὶ ταῖς θυγατράσι σου μετὰ σοῦ, νόμιμον αἰώνιον· πᾶς καθαρὸς ἐν τῷ οἴκῳ σου ἔδεται αὐτά. Πᾶσα ἀπαρχὴ ἐλαίου, καὶ πᾶσα ἀπαρχὴ οἴνου, σίτου ἀπαρχὴ αὐτῶν ὅσα ἂν δῶσι τῷ Κυρίῳ, σοὶ δέδωκα αὐτά. Τὰ πρωτογεννήματα πάντα ὅσα ἐν τῇ γῇ αὐτῶν, ὅσα ἂν ἐνέγκωσι Κυρίῳ, σοὶ ἔσται· πᾶς καθαρὸς ἐν τῷ οἴκῳ σου ἔδεται αὐτά. Πᾶν ἀνατεθεματισμένον ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ, σοὶ ἔσται. Καὶ πᾶν διανοῖγον μήτραν ἀπὸ πάσης σαρκὸς, ὅσα προσφέρουσι Κυρίῳ ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, σοὶ ἔσται· ἀλλ ἢ λύτροις λυτρωθήσεται τὰ πρωτότοκα τῶν ἀνθρώπων, καὶ τὰ πρωτότοκα τῶν κτηνῶν τῶν

ἀκαθάρτων λυτρώσῃ. Καὶ ἡ λύτρωσις αὐτοῦ, ἀπὸ μηνιαίου· ἡ συντίμησις πέντε σίκλων, κατὰ τὸν σίκλον τὸν ἅγιον εἴκοσι ὀβολοί εἰσι. Πλὴν πρωτότοκα μόσχων καὶ πρωτότοκα προβάτων, καὶ πρωτότοκα αἰγῶν οὐ λυτρώσῃ· ἅγιά ἐστι· καὶ τὸ αἷμα αὐτῶν προσχεεῖς πρὸς τὸ θυσιαστήριον, καὶ τὸ στέαρ ἀνοίσεις κάρπωμα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ. Καὶ τὰ κρέα ἔσται σοι, καθὰ καὶ τὸ στηθύνιον τοῦ ἐπιθέματος· καὶ κατὰ τὸν βραχίονα τὸν δεξιὸν, σοὶ ἔσται. Πᾶν ἀφαίρεμα τῶν ἁγίων, ὅσα ἐὰν ἀφέλωσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ Κυρίῳ, δέδωκά σοι καὶ τοῖς υἱοῖς σου καὶ ταῖς θυγατράσι σου μετὰ σοῦ, νόμιμον αἰώνιον· διαθήκη ἁλὸς αἰωνίου ἔστιν ἔναντι Κυρίου, σοὶ καὶ τῷ σπέρματί σου μετὰ σέ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Ἀαρὼν, ἐν τῇ γῇ αὐτῶν οὐ κληρονομήσεις, καὶ μερὶς οὐκ ἔσται σοι ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἐγὼ μερίς σου καὶ κληρονομία σου ἐν μέσῳ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ τοῖς υἱοῖς Λευὶ ἰδοὺ δέδωκα πᾶν ἐπιδέκατον ἐν Ἰσραὴλ ἐν κλήρῳ ἀντὶ τῶν λειτουργιῶν αὐτῶν, ὅσα αὐτοὶ λειτουργοῦσι λειτουργίαν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ οὐ προσελεύσονται ἔτι οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου λαβεῖν ἁμαρτίαν θανατηφόρον. Καὶ λειτουργήσει ὁ Λενίτης αὐτὸς τὴν λειτουργίαν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ αὐτοὶ λήψονται τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν, νόμιμον αἰώνιον εἰς τὰς γενεὰς αὐτῶν· καὶ ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραὴλ οὐ κληρονομήσουσι κληρονομίαν. Ὅτι τὰ ἐπιδέκατα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ὅσα ἐὰν ἀφορίσωσι Κυρίῳ, ἀφαίρεμα δέδωκα τοῖς Λευίταις ἐν κλήρῳ· διὰ τοῦτο εἴρηκα αὐτοῖς, ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραὴλ οὐ κληρονομήσουσι κλῆρον. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, καὶ τοῖς Λενίταις λαλήσεις, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ἐὰν λάβητε παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ τὸ ἐπιδέκατον, ὃ δέδωκα ὑμῖν παρ αὐτῶν ἐν κλήρῳ, καὶ ἀφελεῖτε ὑμεῖς ἀπ αὐτοῦ ἀφαίρεμα Κυρίῳ, ἐπιδέκατον ἀπὸ τοῦ ἐπιδεκάτου. Καὶ

λογισθήσεται ὑμῖν τὰ ἀφαιρέματα ὑμῶν ὡς σῖτος ἀπὸ ἅλω, καὶ ἀφαίρεμα ἀπὸ ληνοῦ. Οὕτως ἀφελεῖτε αὐτοὺς καὶ ὑμεῖς ἀπὸ πάντων τῶν ἀφαιρεμάτων Κυρίου ἀπὸ πάντων τῶν ἐπιδεκάτων ὑμῶν, ὅσα ἐὰν λάβητε παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ δώσετε ἀπ αὐτῶν ἀφαίρεμα Κυρίῳ Ἀαρὼν τῷ ἱερεῖ. Ἀπὸ πάντων τῶν δομάτων ὑμῶν ἀφελεῖτε ἀφαιρεμα Κυρίῳ, ἢ ἀπὸ πάντων τῶν ἀπαρχῶν τὸ ἡγιασμένον ἀπ αὐτοῦ. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ὅταν ἀφαιρῆτε τὴν ἀπαρχὴν ἀπ αὐτοῦ, καὶ λογισθήσεται τοῖς Λευίταις ὡς γέννημα ἀπὸ ἅλω, καὶ ὡς γέννημα ἀπὸ ληνοῦ. Καὶ ἔδεσθε αὐτὸ ἐν παντὶ τόπῳ ὑμεῖς καὶ οἱ οἶκοι ὑμῶν, ὅτι μισθὸς οὗτος ὑμῖν ἐστιν ἀντὶ τῶν λειτουργιῶν ὑμῶν τῶν ἐν τῇ σκηνῇ τοῦ μαρτυρίου. Καὶ οὐ λήψεσθε δι αὐτὸ ἁμαρτίαν, ὅτι ἂν ἀφαιρῆτε τὴν ἀπαρχὴν ἀπ αὐτοῦ· καὶ τὰ ἅγια τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ οὐ βεβηλώσετε, ἵνα μὴ ἀποθάνητε.

# 19

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, λέγων, αὕτη ἡ διαστολὴ τοῦ νόμου, ὅσα συνέταξε Κύριος, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ λαβέτωσαν πρὸς σὲ δάμαλιν πυῤῥὰν ἄμωμου, ἥτις οὐκ ἔχει ἐν αὐτῇ μῶμον, καὶ ᾗ οὐκ ἐπεβλήθη ἐπ αὐτὴν ζυγός. Καὶ δώσεις αὐτὴν πρὸς Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα· καὶ ἐξάξουσιν αὐτὴν ἔξω τῆς παρεμβολῆς εἰς τόπον καθαρὸν, καὶ σφάξουσιν αὐτὴν ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ λήψεται Ἐλεάζαρ ἀπὸ τοῦ αἵματος αὐτῆς, καὶ ῥανεῖ ἀπέναντι τοῦ προσώπου τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου ἀπὸ τοῦ αἵματος αὐτῆς ἑπτάκις. Καὶ κατακαύσουσιν αὐτὴν ἐναντίον αὐτοῦ· καὶ τὸ δέρμα καὶ τὰ κρέα αὐτῆς καὶ τὸ αἷμα αὐτῆς σὺν τῇ κόπρῳ

αὐτῆς κατακαυθήσεται. Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς ξύλον κέδρινον καὶ ὕσσωπον καὶ κόκκινον, καὶ ἐμβαλοῦσιν εἰς μέσον τοῦ κατακαύματος τῆς δαμάλεως. Καὶ πλυνεῖ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ὁ ἱερεὺς, καὶ λούσεται τὸ σῶμα αὐτοῦ ὕδατι, καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσεται εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἀκάθαρτος ἔσται ὁ ἱερεὺς ἕως ἑσπέρας. Καὶ ὁ κατακαίων αὐτὴν πλυνεῖ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ λούσεται τὸ σῶμα αὐτοῦ, καὶ ἀκάθαρτος ἔσται ἕως ἑσπέρας. Καὶ συνάξει ἄνθρωπος καθαρὸς τὴν σποδὸν τῆς δαμάλεως, καὶ ἀποθήσει ἔξω τῆς παρεμβολῆς εἰς τόπον καθαρόν· καὶ ἔσται τῇ συναγωγῇ υἱῶν Ἰσραὴλ εἰς διατήρησιν· ὕδωρ ῥαντισμοῦ ἁγνισμά ἐστι. Καὶ ὁ συνάγων τὴν σποδιὰν τῆς δαμάλεως, πλυνεῖ τὰ ἱμάτια αὐτου, καὶ ἀκάθαρτος ἔσται ἕως ἑσπέρας· καὶ ἔσται τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ καὶ τοῖς προσηλύτοις προσκειμένοις νόμιμον αἰώνιον. Ὁ ἁπτόμενος τοῦ τεθνηκότος πάσης ψυχῆς ἀνθρώπου, ἀκάθαρτος ἔσται ἑπτὰ ἡμέρας. Οὗτος ἁγνισθήσεται τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ καθαρὸς ἔσται· ἐὰν δὲ μὴ ἁφαγνισθῇ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, οὐ καθαρὸς ἔσται. Πᾶς ὁ ἁπτόμενος τοῦ τεθνηκότος ἀπὸ ψυχῆς ἀνθρώπου, ἐὰν ἀποθάνῃ, καὶ μὴ ἁφαγνισθῇ, τὴν σκηνὴν Κυρίου ἐμίανεν· ἐκτριβήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐξ Ἰσραὴλ, ὅτι ὕδωρ ῥαντισμοῦ οὐ περιερῥαντίσθη ἐπ αὐτόν· ἀκάθαρτός ἐστιν· ἔτι ἡ ἀκαθαρσία αὐτοῦ ἐν αὐτῷ ἐστι. Καὶ οὗτος ὁ νόμος· ἄνθρωπος ἐὰν ἀποθάνῃ ἐν οἰκίᾳ, πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος εἰς τὴν οἰκίαν, καὶ ὅσα ἐστὶν ἐν τῇ οἰκίᾳ, ἀκάθαρτα ἔσται ἑπτὰ ἡμέρας. Καὶ πᾶν σκεῦος ἀνεῳγμένον ὅσα οὐχὶ δεσμὸν καταδέδεται ἐπ αὐτῷ, ἀκάθαρτά ἐστι. Καὶ πᾶς ὃς ἂν ἅψηται ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου τραυματίου ἢ νεκροῦ ἢ ὀστέου ἀνθρωπίνου ἢ μνήματος, ἑπτὰ ἡμέρας ἀκάθαρτος ἔσται. Καὶ λήψονται τῷ ἀκαθάρτῳ ἀπὸ τῆς σποδιᾶς τῆς κατακεκαυμένης τοῦ

ἁγνισμοῦ, καὶ κέχεοῦσιν ἐπ αὐτὴν ὕδωρ ζῶν εἰς σκεῦος. Καὶ λήψεται ὕσσωπον, καὶ βάψει εἰς τὸ ὕδωρ ἀνὴρ καθαρὸς, καὶ περιῤῥανεῖ ἐπὶ τὸν οἶκον, καὶ ἐπὶ τὰ σκεύη, καὶ ἐπὶ τὰς ψυχὰς, ὅσαι ἂν ὦσιν ἐκεῖ, καὶ ἐπὶ τὸν ἡμμένον τοῦ ὀστέου τοῦ ἀνθρωπίνου, ἢ τοῦ τραυματίου, ἢ τοῦ τεθνηκότος, ἢ τοῦ μνήματος. Καὶ περιῤῥανεῖ ὁ καθαρὸς ἐπὶ τὸν ἀκάθαρτον ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ ἀφαγνισθήσεται τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ· καὶ πλυνεῖ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ λούσεται ὕδατι, καὶ ἀκάθαρτος ἔσται ἕως ἑσπέρας. Καὶ ἄνθρωπος ὃς ἂν μιανθῇ, καὶ μὴ ἀφαγνισθῇ, ἐξολοθρευθήσεται ἡ ψυχὴ ἐκείνη ἐκ μέσου τῆς συναγωγῆς, ὅτι τὰ ἅγια Κυρίου ἐμίανεν, ὅτι ὕδωρ ῥαντισμοῦ οὐ περιερῥαντίσθη ἐπ αὐτόν· ἀκάθαρτός ἐστι. Καὶ ἔσται ὑμῖν νόμιμον αἰώνιον· καὶ ὁ περιῤῥαίνων ὕδωρ ῥαντισμοῦ, πλυνεῖ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ· καὶ ὁ ἁπτόμενος τοῦ ὕδατος τοῦ ῥαντισμοῦ, ἀκάθαρτος ἔσται ἕως ἑσπέρας. Καὶ παντὸς οὗ ἐὰν ἅψηται αὐτοῦ ὁ ἀκάθαρτος, ἀκάθαρτον ἔσται· καὶ ψυχὴ ἡ ἁπτομένη, ἀκάθαρτος ἔσται ἕως ἑσπέρας.

# 20

Καὶ ἦλθον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, πᾶσα ἡ συναγωγὴ, εἰς τὴν ἔρημον Σὶν, ἐν τῷ μηνὶ τῷ πρώτῳ, καὶ κατέμεινεν ὁ λαὸς ἐν Κάδης· καὶ ἐτελεύτησεν ἐκεῖ Μαριὰμ, καὶ ἐτάφη ἐκεῖ. Καὶ οὐκ ἦν ὕδωρ τῇ συναγωγῇ· καὶ ἠθροίσθησαν ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρών. Καὶ ἐλοιδορεῖτο ὁ λαὸς πρὸς Μωυσῆν, λέγοντες, ὄφελον ἀπεθάνομεν ἐν τῇ ἀπωλείᾳ τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἱνατί ἀνηγάγετε τὴν συναγωγὴν Κυρίου εἰς τὴν ἔρημον ταύτην

ἀποκτεῖναι ἡμᾶς, καὶ τα κτήνη ἡμῶν; Καὶ ἱνατί τοῦτο; ἀνηγάγετε ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου, παραγενέσθαι εἰς τὸν τόπον τὸν πονηρὸν τοῦτον· τόπος οὗ οὐ σπείρεται, οὐδὲ συκαῖ, οὐδὲ ἄμπελοι, οὔτε ῥοαὶ, οὔτε ὕδωρ ἐστὶ πιεῖν. Καὶ ἦλθε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἀπὸ προσώπου τῆς συναγωγῆς ἐπὶ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον· καὶ ὤφθη ἡ δόξα Κυρίου πρὸς αὐτοὺς. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε τὴν ῥάβδον σου, καὶ ἐκκλησίασον τὴν συναγωγὴν σὺ καὶ Ἀαρὼν ὁ ἀδελφός σου, καὶ λαλήσατε πρὸς τὴν πέτραν ἐναντίον αὐτῶν, καὶ δώσει τὰ ὕδατα αὐτῆς, καὶ ἐξοίσετε αὐτοῖς ὕδωρ ἐκ τῆς πέτρας, καὶ ποτιεῖτε τὴν συναγωγὴν, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς τὴν ῥάβδον τὴν ἀπέναντι Κυρίου, καθὰ συνέταξε Κύριος. Καὶ ἐξεκκλησίασε Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν τὴν συναγωγὴν ἀπέναντι τῆς πέτρας, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀκούσατέ μου οἱ ἀπειθεῖς· μὴ ἐκ τῆς πέτρας ταύτης ἐξάξομεν ὑμῖν ὕδωρ; Καὶ ἐπάρας Μωυσῆς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, ἐπάταξε τὴν πέτραν τῇ ῥάβδῳ δίς· καὶ ἐξῆλθεν ὕδωρ πολὺ, καὶ ἔπιεν ἡ συναγωγὴ, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν, ὅτι οὐκ ἐπιστεύσατε ἁγιάσαι με ἐναντίον τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, διὰ τοῦτο οὐκ εἰσάξετε ὑμεῖς τὴν συναγωγὴν ταύτην εἰς τὴν γῆν ἣν δέδωκα αὐτοῖς. Τοῦτο τὸ ὕδωρ Ἀντιλογίας, ὅτι ἐλοιδορήθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἔναντι Κυρίου, καὶ ἡγιάσθη ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἀπέστειλε Μωυσῆς ἀγγέλους ἐκ Κάδης πρὸς βασιλέα Ἐδὼμ, λέγων, τάδε λέγει ὁ ἀδελφός σου Ἰσραήλ· σὺ ἐπίστῃ πάντα τὸν μόχθον τὸν εὑρόντα ἡμᾶς. Καὶ κατέβησαν οἱ πατέρες ἡμῶν εἰς Αἴγυπτον, καὶ παρῳκήσαμεν ἐν Αἰγύπτῳ ἡμέρας πλείους, καὶ ἐκάκωσαν ἡμᾶς οἱ Αἰγύπτιοι καὶ τοὺς πατέρας ἡμῶν. Καὶ ἀνεβοήσαμεν πρὸς Κύριον, καὶ εἰσήκουσε Κύριος τῆς φωνῆς ἡμῶν, καὶ ἀποστείλας ἄγγελον, ἐξήγαγεν ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου· καὶ

νῦν ἐσμὲν ἐν Κάδης πόλει, ἐκ μέρους τῶν ὁρίων σου. Παρελευσόμεθα διὰ τῆς γῆς σου· οὐ διελευσόμεθα δι ἀγρῶν, οὐδὲ δι ἀμπελώνων, οὐδὲ πιόμεθα ὕδωρ ἐκ λάκκου σου· ὁδῷ βασιλικῇ πορευσόμεθα· οὐκ ἐκκλινοῦμεν δεξιὰ οὐδὲ εὐώνυμα, ἕως ἂν παρέλθωμεν τὰ ὅριά σου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐδὼμ, Οὐ διελεύσῃ δι ἐμοῦ· εἰ δὲ μὴ, ἐν πολέμῳ ἐξελεύσομαι εἰς συνάντησίν σοι. Καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, παρὰ τὸ ὄρος παρελευσόμεθα· ἐὰν δὲ τοῦ ὕδατός σου πίωμεν ἐγώ τε καὶ τὰ κτήνη μου, δώσω τιμήν σοι· ἀλλὰ τὸ πρᾶγμα οὐδέν ἐστι· παρὰ τὸ ὄρος παρελευσόμεθα. Ὁ δὲ εἶπεν, οὐ διελεύσῃ δι ἐμοῦ· καὶ ἐξῆλθεν Ἐδὼμ εἰς συνάντησιν αὐτῷ ἐν ὄχλῳ βαρεῖ, καὶ ἐν χειρὶ ἰσχυρᾷ. Καὶ οὐκ ἠθέλησεν Ἐδὼμ δοῦναι τῷ Ἰσραὴλ παρελθεῖν διὰ τῶν ὁρίων αὐτοῦ· καὶ ἐξέκλινεν Ἰσραὴλ ἀπ αὐτοῦ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Καδης· καὶ παρεγένοντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πᾶσα ἡ συναγωγὴ εἰς Ὢρ τὸ ὄρος. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν ἐν Ὢρ τῷ ὄρει ἐπὶ τῶν ὁρίων τῆς γῆς Ἐδὼμ, λέγων, προστεθήτω Ἀαρὼν πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, ὅτι οὐ μὴ εἰσέλθητε εἰς τὴν γῆν ἣν δέδωκα τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, διότι παρωξύνατέ με ἐπὶ τοῦ ὕδατος τῆς λοιδορίας. Λάβε τὸν Ἀαρὼν, καὶ Ἐλεάζαρ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, καὶ ἀναβίβασον αὐτοὺς εἰς Ὢρ τὸ ὄρος, ἔναντι πάσης τῆς συναγωγῆς, καὶ ἔκδυσον Ἀαρὼν τὴν στολὴν αὐτοῦ, καὶ ἔνδυσον Ἐλεάζαρ τὸν υἱὸν αὐτοῦ· καὶ Ἀαρὼν προστεθεὶς ἀποθανέτω ἐκεῖ. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς καθὰ συνέταξε Κύριος αὐτῷ, καὶ ἀνεβίβασεν αὐτὸν εἰς Ὢρ τὸ ὄρος, ἐναντίον πάσης τῆς συναγωγῆς, καὶ ἐξέδυσε τὸν Ἀαρὼν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἐνέδυσεν αὐτὰ Ἐλεάζαρ τὸν υἱὸν αὐτοῦ· καὶ ἀπέθανεν Ἀαρὼν ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους· καὶ κατέβη Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ἐκ τοῦ ὄρους. Καὶ εἶδε πᾶσα ἡ συναγωγὴ ὅτι ἀπελύθη Ἀαρὼν, καὶ ἔκλαυσαν τὸν Ἀαρὼν τριάκοντα ἡμέρας πᾶς οἶκος Ἰσραήλ.

# 21

Καὶ ἤκουσεν ὁ Χανανεὶς βασιλεὺς Ἀρὰδ ὁ κατοικῶν κατὰ τὴν ἔρημον, ὅτι ἦλθεν Ἰσραὴλ ὁδὸν Ἀθαρεὶν, καὶ ἐπολέμησε πρὸς Ἰσραὴλ, καὶ κατεπροενόμευσεν ἐξ αὐτῶν αἰχμαλωσίαν. Καὶ ηὔξατο Ἰσραὴλ εὐχὴν Κυρίῳ, καὶ εἶπεν, ἐάν μοι παραδῷς τὸν λαὸν τοῦτον ὑποχείριον, ἀναθεματιῶ αὐτὸν καὶ τὰς πόλεις αὐτοῦ. Καὶ εἰσήκουσε Κύριος τῆς φωνῆς Ἰσραὴλ, καὶ παρέδωκε τὸν Χανανεὶν ὑποχείριον αὐτοῦ· καὶ ἀνεθεμάτισεν αὐτὸν, καὶ τὰς πόλεις αὐτοῦ· καὶ ἐπεκάλεσαν τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Ἀνάθεμα. Καὶ ἀπάραντες ἐξ Ὣρ τοῦ ὄρους ὁδὸν ἐπὶ θάλασσαν ἐρυθρᾶν, περιεκύκλωσαν γῆν Ἐδώμ· καὶ ὠλιγοψύχησεν ὁ λαὸς ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ κατελάλει ὁ λαὸς πρὸς τὸν Θεὸν καὶ κατὰ Μωυσῆ, λέγοντες, ἱνατί τοῦτο; ἐξήγαγες ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου ἀποκτεῖναι ἐν τῇ ἐρήμῳ; ὅτι οὐκ ἔστιν ἄρτος, οὐδὲ ὕδωρ· ἡ δὲ ψυχὴ ἡμῶν προσώχθισεν ἐν τῷ ἄρτῳ τῷ διακένῳ τούτῳ. Καὶ ἀπέστειλε Κύριος εἰς τὸν λαὸν τοὺς ὄφεις τοὺς θανατοῦντας, καὶ ἔδακνον τὸν λαόν, καὶ ἀπέθανε λαὸς πολὺς τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ παραγενόμενος ὁ λαὸς πρὸς Μωυσῆν, ἔλεγον, ὅτι ἡμάρτομεν, ὅτι κατελαλήσαμεν κατὰ τοῦ Κυρίου, καὶ κατὰ σοῦ· εὔξαι οὖν πρὸς Κύριον, καὶ ἀφελέτω ἀφ ἡμῶν τὸν ὄφιν. Καὶ ηὔξατο Μωυσῆς πρὸς Κύριον περὶ τοῦ λαοῦ· καὶ εἰπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ποίησον σεαυτῷ ὄφιν, καὶ θὲς αὐτὸν ἐπὶ σημείου, καὶ ἔσται ἐὰν δάκῃ ὄφις ἄνθρωπον, πᾶς ὁ δεδηγμένος ἰδὼν αὐτὸν ζήσεται. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς ὄφιν χαλκοῦν, καὶ ἔστησεν αὐτὸν ἐπὶ σημείου· καὶ ἐγένετο ὅταν ἔδακνεν ὄφις ἄνθρωπον, καὶ ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὸν ὄφιν τὸν χαλκοῦν, καὶ ἔζη. Καὶ ἀπῆραν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ παρενέβαλον ἐν Ὠβώθ. Καὶ

ἐξάραντες ἐξ Ὠβὼθ, καὶ παρενέβαλον ἐν Ἀχαλγαὶ ἐκ τοῦ πέραν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον Μωὰβ, κατ ἀνατολὰς ἡλίου. Καὶ ἐκεῖθεν ἀπῆραν, καὶ παρενέβαλον εἰς φάραγγα Ζαρέδ. Καὶ ἐκεῖθεν ἀπάραντες παρενέβαλον εἰς τὸ πέραν Ἀρνῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, τὸ ἐξέχον ἀπὸ τῶν ὁρίων τῶν Ἀμορῥαίων· ἔστι γὰρ Ἀρνῶν ὅρια Μωὰβ, ἀναμέσον Μωὰβ καὶ ἀναμέσον τοῦ Ἀμορῥαίου. Διὰ τοῦτο λέγεται ἐν βιβλίῳ, πόλεμος τοῦ Κυρίου τὴν Ζωὸβ ἐφλόγισε, καὶ τοὺς χιμάῤῥους Ἀρνῶν. Καὶ τοὺς χιμάῤῥους κατέστησε κατοικίσαι Ἦρ· καὶ πρόσκειται τοῖς ὁρίοις Μωάβ. Καὶ ἐκεῖθεν τὸ φρέαρ· τοῦτο φρέαρ, ὃ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, συνάγαγε τὸν λαὸν, καὶ δώσω αὐτοῖς ὕδωρ πιεῖν. Τότε ᾖσεν Ἰσραὴλ τὸ ᾆσμα τοῦτο ἐπὶ τοῦ φρέατος, ἐξάρχετε αὐτῷ φρέαρ, ὤρυξαν αὐτὸ ἄρχοντες, ἐξελατόμησαν αὐτὸ βασιλεῖς ἐθνῶν ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτῶν, ἐν τῷ κυριεῦσαι αὐτῶν· καὶ ἀπὸ φρέατος εἰς Μανθαναεὶν, καὶ ἀπὸ Μανθαναεὶν εἰς Νααλιὴλ, καὶ ἀπὸ Νααλιὴλ εἰς Βαμὼθ, καὶ ἀπὸ Βαμὼθ εἰς Ἰανὴν, ἥ ἐστιν ἐν τῷ πεδίῳ Μωὰβ, ἀπὸ κορυφῆς τοῦ λελαξευμένου, τὸ βλέπον κατὰ πρόσωπον τῆς ἐρήμου. Καὶ ἀπέστειλε Μωυσῆς πρέαβεις πρὸς Σηὼν βασιλέα Ἀμορῥαίων, λόγοις εἰρηνικοῖς, λέγων, παρελευσόμεθα διὰ τῆς γῆς σου, τῇ ὁδῷ πορευσόμεθα· οὐκ ἐκκλινοῦμεν οὔτε εἰς ἀγρὸν, οὔτε εἰς ἀμπελῶνα· Οὐ πιόμεθα ὕδωρ ἐκ φρέατός σου· ὁδῷ βασιλικῇ παρευσόμεθα, ἕως παρέλθωμεν τὰ ὅριά σου. Καὶ οὐκ ἔδωκε Σηὼν τῷ Ἰσραὴλ παρελθεῖν διὰ τῶν ὁρίων αὐτοῦ· καὶ συνήγαγε Σηὼν πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθε παρατάξασθαι τῷ Ἰσραὴλ εἰς τὴν ἔρημον· καὶ ἦλθεν εἰς Ἰασσὰ, καὶ παρετάξατο τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν Ἰσραὴλ φόνῳ μαχαίρης, καὶ κατεκυρίευσαν τῆς γῆς αὐτοῦ, ἀπὸ Ἀρνῶν ἕως Ἰαβὸκ, ἕως υἱῶν Ἀμμὰν, ὅτι Ἰαζὴρ ὅρια υἱῶν Ἀμμάν ἐστι. Καὶ ἔλαβεν Ἰσραὴλ πάσας τὰς πόλεις ταύτας, καὶ

κατῴκησεν Ἰσραὴλ ἐν πάσαις ταῖς πόλεσι τῶν Ἀμορῥαίων, ἐν Ἐσεβὼν, καὶ ἐν πάσαις ταῖς συγκυρούσαις αὐτῇ. Ἔστι γὰρ Ἐσεβὼν, πόλις Σηὼν τοῦ βασιλέως τῶν Ἀμορῥαίων ἐστίν· καὶ οὗτος ἐπολέμησε βασιλέα Μωὰβ τὸ πρότερον· καὶ ἔλαβον πᾶσαν τὴν γῆν αὐτοῦ, ἀπὸ Ἀροὴρ ἕως Ἀρνῶν. Διὰ τοῦτο ἐροῦσιν οἱ αἰνιγματισταὶ, ἔλθετε εἰς Ἐσεβὼν, ἵνα οἰκοδομηθῇ καὶ κατασκευασθῇ πόλις Σηών· ὅτι πῦρ ἐξῆλθεν ἐξ Ἐσεβὼν, φλὸξ ἐκ πόλεως Σηὼν, καὶ κατέφαγεν ἕως Μωὰβ, καὶ κατέπιε στήλας Ἀρνῶν. Οὐαί σοι Μωὰβ, ἀπώλου λαὸς Χαμώς· ἀπεδόθησαν οἱ υἱοὶ αὐτῶν διασώζεσθαι, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν αἰχμάλωτοι τῷ βασιλεῖ τῶν Ἀμορῥαίων Σηὼν, καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν ἀπολεῖται, Ἐσεβὼν ἕως Δαιβών· καὶ αἱ γυναῖκες ἔτι προσεξέκαυσαν πῦρ ἐπὶ Μωάβ. Κατῴκησε δὲ Ἰσραὴλ ἐν πάσαις ταῖς πόλεσι τῶν Ἀμορῥαίων. Καὶ ἀπέστειλε Μωυσῆς κατασκέψασθαι τὴν Ἰαζήρ· καὶ κατελάβοντο αὐτὴν, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς, καὶ ἐξέβαλον τὸν Ἀμορῥαῖον τὸν κατοικοῦντα ἐκεῖ. Καὶ ἐπιστρέψαντες, ἀνέβησαν ὁδὸν τὴν εἰς Βασάν· καὶ ἐξῆλθεν Ὢγ βασιλεὺς τῆς Βασὰν εἰς συνάντησιν αὐτοῖς, καὶ πᾶς ὁ λαὸς αὐτοῦ εἰς πόλεμον εἰς Ἐδραείν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, μὴ φοβηθῇς αὐτὸν, ὅτι εἰς τὰς χεῖράς σου παραδέδωκα αὐτὸν, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν αὐτοῦ· καὶ ποιήσεις αὐτῷ καθὼς ἐποίησας τῷ Σηὼν βασιλεῖ τῶν Ἀμορῥαίων, ὃς κατῴκει ἐν Ἐσεβών. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἕως τοῦ μὴ καταλιπεῖν αὐτοῦ ζωγρείαν· καὶ ἐκληρονόμησαν τὴν γῆν αὐτον.

# 22

Καὶ ἀπάραντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ παρενέβαλον ἐπὶ δυσμῶν Μωὰβ παρὰ τὸν Ἰορδάνην κατὰ Ἰεριχώ. Καὶ ἰδὼν Βαλὰκ υἱὸς Σεπφὼρ πάντα ὅσα ἐποίησεν Ἰσραὴλ τῷ Ἀμορῥαίῳ, καὶ ἐφοβήθη Μωὰβ τὸν λαὸν σφόδρα ὅτι πολλοὶ ἦσαν· καὶ προσώχθισε Μωὰβ ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Μωὰβ τῇ γερουσίᾳ Μαδιὰμ, νῦν ἐκλείξει ἡ συναγωγὴ αὕτη πάντας τοὺς κύκλῳ ἡμῶν, ὡσεὶ ἐκλείξαι ὁ μόσχος τὰ χλωρὰ ἐκ τοῦ πεδίου· καὶ Βαλὰκ υἱὸς Σεπφὼρ βασιλεὺς Μωὰβ ἦν κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον. Καὶ ἀπέστειλε πρέσβεις πρὸς Βαλαὰμ υἱὸν Βεὼρ Φαθουρὰ, ὅ ἐστιν ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ γῆς υἱῶν λαοῦ αὐτοῦ, καλέσαι αὐτὸν, λέγων, ἰδοὺ λαὸς ἐξελήλυθεν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἰδοὺ κατεκάλυψε τὴν ὄψιν τῆς γῆς, καὶ οὗτος ἐγκάθηται ἐχόμενός μου. Καὶ νῦν δεῦρο ἄρασαί μοι τὸν λαὸν τοῦτον, ὅτι ἰσχύει οὗτος ἢ ἡμεῖς, ἐὰν δυνώμεθα πατάξαι ἐξ αὐτῶν, καὶ ἐκβαλῶ αὐτοὺς ἐκ τῆς γῆς· ὅτι οἶδα οὓς ἐὰν εὐλογήσῃς σὺ, εὐλόγηνται, καὶ οὓς ἂν καταράσῃ σὺ, κεκατήρανται. Καὶ ἐπορεύθη ἡ γερουσία Μωὰβ, καὶ ἡ γερουσία Μαδιὰμ, καὶ τὰ μαντεῖα ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν· καὶ ἦλθον πρὸς Βαλαὰμ, καὶ εἶπαν αὐτῷ τὰ ῥήματα Βαλάκ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, καταλύσατε αὐτοῦ τὴν νύκτα, καὶ ἀποκριθήσομαι ὑμῖν πράγματα ἃ ἂν λαλήσῃ Κύριος πρὸς μέ· καὶ κατέμειναν οἱ ἄρχοντες Μωὰβ παρὰ Βαλαάμ. Καὶ ἦλθεν ὁ Θεὸς πρὸς Βαλαὰμ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί οἱ ἄνθρωποι οὗτοι παρὰ σοί; Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς τὸν Θεὸν, Βαλὰκ υἱὸς Σεπφὼρ, βασιλεὺς Μωὰβ, ἀπέστειλεν αὐτοὺς πρὸς μὲ, λέγων, ἰδοὺ λαὸς ἐξελήλυθεν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ κεκάλυφεν τὴν ὄψιν τῆς γῆς, καὶ οὗτος ἐγκάθηται ἐχόμενός μου, καὶ νῦν δεῦρο ἄρασαί μοι αὐτὸν, εἰ ἄρα δυνήσομαι πατάξαι αὐτὸν, καὶ ἐκβαλῶ αὐτὸν ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πρὸς Βαλαὰμ, οὐ πορεύσῃ μετ αὐτῶν, οὐδὲ καταράσῃ τὸν λαόν· ἔστι γὰρ εὐλογημένος. Καὶ ἀναστὰς Βαλαὰμ τοπρωΐ,

εἶπε τοῖς ἄρχουσι Βαλὰκ, ἀποτρέχετε πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν, οὐκ ἀφίησί με ὁ Θεὸς πορεύεσθαι μεθ ὑμῶν. Καὶ ἀναστάντες οἱ ἄρχοντες Μωὰβ, ἦλθον πρὸς Βαλὰκ, καὶ εἶπαν, οὐ θέλει Βαλαὰμ πορευθῆναι μεθ ἡμῶν. Καὶ προσέθετο Βαλὰκ ἔτι ἀποστεῖλαι ἄρχοντας πλείους, καὶ ἐντιμοτέρους τούτων. Καὶ ἦλθον πρὸς Βαλαὰμ, καὶ λέγουσιν αὐτῷ, τάδε λέγει Βαλὰκ ὁ τοῦ Σεπφώρ· ἀξιῶ σε μὴ ὀκνήσῃς ἐλθεῖν πρὸς μέ. ἐντίμως γὰρ τιμήσω σε, καὶ ὅσα ἐὰν εἴπῃς ποιήσω σοι· καὶ δεῦρο ἐπικατάρασαί μοι τὸν λαὸν τοῦτον. Καὶ ἀπεκρίθη Βαλαὰμ, καὶ εἶπε τοῖς ἄρχουσι Βαλὰκ, ἐὰν δῷ μοι Βαλὰκ πλήρη τὸν οἶκον αὐτοῦ ἀργυρίου καὶ χρυσίου, οὐ δυνήσομαι παραβῆναι τὸ ῥῆμα Κυρίου τοῦ Θεοῦ, ποιῆσαι αὐτὸ μικρὸν ἢ μέγα ἐν τῇ διανοίᾳ μου. Καὶ νῦν ὑπομείνατε αὐτοῦ καὶ ὑμεῖς τὴν νύκτα ταύτην, καὶ γνώσομαι τί προσθήσει Κύριος λαλῆσαι πρὸς μέ. Καὶ ἦλθεν ὁ Θεὸς πρὸς Βαλαὰμ νυκτὸς, καὶ εἶπεν αὐτῷ, εἰ καλέσαι σε πάρεισιν οἱ ἄνθρωποι οὗτοι, ἀναστὰς ἀκολούθησον αὐτοῖς· ἀλλὰ τὸ ῥῆμα ὃ ἐὰν λαλήσω πρὸς σὲ, τοῦτο ποιήσεις. Καὶ ἀναστὰς Βαλαὰμ τοπρωΐ, ἐπέσαξε τὴν ὄνον αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύθη μετὰ τῶν ἀρχόντων Μωάβ. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ ὁ Θεὸς ὅτι ἐπορεύθη αὐτός· καὶ ἀνέστη ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ διαβαλεῖν αὐτόν· καὶ αὐτὸς ἐπιβεβήκει ἐπὶ τῆς ὄνου αὐτοῦ, καὶ οἱ δύο παῖδες αὐτοῦ μετ αὐτοῦ. Καὶ ἰδοῦσα ἡ ὄνος τὸν ἄγγελον τοῦ Θεοῦ ἀνθεστηκότα ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ τὴν ῥομφαίαν ἐσπασμένην ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐξέκλινεν ἡ ὄνος ἐκ τῆς ὁδοῦ, καὶ ἐπορεύετο εἰς τὸ πεδίον· καὶ ἐπάταξε τὴν ὄνον ἐν τῇ ῥάβδῳ αὐτοῦ τοῦ εὐθῦναι αὐτὴν ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ ἔστη ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ ἐν ταῖς αὔλαξι τῶν ἀμπέλων, φραγμὸς ἐντεῦθεν καὶ φραγμὸς ἐντεῦθεν· Καὶ ἰδοῦσα ἡ ὄνος τὸν ἄγγελον τοῦ Θεοῦ, προσέθλιψεν ἑαυτὴν πρὸς τὸν τοῖχον, καὶ ἀπέθλιψεν τὸν πόδα Βαλαὰμ πρὸς τὸν τοῖχον· καὶ προσέθετο ἔτι μαστίξαι αὐτήν. Καὶ

προσέθετο ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ, καὶ ἀπελθὼν ὑπέστη ἐν τόπῳ στενῷ, εἰς ὃν οὐκ ἦν ἐκκλῖναι δεξιὰν ἢ ἀριστεράν. Καὶ ἰδοῦσα ἡ ὄνος τὸν ἄγγελον τοῦ Θεοῦ, συνεκάθισεν ὑποκάτω Βαλαάμ· καὶ ἐθυμώθη Βαλαὰμ, καὶ ἔτυπτε τὴν ὄνον τῇ ῥάβδῳ. Καὶ ἤνοιξεν ὁ Θεὸς τὸ στόμα τῆς ὄνου, καὶ λέγει τῷ Βαλαὰμ, τί ἐποίησά σοι, ὅτι πέπαικάς με τρίτον τοῦτο; Καὶ εἶπε Βαλαὰμ τῇ ὄνῳ, ὅτι ἐμπέπαιχάς μοι, καὶ εἰ εἶχον μάχαιραν ἐν τῇ χειρὶ ἤδη ἂν ἐξεκέντησά σε. Καὶ λέγει ἡ ὄνος τῷ Βαλαὰμ, οὐκ ἐγὼ ἡ ὄνος σου ἐφ ἧς ἐπέβαινες ἀπὸ νεότητός σου, ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας; μὴ ὑπεροράσει ὑπεριδούσα ἐποίησά σοι οὕτως; ὁ δὲ εἶπεν, οὐχί. Ἀπεκάλυψε δὲ ὁ Θεὸς τοὺς ὀφθαλμοὺς Βαλαὰμ, καὶ ὁρᾷ τὸν ἄγγελον Κυρίου ἀνθεστηκότα ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ τὴν μάχαιραν ἐσπασμένην ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ κύψας προσεκύνησε τῷ προσώπῳ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ, διατί ἐπάταξας τὴν ὄνον σου τοῦτο τρίτον; καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἐξῆλθον εἰς διαβολήν σου, ὅτι οὐκ ἀστεία ἡ ὁδός σου ἐναντίον μου, καὶ ἰδοῦσά με ἡ ὄνος, ἐξέκλινεν ἀπ ἐμοῦ τρίτον τοῦτο. Καὶ εἰ μὴ ἐξέκλινεν, νῦν οὖν σὲ μὲν ἀπέκτεινα, ἐκείνην δ ἂν περιεποιησάμην. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ τῷ ἀγγέλῳ Κυρίου, ἡμάρτηκα, οὐ γὰρ ἠπιστάμην ὅτι σύ μοι ἀνθέστηκας ἐν τῇ ὁδῷ εἰς συνάντησιν· καὶ νῦν εἰ μή σοι ἀρκέσει, ἀποστραφήσομαι. Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ πρὸς Βαλαὰμ, συμπορεύθητι μετὰ τῶν ἀνθρώπων· πλὴν τὸ ῥῆμα ὃ ἐὰν εἴπω πρὸς σὲ, τοῦτο φυλάξῃ λαλῆσαι. Καὶ ἐπορεύθη Βαλαὰμ μετὰ τῶν ἀρχόντων Βαλάκ. Καὶ ἀκούσας Βαλὰκ ὅτι ἥκει Βαλαὰμ, ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν αὐτῷ, εἰς πόλιν Μωάβ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τῶν ὁρίων Ἀρνῶν, ἥ ἐστιν ἐκ μέρους τῶν ὁρίων. Καὶ εἶπε Βαλὰκ πρὸς Βαλαὰμ, οὐχὶ ἀπέστειλα πρὸς σὲ καλέσαι σε; διατί οὐκ ἦρχου πρὸς μέ; ὄντως οὐ δυνήσομαι τιμῆσαί σε; Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ,

ἰδοὺ ἥκω πρὸς σὲ νῦν· δυνατὸς ἔσομαι λαλῆσαί τι; τὸ ῥῆμα ὃ ἐὰν ἐμβάλῃ ὁ Θεὸς εἰς τὸ στόμα μου, τοῦτο λαλήσω. Καὶ ἐπορεύθη Βαλαὰμ μετὰ Βαλὰκ, καὶ ἦλθον εἰς πόλεις ἐπαύλεων. Καὶ ἔθυσε Βαλὰκ πρόβατα καὶ μόσχους, καὶ ἀπέστειλε τῷ Βαλαὰμ καὶ τοῖς ἄρχουσι τοῖς μετ αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη πρωΐ· καὶ παραλαβὼν Βαλὰκ τὸν Βαλαάμ, ἀνεβίβασεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν στήλην τοῦ Βαὰλ, καὶ ἔδειξεν αὐτῷ ἐκεῖθεν μέρος τι τοῦ λαοῦ.

# 23

Καὶ εἶπε Βαλαὰμ τῷ Βαλὰκ οἰκοδόμησόν μοι ἐνταῦθα ἑπτὰ βωμοὺς, καὶ ἑτοίμασόν μοι ἐνταῦθα ἑπτὰ μόσχους, καὶ ἑπτὰ κριούς. Καὶ ἐποίησε Βαλὰκ ὃν τρόπον εἶπεν αὐτῷ Βαλαάμ· καὶ ἀνήνεγκε μόσχον καὶ κριὸν ἐπὶ τὸν βωμόν. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ, παράστηθι ἐπὶ τῆς θυσίας σου, καὶ πορεύσομαι εἴ μοι φανεῖται ὁ Θεὸς ἐν συναντήσει, καὶ ῥῆμα ὃ ἐάν μοι δείξῃ, ἀναγγελῶ σοι· καὶ παρέστη Βαλὰκ ἐπὶ τῆς θυσίας αὐτοῦ. Καὶ Βαλαὰμ ἐπορεύθη ἐπερωτῆσαι τὸν Θεόν· καὶ ἐπορεύθη εὐθεῖαν· καὶ ἐφάνη ὁ Θεὸς τῷ Βαλαὰμ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Βαλαάμ, τοὺς ἑπτὰ βωμοὺς ἡτοίμασα, καὶ ἀνεβίβασα μόσχον καὶ κριὸν ἐπὶ τὸν βωμόν. Καὶ ἐνέβαλεν ὁ Θεὸς ῥῆμα εἰς τὸ στόμα Βαλαὰμ, καὶ εἶπεν, ἐπιστραφεὶς πρὸς Βαλὰκ, οὕτω λαλήσεις. Καὶ ἀπεστράφη πρὸς αὐτόν· καὶ ὁ δὲ ἐφιστήκει ἐπὶ τῶν ὁλοκαυτωμάτων αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες Μωὰβ μετ αὐτοῦ· καὶ ἐγενήθη πνεῦμα Θεοῦ ἐπ αὐτῷ. Καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπεν ἐκ Μεσοποταμίας μετεπέμψατό με Βαλὰκ βασιλεὺς Μωὰβ ἐξ ὀρέων ἀπ ἀνατολῶν, λέγων, δεῦρο ἄρασαί μοι τὸν Ἰακώβ, καὶ δεῦρο

ἐπικατάρασαί μοι τὸν Ἰσραήλ. Τί ἀράσωμαι ὃν μὴ ἀρᾶται Κύριος; ἢ τί καταράσωμαι ὃν μὴ καταρᾶται ὁ Θεός; Ὅτι ἀπὸ κορυφῆς ὀρέων ὄψομαι αὐτὸν, καὶ ἀπὸ βουνῶν προσνοήσω αὐτόν· ἰδοὺ λαὸς μόνος κατοικήσει, καὶ ἐν ἔθνεσιν οὐ συλλογισθήσεται. Τίς ἐξηκριβάσατο τὸ σπέρμα Ἰακὼβ, καὶ τίς ἐξαριθμήσεται δήμους Ἰσραήλ; ἀποθάνοι ἡ ψυχή μου ἐν ψυχαῖς δικαίων, καὶ γένοιτο τὸ σπέρμα μου ὡς τὸ σπέρμα τούτων. Καὶ εἶπε Βαλὰκ πρὸς Βαλαὰμ, τί πεποίηκάς μοι; εἰς κατάρασιν ἐχθρῶν μου κέκληκά σε, καὶ ἰδοὺ εὐλόγηκας εὐλογίαν. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ, οὐχὶ ὅσα ἂν ἐμβάλῃ ὁ Θεὸς εἰς τὸ στόμα μου, τοῦτο φυλάξω λαλῆσαι; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Βαλὰκ, δεῦρο ἔτι μετ ἐμοῦ εἰς τόπον ἄλλον ἐξ οὗ οὐκ ὄψει αὐτὸν ἐκεῖθεν, ἀλλ ἢ μέρος τι αὐτοῦ ὄψει, πάντας δὲ οὐ μὴ ἴδῃς, καὶ κατάρασαί μοι αὐτὸν ἐκεῖθεν. Καὶ παρέλαβεν αὐτὸν εἰς ἀγροῦ σκοπιὰν ἐπὶ κορυφὴν λελαξευμένου· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ ἑπτὰ βωμοὺς, καὶ ἀνεβίβασε μόσχον καὶ κριὸν ἐπὶ τὸν βωμόν. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ, παράστηθι ἐπὶ τῆς θυσίας σου, ἐγὼ δὲ πορεύσομαι ἐπερωτῆσαι τὸν Θεόν. Καὶ συνήντησεν ὁ Θεὸς τῷ Βαλαὰμ, καὶ ἐνέβαλε ῥῆμα εἰς τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἀποστράφηθι πρὸς Βαλὰκ, καὶ τάδε λαλήσεις. Καὶ ἀπεστράφη πρὸς αὐτόν· καὶ ὁ δὲ ἐφειστήκει ἐπὶ τῆς ὁλοκαυτώσεως αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες Μωὰβ μετ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν αὐτῷ Βαλὰκ, τί ἐλάλησε Κύριος; Καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπεν, ἀνάστηθι Βαλὰκ, καὶ ἄκουε, ἐνώτισαι μάρτυς υἱὸς Σεπφώρ. Οὐχ ὡς ἄνθρωπος ὁ Θεὸς διαρτηθῆναι, οὐδ ὡς υἱὸς ἀνθρώπου ἀπειληθῆναι, αὐτὸς εἶπας, οὐχὶ ποιήσει; λαλήσει, καὶ οὐχὶ ἐμμενεῖ; Ἰδοὺ εὐλογεῖν παρείλημμαι· εὐλογήσω, καὶ οὐ μὴ ἀποστρέψω. Οὐκ ἔσται μόχθος ἐν Ἰακὼβ, οὐδὲ ὀφθήσεται πόνος ἐν Ἰσραήλ· Κύριος ὁ θεὸς αὐτοῦ μετ αὐτοῦ, τὰ ἔνδοξα ἀρχόντων ἐν αὐτῷ. Θεὸς ὁ

ἐξαγαγὼν αὐτὸν ἐξ Αἰγύπτου, ὡς δόξα μονοκέρωτος αὐτῷ. Οὐ γάρ ἐστιν οἰωνισμὸς ἐν Ἰακὼβ, οὐδὲ μαντεία ἐν Ἰσραήλ· κατὰ καιρὸν ῥηθήσεται Ἰακὼβ, καὶ τῷ Ἰσραὴλ, τί ἐπιτελέσει ὁ Θεός; Ἰδοὺ λαὸς ὡς σκύμνος ἀναστήσεται, καὶ ὡς λέων γαυρωθήσεται· οὐ κοιμηθήσεται ἕως φάγῃ θήραν, καὶ αἷμα τραυματιῶν πίεται. Καὶ εἶπε Βαλὰκ πρὸς Βαλαὰμ, οὔτε κατάραις καταράσῃ μοι αὐτὸν, οὔτε εὐλογῶν μὴ εὐλογήσῃς αὐτόν. Καὶ ἀποκριθεὶς Βαλαὰμ, εἶπε τῷ Βαλὰκ, οὐκ ἐλάλησά σοι, λέγων, τὸ ῥῆμα ὃ ἐὰν λαλήσῃ ὁ Θεὸς, τοῦτο ποιήσω; Καὶ εἶπε Βαλὰκ πρὸς Βαλαὰμ, δεῦρο παραλάβω σε εἰς τόπον ἄλλον, εἰ ἀρέσει τῷ Θεῷ, καὶ κατάρασαί μοι αὐτὸν ἐκεῖθεν. Καὶ παρέλαβε Βαλὰκ τὸν Βαλαὰμ ἐπὶ κορυφὴν τοῦ Φογὼρ, τὸ παρατεῖνον εἰς τὴν ἔρημον. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ, οἰκοδόμησόν μοι ὧδε ἑπτὰ βωμοὺς, καὶ ἑτοίμασόν μοι ὧδε ἑπτὰ μόσχους, καὶ ἑπτὰ κριούς. Καὶ ἐποίησε Βαλὰκ καθάπερ εἶπεν αὐτῷ Βαλαάμ, καί ἀνήνεγκε μόσχον καὶ κριὸν ἐπὶ τὸν βωμόν.

# 24

Καὶ ἰδὼν Βαλαὰμ ὅτι καλόν ἐστιν ἐναντίον Κυρίου εὐλογεῖν τὸν Ἰσραὴλ, οὐκ ἐπορεύθη κατὰ τὸ εἰωθὸς αὐτῷ εἰς συνάντησιν τοῖς οἰωνοῖς, καὶ ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν ἔρημον. Καὶ ἐξάρας Βαλαὰμ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καθορᾷ τὸν Ἰσραὴλ ἐστρατοπεδευκότα κατὰ φυλάς· καὶ ἐγένετο ἐπ αὐτῷ πνεῦμα Θεου. Καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπε, φησὶ Βαλαὰμ υἱὸς Βεὼρ, φησὶν ὁ ἄνθρωπος ὁ ἀληθινῶς ὁρῶν, φησὶν ἀκούων λόγια ἰσχυροῦ, ὅστις ὅρασιν Θεοῦ εἶδεν ἐν ὕπνῳ· ἀποκεκαλυμμένοι οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ. Ὡς καλοὶ οἱ οἶκοί σου Ἰακὼβ, αἱ σκηναί σου

Ἰσραήλ· Ὡσεὶ νάπαι σκιάζουσαι, καὶ ὡσεὶ παράδεισοι ἐπὶ ποταμῷ, καὶ ὡσεὶ, σκηναὶ, ἃς ἔπηξε Κύριος, καί ὡσεὶ κέδροι παρ ὕδατα. Ἐξελεύσεται ἄνθρωπος ἐκ τοῦ σπέρματος αὐτοῦ, καὶ κυριεύσει ἐθνῶν πολλῶν· καὶ ὑψωθήσεται ἡ Γὼγ βασιλεία, καὶ αὐξηθήσεται βασιλεία αὐτοῦ. Θεὸς ὡδήγησεν αὐτὸν ἐξ Αἰγύπτου· ὡς δόξα μονοκέρωτος αὐτῷ· ἔδεται ἔθνη ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ τὰ πάχη αὐτῶν ἐκμυελιεῖ, καὶ ταῖς βολίσιν αὐτοῦ κατατοξεύσει ἐχθρόν. Κατακλιθεὶς ἀνεπαύσατο ὡς λέων, καὶ ὡς σκύμνος· τίς ἀναστήσει αὐτόν· οἱ εὐλογοῦντές σε, εὐλόγηνται· καὶ οἱ καταρώμενοί σε, κεκατήρανται. Καὶ ἐθυμώθη Βαλὰκ ἐπὶ Βαλαὰμ, καὶ συνεκρότησε ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, καὶ εἶπε Βαλὰκ πρὸς Βαλαὰμ, καταρᾶσθαι τὸν ἐχθρόν μου κέκληκά σε, καὶ ἰδοὺ εὐλογῶν εὐλόγησας τρίτον τοῦτο. Νῦν οὖν φεῦγε εἰς τὸν τόπον σου· εἶπα, τιμήσω σε, καὶ νῦν ἐστέρησέ σε Κύριος τῆς δόξης. Καὶ εἶπε Βαλαὰμ πρὸς Βαλὰκ, οὐχὶ καὶ τοῖς ἀγγέλοις σου οὓς ἀπέστειλας πρὸς με ἐλάλησα, λέγων, ἐάν μοι δῷ Βαλὰκ πλήρη τὸν οἶκον αὐτοῦ ἀργυρίου καὶ χρυσίου, οὐ δυνήσομαι παραβῆναι τὸ ῥῆμα Κυρίου ποιῆσαι αὐτὸ καλὸν ἢ πονηρὸν παρ ἐμαυτοῦ· ὅσα ἂν εἴπῃ ὁ Θεός, ταῦτα ἐρῶ. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἀποτρέχω εἰς τὸν τόπον μου· δεῦρο, συμβουλεύσω σοι, τί ποιήσει ὁ λαὸς οὗτος τὸν λαόν σου ἐπ ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν. Καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπε, Φησὶ Βαλαὰμ υἱὸς Βεὼρ, φησὶν ὁ ἄνθρωπος ὁ ἀληθινῶς ὁρῶν, ἀκούων λόγια Θεοῦ, ἐπιστάμενος ἐπιστήμην παρὰ ὑψίστου, καὶ ὅρασιν Θεοῦ ἰδὼν ἐν ὕπνῳ· ἀποκεκαλυμμένοι οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ. Δείξω αὐτῷ, καὶ οὐχὶ νῦν· μακαρίζω, καὶ οὐκ ἐγγίζει· ἀνατελεῖ ἄστρον ἐξ Ἰακὼβ, ἀναστήσεται ἄνθρωπος ἐξ Ἰσραήλ· καὶ θραύσει τοὺς ἀρχηγοὺς Μωὰβ, καῖ προνομεύσει πάντας υἱοὺς Σήθ. Καὶ ἔσται Ἐδὼμ κληρονομία, καὶ ἔσται κληρονομία Ἡσαῦ ὁ ἐχθρὸς αὐτοῦ· καὶ

Ἰσραὴλ ἐποίησεν ἐν ἰσχύϊ. Καὶ ἐξεγερθήσεται ἐξ Ἰακὼβ, καὶ ἀπολεῖ σωζόμενον ἐκ πόλεως. Καὶ ἰδὼν τὸν Ἀμαλὴκ, καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπεν, ἀρχὴ ἐθνῶν Ἀμαλὴκ, καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν ἀπολεῖται. Καὶ ἰδὼν τὸν Κεναῖον, καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπεν, ἰσχυρὰ ἡ κατοικία σου· καὶ ἐὰν θῇς ἐν πέτρᾳ τὴν νοσσίαν σου, καὶ ἐὰν γένηται τῷ Βεὼρ νοσσιὰ πανουργίας, Ἀσσύριοι αἰχμαλωτεύσουσί σε. Καὶ ἰδὼν τὸν Ὢγ, καὶ ἀναλαβὼν τὴν παραβολὴν αὐτοῦ, εἶπεν, ὢ ὢ, τίς ζήσεται, ὅταν θῇ ταῦτα ὁ Θεός; Καὶ ἐξελεύσεται ἐκ χειρῶς Κιτιαίων, καὶ κακώσουσιν Ἀσσοὺρ, καὶ κακώσουσιν Ἑβραίους, καὶ αὐτοὶ ὁμοθυμαδὸν ἀπολοῦνται. Καὶ ἀναστὰς Βαλαὰμ ἀπῆλθεν, ἀποστραφεὶς εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ· καὶ Βαλὰκ ἀπῆλθε πρὸς ἑαυτόν.

# 25

Καὶ κατέλυσεν Ἰσραὴλ ἐν Σαττεὶν, καὶ ἐβεβηλώθη ὁ λαὸς ἐκπορνεῦσαι εἰς τὰς θυγατέρας Μωάβ. Καὶ ἐκάλεσαν αὐτοὺς εἰς τὰς θυσίας τῶν εἰδώλων αὐτῶν· καὶ ἔφαγεν ὁ λαὸς τῶν θυσιῶν αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν· Καὶ ἐτελέσθη Ἰσραὴλ τῷ Βεελφεγώρ· καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος τῷ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Κύριος τῷ Μωυσῇ, λάβε πάντας τοὺς ἀρχηγοὺς τοῦ λαοῦ, καὶ παραδειγμάτισον αὐτοὺς Κυρίῳ κατέναντι τοῦ ἡλίου, καὶ ἀποστραφήσεται ὀργὴ θυμοῦ Κυρίου ἀπὸ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Μωυσῆς ταῖς φυλαῖς Ἰσραήλ, ἀποκτείνατε ἕκαστος τὸν οἰκεῖον αὐτοῦ τὸν τετελεσμένον τῷ Βεελφεγώρ. Καὶ ἰδοὺ ἄνθρωπος τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐλθὼν προσήγαγε τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ πρὸς τὴν Μαδιανίτιν ἐναντίον Μωυσῆ, καὶ ἐναντίον πάσης συναγωγῆς υἱῶν

Ἰσραήλ· αὐτοὶ δὲ ἔκλαιον παρὰ τὴν θύραν τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ἰδὼν Φινεὲς υἱὸς Ἐλεάζαρ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως, ἐξανέστη ἐκ μέσου τῆς συναγωγῆς, καὶ λαβὼν σειρομάστην ἐν τῇ χειρὶ, εἰσῆλθεν ὀπίσω τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Ἰσραηλίτου εἰς τὴν κάμινον, καὶ ἀπεκέντησεν ἀμφοτέρους, τόν τε ἄνθρωπον τὸν Ἰσραηλίτην, καὶ τὴν γυναῖκα διὰ τῆς μήτρας αὐτῆς· καὶ ἐπαύσατο ἡ πληγὴ ἀπὸ υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένοντο οἱ τεθνηκότες ἐν τῇ πληγῇ, τέσσαρες καὶ εἴκοσι χιλιάδες. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, Φινεὲς υἱὸς Ἐλεάζαρ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως κατέπαυσε τὸν θυμόν μου ἀπὸ υἱῶν Ἰσραὴλ, ἐν τῷ ζηλῶσαί μου τὸν ζῆλον ἐν αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐξανήλωσα τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐν τῷ ζήλῳ μου. Οὕτως εἰπον, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι αὐτῷ διαθήκην εἰρήνης, καὶ ἔσται αὐτῷ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ μετ αὐτὸν διαθήκη ἱερατείας αἰωνία, ἀνθ ὧν ἐζήλωσεν τῷ Θεῷ αὐτοῦ, καὶ ἐξιλάσατο περὶ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Τὸ δὲ ὄνομα τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Ἰσραηλείτου τοῦ πεπληγότος, ὃς ἐπλήγη μετὰ τῆς Μαδιανίτιδος, Ζαμβρὶ, υἱὸς Σαλμὼν, ἄρχων οἴκου πατριᾶς τῶν Συμεών. Καὶ ὄνομα τῇ γυναικὶ τῇ Μαδιανίτιδι τῇ πεπληγυίᾳ, Χασβὶ, θυγάτηρ Σοὺρ, ἄρχοντος ἔθνους Ὀμμὼθ· οἴκου πατριᾶς ἐστι τῶν Μαδιάμ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐχθραίνετε τοῖς Μαδιηναίοις καὶ πατάξατε αὐτοὺς, ὅτι ἐχθραίνουσιν αὐτοὶ ὑμῖν ἐν δολιότητι, ὅσα δολιοῦσιν ὑμᾶς διὰ Φογὼρ, καὶ διὰ Χασβὶ θυγατέρα ἄρχοντος Μαδιὰμ ἀδελφὴν αὐτῶν, τὴν πεπληγυῖαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς πληγῆς διὰ Φογώρ.

# 26

Καὶ ἐγένετο μετὰ τὴν πληγὴν, καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν καὶ Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα, λέγων, λάβε τὴν ἀρχὴν πάσης συναγωγῆς υἱῶν Ἰσραὴλ ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος παρατάξασθαι ἐν Ἰσραήλ. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς ἐν Ἀραβὼθ Μωὰβ ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχὼ, λέγων, ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ οἱ ἐξελθόντες ἐξ Αἰγύπτου, Ῥουβὴν πρωτότοκος Ἰσραήλ· υἱοὶ δὲ Ῥουβὴν Ἐνὼχ, καὶ δῆμος τοῦ Ἐνώχ· τῷ Φαλλοῦ, δῆμος τοῦ Φαλλουί. Τῷ Ἀσρὼν, δῆμος τοῦ Ἀσρωνεί· τῷ Χαρμὶ, δῆμος τοῦ Χαρμί. Οὗτοι δῆμοι Ῥουβήν· καὶ ἐγένετο ἡ ἐπίσκεψις αὐτῶν, τρεῖς καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ ἑπτακόσιοι καὶ τριάκοντα. Καὶ υἱοῖ Φαλλοὺ, Ἐλιάβ. Καὶ υἱοὶ Ἐλιὰβ, Ναμουὴλ, καὶ Δαθὰν, καὶ Ἀβειρών· οὗτοι ἐπίκλητοι τῆς συναγωγῆς· οὗτοί εἰσιν οἱ ἐπισυστάντες ἐπὶ Μωυσῆν καὶ Ἀαρὼν ἐν τῇ συναγωγῇ Κορὲ, ἐν τῇ ἐπισυστάσει Κυρίου. Καὶ ἀνοίξασα ἡ γῆ τὸ στόμα αὐτῆς, κατέπιεν αὐτοὺς καὶ Κορὲ, ἐν τῷ θανάτῳ τῆς συναγωγῆ αὐτοῦ, ὅτε κατέφαγε τὸ πῦρ τοὺς πεντήκοντα καὶ διακοσίους, καὶ ἐγενήθησαν ἐν σημείῳ· οἱ δὲ υἱοὶ Κορὲ οὐκ ἀπέθανον. Καὶ οἱ υἱοὶ Συμεὼν, ὁ δῆμος τῶν υἱῶν Συμεών· τῷ Ναμουὴλ, δῆμος ὁ Ναμουηλί· τῷ Ἰαμὶν, δῆμος ὁ Ἰαμινί· τῷ Ἰαχὶν, δῆμος Ἰαχινί· Τῷ Ζαρὰ δῆμος ὁ Ζαραΐ· τῷ Σαοὺλ, δῆμος ὁ Σαουλί. Οὗτοι δῆμοι Συμεὼν ἐκ τῆς ἐπισκέψεως αὐτῶν, δύο καὶ εἴκοσι χιλιάδες καὶ διακόσιοι. Υἱοὶ δὲ Ἰούδα, Ἦρ καὶ Αὐνάν· καὶ ἀπέθανον Ἦρ καὶ Αὐνὰν ἐν γῇ Χαναάν. Καὶ ἐγένοντο οἱ υἱοὶ Ἰούδα κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Σηλὼμ, δῆμος ὁ Σηλωνί· τῷ Φαρὲς, δῆμος ὁ Φαρεσί· τῷ Ζαρὰ, δῆμος ὁ Ζαραΐ. Καὶ ἐγένοντο οἱ υἱοὶ Φαρὲς, τῷ Ἀσρὼν, δῆμος ὁ Ἀσρωνί· τῷ Ἰαμοῦν, δῆμος ὁ Ἰαμουνί. Οὗτοι δῆμοι τοῦ Ἰούδα κατὰ τὴν ἐπίσκεψιν αὐτῶν, ἓξ καὶ ἑβδομήκοντα χιλιάδες

καὶ πεντακόσιοι. Καὶ υἱοὶ Ἰσσάχαρ κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Θωλᾷ, δῆμος ὁ Θωλαΐ· τῷ Φουᾷ, δῆμος ὁ Φουαΐ· Τῷ Ἰασοὺβ, δῆμος ὁ Ἰασουβί· τῷ Σαμρὰμ, δῆμος ὁ Σαμραμί. Οὗτοι δῆμοι Ἰσσάχαρ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, τέσσαρες καὶ ἑξήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Υἱοὶ Ζαβουλὼν κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Σαρὲδ, δῆμος ὁ Σαρεδί· τῷ Ἀλλὼν, δῆμος ὁ Ἀλλωνί· τῷ Ἀλλὴλ, δῆμος ὁ Ἀλληλί. Οὗτοι δῆμοι Ζαβουλὼν ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, ἑξήκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Υἱοὶ Γὰδ κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Σαφὼν, δῆμος ὁ Σαφωνί· τῷ Ἀγγὶ, δῆμος ὁ Ἀγγί· τῷ Σουνὶ, δῆμος ὁ Σουνί· τῷ Ἀζενὶ, δῆμος ὁ Ἀζενί· τῷ Ἀδδὶ, δῆμος ὁ Ἀδδί· τῷ Ἀροδὶ, δῆμος ὁ Αροαδί· τῷ Ἀριὴλ, δῆμος ὁ Ἀριηλί. Οὗτοι δῆμοι υἱῶν Γὰδ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, τέσσαρες καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Υἱοὶ Ἀσὴρ κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Ἰαμὶν, δῆμος ὁ Ἰαμινί· τῷ Ἰεσοὺ, δῆμος ὁ Ἰεσουΐ· τῷ Βαριὰ, δῆμος ὁ Βαριαΐ. Τῷ Χοβὲρ, δῆμος ὁ Χοβερί· τῷ Μελχιὴλ, δῆμος ὁ Μελχιηλί. Καὶ τὸ ὄνομα θυγατρὸς Ἀσὴρ, Σάρα. Οὗτοι δῆμοι Ἀσὴρ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, τρεῖς καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Υἱοὶ Ἰωσὴφ κατὰ δήμους αὐτῶν, Μανασσῆ καὶ Ἐφραίμ. Υἱοὶ Μανασσῆ. Τῷ Μαχὶρ, δῆμος ὁ Μαχιρί· καὶ Μαχὶρ ἐγέννησε τὸν Γαλαάδ· τῷ Γαλαὰδ, δῆμος ὁ Γαλααδί. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Γαλαάδ· Ἀχιέζερ, δῆμος ὁ Ἀχιεζερί· τῷ Χελὲγ, δῆμος ὁ Χελεγί. Τῷ Ἐσριὴλ, δῆμος ὁ Ἐσριηλί· τῷ Συχὲμ, δῆμος ὁ Συχεμί· Τῷ Συμαὲρ, δῆμος ὁ Συμαερί· καὶ τῷ Ὀφὲρ, δῆμος ὁ Ὀφερὶ. Καὶ τῷ Σαλπαὰδ, υἱῷ Ὀφὲρ, οὐκ ἐγένοντο αὐτῷ υἱοὶ, ἀλλ ἢ θυγατέρες· καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν θυγατέρων Σαλπαάδ· Μαλὰ, καὶ Νουὰ, καὶ Ἐγλὰ, καὶ Μελχὰ, καὶ Θερσά. Οὗτοι δῆμοι Μανασσὴ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, δύο καὶ πεντήκοντα χιλιαδες καὶ ἑπτακόσιοι. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Ἐφραίμ· τῷ Σουθαλὰ, δῆμος ὁ Σουθαλάν· τῷ Ταναὰχ, δῆμος ὁ Ταναχί. Οὗτοι υἱοὶ Σουθαλά· τῷ

Ἐδὲν, δῆμος ὁ Ἐδενί. Οὗτοι δῆμοι Ἐφραὶμ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, δύο καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι· οὗτοι δῆμοι υἱῶν Ἰωσὴφ κατὰ δήμους αὐτῶν. Υἱοὶ Βενιαμὶν κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Βαλὲ, δῆμος ὁ Βαλί· τῷ Ἀσυβὴρ, δῆμος ὁ Ἀσυβηρί· τῷ Ἰαχιρὰν, δῆμος ὁ Ἰαχιρανί. Τῷ Σωφὰν, δῆμος ὁ Σωφανι. Καὶ ἐγένοντο οἱ υἱοὶ Βαλὲ, Ἀδὰρ, καὶ Νοεμάν· τῷ Ἀδὰρ, δῆμος ὁ Αδαρί· καὶ τῷ Νοεμὰν, δῆμος ὁ Νοεμανί. Οὗτοι υἱοὶ Βενιαμὶν κατὰ δήμους αὐτῶν ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, πέντε καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι. Καὶ υἱοὶ Δὰν κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Σαμὲ, δῆμος ὁ Σαμεῖ, οὗτοι δῆμοι Δὰν κατὰ δήμους αὐτῶν. Πάντες οἱ δῆμοι Σαμεῖ κατ ἐπισκοπὴν αὐτῶν, τέσσαρες καὶ ἑξήκοντα χιλιάδες καὶ τετρακόσιοι. Υἱοὶ Νεφθαλὶ κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Ἀσιὴλ· δῆμος ὁ Ἀσιηλί· τῷ Γαυνὶ, δῆμος ὁ Γαυνί. Τῷ Ἰεσὲρ, δῆμος ὁ Ἰεσερί· τῷ Σελλὴμ, δῆμος ὁ Σελλημί. Οὗτοι δῆμοι Νεφθαλὶ ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν, τεσσαράκοντα χιλιάδες καὶ τριακόσιοι. Αὕτη ἡ ἐπίσκεψις υἱῶν Ἰσραὴλ, ἑξακόσιαι χιλιάδες καὶ χίλιοι καὶ ἑπτακόσιοι καὶ τριάκοντα. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, τούτοις μερισθήσεται ἡ γῆ, κληρονομεῖν ἐξ ἀριθμοῦ ὀνομάτων. Τοῖς πλείοσι πλεονάσεις τὴν κληρονομίαν, καὶ τοῖς ἐλάττοσιν ἐλαττώσεις τὴν κληρονομίαν αὐτῶν· ἑκάστῳ, καθὼς ἐπεσκέπησαν, δοθήσεται ἡ κληρονομία αὐτῶν. Διὰ κλήρων μερισθήσεται ἡ γῆ τοῖς ὀνόμασι· κατὰ φυλὰς πατριῶν αὐτῶν κληρονομήσουσιν. Ἐκ τοῦ κλήρου μεριεῖς τὴν κληρονομίαν αὐτῶν ἀναμέσον πολλῶν καὶ ὀλίγων. Καὶ υἱοὶ Λευὶ κατὰ δήμους αὐτῶν· τῷ Γεδσὼν, δῆμος ὁ Γεδσωνί· τῷ Καὰθ, δῆμος ὁ Κααθί· τῷ Μεραρὶ, δῆμος ὁ Μεραρί. Οὗτοι δῆμοι υἱῶν Λευί· δῆμος ὁ Λοβενί, δῆμος ὁ Χεβρωνὶ, δῆμος ὁ Κορὲ, καὶ δῆμος ὁ Μουσί· καὶ Καὰθ ἐγέννησε τὸν Ἀμράμ. Τὸ δὲ ὄνομα τῆς γυναικὸς αὐτοῦ Ἰωχαβὲδ,

θυγάτηρ Λευὶ, ἣ ἔτεκε τούτους τῷ Λευὶ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ἔτεκε τῷ Ἀμρὰμ τὸν Ἀαρὼν καὶ Μωυσῆν, καὶ Μαριὰμ τὴν ἀδελφὴν αὐτῶν. Καὶ ἐγενήθησαν τῷ Ἀαρὼν, ὅ, τε Ναδὰβ, καὶ Ἀβιοὺδ, καὶ Ἐλεάζαρ, καὶ Ἰθάμαρ. Καὶ ἀπέθανε Ναδὰβ καὶ Ἀβιοὺδ ἐν τῷ προσφέρειν αὐτοὺς πῦρ ἀλλότριον ἔναντι Κυρίου ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾷ. Καὶ ἐγενήθησαν ἐξ ἐπισκέψεως αὐτῶν τρεῖς καὶ εἴκοσι χιλιάδες, πᾶν ἀρσενικὸν ἀπὸ μηνιαίου καὶ ἐπάνω· οὐ γὰρ συνεπεσκέπησαν ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραὴλ, ὅτι οὐ δίδοται αὐτοῖς κλῆρος ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ αὕτη ἡ ἐπίσκεψις Μωυσῆ καὶ Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, οἱ ἐπεσκέψαντο τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐν Ἀραβὼθ Μωὰβ, ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχώ. Καὶ ἐν τούτοις οὐκ ἦν ἄνθρωπος τῶν ἐπεσκεμμένων ὑπὸ Μωυσῆ καὶ Ἀαρὼν, οὓς ἐπεσκέψαντο τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾷ. Ὅτι εἶπε Κύριος αὐτοῖς, θανάτῳ ἀποθανοῦνται ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ οὐ κατελείφθη ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς, πλὴν Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννὴ, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυή.

# 27

Καὶ προσελθοῦσαι αἱ θυγατέρες Σαλπαὰδ υἱοῦ Ὀφὲρ, υἱοῦ Γαλαὰδ, υἱοῦ Μαχιρ, τοῦ δήμου Μανασσῆ, τῶν υἱῶν Ἰωσὴφ, καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα αὐτῶν, Μααλὰ, καὶ Νουὰ, καὶ Ἐγλὰ, καὶ Μελχὰ, καὶ Θερσὰ, καὶ στᾶσαι ἔναντι Μωυσῆ, καὶ ἔναντι Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἔναντι τῶν ἀρχόντων, καὶ ἔναντι πάσης συναγωγῆς ἐπὶ τῆς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, λέγουσιν, ὁ πατὴρ ἡμῶν ἀπέθανεν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ αὐτὸς οὐκ ἦν ἐν μέσῳ τῆς συναγωγῆς τῆς ἐπισυστάσης ἔναντι Κυρίου ἐν τῇ συναγωγῇ Κορὲ, ὅτι δι ἁμαρτίαν αὐτοῦ ἀπέθανε, καὶ υἱοὶ οὐκ ἐγένοντο αὐτῷ· μὴ

ἐξαλειφθήτω τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς ἡμῶν ἐκ μέσου τοῦ δήμου αὐτοῦ, ὅτι οὐκ ἔστιν αὐτῷ υἱός· δότε ἡμῖν κατάσχεσιν ἐν μέσῳ ἀδελφῶν πατρὸς ἡμῶν. Καὶ προσήγαγε Μωυσῆν τὴν κρίσιν αὐτῶν ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγεν, ὀρθῶς θυγατέρες Σαλπαὰδ λελαλήκασι· δόμα δώσεις αὐταῖς κατάσχεσιν κληρονομίας ἐν μέσῳ ἀδελφῶν πατρὸς αὐτῶν, καὶ περιθήσεις τὸν κλῆρον τοῦ πατρὸς αὐτῶν αὐταῖς. Καὶ τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ λαλήσεις, λέγων, ἄνθρωπος ἐὰν ἀποθάνῃ, καὶ υἱὸς μὴ ᾖ αὐτῷ, περιθήσετε τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ· Ἐὰν δὲ μὴ ᾖ θυγάτηρ αὐτῷ, δώσετε τὴν κληρονομίαν τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ. Ἐὰν δὲ μὴ ὦσιν αὐτῷ ἀδελφοὶ, δώσετε τὴν κληρονομίαν τῷ ἀδελφῷ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Ἐὰν δὲ μὴ ὦσιν ἀδελφοὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, δώσετε τὴν κληρονομίαν τῷ οἰκείῳ τῷ ἔγγιστα αὐτοῦ ἐκ τῆς φυλῆς αὐτοῦ, κληρονομῆσαι τὰ αὐτοῦ· καὶ ἔσται τοῦτο τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ δικαίωμα κρίσεως, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἀνάβηθι εἰς τὸ ὄρος τὸ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, τοῦτο τὸ ὄρος Ναβαὺ, καὶ ἴδε τὴν γῆν Χαναὰν, ἣν ἐγὼ δίδωμι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν κατασχέσει. Καὶ ὄψῃ αὐτὴν, καὶ προστεθήσῃ πρὸς τὸν λαόν σου καὶ σὺ, καθὰ προσετέθη Ἀαρὼν ὁ ἀδελφός σου ἐν Ὣρ τῷ ὄρει. Διότι παρέβητε τὸ ῥῆμά μου ἐν τῇ ἐρήμῳ Σὶν, ἐν τῷ ἀντιπίπτειν τὴν συναγωγὴν ἁγιάσαι με, οὐχ ἡγιάσατέ με ἐπὶ τῷ ὕδατι ἔναντι αὐτῶν· τοῦτ ἔστι τὸ ὕδωρ ἀντιλογίας ἐν Κάδης ἐν τῇ ἐρήμῳ Σίν. Καὶ εἶπε Μωυσῆς πρὸς Κύριον, ἐπισκεψάσθω Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πνευμάτων καὶ πάσης σαρκὸς ἄνθρωπον ἐπὶ τῆς συναγωγῆς ταύτης, ὅστις ἐξελεύσεται πρὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ ὅστις εἰσελεύσεται πρὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ ὅστις ἐξάξει αὐτοὺς, καὶ ὅστις εἰσάξει αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἔσται ἡ συναγωγὴ Κυρίου ὡσεὶ πρόβατα οἷς οὐκ ἔστι ποιμήν. Καὶ

ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε πρὸς σεαυτὸν Ἰησοῦν υἱὸν Ναυὴ, ἄνθρωπον ὃς ἔχει πνεῦμα ἐν ἑαυτῷ, καὶ ἐπιθήσεις τὰς χεῖράς σου ἐπ αὐτόν· Καὶ στήσεις αὐτὸν ἔναντι Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἐντελῇ αὐτῷ ἔναντι πάσης συναγωγῆς, καὶ ἐντελῇ περὶ αὐτοῦ ἐναντίον αὐτῶν. Καὶ δώσεις τῆς δόξης σου ἐπ αὐτὸν, ὅπως ἂν εἰσακούσωσιν αὐτοῦ οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ ἔναντι Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως στήσεται, καὶ ἐπερωτήσουσιν αὐτὸν τὴν κρίσιν τῶν δήλων ἔναντι Κυρίου· ἐπὶ τῷ στόματι αὐτοῦ ἐξελεύσονται, καὶ ἐπὶ τῷ στόματι αὐτοῦ εἰσελεύσονται αὐτὸς καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ὁμοθυμαδὸν, καὶ πᾶσα ἡ συναγωγή. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς καθὰ ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος· καὶ λαβὼν τὸν Ἰησοῦν, ἔστησεν αὐτὸν ἐναντίον Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἐναντίον πάσης συναγωγῆς, καὶ ἐπέθηκε τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐπ αὐτὸν, καὶ συνέστησεν αὐτὸν καθάπερ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ.

# 28

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἔντειλαι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, λέγων, τὰ δῶρά μου δόματά μου καρπώματά μου εἰς ὀσμὴν εὐωδίας διατηρήσετε προσφέρειν ἐμοὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς μου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ταῦτα τὰ καρπώματα ὅσα προσάξετε Κυρίῳ, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἀμώμους δύο τὴν ἡμέραν εἰς ὁλοκαύτωσιν ἐνδελεχῶς. Τὸν ἀμνὸν τὸν ἕνα ποιήσεις τὸ τοπρωΐ, καὶ τὸν ἀμνὸν τὸν δεύτερον ποιήσεις τὸ πρὸς ἑσπέραν. Καὶ ποιήσεις τὸ δέκατον τοῦ οἰφὶ σεμίδαλιν εἰς θυσίαν ἀναπεποιημένην ἐν ἐλαίῳ ἐν τετάρτῳ τοῦ ἵν. Ὁλοκαύτωμα ἐνδελεχισμοῦ, ἡ γενομένη ἐν τῷ ὄρει Σινᾷ εἰς ὀσμὴν εὐωδίας

Κυρίῳ. Καὶ σπονδὴν αὐτοῦ τὸ τέταρτον τοῦ ἵν τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνί· ἐν τῷ ἁγίῳ σπείσεις σπονδὴν σίκερα Κυρίῳ· καὶ τὸν ἀμνὸν τὸν δεύτερον ποιήσεις τὸ πρὸς ἑσπέραν· κατὰ τὴν θυσίαν αὐτοῦ καὶ κατὰ τὴν σπονδὴν αὐτοῦ ποιήσετε εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων προσάξετε δύο ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἀμώμους, καὶ δύο δέκατα σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ εἰς θυσίαν καὶ σπονδὴν, ὁλοκαύτωμα σαββάτων ἐν τοῖς σαββάτοις ἐπὶ τὴς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντὸς, καὶ τὴν σπονδὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐν ταῖς νεομηνίαις προσάξετε ὁλοκαύτωμα τῷ Κυρίῳ, μόσχους ἐκ βοῶν δύο, καὶ κριὸν ἕνα, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἑπτὰ ἀμώμους· Τρία δέκατα σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, καὶ δύο δέκατα σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ τῷ κριῷ τῷ ἑνί· Δέκατον δέκατον σεμιδάλεως ἀναπεποιημένης ἐν ἐλαίῳ τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, θυσίαν ὀσμὴν εὐωδίας κάρπωμα Κυρίῳ. Ἡ σπονδὴ αὐτῶν τὸ ἥμισυ τοῦ ἵν ἔσται τῷ μόσχῳ τῷ ἑνί· καὶ τὸ τρίτον τοῦ ἵν ἔσται τῷ κριῷ τῷ ἑνί. Καὶ τὸ τέταρτον τοῦ ἵν ἔσται τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ οἴνου· τοῦτο τὸ ὁλοκαύτωμα μῆνα ἐκ μηνὸς εἰς τοὺς μῆνας τοῦ ἐνιαυτοῦ. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας Κυρίῳ, ἐπὶ τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντὸς ποιηθήσεται, καὶ ἡ σπονδὴ αὐτοῦ. Καὶ ἐν τῷ μηνὶ τῷ πρώτῳ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς πάσχα Κυρίῳ. Καὶ τῇ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς τούτου ἑορτή· ἑπτὰ ἡμέρας ἄζυμα ἔδεσθε. Καὶ ἡ ἡμέρα ἡ πρώτη ἐπίκλητος ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε. Καὶ προσάξετε ὁλοκαυτώματα κάρπωμα Κυρίῳ, μόσχους ἐκ βοῶν δύο, κριὸν ἕνα, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἑπτά· ἄμωμοι ἔσονται ὑμῖν. Καὶ θυσία αὐτῶν σεμίδαλις ἀναπεποιημένη ἐν ἐλαίῳ· τρία δέκατα τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, καὶ δύο δέκατα τῷ κριῷ τῷ ἑνί. Δέκατον δέκατον ποιήσεις τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, τοῖς ἑπτὰ ἀμνοῖς. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν

ἕνα περὶ ἁμαρτίας, ἐξιλάσασθαι περὶ ὑμῶν· Πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντὸς τῆς πρωϊνῆς, ὅ ἐστιν ὁλοκαύτωμα ἐνδελεχισμοῦ. Ταῦτα κατὰ ταῦτα ποιήσετε τὴν ἡμέραν εἰς τὰς ἑπτὰ ἡμέρας, δῶρον κάρπωμα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, ἐπὶ τοῦ ὁλοκαυτώματος τοῦ διαπαντὸς ποιήσεις τὴν σπονδὴν αὐτοῦ. Καὶ ἡμέρα ἡ ἑβδόμη κλητὴ ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε ἐν αὐτῇ. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῶν νέων, ὅταν προσφέρητε θυσίαν νέαν Κυρίῳ τῶν ἑβδομάδων, ἐπίκλητος ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε. Καὶ προσάξετε ὁλοκαυτώματα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, μόσχους ἐκ βοῶν δύο, κριὸν ἕνα, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἑπτὰ ἀμώμους. Ἡ θυσία αὐτῶν σεμίδαλις ἀναπεποιημένη ἐν ἐλαίῳ· τρία δέκατα τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, καὶ δύο δέκατα τῷ κριῷ τῷ ἑνί. Δέκατον δέκατον τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, τοῖς ἑπτὰ ἀμνοῖς· καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας, ἐξιλάσασθαι περὶ ὑμῶν· πλὴν τοῦ ὁλοκαυτώματος τοῦ διαπαντός· καὶ τὴν θυσίαν αὐτῶν ποιήσετέ μοι, ἄμωμοι ἔσονται ὑμῖν, καὶ τὰς σπονδὰς αὐτῶν.

# 29

Καὶ τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐπίκλητος ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε· ἡμέρα σημασίας ἔσται ὑμῖν. Καὶ ποιήσετε ὁλοκαυτώματα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, μόσχον ἕνα ἐκ βοῶν, κριὸν ἕνα, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἑπτὰ ἀμώμους. Ἡ θυσία αὐτῶν σεμίδαλις ἀναπεποιημένη ἐν ἐλαίῳ· τρία δέκατα τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, καὶ δύο δέκατα τῷ κρίῳ τῷ ἑνί· Δέκατον δέκατον τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, τοῖς ἑπτὰ ἀμνοῖς· Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας,

ἐξιλάσασθαι περὶ ὑμῶν· Πλὴν τῶν ὁλοκαυτωμάτων τῆς νουμηνίας· καὶ αἱ θυσίαι αὐτῶν, καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν, καὶ τὸ ὁλοκαύτωμα τὸ διαπαντός· καί αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ. Καὶ τῇ δεκάτῃ τοῦ μηνὸς τούτου ἐπίκλητος ἁγία ἔσται ὑμῖν· καὶ κακώσετε τὰς ψυχὰς ὑμῶν, καὶ πᾶν ἔργον οὐ ποιήσετε. Καὶ προσοίσετε ὁλοκαυτώματα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, καρπώματα Κυρίῳ, μόσχον ἐκ βοῶν ἕνα, κριὸν ἕνα, ἀμνους ἐνιαυσίους ἑπτά· ἄμωμοι ἔσονται ὑμῖν. Ἡ θυσία αὐτῶν σεμίδαλις ἀναπεποιημένη ἐν ἐλαίῳ· τρία δέκατα τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, καὶ δύο δέκατα τῷ κριῷ τῷ ἑνί· Δέκατον δέκατον τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, εἰς τοὺς ἑπτὰ ἀμνούς· Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας, ἐξιλάσασθαι περὶ ὑμῶν· πλὴν τὸ περὶ τῆς ἁμαρτίας τῆς ἐξιλάσεως, καὶ ἡ ὁλοκαύτωσις ἡ διαπαντός· ἡ θυσία αὐτῆς, καὶ ἡ σπονδὴ αὐτῆς κατὰ τὴν σύγκρισιν εἰς ὀσμὴν εὐωδίας κάρπωμα Κυρίῳ. Καὶ τῇ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς τοῦ ἑβδόμου τούτου ἐπίκλητος ἁγία ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιήσετε· καὶ ἑορτάσατε αὐτὴν ἑορτὴν Κυρίῳ ἑπτὰ ἡμέρας. Καὶ προσάξετε ὁλοκαυτώματα κάρπωμα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας Κυρίῳ, τῇ ἡμέρᾳ τῇ πρώτῃ μόσχους ἐκ βοῶν τρεῖς καὶ δέκα, κριοὺς δυο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους δεκατέσσαρας· ἄμωμοι ἔσονται. Αἱ θυσίαι αὐτῶν σεμίδαλις ἀναπεποιημένη ἐν ἐλαίῳ· τρία δέκατα τῷ μόσχῳ τῷ ἑνὶ, τοῖς τρισκαίδεκα μόσχοις· καὶ δύο δέκατα τῷ κριῷ τῷ ἑνὶ, ἐπὶ τοὺς δύο κριούς· Δέκατον δέκατον τῷ ἀμνῷ τῷ ἑνὶ, ἐπὶ τοὺς τέσσαρας καὶ δέκα ἀμνούς· Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ μόσχους δώδεκα, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους τέσσαρας καὶ δέκα ἀμώμους. Ἡ θυσία αὐτῶν καὶ ἡ σπονδὴ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ

τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν. καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ μόσχους ἕνδεκα, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους τέσσαρας καὶ δέκα ἀμώμους. Ἡ θυσία αὐτῶν καὶ ἡ σπονδὴ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ μόσχους δέκα, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους τέσσαρας καὶ δέκα ἀμώμους. Αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ πέμπτῃ μόσχους ἐννέα, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους τέσσαρας καὶ δέκα ἀμώμους. Αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἕκτῃ μόσχους ὀκτὼ, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους δεκατέσσαρας ἀμώμους. Αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύγκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδομῃ μόσχους ἑπτὰ, κριοὺς δύο, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους δεκατέσσαρας ἀμώμους. Αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν τοῖς μόσχοις καὶ τοῖς κριοῖς καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν

σύγκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ ἐξόδιον ἔσται ὑμῖν· πᾶν ἔργον λατρευτὸν οὐ ποιησετε ἐν αὐτῇ. Καὶ προσάξετε ὁλοκαυτώματα εἰς ὀσμὴν εὐωδίας καρπώματα τῷ Κυρίῳ, μόσχον ἕνα, κριὸν ἕνα, ἀμνοὺς ἐνιαυσίους ἑπτὰ ἀμώμους. Αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν τῷ μόσχῳ καὶ τῷ κριῷ καὶ τοῖς ἀμνοῖς κατὰ ἀριθμὸν αὐτῶν, κατὰ τὴν σύνκρισιν αὐτῶν. Καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν ἕνα περὶ ἁμαρτίας· πλὴν τῆς ὁλοκαυτώσεως τῆς διαπαντός· αἱ θυσίαι αὐτῶν καὶ αἱ σπονδαὶ αὐτῶν. Ταῦτα ποιήσετε Κυρίῳ ἐν ταῖς ἑορταῖς ὑμῶν, πλὴν τῶν εὐχῶν ὑμῶν, καὶ τὰ ἑκούσια ὑμῶν, καὶ τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν, καὶ τὰς θυσίας ὑμῶν, καὶ τὰς σπονδὰς ὑμῶν, καὶ τὰ σωτήρια ὑμῶν.

# 30

Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς πρὸς τοὺς ἄρχοντας τῶν φυλῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, λέγων, τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ συνέταξε Κύριος. Ἄνθρωπος ἄνθρωπος ὃς ἂν εὔξηται εὐχὴν Κυρίῳ, ἢ ὀμόσῃ ὅρκον, ἢ ὁρίσηται ὁρισμῷ περὶ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, οὐ βεβηλώσει τὸ ῥῆμα αὐτοῦ· πάντα ὅσα ἂν ἐξέλθῃ ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ, ποιήσει. Ἐὰν δὲ εὔξηται γυνὴ εὐχὴν Κυρίῳ, ἢ ὁρίσηται ὁρισμὸν ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἐν τῇ νεότητι αὐτῆς, καὶ ἀκούσῃ ὁ πατὴρ αὐτῆς τὰς εὐχὰς αὐτῆς, καὶ τοὺς ὁρισμοὺς αὐτῆς, οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, καὶ παρασιωπήσῃ αὐτῆς ὁ πατὴρ, καὶ στήσονται πᾶσαι αἱ εὐχαὶ αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ὁρισμοὶ

οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, μενοῦσιν αὐτῇ· Ἐὰν δὲ ἀνανεύων ἀνανεύσῃ ὁ πατὴρ αὐτῆς, ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἀκούσῃ πάσας τὰς εὐχὰς αὐτῆς καὶ τοὺς ὁρισμοὺς, οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, οὐ στήσονται· καὶ Κύριος καθαριεῖ αὐτὴν, ὅτι ἀνένευσεν ὁ πατὴρ αὐτῆς. Ἐὰν δὲ γενομένη γένηται ἀνδρὶ, καὶ αἱ εὐχαὶ αὐτῆς ἐπ αὐτῇ κατὰ τὴν διαστολὴν τῶν χειλέων αὐτῆς, οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, καὶ ἀκούσῃ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, καὶ παρασιωπήσῃ αὐτῇ ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἀκούσῃ, καὶ οὕτω στήσονται πᾶσαι αἱ εὐχαὶ αὐτῆς, καὶ οἱ ὁρισμοὶ αὐτῆς, οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, στήσονται. Ἐὰν δὲ ἀνανεύων ἀνανεύσῃ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ᾗ ἐὰν ἡμέρᾳ ἀκούσῃ, πᾶσαι αἱ εὐχαὶ αὐτῆς, καὶ οἱ ὁρισμοὶ αὐτῆς οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, οὐ μενοῦσιν, ὅτι ὁ ἀνὴρ ἀνένευσεν ἀπ αὐτῆς· καὶ Κύριος καθαριεῖ αὐτήν. Καὶ εὐχὴ χήρας καὶ ἐκβεβλημένης ὅσα ἐὰν εὔξηται κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, μενοῦσιν αὐτῇ. Ἐὰν δὲ ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς ἡ εὐχὴ αὐτῆς, ἢ ὁ ὁρισμὸς κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς μεθ ὅρκου, καὶ ἀκούσῃ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, καὶ παρασιωπήσῃ αὐτῇ, καὶ μὴ ἀνανεύσῃ αὐτῇ, καὶ στήσονται πᾶσαι αἱ εὐχαὶ αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ὁρισμοὶ αὐτῆς οὓς ὡρίσατο κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, στήσονται κατ αὐτῆς. Ἐὰν δὲ περιελὼν περιέλῃ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἀκούσῃ, πάντα ὅσα ἐὰν ἐξέλθῃ ἐκ τῶν χειλέων αὐτῆς κατὰ τὰς εὐχὰς αὐτῆς, καὶ κατὰ τοὺς ὁρισμοὺς τοὺς κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτῆς, οὐ μενεῖ αὐτῇ· ὁ ἀνὴρ αὐτῆς περιεῖλε, καὶ Κύριος καθαριεῖ αὐτήν. Πᾶσα εὐχὴ καὶ πᾶς ὅρκος δεσμοῦ κακῶσαι ψυχὴν, ὁ ἀνὴρ αὐτῆς στήσει αὐτῇ, καὶ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς περιελεῖ Ἐὰν δὲ σιωπῶν παρασιωπήσῃ αὐτῇ ἡμέραν ἐξ ἡμέρας, καὶ στήσει αὐτῇ πάσας τὰς εὐχὰς αὐτῆς, καὶ τοὺς ὁρισμοὺς τοὺς ἐπ αὐτῆς στήσει αὐτῇ, ὅτι ἐσιώπησεν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἤκουσεν. Ἐὰν δὲ περιελὼν περιέλῃ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς μετὰ

τὴν ἡμέραν ἣν ἤκουσε, καὶ λήψεται τὴν ἁμαρτίαν αὐτοῦ. Ταῦτα τὰ δικαιώματα ὅσα ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ, ἀναμέσον ἀνδρὸς καὶ γυναικὸς αὐτοῦ, καὶ ἀναμέσον πατρὸς καὶ θυγατρὸς ἐν νεότητι ἐ οἴκῳ πατρός.

# 31

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἐκδίκει τὴν ἐκδίκησιν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐκ τῶν Μαδιανιτῶν, καὶ ἔσχατον προστεθήσῃ πρὸς τὸν λαόν σου. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς πρὸς τὸν λαὸν, λέγων, ἐξοπλίσατε ἐξ ὑμῶν ἄνδρας, καὶ παρατάξασθε ἔναντι Κυρίου ἐπὶ Μαδιὰν, ἀποδοῦναι ἐκδίκησιν παρὰ τοῦ Κυρίου τῇ Μαδιάν. Χιλίους ἐκ φυλῆς, χιλίους ἐκ φυλῆς, ἐκ πασῶν φυλῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἀποστείλατε παρατάξασθαι. Καὶ ἐξηρίθμησαν ἐκ τῶν χιλιάδων Ἰσραὴλ χιλίους ἐκ φυλῆς, δώδεκα χιλιάδας ἐνωπλισμένοι εἰς παράταξιν. Καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς Μωυσῆς χιλίους ἐκ φυλῆς, χιλίους ἐκ φυλῆς σὺν δυνάμει αὐτῶν, καὶ Φινεὲς υἱὸν Ἐλεάζαρ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως· καὶ τὰ σκεύη τὰ ἅγια, καὶ αἱ σάλπιγγες τῶν σημασιῶν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Καὶ παρετάξαντο ἐπὶ Μαδιὰν, καθὰ ἐνετείλατο Κύριος Μωυσῇ· καὶ ἀπέκτειναν πᾶν ἀρσενικόν. Καὶ τοὺς βασιλεῖς Μαδιὰν ἀπέκτειναν ἅμα τοῖς τραυματίαις αὐτῶν· καὶ τὸν Εὐὶν, καὶ τὸν Ῥοκὸν, καὶ τὸν Σοὺρ, καὶ τὸν Οὖρ, καὶ τὸν Ῥοβὸκ, πέντε βασιλεῖς Μαδιάν· καὶ τὸν Βαλαὰμ υἱὸν Βεὼρ ἀπέκτειναν ἐν ῥομφαίᾳ σὺν τοῖς τραυματίαις αὐτῶν· Καὶ ἐπρονόμευσαν τὰς γυναῖκας Μαδιὰν, καὶ τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ ἔγκτητα αὐτῶν· καὶ τὴν δύναμιν αὐτῶν ἐπρονόμευσαν· Καὶ πάσας τὰς πόλεις αὐτῶν τὰς ἐν ταῖς

κατοικίαις αὐτῶν, καὶ τὰς ἐπαύλεις αὐτῶν ἐνέπρησαν ἐν πυρί. Καὶ ἔλαβον πᾶσαν τὴν προνομὴν αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ σκῦλα αὐτῶν ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους. Καὶ ἤγαγον πρὸς Μωυσῆν καὶ πρὸς Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα, καὶ πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραὴλ, τὴν αἰχμαλωσίαν, καὶ τὰ σκύλα, καὶ τὴν προνομὴν εἰς τὴν παρεμβολὴν εἰς Ἀραβὼθ Μωὰβ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχώ. Καὶ ἐξῆλθε Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῆς συναγωγῆς εἰς συνάντησιν αὐτοῖς ἔξω τῆς παρεμβολῆς. Καὶ ὠργίσθη Μωυσῆς ἐπὶ τοῖς ἐπισκόποις τῆς δυνάμεως, χιλιάρχοις καὶ ἑκατοντάρχοις τοῖς ἐρχομένοις ἐκ τῆς παρατάξεως τοῦ πολέμου. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Μωυσῆς, ἵνατί ἐζωγρήσατε πᾶν θῆλυ; Αὗται γὰρ ἦσαν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ κατὰ τὸ ῥῆμα Βαλαὰμ τοῦ ἀποστῆσαι καὶ ὑπεριδεῖν τὸ ῥῆμα Κυρίου, ἕνεκεν Φογώρ· καὶ ἐγένετο ἡ πληγὴ ἐν τῇ συναγωγῇ Κυρίου. Καὶ νῦν ἀποκτείνατε πᾶν ἀρσενικὸν ἐν πάσῃ τῇ ἀπαρτίᾳ, πᾶσαν γυναῖκα, ἥτις ἔγνω κοίτην ἄρσενος, ἀποκτείνατε. Καὶ πᾶσαν τὴν ἀπαρτίαν τῶν γυναικῶν, ἥτις οὐκ οἶδε κοίτην ἄρσενος, ζωγρήσατε αὐτάς. Καὶ ὑμεῖς παρεμβάλετε ἔξω τῆς παρεμβολῆς ἑπτὰ ἡμέρας· πᾶς ὁ ἀνελὼν καὶ ὁ ἁπτόμενος τοῦ τετρωμένου ἁγνισθήσεται τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ὑμεῖς καὶ ἡ αἰχμαλωσία ὑμῶν. Καὶ πᾶν περίβλημα καὶ πᾶν σκεῦος δερμάτινον, καὶ πᾶσαν ἐργασίαν ἐξ αἰγείας, καὶ πᾶν σκεῦος ξύλινον ἀφαγνιεῖτε. Καὶ εἶπεν Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς πρὸς τοὺς ἄνδρας τῆς δυνάμεως τοὺς ἐρχομένους ἐκ τῆς παρατάξεως τοῦ πολέμου, τοῦτο τὸ δικαίωμα τοῦ νόμου ὃ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Πλὴν τοῦ χρυσίου καὶ τοῦ ἀργυρίου καὶ χαλκοῦ καὶ σιδήρου καὶ μολίβου καὶ κασσιτέρου, πᾶν πρᾶγμα ὃ διελεύσεται ἐν πυρὶ, καὶ καθαρισθήσεται, ἀλλ ἢ τῷ ὕδατι τοῦ ἁγνισμοῦ ἁγνισθήσεται· καὶ πάντα ὅσα ἐὰν μὴ διαπορεύηται διὰ

πυρὸς, διελεύσεται δι ὕδατος. Καὶ πλυνεῖσθε τὰ ἱμάτια τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ καθαρισθήσεσθε· καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσεσθε εἰς τὴν παρεμβολήν. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάβε τὸ κεφάλαιον τῶν σκύλων τῆς αἰχμαλωσίας ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους σὺ καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν πατριῶν τῆς συναγωγῆς. Καὶ διελεῖτε τὰ σκῦλα ἀναμέσον τῶν πολεμιστῶν τῶν ἐκπεπορευμένων εἰς τὴν παράταξιν, καὶ ἀναμέσον πάσης συναγωγῆς. Καὶ ἀφελεῖτε τέλος Κυρίῳ παρὰ τῶν ἀνθρώπων τῶν πολεμιστῶν τῶν ἐκπεπορευμένων εἰς τὴν παράταξιν, μίαν ψυχὴν ἀπὸ πεντακοσίων, ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ ἀπὸ τῶν κτηνῶν, καὶ ἀπὸ τῶν βοῶν, καὶ ἀπὸ τῶν προβάτων, καὶ ἀπὸ τῶν ὄνων· καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους αὐτῶν λήψεσθε. Καὶ δώσεις Ἐλεάζαρ τῷ ἱερεῖ τὰς ἀπαρχὰς Κυρίου. Καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους τοῦ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ λήψῃ ἕνα ἀπὸ πεντήκοντα ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ ἀπὸ τῶν βοῶν, καὶ ἀπὸ τῶν προβάτων, καὶ ἀπὸ τῶν ὄνων, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν κτηνῶν· καὶ δώσεις αὐτὰ τοῖς Λευίταις τοῖς φυλάσσουσι τὰς φυλακὰς ἐν τῇ σκηνῇ Κυρίου. Καὶ ἐποίησε Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ ἐγενήθη τὸ πλεόνασμα τῆς προνομῆς ὁ προενόμευσαν οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ, ἀπὸ τῶν προβάτων, ἑξακόσιαι χιλιάδες καὶ ἑβδομήκοντα καὶ πέντε χιλιάδες· Καὶ βόες, δύο καὶ ἑβδομήκοντα χιλιάδες· Καὶ ὄνοι, μία καὶ ἑξήκοντα χιλιάδες· Καὶ ψυχαὶ ἀνθρώπων ἀπὸ τῶν γυναικῶν αἳ οὐκ ἔγνωσαν κοίτην ἀνδρὸς, πᾶσαι ψυχαὶ, δύο καὶ τριάκοντα χιλιάδες. Καὶ ἐγενήθη τὸ ἡμίσευμα ἡ μερὶς τῶν ἐκπεπορευμένων εἰς τὸν πόλεμον ἐκ τοῦ ἀριθμοῦ τῶν προβάτων, τριακόσιαι καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ ἑπτακισχίλια καὶ πεντακόσια. Καὶ ἐγένετο τὸ τέλος Κυρίῳ ἀπὸ τῶν προβάτων, ἑξακόσιαι ἑβδομήκοντα πέντε· Καὶ βόες, ἓξ καὶ

τριάκοντα χιλιάδες, καὶ τὸ τέλος Κυρίῳ, δύο καὶ ἑβδομήκοντα· Καὶ ὄνοι, τριάκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι, καὶ τὸ τέλος Κυρίῳ, εἷς καὶ ἑξήκοντα· Καὶ ψυχαὶ ἀνθρώπων, ἑκκαίδεκα χιλιάδες, καὶ τὸ τέλος αὐτῶν Κυρίῳ, δύο καὶ τριάκοντα ψυχαί. Καὶ ἔδωκε Μωυσῆς τὸ τέλος Κυρίῳ τὸ ἀφαίρεμα τοῦ Θεοῦ Ἐλεάζαρ τῷ ἱερεῖ, καθὰ συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ· ἀπὸ τοῦ ἡμισεύματος τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, οὓς διεῖλε Μωυσῆς ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν. Καὶ ἐγένετο τὸ ἡμίσευμα ἀπὸ τῆς συναγωγῆς ἀπὸ τῶν προβάων, τριακόσιαι καὶ τριάκοντα χιλιάδες καὶ ἑπτακισχίλια καὶ πεντακόσια· Καὶ βόες, ἓξ καὶ τριάκοντα χιλιάδες· Ὄνοι, τριάκοντα χιλιάδες καὶ πεντακόσιοι· Καὶ ψυχαὶ ἀνθρώπων, ἓξ καὶ δέκα χιλιάδες. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς ἀπὸ τοῦ ἡμισεύματος τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ τὸ ἓν ἀπὸ τῶν πεντήκοντα, ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων καὶ ἀπὸ τῶν κτηνῶν, καὶ ἔδωκεν αὐτὰ τοῖς Λευίταις τοῖς φυλάσσουσι τὰς φυλακὰς τῆς σκηνῆς Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ προσῆλθον πρὸς Μωυσῆν πάντες οἱ καθεσταμένοι εἰς τὰς χιλιαρχίας τῆς δυνάμεως, χιλίαρχοι καὶ ἑκατόνταρχοι, καὶ εἶπαν πρὸς Μωυσῆν, Οἱ παῖδές σου εἰλήφασι τὸ κεφάλαιον τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν τῶν παρ ἡμῖν, καὶ οὐ διαπεφώνηκεν ἀπ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. Καὶ προσενηνόχαμεν τὸ δῶρον Κυρίῳ, ἀνὴρ ὃ εὗρε σκεῦος χρυσοῦν καὶ χλιδῶνα καὶ ψέλλιον καὶ δακτύλιον καὶ περιδέξιον καὶ ἐμπλοκιον, ἐξιλάσασθαι περὶ ἡμῶν ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς τὸ χρυσίον παρ αὐτῶν πᾶν σκεῦος εἰργασμένον. Καὶ ἐγένετο πᾶν τὸ χρυσίον τὸ ἀφαίρεμα ὃ ἀφεῖλον Κυρίῳ, ἑκκίδεκα χιλιάδες καὶ ἑπτακόσιοι καὶ πεντήκοντα σίκλοι παρὰ τῶν χιλιάρχων καὶ παρὰ τῶν ἑκατοντάρχων. Καὶ οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ ἐπρονόμευσαν ἕκαστος ἑαυτῷ. Καὶ ἔλαβε Μωυσῆς καὶ Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς τὸ

χρυσίον παρὰ τῶν χιλιάρχων καὶ παρὰ τῶν ἑκατοντάρχων, καὶ εἰσήνεγκεν αὐτὰ εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, μνημόσυνον τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἔναντι Κυρίου.

# 32

Καὶ κτήνη πλῆθος ἦν τοῖς υἱοῖς Ῥουβὴν καὶ τοῖς υἱοῖς Γὰδ, πλῆθος σφόδρα· καὶ εἶδον τὴν χώραν Ἰαζὴρ, καὶ τὴν χώραν Γαλαάδ· καὶ ἦν ὁ τόπος, τόπος κτήνεσι· Καὶ προσελθόντες οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, εἶπαν πρὸς Μωυσῆν καὶ πρὸς Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα καὶ πρὸς τοὺς ἄρχοντας τῆς συναγωγῆς, λέγοντες, Ἀταρὼθ, καὶ Δαιβὼν, καὶ Ἰαζὴρ, καὶ Ναμρὰ, καὶ Ἐσεβὼν, καὶ Ἐλεαλὴ, καὶ Σεβαμὰ, καὶ Ναβαὺ, καὶ Βαιάν, τὴν γῆν ἣν παραδέδωκε Κύριος ἐνώπιον τῶν υἱῶν Ἰσραήλ, γῆ κτηνοτρόφος ἐστὶ, καὶ τοῖς παισί σου κτήνη ὑπάρχει. Καὶ ἔλεγον, εἰ εὕρομεν χάριν ἐνώπιόν σου, δοθήτω ἡ γῆ αὕτη τοῖς οἰκέταις σου ἐν κατασχέσει, καὶ μὴ διαβιβάσῃς ἡμᾶς τὸν Ἰορδάνην. Καὶ εἶπε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Γὰδ καὶ τοῖς υἱοῖς Ῥουβὴν, οἱ ἀδελφοὶ ὑμῶν πορεύονται εἰς τὸν πόλεμον, καὶ ὑμεῖς καθήσεσθε αὐτοῦ; Καὶ ἱνατί διαστρέφετε τὰς διανοίας τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ μὴ διαβῆναι εἰς τὴν γῆν, ἣν Κύριος δίδωσιν αὐτοῖς; Οὐχ οὕτως ἐποίησαν οἱ πατέρες ὑμῶν, ὅτε ἀπέστειλα αὐτοὺς ἐκ Κάδης Βαρνὴ κατανοῆσαι τὴν γῆν; καὶ ἀνέβησαν φάραγγα βότρυος, καὶ κατενόησαν τὴν γῆν, καὶ ἀπέστησαν τὴν καρδίαν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ὅπως μὴ εἰσέλθωσιν εἰς τὴν γῆν, ἣν ἔδωκε Κύριος αὐτοῖς. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ὤμοσε, λέγων, εἰ ὄψονται οἱ ἄνθρωποι οὗτοι οἱ ἀναβάντες ἐξ Αἰγύπτου ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω, οἱ ἐπιστάμενοι τὸ ἀγαθὸν καὶ τὸ κακὸν,

τὴν γῆν ἣν ὤμοσα τῷ Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ, οὐ γὰρ συνεπηκολούθησαν ὀπίσω μου· πλὴν Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννὴ ὁ διακεχωρισμένος, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυὴ, ὅτι συνεπηκολούθησεν ὀπίσω Κυρίου. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ, καὶ κατερόμβευσεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ τεσσεράκοντα ἔτη, ἕως ἐξανηλώθη πᾶσα ἡ γενεὰ, οἱ ποιοῦντες τὰ πονηρὰ ἔναντι Κυρίου. Ἰδοὺ ἀνέστητε ἀντὶ τῶν πατέρων ὑμῶν, σύντριμμα ἀνθρώπων ἁμαρτωλῶν, προσθεῖναι ἔτι ἐπὶ τὸν θυμὸν τῆς ὀργῆς Κυρίου ἐπὶ Ἰσραήλ. Ὅτι ἀποστραφήσεσθε ἀπ αὐτοῦ προσθεῖναι ἔτι καταλιπεῖν αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἀνομήσετε εἰς ὅλην τὴν συναγωγὴν ταύτην. Καὶ προσῆλθον αὐτῷ, καὶ ἔλεγον, ἐπαύλεις προβάτων οἰκοδομήσομεν ὧδε τοῖς κτήνεσιν ἡμῶν, καὶ πόλεις ταῖς ἀποσκευαῖς ἡμῶν. Καὶ ἡμεῖς ἐνοπλισάμενοι προφυλακὴν πρότεροι τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἕως ἂν ἀγάγωμεν αὐτοὺς εἰς τὸν ἑαυτῶν τόπον· καὶ κατοικήσει ἡ ἀποσκευὴ ἡμῶν ἐν πόλεσι τετειχισμέναις διὰ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν. Οὐ μὴ ἀποστραφῶμεν εἰς τὰς οἰκίας ἡμῶν ἕως ἂν καταμερισθῶσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, ἕκαστος εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. Καὶ οὐκέτι κληρονομήσομεν ἐν αὐτοῖς ἀπὸ τοῦ πέραν τοῦ Ἰορδάνου καὶ ἐπέκεινα, ὅτι ἀπέχομεν τοὺς κλήρους ἡμῶν ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν ἀνατολαῖς. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Μωυσῆς, ἐὰν ποιήσητε κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο, ἐὰν ἐξοπλίσησθε ἔναντι Κυρίου εἰς πόλεμον, καὶ παρελεύσεται ὑμῶν πᾶς ὁπλίτης τὸν Ἰορδάνην ἔναντι Κυρίου, ἕως ἂν ἐκτριβῇ ὁ ἐχθρὸς αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ κατακυριευθῇ ἡ γῆ ἔναντι Κυρίου, καὶ μετὰ ταῦτα ἀποστραφήσεσθε, καὶ ἔσεσθε ἀθῷοι ἔναντι Κυρίου, καὶ ἀπὸ Ἰσραήλ· καὶ ἔσται ἡ γῆ αὕτη ὑμῖν ἐν κατασχέσει ἔναντι Κυρίου. Ἐὰν δὲ μὴ ποιήσητε οὕτως, ἁμαρτήσεσθε ἔναντι Κυρίου· καὶ γνώσεσθε τὴν ἁμαρτίαν ὑμῶν,

ὅταν ὑμᾶς καταλάβῃ τὰ κακά. Καὶ οἰκοδομήσετε ὑμῖν ἑαυτοῖς πόλεις τῇ ἀποσκευῇ ὑμῶν, καὶ ἐπαύλεις τοῖς κτήνεσιν ὑμῶν· καὶ τὸ ἐκπορευόμενον ἐκ τοῦ στόματος ὑμῶν ποιήσετε. Καὶ εἶπαν υἱοὶ Ῥουβὴν καὶ υἱοὶ Γὰδ πρὸς Μωυσῆν, λέγοντες, οἱ παῖδές σου ποιήσουσι καθὰ ὁ Κύριος ἡμῶν ἐντέλλεται. Ἡ ἀποσκευὴ ἡμῶν, καὶ αἱ γυναῖκες ἡμῶν, καὶ πάντα τὰ κτήνη ἡμῶν ἔσονται ἐν ταῖς πόλεσιν Γαλαάδ. Οἱ δὲ παῖδές σου παρελεύσονται πάντες ἐνωπλισμένοι καὶ ἐκτεταγμένοι ἔναντι Κυρίου εἰς τὸν πόλεμον, ὃν τρόπον ὁ κύριος λέγει. Καὶ συνέστησεν αὐτοῖς Μωυσῆς Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα, καὶ Ἰησοῦν υἱὸν Ναυὴ, καὶ τοὺς ἄρχοντας πατριῶν τῶν φυλῶν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Μωυσῆς, ἐὰν διαβῶσιν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ μεθ ὑμῶν τὸν Ἰορδάνην, πᾶς ἐνωπλισμένος εἰς πόλεμον ἔναντι Κυρίου, καὶ κατακυριεύσητε τῆς γῆς ἀπέναντι ὑμῶν, καὶ δώσετε αὐτοῖς τὴν γῆν Γαλαὰδ ἐν κατασχέσει. Ἐὰν δὲ μὴ διαβῶσιν ἐνωπλισμένοι μεθ ὑμῶν εἰς τὸν πόλεμον ἔναντι Κυρίου, καὶ διαβιβάσετε τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν πρότερα ὑμῶν εἰς γῆν Χαναὰν, καὶ συγκατακληρονομηθήσονται ἐν ὑμῖν ἐν τῇ γῇ Χαναάν. Καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ λέγοντες, ὅσα ὁ Κύριος λέγει τοῖς θεράπουσιν, οὕτω ποιήσομεν ἡμεῖς. Διαβησόμεθα ἐνωπλισμένοι ἔναντι Κυρίου εἰς γῆν Χαναὰν, καὶ δώσετε τὴν κατάσχεσιν ἡμῖν ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Γὰδ, καὶ τοῖς υἱοῖς Ῥουβὴν, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ υἱῶν Ἰωσὴφ, τὴν βασιλείαν Σηὼν βασιλέως Ἀμορῥαίων, καὶ τὴν βασιλείαν Ὼγ βασιλέως τῆς Βασὰν, τὴν γῆν καὶ τὰς πόλεις σὺν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς, πόλεις τῆς γῆς κύκλῳ. Καὶ ᾠκοδόμησαν οἱ υἱοὶ Γὰδ τὴν Δαιβὼν, καὶ τὴν Ἀταρὼθ, καὶ τὴν Ἀροὴρ, καὶ τὴν Σοφὰρ, καὶ τὴν Ἰαζὴρ, καὶ ὕψωσαν αὐτὰς,

καὶ τὴν Ναμρὰμ, καὶ τὴν Βαιθαρὰν, πόλεις ὀχυρὰς, καὶ ἐπαύλεις προβάτων. Καὶ οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν ᾠκοδόμησαν τὴν Ἐσεβὼν, καὶ Ἐλεάλην, καὶ Καριαθὰμ, καὶ τὴν Βεελμεὼν, περικεκυκλωμένας, καὶ τὴν Σεβαμά· καὶ ἐπωνόμασαν κατὰ τὰ ὀνόματα αὐτῶν τὰ ὀνόματα τῶν πόλεων, ἃς ᾠκοδόμησαν. Καὶ ἐπορεύθη υἱὸς Μαχὶρ υἱοῦ Μανασσὴ Γαλαὰδ, καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ ἀπώλεσε τὸν Ἀμορῥαῖον τὸν κατοικοῦντα ἐν αὐτῇ. Καὶ ἔδωκε Μωυσῆς τὴν Γαλαὰδ τῷ Μαχὶρ υἱῷ Μανασσῆ, καὶ κατῴκησεν ἐκεῖ. Καὶ Ἰαΐρ ὁ τοῦ Μανασσῆ ἐπορεύθη, καὶ ἔλαβε τὰς ἐπαύλεις αὐτῶν, καὶ ἐπωνόμασεν αὐτὰς ἐπαύλεις Ἰαΐρ. Καὶ Ναβαὺ ἐπορεύθη, καὶ ἔλαβε τὴν Καὰθ καὶ τὰς κώμας αὐτῆς, καὶ ἐπωνόμασεν αὐτὰς Ναβὼθ ἐκ τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ.

# 33

Καὶ οὗτοι οἱ σταθμοὶ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ὡς ἐξῆλθον ἐκ γῆς Αἰγύπτου σὺν δυνάμει αὐτῶν ἐν χειρὶ Μωυσῆ καὶ Ἀαρών. Καὶ ἔγραψε Μωυσῆς τὰς ἀπάρσεις αὐτῶν, καὶ τοὺς σταθμοὺς αὐτῶν, διὰ ῥήματος Κυρίου· καὶ οὗτοι σταθμοὶ τῆς πορείας αὐτῶν. Ἀπῆραν ἐκ Ῥαμεσσὴ τῷ μηνὶ τῷ πρώτῳ, τῇ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου· τῇ ἐπαύριον τοῦ πάσχα ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν χειρὶ ὑψηλῇ ἐναντίον πάντων τῶν Αἰγυπτίων. Καὶ οἱ Αἰγύπτιοι ἔθαπτον ἐξ αὐτῶν τοὺς τεθνηκότας πάντας οὓς ἐπάταξε Κύριος, πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ· καὶ ἐν τοῖς θεοῖς αὐτῶν ἐποίησε τὴν ἐκδίκησιν Κύριος. Καὶ ἀπάραντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐκ Ῥαμεσσῆ, παρενέβαλον εἰς Σοκχώθ. Καὶ ἀπάραντες ἐκ Σοκχὼθ, παρενέβαλον εἰς Βουθὰν, ὅ ἐστι μέρος τι τῆς ἐρήμου· Καὶ ἀπῆραν

ἐκ Βουθὰν, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ τὸ στόμα Εἰρὼθ, ὅ ἐστιν ἀπέναντι Βεελσεπφὼν, καὶ παρενέβαλον ἀπέναντι Μαγδώλου. Καὶ ἀπῆραν ἀπέναντι Εἰρὼθ, καὶ διέβησαν μέσον τῆς θαλάσσης εἰς τὴν ἔρημον· καὶ ἐπορεύθησαν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν διὰ τῆς ἐρήμου αὐτοὶ, καὶ παρενέβαλον ἐν Πικρίαις. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Πικριῶν, καὶ ἦλθον εἰς Αἰλίμ· καὶ ἐν Αἰλὶμ δώδεκα πηγαὶ ὑδάτων, καὶ ἑβδομήκοντα στελέχη φοινίκων, καὶ παρενέβαλον ἐκεῖ παρὰ τὸ ὕδωρ. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Αἰλὶμ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ θάλασσαν ἐρυθράν. Καὶ ἀπῆραν ἀπὸ θαλάσσης ἐρυθρᾶς, καὶ παρενέβαλον εἰς τὴν ἔρημον Σίν. Καὶ ἀπῆραν ἐκ τῆς ἐρήμου Σὶν, καὶ παρενέβαλον εἰς Ῥαφακά. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥαφακὰ, καὶ παρενέβαλον ἐν Αἰλούς. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Αἰλούς, καὶ παρενέβαλον ἐν Ῥαφιδίν· καὶ οὐκ ἦν ἐκεῖ ὕδωρ τῷ λαῷ πιεῖν. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥαφιδὶν, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ ἐρήμῳ Σινᾶ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ τῆς ἐρήμου Σινᾶ, καὶ παρενέβαλον ἐν μνήμασι τῆς ἐπιθυμίας. Καὶ ἀπῆραν ἐκ μνημάτων τῆς ἐπιθυμίας, καὶ παρενέβαλον ἐν Ἀσηρώθ. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Ἀσηρὼθ, καὶ παρενέβαλον ἐν Ῥαθαμᾷ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥαθαμᾶ, καὶ παρενέβαλον ἐν Ῥεμμὼν Φαρές. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥεμμὼν Φαρὲς, καὶ παρενέβαλον εἰς Λεβωνᾶ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Λεβῶνα, καὶ παρενέβαλον εἰς Ῥεσσάν. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ῥεσσὰν, καὶ παρενέβαλον εἰς Μακελλάθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Μακελλὰθ, καὶ παρενέβαλον εἰς Σαφάρ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Σαφὰρ, καὶ παρενέβαλον εἰς Χαραδάθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Χαραδὰθ, καὶ παρενέβαλον εἰς Μακηλώθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Μακηλὼθ, καὶ παρενέβαλον εἰς Καταάθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Καταὰθ, καὶ παρενέβαλον εἰς Ταράθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Ταρὰθ, καὶ παρενέβαλον εἰς Μαθεκκά. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Μαθεκκὰ, καὶ παρενέβαλον εἰς Σελμωνᾶ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Σελμωνᾶ, καὶ παρενέβαλον εἰς Μασουρούθ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Μασουροὺθ, καὶ

παρενέβαλον εἰς Βαναία. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Βαναία, καὶ παρενέβαλον εἰς τὸ ὄρος Γαδγάδ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ τοῦ ὄρους Γαδγὰδ, καὶ παρενέβαλον εἰς Ἐτεβαθά. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Ἐτεβαθὰ, καὶ παρενέβαλον εἰς Ἐβρωνά. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Ἐβρωνὰ, καὶ παρενέβαλον εἰς Γεσιὼν Γάβερ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Γεσιὼν Γάβερ, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ ἐρήμῳ Σίν· καὶ ἀπῆραν ἐκ τῆς ἐρήμου Σὶν, καὶ παρενέβαλον εἰς τὴν ἔρημον Φαράν· αὕτη ἐστὶ Κάδης. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Κάδης, καὶ παρενέβαλον εἰς Ὢρ τὸ ὄρος πλησίον γῆς Ἐδώμ. Καὶ ἀνέβη Ἀαρὼν ὁ ἱερεὺς διὰ προστάγματος Κυρίου, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ ἐν τῷ τεσσαρακοστῷ ἔτει τῆς ἐξόδου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ μιᾷ τοῦ μηνός. Καὶ Ἀαρὼν ἦν τριῶν καὶ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν ἐτῶν, ὅτε ἀπέθνησκεν ἐν Ὢρ τῷ ὄρει. Καὶ ἀκούσας ὁ Χανανὶς βασιλεὺς Ἀρὰδ, καὶ οὗτος κατῴκει ἐν γῇ Χαναὰν, ὅτε εἰσεπορεύοντο οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ ἀπῆραν ἐξ Ὢρ τοῦ ὄρους, καὶ παρενέβαλον εἰς Σελμωνᾶ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Σελμωνᾶ, καὶ παρενέβαλον εἰς Φινώ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Φινὼ, καὶ παρενέβαλον ἐν Ὠβώθ. Καὶ ἀπῆραν ἐξ Ὠβὼθ, καὶ παρενέβαλον ἐν Γαΐ, ἐν τῷ πέραν ἐπὶ τῶν ὁρίων Μωάβ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Γαΐ, καὶ παρενέβαλον εἰς Δαιβὼν Γάδ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Δαιβὼν Γὰδ, καὶ παρενέβαλον ἐν Γελμὼν Δεβλαθαίμ. Καὶ ἀπῆραν ἐκ Γελμὼν Δεβλαθαὶμ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ τὰ ὄρη τὰ Ἀβαρὶμ, ἀπέναντι Ναβαῦ. Καὶ ἀπῆραν ἀπὸ ὀρέων Ἀβαρὶμ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ δυσμῶν Μωὰβ, ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχώ. Καὶ παρενέβαλον παρὰ τὸν Ἰορδάνην ἀναμέσον Αἰσιμώθ, ἕως Βελσᾶ τὸ κατὰ δυσμὰς Μωάβ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸ; Μωυσῆν ἐπὶ δυσμῶν Μωὰβ παρὰ τὸν Ἰορδάνην κατὰ Ἰεριχὼ, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην εἰς γῆν Χαναάν. Καὶ ἀπολεῖτε πάντας

τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ γῇ πρὸ προσώπου ὑμῶν, καὶ ἐξαρεῖτε τὰς σκοπιὰς αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ εἴδωλα τὰ χωνευτὰ αὐτῶν ἀπολεῖτε αὐτὰ, καὶ πάσας τὰς στήλας αὐτῶν ἐξαρεῖτε. Καὶ ἀπολεῖτε πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, καὶ κατοικήσετε ἐν αὐτῇ, ὑμῖν γὰρ δέδωκα τὴν γῆν αὐτῶν ἐν κλήρῳ. Καὶ κατακληρονομήσετε τὴν γῆν αὐτῶν ἐν κλήρῳ κατὰ φυλὰς ὑμῶν· τοῖς πλείοσι πληθυνεῖτε τὴν κατάσχεσιν αὐτῶν, καὶ τοῖς ἐλάττοσιν ἐλαττώσετε τὴν κατάσχεσιν αὐτῶν· εἰς ὃ ἂν ἐξέλθῃ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ἐκεῖ αὐτοῦ ἔσται· κατὰ φυλὰς πατριῶν ὑμῶν κληρονομήσετε. Ἐὰν δὲ μὴ ἀπολέσητε τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ προσώπου ὑμῶν, καὶ ἔσται οὓς ἐὰν καταλίπητε ἐξ αὐτῶν, σκόλοπες ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, καὶ βολίδες ἐν ταῖς πλευραῖς ὑμῶν, καὶ ἐχθρεύσουσιν ὑμῖν ἐπὶ τῆς γῆς, ἐφ ἣν ὑμεῖς κατοικήσετε. Καὶ ἔσται καθότι διεγνώκειν ποιῆσαι αὐτοὺς, ποιήσω ὑμᾶς.

# 34

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ἔντειλαι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε εἰς τὴν γῆν Χαναὰν· αὕτη ἔσται ὑμῖν εἰς κληρονομίαν, γῆ Χαναὰν σὺν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς. Καὶ ἔσται ὑμῖν τὸ κλίτος τὸ πρὸς Λίβα ἀπὸ ἐρήμου Σὶν ἕως ἐχόμενον Ἐδὼμ, καὶ ἔσται ὑμῖν τὰ ὅρια πρὸς λίβα ἀπὸ μέρους τῆς θαλάσσης τῆς ἁλυκῆς ἀπὸ ἀνατολῶν. Καὶ κυκλώσει ὑμᾶς τὰ ὅρια ἀπὸ Λιβὸς πρὸς ἀνάβασιν Ἀκραβὶν, καὶ παρελεύσεται Ἐννὰκ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτοῦ πρὸς Λίβα Κάδης τοῦ Βαρνὴ, καὶ ἐξελεύσεται εἰς ἔπαυλιν Ἀρὰδ, καὶ παρελεύσεται Ἀσεμωνᾶ. Καὶ κυκλώσει τὰ ὅρια ἀπὸ Ἀσεμωνᾶ χειμάῤῥουν Αἰγύπτου, καὶ ἔσται ἡ

διέξοδος ἡ θάλασσα. Καὶ τὰ ὅρια τῆς θαλάσσης ἔσται ὑμῖν, ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη ὁριεῖ, τοῦτο ἔσται ὑμῖν τὰ ὅρια τῆς θαλάσσης. Καὶ τοῦτο ἔσται ὑμῖν τὰ ὅρια πρὸς βοῤῥᾶν· ἀπὸ τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης καταμετρήσετε ὑμῖν αὐτοῖς παρὰ τὸ ὄρος τὸ ὄρος. Καὶ ἀπὸ τοῦ ὄρους τὸ ὄρος καταμετρήσετε αὐτοῖς, εἰσπορευομένων εἰς Ἐμὰθ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτοῦ τὰ ὅρια Σαραδάκ. Καὶ ἐξελεύσεται τὰ ὅρια Δεφρωνὰ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτοῦ Ἀρσεναΐν· τοῦτο ἔσται ὑμῖν ὅρια ἀπὸ Βοῤῥᾶ. Καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια ἀπὸ Σεπεφαμὰρ Βηλὰ ἀπὸ ἀνατολῶν ἐπὶ πηγὰς, και καταβήσεται τὰ ὅρια Βηλὰ ἐπὶ νώτου θαλάσσης Χενερὲθ ἀπὸ ἀνατολῶν. Καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια ἀπὸ Σεπφαμὰρ Βηλὰ ἀπὸ ἀνατολῶν ἐπὶ πηγάς, καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια Βηλὰ ἐπὶ νώτου θαλάσσης Χενερὲθ ἀπὸ ἀνατολῶν. Καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια ἐπὶ τὸν Ἰορδάνην, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος θάλασσα ἡ ἁλυκή· αὕτη ἔσται ὑμῖν ἡ γῆ καὶ τὰ ὅρια αὐτῆς κύκλῳ. Καὶ ἐνετείλατο Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, αὕτη ἡ γῆ ἣν κατακληρονομήσετε αὐτὴν μετὰ κλήρου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος δοῦναι αὐτὴν ταῖς ἐννέα φυλαῖς καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ. Ὅτι ἔλαβε φυλὴ υἱῶν Ῥουβὴν, καὶ φυλὴ υἱῶν Γὰδ κατ οἴκους πατριῶν αὐτῶν· καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ ἀπέλαβον τοὺς κλήρους αὐτῶν. Δύο φυλαὶ καὶ ἥμισυ φυλῆς ἔλαβον τοὺς κλήρους αὐτῶν πέραν τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχὼ ἀπὸ Νότου κατ ἀνατολάς. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν, οἳ κληρονομήσουσιν ὑμῖν τὴν γῆν· Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυή. Καὶ ἄρχοντα ἕνα ἐκ φυλῆς λήψεσθε κατακληρονομῆσαι ὑμῖν τὴν γῆν. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν· τῆς φυλῆς Ἰούδα, Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννή. Τῆς φυλῆς Συμεὼν, Σαλαμιὴλ υἱὸς Σεμιούδ. Τῆς φυλῆς Βενιαμὶν, Ἐλδὰδ υἱὸς Χασλών· Τῆς φυλῆς Δὰν, ἄρχων

Βακχὶρ υἱὸς Ἐγλί. Τῶν υἱῶν Ἰωσὴφ φυλῆς υἱῶν Μανασσῆ, ἄρχων Ἀνιὴλ υἱὸς Σουφί. Τῆς φυλῆς υἱῶν Ἐφραὶμ, ἄρχων Καμουὴλ υἱὸς Σαβαθᾶν. Τῆς φυλῆς Ζαβουλὼν, ἄρχων Ἐλισαφὰν υἱὸς Φαρνάχ. Τῆς φυλῆς υἱῶν Ἰσσάχαρ, ἄρχων Φαλτιὴλ υἱὸς Ὀζᾶ. Τῆς φυλῆς υἱῶν Ἀσὴρ, ἄρχων Ἀχιὼρ υἱὸς Σελεμί. Τῆς φυλῆς Νεφθαλὶ, ἄρχων Φαδαὴλ υἱὸς Ἰαμιούδ. Τούτοις ἐνετείλατο Κύριος καταμερίσαι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν γῇ Χαναάν.

# 35

Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐπὶ δυσμῶν Μωὰβ παρὰ τὸν Ἰορδάνην κατὰ Ἰεριχὼ, λέγων, σύνταξον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ δώσουσι τοῖς Λευίταις ἀπὸ τῶν κλήρων κατασχέσεως αὐτῶν πόλεις κατοικεῖν· καὶ τὰ προάστεια τῶν πόλεων κύκλῳ αὐτῶν δώσουσι τοῖς Λευίταις. Καὶ ἔσονται αὐτοῖς αἱ πόλεις κατοικεῖν, καὶ τὰ ἀφορίσματα αὐτῶν ἔσται τοῖς κτήνεσιν αὐτῶν, καὶ πᾶσι τοῖς τετράποσιν αὐτῶν. Καὶ τὰ συνκυροῦντα τῶν πόλεων, ἃς δώσετε τοῖς Λευίταις, ἀπὸ τείχους τῆς πόλεως καὶ ἔξω δισχιλίους πήχεις κύκλῳ. Καὶ μετρήσεις ἔξω τῆς πόλεως τὸ κλίτος τὸ πρὸς ἀνατολὰς δισχιλίους πήχεις, καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς Λίβα δισχιλίους πήχεις, καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς θάλασσαν διαχιλίους πήχεις, καὶ τὸ κλίτος τὸ πρὸς Βορῤᾶν δισχιλίους πήχεις· καὶ ἡ πόλις μέσον τούτου ἔσται ὑμῖν, καὶ τὰ ὅμορα τῶν πόλεων. Καὶ τὰς πόλεις δώσετε τοῖς Λευίταις, τὰς ἓξ πόλεις τῶν φυγαδευτηρίων ἃς δώσετε φυγεῖν ἐκεῖ τῷ φονεύσαντι, καὶ πρὸς ταύταις τεσσαράκοντα καὶ δύο πόλεις. Πάσας τὰς πόλεις δώσετε τοῖς Λευίταις τεσσαράκοντα καὶ ὀκτὼ πόλεις· ταύτας, καὶ τὰ προάστεια αὐτῶν. Καὶ τὰς πόλεις ἃς δώσετε

ἀπὸ τῆς κατασχέσεως υἱῶν Ἰσραὴλ, ἀπὸ τῶν τὰ πολλὰ, πολλά· καὶ ἀπὸ τῶν ἐλαττόνων, ἐλάττω· ἕκαστος κατὰ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ ἣν κατακληρονομήσουσι, δώσουσιν ἀπὸ τῶν πόλεων τοῖς Λευίταις. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην εἰς γῆν Χαναάν. Καὶ διαστελεῖτε ὑμῖν αὐτοῖς πόλεις· φυγαδευτήρια ἔσται ὑμῖν φυγεῖν ἐκεῖ τὸν φονευτὴν, πᾶς ὁ πατάξας ψυχὴν ἀκουσίως. Καὶ ἔσονται αἱ πόλεις ὑμῖν φυγαδευτήρια ἀπὸ τοῦ ἀγχιστεύοντος τὸ αἷμα, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνῃ ὁ φονεύων ἕως ἂν στῇ ἔναντι τῆς συναγωγῆς εἰς κρίσιν. Καὶ αἱ πόλεις ἃς δώσετε τὰς ἓξ πόλεις, φυγαδευτήρια ἔσονται ὑμῖν. Τὰς τρεῖς πόλεις δώσετε πέραν τοῦ Ἰορδάνου, καὶ τὰς τρεῖς πόλεις δώσετε ἐν γῇ Χαναάν. Φυγαδεῖον ἔσται τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, καὶ τῷ προσηλύτῳ, καὶ τῷ παροίκῳ τῷ ἐν ὑμῖν· ἔσονται αἱ πόλεις αὗται εἰς φυγαδευτήριον, φυγεῖν ἐκεῖ παντὶ πατάξαντι ψυχὴν ἀκουσίως. Ἐὰν δὲ ἐν σκεύει σιδήρου πατάξῃ αὐτὸν, καὶ τελευτήσῃ, φονευτής ἐστι· θανάτῳ θανατούσθω ὁ φονευτής. Ἐὰν δὲ ἐν λίθῳ ἐκ χειρὸς ἐν ᾧ ἀποθανεῖται ἐν αὐτῷ, πατάξῃ αὐτὸν, καὶ ἀποθάνῃ, φονευτής ἐστι· θανάτῳ θανατούσθω ὁ φονευτής. Ἐὰν δὲ ἐν σκεύει ξυλίνῳ ἐκ χειρὸς ἐξ οὗ ἀποθανεῖται ἐν αὐτῷ, πατάξῃ αὐτόν, καὶ ἀποθάνῃ, φονευτής ἐστι· θανάτῳ θανατούσθω ὁ φονευτής. Ὁ ἀγχιστεύων τὸ αἷμα, οὗτος ἀποκτενεῖ τὸν φονεύσαντα· ὅταν συναντήσῃ αὐτῷ οὗτος, ἀποκτενεῖ αὐτόν. Ἐὰν δὲ δι ἔχθραν ὥσῃ αὐτὸν, καὶ ἐπιῤῥίψῃ ἐπ αὐτὸν πᾶν σκεῦος ἐξ ἐνέδρου, καὶ ἀποθάνῃ, ἢ διὰ μῆνιν ἐπάταξεν αὐτὸν τῇ χειρί, καὶ ἀποθάνῃ, θανάτῳ θανατούσθω ὁ πατάξας, φονευτής ἐστι· θανάτῳ θανατούσθω ὁ φονεύων· ὁ ἀγχιστεύων τὸ αἷμα ἀποκτενεῖ τὸν φονεύσαντα ἐν τῷ συναντῆσαι αὐτῷ. Ἐὰν δὲ ἐξάπινα, οὐ δι ἔχθραν ὥσῃ αὐτὸν, ἢ ἐπιῤῥίψῃ ἐπ

αὐτὸν πᾶν σκεῦος, οὐκ ἐξ ἐνέδρου, ἢ παντὶ λίθῳ, ἐν ᾧ ἀποθανεῖται ἐν αὐτῷ, οὐκ εἰδὼς, καὶ ἐπιπέσῃ ἐπ αὐτὸν, καὶ ἀποθάνῃ, αὐτὸς δὲ οὐκ ἐχθρὸς αὐτοῦ ἦν, οὐδὲ ζητῶν κακοποιῆσαι αὐτόν· καὶ κρινεῖ ἡ συναγωγὴ ἀναμέσον τοῦ πατάξαντος καὶ ἀναμέσον τοῦ ἀγχιστεύοντος τὸ αἷμα, κατὰ τὰ κρίματα ταῦτα. Καὶ ἐξελεῖται ἡ συναγωγὴ τὸν φονεύσαντα ἀπὸ τοῦ ἀγχιστεύοντος τὸ αἷμα, καὶ ἀποκαταστήσουσιν αὐτὸν ἡ συναγωγὴ εἰς τὴν πόλιν τοῦ φυγαδευτηρίου αὐτοῦ, οὗ κατέφυγε, καὶ κατοικήσει ἐκεῖ ἕως ἂν ἀποθάνῃ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, ὃν ἔχρισαν αὐτὸν τῷ ἐλαίῳ τῷ ἁγίῳ. Ἐὰν δὲ ἐξόδῳ ἐξέλθῃ ὁ φονεύασς τὰ ὅρια τῆς πόλεως εἰς ἣν κατέφυγεν ἐκεῖ, καὶ εὕρῃ αὐτὸν ὁ ἀγχιστεύων τὸ αἷμα ἔξω τῶν ὁρίων τῆς πόλεως καταφυγῆς αὐτοῦ, καὶ φονεύσῃ ὁ ἀγχιστεύων τὸ αἷμα τὸν φονεύσαντα, οὐκ ἔνοχός ἐστιν. Ἐν γὰρ τῇ πόλει τῆς καταφυγῆς κατοικείτω ἕως ἂν ἀποθάνῃ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας· καὶ μετὰ τὸ ἀποθανεῖν τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, ἐπαναστραφήσεται ὁ φονεύσας εἰς τὴν γῆν τῆς κατασχέσεως αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ταῦτα ὑμῖν εἰς δικαίωμα κρίματος εἰς τὰς γενεὰς ὑμῶν ἐν πάσαις ταῖς κατοικίαις ὑμῶν. Πᾶς πατάξας ψυχήν, διὰ μαρτύρων φονεύσεις τὸν φονεύσαντα· καὶ μάρτυς εἷς οὐ μαρτυρήσει ἐπὶ ψυχὴν ἀποθανεῖν. Καὶ οὐ λήψεσθε λύτρα περὶ ψυχῆς παρὰ τοῦ φονεύσαντος τοῦ ἐνόχου ὄντος ἀναιρεθῆναι· θανάτῳ γὰρ θανατωθήσεται. Οὐ λήψεσθε λύτρα τοῦ φυγεῖν εἰς πόλιν τῶν φυγαδευτηρίων, τοῦ πάλιν κατοικεῖν ἐπὶ τῆς γῆς, ἕως ἂν ἀποθάνῃ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας. Καὶ οὐ μὴ φονοκτονήσητε τὴν γῆν εἰς ἣν ὑμεῖς κατοικεῖτε· τὸ γὰρ αἷμα τοῦτο φονοκτονεῖ τὴν γῆν, καὶ οὐκ ἐξιλασθήσεται ἡ γῆ ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ ἐκχυθέντος ἐπ αὐτῆς, ἀλλ ἐπὶ τοῦ αἵματος τοῦ ἐκχέοντος. Καὶ οὐ μιανεῖτε τὴν γῆν ἐφ ἧς κατοικεῖτε ἐπ αὐτῆς, ἐφ ἧς ἐγὼ κατασκηνώ ἐν ὑμῖν· ἐγὼ γάρ εἰμι Κύριος κατασκηνῶν ἐν

μέσῳ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.

# 36

Καὶ προσῆλθον οἱ ἄρχοντες φυλῆς υἱῶν Γαλαὰδ υἱοῦ Μαχὶρ υἱοῦ Μανασσῆ ἐκ τῆς φυλῆς υἱῶν Ἰωσὴφ, καὶ ἐλάλησαν ἔναντι Μωυσῆ, καὶ ἔναντι Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἔναντι τῶν ἀρχόντων οἴκων πατριῶν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ εἶπαν, τῷ κυρίῳ ἡμῶν ἐνετείλατο Κύριος ἀποδοῦναι τὴν γῆν τῆς κληρονομίας ἐν κλήρῳ τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ τῷ κυρίῳ συνέταξε Κύριος δοῦναι τὴν κληρονομίαν Σαλπαὰδ τοῦ ἀδελφοῦ ἡμῶν ταῖς θυγατράσιν αὐτοῦ. Καὶ ἔσονται ἑνὶ τῶν φυλῶν υἱῶν Ἰσραὴλ γυναῖκες· καὶ ἀφαιρεθήσεται ὁ κλῆρος αὐτῶν ἐκ τῆς κατασχέσεως τῶν πατέρεν ἡμῶν, καὶ προστεθήσεται εἰς κληρονομίαν τῆς φυλῆς, οἷς ἂν γένωνται γυναῖκες, καὶ ἐκ τοῦ κλήρου τῆς κληρονομίας ἡμῶν ἀφαιρεθήσεται. Ἐὰν δὲ γένηται ἡ ἄφεσις τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ προστεθήσεται ἡ κληρονομία αὐτῶν ἐπὶ τὴν κληρονομίαν τῆς φυλῆς, οἷς ἂν γένωνται γυναῖκες, καὶ ἀπὸ τῆς κληρονομίας φυλῆς πατριᾶς ἡμῶν ἀφαιρεθήσεται ἡ κληρονομία αὐτῶν. Καὶ ἐνετείλατο Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ διὰ προστάγματος Κυρίου, λέγων, οὕτως φυλὴ υἱῶν Ἰωσὴφ λέγουσι. Τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ συνέταξε Κύριος ταῖς θυγατράσι Σαλπαὰδ, λέγων, οὗ ἀρέσκῃ ἐναντίον αὐτῶν, ἔστωσαν γυναῖκες, πλὴν ἐκ τοῦ δήμου τοῦ πατρὸς αὐτῶν ἔστωσαν γυναῖκες. Καὶ οὐχὶ περιστραφήσεται κληρονομία τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἀπὸ φυλῆς ἐπὶ φύλην, ὅτι ἕκαστος ἐν τῇ κληρονομίᾳ τῆς φυλῆς τῆς πατριᾶς αὐτοῦ προσκολληθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Καὶ πᾶσα θυγάτηρ ἀγχιατεύουσα κληρονομίαν ἐκ τῶν φυλῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἑνὶ τῶν ἐκ

τοῦ δήμου τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἔσονται γυναῖκες, ἵνα ἀγχιστεύσωσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἕκαστος τὴν κληρονομίαν τὴν πατρικὴν αὐτοῦ. Καὶ οὐ περιστραφήσεται ὁ κλῆρος ἐκ φυλῆς ἐπὶ φυλὴν ἑτέραν, ἀλλ ἕκαστος ἐν τῇ κληρονομίᾳ αὐτοῦ προσκολληθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν θυγατράσι Σαλπαάδ. Καὶ ἐγένοντο Θερσὰ καὶ Ἐγλὰ καὶ Μελχὰ καὶ Νούα καὶ Μαλαὰ θυγατέρες Σαλπαὰδ, τοῖς ἀνεψιοῖς αὐτῶν, ἐκ τοῦ δήμου τοῦ Μανασσῆ υἱῶν Ἰωσὴφ ἐγενήθησαν γυναῖκες· καὶ ἐγενήθη ἡ κληρονομία αὐτῶν ἐπὶ τὴν φυλὴν δήμου τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Αὗται αἱ ἐντολαὶ καὶ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα, ἃ ἐνετείλατο Κύριος ἐν χειρὶ Μωυσῆ ἐπὶ δυσμῶν Μωὰβ ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχώ.

# ΔΕΥΤΕΡΟΝΟΜΙΟΝ

## 1

ΟΥΤΟΙ οἱ λόγοι οὓς ἐλάλησε Μωυσῆς παντὶ Ἰσραὴλ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν τῇ ἐρήμῳ πρὸς δυσμαῖς πλησίον τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης ἀναμέσον Φαρὰν Τοφὸλ, καὶ Λοβὸν, καὶ Αὐλῶν, καὶ καταχρύσεα. Ἕνδεκα ἡμερῶν ἐκ Χωρὴβ ὁδὸς ἐπ ὄρος Σηεὶρ ἕως Κάδης Βαρνή. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ τεσσαρακοστῷ ἔτει ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ μηνὶ μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐλάλησε Μωυσῆς πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραὴλ, κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο Κύριος αὐτῷ πρὸς αὐτούς· μετὰ τὸ πατάξαι Σηὼν βασιλέα Ἀμορῥαίων τὸν κατοικήσαντα ἐν Ἐσεβὼν, καὶ τὸν Ὢγ βασιλέα τῆς Βασὰν τὸν κατοικήσαντα ἐν Ἀσταρὼθ καὶ ἐν Ἐδραΐν, ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν γῇ Μωὰβ, ἤρξατο Μωυσῆς διασαφῆσαι τὸν νόμον τοῦτον, λέγων, Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐλάλησεν ἡμῖν ἐν Χωρὴβ, λέγων, ἱκανούσθω ὑμῖν κατοικεῖν ἐν τῷ ὄρει τούτῳ. Ἐπιστράφητε καὶ ἀπάρατε ὑμεῖς καὶ εἰσπορεύεσθε εἰς ὄρος Ἀμορῥαίων, καὶ πρὸς πάντας τοὺς περιοίκους Ἄραβα, εἰς ὄρος καὶ πεδίον, καὶ πρὸς Λίβα, καὶ παραλίαν γῆν Χαναναίων, καὶ Ἀντιλίβανον ἕως τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου, ποταμοῦ Εὐφράτου. Ἴδετε, παραδέδωκεν ἐνώπιον

ὑμῶν τὴν γῆν· εἰσπορευθέντες κληρονομήσατε τὴν γῆν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν ὑμῶν τῷ Ἀβραὰμ, καὶ Ἰσαὰκ, καὶ Ἰσκὼβ, δοῦναι αὐτοῖς καὶ τῷ σπέρματι αὐτῶν μετ αὐτούς. Καὶ εἶπα πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγων, οὐ δυνήσομαι μόνος φέρειν ὑμᾶς. Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐπλήθυνεν ὑμᾶς, καὶ ἰδού ἐστε σήμερον ὡσεὶ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει. Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν προσθείῃ ὑμῖν ὡς ἐστὲ χιλιοπλασίως, καὶ εὐλογήσαι ὑμᾶς καθότι ἐλάλησεν ὑμῖν. Πῶς δυνήσομαι μόνος φέρειν τὸν κόπον ὑμῶν καὶ τὴν ὑπόστασιν ὑμῶν καὶ τὰς ἀντιλογίας ὑμῶν; Δότε ἑαυτοῖς ἄνδρας σοφοὺς καὶ ἐπιστήμονας καὶ συνετοὺς εἰς τὰς φυλὰς ὑμῶν, καὶ καταστήσω ἐφ ὑμῶν, ἡγουμένους ὑμῶν. Καὶ ἀπεκρίθητέ μοι, καὶ εἴπατε, καλὸν τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησας ποιῆσαι. Καὶ ἔλαβον ἐξ ὑμῶν ἄνδρας σοφοὺς καὶ ἐπιστήμονας καὶ συνετούς, καὶ κατέστησα αὐτοὺς ἡγεῖσθαι ἐφ ὑμῶν χιλιάρχους, καὶ ἑκατοντάρχους, καὶ πεντηκοντάρχους, καὶ δεκάρχους, καὶ γραμματοεισαγωγεῖς τοῖς κριταῖς ὑμῶν· Καὶ ἐνετειλάμην τοῖς κριταῖς ὑμῶν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγων, διακούετε ἀναμέσον τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν, καὶ κρίνατε δικαίως ἀναμέσον ἀνδρὸς, καὶ ἀναμέσον ἀδελφοῦ, καὶ ἀναμέσον προσηλύτου αὐτοῦ. Οὐκ ἐπιγνώσῃ πρόσωπον ἐν κρίσει, κατὰ τὸν μικρὸν καὶ κατὰ τὸν μέγαν κρινεῖς, οὐ μὴ ὑποστείλῃ πρόσωπον ἀνθρώπου, ὅτι ἡ κρίσις τοῦ Θεοῦ ἐστι· καὶ τὸ ῥῆμα ὃ ἐὰν σκληρὸν ᾖ· ἀφ ὑμῶν, ἀνοίσετε αὐτὸ ἐπ ἐμὲ, καὶ ἀκούσομαι αὐτό. Καὶ ἐνετειλάμην ὑμῖν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ πάντας τοὺς λόγους, οὓς ποιήσετε. Καὶ ἀπάραντες ἐκ Χωρὴβ ἐπορεύθημεν πᾶσαν τὴν ἔρημον τὴν μεγάλην καὶ τὴν φοβερὰν ἐκείνην, ἣν εἴδετε, ὁδὸν ὄρους τοῦ Ἀμορῥαίου, καθότι ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἡμῖν, καὶ ἤλθομεν ἕως Κάδης Βαρνή. Καὶ εἶπα πρὸς ὑμᾶς, ἤλθατε ἕως τοῦ ὄρους τοῦ Ἀμορῥαίου,

ὃ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν ὑμῖν. Ἴδετε, παραδέδωκεν ὑμῖν Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν πρὸ προσώπου ὑμῶν τὴν γῆν· ἀναβάντες κληρονομήσατε ὃν τρόπον εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν ὑμῖν· μὴ φοβεῖσθε, μηδὲ δειλιάσητε. Καὶ προσήλθατέ μοι πάντες, καὶ εἴπατε, Ἀποστείλωμεν ἄνδρας προτέρους ἡμῶν, καὶ ἐφοδευσάτωσαν ἡμῖν τὴν γῆν, καὶ ἀναγγειλάτωσαν ἡμῖν ἀπόκρισιν τὴν ὁδὸν δι ἧς ἀναβησόμεθα ἐν αὐτῇ, καὶ τὰς πόλεις εἰς ἃς εἰσπορευσόμεθα εἰς αὐτάς. Καὶ ἤρεσεν ἐναντίον μου τὸ ῥῆμα· καὶ ἔλαβον ἐξ ὑμῶν δώδεκα ἄνδρας, ἄνδρα ἕνα κατά φυλήν. Καὶ ἐπιστραφέντες ἀνέβησαν εἰς τὸ ὄρος, καὶ ἦλθοσαν ἕως φάραγγος βότρυος, καὶ κατεσκόπευσαν αὐτήν. Καὶ ἐλάβοσαν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν ἀπὸ τοῦ καρποῦ τῆς γῆς, καὶ κατήνεγκαν πρὸς ὑμᾶς, καὶ ἔλεγον, Ἀγαθὴ ἡ γῆ, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν ἡμῖν. Καὶ οὐκ ἠθελήσατε ἀναβῆναι, ἀλλ ἠπειθήσατε τῷ ῥήματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ διεγογγύζετε ἐν ταῖς σκηναῖς ὑμῶν, καὶ εἴπατε, διὰ τὸ μισεῖν Κύριον ἡμᾶς, ἐξήγαγεν ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου παραδοῦναι ἡμᾶς εἰς χεῖρας Ἀμορῥαίων, ἐξολοθρεῦσαι ἡμᾶς. Ποῦ ἡμεῖς ἀναβαίνομεν; οἱ δὲ ἀδελφοὶ ὑμῶν ἀπέστησαν τὴν καρδίαν ὑμῶν, λέγοντες, ἔθνος μέγα καὶ πολὺ καὶ δυνατώτερον ἡμῶν, καὶ πόλεις μεγάλαι καὶ τετειχισμέναι ἕως τοῦ οὐρανοῦ· ἀλλὰ καὶ υἱοὺς γιγάντων ἑωράκαμεν ἐκεῖ. Καὶ εἶπα πρὸς ὑμᾶς, μὴ πτήξητε, μηδὲ φοβηθῆτε ἀπ αὐτῶν. Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ὁ προπορευόμενος πρὸ προσώπου ὑμῶν, αὐτὸς συνεκπολεμήσει αὐτοὺς μεθ ὑμῶν κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν ὑμῖν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ ταύτῃ ἣν εἴδετε, ὁδὸν ὄρους τοῦ Ἀμορῥαίου· ὡς τροφοφορήσαι σε Κύριος ὁ Θεός σου, ὡς εἴτις τροφοφορήσαι ἄνθρωπος τὸν υἱὸν αὐτοῦ, κατὰ πᾶσαν τὴν ὁδὸν εἰς ἣν ἐπορεύθητε ἕως ἦλθετε εἰς τὸν τόπον τοῦτον. Καὶ ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ οὐκ ἐνεπιστεύσατε Κυρίῳ τῷ Θεῷ

ἡμῶν, ὃς προπορεύεται πρότερος ὑμῶν ἐν τῇ ὁδῷ ἐκλέγεσθαι ὑμῖν τόπον, ὁδηγῶν ὑμᾶς ἐν πυρὶ νυκτὸς, δεικνύων ὑμῖν τὴν ὁδὸν καθ ἣν πορεύεσθε ἐπ αὐτῆς, καὶ ἐν νεφέλῃ ἡμέρας. Καὶ ἤκουσε Κύριος τὴν φωνὴν τῶν λόγων ὑμῶν, καὶ παροξυνθεὶς ὤμοσε, λέγων, εἰ ὄψεταί τις τῶν ἀνδρῶν τούτων τὴν γῆν ἀγαθὴν ταύτην, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, πλὴν Χάλεβ υἱὸς Ἰεφοννὴ, οὗτος ὄψεται αὐτὴν, καὶ τούτῳ δώσω τὴν γῆν ἐφ ἣν ἐπέβη, καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, διὰ τὸ προσκεῖσθαι αὐτὸν τὰ πρὸς Κύριον. Καὶ ἐμοὶ ἐθυμώθη Κύριος δι ὑμᾶς, λέγων, οὐδὲ σὺ οὐ μὴ εἰσέλθῃς ἐκεῖ. Ἰησοῦς υἱὸς Ναυὴ ὁ παρεστηκώς σοι, οὗτος εἰσελεύσεται ἐκεῖ· αὐτὸν κατίσχυσον, ὅτι αὐτὸς κατακληρονομήσει αὐτὴν τῷ Ἰσραήλ. Καὶ πᾶν παιδίον νέον ὅστις οὐκ οἶδε σήμερον ἀγαθὸν ἢ κακόν, οὗτοι εἰσελεύσονται ἐκεῖ, καὶ τούτοις δώσω αὐτήν, καὶ αὐτοὶ κληρονομήσουσιν αὐτήν. Καὶ ὑμεῖς ἐπιστράφεντες ἐστρατοπεδεύσατε εἰς τὴν ἔρημον, ὁδὸν τὴν ἐπὶ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης. Καὶ ἀπεκρίθητε, καὶ εἴπατε, ἡμάρτομεν ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν· ἡμεῖς ἀναβάντες πολεμήσομεν κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἡμῖν· καὶ ἀναλαβόντες ἕκαστος τὰ σκεύη τὰ πολεμικὰ αὐτοῦ, καὶ συναθροισθέντες ἀναβαίνετε εἰς τὸ ὄρος. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, εἶπον αὐτοῖς, οὐκ ἀναβήσεσθε οὐδὲ μὴ πολεμήσετε, οὐ γάρ εἰμι μεθ ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ συντριβῆτε ἐνώπιον τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν. Καὶ ἐλάλησα ὑμῖν, καὶ οὐκ εἰσηκούσατέ μου· καὶ παρέβητε τὸ ῥῆμα Κυρίου· καὶ παραβιασάμενοι ἀνέβητε εἰς τὸ ὄρος. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ Ἀμορῥαῖος ὁ κατοικῶν ἐν τῷ ὄρει ἐκείνῳ εἰς συνάντησιν ὑμῖν, καὶ κατεδίωξεν ὑμᾶς ὡσεὶ ποιήσαισαν αἱ μέλισσαι, καὶ ἐτίτρωσκον ὑμᾶς ἀπὸ Σηεὶρ ἕως Ἑρμᾶ. Καὶ καθίσαντες ἐκλαίετε ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ οὐκ εἰσήκουσε Κύριος τῆς φωνῆς ὑμῶν, οὐδὲ προσέσχεν

ὑμῖν. Καὶ ἐνεκάθησθε ἐν Κάδης ἡμέρας πολλάς, ὅσας ποτὲ ἡμέρας ἐνεκάθησθε.

# 2

Καὶ ἐπιστραφέντες ἀπῆραμεν εἰς τὴν ἔρημον, ὁδὸν θάλασσαν ἐρυθράν, ὃν τρόπον ἐλάλησε Κύριος πρὸς μὲ, καὶ ἐκυκλώσαμεν τὸ ὄρος τὸ Σηεὶρ ἡμέρας πολλάς. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, ἱκανούσθω ὑμῖν κυκλούν τὸ ὄρος τοῦτο· ἐπιστράφητε οὖν ἐπὶ Βορρᾶν· Καὶ τῷ λαῷ ἔντειλαι, λέγων, ὑμεῖς παραπορεύεσθε διὰ τῶν ὁρίων τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν υἱῶν Ἡσαύ, οἳ κατοικοῦσιν ἐν Σηεὶρ, καὶ φοβηθήσονται ὑμᾶς, καὶ εὐλαβηθήσονται ὑμᾶς σφόδρα. Μὴ συνάψητε πρὸς αὐτοὺς πόλεμον, οὐ γὰρ δῶ ὑμῖν ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν οὐδὲ βῆμα ποδός, ὅτι ἐν κλήρῳ δέδωκα τοῖς υἱοῖς Ἡσαὺ τὸ ὄρος τὸ Σηείρ. Ἀργυρίου βρώματα ἀγοράσατε παρ αὐτῶν καὶ φάγεσθε, καὶ ὕδωρ μέτρῳ λήψεσθε παρ αὐτῶν ἀργυρίου καὶ πίεσθε. Ὁ γὰρ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν εὐλόγησέ σε ἐν παντὶ ἔργῳ τῶν χειρῶν σου· διάγνωθι πῶς διῆλθες τὴν ἔρημον τὴν μεγάλην καὶ τὴν φοβερὰν ἐκείνην· ἰδοὺ τεσσαράκοντα ἔτη Κύριος ὁ Θεός σου μετὰ σοῦ· οὐκ ἐπεδεήθης ῥήματος. Καὶ παρήλθομεν τοὺς ἀδελφοὺς ἡμῶν υἱοὺς Ἡσαῦ, τοὺς κατοικοῦντας ἐν Σηεὶρ, παρὰ τὴν ὁδὸν τὴν Ἄραβα ἀπὸ Αἰλὼν καὶ ἀπὸ Γεσιὼν Γάβερ· καὶ ἐπιστρέψαντες παρήλθομεν ὁδὸν ἔρημον Μωάβ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, μὴ ἐχθραίνετε τοῖς Μωαβιταῖς, καὶ μὴ συνάψητε πρὸς αὐτοὺς πόλεμον· οὐ γὰρ μὴ δῶ ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν ὑμῖν ἐν κλήρῳ, τοῖς γὰρ υἱοῖς Λὼτ δέδωκα τὴν Ἀροὴρ κληρονομεῖν. Οἱ Ὀμμὶν πρότεροι ἐνεκάθηντο ἐπ αὐτῆς, ἔθνος μέγα καὶ πολὺ καὶ

ἰσχύοντες, ὥσπερ οἱ Ἐνακίμ. Ῥαφαΐν λογισθήσονται καὶ οὗτοι ὥσπερ καὶ οἱ Ἐνακίμ· καὶ οἱ Μωαβῖται ἐπονομάζουσιν αὐτοὺς Ὀμμείν. Καὶ ἐν Σηεὶρ ἐνεκάθητο ὁ Χορῥαῖος τὸ πρότερον, καὶ υἱοὶ Ἡσαὺ ἀπώλεσαν αὐτοὺς, καὶ ἐξέτριψαν αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. καὶ κατῳκίσθησαν ἀντ αὐτῶν, ὃν τρόπον ἐποίησεν Ἰσραὴλ τὴν γῆν τῆς κληρονομίας αὐτοῦ, ἣν δέδωκε Κύριος αὐτοῖς. Νῦν οὖν ἀνάστητε καὶ ἀπάρατε ὑμεῖς, καὶ παραπορεύεσθε τὴν φάραγγα Ζάρετ. Καὶ αἱ ἡμέραι ἃς παρεπορεύθημεν ἀπὸ Κάδης Βαρνὴ ἕως οὗ παρήλθομεν τὴν φάραγγα Ζαρὲτ, τριάκοντα καὶ ὀκτὼ ἔτη, ἕως οὗ διέπεσε πᾶσα γενεὰ ἀνδρῶν πολεμιστῶν ἀποθνήσκοντες ἐκ τῆς παρεμβολῆς, καθότι ὤμοσεν Κύριος ὁ Θεός αὐτοὺς. Καὶ ἡ χεὶρ τοῦ Θεοῦ ἦν ἐπ αὐτοῖς ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς ἐκ μέσου τῆς παρεμβολῆς ἕως οὗ διέπεσαν. Καὶ ἐγενήθη ἐπειδὰν ἔπεσαν πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ ἀποθνήσκοντες ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ, καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς μὲ, λέγων, σὺ παραπορεύσῃ σήμερον τὰ ὅρια Μωὰβ τὴν Ἀροὴρ, καὶ προσάξετε ἐγγὺς υἱῶν Ἀμμάν· μὴ ἐχθραίνετε αὐτοῖς, μηδὲ συνάψετε αὐτοῖς εἰς πόλεμον· οὐ γὰρ μὴ δῶ ἀπὸ τῆς γῆς υἱῶν Ἀμμάν σοι ἐν κλήρῳ, ὅτι τοῖς υἱοῖς Λὼτ δέδωκα αὐτὴν ἐν κλήρῳ. Γὴ Ῥαφαΐν λογισθήσεται, καὶ γὰρ ἐπ αὐτῆς κατῴκουν οἱ Ῥαφαΐν τοπρότερον καὶ οἱ Ἀμμανῖται ἐπονομάζουσιν αὐτοὺς Ζοχομμίν. Ἔθνος μέγα καὶ πολὺ καὶ δυνατώτερον ὑμῶν, ὥσπερ καὶ οἱ Ἐνακείμ· καὶ ἀπώλεσεν αὐτοὺς Κύριος πρὸ πρόσωπου αὐτῶν, καὶ κατεκληρονόμησαν καὶ κατῳκίσθησαν, ἀντ αὐτῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Ὥσπερ ἐποίησαν τοῖς υἱοῖς Ἡσαὺ τοῖς κατοικοῦσιν ἐν Σηείρ, ὃν τρόπον ἐξέτριψαν τὸν Χορῥαῖον ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ κατεκληρονόμησαν αὐτοὺς, καὶ κατῳκίσθησαν ἀντ αὐτῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ οἱ Εὐαῖοι οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἀσηδὼθ ἕως Γάζης, καὶ οἱ Καππάδοκες οἱ ἐξελθόντες ἐκ

Καππαδοκίας, ἐξέτριψαν αὐτοὺς, καὶ κατῳκίσθησαν ἀντ αὐτῶν. Νῦν οὖν ἀνάστητε καὶ ἀπάρατε, καὶ παρέλθετε ὑμεῖς τὴν φάραγγα Ἀρνών· ἰδοὺ παραδέδωκα εἰς χεῖράς σου τὸν Σηὼν βασιλέα Ἐσεβὼν τὸν Ἀμορῥαῖον καὶ τὴν γῆν αὐτοῦ· ἐνάρχου κληρονομεῖν· σύναπτε πρὸς αὐτὸν πόλεμον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Ἐνάρχου δοῦναι τὸν τρόμον σου καὶ τὸν φόβον σου ἐπὶ προσώπου πάντων τῶν ἐθνῶν τῶν ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ, οἵτινες ἀκούσαντες τὸ ὄνομά σου ταραχθήσονται, καὶ ὠδῖνας ἕξουσιν ἀπὸ προσώπου σου. Καὶ ἀπέστειλα πρέσβεις ἐκ τῆς ἐρήμου Κεδαμὼθ πρὸς Σηὼν βασιλέα Ἐσεβὼν λόγοις εἰρηνικοῖς, λέγων, παρελεύσομαι διὰ τῆς γῆς σου· ἐν τῇ ὁδῷ παρεύσομαι, οὐκ ἐκκλινῶ δεξιὰ οὐδ ἀριστερά. Βρώματα ἀργυρίου ἀποδώσῃ μοι, καὶ φάγομαι· καὶ ὕδωρ ἀργυρίου ἀποδώσῃ μοι, καὶ πίομαι· πλὴν ὅτι παρελεύσομαι τοῖς ποσί· Καθὼς ἐποίησάν μοι οἱ υἱοὶ Ἡσαῦ οἱ κατοικοῦντες ἐν Σηεὶρ, καὶ οἱ Μωαβῖται οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἀροήρ· ἕως παρέλθω τὸν Ἰορδάνην εἰς τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν ἡμῖν. Καὶ οὐκ ἠθέλησεν Σηὼν βασιλεὺς Ἐσεβὼν παρελθεῖν ἡμᾶς δι αὐτοῦ, ὅτι ἐσκλήρυνε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ κατίσχυσε τὴν καρδίαν αὐτοῦ, ἵνα παραδοθῇ εἰς τὰς χεῖράς σου ὡς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ ἰδοὺ ἤργμαι παραδοῦναι πρὸ προσώπου σου τὸν Σηὼν βασιλέα Ἐσεβὼν τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ ἔναρξαι κληρονομῆσαι τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθε Σηὼν βασιλεὺς Ἐσεβὼν εἰς συνάντησιν ἡμῖν, αὐτὸς καὶ πᾶς ὁ λαὸς αὐτοῦ, εἰς πόλεμον εἰς Ἰασσά. Καὶ παρέδωκεν αὐτὸν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν πρὸ προσώπου ἡμῶν· καὶ ἐπατάξαμεν αὐτὸν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ. Καὶ ἐκρατήσαμεν πασῶν τῶν πόλεων αὐτοῦ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ ἐξωλοθρεύσαμεν πᾶσαν πόλιν ἐξῆς, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν· οὐ κατελίπομεν

ζωγρίαν. Πλὴν τὰ κτήνη ἐπρονομεύσαμεν, καὶ τὰ σκῦλα τῶν πόλεων ἐλάβομεν ἐξ Ἀροὴρ, ἥ ἐστι παρὰ τὸ χεῖλος χειμάῤῥου Ἀρνών, καὶ τὴν πόλιν τὴν οὖσαν ἐν τῇ φάραγγι, καὶ ἕως ὄρους τοῦ Γαλαάδ· οὐκ ἐγενήθη πόλις ἥτις διέφυγεν ἡμᾶς. τὰς πάσας παρέδωκε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰς τὰς χεῖρας ἡμῶν. Πλὴν ἐγγὺς υἱῶν Ἀμμὰν οὐ προσήλθομεν πάντα τὰ συγκυροῦντα χειμάῤῥου Ἰαβὸκ, καὶ τὰς πόλεις τὰς ἐν τῇ ὀρεινῇ, καθότι ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἡμῖν.

# 3

Καὶ ἐπιστραφέντες, ἀνέβημεν ὁδὸν τὴν εἰς Βασάν· καὶ ἐξῆλθεν Ὢγ βασιλεὺς τῆς Βασὰν εἰς συνάντησιν ἡμῖν, αὐτὸς καὶ πᾶς ὁ λαὸς αὐτου εἰς πόλεμον εἰς Ἐδραΐμ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, μὴ φοβηθῇς αὐτόν, ὅτι εἰς τὰς χεῖράς σου παραδέδωκα αὐτὸν, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν αὐτοῦ· καὶ ποιήσεις αὐτῷ, ὥσπερ ἐποίησας Σηὼν βασιλεῖ τῶν Ἀμορῥαίων, ὃς κατῴκει ἐν Ἐσεβών. Καὶ παρέδωκεν αὐτὸν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰς τὰς χεῖρας ἡμῶν, καὶ τὸν Ὢγ βασιλέα τῆς Βασὰν, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ· καὶ ἐπατάξαμεν αὐτὸν, ἕως τοῦ μὴ καταλιπεῖν αὐτοῦ σπέρμα. Καὶ ἐκρατήσαμεν πασῶν τῶν πόλεων αὐτοῦ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ· οὐκ ἦν πόλις, ἣν οὐκ ἐλάβομεν παρ αὐτῶν· ἑξήκοντα πόλεις, πάντα τὰ περίχωρα Ἀργὸβ βασιλέως Ὢγ ἐν Βασάν· Πᾶσαι πόλεις ὀχυραί, τείχη ὑψηλά, πύλαι καὶ μοχλοί· πλὴν τῶν πόλεων τῶν Φερεζαίων τῶν πολλῶν σφόδρα. Ἐξωλοθρεύσαμεν, ὥσπερ ἐποιήσαμεν τὸν Σηὼν βασιλέα Ἐσεβών, καὶ ἐξωλοθρεύσαμεν πᾶσαν πόλιν ἐξῆς, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ παιδία, καὶ πάντα τὰ

κτήνη· καὶ τὰ σκῦλα τῶν πόλεων ἐπρονομεύσαμεν ἑαυτοῖς. Καὶ ἐλάβομεν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ τὴν γῆν ἐκ χειρῶν δύο βασιλέων τῶν Ἀμορῥαίων, οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἀπὸ τοῦ χειμάῤῥου Ἀρνὼν καὶ ἕως Ἀερμών· Οἱ Φοίνικες ἐπονομάζουσιν τὸ Ἀερμὼν Σανιώρ, καὶ ὁ Ἀμορῥαῖος ἐπωνόμασεν αὐτὸ Σανίρ· Πᾶσαι πόλεις Μισὼρ, καὶ πᾶσα Γαλαάδ, καὶ πᾶσα Βασὰν ἕως Ἑλχᾶ καὶ Ἐδραΐμ, πόλεις βασιλείας τοῦ Ὢγ ἐν τῇ Βασάν· Ὅτι πλὴν Ὢγ βασιλεὺς Βασὰν κατελείφθη ἀπὸ τῶν Ῥαφαΐν· ἰδοὺ ἡ κλίνη αὐτοῦ κλίνη σιδηρᾶ, ἰδοὺ αὕτη ἐν τῇ ἄκρᾳ τῶν υἱῶν Ἀμμών· ἐννέα πήχεων τὸ μηκος αὐτῆς, καὶ τεσσάρων πήχεων τὸ εὖρος αὐτῆς ἐν πήχει ἀνδρός. Καὶ τὴν γῆν ἐκείνην ἐκληρονομήσαμεν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπὸ Ἀροήρ, ἥ ἐστι παρὰ τὸ χείλος χειμάῤῥου Ἀρνών, καὶ τὸ ἥμισυ τοῦ ὄρους Γαλαάδ· καὶ τὰς πόλεις αὐτοῦ ἔδωκα τῷ Ῥουβὴν καὶ τῷ Γάδ. Καὶ τὸ κατάλοιπον τοῦ Γαλαὰδ, καὶ πᾶσαν τὴν Βασάν βασιλείαν Ὢγ ἔδωκα τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσή, καὶ πᾶσαν περίχωρον Ἀργόβ, πᾶσαν Βασὰν ἐκείνην· γῆ Ῥαφαΐν λογισθήσεται. Καὶ Ἰαΐρ υἱὸς Μανασσὴ ἔλαβε πᾶσαν τὴν περίχωρον Ἀργὸβ ἕως τῶν ὁρίων Γαργασὶ καὶ Μαχαθί· ἐπωνόμασεν αὐτὰς ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ τὴν Βασὰν Θαυὼθ Ἰαεΐρ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ τῷ Μαχὶρ ἔδωκα τὴν Γαλαάδ. Καὶ τῷ Ῥουβὴν καὶ τῷ Γάδ δέδωκα ὑπὸ τῆς Γαλαὰδ ἕως χειμάῤῥου Ἀρνών μέσον τοῦ χειμάῤῥου ὅριον καὶ ἕως τοῦ Ἰαβόκ· ὁ χειμάῤῥους ὅριον τοῖς υἱοῖς Ἀμμάν· Καὶ ἡ Ἄραβα καὶ ὁ Ἰορδάνης ὅριον Μαχαναρὲθ, καὶ ἕως θαλάσσης Ἄραβά, θαλάσσης ἁλυκῆς ὑπὸ Ἀσηδὼθ τὴν Φασγὰ ἀνατολῶν. Καὶ ἐνετειλάμην ὑμῖν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγων, Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἔδωκεν ὑμῖν τὴν γῆν ταύτην ἐν κλήρῳ· ἐνοπλισάμενοι προπορεύεσθε πρὸ προσώπου τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν υἱῶν Ἰσραήλ πᾶς δυνατός. Πλὴν αἱ γυναῖκες ὑμῶν καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν καὶ τὰ

κτήνη ὑμῶν, οἶδα ὅτι πολλὰ κτήνη ὑμῖν, κατοικείτωσαν ἐν ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, αἷς ἔδωκα ὑμῖν, ἕως ἂν καταπαύσῃ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, ὥσπερ καὶ ὑμᾶς, καὶ κατακληρονομήσωσι καὶ οὗτοι τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν αὐτοῖς ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ ἐπαναστραφήσεσθε ἕκαστος εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, ἣν ἔδωκα ὑμῖν. Καὶ τῷ Ἰησοῦ ἐνετειλάμην ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγων, οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ἑωράκασιν πάντα, ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τοῖς δυσὶ βασιλεῦσι τούτοις· οὕτως ποιήσει Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν πάσας τὰς βασιλείας ἐφ ἃς σὺ διαβαίνεις ἐκεῖ. Οὐ φοβηθήσεσθε ἀπ αὐτῶν, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν αὐτὸς πολεμήσει περὶ ὑμῶν. Καὶ ἐδεήθην Κυρίου ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγων, Κύριε Θεὲ, σὺ ἤρξω δεῖξαι τῷ σῷ θεράποντι τὴν ἰσχύν σου, καὶ τὴν δύναμίν σου, καὶ τὴν χεῖρα τὴν κραταιὰν, καὶ τὸν βραχίονα τὸν ὑψηλόν· τίς γάρ ἐστι Θεὸς ἐν τῷ οὐρανῷ ἢ ἐπὶ τῆς γῆς, ὅστις ποιήσει καθὰ ἐποίησας σὺ, καὶ κατὰ τὴν ἰσχύν σου; Διαβὰς οὖν ὄψομαι τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν ταύην τὴν οὖσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, τὸ ὄρος τοῦτο τὸ ἀγαθὸν καὶ τὸν Ἀντιλίβανον. Καὶ ὑπερεῖδε Κύριος ἐμὲ ἕνεκεν ὑμῶν, καὶ οὐκ εἰσήκουσέ μου· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, ἱκανούσθω σοι, μὴ προσθῇς ἔτι λαλῆσαι τὸν λόγον τοῦτον. Ἀνάβηθι ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ λελαξευμένου, καὶ ἀναβλέψας τοὶς ἀφθαλμοῖς σου κατὰ θάλασσαν καὶ Βορῤᾶν καὶ Λίβα καὶ ἀνατολάς, καὶ ἴδε τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, ὅτι οὐ διαβήσῃ τὸν Ἰορδάνην τοῦτον. Καὶ ἔντειλαι Ἰησοῦ καὶ κατίσχυσον αὐτὸν καὶ παρακάλεσον αὐτὸν, ὅτι οὗτος διαβήσεται πρὸ προσώπου τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ οὗτος κατακληρονομήσει αὐτοῖς πᾶσαν τὴν γῆν ἣν ἑώρακας. Καὶ ἐνεκαθήμεθα ἐν νάπῃ σύνεγγυς οἴκου Φογώρ.

# 4

Καὶ νῦν Ἰσραὴλ ἄκουε τῶν δικαιωμάτων καὶ τῶν κριμάτων, ὅσα ἐγὼ διδάσκω ὑμᾶς σήμερον ποιεῖν, ἵνα ζῆτε, καὶ πολυπλασιασθῆτε, καὶ εἰσελθόντες κληρονομήσητε τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν δίδωσιν ὑμῖν. Οὐ προσθήσετε πρὸς τὸ ῥῆμα ὃ ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν, καὶ οὐκ ἀφελεῖτε ἀπ αὐτοῦ· φυλάσσεσθε τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον. Οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ἑωράκασι πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τῷ Βεελφεγὼρ, ὅτι πᾶς ἄνθρωπος ὅστις ἐπορεύθη ὀπίσω Βεελφεγὼρ, ἐξέτριψεν αὐτὸν Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐξ ὑμῶν. Ὑμεῖς δὲ οἱ προσκείμενοι Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν, ζῆτε πάντες ἐν τῇ σήμερον. Ἴδετε, δέδειχα ὑμῖν δικαιώματα καὶ κρίσεις καθὰ ἐνετείλατό μοι Κύριος, ποιῆσαι οὕτως ἐν τῇ γῇ εἰς ἣν ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε ἐκεῖ κληρονομεῖν αὐτήν. Καὶ φυλάξεσθε καὶ ποιήσετε· ὅτι αὕτη ἡ σοφία ὑμῶν καὶ ἡ σύνεσις ἐναντίον πάντων τῶν ἐθνῶν, ὅσοι ἂν ἀκούσωσι πάντα τὰ δικαιώματα ταῦτα· καὶ ἐροῦσιν, ἰδοὺ λαὸς σοφὸς καὶ ἐπιστήμων τὸ ἔθνος τὸ μέγα τοῦτο. Ὅτι ποῖον ἔθνος μέγα, ᾧ ἐστιν αὐτῷ Θεὸς ἐγγίζων αὐτοῖς ὡς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐν πᾶσιν οἷς ἐὰν αὐτὸν ἐπικαλεσώμεθα; Καὶ ποῖον ἔθνος μέγα, ᾧ ἐστιν αὐτῷ δικαιώματα καὶ κρίματα δίκαια κατὰ πάντα τὸν νόμον τοῦτον, ὃν ἐγὼ δίδωμι ἐνώπιον ὑμῶν σήμερον; Πρόσεχε σεαυτῷ, καὶ φύλαξον τὴν ψυχήν σου σφόδρα· μὴ ἐπιλάθῃ πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἑωράκασιν οἱ ὀφθαλμοί σου, καὶ μὴ ἀποστήτωσαν ἀπὸ τῆς καρδίας σου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου· καὶ συμβιβάσεις τοὺς υἱούς σου καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν σου, ἡμέραν ἣν ἔστητε ἐνώπιον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐν Χωρὴβ

τῇ ἡμέρᾳ τῆς ἐκκλησίας· ὅτε εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἐκκλησίασον πρὸς μὲ τὸν λαὸν, καὶ ἀκουσάτωσαν τὰ ῥήματά μου, ὅπως μάθωσι φοβεῖσθαί με πάσας τὰς ἡμέρας ἃς αὐτοὶ ζῶσιν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν διδάξουσι. Καὶ προσήλθετε καὶ ἔστητε ὑπὸ τὸ ὄρος· καὶ τὸ ὄρος ἐκαίετο πυρὶ ἕως τοῦ οὐρανοῦ· σκότος, γνόφος, θύελλα. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐκ μέσου τοῦ πυρὸς φωνὴν ῥημάτων, ἣν ὑμεῖς ἠκούσατε· καὶ ὁμοίωμα οὐκ εἴδετε, ἀλλ ἢ φωνήν· Καὶ ἀνήγγειλεν ὑμῖν τὴν διαθήκην αὐτοῦ, ἣν ἐνετείλατο ὑμῖν ποιεῖν, τὰ δέκα ῥήματα, καὶ ἔγραψεν αὐτὰ ἐπὶ δύο πλάκας λιθίνας. Καὶ ἐμοὶ ἐνετείλατο Κύριος ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, διδάξαι ὑμᾶς δικαιώματα καὶ κρίσεις, ποιεῖν ὑμᾶς αὐτὰ ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Καὶ φυλάξεσθε σφόδρα τὰς ψυχὰς ὑμῶν, ὅτι οὐκ εἴδετε ὁμοίωμα ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐλάλησε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐν Χωρὴβ ἐν τῷ ὄρει ἐκ μέσου τοῦ πυρός. Μὴ ἀνομήσητε καὶ ποιήσητε ὑμῖν ἑαυτοῖς γλυπτὸν ὁμοίωμα, πᾶσαν εἰκόνα ὁμοίωμα ἀρσενικοῦ ἢ θηλυκοῦ, ὁμοίωμα παντὸς κτήνους τῶν ὄντων ἐπὶ τῆς γῆς, ὁμοίωμα παντὸς ὀρνέου πτερωτοῦ ὃ πέταται ὑπὸ τὸν οὐρανὸν, ὁμοίωμα παντὸς ἑρπετοῦ ὃ ἕρπει ἐπὶ τῆς γῆς, ὁμοίωμα παντὸς ἰχθύος, ὅσα ἐστὶν ἐν τοῖς ὕδασιν ὑποκάτω τῆς γῆς. Καὶ μὴ ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἰδὼν τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνην καὶ τοὺς ἀστέρας, καὶ πάντα τὸν κόσμον τοῦ οὐρανοῦ, πλανηθεὶς προσκυνήσῃς αὐτοῖς, καὶ λατρεύσῃς αὐτοῖς, ἃ ἀπένειμε Κύριος ὁ Θεός σου αὐτὰ πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τοῖς ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ. Ὑμᾶς δὲ ἔλαβεν ὁ Θεὸς, καὶ ἐξήγαγεν ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐκ τῆς καμίνου τῆς σιδηρᾶς, ἐξ Αἰγύπτου, εἶναι αὐτῷ λαὸν ἔγκληρον, ὡς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ Κύριος ὁ Θεὸς ἐθυμώθη μοι περὶ τῶν λεγομένων ὑφ ὑμῶν, καὶ ὤμοσεν ἵνα μὴ διαβῶ τὸν Ἰορδάνην τοῦτον, καὶ ἵνα μὴ εἰσέλθω εἰς

τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ. Ἐγὼ γὰρ ἀποθνήσκω ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, καὶ οὐ διαβαίνω τὸν Ἰορδάνην τοῦτον· ὑμεῖς δὲ διαβαίνετε, καὶ κληρονομήσετε τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν ταύτην. Προσέχετε ὑμῖν, μὴ ἐπιλάθησθε τὴν διαθήκην Κύριου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ἣν διέθετο πρὸς ὑμᾶς, καὶ ἀνομήσητε, καὶ ποιήσητε ὑμῖν ἑαυτοῖς γλυπτὸν ὁμοίωμα πάντων ὧν συνέταξέ σοι Κύριος ὁ Θεός σου. Ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου πῦρ καταναλίσκον ἐστί, Θεὸς ζηλωτής. Ἐὰν δὲ γεννήσῃς υἱοὺς καὶ υἱοὺς τῶν υἱῶν σου, καὶ χρονίσητε ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἀνομήσητε, καὶ ποιήσετε γλυπτὸν ὁμοίωμα παντός, καὶ ποιήσητε τὸ πονηρὸν ἐνώπιου Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν παροργίσαι αὐτόν, διαμαρτύρομαι ὑμῖν σήμερον τὸν τε οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, ὅτι ἀπωλίᾳ ἀπολεῖσθε ἀπὸ τῆς γῆς, εἰς ἣν ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην ἐκεῖ κληρονομῆσαι· οὐχὶ πολυχρονιεῖτε ἡμέρας ἐπ αὐτῆς, ἀλλ ἢ ἐκτριβῇ ἐκτριβήσεσθε. Καὶ διασπερεῖ Κύριος ὑμᾶς ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι, καὶ καταλειφθήσεσθε ὀλίγοι ἀριθμῷ ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, εἰς οὓς εἰσάξει Κύριος ὑμᾶς ἐκεῖ. Καὶ λατρεύσετε ἐκεῖ θεοῖς ἑτέροις ἔργοις χειρῶν ἀνθρώπων, ξύλοις καὶ λίθοις, οἳ οὐκ ὄψονται, οὔτε μὴ ἀκούσωσιν, οὔτε μὴ φάγωσιν, οὔτε μὴ ὀσφρανθῶσι. Καὶ ζητήσετε ἐκεῖ Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν, καὶ εὑρήσετε αὐτὸν ὅταν ἐκζητήσητε αὐτὸν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου ἐν τῇ θλίψει σου· Καὶ εὑρήσουσί σε πάντες οἱ λόγοι οὗτοι ἐπ ἐσχάτῳ τῶν ἡμερῶν, καὶ ἐπιστραφήσῃ πρὸς Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς σὐτοῦ· Ὅτι Θεὸς οἰκτίρμων Κύριος ὁ Θεός σου· οὐκ ἐγκαταλείψει σε, οὐδὲ μὴ ἐκτρίψει σε· οὐκ ἐπιλήσεται τὴν διαθήκην τῶν πατέρων σου, ἣν ὤμοσεν αὐτοῖς Κύριος. Ἐπερωτήσατε ἡμέρας προτέρας τὰς γενομένας προτέρας σου ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς ἔκτισεν ὁ Θεὸς ἄνθρωπον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ τὸ

ἄκρον τοῦ οὐρανοῦ ἕως τοῦ ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ, εἰ γέγονε κατὰ τὸ ῥῆμα τὸ μέγα τοῦτο, εἰ ἤκουσται τοιοῦτο· εἰ ἀκήκοεν ἔθνος φωνὴν Θεοῦ ζῶντος λαλοῦντος ἐκ μέσου τοῦ πυρός, ὃν τρόπον ἀκήκοας σὺ καὶ ἔζησας· εἰ ἐπείρασεν ὁ Θεὸς εἰσελθὼν λαβεῖν ἑαυτῷ ἔθνος ἐκ μέσου ἔθνους ἐν πειρασμῷ, καὶ ἐν σημείοις, καὶ ἐν τέρασι, καὶ ἐν πολέμῳ, καὶ ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, καὶ ἐν ὁράμασιν μεγάλοις, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐν Αἰγύπτῳ ἐνώπιόν σου βλέποντος· ὥστε εἰδῆσαί σε ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου οὗτος Θεός ἐστι, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν αὐτοῦ. Ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἀκουστὴ ἐγένετο ἡ φωνὴ αὐτοῦ παιδεῦσαί σε, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς ἔδειξέ σοι τὸ πῦρ αὐτοῦ τὸ μέγα, καὶ τὰ ῥήματα αὐτοῦ ἤκουσας ἐκ μέσου τοῦ πυρός. Διὰ τὸ ἀγαπῆσαι αὐτὸν τοὺς πατέρας σου, καὶ ἐξελέξατο τὸ σπέρμα αὐτῶν μετ αὐτοὺς ὑμᾶς, καὶ ἐξήγαγέ σε αὐτὸς ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ τῇ μεγάλῃ ἐξ Αἰγύπτου, ἐξολοθρεῦσαι ἔθνη μεγάλα καὶ ἰσχυρότερά σου πρὸ προσώπου σου, εἰσαγαγεῖν σε δοῦναί σοι τὴν γῆν αὐτῶν κληρονομεῖν, καθὼς ἔχεις σήμερον. Καὶ γνώσῃ σήμερον, καὶ ἐπιστραφήσῃ τῇ διανοίᾳ, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου οὗτος Θεὸς ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω καὶ ἐπὶ τῆς γῆς κάτω, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν αὐτοῦ. Καὶ φυλάξασθε τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, ὅσα ἐγὼ ἀντέλλομαί σοι σήμερον, ἵνα εὖ σοι γένηται καὶ τοῖς υἱοῖς σου μετὰ σὲ, ὅπως μακροήμεροι γένησθε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι πάσας τὰς ἡμέρας. Τότε ἀφώρισε Μωυσῆς τρεῖς πόλεις πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου, φυγεῖν ἐκεῖ τὸν φονευτὴν ὃς ἂν φονεύσῃ τὸν πλησίον οὐκ εἰδὼς, καὶ οὗτος οὐ μισῶν αὐτὸν πρὸ τῆς χθὲς καὶ τῆς τρίτης, καὶ καταφεύξεται εἰς μίαν τῶν πόλεων τούτων, καὶ ζήσεται· τὴν Βοσὸρ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν τῇ γῇ τῇ πεδινῇ τῷ Ῥουβήν, καὶ τὴν Ῥαμὼθ ἐν Γαλαὰδ τῷ Γαδδί, καὶ τὴν Γαυλὼν ἐν Βασὰν τῷ Μανασσῇ. Οὗτος ὁ

νόμος, ὃν παρέθετο Μωυσῆς ἐνώπιον υἱῶν Ἰσραήλ. Ταῦτα τὰ μαρτύρια, καὶ τὰ δικαιώματα, καὶ τὰ κρίματα, ὅσα ἐλάλησε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ἐν φάραγγι, ἐγγὺς οἴκου Φογώρ, ἐν γῇ Σηὼν βασιλέως τῶν Ἀμορῥαίων, ὃς κατῴκει ἐν Ἐσεβὼν, ὃν ἐπάταξε Μωυσῆς, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ, ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἐκληρονόμησαν τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ τὴν γῆν Ὢγ βασιλέως τῆς Βασὰν, δύο βασιλέων τῶν Ἀμορῥαίων, οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου κατὰ ἀνατολὰς ἡλίου, ἀπὸ Ἀροὴρ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τοῦ χείλους χειμάῤῥου Ἀρνών, καὶ ἐπὶ τοῦ ὄρους τοῦ Σηὼν, ὅ ἐστιν Ἀερμὼν, πᾶσαν τὴν Ἄραβα πέραν τοῦ Ἰορδάνου κατὰ ἀνατολὰς ἡλίου ὑπὸ Ἀσηδὼθ τὴν λαξευτήν.

# 5

Καὶ ἐκάλεσε Μωυσῆς πάντα Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς, ἄκουε Ἰσραὴλ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα, ὅσα ἐγὼ λαλῶ ἐν τοῖς ὠσὶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, καὶ μαθήσεσθε αὐτὰ, καὶ φυλάξεσθε ποιεῖν αὐτά. Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν διέθετο πρὸς ὑμᾶς διαθήκην ἐν Χωρήβ. Οὐχὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν διέθετο Κύριος τὴν διαθήκην ταύτην, ἀλλ ἢ πρὸς ὑμᾶς· ὑμεῖς ὧδε πάντες ζῶντες σήμερον. Πρόσωπον κατὰ πρόσωπον ἐλάλησε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ ὄρει ἐκ μέσου τοῦ πυρός. Κᾀγὼ εἱστήκειν ἀναμέσον Κυρίου καὶ ὑμῶν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν τὰ ῥήματα Κυρίου, ὅτι ἐφοβήθητε ἀπὸ προσώπου τοῦ πυρὸς, καὶ οὐκ ἀνέβητε εἰς τὸ ὄρος, λέγων ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ Θεός σου ὁ ἐξαγαγών σε ἐκ γῆς Αἰγύπτοῦ, ἐξ οἴκου δουλείας. Οὐκ ἔσονταί σοι θεοὶ ἕτεροι πρὸ προσώπου μου.

Οὐ ποιήσεις σεαυτῷ εἴδωλον, οὐδὲ παντὸς ὁμοίωμα, ὅσα ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω, καὶ ὅσα ἐν τῇ γῇ κάτω, καὶ ὅσα ἐν τοῖς ὕδασιν ὑποκάτω τῆς γῆς. Οὐ πρόσκυνήσεις αὐτοῖς, οὐδὲ μὴ λατρεύσῃς αὐτοῖς· ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ Θεός σου, Θεὸς ζηλωτὴς, ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας πατέρων ἐπὶ τέκνα ἐπὶ τρίτην καὶ τετάρτην γενεὰν τοῖς μισοῦσί με, καὶ ποιῶν ἔλεος εἰς χιλιάδας τοῖς ἀγαπῶσί με, καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰ προστάγματά μου. Οὐ λήψῃ τὸ ὄνομα Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐπὶ ματαίῳ· οὐ γὰρ μὴ καθαρίσῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὸν λαμβάνοντα τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶ ματαίῳ. Φύλαξαι τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων ἁγιάζειν αὐτὴν, ὃν τρόπον ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου. Ἓξ ἡμέρας ἐργᾷ καὶ ποιήσεις πάντα τὰ ἔργα σου· τῇ δὲ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ σάββατα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· οὐ ποιήσεις ἐν αὐτῇ πᾶν ἔργον σὺ καὶ ὁ υἱός σου καὶ ἡ θυγάτηρ σου, ὁ παῖς σου καὶ ἡ παιδίσκη σου, ὁ βοῦς σου καὶ τὸ ὑποζύγιόνσου, καὶ πᾶν κτῆνός σου, καὶ προσήλυτος ὁ παροικῶν ἐν σοὶ· ἵνα ἀναπαύσηται ὁ παῖς σου, καὶ ἡ παιδίσκη σου, καὶ τὸ ὑποζύγίον σου, ὥσπερ καὶ σύ. Καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἦσθα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἐξήγαγέ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐκεῖθεν ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ· διὰ τοῦτο συνέταξέ σοι Κύριος ὁ Θεός σου ὥστε φυλάσσεσθαι τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων καὶ ἁγιάζειν αὐτήν. Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου, ὃν τρόπον ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου, ἵνα εὖ σοι γένηται, καὶ ἵνα μακροχρόνιος γένῃ ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Οὐ φονεύσεις. Οὐ μοιχεύσεις. Οὐ κλέψεις. Οὐ ψευδομαρτυρήσεις κατὰ τοῦ πλησίον σου μαρτυρίαν ψευδῆ. Οὐκ ἐπιθυμήσεις τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον σου· οὐκ ἐπιθυμήσεις τὴν οἰκίαν τοῦ πλησίον σου, οὔτε τὸν ἀγρὸν αὐτοῦ, οὔτε τὸν παῖδα αὐτοῦ, οὔτε τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, οὔτε τοῦ βοὸς αὐτοῦ, οὔτε τοῦ ὑποζυγίου αὐτοῦ, οὔτε παντὸς κτήνους

αὐτοῦ, οὔτε πάντα ὅσα τῷ πλησίον σου ἐστί. Ταῦτα τὰ ῥήματα ἐλάλησε Κύριος πρὸς πᾶσαν συναγωγὴν ὑμῶν ἐν τῷ ὄρει ἐκ μέσου τοῦ πυρός· σκότος, γνόφος, θύελλα, φωνὴ μεγάλη· καὶ οὐ προσέθηκε· καὶ ἔγραψεν αὐτὰ ἐπὶ δύο πλάκας λιθίνας, καὶ ἔδωκέ μοι. Καὶ ἐγένετο ὡς ἠκούσατε τὴν φωνὴν ἐκ μέσου τοῦ πυρός, καὶ τὸ ὄρος ἐκαίετο πυρί, καὶ προσήλθετε πρὸς μὲ πάντες οἱ ἡγούμενοι τῶν φυλῶν ὑμῶν, καὶ ἡ γερουσία ὑμῶν, καὶ ἐλέγετε, ἰδοὺ ἔδειξεν ἡμῖν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τὴν δόξαν αὐτοῦ, καὶ τὴν φωνὴν αὐτοῦ ἠκούσαμεν ἐκ μέσου τοῦ πυρός· ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ εἴδομεν ὅτι λαλήσει ὁ Θεὸς πρὸς ἄνθρωπον, καὶ ζήσεται. Καὶ νῦν μὴ ἀποθάνωμεν, ὅτι ἐξαναλώσει ἡμᾶς τὸ πῦρ τὸ μέγα τοῦτο, ἐὰν προσθώμεθα ἡμεῖς ἀκοῦσαι τὴν φωνὴν Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἔτι, καὶ ἀποθανούμεθα. Τίς γὰρ σὰρξ ἥτις ἤκουσε φωνὴν Θεοῦ ζῶντος, λαλοῦντος ἐκ μέσου τοῦ πυρὸς, ὡς ἡμεῖς, καὶ ζήσεται; Πρόσελθε σὺ, καὶ ἄκουσον πάντα ὅσα ἂν εἴπῃ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ σὺ λαλήσεις πρὸς ἡμᾶς πάντα ὅσα ἂν λαλήσει Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν πρὸς σὲ, καὶ ἀκουσόμεθα, καὶ ποιήσομεν. Καὶ ἤκουσε Κύριος τὴν φωνὴν τῶν λόγων ὑμῶν λαλούντων πρὸς μέ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, ἤκουσα τὴν φωνὴν τῶν λόγων τοῦ λαοῦ τούτου ὅσα ἐλάλησαν πρὸς σέ· ὀρθῶς πάντα ὅσα ἐλάλησαν. Τίς δώσει εἶναι οὕτω τὴν καρδίαν αὐτῶν ἐν αὐτοῖς, ὥστε φοβεῖσθαί με καὶ φυλάσσεσθαι τὰς ἐντολάς μου πάσας τὰς ἡμέρας, ἵνα εὖ ᾖ· αὐτοῖς, καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῶν δι αἰῶνος; Βάδισον, εἶπον αὐτοῖς, ἀποστράφητε ὑμεῖς εἰς τοὺς οἴκους ὑμῶν· σὺ δὲ αὐτοῦ στῆθι μετ ἐμοῦ, καὶ λαλήσω πρὸς σὲ τὰς ἐντολὰς καὶ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα ὅσα διδάξεις αὐτοὺς, καὶ ποιείτωσαν οὕτως ἐν τῇ γῇ ἣν ἐγὼ δίδωμι αὐτοῖς ἐν κλήρῳ. Καὶ φυλάξεσθε ποιεῖν ὃν τρόπον ἐνετειλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου· οὐκ ἐκκλινεῖτε εἰς δεξιὰ οὐδὲ εἰς ἀριστερά, κατὰ πᾶσαν

τὴν ὁδὸν, ἣν ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου πορεύεσθαι ἐν αὐτῇ, ὅπως καταπαύσῃ σε, καὶ εὖ σοι ᾖ·, καὶ μακροημερεύσητε ἐπὶ τῆς γῆς ἣν κληρονομήσετε.

# 6

Καὶ αὗται αἱ ἐντολαὶ καὶ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα ὅσα ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν διδάξαι ὑμᾶς ποιεῖν οὕτως ἐν τῇ γῇ, εἰς ἣν ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Ἵνα φοβῆσθε Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν, φυλάσσεσθε πάντα τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, σὺ καὶ οἱ υἱοί σου, καὶ οἱ υἱοὶ τῶν υἱῶν σου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου, ἵνα μακροημερεύσητε. Καὶ ἄκουσον Ἰσραὴλ, καὶ φύλαξον ποιεῖν, ὅπως εὖ σοι ᾖ·, καὶ ἵνα πληθυνθῆτε σφόδρα, καθάπερ ἐλάλησε Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σου δοῦναί σοι γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· καὶ ταῦτα τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα, ὅσα ἐνετείλατο Κύριος τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐξελθόντων αὐτῶν ἐκ γῆν Αἰγύπτου. Ἄκουε Ἰσραὴλ, Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, Κύριος εἷς ἐστι. Καὶ ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς διανοίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς δυνάμεώς σου. Καὶ ἔσται τὰ ῥήματα ταῦτα, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἐν τῇ καρδίᾳ σου, καὶ ἐν τῇ ψυχῇ σου. Καὶ προβιβάσεις αὐτὰ τοὺς υἱούς σου, καὶ λαλήσεις ἐν αὐτοῖς καθήμενος ἐν οἴκῳ, καὶ πορευόμενος ἐν ὁδῷ, καὶ κοιταζόμενος, καὶ διανιστάμενος. Καὶ ἀφάψεις αὐτὰ εἰς σημεῖον ἐπὶ τῆς χειρός σου, καὶ ἔσται ἀσάλευτον πρὸ ὀφθαλμῶν σου. Καὶ γράψετε αὐτὰ ἐπὶ τὰς φλιὰς τῶν οἰκιῶν ὑμῶν, καὶ τῶν πυλῶν ὑμῶν. Καὶ ἔσται ὅταν εἰσαγάγῃ σε Κύριος ὁ

Θεός σου εἰς τὴν γῆν ἣν ὤμοσε τοῖς πατράσι σου, τῷ Ἀβραὰμ, καὶ τῷ Ἰσαακ, καὶ τῷ Ἰακώβ, δοῦναί σοι πόλεις μεγάλας καὶ καλὰς ἃς οὐκ ᾠκοδόμησας, οἰκίας πλήρεις πάντων ἀγαθῶν ἃς οὐκ ἐνέπλησας, λάκκους λελατομημένους οὓς οὐκ ἐξελατόμησας, ἀμπελῶνας καὶ ἐλαιῶνας οὓς οὐ κατεφύτευσας, καὶ φαγὼν καὶ ἐμπλησθεὶς, πρόσεχε σεαυτῷ μὴ ἐπιλάθῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου τοῦ ἐξαγαγόντος σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας. Κύριον τὸν Θεόν σου φοβήθήσῃ, καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύσεις, καὶ πρὸς αὐτὸν κολληθήσῃ, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ὀμῇ. Οὐ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἑτέρων ἀπὸ τῶν θεῶν τῶν ἐθνῶν τῶν περικύκλῳ ὑμῶν, ὅτι ὁ Θεὸς ζηλωτὴς Κύριος ὁ Θεός σου ἐν σοί· μὴ ὀργισθεὶς θυμῷ Κύριος ὁ Θεός σου σοὶ, ἐξολοθρεύσῃ σε ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς. Οὐκ ἐκπειράσεις Κύριον τὸν Θεόν σου, ὃν τρόπον ἐξεπειράσατε ἐν τῷ πειρασμῷ. Φυλάσσων φυλάξῃ τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, τὰ μαρτύρια, καὶ τὰ δικαιώματα, ὅσα ἐνετείλατό σοι. Καὶ ποιήσεις τὸ ἀρεστὸν καὶ τὸ καλὸν ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ἵνα εὖ σοι γένηται, καὶ εἰσέλθῃς καὶ κληρονομήσῃς τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν, ἣν ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἐκδιῶξαι πάντας τοὺς ἐχθρούς σου πρὸ προσώπου σου, καθὰ ἐλάλησε Κύριος. Καὶ ἔσται ὅταν ἐρωτήσῃ σε ὁ υἱός σου αὔριον, λέγων, τί ἐστι τὰ μαρτύρια, καὶ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα, ὅσα ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἡμῖν; Καὶ ἐρεῖς τῷ υἱῷ σου, οἰκέται ἦμεν τῷ Φαραὼ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἐξήγαγεν ἡμᾶς Κύριος ἐκεῖθεν ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ. Καὶ ἔδωκε Κύριος σημεῖα καὶ τέρατα μεγάλα καὶ πονηρὰ ἐν Αἰγύπτῳ ἐν Φαραὼ καὶ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ἐνώπιον ἡμῶν, καὶ ἡμᾶς ἐξήγαγεν ἐκεῖθεν δαῦναι ἡμῖν τὴν γῆν ταύτην, ἣν ὤμοσε δοῦναι τοῖς πατράσιν ἡμῶν. Καὶ ἐνετείλατο ἡμῖν Κύριος ποιεῖν πάντα τὰ δικαιώματα ταῦτα· φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεὸν

ἡμῶν, ἵνα εὖ ᾖ· ἡμῖν πάσας τὰς ἡμέρας, ἵνα ζῶμεν ὥσπερ καὶ σήμερον. Καὶ ἐλεημοσύνη ἔσται ἡμῖν, ἐὰν φυλασσώμεθα ποιεῖν πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καθὰ ἐνετείλατο ἡμῖν.

# 7

Ἐὰν δὲ εἰσάγῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὴν γῆν, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτὴν, καὶ ἐξάρῃ ἔθνη μεγάλα ἀπὸ προσώπου σου, τὸν Χετταῖον καὶ Γεργεσαῖον καὶ Ἀμορῥαῖον καὶ Χαναναῖον καὶ Φερεζαῖον καὶ Εὐαῖον καὶ Ἰεβουσαῖον, ἑπτὰ ἔθην πολλὰ καὶ ἰσχυρότερα ὑμῶν· Καὶ παραδώσει αὐτοὺς Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὰς χεῖράς σου, καὶ πατάξεις αὐτούς· ἀφανισμῷ ἀφανιεῖς αὐτούς· οὐ διαθήσῃ πρὸς αὐτοὺς διαθήκην, οὐδὲ μὴ ἐλεήσητε αὐτούς, οὐδὲ μὴ γαμβρεύσητε πρὸς αὐτούς· τὴν θυγατέρα σου οὐ δώσεις τῷ υἱῷ αὐτοῦ, καὶ τὴν θυγατέρα αὐτοῦ οὐ λήψῃ τῷ υἱῷ σου. Ἀποστήσει γὰρ τὸν υἱόν σου ἀπ ἐμοῦ, καὶ λατρεύσει θεοῖς ἑτέροις· καὶ ὀργισθήσεται θυμῷ Κύριος εἰς ὑμᾶς, καὶ ἐξολοθρεύσει σε τοτάχος. Ἀλλ οὕτω ποιήσετε αὐτοῖς· τοὺς βωμοὺς αὐτῶν καθελεῖτε, καὶ τὰς στήλας αὐτῶν συντρίψετε, καὶ τὰ ἄλση αὐτῶν ἐκκόψετε, καὶ τὰ γλυπτὰ τῶν θεῶν αὐτῶν κατακαύσετε πυρί. Ὅτι λαὸς ἅγιος εἶ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· καὶ σὲ προείλετο Κύριος ὁ Θεός σου εἶναι αὐτῷ λαὸν περιούσιον παρὰ πάντα τὰ ἔθνη, ὅσα ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. Οὐχ ὅτι πολυπληθεῖτε παρὰ πάντα τὰ ἔθνη, προείλετο Κύριος ὑμᾶς, καὶ ἐξελέξατο Κύριος ὑμᾶς· ὑμεῖς γάρ ἐστε ὀλιγοστοὶ παρὰ πάντα τὰ ἔθνη. Ἀλλὰ παρὰ τὸ ἀγαπᾷν Κύριον ὑμᾶς, καὶ διατηρῶν τὸν ὅρκον ὃν ὤμοσε τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἐξήγαγεν ὑμᾶς Κύριος ἐν

χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐλυτρώσατό σε Κύριος ἐξ οἴκου δουελίας, ἐκ χειρὸς Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου. Καὶ γνώσῃ, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου, οὗτος Θεός· Θεὸς πιστός, ὁ φυλάσσων διαθήκην καὶ ἔλεος τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτὸν καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ εἰς χιλίας γενεάς, καὶ ἀποδιδοὺς τοῖς μισοῦσι κατὰ πρόσωπον ἐξολοθρεῦσαι αὐτούς· καὶ οὐχὶ βραδυνεῖ τοίς μισοῦσι· κατὰ πρόσωπον ἀποδώσει αὐτοῖς. Καὶ φυλάξῃ τὰς ἐντολὰς, καὶ τὰ δικαιώματα, καὶ τὰ κρίματα ταῦτα, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον ποιεῖν. Καὶ ἔσται ἡνίκα ἂν ἀκούσητε τὰ δικαιώματα ταῦτα, καὶ φυλάξητε καὶ ποιήσητε αὐτὰ, καὶ διαφυλάξει Κύριος ὁ Θεός σου σοὶ τὴν διαθήκην καὶ τὸ ἔλεος, ὃ ὤμοσε τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ ἀγαπήσει σε, καὶ εὐλογήσει σε, καὶ πληθυνεῖ σε, καὶ εὐλογήσει τὰ ἔγγονα τῆς κοιλίας σου, καὶ τὸν καρπὸν τῆς γῆς σου, τὸν σῖτόν σου, καὶ τὸν οἶνόν σου, καὶ τὸ ἔλαιόν σου, τὰ βουκόλια τῶν βοῶν σου, καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων σου ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσι σου δοῦναί σοι. Εὐλογητὸς ἔσῃ παρὰ πάντα τὰ ἔθνη· οὐκ ἔσται ἐν ὑμῖν ἄγονος, οὐδὲ στεῖρα, καὶ ἐν τοῖς κτήνεσί σου. Καὶ περιελεῖ Κύριος ὁ Θεός σου ἀπὸ σοῦ πᾶσαν μαλακίαν, καὶ πάσας νόσους Αἰγύπτου τὰς πονηρὰς, ἃς ἑώρακας, καὶ ὅσα ἔγνως, οὐκ ἐπιθήσει ἐπὶ σὲ· καὶ ἐπιθήσει αὐτὰ ἐπὶ πάντας τοὺς μισοῦντὰς σε. Καὶ φαγῇ πάντα τὰ σκῦλα τῶν ἐθνῶν, ἃ Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι· οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός σου ἐπ αὐτοῖς, καὶ οὐ μὴ λατρεύσῃς τοῖς θεοῖς αὐτῶν· ὅτι σκῶλον τοῦτό ἐστί σοί. Ἐὰν δὲ λέγῃς ἐν τῇ διανοίᾳ σου, ὅτι πολὺ τὸ ἔθνος τοῦτο ἢ ἐγώ, πῶς δυνήσομαι ἐξολοθρεῦσαι αὐτούς; Οὐ φοβηθήσῃ αὐτούς· μνείᾳ μνησθήσῃ, ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεός σου τῷ Φαραὼ καὶ πᾶσι τοῖς Αἰγυπτίοις· Τοὺς πειρασμοὺς τοὺς μεγάλους, οὓς ἴδοσαν οἱ ὀφθαλμοί σου, τὰ σημεῖα καὶ τὰ τέρατα τὰ μεγάλα ἐκεῖνα, τὴν

χεῖρα τὴν κραταιὰν, καὶ τὸν βραχίονα τὸν ὑψηλόν· ὡς ἐξήγαγέ σε Κύριος ὁ Θεός σου, οὕτως ποιήσει Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν πᾶσιν τοῖς ἔθνεσιν, οὓς σὺ φοβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. Καὶ τὰς σφηκίας ἀποστελεῖ Κύριος ὁ Θεός σου εἰς αὐτοὺς, ἕως ἂν ἐκτριβῶσιν οἱ καταλελειμμένοι καὶ οἱ κεκρυμμένοι ἀπὸ σοῦ· Οὐ τρωθήσῃ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου ἐν σοί, Θεὸς μέγας καὶ κραταιός. Καὶ καταναλώσει Κύριος ὁ Θεός σου τὰ ἔθνη ταῦτα ἀπὸ προσώπου σου κατὰ μικρὸν μικρόν· οὐ δυνήσῃ ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς τοτάχος, ἵνα μὴ γένηται ἡ γῆ ἔρημος, καὶ πληθυνθῇ ἐπὶ σὲ τὰ θηρία τὰ ἄγρια. Καὶ παραδώσει αὐτοὺς Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὰς χεῖράς σου, καὶ ἀπολεῖς αὐτοὺς ἀπωλείᾳ μεγάλῃ, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσητε αὐτούς· Καὶ παραδώσει τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν εἰς τὰς χεῖρας ὑμῶν, καὶ ἀπολεῖτε τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐκ τοῦ τόπου ἐκείνου· οὐκ ἀντιστήσεται οὐθεὶς κατὰ πρόσωπόν σου, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃς αὐτούς. Τὰ γλυπτὰ τῶν Θεῶν αὐτῶν καύσετε πυρί· οὐκ ἐπιθυμήσεις ἀργύριον, οὐδὲ χρυσίον ἀπ αὐτῶν οὐ λήψῃ σεαυτῷ, μὴ πταίσῃς δι αὐτὸ, ὅτι βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σού ἐστί. Καὶ οὐκ εἰσοίσεις βδέλυγμα εἰς τὸν οἶκόν σου, καὶ ἀνάθεμα ἔσῃ ὥσπερ τοῦτο· προσοχθίσματι προσοχθιεῖς, καὶ βδελύγματι βδελύξῃ, ὅτι ἀνάθεμά ἐστι.

# 8

Πάσας τὰς ἐντολὰς, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον, φυλάξεσθε ποιεῖν, ἵνα ζῆτε καὶ πολυπλασιασθῆτε, καὶ εἰσέλθητε καὶ κληρονομήσητε τὴν γῆν, ἣν ὤμοσε Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ μνησθήσῃ πᾶσαν τὴν ὁδὸν, ἣν ἤγαγέ σε

Κύριος ὁ Θεός σου ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅπως ἂν κακώσῃ σε καὶ πειράσῃ σε, καὶ διαγνωσθῇ τὰ ἐν τῇ καρδίᾳ σου, εἰ φυλάξῃ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ ἢ οὔ. Καὶ ἐκάκωσέ σε, καὶ ἐλιμαγχόνησέ σε, καὶ ἐψώμισέ σε τὸ μάννα, ὃ οὐκ ᾔδεισαν οἱ πατέρες σου· ἵνα ἀναγγείλῃ σοι, ὅτι οὐκ ἐπ ἄρτῳ μόνῳ ζήσεται ὁ ἄνθρωπος, ἀλλ ἐπὶ παντὶ ῥήματι τῷ ἐκπορευομένῳ διὰ στόματος Θεοῦ ζήσεται ὁ ἄνθρωπος. Τὰ ἱμάτιά σου οὐκ ἐπαλαιώθη ἀπὸ σοῦ, τὰ ὑποδήματά σου οὐ κατετρίβη ἀπὸ σοῦ· οἱ πόδες σου οὐκ ἐτυλώθησαν, ἰδοὺ τεσσαράκοντα ἔτη. Καὶ γνώσῃ τῇ καρδίᾳ σου, ὅτι ὡς εἴτις ἄνθρωπος παιδεύσῃ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, οὕτως Κύριος ὁ Θεός σου παιδεύσει σε. Καὶ φυλάξῃ τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου πορεύεσθαι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ φοβεῖσθαι αὐτόν. Ὁ γὰρ Κύριος ὁ Θεός σου εἰσάξει σε εἰς γῆν ἀγαθὴν καὶ πολλὴν, οὗ χείμαῤῥοι ὑδάτων, καὶ πηγαὶ ἀβύσσων ἐκπορευόμεναι διὰ τῶν πεδίων καὶ διὰ τῶν ὀρέων· Γῆ πυροῦ καὶ κριθῆς, ἄμπελοι, συκαῖ, ῥοαί· γῆ ἐλαίας ἐλαίου καὶ μέλιτος· γῆ ἐφ ἧς οὐ μετὰ πτωχείας φαγῇ τὸν ἄρτον σου, καὶ οὐκ ἐνδεηθήσῃ ἐπ αὐτῆς οὐδέν· γῆ ἧς οἱ λίθοι σίδηρος, καὶ ἐκ τῶν ὀρέων αὐτῆς μεταλλεύσεις χαλκόν. Καὶ φαγῇ καὶ ἐμπλησθήσῃ, καὶ εὐλογήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐπὶ τῆς γῆς τῆς ἀγαθῆς, ἧς δέδωκέ σοι. Πρόσεχε σεαυτῷ μὴ ἐπιλάθῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, τοῦ μὴ φυλάξαι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ κρίματα καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον· Μὴ φαγὼν καὶ ἐμπλησθεὶς, καὶ οἰκίας καλὰς οἰκοδομήσας καὶ κατοικήσας ἐν αὐταῖς, καὶ τῶν βοῶν σου καὶ τῶν προβάτων σου πληθυνθέντων σοι, ἀργυρίου καὶ χρυσίου πληθυνθέντος σοι, καὶ πάντων ὅσων σοι ἔσται πληθυνθέντων σοι, ὑψωθῇς τῇ καρδίᾳ, καὶ ἐπιλάθῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, τοῦ ἐξαγαγόντος σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας· τοῦ ἀγαγόντος σε διὰ τῆς ἐρήμου τῆς μεγάλης καὶ τῆς

φοβερᾶς ἐκείνης, οὗ ὄφις δάκνων, καὶ σκορπίος, καὶ δίψα, οὗ οὐκ ἦν ὕδωρ· τοῦ ἐξαγαγόντος σοι ἐκ πέτρας ἀκροτόμου πηγὴν ὕδατος· τοῦ ψωμίσαντός σε τὸ μάννα ἐν τῇ ἐρήμῳ ὃ οὐκ ᾔδεις σὺ, καὶ οὐκ ᾔδεισαν οἱ πατέρες σου, ἵνα κακώσῃ σε, καὶ ἐκπειράσῃ σε, καὶ εὖ σε ποιήσῃ ἐπ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν σου. Μὴ εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, ἡ ἰσχύς μου, καὶ τὸ κράτος τῆς χειρός μου ἐποίησέ μοι τὴν δύναμιν τὴν μεγάλην ταύτην. Καὶ μνησθήσῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ὅτι αὐτός σοι δίδωσιν ἰσχὺν τοῦ ποιῆσαι δύναμιν, καὶ ἵνα στήσῃ τὴν διαθήκην αὐτοῦ ἣν ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσι σου, ὡς σήμερον. Καὶ ἔσται ἐὰν λήθῃ ἐπιλάθῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ πορευθῇς, ὀπίσω θεῶν ἑτέρων, καὶ λατρεύσῃς αὐτοῖς, καὶ προσκυνήσῃς αὐτοῖς, διαμαρτύρομαι ὑμῖν σήμερον τόν τε οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, ὅτι ἀπωλείᾳ ἀπολεῖσθε. Καθὰ καὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη ὅσα Κύριος ὁ Θεὸς ἀπολλύει πρὸ προσώπου ὑμῶν, οὕτως ἀπολεῖσθε, ἀνθ ὧν οὐκ ἠκούσατε τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν.

# 9

Ἄκουε Ἰσραήλ· σὺ διαβαίνεις σήμερον τὸν Ἰορδάνην εἰσελθεῖν κληρονομῆσαι ἔθνη μεγάλα καὶ ἰσχυρότερα μᾶλλον ἢ ὑμεῖς, πόλεις μεγάλας καὶ τειχήρεις ἕως τοῦ οὐρανοῦ, λαὸν μέγαν καὶ πολὺν καὶ εὐμήκη, υἱοὺς Ἐνάκ, οὓς σὺ οἶσθα, καὶ σὺ ἀκήκοας, τίς ἀντιστήσεται κατὰ πρόσωπον υἱῶν Ἐνάκ; Καὶ γνώσῃ σήμερον, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου οὗτος προπορεύσεται πρὸ προσώπου σου· πῦρ καταναλίσκον ἐστίν· οὗτος ἐξολοθρεύσει αὐτούς, καὶ οὗτος ἀποστρέψει αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου σου, καὶ ἀπολεῖ αὐτοὺς ἐν τάχει, καθάπερ εἶπέ σοι Κύριος. Μὴ εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου ἐν τῷ

ἐξαναλῶσαι Κύριον τὸν Θεόν σου τὰ ἔθνη ταῦτα πρὸ προσώπου σου, λέγων, διὰ τὴν δικαιοσύνην μου εἰσήγαγέ με Κύριος κληρονομῆσαι τὴν γὴν τὴν ἀγαθὴν ταύτην. Οὐχὶ διὰ τὴν δικαιοσύνην σου, οὐδὲ διὰ τὴν ὁσιότητα τῆς καρδίας σου σὺ εἰσπορεύῃ κληρονομῆσαι τὴν γῆν αὐτῶν, ἀλλὰ διὰ τὴν ἀσέβειαν τῶν ἐθνῶν τούτων Κύριος ἐξολοθρεύσει αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου σου, καὶ ἵνα στήσῃ τὴν διαθήκην, ἣ ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν ἡμῶν τῷ Ἀβραὰμ καὶ τῷ Ἰσαὰκ καὶ τῷ Ἰακώβ. Καὶ γνώσῃ σήμερον, ὅτι οὐχὶ διὰ τὰς δικαιοσύνας σου Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν ταύτην κληρονομῆσαι, ὅτι λαὸς σκληροτράχηλος εἶ. Μνήσθητι, μὴ ἐπιλάθῃ ὅσα παρώξυνας Κύριον τὸν Θεόν σου ἐν τῇ ἐρήμῳ· ἀφ ἧς ἡμέρας ἐξήλθετε ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἤλθετε εἰς τὸν τόπον τοῦτον, ἀπειθοῦντες διετελεῖτε τὰ πρὸς Κύριον. Καὶ ἐν Χωρὴβ παρωξύνατε Κύριον, καὶ ἐθυμώθη Κύριος ἐφ ὑμῖν ἐξολεθρεῦσαι ὑμᾶς, ἀναβαίνοντός μου εἰς τὸ ὄρος λαβεῖν τὰς πλάκας τὰς λιθίνας, πλάκας διαθήκης ἃς διέθετο Κύριος πρὸς ὑμᾶς, καὶ κατεγενόμην ἐν τῷ ὄρει τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσεράκοντα νύκτας, ἄρτον οὐκ ἔφαγον καὶ ὕδωρ οὐκ ἔπιον. Καὶ ἔδωκέ μοι Κύριος τὰς δύο πλάκας τὰς λιθίνας γεγραμμένας ἐν τῷ δακτύλῳ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπ αὐταῖς ἐγέγραπτο πάντες οἱ λόγοι οὓς ἐλάλησε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ ὄρει ἡμέρᾳ ἐκκλησίας· Καὶ ἐγένετο διὰ τεσσεράκοντα ἡμερῶν καὶ διὰ τεσσαράκοντα νυκτῶν ἔδωκε Κύριος ἐμοὶ τὰς δύο πλάκας τὰς λιθίνας, πλάκας διαθήκης. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, ἀνάστηθι, κατάβηθι τοτάχος ἐντεῦθεν, ὅτι ἠνόμησεν ὁ λαός σου, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου· παρέβησαν ταχὺ ἐκ τῆς ὁδοῦ ἧς ἐνετείλω αὐτοῖς, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς χώνευμα. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, λέγων, λελάληκα πρὸς σὲ ἅπαξ καὶ δὶς, λέγων, ἑώρακα τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ ἰδοὺ λαὸς

σκληροτράχηλός ἐστι· Καὶ νῦν ἔασόν με ἐξολοθρεῦσαι αὐτούς, καὶ ἐξαλείψω τὸ ὄνομα αὐτῶν ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ποιήσω σε εἰς ἔθνος μέγα, καὶ ἰσχυρὸν, καὶ πολὺ μᾶλλον ἢ τοῦτο. Καὶ ἐπιστρέψας, κατέβην ἐκ τοῦ ὄρους· καὶ τὸ ὄρος ἐκαίετο πυρὶ ἕως τοῦ οὐρανοῦ· καὶ αἱ δύο πλάκες τῶν μαρτυρίων ἐπὶ ταῖς δυσὶ χερσί μου. Καὶ ἰδὼν ὅτι ἡμάρτετε ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ ἐποιήσατε ὑμῖν αὐτοῖς χωνευτόν, καὶ παρέβητε ἀπὸ τῆς ὁδοῦ, ἧς ἐνετείλατο Κύριος ὑμῖν ποιεῖν· καὶ ἐπιλαβόμενος τῶν δύο πλακῶν, ἔῤῥιψα αὐτὰς ἀπὸ τῶν δύο χειρῶν μου, καὶ συνέτριψα ἐναντίον ὑμῶν. Καὶ ἐδεήθην ἐναντίον Κυρίου δεύτερον καθάπερ καὶ τὸ πρότερον τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας, ἄρτον οὐκ ἔφαγον καὶ ὕδωρ οὐκ ἔπιον, περὶ πασῶν τῶν ἁμαρτιῶν ὑμῶν ὧν ἡμάρτετε ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ παροξῦναι αὐτόν. Καὶ ἔκφοβός εἰμι διὰ τὸν θυμόν καὶ τὴν ὀργὴν, ὅτι παρωξύνθη Κύριος ἐφ ὑμῖν τοῦ ἐξολοθρεῦσαι ὑμᾶς· καὶ εἰσήκουσε Κύριος ἐμοῦ καὶ ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ. Καὶ ἐπὶ Ἀαρὼν ἐθυμώθη ἐξολοθρεῦσαι αὐτόν, καὶ ηὐξάμην καὶ περὶ Ἀαρὼν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ. Καὶ τὴν ἁμαρτίαν ὑμῶν, ἣν ἐποιήσατε, τὸν μόσχον ἔλαβον αὐτὸν, καὶ κατέκαυσα αὐτὸν ἐν πυρί, καὶ συνέκοψα αὐτὸν καταλέσας σφόδρα ἕως ἐγένετο λεπτόν, καὶ ἐγένετο ὡσεὶ κονιορτός· καὶ ἔῤῥιψα τὸν κονιορτὸν εἰς τὸν χειμάῤῥουν τὸν καταβαίνοντα ἐκ τοῦ ὄρους. Καὶ ἐν τῷ ἐμπυρισμῷ, καὶ ἐν τῷ πειρασμῷ, καὶ ἐν τοῖς μνήμασι τῆς ἐπιθυμίας παροξύναντες ἦτε Κύριον. Καὶ ὅτε ἐξαπέστειλεν ὑμᾶς Κύριος ἐκ Κάδης Βαρνὴ, λέγων, ἀνάβητε καὶ κληρονομήσατε τὴν γῆν, ἣν δίδωμι ὑμῖν, καὶ ἠπειθήσατε τῷ ῥήματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ οὐκ ἐπιστεύσατε αὐτῷ, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Ἀπειθοῦντες ἦτε τὰ πρὸς Κύριον ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς ἐγνώσθη ὑμῖν. Καὶ ἐδεήθην ἔναντι

Κυρίου τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας, ὅσας ἐδεήθην· εἶπε γὰρ Κύριος ἐξολοθρεῦσαι ὑμᾶς. Καὶ ηὐξάμην πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ εἶπα, Κύριε βασιλεῦ τῶν θεῶν, μὴ ἐξολοθρεύσῃς τὸν λαόν σου καὶ τὴν μερίδα σου, ἣν ἐλυτρώσω, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν τῇ ἰσχύϊ σου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῇ χειρί σου τῇ κραταιᾷ, καὶ ἐν τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ. Μνήσθητι Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ τῶν θεραπόντων σου, οἷς ὤμοσας κατὰ σεαυτοῦ· μὴ ἐπιβλέψῃς ἐπὶ τὴν σκληρότητα τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ τὰ ἀσεβήματα, καὶ ἐπὶ τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν. Μὴ εἴπωσιν οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν ὅθεν ἐξήγαγες ἡμᾶς ἐκεῖθεν, λέγοντες, παρὰ τὸ μὴ δύνασθαι Κύριον εἰσαγαγεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν εἶπεν αὐτοῖς, καὶ παρὰ τὸ μισῆσαι αὐτοὺς, ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ ἀποκτεῖναι αὐτούς. Καὶ οὗτοι λαός σου καὶ κλῆρός σου, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν τῇ ἰσχύϊ σου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῇ χειρί σου τῇ κραταιᾷ, καὶ ἐν τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ.

# 10

Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, λάξευσον σεαυτῷ δύο πλάκας λιθίνας ὥσπερ τὰς πρώτας, καὶ ἀνάβηθι πρὸς μὲ εἰς τὸ ὄρος, καὶ ποιήσεις σεαυτῷ κιβωτὸν ξυλίνην. Καὶ γράψεις ἐπὶ τὰς πλάκας τὰ ῥήματα, ἃ ἦν ἐν ταῖς πλαξὶν ταῖς πρώταις ἃς συνέτριψας, καὶ ἐμβαλεῖς αὐτὰ εἰς τὴν κιβωτόν. Καὶ ἐποίησα κιβωτὸν ἐκ ξύλων ἀσήπτων, καὶ ἐλάξευσα τὰς πλάκας λιθίνας ὡς αἱ πρῶται, καὶ ἀνέβην εἰς τὸ ὄρος καὶ αἱ δύο πλάκες ἐπὶ ταῖς χερσί μου. Καὶ ἔγραψεν ἐπὶ τὰς πλάκας κατὰ τὴν γραφὴν τὴν πρώτην τοὺς δέκα λόγους, οὓς ἐλάλησε Κύριος πρὸς ὑμᾶς ἐν τῷ ὄρει ἐκ

μέσου τοῦ πυρός, καὶ ἔδωκεν αὐτὰς Κύριος ἐμοί. Καὶ ἐπιστρέψας κατέβην ἐκ τοῦ ὄρους, καὶ ἐνέβαλον τὰς πλάκας εἰς τὴν κιβωτὸν ἣν ἐποίησα· καὶ ἦσαν ἐκεῖ, καθὰ ἐνετείλατό μοι Κύριος. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀπῆραν ἐκ Βηρὼθ υἱῶν Ἰακεὶμ Μισαδαΐ· ἐκεῖ ἀπέθανεν Ἀαρὼν, καὶ ἐτάφη ἐκεῖ, καὶ ἱεράτευσεν Ἐλεάζὰρ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ αὐτοῦ. Ἐκεῖθεν ἀπῆραν εἰς Γαδγάδ· καὶ ἀπὸ Γαδγὰδ εἰς Ἐτεβαθᾶ, γῆ χείμαῤῥοι ὑδάτων. Ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ διέστειλε Κύριος τὴν φυλὴν τὴν Λευὶ, αἴρειν τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου, παρεστάναι ἔναντι Κυρίου, λειτουργεῖν καὶ ἐπεύχεσθαι ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Διὰ τοῦτο οὐκ ἔστιν τοῖς Λευίταις μερὶς καὶ κλῆρος ἐν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν· Κύριος αὐτὸς κλῆρος αὐτοῦ, καθότι εἶπεν αὐτῷ. Κἀγὼ εἱστήκειν ἐν τῷ ὄρει τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας. καὶ εἰσήκουσε Κύριος ἐμοῦ καὶ ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ, καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος ἐξολοθρεῦσαι ὑμᾶς. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μέ, Βάδιζε, ἄπαρον ἐναντίον τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ εἰσπορευέσθωσαν καὶ κληρονομείτωσαν τὴν γῆν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν αὐτῶν δοῦναι αὐτοῖς. Καὶ νῦν, Ἰσραήλ, τί Κύριος ὁ Θεός σου αἰτεῖται παρὰ σοῦ, ἀλλ ἢ φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ πορεύεσθαι ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ ἀγαπᾷν αὐτόν, καὶ λατρεύειν Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, φυλάσσεσθαι τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἵνα εὖ σοι ᾖ·; Ἰδοὺ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ὁ οὐρανὸς καὶ ὁ οὐρανὸς τοῦ οὐρανοῦ, ἡ γῆ καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτῇ. Πλὴν τοὺς πατέρας ὑμῶν προείλετο Κύριος ἀγαπᾷν αὐτούς, καὶ ἐξελέξατο τὸ σπέρμα αὐτῶν μετ αὐτοὺς, ὑμᾶς, παρὰ πάντα τὰ ἔθνη, κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην. Καὶ περιτεμεῖσθε τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν, καὶ τὸν τράχηλον

ὑμῶν οὐ σκληρυνεῖτε. Ὁ γὰρ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, οὗτος Θεὸς τῶν θεῶν, καὶ κύριος τῶν κυρίων, ὁ Θεὸς ὁ μέγας, καὶ ἰσχυρὸς, καὶ φοβερὸς, ὅστις οὐ θαυμάζει πρόσωπον, οὐδὲ οὐ μὴ λάβῃ δῶρον· ποιῶν κρίσιν προσηλύτῳ καὶ ὀρφανῷ καὶ χήρᾳ, καὶ ἀγαπᾷ τὸν προσήλυτον δοῦναι αὐτῷ ἄρτον καὶ ἱμάτιον. Καὶ ἀγαπήσετε τὸν προσήλυτον· προσήλυτοι γὰρ ἦτε ἐν γῇ Αἰγύπτῳ. Κύριον τὸν Θεόν σου φοβηθήσῃ, καὶ αὐτῷ λατρεύσεις, καὶ πρὸς αὐτὸν κολληθήσῃ, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ὀμῇ· Οὗτος καύχημά σου, καὶ οὗτος Θεός σου, ὅστις ἐποίησεν ἐν σοὶ τὰ μεγάλα καὶ τὰ ἔνδοξα ταῦτα, ἃ ἴδοσαν οἱ ὀφθαλμοί σου. Ἐν ἑβδομήκοντα ψυχαῖς κατέβησαν οἱ πατέρες σου εἰς Αἴγυπτον· νυνὶ δὲ ἐποίησέ σε Κύριος ὁ Θεός σου ὡσεὶ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει.

# 11

Καὶ ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ φυλάξῃ τὰ φυλάγματα αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰς κρίσεις αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ γνώσεσθε σήμερον, ὅτι οὐχὶ τὰ παιδία ὑμῶν, ὅσοι οὐκ οἴδασιν οὐδὲ ἴδοσαν τὴν παιδείαν Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ τὰ μεγαλεῖα αὐτοῦ, καὶ τὴν χεῖρα τὴν κραταιὰν, καὶ τὸν βραχίονα τὸν ὑψηλόν, καὶ τὰ σημεῖα αὐτοῦ, καὶ τὰ τέρατα αὐτοῦ, ὅσα ἐποίησεν ἐν μέσῳ Αἰγύπτου Φαραὼ βασιλεῖ Αἰγύπτου, καὶ πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ, καὶ ὅσα ἐποίησε τὴν δύναμιν τῶν Αἰγυπτίων, καὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν, καὶ τὴν ἵππον αὐτῶν, καὶ τὴν δύναμιν αὐτῶν, ὡς ἐπέκλυσε τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης τῆς ἐρυθρᾶς ἐπὶ προσώπου αὐτῶν καταδιωκόντων αὐτῶν ἐκ τῶν ὀπίσω ὑμῶν, καὶ ἀπώλεσεν αὐτοὺς Κύριος ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ ὅσα

ἐποίησεν ἡμῖν ἐν τῇ ἐρήμῳ ἕως ἤλθετε εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ὅσα ἐποίησε τῷ Δαθὰν καὶ Ἀβειρὼν υἱοῖς Ἐλιὰβ υἱοῦ Ῥουβὴν, οὓς ἀνοίξασα ἡ γῆ τὸ στόμα αὐτῆς κατέπιεν αὐτοὺς, καὶ τοὺς οἴκους αὐτῶν, καὶ τὰς σκηνὰς αὐτῶν, καὶ πᾶσαν αὐτῶν τὴν ὑπόστασιν τὴν μετ αὐτῶν ἐν μέσῳ παντὸς Ἰσραήλ· Ὅτι οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ἑώρακαν πάντα τὰ ἔργα Κυρίου τὰ μεγάλα, ὅσα ἐποίησεν ἐν ὑμῖν σήμερον. Καὶ φυλάξεσθε πάσας τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἵνα ζῆτε, καὶ πολυπλασιασθῆτε, καὶ εἰσελθόντες κληρονομήσητε τὴν γῆν, εἰς ἣν ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν· Ἵνα μακροημερεύσητε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν ὑμῶν δοῦναι αὐτοῖς καὶ τῷ σπέρματι αὐτῶν μετ αὐτούς, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Ἔστι γὰρ ἡ γῆ εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν, οὐχ ὥσπερ γῆ Αἰγύπτου ἐστίν, ὅθεν ἐκπεπόρευσθε ἐκεῖθεν, ὅταν σπείρωσι τὸν σπόρον, καὶ ποτίζωσι τοῖς ποσὶν αὐτῶν, ὡσεὶ κῆπον λαχανείας· Ἡ δὲ γῆ εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτὴν, γῆ ὀρεινὴ καὶ πεδινὴ· ἐκ τοῦ ὑετοῦ τοῦ οὐρανοῦ πίεται ὕδωρ. Γῆ, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου ἐπισκοπεῖται αὐτὴν διαπαντός, οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐπ αὐτῆς ἀπ ἀρχῆς τοῦ ἐνιαυτοῦ καὶ ἕως συντελείας τοῦ ἐνιαυτοῦ. Ἐὰν δὲ ἀκοῇ ἀκούσητε πάσας τὰς ἐντολὰς, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ λατρεύειν αὐτῷ ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ δώσει τὸν ὑετὸν τῇ γῇ σου καθ ὥραν πρώϊμον καὶ ὄψιμον, καὶ εἰσοίσεις τὸν σῖτόν σου, καὶ τὸν οἶνόν σου, καὶ τὸ ἔλαιόν σου, καὶ δώσει χορτάσματα ἐν τοῖς ἀγροῖς σου τοῖς κτήνεσί σου· καὶ φαγὼν, καὶ ἐμπλησθεὶς, πρόσεχε σεαυτῷ μὴ πλατυνθῇ ἡ καρδία σου, καὶ παραβῆτε, καὶ λατρεύσητε θεοῖς ἑτέροις, καὶ προσκυνήσητε αὐτοῖς, καὶ θυμωθεὶς ὀργῇ Κύριος ἐφ ὑμῖν, καὶ

συσχῇ τὸν οὐρανὸν, καὶ οὐκ ἔσται ὑετὸς, καὶ ἡ γῆ οὐ δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς, καὶ ἀπολεῖσθε ἐν τάχει ἀπὸ τῆς γῆς τῆς ἀγαθῆς, ἧς Κύριος ἔδωκεν ὑμῖν. Καὶ ἐμβαλεῖτε τὰ ῥήματα ταῦτα εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν καὶ εἰς τὴν ψυχὴν ὑμῶν, καὶ ἀφάψετε αὐτὰ εἰς σημεῖον ἐπὶ τῆς χειρὸς ὑμῶν, καὶ ἔσται ἀσάλευτον πρὸ ὀφθαλμῶν ὑμῶν· Καὶ διδάξετε αὐτὰ τὰ τέκνα ὑμῶν λαλεῖν ἐν αὐτοῖς καθημένου σου ἐν οἴκῳ, καὶ πορευομένου σου ἐν ὁδῷ, καὶ καθεύδοντός σου, καὶ διανισταμένου σου. Καὶ γράψετε αὐτὰ ἐπὶ τὰς φλιὰς τῶν οἰκιῶν ὑμῶν, καὶ τῶν πυλῶν ὑμῶν, ἵνα μακροημερεύσητε, καὶ αἱ ἡμέραι τῶν υἱῶν ὑμῶν ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν ὑμῶν δοῦναι αὐτοῖς, καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ οὐρανοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσητε πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον ποιεῖν, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ πορεύεσθαι ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ προσκολλᾶσθαι αὐτῷ, καὶ ἐκβαλεῖ Κύριος πάντα τὰ ἔθνη ταῦτα ἀπὸ προσώπου ὑμῶν, καὶ κληρονομήσετε ἔθνη μεγάλα καὶ ἰσχυρὰ μᾶλλον ἢ ὑμεῖς. Πάντα τὸν τόπον οὗ ἐὰν πατήσῃ τὸ ἴχνος τοῦ ποδὸς ὑμῶν, ὑμῖν ἔσται· ἀπὸ τῆς ἐρήμου καὶ Ἀντιλιβάνου, καὶ ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ μελάλου, ποταμοῦ Εὐφράτου, καὶ ἕως τῆς θαλάσσης τῆς ἐπὶ δυσμῶν ἔσται τὰ ὅριά σου. Οὐκ ἀντιστήσεται οὐδεὶς κατὰ πρόσωπον ὑμῶν· καὶ τὸν φόβον ὑμῶν καὶ τὸν τρόμον ὑμῶν ἐπιθήσει Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς, ἐφ ἧς ἂν ἐπιβῆτε ἐπ αὐτῆς, ὃν τρόπον ἐλάλησε πρὸς ὑμᾶς. Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι ἐνώπιον ὑμῶν σήμερον τὴν εὐλογίαν καὶ τὴν κατάραν· Τὴν εὐλογίαν, ἐὰν ἀκούσητε τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον· καὶ τὴν κατάραν, ἐὰν μὴ ἀκούσητε τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον,

καὶ πλανηθῆτε ἀπὸ τῆς ὁδοῦ ἧς ἐνετειλάμην ὑμῖν, πορευθέντες λατρεύειν θεοῖς ἑτέροις, οὓς οὐκ οἴδατε. Καὶ ἔσται ὅταν εἰσαγάγῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὴν γῆν εἰς ἣν διαβαίνεις ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν, καὶ δώσεις εὐλογίαν ἐπ ὄρος Γαριζὶν, καὶ τὴν κατάραν ἐπ ὄρος Γαιβάλ. Οὐκ ἰδοὺ ταῦτα πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὀπίσω ὁδὸν δυσμῶν ἡλίου ἐν γῇ Χαναὰν, τὸ κατοικοῦν ἐπὶ δυσμῶν ἐχόμενον τοῦ Γολγὸλ πλησίον τῆς δρυὸς τῆς ὑψηλῆς; Ὑμεῖς γὰρ διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην, εἰσελθόντες κληρονομῆσαι τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν ὑμῖν ἐν κλήρῳ πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ κατοικήσετε ἐν αὐτῇ. Καὶ φυλάξεσθε τοῦ ποιεῖν πάντα τὰ προστάγματα αὐτοῦ, καὶ τὰς κρίσεις ταύτας, ὅσας ἐγὼ δίδωμι ἐνώπιον ὑμῶν σήμερον.

# 12

Καὶ ταῦτα τὰ προστάγματα καὶ αἱ κρίσεις, ἃς φυλάξετε τοῦ ποιεῖν ἐν τῇ γῇ, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν δίδωσιν ὑμῖν ἐν κλήρῳ, πάσας τὰς ἡμέρας, ἃς ὑμεῖς ζῆτε ἐπὶ τῆς γῆς. Ἀπωλίᾳ ἀπολεῖτε πάντας τοὺς τόπους ἐν οἷς ἐλάτρευσαν ἐκεῖ τοῖς θεοῖς αὐτῶν, οὓς ὑμεῖς κληρονομεῖτε αὐτοὺς, ἐπὶ τῶν ὀρέων τῶν ὑψηλῶν, καὶ ἐπὶ τῶν θινῶν, καὶ ὑποκάτω δένδρου δασέος· Καὶ κατασκάψετε τοὺς βωμοὺς αὐτῶν, καὶ συντρίψετε τὰς στήλας αὐτῶν, καὶ τὰ ἄλση αὐτῶν ἐκκόψετε, καὶ τὰ γλυπτὰ τῶν θεῶν αὐτῶν κατακαύσετε πυρί, καὶ ἀπολεῖτε τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐκ τοῦ τόπου ἐκείνου. Οὐ ποιήσετε οὕτω Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν. Ἀλλ ἢ εἰς τὸν τόπον, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐν μιᾷ τῶν πόλεων ὑμῶν ἐπονομάσαι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ καὶ ἐπικληθῆναι, καὶ

ἐκζητήσετε καὶ ἐλεύσεσθε ἐκεῖ. Καὶ οἴσετε ἐκεῖ τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμων, καὶ τὰ θυσιάσματα ὑμῶν, καὶ τὰς ἀπαρχὰς ὑμῶν, καὶ τὰς εὐχὰς ὑμῶν, καὶ τὰ ἐκούσια ὑμῶν, καὶ τὰς ὁμολογίας ὑμῶν, τὰ πρωτότοκα τῶν βοῶν ὑμῶν, καὶ τῶν προβάτων ὑμῶν. Καὶ φάγεσθε ἐκεῖ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ εὐφρανθήσεσθε ἐπὶ πᾶσιν, οὗ ἐὰν ἐπιβάλητε τὴν χεῖρα ὑμεῖς, καὶ οἱ οἶκοι ὑμῶν, καθότι εὐλόγησέ σε Κύριος ὁ Θεός σου. Οὐ ποιήσετε πάντα ὅσα ἡμεῖς ποιοῦμεν ὧδε σήμερον, ἕκαστος τὸ ἀρεστὸν ἐνώπιον αὐτοῦ· Οὐ γὰρ ἥκατε ἕως τοῦ νῦν εἰς τὴν κατάπαυσιν, καὶ εἰς τὴν κληρονομίαν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν ὑμῖν. Καὶ διαβήσεσθε τὸν Ἰορδάνην, καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν κατακληρονομεῖ ὑμῖν, καὶ καταπαύσει ὑμᾶς ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν τῶν κύκλῳ, καὶ κατοικήσετε μετὰ ἀσφαλείας. Καὶ ἔσται ὁ τόπος, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ, ἐκεῖ οἴσετε πάντα ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον· τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν, καὶ τὰ θυσιάσματα ὑμῶν, καὶ τὰ ἐπιδέκατα ὑμῶν, καὶ τὰς ἀπαρχὰς τῶν χειρῶν ὑμῶν, καὶ πᾶν ἐκλεκτὸν τῶν δώρων ὑμῶν, ὅσα ἂν εὔξησθε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν. Καὶ εὐφρανθήσεσθε ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, ὑμεῖς καὶ οἱ υἱοὶ ὑμῶν, καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ παῖδες ὑμῶν, καὶ αἱ παιδίσκαι ὑμῶν, καὶ ὁ Λευίτης ὁ ἐπὶ τῶν πυλῶν ὑμῶν· ὅτι οὐκ ἔστιν αὐτῷ μερὶς οὐδὲ κλῆρος μεθ ὑμῶν. Πρόσεχε σεαυτῷ, μὴ ἀνενέγκῃς τὰ ὁλοκαυτώματά σου ἐν παντὶ τόπῳ οὗ ἐὰν ἴδῃς. Ἀλλ ἢ εἰς τὸν τόπον, ὃν ἂν ἐκλέξεται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτὸν, ἐν μιᾷ τῶν φυλῶν σου, ἐκεῖ ἀνοίσετε τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν, καὶ ἐκεῖ ποιήσεις πάντα ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον. Ἀλλ ἢ ἐν πάσῃ ἐπιθυμίᾳ σου θύσεις, καὶ φαγῇ κρέα κατὰ τὴν εὐλογίαν Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ἣν ἔδωκέ σοι ἐν πάσῃ πόλει· ὁ

ἀκάθαρτος ἐν σοὶ καὶ ὁ καθαρὸς ἐπὶ τὸ αὐτό φάγεται αὐτό, ὡς δορκάδα ἢ ἔλαφον. Πλὴν τὸ αἷμα οὐ φάγεσθε· ἐπὶ τὴν γῆν ἐκχεεῖτε αὐτὸ, ὡς ὕδωρ. Οὐ δυνήσῃ φαγεῖν ἐν ταῖς πόλεσί σου τὸ ἐπιδέκατον τοῦ σίτου σου, καὶ τοῦ οἴνου σου, καὶ τοῦ ἐλαίου σου, τὰ πρωτότοκα τῶν βοῶν σου, καὶ τῶν προβάτων σαυ, καὶ πάσας τὰς εὐχὰς, ὅσας ἂν εὔξησθε, καὶ τὰς ὁμολογίας ὑμῶν, καὶ τὰς ἀπαρχὰς τῶν χειρῶν σου. Ἀλλ ἢ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου φάγῃ αὐτὸ ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτῷ, σὺ καὶ ὁ υἱός σου, καὶ ἡ θυγάτηρ σου, ὁ παῖς σου, καὶ ἡ παιδίσκη σου, καὶ ὁ προσήλυτος ὁ ἐν ταῖς πόλεσιν ὑμῶν· καὶ εὐφρανθήσῃ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐπὶ πάντα, οὗ ἐὰν ἐπιβάλῃς τὴν χεῖρά σου. Πρόσεχε σεαυτῷ μὴ ἐγκαταλίπῃς τὸν Λευίτην πάντα τὸν χρόνον ὅσον ἃ ζῇς ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐὰν δὲ ἐμπλατύνῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὰ ὅριά σου, καθάπερ ἐλάλησέ σοι, καὶ ἐρεῖς, φάγομαι κρέα, ἐὰν ἐπιθυμήσῃ ἡ ψυχή σου ὥστε φαγεῖν κρέα, ἐν πάσῃ ἐπιθυμίᾳ τῆς ψυχῆς σου φάγῃ κρέα. Ἐὰν δὲ μακρὰν ἀπέχῃ σου ὁ τόπος, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐκεῖ ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ, καὶ θύσεις ἀπὸ τῶν βοῶν σου, καὶ ἀπὸ τῶν προβάτων σου ὧν ἂν δῷ ὁ Θεός σοι, ὃν τρόπον ἐνετειλάμην σοι, καὶ φαγῇ ἐν ταῖς πόλεσί σου κατὰ τὴν ἐπιθυμίαν τῆς ψυχῆς σου. Ὡς ἔσθεται ἡ δορκὰς καὶ ἡ ἔλαφος, οὕτω φαγῇ αὐτό· ὁ ἀκάθαρτος ἐν σοὶ καὶ ὁ καθαρὸς ὡσαύτως ἔδεται. Πρόσεχε ἰσχυρῶς τοῦ μὴ φαγεῖν αἷμα, ὅτι αἷμα αὐτοῦ ψυχή· οὐ βρωθήσεται ψυχὴ μετὰ τῶν κρεῶν. Οὐ φάγεσθε· ἐπὶ τὴν γῆν ἐκχεεῖτε αὐτὸ ὡς ὕδωρ. Οὐ φαγῇ αὐτὸ, ἵνα εὖ σοι γένηται καὶ τοῖς υἱοῖς σου μετὰ σὲ, ἐὰν ποιήσῃς τὸ καλὸν καὶ τὸ ἀρεστὸν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Πλὴν τὰ ἅγιά σου ἐὰν γένηταί σοι, καὶ τὰς εὐχάς σου λαβὼν ἥξεις εἰς τὸν τόπον, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα

αὐτοῦ ἐκεῖ. Καὶ ποιήσεις τὰ ὁλοκαυτώματά σου, τὰ κρέα ἀνοίσεις ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου· τὸ δὲ αἷμα τῶν θυσιῶν σου προσχεεῖς πρὸς τὴν βάσιν τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, τὰ δὲ κρέα φαγῇ. Φυλάσσου καὶ ἄκουε καὶ ποιήσεις πάντας τοὺς λόγους οὓς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι, ἵνα εὖ σοι γένηται καὶ τοῖς υἱοῖς σου δι αἰῶνος, ἐὰν ποιήσῃς τὸ ἀρεστὸν καὶ τὸ καλὸν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Ἐὰν δὲ ἐξολοθρεύσῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὰ ἔθνη, εἰς οὓς εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι τὴν γῆν αὐτῶν, ἀπὸ προσώπου σου, καὶ κατακληρονομήσῃς αὐτὴν, καὶ κατοικήσῃς ἐν τῇ γῇ αὐτῶν, πρόσεχε σεαυτῷ μὴ ἐκζητήσῃς ἐπακολουθῆσαι αὐτοῖς μετὰ τὸ ἐξολοθρευθῆναι αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου σου, λέγων, πῶς ποιοῦσι τὰ ἔθνη ταῦτα τοῖς θεοῖς αὐτῶν; ποιήσω κἀγώ. Οὐ ποιήσεις οὕτω τῷ Θεῷ σου· τὰ γὰρ βδελύματα Κυρίου ἃ ἐμίσησεν, ἐποίησαν ἐν τοῖς θεοῖς αὐτῶν, ὅτι τοὺς υἱοὺς αὐτῶν, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν κατακαίουσιν ἐν πυρὶ τοῖς θεοῖς αὐτῶν.

# 13

Πᾶν ῥῆμα ὃ ἐγὼ ἐντλλομαι ὑμῖν σήμερον, τοῦτο φυλάξῃ ποιεῖν· οὐ προσθήσεις ἐπ αὐτό, οὐδὲ ἀφελεῖς ἀπ αὐτοῦ. Ἐὰν δὲ ἀναστῇ ἐν σοὶ προφήτης ἢ ἐνυπνιαζόμενος τὸ ἐνύπνιον, καὶ δῷ σοι σημεῖον ἢ τέρας, καὶ ἔλθῃ τὸ σημεῖον ἢ τὸ τέρας ὃ ἐλάλησε πρὸς σὲ, λέγων, πορευθῶμεν καὶ λατρεύσωμεν θεοῖς ἑτέροις οὓς οὐκ οἴδατε, οὐκ ἀκούσεσθε τῶν λόγων τοῦ προφήτου ἐκείνου ἢ τοῦ ἐνυπνιαζομένου τὸ ἐνύπνιον ἐκεῖνο· ὅτι πειράζει Κύριος ὁ Θεός σου ὑμᾶς, εἰδέναι εἰ ἀγαπᾶτε τὸν Θεὸν ὑμῶν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας ὑμῶν, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς ὑμῶν. Ὀπίσω Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν

πορεύεσθε, καὶ τοῦτον φοβηθήσεσθε, καὶ τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσεσθε, καὶ αὐτῷ προστεθήσεσθε. Καὶ ὁ προφήτης ἐκεῖνος ἢ ὁ τὸ ἐνύπνιον ἐνυπνιαζόμενος ἐκεῖνος, ἀποθανεῖται· ἐλάλησε γὰρ πλανῆσαί σε ἀπὸ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐξαγαγόντος σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, τοῦ λυτρωσαμένου σε ἐκ τῆς δουλείας, ἐξῶσαί σε ἀπὸ τῆς ὁδοῦ, ἧς ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου πορεύεσθαι ἐν αὐτῇ· καὶ ἀφανιεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Ἐὰν δὲ παρακαλέσῃ σε ὁ ἀδελφός σου ἐκ πατρός σου ἢ ἐκ μητρός σου, ἢ ὁ υἱός σου, ἢ ἡ θυγάτηρ, ἢ ἡ γυνή σου ἡ ἐν κόλπῳ σου, ἢ φίλος ἴσος τῇ ψυχῇς σου λάθρα, λέγων, βαδίσωμεν καὶ λατρεύσωμεν θεοῖς ἑτέροις, οὓς οὐκ ᾔδεις σὺ καὶ οἱ πατέρες σου, ἀπὸ τῶν θεῶν τῶν ἐθνῶν τῶν περὶ κύκλῳ ὑμῶν, τῶν ἐγγιζόντων σοι ἢ τῶν μακρὰν ἀπὸ σοῦ, ἀπ ἄκρου τῆς γῆς ἕως ἄκρου τῆς γῆς, οὐ συνθελήσεις αὐτῷ, καὶ οὐκ εἰσακούσῃ αὐτοῦ, καὶ οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός σου ἐπ αὐτῷ, οὐκ ἐπιποθήσεις ἐπ αὐτῷ, οὐδ οὐ μὴ σκεπάσῃς αὐτόν· ἀναγγέλλων ἀναγγελεῖς περὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ χεῖρές σου ἔσονται ἐπ αὐτὸν ἐν πρώτοις ἀποκτεῖναι αὐτὸν, καὶ αἱ χεῖρες παντὸς τοῦ λαοῦ ἐπ ἐσχάτῳ. Καὶ λιθοβολήσουσιν αὐτὸν ἐν λίθοις, καὶ ἀποθανεῖται, ὅτι ἐζήτησεν ἀποστῆσαί σε ἀπὸ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου τοῦ ἐξαγαγόντος σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἀκούσας φοβηθήσεται, καὶ οὐ προσθήσει ποιῆσαι ἔτι κατὰ τὸ ῥῆμα τὸ πονηρὸν τοῦτο ἐν ὑμῖν. Ἐὰν δὲ ἀκούσῃς ἐν μιᾷ τῶν πόλεών σου, ὧν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κατοικεῖν σε ἐκεῖ, λεγόντων, ἐξήλθοσαν ἄνδρες παράνομοι ἐξ ὑμῶν, καὶ ἀπέστησαν πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν αὐτῶν, λέγοντες, πορευθῶμεν καὶ λατρεύσωμεν θεοῖς ἑτέροις, οὓς οὐκ ᾔδειτε, καὶ ἐτάσεις καὶ ἐρωτήσεις, καὶ ἐρευνήσεις σφόδρα, καὶ ἰδοὺ ἀληθὴς σαφῶς ὁ λόγος, γεγένηται τὸ βδέλυγμα τοῦτο ἐν ὑμῖν· ἀναιρῶν ἀνελεῖς

πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ γῇ ἐκείνῃ ἐν φόνῳ μαχαίρας, ἀναθέματι ἀναθεματιεῖτε αὐτὴν, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῇ. Καὶ πάντα τὰ σκῦλα αὐτῆς συνάξεις εἰς τὰς διόδους αὐτῆς, καὶ ἐμπρήσεις τὴν πόλιν ἐν πυρὶ, καὶ πάντα τὰ σκῦλα αὐτῆς πανδημεὶ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου· καὶ ἔσται ἀοίκητος εἰς τὸν αἰῶνα, οὐκ ἀνοικοδομηθήσεται ἔτι. Καὶ οὐ προσκολληθήσεται οὐδὲν ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος ἐν τῇ χειρί σου, ἵνα ἀποστραφῇ Κύριος ἀπὸ θυμοῦ τῆς ὀργῆς αὐτοῦ, καὶ δώσῃ σοι ἔλεος, καὶ ἐλεήσῃ σε, καὶ πληθύνῃ σε, ὃν τρόπον ὤμοσε τοῖς πατράσι σου, ἐὰν ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, φυλάσσειν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ποιεῖν τὸ καλὸν καὶ τὸ ἀρεστὸν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου.

# 14

Υἱοί ἐστε Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν· οὐκ ἐπιθήσετε φαλάκρωμα ἀναμέσον τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν ἐπὶ νεκρῷ. Ὅτι λαὸς ἅγιος εἶ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καὶ σε ἐξελέξατο Κύριος ὁ Θεός σου γενέσθαι σε λαὸν αὐτῷ περιούσιον ἀπὸ πάντων τῶν ἐθνῶν τῶν ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. Οὐ φάγεσθε πᾶν βδέλυγμα. Ταῦτα κτήνη ἃ φάγεσθε· μόσχον ἐκ βοῶν, καὶ ἀμνὸν ἐκ προβάτων, καὶ χίμαρον ἐξ αἰγῶν· ἔλαφον, καὶ δορκάδα, καὶ πύγαργον, ὄρυγα, καὶ καμηλοπάρδαλιν. Πᾶν κτῆνος διχηλοῦν ὁπλὴν, καὶ ὀνυχιστῆρας ὀνυχίζον δύο χηλῶν, καὶ ἀνάγον μηρυκισμὸν ἐν τοῖς κτήνεσι, ταῦτα φάγεσθε. Καὶ ταῦτα οὐ φάγεσθε ἀπὸ τῶν ἀναγόντων μηρυκισμὸν, καὶ ἀπὸ τῶν διχηλούντων τὰς ὁπλὰς, καὶ ὀνυχιζόντων ὀνυχιστῆρας· τὸν κάμηλον, καὶ δασύποδα, καὶ χοιρογρύλλιον· ὅτι

ἀνάγουσι μηρυκισμὸν, καὶ ὁπλὴν οὐ διχηλοῦσιν, ἀκάθαρτα ταῦτα ὑμῖν ἐστι. Καὶ τὸν ὗν, ὅτι διχηλεῖ ὁπλὴν τοῦτο, καὶ ὀνυχίζει ὀνυχιστῆρας ὁπλῆς, καὶ τοῦτο μηρυκισμὸν οὐ μηρυκᾶται ἀκάθαρτον τοῦτο ὑμῖν· ἀπὸ τῶν κρεῶν αὐτῶν οὐ φάγεσθε, τῶν θνησιμαίων αὐτῶν οὐχ ἅψεσθε. Καὶ ταῦτα φάγεσθε ἀπὸ πάντων τῶν ἐν τῷ ὕδατι, πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτοῖς πτερύγια καὶ λεπίδες, φάγεσθε. Καὶ πάντα ὅσα οὐκ ἔστιν αὐτοῖς πτερύγια καὶ λεπίδες, οὐ φάγεσθε· ἀκάθαρτα ὑμῖν ἐστι. Πᾶν ὄρνεον καθαρὸν φάγεσθε. Καὶ ταῦτα οὐ φάγεσθε ἀπ αὐτῶν· τὸν ἀετὸν, καὶ τὸν γρύπα, καὶ τὸν ἁλιάετον, καὶ τὸν γύπα, καὶ τὸν ἴκτινον, καὶ τὰ ὅμοια αὐτῷ, καὶ στρουθὸν, καὶ γλαῦκα, καὶ λάρον, καὶ ἐρωδιὸν, καὶ κύκνον, καὶ ἶβιν, καὶ καταράκτην, καὶ ἱέρακα, καὶ τὰ ὅμοια αὐτῷ, καὶ ἔποπα, καὶ νυκτικόρακα, καὶ πελακᾶνα, καὶ χαραδριὸν, καὶ τὰ ὅμοια αὐτῷ, καὶ πορφυρίωνα, καὶ νυκτερίδα. Πάντα τὰ ἑρπετὰ τῶν πετεινῶν ἀκάθαρτά ἐστιν ὑμῖν· οὐ φάγεσθε ἀπ αὐτῶν. Πᾶν πετεινὸν καθαρὸν φάγεσθε. Πᾶν θνησιμαῖον οὐ φάγεσθε· τῷ παροίκῳ τῷ ἐν ταῖς πόλεσί σου δοθήσεται καὶ φάγεται, ἢ ἀποδώσῃ τῷ ἀλλοτρίῳ, ὅτι λαὸς ἅγιος εἶ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Οὐχ ἑψήσεις ἄρνα ἐν γάλακτι μητρὸς αὐτοῦ. Δεκάτην ἀποδεκατώσεις παντὸς γεννήματος τοῦ σπέρματός σου, τὸ γέννημα τοῦ ἀγροῦ σου ἐνιαυτὸν κατ ἐνιαυτόν. Καὶ φαγῇ αὐτὸ ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ· οἴσετε τὰ ἐπιδέκατα τοῦ σίτου σου, καὶ τοῦ οἴνου σου, καὶ τοῦ ἐλαίου σου, τὰ πρωτότοκα τῶν βοῶν σου, καὶ τῶν προβάτων σου, ἵνα μάθῃς φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεόν σου πάσας τὰς ἡμέρας. Ἐὰν δὲ μακρὰν γένηται ἡ ὁδὸς ἀπὸ σοῦ, καὶ μὴ δύνῃ ἀναφέρειν αὐτὰ, ὅτι μακρὰν ἀπὸ σοῦ ὁ τόπος, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ, ὅτι εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός

σοῦ, καὶ ἀποδώσῃ αὐτὰ ἀργυρίου, καὶ λήψῃ τὸ ἀργύριον ἐν ταῖς χερσί σου, καὶ πορεύσῃ εἰς τὸν τόπον ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτόν. Καὶ δώσεις ἀργύριον ἐπὶ παντὸς οὗ ἂν ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχή σου, ἐπὶ βουσὶν ἢ ἐπὶ προβάτοις, ἢ ἐτ οἴνῳ ἢ ἐπὶ σίκερα, ἢ ἐπὶ σίκερα, ἢ ἐπὶ παντὸς οὗ ἂν ἐπιθυμῇ ἡ φυχή σου, καὶ φαγῇ ἐκεῖ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ εὐφρανθήσῃ σὺ καὶ ὁ οἶκός σου, καὶ ὁ Λευίτης ὁ ἐν ταῖς πόλεσί σου, ὅτι οὐκ ἔστιν αὐτῷ μερὶς οὐδὲ κλῆρος μετὰ σοῦ. Μετὰ τρία ἔτη ἐξοίσεις πᾶν τὸ ἐπιδέκατον τῶν γεννημάτων σου, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐκείνῳ θήσεις αὐτὸ ἐν ταῖς πόλεσί σου. Καὶ ἐλεύσεται ὁ Λευίτης, ὅτι οὐκ ἔστιν αὐτῷ μερὶς οὐδὲ κλῆρος μετὰ σοῦ, καὶ ὁ προσήλυτος καὶ ὁ ὀρφανὸς καὶ ἡ χήρα ἡ ἐν ταῖς πόλεσί σου, καὶ φάγονται καὶ ἐμπλησθήσονται, ἵνα εὐλογήσῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις οἷς ἐὰν ποιῇς.

# 15

Δι ἑπτὰ ἐτῶν ποιήσεις ἄφεσιν. Καὶ οὕτω τὸ πρόσταγμα τῆς ἀφέσεως· ἀφήσεις πᾶν χρέος ἴδιον, ὃ ὀφείλει σοι ὁ πλησίον, καὶ τὸν ἀδελφόν σου οὐκ ἀπαιτήσεις· ἐπικέκληται γὰρ ἄφεσις Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Τὸν ἀλλότριον ἀπαιτήσεις ὅσα ἐὰν ἠ· σοι παρ αὐτῷ, τῷ δὲ ἀδελφῷ σου ἄφεσιν ποιήσεις τοῦ χρέους σου. Ὅτι οὐκ ἔσται ἐν σοὶ ἐνδεὴς, ὅτι εὐλογῶν εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν τῇ γῇ, ᾗ Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ κατακληρονομεῖν σε αὐτήν. Ἐὰν δὲ ἀκοῇ εἰσακούσητε τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν φυλάσσειν καὶ ποιεῖν πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου εὐλόγησέ σε ὃν τρόπον ἐλάλησέ σοι· καὶ δανειεῖς ἔθνεσι πολλοῖς, σὺ δὲ οὐ δανειῇ·

καὶ ἄρξεις ἐθνῶν πολλῶν, σοῦ δὲ οὐκ ἄρξουσιν. Ἐὰν δὲ γένηται ἐν σοὶ ἐνδεὴς ἐκ τῶν ἀδελφῶν σου ἐν μιᾷ τῶν πόλεών σου ἐν τῇ γῇ, ᾗ Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, οὐκ ἀποστέρξεις τὴν καρδίαν σου, οὐδ οὐ μὴ συσφίγξεις τὴν χεῖρά σου ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ σου τοῦ ἐπιδεομένου. Ἀνοίγων ἀνοίξεις τὰς χεῖράς σου αὐτῷ, καὶ δάνειον δανειεῖς αὐτῷ ὅσον ἐπιδέεται, καθότι ἐνδεεῖται. Πρόσεχε σεαυτῷ μὴ γένηται ῥῆμα κρυπτὸν ἐν τῇ καρδίᾳ σου ἀνόμημα, λέγων, Ἐγγίζει τὸ ἔτος τὸ ἕβδομον, ἔτος τῆς ἀφέσεως, καὶ πονηρεύσηται ὁ ὀφθαλμός σου τῷ ἀδελφῷ σου τῷ ἐπιδεομένῳ, καὶ οὐ δώσεις αὐτῷ, καὶ καταβοήσεται κατὰ σοῦ πρὸς Κύριον, καὶ ἔσται ἐν σοὶ ἁμαρτία μεγάλη. Διδοὺς δώσεις αὐτῷ, καὶ δάνειον δανειεῖς αὐτῷ ὅσον ἐπιδέεται, καθότι ἐνδεεῖται· καὶ οὐ λυπηθήσῃ τῇ καρδίᾳ σου διδόντος σου αὐτῷ, ὅτι διὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσιν τοῖς ἔργοις καὶ ἐν πᾶσι οὗ ἂν ἐπιβάλῃς τὴν χεῖρά σου. Οὐ γὰρ μὴ ἐκλίπῃ ἐνδεὴς ἀπὸ τῆς γῆς σου· διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι ποιεῖν τὸ ῥῆμα τοῦτο, λέγων, ἀνοίγων ἀνοίξεις τὰς χεῖράς σου τῷ ἀδελφῷ σου τῷ πένητι καὶ τῷ ἐπιδεομένῳ τῷ ἐπὶ τῆς γῆς σου. Ἐὰν δὲ πραθῇ σοι ὁ ἀδελφός σου ὁ Ἑβραῖος ἢ Ἑβραία, δουλεύσει σοι ἓξ ἔτη, καὶ τῷ ἑβδόμῳ ἐξαποστελεῖς αὐτὸν ἐλεύθερον ἀπὸ σοῦ. Ὅταν δὲ ἐξαποστέλλῃς αὐτὸν ἐλεύθερον ἀπὸ σοῦ, οὐκ ἐξαποστελεῖς αὐτὸν κενόν. Ἐφόδιον ἐφοδιάσεις αὐτὸν ἀπὸ τῶν προβάτων σου, καὶ ἀπὸ τοῦ σίτου σου, καὶ ἀπὸ τοῦ οἴνου σου· καθὰ εὐλόγησέ σε Κύριος ὁ Θεός σου, δώσεις αὐτῷ. Καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἦσθα ἐν γῇ Αἰγύπτου, καὶ ἐλυτρώσατό σε Κύριος ὁ Θεός σοῦ ἐκεῖθεν· διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι ποιεῖν τὸ ῥῆμα τοῦτο. Ἐὰν δὲ λέγῃ πρὸς σέ, οὐκ ἐξελεύσομαι ἀπὸ σοῦ, ὅτι ἠγάπηκέ σε καὶ τὴν οἰκίαν σου, ὅτι εὖ ἐστιν αὐτῷ παρὰ σοί. Καὶ λήψῃ τὸ ὀπήτιον, καὶ τρυπήσεις τὸ ὠτίον αὐτοῦ πρὸς τὴν θύραν,

καὶ ἔσται σοι οἰκέτης εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ τὴν παιδίσκην σου ὡσαύτως ποιήσεις. Οὐ σκληρὸν ἔσται ἐναντίον σου ἐξαποστελλομένων αὐτῶν ἐλευθέρων ἀπὸ σου, ὅτι ἐπέτειον μισθὸν τοῦ μισθωτοῦ ἐδούλευσέ σοι ἓξ ἔτη· καὶ εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσιν οἷς ἐὰν ποιῇς. Πᾶν πρωτότοκον ὃ ἐὰν τεχθῇ ἐν ταῖς βουσί σου, καὶ ἐν τοῖς προβάτοις σου, τὰ ἀρσενικὰ ἁγιάσεις Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· οὐκ ἐργᾷ ἐν τῷ πρωτοτόκῳ μόσχῳ σου, καὶ οὐ μὴ κείρῃς τὰ πρωτότοκα τῶν προβάτων σου. Ἔναντι Κυρίου φαγῇ αὐτὸ ἐνιαυτὸν ἐξ ἐνιαυτοῦ ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου, σὺ καὶ ὁ οἶκός σου. Ἐὰν δὲ ᾖ· ἐν αὐτῷ μῶμος, χωλὸν ἢ τυφλον, μῶμον πονηρὸν, οὐ θύσεις αὐτὸ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Ἐν ταῖς πόλεσί σου φαγῇ αὐτό· ὁ ἀκάθαρτος ἐν σοι, καὶ ὁ καθαρὸς ὡσαύτως ἔδεται ὡς δορκάδα ἢ ἔλαφον. Πλὴν αἷμα οὐ φᾳγεσθε· ἐπὶ τὴν γῆν ἐκχεεῖς αὐτὸ ὡς ὕδωρ.

# 16

Φυλάξαι τὸν μῆνα τῶν νέων, καὶ ποιήσεις τὸ πάσχα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, ὅτι ἐν τῷ μηνὶ τῶν νέων ἐξῆλθες ἐξ Αἰγύπτου νυκτός. Καὶ θύσεις τὸ πάσχα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου πρόβατα καὶ βόας ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτὸν, ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ. Οὐ φαγῇ ἐπ αὐτοῦ ζύμην· ἑπτὰ ἡμέρας φαγῇ ἐπ αὐτοῦ ἄζυμα, ἄρτον κακώσεως, ὅτι ἐν σπουδῇ ἐξῆλθετε ἐξ Αἰγύπτου, ἵνα μνησθῆτε τὴν ἡμέραν τῆς ἐξοδίας ὑμῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς ὑμῶν. Οὐκ ὀφθήσεται σοι ζύμη ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις σου ἑπτὰ ἡμέρας, καὶ οὐ κοιμήθησεται ἀπὸ τῶν κρεῶν ὧν ἐὰν θύσῃς τὸ ἑσπέρας τῇ ἡμέρᾳ τῇ πρώτῃ εἰς

τοπρωΐ. Οὐ δυνήσῃ θῦσαι τὸ πάσχα ἐν οὐδεμιᾷ τῶν πόλεών σου, ὧν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι· ἀλλ ἢ εἰς τὸν τόπον, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου, ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ, θύσεις τὸ πάσχα ἑσπέρας πρὸς δυσμὰς ἡλίου, ἐν τῷ καιρῷ ᾧ ἐξῆλθες ἐξ Αἰγύπτου. Καὶ ἐψήσεις καὶ ὀπτήσεις καὶ φαγῇ ἐν τῷ τόπῳ, οὗ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτόν· καὶ ἀποστραφήσῃ τοπρωΐ, καὶ ἐλεύσῃ εἰς τοὺς οἴκους σου. Ἓξ ἡμέρας φαγῇ ἄζυμα, καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἐξόδιον ἑορτὴ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου· οὐ ποιήσεις ἐν αὐτῇ πᾶν ἔργον, πλὴν ὅσα ποιηθήσεται ψυχῇ. Ἑπτὰ ἑβδομάδας ἐξαριθμήσεις σεαυτῷ· ἀρξαμένου σου δρέπανον ἐπ ἀμητὸν, ἄρξῃ ἐξαριθμῆσαι ἑπτὰ ἑβδομάδας. Καὶ ποιήσεις ἑορτὴν ἑβδομάδων Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καθὼς ἡ χείρ σου ἰσχύει, ὅσα ἂν δῷ Κύριος ὁ Θεός σου. Καὶ εὐφρανθήσῃ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, σὺ καὶ ὁ υἱός σου, καὶ ἡ θυγάτηρ σου, ὁ παῖς σου, καὶ ἡ παιδίσκη σου, καὶ ὁ Λευίτης, καὶ ὁ προσήλυτος, καὶ ὁ ὀρφανὸς, καὶ ἡ χήρα ἡ οὖσα ἐν ὑμῖν, ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτὸν, ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ. Καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἐγένου ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ φυλάξῃ καὶ ποιήσεις τὰς ἐντολὰς ταύτας. Ἑορτὴν σκηνῶν ποιήσεις σεαυτῷ ἑπτὰ ἡμέρας ἐν τῷ συναγαγεῖν σε ἐκ τῆς ἅλωνός σου καὶ ἀπὸ τῆς ληνοῦ σου. Καὶ εὐφρανθήσῃ ἐν τῇ ἑορτῇ σου, σὺ καὶ ὁ υἱός σου, καὶ ἡ θυγάτηρ σου, ὁ παῖς σου, καὶ ἡ παιδίσκη σου, καὶ ὁ Λευίτης, καὶ ὁ προσήλυτος, καὶ ὁ ὀρφανὸς, καὶ ἡ χήρα ἡ οὖσα ἐν ταῖς πόλεσί σου. Ἑπτὰ ἡμέρας ἑορτάσεις Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐν τῷ τόπῳ, ᾧ ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου αὐτῷ· ἐὰν δὲ εὐλογήσῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσι γεννήμασί σου, καὶ ἐν πάντι ἔργῳ τῶν χειρῶν σου, καὶ ἔσῃ εὐφραινόμενος. Τρεῖς καιροὺς τοῦ ἐνιαυτοῦ ὀφθήσεται πᾶν ἀρσενικόν σου ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐν

τῷ τόπῳ, ᾧ ἐὰν ἐκλέξηται αὐτὸν Κύριος· ἐν τῇ ἑορτῇ τῶν ἀζύμων, καὶ ἐν τῇ ἑορτῇ τῶν ἑβδομάδων, καὶ ἐν τῇ ἑορτῇ τῆς σκηνοπηγίας· οὐκ ὀφθήσῃ ἐνώπιον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου κενός. Ἕκαστος κατὰ δύναμιν τῶν χειρῶν ὑμῶν, κατὰ τὴν εὐλογίαν Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἣν ἔδωκέ σοι. Κριτὰς καὶ γραμματοεισαγωγεῖς ποιήσεις σεαυτῷ ἐν ταῖς πόλεσί σου, αἷς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κατὰ φυλάς· καὶ κρινοῦσι τὸν λαὸν κρίσιν δικαίαν. Οὐκ ἐκκλινοῦσι κρίσιν, οὐδὲ λήψονται δῶρον· τὰ γὰρ δῶρα ἀποτυφλοῖ ὀφθαλμοὺς σοφῶν, καὶ ἐξαίρει λόγους δικαίων. Δικαίως τὸ δίκαιον διώξῃ, ἵνα ζῆτε, καὶ εἰσελθόντες κληρονομήσητε τὴν γῆν ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Οὐ φυτεύσεις σεαυτῷ ἄλσος· πᾶν ξύλον παρὰ τὸ θυσιαστήριον τοῦ Θεοῦ σου οὐ ποιήσεις σεαυτῷ. Οὐ στήσεις σεαυτῷ στήλην, ἃ ἐμίσησε Κύριος ὁ Θεός σου.

# 17

Οὐ θύσεις Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου μόσχον ἢ πρόβατον, ἐν ᾧ ἐστιν ἐν αὐτῷ μῶμος, πᾶν ῥῆμα πονηρόν· ὅτι βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐστίν. Ἐὰν δὲ εὑρεθῇ ἐν μιᾷ τῶν πόλεών σου, ὧν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, ἀνὴρ ἢ γυνὴ ὃς ποιήσει τὸ πονηρὸν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, παρελθεῖν τὴν διαθήκην αὐτοῦ, καὶ ἐλθόντες λατρεύσωσι θεοῖς ἑτέροις, καὶ προσκυνήσωσιν αὐτοῖς, τῷ ἡλίῳ, ἢ τῇ σελήνῃ, ἢ παντὶ τῶν ἐκ τοῦ κόσμου τοῦ οὐρανοῦ, ἃ οὐ προσέταξέ σοι, καὶ ἀναγγελῇ σοι καὶ ἐκζητήσῃς σφόδρα, καὶ ἰδοὺ ἀληθῶς γέγονε τὸ ῥῆμα, γεγένηται τὸ βδέλυγμα τοῦτο ἐν Ἰσραήλ· Καὶ ἐξάξεις τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, ἢ τὴν γυναῖκα ἐκείνην, καὶ λιθοβολήσετε αὐτοὺς ἐν λίθοις, καὶ τελευτήσουσιν. Ἐπὶ δυσὶ

μάρτυσιν ἢ ἐπὶ τρισὶ μάρτυσιν ἀποθανεῖται· ὁ ἀποθνήσκων οὐκ ἀποθανεῖται ἐφ ἑνὶ μάρτυρι. Καὶ ἡ χεὶρ τῶν μαρτύρων ἔσται ἐπ αὐτῷ ἐν πρώτοις θανατῶσαι αὐτὸν, καὶ ἡ χεὶρ τοῦ λαοῦ ἐπ ἐσχάτων· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Ἐὰν δὲ ἀδυνατήσῃ ἀπὸ σοῦ ῥῆμα ἐν κρίσει ἀναμέσον αἵμα αἵματος, καὶ ἀναμέσον κρίσις κρίσεως, καὶ ἀναμέσον ἀφὴ ἀφῆς, καὶ ἀναμέσον ἀντιλογία ἀντιλογίας, ῥήματα κρίσεως ἐν ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, καὶ ἀναστὰς ἀναβήσῃ εἰς τὸν τόπον ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐκεῖ, καὶ ἐγεύσῃ πρὸς τὸνς ἱερεῖς τοὺς Λευίτας, καὶ πρὸς τὸν κριτὴν ὃς ἂν γένηται ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐκζητήσαντες ἀναγγελοῦσί σοι τὴν κρίσιν. Καὶ ποιήσεις κατὰ τὸ πρᾶγμα ὃ ἂν ἀναγγείλωσί σοι ἐκ τοῦ τόπου, οὗ ἐὰν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ φυλάξῃ ποιῆσαι πάντα ὅσα ἂν νομοθετηθῇ σοι. Κατὰ τὸν νόμον καὶ κατὰ τὴν κρίσιν ἣν ἂν εἴπωσί σοι, ποιήσεις· οὐκ ἐκκλινεῖς ἀπὸ τοῦ ῥήματος οὗ ἐὰν ἀναγγείλωσί σοι δεξιὰ οὐδὲ ἀριστερά. Καὶ ὁ ἄνθρωπος ὃς ἐὰν ποιήσῃ ἐν ὑπερηφανίᾳ, ὥστε μὴ ὑπακοῦσαι τοῦ ἱερέως τοῦ παρεστηκότος λειτουργεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ἢ τοῦ κριτοῦ ὃς ἂν ἡ· ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἀποθανεῖται ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ Ἰσραήλ. Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀκούσας φοβηθήσεται, καὶ οὐκ ἀσεβήσει ἔτι. Ἐὰν δὲ εἰσέλθῃς εἰς τὴν γῆν ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, καὶ κληρονομήσῃς αὐτὴν, καὶ κατοικήσῃς ἐπ αὐτὴν, καὶ εἴπῃς, καταστήσω ἐπ ἐμαυτὸν ἄρχοντα, καθὰ καὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ μου· καθιστῶν καταστήσεις ἐπὶ σεαυτὸν ἄρχοντα, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεὸς αὐτόν· ἐκ τῶν ἀδελφῶν σου καταστήσεις ἐπὶ σεαυτὸν ἄρχοντα· οὐ δυνήσῃ καταστῆσαι ἐπὶ σεαυτὸν ἄνθρωπον ἀλλότριον, ὅτι οὐκ ἀδελφός σου ἐστί. Διότι οὐ πληθυνεῖ ἑαυτῷ ἵππον, οὐδὲ μὴ ἀποστρέψῃ τὸν λαὸν εἰς Αἴγυπτον, ὅπως μὴ

πληθύνῃ αὐτῷ ἵππον· ὁ δὲ Κύριος εἶπεν, οὐ προσθήσεσθε ἀποστρέψαι τῇ ὁδῷ ταύτῃ ἔτι. Καὶ οὐ πληθυνεῖ ἑαυτῷ γυναῖκας, ἵνα μὴ μεταστῇ αὐτοῦ καρδία· καὶ ἀργύριον καὶ χρυσίον οὐ πληθυνεῖ ἑαυτῷ σφόδρα. Καὶ ὅταν καθίσῃ ἐπὶ τῆς ἀρχῆς αὐτοῦ, καὶ γράψει αὐτῷ τὸ δευτερονόμιον τοῦτο εἰς βιβλίον παρὰ τῶν ἱερέων τῶν Λευιτῶν, καὶ ἔσται μετ αὐτοῦ, καὶ ἀναγνώσεται ἐν αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ, ἵνα μάθῃ φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ φυλάσσεσθαι πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας, καὶ τὰ δικαιώματα ταῦτα ποιεῖν· ἵνα μὴ ὑψωθῇ ἡ καρδία αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, ἵνα μὴ παραβῇ ἀπὸ τῶν ἐντολῶν δεξιὰ ἢ ἀριστερὰ, ὅπως ἂν μακροχρονίσῃ ἐπὶ τῆς ἀρχῆς αὐτοῦ, αὐτὸς καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ.

# 18

Οὐκ ἔσται τοῖς ἱερεῦσι τοῖς Λευίταις ὅλῃ φυλῇ Λευὶ μερὶς οὐδὲ κλῆρος μετὰ Ἰσραήλ· καρπώματα Κυρίου ὁ κλῆρος αὐτῶν, φάγονται αὐτά. Κλῆρος δὲ οὐκ ἔσται αὐτοῖς ἐν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν· Κύριος αὐτὸς κλῆρος αὐτοῦ, καθότι εἶπεν αὐτῷ. Καὶ αὕτη ἡ κρίσις τῶν ἱερέων τὰ παρὰ τοῦ λαοῦ παρὰ τῶν θυόντων τὰ θύματα, ἐάν τε μόσχον, ἐάν τε πρόβατον· καὶ δώσεις τὸν βραχίονα τῷ ἱερεῖ, καὶ τὰ σιαγόνια, καὶ τὸ ἔνυστρον, καὶ τὰς ἀπαρχὰς τοῦ σίτου σου, καὶ τοῦ οἴνου σου, καὶ τοῦ ἐλαίου σου· καὶ τὴν ἀπαρχὴν τῶν κουρῶν τῶν προβάτων σου δώσεις αὐτῷ. Ὅτι αὐτὸν ἐξελέξατο Κύριος ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν σου, παρεστάναι ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ, λειτουργεῖν καὶ εὐλογεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ, αὐτὸς καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Ἐὰν δὲ παραγένηται

ὁ Λευίτης ἐκ μιᾶς τῶν πόλεων ἐκ πάντων τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, οὗ αὐτὸς παροικεῖ, καθ ὅτι ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, εἰς τὸν τόπον ὃν ἂν ἐκλέξηται, λειτουργήσει τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ, ὥσπερ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ οἱ Λευῖται οἱ παρεστηκότες ἐκεῖ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Μερίδα μεμερισμένην φάγεται, πλὴν τῆς πράσεως τῆς κατὰ πατριάν. Ἐὰν δὲ εἰσέλθῃς εἰς τὴν γῆν ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, οὐ μαθήσῃ ποιεῖν κατὰ τὰ βδελύγματα τῶν ἐθνῶν ἐκείνων. Οὐχ εὑρεθήσεται ἐν σοὶ περικαθαίρων τὸν υἱὸν αὐτοῦ καὶ τὴν θυγατέρα αὐτοῦ ἐν πυρὶ, μαντευόμενος μαντείαν, κληδονιζόμενος, καὶ οἰωνιζόμενος, φαρμακοῖς ἐπαείδων ἐπαοιδὴν, ἐγγαστρίμυθος, καὶ τερατοσκόπος, ἐπερωτῶν τοὺς νεκρούς. Ἔστι γὰρ βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου πᾶς ποιῶν ταῦτα· ἕνεκεν γὰρ τῶν βδελυγμάτων τούτων Κύριος ἐξολοθρεύσει αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου σου. Τέλειος ἔσῃ ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Τὰ γὰρ ἔθνη ταῦτα, οὓς σὺ κατακληρονομεῖς αὐτοὺς, οὗτοι κληδόνων καὶ μαντειῶν ἀκούσονται· καί σοι οὐχ οὕτως ἔδωκε Κύριος ὁ Θεός σου. Προφήτην ἐκ τῶν ἀδελφῶν σου, ὡς ἐμὲ, ἀναστήσει σοι Κύριος ὁ Θεός σου· αὐτοῦ ἀκούσεσθε· Κατὰ πάντα ὅσα ᾐτήσω παρὰ Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου ἐν Χωρὴβ τῇ ἡμέρᾳ τῆς ἐκκλησίας, λέγοντες, οὐ προσθήσομεν ἀκοῦσαι τὴν φωνὴν Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ τὸ πῦρ τοῦτο τὸ μέγα οὐκ ὀψόμεθα ἔτι, οὐδὲ μὴ ἀποθάνωμεν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ὀρθῶς πάντα ὅσα ἐλάλησαν πρὸς σέ. Προφήτην ἀναστήσω αὐτοῖς ἐκ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν, ὥσπερ σέ· καὶ δώσω τὰ ῥήματα ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καὶ λαλήσει αὐτοῖς καθ ὅτι ἂν ἐντείλωμαι αὐτῷ. Καὶ ὁ ἄνθρωπος ὃς ἐὰν μὴ ἀκούσῃ ὅσα ἂν λαλήσῃ ὁ προφήτης ἐκεῖνος ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐγὼ ἐκδικήσω ἐξ αὐτοῦ. Πλὴν ὁ προφήτης ὃς ἂν ἀσεβήσῃ λαλῆσαι ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου ῥῆμα ὃ οὐ προσέταξα λαλῆσαι, καὶ ὃς

ἂν λαλήσῃ ἐν ὀνόματι θεῶν ἑτέρων, ἀποθανεῖται ὁ προφήτης ἐκεῖνος. Ἐὰν δὲ εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, πῶς γνωσόμεθα τὸ ῥῆμα ὃ οὐκ ἐλάλησε Κύριος; Ὅσα ἐὰν λαλήσῃ ὁ προφήτης ἐκεῖνος τῷ ὀνόματι Κυρίου, καὶ μὴ γένηται, καὶ μὴ συμβῇ, τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ οὐκ ἐλάλησε Κύριος, ἐν ἀσεβείᾳ ἐλάλησεν ὁ προφήτης ἐκεῖνος· οὐκ ἀφέξεσθε αὐτοῦ.

# 19

Ἐὰν δὲ ἀφανίσῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὰ ἔθνη, ἃ ὁ Θεὸς δίδωσί σοι τὴν γῆν, καὶ κατακληρονομήσητε αὐτοὺς, καὶ κατοικήσητε ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς οἴκοις αὐτῶν, τρεῖς πόλεις διαστελεῖς σεαυτῷ ἐν μέσῳ τῆς γῆς σου, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Στόχασαί σοι τὴν ὁδὸν, καὶ τριμεριεῖς τὰ ὅρια τῆς γῆς σου, ἣν καταμερίζει σοι Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ ἔσται καταφυγὴ παντὶ φονευτῇ. Τοῦτο δὲ ἔσται τὸ πρόσταγμα τοῦ φονευτοῦ, ὃς ἂν φύγῃ ἐκεῖ, καὶ ζήσεται, ὃς ἂν πατάξῃ τὸν πλησίον αὐτοῦ οὐκ εἰδῶς, καὶ οὗτος οὐ μισῶν αὐτὸν πρὸ τῆς χθὲς καὶ τρίτης. Καὶ ὅς ἐὰν εἰσέλθῃ μετὰ τοῦ πλησίον εἰς τὸν δρυμὸν συναγαγεῖν ξύλα, καὶ ἐκκρουσθῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ τῇ ἀξίνῃ κόπτοντος τὸ ξύλον, καὶ ἐκπεσὸν τὸ σιδήριον ἀπὸ τοῦ ξύλου τύχῃ τοῦ πλησίον, καὶ ἀποθάνῃ, οὗτος καταφεύξεται εἰς μίαν τῶν πόλεων τούτων, καὶ ζήσεται. Ἵνα μὴ διώξας ὁ ἀγχιστεύων τοῦ αἵματος ὀπίσω τοῦ φονεύσαντος, ὅτι παρατεθέρμανται τῇ καρδίᾳ, καὶ καταλάβῃ αὐτὸν, ἐὰν μακροτέρα ἡ· ἡ ὁδὸς, καὶ πατάξῃ αὐτοῦ ψυχήν· καὶ τούτῳ οὐκ ἔστι κρίσις θανάτου, ὅτι οὐ μισῶν ἦν αὐτὸν πρὸ τῆς χθὲς, οὐδὲ πρὸ τῆς τρίτης. Διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι τὸ ῥῆμα τοῦτο, λέγων, τρεῖς

πόλεις διαστελεῖς σεαυτῷ. Ἐὰν δὲ ἐμπλατύνῃ Κύριος ὁ Θεός σου τὰ ὅριά σου, ὃν τρόπον ὤμοσε τοῖς πατράσι σου, καὶ δῷ σοι Κύριος πᾶσαν τὴν γῆν, ἣν εἶπε δοῦναι τοῖς πατράσι σου, ἐὰν ἀκούσῃς ποιεῖν πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεόν σου, πορεύεσθαι ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας· προσθήσεις σεαυτῷ ἔτι τρεῖς πόλεις πρὸς τὰς τρεῖς ταύτας. Καὶ οὐκ ἐκχυθήσεται αἷμα ἀναίτιον ἐν τῇ γῇ, ἡ· Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ, καὶ οὐκ ἔσται ἐν σοὶ αἵματι ἔνοχος. Ἐὰν δὲ γένηται ἐν σοὶ ἄνθρωπος μισῶν τὸν πλησίον, καὶ ἐνεδρεύσῃ αὐτὸν, καὶ ἐπαναστῇ ἐπ αὐτὸν, καὶ πατάξῃ αὐτοῦ ψυχὴν, καὶ ἀποθάνῃ, καὶ φύγῃ εἰς μίαν τῶν πόλεων τούτων· καὶ ἀποστελοῦσιν ἡ γερουσία τῆς πόλεως αὐτοῦ, καὶ λήμψονται αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ παραδώσουσιν αὐτὸν εἰς χεῖρας τῶν ἀγχιστευόντων τοῦ αἵματος, καὶ ἀποθανεῖται. Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός σου ἐπ αὐτῷ, καὶ καθαριεῖς τὸ αἷμα τὸ ἀναίτιον ἐξ Ἰσραὴλ, καὶ εὖ σοι ἔσται. Οὐ μετακινήσεις ὅρια τοῦ πλησίον, ἃ ἔστησαν οἱ πατέρες σου ἐν τῇ κληρονομίᾳ, ᾗ κατεκληρονομήθης ἐν τῇ γῇ, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ. Οὐκ ἐμμενεῖ μάρτυς εἷς μαρτυρῆσαι κατὰ ἀνθρώπου κατὰ πᾶσαν ἀδικίαν, καὶ κατὰ πᾶν ἁμάρτημα, καὶ κατὰ πᾶσαν ἁμαρτίαν, ἣν ἐὰν ἁμάρτῃ· ἐπὶ στόματος δύο μαρτύρων, καὶ ἐπὶ στόματος τριῶν μαρτύρων, στήσεται πᾶν ῥῆμα. Ἐὰν δὲ καταστῇ μάρτυς ἄδικος κατὰ ἀνθρώπου, καταλέγων αὐτοῦ ἀσέβειαν· καὶ στήσονται οἱ δύο ἄνθρωποι οἷς ἐστιν αὐτοῖς ἡ ἀντιλογία, ἔναντι Κυρίου, καὶ ἔναντι τῶν ἱερέων, καὶ ἔναντι τῶν κριτῶν, οἳ ἂν ὦσιν ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις· Καὶ ἐξετάσωσιν οἱ κριταὶ ἀκριβῶς, καὶ ἰδοὺ μάρτυς ἄδικος ἐμαρτύρησεν ἄδικα, ἀντέστη κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ· Καὶ ποιήσετε αὐτῷ ὃν τρόπον ἐπονηρεύσατο ποιῆσαι κατὰ τοῦ

ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐξαρεῖς τὸ πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Καὶ οἱ ἐπίλοιποι ἀκούσαντες φοβηθήσονται, καὶ οὐ προσθήσουσιν ἔτι ποιῆσαι κατὰ τὸ ῥῆμα τὸ πονηρὸν τοῦτο ἐν ὑμῖν. Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός σου ἐπ αὐτῷ· ψυχὴν ἀντὶ ψυχῆς, ὀφθαλμὸν ἀντὶ ὀφθαλμοῦ, ὀδόντα ἀντὶ ὀδόντος, χεῖρα ἀντὶ χειρὸς, πόδα ἀντὶ ποδός.

# 20

Ἐὰν δὲ ἐξέλθῃς εἰς πόλεμον ἐπὶ τοὺς ἐχθρούς σου, καὶ ἴδῃς ἵππον καὶ ἀναβάτην καὶ λαὸν πλείονά σου, οὐ φοβηθήσῃ ἀπ αὐτῶν, ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου μετὰ σοῦ, ὁ ἀναβιβάσας σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται ὅταν ἐγγίσῃς τῷ πολέμῳ, καὶ προσεγγίσας ὁ ἱερεὺς λαλήσει τῷ λαῷ, καὶ ἐρεῖ πρὸς αὐτοὺς, ἄκουε Ἰσραήλ· ὑμεῖς πορεύεσθε σήμερον εἰς τὸν πόλεμον ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν· μὴ ἐκλυέσθω ἡ καρδία ὑμῶν, μὴ φοβεῖσθε, μηδὲ θραύεσθε, μηδὲ ἐκκλίνετε ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. Ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ὁ προπορευόμενος μεθ ὑμῶν, συνεκπολεμῆσαι ὑμῖν τοὺς ἐχθροὺς ὑμῶν διασῶσαι ὑμᾶς. Καὶ λαλήσουσιν οἱ γραμματεῖς πρὸς τὸν λαὸν, λέγοντες, τίς ὁ ἄνθρωπος ὁ οἰκοδομήσας οἰκίαν καινὴν, καὶ οὐκ ἐνεκαίνισεν αὐτήν; πορευέσθω καὶ ἀποστραφήτω εἰς τὴν· οἰκίαν αὐτοῦ, μὴ ἀποθάνῃ ἐν τῷ πολέμῳ, καὶ ἄνθρωπος ἕτερος ἐγκαινιεῖ αὐτήν. Καὶ τίς ὁ ἄνθρωπος ὅστις ἐφύτευσεν ἀμπελῶνα, καὶ οὐκ εὐφράνθη ἐξ αὐτοῦ; πορευέσθω καὶ ἀποστραφήτω εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, μὴ ἀποθάνῃ ἐν τῷ πολέμῳ, καὶ ἄνθρωπος ἕτερος εὐφρανθήσεται ἐξ αὐτοῦ. Καὶ τίς ὁ ἄνθρωπος ὅστις μεμνήστευται γυναῖκα, καὶ οὐκ ἔλαβεν αὐτήν; πορευέσθω καὶ ἀποστραφήτω εἰς

τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, μὴ ἀποθάνῃ ἐν τῷ πολέμῳ, καὶ ἄνθρωπος ἕτερος λήψεται αὐτήν. Καὶ προσθήσουσιν οἱ γραμματεῖς λαλῆσαι πρὸς τὸν λαὸν, καὶ ἐροῦσι, τίς ὁ ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος καὶ δειλὸς τῇ καρδίᾳ; πορευέσθω καὶ ἀποστραφήτω εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, ἵνα μὴ δειλιάνῃ τὴν καρδίαν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὥσπερ ἡ αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ὅταν παύσωνται οἱ γραμματεῖς λαλοῦντες πρὸς τὸν λαὸν, καὶ καταστήσουσιν ἄρχοντας τῆς στρατιᾶς προηγουμένους τοῦ λαοῦ. Ἐὰν δὲ προσέλθῃς πρὸς πόλιν ἐκπολεμῆσαι αὐτοὺς, καὶ ἐκκαλέσαι αὐτοὺς μετ εἰρήνης. Ἐὰν μὲν εἰρηνικὰ ἀποκριθῶσί σοι, καὶ ἀνοίξωσί σοι, ἔσται πᾶς ὁ λαὸς οἱ εὑρεθέντες ἐν αὐτῇ ἔσονταί σοι φορολόγητοι καὶ ὑπήκοοί σου. Ἐὰν δὲ μὴ ὑπακούσωσί σοι, καὶ ποιῶσι πρὸς σὲ πόλεμον, περικαθιεῖς αὐτὴν, ἕως ἂν παραδῷ σοι αὐτὴν Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὰς χεῖράς σου, καὶ πατάξεις πᾶν ἀρσενικὸν αὐτῆς ἐν φόνῳ μαχαίρας, πλὴν τῶν γυναικῶν καὶ τῆς ἀποσκευῆς· καὶ πάντα τὰ κτήνη, καὶ πάντα ὅσα ἂν ὑπάρχῃ ἐν τῇ πόλει, καὶ πᾶσαν τὴν ἀπαρτίαν προνομεύσεις σεαυτῷ, καὶ φαγῇ πᾶσαν τὴν προνομὴν τῶν ἐχθρῶν σου, ὧν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Οὕτως ποιήσεις πάσας τὰς πόλεις τὰς μακρὰν οὔσας σου σφόδρα, οὐχὶ ἐκ τῶν πόλεων τῶν ἐθνῶν τούτων, ὧν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κληρονομεῖν τὴν γῆν αὐτῶν. Οὐ ζωγρήσετε πᾶν ἐμπνέον, ἀλλ ἢ ἀναθέματι ἀναθεματιεῖτε αὐτοὺς, τὸν Χετταῖον, καὶ Ἀμορῥαῖον, καὶ Χαναναῖον, καὶ Φερεζαῖον, καὶ Εὐαῖον, καὶ Ἰεβουσαῖον, καὶ Γεργεσαῖον, ὃν τρόπον ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου, ἵνα μὴ διδάξωσι ποιεῖν ὑμᾶς πάντα τὰ βδελύγματα αὐτῶν, ὅσα ἐποίησαν τοῖς θεοῖς αὐτῶν, καὶ ἁμαρτήσεσθε ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν. Ἐὰν δὲ περικαθίσῃς περὶ πόλιν μίαν ἡμέρας πλείους ἐκπολεμῆσαι αὐτὴν εἰς κατάληψιν αὐτῆς, οὐκ ἐξολεθρεύσεις τὰ

δένδρα αὐτῆς, ἐπιβαλεῖν ἐπ αὐτὰ σίδηρον, ἀλλ ἢ ἀπ αὐτοῦ φαγῇ, αὐτὸ δὲ οὐκ ἐκκόψεις· μὴ ἄνθρωπος τὸ ξύλον τὸ ἐν τῷ ἀγρῷ, εἰσελθεῖν ἀπὸ προσώπου σου εἰς τὸν χάρακα; Ἀλλὰ ξύλον ὃ ἐπίστασαι ὅτι οὐ καρπόβρωτόν ἐστι, τοῦτο ὀλοθρεύσεις καὶ ἐκκόψεις· καὶ οἰκοδομήσεις χαράκωσιν ἐπὶ τὴν πόλιν, ἥτις ποιεῖ πρὸς σὲ τὸν πόλεμον, ἕως ἂν παραδοθῇ.

# 21

Ἐὰν δὲ εὑρεθῇ τραυματίας ἐν τῇ γῇ, ᾗ Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κληρονομῆσαι, πεπτωκὼς ἐν τῷ πεδίῳ, καὶ οὐκ οἴδασι τὸν πατάξαντα, ἐξελεύσεται ἡ γερουσία σου καὶ οἱ κριταί σου, καὶ ἐκμετρήσουσιν ἐπὶ τὰς πόλεις τὰς κύκλῳ τοῦ τραυματίου· Καὶ ἔσται ἡ πόλις ἡ ἐγγίζουσα τῷ τραυματίᾳ, καὶ λήψεται ἡ γερουσία τῆς πόλεως ἐκείνης δάμαλιν ἐκ βοῶν, ἥτις οὐκ εἴργασται, καὶ ἥτις οὐχ εἵλκυσε ζυγόν· Καὶ καταβιβάσουσιν ἡ γερουσία τῆς πόλεως ἐκείνης δάμαλιν εἰς φάραγγα τραχεῖαν, ἥτις οὐκ εἴργασται οὐδὲ σπείρεται, καὶ νευροκοπήσουσι τὴν δάμαλιν ἐν τῇ φάραγγι. Καὶ προσελεύσονται οἱ ἱερεῖς οἱ Λευῖται, ὅτι αὐτοὺς ἐπέλεξε Κύριος ὁ Θεὸς παρεστηκέναι αὐτῷ, καὶ εὐλογεῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ· καὶ ἐπὶ τῷ στόματι αὐτῶν ἔσται πᾶσα ἀντιλογία, καὶ πᾶσα ἀφή. Καὶ πᾶσα ἡ γερουσία τῆς πόλεως ἐκείνης οἱ ἐγγίζοντες τῷ τραυματίᾳ νίψονται τὰς χεῖρας ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τῆς δαμάλεως τῆς νενευροκοπημένης ἐν τῇ φάραγγι· καὶ ἀποκριθέντες, ἐροῦσιν, αἱ χεῖρες ἡμῶν οὐκ ἐξέχεαν τὸ αἷμα τοῦτο, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν οὐκ ἑωράκασιν. Ἵλεως γένου τῷ λαῷ σου Ἰσραὴλ, οὓς ἐλυτρώσω Κύριε, ἵνα μὴ γένηται αἷμα ἀναίτιον ἐν τῷ λαῷ σου Ἰσραήλ· καὶ

ἐξιλασθήσεται αὐτοῖς τὸ αἷμα. Σὺ δὲ ἐξαρεῖς τὸ αἷμα τὸ ἀναίτιον ἐξ ὑμῶν αὐτῶν, ἐὰν ποιήσῃς τὸ καλὸν καὶ τὸ ἀρεστὸν ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Ἐὰν δὲ ἐξελθὼν εἰς πόλεμον ἐπὶ τοὺς ἐχθρούς σου, καὶ παραδῷ σοι Κύριος ὁ Θεός σου εἰς τὰς χεῖράς σου, καὶ προνομεύσῃς τὴν προνομὴν αὐτῶν, καὶ ἴδῃς ἐν τῇ προνομῇ γυναῖκα καλὴν τῷ εἴδει, καὶ ἐνθυμηθῇς αὐτῆς, καὶ λάβῃς αὐτὴν σεαυτῷ γυναῖκα, καὶ εἰσάξῃς αὐτὴν ἔνδον εἰς τὴν οἰκίαν σου, καὶ ξυρήσεις τὴν κεφαλὴν αὐτῆς, καὶ περιονυχιεῖς αὐτὴν, καὶ περιελεῖς τὰ ἱμάτια τῆς αἰχμαλωσίας ἀπ αὐτῆς, καὶ καθιεῖται ἐν τῇ οἰκίᾳ σου, καὶ κλαύσεται τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα μηνὸς ἡμέρας· καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσῃ πρὸς αὐτὴν καὶ συνοικισθήσῃ αὐτῇ, καὶ ἔσται σου γυνή. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ θέλῃς αὐτὴν, ἐξαποστελεῖς αὐτὴν ἐλευθέραν, καὶ πράσει οὐ πραθήσεται ἀργυρίου· οὐκ ἀθετήσεις αὐτὴν, διότι ἐταπείνωσας αὐτήν. Ἐὰν δὲ γένωνταί ἀνθρώπῳ δύο γυναῖκες, μία αὐτῶν ἠγαπημένη, καὶ μία αὐτῶν μισουμένη, καὶ τέκωσιν αὐτῷ ἡ ἠγαπημένη καὶ ἡ μισουμένη, καὶ γένηται υἱὸς πρωτότοκος τῆς μισουμένης· Καὶ ἔσται ἡ· ἂν ἡμέρᾳ κατακληρονομῇ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, οὐ δυνήσεται πρωτοτοκεῦσαι τῷ υἱῷ τῆς ἠγαπημένης, ὑπεριδὼν τὸν υἱὸν τῆς μισουμένης τὸν πρωτότοκον· Ἀλλὰ τὸν πρωτότοκον υἱὸν τῆς μισουμένης ἐπιγνώσεται δοῦναι αὐτῷ διπλᾶ ἀπὸ πάντων ὧν ἂν εὑρεθῇ αὐτῷ, ὅτι οὗτός ἐστιν ἀρχὴ τέκνων αὐτοῦ, καὶ τούτῳ καθήκει τὰ πρωτοτοκεῖα. Ἐὰν δέ τινι ἡ· υἱὸς ἀπειθῆς καὶ ἐρεθιστὴς οὐχ ὑπακούων φωνὴν πατρὸς καὶ φωνὴν μητρὸς, καὶ παιδεύωσιν αὐτὸν, καὶ μὴ εἰσακούῃ αὐτῶν· Καὶ συλλαβόντες αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, καὶ ἐξάξουσιν αὐτὸν ἐπὶ τὴν γερουσίαν τῆς πόλεως αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὴν πύλην τοῦ τόπου· Καὶ ἐροῦσι τοῖς ἀνδράσι τῆς πόλεως αὐτῶν, ὁ υἱὸς ἡμῶν οὗτος ἀπειθεῖ καὶ

ἐρεθίζει, οὐχ ὑπακούει τῆς φωνῆς ἡμῶν, συμβολοκοπῶν οἰνοφλυγεῖ. Καὶ λιθοβολήσουσιν αὐτὸν οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως αὐτοῦ ἐν λίθοις, καὶ ἀποθανεῖται· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν· καὶ οἱ ἐπίλοιποι ἀκούσαντες φοβηθήσονται. Ἐὰν δὲ γένηται ἔν τινι ἁμαρτία, κρίμα θανάτου, καὶ ἀποθάνῃ, καὶ κρεμάσητε αὐτὸν ἐπὶ ξύλου· οὐ κοιμηθήσεται τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ ξύλου, ἀλλὰ ταφῇ θάψετε αὐτὸ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι κεκατηραμένος ὑπὸ Θεοῦ πᾶς κρεμάμενος ἐπὶ ξύλου· καὶ οὐ μὴ μιανεῖτε τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ.

# 22

Μὴ ἰδὼν τὸν μόσχον τοῦ ἀδελφοῦ σου, ἢ τὸ πρόβατον αὐτοῦ, πλανώμενα ἐν τῇ ὁδῷ, ὑπερίδῃς αὐτά· ἀποστροφῇ ἀποστρέψεις αὐτὰ τῷ ἀδελφῷ σου, καὶ ἀποδώσεις αὐτῷ. Ἐὰν δὲ μὴ ἐγγίζῃ ὁ ἀδελφός σου πρὸς σὲ, μηδὲ ἐπίοτῃ αὐτὸν, συνάξεις αὐτὸν ἔνδον εἰς τὴν οἰκίαν σου, καὶ ἔσται μετὰ σοῦ ἕως ἂν ζητήσῃ αὐτὰ ὁ ἀδελφός σου, καὶ ἀποδώσεις αὐτῷ. Οὕτω ποιήσεις τὸν ὄνον αὐτοῦ, καὶ οὕτω ποιήσεις τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ οὕτω ποιήσεις κατὰ πᾶσαν ἀπώλειαν τοῦ ἀδελφοῦ σου· ὅσα ἐὰν ἀπολῆται παρ αὐτοῦ, καὶ εὕρῃς, οὐ δυνήσῃ ὑπεριδεῖν. Οὐκ ὄψῃ τὸν ὄνον τοῦ ἀδελφοῦ σου ἢ τὸν μόσχον αὐτοῦ πεπτωκότας ἐν τῇ ὁδῷ, μὴ ὑπερίδῃς αὐτοὺς, ἀνιστῶν ἀναστήσεις μετ αὐτοῦ. Οὐκ ἔσται σκεύη ἀνδρὸς ἐπὶ γυναικὶ, οὐδὲ μὴ ἐνδύσηται ἀνὴρ στολὴν γυναικίαν, ὅτι βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐστὶ πᾶς ποιῶν ταῦτα. Ἐὰν δὲ συναντήσῃς νοσσιᾷ ὀρνέων πρὸ προσώπου σου ἐν τῇ ὁδῷ ἢ ἐπὶ παντὶ δένδρῳ, ἢ ἐπὶ τῆς γῆς, νοσσοῖς ἢ ᾠοῖς, καὶ ἡ μήτηρ θάλπῃ

ἐπὶ τῶν νοσσῶν ἢ ἐπὶ τῶν ὠῶν, οὐ λήψῃ τὴν μητέρα μετὰ τῶν τέκνων. Ἀποστολῇ ἀποστελεῖς τὴν μητέρα, τὰ δὲ παιδία λήψῃ σεαυτῷ, ἵνα εὖ σοι γένηται καὶ πολυήμερος γένῃ. Ἐὰν οἰκοδομήσῃς οἰκίαν καινήν, καὶ ποιήσεις στεφάνην τῷ δώματί σου, καὶ οὐ ποιήσεις φόνον ἐν τῇ οἰκίᾳ σου, ἐὰν πέσῃ ὁ πεσὼν ἀπ αὐτοῦ. Οὐ κατασπερεῖς τὸν ἀμπελῶνά σου διάφορον, ἵνα μὴ ἁγιασθῇ τὸ γέννημα, καὶ τὸ σπέρμα ὃ ἐὰν σπείρῃς μετὰ τοῦ γεννήματος τοῦ ἀμπελῶνός σου. Οὐκ ἀροτριάσεις ἐν μόσχῳ καὶ ὄνῳ ἐπὶ τὸ αὐτό. Οὐκ ἐνδύσῃ κίβδηλον, ἔρια καὶ λίνον ἐν τῷ αὐτῷ. Στρεπτὰ ποιήσεις σεαυτῷ ἐπὶ τῶν τεσσάρων κρασπέδων τῶν περιβολαίων σου, ἃ ἐὰν περιβάλῃ ἐν αὐτοῖς. Ἐὰν δέ τις λάβῃ γυναῖκα καὶ συνοικήσῃ αὐτῇ, καὶ μισήσῃ αὐτήν, καὶ ἐπιθῇ αὐτῇ προφασιστικοὺς λόγους, καὶ κατενέγκῃ αὐτῆς ὄνομα πονηρὸν, καὶ λέγῃ, τὴν γυναῖκα ταύτην εἴληφα, καὶ προσελθὼν αὐτῇ οὐχ εὕρηκα αὐτῆς τὰ παρθένια· Καὶ λαβὼν ὁ πατὴρ τῆς παιδὸς καὶ ἡ μήτηρ ἐξοίσουσι τὰ παρθένια τῆς παιδὸς πρὸς τὴν γερουσίαν ἐπὶ τὴν πύλην. Καὶ ἐρεῖ ὁ πατὴρ τῆς παιδὸς τῇ γερουσίᾳ, τὴν θυγατέρα μου ταύτην δέδωκα τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ γυναῖκα, καὶ μισήσας αὐτὴν νῦν οὗτος, ἐπιτίθησιν αὐτῇ προφασιστικοὺς λόγους, λέγων, οὐχ εὕρηκα τῇ θυγατρί σου παρθένια· καὶ ταῦτα τὰ παρθένια τῆς θυγατρός μου. Καὶ ἀναπτύξουσι τὸ ἱμάτιον ἐναντίον τῆς γερουσίας τῆς πόλεως. Καὶ λήψεται ἡ γερουσία τῆς πόλεως ἐκείνης τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, καὶ παιδεύσουσιν αὐτόν, καὶ ξημιώσουσιν αὐτὸν ἑκατὸν σίκλους, καὶ δώσουσι τῷ πατρὶ τῆς νεάνιδος, ὅτι ἐξήνεγκεν ὄνομα πονηρὸν ἐπὶ παρθένον Ἰσραηλίτιν, καὶ αὐτοῦ ἔσται γυνή· οὐ δυνήσεται ἐξαποστεῖλαι αὐτὴν τὸν ἅπαντα χρόνον. Ἐὰν δὲ ἐπ ἀληθείας γένηται ὁ λόγος οὗτος, καὶ μὴ εὑρεθῇ παρθένια τῇ νεάνιδι, καὶ ἐξάξουσι τὴν νεᾶνιν ἐπὶ τὰς θύρας

τοῦ οἴκου τοῦ πατρὸς αὐτῆς, καὶ λιθοβολήσουσιν αὐτὴν ἐν λίθοις, καὶ ἀποθανεῖται, ὅτι ἐποίησεν ἀφροσύνην ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ ἐκπορνεῦσαι τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτῆς· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Ἐὰν δὲ εὑρεθῇ ἄνθρωπος κοιμώμενος μετὰ γυναικὸς συνωκισμένης ἀνδρί, ἀποκτενεῖτε ἀμφοτέρους, τὸν ἄνδρα τὸν κοιμώμενον μετὰ τῆς γυναικὸς, καὶ τὴν γυναῖκα· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ Ἰσραήλ. Ἐὰν δὲ γένηται παῖς παρθένος μεμνηστευμένη ἀνδρί, καὶ εὑρὼν αὐτὴν ἄνθρωπος ἐν πόλει κοιμηθῇ μετ αὐτῆς, ἐξάξετε ἀμφοτέρους ἐπὶ τὴν πυλὴν τῆς πόλεως αὐτῶν, καὶ λιθοβοληθήσονται ἐν λίθοις, καὶ ἀποθανοῦνται· τὴν νεᾶνιν, ὅτι οὐκ ἐβόησεν ἐν τῇ πόλει· καὶ τὸν ἄνθρωπον, ὅτι ἐταπείνωσε τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Ἐὰν δὲ ἐν πεδίῳ εὕρῃ ἄνθρωπος τὴν παῖδα τὴν μεμνηστευμένην, καὶ βιασάμενος κοιμηθῇ μετ αὐτῆς, ἀποκτενεῖτε τὸν κοιμώμενον μετ αὐτῆς μόνον. Καὶ τῇ νεάνιδι οὐκ ἔστιν ἁμάρτημα θανάτου· ὡς εἴ τις ἐπαναστῇ ἄνθρωπος ἐπὶ τὸν πλησίον, καὶ φονεύσῃ αὐτοῦ ψυχήν, οὕτω τὸ πρᾶγμα τοῦτο, ὅτι ἐν τῷ ἀγρῷ εὗρεν αὐτήν· ἐβόησεν ἡ νεᾶνις ἡ μεμνηστευμένη, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθήσων αὐτῇ. Ἐὰν δέ τις εὕρῃ τὴν παῖδα τὴν παρθένον, ἥτις οὐ μεμνήστευται, καὶ βιασάμενος κοιμηθῇ μετ αὐτῆς, καὶ εὑρεθῇ, δώσει ὁ ἄνθρωπος ὁ κοιμηθεὶς μετ αὐτῆς τῷ πατρὶ τῆς νεάνιδος πεντήκοντα δίδραχμα ἀργυρίου, καὶ αὐτοῦ ἔσται γυνή, ἀνθ ὧν ἐταπείνωσεν αὐτήν· οὐ δυνήσεται ἐξαποστεῖλαι αὐτὴν τὸν ἅπαντα χρόνον.

# 23

Οὐ λήψεται ἄνθρωπος τὴν γυναῖκα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἀποκαλύψει συγκάλυμμα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Οὐκ εἰσελεύσεται θλαδίας, οὐδὲ ἀποκεκομμένος, εἰς ἐκκλησίαν Κυρίου. Οὐκ εἰσελεύσεται ἐκ πόρνης εἰς ἐκκλησίαν Κύριου. Οὐκ εἰσελεύσεται Ἀμμανίτης καὶ Μωαβίτης εἰς ἐκκλησίαν Κυρίου, καὶ ἕως δεκάτης γενεᾶς οὐκ εἰσελεύσεται εἰς ἐκκλησίαν Κυρίου, καὶ ἕως εἰς τὸν αἰῶνα· παρὰ τὸ μὴ συναντῆσαι αὐτοὺς ὑμῖν μετὰ ἄρτων καὶ ὕδατος ἐν τῇ ὁδῷ, ἐκπορευομένων ὑμῶν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ὅτι ἐμισθώσαντο ἐπὶ σὲ τὸν Βαλαὰμ υἱὸν Βεὼρ ἐκ τῆς Μεσοποταμίας καταρᾶσθαί σε. Καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος ὁ Θεός σου εἰσακοῦσαι τοῦ Βαλαάμ· καὶ μετέστρεψε Κύριος ὁ Θεός σου τὰς κατάρας εἰς εὐλογίαν, ὅτι ἠγάπησέ σε Κύριος ὁ Θεός σου. Οὐ προσαγορεύσεις εἰρηνικὰ αὐτοῖς καὶ συμφέροντα αὐτοῖς πάσας τὰς ἡμέρας σου εἰς τὸν αἰῶνα. Οὐ βδελύξῃ Ἰδουμαῖον, ὅτι ἀδελφός σού ἐστίν· οὐ βδελύξῃ Αἰγύπτιον, ὅτι πάροικος ἐγένου ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ. Υἱοὶ ἐὰν γεννηθῶσιν αὐτοῖς, γενεᾷ τρίτῃ εἰσελεύσονται εἰς ἐκκλησίαν Κυρίου. Ἐὰν δὲ ἐξέλθῃς παρεμβαλεῖν ἐπὶ τοὺς ἐχθρούς σου, καὶ φυλάξῃ ἀπὸ παντὸς ῥήματος πονηροῦ. Ἐὰν ἡ· ἐν σοὶ ἄνθρωπος ὃς οὐκ ἔσται καθαρὸς ἐκ ῥύσεως αὐτοῦ νυκτὸς, καὶ ἐξελεύσεται ἔξω τῆν παρεμβολῆς, καὶ οὐκ εἰσελεύσεται εἰς τὴν παρεμβολήν. Καὶ ἔσται τὸ πρὸς ἑσπέραν λούσεται τὸ σῶμα αὐτοῦ ὕδατι, καὶ δεδυκότος ἡλίου εἰσελεύσεται εἰς τὴν παρεμβολήν. Καὶ τόπος ἔσται σοι ἔξω τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἐξελεύσῃ ἐκεῖ ἔξω. Καὶ πάσσαλος ἔσται σοι ἐπὶ τῆς ζώνης σου· καὶ ἔσται ὅταν διακαθιζάνῃς ἔξω, καὶ ὀρύξεις ἐν αὐτῷ, καὶ ἐπαγαγὼν καλύψεις τὴν ἀσχημοσύνην σου· Ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου ἐμπεριπατεῖ ἐν τῇ παρεμβολῇ σου ἐξελέσθαι σε καὶ παραδοῦναι τὸν ἐχθρόν σου πρὸ προσώπου σου· καὶ ἔσται ἡ παρεμβολή σου ἁγία, καὶ οὐκ

ὀφθήσεται ἐν σοὶ ἀσχημοσύνη πράγματος, καὶ ἀποστρέψει ἀπὸ σοῦ. Οὐ παραδώσεις παῖδα τῷ κυρίῳ αὐτοῦ, ὃς προστέθειταί σοι παρὰ τοῦ κυρίου αὐτοῦ. Μετὰ σοῦ κατοικήσει, ἐν ὑμῖν κατοικήσει οὗ ἂν ἀρέσῃ αὐτῷ· οὐ θλίψεις αὐτόν. Οὐκ ἔσται πόρνη ἀπὸ θυγατέρων Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἔσται πορνεύων ἀπὸ υἱῶν Ἰσραήλ· οὐκ ἔσται τελεσφόρος ἀπὸ θυγατέρων Ἰσραήλ, καὶ οὐκ ἔσται τελισκόμενος ἀπὸ υἱῶν Ἰσραήλ. Οὐ προσοίσεις μίσθωμα πόρνης, οὐδὲ ἄλλαγμα κυνὸς εἰς τὸν οἶκον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου πρὸς πᾶσαν εὐχὴν, ὅτι βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐστὶ καὶ ἀμφότερα. Οὐκ ἐκτοκιεῖς τῷ ἀδελφῷ σου τόκον ἀργυρίου, καὶ τόκον βρωμάτων, καὶ τοκον παντὸς πράγματος, οὗ ἐὰν ἐκδανίσῃς. Τῷ ἀλλοτρίῳ ἐκτοκιεῖς, τῷ δὲ ἀδελφῷ σου οὐκ ἐκτοκιεῖς, ἵνα εὐλογήσῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Ἐὰν δὲ εὔξῃ εὐχὴν Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, οὐ χρονιεῖς ἀποδοῦναι αὐτὴν, ὅτι ἐκζητῶν ἐκζητήσει Κύριος ὁ Θεός σου παρὰ σοῦ, καὶ ἔσται ἐν σοὶ ἁμαρτία. Ἐὰν δὲ μὴ θέλῃς εὔξασθαι, οὐκ ἔστιν ἐν σοὶ ἁμαρτία. Τὰ ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων σου φυλάξῃ, καὶ ποιήσεις ὃν τρόπον ηὔξω Κυρίῳ τῷ Θεῷ δόμα, ὃ ἐλάλησας τῷ στόματί σου. Ἐὰν δὲ εἰσέλθῃς εἰς ἀμητὸν τοῦ πλησίον σου, καὶ συλλέξῃς ἐν ταῖς χερσί σου στάχυς, καὶ δρέπανον οὐ μὴ ἐπιβάλῃς ἐπ ἀμητὸν τοῦ πλησίον σου. Ἐὰν δὲ εἰσέλθῃς εἰς τὸν ἀμπελῶνα τοῦ πλησίον σου, φαγῇ σταφυλὴν, ὅσον ψυχήν σου ἐμπλησθῆναι, εἰς δὲ ἄγγος οὐκ ἐμβάλῃς.

# 24

Ἐὰν δέ τις λάβῃ γυναῖκα, καὶ συνοικήσῃ αὐτῇ, καὶ ἔσται ἐὰν μὴ εὕρῃ χάριν ἐναντίον αὐτοῦ, ὅτι εὗρεν ἐν αὐτῇ ἄσχημον πρᾶγμα, καὶ γράψει αὐτῇ βιβλίον ἀποστασίου, καὶ δώσει εἰς τὰς χεῖρας αὐτῆς, καὶ ἐξαποστελεῖ αὐτὴν ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ ἀπελθοῦσα γένηται ἀνδρὶ ἑτέρῳ, καὶ μισήσῃ αὐτὴν ὁ ἀνὴρ ὁ ἔσχατος, καὶ γράψῃ αὐτῇ βιβλίον ἀποστασίου, καὶ δώσει εἰς τὰς χεῖρας αὐτῆς, καὶ ἐξαποστελεῖ αὐτὴν ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ ἀποθάνῃ ὁ ἀνὴρ ὁ ἔσχατος, ὃς ἔλαβεν αὐτὴν ἑαυτῷ γυναῖκα, οὐ δυνήσεται ὁ ἀνὴρ ὁ πρότερος ὁ ἐξαποστείλας αὐτὴν, ἐπαναστρέψας λαβεῖν αὐτὴν ἑαυτῷ γυναῖκα, μετὰ τὸ μιανθῆναι αὐτὴν, ὅτι βδέλυγμά ἐστιν ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ οὐ μιανεῖτε τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ. Ἐὰν δέ τις λάβῃ γυναῖκα προσφάτως, οὐκ ἐξελεύσεται εἰς πόλεμον, καὶ οὐκ ἐπιβληθήσεται αὐτῷ οὐδὲν πρᾶγμα· ἀθῶος ἔσται ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ, ἐνιαυτὸν ἕνα εὐφρανεῖ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἣν ἔλαβεν. Οὐκ ἐνεχυράσεις μύλον, οὐδὲ ἐπιμύλιον, ὅτι ψυχὴν οὗτος ἐνεχυράζει. Ἐὰν δὲ ἁλῷ ἄνθρωπος κλέπτων ψυχὴν ἐκ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ καταδυναστεύσας αὐτὸν ἀποδῶται, ἀποθανεῖται ὁ κλέπτης ἐκεῖνος· καὶ ἐξαρεῖς τὸν πονηρὸν ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Πρόσεχε σεαυτῷ ἐν τῇ ἁφῇ τῆς λέπρας· φυλάξῃ σφόδρα ποιεῖν κατὰ πάντα τὸν νόμον, ὃν ἂν ἀναγγείλωσιν ὑμῖν οἱ ἱερεῖς οἱ Λευῖται· ὃν τρόπον ἐνετειλάμην ὑμῖν, φυλάξασθε ποιεῖν. Μνήσθητι ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεός σου τῇ Μαριὰμ ἐν τῇ ὁδῷ, ἐκπορευομένων ὑμῶν ἐξ Αἰγύπτου. Ἐὰν ὀφείλημα ᾖ· ἐν τῷ πλησίον σου, ὀφείλημα ὁτιοῦν, οὐκ εἰσελεύσῃ εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἐνεχυράσαι τὸ ἐνέχυρον αὐτοῦ. Ἔξω στήσῃ, καὶ ὁ ἄνθρωπος οὗ τὸ δάνειόν σού ἐστιν ἐν αὐτῷ, ἐξοίσει σοι τὸ ἐνέχυρον ἔξω. Ἐὰν δὲ ὁ ἄνθρωπος πένηται, οὐ κοιμηθήσῃ ἐν τῷ ἐνεχύρῳ αὐτοῦ. Ἀποδόσει ἀποδώσεις τὸ

ἐνέχυρον αὐτοῦ πρὸς δυσμαῖς ἡλίου, καὶ κοιμηθήσεται ἐν τῷ ἱματίῳ αὐτοῦ, καὶ εὐλογήσει σε, καὶ ἔσται σοι ἐλεημοσύνη ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Οὐκ ἀπαδικήσεις μισθὸν πένητος καὶ ἐνδεοῦς ἐκ τῶν ἀδελφῶν σου, ἢ ἐκ τῶν προσηλύτων τῶν ἐν ταῖς πόλεσίν σου. Αὐθημερὸν ἀποδώσεις τὸν μισθὸν αὐτοῦ, οὐκ ἐπιδύσεται ὁ ἥλιος ἐπ αὐτῷ, ὅτι πένης ἐστὶ, καὶ ἐν αὐτῷ ἔχει τὴν ἐλπίδα, καὶ καταβοήσεται κατὰ σοῦ πρὸς Κύριον, καὶ ἔσται ἐν σοὶ ἁμαρτία. Οὐκ ἀποθανοῦνται πατέρες ὑπὲρ τέκνων, καὶ οἱ υἱοὶ οὐκ ἀποθανοῦνται ὑπὲρ πατέρων· ἕκαστος ἐν τῇ ἑαυτοῦ ἁματρίᾳ ἀποθανεῖται. Οὐκ ἐκκλινεῖς κρίσιν προσηλύτου καὶ ὀρφανοῦ καὶ χήρας· οὐκ ἐνεχυράσεις ἱμαίτιον χήρας, καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἦσθα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἐλυτρώσατό σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐκεῖθεν· διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι ποιεῖν τὸ ῥῆμα τοῦτο. Ἐὰν δὲ ἀμήσῃς ἀμητὸν ἐν τῷ ἀγρῷ σου, καὶ ἐπιλάθῃ δράγμα ἐν τῷ ἀγρῷ σου, οὐκ ἀναστραφήσῃ λαβεῖν αὐτό· τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ ὀρφανῷ καὶ τῇ χήρᾳ ἔσται, ἵνα εὐλογήσῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν σου. Ἐὰν δὲ ἐλαιολογῇς, οὐκ ἐπαναστρέψεις καλαμήσασθαι τὰ ὀπίσω σου· τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ ὀρφανῷ καὶ τῇ χήρᾳ ἔσται· καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἦσθα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ· διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι ποιεῖν τὸ ῥῆμα τοῦτο. Ἐὰν δὲ τρυγήσῃς τὸν ἀμπελῶνά σου, οὐκ ἐπανατρυγήσεις αὐτὸν τὰ ὀπίσω σου· τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ ὀρφανῷ καὶ τῇ χήρᾳ ἔσται· καὶ μνησθήσῃ ὅτι οἰκέτης ἦσθα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ· διὰ τοῦτο ἐγώ σοι ἐντέλλομαι ποιεῖν τὸ ῥῆμα τοῦτο.

# 25

Ἐὰν δὲ γένηται ἀντιλογία ἀναμέσον ἀνθρώπων, καὶ προσέλθωσιν εἰς κρίσιν, καὶ κρίνωσι, καὶ δικαιώσωσι τὸ δίκαιον, καὶ καταγνῶσι τοῦ ἀσεβοῦς· Καὶ ἔσται, ἐὰν ἄξιος ἡ· πληγῶν ὁ ἀσεβῶν, καθιεῖς αὐτὸν ἔναντι τῶν κριτῶν, καὶ μαστιγώσουσιν αὐτὸν ἐναντίον αὐτῶν κατὰ τὴν ἀσέβειαν αὐτοῦ. Καὶ ἀριθμῷ τεσσαράκοντα μαστιγώσουσιν αὐτόν οὐ προσθήσουσιν· ἐὰν δὲ προσθῇς μαστιγῶσαι ὑπὲρ ταύτας τὰς πληγὰς πλείους, ἀσχημονήσει ὁ ἀδελφός σου ἐναντίον σου. Οὐ φιμώσεις βοῦν ἀλοῶντα. Ἐὰν δὲ κατοικῶσιν ἀδελφοὶ ἐπὶ τὸ αὐτό, καὶ ἀποθάνῃ εἷς ἐξ αὐτῶν, σπέρμα δὲ μὴ ἦν αὐτῷ, οὐκ ἔσται ἡ γυνὴ τοῦ τεθνηκότος ἔξω ἀνδρὶ μὴ ἐγγίζοντι· ὁ ἀδελφὸς τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς εἰσελεύσεται πρὸς αὐτὴν, καὶ λήψεται αὐτὴν ἑαυτῷ γυναῖκα, καὶ συνοικήσει αὐτῇ. Καὶ ἔσται τὸ παιδίον ὃ ἐὰν τέκῃ, κατασταθήσεται ἐκ τοῦ ὀνόματος τοῦ τετελευτηκότος, καὶ οὐκ ἐξαλειφθήσεται τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐξ Ἰσραήλ. Ἐὰν δὲ μὴ βούληται ὁ ἄνθρωπος λαβεῖν τὴν γυναῖκα τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ ἀναβήσεται ἡ γυνὴ ἐπὶ τὴν πύλην ἐπὶ τὴν γερουσίαν, καὶ ἐρεῖ, οὐ θέλει ὁ ἀδελφὸς τοῦ ἀνδρός μου ἀναστῆσαι τὸ ὄνομα τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ ἐν Ἰσραήλ, οὐκ ἠθέλησεν ὁ ἀδελφὸς τοῦ ἀνδρός μου. Καὶ καλέσουσιν αὐτὸν ἡ γερουσία τῆς πόλεως αὐτοῦ, καὶ ἐροῦσιν αὐτῷ· καὶ στὰς εἴπῃ, οὐ βούλομαι λαβεῖν αὐτήν· καὶ προσελθοῦσα ἡ γυνὴ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ ἔναντι τῆς γερουσίας, καὶ ὑπολύσει τὸ ὑπόδημα αὐτοῦ τὸ ἓν ἀπὸ τοῦ ποδὸς αὐτοῦ, καὶ ἐμπτύσεται κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ ἀποκριθεῖσα ἐρεῖ, οὕτως ποιήσουσι τῷ ἀνθρώπῳ, ὃς οὐκ οἰκοδομήσει τὸν οἶκον τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ ἐν Ἰσραήλ. Καὶ κληθήσεται τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐν Ἰσραὴλ, οἶκος τοῦ ὑπολυθέντος τὸ ὑπόδημα. Ἐὰν δὲ μάχωνται ἄνθρωποι ἐπὶ τὸ αὐτό, ἄνθρωπος μετὰ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ προσέλθῃ ἡ γυνὴ ἑνὸς αὐτῶν ἐξελέσθαι

τὸν ἄνδρα αὐτῆς ἐκ χειρὸς τοῦ τύπτοντος αὐτόν, καὶ ἐκτείνασα τὴν χεῖρα ἐπιλάβηται τῶν διδύμων αὐτοῦ, ἀποκόψεις τὴν χεῖρα· οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός σου ἐπ αὐτῇ. Οὐκ ἔσται σοι ἐν τῷ μαρσίππῳ σου στάθμιον καὶ στάθμιον, μέγα ἢ μικρόν. Οὐκ ἔσται ἐν τῇ οἰκίᾳ σου μέτρον καὶ μέτρον, μέγα ἢ μικρόν. Στάθμιον ἀληθινὸν καὶ δίκαιον ἔσται σοι, καὶ μέτρον ἀληθινὸν καὶ δίκαιον ἔσται σοι, ἵνα πολυήμερος γένῃ ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι ἐν κλήρῳ. Ὅτι βδέλυγμα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου πας ποιῶν ταῦτα, πας ποιῶν ἄδικον. Μνήσθητι ὅσα ἐποίησέ σοι Ἀμαλὴκ ἐν τῇ ὁδῷ, ἐκπορευομένου σου ἐκ γῆς Αἰγύπτου, πῶς ἀντέστη σοι ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ἔκοψέ σου τὴν οὐραγίαν, τοὺς κοπιῶντας ὀπίσω σου, σὺ δὲ ἐπείνας καὶ ἐκοπίας· καὶ οὐκ ἐφοβήθη τὸν Θεόν. Καὶ ἔσται ἡνίκα ἐὰν καταπαύσῃ σε Κύριος ὁ Θεός σου ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν σου τῶν κύκλῳ σου ἐν τῇ γῇ, ᾗ Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κληρονομῆσαι, ἐξαλείψεις τὸ ὄνομα Ἀμαλὴκ ἐκ τῆς ὑπὸ τὸν οὐρανόν, καὶ οὐ μὴ ἐπιλάθῃ.

# 26

Καὶ ἔσται ἐὰν εἰσέλθῃς εἰς τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι κληρονομῆσαι, καὶ κατακληρονομήσῃς αὐτὴν, καὶ κατοικήσῃς ἐπ αὐτὴν, καὶ λήμψῃ ἀπὸ τῆς ἀπαρχῆς τῶν καρπῶν τῆς γῆς σου, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, καὶ ἐμβαλεῖς εἰς κάρταλλον, καὶ πορεύσῃ εἰς τὸν τόπον, ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος ὁ Θεός σου ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ. Καὶ ἐλεύσῃ πρὸς τὸν ἱερέα ὃς ἔσται ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, ἀναγγέλλω σήμερον Κυρίῳ τῷ Θεῷ μου, ὅτι εἰσελήλυθα εἰς τὴν γῆν, ἣν ὤμοσε

Κύριος τοῖς πατράσιν ἡμῶν δοῦναι ἡμῖν. Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς τὸν κάρταλλον ἐκ τῶν χειρῶν σου, καὶ θήσει αὐτὸν ἀπέναντι τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Καὶ ἀποκριθεὶς ἐρεῖ ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, Συρίαν ἀπέβαλεν ὁ πατήρ μου, καὶ κατέβη εἰς Αἴγυπτον, καὶ παρῴκησεν ἐκεῖ ἐν ἀριθμῷ βραχεῖ, καὶ ἐγένετο ἐκεῖ εἰς ἔθνος μέγα καὶ πλῆθος πολύ. Καὶ ἐκάκωσαν ἡμᾶς οἱ Αἰγύπτιοι, καὶ ἐταπείνωσαν ἡμᾶς, καὶ ἐπέθηκαν ἡμῖν ἔργα σκληρά· Καὶ ἀνεβοήσαμεν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ εἰσήκουσε Κύριος τῆς φωνῆς ἡμῶν, καὶ εἶδε τὴν ταπείνωσιν ἡμῶν, καὶ τὸν μόχθον ἡμῶν, καὶ τὸν θλιμμὸν ἡμῶν. Καὶ ἐξήγαγεν ἡμᾶς Κύριος ἐξ Αἰγύπτου αὐτὸς ἐν ἰσχύϊ αὐτοῦ τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ βραχίονι ὑψηλῷ, καὶ ἐν ὁράμασι μεγάλοις, καὶ ἐν σημείοις, καὶ ἐν τέρασι. Καὶ εἰσήγαγεν ἡμᾶς εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἔδωκεν ἡμῖν τὴν γῆν ταύτην, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἐνήνοχα τὴν ἀπαρχὴν τῶν γεννημάτων τῆς γῆς, ἧς ἔδωκάς μοι Κύριε, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι· καὶ ἀφήσεις αὐτὸ ἀπέναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ προσκυνήσεις ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ εὐφρανθήσῃ ἐν πᾶσι τοῖς ἀγαθοῖς, οἷς ἔδωκέ σοι Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ ἡ οἰκία σου, καὶ ὁ Λευίτης, καὶ ὁ προσήλυτος ὁ ἐν σοί. Ἐὰν δὲ συντελέσῃς ἀποδεκατῶσαι πᾶν τὸ ἐπιδέκατον τῶν γενημάτων σου ἐν τῷ ἔτει τῷ τρίτῳ, τὸ δεύτερον ἐπιδέκατον δώσεις τῷ Λευίτῃ καὶ τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ ὀρφανῷ καὶ τῇ χήρᾳ, καὶ φάγονται ἐν ταῖς πόλεσί σου, καὶ εὐφρανθήσονται. Καὶ ἐρεῖς ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ἐξεκάθαρα τὰ ἅγια ἐκ τῆς οἰκίας μου, καὶ ἔδωκα αὐτὰ τῷ Λευίτῃ καὶ τῷ προσηλύτῳ καὶ τῷ ὀρφανῷ καὶ τῇ χήρᾳ, κατὰ πάσας τὰς ἐντολὰς ἃς ἐνετείλω μοι· οὐ παρῆλθον τὴν ἐντολήν σου, καὶ οὐκ ἐπελαθόμην. Καὶ οὐκ ἔφαγον ἐν ὀδύνῃ μου ἀπ αὐτῶν, οὐκ ἐκάρπωσα ἀπ αὐτῶν εἰς ἀκάθαρτον, οὐκ ἔδωκα ἀπ αὐτῶν τῷ

τεθνηκότι· ὑπήκουσα τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ἐποίησα καθὰ ἐνετείλω μοι. Κάτιδε ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ ἁγίου σου ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εὐλόγησον τὸν λαόν σου τὸν Ἰσραὴλ, καὶ τὴν γῆν ἣν ἔδωκας αὐτοῖς, καθὰ ὤμοσας τοῖς πατράσιν ἡμῶν, δοῦναι ἡμῖν γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ Κύριος ὁ Θεός σου ἐνετείλατό σοι ποιῆσαι πάντα τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα· καὶ φυλάξεσθε καὶ ποιήσετε αὐτὰ ἐξ ὅλης τῆς καρδίας ὑμῶν, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς ὑμῶν. Τὸν Θεὸν εἵλου σήμερον εἶναί σου Θεόν, καὶ πορεύεσθαι ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ φυλάσσεσθαι τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα, καὶ ὑπακούειν τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Καὶ Κύριος εἵλατό σε σήμερον γενέσθαι σε αὐτῷ λαὸν περιούσιον, καθάπερ εἶπε, φυλάττειν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ εἶναί σε ὑπεράνω πάντων τῶν ἐθνῶν, ὡς ἐποίησέ σε ὀνομαστὸν καὶ καύχημα καὶ δοξαστόν, εἶναί σε λαὸν ἅγιον Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καθὼς ἐλάλησε.

# 27

Καὶ προσέταξε Μωυσῆς καὶ ἡ γερουσία Ἰσραὴλ, λέγων, φυλάσσεσθε πάσας τὰς ἐντολάς ταύτας, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν σήμερον. Καὶ ἔσται ᾗ ἂν ἡμέρᾳ διαβῆτε τὸν Ἰορδάνην εἰς τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι, καὶ στήσεις σεαυτῷ λίθους μεγάλους, καὶ κονιάσεις αὐτοὺς κονίᾳ. Καὶ γράψεις ἐπὶ τῶν λίθων τούτων πάντας τούς λόγους τοῦ νόμου τούτου, ὡς ἂν διαβῆτε τὸν Ἰορδάνην, ἡνίκα ἂν εἰσέλθητε εἰς τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σου δίδωσί σοι, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι, ὃν τρόπον εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων σού σοί. Καὶ ἔσται ὡς ἂν διαβῆτε τὸν Ἰορδάνην, στήσετε τοὺς λίθους τούτους, οὓς ἐγὼ ἐντέλλομαί

σοι σήμερον, ἐν ὄρει Γαιβάλ, καὶ κονιάσεις αὐτοὺς κονίᾳ. Καὶ οἰκοδομήσεις ἐκεῖ θυσιαστήριον Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, θυσιαστήριον ἐκ λίθων· οὐκ ἐπιβαλεῖς ἐπ αὐτὸ σίδηρον· λίθους ὁλοκλήρους οἰκοδομήσεις θυσιαστήριον Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καὶ ἀνοίσεις ἐπ αὐτὸ ὁλοκαυτώματα Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Καὶ θύσεις ἐκεῖ θυσίαν σωτηρίου· καὶ φάγῃ, καὶ ἐμπλησθήσῃ, καὶ εὐφρανθήσῃ ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Καὶ γράψεις ἐπὶ τῶν λίθων πάντα τὸν νόμον τοῦτον σαφῶς σφόδρα. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς καὶ οἱ ἱερεῖς οἱ Λευῖται παντὶ Ἰσραὴλ, λέγοντες, σιώπα καὶ ἄκουε Ἰσραήλ· ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ γέγονας εἰς λαὸν Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καὶ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ ποιήσεις πάσας τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον. Καὶ ἐνετείλατο Μωυσῆς τῷ λαῷ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, οὗτοι στήσονται εὐλογεῖν τὸν λαὸν ἐν ὄρει Γαριζίν διαβάντες τὸν Ἰορδάνην, Συμεὼν, Λευὶ, Ἰουδας, Ἰσσάχαρ, Ἰωσὴφ, καὶ Βενιαμίν. Καὶ οὗτοι στήσονται ἐπὶ τῆς κατάρας ἐν ὄρει Γαιβάλ, Ῥουβὴν, Γὰδ, καὶ Ἀσὴρ, Ζαβουλὼν, Δὰν, καὶ Νεφθαλί. Καὶ ἀποκριθέντες ἐροῦσιν οἱ Λευῖται παντὶ Ἰσραὴλ φωνῇ μεγάλῃ, ἐπικατάρατος ἄνθρωπος ὅστις ποιήσει γλυπτὸν καὶ χωνευτὸν, βδέλυγμα Κυρίῳ, ἔργον χειρῶν τεχνιτῶν, καὶ θήσει αὐτὸ ἐν ἀποκρύφῳ· καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὁ λαὸς, ἐροῦσι, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ ἀτιμάζων πατέρα αὐτοῦ ἢ μητέρα αὐτοῦ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοτιο. Ἐπικατάρατος ὁ μετατιθεὶς ὅρια τοῦ πλησίον· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ πλανῶν τυφλὸν ἐν ὁδῷ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὃς ἂν ἐκκλίνῃ κρίσιν προσηλύτου καὶ ὀρφανοῦ καὶ χήρας· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ κοιμώμενος μετὰ γυναικὸς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ὅτι ἀπεκάλυψε συγκάλυμμα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο.

Ἐπικατάρατος ὁ κοιμώμενος μετὰ παντὸς κτήνους· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ κοιμώμενος μετὰ ἀδελφῆς ἐκ πατρὸς ἢ μητρὸς αὐτοῦ. καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ κοιμώμενος μετὰ νύμφης αὐτοῦ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο· ἐπικατάρατος ὁ κοιμώμενος μετὰ τῆς ἀδελφῆς τῆς γυναικὸς αὐτοῦ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὁ τύπτων τὸν πλησίον δόλῳ· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαός, γένοιτο. Ἐπικατάρατος ὃς ἂν λάβῃ δῶρα πατάξαι ψυχὴν αἵματος ἀθῴου· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο. Ἐπικατάρατος πᾶς ἄνθρωπος ὃς οὐκ ἐμμένει ἐν πᾶσι τοῖς λόγοις τοῦ νόμου τούτου ποιῆσαι αὐτούς· καὶ ἐροῦσι πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο.

# 28

Καὶ ἔσται ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, φυλάσσειν καὶ ποιεῖν πάσας τὰς ἐντολὰς ταύτας, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, καὶ δώσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ὑπεράνω ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς, καὶ ἥξουσιν ἐπὶ σὲ πᾶσαι αἱ εὐλογίαι αὗται, καὶ εὑρήσουσί σε· ἐὰν ἀκοῇ ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, εὐλογημένος σὺ ἐν πόλει, καὶ εὐλογημένος σὺ ἐν ἀγρῷ. Εὐλογημένα τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου, καὶ τὰ γεννήματα τῆς γης σου, καὶ τὰ βουκόλια τῶν βοῶν σου, καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων σου. Εὐλογημέναι αἱ ἀποθῆκαί σου, καὶ τὰ ἐγκαταλείμματά σου. Εὐλογημένος σὺ ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαί σε, καὶ εὐλογημένος σὺ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαί σε. Παραδῷ Κύριος ὁ Θεός σου τοὺς ἐχθρούς σου τοὺς ἀνθεστηκότας σοι συντετριμμένους πρὸ προσώπου σου· ὁδῷ μιᾷ ἐξελεύσονται πρὸς σέ, καὶ ἐν ἑπτὰ ὁδοῖς φεύξονται ἀπὸ

προσώπου σου. Ἀποστείλαι Κύριος ἐπὶ σὲ τὴν εὐλογίαν ἐν τοῖς ταμείοις σου, καὶ ἐπὶ πάντα οὗ ἂν ἐπιβάλῃς τὴν χεῖρά σου, ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς Κύριος ὁ Θεός σου δίδωσί σοι. Ἀναστήσαι σε Κύριος ἑαυτῷ λαὸν ἅγιον, ὃν τρόπον ὤμοσε τοῖς πατράσι σου· ἐὰν ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ πορευθῇς ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ ὄψονταί σε πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς, ὅτι τὸ ὄνομα Κυρίου ἐπικέκληταί σοι, καὶ φοβηθήσονταί σε. Καὶ πληθυνεῖ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς ἀγαθὰ ἐν τοῖς ἐκγόνοις τῆς κοιλίας σου, καὶ ἐπὶ τοῖς ἐκγόνοις τῶν κτηνῶν σου, καὶ ἐπὶ τοῖς γεννήμασι τῆς γῆς σου, ἐπὶ τῆς γῆς σου ἧς ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσι σου δοῦναί σοι. Ἀνοίξαι σοι Κύριος τὸν θησαυρὸν αὐτοῦ τὸν ἀγαθὸν, τὸν οὐρανὸν, δοῦναι τὸν ὑετὸν τῇ γῇ σου ἐπὶ καιροῦ· εὐλογῆσαι πάντα τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου· καὶ δανειεῖς ἔθνεσι πολλοῖς, σὺ δὲ οὐ δανειῇ. καὶ ἄρξεις σὺ ἐθνῶν πολλῶν, σοῦ δὲ οὐκ ἄρξουσι. Καταστήσαι σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς κεφαλὴν καὶ μὴ εἰς οὐρὰν, καὶ ἔσῃ τότε ἐπάνω καὶ οὐκ ἔσῃ ὑποκάτω, ἐὰν ἀκούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον φυλάσσειν. Οὐ παραβήσῃ ἀπὸ πασῶν τῶν ἐντολῶν, ὧν ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον δεξιὰ οὐδὲ ἀριστερὰ, πορεύσεθαι ὀπίσω θεῶν ἑτέρων λατρεύειν αὐτοῖς. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ εἰσακούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, φυλάσσεσθαι πάσας τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, καὶ ἐλεύσονται ἐπὶ σὲ πᾶσαι αἱ κατάραι αὗται, καὶ καταλήψονταί σε. Ἐπικατάρατος σὺ ἐν πόλει, καὶ ἐπικατάρατος σὺ ἐν ἀγρῷ. Ἐπικατάρατοι αἱ ἀποθῆκαί σου, καὶ τὰ ἐγκαταλείμματά σου. Ἐπικατάρατα τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου, καὶ τὰ γεννήματα τῆς γῆς σου, τὰ βουκόλια τῶν βοῶν σου, καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων σου· Ἐπικατάρατος σὺ ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαί σε, καὶ ἐπικατάρατος σὺ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαί σε.

Ἀποστείλαι Κύριος ἐπὶ σὲ τὴν ἔνδειαν καὶ τὴν ἐκλιμίαν καὶ τὴν ἀνάλωσιν ἐπὶ πάντα οὗ ἐὰν ἐπιβάλῃς τὴν χεῖρά σου, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ σε, καὶ ἕως ἂν ἀπολέσῃ σε ἐν τάχει διὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματά σου, διότι ἐνκατέλιπές με. Προσκολλήσαι Κύριος εἰς σὲ τὸν θάνατον, ἕως ἂν ἐξαναλώσῃ σε ἀπὸ τῆς γῆς, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Πατάξαι σε Κύριος ἐν ἀπορίᾳ, καὶ πυρετῷ, καὶ ῥίγει, καὶ ἐρεθισμῷ, καὶ ἀνεμοφθορίᾳ, καὶ τῇ ὄχρᾳ, καὶ καταδιώξονταί σε ἕως ἂν ἀπολέσωσί σε. Καὶ ἔσται σοι ὁ οὐρανὸς ὁ ὑπὲρ κεφαλῆς σου χαλκοῦς, καὶ ἡ γῆ ἡ ὑποκάτω σου σιδηρᾶ. Δῴη Κύριος ὁ Θεός σου τὸν ὑετὸν τῆς γῆς σου κονιορτὸν, καὶ χοῦς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβήσεται, ἕως ἂν ἐκτρίψῃ σε, καὶ ἕως ἂν ἀπολέσῃ σε ἐν τάχει. Δῴη σε Κύριος ἐπὶ κοπὴν ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν· ἐν ὁδῷ μιᾷ ἐξελεύσῃ πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἐν ἑπτὰ ὁδοῖς φεύξῃ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· καὶ ἔσῃ διασπορὰ ἐν πάσαις βασιλείαις τῆς γῆς. Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ ὑμῶν κατάβρωμα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν. Πατάξαι σε Κύριος ἕλκει Αἰγυπτίῳ εἰς τὴν ἕδραν, καὶ ψώρᾳ ἀγρίᾳ, καὶ κνήφῃ, ὥστε μὴ δύνασθαί σε ἰαθῆναι. Πατάξαι σε Κύριος παραπληξίᾳ, καὶ ἀορασίᾳ, καὶ ἐκστάσει διανοίας. Καὶ ἔσῃ ψηλαφῶν μεσημβρίας, ὡσεί τις ψηλαφήσαι τυφλὸς ἐν τῷ σκότει, καὶ οὐκ εὐοδώσει τὰς ὁδούς σου· καὶ ἔσῃ τότε ἀδικούμενος, καὶ διαρπαζόμενος πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ οὐκ ἔσται ὁ βοηθῶν. Γυναῖκα λήψῃ, καὶ ἀνὴρ ἕτερος ἕξει αὐτήν· οἰκίαν οἰκοδομήσεις, καὶ οὐκ οἰκήσεις ἐν αὐτῇ· ἀμπελῶνα φυτεύσεις, καὶ οὐ μὴ τρυγήσεις αὐτόν. Ὁ μόσχος σου ἐσφαγμένος ἐναντίον σου, καὶ οὐ φάγῃ ἐξ αὐτοῦ· ὁ ὄνος σου ἡρπασμένος ἀπὸ σοῦ, καὶ οὐκ ἀποδοθήσεταί σοι· τὰ πρόβατά σου δεδομένα τοῖς ἐχθροῖς σου, καὶ οὐκ ἔσται σοι ὁ βοηθῶν. Οἱ υἱοί σου καὶ αἱ θυγατέρες σου

δεδομέναι ἔθνει ἑτέρῳ, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου βλέψονται σφακελίζοντες εἰς αὐτὰ· οὐκ ἰσχύσει ἡ χείρ σου. Τὰ ἐκφόρια τῆς γῆς σου, καὶ πάντας τοὺς πόνους σου φάγεται ἔθνος, ὃ οὐκ ἐπίστασαι· καὶ ἔσῃ ἀδικούμενος καὶ τεθραυσμένος πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἔσῃ παράπληκτος διὰ τὰ ὁράματα τῶν ὀφθαλμῶν σου, ἃ βλέψῃ. Πατάξαι σε Κύριος ἐν ἕλκει πονηρῷ ἐπὶ τὰ γόνατα καὶ ἐπὶ τὰς κνήμας, ὥστε μὴ δύνασθαι ἰαθῆναί σε ἀπὸ ἴχνους τῶν ποδῶν σου ἕως τῆς κορυφῆς σου. Ἀπαγάγοι Κύριός σε καὶ τοὺς ἄρχοντάς σου, οὓς ἂν καταστήσῃς ἐπὶ σεαυτὸν, ἐπ ἔθνος ὃ οὐκ ἐπίστασαι σὺ καὶ οἱ πατέρες σου, καὶ λατρεύσεις ἐκεῖ θεοῖς ἑτέροις ξύλοις καὶ λίθοις. Καὶ ἔσῃ ἐκεῖ ἐν αἰνίγματι καὶ παραβολῇ καὶ διηγήματι ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, εἰς οὓς ἂν ἀπαγάγῃ σε Κύριος ἐκεῖ. Σπέρμα πολὺ ἐξοίσεις εἰς τὸ πεδίον, καὶ ὀλίγα εἰσοίσεις, ὅτι κατέδεται αὐτὰ ἡ ἀκρίς· Ἀμπελῶνα φυτεύσεις καὶ κατεργᾷ, καὶ οἶνον οὐ πίεσαι οὐδὲ εὐφρανθήσῃ ἐξ αὐτοῦ, ὅτι καταφάγεται αὐτὰ ὁ σκώληξ. Ἐλαῖαι ἔσονταί σοι ἐν πᾶσι τοὶς ὁρίοις σου, καὶ ἔλαιον οὐ χρίσῃ, ὅτι ἐκρυήσεται ἡ ἐλαία σου. Υἱοὺς καὶ θυγατέρας γεννήσεις καὶ οὐκ ἔσονται· ἀπελεύσονται γὰρ ἐν αἰχμαλωσίᾳ. Πάντα τὰ ξύλινά σου, καὶ τὰ γεννήματα τῆς γῆς σου ἐξαναλώσει ἡ ἐρισύβη. Ὁ προσήλυτος ὅς ἐστιν ἐν σοὶ, ἀναβήσεται ἄνω ἄνω, σὺ δὲ καταβήσῃ κάτω κάτω. Οὗτος δανειεῖ σοι, σὺ δὲ τούτῳ οὐ δανειεῖς· οὗτος ἔσται κεφαλὴ, σὺ δὲ ἔσῃ οὐρά. Καὶ ἐλεύσονται ἐπὶ σὲ πᾶσαι αἱ κατάραι αὗται, καὶ καταδιώξονταί σε, καὶ καταλήψονταί σε, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ σε, καὶ ἕως ἂν ἀπολέσῃ σε· ὅτι οὐκ εἰσήκουσας τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, φυλάξαι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα ὅσα ἐνετείλατό σοι. Καὶ ἔσται ἐν σοὶ σημεῖα, καὶ τέρατα ἐν τῷ σπέρματί σου ἕως τοῦ αἰῶνος, ἀνθ ὧν οὐκ ἐλάτρευσας Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐν εὐφροσύνῃ καὶ ἀγαθῇ

διανοίᾳ διὰ τὸ πλῆθος πάντων. Καὶ λατρεύσεις τοῖς ἐχθροῖς σου, οὓς ἐπαποστελεῖ Κύριος ἐπὶ σέ, ἐν λιμῷ, καὶ ἐν δίψει, καὶ ἐν γυμνότητι, καὶ ἐν ἐκλείψει πάντων· καὶ ἐπιθήσῃ κλοιὸν σιδηροῦν ἐπὶ τὸν τράχηλόν σου, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ σε. Ἐπάξει ἐπὶ σὲ Κύριος ἔθνος μακρόθεν ἀπ ἐσχάτου τῆς γῆς ὡσεὶ ὅρμημα ἀετοῦ, ἔθνος ὃ οὐκ ἀκούσῃ τῆς φωνῆς αὐτοῦ, ἔθνος ἀναιδὲς προσώπῳ, ὅστις οὐ θαυμάσει πρόσωπον πρεσβύτου, καὶ νέον οὐκ ἐλεήσει. Καὶ κατέδεται τὰ ἔγκονα τῶν κτηνῶν σου, καὶ τὰ γεννήματα τῆς γῆς σου, ὥστε μὴ καταλιπεῖν σοι σῖτον, οἶνον, ἔλαιον, τὰ βουκόλια τῶν βοῶν σου, καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων σου, ἕως ἂν ἀπολέσῃ σε. Καὶ ἐκτρίψῃ σε ἐν ταῖς πόλεσί σου, ἕως ἂν καθαιρεθῶσι τὰ τείχη τὰ ὑψηλὰ καὶ τὰ ὀχυρὰ, ἐφ οἷς σὺ πέποιθας ἐπ αὐτοῖς, ἐν πάσῃ τῇ γῇ σου· καὶ θλίψει σε ἐν ταῖς πόλεσί σου, αἷς ἔδωκέ σοι. Καὶ φαγῇ τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου, κρέα υἱῶν σου καὶ θυγατέρων σου, ὅσα ἔδωκέ σοι, ἐν τῇ στενοχωρίᾳ σου καὶ ἐν τῇ θλίψει σου, ἣ· θλίψει σε ὁ ἐχθρός σου. Ὁ ἁπαλὸς ὁ ἐν σοὶ καὶ ὁ τρυφερὸς σφόδρα, βασκανεῖ τῷ ὀφθαλμῷ αὐτοῦ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ τὴν γυναῖκα τὴν ἐν τῷ κόλπῳ αὐτοῦ, καὶ τὰ καταλελειμμένα τέκνα, ἃ ἂν καταλειφθῇ αὐτῷ, ὥστε δοῦναι ἑνὶ αὐτῶν ἀπὸ τῶν σαρκῶν τῶν τέκνων αὐτοῦ, ὧν ἂν κατέσθῃ διὰ τὸ μὴ καταλειφθῆναι αὐτῷ οὐδὲν ἐν τῇ στενοχωρίᾳ σου, καὶ ἐν τῇ θλίψει σου, ἣ· ἂν θλίψωσί σε οἱ ἐχθροί σου ἐν πάσαις ταῖς πόλεσί σου. Καὶ ἡ ἁπαλὴ ἐν ὑμῖν καὶ ἡ τρυφερά, ἧς οὐχὶ πεῖραν ἔλαβεν ὁ ποὺς αὐτῆς βαίνειν ἐπὶ τῆς γῆς διὰ τὴν τρυφερότητα καὶ διὰ τὴν ἁπαλότητα, βασκανεῖ τῷ ὀφθαλμῷ αὐτῆς τὸν ἄνδρα αὐτῆς τὸν ἐν κόλπῳ αὐτῆς, καὶ τὸν υἱὸν καὶ τὴν θυγατέρα αὐτῆς, καὶ τὸ κόριον αὐτῆς τὸ ἐξελθὸν διὰ τῶν μηρῶν αὐτῆς, καὶ τὸ τέκνον αὐτῆς ὃ ἐὰν τέκῃ· καταφάγεται γὰρ αὐτὰ διὰ τὴν ἔνδειαν πάντων κρυφῇ ἐν τῇ στενοχωρίᾳ σου,

καὶ ἐν τῇ θλίψει σου, ἡ· θλίψει σε ὁ ἐχθρός σου ἐν ταῖς πόλεσί σου, ἐὰν μὴ εἰσακούσῃς ποιεῖν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ νόμου τούτου, τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ, φοβεῖσθαι τὸ ὄνομα τὸ ἔντιμον τὸ θαυμαστὸν τοῦτο, ΚΥΡΙΟΝ τὸν ΘΕΟΝ σου. Καὶ παραδοξάσει Κύριος τὰς πληγάς σου, καὶ τὰς πληγὰς τοῦ σπέρματός σου, πληγὰς μεγάλας καὶ θαυμαστὰς, καὶ νόσους πονηρὰς καὶ πιστάς. Καὶ ἐπιστρέψει πᾶσαν τὴν ὀδύνην Αἰγύπτου τὴν πονηρὰν, ἣν διευλαβοῦ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ κολληθήσονται ἐν σοί. Καὶ πᾶσαν μαλακίαν, καὶ πᾶσαν πληγὴν τὴν μὴ γεγραμμένην, καὶ πᾶσαν τὴν γεγραμμένην ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου τούτου, ἐπάξει Κύριος ἐπὶ σέ, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ σε. Καὶ καταλειφθήσεσθε ἐν ἀριθμῷ βραχεῖ, ἀνθ ὧν ὅτι ἦτε ὡσεὶ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει, ὅτι οὐκ εἰσήκουσας τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον εὐφράνθη Κύριος ἐφ ὑμῖν εὖ ποιῆσαι ὑμᾶς, καὶ πληθῦναι ὑμᾶς, οὕτως εὐφρανθήσεται Κύριος ἐφ ὑμῖν ἐξολοθρεῦσαι ὑμᾶς· καὶ ἐξαρθήσεσθε ἐν τάχει ἀπὸ τῆς γῆς, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Καὶ διασπερεῖ σε Κύριος ὁ Θεός σου εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἀπ ἄκρου τῆς γῆς ἕως ἄκρου τῆς γῆς, καὶ δουλεύσεις ἐκεῖ θεοῖς ἑτέροις, ξύλοις καὶ λίθοις, οὓς οὐκ ἠπίστω σὺ καὶ οἱ πατέρες σου. Ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις οὐκ ἀναπαύσει σε, οὐδ οὐ μὴ γένηται στάσις τῷ ἴχνει τοῦ ποδός σου· καὶ δώσει σοι Κύριος ἐκεῖ καρδίαν ἑτέραν ἀπειθοῦσαν, καὶ ἐκλείποντας ὀφθαλμοὺς, καὶ τηκομένην ψυχήν. Καὶ ἔσται ἡ ζωή σου κρεμαμένη ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν σου· καὶ φοβηθήσῃ ἡμέρας καὶ νυκτὸς, καὶ οὐ πιστεύσεις τῇ ζωῇ σου. Τὸ πρωῒ ἐρεῖς, πῶς ἂν γένοιτο ἑσπέρα· καὶ τὸ ἑσπέρας ἐρεῖς, πῶς ἂν γένοιτο πρωΐ· ἀπὸ τοῦ φόβου τῆς καρδίας σου ἃ φοβηθήσῃ, καὶ ἀπὸ τῶν ὁραμάτων τῶν ὀφθαλμῶν σου ὧν ὄψῃ. Καὶ ἀποστρέψει σε Κύριος

εἰς Αἴγυπτον ἐν πλοίοις, ἐν τῇ ὁδῷ ἡ· εἶπα, οὐ προσθήσῃ ἔτι ἰδεῖν αὐτήν· καὶ πραθήσεσθε ἐκεῖ τοῖς ἐχθροῖς ὑμῶν εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας, καὶ οὐκ ἔσται ὁ κτώμενος. Οὗτοι οἱ λόγοι τῆς διαθήκης, οὓς ἐνετείλατο Κύριος Μωυσῇ στῆσαι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν γῇ Μωὰβ, πλὴν τῆς διαθήκης ἧς διέθετο αὐτοῖς ἐν Χωρήβ.

# 29

Καὶ ἐκάλεσε Μωυσῆς πάντας τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς ἑωράκατε πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἐνώπιον ὑμῶν Φαραὼ καὶ τοῖς θεράπουσιν αὐτοῦ, καὶ πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ, τοὺς πειρασμοὺς τοὺς μεγάλους οὓς ἑωράκασιν οἱ ὀφθαλμοί σου, τὰ σημεῖα καὶ τὰ τέρατα τὰ μεγάλα ἐκεῖνα. Καὶ οὐκ ἔδωκε Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῖν καρδίαν εἰδέναι, καὶ ὀφθαλμοὺς βλέπειν, καὶ ὦτα ἀκούειν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἤγαγεν ὑμᾶς τεσσαράκοντα ἔτη ἐν τῇ ἐρήμῳ· οὐκ ἐπαλαιώθη τὰ ἱμάτια ὑμῶν, καὶ τὰ ὑποδήματα ὑμῶν οὐ κατετρίβη ἀπὸ τῶν ποδῶν ὑμῶν. Ἄρτον οὐκ ἐφάγετε, οἶνον καὶ σίκερα οὐκ ἐπίετε, ἵνα γνῶτε ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐγώ. Καὶ ἤλθετε ἕως τοῦ τόπου τούτου· καὶ ἐξῆλθε Σηὼν βασιλεὺς Ἐσεβὼν, καὶ Ὢγ βασιλεὺς Βασὰν εἰς συνάντησιν ἡμῖν ἐν πολέμῳ. Καὶ ἐπατάξαμεν αὐτοὺς, καὶ ἐλάβομεν τὴν γῆν αὐτῶν, καὶ ἔδωκα αὐτὴν ἐν κλήρῳ τῷ Ῥουβὴν, καὶ τῷ Γαδδὶ, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ. Καὶ φυλάξεσθε ποιεῖν πάντας τοὺς λόγους τῆς διαθήκης ταύτης, ἵνα συνῆτε πάντα ὅσα ποιήσετε. Ὑμεῖς ἑστήκατε πάντες σήμερον ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, οἱ ἀρχίφυλοι ὑμῶν, καὶ ἡ γερουσία ὑμῶν, καὶ οἱ κριταὶ ὑμῶν, καὶ οἱ γραμματοεισαγωγεῖς ὑμῶν, πᾶς ἀνὴρ Ἰσραήλ, αἱ γυναῖκες ὑμῶν,

καὶ τὰ ἔκγονα ὑμῶν καὶ ὁ προσήλυτος ὁ ἐν μέσῳ τῆς παρεμβολῆς ὑμῶν, ἀπὸ ξυλοκόπου ὑμῶν καὶ ἕως ὑδροφόρου ὑμῶν, παρελθεῖν ἐν τῇ διαθήκῃ Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀραῖς αὐτοῦ, ὅσα Κύριος ὁ Θεός σου διατίθεται πρὸς σὲ σήμερον· ἵνα στήσῃ σε αὐτῷ εἰς λαὸν, καὶ αὐτὸς ἔσται σου Θεὸς, ὃν τρόπον εἶπέ σοι, καὶ ὃν τρόπον ὤμοσε τοῖς πατράσι σου Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακώβ. Καὶ οὐχ ὑμῖν μόνοις ἐγὼ διατίθεμαι τὴν διαθήκην ταύτην καὶ τὴν ἀρὰν ταύτην, ἀλλὰ καὶ τοῖς ὧδε οὖσι μεθ ὑμῶν σήμερον ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ τοῖς μὴ οὖσι μεθ ὑμῶν ὧδε σήμερον. Ὅτι ὑμεῖς οἴδατε πῶς κατῳκήσαμεν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ὡς παρήλθομεν ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν οὓς παρήλθετε. Καὶ ἴδετε τὰ βδελύγματα αὐτῶν, καὶ τὰ εἴδωλα αὐτῶν, ξύλον καὶ λίθον, ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἅ ἐστι παρ αὐτοῖς. Μή τις ἐστὶν ἐν ὑμῖν ἀνὴρ, ἢ γυνὴ, ἢ πατριὰ, ἢ φυλὴ, τινὸς ἡ διάνοια ἐξέκλινεν ἀπὸ Κυρίου τοῦ Θεου ὑμῶν, πορευθέντες λατρεύειν τοῖς θεοῖς τῶν ἐθνῶν ἐκείνων· μή τις ἐστὶν ἐν ὑμῖν ῥίζα ἄνω φύουσα ἐν χολῇ καὶ πικρίᾳ· Καὶ ἔσται ἐὰν ἀκούσῃ τὰ ῥήματα τῆς ἀρᾶς ταύτης, καὶ ἐπιφημίσηται ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, λέγων, ὅσιά μοι γένοιτο, ὅτι ἐν τῇ ἀποπλανήσει τῆς καρδίας μου πορεύσομαι, ἵνα μὴ συναπολέσῃ ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν ἀναμάρτητον· Οὐ μὴ θελήσει ὁ Θεὸς εὐϊλατεῦσαι αὐτῷ, ἀλλ ἢ τότε ἐκκαυθήσεται ὀργὴ Κυρίου καὶ ὁ ζῆλος αὐτοῦ ἐν τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ· καὶ κολληθήσονται ἐν αὐτῷ πᾶσαι αἱ ἀραὶ τῆς διαθήκης ταύτης, αἱ γεγραμμέναι ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ· καὶ ἐξαλείψει Κύριος τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκ τῆς ὑπὸ τὸν οὐρανόν. Καὶ διαστελεῖ αὐτὸν Κύριος εἰς κακὰ ἐκ πάντων υἱῶν Ἰσραὴλ, κατὰ πάσας τὰς ἀρὰς τῆς διαθήκης τὰς γεγραμμένας ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου τούτου. Καὶ ἐροῦσιν ἡ γενεὰ ἡ ἑτέρα οἱ υἱοὶ ὑμῶν, οἳ ἀναστήσονται μεθ ὑμᾶς, καὶ ὁ ἀλλότριος ὃς ἂν ἔλθῃ ἐκ γῆς

μακρόθεν, καὶ ὄψονται τὰς πληγὰς τῆς γῆς ἐκείνης καὶ τὰς νόσους αὐτῆς, ἃς ἀπέστειλε Κύριος ἐπ αὐτὴν, θεῖον καὶ ἅλα κατακεκαυμένον· πᾶσα ἡ γῆ αὐτῆς οὐ σπαρήσεται, οὐδὲ ἀνατελεῖ, οὐδὲ μὴ ἀναβῇ ἐπ αὐτὴν πᾶν χλωρόν. ὥσπερ κατεστράφη Σόδομα καὶ Γόμορῥα, Ἀδαμὰ καὶ Σεβωΐμ, ἃς κατέστρεψε Κύριος ἐν θυμῷ καὶ ὀργῇ· Καὶ ἐροῦσι πάντα τὰ ἔθνη, διατί ἐποίησε Κύριος οὕτω τῇ γῇ ταύτῃ; τίς ὁ θυμὸς τῆς ὀργῆς ὁ μέγας οὗτος; Καὶ ἐροῦσιν, ὅτι κατέλιπον τὴν διαθήκην Κυρίου τοῦ Θεοῦ τῶν πατέρων αὐτῶν, ἃ διέθετο τοῖς πατράσιν αὐτῶν, ὅτε ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ πορεύθεντες ἐλάτρευσαν θεοῖς ἑτέροις, οὓς οὐκ ἠπίσταντο, οὐδὲ διένειμεν αὐτοῖς· Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην ἐπαγαγεῖν ἐπ αὐτὴν κατὰ πάσας τὰς κατάρας τὰς γεγραμμένας ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου τούτου. Καὶ ἐξῆρεν αὐτοὺς Κύριος ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν ἐν θυμῷ καὶ ὀργῇ καὶ παροξυσμῷ μεγάλῳ σφόδρα, καὶ ἐξέβαλεν αὐτοὺς εἰς γῆν ἑτέραν ὡσεὶ νῦν. Τὰ κρυπτὰ Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν, τὰ δὲ φανερὰ ἡμῖν καὶ τοῖς τέκνοις ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, ποιεῖν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ νόμου τούτου. Τὰ κρυπτὰ Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν, τὰ δὲ φανερὰ ἡμῖν καὶ τοῖς τέκνοις ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, ποιεῖν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ νόμου τούτου.

# 30

Καὶ ἔσται ὡς ἂν ἔλθωσιν ἐπὶ σὲ πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα, ἡ εὐλογία καὶ ἡ κατάρα, ἣν ἔδωκα πρὸ προσώπου σου; καὶ δέξῃ εἰς τὴν καρδίαν σου ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, οὗ ἐὰν σε διασκορπίσῃ σε Κύριος ἐκεῖ, καὶ ἐπιστραφήσῃ ἐπὶ Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς αὐτοῦ κατὰ πάντα ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι

σήμερον, ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ἰάσεται Κύριος τὰς ἁμαρτίας σου, καὶ ἐλεήσει σε, καὶ πάλιν συνάξει σε ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν, εἰς οὓς διεσκόρπισέ σε Κύριος ἐκεῖ. Ἐὰν ἡ· ἡ διασπορά σου ἀπ ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ ἕως ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ, ἐκεῖθεν συνάξει σε Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ ἐκεῖθεν λήψεταί σε Κύριος ὁ Θεός σου. Καὶ εἰσάξει σε ὁ Θεός σου ἐκεῖθεν εἰς τὴν γῆν ἣν ἐκληρονόμησαν οἱ πατέρες σου, καὶ κληρονομήσεις αὐτήν· καὶ εὖ σε ποιήσει, καὶ πλεοναστόν σε ποιήσει ὑπὲρ τοὺς πατέρας σου. Καὶ περικαθαριεῖ Κύριος τὴν καρδίαν σου, καὶ τὴν καρδίαν τοῦ σπέρματός σου, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου, ἵνα ζῇς σύ. Καὶ δώσει Κύριος ὁ Θεός σου τὰς ἀρὰς ταύτας ἐπὶ τοὺς ἐχθρούς σου, καὶ ἐπὶ τοὺς μισοῦντάς σε, οἳ ἐδίωξάν σε. Καὶ σὺ ἐπιστραφήσῃ καὶ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ ποιήσεις τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, ὅσας ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον. Καὶ εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν παντὶ ἔργῳ τῶν χειρῶν σου, ἐν τοῖς ἐκγόνοις τῆς κοιλίας σου, καὶ ἐν τοῖς ἐκγόνοις τῶν κτηνῶν σου, καὶ ἐν τοῖς γεννήμασι τῆς γῆς σου, ὅτι ἐπιστρέψει Κύριος ὁ Θεός σου εὐφρανθῆναὶ ἐπὶ σοὶ εἰς ἀγαθὰ, καθότι εὐφράνθη ἐπὶ τοῖς πατράσι σου· Ἐὰν εἰσακούσῃς τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, φυλάσσεσθαι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, καὶ τὰς κρίσεις αὐτοῦ τὰς γεγραμμένας ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου τούτου· ἐὰν ἐπιστραφῇς ἐπὶ Κύριον τὸν Θεόν σου ἐξ ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς σου. Ὅτι ἡ ἐντολὴ αὕτη ἣν ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, οὐχ ὑπέρογκός ἐστιν, οὐδέ μακρὰν ἀπὸ σοῦ ἐστιν. Οὐκ ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω ἐστὶ, λέγων, τίς ἀναβήσεται ἡμῖν εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ λήψεται ἡμῖν αὐτὴν, καὶ ἀκούσαντες αὐτὴν ποιήσομεν; Οὐδὲ πέραν τῆς θαλάσσης ἐστί, λέγων, τίς διαπεράσει

ἡμῖν εἰς τὸ πέραν τῆς θαλάσσης, καὶ λάβῃ ἡμῖν αὐτὴν, καὶ ἀκουστὴν ἡμῖν ποιήσῃ αὐτὴν, καὶ ποιήσομεν; Ἐγγύς σου ἐστὶ τὸ ῥῆμα σφόδρα ἐν τῷ στόματί σου, καὶ ἐν τῇ καρδίᾳ σου, καὶ ἐν ταῖς χερσί σου ποιεῖν αὐτό. Ἰδοὺ δέδωκα πρὸ προσώπου σου σήμερον τὴν ζωὴν καὶ τὸν θάνατον, τὸ ἀγαθὸν καὶ τὸ κακόν. Ἐὰν εἰσακούσῃς τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, ἃς ἐγὼ ἐντέλλομαί σοι σήμερον, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεόν σου, πορεύεσθαι ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ φυλάσσεσθαι τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, καὶ τὰς κρίσεις αὐτοῦ, καὶ ζήσεσθε, καὶ πολλοὶ ἔσεσθε, καὶ εὐλογήσει σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ, εἰς ἣν εἰσπορεύῃ ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Καὶ ἐὰν μεταστῇ ἡ καρδία σου, καὶ μὴ εἰσακούσῃς, καὶ πλανηθεὶς προσκυνήσῃς θεοῖς ἑτέροις καὶ λατρεύσῃς αὐτοῖς, ἀναγγέλλω σοι σήμερον, ὅτι ἀπωλείᾳ ἀπολεῖσθε, καὶ οὐ μὴ πολυήμεροι γένησθε ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Διαμαρτύρομαι ὑμῖν σήμερον τόν τε οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, τὴν ζωὴν καὶ τὸν θάνατον δέδωκα πρὸ προσώπου ὑμῶν, τὴν εὐλογίαν καὶ τὴν κατάραν· ἔκλεξαι τὴν ζωὴν σὺ, ἵνα ζήσῃς σὺ καὶ τὸ σπέρμα σου, ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεόν σου, εἰσακούειν τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ ἔχεσθαι αὐτοῦ· ὅτι τοῦτο ἡ ζωή σου καὶ ἡ μακρότης τῶν ἡμερῶν σου, τὸ κατοικεῖν ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσι σου Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ δοῦναι αὐτοῖς.

# 31

Καὶ συνετέλεσε Μωυσῆς λαλῶν πάντας τοὺς λόγους τούτους πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἑκατὸν καὶ εἴκοσι

ἐτῶν ἐγώ εἰμι σήμερον· οὐ δυνήσομαι ἔτι εἰσπορεύεσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι· Κύριος δὲ εἶπε πρὸς μὲ, οὐ διαβήσῃ τὸν Ιορδάνην τοῦτον. Κύριος ὁ Θεός σου ὁ προπορευόμενος πρὸ προσώπου σου, οὗτος ἐξολοθρεύσει τὰ ἔθνη ταῦτα ἀπὸ προσώπου σου, καὶ κατακληρονομήσεις αὐτούς· καὶ Ἰησοῦς ὁ προπορευόμενος πρὸ προσώπου σου, καθὰ ἐλάλησε Κύριος. Καὶ ποιήσει Κύριος ὁ Θεός σου αὐτοῖς καθὼς ἐποίησε Σηὼν καὶ Ὢγ δυσὶ βασιλεῦσι τῶν Ἀμορῥαίων, οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, καὶ τῇ γῇ αὐτῶν, καθότι ἐξωλόθρευσεν αὐτούς. Καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος ὑμῖν· καὶ ποιήσετε αὐτοῖς, καθότι ἐνετειλάμην ὑμῖν. Ἀνδρίζου καὶ ἴσχυε, μὴ φοβοῦ, μηδὲ δειλιάσῃς, μηδὲ πτοηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· ὅτι Κύριος ὁ Θεός σου ὁ προπορευόμενος μεθ ὑμῶν ἐν ὑμῖν, οὔτε μή σε ἀνῇ, οὔτε μή σε ἐγκαταλίπῃ. Καὶ ἐκάλεσε Μωυσῆς Ἰησοῦν, καὶ εἶπεν αὐτῷ ἔναντι παντὸς Ἰσραὴλ, ἀνδρίζου καὶ ἴσχυε, σὺ γὰρ εἰσελεύσῃ πρὸ προσώπου τοῦ λαοῦ τούτου εἰς τὴν γῆν ἣν ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν ὑμῶν δοῦναι αὐτοῖς, καὶ σὺ κατακληρονομήσεις αὐτοῖς. Καὶ Κύριος ὁ συμπορευόμενος μετὰ σοῦ, οὐκ ἀνήσει σε, οὐδὲ μὴ σε ἐγκαταλίπῃ· μή φοβοῦ, μηδὲ δειλία. Καὶ ἔγραψε Μωυσῆς τὰ ῥήματα τοῦ νόμου τούτου εἰς βιβλίον, καὶ ἔδωκε τοῖς ἱερεῦσι τοῖς υἱοῖς Λευὶ τοῖς αἴρουσι τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου, καὶ τοῖς πρεσβυτέροις τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐνετείλατο Μωυσῆς αὐτοῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, μετὰ ἑπτὰ ἔτη ἐν καιρῷ ἐνιαυτοῦ ἀφέσεως ἐν ἑορτῇ σκηνοπηγίας, ἐν τῷ συμπορεύεσθαι πάντα Ἰσραὴλ ὀφθῆναι ἐνώπιον Κύριου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ἂν ἐκλέξηται Κύριος, ἀναγνώσεσθε τὸν νόμον τοῦτον ἐναντίον παντὸς Ἰσραὴλ εἰς τὰ ὦτα αὐτῶν, ἐκκλησιάσας τὸν λαὸν, τοὺς ἄνδρας καὶ τὰς γυναῖκας καὶ τὰ ἔκγονα καὶ τὸν προσήλυτον τὸν ἐν ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, ἵν ἀκούσωσι, καὶ ἵνα

μάθωσι φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν· καὶ ἀκούσονται ποιεῖν πάντας τοὺς λόγους τοῦ νόμου τούτου. Καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν οἳ οὐκ οἴδασιν, ἀκούσονται, καὶ μαθήσονται φοβεῖσθαι Κύριον τὸν Θεόν σου πάσας τὰς ἡμέρας ὅσας αὐτοὶ ζῶσιν ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτήν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἰδοὺ ἐγγίκασιν αἱ ἡμέραι τοῦ θανάτου σου· κάλεσον Ἰησοῦν, καὶ στῆτε παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἐντελοῦμαι αὐτῷ· καὶ ἐπορεύθη Μωυσῆς καὶ Ἰησοῦς εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου, καὶ ἔστησαν παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ κατέβη Κύριος ἐν νεφέλῃ, καὶ ἔστη παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἔστη ὁ στύλος τῆς νεφέλης παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, ἰδοὺ σὺ κοιμᾷ μετὰ τῶν πατέρων σου, καὶ ἀναστὰς οὗτος ὁ λαὸς ἐκπορνεύσει ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων τῆς γῆς, εἰς ἣν οὗτος εἰσπορεύεται, καὶ καταλείψουσί με, καὶ διασκεδάσουσι τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην αὐτοῖς. Καὶ ὀργισθήσομαι θυμῷ εἰς αὐτοὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ καταλείψω αὐτοὺς, καὶ ἀποστρέψω τὸ πρόσωπόν μου ἀπ αὐτῶν, καὶ ἔσται κατάβρωμα· καὶ εὑρήσουσιν αὐτὸν κακὰ πολλὰ καὶ θλίψεις· καὶ ἐρεῖ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, διότι οὐκ ἔστι Κύριος ὁ Θεός μου ἐν ἐμοὶ, εὕροσάν με τὰ κακὰ ταῦτα. Ἐγὼ δὲ ἀποστροφῇ ἀποστρέψω τὸ πρόσωπόν μου ἀπ αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, διὰ πάσας τὰς κακίας ἃς ἐποίησαν, ὅτι ἀπέστρεψαν ἐπὶ θεοὺς ἀλλοτρίους. Καὶ νῦν γράψατε τὰ ῥήματα τῆς ᾠδῆς ταύτης, καὶ διδάξατε αὐτὴν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἐμβαλεῖτε αὐτὴν εἰς τὸ στόμα αὐτῶν, ἵνα γένηταί μοι ἡ ᾠδὴ αὕτη κατὰ πρόσωπον μαρτυροῦσα ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ. Εἰσάξω γὰρ αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, δοῦναι αὐτοῖς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι,

καὶ φάγονται, καὶ ἐμπλησθέντες κορήσουσι, καὶ ἐπιστραφήσονται ἐπὶ θεοὺς ἀλλοτρίους, καὶ λατρεύσουσιν αὐτοῖς, καὶ παροξυνοῦσί με, καὶ διασκεδάσουσι τὴν διαθήκην μου. Καὶ ἀντικαταστήσεται ἡ ᾠδὴ αὕτη κατὰ πρόσωπον μαρτυροῦσα· οὐ γὰρ μὴ ἐπιλησθῇ ἀπὸ στόματος αὐτῶν, καὶ ἀπὸ στόματος τοῦ σπέρματος αὐτῶν· ἐγὼ γὰρ οἶδα τὴν πονηρίαν αὐτῶν, ὅσα ποιοῦσιν ὧδε σήμερον, πρὸ τοῦ εἰσαγαγεῖν με αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν τὴν ἀγαθὴν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν αὐτῶν. Καὶ ἔγραψε Μωυσῆς τὴν ᾠδὴν ταύτην ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, καὶ ἐδίδαξεν αὐτὴν τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ ἐνετείλατο Ἰησοῖ, καὶ εἶπεν, ἀνδρίζου καὶ ἴσχυε, σὺ γὰρ εἰσάξεις τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ εἰς τὴν γῆν, ἣν ὤμοσεν αὐτοῖς Κύριος, καὶ αὐτὸς ἔσται μετὰ σοῦ. Ἡνίκα δὲ συνετέλεσε Μωυσῆς γράφων πάντας τοὺς λόγους τοῦ νόμου τούτου εἰς βιβλίον ἕως εἰς τέλος, καὶ ἐνετείλατο τοῖς Λευίταις τοῖς αἴρουσι τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου, λέγων, λαβόντες τὸ βιβλίον τοῦ νόμου τούτου, θήσετε αὐτὸ ἐκ πλαγίων τῆς κιβωτοῦ τῆς διαθήκης Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν· καὶ ἔσται ἐκεῖ ἐν σοὶ εἰς μαρτύριον. Ὅτι ἐγὼ ἐπίσταμαι τὸν ἐρεθισμόν σου, καὶ τὸν τράχηλόν σου τὸν σκληρόν· ἔτι γὰρ ἐμοῦ ζῶντος μεθ ὑμῶν σήμερον, παραπικραίνοντες ἦτε τὰ πρὸς τὸν Θεόν· πῶς οὐχὶ καὶ ἔσχατον τοῦ θανάτου μου; Ἐκκλησιάσατε πρὸς μὲ τοὺς φυλάρχους ὑμῶν, καὶ τοὺς πρεσβυτέρους ὑμῶν, καὶ τοὺς κριτὰς ὑμῶν, καὶ τοὺς γραμματοεισαγωγεῖς ὑμῶν, ἵνα λαλήσω εἰς τὰ ὦτα αὐτῶν πάντας τοὺς λόγους τούτους· καὶ διαμαρτύρομαι αὐτοῖς τόν τε οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Οἶδα γὰρ ὅτι ἔσχατον τῆς τελευτῆς μου ἀνομίᾳ ἀνομήσετε, καὶ ἐκκλινεῖτε ἐκ τῆς ὁδοῦ ἧς ἐνετειλάμην ὑμῖν, καὶ συναντήσεται ὑμῖν τὰ κακὰ ἔσχατον τῶν ἡμερῶν, ὅτι ποιήσετε τὰ πονηρὰ ἐναντίον Κυρίου, παροργίσαι αὐτὸν ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ὑμῶν. Καὶ ἐλάλησε Μωυσῆς εἰς τὰ ὦτα πάσης ἐκκλησίας

τὰ ῥήματα τῆς ᾠδῆς ταύτης ἕως εἰς τέλος.

# 32

Πρόσεχε οὐρανὲ, καὶ λαλήσω, καὶ ἀκουέτω ἡ γῆ ῥήματα ἐκ στόματός μου. Προσδοκάσθω ὡς ὑετὸς τὸ ἀπόφθεγμά μου, καὶ καταβήτω ὡς δρόσος τὰ ῥήματά μου, ὡσεὶ ὄμβρος ἐπ ἄγρωστιν, καὶ ὡσεὶ νιφετὸς ἐπὶ χόρτον. Ὅτι τὸ ὄνομα Κυρίου ἐκάλεσα· δότε μεγαλωσύνην τῷ Θεῷ ἡμῶν. Θεὸς, ἀληθινὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ κρίσεις· Θεὸς πιστὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἀδικία· δίκαιος καὶ ὅσιος Κύριος. Ἡμάρτοσαν οὐκ αὐτῷ τέκνα μωμητά· γενεὰ σκολιὰ καὶ διεστραμμένη. Ταῦτα Κυρίῳ ἀνταποδίδοτε; οὕτω λαὸς μωρὸς καὶ οὐχὶ σοφός; οὐκ αὐτὸς οὗτός σου πατὴρ ἐκτήσατό σε καὶ ἐποίησέ σε καὶ ἔπλασέ σε; Μνήσθητε ἡμέρας αἰῶνος, σύνετε ἔτη γενεῶν γενεαῖς. ἐπερώτησον τὸν πατέρα σου καὶ ἀναγγελεῖ σοι, τοὺς πρεσβυτέρους σου καὶ ἐροῦσί σοι. Ὅτε διεμέριζεν ὁ ὕψιστος ἔθνη, ὡς διέσπειρεν υἱοὺς Αδὰμ, ἔστησεν ὅρια ἐθνῶν κατὰ ἀριθμὸν ἀγγέλων Θεοῦ. Καὶ ἐγενήθη μερὶς Κυρίου λαὸς αὐτοῦ Ἰακώβ· σχοίνισμα κληρονομίας αὐτοῦ Ἰσραήλ. Αὐτάρκησεν αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν δίψει καύματος ἐν γῇ ἀνύδρῳ· ἐκύκλωσεν αὐτὸν καὶ ἐπαίδευσεν αὐτὸν, καὶ διεφύλαξεν αὐτὸν, ὡς κόρην ὀφθαλμοῦ· Ὡς ἀετὸς σκεπάσαι νοσσιὰν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοῖς νοσσοῖς αὐτοῦ ἐπεπόθησε, διεὶς τὰς πτέρυγας αὐτοῦ ἐδέξατο αὐτοὺς, καὶ ἀνέλαβεν αὐτοὺς ἐπὶ τῶν μεταφρένων αὐτοῦ. Κύριος μόνος ἦγεν αὐτοὺς, οὐκ ἦν μετ αὐτῶν θεὸς ἀλλότριος. Ἀνεβίβασεν αὐτοὺς ἐπὶ τὴν ἰσχὺν τῆς γῆς· ἐψώμισεν αὐτοὺς γεννήματα ἀγρῶν· ἐθήλασαν μέλι ἐκ πέτρας, καὶ ἔλαιον ἐκ στερεᾶς πέτρας. Βούτυρον

βοῶν, καὶ γάλα προβάτων, μετὰ στέατος ἀρνῶν καὶ κριῶν, υἱῶν ταύρων καὶ τράγων, μετὰ στέατος νεφρῶν πυροῦ, καὶ αἷμα σταφυλῆς ἔπιεν οἶνον. Καὶ ἔφαγεν Ἰακὼβ καὶ ἐνεπλήσθη, καὶ ἀπελάκτισεν ὁ ἠγαπημένος· ἐλιπάνθη, ἐπαχύνθη, ἐπλατύνθη, καὶ ἐγκατέλιπε τὸν Θεὸν τὸν ποιήσαντα αὐτὸν, καὶ ἀπέστη ἀπὸ Θεοῦ σωτῆρος αὐτοῦ. Παρώξυνάν με ἐπ ἀλλοτρίοις· ἐν βδελύγμασιν αὐτῶν παρεπίκρανάν με. Εθυσαν δαιμονίοις, καὶ οὐ Θεῷ· θεοῖς οἷς οὐκ ᾔδεισαν· καινοὶ πρόσφατοι ἥκασιν, οὓς οὐκ ᾔδεισαν οἱ πατέρες αὐτῶν. Θεὸν τὸν γεννήσαντά σε ἐγκατέλιπες, καὶ ἐπελάθου Θεοῦ τοῦ τρέφοντός σε. Καὶ εἶδε Κύριος, καὶ ἐζήλωσε· καὶ παρωξύνθη δι ὀργὴν υἱῶν αὐτοῦ καὶ θυγατέρων, καὶ εἶπεν, ἀποστρέψω τὸ πρόσωπόν μου ἀπ αὐτῶν, καὶ δείξω τί ἔσται αὐτοῖς ἐπ ἐσχάτων ἡμερῶν· ὅτι γενεὰ ἐξεστραμμένη ἐστίν, υἱοὶ οἷς οὐκ ἔστι πίστις ἐν αὐτοῖς. Αὐτοὶ παρεζήλωσάν με ἐπ οὐ Θεῷ, παρώξυνάν με ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν· κἀγὼ παραζηλώσω αὐτοὺς ἐπ οὐκ ἔθνει, ἐπὶ ἔθνει ἀσυνέτῳ παροργιῶ αὐτούς. Ὅτι πῦρ ἐκκέκαυται ἐκ τοῦ θυμοῦ μου, καυθήσεται ἕως ᾅδου κάτω· καταφάγεται γῆν καὶ τὰ γεννήματα αὐτῆς· φλέξει θεμέλια ὀρέων. Συνάξω εἰς αὐτοὺς κακὰ, καὶ τὰ βέλη μου συμπολεμήσω εἰς αὐτούς. Τηκόμενοι λιμῷ καὶ βρώσει ὀρνέων, καὶ ὀπισθότονος ἀνίατος· ὀδόντας θηρίων ἐπαποστελῶ εἰς αὐτοὺς, μετὰ θυμοῦ συρόντων ἐπὶ γῆν. Ἔξωθεν ἀτεκνώσει αὐτοὺς μάχαιρα, καὶ ἐκ τῶν ταμιείων, φόβος· νεανίσκος σὺν παρθένῳ, θηλάζων μετὰ καθεστηκότος πρεσβύτου. Εἶπα, διασπερῶ αὐτοὺς, παύσω δὲ ἐξ ἀνθρώπων τὸ μνημόσυνον αὐτῶν. Εἰ μὴ δι ὀργὴν ἐχθρῶν, ἵνα μὴ μακροχρονίσωσι, ἵνα μὴ συνεπιθῶνται οἱ ὑπεναντίοι· μὴ εἴπωσιν, ἡ χεὶρ ἡμῶν ἡ ὑψηλὴ, καὶ οὐχὶ Κύριος, ἐποίησε ταῦτα πάντα. Ἔθνος ἀπολωλεκὸς βουλήν ἐστι, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς ἐπιστήμη. Οὐκ ἐφρόνησαν συνιέναι· ταῦτα

καταδεξάσθωσαν εἰς τὸν ἐπιόντα χρόνον. Πῶς διώξεται εἷς χιλίους, καὶ δύο μετακινήσουσι μυριάδας, εἰ μὴ ὁ Θεὸς ἀπέδοτο αὐτοὺς, καὶ Κύριος παρέδωκεν αὐτούς; Ὅτι οὐκ εἰσὶν ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν οἱ θεοὶ αὐτῶν· οἱ δὲ ἐχθροὶ ἡμῶν ἀνόητοι. Ἐκ γὰρ ἀμπέλου Σοδόμων ἡ ἄμπελος αὐτῶν, καὶ ἡ κληματὶς αὐτῶν ἐκ Γομόῤῥας· σταφυλὴ αὐτῶν σταφυλὴ χολῆς, βότρυς πικρίας αὐτοῖς. Θυμὸς δρακόντων ὁ οἶνος αὐτῶν, καὶ θυμὸς ἀσπίδων ἀνίατος. Οὐκ ἰδοὺ ταῦτα συνῆκται παρ ἐμοὶ, καὶ ἐσφράγισται ἐν τοῖς θησαυροῖς μου; Ἐν ἡμέρᾳ ἐκδικήσεως ἀνταποδώσω, ὅταν σφαλῇ ὁ ποὺς αὐτῶν· ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα ἀπωλίας αὐτοῖς, καὶ πάρεστιν ἕτοιμα ὑμῖν. Ὅτι κρινεῖ Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοῖς δούλοις αὐτοῦ παρακληθήσεται· εἶδε γὰρ παραλελυμένους αὐτοὺς, καὶ ἐκλελοιπότας ἐν ἐπαγωγῇ, καὶ παρειμένους· Καὶ εἶπε Κύριος, ποῦ εἰσιν οἱ θεοὶ αὐτῶν, ἐφ οἷς ἐπεποίθεισαν ἐπ αὐτοῖς, ὧν τὸ στέαρ τῶν θυσιῶν αὐτῶν ἠσθίετε, καὶ ἐπίνετε τὸν οἶνον τῶν σπονδῶν αὐτῶν; ἀναστήτωσαν καὶ βοηθησάτωσαν ὑμῖν καὶ γενηθήτωσαν ὑμῖν σκεπασταί. Ἴδετε ἴδετε ὅτι ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστι Θεὸς πλὴν ἐμοῦ· ἐγὼ ἀποκτείνω, καὶ ζῇν ποιήσω· πατάξω, κἀγὼ ἰάσομαι· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἐξελεῖται ἐκ τῶν χειρῶν μου. Ὅτι ἀρῶ εἰς τὸν οὐρανὸν τὴν χεῖρά μου, καὶ ὀμοῦμαι τὴν δεξιάν μου· καὶ ἐρῶ, ζῶ ἐγὼ εἰς τὸν αἰῶνα· Ὅτι παροξυνῶ ὡς ἀστραπὴν τὴν μάχαιράν μου, καὶ ἀνθέξεται κρίματος ἡ χείρ μου, καὶ ἀποδώσω δίκην τοῖς ἐχθροῖς, καὶ τοῖς μισοῦσί με ἀνταποδώσω. Μεθύσω τὰ βέλη μου ἀφ αἵματος, καὶ ἡ μάχαιρά μου φάγεται κρέα ἀφ αἵματος τραυματιῶν καὶ αἰχμαλωσίας ἀπὸ κεφαλῆς ἀρχόντων ἐχθρῶν. Εὐφράνθητε οὐρανοὶ ἅμα αὐτῷ, καὶ προσκυνησάτωσαν αὐτῷ πάντες ἄγγελοι Θεοῦ· εὐφράνθητε ἔθνη μετὰ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐνισχυσάτωσαν αὐτῷ πάντες υἱοὶ Θεοῦ, ὅτι τὸ αἷμα τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἐκδικᾶται· καὶ

ἐκδικήσει καὶ ἀνταποδώσει δίκην τοῖς ἐχθροῖς, καὶ τοῖς μισοῦσιν ἀνταποδώσει· καὶ ἐκκαθαριεῖ Κύριος τὴν γῆν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἔγραψε Μωυσῆς τὴν ᾠδὴν ταύτην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἐδίδαξεν αὐτὴν τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ· καὶ εἰσῆλθε Μωυσῆς, καὶ ἐλάλησε πάντας τοὺς λόγους τοῦ νόμου τούτου εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ, αὐτὸς καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυή. Καὶ ἐξετέλεσε Μωυσῆς λαλῶν παντὶ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, προσέχετε τῇ καρδίᾳ ἐπὶ πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς ἐγὼ διαμαρτύρομαι ὑμῖν σήμερον, ἃ ἐντελεῖσθε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν, φυλάσσειν καὶ ποιεῖν πάντας τοὺς λόγους τοῦ νόμου τούτου. Ὅτι οὐχὶ λόγος κενὸς οὗτος ὑμῖν· ὅτι αὕτη ἡ ζωὴ ὑμῶν, καὶ ἕνεκεν τοῦ λόγου τούτου μακροημερεύσετε ἐπὶ τῆς γῆς, εἰς ἣν ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην ἐκεῖ κληρονομῆσαι. Καὶ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, λέγων, ἀνάβηθι εἰς τὸ ὄρος τὸ Ἀβαρίμ, τοῦτο ὄρος Ναβαῦ ὅ ἐστιν ἐν γῇ Μωὰβ κατὰ πρόσωπον Ἰεριχὼ, καὶ ἴδε τὴν γῆν Χαναάν, ἣν ἐγὼ δίδωμι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ τελεύτα ἐν τῷ ὄρει εἰς ὃ ἀναβαίνεις ἐκεῖ, καὶ προστέθητι πρὸς τὸν λαόν σου· ὃν τρόπον ἀπέθανεν Ἀαρὼν ὁ ἀδελφός σου ἐν Ὣρ τῷ ὄρει, καὶ προσετέθη πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ. Ὅτι ἠπειθήσατε τῷ ῥήματί μου ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ ὕδατος ἀντιλογίας Κάδης ἐν τῇ ἐρήμῳ Σὶν, διότι οὐχ ἡγιάσατέ με ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Ἀπέναντι ὄψει τὴν γῆν, καὶ ἐκεῖ οὐκ εἰσελεύσῃ.

# 33

Καὶ αὕτη ἡ εὐλογία ἣν ηὐλόγησε Μωυσῆς ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ πρὸ τῆς τελευτῆς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε, Κύριος ἐκ

Σινὰ ἥκει, καὶ ἐπέφανεν ἐκ Σηεὶρ ἡμῖν, καὶ κατέσπευσεν ἐξ ὄρους Φαρὰν, σὺν μυρίασι Κάδης, ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ ἄγγελοι μετ αὐτοῦ. Καὶ ἐφείσατο τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἡγιασμένοι ὑπὸ τὰς χεῖράς σου· καὶ οὗτοι ὑπὸ σέ εἰσί· καὶ ἐδέξατο ἀπὸ τῶν λόγων αὐτοῦ νόμον, ὃν ἐνετείλατο ἡμῖν Μωυσῆς, κληρονομίαν συναγωγαῖς Ἰακώβ. Καὶ ἔσται ἐν τῷ ἠγαπημένῳ ἄρχων, συναχθέντων ἀρχόντων λαῶν ἅμα φυλαῖς Ἰσραήλ. Ζήτω Ῥουβὴν, καὶ μὴ ἀποθανέτω, καὶ ἔστω πολὺς ἐν ἀριθμῷ. Καὶ αὕτη Ἰούδα· εἰσάκουσον Κύριε φωνῆς Ἰούδα, καὶ εἰς τὸν λαὸν αὐτοῦ ἔλθοις ἄν· αἱ χεῖρες αὐτοῦ διακρινοῦσιν αὐτῷ, καὶ βοηθὸς ἐκ τῶν ἐχθρῶν ἔσῃ. Καὶ τῷ Λευὶ εἶπε, δότε Λευὶ δήλους αὐτοῦ, καὶ ἀλήθειαν αὐτοῦ τῷ ἀνδρὶ τῷ ὁσίῳ, ὃν ἐπείρασαν αὐτὸν ἐν πείρᾳ· ἐλοιδόρησαν αὐτὸν ἐφ ὕδατος ἀντιλογίας· Ὁ λέγων τῷ πατρὶ καὶ τῇ μητρὶ, οὐχ ἑώρακά σε, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ οὐκ ἐπέγνω, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ἀπέγνω· ἐφύλαξε τὰ λόγιά σου, καὶ τὴν διαθήκην σου διετήρησε. Δηλώσουσι τὰ δικαιώματά σου τῷ Ἰακὼβ, καὶ τὸν νόμον σου τῷ Ἰσραήλ· ἐπιθήσουσι θυμίαμα ἐν ὀργῇ σου διαπαντὸς ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν σου. Εὐλόγησον, Κύριε, τὴν ἰσχὺν αὐτοῦ, καὶ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ δέξαι· κάταξον ὀσφῦν ἐχθρῶν ἐπανεστηκότων αὐτῷ, καὶ οἱ μισοῦντες αὐτὸν μὴ ἀναστήτωσαν. Καὶ τῷ Βενιαμὶν εἶπεν, ἠγαπημένος ὑπὸ Κυρίου κατασκηνώσει πεποιθὼς, καὶ ὁ Θεὸς σκιάζει ἐπ αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ ἀναμέσον τῶν ὤμων αὐτοῦ κατέπαυσε. Καὶ τῷ Ἰωσὴφ εἶπεν, ἀπ εὐλογίας Κύριου ἡ γῆ αὐτοῦ, ἀπὸ ὠρῶν οὐρανοῦ, καὶ δρόσου, καὶ ἀπὸ ἀβύσσων πηγῶν κάτωθεν, καὶ καθ ὥραν γεννημάτων ἡλίου τροπῶν, καὶ ἀπὸ συνόδων μηνῶν, ἀπὸ κορυφῆς ὀρέων ἀρχῆς, καὶ ἀπὸ κορυφῆς βουνῶν ἀενάων, καὶ καθ ὥραν γῆς πληρώσεως· καὶ τὰ δεκτὰ τῷ ὀφθέντι ἐν τῇ βάτῳ ἔλθοισαν ἐπὶ κεφαλὴν Ἰωσὴφ, καὶ ἐπὶ

κορυφῆς δοξασθεὶς ἐπ ἀδελφοῖς. Πρωτότοκος ταύρου τὸ κάλλος αὐτοῦ, κέρατα μονοκέρωτος τὰ κέρατα αὐτοῦ· ἐν αὐτοῖς ἔθνη κερατιεῖ ἅμα, ἕως ἀπ ἄκρου γῆς· αὗταί μυρίαδες Ἐφραὶμ, καὶ αὗται χιλιάδες Μανασσῆ. Καὶ τῷ Ζαβουλὼν εἶπεν, εὐφράνθητι Ζαβουλὼν ἐν ἐξοδίᾳ σου, καὶ Ἰσσάχαρ ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτοῦ. Ἔθνη ἐξολοθρεύσουσι· καὶ ἐπικαλέσεσθε ἐκεῖ, καὶ θύσετε ἐκεῖ θυσίαν δικαιοσύνης· ὅτι πλοῦτος θαλάσσης θηλάσει σε, καὶ ἐμπόρια παράλιον κατοικούντων. Καὶ τῷ Γὰδ εἶπεν, εὐλογημένος ἐμπλατύνων Γάδ· ὡς λέων ἐνεπαύσατο, συντρίψας βραχίονα καὶ ἄρχοντα. Καὶ εἶδεν ἀπαρχὴν αὐτοῦ, ὅτι ἐκεῖ ἐμερίσθη γῆ ἀρχόντων συνηγμένων ἅμα ἀρχηγοῖς λαῶν· δικαιοσύνην Κύριος ἐποίησε, καὶ κρίσιν αὐτοῦ μετὰ Ἰσραήλ. Καὶ τῷ Δὰν εἶπε, Δὰν σκύμνος λέοντος, καὶ ἐκπηδήσεται ἐκ τοῦ Βασάν. Καὶ τῷ Νεφθαλὶ εἶπε, Νεφθαλὶ πλησμονὴ δεκτῶν· καὶ ἐμπλησθήτω εὐλογία παρὰ Κυρίου· θάλασσαν καὶ Λίβα κληρονομήσει. Καὶ τῷ Ἀσὴρ εἶπεν, εὐλογημένος ἀπὸ τέκνων Ἀσήρ, καὶ ἔσται δεκτὸς τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ· βάψει ἐν ἐλαίῳ τὸν πόδα αὐτοῦ. Σίδηρος καὶ χαλκὸς τὸ ὑπόδημα αὐτοῦ ἔσται· ὡς αἱ ἡμέραι σου, ἡ ἰσχύς σου. Οὐκ ἔστιν ὥσπερ ὁ Θεὸς τοῦ ἠγαπημένου, ὁ ἐπιβαίνων ἐπὶ τὸν οὐρανὸν βοηθός σου, καὶ ὁ μεγαλοπρεπὴς τοῦ στερεώματος. Καὶ σκεπάσει σε Θεοῦ ἀρχὴ, καὶ ὑπὸ ἰσχὺν βραχιόνων ἀενάων· καὶ ἐκβαλεῖ ἀπὸ προσώπου σου ἐχθρὸν, λέγων, ἀπόλοιο. Καὶ κατασκηνώσει Ἰσραὴλ πεποιθὼς, μόνος ἐπὶ γῆς Ἰακὼβ, ἐπὶ σίτῳ καὶ οἴνῳ· καὶ ὁ οὐρανός σοι συννεφὴς δρόσῳ. Μακάριος σὺ Ἰσραήλ· τίς ὅμοιός σοι λαὸς σωζόμενος ὑπὸ Κυρίου; ὑπερασπιεῖ ὁ βοηθός σου, καὶ ἡ μάχαιρα καύχημά σου· καὶ ψεύσονταί σε οἱ ἐχθροί σου· καὶ σὺ ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτῶν ἐπιβήσῃ.

# 34

Καὶ ἀνεβη Μωυσῆς ἀπὸ Ἀραβὼθ Μωὰβ ἐπὶ τὸ ὄρος Ναβαῦ, ἐπὶ κορυφὴν Φασγὰ, ἥ ἐστιν ἐπὶ προσώπου Ἰεριχώ· καὶ ἔδειξεν αὐτῷ Κύριος πᾶσαν τὴν γῆν Γαλαὰδ ἕως Δὰν, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Νεφθαλὶ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Ἐφραὶμ, καὶ Μανασσῆ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Ἰούδα ἕως τῆς θαλάσσης τῆς ἐσχάτης, καὶ τὴν ἔρημον, καὶ τὰ περίχωρα Ἰεριχὼ, πόλιν φοινίκων ἕως Σηγώρ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν, αὕτη ἡ γῆ ἣν ὤμοσα τῷ Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ, λέγων, τῷ σπέρματι ὑμῶν δώσω αὐτήν· καὶ ἔδειξα τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἐκεῖ οὐκ εἰσελεύσῃ. Καὶ ἐτελεύτησε Μωυσῆς ὁ οἰκέτης Κυρίου ἐν γῇ Μωὰβ διὰ ῥήματος Κυρίου. Καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν Γαὶ ἐγγὺς οἴκου Φογώρ· καὶ οὐκ εἶδεν οὐδεὶς τὴν ταφὴν αὐτοῦ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Μωυσῆς δὲ ἦν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι ἐτῶν ἐν τῷ τελευτᾷν αὐτόν· οὐκ ἠμαυρώθησαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ, οὐδὲ ἐφθάρησαν τὰ χελώνια αὐτοῦ. Καὶ ἔκλαυσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ Μωυσῆν ἐν Ἀραβὼθ Μωὰβ ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχὼ τριάκοντα ἡμέρας, καὶ συνετελέσθησαν αἱ ἡμέραι πένθους κλαυθμοῦ Μωυσῆ. Καὶ Ἰησοῦς υἱὸς Ναυῆ ἐνεπλήσθη πνεύματος συνέσεως, ἐπέθηκε γὰρ Μωυσῆς τὰς χεῖρας αὐτοὺ ἐπ αὐτόν· καὶ εἰσήκουσαν αὐτοῦ οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ ἐποίησαν καθότι ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ. Καὶ οὐκ ἀνέστη ἔτι προφήτης ἐν Ἰσραὴλ ὡς Μωσῆς· ὃν ἔγνω Κύριος αὐτὸν πρόσωπον κατὰ πρόσωπον ἐν πᾶσι τοῖς σημείοις καὶ τέρασιν, ὃν ἀπέστειλεν αὐτὸν Κύριος ποιῆσαι αὐτὰ ἐν γῇ Αἰγύπτῳ Φαραὼ, καὶ τοῖς θεράπουσιν αὐτοῦ, καὶ πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ· τὰ θαυμάσια τὰ μεγάλα, καὶ τὴν χεῖρα τὴν κραταιὰν, ἃ ἐποίησε Μωυσῆς ἔναντι παντὸς Ἰσραήλ.

# ΙΗΣΟΥΣ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο μετὰ τὴν τελευτὴν Μωυσῆ, εἶπε Κύριος τῷ Ἰησοῖ υἱῷ Ναυῆ τῷ ὑπουργῷ Μωυσῆ, λέγων, Μωυσῆς ὁ θεράπωνμου τετελεύτηκε. νῦν οὖν ἀναστὰς, διάβηθι τὸν Ἰορδάνην σὺ καὶ πᾶς ὁ λαὸς οὗτος εἰς τὴν γῆν, ἣν ἐγὼ δίδωμι αὐτοῖς. πᾶς ὁ τόπος ἐφ ὃν ἂν ἐπιβῆτε τῷ ἴχνει τῶν ποδῶν ὑμῶν, ὑμῖν δώσω αὐτόν, ὃν τρόπον εἴρηκα τῷ Μωυσῇ· Τὴν ἔρημον καὶ τὸν Ἀντιλίβανον, ἕως τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου, ποταμοῦ Εὐφράτου, καὶ ἕως τῆς θαλάσσης τῆς ἐσχάτης· ἀφ ἡλίου δυσμῶν ἔσται τὰ ὅρια ὑμῶν. οὐκ ἀντιστήσεται ἄνθρωπος κατενώπιον ὑμῶν πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου· καὶ ὥσπερ ἤμην μετὰ Μωυσῆ, οὕτως ἔσομαι καὶ μετὰ σοῦ, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω σε οὐδ ὑπερόψομαί σε. Ἴσχυε καὶ ἀνδρίζου· σὺ γὰρ ἀποδιεῖς τῷ λαῷ τούτῳ τὴν γῆν, ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσινν ὑμῶν δοῦναι αὐτοῖς. Ἴσχυε οὖν καὶ ἀνδρίζου, φυλάσσεσθαι καὶ ποιεῖν καθότι ἐνετείλατό σοι Μωυσῆς ὁ παῖς μου· καὶ οὐκ ἐκκλινεῖς ἀπ αὐτῶν εἰς δεξιὰ οὐδὲ εἰς ἀριστερὰ, ἵνα συνῇς ἐν πᾶσιν οἷς ἐὰν πράσσῃς. Καὶ οὐκ ἀποστήσεται ἡ βίβλος τοῦ νόμου τούτου ἐκ τοῦ στόματός σου, καὶ μελετήσεις ἐν αὐτῇ ἡμέρας

καὶ νυκτὸς, ἵνα εἰδῇς ποιεῖν πάντα τὰ γεγραμμένα· τότε εὐοδωθήσῃ, καὶ εὐοδώσεις τὰς ὁδούς σου, καὶ τότε συνήσεις. Ἰδοὺ ἐντέαλμαί σοι· ἴσχυε καὶ ἀνδρίζου, μὴ δειλιάσῃς, μηδὲ φοβηθῇ, ὅτι μετὰ σοῦ Κύριος ὁ Θεός σου εἰς πάντα οὗ ἐὰν πορεύῃ· Καὶ ἐνετείλατο Ἰησοῦς τοῖς γραμματεῦσιν τοῦ λαοῦ, λέγων, Εἰσέλθατε κατὰ μέσον τῆς παρεμβολῆς τοῦ λαοῦ, καὶ ἐντείλασθε τῷ λαῷ, λέγοντες, ἑτοιμάζεσθε ἐπισιτισμόν, ὅτι ἔτι τρεῖς ἡμέραι καὶ ὑμεῖς διαβαίνετε τὸν Ἰορδάνην τοῦτον, εἰσελθόντες κατασχεῖν τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ὑμῶν δίδωσιν ὑμῖν. Καὶ τῷ Ῥουβὴν, καὶ τῷ Γὰδ, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ εἶπεν Ἰησοῦς, μνήσθητε τὸ ῥῆμα ὃ ἐνετείλατο ὑμῖν Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου, λέγων, Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν κατέπαυσεν ὑμᾶς, καὶ ἔδωκεν ὑμῖν τὴν γῆν ταύτην. Αἱ γυναῖκες ὑμῶν καὶ τὰ παιδία ὑμῶν καὶ τὰ κτήνη ὑμῶν κατοικείτωσαν ἐν τῇ γῇ, ᾗ ἔδωκεν ὑμῖν· ὑμεῖς δὲ διαβήσεσθε εὔζωνοι πρότεροι τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν πᾶς ὁ ἰσχύων· καὶ συμμαχήσετε αὐτοῖς, ἕως ἂν καταπαύσῃ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, ὥσπερ καὶ ὑμᾶς, καὶ κληρονομήσωσι καὶ οὗτοι τὴν γῆν, ἣν Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν δίδωσιν αὐτοῖς· καὶ ἀπελεύσεσθε ἕκαστος εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, ἣν ἔδωκεν ὑμῖν Μωυσῆς εἰς τὸ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐπ ἀνατολῶν ἡλίου. Καὶ ἀποκριθέντες τῷ Ἰησοῦ εἶπαν, πάντα ὅσα ἐὰν ἐντείλῃ ἡμῖν, ποιήσομεν, καὶ εἰς πάντα τόπον οὗ ἐὰν ἀποστείλῃς ἡμᾶς, πορευσόμεθα. Κατὰ πάντα ὅσα ἠκούσαμεν Μωυσῆ, ἀκουσόμεθά σοῦ· πλὴν ἔστω Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν μετὰ σοῦ, ὃν τρόπον ἦν μετὰ Μωυσῆ. Ὁ δὲ ἄνθρωπος ὃς ἂν ἀπειθήσῃ σοι, καὶ ὅστις μὴ ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων σου καθότι ἐὰν ἐντείλῃ αὐτῷ, ἀποθανέτω· ἀλλὰ ἴσχυε καὶ ἀνδρίζου.

# 2

Καὶ ἀπέστειλεν Ἰησοῦς υἱὸς Ναυῆ ἐκ Σαττὶν δύο νεανίσκους κατασκοπεῦσαι, λέγων, ἀνάβητε καὶ ἴδετε τὴν γῆν καὶ τὴν Ἰεριχώ· καὶ πορευθέντες οἱ δύο νεανίσκοι εἰσήλθοσαν εἰς Ἰεριχώ· καὶ εἰσήλθοσαν εἰς οἰκίαν γυναικὸς πόρνης, ᾗ ὄνομα Ῥαάβ· Καὶ κατέλυσαν ἐκεῖ. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ βασιλεῖ Ἰεριχὼ, λέγοντες, εἰσπεπόρευνται ὧδε ἄνδρες τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατασκοπεῦσαι τὴν γῆν. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Ἰεριχὼ, καὶ εἶπε πρὸς Ῥαὰβ, λέγων, ἐξάγαγε τοὺς ἄνδρας τοὺς εἰσπεπορευμένους εἰς τὴν οἰκίαν σου τὴν νύκτα, κατασκοπεῦσαι γὰρ τὴν γῆν ἥκασι. Καὶ λαβοῦσα ἡ γυνὴ τοὺς δύο ἄνδρας, ἔκρυψεν αὐτούς· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, λέγουσα, εἰσεληλύθασι πρὸς μὲ οἱ ἄνδρες, ὡς δὲ ἡ πύλη ἐκλείετο ἐν τῷ σκότει, καὶ οἱ ἄνδρες ἐξῆλθον· οὐκ ἐπίσταμαι ποῦ πεπόρευνται· καταδιώξατε ὀπίσω αὐτῶν, εἰ καταλήψεσθε αὐτούς. Αὕτη δὲ ἀνεβίβασεν αὐτοὺς ἐπὶ τὸ δῶμα, καὶ ἔκρυψεν αὐτοὺς ἐν τῇ λινοκαλάμῃ τῇ ἐστοιβασμένῃ αὐτῇ ἐπὶ τοῦ δώματος. Καὶ οἱ ἄνδρες κατεδίωξαν ὀπίσω αὐτῶν ὁδὸν τὴν ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου ἐπὶ τὰς διαβάσεις, καὶ ἡ πύλη ἐκλείσθη. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐξῆλθοσαν οἱ διώκοντες ὀπίσω αὐτῶν, καὶ αὐτοὶ δὲ πρὶν ἢ κοιμηθῆναι αὐτοὺς, αὕτη δὲ ἀνέβη πρὸς αὐτοὺς ἐπὶ τὸ δῶμα, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἐπίσταμαι ὅτι ἔδωκεν ὑμῖν Κύριος τὴν γῆν· ἐπιπέπτωκε γὰρ ὁ φόβος ὑμῶν ἐφ ἡμᾶς. Ἀκηκόαμεν γὰρ ὅτι κατεξήρανε Κύριος ὁ Θεὸς τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν ἀπὸ προσώπου ὑμῶν, ὅτε ἐξεπορεύεσθε ἐκ γῆς Αἰγυπτου, καὶ ὅσα ἐποίησε τοῖς δυσὶ βασιλεῦσι τῶν Ἀμορῥαίων, οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, τῷ Σηὼν καὶ Ὢγ, οὓς ἐξωλοθρεύσατε αὐτούς. Καὶ ἀκούσαντες ἡμεῖς

ἐξέστημεν τῇ καρδίᾳ ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔστη ἔτι πνεῦμα ἐν οὐδενὶ ἡμῶν ἀπὸ προσώπου ὑμῶν· ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, Θεὸς ἐν οὐρανῷ ἄνω καὶ ἐπὶ τῆς γῆς κάτω. Καὶ νῦν ὀμόσατέ μοι Κύριον τὸν Θεὸν, ὅτι ποιῶ ὑμῖν ἔλεος, καὶ ποιήσατε Καὶ ὑμεῖς ἔλεος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός μου, καὶ ζωγρήσατε τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς μου, τὴν μητέρα μου, καὶ τοὺς ἀδελφούς μου, καὶ πάντα τὸν οἰκόν μου, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτοῖς, καὶ ἐξελεῖσθε τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου. Καὶ εἶπαν αὐτῇ οἱ ἄνδρες, ἡ ψυχὴ ἡμῶν ἀνθ ὑμῶν εἰς θάνατον· καὶ αὐτὴ εἶπεν, ὡς ἂν παραδῷ Κύριος ὑμῖν τὴν πόλιν, ποιήσετε εἰς ἐμὲ ἔλεος καὶ ἀλήθειαν. Καὶ κατεχάλασεν αὐτοὺς διὰ τῆς θυρίδος, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, εἰς τὴν ὀρεινὴν ἀπέλθετε, μὴ συναντήσωσιν ὑμῖν οἱ καταδιώκοντες, καὶ κρυβήσεσθε ἐκεῖ τρεῖς ἡμέρας ἕως ἂν ἀποστρέψωσιν οἱ καταδιώκοντες ὀπίσω ὑμῶν, καὶ μετὰ ταῦτα ἀπελεύσεσθε εἰς τὴν ὁδὸν ὑμῶν. Καὶ εἶπαν πρὸς αὐτὴν οἱ ἄνδρες, ἀθῶοι ἐσμὲν τῷ ὅρκῳ σου τούτῳ. Ἰδοὺ ἡμεῖς εἰσπορευόμεθα εἰς μέρος τῆς πόλεως, καὶ θήσεις τὸ σημεῖον, τὸ σπαρτίον τὸ κόκκινον τοῦτο ἐκδήσεις εἰς τὴν θυρίδα δι ἧς κατεβίβασας ἡμᾶς δι αὐτῆς· τὸν δὲ πατέρα σου, καὶ τὴν μητέρα σου, καὶ τοὺς ἀδελφούς σου, καὶ πάντα τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου συνάξεις πρὸς σεαυτὴν εἰς τὴν οἰκίαν σου. Καὶ ἔσται πᾶς ὃς ἂν ἐξέλθῃ τὴν θύραν τῆς οἰκίας σου ἔξω, ἔνοχος ἑαυτῷ ἔσται, ἡμεῖς δὲ ἀθῶοι τῷ ὅρκῳ σου τούτῳ· καὶ ὅσοι ἐὰν γένωνται μετὰ σοῦ ἐν τῇ οἰκίᾳ σου, ἡμεῖς ἔνοχοι ἐσόμεθα. Ἐὰν δέ τις ἡμᾶς ἀδικήσῃ ἢ καὶ ἀποκαλύψῃ τοὺς λόγους ἡμῶν τούτους, ἐσόμεθα ἀθῶοι τῷ ὅρκῳ σου τούτῳ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, κατὰ τὸ ῥῆμα ὑμῶν ἔστω· καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς, καὶ ἐπορεύθησαν. Καὶ ἦλθοσαν εἰς τὴν ὀρεινήν, καὶ κατέμειναν ἐκεῖ τρεῖς ἡμέρας· καὶ ἐξεζήτησαν οἱ καταδιώκοντες πάσας τὰς ὁδοὺς, καὶ οὐχ εὗροσαν. Καὶ

ὑπέστρεψαν οἱ δύο νεανίσκοι, καὶ κατέβησαν ἐκ τοῦ ὄρους· καὶ διέβησαν πρὸς Ἰησοῦν υἱὸν Ναυὴ, καὶ διηγήσαντο αὐτῷ πάντα τὰ συμβεβηκότα αὐτοῖς. Καὶ εἶπαν πρὸς Ἰησοῦν, ὅτι παραδέδωκε Κύριος πᾶσαν τὴν γῆν ἐν χειρὶ ἡμῶν, καὶ κατέπτηχε πᾶς ὁ κατοικῶν τὴν γῆν ἐκείνην ἀφ ἡμῶν.

# 3

Καὶ ὤρθρισεν Ἰησοῦς τοπρωΐ, καὶ ἀπῆρεν ἐκ Σαττὶν, καὶ ἦλθοσαν ἕως τοῦ Ἰορδάνου, καὶ κατέλυσαν ἐκεῖ πρὸ τοῦ διαβῆναι. Καὶ ἐγένετο μετὰ τρεῖς ἡμέρας διῆλθον οἱ γραμματεῖς διὰ τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἐνετείλαντο τῷ λαῷ, λέγοντες, ὅταν ἴδητε τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ τοὺς ἱερεῖς ἡμῶν καὶ τοὺς Λευίτας αἴροντας αὐτὴν, ἀπαρεῖτε ἀπὸ τῶν τόπων ὑμῶν, καὶ πορεύσεσθε ὀπίσω αὐτῆς. Ἀλλὰ μακρὰν ἔστω ἀναμέσον ὑμῶν καὶ ἐκείνης, ὅσον δισχιλίους πήχεις στήσεσθε· μὴ προσεγγίσητε αὐτῇ, ἵνα ἐπίστησθε τὴν ὁδὸν, ἣν πορεύσεσθε αὐτήν· οὐ γὰρ πεπόρευσθε τὴν ὁδὸν ἀπ ἐχθὲς καὶ τρίτης ἡμέρας. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τῷ λαῷ, ἁγνίσασθε εἰς αὔριον, ὅτι αὔριον ποιήσει Κύριος ἐν ὑμῖν θαυμαστά. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τοῖς ἱερεῦσιν, ἄρατε τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου, καὶ προπορεύεσθε τοῦ λαοῦ· καὶ ᾖραν οἱ ἱερεῖς τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου, καὶ ἐπορεύοντο ἔμπροσθεν τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἄρχομαι ὑψῶσαί σε κατενώπιον πάντων υἱῶν Ἰσραὴλ, ἵνα γνῶσιν ὅτι καθότι ἤμην μετὰ Μωυσῆ, οὕτως ἔσομαι καὶ μετὰ σοῦ. Καὶ νῦν ἔντειλαι τοῖς ἱερεῦσι τοῖς αἴρουσι τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης, λέγων, ὡς ἂν εἰσέλθητε ἐπὶ μέρους τοῦ ὕδατος τοῦ

Ἰορδάνου, καὶ ἐν τῷ Ἰορδάνῃ στήσεσθε. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, προσαγάγετε ὧδε, καὶ ἀκούσατε τὸ ῥῆμα Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Ἐν τούτῳ γνώσεσθε, ὅτι Θεὸς ζῶν ἐν ὑμῖν, καὶ ὀλοθρεύων ὀλοθρεύσει ἀπὸ προσώπου ἡμῶν τὸν Χαναναῖον, καὶ τὸν Χετταῖον, καὶ τὸν Φερεζαῖον, καὶ τὸν Εὐαῖον, καὶ τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ τὸν Γεργεσαῖον, καὶ τὸν Ἰεβουσαῖον. Ἰδοὺ ἡ κιβωτὸς διαθήκης Κυρίου πάσης τῆς γῆς διαβαίνει τὸν Ἰορδάνην. Προχειρίσασθε ὑμῖν δώδεκα ἄνδρας ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἕνα ἀφ ἑκάστης φυλῆς. Καὶ ἔσται, ὡς ἂν καταπαύσωσιν οἱ πόδες τῶν ἱερέων τῶν αἰρόντων τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου πάσης τῆς γῆς ἐν τῷ ὕδατι τοῦ Ἰορδάνου, τὸ ὕδωρ τοῦ Ἰορδάνου ἐκλείψει, τὸ δὲ ὕδωρ τὸ καταβαῖνον στήσεται. Καὶ ἀπῆρεν ὁ λαὸς ἐκ τῶν σκηνωμάτων αὐτῶν διαβῆναι τὸν Ἰορδάνην, οἱ δὲ ἱερεῖς ᾖροσαν τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου πρότεροι τοῦ λαοῦ. Ὡς δὲ εἰσεπορεύοντο οἱ ἱερεῖς οἱ αἴροντες τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης ἐπὶ τὸν Ἰορδάνην, καὶ οἱ πόδες τῶν ἱερέων τῶν αἰρόντων τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου ἐβάφησαν εἰς μέρος τοῦ ὕδατος τοῦ Ἰορδάνου· ὁ δὲ Ἰορδάνης ἐπληροῦτο καθ ὅλην τὴν κρηπίδα αὐτοῦ, ὡσεὶ ἡμέραι θερισμοῦ πυρῶν· Καὶ ἔστη τὰ ὕδατα τὰ καταβαίνοντα ἄνωθεν, ἔστη πῆγμα ἓν ἀφεστηκὸς μακρὰν σφόδρα σφοδρῶς ἕως μέρους Καριαθιαρίμ· τὸ δὲ καταβαῖνον κατέβη εἰς τὴν θάλασσαν Ἄραβα θάλασσαν ἁλὸς, ἕως εἰς τὸ τέλος ἐξέλιπε· καὶ ὁ λαὸς εἱστήκει ἀπέναντι Ἰεριχώ. Καὶ ἔστησαν οἱ ἱερεῖς οἱ αἴροντες τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου ἐπὶ ξηρᾶς ἐν μέσῳ τοῦ Ἰορδάνου· καὶ πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ διέβαινον διὰ ξηρᾶς, ἕως συνετέλεσε πᾶς ὁ λαὸς διαβαίνων τὸν Ἰορδάνην.

# 4

Καὶ ἐπεὶ συνετέλεσε πᾶς ὁ λαὸς διαβαίνων τὸν Ἰορδανην, καὶ εἶπε, Κύριος τῷ Ἰησοῖ, λέγων, ταραλαβὼν ἄνδρας ἀπὸ τοῦ λαοῦ, ἕνα ἀφ ἑκάστης φυλῆς, σύνταξον αὐτοῖς· καὶ ἀνέλεσθε ἐκ μέσου τοῦ Ἰορδάνου ἑτοίμους δώδεκα λίθους, καὶ τούτους διακομίσαντες ἅμα ὑμῖν αὐτοῖς, θέτε αὐτοὺς ἐν τῇ στρατοπεδίᾳ ὑμῶν, οὗ ἐὰν παρεμβάλητε ἐκεῖ τὴν νύκτα. Καὶ ἀνακαλεσάμενος Ἰησοῦς δώδεκα ἄνδρας τῶν ἐνδόξων ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἕνα ἀφ ἑκάστης φυλῆς, εἶπεν αὐτοῖς, προσαγάγετε ἔμπροσθέν μου πρὸ προσώπου Κυρίου εἰς μέσον τοῦ Ἰροδάνου· καὶ ἀνελόμενος ἐκεῖθεν ἕκαστος λίθον, ἀράτω ἐπὶ τῶν ὤμων αὐτοῦ κατὰ τὸν ἀριθμὸν τῶν δώδεκα φυλῶν τοῦ Ἰσραὴλ, ἵνα ὑπάρχωσιν ὑμῖν οὗτοι εἰς σημεῖον κείμενον διαπαντός· ἵνα ὅταν ἐρωτᾷ σε ὁ υἱός σου αὔριον λέγων, τί εἰσιν οἱ λιθοι οὗτοι ἡμῖν; Καὶ σὺ δηλώσεις τῷ υἱῷ σου, λέγων, ὅτι ἐξέλιπεν ὁ Ἰορδάνης ποταμὸς ἀπὸ προσώπου κιβωτοῦ διαθήκης Κυρίου πάσης τῆς γῆς, ὡς διέβαινεν αὐτόν· καὶ ἔσονται οἱ λίθοι οὗτοι ὑμῖν μνημόσυνον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἕως τοῦ αἰῶνος. Καὶ ἐποίησαν οὕτως οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καθότι ἐνετείλατο Κύριος τῷ Ἰησοῖ· καὶ ἀναλαβόντες δώδεκα λίθους ἐκ μέσου τοῦ Ἰορδάνου, καθάπερ συνέταξε Κύριος τῷ Ἰησοῖ ἐν τῇ συντελείᾳ τῆς διαβάσεως τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ διεκόμισαν ἅμα ἑαυτοῖς εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἀπέθηκαν ἐκεῖ. Ἔστησε δὲ Ἰησοῦς καὶ ἄλλους δώδεκα λίθους ἐν αὐτῷ τῷ Ἰορδάνῃ, ἐν τῷ γενομένῳ τόπῳ ὑπὸ τοὺς πόδας τῶν ἱερέων τῶν αἱρόντων τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου· καὶ εἰσὶν ἐκεῖ ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Εἱστήκεισαν δὲ οἱ ἱερεῖς οἱ αἴροντες τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης ἐν τῷ Ἰορδάνῃ, ἕως οὗ συνετέλεσεν

Ἰησοῦς πάντα ἃ ἐνετείλατο Κύριος ἀναγγεῖλαι τῷ λαῷ· καὶ ἔσπευσεν ὁ λαὸς, καὶ διέβησαν. Καὶ ἐγένετο ὡς συνετέλεσε πᾶς ὁ λαὸς διαβῆναι, καὶ διέβη ἡ κιβωτὸς τῆς διαθήκης Κυρίου, καὶ οἱ λίθοι ἔμπροσθεν αὐτῶν. Καὶ διέβησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν, καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, καὶ οἱ ἡμίσεις φυλῆς Μανασσῆ διεσκευασμένοι ἔμπροσθεν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καθάπερ ἐνετείλατο αὐτοῖς Μωυσῆς. Τετρακισμύριοι εὔζωνοι εἰς μάχην διέβησαν ἐναντίον Κυρίου εἰς πόλεμον πρὸς τὴν Ἰεριχὼ πόλιν. Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ηὔξησε Κύριος τὸν Ἰησοῦν ἐναντίον τοῦ παντὸς γένους Ἰσραὴλ· καὶ ἐφοβοῦντο αὐτὸν, ὥσπερ Μωυσῆν, ὅσον χρόνον ἔζη. Καὶ εἶπε Κύριος τῷ Ἰησοῖ, λέγων, ἔντειλαι τοῖς ἱερεῦσι τοῖς αἴρουσι τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης τοῦ μαρτυρίου Κυρίου, ἐκβῆναι ἐκ τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἐνετείλατο Ἰησοῦς τοῖς ἱερεῦσι, λέγων, ἔκβητε ἐκ τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐξέβησαν οἱ ἱερεῖς οἱ αἴροντες τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου ἐκ τοῦ Ἰορδάνου, καὶ ἔθηκαν τοὺς πόδας ἐπὶ τῆς γῆς, ὥρμησε τὸ ὕδωρ τοῦ Ἰορδάνου κατὰ χώραν, καὶ ἐπορεύετο καθὰ χθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν δι ὅλης τῆς κρηπίδος. Καὶ ὁ λαὸς ἀνέβη ἐκ τοῦ Ἰορδάνου δεκάτῃ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου· καὶ κατεστρατοπέδευσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν Γαλγάλοις κατὰ μέρος τὸ πρὸς ἡλίου ἀνατολὰς ἀπὸ τῆς Ἰεριχώ. Καὶ τοὺς δώδεκα λίθους τούτους, οὓς ἔλαβεν ἐκ τοῦ Ἰορδάνου, ἔστησεν Ἰησοῦς ἐν Γαλγάλοις, λέγων, ὅταν ἐρωτῶσιν ὑμᾶς οἱ υἱοι ὑμῶν λέγοντες, τί εἰσιν οἱ λίθοι οὗτοι; Ἀναγγείλατε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν, ὅτι ἐπὶ ξηρᾶς διέβη Ἰσραὴλ τὸν Ἰορδάνην τοῦτον, ἀποξηράναντος Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν τὸ ὕδωρ τοῦ Ἰορδάνου ἐκ τῶν ἔμπροσθεν αὐτῶν, μέχρις οὗ διέβησαν· καθάπερ ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν, ἣν ἀπεξήρανε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἔμπροσθεν ἡμῶν, ἕως παρήλθομεν· Ὅπως γνῶσι πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς, ὅτι ἡ

δύναμις τοῦ κυρίου ἰσχυρά ἐστι, καὶ ἵνα ὑμεῖς σέβησθε Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν ἐν παντὶ ἔργῳ.

# 5

Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσαν οἱ βασιλεῖς τῶν Ἀμορῥαίων οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, καὶ οἱ βασιλεῖς τῆς Φοινίκης οἳ παρὰ τὴν θάλασσαν, ὅτι ἀπεξήρανε Κύριος ὁ Θεὸς τὸν Ἰορδάνην ποταμὸν ἐκ τῶν ἔμπροσθεν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν τῷ διαβαίνειν αὐτοὺς καὶ ἐτάκησαν αὐτῶν αἱ διάνοιαι, καὶ κατεπλάγησαν, καὶ οὐκ ἦν ἐν αὐτοῖς φρόνησις οὐδεμία ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Ὑπὸ δὲ τοῦτον τὸν καιρὸν εἶπε Κύριος τῷ Ἰησοῖ, ποίησον σεαυτῷ μαχαίρας πετρίνας ἐκ πέτρας ἀκροτόμου, καὶ καθίσας περίτεμε τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ δευτέρου. Καὶ ἐποίησεν Ἰησοῦς μαχαίρας πετρίνας ἀκροτόμους, καὶ περιέτεμε τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ καλουμένου τόπου, Βουνὸς τῶν ἀκροβυστιῶν. Ὃν δὲ τρόπον περιεκάθαρεν Ἰησοῦς τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ· ὅσοι ποτὲ ἐγένοντο ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ὅσοι ποτὲ ἀπερίτμητοι ἦσαν τῶν ἐξεληλυθότων ἐξ Αἰγύπτου, πάντας τούτους περιέτεμεν Ἰησοῦς· τεσσαράκοντα γὰρ καὶ δύο ἔτη ἀνέστραπται Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ τῇ Μαβδαρίτιδτ. Διὸ ἀπερίτμητοι ἦσαν οἱ πλεῖστοι αὐτῶν τῶν μαχίμων τῶν ἐξεληλυθότων ἐκ γῆς Αἰγύπτου, οἱ ἀπειθήσαντες τῶν ἐντολῶν τοῦ Θεοῦ, οἷς καὶ διώρισε μὴ ἰδεῖν αὐτοὺς τὴν γῆν, ἣν ὤμοσε Κύριος τοῖς πατράσιν αὐτῶν δοῦναι γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Ἀντὶ δὲ τούτων ἀντικατέστησε τοὺς υἱοὺς αὐτῶν, οὓς Ἰησοῦς περιέτεμε, διὰ τὸ αὐτοὺς γεγεννῆσθαι κατὰ τὴν ὁδὸν ἀπεριτμήτους. Περιτμηθέντες δὲ ἡσυχίαν εἶχον αὐτόθι καθήμενοι ἐν τῇ

παρεμβολῇ ἕως ὑγιάσθησαν. Καὶ εἶπε Κύριος τῷ Ἰησοῖ υἱῷ Ναυή, ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ ἀφεῖλον τὸν ὀνειδισμὸν Αἰγύπτου ἀφ ὑμῶν· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Γάλγαλα. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πάσχα τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς ἀφ ἑσπέρας ἐπὶ δυσμῶν Ἰεριχὼ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν τῷ πεδίῳ. Καὶ ἐφάγοσαν ἀπὸ τοῦ σίτου τῆς γῆς ἄζυμα καὶ νέα. Ἐν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐξέλιπε τὸ μάννα μετὰ τὸ βεβρωκέναι αὐτοὺς ἐκ τοῦ σίτου τῆς γῆς, καὶ οὐκέτι ὑπῆρχε τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ μάννα· ἐκαρπίσαντο δὲ τὴν χώραν τῶν Φοινίκων ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐκείνῳ. Καὶ ἐγένετο ὡς ἦν Ἰησοῦς ἐν Ἰεριχὼ, καὶ ἀναβλέψας τοῖς ὀφθαλμοῖς εἶδεν ἄνθρωπον ἑστηκότα ἐναντίον αὐτοῦ, καὶ ἡ ῥομφαία ἐσπασμένη ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ· καὶ προσελθὼν Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῷ, ἡμέτερος εἶ, ἢ τῶν ὑπεναντίων; Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ, ἐγὼ ἀρχιστράτηγος δυνάμεως Κυρίου, νυνὶ παραγέγονα. Καὶ Ἰησοῦς ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, δέσποτα, τί προστάσσεις τῷ σῷ οἰκέτῃ; Καὶ λέγει ὁ ἀρχιστράτηγος Κυρίου πρὸς Ἰησοῦν, Λῦσαι τὸ ὑπόδημα ἐκ τῶν ποδῶν σου, ὁ γὰρ τόπος ἐφ ᾧ νῦν ἕστηκας ἐπ αὐτοῦ, ἅγιός ἐστι.

# 6

Καὶ Ἰεριχὼ συρκεκλεισμένη καὶ ὠχυρωμένη, καὶ οὐδεὶς ἐξεπορεύετο ἐξ αὐτῆς, οὐδὲ εἰσεπορεύετο. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, ἰδον ἐγὼ παραδίδωμι ὑποχείριόν σοι τὴν Ἰεριχὼ, καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς τὸν ἐν αὐτῇ, δυνατοὺς ὄντας ἐν ἰσχύϊ. Σὺ δὲ περίστησον αὐτῇ τοὺς μαχίμους κύκλῳ. Καὶ ἔσται ὡς ἂν σαλπίσητε τῇ σάλπιγγι, ἀνακραγέτω πᾶς ὁ λαὸς ἅμα, καὶ

ἀνακραγόντων αὐτῶν πεσεῖται αὐτόματα τὰ τείχη τῆς πόλεως, καὶ εἰσελεύσεται πᾶς ὁ λαὸς ὁρμήσας ἕκαστος κατὰ πρόσωπον εἰς τὴν πόλιν. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυῆ πρὸς τοὺς ἱερεῖς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, λέγων, παραγγείλατε τῷ λαῷ περιελθεῖν, καὶ κυκλῶσαι τὴν πόλιν· καὶ οἱ μάχιμοι παραπορευέσθωσαν ἐνωπλισμένοι ἐναντίον Κυρίου. Καὶ ἑπτὰ ἱερεῖς ἔχοντες ἑπτὰ σάλπιγγας ἱερὰς παρελθέτωσαν ὡσαύτως ἐναντίον τοῦ Κυρίου, καὶ σημαινέτωσαν εὐτόνως· καὶ ἡ κιβωτὸς τῆς διαθήκης Κυρίου ἐπακολουθείτω. Οἱ δὲ μάχιμοι παραπορευέσθωσαν ἔμπροσθεν, καὶ οἱ ἱερεῖς οἱ οὐραγοῦντες ὀπίσω τῆς κιβωτοῦ τῆς διαθήκης Κυρίου σαλπίζοντες. Τῷ δὲ λαῷ ἐνετείλατο Ἰησοῦς, λέγων, μὴ βοᾶτε, μηδὲ ἀκουσάτω μηδεὶς τὴν φωνὴν ὑμῶν, ἕως ἂν ἡμέραν διαγγείλῃ αὐτὸς ἀναβοῆσαι, καὶ τότε ἀναβοήσετε· Καὶ περιελθοῦσα ἡ κιβωτὸς τῆς διαθήκης τοῦ Θεοῦ εὐθέως ἀπῆλθεν εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἐκοιμήθη ἐκεῖ. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ ἀνέστη Ἰησοῦς τοπρωΐ, καὶ ᾖραν οἱ ἱερεῖς τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου. Καὶ οἱ ἑπτὰ ἱερεῖς οἱ φέροντες τὰς σάλπιγγας τὰς ἑπτὰ προεπορεύοντο ἐναντίον Κυρίου· καὶ μετὰ ταῦτα εἰσεπορεύοντο οἱ μάχιμοι, καὶ ὁ λοιπὸς ὄχλος ὄπισθεν τῆς κιβωτοῦ τῆς διαθήκης Κυρίου· καὶ οἱ ἱερεῖς ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξι, καὶ ὁ λοιπὸς ὄχλος ἅπας περιεκύκλωσε τὴν πόλιν ἐξάκις ἐγγύθεν, καὶ ἀπῆλθε πάλιν εἰς τὴν παρεμβολήν· οὕτως ἐποίει ἐπὶ ἓξ ἡμέρας. Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ ἀνέστησαν ὄρθρου, καὶ περιήλθοσαν τὴν πόλιν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἑπτάκις. Καὶ ἐγένετο τῇ περιόδῳ τῇ ἑβδόμῃ ἐσάλπισαν οἱ ἱερεῖς· καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, κεκράξατε, παρέδωκε γὰρ Κύριος ὑμῖν τὴν πόλιν. Καὶ ἔσται ἡ πόλις ἀνάθεμα, αὐτὴ καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτῇ, Κυρὶῳ σαβαώθ· πλὴν Ῥαὰβ τὴν πόρνην περιποιήσασθε αὐτὴν, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν τῷ οἴκῳ

αὐτῆς. Ἀγγὰ ὑμεῖς φυλάξεσθε σφόδρα ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος, μήποτε ἐνθυμηθέντες ὑμεῖς αὐτοὶ λάβητε ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος, καὶ ποιήσητε τὴν παρεμβολὴν τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἀνάθεμα, καὶ ἐκτρίψητε ἡμᾶς. Καὶ πᾶν ἀργύριον ἢ χρυσίον, ἢ χαλκὸς ἢ σίδηρος, ἅγιον ἔσται τῷ Κυρὶῳ· εἰς θησαυρὸν Κυρίου εἰσενεχθήσεται. Καὶ ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξιν οἱ ἱερεῖς· ὡς δὲ ἤκουσεν ὁ λαὸς τῶν σαλπίγγων, ἠλάλαξε πᾶς ὁ λαὸς ἅμα ἀλαλαγμῷ μεγάλῳ καὶ ἰσχυρῷ· καὶ ἔπεσεν ἅπαν τὸ τεῖχος κύκλῳ· καὶ ἀνέβη πᾶς ὁ λαὸς εἰς τὴν πόλιν. Καὶ ἀνεθεμάτισεν αὐτὴν Ἰησοῦς, καὶ ὅσα ἦν ἐν τῇ πόλει ἀπὸ ἀνδρὸς καὶ ἕως γυναικὸς, ἀπὸ νεανίσκου καὶ ἕως πρεσβύτου, καὶ ἕως μόσχου καὶ ὑποζυγίου, ἐν στόματι ῥομφαίας. Καὶ τοῖς δυσὶ νεανίσκοις τοῖς κατασκοπεύσασιν εἶπεν Ἰησοῦς, εἰσέλθατε εἰς τὴν οἰκίαν τῆς γυναικὸς, καὶ ἐξαγάγετε αὐτὴν ἐκεῖθεν, καὶ ὅσα ἐστὶν αὐτῇ. Καὶ εἰσῆλθον οἱ δύο νεανίσκοι οἱ κατασκοπεύσαντες τὴν πόλιν, εἰς τὴν οἰκίαν τῆς γυναικὸς, καὶ ἐξηγάγοσαν Ῥαὰβ τὴν πόρνην, καὶ τὸν πατέρα αὐτῆς, καὶ τὴν μητέρα αὐτῆς, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς, καὶ τὴν συγγένειαν αὐτῆς, καὶ πάντα ὅσα ἦν αὐτῇ· καὶ κατέστησαν αὐτὴν ἔξω τῆς παρεμβολῆς Ἰσραήλ. Καὶ ἡ πόλις ἐνεπρήσθη ἐν πυρισμῷ σὺν πᾶσι τοῖς ἐν αὐτῇ· πλὴν ἀργυρίου καὶ χρυσίου καὶ χαλκοῦ καὶ σιδήρου ἔδωκαν εἰς θησαυρὸν Κυρίου εἰσενεχθῆναι. Καὶ Ῥαὰβ τὴν πόρνην, καὶ πάντα τὸν οἶκον αὐτῆς τὸν πατρικὸν ἐζώγρησεν Ἰησοῦς· καὶ κατῴκισεν ἐν τῷ Ἰσραὴλ ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, διότι ἔκρυψε τοὺς κατασκοπεύαντας, οὓς ἀπέστειλεν Ἰησοῦς κατασκοπεῦσαι τὴν Ἰεριχώ. Καὶ ὥρκισεν Ἰησοῦς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐναντίον Κυρίου, λέγων, ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος, ὃς οἰκοδομήσει τὴν πόλιν ἐκείνην· ἐν τῷ πρωτοτόκῳ αὐτοῦ θεμελιώσει αὐτὴν, καὶ ἐν τῷ ἐλαχίστῳ αὐτοῦ ἐπιστήσει τὰς πύλας αὐτῆς. Καὶ οὕτως

ἐποίησεν Ὀζᾶν ὁ ἐκ Βαιθήλ· ἐν τῷ Ἀβιρὼν τῷ πρωτοτόκῳ ἐθεμελίωσεν αὐτὴν, καὶ ἐν τῷ ἐλαχίστῳ διασωθέντι ἐπέστησε τὰς πύλας αὐτῆς. Καὶ ἦν Κύριος μετὰ Ἰησοῦ, καὶ ἦν τὸ ὄνομα αὐτοῦ κατὰ πᾶσαν τὴν γῆν.

# 7

Καὶ ἐπλημμέλησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πλημμέλιαν μεγάλην, καὶ ἐνοσφίσαντο ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος· καὶ ἔλαβεν Ἄχαρ υἱὸς Χαρμὶ υἱοῦ Ζαμβρὶ υἱοῦ Ζαρὰ ἐκ τῆς φυλῆς Ἰούδα ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος· καὶ ἐθυμώθη Κύριος ὀργῇ τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰησοῦς ἄνδρας εἰς Γαὶ, ἥ ἐστι κατὰ Βαιθὴλ, λέγων, κατασκέψασθε τὴν Γαί καὶ ἀνέβησαν οἱ ἄνδρες καὶ κατεσκέψαντο τὴν Γαί· Καὶ ἀνέστρεψαν πρὸς Ἰησοῦν, καὶ εἶπαν πρὸς αὐτὸν, μὴ ἀναβήτω πᾶς ὁ λαὸς, ἀλλ ὡσεὶ δισχίλιοι ἢ τρισχίλιοι ἄνδρες ἀναβήτωσαν καὶ ἐκπολιορκησάτωσαν τὴν πόλιν· μὴ ἀναγάγῃς ἐκεῖ τὸν λαὸν ἅπαντα, ὀλίγοι γάρ εἰσι. Καὶ ἀνέβησαν ὡσεὶ τρισχίλιοι ἄνδρες, καὶ ἔφυγον ἀπὸ προσώπου ἀνδρῶν Γαί. Καὶ ἀπέκτειναν ἀπ αὐτῶν ἄνδρες Γαὶ εἰς τριακονταὲξ ἄνδρας, καὶ κατεδίωξαν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πύλης, καὶ συνέτριψαν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ καταφεροῦς· καὶ ἐπτοήθη ἡ καρδία τοῦ λαοῦ, καὶ ἐγένετο ὥσπερ ὕδωρ. Καὶ διέῤῥηξεν Ἰησοῦς τὰ ἱμάτια αὐτοῦ· καὶ ἔπεσεν Ἰησοῦς ἐπὶ τὴν γῆν ἐπὶ πρόσωπον ἐναντίον Κυρίου ἕως ἑσπέρας, αὐτὸς καὶ οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραήλ· καὶ ἐπεβάλοντο χοῦν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς, δέομαι Κύριε· ἱνατί διεβίβασεν ὁ παῖς σου τὸν λαὸν τοῦτον τὸν Ἰορδάνην παραδοῦναι αὐτὸν τῷ Ἀμορῥαίῳ, ἀπολέσαι ἡμᾶς; καὶ εἰ κατεμείναμεν καὶ κατῳκίσθημεν παρὰ τὸν

Ἰορδάνην. Καὶ τί ἐρῶ ἐπεὶ μετέβαλεν Ἰσραὴλ αὐχένα ἀπέναντι τοῦ ἐχθροῦ αὐτοῦ; Καὶ ἀκούσας ὁ Χαναναῖος καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, περικυκλώσουσιν ἡμᾶς, καὶ ἐκτρίψουσιν ἡμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς· καὶ τί ποιήσεις τὸ ὄνομά σου τὸ μέγα; Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, ἀνάστηθι, ἱνατί τοῦτο σὺ πέπτωκας ἐπὶ πρόσωπόν σου; Ἡμάρτηκεν ὁ λαὸς καὶ παρέβη τὴν διαθήκην, ἣν διεθέμην πρὸς αὐτοὺς, κλέψαντες ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος ἐνέβαλον εἰς τὰ σκεύη αὐτῶν. Καὶ οὐ μὴ δύνωνται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ὑποστῆναι κατὰ πρόσωπον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν· αὐχένα ὑποστρέψουσιν ἔναντι τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, ὅτι ἐγενήθησαν ἀνάθεμα· οὐ προσθήσω ἔτι εἶναι μεθ ὑμῶν, ἐὰν μὴ ἐξάρητε τὸ ἀνάθεμα ἐξ ὑμῶν αὐτῶν. Ἀναστὰς ἁγίασον τὸν λαὸν, καὶ εἶπον ἁγιασθῆναι εἰσαύριον· τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, τὸ ἀνάθεμά ἐστιν ἐν ὑμῖν· οὐ δυνήσεσθε ἀντιστῆναι ἀπέναντι τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν, ἕως ἂν ἐξάρητε τὸ ἀνάθεμα ἐξ ὑμῶν. Καὶ συναχθήσεσθε πάντες τοπρωΐ κατὰ φυλὰς, καὶ ἔσται ἡ φυλὴ ἣν ἂν δείξῃ Κύριος, προσάξετε κατὰ δήμους· καὶ τὸν δῆμον ὃν ἂν δείξῃ Κύριος, προσάξετε κατ οἶκον· καὶ τὸν οἶκον ὃν ἂν δέξῃ Κύριος, προσάξετε κατ ἄνδρα. Καὶ ὃς ἂν ἐνδειχθῇ, κατακαυθήσεται ἐν πυρὶ, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτῷ· ὅτι παρέβη τὴν διαθήκην Κυρίου, καὶ ἐποίησεν ἀνόμημα ἐν Ἰσραήλ. Καὶ ὤρθρισεν Ἰησοῦς, καὶ προσήγαγε τὸν λαὸν κατὰ φυλάς· καὶ ἐνεδείχθη ἡ φυλὴ Ἰούδα. Καὶ προσήχθη κατὰ δήμους, καὶ ἐνεδείχθη δῆμος Ζαραΐ. Καὶ προσήχθη κατ ἄνδρα, καὶ ἐνεδείχθη Ἄχαρ υἱὸς Ζαμβρὶ υἱοῦ Ζάρά. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τῷ Ἄχαρ, δὸς δόξαν σήμερον τῷ Κυρίῳ Θεῷ Ἰσραὴλ, καὶ δὸς τὴν ἐξομολόγησιν, καὶ ἀνάγγειλόν μοι τί ἐποίησας, καὶ μὴ κρύψῃς ἀπ ἐμοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη Ἄχαρ τῷ Ἰησοῖ, καὶ εἶπεν, ἀληθῶς ἥμαρτον ἐναντίον Κυρίου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ· οὕτως καὶ οὕτως ἐποίησα. Εἶδον ἐν τῇ προνομῇ

ψιλὴν ποικίλην, καὶ διακόσια δίδραχμα ἀργυρίου, καὶ γλῶσσαν μίαν χρυσῆν πεντήκοντα διδράχμων, καὶ ἐνθυμηθεὶς αὐτῶν ἔλαβον· καὶ ἰδοὺ αὐτὰ ἐγκέκρυπται ἐν τῇ σκηνῇ μου, καὶ τὸ ἀργύριον κέκρυπται ὑποκάτω αὐτῶν. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰησοῦς ἀγγέλους, καὶ ἔδραμον εἰς τὴν σκηνὴν εἰς τὴν παρεμβολήν· καὶ ταῦτα ἦν κεκρυμμένα εἰς τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, καὶ τὸ ἀργύριον ὑποκάτω αὐτῶν. Καὶ ἐξήνεγκαν αὐτὰ ἐκ τῆς σκηνῆς, καὶ ἤνεγκαν πρὸς Ἰησοῦν καὶ τοὺς πρεσβυτέρους Ἰσραὴλ, καὶ ἔθηκαν αὐτὰ ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἔλαβεν Ἰησοῦς τὸν Ἄχαρ υἱὸν Ζαρὰ, καὶ ἀνήγαγεν αὐτὸν εἰς φάραγγα Ἀχὼρ, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτοῦ, καὶ τοὺς μόσχους αὐτοῦ, καὶ τὰ ὑποζύγια αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ πρόβατα αὐτοῦ, καὶ τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, καὶ πᾶς ὁ λαὸς μετ αὐτοῦ· καὶ ἀνήγαγεν αὐτοὺς εἰς Ἐμεκαχώρ. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τῷ Ἄχαρ, τί ὠλόθρευσας ἡμᾶς; ἐξολοθρεύσαι σε Κύριος καθὰ καὶ σήμερον. Καὶ ἐλιθοβόλησαν αὐτὸν λίθοις πᾶς Ἰσραὴλ, καὶ ἐπέστησαν αὐτῷ σωρὸν λίθων μέγαν· καὶ ἐπαύσατο Κύριος τοῦ θυμοῦ τῆς ὀργῆς. Διὰ τοῦτο ἐπωνόμασεν αὐτὸ Ἐμεκαχὼρ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης.

# 8

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, μὴ φοβηθῇς, μηδὲ δειλιάσῃς· λάβε μετὰ σοῦ πάντας τοὺς ἄνδρας τοὺς πολεμιστάς, καὶ ἀναστὰς ἀνάβηθι εἰς Γαί· ἰδοὺ δέδωκα εἰς τὰς χεῖράς σου τὸν βασιλέα Γαὶ, καὶ τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ ποιήσεις τὴν Γαὶ, ὃν τρόπον ἐποίησας τὴν Ἰεριχὼ, καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς· καὶ τὴν προνομὴν τῶν κτηνῶν προνομεύσεις σεαυτῷ· κατάστησον δὲ σεαυτῷ ἔνεδρα τῇ πόλει εἰς

τὰ ὀπίσω. Καὶ ἀνέστη Ἰησοῦς καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ πολεμιστὴς ὥστε ἀναβῆναι εἰς Γαί. ἐπέλεξε δὲ Ἰησοῦς τριάκοντα χιλιάδας ἀνδρῶν δυνατοὺς ἐν ἰσχύϊ, καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς νυκτός. Καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς, λέγων, ὑμεῖς ἐνεδρεύσατε ὀπίσω τῆς πόλεως· μὴ μακρὰν γίνεσθε ἀπὸ τῆς πόλεως, καὶ ἔσεσθε πάντες ἕτοιμοι. Καὶ ἐγὼ καὶ πάντες οἱ μετ ἐμοῦ προσάξομεν πρὸς τὴν πόλιν· καὶ ἔσται ὡς ἂν ἐξέλθωσιν οἱ κατοικοῦντες Γαὶ εἰς συνάντησιν ἡμῖν, καθάπερ καὶ πρώην, καὶ φευξόμεθα ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. Καὶ ὡς ἂν ἐξέλθωσιν ὀπίσω ἡμῶν, ἀποσπάσομεν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πόλεως· καὶ ἐροῦσι, φεύγουσιν οὗτοι ἀπὸ προσώπου ἡμῶν, ὃν τρόπον καὶ ἔμπροσθεν. Ὑμεῖς δὲ ἐξαναστήσεσθε ἐκ τῆς ἐνέδρας, καὶ πορεύσεσθε εἰς τὴν πόλιν. Κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο ποιήσετε· ἰδοὺ ἐντέταλμαι ὑμῖν. Καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς Ἰησοῦς, καὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὴν ἔνεδραν· καὶ ἐνεκάθισαν ἀναμέσον Βαιθὴλ καὶ ἀναμέσον Γαὶ, ἀπὸ θαλάσσης τῆς Γαί. Καὶ ὀρθρίσας Ἰησοῦς τοπρωΐ, ἐπεσκέψατο τὸν λαόν· καὶ ἀνέβησαν αὐτὸς καὶ οἱ πρεσβύτεροι κατὰ πρόσωπον τοῦ λαοῦ ἐπὶ Γαί. Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ πολεμιστὴς μετ αὐτοῦ ἀνέβησαν· καὶ πορευόμενοι ἦλθον ἐξεναντίας τῆς πόλεως ἀπὸ ἀνατολῶν. Καὶ τὰ ἔνεδρα τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάσσης· Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδε βασιλεὺς Γαὶ, ἔσπευσε καὶ ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν αὐτοῖς ἐπ εὐθείας εἰς τὸν πόλεμον, αὐτὸς καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ αὐτοῦ· καὶ αὐτὸς οὐκ ᾔδει ὅτι ἔνεδρα αὐτῷ ἐστιν ὀπίσω τῆς πόλεως. Καὶ εἶδε, καὶ ἀνεχώρησεν Ἰησοῦς καὶ Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. Καὶ κατεδίωξαν ὀπίσω τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ αὐτοὶ ἀπέστησαν ἀπὸ τῆς πόλεως. Οὐ κατελείφθη οὐδεὶς ἐν τῇ Γαὶ, ὃς οὐ κατεδίωξεν ὀπίσω Ἰσραήλ· καὶ κατέλιπον τὴν πόλιν ἠνεῳγμένην, καὶ κατεδίωξαν ὀπίσω Ἰσραήλ· Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, ἔκτεινον τὴν χεῖρά σου ἐν τῷ γαισῷ τῷ ἐν τῇ χειρί σου ἐπὶ

τὴν πόλιν, εἰς γὰρ τὰς χεῖράς σου παραδέδωκα αὐτήν· καὶ τὰ ἔνεδρα ἐξαναστήσονται ἐν τάχει ἐκ τοῦ τόπου αὐτῶν. Καὶ ἐξέτεινεν Ἰησοῦς τὴν χεῖρα αὐτοῦ τὸν γαισὸν ἐπὶ τὴν πόλιν· καὶ τὰ ἔνεδρα ἐξανέστησαν ἐν τάχει ἐκ τοῦ τόπου αὐτῶν· καὶ ἐξῆλθοσαν ὅτε ἐξέτεινε τὴν χεῖρα, καὶ εἰσήλθοσαν καὶτὴν πόλιν, καὶ κατελάβοντο αὐτήν· καὶ σπεύσαντες ἐνέπρησαν τὴν πόλιν ἐν πυρί. Καὶ περιβλέψαντες οἱ κάτοικοι Γαὶ εἰς τὰ ὀπίσω αὐτῶν, καὶ ἐθεώρουν καπνὸν ἀναβαίνοντα ἐκ τῆς πόλεως εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ οὐκ ἔτι εἶχον ποῦ φύγωσιν ὧδε ἢ ὧδε. Καὶ Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ εἶδον, ὅτι ἔλαβον τὰ ἔνεδρα τὴν πόλιν, καὶ ὅτι ἀνέβη ὁ καπνὸς τῆς πόλεως εἰς τὸν οὐρανόν· καὶ μεταβαλλόμενοι, ἐπάταξαν τοὺς ἄνδρας τῆς Γαί. Καὶ οὗτοι ἐξῆλθοσαν ἐκ τῆς πόλεως εἰς συνάντησιν· καὶ ἐκενήθησαν ἀναμέσον τῆς παρεμβολῆς, οὗτοι ἐντεῦθεν καὶ οὗτοι ἐντεῦθεν· καὶ ἐπάταξαν αὐτοὺς ἕως τοῦ μὴ καταλειφθῆναι αὐτῶν σεσωσμένον καὶ διαπεφευγότα. Καὶ τὸν βασιλέα τῆς Γαὶ συνέλαβον ζῶντα, καὶ προσήγαγον αὐτὸν πρὸς Ἰησοῦν. Καὶ ὡς ἐπαύσαντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀποκτείνοντες πάντας τοὺς ἐν τῇ Γαὶ, καὶ τοὺς ἐν τοῖς πεδίοις, καὶ ἐν τῷ ὄρει ἐπὶ τῆς καταβάσεως, οὗ κατεδίωξαν αὐτοὺς ἀπ αὐτῆς εἰς τέλος, καὶ ἐπέστρεψεν Ἰησοῦς εἰς Γαὶ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν ἐν στόματι ῥομφαίας. Καὶ ἐγενήθησαν οἱ πεσόντες ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀπὸ ἄνδρος καὶ ἕως γυναικὸς, δώδεκα χιλιάδες, πάντας τοὺς κατοικοῦντας Γαί. Πλὴν τῶν σκύλων τῶν ἐν τῇ πόλει πάντα, ἃ ἐπρονόμευσαν ἑαυτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ κατὰ πρόσταγμα Κυρίου, ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Ἰησοῖ. Καὶ ἐνεπύρισεν Ἰησοῦς τὴν πόλιν ἐν πυρί· χῶμα ἀοίκητον εἰς τὸν αἰῶνα ἔθηκεν αὐτὴν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ τὸν βασιλέα τῆς Γαὶ ἐκρέμασεν ἐπὶ ξύλου διδύμου· καὶ ἦν ἐπὶ τοῦ ξύλου ἕως ἑσπέρας· καὶ ἐπιδύνοντος τοῦ

ἡλίου συνέταξεν Ἰησοῦς, καὶ καθείλοσαν τὸ σῶμα αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ξύλου, καὶ ἔῤῥιψαν αὐτὸ εἰς τὸν βόθρον· καὶ ἐπέστησαν αὐτῷ σωρὸν λίθων, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης.

# 9

Ὡς δὲ ἤκουσαν οἱ βασιλεῖς τῶν Ἀμορῥαίων οἱ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, οἱ ἐν τῇ ὀρεινῇ, καὶ οἱ ἐν τῇ πεδινῇ, καὶ οἱ ἐν πάσῃ τῇ παραλίᾳ τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης, καὶ οἱ πρὸς τῷ Ἀντιλιβάνῳ, καὶ οἱ Χετταῖοι, καὶ οἱ Χαναναῖοι, καὶ οἱ Φερεζαῖοι, καὶ οἱ Εὐαῖοι, καὶ οἱ Ἀμορῥαῖοι, καὶ οἱ Γεργεσαῖοι, καὶ οἱ Ἰεβουσαῖοι, συνήλθοσαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἐκπολεμῆσαι Ἰησοῦν καὶ Ἰσραὴλ ἅμα πάντες. Καὶ οἱ κατοικοῦντες Γαβαὼν ἤκουσαν πάντα ὅσα ἐποίησε Κύριος τῇ Ἰεριχὼ καὶ τῇ Γαί. Καὶ ἐποίησαν καί γε αὐτοὶ μετὰ πανουργίας· καὶ ἐλθόντες ἐπεσιτίσαντο καὶ ἡτοιμάσαντο· καὶ λαβόντες σάκκους παλαιοὺς ἐπὶ τῶν ὤμων αὐτῶν, καὶ ἀσκοὺς οἴνου παλαιοὺς καὶ κατεῤῥωγότας ἀποδεδεμένους, καὶ τὰ κοῖλα τῶν ὑποδημάτων αὐτῶν, καὶ τὰ σανδάλια αὐτῶν παλαιὰ καὶ καταπεπελματωμένα ἐν τοῖς ποσὶν αὐτῶν, καὶ τὰ ἱμάτια αὐτῶν πεπαλαιωμένα ἐπάνω αὐτῶν, καὶ ὁ ἄρτος αὐτῶν τοῦ ἐπισιτισμοῦ ξηρὸς καὶ εὐρωτιῶν καὶ βεβρωμένος. Καὶ ἦλθοσαν πρὸς Ἰησοῦν εἰς τὴν παρεμβολὴν Ἰσραὴλ εἰς Γάλγαλα, καὶ εἶπαν πρὸς Ἰησοῦν καὶ Ἰσραήλ, ἐκ γῆς μακρόθεν ἥκαμεν· καὶ νῦν διάθεσθε ἡμῖν διαθήκην. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς τὸν Χορῥαῖον, ὅρα μὴ ἐν ἐμοὶ κατοικεῖς· καὶ πῶς σοι διαθῶμαι διαθήκην; Καὶ εἶπαν πρὸς Ἰησοῦν, οἰκεται σου ἐσμέν· καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ἰησοῦς, πόθεν ἐστὲ, καὶ πόθεν παραγεγόνατε; Καὶ εἶπαν, ἐκ γῆς μακρόθεν σφόδρα ἥκασιν οἱ

παῖδές σου ἐν ὀνόματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου· ἀκηκόαμεν γὰρ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ ὅσα ἐποίησεν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ὅσα ἐποίησε τοῖς βασιλεῦσι τῶν Ἀμορῥαίων, οἳ ἦσαν πέραν τοῦ Ἰορδάνου, τῷ Σηὼν βασιλεῖ τῶν Ἀμορῥαίων, καὶ τῷ Ὢγ βασιλεῖ τῆς Βασὰν, ὃς κατῴκει ἐν Ἀσταρὼθ καὶ ἐν Ἐδραΐν. Καὶ ἀκούσαντες εἶπαν πρὸς ἡμᾶς οἱ πρεσβύτεροι ἡμῶν καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν ἡμῶν, λέγοντες, λάβετε ἑαυτοῖς ἐπισιτισμὸν εἰς τὴν ὁδὸν, καὶ πορεύθητε εἰς συνάντησιν αὐτῶν, καὶ ἐρεῖτε πρὸς αὐτοὺς, οἰκέται σου ἐσμὲν, καὶ νῦν διάθεσθε ἡμῖν τὴν διαθήκην. Οὗτοι οἱ ἄρτοι, θερμοὺς ἐφωδιάσθημεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐξήλθομεν παραγενέσθαι πρὸς ὑμᾶς· νῦν δὲ ἐξηράνθησαν καὶ γεγόνασι βεβρωμένοι. Καὶ οὗτοι οἱ ἀσκοὶ τοῦ οἴνου οὓς ἐπλήσαμεν καινοὺς, καὶ οὗτοι ἐῤῥώγασι· καὶ τὰ ἱμάτια ἡμῶν, καὶ τὰ ὑποδήματα ἡμῶν πεπαλαίωται ἀπὸ τῆς πολλῆς ὁδοῦ σφόδρα. Καὶ ἔλαβον οἱ ἄρχοντες τοῦ ἐπισιτισμοῦ αὐτῶν, καὶ Κύριον οὐκ ἐπηρώτησαν. Καὶ ἐποίησεν Ἰησοῦς πρὸς αὐτοὺς εἰρήνην, καὶ διέθεντο πρὸς αὐτοὺς διαθήκην τοῦ διασῶσαι αὐτούς· καὶ ὤμοσαν αὐτοῖς οἱ ἄρχοντες τῆς συναγωγῆς. Καὶ ἐγένετο μετὰ τρεῖς ἡμέρας μετὰ τὸ διαθέσθαι πρὸς αὐτοὺς διαθήκην, ἤκουσαν ὅτι ἐγγύθεν αὐτῶν εἰσι, καὶ ὅτι ἐν αὐτοῖς κατοικοῦσι. Καὶ ἀπῆραν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἦλθον εἰς τὰς πόλεις αὐτῶν· αἱ δὲ πόλεις αὐτῶν Γαβαὼν καὶ Κεφιρὰ καὶ Βηρὼτ, καὶ πόλεις Ἰαρίν. Καὶ οὐκ ἐμαχέσαντο αὐτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, ὅτι ὤμοσαν αὐτοῖς πάντες οἱ ἄρχοντες Κύριον τὸν Θεὸν Ἰσραήλ· καὶ διεγόγγυσαν πᾶσα ἡ συναγωγὴ ἐπὶ τοῖς ἄρχουσι. Καὶ εἶπαν οἱ ἄρχοντες πάσῃ τῇ συναγωγῇ, ἡμεῖς ὠμόσαμεν αὐτοῖς Κύριον τὸν Θεὸν Ἰσραὴλ, καὶ νῦν οὐ δυνησόμεθα ἅψασθαι αὐτῶν. Τοῦτο ποιήσομεν, ζωγρῆσαι αὐτοὺς, καὶ περιποιησόμεθα αὐτούς· καὶ οὐκ ἔσται καθ ἡμῶν ὀργὴ διὰ τὸν ὅρκον, ὃν ὠμόσαμεν αὐτοῖς.

Ζήσονται, καὶ ἔσονται ξυλοκόποι καὶ ὑδροφόροι πάσῃ τῇ συναγωγῇ, καθάπερ εἶπαν αὐτοῖς οἱ ἄρχοντες. Καὶ συνεκάλεσεν αὐτοὺς Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, διατί παρελογίσασθέ με, λέγοντες, μακρὰν ἀπὸ σοῦ ἐσμὲν σφόδρα· ὑμεῖς δὲ ἐγχώριοί ἐστε τῶν κατοικούντων ἐν ἡμῖν; Καὶ νῦν ἐπικατάρατοί ἐστε· οὐ μὴ ἐκλείπῃ ἐξ ὑμῶν δοῦλος, οὐδὲ ξυλοκόπος, οὐδὲ ὑδροφόρος ἐμοὶ καὶ τῷ Θεῷ μου. Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ Ἰησοῖ, λέγοντες, ἀνηγγέλη ἡμῖν ὅσα συνέταξε Κύριος ὁ Θεός σου Μωυσῇ τῷ παιδὶ αὐτοῦ, δοῦναι ὑμῖν τὴν γῆν ταύτην, καὶ ἐξολοθρεῦσαι ἡμᾶς καὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐπ αὐτῆς ἀπὸ προσώπου ὑμῶν· καὶ ἐφοβήθημεν σφόδρα περὶ τῶν ψυχῶν ἡμῶν ἀπὸ προσώπου ὑμῶν, καὶ ἐποιήσαμεν τὸ πρᾶγμα τοῦτο. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἡμεῖς ὑποχείριοι ὑμῖν· ὡς ἀρέσκει ὑμῖν καὶ ὡς δοκεῖ ὑμῖν, ποιήσατε ἡμῖν. Καὶ ἐποίησαν αὐτοῖς οὕτως· καὶ ἐξείλατο αὐτοὺς Ἰησοῦς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ χειρῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἀνεῖλον αὐτούς. Καὶ κατέστησεν αὐτοὺς Ἰησοῦς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ξυλοκόπους καὶ ὑδροφόρους πάσῃ τῇ συναγωγῇ, καὶ τῷ θυσιαστηρίῳ τοῦ Θεοῦ· διὰ τοῦτο ἐγένοντο οἱ κατοικοῦντες Γαβαὼν ξυλοκόποι καὶ ὑδροφόροι τοῦ θυσιαστηρίου τοῦ θεοῦ ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ εἰς τὸν τόπον ὃν ἂν ἐκλέξηται Κύριος.

# 10

Ὡς δὲ ἤκουσεν Ἀδωνιβεζέκ βασιλεὺς Ἰερουσαλὴμ ὅτι ἔλαβεν Ἰησοῦς τὴν Γαὶ, καὶ ἐξωλόθρευσεν αὐτὴν, ὃν τρόπον ἐποίησαν τὴν Ἰεριχὼ καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς, οὕτως ἐποίησαν καὶ τὴν Γαὶ καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς, καὶ ὅτι ηὐτομόλησαν οἱ κατοικοῦντες Γαβαὼν πρὸς

Ἰησοῦν καὶ πρὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἐφοβήθησαν ἀπ αὐτῶν σφόδρα· ᾔδει γὰρ ὅτι πόλις μεγάλη Γαβαὼν, ὡσεὶ μία τῶν μητροπόλεων, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες αὐτῆς ἰσχυροί. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀδωνιβεζὲκ βασιλεὺς Ἰερουσαλὴμ πρὸς Ἐλὰμ βασιλέα Χεβρὼν, καὶ πρὸς Φιδὼν βασιλέα Ἰερειμοὺθ, καὶ πρὸς Ἰεφθα βασιλέα Λαχὶς καὶ πρὸς Δαβεὶν βασιλέα Ὀδολλὰμ, λέγων, δεῦτε, ἀνάβητε πρός με, καὶ βοηθήσατέ μοι, καὶ ἐκπολεμήσωμεν Γαβαών· ηὐτομόλησαν γὰρ πρὸς Ἰησοῦν καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ πέντε βασιλεῖς τῶν Ἰεβουσαίων, βασιλεὺς Ἰερουσαλὴμ, καὶ βασιλεὺς Χεβρὼν, καὶ βασιλεὺς Ἰεριμοὺθ, καὶ βασιλεὺς Λαχὶς, καὶ βασιλεὺς Ὀδολλάμ, αὐτοὶ καὶ πᾶς ὁ λαὸς αὐτῶν. καὶ περιεκάθισαν τὴν Γαβαὼν, καὶ ἐξεπολιόρκουν αὐτήν. Καὶ ἀπέστειλαν οἱ κατοικοῦντες Γαβαὼν πρὸς Ἰησοῦν εἰς τὴν παρεμβολὴν Ἰσραὴλ εἰς Γάλγαλα, λέγοντες, μὴ ἐκλύσῃς τὰς χεῖράς σου ἀπὸ τῶν παίδων σου· ἀνάβηθι πρὸς ἡμᾶς, τοτάχος, και βοήθησον ἡμῖν, καὶ ἐξελοῦ ἡμᾶς· ὅτι συνηγμένοι εἰσὶν ἐφ ἡμᾶς πάντες οἱ βασιλεῖς τῶν Ἀμορῥαίων, οἱ κατοικοῦντες τὴν ὀρεινὴν. Καὶ ἀνέβη Ἰησοῦς ἐκ Γαλγάλων, αὐτὸς καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ πολεμιστὴς μετ αὐτοῦ, πᾶς δυνατὸς ἐν ἰσχύϊ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, μὴ φοβηθῇς αὐτούς, εἰς γὰρ τὰς χεῖράς σου παραδέδωκα αὐτούς· οὐχ ὑπολειφθήσεται ἐξ αὐτῶν οὐδεὶς ἐνώπιον ὑμῶν. Καὶ ἐπεὶ παρεγένετο Ἰησοῦς ἐπ αὐτοὺς ἄφνω, ὅλην τὴν νύκτα εἰσεπορεύθη ἐκ Γαλγάλων. Καὶ ἐξέστησεν αὐτοὺς Κύριος ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ συνέτριψεν αὐτοὺς Κύριος συντρίψει μεγάλῃ ἐν Γαβαών· καὶ κατεδίωξαν αὐτοὺς ὁδὸν ἀναβάσεως Ὡρωνείν, καὶ κατέκοπτον αὐτοὺς ἕως Ἀζηκὰ καὶ ἕως Μακηδά. Ἐν δὲ τῷ φεύγειν αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴς καταβάσεως Ὡρωνεὶν, καὶ Κύριος ἐπέῤῥιψεν αὐτοῖς λίθους χαλάζης ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἕως

Ἀζηκά· καὶ ἐγένοντο πλείους οἱ ἀποθανόντες διὰ τοὺς λίθους τῆς χαλάζης, ἢ οὓς ἀπέκτειναν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ μαχαίρᾳ ἐν τῷ πολέμῳ. Τότε ἐλάλησεν Ἰησοῦς πρὸς Κύριον, ᾗ ἡμέρᾳ παρέδωκεν ὁ Θεὸς τὸν Ἀμορῥαῖον ὑποχείριον Ἰσραὴλ, ἡνίκα συνέτριψεν αὐτοὺς ἐν Γαβαὼν, καὶ συνετρίβησαν ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ εἶπεν Ἰησοῦς, στήτω ὁ ἥλιος κατὰ Γαβαὼν, καὶ ἡ σελήνη κατὰ φάραγγα Αἰλών. Καὶ ἔστη ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη ἐν στάσει, ἕως ἠμύνατο ὁ Θεὸς τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν· καὶ ἔστη ὁ ἥλιος κατὰ μέσον τοῦ οὐρανοῦ· οὐ προεπορεύετο εἰς δυσμὰς εἰς τέλος ἡμέρας μιᾶς. Καὶ οὐκ ἐγένετο ἡμέρα τοιαύτη οὐδὲ τὸ πρότερον οὐδὲ τὸ ἔσχατον, ὥστε ἐπακοῦσαι Θεὸν ἀνθρώπου, ὅτι Κύριος συνεξεπολέμησε τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἔφυγον οἱ πέντε βασιλεῖς οὗτοι, καὶ κατεκρύβησαν εἰς τὸ σπήλαιον τὸ ἐν Μακηδά. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες, εὕρηνται οἱ πέντε βασιλεῖς κεκρυμμένοι ἐν τῷ σπηλαίῳ τῷ ἐν Μακηδά. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς, κυλίσατε λίθους ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ σπηλαίου, καὶ καταστήσατε ἄνδρας φυλάσσειν ἐπ αὐτούς. Ὑμεῖς δὲ μὴ ἐστήκατε, καταδιώκοντες ὀπίσω τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν, καὶ καταλάβετε τὴν οὐραγίαν αὐτῶν, καὶ μὴ ἀφῆτε εἰσελθεῖν εἰς τὰς πόλεις αὐτῶν· παρέδωκε γὰρ αὐτοὺς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰς τὰς χεῖρας ἡμῶν. Καὶ ἐγένετο ὡς κατέπαυσεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς υἱὸς Ἰσραὴλ κόπτοντες αὐτοὺς κοπὴν μεγάλην σφόδρα ἕως εἰς τέλος, καὶ οἱ διασωζόμενοι διεσώθησαν εἰς τὰς πόλεις τὰς ὀχυράς. Καὶ ἀπεστράφη πᾶς ὁ λαὸς πρὸς Ἰησοῦν εἰς Μακηδὰ ὑγιεῖς· καὶ οὐκ ἔγρυξεν οὐδεὶς τῶν υἱῶν Ἰηραὴλ τῇ γλώσσῃ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς, ἀνοίξατε τὸ σπήλαιον, καὶ ἐξαγάγετε τοὺς πέντε βασιλεῖς τούτους ἐκ τοῦ σπηλαίου. Καὶ ἐξηγάγοσαν τοὺς πέντε βασιλεῖς ἐκ τοῦ σπηλαίου, τὸν βασιλέα Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὸν βασιλέα Χεβρὼν, καὶ τὸν βασιλέα Ἰεριμοὺθ, καὶ τὸν βασιλέα Λαχὶς, καὶ τὸν βασιλέα

Ὀδολλάμ. Καὶ ἐπεὶ ἐξήγαγον αὐτοὺς πρὸς Ἰησοῦν, καὶ συνεκάλεσεν Ἰησοῦς πάντα Ἰσραὴλ, καὶ τοὺς ἐναρχομένους τοῦ πολέμου τοὺς συμπορευομένους αὐτῷ, λέγων αὐτοῖς, προπορεύεσθε καὶ ἐπίθετε τοὺς πόδας ὑμῶν ἐπὶ τοὺς τραχήλους αὐτῶν· καὶ προσελθόντες ἐπέθηκαν τοὺς πόδας αὐτῶν ἐπὶ τοὺς τραχήλους αὐτῶν. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς πρὸς αὐτοὺς, μὴ φοβηθῆτε αὐτοὺς, μηδὲ δειλιάσητε, ἀνδρίζεσθε καὶ ἰσχύετε, ὅτι οὕτω ποιήσει Κύριος πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς ὑμῶν, οὓς ὑμεῖς καταπολεμεῖτε αὐτούς. Καὶ ἀπέκτεινεν αὐτοὺς Ἰησοῦς, καὶ ἐκρέμασεν αὐτοὺς ἐπὶ πέντε ξύλων· καὶ ἦσαν κρεμάμενοι ἐπὶ τῶν ξύλων ἕως ἑσπέρας. Καὶ ἐγενήθη πρὸς ἡλίου δυσμὰς, ἐνετείλατο Ἰησοῦς, καὶ καθεῖλον αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ξύλων, καὶ ἔῤῥιψαν αὐτοὺς εἰς τὸ σπήλαιον, εἰς ὃ κατεφύγοσαν ἐκεῖ, καὶ ἐπεκύλισαν λίθους ἐπὶ τὸ σπήλαιον ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Καὶ τὴν Μακηδὰ ἐλάβοσαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἐφόνευσαν αὐτὴν ἐν στόματι ξίφους, καὶ ἐξωλόθρευσαν πᾶν ἐμπνέον ὃ ἦν ἐν αὐτῇ· καὶ οὐ κατελείφθη οὐδεὶς ἐν αὐτῇ διασεσωσμένος καὶ διαπεφευγώς· καὶ ἐποίησαν τῷ βασιλεῖ Μακηδὰ, ὃν τρόπον ἐποίησαν τῷ βασιλεῖ Ἰεριχώ. Καὶ ἀπῆλθεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ αὐτοῦ ἐκ Μακηδὰ εἰς Λεβνὰ, καὶ ἐπολιόρκει Λεβνά. Καὶ παρέδωκεν αὐτὴν Κύριος εἰς χεῖρας Ἰσραήλ· καὶ ἔλαβον αὐτὴν, καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἐφόνευσαν αὐτὴν ἐν στόματι ξίφους, καὶ πᾶν ἐμπνέον ἐν αὐτῇ· καὶ οὐ κατελείφθη ἐν αὐτῇ διασεσωσμένος καὶ διαπεφευγώς· καὶ ἐποίησαν τῷ βασιλεῖ αὐτῆς, ὃν τρόπον ἐποίησαν τῷ βασιλεῖ Ἰεριχώ. Καὶ ἀπῆλθεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ αὐτοῦ ἐκ Λεβνὰ εἰς Λαχὶς, καὶ περιεκάθισεν αὐτὴν, καὶ ἐπολιόρκει αὐτήν. Καὶ παρέδωκε Κύριος τὴν Λαχὶς εἰς τὰς χεῖρας Ἰσραήλ. καὶ ἔλαβεν αὐτὴν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ, καὶ ἐφόνευσαν αὐτὴν ἐν στόματι

ξίφους, καὶ ἐξωλόθρευσαν αὐτὴν, ὃν τρόπον ἐποίησαν τὴν Λεβνά. Τότε ἀνέβη Ἐλὰμ βασιλεὺς Γαζὲρ βοηθήσων τῇ Λαχείς· καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν Ἰησοῦς ἐν στόματι ξίφους, καὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἕως τοῦ μὴ καταλειφθῆναι αὐτῶν σεσωσμένον καὶ διαπεφευγότα. Καὶ ἀπῆλθεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ αὐτοῦ ἐκ Λαχὶς εἰς Ὀδολλὰμ, καὶ περιεκάθισεν αὐτὴν καὶ ἐξεπολιόρκησεν αὐτήν. Καὶ παρέδωκεν αὐτὴν Κύριος ἐν χειρὶ Ἰσραήλ· καὶ ἔλαβεν αὐτὴν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἐφόνευσεν αὐτὴν ἐν στόματι ξίφους, καὶ πᾶν ἐμπνέον ἐν ἀτῇ ἐφόνευσαν, ὃν τρόπον ἐποίησαν τῇ Λαχίς. Καὶ ἀπῆλθεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ αὐτοῦ εἰς Χεβρὼν, καὶ περιεκάθισεν αὐτήν. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν ἐν στόματι ξίφους, καὶ πᾶν τὸ ἐμπνέον ὅσα ἦν ἐν αὐτῇ· οὐκ ἦν διασεσωσμένος· ὃν τρόπον ἐποίησαν τὴν Ὀδολλὰμ, ἐξωλόθρευσαν αὐτὴν, καὶ ὅσα ἦν ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ εἰς Δαβίρ· καὶ περικαθίσαντες αὐτὴν, ἔλαβον αὐτὴν, καὶ τὸν βασιλέα αὐτῆς, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς· καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν ἐν στόματι ξίφους, καὶ ἐξωλόθρευσαν αὐτὴν, καὶ πᾶν ἐμπνέον ἐν αὐτῇ· καὶ οὐ κατέλιπον αὐτῇ οὐδένα διασεσωσμένον· ὃν τρόπον ἐποίησαν τῇ Χεβρὼν καὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῆς, οὕτως ἐποίησαν τῇ Δαβὶρ καὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῆς. Καὶ ἐπάταξεν Ἰησοῦς πᾶσαν τὴν γῆν τῆς ὀρεινῆς, καὶ τὴν Ναγὲβ, καὶ τὴν πεδινὴν, καὶ τὴν Ἀσηδὼθ, καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῆς· οὐ κατέλιπον αὐτῶν σεσωσμένον· καὶ πᾶν ἐμπνέον ζωῆς ἐξωλόθρευσεν, ὃν τρόπον ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἀπὸ Κάδης Βαρνῆ ἕως Γάζης πᾶσαν τὴν Γοσὸμ ἕως τῆς Γαβαών. Καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ τὴν γῆν αὐτῶν ἐπάταξεν Ἰησοῦς εἰσάπαξ· ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ συνεπολέμει τῷ Ἰσραήλ.

# 11

Ὡς δὲ ἤκουσεν Ἰαβὶς βασιλεὺς Ἀσὼρ, ἀπέστειλε πρὸς Ἰωβὰβ βασιλέα Μαρῶν, καὶ πρὸς βασιλέα Συμοὼν, καὶ πρὸς βασιλέα Ἀζὶφ, καὶ πρὸς βασιλεῖς τοὺς κατὰ Σιδῶνα τὴν μεγάλην, εἰς τὴν ὀρεινὴν καὶ εἰς Ἄραβα ἀπέναντι Κενερὼθ, καὶ εἰς τὸ πεδίον, καὶ εἰς Φεναεδδὼρ, καὶ εἰς τοὺς παραλίους Χαναναίους ἀπὸ ἀνατολῶν, καὶ εἰς τοὺς παραλίους Ἀμορῥαίους, καὶ τοὺς Χετταίους, καὶ Φερεζαίους, καὶ Ἰεβουσαίους τοὺς ἐν τῷ ὄρει, καὶ τοὺς Εὐαίους, καὶ τοὺς ὑπὸ τὴν Ἀερμὼν εἰς γῆν Μασσύμα. Καὶ ἐξῆλθον αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν μετ αὐτῶν, ὥσπερ ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης τῷ πλήθει, καὶ ἵπποι καὶ ἅρματα πολλὰ σφόδρα. Καὶ συνῆλθον πάντες οἱ βασιλεῖς αὐτοὶ καὶ παρεγένοντο ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ τοῦ ὕδατος Μαρὼν πολεμῆσαι τὸν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι αὔριον ταύτην τὴν ὥραν ἐγὼ παραδίδωμι τετροπωμένους αὐτοὺς ἐναντίον τοῦ Ἰσραήλ· τοὺς ἵππους αὐτῶν νευροκοπήσεις, καὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν κατακαύσεις ἐν πυρί. Καὶ ἦλθεν Ἰησοῦς καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ πολεμιστὴς ἐπ αὐτοὺς ἐπὶ τὸ ὕδωρ Μαρὼν ἐξάπινα· καὶ ἐπέπεσαν ἐπ αὐτοὺς ἐν τῇ ὀρεινῇ. Καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος ὑποχειρίους Ἰσραήλ· καὶ κόπτοντες αὐτοὺς κατεδίωκον ἕως Σιδῶνος τῆς μεγάλης, καὶ ἕως Μασερὼν, καὶ ἕως τῶν πεδίων Μασσὼχ κατ ἀνατολάς· καὶ κατέκοψαν αὐτοὺς ἕως τοῦ μὴ καταλειφθῆναι αὐτῶν διασεσωσμένον. Καὶ ἐποίησεν αὐτοῖς Ἰησοῦς, ὃν τρόπον ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος· τοὺς ἵππους αὐτῶν ἐνευροκόπησε, καὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν ἐνέπρησε πυρί. Καὶ ἐπεστράφη Ἰησοῦς ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ κατελάβετο Ἀσὼρ, καὶ

τὸν βασιλέα αὐτῆς· ἦν δὲ Ἀσὼρ τοπρότερον ἄρχουσα πασῶν τῶν βασιλειῶν τούτων. Καὶ ἀπέκτειναν πᾶν ἐμπνέον ἐν αὐτῇ ἐν ξίφει, καὶ ἐξωλόθρευσαν πάντας, καὶ οὐ κατελείφθη ἐν αὐτῇ ἐμπνέον· καὶ τὴν Ἀσὼρ ἐνέπρησαν ἐν πυρί. Καὶ πάσας τὰς πόλεις τῶν βασιλειῶν, καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἔλαβεν Ἰησοῦς, καὶ ἀνεῖλεν αὐτοὺς ἐν στόματι ξίφους· καὶ ἐξωλόθρευσαν αὐτοὺς, ὃν τρόπον συνέταξε Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου. Ἀλλὰ πάσας τὰς πόλεις τὰς κεχωματισμένας οὐκ ἐνέπρησεν Ἰσραήλ· πλὴν Ἀσὼρ μόνην ἐνέπρησεν Ἰσραὴλ, καὶ πάντα τὰ σκῦλα αὐτῆς ἐπρονόμευσαν ἑαυτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· αὐτοὺς δὲ πάντας ἐξωλόθρευσαν ἐν στόματι ξίφους, ἕως ἀπώλεσεν αὐτοὺς· οὐ κατέλιπον ἐξ αὐτῶν οὐδὲν ἐμπνέον. Ὃν τρόπον συνέταξε Κύριος τῷ Μωυσῇ τῷ παιδὶ αὐτοῦ, καὶ Μωυσῆς ὡσαύτως ἐνετείλατο τῷ Ἰησοῦ· καὶ οὕτως ἐποίησεν Ἰησοῦς, οὐ παρέβη οὐδὲν ἀπὸ πάντων ὧν συνέταξεν αὐτῷ Μωυσῆς. Καὶ ἔλαβεν Ἰησοῦς πᾶσαν τὴν γῆν τὴν ὀρεινὴν, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Ναγὲβ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Γοσὸμ, καὶ τὴν πεδινὴν, καὶ τὴν πρὸς δυσμαῖς, καὶ τὸ ὄρος Ἰσραὴλ, καὶ τὰ ταπεινὰ τὰ πρὸς τῷ ὄρει ἀπὸ ὄρους Χελχὰ, καὶ ὃ προσαναβαίνει εἰς Σηεὶρ, καὶ ἕως Βαλαγὰδ, καὶ τὰ πεδία τοῦ Λιβάνου ὑπὸ τὸ ὄρος τὸ Ἀερμών· καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἔλαβε, καὶ ἀνεῖλε, καὶ ἀπέκτεινε. Καὶ ἡμέρας πλείους ἐποίησεν Ἰησοῦς πρὸς τοὺς βασιλεῖς τούτους τὸν πόλεμον. Καὶ οὐκ ἦν πόλις, ἣν οὐκ ἔλαβεν Ἰσραήλ· πάντα ἐλάβοσαν ἐν πολέμῳ. Ὅτι διὰ Κυρίου ἐγένετο κατισχύσαι αὐτῶν τὴν καρδίαν συναντᾶν εἰς πόλεμον πρὸς Ἰσραὴλ, ἵνα ἐξολοθρευθῶσιν, ὅπως μὴ δοθῇ αὐτοῖς ἔλεος, ἀλλ ἵνα ἐξολοθρευθῶσιν, ὃν τρόπον εἶπε Κύριος πρὸς Μωυσῆν. Καὶ ἦλθεν Ἰησοῦς ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ ἐξωλόθρευσε τοὺς Ἐνακὶμ ἐκ τῆς ὀρεινῆς, ἐκ Χεβρὼν, καὶ ἐκ Δαβὶρ, καὶ ἐξ Ἀναβὼθ, καὶ ἐκ παντὸς

Ἰούδα σὺν ταῖς πόλεσιν αὐτῶν· καὶ ἐξωλόθρευσεν αὐτοὺς Ἰησοῦς. Οὐ κατελείφθη τῶν Ἐνακὶμ ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ἀλλὰ πλὴν ἐν Γάζῃ, καὶ ἐν Γὲθ, καὶ ἐν Ἀσελδὼ κατελείφθη. Καὶ ἔλαβεν Ἰησοῦς πᾶσαν τὴν γῆν, καθότι ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ· καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς Ἰησοῦς ἐν κληρονομίᾳ Ἰσραὴλ ἐν μερισμῷ κατὰ φυλὰς αὐτῶν· καὶ ἡ γῆ κατέπαυσε πολεμουμένη.

# 12

Καὶ οὗτοι οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, οὓς ἀνεῖλον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ κατεκληρονόμησαν τὴν γῆν αὐτῶν πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἀφ ἡλίου ἀνατολῶν ἀπὸ φάραγγος Ἀρνῶν ἕως τοῦ ὄρους Ἀερμὼν, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Ἄραβα ἀπ ἀνατολῶν. Σηὼν τὸν βασιλέα τῶν Ἀμορῥαίων, ὃς κατῴκει ἐν Ἐσεβὼν, κυριεύων ἀπὸ Ἀρνῶν, ἥ ἐστιν ἐν τῇ φάραγγι κατὰ μέρος τῆς φάραγγος, καὶ τὸ ἥμισυ τῆς Γαλαὰδ ἕως Ἰαβὸκ, ὅρια υἱῶν Ἀμμών. Καὶ Ἄραβ ἕως τῆς θαλάσσης Χενερὲθ κατ ἀνατολὰς, καὶ ἕως τῆς θαλάσσης Ἄραβα, θάλασσαν τῶν ἁλῶν ἀπὸ ἀνατολῶν ὁδὸν τὴν κατὰ Ἀσειμὼθ, ἀπὸ Θαιμὰν τὴν ὑπὸ Ἀσηδὼθ Φασγά. Καὶ Ὢγ βασιλεὺς Βασὰν ὑπελείφθη ἐκ τῶν γιγάντων, ὁ κατοικῶν ἐν Ἀσταρὼθ καὶ ἐν Ἐδραΐν, ἄρχων ἀπὸ ὄρους Ἀερμὼν καὶ ἀπὸ Σεκχαὶ, καὶ πᾶσαν τὴν Βασὰν ἕως ὁρίων Γεργεσὶ, καὶ τὴν Μαχὶ, καὶ τὸ ἥμισυ Γαλαδ ὁρίων Σηὼν βασιλέως Ἐσεβών. Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπάταξαν αὐτούς· καὶ ἔδωκεν αὐτὴν Μωυσῆς ἐν κληρονομίᾳ Ῥουβὴν, καὶ Γὰδ, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ. Καὶ οὗτοι οἱ βασιλεῖς τῶν Ἀμορῥαίων, οὓς ἀνεῖλεν Ἰησοῦς καὶ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου παρὰ θάλασσαν Βαλαγὰδ ἐν τῷ πεδίῳ τοῦ Λιβάνου, καὶ

ἕως ὄρους τοῦ Χελχὰ ἀναβαινόντων εἰς Σηείρ· καὶ ἔδωκεν αὐτὴν Ἰησοῦς ταῖς φυλαῖς Ἰσραὴλ κληρονομεῖν κατὰ κλῆρον αὐτῶν, ἐν τῷ ὄρει, καὶ ἐν τῷ πεδίῳ, καὶ ἐν Ἄραβ, καὶ ἐν Ἀσηδὼθ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ Ναγὲβ· τὸν Χετταῖον, καὶ τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ τὸν Χαναναῖον, καὶ τὸν Φερεζαῖον, καὶ τὸν Εὐαῖον, καὶ τὸν Ἰεβουσαῖον. Τὸν βασιλέα Ἰεριχὼ, καὶ τὸν βασιλέα τῆς Γαὶ, ἥ ἐστι πλησίον Βαιθὴλ, βασιλέα Ἱερουσαλὴμ, βασιλέα Χεβρὼν, βασιλέα Ἰεριμοὺθ, βασιλέα Λαχὶς, βασιλέα Αἰλὰμ, βασιλέα Γαζὲρ, βασιλέα Δαβὶρ, βασιλέα Γαδὲρ, βασιλέα Ἑρμὰθ, βασιλέα Ἀδὲρ, βασιλέα Λεβνὰ, βασιλέα Ὀδολλὰμ, βασιλέα Ἠλὰθ, βασιλέα Ταφοὺτ, βασιλέα Ὀφὲρ, βασιλέα Ὀφὲκ τῆς Ἀρὼκ, βασιλέα Ἀσὼμ, βασιλέα Συμοὼν, βασιλέα Μαμβρὼθ, βασιλέα Ἀζὶφ, βασιλέα Κάδης, βασιλέα Ζαχὰκ, βασιλέα Μαρεδὼθ, βασιλέα Ἰεκὸμ τοῦ Χερμὲλ, βασιλέα Ὀδολλὰμ τοῦ Φεννεαδὼρ, βασιλέα Γεῖ τῆς Γαλιλαίας, βασιλέα Θερσά· πάντες οὗτοι βασιλεῖς εἰκοσιεννέα.

# 13

Καὶ Ἰησοῦς πρεσβύτερος προβεβηκὼς τῶν ἡμερῶν· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰησοῦν, σὺ προβέβηκας τῶν ἡμερῶν, καὶ ἡ γῆ ὑπολέλειπται πολλὴ εἰς κληρονομίαν. Καὶ αὕτη ἡ γῆ καταλελειμμένη· ὅρια Φυλιστιεὶμ, ὁ Γεσιρὶ, καὶ ὁ Χαναναῖος, ἀπὸ τῆς ἀοικήτου τῆς κατὰ πρόσωπον Αἰγύπτου ἕως τῶν ὁρίων Ἀκκαρὼν ἐξ εὐωνύμων τῶν Χαναναίων προσλογίζεται ταῖς πέντε σατραπείαις τῶν Φυλιστιείμ, τῷ Γαζαίῳ, καὶ τῷ Ἀζωτίῳ, καὶ τῷ Ἀσκαλωνίτῃ, καὶ τῷ Γετθαίῳ, καὶ τῷ Ἀκκαρωνίτῃ, καὶ τῷ Εὐαίῳ, ἐκ Θαιμὰν καὶ πάσῃ γῇ Χαναὰν ἐναντίον Γάζης, καὶ οἱ Σιδώνιοι ἕως

Ἀφὲκ, ἕως τῶν ὁρίων τῶν Ἀμορῥαίων, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν Γαλιὰθ Φυλιστιεὶμ, καὶ πάντα τὸν Λίβανον ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου ἀπὸ Γαλγὰλ ὑπὸ τὸ ὄρος τὸ Ἀερμὼν ἕως τῆς εἰσόδου Ἐμὰθ, πᾶς ὁ κατοικῶν τὴν ὀρεινὴν ἀπὸ τοῦ Λιβάνου ἕως τῆς Μασερὲθ Μεμφωμαὶμ. Πάντας τοὺς Σιδωνίους, ἐγὼ αὐτοὺς ἐξολοθρεύσω ἀπὸ προσώπου Ἰσραήλ· ἀλλὰ διάδος αὐτὴν ἐν κλήρῳ τῷ Ἰσραὴλ, ὃν τρόπον σοὶ ἐνετειλάμην. Καὶ νῦν μέρισον τὴν γῆν ταύτην ἐν κληρονομίᾳ ταῖς ἐννέα φυλαῖς, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσή. Ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου ἕως τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης κατὰ δυσμὰς ἡλίου δώσεις αὐτήν· ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη ὁριεῖ. ταῖς δυσὶ φυλαῖς, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσή, τῷ Ῥουβὴν, καὶ τῷ Γὰδ ἔδωκε Μωυσῆς ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου· κατ ἀνατολὰς ἡλίου δέδωκεν αὐτῷ Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου, ἀπὸ Ἀροὴρ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τοῦ χείλους χειμάῤῥου Ἀρνών, καὶ τὴν πόλιν τὴν ἐν μέσῳ τῆς φάραγγος, καὶ πᾶσαν τὴν Μισὼρ ἀπὸ Μαιδαβάν· Πάσας τὰς πόλεις Σηὼν βασιλέως Ἀμορῥαίων, ὃς ἐβασίλευσεν ἐν Ἐσεβὼν ἕως τῶν ὁρίων υἱῶν Ἀμμῶν· Καὶ τὴν Γαλααδίτιδα, καὶ τὰ ὅρια Γεσιρὶ, καὶ τοὺς Μαχατὶ, πᾶν ὄρος Ἀερμὼν, καὶ πᾶσαν τὴν Βασανίτιν ἕως Ἀχά· Πᾶσαν τὴν βασιλείαν Ὼγ ἐν τῇ Βασανίτιδι, ὃς ἐβασίλευσεν ἐν Ἀσταρὼθ καὶ ἐν Ἐδραΐν· οὗτος κατελείφθη ἀπὸ τῶν γιγάντων, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν Μωυσῆς, καὶ ἐξωλόθρευσε. Καὶ οὐκ ἐξωλόθρευσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸν Γεσιρὶ, καὶ τὸν Μαχατὶ, καὶ τὸν Χαναναῖον· καὶ κατῴκει βασιλεὺς Γεσιρὶ καὶ ὁ Μαχατὶ ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. Πλὴν τῆς φυλῆς Λευὶ οὐκ ἐδόθη κληρονομία· Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, οὗτος κληρονομία αὐτῶν, καθὰ εἶπεν αὐτοῖς Κύριος· καὶ οὗτος ὁ καταμερισμὸς, ὃν κατεμέρισε Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν Ἀραβὼθ Μωὰβ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου κατὰ Ἰεριχώ. Καὶ ἔδωκε Μωυσῆς τῇ φυλῇ

Ῥουβὴν κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ ἐγενήθη αὐτῶν τὰ ὅρια ἀπὸ Ἀροὴρ, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον φάραγγος Ἀρνῶν, καὶ ἡ πόλις ἡ ἐν τῇ φάραγγι Ἀρνῶν· καὶ πᾶσαν τὴν Μισὼρ, ἕως Ἐσεβὼν, καὶ πάσας τὰς πόλεις τὰς οὔσας ἐν τῇ Μισὼρ, καὶ Δαιβὼν, καὶ Βαιμὼν Βαὰλ, καὶ οἴκου Μεελβὼθ, καὶ Βασὰν, καὶ Βακεδμὼθ, καὶ Μαιφαὰδ, καὶ, Καριθαὶμ, καὶ Σεβαμὰ, καὶ Σεραδὰ, καὶ Σιὼν ἐν τῷ ὄρει Ἐνὰβ, καὶ Βαιθφογὼρ, καὶ Ἀσηδὼθ Φασγὰ, καὶ Βαιτθασεινὼθ, καὶ πάσας τὰς πόλεις τοῦ Μισὼρ, καὶ πᾶσαν τὴν βασιλείαν τοῦ Σηὼν βασιλέως τῶν Ἀμορῥαίων, ὃν ἐπάταξε Μωυσῆς αὐτὸν καὶ τοὺς ἡγουμένους Μαδιὰμ, καὶ τὸν Εὐὶ, καὶ τὸν Ῥοβὸκ, καὶ τὸν Σοὺρ, καὶ τὸν Οὖρ, καὶ τὸν Ῥοβὲ ἄρχοντα ἕναρα Σιὼν, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Σιών. Καὶ τὸν Βαλαὰμ τὸν τοῦ Βαιὼρ τὸν μάντιν ἀπέκτειναν ἐν τῇ ῥοπῇ. Ἐγένετο δὲ τὰ ὅρια Ῥουβὴν, Ἰορδάνης ὅριον· αὐτη ἡ κληρονομία υἱῶν Ῥουβὴν κατὰ δήμους αὐτῶν, αἱ πόλεις αὐτῶν καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν. Ἔδωκε δὲ Μωυσῆς τοῖς υἱοῖς Γὰδ κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια αὐτῶν Ἰαζήρ· πᾶσαι πόλεις Γαλαὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ γῆς υἱῶν Ἀμμῶν ἕως Ἄραβα, ἥ ἐστι κατὰ προσωπον Ἀράδ. Καὶ ἀπὸ Ἐσεβὼν ἕως Ἀραβὼθ κατὰ τὴν Μασσηφὰ, καὶ Βοτανὶμ, καὶ Μαὰν ἕως τῶν ὁρίων Δαιβὼν, καὶ Ἐναδὼμ καὶ Ὀθαργαΐ καὶ Βαινθαναβρὰ καὶ Σοκχωθὰ καὶ Σαφὰν καὶ τὴν λοιπὴν βασιλείαν Σηὼν βασιλέως Ἐσεβών· καὶ ὁ Ἰορδάνης ὁριεῖ ἕως μέρους τῆς θαλάσσης Χενερὲθ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἀπ ἀνατολῶν. Αὕτη ἡ κληρονομία υἱῶν Γὰδ κατὰ δήμους αὐτῶν καὶ κατὰ πόλεις αὐτῶν· κατὰ δήμους αὐτῶν αὐχένα ἐπιστρέψουσιν ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, ὅτι ἐγενήθη κατὰ δήμους αὐτῶν αἱ πόλεις αὐτῶν, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν. Καὶ ἔδωκε Μωυσῆς τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια αὐτῶν ἀπὸ Μαὰν, καὶ πᾶσα βασιλεία Βασὰν, καὶ πᾶσα βασιλεία Ὼγ βασιλέως τῆς Βασὰν, καὶ πάσας τὰς κώμας

Ἰαΐρ, αἵ εἰσιν ἐν τῇ Βασανίτιδι, ἑξήκοντα πόλεις. Καὶ τὸ ἥμισυ τῆς Γαλαάδ· καὶ ἐν Ἀσταρὼθ, καὶ ἐν Ἐδραΐν πόλεις βασιλείας Ὢγ ἐν τῇ Βασανίτιδι, τοῖς υἱοῖς Μαχὶρ υἱοῖς Μανασσῆ, καὶ τοῖς ἡμίσεσιν υἱοις Μαχὶρ υἱοῖς Μανασσῆ, κατὰ δήμους αὐτῶν. Οὗτοι οὓς κατεκληρονόμησε Μωυσῆς πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν Ἀραβὼθ Μωὰβ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου τοῦ κατὰ Ἰεριχὼ ἀπ ἀνατολῶν.

# 14

Καὶ οὗτοι οἱ κατακληρονομήσαντες υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν τῇ γῇ Χαναὰν, οἷς κατεκληρονόμησαν αὐτοῖς Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυῆ, καὶ οἱ ἄρχοντες πατριῶν φυλῶν τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Κατὰ κλήρους ἐκληρονόμησαν, ὃν τρόπον ἐνετείλατο Κύριος ἐν χειρὶ Ἰησοῦ ταῖς ἐννέα φυλαῖς, καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς ἀπὸ τοῦ πέραν τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ τοῖς Λευίταις οὐκ ἔδωκε κλῆρον ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰωσὴφ δύο φυλαὶ Μανασσὴ καὶ Ἐφραΐμ· καὶ οὐκ ἐδόθη μερὶς ἐν τῇ γῇ τοῖς Λευίταις, ἀλλ ἢ πόλεις κατοικεῖν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῶν τοῖς κτήνεσι, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν. Ὃν τρόπον ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ, οὕτως ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐμέρισαν τὴν γῆν. Καὶ προσήλθοσαν οἱ υἱοῖ Ἰούδα πρὸς Ἰησοῦν ἐν Γαλγάλ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Χάλεβ ὁ τοῦ Ἰεφονὴ ὁ Κενεζαῖος, σὺ ἐπίστῃ τὸ ῥῆμα, ὃ ἐλάλησε Κύριος πρὸς Μωυσῆν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ περὶ ἐμοῦ καὶ σοῦ ἐν Κάδης Βαρνῆ. Τεσσαράκοντα γὰρ ἐτῶν ἦμην ὅτε ἀπέστειλέ με Μωυσῆς ὁ παῖς τοῦ Θεοῦ ἐκ Κάδης Βαρνῆ κατασκοπεῦσαι τὴν γῆν· καὶ ἀπεκρίθην αὐτῷ λόγον κατὰ τὸν νοῦν αὐτοῦ. Οἱ ἀδελφοί μου οἱ ἀναβάντες μετ ἐμοῦ μετέστησαν τὴν καρδίαν τοῦ λαοῦ, ἐγὼ δὲ προσετέθην ἐπακολουθῆσαι Κυρίῳ τῷ

Θεῷ μου. Καὶ ὤμοσε Μωυσῆς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγων, ἡ γῆ ἐφ ἣν ἐπέβης, σοὶ ἔσται ἐν κλήρῳ καὶ τοῖς τέκνοις σου εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι προσετέθης ἐπακολουθῆσαι ὀπίσω Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ νῦν διέθρεψέ με Κύριος ὃν τρόπον εἶπε· τοῦτο τεσσαρακοστὸν καὶ πέμπτον ἔτος, ἀφ οὗ ἐλάλησε Κύριος τὸ ῥῆμα τοῦτο πρὸς Μωυσῆν· καὶ ἐπορεύθη Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ νῦν ἰδοὺ ἐγὼ σήμερον ὀγδοήκοντα καὶ πέντε ἐτῶν· Ἔτι εἰμὶ σήμερον ἰσχύων, ὡσεὶ ὅτε ἀπέστειλέ με Μωυσῆς, ὡσαύτως ἰσχύω νῦν ἐζελθεῖν καὶ εἰσελθεῖν εἰς τὸν πόλεμον. Καὶ νῦν αἰτοῦμαί σε τὸ ὄρος τοῦτο, καθὰ εἶπε Κύριος τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι σὺ ἀκήκοας τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· νῦν δὲ οἱ Ἐνακὶμ ἐκεῖ εἰσι, πόλεις ὀχυραὶ καὶ μεγάλαι· ἐὰν οὖν Κύριος μετ ἐμοῦ ᾖ, ἐξολοθρεύσω αὐτοὺς, ὃν τρόπον εἶπέ μοι Κύριος. Καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν Ἰησοῦς, καὶ ἔδωκε Χεβρὼν τῷ Χάλεβ υἱῷ Ἰεφονῆ υἱῷ Κενὲζ ἐν κλήρῳ. Διὰ τοῦτο ἐγενήθη ἡ Χεβρὼν τῷ Χάλεβ τῷ τοῦ Ἰεφονῆ τοῦ Κενεζαίου ἐν κλήρῳ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, διὰ τὸ αὐτὸν ἐπακολουθῆσαι τῷ προστάγματι Κυρίου Θεοῦ Ἰσραήλ. Τὸ δὲ ὄνομα τῆς Χεβρὼν ἦν τὸ πρότερον πόλις Ἀργὸβ, μητρόπολις τῶν Ἐνακὶμ αὕτη· καὶ ἡ γῆ ἐκόπασε τοῦ πολέμου.

# 15

Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια φυλῆς Ἰούδα κατὰ δήμους αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὁρίων τῆς Ἰδουμαίας ἀπὸ τῆς ἐρήμου Σὶν ἕως Κάδης πρὸς Λίβα. Καὶ ἐγενήθη αὐτῶν τὰ ὅρια ἀπὸ Λιβὸς ἕως μέρους θαλάσσης τῆς ἁλυκῆς ἀπὸ τῆς λοφιᾶς τῆς φερούσης ἐπὶ Λίβα. Καὶ διαπορεύεται ἀπέναντι τῆς προσαναβάσεως Ἀκραβίν· καὶ ἐκπεριπορεύεται Σενὰ,

καὶ ἀναβαίνει ἀπὸ Λιβὸς ἐπὶ Κάδης Βαρνῆ· καὶ ἐκπορεύεται Ἀσωρὼν, καὶ προσαναβαίνει εἰς Σάραδα· καὶ ἐκπορεύεται τὴν κατὰ δυσμὰς Κάδης, καὶ ἐκπορεύεται ἐπὶ Σελμωνὰν, καὶ διεκβάλλει ἕως φάραγγος Αἰγύπτου· καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος τῶν ὁρίων ἐπὶ τὴν θάλασσαν· τοῦτό ἐστιν αὐτῶν ὅρια ἀπὸ Λιβός. Καὶ τὰ ὅρια ἀπὸ ἀνατολῶν πᾶσα ἡ θάλασσα ἡ ἁλυκὴ ἕως τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ τὰ ὅρια αὐτῶν ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ ἀπὸ τῆς λοφιᾶς τῆς θαλάσσης καὶ ἀπὸ τοῦ μέρους τοῦ Ἰορδάνου. Ἐπιβαίνει τὰ ὅρια ἐπὶ Βαιθαγλαάμ· καὶ παραπορεύεται ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἐπὶ Βαιθάραβα, καὶ προσαναβαίνει τὰ ὅρια ἐπὶ λίθον Βαιὼν υἱοῦ Ῥουβήν· Καὶ προσαναβαίνει τὰ ὅρια ἐπὶ τὸ τέταρτον τῆς φάραγγος Ἀχὼρ, καὶ καταβαίνει ἐπὶ Γαλγὰλ, ἥ ἐστιν ἀπέναντι τῆς προσβάσεως Ἀδαμμὶν, ἥ ἐστι κατὰ Λίβα τῇ φάραγγι, καὶ διεκβάλλεῖ ἐπὶ τὸ ὕδωρ τῆς πηγῆς τοῦ ἡλίου· καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος πηγὴ Ῥωγήλ· Καὶ ἀναβαίνει τὰ ὅρια εἰς φάραγγα Ἐννὸμ, ἐπὶ νώτου τοῦ Ἰεβοῦις ἀπὸ Λιβός· αὕτη ἐστιν Ἱερουσαλήμ· καὶ διεκβάλλει τὰ ὅρια ἐπὶ κορυφὴν ὄρους, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον φάραγγος Ἐννὸμ πρὸς θαλάσσης, ἥ ἐστιν ἐκ μέρους γῆς Ῥαφαΐν ἐπὶ βοῤῥᾶ· Καὶ διεκβάλλει τὸ ὅριον ἀπὸ κορυφῆς τοῦ ὄρους ἐπὶ πηγὴν ὕδατος Ναφθὼ, καὶ διεκβάλλει εἰς τὸ ὄρος Ἐφρών· καὶ ἄξει τὸ ὅριον εἰς Βαάλ· αὕτη ἐστὶ πόλις Ἰαρίμ. Καὶ περιελεύσεται ὅριον ἀπὸ Βαὰλ ἐπὶ θάλασσαν, καὶ παρελεύσεται εἰς ὄρος Ἀσσὰρ ἐπὶ νώτου πόλιν Ἰαρὶν ἀπὸ Βοῤῥᾶ· αὕτη ἐστὶ Χασλών· καὶ καταβήσεται ἐπὶ πόλιν ἡλίου, καὶ παρελεύσεται ἐπὶ Λίβα· Καὶ διεκβάλλει τὸ ὅριον κατὰ νώτου Ἀκκαρὼν ἐπὶ βοῤῥᾶν, καὶ διεκβαλεῖ τὰ ὅρια εἰς Σοκχὼθ, καὶ παρελεύσεται ὅρια ἐπὶ Λίβα, καὶ διεκβαλεῖ ἐπὶ Λεβνὰ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος τῶν ὁρίων ἐπὶ θάλασσαν· Καὶ τὰ ὅρια αὐτῶν ἀπὸ θαλάσσης, ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη ὁριεῖ. Ταῦτα τὰ ὅρια υἱῶν Ἰούδα

κύκλῳ κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ τῷ Χάλεβ υἱῷ Ἰεφονῆ ἔδωκε μερίδα ἐν μέσῳ υἱῶν Ἰούδα διὰ προστάγματος τοῦ Θεοῦ· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Ἰησοῦς τὴν πόλιν Ἀρβὸκ μητρόπολιν Ἐνάκ· αὕτη ἐστὶ Χεβρών. Καὶ ἐξωλόθρευσεν ἐκεῖθεν Χάλεβ υἱὸς Ἰεφονὴ τοὺς τρεῖς υἱοὺς Ἐνὰκ, τὸν Σουσὶ καὶ Θολαμὶ καὶ τὸν Ἀχιμᾶ. Καὶ ἀνέβη ἐκεῖθεν Χάλεβ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Δαβίρ· τὸ δὲ ὄνομα Δαβὶρ ἦν τὸ πρότερον πόλις Γραμμάτων. Καὶ εἶπε Χάλεβ, ὃς ἂν λάβῃ καὶ ἐκκόψῃ τὴν πόλιν τῶν Γραμμάτων καὶ κυριεύσῃ αὐτῆς, δώσω αὐτῷ τὴν Ἀσχὰν θυγατέρα μου εἰς γυναῖκα. Καὶ ἔλαβεν αὐτὴν Γοθονιὴλ υἱὸς Χενὲζ ἀδελφοῦ Χάλεβ· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ τὴν Ἀσχὰν θυγατέρα αὐτοῦ γυναῖκα. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐκπορεύέσθαι αὐτὴν καὶ συνέβουλεύσατο αὐτῷ, λέγουσα, αἰτήσομαι τὸν πατέρα μου ἀγρόν· καὶ ἐβόησεν ἐκ τοῦ ὄνου· καὶ εἶπεν αὐτῇ Χάλεβ, τί ἐστί σοι; Καὶ εἶπεν αὐτῷ, δός μοι εὐλογίαν, ὅτι εἰς γῆν Ναγὲβ δέδωκάς με· δός μοι τὴν Βοτθανίς· καὶ ἔδωκεν αὐτῇ τὴν Γοναιθλὰν τὴν ἄνω καὶ τὴν Γοναιθλὰν τὴν κάτω. Αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Ἰούδα. Ἐγενήθησαν δὲ πόλεις αὐτῶν πόλεις πρὸς τῇ φυλῇ υἱῶν Ἰούδα ἐφ ὁρίων Ἐδὼμ ἐπὶ τῆς ἐρήμου, καὶ Βαισελεὴλ, καὶ Ἀρὰ, καὶ Ἀσὼρ, καὶ Ἰκὰμ, καὶ Ῥεγμὰ, καὶ Ἀρουὴλ, καὶ Κάδης, καὶ Ἀσοριωναὶν, καὶ Μαινὰμ, καὶ Βαλμαινὰν, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, καὶ αἱ πόλεις Ἀσερὼν, αὕτη Ἀσὼρ, καὶ Σὴν, καὶ Σαλμαὰ, καὶ Μωλαδὰ, καὶ Σερὶ, καὶ Βαιφαλὰθ, καὶ Χολασεωλὰ, καὶ Βηρσαβεέ· καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν, Βαλὰ, καὶ Βακὼκ, καὶ Ἀσὸμ, καὶ Ἐλβωϋδὰδ, καὶ Βαιθὴλ, καὶ Ἑρμὰ, καὶ Σεκελὰκ, καὶ Μαχαρὶμ, καὶ Σεθεννὰκ, καὶ Λαβὼς, καὶ Σαλὴ, καὶ Ἐρωμώθ· πόλεις εἰκοσιεννέα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Ἐν τῇ πεδινῇ Ἀσταὼλ, καὶ Ῥάα, καὶ Ἄσσα. Καὶ Ῥάμεν, καὶ Τανὼ, καὶ Ἰλουθὼθ, καὶ Μαιανὶ, καὶ Ἰερμοὺθ, καὶ Ὀδολλὰμ, καὶ Μεμβρὰ, καὶ Σαωχὼ, καὶ Ἰαζηκὰ, καὶ Σακαρὶμ, καὶ Γάδηρα, καὶ αἱ

ἐπαύλεις αὐτῆς· πόλεις δεκατέσσαρες, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Σεννὰ, καὶ Ἀδασὰν, καὶ Μαγαδαλγὰδ, καὶ Δαλὰδ, καὶ Μασφὰ, καὶ Ἰαχαρεὴλ, καὶ Βασηδὼθ, καὶ Ἰδεαδαλέα, καὶ Χαβρά, καὶ Μαχὲς, καὶ Μααχὼς, καὶ Γεδδὼρ, καὶ Βαγαδιὴλ, καὶ Νωμὰν, καὶ Μαχηδάν· πόλεις ἑκκαίδεκα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Λεβνὰ, καὶ Ἰθὰκ, καὶ Ἀνὼχ, καὶ Ἰανὰ, καὶ Νασὶβ, καὶ Κεϊλὰμ, καὶ Ἀκιεζὶ, καὶ Κεζὶβ, καὶ Βαθησὰρ, καὶ Αἰλώμ· πόλεις δέκα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Ἀκκαρὼν, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῆς, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν, ἀπὸ Ἀκκαρὼν Γεμνά· καὶ πᾶσαι ὅσαι εἰσὶ πλησίον Ἀσηδώθ· καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, Ἀσιεδὼθ, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῆς, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῆς· Γάζα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῆς, καὶ ἐπαύλεις αὐτῆς ἕως τοῦ χειμάῤῥου Αἰγύπτου, καὶ ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη διορίζει. Καὶ ἐν τῇ ὀρεινῇ Σαμὶρ, καὶ Ἰεθὲρ, καὶ Σωχὰ, καὶ Ῥεννὰ, καὶ πόλις Γραμμάτων, αὕτη Δαβὶρ, καὶ Ἀνὼν, καὶ Ἦς, καὶ Μὰν, καὶ Αἰσὰμ, καὶ Γοσὸμ, καὶ Χαλοὺ, καὶ Χαννὰ, καὶ Γηλώμ· πόλεις ἕνδεκα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Αἰρὲμ, καὶ Ῥεμνὰ, καὶ Σομὰ, καὶ Ἰεμαΐν, καὶ Βαιθαχοὺ, καὶ Φακουὰ, καὶ Εὐμὰ, καὶ πόλις Ἀρβὸκ, αὕτη ἐστὶ Χεβρὼν, καὶ Σωραίθ· πόλεις ἐννέα, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν· Μαὼρ, καὶ Χερμὲλ, καὶ Ὀζὶβ, καὶ Ἰτὰν, καὶ Ἰαριὴλ, καὶ Ἀρικὰμ, καὶ Ζακαναΐμ, καὶ Γαβαὰ, καὶ Θαμναθά· πόλεις ἐννέα, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Αἰλουὰ, καὶ Βηθσοὺρ, καὶ Γεδδὼν, καὶ Μαγαρὼθ, καὶ Βαιθανὰμ, καὶ Θεκούμ· πόλεις ἓξ, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Καριαθβαὰλ, αὕτη ἡ πόλις Ἰαρὶμ, καὶ Σωθηβᾶ· πόλεις δύο, καὶ αἱ ἐπαύλεις αὐτῶν· καὶ Βαδδαργεὶς, καὶ Θαραβαὰμ, καὶ Αἰνὼν, καὶ Αἰοχιοζὰ, καὶ Ναφλαζὼν, καὶ αἱ πόλεις Σαδῶν, καὶ Ἀρκάδης· πόλεις ἑπτὰ, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Καὶ ὁ Ἰεβουσαῖος κατῴκει ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν οἱ υἱοὶ Ἰούδα ἀπολέσαι αὐτούς· καὶ κατῴκησαν οἱ Ἰεβουσαῖοι ἐν Ἰερουσαλὴμ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης.

# 16

Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια υἱῶν Ἰωσὴφ ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου τοῦ κατὰ Ἰεριχὼ ἀπὸ ἀνατολῶν· καὶ ἀναβήσεται ἀπὸ Ἰεριχὼ εἰς τὴν ὀρεινὴν, τὴν ἔρημον, εἰς Βαιθὴλ Λουζά. Καὶ ἐξελεύσεται εἰς Βαιθὴλ, καὶ παρελεύσεται ἐπὶ τὰ ὅρια τοῦ Ἀχαταρωθί. Καὶ διελεύσεται ἐπὶ τὴν θάλασσαν ἐπὶ τὰ ὅρια Ἀπταλὶμ ἕως τῶν ὁρίων Βαιθωρὼν τὴν κάτω, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτῶν ἐπὶ τὴν θάλασσαν. Καὶ ἐκληρονόμησαν οἱ υἱοὶ Ἰωσὴφ, Ἐφραΐμ καὶ Μανασσή. Καὶ ἐγενήθη ὅρια υἱῶν Ἐφραΐμ κατὰ δήμους αὐτῶν· καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια τῆς κληρονομίας αὐτῶν ἀπ ἀνατολῶν Ἀταρὼθ, καὶ Ἐρὼκ ἕως Βαιθωρὼν τὴν ἄνω, καὶ Γαζαρά. Καὶ ἐλεύσεται τὰ ὅρια ἐπὶ τὴν θάλασσαν εἰς Ἰκασμὼν ἀπὸ Βοῤῥᾶ Θερμᾶ· περιελεύσεται ἐπ ἀνατολὰς εἰς Θηνασὰ, καὶ Σέλλης, καὶ παρελεύσεται ἀπ ἀνατολῶν εἰς Ἰανῶκὰ, καὶ εἰς Μαχὼ, καὶ Ἀταρὼθ, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· καὶ ἐλεύσεται ἐπὶ Ἰεριχὼ, καὶ διεκβαλεῖ ἐπὶ τὸν Ἰορδάνην. Καὶ ἀπὸ Τάφου πορεύσεται τὰ ὅρια ἐπὶ θάλασσαν ἐπὶ Χελκανα· καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτῶν ἐπὶ θάλασσαν· αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς Ἐφραΐμ κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ αἱ πόλεις αἱ ἀφορισθεῖσαι τοῖς υἱοῖς Ἐφραΐμ ἀναμέσον τῆς κληρονομίας νἱῶν Μανασσή, πᾶσαι αἱ πόλεις καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Καὶ οὐκ ἀπώλεσεν Ἐφραΐμ τὸν Χαναναῖον τὸν κατοικοῦντα ἐν Γάζέρ· καὶ κατῴκει ὁ Χαναναῖος ἐν τῷ Ἐφραΐμ ἕως τῆς ἡμέρας ταυτης, ἕως ἀνέβη Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ ἐνέπρησεν αὐτὴν ἐν πυρί· καὶ τοὺς Χαναναίους, καὶ τοὺς Φερεζαίους, καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν Γαζὲρ, ἐξεκέντησαν· καὶ ἔδωκεν αὐτὴν Φαραὼ ἐν φερνῇ τῇ θυγατρὶ αὐτοῦ.

# 17

Καὶ ἐγένετο τὰ ὅρια φυλῆς υἱῶν Μανασσῆ, ὅτι οὗτος πρωτότοκος τῷ Ἰωσὴφ, τῷ Μαχὶρ πρωτοτόκῳ Μανασσῆ πατρὶ Γαλαὰδ, ἀνὴρ γὰρ πολεμιστὴς ἦν, ἐν τῇ Γαλααδίτιδι καὶ ἐν τῇ Βασανίτιδι. Καὶ ἐγενήθη τοῖς υἱοῖς Μανασσῆ τοῖς λοιποῖς κατὰ δήμους αὐτῶν· τοῖς υἱοῖς Ἰεζὶ, καὶ τοῖς υἱοῖς Κελὲζ, καὶ τοῖς υἱοῖς Ἰεζιὴλ, καὶ τοῖς υἱοῖς Συχὲμ, καὶ τοῖς υἱοῖς Συμαρὶμ, καὶ τοῖς υἱοῖς Ὀφέρ· οὗτοι ἄρσενες κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ τῷ Σαλπαὰδ υἱῷ Ὀφὲρ οὐκ ἦσαν αὐτῷ υἱοὶ ἀλλ ἢ θυγατέρες· καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν θυγατέρων Σαλπαάδ· Μααλὰ, καὶ Νουὰ, καὶ Ἐγλὰ, καὶ Μελχὰ, καὶ Θερσά. Καὶ ἔστησαν ἐναντίον Ἐλεάζαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἐναντίον Ἰησοῦ, καὶ ἐναντίον τῶν ἀρχόντων, λέγουσαι, ὁ Θεὸς ἐνετείλατο διὰ χειρὸς Μωυσῆ δοῦναι ἡμῖν κληρονομίαν ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν· καὶ ἐδόθη αὐταῖς διὰ προστάγματος Κυρίου κλῆρος ἐν τοῖς ἀδελφοῖς τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Καὶ ἔπεσεν ὁ σχοινισμὸς αὐτῶν ἀπὸ Ἀνάσσα, καὶ πεδίον Λαβὲκ ἐκ τῆς γῆς Γαλαὰδ, ἥ ἐστι πέραν τοῦ Ἰορδάνου· Ὅτι θυγατέρες υἱῶν Μανασσὴ ἐκληρονόμησαν κλῆρον ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν· ἡ δὲ γῆ Γαλαὰδ ἐγενήθη τοῖς υἱοῖς Μανασσὴ τοῖς καταλελειμμένοις. Καὶ ἐγενήθη ὅρια υἱῶν Μανασσῆ Δηλανὰθ, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον υἱῶν Ἀνὰθ, καὶ πορεύεται ἐπὶ τὰ ὅρια ἐπὶ Ἰαμὶν καὶ Ἰασσὶβ ἐπὶ πηγὴν Θαφθώθ. Τῷ Μανασσῇ ἔσται· καὶ Θαφὲθ ἐπὶ τῶν ὁρίων Μανασσῆ, τοῖς υἱοῖς Ἐφραΐμ. Καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια ἐπὶ φάραγγα Καρανὰ ἐπὶ Λίβα κατὰ φάραγγα Ἰαριὴλ· τερέμινθος τῷ Ἐφραΐμ ἀναμέσον πόλεως Μανασσῆ· καὶ ὅρια Μανασσῆ ἐπὶ τὸν βορῥᾶν εἰς τὸν χειμάῤῥουν· καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος θάλασσα ἀπὸ Λιβὸς τῷ Ἐφραΐμ, καὶ ἐπὶ

Βορῥᾶν Μανασσῆ· καὶ ἔσται ἡ θάλασσα ὅρια αὐτοῖς· καὶ ἐπὶ Ἀσὴβ συνάψουσιν ἐπὶ Βορῥᾶν, καὶ τῷ Ἰσσάχαρ ἀπὸ ἀνατολῶν. Καὶ ἔσται Μανασσῆ ἐν Ἰσσάχαρ καὶ ἐν Ἀσὴρ Βαιθοὰν καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Δὼρ, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Μαγεδδὼ, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς, καὶ τὸ τρίτον τῆς Μαφετὰ, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς. Καὶ οὐκ ἠδυνάσθησαν οἱ υἱοὶ Μανασσῆ ἐξολοθρεῦσαι τὰς πόλεις ταύτας· καὶ ἤρχετο ὁ Χαναναῖος κατοικεῖν ἐν τῇ γῇ ταύτῃ. Καὶ ἐγενήθη καὶ ἐπεὶ κατίσχυσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐποίησαν τοὺς Χαναναίους ὑπηκόους, ἐξολοθρεῦσαι δὲ αὐτοὺς οὐκ ἐξωλόθρευσαν. Ἀντεῖπαν δὲ οἱ νἱοὶ Ἰωσὴφ τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες, διατί ἐκληρονόμησας ἡμᾶς κλῆρον ἕνα, καὶ σχοίνισμα ἕν; ἐγὼ δὲ λαὸς πολύς εἰμι, καὶ ὁ Θεὸς εὐλόγησέ με. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἰησοῦς, εἰ λαὸς πολὺς εἶ, ἀνάβηθι εἰς τὸν δρυμὸν, καὶ ἐκκάθαρον σεαυτῷ εἰ στενοχωρεῖ σε τὸ ὄρος τὸ Ἐφραΐμ. Καὶ εἶπαν, οὐκ ἀρέσκει ἡμῖν τὸ ὄρος τὸ Ἐφραΐμ· καὶ ἵππος ἐπίλεκτος, καὶ σίδηρος τῷ Χαναναίῳ τῷ κατοικοῦντι ἐν αὐτῷ ἐν Βαιθσὰν, καὶ ἐν ταῖς κώμαις αὐτῆς, ἐν τῇ κοιλάδι Ἰεζραέλ. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τοῖς υἱοῖς Ἰωσὴφ, εἰ λαὸς πολὺς εἶ καὶ ἰσχὺν μεγάλην ἔχεις, οὐκ ἔσται σοι κλῆρος εἷς· Ὁ γὰρ δρυμὸς ἔσται σοι, ὅτι δρυμός ἐστι καὶ ἐκκαθαριεῖς αὐτὸν, καὶ ἔσται σοι· καὶ ὅταν ἐξολοθρεύσῃς τὸν Χαναναῖον, ὅτι ἵππος ἐπίλεκτος αὐτῷ ἐστι· σὺ γὰρ ὑπερισχύεις αὐτοῦ.

# 18

Καὶ ἐξεκκλησιάσθη πᾶσα συναγωγὴ υἱῶν Ἰσραὴλ εἰς Σηλὼ, καὶ ἔπηξαν ἐκεῖ τὴν σκηνὴν τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἡ γῆ ἐκρατήθη ὑπ

αὐτῶν. Καὶ κατελείφθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οἳ οὐκ ἐκληρονόμησαν, ἑπτὰ φυλαί. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, ἕως τίνος ἐκλυθήσεσθε κληρονομῆσαι τὴν γῆν, ἣν ἔδωκε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν; Δότε ἐξ ὑμῶν ἄνδρας τρεῖς ἐκ φυλῆς, καὶ ἀναστάντες διελθέτωσαν τὴν γῆν, καὶ διαγραψάτωσαν αὐτὴν ἐναντίον μου, καθὰ δεήσει διελεῖν αὐτήν. Καὶ διέλθοσαν πρὸς αὐτόν· καὶ διεῖλεν αὐτοῖς ἑπτὰ μερίδας· Ἰούδας στήσεται αὐτοῖς ὅριον ἀπὸ Λιβὸς, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰωσὴφ στήσονται αὐτοῖς ἀπὸ Βορῤᾶ. Ὑμεῖς δὲ μερίσατε τὴν γῆν ἑπτὰ μερίδας, καὶ ἐνέγκατε ὧδε πρὸς μὲ, καὶ ἐξοίσω ὑμῖν κλῆρον ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Οὐ γάρ ἐστι μερὶς τοῖς υἱοῖς Λευὶ ἐν ὑμῖν· ἱερατεία γὰρ Κυρίου μερὶς αὐτοῦ· καὶ Γὰδ καὶ Ῥουβὴν καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ ἐλάβοσαν τὴν κληρονομίαν αὐτῶν πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐπ ἀνατολῆς, ἣν ἔδωκεν αὐτοῖς Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου. Καὶ ἀναστάντες οἱ ἄνδρες ἐπορεύθησαν· καὶ ἐνετείλατο Ἰησοῦς τοῖς ἀνδράσι τοῖς πορευομένοις χωροβατῆσαι τὴν γῆν, λέγων, πορεύεσθε καὶ χωροβατήσατε τὴν γῆν, καὶ παραγενήθητε πρὸς μὲ, καὶ ὧδε ἐξοίσω ὑμῖν κλῆρον ἔναντι Κυρίου ἐν Σηλώ. Καὶ ἐπορεύθησαν, καὶ ἐχωροβάτησαν τὴν γῆν· καὶ εἴδοσαν αὐτὴν, καὶ ἔγραψαν αὐτὴν κατὰ πόλεις, ἑπτα μερίδας εἰς βιβλίον, καὶ ἤνεγκαν πρὸς Ἰησοῦν. Καὶ ἐνέβαλεν αὐτοῖς Ἰησοῦς κλῆρον ἐν Σηλὼ ἔναντι Κυρίου. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος φυλῆς Βενιαμὶν πρῶτος κατὰ δήμους αὐτῶν· καὶ ἐξῆλθεν ὅρια τοῦ κλήρου αὐτῶν ἀναμέσον υἱῶν Ἰούδα καὶ ἀναμέσον τῶν υἱῶν Ἰωσήφ. Καὶ ἐγενήθη αὐτῶν τὰ ὅρια ἀπὸ Βορῤᾶ· ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου προσαναβήσεται τὰ ὅρια κατὰ νὼτου Ἰεριχὼ ἀπὸ Βορῤᾶ, καὶ ἀναβήσεται ἐπὶ τὸ ὄρος ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος ἡ Μαβδαρίτις Βαιθών. Καὶ διελεύσεται ἐκεῖθεν τὰ ὅρια Λοῦζὰ ἐπὶ νώτου Λουζὰ ἀπὸ Λιβὸς αὐτῆς· αὕτη ἐστὶ Βαιθήλ· καὶ

καταβήσεται τὰ ὅρια Μααταρὼβ Ὀρὲχ ἐπὶ τὴν ὀρεινὴν, ἥ ἐστι πρὸς Λίβα Βαιθωρὼν ἡ κάτω. Καὶ διελεύσεται τὰ ὅρια καὶ παρελεύσεται ἐπὶ τὸ μέρος τὸ βλέπον παρὰ θάλασσαν ἀπὸ Λιβὸς ἀπὸ τοῦ ὄρους ἐπὶ πρόσωπον Βαιθωρὼν Λίβα· καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος εἰς Καριὰθ Βαάλ· αὕτη ἐστὶ Καριαθιαρὶν, πόλις υἱῶν Ἰούδα· τοῦτό ἐστι τὸ μέρος τὸ πρὸς θάλασσαν. Καὶ μέρος τὸ πρὸς Λίβα ἀπὸ μέρους Καριὰθ Βαάλ· καὶ διελεύσεται ὅρια εἰς Γασὶν, ἐπὶ πηγὴν ὕδατος Ναφθώ. Καὶ καταβήσεται τὰ ὅρια ἐπὶ μέρους, τοῦτό ἐστι κατὰ πρόσωπον νάπης Σοννὰμ, ὅ ἐστιν ἐκ μέρους Ἐμὲκ Ῥαφαΐν ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ καταβήσεται Γαίεννα ἐπὶ νῶτον Ἰεβουσαὶ ἀπὸ Λιβός· καταβήσεται ἐπὶ πηγὴν Ῥωγήλ· Καὶ διελεύσεται ἐπὶ πηγὴν Βαιθσαμύς· καὶ παρελεύσεται ἐπὶ Γαλιλὼθ, ἥ ἐστιν ἀπέναντι πρὸς ἀνάβασις Αἰθαμίν· καὶ καταβήσεται ἐπὶ λίθον Βαιὼν υἱῶν Ῥουβήν· καὶ διελεύσεται κατὰ νώτου Βαιθάραβα ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ καταβήσεται ἐπὶ τὰ ὅρια ἐπὶ νῶτον θάλασσαν ἀπὸ Βοῤῥᾶ. Καὶ ἔσται ἡ διέξοδος τῶν ὁρίων ἐπὶ λοφιὰν τῆς θαλάσσης τῶν ἁλῶν ἐπὶ Βοῤῥᾶν εἰς μέρος τοῦ Ἰορδάνου ἀπὸ Λιβός· ταῦτα τὰ ὅριά ἐστιν ἀπὸ Λιβός. Καὶ ὁ Ἰορδάνης ὁριεῖ ἀπὸ μέρους ἀνατολῶν· αὕτη ἡ κληρονομία υἱῶν Βενιαμὶν, τὰ ὅρια αὐτῆς κύκλῳ κατὰ δήμους. Καὶ ἐγενήθησαν αἱ πόλεις τῶν υιῶν Βενιαμὶν κατὰ δήμους αὐτῶν Ἱερειχὼ, καὶ Βεθεγαιὼ, καὶ Ἀμεκασὶς, καὶ Βαιθαβαρὰ, καὶ Σαρὰ, καὶ Βησανὰ, καὶ Αἰεὶν, καὶ Φαρὰ, καὶ Ἐφραθὰ, καὶ Καραφὰ, καὶ Κεφιρὰ, καὶ Μονὶ, καὶ Γαβαὰ, πόλεις δώδεκα· καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, Γαβαὼν, καὶ Ῥαμὰ, καὶ Βεηρωθὰ, καὶ Μασσημὰ, καὶ Μιρὼν, καὶ Ἀμωκὴ, καὶ Φιρὰ, καὶ Καφὰν, καὶ Νακὰν, καὶ Ζεληκὰν, καὶ Θαρεηλὰ, καὶ Ἰηβοῦς· αὕτη ἐστὶν Ἱερουσαλήμ· καὶ Γαβαὼθ, Ἰαρὶμ, πόλεις δεκατρεῖς, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· αὕτη ἡ κληρονομία υἱῶν Βενιαμὶν κατὰ δήμους αὐτῶν.

# 19

Καὶ ἐξῆλθεν ὁ δεύτερος κλῆρος τῶν υἱῶν Συμεών· καὶ ἐγενήθη ἡ κληρονομία αὐτῶν ἀναμέσον κλήρων υἱῶν Ἰούδα. Καὶ ἐγενήθη ὁ κλῆρος αὐτῶν Βηρσαβεὲ, καὶ Σαμαὰ, καὶ Καλαδὰμ, καὶ Ἀρσωλὰ, καὶ Βωλὰ, καὶ Ἰασὸν, καὶ Ἐρθουλὰ, καὶ Βουλὰ, καὶ Ἑρμὰ, καὶ Σικελὰκ, καὶ Βαιθμαχερὲβ, καὶ Σαρσουσὶν, καὶ Βαθαρὼθ, καὶ οἱ ἀγροὶ αὐτῶν· πόλεις δεκατρεῖς, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Ἐρεμμὼν, καὶ Θαλχὰ, καὶ Ἰεθὲρ, καὶ Ἀσάν· πόλεις τέσσαρες καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν, κύκλῳ τῶν πόλεων αὐτῶν ἕως Βαλὲκ πορευομένων Βαμὲθ κατὰ Λίβα· αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Συμεὼν κατὰ δήμους αὐτῶν. Ἀπὸ τοῦ κλήρου τοῦ Ἰούδα ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Συμεὼν, ὅτι ἐγενήθη ἡ μερὶς υἱῶν Ἰούδα μείζων τῆς αὐτῶν· καὶ ἐκληρονόμησαν οἱ υἱοὶ Συμεὼν ἐν μέσῳ τοῦ κλήρου αὐτῶν. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος ὁ τρίτος τῷ Ζαβουλὼν κατὰ δήμους αὐτῶν· ἔσται τὰ ὅρια τῆς κληρονομίας αὐτῶν, Ἐσεδεκγωλὰ ὅρια αὐτῶν, ἡ θάλασσα καὶ Μαγελδὰ, καὶ συνάψει ἐπὶ Βαιθάραβὰ εἰς τὴν φάραγγα, ἥ ἐστι κατὰ πρόσωπον Ἰεκμάν. Καὶ ἀνέστρεψεν ἀπὸ Σεδδοὺκ ἐξ ἐναντίας ἀπὸ ἀνατολῶν Βαιθσαμὺς ἐπὶ τὰ ὅρια Χασελωθαὶθ, καὶ διελεύσεται ἐπὶ Δαβιρὼθ, καὶ προσαναβήσεται ἐπὶ Φαγγαί. Καὶ ἐκεῖθεν περιελεύσεται ἐξ ἐναντίας ἐπ ἀνατολὰς ἐπὶ Γεβερὲ ἐπὶ πόλιν Κατασὲμ, καὶ διελεύσεται ἐπὶ Ῥεμμωναὰ Μαθαραοζά. Καὶ περιελεύσεται ὅρια ἐπὶ Βοῤῥᾶν ἐπὶ Ἀμὼθ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτῶν ἐπὶ Γαιφαὴλ, καὶ Κατανὰθ, καὶ Ναβαὰλ, καὶ Συμοὼν, καὶ Ἰεριχὼ, καὶ Βαιθμάν. Αὕτη ἡ κληρονομία τῆς φυλῆς υἱῶν Ζαβουλὼν κατὰ δήμους αὐτῶν, πόλεις καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Καὶ τῷ Ἰσσὰχαρ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος ὁ τέταρτος. Καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια

αὐτῶν Ἰαζὴλ, καὶ Χασαλὼθ, καὶ Σουνὰμ, καὶ Ἀγὶν, καὶ Σιωνὰ, καὶ Ῥεηρὼθ, καὶ Ἀναχερὲθ, καὶ Δαβιρὼν, καὶ Κισὼν, καὶ Ῥεβές, καὶ Ῥεμμὰς, καὶ Ἰεὼν, καὶ Τομμὰν, καὶ Αἰμαρὲκ, καὶ Βηρσαφής. Καὶ συνάψει τὰ ὅρια ἐπὶ Γαιθβὼρ, καὶ ἐπὶ Σαλὶμ κατὰ θάλασσαν, καὶ Βαιθσαμύς· καὶ ἔσται αὐτοῦ ἡ διέξοδος τῶν ὁρίων ὁ Ἰορδάνης. Αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Ἰσσάχαρ κατὰ δήμους αὐτῶν, αἱ πόλεις καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος ὁ πέμπτος Ἀσὴρ κατὰ δήμους αὐτῶν. Καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια αὐτῶν Ἐξελεκὲθ, καὶ Ἀλὲφ, καὶ Βαιθὸκ, καὶ Κεὰφ, καὶ Ἐλιμελὲχ, καὶ Ἀμιὴλ, καὶ Μαασά· καὶ συνάψει τῷ Καρμήλῳ κατὰ θάλασσαν, καὶ τῷ Σιὼν, καὶ Λαβανάθ. Καὶ ἐπιστρέψει ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου καὶ Βαιθεγενὲθ, καὶ συνάψει τῷ Ζαβουλὼν καὶ Ἐκγαῖ, καὶ Φθαιὴλ κατὰ Βορῥᾶν, καὶ εἰσελεύσεται ὅρια Σαφθαιβαιθμὲ, καὶ Ἰναὴλ, καὶ διελεύσεται εἰς Χωβαμασομὲλ, καὶ Ἐλβὼν, καὶ Ῥαὰβ, καὶ Ἐμεμαὼν, καὶ Κανθὰν ἕως Σιδῶνος τῆς μεγάλης. Καὶ ἀναστρέψει τὰ ὅρια εἰς Ῥαμὰ, καὶ ἕως πηγῆς Μασφασσὰτ, καὶ τῶν Τυρίων· καὶ ἀναστρέψει τὰ ὅρια ἐπὶ Ἰασὶφ, καὶ ἔσται ἡ διέξοδος αὐτοῦ ἡ θάλασσα, καὶ Ἀπολὲβ, καὶ Ἐχοζὸβ, καὶ Ἀρχὸβ, καὶ Ἀφὲκ, καὶ Ῥααύ. Αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Ἀσὴρ κατὰ δήμους αὐτῶν, πόλεις καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν. Καὶ τῷ Νεφθαλὶ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος ὁ ἕκτος. Καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια αὐτῶν Μοολὰμ, καὶ Μωλὰ, καὶ Βεσεμῒν, καὶ Ἀρμὲ, καὶ Ναβὸκ, καὶ Ἰεφθαμαὶ, ἕως Δωδάμ· καὶ ἐγενήθησαν αἱ διέξοδοι αὐτοῦ Ἰορδάνης. Καὶ ἐπιστρέψει τὰ ὅρια ἐπὶ θάλασσαν ἐν Ἀθθαβὼρ, καὶ διελεύσεται ἐκεῖθεν Ἰακανὰ, καὶ συνάψει τῷ Ζαβουλὼν ἀπὸ Νότου, καὶ Ἀσὴρ συνάψει κατὰ θάλασσαν, καὶ ὁ Ἰορδάνης ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου. Καὶ αἱ πόλεις τειχήρεις τῶν Τυρίων, Τυρὸς, καὶ Ὠμαθαδακὲθ, καὶ Κενερέθ, καὶ Ἀρμαὶθ, καὶ Ἀραὴλ, καὶ Ἀσὼρ, καὶ Κάδες, καὶ Ἀσσαρὶ, καὶ πηγὴ Ἀσὸρ, καὶ Κερωὲ, καὶ Μεγαλααρὶμ,

καὶ Βαιθθαμὲ, καὶ Θεσσαμύς. Αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Νεφθαλί. Καὶ τῷ Δὰν ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος ὁ ἕβδομος· Καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια αὐτῶν Σαρὰθ, καὶ Ἀσὰ, καὶ πόλεις Σαμμαὺς, καὶ Σαλαμὶν, καὶ Ἀμμὸν, καὶ Σιλαθὰ, καὶ Ἐλὼν, καὶ Θαμναθὰ, καὶ Ἀκκαρὼν, καὶ Ἀλκαθὰ, καὶ Βεγεθὼν, καὶ Γεβεελὰν, καὶ Ἀζὼρ, καὶ Βαναιβακὰτ, καὶ Γεθρεμμὼν, καὶ ἀπὸ θαλάσσης Ἱερὰκων ὅριον πλησίον Ἰόππης. Αὕτη ἡ κληρονομία φυλῆς υἱῶν Δὰν κατὰ δήμους αὐτῶν, αἱ πόλεις αὐτῶν καὶ αἱ κῶμαι αὐτῶν· Καὶ ἐπορεύθησαν οἱ υἱοὶ Δὰν καὶ ἐπολέμησαν τὴν Λαχὶς, καὶ κατελάβοντο αὐτὴν, καὶ ἐπάταξαν αὐτὴν ἐν στόματι μαχαίρας· καὶ κατῴκησαν αὐτὴν καὶ ἐκάλεσαν τὸ ὄνομα αὐτῆς Λασενδάν· Καὶ ἐπορεύθησαν ἐμβατεύσαι τὴν γῆν κατὰ τὸ ὅριον αὐτῶν· καὶ ἔδωκαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ κλῆρον τῷ Ἰησοῦ τῷ υἱῷ Ναυῆ ἐν αὐτοῖς διὰ προστάγματος τοῦ Θεοῦ, καὶ ἔδωκαν αὐτῷ τὴν πόλιν, ἣν ᾐτήσατο, Θαμνασαρὰχ, ἥ ἐστιν ἐν τῷ ὄρει Ἐφραίμ· καὶ ᾠκοδόμησε τὴν πόλιν, καὶ κατῴκει ἐν αὐτῇ. Αὗται αἱ διαιρέσεις ἃς κατεκληρονόμησεν Ἐλεάζαρ ὁ ἱερεὺς, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ναυῆ, καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν πατριῶν ἐν ταῖς φυλαῖς Ἰσραὴλ κατὰ κλήρους ἐν Σηλὼ ἔναντι Κυρίου, παρὰ τὰς θύρας τῆς σκηνῆς τοῦ μαρτυρίου· καὶ ἐπορεύθησαν ἐμβατεῦσαι τὴν γῆν.

# 20

Καὶ ἐλάλησε Κύριος τῷ Ἰησοῖ, λέγων, λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγων, δότε τὰς πόλεις τῶν φυγαδευτηρίων, ἃς εἶπα πρὸς ὑμᾶς διὰ Μωυσῆ. Φυγαδευτήριον τῷ φονευτῇ τῷ πατάξαντι ψυχὴν ἀκουσίως· καὶ ἔσονται ὑμῖν αἱ πόλεις φυγαδευτήριον, καὶ οὐκ ἀποθανεῖται ὁ φονευτὴς ὑπὸ τοῦ ἀγχιστεύοντος τὸ αἷμα, ἕως ἂν

καταστῇ· ἐναντίον τῆς συναγωγῆς εἰς κρίσιν. Καὶ διέστειλε τὴν Κάδης ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ ἐν τῷ ὄρει τῷ Νεφθαλὶ, καὶ Συχὲμ ἐν τῷ ὄρει τῷ Ἐφραὶμ, καὶ τὴν πόλιν Ἀρβὸκ, αὕτη ἐστὶ Χεβρὼν, ἐν τῷ ὄρει τῷ Ἰούδα. Καὶ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἔδωκε Βοσὸρ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν τῷ πεδίῳ ἀπὸ τῆς φυλῆς Ῥουβὴν, καὶ Ἀρημὼθ ἐν τῇ Γαλαὰδ ἐκ τῆς φυλῆς Γὰδ, καὶ τὴν Γαυλὼν ἐν τῇ Βασανίτιδι ἐκ τῆς φυλῆς Μανασσῆ. Αὗται αἱ πόλεις αἱ ἐπίκλητοι τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ καὶ τῷ προσηλύτῳ τῷ προσκειμένῳ ἐν αὐτοῖς, καταφυγεῖν ἐκεῖ παντὶ παίοντι ψυχὴν ἀκουσίως, ἵνα μὴ ἀποθάνῃ ἐν χειρὶ τοῦ ἀγχιστεύοντος τὸ αἷμα, ἕως ἂν καταστῇ ἔναντι τῆς συναγωγῆς εἰς κρίσιν.

# 21

Καὶ προσήλθοσαν οἱ ἀρχιπατριῶται τῶν υἱῶν Λευὶ πρὸς Ἐλεάζαρ τὸν ἱερέα, καὶ Ἰησοῦν τὸν τοῦ Ναυῆ, καὶ πρὸς τοὺς ἀρχιφύλους πατριῶν ἐκ τῶν φυλῶν Ἰσραήλ· Καὶ εἶπον πρὸς αὐτοὺς ἐν Σηλὼ ἐν γῇ Χαναὰν, λέγοντες, ἐνετείλατο Κύριος ἐν χειρὶ Μωυσῆ δοῦναι ἡμῖν πόλεις κατοικεῖν, καὶ τὰ περισπόρια τοῖς κτήνεσιν ἡμῶν. Καὶ ἔδωκαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τοῖς Λευίταις ἐν τῷ κατακληρονομεῖν διὰ προστάγματος Κυρίου τὰς πόλεις καὶ τὰ περισπόρια αὐτῶν. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ κλῆρος τῷ δήμῳ Καάθ· καὶ ἐγένετο τοῖς υἱοῖς Ἀαρὼν τοῖς ἱερεῦσι τοῖς Λευίταις ἀπὸ φυλῆς Ἰούδα καὶ ἀπὸ φυλῆς Συμεὼν καὶ ἀπὸ φυλῆς Βενιαμὶν κληρωτὶ, πόλεις δεκατρεῖς. Καὶ τοῖς υἱοῖς Καὰθ τοῖς καταλελειμμένοις ἐκ τῆς φυλῆς Ἐφραὶμ καὶ ἐκ τῆς φυλῆς Δὰν καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ κληρωτὶ, πόλεις δέκα. Καὶ τοῖς υἱοῖς Γεδσὼν ἀπὸ τῆς φυλῆς Ἰσσάχαρ καὶ ἀπὸ τῆς

φυλῆς Ἀσὴρ καὶ ἀπὸ τῆς φυλῆς Νεφθαλὶ καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ ἐν τῇ Βασὰν, πόλεις δεκατρεῖς. Καὶ τοῖς υἱοῖς Μεραρὶ κατὰ δήμους αὐτῶν ἀπὸ φυλῆς Ῥουβὴν καὶ ἀπὸ φυλῆς Γὰδ καὶ ἀπὸ φυλῆς Ζαβουλὼν κληρωτὶ, πόλεις δώδεκα. Καὶ ἔδωκαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τοῖς Λευίταις τὰς πόλεις καὶ τὰ περισπόρια αὐτῶν, ὃν τρόπον ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ, κληρωτί. Καὶ ἔδωκεν ἡ φυλὴ υἱῶν Ἰούδα καὶ ἡ φυλὴ υἱῶν Συμεὼν καὶ ἀπὸ τῆς φυλῆς υἱῶν Βενιαμὶν τὰς πόλεις ταύτας· καὶ ἐπεκλήθησαν τοῖς υἱοῖς Ἀαρὼν ἀπὸ τοῦ δήμου τοῦ Καὰθ τῶν υἱῶν Λευὶ, ὅτι τούτοις ἐγενήθη ὁ κλῆρος. Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς τὴν Καριαθαρβὸκ μητρόπολιν τῶν Ἐνάκ· αὕτη ἐστὶ Χεβρὼν ἐν τῷ ὄρει Ἰούδα· τὰ δὲ περισπόρια κύκλῳ αὐτῆς, καὶ τοὺς ἀγροὺς τῆς πόλεως, καὶ τὰς κώμας αὐτῆς ἔδωκεν Ἰησοῦς τοῖς υἱοῖς Χάλεβ υἱοῦ Ἰεφοννὴ ἐν κατασχέσει. Καὶ τοῖς υἱοῖς Ἀαρὼν ἔδωκε τὴν πόλιν φυγαδευτήριον τῷ φονεύσαντι, τὴν Χεβρὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα τὰ σὺν αὐτῇ· καὶ τὴν Λεμνὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα τὰ πρὸς αὐτῇ· Καὶ τὴν Αἰλὼμ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Τεμὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ τὴν Γελλὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Δαβὶρ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ Ἀσὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Τανὺ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Βαιθσαμὺς, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις ἐννέα παρὰ τῶν δύο φυλῶν τούτων. Καὶ παρὰ τῆς φυλῆς Βενιαμὶν, τὴν Γαβαὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Γαθὲθ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ Ἀναθὼθ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Γάμαλα, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις τέσσαρες. Πᾶσαι αἱ πόλεις υἱῶν Ἀαρὼν τῶν ἱερέων, δεκατρεῖς. Καὶ τοῖς δήμοις υἱοῖς Καὰθ τοῖς Λευίταις τοῖς καταλελειμμένοις ἀπὸ τῶν υἱῶν Καὰθ, καὶ ἐγενήθη ἡ πόλις τῶν ἱερέων αὐτῶν ἀπὸ φυλῆς Ἐφραίμ· καὶ ἔδωκαν αὐτοῖς τὴν πόλιν τοῦ φυγαδευτηρίου τὴν τοῦ φονεύσαντος, τὴν Συχὲμ, καὶ τὰ

ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Γάζαρα καὶ τὰ πρὸς αὐτὴν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ Βαιθωρὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα τὰ αὐτῇ· πόλεις τέσσαρες. Καὶ ἐκ τῆς φυλῆς Δὰν, τὴν Ἐλκωθαὶμ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Γεθεδὰν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ Αἰλὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Γεθερεμμὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις τέσσαρες. Καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ, τὴν Τανὰχ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Ἰεβαθὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις δύο. Πᾶσαι πόλεις δέκα, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ τὰ πρὸς αὐταῖς, τοῖς δήμοις υἱῶν Καὰθ τοῖς ὑπολελειμμένοις. Καὶ τοῖς υἱοῖς Γεδσὼν τοῖς Λευίταις ἐκ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ τὰς πόλεις τὰς ἀφωρισμένας τοῖς φονεύσασι, τὴν Γαυλὼν ἐν τῇ Βασανίτιδι, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Βοσορὰν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις δύο. Καὶ ἐκ τῆς φυλῆς Ἰσσάχαρ, τὴν Κισὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Δεββὰ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ τὴν Ῥεμμὰθ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Πηγὴν γραμμάτων, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις τέσσαρες. Καὶ ἐκ τῆς φυλῆς Ἀσὴρ τὴν Βασελλὰν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Δαββὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· Καὶ Χελκὰτ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Ῥαὰβ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις τέσσαρες. Καὶ ἐκ τῆς φυλῆς Νεφθαλὶ, τὴν πόλιν τὴν ἀφωρισμένην τῷ φονεύσαντι, τὴν Κάδης ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ τὴν Νεμμὰθ, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· καὶ Θεμμὼν, καὶ τὰ ἀφωρισμένα αὐτῇ· πόλεις τρεῖς. Πᾶσαι αἱ πόλεις τοῦ Γεδσὼν κατὰ δήμους αὐτῶν, πόλεις δεκατρεῖς. Καὶ τῷ δήμῳ υἱῶν Μεραρὶ τοῖς Λευίταις τοῖς λοιποῖς ἐκ τῆς φυλῆς Ζαβουλὼν, τὴν Μαὰν, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Κάδης, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· Καὶ Σελλὰ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· πόλεις τρεῖς. Καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου τοῦ κατὰ Ἰεριχὼ ἐκ

τῆς φυλῆς Ῥουβὴν, τὴν πόλιν τὸ φυγαδευτήριον τοῦ φονεύσαντος, τὴν Βοσὸρ ἐν τῇ ἐρήμῳ· τὴν Μισὼ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Ἰαζὴρ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Δεκμὼν, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Μαφὰ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· πόλεις τέσσαρες. Καὶ ἀπὸ τῆς φυλῆς Γὰδ, τὴν πόλιν τὸ φυγαδευτήριον τοῦ φονεύσαντος, καὶ τὴν Ῥαμὼθ ἐν τῇ Γαλαὰδ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· τὴν Καμὶν, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Ἐσβὼν, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· καὶ τὴν Ἰαζὴρ, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῆς· πᾶσαι αἱ πόλεις τέσσαρες. Πᾶσαι αἱ πόλεις τοῖς υἱοῖς Μεραρὶ κατὰ δήμους αὐτῶν τῶν καταλελειμμένων ἀπὸ τῆς φυλῆς τῆς Λευί· καὶ ἐγενήθη τὰ ὅρια αἱ πόλεις δεκαδύο. Πᾶσαι πόλεις τῶν Λευιτῶν ἐν μέσῳ κατασχέσεως υἱῶν Ἰσραὴλ, τεσσαρακονταοκτὼ πόλεις, καὶ τὰ περισπόρια αὐτῶν κύκλῳ τῶν πόλεων τούτων· πόλις καὶ τὰ περισπόρια κύκλῳ τῆς πόλεως πάσαις ταῖς πόλεσι ταύταις· Καὶ ἔδωκε Κύριος τῷ Ἰσραὴλ πᾶσαν τὴν γῆν, ἣν ὤμοσε δοῦναι τοῖς πατράσιν αὐτῶν· καὶ κατεκληρονόμησαν αὐτὴν, καὶ κατῴκησαν ἐν αὐτῇ. Καὶ κατέπαυσεν αὐτοὺς Κύριος κυκλόθεν, καθότι ὤμοσε τοῖς πατράσιν αὐτῶν· οὐκ ἀνέστη οὐθεὶς κατενώπιον αὐτῶν ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν· πάντας τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν παρέδωκε Κύριος εἰς τὰς χεῖρας αὐτῶν. Οὐ διέπεσεν ἀπὸ πάντων τῶν ῥημάτων τῶν καλῶν, ὧν ἐλάλησε Κύριος τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ· πάντα παρεγένετο.

# 22

Τότε συνεκάλεσεν Ἰησοῦς τοὺς υἱοὺς Ῥουβὴν, καὶ τοὺς υἱοὺς Γὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ὑμεῖς ἀκηκόατε

πάντα ὅσα ἐνετείλατο ὑμῖν Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου, καὶ ὑπηκούσατε τῆς φωνῆς μου κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο ὑμῖν. Οὐκ ἐγκαταλελοίπατε τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν ταύτας τὰς ἡμέρας πλείους· ἕως τῆς σήμερον ἡυμέρας ἐφυλάξατε τὴν ἐντολὴν Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν. Νῦν δὲ κατέπαυσε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν τοὺς ἀδελφοὺς ἡμῶν, ὃν τρόπον εἶπεν αὐτοῖς· νῦν οὖν ἀποστραφέντες, ἀπέλθατε εἰς τοὺς οἴκους ὑμῶν, καὶ εἰς τὴν γῆν τῆς κατασχέσεως ὑμῶν, ἣν ἔδωκεν ὑμῖν Μωυσῆς ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου. Ἀλλὰ φυλάξασθε σφόδρα ποιεῖν τὰς ἐντολὰς καὶ τὸν νόμον, ὃν ἐνετείλατο ἡμῖν ποιεῖν Μωυσῆς ὁ παῖς Κυρίου· ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, πορεύεσθαι πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, φυλάξασθαι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ προσκεῖσθαι αὐτῷ, καὶ λατρεύειν αὐτῷ ἐξ ὅλης τῆς διανοίας ὑμῶν, καὶ ἐξ ὅλης τῆς ψυχῆς ὑμῶν. Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς Ἰησοῦς, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτούς· καὶ ἐπορεύθησαν εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν. Καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ ἔδωκε Μωυσῆς ἐν τῇ Βασανίτιδι, καὶ τῷ ἡμίσει ἔδωκεν Ἰησοῦς μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου παρὰ θάλασσαν· καὶ ἡνίκα ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς Ἰησοῦς εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν καὶ εὐλόγησεν αὐτούς. Καὶ ἐν χρήμασι πολλοῖς ἀπήλθοσαν εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν· καὶ κτήνη πολλὰ σφόδρα, καὶ ἀργύριον, καὶ χρυσίον, καὶ σίδηρον, καὶ ἱματισμὸν πολὺν, διείλαντο τὴν προνομὴν τῶν ἐχθρῶν μετὰ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. Καὶ ἐπορεύθησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν, καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν Σηλὼ ἐν γῇ Χαναὰν ἀπελθεῖν εἰς τὴν Γαλαὰδ εἰς γῆν κατασχέσεως αὐτῶν, ἣν ἐκληρονόμησαν αὐτὴν διὰ προστάγματος Κυρίου ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Καὶ ἦλθον εἰς Γαλαὰδ τοῦ Ἰορδάνου, ἥ ἐστιν ἐν γῇ Χαναάν· καὶ ᾠκοδόμησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν, καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ ἐκεῖ βωμὸν ἐπὶ τοῦ

Ἰορδάνου, βωμὸν μέγαν τοῦ ἰδεῖν. Καὶ ἤκουσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ λεγόντων, Ἰδοῦ ᾠκοδομήκασιν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν, καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ βωμὸν ἐφ ὁρίων γῆς Χαναὰν ἐπὶ τοῦ Γαλαὰδ τοῦ Ἰορδάνου ἐν τῷ πέραν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ συνηθροίσθησαν πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς Σηλὼ, ὥστε ἀναβάντες ἐκπολεμῆσαι αὐτούς. Καὶ ἀπέστειλαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς τοὺς υἱοὺς Ῥουβὴν καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς Γὰδ καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ εἰς γῆν Γαλαὰδ, τόν τε Φινεὲς υἱὸν Ἐλεάζαρ υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἀρχιερέως, καὶ δέκα τῶν ἀρχόντων μετ αὐτοῦ· ἄρχων εἷς ἀπὸ οἴκου πατριᾶς ἀπὸ πασῶν φυλῶν Ἰσραήλ· ἄρχοντες οἴκων πατριῶν εἰσι χιλίαρχοι Ἰσραήλ. Καὶ παρεγένοντο πρὸς τοὺς υἱοὺς Ῥουβὴν, καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς Γὰδ, καὶ πρὸς τοὺς ἡμίσεις φυλῆς Μανασσῆ εἰς γῆν Γαλαάδ· καὶ ἐλάλησαν πρὸς αὐτοὺς, λέγοντες, τάδε λέγει πᾶσα ἡ συναγωγὴ Κυρίου, τίς ἡ πλημμέλεια αὕτη, ἣν ἐπλημμελήσατε ἐναντίον τοῦ Θεοῦ Ἰσραὴλ, ἀποστραφῆναι σήμερον ἀπὸ Κυρίου, οἰκοδομήσαντες ὑμῖν ἑαυτοῖς βωμὸν, ἀποστάτας ὑμᾶς γενέσθαι ἀπὸ τοῦ Κυρίου; Μὴ μικρὸν ἡμῖν τὸ ἁμάρτημα Φογὼρ, ὅτι οὐκ ἐκαθαρίσθημεν ἀπ αὐτοῦ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης; καὶ ἐγενήθη πληγὴ ἐν τῇ συναγωγῇ Κυρίου. Καὶ ὑμεῖς ἀπεστράφητε σήμερον ἀπὸ Κυρίου· καὶ ἔσται ἐὰν ἀποστῆτε σήμερον ἀπὸ Κυρίου, καὶ αὔριον ἐπὶ πάντα Ἰσραὴλ ἔσται ἡ ὀργή. Καὶ νῦν εἰ μικρὰ ἡ γῆ ὑμῶν τῆς κατασχέσεως ὑμῶν, διάβητε εἰς τὴν γῆν τῆς Κυρίου κατασχέσεως, οὗ κατασκηνοῖ ἐκεῖ ἡ σκηνὴ Κυρίου, καὶ κατακληρονομήσετε ἐν ἡμῖν· καὶ μὴ ἀπὸ Θεοῦ ἀποστάται γενήθητε, καὶ ὑμεῖς μηδ ἀπόστητε ἀπὸ Κυρίου, διὰ τὸ οἰκοδομῆσαι ὑμᾶς βωμὸν ἔξω τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Οὐκ ἰδοὺ Ἄχαρ ὁ τοῦ Ζαρᾶ πλημμελείᾳ ἐπλημμέλησεν ἀπὸ τοῦ ἀναθέματος, καὶ ἐπὶ πᾶσαν συναγωγὴν Ἰσραὴλ ἐγενήθη ὀργή;

καὶ οὗτος εἷς αὐτὸς ἀπέθανε τῇ ἑαυτοῦ ἁμαρτίᾳ. Καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν, καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ, καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ, καὶ ἐλάλησαν τοῖς χιλιάρχοις Ἰσραὴλ, λέγοντες, ὁ Θεὸς Θεὸς Κύριός ἐστι, καὶ ὁ Θεὸς Θεὸς αὐτὸς οἶδε, καὶ Ἰσραὴλ αὐτὸς γνώσεται· εἰ ἐν ἀποστασίᾳ ἐπλημμελήσαμεν ἔναντι τοῦ Κυρίου, μὴ ῥύσαιτο ἡμᾶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ εἰ ᾠκοδομήσαμεν ἑαυτοῖς βωμὸν, ὥστε ἀποστῆναι ἀπὸ Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ὥστε ἀναβιβάσαι ἐπ αὐτὸν θυσίαν ὁλοκαυτωμάτων, ὥστε ποιῆσαι ἐπ αὐτοῦ θυσίαν σωτηρίου, Κύριος ἐκζητήσει. Ἀλλ ἕνεκεν εὐλαβείας ῥήματος ἐποιήσαμεν τοῦτο, λέγοντες, ἵνα μὴ εἴπωσιν αὔριον τὰ τέκνα ὑμῶν τοῖς τέκνοις ἡμῶν, τί ὑμῖν Κυρίῳ τῷ Θεῷ Ἰσραήλ; Καὶ ὅρια ἔθηκε Κύριος ἀναμέσον ἡμῶν καὶ ὑμῶν τὸν Ἰορδάνην, καὶ οὐκ ἔστιν ὑμῖν μερὶς Κυρίου· καὶ ἀπαλλοτριώσουσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν τοὺς υἱῶν ἡμῶν, ἵνα μὴ σέβωνται Κύριον. Καὶ εἴπαμεν ποιῆσαι οὕτω, τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν βωμὸν τοῦτον οὐχ ἕνεκεν καρπωμάτων οὐδὲ ἕνεκεν θυσιῶν, ἀλλ ἵνα ᾖ τοῦτο μαρτύριον ἀναμέσον ἡμῶν καὶ ὑμῶν, καὶ ἀναμέσον τῶν γενεῶν ἡμῶν μεθ ἡμᾶς, τοῦ λατρεύειν λατρείαν Κυρίου ἐναντίον αὐτοῦ, ἐν τοῖς καρπώμασιν ἡμῶν καὶ ἐν ταῖς θυσίαις ἡμῶν καὶ ἐν ταῖς θυσίαις τῶν σωτηρίων ἡμῶν· καὶ οὐκ ἐροῦσι τὰ τέκνα ὑμῶν τοῖς τέκνοις ἡμῶν αὔριον, οὐκ ἔστιν ὑμῖν μερὶς Κυρίου. Καὶ εἴπαμεν, ἐὰν γένηταί ποτε καὶ λαλήσωσι πρὸς ἡμᾶς, ἢ ταῖς γενεαῖς ἡμῶν αὔριον, καὶ ἐροῦσιν, ἴδετε ὁμοίωμα τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου, ὃ ἐποίησαν οἱ πατέρες ἡμῶν οὐχ ἕνεκεν καρπωμάτων οὐδὲ ἕνεκεν θυσιῶν, ἀλλὰ μαρτύριόν ἐστιν ἀναμέσον ὑμῶν καὶ ἀναμέσον ἡμῶν, καὶ ἀναμέσον τῶν υἱῶν ἡμῶν. Μὴ γένοιτο οὖν ἡμᾶς ἀποστραφῆναι ἀπὸ Κυρίου ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ ἀποστῆναι ἀπὸ Κυρίου, ὥστε οἰκοδομῆσαι ἡμᾶς θυσιαστήριον τοῖς καρπώμασι, καὶ ταῖς θυσίαις Σαλαμὶν, καὶ τῇ θυσίᾳ τοῦ σωτηρίου,

πλὴν τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου ὅ ἐστιν ἐναντίον τῆς σκηνῆς αὐτοῦ. Καὶ ἀκούσας Φινεὲς ὁ ἱερεὺς καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῆς συναγωγῆς Ἰσραὴλ οἳ ἦσαν μετ αὐτοῦ, τοὺς λόγους οὓς ἐλάλησαν οἱ υἱοὶ Ῥουβὴν καὶ οἱ υἱοὶ Γὰδ καὶ τὸ ἥμισυ φυλῆς Μανασσῆ, καὶ ἤρεσεν αὐτοῖς. Καὶ εἶπε Φινεὲς ὁ ἱερεὺς τοῖς υἱοῖς Ῥουβὴν καὶ τοῖς υἱοῖς Γὰδ καὶ τῷ ἡμίσει φυλῆς Μανασσῆ, σήμερον ἐγνώκαμεν ὅτι μεθ ἡμῶν Κύριος, διότι οὐκ ἐπλημμελήσατε ἐναντίον Κυρίου πλημμέλειαν, καὶ ὅτι ἐῤῥύσασθε τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ χειρὸς Κυρίου. Καὶ ἀπέστρεψε Φινεὲς ὁ ἱερεὺς καὶ οἱ ἄρχοντες ἀπὸ τῶν υἱῶν Ῥουβὴν καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν Γὰδ καὶ ἀπὸ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ ἐκ τῆς Γαλαὰδ εἰς γῆν Χαναὰν πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ· καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτοῖς τοὺς λόγους. Καὶ ἤρεσε τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· καὶ ἐλάλησαν πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ εὐλόγησαν τὸν Θεὸν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ εἶπαν μηκέτι ἀναβῆναι πρὸς αὐτοὺς εἰς πόλεμον ἐξολοθρεῦσαι τὴν γῆν τῶν υἱῶν Ῥουβὴν καὶ τῶν υἱων Γὰδ καὶ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ· καὶ κατῴκησαν ἐπ αὐτῆς. Καὶ ἐπωνόμασεν Ἰησοῦς τὸν βωμὸν τῶν Ῥουβὴν καὶ τῶν Γὰδ καὶ τοῦ ἡμίσους φυλῆς Μανασσῆ, καὶ εἶπεν, ὅτι μαρτύριόν ἐστιν ἀναμέσον αὐτῶν, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς αὐτῶν ἐστι.

# 23

Καὶ ἐγένετο μεθ ἡμέρας πλείους μετὰ τὸ καταπαῦσαι Κύριον τὸν Ἰσραὴλ ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ κυκλόθεν, καὶ Ἰησοῦς πρεσβύτερος προβεβηκὼς ταῖς ἡμέραις. Καὶ συνεκάλεσεν Ἰησοῦς πάντας τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ καὶ τὴν γερουσίαν αὐτῶν καὶ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν καὶ τοὺς δικαστὰς αὐτῶν καὶ τοὺς γραμματεῖς

αὐτῶν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἐγὼ γεγήρακα καὶ προβέβηκα ταῖς ἡμέραις· Ὑμεῖς δὲ ἑωράκατε ὅσα ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τούτοις ἀπὸ προσώπου ἡμῶν, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ὁ ἐκπολεμήσας ὑμῖν. Ἴδετε ὅτι ἐπέῤῥιφα ὑμῖν τὰ ἔθνη τὰ καταλελειμμένα ὑμῖν ταῦτα ἐν τοῖς κλήροις εἰς τὰς φυλὰς ὑμῶν, ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἐξωλόθρευσα, καὶ ἀπὸ τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης ὁριεῖ ἐπὶ δυσμὰς ἡλίου. Κύριος δὲ ὁ Θεὸς ἡμῶν οὗτος ἐξολοθρεύσει αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου ἡμῶν, ἕως ἂν ἀπόλωνται· καὶ ἀποστελεῖ αὐτοῖς τὰ θηρία τὰ ἄγρια, ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ αὐτοὺς καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἀπὸ προσώπου ὑμῶν, καὶ κατακληρονομήσετε τὴν γῆν αὐτῶν, καθὰ ἐλάλησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ὑμῖν. Κατισχύσατε οὖν σφόδρα φυλάσσειν καὶ ποιεῖν πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τοῦ νόμου Μωυσῆ, ἵνα μὴ ἐκκλίνητε εἰς δεξιὰ ἢ εὐώνυμα, ὅπως μὴ εἰσέλθητε εἰς τὰ ἔθνη τὰ καταλελειμμένα ταῦτα· καὶ τὰ ὀνόματα τῶν θεῶν αὐτῶν οὐκ ὀνομασθήσεται ἐν ὑμῖν, οὐδὲ μὴ λατρεύσητε, οὐδὲ μὴ προσκυνήσητε αὐτοῖς, ἀλλὰ Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν προσκολληθήσεσθε, καθάπερ ἐποιήσατε ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἐξολοθρεύσει αὐτοὺς Κύριος ἀπὸ προσώπου ὑμῶν ἔθνη μεγάλα καὶ ἰσχυρά· καὶ οὐδεὶς ἀντέστη κατενώπιον ἡμῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Εἷς ὑμῶν ἐδίωξε χιλίους, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν οὗτος ἐξεπολέμει ὑμῖν, καθάπερ εἶπεν ἡμῖν. Καὶ φυλάξασθε σφόδρα τοῦ ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν. Ἐὰν γὰρ ἀποστραφῆτε καὶ προσθῆσθε τοῖς ὑπολειφθεῖσιν ἔθνεσι τούτοις τοῖς μεθ ὑμῶν, καὶ ἐπιγαμίας ποιήσητε πρὸς αὐτοὺς, καὶ συγκαταμιγῆτε αὐτοῖς καὶ αὐτοὶ ὑμῖν, γινώσκετε ὅτι οὐ μὴ προσθῇ Κύριος τοῦ ἐξολοθρεῦσαι τὰ ἔθνη ταῦτα ἀπὸ προσώπου ὑμῶν· καὶ ἔσονται ὑμῖν εἰς παγίδας, καὶ εἰς σκάνδαλα, καὶ εἰς ἥλους ἐν ταῖς

πτέρναις ὑμῶν, καὶ εἰς βολίδας ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, ἕως ἂν ἀπόλησθε ἀπὸ τῆς γῆς τῆς ἀγαθῆς ταύτης, ἣν ἔδωκεν ὑμῖν Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν. Ἐγὼ δὲ ἀποτρέχω τὴν ὁδὸν, καθὰ καὶ πάντες οἱ ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ γνώσεσθε τῇ καρδίᾳ ὑμῶν καὶ τῇ ψυχῇ ὑμῶν, διότι οὐκ ἔπεσεν εἷς λόγος ἀπὸ πάντων τῶν λόγων, ὧν εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν πρὸς πάντα τὰ ἀνήκοντα ἡμῖν, οὐ διεφώνησεν ἐξ αὐτῶν. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἥκει πρὸς ἡμᾶς πάντα τὰ ῥήματα τὰ καλὰ, ἃ ἐλάλησε Κύριος ἐφ ὑμᾶς· οὕτως ἐπάξει Κύριος ὁ Θεὸς ἐφ ὑμᾶς πάντα τὰ ῥήματα τὰ πονηρὰ ἕως ἂν ἐξολοθρεύσῃ ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς τῆς ἀγαθῆς ταύτης, ἧς ἔδωκε Κύριος ὑμῖν, ἐν τῷ παραβῆναι ὑμᾶς τὴν διαθήκην Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ἣν ἐνετείλατο ἡμῖν, καὶ πορευθέντες λατρεύσητε θεοῖς ἑτέροις καὶ προσκυνήσητε αὐτοῖς.

# 24

Καὶ συνήγαγεν Ἰησοῦς πάσας φυλὰς Ἰσραὴλ εἰς Σηλὼ, καὶ συνεκάλεσε τοὺς πρεσβυτέρους αὐτῶν καὶ τοὺς γραμματεῖς αὐτῶν καὶ τοὺς δικαστὰς αὐτῶν, καὶ ἔστησεν αὐτοὺς ἀπέναντι τοῦ Θεοῦ. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς πρὸς πάντα τὸν λαὸν, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, πέραν τοῦ ποταμοῦ παρῴκησαν οἱ πατέρες ὑμῶν τὸ ἀπαρχῆς, Θάρα ὁ πατὴρ Ἀβραὰμ, καὶ ὁ πατὴρ Ναχὼρ, καὶ ἐλάτρευσαν θεοῖς ἑτέροις. Καὶ ἔλαβον τὸν πατέρα ὑμῶν τὸν Ἀβραὰμ ἐκ τοῦ πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ ὡδήγησα αὐτὸν ἐν πάσῃ τῇ γῇ· καὶ ἐπλήθυνα αὐτοῦ σπέρμα, καὶ ἔδωκα αὐτῷ τὸν Ἰσαὰκ, καὶ τῷ Ἰσαὰκ τὸν Ἰακὼβ καὶ τὸν Ἡσαῦ· καὶ ἔδωκα τῷ Ἡσαῦ τὸ ὄρος τὸ Σηεὶρ κληρονομῆσαι αὐτῷ· καὶ Ἰακὼβ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ

κατέβησαν εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἐγένοντο ἐκεῖ εἰς ἔθνος μέγα καὶ πολὺ καὶ κραταιόν· καὶ ἐκάκωσαν αὐτοὺς οἱ Αἰγύπτιοι. Καὶ ἐπάταξα τὴν Αἴγυπτον ἐν σημείοις οἷς ἐποίησα ἐν αὐτοῖς. Καὶ μετὰ ταῦτα ἐξήγαγε τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ εἰσήλθατε εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐρυθράν· καὶ κατεδίωξαν οἱ Αἰγύπτιοι ὀπίσω τῶν πατέρων ἡμῶν ἐν ἅρμασι καὶ ἐν ἵπποις εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐρυθράν. Καὶ ἀνεβοήσαμεν πρὸς Κύριον· καὶ ἔδωκε νεφέλην καὶ γνόφον ἀναμέσον ἡμῶν καὶ ἀναμέσον τῶν Αἰγυπτίων, καὶ ἐπήγαγεν ἐπ αὐτοὺς τὴν θάλασσαν, καὶ ἐκάλυψεν αὐτούς· καὶ εἴδοσαν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ὅσα ἐποίησε Κύριος ἐν γῇ· Αἰγύπτῳ· καὶ ἦτε ἐν τῇ ἐρήμῳ ἡμέρας πλείους. Καὶ ἤγαγεν ἡμᾶς εἰς γῆν Ἀμορῥαίων τῶν κατοικούντων πέραν τοῦ Ἰορδάνου, καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος εἰς τὰς χεῖρας ἡμῶν· καὶ κατεκληρονομήσατε τὴν γῆν αὐτῶν, καὶ ἐξωλοθρεύσατε αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου ὑμῶν. Καὶ ἀνέστη Βαλὰκ ὁ τοῦ Σεπφὼρ βασιλεὺς Μωὰβ, καὶ παρετάξατο τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἀποστείλας ἐκάλεσε τὸν Βαλαὰμ ἀράσασθαι ἡμῖν. Καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος ὁ Θεός σου ἀπολέσαι σε· καὶ εὐλογίαις εὐλόγησεν ἡμᾶς, καὶ ἐξείλατο ἡμᾶς ἐκ χειρῶν αὐτῶν, καὶ παρέδωκεν αὐτούς. Καὶ διέβητε τὸν Ἰορδάνην, καὶ παρεγενήθητε εἰς Ἰεριχώ· καὶ ἐπολέμησαν πρὸς ἡμᾶς οἱ κατοικοῦντες Ἰεριχὼ ὁ Ἀμορῥαῖος, καὶ ὁ Χαναναῖος, καὶ ὁ Φερεζαῖος, καὶ ὁ Εὐαῖος, καὶ ὁ Ἰεβουσαῖος, καὶ ὁ Χετταῖος, καὶ ὁ Γεργεσαῖος· καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος εἰς τὰς χεῖρας ἡμῶν. Καὶ ἐξαπέστειλε προτέραν ὑμῶν τὴν σφηκίαν· καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου ἡμῶν δώδεκα βασιλεῖς τῶν Ἀμορῥαίων, οὐκ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ σου οὐδὲ ἐν τῷ τόξῳ σου. Καὶ ἔδωκεν ὑμῖν γῆν ἐφ ἣν οὐκ ἐκοπιάσατε ἐπ αὐτῆς, καὶ πόλεις ἃς οὐκ ᾠκοδομήκατε, καὶ κατῳκίσθητε ἐν αὐταῖς, καὶ ἀμπελῶνας καὶ ἐλαιῶνας οὓς οὐκ

ἐφυτεύσατε ὑμεῖς, ἔδεσθε. Καὶ νῦν φοβήθητε Κύριον, καὶ λατρεύσατε αὐτῷ ἐν εὐθύτητι καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ περιέλεσθε τοὺς θεοὺς τοὺς ἀλλοτρίους, οἷς ἐλάτρευσαν οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν τῷ πέραν τοῦ ποταμοῦ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ λατρεύσατε Κυρίῳ. Εἰ δὲ μὴ ἀρέσκει ὑμῖν λατρεύειν Κυρίῳ, ἐκλέξασθε ὑμῖν αὐτοῖς σήμερον τίνι λατρεύσητε, εἴτε τοῖς θεοῖς τῶν πατέρων ὑμῶν, τοῖς ἐν τῷ πέραν τοῦ ποταμοῦ, εἴτε τοῖς θεοῖς τῶν Ἀμορραίων, ἐν οἷς ὑμεῖς κατοικεῖτε ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν· ἐγὼ δὲ καὶ ἡ οἰκία μου λατρεύσομεν Κυρίῳ, ὅτι ἅγιός ἐστι. Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ λαὸς εἶπε, μὴ γένοιτο ἡμῖν καταλιπεῖν Κύριον, ὥστε λατρεύειν θεοῖς ἑτέροις. Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, αὐτὸς Θεός ἐστιν· αὐτὸς ἀνήγαγεν ἡμᾶς καὶ τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ διεφύλαξεν ἡμᾶς ἐν πάσῃ τῇ ὁδῷ ᾗ ἐπορεύθημεν ἐν αὐτῇ, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν οὓς παρήλθομεν δι αὐτῶν. Καὶ ἐξέβαλε Κύριος τὸν Ἀμορῥαῖον καὶ πάντα τὰ ἔθνη τὰ κατοικοῦντα τὴν γῆν ἀπὸ προσώπου ἡμῶν· ἀλλὰ καὶ ἡμεῖς λατρεύσομεν Κυρίῳ, οὗτος γὰρ Θεὸς ἡμῶν ἐστι. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς πρὸς τὸν λαόν, οὐ μὴ δύνησθε λατρεύειν Κυρίῳ, ὅτι Θεὸς ἅγιός ἐστι· καὶ ζηλώσας οὗτος οὐκ ἀνήσει τὰ ἁμαρτήματα ὑμῶν καὶ τὰ ἀνομήματα ὑμῶν, ἡνίκα ἂν ἐγκαταλίπητε Κύριον καὶ λατρεύσητε θεοῖς ἑτέροις· καὶ ἐπελθὼν κακώσει ὑμᾶς καὶ ἐξαναλώσει ὑμᾶς ἀνθ ὧν εὖ ἐποίησεν ὑμᾶς. Καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Ἰησοῦν, οὐχὶ, ἀλλὰ Κυρίῳ λατρεύσομεν. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς πρὸς τὸν λαόν, μάρτυρες ὑμεῖς καθ ὑμῶν, ὅτι ὑμεῖς ἐξελέξασθε Κυρίῳ λατρεύειν αὐτῷ. Καὶ νῦν περιέλεσθε τοὺς θεοὺς τοὺς ἀλλοτρίους τοὺς ἐν ὑμῖν, καὶ εὐθύνατε τὴν καρδίαν ὑμῶν πρὸς Κύριον Θεὸν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Ἰησοῦν, Κυρίῳ λατρεύσομεν καὶ τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκουσόμεθα. Καὶ διέθετο Ἰησοῦς διαθήκην πρὸς τὸν λαὸν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ νόμον καὶ κρίσιν ἐν

Σηλὼ ἐνώπιον τῆς σκηνῆς τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἔγραψε τὰ ῥήματα ταῦτα εἰς βιβλίον νόμων τοῦ Θεοῦ· καὶ ἔλαβε λίθον μέγαν, καὶ ἔστησεν αὐτὸν Ἰησοῦς ὑπὸ τὴν τέρμινθον ἀπέναντι Κυρίου. Καὶ εἶπεν Ἰησοῦς πρὸς τὸν λαὸν, ἰδοὺ ὁ λίθος οὗτος ἔσται ἐν ὑμῖν εἰς μαρτύριον, ὅτι αὐτὸς ἀκήκοε πάντα τὰ λεχθέντα αὐτῷ ὑπὸ Κυρίου· ὅτι ἐλάλησε πρὸς ὑμᾶς σήμερον, καὶ οὗτος ἔσται ἐν ὑμῖν εἰς μαρτύριον ἐπ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν, ἡνίκα ἂν ψεύσησθε Κυρίῳ τῷ Θεῷ μου. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰησοῦς τὸν λαὸν, καὶ ἐπορεύθησαν ἕκαστος εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ ἐλάτρευσεν Ἰσραὴλ τῷ Κυρίῳ πάσας τὰς ἡμέρας Ἰησοῦ, καὶ πάσας τὰς ἡμέρας τῶν πρεσβυτέρων ὅσοι ἐφείλκυσαν τὸν χρόνον μετὰ Ἰησοῦ, καὶ ὅσοι εἴδοσαν πάντα τὰ ἔργα Κυρίου ὅσα ἐποίησε τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο μετ ἐκεῖνα καὶ ἀπέθανεν Ἰησοῦς υἱὸς Ναυῆ δοῦλος Κυρίου ἑκατὸν δέκα ἐτῶν. Καὶ ἔθαψαν αὐτὸν πρὸς τοῖς ὁρίοις τοῦ κλήρου αὐτοῦ ἐν Θαμνασαρὰχ ἐν τῷ ὄρει τῷ Ἐφραὶμ ἀπὸ βορρᾶ τοῦ ὄρους τοῦ Γαλαάδ· Καὶ τὰ ὀστᾶ Ἰωσὴφ ἀνήγαγον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, καὶ κατώρυξαν ἐν Σικίμοις, ἐν τῇ μερίδι τοῦ ἀγροῦ οὗ ἐκτήσατο Ἰακὼβ παρὰ τῶν Ἀμορῥαίων τῶν κατοικούντων ἐν Σικίμοις ἀμνάδων ἑκατὸν, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν Ἰωσὴφ ἐν μερίδι. Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα καὶ Ἐλεάζαρ υἱὸς Ἀαρὼν ὁ ἀρχιερεὺς ἐτελεύτησε, καὶ ἐτάφη ἐν Γαβαὰρ Φινεὲς τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ἣν ἔδωκεν αὐτῷ ἐν τῷ ὄρει τῷ Ἐφραίμ.

# ΚΡΙΤΕΣ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο μετὰ τὴν τελευτὴν Ἰησοῦ, καὶ ἐπηρώτων οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ διὰ τοῦ Κυρίου, λέγοντες, τίς ἀναβήσεται ἡμῖν πρὸς τοὺς Χαναναίους ἀφηγούμενος τοῦ πολεμῆσαι πρὸς αὐτούς; Καὶ εἶπε Κύριος, Ἰούδας ἀναβήσεται· ἰδοὺ δέδωκα τὴν γῆν ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἰούδας τῷ Συμεὼν ἀδελφῷ αὐτοῦ, ἀνάβηθι μετ’ ἐμοῦ ἐν τῷ κλήρῳ μου, καὶ παραταξώμεθα πρὸς τοὺς Χαναναίους, καὶ πορεύσομαι κἀγὼ μετὰ σοῦ ἐν τῷ κλήρῳ σου· καὶ ἐπορεύθη μετ’ αὐτοῦ Συμεών. Καὶ ἀνέβη Ἰούδας· καὶ παρέδωκε Κύριος τὸν Χαναναῖον καὶ τὸν Φερεζαῖον εἰς τὰς χεῖρας αὐτῶν· καὶ ἔκοψαν αὐτοὺς ἐν Βεζὲκ εἰς δέκα χιλιάδας ἀνδρῶν· Καὶ κατέλαβον τὸν Ἀδωνιβεζὲκ ἐν τῇ Βεζὲκ, καὶ παρετάξαντο πρὸς αὐτόν· καὶ ἔκοψαν τὸν Χαναναῖον καὶ Φερεζαῖον. Καὶ ἔφυγεν Ἀδωνιβεζέκ· καὶ κατέδραμον ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ ἐλάβοσαν αὐτὸν, καὶ ἀπέκοψαν τὰ ἄκρα τῶν χειρῶν αὐτοῦ καὶ τὰ ἄκρα τῶν ποδῶν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀδωνιβεζὲκ, ἑβδομήκοντα βασιλεῖς, τὰ ἄκρα τῶν χειρῶν αὐτῶν καὶ τὰ ἄκρα τῶν ποδῶν αὐτῶν ἀποκεκομμένοι, ἦσαν συλλέγοντες τὰ ὑποκάτω τῆς τραπέζης μου· καθὼς οὖν ἐποίησα, οὕτως

ἀνταπέδωκέ μοι ὁ Θεός. καὶ ἄγουσιν αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλήμ, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ. Καὶ ἐπολέμουν υἱοὶ Ἰούδα τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ κατελάβοντο αὐτὴν, καὶ ἐπάταξαν αὐτὴν ἐν στόματι ῥομφαίας, καὶ τὴν πόλιν ἐνέπρησαν ἐν πυρί. Καὶ μετὰ ταῦτα κατέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰούδα πολεμῆσαι πρὸς τὸν Χαναναῖον τὸν κατοικοῦντα τὴν ὀρεινὴν καὶ τὸν Νότον καὶ τὴν πεδινήν. Καὶ ἐπορεύθη Ἰούδας πρὸς τὸν Χαναναῖον τὸν κατοικοῦντα ἐν Χεβρών· καὶ ἐξῆλθε Χεβρὼν ἐξ ἐναντίας· καὶ τὸ ὄνομα ἦν Χεβρὼν τὸ πρότερον Καριαθαρβοκσεφέρ· καὶ ἐπάτάξαν τὸν Σεσσὶ καὶ Ἀχιμὰν καὶ Θολμὶ γεννήματα τοῦ Ἐνάκ. Καὶ ἀνέβησαν ἐκεῖθεν πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Δαβίρ· τὸ δὲ ὄνομα τῆς Δαβὶρ ἦν ἔμπροσθεν Καριαθσεφὲρ, πόλις Γραμμάτων. Καὶ εἶπε Χάλεβ, ὃς ἂν πατάξῃ τὴν πόλιν τῶν Γραμμάτων καὶ προκαταλάβηται αὐτὴν, δώσω αὐτῷ τὴν Ἀσχὰ θυγατέρα μου εἰς γυναῖκα. Καὶ προκατελάβετο αὐτὴν Γοθονιὴλ υἱὸς Κενὲζ ἀδελφοῦ Χάλεβ ὁ νεώτερος· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Χάλεβ τὴν Ἀσχὰ θυγατέρα αὐτοῦ εἰς γυναῖκα. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ εἰσόδῳ αὐτῆς, καὶ ἐπέσεισεν αὐτὴν Γοθονιὴλ τοῦ αἰτῆσαι παρὰ τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἀγρόν· καὶ ἐγόγγυζε καὶ ἔκραζεν ἀπὸ τοῦ ὑποζυγίου, εἰς γῆν Νότου ἐκδέδοσαί με· καὶ εἶπεν αὐτῇ Χάλεβ, τί ἐστί σοι; Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἀσχὰ, δὸς δή μοι εὐλογίαν, ὅτι εἰς γῆν Νότου ἐκδέδοσαί με, καὶ δώσεις μοι λύτρωσιν ὕδατος· καὶ ἔδωκεν αὐτῇ Χάλεβ κατὰ τὴν καρδίαν αὐτῆς λύτρωσιν μετεώρων καὶ λύτρωσιν ταπεινῶν. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰοθὸρ τοῦ Κιναίου τοῦ γαμβροῦ Μωυσῆ ἀνέβησαν ἐκ πόλεως τῶν φοινίκων μετὰ τῶν υἱῶν Ἰούδα εἰς τὴν ἔρημον τὴν οὖσαν ἐν τῷ Νότῳ Ἰούδα, ἥ ἐστιν ἐπὶ καταβάσεως Ἀρὰδ, καὶ κατῴκησαν μετὰ τοῦ λαοῦ. Καὶ ἐπορεύθη Ἰούδας μετὰ Συμεὼν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ ἔκοψε τὸν Χαναναῖον τὸν κατοικοῦντα Σεφὲθ, καὶ ἐξωλόθρευσαν αὐτους· καὶ ἐκάλεσε τὸ

ὄνομα τῆς πόλεως, Ἀνάθεμα. Καὶ οὐκ ἐκληρονόμησεν Ἰούδας τὴν Γάζαν οὐδὲ τὰ ὅρια αὐτῆς, οὐδὲ τὴν Ἀσκάλωνα οὐδὲ τὰ ὅρια αὐτῆς, καὶ τὴν Ἀκκαρὼν οὐδὲ τὰ ὅρια αὐτῆς, τὴν Ἄζωτον οὐδὲ τὰ περισπόρια αὐτῆς. Καὶ ἦν Κύριος μετὰ Ἰούδα· καὶ ἐκληρονόμησε τὸ ὄρος, ὅτι οὐκ ἠδυνάσθησαν ἐξολοθρεῦσαι τοὺς κατοικοῦντας τὴν κοιλάδα, ὅτι Ῥηχὰβ διεστείλατο αὐτοῖς. Καὶ ἔδωκαν τῷ Χάλεβ τὴν Χεβρὼν, καθὼς ἐλάλησε Μωυσῆς· καὶ ἐκληρονόμησεν ἐκεῖθεν τὰς τρεῖς πόλεις τῶν υἱῶν Ἐνάκ. Καὶ τὸν Ἰεβουσαῖον τὸν κατοικοῦντα ἐν Ἰερουσαλὴμ οὐκ ἐκληρονόμησαν οἱ υἱοὶ Βενιαμίν· καὶ κατῴκησεν ὁ Ἰεβουσαῖος μετὰ τῶν υἱῶν Βενιαμὶν ἐν Ἰερουσαλὴμ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰωσὴφ καί γε αὐτοὶ εἰς Βαιθήλ· καὶ Κύριος ἦν μετ᾽ αὐτῶν. Καὶ παρενέβαλον, καὶ κατεσκέψαντο Βαιθήλ· τὸ δὲ ὄνομα τῆς πόλεως ἦν ἔμπροσθεν Λουζά. Καὶ εἶδον οἱ φυλάσσοντες, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἐξεπορεύετο ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἔλαβον αὐτόν· καὶ εἶπον αὐτῷ, δεῖξον ἡμῖν τῆς πόλεως τὴν εἴσοδον, καὶ ποιήσομεν μετὰ σου ἔλεος. Καὶ ἔδειξεν αὐτοῖς τὴν εἴσοδον τῆς πόλεως· καὶ ἐπάταξαν τὴν πόλιν ἐν στόματι ῥομφαίας· τὸν δὲ ἄνδρα καὶ τὴν συγγένειαν αὐτοῦ ἐξαπέστειλαν. Καὶ ἐπορεύθη ὁ ἀνὴρ εἰς γῆν Χεττίν· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ πόλιν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτῆς Λουζά· τοῦτο ὄνομα αὐτῆς ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ οὐκ ἐξῆρε Μανασσῆ τὴν Βαιθσὰν, ἥ ἐστι Σκυθῶν πόλις, οὐδὲ τὰς θυγατέρας αὐτῆς οὐδὲ τὰ περίοικα αὐτῆς, οὐδὲ τὴν Θανὰκ οὐδὲ τὰς θυγατέρας αὐτῆς, οὐδὲ τοὺς κατοικοῦντας Δὼρ οὐδὲ τὰς θυγατέρας αὐτῆς, οὐδὲ τὸν κατοικοῦντα Βαλὰκ οὐδὲ τὰ περίοικα αὐτῆς οὐδὲ τὰς θυγατέρας αὐτῆς, οὐδὲ τοὺς κατοικοῦντας Μαγεδὼ οὐδὲ τὰ περίοικα αὐτῆς καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῆς, οὐδὲ τοὺς κατοικοῦντας Ἰεβλαὰμ οὐδὲ τὰ περίοικα αὐτῆς, οὐδὲ τὰς θυγατέρας αὐτῆς· καὶ ἤρξατο ὁ

Χαναναῖος κατοικεῖν ἐν τῇ γῇ ταύτῃ. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐνίσχυσεν Ἰσραὴλ, καὶ ἐποίησε τὸν Χαναναῖον εἰς φόρον, καὶ ἐξαίρων οὐκ ἐξῆρεν αὐτόν. Καὶ Ἐφραὶμ οὐκ ἐξῆρε τὸν Χαναναῖον τὸν κατοικοῦντα ἐν Γαζέρ· καὶ κατῴκησεν ὁ Χαναναῖος ἐν μέσῳ αὐτοῦ ἐν Γαζὲρ, καὶ ἐγένετο εἰς φόρον. Καὶ Ζαβουλὼν οὐκ ἐξῆρε τοὺς κατοικοῦντας Κέδρων, οὐδὲ τοὺς κατοικοῦντας Δωμανά· καὶ κατῴκησεν ὁ Χαναναῖος ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ ἐγένετο αὐτῷ εἰς φόρον. Καὶ Ἀσὴρ οὐκ ἐξῆρε τοὺς κατοικοῦντας Δωμανά· καὶ κατῴκησεν ὁ Χαναναῖος ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ ἐγένετο αὐτῷ εἰς φόρον. Καὶ Ἀσὴρ οὐκ ἐξῆρε τοὺς κατοικοῦντας Ἀκχὼ, καὶ ἐγένετο αὐτῷ εἰς φόρον, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Δὼρ, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Σιδῶνα, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Δαλὰφ, τὸν Ἀσχαζὶ, καὶ τὸν Χεβδὰ, καὶ τὸν Ναΐ, καὶ τὸν Ἐρεώ. Καὶ κατῴκησεν ὁ Ἀσὴρ ἐν μέσῳ τοῦ Χαναναίου τοῦ κατοικοῦντος τὴν γῆν, ὅτι οὐκ ἠδυνήθη ἐξάραι αὐτόν. Καὶ Νεφθαλὶ οὐκ ἐξῆρε τοὺς κατοικοῦντας Βαιθσαμῦς, καὶ τοὺς κατοικοῦντας Βαιθανάχ· καὶ κατῴκησε Νεφθαλὶ ἐν μέσῳ τοῦ Χαναναίου τοῦ κατοικοῦντος τὴν γῆν· οἱ δὲ κατοικοῦντες Βαιθσαμὺς καὶ τὴν Βαιθενὲθ, ἐγένοντο αὐτοῖς εἰς φόρον. Καὶ ἐξέθλιψεν ὁ Ἀμορῥαῖος τοὺς υἱοὺς Δὰν εἰς τὸ ὄρος, ὅτι οὐκ ἀφῆκαν αὐτὸν καταβῆναι εἰς τὴν κοιλάδα. Καὶ ἤρξατο ὁ Ἀμορῥαῖος κατοικεῖν ἐν τῷ ὄρει τῷ ὀστρακώδει, ἐν ᾧ αἱ ἄρκτοι καὶ ἐν ᾧ αἱ ἀλώπεκες, ἐν τῷ Μυρσινῶνι, καὶ ἐν Θαλαβίν, καὶ ἐβαρύνθη ἡ χεὶρ οἴκου Ἰωσὴφ ἐπὶ τὸν Ἀμορῥαῖον, καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς εἰς φόρον. Καὶ τὸ ὅριον τοῦ Ἀμορῥαίου ἀπὸ τῆς ἀναβάσεως Ἀκραβὶν ἀπὸ τῆς πέτρας καὶ ἐπάνω.

# 2

Καὶ ἀνέβη ἄγγελος Κυρίου ἀπὸ Γαλγὰλ ἐπὶ τὸν κλαυθμῶνα καὶ ἐπὶ Βαιθὴλ καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, τάδε λέγει Κύριος, ἀνεβίβασα ὑμᾶς ἐξ Αἰγύπτου, καὶ εἰσήγαγον ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν ἣν ὤμοσα τοῖς πατράσιν ὑμῶν· καὶ εἶπα, οὐ διασκεδάσω τὴν διαθήκην μου τὴν μεθ’ ὑμῶν εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ὑμεῖς οὐ διαθήσεσθε διαθήκην τοῖς ἐγκαθημένοις εἰς τὴν γῆν ταύτην, οὐδὲ τοῖς θεοῖς αὐτῶν προσκυνήσετε, ἀλλὰ τὰ γλυπτὰ αὐτῶν συντρίψετε, τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν καθελεῖτε· καὶ οὐκ εἰσηκούσατε τῆς φωνῆς μου, ὅτι ταῦτα ἐποιήσατε. Κἀγὼ εἶπον, οὐ μὴ ἐξάρω αὐτοὺς ἐκ προσώπου ὑμῶν, καὶ ἔσονται ὑμῖν εἰς συνοχὰς, καὶ οἱ θεοὶ αὐτῶν ἔσονται ὑμῖν εἰς σκάνδαλον. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐλάλησεν ὁ ἄγγελος Κυρίου τοὺς λόγους τούτους πρὸς πάντας υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἐπῆραν ὁ λαὸς τὴν φωνὴν αὐτῶν καὶ ἔκλαυσαν. Καὶ ἐπωνόμασαν τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Κλαυθμῶνες· καὶ ἐθυσίασαν ἐκεῖ τῷ Κυρίῳ. Καὶ ἐξαπέστειλεν Ἰησοῦς τὸν λαὸν, καὶ ἦλθεν ἀνὴρ εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν. Καὶ ἐδούλευσεν ὁ λαὸς τῷ Κυρίῳ πάσας τὰς ἡμέρας Ἰησοῦ καὶ πάσας τὰς ἡμέρας τῶν πρεσβυτέρων, ὅσοι ἐμακροημέρευσαν μετὰ Ἰησοῦ, ὅσοι ἔγνωσαν πᾶν τὸ ἔργον Κυρίου τὸ μέγα ὅσα ἐποίησεν ἐν τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἐτελεύτησεν Ἰησοῦς υἱὸς Ναυῆ δοῦλος Κυρίου, υἱὸς ἑκατὸν δέκα ἐτῶν. Καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν ὁρίῳ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ ἐν Θαμναθαρὲς, ἐν ὄρει Ἐφραὶμ ἀπὸ Βορῥᾶ τοῦ ὄρους Γαάς. Καὶ πᾶσα ἡ γενεὰ ἐκείνη προσετέθησαν πρὸς τοὺς πατέρας αὐτῶν· καὶ ἀνέστη γενεὰ ἑτέρα μετ’ αὐτοὺς, οἳ οὐκ ἔγνωσαν τὸν Κύριον, καί γε τὸ ἔργον ὃ ἐποίησεν ἐν τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐλάτρευσαν τοῖς Βααλίμ. Καὶ ἐγκατέλιπον τὸν Κύριον τὸν Θεὸν τῶν πατέρων αὐτῶν, τὸν ἐξαγαγόντα αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ

ἐπορεύθησαν ὀπίσω θεῶν ἑτέρων ἀπὸ τῶν θεῶν τῶν ἐθνῶν τῶν περικύκλῳ αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς· καὶ παρώργισαν τὸν Κύριον, καὶ ἐγκατέλιπον αὐτὸν, καὶ ἐλάτρευσαν τῷ Βάαλ καὶ ταῖς Ἀστάρταις. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν τῷ Ἰσραήλ· καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς εἰς χεῖρας προνομευόντων, καὶ κατεπρονόμευσαν αὐτούς· καὶ ἀπέδοτο αὐτοὺς ἐν χερσὶ τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν κυκλόθεν, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν ἔτι ἀντιστῆναι κατὰ πρόσωπον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν ἐν πᾶσιν οἷς ἐπορεύοντο· καὶ χεὶρ Κυρίου ἦν ἐπ᾽ αὐτοὺς εἰς κακὰ, καθὼς ἐλάλησε Κύριος καὶ καθὼς ὤμοσε Κύριος αὐτοῖς, καὶ ἐξέθλιψεν αὐτοὺς σφόδρα. Καὶ ἤγειρε Κύριος κριτὰς, καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς Κύριος ἐκ χειρὸς τῶν προνομευόντων αὐτούς· καί γε τῶν κριτῶν οὐχ ὑπήκουσαν, ὅτι ἐξεπόρνευσαν ὀπίσω θεῶν ἑτέρων, καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς· καὶ ἐξέκλιναν ταχὺ ἐκ τῆς ὁδοῦ, ἧς ἐπορεύθησαν οἱ πατέρες αὐτῶν τοῦ εἰσακούειν τῶν λόγων Κυρίου· οὐκ ἐποίησαν οὕτω. Καὶ ὅτι ἤγειρε Κύριος αὐτοῖς κριτὰς, καὶ ἦν Κύριος μετὰ τοῦ κριτοῦ, καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν αὐτῶν πάσας τὰς ἡμέρας τοῦ κριτοῦ, ὅτι παρεκλήθη Κύριος ἀπὸ τοῦ στεναγμοῦ αὐτῶν ἀπὸ προσώπου τῶν πολιορκούντων αὐτοὺς καὶ ἐκθλιβόντων αὐτούς. Καὶ ἐγένετο ὡς ἀπέθνησκεν ὁ κριτὴς, καὶ ἀπέστρεψαν καὶ πάλιν διέφθειραν ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν πορεύεσθαι ὀπίσω θεῶν ἑτέρων, λατρεύειν αὐτοῖς καὶ προσκυνεῖν αὐτοῖς· οὐκ ἀπέῤῥιψαν τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν, καὶ τὰς ὁδοὺς αὐτῶν τὰς σκληράς. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν τῷ Ἰσραήλ· καὶ εἶπεν, ἀνθ᾽ ὧν ὅσα ἐγκατέλιπον τὸ ἔθνος τοῦτο τὴν διαθήκην μου ἣν ἐνετειλάμην τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ οὐκ εἰσήκουσαν τῆς φωνῆς μου, καὶ ἐγὼ οὐ προσθήσω τοῦ ἐξᾶραι ἄνδρα ἐκ προσώπου αὐτῶν ἀπὸ τῶν ἐθνῶν, ὧν κατέλιπεν Ἰησοῦς υἱὸς Ναυῆ ἐν τῇ γῇ· καὶ ἀφῆκε τοῦ πειρᾶσαι

ἐν αὐτοῖς τὸν Ἰσραὴλ, εἰ φυλάσσονται τὴν ὁδὸν Κυρίου πορεύεσθαι ἐν αὐτῇ, ὃν τρόπον ἐφύλαξαν οἱ πατέρες αὐτῶν, ἢ οὔ. Καὶ ἀφήσει Κύριος τὰ ἔθνη ταῦτα τοῦ μὴ ἐξᾶραι αὐτὰ τὸ τάχος, καὶ οὐ παρέδωκεν αὐτὰ ἐν χειρὶ Ἰησοῦ.

# 3

Καὶ ταῦτα τὰ ἔθνη ἃ ἀφῆκε Κύριος αὐτὰ ὥστε πειρᾶσαι ἐν αὐτοῖς τὸν Ἰσραὴλ, πάντας τοὺς μὴ ἐγνωκότας τοὺς πολέμους Χαναάν. Πλὴν διὰ τὰς γενεὰς υἱῶν Ἰσραὴλ τοῦ διδάξαι αὐτοὺς πόλεμον, πλὴν οἱ ἔμπροσθεν αὐτῶν οὐκ ἔγνωσαν αὐτά. Τὰς πέντε σατραπείας τῶν ἀλλοφύλων, καὶ πάντα τὸν Χαναναῖον, καὶ τὸν Σιδώνιον, καὶ τὸν Εὐαῖον τὸν κατοικοῦντα τὸν Λίβανον ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Ἀερμὼν ἕως Λαβωεμάθ. Καὶ ἐγένετο ὥστε πειρᾶσαι ἐν αὐτοῖς τὸν Ἰσραὴλ, γνῶναι εἰ ἀκούσονται τὰς ἐντολὰς Κυρίου, ἃς ἐνετείλατο τοῖς πατράσιν αὐτῶν ἐν χειρὶ Μωυσῆ. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ κατῴκησαν ἐν μέσῳ τοῦ Χαναναίου, καὶ τοῦ Χετταίου, καὶ τοῦ Ἀμορῥαίου, καὶ τοῦ Φερεζαίου, καὶ τοῦ Εὐαίου, καὶ τοῦ Ἰεβουσαίου. Καὶ ἔλαβον τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἑαυτοῖς εἰς γυναῖκας, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἔδωκαν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, καὶ ἐλάτρευσαν τοῖς θεοῖς αὐτῶν. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πονηρὸν ἐναντίον Κυρίου· καὶ ἐπελάθοντο Κυρίου τοῦ Θεοῦ αὐτῶν, καὶ ἐλάτρευσαν τοῖς Βααλὶμ καὶ τοῖς ἄλσεσι. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἀπέδοτο αὐτοὺς ἐν χειρὶ Χουσαρσαθαὶμ βασιλέως Συρίας ποταμῶν· καὶ ἐδούλευσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τῷ Χουσαρσαθαὶμ ἔτη ὀκτώ. Καὶ ἐκέκραξαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον· καὶ ἤγειρε Κύριος σωτῆρα τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἔσωσεν

αὐτοὺς, τὸν Γοθονιὴλ υἱὸν Κενὲζ ἀδελφοῦ Χάλεβ τὸν νεώτερον ὑπὲρ αὐτόν. Καὶ ἐγένετο ἐπ᾽ αὐτὸν πνεῦμα Κυρίου, καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραήλ· καὶ ἐξῆλθεν εἰς πόλεμον πρὸς Χουσαρσαθαίμ· καὶ παρέδωκε Κύριος ἐν χειρὶ αὐτοῦ τὸν Χουσαρσαθαὶμ βασιλέα Συρίας ποταμῶν· καὶ ἐκραταιώθη χεὶρ αὐτοῦ ἐπὶ τὸν Χουσαρσαθαίμ. Καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ ἔτη τεσσαράκοντα· καὶ ἀπέθανε Γοθονιὴλ υἱὸς Κενέζ. Καὶ προσέθεντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἐνίσχυσε Κύριος τὸν Ἐγλὼμ βασιλέα Μωὰβ ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ, διὰ τὸ πεποιηκέναι αὐτοὺς τὸ πονηρὸν ἔναντι Κυρίου. Καὶ συνήγαγε πρὸς ἑαυτὸν πάντας τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν καὶ Ἀμαλὴκ, καὶ ἐπορεύθη καὶ ἐπάταξε τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἐκληρονόμησε τὴν πόλιν τῶν φοινίκων. Καὶ ἐδούλευσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τῷ Ἐγλὼμ βασιλεῖ Μωὰβ ἔτη δεκαοκτώ. Καὶ ἐκέκραξαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον· καὶ ἤγειρεν αὐτοῖς σωτῆρα, τὸν Ἀὼδ υἱὸν Γηρὰ υἱὸν τοῦ Ἰεμενὶ ἄνδρα ἀμφοτεροδέξιον· καὶ ἐξαπέστειλαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ δῶρα ἐν χειρὶ αὐτοῦ τῷ Ἐγλὼμ βασιλεῖ Μωάβ. Καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ Ἀὼδ μάχαιραν δίστομον, σπιθαμῆς τὸ μῆκος αὐτῆς· καὶ περιεζώσατο αὐτὴν ὑπὸ τὸν μανδύαν ἐπὶ τὸν μηρὸν αὐτοῦ τὸν δεξιόν. Καὶ ἐπορεύθη, καὶ προσήνεγκε τὰ δῶρα τῷ Ἐγλὼμ βασιλεῖ Μωάβ· καὶ Ἐγλὼμ ἀνὴρ ἀστεῖος σφόδρα. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα συνετέλεσεν Ἀὼδ προσφέρων τὰ δῶρα, καὶ ἐξαπέστειλε τοὺς φέροντας τὰ δῶρα, καὶ αὐτὸς ὑπέστρεψεν ἀπὸ τῶν γλυπτῶν τῶν μετὰ τῆς Γαλγάλ· καὶ εἶπεν Ἀὼδ, λόγος μοι κρύφιος πρὸς σὲ, βασιλεῦ· καὶ εἶπεν Ἐγλὼμ πρὸς αὐτὸν, σιώπα· καὶ ἐξαπέστειλεν ἀφ᾽ ἑαυτοῦ πάντας τοὺς ἐφεστῶτας ἐπ᾽ αὐτόν, καὶ Ἀὼδ εἰσῆλθε πρὸς αὐτόν· καὶ αὐτὸς ἐκάθητο ἐν τῷ ὑπερῴῳ τῷ θερινῷ τῷ ἑαυτοῦ μονώτατος· καὶ εἶπεν Ἀὼδ, λόγος Θεοῦ μοι πρὸς σὲ, βασιλεῦ· καὶ ἐξανέστη ἀπὸ τοῦ

θρόνου Ἐγλὼμ ἐγγὺς αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἅμα τῷ ἀναστῆναι αὐτὸν, καὶ ἐξέτεινεν Ἀὼδ τὴν χεῖρα τὴν ἀριστερὰν αὐτοῦ, καὶ ἔλαβε τὴν μάχαιραν ἐπάνωθεν τοῦ μηροῦ αὐτοῦ τοῦ δεξιοῦ, καὶ ἐνέπηξεν αὐτὴν ἐν τῇ κοιλίᾳ αὐτοῦ, καὶ ἐπεισήνεγκε καί γε τὴν λαβὴν ὀπίσω τῆς φλογὸς, καὶ ἀπέκλεισε τὸ στέαρ κατὰ τῆς φλογὸς, ὅτι οὐκ ἐξέσπασε τὴν μάχαιραν ἐκ τῆς κοιλίας αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθεν Ἀὼδ τὴν προστάδα· καὶ ἐξῆλθε τοὺς διατεταγμένους, καὶ ἀπέκλεισε τὰς θύρας τοῦ ὑπερῴου κατ’ αὐτοῦ, καὶ ἐσφήνωσε. Καὶ αὐτὸς ἐξῆλθε· καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ ἐπῆλθον καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ αἱ θύραι τοῦ ὑπερῴου ἐσφηνωμέναι· καὶ εἶπαν, μήποτε ἀποκενοῖ τοὺς πόδας αὐτοῦ ἐν τῷ ταμείῳ τῷ θερινῷ; Καὶ ὑπέμειναν ἕως ᾐσχύνοντο· καὶ ἰδοὺ οὐκ ἔστιν ὁ ἀνοίγων τὰς θύρας τοῦ ὑπερῴου· καὶ ἔλαβον τὴν κλεῖδα, καὶ ἤνοιξαν· καὶ ἰδοὺ ὁ κύριος αὐτῶν πεπτωκὼς ἐπὶ τὴν γῆν τεθνηκώς. Καὶ Ἀὼδ διεσώθη ἕως ἐθορυβοῦντο, καὶ οὐκ ἦν ὁ προσνοῶν αὐτῷ· καὶ αὐτὸς παρῆλθε τὰ γλυπτὰ, καὶ διεσώθη εἰς Σετειρωθά. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἦλθεν Ἀὼδ εἰς γῆν Ἰσραὴλ, καὶ ἐσάλπισεν ἐν κερατίνῃ ἐν τῷ ὄρει Ἐφραὶμ, καὶ κατέβησαν σὺν αὐτῷ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀπὸ τοῦ ὄρους, καὶ αὐτὸς ἔμπροσθεν αὐτῶν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, κατάβητε ὀπίσω μου, ὅτι παρέδωκε Κύριος ὁ Θεὸς τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν τὴν Μωὰβ ἐν χειρὶ ἡμῶν· καὶ κατέβησαν ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ προκατελάβοντο τὰς διαβάσεις τοῦ Ἰορδάνου τῆς Μωὰβ, καὶ οὐκ ἀφῆκεν ἄνδρα διαβῆναι. Καὶ ἐπάταξαν τὴν Μωὰβ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ὡσεὶ δέκα χιλιάδας ἀνδρῶν, πᾶν λιπαρὸν καὶ πάντα ἄνδρα δυνάμεως, καὶ οὐ διεσώθη ὁ ἀνήρ. Καὶ ἐνετράπη Μωὰβ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ὑπὸ χεῖρα Ἰσραὴλ, καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ ὀγδοήκοντα ἔτη· καὶ ἔκρινεν αὐτοὺς Ἀὼδ ἕως οὗ ἀπέθανε. Καὶ μετ’ αὐτὸν ἀνέστη Σαμεγὰρ υἱὸς Δινὰχ, καὶ ἐπάταξε τοὺς ἀλλοφύλους εἰς ἑξακοσίους ἄνδρας ἐν τῷ ἀροτρόποδι τῶν βοῶν· καὶ ἔσωσε καί

γε αὐτὸς τὸν Ἰσραήλ.

# 4

Καὶ προσέθεντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ Ἀὼδ ἀπέθανε. Καὶ ἀπέδοτο τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ Κύριος ἐν χειρὶ Ἰαβὶν βασιλέως Χαναὰν, ὃς ἐβασίλευσεν ἐν Ἀσώρ· καὶ ὁ ἄρχων τῆς δυνάμεως αὐτοῦ Σισάρα, καὶ αὐτὸς κατῴκει ἐν Ἀρισὼθ τῶν ἐθνῶν. Καὶ ἐκέκραξαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον, ὅτι ἐννακόσια ἅρματα σιδηρᾶ ἦν αὐτῷ· καὶ αὐτὸς ἔθλιψε τὸν Ἰσραὴλ κατακράτος εἴκοσι ἔτη. Καὶ Δεββῶρα γυνὴ προφῆτις, γυνὴ Λαφιδὼθ, αὕτη ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ. Καὶ αὐτὴ ἐκάθητο ὑπὸ φοίνικα Δεββῶρα ἀναμέσον τῆς Ῥαμὰ καὶ ἀναμέσον τῆς Βαιθὴλ ἐν τῷ ὄρει Ἐφραίμ· καὶ ἀνέβαινον πρὸς αὐτὴν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς κρίσιν. Καὶ ἀπέστειλε Δεββῶρα καὶ ἐκάλεσε τὸν Βαρὰκ υἱὸν Ἀβινεὲμ ἐκ Κάδης Νεφθαλὶ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, οὐχὶ ἐνετείλατο Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ σοι; καὶ ἀπελεύσῃ εἰς ὄρος Θαβὼρ, καὶ λήψῃ μετὰ σεαυτοῦ δέκα χιλιάδας ἀνδρῶν ἐκ τῶν υἱῶν Νεφθαλὶ, καὶ ἐκ τῶν υἱῶν Ζαβουλὼν. Καὶ ἐπάξω πρὸς σὲ εἰς τὸν χειμάῤῥουν Κισῶν ἐπὶ τὸν Σισάρα ἄρχοντα τῆς δυνάμεως Ἰαβὶν, καὶ τὰ ἅρματα αὐτοῦ καὶ τὸ πλῆθος αὐτοῦ, καὶ παραδώσω αὐτὸν εἰς χεῖράς σου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν Βαρὰκ, ἐὰν πορευθῇς μετ’ ἐμοῦ, πορεύσομαι, καὶ ἐὰν μὴ πορευθῇς, οὐ πορεύσομαι· ὅτι οὐκ οἶδα τὴν ἡμέραν ἐν ᾗ εὐοδοῖ Κύριος τὸν ἄγγελον μετ’ ἐμοῦ. Καὶ εἶπε, πορευομένη πορεύσομαι μετὰ σοῦ· πλὴν γίνωσκε ὅτι οὐκ ἔσται τὸ προτέρημά σου ἐπὶ τὴν ὁδὸν ἣν σὺ πορεύῃ, ὅτι ἐν χειρὶ γυναικὸς ἀποδώσεται Κύριος τὸν Σισάρα· καὶ ἀνέστη Δεββῶρα,

καὶ ἐπορεύθη μετὰ τοῦ Βαρὰκ ἐκ Κάδης. Καὶ ἐβόησε Βαρὰκ τὸν Ζαβουλὼν καὶ τὸν Νεφθαλὶ ἐκ Κάδης, καὶ ἀνέβησαν κατὰ πόδας αὐτοῦ δέκα χιλιάδες ἀνδρῶν, καὶ ἀνέβη Δεββῶρα μετ’ αὐτοῦ. Καὶ Χαβὲρ ὁ Κιναῖος ἐχωρίσθη ἀπὸ Καινᾶ ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰωβὰβ γαμβροῦ Μωυσῆ· καὶ ἔπηξε τὴν σκηνὴν αὐτοῦ ἕως δρυὸς πλεονεκτούντων, ἥ ἐστιν ἐχόμενα Κεδές. Καὶ ἀνηγγέλη Σισάρᾳ, ὅτι ἀνέβη Βαρὰκ υἱὸς Ἀβινεὲμ εἰς ὄρος Θαβώρ. Καὶ ἐκάλεσε Σισάρα πάντα τὰ ἅρματα αὐτοὺ ἐννακόσια ἅρματα σιδηρᾶ, καὶ πάντα τὸν λαὸν τὸν μετ’ αὐτοῦ ἀπὸ Ἀρισὼθ τῶν ἐθνῶν εἰς τὸν χειμάῤῥουν Κισῶν. Καὶ εἶπε Δεββῶρα πρὸς Βαρὰκ, ἀνάστηθι, ὅτι αὕτη ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ παρέδωκε Κύριος τὸν Σισάρα ἐν τῇ χειρί σου, ὅτι Κύριος ἐξελεύσεται ἔμπροσθέν σου· καὶ κατέβη Βαρὰκ κατὰ τοῦ ὄρους Θαβὼρ, καὶ δέκα χιλιάδες ἀνδρῶν ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ ἐξέστησε Κύριος τὸν Σισάρα καὶ πάντα τὰ ἅρματα αὐτοῦ καὶ πᾶσαν τὴν παρεμβολὴν αὐτοῦ ἐν στόματι ῥομφαίας ἐνώπιον Βαράκ· καὶ κατέβη Σισάρα ἐπάνωθεν τοὺ ἅρματος αὐτοῦ, καὶ ἔφυγε τοῖς ποσὶν αὐτοῦ. Καὶ Βαρὰκ διώκων ὀπίσω τῶν ἁρμάτων καὶ ὀπίσω τῆς παρεμβολῆς ἕως Ἀρισὼθ τῶν ἐθνῶν· καὶ ἔπεσε πᾶσα παρεμβολὴ Σισάρα ἐν στόματι ῥομφαίας· οὐ κατελείφθη ἕως ἑνός. Καὶ Σισάρα ἔφυγε τοῖς ποσὶν αὐτοῦ εἰς σκηνὴν Ἰαὴλ γυναικὸς Χαβὲρ ἑταίρου τοῦ Κιναίου· ὅτι εἰρήνη ἦν ἀναμέσον Ἰαβὶν βασιλέως Ἀσὼρ καὶ ἀναμέσον τοῦ οἴκου Χαβὲρ τοῦ Κιναίου. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰαὴλ εἰς συνάντησιν Σισάρα, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἔκκλινον, κύριέ μου, ἔκκλινον πρὸς μὲ, μὴ φοβοῦ· καὶ ἐξέκλινε πρὸς αὐτῆν εἰς τὴν σκηνήν· καὶ περιέβαλεν αὐτὸν ἐπιβολαίῳ. Καὶ εἶπε Σισάρα πρὸς αὐτὴν, πότισόν με δὴ μικρὸν ὑδωρ, ὅτι ἐδίψησα· καὶ ἤνοιξε τὸν ἀσκὸν τοῦ γάλακτος, καὶ ἐπότισεν αὐτὸν, καὶ περιέβαλεν αὐτόν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν Σισάρα, στῆθι δὴ ἐπὶ τὴν θύραν τῆς

σκηνῆς, καὶ ἔσται ἐὰν ἀνὴρ ἔλθῃ πρὸς σὲ, καὶ ἐρωτήσῃ σε, καὶ εἴπῃ, εἰ ἔστιν ὧδε ἀνήρ; καὶ ἐρεῖς, οὐκ ἔστι. Καὶ ἔλαβεν Ἰαὴλ γυνὴ Χαβὲρ τὸν πάσσαλον τῆς σκηνῆς, καὶ ἔθηκε τὴν σφύραν ἐν τῇ χειρὶ αὐτῆς, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὸν ἐν κρύφῃ, καὶ ἔπηξε τὸν πάσσαλον ἐν τῷ κροτάφῳ αὐτοῦ, καὶ διεξῆλθεν ἐν τῇ γῇ· καὶ αὐτὸς ἐξεστῶς ἐσκοτώθη, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἰδοὺ Βαρὰκ διώκων τὸν Σισάρα· καὶ ἐξῆλθεν Ἰαὴλ εἰς συνάντησιν αὐτῷ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, δεῦρο καὶ δείξω σοι τὸν ἄνδρα ὃν σὺ ζητεῖς· καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν· καὶ ἰδοὺ Σισάρα ἐῤῥιμμένος νεκρὸς, καὶ ὁ πάσσαλος ἐν τῷ κροτάφῳ αὐτοῦ. Καὶ ἐτρόπωσεν ὁ Θεὸς τὸν Ἰαβὶν βασιλέα Χαναὰν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔμπροσθεν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπορεύετο χεὶρ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ πορευομένη καὶ σκληρυνομένη ἐπὶ Ἰαβὶν βασιλέα Χαναὰν, ἕως οὗ ἐξωλόθρευσαν τὸν Ἰαβὶν βασιλέα Χαναάν.

# 5

Καὶ ᾖσαν Δεββῶρα καὶ Βαρὰκ υἱὸς Ἀβινεὲμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγοντες, Ἀπεκαλύφθη ἀποκάλυμμα ἐν Ἰσραὴλ ἐν τῷ ἑκουσιασθῆναι λαὸν, εὐλογεῖτε Κύριον. Ἀκούσατε βασιλεῖς, καὶ ἐνωτίσασθε σατράπαι· ᾄσομαι ἐγώ εἰμι τῷ Κυρίῳ ἐγώ εἰμι, ψαλῶ τῷ Κυρίῳ τῷ Θεῷ Ἰσραήλ. Κύριε, ἐν τῇ ἐξόδῳ σου ἐν Σηεὶρ, ἐν τῷ ἀπαίρειν σε ἐξ ἀγροῦ Ἐδὼμ, γῆ ἐσείσθη, καὶ ὁ οὐρανὸς ἔσταξε δρόσους, καὶ αἱ νεφέλαι ἔσταξαν ὕδωρ. Ὄρη ἐσαλεύθησαν ἀπὸ προσώπου Κυρίου Ἐλωΐ, τοῦτο Σινὰ ἀπὸ προσώπου Κυρίου Θεοῦ Ἰσραήλ. Ἐν ἡμέραις Σαμεγὰρ υἱοῦ Ἀνὰθ, ἐν ἡμέραις Ἰαὴλ, ἐξέλιπον ὁδοὺς, καὶ ἐπορεύθησαν ἀτραποὺς, ἐπορεύθησαν ὁδοὺς

διεστραμμένας. Ἐξέλιπον δυνατοὶ ἐν Ἰσραὴλ, ἐξέλιπον ἕως οὗ ἀνέστη Δεββῶρα, ἕως οὗ ἀνέστη μήτηρ ἐν Ἰσραήλ. Ἐξελέξαντο θεοὺς καινοὺς, τότε ἐπολέμησαν πόλεις ἀρχόντων· θυρεὸς ἐὰν ὀφθῇ καὶ λόγχη ἐν τεσσαράκοντα χιλιάσιν ἐν Ἰσραήλ. Ἡ καρδία μου εἰς τὰ διατεταγμένα τῷ Ἰσραήλ· οἱ ἑκούσιαζόμενοι ἐν λαῷ εὐλογεῖτε Κύριον. Ἐπιβεβηκότες ἐπὶ ὄνου θηλείας μεσημβρίας, καθήμενοι ἐπὶ κριτηρίου, καὶ πορευόμενοι ἐπὶ ὁδοὺς συνέδρων ἐφ’ ὁδῷ, διηγεῖσθε, ἀπὸ φωνῆς ἀνακρουομένων ἀναμέσον ὑδρευομένων· ἐκεῖ δώσουσι δικαιοσύνας· Κύριε δικαιοσύνας αὔξησον ἐν Ἰσραήλ· τότε κατέβη εἰς τὰς πόλεις λαὸς Κυρίου. Ἐξεγείρου, ἐξεγείρου, Δεββῶρα· ἐξεγείρου, ἐξεγείρου, λάλησον ᾠδήν· ἀνάστα Βαρὰκ, καὶ αἰχμαλώτισον αἰχμάλωσίαν σου υἱὸς Ἀβινεέμ. Τότε κατέβη κατάλειμμα τοῖς ἰσχυροῖς· λαὸς Κυρίου κατέβη αὐτῷ ἐν τοῖς κραταιοῖς ἐξ ἐμοῦ. Ἐφραΐμ ἐξερρίζωσεν αὐτοὺς ἐν τῷ Ἀμαλὴκ, ὀπίσω σου Βενιαμὶν ἐν τοῖς λαοῖς σου· ἐν ἐμοὶ Μαχὶρ κατέβησαν ἐξερευνῶντες· καὶ ἀπὸ Ζαβουλὼν ἕλκοντες ἐν ῥάβδῳ διηγήσεως γραμματέως. Καὶ ἀρχηγοι ἐν Ἰσσάχαρ μετὰ Δεββώρας καὶ Βαράκ· οὕτω Βαρὰκ ἐν κοιλάσιν ἀπέστειλεν ἐν ποσὶν αὐτοῦ, εἰς τὰς μερίδας Ῥουβὴν, μεγάλοι ἐξικνούμενοι καρδίαν. Εἰς τί ἐκάθισαν ἀναμέσον τῆς διγομίας τοῦ ἀκοῦσαι συρισμοῦ ἀγελῶν εἰς διαιρέσεις Ῥουβήν; μεγάλοι ἐξετασμοὶ καρδίας. Γαλαάδ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου οὗ ἐσκήνωσε· καὶ Δὰν εἰς τί παροικεῖ πλοίοις; Ἀσὴρ ἐκάθισε παραλίαν θαλασσῶν, καὶ ἐπὶ διεξόδοις αὐτοῦ σκηνώσει. Ζαβουλὼν λαὸς ὠνείδισε ψυχὴν αὐτοῦ εἰς θάνατον, καὶ Νεφθαλὶ ἐπὶ ὕψη ἀγροῦ ἦλθον αὐτῶν. Βασιλεῖς παρετάξαντο, τότε ἐπολέμησαν βασιλεῖς Χαναὰν ἐν Θαναὰχ ἐπὶ ὕδατι Μαγεδδὼ, δῶρον ἀργυρίου οὐκ ἔλαβον. Ἐξ οὐρανοῦ παρετάξαντο οἱ ἀστέρες, ἐκ τρίβων αὐτῶν παρετάξαντο μετὰ

Σισάρα. Χειμάῤῥους Κισῶν ἐξέσυρεν αὐτοὺς, χειμάῤῥους ἀρχαίων, χειμάῤῥους Κισῶν· καταπατήσει αὐτὸν ψυχή μου δυνατή. Ὅτε ἐνεποδίσθησαν πτέρναι ἵππου, σπουδῇ ἔσπευσαν ἰσχυροὶ αὐτοῦ καταρᾶσθαι Μηρὼζ, εἶπεν ἄγγελος Κυρίου, καταρᾶσθε· ἐπικατάρατος πᾶς ὁ κατοικῶν αὐτὴν, ὅτι οὐκ ἦλθοσαν εἰς βοήθειαν Κυρίου, εἰς βοήθειαν ἐν δυνατοῖς. Εὐλογηθείη ἐν γυναιξὶν Ἰαὴλ γυνὴ Χαβὲρ τοῦ Κιναίου, ἀπὸ γυναικῶν ἐν σκηναῖς εὐλογηθείη. Ὕδωρ ᾔτησε, γάλα ἔδωκεν ἐν λεκάνῃ· ὑπερεχόντων προσήνεγκε βούτυρον. Χεῖρα αὐτῆς ἀριστερὰν εἰς πάσσαλον ἐξέτεινε, καὶ δεξιὰν αὐτῆς εἰς σφύραν κοπίωντων, καὶ ἐσφυροκόπησε Σισάρα, διήλωσε κεφαλὴν αὐτοῦ καὶ ἐπάταξε, διήλωσε κρόταφον αὐτοῦ. Ἀναμέσον τῶν ποδῶν αὐτῆς κατεκυλίσθη· ἔπεσε καὶ ἐκοιμήθη ἀναμέσον τῶν ποδῶν αὐτῆς, κατακλιθεὶς ἔπεσε· καθὼς κατεκλίθη ἐκεῖ ἔπεσεν ἐξοδευθείς. Διὰ τῆς θυρίδος παρέκυψε μήτηρ Σισάρα ἐκτὸς τοῦ τοξικοῦ, διότι ᾐσχύνθη ἅρμα αὐτοῦ; διότι ἐχρόνισαν πόδες ἁρμάτων αὐτοῦ; Αἱ σοφαὶ ἄρχουσαι αὐτῆς ἀπεκρίθησαν πρὸς αὐτὴν, καὶ αὐτὴ ἀπέστρεψε λόγους αὐτῆς ἑαυτῇ, οὐχ εὑρήσουσιν αὐτὸν διαμερίζοντα σκῦλα; οἰκτίρμων οἰκτειρήσει εἰς κεφαλὴν ἀνδρός· σκῦλα βαμμάτων τῷ Σισάρᾳ, σκῦλα βαμμάτων ποικιλίας, βάμματα ποικιλτῶν αὐτὰ τῷ τραχήλῳ αὐτοῦ σκῦλα. Οὕτως ἀπόλοιντο πάντες οἱ ἐχθροί σου, Κύριε· καὶ οἱ ἀγαπῶντες αὐτὸν, ὡς ἔξοδος ἡλίου ἐν δυνάμει αὐτοῦ. Καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ τεσσαράκοντα ἔτη.

# 6

Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ

ἔδωκεν αὐτοὺς Κύριος ἐν χειρὶ Μαδιὰμ ἑπτὰ ἔτη. Καὶ ἴσχυσε χεὶρ Μαδιὰμ ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου Μαδιὰμ τὰς τρυμαλιὰς τὰς ἐν τοῖς ὄρεσι, καὶ τὰ σπήλαια, καὶ τὰ κρεμαστά. Καὶ ἐγένετο ἐὰν ἔσπειραν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἀνέβαινον Μαδιὰμ καὶ Ἀμαλὴκ, καὶ οἱ υἱοὶ ἀνατολῶν συνανέβαινον αὐτοῖς, καὶ παρενέβαλον εἰς αὐτοὺς, καὶ διέφθειρον τοὺς καρποὺς αὐτῶν ἕως ἐλθεῖν εἰς Γάζαν· καὶ οὐ κατελείποντο ὑπόστασιν ζωῆς ἐν τῇ γῇ Ἰσραὴλ, οὐδὲ ἐν τοῖς ποιμνίοις ταῦρον καὶ ὄνον. Ὅτι αὐτοὶ καὶ αἱ κτήσεις αὐτῶν ἀνέβαινον, καὶ αἱ σκηναὶ αὐτῶν παρεγίνοντο, καθὼς ἀκρὶς εἰς πλῆθος, καὶ αὐτοῖς καὶ ταῖς καμήλοις αὐτῶν οὐκ ἦν ἀριθμός· καὶ ἤρχοντο εἰς τὴν γῆν Ἰσραὴλ, καὶ διέφθειρον αὐτήν. Καὶ ἐπτώχευσεν Ἰσραὴλ σφόδρα ἀπὸ προσώπου Μαδιάμ. Καὶ ἐβόησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον ἀπὸ προσώπου Μαδιάμ. Καὶ ἐξαπέστειλε Κύριος ἄνδρα προφήτην πρὸς τοὺς νἱοὺς Ἰσραήλ· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἐγώ εἰμι ὃς ἀνήγαγον ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξήγαγον ὑμᾶς ἐξ οἴκου δουλείας ὑμῶν· καὶ ἐῤῥυσάμην ὑμᾶς ἐκ χειρὸς Αἰγύπτου καὶ ἐκ χειρὸς πάντων τῶν θλιβόντων ὑμᾶς, καὶ ἐξέβαλον αὐτοὺς ἐκ προσώπου ὑμῶν· καὶ ἔδωκα ὑμῖν τὴν γῆν αὐτῶν. Καὶ εἶπα ὑμῖν, ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν· οὐ φοβηθήσεσθε τοὺς θεοὺς τοῦ Ἀμορῥαίου, ἐν οἷς ὑμεῖς κάθησθε ἐν τῇ γῇ αὐτῶν· καὶ οὐκ εἰσηκούσατε τῆς φωνῆς μου. Καὶ ἦλθεν ἄγγελος Κυρίου, καὶ ἐκάθισεν ὑπὸ τὴν τερέμινθον τὴν ἐν Ἐφραθὰ ἐν γῇ Ἰωὰς πατρὸς τοῦ Ἐσδρί· καὶ Γεδεὼν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ῥαβδίζων σῖτον ἐν ληνῷ εἰς ἐκφυγεῖν ἀπὸ προσώπου τοῦ Μαδίαμ. Καὶ ὤφθη αὐτῷ ὁ ἄγγελος Κυρίου, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Κύριος μετὰ σοῦ, ἰσχυρὸς τῶν δυνάμεων. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Γεδεὼν, ἐν ἐμοὶ, Κύριέ μου· καὶ εἰ ἔστι Κύριος μεθ’ ἡμῶν, εἰς τί εὗρεν ἡμᾶς τὰ κακὰ ταῦτα; καὶ ποῦ

ἐστι πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ, ἃ διηγήσαντο ἡμῖν οἱ πατέρες ἡμῶν, λέγοντες, μὴ οὐχὶ ἐξ Αἰγύπτου ἀνήγαγεν ἡμᾶς Κύριος; καὶ νῦν ἐξέῤῥιψεν ἡμᾶς καὶ ἔδωκεν ἡμᾶς ἐν χειρὶ Μαδίαμ. Καὶ ἐπέστρεψε πρὸς αὐτὸν ὁ ἄγγελος Κυρίου, καὶ εἶπε, πορεύου ἐν τῇ ἰσχύϊ σου ταύτῃ, καὶ σώσεις τὸν Ἰσραὴλ ἐκ χειρὸς Μαδιάμ· ἰδοὺ ἐξαπέστειλά σε. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Γεδεὼν, ἐν ἐμοὶ, Κύριέ μου, ἐν τίνι σώσω τὸν Ἰσραήλ; ἰδοὺ ἡ χιλιάς μου ἠσθένησεν ἐν Μανασσῇ, καὶ ἐγώ εἰμι μικρότερος ἐν οἴκῳ τοῦ πατρός μου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ ἄγγελος Κυρίου, Κύριος ἔσται μετὰ σοῦ, καὶ πατάξεις τὴν Μαδιὰμ ὡσεὶ ἄνδρα ἕνα. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Γεδεὼν, εἰ δὴ εὗρον ἔλεος ἐν ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ποιήσεις μοι σήμερον πᾶν ὅτι, ἐλάλησας μετ’ ἐμοῦ, μὴ χωρισθῇς ἐντεῦθεν ἕως τοῦ ἐλθεῖν με πρὸς σὲ, καὶ ἐξοίσω τὴν θυσίαν καὶ θύσω ἐνώπιόν σου· καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι καθίσομαι ἕως τοῦ ἐπιστρέψαι σε. Καὶ Γεδεὼν εἰσῆλθε, καὶ ἐποίησεν ἔριφον αἰγῶν καὶ οἰφὶ ἀλεύρου ἄζυμα, καὶ τὰ κρέα ἔθηκεν ἐν τῷ κοφίνῳ, καὶ τὸν ζωμὸν ἔβαλεν ἐν τῇ χύτρᾳ, καὶ ἐξήνεγκεν αὐτὰ πρὸς αὐτὸν ὑπὸ τὴν τερέμινθον, καὶ προσήγγισε. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ, λάβε τὰ κρέα καὶ τὰ ἄζυμα, καὶ θὲς πρὸς τὴν πέτραν ἐκείνην, καὶ τὸν ζωμὸν ἐχόμενα ἔκχεε· καὶ ἐποιήσεν οὕτως. Καὶ ἐξέτεινεν ὁ ἄγγελος Κυρίου τὸ ἄκρον τῆς ῥάβδου τῆς ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἥψατο τῶν κρεῶν καὶ τὼν ἀζύμων· καὶ ἀνέβη πῦρ ἐκ τῆς πέτρας, καὶ κατέφαγε τὰ κρέα καὶ τοὺς ἀζύμους· καὶ ὁ ἄγγελος Κυρίου ἐπορεύθη ἀπ’ ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Καὶ εἶδε Γεδεὼν, ὅτι ἄγγελος Κυρίου οὗτός ἐστι· καὶ εἶπε Γεδεὼν, ἆ ἆ, Κύριέ μου Κύριε, ὅτι εἶδον τὸν ἄγγελον Κυρίου πρόσωπον πρὸς πρόσωπον. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Κύριος, εἰρήνη σοι, μὴ φοβοῦ, οὐ μὴ ἀποθάνῃς. Καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ Γεδεὼν θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐπεκάλεσεν αὐτῷ, εἰρήνη Κυρίου, ἕως

τῆς ἡμέρας ταύτης, ἔτι αὐτοῦ ὄντος ἐν Ἐφραθὰ πατρὸς τοῦ Ἐσδρί. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ εἶπεν αὐτῷ Κύριος, λάβε τὸν μόσχον τὸν ταῦρον ὅς ἐστι τῷ πατρί σου, καὶ μόσχον δεύτερον ἑπταετῆ, καὶ καθελεῖς τὸ θυσιαστήριον τοῦ Βάαλ ὅ ἐστι τῷ πατρί σου, καὶ τὸ ἄλσος τὸ ἐπ’ αὐτὸ ὁλοθρεύσεις. Καὶ οἰκοδομήσεις θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου ἐπὶ κορυφὴν Μαωζὶ τούτου ἐν τῇ παρατάξει καὶ λήψῃ τὸν μόσχον τὸν δεύτερον, καὶ ἀνοίσεις ὁλοκαυτώματα ἐν τοῖς ξύλοις τοῦ ἄλσοῦς, οὗ ἐξολοθρεύσεις. Καὶ ἔλαβε Γεδεὼν δέκα ἄνδρας ἀπὸ τῶν δούλων ἑαυτοῦ, καὶ ἐποίησεν ὃν τρόπον ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν Κύριος· καὶ ἐγενήθη ὡς ἐφοβήθη τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ καὶ τοὺς ἄνδρας τῆς πόλεως τοῦ ποιῆσαι ἡμέρας, καὶ ἐποίησε νυκτός. Καὶ ὤρθρισαν οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως τοπρωΐ· καὶ ἰδοὺ καθῄρητο τὸ θυσιαστήριον τοῦ Βάαλ, καὶ τὸ ἄλσος τὸ ἐπ’ αὐτῷ ὠλόθρευτο· καὶ εἶδον τὸν μόσχον τὸν δεύτερον, ὃν ἀνήνεγκεν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ ᾠκοδομημένον. Καὶ εἶπεν ἀνὴρ πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, τίς ἐποίησε τὸ ῥῆμα τοῦτο; καὶ ἐπεζήτησαν καὶ ἠρεύνησαν, καὶ ἔγνωσαν ὅτι Γεδεὼν υἱὸς Ἰωὰς ἐποίησε τὸ ῥῆμα τοῦτο. Καὶ εἶπαν οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως πρὸς Ἰωὰς, ἐξένεγκε τὸν υἱόν σου, καὶ ἀποθανέτω, ὅτι καθεῖλε τὸ θυσιαστήριον τοῦ Βάαλ, καὶ ὅτι ὠλόθρευσε τὸ ἄλσος τὸ ἐπ’ αὐτῷ. Καὶ εἶπε Γεδεὼν υἱὸς Ἰωὰς τοῖς ἀνδράσι πᾶσιν, οἳ ἐπανέστησαν αὐτῷ, μὴ ὑμεῖς νῦν δικάζεσθε ὑπὲρ τοῦ Βάαλ; ἢ ὑμεῖς σώσετε αὐτόν; ὃς ἐὰν δικάσηται αὐτῷ, θανατωθήτω ἕως πρωΐ· εἰ θεός ἐστι, δικαζέσθω αὐτῷ, ὅτι καθεῖλε τὸ θυσιαστήριον αὐτοῦ. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ Ἱεροβάαλ, λέγων, δικαζέσθω ἐν αὐτῷ ὁ Βάαλ, ὅτι καθῃρέθη τὸ θυσιαστήριον αὐτοῦ. Καὶ πᾶσα Μαδιὰμ, καὶ Ἀμαλὴκ, καὶ υἱοὶ ἀνατολῶν συνήχθησαν ἐπὶ τοαυτὸ, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ κοιλάδι Ἰεζραέλ. Καὶ πνεῦμα Κυρίου

ἐνέδυσε τὸν Γεδεὼν, καὶ ἐσάλπισεν ἐν κερατίνῃ, καὶ ἐβόησεν Ἀβιέζερ ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ ἀγγέλους ἐξαπέστειλεν εἰς πάντα Μανασσῆ, καὶ ἐν Ἀσὴρ, καὶ ἐν Ζαβουλὼν, καὶ ἐν Νεφθαλί· καὶ ἀνέβη εἰς συνάντησιν αὐτῶν. Καὶ εἶπε Γεδεὼν πρὸς τὸν Θεὸν, εἰ σὺ σώζεις ἐν χειρί μου τὸν Ἰσραὴλ, καθὼς ἐλάλησας, ἰδοὺ ἐγὼ τίθημι τὸν πόκον τοῦ ἐρίου ἐν τῇ ἅλωνι· ἐὰν δρόσος γένηται ἐπὶ τὸν πόκον μόνον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ξηρασία, γνώσομαι ὅτι σώσεις ἐν χειρί μου τὸν Ἰσραὴλ, καθὼς ἐλάλησας. Καὶ ἐγένετο οὕτως· καὶ ὤρθρισε τῇ ἐπαύριον, καὶ ἐξεπίασε τὸν πόκον, καὶ ἔσταξε δρόσος ἀπὸ τοῦ πόκου πλήρης λεκάνη ὕδατος. Καὶ εἶπε Γεδεὼν πρὸς τὸν Θεὸν, μὴ δὴ ὀργισθήτω ὁ θυμός σου ἐν ἐμοὶ, καὶ λαλήσω ἔτι ἅπαξ· πειράσω δὴ καί γε ἔτι ἅπαξ ἐν τῷ πόκῳ· καὶ γενέσθω ἡ ξηρασία ἐπὶ τὸν πόκον μόνον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν γενηθήτω δρόσος. Καὶ ἐποίησεν ὁ Θεὸς οὕτως ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ· καὶ ἐγένετο ξηρασία ἐπὶ τὸν πόκον μόνον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἐγενήθη δρόσος.

# 7

Καὶ ὤρθρισεν Ἰεροβάαλ, αὐτός ἐστι Γεδεὼν, καὶ πᾶς ὁ λαὸς μετ’ αὐτοῦ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ πηγὴν Ἀράδ· καὶ παρεμβολὴ Μαδιὰμ ἦν αὐτῷ ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἀπὸ Γαβααθαμωραὶ ἐν κοιλάδι. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Γεδεὼν, πολὺς ὁ λαὸς ὁ μετὰ σοῦ, ὥστε μὴ παραδοῦναί με τὴν Μαδιὰμ ἐν χειρὶ αὐτῶν, μὴ ποτε καυχήσηται Ἰσραὴλ ἐπ’ ἐμὲ, λέγων, ἡ χείρ μου ἔσωσέ με. Καὶ νῦν λάλησον δὴ ἐν ὠσὶ τοῦ λαοῦ, λέγων, τίς ὁ φοβούμενος καὶ δειλός; ἐπιστραφέτω καὶ ἐκχωρείτω ἀπὸ ὄρους Γαλαάδ· καὶ ἐπέστρεψεν ἀπὸ τοῦ λαοῦ εἴκοσι καὶ δύο χιλιάδες, καὶ δέκα χιλιάδες

ὑπελείφθησαν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Γεδεὼν, ἔτι ὁ λαὸς πολύς ἐστι· κατένεγκον αὐτοὺς πρὸς τὸ ὕδωρ, καὶ ἐκκαθαρῶ σοι αὐτὸν ἐκεῖ· καὶ ἔσται ὃν ἐὰν εἴπω πρὸς σὲ, οὗτος πορεύσεται σὺν σοὶ, αὐτὸς πορεύσεται σὺν σοί· καὶ πᾶς ὃν ἂν εἴπω πρὸς σὲ, οὗτος οὐ πορεύσεται μετὰ σοῦ, αὐτὸς οὐ πορεύσεται μετὰ σοῦ. Καὶ κατήνεγκε τὸν λαὸν πρὸς τὸ ὕδωρ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Γεδεὼν, πᾶς ὃς ἂν λάψῃ τῇ γλώσσῃ αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὕδατος ὡς ἐὰν λάψῃ ὁ κύων, στήσεις αὐτὸν κατὰ μόνας, καὶ πᾶς ὃς ἐὰν κλίνῃ ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ πιεῖν. Καὶ ἐγένετο ὁ ἀριθμὸς τῶν λαψάντων ἐν χειρὶ αὐτῶν πρὸς τὸ στόμα αὐτῶν, τριακόσιοι ἄνδρες· καὶ πᾶν τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ ἔκλιναν ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτῶν πιεῖν ὕδωρ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Γεδεὼν, ἐν τοῖς τριακοσίοις ἀνδράσι τοῖς λάψασι σώσω ὑμᾶς, καὶ δώσω τὴν Μαδιὰμ ἐν χειρί σου, καὶ πᾶς ὁ λαὸς πορεύσονται ἀνὴρ εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ ἔλαβον τὸν ἐπισιτισμὸν τοῦ λαοῦ ἐν χειρὶ αὐτῶν, καὶ τὰς κερατίνας αὐτῶν· καὶ τὸν πάντα ἄνδρα Ἰσραὴλ ἐξαπέστειλεν ἄνδρα εἰς σκηνὴν αὐτοῦ· καὶ τοὺς τριακοσίους ἄνδρας κατίσχυσε· καὶ ἡ παρεμβολὴ Μαδιὰμ ἦσαν αὐτοῦ ὑποκάτω ἐν τῇ κοιλάδι. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Κύριος, ἀνάστα, κατάβηθι ἐν τῇ παρεμβολῇ, ὅτι παρέδωκα αὐτὴν ἐν τῇ χειρί σου. Καὶ εἰ φοβῇ σὺ καταβῆναι, κατάβηθι σὺ καὶ Φαρὰ τὸ παιδάριόν σου εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἀκούσῃ τί λαλήσουσι, καὶ μετὰ τοῦτο ἰσχύσουσιν αἱ χεῖρές σου καὶ καταβήσῃ ἐν τῇ παρεμβολῇ· καὶ κατέβη αὐτὸς καὶ Φαρὰ τὸ παιδάριον αὐτοῦ πρὸς ἀρχὴν τῶν πεντήκοντα, οἳ ἦσαν ἐν τῇ παρεμβολῇ. Καὶ Μαδιὰμ καὶ Ἀμαλὴκ καὶ πάντες οἱ υἱοὶ ἀνατολῶν βεβλημένοι ἐν τῇ κοιλάδι ὡς ἀκρὶς εἰς πλῆθος, καὶ ταῖς καμήλοις αὐτῶν οὐκ ἦν ἀριθμὸς, ἀλλ’ ἦσαν ὡς ἡ ἄμμος ἡ ἐπὶ χείλους τῆς θαλάσσης εἰς πλῆθος. Καὶ ἦλθε Γεδεὼν, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ

ἐξηγούμενος τῷ πλησίον αὐτοῦ ἐνύπνιον, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐνυπνιασάμην ἐνύπνιον, καὶ ἰδοὺ μαγὶς ἄρτου κριθίνου στρεφομένη ἐν τῇ παρεμβολῇ Μαδιὰμ, καὶ ἦλθεν ἕως τῆς σκηνῆς, καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν, καὶ ἔπεσε, καὶ ἀνέστρεψεν αὐτὴν ἄνω, καὶ ἔπεσεν ἡ σκηνή. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ πλησίον αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, οὐκ ἔστιν αὕτη εἰ μὴ ῥομφαία Γεδεὼν υἱοῦ Ἰωὰς ἀνδρὸς Ἰσραήλ· παρέδωκεν ὁ Θεὸς ἐν χειρὶ αὐτοῦ τὴν Μαδιὰμ καὶ πᾶσαν τὴν παρεμβολήν. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσε Γεδεὼν τὴν ἐξήγησιν τοῦ ἐνυπνίου καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησε Κυρίῳ, καὶ ὑπέστρεψεν εἰς τὴν παρεμβολὴν Ἰσραὴλ, καὶ εἶπεν, ἀνάστητε, ὅτι παρέδωκε Κύριος ἐν χειρὶ ἡμῶν τὴν παρεμβολὴν Μαδιάμ. Καὶ διεῖλε τοὺς τριακοσίους ἄνδρας εἰς τρεῖς ἀρχὰς, καὶ ἔδωκε κερατίνας ἐν χειρὶ πάντων, καὶ ὑδρίας κενὰς, καὶ λαμπάδας ἐν ταῖς ὑδρίαις, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀπ’ ἐμοῦ ὄψεσθε, καὶ οὕτω ποιήσετε· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ εἰσπορεύομαι ἐν ἀρχῇ τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἔσται καθὼς ἂν ποιήσω, οὕτω ποιήσετε. Καὶ σαλπιῶ ἐν τῇ κερατίνῃ ἐγὼ, καὶ πάντες μετ’ ἐμοῦ σαλπιεῖτε ἐν ταῖς κερατίναις κύκλῳ ὅλης τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἐρεῖτε, τῷ Κυρίῳ καὶ τῷ Γεδεών. Καὶ εἰσῆλθε Γεδεὼν καὶ οἱ ἑκατὸν ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ ἐν ἀρχῇ τῆς παρεμβολῆς ἐν ἀρχῇ τῆς φυλακῆς μέσης· καὶ ἐγείροντες ἤγειραν τοὺς φυλάσσοντας, καὶ ἐσάλπισαν ἐν ταῖς κερατίναις, καὶ ἐξετίναξαν τὰς ὑδρίας τὰς ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Καὶ ἐσάλπισαν αἱ τρεῖς ἀρχαὶ ἐν ταῖς κερατίναις, καὶ συνέτριψαν τὰς ὑδρίας, καὶ ἐκράτησαν ἐν χερσὶν ἀριστεραῖς αὐτῶν τὰς λαμπάδας, καὶ ἐν χερσὶ δεξιαῖς αὐτῶν τὰς κερατίνας τοῦ σαλπίζειν· καὶ ἀνέκραξαν, ῥομφαία τῷ Κυρίῳ καὶ τῷ Γεδεών. Καὶ ἔστησεν ἀνὴρ ἐφ’ ἑαυτῷ κύκλῳ τῆς παρεμβολῆς· καὶ ἔδραμε πᾶσα ἡ παρεμβολὴ, καὶ ἐσήμαναν, καὶ ἔφυγον. Καὶ ἐσάλπισαν ἐν ταῖς τριακοσίαις

κερατίναις· καὶ ἔθηκε Κύριος τὴν ῥομφαίαν ἀνδρὸς ἐν τῷ πλησίον αὐτοῦ ἐν πάσῃ τῇ παρεμβολῇ. Καὶ ἔφυγεν ἡ παρεμβολὴ ἕως Βηθσεὲδ Ταγαραγαθὰ Ἀβελμεουλὰ ἐπὶ Ταβάθ· καὶ ἐβόησαν ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἀπὸ Νεφθαλὶ καὶ ἀπὸ Ἀσὴρ, καὶ ἀπὸ παντὸς Μανασσῆ, καὶ ἐδίωξαν ὀπίσω Μαδιάμ. Καὶ ἀγγέλους ἀπέστειλε Γεδεὼν ἐν παντὶ ὄρει Ἐφραὶμ, λέγων, κατάβητε εἰς συνάντησιν Μαδιὰμ, καὶ καταλάβετε ἑαυτοῖς τὸ ὕδωρ ἕως Βαιθηρὰ καὶ τὸν Ἰορδάνην· καὶ ἐβόησε πᾶς ἀνὴρ Ἐφραὶμ, καὶ προκατελάβοντο τὸ ὕδωρ ἕως Βαιθηρὰ καὶ τὸν Ἰορδάνην. Καὶ συνελάβοντο τοὺς ἄρχοντας Μαδιὰμ, καὶ τὸν Ὡρὴβ καὶ τὸν Ζήβ· καὶ ἀπέκτειναν τὸν Ὡρὴβ ἐν Σοὺρ Ὡρὴβ, καὶ τὸν Ζὴβ ἀπέκτειναν ἐν Ἰακεφζήφ· καὶ κατεδίωξαν τὴν Μαδιάμ· καὶ τὴν κεφαλὴν Ὡρὴβ καὶ Ζὴβ ἤνεγκαν πρὸς Γεδεὼν ἀπὸ πέραν τοῦ Ἰορδάνου.

# 8

Καὶ εἶπαν πρὸς Γεδεὼν ἀνὴρ Ἐφραὶμ, τί τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐποίησας ἡμῖν, τοῦ μὴ καλέσαι ἡμᾶς ὅτε ἐπορεύθης παρατάξασθαι ἐν Μαδιάμ; καὶ διελέξαντο πρὸς αὐτὸν ἰσχυρῶς. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, τί ἐποίησα νῦν καθὼς ὑμεῖς; ἢ οὐχὶ κρείττων ἐπιφυλλὶς Ἐφραὶμ ἢ τρυγητὸς Ἀβιέζερ; Ἐν χειρὶ ὑμῶν παρέδωκε Κύριος τοὺς ἄρχοντας Μαδιὰμ, τὸν Ὡρὴβ καὶ τὸν Ζήβ· καὶ τί ἠδυνήθην ποιῆσαι ὡς ὑμεῖς; τότε ἀνέθη τὸ πνεῦμα αὐτῶν ἀπ’ αὐτοῦ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν τὸν λόγον τοῦτον. Καὶ ἦλθε Γεδεὼν ἐπὶ τὸν Ἰορδανὴν, καὶ διέβη αὐτὸς καὶ οἱ τριακόσιοι ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ πεινῶντες καὶ διώκοντες. Καὶ εἶπε τοῖς ἀνδράσι Σοκχὼθ, δότε δὴ ἄρτους εἰς τροφὴν τῷ λαῷ τούτῳ τῷ ἐν ποσί μου, ὅτι ἐκλείπουσι, καὶ ἰδοὺ ἐγώ

εἰμι διώκων ὀπίσω τοῦ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ βασιλέων Μαδιάμ. Καὶ εἶπον οἱ ἄρχοντες Σοκχὼθ, μὴ χεὶρ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ νῦν ἐν χειρί σου, ὅτι δώσομεν τῇ δυνάμει σου ἄρτους; Καὶ εἶπε Γεδεὼν, διὰ τοῦτο ἐν τῷ δοῦναι Κύριον τὸν Ζεβεὲ καὶ τὸν Σαλμανὰ ἐν χειρί μου, καὶ ἐγὼ ἀλοήσω τὰς σάρκας ὑμῶν ἐν ταῖς ἀκάνθαις τῆς ἐρήμου, καὶ ἐν ταῖς Βαρκηνίμ. Καὶ ἀνέβη ἐκεῖθεν εἰς Φανουὴλ, καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτοὺς ὡσαύτως· καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ ἄνδρες Φανουὴλ ὃν τρόπον ἀπεκρίθησαν ἄνδρες Σοκχώθ. Καὶ εἶπε Γεδεὼν πρὸς ἄνδρας Φανουὴλ, ἐν ἐπιστροφῇ μου μετ’ εἰρήνης, κατασκάψω τὸν πύργον τοῦτον. Καὶ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ ἐν Καρκὰρ, καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτῶν μετ’ αὐτῶν ὡσεὶ δεκαπέντε χιλιάδες, πάντες οἱ καταλελειμμένοι ἀπὸ πάσης παρεμβολῆς ἀλλοφύλων· καὶ οἱ πεπτωκότες, ἑκατὸν εἴκοσι χιλιάδες ἀνδρῶν σπωμένων ῥομφαίαν. Καὶ ἀνέβη Γεδεὼν ὁδὸν τῶν σκηνούντων ἐν σκηναῖς ἀπὸ ἀνατολῶν τῆς Ναβαὶ καὶ Ἰεγεβάλ· καὶ ἐπάταξε τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἡ παρεμβολὴ ἦν πεποιθυῖα. Καὶ ἔφυγον Ζεβεὲ καὶ Σαλμανά· καὶ ἐδίωξεν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ ἐκράτησε τοὺς δύο βασιλεῖς Μαδιὰμ τὸν Ζεβεὲ καὶ τὸν Σαλμανὰ, καὶ πᾶσαν τὴν παρεμβολὴν ἐξέστησε. Καὶ ἐπέστρεψε Γεδεὼν υἱὸς Ἰωὰς ἀπὸ τῆς παρατάξεως ἀπὸ ἐπάνωθεν τῆς παρατάξεως Ἀρές. Καὶ συνέλαβε παιδάριον ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν Σοκχὼθ, καὶ ἐπηρώτησεν αὐτόν· καὶ ἔγραψε πρὸς αὐτὸν ὀνόματα τῶν ἀρχόντων Σοκχὼθ καὶ τῶν πρεσβυτέρων αὐτῶν, ἑβδομήκοντα καὶ ἑπτὰ ἄνδρας. Καὶ παρεγένετο Γεδεὼν πρὸς τοὺς ἄρχοντας Σοκχὼθ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ, ἐν οἷς ὠνειδίσατέ με, λέγοντες, μὴ χεὶρ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ νῦν ἐν χειρί σου, ὅτι δώσομεν τοῖς ἀνδράσι σου τοῖς ἐκλείπουσιν ἄρτους; Καὶ ἔλαβε τοὺς πρεσβυτέρους τῆς πόλεως ἐν ταῖς ἀκάνθαις τῆς ἐρήμου καὶ ταῖς Βαρκηνὶμ, καὶ ἠλόησεν ἐν

αὐτοῖς τοὺς ἄνδρας τῆς πόλεως· Καὶ τὸν πύργον Φανουὴλ κατέστρεψε, καὶ ἀπέκτεινε τοὺς ἄνδρας τῆς πόλεως. Καὶ εἶπε πρὸς Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ, ποῦ οἱ ἄνδρες, οὓς ἀπεκτείνατε ἐν Θαβώρ; καὶ εἶπαν, ὡς σὺ, ὡς αὐτοὶ, εἰς ὁμοίωμα υἱοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπε Γεδεὼν, ἀδελφοί μου καὶ υἱοὶ τῆς μητρός μου ἦσαν· ζῇ Κύριος· εἰ ἐζωογονήκειτε αὐτοὺς, οὐκ ἂν ἀπέκτεινα ὑμᾶς. Καὶ εἶπεν Ἰεθὲρ τῷ πρωτοτόκῳ αὐτοῦ, ἀναστὰς, ἀπόκτεινον αὐτούς· καὶ οὐκ ἔσπασε τὸ παιδάριον τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ, ὅτι ἐφοβήθη, ὅτι ἔτι νεώτερος ἦν. Καὶ εἶπε Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ, ἀνάστα σὺ, καὶ συνάντησον ἡμῖν, ὅτι ὡς ἀνδρὸς ἡ δύναμίς σου· καὶ ἀνέστη Γεδεὼν, καὶ ἀπέκτεινε τὸν Ζεβεὲ καὶ τὸν Σαλμανά· καὶ ἔλαβε τοὺς μηνίσκους τοὺς ἐν τοῖς τραχήλοις τῶν καμήλων αὐτῶν. Καὶ εἶπον ἀνὴρ Ἰσραὴλ πρὸς Γεδεὼν, κύριε, ἄρξον ἡμῶν καὶ σὺ, καὶ ὁ υἱός σου, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ υἱοῦ σου, ὅτι σὺ ἔσωσας ἡμᾶς ἐκ χειρὸς Μαδιάμ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Γεδεὼν, οὐκ ἄρξω ἐγὼ, καὶ οὐκ ἄρξει ὁ υἱός μου ἐν ὑμῖν· Κύριος ἄρξει ὑμῶν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Γεδεὼν, αἰτήσομαι παρ’ ὑμῶν αἴτημα, καὶ δότε μοι ἀνὴρ ἐνώτιον ἐκ σκύλων αὐτοῦ· ὅτι ἐνώτια χρυσᾶ αὐτοῖς, ὅτι ἦσαν Ἰσμαηλῖται. Καὶ εἶπαν, διδόντες δώσομεν· καὶ ἀνέπτυξε τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ ἔβαλεν ἐκεῖ ἀνὴρ ἐνώτιον σκύλων αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ὁ σταθμὸς τῶν ἐνωτίων τῶν χρυσῶν ὧν ᾔτησε, χίλιοι καὶ ἑπτακόσιοι χρυσοὶ, πάρεξ τῶν μηνίσκων καὶ τῶν στραγγαλίδων καὶ τῶν ἱματίων καὶ πορφυρίδων τῶν ἐπὶ βασιλεῦσι Μαδιὰμ, καὶ ἐκτὸς τῶν περιθεμάτων ἃ ἦν ἐν τοῖς τραχήλοις τῶν καμήλων αὐτῶν. Καὶ ἐποίησεν αὐτὸ Γεδεὼν εἰς ἐφὼδ, καὶ ἔστησεν αὐτὸ ἐν πόλει αὐτοῦ ἐν Ἐφραθά καὶ ἐξεπόρνευσε πᾶς Ἰσραὴλ ὀπίσω αὐτοῦ ἐκεῖ· καὶ ἐγένετο τῷ Γεδεὼν καὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ εἰς σκῶλον. Καὶ συνεστάλη Μαδιὰμ ἐνώπιον υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ οὐ προσέθηκαν ἆραι κεφαλὴν αὐτῶν· καὶ

ἠσύχασεν ἡ γῆ τεσσαράκοντα ἔτη ἐν ἡμέραις Γεδεών. Καὶ ἐπορεύθη Ἱεροβάαλ υἱὸς Ἰωὰς, καὶ ἐκάθισεν ἐν οἴκῳ αὐτοῦ. Καὶ τῷ Γεδεὼν ἦσαν υἱοὶ ἑβδομήκοντα ἐκπορευόμενοι ἐκ μηρῶν αὐτοῦ, ὅτι γυναῖκες πολλαὶ ἦσαν αὐτῷ. Καὶ παλλακὴ αὐτοῦ ἦν ἐν Συχὲμ, καὶ ἔτεκεν αὐτῷ καί γε αὐτὴ υἱὸν, καὶ ἔθηκε τὸ ὄνομα Ἀβιμέλεχ. Καὶ ἀπέθανε Γεδεὼν υἱὸς Ἰωὰς ἐν πόλει αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν τῷ τάφῳ Ἰωὰς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐν Ἐφραθὰ Ἀβὶ Ἐσδρί. Καὶ ἐγενήθη ὡς ἀπέθανε Γεδεὼν, καὶ ἐπέστρεψαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐξεπόρνευσαν ὀπίσω τῶν Βααλὶμ, καὶ ἔθηκαν ἑαυτοῖς τῷ Βάαλ διαθήκην τοῦ εἶναι αὐτοῖς αὐτὸν εἰς θεόν. Καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ Κυρίου τοῦ Θεοῦ τοῦ ῥυσαμένου αὐτοὺς ἐκ χειρὸς πάντων τῶν θλιβόντων αὐτοὺς κυκλόθεν. Καὶ οὐκ ἐποίησαν ἔλεος μετὰ τοῦ οἴκου Ἱεροβάαλ, αὐτός ἐστι Γεδεὼν, κατὰ πάντα τὰ ἀγαθὰ ἃ ἐποίησε μετὰ Ἰσραήλ.

# 9

Καὶ ἐπορεύθη Ἀβιμέλεχ υἱὸς Ἱεροβάαλ εἰς Συχὲμ πρὸς ἀδελφοὺς μητρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτοὺς καὶ πρὸς πᾶσαν συγγένειαν οἴκου πατρὸς μητρὸς αὐτοῦ, λέγων, λαλήσατε δὴ ἐν τοῖς ὠσὶ πάντων τῶν ἀνδρῶν Συχὲμ, τί τὸ ἀγαθὸν ὑμῖν, κυριεῦσαι ὑμῶν ἑβδομήκοντα ἄνδρας πάντας υἱοὺς Ἱεροβάαλ, ἢ κυριεύειν ὑμῶν ἄνδρα ἕνα; καὶ μνήσθητε ὅτι ὀστοῦν ὑμῶν καὶ σὰρξ ὑμῶν εἰμι. Καὶ ἐλάλησαν περὶ αὐτοῦ οἱ ἀδελφοὶ τῆς μητρὸς αὐτοῦ ἐν τοῖς ὠσὶ πάντων τῶν ἀνδρῶν Συχὲμ πάντας τοὺς λόγους τούτους· καὶ ἔκλινεν ἡ καρδία αὐτῶν ὀπίσω Ἀβιμέλεχ, ὅτι εἶπαν, ἀδελφός ἡμῶν ἐστι. Καὶ ἔδωκαν αὐτῷ ἑβδομήκοντα ἀργυρίου ἐξ οἴκου

Βααλβερίθ· καὶ ἐμισθώσατο ἑαυτῷ Ἀβιμέλεχ ἄνδρας κενοὺς καὶ δειλοὺς, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ εἰς Ἐφραθὰ, καὶ ἀπέκτεινε τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ υἱοὺς Ἱεροβάαλ, ἑβδομήκοντα ἄνδρας ἐπὶ λίθον ἕνα· καὶ κατελείφθη Ἰωάθαμ υἱὸς Ἱεροβάαλ ὁ νεώτερος, ὅτι ἐκρύβη. Καὶ συνήχθησαν πάντες ἄνδρες Σικίμων, καὶ πᾶς οἶκος Βηθμααλὼ, καὶ ἐπορεύθησαν, καὶ ἐβασίλευσαν τὸν Ἀβιμέλεχ πρὸς τῇ βαλάνῳ τῇ εὐρετῇ τῆς στάσεως τῆς ἐν Σικίμοις. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ Ἰωάθαμ, καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἔστη ἐπὶ κορυφὴν ὄρους Γαριζὶν, καὶ ἐπῆρε τὴν φωνὴν αὐτοῦ, καὶ ἔκλαυσε, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἀκούσατέ μου ἄνδρες Σικίμων, καὶ ἀκούσεται ὑμῶν ὁ Θεός. Πορευόμενα ἐπορεύθη τὰ ξύλα τοῦ χρίσαι ἐφ’ ἑαυτὰ βασιλέα, καὶ εἶπον τῇ ἐλαίᾳ, βασίλευσον ἐφ’ ἡμῶν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ἡ ἐλαία, μὴ ἀπολείψασα τὴν πιότητά μου, ἐν ᾗ δοξάσουσι τὸν Θεὸν ἄνδρες, πορεύσομαι κινεῖσθαι ἐπὶ τῶν ξύλων; Καὶ εἶπον τὰ ξύλα τῇ συκῇ, δεῦρο, βασίλευσον ἐφ’ ἡμῶν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ἡ συκῆ, μὴ ἀπολείψασα ἐγὼ τὴν γλυκύτητά μου καὶ τὰ γεννήματά μου τὰ ἀγαθὰ, πορεύσομαι κινεῖσθαι ἐπὶ τῶν ξύλων; Καὶ εἶπαν τὰ ξύλα πρὸς τὴν ἄμπελον, δεῦρο, βασίλευσον ἐφ’ ἡμῶν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ἡ ἄμπελος, μὴ ἀπολείψασα τὸν οἶνόν μου τὸν εὐφραίνοντα Θεὸν καὶ ἀνθρώπους, πορεύσομαι κινεῖσθαι ἐπὶ τῶν ξύλων; Καὶ εἶπαν πάντα τὰ ξύλα τῇ ῥάμνῳ, δεῦρο σὺ, βασίλευσον ἐφ’ ἡμῶν. Καὶ εἶπεν ἡ ῥάμνος πρὸς τὰ ξύλα, εἰ ἐν ἀληθείᾳ χρίετέ με ὑμεῖς τοῦ βασιλεύειν ἐφ’ ὑμᾶς, δεῦτε, ὑπόστητε ἐν τῇ σκιᾷ μου· καὶ εἰ μὴ, ἐξέλθοι πῦρ ἀπ’ ἐμοῦ καὶ καταφάγοι τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου. Καὶ νῦν εἰ ἐν ἀληθείᾳ καὶ τελειότητι ἐποιήσατε, καὶ ἐβασιλεύσατε τὸν Ἀβιμέλεχ, καὶ εἰ ἀγαθωσύνην ἐποιήσατε μετὰ Ἱεροβάαλ, καὶ μετὰ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ εἰ ὡς ἀνταπόδοσις χειρὸς αὐτοῦ ἐποιήσατε αὐτῷ, ὡς

παρετάξατο ὁ πατήρ μου ὑπὲρ ὑμῶν, καὶ ἐξέῤῥιψε τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐξεναντίας, καὶ ἐῤῥύσατο ὑμᾶς ἐκ χειρὸς Μαδιὰμ, καὶ ὑμεῖς ἐπανέστητε ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου σήμερον, καὶ ἀπεκτείνατε τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ἑβδομήκοντα ἄνδρας ἐπὶ λίθον ἕνα, καὶ ἐβασίλευσατε τὸν Ἀβιμέλεχ υἱὸν παιδίσκης αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς ἄνδρας Σικίμων, ὅτι ἀδελφὸς ὑμῶν ἐστι· Καὶ εἰ ἐν ἀληθείᾳ καὶ τελειότητι ἐποιήσατε μετὰ Ἰεροβάαλ, καὶ μετὰ τοῦ οἴκου αὐτοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, εὐφρανθείητε ἐν Ἀβιμέλεχ, καὶ εὐφρανθείη καί γε αὐτὸς ἐφ’ ὑμῖν· Εἰ δὲ οὐ, ἐξέλθοι πῦρ ἀπὸ Ἀβιμέλεχ, καὶ καταφάγοι τοὺς ἄνδρας Σικίμων καὶ τὸν οἶκον Βηθμααλώ· καὶ ἐξέλθοι πῦρ ἀπὸ ἀνδρῶν Σικίμων, καὶ ἐκ τοῦ οἴκου Βηθμααλὼ, καὶ καταφάγοι τὸν Ἀβιμέλεχ. Καὶ ἔφυγεν Ἰωάθαμ καὶ ἀπέδρα, καὶ ἐπορεύθη ἕως Βαιὴρ, καὶ ᾤκησεν ἐκεῖ ἀπὸ προσώπου Ἀβιμέλεχ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἦρξεν Ἀβιμέλεχ ἐπὶ Ἰσραὴλ τρία ἔτη. Καὶ ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς πνεῦμα πονηρὸν ἀναμέσον Ἀβιμέλεχ καὶ ἀναμέσον τῶν ἀνδρῶν Σικίμων· καὶ ἠθέτισαν ἄνδρες Σικίμων ἐν τῷ οἴκῳ Ἀβιμέλεχ, τοῦ ἐπαγαγεῖν τὴν ἀδικίαν τῶν ἑβδομήκοντα υἱῶν Ἰεροβάαλ, καὶ τὰ αἵματα αὐτῶν τοῦ θεῖναι ἐπὶ Ἀβιμέλεχ τὸν ἀδελφὸν αὐτῶν, ὃς ἀπέκτεινεν αὐτοὺς, καὶ ἐπὶ ἄνδρας Σικίμων, ὅτι ἐνίσχυσαν τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἀποκτεῖναι τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ. Καὶ ἔθηκαν αὐτῷ οἱ ἄνδρες Σικίμων ἐνεδρεύοντας ἐπὶ τὰς κεφαλὰς τῶν ὀρέων, καὶ διήρπαζον πάντα ὃς παρεπορεύετο ἐπ’ αὐτοὺς ἐν τῇ ὁδῷ· καὶ ἀπηγγέλη τῷ βασιλεῖ Ἀβιμέλεχ. Καὶ ἦλθε Γαὰλ υἱὸς Ἰωβὴλ, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ παρῆλθον ἐν Σικίμοις, καὶ ἤλπισαν ἐν αὐτῷ οἱ ἄνδρες Σικίμων. Καὶ ἐξῆλθον εἰς ἀγρὸν, καὶ ἐτρύγησαν τοὺς ἀμπελῶνας αὐτῶν, καὶ ἐπάτησαν, καὶ ἐποίησαν Ἑλλουλίμ· καὶ εἰσήνεγκαν εἰς οἶκον θεοῦ αὐτῶν, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον, καὶ κατηράσαντο τὸν Ἀβιμέλεχ. Καὶ εἶπε Γαὰλ υἱὸς Ἰωβὴλ, τίς ἐστιν

Ἀβιμέλεχ, καὶ τίς ἐστιν υἱὸς Συχὲμ, ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ; οὐχ υἱὸς Ἱεροβάαλ, καὶ Ζεβοὺλ ἐπίσκοπος αὐτοῦ, δοῦλος αὐτοῦ σὺν τοῖς ἀνδράσιν Ἐμμὼρ πατρὸς Συχέμ; καὶ τί ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ ἡμεῖς; Καὶ τίς δῴη τὸν λαὸν τοῦτον ἐν χειρί μου; καὶ μεταστήσω τὸν Ἀβιμέλεχ, καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτὸν, πλήθυνον τὴν δύναμίν σου καὶ ἔξελθε. Καὶ ἤκουσε Ζεβοὺλ ἄρχων τῆς πόλεως τοὺς λόγους Γαὰλ υἱοῦ Ἰωβὴλ, καὶ ὠργίσθη θυμῷ αὐτός. Καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἀβιμέλεχ ἐν κρυφῇ, λέγων, ἰδοὺ Γαὰλ υἱὸς Ἰωβὴλ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἔρχονται εἰς Συχὲμ, καὶ ἰδοὺ αὐτοὶ περικάθηνται τὴν πόλιν ἐπὶ σέ. Καὶ νῦν ἀνάστηθι νυκτὸς, καὶ ὁ λαὸς ὁ μετὰ σου, καὶ ἐνέδρευσον ἐν τῷ ἀγρῷ. Καὶ ἔσται τοπρωῒ ἅμα τῷ ἀνατεῖλαι τὸν ἥλιον, ὀρθριεῖς καὶ ἐκτενεῖς ἐπὶ τὴν πόλιν· καὶ ἰδοὺ αὐτὸς καὶ ὁ λαὸς ὁ μετ’ αὐτοῦ ἐκπορεύονται πρὸς σὲ, καὶ ποιήσεις αὐτῷ ὅσα ἂν εὕρῃ ἡ χείρ σου. Καὶ ἀνέστη Ἀβιμέλεχ καὶ πᾶς ὁ λαὸς μετ’ αὐτοῦ νυκτὸς, καὶ ἐνήδρευσαν ἐπὶ Συχὲμ τέτρασιν ἀρχαῖς. Καὶ ἐξῆλθε Γαὰλ υἱὸς Ἰωβὴλ, καὶ ἔστη πρὸς τῇ θύρᾳ τῆς πύλης τῆς πόλεως· καὶ ἀνέστη Ἀβιμέλεχ καὶ ὁ λαὸς ὁ μετ’ αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ἐνέδρου. Καὶ εἶδε Γαὰλ υἱὸς Ἰωβὴλ τὸν λαὸν, καὶ εἶπε πρὸς Ζεβοὺλ, ἰδοὺ λαὸς καταβαίνει ἀπὸ τῶν κεφαλῶν τῶν ὀρέων· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ζεβοὺλ, τὴν σκιὰν τῶν ὀρέων σὺ βλέπεις ὡς ἄνδρας. Καὶ προσέθετο ἔτι Γαὰλ τοῦ λαλῆσαι, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ λαὸς καταβαίνων κατὰ θάλασσαν ἀπὸ τοῦ ἐχόμενα ὀμφαλοῦ τῆς γῆς, καὶ ἀρχὴ ἑτέρα ἔρχεται δι’ ὁδοῦ Ἤλων Μαωνενίμ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ζεβοὺλ, καὶ ποῦ ἐστι τὸ στόμα σου ὡς ἐλάλησας, τίς ἐστιν Ἀβιμέλεχ, ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ; μὴ οὐχὶ οὗτος ὁ λαὸς ὃν ἐξουδένωσας; ἔξελθε δὴ νῦν καὶ παράταξαι αὐτῷ. Καὶ ἐξῆλθε Γαὰλ ἐνώπιον ἀνδρῶν Συχὲμ, καὶ παρετάξατο πρὸς Ἀβιμέλεχ. Καὶ ἐδίωξεν αὐτὸν Ἀβιμέλεχ, καὶ ἔφυγεν ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ

ἔπεσον τραυματίαι πολλοὶ ἕως τῆς θύρας τῆς πύλης. Καὶ εἰσῆλθεν Ἀβιμέλεχ ἐν Ἀρημά· καὶ ἐξέβαλε Ζεβοὺλ τὸν Γαὰλ καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, μὴ οἰκεῖν ἐν Συχέμ. Καὶ ἐγένετο τῇ ἐπαύριον καὶ ἐξῆλθεν ὁ λαὸς εἰς τὸν ἀγρὸν, καὶ ἀνήγγειλε τῷ Ἀβιμέλεχ. Καὶ ἔλαβε τὸν λαὸν, καὶ διεῖλεν αὐτοὺς εἰς τρεῖς ἀρχὰς, καὶ ἐνήδρευσεν ἐν ἀγρῷ· καὶ εἶδε, καὶ ἰδοὺ λαὸς ἐξῆλθεν ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἀνέστη ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἐπάταξεν αὐτούς. Καὶ Ἀβιμέλεχ καὶ οἱ ἀρχηγοὶ οἱ μετ᾽ αὐτοῦ ἐξέτειναν, καὶ ἔστησαν παρὰ τὴν θύραν τῆς πύλης τῆς πόλεως· καὶ αἱ δύο ἀρχαὶ ἐξέτειναν ἐπὶ πάντας τοὺς ἐν τῷ ἀγρῷ, καὶ ἐπάταξαν αὐτούς. Καὶ Ἀβιμέλεχ παρετάσσετο ἐν τῇ πόλει ὅλην τὴν ἡμέραν ἐκείνην, καὶ κατελάβετο τὴν πόλιν, καὶ τὸν λαὸν τὸν ἐν αὐτῇ ἀπέκτεινε, καὶ τὴν πόλιν καθεῖλε, καὶ ἔσπειρεν αὐτὴν ἅλας. Καὶ ἤκουσαν πάντες οἱ ἄνδρες πύργου Συχὲμ, καὶ ἦλθον εἰς συνέλευσιν Βαιθηλβερίθ. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ Ἀβιμέλεχ, ὅτι συνήχθησαν πάντες οἱ ἄνδρες πύργου Συχέμ. Καὶ ἀνέβη Ἀβιμέλεχ εἰς ὄρος Σελμὼν, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἔλαβεν Ἀβιμέλεχ τὰς ἀξίνας ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἔκοψε κλάδον ξύλου, καὶ ᾖρε, καὶ ἔθηκεν ἐπὶ ὤμων αὐτοῦ· καὶ εἶπε τῷ λαῷ τῷ μετ᾽ αὐτοῦ, ὃ εἴδετέ με ποιοῦντα, ταχέως ποιήσατε ὡς ἐγώ. Καὶ ἔκοψαν καί γε ἀνὴρ κλάδον πᾶς ἀνὴρ, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω Ἀβιμέλεχ, καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὴν συνέλευσιν, καὶ ἐνεπύρισαν ἐπ᾽ αὐτοὺς τὴν συνέλευσιν ἐν πυρί· καὶ ἀπέθανον καί γε πάντες οἱ ἄνδρες πύργου Σικίμων, ὡσεὶ χίλιοι ἄνδρες καὶ γυναῖκες. Καὶ ἐπορεύθη Ἀβιμέλεχ ἐκ Βαιθηγβερὶθ, καὶ παρενέβαλεν ἐν Θήβης, καὶ κατέλαβεν αὐτήν. Καὶ πύργος ἰσχυρὸς ἦν ἐν μέσῳ τῆς πόλεως· καὶ ἔφυγον ἐκεῖ πάντες οἱ ἄνδρες καὶ αἱ γυναῖκες τῆς πόλεως, καὶ ἔκλεισαν ἔξωθεν αὐτῶν, καὶ ἀνέβησαν ἐπὶ τὸ δῶμα τοῦ πύργου. Καὶ ἦλθεν Ἀβιμέλεχ ἕως τοῦ πύργου, καὶ παρετάξαντο αὐτῷ· καὶ ἤγγισεν Ἀβιμέλεχ ἕως

τῆς θύρας τοῦ πύργου τοῦ ἐμπρῆσαι αὐτὸν ἐν πυρί. Καὶ ἔῤῥιψε γυνὴ μία κλάσμα ἐπιμύλιον ἐπὶ κεφαλὴν Ἀβιμέλεχ, καὶ ἔκλασε τὸ κρανίον αὐτοῦ. Καὶ ἐβόησε ταχὺ πρὸς τὸ παιδάριον τὸ αἴρον τὰ σκεύη αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, σπάσον τὴν ῥομφαίαν μου καὶ θανάτωσόν με, μή ποτε εἴπωσι, γυνὴ ἀπέκτεινεν αὐτόν· καὶ ἐξεκέντησεν αὐτὸν τὸ παιδάριον αὐτοῦ, καὶ ἀπέθανε. Καὶ εἶδεν ἀνὴρ Ἰσραὴλ ὅτι ἀπέθανεν Ἀβιμέλεχ· καὶ ἐπορεύθησαν ἀνὴρ εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ ἐπέστρεψεν ὁ Θεὸς τὴν πονηρίαν Ἀβιμέλεχ, ἣν ἐποίησε τῷ πατρὶ αὐτοῦ, ἀποκτεῖναι τοὺς ἑβδομήκοντα ἀδελφοὺς αὐτοῦ. Καὶ τὴν πᾶσαν πονηρίαν ἀνδρῶν Συχὲμ ἐπέστρεψεν ὁ Θεὸς εἰς κεφαλὴν αὐτῶν· καὶ ἐπῆλθεν ἐπ’ αὐτοὺς ἡ κατάρα Ἰωάθαμ υἱοῦ Ἱεροβάαλ.

# 10

Καὶ ἀνέστη μετὰ Ἀβιμέλεχ τοῦ σῶσαι τὸν Ἰσραὴλ Θωλὰ υἱὸς Φουὰ, υἱὸς πατραδέλφου αὐτοῦ, ἀνὴρ Ἰσσάχαρ· καὶ αὐτὸς ᾤκει ἐν Σαμὶρ ἐν ὄρει Ἐφραίμ. Καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ εἴκοσι τρία ἔτη, καὶ ἀπέθανε, καὶ ἐτάφη ἐν Σαμίρ. Καὶ ἀνέστη μετ’ αὐτὸν Ἰαΐρ ὁ Γαλαὰδ, καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ εἴκοσι δύο ἔτη. Καὶ ἦσαν αὐτῷ τριάκοντα καὶ δύο υἱοὶ ἐπιβαίνοντες ἐπὶ τριάκοντα δύο πώλους· καὶ τριάκοντα δύο πόλεις αὐτοῖς· καὶ ἐκάλουν αὐτὰς ἐπαύλεις Ἰαΐρ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης ἐν γῇ Γαλαάδ. Καὶ ἀπέθανεν Ἰαΐρ, καὶ ἐτάφη ἐν Ῥαμνών. Καὶ προσέθεντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐδούλευσαν τοῖς Βααλὶμ, καὶ ταῖς Ἀσταρὼθ, καὶ τοῖς θεοῖς Ἀρὰμ, καὶ τοῖς θεοῖς Σιδῶνος, καὶ τοῖς θεοῖς Μωὰβ, καὶ τοῖς θεοῖς υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ τοῖς θεοῖς Φυλιστιὶμ,

καὶ ἐγκατέλιπον τὸν Κύριον, καὶ οὐκ ἐδούλευσαν αὐτῷ. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν Ἰσραὴλ, καὶ ἀπέδοτο αὐτοὺς ἐν χειρὶ Φυλιστιΐμ, καὶ ἐν χειρὶ υἱῶν Ἀμμών. Καὶ ἔθλιψαν καὶ ἔθλασαν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ὀκτωκαίδεκα ἔτη, τοὺς πάντας υἱοὺς Ἰσραὴλ τοὺς ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου ἐν γῇ τοῦ Ἀμορῥὶ τοῦ ἐν Γαλαάδ. Καὶ διέβησαν οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν τὸν Ἰορδάνην παρατάξασθαι πρὸς Ἰούδαν, καὶ Βενιαμὶν, καὶ πρὸς Ἐφραίμ· καὶ ἐθλίβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ σφόδρα. Καὶ ἐβόησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον, λέγοντες, ἡμάρτομέν σοι, ὅτι ἐγκατελίπομεν τὸν Θεὸν, καὶ ἐδουλεύσαμεν τῷ Βααλίμ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, μὴ οὐχὶ ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἀπὸ τοῦ Ἀμορῥαίου, καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἀπὸ Φυλιστιΐμ, καὶ Σιδωνίων, καὶ Ἀμαλὲκ, καὶ Μαδιὰμ, οἳ ἔθλιψαν ὑμᾶς; καὶ ἐβοήσατε πρὸς μὲ, καὶ ἔσωσα ὑμᾶς ἐκ χειρὸς αὐτῶν; Καὶ ὑμεῖς ἐγκατελίπετέ με, καὶ ἐδουλεύσατε θεοῖς ἑτέροις· διὰ τοῦτο οὐ προσθήσω τοῦ σῶσαι ὑμᾶς. Πορεύεσθε, καὶ βοήσατε πρὸς τοὺς θεοὺς οὓς ἐξελέξασθε ἑαυτοῖς, καὶ αὐτοὶ σωσάτωσαν ὑμᾶς ἐν καιρῷ θλίψεως ὑμῶν. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον, ἡμάρτομεν, ποίησον σὺ ἡμῖν κατὰ πὰν τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, πλὴν ἐξελοῦ ἡμᾶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ ἐξέκλιναν τοὺς θεοὺς τοὺ ἀλλοτρίους ἐκ μέσου αὐτῶν, καὶ ἐδούλευσαν τῷ Κυρίῳ μόνῳ· καὶ ὠλιγώθη ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν κόπῳ Ἰσραήλ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν, καὶ παρενέβαλον ἐν Γαλαάδ· καὶ συνήχθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ σκοπίᾳ. Καὶ εἶπον ὁ λαὸς οἱ ἄρχοντες Γαλαὰδ, ἀνὴρ πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, τίς ὁ ἀνὴρ ὅστις ἂν ἄρξεται παρατάξασθαι πρὸς υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ ἔσται εἰς ἄρχοντα πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι Γαλαάδ;

# 11

Καὶ Ἰεφθάε ὁ Γαλααδίτης ἐπῃρμένος δυνάμει, καὶ αὐτὸς υἱοῖς γυναικὸς πόρνης, ἣ ἐγέννησε τῷ Γαλαὰδ τὸν Ἰεφθάε. Καὶ ἔτεκεν ἡ γυνὴ Γαλαὰδ αὐτῷ υἱούς· καὶ ἠδρύνθησαν οἱ υἱοὶ τῆς γυναικὸς, καὶ ἐξέβαλον τὸν Ἰεφθάε, καὶ εἶπαν αὐτῷ, οὐ κληρονομήσεις ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς ἡμῶν, ὅτι υἱὸς γυναικὸς ἑταίρας σύ. Καὶ ἔφυγεν Ἰεφθάε ἀπὸ προσώπου τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ ᾤκησεν ἐν γῇ Τώβ· καὶ συνεστράφησαν πρὸς Ἰεφθάε ἄνδρες κενοὶ, καὶ ἐξῆλθον μετ’ αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα παρετάξαντο οἱ υἱοὶ Ἀμμῶν μετὰ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπορεύθησαν οἱ πρεσβύτεροι Γαλαὰδ λαβεῖν τὸν Ἰεφθάε ἀπὸ τῆς γῆς Τὼβ, καὶ εἶπαν τῷ Ἰεφθάε, δεῦρο καὶ ἔσῃ ἡμῖν εἰς ἀρχηγὸν, καὶ παραταξόμεθα πρὸς υἱοὺς Ἀμμών. Καὶ εἶπεν Ἰεφθάε τοῖς πρεσβυτέροις Γαλαὰδ, οὐχὶ ὑμεῖς ἐμισήσατέ με, καὶ ἐξεβάλετέ με ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου, καὶ ἐξαπεστείλατέ με ἀφ’ ὑμῶν; καὶ διατί ἤλθατε πρὸς μὲ νῦν ἡνίκα χρῄζετε; Καὶ εἶπαν οἱ προσβύτεροι Γαλαὰδ πρὸς Ἰεφθάε, διὰ τοῦτο νῦν ἐπεστρέψαμεν πρὸς σὲ, καὶ πορεύσῃ μεθ’ ἡμῶν, καὶ παρατάξῃ πρὸς υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ ἔσῃ ἡμῖν εἰς ἄρχοντα πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι Γαλαάδ. Καὶ εἶπεν Ἰεφθάε πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους Γαλαὰδ, εἰ ἐπιστρέφετέ με ὑμεῖς παρατάξασθαι ἐν υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ παραδῷ αὐτοὺς Κύριος ἐνώπιον ἐμοῦ, καὶ ἐγὼ ὑμῖν ἔσομαι εἰς ἄρχοντα. Καὶ εἶπαν οἱ πρεσβύτεροι Γαλαὰδ πρὸς Ἰεφθάε, Κύριος ἔστω ἀκούων ἀναμέσον ἡμῶν, εἰ μὴ κατὰ τὸ ῥῆμά σου οὕτω ποιήσομεν. Καὶ ἐπορεύθη Ἰεφθάε μετὰ τῶν πρεσβυτέρων Γαλαὰδ, καὶ ἔθηκαν αὐτὸν ὁ λαὸς ἐπ’ αὐτοὺς εἰς κεφαλὴν καὶ εἰς ἀρχηγόν· καὶ ἐλάλησεν Ἰεφθαέ πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ ἐνώπιον Κυρίου ἐν Μασσηφά. Καὶ

ἀπέστειλεν Ἰεφθάε ἀγγέλους πρὸς βασιλέα υἱῶν Ἀμμὼν, λέγων, τί ἐμοὶ καὶ σοὶ, ὅτι ἦλθες πρὸς μὲ τοῦ παρατάξασθαι ἐν τῇ γῇ μου; Καὶ εἶπε βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν πρὸς τοὺς ἀγγέλους Ἰεφθάε, ὅτι ἔλαβεν Ἰσραὴλ τὴν γῆν μου ἐν τῷ ἀναβαίνειν αὐτὸν ἐξ Αἰγύπτου ἀπὸ Ἀρνὼν ἕως Ἰαβὸκ καὶ ἕως τοῦ Ἰορδάνου· καὶ νῦν ἐπίστρεψον αὐτὰς ἐν εἰρήνῃ, καὶ πορεύσομαι. Καὶ προσέθηκεν ἔτι Ἰεφθάε, καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς βασιλέα υἱῶν Ἀμμών. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, οὕτω λέγει Ἰεφθάε, οὐκ ἔλαβεν Ἰσραὴλ τὴν γῆν Μωὰβ, καὶ τὴν γῆν υἱῶν Ἀμμών, ὅτι ἐν τῷ ἀναβαίνειν αὐτοὺς ἐξ Αἰγύπτου ἐπορεύθη Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἕως θαλάσσης Σὶφ, καὶ ἦλθεν εἰς Κάδης. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰσραὴλ ἀγγέλους πρὸς βασιλέα Ἐδὼμ, λέγων, παρελεύσομαι δὴ ἐν τῇ γῇ σου· καὶ οὐκ ἤκουσε βασιλεὺς Ἐδώμ· καί γε πρὸς βασιλέα Μωὰβ ἀπέστειλε, καὶ οὐκ εὐδόκησε· καὶ ἐκάθισεν Ἰσραὴλ ἐν Κάδης, καὶ ἐπορεύθη ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἐκύκλωσε τὴν γῆν Ἐδὼμ καὶ τὴν γῆν Μωάβ· καὶ ἦλθεν ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου τῇ γῇ Μωὰβ, καὶ παρενέβαλεν ἐν πέραν Ἀρνὼν, καὶ οὐκ εἰσῆλθεν ἐν ὁρίοις Μωὰβ, ὅτι Ἀρνὼν ὅριον Μωάβ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰσραὴλ ἀγγέλους πρὸς Σηὼν βασιλέα τοῦ Ἀμορῥαίου βασιλέα Ἐσεβῶν, καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰσραήλ, παρέλθωμεν δὴ ἐν τῇ γῇ σου ἕως τοῦ τόπου ἡμῶν. Καὶ οὐκ ἐνεπίστευσε Σηὼν τῷ Ἰσραὴλ παρελθεῖν ἐν τῷ ὁρίῳ αὐτοῦ· καὶ συνῆξε Σηὼν πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ παρενέβαλον εἰς Ἰασὰ, καὶ παρετάξατο πρὸς Ἰσραήλ. Καὶ παρέδωκε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ τὸν Σηὼν καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν χειρὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπάταξεν αὐτόν· καὶ ἐκληρονόμησεν Ἰσραὴλ πᾶσαν τὴν γῆν τοῦ Ἀμορῥαίου τοῦ κατοικοῦντος τὴν γῆν ἐκείνην ἀπὸ Ἀρνὼν καὶ ἕως τοῦ Ἰαβὸκ, καὶ ἀπὸ τοῦ ἐρήμου ἕως τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ νῦν Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ἐξῆρε τὸν Ἀμορῥαῖον ἀπὸ προσώπου λαοῦ αὐτοῦ Ἰσραήλ, καὶ σὺ

κληρονομήσεις αὐτόν; Οὐχὶ ἃ ἐὰν κληρονομήσει σε Χαμὼς ὁ θεὸς σοῦ, αὐτὰ κληρονομήσεις, καὶ τοὺς πάντας οὓς ἐξῆρε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἀπὸ προσώπου ἡμῶν, αὐτοὺς κληρονομήσομεν; Καὶ νῦν μὴ ἐν ἀγαθῷ ἀγαθώτερος σὺ ὑπὲρ Βαλὰκ υἱὸν Σεπφὼρ βασιλέως Μωάβ; μὴ μαχόμενος ἐμαχέσατο μετὰ Ἰσραὴλ, ἢ πολεμῶν ἐπολέμησεν αὐτὸν, ἐν τῷ οἰκῆσαι ἐν Ἐσεβὼν καὶ ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς, καὶ ἐν γῇ Ἀροὴρ καὶ ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς, καὶ ἐν πάσαις ταῖς πόλεσι ταῖς παρὰ τὸν Ἰορδάνην, τριακόσια ἔτη; καὶ διατί οὐκ ἐῤῥύσω αὐτοὺς ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ; Καὶ νῦν ἐγώ εἰμι οὐχ ἥμαρτόν σοι, καὶ σὺ ποιεῖς μετ’ ἐμοῦ πονηρίαν τοῦ παρατάξασθαι ἐν ἐμοί· κρίναι Κύριος ὁ κρίνων σήμερον ἀναμέσον υἱῶν Ἰσραὴλ καὶ ἀναμέσον υἱῶν Ἀμμών. Καὶ οὐκ ἤκουσε βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν τῶν λόγων Ἰεφθάε, ὧν ἀπέστειλε πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐγένετο ἐπὶ Ἰεφθάε πνεῦμα Κυρίου, καὶ παρῆλθε τὸν Γαλαὰδ, καὶ τὸν Μανασσῆ, καὶ παρῆλθε τὴν σκοπιὰν Γαλαὰδ εἰς τὸ πέραν υἱῶν Ἀμμών. Καὶ ηὔξατο Ἰεφθάε εὐχὴν τῷ Κυρίῳ, καὶ εἶπεν, ἐὰν διδοὺς δῷς μοι τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν ἐν τῇ χειρί μου, καὶ ἔσται ὁ ἐκπορευόμενος ὃς ἂν ἐξέλθῃ ἀπὸ τῆς θύρας τοῦ οἴκου μου εἰς συνάντησίν μου ἐν τῷ ἐπιστρέφειν με ἐν εἰρήνῃ ἀπὸ υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἔσται τῷ Κυρίῳ, ἀνοίσω αὐτὸν ὁλοκαύτωμα. Καὶ παρῆλθεν Ἰεφθάε πρὸς υἱοὺς Ἀμμὼν παρατάξασθαι πρὸς αὐτούς· καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς ἀπὸ Ἀροὴρ ἕως ἐλθεῖν ἄχρις Ἀρνὼν ἐν ἀριθμῷ εἴκοσι πόλεις, καὶ ἕως Ἐβελχαρμὶμ, πληγὴν μεγάλην σφόδρα· καὶ συνεστάλησαν οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἦλθεν Ἰεφθάε εἰς Μασσηφὰ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ ἰδοὺ ἡ θυγάτηρ αὐτοῦ ἐξεπορεύετο εἰς ὑπάντησιν ἐν τυμπάνοις καὶ χοροῖς· καὶ αὕτη ἦν μονογενὴς αὐτῷ· οὐκ ἦν αὐτῷ ἕτερος υἱὸς ἢ θυγάτηρ. Καὶ ἐγένετο

ὡς εἶδεν αὐτὴν αὐτός, διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἆ ἆ, θυγάτηρ μου, ταραχῇ ἐτάραξάς με, καὶ σὺ ἦς ἐν τῷ ταράχῳ μου, καὶ ἐγώ εἰμι ἤνοιξα κατὰ σοῦ τὸ στόμα μου πρὸς Κύριον, καὶ οὐ δυνήσομαι ἀποστρέψαι. Ἡ δὲ εἶπε πρὸς αὐτὸν, πάτερ, ἤνοιξας τὸ στόμα σου πρὸς Κύριον; ποίησόν μοι ὃν τρόπον ἐξῆλθεν ἐκ στόματός σου, ἐν τῷ ποιῆσαί σοι Κύριον ἐκδίκησιν τῶν ἐχθρῶν σου ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἀμμών. Καὶ ἤδε εἶπε πρὸς τὸν πατέρα αὐτῆς, ποιησάτω δὴ ὁ πατήρ μου τὸν λόγον τοῦτον· ἔασόν με δύο μῆνας, καὶ πορεύσομαι καὶ καταβήσομαι ἐπὶ τὰ ὄρη, καὶ κλαύσομαι ἐπὶ τὰ παρθένιά μου ἐγώ εἰμι καὶ αἱ συνεταιρίδες μου. Καὶ εἶπε, πορεύου· καὶ ἀπέστειλεν αὐτὴν δύο μῆνας· καὶ ἐπορεύθη αὐτὴ καὶ αἱ συνεταιρίδες αὐτῆς, καὶ ἔκλαυσεν ἐπὶ τὰ παρθένια αὐτῆς ἐπὶ τὰ ὄρη. Καὶ ἐγένετο ἐν τέλει τῶν δύο μηνῶν, καὶ ἐπέστρεψε πρὸς τὸν πατέρα αὐτῆς· καὶ ἐποίησεν ἐν αὐτῇ τὴν εὐχὴν αὐτοῦ ἣν ηὔξατο· καὶ αὕτη οὐκ ἔγνω ἄνδρα· καὶ ἐγένετο εἰς πρόσταγμα ἐν Ἰσραήλ· Ἀπὸ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας ἐπορεύοντο θυγατέρες Ἰσραὴλ θρηνεῖν τὴν θυγατέρα Ἰεφθάε τοῦ Γαλααδίτου ἐπὶ τέσσαρας ἡμέρας ἐν τῷ ἐνιαυτῷ.

# 12

Καὶ ἐβόησεν ἀνὴρ Ἐφραὶμ, καὶ παρῆλθαν εἰς Βοῤῥᾶν, καὶ εἶπαν πρὸς Ἰεφθάε, διατί παρῆλθες παρατάξασθαι ἐν υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ ἡμᾶς οὐ κέκληκας πορευθῆναι μετὰ σοῦ; τὸν οἶκόν σου ἐμπρήσομεν ἐπὶ σὲ ἐν πυρί. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ἰεφθὰε, ἀνὴρ μαχητὴς ἤμην ἐγὼ καὶ ὁ λαός μου, καὶ οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν σφόδρα· καὶ ἐβόησα ὑμᾶς, καὶ οὐκ ἐσώσατέ με ἐκ χειρὸς αὐτῶν. Καὶ εἶδον ὅτι

οὐκ εἶ σωτὴρ, καὶ ἔθηκα τὴν ψυχήν μου ἐν χειρί μου, καὶ παρῆλθον πρὸς υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς Κύριος ἐν χειρί μου· καὶ εἰς τί ἀνέβητε ἐπ’ ἐμὲ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ παρατάξασθαι ἐν ἐμοί; Καὶ συνέστρεψεν Ἰεφθάε πάντας τοὺς ἄνδρας Γαλαὰδ, καὶ παρετάξατο τῷ Ἐφραὶμ, καὶ ἐπάταξαν ἄνδρες Γαλαὰδ τὸν Ἐφραὶμ, ὅτι εἶπαν οἱ διασωζόμενοι τοῦ Ἐφραὶμ, ὑμεῖς Γαλαὰδ ἐν μέσῳ τοῦ Ἐφραὶμ καὶ ἐν μέσῳ τοῦ Μανασσῆ. Καὶ προκατελάβετο Γαλαὰδ τὰς διαβάσεις τοῦ Ἰορδάνου τοῦ Ἐφραίμ· καὶ εἶπαν αὐτοῖς οἱ διασωζόμενοι Ἐφραὶμ, διαβῶμεν· καὶ εἶπαν αὐτοῖς οἱ ἄνδρες Γαλαὰδ, μὴ Ἐφραθίτης εἶ; καὶ εἶπεν, οὔ. Καὶ εἶπαν αὐτῷ, εἶπον δὴ στάχυς· καὶ οὐ κατεύθυνε τοῦ λαλῆσαι οὕτως· καὶ ἐπελάβοντο αὐτοῦ, καὶ ἔθυσαν αὐτὸν πρὸς τὰς διαβάσεις τοῦ Ἰορδάνου· καὶ ἔπεσαν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπὸ Ἐφραὶμ δύο καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδες. Καὶ ἔκρινεν Ἰεφθάε τὸν Ἰσραὴλ ἓξ ἔτη· καὶ ἀπέθανεν Ἰεφθάε ὁ Γαλααδίτης, καὶ ἐτάφη ἐν πόλει αὐτοῦ Γαλαάδ. Καὶ ἔκρινε μετ’ αὐτὸν τὸν Ἰσραὴλ Ἀβαισσὰν ἀπὸ Βηθλεέμ. Καὶ ἦσαν αὐτῷ τριάκοντα υἱοὶ, καὶ τριάκοντα θυγατέρες, ἃς ἐξαπέστειλεν ἔξω, καὶ τριάκοντα θυγατέρας εἰσήνεγκε τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ ἔξωθεν· καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ ἑπτὰ ἔτη. Καὶ ἀπέθανεν Ἀβαισσὰν, καὶ ἐτάφη ἐν Βηθλεέμ. Καὶ ἔκρινε μετ’ αὐτὸν τὸν Ἰσραὴλ Αἰλὼμ ὁ Ζαβουλωνίτης δέκα ἔτη. Καὶ ἀπέθανεν Αἰλὼμ ὁ Ζαβουλωνίτης, καὶ ἐτάφη ἐν Αἰλὼμ ἐν γῇ Ζαβουλών. Καὶ ἔκρινε μετ’ αὐτὸν τὸν Ἰσραὴλ Ἀβδὼν υἱὸς Ἑλλὴλ ὁ Φαραθωνίτης. Καὶ ἦσαν αὐτῷ τεσσαράκοντα υἱοὶ, καὶ τριάκοντα υἱῶν υἱοὶ ἐπιβαίνοντες ἐπὶ ἑβδομήκοντα πώλους· καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ ὀκτὼ ἔτη. Καὶ ἀπέθανεν Ἀβδὼν υἱὸς Ἐλλὴλ ὁ Φαραθωνίτης, καὶ ἐτάφη ἐν Φαραθὼν ἐν γῇ Ἐφραὶμ ἐν ὄρει τοῦ Ἀμαλήκ.

# 13

Καὶ προσέθηκαν ἔτι οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος ἐν χειρὶ Φυλιστιΐμ τεσσαράκοντα ἔτη. Καὶ ἦν ἀνὴρ εἷς ἀπὸ Σαραὰ ἀπὸ δήμου συγγενείας τοῦ Δανὶ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Μανωὲ, καὶ γυνὴ αὐτοῦ στεῖρα καὶ οὐκ ἔτεκε. Καὶ ὤφθη ἄγγελος Κυρίου πρὸς τὴν γυναῖκα, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, ἰδοὺ σὺ στεῖρα καὶ οὐ τέτοκας, καὶ συλλήψῃ υἱόν. Καὶ νῦν φύλαξαι δὴ, καὶ μὴ πίῃς οἶνον καὶ μέθυσμα, καὶ μὴ φάγῃς πᾶν ἀκάθαρτον, ὅτι ἰδοὺ σὺ ἐν γαστρὶ ἔχεις καὶ τέξῃ υἱόν· καὶ σίδηρος ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ οὐκ ἀναβήσεται, ὅτι Ναζὶρ Θεοῦ ἔσται τὸ παιδάριον ἀπὸ τῆς κοιλίας· καὶ αὐτὸς ἄρξεται σῶσαι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ χειρὸς Φυλιστιΐμ. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ γυνὴ, καὶ εἶπε τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, λέγουσα, ἄνθρωπος Θεοῦ ἦλθε πρὸς μὲ, καὶ εἶδος αὐτοῦ ὡς εἶδος ἀγγέλου Θεοῦ, φοβερὸν σφόδρα· καὶ οὐκ ἠρώτησα αὐτὸν πόθεν ἐστὶ, καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ οὐκ ἀπήγγειλέ μοι. Καὶ εἶπέ μοι, ἰδοὺ σὺ ἐν γαστρὶ ἔχεις καὶ τέξῃ υἱόν· καὶ νῦν μὴ πίῃς οἶνον καὶ μέθυσμα, καὶ μὴ φάγῃς πᾶν ἀκάθαρτον, ὅτι Θεοῦ ἅγιον ἔσται τὸ παιδάριον ἀπὸ γαστρὸς ἕως ἡμέρας θανάτου αὐτοῦ. Καὶ προσηύξατο Μανωὲ πρὸς Κύριον, καὶ εἶπεν, ἐν ἐμοὶ Κύριε ἀδωναϊὲ τὸν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ ὃν ἀπέστειλας· ἐλθέτω δὴ ἔτι πρὸς ἡμᾶς, καὶ συμβιβασάτω ἡμᾶς τί ποιήσωμεν τῷ παιδίῳ τῷ τικτομένῳ. Καὶ εἰσήκουσεν ὁ Θεὸς τῆς φωνῆς Μανωὲ, καὶ ἦλθεν ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ ἔτι πρὸς τὴν γυναῖκα· καὶ αὕτη ἐκάθητο ἐν ἀγρῷ, καὶ Μανωὲ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς οὐκ ἦν μετ’ αὐτῆς. Καὶ ἐτάχυνεν ἡ γυνὴ καὶ ἔδραμε καὶ ἀνήγγειλε τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ ὤπται πρὸς μὲ ὁ ἀνὴρ ὃς ἦλθεν ἐν ἡμέρᾳ πρὸς μέ. Καὶ ἀνέστη καὶ

ἐπορεύθη Μανωὲ ὀπίσω τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, καὶ ἦλθε πρὸς τὸν ἄνδρα, καὶ εἶπεν αὐτῷ, εἰ σὺ εἶ ὁ ἀνὴρ, ὁ λαλήσας πρὸς τὴν γυναῖκα; καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος, ἐγώ. Καὶ εἶπε Μανωὲ, νῦν ἐλεύσεται ὁ λόγος· τίς ἔσται κρίσις τοῦ παιδίου καὶ τὰ ποιήματα αὐτοῦ; Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος Κυρίου πρὸς Μανωὲ, ἀπὸ πάντων ὧν εἴρηκα πρὸς τὴν γυναῖκα, φυλάξεται· Ἀπὸ παντὸς ὃ ἐκπορεύεται ἐξ ἀμπέλου τοῦ οἴνου, οὐ φάγεται, καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα μὴ πιέτω, καὶ πᾶν ἀκάθαρτον μὴ φαγέτω· πάντα ὅσα ἐνετειλάμην αὐτῇ, φυλάξεται. Καὶ εἶπε Μανωὲ πρὸς τὸν ἄγγελον Κυρίου, κατάσχωμεν ὧδέ σε, καὶ ποιήσωμεν ἐνώπιόν σου ἔριφον αἰγῶν. Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος Κυρίου πρὸς Μανωὲ, ἐὰν κατάσχῃς, οὐ φάγομαι ἀπὸ τῶν ἄρτων σου· καὶ ἐὰν ποιήσῃς ὁλοκαύτωμα, τῷ Κυρίῳ ἀνοίσεις αὐτό· ὅτι οὐκ ἔγνω Μανωὲ, ὅτι ἄγγελος Κυρίου αὐτός. Καὶ εἶπε Μανωὲ πρὸς τὸν ἄγγελον Κυρίου, τί τὸ ὄνομά σοι, ὅτι ἔλθοι τὸ ῥῆμά σου, καὶ δοξάσομέν σε; Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ ἄγγελος Κυρίου, εἰς τί τοῦτο ἐρωτᾷς τὸ ὄνομά μου; καὶ αὐτό ἐστι θαυμαστόν. Καὶ ἔλαβε Μανωὲ τὸν ἔριφον τῶν αἰγῶν καὶ τὴν θυσίαν, καὶ ἀνήνεγκεν ἐπὶ τὴν πέτραν τῷ Κυρίῳ· καὶ διεχώρισε ποιῆσαι, καὶ Μανωὲ καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ βλέποντες. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀναβῆναι τὴν φλόγα ἐπάνω τοῦ θυσιαστηρίου ἕως τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἀνέβη ὁ ἄγγελος Κυρίου ἐν τῇ φλογί. καὶ Μανωὲ καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ βλέποντες, καὶ ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ οὐ προσέθηκεν ἔτι ὁ ἄγγελος Κυρίου ὀφθῆναι πρὸς Μανωὲ καὶ πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ· τότε ἔγνω Μανωὲ, ὅτι ἄγγελος Κυρίου οὗτος. Καὶ εἶπε Μανωὲ πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, θανάτῳ ἀποθανούμεθα ὅτι Θεὸν εἴδομεν. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, εἰ ἤθελεν ὁ Κύριος θανατῶσαι ἡμᾶς, οὐκ ἂν ἔλαβεν ἐκ χειρὸς ἡμῶν ὁλοκαύτωμα καὶ θυσίαν, καὶ οὐκ ἂν ἔδειξεν ἡμῖν ταῦτα πάντα, καὶ καθὼς καιρός

οὐκ ἂν ἠκούτισεν ἡμᾶς ταῦτα. Καὶ ἔτεκεν ἡ γυνὴ υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Σαμψών· καὶ ἠδρύνθη τὸ παιδάριον, καὶ εὐλόγησεν αὐτὸ Κύριος. Καὶ ἤρξατο πνεῦμα Κυρίου συνεκπορεύεσθαι αὐτῷ ἐν παρεμβολῇ Δὰν, καὶ ἀναμέσον Σαραὰ καὶ ἀναμέσον Ἐσθαόλ.

# 14

Καὶ κατέβη Σαμψὼν εἰς Θαμναθὰ, καὶ εἶδε γυναῖκα ἐν Θαμναθὰ ἀπὸ τῶν θυγατέρων τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἀνέβη καὶ ἀπήγγειλε τῷ πατρὶ αὐτοῦ καὶ τῇ μητρὶ αὐτοῦ, καὶ εἶπε, γυναῖκα ἑώρακα ἐν Θαμναθὰ ἀπὸ τῶν θυγατέρων Φυλιστιΐμ, καὶ νῦν λάβετε αὐτήν μοι εἰς γυναῖκα. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, μὴ οὐκ εἰσὶ θυγατέρες τῶν ἀδελφῶν σου, καὶ ἐκ παντὸς τοῦ λαοῦ μου γυνὴ, ὅτι συ πορεύῃ λαβεῖν γυναῖκα ἀπὸ τῶν ἀλλοφύλων τῶν ἀπεριτμήτων; Καὶ εἶπε Σαμψὼν πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ, ταύτην λάβε μοι, ὅτι αὕτη εὐθεῖα ἐν ὀφθαλμοῖς μου. Καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ οὐκ ἔγνωσαν ὅτι παρὰ Κυρίου ἐστὶν, ὅτι ἐκδίκησιν αὐτὸς ζητεῖ ἐκ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ οἱ ἀλλόφυλοι κυριεύοντες ἐν Ἰσραήλ. Καὶ κατέβη Σαμψὼν καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ εἰς Θαμναθά· καὶ ἦλθεν ἕως τοῦ ἀμπελῶνος Θαμναθὰ, καὶ ἰδοὺ σκύμνος λέοντος ὠρυόμενος εἰς συνάντησιν αὐτοῦ. Καὶ ἥλατο ἐπ’ αὐτὸν πνεῦμα Κυρίου, καὶ συνέτριψεν αὐτὸν ὡσεὶ συντρίψει ἔριφον αἰγῶν, καὶ οὐδὲν ἦν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἀπήγγειλε τῷ πατρὶ αὐτοῦ καὶ τῇ μητρὶ αὐτοῦ ὃ ἐποίησε. Καὶ κατέβησαν καὶ ἐλάλησαν τῇ γυναικὶ, καὶ ηὐθύνθη ἐν ὀφθαλμοῖς Σαμψών. Καὶ ὑπέστρεψε μεθ’ ἡμέρας

λαβεῖν αὐτὴν, καὶ ἐξέκλινεν ἰδεῖν τὸ πτῶμα τοῦ λέοντος, καὶ ἰδοὺ συναγωγὴ μελισσῶν ἐν τῷ στόματι τοῦ λέοντος καὶ μέλι. Καὶ ἐξεῖλεν αὐτὸ εἰς χεῖρας αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύετο πορευόμενος καὶ ἐσθίων· καὶ ἐπορεύθη πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ καὶ πρὸς τὴν μητέρα αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς καὶ ἔφαγον, καὶ οὐκ ἀπήγγειλεν αὐτοῖς ὅτι ἀπὸ στόματος τοῦ λέοντος ἐξεῖλε τὸ μέλι. Καὶ κατέβη ὁ πατὴρ αὐτοῦ πρὸς τὴν γυναῖκα, καὶ ἐποίησεν ἐκεῖ Σαμψὼν πότον ἡμέρας ἑπτὰ, ὅτι οὕτως ποιοῦσιν οἱ νεανίσκοι. Καὶ ἐγένετο ὅτε εἶδον αὐτὸν, καὶ ἔλαβον τριάκοντα κλητοὺς, καὶ ἦσαν μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, πρόβλημα ὑμῖν προβάλλομαι, ἐὰν ἀπαγγέλλοντες ἀπαγγείλητε αὐτὸ ἐν ταῖς ἑπτὰ ἡμέραις τοῦ πότου καὶ εὕρητε, δώσω ὑμῖν τριάκοντα σινδόνας καὶ τριάκοντα στολὰς ἱματίων. Καὶ ἐὰν μὴ δύνησθε ἀπαγγεῖλαί μοι, δώσετε ὑμεῖς ἐμοὶ τριάκοντα ὀθόνια καὶ τριάκοντα ἀλλασσομένας στολὰς ἱματίων· καὶ εἶπαν αὐτῷ, προβάλου τὸ πρόβλημά σου, καὶ ἀκουσόμεθα αὐτό. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, τὶ βρωτὸν ἐξῆλθεν ἐκ βιβρώσκοντος, καὶ ἀπὸ ἰσχυροῦ γλυκύ· καὶ οὐκ ἠδύναντο ἀπαγγεῖλαι τὸ πρόβλημα ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ, καὶ εἶπαν τῇ γυναικὶ Σαμψὼν, ἀπάτησον δὴ τὸν ἄνδρα σου, καὶ ἀπαγγειλάτω σοι τὸ πρόβλημα, μή ποτε κατακαύσωμέν σε καὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου ἐν πυρί· ἢ ἐκβιᾶσαι ἡμᾶς κεκλήκατε; Καὶ ἔκλαυσεν ἡ γυνὴ Σαμψὼν πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπε, πλὴν μεμίσηκάς με καὶ οὐκ ἠγάπησάς με, ὅτι τὸ πρόβλημα ὃ προεβάλου τοῖς υἱοῖς τοῦ λαοῦ μου, οὐκ ἀπήγγειλάς μοι αὐτό· καὶ εἶπεν αὐτῇ Σαμψὼν, εἰ τῷ πατρί μου καὶ τῇ μητρί μου οὐκ ἀπήγγελκα, σοὶ ἀπαγγείλω; Καὶ ἔκλαυσε πρὸς αὐτὸν ἐπὶ τὰς ἑπτὰ ἡμέρας, ἃς ἦν αὐτοῖς ὁ πότος· καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῇ, ὅτι παρηνόχλησεν αὐτῷ· καὶ αὐτὴ ἀπήγγειλε τοῖς υἱοῖς τοῦ λαοῦ

αὐτῆς. Καὶ εἶπαν αὐτῷ οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ πρὸ τοῦ ἀνατεῖλαι τὸν ἥλιον, τί γλυκύτερον μέλιτος, καὶ τί ἰσχυρότερον λέοντος; καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, εἰ μὴ ἠροτριάσατε ἐν τῇ δαμάλει μου, οὐκ ἂν ἔγνωτε τὸ πρόβλημά μου. Καὶ ἥλατο ἐπ᾽ αὐτὸν πνεῦμα Κυρίου, καὶ κατέβη εἰς Ἀσκάλωνα, καὶ ἐπάταξεν ἐξ αὐτῶν τριάκοντα ἄνδρας, καὶ ἔλαβε τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἔδωκε τὰς στολὰς τοῖς ἀπαγγείλασι τὸ πρόβλημα· Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Σαμψὼν, καὶ ἀνέβη εἰς τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἡ γυνὴ Σαμψὼν ἑνὶ τῶν φίλων αὐτοῦ, ᾧ ἐφιλίασε.

# 15

Καὶ ἐγένετο μεθ᾽ ἡμέρας ἐν ἡμέραις θερισμοῦ πυρῶν, καὶ ἐπεσκέψατο Σαμψὼν τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἐν ἐρίφῳ αἰγῶν, καὶ εἶπεν, εἰσελεύσομαι πρὸς τὴν γυναῖκά μου καὶ εἰς τὸ ταμεῖον· καὶ οὐκ ἔδωκεν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτῆς εἰσελθεῖν. Καὶ εἶπεν ὁ πατὴρ αὐτὴς, λέγων, εἶπα ὅτι μισῶν ἐμίσησας αὐτὴν, καὶ ἔδωκα αὐτὴν ἑνὶ τῶν ἐκ τῶν φίλων σου· μὴ οὐχὶ ἡ ἀδελφὴ αὐτῆς ἡ νεωτέρα ἀγαθωτέρα ὑπὲρ αὐτήν; ἔστω δή σοι ἀντὶ αὐτῆς. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, ἠθῶωμαι καὶ τὸ ἅπαξ ἀπὸ ἀλλοφύλων, ὅτι ποιῶ ἐγὼ μετ᾽ αὐτῶν πονηρίαν· Καὶ ἐπορεύθη Σαμψὼν, καὶ συνέλαβε τριακοσίας ἀλώπεκας, καὶ ἔλαβε λαμπάδας, καὶ ἐπέστρεψε κέρκον πρὸς κέρκον, καὶ ἔθηκε λαμπάδα μίαν ἀναμέσον τῶν δύο κέρκων καὶ ἔδησε, καὶ ἐξέκαυσε πῦρ ἐν ταῖς λαμπάσι, καὶ ἐξαπέστειλεν ἐν τοῖς στάχυσι τῶν ἀλλοφύλων· καὶ ἐκάησαν ἀπὸ ἄλωνος καὶ ἕως σταχύων ὀρθῶν, καὶ ἕως ἀμπελῶνος καὶ ἐλαίας. Καὶ εἶπαν οἱ ἀλλόφυλοι, τίς ἐποίησε ταῦτα; καὶ εἶπαν, Σαμψὼν ὁ νυμφίος τοῦ

Θαμνὶ, ὅτι ἔλαβε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν τῷ ἐκ τῶν φίλων αὐτοῦ· καὶ ἀνέβησαν οἱ ἀλλόφυλοι, καὶ ἐνέπρησαν αὐτὴν καὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτῆς ἐν πυρί. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, ἐὰν ποιήσητε οὕτως ταύτην, ὅτι ἢ μὴν ἐκδικήσω ἐν ὑμῖν, καὶ ἔσχατον κοπάσω. Καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς κνήμην ἐπὶ μηρὸν πληγὴν μεγάλην· καὶ κατέβη καὶ ἐκάθισεν ἐν τρυμαλιᾷ τῆς πέτρας Ἠτάμ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ ἀλλόφυλοι, καὶ παρενέβαλον ἐν Ἰούδα, καὶ ἐξερρίφησαν ἐν Λεχί. Καὶ εἶπαν ἀνὴρ Ἰούδα, εἰς τί ἀνέβητε ἐφ’ ἡμᾶς; καὶ εἶπον οἱ ἀλλόφυλοι, δῆσαι τὸν Σαμψὼν ἀνέβημεν, καὶ ποιῆσαι αὐτῷ ὃν τρόπον ἐποίησεν ἡμῖν. Καὶ κατέβησαν τρισχίλιοι ἀπὸ Ἰούδα ἄνδρες εἰς τρυμαλιὰν πέτρας Ἠτὰμ, καὶ εἶπαν πρὸς Σαμψὼν, οὐκ οἶδας ὅτι κυριεύουσιν οἱ ἀλλόφυλοι ἡμῶν; καὶ τί τοῦτο ἐποίησας ἡμῖν; καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, ὃν τρόπον ἐποίησάν μοι, οὕτως ἐποίησα αὐτοῖς· Καὶ εἶπαν αὐτῷ, δῆσαί σε κατέβημεν τοῦ δοῦναί σε ἐν χειρὶ ἀλλοφύλων· καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαμψὼν, ὀμόσατέ μοι μή ποτε συναντήσητε ἐν ἐμοὶ ὑμεῖς. Καὶ εἶπον αὐτῷ, λέγοντες, οὐχὶ, ὅτι ἀλλ’ ἢ δεσμῷ δήσομέν σε, καὶ παραδώσωμέν σε ἐν χειρὶ αὐτῶν, καὶ θανάτῳ οὐ θανατώσωμέν σε· καὶ ἔδησαν αὐτὸν ἐν δυσὶ καλωδίοις καινοῖς, καὶ ἀνήνεγκαν αὐτὸν ἀπὸ τῆς πέτρας ἐκείνης. Καὶ ἦλθον ἕως σιαγόνος· καὶ οἱ ἀλλόφυλοι ἠλάλαξαν, καὶ ἔδραμον εἰς συνάντησιν αὐτοῦ· καὶ ἥλατο ἐπ’ αὐτὸν πνεῦμα Κυρίου· καὶ ἐγενήθη τὰ καλώδια τὰ ἐπὶ βραχίοσιν αὐτοῦ ὡσεὶ στυππίον ὃ ἐξεκαύθη ἐν πυρί· καὶ ἐτάκησαν δεσμοὶ αὐτοῦ ἀπὸ χειρῶν αὐτοῦ. Καὶ εὗρε σιαγόνα ὄνου ἐξερριμμένην, καὶ ἐξέτεινε τὴν χεῖρα αὐτοῦ καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ ἐπάταξεν ἐν αὐτῇ χιλίους ἄνδρας. Καὶ εἶπε Σαμψὼν, ἐν σιαγόνι ὄνου ἐξαλείφων ἐξήλειψα αὐτοὺς, ὅτι ἐν τῇ σιαγόνι τοῦ ὄνου ἐπάταξα χιλίους ἄνδρας. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐπαύσατο λαλῶν, καὶ

ἔῤῥιψε τὴν σιαγόνα ἐκ τῆς χειρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐκάλεσε τὸν τόπον ἐκεῖνον, ἀναίρεσις σιαγόνος. Καὶ ἐδίψησε σφόδρα, καὶ ἔκλαυσε πρὸς Κύριον, καὶ εἶπε, σὺ εὐδόκησας ἐν χειρὶ δούλου σου τὴν σωτηρίαν τὴν μεγάλην ταύτην, καὶ νῦν ἀποθανοῦμαι τῷ δίψει, καὶ ἐμπεσοῦμαι ἐν χειρὶ τῶν ἀπεριτμήτων; Καὶ ἔῤῥηξεν ὁ Θεὸς τὸν λάκκον τὸν ἐν τῇ σιαγόνι, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ αὐτοῦ ὕδωρ, καὶ ἔπιε· καὶ ἐπέστρεψε τὸ πνεῦμα αὐτοῦ καὶ ἔζησε. διὰ τοῦτο ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτῆς, Πηγὴ τοῦ ἐπικαλουμένου, ἥ ἐστιν ἐν σιαγόνι, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ ἐν ἡμέραις ἀλλοφύλων εἴκοσι ἔτη.

# 16

Καὶ ἐπορεύθη Σαμψὼν εἰς Γάζαν, καὶ εἶδεν ἐκεῖ γυναῖκα πόρνην, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν. Καὶ ἀνηγγέλη τοῖς Γαζαίοις, λέγοντες, ἥκει Σαμψὼν ὧδε. καὶ ἐκύκλωσαν, καὶ ἐνήδρευσαν ἐπ᾽ αὐτὸν ὅλην τὴν νύκτα ἐν τῇ πύλῃ τῆς πόλεως· καὶ ἐκώφευσαν ὅλην τὴν νύκτα, λέγοντες, ἕως διαφαύσῃ ὁ ὄρθρος, καὶ φονεύσωμεν αὐτόν. Καὶ ἐκοιμήθη Σαμψὼν ἕως μεσονυκτίου, καὶ ἀνέστη ἐν ἡμίσει τῆς νυκτὸς, καὶ ἐπελάβετο τῶν θυρῶν τῆς πύλης τῆς πόλεως σὺν τοῖς δυσὶ σταθμοῖς, καὶ ἀνεβάσταζεν αὐτὰς σὺν τῷ μοχλῷ, καὶ ἔθηκεν ἐπὶ ὤμων αὐτοῦ· καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους τοῦ ἐπὶ προσώπου τοῦ Χεβρῶν, καὶ ἔθηκεν αὐτὰ ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο μετὰ τοῦτο, καὶ ἠγάπησε γυναῖκα ἐν Ἀλσωρήχ· καὶ ὄνομα αὐτῇ Δαλιδά. Καὶ ἀνέβησαν πρὸς αὐτὴν οἱ ἄρχοντες τῶν ἀλλοφύλων, καὶ εἶπαν αὐτῇ, ἀπάτησον αὐτὸν, καὶ ἴδε ἐν τίνι ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ ἡ μεγάλη, καὶ ἐν τίνι δυνησόμεθα αὐτῷ, καὶ δήσομεν αὐτὸν τοῦ ταπεινῶσαι

αὐτόν· καὶ ἡμεῖς δώσομέν σοι ἀνὴρ χιλίους καὶ ἑκατὸν ἀργυρίου. Καὶ εἶπε Δαλιδὰ πρὸς Σαμψών, ἀπάγγειλον δή μοι ἐν τίνι ἡ ἰσχύς σου ἡ μεγάλη, καὶ ἐν τίνι δεθήσῃ τοῦ ταπεινωθῆναί σε. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν Σαμψών, ἐὰν δήσωσί με ἐν ἑπτὰ νευραῖς ὑγραῖς μὴ διεφθαρμέναις, καὶ ἀσθενήσω καὶ ἔσομαι ὡς εἷς τῶν ἀνθρώπων. Καὶ ἀνήνεγκαν αὐτῇ οἱ ἄρχοντες τῶν ἀλλοφύλων ἑπτὰ νευρὰς ὑγρὰς μὴ διεφθαρμένας, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν αὐταῖς. Καὶ τὸ ἔνεδρον αὐτῇ ἐκάθητο ἐν τῷ ταμείῳ· καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀλλόφυλοι ἐπὶ σὲ Σαμψών· καὶ διέσπασε τὰς νευρὰς ὡς εἴ τις ἀποσπάσοι στρέμμα στυππίου ἐν τῷ ὀσφρανθῆναι αὐτὸ πυρὸς, καὶ οὐκ ἐγνώσθη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαλιδὰ πρὸς Σαμψών, ἰδοὺ ἐπλάνησάς με, καὶ ἐλάλησας πρὸς μὲ ψευδῆ· νῦν οὖν ἀνάγγειλόν μοι ἐν τίνι δεθήσῃ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, ἐὰν δεσμεύοντες δήσωσί με ἐν καλωδίοις καινοῖς οἷς οὐκ ἐγένετο ἐν αὐτοῖς ἔργον, καὶ ἀσθενήσω καὶ ἔσομαι ὡς εἷς τῶν ἀνθρώπων. Καὶ ἔλαβε Δαλιδὰ καλώδια καινὰ, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ ἔνεδρα ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ταμείου· καὶ εἶπεν, ἀλλόφυλοι ἐπὶ σὲ Σαμψών· καὶ διέσπασεν αὐτὰ ἀπὸ βραχιόνων αὐτοῦ ὡσεὶ σπαρτίον. Καὶ εἶπε Δαλιδὰ πρὸς Σαμψών, ἰδοὺ ἐπλάνησάς με, καὶ ἐλάλησας πρὸς μὲ ψευδῆ· ἀνάγγειλον δή μοι ἐν τίνι δεθήσῃ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, ἐὰν ὑφάνῃς τὰς ἑπτὰ σειρὰς τῆς κεφαλῆς μου σὺν τῷ διάσματι, καὶ ἐγκρούσῃς τῷ πασσάλῳ εἰς τὸν τοῖχον, καὶ ἔσομαι ὡς εἷς τῶν ἀνθρώπων ἀσθενής. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κοιμᾶσθαι αὐτὸν, καὶ ἔλαβε Δαλιδὰ τὰς ἑπτὰ σειρὰς τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ὕφανεν ἐν τῷ διάσματι, καὶ ἔπηξεν τῷ πασσάῳ εἰς τὸν τοῖχον, καὶ εἶπεν, ἀλλόφυλοι ἐπὶ σὲ Σαμψών· καὶ ἐξυπνίσθη ἀπὸ τοῦ ὕπνου αὐτοῦ, καὶ ἐξῆρε τὸν πάσσαλον τοῦ ὑφάσματος ἐκ τοῦ τοίχου. Καὶ εἶπε πρὸς Σαμψὼν Δαλιδὰ, πῶς λέγεις, ἠγάπηκά σε, καὶ ἡ καρδία σου

οὐκ ἔστι μετ’ ἐμοῦ; τοῦτο τρίτον ἐπλάνησάς με καὶ οὐκ ἀπήγγειλάς μοι ἐν τίνι ἡ ἰσχύς σου ἡ μεγάλη. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐξέθλιψεν αὐτὸν ἐν λόγοις αὐτῆς πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ ἐστενοχώρησεν αὐτὸν, καὶ ὠλιγοψύχησεν ἕως τοῦ ἀποθανεῖν. Καὶ ἀνήγγειλεν αὐτῇ πᾶσαν τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, σίδηρος οὐκ ἀνέβη ἐπὶ τὴν κεφαλήν μου, ὅτι ἅγιος Θεοῦ ἐγώ εἰμι ἀπὸ κοιλίας μητρός μου· ἐὰν οὖν ξυρήσωμαι, ἀποστήσεται ἀπ’ ἐμοῦ ἡ ἰσχύς μου καὶ ἀσθενήσω, καὶ ἔσομαι ὡς πάντες οἱ ἄνθρωποι. Καὶ εἶδε Δαλιδὰ, ὅτι ἀπήγγειλεν αὐτῇ πᾶσαν τὴν καρδίαν αὐτοῦ· καὶ ἀπέστειλε καὶ ἐκάλεσε τοὺς ἄρχοντας τῶν ἀλλοφύλων, λέγουσα, ἀνάβητε ἔτι τὸ ἅπαξ τοῦτο, ὅτι ἀπήγγειλέ μοι πᾶσαν τὴν καρδίαν αὐτοῦ· καὶ ἀνέβησαν πρὸς αὐτὴν οἱ ἄρχοντες τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ἀνήνεγκαν τὸ ἀργύριον ἐν χερσὶν αὐτῶν. Καὶ ἐκοίμισε Δαλιδὰ τὸν Σαμψὼν ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτῆς· καὶ ἐκάλεσεν ἄνδρα, καὶ ἐξύρησε τὰς ἑπτὰ σειρὰς τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ἤρξατο ταπεινῶσαι αὐτὸν, καὶ ἀπέστη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαλιδά, ἀλλόφυλοι ἐπὶ σὲ Σαμψών. καὶ ἐξυπνίσθη ἐκ τοῦ ὕπνου αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἐξελεύσομαι ὡς ἅπαξ καὶ ἅπαξ, καὶ ἐκτιναχθήσομαι· καὶ αὐτὸς οὐκ ἔγνω ὅτι ὁ Κύριος ἀπέστη ἀπάνωθεν αὐτοῦ. Καὶ ἐκράτησαν αὐτὸν οἱ ἀλλόφυλοι, καὶ ἐξέκοψαν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ κατήνεγκαν αὐτὸν εἰς Γάζαν, καὶ ἐπέδησαν αὐτὸν ἐν πέδαις χαλκείαις· καὶ ἦν ἀλήθων ἐν οἴκῳ τοῦ δεσμωτηρίου. Καὶ ἤρξατο θρὶξ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ βλαστάνειν καθὼς ἐξυρήσατο. Καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν ἀλλοφύλων συνήχθησαν θυσαιάσαι θυσίασμα μέγα τῷ Δαγὼν θεῷ αὐτῶν, καὶ εὐφρανθῆναι, καὶ εἶπαν, ἔδωκεν ὁ θεὸς ἐν χειρὶ ἡμῶν τὸν Σαμψὼν τὸν ἐχθρὸν ἡμῶν. Καὶ εἶδον αὐτὸν ὁ λαὸς, καὶ ὕμνησαν τὸν θεὸν αὐτῶν, ὅτι παρέδωκεν ὁ θεὸς ἡμῶν τὸν ἐχθρὸν ἡμῶν ἐν χειρὶ ἡμῶν, τὸν ἐρημοῦντα τὴν γῆν ἡμῶν, καὶ

ὃς ἐπλήθυνε τοὺς τραυματίας ἡμῶν. Καὶ ὅτε ἠγαθύνθη ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ εἶπαν, καλέσατε τὸν Σαμψὼν ἐξ οἴκου φυλακῆς, καὶ παιξάτω ἐνώπιον ἡμῶν· καὶ ἐκάλεσαν τὸν Σαμψὼν ἐξ οἴκου δεσμωτηρίου, καὶ ἔπαιζεν ἐνώπιον αὐτῶν· καὶ ἐῤῥάπιζον αὐτὸν, καὶ ἔστησαν αὐτὸν ἀναμέσον τῶν κιόνων. Καὶ εἶπε Σαμψὼν πρὸς τὸν νεανίαν τὸν κρατοῦντα τὴν χεῖρα αὐτοῦ, ἄφες με, καὶ ψηλαφήσω τοὺς κίονας ἐφ’ οἷς ὁ οἶκος ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἐπιστηριχθήσομαι ἐπ’ αὐτούς. Καὶ ὁ οἶκος πλήρης τῶν ἀνδρῶν καὶ τῶν γυναικῶν, καὶ ἐκεῖ πάντες οἱ ἄρχοντες τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ἐπὶ τὸ δῶμα ὡσεὶ τρισχίλιοι ἄνδρες καὶ γυναῖκες οἱ θεωροῦντες ἐν παιγνίαις Σαμψών. Καὶ ἔκλαυσε Σαμψὼν πρὸς Κύριον, καὶ εἶπεν, ἀδωναϊὲ Κύριε μνήσθητι δή μου, καὶ ἐνίσχυσόν με ἔτι τὸ ἅπαξ τοῦτο Θεὲ, καὶ ἀνταποδώσω ἀνταπόδοσιν μίαν περὶ τῶν δύο ὀφθαλμῶν μου τοῖς ἀλλοφύλοις. Καὶ περιέλαβε Σαμψὼν τοὺς δύο κίονας τοῦ οἴκου ἐφ’ οὓς ὁ οἶκος εἱστήκει, καὶ ἐπεστηρίχθη ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἐκράτησεν ἕνα τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, καὶ ἕνα τῇ ἀριστερᾷ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Σαμψὼν, ἀποθανέτω ψυχή μου μετὰ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ ἐβάσταξεν ἐν ἰσχύϊ· καὶ ἔπεσεν ὁ οἶκος ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ ἐπὶ πάντα τὸν λαὸν τὸν ἐν αὐτῷ· καὶ ἦσαν οἱ τεθνηκότες οὓς ἐθανάτωσε Σαμψὼν ἐν τῷ θανάτῳ αὐτοῦ, πλείους ἢ οὓς ἐθανάτωσεν ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ. Καὶ κατέβησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ ἔλαβον αὐτόν· καὶ ἀνέβησαν καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἀναμέσον Σαραὰ καὶ ἀναμέσον Ἐσθαὸλ ἐν τῷ τάφῳ Μανωὲ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ αὐτὸς ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ εἴκοσι ἔτη.

# 17

Καὶ ἐγένετο ἀνὴρ ἀπὸ ὄρους Ἐφραὶμ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Μιχαίας. Καὶ εἶπε τῇ μητρὶ αὐτοῦ, οἱ χίλιοι καὶ ἑκατὸν οὓς ἔλαβες ἀργυρίου σεαυτῇ, καί με ἠράσω, καὶ προσεῖπας ἐν ὠσί μου, ἰδοὺ τὸ ἀργύριον παρ' ἐμοὶ, ἐγὼ ἔλαβον αὐτό. καὶ εἶπεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ, εὐλογητὸς ὁ υἱός μου τῷ Κυρίῳ. Καὶ ἀπέδωκε τοὺς χιλίους καὶ ἑκατὸν τοῦ ἀργυρίου τῇ μητρὶ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ, ἁγιάζουσα ἡγίασα τὸ ἀργύριον τῷ Κυρίῳ ἐκ τῆς χειρός μου τῷ υἱῷ μου τοῦ ποιῆσαι γλυπτὸν καὶ χωνευτὸν, καὶ νῦν ἀποδώσω αὐτό σοι. Καὶ ἀπέδωκε τὸ ἀργύριον τῇ μητρὶ αὐτοῦ· καὶ ἔλαβεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ διακοσίους ἀργυρίου, καὶ ἔδωκεν αὐτὸ ἀργυροκόπῳ, καὶ ἐποίησεν αὐτὸ γλυπτὸν καὶ χωνευτόν· καὶ ἐγενήθη ἐν οἴκῳ Μιχαία. Καὶ ὁ οἶκος Μιχαία αὐτῷ οἶκος Θεοῦ· καὶ ἐποίησεν ἐφὼδ καὶ θαραφίν· καὶ ἐπλήρωσε τὴν χεῖρα ἀπὸ ἑνὸς υἱῶν αὐτοῦ, καὶ ἐγένετο αὐτῷ εἰς ἱερέα. Ἐν δὲ ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἦν βασιλεὺς ἐν Ἰσραήλ· ἀνὴρ τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ ἐποίει. Καὶ ἐγενήθη νεανίας ἐκ Βηθλεέμ δήμου Ἰούδα, καὶ αὐτὸς Λευίτης, καὶ οὗτος παρῴκει ἐκεῖ. Καὶ ἐπορεύθη ὁ ἀνὴρ ἀπὸ Βηθλεὲμ τῆς πόλεως Ἰούδα παροικῆσαι ἐν ᾧ ἐὰν εὕρῃ τόπῳ· καὶ ἦλθεν ἕως ὄρους Ἐφραὶμ, καὶ ἕως οἴκου Μιχαία τοῦ ποιῆσαι ὁδὸν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Μιχαίας, πόθεν ἔρχῃ; καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Λευίτης εἰμὶ ἐκ Βηθλεὲμ Ἰούδα, καὶ ἐγὼ πορεύομαι παροικῆσαι ἐν ᾧ ἐὰν εὕρω τόπῳ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Μιχαίας, κάθου μετ' ἐμοῦ, καὶ γίνου μοι εἰς πατέρα καὶ εἰς ἱερέα, καὶ ἐγὼ δώσω σοι δέκα ἀργυρίου εἰς ἡμέραν, καὶ στολὴν ἱματίων, καὶ τὰ πρὸς ζωήν σου. Καὶ ἐπορεύθη ὁ Λευίτης, καὶ ἤρξατο παροικεῖν παρὰ τῷ ἀνδρί· καὶ ἐγενήθη ὁ νεανίας αὐτῷ ὡς εἷς ἀπὸ υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ ἐπλήρωσε Μιχαίας τὴν χεῖρα τοῦ Λευίτου, καὶ ἐγένετο αὐτῷ εἰς ἱερέα, καὶ ἐγένετο ἐν τῷ οἴκῳ Μιχαία. Καὶ εἶπε Μιχαίας, νῦν ἔγνων ὅτι ἀγαθυνεῖ μοι Κύριος, ὅτι ἐγένετό μοι ὁ

Λευίτης εἰς ἱερέα.

# 18

Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἦν βασιλεὺς ἐν Ἰσραήλ· καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἡ φυλὴ Δὰν ἐζήτει ἑαυτῇ κληρονομίαν κατοικῆσαι, ὅτι οὐκ ἐνέπεσεν αὐτῇ ἕως τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἐν μέσῳ φυλῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κληρονομία. Καὶ ἀπέστειλαν οἱ υἱοὶ Δὰν ἀπὸ δήμων αὐτῶν πέντε ἄνδρας υἱοὺς δυνάμεως, ἀπὸ Σαραὰ καὶ ἀπὸ Ἐσθαὸλ τοῦ κατασκέψασθαι τὴν γῆν καὶ ἐξιχνιάσαι αὐτήν· καὶ εἶπαν πρὸς αὐτοὺς, πορεύεσθε καὶ ἐξιχνιάσατε τὴν γῆν· καὶ ἦλθον ἕως ὄρους Ἐφραὶμ ἕως οἴκου Μιχαία· καὶ ηὐλίσθησαν αὐτοὶ ἐκεῖ ἐν οἴκῳ Μιχαία, καὶ αὐτοὶ ἐπέγνωσαν τὴν φωνὴν τοῦ νεανίσκου τοῦ Λευίτου, καὶ ἐξέκλιναν ἐκεῖ· καὶ εἶπαν αὐτῷ, τίς ἤνεγκέ σε ὧδε; καὶ σὺ τί ποιεῖς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ; καὶ τί σοι ὧδε; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, οὕτω καὶ οὕτως ἐποίησέ μοι Μιχαίας, καὶ ἐμισθώσατό με, καὶ ἐγενόμην αὐτῷ εἰς ἱερέα. Καὶ εἶπαν αὐτῷ, ἐπερώτησον δὴ ἐν τῷ Θεῷ, καὶ γνωσόμεθα εἰ εὐοδωθήσεται ἡ ὁδὸς ἡμῶν, ἐν ᾗ ἡμεῖς πορευόμεθα ἐν αὐτῇ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ ἱερεὺς, πορεύεσθε ἐν εἰρήνῃ· ἐνώπιον Κυρίου ἡ ὁδὸς ὑμῶν, ἐν ᾗ πορεύεσθε ἐν αὐτῇ. Καὶ ἐπορεύθησαν οἱ πέντε ἄνδρες, καὶ ἦλθον εἰς Λαισά· καὶ εἶδαν τὸν λαὸν τὸν ἐν μέσῳ αὐτῆς καθήμενον ἐπ’ ἐλπίδι, ὡς κρίσις Σιδωνίων ἡσυχάζουσα, καὶ οὐκ ἔστι διατρέπων ἢ καταισχύνων λόγον ἐν τῇ γῇ, κληρονόμος ἐκπιέζων θησαυροὺς, καὶ μακράν εἰσι Σιδωνίων, καὶ λόγον οὐκ ἔχουσι πρὸς ἄνθρωπον. Καὶ ἦλθον οἱ πέντε ἄνδρες πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῶν εἰς Σαραὰ καὶ Ἐσθαὸλ, καὶ εἶπον τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν, τί ὑμεῖς κάθησθε; Καὶ εἶπαν, ἀνάστητε, καὶ

ἀναβῶμεν ἐπ’ αὐτοὺς, ὅτι εἴδομεν τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ ἀγαθὴ σφόδρα, καὶ ὑμεῖς ἡσυχάζετε, μὴ ὀκνήσητε τοῦ πορευθῆναι, καὶ εἰσελθεῖν τοῦ κληρονομῆσαι τὴν γῆν. Καὶ ἡνίκα ἐὰν ἔλθητε, εἰσελεύσεσθε πρὸς λαὸν ἐπ’ ἐλπίδι, καὶ ἡ γῆ πλατεῖα, ὅτι ἔδωκεν αὐτὴν ὁ Θεὸς ἐν χειρὶ ὑμῶν· τόπος ὅπου οὐκ ἔστιν ἐκεῖ ὑστέρημα παντὸς ῥήματος τῶν ἐν τῇ γῇ. Καὶ ἀπῆραν ἐκεῖθεν ἀπὸ δήμων τοῦ Δὰν ἀπὸ Σαραὰ καὶ ἀπὸ Ἐσθαὸλ, ἑξακόσιοι ἄνδρες ἐζωσμένοι σκεύη παρατάξεως. Καὶ ἀνέβησαν καὶ παρενέβαλον ἐν Καριαθιαρὶμ ἐν Ἰούδα. διὰ τοῦτο ἐκλήθη ἐν ἐκείνῳ τῷ τόπῳ, παρεμβολὴ Δὰν, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· ἰδοὺ ὀπίσω Καριαθιαρίμ. Καὶ παρῆλθον ἐκεῖθεν ὅρος Ἐφραὶμ, καὶ ἦλθον ἕως οἴκου Μιχαία. Καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ πέντε ἄνδρες οἱ πορευόμενοι κατασκέψασθαι τὴν γῆν Λαισὰ, καὶ εἶπαν πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς, ἔγνωτε ὅτι ἐστὶν ἐν τῷ οἴκῳ τούτῳ ἐφὼδ καὶ θεραφὶν καὶ γλυπτὸν καὶ χωνευτόν· καὶ νῦν γνῶτε ὅ, τι ποιήσετε. Καὶ ἐξέκλιναν ἐκεῖ, καὶ εἰσῆλθον εἰς τὸν οἶκον τοῦ νεανίσκου τοῦ Λευίτου, εἰς τὸν οἶκον Μιχαία, καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν εἰς εἰρήνην. Καὶ οἱ ἑξακόσιοι ἄνδρες οἱ ἀνεζωσμένοι τὰ σκεύη τῆς παρατάξεως αὐτῶν ἑστῶτες παρὰ θύρας τῆς πύλης, οἱ ἐκ τῶν υἱῶν Δάν. Καὶ ἀνέβησαν οἱ πέντε ἄνδρες οἱ πορευθέντες κατασκέψασθαι τὴν γῆν, καὶ εἰσῆλθον ἐκεῖ εἰς οἶκον Μιχαία, καὶ ὁ ἱερεὺς ἑστώς. Καὶ ἔλαβον τὸ γλυπτὸν καὶ τὸ ἐφὼδ καὶ τὸ θεραφὶν καὶ τὸ χωνευτόν· καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς ὁ ἱερεὺς, τί ὑμεῖς ποιεῖτε; Καὶ εἶπαν αὐτῷ, κώφευσον, ἐπίθες τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὸ στόμα σου, καὶ δεῦρο μεθ’ ἡμῶν, καὶ γένου ἡμῖν εἰς πατέρα καὶ εἰς ἱερέα· μὴ ἀγαθὸν εἶναί σε ἱερέα οἴκου ἀνδρὸς ἑνὸς, ἢ γενέσθαι σε ἱερέα φυλῆς καὶ οἴκου εἰς δῆμον Ἰσραήλ; Καὶ ἠγαθύνθη ἡ καρδία τοῦ ἱερέως, καὶ ἔλαβε τὸ ἐφὼδ καὶ τὸ θεραφὶν καὶ τὸ γλυπτὸν καὶ τὸ χωνευτὸν, καὶ ἦλθεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ. Καὶ

ἐπέστρεψαν καὶ ἀπῆλθον, καὶ ἔθηκαν τὰ τέκνα καὶ τὴν κτῆσιν καὶ τὸ βάρος ἔμπροσθεν αὐτῶν. Αὐτοὶ ἐμάκρυναν ἀπὸ οἴκου Μιχαία, καὶ ἰδοὺ Μιχαίας καὶ οἱ ἄνδρες οἱ ἐν ταῖς οἰκίαις ταῖς μετὰ οἴκου Μιχαία ἐβόησαν, καὶ κατελάβοντο τοὺς υἱοὺς Δάν. Καὶ ἐπέστρεψαν οἱ υἱοὶ Δὰν τὸ πρόσωπον αὐτῶν, καὶ εἶπαν τῷ Μιχαίᾳ, τί ἐστί σοι, ὅτι ἐβόησας; Καὶ εἶπε Μιχαίας, ὅτι τὸ γλυπτόν μου, ὃ ἐποίησα, ἐλάβετε, καὶ τὸν ἱερέα, καὶ ἐπορεύθητε· καὶ τί μοι ἔτι; καὶ τί τοῦτο λέγετε πρὸς μὲ, τί κράζεις; Καὶ εἶπαν πρὸς αὐτὸν οἱ υἱοὶ Δὰν, μὴ ἀκουσθήτω δὴ φωνή σου μεθ’ ἡμῶν, μή ποτε συναντήσωσιν ὑμῖν ἄνδρες πικροὶ ψυχῇ, καὶ προσθήσουσι ψυχήν σου, καὶ τὴν ψυχὴν τοῦ οἴκου σου. Καὶ ἐπορεύθησαν οἱ υἱοὶ Δὰν εἰς ὁδὸν αὐτῶν· καὶ εἶδε Μιχαίας, ὅτι δυνατώτεροί εἰσιν ὑπὲρ αὐτόν· καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ οἱ υἱοὶ Δὰν ἔλαβον ὃ ἐποιησε Μιχαίας, καὶ τὸν ἱερέα ὃς ἦν αὐτῷ, καὶ ἦλθον ἐπὶ Λαισὰ, ἐπὶ λαὸν ἡσυχάζοντα καὶ πεποιθότα ἐπ’ ἐλπίδι· καὶ ἐπάταξαν αὐτοὺς ἐν στόματι ῥομφαίας, καὶ τὴν πόλιν ἐνέπρησαν ἐν πυρί. Καὶ οὐκ ἦν ὁ ῥυόμενος, ὅτι μακράν ἐστιν ἀπὸ Σιδωνίων, καὶ λόγος οὐκ ἔστιν αὐτοῖς μετὰ ἀνθρώπου· καὶ αὐτὴ ἐν τῇ κοιλάδι τοῦ οἴκου Ῥαάβ· καὶ ᾠκοδόμησαν τὴν πόλιν, καὶ κατεσκήνωσαν ἐν αὐτῇ, καὶ ἐκάλεσαν τὸ ὄνομα τῆς πόλεως Δὰν, ἐν ὀνόματι Δὰν πατρὸς αὐτῶν, ὃς ἐτέχθη τῷ Ἰσραήλ· καὶ ἦν Οὐλαμαΐς ὄνομα τῆς πόλεως τοπρότερον. Καὶ ἔστησαν ἑαυτοῖς οἱ υἱοὶ Δὰν τὸ γλυπτόν· καὶ Ἰωνάθαν υἱὸς Γηρσὼν υἱὸς Μανασσῆ αὐτὸς καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἦσαν ἱερεῖς τῇ φυλῇ Δὰν ἕως ἡμέρας τῆς ἀποικίας τῆς γῆς. Καὶ ἔθηκαν ἑαυτοῖς τὸ γλυπτὸν ὁ ἐποίησε Μιχαίας, πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἦν ὁ οἶκος τοῦ Θεοῦ ἐν Σηλὼμ· καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἦν βασιλεὺς ἐν Ἰσραήλ.

# 19

Καὶ ἐγένετο ἀνὴρ Λευίτης παροικῶν ἐν μηροῖς ὄρους Ἐφραὶμ, καὶ ἔλαβεν αὐτῷ γυναῖκα παλλακὴν ἀπὸ Βηθλεὲμ Ἰούδα. Καὶ ἐπορεύθη ἀπ᾽ αὐτοῦ ἡ παλλακὴ αὐτοῦ, καὶ ἀπῆλθε παρ᾽ αὐτοῦ εἰς οἶκον πατρὸς αὐτῆς εἰς Βηθλεὲμ Ἰούδα, καὶ ἦν ἐκεῖ ἡμέρας μηνῶν τεσσάρων. Καὶ ἀνέστη ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, καὶ ἐπορεύθη ὀπίσω αὐτῆς τοῦ λαλῆσαι ἐπὶ καρδίαν αὐτῆς, τοῦ ἐπιστρέψαι αὐτὴν αὐτῷ· καὶ νεανίας αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ζεῦγος ὄνων· ἡ δὲ εἰσήνεγκεν αὐτὸν εἰς οἶκον πατρὸς αὐτῆς· καὶ εἶδεν αὐτὸν ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος, καὶ ηὐφράνθη εἰς συνάντησιν αὐτοῦ. Καὶ κατέσχεν αὐτὸν ὁ γαμβρὸς αὐτοῦ ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος, καὶ ἐκάθισε μετ᾽ αὐτοῦ ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον, καὶ ηὐλίσθησαν ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ, καὶ ὤρθρισαν τοπρωΐ καὶ ἀνέστη τοῦ πορευθῆναι, καὶ εἶπεν ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος πρὸς τὸν νυμφίον αὐτοῦ, στήρισον τὴν καρδιάν σου ψωμῷ ἄρτου, καὶ μετὰ τοῦτο πορεύσεσθε. Καὶ ἐκάθισαν καὶ ἔφαγον οἱ δύο ἐπὶ τὸ αὐτὸ καὶ ἔπιον· καὶ εἶπεν ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος πρὸς τὸν ἄνδρα, ἄγε δὴ αὐλίσθητι, καὶ ἀγαθυνθήσεται ἡ καρδία σου. Καὶ ἀνέστη ὁ ἀνὴρ τοῦ πορεύεσθαι αὐτός· καὶ ἐβιάσατο αὐτὸν ὁ γαμβρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐκάθισε καὶ ηὐλίσθη ἐκεῖ. Καὶ ὤρθρισε τοπρωΐ τῇ ἡμέρᾳ τῇ πέμπτῃ τοῦ πορευθῆναι· καὶ εἶπεν ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος, στήρισον δὴ τὴν καρδίαν σου, καὶ στράτευσον ἕως κλῖναι τὴν ἡμέραν· καὶ ἔφαγον οἱ δύο. Καὶ ἀνέστη ὁ ἀνὴρ τοῦ πορευθῆναι αὐτὸς, καὶ ἡ παλλακὴ αὐτοῦ, καὶ ὁ νεανίας αὐτοῦ· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ γάμβρὸς αὐτοῦ ὁ πατὴρ τῆς νεάνιδος, ἰδοὺ δὴ ἠσθένησεν ἡμέρα εἰς τὴν ἑσπέραν· αὐλίσθητι ὧδε, καὶ ἀγαθυνθήσεται ἡ καρδία σου, καὶ

ὀρθριεῖτε αὔριον εἰς ὁδὸν ὑμῶν, καὶ πορεύσῃ εἰς τὸ σκήνωμά σου. Καὶ οὐκ εὐδόκησεν ὁ ἀνὴρ αὐλισθῆναι, καὶ ἀνέστη καὶ ἀπῆλθε, καὶ ἦλθεν ἕως ἀπέναντι Ἰεβοὺς, αὕτη ἐστὶν Ἰερουσαλὴμ, καὶ μετ' αὐτοῦ ζεῦγος ὄνων ἐπισεσαγμένων, καὶ ἡ παλλακὴ αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ. Καὶ ἦλθοσαν ἕως Ἰεβούς· καὶ ἡ ἡμέρα προβεβήκει σφόδρα, καὶ εἶπεν ὁ νεανίας πρὸς τὸν κύριον αὐτοῦ, δεῦρο δὴ καὶ ἐκκλίνωμεν εἰς πόλιν τοῦ Ἰεβουσὶ ταύτην, καὶ αὐλισθῶμεν ἐν αὐτῇ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ κύριος αὐτοῦ, οὐκ ἐκκλινοῦμεν εἰς πόλιν ἀλλοτρίαν, ἐν ᾗ οὐκ ἔστιν ἀπὸ υἱῶν Ἰσραὴλ ὧδε, καὶ παρελευσόμεθα ἕως Γαβαά. Καὶ εἶπε τῷ νεανίᾳ αὐτοῦ, δεῦρο καὶ ἐγγίσωμεν ἑνὶ τῶν τόπων, καὶ αὐλισθησόμεθα ἐν Γαβαᾷ ἢ ἐν Ῥαμᾷ. Καὶ παρῆλθον καὶ ἐπορεύθησαν, καὶ ἔδυ αὐτοῖς ὁ ἥλιος ἐχόμενα τῆς Γαβαὰ, ἥ ἐστιν ἐν τῷ Βενιαμίν. Καὶ ἐξέκλιναν ἐκεῖ τοῦ εἰσελθεῖν αὐλισθῆναι ἐν Γαβαᾷ· καὶ εἰσῆλθον, καὶ ἐκάθισαν ἐν τῇ πλατείᾳ τῆς πόλεως, καὶ οὐκ ἦν ἀνὴρ συνάγων αὐτοὺς εἰς οἰκίαν αὐλισθῆναι. Καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ πρεσβύτης ἤρχετο ἐξ ἔργων αὐτοῦ ἐξ ἀγροῦ ἐν ἑσπέρᾳ, καὶ ὁ ἀνὴρ ἦν ἐξ ὄρους Ἐφραὶμ, καὶ αὐτὸς παρῴκει ἐν Γαβαᾷ, καὶ οἱ ἄνδρες τοῦ τόπου υἱοὶ Βενιαμίν. Καὶ ᾖρε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ εἶδε τὸν ὁδοιπόρον ἄνδρα ἐν τῇ πλατείᾳ τῆς πόλεως· καὶ εἶπεν ὁ ἀνὴρ ὁ πρεσβύτης, ποῦ πορεύῃ, καὶ πόθεν ἔρχῃ; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, παραπορευόμεθα ἡμεῖς ἀπὸ Βηθλεὲμ Ἰούδα ἕως μηρῶν ὄρους Ἐφραίμ· ἐκεῖθεν ἐγώ εἰμι, καὶ ἐπορεύθην ἕως Βηθλεὲμ Ἰούδα, καὶ εἰς τὸν οἶκόν μου ἐγὼ πορεύομαι, καὶ οὐκ ἔστιν ἀνὴρ συνάγων με εἰς τὴν οἰκίαν. Καί γε ἄχυρα καὶ χορτάσματά ἐστι τοῖς ὄνοις ἡμῶν, καὶ ἄρτος καὶ οἶνός ἐστιν ἐμοὶ καὶ τῇ παιδίσκῃ καὶ τῷ νεανίσκῳ μετὰ τῶν παίδων σου· οὐκ ἔστιν ὑστέρημα παντὸς πράγματος. Καὶ εἶπεν ὁ ἀνὴρ πρεσβύτης, εἰρήνη σοι· πλὴν πᾶν τὸ ὑστέρημά σου ἐπ' ἐμὲ, πλὴν ἐν

τῇ πλατείᾳ οὐ μὴ αὐλισθήσῃ. Καὶ εἰσήνεγκεν αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ τόπον ἐποίησε τοῖς ὄνοις, καὶ αὐτοὶ ἐνίψαντο τοὺς πόδας αὐτῶν, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον. Αὐτοὶ δὲ ἀγαθύνοντες καρδίαν αὐτῶν· καὶ ἰδοὺ ἄνδρες τῆς πόλεως υἱοὶ παρανόμων ἐκύκλωσαν τὴν οἰκίαν, κρούοντες ἐπὶ τὴν θύραν· καὶ εἶπον πρὸς τὸν ἄνδρα τὸν κύριον τοῦ οἴκου τὸν πρεσβύτην, λέγοντες, ἐξένεγκε τὸν ἄνδρα ὅς εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν σου, ἵνα γνῶμεν αὐτόν. Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτοὺς ὁ ἀνὴρ ὁ κύριος τοῦ οἴκου, καὶ εἶπε, μὴ ἀδελφοί, μὴ κακοποιήσητε δὴ μετὰ τὸ εἰσελθεῖν τὸν ἄνδρα τοῦτον εἰς τὴν οἰκίαν μου, μὴ ποιήσητε τὴν ἀφροσύνην ταύτην. Ἴδε ἡ θυγάτηρ μου ἡ παρθένος, καὶ ἡ παλλακὴ αὐτοῦ· ἐξάξω αὐτὰς, καὶ ταπεινώσατε αὐτὰς, καὶ ποιήσατε αὐταῖς τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, καὶ τῷ ἀνδρὶ τούτῳ μή ποιήσητε τὸ ῥῆμα τῆς ἀφροσύνης ταύτης. Καὶ οὐκ εὐδόκησαν οἱ ἄνδρες τοῦ εἰσακοῦσαι αὐτοῦ· καὶ ἐπελάβετο ὁ ἀνηρ τῆς παλλακῆς αὐτοῦ, καὶ ἐξήγαγεν αὐτὴν πρὸς αὐτοὺς ἔξω· καὶ ἔγνωσαν αὐτὴν, καὶ ἐνέπαιζον ἐν αὐτῇ ὅλην τὴν νύκτα ἕως τοπρωΐ, καὶ ἐξαπέστειλαν αὐτὴν ὡς ἀνέβη τοπρωΐ. Καὶ ἦλθεν ἡ γυνὴ πρὸς τὸν ὄρθρον, καὶ ἔπεσε παρὰ τὴν θύραν τοῦ οἴκου οὗ ἦν αὐτῆς ἐκεῖ ὁ ἀνὴρ, ἕως οὗ διέφαυσε. Καὶ ἀνέστη ὁ ἀνὴρ αὐτῆς τοπρωΐ, καὶ ἤνοιξε τὰς θύρας τοῦ οἴκου, καὶ ἐξῆλθε τοῦ πορευθῆναι τὴν ὁδὸν αὐτοῦ· καὶ ἰδοὺ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἡ παλλακὴ πεπτωκυῖα παρὰ τὰς θύρας τοῦ οἴκου, καὶ αἱ χεῖρες αὐτῆς ἐπὶ τὸ πρόθυρον. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, ἀνάστα καὶ ἀπέλθωμεν· καὶ οὐκ ἀπεκρίθη, ὅτι ἦν νεκρά· καὶ ἔλαβεν αὐτὴν ἐπὶ τὸν ὄνον, καὶ ἐπορεύθη εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ ἔλαβε τὴν ῥομφαίαν, καὶ ἐκράτησε τὴν παλλακὴν αὐτοῦ· καὶ ἐμέλισεν αὐτὴν εἰς δώδεκα μέλη, καὶ ἀπέστειλεν αὐτὰ ἐν παντὶ ὁρίῳ Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο πᾶς ὁ βλέπων ἔλεγεν, οὐκ ἐγένετο καὶ οὐχ ἑώραται ἀπὸ ἡμέρας

ἀναβάσεως υἱῶν Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης ὡς αὐτή· θέσθε ὑμῖν αὐτοῖς βουλὴν ἐπ᾽ αὐτὴν, καὶ λαλήσατε.

# 20

Καὶ ἐξῆλθον πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐξεκκλησιάσθη ἡ συναγωγὴ ὡς ἀνὴρ εἷς ἀπὸ Δὰν καὶ ἕως Βηρσαβεὲ, καὶ γῇ τοῦ Γαλαὰδ, πρὸς Κύριον εἰς Μασσηφά. Καὶ ἐστάθησαν κατὰ πρόσωπον Κυρίου πᾶσαι αἱ φυλαὶ τοῦ Ἰσραὴλ ἐν ἐκκλησίᾳ τοῦ λαοῦ τοῦ Θεοῦ, τετρακόσιαι χιλιάδες ἀνδρῶν πεζῶν ἕλκοντες ῥομφαίαν. Καὶ ἤκουσαν οἱ υἱοὶ Βενιαμεὶν, ὅτι ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς Μασσηφά· Καὶ ἐλθόντες εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, λαλήσατε, ποῦ ἐγένετο ἡ πονηρία αὕτη; Καὶ ἀπεκριθη ὁ ἀνὴρ ὁ Λευίτης, ὁ ἀνὴρ τῆς γυναικὸς τῆς φονευθείσης, καὶ εἶπεν, εἰς Γαβαὰ τῆς Βενιαμὶν ἦλθον ἐγὼ καὶ ἡ παλλακή μου τοῦ αὐλισθῆναι, καὶ ἀνέστησαν ἐπ᾽ ἐμὲ οἱ ἄνδρες τῆς Γαβαὰ, καὶ ἐκύκλωσαν ἐπ᾽ ἐμὲ ἐπὶ τὴν οἰκίαν νυκτός· ἐμὲ ἠθέλησαν φονεῦσαι, καὶ τὴν παλλακήν μου ἐταπείνωσαν, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἐκράτησα τὴν παλλακήν μου, καὶ ἐμέλισα αὐτὴν, καὶ ἐξαπέστειλα ἐν παντὶ ὁρίῳ κληρονομίας υἱῶν Ἰσραήλ· ὅτι ἐποίησαν ζέμα καὶ ἀπόπτωμα ἐν Ἰσραήλ. Ἰδοὺ πάντες ὑμεῖς υἱοὶ Ἰσραὴλ, δότε ἑαυτοῖς λόγον καὶ βουλὴν ἐκεῖ. Καὶ ἀνέστη πᾶς ὁ λαὸς ὡς ἀνὴρ εἷς, λέγοντες, οὐκ ἀπελευσόμεθα ἀνὴρ εἰς σκήνωμα αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐπιστρέψομεν ἀνὴρ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ νῦν τοῦτο τὸ ῥῆμα, ὃ ποιηθήσεται τῇ Γαβαᾷ· ἀναβησόμεθα ἐπ᾽ αὐτὴν ἐν κλήρῳ. Πλὴν ληψόμεθα δέκα ἄνδρας τοῖς ἑκατὸν εἰς πάσας φυλὰς Ἰσραὴλ, καὶ ἑκατὸν τοῖς χιλίοις, καὶ χιλίους τοῖς μυρίοις, λαβεῖν ἐπισιτισμὸν τοῦ ποιῆσαι

ἐλθεῖν αὐτοὺς εἰς Γαβαὰ Βενιαμὶν, ποιῆσαι αὐτῇ κατὰ πᾶν τὸ ἀπόπτωμα, ὃ ἐποίησεν ἐν Ἰσραήλ. Καὶ συνήχθη πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ εἰς τὴν πόλιν ὡς ἀνὴρ εἷς. Καὶ ἀπέστειλαν αἱ φυλαὶ Ἰσραὴλ ἄνδρας ἐν πάσῃ φυλῇ Βενιαμεὶν, λέγοντες, τίς ἡ πονηρία αὕτη ἡ γενομένη ἐν ὑμῖν; Καὶ νῦν δότε τοὺς ἄνδρας υἱοὺς παρανόμων τοὺς ἐν Γαβαὰ, καὶ θανατώσομεν αὐτοὺς, καὶ ἐκκαθαριοῦμεν πονηρίαν ἀπὸ Ἰσραήλ· καὶ οὐκ εὐδόκησαν οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ συνήχθησαν οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ἀπὸ τῶν πόλεων αὐτῶν εἰς Γαβαὰ ἐξελθεῖν εἰς παράταξιν πρὸς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ ἐπεσκέπησαν οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀπὸ τῶν πόλεων εἰκοσιτρεῖς χιλιάδες ἀνὴρ ἕλκων ῥομφαίαν, ἐκτὸς τῶν οἰκούντων τὴν Γαβαά, οἱ ἐπεσκέπησαν ἑπτακόσιοι ἄνδρες ἐκλεκτοὶ ἐκ παντὸς λαοῦ ἀμφοτεροδέξιοι· πάντες οὗτοι σφενδονῆται ἐν λίθοις πρὸς τρίχα, καὶ οὐκ ἐξαμαρτάνοντες. Καὶ ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἐπεσκέπησαν ἐκτὸς τοῦ Βενιαμὶν τετρακόσιαι χιλιάδες ἀνδρῶν ἑλκόντων ῥομφαίαν· πάντες οὗτοι ἄνδρες παρατάξεως. Καὶ ἀνέστησαν καὶ ἀνέβησαν εἰς Βαιθὴλ, καὶ ἠρώτησαν ἐν τῷ Θεῷ· καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, τίς ἀναβήσεται ἡμῖν ἐν ἀρχῇ εἰς παράταξιν πρὸς υἱοὺς Βενιαμίν; καὶ εἶπε Κύριος, Ἰούδας ἐν ἀρχῇ ἀναβήσεται ἀφηγούμενος. Καὶ ἀνέστησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τοπρωΐ, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ Γαβαά. Καὶ ἐξῆλθον πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ εἰς παράταξιν πρὸς Βενιαμὶν, καὶ συνῆψαν αὐτοῖς ἐπὶ Γαβαά. Καὶ ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ἀπὸ τῆς Γαβαὰ, καὶ διέφθειραν ἐν Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ δύο καὶ εἴκοσι χιλιάδας ἀνδρῶν ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ ἐνίσχυσαν ἀνῆρ Ἰσραὴλ, καὶ προσέθηκαν συνάψαι παράταξιν ἐν τῷ τόπῳ ὅπου συνῆψαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ πρώτῃ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἔκλαυσαν ἐνώπιον Κυρίου ἕως ἑσπέρας, καὶ ἠρώτησαν ἐν Κυρίῳ, λέγοντες, εἰ

προσθῶμεν ἐγγίσαι εἰς παράταξιν πρὸς υἱοὺς Βενιαμὶν ἀδελφοὺς ἡμῶν; καὶ εἶπε Κύριος, ἀνάβητε πρὸς αὐτούς. Καὶ προσῆλθον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς υἱοὺς Βενιαμὶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ. Καὶ ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν εἰς συνάντησιν αὐτοὶς ἀπὸ τῆς Γαβαὰ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ, καὶ διέφθειραν ἀπὸ υἱῶν Ἰσραὴλ ἔτι ὀκτωκαίδεκα χιλιάδας ἀνδρῶν ἐπὶ τὴν γῆν· πάντες οὗτοι ἕλκοντες ῥομφαίαν. Καὶ ἀνέβησαν πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καὶ πᾶς ὁ λαὸς, καὶ ἦλθον εἰς Βαιθήλ· καὶ ἔκλαυσαν, καὶ ἐκάθισαν ἐκεῖ ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἐνήστευσαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἕως ἑσπέρας, καὶ ἀνήνεγκαν ὁλοκαυτώσεις καὶ τελείας ἐνώπιον Κυρίου, ὅτι ἐκεῖ κιβωτὸς διαθήκης Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ Φινεὲς υἱὸς Ἐλεάζαρ υἱοῦ Ἀαρὼν παρεστηκὼς ἐνώπιον αὐτῆς ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις· καὶ ἐπηρώτησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν Κυρίῳ, λέγοντες, εἰ προσθῶμεν ἔτι ἐξελθεῖν εἰς παράταξιν πρὸς υἱοὺς Βενιαμὶν ἀδελφοὺς ἡμῶν; καὶ εἶπε Κύριος, ἀνάβητε, αὔριον δώσω αὐτοὺς εἰς χεῖρας ὑμῶν. Καὶ ἔθηκαν οἱ υἱοῖ Ἰσραὴλ ἔνεδρα τῇ Γαβαὰ κύκλῳ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς υἱοὺς Βενιαμὶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καὶ συνῆψαν πρὸς τὴν Γαβαὰ ὡς ἅπαξ καὶ ἅπαξ. Καὶ ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν εἰς συνάντησιν τοῦ λαοῦ, καὶ ἐξεκενώθησαν ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἤρξαντο πατάσσειν ἀπὸ τοῦ λαοῦ τραυματίας ὡς ἅπαξ καὶ ἅπαξ ἐν ταῖς ὁδοῖς, ἥ ἐστι μία ἀναβαίνουσα εἰς Βαιθὴλ, καὶ μία εἰς Γαβαὰ ἐν ἀγρῷ, ὡς τριάκοντα ἄνδρας ἐν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν, πίπτουσιν ἐνώπιον ἡμῶν ὡς τὸ πρῶτον. καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἶπαν, Φύγωμεν, καὶ ἐκκενώσωμεν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πόλεως εἰς τὰς ὁδούς· καὶ ἐποίησαν οὕτω. Καὶ πᾶς ἀνὴρ ἀνέστη ἐκ τοῦ τόπου αὐτῶν, καὶ συνῆψαν ἐν Βάαλ Θαμάρ· καὶ τὸ ἔνεδρον Ἰσραὴλ ἐπήρχετο ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ ἀπὸ Μαραγαβέ. Καὶ ἦλθον ἐξεναντίας Γαβαὰ δέκα χιλιάδες

ἀνδρῶν ἐκλεκτῶν ἐκ παντὸς Ἰσραήλ· καὶ παράταξις βαρεῖα· καὶ αὐτοὶ οὐκ ἔγνωσαν, ὅτι φθάνει ἀπ᾽ αὐτοὺς ἡ κακία. Καὶ ἐπάταξε Κύριος τὸν Βενιαμὶν ἐνώπιον υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ διέφθειραν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐκ τοῦ Βενιαμὶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἴκοσι καὶ πέντε χιλιάδας καὶ ἑκατὸν ἄνδρας· πάντες οὗτοι εἶλκον ῥομφαίαν. Καὶ εἶδον οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ὅτι ἐπλήγησαν· καὶ ἔδωκεν ἀνὴρ Ἰσραὴλ τῷ Βενιαμὶν τόπον, ὅτι ἤλπισαν πρὸς τὸ ἔνεδρον ὃ ἔθηκαν ἐπὶ τῇ Γαβᾷ. Καὶ ἐν τῷ αὐτοὺς ὑποχωρῆσαι, καὶ τὸ ἔνεδρον ἐκινήθη· καὶ ἐξέτειναν ἐπὶ τὴν Γαβαὰ, καὶ ἐξεχύθη τὸ ἔνεδρον, καὶ ἐπάταξαν τὴν πόλιν ἐν στόματι ῥομφαίας. Καὶ σημεῖον ἦν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ μετὰ τοῦ ἐνέδρου τῆς μάχης ἀνενέγκαι αὐτοὺς σύσσημον καπνοῦ ἀπὸ τῆς πόλεως. Καὶ εἶδον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, ὅτι προκατελάβετο τὸ ἔνεδρον τὴν Γαβαὰ, καὶ ἔστησαν ἐν τῇ παρατάξει· καὶ Βενιαμὶν ἤρξατο πατάσσειν τραυματίας ἐν ἀνδράσιν Ἰσραὴλ ὡς τριάκοντα ἄνδρας· ὅτι εἶπαν, πάλιν πτώσει πίπτουσιν ἐνώπιον ἡμῶν ὡς ἡ παράταξις ἡ πρώτη. Καὶ τὸ σύσσημον ἀνέβη ἐπὶ πλεῖον ἐπὶ τῆς πόλεως ὡς στύλος καπνοῦ· καὶ ἐπέβλεψε Βενιαμὶν ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ ἀνέβη ἡ συντέλεια τῆς πόλεως ἕως οὐρανοῦ. Καὶ ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἐπέστρεψε· καὶ ἔσπευσαν ἄνδρες Βενιαμὶν, ὅτι εἶδον ὅτι συνήντησεν ἐπ᾽ αὐτοὺς ἡ πονηρία. Καὶ ἐπέβλεψαν ἐνώπιον υἱῶν Ἰσραὴλ εἰς τὴς ὁδὸν τῆς ἐρήμου, καὶ ἔφυγον· καὶ ἡ παράταξις ἔφθασεν ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ οἱ ἀπὸ τῶν πόλεων διέφθειρον αὐτοὺς ἐν μέσῳ αὐτῶν. Καὶ κατέκοπτον τὸν Βενιαμὶν, καὶ ἐδίωξαν αὐτὸν ἀπὸ Νουὰ κατὰ πόδα αὐτοῦ ἕως ἀπέναντι Γαβαὰ πρὸς ἀνατολὰς ἡλίου. Καὶ ἔπεσον ἀπὸ Βενιαμὶν ὀκτωκαίδεκα χιλιάδες ἀνδρῶν· οἱ πάντες οὗτοι ἄνδρες δυνάμεως. Καὶ ἐπέβλεψαν οἱ λοιποὶ, καὶ ἔφευγον εἰς τὴν ἔρημον πρὸς τὴν πέτραν τοῦ Ῥέμμών· καὶ ἐκαλαμήσαντο ἐξ αὐτῶν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πεντακισχιλίους ἄνδρας· καὶ κατέβησαν

ὀπίσω αὐτῶν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἕως Γεδᾶν, καὶ ἐπάταξαν ἐξ αὐτῶν δισχιλίους ἄνδρας. Καὶ ἐγένοντο πάντες οἱ πεπτωκότες ἀπὸ Βενιαμὶν, εἰκοσιπέντε χιλιάδες ἀνδρῶν ἑλκόντων ῥομφαίαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· οἱ πάντες οὗτοι ἄνδρες δυνάμεως. Καὶ ἐπέβλεψαν οἱ λοιποὶ, καὶ ἔφυγον εἰς τὴν ἔρημον πρὸς τὴν πέτραν τοῦ Ῥεμμὼν ἑξακόσιοι ἄνδρες, καὶ ἐκάθισαν ἐν πέτρᾳ Ῥεμμὼν τέσσαρας μῆνας. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπέστρεψαν πρὸς υἱοὺς Βενιαμὶν, καὶ ἐπάταξαν αὐτοὺς ἐν στόματι ῥομφαίας ἀπὸ πόλεως Μεθλὰ καὶ ἕως κτήνους, καὶ ἕως παντὸς τοῦ εὑρισκομένου εἰς πάσας τὰς πόλεις· καὶ τὰς πόλεις τὰς εὑρεθείσας ἐνέπρησαν ἐν πυρί.

# 21

Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ὤμοσαν ἐν Μασσηφὰθ, λέγοντες, ἀνὴρ ἐξ ἡμῶν οὐ δώσει θυγατέρα αὐτοῦ τῷ Βενιαμὶν εἰς γυναῖκα. Καὶ ἦλθεν ὁ λαὸς εἰς Βαιθὴλ, καὶ ἐκάθισαν ἐκεῖ ἕως ἑσπέρας ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ· καὶ ᾖραν φωνὴν αὐτῶν, καὶ ἔκλαυσαν κλαυθμὸν μέγαν, καὶ εἶπαν, εἰς τί Κύριε Θεὲ Ισραὴλ ἐγενήθη αὕτη, τοῦ ἐπισκεπῆναι σήμερον ἀπὸ Ἰσραὴλ φυλὴν μίαν; Καὶ ἐγένετο τῇ ἐπαύριον, καὶ ὥρθρισεν ὁ λαὸς, καὶ ᾠκοδόμησαν ἐκεῖ θυσιαστήριον, καὶ ἀνήνεγκαν ὁλοκαυτώσεις καὶ τελείας. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, τίς οὐκ ἀνέβη ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἀπὸ πασῶν φυλῶν Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον; ὅτι ὁ ὅρκος μέγας ἦν τοῖς οὐκ ἀναβεβηκόσι πρὸς Κύριον εἰς Μασσηφὰθ, λέγοντες, θανάτῳ θανατωθήσεται. Καὶ παρεκλήθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Βενιαμὶν ἀδελφὸν αὐτῶν, καὶ εἶπαν, ἐξεκόπη σήμερον φυλὴ μία ἀπὸ Ἰσραήλ. Τί ποιήσωμεν αὐτοῖς τοῖς περισσοῖς τοῖς ὑπολειφθεῖσιν εἰς γυναῖκας; καὶ ἡμεῖς ὠμόσαμεν ἐν

Κυρίῳ τοῦ μὴ δοῦναι αὐτοῖς ἀπὸ τῶν θυγατέρων ἡμῶν εἰς γυναῖκας. Καὶ εἶπαν, τίς εἷς ἀπὸ φυλῶν Ἰσραὴλ, ὃς οὐκ ἀνέβη πρὸς Κύριον εἰς Μασσηφάθ; Καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦλθεν ἀνὴρ εἰς τὴν παρεμβολὴν ἀπὸ Ἰαβεῖς Γαλαὰδ εἰς τὴν ἐκκλησίαν. Καὶ ἐπεσκέπη ὁ λαὸς, καὶ οὐκ ἦν ἐκεῖ ἀνὴρ ἀπὸ οἰκούντων Ἰαβὶς Γαλαάδ. Καὶ ἀπέστειλεν ἐκεῖ ἡ συναγωγὴ δώδεκα χιλιάδας ἀνδρῶν ἀπὸ υἱῶν τῆς δυνάμεως, καὶ ἐνετείλαντο αὐτοῖς λέγοντες, πορεύεσθε καὶ πατάξατε τοὺς οἰκοῦντας Ἰαβεῖς Γαλαὰδ ἐν στόματι ῥομφαίας. Καὶ τοῦτο ποιήσετε· πᾶν ἄρσεν καὶ πᾶσαν γυναῖκα εἰδυῖαν κοίτην ἄρσενος, ἀναθεματιεῖτε· τὰς δὲ παρθένους, περιποιήσεσθε· καὶ ἐποίησαν οὕτως. Καὶ εὗρον ἀπὸ οἰκούντων Ἰαβεῖς Γαλαὰδ, τετρακοσίας νεάνιδας παρθένους, αἵτινες οὐκ ἔγνωσαν ἄνδρα εἰς κοίτην ἄρσενος, καὶ ἤνεγκαν αὐτὰς εἰς τὴν παρεμβολὴν εἰς Σηλὼμ τὴν ἐν γῇ Χαναάν. Καὶ ἀπέστειλαν πᾶσα ἡ συναγωγὴ, καὶ ἐλάλησαν πρὸς τοὺς υἱοὺς Βενιαμεὶν ἐν τῇ πέτρᾳ Ῥεμμὼν, καὶ ἐκάλεσαν αὐτοὺς εἰς εἰρήνην. Καὶ ἐπέστρεψε Βενιαμὶν πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ ἔδωκαν αὐτοῖς οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὰς γυναῖκας ἃς ἐζωοποίησαν ἀπὸ τῶν θυγατέρων Ἰαβὶς Γαλαάδ· καὶ ἤρεσεν αὐτοῖς οὕτω. Καὶ ὁ λαὸς παρεκλήθη ἐπὶ τῷ Βενιαμὶν, ὅτι ἐποίησε Κύριος διακοπὴν ἐν ταῖς φυλαῖς Ἰσραήλ. Καὶ εἶπον οἱ πρεσβύτεροι τῆς συναγωγῆς, τί ποιήσωμεν τοῖς περισσοῖς εἰς γυναῖκας; ὅτι ἠφανίσθη ἀπὸ Βενιαμὶν γυνή. Καὶ εἶπαν, κληρονομία διασωζομένων τῶν Βενιαμίν· καὶ οὐκ ἐξαλειφθήσεται φυλὴ ἀπὸ Ἰσραὴλ, ὅτι ἡμεῖς οὐ δυνησόμεθα δοῦναι αὐτοῖς γυναῖκας ἀπὸ τῶν θυγατέρων ἡμῶν, ὅτι ὠμόσαμεν ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ, λέγοντες, ἐπικατάρατος ὁ διδοὺς γυναῖκα τῷ Βενιαμίν. Καὶ εἶπαν, ἰδοὺ δὴ ἑορτὴ Κυρίου ἐν Σηλὼμ ἀφ’ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας, ἥ ἐστιν ἀπὸ Βορρᾶ τῆς Βαιθὴλ, κατ’ ἀνατολὰς ἡλίου ἐπὶ τῆς ὁδοῦ

τῆς ἀναβαινούσης ἀπὸ Βαιθὴλ εἰς Συχὲμ, καὶ ἀπὸ Νότου τῆς Λεβωνᾶ. Καὶ ἐνετείλαντο τοῖς υἱοῖς Βενιαμεὶν, λέγοντες, πορεύεσθε καὶ ἐνεδρεύσατε ἐν τοῖς ἀμπελῶσι, καὶ ὄψεσθε, καὶ ἰδοὺ, ἐὰν ἐξέλθωσιν αἱ θυγατέρες τῶν οἰκούντων Σηλὼ χορεύειν ἐν τοῖς χοροῖς, καὶ ἐξελεύσεσθε ἐκ τῶν ἀμπελώνων, καὶ ἁρπάσατε αὐτοῖς ἀνὴρ γυναῖκα ἀπὸ τῶν θυγατέρων Σηλὼμ, καὶ πορεύεσθε εἰς γῆν Βενιαμίν. Καὶ ἔσται ὅταν ἔλθωσιν οἱ πατέρες αὐτῶν ἢ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν κρίνεσθαι πρὸς ἡμᾶς, καὶ ἐροῦμεν αὐτοῖς, ἔλεος ποιήσατε ἡμῖν αὐτὰς, ὅτι οὐκ ἐλάβομεν ἀνὴρ γυναῖκα αὐτοῦ ἐν τῇ παρατάξει, ὅτι οὐχ ὑμεῖς ἐδώκατε αὐτοῖς, ὡς κλῆρος πλημμελήσατε. Καὶ ἐποίησαν οὕτως οἱ υἱοὶ Βενιαμίν· καὶ ἔλαβον γυναῖκας εἰς ἀριθμὸν αὐτῶν ἀπὸ τῶν χορευουσῶν ὧν ἥρπασαν· καὶ ἐπορεύθησαν, καὶ ὑπέστρεψαν εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτῶν· καὶ ᾠκοδόμησαν τὰς πόλεις, καὶ ἐκάθισαν ἐν αὐταῖς. Καὶ περιεπάτησαν ἐκεῖθεν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀνὴρ εἰς φυλὴν αὐτοῦ καὶ εἰς συγγένειαν αὐτοῦ· καὶ ἐξῆλθον ἐκεῖθεν ἀνὴρ εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. Ἐν δὲ ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἦν βασιλεὺς ἐν Ἰσραήλ· ἀνὴρ τὸ εὐθὲς ἐνώπιον αὐτοῦ ἐποίει.

# ΡΟΥΘ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο ἐν τῷ κρίνειν τοὺς κριτὰς, καὶ ἐγένετο λιμὸς ἐν τῇ γῇ· καὶ ἐπορεύθη ἀνὴρ ἀπὸ Βηθλεὲμ Ἰούδα τοῦ παροικῆσαι ἐν ἀγρῷ Μωὰβ, αὐτὸς καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, καὶ οἱ δύο υἱοὶ αὐτοῦ. Καὶ ὄνομα τῷ ἀνδρὶ Ἐλιμέλεχ, καὶ ὄνομα τῇ γυναικὶ αὐτοῦ Νωεμὶν, καὶ ὄνομα τοῖς δυσὶν υἱοῖς αὐτοῦ Μααλὼν, καὶ Χελαιὼν, Ἐφραθαῖοι ἐκ Βηθλεὲμ τῆς Ἰούδα· καὶ ἦλθοσαν εἰς ἀγρὸν Μωὰβ, καὶ ἦσαν ἐκεῖ. Καὶ ἀπέθανεν Ἐλιμέλεχ ὁ ἀνὴρ τῆς Νωεμὶν, καὶ κατελείφθη αὕτη καὶ οἱ δύο υἱοὶ αὐτῆς. Καὶ ἐλάβοσαν ἑαυτοῖς γυναῖκας Μωαβίτιδας· ὄνομα τῇ μιᾷ, Ὀρφά· καὶ ὄνομα τῇ δευτέρᾳ, Ῥούθ· καὶ κατῴκησαν ἐκεῖ ὡς δέκα ἔτη. Καὶ ἀπέθανον καί γε ἀμφότεροι Μααλὼν καὶ Χελαιών· καὶ κατελείφθη ἡ γυνὴ ἀπὸ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς, καὶ ἀπὸ τῶν δύο υἱῶν αὐτῆς. Καὶ ἀνεστη αὕτη καὶ αἱ δύο νύμφαι αὐτῆς, καὶ ἀπέστρεψαν ἐξ ἀγροῦ Μωὰβ, ὅτι ἤκουσεν ἐν ἀγρῷ Μωὰβ ὅτι ἐπέσκεπται Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, δοῦναι αὐτοῖς ἄρτους. Καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου οὗ ἦν ἐκεῖ, καὶ αἱ δύο νύμφαι αὐτῆς μετ’ αὐτῆς· καὶ ἐπορεύοντο ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἐπιστρέψαι εἰς τὴν γῆν Ἰούδα. Καὶ εἶπε Νωεμὶν, ταῖς δυσὶ νύμφαις αὐτῆς, πορεύεσθε δὴ,

ἀποστράφητε ἑκάστη εἰς οἶκον μητρὸς αὐτῆς· ποιήσαι Κύριος μεθ’ ὑμῶν ἔλεος, καθὼς ἐποιήσατε μετὰ τῶν τεθνηκότων καὶ μετ’ ἐμοῦ· Δῴη Κύριος ὑμῖν καὶ εὕρητε ἀνάπαυσιν ἑκάστη ἐν οἴκῳ ἀνδρὸς αὐτῆς· καὶ κατεφίλησεν αὐτάς· καὶ ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν, καὶ ἔλαυσαν. Καὶ εἶπαν αὐτῇ, μετὰ σου ἐπιστρέφομεν εἰς τὸν λαόν σου. Καὶ εἶπε Νωεμὶν, ἐπιστράφητε δὴ θυγατέρες μου· καὶ ἱνατί πορεύεσθε μετ’ ἐμοῦ; μὴ ἔτι μοι υἱοὶ ἐν τῇ κοιλίᾳ μου, καὶ ἔσονται ὑμῖν εἰς ἄνδρας; Ἐπιστράφητε δὴ θυγατέρες μου, διότι γεγήρακα τοῦ μὴ εἶναι ἀνδρί· ὅτι εἶπα, ὅτι ἐστί μοι ὑπόστασις τοῦ γενηθῆναί με ἀνδρὶ, καὶ τέξομαι υἱούς· Μὴ αὐτοὺς προσδέξεσθε ἕως οὗ ἁδρυνθώσιν; ἢ αὐτοῖς κατασχεθήσεσθε τοῦ μὴ γενέσθαι ἀνδρί; μὴ δὴ θυγατέρες μου, ὅτι ἐπικράνθη μοι ὑπὲρ ὑμᾶς, ὅτι ἐξῆλθεν ἐν ἐμοὶ χεὶρ Κυρίου. Καὶ ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν, καὶ ἔκλαυσαν ἔτι· καὶ κατεφίλησεν Ὀρφὰ τὴν πενθερὰν αὐτῆς, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὸν λαὸν αὐτῆς· Ῥοὺθ δὲ ἠκολούθησεν αὐτῇ. Καὶ εἶπε Νωεμῖν πρὸς Ῥοὺθ, ἰδοὺ ἀνέστρεψε σύννυμφός σου πρὸς λαὸν αὐτῆς καὶ πρὸς τοὺς θεοὺς αὐτῆς· ἐπιστράφηθι δὴ καὶ σὺ ὀπίσω τῆς συννύμφου σου. Εἶπε δὴ Ῥοῦθ, μὴ ἀπάντησαί μοι τοῦ καταλιπεῖν σε, ἢ ἀποστρέψαι ὄπισθέν σου, ὅτι σὺ ὅπου ἐὰν πορευθῇς, πορεύσομαι, καὶ οὗ ἐὰν αὐλισθῇς, αὐλισθήσομαι· ὁ λαός σου, λαός μου, καὶ ὁ Θεός σου, Θεός μου· Καὶ οὗ ἐὰν ἀποθάνῃς, ἀποθανοῦμαι, κἀκεῖ ταφήσομαι· τάδε ποιήσαι μοι Κύριος, καὶ τάδε προσθείη, ὅτι θάνατος διαστελεῖ ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ. Ἰδοῦσα δὲ Νωεμὶν ὅτι κραταιοῦται αὐτὴ τοῦ πορεύεσθαι μετ’ αὐτῆς, ἐκόπασε τοῦ λαλῆσαι πρὸς αὐτὴν ἔτι. Ἐπορεύθησαν δὲ ἀμφότεραι, ἕως τοῦ παραγενέσθαι αὐτὰς εἰς Βηθλεέμ· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐλθεῖν αὐτὰς εἰς Βηθλεὲμ, καὶ ἤχησε πᾶσα ἡ πόλις ἐπ’ αὐταῖς, καὶ εἶπον, εἰ αὕτη ἐστὶ Νωεμίν; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὰς, μὴ δὴ καλεῖτέ με Νωεμίν·

καλέσατέ με πικρὰν, ὅτι ἐπικράνθη ἐν ἐμοὶ ὁ ἱκανὸς σφόδρα. Ἐγὼ πλήρης ἐπορεύθην, καὶ κενὴν ἀπέστρεψέ με ὁ Κύριος· καὶ ἱνατί καλεῖτέ με Νωεμὶν, καὶ Κύριος ἐταπείνωσέ με, καὶ ὁ ἱκανὸς ἐκάκωσέ με; Καὶ ἐπέστρεψε Νωεμὶν καὶ Ῥοὺθ ἡ Μωαβίτις ἡ νύμφη αὐτῆς ἐπιστρέφουσαι ἐξ ἀγροῦ Μωάβ· αὗται δὲ παρεγενήθησαν εἰς Βηθλεὲμ ἐν ἀρχῇ θερισμοῦ κριθῶν.

# 2

Καὶ τῇ Νωεμὶν ἀνὴρ γνώριμος τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, ὁ δὲ ἀνὴρ δυνατὸς ἰσχύϊ ἐκ τῆς συγγενείας Ἐλιμέλεχ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Βοόζ. Καὶ εἶπε Ῥοὺθ ἡ Μωαβίτις πρὸς Νωεμὶν, πορεῦθω δὴ εἰς ἀγρὸν, καὶ συνάξω ἐν τοῖς στάχυσι κατόπισθεν οὗ ἐὰν εὕρω χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. εἶπε δὲ αὐτῇ, πορεύου, θύγατερ. Καὶ ἐπορεύθη· καὶ ἐλθοῦσα συνέλεξεν ἐν τῷ ἀγρῷ κατόπισθε τῶν θεριζόντων· καὶ περιέπεσε περιπτώματι τῇ μερίδι τοῦ ἀγροῦ Βοὸζ, τοῦ ἐκ τῆς συγγενείας Ἐλιμέλεχ. Καὶ ἰδοὺ Βοὸζ ἦλθεν ἐκ Βηθλεὲμ, καὶ εἶπε τοῖς θερίζουσι, Κύριος μεθ’ ὑμῶν· καὶ εἶπον αὐτῷ, εὐλογήσαι σε Κύριος. Καὶ εἶπε Βοὸζ τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ τῷ ἐφεστῶτι ἐπὶ τοὺς θερίζοντας, τίνος ἡ νεᾶνις αὕτη; Καὶ ἀπεκρίθη τὸ παιδάριον τὸ ἐφεστὸς ἐπὶ τοὺς θερίζοντας, καὶ εἶπεν, ἡ παῖς ἡ Μωαβίτις ἐστὶν ἡ ἀποστραφεῖσα μετὰ Νωεμὶν ἐξ ἀγροῦ Μωάβ· Καὶ εἶπε, συλλέξω δὴ καὶ συνάξω ἐν τοῖς δράγμασιν ὄπισθεν τῶν θεριζόντων· καὶ ἦλθε καὶ ἔστη ἀπὸ πρωΐθεν καὶ ἕως ἑσπέρας, οὐ κατέπαυσεν ἐν τῷ ἀγρῷ μικρόν. Καὶ εἶπε Βοὸζ πρὸς Ῥοὺθ, οὐκ ἤκουσας θύγατερ; μὴ πορευθῇς ἐν ἀγρῷ συλλέξαι ἑτέρῳ· καὶ σὺ οὐ πορεύσῃ ἐντεῦθεν, ὧδε κολλήθητι μετὰ τῶν κορασίων μου. Οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς τὸν ἀγρὸν οὗ ἐὰν

θερίζωσι, καὶ πορεύσῃ κατόπισθεν αὐτῶν· ἰδοὺ ἐνετειλάμην τοῖς παιδαρίοις τοῦ μὴ ἅψασθαί σου· καὶ ὅτε διψήσεις καὶ πορευθήσῃ εἰς τὰ σκεύη, καὶ πίεσαι ὅθεν ἐὰν ὑδρεύωνται τὰ παιδάρια. Καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς, καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τί ὅτι εὗρον χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου τοῦ ἐπιγνῶναί με, καὶ ἐγώ εἰμι ξένη; Καὶ ἀπεκρίθη Βοὸζ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, ἀπαγγελίᾳ ἀπηγγέλη μοι ὅσα πεποίηκας μετὰ τῆς πενθερᾶς σου μετὰ τὸ ἀποθανεῖν τὸν ἄνδρα σου· καὶ πῶς κατέλιπες τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου, καὶ τὴν γῆν γενέσεώς σου, καὶ ἐπορεύθης πρὸς λαὸν ὃν οὐκ ᾔδεις ἐχθὲς καὶ τρίτης. Ἀποτίσαι Κύριος τὴν ἐργασίαν σου· γένοιτο ὁ μισθός σου πλήρης παρὰ Κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ, πρὸς ὃν ἦλθες πεποιθέναι ὑπὸ τὰς πτέρυγας αὐτοῦ. Ἡ δὲ εἶπεν, εὕροιμι χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου κύριε, ὅτι παρεκάλεσάς με, καὶ ὅτι ἐλάλησας ἐπὶ καρδίαν τῆς δούλης σου, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἔσομαι ὡς μία τῶν παιδισκῶν σου. Καὶ εἶπεν αὐτῇ Βοὸζ, ἤδη ὥρα τοῦ φαγεῖν, πρόσελθε ὧδε καὶ φάγεσαι τῶν ἄρτων, καὶ βάψεις τὸν ψωμόν σου ἐν τῷ ὄξει· καὶ ἐκάθισε Ῥοὺθ ἐκ πλαγίων τῶν θεριζόντων· καὶ ἐβούνισεν αὐτῇ Βοὸζ ἄλφιτον, καὶ ἔφαγε καὶ ἐνεπλήσθη καὶ κατέλιπε, Καὶ ἀνέστη τοῦ συλλέγειν· καὶ ἐνετείλατο Βοὸζ τοῖς παιδαρίοις αὐτοῦ, λέγων, καί γε ἀναμέσον τῶν δραγμάτων συλλεγέτω, καὶ μὴ καταισχύνητε αὐτήν· Καὶ βαστάζοντες βαστάσατε αὐτῇ, καί γε παραβάλλοντες παραβαλεῖτε αὐτῇ ἐκ τῶν βεβουνισμένων, καὶ φάγεται, καὶ συλλέξει, καὶ οὐκ ἐπιτιμήσετε αὐτῇ. Καὶ συνέλεξεν ἐν τῷ ἀγρῷ ἕως ἑσπέρας, καὶ ἐῤῥάβδισεν ἃ συνέλεξε, καὶ ἐγενήθη ὡς οἰφὶ κριθῶν. Καὶ ἦρε καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν· καὶ εἶδεν ἡ πενθερὰ αὐτῆς ἃ συνέλεξε· καὶ ἐξενέγκασα Ῥοὺθ ἔδωκεν αὐτῇ ἃ κατέλιπεν ἐξ ὧν ἐνεπλήσθη. Καὶ εἶπεν αὐτῇ ἡ πενθερὰ αὐτῆς, ποῦ συνέλεξας σήμερον καὶ ποῦ

ἐποίησας; εἴη ὁ ἐπιγνούς σε εὐλογημένος· καὶ ἀνήγγειλε Ῥοὺθ τῇ πενθερᾷ αὐτῆς ποῦ ἐποίησε, καὶ εἶπε, τὸ ὄνομα τοῦ ἀνδρὸς μεθ’ οὗ ἐποίησα σήμερον Βοόζ. Εἶπε δὲ Νωεμὶν τῇ νύμφῃ αὐτῆς, εὐλογητός ἐστι τῷ Κυρίῳ, ὅτι οὐκ ἐγκατέλιπε τὸ ἔλεος αὐτοῦ μετὰ τῶν ζώντων καὶ μετὰ τῶν τεθνηκότων· καὶ εἶπεν αὐτῇ Νωεμὶν, ἐγγίζει ἡμῖν ὁ ἀνὴρ, ἐκ τῶν ἀγχιστευόντων ἡμῖν ἐστι. Καὶ εἶπε Ῥοὺθ πρὸς τὴν πενθερὰν αὐτῆς, καί γε ὅτι εἶπε πρὸς μέ, μετὰ τῶν κορασίων τῶν ἐμῶν προσκολλήθητι, ἕως ἂν τελέσωσιν ὅλον τὸν ἀμητὸν ὃς ὑπάρχει μοι. Καὶ εἶπε Νωεμὶν πρὸς Ῥοὺθ τὴν νύμφην αὐτῆς, ἀγαθὸν θύγατερ, ὅτι ἐξῆλθες μετὰ τῶν κορασίων αὐτου, καὶ οὐκ ἀπαντήσονταί σοι ἐν ἀγρῷ ἑτέρῳ. Καὶ προσεκολλήθη Ῥοὺθ τοῖς κορασίοις τοῦ Βοὸζ τοῦ συλλέγειν, ἕως τοῦ συντελέσαι τὸν θερισμὸν τῶν κριθῶν καὶ τῶν πυρῶν.

# 3

Καὶ ἐκάθισε μετὰ τῆς πενθερᾶς αὐτῆς· εἶπε δὲ αὐτῇ Νωεμὶν ἡ πενθερὰ αὐτῆς, θύγατερ, οὐ μὴ ζητήσω σοι ἀνάπαυσιν, ἵνα εὖ γένηταί σοι; Καὶ νῦν οὐχὶ Βοὸζ γνώριμος ἡμῶν, οὗ ἦς μετὰ τῶν κορασίων αὐτοῦ; ἰδοὺ αὐτὸς λικμᾷ τὸν ἅλωνα τῶν κριθῶν ταύτῃ τῇ νυκτί. Σὺ δὲ λούσῃ, καὶ ἀλείψῃ, καὶ περιθήσεις τὸν ἱματισμόν σου ἐπὶ σὲ, καὶ ἀναβήσῃ ἐπὶ τὸν ἅλω· μὴ γνωρισθῇς τῷ ἀνδρὶ ἕως τοῦ συντελέσαι αὐτὸν τοῦ φαγεῖν καὶ πιεῖν. Καὶ ἔσται ἐν τῷ κοιμηθῆναι αὐτὸν, καὶ γνώσῃ τὸν τόπον ὅπου κοιμᾶται ἐκεῖ, καὶ ἐλεύσῃ καὶ ἀποκαλύψεις τὰ πρὸς ποδῶν αὐτοῦ, καὶ κοιμηθήσῃ, καὶ αὐτὸς ἀπαγγελεῖ σοι ἃ ποιήσεις. Εἶπε δὲ Ῥοὺθ πρὸς αὐτὴν, πάντα ὅσα ἂν εἴπῃς, ποιήσω. Καὶ κατέβη εἰς τὸν ἅλω, καὶ ἐποίησε κατὰ

πάντα, ὅσα ἐνετείλατο αὐτῇ ἡ πενθερὰ αὐτῆς. Καὶ ἔφαγε Βοὸζ καὶ ἔπιε, καὶ ἠγαθύνθη ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ ἦλθε κοιμηθῆναι ἐν μερίδι τῆς στοιβῆς· ἡ δὲ ἦλθεν ἐν κρυφῇ, καὶ ἀπεκάλυψε τὰ πρὸς ποδῶν αὐτοῦ. Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ μεσονυκτίῳ, καὶ ἐξέστη ὁ ἀνὴρ, καὶ ἐταράχθη, καὶ ἰδοὺ γυνὴ κοιμᾶται πρὸς ποδῶν αὐτοῦ. Εἶπε δὲ, τίς εἶ σύ; ἡ δὲ εἶπεν, ἐγὼ εἰμι Ῥοὺθ ἡ δούλη σου, καὶ περιβαλεῖς τὸ πτερύγιόν σου ἐπὶ τὴν δούλην σου, ὅτι ἀγχιστεὺς εἶ σύ. Καὶ εἶπε Βοὸζ, εὐλογημένη σὺ τῷ Κυρίῳ Θεῷ, θύγατερ, ὅτι ἠγάθυνας τὸ ἔλεός σου τὸ ἔσχατον ὑπὲρ τὸ πρῶτον, μὴ πορευθῆναί σε ὀπίσω νεανιῶν, εἴτοι πτωχὸς εἴτοι πλούσιος. Καὶ νῦν θύγατερ μὴ φοβοῦ, πάντα ὅσα ἐὰν εἴπῃς ποιήσω σοι· οἶδε γὰρ πᾶσα φυλὴ λαοῦ μου ὅτι γυνὴ δυνάμεως εἶ σύ. Καὶ νῦν ὁ ἀληθῶς ἀγχιστεὺς ἐγώ εἰμι· καί γε ἐστὶν ἀγχιστεὺς ἐγγίων ὑπὲρ ἐμέ. Αὐλίσθητι τὴν νύκτα, καὶ ἔσται τοπρωῒ ἐὰν ἀγχιστεύσῃ σε, ἀγαθόν· ἀγχιστευέτω· ἐὰν δὲ μὴ βούληται ἀγχιστεῦσαί σε, ἀγχιστεύσω σε ἐγώ· ζῇ Κύριος· κοιμήθητι ἕως τοπρωΐ. Καὶ ἐκοιμήθη πρὸς ποδῶν αὐτοῦ ἕως πρωΐ· ἡ δὲ ἀνέστη πρὸ τοῦ ἐπιγνῶναι ἄνδρα τὸν πλησίον αὐτοῦ· καὶ εἶπε Βοὸζ, μὴ γνωσθήτω, ὅτι ἦλθε γυνὴ εἰς τὸν ἅλω. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, Φέρε τὸ περίζωμα τὸ ἐπάνω σου· καὶ ἐκράτησεν αὐτὸ, καὶ ἐμέτρησεν ἓξ κριθῶν, καὶ ἐπέθηκεν ἐπ’ αὐτὴν, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν. Καὶ Ῥοὺθ εἰσῆλθε πρὸς τὴν πενθερὰ αὐτῆς· ἡ δὲ εἶπεν αὐτῇ, θύγατερ· καὶ εἶπεν αὐτῇ πάντα ὅσα ἐποίησεν αὐτῇ ὁ ἀνήρ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, τὰ ἓξ τῶν κριθῶν ταῦτα ἔδωκέ μοι, ὅτι εἶπε πρὸς μὲ, μὴ εἰσέλθῃς κενὴ πρὸς τὴν πενθεράν σου. Ἡ δὲ εἶπε, κάθου θύγατερ, ἕως τοῦ ἐπιγνῶναί σε πῶς οὐ πεσεῖται ῥῆμα· οὐ γὰρ μὴ ἡσυχάσῃ ὁ ἀνὴρ ἕως ἂν τελεσθῇ τὸ ῥῆμα σήμερον.

# 4

Καὶ Βοὸζ ἀνέβη ἐπὶ τὴν πύλην, και ἐκαθισεν ἐκεῖ, καὶ ἰδοὺ ὁ ἀγχιστεὺς παρεπορεύετο, ὃν ἐλάλησε Βοόζ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Βοὸζ, ἐκκλίνας κάθισον ὧδε κρύφιε· καὶ ἐξέκλινε καὶ ἐκάθισε. Καὶ ἔλαβε Βοὸζ δέκα ἄνδρας ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τῆς πόλεως, καὶ εἶπε, καθίσατε ὧδε· καὶ ἐκάθισαν. Καὶ εἶπε Βοὸζ τῷ ἀγχιστεῖ, τὴν μερίδα τοῦ ἀγροῦ ἥ ἐστι τοῦ ἀδελφοῦ ἡμῶν τοῦ Ἐλιμέλεχ, ἣ δέδοται Νωεμὶν τῇ ἐπιστρεφούσῃ ἐξ ἀγροῦ Μωὰβ, κᾀγὼ εἶπα, ἀποκαλύψω τὸ οὖς σου λέγων, κτῆσαι ἐναντίον τῶν καθημένων, καὶ ἐναντίον τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ μου. εἰ ἀγχιστεύεις, ἀγχίστευε· εἰ δὲ μὴ ἀγχιστεύεις, ἀνάγγειλόν μοι, καὶ γνώσομαι, ὅτι οὐκ ἔστι πάρεξ σοῦ τοῦ ἀγχιστεῦσαι, κᾀγώ εἰμι μετὰ σέ· ὁ δὲ εἶπεν, ἐγώ εἰμι, ἀγχιστεῦσαι, κἀγώ εἰμι, ἀγχιστεύσω. Καὶ εἶπε Βοὸζ, ἐν ἡμέρᾳ τοῦ κτήσασθαί σε τὸν ἀγρὸν ἐκ χειρὸς Νωεμὶν καὶ παρὰ Ῥοὺθ τῆς Μωαβίτιδος γυναικὸς τοῦ τεθνηκότος, καὶ αὐτὴν κτήσασθαί σε δεῖ, ὥστε ἀναστῆσαι τὸ ὄνομα τοῦ τεθνηκότος ἐπὶ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ ἀγχιστεὺς, οὐ δυνήσομαι ἀγχιστεῦσαι ἐμαυτῷ, μή ποτε διαφθείρω τὴν κληρονομίαν μου· ἀγχίστευσον σεαυτῷ τὴν ἀγχιστείαν μου, ὅτι οὐ δυνήσομαι ἀγχιστεῦσαι. Καὶ τοῦτο τὸ δικαίωμα ἔμπροσθεν ἐν τῷ Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν ἀγχιστείαν, καὶ ἐπὶ τὸ ἀντάλλαγμα τοῦ στῆσαι πάντα λόγον· καὶ ὑπελύετο ἀνὴρ τὸ ὑπόδημα αὐτοῦ, καὶ ἐδίδου τῷ πλησίον αὐτοῦ τῷ ἀγχιστεύοντι τὴν ἀγχιστείαν αὐτοῦ· καὶ τοῦτο ἦν μαρτύριον ἐν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπεν ὁ ἀγχιστεὺς τῷ Βοὸζ, κτῆσαι σεαυτῷ τὴν ἀγχιστείαν μου· καὶ ὑπελύσατο τὸ ὑπόδημα αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ. Καὶ εἶπε Βοὸζ τοῖς πρεσβυτέροις καὶ παντὶ τῷ λαῷ,

μάρτυρες ὑμεῖς σήμερον, ὅτι κέκτημαι πάντα τὰ τοῦ Ἐλιμέλεχ, καὶ πάντα ὅσα ὑπάρχει τῷ Χελαιὼν καὶ τῷ Μααλὼν ἐκ χειρὸς Νωεμίν. Καί γε Ῥοὺθ τὴν Μωαβίτιν τὴν γυναῖκα Μααλὼν κέκτημαι ἐμαυτῷ εἰς γυναῖκα, τοῦ ἀναστῆσαι τὸ ὄνομα τοῦ τεθνηκότος ἐπὶ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐξολοθρευθήσεται τὸ ὄνομα τοῦ τεθνηκότος ἐκ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῆς φυλῆς λαοῦ αὐτοῦ· μάρτυρες ὑμεῖς σήμερον. Καὶ εἴποσαν πᾶς ὁ λαὸς οἱ ἐν τῇ πύλῃ, μάρτυρες· καὶ οἱ πρεσβύτεροι εἴποσαν, δῴη Κύριος τὴν γυναῖκά σου, τὴν εἰσπορευομένην εἰς τὸν οἶκόν σου, ὡς Ῥαχὴλ καὶ ὡς Λίαν, αἳ ᾠκοδόμησαν ἀμφότεραι τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἐποίησαν δύναμιν ἐν Ἐφραθᾷ, καὶ ἔσται ὄνομα ἐν Βηθλεέμ. Καὶ γένοιτο οἶκός σου, ὡς οἶκος Φαρὲς, ὃν ἔτεκε Θάμαρ τῷ Ἰούδᾳ, ἐκ τοῦ σπέρματος οὗ δώσει Κύριός σοι ἐκ τῆς παιδίσκης ταύτης. Καὶ ἔλαβε Βοὸζ τὴν Ῥοὺθ, καὶ ἐγενήθη αὐτῷ εἰς γυναῖκα, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτήν. καὶ ἔδωκεν αὐτῇ Κύριος κύησιν, καὶ ἔτεκεν υἱόν. Καὶ εἶπαν αἱ γυναῖκες πρὸς Νωεμὶν, εὐλογητὸς Κύριος, ὃς οὐ κατέλυσέ σοι σήμερον τὸν ἀγχιστέα, καὶ καλέσαι τὸ ὄνομά σου ἐν Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται σοι εἰς ἐπιστρέφοντα ψυχὴν, καὶ τοῦ διαθρέψαι τὴν πολιάν σου, ὅτι ἡ νύμφη ἡ ἀγαπήσασά σε, ἔτεκεν αὐτὸν, ἥ ἐστιν ἀγαθή σοι ὑπὲρ ἑπτὰ υἱούς. Καὶ ἔλαβε Νωεμὶν τὸ παιδίον, καὶ ἔθηκεν εἰς τὸν κόλπον αὐτῆς, καὶ ἐγενήθη αὐτῷ εἰς τιθηνόν. Καὶ ἐκάλεσαν αὐτοῦ αἱ γείτονες ὄνομα, λέγουσαι, ἐτέχθη υἱὸς τῇ Νωεμίν. καὶ ἐκάλεσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ὠβήδ· οὗτος πατὴρ Ἰεσσαὶ πατρὸς Δαυίδ. Καὶ αὗται αἱ γενέσεις Φαρές. Φαρές ἐγέννησε τὸν Ἐσρώμ· Ἐσρὼμ ἐγέννησε τὸν Ἀράμ· καὶ Ἀρὰμ ἐγέννησε τὸν Ἀμιναδάβ· Καὶ Ἀμιναδὰβ ἐγέννησε τὸν Ναασσών· καὶ Ναασσὼν ἐγέννησε τὸν Σαλμών· Καὶ Σαλμὼν ἐγέννησε τὸν Βοόζ· καὶ Βοὸζ ἐγέννησε τὸν Ὠβήδ· Καὶ Ὠβὴδ ἐγέννησε τὸν Ἰεσσαί· καὶ Ἰεσσαὶ

ἐγέννησε τὸν Δαυίδ.

# Α΄ ΣΑΜΟΥΗΛ

## 1

ΆΝΘΡΩΠΟΣ ἦν ἐξ Ἀρμαθαὶμ Σιφὰ, ἐξ ὄρους Ἐφραὶμ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Ἑλκανὰ υἱὸς Ἰερεμεὴλ υἱοῦ Ἡλιοὺ υἱοῦ Θοκὲ ἐν Νασὶβ Ἐφραίμ. Καὶ τοῦτῳ δύο γυναῖκες· ὄνομα τῇ μιᾷ, Ἄννα· καὶ ὄνομα τῇ δευτέρᾳ, Φεννάνα. Καὶ ἦν τῇ Φεννάνᾳ παιδία· καὶ τῇ Ἄννᾳ οὐκ ἦν παιδίον. Καὶ ἀνέβαινεν ὁ ἄνθρωπος ἐξ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας ἐκ πόλεως αὐτοῦ ἐξ Ἀρμαθαὶμ προσκυνεῖν καὶ θύειν Κυρίῳ τῷ Θεῷ σαβαὼθ εἰς Σηλώμ· καὶ ἐκεῖ Ἡλὶ καὶ οἱ δύο υἱοὶ αὐτοῦ Ὀφνὶ καὶ Φινεὲς ἱερεῖς τοῦ Κυρίου. Καὶ ἐγενήθη ἡμέρα, καὶ ἔθυσεν Ἑλκανὰ, καὶ ἔδωκε τῇ Φεννάνᾳ γυναικὶ αὐτοῦ, καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῆς μερίδας. Καὶ τῇ Ἄννᾳ ἔδωκε μερίδα μίαν, ὅτι οὐκ ἦν αὐτῇ παιδίον, πλὴν ὅτι τὴν Ἄνναν ἠγάπα Ἑλκανὰ ὑπὲρ ταύτην· καὶ Κύριος ἀπέκλεισε τὰ περὶ τὴν μήτραν αὐτῆς, ὅτι οὐκ ἔδωκεν αὐτῇ Κύριος παιδίον κατὰ τὴν θλίψιν αὐτῆς, καὶ κατὰ τὴν ἀθυμίαν τῆς θλίψεως αὐτῆς· καὶ ἠθύμει διὰ τοῦτο, ὅτι συνέκλεισε Κύριος τὰ περὶ τὴν μήτραν αὐτῆς τοῦ μὴ δοῦναι αὐτῇ παιδίον. Οὕτως ἐποίει ἐνιαυτὸν κατ’ ἐνιαυτὸν, ἐν τῷ ἀναβαίνειν αὐτὴν εἰς οἶκον Κυρίου· καὶ ἠθύμει, καὶ ἔκλαιε, καὶ οὐκ ἤσθιε. Καὶ εἶπεν αὐτῇ Ἑλκανὰ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, Ἄννα· καὶ

εἶπεν αὐτῷ, ἰδοὺ ἐγώ, κύριε· καὶ εἶπεν αὐτῇ, τί ἐστί σοι ὅτι κλαίεις; καὶ ἱνατί οὐκ ἐσθίεις; καὶ ἱνατί τύπτει σε ἡ καρδία σου; οὐκ ἀγαθὸς ἐγώ σοι ὑπὲρ δέκα τέκνα; Καὶ ἀνέστη Ἄννα μετὰ τὸ φαγεῖν αὐτοὺς ἐν Σηλὼμ, καὶ κατέστη ἐνώπιον Κυρίου· καὶ Ἠλὶ ὁ ἱερεὺς, ἐπὶ τοῦ δίφρου ἐπὶ τῶν φλιῶν ναοῦ Κυρίου. Καὶ αὐτὴ κατώδυνος ψυχῇ, καὶ προσηύξατο πρὸς Κύριον, καί κλαίουσα ἔκλαυσε. Καὶ ηὔξατο εὐχὴν Κυρίῳ, λέγουσα, Ἀδωναΐ Κύριε ἐλωὲ σαβαὼθ, ἐὰν ἐπιβλέπων ἐπιβλέψῃς ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τῆς δούλης σου, καὶ μνησθῇς μου, καὶ δῷς τῇ δούλῃ σου σπέρμα ἀνδρῶν, καὶ δώσω αὐτὸν ἐνώπιόν σου δοτὸν ἕως ἡμέρας θανάτου αὐτοῦ, καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα οὐ πίεται, καὶ σίδηρος οὐκ ἀναβήσεται ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ὅτε ἐπλήθυνε προσευχομένη ἐνώπιον Κύριου, καὶ Ἠλὶ ὁ ἱερεὺς ἐφύλαξε τὸ στόμα αὐτῆς. Καὶ αὕτη ἐλάλει ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς, καὶ τὰ χείλη αὐτῆς ἐκινεῖτο, καὶ φωνὴ αὐτῆς οὐκ ἠκούετο· καὶ ἐλογίσατο αὐτὴν Ἠλὶ εἰς μεθύουσαν. Καὶ εἶπεν αὐτῇ τὸ παιδάριον Ἠλὶ, ἕως πότε μεθυσθήσῃ; περιελοῦ τὸν οἶνόν σου, καὶ πορεύου ἐκ προσώπου Κυρίου. Καὶ ἀπεκρίθη Ἄννα, καὶ εἶπεν, οὐχὶ κύριε· γυνὴ ἡ σκληρὰ ἡμέρα ἐγώ εἰμι, καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα οὐ πέπωκα, καὶ ἐκχέω τὴν ψυχήν μου ἐνώπιον Κυρίου. Μὴ δῷς τὴν δούλην σου εἰς θυγατέρα λοιμὴν, ὅτι ἐκ πλήθους ἀδολεσχίας μου ἐκτέτακα ἕως νῦν. Καὶ ἀπεκρίθη Ἠλὶ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, πορεύου εἰς εἰρήνην· ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ δῴη σοι πᾶν αἴτημά σου, ὃ ᾐτήσω παρ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, εὗρεν ἡ δούλη σου χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου· καὶ ἐπορεύθη ἡ γυνὴ εἰς τὴν ὁδὸν αὐτῆς· καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ κατάλυμα αὐτῆς, καὶ ἔφαγε μετὰ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς καὶ ἔπιε, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτῆς οὐ συνέπεσεν ἔτι. Καὶ ὀρθρίζουσι τοπρωΐ καὶ προσκυνοῦσι τῷ Κυρίῳ, καὶ πορεύονται τὴν ὁδὸν αὐτῶν· καὶ εἰσῆλθεν Ἑλκανὰ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ Ἀρμαθαὶμ, καὶ

ἔγνω τὴν Ἄνναν γυναῖκα αὐτοῦ· καὶ ἐμνήσθη αὐτῆς Κύριος, καὶ συνέλαβε. Καὶ ἐγενήθη τῷ καιρῷ τῶν ἡμερῶν, καὶ ἔτεκεν υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Σαμουὴλ, καὶ εἶπεν, ὅτι παρὰ Κυρίου Θεοῦ σαβαὼθ ᾐτησάμην αὐτόν. Καὶ ἀνέβη ὁ ἄνθρωπος Ἑλκανὰ καὶ πᾶς ὁ οἶκος αὐτοῦ θῦσαι ἐν Σηλὼμ τὴν θυσίαν τῶν ἡμερῶν, καὶ τὰς εὐχὰς αὐτοῦ, καὶ πάσας τὰς δεκάτας τῆς γῆς αὐτοῦ. Καὶ Ἄννα οὐκ ἀνέβη μετ’ αὐτοῦ, ὅτι εἶπε τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, ἕως τοῦ ἀναβῆναι τὸ παιδάριον, ἐὰν ἀπογαλακτίσω αὐτὸ, καὶ ὀφθήσεται τῷ προσώπῳ Κυρίου, καὶ καθήσεται ἕως αἰῶνος ἐκεῖ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ Ἑλκανὰ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, ποίει τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, κάθου ἕως ἂν ἀπογαλακτίσῃς αὐτό· ἀλλὰ στήσαι Κύριος τὸ ἐξελθὸν ἐκ τοῦ στόματός σου· καὶ ἐκάθισεν ἡ γυνὴ καὶ ἐθήλασε τὸν υἱὸν αὐτῆς, ἕως ἂν ἀπογαλακτίσῃ αὐτόν. Καὶ ἀνέβη μετ’ αὐτοῦ εἰς Σηλὼμ ἐν μόσχῳ τριετίζοντι, καὶ ἄρτοις, καὶ οἰφὶ σεμιδάλεως, καὶ νέβελ οἴνου· καὶ εἰσῆλθεν εἰς οἶκον Κυρίου ἐν Σηλὼμ, καὶ τὸ παιδάριον μετ’ αὐτῶν. Καὶ προσήγαγον ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἔσφαξεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ τὴν θυσίαν, ἣν ἐποίει ἐξ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας τῷ Κυρίῳ· καὶ προσήγαγε τὸ παιδάριον, καὶ ἔσφαξε τὸν μόσχον· καὶ προσήγαγεν Ἄννα ἡ μήτηρ τοῦ παιδαρίου πρὸς Ἠλὶ, καὶ εἶπεν, ἐν ἐμοί κύριε ζῇ ἡ ψυχή σου, ἐγὼ ἡ γυνὴ ἡ καταστᾶσα ἐνώπιόν σου μετὰ σοῦ ἐν τῷ προσεύξασθαι πρὸς Κύριον. Ὑπὲρ τοῦ παιδαρίου τούτου προσηυξάμην· καὶ ἐδωκέ μοι Κύριος τὸ αἴτημά μου ὃ ᾐτησάμην παρ’ αὐτοῦ. Κἀγὼ κιχρῶ αὐτὸν τῷ Κυρίῳ πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ζῇ αὐτὸς, χρῆσιν τῷ Κυρίῳ, καὶ εἶπεν,

# 2

Ἐστερέωθη ἡ καρδία μου ἐν Κυρίῳ, ὑψώθη κέρας μου ἐν Θεῷ μου, ἐπλατύνθη ἐπ᾽ ἐχθρούς μου τὸ στόμα μου, εὐφράνθην ἐν σωτηρίᾳ σου. Ὅτι οὐκ ἔστιν ἅγιος ὡς Κύριος, καὶ οὐκ ἔστι δίκαιος ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, οὐκ ἔστιν ἅγιος πλήν σου. Μὴ καυχᾶσθε, καὶ μὴ λαλεῖτε ὑψηλά· μὴ ἐξελθέτω μεγαλορρημοσύνη ἐκ τοῦ στόματος ὑμῶν, ὅτι Θεὸς γνώσεων Κύριος, καὶ Θεὸς ἑτοιμάζων ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ. Τόξον δυνατῶν ἠσθένησε, καὶ ἀσθενοῦντες περιεζώσαντο δυνάμιν. Πλήρεις ἄρτων ἠλαττώθησαν, καὶ οἱ πεινῶντες παρῆκαν γῆν· ὅτι στεῖρα ἔτεκεν ἑπτὰ, καὶ ἡ πολλὴ ἐν τέκνοις ἠσθένησε. Κύριος θανατοῖ καὶ ζωογονεῖ, κατάγει εἰς ᾅδου καὶ ἀνάγει. Κύριος πτωχίζει καὶ πλουτίζει, ταπεινοῖ καὶ ἀνυψοῖ. Ἀνιστᾷ ἀπὸ γῆς πένητα, καὶ ἀπὸ κοπρίας ἐγείρει πτωχὸν, καθίσαι μετὰ δυναστῶν λαοῦ, καὶ θρόνον δόξης κατακληρονομῶν αὐτοῖς, διδοὺς εὐχὴν τῷ εὐχομένῳ· καὶ εὐλόγησεν ἔτη δικαίου, ὅτι οὐκ ἐν ἰσχύϊ δυνατὸς ἀνήρ. Κύριος ἀσθενῆ ποιήσει ἀντίδικον αὐτοῦ, Κύριος ἅγιος· μὴ καυχάσθω ὁ φρόνιμος ἐν τῇ φρονήσει αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ δυνατὸς ἐν τῇ δυνάμει αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ πλούσιος ἐν τῷ πλούτῳ αὐτοῦ· ἀλλ᾽ ἐν τούτῳ καυχάσθω ὁ καυχώμενος, συνιεῖν καὶ γινώσκειν τὸν Κύριον, καὶ ποιεῖν κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐν μέσῳ τῆς γῆς. Κύριος ἀνέβη εἰς οὐρανοὺς, καὶ ἐβρόντησεν· αὐτὸς κρινεῖ ἄκρα γῆς, καὶ δίδωσιν ἰσχὺν τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν, καὶ ὑψώσει κέρας χριστοῦ αὐτοῦ. Καὶ κατέλιπεν αὐτὸν ἐκεῖ ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἀπῆλθεν εἰς Ἁρμαθαίμ· καὶ τὸ παιδάριον ἦν λειτουργῶν τῷ προσώπῳ Κυρίου ἐνώπιον Ἠλὶ τοῦ ἱερέως. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἠλὶ τοῦ ἱερέως υἱοὶ λοιμοί, οὐκ εἰδότες τὸν Κύριον. Καὶ τὸ δικαίωμα τοῦ ἱερέως παρὰ τοῦ λαοῦ παντὸς τοῦ θύοντος· καὶ ἤρχετο τὸ παιδάριον τοῦ ἱερέως ὡς ἂν ἡψήθη τὸ κρέας, καὶ κρεάγρα τριόδους ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν εἰς τὸν λέβητα τὸν

μέγαν ἢ εἰς τὸ χαλκεῖον ἢ εἰς τὴν χύτραν, καὶ πᾶν ὃ ἐὰν ἀνέβη ἐν τῇ κρεάγρᾳ, ἐλάμβανεν ἑαυτῷ ὁ ἱερεύς· κατὰ τάδε ἐποίουν παντὶ Ἰσραὴλ τοῖς ἐρχομένοις θῦσαι Κυρίῳ ἐν Σηλώμ. Καὶ πρὶν θυμιαθῆναι τὸ στέαρ, ἤρχετο τὸ παιδάριον τοῦ ἱερέως, καὶ ἔλεγε τῷ ἀνδρὶ τῷ θύοντι, δὸς κρέας ὀπτῆσαι τῷ ἱερεῖ, καὶ οὐ μὴ λάβω παρὰ σοῦ κρέας ἐφθὸν ἐκ τοῦ λέβητος. Καὶ ἔλεγεν ὁ ἀνὴρ ὁ θύων, θυμιαθήτω πρῶτον ὡς καθήκει τὸ στέαρ, καὶ λάβε σεαυτῷ ἐκ πάντων ὧν ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχή σου· καὶ εἶπεν, οὐχί· ὅτι νῦν δώσεις· καὶ ἐὰν μὴ, λήψομαι κραταιῶς. Καὶ ἦν ἡ ἁμαρτία ἐνώπιον Κυρίου τῶν παιδαρίων μεγάλη σφόδρα, ὅτι ἠθέτουν τὴν θυσίαν Κυρίου. Καὶ Σαμουὴλ ἦν λειτουργῶν ἐνώπιον Κυρίου, παιδάριον περιεζωσμένον ἐφοὺδ βάδ· Καὶ διπλοΐδα μικρὰν ἐποίησεν αὐτῷ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, καὶ ἀνέφερεν αὐτῷ ἐξ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας ἐν τῷ ἀναβαίνειν αὐτὴν μετὰ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς θῦσαι τὴν θυσίαν τῶν ἡμερῶν. Καὶ εὐλόγησεν Ἡλὶ τὸν Ἑλκανὰ καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, λέγων, ἀποτίσαι σοι Κύριος σπέρμα ἐκ τῆς γυναικὸς ταύτης, ἀντὶ τοῦ χρέους οὗ ἔχρησας τῷ Κυρίῳ· καὶ ἀπῆλθεν ὁ ἄνθρωπος εἰς τὸν τὸπον αὐτοῦ. Καὶ ἐπεσκέψατο Κύριος τὴν Ἄνναν, καὶ ἔτεκεν ἔτι τρεῖς υἱοὺς, καὶ δύο θυγατέρας· καὶ ἐμεγαλύνθη τὸ παιδάριον Σαμουὴλ ἐνώπιον Κυρίου. Καὶ Ἡλὶ πρεσβύτης σφόδρα· καὶ ἤκουσεν ἃ ἐποίουν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ· Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ἱνατί ποιεῖτε κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο, ὃ ἐγὼ ἀκούω ἐκ στόματος παντὸς τοῦ λαοῦ Κυρίου; Μὴ τέκνα, ὅτι οὐκ ἀγαθὴ ἡ ἀκοὴ ἣν ἐγὼ ἀκούω· μὴ ποιεῖτε οὕτως, ὅτι οὐκ ἀγαθαὶ αἱ ἀκοαὶ ἃς ἐγὼ ἀκούω τοῦ μὴ δουλεύειν λαὸν Θεῷ. Ἐὰν ἁμαρτάνων ἁμάρτῃ ἀνὴρ εἰς ἄνδρα, καὶ προσεύξονται ὑπὲρ αὐτοῦ πρὸς Κύριον· καὶ ἐὰν τῷ Κυρίῳ ἁμάρτῃ, τίς προσεύξεται ὑπὲρ αὐτοῦ; Καὶ οὐκ ἤκουον τῆς φωνῆς τοῦ πατρὸς αὐτῶν, ὅτι βουλόμενος ἐβούλετο

Κύριος διαφθεῖραι αὐτούς. Καὶ τὸ παιδάριον Σαμουὴλ ἐπορεύετο, καὶ ἦν ἀγαθὸν μετὰ Κυρίου καὶ μετὰ ανθρώπων. Καὶ ἦλθεν ὁ ἄνθρωπος Θεοῦ πρὸς Ἠλὶ, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ἀποκαλυφθεὶς ἀπεκαλύφθην πρὸς οἶκον τοῦ πατρός σου, ὄντων αὐτῶν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ δούλων τῷ οἴκῳ Φαραὼ. Καὶ ἐξελεξάμην τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου ἐκ πάντων τῶν σκήπτρων Ἰσραὴλ ἐμοὶ ἱερατεύειν, τοῦ ἀναβαίνειν ἐπὶ θυσιαστήριόν μου, καὶ θυμιᾷν θυμίαμα, καὶ αἴρειν ἐφούδ· καὶ ἔδωκα τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός σου τὰ πάντα τοῦ πυρὸς υἱῶν Ἰσραὴλ εἰς βρῶσιν. Καὶ ἱνατί ἐπέβλεψας ἐπὶ τὸ θυμίαμά μου καὶ εἰς τὴν θυσίαν μου ἀναιδεῖ ὀφθαλμῷ; καὶ ἐδόξασας τοὺς υἱούς σου ὑπὲρ ἐμὲ ἐνευλογεῖσθαι ἀπαρχῆς πάσης θυσίας τοῦ Ἰσραὴλ ἔμπροσθέν μου; Διὰ τοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, εἶπα, ὁ οἶκός σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου διελεύσεται ἐνώπιόν μου ἕως αἰῶνος· καὶ νῦν φησι Κὺριος, μηδαμῶς ἐμοὶ, ὅτι ἀλλ’ ἢ τοὺς δοξάζοντάς με δοξάσω, καὶ ὁ ἐξουθενῶν με ἀτιμωθήσεται. Ἰδοὺ ἔρχονται ἡμέραι, καὶ ἐξολοθρεύσω τὸ σπέρμα σου καὶ τὸ σπέρμα οἴκου πατρός σου· Καὶ οὐκ ἔσται σοι πρεσβύτης ἐν οἴκῳ μου πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἄνδρα οὐκ ἐξολοθρεύσω σοι ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου μου, ἐκλείπειν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ καταῤῥεῖν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ· καὶ πᾶς περισσεύων οἴκου σου πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ ἀνδρῶν. Καὶ τοῦτό σοι τὸ σημεῖον ὃ ἥξει ἐπὶ τοὺς δύο υἱούς σου, Ὀφνὶ καὶ Φινεὲς, ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἀποθανοῦνται ἀμφότεροι. Καὶ ἀναστήσω ἐμαυτῷ ἱερέα πιστὸν, ὃς πάντα τὰ ἐν τῇ καρδίᾳ μου καὶ τὰ ἐν τῇ ψυχῇ μου ποιήσει καὶ οἰκοδομήσω αὐτῷ οἶκον πιστὸν, καὶ διελεύσεται ἐνώπιον χριστοῦ μου πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἔσται ὁ περισσεύων ἐν οἴκῳ σον, ἥξει προσκυνεῖν αὐτῷ ὀβολοῦ ἀργυρίου, λέγων, παράῤῥιψόν με ἐπὶ μίαν τῶν ἱερατειῶν σου φαγεῖν ἄρτον.

# 3

Καὶ τὸ παιδάριον Σαμουὴλ ἦν λειτουργῶν τῷ Κυρίῳ ἐνώπιον Ἡλὶ τοῦ ἱερέως· καὶ ῥῆμα Κυρίου ἦν τίμιον ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, οὐκ ἦν ὅρασις διαστέλλουσα. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρα ἐκείνῃ, καὶ Ἡλὶ ἐκάθευδεν ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἤρξαντο βαρύνεσθαι, καὶ οὐκ ἠδύναντο βλέπειν. Καὶ ὁ λύχνος τοῦ Θεοῦ πρὶν ἐπισκευασθῆναι, καὶ Σαμουὴλ ἐκάθευδεν ἐν τῷ ναῷ, οὗ ἡ κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἐκάλεσε Κύριος, Σαμουὴλ Σαμουήλ· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ ἔδραμε πρὸς Ἡλὶ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγὼ, ὅτι κέκληκάς με· καὶ εἶπεν, οὐ κέκληκά σε, ἀνάστρεφε, κάθευδε· καὶ ἀνέστρεψε καὶ ἐκάθευδε. Καὶ προσέθετο Κύριος, καὶ ἐκάλεσε, Σαμουὴλ Σαμουήλ· καὶ ἐπορεύθη πρὸς Ἡλὶ τὸ δεύτερον, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγὼ, ὅτι κέκληκάς με· καὶ εἶπεν, οὐ κέκληκά σε, ἀνάστρεφε, κάθευδε. Καὶ Σαμουὴλ πρὶν γνῶναι Θεὸν, καὶ ἀποκαλυφθῆναι αὐτῷ ῥῆμα Κυρίου. Καὶ προσέθετο Κύριος καλέσαι Σαμουὴλ ἐν τρίτῳ· καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθη πρὸς Ἡλὶ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγὼ, ὅτι κέκληκάς με· καὶ ἐσοφίσατο Ἡλὶ ὅτι Κύριος κέκληκε τὸ παιδάριον. Καὶ εἶπεν, ἀνάστρεφε, κάθευδε τέκνον· καὶ ἔσται ἐὰν καλέσῃ σε, καὶ ἐρεῖς, λάλει, ὅτι ἀκούει ὁ δοῦλός σου· καὶ ἐπορεύθη Σαμουὴλ, καὶ ἐκοιμήθη ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ. Καὶ ἦλθε Κύριος καὶ κατέστη, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν ὡς ἅπαξ καὶ ἅπαξ· καὶ εἶπε Σαμουὴλ, λάλει, ὅτι ἀκούει ὁ δοῦλός σου. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ τὰ ῥήματά μου ἐν Ἰσραὴλ, παντὸς ἀκούοντος αὐτὰ, ἠχήσει ἀμφότερα τὰ ὦτα αὐτοῦ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπεγερῶ ἐπὶ Ἡλὶ πάντα ὅσα ἐλάλησα εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, ἄρξομαι καὶ ἐπιτελέσω. Καὶ ἀνήγγελκα αὐτῷ ὅτι ἐκδικῶ ἐγὼ τὸν οἶκον αὐτοῦ ἕως αἰῶνος

ἐν ἀδικίαις υἱῶν αὐτοῦ, ὅτι κακολογοῦντες Θεὸν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐνουθέτει αὐτούς. Καὶ οὐδ’ οὕτως· ὤμοσα τῷ οἴκῳ Ἠλὶ, εἰ ἐξιλασθήσεται ἀδικία οἴκου Ἠλὶ, ἐν θυμιάματι καὶ ἐν θυσίαις ἕως αἰῶνος. Καὶ κοιμᾶται Σαμουὴλ ἕως πρωΐ, καὶ ὤρθρισε τοπρωΐ καὶ ἤνοιξε τὰς θύρας οἴκου Κυρίου· καὶ Σαμουὴλ ἐφοβήθη ἀπαγγεῖλαι τὴν ὅρασιν. Καὶ εἶπεν Ἠλὶ πρὸς Σαμουὴλ, Σαμουὴλ τέκνον· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ εἶπε, τί τὸ ῥήμα τὸ λαληθὲν πρὸς σέ; μὴ δὴ κρήψῃς ἀπ’ ἐμοῦ· τάδε ποιήσαι σοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε προσθείη, ἐὰν κρύψῃς ἀπ’ ἐμοῦ ῥῆμα ἐκ πάντων τῶν λόγων τῶν λαληθέντων σοι ἐν τοῖς ὠσί σου. Καὶ ἀπήγγειλε Σαμουὴλ πάντας τοὺς λόγους, καὶ οὐκ ἔκρυψεν ἀπ’ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν Ἠλὶ, Κύριος αὐτὸς, τὸ ἀγαθὸν ἐνώπιον αὐτοῦ ποιήσει. Καὶ ἐμεγαλύνθη Σαμουὴλ, καὶ ἦν Κύριος μετ’ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔπεσεν ἀπὸ πάντων τῶν λόγων αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ ἔγνωσαν πᾶς Ἰσραὴλ ἀπὸ Δὰν καὶ ἕως Βηρσαβεὲ, ὅτι πιστὸς Σαμονὴλ εἰς προφήτην τῷ Κυρίῳ. Καὶ προσέθετο Κύριος δηλωθῆναι ἐν Σηλὼμε, ὅτι ἀπεκαλύφθη Κύριος πρὸς Σαμουήλ· καὶ ἐπιστεύθη Σαμουὴλ τοῦ προφήτης γενέσθαι τῷ Κυρίῳ εἰς πάντα Ἰσραὴλ ἀπ’ ἄκρων τῆς γῆς καὶ ἕως ἄκρων· καὶ Ἠλὶ πρεσβύτης σφόδρα, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ πορεύομενοι ἐπορεύοντο, καὶ πονηρὰ ἡ ὁδὸς αὐτῶν ἐνώπιον Κυρίου.

# 4

Καὶ ἐγενήθη ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ συναθροίζονται ἀλλόφυλοι ἐπὶ Ἰσραὴλ εἰς πόλεμον· καὶ ἐξῆλθεν Ἰσραὴλ εἰς ἀπάντησιν αὐτοῖς εἰς πόλεμον, καὶ παρεμβάλλουσιν ἐπὶ Ἀβενέζερ· καὶ οἱ ἀλλόφυλοι παρεμβάλλουσιν ἐν Ἀφέκ. Καὶ παρατάσσονται

ἀλλόφυλοι εἰς πόλεμον ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἔκλινεν ὁ πόλεμος, καὶ ἔπταισεν ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἐνώπιον ἀλλοφύλων, καὶ ἐπλήγησαν ἐν τῇ παρατάξει ἐν ἀγρῷ τέσσαρες χιλιάδες ἀνδρῶν. Καὶ ἦλθεν ὁ λαὸς εἰς τὴν παρεμβολήν, καὶ εἶπαν οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραὴλ, κατὰ τί ἔπταισεν ἡμᾶς Κύριος σήμερον ἐνώπιον ἀλλοφύλων; λάβωμεν τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐκ Σηλώμ, καὶ ἐξελθέτω ἐκ μέσου ἡμῶν, καὶ σώσει ἡμᾶς ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν ἡμῶν. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ λαὸς εἰς Σηλὼμ, καὶ αἴρουσιν ἐκεῖθεν τὴν κιβωτὸν Κυρίου καθημένου χερουβίμ· καὶ ἀμφότεροι οἱ υἱοὶ Ἠλὶ μετὰ τῆς κιβωτοῦ, Ὀφνὶ καὶ Φινεές. Καὶ ἐγενήθη ὡς ἦλθεν ἡ κιβωτὸς Κυρίου εἰς τὴν παρεμβολὴν, καὶ ἀνέκραξεν πᾶς Ἰσραὴλ φωνῇ μεγάλῃ, καὶ ἤχησεν ἡ γῆ. Καὶ ἤκουσαν οἱ ἀλλόφυλοι τῆς κραυγῆς, καὶ εἶπον οἱ ἀλλόφυλοι, τίς ἡ κραυγὴ ἡ μεγάλη αὕτη ἐν τῇ παρεμβολῇ τῶν Ἑβραίων; καὶ ἔγνωσαν ὅτι κιβωτὸς Κυρίου ἥκει εἰς τὴν παρεμβολήν. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἀλλόφυλοι, καὶ εἶπον, οὗτοι οἱ θεοὶ ἥκασι πρὸς αὐτοὺς εἰς τὴν παρεμβολήν. Οὐαὶ ἡμῖν, ἐξελοῦ ἡμᾶς Κύριε σήμερον, ὅτι οὐ γέγονε τοιαύτη ἐχθὲς καὶ τρίτην· οὐαὶ ἡμῖν, τίς ἐξελεῖται ἡμᾶς ἐκ χειρὸς τῶν θεῶν τῶν στερεῶν τούτων; οὗτοι οἱ θεοὶ οἱ πατάξαντες τὴν Αἴγυπτον ἐν πάσῃ πληγῇ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ. Κραταιοῦσθε καὶ γίνεσθε εἰς ἄνδρας ἀλλόφυλοι, ὅπως μὴ δουλεύσητε τοῖς Ἑβραίοις, καθὼς ἐδούλευσαν ἡμῖν, καὶ ἔσεσθε εἰς ἄνδρας, καὶ πολεμήσατε αὐτούς. Καὶ ἐπολέμησαν αὐτούς· καὶ πταίει ἀνὴρ Ἰσραὴλ, καὶ ἔφυγεν ἕκαστος εἰς σκήνωμα αὐτοῦ· καὶ ἐγένετο πληγὴ μεγάλη σφόδρα· καὶ ἔπεσον ἐξ Ἰσραὴλ τριάκοντα χιλιάδες ταγμάτων. Καὶ κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ ἐλήφθη, καὶ ἀμφότεροι οἱ υἱοὶ Ἠλὶ ἀπέθανον, Ὀφνὶ καὶ Φινεές. Καὶ ἔδραμεν ἀνὴρ Ἰεμιναῖος ἐκ τῆς παρατάξεως, καὶ ἦλθεν εἰς Σηλὼμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ διερῥωγότα, καὶ γῆ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς

αὐτοῦ. Καὶ ἦλθε, καὶ ἰδοὺ Ἠλὶ ἐπὶ τοῦ δίφρου παρὰ τὴν πύλην σκοπεύων τὴν ὁδὸν, ὅτι ἦν καρδία αὐτοῦ ἐξεστηκυῖα περὶ τῆς κιβωτοῦ τοῦ Θεοῦ· καὶ ὁ ἄνθρωπος εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν ἀπαγγεῖλαι· καὶ ἀνεβόησεν ἡ πόλις. Καὶ ἤκουσεν Ἠλὶ τὴν φωνὴν τῆς βοῆς, καὶ εἶπε, τίς ἡ φωνῆ τῆς βοῆς ταύτης; καὶ ὁ ἄνθρωπος σπεύσας εἰσῆλθε, καὶ ἀπήγγειλε τῷ Ἠλί. Καὶ Ἠλὶ υἱὸς ἐνενήκοντα ἐτῶν, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐπανέστησαν, καὶ οὐκ ἐπέβλεπε. Καὶ εἶπεν Ἠλὶ τοῖς ἀνδράσιν τοῖς περιεστηκόσιν αὐτῷ, τίς ἡ φωνὴ τοῦ ἤχου τούτου; καὶ ὁ ἀνὴρ σπεύσας προσῆλθε πρὸς Ἠλὶ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἐγώ εἰμι ὁ ἥκων ἐκ τῆς παρεμβολῆς, κἀγὼ πέφευγα ἐκ τῆς παρατάξεως σήμερον· καὶ εἶπεν Ἠλὶ, τί τὸ γεγονὸς ῥῆμα, τέκνον; Καὶ ἀπεκρίθη τὸ παιδάριον, καὶ εἶπε, πέφευγεν ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἐκ προσώπου ἀλλοφύλων, καὶ ἐγένετο πληγὴ μεγάλη ἐν τῷ λαῷ, καὶ ἀμφότεροι οἱ υἱοί σου τεθνήκασι, καὶ ἡ κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ ἐλήφθη. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐμνήσθη τῆς κιβωτοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἔπεσεν ἀπὸ τοῦ δίφρου ὀπισθίως ἐχόμενος τῆς πύλης, καὶ συνετρίβη ὁ νῶτος αὐτοῦ, καὶ ἀπέθανεν, ὅτι πρεσβύτης ὁ ἄνθρωπος καὶ βαρύς· καὶ αὐτὸς ἔκρινε τὸν Ἰσραὴλ εἴκοσι ἔτη. Καὶ νύμφη αὐτοῦ γυνὴ Φινεὲς συνειληφυῖα τοῦ τεκεῖν, καὶ ἤκουσε τὴν ἀγγελίαν, ὅτι ἐλήφθη ἡ κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ, καὶ ὅτι τέθνηκεν ὁ πενθερὸς αὐτῆς καὶ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, καὶ ἔκλαυσε καὶ ἔτεκεν, ὅτι ἐπεστράφησαν ἐπ’ αὐτὴν ὠδῖνες αὐτῆς· Καὶ ἐν τῷ καιρῷ αὐτῆς ἀποθνήσκει· καὶ εἶπον αὐτῇ αἱ γυναῖκες αἱ παρεστηκυῖαι αὐτῇ, μὴ φοβοῦ, ὅτι υἱὸν τέτοκασ· καὶ οὐκ ἀπεκρίθη, καὶ οὐκ ἐνόησαν ἡ καρδία αὐτῆς. Καὶ ἐκάλεσε τὸ παιδάριον Οὐαιβαρχαβώθ ὑπὲρ τῆς κιβωτοῦ τοῦ Θεοῦ, καὶ ὑπὲρ τοῦ πενθεροῦ αὐτῆς, καὶ ὑπὲρ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς. Καὶ εἶπαν, ἀπῴκισται δόξα Ἰσραὴλ ἐν τῷ ληφθῆναι τὴν κιβωτὸν Κυρίου.

# 5

Καὶ ἀλλόφυλοι ἔλαβον τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ, καὶ εἰσήνεγκαν αὐτὴν ἐξ Ἀβενεζὲρ εἰς Ἄζωτον. Καὶ ἔλαβον ἀλλόφυλοι τὴν κιβωτὸν Κυρίου, καὶ εἰσήνεγκαν αὐτὴν εἰς οἶκον Δαγὼν, καὶ παρέστησαν αὐτὴν παρὰ Δαγών. Καὶ ὤρθρισαν οἱ Ἀζώτιοι, καὶ εἰσῆλθον εἰς οἶκον Δαγών· καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ Δαγὼν πεπτωκὼς ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐνώπιον κιβωτοῦ τοῦ Θεοῦ· καὶ ἤγειραν τὸν Δαγὼν, καὶ κατέστησαν εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ· καὶ ἐβαρύνθη χεὶρ Κυρίου ἐπὶ τοὺς Ἀζωτίους, καὶ ἐβασάνισεν αὐτούς· καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς εἰς τὰς ἕδρας αὐτῶν, τὴν Ἄζωτον καὶ τὰ ὅρια αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο ὅτε ὤρθρισαν τοπρωΐ, καὶ ἰδοὺ Δαγὼν, πεπτωκὼς ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐνώπιον κιβωτοῦ διαθήκης Κυρίου· καὶ κεφαλὴ Δαγὼν καὶ ἀμφότερα τὰ ἴχνη χειρῶν αὐτοῦ ἀφῃρημένα ἐπὶ τὰ ἐμπρόσθια ἁμαφὲθ ἕκαστοι, καὶ ἀμφότεροι οἱ καρποὶ τῶν χειρῶν αὐτοῦ πεπτωκότες ἐπὶ τὸ πρόθυρον, πλὴν ἡ ῥάχις Δαγὼν ὑπελείφθη. Διὰ τοῦτο οὐκ ἐπιβαίνουσιν οἱ ἱερεῖς Δαγὼν, καὶ πᾶς ὁ εἰσπορευόμενος εἰς οἶκον Δαγὼν, ἐπὶ βαθμὸν οἴκου Δαγὼν ἐν Ἀζώτῳ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ὅτι ὑπερβαίνοντες ὑπερβαίνουσι. Καὶ ἐβαρύνθη ἡ χεὶρ Κυρίου ἐπὶ Ἄζωτον, καὶ ἐπήγαγεν αὐτοῖς, καὶ ἐξέζεσεν αὐτοῖς εἰς τὰς ναῦς, καὶ μέσον τῆς χώρας αὐτῆς ἀνεφύησαν μύες· καὶ ἐγένετο σύγχυσις θανάτου μεγάλη ἐν τῇ πόλει. Καὶ εἶδον οἱ ἄνδρες Ἀζώτου ὅτι οὕτως, καὶ λέγουσιν, ὅτι οὐ καθήσεται κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ Ἰσραὴλ μεθ’ ἡμῶν, ὅτι σκληρὰ χεὶρ αὐτοῦ ἐφ’ ἡμᾶς καὶ ἐπὶ Δαγὼν θεὸν ἡμῶν. Καὶ ἀποστέλλουσι καὶ συνάγουσι τοὺς σατράπας τῶν ἀλλοφύλων πρὸς αὐτοὺς, καὶ λέγουσι, τί ποιήσωμεν τῇ κιβωτῷ Θεοῦ Ἰσραήλ; καὶ λέγουσιν οἱ Γεθαῖοι,

μετελθέτω κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ πρὸς ἡμᾶς· καὶ μετῆλθε κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ Ἰσραὴλ εἰς Γέθ. Καὶ ἐγενήθη μετὰ τὸ μετελθεῖν αὐτὴν, καὶ γίνεται χεὶρ Κυρίου τῇ πόλει, τάραχος μέγας σφόδρα· καὶ ἐπάταξε τοὺς ἄνδρας τῆς πόλεως ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς εἰς τὰς ἕδρας αὐτῶν· καὶ ἐποίησαν οἱ Γεθαῖοι ἑαυτοῖς ἕδρας. Καὶ ἐξαποστέλλουσι τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ εἰς Ἀσκάλωνα· καὶ ἐγενήθη ὡς εἰσῆλθε κιβωτὸς Θεοῦ εἰς Ἀσκάλωνα, καὶ ἐβόησαν οἱ Ἀσκαλωνῖται, λέγοντες, τί ἀπεστρέψατε τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ Ἰσραὴλ πρὸς ἡμᾶς θανατῶσαι ἡμᾶς καὶ τὸν λαὸν ἡμῶν; Καὶ ἐξαποστέλλουσι καὶ συνάγουσι τοὺς σατράπας τῶν ἀλλοφύλων, καὶ εἶπον, ἐξαποστείλατε τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ, καὶ καθισάτω εἰς τὸν τόπον αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ θανατώσῃ ἡμᾶς καὶ τὸν λαὸν ἡμῶν· Ὅτι ἐγενήθη σύγχυσις ἐν ὅλῃ τῇ πόλει βαρεῖα σφόδρα, ὡς εἰσῆλθεν κιβωτὸς Θεοῦ Ἰσραὴλ ἐκεῖ. καὶ οἱ ζῶντες καὶ οὐκ ἀποθανόντες ἐπλήγησαν εἰς τὰς ἕδρας· καὶ ἀνέβη ἡ κραυγὴ τῆς πόλεως εἰς τὸν οὐρανόν.

# 6

Καὶ ἦν ἡ κιβωτὸς ἐν ἀγρῷ τῶν ἀλλοφύλων ἑπτὰ μῆνας, καὶ ἐξέζεσεν ἡ γῆ αὐτῶν μύας. Καὶ καλοῦσιν ἀλλόφυλοι τοὺς ἱερεῖς καὶ τοὺς μάντεις καὶ τοὺς ἐπαοιδοὺς αὐτῶν, λέγοντες, τί ποιήσωμεν τῇ κιβωτῷ Κυρίου; γνωρίσατε ἡμῖν ἐν τίνι ἀποστελοῦμεν αὐτὴν εἰς τὸν τόπον αὐτῆς. Καὶ εἶπαν, εἰ ἐξαποστέλλετε ὑμεῖς τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου Θεοῦ Ἰσραήλ, μὴ δὴ ἐξαποστείλητε αὐτὴν κενήν, ἀλλὰ ἀποδιδόντες ἀπόδοτε αὐτῇ τῆς βασάνου, καὶ τότε ἰαθήσεσθε, καὶ ἐξιλασθήσεται ὑμῖν· μὴ οὐκ ἀποστῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ

ἀφ’ ὑμῶν; Καὶ λέγουσι, τί τὸ τῆς βασάνου ἀποδώσομεν αὐτῇ; καὶ εἶπαν, κατα ἀριθμὸν τῶν σατραπῶν τῶν ἀλλοφύλων πέντε ἕδρας χρυσᾶς, ὅτι πταῖσμα ἐν ὑμῖν καὶ τοῖς ἄρχουσιν ὑμῶν καὶ τῷ λαῷ, καὶ μῦς χρυσοῦς ὁμοίωμα τῶν μυῶν ὑμῶν τῶν διαφθειρόντων τὴν γῆν· καὶ δώσετε τῷ Κυρίῳ δόξαν, ὅπως κουφίσῃ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἀφ’ ὑμῶν, καὶ ἀπὸ τῶν θεῶν ὑμῶν, καὶ ἀπὸ τῆς γῆς ὑμῶν. Καὶ ἱνατί βαρύνετε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὡς ἐβάρυνεν Αἴγυπτος καὶ Φαραὼ τὴν καρδίαν αὐτῶν; οὐχὶ ὅτε ἐνέπαιξεν αὐτοῖς, ἐξαπέστειλαν αὐτοὺς καὶ ἀπῆλθον; Καὶ νῦν λάβετε καὶ ποιήσατε ἅμαξαν καινὴν, καὶ δύο βόας πρωτοτοκούσας ἄνευ τῶν τέκνων· καὶ ζεύξατε τὰς βόας ἐν τῇ ἁμάξῃ, καὶ ἀπαγάγετε τὰ τὲκνα ἀπὸ ὄπισθεν αὐτῶν εἰς οἶκον. Καὶ λήψεσθε τὴν κιβωτὸν, καὶ θήσετε αὐτὴν ἐπὶ τὴν ἅμαξαν, καὶ τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ ἀποδώσετε αὐτῇ τῆς βασάνου, καὶ θήσετε ἐν θέματι βερσεχθὰν ἐκ μέρους αὐτῆς· καὶ ἐξαποστελεῖτε αὐτὴν, καὶ ἀπελάσατε αὐτήν, καὶ ἀπελεύσεσθε. Καὶ ὄψεσθε, εἰ ὁδὸν ὁρίων αὐτῆς πορεύσεται μετὰ Βαιθσαμὺς, αὐτὸς πεποίηκεν ἡμῖν τὴν κακίαν τὴν μεγάλην ταύτην· καὶ ἐὰν μὴ, καὶ γνωσόμεθα ὅτι οὐ χεὶρ αὐτοῦ ἥπται ἡμῶν, ἀλλὰ σύμπτωμα τοῦτο γέγονεν ἡμῖν. Καὶ ἐποίησαν οἱ ἀλλόφυλοι οὕτω· καὶ ἔλαβον δύο βόας πρωτοτοκούσας, καὶ ἔζευξαν αὐτὰς ἐν τῇ ἁμάξῃ, καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ἀπεκώλυσαν εἰς οἶκον· Καὶ ἔθεντο τὴν κιβωτὸν Κυρίου ἐπὶ τὴν ἅμαξαν, καὶ τὸ θέμα ἐργὰβ καὶ τοὺς μῦς τοὺς χρυσοῦς. Καὶ κατεύθυναν αἱ βόες ἐν τῇ ὁδῷ εἰς ὁδὸν Βαιθσαμὺς, ἐν τρίβῳ ἑνὶ ἐπορεύοντο καὶ ἐκοπίων, καὶ οὐ μεθίσταντο δεξιὰ οὐδὲ ἀριστερά· καὶ οἱ σατράπαι τῶν ἀλλοφύλων ἐπορεύοντο ὀπίσω αὐτῆς ἕως ὁρίων Βαιθσαμύς. Καὶ οἱ ἐν Βαιθσαμὺς ἐθέριζον θερισμὸν πυρῶν ἐν κοιλάδι· καὶ ᾖραν ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ εἶδον κιβωτὸν Κυρίου, καὶ ηὐφράνθησαν εἰς ἀπάντησιν αὐτῆς. Καὶ ἡ

ἅμαξα εἰσῆλθεν εἰς ἀγρὸν Ὡσῆὲ τὸν ἐν Βαιθσαμὺς, καὶ ἔστησαν ἐκεῖ παρ᾽ αὐτῇ λίθον μέγαν· καὶ σχίζουσι τὰ ξύλα τῆς ἁμάξης, καὶ τὰς βόας ἀνήνεγκαν εἰς ὁλοκαύτωσιν τῷ κυρίῳ. Καὶ οἱ Λευῖται ἀνήνεγκαν τὴν κιβωτὸν τοῦ Κυρίου, καὶ τὸ θέμα ἐργὰβ μετ᾽ αὐτῆς, καὶ τὰ ἐπ᾽ αὐτῆς σκεύη τὰ χρυσᾶ, καὶ ἔθεντο ἐπὶ τοῦ λίθου τοῦ μεγάλου· καὶ οἱ ἄνδρες Βαιθσαμὺς ἀνήνεγκαν ὁλοκαυτώσεις καὶ θυσίας ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τῷ Κυρίῳ. Καὶ οἱ πέντε σατράπαι τῶν ἀλλοφύλων ἑώρων, καὶ ἀνέστρεψαν εἰς Ἀσκάλωνα τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ αὗται αἱ ἕδραι αἱ χρυσαῖ, ἃς ἀπέδωκαν οἱ ἀλλόφυλοι τῆς βασάνου τῷ Κυρίῳ· τῆς Ἀζώτου μίαν, τῆς Γάζης μίαν, τῆς Ἀσκάλωνος μίαν, τῆς Γὲθ μίαν, τῆς Ἀκκαρὼν μίαν. Καὶ μῦς οἱ χρυσοῖ κατ᾽ ἀριθμὸν πασῶν πόλεων τῶν ἀλλοφύλων τῶν πέντε σατραπῶν ἐκ πόλεως ἐστερεωμένης καὶ ἕως κώμης τοῦ Φερεζαίου, καὶ ἕως λίθου τοῦ μεγάλου, οὗ ἐπέθηκαν ἐπ᾽ αὐτοῦ τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου, τοῦ ἐν ἀγρῷ Ὡσηὲ τοῦ Βαιθσαμυσίτου. Καὶ οὐκ ἠσμένισαν οἱ υἱοὶ Ἰεχονίου ἐν τοῖς ἀνδράσι Βαιθσαμὺς, ὅτι εἶδαν κιβωτὸν Κυρίου· καὶ ἐπάταξεν ἐν αὐτοῖς ἑβδομήκοντα ἄνδρας, καὶ πεντήκοντα χιλιάδας ἀνδρῶν· καὶ ἐπένθησεν ὁ λαός, ὅτι ἐπάταξε Κύριος ἐν τῷ λαῷ πληγὴν μεγάλην σφόδρα. Καὶ εἶπαν οἱ ἄνδρες οἱ ἐκ Βαιθσαμὺς, τίς δυνήσεται διελθεῖν ἐνώπιον Κυρίου τοῦ Θεοῦ τοῦ ἁγίου τούτου; καὶ πρὸς τίνα ἀναβήσεται κιβωτὸς Κυρίου ἀφ᾽ ἡμῶν; Καὶ ἀποστέλλουσιν ἀγγέλους πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Καριαθιαρεὶμ, λέγοντες, ἀπεστρόφασιν ἀλλόφυλοι τὴν κιβωτὸν Κυρίου, κατάβητε καὶ ἀναγάγετε αὐτὴν πρὸς ἑαυτούς.

# 7

Καὶ ἔρχονται οἱ ἄνδρες Καριαθιαρὶμ, καὶ ἀνάγουσι τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου· καὶ εἰσάγουσιν αὐτὴν εἰς οἶκον Ἀμιναδὰβ τὸν ἐν τῷ βουνῷ· καὶ τὸν Ἐλεάζαρ τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἡγίασαν φυλάσσειν τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου. Καὶ ἐγενήθη ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἦν ἡ κιβωτὸς ἐν Καριαθιαρὶμ, ἐπλήθυναν αἱ ἡμέραι, καὶ ἐγένετο εἴκοσι ἔτη· καὶ ἐπέβλεψε πᾶς οἶκος Ἰσραὴλ ὀπίσω Κυρίου. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς πάντα οἶκον Ἰσραὴλ, λέγων, εἰ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ὑμῶν ὑμεῖς ἐπιστρέφετε πρὸς Κύριον, περιέλετε θεοὺς ἀλλοτρίους ἐκ μέσου ὑμῶν, καὶ τὰ ἄλση, καὶ ἑτοιμάσατε τὰς καρδίας ὑμῶν πρὸς Κύριον, καὶ δουλεύσατε αὐτῷ μόνῳ, καὶ ἐξελεῖται ὑμᾶς ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων. Καὶ περιεῖλον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὰς Βααλὶμ καὶ τὰ ἄλση Ἀσταρὼθ, καὶ ἐδούλευσαν Κυρίῳ μόνῳ. Καὶ εἶπε Σαμουήλ, ἀθροίσατε πάντα Ἰσραὴλ εἰς Μασσηφὰθ, καὶ προσεύξομαι περὶ ὑμῶν πρὸς Κύριον. Καὶ συνήχθησαν εἰς Μασσηφὰθ, καὶ ὑδρεύονται ὕδωρ, καὶ ἐξέχεαν ἐνώπιον Κυρίου ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἐνήστευσαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ εἶπαν, ἡμαρτήκαμεν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἐδίκαζε Σαμουὴλ τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ εἰς Μασσηφάθ. Καὶ ἤκουσαν οἱ ἀλλόφυλοι ὅτι συνηθροίσθησαν πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ εἰς Μασσηφάθ· καὶ ἀνέβησαν σατράπαι ἀλλοφύλων ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἀκούουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ, καὶ ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου ἀλλοφύλων. Καὶ εἶπαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ πρὸς Σαμουήλ, μὴ παρασιωπήσῃς ἀφ’ ἡμῶν τοῦ μὴ βοᾷν πρὸς Κύριον Θεόν σου, καὶ σώσει ἡμᾶς ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων. Καὶ ἔλαβε Σαμουὴλ ἄρνα γαλαθηνὸν ἕνα, καὶ ἀνήνεγκεν αὐτὸν ὁλοκαύτωσιν σὺν παντὶ τῷ λαῷ τῷ Κυρίῳ· καὶ ἐβόησε Σαμουὴλ πρὸς Κύριον περὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπήκουσεν αὐτοῦ Κύριος. Καὶ ἦν Σαμουὴλ ἀναφέρων τὴν ὁλοκαύτωσιν· καὶ ἀλλόφυλοι προσῆγον εἰς πόλεμον ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἐβρόντησε Κύριος ἐν φωνῇ μεγάλῃ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπὶ

τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ συνεχύθησαν καὶ ἔπταισαν ἐνώπιον Ἰσραήλ. Καὶ ἐξῆλθον ἄνδρες Ἰσραὴλ ἐκ Μασσηφὰθ, καὶ κατεδίωξαν τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ ἐπάταξαν αὐτοὺς ἕως ὑποκάτω τοῦ Βαιθχόρ. Καὶ ἔλαβεν Σαμουὴλ λίθον ἕνα, καὶ ἔστησεν αὐτὸν ἀναμέσον Μασσηφὰθ καὶ ἀναμέσον τῆς παλαιᾶς· καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἀβενέζερ, λίθος τοῦ βοηθοῦ· καὶ εἶπεν, ἕως ἐνταῦθα ἐβοήθησεν ἡμῖν Κύριος. Καὶ ἐταπείνωσε Κύριος τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ οὐ προσέθεντο ἔτι προσελθεῖν εἰς ὅριον Ἰσραήλ· καὶ ἐγενήθη χεὶρ Κυρίου ἐπὶ τοὺς ἀλλοφύλους πάσας τὰς ἡμέρας τοῦ Σαμουήλ. Καὶ ἀπεδόθησαν αἱ πόλεις ἃς ἔλαβον οἱ ἀλλόφυλοι παρὰ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἀπέδωκαν αὐτὰς τῷ Ἰσραὴλ ἀπὸ Ἀσκάλωνος ἕως Ἀζόβ· καὶ τὸ ὅριον Ἰσραὴλ ἀφείλοντο ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων· καὶ ἦν εἰρήνη ἀναμέσον Ἰσραὴλ καὶ ἀναμέσον τοῦ Ἀμορῥαίου. Καὶ ἐδίκαζεν Σαμουὴλ τὸν Ἰσραὴλ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζεῆς αὐτοῦ. Καὶ ἐπορεύετο κατ' ἐνιαυτὸν ἐνιαυτὸν, καὶ ἐκύκλου Βαιθὴλ καὶ τὴν Γαλγαλὰ καὶ τὴν Μασσηφάθ· καὶ ἐδίκαζε τὸν Ἰσραὴλ ἐν πᾶσι τοῖς ἡγιασμένοις τούτοις. Ἡ δὲ ἀποστροφὴ αὐτοῦ εἰς Ἀρμαθάιμ, ὅτι ἐκεῖ ἦν ὁ οἶκος αὐτοῦ· καὶ ἐδίκαζεν ἐκεῖ τὸν Ἰσραήλ, καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ.

# 8

Καὶ ἐγένετο ὡς ἐγήρασε Σαμουὴλ, καὶ κατέστησε τούς υἱοὺς αὐτοῦ δικαστὰς τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν υἱῶν αὐτοῦ· πρωτότοκος Ἰωήλ, καὶ ὄνομα τοῦ δευτέρου Ἀβιά, δικασταὶ ἐν Βηρσαβεέ. Καὶ οὐκ ἐπορεύθησαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐν ὁδῷ αὐτοῦ· καὶ ἐξέκλιναν ὀπίσω τῆς συντελείας, καὶ ἐλάμβανον δῶρα, καὶ

ἐξέκλινον δικαιώματα. Καὶ συναθροίζονται ἄνδρες Ἰσραὴλ, καὶ παραγίνονται εἰς Ἀρμαθαὶμ πρὸς Σαμουὴλ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, ἰδοὺ, σὺ γεγήρακας, καὶ οἱ υἱοί σου οὐ πορεύονται ἐν τῇ ὁδῷ σου· καὶ νῦν κατάστησον ἐφ' ἡμᾶς βασιλέα δικάζειν ἡμᾶς, καθὰ καὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη. Καὶ πονηρὸν τὸ ῥῆμα ἐν ὀφθαλμοῖς Σαμουήλ, ὡς εἶπαν, δὸς ἡμῖν βασιλέα δικάζειν ἡμᾶς· καὶ προσηύξατο Σαμουὴλ πρὸς Κύριον. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουήλ, ἄκουε τῆς φωνῆς τοῦ λαοῦ, καθὰ ἂν λαλῶσί σοι, ὅτι οὐ σὲ ἐξουθενήκασιν, ἀλλ' ἢ ἐμὲ ἐξουθενήκασι τοῦ μὴ βασιλεύειν ἐπ' αὐτῶν. Κατὰ πάντα τὰ ποιήματα, ἃ ἐποίησάν μοι ἀφ' ἧς ἡμέρας ἀνήγαγον αὐτοὺς ἐξ Αἰγύπτου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἐδούλευον θεοῖς ἑτέροις, οὕτως αὐτοὶ ποιοῦσι καὶ σοί. Καὶ νῦν ἄκουε τῆς φωνῆς αὐτῶν· πλὴν ὅτι διαμαρτυρόμενος διαμαρτύρῃ αὐτοῖς, καὶ ἀπαγγελεῖς αὐτοῖς τὸ δικαίωμα τοῦ βασιλέως ὃς βασιλεύσει ἐπ' αὐτούς. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πᾶν τὸ ῥῆμα τοῦ κυρίου πρὸς τὸν λαὸν τοὺς αἰτοῦντας παρ' αὐτοῦ βασιλέα. Καὶ εἶπε, τοῦτο ἔσται τὸ δικαίωμα τοῦ βασιλέως ὃς βασιλεύσει ἐφ' ὑμᾶς· τοὺς υἱοὺς ὑμῶν λήψεται, καὶ θήσεται αὐτοὺς ἐν ἅρμασιν αὐτοῦ, καὶ ἐν ἱππεῦσιν αὐτοῦ, καὶ προτρέχοντας τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ, καὶ θέσθαι αὐτοὺς ἑαυτῷ ἑκατονάρχους καὶ χιλιάρχους, καὶ θερίζειν θερισμὸν αὐτοῦ, καὶ τρυγᾷν τρυγητὸν αὐτοῦ, καὶ ποιεῖν σκεύη πολεμικὰ αὐτοῦ, καὶ σκεύη ἁρμάτων αὐτοῦ. Καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν λήψεται εἰς μυρεψοὺς, καὶ εἰς μαγειρίσσας, καὶ εἰς πεσσούσας. Καὶ τοὺς ἀγροὺς ὑμῶν, καὶ τοὺς ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς ἐλαιῶνας ὑμῶν τοὺς ἀγαθοὺς λήψεται, καὶ δώσει τοῖς δούλοις ἑαυτοῦ. Καὶ τὰ σπέρματα ὑμῶν καὶ τοὺς ἀμπελῶνας ὑμῶν ἀποδεκατώσει, καὶ δώσει τοῖς εὐνούχοις αὐτοῦ, καὶ τοῖς δούλοις αὐτοῦ. Καὶ τοὺς δούλους ὑμῶν, καὶ τὰς δούλας ὑμῶν, καὶ τὰ βουκόλια ὑμῶν τὰ

ἀγαθὰ, καὶ τοὺς ὄνους ὑμῶν λήψεται, καὶ ἀποδεκατώσει εἰς τὰ ἔργα αὐτοῦ· Καὶ τὰ ποίμνια ὑμῶν ἀποδεκατώσει, καὶ ὑμεῖς ἔσεσθε αὐτῷ δοῦλοι. Καὶ βοήσεσθε ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ προσώπου βασιλέως ὑμῶν οὗ ἐξελέξασθε ἑαυτοῖς, καὶ οὐκ ἐπακούσεται Κύριος ὑμῶν ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ὅτι ὑμεῖς ἐξελέξασθε ἑαυτοῖς βασιλέα. Καὶ οὐκ ἐβούλετο ὁ λαὸς ἀκοῦσαι τοῦ Σαμουὴλ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, οὐχὶ, ἀλλ’ ἢ βασιλεὺς ἔσται ἐφ’ ἡμᾶς. Καὶ ἐσόμεθα καὶ ἡμεῖς καθὰ πάντα τὰ ἔθνη· καὶ δικάσει ἡμᾶς βασιλεὺς ἡμῶν, καὶ ἐξελεύσεται ἔμπροσθεν ἡμῶν, καὶ πολεμήσει τὸν πόλεμον ἡμῶν. Καὶ ἤκουσε Σαμουὴλ πάντας τοὺς λόγους τοῦ λαοῦ, καὶ ἐλάλησεν αὐτοὺς εἰς τὰ ὦτα Κυρίου. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουήλ, ἄκουε τῆς φωνῆς αὐτῶν, καὶ βασίλευσον αὐτοῖς βασιλέα· καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς ἄνδρας Ἰσραήλ, ἀποτρεχέτω ἕκαστος εἰς τὴν πόλιν αὐτοῦ.

# 9

Καὶ ἀνὴρ ἐξ υἱῶν Βενιαμίν, καὶ ὄνομα αὐτῷ Κίς, υἱὸς ’Αβιὴλ, υἱοῦ Ἰαρὲδ, υἱοῦ Βαχὶρ, υἱοῦ ’Αφὲκ, υἱοῦ ἀνδρὸς Ἰεμιναίου, ἀνὴρ δυνατός. Καὶ τούτῳ υἱός, καὶ ὄνομα αὐτῷ Σαούλ, εὐμεγέθης, ἀνὴρ ἀγαθός, καὶ οὐκ ἦν ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ ἀγαθὸς ὑπὲρ αὐτόν, ὑπερωμίαν καὶ ἐπάνω ὑψηλὸς ὑπὲρ πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀπώλοντο αἱ ὄνοι Κὶς πατρὸς Σαούλ· καὶ εἶπε Κὶς πρὸς Σαοὺλ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, λάβε μετὰ σεαυτοῦ ἓν τῶν παιδαρίων, καὶ ἀνάστητε καὶ πορεύθητε καὶ ζητήσατε τὰς ὄνους. Καὶ διῆλθον δι’ ὄρους Ἐφράιμ, καὶ διῆλθον διὰ τῆς γῆς Σελχὰ, καὶ οὐχ εὗρον· καὶ διῆλθον διὰ τῆς γῆς Σεγαλὶμ, καὶ οὐκ ἦν· καὶ διῆλθον διὰ τῆς γῆς Ἰαμὶν, καὶ οὐχ

εὗρον. Αὐτῶν δὲ ἐλθόντων εἰς τὴν Σὶφ, καὶ Σαοὺλ εἶπε τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ τῷ μετ᾽ αὐτοῦ, δεῦρο καὶ ἀποστρέψωμεν, μὴ ἀνεὶς ὁ πατήρ μου τὰς ὄνους, φροντίζῃ τὰ περὶ ἡμῶν. Καὶ εἶπεν αὐτῷ τὸ παιδάριον, ἰδοὺ δὴ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, καὶ ὁ ἄνθρωπος ἔνδοξος, πᾶν ὃ ἐὰν λαλήσῃ παραγινόμενον παρέσται· καὶ νῦν πορευθῶμεν, ὅπως ἀπαγγείλῃ ἡμῖν τὴν ὁδὸν ἡμῶν ἐφ᾽ ἣν ἐπορευθημεν ἐπ᾽ αὐτήν. Καὶ εἶπε Σαοὺλ τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ τῷ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ πορευσόμεθα· καὶ τί οἴσομεν τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ; ὅτι οἱ ἄρτοι ἐκλελοίπασιν ἐκ τῶν ἀγγείων ἡμῶν, καὶ πλεῖον οὐκ ἔστι μεθ᾽ ἡμῶν εἰσενεγκεῖν τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ τὸ ὑπάρχον ἡμῖν. Καὶ προσέθετο τὸ παιδάριον ἀποκριθῆναι τῷ Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ εὕρηται ἐν τῇ χειρί μου τέταρτον σίκλου ἀργυρίου, καὶ δώσεις τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἀπαγγελεῖ ἡμῖν τὴν ὁδὸν ἡμῶν. Καὶ ἔμπροσθεν ἐν Ἰσραὴλ τάδε ἔλεγεν ἕκαστος ἐν τῷ πορεύεσθαι ἐπερωτᾷν τὸν Θεὸν, δεῦρο καὶ πορευθῶμεν πρὸς τὸν βλέποντα· ὅτι τὸν προφήτην ἐκάλει ὁ λαὸς ἔμπροσθεν, ὁ βλέπων. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸ παιδάριον αὐτοῦ, ἀγαθὸν τὸ ῥῆμα, δεῦρο καὶ πορευθῶμεν· καὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὴν πόλιν οὗ ἦν ἐκεῖ ὁ ἄνθρωπος ὁ τοῦ Θεοῦ. Αὐτῶν ἀναβαινόντων τὴν ἀνάβασιν τῆς πόλεως, καὶ αὐτοὶ εὑρίσκουσι τὰ κοράσια ἐξεληλυθότα ὑδρεύεσθαι ὕδωρ, καὶ λέγουσιν αὐταῖς, εἰ ἔστιν ἐνταῦθα ὁ βλέπων; Καὶ ἀπεκρίθη τὰ κοράσια αὐτοῖς, καὶ λέγουσιν αὐτοῖς, ἔστιν· ἰδοὺ κατὰ πρόσωπον ὑμῶν· νῦν διὰ τὴν ἡμέραν ἥκει εἰς τὴν πόλιν, ὅτι θυσία σήμερον τῷ λαῷ ἐν Βαμᾷ. Ὡς ἂν εἰσέλθητε εἰς τὴν πόλιν, οὕτως εὑρήσετε αὐτὸν ἐν τῇ πόλει, πρὶν ἀναβῆναι αὐτὸν εἰς Βαμᾶ τοῦ φαγεῖν· ὅτι οὐ μὴ φάγῃ ὁ λαὸς ἕως τοῦ εἰσελθεῖν αὐτόν, ὅτι οὗτος εὐλογεῖ τὴν θυσίαν, καὶ μετὰ ταῦτα ἐσθίουσιν οἱ ξένοι· καὶ νῦν ἀνάβητε, ὅτι διὰ τὴν ἡμέραν εὑρήσετε αὐτόν. Καὶ ἀναβαίνουσι τὴν

πόλιν· αὐτῶν εἰσπορευομένων εἰς μέσον τῆς πόλεως, καὶ ἰδοὺ Σαμουὴλ ἐξῆλθεν εἰς τὴν ἀπάντησιν αὐτῶν, τοῦ ἀναβῆναι εἰς Βαμᾶ. Καὶ Κύριος ἀπεκάλυψε τὸ ὠτίον Σαμουὴλ ἡμέρᾳ μιᾷ ἔμπροσθεν τοῦ ἐλθεῖν πρὸς αὐτὸν Σαοὺλ, λέγων, ὡς ὁ καιρὸς, αὔριον ἀποστελῶ πρὸς σὲ ἄνδρα ἐκ γῆς Βενιαμίν, καὶ χρίσεις αὐτὸν εἰς ἄρχοντα ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ, καὶ σώσει τὸν λαόν μου ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων, ὅτι ἐπέβλεψα ἐπὶ τὴν ταπείνωσιν τοῦ λαοῦ μου, ὅτι ἦλθε βοὴ αὐτῶν πρὸς μέ. Καὶ Σαμουὴλ εἶδε τὸν Σαούλ, καὶ Κύριος ἀπεκρίθη αὐτῷ, ἰδοὺ ὁ ἄνθρωπος ὃν εἶπά σοι, οὗτος ἄρξει ἐν τῷ λαῷ μου. Καὶ προσήγαγε Σαοὺλ πρὸς Σαμουὴλ εἰς μέσον τῆς πόλεως, καὶ εἶπεν, ἀπάγγειλον δὴ ποῖος ὁ οἶκος τοῦ βλέποντος. Καὶ ἀπεκρίθη Σαμουὴλ τῷ Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι αὐτός· ἀνάβηθι ἔμπροσθέν μου εἰς Βαμὰ, καὶ φάγε μετ’ ἐμοῦ σήμερον, καὶ ἐξαποστελῶ σε πρωΐ, καὶ πάντα τὰ ἐν τῇ καρδίᾳ σου ἀπαγγελῶ σοι. Καὶ περὶ τῶν ὄνων σου τῶν ἀπολωλυιῶν σήμερον τριταίων, μὴ θῇς τὴν καρδίαν σου αὐταῖς, ὅτι εὕρηνται· καὶ τίνι τὰ ὡραῖα τοῦ Ἰσραήλ; οὐ σοὶ, καὶ τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός σου; Καὶ ἀπεκρίθη Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, οὐχὶ ἀνδρὸς υἱὸς Ἰεμιναίου ἐγώ εἰμι τοῦ μικροῦ σκήπτρου φυλῆς Ἰσραήλ; καὶ τῆς φυλῆς τῆς ἐλαχίστης ἐξ ὅλου σκήπτρου Βενιαμίν; καὶ ἱνατί ἐλάλησας πρὸς ἐμὲ κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο; Καὶ ἔλαβε Σαμουὴλ τὸν Σαοὺλ καὶ τὸ παιδάριον αὐτοῦ, καὶ εἰσήγαγεν αὐτοὺς εἰς τὸ κατάλυμα, καὶ ἔθετο αὐτοῖς ἐκεῖ τόπον ἐν πρώτοις τῶν κεκλημένων ὡσεὶ ἑβδομήκοντα ἀνδρῶν. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ τῷ μαγείρῳ, δός μοι τὴν μερίδα ἣν ἔδωκά σοι, ἣν εἶπά σοι θεῖναι αὐτὴν παρὰ σοί. Καὶ ἤψησεν ὁ μάγειρος τὴν κωλέαν, καὶ παρέθηκεν αὐτὴν ἐνώπιον Σαούλ· καὶ εἶπε Σαμουὴλ τῷ Σαούλ, ἰδοὺ ὑπόλειμμα, παράθες αὐτὸ ἐνώπιόν σου καὶ φάγε, ὅτι εἰς μαρτύριον τέθειταί σοι παρὰ τοὺς ἄλλους,

ἀπόκνιζε· καὶ ἔφαγεν Σαοὺλ μετὰ Σαμουὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ κατέβη ἐκ τῆς Βαμᾶ εἰς τὴν πόλιν· καὶ διέστρωσαν τῷ Σαοὺλ ἐπὶ τῷ δώματι, καὶ ἐκοιμήθη. Καὶ ἐγένετο ὡς ἀνέβαινεν ὁ ὄρθρος, καὶ ἐκάλεσε Σαμουὴλ τὸν Σαοὺλ ἐπὶ τῷ δώματι, λέγων, ἀνάστα, καὶ ἐξαποστελῶ σε· καὶ ἀνέστη Σαοὺλ, καὶ ἐξῆλθεν αὐτὸς καὶ Σαμουὴλ ἕως ἔξω. Αὐτῶν καταβαινόντων εἰς μέρος τῆς πόλεως, καὶ Σαμουὴλ εἶπε τῷ Σαοὺλ, εἶπον τῷ νεανίσκῳ, καὶ διελθέτω ἔμπροσθεν ἡμῶν· καὶ σὺ στῆθι ὡς σήμερον, καὶ ἄκουσον ῥῆμα Θεοῦ.

# 10

Καὶ ἔλαβε Σαμουὴλ τὸν φακὸν τοῦ ἐλαίου, καὶ ἐπέχεεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἐφίλησεν αὐτὸν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, οὐχὶ κέχρικέ σε Κύριος εἰς ἄρχοντα ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐπὶ Ἰσραήλ; καὶ σὺ ἄρξεις ἐν λαῷ Κυρίου, καὶ σὺ σώσεις αὐτὸν ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν αὐτοῦ· καὶ τοῦτό σοι τὸ σημεῖον, ὅτι ἔχρισέ σε Κύριος ἐπὶ κληρονομίαν αὐτοῦ εἰς ἄρχοντα· Ὡς ἂν ἀπέλθῃς σήμερον ἀπ’ ἐμοῦ, καὶ εὑρήσεις δύο ἄνδρας πρὸς τοῖς τάφοις Ῥαχὴλ ἐν τῷ ὄρει Βενιαμὶν ἀλλομένους μεγάλα· καὶ ἐροῦσί σοι, εὕρηνται αἱ ὄνοι ἃς ἐπορεύθητε ζητεῖν· καὶ ἰδοὺ ὁ πατήρ σου ἀποτετίνακται τὸ ῥῆμα τῶν ὄνων, καὶ ἐδαψιλεύσατο δι’ ὑμᾶς, λέγων, τί ποιήσω ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ μου; Καὶ ἀπελεύσῃ ἐκεῖθε καὶ ἐπέκεινα ἥξεις ἕως τῆς δρυὸς Θαβώρ, καὶ εὑρήσεις ἐκεῖ τρεῖς ἄνδρας ἀναβαίνοντας πρὸς τὸν Θεὸν εἰς Βαιθὴλ, ἕνα αἴροντα τρία αἰγίδια, καὶ ἕνα αἴροντα τρία ἀγγεῖα ἄρτων, καὶ ἕνα αἴροντα ἀσκὸν οἴνου· Καὶ ἐρωτήσουσί σε τὰ εἰς εἰρήνην, καὶ δώσουσί σοι δύο ἀπαρχὰς ἄρτων, καὶ λὴψῃ ἐκ τῆς

χειρὸς αὐτῶν. Καὶ μετὰ ταῦτα εἰσελεύσῃ εἰς τὸν βουνὸν τοῦ Θεοῦ, οὗ ἐστιν ἐκεῖ τὸ ἀνάστημα τῶν ἀλλοφύλων· ἐκεῖ Νασὶβ ὁ ἀλλόφυλος· καὶ ἔσται ὡς ἂν εἰσέλθητε ἐκεῖ εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἀπαντήσεις χορῷ προφητῶν καταβαινόντων ἐκ τῆς Βαμᾶ, καὶ ἔμπροσθεν αὐτῶν νάβλα, καὶ τύμπανον, καὶ αὐλὸς, καὶ κινύρα, καὶ αὐτοὶ προφητεύοντες· Καὶ ἐφαλεῖται ἐπὶ σὲ πνεῦμα Κυρίου, καὶ προφητεύσεις μετ’ αὐτῶν, καὶ στραφήσῃ εἰς ἄνδρα ἄλλον. Καὶ ἔσται ὅταν ἥξει τὰ σημεῖα ταῦτα ἐπὶ σὲ, ποίει πάντα ὅσα ἐὰν εὕρῃ ἡ χείρ σου, ὅτι Θεὸς μετὰ σοῦ. Καὶ καταβήσῃ ἔμπροσθεν τῆς Γαλγὰλ, καὶ ἰδοὺ καταβαίνω πρὸς σὲ ἀνενεγκεῖν ὁλοκαύτωσιν καὶ θυσίας εἰρηνικάς· ἑπτὰ ἡμέρας διαλείψεις ἕως τοῦ ἐλθεῖν με πρὸς σὲ, καὶ γνωρίσω σοι ἃ ποιήσεις. Καὶ ἐγενήθη ὥστε ἐπιστραφῆναι τῷ ὤμῳ αὐτοῦ ἀπελθεῖν ἀπὸ Σαμουὴλ, μετέστρεψεν αὐτῷ ὁ Θεὸς καρδίαν ἄλλην· καὶ ἦλθε πάντα τὰ σημεῖα ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ ἔρχεται ἐκεῖθεν εἰς τὸν βουνόν, καὶ ἰδοὺ χορὸς προφητῶν ἐξεναντίας αὐτοῦ· καὶ ἥλατο ἐπ’ αὐτὸν πνεῦμα Θεοῦ, καὶ προεφήτευσεν ἐν μέσῳ αὐτῶν. Καὶ ἐγενήθησαν πάντες οἱ εἰδότες αὐτὸν ἐχθὲς καὶ τρίτης, καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐν μέσῳ τῶν προφητῶν· καὶ εἶπεν ὁ λαὸς ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, τί τοῦτο τὸ γεγονὸς τῷ υἱῷ Κίς; ἢ καὶ Σαοὺλ ἐν προφήταις; Καὶ ἀπεκρίθη τίς αὐτῶν, καὶ εἶπε, καὶ τίς πατὴρ αὐτοῦ; καὶ διὰ τοῦτο ἐγενήθη εἰς παραβολὴν, ἢ καὶ Σαοὺλ ἐν προφήταις; Καὶ συνετέλεσε προφητεύων, καὶ ἔρχεται εἰς τὸν βουνόν. Καὶ εἶπεν ὁ οἰκεῖος αὐτοῦ πρὸς αὐτὸν καὶ πρὸς τὸ παιδάριον αὐτοῦ, ποῦ ἐπορεύθητε; καὶ εἶπαν, ζητεῖν τὰς ὄνους, καὶ εἴδαμεν ὅτι οὐκ εἰσί, καὶ εἰσήλθομεν πρὸς Σαμουήλ. Καὶ εἶπεν ὁ οἰκεῖος πρὸς Σαοὺλ, ἀπάγγειλον δή μοι, τί εἶπέ σοι Σαμουήλ; Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸν οἰκεῖον αὐτοῦ, ἀπήγγειλεν ἀπαγγέλλων μοι, ὅτι εὕρηνται αἱ ὄνοι·

τὸ δὲ ῥῆμα τῆς βασιλείας οὐκ ἀπήγγειλεν αὐτῷ. Καὶ παρήγγειλε Σαμουὴλ παντὶ τῷ λαῷ πρὸς Κύριον εἰς Μασσηφάθ. Καὶ εἶπε πρὸς υἱοὺς Ἰσραὴλ, τάδε εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐγὼ ἀνήγαγον τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἐξειλάμην ὑμᾶς ἐκ χειρὸς Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ ἐκ πασῶν τῶν βασιλειῶν τῶν θλιβουσῶν ὑμᾶς. Καὶ ὑμεῖς σήμερον ἐξουδενήκατε τὸν Θεόν, ὃς αὐτός ἐστιν ὑμῶν σωτὴρ ἐκ πάντων τῶν κακῶν ὑμῶν καὶ θλίψεων ὑμῶν· καὶ εἴπατε, οὐχί, ἀλλ’ ἢ ὅτι βασιλέα καταστήσεις ἐφ’ ἡμῶν· καὶ νῦν κατάστητε ἐνώπιον Κυρίου κατὰ τὰ σκῆπτρα ὑμῶν καὶ κατὰ τὰς φυλὰς ὑμῶν. Καὶ προσήγαγε Σαμουὴλ πάντα τὰ σκῆπτρα Ἰσραὴλ, καὶ κατακληροῦται σκῆπτρον Βενιαμίν. Καὶ προσάγει σκῆπτρον Βενιαμὶν εἰς φυλάς, καὶ κατακληροῦται φυλὴ Ματταρί· καὶ προσάγουσι τὴν φυλὴν Ματταρὶ εἰς ἄνδρας, καὶ κατακληροῦται Σαοὺλ υἱὸς Κίς· καὶ ἐζήτει αὐτόν, καὶ οὐχ εὑρίσκετο. Καὶ ἐπηρώτησε Σαμουὴλ ἔτι ἐν Κυρίῳ, εἰ ἔρχεται ὁ ἀνὴρ ἐνταῦθα; καὶ εἶπε Κύριος, ἰδοὺ αὐτὸς κέκρυπται ἐν τοῖς σκεύεσι. Καὶ ἔδραμε καὶ λαμβάνει αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ κατέστησεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ· καὶ ὑψώθη ὑπὲρ πάντα τὸν λαὸν ὑπερωμίαν καὶ ἐπάνω. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς πάντα τὸν λαὸν, εἰ ἑωράκατε ὃν ἐκλέλεκται ἑαυτῷ Κύριος, ὅτι οὐκ ἔστιν ὅμοιος αὐτῷ ἐν πᾶσιν ὑμῖν; καὶ ἔγνωσαν πᾶς ὁ λαὸς, καὶ εἶπαν, ζήτω ὁ βασιλεύς. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς τὸν λαὸν τὸ δικαίωμα τοῦ βασιλέως, καὶ ἔγραψεν ἐν βιβλίῳ, καὶ ἔθηκεν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἐξαπέστειλε Σαμουὴλ πάντα τὸν λαόν, καὶ ἀπῆλθεν ἕκαστος εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ Σαοὺλ ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ εἰς Γαβαά· καὶ ἐπορεύθησαν υἱοὶ δυνάμεων, ὧν ἥψατο Κύριος καρδίας αὐτῶν μετὰ Σαούλ. Καὶ υἱοὶ λοιμοὶ εἶπαν, τίς σώσει ἡμᾶς οὗτος; καὶ ἠτίμασαν αὐτόν, καὶ οὐκ ἤνεγκαν αὐτῷ δῶρα.

# 11

Καὶ ἐγενήθη ὡς μετὰ μῆνα, καὶ ἀνέβη Νάας ὁ Ἀμμανίτης, καὶ παρεμβάλλει ἐπὶ Ἰαβὶς Γαλαάδ· καὶ εἶπαν πάντες οἱ ἄνδρες Ἰαβὶς πρὸς Νάας τὸν Ἀμμανίτην, διάθου ἡμῖν διαθήκην, καὶ δουλεύσομέν σοι. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Νάας ὁ ’Αμμανίτης, ἐν ταύτῃ διαθήσομαι διαθήκην ὑμῖν, ἐν τῷ ἐξορύξαι ὑμῶν πάντα ὀφθαλμὸν δεξιόν, καὶ θήσομαι ὄνειδος ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ ἄνδρες Ἰαβίς, ἄνες ἡμῖν ἑπτὰ ἡμέρας καὶ ἀποστελοῦμεν ἀγγέλους εἰς πᾶν ὅριον Ἰσραήλ· ἐὰν μὴ ᾖ ὁ σώζων ἡμᾶς, ἐξελευσόμεθα πρὸς ὑμᾶς. Καὶ ἔρχονται οἱ ἄγγελοι εἰς Γαβαὰ πρὸς Σαούλ, καὶ λαλοῦσι τοὺς λόγους εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ· καὶ ᾖραν πᾶς ὁ λαὸς τὴν φωνὴν αὐτῶν, καὶ ἔκλαυσαν. Καὶ ἰδοὺ Σαοὺλ ἤρχετο μετὰ τοπρωΐ ἐξ ἀγροῦ· καὶ εἶπε Σαοὺλ, Τί ὅτι κλαίει ὁ λαός; καὶ διηγοῦνται αὐτῷ τὰ ῥήματα τῶν ἀνδρῶν Ἰαβίς. Καὶ ἐφήλατο πνεῦμα Κυρίου ἐπὶ Σαοὺλ ὡς ἤκουσε τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ ἐθυμώθη ἐπ’ αὐτοὺς ὀργῇ αὐτοῦ σφόδρα. Καὶ ἔλαβε δύο βόας, καὶ ἐμέλισεν αὐτὰς, καὶ ἀπέστειλεν εἰς πᾶν ὅριον Ἰσραὴλ ἐν χειρὶ ἀγγέλων, λέγων, ὃς οὐκ ἔστιν ἐκπορευόμενος ὀπίσω Σαοὺλ καὶ ὀπίσω Σαμουὴλ, κατὰ τάδε ποιήσουσι τοῖς βουσὶν αὐτοῦ· καὶ ἐπῆλθεν ἔκστασις Κυρίου ἐπὶ τὸν λαὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἐβόησαν ὡς ἀνὴρ εἷς. Καὶ ἐπισκέπτεται αὐτοὺς ἐν βεζὲκ ἐν Βαμᾷ πάντα ἄνδρα Ἰσραὴλ ἑξακοσίας χιλιάδας, καὶ ἄνδρας Ἰούδα ἑβδομήκοντα χιλιάδας. Καὶ εἶπε τοῖς ἀγγέλοις τοῖς ἐρχομένοις, τάδε ἐρεῖτε τοῖς ἀνδράσιν Ἰαβὶς, αὔριον ὑμῖν ἡ σωτηρία διαθερμάναντος τοῦ ἡλίου· καὶ ἦλθον οἱ ἄγγελοι εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἀπαγγέλλουσι τοῖς ἀνδράσιν Ἰαβίς, καὶ εὐφράνθησαν. Καὶ εἶπον οἱ ἄνδρες Ἰαβὶς πρὸς Νάας τὸν ’Αμμανίτην, αὔριον

ἐξελευσόμεθα πρὸς ὑμᾶς, καὶ ποιήσετε ἡμῖν τὸ ἀγαθὸν ἐνώπιον ὑμῶν. Καὶ ἐγενήθη μετὰ τὴν αὔριον, καὶ ἔθετο Σαοὺλ τὸν λαὸν εἰς τρεῖς ἀρχὰς, καὶ εἰσπορεύονται μέσον τῆς παρεμβολῆς ἐν φυλακῇ τῇ ἐωθινῇ, καὶ ἔτυπτον τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν ἕως διεθερμάνθη ἡ ἡμέρα· καὶ ἐγενήθη καὶ ὑπολελειμμένοι διεσπάρησαν, καὶ οὐκ ὑπελείφθησαν ἐν αὐτοῖς δύο κατὰ τὸ αὐτό. Καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Σαμουὴλ τίς ὁ εἴπας ὅτι Σαοὺλ οὐ βασιλεύσει ἡμῶν; παράδος τοὺς ἄνδρας, καὶ θανατώσομεν αὐτούς. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, οὐκ ἀποθανεῖται οὐδεὶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, ὅτι σήμερον ἐποίησε Κύριος σωτηρίαν ἐν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς τὸν λαὸν, λέγων, πορευθῶμεν εἰς Γάλγαλα, καὶ ἐγκαινίσωμεν ἐκεῖ τὴν βασιλείαν. Καὶ ἐπορεύθη πᾶς ὁ λαὸς εἰς Γάλγαλα, καὶ ἔχρισε Σαμουὴλ ἐκεῖ τὸν Σαοὺλ εἰς βασιλέα ἐνώπιον Κυρίου ἐν Γαλγάλοις· καὶ ἔθυσεν ἐκεῖ θυσίας καὶ εἰρηνικὰς ἐνώπιον Κυρίου· καὶ εὐφράνθη Σαμουὴλ καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ὥστε λίαν.

# 12

Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς πάντα Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἤκουσα φωνῆς ὑμῶν εἰς πάντα ὅσα εἴπατέ μοι, καὶ ἐβασίλευσα ἐφ’ ὑμᾶς βασιλέα, καὶ νῦν ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς διαπορεύεται ἐνώπιον ὑμῶν· κἀγὼ γεγήρακα καὶ καθήσομαι, καὶ οἱ υἱοί μου ἰδοὺ ἐν ὑμῖν· κἀγὼ ἰδοὺ διελήλυθα ἐνώπιον ὑμῶν ἐκ νεότητος καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Ἰδοὺ ἐγώ, ἀποκρίθητε κατ’ ἐμοῦ ἐνώπιον Κυρίου καὶ ἐνώπιον χριστοῦ αὐτοῦ· μόσχον τίνος εἴληφα, ἢ ὄνον τίνος εἴληφα, ἢ τίνα κατεδυνάστευσα ὑμῶν, ἢ τίνα ἐξεπίεσα, ἢ ἐκ χειρὸς τίνος εἴληφα ἐξίλασμα καὶ ὑπόδημα; ἀποκρίθητε κατ’ ἐμοῦ, καὶ ἀποδώσω ὑμῖν. Καὶ εἶπαν

πρὸς Σαμουὴλ οὐκ ἠδίκησας ἡμᾶς, καὶ οὐ κατεδυνάστευσας ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἔθλασας ἡμᾶς, καὶ οὐκ εἴληφας ἐκ χειρὸς οὐδενὸς οὐδέν. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς τὸν λαὸν, μάρτυς Κύριος ἐν ὑμῖν, καὶ μάρτυς χριστὸς αὐτοῦ σήμερον ἐν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ, ὅτι οὐχ εὑρήκατε ἐν χειρί μου οὐδέν· καὶ εἶπαν, μάρτυς. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς τὸν λαὸν, λέγων, μάρτυς Κύριος ὁ ποιήσας τὸν Μωυσῆν καὶ τὸν Ἀαρὼν, ὁ ἀναγαγὼν τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐξ Αἰγύπτου. Καὶ νῦν κατάστητε, καὶ δικάσω ὑμᾶς ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἀπαγγελῶ ὑμῖν τὴν πᾶσαν δικαιοσύνην Κυρίου, ἃ ἐποίησεν ἐν ὑμῖν καὶ ἐν τοῖς πατράσιν ὑμῶν· Ὡς εἰσῆλθεν Ἰακὼβ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἐταπείνωσεν αὐτοὺς Αἴγυπτος· καὶ ἐβόησαν οἱ πατέρες ἡμῶν πρὸς Κύριον, καὶ ἀπέστειλε Κύριος τὸν Μωυσῆν καὶ τὸν Ἀαρών, καὶ ἐξήγαγον τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ κατῴκισεν αὐτοὺς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Καὶ ἐπελάθοντο Κυρίου τοῦ Θεοῦ αὐτῶν, καὶ ἀπέδοτο αὐτοὺς εἰς χεῖρας Σισαρά ἀρχιστρατήγῳ Ἰαβὶς βασιλέως Ἀσὼρ, καὶ εἰς χεῖρας ἀλλοφύλων, καὶ εἰς χεῖρας βασιλέως Μωὰβ, καὶ ἐπολέμησεν ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἐβόησαν πρὸς Κύριον, καὶ ἔλεγον, ἡμάρτομεν, ὅτι ἐγκατελίπομεν τὸν Κύριον, καὶ ἐδουλεύσαμεν τοῖς Βααλὶμ καὶ τοῖς ἄλσεσι· καὶ νῦν ἐξελοῦ ἡμᾶς ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν ἡμῶν, καὶ δουλεύσομέν σοι. Καὶ ἀπέστειλε τὸν Ἰεροβάαλ, καὶ τὸν Βαρὰκ, καὶ τὸν Ἰεφθάε, καὶ τὸν Σαμουὴλ, καὶ ἐξείλατο ἡμᾶς ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν ἡμῶν τῶν κυκλόθεν, καὶ κατῳκεῖτε πεποιθότες. Καὶ ἴδετε ὅτι Νάας βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν ἦλθεν ἐφ’ ὑμᾶς, καὶ εἴπατε, οὐχί, ἀλλ’ ἢ ὅτι βασιλεὺς βασιλεύσει ἐφ’ ἡμῶν· καὶ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν βασιλεὺς ἡμῶν. Καὶ νῦν ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς ὃν ἐξελέξασθε· καὶ ἰδοὺ δέδωκε Κύριος ἐφ’ ὑμᾶς βασιλέα. Ἐὰν φοβηθῆτε τὸν Κύριον, καὶ δουλεύσητε αὐτῷ, καὶ ἀκούσητε τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ μὴ ἐρίσητε τῷ στόματι Κυρίου, καὶ ἦτε καὶ

ὑμεῖς καὶ ὁ βασιλεὺς ὁ βασιλεύων ἐφ’ ὑμῶν ὀπίσω Κυρίου πορευόμενοι· Ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσητε τῆς φωνῆς Κυρίου, καὶ ἐρίσητε τῷ στόματι Κυρίου, καὶ ἔσται χεὶρ Κυρίου ἐφ’ ὑμᾶς καὶ ἐπὶ τὸν βασιλέα ὑμῶν. Καὶ νῦν κατάστητε, καὶ ἴδετε τὸ ῥῆμα τὸ μέγα τοῦτο ὃ ὁ κύριος ποιήσει ἐν ὀφθαλμοῖς ὑμῶν. Οὐχὶ θερισμὸς πυρῶν σήμερον; ἐπικαλέσομαι Κύριον, καὶ δώσει φωνὰς καὶ ὑετόν· καὶ γνῶτε καὶ ἴδετε, ὅτι ἡ κακία ὑμῶν μεγάλη, ἣν ἐποίησατε ἐνώπιον Κυρίου, αἰτήσαντες ἑαυτοῖς βασιλέα. Καὶ ἐπεκαλέσατο Σαμουὴλ τὸν Κύριον· καὶ ἔδωκε Κύριος φωνὰς καὶ ὑετὸν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· καὶ ἐφοβήθησαν πᾶς ὁ λαὸς τὸν Κύριον σφόδρα καὶ τὸν Σαμουήλ. Καὶ εἶπαν πᾶς ὁ λαὸς πρὸς Σαμουὴλ, πρόσευξαι ὑπὲρ τῶν δούλων σου πρὸς Κύριον Θεόν σου, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνωμεν, ὅτι προστεθείκαμεν πρὸς πάσας τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν κακίαν, αἰτήσαντες ἑαυτοῖς βασιλέα. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς τὸν λαὸν, μὴ φοβεῖσθε· ὑμεῖς πεποιήκατε τὴν πᾶσαν κακίαν ταύτην· πλὴν μὴ ἐκκλίνητε ἀπὸ ὄπισθεν Κυρίου, καὶ δουλεύσατε τῷ κυρίῳ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ὑμῶν· Καὶ μὴ παραβῆτε ὀπίσω τῶν μηθὲν ὄντων, οἳ οὐ περανοῦσιν οὐθὲν, καὶ οἳ οὐκ ἐξελοῦνται, ὅτι οὐθέν εἰσιν. Ὅτι οὐκ ἀπώσεται Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ διὰ τὸ ὄνομα αὐτοῦ τὸ μέγα, ὅτι ἐπιεικῶς Κύριος προσελάβετο ὑμᾶς ἑαυτῷ εἰς λαόν. Καὶ ἐμοὶ μηδαμῶς τοῦ ἁμαρτεῖν τῷ Κυρίῳ ἀνιέναι τοῦ προσεύχεσθαι περὶ ὑμῶν· καὶ δουλεύσω τῷ Κυρίῳ, καὶ δείξω ὑμῖν τὴν ὁδὸν τὴν ἀγαθὴν καὶ τὴν εὐθεῖαν· Πλὴν φοβεῖσθε τὸν κύριον, καὶ δουλεύσατε αὐτῷ ἐν ἀληθείᾳ καὶ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ὑμῶν, ὅτι ἴδετε ἃ ἐμεγάλυνε μεθ’ ὑμῶν. Καὶ ἐὰν κακίᾳ κακοποιήσητε, καὶ ὑμεῖς καὶ ὁ βασιλεὺς ὑμῶν προστεθήσεσθε.

# 13

Καὶ ἐκλέγεται ἑαυτῷ Σαοὺλ τρεῖς χιλιάδας ἀνδρῶν ἐκ τῶν ἀνδρῶν Ἰσραήλ· καὶ ἦσαν μετὰ Σαοὺλ δισχίλιοι οἱ ἐν Μαχμὰς, καὶ ἐν τῷ ὄρει Βαιθήλ, καὶ χίλιοι ἦσαν μετὰ Ἰωνάθαν ἐν Γαβαὰ τοῦ Βενιαμίν· καὶ τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ ἐξαπέστειλεν ἕκαστον εἰς τὸ σκήνωμα αὐτοῦ. Καὶ ἐπάταξεν Ἰωνάθαν τὸν Νασὶβ τὸν ἀλλόφυλον τὸν ἐν τῷ βουνῷ· καὶ ἀκούουσιν οἱ ἀλλόφυλοι· καὶ Σαοὺλ σάλπιγγι σαλπίζει εἰς πᾶσαν τὴν γῆν, λέγων, ἠθετήκασιν οἱ δοῦλοι. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἤκουσε λεγόντων, πέπαικε Σαοὺλ τὸν Νασὶβ τὸν ἀλλόφυλον, καὶ ᾐσχύνθησαν Ἰσραὴλ ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις· καὶ ἀνέβησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ὀπίσω Σαοὺλ ἐν Γαλγάλοις. Καὶ οἱ ἀλλόφυλοι συνάγονται εἰς πόλεμον ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἀναβαίνουσιν ἐπὶ Ἰσραὴλ τριάκοντα χιλιάδες ἁρμάτων, καὶ ἓξ χιλιάδες ἱππέων, καὶ λαὸς ὡς ἡ ἄμμος ἡ παρὰ τὴν θάλασσαν τῷ πλήθει· καὶ ἀναβαίνουσι καὶ παρεμβάλλουσιν ἐν Μαχμὰς ἐξ ἐναντίας Βαιθωρὼν κατὰ Νότου. Καὶ ἀνὴρ Ἰσραὴλ εἶδεν ὅτι στενῶς αὐτῷ μὴ προσάγειν αὐτόν, καὶ ἐκρύβη ὁ λαὸς ἐν τοῖς σπηλαίοις, καὶ ἐν ταῖς μάνδραις, καὶ ἐν ταῖς πέτραις, καὶ ἐν τοῖς βόθροις, καὶ ἐν τοῖς λάκκοις. Καὶ οἱ διαβαίνοντες διέβησαν τὸν Ἰορδάνην εἰς γῆν Γὰδ καὶ Γαλαάδ· καὶ Σαοὺλ ἔτι ἦν ἐν Γαλγάλοις, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἐξέστη ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ διέλιπεν ἑπτὰ ἡμέρας τῷ μαρτυρίῳ, ὡς εἶπε Σαμουήλ, καὶ οὐ παρεγένετο Σαμουὴλ εἰς Γάλγαλα, καὶ διεσπάρη ὁ λαὸς αὐτοῦ ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Σαούλ, προσαγάγετε ὅπως ποιήσω ὁλοκαύτωσιν καὶ εἰρηνικάς· καὶ ἀνήνεγκε τὴν ὁλοκαύτωσιν. Καὶ ἐγένετο ὡς συνετέλεσεν ἀναφέρων τὴν ὁλοκαύτωσιν, καὶ Σαμουὴλ παραγίνεται· καὶ ἐξῆλθε Σαοὺλ εἰς ἀπάντησιν αὐτῷ εὐλογῆσαι

αὐτόν. Καὶ εἶπε Σαμουήλ, τί πεποίηκας; καὶ εἶπε Σαούλ, ὅτι εἶδον ὡς διεσπάρη ὁ λαὸς ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ σὺ οὐ παρεγένου ὡς διετάξω ἐν τῷ μαρτυρίῳ τῶν ἡμερῶν, καὶ οἱ ἀλλόφυλοι συνήχθησαν εἰς Μαχμάς, καὶ εἶπα, νῦν καταβήσονται οἱ ἀλλόφυλοι πρὸς μὲ εἰς Γάλγαλα, καὶ τοῦ προσώπου τοῦ κυρίου οὐκ ἐδεήθην· καὶ ἐνεκρατευσάμην, καὶ ἀνήνεγκα τὴν ὁλοκαύτωσιν. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Σαοὺλ, μεματαίωταί σοι, ὅτι οὐκ ἐφύλαξας τὴν ἐντολήν μου, ἣν ἐνετείλατό σοι Κύριος, ὡς νῦν ἡτοίμασε Κύριος τὴν βασιλείαν σου ἐπὶ Ἰσραὴλ ἕως αἰῶνος. Καὶ νῦν ἡ βασιλεία σου οὐ στήσεταί σοι, καὶ ζητήσει Κύριος ἑαυτῷ ἄνθρωπον κατὰ τὴν καρδίαν αὐτοῦ· καὶ ἐντελεῖται Κύριος αὐτῷ εἰς ἄρχοντα ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, ὅτι οὐκ ἐφύλαξας ὅσα ἐνετείλατό σοι Κύριος. Καὶ ἀνέστη Σαμουὴλ, καὶ ἀπῆλθεν ἐκ Γαλγάλων· καὶ τὸ κατάλειμμα τοῦ λαοῦ ἀνέβη ὀπίσω Σαοὺλ εἰς ἀπάντησιν ὀπίσω τοῦ λαοῦ τοῦ πολεμιστοῦ· αὐτῶν παραγενομένων ἐκ Γαλγάλων εἰς Γαβαὰ Βενιαμίν. Καὶ ἐπεσκέψατο Σαοὺλ τὸν λαὸν τὸν εὑρεθέντα μετ᾽ αὐτοῦ ὡς ἑξακοσίους ἄνδρας. Καὶ Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν υἱὸς αὐτοῦ καὶ ὁ λαὸς οἱ εὑρεθέντες μετ᾽ αὐτῶν ἐκάθισαν ἐν Γαβαὰ Βενιαμὶν, καὶ ἔκλαιον· Καὶ οἱ ἀλλόφυλοι παρεμβεβλήκεισαν ἐν Μαχμάς. Καὶ ἐξῆλθε διαφθείρων ἐξ ἀγροῦ ἀλλοφύλων τρισὶν ἀρχαῖς· ἡ ἀρχὴ ἡ μία ἐπιβλέπουσα ὁδὸν Γοφερὰ ἐπὶ γὴν Σωγὰλ, καὶ ἡ ἀρχὴ ἡ μία ἐπιβλέπουσα ὁδὸν Βαιθωρὼν, καὶ ἡ ἀρχὴ ἡ μία ἐπιβλέπουσα ὁδὸν Γαβαὲ τὴν εἰσκύπτουσαν ἐπὶ Γαὶ τὴν Σαβίμ. Καὶ τέκτων σιδήρου οὐχ εὑρίσκετο ἐν πάσῃ γῇ Ἰσραὴλ, ὅτι εἶπον οἱ ἀλλόφυλοι, μὴ ποιήσωσιν οἱ Ἑβραῖοι ῥομφαίαν καὶ δόρυ. Καὶ κατέβαινον πᾶς Ἰσραὴλ εἰς γῆν ἀλλοφύλων χαλκεύειν ἕκαστος τὸ θέριστρον αὐτοῦ καὶ τὸ σκεῦος αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὴν ἀξίνην αὐτοῦ καὶ τὸ δρέπανον αὐτοῦ. Καὶ ἦν ὁ τρυγητὸς ἕτοιμος τοῦ θερίζειν· τὰ δὲ

σκεύη ἦν τρεῖς σίκλοι εἰς τὸν ὀδόντα, καὶ τῇ ἀξίνῃ καὶ τῷ δρεπάνῳ ὑπόστασις ἦν ἡ αὐτή. Καὶ ἐγενήθη ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ πολέμου Μαχμὰς, καὶ οὐχ εὑρέθη ῥομφαία καὶ δόρυ ἐν χειρὶ παντὸς τοῦ λαοῦ τοῦ μετὰ Σαοὺλ καὶ μετὰ Ἰωνάθαν· καὶ εὑρέθη τῷ Σαοὺλ καὶ τῷ Ἰωνὰθαν υἱῷ αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθεν ἐξ ὑποστάσεως τῶν ἀλλοφύλων τὴν ἐν τῷ πέραν Μαχμάς.

# 14

Καὶ γίνεται ἡ ἡμέρα, καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν υἱὸς Σαοὺλ τῷ παιδαρίῳ τῷ αἴροντι τὰ σκεύη αὐτοῦ, δεῦρο, καὶ διαβῶμεν εἰς Μεσσὰβ τῶν ἀλλοφύλων τὴν ἐν τῷ πέραν ἐκείνῳ· καὶ τῷ πατρὶ αὐτοῦ οὐκ ἀπήγγειλε. Καὶ Σαοὺλ ἐκάθητο ἐπ’ ἄκρου τοῦ βουνοῦ ὑπὸ τὴν ῥοὰν τὴν ἐν Μαγδὼν, καὶ ἦσαν μετ’ αὐτοῦ ὡς ἑξακόσιοι ἄνδρες. Καὶ ’Αχιὰ υἱὸς ’Αχιτὼβ ἀδελφοῦ Ἰωχαβὴλ υἱοῦ Φινεὲς υἱοῦ Ἠλὶ ἱερεὺς τοῦ Θεοῦ ἐν Σηλὼμ αἴρων ἐφούδ· καὶ ὁ λαὸς οὐκ ᾔδει ὅτι πεπόρευται Ἰωνάθαν. Καὶ ἀναμέσον τῆς διαβάσεως οὗ ἐζήτει Ἰωνάθαν διαβῆναι εἰς τὴν ὑπόστασιν τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ὁδοὺς πέτρας ἐκ τούτου, καὶ ὁδοὺς πέτρας ἐκ τούτου· ὄνομα τῷ ἑνὶ Βασὲς, καὶ ὄνομα τῷ ἄλλῳ Σεννά. Ἡ ὁδὸς ἡ μία ἀπὸ Βορῥᾶ ἐρχομένῳ Μαχμάς, καὶ ἡ ὁδὸς ἡ ἄλλη ἀπὸ Νότου ἐρχομένῳ Γαβαέ. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν πρὸς τὸ παιδάριον τὸ αἶρον τὰ σκεύη αὐτοῦ, δεῦρο, διαβῶμεν εἰς Μεσσὰβ τῶν ἀπεριτμήτων τούτων, εἴ τι ποιήσαι Κύριος ἡμῖν, ὅτι οὐκ ἔστι τῷ Κυρίῳ συνεχόμενον σώζειν ἐν πολλοῖς ἢ ἐν ὀλίγοις. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ, ποίει πᾶν ὃ ἐὰν ἡ καρδία σου ἐκκλίνῃ· ἰδοὺ ἐγὼ μετὰ σοῦ, ὡς ἡ καρδία σον καρδία μοῦ. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν, ἰδοὺ ἡμεὶς

διαβαίνομεν πρὸς τοὺς ἄνδρας, καὶ κατακυλισθησόμεθα πρὸς αὐτούς· Ἐὰν τάδε εἴπωσι πρὸς ἡμᾶς, ἀπόστητε ἐκεῖ ἕως ἂν ἀπαγγείλωμεν ὑμῖν· καὶ στησόμεθα ἐφ᾽ ἑαυτοῖς, καὶ οὐ μὴ ἀναβῶμεν ἐπ᾽ αὐτούς. Ἐὰν τάδε εἴπωσι πρὸς ἡμᾶς, ἀνάβητε πρὸς ἡμᾶς· καὶ ἀναβησόμεθα, ὅτι παραδέδωκεν αὐτοὺς Κύριος εἰς χεῖρας ἡμῶν· τοῦτο ἡμῖν τὸ σημεῖον. Καὶ εἰσῆλθον ἀμφότεροι εἰς Μεσσὰβ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ λέγουσιν οἱ ἀλλόφυλοι, ἰδοὺ Ἑβραῖοι ἐκπορεύονται ἐκ τῶν τρωγλῶν αὐτῶν, οὗ ἐκρύβησαν ἐκεῖ. Καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ ἄνδρες Μεσσὰβ πρὸς Ἰωνάθαν καὶ πρὸς τὸν αἴροντα τὰ σκεύη αὐτοῦ, καὶ λέγουσιν, ἀνάβητε πρὸς ἡμᾶς, καὶ γνωριοῦμεν ὑμῖν ῥῆμα· καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν πρὸς τὸν αἴροντα τὰ σκεύη αὐτοῦ, ἀνάβηθι ὀπίσω μου, ὅτι παρέδωκεν αὐτοὺς Κύριος εἰς χεῖρας Ἰσραήλ. Καὶ ἀνέβη Ἰωνάθὰν ἐπὶ τὰς χεῖρας αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτοῦ, καὶ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἐπέβλεψαν κατὰ πρόσωπον Ἰωνάθαν, καὶ ἐπάταξεν αὐτούς, καὶ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ ἐπεδίδου ὀπίσω αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἡ πληγὴ ἡ πρώτη, ἣν ἐπάταξεν Ἰωνάθαν καὶ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ, ὡς εἴκοσι ἄνδρες ἐν βολίσι καὶ ἐν πετροβόλοις καὶ ἐν κόχλαξι τοῦ πεδίου. Καὶ ἐγενήθη ἔκστασις ἐν τῇ παρεμβολῇ, καὶ ἐν ἀγρῷ· καὶ πᾶς ὁ λαός οἱ ἐν Μεσσὰβ, καὶ οἱ διαφθείροντες ἐξέστησαν, καὶ αὐτοὶ οὐκ ἤθελον ποιεῖν· καὶ ἐθάμβησεν ἡ γῆ, καὶ ἐγενήθη ἔκστασις παρὰ Κυρίου. Καὶ εἶδον οἱ σκοποὶ τοῦ Σαοὺλ ἐν Γαβαὰ Βενιαμὶν, καὶ ἰδοὺ ἡ παρεμβολὴ τεταραγμένη ἔνθεν καὶ ἔνθεν. Καὶ εἶπε Σαοὺλ τῷ λαῷ τῷ μετ᾽ αὐτοῦ, ἐπισκέψασθε δὴ, καὶ ἴδετε τίς πεπόρευται ἐξ ὑμῶν· καὶ ἐπεσκέψαντο, καὶ ἰδοὺ οὐχ εὑρίσκετο Ἰωνάθαν καὶ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ τῷ ᾽Αχιᾷ, προσάγαγε τὸ ἐφούδ· ὅτι αὐτὸς ᾖρε τὸ ἐφοὺδ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐνώπιον Ἰσραήλ. Καὶ ἐγενήθη ὡς λαλεῖ Σαοὺλ πρὸς

τὸν ἱερέα, καὶ ὁ ἦχος ἐν τῇ παρεμβολῇ τῶν ἀλλοφύλων ἐπορεύετο πορευόμενος καὶ ἐπλήθυνε· καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸν ἱερέα, συνάγαγε τὰς χεῖράς σου. Καὶ ἀνέβη Σαοὺλ καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἔρχονται ἕως τοῦ πολέμου· καὶ ἰδοὺ ἐγένετο ῥομφαία ἀνδρὸς ἐπὶ τὸν πλησίον αὐτοῦ, σύγχυσις μεγάλη σφόδρα. Καὶ οἱ δοῦλοι οἱ ὄντες ἐχθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν μετὰ τῶν ἀλλοφύλων οἱ ἀναβάντες εἰς τὴν παρεμβολὴν, ἐπεστράφησαν καὶ αὐτοὶ εἶναι μετὰ Ἰσραὴλ τῶν μετὰ Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ οἱ κρυπτόμενοι ἐν τῷ ὄρει Ἐφραὶμ, καὶ ἤκουσαν ὅτι πεφεύγασιν οἱ ἀλλόφυλοι· καὶ συνάπτουσι καὶ αὐτοὶ ὀπίσω αὐτῶν εἰς πόλεμον· καὶ ἔσωσε Κύριος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τὸν Ἰσραήλ· καὶ ὁ πόλεμος διῆλθε τὴν Βαμώθ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἦν μετὰ Σαοὺλ ὡς δέκα χιλιάδες ἀνδρῶν. Καὶ ἦν ὁ πόλεμος διεσπαρμένος εἰς ὅλην πόλιν ἐν τῷ ὄρει Ἐφραίμ. Καὶ Σαοὺλ ἠγνόησεν ἄγνοιαν μεγάλην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἀρᾶται τῷ λαῷ, λέγων, ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος ὃς φάγεται ἄρτον ἕως ἑσπέρας· καὶ ἐκδικήσω τὸν ἐχθρόν μου· καὶ οὐκ ἐγεύσατο πᾶς ὁ λαὸς ἄρτου· καὶ πᾶσα ἡ γῆ ἠρίστα. Καὶ Ἰάαλ δρυμὸς ἦν μελισσῶνος κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀγροῦ. Καὶ εἰσῆλθεν ὁ λαὸς εἰς τὸν μελισσῶνα, καὶ ἰδοὺ ἐπορεύετο λαλῶν· καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν ἐπιστρέφων τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς τὸ στόμα αὐτοῦ, ὅτι ἐφοβήθη ὁ λαὸς τὸν ὅρκον Κυρίου. Καὶ Ἰωνάθαν οὐκ ἀκηκόει ἐν τῷ ὁρκίζειν τὸν πατέρα αὐτοῦ τὸν λαόν· καὶ ἐξέτεινε τὸ ἄκρον τοῦ σκήπτρου αὐτοῦ τοῦ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἔβαψεν αὐτὸ εἰς τὸ κηρίον τοῦ μέλιτος, καὶ ἐπέστρεψε τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ ἀνέβλεψαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη εἷς ἐκ τοῦ λαοῦ, καὶ εἶπεν, ὁρκίσας ὥρκισε τὸν λαὸν ὁ πατήρ σου, λέγων ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος ὃς φάγεται ἄρτον σήμερον· καὶ ἐξελύθη ὁ λαός. Καὶ ἔγνω Ἰωνάθαν, καὶ εἶπεν, ἀπήλλαχεν ὁ πατήρ

μου τὴν γῆν· ἴδε, διότι εἶδον οἱ ὀφθαλμοί μου ὅτι ἐγευσάμην βραχύ τι τοῦ μέλιτος τούτου· Ἀλλ’ ὅτι ἔφαγεν ἔσθων σήμερον ὁ λαὸς τῶν σκύλων τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν ὧν εὗρεν, ὅτι νῦν ἂν μείζων ἦν ἡ πληγὴ ἡ ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις. Καὶ ἐπάταξεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ τῶν ἀλλοφύλων ἐν Μαχμάς· καὶ ἐκοπίασεν ὁ λαὸς σφόδρα. Καὶ ἐκλίθη ὁ λαὸς εἰς τὰ σκῦλα· καὶ ἔλαβεν ὁ λαὸς ποίμνια, καὶ βουκόλια, καὶ τέκνα βοῶν, καὶ ἔσφαξεν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἤσθιεν ὁ λαὸς σὺν τῷ αἵματι. Καὶ ἀπηγγέλη Σαοὺλ, λέγοντες, ἡμάρτηκεν ὁ λαὸς τῷ Κυρίῳ, φαγὼν σὺν τῷ αἵματι· καὶ εἶπε Σαοὺλ, ἐκ Γεθθαὶμ κυλίσατέ μοι λίθον ἐνταῦθα μέγαν. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, διασπάρητε ἐν τῷ λαῷ, καὶ εἴπατε αὐτοῖς προσαγαγεῖν ἐνταῦθα ἕκαστος τὸν μόσχον αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸ πρόβατον αὐτοῦ· καὶ σφαζέτω ἐπὶ τούτου, καὶ οὐ μὴ ἁμάρτητε τῷ Κυρίῳ τοῦ ἐσθίειν σὺν τῷ αἵματι· καὶ προσῆγεν ὁ λαὸς ἕκαστος τὸ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἔσφαζον ἐκεῖ. Καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ Σαοὺλ θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ· τοῦτο ἤρξατο Σαοὺλ οἰκοδομῆσαι θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ. Καὶ εἶπε Σαούλ, καταβῶμεν ὀπίσω τῶν ἀλλοφύλων τὴν νύκτα, καὶ διαρπάσωμεν ἐν αὐτοῖς ἕως διαφαύσῃ ἡμέρα, καὶ μὴ ὑπολείπωμεν ἐν αὐτοῖς ἄνδρα· καὶ εἶπαν, πᾶν τὸ ἀγαθὸν ἐνώπιόν σου ποίει· καὶ εἶπεν ὁ ἱερεὺς, προσελθωμεν ἐνταῦθα πρὸς τὸν Θεόν. Καὶ ἐπηρώτησε Σαοὺλ τὸν Θεὸν, εἰ καταβῶ ὀπίσω τῶν ἀλλοφύλων, εἰ παραδώσεις αὐτοὺς εἰς χεῖρας Ἰσραήλ; καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, προσαγάγετε ἐνταῦθα πάσας τὰς γωνίας τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ γνῶτε καὶ ἴδετε ἐν τίνι γέγονεν ἡ ἁμαρτία αὕτη σήμερον. Ὅτι ζῇ Κύριος ὁ σώσας τὸν Ἰσραὴλ, ὅτι ἐὰν ἀποκριθῇ κατὰ Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ μου, θανάτῳ ἀποθανεῖται· καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀποκρινόμενος ἐκ παντὸς τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπε παντὶ ἀνδρὶ Ἰσραὴλ, ὑμεῖς ἔσεστε εἰς δουλείαν, καὶ ἐγὼ καὶ Ἰωνάθαν ὁ υἱός μου

ἐσόμεθα εἰς δουλείαν· καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Σαούλ, τὸ ἀγαθὸν ἐνώπιόν σου ποίει. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, τί ὅτι οὐκ ἀπεκρίθης τῷ δούλῳ σου σήμερον; εἰ ἐν ἐμοὶ ἢ ἐν Ἰωνάθαν τῷ υἱῷ μου ἡ ἀδικία; Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, δὸς δήλους· καὶ ἐὰν τάδε εἴπῃ, δὸς δὴ τῷ λαῷ σου Ἰσραὴλ, δὸς δὴ ὁσιότητα· καὶ κληροῦται Ἰωνάθαν καὶ Σαούλ, καὶ ὁ λαὸς ἐξῆλθε. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, βάλλετε ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ ἀναμέσον Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ μου· ὃν ἂν κατακληρώσηται Κύριος, ἀποθανέτω· καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Σαοὺλ, οὐκ ἔστι τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ κατεκράτησε Σαοὺλ τοῦ λαοῦ, καὶ βάλλουσιν ἀναμέσον αὐτοῦ καὶ ἀναμέσον Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, καὶ κατακληροῦται Ἰωνάθαν. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Ἰωνάθαν, ἀπάγγειλόν μοι τί πεποίηκας· καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ Ἰωνάθαν, καὶ εἶπε, γευόμενος ἐγευσάμην ἐν ἄκρῳ τῷ σκήπτρῳ τῷ ἐν τῇ χειρί μου βραχὺ μέλι, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἀποθνήσκω. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Σαοὺλ, τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε προσθείη, ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ σήμερον. Καὶ εἶπεν ὁ λαὸς πρὸς Σαοὺλ, εἰ σήμερον θανατωθήσεται ὁ ποιήσας τὴν σωτηρίαν τὴν μεγάλην ταύτην ἐν Ἰσραήλ; ζῇ Κύριος, εἰ πεσεῖται τριχὸς τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, ὅτι ὁ λαὸς τοῦ Θεοῦ ἐποίησε τὴν ἡμέραν ταύτην· καὶ προσηύξατο ὁ λαὸς περὶ Ἰωνάθαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ οὐκ ἀπέθανε. Καὶ ἀνέβη Σαοὺλ ἀπὸ ὄπισθε τῶν ἀλλοφύλων· καὶ οἱ ἀλλόφυλοι ἀπῆλθον εἰς τὸν τόπον αὐτῶν. Καὶ Σαοὺλ ἔλαχε τοῦ βασιλεύειν, κατακληροῦται ἔργον ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἐπολέμει κύκλῳ πάντας τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ εἰς τὸν Μωὰβ, καὶ εἰς τοὺς υἱοὺς ’Αμμὼν, καὶ εἰς τοὺς υἱοὺς Ἐδὼμ, καὶ εἰς τὸν Βαιθαιὼρ, καὶ εἰς βασιλέα Σουβὰ, καὶ εἰς τοὺς ἀλλοφύλους· οὗ ἂν ἐστράφη, ἐσώζετο. Καὶ ἐποίησε δύναμιν, καὶ ἐπάταξε τὸν ’Αμαλήκ· καὶ ἐξείλετο τὸν Ἰσραὴλ ἐκ χειρὸς τῶν καταπατούντων αὐτόν. Καὶ

ἦσαν οἱ υἱοὶ Σαοὺλ Ἰωνάθαν, καὶ Ἰεσσιοὺ, καὶ Μελχισά· καὶ ὀνόματα τῶν δύο θυγατέρων αὐτοῦ, ὄνομα τῇ πρωτοτόκῳ Μερόβ, καὶ ὄνομα τῇ δευτέρᾳ Μελχόλ. Καὶ ὄνομα τῇ γυναικὶ αὐτοῦ ’Αχινοὸμ, θυγάτερ ’Αχιμάας· καὶ ὄνομα τῷ ἀρχιστρατήγῳ αὐτοῦ ’Αβεννηρ, υἱὸς Νὴρ, υἱοῦ οἰκείου Σαούλ. Καὶ Κὶς πατὴρ Σαοὺλ, καὶ Νὴρ πατὴρ ’Αβεννὴρ υἱὸς Ἰαμὶν, υἱοῦ ’Αβιήλ. Καὶ ἦν ὁ πόλεμος κραταιὸς ἐπὶ τοὺς ἀλλοφύλους πάσας τὰς ἡμέρας Σαούλ· καὶ ἰδὼν Σαοὺλ πάντα ἄνδρα δυνατὸν, καὶ πάντα ἄνδρα υἱὸν δυνάμεως, καὶ συνήγαγεν αὐτοὺς πρὸς αὐτόν.

# 15

Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Σαοὺλ, ἐμὲ ἀπέστειλε Κύριος χρίσαί σε εἰς βασιλεα ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ νῦν ἄκουε τῆς φωνῆς Κυρίου. Τάδε εἶπε Κύριος σαβαὼθ, νῦν ἐκδικήσω ἃ ἐποίησεν ’Αμαλὴκ τῷ Ἰσραὴλ, ὡς ἀπήντησεν αὐτῷ ἐν τῇ ὁδῷ ἀναβαίνοντος αὐτοῦ ἐξ Αἰγύπτου. Καὶ νῦν πορεύου, καὶ πατάξεις τὸν ’Αμαλὴκ καὶ Ἰερὶμ καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, καὶ οὐ περιποιήσῃ ἐξ αὐτοῦ, καὶ ἐξολοθρεύσεις αὐτόν· καὶ ἀναθεματιεῖς αὐτὸν καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, καὶ οὐ φείσῃ ἀπ’ αὐτοῦ· καὶ ἀποκτενεῖς ἀπὸ ἀνδρὸς καὶ ἕως γυναικὸς, καὶ ἀπὸ νηπίου ἕως θηλάζοντος, καὶ ἀπὸ μόσχου ἕως προβάτου, καὶ ἀπὸ καμήλου ἕως ὄνου. Καὶ παρήγγειλε Σαοὺλ τῷ λαῷ, καὶ ἐπισκέπτεται αὐτοὺς ἐν Γαλγάλοις τετρακοσίας χιλιάδας ταγμάτων, καὶ τὸν Ἰούδαν τριάκοντα χιλιάδας ταγμάτων. Καὶ ἦλθε Σαοὺλ ἕως τῶν πόλεων ’Αμαλὴκ, καὶ ἐνήδρευσεν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸν Κιναῖον, ἄπελθε καὶ ἔκκλινον ἐκ μέσου τοῦ ’Αμαληκίτου, μὴ προσθῶ σε μετ’ αὐτοῦ, καὶ σὺ ἐποίησας ἔλεος μετὰ τῶν υἱῶν

Ἰσραὴλ, ἐν τῷ ἀναβαίνειν αὐτοὺς ἐξ Αἰγύπτου· καὶ ἐξέκλινεν ὁ Κιναῖος ἐκ μέσου ’Αμαλήκ. Καὶ ἐπάταξε Σαοὺλ τὸν Ἀμαλὴκ ἀπὸ Εὐειλὰτ ἕως Σοὺρ ἐπὶ προσώπου Αἰγύπτου. Καὶ συνέλαβε τὸν ’Αγὰγ βασιλέα ’Αμαλὴκ ζῶντα, καὶ πάντα τὸν λαὸν καὶ Ἱερὶμ ἀπέκτεινεν ἐν στόματι ῥομφαίας. Καὶ περιεποιήσατο Σαοὺλ καὶ πᾶς ὁ λαὸς τὸν ’Αγὰγ ζῶντα, καὶ τὰ ἀγαθὰ τῶν ποιμνίων, καὶ τῶν βουκολίων, καὶ τῶν ἐδεσμάτων καὶ τῶν ἀμπελώνων, καὶ πάντων τῶν ἀγαθῶν, καὶ οὐκ ἐβούλοντο ἐξολοθρεῦσαι αὐτά· καὶ πᾶν ἔργον ἠτιμωμένον καὶ ἐξουδενωμένον ἐξωλόθρευσαν. Καὶ ἐγενήθη ῥῆμα Κυρίου πρὸς Σαμουὴλ, λέγων, παρακέκλημαι ὅτι ἐβασίλευσα τὸν Σαοὺλ εἰς βασιλέα, ὅτι ἀπέστρεψεν ἀπὸ ὄπισθέ μου, καὶ τοὺς λόγους μου οὐκ ἐτήρησε· καὶ ἠθύμησε Σαμουὴλ, καὶ ἐβόησε πρὸς Κύριον ὅλην τὴν νύκτα. Καὶ ὤρθρισε Σαμουὴλ, καὶ ἐπορεύθη εἰς ἀπάντησιν Ἰσραὴλ το πρωΐ· καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαοὺλ, λέγοντες ἥκει Σαμουὴλ εἰς Κάρμηλον, καὶ ἀνέστακεν αὐτῷ χεῖρα· καὶ ἐπέστρεψε τὸ ἅρμα, καὶ κατέβη εἰς Γάλγαλα πρὸς Σαούλ, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἀνέφερεν ὁλοκαύτωσιν τῷ Κυρίῳ, τὰ πρῶτα τῶν σκύλων ἤνεγκεν ἐξ ’Αμαλήκ. Καὶ παρεγένετο Σαμουὴλ πρὸς Σαούλ· καὶ εἶπεν αὐτῷ Σαοὺλ, εὐλογητὸς σὺ τῷ Κυρίῳ· ἔστησα πάντα ὅσα ἐλάλησε Κύριος. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ, καὶ τίς ἡ φωνὴ τοῦ ποιμνίου τούτου ἐν τοῖς ὠσί μου, καὶ φωνὴ τῶν βοῶν ἣν ἐγὼ ἀκούω; Καὶ εἶπε Σαούλ, ἐξ ’Αμαλὴκ ἤνεγκα αὐτά, ἃ περιεποιήσατο ὁ λαός, τὰ κράτιστα τοῦ ποιμνίου, καὶ τῶν βοῶν, ὅπως τυθῇ Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου, καὶ τὰ λοιπὰ ἐξωλόθρευσα. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Σαοὺλ, ἄνες, καὶ ἀπαγγελῶ σοι ἃ ἐλάλησε Κύριος πρὸς μὲ τὴν νύκτα· καὶ εἶπεν αὐτῷ, λάλησον. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Σαούλ, οὐχὶ μικρὸς εἶ σὺ ἐνώπιον αὐτοῦ, ἡγούμενος σκήπτρου φυλῆς Ἰσραήλ; καὶ ἔχρισέ σε Κύριος εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ ἀπέστειλέ σε Κύριος ἐν ὁδῷ,

καὶ εἶπέ σοι, πορεύθητι, καὶ ἐξολόθρευσον· ἀνελεῖς τοὺς ἁμαρτάνοντας εἰς ἐμέ, τὸν Ἀμαλὴκ, καὶ πολεμήσεις αὐτοὺς ἕως συντελέσῃς αὐτούς. Καὶ ἱνατί οὐκ ἤκουσας φωνῆς Κυρίου, ἀλλ' ὥρμησας τοῦ θέσθαι ἐπὶ τὰ σκῦλα, καὶ ἐποίησας τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου; Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Σαμουὴλ, διὰ τὸ ἀκοῦσαί με τῆς φωνῆς τοῦ λαοῦ, καὶ ἐπορεύθην τῇ ὁδῷ ᾗ ἀπέστειλέ με Κύριος, καὶ ἤγαγον τὸν 'Αγὰγ βασιλέα 'Αμαλὴκ, καὶ τὸν 'Αμαλὴκ ἐξωλόθρευσα. Καὶ ἔλαβεν ὁ λαὸς τῶν σκύλων ποίμνια καὶ βουκόλια τὰ πρῶτα τοῦ ἐξολοθρεύματος, θύσαι ἐνώπιον Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν ἐν Γαλγάλοις. Καὶ εἶπε Σαμουήλ, εἰ θελητὸν τῷ Κυρίῳ ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας, ὡς τὸ ἀκοῦσαι φωνῆς Κυρίου; ἰδοὺ ἀκοὴ ὑπὲρ θυσίαν ἀγαθὴν, καὶ ἡ ἐπακρόασις ὑπὲρ στέαρ κριῶν. Ὅτι ἁμαρτία οἰώνισμά ἐστιν, ὀδύνην καὶ πόνους θεραφὶν ἐπάγουσιν· ὅτι ἐξουδένωσας τὸ ῥῆμα Κυρίου, καὶ ἐξουδενώσει σε Κύριος μὴ εἶναι βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Σαμουὴλ, ἡμάρτηκα, ὅτι παρέβην τὸν λόγον Κυρίου καὶ τὸ ῥῆμά σου, ὅτι ἐφοβήθην τὸν λαὸν, καὶ ἤκουσα τῆς φωνῆς αὐτῶν. Καὶ νῦν ἆρον δὴ τὸ ἁμάρτημά μου, καὶ ἀνάστρεψον μετ' ἐμοῦ, καὶ προσκυνήσω Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Σαοὺλ, οὐκ ἀναστρέφω μετὰ σοῦ; ὅτι ἐξουδένωσας τὸ ῥῆμα Κυρίου, καὶ ἐξουδενώσει σε Κύριος τοῦ μὴ εἶναι βασιλέα ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπέστρεψε Σαμουὴλ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ τοῦ ἀπελθεῖν, καὶ ἐκράτησε Σαοὺλ τοῦ πτερυγίου τῆς διπλοΐδος αὐτοῦ, καὶ διέῤῥηξεν αὐτό. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Σαμουὴλ, διέῤῥηξε Κύριος τὴν βασιλείαν σου ἀπὸ Ἰσραὴλ ἐκ χείρος σου σήμερον, καὶ δώσει αὐτὴν τῷ πλησίον σου τῷ ἀγαθῷ ὑπὲρ σέ· Καὶ διαιρεθήσεται Ἰσραὴλ εἰς δύο, καὶ οὐκ ἀποστρέψει οὐδὲ μετανοήσει, ὅτι οὐχ ὡς ἄνθρωπός ἐστι τοῦ μετανοῆσαι αὐτός. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, ἡμάρτηκα,

ἀλλὰ δόξασόν με δὴ ἐνώπιον πρεσβυτέρων Ἰσραὴλ καὶ ἐνώπιον λαοῦ μου, καὶ ἀνάστρεψον μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ προσκυνήσω Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου. Καὶ ἀνέστρεψε Σαμουὴλ ὀπίσω Σαοὺλ, καὶ προσεκύνησε τῷ Κυρίῳ. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ, προσαγάγετέ μοι τὸν ᾽Αγὰγ βασιλέα ᾽Αμαλήκ· καὶ προσῆλθε πρὸς αὐτὸν ᾽Αγὰγ τρέμων· καὶ εἶπεν ᾽Αγὰγ, εἰ οὕτω πικρὸς ὁ θάνατος. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς ᾽Αγὰγ, καθότι ἠτέκνωσε γυναῖκας ἡ ῥομφαία σου, οὕτως ἀτεκνωθήσεται ἐκ γυναικῶν ἡ μήτηρ σου· καὶ ἔσφαξε Σαμουὴλ τὸν ᾽Αγὰγ ἐνώπιον Κυρίου ἐν Γαλγάλ. Καὶ ἀπῆλθε Σαμουὴλ εἰς ᾽Αρμαθαίμ· καὶ Σαοὺλ ἀνέβη εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ εἰς Γαβαά. Καὶ οὐ προσέθετο ἔτι Σαμουὴλ ἰδεῖν τὸν Σαοὺλ ἕως ἡμέρας θανάτου αὐτοῦ, ὅτι ἐπένθει Σαμουὴλ ἐπὶ Σαοὺλ, καὶ Κύριος μετεμελήθη ὅτι ἐβασίλευσε τὸν Σαοὺλ ἐπὶ Ἰσραήλ.

# 16

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουήλ, ἕως πότε σὺ πενθεῖς ἐπὶ Σαοὺλ, κἀγω ἐξουδένωκα αὐτὸν, μὴ βασιλεύειν ἐπὶ Ἰσραήλ; πλῆσον τὸ κέρας σου ἐλαίου, καὶ δεῦρο ἀποστείλω σε πρὸς Ἰεσσαὶ ἕως Βηθλεὲμ, ὅτι ἑώρακα ἐν τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ ἐμοὶ βασιλέα. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πῶς πορευθῶ; καὶ ἀκούσεται Σαοὺλ, καὶ ἀποκτενεῖ με· καὶ εἶπε Κύριος, δάμαλιν βοῶν λάβε ἐν τῇ χειρί σου, καὶ ἐρεῖς, θῦσαι τῷ Κυρίῳ ἥκω. Καὶ καλέσεις τὸν Ἰεσσαὶ εἰς τὴν θυσίαν, καὶ γνωριῶ σοι ἃ ποιήσεις· καὶ χρίσεις ὃν ἂν εἴπω πρὸς σέ. Καὶ ἐποίησε Σαμουὴλ πάντα ἃ ἐλάλησεν αὐτῷ Κύριος· καὶ ἦλθεν εἰς Βηθλεὲμ, καὶ ἐξέστησαν οἱ πρεσβύτεροι τῆς πόλεως τῇ ἀπαντήσει αὐτοῦ, καὶ εἶπαν, ἢ εἰρήνη ἡ εἴσοδός σου ὁ βλέπων; Καὶ εἶπεν,

εἰρήνη· θῦσαι τῷ Κυρίῳ ἥκω· ἁγιάσθητε καὶ εὐφράνθητε μετ’ ἐμοῦ σήμερον· καὶ ἡγίασε τὸν Ἰεσσαὶ καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ ἐκάλεσεν αὐτοὺς εἰς τὴν θυσίαν. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ εἰσιέναι αὐτοὺς, καὶ εἶδε τὸν Ἐλιάβ, καὶ εἶπεν, ἀλλὰ καὶ ἐνώπιον Κυρίου χριστὸς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουὴλ, μὴ ἐπιβλέψῃς ἐπὶ τὴν ὄψιν αὐτοῦ, μηδὲ εἰς τὴν ἔξιν μεγέθους αὐτοῦ, ὅτι ἐξουδένωκα αὐτόν· ὅτι οὐχ ὡς ἐμβλέψεται ἄνθρωπος, ὄψεται ὁ Θεός· ὅτι ἄνθρωπος ὄψεται εἰς πρόσωπον, ὁ δὲ Θεὸς ὄψεται εἰς καρδίαν. Καὶ ἐκάλεσεν Ἰεσσαὶ τὸν ’Αμιναδὰβ, καὶ παρῆλθε κατὰ πρόσωπον Σαμουήλ. καὶ εἶπεν οὐδὲ τοῦτον ἐξελέξατο ὁ Θεός. Καὶ παρήγαγεν Ἰεσσαὶ τὸν Σαμά· καὶ εἶπε, καὶ ἐν τούτῳ οὐκ ἐξελέξατο Κύριος. Καὶ παρήγαγεν Ἰεσσαὶ τοὺς ἑπτὰ υἱοὺς αὐτοῦ ἐνώπιον Σαμουήλ· καὶ εἶπε Σαμουὴλ, οὐκ ἐξελέξατο Κύριος ἐν τούτοις. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Ἰεσσαὶ, ἐκλελοίπασι τὰ παιδάρια; καὶ εἶπεν, ἔτι ὁ μικρὸς ἰδοὺ ποιμαίνει ἐν τῷ ποιμνίῳ· καὶ εἶπε Σαμουὴλ πρὸς Ἰεσσαὶ, ἀπόστειλον καὶ λάβε αὐτὸν, ὅτι οὐ μὴ κατακλιθῶμεν ἕως τοῦ ἐλθεῖν αὐτόν. Καὶ ἀπέστειλε καὶ εἰσήγαγεν αὐτόν· καὶ αὐτὸς πυῤῥάκης μετὰ κάλλους ὀφθαλμῶν, καὶ ἀγαθὸς ὁράσει Κυρίῳ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαμουὴλ, ἀνάστα καὶ χρίσον τὸν Δαυείδ, ὅτι οὗτός ἐστιν ἀγαθός. Καὶ ἔλαβε Σαμουὴλ τὸ κέρας τοῦ ἐλαίου, καὶ ἔχρισεν αὐτὸν ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ· καὶ ἐφήλατο πνεῦμα Κυρίου ἐπὶ Δαυὶδ ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ ἐπάνω· καὶ ἀνέστη Σαμουὴλ, καὶ ἀπῆλθεν εἰς ’Αρμαθαίμ. Καὶ πνεῦμα Κυρίου ἀπέστη ἀπὸ Σαοὺλ, καὶ ἔπνιγεν αὐτὸν πνεῦμα πονηρὸν παρὰ Κυρίου. Καὶ εἶπαν οἱ παῖδες Σαοὺλ πρὸς αὐτόν, ἰδοὺ δὴ, πνεῦμα Κυρίου πονηρὸν πνίγει σε· Εἰπάτωσαν δὴ οἱ δοῦλοί σου ἐνώπιόν σου, καὶ ζητησάτωσαν τῷ κυρίῳ ἡμῶν ἄνδρα εἰδότα ψάλλειν ἐν κινύρᾳ· καὶ ἔσται ἐν τῷ εἶναι πνεῦμα πονηρὸν ἐπὶ σοὶ, καὶ ψαλῇ ἐν τῇ κινύρᾳ αὐτοῦ, καὶ ἀγαθόν

σοι ἔσται καὶ ἀναπαύσει σε. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ἴδετε δή μοι ἄνδρα ὀρθῶς ψάλλοντα, καὶ εἰσαγάγετε αὐτὸν πρὸς μέ. Καὶ ἀπεκρίθη εἷς τῶν παιδαρίων αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἑώρακα υἱὸν τῷ Ἰεσσαὶ Βηθλεεμίτην, καὶ αὐτὸν εἰδότα ψαλμὸν, καὶ ὁ ἀνὴρ συνετὸς, καὶ πολεμιστὴς, καὶ σοφὸς λόγῳ, καὶ ὁ ἀνὴρ ἀγαθὸς τῷ εἴδει, καὶ Κύριος μετ’ αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε Σαοὺλ ἀγγέλους πρὸς Ἰεσσαὶ, λέγων, ἀπόστειλον πρὸς μὲ τὸν υἱόν σου Δαυὶδ τὸν ἐν τῷ ποιμνίῳ σου. Καὶ ἔλαβεν Ἰεσσαὶ γόμορ ἄρτων, καὶ ἀσκὸν οἴνου, καὶ ἔριφον αἰγῶν ἕνα, καὶ ἐξαπέστειλεν ἐι· χειρὶ Δαυὶδ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ πρὸς Σαούλ. Καὶ εἰσῆλθε Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, καὶ παρειστήκει ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ ἠγάπησεν αὐτὸν σφόδρα· καὶ ἐγενήθη αὐτῷ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε Σαοὺλ πρὸς Ἰεσσαὶ, λέγων, παριστάσθω δὴ Δαυὶδ ἐνώπιον ἐμοῦ, ὅτι εὗρε χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς μου. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ εἶναι πνεῦμα πονηρὸν ἐπὶ Σαοὺλ, καὶ ἐλάμβανε Δαυὶδ τὴν κινύραν, καὶ ἔψαλλεν ἐν χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἀνέψυχε Σαοὺλ, καὶ ἀγαθὸν αὐτῷ, καὶ ἀφίστατο ἀπ’ αὐτοῦ τὸ πνεῦμα τὸ πονηρόν.

# 17

Καὶ συνάγουσιν ἀλλόφυλοι τὰς παρεμβολὰς αὐτῶν εἰς πόλεμον, καὶ συνάγονται εἰς Σοκχὼθ τῆς Ἰουδαίας, καὶ παρεμβάλλουσιν ἀναμέσον Σοκχὼθ, καὶ ἀναμέσον ’Αζηκὰ Ἐφερμέν. Καὶ Σαοὺλ καὶ οἱ ἄνδρες Ἰσραὴλ συνάγονται, καὶ παρεμβάλλουσιν ἐν τῇ κοιλάδι αὐτοὶ, καὶ παρατάσσονται εἰς πόλεμον ἐξεναντίας τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ οἱ ἀλλόφυλοι ἵστανται ἐπὶ τοῦ ὄρους ἐνταῦθα, καὶ Ἰσραὴλ ἵσταται ἐπὶ τοῦ ὄρους ἐνταῦθα, καὶ ὁ αὐλὼν ἀναμέσον

αὐτῶν. Καὶ ἐξῆλθεν ἀνὴρ δυνατὸς ἐκ τῆς παρατάξεως τῶν ἀλλοφύλων, Γολιὰθ ὄνομα αὐτῷ ἐκ Γὲθ, ὕψος αὐτοῦ τεσσάρων πήχεων καὶ σπιθαμῆς. Καὶ περικεφαλαῖα ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ θώρακα ἁλυσιδωτὸν αὐτὸς ἐνδεδυκώς· καὶ ὁ σταθμὸς τοῦ θώρακος αὐτοῦ, πέντε χιλιάδες σίκλων χαλκοῦ καὶ σιδήρου. Καὶ κνημῖδες χαλκαῖ ἐπὶ τῶν σκελῶν αὐτοῦ, καὶ ἀσπὶς χαλκῆ ἀναμέσον τῶν ὤμων αὐτοῦ. Καὶ ὁ κοντὸς τοῦ δόρατος αὐτοῦ ὡσεὶ μέσακλον ὑφαινόντων, καὶ ἡ λόγχη αὐτοῦ ἑξακοσίων σίκλων σιδήρου· καὶ ὁ αἴρων τὰ ὅπλα αὐτοῦ προεπορεύετο αὐτοῦ. Καὶ ἔστη καὶ ἀνεβόησεν εἰς τὴν παράταξιν Ἰσραὴλ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, τί ἐκπορεύεσθε παρατάξασθαι πολέμῳ ἐξεναντίας ἡμῶν; οὐκ ἐγώ εἰμι ἀλλόφυλος, καὶ ὑμεῖς Ἑβραῖοι τοῦ Σαούλ; ἐκλέξασθε ἑαυτοῖς ἄνδρα, καὶ καταβήτω πρὸς με. Καὶ ἐὰν δυνηθῇ πολεμῆσαι πρός με, καὶ ἐαν πατάξῃ με, καὶ ἐσόμεθα ὑμῖν εἰς δούλους· ἐὰν δὲ ἐγὼ δυνηθῶ καὶ πατάξω αὐτὸν, ἔσεσθε ἡμῖν εἰς δούλους, καὶ δουλεύσετε ἡμῖν. Καὶ εἶπεν ὁ ἀλλόφυλος, ἰδοὺ ἐγὼ ὠνείδισα τὴν παράταξιν Ἰσραὴλ σήμερον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ· δότε μοι ἄνδρα, καὶ μονομαχήσομεν ἀμφότεροι. Καὶ ἤκουσε Σαοὺλ καὶ πᾶς Ἰσραὴλ τὰ ῥήματα τοῦ ἀλλοφύλου ταῦτα, καὶ ἐξέστησαν καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, μὴ δὴ συμπεσέτω καρδία τοῦ κυρίου μου ἐπ’ αὐτόν· ὁ δοῦλός σου πορεύσεται καὶ πολεμήσει μετὰ τοῦ ἀλλοφύλου τούτου. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸν Δαυὶδ, οὐ μὴ δυνήσῃ πορευθῆναι πρὸς τὸν ἀλλόφυλον τοῦ πολεμεῖν μετ’ αὐτοῦ, ὅτι παιδάριον εἶ σὺ, καὶ αὐτὸς ἀνὴρ πολεμιστὴς ἐκ νεότητος αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, ποιμαίνων ἦν ὁ δοῦλός σου τῷ πατρὶ αὐτοῦ ἐν τῷ ποιμνίῳ· καὶ ὅταν ἤρχετο ὁ λέων, καὶ ἡ ἄρκος, καὶ ἐλάμβανε πρόβατον ἐκ τῆς ἀγέλης, καὶ ἐξεπορευόμην ὀπίσω αὐτοῦ καὶ ἐπάταξα αὐτόν, καὶ ἐξέσπασα ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ·

καὶ εἰ ἐπανίστατο ἐπ’ ἐμὲ, καὶ ἐκράτησα τοῦ φάρυγγος αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξα, καὶ ἐθανάτωσα αὐτόν· Καὶ τὸν λέοντα καὶ τὴν ἄρκον ἔτυπτεν ὁ δοῦλός σου, καὶ ἔσται ὁ ἀλλόφυλος ὁ ἀπερίτμητος ὡς ἓν τούτων· οὐχὶ πορεύσομαι καὶ πατάξω αὐτὸν, καὶ ἀφελῶ σήμερον ὄνειδος ἐξ Ἰσραήλ; διότι τίς ὁ ἀπερίτμητος οὗτος, ὃς ὠνείδισε παράταξιν Θεοῦ ζῶντος; Κύριος ὃς ἐξείλατό με ἐκ χειρὸς τοῦ λέοντος καὶ ἐκ χειρὸς τῆς ἄρκτου, αὐτὸς ἐξελεῖταί με ἐκ χειρὸς τοῦ ἀλλοφύλου τοῦ ἀπεριτμήτου τούτου· καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Δαυὶδ, πορεύου, καὶ ἔσται Κύριος μετὰ σοῦ. Καὶ ἐνέδυσε Σαοὺλ τὸν Δαυὶδ μανδύαν, καὶ τὴν περικεφαλαίαν χαλκῆν περὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἔζωσε τὸν Δαυὶδ τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ ἐπάνω τοῦ μανδύου αὐτοῦ· καὶ ἐκοπίασε περιπατήσας ἅπαξ καὶ δίς· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, οὐ μὴ δύνωμαι πορευθῆναι ἐν τούτοις, ὅτι οὐ πεπείραμαι· καὶ ἀφαιροῦσιν αὐτὰ ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ ἔλαβε τὴν βακτηρίαν αὐτοῦ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐξελέξατο ἑαυτῷ πέντε λίθους λείους ἐκ τοῦ χειμάῤῥου, καὶ ἔθετο αὐτοὺς ἐν τῷ καδίῳ τῷ ποιμενικῷ τῷ ὄντι αὐτῷ εἰς συλλογὴν, καὶ σφενδόνη αὐτοῦ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ· καὶ προσῆλθε πρὸς τὸν ἄνδρα τὸν ἀλλόφυλον. Καὶ εἶδε Γολιὰθ τὸν Δαυὶδ, καὶ ἐξητίμασεν αὐτόν· ὅτι αὐτὸς ἦν παιδάριον, καὶ αὐτὸς πυῤῥάκης μετὰ κάλλους ὀφθαλμῶν. Καὶ εἶπεν ὁ ἀλλόφυλος πρὸς Δαυὶδ, ὡσεὶ κύων ἐγώ εἰμι, ὅτι σὺ ἔρχῃ ἐπ’ ἐμὲ ἐν ῥάβδῳ καὶ λίθοις; καὶ εἶπε Δαυὶδ, οὐχί, ἀλλ’ ἢ χείρων κυνός· καὶ κατηράσατο ὁ ἀλλόφυλος τὸν Δαυὶδ ἐν τοῖς θεοῖς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ ἀλλόφυλος πρὸς Δαυὶδ, δεῦρο πρὸς μὲ, καὶ δώσω τὰς σάρκας σου τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τοῖς κτήνεσι τῆς γῆς. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τὸν ἀλλόφυλον, σὺ ἔρχῃ πρὸς μὲ ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν δόρατι καὶ ἐν ἀσπίδι, κἀγὼ πορεύομαι πρὸς σὲ ἐν ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ σαβαὼθ παρατάξεως Ἰσραὴλ, ἣν ὠνείδισας σήμερον, καὶ

ἀποκλείσει σε Κύριος σήμερον εἰς τὴν χεῖρά μου, καὶ ἀποκτενῶ σε, καὶ ἀφελῶ τὴν κεφαλήν σου ἀπὸ σοῦ, καὶ δώσω τὰ κῶλά σου καὶ τὰ κῶλα παρεμβολῆς ἀλλοφύλων ἐν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· καὶ γνώσεται πᾶσα ἡ γῆ, ὅτι ἔστι Θεὸς ἐν Ἰσραήλ. Καὶ γνώσεται πᾶσα ἡ ἐκκλησία αὕτη, ὅτι οὐκ ἐν ῥομφαίᾳ καὶ δόρατι σώζει Κύριος, ὅτι τοῦ Κυρίου ὁ πόλεμος, καὶ παραδώσει Κύριος ὑμᾶς εἰς χεῖρας ἡμῶν. Καὶ ἀνέστη ὁ ἀλλόφυλος καὶ ἐπορεύθη εἰς συνάντησιν Δαυίδ. Καὶ ἐξέτεινε Δαυὶδ τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς τὸ κάδιον, καὶ ἔλαβεν ἐκεῖθεν λίθον ἕνα, καὶ ἐσφενδόνησε, καὶ ἐπάταξε τὸν ἀλλόφυλον εἰς τὸ μέτωπον αὐτοῦ, καὶ διέδυ ὁ λίθος διὰ τῆς περικεφαλαίας εἰς τὸ μέτωπον αὐτοῦ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ ἔδραμε Δαυὶδ, καὶ ἐπέστη ἐπ’ αὐτὸν, καὶ ἔλαβε τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτὸν, καὶ ἀφεῖλε τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ· καὶ εἶδον οἱ ἀλλόφυλοι, ὅτι τέθνηκεν ὁ δυνατὸς αὐτῶν, καὶ ἔφυγον. Καὶ ἀνίστανται ἄνδρες Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, καὶ ἠλάλαξαν, καὶ κατεδίωξαν ὀπίσω αὐτῶν ἕως εἰσόδου Γὲθ, καὶ ἕως τῆς πύλης ’Ασκάλωνος· καὶ ἔπεσον τραυματίαι τῶν ἀλλοφύλων ἐν τῇ ὁδῷ τῶν πυλῶν καὶ ἕως Γὲθ, καὶ ἕως ’Ακκαρών. Καὶ ἀνέστρεψαν ἄνδρες Ἰσραὴλ ἐκκλίνοντες ὀπίσω τῶν ἀλλοφύλων, καὶ κατεπάτουν τὰς παρεμβολὰς αὐτῶν. Καὶ ἔλαβε Δαυὶδ τὴν κεφαλὴν τοῦ ἀλλοφύλου, καὶ ἤνεγκεν αὐτὴν εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ ἔθηκεν ἐν τῷ σκηνώματι αὐτοῦ.

# 18

Καὶ ἐξῆλθον αἱ χορεύουσαι εἰς συνάντησιν Δαυὶδ ἐκ πασῶν

πόλεων Ἰσραὴλ ἐν τυμπάνοις, καὶ ἐν χαρμοσύνῃ, καὶ ἐν κυμβάλοις. Καὶ ἐξῆρχον αἱ γυναῖκες, καὶ ἔλεγον, ἐπάταξε Σαοὺλ ἐν χιλιάσιν αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ ἐν μυριάσιν αὐτοῦ. Καὶ πονηρὸν ἐφάνη τὸ ῥῆμα ἐν ὀφθαλμοῖς Σαοὺλ περὶ τοῦ λόγου τούτου, καὶ εἶπε, τῷ Δαυὶδ ἔδωκαν τὰς μυριάδας, καὶ ἐμοὶ ἔδωκαν τὰς χιλιάδας. Καὶ ἐφοβήθη Σαοὺλ ἀπὸ προσώπου Δαυὶδ, καὶ ἀπέστησεν αὐτὸν ἀπ᾽ αὐτοῦ, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἑαυτῷ χιλίαρχον· καὶ ἐξεπορεύετο καὶ εἰσεπορεύετο ἔμπροσθεν τοῦ λαοῦ. Καὶ ἦν Δαυὶδ ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ συνιῶν, καὶ Κύριος ἦν μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ εἶδε Σαοὺλ ὡς αὐτὸς συνιεῖ σφόδρα, καὶ εὐλαβεῖτο ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ πᾶς Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδας ἠγάπα τὸν Δαυὶδ, ὅτι αὐτὸς εἰσεπορεύετο καὶ ἐξεπορεύετο πρὸ προσώπου τοῦ λαοῦ. Καὶ ἠγάπησε Μελχὸλ ἡ θυγάτηρ Σαοὺλ τὸν Δαυίδ· καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαοὺλ, καὶ ηὐθύνθη ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, δώσω αὐτὴν αὐτῷ, καὶ ἔσται αὐτῷ εἰς σκάνδαλον· καὶ ἦν ἐπὶ Σαοὺλ χεὶρ ἀλλοφύλων. Καὶ ἐνετείλατο Σαοὺλ τοῖς παισὶν αὐτοῦ, λέγων, λαλήσατε ὑμεῖς λάθρα τῷ Δαυὶδ, λέγοντες, ἰδοὺ θέλει ἐν σοὶ ὁ βασιλεὺς, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ ἀγαπῶσί σε, καὶ σὺ ἐπιγάμβρευσον τῷ βασιλεῖ. Καὶ ἐλάλησαν οἱ παῖδες Σαοὺλ εἰς τὰ ὦτα Δαυὶδ τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ εἶπε Δαυὶδ, εἰ κούφον ἐν ὀφθαλμοῖς ὑμῶν ἐπιγαμβρεῦσαι βασιλεῖ; κἀγὼ ἀνὴρ ταπεινὸς, καὶ οὐχὶ ἔνδοξος. Καὶ ἀπήγγειλαν οἱ παῖδες Σαοὺλ αὐτῷ κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, ἃ ἐλάλησε Δαυίδ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, τάδε ἐρεῖτε τῷ Δαυὶδ, οὐ βούλεται ὁ βασιλεὺς ἐν δόματι ἀλλ᾽ ἢ ἐν ἑκατὸν ἀκροβυστίαις ἀλλοφύλων ἐκδικῆσαι ἐχθροὺς τοῦ βασιλέως· καὶ Σαοὺλ ἐλογίσατο ἐμβαλεῖν αὐτὸν εἰς χεῖρας τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἀπαγγέλλουσιν οἱ παῖδες Σαοὺλ τῷ Δαυὶδ τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ ηὐθύνθη ὁ λόγος ἐν ὀφθαλμοῖς Δαυὶδ ἐπιγαμβρεῦσαι τῷ βασιλεῖ. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ, καὶ ἐπορεύθη αὐτὸς

καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις ἑκατὸν ἄνδρας· καὶ ἀνήνεγκε τὰς ἀκροβυστίας αὐτῶν, καὶ ἐπιγαμβρεύεται τῷ βασιλεῖ, καὶ δίδωσιν αὐτῷ τὴν Μελχὸλ θυγατέρα αὐτοῦ αὐτῷ εἰς γυναῖκα. Καὶ εἶδε Σαοὺλ ὅτι Κύριος μετὰ Δαυὶδ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἠγάπα αὐτόν. Καὶ προσέθετο εὐλαβεῖσθαι ἀπὸ Δαυὶδ ἔτι.

# 19

Καὶ ἐλάλησε Σαοὺλ πρὸς Ἰωνάθαν τὸν υἱὸν αὐτοῦ, καὶ πρὸς πάντας τοὺς παῖδας αὐτοῦ θανατῶσαι τὸν Δαυίδ. Καὶ Ἰωνάθαν ὁ υἱὸς Σαοὺλ ἠρεῖτο τὸν Δαυὶδ σφόδρα· καὶ ἀπήγγειλεν Ἰωνάθαν τῷ Δαυὶδ, λέγων, Σαοὺλ ζητεῖ θανατῶσαί σε· φύλαξαι οὖν αὔριον πρωΐ, καὶ κρύβηθι καὶ κάθισον κρυδῇ· Καὶ ἐγὼ ἐξελεύσομαι καὶ στήσομαι ἐχόμενος τοῦ πατρός μου ἐν ἀγρῷ οὗ ἐὰν ᾖς ἐκεῖ· καὶ ἐγὼ λαλήσω περὶ σοῦ πρὸς τὸν πατέρα μου, καὶ ὄψομαι ὅ, τι ἐὰν ᾖ, καὶ ἀπαγγελῶ σοι. Καὶ ἐλάλησεν Ἰωνάθαν περὶ Δαυὶδ ἀγαθὰ πρὸς Σαοὺλ τὸν πατέρα αὐτοῦ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, μὴ ἁμαρτησάτω ὁ βασιλεὺς εἰς τὸν δοῦλόν σου Δαυὶδ, ὅτι οὐχ ἡμάρτηκεν εἰς σὲ, καὶ τὰ ποιήματα αὐτοῦ ἀγαθὰ σφόδρα· Καὶ ἔθετο τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξε τὸν ἀλλόφυλον, καὶ ἐποίησε Κύριος σωτηρίαν μεγάλην, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ εἶδον, καὶ ἐχάρησαν· καὶ ἱνατί ἁμαρτάνεις εἰς αἷμα ἀθῶον θανατῶσαι τὸν Δαυὶδ δωρεάν; Καὶ ἤκουσε Σαοὺλ τῆς φωνῆς Ἰωνάθαν· καὶ ὤμοσε Σαοὺλ, λέγων, ζῇ Κύριος, εἰ ἀποθανεῖται. Καὶ ἐκάλεσεν Ἰωνάθαν τὸν Δαυὶδ, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ εἰσήγαγεν Ἰωνάθαν τὸν Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, καὶ ἦν ἐνώπιον αὐτοῦ, ὡς ἐχθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν. Καὶ προσέθετο ὁ πόλεμος γενέσθαι πρὸς Σαοὺλ, καὶ

κατίσχυσε Δαυὶδ, καὶ ἐπολέμησε τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ ἐπάταξεν ἐν αὐτοῖς πληγὴν μεγάλην σφόδρα, καὶ ἔφυγον ἐκ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο πνεῦμα Θεοῦ πονηρὸν ἐπὶ Σαοὺλ, καὶ αὐτὸς ἐν οἴκῳ καθεύδων, καὶ δόρυ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ ἔψαλλε ταῖς χερσὶν αὐτοῦ. Καὶ ἐζήτει Σαοὺλ πατάξαι τὸ δόρυ εἰς Δαυίδ· καὶ ἀπέστη Δαυὶδ ἐκ προσώπου Σαούλ· καὶ ἐπάταξε τὸ δόρυ εἰς τὸν τοῖχον· καὶ Δαυὶδ ἀνεχώρησε καὶ διεσώθη. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ ἀπέστειλε Σαοὺλ ἀγγελους εἰς οἶκον Δαυὶδ φυλάξαι αὐτὸν, τοῦ θανατῶσαι αὐτὸν πρωΐ· καὶ ἀπήγγειλε τῷ Δαυὶδ Μελχὸλ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, λέγουσα, ἐὰν μὴ σὺ σώσῃς τὴν ψυχὴν σαυτοῦ τὴν νύκτα ταύτην, αὔριον θανατωθήσῃ. Καὶ κατάγει ἡ Μελχὸλ τὸν Δαυὶδ διὰ τῆς θυρίδος, καὶ ἀπῆλθε καὶ ἔφυγε καὶ σώζεται. Καὶ ἔλαβεν ἡ Μελχὸλ τὰ κενοτάφια, καὶ ἔθετο ἐπὶ τὴν κλίνην, καὶ ἦπαρ τῶν αἰγῶν ἔθετο πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ἐκάλυψεν αὐτὰ ἱματίῳ. Καὶ ἀπέστειλε Σαοὺλ ἀγγέλους λαβεῖν τὸν Δαυὶδ, καὶ λέγουσιν ἐνοχλεῖσθαι αὐτόν. Καὶ ἀποστέλλει ἐπὶ τὸν Δαυὶδ, λέγων, ἀγάγετε αὐτὸν ἐπὶ τῆς κλίνης πρὸς μὲ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. Καὶ ἔρχονται οἱ ἄγγελοι, καὶ ἰδοὺ τὰ κενοτάφια ἐπὶ τῆς κλίνης, καὶ ἦπαρ τῶν αἰγῶν πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ τῇ Μελχὸλ, ἱνατί οὕτως παρελογίσω με, καὶ ἐξαπέστειλας τὸν ἐχθρόν μου, καὶ διεσώθη; καὶ εἶπε Μελχὸλ τῷ Σαοὺλ, αὐτὸς εἶπεν, ἐξαπόστειλόν με, εἰ δὲ μὴ, θανατώσω σε. Καὶ Δαυὶδ ἔφυγε καὶ διεσώθη, καὶ παραγίνεται πρὸς Σαμουὴλ εἰς Ἁρμαθαὶμ, καὶ ἀπαγγέλλει αὐτῷ πάντα ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ Σαούλ· καὶ ἐπορεύθη Σαμουὴλ καὶ Δαυὶδ, καὶ ἐκάθισαν ἐν Ναυὰθ ἐν Ῥαμᾶ. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαοὺλ, λέγοντες, ἰδοὺ Δαυὶδ ἐν Ναυὰθ ἐν Ῥαμά. Καὶ ἀπέστειλε Σαοὺλ ἀγγέλους λαβεῖν τὸν Δαυὶδ, καὶ εἶδον τὴν ἐκκλησίαν τῶν προφητῶν, καὶ Σαμουὴλ εἱστήκει καθεστηκὼς ἐπ’

αὐτῶν· καὶ ἐγενήθη ἐπὶ τούς ἀγγέλους τοῦ Σαοὺλ πνεῦμα Θεοῦ, καὶ προφητεύουσι. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαοὺλ, καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους ἑτέρους, καὶ ἐπροφήτευσαν καὶ αὐτοί· καὶ προσέθετο Σαοὺλ ἀποστεῖλαι ἀγγέλους τρίτους, καὶ ἐπροφήτευσαν καὶ αὐτοί. Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ Σαοὺλ, καὶ ἐπορεύθη καὶ αὐτὸς εἰς Ἁρμαθαὶμ, καὶ ἔρχεται ἕως τοῦ φρέατος τοῦ ἅλω τοῦ ἐν τῷ Σεφί, καὶ ἠρώτησε καὶ εἶπε, ποῦ Σαμουὴλ καὶ Δαυίδ; καὶ εἶπαν, ἰδοὺ ἐν Ναυὰθ ἐν Ῥαμᾷ. Καὶ ἐπορεύθη ἐκεῖθεν εἰς Ναυὰθ ἐν Ῥαμᾷ· καὶ ἐγενήθη καὶ ἐπ’ αὐτῷ πνεῦμα Θεοῦ, καὶ ἐπορεύετο προφητεύων ἕως τοῦ ἐλθεῖν αὐτὸν εἰς Ναυὰθ ἐν Ῥαμᾷ. Καὶ ἐξεδύσατο τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἐπροφήτευσεν ἐνώπιον αὐτῶν· καὶ ἔπεσε γυμνὸς ὅλην τὴν ἡμέραν ἐκείνην καὶ ὅλην τὴν νύκτα· διὰ τοῦτο ἔλεγον, εἰ καὶ Σαοὺλ ἐν προφήταις;

# 20

Καὶ ἀπέδρα Δαυὶδ ἐκ Ναυὰθ ἐν Ῥαμᾷ, καὶ ἔρχεται ἐνώπιον Ἰωνάθαν, καὶ εἶπε, τί πεποίηκα, καὶ τί τὸ ἀδίκημά μου, καὶ τί ἡμάρτηκα ἐνώπιον τοῦ πατρός σου, ὅτι ἐπιζητεῖ τὴν ψυχήν μου; Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰωνάθαν, μηδαμῶς σοι, οὐ μὴ ἀποθάνῃς· ἰδοὺ οὐ μὴ ποιήσῃ ὁ πατήρ μου ῥῆμα μέγα ἢ μικρὸν, καὶ οὐκ ἀποκαλύψει τὸ ὠτίον μου· καὶ τί ὅτι κρύψει ὁ πατήρ μου ἀπ’ ἐμοῦ τὸ ῥῆμα τοῦτο; οὐκ ἔστι τοῦτο. Καὶ ἀπεκρίθη Δαυὶδ τῷ Ἰωνάθαν, καὶ εἶπε, γινώσκων οἶδεν ὁ πατήρ σου, ὅτι, εὕρηκα χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, καὶ εἶπε, μὴ γνῶναι τοῦτο Ἰωνάθαν, μὴ οὐ βούληται· ἀλλὰ ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, ὅτι καθὼς εἶπον, ἐμπέπλησται ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ τοῦ θανάτου. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν πρὸς Δαυὶδ, τί ἐπιθυμεῖ

ἡ ψυχή σου, καὶ τί ποιήσω σοι; Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἰωνάθαν, ἰδοὺ δὴ νεομηνία αὔριον, καὶ ἐγὼ καθίσας οὐ καθήσομαι φαγεῖν, καὶ ἐξαποστελεῖς με, καὶ κρυβήσομαι ἐν τῷ πεδίῳ ἕως δείλης. Καὶ ἐὰν ἐπισκεπτόμενος ἐπισκέψηταί με ὁ πατήρ σου, καὶ ἐρεῖς, παραιτούμενος παρῃτήσατο ἀπ᾽ ἐμοῦ Δαυὶδ δραμεῖν ἕως εἰς Βηθλεὲμ τὴν πόλιν αὐτοῦ, ὅτι θυσία τῶν ἡμερῶν ἐκεῖ ὅλῃ τῇ φυλῇ. Ἐὰν τάδε εἴπῃ, ἀγαθῶς, εἰρήνη τῷ δούλῳ σου· καὶ ἐὰν σκληρῶς ἀποκριθῇ σοι, γνῶθι ὅτι συντετέλεσται ἡ κακία παρ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ποιήσεις ἔλεος μετὰ δούλου σου, ὅτι εἰσήγαγες εἰς διαθήκην Κυρίου τὸν δοῦλόν σου μετὰ σεαυτοῦ· καὶ εἰ ἔστιν ἀδικία ἐν τῷ δούλῳ σου, θανάτωσόν με σὺ, καὶ ἕως τοῦ πατρός σου ἰνατί οὔτως εἰσάγεις με; Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν, μηδαμῶς σοι· ὅτι ἐὰν γινῶσκων γνῶ ὅτι συντετέλεσται ἡ κακία παρὰ τοῦ πατρός μου τοῦ ἐλθεῖν ἐπὶ σὲ, καὶ ἐὰν μὴ ᾖ εἰς τὰς πόλεις σου, ἐγὼ ἀπαγγελῶ σοι. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἰωνάθαν, τίς ἀπαγγείλῃ μοι, ἐὰν ἀποκριθῇ ὁ πατήρ σου σκληρῶς; Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν πρὸς Δαυὶδ, πορεύου, καὶ μὲνε εἰς ἀγρόν· καὶ ἐκπορεύονται ἀμφότεροι εἰς ἀγρόν. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν πρὸς Δαυὶδ, Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ οἶδεν, ὅτι ἀνακρινῶ τὸν πάτερα μου ὡς ἂν ὁ καιρὸς, τρισσῶς, καὶ ἰδοὺ ἀγαθὸν ᾖ περὶ Δαυὶδ, καὶ οὐ μὴ ἀποστείλω πρὸς σὲ εἰς ἀγρὸν, τάδε ποιήσαι ὁ Θεὸς τῷ Ἰωνάθαν καὶ τάδε προσθείη· ὅτι ἀνοίσω τὰ κακὰ ἐπὶ σὲ, καὶ ἀποκαλύψω τὸ ὠτίον σου, καὶ ἐξαποστελῶ σε καὶ ἀπελεύσῃ εἰς εἰρήνην, καὶ ἔσται Κύριος μετὰ σοῦ καθὼς ἦν μετὰ τοῦ πατρός μου. Καὶ ἐὰν μὲν ἔτι μου ζῶντος, καὶ ποιήσεις ἔλεος μετ᾽ ἐμοῦ· καὶ ἐὰν θανάτῳ ἀποθάνω, οὐκ ἐξαρεῖς ἔλεός σου ἀπὸ τοῦ οἴκου μου ἕως τοῦ αἰῶνος· καὶ εἰ μὴ, ἐν τῷ ἐξαίρειν Κύριον τοὺς ἐχθροὺς Δαυὶδ ἕκαστον ἀπὸ τοῦ προσώπου τῆς γῆς, εὑρεθῆναι τὸ ὄνομα τοῦ Ἰωνάθαν ἀπὸ τοῦ οἴκου Δαυὶδ, καὶ ἐκζητῆσαι Κύριος ἐχθροὺς

τοῦ Δαυίδ. Καὶ προσέθετο ἔτι Ἰωνάθαν ὀμόσαι τῷ Δαυίδ, ὅτι ἠγάπησε ψυχὴν ἀγαπῶντος αὐτόν. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν, αὔριον νεομηνία, καὶ ἐπισκεπήσῃ, ὅτι ἐπισκεπήσεται καθέδρα σου. Καὶ τρισσεύσεις καὶ ἐπισκεψῃ καὶ ἥξεις εἰς τὸν τόπον σου οὗ κρυβῇς ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐργασίμῃ, καὶ καθήσῃ παρὰ τὸ ἐργὰβ ἐκεῖνο. Καὶ ἐγὼ τρισσεύσω ταῖς σχίζαις ἀκοντίζων, ἐκπέμπων εἰς τὴν ’Αματταρί. Καὶ ἰδοὺ ἀποστέλλω τὸ παιδάριον, λέγων, δεῦρο, εὗρέ μοι τὴν σχίζαν. Ἐὰν εἴπω λέγων τῷ παιδαρίῳ, ὧδε ἡ σχίζα ἀπὸ σοῦ καὶ ὧδε, λάβε αὐτήν· παραγίνου, ὅτι εἰρήνη σοι, καὶ οὐκ ἔστι λόγος, ζῇ Κύριος· ἐὰν τάδε εἴπω τῷ νεανίσκῳ, ὧδε ἡ σχίζα ἀπὸ σοῦ καὶ ἐπέκεινα· πορεύου, ὅτι ἐξαπέσταλκέ σε Κύριος. Καὶ τὸ ῥῆμα ὃ ἐλαλήσαμεν ἐγὼ καὶ σὺ, ἰδοὺ Κύριος μάρτυς ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ ἕως αἰῶνος. Καὶ κρύπτεται Δαυὶδ ἐν ἀγρῷ, καὶ παραγίνεται ὁ μὴν, καὶ ἔρχεται ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τὴν τράπεζαν τοῦ φαγεῖν. Καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τὴν καθέδραν αὐτοῦ ὡς ἅπαξ καὶ ἅπαξ ἐπὶ τῆς καθέδρας παρὰ τοῖχον, καὶ προέφθασε τὸν Ἰωνάθαν, καὶ ἐκάθισεν Ἀβεννὴρ ἐκ πλαγίων Σαοὺλ, καὶ ἐπεσκέπη ὁ τόπος Δαυίδ. Καὶ οὐκ ἐλάλησε Σαοὺλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι εἴρηκε, σύμπτωμα φαίνεται, μὴ καθαρὸς εἶναι, ὅτι οὐ κεκαθάρισται. Καὶ ἐγενήθη τῇ ἐπαύριον τοῦ μηνὸς τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ, καὶ ἐπεσκέπη ὁ τόπος τοῦ Δαυίδ· καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Ἰωνάθαν τὸν υἱὸν αὐτοῦ, τί ὅτι οὐ παραγέγονεν ὁ υἱὸς Ἰεσσαὶ καὶ ἐχθὲς καὶ σήμερον ἐπὶ τὴν τράπεζαν; Καὶ ἀπεκρίθη Ἰωνάθαν τῷ Σαοὺλ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, παρῄτηται παρ’ ἐμοῦ Δαυὶδ ἕως εἰς Βηθλεὲμ τὴν πόλιν αὐτοῦ πορευθῆναι. Καὶ εἶπεν, ἐξαπόστειλον δή με, ὅτι θυσία τῆς φυλῆς ἡμῖν ἐν τῇ πόλει, καὶ ἐνετείλαντο πρὸς μὲ οἱ ἀδελφοί μου· καὶ νῦν εἰ εὕρηκα χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, διαβήσομαι δὴ καὶ ὄψομαι τοὺς ἀδελφούς μου· διὰ τοῦτο οὐ παραγέγονεν ἐπὶ τὴν τράπεζαν τοῦ

βασιλέως. Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ Σαοὺλ ἐπὶ Ἰωνάθαν σφόδρα, καὶ εἶπεν αὐτῷ, υἱὲ κορασίων αὐτομολούντων, οὐ γὰρ οἶδα ὅτι μέτοχος εἶ σὺ τῷ υἱῷ Ἰεσσαὶ εἰς αἰσχύνην σου, καὶ εἰς αἰσχύνην ἀποκαλύψεως μητρός σου; ὅτι πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ὁ υἱὸς Ἰεσσαὶ ζῇ ἐπὶ τῆς γῆς, οὐχ ἑτοιμασθήσεται ἡ βασιλεία σου· νῦν οὖν ἀποστείλας λάβε τὸν νεανίαν, ὅτι υἱὸς θανάτου οὗτος. Καὶ ἀπεκρίθη Ἰωνάθαν τῷ Σαοὺλ, ἵνατί ἀποθνήσκει; τί πεποίηκε; Καὶ ἐπῆρε Σαοὺλ τὸ δόρυ ἐπὶ Ἰωνάθαν τοῦ θανατῶσαι αὐτόν· καὶ ἔγνω Ἰωνάθαν ὅτι συντετέλεσται ἡ κακία αὕτη παρὰ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ θανατῶσαι τὸν Δαυίδ. Καὶ ἀνεπήδησεν Ἰωνάθαν ἀπὸ τῆς τραπέζης ἐν ὀργῇ θυμοῦ, καὶ οὐκ ἔφαγεν ἐν τῇ δευτέρᾳ τοῦ μηνὸς ἄρτον, ὅτι ἐθρανσθη ἐπὶ τὸν Δαυὶδ, ὅτι συνετέλεσεν ἐπ’ αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη πρωὶ, καὶ ἐξῆλθεν Ἰωνάθαν εἰς ἀγρόν, καθὼς ἐτάξατο εἰς τὸ μαρτύριον Δαυίδ, καὶ παιδάριον μικρὸν μετ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε τῷ παιδαρίω, δράνε, εὗρέ μοι τὰς σχίζας ἐν αἷς ἐγὼ ἀκοντίζω· και τὸ παιδάμε ἔδρανε, και αὐτὸς ἠκόντισε τῇ σχίζῃ, καὶ παρήγαγεν αὐτήν. Καὶ ἦλθεν τὸ παιδάριον ἕως τοῦ τόπου τῆς σχίζης οὗ ἠκόντιζεν Ἰωνάθαν· καὶ ἀνεβόησεν Ἰωνάθαν ὀπίσω τοῦ νεανίου, καὶ εἶπεν, ἐκεῖ ἡ σχίζα ἀπὸ σοῦ καὶ ἐπέκεινα· Καὶ ἀνεβόησεν Ἰωνάθαν ὀπίσω τοῦ παιδαρίου αὐτοῦ, λέγων, ταχύνας σπεῦσον, καὶ μὴ στῇς· καὶ ἀνέλεξε τὸ παιδάριον Ἰωνάθαν τὰς σχίζας, καὶ ἤνεγκε τὰς σχίζας πρὸς τὸν κύριον αὐτοῦ. καὶ τὸ παιδάριον οὐκ ἔγνω οὐθὲν, πάρεξ Ἰωνάθαν καὶ Δαυίδ. καὶ Ἰωνάθαν ἔδωκε τὰ σκεύη αὐτοῦ ἐπὶ τὸ παιδάριον αὐτοῦ, καὶ εἶπε τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ, πορεύου, εἴσελθε εἰς τὴν πόλιν. Καὶ ὡς εἰσῆλθε τὸ παιδάριον, καὶ Δαυὶδ ἀνέστη ἀπὸ τοῦ ἀργὰβ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ τρίς, καὶ κατεφίλησεν ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ ἔκλαυσεν ἕκαστος

τῷ πλησίον αὐτοῦ, ἕως συντελείας μεγάλης. Καὶ εἶπεν Ἰωνάθαν τῷ Δαυὶδ, πορεύου εἰς εἰρήνην, καὶ ὡς ὀμωμόκαμεν ἡμεῖς ἀμφότεροι ἐν ὀνόματι Κυρίου, λέγοντες, Κύριος ἔσται μάρτυς ἀνὰμέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ, καὶ ἀνὰμέσον τοῦ σηέρματός μου καὶ ἀναμέσον τοῦ σπέρματός σον ἕως αἰῶνος·

# 21

καὶ ἀνέστη Δαυὶδ καὶ ἀπῆλθε, καὶ Ἰωνάθαν εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν. Καὶ ἔρχεται Δαυὶδ εἰς Νομβᾶ πρὸς Ἀβιμέλεχ τὸν ἱερέα· καὶ ἐξέστη Ἀβιμέλεχ τῇ ἀπαντήσει αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί ὅτι σὺ μόνος, καὶ οὐθεὶς μετὰ σοῦ; Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῷ ἱερεῖ, ὁ βασιλεὺς ἐντέταλταί μοι ῥῆμα σήμερον, καὶ εἶπέ μοι, μηδεὶς γνώτω τὸ ῥῆμα περὶ οὗ ἐγὼ ἀποστέλλω σε, καὶ ὑπὲρ οὗ ἐγὼ ἐντέταλμαί σοι· καὶ τοῖς παιδαρίοις διαμεμαρτύρημαι ἐν τῷ τόπῳ τῷ λεγομένῳ, Θεοῦ πίστις φελλανὶ μαεμωνί. Καὶ νῦν εἰ εἰσὶν ὑπὸ τὴν χεῖρά σου πέντε ἄρτοι, δὸς εἰς χεῖρά μου τὸ εὑρεθέν. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἱερεὺς τῷ Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, οὐκ εἰσιν ἄρτοι βέβηλοι ὑπὸ τὴν χεῖρά μου, ὅτι ἀλλ’ ἢ ἄρτοι ἅγιοί εἰσιν· εἰ πεφυλαγμένα τὰ παιδάριά ἐστι πλὴν ἀπὸ γυναικὸς, καὶ φάγεται. Καὶ ἀπεκρίθη Δαυὶδ τῷ ἱερεῖ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀλλὰ ἀπὸ γυναικὸς ἀπεσχήμεθα ἐχθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν· ἐν τῷ ἐξελθεῖν με εἰς ὁδὸν γέγονε πάντα τὰ παιδία ἡγνισμένα, καὶ αὐτὴ ἡ ὁδὸς βέβηλος, διότι ἁγιασθήσεται σήμερον διὰ τὰ σκεύη μου. Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Ἀβιμέλεχ ὁ ἱερεὺς τοὺς ἄρτους τῆς προθέσεως, ὅτι ἐκεῖ οὐκ ἦν ἄρτοι, ἀλλ’ ἢ ἄρτοι τοῦ προσώπου οἱ ἀφῃρημένοι ἐκ προσώπου Κυρίου, τοῦ παρατεθῆναι ἄρτον θερμὸν ᾗ ἡμέρᾳ ἔλαβεν αὐτούς. Καὶ ἐκεῖ ἦν ἓν τῶν παιδαρίων τοῦ Σαοὺλ

ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ συνεχόμενος Νεεσσαρὰν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ὄνομα αὐτῷ Δωὴκ Σύρος, νέμων τὰς ἡμιόνους Σαούλ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβιμέλεχ, ἴδε εἰ ἔστιν ἐνταῦθα ὑπὸ τὴν χεῖρά σου δόρυ ἢ ῥομφαία, ὅτι τὴν ῥομφαίαν μου καὶ τὰ σκεύη οὐκ εἴληφα ἐν τῇ χειρί μου, ὅτι ἦν τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως κατὰ σπουδήν. Καὶ εἶπεν ὁ ἱερεὺς, ἰδοὺ ἡ ῥομφαία Γολιὰθ τὸυ ἀλλοφύλου, ὃν ἐπάταξας ἐν τῇ κοιλάδι Ἠλᾶ· καὶ αὕτη ἐνειλημένη ἦν ἐν ἱματίῳ· εἰ ταύτην λήψῃ, σεαυτῷ λάβε, ὅτι οὐκ ἔστιν ἑτέρα πάρεξ ταύτης ἐνταῦθα· καὶ εἶπε Δαυὶδ, ἰδοὺ οὐκ ἔστιν ὥσπερ αὐτή· δός μοι αὐτήν. Καὶ ἔδωκεν αὐτὴν αὐτῷ· καὶ ἀνέστη Δαυὶδ, καὶ ἔφυγεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ προσώπου Σαούλ· καὶ ἦλθε Δαυὶδ πρὸς Ἀγχοῦς βασιλέα Γέθ. Καὶ εἶπον οἱ παῖδες Ἀγχοῦς πρὸς αὐτὸν, οὐχὶ οὗτος Δαυὶδ ὁ βασιλεὺς τῆς γῆς; οὐχὶ τούτῳ ἐξῆρχον αἱ χορεύουσαι, λέγουσαι, ἐπάταξε Σαοὺλ ἐν χιλιάσιν αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ ἐν μυριάσιν αὐτοῦ; Καὶ ἔθετο Δαυὶδ τὰ ῥήματα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, καὶ ἐφοβήθη σφόδρα ἀπὸ προσώπου Ἀγχοῦς βασιλέως Γέθ. Καὶ ἠλλοίωσε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ προσεποιήσατο ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἐτυμπάνιζεν ἐπὶ ταῖς θύραις τῆς πόλεως, καὶ παρεφέρετο ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, καὶ ἔπιπτεν ἐπὶ τὰς θύρας τῆς πύλης, καὶ τὰ σίελα αὐτοῦ κατέῤῥει ἐπὶ τὸν πώγωνα αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀγχοῦς πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ἰδοὺ ἴδετε ἄνδρα ἐπίληπτον, ἱνατί εἰσηγάγετε αὐτὸν πρὸς μέ; Μὴ ἐλαττοῦμαι ἐπιλήπτων ἐγὼ, ὅτι εἰσαγηόχατε αὐτὸν ἐπιληπτεύεσθαι πρὸς μέ; οὗτος οὐκ εἰσελεύσεται εἰς οἰκίαν.

# 22

Καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν Δαυὶδ, καὶ διεσώθη, καὶ ἔρχεται εἰς τὸ

σπήλαιον τὸ Ὀδολλάμ· καὶ ἀκούουσιν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ καταβαίνουσι πρὸς αὐτὸν ἐκεῖ. Καὶ συνήγοντο πρὸς αὐτὸν πᾶς ἐν ἀνάγκῃ, καὶ πᾶς ὑπόχρεως, καὶ πᾶς κατώδυνος ψυχῇ, καὶ ἦν ἐπ᾽ αὐτῶν ἡγούμενος, καὶ ἦσαν μετ᾽ αὐτοῦ ὡς τετρακόσιοι ἄνδρες. Καὶ ἀπῆλθε Δαυὶδ ἐκεῖθεν εἰς Μασσηφὰθ τῆς Μωὰβ, καὶ εἶπε πρὸς βασιλέα Μωὰβ, γινέσθωσαν δὴ ὁ πατήρ μου καὶ ἡ μήτηρ μου παρὰ σοί, ἕως ὅτου γνῶ τί ποιήσει μοι ὁ Θεός. Καὶ παρεκάλεσε τὸ πρόσωπον τοῦ βασιλέως Μωὰβ, καὶ κατῴκουν μετ᾽ αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας, ὄντος τοῦ Δαυὶδ ἐν τῇ περιοχῇ. Καὶ εἶπε Γὰδ ὁ προφήτης πρὸς Δαυὶδ, μὴ κάθου ἐν τῇ περιοχῇ· πορεύου, καὶ ἥξεις εἰς γῆν Ἰούδα· καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ, καὶ ἦλθε καὶ ἐκάθισεν ἐν πόλει Σαρίκ. Καὶ ἤκουσε Σαοὺλ, ὅτι ἔγνωσταιΔαυὶδ, καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ Σαοὺλ ἐκάθητο ἐν τῷ βουνῷ ὑπὸ τὴν ἄρουραν τὴν ἐν Ῥαμᾷ, καὶ τὸ δόρυ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ παρειστήκεισαν αὐτῷ. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ τοὺς παρεστηκότας αὐτῷ, ἀκούσατε δὴ υἱοὶ Βενιαμὶν, εἰ ἀληθῶς πᾶσιν ὑμῖν δώσει ὁ υἱὸς Ἰεσσαὶ ἀγροὺς καὶ ἀμπελῶνας, καὶ πάντας ὑμᾶς τάξει ἑκατοντάρχους καὶ χιλιάρχους, ὅτι σύγκεισθε πάντες ὑμεῖς ἐπ᾽ ἐμὲ, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἀποκαλύπτων τὸ ὠτίον μου, ἐν τῷ διαθέσθαι τὸν υἱόν μου διαθήκην μετὰ τοῦ υἱοῦ Ἰεσσαὶ, καὶ οὐκ ἔστι πονῶν περὶ ἐμοῦ ἐξ ὑμῶν, καὶ ἀποκαλύπτων τὸ ὠτίον μου, ὅτι ἐπήγειρεν ὁ υἱός μου τὸν δοῦλόν μου ἐπ᾽ ἐμὲ εἰς ἐχθρὸν, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη; Καὶ ἀποκρίνεται Δωὴκ ὁ Σύρος ὁ καθεστηκὼς ἐπὶ τάς ἡμιόνους Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, ἑωρακα τὸν υἱὸν Ἰεσσαὶ παραγινόμενον εἰς Νομβᾶ πρὸς Ἀβιμέλεχ υἱὸν Ἀχιτὼβ τὸν ἱερέα. Καὶ ἠρώτα αὐτῷ διὰ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπισιτισμὸν ἔδωκεν αὐτῷ, καὶ τὴν ῥομφαίαν Γολιὰθ τοῦ ἀλλοφύλου ἔδωκεν αὐτῷ. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς καλέσαι τὸν Ἀβιμέλεχ υἱὸν

Ἀχιτὼβ καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ τοὺς ἱερεῖς τοὺς ἐν Νομβᾶ· καὶ παρεγένοντο πάντες πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, ἄκουε δὴ υἱὲ Ἀχιτώβ· καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἐγὼ, λάλει κύριε. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Σαοὺλ, ἱνατί συνέθου κατ᾽ ἐμοῦ σὺ καὶ ὁ υἱὸς Ἰεσσαὶ, δοῦναί σε αὐτῷ ἄρτον καὶ ῥομφαίαν, καὶ ἐρωτᾶν αὐτῷ διὰ τοῦ Θεοῦ, θέσθαι αὐτὸν ἐπ᾽ ἐμὲ εἰς ἐχθρὸν, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη; Καὶ ἀπεκρίθη τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπε, καὶ τίς ἐν πᾶσι τοῖς δούλοις σου ὡς Δαυὶδ πιστὸς, καὶ γαμβρὸς τοῦ βασιλέως, καὶ ἄρχων παντὸς παραγγέλματός σου, καὶ ἔνδοξος ἐν τῷ οἰκῳ σου; Ἢ σήμερον ἤργμαι ἐρωτᾶν αὐτῷ διὰ τοῦ Θεοῦ; μηδαμῶς· μὴ δότω ὁ βασιλεὺς κατὰ τοῦ δούλου αὐτοῦ λόγον, καὶ ἐφ᾽ ὅλον τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου, ὅτι οὐκ ἤδει ὁ δοῦλός σου ἐν πᾶσι τούτοις ῥῆμα μικρὸν, ἢ μέγα. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Σαοὺλ, θανάτῳ ἀποθανῇ Ἀβιμέλεχ σὺ, καὶ πᾶς ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τοῖς παρατρέχουσι τοῖς ἐφεστηκόσι πρὸς αὐτὸν, προσαγάγετε καὶ θανατοῦτε τοὺς ἱερεῖς τοῦ Κυρίου, ὅτι ἡ χεὶρ αὐτῶν μετὰ Δαυὶδ, καὶ ὅτι ἔγνωσαν ὅτι φεύγει αὐτὸς, καὶ οὐκ ἀπεκάλυψαν τὸ ὠτίον μου· καὶ οὐκ ἐβουλήθησαν οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως ἐπενεγκεῖν τὰς χεῖρας αὐτῶν ἁπαντῆσαι εἰς τοὺς ἱερεῖς Κυρίου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Δωὴκ, ἐπιστρέφου σὺ, καὶ ἀπάντα εἰς τοὺς ἱερεῖς· καὶ ἐπεστράφη Δωὴκ ὁ Σύρος, καὶ ἐθανάτωσε τοὺς ἱερεῖς τοῦ Κυρίου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, τριακοσίους καὶ πέντε ἄνδρας, πάντας αἴροντας ἐφούδ. Καὶ τὴν Νομβᾶ τὴν πόλιν τῶν ἱερέων ἐπάταξεν ἐν στόματι ῥομφαίας ἀπὸ ἀνδρὸς ἕως γυναικὸς, ἀπὸ νηπίου ἕως θηλάζοντος, καὶ μόσχου, καὶ ὄνου, καὶ προβάτου. Καὶ διασώζεται υἱὸς εἷς τῷ Ἀβιμέλεχ υἱῷ Ἀχιτὼβ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Ἀβιάθαρ, καὶ ἔφυγεν ὀπίσω Δαυίδ. Καὶ ἀπήγγειλεν Ἀβιάθαρ τῷ Δαυὶδ, ὅτι ἐθανάτωσε Σαοὺλ πάντας τοὺς ἱερεῖς τοῦ Κυρίου. Καὶ εἶπε Δαυὶδ

τῷ Ἀβιάθαρ, ἤδειν ὅτι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι Δωὴκ ὁ Σύρος ὅτι ἀπαγγέλλων ἀπαγγελεῖ τῷ Σαούλ· ἐγώ εἰμι αἴτιος τῶν ψυχῶν οἴκου τοῦ πατρός σου. Κάθου μετ’ ἐμοῦ· μὴ φοβοῦ, ὅτι οὗ ἐὰν ζητῶ τῇ ψυχῇ μου τόπον, ζητήσω καὶ τῇ ψυχῇ σου, ὅτι πεφύλαξαι σὺ παρ’ ἐμοί.

# 23

Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Δαυὶδ, λέγοντες, ἰδοὺ οἱ ἀλλόφυλοι πολεμοῦσιν ἐν τῇ Κεϊλὰ, καὶ αὐτοὶ διαρπάζουσι, καταπατοῦσι τοὺς ἅλω. Καὶ ἐπηρώτησε Δαυὶδ διὰ τοῦ Κυρίου, λέγων, εἰ πορευθῶ, καὶ πατάξω τοὺς ἀλλοφύλους τούτους; καὶ εἶπε Κύριος, πορεύου, καὶ πατάξεις ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις τούτοις, καὶ σώσεις τὴν Κεϊλά. Καὶ εἶπον οἱ ἄνδρες τοῦ Δαυὶδ πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ ἡμεῖς ἐνταῦθα ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φοβούμεθα, καὶ πῶς ἔσται ἐὰν πορευθῶμεν εἰς Κεϊλὰ, εἰς τὰ σκῦλα τῶν ἀλλοφύλων εἰσπορευσόμεθα; Καὶ προσέθετο Δαυὶδ ἔτι ἐπερωτῆσαι διὰ τοῦ Κυρίου· καὶ ἀπεκρίθη αὐτῷ Κύριος, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀνάστηθι καὶ κατάβηθι εἰς Κεϊλὰ, ὅτι ἐγὼ παραδίδωμι τοὺς ἀλλοφύλους εἰς χεῖράς σου. Καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ εἰς Κεϊλὰ, καὶ ἐπολέμησε τοῖς ἀλλοφύλοις· καὶ ἔφυγον ἐκ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἀπήγαγε τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ ἐπάταξεν ἐν αὐτοῖς πληγὴν μεγάλην, καὶ ἔσωσε Δαυὶδ τοὺς κατοικοῦντας Κεϊλά. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ φεύγειν Ἀβιάθαρ υἱὸν Ἀχιμέλεχ πρὸς Δαυὶδ, καὶ αὐτὸς μετὰ Δαυὶδ εἰς Κεϊλὰ κατέβη ἔχων ἐφοὺδ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαοὺλ, ὅτι ἥκει ὁ Δαυὶδ εἰς Κεϊλά· καὶ εἶπε Σαοὺλ, πέπρακεν αὐτὸν ὁ Θεὸς εἰς τὰς χεῖράς μου, ὅτι ἀποκέκλεισται εἰσελθὼν εἰς πόλιν θυρῶν καὶ μοχλῶν. Καὶ

παρήγγειλε Σαοὺλ παντὶ τῷ λαῷ καταβαίνειν εἰς πόλεμον εἰς Κεϊλὰ, συνέχειν τὸν Δαυὶδ καὶ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ. Καὶ ἔγνω Δαυὶδ, ὅτι οὐ παρασιωπᾷ Σαοὺλ περὶ αὐτοῦ τὴν κακίαν· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβιάθαρ τὸν ἱερέα, προσάγαγε τὸ ἐφοὺδ Κυρίου. Καὶ εἶπε Δαυίδ, Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραήλ, ἀκούων ἀκήκοεν ὁ δοῦλός σου, ὅτι ζητεῖ Σαοὺλ ἐλθεῖν ἐπὶ Κεϊλὰ διαφθεῖραι τὴν πόλιν δι' ἐμέ. Εἰ ἀποκλεισθήσεται; καὶ νῦν εἰ καταβήσεται Σαοὺλ, καθὼς ἤκουσεν ὁ δοῦλός σου; Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραήλ ἀπάγγειλον τῷ δούλῳ σου· καὶ εἶπε Κύριος, ἀποκλεισθήσεται. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ' αὐτοῦ ὡς τετρακόσιοι, καὶ ἐξῆλθον ἐκ Κεϊλὰ, καὶ ἐπορεύοντο οὗ ἐὰν ἐπορεύοντο· καὶ τῷ Σαοὺλ ἀπηγγέλη, ὅτι διασέσωσται Δαυὶδ ἐκ Κεϊλὰ, καὶ ἀνῆκε τοῦ ἐλθεῖν. Καὶ ἐκάθισεν ἐν Μασερὲμ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν τοῖς στενοῖς, καὶ ἐκάθετο ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν τῷ ὄρει Ζὶφ, ἐν τῇ γῇ τῇ αὐχμώδει· καὶ ἐζήτει αὐτὸν Σαοὺλ πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ οὐ παρέδωκεν αὐτὸν Κύριος εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ. Καὶ εἶδε Δαυὶδ, ὅτι ἐξέρχεται Σαοὺλ τοῦ ζητεῖν τὸν Δαυίδ· καὶ Δαυὶδ ἦν ἐν τῷ ὄρει τῷ αὐχμώδει ἐν τῇ Καινῇ Ζίφ. Καὶ ἀνέστη Ἰωνάθαν υἱὸς Σαοὺλ καὶ ἐπορεύθη πρὸς Δαυὶδ εἰς Καινὴν, καὶ ἐκραταίωσε τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐν Κυρίῳ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, μὴ φοβοῦ, ὅτι οὐ μὴ εὕρῃ σε ἡ χεὶρ Σαοὺλ τοῦ πατρός μου, καὶ σὺ βασιλεύσεις ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐγὼ ἔσομαί σοι εἰς δεύτερον, καὶ Σαοὺλ ὁ πατήρ μου οἶδεν οὕτως. Καὶ διέθεντο ἀμφότεροι διαθήκην ἐνώπιον Κυρίου· καὶ ἐκάθητο Δαυὶδ ἐν Καινῇ, καὶ Ἰωνάθαν ἀπῆλθεν εἰς οἶκον αὐτοῦ. Καὶ ἀνέβησαν οἱ Ζιφαῖοι ἐκ τῆς αὐχμώδους πρὸς Σαοὺλ ἐπὶ τὸν βουνὸν, λέγοντες, οὐκ ἰδοὺ Δαυὶδ κέκρυπται παρ' ἡμῖν ἐν Μεσσαρὰ ἐν τοῖς στενοῖς ἐν τῇ Καινῇ ἐν τῷ βουνῷ τοῦ Ἐχελᾶ τοῦ ἐκ δεξιῶν τοῦ Ἰεσσαιμοῦ; Καὶ νῦν πᾶν τὸ πρὸς ψυχὴν τοῦ βασιλέως εἰς κατάβασιν, καταβαινέτω πρὸς ἡμᾶς· κεκλείκασιν

αὐτὸν εἰς τὰς χεῖρας τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Σαοὺλ, εὐλογημένοι ὑμεῖς τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἐπονέσατε περὶ ἐμοῦ· Πορεύθητε δὴ καὶ ἑτοιμάσατε ἔτι, καὶ γνῶτε τὸν τόπον αὐτοῦ οὗ ἔσται ὁ ποὺς αὐτοῦ ἐν τάχει ἐκεῖ οὗ εἴπατε, μή ποτε πανουργεύσηται. Καὶ ἴδετε καὶ γνῶτε, καὶ πορεύσομαι μεθ’ ὑμῶν· καὶ ἔσται εἰ ἔστιν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐξερευνήσω αὐτὸν ἐν πάσαις χιλιάσιν Ἰούδα. Καὶ ἀνέστησαν οἱ Ζιφαῖοι, καὶ ἐπορεύθησαν ἔμπροσθεν Σαούλ· καὶ Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ τῇ Μαὼν καθ’ ἐσπέραν ἐκ δεξιῶν τοῦ Ἰεσσαιμοῦ. Καὶ ἐπορεύθη Σαοὺλ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ζητεῖν αὐτόν· καὶ ἀπήγγειλαν τῷ Δαυὶδ, καὶ κατέβη εἰς τὴν πέτραν τὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ Μαών· καὶ ἤκουσε Σαοὺλ, καὶ κατεδίωξεν ὀπίσω Δαυὶδ εἰς τὴν ἔρημον Μαών. Καὶ πορεύονται Σαοὺλ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἐκ μέρους τοῦ ὄρους ἐκ τούτου, καὶ ἦν Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἐκ μέρους τοῦ ὄρους ἐκ τούτου· καὶ ἦν Δαυὶδ σκεπαζόμενος πορεύεσθαι ἀπὸ προσώπου Σαούλ· καὶ Σαοὺλ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ παρενέβαλον ἐπὶ Δαυὶδ καὶ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ, συλλαβεῖν αὐτούς. Καὶ πρὸς Σαοὺλ ἦλθεν ἄγγελος, λέγων, σπεῦδε καὶ δεῦρο, ὅτι ἀλλόφυλοι ἐπέθεντο ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ ἀνέστρεψε Σαοὺλ μὴ καταδιώκειν ὀπίσω Δαυίδ, καὶ ἐπορεύθη εἰς συνάντησιν τῶν ἀλλοφύλων· διὰ τοῦτο ἐπεκλήθη ὁ τόπος ἐκεῖνος, πέτρα ἡ μερισθεῖσα.

# 24

Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ ἐκεῖθεν, καὶ ἐκάθισεν ἐν τοῖς στενοῖς Ἐνγαδδί. Καὶ ἐγενήθη ὡς ἀνέστρεψε Σαοὺλ ἀπὸ ὄπισθεν τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ἀπηγγέλη αὐτῷ, λεγόντων, ὅτι Δαυὶδ ἐν τῇ ἐρήμῳ Ἐνγαδδί.

Καὶ ἔλαβε μεθ’ ἑαυτοῦ τρεῖς χιλιάδας ἀνδρῶν ἐκλεκτοὺς ἐκ παντὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἐπορεύθη ζητεῖν τὸν Δαυὶδ καὶ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ ἐπὶ πρόσωπον Σαδδαιέμ. Καὶ ἦλθεν εἰς τὰς ἀγέλας τῶν ποιμνίων τὰς ἐπὶ τῆς ὁδοῦ, καὶ ἦν ἐκεῖ σπήλαιον· καὶ Σαοὺλ εἰσῆλθε παρασκευάσασθαι, καὶ Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἐσώτερον τοῦ σπηλαίου ἐκάθηντο. Καὶ εἶπον οἱ ἄνδρες Δαυὶδ πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ ἡ ἡμέρα αὕτη, ἣν εἶπε Κύριος πρὸς σὲ παραδοῦναι τὸν ἐχθρόν σου εἰς τὰς χεῖράς σου, καὶ ποιήσεις αὐτῷ ὡς ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου· καὶ ἀνέστη Δαυὶδ, καὶ ἀφεῖλε τὸ πτερύγιον τῆς διπλοΐδος τοῦ Σαοὺλ λαθραίως. Καὶ ἐγενήθη μετὰ ταῦτα, καὶ ἐπάταξε καρδία Δαυὶδ αὐτὸν, ὅτι ἀφεῖλε τὸ πτερύγιον τῆς διπλοΐδος αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ, μηδαμῶς μοι παρὰ Κυρίου, εἰ ποιήσω τὸ ῥῆμα τοῦτο τῷ κυρίῳ μου τῷ χριστῷ Κυρίου, ἐπενέγκαι χεῖρά μου ἐπ’ αὐτὸν, ὅτι χριστὸς Κυρίου ἐστὶν οὗτος. Καὶ ἔπεισε Δαυὶδ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ ἐν λόγοις, καὶ οὐκ ἔδωκεν αὐτοῖς ἀναστάντας θῦσαι τὸν Σαούλ· καὶ ἀνέστη Σαοὺλ καὶ κατέβη τὴν ὁδόν. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ ὀπίσω αὐτοῦ ἐκ τοῦ σπηλαίου· καὶ ἐβόησε Δαυὶδ ὀπίσω Σαοὺλ, λέγων, κύριε βασιλευ· καὶ ἐπέβλεψε Σαοὺλ εἰς τᾶ ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ ἔκυψε Δαυὶδ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Σαοὺλ, ἱνατί ἀκούεις τῶν λόγων τοῦ λαοῦ, λεγόντων, ἰδοὺ Δαυὶδ ζητεῖ τὴν ψυχήν σου; Ἰδοὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἑωράκασιν οἱ ὀφθαλμοί σου ὡς παρέδωκέ σε Κύριος σήμερον εἰς χεῖράς μου ἐν τῷ σπηλαίῳ, καὶ οὐκ ἠβουλήθην ἀποκτεῖναί σε, καὶ ἐφεισάμην σου, καὶ εἶπα, οὐκ ἐποίσω χεῖρά μου ἐπὶ κύριόν μου, ὅτι χριστὸς Κυρίου οὗτός ἐστι. καὶ ἰδοὺ τὸ πτερύγιον τῆς διπλοΐδος σου ἐν τῇ χειρί μου, ἐγὼ ἀφῄρηκα τὸ πτερύγιον, καὶ οὐκ ἀπέκτανκά σε· καὶ γνῶθι καὶ ἴδε σήμερον, ὅτι οὐκ ἔστι κακία ἐν τῇ

χειρί μου οὐδὲ ἀσέβεια καὶ ἀθέτησις, καὶ οὐχ ἡμάρτηκα εἰς σὲ, καὶ σὺ δεσμεύεις τὴν ψυχήν μου λαβεῖν αὐτήν. Δικάσαι Κύριος ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ σοῦ, καὶ ἐκδικήσαι σοι Κύριος ἐκ σου· καὶ ἡ χείρ μου οὐκ ἔσται ἐπὶ σὲ, καθὼς λέγεται ἡ παραβολὴ ἡ ἀρχαῖα, ἐξ ἀνόμων ἐξελεύσεται πλημμέλεια· καὶ ἡ χείρ μου οὐκ ἔσται ἐπὶ σέ. Καὶ νῦν ὀπίσω τίνος σὺ ἐκπορεύῃ βασιλεῦ Ἰσραήλ; ὀπίσω τίνος καταδιώκεις σύ; ὀπίσω κυνὸς τεθνηκότος, καὶ ὀπίσω ψύλλου ἑνός; Γένοιτο Κύριος εἰς κριτὴν καὶ δικαστὴν ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ ἀναμέσον σοῦ, ἴδοι Κύριος καὶ κρίναι τὴν κρίσιν μου, καὶ δικάσαι μοι ἐκ χειρός σου. Καὶ ἐγένετο, ὡς συνετέλεσε Δαυὶδ τὰ ῥήματα ταῦτα λαλῶν πρὸς Σαοὺλ, καὶ εἶπε Σαοὺλ, ἡ φωνή σου αὕτη, τέκνον Δαυίδ; καὶ ᾖρε Σαοὺλ τὴν φωνὴν αὐτοῦ, καὶ ἔκλαυσε. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Δαυὶδ, δίκαιος σὺ ὑπὲρ ἐμὲ, ὅτι σὺ ἀνταπέδωκάς μοι ἀγαθά, ἐγὼ δὲ ἀνταπέδωκά σοι κακά. Καὶ σὺ ἀπήγγειλάς μοι σήμερον ἃ ἐποίησάς μοι ἀγαθὰ, ὡς ἀπέκλεισέ με Κύριος εἰς χεῖράς σου σήμερον, καὶ οὐκ ἀπέκτεινάς με. Καὶ ὅτι εἰ εὕροι τις τὸν ἐχθρὸν αὐτοῦ ἐν θλίψει, καὶ ἐκπέμψοι αὐτὸν ἐν ὁδῷ ἀγαθῇ, καὶ Κύριος ἀποτίσει αὐτῷ ἀγαθὰ, καθὼς πεποίηκας σήμερον. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἐγὼ γινώσκω, ὅτι βασιλεύων βασιλεύσεις, καὶ στήσεται ἐν χειρί σου ἡ βασιλεία Ἰσραήλ. Καὶ νῦν ὄμοσόν μοι ἐν Κυρίῳ, ὅτι οὐκ ἐξολοθρεύσεις τὸ σπέρμα μου ὀπίσω μοῦ, οὐκ ἀφανιεῖς τὸ ὄνομά μου ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου. Καὶ ὤμοσε Δαυὶδ τῷ Σαούλ· καὶ ἀπῆλθε Σαοὺλ εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἀνέβησαν εἰς τὴν Μεσσερὰ στενήν.

# 25

Καὶ ἀπέθανε Σαμουὴλ, καὶ συναθροίζονται πᾶς Ἰσραὴλ, καὶ κόπτονται αὐτὸν, καὶ θάπτουσιν αὐτὸν ἐν οἴκῳ αὐτοῦ ἐν Ἁρμαθαίμ· καὶ ἀνέστη Δαυὶδ, καὶ κατέβη εἰς τὴν ἔρημον Μαών. Καὶ ἦν ἄνθρωπος ἐν τῇ Μαὼν, καὶ τὰ ποίμνια αὐτοῦ ἐν τῷ Καρμήλῳ, καὶ ὁ ἄνθρωπος μέγας σφόδρα· καὶ τούτῳ ποίμνια τρισχίλια, καὶ αἶγες χίλιαι· καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ κείρειν τὸ ποίμνιον αὐτοῦ ἐν τῷ Καρμήλῳ. Καὶ ὄνομα τῷ ἀνθρώπῳ Νάβαλ, καὶ ὄνομα τῇ γυναικὶ αὐτοῦ Ἀβιγαία· καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ ἀγαθὴ συνέσει καὶ ἀγαθὴ τῷ εἴδει σφόδρα· καὶ ὁ ἄνθρωπος σκληρὸς καὶ πονηρὸς ἐν ἐπιτηδεύμασι, καὶ ὁ ἄνθρωπος κυνικός. καὶ ἤκουσε Δαυὶδ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι κείρει Νάβαλ ὁ Καρμήλιος τὸ ποίμνιον αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ δέκα παιδάρια, καὶ εἶπε τοῖς παιδαρίοις, ἀνάβητε εἰς Κάρμηλον καὶ ἀπέλθατε πρὸς Νάβαλ, καὶ ἐρωτήσατε αὐτὸν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου εἰς εἰρήνην, καὶ ἐρεῖτε τάδε· εἰς ὥρας καὶ σὺ ὑγιαίνων καὶ ὁ οἶκός σου, καὶ πάντα τὰ σὰ ὑγιαίνοντα. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἀκήκοα ὅτι κείρουσί σοι νῦν οἱ ποιμένες σου οἳ ἦσαν μεθ’ ἡμῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ οὐκ ἀπεκωλύσαμεν αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμεθα αὐτοῖς οὐθὲν πάσας τὰς ἡμέρας ὄντων αὐτῶν ἐν Καρμήλῳ. Ἐρώτησον τὰ παιδάριά σου, καὶ ἀπαγγελοῦσί σοι· καὶ εὑρέτωσαν τὰ παιδάριά σου χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, ὅτι ἐφ’ ἡμέραν ἀγαθὴν ἤκομεν· δὸς δὴ ὃ ἐὰν εὕρῃ ἡ χείρ σου τῷ υἱῷ σου τῷ Δαυίδ. Καὶ ἔρχονται τὰ παιδάρια, καὶ λαλοῦσι τοὺς λόγους τούτους πρὸς Νάβαλ κατὰ πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα ἐν τῷ ὀνόματι Δαυίδ· καὶ ἀνεπήδησε καὶ ἀπεκρίθη Νάβαλ τοῖς παισὶ Δαυὶδ, καὶ εἶπε, τίς ὁ Δαυὶδ, καὶ τίς ὁ υἱὸς Ἰεσσαί; σήμερον πεπληθυμένοι εἰσὶν οἱ δοῦλοι ἀναχωροῦντες ἕκαστος ἐκ προσώπου τοῦ κυρίου αὐτοῦ. Καὶ λήψομαι τοὺς ἄρτους μου καὶ τὸν οἶνόν μου καὶ τὰ θύματά μου ἃ τέθυκα τοῖς κείρουσί μου τὰ πρόβατα, καὶ δώσω αὐτὰ ἀνδράσιν,

οἷς οὐκ οἶδα πόθεν εἰσί; Καὶ ἀπεστράφησαν τὰ παιδάρια Δαυὶδ εἰς ὁδὸν αὐτῶν, καὶ ἀνέστρεψαν καὶ ἦλθον, καὶ ἀνήγγειλαν τῷ Δαυὶδ κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τοῖς ἀνδράσιν αὐτοῦ, ζώσασθε ἕκαστος τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ· καὶ ἀνέβησαν ὀπίσω Δαυὶδ, ὡς τετρακόσιοι ἄνδρες· καὶ οἱ διακόσιοι ἐκάθισαν μετὰ τῶν σκευῶν. Καὶ τῇ Ἀβιγαίᾳ γυναικὶ Νάβαλ ἀπήγγειλεν ἓν τῶν παιδαρίων, λέγων, ἰδοὺ Δαυὶδ ἀπέστειλεν ἀγγέλους ἐκ τῆς ἐρήμου εὐλογῆσαι τὸν κύριον ἡμῶν, καὶ ἐξέκλινεν ἀπ’ αὐτῶν. Καὶ οἱ ἄνδρες ἀγαθοὶ ἡμῖν σφόδρα, οὐκ ἀπεκώλυσαν ἡμᾶς, οὐδὲ ἐνετείλαντο ἡμῖν οὐδὲν πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἦμεν παρ’ αὐτοῖς. Καὶ ἐν τῷ εἶναι ἡμᾶς ἐν ἀγρῷ, ὡς τεῖχος ἦσαν περὶ ἡμᾶς καὶ τὴν νύκτα καὶ τὴν ἡμέραν, πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἦμεν παρ’ αὐτοῖς ποιμαίνοντες τὸ ποίμνιον. Καὶ νῦν γνῶθι καὶ ἴδε σὺ τί ποιήσεις, ὅτι συντετέλεσται ἡ κακία εἰς τὸν κύριον ἡμῶν καὶ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ οὗτος υἱὸς λοιμὸς, καὶ οὐκ ἔστι λαλῆσαι πρὸς αὐτόν. Καὶ ἔσπευσεν Ἀβιγαία καὶ ἔλαβε διακοσίους ἄρτους, καὶ δύο ἀγγεῖα οἴνου, καὶ πέντε πρόβατα πεποιημένα, καὶ πέντε οἰφὶ ἀλφίτου, καὶ γόμορ ἓν σταφίδος, καὶ διακοσίας παλάθας, καὶ ἔθετο ἐπὶ τοὺς ὄνους. Καὶ εἶπε τοῖς παιδαρίοις αὐτῆς, προπορεύεσθε ἔμπροσθέν μου, καὶ ἰδοὺ, ἐγὼ ὀπίσω ὑμῶν παραγίνομαι· καὶ τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς οὐκ ἀπήγγειλε. Καὶ ἐγενήθη, αὐτῆς ἐπιβεβηκυίης ἐπὶ τὴν ὄνον καὶ καταβαινούσης ἐν σκέπῃ τοῦ ὄρους, καὶ ἰδοὺ Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ κατέβαινον εἰς συνάντησιν αὐτῆς, καὶ ἀπήντησεν αὐτοῖς. Καὶ Δαυὶδ εἶπεν, ἴσως εἰς ἄδικον πεφύλακα πάντα τὰ αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ οὐκ ἐνετειλάμεθα λαβεῖν ἐκ πάντων τῶν αὐτοῦ οὐθὲν, καὶ ἀνταπέδωκέ μοι πονηρὰ ἀντὶ ἀγαθῶν. Τάδε ποιήσαι ὁ Θεὸς τῷ Δαυὶδ καὶ τάδε προσθείη, εἰ ὑπολείψομαι ἐκ πάντων τῶν τοῦ Νάβαλ ἕως πρωΐ οὐροῦντα πρὸς τοῖχον. Καὶ εἶδεν Ἀβιγαία τὸν

Δαυίδ, καὶ ἔσπευσε καὶ κατεπήδησεν ἀπὸ τῆς ὄνου, καὶ ἔπεσεν ἐνώπιον Δαυὶδ ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ ἐπὶ τὴν γῆν ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἐν ἐμοὶ κύριέ μου ἡ ἀδικία μου, λαλησάτω δὴ ἡ δούλη σου εἰς τὰ ὦτά σου, καὶ ἄκουσον λόγων τῆς δούλης σου. Μὴ δὴ θέσθω ὁ κύριός μου καρδίαν αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ἄνθρωπον τὸν λοιμὸν τοῦτον, ὅτι κατὰ τὸ ὄνομα αὐτοῦ οὗτός ἐστι· Νάβαλ ὄνομα αὐτῷ, καὶ ἀφροσύνη μετ’ αὐτοῦ· καὶ ἐγὼ ἡ δούλη σου οὐκ εἶδον τὰ παιδάρια τοῦ κυρίου μου ἃ ἀπέστειλας. Καὶ νῦν κύριέ μου, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, καθὼς ἐκώλυσέ σε Κύριος τοῦ μὴ ἐλθεῖν εἰς αἷμα ἀθῶον, καὶ σώζειν τὴν χεῖρά σου σοί· καὶ νῦν γένοιντο ὡς Νάβαλ οἱ ἐχθροί σου καὶ οἱ ζητοῦντες τῷ κυρίῳ μου κακά. Καὶ νῦν λάβε τὴν εὐλογίαν ταύτην, ἣν ἐνήνοχεν ἡ δούλη σου τῷ κυρίῳ μου, καὶ δώσεις τοῖς παιδαρίοις τοῖς παρεστηκόσι τῷ κυρίῳ μου. Ἆρον δὴ τὸ ἀνόμημα τῆς δούλης σου, ὅτι ποιῶν ποιήσει Κύριος τῷ κυρίῳ μου οἶκον πιστὸν, ὅτι πόλεμον κυρίου μου ὁ Κύριος πολεμεῖ, καὶ κακία οὐχ εὑρεθήσεται ἐν σοὶ πώποτε. Καὶ ἀναστήσεται ἄνθρωπος καταδιώκων σε καὶ ζητῶν τὴν ψυχήν σου, καὶ ἔσται ψυχὴ κυρίου μου ἐνδεδεμένη ἐν δεσμῷ τῆς ζωῆς παρὰ Κυρίῳ τῷ Θεῷ, καὶ ψυχὴν ἐχθρῶν σου σφενδονήσεις ἐν μέσῳ τῆς σφενδόνης. Καὶ ἔσται ὅτε ποιήσῃ Κύριος τῷ κυρίῳ μου πάντα ὅσα ἐλάλησεν ἀγαθὰ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐντελεῖταί σοι εἰς ἡγούμενον ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἔσται σοι τοῦτο βδελυγμὸς καὶ σκάνδαλον τῷ κυρίῳ μου, ἐκχέαι αἷμα ἀθῶον δωρεὰν, καὶ σῶσαι χεῖρα κυρίῳ μου αὐτῷ· καὶ ἀγαθώσαι Κύριος τῷ κυρίῳ μοῦ, καὶ μνησθήσῃ τῆς δούλης σου ἀγαθῶσαι αὐτῇ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῇ Ἀβιγαίᾳ, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὃς ἀπέστειλέ σε σήμερον ἐν ταύτῃ εἰς ἀπάντησίν μοι, καὶ εὐλογητὸς ὁ τρόπος σου, καὶ εὐλογημένη σὺ ἡ ἀποκωλύσασά με σήμερον ἐν ταύτῃ μὴ ἐλθεῖν εἰς αἵματα, καὶ

σῶσαι χεῖρά μου ἐμοί. Πλὴν ὅτι ζῇ Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὃς ἀπεκώλυσέ σε σήμερον τοῦ κακοποιῆσαί σε, ὅτι εἰ μὴ ἔσπευσας καὶ παρεγένου εἰς ἀπάντησίν μοι, τότε εἶπα, εἰ ὑπολειφθήσεται τῷ Νάβαλ ἕως φωτὸς τοῦ πρωΐ οὐρῶν πρὸς τοῖχον. Καὶ ἔλαβε Δαυὶδ ἐκ χειρὸς αὐτῆς πάντα ἃ ἔφερεν αὐτῷ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, ἀνάβηθι εἰς εἰρήνην εἰς οἶκόν σου· βλέπε, ἤκουσα τῆς φωνῆς σου, καὶ ἠρέτισα τὸ πρόσωπόν σου. Καὶ παρεγενήθη Ἀβιγαία πρὸς Νάβαλ· καὶ ἰδοὺ αὐτῷ πότος ἐν οἴκῳ αὐτοῦ, ὡς πότος βασιλέως· καὶ ἡ καρδία Νάβαλ ἀγαθὴ ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ αὐτὸς μεθύων ἕως σφόδρα· καὶ οὐκ ἀπήγγειλεν αὐτῷ ῥῆμα μικρὸν ἢ μέγα ἕως φωτὸς τοῦ πρωΐ. Καὶ ἐγένετο πρωΐ, ὡς ἐξένηψεν ἀπὸ τοῦ οἴνου Νάβαλ, ἀπήγγειλεν ἡ γυνὴ αὐτοῦ τὰ ῥήματα ταῦτα· καὶ ἐναπέθανεν ἡ καρδία αὐτοῦ ἐν αὐτῷ, καὶ αὐτὸς γίνεται ὡς λίθος. Καὶ ἐγένετο ὡσεὶ δέκα ἡμέραι, καὶ ἐπάταξε Κύριος τὸν Νάβαλ, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἤκουσε Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς Κύριος, ὃς ἔκρινε τὴν κρίσιν τοῦ ὀνειδισμοῦ μου ἐκ χειρὸς Νάβαλ, καὶ τὸν δοῦλον αὐτοῦ περιεποιήσατο ἐκ χειρὸς κακῶν, καὶ τὴν κακίαν Νάβαλ ἀπέστρεψε Κύριος εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ καὶ ἐλάλησε περὶ Ἀβιγαίας, λαβεῖν αὐτὴν ἑαυτῷ εἰς γυναῖκα. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες Δαυὶδ πρὸς Ἀβιγαίαν εἰς Κάρμηλον, καὶ ἐλάλησαν αὐτῇ, λέγοντες, Δαυὶδ ἀπέστειλεν ἡμᾶς πρὸς σὲ, λαβεῖν σε αὐτῷ εἰς γυναῖκα. Καὶ ἀνέστη καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν ἐπὶ πρόσωπον, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἡ δούλη σου εἰς παιδίσκην νίψαι πόδας τῶν παίδων σου. Καὶ ἀνέστη Ἀβιγαία, καὶ ἐπέβη ἐπὶ τὴν ὄνον, καὶ πέντε κοράσια ἠκολούθουν αὐτῇ, καὶ ἐπορεύθη ὀπίσω τῶν παίδων Δαυὶδ, καὶ γίνεται αὐτῷ εἰς γυναῖκα. Καὶ τὴν Ἀχινάαμ ἔλαβε Δαυὶδ ἐξ Ἰεζραὲλ, καὶ ἀμφότεραι ἦσαν αὐτῷ γυναῖκες. Καὶ Σαοὺλ ἔδωκε Μελχὸλ τὴν θυγατέρα αὐτοῦ τὴν γυναῖκα Δαυὶδ τῷ Φαλτὶ υἱῷ Ἀμὶς τῷ ἐκ Ῥομμᾶ.

# 26

Καὶ ἔρχονται οἱ Ζιφαῖοι ἐκ τῆς αὐχμώδους πρὸς τὸν Σαοὺλ εἰς τὸν βουνὸν, λέγοντες, ἰδοὺ Δαυὶδ σκεπάζεται μεθ’ ἡμῶν ἐν τῷ βουνῷ τῷ ’Εχελὰ, κατὰ πρόσωπον τοῦ Ἰεσσεμοῦ. Καὶ ἀνέστη Σαοὺλ, καὶ κατέβη εἰς τὴν ἔρημον Ζὶφ, καὶ μετ’ αὐτοὺ τρεῖς χιλιάδες ἀνδρῶν ἐκλεκτοὶ ἐξ Ἰσραὴλ, ζητεῖν τὸν Δαυὶδ ἐν τῇ ἐρήμῳ Ζίφ. Καὶ παρενέβαλε Σαοὺλ ἐν τῷ βουνῷ τῷ Ἐχελὰ τῷ ἐπὶ προσώπου τοῦ Ἰεσσεμοῦ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ, καὶ Δαυὶδ ἐκάθισεν ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ εἶδε Δαυὶδ, ὅτι ἥκει Σαοὺλ ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν ἔρημον. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ κατασκόπους, καὶ ἔγνω ὅτι ἥκει Σαοὺλ ἕτοιμος ἐκ Κεϊλά. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ λάθρα, καὶ εἰσπορεύεται εἰς τὸν τόπον οὗ ἐκάθευδεν ἐκεῖ Σαοὺλ, καὶ ἐκεῖ Ἀβεννὴρ υἱὸς Νὴρ ἀρχιστράτηγος αὐτοῦ· καὶ Σαοὺλ ἐκάθευδεν ἐν λαμπήνῃ, καὶ ὁ λαὸς παρεμβεβληκὼς κύκλῳ αὐτοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη Δαυὶδ, καὶ εἶπε πρὸς Ἀβιμέλεχ τὸν Χετταῖον, καὶ πρὸς Ἀβεσσὰ υἱὸν Σαρουίας ἀδελφὸν Ἰωὰβ, λέγων, τίς εἰσελεύσεται μετ’ ἐμοῦ πρὸς Σαοὺλ εἰς τὴν παρεμβολήν; καὶ εἶπεν Ἀβεσσὰ, ἐγὼ εἰσελεύσομαι μετὰ σοῦ. Καὶ εἰσπορεύεται Δαυὶδ καὶ Ἀβεσσὰ εἰς τὸν λαὸν τὴν νύκτα· καὶ ἰδοὺ Σαοὺλ καθεύδων ὕπνῳ ἐν λαμπήνῃ, καὶ τὸ δόρυ αὐτοῦ ἐμπεπηγὸς εἰς τὴν γῆν πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ Ἀβεννὴρ καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐκάθευδε κύκλῳ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσὰ πρὸς Δαυὶδ, ἀπέκλεισε Κύριος σήμερον τὸν ἐχθρόν σου εἰς χεῖράς σου· καὶ νῦν πατάξω αὐτὸν τῷ δόρατι εἰς τὴν γῆν ἅπαξ, καὶ οὐ δευτερώσω αὐτῷ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβεσσὰ, μὴ ταπεινώσῃς αὐτὸν, ὅτι τίς ἐποίσει χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ χριστὸν Κυρίου καὶ ἀθωωθήσεται; Καὶ εἶπε Δαυὶδ, ζῇ Κύριος, ἐὰν μὴ Κύριος παίσῃ αὐτὸν, ἢ ἡμέρα αὐτοῦ ἔλθῃ καὶ ἀποθάνῃ, ἢ εἰς πόλεμον καταβῇ

καὶ προστεθῇ. Μηδαμῶς μοι παρὰ Κυρίου ἐπενεγκεῖν χεῖρά μου ἐπὶ χριστὸν Κυρίου· καὶ νῦν λάβε δὴ τὸ δόρυ ἀπὸ προσκεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ τὸν φακὸν τοῦ ὕδατος, καὶ ἀπέλθωμεν ἡμεῖς καθ’ ἑαυτούς. Καὶ ἔλαβε Δαυὶδ τὸ δόρυ, καὶ τὸν φακὸν τοῦ ὕδατος ἀπὸ προσκεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ἀπῆλθον καθ’ ἑαυτούς· καὶ οὐκ ἦν ὁ βλέπων, καὶ οὐκ ἦν ὁ γινώσκων, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐξεγειρόμενος, πάντες ὑπνοῦντες, ὅτι θάμβος Κυρίου ἐπέπεσεν ἐπ’ αὐτούς. Καὶ διέβη Δαυὶδ εἰς τὸ πέραν, καὶ ἔστη ἐπὶ τὴν κορυφὴν τοῦ ὄρους μακρόθεν, καὶ πολλὴ ἡ ὁδὸς ἀναμέσον αὐτῶν. Καὶ προσεκαλέσατο Δαυὶδ τὸν λαὸν, καὶ τῷ Ἀβεννὴρ ἐλάλησε, λέγων, οὐκ ἀποκριθήσῃ Ἀβεννήρ; καὶ ἀπεκρίθη ’Αβεννὴρ, καὶ εἶπε, τίς εἶ σὺ ὁ καλῶν; Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβεννὴρ, οὐκ ἀνὴρ σύ; καὶ τίς, ὡς σὺ, ἐν Ἰσραήλ; καὶ διατί οὐ φυλάσσεις τὸν κύριόν σου τὸν βασιλέα; ὅτι εἰσῆλθεν εἷς ἐκ τοῦ λαοῦ διαφθεῖραι τὸν κύριόν σου τὸν βασιλέα. Καὶ οὐκ ἀγαθὸν τὸ ῥῆμα τοῦτο, ὃ πεποίηκας· ζῇ Κύριος, ὅτι υἱοὶ θανατώσεως ὑμεῖς, οἱ φυλάσσοντες τὸν βασιλέα τὸν κύριον ὑμῶν τὸν χριστὸν Κυρίου· καὶ νῦν ἴδε δὴ τὸ δόρυ τοῦ βασιλέως, καὶ ὁ φακὸς τοῦ ὕδατος, ποῦ ἐστι τὰ πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ; Καὶ ἐπέγνω Σαοὺλ τὴν φωνὴν Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, ἡ φωνή σου αὕτη, τέκνον Δαυίδ; καὶ εἶπε Δαυίδ, δοῦλός σου κύριε βασιλεῦ. Καὶ εἶπεν, ἱνατί τοῦτο καταδιώκει ὁ κύριος ὀπίσω τοῦ δούλου αὐτοῦ; ὅτι τί ἡμάρτηκα; καὶ τί εὑρέθη ἐν ἐμοὶ ἀδίκημα; Καὶ νῦν ἀκουσάτω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς τὸ ῥῆμα τοῦ δούλου αὐτοῦ· εἰ ὁ Θεὸς ἐπισείει σε ἐπ’ ἐμὲ, ὀσφρανθείη θυσία σου· καὶ εἰ υἱοὶ ἀνθρώπων, ἐπικατάρατοι οὗτοι ἐνώπιον Κυρίου, ὅτι ἐξέβαλόν με σήμερον μὴ ἐστηρίθαι ἐν κληρονομίᾳ Κυρίου, λέγοντες, πορεύου, δούλευε θεοῖς ἑτέροις. Καὶ νῦν μὴ πέσοι τὸ αἷμά μου ἐπὶ τὴν γῆν ἐξεναντίας προσώπου Κυρίου, ὅτι ἐξελήλυθεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ ζητεῖν

ψυχήν μου, καθὼς καταδιώκει ὁ νυκτικόραξ ἐν τοῖς ὄρεσι. Καὶ εἶπε Σαοὺλ, ἡμάρτηκα· ἐπίστρεφε, τέκνον Δαυὶδ, ὅτι οὐ κακοποιήσω σε, ἀνθ' ὧν ἔντιμος ψυχή μου ἐν ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἐν τῇ σήμερον μεματαίωμαι καὶ ἠγνόηκα πολλὰ σφόδρα. Καὶ ἀπεκρίθη Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ τὸ δόρυ τοῦ βασιλέως· διελθέτω εἷς τῶν παιδαρίων καὶ λαβέτω αὐτό· Καὶ Κύριος ἐπιστρέψει ἑκάστῳ κατὰ τὰς δικαιοσύνας αὐτοῦ καὶ τὴν πίστιν αὐτοῦ· ὡς παρέδωκέ σε Κύριος σήμερον εἰς χεῖράς μου, καὶ οὐκ ἠθέλησα ἐπενεγκεῖν χεῖρά μου ἐπὶ χριστὸν Κυρίου. Καὶ ἰδοὺ καθὼς ἐμεγαλύνθη ἡ ψυχή σου σήμερον ἐν ταύτῃ ἐν ὀφθαλμοῖς μου, οὕτως μεγαλυνθείη ἡ ψυχή μου ἐνώπιον Κυρίου, καὶ σκεπάσαι με, καὶ ἐξελεῖταί με ἐκ πάσης θλίψεως. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς Δαυὶδ, εὐλογημένος σὺ, τέκνον· καὶ ποιῶν ποιήσεις, καὶ δυνάμενος δυνήσῃ· καὶ ἀπῆλθε Δαυὶδ εἰς τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ Σαοὺλ ἀπέστρεψεν εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ.

# 27

Καὶ εἶπε Δαυὶδ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, λέγων, νῦν προστεθήσομαι ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ εἰς χεῖρας Σαούλ· καὶ οὐκ ἔστι μοι ἀγαθὸν ἐὰν μὴ σωθῶ εἰς γῆν ἀλλοφύλων, καὶ ἀνῇ ἀπ' ἐμοῦ Σαοὺλ τοῦ ζητεῖν με εἰς πᾶν ὅριον Ἰσραὴλ, καὶ σωθήσομαι ἐκ χειρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ καὶ οἱ ἐξακόσιοι ἄνδρες οἱ μετ' αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύθη πρὸς Ἀγχοῦς υἱὸν Ἀμμὰχ βασιλέα Γέθ. Καὶ ἐκάθισε Δαυὶδ μετὰ Ἀγχοῦς, αὐτὸς καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἕκαστος καὶ ὁ οἶκος αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ καὶ ἀμφότεραι αἱ γυναῖκες αὐτοῦ, Ἀχινάαμ Ἰεζραηλίτις καὶ Ἀβιγαία ἡ γυνὴ Νάβαλ τοῦ Καρμηλίου. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ Σαοὺλ ὅτι πέφευγε Δαυὶδ εἰς Γὲθ, καὶ οὐ προσέθετο ἔτι ζητεῖν αὐτόν. Καὶ εἶπε Δαυὶδ

πρὸς Ἀγχοῦς, εἰ δὴ εὕρηκεν ὁ δοῦλός σου χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, δότωσαν δή μοι τόπον ἐν μιᾷ τῶν πόλεων τῶν κατ᾽ ἀγρὸν, καὶ καθήσομαι ἐκεῖ· καὶ ἱνατί κάθηται ὁ δοῦλός σου ἐν πόλει βασιλευομένῃ μετὰ σοῦ; Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τὴν Σεκελάκ· διὰ τοῦτο ἐγενήθη Σεκελὰκ τῷ βασιλεῖ τῆς Ἰουδαίας ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἐγενήθη ὁ ἀριθμὸς τῶν ἡμερῶν ὧν ἐκάθισε Δαυὶδ ἐν ἀγρῷ τῶν ἀλλοφύλων, τέσσαρας μῆνας. Καὶ ἀνέβαινε Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ, καὶ ἐπετίθεντο ἐπὶ πάντα τὸν Γεσιρὶ καὶ ἐπὶ τὸν Ἀμαληκίτην· καὶ ἰδοὺ ἡ γῆ κατῳκεῖτο ἀπὸ ἀνηκόντων ἡ ἀπὸ Γελαμψοὺρ τετειχισμένων καὶ ἕως γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔτυπτε τὴν γῆν, καὶ οὐκ ἐζωογόνει ἄνδρα ἢ γυναῖκα· καὶ ἐλάμβανον ποίμνια καὶ βουκόλια καὶ ὄνους καὶ καμήλους καὶ ἱματισμὸν, καὶ ἀνέστρεψαν καὶ ἤρχοντο πρὸς Ἀγχοῦς. Καὶ εἶπεν Ἀγχοῦς πρὸς Δαυὶδ ἐπὶ τίνα ἐπέθεσθε σήμερον; καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀγχοῦς, κατὰ Νότον τῆς Ἰουδαίας καὶ κατὰ Νότον Ἰεσμεγὰ καὶ κατὰ Νότον τοῦ Κενεζί. Καὶ ἄνδρα καὶ γυναῖκα οὐκ ἐζωογόνησα τοῦ εἰσαγαγεῖν εἰς Γὲθ, λέγων, μὴ ἀναγγειλωσιν εἰς Γὲθ καθ᾽ ἡμῶν, λέγοντες, τάδε Δαυὶδ ποιεῖ· καὶ τόδε τὸ δικαίωμα αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἐκάθητο Δαυὶδ ἐν ἀγρῷ τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἐπιστεύθη Δαυὶδ ἐν τῷ Ἀγχοῦς σφόδρα, λέγων, ἤσχυνται αἰσχυνόμενος ἐν τῷ λαῷ αὐτοῦ ἐν Ἰσραὴλ, καὶ ἔσται μοι δοῦλος εἰς τὸν αἰῶνα.

# 28

Καὶ ἐγενήθη ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ συναθροίζονται ἀλλόφυλοι ἐν ταῖς παρεμβολαῖς αὐτῶν ἐξελθεῖν πολεμεῖν μετὰ

Ἰσραήλ· καὶ εἶπεν Ἀγχοῦς πρὸς Δαυὶδ, γινώσκων γνώσῃ, ὅτι μετ’ ἐμοῦ ἐξελεύσῃ εἰς πόλεμον σὺ, καὶ οἱ ἄνδρες σου. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀγχοῦς, οὕτω νῦν γνώσῃ ἃ ποιήσει ὁ δοῦλός σου· καὶ εἶπεν Ἀγχοῦς πρὸς Δαυὶδ, οὕτως ἀρχισωματοφύλακα θήσομαί σε πάσας τὰς ἡμέρας Καὶ Σαμουὴλ ἀπέθανε, καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν πᾶς Ἰσραὴλ, καὶ θάπτουσιν αὐτὸν ἐν Ἁρμαθαὶμ ἐν πόλει αὐτοῦ. καὶ Σαοὺλ περιεῖλε τοὺς ἐγγαστριμύθους καὶ τοὺς γνώστας ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ συναθροίζονται οἱ ἀλλόφυλοι, καὶ ἔρχονται καὶ παρεμβάλλουσιν εἰς Σωνάμ· καὶ συναθροίζει Σαοὺλ πάντα ἄνδρα Ἰσραὴλ, καὶ παρεμβάλλουσιν εἰς Γελβουέ. Καὶ εἶδε Σαοὺλ τὴν παρεμβολὴν τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ἐφοβήθη, καὶ ἐξέστη ἡ καρδία αὐτοῦ σφόδρα. Καὶ ἐπηρώτησε Σαοὺλ διὰ Κυρίου, καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ Κύριος ἐν τοῖς ἐνυπνίοις καὶ ἐν τοῖς δήλοις καὶ ἐν τοῖς προφήταις. Καὶ εἶπε Σαοὺλ τοῖς παισὶν αὐτοῦ, ζητήσατέ μοι γυναῖκα ἐγγαστρίμυθον, καὶ πορεύσομαι πρὸς αὐτὴν, καὶ ζητήσω ἐν αὐτῇ· καὶ εἶπαν οἱ παῖδες αὐτοῦ πρὸς αὐτὸν ἰδοὺ γυνὴ ἐγγαστρίμυθος ἐν Ἀενδώρ. Καὶ συνεκαλύψατο Σαοὺλ, καὶ περιεβάλετο ἱμάτια ἕτερα, καὶ πορεύεται αὐτὸς καὶ δύο ἄνδρες μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἔρχονται πρὸς τὴν γυναῖκα νυκτὸς, καὶ εἶπεν αὐτῇ, μάντευσαι δή μοι ἐν τῷ ἐγγαστριμύθῳ, καὶ ἀνάγαγέ μοι ὃν ἐὰν εἴπω σοι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ἡ γυνὴ, ἰδοὺ δὴ σὺ οἶδας ὅσα ἐποίησε Σαοὺλ, ὡς ἐξωλόθρευσε τοὺς ἐγγαστριμύθους καὶ τοὺς γνώστας ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἱνατί σὺ παγιδεύεις τὴν ψυχήν μοι θανατῶσαι αὐτήν; Καὶ ὤμοσεν αὐτῇ Σαοὺλ, λέγων, ζῇ Κύριος, εἰ ἀπαντήσεταί σοι ἀδικία ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, τίνα ἀναγάγω σοι; καὶ εἶπε, τὸν Σαμουὴλ ἀνάγαγέ μοι. Καὶ εἶδεν ἡ γυνὴ τὸν Σαμουὴλ, καὶ ἀνεβόησε φωνῇ μεγάλῃ· καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ πρὸς Σαοὺλ, ἱνατί παρελογίσω με; καὶ σὺ εἶ Σαούλ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ βασιλεὺς, μὴ

φοβοῦ, εἶπον τίνα ἑώρακας· καὶ εἶπεν αὐτῷ ἡ γυνὴ, θεοὺς ἑώρακα ἀναβαίνοντας ἐκ τῆς γῆς. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, τί ἔγνως; καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἄνδρα ὄρθιον ἀναβαίνοντα ἐκ τῆς γῆς, καὶ οὗτος διπλοΐδα ἀναβεβλημένος· καὶ ἔγνω Σαοὺλ, ὅτι οὗτος Σαμουὴλ, καὶ ἔκυψεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ, ἱνατί παρηνώχλησάς μοι ἀναβῆναί με; καὶ εἶπε Σαοὺλ, θλίβομαι σφόδρα, καὶ οἱ ἀλλόφυλοι πολεμοῦσιν ἐν ἐμοὶ, καὶ ὁ Θεὸς ἀφέστηκεν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἐπακήκοέ μοι ἔτι καὶ ἐν χειρὶ τῶν προφητῶν καὶ ἐν τοῖς ἐνυπνίοις· καὶ νῦν κέκληκά σε γνωρίσαι μοι τί ποιήσω. Καὶ εἶπε Σαμουὴλ, ἱνατί ἐπερωτᾷς με, καὶ Κύριος ἀφέστηκεν ἀπὸ σοῦ, καὶ γέγονε μετὰ τοῦ πλησίον σου; Καὶ πεποίηκε Κύριος σοι, καθὼς ἐλάλησε Κύριος ἐν χειρί μου, καὶ διαῤῥήξει Κύριος τὴν βασιλείαν σου ἐκ χειρός σου, καὶ δώσει αὐτὴν τῷ πλησίον σου τῷ Δαυὶδ, διότι οὐκ ἤκουσας φωνῆς Κυρίου, καὶ οὐκ ἐποίησας θυμὸν ὀργῆς αὐτοῦ ἐν Ἀμαλὴκ, διὰ τοῦτο τὸ ῥῆμα ἐποίησε Κύριός σοι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ παραδώσει Κύριος τὸν Ἰσραὴλ μετὰ σοῦ εἰς χεῖρας ἀλλοφύλων, καὶ αὔριον σὺ καὶ οἱ υἱοί σου μετὰ σοῦ πεσοῦνται, καὶ τὴν παρεμβολὴν Ἰσραὴλ δώσει Κύριος εἰς χεῖρας ἀλλοφύλων. Καὶ ἔσπευσε Σαοὺλ καὶ ἔπεσεν ἐστηκὼς ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐφοβήθη σφόδρα ἀπὸ τῶν λόγων Σαμουὴλ, καὶ ἐν αὐτῷ οὐκ ἦν ἰσχὺς ἔτι, οὐ γὰρ ἔφαγεν ἄρτον ὅλην τὴν ἡμέραν καὶ ὅλην τὴν νύκτα ἐκείνην. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ γυνὴ πρὸς Σαοὺλ, καὶ εἶδεν ὅτι ἔσπευσε σφόδρα, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ δὴ ἤκουσεν ἡ δούλη σου τῆς φωνῆς σου, καὶ ἐθέμην τὴν ψυχήν μου ἐν τῇ χειρί μου, καὶ ἤκουσα τοὺς λόγους οὓς ἐλάλησάς μοι. Καὶ νῦν ἄκουσον δὴ φωνῆς τῆς δούλης σου, καὶ παραθήσω ἐνώπιόν σου ψωμὸν ἄρτου, καὶ φάγε, καὶ ἔσται σοὶ ἰσχὺς, ὅτι πορεύῃ ἐν ὁδῷ. Καὶ οὐκ ἐβουλήθη φαγεῖν· καὶ παρεβιάζοντο αὐτὸν οἱ παῖδες

αὐτοῦ καὶ ἡ γυνὴ, καὶ ἤκουσε τῆς φωνῆς αὐτῶν, καὶ ἀνέστη ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τὸν δίφρον. Καὶ τῇ γυναικὶ ἦν δάμαλις νομὰς ἐν τῇ οἰκίᾳ· καὶ ἔσπευσε καὶ ἔθυσεν αὐτήν· καὶ ἔλαβεν ἄλευρα καὶ ἐφύρασε, καὶ ἔπεψεν ἄζυμα, καὶ προσήγαγεν ἐνώπιον Σαοὺλ, καὶ ἐνώπιον τῶν παίδων αὐτοῦ· καὶ ἔφαγον, καὶ ἀνέστησαν καὶ ἀπῆλθον τὴν νύκτα ἐκείνην.

# 29

Καὶ συναθροίζουσιν ἀλλόφυλοι πάσας τὰς παρεμβολὰς αὐτῶν εἰς Ἀφὲκ, καὶ Ἰσραὴλ παρενέβαλεν ἐν Ἀεδὼρ τὴν ἐν Ἰεζραέλ. Καὶ οἱ σατράπαι τῶν ἀλλοφύλων παρεπορεύοντο εἰς ἑκατοντάδας καὶ χιλιάδας, καὶ Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ παρεπορεύοντο ἐπ’ ἐσχάτων μετὰ Ἀγχοῦς. Καὶ εἶπον οἱ σατράπαι τῶν ἀλλοφύλων, τίνες οἱ διαπορευόμενοι οὗτοι; καὶ εἶπεν Ἀγχοῦς πρὸς τοὺς στρατηγοὺς τῶν ἀλλοφύλων, οὐκ οὗτος Δαυὶδ ὁ δοῦλος Σαοὺλ βασιλέως Ἰσραήλ; γέγονε μεθ’ ἡμῶν ἡμέρας τοῦτο δεύτερον ἔτος, καὶ οὐχ εὕρηκα ἐν αὐτῷ οὐθὲν ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἐνέπεσε πρὸς μὲ καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἐλυπήθησαν ἐπ’ αὐτῷ οἱ στρατηγοὶ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ λέγουσιν αὐτῷ, ἀπόστρεψον τὸν ἄνδρα, καὶ ἀποστραφήτω εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ, οὗ κατέστησας αὐτὸν ἐκεῖ, καὶ μὴ ἐρχέσθω μεθ’ ἡμῶν εἰς τὸν πόλεμον, καὶ μὴ γινέσθω ἐπίβουλος τῆς παρεμβολῆς· καὶ ἐν τίνι διαλλαγήσεται οὗτος τῷ κυρίῳ αὐτοῦ; οὐχὶ ἐν ταῖς κεφαλαῖς τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων; οὐχ οὗτος Δαυὶδ, ᾧ ἐξῆρχον ἐν χοροῖς, λέγοντες, ἐπάταξε Σαοὺλ ἐν χιλιάσιν αὐτοῦ, καὶ Δαυὶδ ἐν μυριάσιν αὐτοῦ; Καὶ ἐκάλεσεν Ἀγχοῦς τὸν Δαυὶδ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ζῇ Κύριος, ὅτι εὐθὺς σὺ καὶ ἀγαθὸς ἐν ὀφθαλμοῖς μου, καὶ ἡ

ἔξοδός σου καὶ ἡ εἴσοδός σου μετ’ ἐμοῦ ἐν τῇ παρεμβολῇ, καὶ ὅτι οὐχ εὕρηκα κατὰ σοῦ κακίαν ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἥκεις πρὸς μὲ ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας· καὶ ἐν ὀφθαλμοῖς τῶν σατραπῶν οὐκ ἀγαθὸς σύ. Καὶ νῦν ἀνάστρεφε καὶ πορεύου εἰς εἰρήνην, καὶ οὐ μὴ ποιήσῃς κακίαν ἐν ὀφθαλμοῖς τῶν σατραπῶν τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀγχοῦς, τί πεποίηκά σοι καὶ τί εὗρες ἐν τῷ δούλῳ σου ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἤμην ἐνώπιόν σου καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ὅτι οὐ μὴ ἔλθω πολεμήσας τοὺς ἐχθροὺς τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως; Καὶ ἀπεκρίθη Ἀγχοῦς πρὸς Δαυὶδ, οἶδα ὅτι ἀγαθὸς σὺ ἐν ὀφθαλμοῖς μου, ἀλλ’ οἱ σατράπαι τῶν ἀλλοφύλων λέγουσιν, οὐχ ἥξει μεθ’ ἡμῶν εἰς πόλεμον. Καὶ νῦν ὄρθρισον τοπρωῒ σὺ καὶ οἱ παῖδες τοῦ κυρίου σου οἱ ἥκοντες μετὰ σοῦ, καὶ πορεύεσθε εἰς τὸν τόπον οὗ κατέστησα ὑμᾶς ἐκεῖ, καὶ λόγον λοιμὸν μὴ θῇς ἐν καρδίᾳ σου, ὅτι ἀγαθὸς σὺ ἐνώπιόν μου· καὶ ὀρθρίσατε ἐν τῇ ὁδῷ καὶ φωτισάτω ὑμῖν, καὶ πορεύθητε. Καὶ ὤρθρισε Δαυὶδ αὐτὸς καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἀπελθεῖν καὶ φυλάσσειν τὴν γῆν τῶν ἀλλοφύλων, καὶ οἱ ἀλλόφυλοι ἀνέβησαν πολεμεῖν ἐπὶ Ἰεζραήλ.

# 30

Καὶ ἐγενήθη εἰσελθόντος Δαυὶδ καὶ τῶν ἀνδρῶν αὐτοῦ τὴν Σεκελὰκ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καὶ Ἀμαλὴκ ἐπέθετο ἐπὶ τὸν Νότον καὶ ἐπὶ τὴν Σεκελὰκ, καὶ ἐπάταξε τὴν Σεκελὰκ καὶ ἐνεπύρισαν αὐτὴν ἐν πυρί. Καὶ τὰς γυναῖκας καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῇ ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου οὐκ ἐθανάτωσαν ἄνδρα καὶ γυναῖκα, ἀλλ’ ᾐχμαλώτευσαν, καὶ ἀπῆλθον εἰς τὴν ὁδὸν αὐτῶν. Καὶ ἦλθε Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἰδοὺ ἐμπεπύρισται ἐν πυρὶ, αἱ δὲ γυναῖκες

αὐτῶν καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν ᾐχμαλωτευμένοι. Καὶ ᾖρε Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ τὴν φωνὴν αὐτῶν, καὶ ἔκλαυσαν ἕως ὅτου οὐκ ἦν ἐν αὐτοῖς ἰσχὺς ἔτι τοῦ κλαίειν. Καὶ ἀμφότεραι αἱ γυναῖκες Δαυὶδ ᾐχμαλωτεύθησαν, Ἀχιναὰμ ἡ Ἰεζραηλίτις, καὶ Ἀβιγαία ἡ γυνὴ Νάβαλ τοῦ Καρμηλίου. Καὶ ἐθλίβη Δαυὶδ σφόδρα, ὅτι εἶπεν ὁ λαὸς λιθοβολῆσαι αὐτὸν, ὅτι κατώδυνος ψυχὴ παντὸς τοῦ λαοῦ ἑκάστου ἐπὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τὰς θυγατέρας αὐτοῦ· καὶ ἐκραταιώθη Δαυὶδ ἐν Κυρίῳ Θεῷ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβιάθαρ τὸν ἱερέα υἱὸν Ἀχιμέλεχ, προσάγαγε τὸ ἐφούδ. Καὶ ἐπηρώτησε Δαυὶδ διὰ τοῦ Κυρίου, λέγων, εἰ καταδιώξω ὀπίσω τοῦ γεδδοὺρ τούτου; εἰ καταλήμψομαι αὐτούς; καὶ εἶπεν αὐτῷ, καταδίωκε, ὅτι καταλαμβάνων καταλήμψῃ αὐτοὺς, καὶ ἐξαιρούμενος ἐξελῇ. Καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ αὐτὸς καὶ οἱ ἑξακόσιοι ἄνδρες μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἔρχονται ἕως τοῦ χειμάῤῥου Βοσὸρ, καὶ οἱ περισσοὶ ἔστησαν. Καὶ κατεδίωξεν ἐν τετρακοσίοις ἀνδράσιν· ὑπέστησαν δὲ διακόσιοι ἄνδρες οἵτινες ἐκάθισαν πέραν τοῦ χειμάῤῥου τοῦ Βοσόρ. Καὶ εὑρίσκουσιν ἄνδρα Αἰγύπτιον ἐν ἀγρῷ, καὶ λαμβάνουσιν αὐτὸν, καὶ ἄγουσιν αὐτὸν πρὸς Δαυίδ· καὶ διδόασιν αὐτῷ ἄρτον καὶ ἔφαγε, καὶ ἐπότισαν αὐτὸν ὕδωρ· καὶ διδόασιν αὐτῷ κλάσμα παλάθης καὶ ἔφαγε, καὶ κατέστη τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ· ὅτι οὐ βεβρώκει ἄρτον, καὶ οὐ πεπώκει ὕδωρ τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυὶδ, τίνος σὺ εἶ, καὶ πόθεν εἶ; καὶ εἶπε τὸ παιδάριον τὸ Αἰγύπτιον, ἐγώ εἰμι δοῦλος ἀνδρὸς Ἀμαληκίτου, καὶ κατέλιπέ με ὁ κύριός μου, ὅτι ἠνωχλήθην ἐγὼ σήμερον τριταῖος. Καὶ ἡμεῖς ἐπεθέμεθα ἐπὶ τὸν Νότον τοῦ Χελεθὶ, καὶ ἐπὶ τὰ τῆς Ἰουδαίας μέρη, καὶ ἐπὶ Νότον Χελοὺβ, καὶ τὴν Σεκελὰκ ἐνεπυρίσαμεν ἐν πυρί. Καὶ εἶπεν, αὐτῷ Δαυὶδ, εἰ κατάξεις με ἐπὶ τὸ γεδδοὺρ τοῦτο; καὶ εἶπεν, ὄμοσον δή μοι κατὰ

τοῦ Θεοῦ μὴ θανατώσειν με, καὶ μὴ παραδοῦναί με εἰς χεῖρας τοῦ κυρίου μου, καὶ κατάξω σε ἐπὶ τὸ γεδδοὺρ τοῦτο. Καὶ κατήγαγεν αὐτὸν ἐκεῖ, καὶ ἰδοὺ οὗτοι διακεχυμένοι ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς, ἐσθίοντες καὶ πίνοντες καὶ ἑορτάζοντες ἐν πᾶσι τοῖς σκύλοις τοῖς μεγάλοις, οἷς ἔλαβον ἐκ γῆς ἀλλοφύλων καὶ ἐκ γῆς Ἰούδα. Καὶ ἦλθεν ἐπ᾽ αὐτοὺς Δαυὶδ, καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς ἀπὸ ἑωσφόρου ἕως δείλης καὶ τῇ ἐπαύριον· καὶ οὐκ ἐσώθη ἐξ αὐτῶν ἀνὴρ, ὅτι ἀλλ᾽ ἢ τετρακόσια παιδάρια, ἃ ἦν ἐπιβεβηκότα ἐπὶ τὰς καμήλους, καὶ ἔφυγον. Καὶ ἀφείλατο Δαυὶδ πάντα ἃ ἔλαβον οἱ Ἀμαληκῖται, καὶ ἀμφότερας τὰς γυναῖκας αὐτοῦ ἐξείλατο. Καὶ οὐ διεφώνησεν αὐτοῖς ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἀπὸ τῶν σκύλων, καὶ ἕως υἱῶν καὶ θυγατέρων, καὶ ἕως πάντων ὧν ἔλαβον αὐτῶν, καὶ πάντα ἐπέστρεψε Δαυίδ. Καὶ ἔλαβε πάντα τὰ ποίμνια, καὶ τὰ βουκόλια, καὶ ἀπήγαγεν ἔμπροσθεν τῶν σκύλων· καὶ τοῖς σκύλοις ἐκείνοις ἐλέγετο, ταῦτα τὰ σκῦλα Δαυίδ. Καὶ παραγίνεται Δαυὶδ πρὸς τοὺς διακοσίους ἄνδρας τούς ὑπολειφθέντας τοῦ πορεύεσθαι ὀπίσω Δαυὶδ, καὶ ἐκάθισεν αὐτοὺς ἐν τῷ χειμάῤῥῳ τοῦ Βοσὸρ, καὶ ἐξῆλθον εἰς ἀπάντησιν Δαυὶδ καὶ εἰς ἀπάντησιν τοῦ λαοῦ τοῦ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ προσήγαγε Δαυὶδ ἕως τοῦ λαοῦ, καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν τὰ εἰς εἰρήνην. Καὶ ἀπεκρίθη πᾶς ἀνὴρ λοιμὸς καὶ πονηρὸς τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν τῶν πορευθέντων μετὰ Δαυὶδ, καὶ εἶπον, ὅτι οὐ κατεδίωξαν μεθ᾽ ἡμῶν, οὐ δώσομεν αὐτοῖς ἐκ τῶν σκύλων ὧν ἐξειλόμεθα, ὅτι ἀλλ᾽ ἢ ἕκαστος τὴς γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ τὰ τέκνα αὐτοῦ ἀπαγέσθωσαν, καὶ ἀποστρεφέτωσαν. Καὶ εἶπε Δαυὶδ, οὐ ποιήσετε οὕτως, μετὰ τὸ παραδοῦναι τὸν Κύριον ἡμῖν, καὶ φυλάξαι ἡμᾶς, καὶ παρέδωκε Κύριος τὸν γεδδοὺρ τὸν ἐπερχόμενον ἐφ᾽ ἡμᾶς, εἰς χεῖρας ἡμῶν. Καὶ τίς ἐπακούσεται ὑμῶν τῶν λόγων τούτων; ὅτιδοὐχ ἧττον ἡμῶν εἰσι, διότι κατὰ τὴν μερίδα τοῦ

καταβαίνοντος εἰς τὸν πόλεμον, οὕτως ἔσται ἡ μερὶς τοῦ καθημένου ἐπὶ τὰ σκεύη, κατὰ τὸ αὐτὸ μεριοῦνται. Καὶ ἐγενήθη ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ ἐπάνω, καὶ ἐγένετο εἰς προστάγμα καὶ εἰς δικαίωμα τῷ Ἰσραὴλ ἕως τῆς σήμερον. Καὶ ἦλθε Δαυὶδ εἰς Σεκελὰκ, καὶ ἀπέστειλε τοῖς πρεσβυτέροις τῶν σκύλων Ἰούδα καὶ τοῖς πλησίον αὐτοῦ, λέγων, ἰδοὺ ἀπὸ τῶν σκύλων τῶν ἐχθρῶν Κυρίου, τοῖς ἐν Βαιθσοὺρ, καὶ τοῖς Ῥαμᾷ Νότου, καὶ τοῖς ἐν Γεθὸρ, καὶ τοῖς ἐν Ἀροὴρ, καὶ τοῖς ἐν Ἀμμαδὶ, καὶ τοῖς ἐν Σαφὶ, καὶ τοῖς ἐν Ἐσθιὲ, καὶ τοῖς ἐν Καρμήλῳ, καὶ τοῖς ἐν ταῖς πόλεσι τοῦ Ἱερεμεὴλ, καὶ τοῖς ἐν ταῖς πόλεσι τοῦ Κενεζὶ, καὶ τοῖς ἐν Ἱεριμοὺθ, καὶ τοῖς ἐν Βηρσαβεὶ, καὶ τοῖς ἐν Νομβὲ, καὶ τοῖς ἐν Χεβρὼν, καὶ πάντας τοὺς τόπους οὓς διῆλθε Δαυὶδ ἐκεῖ αὐτὸς καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ.

# 31

Καὶ οἱ ἀλλόφύλοι ἐπολέμουν ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἔφυγον οἱ ἄνδρες Ἰσραὴλ ἐκ προσώπου τῶν ἀλλοφύλων, καὶ πίπτουσι τραυματίαι ἐν τῷ ὄρει τῷ Γελβουέ. Καὶ συνάπτουσιν οἱ ἀλλόφυλοι τῷ Σαοὺλ καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, καὶ τύπτουσιν ἀλλόφυλοι τὸν Ἰωναθάν, καὶ τὸν Ἀμιναδὰβ, καὶ τὸν Μελχισᾶ υἱὸν Σαούλ. Καὶ βαρύνεται ὁ πόλεμος ἐπὶ Σαοὺλ, καὶ εὑρίσκουσιν αὐτὸν οἱ ἀκοντισταὶ ἄνδρες τόξοται, καὶ ἐτραυματίσθη εἰς τὰ ὑποχόνδρια. Καὶ εἶπε Σαοὺλ πρὸς τὸν αἴροντα τὰ σκεύη αὐτοῦ, σπάσαι τὴν ῥομφαίαν σου καὶ ἀποκέντησόν με ἐν αὐτῇ, μὴ ἔλθωσιν οἱ ἀπερίτμητοι οὗτοι καὶ ἀποκεντήσωσί με καὶ ἐμπαίξωσιν ἐμοί· καὶ οὐκ ἐβούλετο ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ, ὅτι ἐφοβήθη σφόδρα· καὶ ἔλαβε Σαοὺλ τὴν ῥομφαίαν, καὶ ἐπέπεσεν ἐπ’ αὐτήν. Καὶ εἶδεν ὁ αἴρων τὰ σκεύη

αὐτοῦ ὅτι τέθνηκε Σαοὺλ, καὶ ἐπέπεσε καὶ αὐτὸς ἐπὶ τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ, καὶ ἀπέθανε μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἀπέθανε Σαοὺλ, καὶ οἱ τρεῖς υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ ὁ αἴρων τὰ σκεύη αὐτοῦ, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κατὰ τὸ αὐτό. Καὶ εἶδον οἱ ἄνδρες Ἰσραὴλ οἱ ἐν τῷ πέραν τῆς κοιλάδος καὶ οἱ ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὅτι ἔφυγον οἱ ἄνδρες Ἰσραὴλ, καὶ ὅτι τέθνηκε Σαοὺλ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ καταλείπουσι τὰς πόλεις αὐτῶν καὶ φεύγουσι· καὶ ἔρχονται οἱ ἀλλόφυλοι καὶ κατοικοῦσιν ἐν αὐταῖς. Καὶ ἐγενήθη τῇ ἐπαύριον ἔρχονται οἱ ἀλλόφυλοι ἐκδιδύσκειν τοὺς νεκροὺς, καὶ εὑρίσκουσι τὸν Σαοὺλ καὶ τοὺς τρεῖς υἱοὺς αὐτοῦ πεπτωκότας ἐπὶ τὰ ὄρη Γελβούε. Καὶ ἀποστρέφουσιν αὐτὸν, καὶ ἐξέδυσαν τὰ σκεύη αὐτοῦ, καὶ ἀποστέλλουσιν αὐτὰ εἰς γῆν ἀλλοφύλων, κύκλῳ εὐαγγελίζοντες τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν καὶ τῷ λαῷ. Καὶ ἀνέθηκαν τὰ σκεύη αὐτοῦ εἰς τὸ Ἀσταρτεῖον, καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ κατέπηξαν ἐν τῷ τείχει Βαιθσάμ. Καὶ ἀκούουσιν οἱ κατοικοῦντες Ἰαβὶς τῆς Γαλααδίτιδος ἃ ἐποίησαν οἱ ἀλλόφυλοι τῷ Σαούλ. Καὶ ἀνέστησαν πᾶς ἀνὴρ δυνάμεως, καὶ ἐπορεύθησαν ὅλην τὴν νύκτα, καὶ ἔλαβον τὸ σῶμα Σαοὺλ καὶ τὸ σῶμα Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ τείχους Βαιθσὰμ, καὶ φέρουσιν αὐτοὺς εἰς Ἰαβὶς, καὶ κατακαίουσιν αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ λαμβάνουσιν τὰ ὀστᾶ αὐτῶν, καὶ θάπτουσιν ὑπὸ τὴν ἄρουραν τὴν ἐν Ἰαβὶς, καὶ νηστεύουσιν ἑπτὰ ἡμέρας.

# Β΄ ΣΑΜΟΥΗΛ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Σαοὺλ, καὶ Δαυὶδ ἀνέστρεψε τύπτων τὸν Ἀμαλὴκ, καὶ ἐκάθισε Δαυὶδ ἐν Σεκελὰκ ἡμέρας δύο. Καὶ ἐγενήθη τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἦλθεν ἐκ τῆς παρεμβολῆς ἐκ τοῦ λαοῦ Σαοὺλ, καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ διερῤῥωγότα, καὶ γῆ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἰσελθεῖν αὐτὸν πρὸς Δαυὶδ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυὶδ, πόθεν σὺ παραγίνῃ; καὶ εἶπεν πρὸς αὐτὸν, ἐκ τῆς παρεμβολῆς Ἰσραὴλ ἐγὼ διασέσωσμαι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυὶδ, τίς ὁ λόγος οὗτος; ἀπάγγειλόν μοι· καὶ εἶπεν, ὅτι ἔφυγεν ὁ λαὸς ἐκ τοῦ πολέμου, καὶ πεπτώκασι πολλοὶ ἐκ τοῦ λαοῦ καὶ ἀπέθανον, καὶ Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀπέθανε. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῷ παιδαρίῳ τῷ ἀπαγγελλοντι αὐτῷ, πῶς οἶδας ὅτι τέθνηκε Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν ὁ υἱὸς αὐτοῦ; Καὶ εἶπε τὸ παιδάριον τὸ ἀπαγγέλλον αὐτῷ, περιπτώματι περιέπεσον ἐν τῷ ὄρει τῷ Γελβουὲ, καὶ ἰδοὺ Σαοὺλ ἐπεστήρικτο ἐπὶ τὸ δόρυ αὐτοῦ, καὶ ἰδοὺ τὰ ἅρματα καὶ οἱ ἱππάρχαι συνῆψαν αὐτῷ. Καὶ ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὰ ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ εἶδέ με, καὶ ἐκάλεσέ με· καὶ εἶπα, ἰδοὺ ἐγώ. Καὶ εἶπέ μοι, τίς εἶ σύ;

καὶ εἶπα, Ἀμαληκίτης ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, στῆθι δὴ ἐπάνω μου καὶ θανάτωσόν με, ὅτι κατέσχε με σκότος δεινὸν, ὅτι πᾶσα ἡ ψυχή μου ἐν ἐμοί. Καὶ ἐπέστην ἐπ’ αὐτὸν καὶ ἐθανάτωσα αὐτὸν, ὅτι ᾔδειν ὅτι οὐ ζήσεται μετὰ τὸ πεσεῖν αὐτόν· καὶ ἔλαβον τὸ βασίλειον τὸ ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ τὸν χλιδόνα τὸν ἐπὶ τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, καὶ ἐνήνοχα αὐτὰ τῷ κυρίῳ μου ὧδε. Καὶ ἐκράτησε Δαυὶδ τῶν ἱματίων αὐτοῦ, καὶ διέῤῥηξεν αὐτά· καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ διέῤῥηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν. Καὶ ἐκόψαντο καὶ ἔκλαυσαν καὶ ἐνήστευσαν ἕως δείλης ἐπὶ Σαοὺλ καὶ ἐπὶ Ἰωνάθαν τὸν υἱὸν αὐτοῦ καὶ ἐπὶ τὸν λαὸν Ἰούδα καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, ὅτι ἐπλήγησαν ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῷ παιδαρίῳ τῷ ἀπαγγέλλοντι αὐτῷ, πόθεν εἶ σύ; καὶ εἶπεν, υἱὸς ανδρὸς παροίκου Ἀμαληκίτου ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυὶδ, πῶς οὐκ ἐφοβήθης ἐπενεγκεῖν χεῖρά σου διαφθεῖραι τὸν χριστὸν Κυρίου; Καὶ ἐκάλεσε Δαυὶδ ἓν τῶν παιδαρίων αὐτοῦ, καὶ εἶπε, προσελθὼν ἀπάντησον αὐτῷ· καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν, καὶ ἀπέθανε. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Δαυὶδ, τὸ αἷμά σου ἐπὶ τὴν κεφαλήν σου, ὅτι τὸ στόμα σου ἀπεκρίθη κατὰ σοῦ, λέγον, ὅτι ἐγὼ ἐθανάτωσα τὸν χριστὸν Κυρίου. Καὶ ἐθρήνησε Δαυὶδ τὸν θρῆνον τοῦτον ἐπὶ Σαοὺλ καὶ ἐπὶ Ἰωνάθαν τὸν υἱὸν αὐτοῦ. Καὶ εἶπε τοῦ διδάξαι τοὺς υἱοὺς Ἰούδα· ἰδοὺ γέγραπται ἐπὶ βιβλίου τοῦ εὐθοῦς. Στήλωσον Ἰσραὴλ ὑπὲρ τῶν τεθνηκότων ἐπὶ τὰ ὕψη σου τραυματιῶν· πῶς ἔπεσαν δυνατοί; Μὴ ἀναγγείλητε ἐν Γὲθ, καὶ μὴ εὐαγγελίσησθε ἐν ταῖς ἐξόδοις Ἀσκάλωνος, μή ποτε εὐφρανθῶσι θυγατέρες ἀλλοφύλων, μή ποτε ἀγαλλιάσωνται θυγατέρες τῶν ἀπεριτμήτων. Ὄρη τὰ ἐν Γελβουὲ μὴ καταβάτω δρόσος καὶ μὴ ὑετὸς ἐφ’ ὑμᾶς, καὶ ἀγροὶ ἀπαρχῶν, ὅτι ἐκεῖ προσωχθίσθη θυρεὸς δυνατῶν· θυρεὸς Σαοὺλ οὐκ ἐχρίσθη ἐν ἐλαίῳ. Ἀφ’ αἵματος τραυματιῶν καὶ ἀπὸ στέατος

δυνατῶν τόξον Ἰωνάθαν οὐκ ἀπεστράφη κενὸν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ῥομφαία Σαοὺλ οὐκ ἀνέκαμψε κενή. Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν οἱ ἠγαπημένοι καὶ ὡραῖοι οὐ διακεχωρισμένοι, εὐπρεπεῖς ἐν τῇ ζωῇ αὐτῶν, καὶ ἐν τῷ θανάτῳ αὐτῶν οὐ διεχωρίσθησαν· ὑπὲρ ἀετοὺς κοῦφοι, καὶ ὑπὲρ λέοντας ἐκραταιώθησαν. Θυγατέρες Ἰσραὴλ ἐπὶ Σαοὺλ κλαύσατε, τὸν ἐνδιδύσκοντα ὑμᾶς κόκκινα μετὰ κόσμου ὑμῶν, τὸν ἀναφέροντα κόσμον χρυσοῦν ἐπὶ τὰ ἐνδύματα ὑμῶν. Πῶς ἔπεσαν δυνατοὶ ἐν μέσῳ τοῦ πολέμου, Ἰωνάθαν ἐπὶ τὰ ὕψη σου τραυματίαι; Ἀλγῶ ἐπὶ σοὶ, ἀδελφέ μου Ἰωνάθαν, ὡραιώθης μοι σφόδρα, ἐθαυμαστώθη ἡ ἀγάπησίς σου ἐμοὶ ὑπὲρ ἀγάπησιν γυναικῶν. Πῶς ἔπεσαν δυνατοὶ, καὶ ἀπώλοντο σκεύη πολεμικά;

# 2

Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα καὶ ἐπηρώτησε Δαυὶδ ἐν Κυρίῳ, λέγων, εἰ ἀναβῶ εἰς μίαν τῶν πόλεων Ἰούδα; καὶ εἶπε Κύριος πρὸς αὐτὸν, ἀνάβηθι· καὶ εἶπε Δαυὶδ, ποῦ ἀναβῶ; καὶ εἶπεν, εἰς Χεβρών. Καὶ ἀνέβη ἐκεῖ Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν, καὶ ἀμφότεραι αἱ γυναῖκες αὐτοῦ, Ἀχινάαμ ἡ Ἰεζραηλίτις, καὶ Ἀβιγαία ἡ γυνὴ Νάβαλ τοῦ Καρμηλίου, καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ ἕκαστος, καὶ ὁ οἶκος αὐτοῦ, καὶ κατῴκουν ἐν ταῖς πόλεσι Χεβρών. Καὶ ἔρχονται ἄνδρες τῆς Ἰουδαίας, καὶ χρίουσι τὸν Δαυὶδ ἐκεῖ τοῦ βασιλεύειν ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰούδα· Καὶ ἀπήγγειλαν τῷ Δαυὶδ, λέγοντες, ὅτι οἱ ἄνδρες Ἰαβὶς τῆς Γαλααδίτιδος ἔθαψαν τὸν Σαούλ. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ ἀγγέλους πρὸς τοὺς ἡγουμένους Ἰαβὶς τῆς Γαλααδίτιδος, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Δαυὶδ, εὐλογημένοι ὑμεῖς τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἐποιήσατε τὸ ἔλεος τοῦτο ἐπὶ τὸν κύριον ὑμῶν, ἐπὶ Σαοὺλ τὸν χριστὸν Κυρίου, καὶ

ἐθάψατε αὐτὸν καὶ Ἰωνάθαν τὸν υἱὸν αὐτοῦ. Καὶ νῦν ποιῆσαι Κύριος μεθ’ ὑμῶν ἔλεος καὶ ἀλήθειαν· καί γε ἐγὼ ποιήσω μεθ’ ὑμῶν τὸ ἀγαθὸν τοῦτο, ὅτι ἐποιήσατε τὸ ῥῆμα τοῦτο. Καὶ νῦν κραταιούσθωσαν αἱ χεῖρες ὑμῶν, καὶ γίνεσθε εἰς υἱοὺς δυνατοὺς, ὅτι τέθνηκεν ὁ κύριος ὑμῶν Σαοὺλ, καί γε ἐμὲ κέχρικεν ὁ οἶκος Ἰούδα ἐφ’ ἑαυτὸν εἰς βασιλέα. Καὶ Ἀβεννὴρ υἱὸς Νὴρ ἀρχιστράτηγος τοῦ Σαοὺλ ἔλαβε τὸν Ἰεβοσθὲ υἱὸν Σαοὺλ, καὶ ἀνεβίβασεν αὐτὸν ἐκ τῆς παρεμβολῆς εἰς Μαναὲμ, καὶ ἐβασίλευσεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν Γαλααδίτιν, καὶ ἐπὶ τὸν Θασιρὶ, καὶ ἐπὶ τὸν Ἰεζραὴλ, καὶ ἐπὶ τὸν Ἐφραὶμ, καὶ ἐπὶ τὸν Βενιαμὶν, καὶ ἐπὶ πάντα Ἰσραήλ. Τεσσαράκοντα ἐτῶν Ἰεβοσθὲ υἱὸς Σαοὺλ, ὅτε ἐβασίλευσεν ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ· καὶ δύο ἔτη ἐβασίλευσε, πλὴν τοῦ οἴκου Ἰούδα, οἳ ἦσαν ὀπίσω Δαυίδ. Καὶ ἐγένοντο αἱ ἡμέραι ἃς Δαυὶδ ἐβασίλευσεν ἐν Χεβρὼν ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰούδα, ἑπτὰ ἔτη καὶ μῆνας ἕξ. Καὶ ἐξῆλθεν Ἀβεννὴρ υἱὸς Νὴρ, καὶ οἱ παῖδες Ἰεβοσθὲ υἱοῦ Σαοὺλ ἐκ Μαναὲμ εἰς Γαβαών· Καὶ Ἰωὰβ υἱὸς Σαρουία, καὶ οἱ παῖδες Δαυὶδ ἐξῆλθον ἐκ Χεβρὼν, καὶ συναντῶσιν αὐτοῖς ἐπὶ τὴν κρήνην τὴν Γαβαὼν ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ ἐκάθισαν οὗτοι ἐπὶ τὴν κρήνην ἐντεῦθεν, καὶ οὗτοι ἐπὶ τὴν κρήνην ἐντεῦθεν. Καὶ εἶπεν Ἀβεννὴρ πρὸς Ἰωὰβ, ἀναστήτωσαν δὴ τὰ παιδάρια, καὶ παιξάτωσαν ἐνώπιον ὑμῶν· καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, ἀναστήτωσαν. Καὶ ἀνέστησαν καὶ παρῆλθον ἐν ἀριθμῷ τῶν παίδων Βενιαμὶν δώδεκα τῶν Ἰεβοσθὲ υἱοῦ Σαοὺλ, καὶ δώδεκα ἐκ τῶν παίδων Δαυίδ Καὶ ἐκράτησαν ἕκαστος τῇ χειρὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ μάχαιρα αὐτοῦ εἰς πλευρὰν τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ πίπτουσι κατὰ τὸ αὐτό· καὶ ἐκλήθη τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, μερὶς τῶν ἐπιβούλων, ἥ ἐστιν ἐν Γαβαών. Καὶ ἐγένετο ὁ πόλεμος σκληρὸς ὥστε λίαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· καὶ ἔπταισεν Ἀβεννὴρ καὶ ἄνδρες

Ἰσραὴλ ἐνώπιον παίδων Δαυίδ. Καὶ ἐγένοντο ἐκεῖ τρεῖς υἱοὶ Σαρουία, Ἰωὰβ, καὶ Ἀβεσσὰ, καὶ Ἀσαήλ· καὶ Ἀσαὴλ κοῦφος τοῖς ποσὶν αὐτοῦ· ὡσεὶ μία δορκὰς ἐν ἀγρῷ. Καὶ κατεδίωξεν Ἀσαὴλ ὀπίσω Ἀβεννὴρ, καὶ οὐκ ἐξέκλινε τοῦ πορεύεσθαι εἰς δεξιὰ οὐδὲ εἰς ἀριστερὰ κατόπισθεν Ἀβεννήρ. Καὶ ἐπέβλεψεν Ἀβεννὴρ εἰς τὰ ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, εἰ σὺ εἶ αὐτὸς Ἀσαήλ; καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἀβεννὴρ, ἔκκλινον σὺ εἰς τὰ δεξιὰ ἢ εἰς τὰ ἀριστερὰ, καὶ κατάσχε σεαυτῷ ἓν τῶν παιδαρίων, καὶ λάβε σεαυτῷ τὴν πανοπλίαν αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἠθέλησεν Ἀσαὴλ ἐκκλῖναι ἐκ τῶν ὄπισθεν αὐτοῦ. Καὶ προσέθετο ἔτι Ἀβεννὴρ λέγων τῷ Ἀσαὴλ, ἀπόστηθι ἀπ’ ἐμοῦ, ἵνα μὴ πατάξω σε εἰς τὴν γῆν· καὶ πῶς ἀρῶ τὸ πρόσωπόν μου πρὸς Ἰωάβ; Καὶ ποῦ ἐστι ταῦτα; ἐπίστρεφε πρὸς Ἰωὰβ τὸν ἀδελφόν σου. Καὶ οὐκ ἐβούλετο τοῦ ἀποστῆναι· καὶ τύπτει αὐτὸν Ἀβεννὴρ ἐν τῷ ὀπίσω τοῦ δόρατος ἐπὶ τὴν ψόαν, καὶ διεξῆλθε τὸ δόρυ ἐκ τῶν ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ πίπτει ἐκεῖ καὶ ἀποθνήσκει ὑποκάτω αὐτοῦ· καὶ ἐγένετο πᾶς ὁ ἐρχόμενος ἕως τοῦ τόπου οὗ ἔπεσεν ἐκεῖ Ἀσαὴλ καὶ ἀπέθανε, καὶ ὑφίστατο. Καὶ κατεδίωξεν Ἰωὰβ καὶ Ἀβεσσὰ ὀπίσω Ἀβεννὴρ, καὶ ὁ ἥλιος ἔδυνε· καὶ αὐτοὶ εἰσῆλθον ἕως τοῦ βουνοῦ Ἀμμὰν, ὅ ἐστιν ἐπὶ προσώπου Γαΐ, ὁδὸν ἔρημον Γαβαών. Καὶ συναθροίζονται οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν οἱ ὀπίσω Ἀβεννὴρ, καὶ ἐγενήθησαν εἰς συνάντησιν μίαν, καὶ ἔστησαν ἐπὶ κεφαλὴν βουνοῦ ἑνός. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀβεννὴρ Ἰωὰβ, καὶ εἶπε, μὴ εἰς νῖκος καταφάγεται ἡ ῥομφαία; ἢ οὐκ οἶδας ὅτι πικρὰ ἔσται εἰς τὰ ἔσχατα; καὶ ἕως πότε οὐ μὴ εἴπῃς τῷ λαῷ ἀποστρέφειν ἀπὸ ὄπισθε τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν; Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, ζῇ Κύριος, ὅτι εἰ μὴ ἐλάλησας, διότι τότε ἐκ πρωϊόθεν ἀνέβη ἂν ὁ λαὸς ἕκαστος κατόπισθε τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἐσάλπισεν Ἰωὰβ τῇ σάλπιγγι, καὶ ἀπέστησαν πᾶς ὁ λαὸς, καὶ οὐ κατεδίωξαν ὀπίσω τοῦ Ἰσραὴλ,

καὶ οὐ προσέθεντο ἔτι τοῦ πολεμεῖν. Καὶ Ἀβεννὴρ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἀπῆλθον εἰς δυσμὰς ὅλην τὴν νύκτα ἐκείνην, καὶ διέβαινον τὸν Ἰορδάνην, καὶ ἐπορεύθησαν ὅλην τὴν παρατείνουσαν, καὶ ἔρχονται εἰς τὴν παρεμβολήν. Καὶ Ἰωὰβ ἀνέστρεψεν ὄπισθεν ἀπὸ τοῦ Ἀβεννὴρ, καὶ συνήθροισε πάντα τὸν λαὸν, καὶ ἐπεσκέπησαν τῶν παίδων Δαυὶδ ἐννεακαίδεκα ἄνδρες, καὶ Ἀσαήλ. Καὶ οἱ παῖδες Δαυὶδ ἐπάταξαν τῶν υἱῶν Βενιαμὶν τῶν ἀνδρῶν Ἀβεννὴρ τριακοσίους ἑξήκοντα ἄνδρας παρ’ αὐτοῦ. Καὶ αἴρουσι τὸν Ἀσαὴλ, καὶ θάπτουσιν αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐν Βηθλεέμ· καὶ ἐπορεύθη Ἰωὰβ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ ὅλην τὴν νύκτα, καὶ διέφαυσεν αὐτοῖς ἐν Χεβρών.

# 3

Καὶ ἐγένετο ὁ πόλεμος ἐπὶ πολὺ ἀναμέσον τοῦ οἴκου Σαοὺλ καὶ ἀναμέσον τοῦ οἴκου Δαυίδ· καὶ ὁ οἶκος Δαυὶδ ἐπορεύετο καὶ ἐκραταιοῦτο, καὶ ὁ οἶκος Σαοὺλ ἐπορεύετο καὶ ἠσθένει. Καὶ ἐτέχθησαν τῷ Δαυὶδ υἱοὶ ἐν Χεβρών· καὶ ἦν ὁ πρωτότοκος αὐτοῦ Ἀμνὼν τῆς Ἀχινόομ τῆς Ἰεζραηλίτιδος. Καὶ ὁ δεύτερος αὐτοῦ Δαλουΐα τῆς Ἀβιγαίας τῆς Καρμηλίας, καὶ ὁ τρίος, Ἀβεσσαλὼμ υἱὸς Μααχὰ θυγατρὸς Θολμὶ βασιλέως Γεσσὶρ, καὶ ὁ τέταρτος Ὀρνία υἱὸς Ἀγγὶθ, καὶ ὁ πέμπτος Σαφατία τῆς Ἀβιτὰλ, καὶ ὁ ἕκτος Ἰεθεραὰμ τῆς Αἰγὰλ γυναικὸς Δαυίδ· οὗτοι ἐτέχθησαν τῷ Δαυὶδ ἐν Χεβρών. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι τὸν πόλεμον ἀναμέσον τοῦ οἴκου Σαοὺλ καὶ ἀναμέσον τοῦ οἴκου Δαυὶδ, καὶ Ἀβεννὴρ ἦν κρατῶν τοῦ οἴκου Σαούλ. Καὶ τῷ Σαοὺλ παλλακὴ Ῥεσφὰ θυγάτηρ Ἰώλ· καὶ εἶπεν Ἰεβοσθὲ υἱὸς Σαοὺλ πρὸς Ἀβεννὴρ, τί ὅτι εἰσῆλθες πρὸς τὴν

παλλακὴν τοῦ πατρός μου; Καὶ ἐθυμώθη σφόδρα Ἀβεννὴρ περὶ τοῦ λόγου τούτου τῷ Ἰεβοσθέ. καὶ εἶπεν Ἀβεννὴρ πρὸς αὐτὸν, μὴ κεφαλὴ κυνὸς ἐγώ εἰμι; ἐποίησα σήμερον ἔλεος μετὰ τοῦ οἴκου Σαοὺλ τοῦ πατρός σου, καὶ περὶ ἀδελφῶν καὶ περὶ γνωρίμων, καὶ οὐκ ηὐτομόλησα εἰς τὸν οἶκον Δαυὶδ, καὶ ἐπιζητεῖς ἐπ’ ἐμὲ σὺ ὑπὲρ ἀδικίας γυναικὸς σήμερον; Τάδε ποιήσαι ὁ Θεὸς τῷ Ἀβεννὴρ καὶ τάδε προσθείη αὐτῷ, ὅτι καθὼς ὤμοσε Κύριος τῷ Δαυὶδ, ὅτι οὕτως ποιήσω αὐτῷ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, περιελεῖν τὴν βασιλείαν ἀπὸ τοῦ οἴκου Σαοὺλ, καὶ τοῦ ἀναστῆσαι τὸν θρόνον Δαυὶδ ἐπὶ Ἰσραὴλ καὶ ἐπὶ τὸν Ἰούδαν ἀπὸ Δὰν ἕως Βηρσαβεέ. Καὶ οὐκ ἠδυνάσθη ἔτι Ἰεβοσθὲ ἀποκριθῆναι τῷ Ἀβεννὴρ ῥῆμα, ἀπὸ τοῦ φοβεῖσθαι αὐτόν. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀβεννὴρ ἀγγέλους πρὸς Δαυὶδ εἰς Θαιλὰμ οὗ ἦν, παραχρῆμα, λέγων, διάθου διαθήκην σου μετ’ ἐμοῦ, καὶ ἰδοὺ ἡ χείρ μου μετὰ σοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς σὲ πάντα τὸν οἶκον Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ, καλῶς ἐγὼ διαθήσομαι πρὸς σὲ διαθήκην· πλὴν λόγον ἕνα ἐγὼ αἰτοῦμαι παρὰ σοῦ, λέγων, οὐκ ὄψει τὸ πρόσωπόν μου, ἐὰν μὴ ἀγάγῃς τὴν Μελχὸλ θυγατέρα Σαοὺλ παραγινομένου σου ἰδεῖν τὸ πρόσωπόν μου. Καὶ ἐξαπέστειλε Δαυὶδ πρὸς Ἰεβοσθὲ υἱον Σαοὺλ ἀγγέλους, λέγων, ἀπόδος μοι τῆν γυναῖκά μου τὴν Μελχὸλ, ἣν ἔλαβον ἐν ἑκατὸν ἀκροβυστίαις ἀλλοφύλων. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰεβοσθὲ, καὶ ἔλαβεν αὐτὴν παρὰ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς παρὰ Φαλτιὴλ υἱοῦ Σελλῆς. Καὶ ἐπορεύετο ὁ ἀνὴρ αὐτῆς μετ’ αὐτῆς κλαίων ὀπίσω αὐτῆς ἕως Βαρακίμ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἀβεννὴρ, πορεύου, ἀνάστρεφε· καὶ ἀνέστρεψε. Καὶ εἶπεν Ἀβεννὴρ πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους Ἰσραὴλ, λέγων, χθὲς καὶ τρίτην ἐζητεῖτε τὸν Δαυὶδ βασιλεύειν ἐφ’ ὑμᾶς. Καὶ νῦν ποιήσατε, ὅτι Κύριος ἐλάλησε περὶ Δαυὶδ, λέγων, ἐν χειρὶ τοῦ δούλου μου Δαυὶδ σώσω τὸν Ἰσραὴλ ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων, καὶ ἐκ χειρὸς πάντων τῶν

ἐχθρῶν αὐτῶν. Καὶ ἐλάλησεν Ἀβεννὴρ ἐν τοῖς ὠσὶ Βενιαμίν· καὶ ἐπορεύθη Ἀβεννὴρ τοῦ λαλῆσαι εἰς τὰ ὦτα τοῦ Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν πάντα ὅσα ἤρεσεν ἐν ὀφθαλμοῖς Ἰσραὴλ καὶ ἐν ὀφθαλμοῖς οἴκου Βενιαμίν. Καὶ ἦλθεν Ἀβεννὴρ πρὸς Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ εἴκοσι ἄνδρες· καὶ ἐποίησε Δαυὶδ τῷ Ἀβεννὴρ καὶ τοῖς ἀνδράσι τοῖς μετ᾽ αὐτοῦ πότον. Καὶ εἶπεν Ἀβεννὴρ πρὸς Δαυὶδ, ἀναστήσομαι δὴ καὶ πορεύσομαι καὶ συναθροίσω πρὸς κύριόν μου τὸν βασιλέα πάντα Ἰσραὴλ· καὶ διαθήσομαι μετ᾽ αὐτοῦ διαθήκην, καὶ βασιλεύσεις ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχή σου. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ τὸν Ἀβεννὴρ, καὶ ἐπορεύθη ἐν εἰρήνῃ. Καὶ ἰδοὺ οἱ παῖδες Δαυὶδ καὶ Ἰωὰβ παρεγένοντο ἐκ τῆς ἐξοδίας, καὶ σκῦλα πολλὰ ἔφερον μεθ᾽ ἑαυτῶν· καὶ Ἀβεννὴρ οὐκ ἦν μετὰ Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν, ὅτι ἀπεστάλκει αὐτὸν, καὶ ἀπεληλύθει ἐν εἰρήνῃ. Καὶ Ἰωὰβ καὶ πᾶσα ἡ στρατιὰ αὐτοῦ ἦλθοσαν, καὶ ἀπηγγέλη τῷ Ἰωὰβ, λέγοντες, ἥκει Ἀβεννὴρ υἱὸς Νὴρ πρὸς Δαυὶδ, καὶ ἀπέσταλκεν αὐτὸν, καὶ ἀπῆλθεν ἐν εἰρήνῃ. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰωὰβ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπε, τί τοῦτο ἐποίησας; ἰδοὺ ἦλθεν Ἀβεννὴρ πρὸς σὲ, καὶ ἱνατί ἐξαπέσταλκας αὐτὸν, καὶ ἀπελήλυθεν ἐν εἰρήνῃ; Ἢ οὐκ οἶδας τὴν κακίαν Ἀβεννὴρ υἱοῦ Νὴρ, ὅτι ἀπατῆσαί σε παρεγένετο, καὶ γνῶναι τὴν ἔξοδόν σου καὶ τὴν εἴσοδόν σου, καὶ γνῶναι ἅπαντα ὅσα σὺ ποιεῖς; Καὶ ἀνέστρεψεν Ἰωὰβ ἀπὸ τοῦ Δαυὶδ, καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἀβεννὴρ ὀπίσω, καὶ ἐπιστρέφουσιν αὐτὸν ἀπὸ τοῦ φρέατος τοῦ Σεειρὰμ· καὶ Δαυὶδ οὐκ ᾔδει. Καὶ ἐπέστρεψε τὸν Ἀβεννὴρ εἰς Χεβρὼν, καὶ ἐξέκλινεν αὐτὸν Ἰωὰβ ἐκ πλαγίων τῆς πύλης λαλῆσαι πρὸς αὐτὸν, ἐνεδρεύων· καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ἐκεῖ εἰς τὴν ψόαν, καὶ ἀπέθανεν ἐν τῷ αἵματι Ἀσαὴλ τοῦ ἀδελφοῦ Ἰωάβ. Καὶ ἤκουσε Δαυὶδ μετὰ ταῦτα, καὶ εἶπεν, ἀθῶός εἰμι ἐγὼ καὶ ἡ βασιλεία μου ἀπὸ Κυρίου καὶ ἕως αἰῶνος ἀπὸ τῶν

αἱμάτων Ἀβεννὴρ υἱοῦ Νήρ. Καταντησάτωσαν ἐπὶ κεφαλὴν Ἰωὰβ καὶ ἐπὶ πάντα τὸν οἶκον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ μὴ ἐκλείποι ἐκ τοῦ οἴκου Ἰωὰβ γονορρυὴς, καὶ λεπρὸς, καὶ κρατῶν σκυτάλης, καὶ πίπτων ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐλασσούμενος ἄρτοις. Ἰωὰβ δὲ καὶ Ἀβεσσὰ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ διαπαρετηροῦντο τὸν Ἀβεννὴρ, ἀνθ’ ὧν ἐθανάτωσε τὸν Ἀσαὴλ τὸν ἀδελφὸν αὐτῶν ἐν Γαβαὼν, ἐν τῷ πολέμῳ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἰωὰβ καὶ πρὸς πάντα τὸν λαὸν τὸν μετ’ αὐτοῦ, διαῤῥήξατε τὰ ἱμάτια ὑμῶν, καὶ περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε ἐνώπιον Ἀβεννήρ· καὶ ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἐπορεύετο ὀπίσω τῆς κλίνης. Καὶ θάπτουσι τὸν Ἀβεννὴρ ἐν Χεβρών· καὶ ᾖρεν ὁ βασιλεὺς τὴν φωνὴν αὐτοῦ καὶ ἔκλαυσεν ἐπὶ τοῦ τάφου αὐτοῦ, καὶ ἔκλαυσε πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ Ἀβεννήρ. Καὶ ἐθρήνησεν ὁ βασιλεὺς ἐπὶ Ἀβεννὴρ, καὶ εἶπεν, εἰ κατὰ τὸν θάνατον Νάβαλ ἀποθανεῖται Ἀβεννήρ; Αἱ χεῖρές σου οὐκ ἐδέθησαν, οἱ πόδες σου οὐκ ἐν πέδαις· οὐ προσήγαγεν ὡς Νάβαλ, ἐνώπιον υἱῶν ἀδικίας ἔπεσας· καὶ συνήχθη πᾶς ὁ λαὸς τοῦ κλαῦσαι αὐτόν. Καὶ ἦλθε πᾶς ὁ λαὸς περιδειπνῆσαι τὸν Δαυὶδ ἄρτοις ἔτι οὔσης ἡμέρας· καὶ ὤμοσε Δαυὶδ, λέγων, τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε προσθείη, ὅτι ἐὰν μὴ δύῃ ὁ ἥλιος, οὐ μὴ γεύσομαι ἄρτου ἢ ἀπὸ παντὸς τινός. Καὶ ἔγνω πᾶς ὁ λαὸς, καὶ ἤρεσεν ἐνώπιον αὐτῶν πάντα ὅσα ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς ἐνώπιον τοῦ λαοῦ. Καὶ ἔγνω πᾶς ὁ λαὸς καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι οὐκ ἐγένετο παρὰ τοῦ βασιλέως θανατῶσαι τὸν Ἀβεννὴρ υἱὸν Νήρ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, οὐκ οἴδατε, ὅτι ἡγούμενος μέγας πέπτωκεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἐν τῷ Ἰσραήλ; Καὶ ὅτι ἐγώ εἰμι συγγενὴς σήμερον, καὶ καθεσταμένος ὑπὸ βασιλέως; οἱ δὲ ἄνδρες οὗτοι υἱοὶ Σαρουίας σκληρότεροί μου εἰσίν· ἀποδῷ Κύριος τῷ ποιοῦντι τὰ πονηρὰ κατὰ τὴν κακίαν αὐτοῦ.

# 4

Καὶ ἤκουσεν Ἰεβοσθὲ υἱὸς Σαοὺλ, ὅτι τέθνηκεν Ἀβεννὴρ υἱὸς Νὴρ ἐν Χεβρὼν, καὶ ἐξελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες Ἰσραὴλ παρείθησαν. Καὶ δύο ἄνδρες ἡγούμενοι συστρεμμάτων τῷ Ἰεβοσθὲ υἱῷ Σαούλ· ὄνομα τῷ ἑνὶ Βαανὰ, καὶ ὄνομα τῷ δευτέρῳ Ῥηχὰβ, υἱοὶ Ῥεμμὼν τοῦ Βηρωθαίου ἐκ τῶν υἱῶν Βενιαμίν· ὅτι Βηρὼθ ἐλογίζετο τοῖς υἱοῖς Βενιαμίν· Καὶ ἀπέδρασαν οἱ Βηρωθαῖοι εἰς Γεθαὶμ, καὶ ἦσαν ἐκεῖ παροικοῦντες ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ τῷ Ἰωνάθαν υἱῷ Σαοὺλ υἱὸς πεπληγὼς τοὺς πόδας υἱὸς ἐτῶν πέντε, καὶ οὗτος ἐν τῷ ἐλθεῖν τὴν ἀγγελίαν Σαοὺλ καὶ Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ ἐξ Ἰεζραὴλ, καὶ ᾖρεν αὐτὸν ἡ τιθηνὸς αὐτοῦ, καὶ ἔφυγε· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ σπεύδειν αὐτὸν καὶ ἀναχωρεῖν, καὶ ἔπεσε καὶ ἐχωλάνθη, καὶ ὄνομα αὐτῷ Μεμφιβοσθέ. Καὶ ἐπορεύθησαν υἱοὶ Ῥεμμὼν τοῦ Βηρωθαίου Ῥηχὰβ καὶ Βαανὰ, καὶ εἰσῆλθον εν τῷ καύματι τῆς ἡμέρας εἰς οἶκον Ἰεβοσθὲ, καὶ αὐτὸς ἐκάθευδεν ἐν τῇ κοίτῃ τῆς μεσημβρίας. Καὶ ἰδοὺ ἡ θυρωρὸς τοῦ οἴκου ἐκάθαιρε πυροὺς, καὶ ἐνύσταξε καὶ ἐκάθευδε· καὶ Ῥηχὰβ καὶ Βαανὰ οἱ ἀδελφοὶ διέλαθον, καὶ εἰσῆλθον εἰς τὸν οἶκον· καὶ Ἰεβοσθὲ ἐκάθευδεν ἐπὶ τῆς κλίνης αὐτοῦ ἐν τῷ κοιτῶνι αὐτοῦ· καὶ τύπτουσιν αὐτὸν, καὶ θανατοῦσιν αὐτὸν, καὶ ἀφαιροῦσι τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ· καὶ ἔλαβον τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἀπῆλθον ὁδὸν τὴν κατὰ δυσμὰς ὅλην τὴν νύκτα. Καὶ ἤνεγκαν τὴν κεφαλὴν Ἰεβοσθὲ τῷ Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν, καὶ εἶπον πρὸς τὸν βασιλέα, ἰδοὺ ἡ κεφαλὴ Ἰεβοσθὲ υἱοῦ Σαοὺλ τοῦ ἐχθροῦ σου, ὃς ἐζήτει τὴν ψυχήν σου, καὶ ἔδωκε Κύριος τῷ κυρίῳ βασιλεῖ ἐκδίκησιν τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, ἐκ Σαοὺλ τοῦ ἐχθροῦ σου καὶ ἐκ τοῦ

σπέρματος αὐτοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη Δαυὶδ τῷ Ῥηχὰβ καὶ τῷ Βαανὰ ἀδελφῷ αὐτοῦ υἱοῖς Ῥεμμὼν τοῦ Βηρωθαίου, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ζῇ Κύριος, ὃς ἐλυτρώσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ πάσης θλίψεως, ὅτι ὁ ἀπαγγείλας μοι ὅτι τέθνηκε Σαοὺλ, καὶ αὐτὸς ἦν ὡς εὐαγγελιζόμενος ἐνώπιόν μου, καὶ κατέσχον αὐτὸν καὶ ἀπέκτεινα αὐτὸν ἐν Σεκελὰκ, ᾧ ἔδει με δοῦναι εὐαγγέλια. Καὶ νῦν ἄνδρες πονηροὶ ἀπεκτάγκασιν ἄνδρα δίκαιον ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ· καὶ νῦν ἐκζητήσω τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐκ χειρὸς ὑμῶν, καὶ ἐξολοθρεύσω ὑμᾶς ἐκ τῆς γῆς. Καὶ ἐνετείλατο Δαυὶδ τοῖς παιδαρίοις αὐτοῦ, καὶ ἀποκτείνουσιν αὐτούς, καὶ κολοβοῦσι τὰς χεῖρας αὐτῶν καὶ τοὺς πόδας αὐτῶν, καὶ ἐκρέμασαν αὐτοὺς ἐπι τῆς κρήνης ἐν Χεβρὼν, καὶ τὴν κεφαλὴν Ἰεβοσθὲ ἔθαψαν ἐν τῷ τάφῳ Ἀβεννὴρ υἱοῦ Νήρ.

# 5

Καὶ παραγίνονται πᾶσαι αἱ φυλαὶ Ἰσραὴλ πρὸς Δαυὶδ εἰς Χεβρὼν, καὶ εἶπαν αὐτῷ, ἰδοὺ ὀστᾶ σου, καὶ σάρκες σου ἡμεῖς. Καὶ ἐχθὲς καὶ τρίτην ὄντος Σαοὺλ βασιλέως ἐφ’ ἡμῖν, σὺ ἦσθα ὁ ἐξάγων καὶ εἰσάγων τὸν Ἰσραήλ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς σὲ, σὺ ποιμανεῖς τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραὴλ, καὶ σὺ ἔσῃ εἰς ἡγούμενον ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. Καὶ ἔρχονται πάντες οἱ πρεσβύτεροι Ἰσραὴλ πρὸς τὸν βασιλέα εἰς Χεβρὼν, καὶ διέθετο αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ διαθήκην ἐν Χεβρὼν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ χρίουσι τὸν Δαυὶδ εἰς βασιλέα ἐπὶ πάντα Ἰσραήλ. Υἱὸς τριάκοντα ἐτῶν Δαυὶδ ἐν τῷ βασιλεῦσαι αὐτόν, καὶ τεσσαράκοντα ἔτη ἐβασίλευσεν. Ἑπτὰ ἔτη καὶ μῆνας ἓξ ἐβασίλευσεν ἐν Χεβρὼν ἐπὶ τὸν Ἰούδαν, καὶ τριάκοντα τρία ἔτη

ἐβασίλευσεν ἐπὶ πάντα Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδαν ἐν Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἀπῆλθε Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ εἰς Ἰερουσαλὴμ πρὸς τὸν Ἰεβουσαῖον τὸν κατοικοῦντα τὴν γῆν· καὶ ἐῤῥέθη τῷ Δαυὶδ, οὐκ εἰσελεύσῃ ὧδε, ὅτι ἀντέστησαν οἱ τυφλοὶ καὶ οἱ χωλοὶ, λέγοντες, ὅτι οὐκ εἰσελεύσεται Δαυὶδ ὧδε. Καὶ προκατελάβετο Δαυὶδ τὴν περιοχὴν Σιών· αὕτη ἡ πόλις τοῦ Δαυίδ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, πᾶς τύπτων Ἰεβουσαῖον, ἁπτέσθω ἐν παραξιφίδι καὶ τοὺς χωλοὺς καὶ τοὺς τυφλοὺς καὶ τοὺς μισοῦντας τὴν ψυχὴν Δαυίδ. Διὰ τοῦτο ἐροῦσι, τυφλοὶ καὶ χωλοὶ οὐκ εἰσελεύσονταί εἰς οἶκον Κυρίου. Καὶ ἐκάθισε Δαυὶδ ἐν τῇ περιοχῇ, καὶ ἐκλήθη αὕτη ἡ πόλις Δαυίδ· καὶ ᾠκοδόμησεν αὐτὴν πόλιν κύκλῳ ἀπὸ τῆς ἄκρας, καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ διεπορεύετο Δαυὶδ πορευόμενος καὶ μεγαλυνόμενος, καὶ Κύριος παντοκράτωρ μετ’ αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε Χειρὰμ βασιλεὺς Τύρου ἀγγέλους πρὸς Δαυὶδ, καὶ ξύλα κέδρινα, καὶ τέκτονας ξύλων, καὶ τέκτονας λίθων, καὶ ᾠκοδόμησαν οἶκον τῷ Δαυίδ. Καὶ ἔγνω Δαυὶδ, ὅτι ἡτοίμασεν αὐτὸν Κύριος εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ὅτι ἐπῄρθη ἡ βασιλεία αὐτοῦ διὰ τὸν λαὸν αὐτοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἔλαβε Δαυὶδ ἔτι γυναῖκας καὶ παλλακὰς ἐξ Ἰερουσαλὴμ, μετὰ τὸ ἐλθεῖν αὐτὸν ἐκ Χεβρών· καὶ ἐγένοντο τῷ Δαυὶδ ἔτι υἱοὶ καὶ θυγατέρες. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν γεννηθέντων αὐτῷ ἐν Ἱερουσαλήμ· Σαμμοὺς, καὶ Σωβὰβ, καὶ Νάθαν, καὶ Σαλωμὼν, καὶ Ἐβεὰρ, καὶ Ἐλισουὲ, καὶ Ναφὲκ, καὶ Ἰεφιὲς, καὶ Ἐλισαμὰ, καὶ Ἐλιδαὲ, καὶ Ἐλιφαλὰθ, Καὶ ἤκουσαν οἱ ἀλλόφυλοι ὅτι κέχρισται Δαυὶδ βασιλεὺς ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἀνέβησαν πάντες οἱ ἀλλόφυλοι ζητεῖν τὸν Δαυίδ· καὶ ἤκουσε Δαυὶδ, καὶ κατέβη εἰς τὴν περιοχήν. Καὶ οἱ ἀλλόφυλοι παραγίνονται, καὶ συνέπεσαν εἰς τὴν κοιλάδα τῶν Τιτάνων. Καὶ ἠρώτησε Δαυὶδ διὰ Κυρίου, λέγων, εἰ ἀναβῶ πρὸς τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ παραδώσεις

αὐτοὺς εἰς τὰς χεῖράς μου; καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Δαυὶδ, ἀνάβαινε, ὅτι παραδιδοὺς παραδώσω τοὺς ἀλλοφύλους εἰς τὰς χεῖράς σου. Καὶ ἦλθε Δαυὶδ ἐκ τῶν ἐπάνω διακοπῶν, καὶ ἔκοψε τοὺς ἀλλοφύλους ἐκεῖ· καὶ εἶπε Δαυὶδ, διέκοψε Κύριος τοὺς ἐχθροὺς ἀλλοφύλους ἐνώπιον ἐμοῦ, ὡς διακόπτεται ὕδατα· διὰ τοῦτο ἐκλήθη τὸ ὄνομα τοῦ τόπου ἐκείνου, Ἐπάνω διακοπῶν. Καὶ καταλιμπάνουσιν ἐκεῖ τοὺς θεοὺς αὐτῶν, καὶ ἐλάβοσαν αὐτοὺς Δαυὶδ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ’ αὐτοῦ. Καὶ προσέθεντο ἔτι ἀλλόφυλοι τοῦ ἀναβῆναι, καὶ συνέπεσαν ἐν τῇ κοιλάδι τῶν Τιτάνων. Καὶ ἐπηρώτησε Δαυὶδ διὰ Κυρίου· καὶ εἶπε Κύριος, οὐκ ἀναβήσῃ εἰς συνάντησιν αὐτῶν, ἀποστρέφου ἀπ’ αὐτῶν, καὶ παρέσῃ αὐτοῖς πλησίον τοῦ κλαυθμῶνος. Καὶ ἔσται ἐν τῷ ἀκοῦσαί σε τὴν φωνὴν τοῦ συγκλεισμοῦ ἀπὸ τοῦ ἄλσους τοῦ κλαυθμῶνος, τότε καταβήσῃ πρὸς αὐτούς, ὅτι τότε ἐξελεύσεται Κύριος ἔμπροσθέν σου κόπτειν ἐν τῷ πολέμῳ τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἐποιήσε Δαυὶδ καθὼς ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος, καὶ ἐπάταξε τοὺς ἀλλοφύλους ἀπὸ Γαβαὼν ἕως τῆς γῆς Γαζηρά.

# 6

Καὶ συνήγαγεν ἔτι Δαυὶδ πάντα νεανίαν ἐξ Ἰσραὴλ, ὡς ἑβδομήκοντα χιλιάδας. Καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ’ αὐτοῦ καὶ ἀπὸ τῶν ἀρχόντων Ἰούδα ἐν ἀναβάσει τοῦ ἀναγαγεῖν ἐκεῖθεν τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ, ἐφ’ ἣν ἐπεκλήθη τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου τῶν δυνάμεων καθημένου ἐπὶ τῶν χερουβὶν ἐπ’ αὐτῆς. Καὶ ἐπεβίβασεν τὴν κιβωτὸν Κυρίου ἐφ’ ἅμαξαν καινὴν, καὶ ᾖραν αὐτὴν ἐξ οἴκου Ἀμιναδὰβ τοῦ ἐν τῷ βουνῷ· καὶ Ὀζὰ καὶ οἱ

ἀδελφοὶ αὐτοῦ υἱοὶ Ἀμιναδὰβ ἦγαν τὴν ἅμαξαν σὺν τῇ κιβωτῷ. Καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπορεύοντο ἔμπροσθεν τῆς κιβωτοῦ. Καὶ Δαυὶδ καὶ υἱοὶ Ἰσραὴλ παίζοντες ἐνώπιον Κυρίου ἐν ὀργάνοις ἡρμοσμένοις ἐν ἰσχύϊ, καὶ ἐν ᾠδαῖς, καὶ ἐν κινύραις, καὶ ἐν νάβλαις, καὶ ἐν τυμπάνοις, καὶ ἐν κυμβάλοις, καὶ ἐν αὐλοῖς. Καὶ παραγίνονται ἕως ἅλω Ναχώρ· καὶ ἐξέτεινεν Ὀζὰ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ κατασχεῖν αὐτὴν, καὶ ἐκράτησεν αὐτὴν, ὅτι περιέσπασεν αὐτὴν ὁ μόσχος. Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ Κύριος τῷ Ὀζᾷ, καὶ ἔπαισεν αὐτὸν ἐκεῖ ὁ Θεός, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ παρὰ τὴν κιβωτὸν τοῦ Κυρίου ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἠθύμησε Δαυὶδ ὑπὲρ οὗ διέκοψε Κύριος διακοπὴν ἐν τῷ Ὀζᾷ, καὶ ἐκλήθη ὁ τόπος ἐκεῖνος, διακοπὴ Ὀζᾶ, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἐφοβήθη Δαυὶδ τὸν Κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, πῶς εἰσελεύσεται πρὸς μὲ ἡ κιβωτὸς Κυρίου; Καὶ οὐκ ἐβούλετο Δαυὶδ τοῦ ἐκκλῖναι πρὸς αὐτὸν τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου εἰς τὴν πόλιν Δαυίδ· καὶ ἀπέκλινεν αὐτὴν Δαυὶδ εἰς οἶκον Ἀβεδδαρὰ τοῦ Γεθαίου. Καὶ ἐκάθισεν ἡ κιβωτὸς τοῦ Κυρίου εἰς οἶκον Ἀβεδδαρὰ τοῦ Γεθαίου μῆνας τρεῖς· καὶ εὐλόγησε Κύριος ὅλον τὸν οἶκον Ἀβεδδαρὰ, καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ βασιλεῖ Δαυὶδ, λέγοντες, εὐλόγησε Κύριος τὸν οἶκον Ἀβεδδαρὰ, καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, ἕνεκα τῆς κιβωτοῦ τοῦ Θεοῦ· καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ, καὶ ἀνήγαγε τὴν κιβωτὸν τοῦ Κυρίου ἐκ τοῦ οἴκου Ἀβεδδαρὰ εἰς τὴν πόλιν Δαυὶδ ἐν εὐφροσύνῃ. Καὶ ἦσαν μετ’ αὐτοῦ αἴροντες τὴν κιβωτὸν ἑπτὰ χοροὶ, καὶ θύμα μόσχος καὶ ἄρνες. Καὶ Δαυὶδ ἀνεκρούετο ἐν ὀργάνοις ἡρμοσμένοις ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ὁ Δαυὶδ ἐνδεδυκὼς στολὴν ἔξαλλον. Καὶ Δαυὶδ καὶ πᾶς ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἀνήγαγον τὴν κιβωτὸν Κυρίου μετὰ κραυγῆς καὶ μετὰ φωνῆς σάλπιγγος. Καὶ ἐγένετο τῆς κιβωτοῦ παραγινομένης ἕως πόλεως Δαυίδ, καὶ Μελχὸλ ἡ θυγάτηρ Σαοὺλ διέκυπτε διὰ τῆς

θυρίδος, καὶ εἶδε τὸν βασιλέα Δαυὶδ ὀρχούμενον, καὶ ἀνακρουόμενον ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐξουδένωσεν αὐτὸν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς. Καὶ φέρουσι τὴν κιβωτὸν τοῦ Κυρίου, καὶ ἀνέθηκαν αὐτὴν εἰς τὸν τόπον αὐτῆς εἰς μέσον τῆς σκηνῆς, ἧς ἔπηξεν αὐτῇ Δαυὶδ· καὶ ἀνήνεγκε Δαυιδ ὁλοκαυτώματα ἐνώπιον Κυρίου, εἰρηνικάς. Καὶ συνετέλεσε Δαυὶδ συναναφέρων τὰς ὁλοκαυτώσεις καὶ τὰς εἰρηνικὰς, καὶ εὐλόγησε τὸν λαὸν ἐν ὀνόματι Κυρίου τῶν δυνάμεων. Καὶ διεμέρισε παντὶ τῷ λαῷ εἰς πᾶσαν τὴν δύναμιν τοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ Δὰν ἕως Βηρσαβεὲ, καὶ ἀπὸ ἀνδρὸς ἕως γυναικὸς, ἑκάστῳ κολλυρίδα ἄρτου, καὶ ἐσχαρίτην, καὶ λάγανον ἀπὸ τηγάνου· καὶ ἀπῆλθε πᾶς ὁ λαὸς ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ ἐπέστρεψε Δαυὶδ εὐλογῆσαι τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ ἐξῆλθε Μελχὸλ ἡ θυγάτηρ Σαοὺλ εἰς ἀπάντησιν Δαυὶδ, καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν, καὶ εἶπε, τί δεδόξασται σήμερον ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, ὃς ἀπεκαλύφθη σήμερον ἐν ὀφθαλμοῖς παιδισκῶν τῶν δούλων ἑαυτοῦ, καθὼς ἀποκαλύπτεται ἀποκαλυφθεὶς εἷς τῶν ὀρχουμένων; Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Μελχόλ, ἐνώπιον Κυρίου ὀρχήσομαι· εὐλογητὸς Κύριος ὃς ἐξελέξατό με ὑπὲρ τὸν πατέρα σου καὶ ὑπὲρ πάντα τὸν οἶκον αὐτοῦ, του καταστῆσαί με εἰς ἡγούμενον ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ· καὶ παίξομαι καὶ ὀρχήσομαι ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἀποκαλυφθήσομαι ἔτι οὕτως, καὶ ἔσομαι ἀχρεῖος ἐν ὀφθαλμοῖς σου, καὶ μετὰ τῶν παιδισκῶν, ὧν εἶπάς με μὴ δοξασθῆναι. Καὶ τῇ Μελχὸλ θυγατρὶ Σαοὺλ οὐκ ἐγένετο παιδίον ἕως τῆς ἡμέρας τοῦ ἀποθανεῖν αὐτήν.

# 7

Καὶ ἐγένετο ὅτε ἐκάθισεν ὁ βασιλεὺς ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ Κύριος κατεκληρονόμησεν αὐτὸν κύκλῳ ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ τῶν κύκλῳ, καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Νάθαν τὸν προφήτην, ἰδοὺ δὴ ἐγὼ κατοικῶ ἐν οἴκῳ κεδρίνῳ, καὶ ἡ κιβωτὸς τοῦ Θεοῦ κάθηται ἐν μέσῳ τῆς σκηνῆς. Καὶ εἶπε Νάθαν πρὸς τὸν βασιλέα, πάντα ὅσα ἂν ἐν τῇ καρδίᾳ σου, βάδιζε καὶ ποίει, ὅτι Κύριος μετὰ σοῦ. Καὶ ἐγένετο τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ, καὶ ἐγένετο ῥῆμα Κυρίου πρὸς Νάθαν, λέγων, πορεύου, καὶ εἶπον πρὸς τὸν δοῦλόν μου Δαυὶδ, τάδε λέγει Κύριος, οὐ σὺ οἰκοδομήσεις μοι οἶκον τοῦ κατοικῆσαί με. Ὅτι οὐ κατῴκηκα ἐν οἴκῳ ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἀνήγαγον τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ ἤμην ἐυπεριπατῶν ἐν καταλύματι καὶ ἐν σκηνῇ, ἐν πᾶσιν οἷς διῆλθον ἐν παντὶ Ἰσραήλ· εἰ λαλῶν ἐλάλησα πρὸς μίαν φυλὴν τοῦ Ἰσραὴλ, ᾧ ἐνετειλάμην ποιμαίνειν τὸν λαόν μου Ἰσραὴλ, λέγων, ἱνατί οὐκ ᾠκοδομήκατέ μοι οἶκον κέδρινον; Καὶ νῦν τάδε ἐρεῖς τῷ δούλῳ μου Δαυὶδ, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἔλαβόν σε ἐκ τῆς μάνδρας τῶν προβάτων, τοῦ εἶναί σε εἰς ἡγούμενον ἐπὶ τὸν λαόν μου ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἤμην μετὰ σοῦ ἐν πᾶσιν οἷς ἐπορεύου, καὶ ἐξωλόθρευσα πάντας τοὺς ἐχθρούς σου ἀπὸ προσώπου σου, καὶ ἐποίησά σε ὀνομαστὸν κατὰ τὸ ὄνομα τῶν μεγάλων τῶν ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ θήσομαι τόπον τῷ λαῷ μου τῷ Ἰσραὴλ, καὶ καταφυτεύσω αὐτὸν, καὶ κατασκηνώσει καθ’ ἑαυτὸν, καὶ οὐ μεριμνήσει οὐκέτι· καὶ οὐ προσθήσει υἱὸς ἀδικίας τοῦ ταπεινῶσαι αὐτὸν, καθὼς ἀπ’ ἀρχῆς, ἀπὸ τῶν ἡμερῶν ὧν ἔταξα κριτὰς ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ· καὶ ἀναπαύσω σε ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν σου· καὶ ἀπαγγελεῖ σοι Κύριος, ὅτι οἶκον οἰκοδομήσεις αὐτῷ. Καὶ ἔσται ἐὰν πληρωθῶσιν αἱ ἡμέραι σου, καὶ κοιμηθήσῃ μετὰ τῶν πατέρων σου, καὶ ἀναστήσω τὸ σπέρμα σου μετὰ σὲ, ὃς ἔσται ἐκ τῆς κοιλίας σου, καὶ

ἑτοιμάσω τὴν βασιλείαν αὐτοῦ. Αὐτὸς οἰκοδομήσει μοι οἶκον τῷ ὀνόματί μου, καὶ ἀνορθώσω τὸν θρόνον αὐτοῦ ἕως εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐγὼ ἔσομαι αὐτῷ εἰς πατέρα, καὶ αὐτὸς ἔσται μοι εἰς υἱόν· καὶ ἐὰν ἔλθῃ ἡ ἀδικία αὐτοῦ, καὶ ἐλέγξω αὐτὸν ἐν ῥάβδῳ ἀνδρῶν, καὶ ἐν ἁφαῖς υἱῶν ἀνθρώπων· Τὸ δὲ ἔλεός μου οὐκ ἀποστήσω ἀπ᾽ αὐτοῦ, καθὼς ἀπέστησα ἀφ᾽ ὧν ἀπέστησα ἐκ προσώπου μου. Καὶ πιστωθήσεται ὁ οἶκος αὐτοῦ, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ ἕως αἰῶνος ἐνώπιόν μου· καὶ ὁ θρόνος αὐτοῦ ἔσται ἀνωρθωμένος εἰς τον αἰῶνα. Κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, καὶ κατὰ πᾶσαν τὴν ὅρασιν ταύτην, οὕτως ἐλάλησε Νάθαν πρὸς Δαυίδ. Καὶ εἰσῆλθεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ, καὶ ἐνάθισεν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ εἶπε, τίς εἰμι ἐγὼ, Κύριέ μου Κύριε, καὶ τίς ὁ οἶκός μου, ὅτι ἠγάπησάς με ἕως τούτων; Καὶ κατεσμικρύνθην μικρὸν ἐνώπίον σου, Κύριέ μου Κύριε, καὶ ἐλάλησας ὑπὲρ τοῦ οἴκου τοῦ δούλου σου εἰς μακράν· οὗτος δὲ ὁ νόμος τοῦ ἀνθρώπου, Κύριέ μου Κύριε; Καὶ τί προσθήσει Δαυὶδ ἔτι τοῦ λαλῆσαι πρὸς σέ; καὶ νῦν σὺ οἶδας τὸν δοῦλόν σου, Κύριέ μου Κύριε, καὶ διὰ τὸν δοῦλόν σου πεποίηκας, καὶ κατὰ τὴν καρδίαν σου ἐποίησας πᾶσαν τὴν μεγαλωσύνην ταύτην, γνωρίσαι τῷ δούλῳ σου, ἕνεκεν τοῦ μεγαλύναι σε Κύριέ μου· ὅτι οὐκ ἔστιν ὡς σὺ, καὶ οὐκ ἔστι Θεὸς πλὴν σοῦ ἐν πᾶσιν οἷς ἠκούσαμεν ἐν τοῖς ὠσὶν ἡμῶν. Καὶ τίς ὡς ὁ λαός σου Ἰσραὴλ ἔθνος ἄλλο ἐν τῇ γῇ; ὡς ὡδήγησεν αὐτὸν ὁ Θεὸς τοῦ λυτρώσασθαι αὐτῷ λαὸν, τοῦ θέσθαι σε ὄνομα, τοῦ ποιῆσαι μεγαλωσύνην καὶ ἐπιφάνειαν, τοῦ ἐκβαλεῖν σε ἐκ προσώπου τοῦ λαοῦ σου, οὓς ἐλυτρώσω σεαυτῷ ἐξ Αἰγύπτου, ἔθνη καὶ σκηνώματα; Καὶ ἡτοίμασας σεαυτῷ τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ εἰς λαὸν ἕως αἰῶνος, καὶ σὺ Κύριε ἐγένου αὐτοῖς εἰς Θεόν. Καὶ νῦν, κύριέ μου, ῥῆμα ὃ ἐλάλησας περὶ τοῦ δούλου σου καὶ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, πίστωσον ἕως τοῦ αἰῶνος, Κύριε παντοκράτωρ θεὲ τοῦ

Ἰσραήλ· καὶ νῦν καθὼς ἐλάλησας, Μεγαλυνθείη τὸ ὄνομά σου ἕως αἰῶνος. Κύριε παντοκράτωρ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἀπεκάλυψας τὸ ὠτίον τοῦ δούλου σου, λέγων, οἶκον οἰκοδομήσω σοι· διὰ τοῦτο εὗρεν ὁ δοῦλός σου τὴν καρδίαν ἑαυτοῦ τοῦ προσεύξασθαι πρὸς σὲ τὴν προσευχὴν ταύτην. Καὶ νῦν, Κύριέ μου Κύριε, σὺ εἶ Θεὸς, καὶ οἱ λόγοι σου ἔσονται ἀληθιναὶ, καὶ ἐλάλησας ὑπὲρ τοῦ δούλου σου τὰ ἀγαθὰ ταῦτα. Καὶ νῦν ἄρξαι καὶ εὐλόγησον τὸν οἶκον τοῦ δούλου σου, τοῦ εἶναι εἰς τὸν αἰῶνα ἐνώπιόν σου· ὅτι σὺ Κύριέ μου Κύριε ἐλάλησας, καὶ ἀπὸ τῆς εὐλογίας σου εὐλογηθήσεται ὁ οἶκος τοῦ δούλου σου τοῦ εἶναι εἰς τὸν αἰῶνα.

# 8

Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα, καὶ ἐπάταξε Δαυὶδ τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ ἐτροπώσατο αὐτούς· καὶ ἔλαβε Δαυὶδ τὴν ἀφωρισμένην ἐκ χειρὸς τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἐπάταξε Δαυὶδ τὴν Μωὰβ, καὶ διεμέτρησεν αὐτοὺς ἐν σχοινίοις, κοιμίσας αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἐγένετο τὰ δύο σχοινίσματα τοῦ θανατῶσαι, καὶ τὰ δύο σχοινίσματα ἐζώγρησε· καὶ ἐγένετο Μωὰβ τῷ Δαυὶδ εἰς δούλους φέροντας ξένια. Καὶ ἐπάταξε Δαυὶδ τὸν Ἀδραάζὰρ υἱὸν Ῥαὰβ, βασιλέα Σουβὰ, πορευομένου αὐτοῦ ἐπιστῆσαι τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ποταμὸν Εὐφράτην. Καὶ προκατελάβετο Δαυὶδ τῶν αὐτοῦ χίλια ἅρματα, καὶ ἑπτὰ χιλιάδας ἱππέων, καὶ εἴκοσι χιλιάδας ἀνδρῶν πεζῶν· καὶ παρέλυσε Δαυὶδ πάντα τὰ ἅρματα, καὶ ὑπελείπετο ἑαυτῷ ἑκατὸν ἅρματα. Καὶ παραγίνεται Συρία Δαμασκοῦ βοηθῆσαι τῷ Ἀδραάζὰρ βασιλεῖ Σουβὰ, καὶ ἐπάταξε Δαυὶδ ἐν τῷ Σύρῳ εἴκοσι δύο χιλιάδας ἀνδρῶν. Καὶ ἔθετο Δαυὶδ φρουρὰν ἐν Συρίᾳ τῇ κατὰ Δαμασκὸν, καὶ

ἐγένετο ὁ Σύρος τῷ Δαυὶδ εἰς δούλους φέροντας ξένια· καὶ ἔσωσε Κύριος τὸν Δαυὶδ ἐν πᾶσιν οἷς ἐπορεύετο. Καὶ ἔλαβε Δαυὶδ τοὺς χλιδῶνας τοὺς χρυσοῦς, οἳ ἦσαν ἐπὶ τῶν παίδων τῶν Ἀδραάζαρ βασιλέως Σουβά, καὶ ἤνεγκεν αὐτὰ εἰς Ἰερουσαλήμ· καὶ ἔλαβεν αὐτὰ Σουσακὶμ βασιλεὺς Αἰγύπτου, ἐν τῷ ἀναβῆναι αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐν ἡμέραις Ῥοβοὰμ υἱοῦ Σαλωμῶντος. Καὶ ἐκ τῆς Μετεβὰκ καὶ ἐκ τῶν ἐκλεκτῶν πόλεων τοῦ Ἀδραάζαρ ἔλαβεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ χαλκὸν πολὺν σφόδρα· ἐν αὐτῷ ἐποίησε Σαλωμὼν τὴν θάλασσαν τὴν χαλκῆν, καὶ τοὺς στύλους, καὶ τοὺς λουτῆρας, καὶ πάντα τὰ σκεύη. Καὶ ἤκουσε Θοοὺ ὁ βασιλεὺς Ἡμὰθ, ὅτι ἐπάταξε Δαυὶδ πᾶσαν τὴν δύναμιν Ἀδραάζαρ, καὶ ἀπέστειλε Θοοὺ Ἰεδδουρὰμ τὸν υἱὸν αὐτοῦ πρὸς βασιλέα Δαυὶδ ἐρωτῆσαι αὐτὸν τὰ εἰς εἰρήνην, καὶ εὐλογῆσαι αὐτὸν ὑπὲρ οὗ ἐπολέμησε τὸν Ἀδραάζαρ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν, ὅτι ἀντικείμενος ἦν τῷ Ἀδραάζάρ· καὶ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ ἦσαν σκεύη ἀργυρᾶ, καὶ σκεύη χρυσᾶ, καὶ σκεύη χαλκᾶ. Καὶ ταῦτα ἡγίασεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ τῷ Κυρίῳ, μετὰ τοῦ ἀργυρίου καὶ μετὰ τοῦ χρυσίου οὗ ἡγίασεν ἐκ πασῶν τῶν πόλεων ὧν κατεδυνάστευσεν, ἐκ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ ἐκ τῆς Μωὰβ, καὶ ἐκ τῶν υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐκ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ἐξ Ἀμαλὴκ, καὶ ἐκ τῶν σκύλων Ἀδραάζαρ υἱοῦ Ῥαὰβ βασιλέως Σουβά. Καὶ ἐποίησε Δαυὶδ ὄνομα· καὶ ἐν τῷ ἀνακάμπτειν αὐτὸν ἐπάταξε τὴν Ἰδουμαίαν ἐν Γεβελὲμ εἰς ὀκτωκαίδεκα χιλιάδας. Καὶ ἔθετο ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ φρουρὰν, ἐν πάσῃ τῇ Ἰδουμαίᾳ· καὶ ἐγένοντο πάντες οἱ Ἰδουμαῖοι δοῦλοι τῷ βασιλεῖ· καὶ ἔσωσε Κύριος τὸν Δαυὶδ ἐν πᾶσιν οἷς ἐπορεύετο. Καὶ ἐβασίλευσε Δαυὶδ ἐπὶ πάντα Ἰσραήλ· καὶ ἦν Δαυὶδ ποιῶν κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ. Καὶ Ἰωὰβ υἱὸς Σαρουίας ἐπὶ τῆς στρατιᾶς· καὶ Ἰωσαφὰτ υἱὸς Ἀχιλοὺδ ἐπὶ τῶν ὑπομνημάτων· καὶ Σαδὼκ υἱὸς Ἀχιτὼβ καὶ Ἀχιμέλεχ υἱὸς Ἀβιάθαρ

ἱερεῖς· καὶ Σασὰ ὁ γραμματεύς· καὶ Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ σύμβουλος· καὶ ὁ Χελεθὶ, καὶ ὁ Φελετὶ, καὶ οἱ υἱοὶ Δαυὶδ αὐλάρχαι ἦσαν.

# 9

Καὶ εἶπε Δαυὶδ, εἰ ἔστιν ἔτι ὑπολελειμμένος ἐν τῷ οἴκῳ Σαοὺλ, καὶ ποιήσω μετ᾽ αὐτοῦ ἔλεος ἕνεκεν Ἰωνάθαν; Καὶ ἐκ τοῦ οἴκου Σαοὺλ ἦν παῖς, καὶ ὄνομα αὐτῷ Σιβά· καὶ καλοῦσιν αὐτὸν πρὸς Δαυίδ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλεὺς, σὺ εἶ Σιβά; καὶ εἶπεν, ἐγὼ δοῦλος σός. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, εἰ ὑπολέλειπται ἐκ τοῦ οἴκου Σαοὺλ ἔτι ἀνὴρ, καὶ ποιήσω μετ᾽ αὐτοῦ ἔλεος Θεοῦ; καὶ εἶπε Σιβὰ πρὸς τὸν βασιλέα, ἔτι ἐστὶν υἱὸς τῷ Ἰωνάθαν πεπληγὼς τοὺς πόδας. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ποῦ οὗτος; καὶ εἶπε Σιβὰ πρὸς τὸν βασιλέα, ἰδοὺ ἐν οἴκῳ Μαχεὶρ υἱοῦ Ἀμιὴλ ἐκ τῆς Λοδάβαρ. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ, καὶ ἔλαβεν αὐτὸν ἐκ τοῦ οἴκου Μαχὶρ υἱοῦ Ἀμιὴλ ἐκ τῆς Λαδάβαρ. Καὶ παραγίνεται Μεμφιβοσθὲ υἱὸς Ἰωνάθαν υἱοῦ Σαοὺλ πρὸς τὸν βασιλέα Δαυίδ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ· καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυίδ, Μεμφιβοσθέ; καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ὁ δοῦλός σου. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυίδ, μὴ φοβοῦ, ὅτι ποιῶν ποιήσω μετὰ σοῦ ἔλεος διὰ Ἰωνάθαν τὸν πατέρα σου, καὶ ἀποκαταστήσω σοι πάντα ἀγρὸν Σαοὺλ πατρὸς τοῦ πατρός σου, καὶ σὺ φαγῃ ἄρτον ἐπὶ τῆς τραπέζης μου διαπαντός. Καὶ προσεκύνησε Μεμφιβοσθὲ, καὶ εἶπε, τίς εἰμι ὁ δοῦλός σου, ὅτι ἐπέβλεψας ἐπὶ τὸν κύνα τὸν τεθνηκότα τὸν ὅμοιον ἐμοί; Καὶ ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς Σιβὰ τὸ παιδάριον Σαοὺλ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, πάντα ὅσα ἐστὶ τῷ Σαοὺλ καὶ ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ δέδωκα τῷ υἱῷ τοῦ κυρίου σου. Καὶ ἐργᾷ αὐτῷ τὴν γῆν σὺ, καὶ οἱ υἱοί σου,

καὶ οἱ δοῦλοί σου, καὶ εἰσοίσεις τῷ υἱῷ τοῦ κυρίου σου ἄρτους, καὶ ἔδεται ἄρτους· καὶ Μεμφιβοσθὲ υἱὸς τοῦ κυρίου σου φάγεται διαπαντὸς ἄρτον ἐπὶ τῆς τραπέζης μου· καὶ τῷ Σιβᾷ ἦσαν πεντεκαίδεκα υἱοὶ, καὶ εἴκοσι δοῦλοι. Καὶ εἶπε Σιβὰ πρὸς τὸν βασιλέα, κατὰ πάντα ὅσα ἐντέταλται ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς τῷ δούλῳ αὐτοῦ, οὕτως ποιήσει ὁ δοῦλός σου· καὶ Μεμφιβοσθὲ ἤσθιεν ἐπὶ τῆς τραπέζης Δαυὶδ καθὼς εἷς τῶν υἱῶν αὐτοῦ τοῦ βασιλέως. Καὶ τῷ Μεμφιβοσθὲ υἱὸς μικρὸς ἦν, καὶ ὄνομα αὐτῷ Μιχά· καὶ πᾶσα ἡ κατοίκησις τοῦ οἴκου Σιβὰ δοῦλοι τοῦ Μεμφιβοσθέ. Καὶ Μεμφιβοσθὲ κατῴκει ἐν Ἰερουσαλὴμ, ὅτι ἐπὶ τῆς τραπέζης τοῦ βασιλέως αὐτὸς διαπαντὸς ἤσθιε, καὶ αὐτὸς ἦν χωλὸς ἀμφοτέροις τοῖς ποσὶν αὐτοῦ.

# 10

Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα καὶ ἀπέθανε βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐβασίλευσεν Ἀννὼν υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ, ποιήσω ἔλεος μετὰ Ἀννὼν υἱοῦ Ναὰς, ὃν τρόπον ἐποίησεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ μετ’ ἐμοῦ ἔλεος. Καὶ ἀπέστειλεν Δαυὶδ παρακαλέσαι αὐτὸν ἐν χειρὶ τῶν δούλων αὐτοῦ περὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ παρεγένοντο οἱ παῖδες Δαυὶδ εἰς τὴν γῆν υἱῶν Ἀμμών. Καὶ εἶπον οἱ ἄρχοντες υἱῶν Ἀμμὼν πρὸς Ἀννῶν τὸν κύριον αὐτῶν, μὴ παρὰ τὸ δοξάζειν Δαυὶδ τὸν πατέρα σου ἐνώπιόν σου, ὅτι ἀπέστειλέ σοι παρακαλοῦντας; ἀλλ’ ὅπως οὐχὶ ἐρευνήσωσι τὴν πόλιν καὶ κατασκοπήσωσιν αὐτὴν καὶ τοῦ κατασκέψασθαι αὐτὴν ἀπέστειλε Δαυὶδ τοὺς παῖδας αὐτοῦ πρὸς σέ; Καὶ ἔλαβεν Ἀννὼν τοὺς παῖδας Δαυὶδ, καὶ ἐξύρησε τοὺς πώγωνας αὐτῶν, καὶ ἀπέκοψε τοὺς μανδύας αὐτῶν ἐν τῷ ἡμίσει

ἕως τῶν ἰσχίων αὐτῶν, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτούς. Καὶ ἀπήγγειλαν τῷ Δαυὶδ ὑπὲρ τῶν ἀνδρῶν, καὶ ἀπέστειλεν εἰς ἀπαντὴν αὐτῶν, ὅτι ἦσαν οἱ ἄνδρες ἠτιμασμένοι σφόδρα· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, καθίσατε ἐν Ἰεριχὼ ἕως τοῦ ἀνατεῖλαι τοὺς πώγωνας ὑμῶν, καὶ ἐπιστραφήσεσθε. Καὶ εἶδον οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν ὅτι κατῃσχύνθησαν ὁ λαὸς Δαυίδ· καὶ ἀπέστειλαν οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν, καὶ ἐμισθώσαντο τὴν Συρίαν Βαιθραὰμ, καὶ τὴν Συρίαν Σουβὰ, καὶ Ῥοὼβ, εἴκοσι χιλιάδας πεζῶν, καὶ τὸν βασιλέα Ἀμαλὴκ χιλίους ἄνδρας, καὶ Ἰστὼβ δώδεκα χιλιάδας ἀνδρῶν. Καὶ ἤκουσε Δαυὶδ, καὶ ἀπέστειλε τὸν Ἰωὰβ καὶ πᾶσαν τὴν δύναμιν τοὺς δυνατούς. Καὶ ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν καὶ παρετάξαντο πόλεμον παρὰ τῇ θύρᾳ τῆς πύλης, Συρίας Σουβὰ καὶ Ῥοὼβ καὶ Ἰστὼβ καὶ Ἀμαλὴκ μόνοι ἐν ἀγρῷ. Καὶ εἶδεν Ἰωὰβ ὅτι ἐγενήθη πρὸς αὐτὸν ἀντιπρόσωπον τοῦ πολέμου ἐκ τοῦ κατὰ πρόσωπον ἐξεναντίας καὶ ἐκ τοῦ ὄπισθεν, καὶ ἐπελέξατο ἐκ πάντων τῶν νεανιῶν Ἰσραὴλ, καὶ παρετάξαντο ἐξ ἐναντίας Συρίας. Καὶ τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ ἔδωκεν ἐν χειρὶ Ἀβεσσὰ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ παρετάξαντο ἐξεναντίας υἱῶν Ἀμμών. Καὶ εἶπεν, εὰν κραταιωθῇ Συρία ὑπὲρ ἐμὲ, καὶ ἔσεσθέ μοι εἰς σωτηρίαν· καὶ ἐὰν κραταιωθῶσιν υἱοὶ Ἀμμὼν ὑπὲρ σὲ, καὶ ἐσόμεθα τοῦ σῶσαί σε. Ἀνδρίζου καὶ κραταιωθῶμεν ὑπὲρ τοῦ λαοῦ ἡμῶν καὶ περὶ τῶν πόλεων τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ Κύριος ποιήσει τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. Καὶ προσῆλθεν Ἰωὰβ καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ μετ’ αὐτοῦ εἰς πόλεμον πρὸς Συρίαν, καὶ ἔφυγαν ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἀμμὼν εἶδαν ὅτι ἔφυγε Συρία, καὶ ἔφυγαν ἀπὸ προσώπου Ἀβεσσὰ, καὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν πόλιν· καὶ ἀνέστρεψεν Ἰωὰβ ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ παρεγένετο εἰς Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἶδε Συρία ὅτι ἔπτάισεν ἔμπροσθεν Ἰσραὴλ, καὶ συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτό. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀδραάζὰρ, καὶ συνήγαγε τὴν Συρίαν τὴν ἐκ

τοῦ πέραν τοῦ ποταμοῦ Χαλαμὰκ, καὶ παρεγένοντο Αἰλάμ· καὶ Σωβὰκ ἄρχων τῆς δυνάμεως Ἀδρααζὰρ ἔμπροσθεν αὐτῶν. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Δαυὶδ, καὶ συνήγαγε τὸν πάντα Ἰσραὴλ, καὶ διέβη τὸν Ἰορδάνην, καὶ παρεγένετο εἰς Αἰλάμ· καὶ παρετάξατο Συρία ἀπέναντι Δαυὶδ, καὶ ἐπολέμησαν μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἔφυγε Συρία ἀπὸ πρόσωπου Ἰσραήλ· καὶ ἀνεῖλε Δαυὶδ ἐκ τῆς Συρίας ἑπτακόσια ἅρματα, καὶ τεσσαράκοντα χιλιάδας ἱππέων, καὶ τὸν Σωβὰκ τὸν ἄρχοντα τῆς δυνάμεως αὐτοῦ ἐπάταξε, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ. Καὶ εἶδαν πάντες οἱ βασιλεῖς οἱ δοῦλοι Ἀδρααζὰρ ὅτι ἔπταισαν ἔμπροσθεν Ἰσραὴλ, καὶ ηὐτομόλησαν μετὰ Ἰσραὴλ, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς· καὶ ἐφοβήθη Συρία τοῦ σῶσαι ἔτι τοὺς υἱοὺς Ἀμμών.

# 11

Καὶ ἐγένετο, ἐπιστρέψαντος τοῦ ἐνιαυτοῦ εἰς τὸν καιρὸν τῆς ἐξοδίας τῶν βασιλέων, καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ τὸν Ἰωὰβ, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ τὸν πάντα Ἰσραὴλ, καὶ διέφθειραν τοὺς υἱοὺς Ἀμμών· καὶ διεκάθισαν ἐπὶ Ῥαββάθ· καὶ Δαυὶδ ἐκάθισεν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐγένετο πρὸς ἑσπέραν, καὶ ἀνέστη Δαυὶδ ἀπὸ τῆς κοίτης αὐτοῦ, καὶ περιεπάτει ἐπὶ τοῦ δώματος τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ εἶδε γυναῖκα λουομένην ἀπὸ τοῦ δώματος, καὶ ἡ γυνὴ καλὴ τῷ εἴδει σφόδρα. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ, καὶ ἐζήτησε τὴν γυναῖκα, καὶ εἶπεν, οὐχὶ αὕτη Βηρσαβεὲ θυγάτηρ Ἐλιὰβ γυνὴ Οὐρίου τοῦ Χετταίου; Καὶ ἀπέστειλεν Δαυὶδ ἀγγέλους, καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὴν, καὶ ἐκοιμήθη μετ᾽ αὐτῆς· καὶ αὕτη ἁγιαζομένη ἀπὸ ἀκαθαρσίας αὐτῆς, καὶ ἀπέστρεψεν εἰς τὸν οἶκον

αὐτῆς. Καὶ ἐν γαστρὶ ἔλαβεν ἡ γυνή· καὶ ἀποστείλασα ἀπήγγειλε τῷ Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, ἐγώ εἰμι ἐν γαστρὶ ἔχω. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ πρὸς Ἰωὰβ, λέγων, ἀπόστειλον πρὸς μὲ τὸν Οὐρίαν τὸν Χετταῖον· καὶ ἀπέστειλεν Ἰωὰβ τὸν Οὐρίαν πρὸς Δαυίδ. Καὶ παραγίνεται Οὐρίας καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐπηρώτησε Δαυὶδ εἰς εἰρήνην Ἰωὰβ, καὶ εἰς εἰρήνην τοῦ λαοῦ, καὶ εἰς εἰρήνην τοῦ πολέμου. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῷ Οὐρίᾳ, Κατάβηθι εἰς τὸν οἶκόν σου, καὶ νίψαι τοὺς πόδας σου· καὶ ἐξῆλθεν Οὐρίας ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἐξῆλθεν ὀπίσω αὐτοῦ ἄρσις τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐκοιμήθη Οὐρίας παρὰ τῇ θύρᾳ τοῦ βασιλέως μετὰ τῶν δούλων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ οὐ κατέβη εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ ἀνήγγειλαν τῷ Δαυὶδ, λέγοντες, ὅτι Οὐ κατέβη Οὐρίας εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Οὐρίαν, οὐχὶ ἐξ ὁδοῦ σὺ ἔρχῃ; τί ὅτι οὐ κατέβης εἰς τὸν οἶκόν σου; Καὶ εἶπεν Οὐρίας πρὸς Δαυὶδ, ἡ κιβωτὸς, καὶ Ἰσραὴλ, καὶ Ἰούδας κατοικοῦσιν ἐν σκηναῖς, καὶ ὁ κύριός μου Ἰωὰβ, καὶ οἱ δοῦλοι τοῦ κυρίου μου ἐπὶ πρόσωπον τοῦ ἀγροῦ παρεμβάλλουσι, καὶ ἐγὼ εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν μου τοῦ φαγεῖν, καὶ πιεῖν, καὶ κοιμηθῆναι μετὰ τῆς γυναικός μου; πῶς; ζῇ ἡ ψυχή σου, εἰ ποιήσω τὸ ῥῆμα τοῦτο. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Οὐρίαν, κάθισον ἐνταῦθα καί γε σήμερον, καὶ αὔριον ἐξαποστελῶ σε· καὶ ἐκάθισεν Οὐρίας ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καὶ τῇ ἐπαύριον. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν Δαυὶδ, καὶ ἔφαγεν ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ ἔπιε, καὶ ἐμέθυσεν αὐτὸν, καὶ ἐξῆλθεν ἑσπέρας τοῦ κοιμηθῆναι ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ μετὰ τῶν δούλων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ οὐ κατέβη. Καὶ ἐγένετο πρωΐ, καὶ ἔγραψε Δαυὶδ βιβλίον πρὸς Ἰωὰβ, καὶ ἀπέστειλεν ἐν χειρὶ Οὐρίου. Καὶ ἔγραψεν ἐν βιβλίῳ, λέγων, εἰσάγαγε τὸν Οὐρίαν ἐξεναντίας τοῦ πολέμου τοῦ κραταιοῦ, καὶ ἀποστραφήσεσθε ἀπὸ ὄπισθεν αὐτοῦ, καὶ πληγήσεται καὶ

ἀποθανεῖται. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ φυλάσσειν Ἰωὰβ ἐπὶ τὴν πόλιν, καὶ ἔθηκε τὸν Οὐρίαν εἰς τὸν τόπον οὗ ᾔδει ὅτι ἄνδρες δυνάμεως ἐκεῖ. Καὶ ἐξῆλθον οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως, καὶ ἐπολέμουν μετὰ Ἰωάβ· καὶ ἔπεσαν ἐκ τοῦ λαοῦ ἐκ τῶν δούλων Δαυὶδ, καὶ ἀπέθανε καί γε Οὐρίας ὁ Χετταῖος. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰωὰβ, καὶ ἀπήγγειλε τῷ Δαυὶδ πάντας τοὺς λόγους τοῦ πολέμου λαλῆσαι πρὸς τὸν βασιλέα· καὶ ἐνετείλατο τῷ ἀγγέλῳ, λέγων, ἐν τῷ συντελέσαι πάντας τοὺς λόγους τοῦ πολέμου λαλῆσαι πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἔσται ἐὰν ἀναβῇ ὁ θυμὸς τοῦ βασιλέως, καὶ εἴπῃ σοι, τί ὅτι ἠγγίσατε πρὸς τὴν πόλιν πολεμῆσαι; οὐκ ᾔδειτε ὅτι τοξεύσουσιν ἀπάνωθεν τοῦ τείχους; Τίς ἐπάταξε τὸν Ἀβιμέλεχ υἱὸν Ἰεροβάαλ υἱοῦ Νήρ; οὐχὶ γυνὴ ἔῤῥιψε κλάσμα μύλου ἐπ’ αὐτὸν ἀπὸ ἄνωθεν τοῦ τείχους, καὶ ἀπέθανεν ἐν Θαμασί; ἱνατί προσηγάγετε πρὸς τὸ τεῖχος; καὶ ἐρεῖς, καί γε ὁ δοῦλός σου Οὐρίας ὁ Χετταῖος ἀπέθανε. Καὶ ἐπορεύθη ὁ ἄγγελος Ἰωὰβ πρὸς τὸν βασιλέα εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ παρεγένετο καὶ ἀπήγγειλε τῷ Δαυὶδ πάντα ὅσα ἀπήγγειλεν αὐτῷ Ἰωὰβ, πάντα τὰ ῥήματα τοῦ πολέμου· καὶ ἐθυμώθη Δαυὶδ πρὸς Ἰωὰβ, καὶ εἶπε πρὸς τὸν ἄγγελον, ἱνατί προσηγάγετε πρὸς τὴν πόλιν τοῦ πολεμῆσαι; οὐκ ᾔδειτε ὅτι πληγήσεσθε ἀπὸ τοῦ τείχους; τίς ἐπάταξε τὸν Ἀβιμέλεχ υἱὸν Ἰεροβάαλ; οὐχὶ γυνὴ ἔῤῥιψεν ἐπ’ αὐτὸν κλάσμα μύλου ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ ἀπέθανεν ἐν Θαμασί; ἱνατί προσηγάγετε πρὸς τὸ τεῖχος; Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος πρὸς Δαυὶδ, ὅτι ἐκραταίωσαν ἐφ’ ἡμᾶς οἱ ἄνδρες, καὶ ἐξῆλθον ἐφ’ ἡμᾶς εἰς τὸν ἀγρὸν, καὶ ἐγενήθημεν ἐπ’ αὐτοὺς ἕως τῆς θύρας τῆς πύλης. Καὶ ἐτόξευσαν οἱ τοξεύοντες πρὸς τοὺς παῖδάς σου ἀπάνωθεν τοῦ τείχους, καὶ ἀπέθανον τῶν παίδων τοῦ βασιλέως, καί γε ὁ δοῦλός σου Οὐρίας ὁ Χετταῖος ἀπέθανε. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τὸν ἄγγελον, τάδε ἐρεῖς πρὸς Ἰωάβ, μὴ πονηρὸν ἔστω ἐν ὀφθαλμοῖς σου τὸ

ῥῆμα τοῦτο, ὅτι ποτὲ μὲν οὕτως καὶ ποτὲ οὕτως φάγεται ἡ μάχαιρα· κραταίωσον τὸν πόλεμόν σου εἰν τὴν πόλιν, καὶ κατάσπασον αὐτὴν, καὶ κραταίωσον αὐτήν. Καὶ ἤκουσεν ἡ γυνὴ Οὐρίου ὅτι ἀπέθανεν Οὐρίας ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, καὶ ἐκόψατο τὸν ἄνδρα αὐτῆς. Καὶ διῆλθε τὸ πένθος, καὶ ἀπέστειλεν Δαυὶδ, καὶ συνήγαγεν αὐτὴν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἐγενήθη αὐτῷ εἰς γυναῖκα, καὶ ἔτεκεν αὐτῷ υἱόν· καὶ πονηρὸν ἐφάνη τὸ ῥῆμα ὃ ἐποίησε Δαυὶδ ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου.

# 12

Καὶ ἀπέστειλε Κύριος τὸν Νάθαν τὸν προφήτην πρὸς Δαυίδ· καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, δύο ἦσαν ἄνδρες ἐν πόλει μιᾷ, εἷς πλούσιος, καὶ εἷς πένης. Καὶ τῷ πλουσίῳ ἦν ποίμνια καὶ βουκόλια πολλὰ σφόδρα. Καὶ τῷ πένητι οὐδὲν ἀλλ’ ἢ ἀμνὰς μία μικρὰ, ἣν ἐκτήσατο καὶ περιεποιήσατο, καὶ ἐξέθρεψεν αὐτὴν, καὶ ἠδρύνθη μετ’ αὐτοῦ καὶ μετὰ τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ αὐτὸ, ἐκ τοῦ ἄρτου αὐτοῦ ἤσθιε, καὶ ἐκ τοῦ ποτηρίου αὐτοῦ ἔπινε, καὶ ἐν τῷ κόλπῳ αὐτοῦ ἐκάθευδε, καὶ ἦν αὐτῷ ὡς θυγάτηρ. Καὶ ἦλθε πάροδος τῷ ἀνδρὶ τῷ πλουσίῳ, καὶ ἐφείσατο λαβεῖν ἐκ τῶν ποιμνίων αὐτοῦ, καὶ ἐκ τῶν βουκολίων αὐτοῦ, τοῦ ποιῆσαι τῷ ξένῳ ὁδοιπόρῳ τῷ ἐλθόντι πρὸς αὐτὸν, καὶ ἔλαβε τὴν ἀμνάδα τοῦ πένητος. καὶ ἐποίησεν αὐτὴν τῷ ἀνδρὶ τῷ ἐλθόντι πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ Δαυὶδ σφόδρα τῷ ἀνδρὶ, καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Νάθαν, ζῇ Κύριος, ὅτι υἱὸς θανάτου ὁ ἀνὴρ ὁ ποιήσας τοῦτο· Καὶ τὴν ἀμνάδα ἀποτίσει ἑπταπλασίονα, ἀνθ’ ὧν ὅτι ἐποίησε τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ περὶ οὗ οὐκ ἐφείσατο. Καὶ εἶπε Νάθαν πρὸς Δαυὶδ, σὺ εἶ

ὁ ἀνὴρ ὁ ποιήσας τοῦτο· τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἐγώ εἰμι ὁ χρίσας σε εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐγώ εἰμι ἐῤῥυσάμην σε ἐκ χειρὸς Σαοὺλ, καὶ ἔδωκά σοι τὸν οἶκον τοῦ κυρίου σου, καὶ τὰς γυναῖκας τοῦ κυρίου σου ἐν τῷ κόλπῳ σου, καὶ ἔδωκά σοι τὸν οἶκον Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα· καὶ εἰ μικρόν ἐστι, προσθήσω σοι κατὰ ταῦτα. Τί ὅτι ἐφαύλισας τὸν λόγον Κυρίου, τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ; τὸν Οὐρίαν τὸν Χετταῖον ἐπάταξας ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἔλαβες σεαυτῷ εἰς γυναῖκα, καὶ αὐτὸν ἀπέκτεινας ἐν ῥομφαίᾳ υἱῶν Ἀμμών. Καὶ νὺν οὐκ ἀποστήσεται ῥομφαία ἐκ τοῦ οἴκου σου ἕως αἰῶνος, ἀνθ’ ὧν ὅτι ἐξουδένωσάς με, καὶ ἔλαβες τὴν γυναῖκα τοῦ Οὐρίου τοῦ Χετταίου, τοῦ εἶναί σοι εἰς γυναῖκα. Τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐπὶ σὲ κακὰ ἐκ τοῦ οἴκου σου, καὶ λήψομαι τὰς γυναῖκάς σου κατ’ ὀφθαλμούς σου, καὶ δώσω τῷ πλησίον σου, καὶ κοιμηθήσεται μετὰ τῶν γυναικῶν σου ἐναντίον τοῦ ἡλίου τούτου. Ὅτι σὺ ἐποίησας κρυβῇ, κἀγὼ ποιήσω τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐναντίον παντὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἀπέναντι τοῦ ἡλίου τούτου. Καὶ εἶπε Δαυὶδ τῷ Νάθαν, ἡμάρτηκα τῷ Κυρίῳ· καὶ εἶπε Νάθαν πρὸς Δαυὶδ, καὶ Κύριος παρεβίβασε τὸ ἁμάρτημά σου· οὐ μὴ ἀποθάνῃς. Πλὴν ὅτι παροργίζων παρώργισας τοὺς ἐχθροὺς Κυρίου ἐν τῷ ῥήματι τούτῳ, καί γε ὁ υἱός σου ὁ τεχθείς σοι θανάτῳ ἀποθανεῖται. Καὶ ἀπῆλθε Νάθαν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ· καὶ ἔθραυσε Κύριος τὸ παιδίον ὃ ἔτεκεν ἡ γυνὴ Οὐρίου τοῦ Χετταίου τῷ Δαυὶδ, καὶ ἠῤῥώστησε. Καὶ ἐζήτησε Δαυὶδ τὸν Θεὸν περὶ τοῦ παιδαρίου, καὶ ἐνήστευσε Δαυὶδ νηστείαν, καὶ εἰσῆλθε καὶ ηὐλίσθη ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἀνέστησαν ἐπ’ αὐτὸν οἱ πρεσβύτεροι τοῦ οἴκου αὐτοῦ ἐγεῖραι αὐτὸν ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἠθέλησε, καὶ οὐ συνέφαγεν αὐτοῖς ἄρτον. Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ ἀπέθανε τὸ παιδάριον· καὶ ἐφοβήθησαν οἱ δοῦλοι Δαυὶδ ἀναγγεῖλαι αὐτῷ, ὅτι

τέθνηκε τὸ παιδάριον, ὅτι εἶπον, ἰδοὺ ἐν τῷ τὸ παιδάριον ἔτι ζῇν ἐλαλήσαμεν πρὸς αὐτὸν, καὶ οὐκ εἰσήκουσε τῆς φωνῆς ἡμῶν· καὶ πῶς εἴπωμεν πρὸς αὐτὸν ὅτι τέθνηκε τὸ παιδάριον, καὶ ποιήσει κακά; Καὶ συνῆκε Δαυὶδ, ὅτι οἱ παῖδες αὐτοῦ ψιθυρίζουσι, καὶ ἐνόησε Δαυὶδ ὅτι τέθνηκε τὸ παιδάριον· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, εἰ τέθνηκε τὸ παιδάριον; καὶ εἶπαν, τέθνηκε. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ ἐκ τῆς γῆς, καὶ ἐλούσατο, καὶ ἠλείψατο, καὶ ἤλλαξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ᾔτησεν ἄρτον φαγεῖν, καὶ παρέθηκαν αὐτῷ ἄρτον, καὶ ἔφαγε. Καὶ εἶπαν οἱ παῖδες αὐτοῦ πρὸς αὐτόν, τί τὸ ῥῆμα τοῦτο ὃ ἐποίησας ἕνεκα τοῦ παιδαρίου; ἔτι ζῶντος ἐνήστευες καὶ ἔκλαιες καὶ ἠγρύπνεις, καὶ ἡνίκα ἀπέθανε τὸ παιδάριον, ἀνέστης, καὶ ἔφαγες ἄρτον, καὶ πέπωκας; Καὶ εἶπε Δαυὶδ, ἐν τῷ τὸ παιδάριον ἔτι ζῇν ἐνήστευσα καὶ ἔκλαυσα, ὅτι εἶπα, τίς οἶδεν εἰ ἐλεήσει με Κύριος, καὶ ζήσεται τὸ παιδάριον; Καὶ νῦν τέθνηκεν, ἱνατί τοῦτο ἐγὼ νηστεύω; μὴ δυνήσομαι ἐπιστρέψαι αὐτὸν ἔτι; ἐγὼ πορεύσομαι πρὸς αὐτόν, καὶ αὐτὸς οὐκ ἀναστρέψει πρὸς μέ. Καὶ παρεκάλεσε Δαυὶδ Βηρσαβεὲ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὴν, καὶ ἐκοιμήθη μετ’ αὐτῆς, καὶ συνέλαβε καὶ ἔτεκεν υἱὸν, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Σαλωμὼν, καὶ Κύριος ἠγάπησεν αὐτόν. Καὶ ἀπέστειλεν ἐν χειρὶ Νάθαν τοῦ προφήτου, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰεδδεδὶ, ἕνεκεν Κυρίου. Καὶ ἐπολέμησεν Ἰωὰβ ἐν Ῥαββὰθ υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ κατέλαβε τὴν πόλιν τῆς βασιλείας. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰωὰβ ἀγγέλους πρὸς Δαυὶδ, καὶ εἶπεν, ἐπολέμησα ἐν Ῥαββὰθ, καὶ κατελαβόμην τὴν πόλιν τῶν ὑδάτων. Καὶ νῦν συνάγαγε τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ, καὶ παρέμβαλε ἐπὶ τὴν πόλιν, καὶ προκαταλαβοῦ αὐτὴν, ἵνα μὴ προκαταλάβωμαι ἐγὼ τὴν πόλιν, καὶ κληθῇ τὸ ὄνομά μου ἐπ’

αὐτήν. Καὶ συνήγαγε Δαυὶδ πάντα τὸν λαὸν, καὶ ἐπορεύθη εἰς Ῥαββὰθ, καὶ ἐπολέμησεν ἐν αὐτῇ, καὶ κατελάβετο αὐτήν. Καὶ ἔλαβε τὸν στέφανον Μολχὸμ τοῦ βασιλέως αὐτῶν ἀπὸ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ ὁ σταθμὸς αὐτοῦ τάλαντον χρυσίου, καὶ λίθου τιμίου, καὶ ἦν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς Δαυὶδ, καὶ σκῦλα τῆς πόλεως ἐξήνεγκε πολλὰ σφόδρα. Καὶ τὸν λαὸν τὸν ὄντα ἐν αὐτῇ ἐξήγαγε, καὶ ἔθηκεν ἐν τῷ πρίονι, καὶ ἐν τοῖς τριβόλοις τοῖς σιδηροῖς, καὶ ὑποτομεῦσι σιδηροῖς, καὶ διήγαγεν αὐτοὺς διὰ τοῦ πλινθίου· καὶ οὕτως ἐποίησε πάσαις ταῖς πόλεσιν υἱῶν Ἀμμών· καὶ ἐπέστρεψε Δαυὶδ καὶ πᾶς ὁ λαὸς εἰς Ἰερουσαλήμ.

# 13

Καὶ ἐγενήθη μετὰ ταῦτα καὶ τῷ Ἀβεσσαλὼμ υἱῷ Δαυὶδ ἀδελφὴ καλὴ τῷ εἴδει σφόδρα, καὶ ὄνομα αὐτῇ Θημὰρ, καὶ ἠγάπησεν αὐτὴν Ἀμνὼν υἱὸς Δαυίδ. Καὶ ἐθλίβετο Ἀμνὼν ὥστε ἀῤῥωστεῖν διὰ Θημὰρ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ, ὅτι παρθένος ἦν αὕτη, καὶ ὑπέρογκον ἐν ὀφθαλμοῖς Ἀμνὼν τοῦ ποιῆσαί τι αὐτῇ. Καὶ ἦν τῷ Ἀμνὼν ἑταῖρος, καὶ ὄνομα αὐτῷ Ἰωναδὰβ, υἱὸς Σαμαὰ τοῦ ἀδελφοῦ Δαυίδ· καὶ Ἰωναδὰβ ἀνὴρ σοφὸς σφόδρα, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί σοι ὅτι σὺ οὕτως ἀσθενὴς, υἱὲ τοῦ βασιλέως, τὸ πρωῒ πρωΐ; οὐκ ἀπαγγέλλεις μοι; καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἀμνὼν, Θημὰρ τὴν ἀδελφὴν Ἀβεσσαλὼμ τοῦ ἀδελφοῦ μου ἐγὼ ἀγαπῶ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰωναδὰβ, κοιμήθητι ἐπὶ τῆς κοίτης σου καὶ μαλακίσθητι, καὶ εἰσελεύσεται ὁ πατήρ σου τοῦ ἰδεῖν σε, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, ἐλθέτω δὴ Θημὰρ ἡ ἀδελφή μου, καὶ ψωμισάτω με, καὶ ποιησάτω κατ’ ὀφθαλμούς μου βρῶμα, ὅπως ἴδω καὶ φάγω ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῆς. Καὶ ἐκοιμήθη Ἀμνὼν καὶ

ἠῤῥώστησε· καὶ εἰσῆλθεν ὁ βασιλεὺς ἰδεῖν αὐτόν· καὶ εἶπεν Ἀμνὼν πρὸς τὸν βασιλέα, ἐλθέτω δὴ Θημὰρ ἡ ἀδελφή μου πρὸς μὲ, καὶ κολλυρισάτω ἐν ὀφθαλμοῖς μου δύο κολλυρίδας, καὶ φάγομαι ἐκ τῆς χειρὸς αὐτῆς. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ πρὸς Θημὰρ εἰς τὸν οἶκον, λέγων, πορεύθητι δὴ εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀδελφοῦ σου, καὶ ποίησον αὐτῷ βρῶμα. Καὶ ἐπορεύθη Θημὰρ εἰς τὸν οἶκον Ἀμνὼν ἀδελφοῦ αὐτῆς, καὶ αὐτὸς κοιμώμενος· καὶ ἔλαβε τὸ σταῖς καὶ ἐφύρασε, καὶ ἐκολλύρισε κατ’ ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ ἤψησε τὰς κολλυρίδας. Καὶ ἔλαβε τὸ τήγανον καὶ κατεκένωσεν ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠθέλησε φαγεῖν· καὶ εἶπεν Ἀμνὼν, ἐξαγάγετε πάντα ἄνδρα ἐπάνωθέν μου· καὶ ἐξήγαγον πάντα ἄνδρα ἀπὸ ἐπάνωθεν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀμνὼν πρὸς Θημὰρ, εἰσένεγκε τὸ βρῶμα εἰς τὸ ταμιεῖον, καὶ φάγομαι ἐκ τῆς χειρός σου· καὶ ἔλαβε Θημὰρ τὰς κολλυρίδας ἃς ἐποίησε, καὶ εἰσήνεγκε τῷ Ἀμνὼν ἀδελφῷ αὐτῆς εἰς τὸν κοιτῶνα. Καὶ προσήγαγεν αὐτῷ τοῦ φαγεῖν, καὶ ἐπελάβετο αὐτῆς, καὶ εἶπεν αὐτῇ, δεῦρο, κοιμήθητι μετ’ ἐμοῦ, ἀδελφή μου. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, μὴ ἀδελφέ μου, μὴ ταπεινώσῃς με, διότι οὐ ποιηθήσεται οὕτως ἐν Ἰσραὴλ, μὴ ποιήσῃς τὴν ἀφροσύνην ταύτην. Καὶ ἐγὼ ποῦ ἀποίσω τὸ ὄνειδός μου; καὶ σὺ ἔσῃ ὡς εἷς τῶν ἀφρόνων ἐν Ἰσραήλ· καὶ νῦν λάλησον δὴ πρὸς τὸν βασιλέα, ὅτι οὐ μὴ κωλύσῃ με ἀπὸ σοῦ. Καὶ οὐκ ἠθέλησεν Ἀμνὼν τοῦ ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς αὐτῆς· καὶ ἐκραταίωσεν ὑπὲρ αὐτὴν, καὶ ἐταπείνωσεν αὐτήν, καὶ ἐκοιμήθη μετ’ αὐτῆς. Καὶ ἐμίσησεν αὐτὴν Ἀμνὼν μῖσος μέγα σφόδρα, ὅτι μέγα τὸ μῖσος ὃ ἐμίσησεν αὐτὴν μπὲρ τὴν ἀγάπην ἣν ἠγάπησεν αὐτὴν, ὅτι μείζων ἡ κακία ἡ ἐσχάτη ἢ ἡ πρώτη· καὶ εἶπεν αὐτῇ Ἀμνὼν, ἀνάστηθι, καὶ πορεύου. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Θημὰρ περὶ τῆς κακίας τῆς μεγάλης ταύτης ὑπὲρ ἑτέραν ἣν ἐποίησας μετ’ ἐμοῦ, τοῦ ἐξαποστεῖλαί με· καὶ οὐκ ἐθέλησεν Ἀμνὼν ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς

αὐτῆς. Καὶ ἐκάλεσε τὸ παιδάριον αὐτοῦ τὸν προεστηκότα τοῦ οἴκου, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἐξαποστείλατε δὴ ταύτην ἀπ᾽ ἐμοῦ ἔξω, καὶ ἀπόκλεισον τὴν θύραν ὀπίσω αὐτῆς. Καὶ ἐπ᾽ αὐτῆς ἦν χιτὼν καρπωτὸς, ὅτι οὕτως ἐνεδιδύσκοντο αἱ θυγατέρες τοῦ βασιλέως αἱ παρθένοι τοὺς ἐπενδύτας αὐτῶν· καὶ ἐξήγαγεν αὐτὴν ὁ λειτουργὸς αὐτοῦ ἔξω, καὶ ἀπέκλεισε τὴν θύραν ὀπίσω αὐτῆς. Καὶ ἔλαβε Θημὰρ σποδὸν, καὶ ἐπέθηκεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῆς· καὶ τὸν χιτῶνα τὸν καρπωτὸν τὸν ἐπ᾽ αὐτῆς διέῤῥηξε· καὶ ἐπέθηκε τὰς χεῖρας αὐτῆς ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῆς, καὶ ἐπορεύθη πορευομένη καὶ κράζουσα. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν Ἀβεσσαλὼμ ὁ ἀδελφὸς αὐτῆς, μὴ Ἀμνὼν ὁ ἀδελφός σου ἐγένετο μετὰ σοῦ; καὶ νῦν ἀδελφή μου κώφευσον, ὅτι ἀδελφός σου ἐστί· μὴ θῇς τὴν καρδίαν σου τοῦ λαλῆσαι τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ ἐκάθισε Θημὰρ χηρεύουσα ἐν τῷ οἴκῳ Ἀβεσσαλὼμ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῆς. Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ πάντας τοὺς λόγους τούτους, καὶ ἐθυμώθη σφόδρα, καὶ οὐκ ἐλύπησε τὸ πνεῦμα Ἀμνὼν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ὅτι ἠγάπα αὐτὸν, ὅτι πρωτότοκος αὐτοῦ ἦν. Καὶ οὐκ ἐλάλησεν Ἀβεσσαλὼμ μετὰ Ἀμνὼν ἀπὸ πονηροῦ ἕως ἀγαθοῦ, ὅτι ἐμίσει Ἀβεσσαλὼμ τὸν Ἀμνὼν ἐπὶ λόγου οὗ ἐταπείνωσε Θημὰρ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο εἰς διετηρίδα ἡμερῶν, καὶ ἦσαν κείροντες τῷ Ἀβεσσαλὼμ ἐν Βελασὼρ τῇ ἐχόμενα Ἐφραὶμ, καὶ ἐκάλεσεν Ἀβεσσαλὼμ πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως. Καὶ ἦλθεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ δὴ κείρουσι τῷ δούλῳ σου, πορευθήτω δὴ ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μετὰ τοῦ δούλου σου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, μὴ δὴ υἱέ μου, μὴ πορεύθῶμεν πάντες ἡμεῖς, καὶ οὐ μὴ καταβαρυνθῶμεν ἐπὶ σέ· καὶ ἐβιάσατο αὐτόν, καὶ οὐκ ἠθέλησε τοῦ πορευθῆναι, καὶ εὐλόγησεν αὐτόν. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς αὐτὸν, καὶ εἰ μή, πορευθήτω δὴ μεθ᾽ ἡμῶν Ἀμνὼν ὁ ἀδελφός μου·

καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ἱνατί πορευθῇ μετὰ σοῦ; Καὶ ἐβιάσατο αὐτὸν Ἀβεσσαλώμ, καὶ ἀπέστειλε μετ’ αὐτοῦ τὸν Ἀμνὼν καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως· καὶ ἐποίησεν Ἀβεσσαλὼμ πότον κατὰ τὸν πότον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐνετείλατο Ἀβεσσαλὼμ τοῖς παιδαρίοις αὐτοῦ, λέγων, ἴδετε ὡς ἂν ἀγαθυνθῇ ἡ καρδία Ἀμνὼν ἐν τῷ οἴνῳ, καὶ εἴπω πρὸς ὑμᾶς, πατάξατε τὸν Ἀμνὼν, καὶ θανατώσατε αὐτόν· μὴ φοβηθῆτε, ὅτι οὐχὶ ἐγώ εἰμι ὁ ἐντελλόμενος ὑμῖν; ἀνδρίζεσθε καὶ γίνεσθε εἰς υἱοὺς δυνάμεως. Καὶ ἐποίησαν τὰ παιδάρια Ἀβεσσαλὼμ τῷ Ἀμνὼν, καθὰ ἐνετείλατο αὐτοῖς Ἀβεσσαλώμ· καὶ ἀνέστησαν πάντες οἱ υἱοὶ τοῦ βασιλέως, καὶ ἐπεκάθισαν ἀνὴρ ἐπὶ τὴν ἡμιονον αὐτοῦ, καὶ ἔφυγον. Καὶ ἐγένετο, αὐτῶν ὄντων ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ἡ ἀκοὴ ἦλθε πρὸς Δαυὶδ, λέγων, ἐπάταξεν Ἀβεσσαλὼμ πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως, καὶ οὐ κατελείφθη ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. Καὶ ἀνέστη ὁ βασιλεὺς καὶ διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ καὶ ἐκοιμήθη ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ οἱ περιεστῶτες αὐτῷ διέῤῥηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν. Καὶ ἀπεκρίθη Ἰωναδὰβ υἱὸς Σαμαὰ ἀδελφοῦ Δαυὶδ, καὶ εἶπε, μὴ εἰπάτω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς ὅτι πάντα τὰ παιδάρια τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως ἐθανάτωσεν, ὅτι Ἀμνὼν μονώτατος ἀπέθανεν, ὅτι ἐπὶ στόματος Ἀβεσσαλὼμ ἦν κείμενος ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς ἐταπείνωσε Θημὰρ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ. Καὶ νῦν μὴ θέσθω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ ῥῆμα, λέγων, πάντες οἱ υἱοὶ τοῦ βασιλέως ἀπέθανον· ὅτι ἀλλ’ ἢ Ἀμνὼν μονώτατος ἀπέθανε. Καὶ ἀπέδρα Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ᾖρε τὸ παιδάριον ὁ σκοπὸς τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ εἶδε· καὶ ἰδοὺ λαὸς πολὺς πορευόμενος ἐν τῇ ὁδῷ ὄπισθεν αὐτοῦ ἐκ πλευρᾶς τοῦ ὄρους ἐν τῇ καταβάσει· καὶ παρεγένετο ὁ σκοπὸς καὶ ἀπήγγειλε τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπεν, ἄνδρας ἑώρακα ἐκ τῆς ὁδοῦ τὴς Ὡρωνῆν ἐκ μέρους τοῦ ὄρους. Καὶ

εἶπεν Ἰωναδὰβ πρὸς τὸν βασιλέα, ἰδοὺ οἱ υἱοὶ τοῦ βασιλέως πάρεισι· κατὰ τὸν λόγον τοῦ δούλου σου, οὕτως ἐγένετο. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα συνετέλεσε λαλῶν, καὶ ἰδοὺ οἱ υἱοὶ τοῦ βασιλέως ἦλθον, καὶ ἐπῆραν τὴν φωνὴν αὐτῶν καὶ ἔκλαυσαν· καί γε ὁ βασιλεὺς καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ ἔκλαυσαν κλαυθμὸν μέγαν σφόδρα. Καὶ Ἀβεσσαλὼμ ἔφυγε, καὶ ἐπορεύθη, πρὸς Θολμὶ υἱὸν Ἐμιοὺδ βασιλέα Γεδσοὺρ εἰς γῆν Χαμααχάδ· καὶ ἐπένθησεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἐπὶ τὸν υἱὸν αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ Ἀβεσσαλὼμ ἀπέδρα, καὶ ἐπορεύθη εἰς Γεδσοὺρ, καὶ ἦν ἐκεῖ ἔτη τρία. Καὶ ἐκόπασεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ τοῦ ἐξελθεῖν πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, ὅτι παρεκλήθη ἐπὶ Ἀμνὼν, ὅτι ἀπέθανε.

# 14

Καὶ ἔγνω Ἰωὰβ υἱὸς Σαρουίας ὅτι ἡ καρδία τοῦ βασιλέως ἐπὶ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰωὰβ εἰς Θεκωὲ, καὶ ἔλαβεν ἐκεῖθεν γυναῖκα σοφὴν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, πένθησον δὴ, καὶ ἔνδυσαι ἱμάτια πενθικὰ, καὶ μὴ ἀλείψῃ ἔλαιον, καὶ ἔσῃ ὡς γυνὴ πενθοῦσα ἐπὶ τεθνηκότι τοῦτο ἡμέρας πολλὰς, καὶ ἐλεύσῃ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ λαλήσεις πρὸς αὐτὸν κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ ἔθηκεν Ἰωὰβ τοὺς λόγους ἐν τῷ στόματι αὐτῆς. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ γυνὴ ἡ Θεκωῖτις πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς εἰς τὴν γῆν, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ, καὶ εἶπε, σῶσον βασιλεῦ, σῶσον. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν ὁ βασιλεὺς, τί ἐστι σοι; Ἡ δὲ εἶπε, καὶ μάλα γυνὴ χήρα ἐγώ εἰμι, καὶ ἀπέθανεν ὁ ἀνήρ μου. Καί γε τῇ δούλῃ σου δύο υἱοὶ, καὶ ἐμαχέσαντο ἀμφότεροι ἐν τῷ ἀγρῷ, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐξαιρούμενος ἀναμέσον αὐτῶν· καὶ ἔπαισεν ὁ εἷς τὸν ἕνα ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ

ἐθανάτωσεν αὐτόν. Καὶ ἰδοὺ ἐπανέστη ὅλη ἡ πατριὰ πρὸς τὴν δούλην σου, καὶ εἶπαν, δὸς τὸν παίσαντα τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ θανατώσομεν αὐτὸν ἀντὶ τῆς ψυχῆς τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ οὗ ἀπέκτεινε, καὶ ἐξαροῦμεν καί γε τὸν κληρονόμον ὑμῶν· καὶ σβέσουσι τὸν ἄνθρακά μου τὸν καταλειφθέντα ὥστε μὴ θέσθαι τῷ ἀνδρί μου κατάλειμμα καὶ ὄνομα ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὴν γυναῖκα, ὑγιαίνουσα βάδιζε εἰς τὸν οἶκόν σου, κἀγὼ ἐντελοῦμαι περὶ σοῦ. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ ἡ Θεκωῖτις πρὸς τὸν βασιλέα, ἐπ’ ἐμὲ, κύριέ μου βασιλεῦ, ἡ ἀνομία καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός μου, καὶ ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ θρόνος αὐτοῦ ἀθῶος. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, τίς ὁ λαλῶν πρὸς σὲ, καὶ ἄξεις αὐτὸν πρὸς ἐμὲ, καὶ οὐ προσθήσει ἔτι ἅψασθαι αὐτοῦ; Καὶ εἶπε, μνημονευσάτω δὴ ὁ βασιλεὺς τὸν Κύριον Θεὸν αὐτοῦ πληθυνθῆναι ἀγχιστέα τοῦ αἵματος τοῦ διαφθεῖραι, καὶ οὐ μὴ ἐξάρωσι τὸν υἱόν μου· καὶ εἶπε, ζῇ Κύριος, εἶ πεσεῖται ἀπὸ τῆς τριχὸς τοῦ υἱοῦ σου ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, λαλησάτω δὴ ἡ δούλη σου πρὸς τὸν κύριόν μου βασιλέα ῥῆμα· καὶ εἶπε, λάλησον. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, ἱνατί ἐλογίσω τοιοῦτο ἐπὶ λαὸν Θεοῦ; ἢ ἐκ στόματος τοῦ βασιλέως ὁ λόγος οὗτος ὡς πλημμέλεια, τοῦ μὴ ἐπιστρέψαι τὸν βασιλέα τὸν ἐξωσμένον αὐτοῦ; Ὅτι θανάτῳ ἀποθανούμεθα, καὶ ὥσπερ τὸ ὕδωρ τὸ καταφερόμενον ἐπὶ τῆς γῆς ὃ οὐ συναχθήσεται, καὶ λήψεται ὁ Θεὸς ψυχὴν, καὶ λογιζόμενος τοῦ ἐξῶσαι ἀπ’ αὐτοῦ ἐξεωσμένον. Καὶ νῦν ὃ ἦλθον λαλῆσαι πρὸς τὸν βασιλέα τὸν κύριόν μου τὸ ῥῆμα τοῦτο, ὅτι ὄψεταί με ὁ λαὸς, καὶ ἐρεῖ ἡ δούλη σου, λαλησάτω δὴ πρὸς τὸν κύριόν μον τὸν βασιλέα, εἴπως ποιήσει ὁ βασιλεὺς τὸ ῥῆμα τῆς δούλης αὐτοῦ ὅτι ἀκούσει ὁ βασιλεύς· ῥυσάσθω τὴν δούλην αὐτοῦ ἐκ χειρὸς τοῦ ἀνδρὸς τοῦ ζητοῦντος ἐξᾶραί με καὶ τὸν υἱόν μου ἀπὸ κληρονομίας Θεοῦ. Καὶ εἶπεν ἡ γυνή, εἰ ἤδη ὁ

λόγος τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως εἰς θυσίας· ὅτι καθὼς ἄγγελος Θεοῦ, οὕτως ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς, τοῦ ἀκούειν τὸ ἀγαθὸν καὶ τὸ πονηρόν· καὶ Κύριος ὁ Θεός σου ἔσται μετὰ σοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, καὶ εἶπε πρὸς τὴν γυναῖκα, μὴ δὴ κρύψῃς ἀπ᾽ ἐμοῦ ῥῆμα, ὃ ἐγὼ ἐπερωτῶ σε· καὶ εἶπεν ἡ γυνή, λαλησάτω δὴ ὁ κύριός μου ὁ βασιλεύς. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, μὴ ἡ χεὶρ Ἰωὰβ ἐν παντὶ τούτῳ μετὰ σοῦ; καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ τῷ βασιλεῖ, ζῇ ἡ ψυχή σου, κύριέ μου βασιλεῦ, εἰ ἔστιν εἰς τὰ δεξιὰ ἢ εἰς τὰ ἀριστερὰ ἐκ πάντων ὧν ἐλάλησεν ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς, ὅτι ὁ δοῦλός σου Ἰωὰβ αὐτὸς ἐνετείλατό μοι, καὶ αὐτὸς ἔθετο ἐν τῷ στόματι τῆς δούλης σου πάντας τοὺς λόγους τούτους. Ἕνεκεν τοῦ περιελθεῖν τὸ πρόσωπον τοῦ ῥήματος τούτου, ὃ ἐποίησεν ὁ δοῦλός σου Ἰωὰβ τὸν λόγον τοῦτον· καὶ ὁ κύριός μου σοφὸς καθὼς σοφία ἀγγέλου τοῦ Θεοῦ, τοῦ γνῶναι πάντα τὰ ἐν τῇ γῇ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἰωὰβ, ἰδοὺ δὴ ἐποίησά σοι κατὰ τὸν λόγον σου τοῦτον· πορεύου, ἐπιστρέψον τὸ παιδάριον τὸν Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἔπεσεν Ἰωὰβ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ προσεκύνησε, καὶ εὐλόγησε τὸν βασιλέα· καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, σήμερον ἔγνω ὁ δοῦλός σου ὅτι εὗρον χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου, κύριέ μου βασιλεῦ, ὅτι ἐποίησεν ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς τὸν λόγον τοῦ δούλου αὐτοῦ. Καὶ ἀνέστη Ἰωὰβ, καὶ ἐπορεύθη εἰς Γεδσούρ, καὶ ἤγαγε τὸν Ἀβεσσαλὼμ εἰς Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ἀποστραφήτω εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ τὸ πρόσωπόν μου μὴ βλεπέτω· καὶ ἀπέστρεψεν Ἀβεσσαλὼμ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ τὸ πρόσωπον τοῦ βασιλέως οὐκ εἶδε. Καὶ ὡς Ἀβεσσαλὼμ οὐκ ἦν ἀνὴρ ἐν παντὶ Ἰσραὴλ αἰνετὸς σφόδρα, ἀπὸ ἴχνους ποδὸς αὐτοῦ καὶ ἕως κορυφῆς αὐτοῦ οὐκ ἦν ἐν αὐτῷ μῶμος. Καὶ ἐν τῷ κείρεσθαι αὐτὸν τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἐγένετο ἀπ᾽ ἀρχῆς ἡμερῶν εἰς ἡμέρας ὡς ἂν ἐκείρετο, ὅτι κατεβαρύνετο

ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ κειρόμενος αὐτὴν ἔστησε τὴν τρίχα τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ διακοσίους σίκλους ἐν τῷ σίκλῳ τῷ βασιλικῷ. Καὶ ἐτέχθησαν τῷ Ἀβεσσαλὼμ τρεῖς υἱοὶ, καὶ θυγάτηρ μία, καὶ ὄνομα αὐτῇ Θημάρ· αὕτη ἦν γυνὴ καλὴ σφόδρα· καὶ γίνεται γυνὴ Ῥοβοὰμ υἱῷ Σαλωμὼν, καὶ τίκτει αὐτῷ τὸν Ἀβία. Καὶ ἐκάθισεν Ἀβεσσαλὼμ ἐν Ἰερουσαλὴμ δύο ἔτη ἡμερῶν, καὶ τὸ πρόσωπον τοῦ βασιλέως οὐκ εἶδε. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς Ἰωὰβ ἀποστεῖλαι αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ οὐκ ἠθέλησεν ἐλθεῖν πρὸς αὐτόν· καὶ ἀπέστειλεν ἐκ δευτέρου πρὸς αὐτὸν, καὶ οὐκ ἠθέλησε παραγενέσθαι. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ἴδετε, ἡ μερὶς ἐν ἀγρῷ τοῦ Ἰωὰβ ἐχόμενά μου, καὶ αὐτῷ ἐκεῖ κριθαὶ, πορεύεσθε καὶ ἐμπρήσατε αὐτὴν ἐν πυρί· καὶ ἐνέπρησαν οἱ παῖδες Ἀβεσσαλὼμ τὴν μερίδα· καὶ παραγίνονται οἱ δοῦλοι Ἰωὰβ πρὸς αὐτὸν διερῥηχότες τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ εἶπον, ἐνεπύρισαν οἱ δοῦλοι Ἀβεσσαλὼμ τὴν μερίδα ἐν πυρί. Καὶ ἀνέστη Ἰωὰβ, καὶ ἦλθε πρὸς Ἀβεσσαλὼμ εἰς τὸν οἶκον, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἱνατί ἐνεπύρισαν οἱ παῖδές σου τὴν μερίδα τὴν ἐμὴν ἐν πυρί; Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς Ἰωὰβ, ἰδοὺ ἀπέστειλα πρὸς σὲ, λέγων, ἦκε ὧδε, καὶ ἀποστελῶ σε πρὸς τὸν βασιλέα, λέγων, ἱνατί ἦλθον ἐκ Γεδσούρ; ἀγαθόν μοι ἦν εἶναι ἐκεῖ· καὶ νῦν ἰδοὺ τὸ πρόσωπον τοῦ βασιλέως οὐκ εἶδον· εἰ δέ ἐστιν ἐν ἐμοὶ ἀδικία, καὶ θανάτωσόν με. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰωὰβ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ· καὶ ἐκάλεσε τὸν Ἀβεσσαλώμ· καὶ εἰσῆλθε πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως· καὶ κατεφίλησεν ὁ βασιλεὺς τὸν Ἀβεσσαλώμ.

# 15

Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ Ἀβεσσαλὼμ ἅρματα, καὶ ἵππους, καὶ πεντήκοντα ἄνδρας παρατρέχειν ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ ὤρθρισεν Ἀβεσσαλὼμ, καὶ ἔστη ἀνὰ χεῖρα τῆς ὁδοῦ τῆς πύλης· καὶ ἐγένετο πᾶς ἀνὴρ ᾧ ἐγένετο κρίσις, ἦλθε πρὸς τὸν βασιλέα εἰς κρίσιν, καὶ ἐβόησε πρὸς αὐτὸν Ἀβεσσαλὼμ, καὶ ἔλεγεν αὐτῷ, ἐκ ποίας πόλεως σὺ εἶ; καὶ εἶπεν, ἐκ μιᾶς φυλῶν Ἰσραὴλ ὁ δοῦλός σου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ Ἀβεσσαλὼμ, ἰδοὺ οἱ λόγοι σου ἀγαθοὶ καὶ εὔκολοι, καὶ ὁ ἀκούων οὐκ ἔστι σοι παρὰ τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ, τίς με καταστήσει κριτὴν ἐν τῇ γῇ, καὶ ἐπ’ ἐμὲ ἐλεύσεται πᾶς ἀνὴρ ᾧ ἐὰν ᾖ ἀντιλογία καὶ κρίσις, καὶ δικαιώσω αὐτόν; Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐγγίζειν ἄνδρα τοῦ προσκυνῆσαι αὐτῷ, καὶ ἐξέτεινε τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ἐπελαμβάνετο αὐτοῦ, καὶ κατεφίλησεν αὐτόν. Καὶ ἐποίησεν Ἀβεσσαλὼμ κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο παντὶ Ἰσραὴλ τοῖς παραγινομένοις εἰς κρίσιν πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἰδιοποιεῖτο Ἀβεσσαλὼμ τὴν καρδίαν ἀνδρῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο ἀπὸ τέλους τεσσαράκοντα ἐτῶν, καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ, πορεύσομαι δὴ, καὶ ἀποτίσω τὰς εὐχάς μου, ἃς ηὐξάμην τῷ Κυρίῳ ἐν Χεβρών· Ὅτι εὐχὴν ηὔξατο ὁ δοῦλός σου ἐν τῷ οἰκεῖν με ἐν Γεδσοὺρ ἐν Συρίᾳ, λέγων, ἐὰν ἐπιστρέφων ἐπιστρέψῃ με Κύριος εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ λατρεύσω τῷ Κυρίῳ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Βάδιζε εἰς εἰρήνην· καὶ ἀναστὰς ἐπορεύθη εἰς Χεβρών. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀβεσσαλὼμ κατασκόπους ἐν πάσαις φυλαῖς Ἰσραὴλ, λέγων, ἐν τῷ ἀκοῦσαι ὑμᾶς τὴν φωνὴν τῆς κερατίνης, καὶ ἐρεῖτε, βεβασίλευκε βασιλεὺς Ἀβεσσαλὼμ ἐν Χεβρών. Καὶ μετὰ Ἀβεσσαλὼμ ἐπορεύθησαν διακόσιοι ἄνδρες ἐξ

Ἰερουσαλὴμ κλητοί· καὶ πορευόμενοι τῇ ἁπλότητι αὐτῶν, καὶ οὐκ ἔγνωσαν πᾶν ῥῆμα. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀβεσσαλὼμ τῷ Ἀχειτόφελ τῷ Θεκωνεὶ, σύμβουλον Δαυὶδ, ἐκ τῆς πόλεως αὐτοῦ εἰς Γωλὰ, ἐν τῷ θυσιάζειν αὐτόν· καὶ ἐγένετο σύντριμμα ἰσχυρόν· καὶ ὁ λαὸς ὁ πορευόμενος καὶ πολὺς μετὰ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ παρεγένετο ἀπαγγέλων πρὸς Δαυὶδ, λέγων, ἐγενήθη ἡ καρδία ἀνδρῶν Ἰσραὴλ ὀπίσω Ἀβεσσαλώμ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πᾶσι τοῖς παισὶν αὐτοῦ τοῖς μετ’ αὐτοῦ τοῖς ἐν Ἰερουσαλὴμ, ἀνάστητε καὶ φύγωμεν, ὅτι οὐκ ἔστιν ἡμῖν σωτηρία ἀπὸ προσώπου Ἀβεσσαλώμ· ταχύνατε τοῦ πορευθῆναι, ἵνα μὴ ταχύνῃ καὶ καταλάβῃ ἡμᾶς, καὶ ἐξώσῃ ἐφ’ ἡμᾶς τὴν κακίαν, καὶ πατάξῃ τὴν πόλιν ἐν στόματι μαχαίρης. Καὶ εἶπον οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως πρὸς τὸν βασιλέα, κατὰ πάντα ὅσα αἱρεῖται ὁ κύριος ἡμῶν ὁ βασιλεὺς, ἰδοὺ οἱ παῖδές σου. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς καὶ πᾶς ὁ οἶκος αὐτοῦ τοῖς ποσὶν αὐτῶν· καὶ ἀφῆκεν ὁ βασιλεὺς δέκα γυναῖκας τῶν παλλακῶν αὐτοῦ φυλάσσειν τὸν οἶκον. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ πεζῇ, καὶ ἔστησαν ἐν οἴκῳ τῷ μακράν. Καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ ἀνὰ χεῖρα αὐτοῦ παρῆγον, καὶ πᾶς Χελεθὶ καὶ πᾶς ὁ Φελεθὶ, καὶ ἔστησαν ἐπὶ τῆς ἐλαίας ἐν τῇ ἐρήμῳ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς παρεπορεύετο ἐχόμενος αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ περὶ αὐτὸν, καὶ πάντες οἱ ἀδροὶ, καὶ πάντες οἱ μαχηταὶ ἑξακόσιοι ἄνδρες· καὶ παρῆσαν ἐπὶ χεῖρα αὐτοῦ· καὶ πᾶς ὁ Χελεθι, καὶ πᾶς ὁ Φελεθὶ, καὶ πάντες οἱ Γεθαῖοι οἱ ἑξακόσιοι ἄνδρες οἱ ἐλθόντες τοῖς ποσὶν αὐτῶν ἐκ Γὲθ, καὶ πορευόμενοι ἐπὶ πρόσωπον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἐθὶ τὸν Γεθαῖον, ἱνατί πορεύῃ καὶ σὺ μεθ’ ἡμῶν; ἐπίστρεφε, καὶ οἴκει μετὰ τοῦ βασιλέως, ὅτι ξένος εἶ σὺ, καὶ ὅτι μετῴκηκας σὺ ἐκ τοῦ τόπου σου. Εἰ ἐχθὲς παραγέγονας, καὶ σήμερον κινήσω σε μεθ’ ἡμῶν; καί γε μεταναστήσεις τὸν τόπον

σου· χθὲς ἡ ἐξέλευσίς σου, καὶ σήμερον μετακινήσω σε μεθ’ ἡμῶν τοῦ πορευθῆναι; καὶ ἐγὼ πορεύσομαι οὗ ἐὰν ἐγὼ πορευθῶ· ἐπιστρέφου καὶ ἐπίστρεψον τοὺς ἀδελφούς σου μετὰ σοῦ, καὶ Κύριος ποιήσει μετὰ σοῦ ἔλεος καὶ ἀλήθειαν. Καὶ ἀπεκρίθη Ἐθὶ τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπε, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς, ὅτι εἰς τὸν τόπον οὗ ἐὰν ᾖ ὁ κύριός μου, καὶ ἐὰν εἰς θάνατον καὶ ἐὰν εἰς ζωὴν, ὅτι ἐκεῖ ἔσται ὁ δοῦλός σου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἐθὶ, δεῦρο, καὶ διάβαινε μετ’ ἐμοῦ· καὶ παρῆλθεν Ἐθὶ ὁ Γεθαῖος καὶ ὁ βασιλεὺς, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ὁ μετ’ αὐτοῦ. Καὶ πᾶσα ἡ γῆ ἔκλαιε φωνῇ μεγάλῃ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς παρεπορεύοντο ἐν τῷ χειμάῤῥῳ τῶν Κέδρων· καὶ ὁ βασιλεὺς διέβη τὸν χειμάῤῥουν Κέδρων· καὶ πᾶς ὁ λαὸς καὶ ὁ βασιλεὺς παρεπορεύοντο ἐπὶ πρόσωπον ὁδοῦ τὴν ἔρημον. Καὶ ἰδοὺ καί γε Σαδὼκ καὶ πάντες οἱ Λευῖται μετ’ αὐτοῦ, αἴροντες τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου ἀπὸ Βαιθάρ· καὶ ἔστησαν τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ· καὶ ἀνέβη Ἀβιάθαρ ἕως ἐπαύσατο πᾶς ὁ λαὸς παρελθεῖν ἐκ τῆς πόλεως. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν Σαδὼκ, ἀπόστρεψον τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ εἰς τὴν πόλιν· ἐὰν εὕρω χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, καὶ ἐπιστρέψει με, καὶ δείξει μοι αὐτὴν καὶ τὴν εὐπρέπειαν αὐτῆς. Καὶ ἐὰν εἴπῃ οὕτως, οὐκ ἠθέληκα ἐν σοί· ἰδοὺ ἐγώ εἰμι, ποιείτω μοι κατὰ τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Σαδὼκ τῷ ἱερεῖ, ἴδετε, σὺ ἐπιστρέφεις εἰς τὴν πόλιν ἐν εἰρήνῃ, καὶ Ἀχιμάας ὁ υἱός σου, καὶ Ἰωνάθαν ὁ υἱὸς Ἀβιάθαρ οἱ δύο υἱοὶ ὑμῶν μεθ’ ὑμῶν. Ἴδετε, ἐγώ εἰμι στρατεύομαι ἐν Ἀραβὼθ τῆς ἐρήμου, ἕως τοῦ ἐλθεῖν ῥῆμα παρ’ ὑμῶν τοῦ ἀπαγγεῖλαί μοι. Καὶ ἀπέστρεψε Σαδὼκ καὶ Ἀβιάθαρ τὴν κιβωτὸν τοῦ Θεοῦ εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐκάθισεν ἐκεῖ. Καὶ Δαυὶδ ἀνέβαινεν ἐν τῇ ἀναβάσει τῶν ἐλαιῶν ἀναβαίνων καὶ κλαίων, καὶ τὴν κεφαλὴν

ἐπικεκαλυμμένος, καὶ αὐτὸς ἐπορεύετο ἀνυπόδετος· καὶ πὰς ὁ λαὸς ὁ μετ᾽ αὐτοῦ ἐπεκάλυψεν ἀνὴρ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ· καὶ ἀνέβαινον ἀναβαίνοντες καὶ κλαίοντες. Καὶ ἀνηγγέλη Δαυὶδ, λέγοντες, καὶ Ἀχιτόφελ ἐν τοῖς συστρεφομένοις μετὰ Ἀβεσσαλὼμ· καὶ εἶπε Δαυὶδ, διασκέδασον δὴ τὴν βουλὴν Ἀχιτόφελ, Κύριε ὁ Θεός μου. Καὶ ἦν Δαυὶδ ἐρχόμενος ἕως τοῦ Ῥὼς, οὗ προσεκύνησεν ἐκεῖ τῷ Θεῷ· καὶ ἰδοὺ εἰς ἀπαντὴν αὐτῷ Χουσὶ ὁ ἀρχιεταῖρος Δαυίδ διερρηχὼς τὸν χιτῶνα αὐτοῦ, καὶ γῆ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Δαυὶδ ἐὰν μὲν διαβῇς μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ ἔσῃ ἐπ᾽ ἐμὲ εἰς βάσταγμα· καὶ ἐὰν ἐπιστρέψῃς ἐπὶ τὴν πόλιν, καὶ ἐρεῖς τῷ Ἀβεσσαλὼμ, διεληλύθασιν οἱ ἀδελφοί σου, καὶ ὁ βασιλεὺς κατόπισθέ μου διελήλυθεν ὁ πατήρ σου· καὶ νῦν παῖς σού εἰμὶ, βασιλεῦ, ἔασόν με ζῆσαι· παῖς τοῦ πατρὸς σου ἤμην τότε καὶ ἀρτίως, καὶ νῦν ἐγὼ δοῦλος σός· καὶ διασκεδάσεις μοι τὴν βουλὴν Ἀχιτόφελ. Καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ μετὰ σοῦ Σαδὼκ καὶ Ἀβιάθαρ οἱ ἱερεῖς· καὶ ἔσται πὰν ῥῆμα ὁ ἐὰν ἀκούσῃς ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπαγγελεῖς τῷ Σαδὼκ καὶ τῷ Ἀβιάθαρ τοῖς ἱερεῦσιν. Ἰδοὺ ἐκεῖ μετ᾽ αὐτῶν δύο υἱοὶ αὐτῶν, Ἀχιμάας υἱὸς τῷ Σαδὼκ, καὶ Ἰωνάθαν υἱὸς τῷ Ἀβιάθαρ· καὶ ἀποστελεῖτε ἐν χειρὶ αὐτῶν πρὸς μὲ πὰν ῥῆμα ὃ ἐὰν ἀκούσητε. Καὶ εἰσῆλθε Χουσὶ ὁ ἑταῖρος Δαυὶδ εἰς τὴν πόλιν, καὶ Ἀβεσσαλὼμ ἄρτι εἰσεπορεύετο εἰς Ἰερουσαλήμ.

# 16

Καὶ Δαυὶδ παρῆλθε βραχύ τι ἀπὸ τῆς Ῥὼς, καὶ ἰδοὺ Σιβὰ τὸ παιδάριον Μεμφιβοσθὲ εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ· καὶ ζεῦγος ὄνων ἐπισεσαγμένων, καὶ ἐπ᾽ αὐτοῖς διακόσιοι ἄρτοι, καὶ ἑκατὸν

σταφίδες, καὶ ἑκατὸν φοίνικες καὶ νέβελ οἴνου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Σιβὰ, τί ταῦτά σοι; καὶ εἶπε Σιβὰ, τὰ ὑποζύγια τῇ οἰκίᾳ τοῦ βασιλέως τοῦ ἐπικαθῆσθαι, καὶ οἱ ἄρτοι καὶ οἱ φοίνικες εἰς βρῶσιν τοῖς παιδαρίοις, καὶ ὁ οἶνος πιεῖν τοῖς ἐκλελυμένοις ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ποῦ ὁ υἱὸς τοῦ κυρίου σου; καὶ εἶπε Σιβὰ πρὸς τὸν βασιλέα, ἰδοὺ κάθηται ἐν Ἰερουσαλὴμ, ὅτι εἶπε, σήμερον ἐπιστρέψουσί μοι οἶκος Ἰσραὴλ τὴν βασιλείαν τοῦ πατρός μου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Σιβᾷ, ἰδού σοι πάντα ὅσα ἐστὶ Μεμφιβοσθέ· καὶ εἶπε Σιβὰ προσκυνήσας, εὕροιμι χάριν ἐν ὀφθαλμοῖς σου κύριέ μου βασιλεῦ. Καὶ ἦλθεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἕως Βαουρίμ· καὶ ἰδοὺ ἐκεῖθεν ἀνὴρ ἐξεπορεύετο ἐκ συγγενείας οἴκου Σαοὺλ, καὶ ὄνομα αὐτῷ Σεμεΐ υἱὸς Γηρά· ἐξῆλθε ἐκπορευόμενος καὶ καταρώμενος, καὶ λιθάζων ἐν λίθοις τὸν Δαυὶδ, καὶ πάντας τοὺς παῖδας τοῦ βασιλέως Δαυίδ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἦν, καὶ πάντες οἱ δυνατοὶ, ἐκ δεξιῶν καὶ ἐξ εὐωνύμων τοῦ βασιλέως. Καὶ οὕτως ἔλεγε Σεμεΐ ἐν τῷ καταρᾶσθαι αὐτὸν, ἔξελθε ἔξελθε ἀνὴρ αἱμάτων καὶ ἀνὴρ ὁ παράνομος. Ἐπέστρεψεν ἐπὶ σὲ Κύριος πάντα τὰ αἵματα τοῦ οἴκου Σαοὺλ, ὅτι ἐβασίλευσας ἀντ' αὐτοῦ· καὶ ἔδωκε Κύριος τὴν βασιλείαν ἐν χειρὶ Ἀβεσσαλὼμ τοῦ υἱοῦ σου· καὶ ἰδοὺ σὺ ἐν τῇ κακίᾳ σου, ὅτι ἀνὴρ αἱμάτων σύ. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσὰ υἱὸς Σαρουίας πρὸς τὸν βασιλέα, ἱνατί καταρᾶται ὁ κύων ὁ τεθνηκὼς οὗτος τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα; διαβήσομαι δὴ καὶ ἀφελῶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, τί ἐμοὶ καὶ ὑμῖν, υἱοὶ Σαρουίας; καὶ ἄφετε αὐτὸν, καὶ οὕτως καταράσθω, ὅτι Κύριος εἶπεν αὐτῷ καταρᾶσθαι τὸν Δαυίδ· καὶ τίς ἐρεῖ, ὡς τί ἐποίησας οὕτως; Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀβεσσὰ καὶ πρὸς πάντας τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ἰδοὺ ὁ υἱός μου ὁ ἐξελθὼν ἐκ τῆς κοιλίας μου ζητεῖ τὴν ψυχήν μου, καὶ προσέτι νῦν ὁ υἱὸς τοῦ Ἰεμινί· ἄφετε αὐτὸν

καταρᾶσθαι, ὅτι εἶπεν αὐτῷ Κύριος. Εἴπως ἴδοι Κύριος ἐν τῇ ταπεινώσει μου, καὶ ἐπιστρέψει μοι ἀγαθὰ ἀντὶ τῆς κατάρας αὐτοῦ τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ καὶ πάντες οἱ ἄνδρες αὐτοῦ ἐν τῇ ὁδῷ· καὶ Σεμεῒ ἐπορεύετο ἐκ πλευρᾶς τοῦ ὄρους ἐχόμενα αὐτοῦ πορευόμενος καὶ καταρώμενος καὶ λιθάζων ἐν λίθοις ἐκ πλαγίων αὐτοῦ καὶ τῷ χοῒ πάσσων. Καὶ ἦλθεν ὁ βασιλεὺς καὶ πᾶς ὁ λαὸς μετ᾽ αὐτοῦ ἐκλελυμένοι, καὶ ἀνέψυξαν ἐκεῖ. Καὶ Ἀβεσσαλὼμ καὶ πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ εἰσῆλθον εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ Ἀχιτόφελ μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἡνίκα ἦλθε Χουσὶ ὁ ἀρχιεταῖρος Δαυὶδ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, καὶ εἶπε Χουσὶ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, ζήτω ὁ βασιλεύς. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς Χουσὶ, τοῦτο τὸ ἔλεός σου μετὰ τοῦ ἑταίρου σου; ἱνατί οὐκ ἀπῆλθες μετὰ τοῦ ἑταίρου σου; Καὶ εἶπε Χουσὶ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, οὐχὶ, ἀλλὰ κατόπισθεν οὗ ἐξελέξατο Κύριος καὶ ὁ λαὸς οὗτος καὶ πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ, αὐτῷ ἔσομαι, καὶ μετὰ αὐτοῦ καθήσομαι. Καὶ τὸ δεύτερον, τίνι ἐγὼ δουλεύσω; οὐχὶ ἐνώπιον τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ; καθάπερ ἐδούλευσα ἐνώπιον τοῦ πατρός σου, οὕτως ἔσομαι ἐνώπιόν σου. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς Ἀχιτόφελ, φέρετε ἑαυτοῖς βουλὴν τί ποιήσωμεν. Καὶ εἶπεν Ἀχιτόφελ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, εἴσελθε πρὸς τὰς παλλακὰς τοῦ πατρός σου, ἃς κατέλιπε φυλάσσειν τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἀκούσεται πᾶς Ἰσραὴλ, ὅτι κατῄσχυνα, τὸν πατέρα σοῦ, καὶ ἐνισχύσουσιν αἱ χεῖρες πάντων τῶν μετὰ σοῦ. Καὶ ἔπηξαν τὴν σκηνὴν τῷ Ἀβεσσαλὼμ ἐπὶ τὸ δῶμα, καὶ εἰσῆλθεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς τὰς παλλακὰς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ κατ᾽ ὀφθαλμοὺς παντὸς Ἰσραήλ. Καὶ ἡ βουλὴ Ἀχιτόφελ, ἣν ἐβουλεύσατο ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρώταις, ὃν τρόπον ἐπερωτήσῃ τις ἐν λόγῳ τοῦ Θεοῦ· οὕτως πᾶσα ἡ βουλὴ τοῦ Ἀχιτόφελ καί γε τῷ Δαυὶδ καί γε τῷ Ἀβεσσαλώμ.

# 17

Καὶ εἶπεν Ἀχιτόφελ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, ἐπιλέξω δὴ ἐμαυτῷ δώδεκα χιλιάδας ἀνδρῶν, καὶ ἀναστήσομαι καὶ καταδιώξω ὀπίσω Δαυὶδ τὴν νύκτα. Καὶ ἐπελεύσομαι ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ αὐτὸς κοπιῶν καὶ ἐκλελυμένος χερσὶ, καὶ ἐκστήσω αὐτὸν, καὶ φεύξεται πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ πατάξω τὸν βασιλέα μονώτατον· Καὶ ἐπιστρέψω πάντα τὸν λαὸν πρὸς σὲ, ὃν τρόπον ἐπιστρέφει ἡ νύμφη πρὸς τὸν ἄνδρα αὐτῆς· πλὴν ψυχὴν ἀνδρὸς ἑνὸς σὺ ζητεῖς, καὶ παντὶ τῷ λαῷ ἔσται εἰρήνη. Καὶ εὐθὺς ὁ λόγος ἐν ὀφθαλμοῖς Ἀβεσσαλὼμ, καὶ ἐν ὀφθαλμοῖς πάντων τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραήλ. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ, καλέσατε δὴ καί γε τὸν Χουσὶ τὸν Ἀραχὶ, καὶ ἀκούσωμεν τί ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καί γε αὐτοῦ. Καὶ εἰσῆλθε Χουσὶ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ πρὸς αὐτὸν, λέγων, κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐλάλησεν Ἀχιτόφελ· ποιήσομεν κατὰ τὸν λόγον αὐτοῦ; εἰ δὲ μὴ, σὺ λάλησον. Καὶ εἶπε Χουσὶ πρὸς Ἀβεσσαλὼμ, οὐκ ἀγαθὴ αὕτη ἡ βουλὴ ἣν ἐβουλεύσατο Ἀχιτόφελ τὸ ἅπαξ τοῦτο. Καὶ εἶπε Χουσὶ, σὺ οἶδας τὸν πατέρα σου καὶ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ, ὅτι δυνατοί εἰσι σφόδρα καὶ κατάπικροι τῇ ψυχῇ αὐτῶν, ὡς ἄρκος ἠτεκνωμένη ἐν ἀγρῷ, καὶ ὡς ὗς τραχεῖα ἐν τῇ πεδίῳ· ὁ πατήρ σου ἀνὴρ πολεμιστὴς, καὶ οὐ μὴ καταλύσῃ τὸν λαόν. Ἰδοὺ γὰρ αὐτὸς νῦν κέκρυπται ἐν ἑνὶ τῶν βουνῶν ἢ ἐν ἑνὶ τῶν τόπων· καὶ ἔσται ἐν τῷ ἐπιπεσεῖν αὐτοῖς ἐν ἀρχῇ, καὶ ἀκούσῃ ἀκούων, καὶ εἴπῃ, ἐγενήθη θραῦσις ἐν τῷ λαῷ τῷ ὀπίσω Ἀβεσσαλώμ· Καί γε αὐτὸς υἱὸς δυνάμεως, οὗ ἡ καρδία καθὼς ἡ καρδία τοῦ λέοντος, τηκομένη τακήσεται· ὅτι· οἶδε πᾶς Ἰσραὴλ, ὅτι δυνατὸς ὁ πατήρ σου, καὶ υἱοὶ δυνάμεως οἱ μετ᾽ αὐτοῦ. Ὅτι οὕτως

συμβουλεύων ἐγὼ συνεβούλευσα, καὶ συναγόμενος συναχθήσεται ἐπὶ σὲ πᾶς Ἰσραὴλ ἀπὸ Δὰν καὶ ἕως Βηρσαβεὲ, ὡς ἡ ἄμμος ἡ ἐπὶ τῆς θαλάσσης εἰς πλῆθος· καὶ τὸ πρόσωπόν σου πορευόμενον ἐν μέσῳ αὐτῶν. Καὶ ἥξομεν πρὸς αὐτὸν εἰς ἕνα τῶν τόπων οὗ ἐὰν εὕρωμεν αὐτὸν ἐκεῖ, καὶ παρεμβαλοῦμεν ἐπ’ αὐτὸν, ὡς πίπτει δρόσος ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ οὐχ ὑπολειψόμεθα ἐν αὐτῷ καὶ τοῖς ἀνδράσιν αὐτοῦ τοῖς μετ’ αὐτοῦ, καί γε ἕνα. Καὶ ἐὰν εἰς τὴν πόλιν συναχθῇ, καὶ λήψεται πᾶς Ἰσραὴλ πρὸς τὴν πόλιν ἐκείνην σχοινία, καὶ συροῦμεν αὐτὴν ἕως εἰς τὸν χειμάῤῥουν, ὅπως μὴ καταλειφθῇ ἐκεῖ μηδὲ λίθος. Καὶ εἶπεν Ἀβεσσαλὼμ, καὶ πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ, ἀγαθὴ ἡ βουλὴ Χουσὶ τοῦ Ἀραχὶ ὑπὲρ τὴν βουλὴν Ἀχιτόφελ· καὶ Κύριος ἐνετείλατο διασκεδάσαι τὴν βουλὴν τοῦ Ἀχιτόφελ τὴν ἀγαθὴν, ὅπως ἂν ἐπαγάγῃ Κύριος ἐπὶ Ἀβεσσαλὼμ τὰ κακὰ πάντα. Καὶ εἶπε Χουσὶ ὁ τοῦ Ἀραχὶ πρὸς Σαδὼκ καὶ Ἀβιάθαρ τοὺς ἱερεῖς, οὕτως καὶ οὕτως συνεβούλευσεν Ἀχιτόφελ τῷ Ἀβεσσαλὼμ καὶ τοῖς πρεσβυτέροις Ἰσραήλ· καὶ οὕτως καὶ οὕτως συνεβούλευσα ἐγώ. Καὶ νῦν ἀποστείλατε ταχὺ καὶ ἀναγγείλατε τῷ Δαυὶδ, λέγοντες, μὴ αὐλισθῇς τὴν νύκτα ἐν Ἀραβὼθ τῆς ἐρήμου, καί γε διαβαίνων σπεῦσον, μήποτε καταπείσῃ τὸν βασιλέα, καὶ πάντα τὸν λαὸν τὸν μετ’ αὐτοῦ. Καὶ Ἰωνάθαν καὶ Ἀχιμάας εἱστήκεισαν ἐν τῇ πηγῇ Ῥωγὴλ, καὶ ἐπορεύθη ἡ παιδίσκη, καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς, καὶ αὐτοὶ πορεύονται καὶ ἀναγγέλλουσι τῷ βασιλεῖ Δαυίδ· ὅτι οὐκ ἠδύναντο ὀφθῆναι τοῦ εἰσελθεῖν τὶς τὴν πόλιν. Καὶ εἶδεν αὐτοὺς παιδάριον, καὶ ἀνήγγειλε τῷ Ἀβεσσαλώμ· καὶ ἐπορεύθησαν οἱ δύο ταχέως, καὶ εἰσῆλθαν εἰς οἰκίαν ἀνδρὸς ἐν Βαουρίμ· καὶ αὐτῷ λάκκος ἐν τῇ αὐλῇ, καὶ κατέβησαν ἐκεῖ. Καὶ ἔλαβεν ἡ γυνὴ, καὶ διεπέτασε τὸ ἐπικάλυμμα ἐπὶ πρόσωπον τοῦ λάκκου, καὶ ἔψυξεν ἐπ’ αὐτῷ ἀραφὼθ, καὶ οὐκ ἐγνώσθη ῥῆμα. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες Ἀβεσσαλὼμ

πρὸς τὴν γυναῖκα εἰς τὴν οἰκίαν, καὶ εἶπαν, ποῦ Ἀχιμάας καὶ Ἰωνάθαν; καὶ εἶπεν αὐτοῖς ἡ γυνὴ, παρῆλθαν μικρὸν το ὕδατος· καὶ ἐζήτησαν, καὶ οὐχ εὗραν, καὶ ἀνέστρεψαν εἰς Ἰερουσαλήμ. Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ ἀπελθεῖν αὐτοὺς, καὶ ἀνέβησαν ἐκ τοῦ λάκκου, καὶ ἐπορεύθησαν· καὶ ἀπήγγειλαν τῷ βασιλεῖ Δαυὶδ, καὶ εἶπαν πρὸς Δαυὶδ, ἀνάστητε καὶ διάβητε ταχέως τὸ ὕδωρ, ὅτι οὕτως ἐβουλεύσατο περὶ ὑμῶν Ἀχιτόφελ. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετ’ αὐτοῦ, καὶ διέβησαν τὸν Ἰορδάνην ἕως τοῦ φωτὸς τοῦ πρωΐ, ἕως ἑνὸς οὐκ ἔλαθεν ὃς οὐ διῆλθε τὸν Ἰορδάνην. Καὶ Ἀχιτόφελ εἶδεν ὅτι οὐκ ἐγενήθη ἡ βουλὴ αὐτοῦ, καὶ ἐπέσαξε τὴν ὄνον αὐτοῦ, καὶ ἀνέστη καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ εἰς τὴν πόλιν αὐτοῦ· καὶ ἐνετείλατο τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ ἀπήγξατο καὶ ἀπέθανεν καὶ ἐτάφη ἐν τῷ τάφῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ Δαυεὶδ διῆλθεν εἰς Μαναΐμ καὶ Ἀβεσσαλὼμ διέβη τὸν Ἰορδάνην αὐτὸς καὶ πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ μετ’ αὐτοῦ. Καὶ τὸν Ἀμεσσαῒ κατέστησεν Ἀβεσσαλὼμ ἀντὶ Ἰωὰβ ἐπὶ τῆς δυνάμεως. Καὶ Ἀμεσσαῒ υἱὸς ἀνδρὸς, καὶ ὄνομα αὐτῷ Ἰεθὲρ ὁ Ἰεζραηλίτης· οὗτος εἰσῆλθε πρὸς Ἀβιγαίαν θυγατέρα Νάας ἀδελφὴν Σαρουίας μητρὸς Ἰωάβ. Καὶ παρενέβαλε πᾶς Ἰσραὴλ καὶ Ἀβεσσαλὼμ εἰς τὴν γῆν Γαλαάδ. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἦλθε Δαυὶδ εἰς Μαναΐμ, καὶ Οὐεσβὶ υἱὸς Νάας ἐκ Ῥαββὰθ υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ Μαχὶρ υἱὸς Ἀμιὴλ ἐκ Λωδαβὰρ, καὶ Βερζελλὶ ὁ Γαλααδίτης ἐκ Ῥωγελλὶμ, ἤνεγκαν δέκα κοίτας ἀμφιτάπους, καὶ λέβητας δέκα, καὶ σκεύη κεράμου, καὶ πυροὺς, καὶ κριθὰς, καὶ ἄλευρον, καὶ ἄλφιτον, καὶ κύαμον, καὶ φακὸν, καὶ μέλι, καὶ βούτυρον καὶ πρόβατα καὶ σαφὼθ βοῶν· καὶ προσήνεγκαν τῷ Δαυὶδ, καὶ τῷ λαῷ τῷ μετ’ αὐτοῦ φαγεῖν· ὅτι εἶπεν, ὁ λαὸς πεινῶν καὶ ἐκλελυμένος καὶ διψῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ.

# 18

Καὶ ἐπεσκέψατο Δαυὶδ τὸν λαὸν τὸν μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ κατέστησεν ἐπ᾽ αὐτῶν χιλιάρχους καὶ ἑκατοντάρχους. Καὶ ἀπέστειλε Δαυὶδ τὸν λαὸν τὸ τρίτον ἐν χειρὶ Ἰωὰβ, καὶ τὸ τρίτον ἐν χειρὶ Ἀβεσσὰ υἱοῦ Σαρουίας ἀδελφοῦ Ἰωὰβ, καὶ τὸ τρίτον ἐν χειρὶ Ἐθὶ τοῦ Γεθαίου· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τὸν λαὸν, ἐξελθὼν ἐξελεύσομαι καί γε ἐγὼ μεθ᾽ ὑμῶν. Καὶ εἶπαν, οὐκ ἐξελεύσῃ, ὅτι ἐὰν φυγῇ φύγωμεν, οὐ θήσουσιν ἐφ᾽ ἡμᾶς καρδίαν· καὶ ἐὰν ἀποθάνωμεν τὸ ἥμισυ ἡμῶν, οὐ θήσουσιν ἐφ᾽ ἡμᾶς καρδίαν, ὅτι σὺ ὡς ἡμεῖς δέκα χιλιάδες· καὶ νῦν ἀγαθὸν, ὅτι ἔσῃ ἡμῖν ἐν τῇ πόλει βοήθεια τοῦ βοηθεῖν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς, ὃ ἐὰν ἀρέσῃ ἐν ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, ποιήσω· καὶ ἔστη ὁ βασιλεὺς ἀνὰ χεῖρα τῆς πύλης· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἐξεπορεύετο εἰς ἑκατοντάδας καὶ εἰς χιλιάδας. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Ἰωὰβ καὶ τῷ Ἀβεσσὰ καὶ τῷ Ἐθὶ, λέγων, φείσασθέ μου τοῦ παιδαρίου τοῦ Ἀβεσσαλώμ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἤκουσεν ἐντελλομένου τοῦ βασιλέως πᾶσι τοῖς ἄρχουσιν ὑπὲρ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἐξῆλθε πᾶς ὁ λαὸς εἰς τὸν δρυμὸν ἐξεναντίας Ἰσραήλ· καὶ ἐγένετο ὁ πόλεμος ἐν τῷ δρυμῷ Ἐφραίμ. Καὶ ἔπταισεν ἐκεῖ ὁ λαὸς Ἰσραὴλ ἐνώπιον τῶν παίδων Δαυὶδ, καὶ ἐγένετο ἡ θραῦσις μεγάλη ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, εἴκοσι χιλιάδες ἀνδρῶν. Καὶ ἐγένετο ἐκεῖ ὁ πόλεμος διεσπαρμένος ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς· καὶ ἐπλεόνασεν ὁ δρυμὸς τοῦ καταφαγεῖν ἐκ τοῦ λαοῦ, ὑπὲρ οὓς κατέφαγεν ἐν τῷ λαῷ ἡ μάχαιρα τῇ ἡμέρᾳ ἐκαίνῃ. Καὶ συνήντησεν Ἀβεσσαλὼμ ἐνώπιον τῶν παίδων Δαυίδ· καὶ Ἀβεσσαλὼμ ἦν ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ τοῦ ἡμιόνου αὐτοῦ, καὶ εἰσῆλθεν ὁ ἡμίονος ὑπὸ τὸ δάσος τῆς δρυὸς τῆς μεγάλης, καὶ περιεπλάκη ἡ

κεφαλὴ αὐτοῦ ἐν τῇ δρυΐ, καὶ ἐκρεμάσθη ἀναμέσον τοῦ οὐρανοῦ καὶ ἀναμέσον τῆς γῆς, καὶ ὁ ἡμίονος ὑποκάτω αὐτοῦ παρῆλθε. Καὶ εἶδεν ἀνὴρ εἷς, καὶ ἀνήγγειλε τῷ Ἰωὰβ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἑώρακα τὸν Ἀβεσσαλὼμ κρεμάμενον ἐν τῇ δρυΐ. Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ τῷ ἀνδρὶ τῇ ἀναγγέλλοντι αὐτῷ, καὶ ἰδοὺ ἑώρακας· τί ὅτι οὐκ ἐπάταξας αὐτὸν ἐκεῖ εἰς τὴν γῆν; καὶ ἐγὼ ἂν δεδώκειν σοι δέκα ἀργυρίου καὶ παραζώνην μίαν. Εἶπε δὲ ὁ ἀνὴρ πρὸς Ἰωὰβ, καὶ ἐγώ εἰμι ἵστημι ἐπὶ τὰς χεῖράς μου χιλίους σίκλους ἀργυρίου, οὐ μὴ ἐπιβάλω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τὸν υἱὸν τοῦ βασιλέως· ὅτι ἐν τοῖς ὠσὶν ἡμῶν ἐνετείλατο ὁ βασιλεύς σοι καὶ τῷ Ἀβεσσὰ καὶ τῷ Ἐθὶ, λέγων, φυλάξατέ μοι τὸ παιδάριον τὸν Ἀβεσσαλὼμ, μὴ ποιῆσαι ἐν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ ἄδικον· καὶ πᾶς ὁ λόγος οὐ λήσεται ἀπὸ τοῦ βασιλέως, καὶ σὺ στήσῃ ἐξεναντίας. Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, τοῦτο ἐγὼ ἄρξομαι, οὐχ οὕτως μενῶ ἐνώπιόν σου· καὶ ἔλαβεν Ἰωὰβ τρία βέλη ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐνέπηξεν αὐτὰ ἐν τῇ καρδίᾳ Ἀβεσσαλὼμ, ἔτι αὐτοῦ ζῶντος ἐν τῇ καρδίᾳ τῆς δρυός. Καὶ ἐκύκλωσαν δέκα παιδάρια αἴροντα τὰ σκεύη Ἰωὰβ, καὶ ἐπάταξαν τὸν Ἀβεσσαλὼμ, καὶ ἐθανάτωσαν αὐτόν. Καὶ ἐσάλπισεν Ἰωὰβ ἐν κερατίνῃ, καὶ ἀπέστρεψεν ὁ λαὸς τοῦ μὴ διώκειν ὀπίσω Ἰσραὴλ, ὅτι ἐφείδετο Ἰωὰβ τοῦ λαοῦ. Καὶ ἔλαβε τὸν Ἀβεσσαλὼμ, καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὸν εἰς χάσμα μέγα ἐν τῷ δρυμῷ εἰς τὸν βόθυνον τὸν μέγαν, καὶ ἐστήλωσεν ἐπ’ αὐτὸν σωρὸν λίθων μέγαν σφόδρα· καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἔφυγεν ἀνὴρ εἰς τὸ σκήνωμα αὐτοῦ. Καὶ Ἀβεσσαλὼμ ἔτι ζῶν ἔλαβε καὶ ἔστησεν ἑαυτῷ τὴν στήλην ἐν ᾗ ἐλήφθη, καὶ ἐστήλωσεν αὐτὴν λαβεῖν τὴν στήλην τὴν ἐν τῇ βασιλέως, ὅτι εἶπεν, ὅτι οὐκ ἔστιν αὐτῷ υἱὸς ἕνεκν τοῦ ἀναμνῆσαι τὸ ὄνομα αὐτοῦ· καὶ ἐκάλεσε τὴν στήλην, Χεὶρ Ἀβεσσαλὼμ, ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ Ἀχιμάας υἱὸς Σαδὼκ εἶπε, δράμω δὴ καὶ εὐαγγελιῶ τῷ βασιλεῖ, ὅτι ἔκρινε

Κύριος ἐκ χειρὸς τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰωὰβ, οὐκ ἀνὴρ εὐαγγελίας σὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, καὶ εὐαγγελιῇ ἐν ἡμέρᾳ ἄλλῃ· ἐν δὲ τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ οὐκ εὐαγγελιῇ, οὗ εἵνεκεν ὁ υἱὸς τοῦ βασιλέως ἀπέθανε. Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ τῷ Χουσὶ, Βαδίσας ἀνάγγειλον τῷ βασιλεῖ ὅσα εἶδες· καὶ προσεκύνησε Χουσεὶ τῷ Ἰωὰβ, καὶ ἐξῆλθε. Καὶ προσέθετο ἔτι Ἀχιμάας υἱὸς Σαδὼκ, καὶ εἶπε πρὸς Ἰωὰβ, καὶ ἔστω, ὅτι δράμω καί γε ἐγὼ ὀπίσω τοῦ Χουσί· καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, ἱνατί σὺ τοῦτο τρέχεις, υἱέ μου; δεῦρο, οὐκ ἔστι σοι εὐαγγέλια εἰς ὠφέλειαν πορευομένῳ. Καὶ εἶπε, τί γὰρ ἐὰν δράμω; καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰωὰβ, δράμε· καὶ ἔδραμεν Ἀχιμάας τὴν ὁδὸν τὴν τοῦ Κεχὰρ, καὶ ὑπερέβη τὸν Χουσί. Καὶ Δαυὶδ ἐκάθητο ἀναμέσον τῶν δύο πυλῶν· καὶ ἐπορεύθη ὁ σκοπὸς εἰς τὸ δῶμα τῆς πύλης πρὸς τὸ τεῖχος, καὶ ἐπῆρε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ εἶδε. καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ τρέχων μόνος ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ ἀνεβόησεν ὁ σκοπὸς καὶ ἀπήγγειλε τῷ βασιλεῖ· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, εἰ μόνος ἐστὶν, εὐαγγέλια ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ· καὶ ἐπορεύετο πορευόμενος καὶ ἐγγίζων. Καὶ εἶδεν ὁ σκοπὸς ἄνδρα ἕτερον τρέχοντα· καὶ ἐβόησεν ὁ σκοπὸς πρὸς τῇ πύλῃ, καὶ εἶπε, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἕτερος τρέχων μόνος· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, καί γε οὗτος εὐαγγελιζόμενος. Καὶ εἶπεν ὁ σκοπός, ἐγὼ ὁρῶ τὸν δρόμον τοῦ πρώτου ὡς δρόμον Ἀχιμάας υἱοῦ Σαδώκ· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ἀνὴρ ἀγαθὸς οὗτος, καί γε εἰς εὐαγγελίαν ἀγαθὴν ἐλεύσεται. Καὶ ἐβόησεν Ἀχιμάας, καὶ εἶπε πρὸς τὸν βασιλέα, εἰρήνη· καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεός σου, ὃς ἀπέκλεισε τοὺς ἄνδρας τοὺς ἐπαραμένους τὴν χεῖρα αὐτῶν ἐν τῷ κυρίῳ μου τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, εἰρήνη τῷ παιδαρίῳ τῷ Ἀβεσσαλώμ; καὶ εἶπεν Ἀχιμάας, εἶδον τὸ πλῆθος τὸ μέγα τοῦ ἀποστεῖλαι τὸν δοῦλον τοῦ βασιλέως Ἰωὰβ καὶ τὸν

δοῦλόν σου, καὶ οὐκ ἔγνων τί ἐκεῖ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ἐπίστρεψον, στηλώθητι ὧδε· καὶ ἐπεστράφη, καὶ ἔστη. Καὶ ἰδοὺ ὁ Χουσὶ παρεγένετο, καὶ εἶπε τῷ βασιλεῖ, εὐαγγελισθήτω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς, ὅτι ἔκρινέ σοι Κύριος σήμερον ἐκ χειρὸς πάντων τῶν ἐπεγειρομένων ἐπὶ σέ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν Χουσὶ, εἰ εἰρήνη τῷ παιδαρίῳ τῷ Ἀβεσσαλώμ; καὶ εἶπεν ὁ Χουσὶ, γένοιντο ὡς τὸ παιδάριον οἱ ἐχθροὶ τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως, καὶ πάντες ὅσοι ἐπανέστησαν ἐπ’ αὐτὸν εἰς κακά.

# 19

Καὶ ἐταράχθη ὁ βασιλεὺς, καὶ ἀνέβη εἰς τὸ ὑπερῷον τῆς πύλης, καὶ ἔκλαυσε· καὶ οὕτως εἶπεν ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτὸν, υἱέ μου Ἀβεσσαλὼμ, υἱέ μου, υἱέ μου Ἀβεσαλώμ· τίς δῴη τὸν θάνατόν μου ἀντὶ σοῦ; ἐγὼ ἀντὶ σοῦ Ἀβεσσαλὼμ, υἱέ μου, υἱέ μου. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ Ἰωὰβ, λέγοντες, ἰδοῦ ὁ βασιλεὺς κλαίει καὶ πενθεῖ ἐπὶ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἐγένετο ἡ σωτηρία ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς πένθος παντὶ τῷ λαῷ, ὅτι ἤκουσεν ὁ λαὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγων, ὅτι λυπεῖται ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τῷ υἱῷ αὐτοῦ. Καὶ διεκλέπτετο ὁ λαὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τοῦ εἰσελθεῖν εἰς τὴν πόλιν, καθὼς διακλέπτεται ὁ λαὸς οἱ αἰσχυνόμενοι ἐν τῷ αὐτοὺς φεύγειν ἐν τῷ πολέμῳ. Καὶ ὁ βασιλεὺς ἔκρυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ· καὶ ἔκραξεν ὁ βασιλεὺς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων, υἱέ μου Ἀβεσσαλὼμ, Ἀβεσσαλὼμ υἱὲ μου. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰωὰβ πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὸν οἶκον, καὶ εἶπε, κατῄσχυνας σήμερον τὰ πρόσωπα πάντων τῶν δούλων σου τῶν ἐξαιρουμένων σε σήμερον, καὶ τὴν ψυχὴν τῶν υἱῶν σου, καὶ τῶν θυγατέρων σου, καὶ τὴν ψυχὴν τῶν γυναικῶν σου, καὶ τῶν

παλλακῶν σου, τοῦ ἀγαπᾷν τοὺς μισοῦντάς σε, καὶ μισεῖν τοὺς ἀγαπῶντάς σε· καὶ ἀνήγγειλας σήμερον, ὅτι οὐκ εἰσὶν οἱ ἄρχοντές σου, οὐδὲ παῖδες· ὅτι ἔγνωκα σήμερον, ὅτι εἰ Ἀβεσσαλὼμ ἔζη, πάντες ἡμεῖς σήμερον νεκροί, ὅτι τότε τὸ εὐθὲς ἦν ἐν ὀφθαλμοῖς σου. Καὶ νῦν ἀναστὰς ἔξελθε καὶ λάλησον εἰς τὴν καρδίαν τῶν δούλων σου, ὅτι ἐν Κυρίῳ ὤμοσα, ὅτι εἰ μὴ ἐκπορεύσῃ σήμερον, εἰ αὐλισθήσεται ἀνὴρ μετὰ σοῦ τὴν νύκτα ταύτην· καὶ ἐπίγνωθι σεαυτῷ, καὶ κακόν σοι τοῦτο ὑπὲρ πᾶν τὸ κακὸν τὸ ἐπελθόν σοι ἐκ νεότητός σου ἕως τοῦ νῦν. Καὶ ἀνέστη ὁ βασιλεὺς καὶ ἐκάθισεν ἐν τῇ πύλῃ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀνήγγειλαν, λέγοντες, ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς κάθηται ἐν τῇ πύλῃ· καὶ εἰσῆλθε πᾶς ὁ λαὸς κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως ἐπὶ τὴν πύλην· καὶ Ἰσραὴλ ἔφυγεν ἀνὴρ εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ. Καὶ ἦν πᾶς ὁ λαὸς κρινόμενος ἐν πάσαις φυλαῖς Ἰσραὴλ, λέγοντες, ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἐῤῥύσατο ἡμᾶς ἀπὸ πάντων τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν, καὶ αὐτὸς ἐξείλετο ἡμᾶς ἐκ χειρὸς ἀλλοφύλων· καὶ νῦν πέφευγεν ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἀπὸ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ Ἀβεσσαλὼμ, ὃν ἐχρίσαμεν ἐφ’ ἡμῶν, ἀπέθανεν ἐν τῷ πολέμῳ· καὶ νῦν ἵνατί ὑμεῖς κωφεύετε τοῦ ἐπιστρέψαι τὸν βασιλέα; καὶ τὸ ῥῆμα παντὸς Ἰσραὴλ ἦλθε πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἀπέστειλε πρὸς Σαδὼκ καὶ πρὸς Ἀβιάθαρ τοῦς ἱερεῖς, λέγων, λαλήσατε πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους Ἰούδα, λέγοντες, ἱνατί γίνεσθε ἔσχατοι τοῦ ἐπιστρέψαι τὸν βασιλέα εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ; καὶ λόγος παντὸς Ἰσραὴλ ἦλθε πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Ἀδελφοί μου ὑμεῖς, ὀστᾶ μου καὶ σάρκες μου ὑμεῖς· ἱνατί γίνεσθε ἔσχατοι τοῦ ἐπιστρέψαι τὸν βασιλέα εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ; καὶ τῷ Ἀμεσσαΐ; ἐρεῖτε, οὐχὶ ὀστοῦν μου καὶ σάρξ μου σύ; καὶ νῦν τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς, καὶ τάδε προσθείη, εἰ μὴ ἄρχων δυνάμεως ἔσῃ ἐνώπιον

ἐμοῦ πάσας τὰς ἡμέρας ἀντὶ Ἰωάβ. Καὶ ἔκλινε τὴν καρδίαν παντὸς ἀνδρὸς Ἰούδα ὡς ἀνδρὸς ἑνός· καὶ ἀπέστειλαν πρὸς τὸν βασιλεα, λέγοντες, ἐπιστράφηθι σὺ καὶ πάντες οἱ δοῦλοί σου. Καὶ ἐπέστρεψεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἦλθεν ἕως τοῦ Ἰορδάνου· καὶ ἄνδρες Ἰούδα ἦλθαν εἰς Γάλγαλα τοῦ πορεύεσθαι εἰς ἀπαντὴν τοῦ βασιλέως, διαβιβάσαι τὸν βασιλέα τὸν Ἰορδάνην. Καὶ ἐτάχυνε Σεμεΐ υἱὸς Γηρὰ υἱοῦ τοῦ Ἰεμινὶ ἐκ Βαουρὶμ, καὶ κατέβη μετὰ ἀνδρὸς Ἰούδα εἰς ἀπαντὴν τοῦ βασιλέως Δαυίδ, καὶ χίλιοι ἄνδρες μετ' αὐτοῦ ἐκ τοῦ Βενιαμὶν, καὶ Σιβὰ τὸ παιδάριον τοῦ οἴκου Σαοὺλ, καὶ πεντεκαίδεκα υἱοὶ αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, καὶ εἴκοσι δοῦλοι αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ· καὶ κατεύθυναν τὸν Ἰορδάνην ἔμπροσθεν τοῦ βασιλέως, καὶ ἐλειτούργησαν τὴν λειτουργίαν τοῦ διαβιβάσαι τὸν βασιλέα· καὶ διέβη ἡ διάβασις τοῦ ἐξεγεῖραι τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, καὶ τοῦ ποιῆσαι τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. Καὶ Σεμεΐ υἱὸς Γηρὰ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, διαβαίνοντος αὐτοῦ τὸν Ἰορδάνην, καὶ εἶπε πρὸς τὸν βασιλέα, μὴ δὴ λογισάσθω ὁ κύριός μου ἀνομίαν, καὶ μὴ μνησθῇς ὅσα ἠδίκησεν ὁ παῖς σου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ὁ κύριός μου ἐξεπορεύετο ἐξ Ἰερουσαλὴμ, τοῦ θέσθαι τὸν βασιλέα εἰς τὴν καρδίαν αὐτοῦ. Ὅτι ἔγνω ὁ δοῦλός σου ὅτι ἐγὼ ἥμαρτον, καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἦλθον σήμερον πρότερος παντὸς Ἰσραὴλ καὶ οἴκου Ἰωσὴφ, τοῦ καταβῆναί με εἰς ἀπαντὴν τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως. Καὶ ἀπεκρίθη Ἀβεσσαὲ υἱὸς Σαρουίας, καὶ εἶπε, μὴ ἀντὶ τούτου οὐ θανατωθήσεται Σεμεΐ, ὅτι κατηράσατο τὸν χριστὸν Κυρίου; Καὶ εἶπε Δαυίδ, τί ἐμοὶ καὶ ὑμῖν, υἱοὶ Σαρουίας, ὅτι γίνεσθέ μοι σήμερον εἰς ἐπίβουλον; σήμερον οὐ θανατωθήσεταί τις ἀνὴρ ἐξ Ἰσραήλ· ὅτι οὐκ οἶδα εἰ σήμερον βασιλεύω ἐγὼ ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Σεμεΐ, οὐ μὴ ἀποθάνῃς· καὶ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ βασιλεύς. Καὶ

Μεμφιβοσθὲ υἱὸς υἱοῦ Σαοὺλ κατέβη εἰς ἀπαντὴν τοῦ βασιλέως, καὶ οὐκ ἐθεράπευσε τοὺς πόδας αὐτοῦ, οὐδὲ ὠνυχίσατο, οὐδὲ ἐποίησε τὸν μύστακα αὐτοῦ, καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ οὐκ ἀπέπλυνεν, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς ἀπῆλθεν ὁ βασιλεὺς, ἕως τῆς ἡμέρας ἧς αὐτὸς παρεγένετο ἐν εἰρήνῃ. Καὶ ἐγένετο ὅτε εἰσῆλθεν εἰς Ἰερουσαλὴμ εἰς ἀπάντησιν τοῦ βασιλέως, καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, τί ὅτι οὐκ ἐπορεύθης μετ’ ἐμοῦ, Μεμφιβοσθέ; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Μεμφιβοσθὲ, κύριέ μου βασιλεῦ, ὁ δοῦλός μου παρελογίσατό με, ὅτι εἶπεν ὁ παῖς σου αὐτῷ, ἐπίσαξόν μοι τὴν ὄνον, καὶ ἐπιβῶ ἐπ’ αὐτὴν, καὶ πορεύσομαι μετὰ τοῦ βασιλέως, ὅτι χωλὸς ὁ δοῦλός σου. Καὶ μεθώδευσεν ἐν τῷ δούλῳ σου πρὸς τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα· καὶ ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς ὡς ἄγγελος τοῦ Θεοῦ, καὶ ποίησον τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου. Ὅτι οὐκ ἦν πᾶς ὁ οἶκος τοῦ πατρός μου, ἀλλ’ ἢ ὅτι ἄνδρες θανάτου τῷ κυρίῳ μου τῷ βασιλεῖ, καὶ ἔθηκας τὸν δοῦλόν σου ἐν τοῖς ἐσθίουσι τὴν τράπεζάν σου· καὶ τί ἐστι μοὶ ἔτι δικαίωμα, καὶ τοῦ κεκραγέναι με ἔτι πρὸς τὸν βασιλέα; Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ἱνατί λαλεῖς ἔτι τοὺς λόγους σου; εἶπον, σὺ καὶ Σιβὰ διελεῖσθε τὸν ἀγρόν. Καὶ εἶπε Μεμφιβοσθὲ πρὸς τὸν βασιλέα, καί γε τὰ πάντα λαβέτω, μετὰ τὸ παραγενέσθαι τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα ἐν εἰρήνῃ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. Καὶ Βερζελλὶ ὁ Γαλααδίτης κατέβη ἐκ Ῥωγελλὶμ, καὶ διέβη μετὰ τοῦ βασιλέως τὸν Ἰορδάνην ἐκπέμψαι αὐτὸν τὸν Ἰορδάνην. Καὶ Βερζελλὶ ἀνὴρ πρεσβύτερος σφόδρα, υἱὸς ὀγδοήκοντα ἐτῶν, καὶ αὐτὸς διέθρεψε τὸν βασιλέα ἐν τῷ οἰκεῖν αὐτὸν ἐν Μαναΐμ, ὅτι ἀνὴρ μέγας ἦν σφόδρα. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Βερζελλὶ, σὺ διαβήσῃ μετ’ ἐμοῦ, καὶ διαθρέψω τὸ γῆράς σου μετ’ ἐμοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἶπε Βερζελλὶ πρὸς τὸν βασιλέα, πόσαι ἡμέραι ἐτῶν ζωῆς μου, ὅτι ἀναβήσομαι μετὰ τοῦ βασιλέως εἰς

Ἰερουσαλήμ; Υἱὸς ὀγδοήκοντα ἐτῶν ἐγώ εἰμι σήμερον· εἰ μὴν γνώσομαι ἀναμέσον ἀγαθοῦ καὶ κακοῦ; εἰ γεύσεται ὁ δοῦλός σου ἔτι ὃ φάγομαι ἢ πίομαι; ἢ ἀκούσομαι ἔτι φωνὴν ᾀδόντων καὶ ᾀδουσῶν; καὶ ἱνατί ἔσται ἔτι ὁ δοῦλός σου εἰς φορτίον ἐπὶ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα; Ὡς βραχὺ διαβήσεται ὁ δοῦλός σου τὸν Ἰορδάνην μετὰ τοῦ βασιλέως· καὶ ἱνατί ἀνταποδίδωσί μοι ὁ βασιλεὺς τὴν ἀνταπόδοσιν ταύτην; Καθισάτω δὴ ὁ δοῦλός σου, καὶ ἀποθανοῦμαι ἐν τῇ πόλει μου παρὰ τῷ τάφῳ τοῦ πατρός μου καὶ τῆς μητρός μου· καὶ ἰδοὺ ὁ δοῦλός σου Χαμαὰμ διαβήσεται μετὰ τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως· καὶ ποίησον αὐτῷ τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, μετ᾽ ἐμοῦ διαβήτω Χαμαὰμ, κἀγὼ ποιήσω αὐτῷ τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς μου, καὶ πάντα ὅσα ἂν ἐκλέξῃ ἐπ᾽ ἐμοὶ, ποιήσω σοι. Καὶ διέβη πᾶς ὁ λαὸς τὸν Ἰορδάνην, καὶ ὁ βασιλεὺς διέβη, καὶ κατεφίλησεν ὁ βασιλεὺς τὸν Βερζελλὶ, καὶ εὐλόγησεν αὐτὸν, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ διέβη ὁ βασιλεὺς εἰς Γάλγαλα, καὶ Χαμαὰμ διέβη μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς Ἰούδα διαβαίνοντες μετὰ τοῦ βασιλέως, καί γε τὸ ἥμισυ τοῦ λαοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἰδοὺ πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ παρεγένοντο πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπε πρὸς τὸν βασιλέα, τί ὅτι ἔκλεψάν σε οἱ ἀδελφοὶ ἡμῶν ἀνὴρ Ἰούδα, καὶ διεβίβασαν τὸν βασιλέα καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ τὸν Ἰορδάνην, καὶ πάντες ἄνδρες Δαυὶδ μετ᾽ αὐτοῦ; Καὶ ἀπεκρίθη πᾶς ἀνὴρ Ἰούδα πρὸς ἄνδρα Ἰσραὴλ, καὶ εἶπαν, διότι ἐγγίζει πρὸς μὲ ὁ βασιλεύς· καὶ ἱνατί οὕτως ἐθυμώθης περὶ τοῦ λόγου τούτου; μὴ βρώσει ἐφάγαμεν ἐκ τοῦ βασιλέως, ἢ δόμα ἔδωκεν, ἢ ἄρσιν ᾖρεν ἡμῖν; Καὶ ἀπεκρίθη ἀνὴρ Ἰσραὴλ τῷ ἀνδρὶ Ἰούδα, καὶ εἶπε, δέκα χεῖρές μοι ἐν τῷ βασιλεῖ, καὶ πρωτότοκος ἐγὼ ἢ σὺ, καί γε ἐν τῷ Δαυίδ εἰμι ὑπὲρ σέ· καὶ ἱνατί τοῦτο ὕβρισάς με, καὶ οὐκ ἐλογίσθη ὁ λόγος μου πρῶτός μοι τοῦ

Ἰούδα ἐπιστρέψαι τὸν βασιλέα ἐμοί; καὶ ἐσκληρύνθη ὁ λόγος ἀνδρὸς Ἰούδα ὑπὲρ τὸν λόγον ἀνδρὸς Ἰσραήλ.

# 20

Καὶ ἐκεῖ ἐπικαλούμενος υἱὸς παράνομος, καὶ ὄνομα αὐτῷ Σαβεὲ, υἱὸς Βοχορί ἀνὴρ ὁ Ἰεμινὶ, καὶ ἐσάλπισε τῇ κερατίνῃ, καὶ εἶπεν, οὐκ ἔστιν ἡμῖν μερὶς ἐν Δαυὶδ, οὐδὲ κληρονομία ἡμῖν ἐν τῷ υἱῷ Ἰεσσαί· ἀνὴρ εἰς τὰ σκηνώματά σου, Ἰσραήλ. Καὶ ἀνέβη πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ ἀπὸ ὄπισθεν Δαυὶδ ὀπίσω Σαβεὲ υἱοῦ Βοχορί· καὶ ἀνὴρ Ἰούδα ἐκολλήθη τῷ βασιλεῖ αὐτῶν, ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου καὶ ἕως Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἰσῆλθε Δαυὶδ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ εἰς Ἰερουσαλήμ· καὶ ἔλαβεν ὁ βασιλεὺς τὰς δέκα γυναῖκας τὰς παλλακὰς αὐτοῦ, ἃς ἀφῆκε φυλάσσειν τὸν οἶκον, καὶ ἔδωκεν αὐτὰς ἐν οἴκῳ φυλακῆς, καὶ διέθρεψεν αὐτὰς, καὶ πρὸς αὐτὰς οὐκ εἰσῆλθε· καὶ ἦσαν συνεχόμεναι ἕως ἡμέρας θανάτου αὐτῶν χῆραι ζῶσαι. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἀμεσσαΐ, βόησόν μοι τὸν ἄνδρα Ἰούδα τρεῖς ἡμέρας, σὺ δὲ αὐτοῦ στῆθι. Καὶ ἐπορεύθη Ἀμεσσαΐ τοῦ βοῆσαι τὸν Ἰούδαν, καὶ ἐχρόνισεν ἀπὸ τοῦ καιροῦ οὗ ἐτάξατο αὐτῷ Δαυίδ. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Ἀμεσσαΐ, νῦν κακοποιήσει ἡμᾶς Σαβεὲ υἱὸς Βοχορὶ ὑπὲρ Ἀβεσσαλώμ· καὶ νῦν σὺ λάβε μετὰ σεαυτοῦ τοὺς παῖδας τοῦ κυρίου σου, καὶ καταδίωξον ὀπίσω αὐτοῦ, μή ποτε ἑαυτῷ εὕρῃ πόλεις ὀχυρὰς, καὶ σκιάσει τοὺς ὀφθαλμοὺς ἡμῶν. Καὶ ἐξῆλθον ὀπίσω αὐτοὺ Ἀβεσσαΐ καὶ οἱ ἄνδρες Ἰωὰβ, καὶ ὁ Χερεθὶ, καὶ ὁ Φελεθὶ, καὶ πάντες οἱ δυνατοὶ, καὶ ἐξῆλθον ἐξ Ἰερουσαλὴμ διῶξαι ὀπίσω Σαβεὲ υἱοῦ Βοχορί. Καὶ αὐτοὶ παρὰ τῷ λίθῳ τῷ μεγάλῳ τῷ ἐν Γαβαών· καὶ Ἀμεσσαΐ εἰσῆλθεν ἔμπροσθεν

αὐτῶν· καὶ Ἰωὰβ περιεζωσμένος μανδύαν τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ, καὶ ἐπ᾽ αὐτῷ ἐζωσμένος μάχαιραν ἐζευγμένην ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ ἐν κολεῷ αὐτῆς· καὶ ἡ μάχαιρα ἐξῆλθε· καὶ αὐτὴ ἐξῆλθε καὶ ἔπεσε. Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ τῷ Ἀμεσσαΐ, εἰ ὑγιαίνεις σὺ, ἀδελφέ; καὶ ἐκράτησεν ἡ χεὶρ ἡ δεξιὰ Ἰωὰβ τοῦ πώγωνος Ἀμεσσαΐ τοῦ καταφιλῆσαι αὐτόν. Καὶ Ἀμεσσαΐ οὐκ ἐφυλάξατο τὴν μάχαιραν τὴν ἐν τῇ χειρὶ Ἰωάβ· καὶ ἔπαισεν αὐτὸν ἐν αὐτῇ Ἰωὰβ εἰς τὴν ψόαν, καὶ ἐξεχύθη ἡ κοιλία αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν, καὶ οὐκ ἐδευτέρωσεν αὐτῷ, καὶ ἀπέθανε· καὶ Ἰωὰβ καὶ Ἀβεσσαΐ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐδίωξεν ὀπίσω Σαβεὲ υἱοῦ Βοχορί. Καὶ ἀνὴρ ἔστη ἐπ᾽ αὐτὸν τῶν παιδαρίων Ἰωὰβ, καὶ εἶπε, τίς ὁ βουλόμενος Ἰωὰβ, καὶ τίς τοῦ Δαυὶδ, ὀπίσω Ἰωάβ; Καὶ Ἀμεσσαΐ πεφυρμένος ἐν τῷ αἵματι ἐν μέσῳ τῆς τρίβου· καὶ εἶδεν ἀνὴρ, ὅτι εἱστήκει πᾶς ὁ λαὸς, καὶ ἀπέστρεψε τὸν Ἀμεσσαΐ ἐκ τῆς τρίβου εἰς ἀγρόν· καὶ ἐπέῤῥιψεν ἐπ᾽ αὐτὸν ἱμάτιον, καθ᾽ ὅτι εἶδε πάντα τὸν ἐρχόμενον ἐπ᾽ αὐτὸν ἑστηκότα. Ἡνίκα δὲ ἔφθασεν ἐκ τῆς τρίβου, παρῆλθε πᾶς ἀνὴρ Ἰσραὴλ ὀπίσω Ἰωὰβ τοῦ διῶξαι ὀπίσω Σαβεὲ υἱοῦ Βοχορί. Καὶ διῆλθεν ἐν πάσαις φυλαῖς Ἰσραὴλ εἰς Ἀβὲλ καὶ εἰς Βαθμαχά· καὶ πάντες ἐν Χαῤῥὶ καὶ ἐξεκκλησιάσθησαν, καὶ ἦλθον κατόπισθεν αὐτοῦ. Καὶ παρεγενήθησαν καὶ ἐπολιόρκουν ἐπ᾽ αὐτὸν ἐν Ἀβὲλ καὶ Φερμαχά· καὶ ἐξέχεαν πρόσχωμα πρὸς τὴν πόλιν, καὶ ἔστη ἐν τῷ προτειχίσματι· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετὰ Ἰωὰβ ἐνοοῦσαν καταβαλεῖν τὸ τεῖχος. Καὶ ἐβόησε γυνὴ σοφὴ ἐκ τοῦ τείχους, καὶ εἶπεν, ἀκούσατε ἀκούσατε, εἴπατε δὴ πρὸς Ἰωὰβ, ἔγγισον ἕως ὧδε, καὶ λαλήσω πρὸς αὐτόν. Καὶ προσήγγισε πρὸς αὐτήν· καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, εἰ σὺ εἶ Ἰωάβ; ὁ δὲ εἶπεν, ἐγώ. εἶπε δὲ αὐτῷ, ἄκουσον τοὺς λόγους τῆς δούλης σου· καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, ἀκούω ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπε λέγουσα, λόγον ἐλάλησαν ἐν πρώτοις, λέγοντες, ἠρωτημένος ἠρωτήθη ἐν

τῇ Ἀβὲλ καὶ ἐν Δὰν εἰ ἐξέλιπον ἃ ἔθεντο οἱ πιστοὶ τοῦ Ἰσραήλ· ἐρωτῶντες ἐπερωτήσουσιν ἐν Ἀβὲλ, καὶ οὕτως εἰ ἐξέλιπον. Ἐγώ εἰμι εἰρηνικὰ τῶν στηριγμάτων Ἰσραήλ· σὺ δὲ ζητεῖς θανατῶσαι πόλιν καὶ μητρόπολιν ἐν Ἰσραήλ· ἱνατί καταποντίζεις κληρονομίαν Κυρίου; Καὶ ἀπεκρίθη Ἰωὰβ, καὶ εἶπεν, ἵλεώς μοι ἵλεώς μοι, εἰ καταποντιῶ καὶ εἰ φθερῶ. Οὐχ οὕτως ὁ λόγος, ὅτι ἀνὴρ ἐξ ὄρους Ἐφραὶμ, Σαβεὲ υἱὸς Βοχορὶ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ ἐπῆρε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὸν βασιλέα Δαυίδ. δότε αὐτόν μοι μόνον, καὶ ἀπελεύσομαι ἀπάνωθεν τῆς πόλεως. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ πρὸς Ἰωὰβ, ἰδοὺ ἡ κεφαλὴ αὐτοῦ ῥιφήσεται πρὸς σὲ διὰ τοῦ τείχους. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ γυνὴ πρὸς πάντα τὸν λαὸν, καὶ ἐλάλησε πρὸς πᾶσαν τὴν πόλιν ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτῆς· καὶ ἀφεῖλε τὴν κεφαλὴν Σαβεὲ υἱοῦ Βοχορί· καὶ ἀφεῖλε καὶ ἔβαλε πρὸς Ἰωάβ· καὶ ἐσάλπισεν ἐν κερατίνῃ, καὶ διεσπάρησαν ἀπὸ τῆς πόλεως ἀπ’ αὐτοῦ ἀνὴρ εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ· καὶ Ἰωὰβ ἀπέστρεψεν εἰς Ἰερουσαλὴμ πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ ὁ Ἰωὰβ πρὸς πάσῃ τῇ δυνάμει Ἰσραήλ· καὶ Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ ἐπὶ τοῦ Χερεθὶ, καὶ ἐπὶ τοῦ Φελεθί· Καὶ Ἀδωνιρὰμ ἐπὶ τοῦ φόρου· καὶ Ἰωσαφὰθ υἱὸς Ἀχιλοὺθ ἀναμιμνήσκων. Καὶ Σουσὰ γραμματεύς· καὶ Σαδὼκ καὶ Ἀβιάθαρ ἱερεῖς· Καί γε Ἰρὰς ὁ Ἰαρὶν ἦν ἱερεὺς τῷ Δαυίδ.

# 21

Καὶ ἐγένετο λιμὸς ἐν ταῖς ἡμέραις Δαυὶδ τρία ἔτη, ἐνιαυτὸς ὁ ἐχόμενος ἐνιαυτοῦ· καὶ ἐζήτησε Δαυὶδ τὸ πρόσωπον Κυρίου· καὶ εἶπε Κύριος, ἐπὶ Σαοὺλ καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ ἀδικία ἐν θανάτῳ αἱμάτων αὐτοῦ, περὶ οὗ ἐθανάτωσε τοὺς Γαβαωνίτας. Καὶ

ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ τοὺς Γαβαωνίτας, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· καὶ οἱ Γαβαωνίται οὐχ υἱοὶ Ἰσραήλ εἰσιν, ὅτι ἀλλ᾽ ἢ ἐκ τοῦ ἐλλείμματος τοῦ Ἀμορῥαίου, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ὤμοσαν αὐτοῖς· καὶ ἐζήτησε Σαοὺλ πατάξαι αὐτοὺς ἐν τῷ ζηλῶσαι αὐτὸν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς τοὺς Γαβαωνίτας, τί ποιήσω ὑμῖν, καὶ ἐν τίνι ἐξιλάσωμαι, καὶ εὐλογήσετε τὴν κληρονομίαν Κυρίου; Καὶ εἶπαν αὐτῷ οἱ Γαβαωνίται, οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἀργύριον ἢ χρυσίον μετὰ Σαοὺλ καὶ μετὰ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἀνὴρ θανατῶσαι ἐν Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε, τί ὑμεῖς λέγετε, καὶ ποιήσω ὑμῖν; καὶ εἶπαν πρὸς τὸν βασιλέα, ὁ ἀνὴρ ὃς συνετέλεσεν ἐφ᾽ ἡμᾶς καὶ ἐδίωξεν ἡμᾶς, ὃς παρελογίσατο ἐξολοθρεῦσαι ἡμᾶς, ἀφανίσωμεν αὐτὸν, τοῦ μὴ ἑστάναι αὐτὸν ἐν παντὶ ὁρίῳ Ἰσραήλ. Δότω ἡμῖν ἑπτὰ ἄνδρας ἐκ τῶν υἱῶν αὐτοῦ, καὶ ἐξηλιάσωμεν αὐτοὺς τῷ Κυρίῳ ἐν τῷ Γαβαὼν Σαοὺλ ἐκλεκτοὺς Κυρίου· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ἐγὼ δώσω. Καὶ ἐφείσατο ὁ βασιλεὺς ἐπὶ Μεμφιβοσθὲ υἱὸν Ἰωνάθαν υἱοῦ Σαοὺλ διὰ τὸν ὅρκον Κυρίου τὸν ἀναμέσον αὐτῶν, καὶ ἀναμέσον Δαυὶδ, καὶ ἀναμέσον Ἰωνάθαν υἱοῦ Σαούλ. Καὶ ἔλαβεν ὁ βασιλεὺς τοὺς δύο υἱοὺς Ῥεσφὰ θυγατρὸς Ἀϊᾶ, οὓς ἔτεκε τῷ Σαοὺλ, τὸν Ἑρμωνοῖ καὶ τὸν Μεμφιβοσθὲ, καὶ τοὺς πέντε υἱοὺς τῆς Μιχὸλ θυγατρὸς Σαοὺλ, οὓς ἔτεκε τῷ Ἐσδριὴλ υἱῷ Βερζελλὶ τῷ Μωουλαθί· Καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς ἐν χειρὶ τῶν Γαβαωνιτῶν, καὶ ἐξηλίασαν αὐτοὺς ἐν τῷ ὄρει ἔναντι Κυρίου· καὶ ἔπεσαν οἱ ἑπτὰ αὐτοὶ ἐπὶ τὸ αὐτό· καὶ αὐτοὶ δὲ ἐθανατώθησαν ἐν ἡμέραις θερισμοῦ ἐν πρώτοις, ἐν ἀρχῇ θερισμοῦ κριθῶν. Καὶ ἔλαβε Ῥεσφὰ θυγάτηρ Ἀϊᾶ τὸν σάκκον, καὶ ἔπηξεν αὐτῇ πρὸς τὴν πέτραν ἐν ἀρχῇ θερισμοῦ κριθῶν, ἕως ἔσταξεν ἐπ᾽ αὐτοὺς ὕδωρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ οὐκ ἔδωκε τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ καταπαῦσαι ἐπ᾽ αὐτοὺς ἡμέρας, καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ νυκτός. Καὶ ἀπηγγέλη

τῷ Δαυὶδ ὅσα ἐποίησε Ῥεσφὰ θυγάτηρ Ἀϊᾶ παλλακὴ Σαούλ· καὶ ἐξελύθησαν, καὶ κατέλαβεν αὐτοὺς Δὰν υἱὸς Ἰωὰ ἐκ τῶν ἀπογόνων τῶν γιγάντων. Καὶ ἐπορεύθη Δαυὶδ καὶ ἔλαβε τὰ ὀστᾶ Σαοὺλ, καὶ τὰ ὀστᾶ Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, παρὰ τῶν ἀνδρῶν υἱῶν Ἰαβὶς Γαλαὰδ, οἳ ἔκλεψαν αὐτοὺς ἐκ τῆς πλατείας Βαιθσὰν, ὅτι ἔστησαν αὐτοὺς ἐκεῖ οἱ ἀλλόφυλοι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐπάταξαν οἱ ἀλλόφυλοι τὸν Σαοὺλ ἐν Γελβουέ. Καὶ ἀνένεγκεν ἐκεῖθεν τὰ ὀστᾶ Σαοὺλ καὶ τὰ ὀστᾶ Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, καὶ συνήγαγε τὰ ὀστᾶ τῶν ἐξηλιασμένων. Καὶ ἔθαψαν τὰ ὀστᾶ Σαοὺλ καὶ τὰ ὀστᾶ Ἰωνάθαν τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν ἡλιασθένων ἐν γῇ Βενιαμὶν ἐν τῇ πλευρᾷ ἐν τῷ τάφῳ Κὶς τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐποίησαν πάντα ὅσα ἐνετείλατο ὁ βασιλεύς· καὶ ἐπήκουσεν ὁ Θεὸς τῇ γῇ μετὰ ταῦτα. Καὶ ἐγενήθη ἔτι πόλεμος τοῖς ἀλλοφύλοις μετὰ Ἰσραήλ· καὶ κατέβη Δαυὶδ καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐπολέμησαν μετὰ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ ἐπορεύθη Δαυίδ. Καὶ Ἰεσβὶ, ὃς ἦν ἐν τοῖς ἐκγόνοις τοῦ Ῥαφά, καὶ ὁ σταθμὸς τοῦ δόρατος αὐτοῦ, τριακοσίων σίκλων ὁλκῇ χαλκοῦ, καὶ αὐτὸς περιεζωσμένος κορύνην, καὶ διενοεῖτο τοῦ πατάξαι τὸν Δαυίδ. Καὶ ἐβοήθησεν αὐτῷ Ἀβεσσὰ υἱὸς Σαρουίας, καὶ ἐπάταξε τὸν ἀλλόφυλον καὶ ἐθανάτωσεν αὐτόν· τότε ὤμοσαν οἱ ἄνδρες Δαυὶδ, λέγοντες, οὐκ ἐξελεύσῃ ἔτι μεθ’ ἡμῶν εἰς πόλεμον, καὶ οὐ μὴ σβέσῃς τὸν λύχνον Ἰσραήλ. Καὶ ἐγενήθη μετὰ ταῦτα ἔτι πόλεμος ἐν Γὲθ μετὰ τῶν ἀλλοφύλων· τότε ἐπάταξε Σεβοχὰ ὁ Ἀστατωθὶ τὸν Σὲφ ἐν τοῖς ἐγγόνοις τοῦ Ῥαφά. Καὶ ἐγένετο ὁ πόλεμος ἐν Ῥὸμ μετὰ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ ἐπάταξεν Ἐλεανὰν υἱὸς Ἀριωργὶμ ὁ Βαιθλεεμίτης τὸν Γολιὰθ τὸν Γεθαῖον· καὶ τὸ ξύλον τοῦ δόρατος αὐτοῦ ὡς ἀντίον ὑφαινόντων. Καὶ ἐγένετο ἔτι πόλεμος ἐν Γέθ· καὶ ἦν ἀνὴρ μαδὼν, καὶ οἱ δάκτυλοι τῶν χειρῶν αὐτοῦ, καὶ οἱ δάκτυλοι τῶν ποδῶν αὐτοῦ ἓξ

καὶ ἓξ, εἰκοσιτέσσαρες ἀριθμῷ· καί γε αὐτὸς ἐτέχθη τῷ Ῥαφά. Καὶ ὠνείδισε τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν Ἰωνάθαν υἱὸς Σεμεΐ ἀδελφοῦ Δαυίδ. Οἱ τέσσαρες οὗτοι ἐτέχθησαν ἀπόγονοι τῶν γιγάντων ἐν Γὲθ τῷ Ῥαφὰ οἶκος, καὶ ἔπεσαν ἐν χειρὶ Δαυὶδ, καὶ ἐν χειρὶ τῶν δούλων αὐτοῦ.

# 22

Καὶ ἐλάλησε Δαυὶδ τῷ Κυρίῳ τοὺς λόγους τῆς ᾠδῆς ταύτης, ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐξείλετο αὐτὸν Κύριος ἐκ χειρὸς πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ ἐκ χειρὸς Σαούλ. Καὶ εἶπεν ᾠδή· Κύριε πέτρα μου, καὶ ὀχύρωμά μου, καὶ ἐξαιρούμενός με ἐμοί, ὁ Θεός μου, φύλαξ μου ἔσται μοι, πεποιθὼς ἔσομαι ἐπ’ αὐτῷ· ὑπερασπιστής μου, καὶ κέρας σωτηρίας μου, ἀντιλήπτωρ μου, καὶ καταφυγή μου σωτηρίας μου, ἐξ ἀδίκου σώσεις με. Αἰνετὸν ἐπικαλέσομαι Κύριον, καὶ ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου σωθήσομαι. Ὅτι περιέσχον με συντριμμοὶ θανάτου, χείμαῤῥοι ἀνομίας ἐθάμβησάν με. Ὠδῖνες θανάτου ἐκύκλωσάν με, προέφθασάν με σκληρότητες θανάτου. Ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐπικαλέσομαι τὸν Κύριον, καὶ πρὸς τὸν Θεόν μου βοήσομαι, καὶ ἐπακούσεται ἐκ ναοῦ αὐτοῦ φωνῆς μου, καὶ ἡ κραυγή μου ἐν τοῖς ὠσὶν αὐτοῦ. Καὶ ἐταράχθη καὶ ἐσείσθη ἡ γῆ, καὶ τὰ θεμέλια τοῦ οὐρανοῦ συνεταράχθησαν καὶ ἐσπαράχθησαν, ὅτι ἐθυμώθη Κύριος αὐτοῖς. Ἀνέβη καπνὸς ἐν τῇ ὀργῇ αὐτοῦ, καὶ πῦρ ἐκ στόματος αὐτοῦ κατέδεται· ἄνθρακες ἐξεκαύθησαν ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ ἔκλινεν οὐρανοὺς καὶ κατέβη, καὶ γνόφος ὑποκάτω τῶν ποδῶν αὐτοῦ. Καὶ ἐπεκάθισεν ἐπὶ τῷ χερουβὶν καὶ ἐπετάσθη, καὶ ὤφθη ἐπὶ πτερύγων ἀνέμου. Καὶ ἔθετο σκότος ἀποκρυφὴν αὐτοῦ· κύκλῳ

αὐτοῦ ἡ σκηνὴ αὐτοῦ σκότος ὑδάτων, ἐπάχυνεν ἐν νεφέλαις ἀέρος. Ἀπὸ τοῦ φέγγους ἐναντίον αὐτοῦ ἐξεκαύθησαν ἄνθρακες πυρός. Ἐβρόντησεν ἐξ οὐρανοῦ Κύριος, καὶ ὁ ὕψιστος ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλε βέλη, καὶ ἐσκόρπισεν αὐτούς· καὶ ἤστραψεν ἀστραπὴν, καὶ ἐξέστησεν αὐτούς. Καὶ ὤφθησαν ἀφέσεις θαλάσσης, καὶ ἀπεκαλύφθη θεμέλια τῆς οἰκουμένης ἐν τῇ ἐπιτιμήσει Κυρίου, ἀπὸ πνοῆς πνεύματος θυμοῦ αὐτοῦ. Ἀπέστειλεν ἐξ ὕξ ὕψους καὶ ἔλαβέ με, εἵλκυσέ με ἐξ ὑδάτων πολλῶν. Ἐῤῥύσατό με ἐξ ἐχθρῶν μου ἰσχύος, ἐκ τῶν μισούντων με, ὅτι ἐκραταιώθησαν ὑπὲρ ἐμέ. Προέφθασάν με ἡμέραι θλίψεώς μου· καὶ ἐγένετο Κύριος ἐπιστήριγμά μου; καὶ ἐξήγαγέ με εἰς πλατυσμὸν, καὶ ἐξείλετό με, ὅτι ηὐδόκησες ἐν ἐμοί. Καὶ ἀνταπέδωκέ μοι Κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἀνταπέδωκέ μοι. Ὅτι ἐφύλαξα ὁδοὺς Κυρίου, καὶ οὐκ ἠσέβησα ἀπὸ τοῦ Θεοῦ μου. Ὅτι πάντα τὰ κρίματα αὐτοῦ κατεναντίον μου καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, οὐκ ἀπέστην ἀπ’ αὐτῶν. Καὶ ἔσομαι ἄμωμος αὐτῷ, καὶ προφυλάξομαι ἀπὸ τῆς ἀνομίας μου. Καὶ ἀποδώσει μοι Κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Μετὰ ὁσίου ὁσιωθήσῃ, καὶ μετὰ ἀνδρὸς τελείου τελειωθήσῃ· Καὶ μετὰ ἐκλεκτοῦ ἐκλεκτὸς ἔσῃ, καὶ μετὰ στρεβλοῦ στρεβλωθήσῃ. Καὶ τὸν λαὸν τὸν πτωχὸν σώσεις, καὶ ὀφθαλμοὺς ἐπὶ μετεώρων ταπεινώσεις. Ὅτι σὺ ὁ λύχνος μου Κύριε, καὶ Κύριος ἐκλάμψει μοι τὸ σκότος μου. Ὅτι ἐν σοὶ δραμοῦμαι μονόζωνος, καὶ ἐν τῷ Θεῷ μου ὑπερβήσομαι τεῖχος. Ὁ ἰσχυρὸς ἄμωμος ἡ ὁδὸς αὐτοῦ· τὸ ῥῆμα Κυρίου κραταιὸν πεπυρωμένον· ὑπερασπιστής ἐστι πᾶσι τοῖς πεποιθόσιν ἐπ’ αὐτόν. Τίς ἰσχυρὸς πλὴν Κυρίου; καὶ τίς κτίστης ἔσται πλὴν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν; Ὁ ἰσχυρὸς ὁ κραταιῶν με δυνάμει, καὶ ἐξετίναξεν ἄμωμον

τὴν ὁδόν μου. Τιθεὶς τοὺς πόδας μου ὡς ἐλάφων, καὶ ἐπὶ τὰ ὕψη ἱστῶν με. Διδάσκων χεῖράς μου εἰς πόλεμον, καὶ κατάξας τόξον χαλκοῦν ἐν βραχίονί μου. Καὶ ἔδωκάς μοι ὑπερασπισμὸν σωτηρίας μου, καὶ ἡ ὑπακοή σου ἐπλήθυνέ με εἰς πλατυσμὸν εἰς τὰ διαβήματά μου ὑποκάτω μου, καὶ οὐκ ἐσαλεύθησαν τὰ σκέλη μου. Διώξω ἐχθρούς μου, καὶ ἀφανιῶ αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἀναστρέψω ἕως ἂν συντελέσω αὐτούς. Καὶ θλάσω αὐτοὺς καὶ οὐκ ἀναστήσονται, καὶ πεσοῦνται ὑπὸ τοὺς πόδας μου. Καὶ ἐνισχύσεις με δυνάμει εἰς πόλεμον, κάμψεις τοὺς ἐπιστανομένους μοι ὑποκάτω μου. Καὶ τοὺς ἐχθρούς μου ἔδωκάς μοι νῶτον, τοὺς μισοῦντάς με, καὶ ἐθανάτωσας αὐτούς. Βοήσονται, καὶ οὐκ ἔστι βοηθὸς, πρὸς Κύριον, καὶ οὐκ ἐπήκουσεν αὐτῶν. Καὶ ἐλέανα αὐτοὺς ὡς χοῦν γῆς, ὡς πηλὸν ἐξόδων ἐλέπτυνα αὐτούς. Καὶ ῥύσῃ με ἐκ μάχης λαῶν, φυλάξεις με εἰς κεφαλὴν ἐθνῶν· λαὸς ὃν οὐκ ἔγνω ἐδούλευσάν μοι. Υἱοὶ ἀλλότριοι ἐψεύσαντό μοι, εἰς ἀκοὴν ὠτίου ἤκουσάν μου. Υἱοὶ ἀλλότριοι ἀποῤῥιφήσονται, καὶ σφαλοῦσιν ἐκ τῶν συγκλεισμῶν αὐτῶν. Ζῇ Κύριος, καὶ εὐλογητὸς ὁ φύλαξ μου, καὶ ὑψωθήσεται ὁ Θεός μου ὁ φύλαξ τῆς σωτηρίας μου. Ἰσχυρὸς Κύριος ὁ διδοὺς ἐκδικήσεις ἐμοὶ, παιδεύων λαοὺς ὑποκάτω μου, καὶ ἐξάγων με ἐξ ἐχθρῶν μου· καὶ ἐκ τῶν ἐπεγειρομένων μοι ὑψώσεις με, ἐξ ἀνδρὸς ἀδικημάτων ῥύσῃ με. Διὰ τοῦτο ἐξομολογήσομαί σοι Κύριε ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ψαλῶ. Μεγαλύνων τὰς σωτηρίας βασιλέως αὐτοῦ, καὶ ποιῶν ἔλεος τῷ χριστῷ αὐτοῦ τῷ Δαυὶδ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος. Καὶ οὗτοι οἱ λόγοι Δαυὶδ οἱ ἔσχατοι·

# 23

Πιστὸς Δαυὶδ υἱὸς Ἰεσσαί, καὶ πιστὸς ἀνὴρ ὃν ἀνέστησε Κύριος ἐπὶ χριστὸν Θεοῦ Ἰακὼβ, καὶ εὐπρεπεῖς ψαλμοὶ Ἰσραήλ. Πνεῦμα Κυρίου ἐλάλησεν ἐν ἐμοὶ, καὶ ὁ λόγος αὐτοῦ ἐπὶ γλώσσης μου. Λέγει ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἐμοὶ ἐλάλησε φύλαξ ἐξ Ἰσραὴλ παραβολήν· εἶπὸν ἐν ἀνθρώπῳ, πῶς κραταιώσητε φόβον χριστοῦ; Καὶ ἐν φωτὶ Θεοῦ πρωΐας, ἀνατείλαι ἥλιος τοπρωΐ, οὗ Κύριος παρῆλθεν ἐκ φέγγους, καὶ ὡς ἐξ ὑετοῦ χλόης ἀπὸ γῆς. Οὐ γὰρ οὕτως ὁ οἶκός μου μετὰ ἰσχυροῦ, διαθήκην γὰρ αἰώνιον ἔθετό μοι ἑτοίμην ἐν παντὶ καιρῷ πεφυλαγμένην· ὅτι πᾶσα σωτηρία μου καὶ πᾶν θέλημα, ὅτι οὐ μὴ βλαστήσῃ ὁ παράνομος. Ὥσπερ ἄκανθα ἐξωσμένη πάντες οὗτοι, ὅτι οὐ χειρὶ ληφθήσονται, καὶ ἀνὴρ οὐ κοπιάσει ἐν αὐτοῖς· καὶ πλῆρες σιδήρου, καὶ ξύλον δόρατος, καὶ ἐν πυρὶ καύσει, καὶ καυθήσονται αἰσχύνην αὐτῶν. Ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν δυνατῶν Δαυίδ· Ἰεβοσθὲ ὁ Χαναναῖος ἄρχων τοῦ τρίτου ἐστίν· Ἀδινὼν ὁ Ἀσωναῖος, οὗτος ἐσπάσατο τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ ἐπὶ ὀκτακοσίους στρατιώτας εἰσάπαξ. Καὶ μετ’ αὐτὸν Ἐλεανὰν υἱὸς πατραδέλφου αὐτοῦ υἱὸς Δουδὶ τοῦ ἐν τοῖς τρισὶ δυνατοῖς μετὰ Δαυίδ· καὶ ἐν τῷ ὀνειδίσαι αὐτὸν ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις, συνήχθησαν ἐκεῖ εἰς πόλεμον, καὶ ἀνέβησεν ἀνὴρ Ἰσραήλ. Αὐτὸς ἀνέστη καὶ ἐπάταξεν ἐν τοῖς ἀλλοφύλοις, ἕως οὗ ἐκοπίασεν ἡ χεὶρ αὐτοῦ, καὶ προσεκολλήθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ πρὸς τὴν μάχαιραν· καὶ ἐποίησε Κύριος σωτηρίαν μεγάλην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· καὶ ὁ λαὸς ἐκάθητο ὀπίσω αὐτοῦ πλὴν ἐκδιδύσκειν. Καὶ μετ’ αὐτὸν Σαμαΐα υἱὸς Ἄσα ὁ Ἀρουχαῖος· καὶ συνήχθησαν οἱ ἀλλόφυλοι εἰς Θηρία· καὶ ἦν ἐκεῖ μερὶς τοῦ ἀγροῦ πλήρης φακοῦ· καὶ ὁ λαὸς ἔφυγεν ἐκ προσώπου ἀλλοφύλων. Καὶ ἐστηλώθη ἐν μέσῳ τῆς μερίδος, καὶ ἐξείλατο αὐτὴν, καὶ ἐπάταξε τοὺς ἀλλοφύλους· καὶ ἐποίησε Κύριος σωτηρίαν μεγάλην. Καὶ κατέβησαν τρεῖς ἀπὸ τῶν τριάκοντα, καὶ

κατέβησαν εἰς Κασὼν πρὸς Δαυὶδ, εἰς τὸ σπήλαιον Ὀδολλάμ· καὶ τάγμα τῶν ἀλλοφύλων, καὶ παρενέβαλον ἐν τῇ κοιλάδι Ῥαφαΐν. Καὶ Δαυὶδ τότε ἐν τῇ περιοχῇ, καὶ τὸ ὑπόστεμα τῶν ἀλλοφύλων τότε ἐν Βηθλεέμ. Καὶ ἐπεθύμησε Δαυὶδ καὶ εἶπε, τίς ποτιεῖ με ὕδωρ ἐκ τοῦ λάκκου τοῦ ἐν Βηθλεὲμ τοῦ ἐν τῇ πύλῃ; τὸ δὲ σύστεμα τῶν ἀλλοφύλων τότε ἐν Βηθλεέμ. Καὶ διέῤῥηξαν οἱ τρεῖς δυνατοὶ ἐν τῇ παρεμβολῇ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ ὑδρεύσαντο ὕδωρ ἐκ τοῦ λάκκου τοῦ ἐν Βηθλεὲμ τοῦ ἐν τῇ πύλῃ· καὶ ἔλαβαν, καὶ παρεγένοντο πρὸς Δαυίδ, καὶ οὐκ ἠθέλησε πιεῖν αὐτό· καὶ ἔσπεισεν αὐτὸ τῷ Κυρίῳ. Καὶ εἶπεν, ἵλεώς μοι Κύριε τοῦ ποιῆσαι τοῦτο, εἰ αἷμα τῶν ἀνδρῶν τῶν πορευθέντων ἐν ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν πίομαι· καὶ οὐκ ἠθέλησε πιεῖν αὐτό. Ταῦτα ἐποίησαν οἱ τρεῖς δυνατοί. Καὶ Ἀβεσσὰ ὁ ἀδελφὸς Ἰωάβ υἱὸς Σαρουίας αὐτὸς ἄρχων ἐν τοῖς τρισὶ, καὶ αὐτὸς ἐξήγειρε τὸ δόρυ αὐτοῦ ἐπὶ τριακοσίους τραυματίας· καὶ αὐτῷ ὄνομα ἐν τοῖς τρισὶν. Ἐκ τῶν τριῶν ἐκείνων ἔνδοξος, καὶ ἐγένετο αὐτοῖς εἰς ἄρχοντα, καὶ ἕως τῶν τριῶν οὐκ ἦλθε. Καὶ Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ ἀνὴρ αὐτὸς πολλοστὸς ἔργοις, ἀπὸ Καβεσεήλ, καὶ αὐτὸς ἐπάταξε τοὺς δύο υἱοὺς Ἀριὴλ τοῦ Μωάβ· καὶ αὐτός κατέβη καὶ ἐπάταξε τὸν λέοντα ἐν μέσῳ τοῦ λάκκου ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς χιόνος. Αὐτὸς ἐπάταξε τὸν ἄνδρα τὸν Αἰγύπτιον, ἄνδρα ὁρατὸν, ἐν δὲ τῇ χειρὶ τοῦ Αἰγυπτίου δόρυ ὡς ξύλον διαβάθρας· καὶ κατέβη πρὸς αὐτὸν ἐν ῥάβδῳ, καὶ ἥρπασε τὸ δόρυ ἐκ τῆς χειρὸς τοῦ Αἰγυπτίου, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτὸν ἐν τῷ δόρατι αὐτοῦ. Ταῦτα ἐποίησε Βαναίας υἱὸν Ἰωδαὲ, καὶ αὐτῷ ὄνομα ἐν τοῖς τρισὶ τοῖς δυνατοῖς, ἐκ τῶν τριῶν ἔνδοξος, καὶ πρὸς τοὺς τρεῖς οὐκ ἦλθε· καὶ ἔταξεν αὐτὸν Δαυὶδ πρὸς τὰς ἀκοὰς αὐτοῦ. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν δυνατῶν Δαυὶδ τοῦ βασιλέως. Ἀσαὴλ ἀδελφὸς Ἰωάβ· οὗτος ἐν τοῖς τριάκοντα· Ἐλεανὰν υἱὸς Δουδὶ πατραδέλφου αὐτοῦ ἐν Βηθλεέμ·

Σαιμὰ ὁ Ῥουδαῖος· Σελλὴς ὁ Κελωθί· Ἴρας υἱὸς Ἴσκα ὁ Θεκωΐτης· Ἀβιέζερ ὁ Ἀνωθίτης, ἐκ τῶν υἱῶν τοῦ Ἀνωθίτου· Ἐλλὼν ὁ Ἀωΐτης· Νοερὲ ὁ Νετωφατίτης· Ἐσθαὶ υἱὸς Ῥιβὰ ἐκ Γαβαὲθ υἱὸς Βενιαμὶν τοῦ Ἐφραθαίου· Ἀσμὼθ ὁ Βαρδιαμίτης· Ἐμασοὺ ὁ Σαλαβωνίτης· υἱοὶ Ἀσάν, Ἰωνάθαν· Σαμνὰν ὁ Ἀρωδίτης· Ἀμνὰν υἱὸς Ἀραῒ Σαραουρίτης· Ἀλιφαλὲθ υἱὸς τοῦ Ἀσβίτου, υἱὸς τοῦ Μαχαχαχί· Ἐλιὰβ υἱὸς Ἀχιτόφελ τοῦ Γελωνίτου· Ἀσαραῒ ὁ Καρμήλιος τοῦ Οὐραιοερχί· Γάαλ υἱὸς Ναθανά· πολυδυνάμεως υἱὸς Γαλααδδί· Ἐλιὲ ὁ Ἀμμανίτης· Ἴρας ὁ Ἐθιραῖος· Γηρὰβ ὁ Ἐθεναῖος· Οὐρίας ὁ Χετταῖος· οἱ πάντες τριάκοντα καὶ ἑπτά.

# 24

Καὶ προσέθετο ὀργὴν Κύριος ἐκκαῆναι ἐν Ἰσραήλ, καὶ ἐπέσεισε τὸν Δαυὶδ ἐν αὐτοῖς, λέγων, βάδιζε, ἀρίθμησον τὸν Ἰσραὴλ καὶ τὸν Ἰούδαν. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἰωὰβ ἄρχοντα τῆς ἰσχύος τὸν μετ’ αὐτοῦ, διέλθε δὴ πάσας φυλὰς Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, ἀπὸ Δὰν καὶ ἕως Βηρσαβεέ, καὶ ἐπίσκεψαι τὸν λαὸν, καὶ γνώσομαι τὸν ἀριθμὸν τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπεν Ἰωὰβ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ προσθείη Κύριος ὁ Θεὸς πρὸς τὸν λαὸν ὥσπερ αὐτοὺς καὶ ὥσπερ αὐτοὺς ἑκατονταπλασίονα, καὶ ὀφθαλμοὶ τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως ὁρῶντες· καὶ ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς ἱνατί βούλεται ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ; Καὶ ὑπερίσχυσεν ὁ λόγος τοῦ βασιλέως πρὸς Ἰωὰβ καὶ εἰς τοὺς ἄρχοντας τῆς δυνάμεως· Καὶ ἐξῆλθεν Ἰωὰβ καὶ οἱ ἄρχοντες τῆς ἰσχύος ἐνώπιον τοῦ βασιλέως ἐπισκέψασθαι τὸν λαὸν τὸν Ἰσραήλ. Καὶ διέβησαν τὸν Ἰορδάνην, καὶ παρενέβαλον ἐν Ἀροὴρ ἐκ δεξιῶν τῆς πόλεως τῆς ἐν μέσῳ τῆς φάραγγος Γὰδ καὶ Ἐλιέζερ.

Καὶ ἦλθον εἰς Γαλαὰδ καὶ εἰς γῆν Θαβασὼν, ἥ ἐστιν Ἀδασαὶ, καὶ παρεγένοντο εἰς Δανιδὰν καὶ Οὐδὰν, καὶ ἐκύκλωσαν Σιδῶνα. Καὶ ἦλθον εἰς Μάψαρ Τύρου, καὶ εἰς πάσας τὰς πόλεις τοῦ Εὐαίου καὶ τοῦ Χαναναίου· καὶ ἦλθαν κατὰ Νότον Ἰούδα εἰς Βηρσαβεὲ, καὶ περιώδευσαν ἐν πάσῃ τῇ γῇ· καὶ παρεγένοντο ἀπὸ τέλους ἐννέα μηνῶν καὶ εἴκοσι ἡμερῶν εἰς Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἔδωκεν Ἰωὰβ τὸν ἀριθμὸν τῆς ἐπισκέψεως τοῦ λαοῦ πρὸς τὸν βασιλέα· καὶ ἐγένετο Ἰσραὴλ, ὀκτακόσιαι χιλιάδες ἀνδρῶν δυνάμεως σπωμένων ῥομφαίαν· καὶ ἀνὴρ Ἰούδα, πεντακόσιαι χιλιάδες ἀνδρῶν μαχητῶν. Καὶ ἐπάταξε καρδία Δαυὶδ αὐτὸν μετὰ τὸ ἀριθμῆσαι τὸν λαόν· καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Κύριον, ἥμαρτον σφόδρα ὃ ἐποίησα νῦν Κύριε· παραβίβασον δὴ τὴν ἀνομίαν τοῦ δούλου σου, ὅτι ἐμωράνθην σφόδρα. Καὶ ἀνέστη Δαυὶδ τοπρωΐ· καὶ λόγος Κυρίου ἐγένετο πρὸς Γὰδ τὸν προφήτην τὸν ὁρῶντα, λέγων, πορεύθητι, καὶ λάλησον πρὸς Δαυὶδ, λέγων, τάδε λέγει Κύριος, τρία ἐγώ εἰμι αἴρω ἐπὶ σὲ, καὶ ἔκλεξαι σεαυτῷ ἓν ἐξ αὐτῶν, καὶ ποιήσω σοι. Καὶ εἰσῆλθε Γὰδ πρὸς Δαυὶδ, καὶ ἀνήγγειλε, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἔκλεξαι σεαυτῷ γενέσθαι, εἰ ἔλθῃ σοι τρία ἔτη λιμὸς ἐν τῇ γῇ σου, ἢ τρεῖς μῆνας φεύγειν σε ἔμπροσθεν τῶν ἐχθρῶν σου, καὶ ἔσονται διώκοντές σε, ἢ γενέσθαι τρεῖς ἡμέρας θάνατον ἐν τῇ γῇ σου· νῦν οὖν γνῶθι καὶ ἴδε τί ἀποκριθῶ τῷ ἀποστείλαντί με ῥῆμα. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Γὰδ, στενά μοι πάντοθεν σφόδρα ἐστίν· ἐμπεσοῦμαι δὴ εἰς χεῖρας Κυρίου, ὅτι πολλοὶ οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ σφόδρα· εἰς δὲ χεῖρας ἀνθρώπου οὐ μὴ ἐμπέσω. Καὶ ἐξελέξατο ἑαυτῷ Δαυὶδ τὸν θάνατον· καὶ ἡμέραι θερισμοῦ πυρῶν· καὶ ἔδωκε Κύριος θάνατον ἐν Ἰσραὴλ ἀπὸ πρωΐθεν ἕως ὥρας ἀρίστου, καὶ ἤρξατο ἡ θραῦσις ἐν τῷ λαῷ· καὶ ἀπέθανεν ἐκ τοῦ λαοῦ ἀπὸ Δὰν καὶ ἕως Βηρσαβεὲ, ἑβδομήκοντα χιλιάδες ἀνδρῶν. Καὶ ἐξέτεινεν ὁ ἄγγελος τοῦ Θεοῦ

τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς Ἰερουσαλὴμ τοῦ διαφθεῖραι αὐτὴν, καὶ παρεκλήθη Κύριος ἐπὶ τῇ κακίᾳ, καὶ εἶπε τῷ ἀγγέλῳ τῷ διαφθείροντι ἐν τῷ λαῷ, πολὺ νῦν, ἄνες τὴν χεῖρά σου· καὶ ὁ ἄγγελος Κυρίου ἦν παρὰ τῇ ἅλῳ Ὀρνὰ τοῦ Ἰεβουσαίου. Καὶ εἶπε Δαυὶδ πρὸς Κύριον, ἐν τῷ ἰδεῖν αὐτὸν τὸν ἄγγελον τὸν τύπτοντα ἐν τῷ λαῷ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ, ἐγώ εἰμι ἠδίκησα· καὶ οὗτοι τὰ πρόβατα τί ἐποίησαν; γενέσθω δὴ ἡ χείρ σου ἐν ἐμοὶ, καὶ ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός μου. Καὶ ἦλθε Γὰδ πρὸς Δαυὶδ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀνάβηθι, καὶ στῆσον τῷ Κυρίῳ θυσιαστήριον ἐν τῷ ἅλωνι Ὀρνὰ τοῦ Ἰεβουσαίου. Καὶ ἀνέβη Δαυὶδ κατὰ τὸν λόγον Γὰδ, καθ' ὃν τρόπον ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος. Καὶ διέκυψεν Ὀρνὰ, καὶ εἶδε τὸν βασιλέα καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ παραπορευομένους ἐπάνω αὐτοῦ· καὶ ἐξῆλθεν Ὀρνὰ, καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ εἶπεν Ὀρνὰ, τί ὅτι ἦλθεν ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν δοῦλον αὐτοῦ; καὶ εἶπε Δαυὶδ, κτήσασθαι παρὰ σοῦ τὸν ἅλωνα τοῦ οἰκοδομῆσαι θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ, καὶ συσχεθῇ ἡ θραῦσις ἐπάνω τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπεν Ὀρνὰ πρὸς Δαυὶδ, λαβέτω καὶ ἀνενεγκάτω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς τῷ Κυρίῳ τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ· ἰδοὺ οἱ βόες εἰς ὁλοκαύτωμα, καὶ οἱ τροχοὶ καὶ τὰ σκεύη τῶν βοῶν εἰς ξύλα. Τὰ πάντα ἔδωκεν Ὀρνὰ τῷ βασιλεῖ· καὶ εἶπεν Ὀρνὰ πρὸς τὸν βασιλέα, Κύριος ὁ Θεός σου εὐλογήσαι σε. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ὀρνὰ, οὐχὶ, ὅτι ἀλλὰ κτώμενος κτήσομαι παρὰ σοῦ ἐν ἀναλλάγματι, καὶ οὐκ ἀνοίσω τῷ Κυρίῳ μου Θεῷ ὁλοκαύτωμα δωρεάν. Καὶ ἐκτήσατο Δαυὶδ τὸν ἅλωνα καὶ τοὺς βόας ἐν ἀργυρίῳ σίκλων πεντήκοντα. Καὶ ᾠκοδόμησεν ἐκεῖ Δαυὶδ θυσιαστήριον Κυρίῳ, καὶ ἀνήνεγκεν ὁλοκαυτώσεις καὶ εἰρηνικάς· καὶ προσέθηκε Σαλωμὼν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐπ' ἐσχάτῳ, ὅτι μικρὸν ἦν ἐν πρώτοις· καὶ

ἐπήκουσε Κύριος τῇ γῇ, καὶ συνεσχέθη ἡ θραῦσις ἐπάνωθεν Ἰσραήλ.

# ΨΑΛΜΟΙ

## 1

ΜΑΚΑΡΙΟΣ ἀνὴρ, ὃς οὐκ ἐπορεύθη ἐν βουλῇ ἀσεβῶν, καὶ ἐν ὁδῷ ἁμαρτωλῶν· οὐκ ἔστη, καὶ ἐπὶ καθέδρᾳ λοιμῶν οὐκ ἐκάθισεν. ’Αλλ’ ἢ ἐν τῷ νόμῳ Κυρίου τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ μελετήσει ἡμέρας καὶ νυκτός. Καὶ ἔσται ὡς τὸ ξύλον τὸ πεφυτευμένον παρὰ τὰς διεξόδους τῶν ὑδάτων, ὃ τὸν καρπὸν αὐτοῦ δώσει ἐν καιρῷ αὐτοῦ· καὶ τὸ φύλλον αὐτοῦ οὐκ ἀποῤῥυήσεται, καὶ πάντα ὅσα ἂν ποιῇ κατευοδωθήσεται. Οὐχ οὕτως οἱ ἀσεβεῖς, οὐχ οὕτως, ἀλλ’ ἢ ὡς ὁ χνοῦς ὃν ἐκρίπτει ὁ ἄνεμος ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς. Διὰ τοῦτο οὐκ ἀναστήσονται οἱ ἀσεβεῖς ἐν κρίσει, οὐδὲ ἁμαρτωλοὶ ἐν βουλῇ δικαίων. Ὅτι γινώσκει Κύριος ὁδὸν δικαίων, καὶ ὁδὸς ἀσεβῶν ἀπολεῖται.

## 2

Ἱνατί ἐφρύαξαν ἔθνη, καὶ λαοὶ ἐμελέτησαν κενά; Παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, καὶ οἱ ἄρχοντες συνήχθησαν ἐπιτοαυτὸ κατὰ τοῦ

Κυρίου, καὶ κατὰ τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ. Διαῤῥήξωμεν τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν, καὶ ἀποῤῥίψωμεν ἀφ’ ἡμῶν τὸν ζυγὸν αὐτῶν. Ὁ κατοικῶν ἐν οὐρανοῖς ἐκγελάσεται αὐτοὺς, καὶ ὁ Κύριος ἐκμυκτηριεῖ αὐτούς. Τότε λαλήσει πρὸς αὐτοὺς ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ ταράξει αὐτούς. Ἐγὼ δὲ κατεστάθην βασιλεὺς ὑπ’ αὐτοῦ ἐπὶ Σιὼν ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ, διαγγέλλων τὸ πρόσταγμα Κυρίου· Κύριος εἶπε πρὸς μὲ, υἱός μου εἶ σὺ, ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε. Αἴτησαι παρ’ ἐμοῦ, καὶ δώσω σοι ἔθνη τὴν κληρονομίαν σου, καὶ τὴν κατάσχεσίν σου τὰ πέρατα τῆς γῆς. Ποιμανεῖς αὐτοὺς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ, ὡς σκεῦος κεραμέως συντρίψεις αὐτούς. Καὶ νῦν βασιλεῖς σύνετε, παιδεύθητε πάντες οἱ κρίνοντες τὴν γῆν. Δουλεύσατε τῷ Κυρίῳ ἐν φόβῳ, καὶ ἀγαλλιᾶσθε αὐτῷ ἐν τρόμῳ. Δράξασθε παιδείας, μή ποτε ὀργισθῇ Κύριος, καὶ ἀπολεῖσθε ἐξ ὁδοῦ δικαίας· ὅταν ἐκκαυθῇ ἐν τάχει ὁ θυμὸς αὐτοῦ, μακάριοι πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ’ αὐτῷ.

# 3

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ὁπότε ἀπεδίδρασκεν ἀπὸ προσώπου Ἀβεσσαλὼμ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. Κύριε τί ἐπληθύνθησαν οἱ θλίβοντές με; πολλοὶ ἐπανίστανται ἐπ’ ἐμέ. Πολλοὶ λέγουσι τῇ ψυχῇ μου, οὐκ ἔστι σωτηρία αὐτῷ ἐν τῷ Θεῷ αὐτοῦ· διάψαλμα. Σὺ δὲ Κύριε, ἀντιλήπτωρ μου εἶ, δόξα μου, καὶ ὑψῶν τὴν κεφαλήν μου. Φωνῇ μου πρὸς Κύριον ἐκέκραξα, καὶ ἐπήκουσέ μου ἐξ ὄρους ἁγίου αὐτοῦ· διάψαλμα. Ἐγὼ ἐκοιμήθην καὶ ὕπνωσα, ἐξηγέρθην, ὅτι Κύριος ἀντιλήψεταί μου. Οὐ φοβηθήσομαι ἀπὸ μυριάδων λαοῦ, τῶν κύκλῳ ἐπιτιθεμένων μοι. Ἀνάστα Κύριε, σῶσόν με ὁ Θεός μου·

ὅτι σὺ ἐπάταξας πάντας τοὺς ἐχθραίνοντάς μοι ματαίως, ὀδόντας ἁμαρτωλῶν συνέτριψας. Τοῦ Κυρίου ἡ σωτηρία, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου ἡ εὐλογία σου.

# 4

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ψαλμοῖς ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. Ἐν τῷ ἐπικαλεῖσθαί με, εἰσήκουσέ μου ὁ Θεὸς τῆς δικαιοσύνης μου· ἐν θλίψει ἐπλάτυνάς μοι· οἰκτείρησόν με, καὶ εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου. Υἱοὶ ἀνθρώπων, ἕως πότε βαρυκάρδιοι; ἱνατί ἀγαπᾶτε ματαιότητα, καὶ ζητεῖτε ψεῦδος; διάψαλμα. Καὶ γνῶτε ὅτι ἐθαυμάστωσε Κύριος τὸν ὅσιον αὐτοῦ, Κύριος εἰσακούσεταί μου ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐτόν. Ὀργίζεσθε καὶ μὴ ἁμαρτάνετε· ἃ λέγετε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, ἐπὶ ταῖς κοίταις ὑμῶν κατανύγητε· διάψαλμα. Θύσατε θυσίαν δικαιοσύνης, καὶ ἐλπίσατε ἐπὶ Κύριον. Πολλοὶ λέγουσι, τίς δείξει ἡμῖν τὰ ἀγαθά; ἐσημειώθη ἐφ’ ἡμᾶς τὸ φῶς τοῦ προσώπου σου, Κύριε. Ἔδωκας εὐφροσύνην εἰς τὴν καρδίαν μου· ἀπὸ καρποῦ σίτου καὶ οἴνου καὶ ἐλαίου αὐτῶν ἐπληθύνθησαν. Ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ τὸ αὐτὸ κοιμηθήσομαι, καὶ ὑπνώσω· ὅτι σὺ Κύριε κατὰ μόνας ἐπ’ ἐλπίδι κατῴκισάς με.

# 5

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς κληρονομούσης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Τὰ ῥήματά μου ἐνώτισαι Κύριε, σύνες τῆς κραυγῆς μου, πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ Θεός μου· ὅτι πρὸς

σὲ προσεύξομαι Κύριε, τοπρωῒ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς μου· τοπρωῒ παραστήσομαί σοι, καὶ ἐπόψομαι. Ὅτι οὐχὶ Θεὸς θέλων ἀνομίαν σὺ εἶ· οὐδὲ παροικησει σοι πονηρευόμενος, οὐδὲ διαμενοῦσι παράνομοι κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν σου· ἐμίσησας Κύριε πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν, ἀπολεῖς πάντας τοὺς λαλοῦντας τὸ ψεῦδος· ἄνδρα αἱμάτων καὶ δόλιον βδελύσσεται Κύριος. Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ πλήθει τοῦ ἐλέου σου εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου, προσκυνήσω πρὸς ναὸν ἅγιόν σου ἐν φόβῳ σου. Κύριε ὁδήγησόν με ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου, κατεύθυνον ἐνώπιόν σου τὴν ὁδόν μου. Ὅτι οὐκ ἔστιν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν ἀλήθεια· ἡ καρδία αὐτῶν ματαία· τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν· ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν. Κρίνον αὐτοὺς ὁ Θεός· ἀποπεσάτωσαν ἀπὸ τῶν διαβουλιῶν αὐτῶν· κατὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν αὐτῶν ἔξωσον αὐτοὺς, ὅτι παρεπίκρανάν σε Κύριε. Καὶ εὐφρανθήτωσαν ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ σὲ, εἰς αἰῶνα ἀγαλλιάσονται, καὶ κατασκηνώσεις ἐν αὐτοῖς· καὶ καυχήσονται ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ἀγαπῶντες τὸ ὄνομά σου, ὅτι σὺ εὐλογήσεις δίκαιον Κύριε, ὡς ὅπλῳ εὐδοκίας ἐστεφάνωσας ἡμᾶς.

# 6

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε, μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, μηδὲ τῇ ὀργῇ σου παιδεύσῃς με. Ἐλέησόν με Κύριε, ὅτι ἀσθενής εἰμι· ἴασαί με Κύριε, ὅτι ἐταράχθη τὰ ὀστᾶ μου. Καὶ ἡ ψυχή μου ἐταράχθη σφόδρα· καὶ σὺ Κύριε ἕως πότε; Ἐπίστρεψον Κύριε, ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου· σῶσόν με ἕνεκεν τοῦ ἐλέους σου, ὅτι οὐκ ἔστιν ἐν τῷ θανάτῳ ὁ μνημονεύων σου, ἐν

δὲ τῷ ᾅδῃ τίς ἐξομολογήσεταί σοι; Ἐκοπίασα ἐν στεναγμῷ μου, λούσω καθ' ἑκάστην νύκτα τὴν κλίνην μου, ἐν δάκρυσί μου τὴν στρωμνήν μου βρέξω. Ἐταράχθη ἀπὸ θυμοῦ ὁ ὀφθαλμός μου, ἐπαλαιώθην ἐν πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς μου. Ἀπόστητε ἀπ' ἐμοῦ πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, ὅτι εἰσήκουσε Κύριος τῆς φωνῆς τοῦ κλαυθμοῦ μου. Εἰσήκουσε Κύριος τῆς δεήσεώς μου, Κύριος τὴν προσευχήν μου προσεδέξατο. Αἰσχυνθείησαν καὶ ταραχθείησαν σφόδρα πάντες οἱ ἐχθροί μου, ἐπιστραφείησαν καὶ αἰσχυνθείησαν σφόδρα διὰ τάχους.

# 7

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ὃν ᾖσε τῷ Κυρίῳ ὑπὲρ τῶν λόγων Χουσὶ υἱοῦ Ἰεμενεί. Κύριε ὁ Θεός μου, ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, σῶσόν με ἐκ πάντων τῶν διωκόντων με, καὶ ῥῦσαί με, μή ποτε ἁρπάσῃ ὡς λέων τὴν ψυχήν μου, μὴ ὄντος λυτρουμένου, μηδὲ σώζοντος. Κύριε ὁ Θεός μου, εἰ ἐποίησα τοῦτο, εἰ ἔστιν ἀδικία ἐν χερσί μου, εἰ ἀνταπέδωκα τοῖς ἀνταποδιδοῦσί μοι κακὰ, ἀποπέσοιμι ἄρα ἀπὸ τῶν ἐχθρῶν μου κενός· Καταδιώξαι ὁ ἐχθρὸς τὴν ψυχήν μου καὶ καταλάβοι, καὶ καταπατήσαι εἰς γῆν τὴν ζωήν μου, καὶ τὴν δόξαν μου εἰς χοῦν κατασκηνώσαι· διάψαλμα. Ἀνάστηθι Κύριε ἐν ὀργῇ σου, ὑψώθητι ἐν τοῖς πέρασι τῶν ἐχθρῶν μου· ἐξεγέρθητι Κύριε ὁ Θεός μου ἐν προστάγματι ᾧ ἐνετείλω, καὶ συναγωγὴ λαῶν κυκλώσει σε· καὶ ὑπὲρ ταύτης εἰς ὕψος ἐπίστρεψον. Κύριος κρινεῖ λαούς· κρίνον με Κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ κατὰ τὴν ἀκακίαν μου ἐπ' ἐμοί. Συντελεσθήτω δὴ πονηρία ἁμαρτωλῶν, καὶ κατευθυνεῖς δίκαιον, ἐτάζων καρδίας καὶ νεφροὺς ὁ Θεός. Δικαία ἡ βοήθειά μου

παρὰ τοῦ Θεοῦ τοῦ σώζοντος τοὺς εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. Ὁ Θεὸς κριτὴς δίκαιος, καὶ ἰσχυρὸς, καὶ μακρόθυμος, μὴ ὀργὴν ἐπάγων καθ’ ἑκάστην ἡμέραν. Ἐὰν μὴ ἐπιστραφῆτε, τὴν ῥομφαίαν αὐτοῦ στιλβώσει, τὸ τόξον αὐτοῦ ἐνέτεινε, καὶ ἡτοίμασεν αὐτό. Καὶ ἐν αὐτῷ ἡτοίμασε σκεύη θανάτου, τὰ βέλη αὐτοῦ τοῖς καιομένοις ἐξειργάσατο. Ἰδοὺ ὠδίνησεν ἀδικίαν, συνέλαβε πόνον, καὶ ἔτεκεν ἀνομίαν. Λάκκον ὤρυξε καὶ ἀνέσκαψεν αὐτὸν, καὶ ἐμπεσεῖται εἰς βόθρον ὃν εἰργάσατο. Ἐπιστρέψει ὁ πόνος αὐτοῦ εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ κορυφὴν αὐτοῦ ἡ ἀδικία αὐτοῦ καταβήσεται. Ἐξομολογήσομαι Κυρίῳ κατὰ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, ψαλῶ τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ ὑψίστου.

# 8

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ληνῶν, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε ὁ Κύριος ἡμῶν, ὡς θαυμαστὸν τὸ ὄνομά σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ; ὅτι ἐπήρθη ἡ μεγαλοπρέπειά σου ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν. Ἐκ στόματος νηπίων καὶ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶνον· ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν σου, τοῦ καταλῦσαι ἐχθρὸν καὶ ἐκδικητήν. Ὅτι ὄψομαι τοὺς οὐρανοὺς ἔργα τῶν δακτύλων σου, σελήνην καὶ ἀστέρας, ἃ σὺ ἐθεμελίωσας· Τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι μιμνήσκῃ αὐτοῦ; ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι ἐπισκέπτῃ αὐτόν; Ἠλάττωσας αὐτὸν βραχύ τι παρ’ ἀγγέλους, δόξῃ καὶ τιμῇ ἐστεφάνωσας αὐτὸν, καὶ κατέστησας αὐτὸν ἐπὶ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου· πάντα ὑπέταξας ὑποκάτω τῶν ποδῶν αὐτοῦ, πρόβατα καὶ βόας πάσας, ἔτι δὲ καὶ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου, τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης, τὰ διαπορευόμενα τρίβους θαλασσῶν. Κύριε ὁ Κύριος ἡμῶν, ὡς

θαυμαστὸν ὄνομά σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ;

# 9

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν κρυφίων τοῦ υἱοῦ, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ἐξομολογήσομαι σοι Κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, διηγήσομαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. Εὐφρανθήσομαι καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐν σοὶ, ψαλῶ τῷ ὀνόματί σου ὕψιστε. Ἐν τῷ ἀποστραφῆναι τὸν ἐχθρόν μου εἰς τὰ ὀπίσω, ἀσθενήσουσι καὶ ἀπολοῦνται ἀπὸ προσώπου σου. Ὅτι ἐποίησας τὴν κρίσιν μου καὶ τὴν δίκην μου, ἐκάθισας ἐπὶ θρόνου ὁ κρίνων δικαιοσύνην. Ἐπετίμησας ἔθνεσι, καὶ ἀπώλετο ὁ ἀσεβὴς· τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐξήλειψας εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Τοῦ ἐχθροῦ ἐξέλιπον αἱ ῥομφαῖαι εἰς τέλος, καὶ πόλεις καθεῖλες· ἀπώλετο τὸ μνημόσυνον αὐτῶν μετ᾽ ἤχου, καὶ ὁ Κύριος εἰς τὸν αἰῶνα μένει· ἡτοίμασεν ἐν κρίσει τὸν θρόνον αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν δικαιοσύνῃ, κρινεῖ λαοὺς ἐν εὐθύτητι. Καὶ ἐγένετο Κύριος καταφυγὴ τῷ πένητι, βοηθὸς ἐν εὐκαιρίαις, ἐν θλίψει. Καὶ ἐλπισάτωσαν ἐπὶ σὲ οἱ γινώσκοντες τὸ ὄνομά σου, ὅτι οὐκ ἐγκατέλιπες τοὺς ἐκζητοῦντάς σε Κύριε. Ψάλατε τῷ Κυρίῳ τῷ κατοικοῦντι ἐν Σιὼν, ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ. Ὅτι ἐκζητῶν τὰ αἵματα αὐτῶν ἐμνήσθη, οὐκ ἐπελάθετο τῆς δεήσεως τῶν πενήτων. Ἐλέησόν με Κύριε, ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου, ὁ ὑψῶν με ἐκ τῶν πυλῶν τοῦ θανάτου· Ὅπως ἂν ἐξαγγείλω πάσας τὰς αἰνέσεις σου ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς Σιών· ἀγαλλιάσομαι ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου. Ἐνεπάγησαν ἔθνη ἐν διαφθορᾷ ᾗ ἐποίησαν· ἐν παγίδι ταύτῃ ᾗ ἔκρυψαν συνελήφθη ὁ ποὺς αὐτῶν. Γινώσκεται

Κύριος κρίματα ποιῶν, ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτοῦ συνελήφθη ὁ ἁμαρτωλός· ᾠδὴ διαψάλματος. Ἀποστραφήτωσαν οἱ ἁμαρτωλοὶ εἰς τὸν ᾅδην, πάντα τὰ ἔθνη τὰ ἐπιλανθανόμενα τοῦ Θεοῦ. Ὅτι οὐκ εἰς τέλος ἐπιλησθήσεται ὁ πτωχὸς, ἡ ὑπομονὴ τῶν πενήτων οὐκ ἀπολεῖται εἰς τὸν αἰῶνα. Ἀνάστηθι Κύριε, μὴ κραταιούσθω ἄνθρωπος, κριθήτωσαν ἔθνη ἐνώπιόν σου. Κατάστησον, Κύριε, νομοθέτην ἐπ' αὐτοὺς, γνώτωσαν ἔθνη ὅτι ἀνθρωποί εἰσι· διάψαλμα. Ἱνατί, Κύριε, ἀφέστηκας μακρόθεν, ὑπερορᾷς ἐν εὐκαιρίαις, ἐν θλίψει; Ἐν τῷ ὑπερηφανεύεσθαι τὸν ἀσεβῆ, ἐμπυρίζεται ὁ πτωχὸς, συλλαμβάνονται ἐν διαβουλίοις οἷς διαλογίζονται. Ὅτι ἐπαινεῖται ὁ ἁμαρτωλὸς ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, καὶ ὁ ἀδικῶν ἐνευλογεῖται. Παρώξυνε τὸν Κύριον ὁ ἁμαρτωλὸς, κατὰ τὸ πλῆθος τῆς ὀργῆς αὐτοῦ οὐκ ἐκζητήσει· οὐκ ἔστιν ὁ Θεὸς ἐνώπιον αὐτοῦ. Βεβηλοῦνται αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ· ἀνταναιρεῖται τὰ κρίματά σου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ κατακυριεύσει. Εἶπε γὰρ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, οὐ μὴ σαλευθῶ ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν ἄνευ κακοῦ. Οὗ ἀρᾶς τὸ στόμα αὐτοῦ γέμει καὶ πικρίας καὶ δόλου, ὑπὸ τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ κόπος καὶ πόνος. Ἐγκάθηται ἔνεδρα μετὰ πλουσίων ἐν ἀποκρύφοις, τοῦ ἀποκτεῖναι ἀθῶον· οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀποβλέπουσιν. Ἐνεδρεύει ἐν ἀποκρύφῳ ὡς λέων ἐν τῇ μάνδρᾳ αὐτοῦ· ἐνεδρεύει τοῦ ἁρπάσαι πτωχὸν, ἁρπάσαι πτωχὸν ἐν τῷ ἑλκύσαι αὐτόν· ἐν τῇ παγίδι αὐτοῦ ταπεινώσει αὐτὸν, κύψει καὶ πεσεῖται ἐν τῷ αὐτὸν κατακυριεῦσαι τῶν πενήτων. Εἶπε γὰρ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἐπιλέλησται ὁ Θεὸς, ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ τοῦ μὴ βλέπειν εἰς τέλος. Ἀνάστηθι Κύριε ὁ Θεὸς, ὑψωθήτω ἡ χείρ σου, μὴ ἐπιλάθῃ τῶν πενήτων. Ἕνεκεν τίνος παρώξυνεν ὁ ἀσεβὴς τὸν Θεόν; εἶπε γὰρ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, οὐ ζητήσει. Βλέπεις,

ὅτι σὺ πόνον καὶ θυμὸν κατανοεῖς, τοῦ παραδοῦναι αὐτοὺς εἰς χεῖράς σου· σοὶ ἐγκαταλέλειπται ὁ πτωχὸς, ὀρφανῷ σὺ ἦσθα βοηθός. Σύντριψον τὸν βραχίονα τοῦ ἁμαρτωλοῦ καὶ πονηροῦ, ζητηθήσεται ἡ ἁμαρτία αὐτοῦ καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ. Βασιλεύσει Κύριος εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, ἀπολεῖσθε ἔθνη ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. Τὴν ἐπιθυμίαν τῶν πενήτων εἰσήκουσε Κύριος, τὴν ἑτοιμασίαν τῆς καρδίας αὐτῶν προσέσχε τὸ οὖς σου· Κρῖναι ὀρφανῷ καὶ ταπεινῷ, ἵνα μὴ προσθῇ ἔτι μεγαλαυχεῖν ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς.

# 10

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ. Ἐπὶ τῷ Κυρίῳ πέποιθα· πῶς ἐρεῖτε τῇ ψυχῇ μου, μεταναστεύου ἐπὶ τὰ ὄρη ὡς στρουθίον; Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἐνέτειναν τόξον, ἡτοίμασαν βέλη εἰς φαρέτραν, τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν σκοτομήνῃ τοὺς εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. Ὅτι ἃ κατηρτίσω καθεῖλον, ὁ δὲ δίκαιος τί ἐποίησε; Κύριος ἐν ναῷ ἁγίῳ αὐτοῦ, Κύριος, ἐν οὐρανῷ ὁ θρόνος αὐτοῦ· οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀποβλέπουσι, τὰ βλέφαρα αὐτοῦ ἐξετάζει τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων· Κύριος ἐξετάζει τὸν δίκαιον καὶ τὸν ἀσεβῆ, ὁ δὲ ἀγαπῶν ἀδικίαν μισεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. Ἐπιβρέξει ἐπὶ ἁμαρτωλοὺς παγίδας, πῦρ καὶ θεῖον καὶ πνεῦμα καταιγίδος ἡ μερὶς τοῦ ποτηρίου αὐτῶν. Ὅτι δίκαιος Κύριος καὶ δικαιοσύνας ἠγάπησεν, εὐθύτητα εἶδε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ.

# 11

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Σῶσον με Κύριε, ὅτι ἐκλέλοιπεν ὅσιος, ὅτι ὠλιγώθησαν αἱ ἀλήθειαι ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων. Μάταια ἐλάλησεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, χείλη δόλια, ἐν καρδίᾳ καὶ ἐν καρδίᾳ ἐλάλησαν. Ἐξολοθρεύσαι Κύριος πάντα τὰ χείλη τὰ δόλια, καὶ γλῶσσαν μεγαλορῥήμονα· Τοὺς εἰπόντας, τὴν γλῶσσαν ἡμῶν μεγαλυνοῦμεν, τὰ χείλη ἡμῶν παρ' ἡμῶν ἐστι· τίς ἡμῶν Κύριός ἐστιν; Ἀπὸ τῆς ταλαιπωρίας τῶν πτωχῶν, καὶ ἀπὸ τοῦ στεναγμοῦ τῶν πενήτων, νῦν ἀναστήσομαι, λέγει Κύριος· θήσομαι ἐν σωτηρίῳ, παῤῥησιάσομαι ἐν αὐτῷ. Τὰ λόγια Κυρίου, λόγια ἁγνά· ἀργύριον πεπυρωμένον, δοκίμιον τῇ γῇ, κεκαθαρισμένον ἑπταπλασίως. Σὺ Κύριε φυλάξεις ἡμᾶς· καὶ διατηρήσεις ἡμᾶς ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα. Κύκλῳ οἱ ἀσεβεῖς περιπατοῦσι, κατὰ τὸ ὕψος σου ἐπολυώρησας τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων.

# 12

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ἕως πότε Κύριε ἐπιλήσῃ μου, εἰς τέλος; ἕως πότε ἀποστρέψεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ; Ἕως τίνος θήσομαι βουλὰς ἐν ψυχῇ μου, ὀδύνας ἐν καρδίᾳ μου ἡμέρας; ἕως πότε ὑψωθήσεται ὁ ἐχθρός μου ἐπ' ἐμέ; Ἐπίβλεψον, εἰσάκουσόν μου, Κύριε ὁ Θεός μου· φώτισον τοὺς ὀφθαλμούς μου, μή ποτε ὑπνώσω εἰς θάνατον· μή ποτε εἴποι ὁ ἐχθρός μου, ἴσχυσα πρὸς αὐτόν· οἱ θλίβοντές με ἀγαλλιάσονται ἐὰν σαλευθῶ. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ τῷ ἐλέει σου ἤλπισα· ἀγαλλιάσεται ἡ καρδία μου ἐν τῷ σωτηρίῳ σου. Ἄσω τῷ Κυρίῳ τῷ εὐεργετήσαντί με, καὶ ψαλῶ τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ ὑψίστου.

# 13

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Εἶπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, οὐκ ἔστι Θεός· διέφθειραν καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἐπιτηδεύμασιν, οὐκ ἔστι ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. Κύριος ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, τοῦ ἰδεῖν εἰ ἔστι συνιὼν ἢ ἐκζητῶν τὸν Θεόν. Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν, οὐκ ἔστι ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός· τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν, ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν, ἰὸς ἀσπίδων ὑπὸ τὰ χείλη αὐτῶν· ὧν τὸ στόμα ἀρᾶς καὶ πικρίας γέμει, ὀξεῖς οἱ πόδες αὐτῶν ἐκχέαι αἷμα· σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, καὶ ὁδὸν εἰρήνης οὐκ ἔγνωσαν· οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν. Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, οἱ κατέσθοντες τὸν λαόν μου βρώσει ἄρτου; τὸν Κύριον οὐκ ἐπεκαλέσαντο. Ἐκεῖ ἐδειλίασαν φόβῳ, οὗ οὐκ ἦν φόβος, ὅτι ὁ Θεὸς ἐν γενεᾷ δικαίᾳ. Βουλὴν πτωχοῦ κατῃσχύνατε, ὅτι Κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ ἐστι. Τίς δώσει ἐκ Σιὼν τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραήλ; ἐν τῷ ἐπιστρέψαι Κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἀγαλλιάσθω Ἰακὼβ, καὶ εὐφρανθήτω Ἰσραήλ.

# 14

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε, τίς παροικήσει ἐν τῷ σκηνώματί σου; καὶ τίς κατασκηνώσει ἐν τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ σου; Πορευόμενος ἄμωμος, καὶ ἐργαζόμενος δικαιοσύνην· λαλῶν ἀλήθειαν ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ· Ὃς οὐκ ἐδόλωσεν ἐν γλώσσῃ αὐτοῦ, οὐδὲ ἐποίησε τῷ πλησίον

αὐτοῦ κακὸν, καὶ ὀνειδισμὸν οὐκ ἔλαβεν ἐπὶ τοὺς ἔγγιστα αὐτοῦ· Ἐξουδένωται ἐνώπιον αὐτοῦ πονηρευόμενος, τοὺς δὲ φοβουμένους Κύριον δοξάζει· ὁ ὀμνύων τῷ πλησίον αὐτοῦ καὶ οὐκ ἐθετῶν· Τὸ ἀργύριον αὐτοῦ οὐκ ἔδωκεν ἐπὶ τόκῳ, καὶ δῶρα ἐπ᾽ ἀθώοις οὐκ ἔλαβεν· ὁ ποιῶν ταῦτα, οὐ σαλευθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα.

# 15

Στηλογραφία τῷ Δαυίδ. Φύλαξον με Κύριε, ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα. Εἶπα τῷ Κυρίῳ, Κύριός μου εἶ σὺ, ὅτι τῶν ἀγαθῶν μου οὐ χρείαν ἔχεις. Τοῖς ἁγίοις τοῖς ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ, ἐθαυμάστωσε πάντα τὰ θελήματα αὐτοῦ ἐν αὐτοῖς. Ἐπληθύνθησαν αἱ ἀσθένειαι αὐτῶν, μετὰ ταῦτα ἐτάχυναν· οὐ μὴ συναγάγω τὰς συναγωγὰς αὐτῶν ἐξ αἱμάτων, οὐδὲ μὴ μνησθῶ τῶν ὀνομάτων αὐτῶν διὰ χειλέων μου. Κύριος μερὶς τῆς κληρονομίας μου καὶ τοῦ ποτηρίου μου, σὺ εἶ ὁ ἀποκαθιστῶν τὴν κληρονομίαν μου ἐμοί. Σχοινία ἐπέπεσάν μοι ἐν τοῖς κρατίστοις, καὶ γὰρ ἡ κληρονομία μου κρατίστη μοι ἐστίν. Εὐλογήσω τὸν Κύριον τὸν συνετίσαντά με, ἔτι δὲ καὶ ἕως νυκτὸς ἐπαίδευσάν με οἱ νεφροί μου. Προωρώμην τὸν Κύριον ἐνώπιόν μου διαπαντὸς, ὅτι ἐκ δεξιῶν μου ἐστὶν ἵνα μὴ σαλευθῶ. Διὰ τοῦτο ηὐφράνθη ἡ καρδία μου, καὶ ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου, ἔτι δὲ καὶ ἡ σάρξ μου κατασκηνώσει ἐπ᾽ ἐλπίδι· Ὅτι οὐκ ἐγκαταλείψεις τὴν ψυχήν μου εἰς ᾅδην, οὐδὲ δώσεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν διαφθοράν. Ἐγνώρισάς μοι ὁδοὺς ζωῆς, πληρώσεις με εὐφροσύνης μετὰ τοῦ προσώπου σου, τερπνότητες ἐν τῇ δεξιᾷ σου εἰς τέλος.

# 16

Προσευχὴ τοῦ Δαυίδ. Εἰσάκουσον Κύριε τῆς δικαιοσύνης μου, πρόσχες τῇ δεήσει μου· ἐνώτισαι τὴν προσευχήν μου οὐκ ἐν χείλεσι δολίοις. Ἐκ προσώπου σου τὸ κρίμα μου ἐξέλθοι, οἱ ὀφθαλμοί μου ἰδέτωσαν εὐθύτητας. Ἐδοκίμασας τὴν καρδίαν μου, ἐπεσκέψω νυκτὸς, ἐπύρωσάς με, καὶ οὐχ εὑρέθη ἐν ἐμοὶ ἀδικία· ὅπως ἂν μὴ λαλήσῃ τὸ στόμα μου. Τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων, διὰ τοὺς λόγους τῶν χειλέων σου ἐγὼ ἐφύλαξα ὁδοὺς σκληράς. Κατάρτισαι τὰ διαβήματά μου ἐν ταῖς τρίβοις σου, ἵνα μὴ σαλευθῇ τὰ διαβήματά μου. Ἐγὼ ἐκεκραξα, ὅτι ἐπήκουσας μου ὁ Θεός· κλῖνον τὸ οὖς σου ἐμοὶ, καὶ εἰσάκουσον τῶν ῥημάτων μου. Θαυμάστωσον τὰ ἐλέη σου, ὁ σώζων τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ σέ· ἐκ τῶν ἀνθεστηκότων τῇ δεξιᾷ σου, φύλαξόν με ὡς κόρην ὀφθαλμοῦ· ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου σκεπάσεις με, ἀπὸ προσώπου ἀσεβῶν τῶν ταλαιπωρησάντων με· οἱ ἐχθροί μου τὴν ψυχήν μου περιέσχον. Τὸ στέαρ αὐτῶν συνέκλεισαν, τὸ στόμα αὐτῶν ἐλάλησεν ὑπερηφανίαν. Ἐκβαλόντες με νυνὶ περιεκύκλωσάν με, τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτὼν ἔθεντο ἐκκλῖναι ἐν τῇ γῇ. Ὑπέλαβόν με ὡσεὶ λέων ἕτοιμος εἰς θήραν, καὶ ὡσεὶ σκύμνος οἰκῶν ἐν ἀποκρύφοις. Ἀνάστηθι Κύριε, πρόφθασον αὐτοὺς, καὶ ὑποσκέλισον αὐτοὺς, ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ ἀσεβοῦς, ῥομφαίαν σου ἀπὸ ἐχθρῶν τῆς χειρός σου· Κύριε ἀπολύων ἀπὸ γῆς, διαμέρισον αὐτοὺς ἐν τῇ ζωῇ αὐτῶν, καὶ τῶν κεκρυμμένων σου ἐπλήσθη ἡ γαστὴρ αὐτῶν· ἐχορτάσθησαν ὑείων, καὶ ἀφῆκαν τὰ κατάλοιπα τοῖς νηπίοις αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ ἐν δικαιοσύνῃ ὀφθήσομαι τῷ προσώπῳ σου, χορτασθήσομαι ἐν τῷ ὀφθῆναι τὴν δόξαν σου.

# 17

Εἰς τὸ τέλος τῷ παιδὶ Κυρίου τῷ Δαυὶδ, ἃ ἐλάλησε τῷ Κυρίῳ, τοὺς λόγους τῆς ᾠδῆς ταύτης, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐῤῥύσατο αὐτὸν Κύριος ἐκ χειρὸς πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ ἐκ χειρὸς Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, Αγαπήσω σε, Κύριε ἰσχύς μου. Κύριος στερέωμά μου, καὶ καταφυγή μου, καὶ ῥύστης μου· ὁ Θεός μου βοηθός μου, ἐλπιῶ ἐπ᾽ αὐτόν· ὑπερασπιστής μου, καὶ κέρας σωτηρίας μου, καὶ ἀντιλήπτωρ μου. Αἰνῶν ἐπικαλέσομαι Κύριον, καὶ ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου σωθήσομαι. Περιέσχον με ὠδῖνες θανάτου, καὶ χείμαῤῥοι ἀνομίας ἐξετάραξάν με. Ὠδῖνες ᾅδου περιεκύκλωσάν με, προέφθασάν με παγίδες θανάτου. Καὶ ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐπεκαλεσάμην τὸν Κύριον, καὶ πρὸς τὸν Θεόν μου ἐκέκραξα· ἤκουσεν ἐκ ναοῦ ἁγίου αὐτοῦ φωνῆς μου. καὶ ἡ κραυγή μου ἐνώπιον αὐτοῦ εἰσελεύσεται εἰς τὰ ὦτα αὐτοῦ. Καὶ ἐσαλεύθη, καὶ ἔντρόμος ἐγενήθη ἡ γῆ, καὶ τὰ θεμέλια τῶν ὀρέων ἐταράχθησαν, καὶ ἐσαλεύθησαν, ὅτι ὠργίσθη αὐτοῖς ὁ Θεός. Ἀνέβη καπνὸς ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, καὶ πῦρ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ κατεφλόγισεν, ἄνθρακες ἀνήφθησαν ἀπ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἔκλινεν οὐρανὸν καὶ κατέβη, καὶ γνόφος ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ. Καὶ ἐπέβη ἐπὶ χερουβὶμ καὶ ἐπετάσθη, ἐπετάσθη ἐπὶ πτερύγων ἀνέμων. Καὶ ἔθετο σκότος ἀποκρυφὴν αὐτοῦ, κύκλῳ αὐτοῦ ἡ σκηνὴ αὐτοῦ, σκοτεινὸν ὕδωρ ἐν νεφέλαις ἀέρων. Ἀπὸ τῆς τηλαυγήσεως ἐνώπιον αὐτοῦ αἱ νεφέλαι διῆλθον, χάλαζα καὶ ἄνθρακες πυρός. Καὶ ἐβρόντησεν ἐξ οὐρανοῦ Κύριος, καὶ ὁ ὕψιστος ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐξαπέστειλε βέλη καὶ ἐσκόρπισεν αὐτοὺς, καὶ ἀστραπὰς ἐπλήθυνε καὶ συνετάραξεν αὐτούς. Καὶ ὤφθησαν αἱ πηγαὶ τῶν ὑδάτων, καὶ ἀνεκαλύφθη τὰ θεμέλια τῆς οἰκουμένης· ἀπὸ

ἐπιτιμήσεώς σου Κύριε, ἀπὸ ἐνπνεύσεως πνεύματος ὀργῆς σου. Ἐξαπέστειλεν ἐξ ὕψους καὶ ἔλαβέ με, προσελάβετό με ἐξ ὑδάτων πολλῶν. Ῥύσεταί με ἐξ ἐχθρῶν μου δυνατῶν, καὶ ἐκ τῶν μισούντων με, ὅτι ἐστερεώθησαν ὑπὲρ ἐμέ. Προέφθασάν με ἐν ἡμέρᾳ κακώσεώς μου, καὶ ἐγένετο Κύριος ἀντιστήριγμά μου. Καὶ ἐξήγαγέ με εἰς πλατυσμὸν, ῥύσεταί με, ὅτι ἠθέλησέ με. Καὶ ἀνταποδώσει μοι Κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἀνταποδώσει μοι. Ὅτι ἐφύλαξα τὰς ὁδοὺς Κυρίου, καὶ οὐκ ἠσέβησα ἀπὸ τοῦ Θεοῦ μου. Ὅτι πάντα τὰ κρίματα αὐτοῦ ἐνώπιόν μου, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ οὐκ ἀπέστησαν ἀπ’ ἐμοῦ. Καὶ ἔσομαι ἄμωμος μετ’ αὐτοῦ, καὶ φυλάξομαι ἀπὸ τῆς ἀνομίας μου. Καὶ ἀνταποδώσει μοι Κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Μετὰ ὁσίου ὁσιωθήσῃ, καὶ μετὰ ἀνδρὸς ἀθώου ἀθῶος ἔσῃ· Καὶ μετὰ ἐκλεκτοῦ ἐκλεκτὸς ἔσῃ, καὶ μετὰ στρεβλοῦ διαστρέψεις. Ὅτι σὺ λαὸν ταπεινὸν σώσεις, καὶ ὀφθαλμοὺς ὑπερηφάνων ταπεινώσεις. Ὅτι σὺ φωτιεῖς λύχνον μου Κύριε, ὁ Θεός μου φωτιεῖς τὸ σκότος μου. Ὅτι ἐν σοὶ ῥυσθήσομαι ἀπὸ πειρατηρίου, καὶ ἐν τῷ Θεῷ μου ὑπερβήσομαι τεῖχος. Ὁ Θεός μου, ἄμωμος ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, τὰ λόγια Κυρίου πεπυρωμένα, ὑπερασπιστής ἐστι πάντων τῶν ἐλπιζόντων ἐπ’ αὐτόν. Ὅτι τίς Θεὸς πλὴν τοῦ Κυρίου; καὶ τίς Θεὸς πλὴν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν; Ὁ Θεὸς ὁ περιζωννύων με δύναμιν, καὶ ἔθετο ἄμωμον τὴν ὁδόν μου· ὁ καταρτιζόμενος τοὺς πόδας μου ὡσεὶ ἐλάφου, καὶ ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ἱστῶν με· Διδάσκων χεῖράς μου εἰς πόλεμον· καὶ ἔθου τόξον χαλκοῦν τοὺς βραχίονάς μου, καὶ ἔδωκάς με ὑπερασπισμὸν σωτηρίας μου· καὶ ἡ δεξιά σου ἀντελάβετό μου, καὶ ἡ παιδεία σου ἀνώρθωσέ με εἰς τέλος, καὶ ἡ παιδεία σου αὐτή με διδάξει. Ἐπλάτυνας τὰ διαβήματά μου ὑποκάτω μου, καὶ οὐκ

ἠσθένησαν τὰ ἴχνη μου. Καταδιώξω τοὺς ἐχθρούς μου, καὶ καταλήψομαι αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἀποστραφήσομαι, ἕως ἂν ἐκλείπωσιν. Ἐκθλίψω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι, πεσοῦνται ὑπὸ τοὺς πόδας μου. Καὶ περιέζωσάς με δύναμιν εἰς πόλεμον, συνεπόδισας πάντας τοὺς ἐπανισταένους ἐπ' ἐμὲ ὑποκάτω μου. Καὶ τοὺς ἐχθρούς μου ἔδωκάς μοι νῶτον, καὶ τοὺς μισοῦντάς με ἐξωλόθρευσας. Ἐκέκραξαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ σώζων· πρὸς Κύριον, καὶ οὐκ εἰσήκουεν αὐτῶν. Καὶ λεπτυνῶ αὐτοὺς ὡς χοῦν κατὰ πρόσωπον ἀνέμου, ὡς πηλὸν πλατειῶν λεανῶ αὐτούς. Ῥῦσαί με ἐξ ἀντιλογιῶν λαοῦ, καταστήσεις με εἰς κεφαλὴν ἐθνῶν· λαὸς ὃν οὐκ ἔγνων, ἐδούλευσέ μοι, εἰς ἀκοὴν ὠτίου ὑπήκουσέ μοι· υἱοὶ ἀλλότριοι ἐψεύσαντό μοι, υἱοὶ ἀλλότριοι ἐπαλαιώθησαν, καὶ ἐχώλαναν ἀπὸ τῶν τρίβων αὐτῶν. Ζῇ Κύριος, καὶ εὐλογητὸς ὁ Θεός μου, καὶ ὑψωθήτω ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου. Ὁ Θεὸς ὁ διδοὺς ἐκδικήσεις ἐμοὶ, καὶ ὑποτάξας λαοὺς ὑπ' ἐμὲ, ὁ ῥύστης μου ἐξ ἐχθρῶν ὀργίλων· ἀπὸ τῶν ἐπανισταμένων ἐπ' ἐμὲ ὑψώσεις με, ἀπὸ ἀνδρὸς ἀδίκου ῥύσῃ με. Διὰ τοῦτο ἐξομολογήσομαί σοι ἐν ἔθνεσι, Κύριε, καὶ τῷ ὀνόματί σου ψαλῶ. Μεγαλύνων τὰς σωτηρίας τοῦ βασιλέως αὐτοῦ, καὶ ποιῶν ἔλεος τῷ χριστῷ αὐτοῦ τῷ Δαυὶδ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ ἕως αἰῶνος.

# 18

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Οἱ οὐρανοὶ διηγοῦνται δόξαν Θεοῦ, ποίησιν δὲ χειρῶν αὐτοῦ ἀναγγέλλει τὸ στερέωμα. Ἡμέρα τῇ ἡμέρᾳ ἐρεύγεται ῥῆμα, καὶ νὺξ νυκτὶ ἀναγγέλλει γνῶσιν. Οὐκ εἰσὶ λαλιαὶ οὐδὲ λόγοι, ὧν οὐχὶ ἀκούονται αἱ φωναὶ αὐτῶν· Εἰς πᾶσαν

τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης τὰ ῥήματα αὐτῶν· ἐν τῷ ἡλίῳ ἔθετο τὸ σκήνωμα αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ὡς νυμφίος ἐκπορευόμενος ἐκ παστοῦ αὐτοῦ· ἀγαλλιάσεται ὡς γίγας δραμεῖν ὁδὸν αὐτοῦ. Ἀπ᾽ ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ ἡ ἔξοδος αὐτοῦ· καὶ τὸ κατάντημα αὐτοῦ ἕως ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἀποκρυβήσεται τὴν θέρμην αὐτοῦ. Ὁ νόμος τοῦ Κυρίου ἄμωμος ἐπιστρέφων ψυχὰς, ἡ μαρτυρία Κυρίου πιστὴ σοφίζουσα νήπια. Τὰ δικαιώματα Κυρίου εὐθέα εὐφραίνοντα καρδίαν, ἡ ἐντολὴ Κυρίου τηλαυγὴς φωτίζουσα ὀφθαλμούς. Ὁ φόβος Κυρίου ἁγνὸς διαμένων εἰς αἰῶνα αἰῶνος, τὰ κρίματα Κυρίου ἀληθινὰ δεδικαιωμένα ἐπὶ τὸ αὐτό· Ἐπιθυμητὰ ὑπὲρ χρυσίον καὶ λίθον τίμιον πολὺν, καὶ γλυκύτερα ὑπὲρ μέλι καὶ κηρίον. Καὶ γὰρ ὁ δοῦλός σου φυλάσσει αὐτὰ, ἐν τῷ φυλάσσειν αὐτὰ ἀνταπόδοσις πολλή. Παραπτώματα τίς συνήσει; ἐκ τῶν κρυφίων μου καθάρισόν με, καὶ ἀπὸ ἀλλοτρίων φεῖσαι τοῦ δούλου σου· ἐὰν μή μου κατακυριεύσωσι, τότε ἄμωμος ἔσομαι, καὶ καθαρισθήσομαι ἀπὸ ἁμαρτίας μεγάλης. Καὶ ἔσονται εἰς εὐδοκίαν τὸ λόγια τοῦ στόματός μου, καὶ ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου ἐνώπιόν σου διαπαντός· Κύριε βοηθέ μου, καὶ λυτρωτά μου.

# 19

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ἐπακούσαι σου Κύριος ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, ὑπερασπίσαι σου τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ Ἰακώβ. Ἐξαποστείλαι σοι βοήθειαν ἐξ ἁγίου, καὶ ἐκ Σιὼν ἀντιλάβοιτό σου. Μνησθείη πάσης θυσίας σου, καὶ τὸ ὁλοκαύτωμά σου πιανάτω· διάψαλμα. Δῴη σοι κατὰ τὴν καρδίαν σου, καὶ πᾶσαν τὴν βουλήν

σου πληρώσαι. Ἀγαλλιασόμεθα ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, καὶ ἐν ὀνόματι Θεοῦ ἡμῶν μεγαλυνθησόμεθα· πληρώσαι Κύριος πάντα τὰ αἰτήματά σου. Νῦν ἔγνων ὅτι ἔσωσε Κύριος τὸν χριστὸν αὐτοῦ· ἐπακούσεται αὐτοῦ ἐξ οὐρανοῦ ἁγίου αὐτοῦ, ἐν δυναστείαις ἡ σωτηρία τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ. Οὗτοι ἐν ἅρμασι καὶ οὗτοι ἐν ἵπποις, ἡμεῖς δὲ ἐν ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν μεγαλυνθησόμεθα. Αὐτοὶ συνεποδίσθησαν καὶ ἔπεσαν, ἡμεῖς δὲ ἀνέστημεν καὶ ἀνωρθώθημεν. Κύριε σῶσον τὸν βασιλέα καὶ ἐπάκουσον ἡμῶν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλεσώμεθά σε.

# 20

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε, ἐν τῇ δυνάμει σου εὐφρανθήσεται ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου ἀγαλλιάσεται σφόδρα. Τὴν ἐπιθυμίαν τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἔδωκας αὐτῷ, καὶ τὴν δέησιν τῶν χειλέων αὐτοῦ οὐκ ἐστέρησας αὐτόν· διάψαλμα. Ὅτι προέφθασας αὐτὸν ἐν εὐλογίαις χρηστότητος, ἔθηκας ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ στέφανον ἐκ λίθου τιμίου. Ζωὴν ᾐτήσατό σε, καὶ ἔδωκας αὐτῷ μακρότητα ἡμερῶν εἰς αἰῶνα αἰῶνος. Μεγάλη ἡ δόξα αὐτοῦ ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, δόξαν καὶ μεγαλοπρέπειαν ἐπιθήσεις ἐπ’ αὐτόν. Ὅτι δώσεις αὐτῷ εὐλογίαν εἰς αἰῶνα αἰῶνος, εὐφρανεῖς αὐτὸν ἐν χαρᾷ μετὰ τοῦ προσώπου σου. Ὅτι ὁ βασιλεὺς ἐλπίζει ἐπὶ Κύριον, καὶ ἐν τῷ ἐλέει τοῦ ὑψίστου οὐ μὴ σαλευθῇ. Εὑρεθείη ἡ χείρ σου πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς σου, ἡ δεξιά σου εὕροι πάντας τοὺς μισοῦντάς σε. Θήσεις αὐτοὺς ὡς κλίβανον πυρὸς εἰς καιρὸν τοῦ προσώπου σου, Κύριος ἐν ὀργῇ αὐτοῦ συνταράξει αὐτοὺς, καὶ καταφάγεται αὐτοὺς πῦρ. Τὸν καρπὸν αὐτῶν ἀπὸ γῆς

ἀπολεῖς, καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν ἀπὸ υἱῶν ἀνθρώπων. Ὅτι ἔκλιναν εἰς σὲ κακὰ, διελογίσαντο βουλὴν, ἣν οὐ μὴ δύνωνται στῆσαι. Ὅτι θήσεις αὐτοὺς νῶτον ἐν τοῖς περιλοίποις σου, ἑτοιμάσεις τὸ πρόσωπον αὐτῶν. Ὑψώθητι Κύριε ἐν τῇ δυνάμει σου· ᾄσομεν καὶ ψαλοῦμεν τὰς δυναστείας σου.

# 21

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ἀντιλήψεως τῆς ἑωθινῆς, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ὁ Θεός ὁ Θεός μου, πρόσχες μοι, ἱνατί ἐγκατέλιπές με; μακρὰν ἀπὸ τῆς σωτηρίας μου οἱ λόγοι τῶν παραπτωμάτων μου. Ο Θεός μου, κεκράξομαι ἡμέρας πρὸς σὲ καὶ οὐκ εἰσακούσῃ, καὶ νυκτὸς καὶ οὐκ εἰς ἄνοιαν ἐμοί. Σὺ δὲ ἐν ἁγίῳ κατοικεῖς, ὁ ἔπαινος τοῦ Ἰσραήλ. Ἐπὶ σοὶ ἤλπισαν οἱ πατέρες ἡμῶν, ἤλπισαν καὶ ἐῤῥύσω αὐτούς. Πρὸς σὲ ἐκέκραξαν καὶ ἐσώθησαν, ἐπὶ σοὶ ἤλπισαν καὶ οὐ κατῃσχύνθησαν. Ἐγὼ δέ εἰμι σκώληξ καὶ οὐκ ἄνθρωπος, ὄνειδος ἀνθρώπων καὶ ἐξουδένημα λαοῦ. Πάντες οἱ θεωροῦντές με ἐξεμυκτήρισάν με, ἐλάλησαν ἐν χείλεσιν, ἐκίνησαν κεφαλὴν, ἤλπισεν ἐπὶ Κύριον, ῥυσάσθω αὐτὸν, σωσάτω αὐτὸν, ὅτι θέλει αὐτόν. Ὅτι σὺ εἶ ὁ ἐκσπάσας με ἐκ γαστρὸς, ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ μαστῶν τῆς μητρός μου, ἐπὶ σὲ ἐπερῤῥίφην ἐκ μήτρας· ἐκ κοιλίας μητρός μου Θεός μου εἶ σύ. Μὴ ἀποστῇς ἀπ’ ἐμοῦ· ὅτι θλίψις ἐγγὺς, ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ βοηθῶν. Περιεκύκλωσάν με μόσχοι πολλοί, ταῦροι πίονες περιέσχον με. Ἤνοιξαν ἐπ’ ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, ὡς λέων ὁ ἁρπάζων καὶ ὠρυόμενος. Ὡσεὶ ὕδωρ ἐξεχύθην, καὶ διεσκορπίσθη πάντα τὰ ὀστᾶ μου, ἐγενήθη ἡ καρδία μου ὡσεὶ κηρὸς τηκόμενος ἐν μέσῳ τῆς κοιλίας μου. Ἐξηράνθη ὡσεὶ

ὄστρακον ἡ ἰσχύς μου, καὶ ἡ γλῶσσά μου κεκόλληται τῷ λάρυγγί μου, καὶ εἰς χοῦν θανάτου κατήγαγές με. Ὅτι ἐκύκλωσάν με κύνες πολλοί, συναγωγὴ πονηρευομένων περιέσχον με· ὤρυξαν χεῖράς μου, καὶ πόδας, ἐξηρίθμησαν πάντα τὰ ὀστᾶ μου· αὐτοὶ δὲ κατενόησαν καὶ ἐπεῖδόν με. Διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου ἑαυτοῖς, καὶ ἐπὶ τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον. Σὺ δὲ Κύριε μὴ μακρύνῃς τὴν βοήθειάν μου, εἰς τὴν ἀντίληψίν μου πρόσχες. Ῥῦσαι ἀπὸ ῥομφαίας τὴν ψυχήν μου, καὶ ἐκ χειρὸς κυνὸς τὴν μονογενῆ μου. Σῶσόν με ἐκ στόματος λέοντος, καὶ ἀπὸ κεράτων μονοκερώτων τὴν ταπείνωσίν μου. Διηγήσομαι τὸ ὄνομά σου τοῖς ἀδελφοῖς μου, ἐν μέσῳ ἐκκλησίας ὑμνήσω σε. Οἱ φοβούμενοι Κύριον αἰνέσατε αὐτὸν, ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰακὼβ δοξάσατε αὐτὸν, φοβηθήτωσαν αὐτὸν ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰσραήλ. Οτι οὐκ ἐξουδένωσεν οὐδὲ προσώχθισε τῇ δεήσει τοῦ πτωχοῦ, οὐδὲ ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπ’ ἐμοῦ· καὶ ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐτὸν εἰσήκουσέ μου. Παρὰ σοῦ ὁ ἔπαινός μου ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, τὰς εὐχάς μου ἀποδώσω ἐνώπιον τῶν φοβουμένων αὐτόν. Φάγονται πένητες καὶ ἐμπλησθήσονται, καὶ αἰνέσουσι Κύριον οἱ ἐκζητοῦντες αὐτὸν, ζήσονται αἱ καρδίαι αὐτῶν εἰς αἰῶνα αἰῶνος. Μνησθήσονται καὶ ἐπιστραφήσονται πρὸς Κύριον πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς, καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιον αὐτοῦ πᾶσαι αἱ πατριαὶ τῶν ἐθνῶν. Ὅτι τοῦ Κυρίου ἡ βασιλεία, καὶ αὐτὸς δεσπόζει τῶν ἐθνῶν. Ἔφαγον καὶ προσεκύνησαν πάντες οἱ πίονες τῆς γῆς· ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν γῆν· καὶ ἡ ψυχή μου αὐτῷ ζῇ, καὶ τὸ σπέρμα μου δουλεύσει αὐτῷ· ἀναγγελήσεται τῷ Κυρίῳ γενεὰ ἡ ἐρχομένη· Καὶ ἀναγγελοῦσι τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ λαῷ τῷ τεχθησομένῳ, ὃν ἐποίησεν ὁ Κύριος.

# 22

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριος ποιμαίνει με, καὶ οὐδέν με ὑστερήσει. Εἰς τόπον χλόης ἐκεῖ με κατεσκήνωσεν· ἐπὶ ὕδατος ἀναπαύσεως ἐξέθρεψέ με· Τὴν ψυχήν μου ἐπέστρεψεν· ὡδήγησέν με ἐπὶ τρίβους δικαιοσύνης, ἕνεκεν τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ. Ἐὰν γὰρ καὶ πορευθῶ ἐν μέσῳ σκιᾶς θανάτου, οὐ φοβηθήσομαι κακὰ, ὅτι σὺ μετ’ ἐμοῦ εἶ· ἡ ῥάβδος σου καὶ ἡ βακτηρία σου, αὗταί με παρεκάλεσαν. Ἡτοίμασας ἐνώπίον μου τράπεζαν, ἐξεναντίας τῶν θλιβόντων με· ἐλίπανας ἐν ἐλαίῳ τὴν κεφαλήν μου, καὶ τὸ ποτήριόν σου μεθύσκον ὡς κράτιστον. Καὶ τὸ ἔλεός σου καταδιώξεταί με πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, καὶ τὸ κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ Κυρίου εἰς μακρότητα ἡμερῶν.

# 23

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ τῆς μιᾶς σαββάτου. Τοῦ Κυρίου ἡ γῆ καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, ἡ οἰκουμένη καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ. Αὐτὸς ἐπὶ θαλασσῶν ἐθεμελιώσεν αὐτὴν, καὶ ἐπὶ ποταμῶν ἡτοίμασεν αὐτήν. Τίς ἀναβήσεται εἰς τὸ ὄρος τοῦ Κυρίου, καὶ τίς στήσεται ἐν τόπῳ ἁγίῳ αὐτοῦ; Ἀθῶος χερσὶ καὶ καθαρὸς τῇ καρδίᾳ, ὃς οὐκ ἔλαβεν ἐπὶ ματαίῳ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ οὐκ ὤμοσεν ἐπὶ δόλῳ τῷ πλησίον αὐτοῦ. Οὗτος λήψεται εὐλογίαν παρὰ Κυρίου, καὶ ἐλεημοσύνην παρὰ Θεοῦ σωτῆρος αὐτοῦ. Αὕτη ἡ γενεὰ ζητούντων αὐτὸν, ζητούντων τὸ πρόσωπον τοῦ Θεοῦ Ἰακώβ. διάψαλμα. Ἄρατε πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, καὶ ἐπάρθητε πύλαι αἰώνιοι, καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης. Τίς ἐστιν οὗτος ὁ

βασιλεὺς τῆς δόξης; Κύριος κραταιὸς καὶ δυνατὸς, Κύριος δυνατὸς ἐν πολέμῳ. Ἄρατε πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, καὶ ἐπάρθητε πύλαι αἰώνιοι, καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης. Τίς ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης; Κύριος τῶν δυνάμεων, αὐτός ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης.

# 24

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Πρὸς σὲ, Κύριε, ᾖρα τὴν ψυχήν μου. Ὁ Θεός μου ἐπὶ σοὶ πέποιθα, μὴ καταισχυνθείην· μηδὲ καταγελασάτωσάν μου οἱ ἐχθροί μου, καὶ γὰρ πάντες οἱ ὑπομένοντές σε οὐ μὴ καταισχυνθῶσιν· αἰσχυνθήτωσαν οἱ ἀνομοῦντες διακενῆς. Τὰς ὁδούς σου, Κύριε, γνώρισόν μοι, καὶ τὰς τρίβους σου δίδαξόν με. Ὁδήγησόν με ἐπὶ τὴν ἀλήθειάν σου, καὶ δίδαξόν με, ὅτι σὺ εἶ ὁ Θεὸς ὁ σωτήρ μου, καὶ σὲ ὑπέμεινα ὅλην τὴν ἡμέραν. Μνήσθητι τῶν οἰκτιρμῶν σου Κύριε, καὶ τὰ ἐλέη σου, ὅτι ἀπὸ τοῦ αἰῶνος εἰσίν. Ἁμαρτίας νεότητός μου, καὶ ἀγνοίας μου μὴ μνησθῇς· κατὰ τὸ ἔλεός σου μνήσθητί μου, ἕνεκεν τῆς χρηστότητος σου, Κύριε. Χρηστὸς καὶ εὐθὴς ὁ Κύριος, διὰ τοῦτο νομοθετήσει ἁμαρτάνοντας ἐν ὁδῷ. Ὁδηγήσει πρᾳεῖς ἐν κρίσει, διδάξει πρᾳεῖς ὁδοὺς αὐτοῦ. Πᾶσαι αἱ ὁδοὶ Κυρίου ἔλεος καὶ ἀλήθεια τοῖς ἐκζητοῦσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ. Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου, Κύριε, καὶ ἱλάσῃ τῇ ἁμαρτίᾳ μου, πολλὴ γάρ ἐστι. Τίς ἐστιν ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν Κύριον; νομοθετήσει αὐτῷ ἐν ὁδῷ, ᾗ ᾑρετίσατο. Ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν ἀγαθοῖς αὐλισθήσεται, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ κληρονομήσει γῆν. Κραταίωμα Κύριος τῶν φοβουμένων αὐτὸν, καὶ ἡ διαθήκη αὐτοῦ τοῦ δηλῶσαι αὐτοῖς. Οἱ

ὀφθαλμοί μου διαπαντὸς πρὸς τὸν Κύριον, ὅτι αὐτὸς ἐκσπάσει ἐκ παγίδος τοὺς πόδας μου. Ἐπίβλεψον ἐπ᾽ ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, ὅτι μονογενὴς καὶ πτωχός εἰμι ἐγώ. Αἱ θλίψεις τῆς καρδίας μου ἐπληθύνθησαν, ἐκ τῶν ἀναγκῶν μου ἐξάγαγέ με· Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ τὸν κόπον μου, καὶ ἄφες πάσας τὰς ἁμαρτίας μου. Ἴδε τοὺς ἐχθρούς μου, ὅτι ἐπληθύνθησαν, καὶ μῖσος ἄδικον ἐμίσησάν με. Φύλαξον τὴν ψυχήν μου καὶ ῥῦσαί με· μὴ καταισχυνθείην, ὅτι ἤλπισα ἐπὶ σέ. Ἄκακοι καὶ εὐθεῖς ἐκολλῶντό μοι, ὅτι ὑπέμεινά σε, Κύριε. Λύτρωσαι ὁ Θεὸς τὸν Ἰσραὴλ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ.

# 25

Τοῦ Δαυίδ. Κρίνον με, Κύριε, ὅτι ἐγὼ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπορεύθην, καὶ ἐπὶ τῷ Κυρίῳ ἐλπίζων οὐ μὴ σαλευθῶ. Δοκίμασόν με, Κύριε, καὶ πείρασόν με, πύρωσον τοὺς νεφρούς μου καὶ τὴν καρδίαν μου. Ὅτι τὸ ἔλεός σου κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν μου ἐστὶ, καὶ εὐηρέστησα ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου. Οὐκ ἐκάθισα μετὰ συνεδρίου ματαιότητος, καὶ μετὰ παρανομούντων οὐ μὴ εἰσέλθω· Ἐμίσησα ἐκκλησίαν πονηρευομένων, καὶ μετὰ ἀσεβῶν οὐ μὴ καθίσω. Νίψομαι ἐν ἀθώοις τὰς χεῖράς μου, καὶ κυκλώσω τὸ θυσιαστήριόν σου, Κύριε· Τοῦ ἀκοῦσαι φωνῆς αἰνέσεως, καὶ διηγήσασθαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. Κύριε, ἠγάπησα εὐπρέπειαν οἴκου σου, καὶ τόπον σκηνώματος δόξης σου. Μὴ συναπολέσῃς μετὰ ἀσεβῶν τὴν ψυχήν μου, καὶ μετὰ ἀνδρῶν αἱμάτων τὴν ζωήν μου, ὧν ἐν χερσὶν ἀνομίαι, ἡ δεξιὰ αὐτῶν ἐπλήσθη δώρων. Ἐγὼ δὲ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπορεύθην, λύτρωσαί με καὶ ἐλέησόν με. Ὁ ποῦς μου ἔστη ἐν

εὐθύτητι, ἐν ἐκκλησίαις εὐλογήσω σε Κύριε.

# 26

Τοῦ Δαυὶδ, πρὸ τοῦ χρισθῆναι. Κύριος φωτισμός μου καὶ σώτηρ μου, τίνα φοβηθήσομαι; Κύριος ὑπερασπιστὴς τῆς ζωῆς μου, ἀπὸ τίνος δειλιάσω; Ἐν τῷ ἐγγίζειν ἐπ᾽ ἐμὲ κακοῦντας, τοῦ φαγεῖν τὰς σάρκας μου, οἱ θλίβοντες με καὶ οἱ ἐχθροί μου, αὐτοὶ ἠσθένησαν καὶ ἔπεσαν. Ἐὰν παρατάξηται ἐπ᾽ ἐμὲ παρεμβολὴ, οὐ φοβηθήσεται ἡ καρδία μου· ἐὰν ἐπαναστῇ ἐπ᾽ ἐμὲ πόλεμος, ἐν ταύτῃ ἐγὼ ἐλπιζω. Μίαν ᾐτησάμην παρὰ Κυρίου, ταύτην ἐκζητήσω, τοῦ κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ Κυρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, τοῦ θεωρεῖν με τὴν τερπνότητα Κυρίου, καὶ ἐπισκέπτεσθαι τὸν ναὸν αὐτοῦ. Ὅτι ἔκρυψέ με ἐν σκηνῇ αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ κακῶν μου, ἐσκέπασέ με ἐν ἀποκρύφῳ τῆς σκῆνης αὐτοῦ· ἐν πέτρᾳ ὕψωσέ με, καὶ νῦν ἰδοὺ ὕψωσε τὴν κεφαλήν μου ἐπ᾽ ἐχθρούς μου· ἐκύκλωσα καὶ ἔθυσα ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ θυσίαν ἀλαλαγμοῦ, ᾄσομαι καὶ ψαλῶ τῷ Κυρίῳ· Εἰσάκουσον, Κύριε, τῆς φωνῆς μου ἧς ἐκέκραξα, ἐλέησόν με, καὶ εἰσάκουσόν μου. Σοὶ εἶπεν ἡ καρδία μου, ἐξεζήτησα τὸ πρόσωπόν σου, τὸ πρόσωπόν σου Κύριε ζητήσω. Μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ᾽ ἐμοῦ, μὴ ἐκκλίνῃς ἐν ὀργῇ ἀπὸ τοῦ δούλου σου· βοηθός μου γενοῦ, μὴ ἐγκαταλίπῃς με, καὶ μὴ ὑπερίδῃς με ὁ Θεὸς ὁ σωτήρ μου. Ὅτι ὁ πατήρ μου καὶ ἡ μήτηρ μου ἐγκατέλιπόν με, ὁ δὲ Κύριος προσελάβετό με. Νομοθέτησόν με, Κύριε, ἐν τῇ ὁδῷ σου, καὶ ὁδήγησόν με ἐν τρίβῳ εὐθείᾳ ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου. Μὴ παραδῷς με εἰς ψυχὰς θλιβόντων με, ὅτι ἐπανέστησάν μοι μάρτυρες ἄδικοι, καὶ ἐψεύσατο ἡ ἀδικία ἑαυτῇ.

Πιστεύω τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ Κυρίου ἐν γῇ ζώντων. Ὑπόμεινον τὸν Κυριον, ἀνδρίζου, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία σου, καὶ ὑπόμεινον τὸν Κύριον.

# 27

Τοῦ Δαυίδ. Πρὸς σὲ Κύριε ἐκέκραξα, ὁ Θεός μου μὴ παρασιωπήσῃς ἐπ’ ἐμοὶ, μήποτε παρασιωπήσῃς ἐπ’ ἐμοὶ, καὶ ὁμοιωθήσομαι τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. Εἰσάκουσον τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου, ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς σὲ, ἐν τῷ αἴρειν με χεῖράς μου εἰς ναὸν ἅγιόν σου. Μὴ συνελκύσῃς μετὰ ἁμαρτωλῶν τὴν ψυχήν μου, καὶ μετὰ ἐργαζομένων ἀδικίαν μὴ συναπολέσῃς με, τῶν λαλούντων εἰρήνην μετὰ τῶν πλησίον αὐτῶν, κακὰ δὲ ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν. Δὸς αὐτοῖς κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν πονηρίαν τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν· κατὰ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν δὸς αὐτοῖς, ἀπόδος τὸ ἀνταπόδομα αὐτῶν αὐτοῖς. Ὅτι οὐ συνῆκαν εἰς τὰ ἔργα Κυρίου καὶ εἰς τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ, καθελεῖς αὐτοὺς καὶ οὐ μὴ οἰκοδομήσεις αὐτούς. Εὐλογητὸς Κύριος, ὅτι εἰσήκουσε τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου. Κύριος βοηθός μου καὶ ὑπερασπιστής μου· ἐπ’ αὐτῷ ἤλπισεν ἡ καρδία μου, καὶ ἐβοηθήθην, καὶ ἀνέθαλεν ἡ σάρξ μου· καὶ ἐκ θελήματός μου ἐξομολογήσομαι αὐτῷ. Κύριος κραταίωμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ ὑπερασπιστὴς τῶν σωτηρίων τοῦ χριστοῦ αὐτοῦ ἐστι. Σῶσον τὸν λαόν σου, καὶ εὐλόγησον τὴν κληρονομίαν σου, καὶ ποίμανον αὐτοὺς, καὶ ἔπαρον αὐτοὺς ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 28

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ ἐξοδίου σκηνῆς. Ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ υἱοὶ Θεοῦ, ἐνέγκατε τῷ Κρίῳ υἱοὺς κριῶν· ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ δόξαν καὶ τιμὴν, ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ δόξαν ὀνόματι αὐτοῦ· προσκυνήσατε τῷ Κυρίῳ ἐν αὐλῇ ἁγίᾳ αὐτοῦ. Φωνὴ Κυρίου ἐπὶ τῶν ὑδάτων, ὁ Θεὸς τῆς δόξης ἐβρόντησε, Κύριος ἐπὶ ὑδάτων πολλῶν. Φωνὴ Κυρίου ἐν ἰσχύϊ, φωνὴ Κυρίου ἐν μεγαλοπρεπείᾳ. Φωνὴ Κυρίου συντρίβοντος κέδρους, συντρίψει Κύριος τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου, Καὶ λεπτυνεῖ αὐτὰς ὡς τὸν μόσχον τὸν Λίβανον, καὶ ὁ ἠγαπημένος ὡς υἱὸς μονοκερώτων. Φωνὴ Κυρίου διακόπτοντος φλόγα πυρός. Φωνὴ Κυρίου συσσείοντος ἔρημον, συνσσείσει Κύριος τὴν ἔρημον Κάδης. Φωνὴ Κυρίου καταρτιζομένου ἐλάφους, καὶ ἀποκαλύψει δρυμοὺς, καὶ ἐν τῷ ναῷ αὐτοῦ πᾶς τις λέγει δόξαν. Κύριος τὸν κατακλυσμὸν κατοικιεῖ· καὶ καθιεῖται Κύριος βασιλεὺς εἰς τὸν αἰῶνα. Κύριος ἰσχὺν τῷ λαῷ αὐτοῦ δώσει, Κύριος εὐλογήσει τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν εἰρήνῃ.

# 29

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς ᾠδῆς τοῦ ἐνκαινισμοῦ τοῦ οἴκου τοῦ Δαυίδ. Ὑψώσω σε, Κύριε, ὅτι ὑπέλαβές με, καὶ οὐκ εὔφρανας τοὺς ἐχθρούς μου ἐπ’ ἐμέ. Κύριε ὁ Θεός μου, ἐκέκραξα πρὸς σὲ, καὶ ἰάσω με· Κύριε, ἀνήγαγες ἐξ ᾅδου τὴν ψυχήν μου, ἔσωσάς με ἀπὸ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον. Ψάλατε τῷ Κυρίῳ οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, καὶ ἐξομολογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς ἁγιωσύνης αὐτοῦ. Ὅτι ὀργὴ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ, καὶ ζωὴ ἐν τῷ θελήματι αὐτοῦ· τοεσπέρας αὐλισθήσεται κλαυθμὸς, καὶ εἰς τοπρωΐ ἀγαλλίασις. Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ εὐθηνίᾳ μου, οὐ μὴ σαλευθῶ εἰς τὸν αἰῶνα. Κύριε, ἐν τῷ

θελήματί σου παρέσχου τῷ κάλλει μου δύναμιν· ἀπέστρεψας δὲ τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ἐγενήθην τεταραγμένος. Πρὸς σὲ Κύριε κεκράξομαι, καὶ πρὸς τὸν Θεόν μου δεηθήσομαι. Τίς ὠφέλεια ἐν τῷ αἵματί μου, ἐν τῷ καταβῆναί με εἰς διαφθοράν; μὴ ἐξομολογήσεταί σοι χοῦς; ἢ ἀναγγελεῖ τὴν ἀλήθειάν σου; Ἤκουσε Κύριος, καὶ ἠλέησέ με, Κύριος ἐγενήθη βοηθός μου. Ἔστρεψας τὸν κοπετόν μου εἰς χαρὰν ἐμοὶ, διεῤῥήξας τὸν σάκκον μου, καὶ περιέζωσάς με εὐφροσύνην· ὅπως ἂν ψάλῃ σοι ἡ δόξα μου, καὶ οὐ μὴ κατανυγῶ. Κύριε ὁ Θεός μου, εἰς τὸν αἰῶνα ἐξομολογήσομαί σοι.

# 30

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ἐκστάσεως. Ἐπὶ σοὶ Κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην εἰς τὸν αἰῶνα, ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί με καὶ ἐξελοῦ με. Κλῖνον πρὸς μὲ τὸ οὖς σου, τάχυνον τοῦ ἐξελέσθαι με γενοῦ μοι εἰς Θεὸν ὑπερασπιστὴν καὶ εἰς οἶκον καταφυγῆς τοῦ σῶσαί με. Ὅτι κραταίωμά μου καὶ καταφυγή μου εἶ σὺ, καὶ ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός σου ὁδηγήσεις με, καὶ διαθρέψεις με. Ἐξάξεις με ἐκ παγίδος ταύτης ἧς ἔκρυψάν μοι, ὅτι σὺ εἶ ὁ ὑπερασπιστής μου, Κύριε. Εἰς χεῖράς σου παραθήσομαι τὸ πνεῦμά μου, ἐλυτρώσω με Κύριε ὁ Θεὸς τῆς ἀληθείας. Ἐμίσησας τοὺς διαφυλάσσοντας ματαιότητας διακενῆς· ἐγὼ δὲ ἐπὶ τῷ Κυρίῳ ἤλπισα. Ἀγαλλιάσομαι καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ ἐλέει σου· ὅτι ἐπεῖδες τὴν ταπείνωσίν μου, ἔσωσας ἐκ τῶν ἀναγκῶν τὴν ψυχήν μου. Καὶ οὐ συνέκλεισάς με εἰς χεῖρας ἐχθροῦ, ἔστησας ἐν εὐρυχώρῳ τοὺς πόδας μου. Ἐλέησόν με, Κύριε, ὅτι θλίβομαι· ἐταράχθη ἐν θυμῷ ὁ ὀφθαλμός μου, ἡ ψυχή μου, καὶ ἡ γαστήρ μου. Ὅτι ἐξέλιπεν ἐν ὀδύνῃ ἡ ζωή

μου, καὶ τὰ ἔτη μου ἐν στεναγμοῖς· ἠσθένησεν ἐν πτωχείᾳ ἡ ἰσχύς μου, καὶ τὰ ὀστᾶ μου ἐταράχθησαν. Παρὰ πάντας τοὺς ἐχθρούς μου ἐγενήθην ὄνειδος, καὶ τοῖς γείτοσί μου σφόδρα, καὶ φόβος τοῖς γνωστοῖς μου· οἱ θεωροῦντές με ἔξω ἔφυγον ἀπ᾽ ἐμοῦ· Ἐπελήσθην ὡσεὶ νεκρὸς ἀπὸ καρδίας· ἐγενήθην ὡσεὶ σκεῦος ἀπολωλὸς, ὅτι ἤκουσα ψόγον πολλῶν παροικούντων κυκλόθεν· ἐν τῷ συναχθῆναι αὐτοὺς ἅμα ἐπ᾽ ἐμὲ, τοῦ λαβεῖν τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύσαντο. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, Κύριε· εἶπα, σὺ εἶ ὁ Θεός μου, ἐν ταῖς χερσί σου οἱ κλῆροί μου· ῥῦσαί με ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν μου, καὶ ἐκ τῶν καταδιωκόντων με. Ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὸν δοῦλόν σου, σῶσόν με ἐν τῷ ἐλέει σου. Κύριε, μὴ καταισχυνθείην, ὅτι ἐπεκαλεσάμην σε· αἰσχυνθείησαν οἱ ἀσεβεῖς, καὶ καταχθείησαν εἰς ᾅδου. Ἄλαλα γενηθήτω τὰ χείλη τὰ δόλια, τὰ λαλοῦντα κατὰ τοῦ δικαίου ἀνομίαν ἐν ὑπερηφανίᾳ καὶ ἐξουδενώσει. Ὡς πολὺ τὸ πλῆθος τῆς χρηστότητός σου, Κύριε, ἧς ἔκρυψας τοῖς φοβουμένοις σε; ἐξειργάσω τοῖς ἐλπίζουσιν ἐπὶ σὲ, ἐναντίον τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων. Κατακρύψεις αὐτοὺς ἐν ἀποκρύφῳ τοῦ προσώπου σου ἀπὸ ταραχῆς ἀνθρώπων, σκεπάσεις αὐτοὺς ἐν σκηνῇ ἀπὸ ἀντιλογίας γλωσσῶν. Εὐλογητὸς Κύριος, ὅτι ἐθαυμάστωσε τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐν πόλει περιοχῆς. Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει μου, ἀπέῤῥιμμαι ἀπὸ προσώπου τῶν ὀφθαλμῶν σου· διὰ τοῦτο εἰσήκουσας, Κύριε, τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς σέ. Ἀγαπήσατε τὸν Κύριον πάντες οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, ὅτι ἀληθείας ἐκζητεῖ Κύριος, καὶ ἀνταποδίδωσι τοῖς περισσῶς ποιοῦσιν ὑπερηφανίαν. Ἀνδρίζεσθε, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία ὑμῶν, πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ Κύριον.

# 31

Συνέσεως τῷ Δαυίδ. Μακάριοι ὧν ἀφέθησαν αἱ ἀνομίαι, καὶ ὧν ἐπεκαλύφθησαν αἱ ἁμαρτίαι. Μακάριος ἀνὴρ ᾧ οὐ μὴ λογίσηται Κύριος ἁμαρτίαν, οὐδέ ἐστιν ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ δόλος. Ὅτι ἐσίγησα, ἐπαλαιώθη τὰ ὀστᾶ μου, ἀπὸ τοῦ κράζειν με ὅλην τὴν ἡμέραν. Ὅτι ἡμέρας καὶ νυκτὸς ἐβαρύνθη ἐπ᾽ ἐμὲ ἡ χείρ σου, ἐστράφην εἰς ταλαιπωρίαν ἐν τῷ ἐμπαγῆναι ἄκανθαν· διάψαλμα. Τὴν ἁμαρτίαν μου ἐγνώρισα, καὶ τὴν ἀνομίαν μου οὐκ ἐκάλυψα· εἶπα, ἐξαγορεύσω κατ᾽ ἐμοῦ τὴν ἀνομίαν μου τῷ Κυρίῳ, καὶ σὺ ἀφῆκας τὴν ἀσέβειαν τῆς καρδίας μου· διάψαλμα. Ὑπὲρ ταύτης προσεύξεται πρὸς σὲ πᾶς ὅσιος ἐν καιρῷ εὐθέτῳ· πλὴν ἐν κατακλυσμῷ ὑδάτων πολλῶν πρὸς αὐτὸν οὐκ ἐγγιοῦσι. Σύ μου εἶ καταφυγὴ ἀπὸ θλίψεως τῆς περιεχούσης με, τὸ ἀγαλλίαμά μου λύτρωσαί με ἀπὸ τῶν κυκλωσάντων με· διάψαλμα. Συνετιῶ σε καὶ συμβιβῶ σε ἐν ὁδῷ ταύτῃ ᾗ πορεύσῃ, ἐπιστηριῶ ἐπὶ σὲ τοὺς ὀφθαλμούς μου. Μὴ γίνεσθε ὡς ἵππος καὶ ἡμίονος, οἷς οὐκ ἔστι σύνεσις· ἐν χαλινῷ καὶ κημῷ τὰς σιαγόνας αὐτῶν ἄγξαι τῶν μὴ ἐγγιζόντων πρὸς σέ. Πολλαὶ αἱ μάστιγες τοῦ ἁμαρτωλοῦ, τὸν δὲ ἐλπίζοντα ἐπὶ Κύριον ἔλεος κυκλώσει. Εὐφράνθητε ἐπὶ Κύριον καὶ ἀγαλλιᾶσθε δίκαιοι, καὶ καυχᾶσθε πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

# 32

Τῷ Δαυίδ. Ἀγαλλιᾶσθε δίκαιοι ἐν τῷ Κυρίῳ, τοῖς εὐθέσι πρέπει αἴνεσις. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψάλατε αὐτῷ. Ἄσατε αὐτῷ ᾠσμα καινὸν, καλῶς

ψάλατε ἐν ἀλαλαγμῷ. Ὅτι εὐθὴς ὁ λόγος τοῦ Κυρίου, καὶ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν πίστει. Ἀγαπᾷ ἐγεημοσύνην καὶ κρίσιν, τοῦ ἐλέους Κυρίου πλήρης ἡ γῆ. Τῷ λόγῳ τοῦ Κυρίου οἱ οὐρανοὶ ἐστερεώθησαν, καὶ τῷ πνεύματι τοῦ στόματος αὐτοῦ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτῶν. Συνάγων ὡσεὶ ἀσκὸν ὕδατα θαλάσσης, τιθεὶς ἐν θησαυροῖς ἀβύσσους. Φόβηθήτω τὸν Κύριον πᾶσα ἡ γῆ, ἀπ’ αὐτοῦ δὲ σαλευθήτωσαν πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην. Ὅτι αὐτὸς εἶπε καὶ ἐγενήθησαν, αὐτὸς ἐνετείλατο καὶ ἐκτίσθησαν. Κύριος διασκεδάζει βουλὰς ἐθνῶν, ἀθετεῖ δὲ λογισμοὺς λαῶν, καὶ ἀθετεῖ βουλὰς ἀρχόντων. Ἡ δὲ βουλὴ τοῦ Κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα μένει, λογισμοὶ τῆς καρδίας αὐτοῦ ἀπὸ γενεῶν εἰς γενεάς. Μακάριον τὸ ἔθνος οὗ ἐστι Κύριος ὁ Θεὸς αὐτοῦ, λαὸς ὃν ἐξελέξατο εἰς κληρονομίαν ἑαυτῷ. Ἐξ οὐρανοῦ ἐπέβλεψεν ὁ Κύριος, εἶδε πάντας τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων. Ἐξ ἑτοίμου κατοικητηρίου αὐτοῦ ἐπέβλεψεν ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν. Ὁ πλάσας κατὰ μόνας τὰς καρδίας αὐτῶν, ὁ συνιεὶς πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν. Οὐ σώζεται βασιλεὺς διὰ πολλὴν δύναμιν, καὶ γίγας οὐ σωθήσεται ἐν πλήθει ἰσχύος αὐτοῦ. Ψευδὴς ἵππος εἰς σωτηρίαν, ἐν δὲ πλήθει δυνάμεως αὐτοῦ οὐ σωθήσεται. Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου ἐπὶ τοὺς φοβουμένους αὐτὸν, τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ, ῥύσασθαι ἐκ θανάτου τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ διαθρέψαι αὐτοὺς ἐν λιμῷ. Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὑπομένει τῷ Κυρίῳ, ὅτι βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς ἡμῶν ἐστιν. Ὅτι ἐν αὐτῷ εὐφρανθήσεται ἡ καρδία ἡμῶν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ ἠλπίσαμεν. Γένοιτο τὸ ἔλεός σου, Κύριε, ἐφ’ ἡμᾶς, καθάπερ ἠλπίσαμεν ἐπὶ σέ.

# 33

Τῷ Δαυὶδ, ὁπότε ἠλλοίωσε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐναντίον Ἀβιμέλεχ, καὶ ἀπέλυσεν αὐτὸν, καὶ ἀπῆλθεν. Εὐλογήσω τὸν Κύριον ἐν παντὶ καιρῷ, διαπαντὸς ἡ αἴνεσις αὐτοῦ ἐν τῷ στόματί μου. Ἐν τῷ Κυρίῳ ἐπαινεθήσεται ἡ ψυχή μου· ἀκουσάτωσαν πρᾳεῖς καὶ εὐφρανθήτωσαν. Μεγαλύνατε τὸν Κύριον σὺν ἐμοὶ, καὶ ὑψώσωμεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπιτοαυτό. Ἐξεζήτησα τὸν Κύριον καὶ ἐπήκουσέ μου, καὶ ἐκ πασῶν τῶν παροικιῶν μου ἐῤῥύσατό με· Προσέλθατε πρὸς αὐτὸν καὶ φωτίσθητε, καὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν οὐ μὴ καταισχυνθῇ· Οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξε, καὶ ὁ Κύριος εἰσήκουσεν αὐτοῦ, καὶ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ ἔσωσεν αὐτόν. Παρεμβαλεῖ ἄγγελος Κυρίου κύκλῳ τῶν φοβουμένων αὐτὸν, καὶ ῥύσεται αὐτούς. Γεύσασθε καὶ ἴδετε ὅτι χρηστὸς ὁ Κύριος, μακάριος ἀνὴρ ὃς ἐλπίζει ἐπ’ αὐτόν. φοβήθητε τὸν Κύριον πάντες οἱ ἅγιοι αὐτοῦ, ὅτι οὐκ ἔστιν ὑστέρημα τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. Πλούσιοι ἐπτώχευσαν καὶ ἐπείνασαν, οἱ δὲ ἐκζητοῦντες τὸν Κύριον οὐκ ἐλαττωθήσονται παντὸς ἀγαθοῦ· διάψαλμα. Δεῦτε τέκνα, ἀκούσατέ μου, φόβον Κυρίου διδάξω ὑμᾶς. Τίς ἐστιν ἄνθρωπος ὁ θέλων ζωὴν, ἀγαπῶν ἡμέρας ἰδεῖν ἀγαθάς; Παῦσον τὴν γνῶσσάν σου ἀπὸ κακοῦ, καὶ χείλη σου τοῦ μὴ λαλῆσαι δόλον. Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθὸν· ζήτησον εἰρήνην, καὶ δίωξον αὐτήν. Οφθαλμοὶ Κυρίου ἐπὶ δικαίους, καὶ ὦτα αὐτοῦ εἰς δέησιν αὐτῶν· Πρόσωπον δὲ Κυρίου ἐπὶ ποιοῦντας κακὰ, τοῦ ἐξολοθρεῦσαι ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον αὐτῶν. Ἐκέκραξαν οἱ δίκαιοι, καὶ ὁ Κύριος εἰσήκουσεν αὐτῶν, καὶ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτῶν ἐῤῥύσατο αὐτούς. Ἐγγὺς Κύριος τοῖς συντετριμμένοις τὴν καρδίαν,

καὶ τοὺς ταπεινοὺς τῷ πνεύματι σώσει. Πολλαὶ αἱ θλίψεις τῶν δικαίων, καὶ ἐκ πασῶν αὐτῶν ῥύσεται αὐτοὺς ὁ Κύριος. Φυλάσσει πάντα τὰ ὀστᾶ αὐτῶν, ἓν ἐξ αὐτῶν οὐ συντριβήσεται. Θάνατος ἁμαρτωλῶν πονηρὸς, καὶ οἱ μισοῦντες τὸ δίκαιον πλημμελήσουσι. Λυτρώσεται Κύριος ψυχὰς δούλων αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ πλημμελήσουσι πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπ’ αὐτόν.

# 34

Τῷ Δαυίδ. Δικάσον, Κύριε, τοὺς ἀδικοῦντάς με, πολέμησον τοὺς πολεμοῦντάς με. Ἐπιλαβοῦ ὅπλου καὶ θυρεοῦ, καὶ ἀνάστηθι εἰς βοήθειάν μοι. Ἔκχεον ῥομφαίαν, καὶ σύγκλεισον ἐξεναντίας τῶν καταδιωκόντων με· εἰπὸν τῇ ψυχῇ μου, σωτηρία σου ἐγώ εἰμι. Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου, ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ καταισχυνθείησαν οἱ λογιζόμενοί μοι κακά. Γενηθήτωσαν ὡσεὶ χοῦς κατὰ πρόσωπον ἀνέμου, καὶ ἄγγελος Κυρίου ἐκθλίβων αὐτούς. Γενηθήτω ἡ ὁδὸς αὐτῶν σκότος καὶ ὀλίσθημα, καὶ ἄγγελος Κυρίου καταδιώκων αὐτούς. Ὅτι δωρεὰν ἔκρυψάν μοι διαφθορὰν παγίδος αὐτῶν, μάτην ὠνείδισαν τὴν ψυχήν μου. Ἐλθέτω αὐτοῖς παγὶς ἣν οὐ γινώσκουσι, καὶ ἡ θήρα ἣν ἔκρυψαν, συλλαβέτω αὐτούς, καὶ ἐν τῇ παγίδι πεσοῦνται ἐν αὐτῇ. Ἡ δὲ ψυχή μου ἀγαλλιάσεται ἐπὶ τῷ Κυρίῳ, τερφθήσεται ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ αὐτοῦ. Πάντα τὰ ὀστᾶ μου ἐροῦσι, Κύριε τίς ὅμοιός σοι; ῥυόμενος πτωχὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ, καὶ πτωχὸν καὶ πένητα ἀπὸ τῶν διαρπαζόντων αὐτόν. Ἀναστάντες μάρτυρες ἄδικοι, ἃ οὐκ ἐγίνωσκον, ἐπηρώτων με. Ἀνταπεδίδοσάν μοι πονηρὰ ἀντὶ καλῶν,

καὶ ἀτεκνίαν τῇ ψυχῇ μου. Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ αὐτοὺς παρενοχλεῖν μοι, ἐνεδυόμην σάκκον· καὶ ἐταπείνουν ἐν νηστείᾳ τὴν ψυχήν μου, καὶ ἡ προσευχή μου εἰς κόλπον μου ἀποστραφήσεται. Ὡς πλησίον ὡς ἀδελφὸν ἡμέτερον οὕτως εὐηρέστουν, ὡς πενθῶν καὶ σκυθρωπάξων οὕτως ἐταπεινούμην. Καὶ κατ᾽ ἐμοῦ εὐφράνθησαν, καὶ συνήχθησαν, συνήχθησαν ἐπ᾽ ἐμὲ μάστιγες καὶ οὐκ ἔγνων· διεσχίσθησαν καὶ οὐ κατενύγησαν. Ἐπείρασάν με, ἐξεμυκτήρισάν με μυκτηρισμὸν, ἔβρυξαν ἐπ᾽ ἐμὲ τοὺς ὀδόντας αὐτῶν. Κύριε πότε ἐπόψῃ; ἀποκατάστησον τὴν ψυχήν μου ἀπὸ τῆς κακουργίας αὐτῶν, ἀπὸ λεόντων τὴν μονογενῆ μου. Ἐξομολογήσομαί σοι καὶ ἐν ἐκκλησίᾳ πολλῇ, ἐν λαῷ βαρεῖ αἰνέσω σε. Μὴ ἐπιχαρείησάν μοι οἱ ἐχθραίνοντές μοι ματαίως, οἱ μισοῦντές με δωρεὰν, καὶ διανεύοντες ὀφθαλμοῖς. Ὅτι ἐμοὶ μὲν εἰρηνικὰ ἐλάλουν, καὶ ἐπ᾽ ὀργῇ δόλους διελογίζοντο. Καὶ ἐπλάτυναν ἐπ᾽ ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, εἶπαν, εὖγε, εὖγε, εἶδον οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. Εἶδες Κύριε, μὴ παρασιωπήσῃς, Κύριε μὴ ἀποστῇς ἀπ᾽ ἐμοῦ. Ἐξεγέρθητι Κύριε, καὶ πρόσχες τῇ κρίσει μου, ὁ Θεός μου καὶ ὁ Κύριός μου εἰς τὴν δίκην μου. Κρῖνόν με Κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην σου Κύριε ὁ Θεός μου, καὶ μὴ ἐπιχαρείησάν μοι. Μὴ εἴποισαν ἐν καρδίαις αὐτῶν, εὖγε, εὖγε τῇ ψυχῇ ἡμῶν· μηδὲ εἴποιεν, κατεπίομεν αὐτόν. Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν ἅμα οἱ ἐπιχαίροντες τοῖς κακοῖς μου· ἐνδυσάσθωσαν αἰσχύνην καὶ ἐντροπὴν οἱ μεγαλορῥήμονοῦντες ἐπ᾽ ἐμέ. Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν οἱ θέλοντες τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ εἰπάτωσαν διαπαντὸς, μεγαλυνθείη ὁ Κύριος, οἱ θέλοντες τὴν εἰρήνην τοῦ δούλου αὐτοῦ. Καὶ ἡ γλῶσσά μου μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, ὅλην τὴν ἡμέραν τὸν ἔπαινόν σου.

# 35

Εἰς τὸ τέλος, τῷ δούλῳ Κυρίου τῷ Δαυίδ. Φησὶν ὁ παράνομος τοῦ ἁμαρτάνειν ἐν ἑαυτῷ, οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Ὅτι ἐδόλωσεν ἐνώπιον αὐτοῦ, τοῦ εὑρεῖν τὴν ἀνομίαν αὐτοῦ καὶ μισῆσαι. Τὰ ῥήματα τοῦ στόματος αὐτοῦ ἀνομία καὶ δόλος, οὐκ ἠβουλήθη συνιέναι τοῦ ἀγαθῦναι. Ἀνομίαν ἐλογίσατο ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ, παρέστη πάσῃ ὁδῷ οὐκ ἀγαθῇ, τῇ δὲ κακίᾳ οὐ προσώχθισε. Κύριε, ἐν τῷ οὐρανῷ τὸ ἔλεός σου, καὶ ἡ ἀλήθειά σου ἕως τῶν νεφελῶν. Ἡ δικαιοσύνη σου ὡς ὄρη Θεοῦ, τὰ κρίματά σου ὡσεὶ ἄβυσσος πολλή· ἀνθρώπους καὶ κτήνη σώσεις Κύριε. Ὡς ἐπλήθυνας τὸ ἔλεός σου ὁ Θεός· οἱ δὲ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἐλπιοῦσι. Μεθυσθήσονται ἀπὸ πιότητος οἴκου σου, καὶ τὸν χειμάῤῥουν τῆς τρυφῆς σου ποτιεῖς αὐτούς. Ὅτι παρὰ σοὶ πηγὴ ζωῆς, ἐν τῷ φωτί σου ὀψόμεθα φῶς. Παράτεινον τὸ ἔλεός σου τοῖς γινώσκουσί σε, καὶ τὴν δικαιοσύνην σου τοῖς εὐθέσι τῇ καρδίᾳ. Μὴ ἐλθέτω μοι ποῦς ὑπερηφανίας, καὶ χεὶρ ἁμαρτωλῶν μὴ σαλεύσαι με· Ἐκεῖ ἔπεσον πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, ἐξώσθησαν καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι.

# 36

Τῷ Δαυίδ. Μὴ παραζήλου ἐν πονηρευομένοις, μηδὲ ζήλου τοὺς ποιοῦντας τὴν ἀνομίαν. Ὅτι ὡσεὶ χόρτος ταχὺ ἀποξηρανθήσονται, καὶ ὡσεὶ λάχανα χλόης ταχὺ ἀποπεσοῦνται. Ἔλπισον ἐπὶ Κύριον, καὶ ποίει χρηστότητα, καὶ κατασκήνου τὴν γῆν, καὶ ποιμανθήσῃ

ἐπὶ τῷ πλούτῳ αὐτῆς. Κατατρύφησον τοῦ Κυρίου, καὶ δώσει σοι τὰ αἰτήματα τῆς καρδίας σου. Ἀποκάλυψον πρὸς Κύριον τὴν ὁδόν σου, καὶ ἔλπισον ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ αὐτὸς ποιήσει. Καὶ ἐξοίσει ὡς φῶς τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ τὸ κρίμα σου ὡς μεσημβρίαν. Ὑποτάγηθι τῷ Κυρίῳ, καὶ ἱκέτευσον αὐτόν· μὴ παραζήλου ἐν τῷ κατευοδουμένῳ ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, ἐν ἀνθρώπῳ ποιοῦντι παρανομίας. Παῦσαι ἀπὸ ὀργῆς καὶ ἐνκατάλιπε θυμὸν, μὴ παραζήλου ὥστε πονηρεύεσθαι. Ὅτι οἱ πονηρευόμενοι ἐξολοθρευθήσονται, οἱ δὲ ὑπομένοντες τὸν Κύριον, αὐτοὶ κληρονομήσουσι τὴν γῆν. Καὶ ἔτι ὀλίγον καὶ οὐ μὴ ὑπάρξῃ ἁμαρτωλὸς, καὶ ζητήσεις τὸν τόπον αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ εὕρῃς. Οἱ δὲ πραεῖς κληρονομήσουσι γῆν, καὶ κατατρυφήσουσιν ἐπὶ πλήθει εἰρήνης. Παρατηρήσεται ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαιον, καὶ βρύξει ἐπ᾽ αὐτὸν τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ. Ὁ δὲ Κύριος ἐκγελάσεται αὐτὸν, ὅτι προβλέτει ὅτι ἥξει ἡ ἡμέρα αὐτοῦ. Ῥομφαίαν ἐσπάσαντο οἱ ἁμαρτωλοὶ ἐνέτειναν τόξον αὐτῶν, τοῦ καταβαλεῖν πτωχὸν καὶ πένητα, τοῦ σφάξαι τοὺς εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. Ἡ ῥομφαία αὐτῶν εἰσέλθοι εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, καὶ τὰ τόξα αὐτῶν συντριβείη. Κρεῖσσον ὀλίγον τῷ δικαίῳ ὑπὲρ πλοῦτον ἁμαρτωλῶν πολύν. Ὅτι βραχίονες ἁμαρτωλῶν συντριβήσονται, ὑποστηρίζει δὲ τοὺς δικαίους ὁ Κύριος. Γινώσκει Κύριος τὰς ὁδοὺς τῶν ἀμώμων, καὶ ἡ κληρονομία αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται. Οὐ καταισχυνθήσονται ἐν καιρῷ πονηρῷ, καὶ ἐν ἡμέραις λιμοῦ χορτασθήσονται· Ὅτι οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπολοῦνται, οἱ δὲ ἐχθροὶ τοῦ Κυρίου ἅμα τῷ δοξασθῆναι αὐτοὺς καὶ ὑψωθῆναι, ἐκλείποντες ὡσεὶ καπνὸς ἐξέλιπον. Δανείζεται ὁ ἁμαρτωλὸς, καὶ οὐκ ἀποτίσει, ὁ δὲ δίκαιος οἰκτείρει καὶ διδοῖ. Ὅτι οἱ εὐλογοῦντες αὐτὸν κληρονομήσουσι γῆν, οἱ δὲ καταρώμενοι αὐτὸν ἐξολοθρευθήσονται. Παρὰ Κυρίου τὰ

διαβήματα ἀνθρώπου κατευθύνεται, καὶ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ θελήσει. Ὅταν πέσῃ οὐ καταῤῥαχθήσεται, ὅτι Κύριος ἀντιστηρίζει χεῖρα αὐτοῦ. Νεώτερος ἐγενόμην, καὶ γὰρ ἐγήρασα· καὶ οὐκ εἶδον δίκαιον ἐγκαταλελειμμένον, οὐδὲ τὸ σπέρμα αὐτοῦ ζητοῦν ἄρτους. Ὅλην τὴν ἡμέραν ἐλεεῖ καὶ δανείζει, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς εὐλογίαν ἔσται. Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθὸν, καὶ κατασκήνου εἰς αἰῶνα αἰῶνος. Ὅτι Κύριος ἀγαπᾷ κρίσιν, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψει τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, εἰς τὸν αἰῶνα φυλαχθήσονται· ἄμωμοι ἐκδικηθήσονται, καὶ σπέρμα ἀσεβῶν ἐξολοθρευθήσεται. Δίκαιοι δὲ κληρονομήσουσι γῆν, καὶ κατασκηνώσουσιν εἰς αἰῶνα αἰῶνος ἐπ’ αὐτῆς. Στόμα δικαίου μελετήσει σοφίαν, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτοῦ λαλήσει κρίσιν. Ὁ νόμος τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, καὶ οὐχ ὑποσκελισθήσεται τὰ διαβήματα αὐτοῦ. Κατανοεῖ ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαιον, καὶ ζητεῖ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. Ὁ δὲ Κύριος οὐ μὴ ἐγκαταλίπῃ αὐτὸν εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, οὐδὲ μὴ καταδικάσαι αὐτὸν, ὅταν κρίνηται αὐτῷ. Ὑπόμεινον τὸν Κύριον, καὶ φύλαξον τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ ὑψώσει σε τοῦ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν· ἐν τῷ ἐξολοθρεύεσθαι ἁμαρτωλοὺς, ὄψει. Εἶδον τὸν ἀσεβῆ ὑπερυψούμενον, καὶ ἐπαιρόμενον ὡς τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου· Καὶ παρῆλθον, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν, καὶ ἐζήτησα αὐτόν, καὶ οὐχ εὑρέθη ὁ τόπος αὐτοῦ. Φύλασσε ἀκακίαν καὶ ἴδε εὐθύτητα, ὅτι ἐστὶν ἐγκατάλειμμα ἀνθρώπῳ εἰρηνικῷ. Οἱ δὲ παράνομοι ἐξολοθρευθήσονται ἐπιτοαυτὸ, τὰ ἐγκαταλείμματα τῶν ἀσεβῶν ἐξολοθρευθήσονται· Σωτηρία δὲ τῶν δικαίων παρὰ Κυρίου, καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν ἐν καιρῷ θλίψεως. Καὶ βοηθήσει αὐτοῖς Κύριος, καὶ ῥύσεται αὐτοὺς, καὶ ἐξελεῖται αὐτοὺς ἐξ ἁμαρτωλῶν, καὶ σώσει αὐτοὺς; ὅτι ἤλπισαν ἐπ’ αὐτόν.

# 37

Φαλμὸς τῷ Δαυὶδ εἰς ἀνάμνησιν περὶ σαββάτου. Κύριε, μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, μηδὲ τῇ ὀργῇ σου παιδεύσῃς με. Ὅτι τὰ βέλη σου ἐνεπάγησάν μοι, καὶ ἐπεστήριξας ἐπ’ ἐμὲ τὴν χεῖρά σου. Οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν τῇ σαρκί μου ἀπὸ προσώπου τῆς ὀργῆς σου, οὐκ ἔστιν εἰρήνη τοῖς ὀστέοις μου ἀπὸ προσώπου τῶν ἁμαρτιῶν μου. Ὅτι αἱ ἀνομίαι μου ὑπερῆραν τὴν κεφαλήν μου, ὡσεὶ φορτίον βαρὺ ἐβαρύνθησαν ἐπ’ ἐμέ. Προσώζεσαν καὶ ἐσάπησαν οἱ μώλωπές μου, ἀπὸ προσώπου τῆς ἀφροσύνης μου. Ἐταλαιπώρησα καὶ κατεκάμφθην ἕως τέλους, ὅλην τὴν ἡμέραν σκυθρωπάζων ἐπορευόμην. Ὅτι ἡ ψυχή μου ἐπλησθη ἐμπαιγμῶν, καὶ οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν τῇ σαρκί μου. Ἐκακώθην καὶ ἐταπεινώθην ἕως σφόδρα, ὠρυόμην ἀπὸ στεναγμοῦ τῆς καρδίας μου. Καὶ ἐναντίον σου πᾶσα ἡ ἐπιθυμία μου, καὶ ὁ στεναγμός μου οὐκ ἀπεκρύβη ἀπὸ σοῦ. Ἡ καρδία μου ἐταράχθη, ἐγκατέλιπέ με ἡ ἰσχύς μου, καὶ τὸ φῶς τῶν ὀφθαλμῶν μου οὐκ ἔστι μετ’ ἐμοῦ. Οἱ φίλοι μου καὶ οἱ πλησίον μου ἐξ ἐναντίας μου ἤγγισαν καὶ ἔστησαν, καὶ οἱ ἔγγιστά μου μακρόθεν ἔστησαν, καὶ ἐξεβιάζοντο οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου· καὶ οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι ἐλάλησαν ματαιότητας, καὶ δολιότητας ὅλην τὴν ἡμέραν ἐμελέτησαν. Ἐγὼ δὲ ὡσεὶ κωφὸς οὐκ ἤκουον, καὶ ὡσεὶ ἄλαλος οὐκ ἀνοίγων τὸ στόμα αὐτοῦ· Καὶ ἐγενόμην ὡσεὶ ἄνθρωπος οὐκ ἀκούων, καὶ οὐκ ἔχων ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ ἐλεγμούς. Ὅτι ἐπὶ σοὶ Κύριε ἤλπισα, σὺ εἰσακούσῃ Κύριε ὁ Θεός μου. Ὅτι εἶπα, μή ποτε ἐπιχαρῶσί μοι οἱ ἐχθροί μου, καὶ ἐν τῷ σαλευθῆναι πόδας μου, ἐπ’ ἐμὲ ἐμεγαλορῥήμόνησαν. Ὅτι ἐγὼ εἰς μάστιγας ἕτοιμος, καὶ ἡ ἀλγηδών μου ἐνώπιόν μου διαπαντός. Ὅτι

τὴν ἀνομίαν μου ἀναγγελῶ, καὶ μεριμνήσω ὑπὲρ τῆς ἁμαρτίας μου. Οἱ δὲ ἐχθροί μου ζῶσι, καὶ κεκραταίωνται ὑπὲρ ἐμὲ, καὶ ἐπληθύνθησαν οἱ μισοῦντές με ἀδίκως. Οἱ ἀνταποδιδόντες κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, ἐνδιέβαλλόν με, ἐπεὶ κατεδίωκον δικαιοσύνην. Μὴ ἐγκαταλίπῃς με Κύριε ὁ Θεός μου, μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ. Πρόσχες εἰς τὴν βοήθειάν μου Κύριε τῆς σωτηρίας μου.

# 38

Εἰς τὸ τέλος, τῷ Ἰδιθοὺν ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. Εἶπα, φυλάξω τὰς ὁδούς μου, τοῦ μὴ ἁμαρτάνειν ἐν γλώσσῃ μου· ἐθέμην τῷ στόματί μου φυλακὴν, ἐν τῷ συστῆναι τὸν ἁμαρτωλὸν ἐναντίον μου. Ἐκωφώθην καὶ ἐταπεινώθην καὶ ἐσίγησα ἐξ ἀγαθῶν, καὶ τὸ ἄλγημά μου ἀνεκαινίσθη. Ἐθερμάνθη ἡ καρδία μου ἐντός μου, καὶ ἐν τῇ μελέτῃ μου ἐκκαυθήσεται πῦρ· ἐλάλησα ἐν γλώσσῃ μου, Γνώρισόν μοι Κύριε τὸ πέρας μου, καὶ τὸν ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν μου τίς ἐστιν, ἵνα γνῶ τί ὑστερῶ ἐγώ. Ἰδοὺ παλαιὰς ἔθου τὰς ἡμέρας μου, καὶ ὑπόστασίς μου ὡσεὶ οὐθὲν ἐνώπιόν σου· πλὴν τὰ σύμπαντα ματαιότης, πᾶς ἄνθρωπος ζῶν· διάψαλμα. Μέντοιγε ἐν εἰκόνι διαπορεύεται ἄνθρωπος, πλὴν μάτην ταράσσεται· θησαυρίζει, καὶ οὐ γινώσκει τίνι συνάξει αὐτά. Καὶ νῦν τίς ἡ ὑπομονή μου; οὐχὶ ὁ Κύριος; καὶ ἡ ὑπόστασίς μου παρὰ σοί ἐστι· διάψαλμα. Ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν μου ῥῦσαί με, ὄνειδος ἄφρονι ἔδωκάς με. Ἐκωφώθην καὶ οὐκ ἤνοιξα τὸ στόμα μου, ὅτι σὺ εἶ ὁ ποιήσας με. Ἀπόστησον ἀπ' ἐμοῦ τὰς μάστιγάς σου· ἀπὸ τῆς ἰσχύος τῆς χειρός σου ἐγὼ ἐξέλιπον. Ἐν ἐλεγμοῖς ὑπὲρ ἀνομίας ἐπαίδευσας ἄνθρωπον· καὶ ἐξέτηξας ὡς ἀράχνην τὴν ψυχὴν

αὐτοῦ, πλὴν μάτην ταράσσεται πᾶς ἄνθρωπος· διάψαλμα. Εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου Κύριε καὶ τῆς δεήσεώς μου· ἐνώτισαι τῶν δακρύων μου· μὴ παρασιωπήσῃς, ὅτι πάροικος ἐγώ εἰμι ἐν τῇ γῇ καὶ παρεπίδημος, καθὼς πάντες οἱ πατέρες μου. Ἄνες μοι ἵνα ἀναψύξω πρὸ τοῦ με ἀπελθεῖν, καὶ οὐκέτι μὴ ὑπάρξω.

# 39

Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ ψαλμός. Ὑπομένων ὑπέμεινα τὸν Κύριον, καὶ προσέσχε μοι, καὶ εἰσήκουσε τῆς δεήσεώς μου. Καὶ ἀνήγαγέ με ἐκ λάκκου ταλαιπωρίας, καὶ ἀπὸ πηλοῦ ἰλύος· καὶ ἔστησεν ἐπὶ πέτραν τοὺς πόδας μου, καὶ κατεύθυνε τὰ διαβήματά μου. Καὶ ἐνέβαλεν εἰς τὸ στόμα μου ᾆσμα καινὸν, ὕμνον τῷ Θεῷ ἡμῶν· ὄψονται πολλοὶ καὶ φοβηθήσονται, καὶ ἐλπιοῦσιν ἐπὶ Κύριον. Μακάριος ἀνὴρ, οὗ ἐστι τὸ ὄνομα Κυρίου ἐλπὶς αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐπέβλεψεν εἰς ματαιότητας καὶ μανίας ψευδεῖς. Πολλὰ ἐποίησας σὺ Κύριε ὁ Θεός μου τὰ θαυμάσιά σου, καὶ τοῖς διαλογισμοῖς σου οὐκ ἔστι τίς ὁμοιωθήσεταί σοι· ἀπήγγειλα καὶ ἐλάλησα, ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ ἀριθμόν. Θυσίαν καὶ προσφορὰν οὐκ ἠθέλησας, σῶμα δὲ κατηρτίσω μοι· ὁλοκαύτωμα καὶ περὶ ἁμαρτίας οὐκ ᾔτησας. Τότε εἶπον, ἰδοὺ ἥκω· ἐν κεφαλίδι βιβλίου γέγραπται περὶ ἐμοῦ, τοῦ ποιῆσαι τὸ θέλημά σου ὁ Θεός μου ἠβουλήθην, καὶ τὸν νόμον σου ἐν μέσῳ τῆς καρδίας μου. Εὐηγγελισάμην δικαιοσύνην ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, ἰδοὺ τὰ χείλη μου οὐ μὴ κωλύσω. Κύριε, σὺ ἔγνως τὴν δικαιοσύνην μου, οὐκ ἔκρυψα ἐν τῇ καρδίᾳ μου τὴν ἀλήθειάν σου, καὶ τὸ σωτήριόν σου εἶπα· οὐκ ἔκρυψα τὸ ἔλεός σου καὶ τὴν ἀλήθειάν σου ἀπὸ συναγωγῆς πολλῆς. Σὺ δέ

Κύριε μὴ μακρύνῃς τοὺς οἰκτιρμούς σου ἀπ’ ἐμοῦ, τὸ ἔλεός σου καὶ ἡ ἀλήθειά σου διαπαντὸς ἀντελάβοντό μου. Ὅτι περιέσχον με κακὰ, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμὸς, κατέλαβόν με αἱ ἀνομίαι μου, καὶ οὐκ ἠδυνάσθην τοῦ βλέπειν· ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ τὰς τρίχας τῆς κεφαλῆς μου, καὶ ἡ καρδία μου ἐγκατέλιπέ με. Εὐδόκησον Κύριε τοῦ ῥύσασθαί με, Κύριε εἰς τὸ βοηθῆσαί μοι πρόσχες. Καταισχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν ἅμα οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου, τοῦ ἐξάραι αὐτήν· ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ἐντραπείησαν οἱ θέλοντές μοι κακά. Κομισάσθωσαν παραχρῆμα αἰσχύνην αὐτῶν, οἱ λέγοντές μοι, εὖγε, εὖγε. Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε Κύριε· καὶ εἰπάτωσαν διαπαντὸς, μεγαλυνθήτω ὁ Κύριος, οἱ ἀγαπῶντες τὸ σωτήριόν σου. Ἐγὼ δὲ πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ, Κύριος φροντιεῖ μου· βοηθός μου καὶ ὑπερασπιστής μου εἶ σὺ ὁ Θεός μου, μὴ χρονίσῃς.

# 40

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Μακαρίος ὁ συνιῶν ἐπὶ πτωχὸν καὶ πένητα, ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ ῥύσεται αὐτὸν ὁ Κύριος. Κύριος φυλάξαι αὐτὸν καὶ ζήσαι αὐτὸν, καὶ μακαρίσαι αὐτὸν ἐν τῇ γῇ, καὶ μὴ παραδοῖ αὐτὸν εἰς χεῖρας ἐχθροῦ αὐτοῦ. Κύριος βοηθήσαι αὐτῷ ἐπὶ κλίνης ὀδύνης αὐτοῦ, ὅλην τὴν κοίτην αὐτοῦ ἔστρεψας ἐν τῇ ἀῤῥωστίᾳ αὐτοῦ. Ἐγὼ εἶπα, Κύριε ἐλέησόν με, ἴασαι τὴν ψυχήν μου, ὅτι ἥμαρτόν σοι. Οἱ ἐχθροί μου εἶπαν κακά μοι, πότε ἀποθανεῖται καὶ ἀπολεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ; Καὶ εἰ εἰσεπορεύετο τοῦ ἰδεῖν, μάτην ἐλάλει ἡ καρδία αὐτοῦ, συνήγαγεν ἀνομίαν ἑαυτῷ, ἐξεπορεύετο ἔξω, καὶ ἐλάλει ἐπὶ τὸ αὐτό. Κατ’ ἐμοῦ

ἐψιθύριζον πάντες οἱ ἐχθροί μου, κατ᾽ ἐμοῦ ἐλογίζοντο κακά μοι. Λόγον παράνομον κατέθεντο κατ᾽ ἐμοῦ, μὴ ὁ κοιμώμενος οὐχὶ προσθήσει τοῦ ἀναστῆναι; Καὶ γὰρ ὁ ἄνθρωπος τῆς εἰρήνης μου ἐφ᾽ ὃν ἤλπισα, ὁ ἐσθίων ἄρτους μου ἐμεγάλυνεν ἐπ᾽ ἐμὲ πτερνισμόν. Σὺ δὲ Κύριε ἐλέησόν με, καὶ ἀνάστησόν με, καὶ ἀνταποδώσω αὐτοῖς. Ἐν τούτῳ ἔγνων, ὅτι τεθέληκάς με ὅτι οὐ μὴ ἐπιχαρῇ ὁ ἐχθρός μου ἐπ᾽ ἐμέ. Ἐμοῦ δὲ διὰ τὴν ἀκακίαν ἀντελάβου, καὶ ἐβεβαίωσάς με ἐνώπιόν σου εἰς τὸν αἰῶνα. Εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ εἰς τὸν αἰῶνα· γένοιτο, γένοιτο.

# 41

Εἰς τὸ τέλος, εἰς σύνεσιν τοῖς υἱοῖς Κορέ. Ὃν τρόπον ἐπιποθεῖ ἡ ἔλαφος ἐπὶ τὰς πηγὰς τῶν ὑδάτων, οὕτως ἐπιποθεῖ ἡ ψυχή μου πρὸς σὲ ὁ Θεός. Ἐδίψησεν ἡ ψυχή μου πρὸς τὸν Θεὸν τὸν ζῶντα· πότε ἥξω καὶ ὀφθήσομαι τῷ προσώπῳ τοῦ Θεοῦ; Ἐγενήθη τὰ δάκρυά μου ἐμοὶ ἄρτος ἡμέρας καὶ νυκτὸς, ἐν τῷ λέγεσθαί μοι καθ᾽ ἑκάστην ἡμέραν, ποῦ ἐστιν ὁ Θεός σου; Ταῦτα ἐμνήσθην, καὶ ἐξέχεα ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν ψυχήν μου, ὅτι διελεύσομαι ἐν τόπῳ σκηνῆς θαυμαστῆς ἕως τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ· ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως καὶ ἐξομολογήσεως ἦχου ἑορταζόντων. Ἱνατί περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, καὶ ἱνατί συνταράσσεις με; ἔλπισον ἐπὶ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι αὐτῷ, σωτήριον τοῦ προσώπου μου, Ὁ Θεός μου· πρὸς ἐμαυτὸν ἡ ψυχή μου ἐταράχθη, διὰ τοῦτο μνησθήσομαί σου ἐκ γῆς Ἰορδάνου, καὶ Ἑρμωνιεὶμ ἀπὸ ὄρους μικροῦ. Ἄβυσσος ἄβυσσον ἐπικαλεῖται εἰς φωνὴν τῶν καταῤῥακτῶν σου· πάντες οἱ

μετεωρισμοί σου, καὶ τὰ κύματά σου ἐπ’ ἐμὲ διῆλθον. Ἡμέρας ἐντελεῖται Κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ, καὶ νυκτὸς δηλώσει· παρ’ ἐμοὶ προσευχὴ τῷ Θεῷ τῆς ζωῆς μου, ἐρῶ τῷ Θεῷ, ἀντιλήπτωρ μου εἶ, διατί μου ἐπελάθου; ἱνατί σκυθρωπάζων πορεύομαι ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου; Ἐν τῷ καταθλᾶσθαι τὰ ὀστᾶ μου, ὠνείδισάν με οἱ θλίβοντές με· ἐν τῷ λέγειν αὐτούς μοι καθ’ ἑκάστην ἡμέραν, ποῦ ἐστιν ὁ Θεός σου; Ἱνατί περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, καὶ ἱνατί συνταράσσεις με; ἔλπισον ἐπὶ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι αὐτῷ, ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου μου, καὶ ὁ Θεός μου.

# 42

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κρίνον με ὁ Θεὸς, καὶ δίκασον τὴν δίκην μου, ἐξ ἔθνους οὐχ ὁσίου, ἀπὸ ἀνθρώπου ἀδίκου καὶ δολίου ῥῦσαί με. Ὅτι σὺ εἶ ὁ Θεὸς κραταίωμά μου, ἱνατί ἀπώσω με; καὶ ἱνατί σκυθρωπάζων πορεύομαι ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου; Ἐξαπόστειλον τὸ φῶς σου καὶ τὴν ἀλήθειάν σου, αὐτά με ὡδήγησαν καὶ ἤγαγόν με εἰς ὄρος ἅγιόν σου, καὶ εἰς τὰ σκηνώματά σου. Καὶ εἰσελεύσομαι πρὸς τὸ θυσιαστήριον τοῦ Θεοῦ, πρὸς τὸν Θεὸν τὸν εὐφραίνοντα τὴν νεότητά μου, ἐξομολογήσομαί σοι ἐν κιθάρᾳ ὁ Θεὸς ὁ Θεός μου. Ἱνατί περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, καὶ ἱνατί συνταράσσεις με; ἔλπισον ἐπὶ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι αὐτῷ, σωτήριον τοῦ προσώπου μου, ὁ Θεός μου.

# 43

Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ εἰς σύνεσιν ψαλμός. Ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ὠσὶν ἡμῶν ἠκούσαμεν, οἱ πατέρες ἡμῶν ἀνήγγειλαν ἡμῖν, ἔργον ὃ εἰργάσω ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν, ἐν ἡμεραίς ἀρχαίαις. Ἡ χείρ σου ἔθνη ἐξωλόθρευσε, καὶ κατεφύτευσας αὐτοὺς, ἐκάκωσας λαοὺς καὶ ἐξέβαλες αὐτούς. Οὐ γὰρ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτῶν ἐκληρονόμησαν γῆν, καὶ ὁ βραχίων αὐτῶν οὐκ ἔσωσεν αὐτοὺς, ἀλλὰ ἡ δεξιά σου καὶ ὁ βραχίων σου, καὶ ὁ φωτισμὸς τοῦ προσώπου σου, ὅτι εὐδόκησας ἐν αὐτοῖς. Σὺ εἶ αὐτὸς ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ Θεός μου, ὁ ἐντελλόμενος τὰς σωτηρίας Ἰακώβ. Ἐν σοὶ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν κερατιοῦμεν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐξουθενώσομεν τοὺς ἐπανισταμένους ἡμῖν. Οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ τόξῳ μου ἐλπιῶ, καὶ ἡ ῥομφαία μου οὐ σώσει με. Ἔσωσας γὰρ ἡμᾶς ἐκ τῶν θλιβόντων ἡμᾶς, καὶ τοὺς μισοῦντας ἡμᾶς κατῄσχυνας. Ἐν τῷ Θεῷ ἐπαινεθησόμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐξομολογησόμεθα εἰς τὸν αἰῶνα. διάψαλμα. Νυνὶ δὲ ἀπώσω καὶ κατῄσχυνας ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν. Ἀπέστρεψας ἡμᾶς εἰς τὰ ὀπίσω παρὰ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν, καὶ οἱ μισοῦντες ἡμᾶς διήρπαζον ἑαυτοῖς. Ἔδωκας ἡμᾶς ὡς πρόβατα βρώσεως, καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσι διέσπειρας ἡμᾶς· Ἀπέδου τὸν λαόν σου ἄνευ τιμῆς, καὶ οὐκ ἦν πλῆθος ἐν τοῖς ἀλαλάγμασιν αὐτῶν. Ἔθου ἡμᾶς ὄνειδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, μυκτηρισμὸν καὶ καταγέλωτα τοῖς κύκλῳ ἡμῶν. Ἔθου ἡμᾶς εἰς παραβολὴν ἐν τοῖς ἔθνεσι, κίνησιν κεφαλῆς ἐν τοῖς λαοῖς. Ὅλην τὴν ἡμέραν ἡ ἐντροπή μου κατεναντίον μου ἐστὶ, καὶ ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου μου ἐκάλυψέ με, ἀπὸ φωνῆς ὀνειδίζοντος καὶ παραλαλοῦντος, ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ καὶ ἐκδιώκοντος. Ταῦτα πάντα ἦλθεν ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἐπελαθόμεθά σου, καὶ οὐκ ἠδικήσαμεν ἐν διαθήκῃ σου. Καὶ οὐκ ἀπέστη εἰς τὰ ὀπίσω ἡ καρδία ἡμῶν, καὶ ἐξέκλινας τὰς

τρίβους ἡμῶν ἀπὸ τῆς ὁδοῦ σου. Ὅτι ἐταπείνωσας ἡμᾶς ἐν τόπῳ κακώσεως, καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς σκιὰ θανάτου. Εἰ ἐπελαθόμεθα τοῦ ὀνόματος τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ εἰ διεπετάσαμεν χεῖρας ἡμῶν πρὸς θεὸν ἀλλότριον, οὐχὶ ὁ Θεὸς ἐκζητήσει ταῦτα; αὐτὸς γὰρ γινώσκει τὰ κρύφια τῆς καρδίας. Ὅτι ἕνεκά σου θανατούμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν, ἐλογίσθημεν ὡς πρόβατα σφαγῆς. Ἐξεγέρθητι, ἱνατί ὑπνοῖς Κύριε; ἀνάστηθι, καὶ μὴ ἀπώσῃ εἰς τέλος. Ἱνατί τὸ πρόσωπόν σου ἀποστρέφεις; ἐπιλανθάνῃ τῆς πτωχείας ἡμῶν καὶ τῆς θλίψεως ἡμῶν; Ὅτι ἐταπεινώθη εἰς χοῦν ἡ ψυχὴ ἡμῶν, ἐκολλήθη εἰς γῆν ἡ γαστὴρ ἡμῶν. Ἀνάστα Κύριε, βοήθησον ἡμῖν, καὶ λύτρωσαι ἡμᾶς ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός σου.

# 44

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων τοῖς υἱοῖς Κορὲ εἰς σύνεσιν, ᾠδὴ ὑπὲρ τοῦ ἀγαπητοῦ. Ἐξηρεύξατο ἡ καρδία μου λόγον ἀγαθὸν, λέγω ἐγὼ τὰ ἔργα μου τῷ βασιλεῖ· ἡ γλῶσσά μου κάλαμος γραμματέως ὀξυγράφου. Ὡραῖος κάλλει παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, ἐξεχύθη χάρις ἐν χείλεσί σου, διὰ τοῦτο εὐλόγησέ σε ὁ Θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. Περίζωσαι τὴν ῥομφαίαν σου ἐπὶ τὸν μηρόν σου δυνατέ· τῇ ὡραιότητί σου, καὶ τῷ κάλλει σου, καὶ ἔντεινον, καὶ κατευοδοῦ, καὶ βασίλευε· ἕνεκεν ἀληθείας καὶ πραΰτητος καὶ δικαιοσύνης, καὶ ὁδηγήσει σε θαυμαστῶς ἡ δεξιά σου. Τὰ βέλη σου ἡκονημένα δυνατὲ, λαοὶ ὑποκάτω σου πεσοῦνται, ἐν καρδίᾳ τῶν ἐχθρῶν τοῦ βασιλέως. Ὁ θρόνος σου ὁ Θεὸς εἰς αἰῶνα αἰῶνος, ῥάβδος εὐθύτητος ἡ ῥάβδος τῆς βασιλείας σου. Ἠγάπησας δικαιοσύνην, καὶ ἐμίσησας ἀνομίαν, διὰ τοῦτο ἔχρισέ σε ὁ Θεὸς ὁ

Θεός σου ἔλαιον ἀγαλλιάσεως παρὰ τοὺς μετόχους σου. Σμύρνα καὶ στακτὴ καὶ κασία ἀπὸ τῶν ἱματίων σου, ἀπὸ βάρεων ἐλεφαντίνων, ἐξ ὧν ηὔφρανάν σε θυγατέρες βασιλέων ἐν τῇ τιμῇ σου· παρέστη ἡ βασίλισσα ἐκ δεξιῶν σου, ἐν ἱματισμῷ διαχρύσῳ περιβεβλημένη, πεποικιλμένη. Ἄκουσον θύγατερ καὶ ἴδε καὶ κλῖνον τὸ οὖς σου, καὶ ἐπιλάθου τοῦ λαοῦ σου, καὶ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου. Ὅτι ἐπεθύμησεν ὁ βασιλεὺς τοῦ κάλλους σου, ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ Κύριός σου. Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ θυγατέρες Τύρου ἐν δώροις, τὸ πρόσωπόν σου λιτανεῦσουσιν οἱ πλούσιοι τοῦ λαοῦ τῆς γῆς. Πᾶσα ἡ δόξα αὐτῆς θυγατρὸς τοῦ βασιλέως Ἐσεβὼν, ἐν κροσσωτοῖς χρυσοῖς περιβεβλημένη, πεποικιλμένη· ἀπενεχθήσονται τῷ βασιλεῖ παρθένοι ὀπίσω αὐτῆς, αἱ πλησίον αὐτῆς ἀπενεχθήσονταί σοι. Ἀπενεχθήσονται ἐν εὐφροσύνῃ καὶ ἀγαλλιάσει, ἀχθήσονται εἰς ναὸν βασιλέως. Ἀντὶ τῶν πατέρων σου ἐγενήθησάν σοι υἱοὶ, καταστήσεις αὐτοὺς ἄρχοντας ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Μνησθήσονται τοῦ ὀνόματός σου ἐν πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ, διὰ τοῦτο λαοὶ ἐξομολογήσονταί σοι εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος·

# 45

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορὲ, ὑπὲρ τῶν κρυφίων ψαλμός. Ὁ Θεὸς ἡμῶν καταφυγὴ καὶ δύναμις, βοηθὸς ἐν θλίψεσι ταῖς εὑρούσαις ἡμᾶς σφόδρα. Διὰ τοῦτο οὐ φοβηθησόμεθα ἐν τῷ ταράσσεσθαι τὴν γῆν, καὶ μετατίθεσθαι ὄρη ἐν καρδίαις θαλασσῶν. Ἤχησαν καὶ ἐταράχθησαν τὰ ὕδατα αὐτῶν, ἐταράχθησαν τὰ ὄρη ἐν τῇ κραταιότητι αὐτοῦ. διάψαλμα. Τοῦ

ποταμοῦ τὰ ὁρμήματα εὐφραίνουσι τὴν πόλιν τοῦ Θεοῦ, ἡγίασε τὸ σκήνωμα αὐτοῦ ὁ ὕψιστος. Ὁ Θεὸς ἐν μέσῳ αὐτῆς οὐ σαλευθήσεται, βοηθήσει αὐτῇ ὁ Θεὸς τῷ προσώπῳ. Ἐταράχθησαν ἔθνη, ἔκλιναν βασιλεῖαι, ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ, ἐσαλεύθη ἡ γῆ. Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ’ ἡμῶν, ἀντιλήπτωρ ἡμῶν ὁ Θεὸς Ἰακώβ. διάψαλμα. Δεῦτε καὶ ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ Κυρίου, ἃ ἔθετο τέρατα ἐπὶ τῆς γῆς· ἀνταναιρῶν πολέμους μέχρι τῶν περάτων τῆς γῆς, τόξον συντρίψει, καὶ συγκλάσει ὅπλον, καὶ θυρεοὺς κατακαύσει ἐν πυρί. Σχολάσατε καὶ γνῶτε, ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς, ὑψωθήσομαι ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὑψωθήσομαι ἐν τῇ γῇ· Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ’ ἡμῶν, ἀντιλήπτωρ ἡμῶν ὁ Θεὸς Ἰακώβ.

# 46

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορὲ ψαλμός. Παντὰ τὰ ἔθνη κροτήσατε χεῖρας, ἀλαλάξατε τῷ Θεῷ ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως. Ὅτι Κύριος ὕψιστος, φοβερὸς, βασιλεὺς μέγας ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Ὑπέταξε λαοὺς ἡμῖν, καὶ ἔθνη ὑπὸ τοὺς πόδας ἡμῶν· Ἐξελέξατο ἡμῖν τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, τὴν καλλονὴν Ἰακὼβ, ἣν ἠγάπησε· διάψαλμα. Ἀνέβη ὁ Θεὸς ἐν ἀλαλαγμῷ, Κύριος ἐν φωνῇ σάλπιγγος. Ψάλατε τῷ Θεῷ ἡμῶν, ψάλατε· ψάλατε τῷ βασιλεῖ ἡμῶν, ψάλατε. Ὅτι βασιλεὺς πάσης τῆς γῆς ὁ Θεὸς, ψάλατε συνετῶς. Ἐβασίλευσεν ὁ Θεὸς ἐπὶ τὰ ἔθνη, ὁ Θεὸς κάθηται ἐπὶ θρόνου ἁγίου αὐτοῦ. Ἄρχοντες λαῶν συνήχθησαν μετὰ τοῦ Θεοῦ Ἀβραὰμ, ὅτι τοῦ Θεοῦ οἱ κραταιοὶ τῆς γῆς σφόδρα ἐπῄρθησαν.

# 47

Ψαλμὸς ᾠδῆς τοῖς υἱοῖς Κορὲ δευτέρᾳ σαββάτου. Μεγὰς Κύριος, καὶ αἰνετὸς σφόδρα ἐν πόλει τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ἐν ὄρει ἁγίῳ αὐτοῦ. Εὐρίζων, ἀγαλλιάματι πάσης τῆς γῆς, ὄρη Σιὼν τὰ πλευρὰ τοῦ βορρᾶ, ἡ πόλις τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου. Ὁ Θεὸς ἐν ταῖς βάρεσιν αὐτῆς γινώσκεται, ὅταν ἀντιλαμβάνηται αὐτῆς. Ὅτι ἰδοὺ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς συνήχθησαν, ἦλθοσαν ἐπὶ τὸ αὐτό. Αὐτοὶ ἰδόντες οὕτως ἐθαύμασαν, ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν, τρόμος ἐπελάβετο αὐτῶν· ἐκεῖ ὠδῖνες ὡς τικτούσης. Ἐν πνεύματι βιαίῳ συντρίψεις πλοῖα Θάρσις. Καθάπερ ἠκούσαμεν, οὕτως καὶ εἴδομεν, ἐν πόλει Κυρίου τῶν δυνάμεων, ἐν πόλει τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ὁ Θεὸς ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν αἰῶνα· διάψαλμα. Ὑπελάβομεν ὁ Θεὸς τὸ ἔλεός σου ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ σου. Κατὰ τὸ ὄνομά σου ὁ Θεὸς, οὕτως καὶ ἡ αἴνεσίς σου ἐπὶ τὰ πέρατα τῆς γῆς, δικαιοσύνης πλήρης ἡ δεξιά σου. Εὐφρανθήτω τὸ ὄρος Σιὼν, ἀγαλλιάσθωσαν αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαίας ἕνεκα τῶν κριμάτων σου Κύριε. Κυκλώσατε Σιὼν, καὶ περιλάβετε αὐτὴν, διηγήσασθε ἐν τοῖς πύργοις αὐτῆς. Θέσθε τὰς καρδίας ὑμῶν εἰς τὴν δύναμιν αὐτῆς, καὶ καταδιέλεσθε τὰς βάρεις αὐτῆς, ὅπως ἂν διηγήσησθε εἰς γενεὰν ἑτέραν. Ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, αὐτὸς ποιμανεῖ ἡμᾶς εἰς τοὺς αἰῶνας.

# 48

Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός. Ἀκούσατε ταῦτα πάντα τὰ ἔθνη, ἐνωτίσασθε πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην, οἵ τε γηγενεῖς καὶ οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, ἐπιτοαυτὸ πλούσιος καὶ πένης. Τὸ στόμα μου λαλήσει σοφίαν, καὶ ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου

σύνεσιν. Κλινῶ εἰς παραβολὴν τὸ οὖς μου, ἀνοίξω ἐν ψαλτηρίῳ τὸ πρόβλημά μου. Ἱνατί φοβοῦμαι ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ; ἡ ἀνομία τῆς πτέρνης μου κυκλώσει με. Οἱ πεποιθότες ἐπὶ τῇ δυνάμει αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τῷ πλήθει τοῦ πλούτου αὐτῶν καυχώμενοι. Ἀδελφὸς οὐ λυτροῦται, λυτρώσεται ἄνθρωπος; οὐ δώσει τῷ Θεῷ ἐξίλασμα ἑαυτοῦ, καὶ τὴν τιμὴν τῆς λυτρώσεως τῆς ψυχῆς αὐτοῦ· καὶ ἐκοπίασεν εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ζήσεται εἰς τέλος· ὅτι οὐκ ὄψεται καταφθορὰν, Ὅταν ἴδῃ σοφοὺς ἀποθνήσκοντας, ἐπιτοαυτὸ ἄφρων καὶ ἄνους ἀπολοῦνται, καὶ καταλείψουσιν ἀλλοτρίοις τὸν πλοῦτον αὐτῶν. Καὶ οἱ τάφοι αὐτῶν οἰκίαι αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα, σκηνώματα αὐτῶν εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν, ἐπεκαλέσαντο τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἐπὶ τῶν γαιῶν αὐτῶν. Καὶ ἄνθρωπος ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, παρασυνεβλήθη τοῖς κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς. Αὕτη ἡ ὁδὸς αὐτῶν σκάνδαλον αὐτοῖς, καὶ μετὰ ταῦτα ἐν τῷ στόματι αὐτῶν εὐλογήσουσι· διάψαλμα. Ὡς πρόβατα ἐν ᾅδῃ ἔθεντο, θάνατος ποιμανεῖ αὐτούς· καὶ κατακυριεύσουσιν αὐτῶν οἱ εὐθεῖς τοπρωΐ, καὶ ἡ βοήθεια αὐτῶν παλαιωθήσεται ἐν τῷ ᾅδῃ ἐκ τῆς δόξης αὐτῶν. Πλὴν ὁ Θεὸς λυτρώσεται τὴν ψυχήν μου ἐκ χειρὸς ᾅδου, ὅταν λαμβάνῃ με· διάψαλμα. Μὴ φοβοῦ ὅταν πλουτήσῃ ἄνθρωπος, καὶ ὅταν πληθυνθῇ ἡ δόξα τοῦ οἴκου αὐτοῦ. Ὅτι οὐκ ἐν τῷ ἀποθνήσκειν αὐτὸν λήψεται τὰ πάντα, οὐδὲ συγκαταβήσεται αὐτῷ ἡ δόξα αὐτοῦ. Ὅτι ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ εὐλογηθήσεται, ἐξομολογήσεταί σοι ὅταν ἀγαθύνῃς αὐτῷ. Εἰσελεύσεται ἕως γενεᾶς πατέρων αὐτοῦ, ἕως αἰῶνος οὐκ ὄψεται φῶς. Ἄνθρωπος ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, παρασυνεβλήθη τοῖς κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς.

# 49

Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Θεὸς θεῶν Κύριος ἐλάλησε, καὶ ἐκάλεσε τὴν γῆν ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου μέχρι δυσμῶν. Ἐκ Σιὼν ἡ εὐπρέπεια τῆς ὡραιότητος αὐτοῦ. Ὁ Θεὸς ἐμφανῶς ἥξει, ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ οὐ παρασιωπήσεται· πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ καυθήσεται, καὶ κύκλῳ αὐτοῦ καταιγὶς σφοδρά. Προσκαλέσεται τὸν οὐρανὸν ἄνω, καὶ τὴν γῆν διακρῖναι τὸν λαὸν αὐτοῦ. Συναγάγετε αὐτῷ τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, τοὺς διατιθεμένους τὴν διαθήκην αὐτοῦ ἐπὶ θυσίαις. Καὶ ἀναγγελοῦσιν οἱ οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, ὅτι Θεὸς κριτής ἐστι· διάψαλμα. Ἄκουσον λαός μου καὶ λαλήσω σοι, Ἰσραὴλ, καὶ διαμαρτύρομαί σοι· ὁ Θεὸς ὁ Θεός σου εἰμὶ ἐγώ. Οὐκ ἐπὶ ταῖς θυσίαις σου ἐλέγξω σε, τὰ δὲ ὁλοκαυτώματά σου ἐνώπιόν μου ἐστὶ διαπαντός. Οὐ δέξομαι ἐκ τοῦ οἴκου σου μόσχους, οὐδὲ ἐκ τῶν ποιμνίων σου χιυάρους· Ὅτι ἐμά ἐστι πάντα τὰ θηρία τοῦ δρυμοῦ, κτήνη ἐν τοῖς ὄρεσι, καὶ βόες. Ἔγνωκα πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ὡραιότης ἀγροῦ μετ’ ἐμοῦ ἐστιν. Ἐὰν πεινάσω, οὐ μή σοι εἴπω, ἐμὴ γάρ ἐστιν ἡ οἰκουμένη καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς. Μὴ φάγομαι κρέα ταύρων, ἢ αἷμα τράγων πίομαι; Θῦσον τῷ Θεῷ θυσίαν αἰνέσεως, καὶ ἀπόδος τῷ ὑψίστῳ τὰς εὐχάς σου. Καὶ ἐπικάλεσαί με ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, καὶ ἐξελοῦμαί σε, καὶ δοξάσεις με. διάψαλμα. Τῷ δὲ ἁμαρτωλῷ εἶπεν ὁ Θεὸς, ἱνατί σὺ διηγῇ τὰ δικαιώματά μου, καὶ ἀναλαμβάνεις τὴν διαθήκην μου διὰ στόματός σου; Σὺ δὲ ἐμίσησας παιδείαν, καὶ ἐξέβαλες τοὺς λόγους μου εἰς τὰ ὀπίσω. Εἰ ἐθεώρεις κλέπτην, συνέτρεχες αὐτῷ, καὶ μετὰ μοιχῶν τὴν μερίδα σου ἐτίθεις. Τὸ στόμα σου ἐπλεόνασε κακίαν, καὶ ἡ γλῶσσά σου περιέπλεκε δολιότητα. Καθήμενος κατὰ τοῦ

ἀδελφοῦ σου κατελάλεις, καὶ κατὰ τοῦ υἱοῦ τῆς μητρός σου ἐτίθεις σκάνδαλον. Ταῦτα ἐποίησας, καὶ ἐσίγησα, ὑπέλαβες ἀνομίαν ὅτι ἔσομαί σοι ὅμοιος· ἐλέγξω σε, καὶ παραστήσω κατὰ πρόσωπόν σου. Σύνετε δὴ ταῦτα οἱ ἐπιλανθανόμενοι τοῦ Θεοῦ, μήποτε ἁρπάσῃ, καὶ μὴ ᾖ ὁ ῥυόμενος. Θυσία αἰνέσεως δοξάσει με, καὶ ἐκεῖ ὁδὸς ᾗ δείξω αὐτῷ τὸ σωτήριον Θεοῦ.

# 50

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ ἐλθεῖν πρὸς αὐτὸν Νάθαν τὸν προφήτην, ἡνίκα εἰσῆλθε πρὸς Βηρσαβεέ. Ἐλέησον με ὁ Θεὸς κατὰ τὸ μέγα ἔλεός σου, καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν σου ἐξάλειψον τὸ ἀνόμημά μου. Ἐπιπλεῖον πλῦνόν με ἀπὸ τῆς ἀνομίας μου, καὶ ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας μου καθάρισόν με. Ὅτι τὴν ἀνομίαν μου ἐγὼ γινώσκω, καὶ ἡ ἁμαρτία μου ἐνώπιόν μου ἐστὶ διαπαντός· Σοὶ μόνῳ ἥμαρτον, καὶ τὸ πονηρὸν ἐνώπιόν σου ἐποίησα· ὅπως ἂν δικαιωθῇς ἐν τοῖς λόγοις σου, καὶ νικήσῃς ἐν τῷ κρίνεσθαί σε. Ἰδοὺ γὰρ ἐν ἀνομίαις συνελήφθην, καὶ ἐν ἁμαρτίαις ἐκίσσησέ με ἡ μήτηρ μου. Ἰδοὺ γὰρ ἀλήθειαν ἠγάπησας, τὰ ἄδηλα καὶ τὰ κρύφια τῆς σοφίας σου ἐδήλωσάς μοι. Ῥαντιεῖς με ὑσσώπῳ καὶ καθαρισθήσομαι, πλυνεῖς με καὶ ὑπὲρ χιόνα λευκανθήσομαι. Ἀκουτιεῖς με ἀγαλλίασιν καὶ εὐφροσύνην, ἀγαλλιάσονται ὀστᾶ τεταπεινωμένα. Ἀπόστρεψον τὸ πρόσωπόν σου ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν μου, καὶ πάσας τὰς ἀνομίας μου ἐξάλειψον. Καρδίαν καθαρὰν κτίσον ἐν ἐμοὶ ὁ Θεὸς, καὶ πνεῦμα εὐθὲς ἐγκαίνισον ἐν τοῖς ἐγκάτοις μου. Μὴ ἀποῤῥίψῃς με ἀπὸ τοῦ προσώπου σου, καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιόν σου μὴ ἀντανέλῃς ἀπ’ ἐμοῦ. Ἀπόδος μοι τὴν

ἀγαλλίασιν τοῦ σωτηρίου σου, πνεύματι ἡγεμονικῷ στήριξόν με. Διδάξω ἀνόμους τὰς ὁδούς σου, καὶ ἀσεβεῖς ἐπὶ σὲ ἐπιστρέψουσι. Ῥῦσαί με ἐξ αἱμάτων ὁ Θεὸς, ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου, ἀγαλλιάσεται ἡ γλῶσσά μου τὴν δικαιοσύνην σου. Κύριε, τὰ χείλη μου ἀνοίξεις, καὶ τὸ στόμα μου ἀναγγελεῖ τὴν αἴνεσίν σου. Ὅτι εἰ ἠθέλησας θυσίαν, ἔδωκα ἄν· ὁλοκαυτώματα οὐκ εὐδοκήσεις. Θυσία τῷ Θεῷ πνεῦμα συντετριμμένον, καρδίαν συντετριμμένην καὶ τεταπεινωμένην ὁ Θεὸς οὐκ ἐξουδενώσει. Ἀγάθυνον, Κύριε, ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου τὴν Σιὼν, καὶ οἰκοδομηθήτω τὰ τείχη Ἰερουσαλήμ. Τότε εὐδοκήσεις θυσίαν δικαιοσύνης, ἀναφορὰν, καὶ ὁλοκαυτώματα· τότε ἀνοίσουσιν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν σου μόσχους.

# 51

Εἰς τὸ τέλος συνέσεως τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ ἐλθεῖν Δωὴκ τὸν Ἰδουμαῖον, καὶ ἀναγγεῖλαι τῷ Σαοὺλ, καὶ εἰπεῖν αὐτῷ, ἦλθε Δαυὶδ εἰς τὸν οἶκον Ἀβιμέλεχ. Τί ἐγκαυχᾷ ἐν κακίᾳ ὁ δυνατὸς ἀνομίαν; ὅλην τὴν ἡμέραν ἀδικίαν ἐλογίσατο ἡ γλῶσσά σου· ὡσεὶ ξυρὸν ἠκονημένον ἐποίησας δόλον. Ἠγάπησας κακίαν ὑπὲρ ἀγαθωσύνην, ἀδικίαν ὑπὲρ τὸ λαλῆσαι δικαιοσύνην· διάψαλμα. Ἠγάπησας πάντα τὰ ῥήματα καταποντισμοῦ, γλῶσσαν δολίαν. Διὰ τοῦτο ὁ Θεὸς καθέλοι σε εἰς τέλος, ἐκτίλαι σε καὶ μεταναστεύσαι σε ἀπὸ σκηνώματος, καὶ τὸ ῥίζωμά σου ἐκ γῆς ζώντων· διάψαλμα. Καὶ ὄψονται δίκαιοι καὶ φοβηθήσονται, καὶ ἐπ’ αὐτὸν γελάσονται, καὶ ἐροῦσιν, ἰδοὺ ἄνθρωπος ὃς οὐκ ἔθετο τὸν Θεὸν βοηθὸν αὐτοῦ, ἀλλ’ ἐπήλπισεν ἐπὶ τὸ πλῆθος τοῦ πλούτου αὐτοῦ, καὶ ἐνεδυναμώθη ἐπὶ τῇ ματαιότητι αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ὡσεὶ ἐλαία

κατάκαρπος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Θεοῦ, ἤλπισα ἐπὶ τὸ ἔλεος τοῦ Θεοῦ εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἐξομολογήσομαί σοι εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι ἐποίησας, καὶ ὑπομενῶ τὸ ὄνομά σου, ὅτι χρηστὸν ἐναντίον τῶν ὁσίων σου.

# 52

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ μαελὲθ συνέσεως τῷ Δαυίδ. Εἶπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, οὐκ ἔστι Θεός· διέφθειραν, καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἀνομίαις· οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθόν. Ὁ Θεὸς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, τοῦ ἰδεῖν εἰ ἔστι συνιῶν, ἢ ἐκζητῶν τὸν Θεόν. Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν, οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθὸν, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, οἱ κατεσθίοντες τὸν λαόν μου βρώσει ἄρτου; τὸν Θεὸν οὐκ ἐπεκαλέσαντο. Ἐκεῖ ἐφοβήθησαν φόβον, οὗ οὐκ ἦν φόβος· ὅτι ὁ Θεὸς διεσκόρπισεν ὀστᾶ ἀνθρωπαρέσκων, κατῃσχύνθησαν, ὅτι ὁ Θεὸς ἐξουδένωσεν αὐτούς. Τίς δώσει ἐκ Σιὼν τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραήλ; ἐν τῷ ἀποστρέψαι Κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἀγαλλιάσεται Ἰακὼβ, καὶ εὐφρανθήσεται Ἰσραήλ.

# 53

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ ἐλθεῖν τοὺς Ζειφαίους, καὶ εἰπεῖν τῷ Σαοὺλ, οὐκ ἰδοὺ Δαυὶδ κέκρυπται παρ’ ἡμῖν; Ὁ Θεὸς ἐν τῷ ὀνόματί σου σῶσόν με, καὶ ἐν τῇ δυνάμει σου

κρῖνόν με. Ὁ Θεὸς εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, ἐνώτισαι τὰ ῥήματα τοῦ στόματός μου. Ὅτι ἀλλότριοι ἐπανέστησαν ἐπ’ ἐμὲ, καὶ κραταιοὶ ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, οὐ προέθεντο τὸν Θεὸν ἐνώπιον αὐτῶν· διάψαλμα. Ἰδοὺ γὰρ ὁ Θεὸς βοηθεῖ μοι, καὶ ὁ Κύριος ἀντιλήπτωρ τῆς ψυχῆς μου. Ἀποστρέψει τὰ κακὰ τοῖς ἐχθροῖς μου, ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου ἐξολόθρευσον αὐτούς. Ἑκουσίως θύσω σοι, ἐξομολογήσομαι τῷ ὀνόματί σου Κύριε, ὅτι ἀγαθόν. Ὅτι ἐκ πάσης θλίψεως ἐῤῥύσω με, καὶ ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου.

# 54

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυίδ. Ἐνωτίσαι ὁ Θεὸς τὴν προσευχήν μου, καὶ μὴ ὑπερίδῃς τὴν δέησίν μου· Πρόσχες μοι, καὶ εἰσάκουσόν μου· ἐλυπήθην ἐν τῇ ἀδολεσχίᾳ μου, καὶ ἐταράχθην ἀπὸ φωνῆς ἐχθροῦ, καὶ ἀπὸ θλίψεως ἁμαρτωλοῦ· ὅτι ἐξέκλιναν ἐπ’ ἐμὲ ἀνομίαν, καὶ ἐν ὀργῇ ἐνεκότουν μοι. Ἡ καρδία μου ἐταράχθη ἐν ἐμοὶ, καὶ δειλία θανάτου ἐπέπεσεν ἐπ’ ἐμέ. Φόβος καὶ τρόμος ἦλθεν ἐπ’ ἐμὲ καὶ ἐκάλυψέ με σκότος. Καὶ εἶπα, τίς δώσει μοι πτέρυγας ὡσεὶ περιστερᾶς; καὶ πετασθήσομαι καὶ καταπαύσω. Ἰδοὺ ἐμάκρυνα φυγαδεύων, καὶ ηὐλίσθην ἐν τῇ ἐρήμῳ· διάψαλμα. Προσεδεχόμην τὸν σώζοντά με ἀπὸ ὀλιγοψυχίας καὶ καταιγίδος. Καταπόντισον Κύριε καὶ καταδίελε τὰς γλώσσας αὐτῶν, ὅτι εἶδον ἀνομίαν καὶ ἀντιλογίαν ἐν τῇ πόλει. Ἡμέρας καὶ νυκτὸς κυκλώσει αὐτὴν ἐπὶ τὰ τείχη αὐτῆς, ἀνομία καὶ πόνος ἐν μέσῳ αὐτῆς καὶ ἀδικία, καὶ οὐκ ἐξέλιπεν ἐκ τῶν πλατειῶν αὐτῆς τόκος καὶ δόλος. Ὅτι εἰ ἐχθρὸς ὠνείδισέ με, ὑπήνεγκα ἄν, καὶ εἰ ὁ μισῶν ἐπ’ ἐμὲ

ἐμεγαλορῥημόνησεν, ἐκρύβην ἂν ἀπ’ αὐτοῦ. Σὺ δὲ ἄνθρωπε ἰσόψυχε, ἡγεμών μου καὶ γνωστέ μου, ὃς ἐπιτοαυτὸ ἐγλύκανας ἐδέσματα, ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Θεοῦ ἐπορεύθημεν ἐν ὁμονοίᾳ. Ἐλθέτω θάνατος ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς ᾅδου ζῶντες· ὅτι πονηρία ἐν ταῖς παροικίαις αὐτῶν ἐν μέσῳ αὐτῶν. Ἐγὼ πρὸς τὸν Θεὸν ἐκέκραξα, καὶ ὁ Κύριος εἰσήκουσέ μου. Ἑσπέρας καὶ πρωΐ καὶ μεσημβρίας διηγήσομαι, καὶ ἀπαγγελῶ, καὶ εἰσακούσεται τῆς φωνῆς μου. Λυτρώσεται ἐν εἰρήνῃ τὴν ψυχήν μου ἀπὸ τῶν ἐγγιζόντων μοι, ὅτι ἐν πολλοῖς ἦσαν σὺν ἐμοί. Εἰσακούσεται ὁ Θεὸς καὶ ταπεινώσει αὐτοὺς, ὁ ὑπάρχων πρὸ τῶν αἰώνων· διάψαλμα· Οὐ γάρ ἐστιν αὐτοῖς ἀντάλλαγμα, καὶ οὐκ ἐφοβήθησαν τὸν Θεόν. Ἐξέτεινε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐν τῷ ἀποδιδόναι· ἐβεβήλωσαν τὴν διαθήκην αὐτοῦ. Διεμερίσθησαν ἀπὸ ὀργῆς τοῦ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἤγγισεν ἡ καρδία αὐτοῦ· ἠπαλύνθησαν οἱ λόγοι αὐτοῦ ὑπὲρ ἔλαιον, καὶ αὐτοί εἰσι βολίδες. Ἐπίῤῥιψον ἐπὶ Κύριον τὴν μέριμνάν σου, καὶ αὐτός σε διαθρέψει, οὐ δώσει εἰς τὸν αἰῶνα σάλον τῷ δικαίῳ. Σὺ δὲ ὁ Θεὸς κατάξεις αὐτοὺς εἰς φρέαρ διαφθορᾶς· ἄνδρες αἱμάτων καὶ δολιότητος οὐ μὴ ἡμισεύσωσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν· ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ ἐπὶ σε, Κύριε.

# 55

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τοῦ λαοῦ τοῦ ἀπὸ τῶν ἁγίων μεμακρυμμένου, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ὁπότε ἐκράτησαν αὐτὸν οἱ ἀλλόφυλοι ἐν Γέθ. Ἐλεήσον με ὁ Θεὸς, ὅτι κατεπάτησέ με ἄνθρωπος, ὅλην τὴν ἡμέραν πολεμῶν ἔθλιψέ με. Κατεπάτησάν με οἱ ἐχθροί μου ὅλην τὴν ἡμέραν ἀπὸ ὕψους ἡμέρας, ὅτι πολλοὶ οἱ πολεμοῦντές με.

Φοβηθήσονται, ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ ἐπὶ σοί. Ἐν τῷ Θεῷ ἐπαινέσω τοὺς λόγους μου, ὅλην τὴν ἡμέραν ἐν τῷ Θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσομαι τί ποιήσει μοι σάρξ. Ὅλην τὴν ἡμέραν τοὺς λόγους μου ἐβδελύσσοντο, κατ᾽ ἐμοῦ πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν εἰς κακόν. Παροικήσουσι καὶ κατακρύψουσιν αὐτοὶ, τὴν πτέρναν μου φυλάξουσι· καθάπερ ὑπέμεινα τῇ ψυχῇ μου. Ὑπὲρ τοῦ μηθενὸς σώσεις αὐτοὺς ἐν ὀργῇ λαοὺς κατάξεις· ὁ Θεὸς τὴν ζωήν μου ἐξήγγειλά σοι, ἔθου τὰ δάκρυά μου ἐνώπιόν σου, ὡς καὶ ἐν τῇ ἐπαγγελίᾳ σου. Ἐπιστρέψουσιν οἱ ἐχθροί μου εἰς τὰ ὀπίσω, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλέσωμαί σε· ἰδοὺ ἔγνων ὅτι Θεός μου εἶ σύ. Ἐπὶ τῷ Θεῷ αἰνέσω ῥῆμα, ἐπὶ τῷ Κυρίῳ αἰνέσω λόγον. Ἐπὶ τῷ Θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσομαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος. Ἐν ἐμοὶ ὁ Θεὸς αἱ εὐχαὶ, ἃς ἀποδώσω αἰνέσεώς σου. Ὅτι ἐῤῥύσω τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, καὶ τοὺς πόδας μου ἐξ ὀλισθήματος, τοῦ εὐαρεστῆσαι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐν φωτὶ ζώντων.

# 56

Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ἐν τῷ αὐτὸν ἀποδιδράσκειν ἀπὸ προσώπου Σαοὺλ εἰς τὸ σπήλαιον. Ἐλέησον με ὁ Θεὸς, ἐλέησόν με, ὅτι ἐπὶ σοὶ πέποιθεν ἡ ψυχή μου, καὶ ἐν τῇ σκιᾷ τῶν πτερύγων σου ἐλπιῶ, ἕως οὗ παρέλθῃ ἡ ἀνομία. Κεκράξομαι πρὸς τὸν Θεὸν τὸν ὕψιστον τὸν Θεὸν τὸν εὐεργετήσαντά με· διάψαλμα. Ἐξαπέστειλεν ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἔσωσέ με, ἔδωκεν εἰς ὄνειδος τοὺς καταπατοῦντάς με· ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸ ἔλεος αὐτοῦ καὶ τὴν ἀλήθειαν αὐτοῦ, καὶ ἐῤῥύσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ μέσου σκύμνων· ἐκοιμήθην τεταραγμένος· υἱοὶ

ἀνθρώπων, οἱ ὀδόντες αὐτῶν, ὅπλον καὶ βέλη, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν, μάχαιρα ὀξεῖα. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ Θεὸς, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου. Παγίδας ἡτοίμασαν τοῖς ποσί μου, καὶ κατέκαμψαν τὴν ψυχήν μου· ὤρυξαν πρὸ προσώπου μου βόθρον, καὶ ἐνέπεσαν εἰς αὐτόν· διάψαλμα. Ἑτοίμη ἡ καρδία μου ὁ Θεὸς, ἑτοίμη ἡ καρδία μου, ᾄσομαι καὶ ψαλῶ. Ἐξεγέρθητι ἡ δόξα μου, ἐξεγέρθητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, ἐξεγερθήσομαι ὄρθρου. Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν λαοῖς Κύριε, ψαλῶ σοι ἐν ἔθνεσιν. Ὅτι ἐμεγαλύνθη ἕως τῶν οὐρανῶν τὸ ἔλεός σου, καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλήθειά σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ Θεὸς, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου.

# 57

Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν. Εἰ ἀληθῶς ἄρα δικαιοσύνην λαλεῖτε, εὐθεῖα κρίνετε οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων. Καὶ γὰρ ἐν καρδίᾳ ἀνομίας ἐργάζεσθε ἐν τῇ γῇ, ἀδικίαν αἱ χεῖρες ὑμῶν συμπλέκουσιν. Ἀπηλλοτριώθησαν οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ μήτρας, ἐπλανήθησαν ἀπὸ γαστρὸς, ἐλάλησαν ψευδῆ. Θυμὸς αὐτοῖς κατὰ τὴν ὁμοίωσιν τοῦ ὄφεως, ὡσεὶ ἀσπίδος κωφῆς, καὶ βυούσης τὰ ὦτα αὐτῆς, ἥτις οὐκ εἰσακούσεται φωνὴν ἐπᾳδόντων, φαρμάκου τε φαρμακευομένου παρὰ σοφοῦ. Ὁ Θεὸς συνέτριψε τοὺς ὀδόντας αὐτῶν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, τὰς μύλας τῶν λεόντων συνέθλασεν ὁ Κύριος. Ἐξουδενωθήσονται ὡς ὕδωρ διαπορευόμενον, ἐντενεῖ τὸ τόξον αὐτοῦ ἕως οὗ ἀσθενήσουσιν. Ὡσεὶ κηρὸς ὁ τακεῖς ἀνταναιρεθήσονται, ἔπεσε πῦρ, καὶ οὐκ εἶδον τὸν ἥλιον. Πρὸ τοῦ συνιέναι τὰς ἀκάνθας ὑμῶν τὴν ῥάμνον, ὡσεὶ

ζῶντας ὡσεὶ ἐν ὀργῇ καταπίεται ὑμᾶς. Εὐφρανθήσεται δίκαιος, ὅταν ἴδῃ ἐκδίκησιν ἀσεβῶν, τὰς χεῖρας αὐτοῦ νίψεται ἐν τῷ αἵματι τοῦ ἁμαρτωλοῦ. Καὶ ἐρεῖ ἄνθρωπος, εἰ ἄρα ἐστὶ καρπὸς τῷ δικαίῳ, ἄρα ἐστὶν ὁ Θεὸς κρίνων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ.

# 58

Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ὁπότε ἀπέστειλε Σαοὺλ, καὶ ἐφύλαξε τὸν οἶκον αὐτοῦ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. Ἐξελοῦ με ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου ὁ Θεὸς, καὶ ἐκ τῶν ἐπανισταμένων ἐπ’ ἐμὲ λύτρωσαί με. Ῥῦσαί με ἐκ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν, καὶ ἐξ ἀνδρῶν αἱμάτων σῶσόν με. Ὅτι ἰδοὺ ἐθήρευσαν τὴν ψυχήν μου, ἐπέθεντο ἐπ’ ἐμὲ κραταιοί· οὔτε ἡ ἀνομία μου, οὔτε ἡ ἁμαρτία μου Κύριε· Ανευ ἀνομίας ἔδραμον καὶ κατεύθυνα· ἐξεγέρθητι εἰς συνάντησίν μου, καὶ ἴδε. Καὶ σὺ Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, πρόσχες τοῦ ἐπισκέψασθαι πάντα τὰ ἔθνη, μὴ οἰκτειρήσῃς πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν· διάψαλμα. Ἐπιστρέψουσιν εἰς ἑσπέραν, καὶ λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυκλώσουσιν πόλιν. Ἰδοὺ ἀποφθέγξονται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ ῥομφαία ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν, ὅτι τίς ἤκουσε; Καὶ δὺ Κύριε ἐκγελάσῃ αὐτοὺς, ἐξουδενώσεις τάντα τὰ ἔθνη. Τὸ κράτος μου πρὸς σὲ φυλάξω, ὅτι σὺ ὁ Θεὸς ἀντιλήμπτωρ μου εἶ. Ὁ Θεός μου, τὸ ἔλεος αὐτοῦ προφθάσει με, ὁ Θεός μου δείξει μοι ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου. Μὴ ἀποκτείνῃς αὐτοὺς, μήποτε ἐπιλάθωνται τοῦ νόμου σου· διασκόρπισον αὐτοὺς ἐν τῇ δυνάμει σου, καὶ κατάγαγε αὐτοὺς ὁ ὑπερασπιστής μου Κύριε. Ἁμαρτίαν στόματος αὐτῶν, λόγον

χειλέων αὐτῶν, καὶ συλληφθήτωσαν ἐν τῇ ὑπερηφανίᾳ αὐτῶν· καὶ ἐξ ἀρᾶς καὶ ψεύδους διαγγελήσονται συντέλειαι, ἐν ὀργῇ συντελείας, καὶ οὐ μὴ ὑπάρξουσι· καὶ γνώσονται ὅτι ὁ Θεὸς τοῦ Ἰακὼβ δεσπόζει τῶν περάτων τῆς γῆς· διάψαλμα. Ἐπιστρέψουσιν εἰς ἑσπέραν, καὶ λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυκλώσουσι πόλιν· Αὐτοὶ διασκορπισθήσονται τοῦ φαγεῖν, ἐὰν δὲ μὴ χορτασθῶσι, καὶ γογγύσουσιν. Ἐγὼ δὲ ᾄσομαι τῇ δυνάμει σου, καὶ ἀγαλλιάσομαι τοπρωΐ τὸ ἔλεός σου, ὅτι ἐγενήθης ἀντιλήπτωρ μου καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου. Βοηθός μου, σοὶ ψαλῶ ὁ Θεός μου, ἀντιλήμπτωρ μου εἶ ὁ Θεός μου, τὸ ἔλεός μου.

# 59

Εἰς τὸ τέλος, τοῖς ἀλλοιωθησομένοις ἔτι, εἰς στηλογραφίαν τῷ Δαυὶδ εἰς διδαχὴν, ὁπότε ἐνεπύρισε τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας, καὶ τὴν Συρίαν Σοβὰλ, καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωὰβ, καὶ ἐπάταξε τὴν φάραγγα τῶν ἁλῶν, δώδεκα χιλιάδας. Ὁ Θεὸς ἀπώσω ἡμᾶς καὶ καθεῖλες ἡμᾶς, ὠργίσθης καὶ ᾠκτείρησας ἡμᾶς. Συνέσεισας τὴν γῆν καὶ συνετάραξας αὐτὴν, ἴασαι τὰ συντρίμματα αὐτῆς, ὅτι ἐσαλεύθη. Ἔδειξας τῷ λαῷ σου σκληρὰ, ἐπότισας ἡμᾶς οἶνον κατανύξεως. Ἔδωκας τοῖς φοβουμένοις σε σημείωσιν, τοῦ φυγεῖν ἀπὸ προσώπου τόξον· διάψαλμα. Ὅπως ἂν ῥυσθῶσιν οἱ ἀγαπητοί σου, σῶσον τῇ δεξιᾷ σου καὶ ἐπάκουσόν μου. Ὁ Θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ, ἀγαλλιάσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, καὶ τὴν κοιλάδα τῶν σκηνῶν διαμετρήσω. Ἐμός ἐστι Γαλαὰδ, καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆ, καὶ Ἐφραὶμ κραταίωσις τῆς κεφαλῆς μου· Ἰούδας βασιλεύς μου, Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου, ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν

ἐκτενῶ τὸ ὑπόδημά μου, ἐμοὶ ἀλλόφυλοι ὑπετάγησαν. Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν περιοχῆς; τίς ὁδηγήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας; Οὐχὶ σὺ ὁ Θεὸς, ὁ ἀπωσάμενος ἡμᾶς; καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ, ὁ Θεὸς ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν; Δὸς ἡμῖν βοήθειαν ἐκ θλίψεως, καὶ ματαία σωτηρία ἀνθρώπου. Ἐν τῷ Θεῷ ποιήσομεν δύναμιν, καὶ αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς θλίβοντας ἡμᾶς.

# 60

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις τῷ Δαυίδ. Εἰσάκουσον ὁ Θεὸς τῆς δεήσεώς μου, πρόσχες τῇ προσευχῇ μου. Ἀπὸ τῶν περάτων τῆς γῆς πρὸς σὲ ἐκέκραξα, ἐν τῷ ἀκηδιάσαι τὴν καρδίαν μου, ἐν πέτρᾳ ὕψωσάς με, ὁδήγησάς με, ὅτι ἐγενήθης ἐλπίς μου, πύργος ἰσχύος ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ. Παροικήσω ἐν τῷ σκηνώματί σου εἰς τοὺς αἰῶνας, σκεπασθήσομαι ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου· διάψαλμα. Ὅτι σὺ ὁ Θεὸς εἰσήκουσας τῶν προσευχῶν μου, ἔδωκας κληρονομίαν τοῖς φοβουμένοις τὸ ὄνομά σου. Ἡμέρας ἐφ’ ἡμέρας βασιλέως προσθήσεις, τὰ ἔτη αὐτοῦ ἕως ἡμέρας γενεᾶς καὶ γενεᾶς. Διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, ἔλεος καὶ ἀλήθειαν αὐτοῦ τίς ἐκζητήσει αὐτῶν; Οὕτως ψαγῶ τῷ ὀνόματί σου εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, τοῦ ἀποδοῦναί με τὰς εὐχάς μου ἡμέραν ἐξ ἡμέρας.

# 61

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Οὐχὶ τῷ Θεῷ

ὑποταγήσεται ἡ ψυχή μου; παρ᾽ αὐτοῦ γὰρ τὸ σωτήριόν μου. Καὶ γὰρ αὐτὸς Θεός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ μὴ σαλευθῶ ἐπὶ πλεῖον. Ἕως πότε ἐπιτίθεσθε ἐπ᾽ ἄνθρωπον; φονεύετε πάντες ὡς τοίχῳ κεκλιμένῳ καὶ φραγμῷ ὠσμένῳ. Πλὴν τὴν τιμήν μου ἐβουλεύσαντο ἀπώσασθαι· ἔδραμον ἐν δίψει· τῷ στόματι αὐτῶν εὐλόγουν, καὶ τῇ καρδίᾳ αὐτῶν κατηρῶντο. διάψαλμα. Πλὴν τῷ Θεῷ ὑποτάγηθι, ἡ ψυχή μου, ὅτι παρ᾽ αὐτοῦ ἡ ὑπομονή μου. Ὅτι αὐτὸς Θεός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ μὴ μεταναστεύσω. Ἐπὶ τῷ Θεῷ τὸ σωτήριόν μου, καὶ ἡ δόξα μου· ὁ Θεὸς τῆς βοηθείας μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἐπὶ τῷ Θεῷ. Ἐλπίσατε ἐπ᾽ αὐτὸν πᾶσα συναγωγὴ λαοῦ· ἐκχέετε ἐνώπιον αὐτοῦ τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι ὁ Θεὸς βοηθὸς ἡμῶν· διάψαλμα. Πλὴν μάταιοι οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, ψευδεῖς οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν ζυγοῖς τοῦ ἀδικῆσαι, αὐτοὶ ἐκ ματαιότητος ἐπιτοαυτό. Μὴ ἐλπίζετε ἐπ᾽ ἀδικίαν, καὶ ἐπὶ ἁρπάγματα μὴ ἐπιποθεῖτε· πλοῦτος ἐὰν ῥέῃ, μὴ προστίθεσθε καρδίαν. Ἅπαξ ἐλάλησεν ὁ Θεὸς, δύο ταῦτα ἤκουσα, ὅτι τὸ κράτος τοῦ Θεοῦ· καὶ σοῦ, Κύριε τὸ ἔλεος, ὅτι σὺ ἀποδώσεις ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

# 62

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ τῆς Ἰδουμαίας. Ὁ Θεὸς ὁ Θεός μου πρὸς σὲ ὀρθρίζω, ἐδίψησέ σοι ἡ ψυχή μου, ποσαπλῶς σοι ἡ σάρξ μου, ἐν γῇ ἐρήμῳ καὶ ἀβάτῳ καὶ ἀνύδρῳ, οὕτως ἐν τῷ ἁγίῳ ὤφθην σοι, τοῦ ἰδεῖν τὴν δύναμίν σου καὶ τὴν δόξαν σου. Ὅτι κρεῖσσον τὸ ἔλεός σου ὑπὲρ ζωὰς, τὰ χείλη μου ἐπαινέσουσί σε. Οὕτως εὐλογήσω σε ἐν τῇ ζωῇ μου, ἐν τῷ ὀνόματί

σου ἀρῶ τὰς χεῖράς μου. Ὡσεὶ στέατος καὶ πιότητος ἐμπλησθείη ἡ ψυχή μου, καὶ χείλη ἀγαλλιάσεως αἰνέσει τὸ ὄνομά σου. Εἰ ἐμνημόνευόν σου ἐπὶ τῆς στρωμνῆς μου, ἐν τοῖς ὄρθροις ἐμελέτων εἰς σέ. Ὅτι ἐγενήθης βοηθός μου, καὶ ἐν τῇ σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἀγαλλιάσομαι. Ἐκολλήθη ἡ ψυχή μου ὀπίσω σου, ἐμοῦ ἀντελάβετο ἡ δεξιά σου. Αὐτοὶ δὲ εἰς μάτην ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, εἰσελεύσονται εἰς τὰ κατώτατα τῆς γῆς, παραδοθήσονται εἰς χεῖρας ῥομφαίας, μερίδες ἀλωπέκων ἔσονται. Ὁ δὲ βασιλεὺς εὐφρανθήσεται ἐπὶ τῷ Θεῷ, ἐπαινεθήσεται πᾶς ὁ ὀμνύων ἐν αὐτῷ, ὅτι ἐνεφράγη στόμα λαλούντων ἄδικα.

# 63

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Εἰσάκουσον ὁ Θεὸς τῆς προσευχῆς μου ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς σὲ, ἀπὸ φόβου ἐχθροῦ ἐξελοῦ τὴν ψυχήν μου. Ἐσκέπασάς με ἀπὸ συστροφῆς πονηρευομένων, ἀπὸ πλήθους ἐργαζομένων ἀδικίαν· Οἵτινες ἠκόνησαν ὡς ῥομφαίαν τὰς γλώσσας αὐτῶν, ἐνέτειναν τόξον πρᾶγμα πικρὸν, τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν ἀποκρύφοις ἄμωμον, ἐξάπινα κατατοξεύσουσιν αὐτὸν, καὶ οὐ φοβηθήσονται. Ἐκραταίωσαν ἑαυτοῖς λόγον πονηρὸν, διηγήσαντο τοῦ κρύψαι παγίδας· εἶπαν, τίς ὄψεται αὐτούς; Ἐξηρεύνησαν ἀνομίαν, ἐξέλιπον ἐξερευνῶντες ἐξερευνήσει· προσελεύσεται ἄνθρωπος, καὶ καρδία βαθεῖα, καὶ ὑψωθήσεται ὁ Θεός· βέλος νηπίων ἐγενήθησαν αἱ πληγαὶ αὐτῶν, καὶ ἐξουθένησαν αὐτὸν αἱ γλῶσσαι αὐτῶν· ἐταράχθησαν πάντες οἱ θεωροῦντες αὐτοὺς, καὶ ἐφοβήθη πᾶς ἄνθρωπος· καὶ ἀνήγγειλαν τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰ ποιήματα αὐτοῦ συνῆκαν.

Εὐφρανθήσεται δίκαιος ἐν τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐλπιεῖ ἐπ’ αὐτόν· καὶ ἐπαινεθήσονται πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

# 64

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ᾠδή. Σοὶ πρέπει ὕμνος, ὁ Θεὸς ἐν Σιὼν, καὶ σοὶ ἀποδοθήσεται εὐχή. Εἰσάκουσον προσευχῆς μου, πρὸς σὲ πᾶσα σὰρξ ἥξει. Λόγοι ἀνόμων ὑπερδυνάμωσαν ἡμᾶς, καὶ τὰς ἀσεβείας ἡμῶν σὺ ἱλάσῃ. Μακάριος, ὃν ἐξελέξω καὶ προσελάβου, κατασκηνώσει ἐν ταῖς αὐλαῖς σου· πλησθησόμεθα ἐν τοῖς ἀγαθοῖς τοῦ οἴκου σου, ἅγιος ὁ ναός σου, θαυμαστὸς ἐν δικαιοσύνῃ. ἐπάκουσον ἡμῶν ὁ Θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν, ἡ ἐλπὶς πάντων τῶν περάτων τῆς γῆς, καὶ τῶν ἐν θαλάσσῃ μακράν· ἑτοιμάζων ὄρη ἐν τῇ ἰσχύϊ σου, περιεζωσμένος ἐν δυναστείᾳ· Ὁ συνταράσσων τὸ κῦτος τῆς θαλάσσης, ἦχους κυμάτων αὐτῆς. Ταραχθήσονται τὰ ἔθνη, καὶ φοβηθήσονται οἱ κατοικοῦντες τὰ πέρατα ἀπὸ τῶν σημείων σου· ἐξόδους πρωΐας καὶ ἑσπέρας τέρψεις. Ἐπεσκέψω τὴν γῆν καὶ ἐμέθυσας αὐτὴν, ἐπλήθυνας τοῦ πλουτίσαι αὐτήν· ὁ ποταμὸς τοῦ Θεοῦ ἐπληρώθη ὑδάτων· ἡτοίμασας τὴν τροφὴν αὐτῶν, ὅτι οὕτως ἡ ἑτοιμασία. Τοὺς αὔλακας αὐτῆς μέθυσον, πλήθυνον τὰ γεννήματα αὐτῆς, ἐν ταῖς σταγόσιν αὐτῆς εὐφρανθήσεται ἀνατέλλουσα. Εὐλογήσεις τὸν στέφανον τοῦ ἐνιαυτοῦ τῆς χρηστότητός σου, καὶ τὰ πεδία σου πλησθήσονται πιότητος. Πιανθήσεται τὰ ὄρη τῆς ἐρήμου, καὶ ἀγαλλίασιν οἱ βουνοὶ περιζώσονται. Ἐνεδύσαντο οἱ κριοὶ τῶν προβάτων, καὶ αἱ κοιλάδες πληθυνοῦσι σῖτον, κεκράξονται, καὶ γὰρ ὑμνήσουσιν.

# 65

Εἰς τὸ τέλος, ᾠδὴ ψαλμοῦ ἀναστάσεως. Ἀλαλάξατε τῷ Θεῷ, πᾶσα ἡ γῆ, ψάλατε δὴ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ, δότε δόξαν αἰνέσει αὐτοῦ. Εἴπατε τῷ Θεῷ ὡς φοβερὰ τὰ ἔργα σου; ἐν τῷ πλήθει τῆς δυνάμεώς σου ψεύσονταί σε οἱ ἐχθροί σου. Πᾶσα ἡ γῆ προσκυνησάτωσάν σοι, καὶ ψαλάτωσάν σοι, ψαλάτωσαν τῷ ὀνόματί σου· διάψαλμα. Δεῦτε καὶ ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ, φοβερὸς ἐν βουλαῖς ὑπὲρ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων. Ὁ μεταστρέφων τὴν θάλασσαν εἰς ξηρὰν, ἐν ποταμῷ διελεύσονται ποδί· ἐκεῖ εὐφρανθησόμεθα ἐπ’ αὐτῷ, τῷ δεσπόζοντι ἐν τῇ δυναστείᾳ αὐτοῦ τοῦ αἰῶνος· οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ἔθνη ἐπιβλέπουσιν, οἱ παραπικραίνοντες μὴ ὑψούσθωσαν ἐν ἑαυτοῖς· διάψαλμα. Εὐλογεῖτε ἔθνη τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ ἀκουτίσατε τὴν φωνὴν τῆς αἰνέσεως αὐτοῦ, τοῦ θεμένου τὴν ψυχήν μου εἰς ζωὴν, καὶ μὴ δόντος εἰς σάλον τοὺς πόδας μου. Ὅτι ἐδοκίμασας ἡμᾶς ὁ Θεὸς, ἐπύρωσας ἡμᾶς ὡς πυροῦται τὸ ἀργύριον. Εἰσήγαγες ἡμᾶς εἰς τὴν παγίδα, ἔθου θλίψεις ἐπὶ τὸν νῶτον ἡμῶν, ἐπεβίβασας ἀνθρώπους ἐπὶ τὰς κεφαλὰς ἡμῶν· διήλθομεν διὰ πυρὸς καὶ ὕδατος, καὶ ἐξήγαγες ἡμᾶς εἰς ἀναψυχήν. Εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου ἐν ὁλοκαυτώμασιν, ἀποδώσω σοι τὰς εὐχάς μου, ἃς διέστειλε τὰ χείλη μου, καὶ ἐλάλησε τὸ στόμα μου ἐν τῇ θλίψει μου. Ὁλοκαυτώματα μεμυελωμένα ἀνοίσω σοι μετὰ θυμιάματος καὶ κριῶν, ποιήσω σοι βόας μετὰ χιμάρων· διάψαλμα. Δεῦτε ἀκούσατε, καὶ διηγήσομαι, πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν Θεὸν, ὅσα ἐποίησε τῇ ψυχῇ μου. Πρὸς αὐτὸν τῷ στόματί μου ἐκέκραξα, καὶ ὕψωσα ὑπὸ τὴν γλῶσσάν μου. Ἀδικίαν εἰ ἐθεώρουν ἐν καρδίᾳ μου,

μὴ εἰσακουσάτω Κύριος. Διὰ τοῦτο εἰσήκουσέ μου ὁ Θεὸς, προσέσχε τῇ φωνῇ τῆς προσευχῆς μου. Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς, ὃς οὐκ ἀπέστησε τὴν προσευχήν μου, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἀπ’ ἐμοῦ.

# 66

Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ὁ Θεὸς οἰκτειρήσαι ἡμᾶς, καὶ εὐλογήσαι ἡμᾶς, ἐπιφάναι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐφ’ ἡμᾶς· διάψαλμα. Τοῦ γνῶναι ἐν τῇ γῇ τὴν ὁδόν σου, ἐν πᾶσιν ἔθνεσι τὸ σωτήριόν σου. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ ὁ Θεὸς, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάντες. Εὐφρανθήτωσαν καὶ ἀγαλλιάσθωσαν ἔθνη, ὅτι κρινεῖς λαοὺς ἐν εὐθύτητι, καὶ ἔθνη ἐν τῇ γῇ ὁδηγήσεις· διάψαλμα. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ, ὁ Θεὸς, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάντες. Γῆ ἔδωκε τὸν καρπὸν αὐτῆς· εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ Θεὸς, ὁ Θεὸς ἡμῶν, εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ Θεὸς, καὶ φοβηθήτωσαν αὐτὸν πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς.

# 67

Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ ψαλμὸς ᾠδῆς. Αναστήτω ὁ Θεὸς, καὶ διασκορπισθήτωσαν οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ, καὶ φυγέτωσαν οἱ μισοῦντες αὐτὸν ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. Ὡς ἐκλείπει καπνὸς, ἐκλιπέτωσαν· ὡς τήκεται κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς, οὕτως ἀπόλοιντο οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ. Καὶ οἱ δίκαιοι εὐφρανθήτωσαν· ἀγαλλιάσθωσαν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, τερφθήτωσαν ἐν εὐφροσύνῃ. Ἄσατε τῷ Θεῷ, ψάλατε τῷ ὀνόματι

αὐτοῦ, ὁδοποιήσατε τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ δυσμῶν, Κύριος ὄνομα αὐτῷ, καὶ ἀγαλλιᾶσθε ἐνώπιον αὐτοῦ. ταραχθήσονται ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, τοῦ πατρὸς τῶν ὀρφανῶν, καὶ κριτοῦ τῶν χηρῶν, ὁ Θεὸς ἐν τόπῳ ἁγίῳ αὐτοῦ. Ὁ Θεὸς κατοικίζει μονοτρόπους ἐν οἴκῳ, ἐξάγων πεπεδημένους ἐν ἀνδρείᾳ· ὁμοίως τοὺς παραπικραίνοντας, τοὺς κατοικοῦντας ἐν τάφοις. Ὁ Θεὸς, ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαί σε ἐνώπιον τοῦ λαοῦ σου, ἐν τῷ διαβαίνειν σε τὴν ἔρημον· διάψαλμα· Γῆ ἐσείσθη, καὶ γὰρ οἱ οὐρανοὶ ἔσταξαν ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ τοῦ Σινὰ, ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ. Βροχὴν ἐκούσιον ἀφοριεῖς ὁ Θεὸς τῇ κληρονομίᾳ σου· καὶ ἠσθένησε, σὺ δὲ κατηρτίσω αὐτήν. Τὰ ζῶά σου κατοικοῦσιν ἐν αὐτῇ, ἡτοίμασας ἐν τῇ χρηστότητί σου τῷ πτωχῷ. Ὁ Θεὸς Κύριος δώσει ῥῆμα τοῖς εὐαγγελιζομένοις δυνάμει πολλῇ, ὁ βασιλεὺς τῶν δυνάμεων τοῦ ἀγαπητοῦ, τοῦ ἀγαπητοῦ, καὶ ὡραιότητι τοῦ οἴκου διελέσθαι σκῦλα. Ἐὰν κοιμηθῆτε ἀναμέσον τῶν κλήρων, πτέρυγες περιστερᾶς περιηργυρωμέναι, καὶ τὰ μετάφρενα αὐτῆς ἐν χλωρότητι χρυσίου. Ἐν τῷ διαστέλλειν τὴν ἐπουράνιον βασιλεῖς ἐπ’ αὐτῆς, χιονωθήσονται ἐν Σελμών. Ὄρος τοῦ Θεοῦ ὄρος πῖον, ὄρος τετυρωμένον, ὄρος πῖον. Ἱνατί ὑπολαμβάνετε ὄρη τετυρωμένα; τὸ ὄρος ὃ εὐδόκησεν ὁ Θεὸς κατοικεῖν ἐν αὐτῷ· καὶ γὰρ ὁ Κύριος κατασκηνώσει εἰς τέλος. Τὸ ἅρμα τοῦ Θεοῦ μυριοπλάσιον, χιλιάδες εὐθηνούντων· Κύριος ἐν αὐτοῖς ἐν Σινὰ ἐν τῷ ἁγίῳ. Ἀναβὰς εἰς ὕψος, ᾐχμαλώτευσας αἰχμαλωσίαν· ἔλαβες δόματα ἐν ἀνθρώπῳ, καὶ γὰρ ἀπειθοῦντες τοῦ κατασκηνῶσαι. Κύριος ὁ Θεὸς εὐλογητὸς, εὐλογητὸς Κύριος ἡμέραν καθ’ ἡμέραν, καὶ κατευοδώσει ἡμῖν ὁ Θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν· διάψαλμα. Ὁ Θεὸς ἡμῶν, ὁ Θεὸς τοῦ σώζειν, καὶ τοῦ Κυρίου αἱ διέξοδοι τοῦ θανάτου. Πλὴν ὁ Θεὸς συνθλάσει κεφαλὰς ἐχθρῶν αὐτοῦ,

κορυφὴν τριχὸς διαπορευομένων ἐν πλημμελείαις αὐτῶν. Εἶπε Κύριος, ἐκ Βασὰν ἐπιστρέψω, ἐπιστρέψω ἐν βυθοῖς θαλάσσης. Ὅπως ἂν βαφῇ ὁ ποῦς σου ἐν αἵματι, ἡ γλῶσσα τῶν κυνῶν σου ἐξ ἐχθρῶν παρ' αὐτοῦ. Ἐθεωρήθησαν αἱ πορεῖαί σου ὁ Θεὸς, αἱ πορεῖαι τοῦ Θεοῦ μου τοῦ βασιλέως τοῦ ἐν τῷ ἁγίῳ. Προέφθασαν ἄρχοντες ἐχόμενοι ψαλλόντων, ἐν μέσῳ νεανίδων τυμπανιστριῶν. Ἐν ἐκκλησίαις εὐλογεῖτε τὸν Θεὸν, τὸν Κύριον ἐκ πηγῶν Ἰσραήλ. Ἐκεῖ Βενιαμὶν νεώτερος ἐν ἐκστάσει, ἄρχοντες Ἰούδα ἡγεμόνες αὐτῶν, ἄρχοντες Ζαβουλὼν, ἄρχοντες Νεφθαλί. Ἔντειλαι ὁ Θεὸς τῇ δυνάμει σου, δυνάμωσον ὁ Θεὸς τοῦτο, ὃ κατηρτίσω ἐν ἡμῖν. Ἀπὸ τοῦ ναοῦ σου ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, σοὶ οἴσουσι βασιλεῖς δῶρα. Ἐπιτίμησον τοῖς θηρίοις τοῦ καλάμου· ἡ συναγωγὴ τῶν ταύρων ἐν ταῖς δαμάλεσι τῶν λαῶν, τοῦ μὴ ἀποκλεισθῆναι τοὺς δεδοκιμασμένους τῷ ἀργυρίῳ· διασκόρπισον ἔθνη τὰ τοὺς πολέμους θέλοντα. Ἥξουσι πρέσβεις ἐξ Αἰγύπτου, Αἰθιοπία προφθάσει χεῖρα αὐτῆς τῷ Θεῷ. Αἱ βασιλεῖαι τῆς γῆς ᾄσατε τῷ Θεῷ, ψάλατε τῷ Κυρίῳ. διάψαλμα. Ψάλατε τῷ Θεῷ τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ τὸν οὐρανὸν τοῦ οὐρανοῦ κατὰ ἀνατολὰς, ἰδοὺ δώσει ἐν τῇ φωνῇ αὐτοῦ φωνὴν δυνάμεως. Δότε δόξαν τῷ Θεῷ, ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἡ μεγαλοπρέπεια αὐτοῦ, καὶ ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐν ταῖς νεφέλαις. Θαυμαστὸς ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ, ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, αὐτὸς δώσει δύναμιν καὶ κραταίωσιν τῷ λαῷ αὐτοῦ· εὐλογητὸς ὁ Θεός.

# 68

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων, τῶ Δαυίδ. Σώσον με ὁ

Θεὸς, ὅτι εἰσήλθοσαν ὕδατα ἕως ψυχῆς μου. Ἐνεπάγην εἰς ἰλὺν βυθοῦ, καὶ οὐκ ἔστιν ὑπόστασις· ἦλθον εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης, καὶ καταιγὶς κατεπόντισέ με. Ἐκοπίασα κράζων, ἐβραγχίασεν ὁ λάρυγξ μου, ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοί μου ἀπὸ τοῦ ἐλπίζειν με ἐπὶ τὸν Θεόν μου. Ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ τὰς τρίχας τῆς κεφαλῆς μου οἱ μισοῦντές με δωρεάν· ἐκραταιώθησαν οἱ ἐχθροί μου οἱ ἐκδιώκοντές με ἀδίκως· ἃ οὐχ ἥρπασα, τότε ἀπετίννυον. Ὁ Θεὸς σὺ ἔγνως τὴν ἀφροσύνην μου, καὶ αἱ πλημμελειαί μου ἀπὸ σοῦ οὐκ ἐκρύβησαν. Μὴ αἰσχυνθείησαν ἐπ’ ἐμὲ οἱ ὑπομένοντές σε Κύριε τῶν δυνάμεων, μὴ ἐντραπείησαν ἐπ’ ἐμὲ οἱ ζητοῦντές σε ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραήλ. Ὅτι ἕνεκά σου ὑπήνεγκα ὀνειδισμὸν, ἐκάλυψεν ἐντροπὴ τὸ πρόσωπόν μου. Ἀπηλλοτριωμένος ἐγενήθην τοῖς ἀδελφοῖς μου, καὶ ξένος τοῖς υἱοῖς τῆς μητρός μου· ὅτι ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου κατάφαγέ με, καὶ οἱ ὀνειδισμοὶ τῶν ὀνειδιζόντων σε ἐπέπεσον ἐπ’ ἐμέ. Καὶ συνέκαμψα ἐν νηστείᾳ τὴν ψυχήν μου, καὶ ἐγενήθη εἰς ὀνειδισμοὺς ἐμοί. Καὶ ἐθέμην τὸ ἔνδυμά μου σάκκον, καὶ ἐγενόμην αὐτοῖς εἰς παραβολήν. Κατ’ ἐμοῦ ἠδολέσχουν οἱ καθήμενοι ἐν πύλῃ, καὶ εἰς ἐμὲ ἔψαλλον οἱ πίνοντες τὸν οἶνον. Ἐγὼ δὲ τῇ προσευχῇ μου πρὸς σὲ Κύριε, καιρὸς εὐδοκίας ὁ Θεός· ἐν τῷ πλήθει τοῦ ἐλέους σου ἐπάκουσόν μου, ἐν ἀληθείᾳ τῆς σωτηρίας σου. Σῶσόν με ἀπὸ πηλοῦ, ἵνα μὴ ἐνπαγῶ· ῥυσθείην ἐκ τῶν μισούντων με, καὶ ἐκ τοῦ βάθους τῶν ὑδάτων. Μή με καταποντισάτω καταιγὶς ὕδατος, μηδὲ καταπιέτω με βυθὸς, μηδὲ συνσχέτω ἐπ’ ἐμὲ φρέαρ τὸ στόμα αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου Κύριε, ὅτι χρηστὸν τὸ ἔλεός σου, κατὰ τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν σου ἐπίβλεψον ἐπ’ ἐμε. Καὶ μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπὸ τοῦ παιδός σου· ὅτι θλίβομαι, ταχὺ ἐπάκουσόν μου. Πρόσχες τῇ ψυχῇ μου, καὶ λύτρωσαι αὐτὴν, ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου ῥῦσαί με. Σὺ γὰρ

γινώσκεις τὸν ὀνειδισμόν μου, καὶ τὴν αἰσχύνην μου, καὶ τὴν ἐντροπήν μου· ἐναντίον σου πάντες οἱ θλίβοντές με. Ὀνειδισμὸν προσεδόκησεν ἡ ψυχή μου καὶ ταλαιπωρίαν· καὶ ὑπέμεινα συλλυπούμενον, καὶ οὐχ ὑπῆρξε, καὶ παρακαλοῦντα, καὶ οὐχ εὗρον. Καὶ ἔδωκαν εἰς τὸ βρῶμά μου χολὴν, καὶ εἰς τὴν δίψαν μου ἐπότισάν με ὄξος. Γενηθήτω ἡ τράπεζα αὐτῶν ἐνώπιον αὐτῶν εἰς παγίδα, καὶ εἰς ἀνταπόδοσιν, καὶ εἰς σκάνδαλον. Σκοτισθήτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν τοῦ μὴ βλέπειν, καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διαπαντὸς σύγκαμψον. Ἔκχεον ἐπ’ αὐτοὺς τὴν ὀργήν σου, καὶ ὁ θυμὸς τῆς ὀργῆς σου καταλάβοι αὐτούς. Γενηθήτω ἡ ἔπαυλις αὐτῶν ἠρημωμένη, καὶ ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν μὴ ἔστω ὁ κατοικῶν· ὅτι ὃν σὺ ἐπάταξας, αὐτοὶ κατεδίωξαν, καὶ ἐπὶ τὸ ἄλγος τῶν τραυμάτων μου προσέθηκαν. Πρόσθες ἀνομίαν ἐπὶ τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ μὴ εἰσελθέτωσαν ἐν δικαιοσύνῃ σου. Ἐξαλειφθήτωσαν ἐκ βίβλου ζώντων, καὶ μετὰ δικαίων μὴ γραφήτωσαν. Πτωχὸς καὶ ἀλγῶν εἰμι ἐγὼ, καὶ ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου σου ἀντελάβετό μου. Αἰνέσω τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ μου μετ’ ᾠδῆς, μεγαλυνῶ αὐτὸν ἐν αἰνέσει· καὶ ἀρέσει τῷ Θεῷ ὑπὲρ μόσχον νέον κέρατα ἐκφέροντα καὶ ὁπλάς. Ἰδέτωσαν πτωχοὶ καὶ εὐφρανθήτωσαν· ἐκζητήσατε τὸν Θεὸν, καὶ ζήσεσθε. Ὅτι εἰσήκουσε τῶν πενήτων ὁ Κύριος, καὶ τοὺς πεπεδημένους αὐτοῦ οὐκ ἐξουδένωσεν. Αἰνεσάτωσαν αὐτὸν οἱ οὐρανοὶ καὶ ἡ γῆ, θάλασσα καὶ πάντα τὰ ἕρποντα ἐν αὐτοῖς. Ὅτι ὁ Θεὸς σώσει τὴν Σιὼν, καὶ οἰκοδομηθήσονται αἱ πόλεις τῆς Ἰουδαίας, καὶ κατοικήσουσιν ἐκεῖ, καὶ κληρονομήσουσιν αὐτήν. Καὶ τὸ σπέρμα τῶν δούλων αὐτοῦ καθέξουσιν αὐτὴν, καὶ οἱ ἀγαπῶντες τὸ ὄνομα αὐτοῦ κατασκηνώσουσιν ἐν αὐτῇ.

# 69

Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ εἰς ἀνάμνησιν, εἰς τὸ σῶσαί με Κύριον. Ὁ Θεὸς εἰς τὴν βοήθειάν μου πρόσχες. Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου, ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ καταισχυνθείησαν οἱ βουλόμενοί μοι κατά· Ἀποστραφείησαν παραυτίκα αἰσχυνόμενοι οἱ λέγοντές μοι, εὖγε, εὖγε. Ἀγαλλιάσθωσαν καὶ εὐφρανθήτωσαν ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε, καὶ λεγέτωσαν διαπαντὸς, μεγαλυνθήτω ὁ Θεὸς, οἱ ἀγαπῶντες τὸ σωτήριόν σου. Ἐγὼ δὲ πτωχὸς καὶ πένης, ὁ Θεὸς βοήθησόν μοι· βοηθός μου, καὶ ῥύστης μου εἶ σὺ, Κύριε μὴ χρονίσῃς.

# 70

Τῷ Δαυὶδ υἱῶν Ἰωναδὰβ, καὶ τῶν πρώτων αἰχμαλωτισθέντων. Ἐπὶ σοὶ Κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί με καὶ ἐξελοῦ με, κλῖνον πρὸς μὲ τὸ οὖς σου καὶ σῶσόν με. Γενοῦ μοι εἰς Θεὸν ὑπερασπιστὴν, καὶ εἰς τόπον ὀχυρὸν τοῦ σῶσαί με, ὅτι στερέωμά μου καὶ καταφυγή μου εἶ σύ. Ὁ Θεός μου ῥῦσαί με ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλοῦ, ἐκ χειρὸς παρανομοῦντος καὶ ἀδικοῦντος. Ὅτι σὺ εἶ ἡ ὑπομονή μου Κύριε, Κύριε ἡ ἐλπίς μου ἐκ νεότητός μου· Ἐπὶ σὲ ἐπεστηρίχθην ἀπὸ γαστρὸς, ἐκ κοιλίας μητρός μου σύ μου εἶ σκεπαστής. ἐν σοὶ ἡ ὕμνησίς μου διαπαντός. Ὡσεὶ τέρας ἐγενήθην τοῖς πολλοῖς, καὶ σὺ βοηθὸς κραταιός. Πληρωθήτω τὸ στόμα μου αἰνέσεως, ὅπως ὑμνήσω τὴν δόξαν σου, ὅλην τὴν ἡμέραν τὴν μεγαλοπρέπειάν σου. Μὴ ἀποῤῥίψῃς με εἰς

καιρὸν γήρους, ἐν τῷ ἐκλείπειν τὴν ἰσχύν μου μὴ ἐγκαταλίπῃς με. Ὅτι εἶπαν οἱ ἐχθροί μου ἐμοὶ, καὶ οἱ φυλάσσοντες τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύσαντο ἐπιτοαυτὸ, λέγοντες, ὁ Θεὸς ἐγκατέλιπεν αὐτὸν, καταδιώξατε καὶ καταλάβετε αὐτὸν, ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ ῥυόμενος. Ὁ Θεὸς μὴ μακρύνῃς ἀπ' ἐμοῦ, ὁ Θεός μου εἰς τὴν βοήθειάν μου πρόσχες. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἐκλιπέτωσαν οἱ ἐνδιαβάλλοντες τὴν ψυχήν μου, περιβαλλέσθωσαν αἰσχύνην καὶ ἐντροπὴν οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι. Ἐγὼ δὲ διαπαντὸς ἐλπιῶ, καὶ προσθήσω ἐπὶ πᾶσαν τὴν αἴνεσίν σου. Τὸ στόμα μου ἐξαγγελεῖ τὴν δικαιοσύνην σου, ὅλην τὴν ἡμέραν τὴν σωτηρίαν σου· ὅτι οὐκ ἔγνων πραγματείας. Εἰσελεύσομαι ἐν δυναστείᾳ Κυρίου, Κύριε μνησθήσομαι τῆς δικαιοσύνης σου μόνου. Ἐδίδαξας με ὁ Θεὸς ἐκ νεότητός μου, καὶ μέχρι νῦν ἀπαγγελῶ τὰ θαυμάσιά σου, καὶ ἕως γήρους καὶ πρεσβείου· ὁ Θεὸς μὴ ἐγκαταλίπῃς με, ἕως ἂν ἀπαγγείλω τὸν βραχίονά σου πάσῃ τῇ γενεᾷ τῇ ἐρχομένῃ· Τὴν δυναστείαν σου, καὶ τὴν δικαιοσύνην σου ὁ Θεὸς ἕως ὑψίστων, ἃ ἐποίησας μεγαλεῖα· ὁ Θεὸς τίς ὅμοιός σοι; Ὅσας ἔδειξάς μοι θλίψεις πολλὰς καὶ κακάς; καὶ ἐπιστρέψας ἐζωοποίησάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀβύσσων τῆς γῆς πάλιν ἀνήγαγές με. Ἐπλεόνασας τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ ἐπιστρέψας παρεκάλεσάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀβύσσων τῆς γῆς πάλιν ἀνήγαγές με. Καὶ γὰρ ἐγὼ ἐξομολογήσομαί σοι ἐν σκεύει ψαλμοῦ τὴν ἀλήθειάν σου ὁ Θεὸς, ψαλῶ σοι ἐν κιθάρᾳ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ. Ἀγαλλιάσονται τὰ χείλη μου ὅταν ψάλω σοι, καὶ ἡ ψυχή μου ἣν ἐλυτρώσω. Ἔτι δὲ καὶ ἡ γλῶσσά μου ὅλην τὴν ἡμέραν μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, ὅταν αἰσχυνθῶσι καὶ ἐντραπῶσιν οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι.

# 71

Εἰς Σαλωμών. Ὁ Θεὸς τὸ κρίμα σου τῷ βασιλεῖ δὸς, καὶ τὴν δικαιοσύνην σου τῷ υἱῷ τοῦ βασιλέως· κρίνειν τὸν λαόν σου ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ τοὺς πτωχούς σου ἐν κρίσει. Ἀναλαβέτω τὰ ὄρη εἰρήνην τῷ λαῷ σου, καὶ οἱ βουνοί· ἐν δικαιοσύνῃ κρινεῖ τοὺς πτωχοὺς τοῦ λαοῦ, καὶ σώσει τοὺς υἱοὺς τῶν πενήτων· καὶ ταπεινώσει συκοφάντην, καὶ συμπαραμενεῖ τῷ ἡλίῳ, καὶ πρὸ τῆς σελήνης γενεὰς γενεῶν. Καταβήσεται ὡς ὑετὸς ἐπὶ πόκον, καὶ ὡσεὶ σταγόνες στάζουσαι ἐπὶ τὴν γῆν. Ἀνατελεῖ ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ δικαιοσύνη, καὶ πλῆθος εἰρήνης ἕως οὗ ἀνταναιρεθῇ ἡ σελήνη. Καὶ κατακυριεύσει ἀπὸ θαλάσσης ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ ποταμοῦ ἕως περάτων τῆς οἰκουμένης. Ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται Αἰθίοπες, καὶ οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ χοῦν λείξουσι. Βασιλεῖς Θαρσὶς καὶ αἱ νῆσοι δῶρα προσοίσουσι, βασιλεῖς Ἀράβων καὶ Σαβὰ δῶρα προσάξουσι. Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ πάντες οἱ βασιλεῖς, πάντα τὰ ἔθνη δουλεύσουσιν αὐτῷ. Ὅτι ἐῤῥύσατο πτωχὸν ἐκ δυνάστου, καὶ πένητα ᾧ οὐχ ὑπῆρχε βοηθός. Φείσεται πτωχοῦ καὶ πένητος, καὶ ψυχὰς πένητων σώσει. Ἐκ τόκου καὶ ἐξ ἀδικίας λυτρώσεται τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ ἔντιμον τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ ζήσεται, καὶ δοθήσεται αὐτῷ ἐκ τοῦ χρυσίου τῆς Ἀραβίας, καὶ προσεύξονται περὶ αὐτοῦ διαπαντός· ὅλην τὴν ἡμέραν εὐλογήσουσιν αὐτόν. Ἔσται στήριγμα ἐν τῇ γῇ ἐπ’ ἄκρων τῶν ὀρέων· ὑπεραρθήσεται ὑπὲρ τὸν Λίβανον ὁ καρπὸς αὐτοῦ, καὶ ἐξανθήσουσιν ἐκ πόλεως ὡσεὶ χόρτος τῆς γῆς. Ἔστω τὸ ὄνομα αὐτοῦ εὐλογημένον εἰς τοὺς αἰῶνας, πρὸ τοῦ ἡλίου διαμενεῖ τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ εὐλογηθήσονται ἐν αὐτῷ πᾶσαι αἱ φυλαὶ τῆς

γῆς· πάντα τὰ ἔθνη μακαριοῦσιν αὐτόν. Εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, ὁ ποιῶν θαυμάσια μόνος, καὶ εὐλογητὸν τὸ ὄνομα τῆς δόξης αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς αἰῶνα τοῦ αἰῶνος· καὶ πληρωθήσεται τῆς δόξης αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ. γένοιτο, γένοιτο. Ἐξέλιπον οἱ ὕμνοι Δαυὶδ τοῦ υἱοῦ Ἰεσσαί.

# 72

Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Ὡς ἀγαθὸς ὁ Θεὸς τῷ Ἰσραὴλ, τοῖς εὐθέσι καρδίᾳ. Ἐμοῦ δὲ παρὰ μικρὸν ἐσαλεύθησαν οἱ πόδες, παρ’ ὀλίγον ἐξεχύθη τὰ διαβήματά μου. Ὅτι ἐζήλωσα ἐπὶ τοῖς ἀνόμοις, εἰρήνην ἁμαρτωλῶν θεωρῶν. Ὅτι οὐκ ἔστιν ἀνάνευσις ἐν τῷ θανάτῳ αὐτῶν, καὶ στερέωμα ἐν τῇ μάστιγι αὐτῶν. Ἐν κόποις ἀνθρώπων οὐκ εἰσὶ, καὶ μετὰ ἀνθρώπων οὐ μαστιγωθήσονται. Διὰ τοῦτο ἐκράτησεν αὐτοὺς ἡ ὑπερηφανία, περιεβάλοντο ἀδικίαν καὶ ἀσέβειαν αὐτῶν. Ἐξελεύσεται ὡς ἐκ στέατος ἡ ἀδικία αὐτῶν· διῆλθον εἰς διάθεσιν καρδίας. Διενοήθησαν, καὶ ἐλάλησαν ἐν πονηρίᾳ, ἀδικίαν εἰς τὸ ὕψος ἐλάλησαν. Ἔθεντο εἰς οὐρανὸν τὸ στόμα αὐτῶν, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν διῆλθεν ἐπὶ τῆς γῆς. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψει ὁ λαός μου ἐνταῦθα, καὶ ἡμέραι πλήρεις εὑρεθήσονται ἐν αὐτοῖς. Καὶ εἶπαν, πῶς ἔγνω ὁ Θεὸς, καὶ εἰ ἔστι γνῶσις ἐν τῷ ὑψίστῳ; Ἰδοὺ οὗτοι οἱ ἁμαρτωλοὶ καὶ εὐθηνοῦντες εἰς τὸν αἰῶνα, κατέσχον πλούτου. Καὶ εἶπα, ἄρα ματαίως ἐδικαίωσα τὴν καρδίαν μου, καὶ ἐνιψάμην ἐν ἀθώοις τὰς χεῖράς μου· Καὶ ἐγενόμην μεμαστιγωμένος ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ ὁ ἔλεγχός μου εἰς τὰς πρωΐας. Εἰ ἔλεγον, διηγήσομαι οὕτως, ἰδοὺ τῇ γενεᾷ τῶν υἱῶν σου ἠσυνθέτηκα. Καὶ ὑπέλαβον τοῦ γνῶναι, τοῦτο κόπος ἐστὶν

ἐναντίον μου, ἕως εἰσέλθω εἰς τὸ ἁγιαστήριον τοῦ Θεοῦ, συνῶ εἰς τὰ ἔσχατα. Πλὴν διὰ τὰς δολιότητας ἔθου αὐτοῖς, κατέβαλες αὐτοὺς ἐν τῷ ἐπαρθῆναι. Πῶς ἐγένοντο εἰς ἐρήμωσιν; ἐξάπινα ἐξέλιπον, ἀπώλοντο διὰ τὴν ἀνομίαν αὐτῶν. Ὡσεὶ ἐνύπνιον ἐξεγειρομένου, Κύριε ἐν τῇ πόλει σου τὴν εἰκόνα αὐτῶν ἐξουδενώσεις. Ὅτι ηὐφράνθη ἡ καρδία μου, καὶ οἱ νεφροί μου ἠλλοιώθησαν. Κἀγὼ ἐξουδενωμένος, καὶ οὐκ ἔγνων, κτηνώδης ἐγενόμην παρὰ σοὶ, κἀγὼ διαπαντὸς μετὰ σου· ἐκράτησας τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐν τῇ βουλῇ σου ὡδήγησάς με, καὶ μετὰ δόξης προσελάβου με. Τί γάρ μοι ὑπάρχει ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ παρὰ σοῦ τί ἠθέλησα ἐπὶ τῆς γῆς; Ἐξέλιπεν ἡ καρδία μου καὶ ἡ σάρξ μου, ὁ Θεὸς τῆς καρδίας μου, καὶ ἡ μερίς μου ὁ Θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι ἰδοὺ οἱ μακρύνοντες ἑαυτοὺς ἀπὸ σοῦ, ἀπολοῦνται· ἐξωλόθρευσας πάντα τὸν πορνεύοντα ἀπὸ σοῦ. Ἐμοὶ δὲ τὸ προσκολλᾶσθαι τῷ Θεῷ ἀγαθόν ἐστι, τίθεσθαι ἐν τῷ Κυρίῳ τὴν ἐλπίδα μου· τοῦ ἐξαγγεῖλαι πάσας τὰς αἰνέσεις σου ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς Σιών.

# 73

Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. Ἱνατί ἀπόσω ὁ Θεὸς εἰς τέλος; ὠργίσθη ὁ θυμός σου ἐπὶ πρόβατα νομῆς σου; Μνήσθητι τῆς συναγωγῆς σου ἧς ἐκτήσω ἀπ’ ἀρχῆς· ἐλυτρώσω ῥάβδον κληρονομίας σου· ὄρος Σιὼν τοῦτο ὃ κατεσκήνωσας ἐν αὐτῷ. Ἔπαρον τὰς χεῖράς σου ἐπὶ τὰς ὑπερηφανίας αὐτῶν εἰς τέλος· ὅσα ἐπονηρεύσατο ὁ ἐχθρὸς ἐν τοῖς ἁγίοις σου. Καὶ ἐνεκαυχήσαντο οἱ μισοῦντές σε ἐν μέσῳ τῆς ἑορτῆς σου· ἔθεντο τὰ σημεῖα αὐτῶν σημεῖα, καὶ οὐκ ἔγνωσαν, ὡς

εἰς τὴν εἴσοδον ὑπεράνω· ὡς ἐν δρυμῷ ξύλων ἀξίναις ἐξέκοψαν τὰς θύρας αὐτῆς ἐπιτοαυτὸ, ἐν πελέκει καὶ λαξευτηρίῳ κατέῤῥαξαν αὐτήν. Ἐνεπύρισαν ἐν πυρὶ τὸ ἁγιαστήριόν σου εἰς τὴν γῆν, ἐβεβήλωσαν τὸ σκήνωμα τοῦ ὀνόματός σου. Εἶπαν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, ἡ συγγένεια αὐτῶν ἐπιτοαυτὸ, δεῦτε, καταπαύσωμεν τὰς ἑορτὰς Κυρίου ἀπὸ τῆς γῆς. Τὰ σημεῖα ἡμῶν οὐκ εἴδομεν, οὐκ ἔστιν ἔτι προφήτης, καὶ ἡμᾶς οὐ γνώσεται ἔτι. Ἕως πότε ὁ Θεὸς, ὀνειδιεῖ ὁ ἐχθρὸς, παροξυνεῖ ὁ ὑπεναντίος τὸ ὄνομά σου εἰς τέλος; Ἱνατί ἀποστρέφεις τὴν χεῖρά σου, καὶ τὴν δεξιάν σου ἐκ μέσου τοῦ κόλπου σου εἰς τέλος; Ὁ δὲ Θεὸς βασιλεὺς ἡμῶν πρὸ αἰῶνος, εἰργάσατο σωτηρίαν ἐν μέσῳ τῆς γῆς. Σὺ ἐκραταίωσας ἐν τῇ δυνάμει σου τὴν θάλασσαν, σὺ συνέτριψας τὰς κεφαλὰς τῶν δρακόντων ἐπὶ τοῦ ὕδατος. Σὺ συνέτριψας τὰς κεφαλὰς τοῦ δράκοντος, ἔδωκας αὐτὸν βρῶμα λαοῖς τοῖς Αἰθίοψι. Σὺ διέῤῥηξας πηγὰς καὶ χειμάῤῥους, σὺ ἐξήρανας ποταμοὺς ἠθάμ. Σή ἐστιν ἡ ἡμέρα, καὶ σή ἐστιν ἡ νὺξ, σὺ κατηρτίσω ἥλιον καὶ σελήνην. Σὺ ἐποίησας πάντα τὰ ὅρια τῆς γῆς, θέρος καὶ ἔαρ σὺ ἐποίησας. Μνήσθητι ταύτης τῆς κτίσεώς σου· ἐχθρὸς ὠνείδισε τὸν Κύριον, καὶ λαὸς ἄφρων παρώξυνε τὸ ὄνομά σου. Μὴ παραδῷς τοῖς θηρίοις ψυχὴν ἐξομολογουμένην σοι, τῶν ψυχῶν τῶν πενήτων σου μὴ ἐπιλάθῃ εἰς τέλος. Ἐπίβλεψον εἰς τὴν διαθήκην σου, ὅτι ἐπληρωθήσαν οἱ ἐσκοτωμένοι τῆς γῆς οἴκων ἀνομιῶν. Μὴ ἀποστραφήτω τεταπεινωμένος καὶ κατῃσχυμμένος, πτωχὸς καὶ πένης αἰνέσουσι τὸ ὄνομά σου. Ἀνάστα ὁ Θεὸς, δίκασον τὴν δίκην σου, μνήσθητι τῶν ὀνειδισμῶν σου τῶν ὑπὸ ἄφρονος ὅλην τὴν ἡμέραν. Μὴ ἐπιλάθῃ τῆς φωνῆς τῶν ἱκετῶν σου, ἡ ὑπερηφανία τῶν μισούντων σε ἀναβαίη διαπαντὸς πρὸς σέ.

# 74

Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, ψαλμὸς ᾠδῆς τῷ Ἀσάφ. Ἐξομολογησόμεθα σοι ὁ Θεὸς, ἐξομολογησόμεθα, καὶ ἐπικαλεσόμεθα τὸ ὄνομά σου· διηγήσομαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. Ὅταν λάβω καιρὸν, ἐγὼ εὐθύτητας κρινῶ. Ἐτάκη ἡ γῆ, καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν, ἐγὼ ἐστερέωσα τοὺς στύλους αὐτῆς· διάψαλμα. Εἶπα τοῖς παρανομοῦσι, μὴ παρανομεῖν, καὶ τοῖς ἁμαρτάνουσι, μὴ ὑψοῦτε κέρας. Μὴ ἐπαίρετε εἰς ὕψος τὸ κέρας ὑμῶν, μὴ λαλεῖτε κατὰ τοῦ Θεοῦ ἀδικίαν. Ὅτι οὔτε ἀπὸ ἐξόδων, οὔτε ἀπὸ δυσμῶν, οὔτε ἀπὸ ἐρήμων ὀρέων, ὅτι ὁ Θεὸς κριτής ἐστι· τοῦτον ταπεινοῖ, καὶ τοῦτον ὑψοῖ. Ὅτι ποτήριον ἐν χειρὶ Κυρίου, οἴνου ἀκράτου πλῆρες κεράσματος· καὶ ἔκλινεν ἐκ τούτου εἰς τοῦτο, πλὴν ὁ τρυγίας αὐτοῦ οὐκ ἐξεκενώθη· πίονται πάντες οἱ ἁμαρτωλοὶ τῆς γῆς. Ἐγὼ δὲ ἀγαλλιάσομαι εἰς τὸν αἰῶνα, ψαλῶ τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Καὶ πάντα τὰ κέρατα τῶν ἁμαρτωλῶν συγκλάσω, καὶ ὑψωθήσεται τὰ κέρατα τοῦ δικαίου.

# 75

Εἰς τὸ τέλος ἐν ὕμνοις, ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ· ᾠδὴ πρὸς τὸν Ἀσσύριον. Γνωστὸς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ὁ Θεὸς, ἐν τῷ Ἰσραὴλ μέγα τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἐν εἰρήνῃ ὁ τόπος αὐτοῦ, καὶ τὸ κατοικητήριον αὐτοῦ ἐν Σιών. Ἐκεῖ συνέτριψε τὰ κράτη τῶν τόξων, ὅπλον καὶ ῥομφαίαν καὶ πόλεμον· διάψαλμα. Φωτίζεις σὺ θαυμαστῶς ἀπὸ ὀρέων αἰωνίων, ἐταράχθησαν πάντες οἱ ἀσύνετοι τῇ καρδίᾳ· ὕπνωσαν ὕπνον αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον οὐδὲν πάντες οἱ ἄνδρες τοῦ

πλούτου ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς σου, ὁ Θεὸς Ἰακὼβ, ἐνύσταξαν οἱ ἐπιβεβηκότες τοὺς ἵππους. Σὺ φοβερὸς εἶ, καὶ τίς ἀντιστήσεταί σοι ἀπὸ τῆς ὀργῆς σου; Ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἠκούτισας κρίσιν, γῆ ἐφοβήθη καὶ ἡσύχασεν, ἐν τῷ ἀναστῆναι εἰς κρίσιν τὸν Θεὸν, τοῦ σῶσαι πάντας τοὺς πραεῖς τῆ καρδίᾳ. διάψαλμα. Ὅτι ἐνθύμιον ἀνθρώπου ἐξομολογήσεταί σοι, καὶ ἐγκατάλειμμα ἐνθυμίου ἑορτάσει σοι. Εὔξασθε καὶ ἀπόδοτε Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν, πάντες οἱ κύκλῳ αὐτοῦ οἴσουσι δῶρα· τῷ φοβερῷ καὶ ἀφαιρουμένῳ πνεύματα ἀρχόντων, φοβερῷ παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς γῆς.

# 76

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Φωνῇ μου πρὸς Κύριον ἐκέκραξα, καὶ ἡ φωνή μου πρὸς τὸν Θεὸν, καὶ προσέσχε μοι. Ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου τὸν Θεὸν ἐξεζήτησα, ταῖς χερσί μου νυκτὸς ἐναντίον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠπατήθην· ἀπηνῄνατο παρακληθῆναι ἡ ψυχή μου· Ἐμνήσθην τοῦ Θεοῦ, καὶ εὐφράνθην, ἠδολέσχησα, καὶ ὠλιγοψύχησε τὸ πνεῦμά μου· διάψαλμα. Προκατελάβοντο φυλακὰς πάντες οἱ ἐχθροί μου, ἐταράχθην καὶ οὐκ ἐλάλησα. Διελογισάμην ἡμέρας ἀρχαίας, καὶ ἔτη αἰώνια ἐμνήσθην, καὶ ἐμελέτησα· νυκτὸς μετὰ τῆς καρδίας μου ἠδολέσχουν, καὶ ἔσκαλλον τὸ πνεῦμά μου. Μὴ εἰς τοὺς αἰῶνας ἀπώσεται Κύριος, καὶ οὐ προσθήσει τοῦ εὐδοκῆσαι ἔτι; Ἢ εἰς τέλος ἀποκόψει τὸ ἔλεος ἀπὸ γενεᾶς καὶ γενεᾶς; Ἢ ἐπιλήσεται τοῦ οἰκτειρῆσαι ὁ Θεὸς, ἢ συνέξει ἐν τῇ ὀργῇ αὐτοῦ τοὺς οἰκτιρμοὺς αὐτοῦ; διάψαλμα. Καὶ εἶπα, νῦν ἠρξάμην, αὕτη ἡ

ἀλλοίωσις τῆς δεξιᾶς τοῦ ὑψίστου. Ἐμνήσθην τῶν ἔργων Κυρίου, ὅτι μνησθήσομαι ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῶν θαυμασίων σου, καὶ μελετήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου, καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασί σου ἀδολεσχήσω. Ὁ Θεὸς ἐν τῷ ἁγίῳ ἡ ὁδός σου, τίς θεὸς μέγας ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν; Σὺ εἶ ὁ Θεὸς ὁ ποιῶν θαυμάσια, ἐγνώρισας ἐν τοῖς λαοῖς τὴν δύναμίν σου· ἐλυτρώσω ἐν τῷ βραχίονί σου τὸν λαόν σου, τοὺς υἱοὺς Ἰακὼβ καὶ Ἰωσήφ· διάψαλμα. Εἴδοσάν σε ὕδατα ὁ Θεὸς, εἴδοσάν σε ὕδατα καὶ ἐφοβήθησαν, καὶ ἐταράχθησαν ἄβυσσοι. Πλῆθος ἤχους ὑδάτων, φωνὴν ἔδωκαν αἱ νεφέλαι· καὶ γὰρ τὰ βέλη σου διαπορεύονται. Φωνὴ τῆς βροντῆς σου ἐν τῷ τροχῷ· ἔφαναν αἱ ἀστραπαί σου τῇ οἰκουμένῃ, ἐσαλεύθη καὶ ἔντρομος ἐγενήθη ἡ γῆ. Ἐν τῇ θαλάσσῃ ἡ ὁδός σου, καὶ αἱ τρίβοι σου ἐν ὕδασι πολλοῖς, καὶ τὰ ἴχνη σου οὐ γνωσθήσονται. Ὡδήγησας ὡς πρόβατα τὸν λαόν σου ἐν χειρὶ Μωυσῆ καὶ Ἀαρών.

# 77

Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. Προσέχετε λαός μου τὸν νόμον μου, κλίνατε τὸ οὖς ὑμῶν εἰς τὰ ῥήματα τοῦ στόματός μου. Ἀνοίξω ἐν παραβολαῖς τὸ στόμα μου, φθέγξομαι προβλήματα ἀπ’ ἀρχῆς. Ὅσα ἠκούσαμεν καὶ ἔγνωμεν αὐτὰ, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν διηγήσαντο ἡμῖν. Οὐκ ἐκρύβη ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέραν, ἀπαγγέλλοντες τὰς αἰνέσεις Κυρίου καὶ τὰς δυναστείας αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ ἃ ἐποίησε. Καὶ ἀνέστησε μαρτύριον ἐν Ἰακὼβ, καὶ νόμον ἔθετο ἐν Ἰσραήλ· ὃν ἐνετείλατο τοῖς πατράσιν ἡμῶν, γνωρίσαι αὐτὸν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, ὅπως ἂν γνῷ γενεὰ ἑτέρα, υἱοὶ οἱ τεχθησόμενοι, καὶ ἀναστήσονται καὶ ἀπαγγελοῦσιν αὐτὰ

τοῖς υἱοῖς αὐτῶν· ἵνα θῶνται ἐπὶ τὸν Θεὸν τὴν ἐλπίδα αὐτῶν, καὶ μὴ ἐπιλάθωνται τῶν ἔργων τοῦ Θεοῦ, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ ἐκζητήσωσιν. Ἵνα μὴ γένωνται ὡς οἱ πατέρες αὐτῶν, γενεὰ σκολιὰ καὶ παραπικραίνουσα, γενεὰ ἥτις οὐ κατεύθυνεν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐπιστώθη μετὰ τοῦ Θεοῦ τὸ πνεῦμα αὐτῆς. Υἱοὶ Ἐφραὶμ ἐντεινοντες καὶ βάλλοντες τόξον, ἐστράφησαν ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Οὐκ ἐφύλαξαν τὴν διαθήκην τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ οὐκ ἤθελον πορεύεσθαι. Καὶ ἐπελάθοντο τῶν εὐεργεσιῶν αὐτοῦ καὶ τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, ὧν ἔδειξεν αὐτοῖς· ἐναντίον τῶν πατέρων αὐτῶν ἃ ἐποίησε θαυμάσια, ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν πεδίῳ Τάνεως. Διέῤῥηξε θάλασσαν, καὶ διήγαγεν αὐτοὺς· ἔστησεν ὕδατα ὡσεὶ ἀσκόν. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν νεφέλῃ ἡμέρας, καὶ ὅλην τὴν νύκτα ἐν φωτισμῷ πυρός. Διέῤῥηξε πέτραν ἐν ἐρήμῳ, καὶ ἐπότισεν αὐτοὺς ὡς ἐν ἀβύσσῳ πολλῇ. Καὶ ἐξήγαγεν ὕδωρ ἐκ πέτρας, καὶ κατήγαγεν ὡς ποταμοὺς ὕδατα. Καὶ προσέθεντο ἔτι τοῦ ἁμαρτάνειν αὐτῷ· παρεπικραναν τὸν ὕψιστον ἐν ἀνύδρῳ, καὶ ἐξεπείρασαν τὸν Θεὸν ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, τοῦ αἰτῆσαι βρώματα ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν. Καὶ κατελάλησαν τοῦ Θεοῦ, καὶ εἶπαν, μὴ δυνήσεται ὁ Θεὸς ἑτοιμάσαι τράπεζαν ἐν ἐρήμῳ; Ἐπεὶ ἐπάταξε πέτραν, καὶ ἐῤῥύησαν ὕδατα, καὶ χείμαῤῥοι κατεκλύσθησαν· μὴ καὶ ἄρτον δυνήσεται δοῦναι; ἢ ἑτοιμάσαι τράπεζαν τῷ λαῷ αὐτοῦ; Διὰ τοῦτο ἤκουσε Κύριος καὶ ἀνεβάλετο, καὶ πῦρ ἀνήφθη ἐν Ἰακὼβ, καὶ ὀργὴ ἀνέβη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Ὅτι οὐκ ἐπίστευσαν ἐν τῷ Θεῷ, οὐδὲ ἤλπισαν ἐπὶ τὸ σωτήριον αὐτοῦ. Καὶ ἐνετείλατο νεφέλαις ὑπεράνωθεν, καὶ θύρας οὐρανοῦ ἀνέῳξε· καὶ ἔβρεξεν αὐτοῖς μάννα φαγεῖν, καὶ ἄρτον οὐρανοῦ ἔδωκεν αὐτοῖς. Ἄρτον ἀγγέλων ἔφαγεν ἄνθρωπος, ἐπισιτισμὸν ἀπέστειλεν αὐτοῖς εἰς πλησμονήν. Ἀπῆρε Νότον ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἐπήγαγεν ἐν

τῇ δυναστείᾳ αὐτοῦ Λίβα. Καὶ ἔβρεξεν ἐπ αὐτοὺς ὡσεὶ χοῦν σάρκας, καὶ ὡσεῖ ἄμμον θαλασσῶν πετεινὰ πτερωτά. Καὶ ἐπέπεσον εἰς μέσον τῆς παρεμβολῆς αὐτῶν, κύκλῳ τῶν σκηνωμάτων αὐτῶν. Καὶ ἐφάγοσαν καὶ ἐνεπλήσθησαν σφόδρα, καὶ τὴν ἐπιθυμίαν αὐτῶν ἤνεγκεν αὐτοῖς. Οὐκ ἐστερήθησαν ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας αὐτῶν· ἔτι τῆς βρώσεως αὐτῶν οὔσης ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἀνέβη ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἀπέκτεινεν ἐν τοῖς πίοσιν αὐτῶν, καὶ τοὺς ἐκλεκτοὺς τοῦ Ἰσραὴλ συνεπόδισεν. Ἐν πᾶσι τούτοις ἥμαρτον ἔτι, καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τοῖς θαυμασίοις αὐτοῦ. Καὶ ἐξέλιπον ἐν ματαιότητι αἱ ἡμέραι αὐτῶν, καὶ τὰ ἔτη αὐτῶν μετὰ σπουδῆς. Ὅταν ἀπέκτεινεν αὐτοὺς, ἐζήτουν αὐτὸν, καὶ ἐπέστρεφον καὶ ὤρθριζον πρὸς τὸν Θεόν. Καὶ ἐμνήσθησαν ὅτι ὁ Θεὸς βοηθὸς αὐτῶν ἐστι, καὶ ὁ Θεὸς ὁ ὕψιστος λυτρωτὴς αὐτῶν ἐστι. Καὶ ἠγάπησαν αὐτὸν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ τῇ γλώσσῃ αὐτῶν ἐψεύσαντο αὐτῷ· ἡ δὲ καρδία αὐτῶν οὐκ εὐθεῖα μετ’ αὐτοῦ, οὐδὲ ἐπιστώθησαν ἐν τῇ διαθήκῃ αὐτοῦ. Αὐτὸς δέ ἐστιν οἰκτίρμων, καὶ ἱλάσεται ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῶν, καὶ οὐ διαφθερεῖ· καὶ πληθυνεῖ τοῦ ἀποστρέψαι τὸν θυμὸν αὐτοῦ, καὶ οὐχὶ ἐκκαύσει πᾶσαν τὴν ὀργὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐμνήσθη ὅτι σάρξ εἰσι, πνεῦμα πορευόμενον καὶ οὐκ ἐπιστρέφον. Ποσάκις παρεπίκραναν αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ, παρώργισαν αὐτὸν ἐν γῇ ἀνύδρῳ; Καὶ ἐπέστρεψαν καὶ ἐπείρασαν τὸν Θεὸν, καὶ τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ παρώξυναν. Οὐκ ἐμνήσθησαν τῆς χειρὸς αὐτοῦ, ἡμέρας ἧς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς ἐκ χειρὸς θλίβοντος· Ὡς ἔθετο ἐν Αἰγύπτῳ τὰ σημεῖα αὐτοῦ, καὶ τὰ τέρατα αὐτοῦ ἐν πεδίῳ Τάνεως· Καὶ μετέστρεψεν εἰς αἷμα τοὺς ποταμοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ ὀμβρήματα αὐτῶν ὅπως μὴ πίωσιν· ἐξαπέστειλεν εἰς αὐτοὺς κυνόμυιαν καὶ κατέφαγεν αὐτοὺς, καὶ βάτραχον, καὶ διέφθειρεν αὐτούς· Καὶ ἔδωκε τῇ ἐρυσίβῃ τὸν

καρπὸν αὐτῶν, καὶ τοὺς πόνους αὐτῶν τῇ ἀκρίδι. Ἀπέκτεινεν ἐν χαλάζῃ τὴν ἄμπελον αὐτῶν, καὶ τὰς συκαμίνους αὐτῶν ἐν τῇ πάχνῃ. Καὶ παρέδωκεν ἐν χαλάζῃ τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ τὴν ὕπαρξιν αὐτῶν τῷ πυρί. Ἐξαπέστειλεν εἰς αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, θυμὸν καὶ ὀργὴν καὶ θλίψιν, ἀποστολὴν δι᾽ ἀγγέλων πονηρῶν. Ὡδοποίησε τρίβον τῇ ὀργῇ αὐτοῦ, οὐκ ἐφείσατο ἀπὸ θανάτου τῶν ψυχῶν αὐτῶν, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν εἰς θάνατον συνέκλεισε. Καὶ ἐπάταξε πᾶν πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγυπτῳ, ἀπαρχὴν πόνων αὐτῶν ἐν τοῖς σκηνώμασι Χάμ. Καὶ ἀπῆρεν ὡς πρόβατα τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἤγαγεν αὐτοὺς ὡσεὶ ποίμνιον ἐν ἐρήμῳ. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἐλπίδι, καὶ οὐκ ἐδειλίασον, καὶ τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐκάλυψε θάλασσα. Καὶ εἰσήγαγεν αὐτοὺς εἰς ὄρος ἁγιάσματος αὐτοῦ, ὄρος τοῦτο ὃ ἐκτήσατο ἡ δεξιὰ αὐτοῦ. Καὶ ἐξέβαλεν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν ἔθνη, καὶ ἐκληροδότησεν αὐτοὺς ἐν σχοινίῳ κληροδοσίας, καὶ κατεσκήνωσεν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν τὰς φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἐπείρασαν καὶ παρεπίκραναν τὸν Θεὸν τὸν ὕψιστον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο. Καὶ ἀπέστρεψαν, καὶ ἠσυνθέτησαν καθὼς καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν, μετεστράφησαν εἰς τόξον στρεβλόν. Καὶ παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ τοῖς βουνοῖς αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν παρεζήλωσαν αὐτόν. Ἤκουσεν ὁ Θεὸς καὶ ὑπερεῖδε, καὶ ἐξουδένωσε σφόδρα τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἀπώσατο τὴν σκηνὴν Σηλὼμ, σκήνωμα αὐτοῦ οὗ κατεσκήνωσεν ἐν ἀνθρώποις. Καὶ παρέδωκεν εἰς αἰχμαλωσίαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, καὶ τὴν καλλονὴν αὐτῶν εἰς χεῖρα ἐχθρου. Καὶ συνέκλεισεν εἰς ῥομφαίαν τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ ὑπερεῖδε· Τοὺς νεανίσκους αὐτῶν κατέφαγε πῦρ, καὶ αἱ παρθένοι αὐτῶν οὐκ ἐπένθησαν. Οἱ ἱερεῖς αὐτῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἔπεσον, καὶ αἱ χῆραι αὐτῶν οὐ κλαυσθήσονται. Καὶ ἐξηγέρθη ὡς ὁ

ὑπνῶν Κύριος, ὡς δυνατὸς κεκραιπαληκὼς ἐξ οἴνου. Καὶ ἐπάταξε τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, ὄνειδος αἰώνιον ἔδωκεν αὐτοῖς. Καὶ ἀπώσατο τὸ σκήνωμα Ἰωσὴφ, καὶ τὴν φυλὴν Ἐφραὶμ οὐκ ἐξελέξατο. Καὶ ἐξελέξατο τὴν φυλὴν Ἰούδα, τὸ ὄρος τὸ Σιὼν, ὃ ἠγάπησε. Καὶ ᾠκοδόμησεν ὡς μονοκερώτων τὸ ἁγίασμα αὐτοῦ, ἐν τῇ γῇ ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐξελέξατο Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ ἀνέλαβεν αὐτὸν ἐκ τῶν ποιμνίων τῶν προβάτων. Ἐξόπισθεν τῶν λοχευομένων ἔλαβεν αὐτὸν, ποιμαίνειν Ἰακὼβ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ Ἰσραὴλ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. Καὶ ἐποίμανεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἀκακίᾳ τῆς καρδίας αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ συνέσει τῶν χειρῶν αὐτοῦ, ὡδήγησεν αὐτούς.

# 78

Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Ὁ Θεὸς, ἦλθοσαν ἔθνη εἰς τὴν κληρονομίαν σου, ἐμίαναν τὸν ναὸν τὸν ἅγιόν σου· ἔθεντο Ἰερουσαλὴμ εἰς ὀπωροφυλάκιον. Ἔθεντο τὰ θνησιμαῖα τῶν δούλων σου βρώματα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, τὰς σάρκας τῶν ὁσίων σου τοῖς θηρίοις τῆς γῆς. Ἐξέχεαν τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς ὕδωρ, κύκλῳ Ἰερουσαλὴμ, καὶ οὐκ ἦν ὁ θάπτων. Ἐγενήθημεν εἰς ὄνειδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, μυκτηρισμὸς καὶ χλευασμὸς τοῖς κύκλῳ ἡμῶν. Ἕως πότε, Κύριε, ὀργισθήσῃ εἰς τέλος; ἐκκαυθήσεται ὡς πῦρ ὁ ζῆλός σου; Ἔκχεον τὴν ὀργήν σου ἐπὶ ἔθνη τὰ μὴ ἐπεγνωκότα σε, καὶ ἐπὶ βασιλείας αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο. Ὅτι κατέφαγον τὸν Ἰακὼβ, καὶ τὸν τόπον αὐτοῦ ἠρήμωσαν. Μὴ μνησθῇς ἡμῶν ἀνομιῶν ἀρχαίων, ταχὺ προκαταλαβέτωσαν ἡμᾶς οἱ οἰκτιρμοί σου, ὅτι ἐπτωχεύσαμεν σφόδρα. Βοήθησον ἡμῖν ὁ Θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν,

ἕνεκα τῆς δόξης τοῦ ὀνόματός σου Κύριε ῥῦσαι ἡμᾶς, καὶ ἱλάσθητι ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου· Μή ποτε εἴπωσιν ἐν τοῖς ἔθνεσι, ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς αὐτῶν; καὶ γνωσθήτω ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν ἡμῶν ἡ ἐκδίκησις τοῦ αἵματος τῶν δούλων σου τοῦ ἐκκεχυμένου. Εἰσελθέτω ἐνώπιόν σου ὁ στεναγμὸς τῶν πεπεδημένων, κατὰ τὴν μεγαλωσύνην τοῦ βραχίονός σου περιποίησαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων. Ἀπόδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν ἑπταπλάσια εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν, ὃν ὠνείδισάν σε Κύριε. Ἡμεῖς γὰρ λαός σου καὶ πρόβατα νομῆς σου, ἀνθομολογησόμεθά σοι εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἐξαγγελοῦμεν τὴν αἴνεσίν σου.

# 79

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων, μαρτύριον τῷ Ἀσὰφ, ψαλμὸς ὑπὲρ τοῦ Ἀσσυρίου. Ὁ Ποιμαίνων τὸν Ἰσραὴλ πρόσχες, ὁ ὁδηγῶν ὡσεὶ πρόβατα τὸν Ἰωσήφ· ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ ἐμφάνηθι, ἐναντίον Ἐφραὶμ καὶ Βενιαμὶν καὶ Μανασσῆ· ἐξέγειρον τὴν δυναστείαν σου καὶ ἐλθὲ εἰς τὸ σῶσαι ἡμᾶς. Ὁ Θεὸς ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων, ἕως πότε ὀργίζῃ ἐπὶ τὴν προσευχὴν τοῦ δούλου σου; Ψωμιεῖς ἡμᾶς ἄρτον δακρύων, καὶ ποτιεῖς ἡμᾶς ἐν δάκρυσιν ἐν μέτρῳ. Ἔθου ἡμᾶς εἰς ἀντιλογίαν τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, καὶ οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ἐμυκτήρισαν ἡμᾶς. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα· διάψαλμα. Ἄμπελον ἐξ Αἰγύπτου μετῆρας, ἐξέβαλες ἔθνη καὶ κατεφύτευσας αὐτήν. Ὡδοποίησας ἔμπροσθεν

αὐτῆς, καὶ κατεφύτευσας τὰς ῥίζας αὐτῆς, καὶ ἐπλήσθη ἡ γῆ. Ἐκάλυψεν ὄρη ἡ σκιὰ αὐτῆς, καὶ αἱ ἀναδενδράδες αὐτῆς τὰς κέδρους τοῦ Θεοῦ. Ἐξέτεινε τὰ κλήματα αὐτῆς ἕως θαλάσσης, καὶ ἕως ποταμοῦ τὰς παραφυάδας αὐτῆς. Ἱνατί καθεῖλες τὸν φραγμὸν αὐτῆς, καὶ τρυγῶσιν αὐτὴν πάντες οἱ παραπορευόμενοι τὴν ὁδόν; Ἐλυμήνατο αὐτὴν σῦς ἐκ δρυμοῦ, καὶ μονιὸς ἄγριος κατενεμήσατο αὐτήν. Ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον δὴ, ἐπίβλεψον ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἴδε, καὶ ἐπίσκεψαι τὴν ἄμπελον ταύτην· Καὶ κατάρτισαι αὐτὴν, ἣν ἐφύτευσεν ἡ δεξιά σου, καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου ὃν ἐκραταίωσας σεαυτῷ. Ἐμπεπυρισμένη πυρὶ καὶ ἀνεσκαμμένη· ἀπὸ ἐπιτιμήσεως τοῦ προσώπου σου ἀπολοῦνται. Γενηθήτω ἡ χείρ σου ἐπ’ ἄνδρα δεξιᾶς σου, καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου, ὃν ἐκραταίωσας σεαυτῷ. Καὶ οὐ μὴ ἀποστῶμεν ἀπὸ σοῦ, ζωώσεις ἡμᾶς, καὶ τὸ ὄνομά σου ἐπικαλεσόμεθα. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα.

# 80

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ληνῶν ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Ἀγαλλιᾶσθε τῷ Θεῷ τῷ βοηθῷ ἡμῶν, ἀλαλάξατε τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Λάβετε ψαλμὸν καὶ δότε τύμπανον, ψαλτήριον τερπνὸν μετὰ κιθάρας. Σαλπίσατε ἐν νεομηνίᾳ σάλπιγγι, ἐν εὐσήμῳ ἡμέρᾳ ἑορτῆς ὑμῶν. Ὅτι πρόσταγμα τῷ Ἰσραήλ ἐστι, καὶ κρίμα τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Μαρτύριον ἐν τῷ Ἰωσὴφ ἔθετο αὐτὸν, ἐν τῷ ἐξελθεῖν αὐτὸν ἐκ γῆς Αἰγύπτου· γλῶσσαν ἣν οὐκ ἔγνω, ἤκουσεν. Ἀπέστησεν ἀπὸ ἄρσεων τὸν νῶτον αὐτοῦ· αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἐν τῷ κοφίνῳ ἐδούλευσαν. Ἐν θλίψει

ἐπεκαλέσω με καὶ ἐῤῥυσάμην σε· ἐπήκουσά σου ἐν ἀποκρύφῳ καταιγίδος, ἐδοκίμασά σε ἐπὶ ὕδατος ἀντιλογίας· διάψαλμα. Ἄκουσον λαός μου καὶ λαλήσω σοι, Ἰσραὴλ, καὶ διαμαρτύρομαί σοι· ἐὰν ἀκούσῃς μου, οὐκ ἔσται ἐν σοὶ θεὸς πρόσφατος, οὐδὲ προσκυνήσεις θεῷ ἀλλοτρίῳ. Ἐγὼ γάρ εἰμι Κύριος ὁ Θεός σου, ὁ ἀναγαγών σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, πλάτυνον τὸ στόμα σου καὶ πληρώσω αὐτό. Καὶ οὐκ ἤκουσεν ὁ λαός μου τῆς φωνῆς μου, καὶ Ἰσραὴλ οὐ προσέσχε μοι. Καὶ ἐξαπέστειλα αὐτοὺς κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα τῶν καρδιῶν αὐτῶν, πορεύσονται ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. Εἰ ὁ λαός μου ἤκουσέ μου, Ἰσραὴλ ταῖς ὁδοῖς μου εἰ ἐπορεύθη, ἐν τῷ μηδενὶ ἂν τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐταπείνωσα, καὶ ἐπὶ τοὺς θλίβοντας αὐτοὺς ἐπέβαλον ἂν τὴν χεῖρά μου. Οἱ ἐχθροὶ Κυρίου ἐψεύσαντο αὐτῷ, καὶ ἔσται ὁ καιρὸς αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἐψώμισεν αὐτοὺς ἐκ στέατος πυροῦ, καὶ ἐκ πέτρας μέλι ἐχόρτασεν αὐτούς.

# 81

Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. Ὁ Θεὸς ἔστη ἐν συναγωγῇ θεῶν, ἐν μέσῳ δὲ θεοὺς διακρινεῖ. Ἕως πότε κρίνετε ἀδικίαν, καὶ πρόσωπα ἁμαρτωλῶν λαμβάνετε; διάψαλμα. Κρίνατε ὀρφανὸν καὶ πτωχὸν, ταπεινὸν καὶ πένητα δικαιώσατε. Ἐξέλεσθε πένητα, καὶ πτωχὸν ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλοῦ ῥύσασθε. Οὐκ ἔγνωσαν οὐδὲ συνῆκαν, ἐν σκότει διαπορεύονται· σαλευθήσονται πάντα τὰ θεμελια τῆς γῆς. Ἐγὼ εἶπα, θεοί ἐστε, καὶ υἱοὶ ὑψίστου πάντες. Ὑμεῖς δὲ ὡς ἄνθρωποι ἀποθνήσκετε, καὶ ὡς εἷς τῶν ἀρχόντων πίπτετε. Ἀνάστα ὁ Θεὸς, κρῖνον τὴν γῆν, ὅτι σὺ κατακληρονομήσεις ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν.

# 82

Ὠδὴ ψαλμοῦ τῷ Ἀσάφ. Ὁ Θεὸς, τίς ὁμοιωθήσεταί σοι; μὴ σιγήσῃς, μηδὲ καταπραΰνῃς ὁ Θεός. Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου ἤχησαν· καὶ οἱ μισοῦντές σε ᾖραν κεφαλήν. Ἐπὶ τὸν λαόν σου κατεπανουργεύσαντο γνώμην, καὶ ἐβουλεύσαντο κατὰ τῶν ἁγίων σου. Εἶπαν, δεῦτε καὶ ἐξολοθρεύσωμεν αὐτοὺς ἐξ ἔθνους, καὶ οὐ μὴ μνησθῇ τὸ ὄνομα Ἰσραὴλ ἔτι. Ὅτι ἐβουλεύσαντο ἐν ὁμονοίᾳ ἐπιτοαυτὸ, κατὰ σοῦ διαθήκην διέθεντο· Τὰ σκηνώματα τῶν Ἰδουμαίων καὶ οἱ Ἰσμαηλῖται, Μωὰβ καὶ οἱ Ἀγαρηνοὶ, Γεβὰλ καὶ Ἀμμὼν καὶ Ἀμαλὴκ, καὶ ἀλλόφυλοι μετὰ τῶν κατοικούντων Τύρον. Καὶ γὰρ καὶ Ἀσσοὺρ συμπαρεγένετο μετ' αὐτῶν, ἐγενήθησαν εἰς ἀντίληψιν τοῖς υἱοῖς Λώτ· διάψαλμα. Ποίησον αὐτοῖς ὡς τῇ Μαδιὰμ καὶ τῷ Σεισάρᾳ, ὡς τῷ Ἰαβεὶν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ Κεισῶν. Ἐξωλοθρεύθησαν ἐν Ἀενδὼρ, ἐγενήθησαν ὡσεὶ κόπρος τῇ γῇ. Θοῦ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν ὡς τὸν Ὼρὴβ καὶ Ζὴβ καὶ Ζεβεὲ καὶ Σαλμανὰ, πάντας τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν· Οἵτινες εἶπαν, κληρονομήσωμεν ἑαυτοῖς τὸ θυσιαστήριον τοῦ Θεοῦ. Ὁ Θεός μου θοῦ αὐτοὺς ὡς τροχὸν, ὡς καλάμην κατὰ πρόσωπον ἀνέμου. Ὡσεὶ πῦρ ὃ διαφλέξει δρυμὸν, ὡσεὶ φλὸξ κατακαύσαι ὄρη· Οὕτως καταδιώξεις αὐτοὺς ἐν τῇ καταιγίδι σου, καὶ ἐν τῇ ὀργῇ σου ταράξεις αὐτούς. Πλήρωσον τὰ πρόσωπα αὐτῶν ἀτιμίας, καὶ ζητήσουσι τὸ ὄνομά σου Κύριε. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ταραχθήτωσαν εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, καὶ ἐντραπήτωσαν καὶ ἀπολέσθωσαν. Καὶ γνώτωσαν ὅτι ὄνομά σοι Κύριος· σὺ μόνος ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν.

# 83

Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ληνῶν τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός. Ὡς ἀγαπητὰ τὰ σκηνώματά σου Κύριε τῶν δυνάμεων. Ἐπιποθεῖ καὶ ἐκλείπει ἡ ψυχή μου εἰς τὰς αὐλὰς τοῦ Κυρίου· ἡ καρδία μου καὶ ἡ σάρξ μου ἠγαλλιάσαντο ἐπὶ Θεὸν ζῶντα· Καὶ γὰρ στρουθίον εὗρεν ἑαυτῷ οἰκίαν, καὶ τρυγὼν νοσσιὰν ἑαυτῇ, οὗ θήσει τὰ νοσσία ἑαυτῆς· τὰ θυσιαστήριά σου Κύριε τῶν δυνάμεων, ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ Θεός μου. Μακάριοι οἱ κατοικοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων αἰνέσουσί σε· διάψαλμα. Μακάριος ἀνὴρ οὗ ἐστιν ἡ ἀντίληψις αὐτοῦ παρὰ σοῦ, Κύριε· ἀναβάσεις ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ διέθετο, εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ κλαυθμῶνος, εἰς τὸν τόπον ὃν ἔθετο· καὶ γὰρ εὐλογίας δώσει ὁ νομοθετῶν, πορεύσονται ἐκ δυνάμεως εἰς δύναμιν, ὀφθήσεται ὁ Θεὸς τῶν θεῶν ἐν Σιών. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων, εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, ἐνώτισαι ὁ Θεὸς Ἰακώβ· διάψαλμα. Ὑπερασπιστὰ ἡμῶν ἴδε ὁ Θεὸς, καὶ ἐπίβλεψον ἐπὶ τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σοῦ. Ὅτι κρείσσων ἡμέρα μία ἐν ταῖς αὐλαῖς σου, ὑπὲρ χιλιάδας· ἐξελεξάμην παραῤῥιπτεῖσθαι ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Θεοῦ μᾶλλον ἢ οἰκεῖν με ἐπὶ σκηνώμασιν ἁμαρτωλῶν. Ὅτι ἔλεον καὶ ἀλήθειαν ἀγαπᾷ Κύριος, ὁ Θεὸς χάριν καὶ δόξαν δώσει· Κύριος οὐχ ὑστερήσει τὰ ἀγαθὰ τοῖς πορευομένοις ἐν ἀκακίᾳ. Κύριε τῶν δυνάμεων, μακάριος ἄνθρωπος ὁ ἐλπίζων ἐπὶ σέ.

# 84

Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός. Εὐδόκησας Κύριε τὴν γῆν σου, ἀπέστρεψας τὴν αἰχμαλωσίαν Ἰακώβ. Ἄφῆκας τὰς ἀνομίας τῷ λαῷ σου, ἐκάλυψας πάσας τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· διάψαλμα.

Κατέπαυσας πᾶσαν τὴν ὀργήν σου, ἀπέστρεψας ἀπὸ ὀργῆς θυμοῦ σου. Ἐπίστρεψον ἡμᾶς ὁ Θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν, καὶ ἀπόστρεψον τὸν θυμόν σου ἀφ' ἡμῶν. Μὴ εἰς τὸν αἰῶνα ὀργισθῇς ἡμῖν; ἢ διατενεῖς τὴν ὀργήν σου ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεάν; Ὁ Θεὸς, σὺ ἐπιστρέψας ζωώσεις ἡμᾶς, καὶ ὁ λαός σου εὐφρανθήσεται ἐπὶ σοί. Δεῖξον ἡμῖν Κύριε τὸ ἔλεός σου, καὶ τὸ σωτήριόν σου δῴης ἡμῖν. Ἀκούσομαι τί λαλήσει ἐν ἐμοὶ Κύριος ὁ Θεὸς, ὅτι λαλήσει εἰρήνην ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς ἐπιστρέφοντας πρὸς αὐτὸν καρδίαν. Πλὴν ἐγγὺς τῶν φοβουμένων αὐτὸν τὸ σωτήριον αὐτοῦ, τοῦ κατασκηνῶσαι δόξαν ἐν τῇ γῇ ἡμῶν. Ἔλεος καὶ ἀλήθεια συνήντησαν, δικαιοσύνη καὶ εἰρήνη κατεφίλησαν. Ἀλήθεια ἐκ τῆς γῆς ἀνέτειλε, καὶ δικαιοσύνη ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψε. Καὶ γὰρ ὁ Κύριος δώσει χρηστότητα, καὶ ἡ γῆ ἡμῶν δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς. Δικαιοσύνη ἐναντίον αὐτοῦ προπορεύσεται, καὶ θήσει εἰς ὁδὸν τὰ διαβήματα αὐτοῦ.

# 85

Προσευχὴ τῷ Δαυίδ. Κλίνον Κύριε τὸ οὖς σου, καὶ εἰσάκουσόν μου, ὅτι πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγώ. Φύλαξον τὴν ψυχήν μου, ὅτι ὅσιός εἰμι· σῶσον τὸν δοῦλόν σου ὁ Θεὸς, τὸν ἐλπίζοντα ἐπὶ σέ. Ἐλέησόν με Κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κεκράξομαι ὅλην τὴν ἡμέραν. Εὔφρανον τὴν ψυχὴν τοῦ δούλου σου, ὅτι πρὸς σὲ Κύριε ᾖρα τὴν ψυχήν μου. Ὅτι σὺ Κύριε χρηστὸς καὶ ἐπιεικὴς, καὶ πολυέλεος πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις σε. Ἐνώτισαι Κύριε τὴν προσευχήν μου, καὶ πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου. Ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου ἐκέκραξα πρὸς σὲ, ὅτι εἰσήκουσάς μου. Οὐκ ἔστιν ὅμοιός σοι ἐν

θεοῖς Κύριε, καὶ οὐκ ἔστι κατὰ τὰ ἔργα σου. Πάντα τὰ ἔθνη ὅσα ἐποίησας ἥξουσι, καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιόν σου Κύριε, καὶ δοξάσουσι τὸ ὄνομά σου, ὅτι μέγας εἶ σὺ, καὶ ποιῶν θαυμάσια, σὺ εἶ ὁ Θεὸς μόνος ὁ μέγας. Ὁδήγησόν με Κύριε ἐν τῇ ὁδῷ σου, καὶ πορεύσομαι ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου· εὐφρανθήτω ἡ καρδία μου, τοῦ φοβεῖσθαι τὸ ὄνομά σου. Ἐξομολογήσομαί σοι Κύριε ὁ Θεός μου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, καὶ δοξάσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι τὸ ἔλεός σου μέγα ἐπ’ ἐμὲ, καὶ ἐῤῥύσω τὴν ψυχήν μου ἐξ ᾅδου κατωτάτου. Ὁ Θεὸς, παράνομοι ἐπανέστησαν ἐπ’ ἐμὲ, καὶ συναγωγὴ κραταιῶν ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, καὶ οὐ προέθεντό σε ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ σὺ Κύριε ὁ Θεὸς οἰκτίρμων καὶ ἐλεήμων, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος καὶ ἀληθινός. Ἐπίβλεψον ἐπ’ ἐμὲ, καὶ ἐλέησόν με, δὸς τὸ κράτος σου τῷ παιδί σου, καὶ σῶσον τὸν υἱὸν τῆς παιδίσκης σου. Ποίησον μετ’ ἐμοῦ σημεῖον εἰς ἀγαθὸν, καὶ ἰδέτωσαν οἱ μισοῦντές με, καὶ αἰσχυνθήτωσαν· ὅτι σὺ Κύριε, ἐβοήθησάς μοι, καὶ παρεκάλεσάς με.

# 86

Τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμὸς ᾠδῆς. Οἱ θεμέλιοι αὐτοῦ ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς ἁγίοις. Ἀγαπᾷ Κύριος τὰς πύλας Σιὼν, ὑπὲρ πάντα τὰ σκηνώματα Ἰακώβ. Δεδοξασμένα ἐλαλήθη περὶ σοῦ ἡ πόλις τοῦ Θεοῦ· διάψαλμα. Μνησθήσομαι Ῥαὰβ, καὶ Βαβυλῶνος, τοῖς γινώσκουσί με· καὶ ἰδοὺ ἀλλόφυλοι καὶ Τύρος καὶ λαὸς Αἰθιόπων, οὗτοι ἐγεννήθησαν ἐκεῖ. Μήτηρ Σιὼν ἐρεῖ ἄνθρωπος, καὶ ἄνθρωπος ἐγενήθη ἐν αὐτῇ, καὶ αὐτὸς ἐθεμελίωσεν αὐτὴν ὁ ὕψιστος. Κύριος διηγήσεται ἐν γραφῇ λαῶν, καὶ ἀρχόντων τούτων τῶν

γεγενημένων ἐν αὐτῇ. διάψαλμα. Ὡς εὐφραινομένων πάντων ἡ κατοικία ἐν σοί.

# 87

Ὠδὴ ψαλμοῦ τοῖς υἱοῖς Κορὲ, εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ μαελὲθ τοῦ ἀποκριθῆναι, συνέσεως Αἰμὰν τῷ Ἰσραηλίτῃ. Κύριε ὁ Θεὸς τῆς σωτηρίας μου, ἡμέρας ἐκέκραξα καὶ ἐν νυκτὶ ἐναντίον σου. Εἰσελθέτω ἐνώπιόν σου ἡ προσευχή μου, κλῖνον τὸ οὖς σου εἰς τὴν δέησίν μου, Κύριε. Ὅτι ἐπλήσθη κακῶν ἡ ψυχή μου, καὶ ἡ ζωή μου τῷ ᾅδῃ ἤγγισε. Προσελογίσθην μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον, ἐγενήθην ὡς ἄνθρωπος ἀβοήθητος, ἐν νεκροῖς ἐλεύθερος, ὡσεὶ τραυματίαι ἐῤῥιμμένοι καθεύδοντες ἐν τάφῳ, ὧν οὐκ ἐμνήσθης ἔτι, καὶ αὐτοὶ ἐκ τῆς χειρός σου ἀπώσθησαν. Ἔθεντό με ἐν λάκκῳ κατωτάτῳ, ἐν σκοτεινοῖς καὶ ἐν σκιᾷ θανάτου. Ἐπ’ ἐμὲ ἐπεστηρίχθη ὁ θυμός σου, καὶ πάντας τοὺς μετεωρισμούς σου ἐπήγαγες ἐπ’ ἐμέ· διάψαλμα. Ἐμάκρυνας τοὺς γνωστούς μου ἀπ’ ἐμοῦ, ἔθεντό με βδέλυγμα ἑαυτοῖς· παρεδόθην καὶ οὐκ ἐξεπορευόμην. Οἱ ὀφθαλμοί μου ἠσθένησαν ἀπὸ πτωχείας· καὶ ἐκέκραξα πρὸς σὲ Κύριε ὅλην τὴν ἡμέραν, διεπέτασα πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου. Μὴ τοῖς νεκροῖς ποιήσεις θαυμάσια, ἢ ἰατροὶ ἀναστήσουσι καὶ ἐξομολογήσονταί σοι; Μὴ διηγήσεταί τις ἐν τάφῳ τὸ ἔλεός σου, καὶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῇ ἀπωλείᾳ; Μὴ γνωσθήσεται ἐν τῷ σκότει τὰ θαυμάσιά σου, καὶ ἡ δικαιοσύνη σου ἐν γῇ ἐπιλελησμένῃ; Κἀγὼ πρὸς σὲ Κύριε ἐκέκραξα, καὶ τοπρωΐ ἡ προσευχή μου προφθάσει σε. Ἱνατί Κύριε ἀπωθεῖς τὴν προσευχήν μου, ἀποστρέφεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ’ ἐμοῦ; Πτωχός εἰμι ἐγὼ καὶ

ἐν κόποις ἐκ νεότητός μου, ὑψωθεὶς δὲ ἐταπεινώθην καὶ ἐξηπορήθην. Ἐπ᾽ ἐμὲ διῆλθον αἱ ὀργαί σου, καὶ οἱ φοβερισμοί σου ἐξετάραξάν με. Ἐκύκλωσάν με ὡς ὕδωρ, ὅλην τὴν ἡμέραν περιέσχον με ἅμα. Ἐμάκρυνας ἀπ᾽ ἐμοῦ φίλον, καὶ τοὺς γνωστούς μου ἀπὸ ταλαιπωρίας.

# 88

Συνέσεως Αἰθὰμ τῷ Ἰσραηλίτῃ. Τὰ ἐλέη σου Κύριε εἰς τὸν αἰῶνα ᾄσομαι, εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἀπαγγελῶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῷ στόματί μου. Ὅτι εἶπας, εἰς τὸν αἰῶνα ἔλεος οἰκοδομηθήσεται, ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἑτοιμασθήσεται ἡ ἀλήθειά σου· Διεθέμην διαθήκην τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, ὤμοσα Δαυὶδ τῷ δούλῳ μου. Ἕως τοῦ αἰῶνος ἑτοιμάσω τὸ σπέρμα σου, καὶ οἰκοδομήσω εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν τὸν θρόνον σου· διάψαλμα. Ἐξομολογήσονται οἱ οὐρανοὶ τὰ θαυμάσιά σου Κύριε, καὶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν ἐκκλησίᾳ ἁγίων. Ὅτι τίς ἐν νεφέλαις ἰσωθήσεται τῷ Κυρίῳ; καὶ τίς ὁμοιωθήσεται τῷ Κυρίῳ ἐν υἱοῖς Θεοῦ; Ὁ Θεὸς ἐνδοξαζόμενος ἐν βουλῇ ἁγίων, μέγας καὶ φοβερὸς ἐπὶ πάντας τοὺς περικύκλῳ αὐτοῦ. Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων, τίς ὅμοιός σοι; δυνατὸς εἶ Κύριε, καὶ ἡ ἀλήθειά σου κύκλῳ σου. Σὺ δεσπόζεις τοῦ κράτους τῆς θαλάσσης, τὸν δὲ σάλον τῶν κυμάτων αὐτῆς σὺ καταπραΰνεις. Σὺ ἐταπείνωσας ὡς τραυματίαν ὑπερήφανον, καὶ ἐν τῷ βραχίονι τῆς δυνάμεώς σου διεσκόρπισας τοὺς ἐχθρούς σου. Σοί εἰσιν οἱ οὐρανοὶ, καὶ σή ἐστιν ἡ γῆ, τὴν οἰκουμένην καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς σὺ ἐθεμελίωσας. Τὸν Βορρᾶν καὶ θάλασσας σὺ ἔκτισας, Θαβὼρ καὶ Ἑρμὼν ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀγαλλιάσονται. Σὸς ὁ βραχίων μετὰ δυναστείας·

κραταιωθήτω ἡ χείρ σου, ὑψωθήτω ἡ δεξιά σου. Δικαιοσύνη καὶ κρίμα ἑτοιμασία τοῦ θρόνου σου· ἔλεος καὶ ἀλήθεια προπορεύσονται πρὸ προσώπου σου. Μακάριος ὁ λαὸς ὁ γινώσκων ἀλαλαγμόν· Κύριε ἐν τῷ φωτὶ τοῦ προσώπου σου πορεύσονται, καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀγαλλιάσονται ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ὑψωθήσονται. Ὅτι τὸ καύχημα τῆς δυνάμεως αὐτῶν σὺ εἶ, καὶ ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου ὑψωθήσεται τὸ κέρας ἡμῶν· ὅτι τοῦ Κυρίου ἡ ἀντίληψις, καὶ τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ βασιλέως ἡμῶν. Τότε ἐλάλησας ἐν ὁράσει τοῖς υἱοῖς σου, καὶ εἶπας, ἐθέμην βοήθειαν ἐπὶ δυνατὸν, ὕψωσα ἐκλεκτὸν ἐκ τοῦ λαοῦ μου. Εὗρον Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου, ἐν ἐλέει ἁγίῳ ἔχρισα αὐτόν. Ἡ γὰρ χείρ μου συναντιλήψεται αὐτῷ, καὶ ὁ βραχίων μου κατισχύσει αὐτόν. Οὐκ ὠφελήσει ἐχθρὸς ἐν αὐτῷ, καὶ υἱὸς ἀνομίας οὐ προσθήσει τοῦ κακῶσαι αὐτόν. Καὶ συγκόψω ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς μισοῦντας αὐτὸν τροπώσομαι. Καὶ ἡ ἀλήθειά μου καὶ τὸ ἔλεός μου μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ ὀνόματί μου ὑψωθήσεται τὸ κέρας αὐτοῦ. Καὶ θήσομαι ἐν θαλάσσῃ χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ἐν ποταμοῖς δεξιὰν αὐτοῦ. Αὐτὸς ἐπικαλέσεταί με, πατήρ μου εἶ σὺ, Θεός μου καὶ ἀντιλήπτωρ τῆς σωτηρίας μου. Κἀγὼ πρωτότοκον θήσομαι αὐτὸν, ὑψηλὸν παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς γῆς. Εἰς τὸν αἰῶνα φυλάξω αὐτῷ τὸ ἔλεός μου, καὶ ἡ διαθήκη μου πιστὴ αὐτῷ. Καὶ θήσομαι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος τὸ σπέρμα αὐτοῦ, καὶ τὸν θρόνον αὐτοῦ ὡς τὰς ἡμέρας τοῦ οὐρανοῦ. Ἐὰν ἐγκαταλίπωσιν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὸν νόμον μου, καὶ τοῖς κρίμασί μου μὴ πορευθῶσιν· ἐὰν τὰ δικαιώματά μου βεβηλώσωσι, καὶ τὰς ἐντολάς μου μὴ φυλάξωσιν· Ἐπισκέψομαι ἐν ῥάβδῳ τὰς ἀνομίας αὐτῶν, καὶ ἐν μάστιξι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν. Τὸ δὲ ἔλεός μου οὐ μὴ διασκεδάσω ἀπ’ αὐτοῦ, οὐδὲ μὴ ἀδικήσω ἐν τῇ ἀληθείᾳ μου, οὐδὲ

μὴ βεβηλώσω τὴν διαθήκην μου, καὶ τὰ ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων μου οὐ μὴ ἀθετήσω. Ἅπαξ ὤμοσα ἐν τῷ ἁγίῳ μου, εἰ τῷ Δαυὶδ ψεύσομαι. Τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα μενεῖ, καὶ ὁ θρόνος αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος ἐναντίον μου, καὶ ὡς ἡ σελήνη κατηρτισμένη εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ὁ μάρτυς ἐν οὐρανῷ πιστός· διάψαλμα. Σὺ δὲ ἀπώσω καὶ ἐξουδένωσας, ἀνεβάλου τὸν χριστόν σου. Κατέστρεψας τὴν διαθήκην τοῦ δούλου σου, ἐβεβήλωσας εἰς τὴν γῆν τὸ ἁγίασμα αὐτοῦ. Καθεῖλες πάντας τοὺς φραγμοῦς αὐτοῦ, ἔθου τὰ ὀχυρώματα αὐτοῦ δειλίαν. Διήρπασαν αὐτὸν πάντες οἱ διοδεύοντες ὁδὸν, ἐγενήθη ὄνειδος τοῖς γείτοσιν αὐτοῦ. Ὕψωσας τὴν δεξιὰν τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, εὔφρανας πάντας τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Ἀπέστρεψας τὴν βοήθειαν τῆς ῥομφαίας αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἀντελάβου αὐτοῦ ἐν τῷ πολέμῳ. Κατέλυσας ἀπὸ καθαρισμοῦ αὐτὸν, τὸν θρόνον αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν κατέῤῥαξας, ἐσμίκρυνας τὰς ἡμέρας τοῦ θρόνου αὐτοῦ, κατέχεας αὐτοῦ αἰσχύνην· διάψαλμα. Ἕως πότε Κύριε ἀποστρέφῃ εἰς τέλος; ἐκκαυθήσεται ὡς πῦρ ἡ ὀργή σου; Μνήσθητι τίς ἡ ὑπόστασίς μου· μὴ γὰρ ματαίως ἔκτισας πάντας τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων; Τίς ἐστιν ἄνθρωπος, ὃς ζήσεται καὶ οὐκ ὄψεται θάνατον; ῥύσεται τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐκ χειρὸς ᾅδου; διάψαλμα. Ποῦ ἐστι τὰ ἐλέη σου τὰ ἀρχαῖα, Κύριε, ἃ ὤμοσας τῷ Δαυὶδ ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου; Μνήσθητι Κύριε τοῦ ὀνειδισμου τῶν δούλων σου οὗ ὑπέσχον ἐν τῷ κόλπῳ μου πολλῶν ἐθνῶν· οὗ ὠνείδισαν οἱ ἐχθροί σου Κύριε, οὗ ὠνείδισαν τὸ ἀντάλλαγμα τοῦ χριστοῦ σου. Εὐλογητὸς Κύριος εἰς τὸν αἰῶνα· γένοιτο, γένοιτο.

# 89

Προσευχὴ τοῦ Μωυσῆ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ. Κύριε, καταφυγὴ ἐγενήθης ἡμῖν ἐν γενεᾷ καὶ γενεᾷ. Πρὸ τοῦ ὄρη γενηθῆναι καὶ πλασθῆναι τὴν γῆν καὶ τὴν οἰκουμένην, καὶ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος ἕως τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. Μὴ ἀποστρέψῃς ἄνθρωπον εἰς ταπείνωσιν, καὶ εἶπας, ἐπιστρέψατε υἱοὶ ἀνθρώπων; Ὅτι χίλια ἔτη ἐν ὀφθαλμοῖς σου, ὡς ἡ ἡμέρα ἡ ἐχθὲς ἥτις διῆλθε, καὶ φυλακὴ ἐν νυκτί. Τὰ ἐξουδενώματα αὐτῶν ἔτη ἔσονται, τοπρωῒ ὡσεὶ χλόη παρέλθοι· Τοπρωῒ ἀνθήσαι καὶ παρέλθοι, τὸ ἑσπέρας ἀποπέσοι, σκληρυνθείη καὶ ξηρανθείη. Ὅτι ἐξελίπομεν ἐν τῇ ὀργῇ σου, καὶ ἐν τῷ θυμῷ σου ἐταράχθημεν. Ἔθου τὰς ἀνομίας ἡμῶν ἐνώπιόν σου, ὁ αἰὼν ἡμῶν εἰς φωτισμὸν τοῦ προσώπου σου. Ὅτι πᾶσαι αἱ ἡμέραι ἡμῶν ἐξέλιπον, καὶ ἐν τῇ ὀργῇ σου ἐξελίπομεν· τὰ ἔτη ἡμῶν ὡς ἀράχνη ἐμελέτων. Αἱ ἡμέραι τῶν ἐτῶν ἡμῶν ἐν αὐτοῖς ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐὰν δὲ ἐν δυναστείαις, ὀγδοήκοντα ἔτη, καὶ τὸ πλεῖον αὐτῶν κόπος καὶ πόνος· ὅτι ἐπῆλθε πραΰτης ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ παιδευθησόμεθα. Τίς γινώσκει τὸ κράτος τῆς ὀργῆς σου, καὶ ἀπὸ τοῦ φόβου τοῦ θυμοῦ σου ἐξαριθμήσασθαι; τὴν δεξιάν σου οὕτως γνώρισον, καὶ τοὺς πεπαιδευμένους τῇ καρδίᾳ ἐν σοφίᾳ. Ἐπίστρεψον, Κύριε· ἕως πότε; καὶ παρακλήθητι ἐπὶ τοῖς δούλοις σου. Ἐνεπλήσθημεν τοπρωῒ τοῦ ἐλέους σου, καὶ ἠγαλλιασάμεθα καὶ εὐφράνθημεν· ἐν πάσαις ταῖς ἡμέραις ἡμῶν εὐφρανθείημεν, ἀνθ’ ὧν ἡμερῶν ἐταπείνωσας ἡμᾶς, ἐτῶν ὧν εἴδομεν κακά. Καὶ ἴδε ἐπὶ τοὺς δούλους σου καὶ ἐπὶ τὰ ἔργα σου, καὶ ὁδήγησον τοὺς υἱοὺς αὐτῶν. Καὶ ἔστω ἡ λαμπρότης Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν ἡμῶν κατεύθυνον ἐφ’ ἡμᾶς.

# 90

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. Ὁ κατοικῶν ἐν βοηθείᾳ τοῦ ὑψίστου, ἐν σκέπῃ τοῦ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσεται. Ἐρεῖ τῷ Κυρίῳ, ἀντιλήπτωρ μου εἶ καὶ καταφυγή μου, ὁ Θεός μου, ἐλπιῶ ἐπ᾽ αὐτόν. Ὅτι αὐτὸς ῥύσεταί σε ἐκ παγίδος θηρευτῶν, ἀπὸ λόγου ταραχώδους. Ἐν τοῖς μεταφρένοις αὐτοῦ ἐπισκιάσει σοι, καὶ ὑπὸ τὰς πτέρυγας αὐτοῦ ἐλπιεῖς· ὅπλῳ κυκλώσει σε ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ. Οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ φόβου νυκτερινοῦ, ἀπὸ βέλους πετομένου ἡμέρας, ἀπὸ πράγματος διαπορευομένου ἐν σκότει, ἀπὸ συμπτώματος καὶ δαιμονίου μεσημβρινοῦ. Πεσεῖται ἐκ τοῦ κλίτους σου χιλιὰς, καὶ μυριὰς ἐκ δεξιῶν σου, πρὸς σὲ δὲ οὐκ ἐγγιεῖ. Πλὴν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου κατανοήσεις, καὶ ἀνταπόδοσιν ἁμαρτωλῶν ὄψει. Ὅτι σὺ Κύριε ἡ ἐλπίς μου, τὸν ὕψιστον ἔθου καταφυγήν σου. Οὐ προσελεύσεται πρὸς σὲ κακὰ, καὶ μάστιξ οὐκ ἐγγιεῖ τῷ σκηνώματί σου. Ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, τοῦ διαφυλάξαι σε ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς σου. Ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, μή ποτε προσκόψῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου. Ἐπ᾽ ἀσπίδα καὶ βασιλίσκον ἐπιβήσῃ, καὶ καταπατήσεις λέοντα καὶ δράκοντα. Ὅτι ἐπ᾽ ἐμὲ ἤλπισε, καὶ ῥύσομαι αὐτόν· σκεπάσω αὐτὸν, ὅτι ἔγνω τὸ ὄνομά μου. Ἐπικαλέσεται πρὸς μὲ, καὶ εἰσακούσομαι αὐτοῦ, μετ᾽ αὐτοῦ εἰμι ἐν θλίψει, καὶ ἐξελοῦμαι αὐτὸν, καὶ δοξάσω αὐτόν. Μακρότητι ἡμερῶν ἐμπλήσω αὐτὸν, καὶ δείξω αὐτῷ τὸ σωτήριόν μου.

# 91

Ψαλμὸς ᾠδῆς εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ σαββάτου. Ἀγαθὸν τὸ ἐξομολογεῖσθαι τῷ Κυρίῳ, καὶ ψάλλειν τῷ ὀνόματί σου, ὕψιστε·

τοῦ ἀναγγέλλειν τοπρωΐ τὸ ἔλεός σου, καὶ τὴν ἀλήθειάν σου κατὰ νύκτα, ἐν δεκαχόρδῳ ψαλτηρίῳ, μετ᾽ ᾠδῆς ἐν κιθάρᾳ. Ὅτι εὔφρανάς με, Κύριε, ἐν τῷ ποιήματί σου, καὶ ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν σου ἀγαλλιάσομαι. Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου, Κύριε; σφόδρα ἐβαθύνθησαν οἱ διαλογισμοί σου. Ἀνὴρ ἄφρων οὐ γνώσεται, καὶ ἀσύνετος οὐ συνήσει ταῦτα. Ἐν τῷ ἀνατεῖλαι τοὺς ἁμαρτωλοὺς ὡσεὶ χόρτον, καὶ διέκυψαν πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, ὅπως ἂν ἐξολοθρευθῶσιν εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Σὺ δὲ ὕψιστος εἰς τὸν αἰῶνα, Κύριε. Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου ἀπολοῦνται, καὶ διασκορπισθήσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν. Καὶ ὑψωθήσεται ὡς μονοκέρωτος τὸ κέρας μου, καὶ τὸ γῆράς μου ἐν ἐλέῳ πίονι. Καὶ ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου, καὶ ἐν τοῖς ἐπανισταμένοις ἐπ᾽ ἐμὲ πονηρευομένοις ἀκούσεται τὸ οὖς μου. Δίκαιος ὡς φοῖνιξ ἀνθήσει, ὡς ἡ κέδρος ἡ ἐν τῷ Λιβάνῳ πληθυνθήσεται· Πεφυτευμένοι ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου, ἐν ταῖς αὐλαῖς τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐξανθήσουσι. Τότε πληθυνθήσονται ἐν γήρει πίονι, καὶ εὐπαθοῦντες ἔσονται τοῦ ἀναγγεῖλαι· ὅτι εὐθὴς Κύριος ὁ Θεός μου, καὶ οὐκ ἔστιν ἀδικία ἐν αὐτῷ.

# 92

Εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ προσαββάτου, ὅτε κατῴκισται ἡ γῆ, αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. Ὁ Κύριος ἐβασίλευσεν, εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο, ἐνεδύσατο Κύριος δύναμιν καὶ περιεζώσατο· καὶ γὰρ ἐστερέωσε τὴν οἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται. Ἕτοιμος ὁ θρόνος σου ἀπὸ τότε, ἀπὸ τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. Ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ Κύριε, ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ φωνὰς αὐτῶν, ἀπὸ φωνῶν ὑδάτων πολλῶν· θαυμαστοὶ οἱ

μετεωρισμοὶ τῆς θαλάσσης· θαυμαστὸς ἐν ὑψηλοῖς ὁ Κύριος. Τὰ μαρτύριά σου ἐπιστώθησαν σφόδρα· τῷ οἴκῳ σου πρέπει ἁγίασμα, Κύριε, εἰς μακρότητα ἡμερῶν.

# 93

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ τετράδι σαββάτου. Θεὸς ἐκδικήσεων Κύριος, ὁ Θεὸς ἐκδικήσεων ἐπαῤῥησιάσατο. Ὑψώθητι ὁ κρίνων τὴν γῆν, ἀπόδος ἀνταπόδοσιν τοῖς ὑπερηφάνοις. Ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ, Κύριε, ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ καυχήσονται; Φθέγξονται καὶ λαλήσουσιν ἀδικίαν, λαλήσουσι πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν. Τὸν λαόν σου, Κύριε, ἐταπείνωσαν, καὶ τὴν κληρονομίαν σου ἐκάκωσαν. Χήραν καὶ ὀρφανὸν ἀπέκτειναν, καὶ προσήλυτον ἐφόνευσαν. Καὶ εἶπαν, οὐκ ὄψεται Κύριος, οὐδὲ συνήσει ὁ Θεὸς τοῦ Ἰακώβ. Σύνετε δὴ ἄφρονες ἐν τῷ λαῷ, καὶ μωροὶ, ποτὲ φρονήσατε. Ὁ φυτεύσας τὸ οὖς, οὐχὶ ἀκούει; ἢ ὁ πλάσας τὸν ὀφθαλμὸν, οὐχὶ κατανοεῖ; Ὁ παιδεύων ἔθνη, οὐχὶ ἐλέγξει; ὁ διδάσκων ἄνθρωπον γνῶσιν; Κύριος γινώσκει τοὺς διαλογισμοὺς τῶν ἀνθρώπων, ὅτι εἰσὶ μάταιοι. Μακάριος ὁ ἄνθρωπος ὃν ἂν σὺ παιδεύσῃς Κύριε, καὶ ἐκ τοῦ νόμου σου διδάξῃς αὐτόν· τοῦ πραῢναι αὐτῷ ἀφ’ ἡμερῶν πονηρῶν, ἕως οὗ ὀρυγῇ τῷ ἁμαρτωλῷ βόθρος. Ὅτι οὐκ ἀπώσεται Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ οὐκ ἐγκαταλείψει, ἕως οὗ δικαιοσύνη ἐπιστρέψῃ εἰς κρίσιν, καὶ ἐχόμενοι αὐτῆς πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ· διάψαλμα. Τίς ἀναστήσεταί μοι ἐπὶ πονηρευομένους, ἢ τίς συμπαραστήσεταί μοι ἐπὶ τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν; Εἰ μὴ ὅτι Κύριος ἐβοήθησέ μοι, παραβραχὺ παρῴκησε τῷ ᾅδῃ ἡ ψυχή μου. Εἰ ἔλεγον,

σεσάλευται ὁ πούς μου, τὸ ἔλεός σου Κύριε ἐβοήθει μοι. Κύριε, κατὰ τὸ πλῆθος τῶν ὀδυνῶν μου ἐν τῇ καρδίᾳ μου, αἱ παρακλήσεις σου ἠγάπησαν τὴν ψυχήν μου. Μὴ συμπροσέσται σοι θρόνος ἀνομίας, ὁ πλάσσων κόπον ἐπὶ προστάγματι. Θηρεύσουσιν ἐπὶ ψυχὴν δικαίου, καὶ αἷμα ἀθῶον καταδικάσονται. Καὶ ἐγένετό μοι Κύριος εἰς καταφυγὴν, καὶ ὁ Θεός μου εἰς βοηθὸν ἐλπίδος μου. Καὶ ἀποδώσει αὐτοῖς τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ τὴν πονηρίαν αὐτῶν· ἀφανιεῖ αὐτοὺς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.

# 94

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. Δεῦτε ἀγαλλιασώμεθα τῷ Κυρίῳ, ἀλαλάξωμεν τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρι ἡμῶν. Προφθάσωμεν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν ἐξομολογήσει, καὶ ἐν ψαλμοῖς ἀλαλάξωμεν αὐτῷ. Ὅτι Θεὸς μέγας Κύριος, καὶ βασιλεὺς μέγας ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς· ὅτι οὐκ ἀπώσεται Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, ὅτι ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ τὰ πέρατα τῆς γῆς, καὶ τὰ ὕψη τῶν ὀρέων αὐτοῦ ἐστιν. Ὅτι αὐτοῦ ἐστιν ἡ θάλασσα καὶ αὐτὸς ἐποίησεν αὐτὴν, καὶ τὴν ξηρὰν χεῖρες αὐτοῦ ἔπλασαν. Δεῦτε προσκυνήσωμεν καὶ προσπέσωμεν αὐτῷ, καὶ κλαύσωμεν ἐναντίον Κυρίου τοῦ ποίησαντος ἡμᾶς. Ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν, καὶ ἡμεῖς λαὸς νομῆς αὐτοῦ, καὶ πρόβατα χειρὸς αὐτοῦ· σήμερον ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε, μὴ σκληρύνητε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὡς ἐν τῷ παραπικρασμῷ, κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ πικρασμοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, οὗ ἐπείρασάν με οἱ πατέρες ὑμῶν· ἐδοκίμασαν, καὶ εἶδον τὰ ἔργα μου. Τεσσαράκοντα ἔτη προσώχθισα τῇ γενεᾷ ἐκείνῃ, καὶ εἶπα, ἀεὶ πλανῶνται τῇ καρδίᾳ, καὶ αὐτοὶ οὐκ ἔγνωσαν τὰς ὁδούς μου. Ὡς ὤμοσα ἐν τῇ

ὀργῇ μου, εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου.

# 95

Ὅτε ὁ οἶκος ᾠκοδόμηται μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν, ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. Ἄσατε τῷ Κυρίῳ ᾆσμα καινὸν, ᾄσατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ. Ἄσατε τῷ Κυρίῳ, εὐλογήσατε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, εὐαγγελίζεσθε ἡμέραν ἐξ ἡμέρας τὸ σωτήριον αὐτοῦ. Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὴν δόξαν αὐτοῦ, ἐν πᾶσι τοῖς λαοῖς τὰ θαυμάσια αὐτοῦ. Ὅτι μέγας Κύριος καὶ αἰνετὸς σφόδρα, φοβερός ἐστιν ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς. Ὅτι πάντες οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν δαιμόνια, ὁ δὲ Κύριος τοὺς οὐρανοὺς ἐποίησεν. Ἐξομολόγησις καὶ ὡραιότης ἐνώπιον αὐτοῦ, ἁγιωσύνη καὶ μεγαλοπρέπεια ἐν τῷ ἁγιάσματι αὐτοῦ. Ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ αἱ πατριαὶ τῶν ἐθνῶν, ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ δόξαν καὶ τιμὴν, ἐνέγκατε τῷ Κυρίῳ δόξαν ὀνόματι αὐτοῦ, ἄρατε θυσίας καὶ εἰσπορεύεσθε εἰς τὰς αὐλὰς αὐτοῦ· Προσκυνήσατε τῷ Κυρίῳ ἐν αὐλῇ ἁγίᾳ αὐτοῦ, σαλευθήτω ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ. Εἴπατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὁ Κύριος ἐβασίλευσε· καὶ γὰρ κατώρθωσε τὴν σἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται, κρινεῖ λαοῦς ἐν εὐθύτητι. Εὐφραινέσθωσαν οἱ οὐρανοὶ καὶ ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς. Χαρήσεται τὰ πεδία, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς· τότε ἀγαλλιάσονται πάντα τὰ ξύλα τοῦ δρυμοῦ πρὸ προσώπου τοῦ Κυρίου, ὅτι ἔρχεται, ὅτι ἔρχεται κρῖναι τὴν γῆν· κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ λαοὺς ἐν τῇ ἀληθείᾳ αὐτοῦ.

# 96

Τῷ Δαυὶδ, ὅτε ἡ γῆ αὐτοῦ καθίσταται. Ὁ Κύριος ἐβασίλευσεν, ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, εὐφρανθήτωσαν νῆσοι πολλαί. Νεφέλη καὶ γνόφος κύκλῳ αὐτοῦ, δικαιοσύνη καὶ κρίμα κατόρθωσις τοῦ θρόνου αὐτοῦ. Πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ προπορεύσεται, καὶ φλογιεῖ κύκλῳ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Ἔφαναν αἱ ἀστραπαὶ αὐτοῦ τῇ οἰκουμένῃ, εἶδε καὶ ἐσαλεύθη ἡ γῆ· τὰ ὄρη ὡσεὶ κηρὸς ἐτάκησαν ἀπὸ προσώπου Κυρίου, ἀπὸ προσώπου Κυρίου πάσης τῆς γῆς. Ἀνήγγειλαν αἱ οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, καὶ εἴδοσαν πάντες οἱ λαοὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ. Αἰσχυνθήτωσαν πάντες οἱ προσκυνοῦντες τοῖς γλυπτοῖς, οἱ ἐγκαυχώμενοι ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν· προσκυνήσατε αὐτῷ πάντες ἄγγελοι αὐτοῦ. Ἤκουσε καὶ εὐφράνθη Σιὼν, καὶ ἠγαλλιάσαντο αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαίας, ἕνεκεν τῶν κριμάτων σου Κύριε. Ὅτι σὺ εἶ Κύριος ὁ ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, σφόδρα ὑπερυψώθης ὑπὲρ πάντας τοὺς θεούς. Οἱ ἀγαπῶντες τὸν Κύριον, μισεῖτε πονηρόν· φυλάσσει Κύριος τὰς ψυχὰς τῶν ὁσίων αὐτοῦ, ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλῶν ῥύσεται αὐτούς. Φῶς ἀνέτειλε τῷ δικαίῳ, καὶ τοῖς εὐθέσι τῇ καρδίᾳ εὐφροσύνη. Εὐφράνθητε δίκαιοι ἐν τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐξομολογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς ἁγιωσύνης αὐτοῦ.

# 97

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ἄσατε τῷ Κυρίῳ ᾆσμα καινὸν, ὅτι θαυμαστὰ ἐποίησεν ὁ Κύριος· ἔσωσεν αὐτῷ ἡ δεξιὰ αὐτοῦ, καὶ ὁ βραχίων ὁ ἅγιος αὐτοῦ. Ἐγνώρισε Κύριος τὸ σωτήριον αὐτοῦ, ἐναντίον τῶν ἐθνῶν ἀπεκάλυψε τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. Ἐμνήσθη τοῦ ἐλέους αὐτοῦ τῷ Ἰακὼβ, καὶ τῆς ἀληθείας αὐτοῦ τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ· εἴδοσαν

πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ ἡμῶν. Ἀλαλάξατε τῷ Θεῷ πᾶσα ἡ γῆ, ᾄσατε καὶ ἀγαλλιᾶσθε καὶ ψάλατε. Ψάλατε τῷ Κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, ἐν κιθάρᾳ καὶ φωνῇ ψαλμοῦ. Ἐν σάλπιγξιν ἐλαταῖς, καὶ φωνῇ σάλπιγγος κερατίνης· ἀλαλάξατε ἐνώπιον τοῦ βασιλέως Κυρίῳ. Σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, ἡ οἰκουμένη καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτήν. Ποταμοὶ κροτήσουσι χειρὶ ἐπιτοαυτὸ, τὰ ὄρη ἀγαλλιάσονται. Ὅτι ἥκει κρῖναι τὴν γῆν· κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ λαοὺς ἐν εὐθύτητι.

# 98

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ὁ Κύριος ἐβασίλευσεν, ὀργιζέσθωσαν λαοί· ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ, σαλευθήτω ἡ γῆ. Κύριος ἐν Σιὼν μέγας, καὶ ὑψηλός ἐστιν ἐπὶ πάντας τοὺς λαούς. Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ ὀνόματί σου τῷ μεγάλῳ, ὅτι φοβερὸν καὶ ἅγιόν ἐστι, καὶ τιμὴ βασιλέως κρίσιν ἀγαπᾷ· σὺ ἡτοίμασας εὐθύτητας, κρίσιν καὶ δικαιοσύνην ἐν Ἰακὼβ σὺ ἐποίησας. Ὑψοῦτε Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ προσκυνεῖτε τῷ ὑποποδίῳ τῶν ποδῶν αὐτοῦ, ὅτι ἅγιός ἐστι. Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐν τοῖς ἱερεῦσιν αὐτοῦ, καὶ Σαμουὴλ ἐν τοῖς ἐπικαλουμένοις τὸ ὄνομα αὐτοῦ· ἐπεκαλοῦντο τὸν Κύριον, καὶ αὐτὸς εἰσήκουεν, ἐν στύλῳ νεφέλης ἐλάλει πρὸς αὐτούς· ἐφύλασσον τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, καὶ τὰ προστάγματα ἃ ἔδωκεν αὐτοῖς. Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, σὺ ἐπήκουες αὐτῶν· ὁ Θεὸς, εὐίλατος ἐγίνου αὐτοῖς, καὶ ἐκδικῶν ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν. Ὑψοῦτε Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ προσκυνεῖτε εἰς ὄρος ἅγιον αὐτοῦ, ὅτι ἅγιος Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.

# 99

Ψαλμὸς εἰς ἐξομολόγησιν. Ἀλαλάξατε τῷ Κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, δουλεύσατε τῷ Κυρίῳ ἐν εὐφροσύνῃ· εἰσέλθατε ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει. Γνῶτε ὅτι Κύριος αὐτός ἐστιν ὁ Θεός· αὐτὸς ἐποίησεν ἡμᾶς, καὶ οὐχ ἡμεῖς, λαὸς αὐτοῦ καὶ πρόβατα τῆς νομῆς αὐτοῦ. Εἰσέλθατε εἰς τὰς πύλας αὐτοῦ ἐν ἐξομολογήσει, τὰς αὐλὰς αὐτοῦ ἐν ὕμνοις· ἐξομολογεῖσθε αὐτῷ, αἰνεῖτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Ὅτι χρηστὸς Κύριος, εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ, καὶ ἕως γενεᾶς καὶ γενεᾶς ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ.

# 100

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ἔλεος καὶ κρίσιν ᾄσομαί σοι, Κύριε· ψαλῶ καὶ συνήσω ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ· πότε ἥξεις πρὸς μέ; διεπορευόμην ἐν ἀκακίᾳ καρδίας μου, ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου μου. Οὐ προεθέμην πρὸ ὀφθαλμῶν μου πρᾶγμα παράνομον, ποιοῦντας παραβάσεις ἐμίσησα· οὐκ ἐκολλήθη μοικαρδία σκαμβὴ, ἐκκλίνοντος ἀπ’ ἐμοῦ τοῦ πονηροῦ οὐκ ἐγίνωσκον. Τὸν καταλαλοῦντα λάθρα τοῦ πλησίον αὐτοῦ, τοῦτον ἐξεδίωκον· ὑπερηφάνῳ ὀφθαλμῷ καὶ ἀπλήστῳ καρδίᾳ, τούτῳ οὐ συνήσθιον. Οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπὶ τοὺς πιστοὺς τῆς γῆς, τοῦ συγκαθῆσθαι αὐτοὺς μετ’ ἐμοῦ· πορευόμενος ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ, οὗτός μοι ἐλειτούργει. Οὐ κατῴκει ἐν μέσῳ τῆς οἰκίας μου ποιῶν ὑπερηφανίαν· λαλῶν ἄδικα οὐ κατεύθυνεν ἐναντίον τῶν ὀφθαλμῶν μου. Εἰς τὰς πρωΐας ἀπέκτενον πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, τοῦ ἐξολοθρεῦσαι ἐκ πόλεως Κυρίου πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀδικίαν.

# 101

Προσευχὴ τῷ πτωχῷ, ὅταν ἀκηδιάσῃ, καὶ ἐναντίον Κυρίου ἐκχέῃ τὴν δέησιν αὐτοῦ. Κύριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, καὶ ἡ κραυγή μου πρὸς σὲ ἐλθέτω. Μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ’ ἐμοῦ· ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ θλίβομαι, κλῖνον πρὸς μὲ τὸ οὖς σου· ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ εἰσάκουσόν μου. Ὅτι ἐξέλιπον ὡσεὶ καπνὸς αἱ ἡμέραι μου, καὶ τὰ ὀστᾶ μου ὡσεὶ φρύγιον συνεφρύγησαν. Ἐπλήγην ὡσεὶ χόρτος, καὶ ἐξηράνθη ἡ καρδία μου, ὅτι ἐπελαθόμην τοῦ φαγεῖν τὸν ἄρτον μου. Ἀπὸ φωνῆς τοῦ στεναγμοῦ μου, ἐκολλήθη τὸ ὀστοῦν μου τῇ σαρκί μου. Ὡμοιώθην πελεκᾶνι ἐρημικῷ, ἐγενήθην ὡσεὶ νυκτικόραξ ἐν οἰκοπέδῳ. Ἠγρύπνησα, καὶ ἐγενήθην ὡσεὶ στρουθίον μονάζον ἐπὶ δώματι. Ὅλην τὴν ἡμέραν ὠνείδιζόν με οἱ ἐχθροί μου, καὶ οἱ ἐπαινοῦντές με κατ’ ἐμοῦ ὤμνυον. Ὅτι σποδὸν ὡσεὶ ἄρτον ἔφαγον, καὶ τὸ πόμα μου μετὰ κλαυθμοῦ ἐκίρνων, ἀπὸ προσώπου τῆς ὀργῆς σου καὶ τοῦ θυμοῦ σου, ὅτι ἐπάρας κατέῤῥαξάς με. Αἱ ἡμέραι μου ὡσεὶ σκιὰ ἐκλίθησαν, κἀγὼ ὡσεὶ χόρτος ἐξηράνθην. Σὺ δέ Κύριε εἰς τὸν αἰῶνα μένεις, καὶ τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. Σὺ ἀναστὰς οἰκτειρήσεις τὴν Σιὼν, ὅτι καιρὸς τοῦ οἰκτειρῆσαι αὐτὴν, ὅτι ἥκει καιρός. Ὅτι εὐδόκησαν οἱ δοῦλοί σου τοὺς λίθους αὐτῆς, καὶ τὸν χοῦν αὐτῆς οἰκτειρήσουσι. Καὶ φοβηθήσονται τὰ ἔθνη τὸ ὄνομά σου Κύριε, καὶ πάντες οἱ βασιλεῖς τὴν δόξαν σου. Ὅτι οἰκοδομήσει Κύριος τὴν Σιὼν, καὶ ὀφθήσεται ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ. Ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν προσευχὴν τῶν ταπεινῶν, καὶ οὐκ ἐξουδένωσε τὴν δέησιν αὐτῶν. Γραφήτω αὕτη εἰς γενεὰν ἑτέραν, καὶ λαὸς ὁ κτιζόμενος αἰνέσει τὸν Κύριον. Ὅτι ἐξέκυψεν ἐξ ὕψους ἁγίου

αὐτοῦ, Κύριος ἐξ οὐρανοῦ ἐπὶ τὴν γῆν ἐπέβλεψε, τοῦ ἀκοῦσαι τοῦ στεναγμοῦ τῶν πεπεδημένων, τοῦ λῦσαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων, τοῦ ἀναγγεῖλαι ἐν Σιὼν τὸ ὄνομα Κυρίου, καὶ τὴν αἴνεσιν αὐτοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ· ἐν τῷ συναχθῆναι λαοὺς ἐπιτοαυτὸ, καὶ βασιλεῖς τοῦ δουλεύειν τῷ Κυρίῳ. Ἀπεκρίθη αὐτῷ ἐν ὁδῷ ἰσχύος αὐτοῦ, τὴν ὀλιγότητα τῶν ἡμερῶν μου ἀνάγγειλόν μοι· μὴ ἀναγάγῃς με ἐν ἡμίσει ἡμερῶν μου, ἐν γενεᾷ γενεῶν τὰ ἔτη σου. Κατ' ἀρχὰς τὴν γῆν σὺ Κύριε ἐθεμελίωσας, καὶ ἔργα τῶν χειρῶν σου εἰσὶν οἱ οὐρανοί. Αὐτοὶ ἀπολοῦνται, σὺ δὲ διαμένεις· καὶ πάντες ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσονται, καὶ ὡσεὶ περιβόλαιον ἑλίξεις αὐτοὺς, καὶ ἀλλαγήσονται. Σὺ δὲ ὁ αὐτὸς εἶ, καὶ τὰ ἔτη σου οὐκ ἐκλείψουσιν· Οἱ υἱοῖ τῶν δούλων σου κατασκηνώσουσι, καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα κατευθυνθήσεται.

# 102

Τῷ Δαυίδ. Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον, καὶ πάντα τὰ ἐντός μου τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ. Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον, καὶ μὴ ἐπιλανθάνου πάσας τὰς αἰνέσεις αὐτοῦ· Τὸν εὐιλατεύοντα πάσαις ταῖς ἀνομίαις σου, τὸν ἰώμενον πάσας τὰς νόσους σου, τὸν λυτρούμενον ἐκ φθορᾶς τὴν ζωήν σου, τὸν στεφανοῦντά σε ἐν ἐλέει καὶ οἰκτιρμοῖς, τὸν ἐμπιπλῶντα ἐν ἀγαθοῖς τὴν ἐπιθυμίαν σου· ἀνακαινισθήσεται ὡς ἀετοῦ ἡ νεότης σου. Ποιῶν ἐλεημοσύνας ὁ Κύριος, καὶ κρίμα πᾶσι τοῖς ἀδικουμένοις. Ἐγνώρισε τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ τῷ Μωυσῇ, τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ τὰ θελήματα αὐτοῦ. Οἰκτίρμων καὶ ἐλεήμων ὁ Κύριος, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος. Οὐκ εἰς τέλος ὀργισθήσεται, οὐδὲ εἰς τὸν αἰῶνα μηνιεῖ. Οὐ κατὰ τὰς

ἁμαρτίας ἡμῶν ἐποίησεν ἡμῖν, οὐδὲ κατὰ τὰς ἀνομίας ἡμῶν ἀνταπέδωκεν ἡμῖν. Ὅτι κατὰ τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ ἀπὸ τῆς γῆς, ἐκραταίωσε Κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς φοβουμένους αὐτόν. Καθόσον ἀπέχουσιν ἀνατολαὶ ἀπὸ δυσμῶν, ἐμάκρυνεν ἀφ᾽ ἡμῶν τὰς ἀνομίας ἡμῶν. Καθὼς οἰκτείρει πατὴρ υἱοὺς, ᾠκτείρησε Κύριος τοὺς φοβουμένους αὐτόν. Ὅτι αὐτὸς ἔγνω τὸ πλάσμα ἡμῶν· μνήσθητι ὅτι χοῦς ἐσμεν. Ἄνθρωπος, ὡσεὶ χόρτος αἱ ἡμέραι αὐτοῦ, ὡσεὶ ἄνθος τοῦ ἀγροῦ οὕτως ἐξανθήσει. Ὅτι πνεῦμα διῆλθεν ἐν αὐτῷ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, καὶ οὐκ ἐπιγνώσεται ἔτι τὸν τόπον αὐτοῦ. Τὸ δὲ ἔλεος τοῦ Κυρίου ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος ἐπὶ τοὺς φοβουμένους αὐτόν· καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ ἐπὶ υἱοὺς υἱῶν, τοῖς φυλάσσουσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ, καὶ μεμνημένοις τῶν ἐντολῶν αὐτοῦ τοῦ ποιῆσαι αὐτάς. Κύριος ἐν τῷ οὐρανῷ ἡτοίμασε τὸν θρόνον αὐτοῦ, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ πάντων δεσπόζει. Εὐλογεῖτε τὸν Κύριον πάντες ἄγγελοι αὐτοῦ, δυνατοὶ ἰσχύϊ ποιοῦντες τὸν λόγον αὐτοῦ, τοῦ ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς τῶν λόγων αὐτοῦ. Εὐλογεῖτε τὸν Κύριον πᾶσαι αἱ δυνάμεις αὐτοῦ, λειτουργοὶ αὐτοῦ ποιοῦντες τὰ θελήματα αὐτοῦ. Εὐλογεῖτε τὸν Κύριον πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ, ἐν παντὶ τόπῳ τῆς δυναστείας αὐτοῦ· εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον.

# 103

Τῷ Δαυίδ. Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον. Κύριε ὁ Θεός μου ἐμεγαλύνθης σφόδρα· ἐξομολόγησιν καὶ εὐπρέπειαν ἐνεδύσω, ἀναβαλλόμενος φῶς ὡς ἱμάτιον, ἐκτείνων τὸν οὐρανὸν ὡσεὶ δέῤῥιν· Ὁ στεγάζων ἐν ὕδασι τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ, ὁ τιθεὶς νέφη τὴν

ἐπίβασιν αὐτοῦ· ὁ περιπατῶν ἐπὶ πτερύγων ἀνέμων· Ὁ ποιῶν τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ πνεύματα, καὶ τοὺς λειτουργοὺς αὐτοῦ πῦρ φλέγον· Ὁ θεμελιῶν τὴν γῆν ἐπὶ τὴν ἀσφάλειαν αὐτῆς, οὐ κλιθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἄβυσσος ὡς ἱμάτιον τὸ περιβόλαιον αὐτοῦ, ἐπὶ τῶν ὀρέων στήσονται ὕδατα. Ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς σου φεύξονται, ἀπὸ φωνῆς βροντῆς σου δειλιάσουσιν. Ἀναβαίνουσιν ὄρη, καὶ καταβαίνουσι πεδία εἰς τόπον ὃν ἐθεμελίωσας αὐτοῖς. Ὅριον ἔθου ὃ οὐ παρελεύσονται, οὐδὲ ἐπιστρέψουσι καλύψαι τὴν γῆν. Ὁ ἐξαποστέλλων πηγὰς ἐν φάραγξιν, ἀναμέσον τῶν ὀρέων διελεύσονται ὕδατα. Ποτιοῦσι πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, προσδέξονται ὄναγροι εἰς δίψαν αὐτῶν. Ἐπ’ αὐτὰ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνώσει, ἐκ μέσου τῶν πετρῶν δώσουσι φωνήν. Ποτίζων ὄρη ἐκ τῶν ὑπερῴων αὐτοῦ, ἀπὸ καρποῦ τῶν ἔργων σου χορτασθήσεται ἡ γῆ. Ὁ ἐξανατέλλων χόρτον τοῖς κτήνεσι, καὶ χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων· τοῦ ἐξαγαγεῖν ἄρτον ἐκ τῆς γῆς, καὶ οἶνος εὐφραίνει καρδίαν ἀνθρώπου· τοῦ ἱλαρύναι πρόσωπον ἐν ἐλαίῳ, καὶ ἄρτος καρδίαν ἀνθρώπου στηρίζει. Χορτασθήσεται τὰ ξύλα τοῦ πεδίου, αἱ κέδροι τοῦ Λιβάνου ἃς ἐφύτευσεν. Ἐκεῖ στρουθία ἐννοσσεύσουσι, τοῦ ἐρωδιοῦ ἡ οἰκία ἡγεῖται αὐτῶν. Ὄρη τὰ ὑψηλὰ ταῖς ἐλάφοις, πέτρα καταφυγὴ τοῖς χοιρογρυλλίοις. Ἐποίησε σελήνην εἰς καιροὺς, ὁ ἥλιος ἔγνω τὴν δύσιν αὐτοῦ. Ἔθου σκότος καὶ ἐγένετο νὺξ, ἐν αὐτῇ διελεύσονται πάντα τὰ θηρία τοῦ δρυμοῦ. Σκυμνοι ὠρυόμενοι ἁρπάσαι, καὶ ζητῆσαι παρὰ τοῦ Θεοῦ βρῶσιν αὐτοῖς. Ἀνέτειλεν ὁ ἥλιος καὶ συναχθήσονται, καὶ ἐν ταῖς μάνδραις αὐτῶν κοιτασθήσονται. Ἐξελεύσεται ἄνθρωπος ἐπὶ τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὴν ἐργασίαν αὐτοῦ ἕως ἑσπέρας. Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου Κύριε, πάντα ἐν σοφίᾳ ἐποίησας· ἐπληρώθη ἡ γῆ τῆς κτίσεώς σου·

Αὕτη ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη καὶ εὐρύχωρος· ἐκεῖ ἑρπετὰ ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμὸς, ζῶα μικρὰ μετὰ μεγάλων. Ἐκεῖ πλοῖα διαπορεύονται, δράκων οὗτος ὃν ἔπλασας ἐμπαίζειν αὐτῷ. Πάντα πρὸς σὲ προσδοκῶσι, δοῦναι τὴν τροφὴν αὐτοῖς εὔκαιρον. Δόντος σου αὐτοῖς, συλλέξουσιν· ἀνοίξαντος δέ σου τὴν χεῖρα, τὰ σύμπαντα πλησθήσονται χρηστότητος. Ἀποστρέψαντος δέ σου τὸ πρόσωπον, ταραχθήσονται· ἀντανελεῖς τὸ πνεῦμα αὐτῶν, καὶ ἐκλείψουσι, καὶ εἰς τὸν χοῦν αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν. Ἐξαποστελεῖς τὸ πνεῦμά σου καὶ κτισθήσονται, καὶ ἀνακαινιεῖς τὸ πρόσωπον τῆς γῆς. Ἤτω ἡ δόξα Κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα, εὐφρανθήσεται Κύριος ἐπὶ τοῖς ἔργοις αὐτοῦ· Ὁ ἐπιβλέπων ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ποιῶν αὐτὴν τρέμειν, ὁ ἁπτόμενος τῶν ὀρέων καὶ καπνίζονται. Ἄσω τῷ Κυρίῳ ἐν τῇ ζωῇ μου, ψαλῶ τῷ Θεῷ μου ἕως ὑπάρχω. Ἡδυνθείη αὐτῷ ἡ διαλογή μου, ἐγὼ δὲ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ Κυρίῳ. Ἐκλείποισαν ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἄνομοι, ὥστε μὴ ὑπάρχειν αὐτούς· εὐλόγει, ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον.

# 104

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐπικαλεῖσθε τὸ ὄνομα αὐτοῦ· ἀπαγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔργα αὐτοῦ. Ασατε αὐτῷ καὶ ψάλατε αὐτῷ. διηγήσασθε πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ. Ἐπαινεῖσθε ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ· εὐφρανθήτω καρδία ζητούντων τὸν Κύριον. Ζητήσατε τὸν Κύριον καὶ κραταιώθητε· ζητήσατε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ διαπαντός. Μνήσθητε τῶν θαυμασίων αὐτον ὧν ἐποίησε, τὰ τέρατα αὐτοῦ, καὶ τὰ κρίματα τοῦ στόματος αὐτοῦ. Σπέρμα Ἀβραὰμ δοῦλοι αὐτοῦ, υἱοὶ Ἰακὼβ ἐκλεκτοὶ αὐτοῦ. Αὐτὸς

Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν, ἐν πάσῃ τῇ γῇ τὰ κρίματα αὐτοῦ. Ἐμνήσθη εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ, λόγου οὗ ἐνετείλατο εἰς χιλίας γενεὰς, ὃν διέθετο τῷ Ἀβραὰμ, καὶ τοῦ ὅρκου αὐτοῦ τῷ Ἰσαάκ· Καὶ ἔστησεν αὐτὴν τῷ Ἰακὼβ εἰς πρόσταγμα, καὶ τῷ Ἰσραὴλ εἰς διαθήκην αἰώνιον, λέγων, σοὶ δώσω τὴν γῆν Χαναὰν, σχοίνισμα κληρονομίας ὑμῶν. Ἐν τῷ εἶναι αὐτοὺς ἀριθμῷ βραχεῖς, ὀλιγοστοὺς καὶ παροίκους ἐν αὐτῇ, καὶ διῆλθον ἐξ ἔθνους εἰς ἔθνος, καὶ ἐκ βασιλείας εἰς λαὸν ἕτερον, οὐκ ἀφῆκεν ἄνθρωπον ἀδικῆσαι αὐτοὺς, καὶ ἤλεγξεν ὑπὲρ αὐτῶν βασιλεῖς· Μὴ ἅψησθε τῶν χριστῶν μου, καὶ ἐν τοῖς προφήταις μου μὴ πονηρεύεσθε. Καὶ ἐκάλεσε λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, πᾶν στήριγμα ἄρτου συνέτριψεν. Ἀπέστειλεν ἔμπροσθεν αὐτῶν ἄνθρωπον, εἰς δοῦλον ἐπράθη Ἰωσήφ. Ἐταπείνωσαν ἐν πέδαις τοὺς πόδας αὐτοῦ, σίδηρον διῆλθεν ἡ ψυχὴ αὐτοῦ· Μέχρι τοῦ ἐλθεῖν τὸν λόγον αὐτοῦ· τὸ λόγιον τοῦ Κυρίου ἐπύρωσεν αὐτόν. Ἀπέστειλε βασιλεὺς καὶ ἔλυσεν αὐτὸν, ἄρχων λαῶν καὶ ἀφῆκεν αὐτόν. Κατέστησεν αὐτὸν κύριον τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ ἄρχοντα πάσης τῆς κτήσεως αὐτοῦ, τοῦ παιδεῦσαι τοὺς ἄρχοντας αὐτοῦ ὡς ἑαυτὸν, καὶ τοὺς πρεσβυτέρους αὐτοῦ σοφίσαι. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰσραὴλ εἰς Αἴγυπτον, καὶ Ἰακὼβ παρῴκησεν ἐν γῇ Χάμ. Καὶ ηὔξησε τὸν λαὸν αὐτοῦ σφόδρα, καὶ ἐκραταίωσεν αὐτὸν ὑπὲρ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Καὶ μετέστρεψε τὴν καρδίαν αὐτῶν τοῦ μισῆσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ, τοῦ δολιοῦσθαι ἐν τοῖς δούλοις αὐτοῦ. Ἐξαπέστειλε Μωυσῆν τὸν δοῦλον αὐτοῦ, Ἀαρὼν ὃν ἐξελέξατο αὐτόν. Ἔθετο ἐν αὐτοῖς τοὺς λόγους τῶν σημείων αὐτοῦ, καὶ τῶν τεράτων ἐν γῇ Χάμ. Ἐξαπέστειλε σκότος καὶ ἐσκότασε, καὶ παρεπίκραναν τοὺς λόγους αὐτοῦ· Μετέστρεψε τὰ ὕδατα αὐτῶν εἰς αἷμα, καὶ ἀπέκτεινε τοὺς ἰχθύας αὐτῶν. Ἐξῆρψεν ἡ γῆ αὐτῶν βατράχους, ἐν τοῖς ταμείοις

τῶν βασιλέων αὐτῶν. Εἶπε καὶ ἦλθε κυνόμυια, καὶ σκνίπες ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῶν. Ἔθετο τὰς βροχὰς αὐτῶν χάλαζαν, πῦρ καταφλέγον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν. Καὶ ἐπάταξε τὰς ἀμπέλους αὐτῶν καὶ τὰς συκὰς αὐτῶν, καὶ συνέτριψε πᾶν ξύλον ὁρίου αὐτῶν. Εἶπε καὶ ἦλθεν ἀκρὶς, καὶ βροῦχος οὗ οὐκ ἦν ἀριθμὸς, καὶ κατέφαγε πάντα τὸν χόρτον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν, καὶ κατέφαγε τὸν καρπὸν τῆς γῆς αὐτῶν. Καὶ ἐπάταξε πᾶν πρωτότοκον ἐκ τῆς γῆς αὐτῶν, ἀπαρχὴν παντὸς πόνου αὐτῶν. Καὶ ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐν ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ, καὶ οὐκ ἦν ἐν ταῖς φυλαῖς αὐτῶν ὁ ἀσθενῶν. Εὐφράνθη Αἴγυπτος ἐν τῇ ἐξόδῳ αὐτῶν, ὅτι ἐπέπεσεν ὁ φόβος αὐτῶν ἐπ’ αὐτούς. Διεπέτασε νεφέλην εἰς σκέπην αὐτοῖς, καὶ πῦρ τοῦ φωτίσαι αὐτοῖς τὴν νύκτα. Ἤτησαν, καὶ ἦλθεν ὀρτυγομήτρα, καὶ ἄρτον οὐρανοῦ ἐνέπλησεν αὐτούς. Διέῤῥηξε πέτραν, καὶ ἐῤῥύησαν ὕδατα, ἐπορεύθησαν ἐν ἀνύδροις ποταμοί. Ὅτι ἐμνήσθη τοῦ λόγου τοῦ ἁγίου αὐτοῦ, τοῦ πρὸς Ἀβραὰμ τὸν δοῦλον αὐτοῦ· Καὶ ἐξήγαγε τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει, καὶ τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ ἐν εὐφροσύνῃ· Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς χώρας ἐθνῶν, καὶ πόνους λαῶν ἐκληρονόμησαν. Ὅπως ἂν φυλάξωσι τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ ἐκζητήσωσιν.

# 105

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, ὅτι χρηστὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τίς λαλήσει τὰς δυναστείας τοῦ Κυρίου, ἀκουστὰς ποιήσει πάσας τὰς αἰνέσεις αὐτοῦ; Μακάριοι οἱ φυλάσσοντες κρίσιν, καὶ ποιοῦντες δικαιοσύνην ἐν παντὶ καιρῷ. Μνήσθητι ἡμῶν Κύριε ἐν τῇ εὐδοκίᾳ τοῦ λαοῦ σου, ἐπίσκεψαι

ἡμᾶς ἐν τῷ σωτηρίῳ σου· τοῦ ἰδεῖν ἐν τῇ χρηστότητι τῶν ἐκλεκτῶν σου, τοῦ εὐφρανθῆναι ἐν τῇ εὐφροσύνῃ τοῦ ἔθνους σου, τοῦ ἐπαινεῖσθαι μετὰ τῆς κληρονομίας σου. Ἡμάρτομεν μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν, ἠνομήσαμεν, ἠδικήσαμεν. Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν Αἰγύπτῳ οὐ συνῆκαν τὰ θαυμάσιά σου, καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν τοῦ πλήθους τοῦ ἐλέους σου· καὶ παρεπίκραναν ἀναβαίνοντες ἐν τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ. Καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς ἕνεκεν τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ, τοῦ γνωρίσαι τὴν δυναστείαν αὐτοῦ. Καὶ ἐπετίμησε τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ, καὶ ἐξηράνθη· καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἀβύσσῳ ὡς ἐν ἐρήμῳ· Καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς ἐκ χειρὸς μισούντων, καὶ ἐλυτρώσατο αὐτοὺς ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ. Ἐκάλυψεν ὕδωρ τοὺς θλίβοντας αὐτοὺς, εἷς ἐξ αὐτῶν οὐχ ὑπελείφθη. Καὶ ἐπίστευσαν τοῖς λόγοις αὐτοῦ, καὶ ᾖνεσαν τὴν αἴνεσιν αὐτοῦ. Ἐτάχυναν, ἐπελάθοντο τῶν ἔργων αὐτοῦ, οὐχ ὑπέμειναν τὴν βουλὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐπεθύμησαν ἐπιθυμίαν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἐπείρασαν τὸν Θεὸν ἐν ἀνύδρῳ. Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς τὸ αἴτημα αὐτῶν, καὶ ἐξαπέστειλε πλησμονὴν εἰς τὴν ψυχὴν αὐτῶν. Καὶ παρώργισαν Μωυσῆν ἐν τῇ παρεμβολῇ, καὶ Ἀαρὼν τὸν ἅγιον Κυρίου. Ἠνοίχθη ἡ γῆ καὶ κατέπιε Δαθὰν, καὶ ἐκάλυψεν ἐπὶ τὴν συναγωγὴν Ἀβειρών. Καὶ ἐξεκαύθη πῦρ ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτῶν, καὶ φλὸξ κατέφλεξεν ἁμαρτωλούς. Καὶ ἐποίησαν μόσχον ἐν Χωρὴβ, καὶ προσεκύνησαν τῷ γλυπτῷ· Καὶ ἠλλάξαντο τὴν δόξαν αὐτῶν ἐν ὁμοιώματι μόσχου ἔσθοντος χόρτον. Ἐπελάθοντο τοῦ Θεοῦ τοῦ σώζοντος αὐτοὺς, τοῦ ποιήσαντος μεγάλα ἐν Αἰγύπτῳ, θαυμαστὰ ἐν γῇ Χὰμ, καὶ φοβερὰ ἐπὶ θαλάσσης ἐρυθρᾶς. Καὶ εἶπε τοῦ ἐξολοθρεῦσαι αὐτοὺς, εἰ μὴ Μωυσῆς ὁ ἐκλεκτὸς αὐτοῦ ἔστη ἐν τῇ θραύσει ἐνώπιον αὐτοῦ, τοῦ ἀποστρέψαι ἀπὸ θυμοῦ ὀργῆς αὐτοῦ, τοῦ μὴ ἐξολοθρεῦσαι. Καὶ ἐξουδένωσαν γῆν ἐπιθυμητὴν, καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τῷ λόγῳ αὐτοῦ.

Καὶ ἐγόγγυσαν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν, οὐκ εἰσήκουσαν τῆς φωνῆς Κυρίου. Καὶ ἐπῆρε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτοὺς, τοῦ καταβαλεῖν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ τοῦ καταβαλεῖν τὸ σπέρμα αὐτῶν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ διασκορπίσαι αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις. Καὶ ἐτελέσθησαν τῷ Βεελφεγὼρ, καὶ ἔφαγον θυσίας νεκρῶν. Καὶ παρώξυναν αὐτὸν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν, καὶ ἐπληθύνθη ἐν αὐτοῖς ἡ πτῶσις. Καὶ ἔστη Φινεὲς καὶ ἐξιλάσατο, καὶ ἐκόπασεν ἡ θραῦσις. Καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην, εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἕως τοῦ αἰῶνος. Καὶ παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ ὕδατος ἀντιλογίας, καὶ ἐκακώθη Μωυσῆς δι᾽ αὐτούς· Ὅτι παρεπίκραναν τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ διέστειλεν ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ. Οὐκ ἐξωλόθρευσαν τὰ ἔθνη ἃ εἶπε Κύριος αὐτοῖς. Καὶ ἐμίγησαν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἔμαθον τὰ ἔργα αὐτῶν. Καὶ ἐδούλευσαν τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν, καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς εἰς σκάνδαλον. Καὶ ἔθυσαν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν τοῖς δαιμονίοις, καὶ ἐξέχεαν αἷμα ἀθῶον, αἷμα υἱῶν αὐτῶν καὶ θυγατέρων, ὧν ἔθυσαν τοῖς γλυπτοῖς Χαναάν· καὶ ἐφονοκτονήθη ἡ γῆ ἐν τοῖς αἵμασι, καὶ ἐμιάνθη ἐν τοῖς ἔργοις αὐτῶν· καὶ ἐπόρνευσαν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐβδελύξατο τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. Καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς εἰς χεῖρας ἐχθρῶν, καὶ ἐκυρίευσαν αὐτῶν οἱ μισοῦντες αὐτούς. Καὶ ἔθλιψαν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν, καὶ ἐταπεινώθησαν ὑπὸ τὰς χεῖρας αὐτῶν. Πλεονάκις ἐῤῥύσατο αὐτοὺς, αὐτοὶ δὲ παρεπίκραναν αὐτὸν ἐν τῇ βουλῇ αὐτῶν· καὶ ἐταπεινώθησαν ἐν ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν. Καὶ εἶδε Κύριος ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, ἐν τῷ αὐτὸν εἰσακοῦσαι τῆς δεήσεως αὐτῶν. Καὶ ἐμνήσθη τῆς διαθήκης αὐτοῦ, καὶ μετεμελήθη κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ. Καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς εἰς οἰκτιρμοὺς ἐναντίον πάντων τῶν αἰχμαλωτευσάντων αὐτούς. Σῶσον ἡμᾶς Κύριε ὁ

Θεὸς ἡμῶν, καὶ ἐπισυνάγαγε ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐθνῶν, τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματί σου τῷ ἁγίῳ, τοῦ ἐγκαυχᾶσθαι ἐν τῇ αἰνέσει σου. Εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος· καὶ ἐρεῖ πᾶς ὁ λαὸς, γένοιτο, γένοιτο.

# 106

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, ὅτι χρηστὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Εἰπάτωσαν οἱ λελυτρωμένοι ὑπὸ Κυρίου, οὓς ἐλυτρώσατο ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ, καὶ ἐκ τῶν χωρῶν συνήγαγεν αὐτούς· ἀπὸ ἀνατολῶν, καὶ δυσμῶν, καὶ βορρᾶ, καὶ θαλάσσης. Ἐπλανήθησαν ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν ἀνύδρῳ· ὁδὸν πόλεως κατοικητηρίου οὐχ εὗρον· Πεινῶντες καὶ διψῶντες, ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἐν αὐτοῖς ἐξέλιπε. Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς Κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἐῤῥύσατο αὐτούς· Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς εἰς ὁδὸν εὐθεῖαν, τοῦ πορευθῆναι εἰς πόλιν κατοικητηρίου. Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ Κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. Ὅτι ἐχόρτασε ψυχὴν κενὴν, καὶ πεινῶσαν ἐνέπλησεν ἀγαθῶν. Καθημένους ἐν σκότει καὶ σκιᾷ θανάτου, πεπεδημένους ἐν πτωχείᾳ καὶ σιδήρῳ· Ὅτι παρεπίκραναν τὰ λόγια τοῦ Θεοῦ, καὶ τὴν βουλὴν τοῦ ὑψίστου παρώξυναν· Καὶ ἐταπεινώθη ἐν κόποις ἡ καρδία αὐτῶν, ἠσθένησαν καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν. Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς Κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. Καὶ ἐξήγαγεν αὐτοὺς ἐκ σκότους καὶ σκιᾶς θανάτου, καὶ τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν διέῤῥηξεν. Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ Κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. Ὅτι

συνέτριψε πύλας χαλκᾶς, καὶ μοχλοὺς σιδηροὺς συνέθλασεν. Ἀντελάβετο αὐτῶν ἐξ ὁδοῦ ἀνομίας αὐτῶν, διὰ γὰρ τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐταπεινώθησαν. Πᾶν βρῶμα ἐβδελύξατο ἡ ψυχὴ αὐτῶν, καὶ ἤγγισαν ἕως τῶν πυλῶν τοῦ θανάτου. Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς Κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. Ἀπέστειλε τὸν λόγον αὐτοῦ, καὶ ἰάσατο αὐτοὺς, καὶ ἐῤῥύσατο αὐτοὺς ἐκ τῶν διαφθορῶν αὐτῶν. Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ Κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων· Καὶ θυσάτωσαν αὐτῷ θυσίαν αἰνέσεως, καὶ ἐξαγγειλάτωσαν τὰ ἔργα αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει. Οἱ καταβαίνοντες εἰς θάλασσαν ἐν πλοίοις, ποιοῦντες ἐργασίαν ἐν ὕδασι πολλοῖς, αὐτοὶ εἶδον τὰ ἔργα Κυρίου, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ ἐν τῷ βυθῷ. Εἶπε, καὶ ἔστη πνεῦμα καταιγίδος, καὶ ὑψώθη τὰ κύματα αὐτῆς. Ἀναβαίνουσιν ἕως τῶν οὐρανῶν, καὶ καταβαίνουσιν ἕως τῶν ἀβύσσων· ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἐν κακοῖς ἐτήκετο, ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν ὡς ὁ μεθύων, καὶ πᾶσα ἡ σοφία αὐτῶν κατεπόθη. Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς Κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἐξήγαγεν αὐτούς. Καὶ ἐπέταξε τῇ καταιγίδι, καὶ ἔστη εἰς αὖραν, καὶ ἐσίγησαν τὰ κύματα αὐτῆς. Καὶ εὐφράνθησαν, ὅτι ἡσύχασαν, καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐπὶ λιμένα θελήματος αὐτῶν. Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ Κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. Ὑψωσάτωσαν αὐτὸν ἐν ἐκκλησίᾳ λαοῦ, καὶ ἐν καθέδρᾳ πρεσβυτέρων αἰνεσάτωσαν αὐτόν. Ἔθετο ποταμοὺς εἰς ἐρήμον, καὶ διεξόδους ὑδάτων εἰς δίψαν· Γῆν καρποφόρον εἰς ἅλμην, ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούντων ἐν αὐτῇ. Ἔθετο ἔρημον εἰς λίμνας ὑδάτων, καὶ γῆν ἄνυδρον εἰς διεξόδους ὑδάτων. Καὶ κατῴκισεν ἐκεῖ πεινῶντας, καὶ συνεστήσαντο πόλεις κατοικεσίας· Καὶ ἔσπειραν ἀγροὺς, καὶ ἐφύτευσαν ἀμπελῶνας, καὶ

ἐποίησαν καρπὸν γεννήματος. Καὶ εὐλόγησεν αὐτοὺς, καὶ ἐπληθύνθησαν σφόδρα, καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν οὐκ ἐσμίκρυνε. Καὶ ὠλιγώθησαν καὶ ἐκακώθησαν ἀπὸ θλίψεως κακῶν καὶ ὀδύνης. Ἐξεχύθη ἐξουδένωσις ἐπ᾽ ἄρχοντας αὐτῶν, καὶ ἐπλάνησεν αὐτοὺς ἐν ἀβάτῳ καὶ οὐχ ὁδῷ. Καὶ ἐβοήθησε πένητι ἐκ πτωχείας, καὶ ἔθετο ὡς πρόβατα πατριάς· Ὄψονται εὐθεῖς καὶ εὐφρανθήσονται, καὶ πᾶσα ἀνομία ἐμφράξει τὸ στόμα αὐτῆς. Τίς σοφὸς καὶ φυλάξει ταῦτα, καὶ συνήσει τὰ ἐλέη τοῦ Κυρίου;

# 107

ὨΙδὴ ψαλμοῦ τῷ Δαυίδ. Ἑτοίμη ἡ καρδία μου ὁ Θεὸς, ἑτοίμη ἡ καρδία μου, ᾄσομαι καὶ ψαλῶ ἐν τῇ δόξῃ μου. Ἐξεγέρθητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, ἐξεγερθήσομαι ὄρθρου. Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν λαοῖς Κύριε, ψαλῶ σοι ἐν ἔθνεσιν. Ὅτι μέγα ἐπάνω τῶν οὐρανῶν τὸ ἔλεός σου, καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλήθειά σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς, ὁ Θεὸς, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου. Ὅπως ἂν ῥυσθῶσιν οἱ ἀγαπητοί σου, σῶσον τῇ δεξιᾷ σου, καὶ ἐπάκουσόν μου. Ὁ Θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ, ὑψωθήσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, καὶ τὴν κοιλάδα τῶν σκηνῶν διαμετρήσω. Ἐμός ἐστι Γαλαὰδ, καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆς, καὶ Ἐφραίμ ἀντίληψις τῆς κεφαλῆς μου· Ἰούδας βασιλεύς μου, Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου· ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἐπιβαλῶ τὸ ὑπόδημά μου, ἐμοὶ ἀλλόφυλοι ὑπετάγησαν. Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν περιοχῆς; ἢ τίς ὁδηγήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας; Οὐχὶ σὺ ὁ Θεὸς ὁ ἀπωσάμενος ἡμᾶς; καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ ὁ Θεὸς ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν; Δὸς ἡμῖν βοήθειαν ἐκ θλίψεως, καὶ ματαία σωτηρία ἀνθρώπου. Ἐν τῷ Θεῷ ποιήσομεν

δύναμιν, καὶ αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν.

# 108

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Ὁ Θεὸς τὴν αἴνεσίν μου μὴ παρασιωπήσῃς, ὅτι στόμα ἁμαρτωλοῦ καὶ στόμα δολίου ἐπ᾽ ἐμὲ ἠνοίχθη· ἐλάλησαν κατ᾽ ἐμοῦ γλώσσῃ δολίᾳ, καὶ λόγοις μίσους ἐκύκλωσάν με, καὶ ἐπολέμησάν με δωρέαν. Ἀντὶ τοῦ ἀγαπᾶν με, ἐνδιέβαλλόν με, ἐγὼ δὲ προσηυχόμην. Καὶ ἔθεντο κατ᾽ ἐμοῦ κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, καὶ μῖσος ἀντὶ τῆς ἀγαπήσεώς μου. Κατάστησον ἐπ᾽ αὐτὸν ἁμαρτωλὸν, καὶ διάβολος στήτω ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ. Ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτὸν, ἐξέλθοι καταδεδικασμένος, καὶ ἡ προσευχὴ αὐτοῦ γενέσθω εἰς ἁμαρτίαν. Γενηθήτωσαν αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ὀλίγαι, καὶ τὴν ἐπισκοπὴν αὐτοῦ λάβοι ἕτερος. Γενηθήτωσαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ὀρφανοὶ, καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ χήρα. Σαλευόμενοι μεταναστήτωσαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπαιτησάτωσαν, ἐκβληθήτωσαν ἐκ τῶν οἰκοπέδων αὐτῶν. Ἐξερευνησάτω δανειστὴς πάντα ὅσα ὑπάρχει αὐτῷ, καὶ διαρπασάτωσαν ἀλλότριοι τοὺς πόνους αὐτοῦ. Μὴ ὑπαρξάτω αὐτῷ ἀντιλήμπτωρ, μηδὲ γενηθήτω οἰκτίρμων τοῖς ὀρφανοῖς αὐτοῦ. Γενηθήτω τὰ τέκνα αὐτοῦ εἰς ἐξολόθρευσιν, ἐν γενεᾷ μιᾷ ἐξαλειφθείη τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Ἀναμνησθείη ἡ ἀνομία τῶν πατέρων αὐτοῦ ἔναντι Κυρίου, καὶ ἡ ἁμαρτία τῆς μητρὸς αὐτοῦ μὴ ἐξαλειφθείη. Γενηθήτωσαν ἐναντίον Κυρίου διαπαντὸς, καὶ ἐξολοθρευθείη ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον αὐτῶν· Ἀνθ᾽ ὧν οὐκ ἐμνήσθη ποιῆσαι ἔλεος, καὶ κατεδίωξεν ἄνθρωπον πένητα καὶ πτωχὸν, καὶ κατανενυγμένον τῇ καρδίᾳ τοῦ θανατῶσαι. Καὶ ἠγάπησε κατάραν, καὶ ἥξει αὐτῷ, καὶ

οὐκ ἠθέλησεν εὐλογίαν, καὶ μακρυνθήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἐνεδύσατο κατάραν ὡς ἱμάτιον, καὶ εἰσῆλθεν ὡσεὶ ὕδωρ εἰς τὰ ἔγκατα αὐτοῦ, καὶ ὡσεὶ ἔλαιον ἐν τοῖς ὀστέοις αὐτοῦ. Γενηθήτω αὐτῷ ὡς ἱμάτιον ὃ περιβάλλεται, καὶ ὡσεὶ ζώνη ἣν διαπαντὸς περιζώννυται. Τοῦτο τὸ ἔργον τῶν ἐνδιαβαλλόντων με παρὰ Κυρίου, καὶ τῶν λαλούντων πονηρὰ κατὰ τῆς ψυχῆς μου. Καὶ σὺ Κύριε Κύριε ποίησον μετ᾽ ἐμοῦ ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός σου, ὅτι χρηστὸν τὸ ἔλεός σου. Ῥῦσαί με ὅτι πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγὼ, καὶ ἡ καρδία μου τετάρακται ἐντός μου. Ὡσεὶ σκιὰ ἐν τῷ ἐκκλῖναι αὐτὴν ἀντανῃρέθην, ἐξετινάχθην ὡσεὶ ἀκρίδες. Τὰ γόνατά μου ἠσθένησαν ἀπὸ νηστείας, καὶ ἡ σάρξ μου ἠλλοιώθη δι᾽ ἔλαιον. Κἀγὼ ἐγενήθην ὄνειδος αὐτοῖς· εἴδοσάν με, ἐσάλευσαν κεφαλὰς αὐτῶν. Βοήθησόν μοι Κύριε ὁ Θεός μου, καὶ σῶσόν με κατὰ τὸ ἔλεός σου. Καὶ γνώτωσαν ὅτι ἡ χείρ σου αὕτη, καὶ σὺ Κύριε ἐποίησας αὐτήν. Καταράσονται αὐτοὶ, καὶ σὺ εὐλογήσεις· οἱ ἐπανιστάμενοί μοι αἰσχυνθήτωσαν, ὁ δὲ δοῦλός σου εὐφρανθήσεται. Ἐνδυσάσθωσαν οἱ ἐνδιαβάλλοντές με ἐντροπήν· καὶ περιβαλέσθωσαν ὡς διπλοΐδα αἰσχύνην αὐτῶν. Ἐξομολογήσομαι τῷ Κυρίῳ σφόδρα ἐν τῷ στόματί μου, καὶ ἐν μέσῳ πολλῶν αἰνέσω αὐτόν· Ὅτι παρέστη ἐκ δεξιῶν πένητος, τοῦ σῶσαι ἐκ τῶν καταδιωκόντων τὴν ψυχήν μου.

# 109

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου, κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου. Ῥάβδον δυνάμεως ἐξαποστελεῖ σοι Κύριος ἐκ Σιὼν, κατακυρίευε ἐν

μέσῳ τῶν ἐχθρῶν σου. Μετὰ σοῦ ἡ ἀρχὴ ἐν ἡμέρᾳ τῆς δυνάμεώς σου, ἐν ταῖς λαμπρότησι τῶν ἁγίων σου· ἐκ γαστρὸς πρὸ Ἑωσφόρου ἐγέννησά σε. Ὤμοσε Κύριος καὶ οὐ μεταμεληθήσεται, σὺ ἱερεὺς εἰς τὸν αἰῶνα, κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ. Κύριος ἐκ δεξιῶν σου συνέθλασεν ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ βασιλεῖς. Κρινεῖ ἐν τοῖς ἔθνεσι, πληρώσει πτώματα, συνθλάσει κεφαλὰς ἐπὶ γῆν πολλῶν. Ἐκ χειμάῤῥου ἐν ὁδῷ πίεται, διὰ τοῦτο ὑψώσει κεφαλήν.

# 110

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογήσομαι σοι Κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, ἐν βουλῇ εὐθέων καὶ συναγωγῇ. Μεγάλα τὰ ἔργα Κυρίου, ἐξεζητημένα εἰς πάντα τὰ θελήματα αὐτοῦ. Ἐξομολόγησις καὶ μεγαλοπρέπεια τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Μνείαν ἐποιήσατο τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων ὁ Κύριος. Τροφὴν ἔδωκε τοῖς φοβουμένοις αὐτόν· μνησθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ. Ἰσχὺν ἔργων αὐτοῦ ἀνήγγειλε τῷ λαῷ αὐτοῦ, τοῦ δοῦναι αὐτοῖς κληρονομίαν ἐθνῶν. Ἔργα χειρῶν αὐτοῦ, ἀλήθεια καὶ κρίσις· πισταὶ πᾶσαι αἱ ἐντολαὶ αὐτοῦ, ἐστηριγμέναι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, πεποιημέναι ἐν ἀληθείᾳ καὶ εὐθύτητι. Λύτρωσιν ἀπέστειλε τῷ λαῷ αὐτοῦ· ἐνετείλατο εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκην αὐτοῦ· ἅγιον καὶ φοβερὸν τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Ἀρχὴ σοφίας φόβος Κυρίου, σύνεσις δὲ ἀγαθὴ πᾶσι τοῖς ποιοῦσιν αὐτήν· ἡ αἴνεσις αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

# 111

Ἀλληλούϊα. Μακάριος ἀνὴρ ὁ φοβούμενος τὸν Κύριον, ἐν ταῖς ἐντολαῖς αὐτοῦ θελήσει σφόδρα. Δυνατὸν ἐν τῇ γῇ ἔσται τὸ σπέρμα αὐτοῦ, γενεὰ εὐθέων εὐλογηθήσεται· Δόξα καὶ πλοῦτος ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἐξανέτειλεν ἐν σκότει φῶς τοῖς εὐθέσιν· ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων καὶ δίκαιος. Χρηστὸς ἀνὴρ ὁ οἰκτείρων καὶ κιχρῶν, οἰκονομήσει τοὺς λόγους αὐτοῦ ἐν κρίσει, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα οὐ σαλευθήσεται· εἰς μνημόσυνον αἰώνιον ἔσται δίκαιος. Ἀπὸ ἀκοῆς πονηρᾶς οὐ φοβηθήσεται· ἑτοίμη ἡ καρδία αὐτοῦ ἐλπίζειν ἐπὶ Κύριον· Ἐστήρικται ἡ καρδία αὐτοῦ, οὐ φοβηθῇ, ἕως οὗ ἐπίδῃ ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Ἐσκόρπισεν, ἔδωκε τοῖς πένησιν, ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος· τὸ κέρας αὐτοῦ ὑψωθήσεται ἐν δόξῃ. Ἁμαρτωλὸς ὄψεται καὶ ὀργισθήσεται, τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ βρύξει καὶ τακήσεται· ἐπιθυμία ἁμαρτωλοῦ ἀπολεῖται.

# 112

Ἀλληλούϊα. Αἰνεῖτε παῖδες Κύριον, αἰνεῖτε τὸ ὄνομα Κυρίου. Εἴη τὸ ὄνομα Κυρίου εὐλογημένον ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. Ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου μέχρι δυσμῶν, αἰνετὸν τὸ ὄνομα Κυρίου. Ὑψηλὸς ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη ὁ Κύριος, ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ἡ δόξα αὐτοῦ. Τίς ὡς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν; ὁ ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν, καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφορῶν ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἐν τῇ γῇ· ὁ ἐγείρων ἀπὸ γῆς πτωχὸν, καὶ ἀπὸ κοπρίας ἀνυψῶν πένητα, τοῦ καθίσαι αὐτὸν μετὰ ἀρχόντων, μετὰ ἀρχόντων λαοῦ αὐτοῦ· ὁ κατοικίζων στείραν ἐν οἴκῳ, μητέρα ἐπὶ τέκνοις εὐφραινομένην.

# 113

Ἀλληλούϊα. Ἐν ἐξόδῳ Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, οἴκου Ἰακὼβ ἐκ λαοῦ βαρβάρου, ἐγενήθη Ἰουδαία ἁγίασμα αὐτοῦ, Ἰσραὴλ ἐξουσία αὐτοῦ. Ἡ θάλασσα εἶδε καὶ ἔφυγεν, ὁ Ἰορδάνης ἐστράφη εἰς τὰ ὀπίσω. Τὰ ὄρη ἐσκίρτησαν ὡσεὶ κριοὶ, καὶ οἱ βουνοὶ ὡς ἀρνία προβάτων. Τί σοι ἐστὶ θάλασσα ὅτι ἔφυγες; καὶ σὺ Ἰορδάνη ὅτι ἐστράφης εἰς τὰ ὀπίσω; Τὰ ὄρη ὅτι ἐσκίρτησατε ὡσεὶ κριοί; καὶ οἱ βουνοὶ ὡς ἀρνία προβάτων; Ἀπὸ προσώπου Κυρίου ἐσαλεύθη ἡ γῆ, ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ Ἰακὼβ, τοῦ στρέψαντος τὴν πέτραν εἰς λίμνας ὑδάτων, καὶ τὴν ἀκρότομον εἰς πηγὰς ὑδάτων. Μὴ ἡμῖν Κύριε, μὴ ἡμῖν, ἀλλ’ ἢ τῷ ὀνόματί σου δὸς δόξαν, ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου· μή ποτε εἴπωσι τὰ ἔθνη, ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς αὐτῶν; Ὁ δὲ Θεὸς ἡμῶν ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, πάντα ὅσα ἠθέλησεν ἐποίησε. Τὰ εἴδωλα τῶν ἐθνῶν, ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων. Στόμα ἔχουσι καὶ οὐ λαλήσουσιν, ὀφθαλμοὺς ἔχουσι καὶ οὐκ ὄψονται· Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ ἀκούσονται, ῥῖνας ἔχουσι καὶ οὐκ ὀσφρανθήσονται· Χεῖρας ἔχουσι καὶ οὐ ψηλαφήσουσι, πόδας ἔχουσι καὶ οὐ περιπατήσουσιν, οὐ φωνήσουσιν ἐν τῷ λάρυγγι αὐτῶν. ὅμοιοι αὐτοῖς γένοιντο οἱ ποιοῦντες αὐτὰ, καὶ πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ’ αὐτοῖς. Οἶκος Ἰσραὴλ ἔλπισεν ἐπὶ Κύριον, βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. Οἶκος Ἀαρὼν ἤλπισεν ἐπὶ Κύριον, βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. Οἱ φοβούμενοι τὸν Κύριον ἤλπισαν ἐπὶ Κύριον, βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστι. Κύριος μνησθεὶς ἡμῶν εὐλόγησεν ἡμᾶς, εὐλόγησε τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, εὐλόγησε τὸν οἶκον Ἀαρών· Εὐλόγησε τοὺς φοβουμένους τὸν Κύριον, τοὺς μικροὺς

μετὰ τῶν μεγάλων. Προσθείη Κύριος ἐφ’ ὑμᾶς, ἐφ’ ὑμᾶς καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς ὑμῶν. Εὐλογημένοι ὑμεῖς τῷ Κυρίῳ, τῷ ποιήσαντι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Ὁ οὐρανὸς τοῦ οὐρανοῦ τῷ Κυρίῳ, τὴν δὲ γῆν ἔδωκε τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. Οὐχ οἱ νεκροὶ αἰνέσουσί σε Κύριε, οὐδὲ πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς ᾅδου· Ἀλλ’ ἡμεῖς οἱ ζῶντες εὐλογήσομεν τὸν Κύριον, ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 114

Ἀλληλούϊα. Ἠγαπήσα, ὅτι εἰσακούσεται Κύριος τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου· Ὅτι ἔκλινε τὸ οὖς αὐτοῦ ἐμοὶ, καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις μου ἐπικαλέσομαι. Περιέσχον με ὠδῖνες θανάτου, κίνδυνοι ᾅδου εὗροσάν με· θλίψιν καὶ ὀδύνην εὗρον, καὶ τὸ ὄνομα Κυρίου ἐπεκαλεσάμην, ὦ Κύριε ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου. Ἐλεήμων ὁ Κύριος καὶ δίκαιος, καὶ ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐλεεῖ. Φυλάσσων τὰ νήπια ὁ Κύριος, ἐταπεινώθην καὶ ἔσωσέ με. Ἐπίστρεψον ψυχή μου εἰς τὴν ἀνάπαυσίν σου, ὅτι Κύριος εὐηργέτησέ σε. Ὅτι ἐξείλετο τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, τοὺς ὀφθαλμούς μου ἀπὸ δακρύων, καὶ τοὺς πόδας μου ἀπὸ ὀλισθήματος. Εὐαρεστήσω ἐνώπιον Κυρίου ἐν χώρᾳ ζώντων.

# 115

Ἀλληλούϊα. Ἐπιστεύσα, διὸ ἐλάλησα, ἐγὼ δὲ ἐταπεινώθην σφόδρα. Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει μου, πᾶς ἄνθρωπος ψεύστης. Τί ἀνταποδώσω τῷ Κυρίῳ περὶ πάντων ὧν ἀνταπέδωκέ μοι;

Ποτήριον σωτηρίου λήψομαι, καὶ τὸ ὄνομα Κυρίου ἐπικαλέσομαι· Τίμιος ἐναντίον Κυρίου ὁ θάνατος τῶν ὁσίων αὐτοῦ. Ὦ Κύριε ἐγὼ δοῦλος σὸς, ἐγὼ δοῦλος σὸς, καὶ υἱὸς τῆς παιδίσκης σου, διέῤῥηξας τοὺς δεσμούς μου. Σοὶ θύσω θυσίαν αἰνέσεως, καὶ ἐν ὀνόματι Κυρίου ἐπικαλέσομαι· Τὰς εὐχάς μου τῷ Κυρίῳ ἀποδώσω, ἐναντίον παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἐν αὐλαῖς οἴκου Κυρίου, ἐν μέσῳ σου Ἰερουσαλήμ.

# 116

Ἀλληλούϊα. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον πάντα τὰ ἔθνη, ἐπαινέσατε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί. Ὅτι ἐκραταιώθη τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ ἡ ἀλήθεια τοῦ Κυρίου μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

# 117

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Εἰπάτω δὴ οἶκος Ἰσραὴλ, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Εἰπάτω δὴ οἶκος Ἀαρὼν, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Εἰπάτωσαν δὴ πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν Κύριον, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ἐκ θλίψεως ἐπεκαλεσάμην τὸν Κύριον, καὶ ἐπήκουσέ μου εἰς πλατυσμόν. Κύριος ἐμοὶ βοηθὸς, καὶ οὐ φοβηθήσομαι τί ποιησει μοι ἄνθρωπος. Κύριος ἐμοὶ βοηθὸς, κᾀγὼ ἐπόψομαι τοὺς ἐχθρούς μου. Ἀγαθὸν πεποιθέναι ἐπὶ Κύριον, ἢ πεποιθέναι ἐπ’ ἄνθρωπον. Ἀγαθὸν ἐλπίζειν ἐπὶ Κύριον, ἢ ἐλπίζειν ἐπ’ ἄρχουσι. Πάντα τὰ ἔθνη

ἐκύκλωσάν με, καὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς· Κυκλώσαντες ἐκύκλωσάν με, καὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς· Ἐκύκλωσάν με ὡσεὶ μέλισσαι κηρίον, καὶ ἐξεκαύθησαν ὡς πῦρ ἐν ἀκάνθαις, καὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς. Ὠσθεὶς ἀνετράπην τοῦ πεσεῖν, καὶ ὁ Κύριος ἀντελάβετό μου. Ἰσχύς μου καὶ ὕμνησίς μου ὁ Κύριος, καὶ ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν. Φωνὴ ἀγαλλιάσεως καὶ σωτηρίας ἐν σκηναῖς δικαίων· δεξιὰ Κυρίου ἐποίησε δύναμιν, δεξιὰ Κυρίου ὕψωσέ με· δεξιὰ Κυρίου ἐποίησε δύναμιν. Οὐκ ἀποθανοῦμαι, ἀλλὰ ζήσομαι, καὶ διηγήσομαι τὰ ἔργα Κυρίου. Παιδεύων ἐπαίδευσέ με ὁ Κύριος, καὶ τῷ θανάτῳ οὐ παρέδωκέ με. Ἀνοίξατέ μοι πύλας δικαιοσύνης, εἰσελθὼν ἐν αὐταῖς ἐξομολογήσομαι τῷ Κυρίῳ. Αὕτη ἡ πύλη τοῦ Κυρίου, δίκαιοι εἰσελεύσονται ἐν αὐτῇ. Ἐξομολογήσομαί σοι, ὅτι ἐπήκουσάς μου, καὶ ἐγένου μου εἰς σωτηρίαν. Λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γωνίας. Παρὰ Κυρίου ἐγένετο αὕτη, καὶ ἔστι θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν. Αὕτη ἡ ἡμέρα ἣν ἐποίησεν ὁ Κύριος, ἀγαλλιασώμεθα καὶ εὐφρανθῶμεν ἐν αὐτῇ. Ὦ Κύριε σῶσον δὴ, ὦ Κύριε εὐόδωσον δή. Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου· εὐλογήκαμεν ὑμᾶς ἐξ οἴκου Κυρίου. Θεὸς Κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν· συστήσασθε ἑορτὴν ἐν τοῖς πυκάζουσιν, ἕως τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου. Θεός μου εἶ σὺ, καὶ ἐξομολογήσομαί σοι· Θεός μου εἶ σὺ, καὶ ὑψώσω σε· ἐξομολογήσομαί σοι, ὅτι ἐπήκουσάς μου, καὶ ἐγένου μοι εἰς σωτηρίαν. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

# 118

Ἀλληλούϊα. Μακάριοι ἄμωμοι ἐν ὁδῷ, οἱ πορευόμενοι ἐν νόμῳ Κυρίου. Μακάριοι οἱ ἐξερευνῶντες τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ἐκζητήσουσιν αὐτόν. Οὐ γὰρ οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ ἐπορεύθησαν. Σὺ ἐνετείλω τὰς ἐντολάς σου, τοῦ φυλάξασθαι σφόδρα. Ὄφελον κατευθυνθείησαν αἱ ὁδοί μου, τοῦ φυλάξασθαι τὰ δικαιώματά σου. Τότε οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, ἐν τῷ με ἐπιβλέπειν ἐπὶ πάσας τὰς ἐντολάς σου. Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν εὐθύτητι καρδίας, ἐν τῷ μεμαθηκέναι με τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. Τὰ δικαιώματά σου φυλάξω, μή με ἐγκαταλίπῃς ἕως σφόδρα. Ἐν τίνι κατορθώσει νεώτερος τὴν ὁδὸν αὐτοῦ; ἐν τῷ φυλάξασθαι τοὺς λόγους σου. Ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου ἐξεζήτησά σε, μὴ ἀπώσῃ με ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου. Ἐν τῇ καρδίᾳ μου ἔκρυψα τὰ λόγιά σου, ὅπως ἂν μὴ ἁμάρτω σοι. Εὐλογητὸς εἶ Κύριε, δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. Ἐν τοῖς χείλεσί μου ἐξήγγειλα πάντα τὰ κρίματα τοῦ στόματός σου. Ἐν τῇ ὁδῷ τῶν μαρτυρίων σου ἐτέρφθην, ὡς ἐπὶ παντὶ πλούτῳ. Ἐν ταῖς ἐντολαῖς σου ἀδολεσχήσω, καὶ κατανοήσω τὰς ὁδούς σου. Ἐν τοῖς δικαιώμασί σου μελετήσω, οὐκ ἐπιλήσομαι τῶν λόγων σου. Ἀνταπόδος τῷ δούλῳ σου, ζήσομαι καὶ φυλάξω τοὺς λόγους σου. Ἀποκάλυψον τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ κατανοήσω τὰ θαυμάσια ἐκ τοῦ νόμου σου. Πάροικος ἐγώ εἰμι ἐν τῇ γῇ, μὴ ἀποκρύψῃς ἀπ’ ἐμοῦ τὰς ἐντολάς σου. Ἐπεπόθησεν ἡ ψυχή μου τοῦ ἐπιθυμῆσαι τὰ κρίματά σου ἐν παντὶ καιρῷ. Ἐπετίμησας ὑπερηφάνοις, ἐπικατάρατοι οἱ ἐκκλίνοντες ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου. Περίελε ἀπ’ ἐμοῦ ὄνειδος καὶ ἐξουδένωσιν, ὅτι τὰ μαρτύριά σου ἐξεζήτησα. Καὶ γὰρ ἐκάθισαν ἄρχοντες, καὶ κατ’ ἐμοῦ κατελάλουν, ὁ δὲ δοῦλός σου ἠδολέσχει ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. Καὶ γὰρ τὰ μαρτύριά σου μελέτη μου ἐστὶ, καὶ αἱ συμβουλίαι μου τὰ δικαιώματά σου. Ἐκολλήθη τῷ ἐδάφει ἡ

ψυχή μου, ζῆσόν με κατὰ τὸ λόγον σου. Τὰς ὁδούς σου ἐξήγγειλα καὶ ἐπήκουσάς μου, δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. Ὁδὸν δικαιωμάτων σου συνέτισόν με, καὶ ἀδολεσχήσω ἐν τοῖς θαυμασίοις σου. Ἐνύσταξεν ἡ ψυχή μου ἀπὸ ἀκηδίας, βεβαίωσόν με ἐν τοῖς λόγοις σου. Ὁδὸν ἀδικίας ἀπόστησον ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ τῷ νόμῳ σου ἐλέησόν με. Ὁδὸν ἀληθείας ᾑρετισάμην, καὶ τὰ κρίματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. Ἐκολλήθην τοῖς μαρτυρίοις σου Κύριε, μή με καταισχύνῃς. Ὁδὸν ἐντολῶν σου ἔδραμον, ὅταν ἐπλάτυνας τὴν καρδίαν μου. Νομοθέτησόν με Κύριε τὴν ὁδὸν τῶν δικαιωμάτων σου, καὶ ἐκζητήσω αὐτὴν διαπαντός. Συνέτισόν με, καὶ ἐξερευνήσω τὸν νόμον σου, καὶ φυλάξω αὐτὸν ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου. Ὁδήγησόν με ἐν τῇ τρίβῳ τῶν ἐντολῶν σου, ὅτι αὐτὴν ἠθέλησα. Κλῖνον τὴν καρδίαν μου εἰς τὰ μαρτύριά σου, καὶ μὴ εἰς πλεονεξίαν. Ἀπόστρεψον τοὺς ὀφθαλμούς μου τοῦ μὴ ἰδεῖν ματαιότητα, ἐν τῇ ὁδῷ σου ζῆσόν με. Στῆσον τῷ δούλῳ σου τὸ λόγιόν σου εἰς τὸν φόβον σου. Περίελε τὸν ὄνειδισμόν μου ὃν ὑπώπτευσα, ὅτι τὰ κρίματά σου χρηστά. Ἰδοὺ ἐπεθύμησα τὰς ἐντολάς σου, ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ζῆσόν με. Καὶ ἔλθοι ἐπ᾽ ἐμὲ τὸ ἔλεός σου Κύριε, τὸ σωτήριόν σου κατὰ τὸν λόγον σου. Καὶ ἀποκριθήσομαι τοῖς ὀνειδίζουσί μοι λόγον, ὅτι ἤλπισα ἐπὶ τοῖς λόγοις σου. Καὶ μὴ περιέλῃς ἐκ τοῦ στόματός μου λόγον ἀληθείας ἕως σφόδρα, ὅτι ἐπὶ τοῖς κρίμασί σου ἐπήλπισα. Καὶ φυλάξω τὸν νόμον σου διαπαντὸς, εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Καὶ ἐπορευόμην ἐν πλατυσμῷ, ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐξεζήτησα. Καὶ ἐλάλουν ἐν τοῖς μαρτυρίοις σου ἐναντίον βασιλέων, καὶ οὐκ ᾐσχυνόμην. Καὶ ἐμελέτων ἐν ταῖς ἐντολαῖς σου, αἷς ἠγάπησα σφόδρα. Καὶ ᾖρα τὰς χεῖράς μου πρὸς τὰς ἐντολάς σου ἃς ἠγάπησα, καὶ ἠδολέσχουν ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. Μνήσθητι τῶν λόγων σου τῷ δούλῳ σου ὧν

ἐπήλπισάς με. Αὕτη με παρεκάλεσεν ἐν τῇ ταπεινώσει μου, ὅτι τὸ λόγιόν σου ἔζησέ με. Ὑπερήφανοι παρηνόμουν ἕως σφόδρα, ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐξέκλινα. Ἐμνήσθην τῶν κριμάτων σου ἀπ᾽ αἰῶνος Κύριε, καὶ παρεκλήθην. Ἀθυμία κατέσχε με ἀπὸ ἁμαρτωλῶν τῶν ἐγκαταλιμπανόντων τὸν νόμον σου. Ψαλτὰ ἦσάν μοι τὰ δικαιώματά σου, ἐν τόπῳ παροικίας μου· Ἐμνήσθην ἐν νυκτὶ τοῦ ὀνόματός σου Κύριε, καὶ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. Αὕτη ἐγενήθη μοι, ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα. Μερίς μου εἶ Κύριε, εἶπα τοῦ φυλάξασθαι τὸν νόμον σου. Ἐδεήθην τοῦ προσώπου σου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, ἐλέησόν με κατὰ τὸ λόγιόν σου. Διελογισάμην τὰς ὁδούς σου, καὶ ἐπέστρεψα τοὺς πόδας μου εἰς τὰ μαρτύριά σου. Ἡτοιμάσθην καὶ οὐκ ἐταράχθην, τοῦ φυλάξασθαι τὰς ἐντολάς σου. Σχοινία ἁμαρτωλῶν περιεπλάκησάν μοι, καὶ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην. Μεσονύκτιον ἐξεγειρόμην, τοῦ ἐξομολογεῖσθαί σοι ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. Μέτοχος ἐγώ εἰμι πάντων τῶν φοβουμένων σε, καὶ τῶν φυλασσόντων τὰς ἐντολάς σου. Τοῦ ἐλέους σου Κύριε πλήρης ἡ γῆ, τὰ δικαιώματά σου δίδαξόν με. Χρηστότητα ἐποίησας μετὰ τοῦ δούλου σου Κύριε κατὰ τὸν λόγον σου. Χρηστότητα καὶ παιδείαν καὶ γνῶσιν δίδαξόν με, ὅτι ταῖς ἐντολαῖς σου ἐπίστευσα. Πρὸ τοῦ με ταπεινωθῆναι, ἐγὼ ἐπλημμέλησα, διὰ τοῦτο τὸ λόγιόν σου ἐφύλαξα. Χρηστὸς εἶ σὺ Κύριε· καὶ ἐν τῇ χρηστότητί σου δίδαξόν με τὰ δικαιωματά σου. Ἐπληθύνθη ἐπ᾽ ἐμὲ ἀδικία ὑπερηφάνων, ἐγὼ δὲ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου ἐξερευνήσω τὰς ἐντολάς σου. Ἐτυρώθη ὡς γάλα ἡ καρδία αὐτῶν, ἐγὼ δὲ τὸν νόμον σου ἐμελέτησα. Ἀγαθόν μοι ὅτι ἐταπείνωσάς με, ὅπως ἂν μάθω τὰ δικαιώματά σου. Ἀγαθόν μοι ὁ νόμος τοῦ στόματός σου, ὑπὲρ χιλιάδας χρυσίου καὶ ἀργυρίου. Αἱ χεῖρές σου ἔποίησάν με καὶ ἐπλασάν με, συνέτισόν με καὶ μαθήσομαι τὰς

ἐντολάς σου. Οἱ φοβούμενοί σε ὄψονταί με καὶ εὐφρανθήσονται, ὅτι εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. Ἔγνων Κύριε ὅτι δικαιοσύνη τὰ κρίματά σου, καὶ ἀληθείᾳ ἐταπείνωσάς με. Γενηθήτω δὴ τὸ ἔλεός σου τοῦ παρακαλέσαι με, κατὰ τὸ λόγιόν σου τῷ δούλῳ σου. Ἐλθέτωσάν μοι οἱ οἰκτιρμοί σου, καὶ ζήσομαι, ὅτι ὁ νόμος σου μελέτη μου ἐστίν. Αἰσχυνθήτωσαν ὑπερήφανοι, ὅτι ἀδίκως ἠνόμησαν εἰς ἐμὲ, ἐγὼ δὲ ἀδολεσχήσω ἐν ταῖς ἐντολαῖς σου. Ἐπιστρεψάτωσάν με οἱ φοβούμενοί σε, καὶ οἱ γινώσκοντες τὰ μαρτύριά σου. Γενηθήτω ἡ καρδία μου ἄμωμος ἐν τοῖς δικαιώμασί σου, ὅπως ἂν μὴ αἰσχυνθῶ. Ἐκλείπει εἰς τὸ σωτήριόν σου ἡ ψυχή μου, εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. Ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοί μου εἰς τὸ λόγιόν σου, λέγοντες, πότε παρακαλέσεις με; Ὅτι ἐγενήθην ὡς ἀσκὸς ἐν πάχνῃ· τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. Πόσαι εἰσὶν αἱ ἡμέραι τοῦ δούλου σου; πότε ποιήσεις μοι ἐκ τῶν καταδιωκόντων με κρίσιν; Διηγήσαντό μοι παράνομοι ἀδολεσχίας, ἀλλ’ οὐχ ὡς ὁ νόμος σου Κύριε. Πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου ἀλήθεια· ἀδίκως κατεδίωξάν με, βοήθησόν μοι. Παρὰ βραχὺ συνετέλεσάν με ἐν τῇ γῇ, ἐγὼ δὲ οὐκ ἐγκατέλιπον τὰς ἐντολάς σου. Κατὰ τὸ ἔλεός σου ζῆσόν με, καὶ φυλάξω τὰ μαρτύρια τοῦ στόματός σου. Εἰς τὸν αἰῶνα, Κύριε, ὁ λόγος σου διαμένει ἐν τῷ οὐρανῷ, εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἡ ἀλήθειά σου· ἐθεμελίωσας τὴν γῆν καὶ διαμένει. Τῇ διατάξει σου διαμένει ἡμέρα, ὅτι τὰ σύμπαντα δοῦλα σά. Εἰ μὴ ὅτι ὁ νόμος σου μελέτη μου ἐστὶ, τότε ἂν ἀπωλόμην ἐν τῇ ταπεινώσει μου. Εἰς τὸν αἰῶνα οὐ μὴ ἐπιλάθωμαι τῶν δικαιωμάτων σου, ὅτι ἐν αὐτοῖς ἔζησάς με. Σός εἰμι ἐγὼ, σῶσόν με, ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα. Ἐμὲ ὑπέμειναν ἁμαρτωλοὶ τοῦ ἀπολέσαι με, τὰ μαρτύριά σου συνῆκα. Πάσης συντελείας εἶδον πέρας, πλατεία ἡ ἐντολή σου σφόδρα. Ὡς ἠγάπησα τὸν νόμον σου Κύριε; ὅλην τὴν

ἡμέραν μελέτη μου ἐστίν. Ὑπὲρ τοὺς ἐχθρούς μου ἐσόφισάς με τὴν ἐντολήν σου, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα ἐμή ἐστιν. Ὑπὲρ πάντας τοὺς διδάσκοντάς με συνῆκα, ὅτι τὰ μαρτύριά σου μελέτη μου ἐστίν. Ὑπὲρ πρεσβυτέρους συνῆκα, ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐξεζήτησα. Ἐκ πάσης ὁδοῦ πονηρᾶς ἐκώλυσα τοὺς πόδας μου, ὅπως ἂν φυλάξω τοὺς λόγους σου. Ἀπὸ τῶν κριμάτων σου οὐκ ἐξέκλινα, ὅτι σὺ ἐνομοθέτησάς με. Ὡς γλυκέα τῷ λάρυγγί μου τὰ λόγιά σου, ὑπὲρ μέλι τῷ στόματί μου. Ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου συνῆκα, διὰ τοῦτο ἐμίσησα πᾶσαν ὁδὸν ἀδικίας. Λύχνος τοῖς ποσί μου ὁ νόμος σου, καὶ φῶς ταῖς τρίβοις μου. Ὤμοσα καὶ ἔστησα τοῦ φυλάξασθαι τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. Ἐταπεινώθην ἕως σφόδρα Κύριε, ζῆσόν με κατὰ τὸν λόγον σου. Τὰ ἑκούσια τοῦ στόματός μου εὐλόκησον δὴ Κύριε, καὶ τὰ κρίματά σου δίδαξόν με. Ἡ ψυχή μου ἐν ταῖς χερσὶ σου διαπαντὸς, καὶ τὸν νόμον σου οὐκ ἐπελαθόμην. Ἔθεντο ἁμαρτωλοὶ παγίδα μοι, καὶ ἐκ τῶν ἐντολῶν σου οὐκ ἐπλανήθην. Ἐκληρονόμησα τὰ μαρτύριά σου εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι ἀγαλλιάμα τῆς καρδίας μού εἰσιν. Ἔκλινα τὴν καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὰ δικαιώματά σου εἰς τὸν αἰῶνα δι’ ἀντάμειψιν. Παρανόμους ἐμίσησα, τὸν δὲ νόμον σου ἠγάπησα. Βοηθός μου, καὶ ἀντιλήπτωρ μου εἶ σὺ, εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. Ἐκκλίνατε ἀπ’ ἐμοῦ οἱ πονηρευόμενοι, καὶ ἐξεραυνήσω τὰς ἐντολὰς τοῦ Θεοῦ μου. Ἀντιλαβοῦ μου κατὰ τὸ λόγιόν σου, καὶ ζῆσόν με, καὶ μὴ καταισχύνῃς με ἀπὸ τῆς προσδοκίας μου. Βοήθησόν μοι, καὶ σωθήσομαι, καὶ μελετήσω ἐν τοῖς δικαιώμασί σου διαπαντός. Ἐξουδένωσας πάντας τοὺς ἀποστατοῦντας ἀπὸ τῶν δικαιωμάτων σου, ὅτι ἄδικον τὸ ἐνθύμημα αὐτῶν. Παραβαίνοντας ἐλογισάμην πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, διὰ τοῦτο ἠγάπησα τὰ μαρτύριά σου. Καθήλωσον ἐκ τοῦ φόβου σου τὰς σάρκας μου, ἀπὸ

γὰρ τῶν κριμάτων σου ἐφοβήθην. Ἐποίησα κρίμα καὶ δικαιοσύνην, μὴ παραδῷς με τοῖς ἀδικοῦσί με. Ἔνδεξαι τὸν δοῦλόν σου εἰς ἀγαθὸν, μὴ συκοφαντησάτωσάν με ὑπερήφανοι. Οἱ ὀφθαλμοί μου ἐξέλιπον εἰς τὸ σωτήριόν σου, καὶ εἰς τὸ λόγιον τῆς δικαιοσύνης σου. Ποίησον μετὰ τοῦ δούλου σου κατὰ τὸ ἔλεός σου, καὶ τὰ δικαιώματά σου δίδαξόν με. Δοῦλός σου εἰμὶ ἐγὼ, συνέτισόν με καὶ γνώσομαι τὰ μαρτύριά σου. Καιρὸς τοῦ ποιῆσαι τῷ Κυρίῳ, διεσκέδασαν τὸν νόμον σου. Διὰ τοῦτο ἠγάπησα τὰς ἐντολάς σου ὑπὲρ χρυσίον καὶ τοπάζιον. Διὰ τοῦτο πρὸς πάσας τὰς ἐντολάς σου κατωρθούμην, πᾶσαν ὁδὸν ἄδικον ἐμίσησα. Θαυμαστὰ τὰ μαρτύριά σου, διὰ τοῦτο ἐξηρεύνησεν αὐτὰ ἡ ψυχή μου. Ἡ δήλωσις τῶν λόγων σου φωτιεῖ καὶ συνετιεῖ νηπίους. Τὸ στόμα μου ἤνοιξα, καὶ εἵλκυσα πνεῦμα, ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐπεπόθουν. Ἐπίβλεψον ἐπ’ ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, κατὰ τὸ κρίμα τῶν ἀγαπώντων τὸ ὄνομά σου. Τὰ διαβήματά μου κατεύθυνον κατὰ τὸ λόγιόν σου, καὶ μὴ κατακυριευσάτω μου πᾶσα ἀνομία. Λύτρωσαί με ἀπὸ συκοφαντίας ἀνθρώπων, καὶ φυλάξω τὰς ἐντολάς σου. Τὸ πρόσωπόν σου ἐπίφανον ἐπὶ τὸν δοῦλόν σου, καὶ δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. Διεξόδους ὑδάτων κατέβησαν οἱ ὀφθαλμοί μου, ἐπεὶ οὐκ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. Δίκαιος εἶ Κύριε, καὶ εὐθεῖς αἱ κρίσεις σου. Ἐνετείλω δικαιοσύνην τὰ μαρτύριά σου, καὶ ἀλήθειαν σφόδρα. Ἐξέτηξέ με ὁ ζῆλός σου, ὅτι ἐπελάθοντο τῶν λόγων σου οἱ ἐχθροί μου. Πεπυρωμένον τὸ λόγιόν σου σφόδρα, καὶ ὁ δοῦλός σου ἠγάπησεν αὐτό. Νεώτερος ἐγὼ εἰμι καὶ ἐξουδενωμένος, τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. Ἡ δικαιοσύνη σου δικαιοσύνη εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ὁ νόυος σου ἀλήθεια. Θλίψεις καὶ ἀνάγκαι εὕροσάν με, ἐντολαί σου μελέτη μου. Δικαιοσύνη τὰ μαρτύριά σου εἰς τὸν αἰῶνα· συνέτισόν με, καὶ ζήσομαι. Ἐκέκραξα ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,

ἐπάκουσόν μου Κύριε, τὰ δικαιώματά σου ἐκζητήσω. Ἐκέκραξά σοι, σῶσόν με, καὶ φυλάξω τὰ μαρτύριά σου. Προέφθασα ἐν ἀωρίᾳ καὶ ἐκέκραξα, εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. Προέφθασαν οἱ ὀφθαλμοί μου πρὸς ὄρθρον, τοῦ μελετᾷν τὰ λόγιά σου. Τῆς φωνῆς μου ἄκουσον Κύριε κατὰ τὸ ἔλεός σου, κατὰ τὸ κρίμα σου ζῆσόν με. Προσήγγισαν οἱ καταδιώκοντές με ἀνομίᾳ, ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου ἐμακρύνθησαν. Ἐγγὺς εἶ Κύριε, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοί σου ἀλήθεια. Κατ' ἀρχὰς ἔγνων ἐκ τῶν μαρτυρίων σου, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα ἐθεμελίωσας αὐτά. Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ ἐξελοῦ με, ὅτι τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην. Κρῖνον τὴν κρίσιν μου καὶ λύτρωσαί με, διὰ τὸν λόγον σου ζῆσόν με. Μακρὰν ἀπὸ ἁμαρτωλῶν σωτηρία, ὅτι τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐξεζήτησαν. Οἱ οἰκτιρμοί σου πολλοὶ Κύριε, κατὰ τὸ κρίμα σου ζῆσόν με. Πολλοὶ οἱ ἐκδιώκοντές με καὶ θλίβοντές με· ἐκ τῶν μαρτυρίων σου οὐκ ἐξέκλινα. Εἶδον ἀσυνετοῦντας καὶ ἐξετηκόμην, ὅτι τὰ λόγιά σου οὐκ ἐφυλάξαντο. Ἴδε ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα Κύριε, ἐν τῷ ἐλέει σου ζῆσόν με. Ἀρχὴ τῶν λόγων σου ἀλήθεια, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα πάντα τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. Ἄρχοντες κατεδίωξάν με δωρεὰν, καὶ ἀπὸ τῶν λόγων σου ἐδειλίασεν ἡ καρδία μου. Ἀγαλλιάσομαι ἐγὼ ἐπὶ τὰ λόγιά σου, ὡς ὁ εὑρίσκων σκῦλα πολλά. Ἀδικίαν ἐμίσησα καὶ ἐβδελυξάμην, τὸν δὲ νόμον σου ἠγάπησα. Ἑπτάκις τῆς ἡμέρας ᾔνεσά σε ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. Εἰρήνη πολλὴ τοῖς ἀγαπῶσι τὸν νόμον σου, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς σκάνδαλον. Προσεδόκων τὸ σωτήριόν σου Κύριε, καὶ τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα. Ἐφύλαξεν ἡ ψυχή μου τὰ μαρτύριά σου, καὶ ἠγάπησεν αὐτὰ σφόδρα. Ἐφύλαξα τὰς ἐντολάς σου καὶ τὰ μαρτύριά σου, ὅτι πᾶσαι αἱ ὁδοί μου ἐναντίον σου Κύριε. Ἐγγυσάτω ἡ δέησίς μου ἐνώπιόν σου Κύριε, κατὰ τὸ λόγιόν σου συνέτισόν με. Εἰσέλθοι τὸ

ἀξίωμά μου ἐνώπιόν σου Κύριε, κατὰ τὸ λόγιόν σου ῥῦσαί με. Ἐξερεύξαιντο τὰ χείλη μου ὕμνον, ὅταν διδάξῃς με τὰ δικαιώματά σου. Φθέγξαιτο ἡ γλῶσσά μου τὰ λόγιά σου, ὅτι πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου δικαιοσύνη. Γενέσθω ἡ χείρ σου τοῦ σῶσαί με, ὅτι τὰς ἐντολάς σου ᾑρετισάμην. Ἐπεπόθησα τὸ σωτήριόν σου Κύριε, καὶ ὁ νόμος σου μελέτη μου ἐστί. Ζήσεται ἡ ψυχή μου καὶ αἰνέσει σε, καὶ τὰ κρίματά σου βοηθήσει μοι. Ἐπλανήθην ὡς πρόβατον ἀπολωλὸς, ζήτησον τὸν δοῦλόν σου, ὅτι τὰς ἐντολάς σου οὐκ ἐπελαθόμην.

# 119

Ὠδὴ τ�ων ἀναβαθμῶν. Πρὸς Κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐκέκραξα, καὶ εἰσήκουσέ μου. Κύριε, ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ χειλέων ἀδίκων καὶ ἀπὸ γλώσσης δολίας. Τί δοθείη σοι, καὶ τί προστεθείη σοι πρὸς γλῶσσαν δολίαν; Τὰ βέλη τοῦ δυνατοῦ ἠκονημένα σὺν τοῖς ἄνθραξι τοῖς ἐρημικοῖς. Οἴμοι ὅτι ἡ παροικία μου ἐμακρύνθη, κατεσκήνωσα μετὰ τῶν σκηνωμάτων Κηδάρ. Πολλὰ παρῴκησεν ἡ ψυχή μου· μετὰ τῶν μισούντων τὴν εἰρήνην. Ἤμην εἰρηνικός· ὅταν ἐλάλουν αὐτοῖς, ἐπολέμουν με δωρεάν.

# 120

Ὠδὴ τ�ων ἀναβαθμῶν. Ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου εἰς τὰ ὄρη, ὅθεν ἥξει ἡ βοήθειά μου. Ἡ βοήθειά μου παρὰ Κυρίου τοῦ ποιήσαντος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Μὴ δῴης εἰς σάλον τὸν πόδα σου, μηδὲ νυστάξῃ ὁ φυλάσσων σε. Ἰδοὺ οὐ νυστάξει οὐδὲ ὑπνώσει ὁ

φυλάσσων τὸν Ἰσραήλ. Κύριος φυλάξει σε, Κύριος σκέπη σου ἐπὶ χεῖρα δεξιάν σου. Ἡμέρας ὁ ἥλιος οὐ συγκαύσει σε, οὐδὲ ἡ σελήνη τὴν νύκτα. Κύριος φυλάξαι σε ἀπὸ παντὸς κακοῦ, φυλάξει τὴν ψυχήν σου ὁ Κύριος. Κύριος φυλάξει τὴν εἴσοδόν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν σου, ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 121

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Εὐφράνθην ἐπὶ τοῖς εἰρηκόσι μοι, εἰς οἶκον Κυρίου πορευσόμεθα. Ἑστῶτες ἦσαν οἱ πόδες ἡμῶν ἐν ταῖς αὐλαῖς σου Ἰερουσαλήμ. Ἰερουσαλὴμ οἰκοδομουμένη ὡς πόλις, ἧς ἡ μετοχὴ αὐτῆς ἐπιτοαυτό. Ἐκεῖ γὰρ ἀνέβησαν αἱ φυλαὶ, φυλαὶ Κυρίου μαρτύριον τῷ Ἰσραὴλ, τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματι Κυρίου. Ὅτι ἐκεῖ ἐκάθισαν θρόνοι εἰς κρίσιν, θρόνοι ἐπὶ οἶκον Δαυίδ. Ἐρωτήσατε δὴ τὰ εἰς εἰρήνην τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ εὐθηνία τοῖς ἀγαπῶσί σε. Γενέσθω δὴ εἰρήνη ἐν τῇ δυνάμει σου, καὶ εὐθηνία ἐν ταῖς πυργοβάρεσί σου. Ἕνεκα τῶν ἀδελφῶν μου καὶ τῶν πλησίον μου, ἐλάλουν δὴ εἰρήνην περὶ σοῦ. Ἕνεκα τοῦ οἴκου Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐξεζήτησα ἀγαθά σοι.

# 122

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Πρὸς σὲ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, τὸν κατοικοῦντα ἐν τῷ οὐρανῷ. Ἰδοὺ ὡς ὀφθαλμοὶ δούλων εἰς χεῖρας τῶν κυρίων αὐτῶν, ὡς ὀφθαλμοὶ παιδίσκης εἰς χεῖρας τῆς κυρίας αὐτῆς, οὕτως οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, ἕως

οὗ οἰκτειρῆσαι ἡμᾶς. Ἐλέησον ἡμᾶς Κύριε, ἐλέησον ἡμᾶς, ὅτι ἐπὶ πολὺ ἐπλήσθημεν ἐξουδενώσεως. Ἐπὶ πλεῖον ἐπλήσθη ἡ ψυχὴ ἡμῶν· τὸ ὄνειδος τοῖς εὐθηνοῦσι καὶ ἡ ἐξουδένωσις τοῖς ὑπερηφάνοις.

# 123

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Εἰ μὴ ὅτι Κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, εἰπάτω δὴ Ἰσραὴλ, εἰ μὴ ὅτι Κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, ἐν τῷ ἐπαναστῆναι ἀνθρώπους ἐφ’ ἡμᾶς, ἄρα ζῶντας ἂν κατέπιον ἡμᾶς· ἐν τῷ ὀργισθῆναι τὸν θυμὸν αὐτῶν ἐφ’ ἡμᾶς, ἄρα τὸ ὕδωρ ἂν κατεπόντισεν ἡμᾶς· χείμαῤῥον διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν. Ἄρα διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν τὸ ὕδωρ τὸ ἀνυπόστατον. Εὐλογητὸς Κύριος, ὃς οὐκ ἔδωκεν ἡμᾶς εἰς θήραν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν. Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὡς στρουθίον ἐῤῥύσθη ἐκ τῆς παγίδος τῶν θηρευόντων· ἡ παγὶς συνετρίβη, καὶ ἡμεῖς ἐῤῥύσθημεν. Ἡ βοήθεια ἡμῶν ἐν ὀνόματι Κυρίου, τοῦ ποιήσαντος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν.

# 124

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Οἱ πεποιθότες ἐπὶ Κύριον ὡς ὄρος Σιὼν, οὐ σαλευθήσεται εἰς αἰῶνα ὁ κατοικῶν Ἰερουσαλήμ· ὄρη κύκλῳ αὐτῆς, καὶ ὁ Κύριος κύκλῳ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. Ὅτι οὐκ ἀφήσει Κύριος τὴν ῥάβδον τῶν ἁμαρτωλῶν ἐπὶ τὸν κλῆρον τῶν δικαίων, ὅπως ἂν μὴ ἐκτείνωσιν οἱ δίκαιοι ἐν ἀνομίαις χεῖρας αὐτῶν. Ἀγάθυνον, Κύριε, τοῖς ἀγαθοῖς καὶ τοῖς

εὐθέσι τῇ καρδίᾳ. Τοὺς δὲ ἐκκλίνοντας εἰς τὰς στραγγαλιὰς, ἀπάξει Κύριος μετὰ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν. εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ.

# 125

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Ἐν τῷ ἐπιστρέψαι Κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν Σιὼν, ἐγενήθημεν ὡσεὶ παρακεκλημένοι. Τότε ἐπλήσθη χαρᾶς τὸ στόμα ἡμῶν, καὶ ἡ γλῶσσα ἡμῶν ἀγαλλιάσεως· τότε ἐροῦσιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἐμεγάλυνε Κύριος τοῦ ποιῆσαι μετ’ αὐτῶν. Ἐμεγάλυνε Κύριος τοῦ ποιῆσαι μεθ’ ἡμῶν, ἐγενήθημεν εὐφραινόμενοι. Ἐπίστρεψον, Κύριε, τὴν αἰχμαλωσίαν ἡμῶν ὡς χειμάῤῥους ἐν τῷ Νότῳ. Οἱ σπείροντες ἐν δάκρυσιν, ἐν ἀγαλλιάσει θεριοῦσι. Πορευόμενοι ἐπορεύοντο, καὶ ἔκλαιον βάλλοντες τὰ σπέρματα αὐτῶν· ἐρχόμενοι δὲ ἥξουσιν ἐν ἀγαλλιάσει αἴροντες τὰ δράγματα αὐτῶν.

# 126

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Ἐὰν μὴ Κύριος οἰκοδομήσῃ οἶκον, εἰς μάτην ἐκοπίασαν οἱ οἰκοδομοῦντες· ἐὰν μὴ Κύριος φυλάξῃ πόλιν, εἰς μάτην ἠγρύπνησεν ὁ φυλάσσων. Εἰς μάτην ὑμῖν ἐστι τὸ ὀρθρίζειν· ἐγείρεσθε μετὰ τὸ καθῆσθαι, οἱ ἐσθίοντες ἄρτον ὀδύνης, ὅταν δῷ τοῖς ἀγαπητοῖς αὐτοῦ ὕπνον. Ἰδοὺ ἡ κληρονομία Κυρίου, υἱοί, ὁ μισθὸς τοῦ καρποῦ τῆς γαστρός. Ὡσεὶ βέλη ἐν χειρὶ δυνατοῦ, οὕτως οἱ υἱοὶ τῶν ἐκτετιναγμένων. Μακάριος ὃς πληρώσει τὴν

ἐπιθυμίαν αὐτοῦ ἐξ αὐτῶν· οὐ καταισχυνθήσονται, ὅταν λαλῶσι τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν ἐν πύλαις.

# 127

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Μακάριοι πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν Κύριον, οἱ πορευόμενοι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ. Τοὺς πόνους τῶν καρπῶν σου φάγεσαι· μακάριος εἶ καὶ καλῶς σοι ἔσται. Ἡ γυνή σου ὡς ἄμπελος εὐθηνοῦσα ἐν ταῖς κλίτεσι τῆς οἰκίας σου· οἱ υἱοί σου ὡς νεόφυτα ἐλαιῶν κύκλῳ τῆς τραπέζης σου. Ἰδοὺ οὕτως εὐλογηθήσεται ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν Κύριον. Εὐλογήσαι σε Κύριος ἐκ Σιὼν, καὶ ἴδοις τὰ ἀγαθὰ Ἰερουσαλὴμ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς σου· Καὶ ἴδοις υἱοὺς τῶν υἱῶν σου· εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ.

# 128

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Πλεονάκις ἐπολέμησάν με ἐκ νεότητός μου, εἰπάτω δὴ Ἰσραήλ· Πλεονάκις ἐπολέμησάν με ἐκ νεότητός μου, καὶ γὰρ οὐκ ἠδυνήθησάν μοι. Ἐπὶ τὸν νῶτόν μου ἐτέκταινον οἱ ἁμαρτωλοὶ, ἐμάκρυναν τὴν ἀνομίαν αὐτῶν. Κύριος δίκαιος συνέκοψεν αὐχένας ἁμαρτωλῶν. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἀποστραφήτωσαν εἰς τὰ ὀπίσω πάντες οἱ μισοῦντες Σιών. Γενηθήτωσαν ὡσεὶ χόρτος δωμάτων, ὃς πρὸ τοῦ ἐκσπασθῆναι ἐξηράνθη· Οὗ οὐκ ἐπλήρωσεν τὴν χεῖρα αὐτοῦ ὁ θερίζων, καὶ τὸν κόλπον αὐτοῦ ὁ τὰ δράγματα συλλέγων. Καὶ οὐκ εἶπαν οἱ παράγοντες, εὐλογία Κυρίου ἐφ’ ὑμᾶς, εὐλογήκαμεν ὑμᾶς ἐν

ὀνόματι Κυρίου.

# 129

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Ἐκ βαθέων ἐκέκραξά σοι Κύριε. Κύριε εἰσάκουσον τῆς φωνῆς μου· γενηθήτω τὰ ὦτά σου προσέχοντα εἰς τὴν φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. Ἐὰν ἀνομίας παρατηρήσῃς Κύριε, Κύριε, τίς ὑποστήσεται; Ὅτι παρὰ σοὶ ὁ ἱλασμός ἐστιν· ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός σου ὑπέμεινά σε Κύριε, ὑπέμεινεν ἡ ψυχή μου εἰς τὸν λόγον σου, ἤλπισεν ἡ ψυχή μου ἐπὶ τὸν Κύριον· ἀπὸ φυλακῆς πρωΐας μέχρι νυκτός, Ἐλπισάτω Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν Κύριον· ὅτι παρὰ τῷ Κυρίῳ τὸ ἔλεος, καὶ πολλὴ παρ αὐτῷ λύτρωσις. Καὶ αὐτὸς λυτρώσεται τὸν Ἰσραὴλ ἐκ πασῶν τῶν ἀνομιῶν αὐτοῦ.

# 130

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Κύριε, οὐχ ὑψώθη ἡ καρδία μου, οὐδὲ ἐμετεωρίσθησαν οἱ ὀφθαλμοί μου· οὐδὲ ἐπορεύθην ἐν μεγάλοις, οὐδὲ ἐν θαυμασίοις ὑπὲρ ἐμέ. Εἰ μὴ ἐταπεινοφρόνουν, ἀλλὰ ὕψωσα τὴν ψυχήν μου· ὡς τὸ ἀπογεγαλακτισμένον ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ, ὡς ἀνταποδώσεις ἐπὶ τὴν ψυχήν μου. Ἐλπισάτω Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν Κύριον ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 131

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Μνήσθητι Κύριε τοῦ Δαυὶδ, καὶ πάσης τῆς

πρᾳότητος αὐτοῦ· Ὡς ὤμοσε τῷ Κυρίῳ, ηὔξατο τῷ Θεῷ Ἰακώβ· Εἰ εἰσελεύσομαι εἰς σκήνωμα οἴκου μου, εἰ ἀναβήσομαι ἐπὶ κλίνης στρωμνῆς μου· Εἰ δώσω ὕπνον τοῖς ὀφθαλμοῖς μοῦ, καὶ τοῖς βλεφάροις μου νυσταγμὸν, καὶ ἀνάπαυσιν τοῖς κροτάφοις μου· Ἕως οὗ εὕρω τόπον τῷ Κυρίῳ, σκήνωμα τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Ἰδοὺ ἠκούσαμεν αὐτὴν ἐν Ἐφραθὰ, εὕρομεν αὐτὴν ἐν τοῖς πεδίοις τοῦ δρυμοῦ. Εἰσελευσώμεθα εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ· προσκυνήσωμεν εἰς τὸν τόπον οὗ ἔστησαν οἱ πόδες αὐτοῦ. Ἀνάστηθι Κύριε εἰς τὴν ἀνάπαυσίν σου, σὺ καὶ ἡ κιβωτὸς τοῦ ἁγιάσματός σου. Οἱ ἱερεῖς σου ἐνδύσονται δικαιοσύνην, καὶ οἱ ὅσιοί σου ἀγαλλιάσονται. Ἕνεκεν Δαυὶδ τοῦ δούλου σου, μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σου. Ὤμοσε Κύριος τῷ Δαυὶδ ἀλήθειαν, καὶ οὐ μὴ ἀθετήσει αὐτὴν, ἐκ καρποῦ τῆς κοιλίας σου, θήσομαι ἐπὶ τοῦ θρόνον σου. Ἐὰν φυλάξωνται οἱ υἱοί σου τὴν διαθήκην μου, καὶ τὰ μαρτύριά μου ταῦτα ἃ διδάξω αὐτοὺς, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἕως τοῦ αἰῶνος καθιοῦνται ἐπὶ τοῦ θρόνου σου. Ὅτι ἐξελέξατο Κύριος τὴν Σιὼν, ᾑρετίσατο αὐτὴν εἰς κατοικίαν ἑαυτῷ. Αὕτη ἡ κατάπαυσίς μου εἰς αἰῶνα αἰῶνος, ὧδε κατοικήσω ὅτι ᾑρετισάμην αὐτήν. Τὴν θήραν αὐτῆς εὐλογῶν εὐλογήσω, τοὺς πτωχοὺς αὐτῆς χορτάσω ἄρτων. Τοὺς ἱερεῖς αὐτῆς ἐνδύσω σωτηρίαν, καὶ οἱ ὅσιοι αὐτῆς ἀγαλλιάσει ἀγαλλιάσονται. Ἐκεῖ ἐξανατελῶ κέρας τῷ Δαυὶδ, ἡτοίμασα λύχνον τῷ χριστῷ σου. Τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ ἐνδύσω αἰσχύνην, ἐπὶ δὲ αὐτὸν ἐξανθήσει τὸ ἁγίασμά μου.

# 132

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. Ἰδοὺ δὴ τί καλὸν, ἢ τί τερπνὸν, ἀλλ’ ἢ τὸ

κατοικεῖν ἀδελφοὺς ἐπιτοαυτό; Ὡς μῦρον ἐπὶ κεφαλῆς τὸ καταβαῖνον ἐπὶ πώγωνα, τὸν πώγωνα τὸν Ἀαρὼν, τὸ καταβαῖνον ἐπὶ τὴν ὤαν τοῦ ἐνδύματος αὐτοῦ. Ὡς δρόσος Ἀερμῶν ὁ καταβαίνουσα ἐπὶ τὰ ὄρη Σιών· ὅτι ἐκεῖ ἐνετείλατο Κύριος τὴν εὐλογίαν, ζωὴν ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 133

Ὠδὴ τ�ῶν ἀναβαθμῶν. Ἰδοὺ δὴ εὐλογεῖτε τὸν Κύριον πάντες οἱ δοῦλοι Κυρίου, οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκῳ Κυρίου ἐν αὐλαῖς οἴκου Θεοῦ ἡμῶν· ἐν ταῖς νυξὶν ἐπάρατε τὰς χεῖρας ὑμῶν εἰς τὰ ἅγια, καὶ εὐλογεῖτε τὸν Κύριον. Εὐλογήσαι σε Κύριος ἐκ Σιὼν, ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν.

# 134

Ἀλληλούϊα. Αἰνεῖτε τὸ ὄνομα Κυρίου, αἰνεῖτε δοῦλοι Κύριον, Οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκω Κυρίου, ἐν αὐλαῖς οἴκου Θεοῦ ἡμῶν. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον, ὅτι ἀγαθὸς Κύριος· ψάλατε τῷ ὀνόματι αὐτοῦ, ὅτι καλόν. Ὅτι τὸν Ἰακὼβ ἐξελέξατο ἑαυτῷ ὁ Κύριος, Ἰσραὴλ εἰς περιουσιασμὸν ἑαυτῷ. Ὅτι ἐγὼ ἔγνωκα, ὅτι μέγας ὁ Κύριος, καὶ ὁ Κύριος ἡμῶν παρὰ πάντας τοὺς θεούς. Πάντα ὅσα ἠθέλησεν ὁ Κύριος, ἐποίησεν ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, ἐν ταῖς θαλάσσαις καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἀβύσσοις. Ἀνάγων νεφέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησεν· ὁ ἐξάγων ἀνέμους ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. Ὃς ἐπάταξε τὰ πρωτότοκα Αἰγύπτου ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως

κτήνους. Ἐξαπέστειλεν σημεῖα καὶ τέρατα ἐν μέσῳ σου Αἴγυπτε, ἐν Φαραῷ καὶ ἐν πᾶσι τοῖς δούλοις αὐτοῦ. Ὃς ἐπάταξεν ἔθνη πολλά, καὶ ἀπέκτεινε βασιλεῖς κραταιούς· τὸν Σηὼν βασιλέα τῶν Ἀμορῥαίων, καὶ τὸν Ὢγ βασιλέα τῆς Βασὰν, καὶ πάσας τὰς βασιλείας Χαναάν· Καὶ ἔδωκε τὴν γῆν αὐτῶν κληρονομίαν, κληρονομίαν Ἰσραὴλ λαῷ αὐτοῦ. Κύριε τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. Ὅτι κρινεῖ Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοῖς δούλοις αὐτοῦ παρακληθήσεται. Τὰ εἴδωλα τῶν ἐθνῶν ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων. Στόμα ἔχουσι καὶ οὐ λαλήσουσιν, ὀφθαλμοὺς ἔχουσι καὶ οὐκ ὄψονται· Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ ἐνωτισθήσονται, οὐδὲ γάρ ἐστι πνεῦμα ἐν τῷ στόματι αὐτῶν. Ὅμοιοι αὐτοῖς γένοιντο οἱ ποιοῦντες αὐτὰ, καὶ πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ’ αὐτοῖς. Οἶκος Ἰσραὴλ εὐλογήσατε τὸν Κύριον, οἶκος Ἀαρὼν εὐλογήσατε τὸν Κύριον· Οἶκος Λευὶ, εὐλογήσατε τὸν Κύριον, οἱ φοβούμενοι τὸν Κύριον εὐλογήσατε τὸν Κύριον. Εὐλογητὸς Κύριος ἐκ Σιὼν, ὁ κατοικῶν Ἰερουσαλήμ.

# 135

Ἀλληλούϊα. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Θεῷ τῶν θεῶν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Κυρίῳ τῶν κυρίων, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ ποιήσαντι θαυμάσια μεγάλα μόνῳ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ ποιήσαντι τοὺς οὐρανοὺς ἐν συνέσει, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ στερεώσαντι τὴν γῆν ἐπὶ τῶν ὑδάτων, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος

αὐτοῦ. Τῷ ποιήσαντι φῶτα μεγάλα μόνῳ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τὸν ἥλιον εἰς ἐξουσίαν τῆς ἡμέρας, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Τὴν σελήνην καὶ τοὺς ἀστέρας εἰς ἐξουσίαν τῆς νυκτός, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ πατάξαντι Αἴγυπτον σὺν τοῖς πρωτοτόκοις αὐτῶν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Καὶ ἐξαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ μέσου αὐτῶν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Ἐν χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ καταδιελόντι τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν εἰς διαιρέσεις, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Καὶ διαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ διὰ μέσου αὐτῆς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Καὶ ἐκτινάξαντι Φαραὼ καὶ τὴν δύναμιν αὐτοῦ εἰς θάλασσαν ἐρυθράν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ διαγαγόντι τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ πατάξαντι βασιλεῖς μεγάλους, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Καὶ ἀποκτείναντι βασιλεῖς κραταιούς, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τὸν Σηὼν βασιλέα τῶν Ἀμορῥαίων, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Καὶ τὸν Ὼγ βασιλέα τῆς Βασάν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Καὶ δόντι τὴν γῆν αὐτῶν κληρονομίαν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· κληρονομίαν Ἰσραὴλ δούλῳ αὐτοῦ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ὅτι ἐν τῇ ταπεινώσει ἡμῶν ἐμνήσθη ἡμῶν ὁ Κύριος, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Καὶ ἐλυτρώσατο ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ὁ διδοὺς τροφὴν πάσῃ σαρκὶ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Ἐξομολογεῖσθε τῷ Θεῷ τοῦ οὐρανοῦ, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

# 136

Τῷ Δαυὶδ, Ἰερεμίου. Ἐπὶ τῶν ποταμῶν Βαβυλῶνος ἐκεῖ ἐκαθίσαμεν, καὶ ἐκλαύσαμεν ἐν τῷ μνησθῆναι ἡμᾶς τῆς Σιών. Ἐπὶ ταῖς ἰτέαις ἐν μέσῳ αὐτῆς ἐκρεμάσαμεν τὰ ὄργανα ἡμῶν. Ὅτι ἐκεῖ ἐπηρώτησαν ἡμᾶς οἱ αἰχμαλωτεύσαντες ἡμᾶς, λόγους ᾠδῶν, καὶ οἱ ἀπαγαγόντες ἡμᾶς, ὕμνον· ᾄσατε ἡμῖν ἐκ τῶν ᾠδῶν Σιών. Πῶς ᾄσωμεν τὴν ᾠδὴν Κυρίου ἐπὶ γῆς ἀλλοτρίας; Ἐὰν ἐπιλάθωμαί σου Ἰερουσαλήμ, ἐπιλησθείη ἡ δεξιά μου. Κολληθείη ἡ γλῶσσά μου τῷ λάρυγγί μου, ἐὰν μή σου μνησθῷ· ἐὰν μὴ προανατάξωμαι τὴν Ἰερουσαλὴμ ἐν ἀρχῇ τῆς εὐφροσύνης μου. Μνήσθητι, Κύριε, τῶν υἱῶν Ἐδὼμ τὴν ἡμέραν Ἰερουσαλήμ· τῶν λεγόντων, ἐκκενοῦτε ἐκκενοῦτε, ἕως τῶν θεμελίων αὐτῆς. Θυγάτηρ Βαβυλῶνος ἡ ταλαίπωρος, μακάριος ὃς ἀνταποδώσει σοι τὸ ἀνταπόδομά σου, ὃ ἀνταπέδωκας ἡμῖν. Μακάριος ὃς κρατήσει καὶ ἐδαφιεῖ τὰ νήπιά σου πρὸς τὴν πέτραν.

# 137

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. Ἐξομολογήσομαί σοι Κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, καὶ ἐναντίον ἀγγέλων ψαλῶ σοι, ὅτι ἤκουσας πάντα τὰ ῥήματα τοῦ στόματός μου. Προσκυνήσω πρὸς ναὸν ἅγιόν σου, καὶ ἐξομολογήσομαι τῷ ὀνόματί σου, ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου· ὅτι ἐμεγάλυνας ἐπὶ πᾶν τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν σου. Ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ ἐπάκουσόν μου· πολυωρήσεις με ἐν ψυχῇ μου δυνάμει σου. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι Κύριε πάντες οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, ὅτι ἤκουσαν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ στόματός σου. Καὶ ᾄσάτωσαν ἐν ταῖς ὁδοῖς Κυρίου, ὅτι μεγάλη ἡ δόξα Κυρίου. Ὅτι ὑψηλὸς Κύριος, καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφορᾷ,

καὶ τὰ ὑψηλὰ ἀπομακρόθεν γινώσκει. Ἐὰν πορευθῶ ἐν μέσῳ θλίψεως, ζήσεις με· ἐπ᾽ ὀργὴν ἐχθρῶν μου ἐξέτεινας χεῖράς σου, καὶ ἔσωσέ με ἡ δεξιά σου. Κύριε ἀνταποδώσεις ὑπὲρ ἐμοῦ· Κύριε τὸ ἔλεός σου εἰς τὸν αἰῶνα, τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου μὴ παρίδῃς.

# 138

Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε ἐδοκίμασάς με, καὶ ἔγνως με. Σὺ ἔγνως τὴν καθέδραν μου, καὶ τὴν ἔγερσίν μου· σὺ συνῆκας τοὺς διαλογισμούς μου ἀπὸ μακρόθεν. Τὴν τρίβον μου καὶ τὴν σχοῖνόν μου ἐξιχνίασας· καὶ πάσας τὰς ὁδούς μου προεῖδες, ὅτι οὐκ ἔστι λόγος ἄδικος ἐν γλώσσῃ μου· ἰδοὺ Κύριε, σὺ ἔγνως πάντα τὰ ἔσχατα καὶ τὰ ἀρχαῖα· σὺ ἔπλασάς με καὶ ἔθηκας ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν χεῖρά σου. Ἐθαυμαστώθη ἡ γνῶσίς σου ἐξ ἐμοῦ, ἐκραταιώθη, οὐ μὴ δύνωμαι πρὸς αὐτήν. Ποῦ πορευθῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός σου, καὶ ἀπὸ τοῦ προσώπου σου ποῦ φύγω; Ἐὰν ἀναβῶ εἰς τὸν οὐρανὸν, σὺ ἐκεῖ εἶ· ἐὰν καταβῶ εἰς τὸν ᾅδην, πάρει. Ἐὰν ἀναλάβω τὰς πτέρυγάς μου κατ᾽ ὀρθὸν, καὶ κατασκηνώσω εἰς τὰ ἔσχατα τῆς θαλάσσης, καὶ γὰρ ἐκεῖ ἡ χείρ σου ὁδηγήσει με, καὶ καθέξει με ἡ δεξιά σου. Καὶ εἶπα, ἄρα σκότος καταπατήσει με, καὶ νὺξ φωτισμὸς ἐν τῇ τρυφῇ μου. Ὅτι σκότος οὐ σκοτισθήσεταί ἀπὸ σοῦ, καὶ νὺξ ὡς ἡμέρα φωτισθήσεται· ὡς τὸ σκότος αὐτῆς, οὕτως καὶ τὸ φῶς αὐτῆς. Ὅτι σὺ ἐκτήσω τοὺς νεφρούς μου Κύριε, ἀντελάβου μου ἐκ γαστρὸς μητρός μου. Ἐξομολογήσομαί σοι, ὅτι φοβερῶς ἐθαυμαστώθης· θαυμάσια τὰ ἔργα σου, καὶ ἡ ψυχή μου γινώσκει σφόδρα. Οὐκ ἐκρύβη τὸ ὀστοῦν μου ἀπὸ σοῦ, ὃ ἐποίησας ἐν κρυφῇ, καὶ ἡ ὑπόστασίς μου ἐν τοῖς κατωτάτω τῆς γῆς. Ἀκατέργαστόν μου

εἶδου οἱ ἀφθαλμοί σου, καὶ ἐπὶ τὸ βιβλίον σου πάντες γραφήσονται· ἡμέρας πλασθήσονται καὶ οὐθεὶς ἐν αὐτοῖς. Ἐμοὶ δὲ λίαν ἐτιμήθησαν οἱ φίλοι σου ὁ Θεὸς, λίαν ἐκραταιώθησαν αἱ ἀρχαὶ αὐτῶν. Ἐξαριθμήσομαι αὐτοὺς καὶ ὑπὲρ ἄμμον πληθυνθήσονται· ἐξηγέρθην, καὶ ἔτι εἰμὶ μετὰ σοῦ. Ἐὰν ἀποκτείνῃς ἁμαρτωλοὺς ὁ Θεός· ἄνδρες αἱμάτων ἐκκλίνατε ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι ἐρεῖς εἰς διαλογισμόν· λήψονται εἰς ματαιότητα τὰς πόλεις σου. Οὐχὶ τοὺς μισοῦντάς σε Κύριε ἐμίσησα, καὶ ἐπὶ τοὺς ἐχθρούς σου ἐξετηκόμην; Τέλειον μῖσος ἐμίσουν αὐτοὺς, εἰς ἐχθροὺς ἐγένοντό μοι. Δοκίμασόν με ὁ Θεὸς, καὶ γνῶθι τὴν καρδίαν μου· ἔτασόν με, καὶ γνῶθι τὰς τρίβους μου. Καὶ ἴδε εἰ ὁδὸς ἀνομίας ἐν ἐμοὶ, καὶ ὁδήγησόν με ἐν ὁδῷ αἰωνίᾳ.

# 139

Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ ψαλμός. Ἐξελοῦ με Κύριε ἐξ ἀνθρώπου πονηροῦ, ἀπὸ ἀνδρὸς ἀδίκου ῥῦσαί με· οἵτινες ἐλογίσαντο ἀδικίας ἐν καρδίᾳ, ὅλην τὴν ἡμέραν παρετάσσοντο πολέμους. Ἠκόνησαν γλῶσσαν αὐτῶν ὡσεὶ ὄφεως, ἰὸς ἀσπίδων ὑπὸ τὰ χείλη αὐτῶν· διάψαλμα. Φύλαξόν με Κύριε ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλοῦ, ἀπὸ ἀνθρώπων ἀδίκων ἐξελοῦ με· οἵτινες ἐλογίσαντο τοῦ ὑποσκελίσαι τὰ διαβήματά μου. Ἔκρυψαν ὑπερήφανοι παγίδα μοι· καὶ σχοινία διέτειναν παγίδας τοῖς ποσί μου, ἐχόμενα τρίβου σκάνδαλον ἔθεντό μοι· διάψαλμα. Εἶπα τῷ Κυρίῳ, Θεός μου εἶ σὺ· ἐνώτισαι, Κύριε, τὴν φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. Κύριε Κύριε, δύναμις τῆς σωτηρίας μου, ἐπεσκίασας ἐπὶ τὴν κεφαλήν μου ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Μὴ παραδῷς με, Κύριε, ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας μου

ἁμαρτωλῷ· διελογίσαντο κατ᾽ ἐμοῦ, μὴ ἐγκαταλίπῃς με, μή ποτε ὑψωθῶσι· διάψαλμα. Ἡ κεφαλὴ τοῦ κυκλώματος αὐτῶν, κόπος τῶν χειλέων αὐτῶν καλύψει αὐτούς. Πεσοῦνται ἐπ᾽ αὐτοὺς ἄνθρακες πυρὸς ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ καταβαλεῖς αὐτοὺς ἐν ταλαιπωρίαις, οὐ μὴ ὑποστῶσιν. Ἀνὴρ γλωσσώδης οὐ κατευθυνθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς· ἄνδρα ἄδικον κακὰ θηρεύσει εἰς καταφθοράν. Ἔγνων ὅτι ποιήσει Κύριος τὴν κρίσιν τοῦ πτωχοῦ, καὶ τὴν δίκην τῶν πενήτων. Πλὴν δίκαιοι ἐξομολογήσονται τῷ ὀνόματί σου, κατοικήσουσιν εὐθεῖς σὺν τῷ προσώπῳ σου.

# 140

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. Κύριε ἐκέκραξα πρὸς σὲ, εἰσάκουσόν μου· πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς σέ. Κατευθυνθήτω ἡ προσευχή μου ὡς θυμίαμα ἐνώπιόν σου· ἔπαρσις τῶν χειρῶν μου θυσία ἑσπερινή. Θοῦ, Κύριε, φυλακὴν τῷ στόματί μου, καὶ θύραν περιοχῆς περὶ τὰ χείλη μου. Μὴ ἐκκλίνῃς τὴν καρδίαν μου εἰς λόγους πονηρίας, τοῦ προφασίζεσθαι προφάσεις ἐν ἁμαρτίαις, σὺν ἀνθρώποις ἐργαζομένοις τὴν ἀνομίαν, καὶ οὐ μὴ συνδοιάσω μετὰ τῶν ἐκλεκτῶν αὐτῶν. Παιδεύσει με δίκαιος ἐν ἐλέει καὶ ἐλέγξει με, ἔλαιον δὲ ἁμαρτωλοῦ μὴ λιπανάτω τὴν κεφαλήν μου, ὅτι ἔτι καὶ ἡ προσευχή μου ἐν ταῖς εὐδοκίαις αὐτῶν. Κατεπόθησαν ἐχόμενα πέτρας οἱ κραταιοὶ αὐτῶν· ἀκούσονται τὰ ῥήματά μου, ὅτι ἠδύνθησαν. Ὡσεὶ πάχος γῆς διερῥάγη ἐπὶ τῆς γῆς, διεσκορπίσθη τὰ ὀστᾶ ἡμῶν παρὰ τὸν ᾅδην. Ὅτι πρὸς σὲ, Κύριε Κύριε, οἱ ὀφθαλμοί μου, ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, μὴ ἀντανέλῃς τὴν ψυχήν μου. Φύλαξόν με ἀπὸ παγίδος ἧς συνεστήσαντό μοι, καὶ ἀπὸ

σκανδάλων τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν. Πεσοῦνται ἐν ἀμφιβλήστρῳ αὐτοῦ ἁμαρτωλοὶ, καταμόνας εἰμὶ ἐγὼ ἕως οὗ ἂν παρέλθω.

# 141

Συνέσεως τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τῷ σπηλαίῳ, προσευχή. Φωνῇ μου πρὸς Κύριον ἐκέκραξα, φωνῇ μου πρὸς Κύριον ἐδεήθην. Ἐκχεῶ ἐναντίον αὐτοῦ τὴν δέησίν μου, τὴν θλίψιν μου ἐνώπιον αὐτοῦ ἀπαγγελῶ. Ἐν τῷ ἐκλείπειν ἐξ ἐμοῦ τὸ πνεῦμά μου, καὶ σὺ ἔγνως τὰς τρίβους μου· ἐν ὁδῷ ταύτῃ ᾗ ἐπορευόμην, ἔκρυψαν παγίδα μοι. Κατενόουν εἰς τὰ δεξιὰ καὶ ἐπέβλεπον, ὅτι οὐκ ἦν ὁ ἐπιγινώσκων με· ἀπώλετο φυγὴ ἀπ’ ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐκζητῶν τὴν ψυχήν μου. Πρὸς σὲ, Κύριε, ἐκέραξα, καὶ εἶπα, σὺ εἶ ἡ ἐλπίς μου, μερίς μου ἐν γῇ ζώντων. Πρόσχες πρὸς τὴν δέησίν μου, ὅτι ἐταπεινώθην σφόδρα· ῥῦσαί με ἐκ τῶν καταδιωκόντων με, ὅτι ἐκραταιώθησαν ὑπὲρ ἐμέ. Ἐξάγαγε ἐκ φυλακῆς τὴν ψυχήν μου, τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματί σου, Κύριε· ἐμὲ ὑπομενοῦσι δίκαιοι, ἕως οὗ ἀνταποδῷς μοι.

# 142

Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ὅτε αὐτὸν ὁ υἱὸς κατεδιώκει. Κύριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, ἐνώτισαι τὴν δέησίν μου ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου, ἐπάκουσόν μου ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου. Καὶ μὴ εἰσέλθῃς εἰς κρίσιν μετὰ τοῦ δούλου σου, ὅτι οὐ δικαιωθήσεται ἐνώπιόν σου πᾶς ζῶν.

Ὅτι κατεδίωξεν ὁ ἐχθρὸς τὴν ψυχήν μου· ἐταπείνωσεν εἰς τὴν γῆν τὴν ζωήν μου, ἐκάθισέ με ἐν σκοτεινοῖς ὡς νεκροὺς αἰῶνος, καὶ ἠκηδίασεν ἐπ᾽ ἐμὲ τὸ πνεῦμά μου· ἐν ἐμοὶ ἐταράχθη ἡ καρδία μου. Ἐμνήσθην ἡμερῶν ἀρχαίων· καὶ ἐμελέτησα ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου, ἐν ποιήμασι τῶν χειρῶν σου ἐμελέτων. Διεπέτασα πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου, ἡ ψυχή μου ὡς γῆ ἄνυδρός σοι· διάψαλμα. Ταχὺ εἰσάκουσόν μου, Κύριε, ἐξέλιπε τὸ πνεῦμά μου· μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ ὁμοιωθήσομαι τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. Ἀκουστὸν ποίησόν μοι τοπρωΐ τὸ ἔλεός σου, ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα· γνώρισόν μοι, Κύριε, ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσομαι, ὅτι πρὸς σὲ ἦρα τὴν ψυχήν μου. Ἐξελοῦ με ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου Κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κατέφυγον. Δίδαξόν με τοῦ ποιεῖν τὸ θέλημά σου, ὅτι Θεός μου εἶ σὺ, τὸ πνεῦμά σου τὸ ἀγαθὸν ὁδηγήσει με ἐν τῇ εὐθείᾳ. Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου, Κύριε, ζήσεις με, ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ἐξάξεις ἐκ θλίψεως τὴν ψυχήν μου. Καὶ ἐν τῷ ἐλέει σου ἐξολοθρεύσεις τοὺς ἐχθρούς μου, καὶ ἀπολεῖς πάντας τοὺς θλίβοντας τὴν ψυχήν μου, ὅτι δοῦλός σου εἰμὶ ἐγώ.

# 143

Τῷ Δαυὶδ πρὸς τὸν Γολιάδ. Εὐλογήτος Κύριος ὁ Θεός μου, ὁ διδάσκων τὰς χεῖράς μου εἰς παράταξιν, τοὺς δακτύλους μου εἰς πόλεμον· Ἔλεός μου καὶ καταφυγή μου, ἀντιλήπτωρ μου καὶ ῥύστης μου, ὑπερασπιστής μου, καὶ ἐπ᾽ αὐτῷ ἤλπισα, ὁ ὑποτάσσων τὸν λαόν μου ὑπ᾽ ἐμέ. Κύριε, τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι ἐγνώσθης αὐτῷ; ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι λογίζῃ αὐτόν; Ἄνθρωπος ματαιότητι ὡμοιώθη, αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ὡσεὶ σκιὰ παράγουσι. Κύριε, κλῖνον

οὐρανούς σου καὶ κατάβηθι, ἅψαι τῶν ὀρέων καὶ καπνισθήσονται. Ἄστραψον ἀστραπὴν καὶ σκορπιεῖς αὐτοὺς, ἐξαπόστειλον τὰ βέλη σου καὶ συνταράξεις αὐτούς. Ἐξαπόστειλον τὴν χεῖρά σου ἐξ ὕψους, ἐξελοῦ με καὶ ῥῦσαί με ἐξ ὑδάτων πολλῶν, ἐκ χειρὸς υἱῶν ἀλλοτρίων· ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότητα, καὶ ἡ δεξιὰ αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας. Ὁ Θεὸς, ᾠδὴν καινὴν ᾄσομαί σοι, ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψαλῶ σοι· Τῷ διδόντι τὴν σωτηρίαν τοῖς βασιλεῦσι, τῷ λυτρουμένῳ Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ ἐκ ῥομφαίας πονηρᾶς. Ῥῦσαί με καὶ ἐξελοῦ με ἐκ χειρὸς υἱῶν ἀλλοτρίων, ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότητα, καὶ ἡ δεξιὰ αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας· ὧν οἱ υἱοὶ ὡς νεόφυτα ἱδρυμένα ἐν τῇ νεότητι αὐτῶν· αἱ θυγατέρες αὐτῶν κεκαλλωπισμέναι, περικεκοσμημέναι ὡς ὁμοίωμα ναοῦ. Τὰ ταμεῖα αὐτῶν πλήρη, ἐξερευγόμενα ἐκ τούτου εἰς τοῦτο· τὰ πρόβατα αὐτῶν πολυτόκα, πληθύνοντα ἐν ταῖς ἐξόδοις αὐτῶν· Οἱ βόες αὐτῶν παχεῖς· οὐκ ἔστι κατάπτωμα φραγμοῦ, οὐδὲ διέξοδος, οὐδὲ κραυγὴ ἐν ταῖς ἐπαύλεσιν αὐτῶν. Ἐμακάρισαν τὸν λαὸν ᾧ ταῦτά ἐστι· μακάριος ὁ λαὸς οὗ Κύριος ὁ Θεὸς αὐτοῦ.

# 144

Αἴνεσις τοῦ Δαυίδ. Ὑψώσω σε, ὁ Θεός μου ὁ βασιλεύς μου, καὶ εὐλογήσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Καθ’ ἑκάστην ἡμέραν εὐλογήσω σε, καὶ αἰνέσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Μέγας ὁ Κύριος καὶ αἰνετὸς σφόδρα, καὶ τῆς μεγαλωσύνης αὐτοῦ οὐκ ἔστι πέρας. Γενεὰ καὶ γενεὰ ἐπαινέσει τὰ ἔργα σου, καὶ τὴν δύναμίν σου ἀπαγγελοῦσι. Καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν τῆς δόξης τῆς ἁγιωσύνης

σου λαλήσουσι, καὶ τὰ θαυμάσιά σου διηγήσονται. Καὶ τὴν δύναμιν τῶν φοβερῶν σου ἐροῦσι, καὶ τὴν μεγαλωσύνην σου διηγήσονται. Μνήμην τοῦ πλήθους τῆς χρηστότητός σου ἐξερεύξονται, καὶ τῇ δικαιοσύνῃ σου ἀγαλλιάσονται. Οἰκτίρμων καὶ ἐλεήμων ὁ Κύριος, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος. Χρηστὸς Κύριος τοῖς ὑπομένουσι, καὶ οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ ἐπὶ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι, Κύριε, πάντα τὰ ἔργα σου, καὶ οἱ ὅσιοί σου εὐλογησάτωσάν σε. Δόξαν τῆς βασιλείας σου ἐροῦσι, καὶ τὴν δυναστείαν σου λαλήσουσιν· Τοῦ γνωρίσαι τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων τὴν δυναστείαν σου, καὶ τὴν δόξαν τῆς μεγαλοπρεπείας τῆς βασιλείας σου. Ἡ βασιλεία σου βασιλεία πάντων τῶν αἰώνων, καὶ ἡ δεσποτία σου ἐν πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ· Ὑποστηρίζει Κύριος πάντας τοὺς καταπίπτοντας, καὶ ἀνορθοῖ πάντας τοὺς κατερραγμένους. Οἱ ὀφθαλμοὶ πάντων εἰς σὲ ἐλπίζουσι, καὶ σὺ δίδως τὴν τροφὴν αὐτῶν ἐν εὐκαιρίᾳ. Ἀνοίγεις σὺ τὰς χεῖράς σου, καὶ ἐμπιπλᾷς πᾶν ζῶον εὐδοκίας. Δίκαιος Κύριος ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ ὅσιος ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτοῦ. Ἐγγὺς Κύριος πᾶσιν τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτόν, πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτὸν ἐν ἀληθείᾳ. Θέλημα τῶν φοβουμένων αὐτὸν ποιήσει, καὶ τῆς δεήσεως αὐτῶν ἐπακούσεται, καὶ σώσει αὐτούς. Φυλάσσει Κύριος πάντας τοὺς ἀγαπῶντας αὐτόν, καὶ πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς ἐξολοθρεύσει. Αἴνεσιν Κυρίου λαλήσει τὸ στόμα μου, καὶ εὐλογείτω πᾶσα σὰρξ τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ, εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

# 145

Ἀλληλούϊα· Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. Αἰνεῖ ἡ ψυχή μου τὸν Κύριον. Αἰνέσω Κύριον ἐν ζωῇ μοῦ, ψαλῶ τῷ Θεῷ μου ἕως ὑπάρχω. Μὴ πεποίθατε ἐπ’ ἄρχοντας, καὶ ἐφ’ υἱοὺς ἀνθρώπων, οἷς οὐκ ἔστι σωτηρία. Ἐξελεύσεται τὸ πνεῦμα αὐτοῦ καὶ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἀπολοῦνται πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν. Μακάριος οὗ ὁ Θεὸς Ἰακὼβ βοηθός αὐτοῦ, ἡ ἐλπὶς αὐτοῦ ἐπὶ Κύριον τὸν Θεὸν αὐτοῦ· Τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, τὴν θάλασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς· τὸν φυλάσσοντα ἀλήθειαν εἰς τὸν αἰῶνα, ποιοῦντα κρίμα τοῖς ἀδικουμένοις, διδόντα τροφὴν τοῖς πεινῶσι. Κύριος λύει πεπεδημένους, Κύριος σοφοῖ τυφλοὺς, Κύριος ἀνορθοῖ κατερῥαγμένους, Κύριος ἀγαπᾷ δικαίους, Κύριος φυλάσσει τοὺς προσηλύτους· ὀρφανὸν καὶ χήραν ἀναλήμψεται, καὶ ὁδὸν ἁμαρτωλῶν ἀφανιεῖ. Βασιλεύσει Κύριος εἰς τὸν αἰῶνα, ὁ Θεός σου, Σιὼν, εἰς γενεὰν καὶ γενεάν.

# 146

Ἀλληλούϊα· Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον ὅτι ἀγαθὸν ψαλμός, τῷ Θεῷ ἡμῶν ἡδυνθείη αἴνεσις. Οἰκοδομῶν Ἰερουσαλὴμ ὁ Κύριος, καὶ τὰς διασπορὰς τοῦ Ἰσραὴλ ἐπισυνάξει· Ὁ ἰώμενος τοὺς συντετριμμένους τὴν καρδίαν, καὶ δεσμεύων τὰ συντρίμματα αὐτῶν· Ὁ ἀριθμῶν πλήθη ἄστρων, καὶ πᾶσιν αὐτοῖς ὀνόματα καλῶν. Μέγας ὁ Κύριος ἡμῶν, καὶ μεγάλη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, καὶ τῆς συνέσεως αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἀριθμός. Ἀναλαμβάνων πρᾳεῖς ὁ Κύριος, ταπεινῶν δὲ ἁμαρτωλοὺς ἕως τῆς γῆς. Ἐξάρξατε τῷ Κυρίῳ ἐν ἐξομολογήσει, ψάλατε τῷ Θεῷ ἡμῶν ἐν κιθάρᾳ· Τῷ περιβάλλοντι τὸν οὐρανὸν ἐν νεφέλαις, τῷ ἑτοιμάζοντι τῇ γῇ

ὑετόν· τῷ ἐξανατέλλοντι ἐν ὄρεσι χόρτον, καὶ χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων· καὶ διδόντι τοῖς κτήνεσι τροφὴν αὐτῶν, καὶ τοῖς νεοσσοῖς τῶν κοράκων τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτόν. Οὐκ ἐν τῇ δυναστείᾳ τοῦ ἵππου θελήσει, οὐδὲ ἐν ταῖς κνήμαις τοῦ ἀνδρὸς εὐδοκεῖ. Εὐδοκεῖ Κύριος ἐν τοῖς φοβουμένοις αὐτὸν, καὶ ἐν πᾶσιν τοῖς ἐλπιζουσιν ἐπὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

# 147

Ἀλληλούϊα· Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. Ἐπαίνει, Ἱερουσαλήμ, τὸν Κύριον, αἴνει τὸν Θεόν σου Σιών. Ὅτι ἐνίσχυσεν τοὺς μοχλοὺς τῶν πυλῶν σου, εὐλόγησεν τοὺς υἱούς σου ἐν σοί. Ὁ τιθεὶς τὰ ὅριά σου εἰρήνην, καὶ στέαρ πυροῦ ἐμπιπλῶν σε· Ὁ ἀποστέλλων τὸ λόγιον αὐτοῦ τῇ γῇ, ἕως τάχους δραμεῖται ὁ λόγος αὐτοῦ· Τοῦ διδόντος χιόνα ὡσεὶ ἔριον, ὁμίχλην ὡσεὶ σποδὸν πάσσοντος· Βάλλοντος κρύσταλλον αὐτοῦ ὡσεὶ ψωμούς· κατὰ πρόσωπον ψύχους αὐτοῦ τίς ὑποστήσεται; Ἀποστελεῖ τὸν λόγον αὐτοῦ, καὶ τήξει αὐτά, πνεύσει τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ ῥυήσεται ὕδατα. Ἀπαγγέλλων τὸν λόγον αὐτοῦ τῷ Ἰακώβ, δικαιώματα καὶ κρίματα αὐτοῦ τῷ Ἰσραήλ. Οὐκ ἐποίησεν οὕτως παντὶ ἔθνει, καὶ τὰ κρίματα αὐτοῦ οὐκ ἐδήλωσεν αὐτοῖς.

# 148

Ἀλληλούϊα· Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον ἐκ τῶν οὐρανῶν, αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν τοῖς ὑψίστοις. Αἰνεῖτε αὐτόν πάντες οἱ

ἄγγελοι αὐτοῦ, αἰνεῖτε αὐτόν πᾶσαι αἱ δυνάμεις αὐτοῦ. Αἰνεῖτε αὐτόν ἥλιος καὶ σελήνη, αἰνεῖτε αὐτόν πάντα τὰ ἄστρα καὶ τὸ φῶς. Αἰνεῖτε αὐτόν οἱ οὐρανοὶ τῶν οὐρανῶν, καὶ τὸ ὕδωρ τὸ ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν. Αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνομα Κυρίου· ὅτι αὐτὸς εἶπεν καὶ ἐγενήθησαν, αὐτὸς ἐνετείλατο καὶ ἐκτίσθησαν. Ἔστησεν αὐτὰ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος· πρόσταγμα ἔθετο, καὶ οὐ παρελεύσεται. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον ἐκ τῆς γῆς, δράκοντες καὶ πᾶσαι ἄβυσσοι· Πῦρ, χάλαζα, χιὼν, κρύσταλλος, πνεῦμα καταιγίδος, τὰ ποιοῦντα τὸν λόγον αὐτοῦ· Τὰ ὄρη καὶ πάντες βουνοί, ξύλα καρποφόρα καὶ πᾶσαι κέδροι· Τὰ θηρία καὶ πάντα τὰ κτήνη, ἑρπετὰ καὶ πετεινὰ πτερωτά· Βασιλεῖς τῆς γῆς καὶ πάντες λαοί, ἄρχοντες καὶ πάντες κριταὶ γῆς· Νεανίσκοι καὶ παρθένοι, πρεσβύται μετὰ νεωτέρων αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνομα Κυρίου, ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ μόνου· ἡ ἐξομολόγησις αὐτοῦ ἐπὶ γῆς καὶ οὐρανοῦ, καὶ ὑψώσει κέρας λαοῦ αὐτοῦ· ὕμνος πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ, τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, λαῷ ἐγγίζοντι αὐτῷ.

# 149

Ἀλληλούϊα. Ἄσατε τῷ Κυρίῳ ᾆσμα καινόν· ἡ αἴνεσις αὐτοῦ ἐν ἐκκλησίᾳ ὁσίων. Εὐφρανθήτω Ἰσραὴλ ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτὸν, καὶ υἱοὶ Σιὼν ἀγαλλιάσθωσαν ἐπὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῶν. Αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐν χορῷ, ἐν τυμπάνῳ καὶ ψαλτηρίῳ ψαλάτωσαν αὐτῷ. Ὅτι εὐδοκεῖ Κύριος ἐν λαῷ αὐτοῦ, καὶ ὑψώσει πραεῖς ἐν σωτηρίᾳ. Καυχήσονται ὅσιοι ἐν δόξῃ, καὶ ἀγαλλιάσονται ἐπὶ τῶν κοιτῶν αὐτῶν. Αἱ ὑψώσεις τοῦ Θεοῦ ἐν λάρυγγι αὐτῶν, καὶ ῥομφαῖαι δίστομοι ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν· Τοῦ ποιῆσαι ἐκδίκησιν ἐν

τοῖς ἔθνεσιν, ἐλεγμοὺς ἐν τοῖς λαοῖς· Τοῦ δῆσαι τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἐν πέδαις, καὶ τοὺς ἐνδόξους αὐτῶν ἐν χειροπέδαις σιδηραῖς· Τοῦ ποιῆσαι ἐν αὐτοῖς κρίμα ἔγγραπτον· δόξα αὕτη ἐστὶ πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ.

# 150

Ἀλληλούϊα. Αἰνεῖτε τὸν Θεὸν ἐν τοῖς ἁγίοις αὐτοῦ, αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν στερεώματι δυνάμεως αὐτοῦ. Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐπὶ ταῖς δυναστείαις αὐτοῦ, αἰνεῖτε αὐτὸν κατὰ τὸ πλῆθος τῆς μεγαλωσύνης αὐτοῦ. Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν ἤχῳ σάλπιγγος, αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν ψαλτηρίῳ καὶ κιθάρᾳ. Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν τυμπάνῳ καὶ χορῷ, αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν χορδαῖς καὶ ὀργάνῳ. Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν κυμβάλοις εὐήχοις, αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν κυμβάλοις ἀλαλαγμοῦ. Πᾶσα πνοὴ αἰνεσάτω τὸν Κύριον.

# 151

Οὗτος ὁ ψαλμὸς ἰδιόγραφος εἰς Δαυὶδ, καὶ ἔξωθεν τοῦ ἀριθμοῦ, ὅτε ἐμονομάχησε τῷ Γολιάδ. Μικρὸς ἤμην ἐν τοῖς ἀδελφοίς μου, καὶ νεώτερος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός μου, ἐποίμαινον τὰ πρόβατα τοῦ πατρός μου. Αἱ χεῖρές μου ἐποίησαν ὄργανον, καὶ οἱ δάκτυλοί μου ἥρμοσαν ψαλτήριον. Καὶ τίς ἀναγγελεῖ τῷ Κυρίῳ μου; αὐτὸς Κύριος, αὐτὸς εἰσακούει. Αὐτὸς ἐξαπέστειλεν τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, καὶ ἦρέ με ἐκ τῶν προβάτων τοῦ πατρός μου, καὶ ἔχρισέ με ἐν τῷ ἐλαίῳ τῆς χρίσεως αὐτοῦ. Οἱ ἀδελφοί μου καλοὶ καὶ μεγάλοι, καὶ οὐκ εὐδόκησεν ἐν αὐτοῖς Κύριος. Ἐξῆλθον εἰς συνάντησιν τῷ

ἀλλοφύλῳ, καὶ ἐπικατηράσατό με ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτοῦ· Ἐγὼ δὲ σπασάμενος τὴν παρ᾽ αὐτοῦ μάχαιραν, ἀπεκεφάλισα αὐτόν, καὶ ᾖρα ὄνειδος ἐξ υἱῶν Ἰσραήλ.

# Α΄ ΒΑΣΙΛΕΩΝ

## 1

ΚΑΙ ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ πρεσβύτερος προβεβηκὼς ἡμέραις, καὶ περιέβαλλον αὐτὸν ἱματίοις, καὶ οὐκ ἐθερμαίνετο. Καὶ εἶπον οἱ παῖδες αὐτοῦ, ζητησάτωσαν τῷ βασιλεῖ παρθένον νεάνιδα, καὶ παραστήσεται τῷ βασιλεῖ, καὶ ἔσται αὐτὸν θάλπουσα, καὶ κοιμηθήσεται μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ θερμανθήσεται ὁ κύριός μου ὁ βασιλεύς. Καὶ ἐζήτησαν νεάνιδα καλὴν ἐκ παντὸς ὁρίου Ἰσραήλ· καὶ εὗρον τὴν Ἀβισὰγ τὴν Σωμανίτιν, καὶ ἤνεγκαν αὐτὴν πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ ἡ νεᾶνις καλὴ ἕως σφόδρα· καὶ ἦν θάλπουσα τὸν βασιλέα, καὶ ἐλειτούργει αὐτῷ· καὶ ὁ βασιλεὺς οὐκ ἔγνω αὐτήν. Καὶ Ἀδωνίας υἱὸς Ἀγγὶθ ἐπῄρετο, λέγων, ἐγὼ βασιλεύσω· καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ ἅρματα καὶ ἱππεῖς, καὶ πεντήκοντα ἄνδρας παρατρέχειν ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ οὐκ ἀπεκώλυσεν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ οὐδέποτε, λέγων, διατί σὺ ἐποίησας; καὶ γε αὐτὸς ὡραῖος τῇ ὄψει σφόδρα, καὶ αὐτὸν ἔτεκεν ὀπίσω Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἐγένοντο οἱ λόγοι αὐτοῦ μετὰ Ἰωὰβ τοῦ υἱοῦ Σαρουίας, καὶ μετὰ Ἀβιάθαρ τοῦ ἱερέως, καὶ ἐβοήθουν ὀπίσω Ἀδωνίου. Καὶ Σαδὼκ ὁ ἱερεὺς, καὶ Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ, καὶ Νάθαν ὁ προφήτης, καὶ Σεμεΐ, καὶ Ῥησὶ,

καὶ υἱοὶ δυνατοὶ τοῦ Δαυὶδ, οὐκ ἦσαν ὀπίσω Ἀδωνίου. Καὶ ἐθυσίασεν Ἀδωνίας πρόβατα καὶ μόσχους καὶ ἄρνας μετὰ αἰθῆ τοῦ Ζωελεθὶ, ὃς ἦν ἐχόμενα τῆς Ῥωγήλ· καὶ ἐκάλεσε πάντας τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἀδροὺς Ἰούδα παῖδας τοῦ βασιλέως. Καὶ Νάθαν τὸν προφήτην, καὶ Βαναίαν, καὶ τοὺς δυνατοὺς, καὶ τὸν Σαλωμὼν ἀδελφὸν αὐτοῦ, οὐκ ἐκάλεσε. Καὶ εἶπε Νάθαν πρὸς Βηρσαβεὲ μητέρα Σαλωμὼν, λέγων, οὐκ ἤκουσας ὅτι ἐβασίλευσεν Ἀδωνίας υἱὸς Ἀγγὶθ, καὶ ὁ κύριος ἡμῶν Δαυὶδ οὐκ ἔγνω; Καὶ νῦν δεῦρο, συμβουλεύσω σοι δὴ συμβουλίαν, καὶ ἐξελοῦ τὴν ψυχήν σου, καὶ τὴν ψυχὴν τοῦ υἱοῦ σου Σαλωμών. Δεῦρο εἴσελθε πρὸς τὸν βασιλέα Δαυὶδ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, λέγουσα, οὐχὶ σὺ κύριέ μου βασιλεῦ ὤμοσας τῇ δούλῃ σου, λέγων, ὅτι ὁ υἱός σου Σαλωμὼν βασιλεύσει μετ’ ἐμέ, καὶ αὐτὸς καθιεῖται ἐπὶ τοῦ θρόνου μου; καὶ τί ὅτι ἐβασίλευσεν Ἀδωνίας; Καὶ ἰδοὺ ἔτι λαλούσης σου ἐκεῖ μετα τοῦ βασιλέως, καὶ ἐγὼ εἰσελεύσομαι ὀπίσω σου, καὶ πληρώσω τοὺς λόγους σου. Καὶ εἴσῆλθε Βηρσαβεὲ πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὸ ταμεῖον· καὶ ὁ βασιλεὺς πρεσβύτης σφόδρα· καὶ Ἀβισὰλ ἡ Σωμανῖτις ἦν λειτουργοῦσα τῷ βασιλεῖ. Καὶ ἔκυψε Βηρσαβεὲ, καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ· καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, τί ἔστι σοί; Ἡ δὲ εἶπε, κύριε, σὺ ὤμοσας ἐν Κυρίῳ τῷ Θεῷ σου τῇ δούλῃ σου, λέγων, ὅτι ὁ υἱός σου Σαλωμὼν βασιλεύσει μετ’ ἐμέ, καὶ καθήσεται ἐπὶ τοῦ θρόνου μου. Καὶ νῦν ἰδοὺ Ἀδωνίας ἐβασίλευσε, καὶ σὺ κύριέ μου βασιλεῦ οὐκ ἔγνως. Καὶ ἐθυσίασε μόσχους καὶ ἄρνας καὶ πρόβατα εἰς πλῆθος, καὶ ἐκάλεσε πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως, καὶ Ἀβιάθαρ τὸν ἱερέα, καὶ Ἰωὰβ τὸν ἄρχοντα τῆς δυνάμεως· καὶ τὸν Σαλωμὼν τὸν δοῦλόν σου οὐκ ἐκάλεσε. Καὶ σὺ κύριέ μου βασιλεῦ, οἱ ὀφθαλμοὶ παντὸς Ἰσραὴλ πρὸς σέ, ἀπάγγειλαι αὐτοῖς τίς καθήσεται ἐπὶ τοῦ θρόνου τοῦ

κυρίου μου τοῦ βασιλέως μετ’ αὐτόν. Καὶ ἔσται ὡς ἂν κοιμηθῇ ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἔσομαι ἐγὼ καὶ Σαλωμὼν ὁ υἱός μου ἁμαρτωλοί. Καὶ ἰδοὺ ἔτι αὐτῆς λαλούσης μετὰ τοῦ βασιλέως, καὶ Νάθαν ὁ προφήτης ἦλθε. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ βασιλεῖ, ἰδοὺ Νάθαν ὁ προφήτης· καὶ εἰσῆλθε κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως, καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ εἶπε Νὰθαν, κύριέ μου βασιλεῦ, σὺ εἶπας, Ἀδωνίας βασιλεύσει ὀπίσω μου, καὶ αὐτὸς καθήσεται ἐπὶ τοῦ θρόνου μου; Ὅτι κατέβη σήμερον, καὶ ἐθυσίασε μόσχους καὶ ἄρνας καὶ πρόβατα εἰς πλῆθος, καὶ ἐκάλεσε πάντας τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως, καὶ τοὺς ἄρχοντας τῆς δυνάμεως, καὶ Ἀβιάθαρ τὸν ἱερέα· καὶ ἰδού εἰσιν ἐσθίοντες καὶ πίνοντες ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ εἶπαν, ζήτω ὁ βασιλεὺς Ἀδωνίας. Καὶ ἐμὲ αὐτὸν τὸν δοῦλόν σου, καὶ Σαδὼκ τὸν ἱερέα, καὶ Βαναίαν υἱὸν Ἰωδαὲ, καὶ Σαλωμὼν τὸν δοῦλόν σου, οὐκ ἐκάλεσεν. Εἰ διὰ τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως γέγονε τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ οὐκ ἐγνώρισας τῷ δούλῳ σου τίς καθήσεται ἐπὶ τὸν θρόνον τοῦ κυρίου μου βασιλέως μετ’ αὐτόν; Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ, καὶ εἶπε, καλέσατέ μοι τὴν Βηρσαβεέ· καὶ εἰσῆλθεν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ ἔστη ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ ὤμοσεν ὁ βασιλεὺς, καὶ εἶπε, ζῇ Κύριος ὃς ἐλυτρώσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ πάσης θλίψεως, ὅτι καθὼς ὤμοσά σοι ἐν Κυρίῳ Θεῷ Ἰσραὴλ, λέγων, ὅτι Σαλωμὼν ὁ υἱός σου βασιλεύσει μετ’ ἐμὲ, καὶ αὐτὸς καθήσεται ἐπὶ τοῦ θρόνου μου ἀντ’ ἐμοῦ, ὅτι οὕτω ποιήσω τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ. Καὶ ἔκυψε Βηρσαβεὲ ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπε, ζήτω ὁ κύριός μου ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Δαυίδ, Καλέσατέ μοι Σαδὼκ τὸν ἱερέα, καὶ Νάθαν τὸν προφήτην, καὶ Βαναίαν υἱὸν Ἰωδαέ καὶ εἰσῆλθον ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς αὐτοῖς, λάβετε τοὺς δούλους τοῦ

κυρίου ὑμῶν μεθ’ ὑμῶν, καὶ ἐπιβιβάσατε τὸν υἱόν μου Σαλωμὼν ἐπὶ τὴν ἡμίονον τὴν ἐμὴν, καὶ καταγάγετε αὐτὸν εἰς τὴν Γιὼν, καὶ χρισάτω αὐτὸν ἐκεῖ Σαδὼκ ὁ ἱερεὺς καὶ Νάθαν ὁ προφήτης εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ σαλπίσατε κερατίνῃ, καὶ ἐρεῖτε, ζήτω ὁ βασιλεὺς Σαλωμών. Καὶ καθήσεται ἐπὶ τοῦ θρόνου μου, καὶ βασιλεύσει ἀντ’ ἐμοῦ· καὶ ἐγὼ ἐνετειλάμην τοῦ εἶναι εἰς ἡγούμενον ἐπὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδαν. Καὶ ἀπεκρίθη Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπε, γένοιτο οὕτως· πιστώσαι Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως· καθὼς ἦν Κύριος μετὰ τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως, οὕτως εἴη μετὰ Σαλωμὼν, καὶ μεγαλύναι τὸν θρόνον αὐτοῦ ὑπὲρ τὸν θρόνον τοῦ κυρίου μου τοῦ βασιλέως Δαυίδ. Καὶ κατέβη Σαδὼκ ὁ ἱερεὺς, καὶ Νάθαν ὁ προφήτης, καὶ Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ, καὶ ὁ Χερεθὶ, καὶ ὁ Φελεθὶ, καὶ ἐπεκάθισαν τὸν Σαλωμὼν ἐπὶ τὴν ἡμίονον τοῦ βασιλέως Δαυὶδ, καὶ ἀπήγαγον αὐτὸν εἰς τὴν Γιών. Καὶ ἔλαβε Σαδὼκ ὁ ἱερεὺς τὸ κέρας τοῦ ἐλαίου ἐκ τῆς σκηνῆς, καὶ ἔχρισε τὸν Σαλωμὼν, καὶ ἐσάλπισε τῇ κερατίνῃ· καὶ εἶπε πᾶς ὁ λαός, ζήτω ὁ βασιλεὺς Σαλωμών. Καὶ ἀνέβη πᾶς ὁ λαὸς ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ ἐχόρευον ἐν χοροῖς καὶ εὐφραινόμενοι εὐφροσύνην μεγάλην, καὶ ἐῤῥάγη ἡ γῆ ἐν τῇ φωνῇ αὐτῶν. Καὶ ἤκουσεν Ἀδωνίας καὶ πάντες οἱ κλητοὶ αὐτοῦ, καὶ αὐτοὶ συνετέλεσαν φαγεῖν· καὶ ἤκουσεν Ἰωὰβ τὴν φωνὴν τῆς κερατίνης, καὶ εἶπε, τίς ἡ φωνὴ τῆς πόλεως ἠχούσης; Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος, καὶ ἰδοὺ Ἰωνάθαν υἱὸς Ἀβιάθαρ τοῦ ἱερέως εἰσῆλθε· καὶ εἶπεν Ἀδωνίας, εἴσελθε, ὅτι ἀνὴρ δυνάμεως εἶ σὺ, καὶ ἀγαθὰ εὐαγγέλισαι. Καὶ ἀπεκρίθη Ἰωνάθαν, καὶ εἶπε, καὶ μάλα ὁ κύριος ἡμῶν ὁ βασιλεὺς Δαυὶδ ἐβασίλευσε τὸν Σαλωμὼν, καὶ ἀπέστειλε μετ’ αὐτοῦ ὁ βασιλεὺς τὸν Σαδὼκ τὸν ἱερέα, καὶ Νάθαν τὸν προφήτην, καὶ Βαναίαν τὸν υἱὸν Ἰωδαὲ, καὶ τὸν Χερεθὶ, καὶ τὸν

Φελεθὶ, καὶ ἐπεκάθισαν αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἡμίονον τοῦ βασιλέως· Καὶ ἔχρισαν αὐτὸν Σαδὼκ ὁ ἱερεὺς καὶ Νάθαν ὁ προφήτης ἐν τῇ Γιὼν, καὶ ἀνέβησαν ἐκεῖθεν εὐφραινόμενοι, καὶ ἤχησεν ἡ πόλις· αὕτη ἡ φωνὴ ἣν ἠκούσατε. Καὶ ἐκάθισε Σαλωμὼν ἐπὶ θρόνον βασιλείας. Καὶ εἰσῆλθον οἱ δοῦλοι τοῦ βασιλέως εὐλογῆσαι τὸν κύριον ἡμῶν τὸν βασιλέα Δαυὶδ, λέγοντες, ἀγαθύναι ὁ Θεὸς τὸ ὄνομα Σαλωμὼν ὑπὲρ τὸ ὄνομά σου, καὶ μεγαλύναι τὸν θρόνον αὐτοῦ ὑπὲρ τὸν θρόνον σου· καὶ προσεκύνησεν ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τὴν κοίτην. Καί γε οὕτως εἶπεν ὁ βασιλεύς, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὃς ἔδωκε σήμερον ἐκ τοῦ σπέρματός μου καθήμενον ἐπὶ τοῦ θρόνου μου, καὶ οἱ ὀφθαλμοί μου βλέπουσι. Καὶ ἐξέστησαν πάντες οἱ κλητοὶ τοῦ Ἀδωνίου, καὶ ἦλθον ἀνὴρ εἰς τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Καὶ Ἀδωνίας ἐφοβήθη ἀπὸ προσώπου Σαλωμὼν, καὶ ἀνέστη καὶ ἀπῆλθε καὶ ἐπελάβετο τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ ἀνηγγέλη τῷ Σαλωμὼν, λέγοντες, ἰδοὺ Ἀδωνίας ἐφοβήθη τὸν βασιλέα Σαλωμὼν, καὶ κατέχει τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου, λέγων, ὀμοσάτω μοι σήμερον Σαλωμὼν, εἰ οὐ θανατώσει τὸν δοῦλον αὐτοῦ ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ εἶπε Σαλωμών, ἐὰν γένηται εἰς υἱὸν δυνάμεως, εἰ πεσεῖται τῶν τριχῶν αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἐὰν κακία εὑρεθῇ ἐν αὐτῷ, θανατωθήσεται. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν, καὶ κατήνεγκαν αὐτὸν ἀπάνωθεν τοῦ θυσιαστηρίου· καὶ εἰσῆλθε, καὶ προσεκύνησε τῷ βασιλεῖ Σαλωμών· καὶ εἶπεν αὐτῷ Σαλωμὼν, δεῦρο εἰς τὸν οἶκόν σου.

# 2

Καὶ ἤγγισαν αἱ ἡμέραι Δαυὶδ ἀποθανεῖν αὐτὸν, καὶ ἀπεκρίνατο

Σαλωμὼν υἱῷ αὐτοῦ, λέγων, ἐγώ εἰμι πορεύομαι ἐν ὁδῷ πάσης τῆς γῆς· καὶ ἰσχύσεις, καὶ ἔσῃ εἰς ἄνδρα, καὶ φυλάξεις φυλακὴν Κυρίου Θεοῦ σου τοῦ πορεύεσθαι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, φυλάσσειν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ καὶ τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ νόμῳ Μωυσέως· ἵνα συνήσῃς ἃ ποιήσεις κατὰ πάντα ὅσα ἂν ἐντείλωμαί σοι· Ἵνα στήσῃ Κύριος τὸν λόγον αὐτοῦ ὃν ἐλάλησε, λέγων, ἐὰν φυλάξωσιν οἱ υἱοί σου τὴν ὁδὸν αὐτῶν πορεύεσθαι ἐνώπιόν μου ἐν ἀληθείᾳ, ἐν ὅλῃ καρδίᾳ αὐτῶν, λέγων, οὐκ ἐξολοθρευθήσεταί σοι ἀνὴρ ἐπάνωθεν θρόνου Ἰσραήλ. Καί γε σὺ ἔγνως ὅσα ἐποίησέ μοι Ἰωὰβ υἱὸς Σαρουίας, ὅσα ἐποίησε τοῖς δυσὶν ἄρχουσι τῶν δυνάμεων Ἰσραὴλ, τῷ Ἀβεννὴρ υἱῷ Νὴρ, καὶ τῷ Ἀμεσσαῒ υἱῷ Ἰεθὲρ, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτοὺς, καὶ ἔταξε τὰ αἵματα πολέμου ἐν εἰρήνῃ, καὶ ἔδωκεν αἷμα ἀθῷον ἐν τῇ ζώνῃ αὐτοῦ τῇ ἐν τῇ ὀσφύϊ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ ὑποδήματι αὐτοῦ τῷ ἐν τῷ ποδὶ αὐτοῦ. Καὶ ποιήσεις κατὰ τὴν σοφίαν σου, καὶ σὺ κατάξεις τὴν πολιὰν αὐτοῦ ἐν εἰρήνῃ εἰς ᾅδου. Καὶ τοῖς υἱοῖς Βερζελλὶ τοῦ Γαλααδίτου ποιήσεις ἔλεος, καὶ ἔσονται ἐν τοῖς ἐσθίουσιν τὴν τράπεζάν σου· ὅτι οὕτως ἤγγισάν μοι ἐν τῷ με ἀποδιδράσκειν ἀπὸ προσώπου Ἀβεσσαλὼμ τοῦ ἀδελφοῦ σου. Καὶ ἰδοὺ μετὰ σοῦ Σεμεΐ υἱὸς Γηρὰ υἱὸς τοῦ Ἰεμινὶ ἐκ Βαουρὶμ, καὶ αὐτὸς κατηράσατό με κατάραν ὀδυνηρὰν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐπορευόμην εἰς παρεμβολάς· καὶ αὐτὸς κατέβη εἰς ἀπαντήν μου εἰς τὸν Ἰορδάνην, καὶ ὤμοσα αὐτῷ ἐν Κυρίῳ, λέγων, εἰ θανατώσω σε ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ οὐ μὴ ἀθωώσῃς αὐτὸν, ὅτι ἀνὴρ σοφὸς εἶ σύ, καὶ γνώσῃ ἃ ποιήσεις αὐτῷ, καὶ κατάξεις τὴν πολιὰν αὐτοῦ ἐν αἵματι εἰς ᾅδου. Καὶ ἐκοιμήθη Δαυὶδ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν πόλει Δαυίδ. Καὶ αἱ ἡμέραι ἃς ἐβασίλευσε Δαυὶδ ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ, τεσσαράκοντα ἔτη· ἐν Χεβρὼν ἐβασίλευσεν ἑπτά ἔτη, καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ τριάκοντα τρία

ἔτη. Καὶ Σαλωμὼν ἐκάθισεν ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ ἡτοιμάσθη ἡ βασιλεία αὐτοῦ σφόδρα. Καὶ εἰσῆλθεν Ἀδωνίας υἱὸς Ἀγγὶθ πρὸς Βηρσαβεὲ μητέρα Σαλωμὼν, καὶ προσεκύνησεν αὐτῇ· ἡ δὲ εἶπεν, εἰρήνη ἡ εἴσοδός σου; καὶ εἶπεν, εἰρήνη· λόγος μοι πρὸς σέ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, λάλησον. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, σὺ οἶδας, ὅτι ἐμοὶ ἦν βασιλεία, καὶ ἐπ᾽ ἐμὲ ἔθετο πᾶς Ἰσραὴλ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς βασιλέα· καὶ ἐστράφη ἡ βασιλεία, καὶ ἐγένετο τῷ ἀδελφῷ μου, ὅτι παρὰ Κυρίου ἐγενήθη αὐτῷ. Καὶ νῦν αἴτησιν μίαν ἐγὼ αἰτοῦμαι παρὰ σοῦ, μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου· καὶ εἶπεν αὐτῷ Βηρσαβεὲ, λάλει. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, εἰπον δὴ πρὸς Σαλωμὼν τὸν βασιλέα, ὅτι οὐκ ἀποστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ δώσει μοι τὴν Ἀβισὰγ τὴν Σωμανίτιν εἰς γυναῖκα. Καὶ εἶπε Βηρσαβεὲ, καλῶς· ἐγὼ λαλήσω περὶ σοῦ τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἰσῆλθε Βηρσαβεὲ πρὸς τὸν βασιλέα Σαλωμὼν αλῆσαι αὐτῷ περὶ Ἀδωνίου· καὶ ἐξανέστη ὁ βασιλεὺς εἰς ἀπαντὴν αὐτῇ, καὶ κατεφίλησεν αὐτὴν, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τοῦ θρόνου· καὶ ἐτέθη θρόνος τῇ μητρὶ τοῦ βασιλέως, καὶ ἐκάθισεν ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, αἴτησιν μίαν μικρὰν ἐγὼ αἰτοῦμαι παρὰ σοῦ, μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν μου· καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ βασιλεύς, αἴτησαι, μήτερ ἐμὴ, καὶ οὐκ ἀποστρέψω σε. Καὶ εἶπε, δοθήτω δὴ Ἀβισὰ ἡ Σωμανίτις τῷ Αδωνίᾳ τῷ ἀδελφῷ σου εἰς γυναῖκα. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν, καὶ εἶπε τῇ μητρὶ αὐτοῦ, καὶ ἱνατί σὺ ᾐτησαι τὴν Ἀβισὰλ τῷ Ἀδωνίᾳ; καὶ αἴτησαι αὐτῷ τὴν βασιλείαν, ὅτι οὗτος ἀδελφός μου ὁ μέγας ὑπὲρ ἐμέ, καὶ αὐτῷ Ἀβιάθαρ ὁ ἱερεὺς, καὶ αὐτῷ Ἰωὰβ ὁ υἱὸς Σαρουίας ἀρχιστράτηγος ἑταῖρος. Καὶ ὤμοσεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν κατὰ τοῦ Κυρίου, λέγων, τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε παροσθείη, ὅτι κατὰ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἐλάλησεν Ἀδωνίας τὸν λόγον τοῦτον. Καὶ νῦν ζῇ Κύριος ὃς ἡτοίμασε με καὶ ἔθετό με ἐπὶ

τὸν θρόνον Δαυὶδ τοῦ πατρός μου, καὶ αὐτὸς ἐποίησέ μοι οἶκον καθὼς ἐλάλησε Κύριος, ὅτι σήμερον θανατωθήσεται Ἀδωνίας. Καὶ ἐξαπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ἐν χειρὶ Βαναίου υἱοῦ Ἰωδαὲ, καὶ ἀνεῖλεν αὐτὸν, καὶ ἀπέθανεν Ἀδωνίας ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ τῷ Ἀβιάθαρ τῷ ἱερεῖ εἶπεν ὁ βασιλεύς, ἀπότρεχε σὺ εἰς Ἀναθὼθ εἰς ἀγρόν σου, ὅτι ἀνὴρ θανάτου εἶ σὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ· καὶ οὐ θανατώσω σε, ὅτι ᾖρας τὴν κιβωτὸν τῆς διαθήκης Κυρίου ἐνώπιον τοῦ πατρός μου, καὶ ὅτι ἐκακουχήθης ἐν πᾶσιν οἷς ἐκακουχήθη ὁ πατήρ μου. Καὶ ἐξέβαλε Σαλωμὼν τὸν Ἀβιάθαρ τοῦ μὴ εἶναι ἱερέα τοῦ Κυρίου, πληρωθῆναι τὸ ῥῆμα Κυρίου, ὃ ἐλάλησεν ἐπὶ τὸν οἶκον Ἠλὶ ἐν Σηλώμ. Καὶ ἡ ἀκοὴ ἦλθεν ἕως Ἰωὰβ υἱοῦ Σαρουίας, ὅτι Ἰωὰβ ἦν κεκλικὼς ὀπίσω Ἀδωνίου, καὶ ὀπίσω Σαλωμὼν οὐκ ἔκλινε· καὶ ἔφυγεν Ἰωὰβ εἰς τὸ σκήνωμα τοῦ Κυρίου, καὶ κατέσχε τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαλωμὼν, λέγοντες, ὅτι πέφευγεν Ἰωὰβ εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ Κυρίου, καὶ ἰδοὺ κατέχει τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστηρίου· καὶ ἀπέστειλε Σαλωμὼν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἰωὰβ, λέγων, τί γέγονέ σοι, ὅτι πέφευγας εἰς τὸ θυσιαστήριον; καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, ὅτι ἐφοβήθην ἀπὸ προσώπου σου, καὶ ἔφυγον πρὸς Κύριον· καὶ ἀπέστειλε Σαλωμὼν τὸν Βαναίου υἱὸν Ἰωδαὲ, λέγων, πορεύου καὶ ἄνελε αὐτὸν, καὶ θάψον αὐτόν. Καὶ ἦλθε Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ πρὸς Ἰωὰβ εἰς τὴν σκηνὴν τοῦ Κυρίου, καὶ εἶπεν αὐτῷ τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, ἔξελθε· καὶ εἶπεν Ἰωὰβ, οὐκ ἐκπορεύωμαι, ὅτι ὧδε ἀποθανοῦμαι· καὶ ἐπέστρεψε Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ, καὶ εἶπε τῷ βασιλεῖ, λέγων, τάδε λελάληκεν Ἰωὰβ, καὶ τάδε ἀποκέκριταί μοι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεύς, πορεύου, καὶ ποίησον αὐτῷ καθὼς εἴρηκε, καὶ ἄνελε αὐτὸν· καὶ θάψεις αὐτὸν, καὶ ἐξαρεῖς σήμερον τὸ αἷμα ὃ δωρεὰν ἐξέχεεν, ἀπ’ ἐμοῦ καὶ ἀπὸ τοῦ οἴκου τοῦ πατρός μου. Καὶ ἐπέστρεψε Κύριος τὸ αἷμα τῆς ἀδικίας

αὐτοῦ εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ, ὡς ἀπήντησε τοῖς δυσὶν ἀνθρώποις τοῖς δικαίοις καὶ ἀγαθοῖς ὑπὲρ αὐτὸν, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτοὺς ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ὁ πατήρ μου Δαυὶδ οὐκ ἔγνω τὸ αἷμα αὐτῶν, τὸν Ἀβεννὴρ υἱὸν Νὴρ ἀρχιστράτηγον Ἰσραὴλ, καὶ τὸν Ἀμεσσὰ υἱὸν Ἰεθὲρ ἀρχιστράτηγον Ἰούδα. Καὶ ἐπεστράφη τὰ αἵματα αὐτῶν εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ εἰς κεφαλὴν τοῦ σπέρματος αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ τῷ Δαυὶδ καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ καὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ καὶ τῷ θρόνῳ αὐτοῦ γένοιτο εἰρήνη ἕως αἰῶνος παρὰ Κυρίου. Καὶ ἀνέβη Βαναίας υἱὸς Ἰωδαὲ, καὶ ἀπήντησεν αὐτῷ, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτὸν, καὶ ἔθαψεν αὐτὸν ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ. Καὶ ἔδωκεν ὁ βασιλεὺς τὸν Βαναίου υἱὸν Ἰωδαὲ ἀντ᾽ αὐτοῦ ἐπὶ τὴν στρατηγίαν· καὶ ἡ βασιλεία κατωρθοῦτο ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ Σαδὼκ τὸν ἱερέα ἔδωκεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς εἰς ἱερέα πρῶτον ἀντὶ Ἀβιάθαρ. Καὶ Σαλωμὼς υἱὸς Δαυὶδ ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα ἐν Ἰερουσαλήμ· Καὶ ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς τὸν Σεμεΐ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ὠκοδόμησον σεαυτῷ οἶκον ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ κάθου ἐκεῖ, καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ ἐκεῖθεν οὐδαμοῦ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς ἐξόδου σου καὶ διαβήσῃ τὸν χείμαῤῥον Κέδρων, γινώσκων γνώσῃ ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ· τὸ αἷμά σου ἔσται ἐπὶ τὴν κεφαλήν σου· καὶ ὥρκισεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ εἶπε Σεμεΐ πρὸς τὸν βασιλέα, ἀγαθὸν τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησας, κύριέ μου βασιλεῦ· οὕτω ποιήσει ὁ δοῦλός σου· καὶ ἐκάθισε Σεμεΐ ἐν Ἰερουσαλὴμ τρία ἔτη. Καὶ ἐγενήθη μετὰ τὰ τρία ἔτη, καὶ ἀπέδρασαν δύο δοῦλοι τοῦ Σεμεΐ πρὸς Ἀγχοὺς υἱὸν Μααχὰ βασιλέα Γέθ· καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σεμεΐ, λέγοντες, ἰδοὺ οἱ δοῦλοί σου ἐν Γέθ. Καὶ ἀνέστη Σεμεΐ καὶ ἐπέσαξε τὴν ὄνον αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύθη εἰς Γὲθ πρὸς Ἀγχοὺς τοῦ ἐκζητῆσαι τοὺς δούλους αὐτοῦ· καὶ ἐπορεύθη Σεμεΐ, καὶ ἤγαγε τοὺς δούλους αὐτοῦ ἐκ Γέθ. Καὶ ἀπηγγέλη τῷ Σαλωμὼν, λέγοντες,

ὅτι ἐπορεύθη Σεμεῖ ἐξ Ἰερουσαλὴμ εἰς Γὲθ, καὶ ἀνέστρεψε τοὺς δούλους αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς καὶ ἐκάλεσε τὸν Σεμεΐ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτόν, οὐχὶ ὥρκισά σε κατὰ τοῦ Κυρίου, καὶ ἐπεμαρτυράμην σοι, λέγων, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐξέλθῃς ἐξ Ἰερουσαλὴμ, καὶ πορευθῇς εἰς δεξιὰ ἢ εἰς ἀριστερά, γινώσκων γνώσῃ ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ; Καὶ τί ὅτι οὐκ ἐφύλαξας τὸν ὅρκον Κυρίου, καὶ τὴν ἐντολὴν ἣν ἐνετειλάμην κατὰ σοῦ; Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Σεμεΐ, σὺ οἶδας πᾶσαν τὴν κακίαν σου ἣν οἶδεν ἡ καρδία σου, ἃ ἐποίησας Δαυὶδ τῷ πατρί μου, καὶ ἀνταπέδωκε Κύριος τὴν κακίαν σου εἰς κεφαλήν σου. Καὶ ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν εὐλογημένος, καὶ ὁ θρόνος Δαυὶδ ἔσται ἕτοιμος ἐνώπιον Κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν τῷ Βαναίᾳ υἱῷ Ἰωδαὲ, καὶ ἐξῆλθε καὶ ἀνεῖλεν αὐτόν.

# 3

Πλὴν ὁ λαὸς ἦσαν θυμιῶντες ἐπὶ τοῖς ὑψηλοῖς, ὅτι οὐκ ᾠκοδομήθη οἶκος τῷ Κυρίῳ ἕως τοῦ νῦν. Καὶ ἠγάπησε Σαλωμὼν τὸν Κύριον πορεύεσθαι ἐν τοῖς προστάγμασι Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, πλὴν ἐν τοῖς ὑψηλοῖς ἔθυε καὶ ἐθυμία. Καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθη εἰς Γαβαὼν θῦσαι ἐκεῖ, ὅτι αὕτη ὑψηλοτάτη, καὶ μεγάλη· χιλίαν ὁλοκαύτωσιν ἀνήνεγκε Σαλωμὼν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐν Γαβαών. Καὶ ὤφθη Κύριος τῷ Σαλωμὼν ἐν ὕπνῳ τὴν νύκτα, καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαλωμὼν, αἴτησαί τι αἴτημα σεαυτῷ. Καὶ εἶπε Σαλωμὼν, σὺ ἐποιήσας μετὰ τοῦ δούλου σου Δαυὶδ τοῦ πατρός μου ἔλεος μέγα, καθὼς διῆλθεν ἐνώπιόν σου ἐν ἀληθείᾳ καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ ἐν εὐθύτητι καρδίας μετὰ σοῦ, καὶ ἐφύλαξας αὐτῷ τὸ ἔλεος τὸ μέγα

τοῦτο, δοῦναι τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ νῦν, Κύριε ὁ Θεός μου, σὺ ἔδωκας τὸν δοῦλόν σου ἀντὶ Δαυὶδ τοῦ πατρός μου· καὶ ἐγώ εἰμι παιδάριον μικρὸν, καὶ οὐκ οἶδα τὴν ἔξοδόν μου καὶ τὴν εἴσοδόν μου. Ὁ δὲ δοῦλός σου ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ σου, ὃν ἐξελέξω, λαὸν πολὺν, ὃς οὐκ ἀριθμηθήσεται. Καὶ δώσεις τῷ δούλῳ σου καρδίαν ἀκούειν καὶ διακρίνειν τὸν λαόν σου ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ τοῦ συνιεῖν ἀναμέσον ἀγαθοῦ καὶ κακοῦ· ὅτι τίς δυνηθήσεται κρίνειν τὸν λαόν σου τὸν βαρὺν τοῦτον; Καὶ ἤρεσεν ἐνώπιον Κυρίου, ὅτι ᾐτήσατο Σαλωμὼν τὸ ῥῆμα τοῦτο. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς αὐτὸν, ἀνθ’ ὧν ᾐτήσω παρ’ ἐμοῦ τὸ ῥῆμα τοῦτο, καὶ οὐκ ᾐτήσω σεαυτῷ ἡμέρας πολλὰς, καὶ οὐκ ᾐτήσω πλοῦτον, οὐδὲ ᾐτήσω ψυχὰς ἐχθρῶν σου, ἀλλ’ ᾐτήσω σεαυτῷ τοῦ συνιεῖν τοῦ εἰσακούειν κρίμα, ἰδοὺ πεποίηκα κατὰ τὸ ῥῆμά σου· ἰδοὺ δέδωκά σοι καρδίαν φρονίμην καὶ σοφήν· ὡς σὺ οὐ γέγονεν ἔμπροσθέν σου, καὶ μετὰ σὲ οὐκ ἀναστήσεται ὅμοιός σοι. Καὶ ἃ οὐκ ᾐτήσω δέδωκά σοι, καὶ πλοῦτον καὶ δόξαν, ὡς οὐ γέγονεν ἀνὴρ ὅμοιός σοι ἐν βασιλεῦσι. Καὶ ἐὰν πορευθῇς ἐν τῇ ὁδῷ μου φυλάσσειν τὰς ἐντολάς μου καὶ τὰ προστάγματά μου, ὡς ἐπορεύθη Δαυὶδ ὁ πατήρ σου, καὶ πληθυνῶ τὰς ἡμέρας σου. Καὶ ἐξυπνίσθη Σαλωμὼν, καὶ ἰδοὺ ἐνύπνιον· καὶ ἀνέστη καὶ παραγίνεται εἰς Ἰερουσαλήμ, καὶ ἔστη κατὰ πρόσωπον τοῦ θυσιαστηρίου τοῦ κατὰ πρόσωπον κιβωτοῦ διαθήκης Κυρίου ἐν Σιὼν, καὶ ἀνήγαγεν ὁλοκαυτώσεις, καὶ ἐποίησεν εἰρηνικὰς, καὶ ἐποίησε πότον μέγαν ἑαυτῷ καὶ πᾶσι τοῖς παισὶν αὐτοῦ. Τότε ὤφθησαν δύο γυναῖκες πόρναι τῷ βασιλεῖ, καὶ ἔστησαν ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ ἡ μία, ἐν ἐμοὶ κύριε, ἐγὼ καὶ ἡ γυνὴ αὕτη ᾠκοῦμεν ἐν οἴκῳ ἑνί, καὶ ἐτέκομεν ἐν τῷ οἴκῳ. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ τεκούσης μου, ἔτεκε καὶ ἡ γυνὴ αὕτη· καὶ ἡμεῖς κατὰ τὸ αὐτό· καὶ οὐκ ἔστιν οὐθεὶς μεθ’ ἡμῶν

πάρεξ ἀμφοτέρων ἡμῶν ἐν τῷ οἴκῳ. Καὶ ἀπέθανεν ὁ υἱὸς τῆς γυναικὸς ταύτης τὴν νύκτα, ὡς ἐπεκοιμήθη ἐπ᾽ αὐτόν. Καὶ ἀνέστη μέσης τῆς νυκτὸς, καὶ ἔλαβε τὸν υἱόν μου ἐκ τῶν ἀγκαλῶν μου, καὶ ἐκοίμισεν αὐτὸν ἐν τῷ κόλπῳ αὐτῆς, καὶ τὸν υἱὸν αὐτῆς τὸν τεθνηκότα ἐκοίμισεν ἐν τῷ κόλπῳ μου. Καὶ ἀνέστην τοπρωΐ θηλάσαι τὸν υἱόν μου, καὶ ἐκεῖνος ἦν τεθνηκώς· καὶ ἰδοὺ κατενόησα αὐτὸν πρωΐ, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν ὁ υἱός μου ὃν ἔτεκον. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ ἡ ἑτέρα, οὐχί, ἀλλὰ ὁ υἱός μου ὁ ζῶν, ὁ δὲ υἱός σου ὁ τεθνηκώς· καὶ ἐλάλησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς αὐταῖς, σὺ λέγεις, οὗτος ὁ υἱός μου ὁ ζῶν, καὶ ὁ υἱὸς ταύτης ὁ τεθνηκώς· καὶ σὺ λέγεις, οὐχί, ἀλλὰ ὁ υἱός μου ὁ ζῶν, καὶ ὁ υἱός σου ὁ τεθνηκώς. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, λάβετε μάχαιραν· καὶ προσήνεγκαν τὴν μάχαιραν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, διέλετε τὸ παιδίον τὸ ζῶν τὸ θηλάζον εἰς δύο, καὶ δότε τὸ ἥμισυ αὐτοῦ ταύτῃ, καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ ταύτῃ. Καὶ ἀπεκρίθη ἡ γυνὴ ἧς ἦν ὁ υἱὸς ὁ ζῶν, καὶ εἶπε πρὸς τὸν βασιλέα, ὅτι ἐταράχθη ἡ μήτρα αὐτῆς ἐπὶ τῷ υἱῷ αὐτῆς, καὶ εἶπεν, ἐν ἐμοὶ κύριε, δότε αὐτῇ τὸ παιδίον, καὶ θανάτῳ μὴ θανατώσητε αὐτό· καὶ αὕτη εἶπε, μήτε ἐμοὶ, μήτε αὐτῇ ἔστω, διέλετε. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, καὶ εἶπε, δότε τὸ παιδίον τῇ εἰπούσῃ, δότε αὐτῇ αὐτὸ, καὶ θανάτῳ μὴ θανατώσητε αὐτὸ, αὕτη ἡ μήτηρ αὐτοῦ. Καὶ ἤκουσαν πᾶς Ἰσραὴλ τὸ κρίμα τοῦτο ὃ ἔκρινεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου τοῦ βασιλέως, ὅτι εἶδον ὅτι φρόνησις Θεοῦ ἐν αὐτῷ τοῦ ποιεῖν δικαίωμα.

# 4

Καὶ ἦν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν βασιλεύων ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ οὗτοι ἄρχοντες οἳ ἦσαν αὐτῷ· Ἀζαρίας υἱὸς Σαδώκ· Ἐλιὰφ καὶ Ἀχιὰ υἱὸς Σηβὰ γραμματεῖς· καὶ Ἰωσαφὰτ υἱὸς Ἀχιλοὺδ ἀναμιμνήσκων· Καὶ Βαναίας υἱὸν Ἰωδαὲ ἐπὶ τῆς δυνάμεως· καὶ Σαδὼκ καὶ Ἀβιάθαρ ἱερεῖς· Καὶ Ὀρνία υἱὸς Νάθαν ἐπὶ τῶν καθεσταμένων· καὶ Ζαβοὺθ υἱὸς Νάθαν ἑταῖρος τοῦ βασιλέως· Καὶ Ἀχισὰρ ἦν οἰκονόμος· καὶ Ἐλιὰκ ὁ οἰκονόμος· καὶ Ἐλιὰβ υἱὸς Σὰφ ἐπὶ τῆς πατριᾶς· καὶ Ἀδωνιρὰμ υἱὸς Αὐδῶν ἐπὶ τῶν φόρων. Καὶ τῷ Σαλωμὼν δώδεκα καθεστάμενοι ἐπὶ πάντα Ἰσραήλ, χορηγεῖν τῷ βασιλεῖ καὶ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ· μῆνα ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐγίνετο ἐπὶ τὸν ἕνα χορηγεῖν. Καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα αὐτῶν. Βεὲν υἱὸς Ὢρ ἐν ὄρει Ἐφραὶμ εἷς. Υἱὸς Δακὰρ ἐν Μακὲς, καὶ ἐν Σαλαβὶν, καὶ Βαιθσαμὺς, καὶ Ἐλὼν ἕως Βηθανὰν εἷς. Υἱὸς Ἐσδὶ, ἐν Ἀραβὼθ, αὐτοῦ Σωχὼ καὶ πᾶσα ἡ γῆ Ὀφέρ. Υἱοῦ Ἀμιναδὰβ πᾶσα Νεφθαδὼρ, Τεφὰθ θυγάτηρ Σαλωμὼν ἦν αὐτῷ εἰς γυναῖκα, εἷς. Βανὰ υἱὸς Ἀχιλοὺθ τὴν Ἰθαανὰχ, καὶ Μαγεδδὼ, καὶ πᾶς ὁ οἶκος Σὰν ὁ παρὰ Σεσαθὰν ὑποκάτω τοῦ Ἐσραὲ, καὶ ἐκ Βηθσὰν ἕως Σαβελμαουλᾶ, ἕως Μαεβὲρ Λουκάμ, εἷς. Υἱὸς Ναβὲρ ἐν Ῥαβὼθ Γαλαὰδ, τούτῳ σχοίνισμα Ἐργὰβ ἐν τῇ Βασὰν, ἑξήκοντα πόλεις μεγάλαι τειχήρεις καὶ μοχλοὶ χαλκοῖ, εἷς. Ἀχιναδὰβ υἱὸς Σαδδὼ Μαναΐμ. Ἀχιμαὰς ἐν Νεφθαλίμ, καὶ οὗτος ἔλαβε τὴν Βασεμμὰθ θυγατέρα Σαλωμὼν εἰς γυναῖκα, εἷς. Βαανὰ υἱὸς Χουσὶ ἐν Ἀσὴρ καὶ ἐν Βααλὼθ, εἷς. Σεμεῒ υἱὸς Ἠλὰ ἐν τῷ Βενιαμίν. Γαβὲρ υἱὸς Ἀδαΐ ἐν τῇ γῇ Γὰδ Σηὼν βασιλέως τοῦ Ἐσεβὼν καὶ Ὢγ βασιλέως τοῦ Βασὰν, καὶ νασὲφ εἷς ἐν γῇ Ἰούδα. Ἰωσαφὰτ υἱὸς Φουασοὺδ ἐν Ἰσσάχαρ.

# 5

Καὶ ἐχορήγουν οἱ καθεστάμενοι οὕτως τῷ βσαιλεῖ Σαλωμών· καὶ πάντα τὰ διαγγέλματα ἐπὶ τὴν τράπεζαν τοῦ βασιλέως ἕκαστος μῆνα αὐτοῦ, οὐ παραλλάσσουσι λόγον. Καὶ τὰς κριθὰς καὶ τὸ ἄχυρον τοῖς ἵπποις καὶ τοῖς ἅρμασιν ᾖρον εἰς τὸν τόπον οὗ ἂν ᾖ ὁ βασιλεὺς, ἕκαστος κατὰ τὴν σύνταξιν αὐτοῦ. Καὶ ταῦτα τὰ δέοντα τῷ Σαλωμών· ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τριάκοντα κόροι σεμιδάλεως, καὶ ἑξήκοντα κόροι ἀλεύρου κεκοπανισμένου, καὶ δέκα μόσχοι ἐκλεκτοὶ, καὶ εἴκοσι βόες νομάδες, καὶ ἑκατὸν πρόβατα, ἐκτὸς ἐλάφων, καὶ δορκάδων ἐκλεκτῶν σιτευτά. Ὅτι ἦν ἄρχων πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ ἦν αὐτῷ εἰρήνη ἐκ πάντων τῶν μερῶν κυκλόθεν. Καὶ ἔδωκε Κύριος φρόνησιν τῷ Σαλωμὼν καὶ σοφίαν πολλὴν σφόδρα καὶ χύμα καρδίας, ὡς ἡ ἄμμος ἡ παρὰ τὴν θάλασσαν. Καὶ ἐπληθύνθη Σαλωμὼν σφόδρα ὑπὲρ τὴν φρόνησιν πάντων ἀρχαίων ἀνθρώπων, καὶ ὑπὲρ πάντας φρονίμους Αἰγύπτου. Καὶ ἐσοφίσατο ὑπὲρ πάντας τοὺς ἀνθρώπους· καὶ ἐσοφίσατο ὑπὲρ Γαιθὰν τὸν Ζαρίτην, καὶ τὸν Αἰνὰν, καὶ τὸν Χαλκὰδ καὶ Δαράλα υἱοὺς Μάλ. Καὶ ἐλάλησε Σαλωμὼν τρισχιλίας παραβολὰς, καὶ ἦσαν ᾠδαι αὐτοῦ πεντακισχίλιαι. Καὶ ἐλάλησεν ὑπὲρ τῶν ξύλων ἀπὸ τῆς κέδρου τῆς ἐν τῷ Λιβάνῳ, καὶ ἕως τῆς ὑσσώπου τῆς ἐκπορευομένης διὰ τοῦ τοίχου· καὶ ἐλάλησε περὶ τῶν κτηνῶν καὶ περὶ τῶν πετεινῶν καὶ περὶ τῶν ἑρπετῶν καὶ περὶ τῶν ἰχθύων. Καὶ παρεγίνοντο πάντες οἱ λαοὶ ἀκοῦσαι τῆς σοφίας Σαλωμών· καὶ παρὰ πάντων τῶν βασιλέων τῆς γῆς, ὅσοι ἤκουον τῆς σοφίας αὐτοῦ· Καὶ ἀπέστειλε Χιρὰμ βασιλεὺς Τύρου τοὺς παῖδας αὐτοῦ χρίσαι τὸν Σαλωμὼν ἀντὶ Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ὅτι ἀγαπῶν ἦν Χιρὰμ τὸν Δαυὶδ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἀπέστειλε Σαλωμὼν πρὸς Χιρὰμ, λέγων, Σὺ οἶδας τὸν πατέρα μου Δαυὶδ, ὅτι οὐκ ἠδύνατο οἰκοδομῆσαι οἶκον τῷ ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ μου ἀπὸ προσώπου

τῶν πολέμων τῶν κυκλωσάντων αὐτὸν, ἕως τοῦ δοῦναι Κύριον αὐτοὺς ὑπὸ τὰ ἴχνη τῶν ποδῶν αὐτοῦ. Καὶ νῦν ἀνέπαυσε Κύριος ὁ Θεός μου ἐμοὶ κυκλόθεν, οὐκ ἔστιν ἐπίβουλος καὶ οὐκ ἔστιν ἁμάρτημα πονηρόν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ λέγω οἰκοδομῆσαι οἶκον τῷ ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ μου, καθὼς ἐλάλησε Κύριος ὁ Θεὸς πρὸς Δαυὶδ τὸν πατέρα μου, λέγων, ὁ υἱός σου ὃν δώσω ἀντὶ σοῦ ἐπὶ τὸν θρόνον σου, οὗτος οἰκοδομήσει τὸν οἶκον τῷ ὀνόματί μου. Καὶ νῦν ἔντειλαι, καὶ κοψάτωσάν μοι ξύλα ἐκ τοῦ Λιβάνου· καὶ ἰδοὺ οἱ δοῦλοί μου μετὰ τῶν δούλων σου, καὶ τὸν μισθὸν δουλείας σου δώσω σοι κατὰ πάντα ὅσα ἂν εἴπῃς, ὅτι σὺ οἶδας, ὅτι οὐκ ἔστιν ἡμῖν εἰδὼς ξύλα κόπτειν καθὼς οἱ Σιδώνιοι. Καὶ ἐγενήθη καθὼς ἤκουσε Χιρὰμ τῶν λόγων Σαλωμὼν, ἐχάρη σφόδρα, καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς ὁ Θεὸς σήμερον, ὃς ἔδωκε τῷ Δαυὶδ υἱὸν φρόνιμον ἐπὶ τὸν λαὸν τὸν πολὺν τοῦτον. Καὶ ἀπέστειλε πρὸς Σαλωμὼν, λέγων, ἀκήκοα περὶ πάντων ὧν ἀπέσταλκας πρὸς μέ· ἐγὼ ποιήσω πᾶν θέλημά σου· ξύλα κέδρινα καὶ πεύκινα οἱ δοῦλοί μου κατάξουσιν αὐτὰ ἐκ τοῦ Λιβάνου εἰς τὴν θάλασσαν, ἐγὼ θήσομαι αὐτὰ σχεδίας, ἕως τοῦ τόπου οὗ ἐὰν ἀποστείλῃς πρὸς μὲ, καὶ ἐκτινάξω αὐτὰ ἐκεῖ, καὶ σὺ ἀρεῖς· καὶ ποιήσεις τὸ θέλημά μου, τοῦ δοῦναι ἄρτους τῷ οἴκῳ μου. Καὶ ἦν Χιρὰμ διδοὺς τῷ Σαλωμὼν κέδρους καὶ πεύκας καὶ πᾶν θέλημα αὐτοῦ. Καὶ Σαλωμὼν ἔδωκε τῷ Χιρὰμ εἴκοσι χιλιάδας κόρους πυροῦ καὶ μαχεὶρ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ εἴκος χιλιάδας βαὶθ ἐλαίου κεκομμένου· κατὰ τοῦτο ἐδίδου Σαλωμὼν τῷ Χιρὰμ κατ’ ἐνιαυτόν. Καὶ Κύριος ἔδωκε σοφίαν τῷ Σαλωμὼν καθὼς ἐλάλησεν αὐτῷ· καὶ ἦν εἰρήνη ἀναμέσον Χιρὰμ καὶ ἀναμέσον Σαλωμὼν, καὶ διέθεντο διαθήκην ἀναμέσον αὐτῶν. Καὶ ἀνήνεγκεν ὁ βασιλεὺς φόρον ἐκ παντὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἦν ὁ φόρος τριάκοντα χιλιάδες ἀνδρῶν. Καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὸν

Λίβανον, δέκα χιλιάδες ἐν τῷ μηνὶ ἀλλασσόμενοι· μῆνα ἦσαν ἐν τῷ Λιβάνῳ, καὶ δύο μῆνας ἐν οἴκῳ αὐτῶν· καὶ Ἀδωνιρὰμ ἐπὶ τοῦ φόρου. Καὶ ἦν τῷ Σαλωμὼν ἑβδομήκοντα χιλιάδες αἴροντες ἄρσιν, καὶ ὀγδοήκοντα χιλιάδες λατόμων ἐν τῷ ὄρει, χωρὶς τῶν ἀρχόντων τῶν καθεσταμένων ἐπὶ τῶν ἔργων τῷ Σαλωμὼν, τρεῖς χιλιάδες καὶ ἑξακόσιοι ἐπιστάται οἱ ποιοῦντες τὰ ἔργα. Καὶ ἡτοίμασαν τοὺς λίθους καὶ τὰ ξύλα τρία ἔτη.

# 6

Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ τεσσαρακοστῷ καὶ τετρακοσιοστῷ ἔτει τῆς ἐξόδου υἱῶν Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ ἐν μηνὶ τῷ δευτέρῳ βασιλεύοντος τοῦ βασιλέως Σαλωμὼν ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ, Καὶ ὁ οἶκος ὃν ᾠκοδόμησεν ὁ βασιλεὺς τῷ Κυρίῳ, τεσσαράκοντα ἐν πήχει μῆκος αὐτοῦ, καὶ εἴκοσι ἐν πήχει πλάτος αὐτοῦ, καὶ πέντε καὶ εἴκοσι ἐν πήχει τὸ ὕψος αὐτοῦ· Καὶ τὸ αἰλὰμ κατὰ πρόσωπον τοῦ ναοῦ, εἴκοσι ἐν πήχει μῆκος αὐτοῦ εἰς τὸ πλάτος τοῦ οἴκου, κατὰ πρόσωπον τοῦ οἴκου, καὶ ᾠκοδόμησε τὸν οἶκον, καὶ συνετέλεσεν αὐτόν. Καὶ ἐποίησε τῷ οἴκῳ θυρίδας παρακυπτομένας κρυπτάς. Καὶ ἔδωκεν ἐπὶ τὸν τοῖχον τοῦ οἴκου μέλαθρα κυκλόθεν τῷ ναῷ καὶ τῷ δαβίρ. Ἡ πλευρὰ ἡ ὑποκάτω πέντε πήχεων ἐν πήχει τὸ πλάτος αὐτῆς, καὶ τὸ μέσον ἓξ, καὶ ἡ τρίτη ἑπτὰ ἐν πήχει τὸ πλάτος αὐτῆς· ὅτι διάστημα ἔδωκε τῷ οἴκῳ κυκλόθεν ἔξωθεν τοῦ οἴκου, ὅπως μὴ ἐπιλαμβάνωνται τῶν τοίχων τοῦ οἴκου. Καὶ ὁ οἶκος ἐν τῷ οἰκοδομεῖσθαι αὐτὸν λίθοις ἀκροτομοις ἀργοῖς ᾠκοδομήθη· καὶ σφύρα καὶ πέλεκυς καὶ πᾶν σκεῦος σιδηροῦν οὐκ ἠκούσθη ἐν τῷ οἴκῳ ἐν τῷ οἰκοδομεῖσθαι

αὐτόν. Καὶ ὁ πυλὼν τῆς πλευρᾶς τῆς ὑποκάτωθεν ὑπὸ τὴν ὠμίαν τοῦ οἴκου τὴν δεξιὰν, καὶ ἑλικτὴ ἀνάβασις εἰς τὸ μέσον, καὶ ἐκ τῆς μέσης ἐπὶ τὸ τριόροφα. Καὶ ᾠκοδόμησε τὸν οἶκον καὶ συνετέλεσεν αὐτόν· καὶ ἐκοιλοστάθμησε τὸν οἶκον κέδροις. Καὶ ᾠκοδόμησε τοὺς ἐνδέσμους, δι’ ὅλου τοῦ οἴκου πέντε ἐν πήχει τὸ ὕψος αὐτοῦ, καὶ συνέσχε τὸν σύνδεσμον ἐν ξύλοις κεδρίνοις. Καὶ ᾠκοδόμησε τοὺς τοίχους τοῦ οἴκου ἔσωθεν διὰ ξύλων κεδρίνων ἀπὸ τοῦ ἐδάφους τοῦ οἴκου καὶ ἕως τῶν τοίχων καὶ ἕως τῶν δοκῶν· ἐκοιλοστάθμησε συνεχόμενα ξύλοις ἔσωθεν· καὶ περιέσχε τὸ ἔσω τοῦ οἴκου ἐν πλευραῖς πευκίναις. Καὶ ᾠκοδόμησε τοὺς εἴκοσι πήχεις ἀπ’ ἄκρου τοῦ τοίχου τὸ πλευρὸν τὸ ἓν ἀπὸ τοῦ ἐδάφους ἕως τῶν δοκῶν· καὶ ἐποίησεν ἐκ τοῦ δαβὶρ εἰς τὸ ἁγιον τῶν ἁγίων. Καὶ τεσσαράκοντα πήχεων ἦν ὁ ναὸς κατὰ πρόσωπον τοῦ δαβὶρ ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου ἔσωθεν, δοῦναι ἐκεῖ τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου. Εἴκοσι πήχεις μῆκος, καὶ εἴκοσι πήχεις πλάτος, καὶ εἴκοσι πήχεις τὸ ὕψος αὐτοῦ· Καὶ περιέσχεν αὐτὸ χρυσίῳ συγκεκλεισμένῳ· καὶ ἐποίησε θυσιαστήριον κατὰ πρόσωπον τοῦ δαβὶρ, καὶ περιέσχεν αὐτὸ χρυσίῳ. Καὶ ὅλον τὸν οἶκον περιέσχε χρυσίῳ, ἕως συντελείας παντὸς τοῦ οἴκου. Καὶ ἐποίησεν ἐν τῷ δαβὶρ δύο χερουβὶμ δέκα πήχεων μέγεθος ἐσταθμωμένον· Καὶ πέντε πήχεων πτερύγιον τοῦ χερουβὶμ τοῦ ἑνὸς, καὶ πέντε πήχεων πτερύγιον αὐτοῦ τὸ δεύτερον, ἐν πήχει δέκα ἀπὸ μέρους πτερυγίου αὐτοῦ εἰς μέρος πτερυγίου αὐτοῦ. Οὕτως τῷ χερουβὶμ τῷ δευτέρῳ, ἐν μέτρῳ ἑνὶ συντέλεια μία ἀμφοτέροις. Καὶ τὸ ὕψος τοῦ χερουβὶμ τοῦ ἑνὸς δέκα ἐν πήχει· καὶ οὕτω τῷ χερουβὶμ τῷ δευτέρῳ. Καὶ ἀμφότερα χερουβὶμ ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου τοῦ ἐσωτάτου· καὶ διεπέτασε τὰς πτέρυγας αὐτῶν, καὶ ἥπτετο πτέρυξ μία τοῦ τοίχου, καὶ πτέρυξ χερουβὶμ τοῦ δευτέρου ἥπτετο τοῦ τοίχου τοῦ δευτέρου· καὶ αἱ

πτέρυγες αὐτῶν ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου ἥπτοντο πτέρυξ πτέρυγος. Καὶ περιέσχε τὰ χερουβὶμ χρυσίῳ. Πάντας τοὺς τοίχους τοῦ οἴκου κύκλῳ ἐγκολαπτὰ ἔγραψε γραφίδι χερουβὶμ, καὶ φοίνικας τῷ ἐσωτέρῳ καὶ τῷ ἐξωτέρῳ. Καὶ τὸ ἔδαφος τοῦ οἴκου περιέσχε χρυσίῳ τοῦ ἐσωτάτου καὶ τοῦ ἐξωτάτου. Καὶ τῷ θυρώματι τοῦ δαβὶρ ἐποίησε θύρας ξύλων ἀρκευθίνων, στοαὶ τετραπλῶς, ἐν ἀμφοτέραις ταῖς θύραις ξύλα πεύκινα· δύο πτυχαὶ ἡ θύρα ἡ μία καὶ στροφεῖς αὐτῶν, καὶ δύο πτυχαὶ ἡ θύρα ἡ δευτέρα στρεφόμενα ἐγκεκολαμμένα χερουβὶμ, καὶ φοίνικες, καὶ διαπεπετασμένα πέταλα, καὶ περιεχόμενα χρυσίῳ καταγομένῳ ἐπὶ τὴν ἐκτύπωσιν. Καὶ ᾠκοδόμησε τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτάτην· τρεῖς στίχους ἀπελεκήτων, καὶ στίχος κατειργασμένης κέδρου κυκλόθεν·

# 7

Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν, καὶ ἔλαβε τὸν Χιρὰμ ἐκ Τύρου, υἱὸν γυναικὸς χήρας, καὶ οὗτος ἀπὸ τῆς φυλῆς τῆς Νεφθαλίμ, καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἀνὴρ Τύριος· τέκτων χαλκοῦ, καὶ πεπληρωμένος τῆς τέχνης καὶ συνέσεως καὶ ἐπιγνώσεως τοῦ ποιεῖν πᾶν ἔργον ἐν χαλκῷ· καὶ εἰσηνέχθη πρὸς τὸν βασιλέα Σαλωμών· καὶ ἐποίησε πάντα τὰ ἔργα. Καὶ ἐχώνευσε τοὺς δύο στύλους τῷ αἰλὰμ τοῦ οἴκου· ὀκτωκαίδεκα πήχεις ὕψος τοῦ στύλου· καὶ περίμετρον τεσσαρεσκαίδεκα πήχεις ἐκύκλου αὐτὸν τὸ πάχος τοῦ στύλου· τεσσάρων δσκτύλων τὰ κοιλώματα· καὶ οὕτως ὁ στύλος ὁ δεύτερος· Καὶ δύο ἐπιθέματα ἐποίησε δοῦναι ἐπὶ τὰς κεφαλὰς τῶν στύλων χωνευτά· πέντε πήχεις τὸ ὕψος τοῦ ἐπιθέματος τοῦ ἑνὸς, καὶ πέντε πήχεις τὸ ὕψος τοῦ ἐπιθέματος τοῦ

δευτέρου Καὶ ἐποίησε δύο δίκτυα περικαλύψαι τὸ ἐπίθεμα τῶν στύλων· καὶ δίκτυον τῷ ἐπιθέματι τῷ ἑνὶ, καὶ δίκτυον τῷ ἐπιθέματι τῷ δευτέρῳ. Καὶ ἔργον κρεμαστὸν, δύο στίχοι ῥοῶν χαλκῶν, δεδικτυωμένοι, ἔργον κρεμαστὸν, στίχος ἐπὶ στίχον· καὶ οὕτως ἐποίησε τῷ ἐπιθέματι τῷ δευτέρῳ. Καὶ ἔστησε τοὺς στύλους τοῦ αἰλὰμ τοῦ ναοῦ· καὶ ἔστησε τὸν στύλον τὸν ἕνα, καὶ ἐπεκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰαχούμ· καὶ ἔστησε τὸν στύλον τὸν δεύτερον, καὶ ἐπεκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Βολώζ. Καὶ ἐπὶ τῶν κεφαλῶν τῶν στύλων ἔργον κρίνου κατὰ τὸ αἰλὰμ τεσσάρων πηχῶν· καὶ μέλαθρον ἐπ’ ἀμφοτέρων τῶν στύλων· καὶ ἐπάνωθεν τῶν πλευρῶν ἐπίθεμα τὸ μέλαθρον τῷ πάχει. Καὶ ἐποίησε τὴν θάλασσαν δέκα ἐν πήχει ἀπὸ τοῦ χείλους αὐτῆς ἕως τοῦ χείλους αὐτῆς, στρογγυλόν κύκλῳ τὸ αὐτό· πέντε ἐν πήχει τὸ ὕψος αὐτῆς· καὶ συνηγμένη τρεῖς καὶ τριάκοντα ἐν πήχει. Καὶ ὑποστηρίγματα ὑποκάτωθεν τοῦ χείλους αὐτῆς κυκλόθεν ἐκύκλουν αὐτὴν δέκα ἐν πήχει κυκλόθεν· καὶ τὸ χεῖλος αὐτῆς ὡς ἔργον χείλους ποτηρίου βλαστὸς κρίνου· καὶ τὸ πάχος αὐτοῦ παλαιστής. Καὶ δώδεκα βόες ὑποκάτω τῆς θαλάσσης, οἱ τρεῖς ἐπιβλέποντες βορῤὰν, καὶ οἱ τρεῖς ἐπιβλέποντες θάλασσαν, καὶ οἱ τρεῖς ἐπιβλέποντες Νότον, καὶ οἱ τρεῖς ἐπιβλέποντες ἀνατολήν· καὶ πάντα τὰ ὀπίσθια εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἡ θάλασσα ἐπ’ αὐτῶν ἐπάνωθεν. Καὶ ἐποίησε δέκα μεχωνὼθ χαλκᾶς· πέντε πήχεις μῆκος τῆς μεχωνὼθ τῆς μιᾶς, καὶ τέσσαρες πήχεις τὸ πλάτος αὐτῆς, καὶ ἓξ ἐν πήχει ὕψος αὐτῆς. Καὶ τοῦτο τὸ ἔργον τῶν μεχωνὼθ συγκλειστὸν αὐτοῖς, καὶ συγκλειστὸν ἀναμέσον τῶν ἐξεχομένων. Καὶ ἐπὶ τὰ συγκλείσματα αὐτῶν ἀναμέσον ἐξεχομένων λέοντες καὶ βόες καὶ χερουβὶμ, καὶ ἐπὶ τῶν ἐξεχομένων, οὕτως καὶ ἐπάνωθεν, καὶ ὑποκάτωθεν τῶν λεόντων καὶ τῶν βοῶν χῶραι, ἔργον καταβάσεως. Καὶ τέσσαρες τροχοὶ

χαλκοῖ τῇ μεχωνὼθ τῇ μιᾷ, καὶ τὰ προσέχοντα χαλκᾶ καὶ τέσσαρα μέρη αὐτῶν, ὠμίαι ὑποκάτω τῶν λουτήρων. Καὶ χεῖρες ἐν τοῖς τροχοῖς ἐν τῇ μεχωνώθ. Καὶ τὸ ὕψος τοῦ τροχοῦ τοῦ ἑνὸς πήχεος καὶ ἡμίσους. Καὶ τὸ ἔργον τῶν τροχῶν ἔργον τροχῶν ἅρματος· αἱ χεῖρες αὐτῶν καὶ οἱ νῶτοι αὐτῶν καὶ ἡ πραγματεία αὐτῶν πάντα χωνευτά. Αἱ τέσσαρες ὠμίαι ἐπὶ τῶν τεσσάρων γωνιῶν τῆς μεχωνὼθ τῆς μιᾶς, ἐκ τῆς μεχωνὼθ οἱ ὦμοι αὐτῆς. Καὶ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς τῆς μεχωνὼθ ἥμισυ τοῦ πήχεος μέγεθος αὐτῆς στρογγύλον κύκλῳ ἐπὶ τῆς κεφαλῆς τῆς μεχωνώθ· καὶ ἀρχὴ χειρῶν αὐτῆς καὶ τὰ συγκλείσματα αὐτῆς· καὶ ἠνοίγετο ἐπὶ τὰς ἀρχὰς τῶν χειρῶν αὐτῆς. Καὶ τὰ συγκλείσματα αὐτῆς χερουβὶμ καὶ λέοντες καὶ φοίνικες ἑστῶτα, ἐχόμενον ἕκαστον κατὰ πρόσωπον ἔσω καὶ τὰ κυκλόθεν. Κατ’ αὐτὴν ἐποίησε πάσας τὰς δέκα μεχωνὼθ, τάξιν μίαν καὶ μέτρον ἓν πάσαις. Καὶ ἐποίησε δέκα χυτροκαύλους χαλκοῦς, τεσσαράκοντα χοεῖς χωροῦντα τὸν ἕνα χυτρόκαυλον μετρήσει τεσσάρων πήχων· χυτρόκαυλος ὁ εἷς ἐπὶ τῇ μεχωνὼθ τῇ μιᾷ ταῖς δέκα μεχωνώθ. Καὶ ἔθετο τὰς πέντε μεχωνὼθ ἀπὸ τῆς ὠμίας τοῦ οἴκου ἐκ δεξιῶν, καὶ πέντε ἀπὸ τῆς ὠμίας τοῦ οἴκου ἐξ ἀριστερῶν· καὶ ἡ θάλασσα ἀπὸ τῆς ὠμίας τοῦ οἴκου ἐκ δεξιῶν κατ’ ἀνατολὰς ἀπὸ τοῦ κλίτους τοῦ Νότου. Καὶ ἐποίησε Χιρὰμ τοὺς λέβητας καὶ τὰς θερμαστρεῖς καὶ τὰς φιάλας· καὶ συνετέλεσε Χιρὰμ ποιῶν πάντα τὰ ἔργα ἃ ἐποίησε τῷ βασιλεῖ Σαλωμὼν ἐν οἴκῳ Κυρίου· Στύλους δύο, καὶ τὰ στρεπτὰ τῶν στύλων ἐπὶ τῶν κεφαλῶν τῶν στύλων δύο· καὶ τὰ δίκτυα δύο τοῦ καλύπτειν ἀμφότερα τὰ στρεπτὰ τῶν γλυφῶν τὰ ὄντα ἐπὶ τῶν στύλων. Τὰς ῥοὰς τετρακοσίας ἀμφοτέροις τοῖς δικτύοις, δύο στίχοι ῥοῶν τῷ δικτύῳ τῷ ἑνὶ, περικαλύπτειν ἀμφότερα τὰ ὄντα τὰ στρεπτὰ τῆς μεχωνὼθ ἐπ’ ἀμφοτέροις τοῖς στύλοις· Καὶ τὰ

μεχωνὼθ δέκα, καὶ τοὺς χυτροκαύλους δέκα ἐπὶ τῶν μεχωνώθ· Καὶ τὴν θάλασσαν μίαν, καὶ τοὺς βόας δώδεκα ὑποκάτω τῆς θαλάσσης· Καὶ τοὺς λέβητας καὶ τὰς θερμαστρεῖς καὶ τὰς φιάλας καὶ πάντα τὰ σκεύη, ἃ ἐποίησε Χιρὰμ τῷ βασιλεῖ Σαλωμὼν τῷ οἴκῳ Κυρίου· καὶ οἱ στύλοι τεσσαράκοντα καὶ ὀκτὼ τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως καὶ τοῦ οἴκου Κυρίου· πάντα τὰ ἔργα τοῦ βασιλέως ἃ ἐποίησε Χιρὰμ χαλκᾶ ἄρδην. Οὐκ ἦν σταθμὸς τοῦ χαλκοῦ οὗ ἐποίησε πάντα τὰ ἔργα ταῦτα ἐκ πλήθους σφόδρα· οὐκ ἦν τέρμα τῶν σταθμῶν τοῦ χαλκοῦ. Ἐν τῷ περιοίκῳ τοῦ Ἰορδάνου ἐχώνευσεν αὐτὰ ἐν τῷ πάχει τῆς γῆς ἀναμέσον Σοκχὼθ καὶ ἀναμέσον Σειρά. Καὶ ἔλαβεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν τὰ σκεύη ἃ ἐποίησεν ἐν οἴκῳ Κυρίου, τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν, καὶ τὴν τράπεζαν ἐφ’ ἧς οἱ ἄρτοι τῆς προσφορᾶς, χρυσῆν, καὶ τὰς λυχνίας πέντε ἐξ ἀριστερῶν, καὶ πέντε ἐκ δεξιῶν κατὰ πρόσωπον τοῦ δαβὶρ χρυσᾶς συγκλειομένας, καὶ τὰ λαμπάδια, καὶ τοὺς λύχνους, καὶ τὰς ἐπαρύστρις χρυσᾶς. Καὶ τὰ πρόθυρα, καὶ οἱ ἧλοι, καὶ αἱ φιάλαι, καὶ τὰ τρυβλία, καὶ αἱ θυΐσκαι χρυσαῖ, συγκλειστά· καὶ τὰ θυρώματα τῶν θυρῶν τοῦ οἴκου τοῦ ἐσωτάτου ἁγίου τῶν ἁγίων, καὶ τὰς θύρας τοῦ ναοῦ χρυσᾶς. Καὶ ἀνεπληρώθη τὸ ἔργον ὃ ἐποίησε Σαλωμὼν οἴκου Κυρίου· καὶ εἰσήνεγκε Σαλωμὼν τὰ ἅγια Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ ἅγια Σαλωμών, τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον καὶ τὰ σκεύη ἔδωκεν εἰς τοὺς θησαυροὺς οἴκου Κυρίου. Καὶ τὸν οἶκον ἑαυτῷ ᾠκοδόμησε Σαλωμὼν τρισκαίδεκα ἔτεσι· Καὶ ᾠκοδόμησε τὸν οἶκον δρυμῷ τοῦ Λιβάνου· ἑκατὸν πήχεις μῆκος αὐτοῦ, καὶ πεντήκοντα πήχεις πλάτος αὐτοῦ, καὶ τριάκοντα πηχῶν ὕψος αὐτοῦ· καὶ τριῶν στύχων στύλων κεδρίνων, καὶ ὠμίαι κέδριναι τοῖς στύλοις. Καὶ ἐφάτνωσε τὸν οἶκον ἄνωθεν ἐπὶ τῶν πλευρῶν τῶν στύλων· καὶ ἀριθμὸς τῶν στύλων τεσσαράκοντα καὶ

πέντε ὁ στίχος, καὶ μέλαθρα τρία, καὶ χῶρα ἐπὶ χώραν τρισσῶς. Καὶ πάντα τὰ θυρώματα, καὶ αἱ χῶραι τετράγωνοι μεμελαθρωμέναι· καὶ ἀπὸ τοῦ θυρώματος ἐπὶ θύραν τρισσῶς. Καὶ τὸ αἰλὰμ τῶν στύλων, πεντήκοντα μῆκος, καὶ πεντήκοντα ἐν πλάτει ἐζυγωμένα αἰλὰμ ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν· καὶ στύλοι καὶ πάχος ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς τοῖς αἰλαμίν. Καὶ τὸ αἰλὰμ τῶν θρόνων οὗ κρινεῖ ἐκεῖ, αἰλὰμ τοῦ κριτηρίου. Καὶ ὁ οἶκος αὐτῶν ἐν ᾧ καθήσεται ἐκεῖ, αὐλὴ μία ἐξελισσομένη τούτοις κατὰ τὸ ἔργον τοῦτο· Καὶ οἶκον τῇ θυγατρὶ Φαραὼ ἣν ἔλαβε Σαλωμὼν, κατὰ τὸ αἰλὰμ τοῦτο. Πάντα ταῦτα ἐκ λίθων τιμίων κεκολαμμένα ἐκ διαστήματος ἔσωθεν καὶ ἐκ τοῦ θεμελίου ἕως τῶν γεισῶν· καὶ ἔξωθεν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν μεγάλην, τὴν τεθεμελιωμένην ἐν τιμίοις λίθοις μεγάλοις, λίθοις δεκαπήχεσι καὶ τοῖς ὀκταπήχεσι· Καὶ ἐπάνωθεν τιμίοις κατὰ τὸ μέτρον ἀπελεκήτων, καὶ κέδροις. Τῆς αὐλῆς τῆς μεγάλης κύκλῳ τρεῖς στίχοι ἀπελεκήτων, καὶ στίχος κεκολαμμένης κέδρου· καὶ συνετέλεσε Σαλωμὼν ὅλον τὸν οἶκον αὐτοῦ.

# 8

Καὶ ἐγένετο ὡς συνετέλεσε Σαλωμὼν τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον Κυρίου καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ μετὰ εἴκοσι ἔτη, τότε ἐξεκκλησίασεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν πάντας τοὺς πρεσβυτέρους Ἰσραὴλ ἐν Σιὼν, τοῦ ἐνεγκεῖν τὴν κιβωτὸν διαθήκης Κυρίου ἐκ πόλεως Δαυὶδ, αὕτη ἐστὶ Σιὼν, ἐν μηνὶ Ἀθανίν. Καὶ ᾖραν οἱ ἱερεῖς τὴν κιβωτὸν καὶ τὸ σκήνωμα τοῦ μαρτυρίου καὶ τὰ σκεύη τὰ ἅγια τὰ ἐν τῷ σκηνώματι τοῦ μαρτυρίου. Καὶ ὁ βασιλεὺς καὶ πὰς Ἰσραὴλ ἔμπροσθεν τῆς

κιβωτοῦ θύοντες πρόβατα, βόας, ἀναρίθμητα· Καὶ εἰσφέρουσιν οἱ ἱερεῖς τὴν κιβωτὸν εἰς τὸν τόπον αὐτῆς, εἰς τὸ δαβὶρ τοῦ οἴκου, εἰς τὰ ἅγια τῶν ἁγίων, ὑπὸ τὰς πτέρυγας τῶν χερουβίν. Ὅτι τὰ χερουβὶμ διαπεπετασμένα ταῖς πτέρυξιν ἐπὶ τὸν τόπον τῆς κιβωτοῦ· καὶ περιεκάλυπτον τὰ χερουβὶμ ἐπὶ τὴν κιβωτὸν καὶ ἐπὶ τὰ ἅγια αὐτῆς ἐπάνωθεν. Καὶ ὑπερεῖχον τὰ ἡγιασμένα· καὶ ἐνεβλέποντο αἱ κεφαλαὶ τῶν ἡγιασμένων ἐκ τῶν ἁγίων εἰς πρόσωπον τοῦ δαβὶρ, καὶ οὐκ ὠπτάνοντο ἔξω. Οὐκ ἦν ἐν τῇ κιβωτῷ πλὴν δύο πλάκες λίθιναι, πλάκες τῆς διαθήκης ἃς ἔθηκε Μωυσῆς ἐν Χωρὴβ, ἃς διέθετο Κύριος μετὰ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐξῆλθον οἱ ἱερεῖς ἐκ τοῦ ἁγίου, καὶ ἡ νεφέλη ἔπλησε τὸν οἶκον. Καὶ οὐκ ἠδύναντο οἱ ἱερεῖς στήκειν λειτουργεῖν ἀπὸ προσώπου τῆς νεφέλης, ὅτι ἔπλησε δόξα Κυρίου τὸν οἶκον. Καὶ ἀπέστρεψεν ὁ βασιλεὺς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ εὐλόγησεν ὁ βασιλεὺς πάντα Ἰσραήλ· καὶ πᾶσα ἐκκλησία Ἰσραὴλ εἱστήκει· Καὶ εἶπεν, εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ σημερον, ὃς ἐλάλησεν ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ περὶ Δαυὶδ τοῦ πατρός μου καὶ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ ἐπλήρωσε, λέγον, ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἐξήγαγον τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, οὐκ ἐξελεξάμην ἐν πόλει ἐν ἐνὶ σκήπτρῳ Ἰσραὴλ τοῦ οἰκοδομῆσαι οἶκον τοῦ εἶναι τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ· καὶ ἐξελεξάμην ἐν Ἰερουσαλὴμ εἶναι τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ· καὶ ἐξελεξάμην τὸν Δαυὶδ τοῦ εἶναι ἐπὶ τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο ἐπὶ τῆς καρδίας τοῦ πατρός μου οἰκοδομῆσαι οἶκον τῷ ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Δαυὶδ τὸν πατέρα μου, ἀνθ’ ὧν ἦλθεν ἐπὶ τὴν καρδίαν σου τοῦ οἰκοδομῆσαι οἶκον τῷ ὀνόματί μου, καλῶς ἐποίησας ὅτι ἐγενήθη ἐπὶ τὴν καρδίαν σου. Πλὴν σὺ οὐκ οἰκοδομήσεις τὸν οἶκον, ἀλλ’ ἢ ὁ υἱός σου ὁ ἐξελθὼν ἐκ τῶν

πλευρῶν σου, οὗτος οἰκοδομήσει τὸν οἶκον τῷ ὀνόματί μου. Καὶ ἀνέστησε Κύριος τὸ ῥῆμα αὐτοῦ ὃ ἐλάλησε· καὶ ἀνέστην ἀντὶ Δαυὶδ τοῦ πατρός μου, καὶ ἐκάθισα ἐπὶ τοῦ θρόνου Ἰσραὴλ, καθὼς ἐλάλησε Κύριος, καὶ ᾠκοδόμησα τὸν οἶκον τῷ ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἐθέμην ἐκεῖ τόπον τῇ κιβωτῷ, ἐν ᾗ ἐστιν ἐκεῖ διαθήκη Κυρίου ἣν διέθετο Κύριος μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν ἐν τῷ ἐξαγαγεῖν αὐτὸν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἀνέστη Σαλωμὼν κατὰ πρόσωπον τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου ἐνώπιον πάσης ἐκκλησίας Ἰσραήλ· καὶ διεπέτασε τὰς χεῖρας αὐτοῦ εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ εἶπε, Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, οὐκ ἔστιν ὡς σὺ Θεὸς ἐν τῷ οὐρανῷ ἄνω καὶ ἐπὶ τῆς γῆς κάτω, φυλάσσων διαθήκην καὶ ἔλεος τῷ δούλῳ σου τῷ πορευομένῳ ἐνώπιόν σου ἐν ὅλῃ τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἃ ἐφύλαξας τῷ δούλῳ σου Δαυὶδ τῷ πατρί μου· καὶ γὰρ ἐλάλησας ἐν τῷ στόματί σου, καὶ ἐν χερσί σου ἐπλήρωσας, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ νῦν Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, φύλαξον τῷ δούλῳ σου Δαυὶδ τῷ πατρί μου ἃ ἐλάλησας αὐτῷ, λέγων, οὐκ ἐξαρθήσεταί σου ἀνὴρ ἐκ προσώπου μου καθήμενος ἐπὶ θρόνου Ἰσραὴλ, πλὴν ἐὰν φυλάξωνται τὰ τέκνα σου τὰς ὁδοὺς αὐτῶν τοῦ πορεύεσθαι ἐνώπιόν μου καθὼς ἐπορεύθης ἐνώπιον ἐμοῦ. Καὶ νῦν, Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, πιστωθήτω δὴ τὸ ῥῆμά σου τῷ Δαυὶδ τῷ πατρί μου. Ὅτι εἰ ἀληθῶς κατοικήσει ὁ Θεὸς μετὰ ἀνθρώπων ἐπὶ τῆς γῆς; εἰ ὁ οὐρανὸς καὶ ὁ οὐρανὸς τοῦ οὐρανοῦ οὐκ ἀρκέσουσί σοι, πλὴν καὶ ὁ οἶκος οὗτος ὃν ᾠκοδόμησα τῷ ὀνόματί σου; Καὶ ἐπιβλέψῃ ἐπὶ τὴν δέησίν μου Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἀκούειν τῆς προσευχῆς ἧς ὁ δοῦλός σου προσεύχεται ἐνώπιόν σου πρὸς σὲ σήμερον, τοῦ εἶναι τοὺς ὀφθαλμούς σου ἠνεῳγμένους εἰς τὸν οἶκον τοῦτον ἡμέρας καὶ νυκτὸς, εἰς τὸν τόπον ὃν εἶπας, ἔσται τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ, τοῦ εἰσακούειν τῆς προσευχῆς ἧς προσεύχεται ὁ δοῦλός

σου εἰς τὸν τόπον τοῦτον ἡμέρας καὶ νυκτός. Καὶ εἰσακούσῃ τῆς δεήσεως τοῦ δούλου σου καὶ τοῦ· λαοῦ σου Ἰσραὴλ ἃ ἂν προσεύξωνται εἰς τὸν τόπον τοῦτον· καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐν τῷ τόπῳ τῆς κατοικήσεώς σου ἐν οὐρανῷ· καὶ ποιήσεις καὶ ἵλεως ἔσῃ. Ὅσα ἂν ἁμάρτῃ ἕκαστος τῷ πλησίον αὐτοῦ, καὶ ἐὰν λάβῃ ἐπ᾽ αὐτὸν ἀρὰν τοῦ ἀράσασθαι αὐτὸν, καὶ ἔλθῃ καὶ ἐξαγορεύσῃ κατὰ πρόσωπον τοῦ θυσιαστηρίου σου ἐν τῷ οἴκῳ τούτῳ, καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καὶ ποιήσεις· καὶ κρινεῖς τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ, ἀνομηθῆναι ἄνομον, δοῦναι τὴν ὁδὸν αὐτοῦ εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ τοῦ δικαιῶσαι δίκαιον, δοῦναι αὐτῷ κατὰ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. Ἐν τῷ πταῖσαι τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ ἐνώπιον ἐχθρῶν, ὅτι ἁμαρτήσονταί σοι, καὶ ἐπιστρέψουσι καὶ ἐξομολογήσονται τῷ ὀνόματί σου, καὶ προσεύξονται καὶ δεηθήσονται ἐν τῷ οἴκῳ τούτῳ, καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἵλεως ἔσῃ ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ λαοῦ σου Ἰσραὴλ, καὶ ἐπιστρέψεις αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν ἔδωκας τοῖς πατράσιν αὐτῶν. Ἐν τῷ συσχεθῆναι τὸν οὐρανὸν καὶ μὴ γενέσθαι ὑετὸν, ὅτι ἁμαρτήσονταί σοι, καὶ προσεύξονται εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἐξομολογήσονται τῷ ὀνόματί σου, καὶ ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν ἀποστρέψουσιν ὅταν ταπεινώσῃς αὐτοὺς, καὶ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἵλεως ἔσῃ ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ δούλου σου καὶ τοῦ λαοῦ σου Ἰσραήλ· ὅτι δηλώσεις αὐτοῖς τὴν ὁδὸν τὴν ἀγαθὴν πορεύεσθαι ἐν αὐτῇ, καὶ δώσεις ὑετὸν ἐπὶ τὴν γῆν ἣν ἔδωκας τῷ λαῷ σου ἐν κληρονομίᾳ. Λιμὸς ἐὰν γένηται, θάνατος ἐὰν γένηται, ὅτι ἔσται ἐμπυρισμὸς, βροῦχος, ἐρυσίβη ἐὰν γένηται, καὶ ἐὰν θλίψῃ αὐτὸν ὁ ἐχθρὸς αὐτοῦ ἐν μιᾷ τῶν πόλεων αὐτοῦ, πᾶν συνάντημα, πᾶν πόνον, πᾶσαν προσευχὴν, πᾶσαν δέησιν ἐὰν γένηται παντὶ ἀνθρώπῳ, ὡς ἂν γνῶσιν ἕκαστος ἀφὴν καρδίας αὐτοῦ, καὶ

διαπετάσῃ τὰς χεῖρας αὐτοῦ εἰς τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐξ ἑτοίμου κατοικητηρίου σου, καὶ ἵλεως ἔσῃ, καὶ ποιήσεις καὶ δώσεις ἀνδρὶ κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καθὼς ἂν γνῷς τὴν καρδίαν αὐτοῦ, ὅτι σὺ μονώτατος οἶδας τὴν καρδίαν πάντων υἱῶν ἀνθρώπων, ὅπως φοβῶνταί σε πάσας τὰς ἡμέρας ὅσας αὐτοὶ ζῶσιν ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκας τοῖς πατράσιν ἡμῶν. Καὶ τῷ ἀλλοτρίῳ ὃς οὐκ ἔστιν ἀπὸ λαοῦ σοῦ οὗτος, καὶ ἥξουσι καὶ προσεύξονται εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐξ ἑτοίμου κατοικητηρίου σου, καὶ ποιήσεις κατὰ πάντα ὅσα ἂν ἐπικαλέσηταί σε ὁ ἀλλότριος, ὅπως γνῶσι πάντες οἱ λαοὶ τὸ ὄνομά σου, καὶ φοβῶνταί σε, καθὼς ὁ λαός σου Ἰσραὴλ, καὶ γνῶσιν ὅτι τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦτον ὃν ᾠκοδόμησα. Ὅτι ἐξελεύσεται ὁ λαός σου εἰς πόλεμον ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ ἐν ὁδῷ ᾗ ἐπιστρέψεις αὐτούς, καὶ προσεύξονται ἐν ὀνόματι Κυρίου ὁδὸν τῆς πόλεως ἧς ἐξελέξω ἐν αὐτῇ, καὶ τοῦ οἴκου οὗ ᾠκοδόμησα τῷ ὀνόματί σου, καὶ σὺ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τῆς δεήσεως αὐτῶν, καὶ τῆς προσευχῆς αὐτῶν, καὶ ποιήσεις τὸ δικαίωμα αὐτοῖς. Ὅτι ἁμαρτήσονταί σοι, ὅτι οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος ὃς οὐχ ἁμαρτήσεται, καὶ ἐπάξεις αὐτοὺς καὶ παραδώσεις αὐτοὺς ἐνώπιον ἐχθρῶν, καὶ αἰχμαλωτιοῦσιν οἱ αἰχμαλωτίζοντες εἰς γῆν μακρὰν ἢ ἐγγύς, καὶ ἐπιστρέψουσι καρδίας αὐτῶν ἐν τῇ γῇ οὗ μετήχθησαν ἐκεῖ, καὶ ἐπιστρέψωσιν ἐν γῇ μετοικίας αὐτῶν, καὶ δεηθῶσί σου, λέγοντες, ἡμάρτομεν, ἠδικήσαμεν, ἠνομήσαμεν, καὶ ἐπιστρέψωσι πρὸς σὲ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ αὐτῶν καὶ ἐν ὅλῃ ψυχῇ αὐτῶν ἐν τῇ γῇ ἐχθρῶν αὐτῶν οὗ μετήγαγες αὐτοὺς, καὶ προσεύξονται πρὸς σὲ ὁδὸν γῆς αὐτῶν ἧς ἔδωκας τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ τῆς πόλεως ἧς ἐξελέξω, καὶ τοῦ οἴκου οὗ ᾠκοδόμηκα τῷ ὀνόματί σου, καὶ εἰσακούσῃ ἐκ τοῦ

οὐρανοῦ ἐξ ἑτοίμου κατοικητηρίου σου, καὶ ἵλεως ἔσῃ ταῖς ἀδικίας αὐτῶν αἷς ἥμαρτόν σοι, καὶ κατὰ πάντα τὰ ἀθετήματα αὐτῶν ἃ ἠθέτησάν σοι, καὶ δώσεις αὐτοὺς εἰς οἰκτιρμοὺς ἐνώπιον αἰχμαλωτευόντων αὐτοὺς, καὶ οἰκτειρήσουσιν εἰς αὐτοὺς, ὅτι λαός σου καὶ κληρονομία σου, οὓς ἐξήγαγες ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐκ μέσου χωνευτηρίου σιδήρου. Καὶ ἔστωσαν οἱ ὀφθαλμοί σου καὶ τὰ ὦτά σου ἠνεῳγμένα εἰς τὴν δέησιν τοῦ δούλου σου, καὶ εἰς τὴν δέησιν τοῦ λαοῦ σου Ἰσραὴλ, εἰσακούειν αὐτῶν ἐν πᾶσιν οἷς ἂν ἐπικαλέσωνταί σε. Ὅτι σὺ διέστειλας αὐτοὺς σεαυτῷ εἰς κληρονομίαν ἐκ πάντων τῶν λαῶν τῆς γῆς, καθὼς ἐλάλησας ἐν χειρὶ δούλου σου Μωυσῆ, ἐν τῷ ἐξαγαγεῖν σε τοὺς πατέρας ἡμῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, Κύριε Κύριε. Καὶ ἐγένετο ὡς συνετέλεσε Σαλωμὼν προσευχόμενος πρὸς Κύριον ὅλην τὴν προσευχὴν καὶ τὴν δέησιν ταύτην, καὶ ἀνέστη ἀπὸ προσώπου τοῦ θυσιαστηρίου Κυρίου ὀκλακὼς ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ διαπεπετασμέναι εἰς τὸν οὐρανόν. Καὶ ἔστη, καὶ εὐλόγησε πᾶσαν ἐκκλησίαν Ἰσραὴλ φωνῇ μεγάλῃ, λέγων, εὐλογητὸς Κύριος σήμερον ὃς ἔδωκε κατάπαυσιν τῷ λαῷ αὐτοῦ Ἰσραὴλ, κατὰ πάντα ὅσα ἐλάλησεν· οὐ διεφώνησε λόγος εἷς ἐν πᾶσι τοῖς λόγοις αὐτοῦ τοῖς ἀγαθοῖς οἷς ἐλάλησεν ἐν χειρὶ δούλου αὐτοῦ Μωυσῆ. Γένοιτο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν μεθ’ ἡμῶν, καθὼς ἦν μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν· μὴ ἐγκαταλοίποιτο ἡμᾶς μηδὲ ἀποστρέψοιτο ἡμᾶς, Γένοιτο Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν μεθ’ ἡμῶν, καθὼς ἦν μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν· μὴ ἐγκαταλοίποιτο ἡμᾶς μηδὲ ἀποστρέψοιτο ἡμᾶς, ἐπικλῖναι καρδίας ἡμῶν ἐπ’ αὐτὸν τοῦ πορεύεσθαι ἐν πάσαις ὁδοῖς αὐτοῦ, καὶ φυλάσσειν πάσας ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ προστάγματα αὐτοῦ, ἃ ἐνετείλατο τοῖς πατράσιν ἡμῶν. Καὶ ἔστωσαν οἱ λόγοι οὗτοι ὡς δεδέημαι ἐνώπιον Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν, ἐγγίζοντες πρὸς

Κύριον Θεὸν ἡμῶν ἡμέρας καὶ νυκτὸς, τοῦ ποιεῖν τὸ δικαίωμα τοῦ δοῦλου σου, καὶ τὸ δικαίωμα λαοῦ Ἰσραὴλ ῥῆμα ἡμέρας ἐν ἡμέρᾳ ἐνιαυτοῦ· ὅπως γνῶσι πάντες οἱ λαοὶ τῆς γῆς, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς, αὐτὸς Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι. Καὶ ἔστωσαν αἱ καρδίαι ἡμῶν τέλειαι πρὸς Κύριον Θεὸν ἡμῶν, καὶ ὁσίως πορεύεσθαι ἐν τοῖς προστάγμασιν αὐτοῦ, καὶ φυλάσσειν ἐντολὰς αὐτοῦ, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ ὁ βασιλεὺς καὶ πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἔθυσαν θυσίαν ἐνώπιον Κυρίου. Καὶ ἔθυσεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν τὰς θυσίας τῶν εἰρηνικῶν ἃς ἔθυσε τῷ Κυρίῳ, βοῶν δύο καὶ εἴκοσι χιλιάδας, προβάτων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι χιλιάδας· καὶ ἐνεκαίνισε τὸν οἶκον Κυρίου ὁ βασιλεὺς καὶ πάντες οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἡγίασεν ὁ βασιλεὺς τὸ μέσον τῆς αὐλῆς τὸ κατὰ πρόσωπον τοῦ οἴκου Κυρίου· ὅτι ἐποίησεν ἐκεῖ τὴν ὁλοκαύτωσιν καὶ τὰς θυσίας καὶ τὰ στέατα τῶν εἰρηνικῶν, ὅτι τὸ θυσιαστήριον τὸ χαλκοῦν τὸ ἐνώπιον Κυρίου μικρὸν τοῦ μὴ δύνασθαι τὴν ὁλοκαύτωσιν καὶ τὰς θυσίας τῶν εἰρηνικῶν ὑπενεγκεῖν. Καὶ ἐποίησε Σαλωμὼν τὴν ἑορτὴν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ’ αὐτοῦ, ἐκκλησία μεγάλη ἀπὸ τῆς εἰσόδου Ἡμὰθ ἕως ποταμοῦ Αἰγύπτου, ἐνώπιον Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν ἐν τῷ οἴκῳ ᾧ ᾠκοδόμησεν, ἑσθίων καὶ πίνων καὶ εὐφραινόμενος ἐνώπιον Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν ἑπτὰ ἡμέρας. Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ ἐξαπέστειλε τὸν λαόν· καὶ εὐλόγησαν τὸν βασιλέα, καὶ ἀπῆλθεν ἕκαστος εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ χαίροντες· καὶ ἀγαθὴ ἡ καρδία ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς οἷς ἐποίησε Κύριος τῷ Δαυὶδ δούλῳ αὐτοῦ, καὶ τῷ Ἰσραὴλ λαῷ αὐτοῦ.

# 9

Καὶ ἐγενήθη ὡς συνετέλεσε Σαλωμὼν οἰκοδομεῖν τὸν οἶκον Κυρίου, καὶ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, καὶ πᾶσαν τὴν πραγματείαν Σαλωμὼν, ὅσα ἠθέλησε ποιῆσαι, καὶ ὤφθη Κύριος τῷ Σαλωμὼν δεύτερον, καθὼς ὤφθη ἐν Γαβαών. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Κύριος, ἤκουσα τῆς φωνῆς τῆς προσευχῆς σου, καὶ τῆς δεήσεώς σου ἧς ἐδεήθης ἐνώπιόν μου· πεποίηκά σοι κατὰ πᾶσαν τὴν προσευχήν σου· ἡγίακα τὸν οἶκον τοῦτον ὃν ᾠκοδόμησας τοῦ θέσθαι τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἔσονται οἱ ὀφθαλμοί μου ἐκεῖ καὶ ἡ καρδία μου πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ σὺ ἐὰν πορευθῇς ἐνώπιον ἐμοῦ, καθὼς ἐπορεύθη Δαυὶδ ὁ πατήρ σου, ἐν ὁσιότητι καρδίας καὶ ἐν εὐθύτητι, καὶ τοῦ ποιεῖν κατὰ πάντα ἃ ἐνετειλάμην αὐτῷ, καὶ τὰ προστάγματά μου καὶ τὰς ἐντολάς μου φυλάξῃς, καὶ ἀναστήσω τὸν θρόνον τῆς βασιλείας σου ἐν Ἰσραὴλ εἰς τὸν αἰῶνα, καθὼς ἐλάλησα Δαυὶδ πατρί σου, λέγων, οὐκ ἐξαρθήσεταί σοι ἀνὴρ ἡγούμενος ἐν Ἰσραήλ. Ἐὰν δὲ ἀποστραφέντες ἀποστραφῆτε ὑμεῖς καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν ἀπ’ ἐμοῦ, καὶ μὴ φυλάξητε τὰς ἐντολάς μου καὶ τὰ προστάγματά μου ἃ ἔδωκε Μωυσῆς ἐνώπιον ὑμῶν, καὶ πορευθῆτε καὶ δουλεύσητε θεοῖς ἑτέροις καὶ προσκυνήσητε αὐτοῖς, καὶ ἐξαρῶ τὸν Ἰσραὴλ ἀπὸ τῆς γῆς ἧς ἔδωκα αὐτοῖς, καὶ τὸν οἶκον τοῦτον ὃν ἡγίασα τῷ ὀνόματί μου ἀποῤῥίψω ἐκ προσώπου μου· καὶ ἔσται Ἰσραὴλ εἰς ἀφανισμὸν καὶ εἰς λάλημα εἰς πάντας τοὺς λαούς. Καὶ ὁ οἶκος οὗτος ἔσται ὁ ὑψηλὸς, πᾶς ὁ διαπορευόμενος δι’ αὐτοῦ ἐκστήσεται καὶ συριεῖ, καὶ ἐροῦσιν, ἕνεκεν τίνος ἐποίησε Κύριος οὕτως τῇ γῇ ταύτῃ καὶ τῷ οἴκῳ τούτῳ; Καὶ ἐροῦσιν, ἀνθ’ ὧν ἐγκατέλιπον Κύριον Θεὸν αὐτῶν, ὃς ἐξήγαγε τοὺς πατέρας αὐτῶν ἐξ Αἰγύπτου, ἐξ οἴκου δουλείας, καὶ ἀντελάβοντο θεῶν ἀλλοτρίων καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς, διὰ τοῦτο ἐπήγαγε Κύριος ἐπ’ αὐτοὺς τὴν κακίαν ταύτην. Εἴκοσι ἔτη ἐν

οἷς ᾠκοδόμησε Σαλωμὼν τοὺς δύο οἴκους, τὸν οἶκον Κυρίου καὶ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, Χιρὰμ βασιλεὺς Τύρου ἀντελάβετο τοῦ Σαλωμὼν ἐν ξύλοις κεδρίνοις, καὶ ἐν ξύλοις πευκίνοις, καὶ ἐν χρυσίῳ, καὶ ἐν χρυσίῳ, καὶ ἐν παντὶ θελήματι αὐτοῦ· τότε ἔδωκεν ὁ βασιλεὺς τῷ Χιρὰμ εἴκοσι πόλεις ἐν τῇ γῇ τῇ Γαλιλαίᾳ. Καὶ ἐξῆλθε Χιρὰμ ἐκ Τύρου, καὶ ἐπορεύθη εἰς τὴν Γαλιλαίαν τοῦ ἰδεῖν τὰς πόλεις ἃς ἔδωκεν αὐτῷ Σαλωμών· καὶ οὐκ ἤρεσαν αὐτῷ. Καὶ εἶπε, τί αἱ πόλεις αὗται ἃς ἔδωκάς μοι ἀδελφέ; καὶ ἐκάλεσεν αὐτὰς Ὅριον ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἤνεγκε Χιρὰμ τῷ Σαλωμὼν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι τάλαντα χρυσίου. Καὶ ναῦν ὑπὲρ οὗ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ἐν Γασίων Γαβὲρ τὴν οὖσαν ἐχομένην Αἰλὰθ ἐπὶ τοῦ χείλους τῆς ἐσχάτης θαλάσσης ἐν γῇ Ἐδώμ. Καὶ ἀπέστειλε Χιρὰμ ἐν τῇ νηῒ τῶν παίδων αὐτοῦ ἄνδρας ναυτικοὺς ἐλαύνειν εἰδότας θάλασσαν μετὰ τῶν παίδων Σαλωμών. Καὶ ἦλθον εἰς Σωφιρὰ, καὶ ἔλαβον ἐκεῖθεν χρυσίου ἑκατὸν καὶ εἴκοσι τάλαντα, καὶ ἤνεγκαν τῷ βασιλεῖ Σαλωμών.

# 10

Καὶ βασίλισσα Σαβὰ ἤκουσε τὸ ὄνομα Σαλωμὼν καὶ τὸ ὄνομα Κυρίου, καὶ ἦλθε πειράσαι αὐτὸν ἐν αἰνίγμασι. Καὶ ἦλθεν εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐν δυνάμει βαρείᾳ σφόδρα· καὶ κάμηλοι αἴρουσαι ἡδύσματα καὶ χρυσὸν πολὺν σφόδρα καὶ λίθον τίμιον· καὶ εἰσῆλθε πρὸς Σαλωμὼν, καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ πάντα ὅσα ἦν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς. Καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῇ Σαλωμὼν πάντας τοὺς λόγους αὐτῆς· οὐκ ἦν λόγος παρεωραμένος παρὰ τοῦ βασιλέως, ὃν οὐκ ἀπήγγειλεν αὐτῇ. Καὶ εἶδε βασίλισσα Σαβὰ πᾶσαν τὴν φρόνησιν

Σαλωμὼν, καὶ τὸν οἶκον ὃν ᾠκοδόμησε, καὶ τὰ βρώματα Σαλωμὼν, καὶ τὴν καθέδραν παίδων αὐτοῦ, καὶ τὴν στάσιν λειτουργῶν αὐτοῦ, καὶ τὸν ἱματισμὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς οἰνοχόους αὐτοῦ, καὶ τὴν ὁλοκαύτωσιν αὐτοῦ ἣν ἀνέφερεν ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ ἐξ ἑαυτῆς ἐγένετο· Καὶ εἶπε πρὸς τὸν βασιλέα Σαλωμὼν, ἀληθινὸς ὁ λόγος ὃν ἤκουσα ἐν τῇ γῇ μου περὶ τοῦ λόγου σου καὶ περὶ τῆς φρονήσεώς σου. Καὶ οὐκ ἐπίστευσα τοῖς λαλοῦσί μοι, ἕως ὅτου παρεγενόμην καὶ ἑωράκασιν οἱ ὀφθαλμοί μου· καὶ ἰδοὺ οὐκ εἰσὶ τὸ ἥμισυ καθὼς ἀπήγγειλάν μοι· προστέθεικας ἀγαθὰ πρὸς αὐτὰ ἐπὶ πᾶσαν τὴν ἀκοὴν ἣν ἤκουσα ἐν τῇ γῇ μου. Μακάριαι αἱ γυναῖκές σου, μακάριοι οἱ παῖδές σου οὗτοι οἱ παρεστηκότες ἐνώπιόν σου διόλου, οἱ ἀκούοντες πᾶσαν τὴν φρόνησίν σου. Γένοιτο Κύριος ὁ Θεός σου εὐλογημένος, ὃς ἠθέλησεν ἐν σοὶ δοῦναί σε ἐπὶ θρόνου Ἰσραὴλ, διὰ τὸ ἀγαπᾷν Κύριον τὸν Ἰσραὴλ στῆσαι εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ἔθετό σε βασιλέα ἐπ’ αὐτοὺς, τοῦ ποιεῖν κρίμα ἐν δικαιοσύνῃ καὶ ἐν κρίμασιν αὐτῶν. Καὶ ἔδωκε τῷ Σαλωμὼν ἑκατὸν εἴκοσι τάλαντα χρυσίου, καὶ ἡδύσματα πολλὰ σφόδρα, καὶ λίθον τίμιον· οὐκ ἐληλύθει κατὰ τὰ ἡδύσματα ἐκεῖνα ἔτι εἰς πλῆθος, ἃ ἔδωκε βασίλισσα Σαβὰ τῷ βασιλεῖ Σαλωμών. Καὶ ἡ ναῦς Χιρὰμ ἡ αἴρουσα τὸ χρυσίον ἐκ Σουφὶρ, ἤνεγκε ξύλα πελεκητὰ πολλὰ σφόδρα καὶ λίθον τίμιον. Καὶ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς τὰ ξύλα τὰ πελεκητὰ ὑποστηρίγματα τοῦ οἴκου Κυρίου καὶ τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ νάβλας καὶ κινύρας τοῖς ᾠδοῖς· οὐκ ἐληλύθει τοιαῦτα ξύλα ἀπελέκητα ἐπὶ τῆς γῆς, οὐδὲ ὤφθησάν που ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ἔδωκε τῇ βασιλίσσῃ Σαβὰ πάντα ὅσα ἠθέλησεν, ὅσα ᾐτήσατο, ἐκτὸς πάντων ὧν ἐδεδώκει αὐτῇ διὰ χειρὸς τοῦ βασιλέως Σαλωμών· καὶ ἀπεστράφη, καὶ ἦλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτῆς αὐτὴ, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτῆς. Καὶ ἦν ὁ σταθμὸς τοῦ

χρυσίου τοῦ ἐληλυθότος τῷ Σαλωμὼν ἐν ἐνιαυτῷ ἑνὶ, ἑξακόσια καὶ ἑξηκονταὲξ τάλαντα χρυσίου, χωρὶς τῶν φόρων τῶν ὑποτεταγμένων καὶ τῶν ἐμπόρων καὶ πάντων τῶν βασιλέων τοῦ πέραν καὶ τῶν σατραπῶν τῆς γῆς. Καὶ ἐποίησε Σαλωμὼν τριακόσια δόρατα χρυσᾶ ἐλατά· τριακόσιοι χρυσοῖ ἐπῆσαν ἐπὶ τὸ δόρυ τὸ ἕν· Καὶ τριακόσια ὅπλα χρυσᾶ ἐλατά· καὶ τρεῖς μναῖ ἐνῆσαν χρυσοῦ εἰς τὸ ὅπλον τὸ ἕν· καὶ ἔδωκεν αὐτὰ ὁ βασιλεὺς εἰς οἶκον δρυμοῦ τοῦ Λιβάνου. Καὶ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς θρόνον ἐλεφάντινον μέγαν, καὶ περιεχρύσωσεν αὐτὸν χρυσίῳ δοκίμῳ. Ἓξ ἀναβαθμοὶ τῷ θρόνῳ, καὶ προτομαὶ μόσχων τῷ θρόνῳ ἐκ τῶν ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ χεῖρες ἔνθεν καὶ ἔνθεν ἐπὶ τοῦ τόπου τῆς καθέδρας, καὶ δύο λέοντες ἑστηκότες παρὰ τὰς χεῖρας, καὶ δώδεκα λέοντες ἑστῶτες ἐκεῖ ἐπὶ τῶν ἓξ ἀναβαθμῶν ἔνθεν καὶ ἔνθεν· οὐ γέγονεν οὕτως πάσῃ βασιλείᾳ. Καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ὑπὸ τοῦ Σαλωμὼν γεγονότα χρυσᾶ, καὶ λουτῆρες χρυσοῖ, καὶ πάντα τὰ σκεύη οἴκου δρυμοῦ τοῦ Λιβάνου χρυσίῳ συγκεκλεισμένα. οὐκ ἦν ἀργύριον, ὅτι οὐκ ἦν λογιζόμενον ἐν ταῖς ἡμέραις Σαλωμών· Ὅτι ναῦς Θαρσὶς τῷ βασιλεῖ Σαλωμὼν ἐν τῇ θαλάσσῃ μετὰ τῶν νηῶν Χιράμ· μία διὰ τριῶν ἐτῶν ἤρχετο τῷ βασιλεῖ ναῦς ἐκ Θαρσὶς χρυσίου καὶ ἀργυρίου καὶ λίθων τορευτῶν καὶ πελεκητῶν. Καὶ ἐμεγαλύνθη Σαλωμὼν ὑπὲρ πάντας τοὺς βασιλεῖς τῆς γῆς πλούτῳ καὶ φρονήσει. Καὶ πάντες βασιλεῖς τῆς γῆς ἐζήτουν τὸ πρόσωπον Σαλωμὼν, τοῦ ἀκοῦσαι τῆς φρονήσεως αὐτοῦ ἧς ἔδωκε Κύριος τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ. Καὶ αὐτοὶ ἔφερον ἕκαστος τὰ δῶρα, σκεύη χρυσᾶ, καὶ ἱματισμὸν, στακτὴν, καὶ ἡδύσματα, καὶ ἵππους, καὶ ἡμιόνους τὸ κατ’ ἐνιαυτὸν ἐνιαυτῷ. Καὶ ἦσαν τῷ Σαλωμὼν τέσσαρες χιλιάδες θήλειαι ἵπποι εἰς ἅρματα, καὶ δώδεκα χιλιάδες ἱππέων· καὶ ἔθετο αὐτὰς ἐν ταῖς πόλεσι τῶν ἁρμάτων καὶ μετὰ τοῦ βασιλέως ἐν

Ἰερουσαλήμ· Καὶ ἔδωκεν ὁ βασιλεὺς τὸ χρυσίον καὶ τὸ ἀργύριον ἐν Ἰερουσαλὴμ ὡς λίθους, καὶ τὰς κέδρους ἔδωκεν ὡς συκαμίνους τὰς ἐν τῇ πεδινῇ εἰς πλῆθος. Καὶ ἡ ἔξοδος Σαλωμῶν τῶν ἱππέων καὶ ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἐκ Θεκουὲ ἔμποροι τοῦ βασιλέως· καὶ ἐλάμβανον ἐκ Θεκουὲ ἐν ἀλλάγματι. Καὶ ἀνέβαινεν ἡ ἔξοδος ἐξ Αἰγύπτου ἅρμα ἀντὶ ἑκατὸν ἀργυρίου, καὶ ἵππος ἀντὶ πεντήκοντα ἀργυρίου· καὶ οὕτως πᾶσι τοῖς βασιλεῦσι Χεττιΐν, καὶ βασιλεῦσι Συρίας κατὰ θάλασσαν ἐξεπορεύοντο.

# 11

Καὶ ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ἦν φιλογύνης. Καὶ ἦσαν αὐτῷ γυναῖκες ἄρχουσαι ἑπτακόσιαι, καὶ παλλακαὶ τριακόσιαι. Καὶ ἔλαβε γυναῖκας ἀλλοτρίας, καὶ τὴν θυγατέρα Φαραὼ, Μωαβίτιδας, Ἀμμανίτιδας, Σύρας, καὶ Ἰδουμαίας, Χετταίας, καὶ Ἀμορῥαίας, ἐκ τῶν ἐθνῶν ὧν ἀπεῖπε Κύριος τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, οὐκ εἰσελεύσεσθε εἰς αὐτοὺς, καὶ αὐτοὶ οὐκ εἰσελεύσονται εἰς ὑμᾶς, μὴ ἐκκλίνωσι τὰς καρδίας ὑμῶν ὀπίσω εἰδώλων αὐτῶν· εἰς αὐτοὺς ἐκολλήθη Σαλωμὼν τοῦ ἀγαπῆσαι. Καὶ ἐγενήθη ἐν καιρῷ γήρους Σαλωμὼν, καὶ οὐκ ἦν ἡ καρδία αὐτοῦ τελεία μετὰ Κυρίου Θεοῦ αὐτοῦ, καθὼς ἡ καρδία Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἐξέκλιναν γυναῖκες αἱ ἀλλότριαι τὴν καρδίαν αὐτοῦ ὀπίσω θεῶν αὐτῶν. Τότε ᾠκοδόμησε Σαλωμὼν ὑψηλὸν τῷ Χαμὼς εἰδώλῳ Μωὰβ, καὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῶν εἰδώλῳ υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ τῇ Ἀστάρτῃ βδελύγματι Σιδωνίων. Καὶ οὕτως ἐποίησε πάσαις ταῖς γυναιξὶν αὐτοῦ ταῖς ἀλλοτρίαις, αἳ ἐθυμίων καὶ ἔθυον τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν, καὶ ἐποίησε Σαλωμὼν τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· οὐκ ἐπορεύθη ὀπίσω Κυρίου, ὡς Δαυὶδ ὁ

πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ὠργίσθη Κύριος ἐπὶ Σαλωμὼν, ὅτι ἐξέκλινε καρδίαν αὐτοῦ ἀπὸ Κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ, τοῦ ὀφθέντος αὐτῷ δὶς, καὶ ἐντειλαμένου αὐτῷ ὑπὲρ τοῦ λόγου τούτου, τὸ παράπαν μὴ πορευθῆναι ὀπίσω θεῶν ἑτέρων, καὶ φυλάξασθαι ποιῆσαι ἃ ἐνετείλατο αὐτῷ Κύριος ὁ Θεός· οὐδ’ ἦν ἡ καρδία αὐτοῦ τελεία μετὰ Κυρίου, κατὰ τὴν καρδίαν Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Σαλωμὼν, ἀνθ’ ὧν ἐγένετο ταῦτα μετὰ σοῦ, καὶ οὐκ ἐφύλαξας τὰς ἐντολάς μου καὶ τὰ προστάγματά μου ἃ ἐνετειλάμην σοι, διαῤῥήσσων διαῤῥήξω τὴν βασιλείαν σου ἐκ χειρός σου, καὶ δώσω αὐτὴν τῷ δούλῳ σου. Πλὴν ἐν ταῖς ἡμέραις σου οὐ ποιήσω αὐτὰ διὰ Δαυὶδ τὸν πατέρα σου· ἐκ χειρὸς υἱοῦ σου λήψομαι αὐτήν. Πλὴν ὅλην τὴν βασιλείαν οὐ μὴ λάβω· σκῆπτρον ἓν δώσω τῷ υἱῷ σου διὰ Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου, καὶ διὰ Ἰερουσαλὴμ τὴν πόλιν ἣν ἐξελεξάμην. Καὶ ἤγειρε Κύριος σατὰν τῷ Σαλωμὼν τὸν Ἄδερ τὸν Ἰδουμαῖον, καὶ τὸν Ἐσρὼμ υἱὸν Ἐλιαδαὲ τὸν ἐν Ρααμὰ, Ἀδαδέζερ βασιλέα Σουβὰ κύριον αὐτοῦ· καὶ συνηθροίσθησαν ἐπ’ αὐτὸν ἄνδρες, καὶ ἦν ἄρχων συστρέμματος, καὶ προκατελάβετο τὴν Δαμασέκ· καὶ ἦσαν σατὰν τῷ Ἰσραὴλ πάσας τὰς ἡμέρας Σαλωμών· καὶ Ἄδερ ὁ Ἰδουμαῖος ἐκ τοῦ σπέρματος τῆς βασιλείας ἐν Ἰδουμαίᾳ. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐξολοθρεῦσαι Δαυὶδ τὸν Ἐδὼμ ἐν τῷ πορευθῆναι Ἰωὰβ ἄρχοντα τῆς στρατιᾶς θάπτειν τοὺς τραυματίας, καὶ ἔκοψαν πᾶν ἀρσενικὸν ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ· ὅτι ἓξ μῆνας ἐνεκάθητο ἐκεῖ Ἰωὰβ καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ, ἕως ὅτου ἐξωλόθρευσε πᾶν ἀρσενικὸν ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ· Καὶ ἀπέδρα Ἄδερ αὐτὸς καὶ πάντες ἄνδρες Ἰδουμαῖοι τῶν παίδων τοῦ πατρὸς αὐτοῦ μετ’ αὐτοῦ, καὶ εἰσῆλθον εἰς Αἴγυπτον· καὶ Ἄδερ παιδάριον μικρόν. Καὶ ἀνίστανται ἄνδρες ἐκ τῆς πόλεως Μαδιὰμ, καὶ ἄρχονται εἰς Φαρὰν, καὶ λαμβάνουσιν ἄνδρας μεθ’ αὐτῶν, καὶ ἔρχονται πρὸς Φαραὼ

βασιλέα Αἰγύπτου· καὶ εἰσῆλθεν Ἄδερ πρὸς Φαραὼ, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ οἶκον, καὶ ἄρτους διέταξεν αὐτῷ. Καὶ εὗρεν Ἄδερ χάριν ἐναντίον Φαραὼ σφόδρα, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ γυναῖκα ἀδελφὴν τῆς γυναικὸς αὐτοῦ, ἀδελφὴν Θεκεμίνας μείζω. Καὶ ἔτεκεν αὐτῷ ἡ ἀδελφὴ Θεκεμίνας τῷ Ἄδερ τὸν Γανηβὰθ υἱὸν αὐτῆς· καὶ ἐξέθρεψεν αὐτὸν Θεκεμίνα ἐν μέσῳ υἱῶν Φαραώ· καὶ ἦν Γανηβὰθ ἐν μέσῳ υἱῶν Φαραώ. Καὶ Ἄδερ ἤκουσεν ἐν Αἰγύπτῳ ὅτι κεκοίμηται Δαυὶδ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ὅτι τέθνηκεν Ἰωὰβ ὁ ἄρχων τῆς στρατιᾶς, καὶ εἶπεν Ἄδερ πρὸς Φαραὼ, ἐξαπόστειλόν με, καὶ ἀποστρέψω εἰς τὴν γῆν μου. Καὶ εἶπε Φαραὼ τῷ Ἄδερ, τίνι σὺ ἐλαττονῇ μετ᾽ ἐμοῦ; καὶ ἰδοὺ σὺ ζητεῖς ἀπελθεῖν εἰς τὴν γῆν σου; καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἄδερ, ὅτι ἐξαποστέλλων ἐξαποστελεῖς με· καὶ ἀνέστρεψεν Ἄδερ εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ· αὕτη ἡ κακία ἣν ἐποίησεν Ἄδερ· καὶ ἐβαρυθύμησεν Ἰσραὴλ, καὶ ἐβασίλευσεν ἐν τῇ Ἐδώμ. Καὶ Ἱεροβοὰμ υἱὸς Ναβὰτ ὁ Ἐφραθὶ ἐκ τῆς Σαριρὰ, υἱὸς γυναικὸς χήρας, δοῦλος Σαλωμών. Καὶ τοῦτο τὸ πρᾶγμα ὡς ἐπῆρατο χεῖρας ἐπὶ βασιλέα Σαλωμών· καὶ ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ᾠκοδόμησε τὴν ἄκραν, συνέκλεισε τὸν φραγμὸν τῆς πόλεως Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ὁ ἄνθρωπος Ἱεροβοὰμ ἰσχυρὸς δυνάμει· καὶ εἶδε Σαλωμὼν τὸ παιδάριον ὅτι ἀνὴρ ἔργων ἐστὶ, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἐπὶ τὰς ἄρσεις οἴκου Ἰωσήφ. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ Ἱεροβοὰμ ἐξῆλθεν ἐξ Ἱερουσαλὴμ, καὶ εὗρεν αὐτὸν Ἀχιὰ ὁ Σηλωνίτης ὁ προφήτης ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ἀπέστησεν αὐτὸν ἐκ τῆς ὁδοῦ· καὶ Ἀχιὰ περιβεβλημένος ἱματίῳ καινῷ, καὶ ἀμφότεροι μόνοι ἐν τῷ πεδίῳ. Καὶ ἐπελάβετο Ἀχιὰ τοῦ ἱματίου αὐτοῦ τοῦ καινοῦ τοῦ ἐπ᾽ αὐτῷ, καὶ διέῤῥηξεν αὐτὸ δώδεκα ῥήγματα, καὶ εἶπε τῷ Ἱεροβοὰμ, λάβε σεαυτῷ δέκα ῥήγματα, ὅτι τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ ῥήσσω τὴν βασιλείαν ἐκ χειρὸς Σαλωμὼν,

καὶ δώσω σοι δέκα σκῆπτρα. Καὶ δύο σκῆπτρα ἔσονται αὐτῷ διὰ τὸν δοῦλόν μου Δαυὶδ, καὶ διὰ Ἰερουσαλὴμ τὴν πόλιν ἣν ἐξελεξάμην ἐν αὐτῇ ἐκ πασῶν φυλῶν Ἰσραήλ. Ἀνθ’ ὧν ἐγκατέλιπέ με, καὶ ἐποίησε τῇ Ἀστάρτῃ βδελύγματι Σιδωνίων, καὶ τῷ Χαμὼς, καὶ τοῖς εἰδώλοις Μωὰβ, καὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῶν προσοχθίσματι υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ οὐκ ἐπορεύθη ἐν ταῖς ὁδοῖς μου τοῦ ποιῆσαι τὸ εὐθὲς ἐνώπιον ἐμοῦ, ὡς Δαυὶδ ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ οὐ μὴ λάβω τὴν βασιλείαν ὅλην ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, διότι ἀντιτασσόμενος ἀντιτάξομαι αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ, διὰ τὸν Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου ὃν ἐξελεξάμην αὐτόν. Καὶ λήψομαι τὴν βασιλείαν ἐκ χειρὸς τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, καὶ δώσω σοι τὰ δέκα σκῆπτρα. Τῷ δὲ υἱῷ αὐτοῦ δώσω τὰ δύο σκῆπτρα, ὅπως ᾖ θέσις τῷ δούλῳ μου Δαυὶδ πάσας τὰς ἡμέρας ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ τῇ πόλει, ἣν ἐξελεξάμην ἐμαυτῷ τοῦ θέσθαι τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ. Καὶ σὲ λήψομαι, καὶ βασιλεύσεις ἐν οἷς ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχή σου, καὶ σὺ ἔσῃ βασιλεὺς ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται ἐὰν φυλάξῃς πάντα ὅσα ἂν ἐντείλωμαί σοι, καὶ πορευθῇς ἐν ταῖς ὁδοῖς μου, καὶ ποιήσῃς τὸ εὐθὲς ἐνώπιον ἐμοῦ, τοῦ φυλάξασθαι τὰ προστάγματά μου καὶ τὰς ἐντολάς μου, καθὼς ἐποίησε Δαυὶδ ὁ δοῦλός μου, καὶ ἔσομαι μετὰ σοῦ καὶ οἰκοδομήσω σοι οἶκον πιστὸν, καθὼς ᾠκοδόμησα τῷ Δαυίδ. Καὶ ἐζήτησε Σαλωμὼν θανατῶσαι τὸν Ἱεροβοάμ· καὶ ἀνέστη καὶ ἀπέδρα εἰς Αἴγυπτον πρὸς Σουσακὶμ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἦν ἐν Αἰγύπτῳ ἕως οὗ ἀπέθανε Σαλωμών. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Σαλωμὼν, καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε, καὶ πᾶσαν τὴν φρόνησιν αὐτοῦ, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γέγραπται ἐν βιβλίῳ ῥημάτων Σαλωμών; Καὶ αἱ ἡμέραι ἃς ἐβασίλευε Σαλωμὼν ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐπὶ πάντα Ἰσραὴλ τεσσαράκοντα ἔτη. Καὶ ἐκοιμήθη Σαλωμὼν μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν πόλει Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ

ἐγενήθη ὡς ἤκουσεν Ἱεροβοὰμ υἱὸς Ναβὰτ, καὶ αὐτοῦ ἔτι ὄντος ἐν Αἰγύπτῳ ὡς ἔφυγεν ἐκ προσώπου Σαλωμὼν καὶ ἐκάθητο ἐν Αἰγύπτῳ, κατευθύνει καὶ ἔρχεται εἰς τὴν πόλιν αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν Σαριρὰ τὴν ἐν ὄρει Ἐφραίμ. Καὶ ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν ἐκοιμήθη μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσε Ῥοβοὰμ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 12

Καὶ πορεύεται βασιλεὺς Ῥοβοὰμ εἰς Σίκιμα, ὅτι εἰς Σίκιμα ἦρχοντο πᾶς Ἰσραὴλ βασιλεῦσαι αὐτόν. Καὶ ἐλάλησεν ὁ λαὸς πρὸς τὸν βασιλέα Ῥοβοὰμ, λέγοντες, Ὁ πατήρ σου ἐβάρυνε τὸν κλοιὸν ἡμῶν, καὶ σὺ νῦν κούφισον ἀπὸ τῆς δουλείας τοῦ πατρός σου τῆς σκληρᾶς, καὶ ἀπὸ τοῦ κλοιοῦ αὐτοῦ τοῦ βαρέως, οὗ ἔδωκεν ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ δουλεύσομέν σοι. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ἀπέλθετε ἕως ἡμερῶν τριῶν, καὶ ἀναστρέψατε πρὸς μέ· καὶ ἀπῆλθον. Καὶ ἀπήγγειλεν ὁ βασιλεὺς τοῖς πρεσβυτέροις, οἳ ἦσαν παρεστῶτες ἐνώπιον Σαλωμὼν τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἔτι ζῶντος αὐτοῦ, λέγων, πῶς ὑμεῖς βουλεύεσθε καὶ ἀποκριθῶ τῷ λαῷ τούτῳ λόγον; Καὶ ἐλάλησαν πρὸς αὐτὸν, λέγοντες, εἰ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ ἔσῃ δοῦλος τῷ λαῷ τούτῳ, καὶ δουλεύσεις αὐτοῖς, καὶ λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς λόγους ἀγαθοὺς, καὶ ἔσονταί σοι δοῦλοι πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἐγκατέλιπε τὴν βουλὴν τῶν πρεσβυτέρων ἃ συνεβουλεύσαντο αὐτῷ, καὶ συνεβουλεύσατο μετὰ τῶν παιδαρίων τῶν ἐκτραφέντων μετ’ αὐτοῦ τῶν παρεστηκότων πρὸ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, τί ὑμεῖς συμβουλεύετε; καὶ τί ἀποκριθῶ τῷ λαῷ τούτῳ τοῖς λέγουσι πρὸς μὲ, λεγόντων, κούφισον ἀπὸ τοῦ κλοιοῦ οὗ ἔδωκεν ὁ

πατήρ σου ἐφ’ ἡμᾶς; Καὶ ἐλάλησαν πρὸς αὐτὸν τὰ παιδάρια τὰ ἐκτραφέντα μετ’ αὐτοῦ οἱ παρεστηκότες πρὸ προσώπου αὐτοῦ, λέγοντες, τάδε λαλήσεις τῷ λαῷ τούτῳ τοῖς λαλήσασι πρὸς σὲ, λέγοντες, ὁ πατήρ σου ἐβάρυνε τὸν κλοιὸν ἡμῶν, καὶ σὺ νῦν κούφισον ἀφ’ ἡμῶν· τάδε λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς, ἡ μικρότης μου παχυτέρα τῆς ὀσφύος τοῦ πατρός μου. Καὶ νῦν ὁ πατήρ μου ἐπεσάσσετο ὑμᾶς κλοιῷ βαρεῖ, κἀλὼ προσθήσω ἐπὶ τὸν κλοιὸν ὑμῶν· ὁ πατήρ μου ἐπαίδευσεν ὑμᾶς ἐν μάστιξιν, ἐγὼ δὲ παιδεύσω ὑμᾶς ἐν σκορπίοις. Καὶ παρεγένοντο πᾶς Ἰσραὴλ πρὸς τὸν βασιλέα Ῥοβοὰμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καθότι ἐλάλησεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, λέγων, ἀναστράφητε πρὸς μὲ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν λαὸν σκληρά· καὶ ἐγκατέλιπε Ῥοβοὰμ τὴν βουλὴν τῶν πρεσβυτέρων ἃ συνεβουλεύσαντο αὐτῷ, καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτοὺς κατὰ τὴν βουλὴν τῶν παιδαρίων, λέγων, ὁ πατήρ μου ἐβάρυνε τὸν κλοιὸν ὑμῶν, κἀγὼ προσθήσω ἐπὶ τὸν κλοιὸν ὑμῶν· ὁ πατήρ μου ἐπαίδευσεν ὑμᾶς ἐν μάστιξι, κἀγὼ παιδεύσω ὑμᾶς ἐν σκορπίοις. Καὶ οὐκ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς τοῦ λαοῦ, ὅτι ἦν μεταστροφὴ παρὰ Κυρίου, ὅπως στήσῃ τὸ ῥῆμα αὐτοῦ ὃ ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἀχιὰ τοῦ Σηλωνίτου περὶ Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβάτ. Καὶ εἶδον πᾶς Ἰσραὴλ, ὅτι οὐκ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς αὐτῶν· καὶ ἀπεκρίθη ὁ λαὸς τῷ βασιλεῖ, λέγων, τίς ἡμῖν μερὶς ἐν Δαυίδ; καὶ οὐκ ἔστιν ἡμῖν κληρονομία ἐν υἱῷ Ἰεσσαί· ἀπότρεχε Ἰσραὴλ, εἰς τὰ σκηνώματά σου· νύν βόσκε τὸν οἶκόν σου, Δαυίδ· καὶ ἀπῆλθεν Ἰσραὴλ εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς τὸν Ἀδωνιρὰμ τὸν ἐπὶ τοῦ φόρου, καὶ ἐλιθοβόλησαν αὐτὸν ἐν λίθοις καὶ ἀπέθανε· καὶ ὁ βασιλεὺς Ῥοβοὰμ ἔφθασεν ἀναβῆναι τοῦ φυγεῖν εἰς Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἠθέτησεν Ἰσραὴλ εἰς τὸν οἶκον Δαυὶδ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσε πᾶς Ἰσραὴλ ὅτι ἀνέκαμψεν Ἱεροβοὰμ ἐξ

Αἰγύπτου, καὶ ἀπέστειλαν καὶ ἐκάλεσαν αὐτὸν εἰς τὴν συναγωγὴν, καὶ ἐβασίλευσαν αὐτὸν ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ οὐκ ἦν ὀπίσω οἴκου Δαυὶδ πάρεξ σκήπτρου Ἰούδα καὶ Βενιαμὶν μόνοι. Καὶ Ῥοβοὰμ εἰσῆλθεν εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐξεκκλησίασε τὴν συναγωγὴν Ἰούδα καὶ σκῆπτρον Βενιαμὶν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι χιλιάδας νεανιῶν ποιούντων πόλεμον, τοῦ πολεμεῖν πρὸς οἶκον Ἰσραὴλ, ἐπιστρέψαι τὴν βασιλείαν Ῥοβοὰμ υἱῷ Σαλωμών. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Σαμαίαν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ, λέγων, εἶπον τῷ Ῥοβοὰμ υἱῷ Σαλωμὼν βασιλεῖ Ἰούδα, καὶ πρὸς πάντα οἶκον Ἰούδα καὶ Βενιαμὶν, καὶ τῷ καταλοίπῳ τοῦ λαοῦ, λέγων, τάδε λέγει Κύριος, οὐκ ἀναβήσεσθε οὐδὲ πολεμήσετε μετὰ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν υἱῶν Ἰσραήλ· ἀποστρεφέτω ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον ἑαυτοῦ, ὅτι παρ’ ἐμοῦ γέγονε τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ ἤκουσαν τοῦ λόγου Κυρίου, καὶ κατέπαυσαν τοῦ πορευθῆναι κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου. Καὶ ᾠκοδόμησεν Ἱεροβοὰμ τὴν Σίκιμα τὴν ἐν ὄρει Ἐφραὶμ, καὶ κατῴκει ἐν αὐτῇ, καὶ ἐξῆλθεν ἐκεῖθεν καὶ ᾠκοδόμησε τὴν Φανουήλ. Καὶ εἶπεν Ἱεροβοὰμ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἰδοὺ νῦν ἐπιστρέψει ἡ βασιλεία εἰς οἶκον Δαυίδ· Ἐὰν ἀναβῇ ὁ λαὸς οὗτος ἀναφέρειν θυσίαν ἐν οἴκῳ Κυρίου εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπιστραφήσεται καρδία τοῦ λαοῦ πρὸς Κύριον καὶ κύριον αὐτῶν, πρὸς Ῥοβοὰμ βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἀποκτενοῦσί με. Καὶ ἐβουλεύσατο ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἐποίησε δύο δαμάλεις χρυσᾶς, καὶ εἶπε πρὸς τὸν λαὸν, ἱκανούσθω ὑμῖν ἀναβαίνειν εἰς Ἱερουσαλήμ· ἰδοὺ θεοί σου Ἰσραὴλ οἱ ἀναγαγόντες σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔθετο τὴν μίαν ἐν Βαιθὴλ, καὶ τὴν μίαν ἔδωκεν ἐν Δάν. Καὶ ἐγένετο ὁ λόγος οὗτος εἰς ἁμαρτίαν· καὶ ἐπορεύετο ὁ λαὸς πρὸ προσώπου τῆς μιᾶς ἕως Δὰν, καὶ εἴασαν τὸν οἶκον Κυρίου Καὶ ἐποίησεν οἴκους ἐφ’ ὑψηλῶν, καὶ ἐποίησεν ἱερεῖς μέρος τι ἐκ τοῦ λαοῦ, οἳ οὐκ ἦσαν ἐκ τῶν υἱῶν

Λευί. Καὶ ἐποίησεν Ἱεροβοὰμ ἑορτὴν ἐν τῷ μηνὶ τῷ ὀγδόῳ ἐν τῇ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ τοῦ μηνὸς κατὰ τὴν ἑορτὴν τὴν ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ὃ ἐποίησεν ἐν Βαιθὴλ τοῦ θύειν ταῖς δαμάλεσιν αἷς ἐποίησε, καὶ παρέστησεν ἐν Βαιθὴλ τοὺς ἱερεῖς τῶν ὑψηλῶν ὧν ἐποίησε. Καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ὃ ἐποίησε, τῇ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ ἐν τῷ μηνὶ τῷ ὀγδόῳ ἐν τῇ ἑορτῇ ᾗ ἐπλάσατο ἀπὸ καρδίας αὐτοῦ· καὶ ἐποίησεν ἑορτὴν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τοῦ ἐπιθῦσαι.

# 13

Καὶ ἰδοὺ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐξ Ἰούδα παρεγένετο ἐν λόγῳ Κυρίου εἰς Βαιθὴλ, καὶ Ἱεροβοὰμ εἱστήκει ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐπιθῦσαι. Καὶ ἐπεκάλεσε πρὸς τὸ θυσιαστήριον ἐν λόγῳ Κυρίου, καὶ εἶπε, θυσιαστήριον, θυσιαστήριον, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ υἱὸς τίκτεται τῷ οἴκῳ Δαυὶδ, Ἰωσίας ὄνομα αὐτῷ, καὶ θύσει ἐπὶ σὲ τοὺς ἱερεῖς τῶν ὑψηλῶν τῶν ἐπιθυόντων ἐπὶ σὲ, καὶ ὀστᾶ ἀνθρώπων καύσει ἐπὶ σέ. Καὶ δώσει ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τέρας, λέγων, τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησε Κύριος, λέγων, ἰδοὺ τὸ θυσιαστήριον ῥήγνυται, καὶ ἐκχυθήσεται ἡ πιότης ἡ ἐπ’ αὐτῷ. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἱεροβοὰμ τῶν λόγων τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ τοῦ ἐπικαλεσαμένου ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἐν Βαιθὴλ, καὶ ἐξέτεινεν ὁ βασιλεὺς τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου, λέγων, συλλάβετε αὐτόν· καὶ ἰδοὺ ἐξηράνθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ, ἣν ἐξέτεινεν ἐπ’ αὐτὸν, καὶ οὐκ ἐδυνήθη ἐπιστρέψαι αὐτὴν πρὸς αὐτόν. Καὶ τὸ θυσιαστήριον ἐῤῥάγη, καὶ ἐξεχύθη ἡ πιότης ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου, κατὰ τὸ τέρας ὃ ἔδωκεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐν

λόγῳ Κυρίου. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἱεροβοὰμ τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ Θεοῦ, δεήθητι τοῦ πρόσώπου Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου, καὶ ἐπιστρεψάτω ἡ χείρ μου πρὸς ἐμέ· καὶ ἐδεήθη ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ τοῦ προσώπου Κυρίου, καὶ ἐπέστρεψε τὴν χεῖρα τοῦ βασιλέως πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐγένετο καθὼς τὸ πρότερον. Καὶ ἐλάλησεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ, εἴσελθε μετ' ἐμοῦ εἰς οἶκον, καὶ ἀρίστησον, καὶ δώσω σοι δόμα. Καὶ εἶπεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ πρὸς τὸν βασιλέα, ἐὰν δῷς μοι τὸ ἥμισυ τοῦ οἴκου σου, οὐκ εἰσελεύσομαι μετὰ σοῦ, οὐδὲ μὴ φάγω ἄρτον, οὐδὲ μὴ πίω ὕδωρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ· ὅτι οὕτως ἐνετείλατό μοι Κύριος ἐν λόγῳ, λέγων, μὴ φάγῃς ἄρτον καὶ μὴ πίῃς ὕδωρ καὶ μὴ ἐπιστρέψῃς ἐν τῇ ὁδῷ ᾗ ἐπορεύθης ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀπῆλθεν ἐν ὁδῷ ἄλλῃ, καὶ οὐκ ἀνέστρεψεν ἐν τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθεν ἐν αὐτῇ εἰς Βαιθήλ. Καὶ προφήτης εἷς πρεσβύτης κατῴκη ἐν Βαιθὴλ, καὶ ἔρχονται οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ διηγήσαντο αὐτῷ πάντα τὰ ἔργα ἃ ἐποίησεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐν Βαιθὴλ, καὶ τοὺς λόγους οὓς ἐλάλησε τῷ βασιλεῖ, καὶ ἐπέστρεψαν τὸ πρόσωπον τοῦ πατρὸς αὐτῶν. Καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτοὺς ὁ πατὴρ αὐτῶν, λέγων, ποίᾳ ὁδῷ πεπόρευται; καὶ δεικνύουσιν αὐτῷ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ ἀνῆλθεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ὁ ἐλθὼν ἐξ Ἰούδα. Καὶ εἶπε τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, ἐπισάξατέ μοι τὸν ὄνον· καὶ ἐπέσαξαν αὐτῷ τὸν ὄνον, καὶ ἐπέβη ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἐπορεύθη κατόπισθεν τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ εὗρεν αὐτὸν καθήμενον ὑπὸ δρῦν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, εἰ σὺ εἶ ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ὁ ἐληλυθὼς ἐξ Ἰούδα; καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἐγώ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, δεῦρο μετ' ἐμοῦ, καὶ φάγε ἄρτον. Καὶ εἶπεν, οὐ μὴ δύνωμαι τοῦ ἐπιστρέψαι μετὰ σοῦ, οὐδὲ μὴ φάγομαι ἄρτον, οὐδὲ πίομαι ὕδωρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ· Ὅτι οὕτως ἐντέταλταί μοι ἐν λόγῳ Κύριος, λέγων, μὴ φάγῃς ἄρτον ἐκεῖ καὶ μὴ

πίῃς ὕδωρ καὶ μὴ ἐπιστρέψῃς ἐκεῖ ἐν τῇ ὁδῷ ᾗ ἐπορεύθης ἐν αὐτῇ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, κἀγὼ προφήτης εἰμὶ καθὼς σὺ, καὶ ἄγγελος λελάληκε πρὸς μὲ ἐν ῥήματι Κυρίου, λέγων, ἐπίστρεψον αὐτὸν πρὸς σεαυτὸν εἰς τὸν οἶκόν σου, καὶ φαγέτω ἄρτον, καὶ πιέτω ὕδωρ· καὶ ἐψεύσατο αὐτῷ· Καὶ ἐπέστρεψεν αὐτὸν, καὶ ἔφαγεν ἄρτον καὶ ἔπιεν ὕδωρ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο αὐτῶν καθημένων ἐπὶ τῆς τραπέζης, καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς τὸν προφήτην τὸν ἐπιστρέψαντα αὐτόν· καὶ εἶπε πρὸς τὸν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ τὸν ἥκοντα ἐξ Ἰούδα, λέγων, τάδε λέγει Κύριος, ἀνθ’ ὧν παρεπίκρανας τὸ ῥῆμα Κυρίου, καὶ οὐκ ἐφύλαξας τὴν ἐντολὴν ἣν ἐνετείλατό σοι Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ ἐπέστρεψας, καὶ ἔφαγες ἄρτον καὶ ἔπιες ὕδωρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ ᾧ ἐλάλησε πρὸς σὲ, λέγων, οὐ μὴ φάγῃς ἄρτον καὶ μὴ πίῃς ὕδωρ, οὐ μὴ εἰσέλθῃ τὸ σῶμά σου εἰς τὸν τάφον τῶν πατέρων σου. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὸ φαγεῖν αὐτὸν ἄρτον καὶ πιεῖν ὕδωρ, καὶ ἐπέσαξεν αὐτῷ τὸν ὄνον, καὶ ἐπέστρεψε, καὶ ἀπῆλθε. Καὶ εὗρεν αὐτὸν λέων ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτόν· καὶ ἦν τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐῤῥιμμένον ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ὁ ὄνος εἱστήκει παρ’ αὐτὸ, καὶ ὁ λέων εἱστήκει παρὰ τὸ σῶμα. Καὶ ἰδοὺ ἄνδρες παραπορευόμενοι καὶ εἶδον τὸ θνησιμαῖον ἐῤῥιμμένον ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ὁ λέων εἱστήκει ἐχόμενα τοῦ θνησιμαίου· καὶ εἰσῆλθον, καὶ ἐλάλησαν ἐν τῇ πόλει οὗ ὁ προφήτης ὁ πρεσβύτης κατῴκει ἐν αὐτῇ. Καὶ ἤκουσεν ὁ ἐπιστρέψας αὐτὸν ἐκ τῆς ὁδοῦ, καὶ εἶπεν, ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ οὗτός ἐστιν ὃς παρεπίκρανε τὸ ῥῆμα Κυρίου· Καὶ ἐπορεύθη καὶ εὗρε τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐῤῥιμμένον ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ ὁ ὄνος, καὶ ὁ λέων εἱστήκεισαν παρὰ τὸ σῶμα· καὶ οὐκ ἔφαγεν ὁ λέων τὸ σῶμα τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ οὐ συνέτριψε τὸν ὄνον. Καὶ ᾖρεν ὁ προφήτης τὸ σῶμα τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπέθηκεν αὐτὸ

ἐπὶ τὸν ὄνον, καὶ ἐπέστρεψεν αὐτὸν εἰς τὴν πόλιν ὁ προφήτης, τοῦ θάψαι αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ ἑαυτοῦ, καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν, οὐαὶ ἀδελφέ. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὸ κόψασθαι αὐτὸν, καὶ εἶπε τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, λέγων, ἐὰν ἀποθάνω, θάψατέ με ἐν τῷ τάφῳ τούτῳ οὗ ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ τέθαπται ἐν αὐτῷ, παρὰ τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ θέτε με, ἵνα σωθῶσι τὰ ὀστᾶ μου μετὰ τῶν ὀστῶν αὐτοῦ. Ὅτι γινόμενον ἔσται τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησεν ἐν λόγῳ Κυρίου ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ἐν Βαιθὴλ καὶ ἐπὶ τοὺς οἴκους τοὺς ὑψηλοὺς τοὺς ἐν Σαμαρείᾳ. Καὶ μετὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο οὐκ ἐπέστρεψεν Ἱεροβοὰμ ἀπὸ τῆς κακίας αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψε καὶ ἐποίησεν ἐκ μέρους τοῦ λαοῦ ἱερεῖς ὑψηλῶν· ὁ βουλόμενος ἐπλήρου τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ἐγένετο ἱερεὺς εἰς τὰ ὑψηλά. Καὶ ἐγένετο τὸ ῥῆμα τοῦτο εἰς ἁμαρτίαν τῷ οἴκῳ Ἱεροβοὰμ, καὶ εἰς ὄλεθρον, καὶ εἰς ἀφανισμὸν ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς.

# 14

Καὶ Ῥοβοὰμ υἱὸς Σαλωμὼν ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰούδαν· υἱὸς τεσσαράκοντα καὶ ἐνὸς ἐνιαυτῶν Ῥοβοὰμ ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν· καὶ ἑπτακαίδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἱερουσαλὴμ τῇ πόλει, ἣν ἐξελέξατο Κύριος θέσθαι τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐκεῖ ἐκ πασῶν φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ· καὶ τὸ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Νααμὰ ἡ Ἀμμωνίτις. Καὶ ἐποίησε Ῥοβοὰμ τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· καὶ παρεζήλωσεν αὐτὸν ἐν πᾶσιν οἷς ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτῶν ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῶν αἷς ἥμαρτον. Καὶ ᾠκοδόμησαν ἑαυτοῖς ὑψηλὰ καὶ στήλας καὶ ἄλση ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου συσκίου. Καὶ σύνδεσμος ἐγενήθη ἐν τῇ γῇ,

καὶ ἐποίησαν ἀπὸ πάντων τῶν βδελυγμάτων τῶν ἐθνῶν ὧν ἐξῆρε Κύριος ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ πέμπτῳ βασιλεύοντος Ῥοβοὰμ, ἀνέβη Σουσακεὶμ βασιλεὺς Αἰγύπτου ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔλαβε πάντας τοὺς θησαυροὺς οἴκου Κυρίου καὶ τοὺς θησαυροὺς οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ τὰ δόρατα τὰ χρυσᾶ ἃ ἔλαβε Δαυὶδ ἐκ χειρὸς τῶν παίδων Ἀδραζαὰρ βασιλέως Σουβὰ, καὶ εἰσήνεγκεν αὐτὰ εἰς Ἰερουσαλὴμ τὰ πάντα ἃ ἔλαβεν, ὅπλα τὰ χρυσᾶ ὅσα ἐποίησε Σαλωμὼν, καὶ ἀπήνεγκεν αὐτὰ εἰς Αἴγυπτον. Καὶ ἐποίησε Ῥοβοὰμ ὁ βασιλεὺς ὅπλα χαλκᾶ ἀντ’ αὐτῶν· καὶ ἐπέθεντο ἐπ’ αὐτὸν οἱ ἡγούμενοι τῶν παρατρεχόντων οἱ φυλάσσοντες τὸν πυλῶνα οἴκου βασιλέως. Καὶ ἐγένετο ὅτε εἰσεπορεύετο ὁ βασιλεὺς εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ ᾖρον αὐτὰ οἱ παρατρέχοντες καὶ ἀπηρείδοντο αὐτὰ εἰς τὸ θεὲ τῶν παρατρεχόντων. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ῥοβοὰμ καὶ πάντα ἃ ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ πόλεμος ἦν ἀναμέσον Ῥοβοὰμ καὶ ἀναμέσον Ἱεροβοὰμ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἐκοιμήθη Ῥοβοὰμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ θάπτεται μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, ἐν πόλει Δαυίδ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἀβιοὺ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 15

Καὶ ἐν τῷ ὀκτωκαιδεκάτῳ ἔτει βασιλεύοντος Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, βασιλεύει Ἀβιοὺ υἱὸς Ῥοβοὰμ ἐπὶ Ἰούδαν· Καὶ τρία ἔτη ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰερουσαλήμ· καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Μααχὰ, θυγάτηρ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ πατρὸς αὐτοῦ αἷς ἐποίησεν ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἦν ἡ καρδία αὐτοῦ

τελεία μετὰ Κυρίου Θεοῦ αὐτοῦ, ὡς ἡ καρδία τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Ὅτι διὰ Δαυὶδ ἔδωκεν αὐτῷ Κύριος κατάλειμμα, ἵνα στήσῃ τὰ τέκνα αὐτοῦ μετ᾽ αὐτὸν, καὶ στήσῃ τὴν Ἰερουσαλὴμ· ὡς ἐποίησε Δαυὶδ τὸ εὐθὲς ἐνώπιον Κυρίου, οὐκ ἐξέκλινεν ἀπὸ πάντων ὧν ἐνετείλατο αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀβιοὺ καὶ πάντα ἃ ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; καὶ πόλεμος ἦν ἀναμέσον Ἀβιοὺ καὶ ἀναμέσον Ἱεροβοάμ. Καὶ ἐκοιμήθη Ἀβιοὺ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν τῷ εἰκοστῷ καὶ τετάρτῳ ἔτει τοῦ Ἱεροβοὰμ, καὶ θάπτεται μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυίδ· καὶ βασιλεύει Ἀσὰ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τετάρτῳ καὶ εἰκοστῷ τοῦ Ἱεροβοὰμ βασιλέως Ἰσραὴλ, βασιλεύει Ἀσὰ ἐπὶ Ἰούδαν· Καὶ τεσσαράκοντα καὶ ἓν ἔτος ἐβασίλευσεν ἐν Ἱερουσαλήμ· καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Ἀνὰ, θυγάτηρ Ἀβεσσαλώμ. Καὶ ἐποίησεν Ἀσὰ τὸ εὐθὲς ἐνώπιον Κυρίου, ὡς Δαυὶδ ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ἀφεῖλε τὰς τελετὰς ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἐξαπέστειλε πάντα τὰ ἐπιτηδεύματα ἃ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ. Καὶ τὴν Ἀνὰ τὴν μητέρα ἑαυτοῦ μετέστησε τοῦ μὴ εἶναι ἡγουμένην, καθὼς ἐποίησε σύνοδον ἐν τῷ ἄλσει αὐτῆς· καὶ ἐξέκοψεν Ἀσὰ τὰς καταδύσεις αὐτῆς, καὶ ἐνέπρησε πυρὶ ἐν τῷ χειμάῤῥῳ τῶν Κέδρων. Τὰ δὲ ὑψηλὰ οὐκ ἐξῆρε· πλὴν ἡ καρδία Ἀσὰ ἦν τελεία μετὰ Κυρίου πάσας τὰς ἡμέρας αὐτοῦ. Καὶ εἰσήνεγκε τοὺς κίονας τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ τοὺς κίονας αὐτοῦ εἰσήνεγκεν εἰς τὸν οἶκον Κυρίου ἀργυροῦς καὶ χρυσοῦς, καὶ σκεύη. Καὶ πόλεμος ἦν ἀναμέσον Ἀσὰ καὶ ἀναμέσον Βαασὰ βασιλέως Ἰσραὴλ πάσας τὰς ἡμέρας αὐτῶν. Καὶ ἀνέβη Βαασὰ βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐπὶ Ἰούδαν, καὶ ᾠκοδόμησε τὴν Ῥαμὰ, τοῦ μὴ εἶναι ἐκπορευόμενον καὶ εἰσπορευόμενον τῷ Ἀσὰ βασιλεῖ Ἰούδα. Καὶ

ἔλαβεν Ἀσὰ σύμπαν τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον τὸ εὑρεθὲν ἐν τοῖς θησαυροῖς οἴκου Κυρίου καὶ ἐν τοῖς θησαυροῖς τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἔδωκεν αὐτὰ εἰς χεῖρας παίδων αὐτοῦ· καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ πρὸς υἱὸν Ἄδερ υἱὸν Ταβερεμὰ υἱοῦ Ἀζὶν βασιλέως Συρίας τοῦ κατοικοῦντος ἐν Δαμασκῷ, λέγων, διάθου διαθήκην ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ ἀναμέσον σοῦ, καὶ ἀναμέσον τοῦ πατρός μου καὶ τοῦ πατρός σου· ἰδοὺ ἐξαπέσταλκά σοι δῶρα ἀργύριον καὶ χρυσίον· δεῦρο, διασκέδασον τὴν διαθήκην σου τὴν πρὸς Βαασὰ βασιλέα Ἰσραὴλ, καὶ ἀναβήσεται ἀπ᾽ ἐμοῦ. Καὶ ἤκουσεν υἱὸς Ἄδερ τοῦ βασιλέως Ἀσά, καὶ ἀπέστειλε τοὺς ἄρχοντας τῶν δυνάμεων αὐτοῦ ταῖς πόλεσι τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπάταξαν τὴν Ἀΐν, τὴν Δὰν, καὶ τὴν Ἀβὲλ οἴκου Μααχὰ, καὶ πᾶσαν τὴν Χεννερὲθ, ἕως πάσης τῆς γῆς Νεφθαλί. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσε Βαασὰ, καὶ διέλιπε τοῦ οἰκοδομεῖν τὴν Ῥαμὰ, καὶ ἀνέστρεψεν εἰς Θερσά. Καὶ ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ παρήγγειλε παντὶ Ἰούδα εἰς ἐνακὶμ, καὶ αἴρουσι τοὺς λίθους τῆς Ῥαμὰ, καὶ τὰ ξύλα αὐτῆς ἃ ᾠκοδόμησε Βαασά· καὶ ᾠκοδόμησεν ἐν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ πᾶν βουνὸν Βενιαμὶν καὶ τὴν σκοπιάν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀσὰ, καὶ πᾶσα ἡ δυναστεία αὐτοῦ ἣν ἐποίησε, καὶ τὰς πόλεις ἃς ᾠκοδόμησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐστὶν ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; πλὴν ἐν τῷ καιρῷ τοῦ γήρως αὐτοῦ ἐπόνεσε τοὺς πόδας αὐτοῦ. Καὶ ἐκοιμήθη Ἀσὰ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ θάπτεται μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυίδ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ βασιλεύει Ἰωσαφὰτ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Καὶ Ναβὰτ υἱὸς Ἱεροβοὰμ βασιλεύει ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν ἔτει δευτέρῳ τοῦ Ἀσὰ βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐβασίλευσεν ἐν Ἰσραὴλ ἔτη δύο. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ

αἷς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Καὶ περιεκάθισεν αὐτὸν Βαασὰ υἱὸς Ἀχιὰ ἐπὶ τὸν οἶκον Βελαὰν υἱοῦ Ἀχιὰ, καὶ ἐχάραξεν αὐτὸν ἐν Γαβαθὼν τῇ τῶν ἀλλοφύλων· καὶ Ναβὰτ καὶ πᾶς Ἰσραὴλ περιεκάθητο ἐπὶ Γαβαθών. Καὶ ἐθανάτωσεν αὐτὸν Βαασὰ ἐν ἔτει τρίτῳ τοῦ Ἀσὰ υἱοῦ Ἀσὰ βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐβασίλευσεν. Καὶ ἐγένετο ὡς ἐβασίλευσε, καὶ ἐπάταξεν ὅλον τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ, καὶ οὐχ ὑπελείπετο πᾶσαν πνοὴν τοῦ Ἱεροβοὰμ ἕως τοῦ ἐξολοθρεῦσαι αὐτὸν, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου ὃ ἐλάλησεν ἐν χειρὶ δούλου αὐτοῦ Ἀχιὰ τοῦ Σηλωνίτου· περὶ τῶν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ, ὅς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ, καὶ ἐν τῷ παροργισμῷ αὐτοῦ ᾧ παρώργισε τὸν Κύριον Θεὸν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ναβὰτ καὶ πάντα ἃ ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐστὶν ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐν τῷ ἔτει τῷ τρίτῳ τοῦ Ἀσὰ βασιλέως Ἰούδα βασιλεύει Βαασὰ υἱὸς Ἀχιὰ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Θερσᾷ εἴκοσι καὶ τέσσαρα ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ ὡς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ.

# 16

Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου ἐν χειρὶ Ἰοὺ υἱοῦ Ἀνανὶ πρὸς Βαασά. Ἀνθ’ ὧν ὕψωσά σε ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἔδωκά σε ἡγούμενον ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ, καὶ ἐπορεύθης ἐν τῇ ὁδῷ Ἱεροβοὰμ, καὶ ἐξήμαρτες τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραὴλ, τοῦ παροργίσαι με ἐν τοῖς ματαίοις αὐτῶν, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ὀπίσω Βαασὰ, καὶ ὄπισθεν τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ δώσω τὸν οἶκόν σου ὡς τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβάτ. Τὸν τεθνηκότα τοῦ Βαασὰ ἐν τῇ πόλει καταφάγονται

αὐτὸν οἱ κύνες, καὶ τὸν τεθνηκότα αὐτοῦ ἐν τῷ πεδίῳ καταφάγονται αὐτὸν τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Βαασὰ καὶ πάντα ἃ ἐποίησε, καὶ αἱ δυναστεῖαι αὐτοῦ, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τῶν βασιλέων Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Βαασὰ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ θάπτεται ἐν Θερσᾷ, καὶ βασιλεύει Ἠλὰ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ' αὐτοῦ. Καὶ ἐν χειρὶ Ἰοὺ υἱοῦ Ἀνανὶ ἐλάλησε Κύριος ἐπὶ Βαασὰ καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ, πᾶσαν τὴν κακίαν ἣν ἐποίησεν ἐνώπιον Κυρίου τοῦ παροργίσαι αὐτὸν ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτου, τοῦ εἶναι κατὰ τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ, καὶ ὑπὲρ τοῦ πατάξαι αὐτόν. Καὶ Ἠλὰ υἱὸς Βαασὰ ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰσραὴλ δύο ἔτη ἐν Θερσᾷ. Καὶ συνέστρεψεν ἐπ' αὐτὸν Ζαμβρὶ ὁ ἄρχων τῆς ἡμίσους τῆς ἵππου, καὶ αὐτὸς ἦν ἐν Θερσᾷ πίνων μεθύων ἐν τῷ οἴκῳ Ὡσᾶ τοῦ οἰκονόμου ἐν Θερσᾷ. Καὶ εἰσῆλθε Σαμβρὶ καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν καὶ ἐθανάτωσεν αὐτὸν, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ' αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ βασιλεῦσαι αὐτὸν ἐν τῷ καθίσαι αὐτὸν ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν ὅλον τὸν οἶκον Βαασὰ, κατὰ τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησε Κύριος ἐπὶ τὸν οἶκον Βαασὰ, καὶ πρὸς Ἰοὺ τὸν προφήτην περὶ πασῶν τῶν ἁμαρτιῶν Βαασὰ καὶ Ἠλὰ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ, ὡς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, τοῦ παροργίσαι Κύριον τὸν Θεὸν Ἰσραὴλ ἐν τοῖς ματαίοις αὐτῶν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἠλὰ ἃ ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τῶν βασιλέων Ἰσραήλ; Καὶ Ζαμβρὶ ἐβασίλευσεν ἐν Θερσᾷ ἡμέρας ἑπτά· καὶ ἡ παρεμβολὴ Ἰσραὴλ ἐπὶ Γαβαθὼν τὴν τῶν ἀλλοφύλων. Καὶ ἤκουσεν ὁ λαὸς ἐν τῇ παρεμβολῇ, λεγόντων, συνεστράφη Ζαμβρὶ καὶ ἔπαισν τὸν βασιλέα· καὶ ἐβασίλευσαν ἐν Ἰσραὴλ τὸν Ἀμβρὶ τὸν ἡγούμενον τῆς στρατιᾶς ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐν τῇ παρεμβολῇ. Καὶ ἀνέβη Ἀμβρὶ καὶ πᾶς Ἰσραὴλ μετ' αὐτοῦ ἐκ Γαβαθὼν, καὶ

περιεκάθισαν ἐπὶ Θερσᾷ. Καὶ ἐγενήθη ὡς εἶδε Ζαμβρὶ ὅτι προκατείληπται αὐτοῦ ἡ πόλις, καὶ πορεύεται εἰς ἄντρον τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἐνεπύρισεν ἐπ’ αὐτὸν τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπέθανεν ὑπὲρ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου πορευθῆναι ἐν ὁδῷ Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ ὡς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ζαμβρὶ καὶ τὰς συνάψεις αὐτοῦ ἃς συνῆψεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τῶν βασιλέων Ἰσραήλ; Τότε μερίζεται ὁ λαὸς Ἰσραήλ· ἥμισυ τοῦ λαοῦ γίνεται ὀπίσω Θαμνὶ υἱοῦ Γωνὰθ τοῦ βασιλεῦσαι αὐτὸν, καὶ τὸ ἥμισυ τοῦ λαοῦ γίνεται ὀπίσω Ἀμβρί. Ὁ λαὸς ὁ ὢν ὀπίσω Ἀμβρὶ ὑπερεκράτησε τὸν λαὸν τὸν ὀπίσω Θαμνὶ υἱοῦ Γωνάθ· καὶ ἀπέθανε Θαμνὶ καὶ Ἰωρὰμ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ ἐβασίλευσεν Ἀμβρὶ μετὰ Θαμνί. Ἐν τῷ ἔτει τῷ τριακοστῷ καὶ πρώτῳ τοῦ βασιλέως Ἀσὰ βασιλεύει Ἀμβρὶ ἐπὶ Ἰσραὴλ δώδεκα ἔτη· ἐν Θερσᾷ βασιλεύει ἓξ ἔτη. Καὶ ἐκτήσατο Ἀμβρὶ τὸ ὄρος τὸ Σεμερὼν παρὰ Σεμὴρ τοῦ κυρίου τοῦ ὄρους ἐν δύο ταλάντων ἀργυρίου· καὶ ᾠκοδόμησε τὸ ὄρος, καὶ ἐπεκάλεσαν τὸ ὄνομα τοῦ ὄρους οὗ ᾠκοδόμησαν ἐπὶε τῷ ὀνόματι Σεμὴρ τοῦ κυρίου τοῦ ὄρους, Σεμηρών. Καὶ ἐποίησεν Ἀμβρὶ τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐπονηρεύσατο ὑπὲρ πάντας τοὺς γενομένους ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν πάσῃ ὁδῷ Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ αἷς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, τοῦ παροργίσαι τὸν Κύριον Θεὸν Ἰσραὴλ ἐν τοῖς ματαίοις αὐτῶν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀμβρὶ καὶ πάντα ἃ ἐποίησε, καὶ πᾶσα ἡ δυναστεία αὐτοῦ, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τῶν βασιλέων Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἀμβρὶ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ θάπτεται ἐν Σαμαρείᾳ, καὶ βασιλεύει Ἀχαὰβ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’

αὐτοῦ. Ἐν ἔτει δευτέρῳ τοῦ Ἰωσαφὰτ βασιλέως Ἰούδα, Ἀχαὰβ υἱὸς Ἀμβρὶ ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ εἴκοσι καὶ δύο ἔτη. Καὶ ἐποίησεν Ἀχαὰβ τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐπονηρεύσατο ὑπὲρ πάντας τοὺς ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ οὐκ ἦν αὐτῷ ἱκανὸν τοῦ πορεύεσθαι ἐν ταῖς ἁμαρτίαις Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, καὶ ἔλαβε γυναῖκα τὴν Ἰεζάβελ θυγατέρα Ἰεθεβαὰλ βασιλέως Σιδωνίων· καὶ ἐπορεύθη καὶ ἐδούλευσε τῷ Βάαλ, καὶ προσεκύνησεν αὐτῷ. Καὶ ἔστησε θυσιαστήριον τῷ Βάαλ ἐν οἴκῳ τῶν προσοχθισμάτων αὐτοῦ, ὃν ᾠκοδόμησεν ἐν Σαμαρείᾳ. Καὶ ἐποίησεν Ἀχαὰβ ἄλσος· καὶ προσέθηκεν Ἀχαὰβ τοῦ ποιῆσαι παροργίσματα, τοῦ παροργίσαι τὸν Κύριον Θεὸν τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐξολοθρευθῆναι, ἐκακοποίησεν ὑπὲρ πάντας τοὺς βασιλεῖς Ἰσραὴλ τοὺς γενομένους ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ ᾠκοδόμησεν Ἀχιὴλ ὁ Βαιθηλίτης τὴν Ἰεριχώ· ἐν τῷ Ἀβιρὼν πρωτοτόκῳ αὐτοῦ ἐθεμελίωσεν αὐτὴν, καὶ τῷ Σεγοὺβ τῷ νεωτέρῳ αὐτοῦ ἐπέστησε θύρας αὐτῆς, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου, ὃ ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἰησοῦ υἱοῦ Ναυῆ.

# 17

Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ ὁ προφήτης Θεσβίτης ὁ ἐκ Θεσβῶν τῆς Γαλαὰδ πρὸς Ἀχαὰβ, ζῇ Κύριος ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ᾧ παρέστην ἐνώπιον αὐτοῦ, εἰ ἔσται τὰ ἔτη ταῦτα δρόσος καὶ ὑετὸς, ὅτι εἰ μὴ διὰ στόματος λόγου μου. Καὶ ἐγένετο ῥῆμα Κυρίου πρὸς Ἠλιοὺ, πορεύου ἐντεῦθεν κατὰ ἀνατολὰς, καὶ κρύβηθι ἐν τῷ χειμάῤῥῳ Χοῤῥαθ τοῦ ἐπὶ προσώπου τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἔσται ἐκ τοῦ χειμάῤῥου πίεσαι ὕδωρ, καὶ τοῖς κόραξιν ἐντελοῦμαι

διατρέφειν σε ἐκεῖ. Καὶ ἐποίησεν Ἠλιοὺ κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου, καὶ ἐκάθισεν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ Χοῤῥὰθ ἐπὶ προσώπου τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ οἱ κόρακες ἔφερον αὐτῷ ἄρτους τοπρωΐ, καὶ κρέα τοδείλης, καὶ ἐκ τοῦ χειμάῤῥου ἔπινεν ὕδωρ. Καὶ ἐγένετο μεθ’ ἡμέρας, καὶ ἐξηράνθη ὁ χειμάῤῥους, ὅτι οὐκ ἐγένετο ὑετὸς ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐγένετο ῥῆμα Κυρίου πρὸς Ἠλιοὺ, ἀνάστηθι, καὶ πορεύου εἰς Σαρεπτὰ τῆς Σιδωνίας· ἰδοὺ ἐντέταλμαι ἐκεῖ γυναικὶ χήρᾳ τοῦ διατρέφειν σε. Καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθη εἰς Σαρεπτὰ, καὶ ἦλθεν εἰς τὸν πυλῶνα τῆς πόλεως· καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ γυνὴ χήρα συνέλεγε ξύλα· καὶ ἐβόησεν ὀπίσω αὐτῆς Ἠλιοὺ, καὶ εἶπεν αὐτῇ, λάβε δή μοι ὀλίγον ὕδωρ εἰς ἄγγος, καὶ πίομαι. Καὶ ἐπορεύθη λαβεῖν, καὶ ἐβόησεν ὀπίσω αὐτῆς Ἠλιοὺ, καὶ εἶπε, λήψῃ δή μοι ψωμὸν ἄρτου τοῦ ἐν τῇ χειρί σου. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ, ζῇ Κύριος ὁ Θεός σου, εἰ ἔστι μοι ἐγκρυφίας, ἀλλ’ ἢ ὅσον δρὰξ ἀλεύρου ἐν τῇ ὑδρίᾳ, καὶ ὀλίγον ἔλαιον ἐν τῷ καψάκῃ· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ συλλέξω δύο ξυλάρια, καὶ εἰσελεύσομαι καὶ ποιήσω αὐτὸ ἐμαυτῇ καὶ τοῖς τέκνοις μου, καὶ φαγόμεθα, καὶ ἀποθανούμεθα. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν Ἠλιοὺ, θάρσει, εἴσελθε καὶ ποίησον κατὰ τὸ ῥῆμά σου· ἀλλὰ ποίησόν μοι ἐκεῖθεν ἐγκρυφίαν μικρὸν, καὶ ἐξοίσεις μοι ἐν πρώτοις, σαυτῇ δὲ καὶ τοῖς τέκνοις σου ποιήσεις ἐπ’ ἐσχάτῳ· Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, ἡ ὑδρία τοῦ ἀλεύρου οὐκ ἐκλείψει, καὶ ὁ καψάκης τοῦ ἐλαίου οὐκ ἐλαττονήσει, ἕως ἡμέρας τοῦ δοῦναι Κύριον τὸν ὑετὸν ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐπορεύθη ἡ γυνὴ, καὶ ἐποίησε, καὶ ἤσθιεν αὐτὴ καὶ αὐτὸς καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς. Καὶ ἡ ὑδρία τοῦ ἀλεύρου οὐκ ἐξέλιπε, καὶ ὁ καψάκης τοῦ ἐλαίου οὐκ ἠλαττονήθη, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου ὃ ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἠλιού. Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα, καὶ ἠῤῥώστησεν ὁ υἱὸς τῆς γυναικὸς τῆς κυρίας τοῦ οἴκου· καὶ ἦν ἡ ἀῤῥωστία αὐτοῦ κραταιὰ σφόδρα ἕως οὐχ ὑπελείφθη ἐν αὐτῷ

πνεῦμα. Καὶ εἶπε πρὸς Ἠλιοὺ, τί ἐμοὶ καὶ σοὶ ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ; εἰσῆλθες πρὸς μὲ τοῦ ἀναμνῆσαι ἀδικίας μου, καὶ θανατῶσαι τὸν υἱόν μου; Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς τὴν γυναῖκα, δός μοι τὸν υἱόν σου· καὶ ἔλαβεν αὐτὸν ἐκ τοῦ κόλπου αὐτῆς, καὶ ἀνήνεγκεν αὐτὸν εἰς τὸ ὑπερῷον ἐν ᾧ αὐτὸς ἐκάθητο ἐκεῖ, καὶ ἐκοίμισεν αὐτὸν ἐπὶ τῆς κλίνης. Καὶ ἀνεβόησεν Ἠλιοὺ, καὶ εἶπεν, οἵ μοι Κύριε, ὁ μάρτυς τῆς χήρας μεθ’ ἧς ἐγὼ κατοικῶ μετ’ αὐτῆς, σὺ κεκάκωκας τοῦ θανατῶσαι τὸν υἱὸν αὐτῆς. Καὶ ἐνεφύσησε τῷ παιδαρίῳ τρὶς, καὶ ἐπεκαλέσατο τὸν Κύριον, καὶ εἶπε, Κύριε ὁ Θεός μου, ἐπιστραφήτω δὴ ἡ ψυχὴ τοῦ παιδαρίου τούτου εἰς αὐτόν. Καὶ ἐγένετο οὕτως· καὶ ἀνεβόησε τὸ παιδάριον. Καὶ κατήγαγεν αυτὸ ἀπὸ τοῦ ὑπερῴου εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἔδωκεν αὐτὸ τῇ μητρὶ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, βλέπε, ζῇ ὁ υἱός σου. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ πρὸς Ἠλιοὺ, ἰδοὺ ἔγνωκα ὅτι σὺ ἄνθρωπος Θεοῦ, καὶ ῥῆμα Κυρίου ἐν τῷ στόματί σου ἀληθινόν.

# 18

Καὶ ἐγένετο μεθ’ ἡμέρας πολλὰς, καὶ ῥῆμα Κυρίου ἐγένετο πρὸς Ἠλιοὺ ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ τρίτῳ, λέγων, πορεύθητι, καὶ ὄφθητι τῷ Ἀχαὰβ, καὶ δώσω ὑετὸν ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς. Καὶ ἐπορεύθη Ἠλιοὺ τοῦ ὀφθῆναι τῷ Ἀχαὰβ, καὶ ἡ λιμὸς κραταιὰ ἐν Σαμαρείᾳ. Καὶ ἐκάλεσεν Ἀχαὰβ τὸν Ἀβδιοὺ τὸν οἰκονόμον· καὶ Ἀβδιοὺ ἦν φοβούμενος τὸν Κύριον σφόδρα. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τύπτειν τὴν Ἰεζάβελ τοὺς προφήτας Κυρίου, καὶ ἔλαβεν Ἀβδιοὺ ἑκατὸν ἄνδρας προφήτας καὶ κατέκρυψεν αὐτοὺς κατὰ πεντήκοντα ἐν σπηλαίῳ, καὶ διέτρεφεν αὐτοὺς ἐν ἄρτῳ καὶ ὕδατι. Καὶ εἶπεν Ἀχαὰβ πρὸς Ἀβδιοὺ, δεῦρο, καὶ διέλθωμεν ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ἐπὶ πηγὰς τῶν

ὑδάτων καὶ ἐπὶ χειμάῤῥους, ἐὰν πῶς εὕρωμεν βοτάνην, καὶ περιποιησώμεθα ἵππους καὶ ἡμιόνους, καὶ οὐκ ἐξολοθρευθήσονται ἀπὸ τῶν σκηνῶν. Καὶ ἐμέρισαν ἑαυτοῖς τὴν ὁδὸν τοῦ διελθεῖν αὐτήν· Ἀχαὰβ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ μιᾷ, καὶ Ἀβδιοὺ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ ἄλλῃ μόνος. Καὶ ἦν Ἀβδιοὺ ἐν τῇ ὁδῷ μόνος· καὶ ἦλθεν Ἠλιοὺ εἰς συνάντησιν αὐτοῦ μόνος· καὶ Ἀβδιοὺ ἔσπευσε καὶ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, εἰ σὺ εἶ αὐτὸς, κύριέ μου Ἠλιού; Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ αὐτῷ, ἐγώ· πορεύου, λέγε τῷ κυρίῳ σου, ἰδοὺ Ἠλιού. Καὶ εἶπεν Ἀβδιοὺ, τί ἡμάρτηκα, ὅτι δίδως τὸν δοῦλόν σου εἰς χεῖρα Ἀχαὰβ τοῦ θανατῶσαί με; Ζῇ Κύριος ὁ Θεός σου, εἰ ἔστιν ἔθνος ἢ βασιλεία, οὗ οὐκ ἀπέστειλεν ὁ κύριός μου ζητεῖν σε· καὶ εἰ εἶπον, οὐκ ἔστι, καὶ ἐνέπρησε τὴν βασιλείαν καὶ τὰς χώρας αὐτῆς, ὅτι οὐχ εὕρηκέ σε. Καὶ νῦν σὺ λέγεις, πορεύου, ἀνάγγελε τῷ κυρίῳ σου, ἰδοὺ Ἠλιού. Καὶ ἔσται ἐὰν ἐγὼ ἀπέλθω ἀπὸ σοῦ, καὶ πνεῦμα Κυρίου ἀρεῖ σε εἰς τὴν γῆν ἣν οὐκ οἶδα, καὶ εἰσελεύσομαι ἀπαγγεῖλαι τῷ Ἀχαὰβ, καὶ οὐχ εὑρήσει σε, καὶ ἀποκτενεῖ με· καὶ ὁ δοῦλός σου ἐστὶ φοβούμενος τὸν Κύριον ἐκ νεότητος αὐτοῦ. Ἦ οὐκ ἀπηγγέλη σοι τῷ κυρίῳ μου, οἷα πεποίηκα ἐν τῷ ἀποκτείνειν τὴν Ἰεζάβελ τοὺς προφήτας Κυρίου, καὶ ἔκρυψα ἀπὸ τῶν προφητῶν Κυρίου ἑκατὸν ἄνδρας, ἀνὰ πεντήκοντα ἐν σπηλαίῳ, καὶ ἔθρεψα ἐν ἄρτοις καὶ ὕδατι; Καὶ νῦν σὺ λέγεις μοι, πορεύου, λέγε τῷ κυρίῳ σου, ἰδοὺ Ἠλιού· καὶ ἀποκτενεῖ με. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, ζῇ Κύριος τῶν δυνάμεων ᾧ παρέστην ἐνώπιον αὐτοῦ, ὅτι σήμερον ὀφθήσομαι αὐτῷ. Καὶ ἐπορεύθη Ἀβδιοὺ εἰς συναντὴν τῷ Ἀχαὰβ, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ· καὶ ἐξέδραμεν Ἀχαὰβ, καὶ ἐπορεύθη εἰς συνάντησιν Ἠλιού. Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδεν Ἀχαὰβ τὸν Ἠλιού, καὶ εἶπεν Ἀχαὰβ πρὸς Ἠλιοὺ, εἰ σὺ εἶ αὐτὸς ὁ διαστρέφων τὸν Ἰσραήλ; Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, οὐ διαστρέφω τὸν Ἰσραὴλ, ὅτι ἀλλ’ ἢ σὺ καὶ οἶκος

τοῦ πατρός σου, ἐν τῷ καταλιμπάνειν ὑμᾶς τὸν Κύριον Θεὸν ὑμῶν, καὶ ἐπορεύθης ὀπίσω τῶν Βααλίμ. Καὶ νῦν ἀπόστειλον, συνάθροισον πρὸς μὲ πάντα Ἰσραὴλ εἰς ὄρος τὸ Καρμήλιον, καὶ τοὺς προφήτας τῆς αἰσχύνης τετρακοσίους καὶ πεντήκοντα, καὶ τοὺς προφήτας τῶν ἀλσῶν τετρακοσίους ἐσθίοντας τράπεζαν Ἰεζάβελ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀχαὰβ εἰς πάντα Ἰσραὴλ, καὶ ἐπισυνήγαγεπάντας τοὺς προφήτας εἰς ὄρος τὸ Καρμήλιον. Καὶ προσήγαγεν Ἠλιοὺ πρὸς πάντας· καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἠλιοὺ, ἕως πότε ὑμεῖς χωλανεῖτε ἐπ’ ἀμφοτέραις ταῖς ἰγνύαις· εἰ ἔστι Κύριος ὁ Θεὸς, πορεύεσθε ὀπίσω αὐτοῦ· εἰ δὲ Βάαλ, πορεύεσθε ὀπίσω αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἀπεκρίθη ὁ λαὸς λόγον. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς τὸν λαόν, ἐγὼ ὑπολέλειμμαι προφήτης τοῦ Κυρίου μονώτατος· καὶ οἱ προφῆται τοῦ Βάαλ τετρακόσιοι καὶ πεντήκοντα ἄνδρες, καὶ οἱ προφῆται τοῦ ἄλσους τετρακόσιοι· Δότωσαν ἡμῖν δύο βόας, καὶ ἐκλεξάσθωσαν ἑαυτοῖς τὸν ἕνα, καὶ μελισάτωσαν, καὶ ἐπιθέτωσαν ἐπὶ τῶν ξύλων, καὶ πῦρ μὴ ἐπιθέτωσαν· καὶ ἐγὼ ποιήσω τὸν βοῦν τὸν ἄλλον, καὶ πῦρ οὐ μὴ ἐπιθῶ. Καὶ βοᾶτε ἐν ὀνόματι θεῶν ὑμῶν, καὶ ἐγὼ ἐπικαλέσομαι ἐν τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ μου· καὶ ἔσται ὁ θεὸς ὃς ἂν ἐπακούσῃ ἐν πυρὶ, οὗτος Θεός· καὶ ἀπεκρίθησαν πᾶς ὁ λαὸς, καὶ εἶπον, καλὸν τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησας. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ τοῖς προφήταις τῆς αἰσχύνης, ἐκλέξασθε ἑαυτοῖς τὸν μόσχον τὸν ἕνα, καὶ ποιήσατε πρῶτοι, ὅτι πολλοὶ ὑμεῖς· καὶ ἐπικαλέσασθε ἐν ὀνόματι θεοῦ ὑμῶν, καὶ πῦρ μὴ ἐπιθῆτε. Καὶ ἔλαβον τὸν μόσχον καὶ ἐποίησαν, καὶ ἐπεκαλοῦντο ἐν ὀνόματι τοῦ Βάαλ ἐκ πρωΐθεν ἕως μεσημβρίας, καὶ εἶπον, ἐπάκουσον ἡμῶν ὁ Βάαλ, ἐπάκουσον ἡμῶν· καὶ οὐκ ἦν φωνὴ, καὶ οὐκ ἦν ἀκρόασις· καὶ διέτρεχον ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου οὗ ἐποίησαν. Καὶ ἐγένετο μεσημβρία, καὶ ἐμυκτήρισεν αὐτοὺς Ἠλιοὺ ὁ Θεσβίτης, καὶ εἶπεν, ἐπικαλεῖσθε ἐν

φωνῇ μεγάλῃ, ὅτι θεός ἐστιν· ὅτι ἀδολεσχία αὐτῷ ἐστι, καὶ ἅμα μή ποτε χρηματίζει αὐτὸς, ἢ μή ποτε καθεύδει αὐτὸς, καὶ ἐξαναστήσεται. Καὶ ἐπεκαλοῦντο ἐν φωνῇ μεγάλῃ, καὶ κατετέμνοντο κατὰ τὸν ἐθισμὸν αὐτῶν ἐν μαχαίραις καὶ σειρομάσταις ἕως ἐκχύσεως αἵματος ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ προεφήτευον ἕως οὗ παρῆλθε τὸ δειλινόν· καὶ ἐγένετο ὡς ὁ καιρὸς τοὺ ἀναβῆναι τὴν θυσίαν, καὶ ἐλάλησεν Ἠλιοὺ ὁ Θεσβίτης πρὸς τοὺς προφήτας τῶν προσοχθισμάτων, λέγων, μετάστητε ἀπὸ τοῦ νῦν, καὶ ἐγὼ ποιήσω τὸ ὁλοκαύτωμά μου· καὶ μετέστησαν, καὶ ἀπῆλθον. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς τὸν λαὸν, προσαγάγετε πρὸς μέ· καὶ προσήγαγε πᾶς ὁ λαὸς πρὸς αὐτόν. Καὶ ἔλαβεν Ἠλιοὺ δώδεκα λίθους κατὰ ἀριθμὸν φυλῶν τοῦ Ἰσραὴλ, ὡς ἐλάλησε Κύριος πρὸς αὐτὸν, λέγων, Ἰσραὴλ ἔσται τὸ ὄνομά σου. Καὶ ᾠκοδόμησε τοὺς λίθους ἐν ὀνόματι Κυρίου, καὶ ἰάσατο τὸ θυσιαστήριον τὸ κατεσκαμμένον· καὶ ἐποίησε θάλασσαν χωροῦσαν δύο μετρητὰς σπέρματος κυκλόθεν τοῦ θυσιαστηρίου· Καὶ ἐστοίβασε τὰς σχίδακας ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον ὃ ἐποίησε, καὶ ἐμέλισε τὸ ὁλοκαύτωμα καὶ ἐπέθηκεν ἐπὶ τὰς σχίδακας, καὶ ἐστοίβασεν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ εἶπε, λάβετέ μοι τέσσαρας ὑδρίας ὕδατος, καὶ ἐπιχέετε ἐπὶ τὸ ὁλοκαύτωμα καὶ ἐπὶ τὰς σχίδακας· καὶ ἐποίησαν οὕτως. Καὶ εἶπε, δευτερώσατε· καὶ ἐδευτέρωσαν· καὶ εἶπε, τρισσώσατε· καὶ ἐτρίσσευσαν. Καὶ διεπορεύετο τὸ ὕδωρ κύκλῳ τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ τὴν θάλασσαν ἔπλησαν ὕδατος. Καὶ ἀνεβόησεν Ἠλιοὺ εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ εἶπε, Κύριε ὁ Θεὸς Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰσραήλ, ἐπάκουσόν μου Κύριε, ἐπάκουσόν μου σήμερον ἐν πυρί, καὶ γνώτωσαν πᾶς ὁ λαὸς οὗτος, ὅτι σὺ εἶ Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, καὶ ἐγὼ δοῦλός σου, καὶ διὰ σὲ πεποίηκα τὰ ἔργα ταῦτα. Ἐπάκουσόν μου Κύριε, ἐπάκουσόν μου, καὶ γνώτω ὁ λαὸς οὗτος,

ὅτι σὺ εἶ Κύριος ὁ Θεὸς, καὶ σὺ ἔστρεψας τὴν καρδίαν τοῦ λαοῦ τούτου ὀπίσω. Καὶ ἔπεσε πῦρ παρὰ Κυρίου ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέφαγε τὰ ὁλοκαυτώματα καὶ τὰς σχίδακας καὶ τὸ ὕδωρ τὸ ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ τοὺς λίθους καὶ τὸν χοῦν ἐξέλειξε τὸ πῦρ. Καὶ ἔπεσε πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ πρόσωπον αὐτῶν, καὶ εἶπον, ἀληθῶς Κύριος ὁ Θεὸς αὐτὸς ὁ Θεός. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς τὸν λαὸν, συλλάβετε τοὺς προφήτας τοῦ Βάαλ, μηδεὶς σωθήτω ἐξ αὐτῶν· καὶ συνελαβον αὐτοὺς, καὶ κατάγει αὐτοὺς Ἠλιοὺ εἰς τὸν χειμάῤῥουν Κισσῶν, καὶ ἔσφαξεν αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ τῷ Ἀχαὰβ, ἀνάβηθι, καὶ φάγε καὶ πίε, ὅτι φωνὴ τῶν ποδῶν τοῦ ὑετοῦ. Καὶ ἀνέβη Ἀχαὰβ τοῦ φαγεῖν καὶ πιεῖν· καὶ Ἠλιοὺ ἀνέβη ἐπὶ τὴν Κάρμηλον καὶ ἔκυψεν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἔθηκε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀναμέσον τῶν γονάτων αὐτοῦ, καὶ εἶπε τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ, ἀνάβηθι, καὶ ἐπίβλεψον ὁδὸν τῆς θαλάσσης· καὶ ἐπέβλεψε τὸ παιδάριον, καὶ εἶπεν, οὐκ ἔστιν οὐθέν· καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, καὶ σὺ ἐπίστρεψον ἑπτάκις. Καὶ ἐπέστρεψε τὸ παιδάριον ἑπτάκις· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑβδόμῳ, καὶ ἰδοὺ νεφέλη μικρὰ ὡς ἴχνος ἀνδρὸς ἀνάγουσα ὕδωρ· καὶ εἶπεν, ἀνάβηθι, καὶ εἶπον Ἀχαὰβ, ζεῦξον τὸ ἅρμα σου καὶ κατάβηθι, μὴ καταλάβῃ σε ὁ ὑετός. Καὶ ἐγένετο ἕως ὧδε καὶ ὧδε, καὶ ὁ οὐρανὸς συνεσκότασε νεφέλαις καὶ πνεύματι, καὶ ἐγένετο ὑετὸς μέγας· καὶ ἔκλαιε καὶ ἐπορεύετο Ἀχαὰβ ἕως Ἰεζράελ. Καὶ χεὶρ Κυρίου ἐπὶ τὸν Ἠλιοὺ, καὶ συνέσφιγξε τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἔτρεχεν ἔμπροσθεν Ἀχαὰβ εἰς Ἰεζράελ.

# 19

Καὶ ἀνήγγειλεν Ἀχαὰβ τῇ Ἰεζάβελ γυναικὶ αὐτοῦ πάντα ἃ ἐποίησεν

Ἠλιοὺ, καὶ ὡς ἀπέκτεινε τοὺς προφήτας ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰεζάβελ πρὸς Ἠλιοὺ, καὶ εἶπεν, εἰ σὺ εἶ Ἠλιοὺ καὶ ἐγὼ Ἰεζάβελ, τάδε ποιήσαι μοι ὁ θεὸς καὶ τάδε προσθείη, ὅτι ταύτην τὴν ὥραν αὔριον θήσομαι τὴν ψυχήν σου καθὼς ψυχὴν ἑνὸς ἐξ αὐτῶν. Καὶ ἐφοβήθη Ἠλιοὺ, καὶ ἀνέστη καὶ ἀπῆλθε κατὰ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ ἔρχεται εἰς Βηρσαβεὲ γῆν Ἰούδα, καὶ ἀφῆκε τὸ παιδάριον αὐτοῦ ἐκεῖ. Καὶ αὐτὸς ἐπορεύθη ἐν τῇ ἐρήμῳ ὁδὸν ἡμέρας, καὶ ἦλθε καὶ ἐκάθισεν ὑποκάτω ῥαθμὲν, καὶ ᾐτήσατο τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἀποθανεῖν· καὶ εἶπεν, ἱκανούσθω νῦν, λάβε δὴ τὴν ψυχήν μου ἀπ’ ἐμοῦ Κύριε, ὅτι οὐ κρείσσων ἐγώ εἰμι ὑπὲρ τοὺς πατέρας μου. Καὶ ἐκοιμήθη καὶ ὕπνωσεν ἐκεῖ ὑπὸ φυτόν· καὶ ἰδού τις ἥψατο αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀνάστηθι καὶ φάγε. Καὶ ἐπέβλεψεν Ἠλιού· καὶ ἰδοὺ πρὸς κεφαλῆς αὐτοῦ ἐγκρυφίας ὀλυρίτης καὶ καψάκης ὕδατος· καὶ ἀνέστη καὶ ἔφαγε καὶ ἔπιε, καὶ ἐπιστρέψας ἐκοιμήθη. Καὶ ἐπέστρεψεν ὁ ἄγγελος Κυρίου ἐκ δευτέρου, καὶ ἥψατο αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ἀνάστα, φάγε, ὅτι πολλὴ ἀπὸ σοῦ ἡ ὁδός. Καὶ ἀνέστη, καὶ ἔφαγε, καὶ ἔπιε· καὶ ἐπορεύθη ἐν ἰσχύϊ τῆς ρώσεως ἐκείνης τεσσαράκοντα ἡμέρας καὶ τεσσαράκοντα νύκτας ἕως ὄρους Χωρήβ. Καὶ εἰσῆλθεν ἐκεῖ εἰς τὸ σπήλαιον, καὶ κατέλυσεν ἐκεῖ· καὶ ἰδοὺ ῥῆμα Κυρίου πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπε, τί σὺ ἐνταῦθα Ἠλιού; Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, ζηλῶν ἐζήλωκα τῷ Κυρίῳ παντοκράτορι, ὅτι ἐγκατέλιπόν σε οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· τὰ θυσιαστήριά σου κατέσκαψαν, καὶ τοὺς προφήτας σου ἀπέκτειναν ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ὑπολέλειμμαι ἐγὼ μονώτατος, καὶ ζητοῦσι τὴν ψυχήν μου λαβεῖν αὐτήν. Καὶ εἶπεν, ἐξελεύσῃ αὔριον, καὶ στήσῃ ἐνώπιον Κυρίου ἐν τῷ ὄρει· ἰδοὺ παρελεύσεται Κύριος. Καὶἰδοὺ πνεῦμα μέγα κραταιὸν διαλύον ὄρη καὶ συντρίβον πέτρας ἐνώπιον Κυρίου, οὐκ ἐν τῷ πνεύματι Κύριος· καὶ μετὰ τό πνεῦμα

συσσεισμὸς, οὐκ ἐν τῷ συσσεισμῷ Κύριος· Καὶ μετὰ τὸν συσσεισμὸν πῦρ, οὐκ ἐν τῷ πυρὶ Κύριος· καὶ μετὰ τὸ πῦρ φωνὴ αὔρας λεπτῆς. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν Ἠλιοὺ, καὶ ἐπεκάλυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν τῇ μηλωτῇ αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθε καὶ ἔστη ὑπὸ σπήλαιον· καὶ ἰδοὺ πρὸς αὐτὸν φωνὴ, καὶ εἶπε, τί σὺ ἐνταῦθα Ἠλιού; Καὶ εἶπεν Ἠλιού, ζηλῶν ἐζήλωκα τῷ Κυρίῳ παντοκράτορι, ὅτι ἐγκατέλιπον τὴν διαθήκην σου οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ· καὶ τὰ θυσιαστήριά σου καθεῖλαν, καὶ τοὺς προφήτας σου ἀπέκτειναν ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ὑπολέλειμμαι ἐγὼ μονώτατος, καὶ ζητοῦσι τὴν ψυχήν μου λαβεῖν αὐτήν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς αὐτὸν, πορεύου, ἀνάστρεφε εἰς τὴν ὁδόν σου, καὶ ἥξεις εἰς τὴν ὁδὸν ἐρήμου Δαμασκοῦ· καὶ ἥξεις καὶ χρίσεις τὸν Ἀζαὴλ εἰς βασιλέα τῆς Συρίας· Καὶ τὸν Ἰοὺ υἱὸν Ναμεσσὶ χρίσεις εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ τὸν Ἐλισαιὲ υἱὸν Σαφὰτ χρίσεις εἰς προφήτην ἀντὶ σοῦ. Καὶ ἔσται τὸν σωζόμενον ἐκ ῥομφαίας Ἀζαὴλ, θανατώσει Ἰού· καὶ τὸν σωζόμενον ἐκ ῥομφαίας Ἰοὺ, θανατώσει Ἐλισαιέ. Καὶ καταλείψεις ἐν Ἰσραὴλ ἑπτὰ χιλιάδας ἀνδρῶν, πάντα γόνατα ἃ οὐκ ὤκλασαν γόνυ τῷ Βάαλ, καὶ πᾶν στόμα ὃ οὐ προσεκύνησεν αὐτῷ. Καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν καὶ εὑρίσκει τὸν Ἐλισαιὲ υἱὸν Σαφὰτ, καὶ αὐτὸς ἠροτρία ἐν βουσί· δώδεκα ζεύγη ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δώδεκα· καὶ ἀπῆλθεν ἐπ’ αὐτὸν, καὶ ἐπέῤῥιψε τὴν μηλωτὴν αὐτοῦ ἐπ’ αὐτόν. Καὶ κατέλιπεν Ἐλισαιὲ τὰς βόας, καὶ κατέδραμεν ὀπίσω Ἠλιοὺ, καὶ εἶπε, καταφιλήσω τὸν πατέρα μου, καὶ ἀκολουθήσω ὀπίσω σοῦ· καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, ἀνάστρεφε, ὅτι πεποίηκά σοι. Καὶ ἀνέστρεψεν ἐξ ὄπισθεν αὐτοῦ· καὶ ἔλαβε τὰ ζεύγη τῶν βοῶν, καὶ ἔθυσε καὶ ἥψησεν αὐτὰ ἐν τοῖς σκεύεσι τῶν βοῶν, καὶ ἔδωκε τῷ λαῷ, καὶ ἔφαγον· καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθη ὀπίσω Ἠλιοὺ, καὶ ἐλειτούργει αὐτῷ.

# 20

Καὶ ἀμπελὼν εἷς ἦν τῷ Ναβουθαὶ τῷ Ἰεζραηλίτῃ παρὰ τῇ ἅλῳ Ἀχαὰβ βασιλέως Σαμαρείας. Καὶ ἐλάλησεν Ἀχαὰβ πρὸς Ναβουθαὶ, λέγων, δός μοι τὸν ἀμπελῶνά σου, καὶ ἔσται μοι εἰς κῆπον λαχάνων, ὅτι ἐγγίζων οὗτος τῷ οἴκῳ μου, καὶ δώσω σοι ἀμπελῶνα ἄλλον ἀγαθὸν ὑπὲρ αὐτόν· εἰ δὲ ἀρέσκει ἐνώπιόν σου, δώσω σοι ἀργύριον ἄλλαγμα ἀμπελῶνός σου τούτου, καὶ ἔσται μοι εἰς κῆπον λαχάνων. Καὶ εἶπε Ναβουθαὶ πρὸς Ἀχαάβ, μὴ γένοιτό μοι παρὰ Θεοῦ μου δοῦναι κληρονομίαν πατέρων μου σοί. Καὶ ἐγένετο τὸ πνεῦμα Ἀχαὰβ τεταραγμένον, καὶ ἐκοιμήθη ἐπὶ τῆς κλίνης αὐτοῦ, καὶ συνεκάλυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔφαγεν ἄρτον. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰεζάβελ ἡ γυνὴ αὐτοῦ πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, τί τὸ πνεῦμά σου τεταραγμένον, καὶ οὐκ εἶ σὺ ἐσθίων ἄρτον; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν, ὅτι ἐλάλησα πρὸς Ναβουθαὶ τὸν Ἰεζραηλίτην, λέγων, δός μοι τὸν ἀμπελῶνά σου ἀργυρίου· εἰ δὲ βούλῃ, δώσω σοι ἀμπελῶνα ἄλλον ἀντ’ αὐτοῦ· καὶ εἶπεν οὐ δώσω σοι κληρονομίαν πατέρων μου. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἰεζάβελ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, σὺ νῦν οὕτω ποιεῖς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ; ἀνάστηθι καὶ φάγε ἄρτον καὶ σαυτοῦ γενοῦ, ἐγὼ δὲ δώσω σοι τὸν ἀμπελῶνα Ναβουθαὶ τοῦ Ἰεζραηλίτου. Καὶ ἔγραψε βιβλίον ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἀχαὰβ, καὶ ἐσφραγίσατο τῇ σφραγίδι αὐτοῦ· καὶ ἀπέστειλε τὸ βιβλίον πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους καὶ τοὺς ἐλευθέρους τοὺς κατοικοῦντας μετὰ Ναβουθαί. Καὶ ἐγέγραπτο ἐν τοῖς βιβλίοις, λέγων, νηστεύσατε νηστείαν, καὶ καθίσατε τὸν Ναβουθαὶ ἐν ἀρχῇ τοῦ λαοῦ· Καὶ ἐγκαθίσατε δύο ἄνδρας υἱοὺς παρανόμων ἐξεναντίας αὐτοῦ, καὶ καταμαρτυρησάτωσαν αὐτοῦ, λέγοντες,

εὐλόγησε Θεὸν καὶ βασιλέα· καὶ ἐξαγαγέτωσαν αὐτὸν, καὶ λιθοβοληςάτωσαν αὐτὸν, καὶ ἀποθανέτω. Καὶ ἐποίησαν οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως αὐτοῦ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ ἐλεύθεροι οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ πόλει αὐτοῦ, καθὼς ἀπέστειλε πρὸς αὐτοὺς Ἰεζάβελ, καὶ καθὰ ἐγέγραπτο ἐν τοῖς βιβλίοις οἷς ἀπέστειλε πρὸς αὐτούς. Καὶ ἐκάλεσαν νηστείαν, καὶ ἐκάθισαν τὸν Ναβουθαὶ ἐν ἀρχῇ τοῦ λαοῦ. Καὶ εἰσῆλθον δύο ἄνδρες υἱοὶ παρανόμων, καὶ ἐκάθισαν ἐξεναντίας αὐτοῦ, καὶ κατεμαρτύρησαν αὐτοῦ, λέγοντες, εὐλόγηκας Θεὸν καὶ βασιλέα· καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν ἔξω τῆς πόλεως, καὶ ἐλιθοβόλησαν αὐτὸν ἐν λίθοις, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἀπέστειλαν πρὸς Ἰεζάβελ, λέγοντες, λελιθοβόληται Ναβουθαὶ, καὶ τέθνηκε. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν Ἰεζάβελ, καὶ εἶπε πρὸς Ἀχαὰβ, ἀνάστα, κληρονόμει τὸν ἀμπελῶνα Ναβουθαὶ τοῦ Ἰεζραηλίτου, ὃς οὐκ ἔδωκέ σοι ἀργυρίου, ὅτι οὐκ ἔστι Ναβουθαὶ ζῶν, ὅτι τέθνηκε. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν Ἀχαὰβ ὅτι τέθνηκε Ναβουθαὶ ὁ Ἰεζραηλίτης, καὶ διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ περιεβάλετο σάκκον· καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα, καὶ ἀνέστη καὶ κατέβη Ἀχαὰβ εἰς τὸν ἀμπελῶνα Ναβουθαὶ τοῦ Ἰεζραηλίτου κληρονομῆσαι αὐτόν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἠλιοὺ τὸν Θεσβίτην, λέγων, ἀνάστηθι καὶ κατάβηθι εἰς ἀπαντὴν Ἀχαὰβ βασιλέως Ἰσραὴλ τοῦ ἐν Σαμαρείᾳ, ὅτι οὗτος ἐν ἀμπελῶνι Ναβουθαὶ, ὅτι καταβέβηκεν ἐκεῖ κληρονομῆσαι αὐτόν. Καὶ λαλήσεις πρὸς αὐτὸν, λέγων, τάδε λέγει Κύριος, ὡς σὺ ἐφόνευσας καὶ ἐκληρονόμησας, διὰ τοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἐν παντὶ τόπῳ ᾧ ἔλειξαν αἱ ὗες καὶ οἱ κύνες τὸ αἷμα Ναβουθαὶ, ἐκεῖ λείξουσιν οἱ κύνες τὸ αἷμά σου, καὶ αἱ πόρναι λούσονται ἐν τῷ αἵματί σου. Καὶ εἶπεν Ἀχαὰβ πρὸς Ἠλιοὺ, εἰ εὕρηκάς με ὁ ἐχθρός μου; καὶ εἶπεν, εὕρηκα· διότι μάτην πέπρασαι ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, παροργίσαι αὐτόν. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ σὲ κακά·

καὶ ἐκκαύσω ὀπίσω σου, καὶ ἐξολοθρεύσω τοῦ Ἀχαὰβ οὐροῦντα πρὸς τοῖχον, καὶ συνεχόμενον καὶ ἐγκαταλελειμμένον ἐν Ἰσραήλ. Καὶ δώσω τὸν οἶκόν σου ὡς τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, καὶ ὡς τὸν οἶκον Βαασὰ υἱοῦ Ἀχιὰ, περὶ τῶν παροργισμάτων ὧν παρώργισας καὶ ἐξήμαρτες τὸν Ἰσραὴλ. Καὶ τῇ Ἰεζάβελ ἐλάλησε Κύριος, λέγων, οἱ κύνες καταφάγονται αὐτὴν ἐν τῷ προτειχίσματι τοῦ Ἰεζράελ· Τὸν τεθνηκότα τοῦ Ἀχαὰβ ἐν τῇ πόλει φάγονται οἱ κύνες, καὶ τὸν τεθνηκότα αὐτοῦ ἐν τῷ πεδίῳ φάγονται τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ. Πλὴν ματαίως Ἀχαὰβ, ὃς ἐπράθη ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, ὡς μετέθηκεν αὐτὸν Ἰεζάβελ ἡ γυνὴ αὐτοῦ. Καὶ ἐβδελύχθη σφόδρα πορεύεσθαι ὀπίσω τῶν βδελυγμάτων, κατὰ πάντα ἃ ἐποίησεν ὁ Ἀμορῥαῖος, ὃν ἐξωλόθρευσε Κύριος ἀπὸ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ὑπὲρ τοῦ λόγου ὡς κατενύγη Ἀχαὰβ ἀπὸ προσώπου τοῦ Κυρίου, καὶ ἐπορεύετο κλαίων, καὶ διεῤῥηξε τὸν χιτῶνα αὐτοῦ, καὶ ἐζώσατο σάκκον ἐπὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ, καὶ ἐνήστευσε· καὶ περιεβάλετο σάκκον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐπάταξε Ναβουθαὶ τὸν Ἰεζραηλίτην, καὶ ἐπορεύθη. Καὶ ἐγένετο ῥῆμα Κυρίου ἐν χειρὶ δούλου αὐτοῦ Ἠλιοὺ περὶ Ἀχαὰβ, καὶ εἶπε Κύριος, ἑώρακας ὡς κατενύγη Ἀχαὰβ ἀπὸ προσώπου μου; οὐκ ἐπάξω τὴν κακίαν ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ, ἀλλ’ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ ἐπάξω τὴν κακίαν.

# 21

Καὶ συνήθροισεν υἱὸς Ἄδερ πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτοῦ, καὶ ἀνέβη καὶ περιεκάθισεν ἐπὶ Σαμάρειαν, καὶ τριακονταδύο βασιλεῖς μετ’ αὐτοῦ, καὶ πᾶς ἵππος καὶ ἅρμα· καὶ ἀνέβησαν καὶ περιεκάθισαν ἐπὶ

Σαμάρειαν, καὶ ἐπολέμησαν ἐπ’ αὐτήν. Καὶ ἀπέστειλε πρὸς Ἀχαὰβ βασιλέα Ἰσραὴλ εἰς τὴν πόλιν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει υἱὸς Ἄδερ, τὸ ἀργύριόν σου καὶ τὸ χρυσίον σου ἐμόν ἐστι, καὶ αἱ γυναῖκές σου καὶ τὰ τέκνα σου ἐμά ἐστι. Καὶ ἀπεκρίθη βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε, καθὼς ἐλάλησας κύριέ μου βασιλεῦ, σὸς ἐγώ εἰμι καὶ πάντα τὰ ἐμά. Καὶ ἀνέστρεψαν οἱ ἄγγελοι, καὶ εἶπαν, τάδε λέγει ὁ υἱὸς Ἄδερ, ἐγὼ ἀπέστειλα πρὸς σὲ, λέγων, τὸ ἀργύριόν σου καὶ τὸ χρυσίον σου καὶ τὰς γυναῖκας καὶ τὰ τέκνα σου δώσεις ἐμοὶ, ὅτι ταύτην τὴν ὥραν αὔριον ἀποστελῶ τοὺς παῖδάς μου πρὸς σὲ, καὶ ἐρευνήσουσι τὸν οἶκόν σου καὶ τοὺς οἴκους τῶν παίδων σου, καὶ ἔσται πάντα τὰ ἐπιθυμήματα τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν ἐφ’ ἃ ἂν ἐπιβάλωσι τὰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ λήψονται. Καὶ ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ πάντας τοὺς πρεσβυτέρους τῆς γῆς, καὶ εἶπε, γνῶτε δὴ καὶ ἴδετε ὅτι κακίαν οὗτος ζητεῖ, ὅτι ἀπέσταλκε πρὸς μὲ περὶ τῶν γυναικῶν μου, καὶ περὶ τῶν υἱῶν μου, καὶ περὶ τῶν θυγατέρων μου· τὸ ἀργύριόν μου καὶ τὸ χρυσίον μου οὐκ ἀπεκώλυσα ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ εἶπαν αὐτῷ οἱ πρεσβύτεροι καὶ πᾶς ὁ λαὸς, μὴ ἀκούσῃς, καὶ μὴ θελήσῃς. Καὶ εἶπε τοῖς ἀγγέλοις υἱοῦ Ἄδερ, λέγετε τῷ κυρίῳ ὑμῶν, πάντα ὅσα ἀπέσταλκας πρὸς τὸν δοῦλόν σου ἐν πρώτοις ποιήσω, τὸ δὲ ῥῆμα τοῦτο οὐ δυνήσομαι ποιῆσαι· καὶ ἀπῆραν οἱ ἄνδρες, καὶ ἐπέστρεψαν αὐτῷ λόγον. Καὶ ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν υἱὸς Ἄδερ, λέγων, τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε προσθείη, εἰ ἐκποιήσει ὁ χοῦς Σαμαρείας ταῖς ἀλώπεξι παντὶ τῷ λαῷ τοῖς πεζοῖς μου. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ εἶπεν, ἱκανούσθω· μὴ καυχάσθω ὁ κυρτὸς, ὡς ὁ ὀρθός. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἀπεκρίθη αὐτῷ τὸν λόγον τοῦτον, πίνων ἦν αὐτὸς καὶ πάντες οἱ βασιλεῖς οἱ μετ’ αὐτοῦ ἐν σκηναῖς· καὶ εἶπε τοῖς παισὶν αὐτοῦ, οἰκοδομήσατε χάρακα· καὶ ἔθεντο χάρακα ἐπὶ τὴν πόλιν.

Καὶ ἰδοὺ προφήτης εἷς προσῆλθε τῷ Ἀχαὰβ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, εἰ ἑώρακας τὸν ὄχλον τὸν μέγαν τοῦτον; ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι αὐτὸν σήμερον εἰς χεῖρας σὰς, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ Κύριος. Καὶ εἶπεν Ἀχαὰβ, ἐν τίνι; καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ἐν τοῖς παιδαρίοις τῶν ἀρχόντων τῶν χωρῶν· καὶ εἶπεν Ἀχαὰβ, τίς συνάψει τὸν πόλεμον; καὶ εἶπε, σύ. Καὶ ἐπεσκέψατο Ἀχαὰβ τοὺς ἄρχοντας τὰ παιδάρια τῶν χωρῶν, καὶ ἐγένοντο διακόσια τριάκοντα· καὶ μετὰ ταῦτα ἐπεσκέψατο τὸν λαὸν πάντα υἱὸν δυνάμεως, ἑπτὰ χιλιάδας. Καὶ ἐξῆλθε μεσημβρίας, καὶ υἱὸς Ἄδερ πίνων μεθύων ἐν Σοκχὼθ αὐτὸς καὶ οἱ βασιλεῖς, τριάκοντα καὶ δύο βασιλεῖς συμβοηθοὶ αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθον ἄρχοντες παιδάρια τῶν χωρῶν ἐν πρώτοις· καὶ ἀποστέλλουσι καὶ ἀπαγγέλλουσι τῷ βασιλεῖ Συρίας, λέγοντες, ἄνδρες ἐξεληλύθασιν ἐκ Σαμαρείας. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, εἰ εἰς εἰρήνην ἐκπορεύονται, συλλαβεῖν αὐτοὺς ζῶντας· καὶ εἰ εἰς πόλεμον, ζῶντας συλλαβεῖν αὐτούς· καὶ μὴ ἐξελθάτωσαν ἐκ τῆς πόλεως ἄρχοντα τὰ παιδάρια τῶν χωρῶν. Καὶ ἡ δύναμις ὀπίσω αὐτῶν ἐπάταξεν ἕκαστος τὸν παρ’ αὐτοῦ· καὶ ἐδευτέρωσιν ἕκαστος τὸν παρ’ αὐτοῦ· καὶ ἔφυγε Συρία· καὶ κατεδίωξεν αὐτοὺς Ἰσραήλ· καὶ σώζεται υἱὸς Ἄδερ βασιλεὺς Συρίας ἐφ’ ἵππου ἱππέως. Καὶ ἐξῆλθεν βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἔλαβε πάντας τοὺς ἵππους καὶ τὰ ἅρματα, καὶ ἐπάταξε πληγὴν μεγάλην ἐν Συρίᾳ. Καὶ προσῆλθεν ὁ προφήτης πρὸς βασιλέα Ἰσραὴλ, καὶ εἶπε, κραταιοῦ καὶ γνῶθι καὶ ἴδε τί ποιήσεις, ὅτι ἐπιστρέφοντος τοῦ ἐνιαυτοῦ υἱὸς Ἄδερ βασιλεὺς Συρίας ἀναβαίνει ἐπὶ σὲ. Καὶ οἱ παῖδες βασιλέως Συρίας· καὶ εἶπον, θεὸς ὀρέων Θεὸς Ἰσραὴλ καὶ οὐ θεὸς κοιλάδων, διὰ τοῦτο ἐκραταίωσεν ὑπὲρ ἡμᾶς· ἐὰν δὲ πολεμήσωμεν αὐτοὺς κατ’ εὐθὺ, εἰ μὴν κραταιώσωμεν ὑπὲρ αὐτούς. Καὶ τὸ ῥῆμα τοῦτο ποίησον· ἀπόστησον τοὺς βασιλεῖς

ἕκαστον εἰς τὸν τόπον αὐτῶν, καὶ θοῦ ἀντ’ αὐτῶν σατράπας, καὶ ἀλλάξομέν σοι δύναμιν κατὰ τὴν δύναμιν τὴν πεσοῦσαν, καὶ ἵππον κατὰ τὴν ἵππον, καὶ ἅρματα κατὰ τὰ ἅρματα, καὶ πολεμήσομεν πρὸς αὐτοὺς κατ’ εὐθὺ, καὶ κραταιώσομεν ὑπὲρ αὐτούς· καὶ ἤκουσε τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ ἐποίησεν οὕτως. Καὶ ἐγένετο ἐπιστρέψαντος τοῦ ἐνιαυτοῦ, καὶ ἐπεσκέψατο υἱὸς Ἄδερ τὴν Συρίαν, καὶ ἀνέβη εἰς Ἀφεκὰ εἰς πόλεμον ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπεσκέπησαν, καὶ παρεγένοντο εἰς ἀπαντὴν αὐτῶν· καὶ παρενέβαλεν Ἰσραὴλ ἐξεναντίας αὐτῶν ὡσεὶ δύο ποίμνια αἰγῶν· καὶ Συρία ἔπλησε τὴν γῆν. Καὶ προσῆλθεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ, καὶ εἶπε τῷ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, τάδε λέγει Κύριος, ἀνθ’ ὧν εἶπε Συρία, θεὸς ὀρέων Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ καὶ οὐ θεὸς κοιλάδων αὐτὸς, καὶ δώσω τὴν δύναμιν τὴν μεγάλην ταύτην εἰς χεῖρα σὴν, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ Κύριος. Καὶ παρεμβάλλουσιν οὗτοι ἀπέναντι τούτων ἑπτὰ ἡμέρας· καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἑβδόμῃ, καὶ προσήγαγεν ὁ πόλεμος, καὶ ἐπάταξεν Ἰσραὴλ τὴν Συρίαν ἑκατὸν χιλιάδας πεζῶν μιᾷ ἡμέρᾳ. Καὶ ἔφυγον οἱ κατάλοιποι εἰς Ἀφεκὰ εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἔπεσε τὸ τεῖχος ἐπὶ εἴκοσι καὶ ἑπτὰ χιλιάδας ἀνδρῶν τῶν καταλοίπων· καὶ υἱὸς Ἄδερ ἔφυγε καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ κοιτῶνος, εἰς τὸ ταμιεῖον. Καὶ εἶπε τοῖς παισὶν αὐτοῦ, οἶδα ὅτι βασιλεῖς Ἰσραὴλ βασιλεῖς ἐλέους εἰσίν· ἐπιθώμεθα δὴ σάκκους ἐπὶ τὰς ὀσφύας ἡμῶν, καὶ σχοινία ἐπὶ τὰς κεφαλὰς ἡμῶν, καὶ ἐξέλθωμεν πρὸς βασιλεα Ἰσραὴλ, εἴπως ζωογονήσει τὰς ψυχὰς ἡμῶν. Καὶ περιεζώσαντο σάκκους ἐπὶ τὰς ὀσφύας αὐτῶν, καὶ ἔθεσαν σχοινία ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ εἶπον τῷ βασιλεῖ Ισραὴλ, δοῦλός σου υἱὸς Ἄδερ λέγει, ζησάτω δὴ ἡ ψυχὴ ἡμῶν· καὶ εἶπεν, εἰ ἔτι ζῇ, ἀδελφός μου ἐστί. Καὶ οἱ ἄνδρες οἰωνίσαντο, καὶ ἐσπείσαντο· καὶ ἀνελέξαντο τὸν λόγον ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ, καὶ

εἶπον, ἀδελφός σου υἱὸς Ἄδερ· καὶ εἶπεν, εἰσέλθατε καὶ λάβετε αὐτόν· καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν υἱὸς Ἄδερ, καὶ ἀναβιβάζουσιν αὐτὸν πρὸς αὐτὸν ἐπὶ τὸ ἅρμα. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τὰς πόλεις ἃς ἔλαβεν ὁ πατήρ μου παρὰ τοῦ πατρός σου ἀποδώσω σοι· καὶ ἐξόδους θήσεις σεαυτῷ ἐν Δαμασκῷ, καθὼς ἔθετο ὁ πατήρ μου ἐν Σαμαρείᾳ· καὶ ἐγὼ ἐν διαθήκῃ ἐξαποστελῶ σε. Καὶ διέθετο αὐτῷ διαθήκην, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτόν. Καὶ ἄνθρωπος εἷς ἐκ τῶν υἱῶν τῶν προφητῶν εἶπε πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ ἐν λόγῳ Κυρίου, πάταξον δή με· καὶ οὐκ ἠθέλησεν ὁ ἄνθρωπος πατάξαι αὐτόν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἀνθ’ ὧν οὐκ ἤκουσας τῆς φωνῆς Κυρίου, καὶ ἰδοὺ σὺ ἀποτρέχεις ἀπ’ ἐμοῦ, καὶ πατάξει σε λέων· καὶ ἀπῆλθεν ἀπ’ αὐτοῦ, καὶ εὑρίσκει αὐτὸν λέων, καὶ ἐπάταξεν αὐτόν. Καὶ εὑρίσκει ἄνθρωπον ἄλλον, καὶ εἶπε, πάταξόν με δή· καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ὁ ἄνθρωπος, πατάξας καὶ συνέτριψε. Καὶ ἐπορεύθη ὁ προφήτης καὶ ἔστη τῷ βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ, καὶ κατεδήσατο ἐν τελαμῶνι τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ὡς παρεπορεύετο ὁ βασιλεὺς, καὶ οὗτος ἐβόα πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπεν, ὁ δοῦλός σου ἐξῆλθεν ἐπὶ τὴν στρατιὰν τοῦ πολέμου, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ εἰσήγαγε πρὸς μὲ ἄνδρα, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, φύλαξον τοῦτον τὸν ἄνδρα· ἐὰν δὲ ἐκπηδῶν ἐκπηδήσῃ, καὶ ἔσται ἡ ψυχή σου ἀντὶ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, ἢ τάλαντον ἀργυρίου στήσεις. Καὶ ἐγενήθη, περιεβλέψατο ὁ δοῦλός σου ὧδε καὶ ὧδε, καὶ οὗτος οὐκ ἦν· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ καὶ τὰ ἔνεδρα παρ’ ἐμοὶ ἐφόνευσας· Καὶ ἔσπευσε καὶ ἀφεῖλε τὸν τελαμῶνα ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ· καὶ ἐπέγνω αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, ὅτι ἐκ τῶν προφητῶν οὗτος. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος, διότι ἐξήνεγκας σὺ ἄνδρα ὀλέθριον ἐκ τῆς χειρός σου, καὶ ἔσται ἡ ψυχή σου ἀντὶ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, καὶ ὁ λαός σου ἀντὶ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἀπῆλθεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ

συγκεχυμένος καὶ ἐκλελυμένος, καὶ ἔρχεται εἰς Σαμάρειαν.

# 22

Καὶ ἐκάθισε τὰ τρία ἔτη, καὶ οὐκ ἦν πόλεμος ἀναμέσον Συρίας καὶ ἀναμέσον Ἰσραήλ. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ τρίτῳ, καὶ κατέβη Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα πρὸς βασιλέα Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, εἰ οἴδατε ὅτι ἡμῖν Ῥεμμὰθ Γαλαὰδ, καὶ ἡμεῖς σιωπῶμεν λαβεῖν αὐτὴν ἐκ χειρὸς βασιλέως Συρίας; Καὶ εἶπε βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσαφὰτ, ἀναβήσῃ μεθ’ ἡμῶν εἰς Ῥεμμὰθ Γαλαὰδ εἰς πόλεμον; Καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ, καθὼς ἐγὼ, καὶ σὺ οὕτως· καθὼς ὁ λαός μου, ὁ λαός σου· καθὼς οἱ ἵπποι μου, οἱ ἵπποι σου. Καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα πρὸς βασιλέα Ἰσραὴλ, ἐπερωτήσατε δὴ σήμερον τὸν Κύριον. Καὶ συνήθροισεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ πάντας τοὺς προφήτας ὡς τετρακοσίους ἄνδρας, καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, εἰ πορευθῶ εἰς Ῥεμμὰθ Γαλαὰδ εἰς πόλεμον ἢ ἐπισχῶ; καὶ εἶπον, ἀνάβαινε, καὶ διδοὺς δώσει Κύριος εἰς χεῖρας τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ πρὸς βασιλέα Ἰσραὴλ, οὐκ ἔστιν ὧδε προφήτης τοῦ κυρίου, καὶ ἐπερωτήσομεν τὸν κύριον δι’ αὐτοῦ; Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσαφὰτ, εἷς ἐστιν ἀνὴρ εἰς τὸ ἐπερωτῆσαι δὸ αὐτοῦ τὸν Κύριον, καὶ ἐγὼ μεμίσηκα αὐτὸν, ὅτι οὐ λαλεῖ περὶ ἐμοῦ καλὰ, ἀλλ’ ἢ κακὰ, Μιχαίας υἱὸς Ἰεμβλαά· καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα, μὴ λεγέτω ὁ βασιλεὺς οὕτως. Καὶ ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ εὐνοῦχον ἕνα, καὶ εἶπε, τοτάχος Μιχαίαν υἱὸν Ἰεμβλαά. Καὶ ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ καὶ Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα ἐκάθηντο ἀνὴρ ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ ἔνοπλοι ἐν ταῖς πύλαις

Σαμαρείας· καὶ πάντες οἱ προφῆται ἐπροφήτευον ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ Σεδεκίας υἱὸς Χαναὰν κέρατα σιδηρᾶ, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ἐν τούτοις κερατιεῖς τὴν Συρίαν ἕως συντελεσθῇ. Καὶ πάντες οἱ προφῆται ἐπροφήτευον οὕτως, λέγοντες, ἀνάβαινε εἰς Ῥεμμὰθ Γαλαὰδ, καὶ εὐοδώσει, καὶ δώσει Κύριος εἰς χεῖράς σου καὶ τὸν βασιλέα Συρίας. Καὶ ὁ ἄγγελος ὁ πορευθεὶς καλέσαι τὸν Μιχαίαν, ἐλάλησεν αὐτῷ, λέγων, ἰδοὺ δὴ λαλοῦσι πάντες οἱ προφῆται ἐν στόματι ἑνὶ καλὰ περὶ τοῦ βασιλέως, γίνου δὴ καὶ σὺ εἰς τοὺς λόγους σου κατὰ τοὺς λόγους ἑνὸς τούτων, καὶ λάλησον καλά. Καὶ εἶπε Μιχαίας, ζῇ Κύριος, ὅτι ἃ ἐὰν εἴπῃ Κύριος πρὸς μὲ, ταῦτα λαλήσω. Καὶ ἦλθε πρὸς τὸν βασιλέα· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Μιχαία, εἰ ἀναβῶ εἰς Ῥεμμὰθ Γαλαὰδ εἰς πόλεμον, ἢ ἐπισχῶ; καὶ εἶπεν, ἀνάβαινε, καὶ εὐοδώσει Κύριος εἰς χεῖρα τοῦ βασιλέως. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ποσάκις ἐγὼ ὁρκίζω σε, ὅπως λαλήσῃς πρὸς μὲ ἀλήθειαν ἐν ὀνόματι Κυρίου; Καὶ εἶπεν, οὐχ οὕτως· ἑώρακα πάντα τὸν Ἰσραὴλ διεσπαρμένον ἐν τοῖς ὄρεσιν ὡς ποίμνιον ᾧ οὐκ ἔστι ποιμήν· καὶ εἶπε Κύριος, οὐ κύριος τούτοις Θεός; ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ ἐν εἰρήνῃ ἀναστρεφέτω. Καὶ εἶπε βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσαφὰτ βασιλέα Ἰούδα, οὐκ εἶπα πρὸς σε, ὅτι οὐ προφητεύει οὗτός μοι καλὰ, διότι ἀλλ᾽ ἢ κακά; Καὶ εἶπε Μιχαίας, οὐχ οὕτως· οὐκ ἐγώ· ἄκουε ῥῆμα Κυρίου· οὐχ οὕτως. Εἶδον Θεὸν Ἰσραὴλ καθήμενον ἐπὶ θρόνου αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ στρατιὰ τοῦ οὐρανοῦ εἱστήκει περὶ αὐτὸν ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ καὶ ἐξ εὐωνύμων αὐτοῦ. Καὶ εἶπε Κύριος, τίς ἀπατήσει τὸν Ἀχαὰβ βασιλέα Ἰσραὴλ, καὶ ἀναβήσεται, καὶ πεσεῖται ἐν Ῥεμμὰθ Γαλαάδ; καὶ εἶπεν οὗτος οὕτως, καὶ οὗτος οὕτως. Καὶ ἐξῆλθε πνεῦμα καὶ ἔστη ἐνώπιον Κυρίου, καὶ εἶπεν, ἐγὼ ἀπατήσω αὐτόν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Κύριος, ἐν τίνι; καὶ εἶπεν,

ἐξελεύσομαι, καὶ ἔσομαι πνεῦμα ψευδὲς εἰς τὸ στόμα πάντων τῶν προφητῶν αὐτοῦ· καὶ εἶπεν, ἀπατήσεις, καί γε δυνήσῃ· ἔξελθε καὶ ποίησον οὕτως. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἔδωκε Κύριος πνεῦμα ψευδὲς ἐν στόματι πάντων τῶν προφητῶν σου τούτων, καὶ Κύριος ἐλάλησεν ἐπὶ σὲ κακά. Καὶ προσῆλθε Σεδεκίας υἱὸς Χαναὰν, καὶ ἐπάταξε τὸν Μιχαίαν ἐπὶ τὴν σιαγόνα, καὶ εἶπε, ποῖον πνεῦμα Κύριου τὸ λαλῆσαν ἐν σοί; Καὶ εἶπε Μιχαίας, ἰδοὺ σὺ ὄψῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅταν εἰσέλθῃς ταμεῖον τοῦ ταμείου τοῦ κρυβῆναι ἐκεῖ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, λάβετε τὸν Μιχαίαν, καὶ ἀποστρέψατε αὐτὸν πρὸς Σεμὴρ τὸν βασιλέα τῆς πόλεως· καὶ τῷ Ἰωὰς υἱῷ τοῦ βασιλέως εἶπον θέσθαι τοῦτον ἐν φυλακῇ, καὶ ἐσθίειν αὐτὸν ἄρτον θλίψεως καὶ ὕδωρ θλίψεως ἕως τοῦ ἐπιστρέψαι με ἐν εἰρήνῃ. Καὶ εἶπε Μιχαίας, ἐὰν ἐπιστρέφων ἐπιστρέψῃς ἐν εἰρήνῃ, οὐ λελάληκε Κύριος ἐν ἐμοί. Καὶ ἀνέβη βασιλεὺς Ἰσραὴλ καὶ Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα μετ’ αὐτοῦ εἰς Ῥεμμὰθ Γαλαάδ. Καὶ εἶπε βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς Ἰωσαφὰτ βασιλέα Ἰούδα, συγκαλύψομαι καὶ εἰσελεύσομαι εἰς τὸν πόλεμον, καὶ σὺ ἔνδυσαι τὸν ἱματισμόν μου· καὶ συνεκαλύψατο βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν πόλεμον. Καὶ βασιλεὺς Συρίας ἐνετείλατο τοῖς ἄρχουσι τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ τριάκοντα καὶ δυσὶ, λέγων, μὴ πολεμεῖτε μικρὸν καὶ μέγαν, ἀλλ’ ἢ τὸν βασιλέα Ἰσραὴλ μονώτατον. Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδον οἱ ἄρχοντες τῶν ἁρμάτων τὸν Ἰωσαφὰτ βασιλέα Ἰούδα, καὶ αὐτοὶ εἶπαν, φαίνεται βασιλεὺς Ἰσραήλ οὗτος, καὶ ἐκύκλωσαν αὐτὸν πολεμῆσαι· καὶ ἀνέκραξεν Ἰωσαφάτ. Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδον οἱ ἄρχοντες τῶν ἁρμάτων ὅτι οὐκ ἔστι βασιλεὺς Ἰσραὴλ οὗτος, καὶ ἀπέστρεψαν ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ ἐπέτεινεν εἷς τὸ τόξον εὐστόχως, καὶ ἐπάταξε τὸν βασιλέα Ἰσραὴλ ἀναμέσον τοῦ πνεύμονος καὶ ἀναμέσον τοῦ θώρακος· καὶ εἶπε τῷ ἡνιόχῳ αὐτοῦ, ἐπίστρεψον τὰς χεῖράς σου

καὶ ἐξάγαγέ με ἐκ τοῦ πολέμου, ὅτι τέτρωμαι. Καὶ ἐτροπώθη ὁ πόλεμος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ὁ βασιλεὺς ἦν ἑστηκὼς ἐπὶ τοῦ ἅρματος ἐξεναντίας Συρίας ἀπὸ πρωῒ ἕως ἑσπέρας, καὶ ἀπέχυνε τὸ αἷμα ἀπὸ τῆς πληγῆς εἰς τὸν κόλπον τοῦ ἅρματος, καὶ ἀπέθανεν ἑσπέρας, καὶ ἐξεπορεύετο τὸ αἷμα τῆς τροπῆς ἕως τοῦ κόλπου τοῦ ἅρματος. Καὶ ἔστη ὁ στρατοκῆρυξ δύνοντος τοῦ ἡλίου, λέγων, ἕκαστος εἰς τὴν ἑαυτοῦ πόλιν καὶ εἰς τὴν ἑαυτοῦ γῆν, ὅτι τέθνηκεν ὁ βασιλεύς· καὶ ἦλθον εἰς Σαμάρειαν, καὶ ἔθαψαν τὸν βασιλέα ἐν Σαμαρείᾳ. Καὶ ἀπένιψαν τὸ ἅρμα ἐπὶ τὴν κρήνην Σαμαρείας· καὶ ἐξέλιξαν αἱ ὗες καὶ οἱ κύνες τὸ αἷμα, καὶ αἱ πόρναι ἐλούσαντο ἐν τῷ αἵματι, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου ὃ ἐλάλησε. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀχαὰβ καὶ πάντα ἃ ἐποίησε, καὶ οἶκον ἐλεφάντινον ὃν ᾠκοδόμησε, καὶ πάσας τὰς πόλεις ἃς ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γέγραπται ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τῶν βασιλέων Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἀχαὰβ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσεν Ὀχοζίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Καὶ Ἰωσαφὰτ υἱὸς Ἀσὰ ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰούδαν· ἐν ἔτει τετάρτῳ τοῦ Ἀχαὰβ βασιλέως Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ἰωσαφάτ, Υἱὸς τριάκοντα καὶ πέντε ἐτῶν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν, καὶ εἴκοσι καὶ πέντε ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ· καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀζουβὰ θυγάτηρ Σαλαΐ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν πάσῃ ὁδῷ Ἀσὰ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, οὐκ ἐξέκλινεν ἀπ᾽ αὐτῆς τοῦ ποιῆσαι τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου. Πλὴν τῶν ὑψηλῶν οὐκ ἐξῆρεν· ἔτι ὁ λαὸς ἐθυσίαζε καὶ ἐθυμίων ἐν τοῖς ὑψηλοῖς. Καὶ εἰρήνευσεν Ἰωσαφὰτ μετὰ βασιλέως Ἰσραήλ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωσαφάτ, καὶ αἱ δυναστεῖαι αὐτοῦ ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν βασιλέων Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωσαφὰτ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη παρὰ τοῖς πατράσιν αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυὶδ τοῦ

πατρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωρὰμ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ Ὀχοζίας υἱὸς Ἀχαὰβ ἐβασίλευσεν ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ· ἐν ἔτει ἑπτακαιδεκάτῳ Ἰωσαφὰτ βασιλέως Ἰούδα, Ὀχοζίας υἱὸς Ἀχαὰβ ἐβασίλευσεν ἐν Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ δύο ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐναντίον Κυρίου, καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ Ἀχαὰβ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ καὶ ἐν ὁδῷ Ἰεζάβελ τῆς μητρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις οἴκου Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ· Καὶ ἐδούλευσε τοῖς Βααλὶμ καὶ προσεκύνησεν αὐτοῖς, καὶ παρώργισε τὸν Κύριον Θεὸν Ἰσραὴλ, κατὰ πάντα τὰ γενόμενα ἔμπροσθεν αὐτοῦ.

# Β΄ ΒΑΣΙΛΕΩΝ

## 1

ΚΑΙ ἠθέτησε Μωὰβ ἐν Ἰσραὴλ μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Ἀχαάβ. Καὶ ἔπεσεν Ὀχοζίας διὰ τοῦ δικτυωτοῦ τοῦ ἐν τῷ ὑπερῴῳ αὐτοῦ τῷ ἐν Σαμαρείᾳ, καὶ ἠῤῥώστησε· καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, δεῦτε καὶ ἐπιζητήσατε ἐν τῷ Βάαλ μυῖαν θεὸν Ἀκκαρὼν, εἰ ζήσομαι ἐκ τῆς ἀῤῥωστίας μου ταύτης· καὶ ἐπορεύθησαν ἐπερωτῆσαι δι’ αὐτοῦ. Καὶ ἄγγελος Κυρίου ἐκάλεσεν Ἠλιοὺ τὸν Θεσβίτην, λέγων, ἀναστὰς δεῦρο εἰς συνάντησιν τῶν ἀγγέλων Ὀχοζίου βασιλέως Σαμαρείας, καὶ λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς, εἰ παρὰ τὸ μὴ εἶναι Θεὸν ἐν Ἰσραὴλ, ὑμεῖς πορεύεσθε ἐπιζητῆσαι ἐν τῷ Βάαλ μυῖαν θεὸν Ἀκκαρών; καὶ οὐχ οὕτως· Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, ἡ κλίνη ἐφ’ ἧς ἀνέβης ἐκεῖ, οὐ καταβήσῃ ἀπ’ αὐτῆς, ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ· καὶ ἐπορεύθη Ἠλιοὺ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς. Καὶ ἐπεστράφησαν οἱ ἄγγελοι πρὸς αὐτόν· καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, τί ὅτι ἐπεστρέψατε; Καὶ εἶπαν πρὸς αὐτὸν, ἀνὴρ ἀνέβη εἰς συνάντησιν ἡμῶν, καὶ εἶπε πρὸς ἡμᾶς, δεῦτε, ἐπιστράφητε πρὸς τὸν βασιλέα τὸν ἀποστείλαντα ὑμᾶς, καὶ λαλήσατε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος, εἰ παρὰ τὸ μὴ εἶναιι Θεὸν ἐν Ἰσραὴλ, σὺ πορεύῃ

ἐπιζητῆσαι ἐν τῷ Βάαλ μυῖαν θεὸν Ἀκκαρών; οὐχ οὕτως· ἡ κλίνη ἐφ᾽ ἧς ἀνέβης ἐκεῖ, οὐ καταβήσῃ ἀπ᾽ αὐτῆς, ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ. Καὶ ἐπιστρέψαντες ἀπήγγειλαν τῷ βασιλεῖ καθὰ ἐλάλησεν Ἠλιού· καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτούς, τίς ἡ κρίσις τοῦ ἀνδρὸς τοῦ ἀναβάντος εἰς συνάντησιν ὑμῖν καὶ λαλήσαντος πρὸς ὑμᾶς τοὺς λόγους τούτους; Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, ἀνὴρ δασὺς, καὶ ζώνην δερματίνην περιεζωσμένος τὴν ὀσφῦν αὐτοῦ· καὶ εἶπεν, Ἠλιοὺ ὁ Θεσβίτης οὗτός ἐστι. Καὶ ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν πεντηκόνταρχον καὶ τοὺς πεντήκοντα αὐτοῦ, καὶ ἀνέβη πρὸς αὐτόν· καὶ ἰδοὺ Ἠλιοὺ ἐκάθητο ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους· καὶ ἐλάλησεν ὁ πεντηκόνταρχος πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ, ὁ βασιλεὺς ἐκάλεσέ σε, κατάβηθι. Καὶ ἀπεκρίθη Ἠλιοὺ, καὶ εἶπε πρὸς τὸν πεντηκόνταρχον, καὶ εἰ ἄνθρωπος Θεοῦ ἐγὼ, καταβήσεται πῦρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ καταφάγεταί σε καὶ τοὺς πεντήκοντά σου· καὶ κατέβη πῦρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέφαγεν αὐτὸν καὶ τοὺς πεντήκοντα αὐτοῦ. Καὶ προσέθετο ὁ βασιλεὺς, καὶ ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν ἄλλον πεντηκόνταρχον καὶ τοὺς πεντήκοντα αὐτοῦ· καὶ ἐλάλησεν ὁ πεντηκόνταρχος πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ, τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, ταχέως κατάβηθι. Καὶ ἀπεκρίθη Ἠλιοὺ καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, εἰ ἄνθρωπος Θεοῦ ἐγὼ, καταβήσεται πῦρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ καταφάγεταί σε καὶ τοὺς πεντήκοντά σου· καὶ κατέβη πῦρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέφαγεν αὐτὸν καὶ τοὺς πεντήκοντα αὐτοῦ. Καὶ προσέθετο ὁ βασιλεὺς ἔτι ἀποστεῖλαι ἡγούμενον καὶ τοὺς πεντήκοντα αὐτοῦ· καὶ ἦλθεν ὁ πεντηκόνταρχος ὁ τρίτος, καὶ ἔκαμψεν ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ κατέναντι Ἠλιοὺ, καὶ ἐδεήθη αὐτοῦ, καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ, ἐντιμωθήτω ἡ ψυχή μου, καὶ ἡ ψυχὴ τῶν δούλων σου τούτων τῶν πεντήκοντα ἐν ὀφθαλμοῖς σου. Ἰδοὺ

κατέβη πῦρ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέφαγε τοὺς δύο πεντηκοντάρχους τοὺς πρώτους· καὶ νῦν ἐντιμωθήτω δὴ ἡ ψυχή μου ἐν ὀφθαλμοῖς σου. Καὶ ἐλάλησεν ἄγγελος Κυρίου πρὸς Ἠλιοὺ, καὶ εἶπε, κατάβηθι μετ' αὐτοῦ, μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· καὶ ἀνέστη Ἠλιοὺ καὶ κατέβη μετ' αὐτοῦ πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν Ἠλιού, τάδε λέγει Κύριος, τί ὅτι ἀπέστειλας ἀγγέλους ἐκζητῆσαι ἐν τῷ Βάαλ μυῖαν θεὸν Ἀκκαρών; οὐχ οὕτως· ἡ κλίνη ἐφ' ἧς ἀνέβης ἐκεῖ, οὐ καταβήσῃ ἀπ' αὐτῆς, ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ. Καὶ ἀπέθανε κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου ὃ ἐλάλησεν Ἠλιού. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ὀχοζίου ἃ ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐν βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ;

# 2

Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀνάγειν Κύριον ἐν συσσεισμῷ τὸν Ἠλιοὺ ὡς εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐπορεύθη Ἠλιοὺ καὶ Ἐλισαιὲ ἐκ Γαλγάλων. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς Ἐλισαιὲ, κάθου δὴ ἐνταῦθα, ὅτι ὁ Θεὸς ἀπέσταλκέ με ἕως Βαιθήλ· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, εἰ ἐγκαταλείψω σε· καὶ ἦλθον εἰς Βαιθήλ. Καὶ ἦλθον οἱ υἱοὶ τῶν προφητῶν οἱ ἐν Βαιθὴλ πρὸς Ἐλισαιὲ, καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, εἰ ἔγνως, ὅτι Κύριος σήμερον λαμβάνει τὸν κύριόν σου ἐπάνωθεν τῆς κεφαλῆς σου; καὶ εἶπε, κἀγὼ ἔγνωκα, σιωπᾶτε. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ πρὸς Ἐλισαιὲ, κάθου δὴ ἐνταῦθα, ὅτι Κύριος ἀπέσταλκέ με εἰς Ἰεριχώ· καὶ εἶπε, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, εἰ ἐγκαταλείψω σε· καὶ ἦλθον εἰς Ἰεριχώ. Καὶ ἤγγισαν οἱ υἱοῖ τῶν προφητῶν οἱ ἐν Ἰεριχὼ πρὸς Ἐλισαιὲ, καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, εἰ

ἔγνως, ὅτι σήμερον λαμβάνει Κύριος τὸν κύρίον σου ἐπάνωθεν τῆς κεφαλῆς σου; καὶ εἶπε, καί γε ἐγὼ ἔγνων, σιωπᾶτε. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἠλιοὺ, κάθου δὴ ὧδε, ὅτι Κύριος ἀπέσταλκέ με ἕως εἰς τὸν Ἰορδάνην· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, εἰ ἐγκαταλείψω σε· καὶ ἐπορεύθησαν ἀμφότεροι, καὶ πεντήκοντα ἄνδρες υἱοὶ τῶν προφητῶν, καὶ ἔστησαν ἐξεναντίας μακρόθεν· καὶ ἀμφότεροι ἔστησαν ἐπὶ τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἔλαβεν Ἠλιοὺ τὴν μηλωτὴν αὐτοῦ καὶ εἵλησε καὶ ἐπάταξε τὸ ὕδωρ, καὶ διῃρέθη τὸ ὕδωρ ἔνθα καὶ ἔνθα· καὶ διέβησαν ἀμφότεροι ἐν ἐρήμῳ. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ διαβῆναι αὐτοὺς, καὶ Ἠλιοὺ εἶπε πρὸς Ἐλισαιὲ, αἴτησαι τί ποιήσω σοι πρὶν ἢ ἀναληφθῆναί με ἀπὸ σοῦ· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, γενηθήτω δὴ διπλᾶ ἐν πνεύματί σου ἐπ’ ἐμέ. Καὶ εἶπεν Ἠλιοὺ, ἐσκλήρυνας τοῦ αἰτήσασθαι· ἐὰν ἴδῃς με ἀναλαμβανόμενον ἀπὸ σοῦ, καὶ ἔσται σοι οὕτως· καὶ ἐὰν μὴ, οὐ μὴ γένηται. Καὶ ἐγένετο αὐτῶν πορευομένων, ἐπορεύοντο καὶ ἐλάλουν· καὶ ἰδοὺ ἅρμα πυρὸς καὶ ἵπποι πυρὸς, καὶ διέστειλεν ἀναμέσον ἀμφοτέρων· καὶ ἀνελήμφθη Ἠλιοὺ ἐν συσσεισμῷ ὡς εἰς τὸν οὐρανόν. Καὶ Ἐλισαιὲ ἑώρα, καὶ ἐβόα, πάτερ, πάτερ, ἅρμα Ἰσραὴλ καὶ ἱππεὺς αὐτοῦ· καὶ οὐκ εἶδεν αὐτὸν ἔτι· καὶ ἐπελάβετο τῶν ἱματίων αὐτοῦ, καὶ διέῤῥηξεν αὐτὰ εἰς δύο ῥήγματα. Καὶ ὕψωσε τὴν μηλωτὴν Ἠλιοὺ, ἣ ἔπεσεν ἐπάνωθεν Ἐλισαιέ· καὶ ἐπέστρεψεν Ἐλισαιὲ, καὶ ἔστη ἐπὶ τοῦ χείλους τοῦ Ἰορδάνου, καὶ ἔλαβε τὴν μηλωτὴν Ἠλιοὺ, ἣ ἔπεσεν ἐπάνωθεν αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξε τὸ ὕδωρ, καὶ εἶπε, ποῦ ὁ Θεὸς Ἠλιοὺ ἀφφώ; καὶ ἐπάταξε τὰ ὕδατα, καὶ διεῤῥάγησαν ἔνθα καὶ ἔνθα· καὶ διέβη Ἐλισαιέ. Καὶ εἶδον αὐτὸν οἱ υἱοὶ τῶν προφητῶν οἱ ἐν Ἰεριχὼ ἐξεναντίας, καὶ εἶπον, ἐπαναπέπαυται τὸ πνεῦμα Ἠλιοὺ ἐπὶ Ἐλισαιέ· καὶ ἦλθον εἰς συναντὴν αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησαν αὐτῷ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ δὴ

μετὰ τῶν παίδων σου πεντήκοντα ἄνδρες υἱοὶ δυνάμεως· πορευθέντες δὴ ζητησάτωσαν τὸν κύριόν σου, μή ποτε ᾖρεν αὐτὸν πνεῦμα Κυρίου, καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὸν ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἢ ἐφ’ ἓν τῶν ὀρέων ἢ ἐφ’ ἕνα τῶν βουνῶν· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, οὐκ ἀποστελεῖτε. Καὶ παρεβιάσαντο αὐτὸν, ἕως οὗ ᾐσχύνετο· καὶ εἶπεν, ἀποστείλατε· καὶ ἀπέστειλαν πεντήκοντα ἄνδρας, καὶ ἐζήτησαν τρεῖς ἡμέρας, καὶ οὐχ εὗρον αὐτόν. Καὶ ἀνέστρεψαν πρὸς αὐτόν, καὶ αὐτὸς ἐκάθητο ἐν Ἰεριχώ· καὶ εἶπεν Ἐλισαῖε, οὐκ εἶπον πρὸς ὑμᾶς, μὴ πορευθῆτε; Καὶ εἶπον οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως πρὸς Ἐλισαιὲ, ἰδοὺ ἡ κατοίκησις τῆς πόλεως ἀγαθὴ, καθὼς ὁ κύριος βλέπει, καὶ τὰ ὕδατα πονηρὰ, καὶ ἡ γῆ ἀτεκνουμένη. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ λάβετέ μοι ὑδρίσκην καινὴν, καὶ θέτε ἐκεῖ ἅλα· καὶ ἔλαβον, καὶ ἤνεγκαν πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐξῆλθεν Ἐλισαιὲ εἰς τὴν διέξοδον τῶν ὑδάτων, καὶ ἔῤῥιψεν ἐκεῖ ἅλα, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ἴαμαι τὰ ὕδατα ταῦτα, οὐκ ἔσται ἔτι ἐκεῖθεν θάνατος καὶ ἀτεκνουμένη. Καὶ ἰάθησαν τὰ ὕδατα ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, κατὰ τὸ ῥῆμα Ἐλισαιὲ ὃ ἐλάλησε. Καὶ ἀνέβη ἐκεῖθεν εἰς Βαιθήλ· καὶ ἀναβαίνοντος αὐτοῦ ἐν τῇ ὁδῷ καὶ παιδάρια μικρὰ ἐξῆλθον ἐκ τῆς πόλεως καὶ κατέπαιζον αὐτοῦ, καὶ εἶπον αὐτῷ, ἀνάβαινε φαλακρὲ, ἀνάβαινε. Καὶ ἐξένευσεν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ εἶδεν αὐτὰ, καὶ κατηράσατο αὐτοῖς ἐν ὀνόματι Κυρίου· καὶ ἰδοὺ ἐξῆλθον δύο ἄρκοι ἐκ τοῦ δρυμοῦ, καὶ ἀνέῤῥηξαν ἀπ’ αὐτῶν τεσσαράκοντα καὶ δύο παῖδας. Καὶ ἐπορεύθη ἐκεῖθεν εἰς τὸ ὄρος τὸ Καρμήλιον, κἀκεῖθεν ἐπέστρεψεν εἰς Σαμάρειαν.

# 3

Καὶ Ἰωρὰμ υἱὸς Ἀχαὰμ ἐβασίλευσεν ἐν Ἰσραὴλ ἐν ἔτει ὀκτωκαιδεκάτῳ Ἰωσαφὰτ βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐβασίλευσε δώδεκα ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου· πλὴν οὐχ ὡς ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ οὐχ ὡς ἡ μήτηρ αὐτοῦ· καὶ μετέστησε τὰς στήλας τοῦ Βάαλ, ἃς ἐποίησεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Πλὴν ἐν τῇ ἁμαρτίᾳ Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, ἐκολλήθη, οὐκ ἀπέστη ἀπ’ αὐτῆς. Καὶ Μωσὰ βασιλεὺς Μωὰβ ἦν νωκὴδ, καὶ ἐπέστρεφε τῷ βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐπαναστάσει ἑκατὸν χιλιάδας ἀρνῶν, καὶ ἑκατὸν χιλιάδας κριῶν ἐπὶ πόκων. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Ἀχαὰβ, καὶ ἠθέτησε βασιλεὺς Μωὰβ ἐν βασιλεῖ Ἰσραήλ. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς Ἰωρὰμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ Σαμαρείας, καὶ ἐπεσκέψατο τὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπορεύθη καὶ ἐξαπέστειλε πρὸς Ἰωσαφὰτ βασιλέα Ἰούδα, λέγων, βασιλεὺς Μωὰβ ἠθέτησεν ἐν ἐμοί· εἰ πορεύσῃ μετ’ ἐμοῦ εἰς Μωὰβ εἰς πόλεμον; καὶ εἶπεν, ἀναβήσομαι· ὅμοιός μοι, ὅμοιός σοι· ὡς ὁ λαός μου, ὁ λαός σου· ὡς οἱ ἵπποι μου, οἱ ἵπποι σου. καὶ εἶπε, ποίᾳ ὁδῷ ἀναβῶ; καὶ εἶπεν, ὁδὸν ἔρημον Ἐδώμ. Καὶ ἐπορεύθη ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ καὶ ὁ βασιλεὺς Ἰούδα καὶ ὁ βασιλεὺς Ἐδὼμ, καὶ ἐκύκλωσαν ὁδὸν ἑπτὰ ἡμερῶν· καὶ οὐκ ἦν ὕδωρ τῇ παρεμβολῇ καὶ τοῖς κτήνεσι τοῖς ἐν τοῖς ποσὶν αὐτῶν. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, ὦ, ὅτι κέκληκε Κύριος τοὺς τρεῖς βασιλεῖς παρερχομένους δοῦναι αὐτοὺς ἐν χειρὶ Μωάβ. Καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ, οὐκ ἔστιν ὧδε προφήτης τοῦ Κυρίου, καὶ ἐπιζητήσωμεν τὸν Κύριον παρ’ αὐτοῦ; καὶ ἀπεκρίθη εἷς τῶν παίδων τοῦ βασιλέως Ἰσραὴλ, καὶ εἶπεν, ὧδε Ἐλισαιὲ υἱὸς Σαφὰτ, ὃς ἐπέχεεν ὕδωρ ἐπὶ χεῖρας Ἠλιού. Καὶ εἶπεν Ἰωσαφὰτ, ἔστιν αὐτῷ ῥῆμα Κυρίου· καὶ κατέβη πρὸς αὐτὸν βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα, καὶ βασιλεὺς Ἐδώμ. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ πρὸς βασιλέα Ἰσραὴλ, τί ἐμοὶ καὶ σοί; δεῦρο πρὸς τοὺς προφήτας

τοῦ πατρός σου καὶ τοὺς προφήτας τῆς μητπός σου· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς Ἰσραήλ, μή ὅτι κέκληκε Κύριος τοὺς τρεῖς βασιλεῖς τοῦ παραδοῦναι αὐτοὺς εἰς χεῖρας Μωάβ; Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ζῇ Κύριος τῶν δυνάμεων ᾧ παρέστην ἐνώπιον αὐτοῦ, ὅτι εἰ μὴ πρόσωπον Ἰωσαφὰτ βασιλέως Ἰούδα ἐγὼ λαμβάνω, εἰ ἐπέβλεψα πρὸς σὲ, καὶ εἶδόν σε. Καὶ νῦν λάβε μοι ψάλλοντα· καὶ ἐγένετο ὡς ἔψαλλεν ὁ ψάλλων, καὶ ἐγένετο ἐπ’ αὐτὸν χεὶρ Κυρίου, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ποιήσατε τὸν χειμάῤῥουν τοῦτον βοθύνους βοθύνους, ὅτι τάδε λέγει Κύριος, οὐκ ὄψεσθε πνεῦμα, καὶ οὐκ ὄψεσθε ὑετὸν, καὶ ὁ χειμάῤῥους οὗτος πλησθήσεται ὕδατος, καὶ πίεσθε ὑμεῖς καὶ αἱ κτήσεις ὑμῶν καὶ τὰ κτήνη ὑμῶν. Καὶ κούφη αὐτὴ ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου· καὶ παραδώσω τὴν Μωὰβ ἐν χειρὶ ὑμῶν. Καὶ πατάξετε πᾶσαν πόλιν ὀχυρὰν, καὶ πᾶν ξύλον ἀγαθὸν καταβαλεῖτε, καὶ πάσας πηγὰς ὕδατος ἐμφράξεσθε, καὶ πᾶσαν μερίδα ἀγαθὴν ἀχρειώσετε ἐν λίθοις. Καὶ ἐγένετο πρωῒ ἀναβαινούσης τῆς θυσίας, καὶ ἰδοὺ ὕδατα ἤρχοντο ἐξ ὁδοῦ Ἐδώμ, καὶ ἐπλήσθη ἡ γῆ ὕδατος. Καὶ πᾶσα Μωὰβ ἤκουσαν ὅτι ἀνέβησαν οἱ τρεῖς βασιλεῖς πολεμεῖν αὐτούς· καὶ ἀνεβόησαν ἐκ παντὸς περιεζωσμένοι ζώνην· καὶ εἶπον, ὦ· καὶ ἔστησαν ἐπὶ τοῦ ὁρίου. Καὶ ὤρθρισαν τοπρωῒ, καὶ ὁ ἥλιος ἀνέτειλεν ἐπὶ τὰ ὕδατα· καὶ εἶδε Μωὰβ ἐξεναντίας τὰ ὕδατα πυῤῥὰ ὡς αἷμα, καὶ εἶπαν, αἷμα τοῦτο τῆς ῥομφαίας· καὶ ἐμαχέσαντο οἱ βασιλεῖς, καὶ ἐπάταξεν ἀνὴρ τὸν πλησίον αὐτοῦ· καὶ νῦν ἐπὶ τὰ σκῦλα Μωάβ. Καὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν παρεμβολὴν Ἰσραήλ· καὶ Ἰσραὴλ ἀνέστησαν καὶ ἐπάταξαν τὴν Μωὰβ, καὶ ἔφυγον ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· καὶ εἰσῆλθον εἰσπορευόμενοι καὶ τύπτοντες τὴν Μωάβ, καὶ τὰς πόλεις καθεῖλον, καὶ πᾶσαν μερίδα ἀγαθὴν ἔῤῥιψαν ἀνὴρ τὸν λίθον καὶ ἐνέπλησαν αὐτὴν, καὶ πᾶσαν πηγὴν ἐνέφραξαν, καὶ πᾶν ξύλον ἀγαθὸν

κατέβαλον ἕως τοῦ καταλιπεῖν τοὺς λίθους τοῦ τοίχου καθῃρημένους· καὶ ἐκύκλευσαν οἱ σφενδονῆται, καὶ ἐπάταξαν αὐτήν. Καὶ εἶδεν ὁ βασιλεὺς Μωὰβ ὅτι ἐκραταίωσεν ὑπὲρ αὐτὸν ὁ πόλεμος· καὶ ἔλαβε μεθ’ ἑαυτοῦ ἑπτακοσίους ἄνδρας ἐσπασμένους ῥομφαίαν διακόψαι πρὸς βασιλέα Ἐδὼμ, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν. Καὶ ἔλαβε τὸν υἱὸν αὐτοῦ τὸν πρωτότοκον ὃν ἐβασίλευσεν ἀντ’ αὐτοῦ, καὶ ἀνήνεγκεν αὐτὸν ὁλοκαύτωμα ἐπὶ τοῦ τείχους, καὶ ἐγένετο μετάμελος μέγας ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἀπῆραν ἀπ’ αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψαν εἰς τὴν γῆν.

# 4

Καὶ γυνὴ μία ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν προφητῶν ἐβόα πρὸς τὸν Ἐλισαῖε, λέγουσα, ὁ δοῦλός σου ἀνήρ μου ἀπέθανε, καὶ σὺ ἔγνως, ὅτι δοῦλὸς σου ἦν φοβούμενος τὸν Κύριον· καὶ ὁ δανειστὴς ἦλθε λαβεῖν τοὺς δύο υἱούς μου ἑαυτῷ εἰς δούλους. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, τί ποιήσω σοι; ἀνάγγειλόν μοι τί ἐστι σοι ἐν τῷ οἴκῳ; ἡ δὲ εἶπεν, οὐκ ἔστι τῇ δούλῃ σου οὐδὲν ἐν τῷ οἴκῳ, ὅτι ἀλλ’ ἢ ὃ ἀλείψομαι ἔλαιον. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτήν, δεῦρο, αἴτησαι σεαυτῇ σκεύη ἔξωθεν παρὰ πάντων τῶν γειτόνων σκεύη κενὰ, μὴ ὀλιγώσῃς. Καὶ εἰσελεύσῃ καὶ ἀποκλείσεις τὴν θύραν κατὰ σοῦ καὶ κατὰ τῶν υἱῶν σου, καὶ ἀποχεεῖς εἰς τὰ σκεύη ταῦτα, καὶ τὸ πληρωθὲν ἀρεῖς. Καὶ ἀπῆλθε παρ’ αὐτοῦ, καὶ ἀπέκλεισε τὴν θύραν καθ’ ἑαυτῆς καὶ κατὰ τῶν υἱῶν αὐτῆς· αὐτοὶ προσήγγιζον πρὸς αὐτὴν, καὶ αὐτὴ ἐπέχεεν ἕως ἐπλήσθησαν τὰ σκεύη. Καὶ εἶπε πρὸς τοὺς υἱοὺς αὐτῆς, ἐγγίσατε ἔτι πρὸς μὲ τὸ σκεῦος· καὶ εἶπον αὐτῇ, οὐκ ἔστιν ἔτι σκεῦος· καὶ ἔστη τὸ ἔλαιον. Καὶ ἦλθε, καὶ ἀπήγγειλε τῷ ἀνθρώπῳ

τοῦ Θεοῦ· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, δεῦρο καὶ ἀπόδου τὸ ἔλαιον, καὶ ἀποτίσεις τοὺς τόκους σου, καὶ σὺ καὶ οἱ υἱοί σου ζήσεσθε ἐν τῷ ἐπιλοίπῳ ἐλαίῳ. Καὶ ἐγένετο ἡμέρα, καὶ διέβη Ἐλισαιὲ εἰς Σωμὰν, καὶ ἐκεῖ γυνὴ μεγάλη, καὶ ἐκράτησεν αὐτὸν φαγεῖν ἄρτον· καὶ ἐγένετο ἀφ' ἱκανοῦ τοῦ εἰσπορεύεσθαι αὐτὸν, ἐξέκλινε τοῦ ἐκεῖ φαγεῖν. Καὶ εἶπεν ἡ γυνὴ πρὸς τὸν ἄνδρα αὐτῆς, ἰδοὺ δὴ ἔγνων ὅτι ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἅγιος οὗτος διαπορεύεται ἐφ ἡμᾶς διαπαντός. Ποιήσωμεν δὴ αὐτῷ ὑπερῷον τόπον μικρόν, καὶ θῶμεν αὐτῷ ἐκεῖ κλίνην, καὶ τράπεζαν, καὶ δίφρον, καὶ λυχνίαν· καὶ ἔσται ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι πρὸς ἡμᾶς, καὶ ἐκκλινεῖ ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο ἡμέρα, καὶ εἰσῆλθεν ἐκεῖ, καὶ ἐξέκλινεν εἰς τὸ ὑπερῷον, καὶ ἐκοιμήθη ἐκεῖ. Καὶ εἶπε πρὸς Γιεζὶ τὸ παιδάριον αὐτοῦ, κάλεσόν μοι τὴν Σωμανίτιν ταύτην· καὶ ἐκάλεσεν αὐτήν, καὶ ἔστη ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ, εἶπον δὴ πρὸς αὐτὴν, ἰδοὺ, ἐξέστησας ἡμῖν πᾶσαν τὴν ἔκστασιν ταύτην, τί δεῖ ποιῆσαί σοι; εἰ ἔστι λόγος σοι πρὸς τὸν βασιλέα, ἢ πρὸς τὸν ἄρχοντα τῆς δυνάμεως; ἡ δὲ εἶπεν, ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ ἐγώ εἰμι οἰκῶ. Καὶ εἶπε πρὸς Γιεζὶ, τί δεῖ ποιῆσαι αὐτῇ; καὶ εἶπε Γιεζὶ τὸ παιδάριον αὐτοῦ, καὶ μάλα υἱὸς οὐκ ἔστιν αὐτῇ· καὶ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς πρεσβύτης. Καὶ ἐκάλεσεν αὐτήν, καὶ ἔστη παρὰ τὴν θύραν. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ πρὸς αὐτήν, εἰς τὸν καιρὸν τοῦτον, ὡς ἡ ὥρα, ζῶσα σὺ, περιειληφυῖα υἱόν· ἡ δὲ εἶπε, μή κύριε, μὴ διαψεύσῃ τὴν δούλην σου. Καὶ ἐν γαστρὶ ἔλαβεν ἡ γυνή, καὶ ἔτεκεν υἱὸν εἰς τὸν καιρὸν τοῦτον, ὡς ἡ ὥρα, ζῶσα, ὡς ἐλάλησε πρὸς αὐτὴν Ἐλισαιὲ. Καὶ ἠδρύνθη τὸ παιδάριον· καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἐξῆλθε πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ πρὸς τοὺς θερίζοντας, καὶ εἶπε πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ, τὴν κεφαλήν μου, τὴν κεφαλήν μου· καὶ εἶπε τῷ παιδαρίῳ, ἆρον αὐτὸν πρὸς τὴν μητέρα αὐτοῦ. Καὶ ἦρεν αὐτὸν πρὸς τὴν μητέρα αὐτοῦ, καὶ ἐκοιμήθη ἐπὶ τῶν γονάτων

αὐτῆς ἕως μεσημβρίας, καὶ ἀπέθανε. Καὶ ἀνήνεγκεν αὐτὸν, καὶ ἐκοίμισεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν κλίνην τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ· καὶ ἀπέκλεισε κατ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθε, καὶ ἐκάλεσε τὸν ἄνδρα αὐτῆς, και εἶπεν, ἀπόστειλον δή μοι ἓν τῶν παιδαρίων καὶ μίαν τῶν ὄνων, καὶ δραμοῦμαι ἕως τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπιστρέψω. Καὶ εἶπε, τι ὅτι σὺ πορεύῃ πρὸς αὐτὸν σήμερον; οὐ νεομηνία, οὐδὲ σάββατον· ἡ δὲ εἶπεν, εἰρήνη. Καὶ ἐπέσαξε τὴν ὄνον, καὶ εἶπε πρὸς τὸ παιδάριον αὐτῆς, ἄγε, πορεύου, μὴ ἐπίσχῃς μοι τοῦ ἐπιβῆναι ὅτι ἐὰν εἴπω σοι· δεῦρο καὶ πορεύσῃ, καὶ ἐλεύσῃ πρὸς τὸν ἄνθρωπον τοῦ θεοῦ εἰς ὄρος τὸ Καρμήλιον. Καὶ ἐπορεύθη καὶ ἦλθεν ἕως τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ εἰς τὸ ὄρος· καὶ ἐγένετο ὡς εἶδεν Ἐλισαιὲ ἐρχομένην αὐτὴν, καὶ εἶπε πρὸς Γιεζὶ τὸ παιδάριον αὐτοῦ, ἰδοὺ δὴ ἡ Σωμανίτις ἐκείνη. Νῦν δράμε εἰς ἀπαντὴν αὐτῆς, καὶ ἐρεῖς, ἡ εἰρήνη σοι; ἡ εἰρήνη τῷ ἀνδρί σου; ἡ εἰρήνη τῷ παιδαρίῳ; ἡ δὲ εἶπεν, εἰρήνη. Καὶ ἦλθε πρὸς Ἐλισαιὲ εἰς τὸ ὄρος, καὶ ἐπελάβετο τῶν ποδῶν αὐτοῦ· καὶ ἤγγιζε Γιεζὶ ἀπώσασθαι αὐτήν. καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ἄφες αὐτὴν, ὅτι ἡ ψυχὴ αὐτῆς κατώδυνος αὐτῇ, καὶ Κύριος ἀπέκρυψεν ἀπ᾽ ἐμοῦ καὶ σοῦ καὶ οὐκ ἀνήγγειλέ μοι. Ἡ δὲ εἶπε, μὴ ᾐτησάμην υἱὸν παρὰ τοῦ κυρίου μου; ὅτι οὐκ εἶπα, οὐ πλανήσεις μετ᾽ ἐμοῦ; Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ τῷ Γιεζί, ζῶσαι τὴν ὀσθύν σου, καὶ λάβε τὴν βακτηρίαν μου ἐν τῇ χειρί σου, καὶ δεῦρο, ὅτι ἐὰν εὕρῃς ἄνδρα οὐκ εὐλογήσεις αὐτὸν, καὶ ἐὰν εὐλογήσῃ σε ἀνὴρ οὐκ ἀποκριθήσῃ αὐτῷ· καὶ ἐπιθήσεις τὴν βακτηρίαν μου ἐπὶ πρόσωπον τοῦ παιδαρίου. Καὶ εἶπεν ἡ μήτηρ τοῦ παιδαρίου, ζῇ Κύριος καὶ ζῇ ἡ ψυχή σου, εἰ ἐνκαταλείψω σε· καὶ ἀνέστη Ἐλισαιὲ, καὶ ἐπορεύθη ὀπίσω αὐτῆς. Καὶ Γιεζὶ διῆλθεν ἔμπροσθεν αὐτῆς, καὶ ἀπέθηκε τὴν βακτηρίαν ἐπὶ πρόσωπον τοῦ παιδαρίου· καὶ οὐκ ἦν φωνὴ καὶ οὖκ ἦν ἀκρόασις· καὶ ἐπέστρεψεν εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ,

καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ, λέγων, οὐκ ἠγέρθη τὸ παιδάριον. Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλισαιὲ εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἰδοὺ τὸ παιδάριον τεθνηκός κεκοιμισμένον ἐπὶ τὴν κλίνην αὐτοῦ· Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλισαιὲ εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἀπέκλεισε τὴν θύραν κατὰ τῶν δύο ἑαυτῶν, καὶ προσηύξατο πρὸς Κύριον. Καὶ ἀνέβη καὶ ἐκοιμήθη ἐπὶ τὸ παιδάριον· καὶ ἔθηκε τὸ στόμα αὐτοῦ ἐπὶ τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐπὶ τὰς χεῖρας αὐτοῦ· καὶ διέκαμψεν ἐπ’ αὐτὸν, καὶ διεθερμάνθη ἡ σὰρξ τοῦ παιδαρίου. Καὶ ἐπέστρεψε, καὶ ἐπορεύθη ἐν τῇ οἰκίᾳ ἔνθεν καὶ ἔνθεν· καὶ ἀνέβη καὶ συνέκαμψεν ἐπὶ τὸ παιδάριον ἕως ἑπτάκις· καὶ ἤνοιξε τὸ παιδάριον τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ. Καὶ ἐξεβόησεν Ἐλισαιὲ πρὸς Γιεζὶ, καὶ εἶπε, κάλεσον τὴν Σωμανίτην ταύτην· καὶ ἐκάλεσε, καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτόν· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, λάβε τὸν υἱόν σου. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ γυνὴ, καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησεν ἐπὶ τὴν γῆν· καὶ ἔλαβε τὸν υἱὸν αὐτῆς, καὶ ἐξῆλθε. Καὶ Ἐλισαιὲ ἐπέστρεψεν εἰς Γάλγαλα· καὶ ὁ λιμὸς ἐν τῇ γῇ, καὶ υἱοὶ τῶν προφητῶν ἐκάθηντο ἐνώπιον αὐτοῦ· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ τῷ παιδαρίῳ αὐτοῦ, ἐπίστησον τὸν λέβητα τὸν μέγαν, καὶ ἕψε ἕψεμα τοῖς υἱοῖς τῶν προφητῶν. Καὶ ἐξῆλθεν εἰς τὸν ἀγρὸν συλλέξαι ἀριώθ· καὶ εὗρεν ἄμπελον ἐν τῷ ἀγρῷ, καὶ συνέλεξεν ἀπ’ αὐτῆς τολύπην ἀγρίαν πλῆρες τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ ἐνέβαλεν εἰς τὸν λέβητα τοῦ ἑψέματος, ὅτι οὐκ ἔγνωσαν, καὶ ἐνέχει τοῖς ἀνδράσι φαγεῖν· καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐσθίειν αὐτοὺς ἐκ τοῦ ἑψέματος, καὶ ἰδοὺ ἀνεβόησαν, καὶ εἶπαν, θάνατος ἐν τῷ λέβητι, ἄνθρωπε τοῦ Θεοῦ· καὶ οὐκ ἠδύναντο φαγεῖν. Καὶ εἶπε, λάβετε ἄλευρον, καὶ ἐμβάλετε εἰς τὸν λέβητα· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ πρὸς Γιεζὶ τὸ παιδάριον, ἔγχει τῷ λαῷ καὶ ἐσθιέτωσαν· καὶ οὐκ ἐγενήθη ἐκεῖ ἔτι ῥῆμα πονηρὸν ἐν τῷ λέβητι. Καὶ ἀνὴρ διῆλθεν ἐκ

Βαιθαρισὰ, καὶ ἤνεγκε πρὸς τὸν ἄνθρωπον τοῦ Θεοῦ πρωτογεννημάτων εἴκοσι ἄρτους κριθίνους καὶ παλάθας· καὶ εἶπε, δότε τῷ λαῷ καὶ ἐσθιέτωσαν. Καὶ εἶπεν ὁ λειτουργὸς αὐτοῦ, τί δῶ τοῦτο ἐνώπιον ἑκατὸν ἀνδρῶν; καὶ εἶπε, δὸς τῷ λαῷ καὶ ἐσθιέτωσαν, ὅτι τάδε λέγει Κύριος, φάγονται καὶ καταλείψουσι. Καὶ ἔφαγον καὶ κατέλιπον, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου.

# 5

Καὶ Ναιμὰν ὁ ἄρχων τῆς δυνάμεως Συρίας ἦν ἀνὴρ μέγας ἐνώπιον τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ τεθαυμασμένος προσώπῳ, ὅτι ἐν ὑτῶ ἔδωκε Κύριος σωτηρίαν Συρίᾳ· καὶ ὁ ἀνὴρ ἦν δυνατὸς ἰσχύϊ, λελεπρωμένος. Καὶ Συρία ἐξῆλθον μονόζωνοι, καὶ ᾐχμαλώτευσαν ἐκ γῆς Ἰσραὴλ νεάνιδα μικρὰν, καὶ ἦν ἐνώπιον τῆς γυναικὸς Ναιμάν. Ἡ δὲ εἶπε τῇ κυρίᾳ αὐτῆς, ὄφελον ὁ κύριός μου ἐνώπιον τοῦ προφήτου τοῦ Θεοῦ τοῦ ἐν Σαμαρείᾳ, τότε ἀποσυνάξει αὐτὸν ἀπὸ τῆς λέπρας αὐτοῦ. Καὶ εἰσῆλθε καὶ ἀπήγγειλε τῷ κυρίῳ ἑαυτῆς, καὶ εἶπεν, οὕτως καὶ οὕτως ἐλάλησεν ἡ νεᾶνις ἡ ἐκ γῆς Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε βασιλεὺς Συρίας πρὸς Ναιμὰν, δεῦρο, εἴσελθε καὶ ἐξαποστελῶ βιβλίον πρὸς βασιλέα Ἰσραήλ· καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἔλαβεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ δέκα τάλαντα ἀργυρίου, καὶ ἑξακισχιλίους χρυσοῦς, καὶ δέκα ἀλλασσομένας στολὰς. Καὶ ἤνεγκε τὸ βιβλίον πρὸς τὸν βασιλέα Ἰσραὴλ, λέγων, καὶ νῦν ὡς ἂν ἔλθῃ τὸ βιβλίον τοῦτο πρὸς σὲ, ἰδοὺ ἀπέστειλα πρὸς σὲ Ναιμὰν τὸν δοῦλόν μου, καὶ ἀποσυνάξεις αὐτὸν ἀπὸ τῆς λέπρας αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ὡς ἀνέγνω βασιλεὺς Ἰσραὴλ τὸ βιβλίον, διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ὁ Θεὸς ἐγὼ τοῦ θανατῶσαι καὶ

ζωοποιῆσαι, ὅτι οὗτος ἀποστέλλει πρὸς μὲ ἀποσυνάξαι ἄνδρα ἀπὸ τῆς λέπρας αὐτοῦ; ὅτι πλὴν γνῶτε δὴ καὶ ἴδετε ὅτι προφασίζεται οὗτός μοι. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν Ἐλισαιὲ, ὅτι διέῤῥηξεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἀπέστειλε πρὸς τὸν βασιλέα Ἰσραὴλ, λέγων, ἱνατί διέῤῥηξας τὰ ἱμάτιά σου; ἐλθέτω δὴ πρὸς μὲ Ναιμὰν, καὶ γνώτω ὅτι ἐστι προφήτης ἐν Ἰσραήλ. Καὶ ἦλθε Ναιμὰν ἐν ἵππῳ καὶ ἅρματι, καὶ ἔστη ἐπὶ θύρας οἴκου Ἐλισαιέ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἐλισαιὲ ἄγγελον πρὸς αὐτὸν, λέγων, πορευθεὶς λοῦσαι ἑπτάκις ἐν τῷ Ἰορδάνῃ, καὶ ἐπιστρέψει ἡ σάρξ σου σοὶ καὶ καθαρισθήσῃ. Καὶ ἐθυμώθη Ναιμάν καὶ ἀπῆλθε, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ εἶπον, πρὸς μὲ πάντως ἐξελεύσεται καὶ στήσεται, καὶ ἐπικαλέσεται ἐν ὀνόματι Θεοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσει τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὸν τόπον, καὶ ἀποσυνάξει τὸ λεπρόν. Οὐχὶ ἀγαθὸς Ἀβανὰ καὶ Φαρφὰρ ποταμοὶ Δαμασκοῦ ὑπὲρ πάντα τὰ ὕδατα Ἰσραὴλ; οὐχὶ πορευθεὶς λούσομαι ἐν αὐτοῖς, καὶ καθαρισθήσομαι; καὶ ἐξέκλινε καὶ ἀπῆλθεν ἐν θυμῷ. Καὶ ἤγγισαν οἱ παῖδες αὐτοῦ, καὶ ἐλάλησαν πρὸς αὐτὸν, μέγαν λόγον ἐλάλησεν ὁ προφήτης πρὸς σέ· οὐχὶ ποιήσεις; καὶ ὅτι εἶπε πρὸς σέ, λοῦσαι καὶ καθαρίσθητι. Καὶ κατέβη Ναιμὰν καὶ ἐβαπτίσατο ἐν τῷ Ἰορδάνῃ ἑπτάκις κατὰ τὸ ῥῆμα Ἐλισαῖε· καὶ ἐπέστρεψεν ἡ σὰρξ αὐτοῦ ὡς σὰρξ παιδαρίου μικροῦ, καὶ ἐκαθαρίσθη. Καὶ ἐπέστρεψε πρὸς Ἐλισαιὲ αὐτὸς καὶ πᾶσα ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, καὶ ἦλθε καὶ ἔστη ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἔγνωκα ὅτι οὐκ ἔστι Θεὸς ἐν πάσῃ τῇ γῇ, ὅτι ἀλλ’ ἢ ἐν τῷ Ἰσραήλ· καὶ νῦν λάβε τὴν εὐλογίαν παρὰ τοῦ δούλου σου. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ ζῇ Κύριος ᾧ παρέστην ἐνώπιον αὐτοῦ, εἰ λήψομαι· καὶ παρεβιάσατο αὐτὸν λαβεῖν, καὶ ἠπείθησε· Καὶ εἶπε Ναιμὰν, καὶ εἰ μὴ, δοθήτω δὴ τῷ δούλῳ σου γόμος ζεῦγος ἡμιόνων, καὶ σύ μοι δώσεις ἐκ τῆς γῆς τῆς πυῤῥᾶς, ὅτι οὐ ποιήσει ἔτι ὁ δοῦλός σου

ὁλοκαύτωμα καὶ θυσίασμα θεοῖς ἑτέροις ἀλλ᾽ ἢ τῷ Κυρίῳ τῷ ῥήματι τούτῳ. Καὶ ἱλάσεται Κύριος τῷ δούλῳ σου ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι τὸν κύριόν μου εἰς οἶκον Ῥεμμὰν προσκυνῆσαι ἐκεῖ· καὶ αὐτὸς ἐπαναπαύσεται ἐπὶ τῆς χειρός μου, καὶ προσκυνήσω ἐν οἴκῳ Ῥεμμὰν ἐν τῷ προσκυνεῖν αὐτὸν ἐν οἴκῳ Ῥεμμάν· καὶ ἱλάσεται δὴ Κύριος τῷ δούλῳ σου ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ. Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ πρὸς Ναιμὰν, δεῦρο εἰς εἰρήνην· καὶ ἀπῆλθεν ἀπ᾽ αὐτοῦ εἰς δεβραθὰ τῆς γῆς. Καὶ εἶπε Γιεζὶ τὸ παιδάριον Ἐλισαιὲ, ἰδοὺ ἐφείσατο ὁ κύριός μου τοῦ Ναιμὰν τοῦ Σύρου τούτου, τοῦ μὴ λαβεῖν ἐκ χειρὸς αὐτοῦ ἃ ἐνήνοχε· ζῇ Κύριος, ὅτι εἰ μὴ δραμοῦμαι ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ λήψομαι ἀπ᾽ αὐτοῦ τι. Καὶ ἐδίωξε Γιεζὶ ὀπίσω τοῦ Ναιμάν· καὶ εἶδεν αὐτὸν Ναιμὰν τρέχοντα ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψεν ἀπὸ τοῦ ἅρματος εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, εἰρήνη· ὁ κύριός μου ἀπεστειλέ με, λέγων, ἰδοὺ νῦν ἦλθον πρὸς μὲ δύο παιδάρια ἐξ ὄρους Ἐφραὶμ ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν προφητῶν· δὸς δὴ αὐτοῖς τάλαντον ἀργυρίου, καὶ δύο ἀλλασσομένας στολάς. Καὶ εἶπε, λάβε διτάλαντον ἀργυρίου· καὶ ἔλαβε δύο τάλαντα ἀρλυρίον ἐν δυσὶ θυλάκοις, καὶ δύο ἀλλασσομένας στολὰς, καὶ ἔδωκεν ἐπὶ δύο παιδάρια αὐτοῦ, καὶ ᾖραν ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν εἰς τὸ σκοτεινὸν, καὶ ἔλαβεν ἐκ τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ παρέθετο ἐν οἴκῳ, καὶ ἐξαπέστειλε τοὺς ἄνδρας. Καὶ αὐτὸς εἰσῆλθε, καὶ παρειστήκει πρὸς τὸν κύριον αὐτοῦ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐλισαιὲ, πόθεν Γιεζί; καὶ εἶπε Γιεζί, Οὐ πεπόρευται ὁ δοῦλός σου ἔνθα καὶ ἔνθα. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐλισαιὲ, οὐχὶ ἡ καρδία μου ἐπορεύθη μετὰ σοῦ ὅτε ἐπέστρεψεν ὁ ἀνὴρ ἀπὸ τοῦ ἅρματος εἰς συναντήν σοι; καὶ νῦν ἔλαβες τὸ ἀργύριον, καὶ νῦν ἔλαβες τὰ ἱμάτια, καὶ ἐλαιῶνας καὶ ἀμπελῶνας καὶ πρόβατα καὶ βόας καὶ παῖδας καὶ παιδίσκας. Καὶ ἡ λέπρα Ναιμὰν κολληθήσεται ἐν σοὶ καὶ ἐν τῷ σπέρματί σου εἰς τὸν

αἰῶνα· καὶ ἐξῆλθεν ἐκ προσώπου αὐτοῦ λελεπρωμένος ὡσεὶ χιών.

# 6

Καὶ εἶπον υἱοὶ τῶν προφητῶν πρὸς Ἐλισαιὲ, ἰδοὺ δὴ ὁ τόπος ἐν ᾧ ἡμεῖς οἰκοῦμεν ἐνώπιόν σου στενὸς ἀφ’ ἡμῶν. Πορευθῶμεν δὴ ἕως τοῦ Ἰορδάνου, καὶ λάβωμεν ἐκεῖθεν ἀνὴρ εἷς δοκὸν μίαν, καὶ ποιήσωμεν ἑαυτοῖς ἐκεῖ τοῦ οἰκεῖν ἐκεῖ· καὶ εἶπε, δεῦτε. Καὶ εἶπεν ὁ εἷς ἐπιεικῶς, δεῦρο μετὰ τῶν δούλων σου· καὶ εἶπεν, ἐγὼ πορεύσομαι. Καὶ ἐπορεύθη μετ’ αὐτῶν, καὶ ἦλθον εἰς τὸν Ἰορδάνην, καὶ ἔτεμνον τὰ ξύλα. Καὶ ἰδοὺ ὁ εἷς καταβάλλων τὴν δοκὸν, καὶ τὸ σιδήριον ἐξέπεσεν εἰς τὸ ὕδωρ, καὶ ἐβόησεν, ὦ κύριε, καὶ αὐτὸ κεκρυμμένον. Καὶ εἶπεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ, ποῦ ἔπεσε; καὶ ἔδειξεν αὐτῷ τὸν τόπον· καὶ ἀπέκνισε ξύλον καὶ ἔῤῥιψεν ἐκεῖ, καὶ ἐπεπόλασεν τὸ σιδήριον. Καὶ εἴρηκεν, ὕψωσον σεαυτῷ· καὶ ἐξέτεινε τὴν χεῖρα, καὶ ἔλαβεν αὐτό. Καὶ ὁ βασιλεὺς Συρίας ἦν πολεμῶν ἐν Ἰσραήλ· καὶ ἐβουλεύσατο πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, λέγων, εἰς τὸν τόπον τόνδε τινὰ ἐλμωνὶ παρεμβαλῶ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἐλισαιὲ πρὸς τὸν βασιλέα Ἰσραὴλ, λέγων, φύλαξαι μὴ παρελθεῖν ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, ὅτι ἐκεῖ Συρία κέκρυπται. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ εἰς τὸν τόπον ὃν εἶπεν αὐτῷ Ἐλισαιὲ, καὶ ἐφυλάξατο ἐκεῖθεν οὐ μίαν οὐδὲ δύο. Καὶ ἐξεκινήθη ἡ ψυχὴ βασιλέως Συρίας περὶ τοῦ λόγου τούτου· καὶ ἐκάλεσε τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, οὐκ ἀναγγελεῖτέ μοι τίς προδίδωσί με βασιλεῖ Ἰσραήλ; Καὶ εἶπεν εἷς τῶν παίδων αὐτοῦ, οὐχί κύριέ μου βασιλεῦ, ὅτι Ἐλισαιὲ ὁ προφήτης ὁ ἐν Ἰσραὴλ ἀναγγέλλει τῷ βασιλεῖ Ἰσραὴλ πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἐὰν

λαλήσῃς ἐν τῷ ταμείῳ τοῦ κοιτῶνός σου. Καὶ εἶπε, δεῦτε ἴδετε ποῦ οὗτος, καὶ ἀποστείλας λήψομαι αὐτόν· καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ, λέγοντες, ἰδοὺ ἐν Δωθαΐμ. Καὶ ἀπέστειλεν ἐκεῖ ἵππον καὶ ἅρμα καὶ δύναμιν βαρεῖαν, καὶ ἦλθον νυκτὸς καὶ περιεκύκλωσαν τὴν πόλιν. Καὶ ὤρθρισεν ὁ λειτουργὸς Ἐλισαιὲ ἀναστῆναι, καὶ ἐξῆλθε· καὶ ἰδοὺ δύναμις κυκλοῦσα τὴν πόλιν, καὶ ἵππος καὶ ἅρμα· καὶ εἶπε τὸ παιδάριον πρὸς αὐτὸν, ὦ κύριε, πῶς ποιήσομεν; Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, μὴ φοβοῦ, ὅτι πλείους οἱ μεθ’ ἡμῶν ὑπὲρ τοὺς μετ’ αὐτῶν. Καὶ προσηύξατο Ἐλισαιὲ, καὶ εἶπε, Κύριε, διάνοιξον δὴ τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ παιδαρίου καὶ ἰδέτω· καὶ διήνοιξε Κύριος τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ καὶ εἶδε· καὶ ἰδοὺ τὸ ὄρος πλῆρες ἵππων, καὶ ἅρμα πυρὸς περικύκλῳ Ἐλισαιέ. Καὶ κατέβησαν πρὸς αὐτόν· καὶ προσηύξατο πρὸς Κύριον, καὶ εἶπε, πάταξον δὴ τὸ ἔθνος τοῦτο ἀορασίᾳ· καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς ἀορασίᾳ, κατὰ τὸ ῥῆμα Ἐλισαιὲ. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ἐλισαιὲ, οὐχὶ αὕτη ἡ πόλις καὶ αὕτη ἡ ὁδός· δεῦτε ὀπίσω μου, καὶ ἄξω ὑμᾶς πρὸς τὸν ἄνδρα ὃν ζητεῖτε· καὶ ἀπήγαγεν αὐτοὺς πρὸς Σαμάρειαν. Καὶ ἐγένετο ὡς εἰσῆλθον εἰς Σαμάρειαν, καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ἄνοιξον δή Κύριε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν καὶ ἰδέτωσαν· καὶ διήνοιξε Κύριος τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ εἶδου· καὶ ἰδοὺ ἦσαν ἐν μέσῳ Σαμαρείας. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραήλ πρὸς Ἐλισαιὲ, ὡς εἶδεν αὐτοὺς, εἰ πατάξας πατάξω, πάτερ; Καὶ εἶπεν, Οὐ πατάξεις, εἰ μὴ οὓς ᾐχμαλώτευσας ἐν ῥομφαίᾳ σου καὶ τόξῳ σου σὺ τύπτεις· παράθες ἄρτους καὶ ὕδωρ ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ φαγέτωσαν καὶ πιέτωσαν, καὶ ἀπελθέτωσαν πρὸς τὸν κύριον αὐτῶν. Καὶ παρέθηκεν αὐτοῖς παράθεσιν μεγάλην, καὶ ἔφαγον καὶ ἔπιον· καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς, καὶ ἀπῆλθον πρὸς τὸν κύριον αὐτῶν· καὶ οὐ προσέθεντο ἔτι μονόζωνοι Συρίας τοῦ ἐλθεῖν εἰς γῆν Ἰσραήλ. Καὶ ἐγένετο μετὰ ταῦτα, καὶ ἤθροισεν υἱὸς Ἄδερ

βασιλεὺς Συρίας πᾶσαν τὴν παρεμβολὴν αὐτοῦ, καὶ ἀνέβη, καὶ περιεκάθισαν ἐπὶ Σαμάρειαν. Καὶ ἐγένετο λιμὸς μέγας ἐν Σαμαρείᾳ· καὶ ἰδοὺ περιεκάθηντο ἐπ᾽ αὐτὴν ἕως οὗ ἐγενήθη κεφαλὴ ὄνου πεντήκοντα ἀργυρίου, καὶ τέταρτον τοῦ κάβου κόπρου περιστερῶν πέντε ἀργυρίου. Καὶ ἦν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ διαπορευόμενος ἐπὶ τοῦ τείχους· καὶ γυνὴ ἐβόησε πρὸς αὐτὸν, λέγουσα, Σῶσον κύριε βασιλεῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῇ, μὴ σὲ σώσαι Κύριος, πόθεν σώσω σε; μὴ ἀπὸ ἅλωνος ἢ ἀπὸ ληνοῦ; Καὶ εἶπεν αὐτῇ ὁ βασιλεύς, τί ἐστι σοι; καὶ εἶπεν ἡ γυνή, αὕτη εἶπε πρὸς μέ, δὸς τὸν υἱόν σου καὶ φαγόμεθα αὐτὸν σήμερον, καὶ τὸν υἱόν μου φαγόμεθα αὐτὸν αὔριον. Καὶ ἡψήσαμεν τὸν υἱόν μου καὶ ἐφάγομεν αὐτὸν, καὶ εἶπον πρὸς αὐτὴν τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ, δὸς τὸν υἱόν σου καὶ φάγωμεν αὐτόν· καὶ ἔκρυψε τὸν υἱὸν αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ τοὺς λόγους τῆς γυναικὸς, διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς διεπορεύετο ἐπὶ τοῦ τείχους, καὶ εἶδεν ὁ λαὸς τὸν σάκκον ἐπὶ τῆς σαρκὸς αὐτοῦ ἔσωθεν. Καὶ εἶπε, τάδε ποιήσαι μοι ὁ Θεὸς καὶ τάδε προσθείη, εἰ στήσεται ἡ κεφαλὴ Ἐλισαιὲ ἐπ᾽ αὐτῷ σήμερον. Καὶ Ἐλισαιὲ ἐκάθητο ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἐκάθηντο μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἀπέστειλεν ἄνδρα πρὸ προσώπου αὐτοῦ· πρὶν ἐλθεῖν τὸν ἄγγελον πρὸς αὐτόν, καὶ αὐτὸς εἶπε πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους, εἰ εἴδετε ὅτι ἀπέστειλεν ὁ υἱὸς τοῦ φονευτοῦ οὗτος ἀφελεῖν τὴν κεφαλήν μου; ἴδετε ὡς ἂν ἔλθῃ ὁ ἄγγελος, ἀποκλείσατε τὴν θύραν, καὶ παραθλίψατε αὐτὸν ἐν τῇ θύρᾳ· οὐχὶ φωνὴ τῶν ποδῶν τοῦ κυρίου αὐτοῦ κατόπισθεν αὐτοῦ; Ἔτι αὐτοῦ λαλοῦντος μετ᾽ αὐτῶν, καὶ ἰδοὺ ἄγγελος κατέβη πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ αὕτη ἡ κακία παρὰ Κυρίου· τί ὑπομείνω τῷ Κυρίῳ ἔτι;

# 7

Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ ἄκουσον λόγον Κυρίου· τάδε λέλει Κύριος, ὡς ἡ ὥρα αὔτη, αὔριον μέτρον σεμιδάλεως σίκλου, καὶ δίμετρον κριθῶν σίκλου, ἐν ταῖς πύλαις Σαμαρείας. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ τριστάτης ἐφ’ ὃν ὁ βασιλεὺς ἐπανεπαύετο ἐπὶ τὴν χεῖρα αὐτοῦ τῷ Ἐλισαιὲ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ποιήσει Κύριος καταράκτας ἐν οὐρανῷ, μὴ ἔσται τὸ ῥῆμα τοῦτο; καὶ Ἐλισαιὲ εἶπεν, ἰδοὺ σὺ ὄψει τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἐκεῖθεν οὐ φάγῃ. Καὶ τέσσαρες ἄνδρες ἦσαν λεπροὶ παρὰ τὴν θύραν τῆς πόλεως, καὶ εἶπεν ἀνὴρ πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, τί ἡμεῖς καθήμεθα ὧδε ἕως ἀποθάνωμεν; Ἐὰν εἴπωμεν, εἰσέλθωμεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ ὁ λιμὸς ἐν τῇ πόλει, καὶ ἀποθανούμεθα ἐκεῖ· καὶ ἐὰν καθίσωμεν ὧδε, καὶ ἀποθανούμεθα· καὶ νῦν δεῦτε, καὶ ἐμπεσωμεν εἰς τὴν παρεμβολὴν Συρίας· ἐὰν ζωογονήσωσιν ἡμᾶς, καὶ ζησόμεθα· καὶ ἐὰν θανατώσωσιν ἡμᾶς, καὶ ἀποθανούμεθα. Καὶ ἀνέστησαν ἐν τῷ σκότει εἰσελθεῖν εἰς τὴν παρεμβολὴν Συρίας· καὶ ἦλθον εἰς μέρος παρεμβολῆς Συρίας, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἔστιν ἀνὴρ ἐκεῖ. Καὶ Κύριος ἀκουστὴν ἐποίησε παρεμβολὴν τὴν Συρίας φωνὴν ἅρματος καὶ φωνὴν ἵππου, φωνὴν δυνάμεως μεγάλης· καὶ εἶπεν ἀνὴρ πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, νῦν ἐμισθώσατο ἐφ’ ἡμᾶς ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ τοὺς βασιλέας τῶν Χετταίων καὶ τοὺς βασιλέας Αἰγύπτου τοῦ ἐλθεῖν ἐφ’ ἡμᾶς. Καὶ ἀνέστησαν καὶ ἀπέδρασαν ἐν τῷ σκότει καὶ ἐγκατέλιπον τὰς σκηνὰς αὐτῶν, καὶ τοὺς ἵππους αὐτῶν, καὶ τοὺς ὄνους αὐτῶν ἐν τῇ παρεμβολῇ ὡς ἔστι, καὶ ἔφυγον πρὸς τὴν ψυχὴν ἑαυτῶν. Καὶ εἰσῆλθον οἱ λεπροὶ οὗτοι ἕως μέρους τῆς παρεμβολῆς, καὶ εἰσῆλθον εἰς σκηνὴν μίαν, καὶ ἔφαγον, καὶ ἔπιον, καὶ ἦραν ἐκεῖθεν ἀργύριον, καὶ χρυσίον, καὶ ἱματισμόν· καὶ

ἐπορεύθησαν, καὶ ἐπέστρεψαν ἐκεῖθεν, καὶ εἰσῆλθον εἰς σκηνὴν ἄλλην, καὶ ἔλαβον ἐκεῖθεν καὶ ἐπορεύθησαν, καὶ κατέκρυψαν. Καὶ εἶπεν ἀνὴρ πρὸς τὸν πλησιον αὐτοῦ, οὐχ οὕτως ἡμεῖς ποιοῦμεν· ἡ ἡμέρα αὕτη, ἡμέρα εὐαγγελίας ἐστὶ, καὶ ἡμεῖς σιωπῶμεν, καὶ μένομεν ἕως φωτὸς τοῦ πρωΐ, καὶ εὑρήσομεν ἀνομίαν· καὶ νῦν δεῦρο, καὶ εἰσέλθωμεν καὶ ἀναγγείλωμεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως. Καὶ εἰσῆλθον καὶ ἐβόησαν πρὸς τὴν πύλην τῆς πόλεως, καὶ ἀνήγγειλαν αὐτοῖς, λέγοντες, εἰσήλθομεν εἰς τὴν παρεμβολὴν Συρίας, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἔστιν ἐκεῖ ἀνὴρ καὶ φωνὴ ἀνθρώπου, ὅτι εἰ μὴ ἵππος δεδεμένος καὶ ὄνος, καὶ αἱ σκηναὶ αὐτῶν ὡς εἰσί. Καὶ ἐβόησαν οἱ θυρωροὶ, καὶ ἀνήγγειλαν εἰς τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως ἔσω. Καὶ ἀνέστη ὁ βασιλεὺς νυκτὸς, καὶ εἶπε πρὸς τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ἀναγγελῶ δὴ ὑμῖν ἃ ἐποίησεν ἡμῖν Συρία· ἔγνωσαν ὅτι πεινῶμεν ἡμεῖς, καὶ ἐξῆλθαν ἐκ τῆς παρεμβολῆς καὶ ἐκρύβησαν ἐν τῷ ἀγρῷ, λέγοντες, ὅτι ἐξελεύσονται ἐκ τῆς πόλεως, καὶ συλληψόμεθα αὐτοὺς ζῶντας, καὶ εἰς τὴν πόλιν εἰσελευσόμεθα. Καὶ ἀπεκρίθη εἷς τῶν παίδων αὐτοῦ καὶ εἶπε, λαβέτωσαν δὴ πέντε τῶν ἵππων τῶν ὑπολελειμμένων οἳ κατελείφθησεν ὧδε, ἰδού εἰσι πρὸς πᾶν τὸ πλῆθος Ἰσραὴλ τὸ ἐκλεῖπον, καὶ ἀποστελοῦμεν ἐκεῖ καὶ ὀψόμεθα. Καὶ ἔλαβον δύο ἐπιβάτας ἵππων· καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ ὀπίσω τοῦ βασιλέως Συρίας, λέγων, δεῦτε, καὶ ἴδετε. Καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτῶν ἕως τοῦ Ἰορδάνου. καὶ ἰδοὺ πᾶσα ἡ ὁδὸς πλήρης ἱματίων καὶ σκευῶν ὧν ἔῤῥιψε Συρία ἐν τῷ θαμβεῖσθαι αὐτούς· καὶ ἐπέστρεψαν οἱ ἄγγελοι καὶ ἀνήγγειλαν τῷ βασιλεῖ. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ λαὸς καὶ διήρπασεν τὴν παρεμβολὴν Συρίας· καὶ ἐγένετο μέτρον σεμισάλεως σίκλου, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου, καὶ δίμετρον κριθῶν σίκλου. Καὶ ὁ βασιλεὺς κατέστησε τὸν τριστάτην ἐφ’ ὃν ὁ βασιλεὺς ἐπανεπαύετο τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἐπὶ τῆς

πυλῆς· καὶ συνεπάτησεν αὐτὸν ὁ λαὸς ἐν τῇ πύλῃ, καὶ ἀπέθανε καθὰ ἐλάλησεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ, ὃς ἐλάλησεν ἐν τῷ καταβῆναι τὸν ἄγγελον πρὸς αὐτόν. Καὶ ἐγένετο καθὰ ἐλάλησεν Ἐλισαιὲ πρὸς τὸν βασιλέα, λέγων, δίμετρον κριθῆς σίκλου καὶ μέτρον σεμιδάλεως σίκλου· καὶ ἔσται ὡς ἡ ὥρα αὔριον ἐν τῇ πύλῃ Σαμαρείας. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ τριστάτης τῷ Ἐλισαιὲ, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ Κύριος ποιεῖ καταράκτας ἐν τῷ οὐρανῷ, μὴ ἔσται τὸ ῥῆμα τοῦτο; καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ἰδοὺ ὄψει τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἐκεῖθεν οὐ μὴ φάγῃ. Καὶ ἐγένετο οὕτως, καὶ συνεπάτησαν αὐτὸν ὁ λαὸς ἐν τῇ πύλῃ, καὶ ἀπέθανε.

# 8

Καὶ Ἐλισαιὲ ἐλάλησε πρὸς τὴν γυναῖκα, ἧς ἐζωπύρησε τὸν υἱὸν, λέγων, ἀνάστηθι καὶ δεῦρο σὺ καὶ ὁ οἶκός σου, καὶ παροίκει οὗ ἐὰν παροικήσῃς, ὅτι κέκληκε Κύριος λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, καί γε ἦλθεν ἐπὶ τὴν γῆν ἑπτὰ ἔτη. Καὶ ἀνέστη ἡ γυνὴ, καὶ ἐποίησε κατὰ τὸ ῥῆμα Ἐλισαιὲ καὶ αὐτὴ καὶ ὁ οἶκος αὐτῆς, καὶ παρῴκει ἐν γῇ ἀλλοφύλων ἑπτὰ ἔτη. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὸ τέλος τῶν ἑπτὰ ἐτῶν, καὶ ἐπέστρεψεν ἡ γυνὴ ἐκ γῆς ἀλλοφύλων εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἦλθε βοῆσαι πρὸς τὸν βασιλέα περὶ τοῦ οἴκου ἑαυτῆς καὶ περὶ τῶν ἀγρῶν αὐτῆς. Καὶ ὁ βασιλεὺς ἐλάλει πρὸς Γιεζὶ τὸ παιδάριον Ἐλισαιὲ τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, λέγων, διήγησαι δὴ ἐμοὶ πάντα τὰ μεγάλα ἃ ἐποίησεν Ἐλισαιέ. Καὶ ἐγένετο αὐτοῦ ἐξηγουμένου τῷ βασιλεῖ, ὡς ἐζωπύρησεν υἱὸν τεθνηκότα, καὶ ἰδοὺ ἡ γυνὴ ἧς ἐζωπύρησε τὸν υἱὸν αὐτῆς Ἐλισαιὲ, βοῶσα πρὸς τὸν βασιλέα περὶ τοῦ οἴκου ἑαυτῆς καὶ περὶ τῶν ἀγρῶν ἑαυτῆς· καὶ εἶπε Γιεζὶ, Κύριε

βασιλεῦ, αὕτη ἡ γυνὴ, καὶ οὗτος ὁ υἱὸς αὐτῆς, ὃν ἐζωπύρησεν Ἐλισαιέ. Καὶ ἐπηρώτησεν ὁ βασιλεὺς τὴν γυναῖκα· καὶ διηγήσατο αὐτῷ· καὶ ἔδωκεν αὐτῇ ὁ βασιλεὺς εὐνοῦχον ἕνα, λέγων, ἐπίστρεψον πάντα τὰ αὐτῆς, καὶ πάντα τὰ γεννήματα τοῦ ἀγροῦ ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς κατέλιπε τὴν γῆν ἕως τοῦ νῦν. Καὶ ἦλθεν Ἐλισαιὲ εἰς Δαμασκόν· καὶ υἱὸς Ἄδερ βασιλεὺς Συρίας ἠῤῥώστησε, καὶ ἀνήγγειλαν αὐτῷ, λέγοντες, ἥκει ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἕως ᾧδε. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ἀζαὴλ, λάβε ἐν τῇ χειρί σου μαναὰ, καὶ δεῦρο εἰς ἀπαντὴν τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπιζήτησον τὸν Κύριον παρ’ αὐτοῦ, λέγων, εἰ ζήσομαι ἐκ τῆς ἀῤῥωστίας μου ταύτης; Καὶ ἐπορεύθη Ἀζαὴλ εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ, καὶ ἔλαβε μαναὰ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ ἀγαθὰ Δαμασκοῦ, ἄρσιν τεσσαράκοντα καμήλων, καὶ ἦλθε καὶ ἔστη ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ εἶπε πρὸς Ἐλισαιὲ, υἱός σου υἱὸς Ἄδερ βασιλεὺς Συρίας ἀπέστειλέ με πρὸς σὲ ἐπερωτῆσαι, λέγων, εἰ ζήσομαι ἐκ τῆς ἀῤῥωστίας μου ταύτης; Καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, δεῦρο, εἶπον, ζωῇ ζήσῃ, καὶ ἔδειξέ μοι Κύριος ὅτι θανάτῳ ἀποθανῇ. Καὶ παρέστη τῷ προσώπῳ αὐτοῦ, καὶ ἔθηκεν ἕως αἰσχύνης· καὶ ἔκλαυσεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀζαὴλ, τί ὅτι ὁ κύριός μου κλαίει; καὶ εἶπεν, ὅτι οἶδα ὅσα ποιήσεις τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ κακά· τὰ ὀχυρώματα αὐτῶν ἐξαποστελεῖς ἐν πυρὶ, καὶ τοὺς ἐκλεκτοὺς αὐτῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἀποκτενεῖς, καὶ τὰ νήπια αὐτῶν ἐνσείσεις, καὶ τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας αὐτῶν ἀναῤῥήξεις. Καὶ εἶπεν Ἀζαὴλ, τίς ἐστιν ὁ δοῦλός σου, ὁ κύων ὁ τεθνηκὼς, ὅτι ποιήσει τὸ ῥῆμα τοῦτο; καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, ἔδειξέ μοι Κύριός σε βασιλεύοντα ἐπὶ Συρίαν. Καὶ ἀπῆλθεν ἀπὸ Ἐλισαιὲ, καὶ εἰσῆλθε πρὸς τὸν κύριον αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί εἶπέ σοι Ἐλισαιέ; καὶ εἶπεν, εἶπέ μοι, ζωῇ ζήσῃ. Καὶ ἐγένετο τῇ ἐπαύριον, καὶ ἔλαβε τὸ μαχβὰρ καὶ ἔβαψεν ἐν τῷ

ὕδατι, καὶ περιέβαλεν ἐπὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ ἀπέθανε· καὶ ἐβασίλευσεν Ἀζαὴλ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ἐν ἔτει πέμπτῳ τῷ Ἰωρὰμ υἱῷ Ἀχαὰβ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, καὶ Ἰωσαφὰτ βασιλεῖ Ἰούδα, ἐβασίλευσεν Ἰωρὰμ υἱὸς Ἰωσαφὰτ βασιλεὺς Ἰούδα. Υἱὸς τριάκοντα καὶ δύο ἐτῶν ἦν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ὀκτὼ ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ βασιλέων Ἰσραὴλ καθὼς ἐποίησεν οἶκος Ἀχαὰβ, ὅτι θυγάτηρ Ἀχαὰβ ἦν αὐτῷ εἰς γυναῖκα, καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου. Καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος διαφθεῖραι τὸν Ἰούδαν διὰ Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καθὼς εἶπε δοῦναι αὐτῷ λύχνον καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας. Ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ ἠθέτησεν Ἐδὼμ ὑποκάτωθεν χειρὸς Ἰούδα, καὶ ἐβασίλευσαν ἐφ᾽ ἑαυτὸν βασιλέα. Καὶ ἀνέβη Ἰωρὰμ εἰς Σιὼρ, καὶ πάντα τὰ ἅρματα τὰ μετ᾽ αὐτοῦ· καὶ ἐγένετο αὐτοῦ ἀναστάντος, καὶ ἐπάταξε τὸν Ἐδὼμ τὸν κυκλώσαντα ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ τοὺς ἄρχοντας τῶν ἁρμάτων, καὶ ἔφυγεν ὁ λαὸς εἰς τὰ σκηνώματα αὐτῶν. Καὶ ἠθέτησεν Ἐδὼμ ὑποκάτω τῆς χειρὸς Ἰούδα ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· τότε ἠθέτησε Λοβνὰ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωρὰμ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γέγραπται ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωρὰμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐβασίλευσεν Ὀχοζίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ἐν ἔτει δωδεκάτῳ τῷ Ἰωρὰμ υἱῷ Ἀχαὰβ βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ὀχοζίας υἱὸς Ἰωράμ. Υἱὸς εἴκοσι καὶ δύο ἐτῶν Ὀχοζίας ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν, καὶ ἐνιαυτὸν ἕνα ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Γοθολία θυγάτηρ Ἀμβρὶ βασιλέως Ἰσραήλ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ οἴκου Ἀχαὰβ, καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου καθὼς ὁ οἶκος Ἀχαάβ. Καὶ ἐπορεύθη μετὰ Ἰωρὰμ υἱοῦ

Ἀχαὰβ εἰς πόλεμον μετὰ Ἀζαὴλ βασιλέως ἀλλοφύλων ἐν Ῥεμμὼθ Γαλαὰδ, καὶ ἐπάταξαν οἱ Σύροι τὸν Ἰωράμ. Καὶ ἐπέστρεψεν ὁ βασιλεὺς Ἰωρὰμ τοῦ ἰατρευθῆναι ἐν Ἰεζράελ ἀπὸ τῶν πληγῶν ὧν ἐπάταξαν αὐτὸν ἐν Ῥεμμὼθ, ἐν τῷ πολεμεῖν αὐτὸν μετὰ Ἀζαὴλ βασιλέως Συρίας· καὶ Ὀχοζίας υἱὸς Ἰωρὰμ κατέβη τοῦ ἰδεῖν τὸν Ἰωρὰμ υἱὸν Ἀχαὰβ ἐν Ἰεζράελ, ὅτι ἠῤῥώστει αὐτός.

# 9

Καὶ Ἐλισαιὲ ὁ προφήτης ἐκάλεσεν ἕνα τῶν υἱῶν τῶν προφητῶν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, ζῶσαι τὴν ὀσφύν σου, καὶ λάβε τὸν φακὸν τοῦ ἐλαίου τούτου ἐν τῇ χειρί σου, καὶ δεῦρο εἰς Ῥεμμὼθ Γαλαάδ. Καὶ εἰσελεύσῃ ἐκεῖ, καὶ ὄψει ἐκεῖ Ἰοὺ υἱὸν Ἰωσαφὰτ υἱοῦ Ναμεσσὶ, καὶ εἰσελεύσῃ καὶ ἀναστήσεις αὐτὸν ἐκ μέσου τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ εἰσάξεις αὐτὸν εἰς τὸ ταμεῖον ἐν ταμείῳ. Καὶ λήψῃ τὸν φακὸν τοῦ ἐλαίου, καὶ ἐπιχεεῖς ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ εἰπον, τάδε λέγει Κύριος, κέχρικά σε εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ ἀνοίξεις τὴν θύραν, καὶ φεύξῃ καὶ οὐ μενεῖς. Καὶ ἐπορεύθη τὸ προδάριον ὁ παιφήτης εἰς Ῥεμμὼθ Γαλαάδ. Καὶ εἰσῆλθε· καὶ ἰδοὺ οἱ ἄρχοντες τῆς δυνάμεως ἐκάθηντο, καὶ εἶπε, λόγος μοι πρὸς σὲ ὁ ἄρχων· καὶ εἶπεν Ἰοὺ, πρὸς τίνα ἐκ πάντων ἡμῶν; καὶ εἶπε, πρὸς σέ ὁ ἄρχων. Καὶ ἀνέστη καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἐπέχεε τὸ ἔλαιον ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ, κέχρικά σε εἰς βασιλέα ἐπὶ λαὸν Κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ. Καὶ ἐξολοθρεύσεις τὸν οἶκον Ἀχαὰβ τοῦ κυρίου σου ἐκ προσώπου σου, καὶ ἐκδικὴσεις τὰ αἵματα τῶν δούλων μου τῶν προφητῶν, καὶ τὰ αἵματα πάντων τῶν δούλων Κυρίου ἐκ χειρὸς Ἰεζάβελ, καὶ ἐκ

χειρὸς ὅλου τοῦ οἴκου Ἀχαὰβ, καὶ ἐξολθρεύσεις τῷ οἴκῳ Ἀχαὰβ οὐροῦντα πρὸς τοῖχον, καὶ συνεχόμενον καὶ ἐγκαταλελειμμένον ἐν Ἰσραήλ. Καὶ δώσω τὸν οἶκον Ἀχαὰβ ὡς τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, καὶ ὡς τὸν οἶκον Βαασὰ υἱοῦ Ἀχιά. Καὶ τὴν Ἰεζάβελ καταφάγονται οἱ κύνες ἐν τῇ μερίδι Ἰσζράελ, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ θάπτων· καὶ ἤνοιξε τὴν θύραν καὶ ἔφυγε. Καὶ Ἰοὺ ἐξῆλθε πρὸς τοὺς παῖδας τοῦ κυρίου αὐτοῦ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, εἰρήνη; τί ὅτι εἰσῆλθεν ὁ ἐπίληπτος οὗτος πρὸς σέ; καὶ εἶπεν αὐτοῖς, ὑμεῖς οἴδατε τὸν ἄνδρα καὶ τὴν ἀδολεσχίαν αὐτοῦ. Καὶ εἶπον, ἄδικον, ἀπάγγειλον δὴ ἡμῖν. Καὶ εἶπεν Ἰοὺ πρὸς αὐτοὺς, οὕτω καὶ οὕτω ἐλάλησε πρὸς μὲ, λέγων, καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, κέχρικά σε εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰσραήλ. καὶ ἀκούσαντες ἔσπευσαν, καὶ ἔλαβεν ἕκαστος τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, καὶ ἔθηκαν ὑποκάτω αὐτοῦ ἐπὶ τὸ γαρὲμ τῶν ἀναβάθμων· καὶ ἐσάλπισαν ἐν κερατίνῃ, καὶ εἶπαν, ἐβασίλευσεν Ἰού. Καὶ συνεστράφη Ἰοὺ υἱὸς Ἰωσαφὰτ υἱοῦ Ναμεσσὶ πρὸς Ἰωράμ· καὶ Ἰωρὰμ αὐτὸς ἐφύλασσεν ἐν Ῥεμμὼθ Γαλαὰδ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου Ἀζαὴλ βασιλέως Συρίας. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἰωρὰμ ὁ βασιλεὺς ἰατρευθῆναι ἐν Ἰσζράελ ἀπὸ τῶν πληγῶν ὧν ἔπαισαν αὐτὸν οἱ Σύροι ἐν τῷ πολεμεῖν αὐτὸς μετὰ Ἀζαὴλ βασιλέως Συρίας. Καὶ εἶπεν Ἰοὺ, εἰ ἔστι ψυχὴ ὑμῶν μετ’ ἐμοῦ, μὴ ἐξελθέτω ἐκ τῆς πόλεως διαπεφευγὼς τοῦ πορευθῆναι καὶ ἀπαγγεῖλαι ἐν Ἰεζράελ. Καὶ ἵππευσε καὶ ἐπορεύθη Ἰοὺ, καὶ κατέβη εἰς Ἰεζράελ, ὅτι Ἰωρὰμ βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐθεραπεύετο ἐν τῷ Ἰεζράελ ἀπὸ τῶν τοξευμάτων, ὧν κατετόξευσαν αὐτὸν οἱ Ἀραμὶν ἐν τῇ Ῥαμμὰθ ἐν τῷ πολέμῳ μετὰ Ἀζαὴλ βασιλέως Συρίας, ὅτι αὐτὸς δυνατὸς καὶ ἀνὴρ δυνάμεως· καὶ Ὀχοζίας βασιλεὺς Ἰούδα κατέβη ἰδεῖν τὸν Ἰωράμ. Καὶ ὁ σκοπὸς ἀνέβη ἐπὶ τὸν πύργον Ἰεζράελ, καὶ εἶδε τὸν κονιορτὸν Ἰοὺ ἐν τῷ παραγίνεσθαι αὐτὸν, καὶ εἶπε, Κονιορτὸν ἐγὼ

βλέπω· καὶ εἶπεν Ἰωρὰμ, λάβε ἐπιβάτην, καὶ ἀπόστειλον ἔμπροσθεν αὐτῶν, καὶ εἰπάτω ἡ εἰρήνη. Καὶ ἐπορεύθη ἐπιβάτης ἵππου εἰς ἀπαντὴν αὐτῶν, καὶ εἶπε, τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, ἡ εἰρήνη· καὶ εἶπεν Ἰού, τί σοι καὶ εἰρήνῃ; ἐπίστρεφε εἰς τὰ ὀπίσω μου· καὶ ἀπήγγειλεν ὁ σκοπὸς, λέγων, ἦλθεν ὁ ἄγγελος ἕως αὐτῶν, καὶ οὐκ ἀνέστρεψε. Καὶ ἀπέστειλεν ἐπιβάτην ἵππου δεύτερον, καὶ ἦλθε πρὸς αὐτὸν καὶ εἶπε, τάδε λέγει ὁ βασιλεύς, ἡ εἰρήνη· καὶ εἶπεν Ἰοὺ, τί σοι καὶ εἰρήνῃ; ἐπιστρέφου εἰς τὰ ὀπίσω μου. Καὶ ἀπήγγειλεν ὁ σκοπὸς, λέγων, ἦλθεν ἕως αὐτῶν καὶ οὐκ ἀνέστρεψε, καὶ ὁ ἄγων ἦγε τὸν Ἰοὺ υἱὸν Ναμεσσὶ, ὅτι ἐν παραλλαγῇ ἐγένετο. Καὶ εἶπεν Ἰωρὰμ, ζεῦξον· καὶ ἔζευξεν ἅρμα· καὶ ἐξῆλθεν Ἰωρὰμ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ Ὀχοζίας βασιλεὺς Ἰούδα, ἀνὴρ ἐν τῷ ἅρματι αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθον εἰς ἀπαντὴν Ἰοὺ, καὶ εὗρον αὐτὸν ἐν τῇ μερίδι Ναβουθαὶ τοῦ Ἰεζραηλίτου. Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδεν Ἰωρὰμ τὸν Ἰοὺ, καὶ εἶπεν, ἡ εἰρήνη Ἰοὺ; καὶ εἶπεν Ἰού, τί εἰρήνη; ἔτι αἱ πορνεῖαι Ἰεζάβελ τῆς μητρός σου καὶ τὰ φάρμακα αὐτῆς τὰ πολλά. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωρὰμ τὰς χεῖρας αὐτοῦ, καὶ ἔφυγε· καὶ εἶπε πρὸς Ὀχοζίαν, δόλος Ὀχοζία. Καὶ ἔπλησεν Ἰοὺ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐν τῷ τόξῳ, καὶ ἐπάταξε τὸν Ἰωρὰμ ἀνὰμέσον τῶν βραχιόνων αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθε τὸ βέλος αὐτοῦ διὰ τῆς καρδίας αὐτοῦ, καὶ ἔκαμψεν ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ. Καὶ εἶπε πρὸς Βαδεκὰρ τὸν τριστάτην αὐτοῦ, ῥίψον αὐτὸν ἐν τῇ μερίδι ἀγροῦ Ναβουθαὶ τοῦ Ἰεζραηλίτου, ὅτι μνημονεύω ἐγὼ καὶ σὺ ἐπιβεβηκότες ἐπὶ ζεύγη ὀπίσω Ἀχαὰβ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ Κύριος ἔλαβεν ἐπ’ αὐτὸν τὸ λῆμμα τοῦτο· Εἰ μὴ τὰ αἵματα Ναβουθαὶ καὶ τὰ αἵματα τῶν υἱῶν αὐτοῦ εἶδον ἐχθὲς, φησὶ Κύριος, καὶ ἀνταποδώσω αὐτῷ ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ, φησὶ Κύριος· καὶ νῦν ἄρας δὴ ῥίψον αὐτὸν ἐν τῇ μερίδι κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου. Καὶ Ὀχοζίας βασιλεὺς Ἰούδα εἶδε καὶ ἔφυγεν ὁδὸν

Βαιθγάν· καὶ ἐδίωξεν ὀπίσω αὐτοῦ Ἰού, καὶ εἶπε, καί γε αὐτόν· καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν πρὸς τῷ ἄρματι ἐν τῷ ἀναβαίνειν Γαΐ, ἥ ἐστιν Ἰεβλαάμ· καὶ ἔφυγεν εἰς Μαγεδδὼ, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ. Καὶ ἐπεβίβασαν αὐτὸν οἱ παῖδες αὐτοῦ ἐπὶ τὸ ἅρμα, καὶ ἤγαγον αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυίδ. Καὶ ἐν ἔτει ἑνδεκάτῳ Ἰωρὰμ βασιλέως Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ὀχοζίας ἐπὶ Ἰούδαν. Καὶ ἦλθεν Ἰοὺ ἐπὶ Ἰεζράελ· καὶ Ἰεζάβελ ἤκουσε, καὶ ἐστιμμίσατο τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῆς, καὶ ἠγάθυνε τὴν κεφαλὴν αὐτῆς, καὶ διέκυψε διὰ τῆς θυρίδος. Καὶ Ἰοὺ εἰσεπορεύετο ἐν τῇ πόλει, καὶ εἶπε, ἡ εἰρήνη Ζαμβρὶ ὁ φονευτὴς τοῦ κυρίου αὐτοῦ; Καὶ ἐπῆρε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν θυρίδα, καὶ εἶδεν αὐτὴν, καὶ εἶπε, τίς εἶ σύ; κατάβηθι μετ’ ἐμοῦ· καὶ κατέκυψαν πρὸς αὐτὸν δύο εὐνοῦχοι. Καὶ εἶπε, κυλίσατε αὐτήν· καὶ ἐκύλισαν αὐτὴν, καὶ ἐῤῥαντίσθη τοῦ αἵματος αὐτῆς πρὸς τὸν τοῖχον καὶ πρὸς τοὺς ἵππους, καὶ συνεπάτησαν αὐτήν. Καὶ εἰσῆλθε καὶ ἔφαγε καὶ ἔπιεν, καὶ εἶπε, ἐπισκέψασθε δὴ τὴν κατηραμένην ταύτην, καὶ θάψατε αὐτὴν, ὅτι θυλάτηρ βασιλέως ἐστί. Καὶ ἐπορεύθησαν θάψαι αὐτὴν, καὶ οὐχ εὗρον ἐν αὐτῇ ἄλλο τι ἢ τὸ κρανίον καὶ οἱ πόδες καὶ τὰ ἴχνη τῶν χειρῶν. Καὶ ἐπέστρεψαν καὶ ἀνήγγειλαν αὐτῷ· καὶ εἶπε, λόγος Κυρίου ὃν ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἠλιοὺ τοῦ Θεσβίτου, λέγων, ἐν τῇ μερίδι Ἰεζρὰελ καταφάγονται οἱ κύνες τὰς σάρκας Ἰεζάβελ. Καὶ ἔσται τὸ θνησιμαῖον Ἰεζάβελ ὡς κοπρία ἐπὶ προσώπου τοῦ ἀγροῦ ἐν τῇ μερίδι Ἰεζραλ, ὥστε μὴ εἰπεῖν αὐτοὺς, Ἰεζάβελ.

# 10

Καὶ τῷ Ἀχαὰβ ἑβδομήκοντα υἱοὶ ἐν Σαμαρείᾳ· καὶ ἔγραψεν Ἰοὺ

βιβλίον, καὶ ἀπέστειλεν ἐν Σαμαρείᾳ πρὸς τοὺς ἄρχοντας Σαμαρείας, καὶ πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους, καὶ πρὸς τοὺς τιθηνοὺς Αχαὰβ, λέγων, Καὶ νῦν ὡς ἂν ἔλθῃ τὸ βιβλίον τοῦτο πρὸς ὑμᾶς, καὶ μεθ’ ὑμῶν οἱ υἱοὶ τοῦ κυρίου ὑμῶν, καὶ μεθ’ ὑμῶν τὸ ἅρμα καὶ οἱ ἵπποι καὶ πόλεις ὀχυραὶ καὶ τὰ ὅπλα, καὶ ὄψεσθε τὸν ἀγαθὸν καὶ τὸν εὐθῆ ἐν τοῖς υἱοῖς τοῦ κυρίου ὑμῶν, καὶ καταστήσετε αὐτὸν ἐπὶ τὸν θρόνον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ πολεμεῖτε ὑπὲρ τοῦ οἴκου τοῦ κυρίου ὑμῶν. Καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα, καὶ εἶπον, ἰδοὺ οἱ δύο βασιλεῖς οὐκ ἔστησαν κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ πῶς στησόμεθα ἡμεῖς; Καὶ ἀπέστειλαν οἱ ἐπὶ τοῦ οἴκου καὶ οἱ ἐπὶ τῆς πόλεως καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ τιθηνοὶ πρὸς Ἰού, λέγοντες, παῖδές σου καὶ ἡμεῖς, καὶ ὅσα ἐὰν εἴπῃς πρὸς ἡμᾶς ποιήσομεν· οὐ βασιλεύσομεν ἄνδρα, τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου ποιήσομεν. Καὶ ἔγραψε πρὸς αὐτοὺς Ἰού βιβλίον δεύτερον, λέγων, εἰ ἐμοὶ ὑμεῖς, καὶ τῆς φωνῆς μου ὑμεῖς εἰσακούετε, λάβετε τὴν κεφαλὴν ἀνδρῶν τῶν υἱῶν τοῦ κυρίου ὑμῶν, καὶ ἐνέγκατε πρὸς μὲ, ὡς ἡ ὥρα αὔριον ἐν Ἰεζράελ· καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ βασιλέως ἦσαν ἑβδομήκοντα ἄνδρες, οὗτοι ἀδροὶ τῆς πόλεως ἐξέτρεφον αὐτούς. Καὶ ἐγένετο ὡς ἦλθε τὸ βιβλίον πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἔλαβον τοὺς υἱοὺς τοῦ βασιλέως, καὶ ἔσφαξαν αὐτοὺς ἑβδομήκοντα ἄνδρας· καὶ ἔθηκαν τὰς κεφαλὰς αὐτῶν ἐν καρτάλλοις, καὶ ἀπέστειλαν αὐτὰς πρὸς αὐτὸν εἰς Ἰεζράελ. Καὶ ἦλθεν ὁ ἄγγελος καὶ ἀπήγγειλε, λέγων, ἤνεγκαν τὰς κεφαλὰς τῶν υἱῶν τοῦ βασιλέως· καὶ εἶπε, θέτε αὐτὰς βουνοὺς δύο παρὰ τὴν θύραν τῆς πύλης εἰς πρωΐ. Καὶ ἐγένετο πρωΐ καὶ ἐξῆλθε καὶ ἔστη, καὶ εἶπε πρὸς πάντα τὸν λαόν, δίκαιοι ὑμεῖς· ἰδοὺ ἐγώ εἰμι συνεστράφην ἐπὶ τὸν κύριόν μου, καὶ ἀπέκτεινα αὐτόν· καὶ τίς ἐπάταξε πάντας τούτους; Ἴδετε ἀφφὼ, ὅτι οὐ πεσεῖται ἀπὸ τοῦ ῥήματος Κυρίου εἰς τὴν γῆν οὗ ἐλάλησε Κύριος ἐπὶ τὸν οἶκον

Ἀχαάβ· καὶ Κύριος ἐποίησεν ὅσα ἐλάλησεν ἐν χειρὶ δούλου αὐτοῦ Ἠλιού. Καὶ ἐπάταξεν Ἰοὺ πάντας τοὺς καταλειφθέντας ἐν τῷ οἴκῳ Ἀχαὰβ ἐν Ἰεζράελ, καὶ πάντας τοὺς ἀδροὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς γνωστοὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς ἱερεῖς αὐτοῦ, ὥστε μὴ καταλιπεῖν αὐτοὺ κατάλειμμα. Καὶ ἀνέστη καὶ ἐπορεύθῃ εἰς Σαμάρειαν, αὐτὸς ἐν βαιθακὰθ τῶν ποιμένων ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ Ἰοὺ εὗρε τοὺς ἀδελφοὺς Ὀχοζίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ εἶπε, τίνες ὑμεῖς; καὶ εἶπον, ἀδελφοὶ Ὀχοζίου ἡμεῖς, καὶ κατέβημεν εἰς εἰρήνην τῶν υἱῶν τοῦ βασιλέως, καὶ τῶν υἱῶν τῆς δυναστευούσης. Καὶ εἶπε, συλλάβετε αὐτοὺς ζῶντας· καὶ ἔσφαξαν αὐτοὺς εἰς βαιθακὰθ τεσσαράκοντα καὶ δύο ἄνδρας· οὐ κατέλιπεν ἄνδρα ἐξ αὐτῶν. Καὶ ἐπορεύθη ἐκεῖθεν καὶ εὗρε τὸν Ἰωναδὰβ υἱὸν Ῥηχὰβ εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ, καὶ εὐλόγησεν αὐτόν· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ιοὺ, εἰ ἔστι καρδία σου μετὰ καρδίας μου εὐθεῖα καθὼς ἡ καρδία μου μετὰ τῆς καρδίας σου; καὶ εἶπεν Ἰωναδάβ ἔστι· καὶ εἶπεν Ἰοὺ, καὶ εἰ ἔστι, δὸς τὴν χεῖρά σου· καὶ ἔδωκε τὴν χεῖρα αὐτοῦ· καὶ ἀνεβίβασεν αὐτὸν πρὸς αὐτὸν ἐπὶ τὸ ἅρμα, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, δεῦρο μετ’ ἐμοῦ, καὶ ἴδε ἐν τῷ ζηλῶσαί με τῷ Κυρίῳ· καὶ ἐπεκάθισε αὐτὸν ἐν τῷ ἅρματι αὐτοῦ. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς Σαμάρειαν· καὶ ἐπάταξε πάντας τοὺς καταλειφθέντας τοῦ Ἀχαὰβ ἐν Σαμαρείᾳ ἕως τοῦ ἀφανίσαι αὐτὸν κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου, ὃ ἐλάλησε πρὸς Ἠλιού. Καὶ συνήθροισεν Ἰοὺ πάντα τὸν λαὸν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, Ἀχαὰβ ἐδούλευσε τῷ Βάαλ ὀλίγα, Ἰοὺ δουλεύσει αὐτῷ πολλά. Καὶ νῦν πάντες οἱ προφῆται τοῦ Βάαλ πάντας τοὺς δούλους αὐτοῦ καὶ τοὺς ἱερεῖς αὐτοῦ καλέσατε πρὸς μὲ, ἀνὴρ μὴ ἐπισκεπήτω, ὅτι θυσία μεγάλη μοι τῷ Βάαλ· πᾶς ὃς ἐὰν ἐπισκεπῇ, οὐ ζήσεται· καὶ Ἰοὺ ἐποίησεν ἐν πτερνισμῷ, ἵν’ ἀπολέσῃ τοὺς δούλους τοῦ Βάαλ. Καὶ εἶπεν Ἰοὺ, ἁγιάσατε ἱερείαν τῷ Βάαλ· καὶ ἐκήρυξν. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰοὺ ἐν παντὶ Ἰσραὴλ, λέγων,

καὶ νῦν πάντες οἱ δοῦλοι, καὶ πάντες οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ προθῆται αὐτοῦ, μηδεὶς ἀπολιπέσθω, ὅτι θυσίαν μεγάλην ποιῶ· ὃς ἂν ἀπολειφθῇ, οὐ ζήσεται· καὶ ἦλθον πάντες οἱ δοῦλοι τοῦ Βάαλ, καὶ πάντες οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ προφῆται αὐτοῦ· οὐ κατελείφθη ἀνὴρ ὃς οὐ παρεγένετο· καὶ εἰσῆλθον εἰς τὸν οἶκον τοῦ Βάαλ· καὶ ἐπλήσθη ὁ οἶκος τοῦ Βάαλ στόμα εἰς στόμα. Καὶ εἶπε τῷ ἐπὶ τοῦ οἴκου μεσθάαλ, ἐξάγαγε ἔνδυμα πᾶσι τοῖς δούλοις τοῦ Βάαλ· καὶ ἐξήνεγκεν αὐτοῖς ὁ στολιστής. Καὶ εἰσῆλθεν Ἰοὺ καὶ Ἰωναδὰβ υἱὸς Ῥηχὰβ εἰς οἶκον τοῦ Βάαλ, καὶ εἶπε τοῖς δούλοις τοῦ Βάαλ, ἐρευνήσατε καὶ ἴδετε, εἰ ἔστι μεθ’ ὑμῶν τῶν δούλων Κυρίου, ὅτι ἀλλ’ ἢ οἱ δοῦλοι τοῦ Βάαλ μονώτατοι. Καὶ εἰσῆλθε τοῦ ποιῆσαι τὰ θύματα καὶ τὰ ὁλοκαυτώματα· καὶ Ἰοὺ ἔταξεν ἑαυτῷ ἔξω ὀγδοήκοντα ἄνδρας, καὶ εἶπεν, ἀνὴρ ὃς ἐὰν διασωθῇ ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν ὧν ἐγὼ ἀνάγω ἐπὶ χεῖρα ὑμῶν, ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἀντὶ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ὡς συνετέλεσε ποιῶν τὴν ὁλοκαύτωσιν, καὶ εἶπεν Ἰοὺ τοῖς παρατρέχουσιν καὶ τοῖς τριστάταις, εἰσελθόντες πατάξατε αὐτοὺς, μὴ ἐξελθάτω ἐξ αὐτῶν ἀνήρ· καὶ ἐπάταξαν αὐτοὺς ἐν στόματι ῥομφαίας, καὶ ἔῤῥιψαν οἱ παρατρέχοντες καὶ οἱ τριστάται, καὶ ἐπορεύθησαν ἕως πόλεως οἴκου τοῦ Βάαλ. Καὶ ἐξήνεγκαν τὴν στήλην τοῦ Βάαλ, καὶ ἐνέπρησαν αὐτήν. Καὶ κατέσπασαν τὰς στήλας τοῦ Βάαλ, καὶ ἔπαξαν αὐτὸν εἰς λυτρῶνας ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἠφάνισεν Ἰοὺ τὸν Βάαλ ἐξ Ἰσραήλ. Πλὴν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, οὐκ ἀπέστη Ἰοὺ ἀπὸ ὄπισθεν αὐτῶν· αἱ δαμάλεις αἱ χρυσαῖ ἐν Βαιθὴλ, καὶ ἐν Δάν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰοὺ, ἀνθ’ ὧν ὅσα ἠγάθυνας ποιῆσαι τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς μου κατὰ πάντα ὅσα ἐν τῇ καρδίᾳ μου ἐποίησας τῷ οἴκῳ Ἀχαὰβ, υἱοὶ τέταρτοι καθήσονταί σοι ἐπὶ θρόνου Ἰσραήλ. Καὶ Ἰοὺ οὐκ ἐφύλαξε πορεύεσθαι ἐν νόμῳ

Κυρίου θεοῦ Ἰσραὴλ ἐν ὅλῃ καρδίᾳ αὐτοῦ· οὐκ ἀπέστη ἐπάνωθεν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἤρξατο Κύριος συγκόπτειν ἐν τῷ Ἰσραήλ· καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς Ἀζαὴλ ἐν παντὶ ὁρίῳ Ἰσραὴλ, ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου κατ᾽ ἀνατολὰς ἡλίου πᾶσαν τὴν Γαλαάδ τοῦ Γαδδὶ, καὶ τοῦ Ῥουβὴν, καὶ τοῦ Μανασσῆ, ἀπὸ Ἀροὴρ, ἥ ἐστιν ἐπὶ τοῦ χείλους χειμάῤῥου Ἀρνὼν, καὶ τὴν Γαλαὰδ καὶ τὴν Βασάν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰοὺ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε, καὶ πᾶσα ἡ δυναστεία αὐτοῦ, καὶ τὰς συνάψεις ἃς συνῆψεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίου λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰοὺ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν Σαμαρείᾳ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωάχαζ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Καὶ αἱ ἡμέραι ἃς ἐβασίλευσεν Ἰοὺ ἐπὶ Ἰσραὴλ εἰκοσιοκτὼ ἔτη ἐν Σαμαρείᾳ.

# 11

Καὶ Γοθολία ἡ μήτηρ Ὀχοζίου εἶδεν ὅτι ἀπέθανεν ὁ υἱὸς αὐτῆς, καὶ ἀπώλεσε πᾶν τὸ σπέρμα τῆς βασιλείας. Καὶ ἔλαβεν Ἰωσαβεὲ θυγάτηρ τοῦ βασιλέως Ἰωρὰμ ἀδελφὴ Ὀχοζίου τὸν Ἰωὰς υἱὸν ἀδελφοῦ αὐτῆς, καὶ ἔκλεψεν αὐτὸν ἐκ μέσου τῶν υἱῶν τοῦ βασιλέως τῶν θανατουμένων, αὐτὸν καὶ τὴν τροφὸν αὐτοῦ ἐν τῷ ταμείῳ τῶν κλινῶν, καὶ ἔκρυψεν αὐτὸν ἀπὸ προσώπου Γοθολίας, καὶ οὐκ ἐθανατώθη. Καὶ ἦν μετ᾽ αὐτῆς κρυβόμενος ἐν οἴκῳ Κυρίου ἓξ ἔτη· καὶ Γοθολία βασιλεύουσα ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἐν τῷ ἔτει τῷ ἑβδόμῳ ἀπέστειλεν Ἰωδαὲ, καὶ ἔλαβε τοὺς ἑκατοντάρχους τῶν Χορῥὶ καὶ τῶν Ῥασίμ, καὶ ἀπήγαγεν αὐτοὺς πρὸς αὐτὸν εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ διέθετο αὐτοῖς διαθήκην Κυρίου, καὶ ὥρκωσε· καὶ

ἔδειξεν αὐτοῖς Ἰωδαὲ τὸν υἱὸν τοῦ βασιλέως, καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς, λέγων, οὗτος ὁ λόγος ὃν ποιήσετε· Τὸ τρίτον ἐξ ὑμῶν εἰσελθέτω τὸ σάββατον, καὶ φυλάξατε φυλακὴν οἴκου τοῦ βασιλέως ἐν τῷ πυλῶνι, καὶ τὸ τρίτον ἐν τῇ πύλῃ τῶν ὁδῶν, καὶ τὸ τρίτον τῆς πύλης ὀπίσω τῶν παρατρεχόντων, καὶ φυλάξτε τὴν φυλακὴν τοῦ οἴκου. Καὶ δύο χεῖρες ἐν ὑμῖν, πᾶς ὁ ἐκπορευόμενος τὸ σάββατον, καὶ φυλάξουσι τὴν φυλακὴν οἴκου Κυρίου πρὸς τὸν βασιλέα. Καὶ κυκλώσατε ἐπὶ τὸν βασιλέα κύκλῳ, ἀνὴρ καὶ τὸ σκεῦος αὐτοῦ ἐν χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ὁ εἰσπορευόμενος εἰς τὰς σαδηρὼθ, ἀποθανεῖται· καὶ ἔσονται μετὰ τοῦ βασιλέως ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι αὐτὸν καὶ ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτόν. Καὶ ἐποίησαν οἱ ἑκατόνταρχοι πάντα ὅσα ἐνετείλατο Ἰωδαὲ ὁ συνετός· καὶ ἔλαβεν ἀνὴρ τοὺς ἄνδρας αὐτοῦ καὶ τοὺς εἰσπορευομένους τὸ σάββατον μετὰ τῶν ἐκπορευομένων τὸ σάββατον, καὶ εἰσῆλθον πρὸς Ἰωδαὲ τὸν ἱερέα. Καὶ ἔδωκεν ὁ ἱερεὺς τοῖς ἑκατοντάρχοις τοὺς σειρομάστας καὶ τοὺς τρισσοὺς τοῦ βασιλέως Δαυὶδ τοὺς ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἔστησαν οἱ παρατρέχοντες ἀνὴρ καὶ τὸ σκεῦος αὐτοῦ, ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἀπὸ τῆς ὠμίας τοῦ οἴκου τῆς δεξιᾶς ἕως τῆς ὠμίας τοῦ οἴκου τῆς εὐωνύμου τοῦ θυσιαστηρίου καὶ τοῦ οἴκου, ἐπὶ τὸν βασιλέα κύκλῳ. Καὶ ἐξαπέστειλε τὸν υἱὸν τοῦ βασιλέως, καὶ ἔδωκεν ἐπ᾽ αὐτὸν νεζὲρ καὶ τὸ μαρτύριον, καὶ ἐβασίλευσεν αὐτὸν καὶ ἔχρισεν αὐτόν· καὶ ἐκρότησαν τῇ χειρὶ, καὶ εἶπαν, ζήτω ὁ βασιλεύς. Καὶ ἤκουσε Γοθολία τὴν φωνὴν τῶν τρεχόντων τοῦ λαοῦ, καὶ εἰσῆλθε πρὸς τὸν λαὸν εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ εἶδε, καὶ ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς εἱστήκει ἐπὶ τοῦ στύλου κατὰ τὸ κρίμα· καὶ οἱ ᾠδοὶ καὶ αἱ σάλπιγγες πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς χαίρων καὶ σαλπίζων ἐν σάλπιγξι· καὶ διέῤῥηξε Γοθολία τὰ ἱμάτια ἑαυτῆς, καὶ ἐβόησε σύνδεσμος, σύνδεσμος. Καὶ

ἐνετείλατο Ἰωδαὲ ὁ ἱερεὺς τοῖς ἑκατοντάρχοις τοῖς ἐπισκόποις τῆς δυνάμεως, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς, ἐξαγάγετε αὐτὴν ἔσωθεν τῶν σαδηρὼθ, ὁ εἰσπορευόμενος ὀπίσω αὐτῆς θανάτῳ θανατωθήσεται ἐν ῥομφαίᾳ· ὅτι εἶπεν ὁ ἱερεύς, καὶ μὴ ἀποθάνῃ ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἐπέθηκαν αὐτῇ χεῖρας, καὶ εἰσῆλθον ὁδὸν εἰσόδου τῶν ἵππων οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ. Καὶ διέθετο Ἰωδαὲ διαθήκην ἀναμέσον Κυρίου καὶ ἀναμέσον τοῦ βασιλέως καὶ ἀναμέσον τοῦ λαοῦ, τοῦ εἶναι εἰς λαὸν τῷ Κυρίῳ· καὶ ἀναμέσον τοῦ βασιλέως καὶ ἀναμέσον τοῦ λαοῦ. Καὶ εἰσῆλθε πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς εἰς οἶκον τοῦ Βάαλ, καὶ κατέσπασαν αὐτὸν, καὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτοῦ καὶ τὰς εἰκόνας αὐτοῦ συνέτριψαν ἀγαθῶς· καὶ τὸν Μαθὰν τὸν ἱερέα τοῦ Βάαλ ἀπέκτειναν κατὰ πρόσωπον τῶν θυσιαστηρίων· καὶ ἔθηκεν ὁ ἱερεὺς ἐπισκόπους εἰς τὸν οἶκον Κυρίου. Καὶ ἔλαβε τοὺς ἑκατοντάρχους, καὶ τὸν Χορῥεὶ, καὶ τὸν Ῥασὶμ, καὶ πάντα τὸν λαὸν τῆς γῆς, καὶ κατήγαγον τὸν βασιλέα ἐξ οἴκου Κυρίου· καὶ εἰσῆλθον ὁδὸν πύλης τῶν παρατρεχόντων οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἐκάθισαν αὐτὸν ἐπὶ θρόνου τῶν βασιλέων. Καὶ ἐχάρη πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς, καὶ ἡ πόλις ἡσύχασε· καὶ τὴν Γοθολίαν ἐθανάτωσαν ἐν ῥομφαίᾳ ἐν οἴκῳ τοῦ βασιλέως.

# 12

Υἱὸς ἑπτὰ ἐτῶν Ἰωὰς ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν. Ἐν ἔτει ἑβδόμῳ τῷ Ἰοὺ ἐβασίλευσεν Ἰωὰς, καὶ τεσσαράκοντα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Σαβιὰ ἐκ τῆς Βηρσαβεέ. Καὶ ἐποίησεν Ἰωὰς τὸ εὐθὲς ἐνώπιον Κυρίου πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἐφώτισεν αὐτὸν Ἰωδαὲ ὁ ἱερεύς. Πλὴν τῶν ὑψηλῶν οὐ

μετεστάθησαν, καὶ ἐκεῖ ἔτι ὁ λαὸς ἐθυσίαζε, καὶ ἐθυμίων ἐν τοῖς ὑψηλοῖς. Καὶ εἶπεν Ἰωὰς πρὸς τοὺς ἱερεῖς, πᾶν τὸ ἀργύριον τῶν ἁγίων τὸ εἰσοδιαζόμενον ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου, ἀργύριον συντιμήσεως, ἀνὴρ ἀργύριον λαβὼν συντιμήσεως, πᾶν ἀργύριον ὃ ἐὰν ἀναβῇ ἐπὶ καρδίαν ἀνδρὸς ἐνεγκεῖν ἐν οἴκῳ Κυρίου, λαβέτωσαν ἑαυτοῖς οἱ ἱερεῖς, ἀνὴρ ἀπὸ τῆς πράσεως αὐτοῦ, καὶ αὐτοὶ κρατήσουσι τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου εἰς πάντα οὗ ἐὰν εὑρεθῇ ἐκεῖ βεδέκ. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ εἰκοστῷ καὶ τρίτῳ ἔτει τῷ βασιλεῖ Ἰωὰς οὐκ ἐκραταίωσαν οἱ ἱερεῖς τὸ βεδέκ τοῦ οἴκου. Καὶ ἐκάλεσεν Ἰωὰς ὁ βασιλεὺς Ἰωδαὲ τὸν ἱερέα καὶ τοὺς ἱερεῖς, καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς, τί ὅτι οὐκ ἐκραταιοῦτε τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου; καὶ νῦν μὴ λάβητε ἀργύριον ἀπὸ τῶν πράσεων ὑμῶν, ὅτι εἰς τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου δώσετε αὐτό. Καὶ συνεφώνησαν οἱ ἱερεῖς τοῦ μὴ λαβεῖν ἀργύριον παρὰ τοῦ λαοῦ, καὶ τοῦ μὴ ἐνισχῦσαι τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου. Καὶ ἔλαβεν Ἰωδαὲ ὁ ἱερεὺς κιβωτὸν μίαν, καὶ ἔτρησε τρώγλην ἐπὶ τῆς σανίδος αὐτῆς, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν παρὰ ἀμμαζειβὶ ἐν τῷ οἴκῳ ἀδρος οἴκου Κυρίου· και ἔδωκας οἱ ἱερεῖς οἱ ἱεπεῖς φυλάσσοντες τὸν σταθμὸν πᾶν τὸ ἀργύριον τὸ εὑρεθὲν ἐν οἴκῳ Κυρίου· Καὶ ἐγένετο ὡς εἶδον ὅτι πολὺ τὸ ἀργύριον ἐν τῇ κιβωτῷ, καὶ ἀνέβη ὁ γραμματεὺς τοῦ βασιλέως καὶ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ ἔσθιγξαν καὶ ἠρίθμησαν τὸ ἀργύριον τὸ εὑρεθὲν ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἔδωκαν τὸ ἀργύριον τὸ ἑτοιμασθὲν ἐπὶ χεῖρας ποιούντων τὰ ἔργα τῶν ἐπισκοπῶν οἴκου· Κυρίου, καὶ ἐξέδοσαν τοῖς τέκτοσι τῶν ξύλων, καὶ τοῖς οἰκοδόμοις τοῖς ποιοῦσιν ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ τοῖς τειχισταῖς, καὶ τοῖς λατόμοις τῶν λίθων τοῦ κτήσασθαι ξύλα καὶ λίθους λατομητοὺς τοῦ κατασχεῖν τὸ βεδὲκ οἴκου Κυρίου, εἰς πάντα ὅσα ἐξωδιάσθη ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ κραταιῶσαι. Πλὴν οὐ ποιηθήσονται οἴκῳ Κυρίου θύραι ἀργυραῖ, ἧλοι, φιάλαι, καὶ

σάλπιγγες, πᾶν σκεῦος χρυσοῦν, καὶ σκεῦος ἀργυροῦν, ἐκ τοῦ ἀργυρίου τοῦ εἰσενεχθέντος ἐν οἴκῳ Κυρίου, ὅτι τοῖς ποιοῦσι τὰ ἔργα δώσουσιν αὐτό· καὶ ἐκραταίωσαν ἐν αὐτῷ τὸν οἶκον Κυρίου. Καὶ οὐκ ἐξελογίζοντο τοὺς ἄνδρας οἷς ἐδίδουν τὸ ἀργύριον ἐπὶ χεῖρας αὐτῶν δοῦναι τοῖς ποιοῦσι τὰ ἔργα, ὅτι ἐν πίστει αὐτῶν ποιοῦσιν. Ἀργύριον περὶ ἁμαρτίας, καὶ ἀργύριον περὶ πλημμελείας, ὅ, τι εἰσηνέχθη ἐν οἴκῳ Κυρίου, τοῖς ἱερεῦσιν ἐγένετο. Τότε ἀνέβη Ἀζαὴλ βασιλεὺς Συρίας, καὶ ἐπολέμησεν ἐπὶ Γὲθ, καὶ προκατελάβετο αὐτήν· καὶ ἔταξεν Ἀζαὴλ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀναβῆναι ἐπὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἔλαβεν Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰούδα πάντα τὰ ἅγια ὅσα ἡγίασεν Ἰωσαφὰτ καὶ Ἰωρὰμ καὶ Ὀχοζίας οἱ πατέρες αὐτοῦ καὶ βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ τὰ ἅγια αὐτοῦ, καὶ πᾶν τὸ χρυσίον τὸ εὑρεθὲν ἐν θησαυροῖς οἴκου Κυρίου καὶ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπέστειλεν τῷ Ἀζαὴλ βασιλεῖ Συρίας, καὶ ἀνέβη ἀπὸ Ἰερουσαλήμ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωὰς καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἀνέστησαν οἱ δοῦλοι αὐτοῦ καὶ ἔδησαν πάντα σύνδεσμον, καὶ ἐπάταξαν τὸν Ἰωὰς ἐν οἴκῳ Μαλλὼ τῷ ἐν Σελά. Καὶ Ἰεζιρχὰρ υἱὸς Ἰεμουὰθ, καὶ Ἰεζεβοὺθ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Σωμὴρ, οἱ δοῦλοι αὐτοῦ, ἐπάταξαν αὐτὸν καὶ ἀπέθανε, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυίδ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἀμεσσείας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 13

Ἐν ἔτει εἰκοστῷ καὶ τρίτῳ ἔτει τῷ Ἰωὰς υἱῷ Ὀχοζίου βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσεν Ἰωάχαζ υἱὸς Ἰοὺ ἐν Σαμαρείᾳ ἑπτακαίδεκα ἔτη. Καὶ

ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, καὶ ἐπορεύθη ὀπίσω ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, οὐκ ἀπέστη ἀπ᾽ αὐτῆς. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ Κύριος ἐν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς ἐν χειρὶ Ἀζαὴλ βασιλέως Συρίας, καὶ ἐν χειρὶ υἱοῦ Ἄδερ υἱοῦ Ἀζαὴλ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἐδεήθη Ἰωάχαζ τοῦ προσώπου Κυρίου, καὶ ἐπήκουσεν αὐτοῦ Κύριος, ὅτι εἶδε τὴν θλίψιν Ἰσραὴλ, ὅτι ἔθλιψεν αὐτοὺς βασιλεὺς Συρίας. Καὶ ἔδωκε Κύριος σωτηρίαν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἐξῆλθεν ὑποκάτωθεν χειρὸς Συρίας· καὶ ἐκάθισαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν καθὼς ἐχθὲς καὶ τρίτης. Πλὴν οὐκ ἀπέστησαν ἀπὸ ἁμαρτιῶν οἴκου Ἱεροβοὰμ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ, ἐν αὐτῇ ἐπορεύθη· καὶ γε τὸ ἄλσος ἐστάθη ἐν Σαμαρείᾳ. Ὅτι οὐχ ὑπελείφθη τῷ Ἰωάχαζ λαὸς, ἀλλ᾽ ἢ πεντήκοντα ἱππεῖς καὶ δέκα ἅρματα καὶ δέκα χιλιάδες πεζῶν, ὅτι ἀπώλεσεν αὐτοὺς βασιλεὺ Συρίας, καὶ ἔθεντο αὐτοὺς ὡς χοῦν εἰς καταπάτησιν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωάχαζ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε καὶ αἱ δυναστεῖαι αὐτοῦ, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωάχαζ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν Σαμαρείᾳ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωὰς υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ἐν ἔτει τριακοστῷ καὶ ἑβδόμῳ ἔτει τῷ Ἰωὰς βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσεν Ἰωὰς υἱὸς Ἰωάχαζ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ ἑκκαίδεκα ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου· οὐκ ἀπέστη ἀπὸ πάσης Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ἁμαρτίας, ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραὴλ· ἐν αὐτῇ ἐπορεύθη. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωὰς καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε, καὶ αἱ δυναστεῖαι αὐτοῦ ἃς ἐποίησε μετὰ Ἀμεσσίου βασιλέως Ἰούδα, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωὰς μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ Ἱεροβοὰμ ἐκάθισεν ἐτὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν Σαμαρείᾳ

μετὰ τῶν βασιλέων Ἰσραήλ. Καὶ Ἐλισαιὲ ἠῤῥώστησε τὴν ἀῤῥωστίαν αὐτοῦ, δι᾽ ἣν ἀπέθανε· καὶ κατέβη πρὸς αὐτὸν Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ ἔκλαυσεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ εἶπε, πάτερ πάτερ, ἅρμα Ἰσραὴλ καὶ ἱππεὺς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἐλισαιὲ, λάβε τόξον καὶ βέλη· καὶ ἔλαβε πρὸς ἑαυτὸν τόξον καὶ βέλη. Καὶ εἶπε τῷ βασιλεῖ, ἐπιβίβασον τὴν χεῖρά σου ἐπὶ τὸ τόξον· καὶ ἐπεβίβασεν Ἰωὰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ· καὶ ἐπέθηκεν Ἐλισαιὲ τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐπὶ τὰς χεῖρας τοῦ βασιλέως, καὶ εἶπεν, ἄνοιξον τὴν θυρίδα κατ᾽ ἀνατολάς· καὶ ἤνοιξε· καὶ εἶπεν Ἐλισαιὲ, τόζευσον· καὶ ἐτόζευσε· καὶ εἶπε, βέλος σωτηρίας τῷ Κυρίῳ, καὶ βέλος σωτηρίας ἐν Συρίᾳ, καὶ πατάξεις τὴν Συρίαν ἐν Ἀφὲκ ἕως συντελείας. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἐλισαιὲ, λάβε τόξα· καὶ ἔλαβε· καὶ εἶπε τῷ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, πάταξον εἰς τὴν γῆν· καὶ ἐπάταξεν ὁ βασιλεὺς τρὶς, καὶ ἔστη· Καὶ ἐλυπήθη ἐπ᾽ αὐτῷ ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ, καὶ εἶπεν, εἰ ἐπάταξας πεντάκις ἢ ἑξάκις, τότε ἂν ἐπάταξας τὴν Συρίαν ἕως συντελείας, καὶ νῦν τρὶς πατάξεις τὴν Συρίαν. Καὶ ἀπέθανεν Ἐλισαιὲ, καὶ ἔθαψαν αὐτόν· καὶ μονόζωνοι Μωὰβ ἦλθον ἐν τῇ γῇ ἐλθόντος τοῦ ἐνιαυτοῦ. Καὶ ἐγένετο αὐτῶν θαπτόντων τὸν ἄνδρα, καὶ ἰδοὺ εἶδον τὸν μονόζωνον, καὶ ἔῤῥιψαν τὸν ἄνδρα ἐν τῷ τάφῳ Ἐλισαιέ· καὶ ἐπορεύθη καὶ ἥψατο τῶν ὀστέων Ἐλισαιὲ, καὶ ἔζησε καὶ ἀνέστη ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτοῦ. Καὶ Ἀζαὴλ ἐξέθλιψε τὸν Ἰσραὴλ πάσας τὰς ἡμέρας Ἰωάχαζ. Καὶ ἠλέησε Κύριος αὐτοὺς καὶ ᾠκτείρησεν αὐτούς, καὶ ἐπέβλεψεν ἐπ᾽ αὐτοὺς διὰ τὴν διαθήκην αὐτοῦ τὴν μετὰ Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ, καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος διαφθεῖραι αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἀπέῤῥιψεν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ ἀπέθανεν Ἀζαὴλ βασιλεὺς Συρίας, καὶ ἐβασίλευσεν υἱὸς Ἄδερ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωὰς υἱὸς Ἰωάχαζ, καὶ ἔλαβε τὰς πόλεις ἐκ χειρὸς υἱοῦ Ἄδερ υἱοῦ

Ἄζαὴλ, ἃς ἔλαβεν ἐκ χειρὸς Ἰωάχας τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐν τῷ πολέμῳ· τρὶς ἐπάταξεν αὐτὸν Ἰωὰς, καὶ ἐπέστρεψε τὰς πόλεις Ἰσραήλ.

# 14

Ἐν ἔτει δευτέρῳ τῷ Ἰωὰς υἱῷ Ἰωάχαζ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, καὶ ἐβασιλευσεν Ἀμεσσίας υἱὸς Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰούδα. Υἱὸς εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν ἦν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ εἴκοσι καὶ ἐννέα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Ἰωαδὶμ ἐξ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, πλὴν οὐχ ὡς Δαυὶδ ὁ πατὴρ αὐτοῦ· κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν Ἰωὰς ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἐποίησε. Πλὴν τὰ ὑψηλὰ οὐκ ἐξῆρεν· ἔτι ὁ λαὸς ἐθυσίαζε καὶ ἐθυμίων ἐν τοῖς ὑψηλοῖς. Καὶ ἐγένετο ὅτε κατίσχυσεν ἡ βασιλεία ἐν χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξε τοὺς δούλους αὐτοῦ τοὺς πατάξαντας τὸν πατέρα αὐτοῦ. Καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν παταξάντων οὐκ ἐθανάτωσε, καθὼς γέγραπται ἐν βιβλίῳ νόμων Μωυσῆ, ὡς ἐνετείλατο Κύριος, λέγων, οὐκ ἀποθανοῦνται πατέρες ὑπὲρ υἱῶν, καὶ υἱοὶ οὐκ ἀποθανοῦνται ὑπὲρ πατέρων, ὅτι ἀλλ’ ἢ ἕκαστος ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ ἀποθανεῖται. Αὐτὸς ἐπάταξε τὴν Ἐδὼμ ἐν γεμελὲδ δέκα χιλιάδας, καὶ συνέλαβε τὴν πέτραν ἐν τῷ πολέμῳ, καὶ ἐκάλεσε τὸ ὄνομα αὐτῆς Ἰεθοὴλ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Τότε ἀπέστειλεν Ἀμεσσίας ἀγγέλους πρὸς Ἰωὰς υἱὸν Ἰωάχαζ υἱοῦ Ἰοὺ βασιλέως Ἰσραὴλ, λέγων, δεῦρο ὀφθῶμεν προσώποις. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰσραὴλ πρὸς Ἀμεσσίαν βασιλέα Ἰούδα, λέγων, ὁ ἄκαν ὁ ἐν τῷ Λιβάνῳ ἀπέστειλε πρὸς τὴν κέδρον τὴν ἐν τῷ Λιβάνῳ, λέγων δὸς τὴν θυγατέρα σου τῷ υἱῷ μου εἰς γυναῖκα·

καὶ διῆλθον τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ τὰ ἐν τῷ Λιβάνῳ, καὶ συνεπάτησαν τὴν ἄκανα. Τύπτων ἐπάταξας τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπῆρέ σε καρδία σου· ἐνδοξάσθητι καθήμενος ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ ἱνατί ἐρίζεις ἐν κακίᾳ σου; καὶ πεσῇ σὺ καὶ Ἰούδας μετὰ σοῦ. Καὶ οὐκ ἤκουσεν Ἀμεσσίας· καὶ ἀνέβη Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ ὤφθησαν προσώποις αὐτὸς καὶ Ἀμεσσίας βασιλεὺς Ἰούδα ἐν Βαιθσαμὺς τῇ τοῦ Ἰούδα· Καὶ ἔπταισεν Ἰούδας ἀπὸ προσώπου Ἰσραὴλ, καὶ ἔφυγεν ἀνὴρ εἰς τὸ σκήνωμα αὐτοῦ. Καὶ τὸν Ἀμεσσίαν υἱὸν Ἰωὰς υἱοῦ Ὀχοζίου συνέλαβεν Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐν Βαιθσαμύς· καὶ ἦλθεν εἰς Ἱερουσαλήμ, καὶ καθεῖλεν ἐν τῷ τείχει Ἱερουσαλὴμ ἐν τῇ πύλῃ Ἐφραὶμ ἕως πύλης τῆς γωνίας τετρακοσίους πήχεις. Καὶ ἔλαβε τὸ χρυσίον, καὶ τὸ ἀργύριον, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ εὑρεθέντα ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ ἐν θησαυροῖς οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν συμμίξεων, καὶ ἀπέστρεψεν εἰς Σαμάρειαν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωὰς ὅσα ἐποίησεν ἐν δυναστείᾳ αὐτοῦ, ἃ ἐπολέμησε μετὰ Ἀμεσσείου βασιλέως Ἰούδα, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωὰς μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν Σαμαρείᾳ μετὰ τῶν βασιλέων Ἰσραήλ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἱεροβοὰμ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ ἔζησεν Ἀμεσσίας υἱὸς Ἰωὰς βασιλεὺς Ἰούδα μετὰ τὸ ἀποθανεῖν Ἰωὰς υἱὸν Ἰωάχαζ βασιλέα Ἰσραὴλ, πεντεκαίδεκα ἔτη. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀμεσσίου καὶ πάντα ἅσα ἐποίησεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ συνεστράφησαν ἐπ’ αὐτὸν σύστρεμμα ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἔφυγεν εἰς Λαχίς· καὶ ἀπέστειλαν ὀπίσω αὐτοῦ εἰς Λαχὶς, καὶ ἐθανάτωσαν αὐτὸν ἐκεῖ. Καὶ ᾖραν αὐτὸν ἐφ’ ἵππων, καὶ ἐτάφη ἐν Ἱερουσαλὴμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυίδ. Καὶ ἔλαβε

πᾶς ὁ λαὸς Ἰούδα τὸν Ἀζαρίαν, καὶ αὐτὸς υἱὸς ἑκκαίδεκα ἐτῶν, καὶ ἐβασίλευσαν αὐτὸς ἀντὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ Ἀμεσσίου. Αὐτὸς ᾠκοδόμησε τὴν Αἰλὼθ, καὶ ἐπέστρεψεν αὐτὴν τῷ Ἰούδα μετὰ τὸ κοιμηθῆναι τὸν βασιλέα μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ. Ἐν ἔτει πεντεκαιδεκάτῳ τοῦ Ἀμεσσίου υἱῷ Ἰωὰς βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσεν Ἱεροβοὰμ υἱὸς Ἰωὰς ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ τεσσαράκοντα καὶ ἓν ἔτος. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου· οὐκ ἀπέστη ἀπὸ πασῶν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Αὐτὸς ἀπέστησε τὸ ὅριον Ἰσραὴλ ἀπὸ εἰσόδου Αἰμὰθ ἕως τῆς θαλάσσης τῆς Ἄραβα, κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ ὃ ἐλάλησεν ἐν χειρὶ δούλου αὐτοῦ Ἰῶνα υἱοῦ Ἀμαθὶ τοῦ προφήτου τοῦ ἐκ Γεθχοφέρ. Ὅτι εἶδε Κύριος τὴν ταπείνωσιν Ἰσραὴλ πικρὰν σφόδρα, καὶ ὀλιγοστοὺς συνεχομένους, καὶ ἐσπανισμένους, καὶ ἐγκαταλελειμμένους, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν τῷ Ἰσραήλ. Καὶ οὐκ ἐλάλησε Κύριος ἐξαλεῖψαι τὸ σπέρμα Ἰσραὴλ ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς διὰ χειρὸς Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ἰωάς. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἱεροβοὰμ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε, καὶ αἱ δυναστεῖαι αὐτοῦ, ὅσα ἐπολέμησε, καὶ ὅσα ἐπέστρεψε τὴν Δαμασκὸν, καὶ τὴν Αἰμὰθ τῷ Ἰούδα ἐν Ἰσραὴλ, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Ἱεροβοὰμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ μετὰ βασιλέων Ἰσραὴλ, καὶ ἐβασίλευσε Ζαχαρίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 15

Ἐν ἔτει εἰκοστῷ καὶ ἑβδόμῳ τῷ Ἱεροβοὰμ βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ἀζαρίας υἱὸς Ἀμεσσίου βασιλέως Ἰούδα. Υἱὸς

ἑκκαίδεκα ἐτῶν ἦν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ πεντηκονταδύο ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἰεχελία ἐξ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν Ἀμεσσίας ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Πλὴν τῶν ὑψηλῶν οὐκ ἐξῆρεν, ἔτι ὁ λαὸς ἐθυσίαζε καὶ ἐθυμίων ἐν τοῖς ὑψηλοῖς. Καὶ ἥψατο Κύριος τὸν βασιλέα, καὶ ἦν λελεπρωμένος ἕως ἡμέρας θανάτου αὐτοῦ· καὶ ἐβασίλευσεν ἐν οἴκῳ ἀφφουσώθ· καὶ Ἰωάθαμ υἱὸς τοῦ βασιλέως ἐπὶ τῷ οἴκῳ κρίνων τὸν λαὸν τῆς γῆς. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀζαρίου καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Ἀζαρίας μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυὶδ, καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωάθαν υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Ἐν ἔτει τριακοστῷ καὶ ὀγδόῳ τῷ Ἀζαρίου βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσε Ζαχαρίας υἱὸς Ἱεροβοὰμ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ ἑξάμηνον. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου καθὰ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ· οὐκ ἀπέστη ἀπὸ πασῶν τῶν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ, ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Καὶ συνεστράφησαν ἐπ’ αὐτὸν Σελλοὺμ υἱὸς Ἰαβίς· καὶ ἐπάταξαν αὐτὸν Κεβλαὰμ καὶ ἐθανάτωσαν αὐτὸν, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ζαχαρίου, ἰδού εἰσι γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ. Ὁ λόγος Κυρίου ὃν ἐλάλησε πρὸς Ἰού, λέγων, υἱοὶ τέταρτοι καθήσονταί σοι ἐπὶ θρόνου Ἰσραήλ· καὶ ἐγένετο οὕτως. Καὶ Σελλοὺμ υἱὸς Ἰαβὶς ἐβασίλευσε· καὶ ἐν ἔτει τριακοστῷ καὶ ἐννάτῳ Ἀζαρίᾳ βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσε Σελλοὺμ μῆνα ἡμερῶν ἐν Σαμαρείᾳ. Καὶ ἀνέβη Μαναὴμ υἱὸς Γαδδὶ ἐκ Θαρσιλὰ, καὶ ἦλθεν εἰς Σαμάρειαν, καὶ ἐπάταξε τὸν Σελλοὺμ υἱὸν Ἰαβὶς ἐν Σαμαρείᾳ, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτόν. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Σελλοὺμ, καὶ ἡ

συστροφὴ αὐτοῦ ᾗ συνεστράφη, ἰδού εἰσι γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ. Τότε ἐπάταξε Μαναὴμ καὶ τὴν Θερσὰ καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ τὰ ὅρια αὐτῆς ἀπὸ Θερσὰ, ὅτι οὐκ ἤνοιξαν αὐτῷ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν, καὶ τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας ἀνέῤῥηξεν. Ἐν ἔτει τριακοστῷ καὶ ἐννάτῳ τῷ Ἀζαρίᾳ βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσε Μαναὴμ υἱὸς Γαδδὶ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ δέκα ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, οὐκ ἀπέστη ἀπὸ πασῶν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ ἀνέβη Φονὰ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ Μαναὴμ ἔδωκε τῷ Φουὰ χίλια τάλαντα ἀργυρίου εἶναι τὴν χεῖρα αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ. Καὶ ἐξήνεγκε Μαναὴμ τὸ ἀργύριον ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἐπὶ πᾶν δυνατὸν ἰσχύϊ, δοῦναι τῷ βασιλεῖ τῶν Ἀσσυρίων, πεντήκοντα σίκλους τῷ ἀνδρὶ τῷ ἑνί· καὶ ἀπέστρεψε βασιλεὺς Ἀσσυρίων, καὶ οὐκ ἔστη ἐκεῖ ἐν τῇ γῇ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Μαναὴμ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ; Καὶ ἐκοιμήθη Μαναὴμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσε Φακεσίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ. Ἐν ἔτει πεντηκοστῷ τοῦ Ἀζαρίου βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσε Φακεσίας υἱὸς Μαναὴμ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ δύο ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, οὐκ ἀπέστη ἀπὸ ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Καὶ συνεστράφη ἐπ᾽ αὐτὸν Φακεὲ υἱὸς Ῥομελίου ὁ τριστάτης αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ἐν Σαμαρείᾳ ἐναντίον οἴκου τοῦ βασιλέως μετὰ τοῦ Ἀργὸβ καὶ μετὰ τοῦ Ἀρία, καὶ μετ᾽ αὐτοῦ πεντήκοντα ἄνδρες ἀπὸ τῶν τετρακοσίων· καὶ ἐθανάτωσε αὐτὸν, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ᾽ αὐτοῦ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Φακεσίου καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, ἰδού εἰσι γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ. Ἐν ἔτει

πεντηκοστῷ καὶ δευτέρῳ τοῦ Ἀζαρίου βασιλεῖ Ἰούδα ἐβασίλευσε Φακεὲ υἱὸς Ῥομελίου ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Σαμαρείᾳ εἴκοσι ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, οὐκ ἀπέστη ἀπὸ πασῶν ἁμαρτιῶν Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ναβὰτ ὃς ἐξήμαρτε τὸν Ἰσραήλ. Ἐν ταῖς ἡμέραις Φακεὲ βασιλέως Ἰσραὴλ ἦλθε Θαλγαθφελλασὰρ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, καὶ ἔλαβε τὴν Αἶν καὶ τὴν Ἀβὲλ καὶ τὴν Θαμααχὰ καὶ τὴν Ἀνιὼχ καὶ τὴν Κενὲζ καὶ τὴν Ἀσὼρ καὶ τὴν Γαλαὰν καὶ τὴν Γαλιλαίαν, πᾶσαν γῆν Νεφθαλὶ, καὶ ἀπῳκισεν αὐτοὺς εἰς Ἀσσυρίους. Καὶ συνέστρεψε σύστρεμμα Ὡσηὲ υἱὸς Ἠλὰ ἐπὶ Φακεὲ υἱὸν Ῥομελίου, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν, καὶ ἐθανάτωσε, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ' αὐτοῦ, ἐν ἔτει εἰκοστῷ Ἰωάθαμ υἱοῦ Ἀζαρίου. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Φακεὲ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰσραήλ. Ἐν ἔτει δευτέρῳ Φακεὲ υἱοῦ Ῥομελίου βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ἰωάθαμ υἱὸς Ἀζαρίου βασιλέως Ἰούδα. Υἱὸς εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν ἦν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ἐκκαίδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ ὄνομα τῆς μητρὸς αὐτοῦ Ἰερουσὰ θυγάτηρ Σαδώκ. Καὶ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν Ἀζαρίας ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Πλὴν τὰ ὑψηλὰ οὐκ ἐξῆρεν, ἔτι ὁ λαὸς ἐθυσίαζε καὶ ἐθυμία ἐν τοῖς ὑψηλοῖς· αὐτὸς ᾠκοδόμησε τὴν πύλην οἴκου Κυρίου τὴν ἐπάνω. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωάθαμ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἤρξατο Κύριος ἐξαποστέλλειν ἐν Ἰούδᾳ τὸν Ῥαασσὼν βασιλέα Συρίας, καὶ τὸν Φακεὲ υἱὸν Ῥομελίου. Καὶ ἐκοιμήθη Ἰωάθαμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν πόλει Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἄχαζ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ' αὐτοῦ.

# 16

Ἐν ἔτει ἑπτακαιδεκάτῳ Φακεὲ υἱοῦ Ῥομελίου ἐβασίλευσεν Ἄχαζ υἱὸς Ἰωάθαμ βασιλέως Ἰούδα. Υἱὸς εἴκοσι ἐτῶν ἦν Ἄχαζ ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ἑκκαίδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ οὐκ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου Θεοῦ αὐτοῦ πιστῶς, ὡς Δαυὶδ ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ βασιλέων Ἰσραὴλ, καί γε τὸν υἱὸν αὐτοῦ διῆγεν ἐν πυρὶ, κατὰ τὰ βδελύγματα τῶν ἐθνῶν ὧν ἐξῆρε Κύριος ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐθυσίαζε καὶ ἐθυμία ἐν τοῖς ὑψηλοῖς, καὶ ἐπὶ τῶν βουνῶν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους. Τότε ἀνέβη Ῥαασσὼν βασιλεὺς Συρίας καὶ Φακεὲ υἱὸς Ῥομελίου βασιλεὺς Ἰσραὴλ εἰς Ἰερουσαλὴμ εἰς πόλεμον, καὶ ἐπολιόρκουν ἐπὶ Ἄχαζ, καὶ οὐκ ἠδύναντο πολεμεῖν. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἐπέστρεψε Ῥαασσὼν βασιλεὺς Συρίας τὴν Αἰλὰθ τῇ Συρίᾳ, καὶ ἐξέβαλε τοὺς Ἰουδαίους ἐξ Αἰλὰθ, καὶ Ἰδουμαῖοι ἦλθον εἰς Αἰλὰθ, καὶ κατῴκησαν ἐκεῖ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἀπέστειλεν Ἄχαζ ἀγγέλους πρὸς Θαλγαθφελλασὰρ βασιλέα Ἀσσυρίων, λέγων, δοῦλός σου καὶ υἱός σου ἐγὼ, ἀνάβηθι, σῶσόν με ἐκ χειρὸς βασιλέως Συρίας, καὶ ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἰσραὴλ, τῶν ἐπανισταμένων ἐπ’ ἐμέ. Καὶ ἔλαβεν Ἄχαζ ἀργύριον καὶ χρυσίον τὸ εὑρεθὲν ἐν θησαυροῖς οἴκου Κυρίου καὶ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπέστειλε τῷ βασιλεῖ δῶρα. Καὶ ἤκουσεν αὐτοῦ βασιλεὺς Ἀσσυρίων· καὶ ἀνέβη βασιλεὺς Ἀσσυρίων εἰς Δαμασκὸν, καὶ συνέλαβεν αὐτὴν, καὶ ἀπῴκισεν αὐτὴν, καὶ τὸν Ῥαασσὼν βασιλέα ἐθανάτωσε. Καὶ ἐπορεύθη βασιλεὺς Ἄχαζ εἰς Δαμασκὸν εἰς ἀπαντὴν Θαλγαθφελλασὰρ βασιλεῖ Ἀσσυρίων εἰς Δαμασκόν· καὶ εἶδε τὸ θυσιαστήριον ἐν Δαμασκῷ· καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς

Ἄχαζ πρὸς Οὐρίαν τὸν ἱερέα τὸ ὁμοίωμα τοῦ θυσιαστηρίου καὶ τὸν ῥυθμὸν αὐτοῦ καὶ πᾶσαν ποίησιν αὐτοῦ. Καὶ ᾠκοδόμησεν Οὐρίας ὁ ἱερεὺς τὸ θυσιαστήριον, κατὰ πάντα ὅσα ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Ἄχαζ ἐκ Δαμασκοῦ. Καὶ εἶδεν ὁ βασιλεὺς τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἀνέβη ἐπ᾽ αὐτὸ, καὶ ἐθυμίασε τὴν ὁλοκαύτωσιν αὐτοῦ, καὶ τὴν θυσίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν σπονδὴν αὐτοῦ, καὶ προσέχεε τὸ αἷμα τῶν εἰρηνικῶν τῶν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ χαλκοῦν τὸ ἀπέναντι Κυρίου· καὶ προσήγαγε τὸ πρόσωπον τοῦ οἴκου Κυρίου, ἀπὸ τοῦ ἀναμέσον τοῦ θυσιαστηρίου καὶ ἀπὸ τοῦ ἀναμέσον τοῦ οἴκου Κυρίου· καὶ ἔδειξεν αὐτὸ ἐπὶ μηρὸν τοῦ θυσιαστηρίου κατὰ βορρᾶν. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς Ἄχαζ τῷ Οὐρίᾳ τῷ ἱερεῖ, λέγων, ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ μέγα πρόσφερε τὴν ὁλοκαύτωσιν τὴν πρωϊνὴν καὶ τὴν θυσίαν τὴν ἑσπερινήν, καὶ τὴν ὁλοκαύτωσιν τοῦ βασιλέως καὶ τὴν θυσίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν ὁλοκαύτωσιν παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ τὴν θυσίαν αὐτῶν καὶ τὴν σπονδὴν αὐτῶν, καὶ πᾶν αἷμα ὁλοκαυτώσεως, καὶ πᾶν αἷμα θυσίας ἐπ᾽ αὐτῷ ἐκχεεῖς· καὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ χαλκοῦν ἔσται μοι εἰς τοπρωΐ. Καὶ ἐποίησεν Οὐρίας ὁ ἱερεὺς κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ βασιλεὺς Ἄχαζ. Καὶ συνέκοψεν ὁ βασιλεὺς Ἄχαζ τὰ συνκλείσματα τῶν μεχωνὼθ, καὶ μετῆρεν ἀπ᾽ αὐτῶν τὸν λουτῆρα, καὶ τὴν θάλασσαν καθεῖλεν ἀπὸ τῶν βοῶν τῶν χαλκῶν τῶν ὑποκάτω αὐτῆς, καὶ ἔδωκεν αὐτὴν ἐπὶ βάσιν λιθίνην. Καὶ τὸν θεμέλιον τῆς καθέδρας ᾠκοδόμησεν ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ τὴν εἴσοδον τοῦ βασιλέως τὴν ἔξω ἐπέστρεψεν ἐν οἴκῳ Κυρίου ἀπὸ προσώπου βασιλέως Ἀσσυρίων. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἄχαζ ὅσα ἐποίησεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Ἄχαζ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν πόλει Δαυὶδ, καὶ ἐβασίλευσεν Ἐζεκίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ.

# 17

Ἐν ἔτει δωδεκάτῳ τοῦ Ἄχαζ βασιλέως Ἰούδα ἐβασίλευσεν Ὡσηὲ υἱὸς Ἠλὰ ἐν Σαμαρείᾳ ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐννέα ἔτη. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, πλὴν οὐχ ὡς οἱ βασιλεῖς Ἰσραὴλ οἳ ἦσαν ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Ἐπ’ αὐτὸν ἀνέβη Σαλαμανασσὰρ βασιλεὺς Ἀσσυρίων· καὶ ἐγενήθη αὐτῷ Ὡσηὲ δοῦλος, καὶ ἐπέστρεψεν αὐτῷ μαναά. Καὶ εὗρε βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐν τῷ Ὡσηὲ ἀδικίαν, ὅτι ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Σηγὼρ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ οὐκ ἤνεγκε μαναὰ τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ἐκείνῳ· καὶ ἐπολιόρκησεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν οἴκῳ φυλακῆς. Καὶ ἀνέβη ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐν πάσῃ τῇ γῇ, καὶ ἀνέβη εἰς Σαμάρειαν, καὶ ἐπολιόρκησεν ἐπ’ αὐτὴν τρία ἔτη. Ἐν ἔτει ἐννάτῳ Ὡσῆε συνέλαβε βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὴν Σαμάρειαν, καὶ ἀπῴκισεν Ἰσραὴλ εἰς Ἀσσυρίους, καὶ κατῴκισεν αὐτοὺς ἐν Ἀλαὲ καὶ ἐν Ἀβὼρ ποταμοῖς Γωζὰν, καὶ ὄρη Μήδων. Καὶ ἐγένετο ὅτι ἥμαρτον οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τῷ Κυρίῳ Θεῷ αὐτῶν τῷ ἀναγαγόντι αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου ὑποκάτωθεν χειρὸς Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου, καὶ ἐφοβήθησαν θεοὺς ἑτέρους, καὶ ἐπορεύθησαν τοῖς δικαιώμασι τῶν ἐθνῶν ὧν ἐξῆρε Κύριος ἐκ προσώπου υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ οἱ βασιλεῖς Ἰσραὴλ ὅσοι ἐποίησαν, καὶ ὅσοι ἠμφιέσαντο οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ λόγους, οὐχ οὕτως κατὰ Κυρίου Θεου αὐτῶν· καὶ ᾠκοδόμησαν ἑαυτοῖς ὑψηλὰ ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτῶν ἀπὸ πύργου φυλασσόντων ἕως πόλεως ὀχυρᾶς, καὶ ἐστήλωσαν ἑαυτοῖς στήλας καὶ ἄλση ἐπὶ παντὶ βουνῷ ὑψηλῷ καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους, καὶ ἐθυμίασαν ἐκεῖ ἐν πᾶσιν ὑψηλοῖς, καθὼς τὰ ἔθνη ἃ ἀπῴκησε Κύριος ἐκ προσώπου αὐτῶν,

καὶ ἐποίησαν κοινωνοὺς, καὶ ἐχάραξαν τοῦ παροργίσαι τὸν Κύριον, καὶ ἐλάτρευσαν τοῖς εἰδώλοις οἷς εἶπε Κύριος αὐτοῖς, οὐ ποιήσετε τὸ ῥῆμα τοῦτο τῷ Κυρίῳ. Καὶ διεμαρτύρατο Κύριος ἐν τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἐν τῷ Ἰούδα καὶ ἐν χειρὶ πάντων τῶν προφητῶν αὐτοῦ παντὸς ὁρῶντος, λέγων, ἀποστράφητε ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν, καὶ φυλάξατε τὰς ἐντολάς μου, καὶ τὰ δικαιώματά μου, καὶ πάντα τὸν νόμον ὃν ἐνετειλάμην τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ὅσα ἀπέστειλα αὐτοῖς ἐν χειρὶ τῶν δούλων μου τῶν προφητῶν. Καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν νῶτον αὐτῶν ὑπὲρ τὸν νώτον τῶν πατέρων αὐτῶν. Καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ ὅσα διεμαρτύρατο αὐτοῖς οὐκ ἐφύλαξαν, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν ματαίων, καὶ ἐματαιώθησαν, καὶ ὀπίσω τῶν ἐθνῶν τῶν περικύκλῳ αὐτῶν, ὧν ἐνετείλατο Κύριος αὐτοῖς μὴ ποιῆσαι κατὰ ταῦτα. Ἐγκατέλιπον τὰς ἐντολὰς Κυρίου Θεοῦ αὐτῶν, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς χώνευμα δύο δαμάλεις, καὶ ἐποίησαν ἄλση, καὶ προσεκύνησαν πάσῃ τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐλάτρευσαν τῷ Βάαλ. Καὶ διῆγον τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἐν πυρὶ, καὶ ἐμαντεύοντο μαντείας, καὶ οἰωνίζοντο· καὶ ἐπράθησαν τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου παροργίσαι αὐτόν. Καὶ ἐθυμώθη Κύριος σφόδρα ἐν τῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἀπέστησεν αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ προσώπου αὐτοῦ, καὶ οὐχ ὑμελείφθη πλὴν φυλὴ Ἰούδα μονωτάτη. Καί γε Ἰούδας οὐκ ἐφύλαξε τὰς ἐντολὰς Κυρίου τοῦ Θεοῦ αὐτῶν· καὶ ἐπορεύθησαν ἐν τοῖς δικαιώμασιν Ἰσραὴλ οἷς ἐποίησαν, καὶ ἀπεώσαντο τὸν Κύριος. Καὶ ἐθυμώθη Κύριος παντὶ σπέρματι Ἰσραὴλ, καὶ ἐσάλευσεν αὐτοὺς, καὶ ἔδωκεν αὐτοὺς ἐν χειρὶ διαρπαζόντων αὐτοὺς, ἕως οὗ ἀπέῤῥιψεν αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. Ὅτι πλὴν Ἰσραὴλ ἐπάνωθεν οἴκου Δαυὶδ, καὶ ἐβασίλευσαν τὸν Ἱεροβοὰμ υἱὸν Ναβάτ· καὶ ἐξέωσεν Ἱεροβοὰμ τὸν Ἰσραὴλ

ἐξόπισθε Κυρίου, καὶ ἐξήμαρτεν αὐτοὺς ἁμαρτίαν μεγάλην. Καὶ ἐπορεύθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν πάσῃ ἁμαρτίᾳ Ἱεροβοὰμ ἧς ἐποιήσεν, οὐκ ἀπέστησαν ἀπ᾽ αὐτῆς ἕως οὗ μετέστησε Κύριος τὸν Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, καθὼς ἐλάλησε Κύριος ἐν χειρὶ πάντων τῶν δούλων αὐτοῦ τῶν προφητῶν· καὶ ἀπῳκίσθη Ἰσραὴλ ἐπάνωθεν τῆς γῆς αὐτοῦ εἰς Ἀσσυρίους ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ ἤγαγε βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐκ Βαβυλῶνος τὸν ἐκ Χουνθὰ, ἀπὸ Ἀϊὰ, καὶ ἀπὸ Αἰμὰθ, καὶ Σεπφαρουαΐν, καὶ κατῳκίσθησαν ἐν πόλεσι Σαμαρείας ἀντὶ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἐκληρονόμησαν τὴν Σαμάρειαν, καὶ κατῴκίσθησαν ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο ἐν ἀρχῇ τῆς καθέδρας αὐτῶν οὐκ ἐφοβήθησαν τὸν Κύριον, καὶ ἀπέστειλε Κύριος ἐν αὐτοῖς τοὺς λέοντας, καὶ ἦσαν ἀποκτενίοντες ἐν αὐτοῖς. Καὶ εἶπαν τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων λέγοντες, τὰ ἔθνη ἃ ἀπῴκισας καὶ ἀντεκάθισας ἐν πόλεσι Σαμαρείας οὐκ ἔγνωσαν τὸ κρίμα τοῦ Θεοῦ τῆς γῆς, καὶ ἀπέστειλεν εἰς αὐτοὺς τοὺς λέοντας, καὶ ἰδού εἰσι θανατοῦντες αὐτοὺς, καθότι οὐκ οἴδασι τὸ κρίμα τοῦ Θεοῦ τῆς γῆς. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, λέγων, ἀπαγάγετε ἐκεῖθεν, καὶ πορευέσθωσαν, καὶ κατοικήτωσαν ἐκεῖ, καὶ φωτιοῦσιν αὐτοὺς τὸ κρίμα τοῦ Θεοῦ τῆς γῆς. Καὶ ἦγαγον ἕνα τῶν ἱερέων ὧν ἀπῴκισαν ἀπὸ Σαμαρείας, καὶ ἐκάθισεν ἐν Βαιθὴλ, καὶ ἦν φωτίζων αὐτοὺς πῶς φοβηθῶσι τὸν Κύριον. Καὶ ἦσαν ποιοῦντες ἔθνη ἔθνη θεοὺς αὐτῶν· καὶ ἔθηκαν ἐν οἴκῳ τῶν ὑψηλῶν ὧν ἐποίησαν οἱ Σαμαρεῖται, ἔθνη ἔθνη ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτῶν ἐν αἷς κατῴκουν. Καὶ οἱ ἄνδρες Βαβυλῶνος ἐποίησαν τὴν Σωκχὼθ Βενὶθ, καὶ οἱ ἄνδρες Χοὺθ ἐποίησαν τὴν Ἐργέλ, καὶ οἱ ἄνδρες Αἰμὰθ ἐποίησαν τὴν Ἀσιμὰθ, καὶ οἱ Εὐαῖοι ἐποίησαν τὴν Ἐβλαζὲρ καὶ τὴν Θαρθὰκ, καὶ ὁ Σεπφαρουαΐμ ἠνίκα κατέκαιον τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν πυρὶ τῷ Ἀδραμέλεχ καὶ Ἀνημελὲχ θεοῖς

Σεπφαρουαΐμ. Καὶ ἦσαν φοβούμενοι τὸν Κύριον· καὶ κατῴκισαν τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἐν τοῖς οἴκοις τῶν ὑψηλῶν ἃ ἐποίησαν ἐν Σαμαρείᾳ, ἔθνος ἔθνος ἐν πόλει ἐν ᾗ κατῴκουν ἐν αὐτῇ· καὶ ἦσαν φοβούμενοι τὸν Κύριον· καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς ἱερεῖς τῶν ὑψηλῶν, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς ἐν οἴκῳ τῶν ὑψηλῶν. Καὶ τὸν Κύριον ἐφοβοῦντο, καὶ τοῖς θεοῖς αὐτῶν ἐλάτρευον κατὰ τὸ κρίμα τῶν ἐθνῶν, ὅθεν ἀπῴκισαν αὐτοὺς ἐκεῖθεν. Ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης αὐτοὶ ἐποίουν κατὰ τὸ κρίμα αὐτῶν· αὐτοὶ φοβοῦνται, καὶ αὐτοὶ ποιοῦσι κατὰ τὰ δικαιώματα αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν κρίσιν αὐτῶν, καὶ κατὰ τὸν νόμον, καὶ κατὰ τὴν ἐντολὴν ἣν ἐνετείλατο Κύριος τοῖς υἱοῖς Ἰακὼβ, οὗ ἔθηκε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰσραήλ. Καὶ διέθετο Κύριος μετ’ αὐτῶν διαθήκην, καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς, λέγων, οὐ φοβηθήσεσθε θεοὺς ἑτέρους, καὶ οὐ προσκυνήσετε αὐτοῖς, καὶ οὐ λατρεύσετε αὐτοῖς, καὶ οὐ θυσιάσετε αὐτοῖς· Ὅτι ἀλλ’ ἢ τῷ Κυρίῳ ὃς ἀνήγαγεν ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν ἰσχύϊ μεγάλῃ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, αὐτὸν φοβηθήσεσθε, καὶ αὐτῷ προσκυνήσετε, αὐτῷ θύσετε. Τὰ δικαιώματα καὶ τὰ κρίματα καὶ τὸν νόμον καὶ τὰς ἐντολὰς, ἃς ἔγραψεν ὑμῖν ποιεῖν, φυλάσσεσθε πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ οὐ φοβηθήσεσθε θεοὺς ἑτέρους. Καὶ τὴν διαθήκην ἣν διέθετο μεθ’ ὑμῶν οὐκ ἐπιλήσεσθε· καὶ οὐ φοβηθήσεσθε θεοὺς ἑτέρους· Ἀλλ’ ἢ τὸν Κύριον Θεὸν ὑμῶν φοβηθήσεσθε, καὶ αὐτὸς ἐξελεῖται ὑμᾶς ἐκ πάντων τῶν ἐχθρῶν ὑμῶν. Καὶ οὐκ ἀκούσεσθε ἐτὶ τῷ κρίματι αὐτῶν, ὃ αὐτοὶ ποιοῦσι. Καὶ ἦσαν τὰ ἔθνη ταῦτα φοβούμενοι τὸν Κύριον, καὶ τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν ἦσαν δουλεύοντες· καί γε οἱ υἱοὶ καὶ υἱοὶ τῶν υἱῶν αὐτῶν, καθὰ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτῶν, ποιοῦσιν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης.

# 18

Καὶ ἐγένετο ἐν ἔτει τρίτῳ τῷ Ὡσηὲ υἱῷ Ἠλὰ βασιλεῖ Ἰσραὴλ ἐβασίλευσεν Ἐζεκίας υἱὸς Ἄχαζ βασιλέως Ἰούδα. Υἱὸς εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ εἴκοσι καὶ ἐννέα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἄβού, θυγάτηρ Ζαχαρίου. Καὶ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε Δαυὶδ ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Αὐτὸς ἐξῆρε τὰ ὑψηλὰ, καὶ συνέτριψε τὰς στήλας, καὶ ἐξωλέθρευσε τὰ ἄλση, καὶ τὸν ὄφιν τὸν χαλκοῦν ὃν ἐποίησε Μωυσῆς, ὅτι ἕως τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ θυμιῶντες αὐτῷ· καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν Νεεσθάν. Ἐν Κυρίῳ Θεῷ Ἰσραὴλ ἤλπισεν, καὶ μετ’ αὐτὸν οὐκ ἐγενήθη ὅμοιος αὐτῷ ἐν βασιλεῦσιν Ἰούδα, καὶ ἐν τοῖς γενομένοις ἔμπροσθεν αὐτοῦ. Καὶ ἐκολλήθη τῷ Κυρίῳ, οὐκ ἀπέστη ὄπισθεν αὐτοῦ, καὶ ἐφύλαξε τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ ὅσας ἐνετείλατο Μωυσῇ. Καὶ ἦν Κύριος μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐν πᾶσιν οἷς ἐποίει, συνῆκε· καὶ ἠθέτησεν ἐν τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων, καὶ οὐκ ἐδούλευσεν αὐτῷ. Αὐτὸς ἐπάταξεν τοὺς ἀλλοφύλους ἕως Γάζης, καὶ ἕως ὁρίου αὐτῆς ἀπὸ πύργου φυλασσόντων καὶ ἕως πόλεως ὀχυρᾶς. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ βασιλεῖ Ἐζεκίᾳ, αὐτὸς ἐνιαυτὸς ὁ ἕβδομος τῷ Ὡσηὲ υἱῷ Ἠλὰ βασιλεῖ Ἰσραήλ, ἀνέβη Σαλαμανασσὰρ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ Σαμάρειαν, καὶ ἐπολιόρκει ἐπ’ αὐτὴν, καὶ κατελάβετο αὐτὴν ἀπὸ τέλους τριῶν ἐτῶν ἐν ἔτει ἕκτῳ τῷ Ἐζεκίᾳ, αὐτὸς ἐνιαυτὸς ἔννατος τῷ Ὡσηὲ βασιλεῖ Ἰσραὴλ, καὶ συνελήμφθη Σαμάρεια. Καὶ ἀπῴκισε βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὴν Σαμάρειαν εἰς Ἀσσυρίους, καὶ ἔθηκεν αὐτοὺς ἐν Ἀλαὲ καὶ ἐν Ἀβὼρ ποταμῷ Γωζὰν καὶ ὄρῃ Μήδων· ἀνθ’ ὧν ὅτι οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς Κυρίου Θεοῦ

αὐτῶν, καὶ παρέβησαν τὴν διαθήκην αὐτοῦ πάντα ὅσα ἐνετείλατο Μωυσῆς ὁ δοῦλος Κυρίου, καὶ οὐκ ἤκουσαν καὶ οὐκ ἐποίησαν. Καὶ τῷ τεσσαρεσκαιδεκάτῳ ἔτει ἔτει τοῦ βασιλέως βασιλέως Ἐζεκίου ἀνέβη Σενναχηρὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα τὰς ὀχυρὰς, καὶ συνέλαβεν αὐτάς. Καὶ ἀπέστειλεν Ἐζεκίας βασιλεὺς Ἰούδα ἀγγέλους πρὸς βασιλέα Ἀσσυρίων εἰς Λαχὶς, λέγων, ἡμάρτηκα, ἀποστράφηθι ἀπ’ ἐμοῦ· ὃ ἐὰν ἐπιθῇς ἐπ’ ἐμὲ, βαστάσω· καὶ ἐπέθηκεν ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ Ἐζεκίαν βασιλέα Ἰούδα τριακόσια τάλαντα ἀργυρίου, καὶ τριάκοντα τάλαντα χρυσίου. Καὶ ἔδωκεν Ἐζεκίας πᾶν τὸ ἀργύριον τὸ εὑρεθὲν ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ ἐν θησαυροῖς οἴκου τοῦ βασιλέως. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ συνέκοψεν Ἐζεκίας τὰς θύρας ναοῦ, καὶ τὰ ἐστηριγμένα ἃ ἐχρύσωσεν Ἐζεκίας ὁ βασιλεὺς Ἰούδα, καὶ ἔδωκεν αὐτὰ βασιλεῖ Ἀσσυρίων. Καὶ ἀπέστειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὸν Θανθὰν καὶ τὸν Ῥαφὶς καὶ τὸν Ῥαψάκην ἐκ Λαχὶς πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν ἐν δυνάμει βαρείᾳ ἐπὶ Ἰερουσαλήμ· καὶ ἀνέβησαν καὶ ἦλθον εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔστησαν ἐν τῷ ὑδραγωγῷ τῆς κολυμβήθρας τῆς ἄνω, ἥ ἐστιν ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἀγροῦ τοῦ γναφέως. Καὶ ἐβόησαν πρὸς Ἐζεκίαν· καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν Ἐλιακὶμ υἱὸς Χελκίου ὁ οἰκονόμος, καὶ Σωμνὰς ὁ γραμματεὺς, καὶ Ἰωὰς ὁ υἱὸς Σαφὰτ ὁ ἀναμιμνήσκων. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ῥαψάκης, εἴπατε δὴ πρὸς Ἐζεκίαν, τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, ὁ μέγας βασιλεὺς Ἀσσυρίων, τί ἡ πεποίθησις αὕτη ἣν πέποιθας; Εἶπας, πλὴν λόγοι χειλέων, Βουλὴ καὶ δύναμις εἰς πόλεμον· νῦν οὖν τίνι πεποιθὼς ἠθέτησας ἐν ἐμοί; Νῦν ἰδοὺ πέποιθας σαυτῷ ἐπὶ τὴν ῥάβδον τὴν καλαμίνην τὴς τεθλασμένην ταύτην, ἐπ’ Αἴγυπτον; ὃς ἂν στηριχθῇ ἀνὴρ ἐπ’ αὐτὴν, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ τρήσει αὐτήν· οὕτως Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου πᾶσι τοῖς πεποιθόσιν ἐπ’ αὐτόν. Καὶ ὅτι εἶπας

πρὸς μὲ, ἐπὶ Κύριον Θεὸν πεποίθαμεν· οὐχὶ αὐτὸς οὗτος ἀπέστησεν Ἐζεκίας τὰ ὑψηλὰ αὐτοῦ καὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτοῦ, καὶ εἶπε τῷ Ἰούδᾳ καὶ τῇ Ἱερουσαλὴμ, ἐνώπιον τοῦ θυσιαστηρίου τούτου προσκυνήσετε ἐν Ἱερουσαλήμ; Καὶ νῦν μίχθητε δὴ τῷ κυρίῳ μου βασιλεῖ Ἀσσυρίων, καὶ δώσω σοι δισχιλίους ἵππους, εἰ δυνήσῃ δοῦναι σεαυτῷ ἐπιβάτας ἐπ’ αὐτούς. Καὶ πῶς ἀποστρέψεις τὸ πρόσωπον τοπάρχου ἑνὸς τῶν δούλων τοῦ κυρίου μου τῶν ἐλαχίστων; καὶ ἤλπισας σαυτῷ ἐπ’ Αἴγυπτον εἰς ἅρματα καὶ ἱππεῖς. Καὶ νῦν μὴ ἄνευ Κυρίου ἀνέβημεν ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον τοῦ διαφθεῖραι αὐτόν; Κύριος εἶπε πρὸς μὲ, ἀνάβηθι ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην καὶ διάφθειρον αὐτήν. Καὶ εἶπεν Ἐλιακὶμ υἱὸς Χελκίου καὶ Σωμνὰς καὶ Ἰωὰς πρὸς Ῥαψάκην, λάλησον δὴ πρὸς τοὺς παῖδάς σου Συριστὶ, ὅτι ἀκούομεν ἡμεῖς· καὶ οὐ λαλήσεις μεθ’ ἡμῶν Ἰουδαϊστὶ· καὶ ἱνατί λαλεῖς ἐν τοῖς ὠσὶ τοῦ λαοῦ τοῦ ἐπὶ τοῦ τείχους; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ῥαψάκης, μὴ ἐπὶ τὸν κύριόν σου καὶ πρὸς σὲ ἀπέστειλέ με ὁ κύριός μου λαλῆσαι τοὺς λόγους τούτους; οὐχὶ ἐπὶ τοὺς ἄνδρας τοὺς καθημένους ἐπὶ τοῦ τείχους, τοῦ φαγεῖν τὴν κόπρον αὐτῶν, καὶ πιεῖν τὸ οὖρον αὐτῶν μεθ’ ὑμῶν ἅμα; Καὶ ἔστη Ῥαψάκης καὶ ἐβόησε φωνῇ μεγάλῃ Ἰουδαϊστὶ, καὶ ἐλάλησε καὶ εἶπεν, ἀκούσατε τοὺς λόγους τοῦ μεγάλου βασιλέως Ἀσσυρίων. Τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς, μὴ ἐπαιρέτω ὑμᾶς Ἐζεκίας λόγοις, ὅτι οὐ μὴ δύνηται ὑμᾶς ἐξελέσθαι ἐκ χειρὸς αὐτοῦ. Καὶ μὴ ἐπελπιζέτω ὑμᾶς Ἐζεκίας πρὸς Κὺριον, λέγων, ἐξαιρούμενος ἐξελεῖται Κύριος, οὐ μὴ παραδοθῇ ἡ πόλις αὕτη ἐν χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. Μὴ ἀκούετε Ἐζεκίου· ὅτι τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ποιήσατε μετ’ ἐμοῦ εὐλογίαν, καὶ ἐξέλθατε πρὸς μὲ, καὶ πίεται ἀνὴρ τὴν ἄμπελον αὐτοῦ, καὶ ἀνὴρ τὴν συκῆν αὐτοῦ φάγεται, καὶ πίεται ὕδωρ τοῦ λάκκου αὐτοῦ, ἕως ἔλθω καὶ λάβω ὑμᾶς εἰς γῆν ὡς γῆ ὑμῶν, γῆ

σίτου καὶ οἴνου καὶ ἄρτου καὶ ἀμπελώνων, γῆ ἐλαίας ἐλαίου καὶ μέλιτος, καὶ ζήσετε καὶ οὐ μὴ ἀποθάνητε· καὶ μὴ ἀκούετε Ἐζεκίου, ὅτι ἀπατᾷ ὑμᾶς, λέγων, Κύριος ῥύσεται ὑμᾶς. Μὴ ῥυόμενοι ἐῤῥύσαντο οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ χώραν ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων; Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς Αἰμὰθ, καὶ Ἀρφάδ; ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς Σεπφαρουαΐμ, Ἀνὰ, καὶ Ἀβὰ, ὅτι ἐξείλαντο Σαμάρειαν ἐκ χειρός μου; Τίς ἐν πᾶσι τοῖς θεοῖς τῶν γαιῶν, οἳ ἐξείλαντο τὰς γᾶς αὐτῶν ἐκ χειρός μου, ὅτι ἐξελεῖται Κύριος τὴν Ἱερουσαλὴμ ἐκ χειρός μου; Καὶ ἐκώφευσαν καὶ οὐκ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ λόγον, ὅτι ἐντολὴ τοῦ βασιλέως, λέγων, οὐκ ἀποκριθήσεσθε αὐτῷ. Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλιακὶμ υἱὸς Χελκίου ὁ οἰκονόμος, καὶ Σωμνὰς ὁ γραμματεὺς, καὶ Ἰωὰς υἱὸς Σαφὰτ ὁ ἀναμιμνήσκων πρὸς Ἐζεκίαν, διεῤῥηχότες τὰ ἱμάτια, καὶ ἀνήγγειλαν αὐτῷ τοὺς λόγους Ῥαψάκου.

# 19

Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἐζεκίας, καὶ διεῤῥῆξε τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ περιεβάλετο σάκκον, καὶ εἰσῆλθεν εἰς οἶκον Κυρίου. Καὶ ἀπέστειλεν Ἐλιακὶμ τὸν οἰκονόμον, καὶ Σωμνὰν τὸν γραμματέα, καὶ τοὺς πρεσβυτέρους τῶν ἱερέων περιβεβλημένους σάκκους, πρὸς Ἡσαΐαν τὸν προφήτην υἱὸν Ἀμώς. Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Ἐζεκίας, ἡμέρα θλίψεως καὶ ἐλεγμοῦ καὶ παροργισμοῦ ἡ ἡμέρα αὕτη· ὅτι ἦλθον υἱοὶ ἕως ὠδίνων, καὶ ἰσχὺς οὐκ ἔστι τῇ τικτούσῃ. Εἴ πως εἰσακούσεται Κύριος ὁ Θεός σου πάντας τοὺς λόγους Ῥαψάκου, ὃν ἀπέστειλεν αὐτὸν βασιλεὺς Ἀσσυρίων ὁ κύριος αὐτοῦ ὀνειδίζειν Θεὸν ζῶντα, καὶ βλασφημεῖν

ἐν λόγοις οἷς ἤκουσε Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ λήψῃ προσευχὴν περὶ τοῦ λείμματος τοῦ εὑρισκομένου. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως Ἐζεκίου πρὸς Ἡσαΐαν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἡσαΐας, Τάδε ἐρεῖτε πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν, τάδε λέγει Κύριος, μὴ φοβηθῇς ἀπὸ τῶν λόγων ὧν ἤκουσας, ὧν ἐβλασφήμησαν τὰ παιδάρια βασιλέως Ἀσσυρίων. Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι ἐν αὐτῷ πνεῦμα, καὶ ἀκούσεται ἀγγελίαν, καὶ ἀποστραφήσεται εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ· καὶ καταβαλῶ αὐτὸν ἐν ῥομφαίᾳ ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ. Καὶ ἐπέστρεψε Ῥαψάκης, καὶ εὗρε τὸν βασιλέα Ἀσσυρίων πολεμοῦντα ἐπὶ Λοβνά, ὅτι ἤκουσεν ὅτι ἀπῇρεν ἐκ Λαχίς. Καὶ ἤκουσε περὶ Θαρακὰ βασιλέως Αἰθιόπων, λέγων, ἰδοὺ ἐξῆλθε πολεμεῖν μετὰ σοῦ· καὶ ἐπέστρεψε, καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἐζεκίαν, λέγων, μὴ ἐπαιρέτω σε ὁ Θεός σου ἐφ’ ᾧ σὺ πέποιθας ἐν αὐτῷ, λέγων, οὐ μὴ παραδοθῇ Ἰερουσαλὴμ εἰς χεῖρας βασιλέως Ἀσσυρίων. Ἰδοὺ σὺ ἤκουσας πάντα ὅσα ἐποίησαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων πάσαις ταῖς γαίαις τοῦ ἀναθεματίσαι αὐτάς· καὶ σὺ ῥυσθήσῃ; Μὴ ἐξαιρούμενοι ἐξείλαντο αὐτοὺς οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, οὓς διέφθειραν οἱ πατρές μου, τήν τε Γωζὰν, καὶ τὴν Χαῤῥὰν, καὶ τὴν Ῥαφὶς, καὶ υἱοὺς Ἐδὲμ τοὺς ἐν Θαεσθέν; Ποῦ ἐστιν ὁ βασιλεὺς Αἰμὰθ, καὶ ὁ βασιλεὺς Ἀρφάδ; καὶ ποῦ ἐστιν ὁ βασιλεὺς τῆς πόλεως Σεπφαρουαΐν, Ἀνὰ, καὶ Ἀβά; Καὶ ἔλαβεν Ἐζεκίας τὰ βιβλία ἐκ χειρὸς τῶν ἀγγέλων, καὶ ἀνέγνω αὐτά· καὶ ἀνέβη εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ ἀνέπτυξεν αὐτὰ Ἐζεκίας ἐναντίον Κυρίου, καὶ εἶπε, Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ, σὺ εἶ ὁ Θεὸς μόνος ἐν πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. Κλῖνον Κύριε τὸ οὖς σου καὶ ἄκουσον, ἄνοιξον Κύριε τοὺς ὀφθαλμούς σου καὶ ἴδε, καὶ ἄκουσον τοὺς λόγους Σενναχηρὶμ οὓς ἀπέστειλεν ὀνειδίζειν Θεὸν ζῶντα. Ὅτι ἀληθείᾳ Κύριε ἠρήμωσαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων τὰ ἔθνη,

καὶ ἔδωκαν τοὺς θεοὺς αὐτῶν εἰς τὸ πῦρ, ὅτι οὐ θεοί εἰσιν, ἀλλ᾽ ἢ ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων ξύλα καὶ λίθος· καὶ ἀπώλεσαν αὐτούς. Καὶ νῦν, Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, σῶσον ἡμᾶς ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, καὶ γνώσονται πᾶσαι αἱ βασιλεῖαι τῆς γῆς, ὅτι σὺ Κύριος ὁ Θεὸς μόνος. Καὶ ἀπέστειλεν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς πρὸς Ἐζεκίαν, λέγων, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων Θεὸς Ἰσραὴλ, ἃ προσηύξω πρὸς μὲ περὶ Σενναχηρὶμ βασιλέως Ἀσσυρίων, ἤκουσα. Οὗτος ὁ λόγος ὃν ἐλάλησε Κύριος ἐπ᾽ αὐτὸν, ἐξουδένησέ σε καὶ ἐμυκτήρισέ σε παρθένος θυγάτηρ Σιὼν, ἐπὶ σοὶ κεφαλὴν αὐτῆς ἐκίνησε θυγάτηρ Ἰερουσαλήμ. Τίνα ὠνείδισας, καὶ τίνα ἐβλασφήμησας; καὶ ἐπὶ τίνα ὕψωσας φωνὴν, καὶ ἦρας εἰς ὕψος τοὺς ὀφθαλμούς σου; εἰς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ; Ἐν χειρὶ ἀγγέλων σου ὠνείδισας Κύριον, καὶ εἶπας, ἐν τῷ πλήθει τῶν ἁρμάτων μου ἐγὼ ἀναβήσομαι εἰς ὕψος ὀρέων μηροὺς τοῦ Λιβάνου, καὶ ἔκοψα τὸ μέγεθος τῆς κέδρου αὐτοῦ, τὰ ἐκλεκτὰ κυπαρίσσων αὐτοῦ, καὶ ἦλθον εἰς μέσον δρυμοῦ καὶ Καρμήλου. Ἐγὼ ἔψυξα καὶ ἔπιον ὕδατα ἀλλότρια, καὶ ἐξερήμωσα τῷ ἴχνει τοῦ ποδός μου πάντας ποταμοὺς περιοχῆς. Ἔπλασα αὐτὴν, συνήγαγον αὐτήν· καὶ ἐγενήθη εἰς ἐπάρσεις ἀποικεσιῶν μαχίμων πόλεις ὀχυράς. Καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐταῖς ἠσθένησαν τῇ χειρὶ, ἔπτηξαν καὶ κατῃσχύνθησαν· ἐγένοντο χόρτος ἀγροῦ, ἢ χλωρὰ βοτάνη, χλόη δωμάτων, καὶ πάτημα ἀπέναντι ἐστηκότος. Καὶ τὴν καθέδραν σου καὶ τὴν ἔξοδόν σου ἔγνων, καὶ τὸν θυμόν σου ἐπ᾽ ἐμὲ, διὰ τὸ ὀργισθῆναί σε ἐπ᾽ ἐμὲ, καὶ τὸ στρῆνός σου ἀνέβη ἐν τοῖς ὠσί μου· καὶ θήσω τὰ ἄγκιστρά μου ἐν τοῖς μυκτῆρσί σου, καὶ χαλινὸν ἐν τοῖς χείλεσί σου, καὶ ἀποστρέψω σε ἐν τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθες ἐν αὐτῇ. Καὶ τοῦτό σοι τὸ σημεῖον· φάγε τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν αὐτόματα, καὶ τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ τὰ ἀνατέλλοντα, καὶ ἔτει τρίτῳ σπορὰ καὶ ἀμητὸς καὶ

φυτεία ἀμπελώνων, καὶ φάγεσθε τὸν καρπὸν αὐτῶν. Καὶ προσθήσει τὸν διασεσωσμένον οἴκου Ἰούδα τὸ ὑπολειφθὲν ῥίζαν κάτω, καὶ ποιήσει καρπὸν ἄνω. Ὅτι ἐξ Ἰερουσαλὴμ ἐξελεύσεται κατάλειμμα, καὶ ἀνασωζόμενος ἐξ ὄρους Σιών· ὁ ζῆλος Κυρίου τῶν δυνάμεων ποιήσει τοῦτο. Οὐχ οὕτως; Τάδε λέγει Κύριος πρὸς βασιλέα Ἀσσυρίων, οὐκ εἰσελεύσεται εἰς τὴν πόλιν ταύτην, καὶ οὐ τοξεύσει ἐκεῖ βέλος, καὶ οὐ προφθάσει ἐπ᾽ αὐτὴν θυρεὸς, καὶ οὐ μὴ ἐκχέῃ πρὸς αὐτὴν πρόσχωμα. Τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθεν, ἐν αὐτῇ ἀποστραφήσεται, καὶ εἰς τὴν πόλιν ταύτην οὐκ εἰσελεύσεται, λέγει Κύριος. Καὶ ὑπερασπιῶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης δι᾽ ἐμὲ καὶ διὰ Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου. Καὶ ἐγένετο νυκτὸς, καὶ ἐξῆλθεν ἄγγελος Κυρίου καὶ ἐπάταξεν ἐν τῇ παρεμβολῇ τῶν Ἀσσυρίων ἑκατὸν ὀγδοηκονταπέντε χιλιάδας· καὶ ὤρθρισαν τοπρωΐ, καὶ ἰδοὺ πάντες σώματα νεκρά. Καὶ ἀπῆρε καὶ ἐπορεύθη καὶ ἀπέστρεψε Σενναχηρὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, καὶ ᾤκησεν ἐν Νινευῆ. Καὶ ἐγένετο αὐτοῦ προσκυνοῦντος ἐν οἴκῳ Μεσερὰχ τοῦ θεοῦ αὐτοῦ, καὶ Ἀδραμέλεχ καὶ Σαρασὰρ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπάταξαν αὐτὸν ἐν μαχαίρᾳ· καὶ αὐτοὶ ἐσώθησαν εἰς γῆν Ἀραράθ· καὶ ἐβασίλευσεν Ἀσορδὰν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ.

# 20

Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἠῤῥώστησεν Ἐζεκίας εἰς θάνατον· καὶ εἰσῆλθε πρὸς αὐτὸν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς ὁ προφήτης, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος, ἔντειλαι τῷ οἴκῳ σου, ἀποθνήσκεις σὺ καὶ οὐ ζήσῃ. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἐζεκίας πρὸς τὸν τοῖχον, καὶ ηὔξατο πρὸς Κύριον λέγων Κύριε, μνήσθητι δὴ ὅσα περιεπάτησα ἐνώπιόν

σου ἐν ἀληθείᾳ καὶ καρδίᾳ πλήρει, καὶ τὸ ἀγαθὸν ἐν ὀφθαλμοῖς σου ἐποίησα· καὶ ἔκλαυσεν Ἐζεκίας κλαυθμῷ μεγάλῳ. Καὶ ἦν Ἡσαΐας ἐν τῇ αὐλῇ τῇ μέσῃ, καὶ ῥῆμα Κυρίου ἐγένετο πρὸς αὐτὸν, λέγων, ἐπίστρεψον, καὶ ἐρεῖς πρὸς Ἐζεκίαν τὸν ἡγούμενον τοῦ λαοῦ μου, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Δαυὶδ τοῦ πατρός σου, ἤκουσα τῆς προσευχῆς σου, εἶδον τὰ δάκρυά σου· ἰδοὺ ἐγὼ ἰάσομαί σε· τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἀναβήσῃ εἰς οἶκον Κυρίου. Καὶ προσθήσω ἐπὶ τὰς ἡμέρας σου πεντεκαίδεκα ἔτη· καὶ ἐκ χειρὸς· βασιλέως Ἀσσυρίων σώσω σε καὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ ὑπερασπιῶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης δι’ ἐμὲ καὶ διὰ Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου. Καὶ εἶπε, λαβέτωσαν παλάθην σύκων, καὶ ἐπιθέτωσαν ἐπὶ τὸ ἕλκος, καὶ ὑγιάσει. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας πρὸς Ἡσαΐαν, τί τὸ σημεῖον ὅτι ἰάσεταί με Κύριος, καὶ ἀναβήσομαι εἰς οἶκον Κυρίου τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ; Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας, τοῦτο τὸ σημεῖον παρὰ Κυρίου, ὅτι ποιήσει Κύριος τὸν λόγον ὃν ἐλάλησε· πορεύσεται ἡ σκιὰ δέκα βαθμοὺς, ἐὰν ἐπιστρέψῃ δέκα βαθμούς. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, κοῦφον τὴν σκιὰν κλῖναι δέκα βαθμούς· οὐχὶ, ἀλλ’ ἐπιστραφήτω ἡ σκιὰ ἐν τοῖς ἀναβαθμοῖς δέκα βαθμοὺς εἰς τὰ ὀπίσω. Καὶ ἐβόησεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης πρὸς Κύριον, καὶ ἐπέστρεψεν ἡ σκιὰ ἐν τοῖς ἀναβαθμοῖς εἰς τὰ ὀπίσω δέκα βαθμούς. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπέστειλε Μαρωδὰχ Βαλαδὰν υἱὸς Βαλαδὰν βασιλεὺς Βαβυλῶνος βιβλία καὶ μαναὰ πρὸς Ἐζεκίαν, ὅτι ἤκουσεν ὅτι ἠῤῥώστησεν Ἐζεκίας. Καὶ ἐχάρη ἐπ’ αὐτοῖς Ἐζεκίας, καὶ ἔδειξεν αὐτοῖς ὅλον τὸν οἶκον τοῦ νεχωθὰ, τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον, τὰ ἀρώματα καὶ τὸ ἔλαιον τὸ ἀγαθὸν, καὶ τὸν οἶκον τῶν σκευῶν, καὶ ὅσα εὑρέθη ἐν τοῖς θησαυροῖς αὐτοῦ· οὐκ ἦν λόγος ὃν οὐκ ἔδειξεν αὐτοῖς Ἐζεκίας ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ καὶ ἐν πάσῃ τῇ ἐξουσίᾳ αὐτοῦ. Καὶ εἰσῆλθεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, καὶ εἶπε πρὸς

αὐτόν, τί ἐλάλησαν οἱ ἄνδρες οὗτοι, καὶ πόθεν ἥκασι πρὸς σέ; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, ἐκ γῆς πόῤῥωθεν ἥκασιν πρὸς μὲ, ἐκ Βαβυλῶνος. Καὶ εἶπε, τί εἶδον ἐν τῷ οἴκῳ σου; καὶ εἶπε πάντα ὅσα ἐν τῷ οἴκῳ μου εἶδον· οὐκ ἦν ἐν τῷ οἴκῳ μου ὃ οὐκ ἔδειξα αὐτοῖς, ἀλλὰ καὶ τὰ ἐν τοῖς θησαυροῖς μου. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας πρὸς Ἐζεκίαν, ἄκουσον λόγον Κυρίου, ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, καὶ ληφθήσεται πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ ὅσα ἐθησαύρισαν οἱ πατέρες σου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, εἰς Βαβυλῶνα· καὶ οὐχ ὑπολειφθήσεται ῥῆμα ὃ εἶπε Κύριος. Καὶ οἱ υἱοί σου οἳ ἐξελεύσονται ἐκ σοῦ οὓς γεννήσεις, λήψεται, καὶ ἔσονται εὐνοῦχοι ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας πρὸς Ἡσαΐαν, ἀγαθὸς ὁ λόγος Κυρίου ὃν ἐλάλησεν· ἔστω εἰρήνη ἐν ταῖς ἡμέραις μου. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἐζεκίου καὶ πᾶσα ἡ δυναστεία αὐτοῦ καὶ ὅσα ἐποίησε, τὴν κρήνην καὶ τὸν ὑδραγωγόν, καὶ εἰσήγαγε τὸ ὕδωρ εἰς τὴν πόλιν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Ἐζεκίας μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσε Μανασσῆς υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 21

Υἱὸς δώδεκα ἐτῶν Μανασσὴς ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν, καὶ πεντήκοντα καὶ πέντε ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀψιβά. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ τὰ βδελύγματα τῶν ἐθνῶν ὧν ἐξῆρε Κύριος ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐπέστρεψε καὶ ᾠκοδόμησε τὰ ὑψηλὰ ἃ κατέσπασεν Ἐζεκίας ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἀνέστησε θυσιαστήριον τῇ Βάαλ, καὶ ἐποίησε τὰ ἄλση καθὼς ἐποίησεν

Ἀχαὰβ βασιλεὺς Ἰσραήλ, καὶ προσεκύνησε πάσῃ τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐδούλευσεν αὐτοῖς. Καὶ ᾠκοδόμησε θυσιαστήριον ἐν ὄκῳ Κυρίου, ὡς εἶπεν, ἐν Ἰερουσάλὴμ θήσω τὸ ὄνομά μου. Καὶ ᾠκοδόμησε θυσιαστήριον πάσῃ τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ ἐν ταῖς δυσὶν αὐλαῖς οἴκου Κυρίου. Καὶ διῆγε τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ἐν πυρί, καὶ ἐκληδονίζετο καὶ οἰωνίζετο, καὶ ἐποίησε τεμένη, καὶ γνώστας ἐπλήθυνε τοῦ ποιεῖν τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου παροργίσαι αὐτόν. Καὶ ἔθηκε τὸ γλυπτὸν τοῦ ἄλσους ἐν τῷ οἴκῳ ᾧ εἶπε Κύριος πρὸς Δαυὶδ καὶ πρὸς Σαλωμὼν τὸν υἱὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ οἴκῳ τούτῳ καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ ᾗ ἐξελεξάμην ἐκ πασῶν φυλῶν τοῦ Ἰσραὴλ καὶ θήσω τὸ ὄνομά μου εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ οὐ προσθήσω τοῦ σαλεῦσαι τὸν πόδα Ἰσραὴλ ἀπὸ τῆς γῆς ἧς ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, οἵ τινες φυλάξουσι πάντα ὅσα ἐνετειλάμην κατὰ πᾶσαν τὴν ἐντολὴν ἣν ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ δοῦλός μου Μωυσῆς. Καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ ἐπλάνησεν αὐτοὺς Μανασσῆς τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου ὑπὲρ τὰ ἔθνη, ἃ ἠθάνισε Κύριος ἐκ προσώπου υἱῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἐλάλησε Κύριος ἐν χειρὶ δούλων αὐτοῦ τῶν προφητῶν, λέγων, ἀνθ’ ὧν ὅσα ἐποίησε Μανασσῆς ὁ βασιλεὺς Ἰούδα τὰ βδελύγματα ταῦτα τὰ πονηρὰ ἀπὸ πάντων ὧν ἐποίησεν ὁ Ἀμορῥαῖος ὁ ἔμπροσθεν, καὶ ἐξήμαρτε καί γε Ἰούδαν ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν, οὐχ οὕτως· τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ, ἰδοὺ ἐγὼ φέρω κακὰ ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ καὶ Ἰούδαν, ὥστε παντὸς ἀκούοντος ἠχήσει ἀμφότερα τὰ ὦτα αὐτοῦ· Καὶ ἐκτενῶ ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ τὸ μέτρον Σαμαρείας καὶ τὸ στάθμιον οἴκου Ἀχαάβ· καὶ ἀπαλείψω τὴν Ἰερουσαλὴμ, καθὼς ἀπαλείφεται ὁ ἀλάβαστρος ἀπαλειφόμενος καὶ καταστρέφεται ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ. Καὶ ἀπεώσομαι τὸ ὑπόλειμμα τῆς κληρονομίας μου, καὶ παραδώσω αὐτοὺς εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ ἔσονται εἰς διαρπαγὴν καὶ εἰς

προνομὴν πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν, ἀνθ’ ὧν ὅσα ἐποίησαν τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς μου, καὶ ἦσαν παροργίζοντές με ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς ἐξήγαγον τοὺς πατέρας αὐτῶν ἐξ Αἰγύπτου καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καί γε αἷμα ἀθῷον ἐξέχεε Μανασσῆς πολὺ σφόδρα ἕως οὗ ἔπλησε τὴν Ἰερουσαλὴμ στόμα εἰς στόμα, πλὴν ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτοῦ ὧν ἐξήμαρτε τὸν Ἰούδαν τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Μανασσῆ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησε, καὶ ἡ ἁμαρτία αὐτοῦ ἣν ἥμαρτεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἐκοιμήθη Μανασσὴς μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐτάφη ἐν τῷ κήπῳ τοῦ οἴκου αὐτοῦ ἐν κήπῳ Ὀζά· καὶ ἐβασίλευσεν Ἀμὼς υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Υἱὸς εἴκοσι καὶ δύο ἐτῶν Ἀμὼς ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτόν, καὶ δύο ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Μεσολλάμ, θυγάτηρ Ἀρὼς ἐξ Ἰετέβα. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου καθὼς ἐποίησε Μανασσὴς, ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Καὶ ἐπορεύθη ἐν πάσῃ ὁδῷ ᾗ ἐπορεύθη ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἐλάτρευσε τοῖς εἰδώλοις οἷς ἐλάτρευσεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ προσεκύνησεν αὐτοῖς. Καὶ ἐγκατέλιπε τὸν Κύριον Θεὸν τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐπορεύθη ἐν ὁδῷ Κυρίου. Καὶ συνεστράφησαν οἱ παῖδες Ἀμὼς πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐθανάτωσαν τὸν βασιλέα ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Καὶ ἐπάταξεν ὁ λαὸς τῆς γῆς πάντας τοὺς συστραφέντας ἐπὶ τὸν βασιλέα Ἀμώς, καὶ ἐβασίλευσεν ὁ λαὸς τῆς γῆς τὸν Ἰωσίαν υἱὸν αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἀμὼς ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ αὐτοῦ ἐν τῷ κήτῳ Ὀζά, καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωσίας υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ.

# 22

Υἱὸς ὀκτὼ ἐτῶν Ἰωσείας ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ τριάκοντα καὶ ἓν ἔτος ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἰεδία, θυλάτηρ Ἐδεϊὰ ἐκ Βασουρώθ. Καὶ ἐποίησε τὸ εὐθὲς ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, καὶ ἐπορεύθη ἐν πάσῃ ὁδῷ Δαυὶδ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, οὐκ ἀπέστη δεξιὰ καὶ ἀριστερά. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ὀκτωκαιδεκάτῳ ἔτει τῷ βασιλεῖ Ἰωσείᾳ, ἐν τῷ μηνὶ τῷ ὀγδόῳ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς τὸν Σαπφὰν υἱὸν Ἐζελίου υἱοῦ Μεσολλὰμ τὸν γραμματέα οἴκου Κυρίου, λέγων, ἀνάβηθι πρὸς Χελκίαν τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, καὶ σφράγισον τὸ ἀργύριον τὸ εἰσενεχθὲν ἐν οἴκῳ Κυρίου, ὃ συνήγαγον οἱ φυλάσσοντες τὸν σταθμὸν παρὰ τοῦ λαοῦ. Καὶ δότωσαν αὐτὸ ἐπὶ χεῖρα ποιούντων τὰ ἔργα τῶν καθεσταμένων ἐν οἴκῳ Κυρίου· καὶ ἔδωκεν αὐτὸ τοῖς ποιοῦσι τὰ ἔργα τοῖς ἐν οἴκῳ Κυρίου τοῦ κατισχῦσαι τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου, τοῖς τέκτοσι καὶ τοῖς οἰκοδόμοις καὶ τοῖς τειχισταῖς, καὶ τοῦ κτήσασθαι ξύλα καὶ λίθους λατομητοὺς, τοῦ κραταιῶσαι τὸ βεδὲκ τοῦ οἴκου. Πλὴν οὐκ ἐξελογίζοντο αὐτοὺς τὸ ἀργύριον τὸ διδόμενον αὐτοῖς, ὅτι ἐν πίστει αὐτοὶ ποιοῦσι. Καὶ εἶπε Χελκίας ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας πρὸς Σαπφὰν τὸν γραμματέα, βιβλίον τοῦ νόμου εὗρον ἐν οἴκῳ Κυρίου· καὶ ἔδωκε Χελκίας τὸ βιβλίον πρὸς Σαπφὰν, καὶ ἀνέγνω αὐτό. Καὶ εἰσῆλθεν ἐν οἴκῳ Κυρίου πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἀπέστρεψε τῷ βασιλεῖ ῥῆμα, καὶ εἶπεν, ἐχώνευσαν οἱ δοῦλοί σου τὸ ἀργύριον τὸ εὑρεθὲν ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ ἔδωκαν αὐτὸ ἐπὶ χεῖρα ποιούντων τὰ ἔργα καθεσταμένων ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ εἶπε Σαπφὰν ὁ γραμματεὺς πρὸς τὸν βασιλέα, λέγων, βιβλίον ἔδωκέ μοι Χελκίας ὁ ἱερεύς· καὶ ἀνέγνω αὐτὸ Σαπφὰν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ

ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς τοὺς λόγους βιβλίου τοῦ νόμου, καὶ διέῤῥηξε τὰ ἱμάτια ἑαυτοῦ. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Χελκίᾳ τῷ ἱερεῖ, καὶ τῷ Ἀχικὰμ υἱῷ Σαπφὰν, καὶ τῷ Ἀχοβὼρ υἱῷ Μιχαίου, καὶ τῷ Σαπφὰν τῷ γραμματεῖ, καὶ τῷ Ἀσαΐᾳ δούλῳ τοῦ βασιλέως, λέγων, δεῦτε, ἐκζητήσατε τὸν Κύριον περὶ ἐμοῦ, καὶ περὶ παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ περὶ παντὸς τοῦ Ἰούδα, καὶ περὶ τῶν λόγων τοῦ βιβλίου τοῦ εὑρεθέντος τούτου, ὅτι μεγάλη ἡ ὀργὴ Κυρίου ἐκκεκαυμένη ἐν ἡμῖν, ὑπὲρ οὗ οὐκ ἤκουσαν οἱ πατέρες ἡμῶν τῶν λόγων τοῦ βιβλίου τούτου τοῦ ποιεῖν κατὰ πάντα τὰ γεγραμμένα καθ’ ἡμῶν. Καὶ ἐπορεύθη Χελκίας ὁ ἱερεὺς, καὶ Ἀχικὰμ, καὶ Ἀχοβὼρ, καὶ Σαπφὰν, καὶ Ἀσαΐας πρὸς Ὄλδαν τὴν προφῆτιν μητέρα Σελλὴμ υἱοῦ Θεκουαὺ υἱοῦ Ἀρὰς τοῦ ἱματιοφύλακος· καὶ αὕτη κατῴκει ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐν τῇ Μασενᾷ· καὶ ἐλάλησαν πρὸς αὐτήν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, τάδε λέγει Κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, εἴπατε τῷ ἀνδρὶ τῷ ἀποστείλαντι ὑμᾶς πρὸς μέ, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω κακὰ ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἐπὶ τοὺς ἐνοικοῦντας αὐτὸν πάντας τοὺς λόγους τοῦ βιβλίου οὓς ἀνέγνω βασιλεὺς Ἰούδα, ἀνθ’ ὧν ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἐθυμίων θεοῖς ἑτέροις, ὅπως παροργίσωσί με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ ἐκκαυθήσεται θυμός μου ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ καὶ οὐ σβεσθήσεται. Καὶ πρὸς βασιλέα Ἰούδα τὸν ἀποστείλαντα ὑμᾶς ἐπιζητῆσαι τὸν Κύριον, τάδε ἐρεῖτε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, οἱ λόγοι οὓς ἤκουσας, ἀνθ’ ὧν ὅτι ἠπαλύνθη ἡ καρδία σου, καὶ ἐνετράπης ἀπὸ προσώπου, ὡς ἤκουσας ὅσα ἐλάλησα ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον καὶ ἐπὶ τοὺς ἐνοικοῦντας αὐτὸν, τοῦ εἶναι εἰς ἀφανισμὸν καὶ εἰς κατάραν, καὶ διέῤῥηξας τὰ ἱμάτιά σου καὶ ἔκλαυσας ἐνώπιόν μου, καί γε ἐγὼ ἤκουσα, λέγει Κύριος. Οὐχ οὕτως· ἰδοὺ προστίθημί σε πρὸς τοὺς πατέρας σου, καὶ συναχθήσῃ

εἰς τὸν τάφον σου ἐν εἰρήνῃ, καὶ οὐκ ὀφθήσεται ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου ἐν πᾶσι τοῖς κακοῖς οἷς ἐγώ εἰμι ἐπάγω ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον.

# 23

Καὶ ἐπέστρεψαν τῷ βασιλεῖ τὸ ῥῆμα· καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς, καὶ συνήγαγε πρὸς ἑαυτὸν πάντας τοὺς πρεσβυτέρους Ἰούδα καὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἀνέβη ὁ βασιλεὺς εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ πᾶς ἀνὴρ Ἰούδα καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλὴμ μετ’ αὐτοῦ, καὶ οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ προφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀπὸ μικροῦ καὶ ἕως μεγάλου, καὶ ἀνέγνω ἐν ὠσὶν αὐτῶν πάντας τοὺς λόγους τοῦ βιβλίου τῆς διαθήκης τοῦ εὑρεθέντος ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἔστη ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν στύλον, καὶ διέθετο διαθήκην ἐνώπιον Κυρίου, τοῦ πορεύεσθαι ὀπίσω Κυρίου, τοῦ φυλάσσειν τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ ἐν πάσῃ καρδίᾳ καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ, τοῦ ἀναστῆσαι τοὺς λόγους τῆς διαθήκης ταύτης, τὰ γεγραμμένα ἐπὶ τὸ βιβλίον τοῦτο· καὶ ἔστη πᾶς ὁ λαὸς ἐν τῇ διαθήκῃ. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Χελκίᾳ τῷ ἱερεῖ τῷ μεγάλῳ καὶ τοῖς ἱερεῦσι τῆς δευτερώσεως καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὸν σταθμὸν, ἐξαγαγεῖν ἐκ τοῦ ναοῦ Κυρίου πάντα τὰ σκεύη τὰ πεποιημένα τῷ Βάαλ καὶ τῷ ἄλσει καὶ πάσῃ τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ· καὶ κατέκαυσεν αὐτὰ ἔξω Ἰερουσαλὴμ ἐν σαλημὼθ Κέδρών, καὶ ἔλαβεν τὸν χοῦν αὐτῶν εἰς Βαιθήλ. Καὶ κατέκαυσε τοὺς χωμαρὶμ οὓς ἔδωκαν βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἐθυμίων ἐν τοῖς ὑψηλοῖς καὶ ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα καὶ τοῖς περικύκλῳ Ἰερουσαλήμ, καὶ τοὺς θυμιῶντας τῷ Βάαλ καὶ τῷ ἡλίῳ, καὶ τῇ σελήνῃ, καὶ τοῖς μαζουρὼθ, καὶ πάσῃ τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ

ἐξήνεγκε τὸ ἄλσος ἐξ οἴκου Κυρίου ἔξωθεν Ἰερουσαλὴμ εἰς τὸν χειμάῤῥουν Κέδρών, καὶ κατέκαυσεν αὐτὸν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ Κεδρων, καὶ ἐλέπτυνεν εἰς χοῦν· καὶ ἔῤῥιψε τὸν χοῦν αὐτοῦ εἰς τὸν τάφον τῶν υἱῶν τοῦ λαοῦ. καὶ καθεῖλε τὸν οἶκον τῶν καδησὶμ τῶν ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου, οὗ αἱ γυναῖκες ὕφαινον ἐκεῖ χεττιῖμ τῷ ἄλσει. Καὶ ἀνήγαγεν πάντας τοὺς ἱερεῖς ἐκ πόλεων Ἰούδα, καὶ ἐμίανε τὰ ὑψηλὰ οὗ ἐθυμίασαν ἐκεῖ οἱ ἱερεῖς ἀπὸ Γαιβὰλ καὶ ἕως Βηρσάβεέ· καὶ καθεῖλε τὸν οἶκον τῶν πυλῶν τὸν παρὰ τὴν θύραν τῆς πύλης Ἰησοῦ ἄρχοντος τῆς πόλεως, τῶν ἐξ ἀριστερῶν ἀνδρὸς ἐν τῇ πύλῃ τῆς πόλεως. Πλὴν οὐκ ἀνέβησαν οἱ ἱερεῖς τῶν ὑψηλῶν πρὸς τὸ θυσιαστήριον Κυρίου ἐν Ἰερουσαλήμ, ὅτι εἰ μὴ ἔφαγον ἄζυμα ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. Καὶ ἐμίανε τὸν Ταφὲθ τὸν ἐν φάραγγι υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ διαγαγεῖν ἄνδρα τὸν υἱὸν αὐτοῦ καὶ ἄνδρα τὴν θυγατέρα αὐτοῦ τῷ Μόλοχ ἐν πυρί. Καὶ κατέκαυσε τοὺς ἵππους οὓς ἔδωκαν βασιλεῖς Ἰούδα τῷ ἡλίῳ ἐν τῇ εἰσόδῳ οἴκου Κυρίου εἰς τὸ γαζοφυλάκιον Ναθὰν βασιλέως τοῦ εὐνούχου ἐν φαρουρείμ· καὶ τὸ ἅρμα τοῦ ἡλίου κατέκαυσεν πυρί, καὶ τὰ θυσιαστήρια τὰ ἐπὶ τοῦ δώματος τοῦ ὑπερῴου Ἄχαζ, ἃ ἐποίησαν βασιλεὶς Ἰούδα· καὶ τὰ θυσιαστήρια ἃ ἐποίησε Μανασσῆς ἐν ταῖς δυσὶν αὐλαῖς οἴκου Κυρίου καθεῖλεν ὁ βασιλεὺς καὶ κατέσπασεν ἐκεῖθεν, καὶ ἔῤῥιψε τὸν χοῦν αὐτῶν εἰς τὸν χειμάῤῥουν Κέδρων. Καὶ τὸν οἶκον τὸν ἐπὶ πρόσωπον Ἰερουσαλὴμ τὸν ἐκ δεξιῶν τοῦ ὄρους τοῦ Μοσθὰθ, ὃν ᾠκοδόμησε Σαλωμὼν βασιλεὺς Ἰσραὴλ τῇ Ἀστάρτῃ προσοχθίσματι Σιδωνίων, καὶ τῷ Χαμὼς προσοχθίσματι Μωὰβ, καὶ τῷ Μολὸχ βδελύγματι υἱῶν Ἀμμὼν, ἐμίανεν ὁ βασιλεύς. Καὶ συνέτριψε τὰς στήλας, καὶ ἐξωλόθρευσε τὰ ἄλση, καὶ ἔπλησε τοὺς τόπους αὐτῶν ὀστέων ἀνθρώπων. Καί γε τὸ θυσιαστήριον τὸ ἐν Βαιθὴλ τὸ ὑψηλὸν ὃ ἐποίησεν Ἱεροβοὰμ υἱὸς Ναβὰτ, ὃς ἐξήμαρτε

τὸν Ἰσραὴλ, καί γε τὸ θυσιαστήριον ἐκεῖνο τὸ ὑψηλὸν κατέσπασε, καὶ συνέτριψε τοὺς λίθους αὐτοῦ καὶ ἐλέπτυνεν εἰς χοῦν, καὶ κατέκαυσε τὸ ἄλσος. Καὶ ἐξένευσεν Ἰωσίας καὶ εἶδε τοὺς τάφους τοὺς ἐκεῖ ἐν τῇ πόλει, καὶ ἀπέστειλε, καὶ ἔλαβε τὰ ὀστᾶ ἐκ τῶν τάφων, καὶ κατέκαυσεν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐμίανεν αὐτὸ κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου ὃ ἐλάλησεν ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ἐν τῷ ἑστᾶναι Ἱεροβοὰμ ἐν τῇ ἑορτῇ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον· καὶ ἐπιστρέψας ᾖρε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ἐπὶ τὸν τάφον τοῦ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ τοῦ λαλήσαντος τοὺς λόγους τούτους. Καὶ εἶπεν, τί τὸ σκόπελον ἐκεῖνο ὃ ἐγὼ ὁρῶ; καὶ εἶπον αὐτῷ οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως, ὁ ἄνθρωπος τοῦ Θεοῦ ὁ ἐξεληλυθὼς ἐξ Ἰούδα, καὶ ἐπικαλεσάμενος τοὺς λόγους τούτους οὓς ἐπεκαλέσατο ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον Βαιθήλ. Καὶ εἶπεν, ἄφετε αὐτὸν, ἀνὴρ μὴ κινησάτωσαν τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ· καὶ ἐῤῥύσθησαν τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ μετὰ τῶν ὀστῶν τοῦ προφήτου τοῦ ἥκοντος ἐκ Σαμαρείας. Καί γε πάντας τοὺς οἴκους τῶν ὑψηλῶν τοὺς ἐν ταῖς πόλεσιν Σαμαρείας, οὓς ἐποίησαν βασιλεῖς Ἰσραὴλ παροργίζειν Κύριον, ἀπέστησεν Ἰωσίας, καὶ ἐποίησεν ἐν αὐτοῖς πάντα τὰ ἔργα ἃ ἐποίησεν ἐν Βαιθήλ. Καὶ ἐθυσίασε πάντας τοὺς ἱερεῖς τῶν ὑψηλῶν τοὺς ὄντας ἐκεῖ ἐπὶ τῶν θυσιαστηρίων, καὶ κατέκαυσε τὰ ὀστᾶ τῶν ἀνθρώπων ἐπ’ αὐτὰ, καὶ ἐπεστράφη εἰς Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς παντὶ τῷ λαῷ, λέγων, ποιήσατε πάσχα τῷ Κυρίῳ Θεῷ ἡμῶν, καθὼς γέγραπται ἐπὶ βιβλίου τῆς διαθήκης ταύτης. Ὅτι οὐκ ἐγενήθη τὸ πάσχα τοῦτο ἀφ’ ἡμερῶν τῶν κριτῶν οἳ ἔκρινον τὸν Ἰσραὴλ, καὶ πάσας τὰς ἡμέρας βασιλέων Ἰσραὴλ καὶ βασιλέων Ἰούδα. ὅτι ἀλλ’ ἢ τῷ ὀκτωκαιδεκάτῳ ἔτει τοῦ βασιλέως Ἰωσίον ἐγενήθη τὸ πάσχα τῷ Κυρίῳ ἐν Ἱερουσαλήμ. Καί γε τοὺς θελητὰς, καὶ τοὺς γνωριστὰς καὶ τὰ θεραφὶν, καὶ τὰ εἴδωλα, καὶ πάντα τὰ

προσοχθίσματα τὰ γεγονότα ἐν τῇ γῇ Ἰούδα καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐξῆρεν Ἰωσίας, ἵνα στήσῃ τοὺς λόγους τοῦ νόμου τοὺς γεγραμμένους ἐπὶ τοῦ βιβλίου, οὗ εὗρε Χελκίας ὁ ἱερεὺς ἐν οἴκῳ Κυρίου. Ὅμοιος αὐτῷ οὐκ ἐγενήθη ἔμπροσθεν αὐτοῦ βασιλεὺς, ὃς ἐπέστρεψε πρὸς Κύριον ἐν ὅλῃ καρδίᾳ αὐτοῦ, καὶ ἐν ὅλῃ ψυχῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν ὅλῃ ἰσχύϊ αὐτοῦ κατὰ πάντα τὸν νόμον Μωυσῆ, καὶ μετ' αὐτὸν οὐκ ἀνέστη ὅμοιος αὐτῷ. Πλὴν οὐκ ἀπεστράφη Κύριος ἀπὸ θυμοῦ τῆς ὀργῆς αὐτοῦ τῆς μεγάλης οὗ ἐθυμώθη ὀργῇ αὐτοῦ ἐν τῷ Ἰούδᾳ ἐπὶ τοὺς παροργισμοὺς, οὓς παρώργισεν αὐτὸν Μανασσῆς. Καὶ εἶπε Κύριος, καί γε τὸν Ἰούδα ἀποστήσω ἀπὸ τοῦ προσώπου μου, καθὼς ἀπέστησα τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἀπεώσομαι τὴν πόλιν ταύτην ἣν ἐξελεξάμην, τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὸν οἶκον οὗ εἶπον, ἔσται τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωσίου καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐχὶ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; Ἐν δὲ ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ ἀνέβη Φαραὼ Νεχαὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου ἐπὶ βασιλέα Ἀσσυρίων ἐπὶ ποταμὸν Εὐφράτην· καὶ ἐπορεύθη Ἰωσίας εἰς ἀπαντὴν αὐτοῦ, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτὸν Νεχαὼ ἐν Μαγεδδὼ ἐν τῷ ἰδεῖν αὐτόν. Καὶ ἐπεβίβασαν αὐτὸν οἱ παῖδες αὐτοῦ νεκρὸν ἐκ Μαγεδδὼ, καὶ ἤγαγον αὐτὸν εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ αὐτοῦ· καὶ ἔλαβεν ὁ λαὸς τῆς γῆς τὸν Ἰωάχαζ υἱὸν Ἰωσίου, καὶ ἔχρισαν αὐτὸν, καὶ ἐβασίλευσαν αὐτὸν ἀντὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Υἱὸς εἴκοσι καὶ τριῶν ἐτῶν ἦν Ἰωάχαζ ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ τρίμηνον ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀμιτὰλ, θυγάτηρ Ἱερεμίου ἐκ Λοβνά. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ. Καὶ μετέστησεν αὐτὸν Φαραὼ Νεχαὼ ἐν Ῥαβλαὰμ ἐν γῇ Ἐμὰθ τοῦ μὴ βασιλεύειν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔδωκε ζημίαν ἐπὶ τὴν γῆν

ἑκατὸν τάλαντα ἀργυρίου καὶ ἑκατὸν τάλαντα χρυσίου. Καὶ ἐβασίλευσε Φαραὼ Νεχαὼ ἐπ᾽ αὐτοὺς τὸν Ἐλιακὶμ υἱὸν Ἰωσίου βασιλέως Ἰούδα ἀντὶ Ἰωσίου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἐπέστρεψε τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωακίμ· καὶ τὸν Ἰωάχαζ ἔλαβε καὶ εἰσήνεγκεν εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ. Καὶ τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον ἔδωκεν Ἰωακὶμ τῷ Φαραῷ, πλὴν ἐτιμογράφησε τὴν γῆν τοῦ δοῦναι τὸ ἀργύριον ἐπὶ στόματος Φαραώ ἀνὴρ κατὰ τὴν συντίμησιν αὐτοῦ ἔδωκαν τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον μετὰ τοῦ λαοῦ τῆς γῆς τοῦ δοῦναι τῷ Φαραῷ Νεχαώ. Υἱὸς εἴκοσι καὶ πέντε ἐτῶν Ἰωακὶμ ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ἕνδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἰελδὰφ θυγάτηρ Φαδαΐλ ἐκ Ῥουμά. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ.

# 24

Ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ ἀνέβη Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ ἐγενήθη αὐτῷ Ἰωακὶμ δοῦλος τρία ἔτη· καὶ ἐπέστρεψε καὶ ἠθέτησεν ἐν αὐτῷ. Καὶ ἀπέστειλε Κύριος αὐτῷ τοὺς μονοζώνους τῶν Χαλδαίων, καὶ τοὺς μονοζώνους Συρίας, καὶ τοὺς μονοζώνους Μωὰβ, καὶ τοὺς μονοζώνους υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ Ἰούδα τοῦ κατισχῦσαι κατὰ τὸν λόγον Κυρίου, ὃν ἐλάλησεν ἐν χειρὶ τῶν δούλων αὐτοῦ τῶν προφητῶν. Πλὴν ἐπὶ τὸν θυμὸν Κυρίου ἦν ἐν τῷ Ἰούδα, ἀποστῆσαι αὐτὸν ἀπὸ τοῦ προσώπου αὐτὸν ἐν ἁμαρτίαις Μανασσὴ κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε. Καί γε τὸ αἷμα ἀθῷον, ἐξέχεε, καὶ ἔπλησε τὴν Ἰερουσαλὴμ αἵματος ἀθώου, καὶ οὐκ ἠθέλησε Κύριος ἱλασθῆναι.

Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωακὶμ καὶ πάντα ὅσα ἐποίησεν, οὐκ ἰδοὺ ταῦτα γεγραμμένα ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα; καὶ ἐκοιμήθη Ἰωακεὶμ μετὰ τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἐβασίλευσεν Ἰωακεὶμ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. Καὶ οὐ προσέθετο ἔτι βασιλεὺς Αἰγύπτου ἐξελθεῖν ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ, ὅτι ἔλαβε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἀπὸ τοῦ χειμάῤῥου Αἰγύπτου ἕως τοῦ ποταμοῦ Εὐφράτου πάντα ὅσα ἦν τοῦ βασιλέως Αἰγύπτου. Υἱὸς ὀκτωκαίδεκα ἐτῶν Ἰωαχὶμ ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ τρίμηνον ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Νέσθα, θυγάτηρ Ἐλλαναθὰμ, ἐξ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐν ὀφθαλμοῖς Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν ὁ πατὴρ αὐτοῦ. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀνέβη Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἦλθεν ἡ πόλις ἐν περιοχῇ. Καὶ εἰσῆλθε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς πόλιν, καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ ἐπολιόρκουν ἐπ’ αὐτήν. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰωαχὶμ βασιλεὺς Ἰούδα ἐπὶ βασιλέα Βαβυλῶνος, αὐτὸς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ, καὶ οἱ εὐνοῦχοι αὐτοῦ· καὶ ἔλαβεν αὐτὸν βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν τῷ ὀγδόῳ ἔτει τῆς βασιλείας αὐτοῦ. Καὶ ἐξήνεγκεν ἐκεῖθεν πάντας τοὺς θησαυροὺς οἴκου Κυρίου, καὶ τοὺς θησαυροὺς οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ συνέκοψε πάντα τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ ἃ ἐποίησε Σαλωμὼν ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐν τῷ ναῷ Κυρίου κατὰ τὸ ῥῆμα Κυρίου. Καὶ ἀπῴκισε τὴν Ἰερουσαλὴμ καὶ πάντας τοὺς ἄρχοντας καὶ τοὺς δυνατοὺς ἰσχύϊ αἰχμαλωσίας δέκα χιλιάδας αἰχμαλωτίσας, καὶ πᾶν τέκτονα καὶ τὸν συγκλείοντα, καὶ οὐχ ὑπελείφθη πλὴν οἱ πτωχοὶ τῆς γῆς. Καὶ ἀπῴκισε τὸν Ἰωαχὶμ εἰς Βαβυλῶνα, καὶ τὴν μητέρα τοῦ βασιλέως, καὶ τὰς γυναῖκας τοῦ βασιλέως, καὶ τοὺς εὐνούχους αὐτοῦ· καὶ τοὺς ἰσχυροὺς τῆς γῆς ἀπήγαγεν εἰς ἀποικεσίαν ἐξ Ἰερουσαλὴμ εἰς Βαβυλῶνα· Καὶ

πάντας τοὺς ἄνδρας τῆς δυνάμεως ἑπτακισχιλίους, καὶ τὸν τέκτονα καὶ τὸν συγκλείοντα χιλίους· πάντες δυνατοὶ ποιοῦντες πόλεμον· καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς βασιλεὺς Βαβυλῶνος μετοικεσίαν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἐβασίλευσε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὸν Βατθανίαν υἱὸν αὐτοῦ ἀντ' αὐτοῦ, καὶ ἐπέθηκε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Σεδεκία. Υἱὸς εἴκοσι καὶ ἑνὸς ἐνιαυτῶν Σεδεκίας ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ἕνδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀμιτὰλ, θυγάτηρ Ἱερεμίου. Καὶ ἐποίησε τὸ πονηρὸν ἐνώπιον Κυρίου, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησεν Ἰωακίμ. Ὅτι ἐπὶ τὸν θυμὸν Κυρίου ἦν ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ καὶ ἐν τῷ Ἰούδα, ἕως ἀπέῤῥιψεν αὐτοὺς ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ ἠθέτησε Σεδεκίας ἐν τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος.

# 25

Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἔτει τῷ ἐννάτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἐν τῷ μηνὶ τῷ δεκάτῳ, ἦλθε Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἰερουσαλήμ· καὶ παρενέβαλεν ἐπ' αὐτὴν, καὶ ᾠκοδόμησεν ἐπ' αὐτὴν περίτειχος κύκλῳ. Καὶ ἦλθεν ἡ πόλις ἐν περιοχῇ ἕως τοῦ ἑνδεκάτου ἔτους τοῦ βασιλέως Σεδεκίου ἐννάτῃ τοῦ μηνός. Καὶ ἐνίσχυσεν ὁ λιμὸς ἐν τῇ πόλει, καὶ οὐκ ἦσαν ἄρτοι τῷ λαῷ τῆς γῆς. Καὶ ἐῤῥάγη ἡ πόλις, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες τοῦ πολέμου ἐξῆλθον νυκτὸς ὁδὸν πύλης τῆς ἀναμέσον τῶν τειχῶν, αὕτη ἐστὶ τοῦ κήπου τοῦ βασιλέως, καὶ οἱ Χαλδαῖοι ἐπὶ τὴν πόλιν κύκλῳ· καὶ ἐπορεύθη ὁδὸν τὴν Ἄραβα· Καὶ ἐδίωξεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων ὀπίσω τοῦ βασιλέως, καὶ κατέλαβον αὐτὸν ἐν Ἀραβὼθ Ἰεριχὼ, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ διεσπάρη ἐπάνωθεν

αὐτοῦ. Καὶ συνέλαβον τὸν βασιλέα, καὶ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Ῥεβλαθά· καὶ ἐλάλησε μετ᾽ αὐτοῦ κρίσιν. Καὶ τοὺς υἱοὺς Σεδεκίου ἔσφαξε κατ᾽ ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς Σεδεκίου ἐξετύφλωσε, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν πέδαις, καὶ ἤγαγεν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ ἑβδόμῃ τοῦ μηνὸς, αὐτὸς ἐνιαυτὸς ἐννεακαιδέκατος τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, ἦλθε Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος ἑστὼς ἐνώπιον βασιλέως Βαβυλῶνος εἰς Ἰερουσαλήμ· Καὶ ἐνέπρησε τὸν οἶκον Κυρίου, καὶ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, καὶ πάντας τοὺς οἴκους Ἰερουσαλὴμ, καὶ πᾶν οἶκον ἐνέπρησεν ὁ ἀρχιμάγειρος. Καὶ τὸ τεῖχος Ἰερουσαλὴμ κυκλόθεν κατέσπασεν ἡ δύναμις τῶν χαλδαίων. Καὶ τὸ περισσὸν τοῦ λαοῦ τὸ καταλειφθὲν ἐν τῇ πόλει, καὶ τοὺς ἐμπεπτωκότας οἳ ἐνέπεσον πρὸς τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ τὸ λοιπὸν τοῦ στηρίγματος μετῆρε Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος. Καὶ ἀπὸ τῶν πτωχῶν τῆς γῆς ὑπέλιπεν ὁ ἀρχιμάγειρος εἰς ἀμπελουργοὺς καὶ εἰς γαβίν. Καὶ τοὺς στύλους τοὺς χαλκοῦς τοὺς ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ τὰς μεχωνὼθ, καὶ τὴν θάλασσαν τὴν χαλκῆν τὴν ἐν οἴκῳ Κυρίου συνέτριψαν οἱ Χαλδαῖοι, καὶ ᾖραν τὸν χαλκὸν αὐτῶν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ τοὺς λέβητας, καὶ τὰ ἰαμὶν, καὶ τὰς φιάλας, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ χαλκᾶ ἐν οἷς λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς, ἔλαβε. Καὶ τὰ πυρεῖα, καὶ τὰς φιάλας τὰς χρυσᾶς καὶ τὰς ἀργυρᾶς ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος, στύλους δύο, καὶ τὴν θάλασσαν μίαν, καὶ τὰς μεχωνὼθ ἃς ἐποίησε Σαλωμὼν τῷ οἴκῳ Κυρίου· οὐκ ἦν σταθμὸς τοῦ χαλκοῦ πάντων τῶν σκευῶν. Ὀκτωκαίδεκα πήχεων ὕψος τοῦ στύλου τοῦ ἑνὸς, καὶ τὸ χωθὰρ ἐπ᾽ αὐτοῦ τὸ χαλκοῦν· καὶ τὸ ὕψος τοῦ χωθὰρ τριῶν πήχεων· σαβαχὰ, καὶ ῥοαὶ ἐπὶ τῷ χωθὰρ κύκλῳ τὰ πάντα χαλκᾶ, καὶ κατὰ ταῦτα τῷ στύλῳ τῷ δευτέρῳ ἐπὶ τῷ

σαβαχά. Καὶ ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος τὸν Σαραίαν ἱερέα τὸν πρῶτον, καὶ τὸν Σοφονίαν υἱὸν τῆς δευτερώσεως, καὶ τοὺς τρεῖς τοὺς φυλάσσοντας τὸν σταθμόν. Καὶ ἐκ τῆς πόλεως ἔλαβον εὐνοῦχον ἕνα, ὅς ἦν ἐπιστάτης τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν, καὶ πέντε ἄνδρας τῶν ὁρώντων τὸ πρόσωπον τοῦ βασιλέως τοὺς εὑρεθέντας ἐν τῇ πόλει, καὶ τὸν γραμματέα τοῦ ἄρχοντος τῆς δυνάμεως τὸν ἐκτάσσοντα τὸν λαὸν τῆς γῆς, καὶ ἑξήκοντα ἄνδρας τοῦ λαοῦ τῆς γῆς τοὺς εὑρεθέντας ἐν τῇ πόλει. Καὶ ἔλαβεν αὐτοὺς Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος, καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς πρὸς τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Ῥεβλαθά. Καὶ ἔπαισεν αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ ἐθανάτωσεν αὐτοὺς εἰς Ῥεβλαθὰ ἐν γῇ Αἰμάθ· καὶ ἀπῳκίσθη Ἰούδας ἐπάνωθεν τῆς γῆς αὐτοῦ. Καὶ ὁ λαὸς ὁ καταλειφθεὶς ἐν τῇ γῇ Ἰούδα οὓς κατέλιπε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ κατέστησεν ἐπ’ αὐτῶν τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰμ υἱὸν Σαφάν. Καὶ ἤκουσαν πάντες οἱ ἄρχοντες τῆς δυνάμεως αυτοὶ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν, ὅτι κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὸν Γοδολίαν, καὶ ἦλθον πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰθ, καὶ Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου, καὶ Ἰωνὰ υἱὸς Καρὴθ, καὶ Σαραίας υἱὸς Θαναμὰθ ὁ Νετωφαθίτης, καὶ Ἰεζονίας υἱὸς τοῦ Μαχαθὶ, αὐτοὶ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν· Καὶ ὤμοσεν Γοδολίας αὐτοῖς, καὶ τοῖς ἀνδράσιν αὐτῶν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, μὴ φοβεῖσθε πάροδον τῶν Χαλδαίων, καθίσατε ἐν τῇ γῇ, καὶ δουλεύσατε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, καὶ καλῶς ἔσται ὑμῖν. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἑβδόμῳ μηνὶ ἦλθεν Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου υἱοῦ Ἐλισαμὰ ἐκ τοῦ σπέρματος τῶν βασιλέων, καὶ δέκα ἄνδρες μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξε τὸν Γοδολίαν καὶ ἀπέθανε, καὶ τοὺς Ἰουδαίους καὶ τοὺς Χαλδαίους, οἳ ἦσαν μετ’ αὐτοῦ ἐν Μασσηφά. Καὶ ἀνέστη πᾶς ὁ λαὸς ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν δυνάμεων, καὶ εἰσῆλθον εἰς

Αἴγυπτον, ὅτι ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου τῶν Χαλδαίων. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ τριακοστῷ καὶ ἑβδόμῳ ἔτει τῆς ἀποικίας τοῦ Ἰωαχὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνὶ, ἑβδόμῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ὕψωσεν Εὐιαλμαρωδὲκ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῆς βασιλείας αὐτοῦ τὴν κεφαλὴν Ἰωαχὶμ τοῦ βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐξήγαγεν αὐτὸν ἐξ οἴκου φυλακῆς αὐτοῦ. Καὶ ἐλάλησε μετ’ αὐτοῦ ἀγαθὰ, καὶ ἔδωκε τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπάνωθεν τῶν θρόνων τῶν βασιλέων τῶν μετ’ αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι. Καὶ ἠλλοίωσε τὰ ἱμάτια τῆς φυλακῆς αὐτοῦ, καὶ ἤσθιεν ἄρτον διαπαντὸς ἐνώπιον αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ. Καὶ ἡ ἑστιατορία αὐτοῦ ἑστιατορία διαπαντὸς ἐδόθη αὐτῷ ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως, λόγον ἡμέρας ἐν τῇ ἡμέρᾳ αὐτοῦ, πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ.

# ΙΩΗΛ

## 1

ΛΟΓΟΣ Κυρίου ὃς ἐγενήθη πρὸς Ἰωὴλ τὸν τοῦ Βαθουήλ. Ἀκούσατε ταῦτα, οἱ πρεσβύτεροι, καὶ ἐνωτίσασθε, πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν. εἰ γέγονεν τοιαῦτα ἐν ταῖς ἡμέραις ἡμῶν, ἢ ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πατέρων ὑμῶν; ὑπὲρ αὐτῶν τοῖς τέκνοις ὑμῶν διηγήσασθε, καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν τοῖς τέκνοις αὐτῶν, καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέραν. τὰ κατάλοιπα τῆς κάμπης κατέφαγεν ἡ ἀκρίς, καὶ τὰ κατάλοιπα τῆς ἀκρίδος κατέφαγεν ὁ βροῦχος, καὶ τὰ κατάλοιπα τοῦ βρούχου κατέφαγεν ἡ ἐρυσίβη. Ἐκνήψατε, οἱ μεθύοντες, ἐξ οἴνου αὐτῶν καὶ κλαύσατε· θρηνήσατε πάντες οἱ πίνοντες οἶνον εἰς μέθην, ὅτι ἐξῄρθη ἐκ στόματος ὑμῶν εὐφροσύνη καὶ χαρά. Ὅτι ἔθνος ἀνέβη ἐπὶ τὴν γῆν μου ἰσχυρὸν καὶ ἀναρίθμητον, οἱ ὀδόντες αὐτοῦ ὀδόντες λέοντος, καὶ αἱ μῦλαι αὐτοῦ σκύμνου· Ἔθετο τὴν ἄμπελόν μου εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τὰς συκάς μου εἰς συγκλασμόν· ἐρευνῶν ἐξηρεύνησεν αὐτὴν, καὶ ἔῤῥιψεν· ἐλεύκανε τὰ κλήματα αὐτῆς. Θρήνησον πρὸς μὲ ὑπὲρ νύμφην περιεζωσμένην σάκκον, ἐπὶ τὸν ἄνδρα αὐτῆς τὸν παρθενικόν. Ἐξῆρται θυσία καὶ σπονδὴ ἐξ οἴκου Κυρίου· πενθεῖτε

οἱ ἱερεῖς οἱ λειτουργοῦντες θυσιαστηρίῳ Κυρίου, ὅτι τεταλαιπώρηκε τὰ πεδία· πενθείτω ἡ γῆ, ὅτι τεταλαιπώρηκεν σῖτος· ἐξηράνθη οἶνος, ὠλιγώθη ἔλαιον· Ἐξηράνθησαν γεωργοί· θρηνεῖτε κτήματα ὑπὲρ πυροῦ καὶ κριθῆς, ὅτι ἀπόλωλε τρυγητὸς ἐξ ἀγροῦ· Ἡ ἄμπελος ἐξηράνθη, καὶ αἱ συκαῖ ὠλιγώθησαν· ῥοὰ, καὶ φοῖνιξ, καὶ μῆλον, καὶ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ ἐξηράνθησαν, ὅτι ᾐσχυναν χαρὰν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων. Περιζώσασθε καὶ κόπτεσθε οἱ ἱερεῖς· θρηνεῖτε οἱ λειτουργοῦντες θυσιαστηρίῳ· εἰσέλθετε, ὑπνώσατε ἐν σάκκοις λειτουργοῦντες Θεῷ, ὅτι ἀπέσχηκεν ἐξ οἴκου Θεοῦ ὑμῶν θυσία καὶ σπονδή. Ἁγιάσατε νηστείαν, κηρύξατε θεραπείαν, συναγάγετε πρεσβυτέρους, πάντας κατοικοῦντας γῆν εἰς οἶκον Θεοῦ ὑμῶν, καὶ κεκράξετε πρὸς Κύριον ἐκτενῶς, Οἴμοι, οἴμοι, οἴμοι εἰς ἡμέραν, ὅτι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα Κυρίου, καὶ ὡς ταλαιπωρία ἐκ ταλαιπωρίας ἥξει. Κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν βρώματα ἐξωλθρεύθη, ἐξ οἴκου Θεοῦ ὑμῶν εὐφροσύνη καὶ χαρά. Ἐσκίρτησαν δαμάλεις ἐπὶ ταῖς φάτναις αὐτῶν, ἠφανίσθησαν θησαυροὶ, κατεσκάφησαν ληνοὶ, ὅτι ἐξηράνθη σῖτος. Τί ἀποθήσομεν ἑαυτοῖς; ἔκλαυσαν βουκόλια βοῶν, ὅτι οὐχ ὑπῆρχε νομὴ αὐτοῖς· καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων ἠφανίσθησαν. Πρὸς σὲ Κύριε βοήσομαι, ὅτι πῦρ ἀνήλωσε τὰ ὡραῖα τῆς ἐρήμου, καὶ φλὸξ ἀνῆψε πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ, καὶ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου ἀνέβλεψαν πρὸς σὲ, ὅτι ἐξηράνθησαν ἀφέσεις ὑδάτων, καὶ πῦρ κατέφαγε τὰ ὡραῖα τῆς ἐρήμου.

# 2

Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐν Σιὼν, κηρύξατε ἐν ὄρει ἁγίῳ μου, καὶ

συγχυθήτωσαν πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, διότι πάρεστιν ἡμέρα Κυρίου, ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα σκότους καὶ γνόφου, ἡμέρα νεφέλης καὶ ὁμίχλης· ὡς ὄρθρος χυθήσεται ἐπὶ τὰ ὄρη λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς, ὅμοιος αὐτῷ οὐ γέγονεν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, καὶ μετ’ αὐτὸν οὐ προστεθήσεται ἕως ἐτῶν εἰς γενεὰς γενεῶν. Τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ πῦρ ἀναλίσκον, καὶ τὰ ὀπίσω αὐτοῦ ἀναπτομένη φλόξ· ὡς παράδεισος τρυφῆς ἡ γῆ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ τὰ ὄπισθεν αὐτοῦ πεδίον ἀφανισμοῦ, καὶ ἀνασωζόμενος οὐκ ἔσται αὐτῷ. Ὡς ὅρασις ἵππων ἡ ὅρασις αὐτῶν, καὶ ὡς ἱππεῖς οὕτως καταδιώξονται. Ὡς φωνὴ ἁρμάτων ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων ἐξαλοῦνται, καὶ ὡς φωνὴ φλογὸς πυρὸς κατεσθιούσης καλάμην, καὶ ὡς λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς παρατασσόμενος εἰς πόλεμον. Ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ συντριβήσονται λαοὶ, πᾶν πρόσωπον ὡς πρόσκαυμα χύτρας. Ὡς μαχηταὶ δραμοῦνται καὶ ὡς ἄνδρες πολεμισταὶ ἀναβήσονται ἐπὶ τὰ τείχη, καὶ ἕκαστος ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ πορεύσεται, καὶ οὐ μὴ ἐκκλίνωσι τὰς τρίβους αὐτῶν, καὶ ἕκαστος ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ οὐκ ἀφέξεται· καταβαρυνόμενοι ἐν τοῖς ὅπλοις αὐτῶν πορεύσονται, καὶ ἐν τοῖς βέλεσιν αὐτῶν πεσοῦνται, καὶ οὐ μὴ συντελεσθῶσι. Τῆς πόλεως ἐπιλήψονται, καὶ ἐπὶ τῶν τειχέων δραμοῦνται, καὶ ἐπὶ ταῖς οἰκίαις ἀναβήσονται, καὶ διὰ θυρίδων εἰσελεύσονται ὡς κλέπται. Πρὸ προσώπου αὐτοῦ συγχυθήσεται ἡ γῆ, καὶ σεισθήσεται ὁ οὐρανός· ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη συσκοτάσουσι, καὶ ἄστρα δύσουσι τὸ φέγγος αὐτῶν. Καὶ Κύριος δώσει φωνὴν αὐτοῦ πρὸ προσώπου δυνάμεως αὐτοῦ, ὅτι πολλή ἐστι σφόδρα ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, ὅτι ἰσχυρὰ ἔργα λόγων αὐτοῦ· διότι μεγάλη ἡ ἡμέρα Κυρίου, ἐπιφανὴς σφόδρα, καὶ τίς ἔσται ἱκανὸς αὐτῇ; Καὶ νῦν λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, ἐπιστράφητε πρὸς μὲ ἐξ ὅλης τῆς καρδίας ὑμῶν, καὶ ἐν νηστείᾳ,

καὶ ἐν κλαυθμῷ, καὶ ἐν κοπετῷ, καὶ διαῤῥήξατε τὰς καρδίας ὑμῶν, καὶ μὴ τὰ ἱμάτια ὑμῶν· καὶ ἐπιστράφητε πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν, ὅτι ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων ἐστὶ, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, καὶ μετανοῶν ἐπὶ ταῖς κακίαις. Τίς οἶδεν εἰ ἐπιστρέψει, καὶ μετανοήσει, καὶ ὑπολείψεται ὀπίσω αὐτοῦ εὐλογίαν, καὶ θυσίαν, καὶ σπονδὴν Κυρίῳ τῷ Θεῷ ὑμῶν; Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐν Σιὼν, ἁγιάσατε νηστείαν. κηρύξατε θεραπείαν, συναγάγετε λαὸν, ἁγιάσατε ἐκκλησίαν, ἐκλέξασθε πρεσβυτέρους, συναγάγετε νήπια θηλάζοντα μαστοὺς, ἐξελθέτω νυμφίος ἐκ τοῦ κοιτῶνος αὐτοῦ, καὶ νύμφη ἐκ τοῦ παστοῦ αὐτῆς. Ἀναμέσον τῆς κρηπίδος τοῦ θυσιαστηρίου, κλαύσονται οἱ ἱερεῖς οἱ λειτουργοῦντες τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐροῦσι, φεῖσαι Κύριε, τοῦ λαοῦ σου, καὶ μὴ δῷς τὴν κληρονομίαν σου εἰς ὄνειδος, τοῦ κατάρξαι αὐτῶν ἔθνη, ὅπως μὴ εἴπωσιν ἐν τοῖς ἔθνεσι, ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς αὐτῶν; Καὶ ἐζήλωσε Κύριος τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ ἐφείσατο τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἀπεκρίθη Κύριος, καὶ εἶπε τῷ λαῷ αὐτοῦ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω ὑμῖν τὸν σῖτον καὶ τὸν οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ἐμπλησθήσεσθε αὐτῶν, καὶ οὐ δώσω ὑμᾶς οὐκ ἔτι εἰς ὀνειδισμὸν ἐν τοῖς ἔθνεσι. Καὶ τὸν ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἐκδιώξω ἀφ’ ὑμῶν, καὶ ἐξώσω αὐτὸν εἰς γῆν ἄνυδρον, καὶ ἀφανιῶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην, καὶ τὰ ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην· καὶ ἀναβήσεται ἡ σαπρία αὐτοῦ, καὶ ἀναβήσεται ὁ βρόμος αὐτοῦ, ὅτι ἐμεγάλυνε τὰ ἔργα αὐτοῦ. Θάρσει γῆ, χαῖρε καὶ εὐφραίνου, ὅτι ἐμεγάλυνε Κύριος τοῦ ποιῆσαι. Θαρσεῖτε κτήνη τοῦ πεδίου, ὅτι βεβλάστηκε τὰ πεδία τῆς ἐρήμου, ὅτι ξύλον ἤνεγκεν τὸν καρπὸν αὐτοῦ, συκῆ καὶ ἄμπελος ἔδωκαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν. Καὶ τὰ τέκνα Σιὼν χαίρετε καὶ εὐφραίνεσθε ἐπὶ τῷ Κυρίῳ Θεῷ ὑμῶν, διότι ἔδωκεν ὑμῖν τὰ βρώματα εἰς δικαιοσύνην, καὶ βρέξει ὑμῖν ὑετὸν πρώϊμον καὶ

ὄψιμον, καθὼς ἔμπροσθεν, καὶ πλησθήσονται αἱ ἅλωνες σίτου, καὶ ὑπερχυθήσονται αἱ ληνοὶ οἴνου καὶ ἐλαίου. Καὶ ἀνταποδώσε ὑμῖν ἀντὶ τῶν ἐτῶν ὧν κατέφαγεν ἡ ἀκρὶς, καὶ ὁ βροῦχος, καὶ ἡ ἐρυσίβη, καὶ ἡ κάμπη, ἡ δύναμίς μου ἡ μεγάλη, ἣν ἐξαπέστειλα εἰς ὑμᾶς. Καὶ φάγεσθε ἐσθίοντες, καὶ ἐμπλησθήσεσθε, καὶ αἰνέσετε τὸ ὄνομα Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, ἃ ἐποίησε μεθ’ ὑμῶν εἰς θαυμάσια· καὶ οὐ μὴ καταισχυνθῇ ὁ λαός μου εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐν μέσῳ τοῦ Ἰσραὴλ ἐγώ εἰμι, καὶ ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ· καὶ οὐ μὴ καταισχυνθῶσιν ἔτι ὁ λαός μου εἰς τὸν αἰῶνα.

# 3

Καὶ ἔσται μετὰ ταῦτα, καὶ ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, καὶ προφητεύσουσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν, καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν ἐνύπνια ἐνυπνιασθήσονται, καὶ οἱ νεανίσκοι ὑμῶν ὁράσεις ὄψονται. Καὶ ἐπὶ τοὺς δούλους μου καὶ ἐπὶ τὰς δούλας ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου. Καὶ δώσω τέρατα ἐν οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς αἷμα καὶ πῦρ καὶ ἀτμίδα καπνοῦ. Ὁ ἥλιος μεταστραφήσεται εἰς σκότος, καὶ ἡ σελήνη εἰς αἷμα, πρὶν ἐλθεῖν τὴν ἡμέραν Κυρίου τὴν μεγάλην, καὶ ἐπιφανῆ. Καὶ ἔσται πᾶς ὃς ἂν ἐπικαλέσηται τὸ ὄνομα Κυρίου, σωθήσεται· ὅτι ἐν τῷ ὄρει Σιὼν καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ ἔσται ἀνασωζόμενος καθότι εἶπε Κύριος, καὶ εὐαγγελιζόμενοι οὓς Κύριος προσκέκληται.

# 4

Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅταν ἐπιστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν Ἰούδα καὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ συνάξω πάντα τὰ ἔθνη, καὶ κατάξω αὐτὰ εἰς τὴν κοιλάδα Ἰωσαφὰτ, καὶ διακριθήσομαι πρὸς αὐτοὺς ἐκεῖ ὑπὲρ τοῦ λαοῦ μου καὶ τῆς κληρονομίας μου Ἰσραὴλ, οἳ διεσπάρησαν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ τὴν γῆν μου κατεδιείλαντο, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν μου ἔβαλον κλήρους, καὶ ἔδωκαν τὰ παιδάρια πόρναις, καὶ τὰ κοράσια ἐπώλουν ἀντὶ τοῦ οἴνου, καὶ ἔπινον. Καὶ τί ὑμεῖς ἐμοὶ Τύρος, καὶ Σιδὼν, καὶ πᾶσα Γαλιλαία ἀλλοφύλων; μὴ ἀνταπόδομα ὑμεῖς ἀνταποδίδοτέ μοι; ἢ μνησικακεῖτε ὑμεῖς ἐπ’ ἐμοί; ὀξέως, καὶ ταχέως ἀνταποδώσω τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς ὑμῶν, ἀνθ’ ὧν τὸ ἀργύριόν μου καὶ τὸ χρυσίον μου ἐλάβετε, καὶ τὰ ἐπίλεκτά μου τὰ καλὰ εἰσηνέγκατε εἰς τοὺς ναοὺς ὑμῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἰούδα καὶ τοὺς υἱοὺς Ἰερουσαλὴμ ἀπέδοσθε τοῖς υἱοῖς τῶν Ἑλλήνων, ὅπως ἐξώσητε αὐτοὺς ἐκ τῶν ὁρίων αὐτῶν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω αὐτοὺς ἐκ τοῦ τόπου οὗ ἀπέδοσθε αὐτοὺς ἐκεῖ, καὶ ἀνταποδώσω τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς ὑμῶν, καὶ ἀποδώσομαι τοὺς υἱοὺς ὑμῶν καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν εἰς χεῖρας τῶν υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἀποδώσονται αὐτοὺς εἰς αἰχμαλωσίαν εἰς ἔθνος μακρὰν ἀπέχον, ὅτι Κύριος ἐλάλησε. Κηρύξατε ταῦτα ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἁγιάσατε πόλεμον, ἐξεγείρατε τοὺς μαχητὰς, προσαγάγετε καὶ ἀναβαίνετε πάντες ἄνδρες πολεμισταὶ, συγκόψατε τὰ ἄροτρα ὑμῶν εἰς ῥομφαίας, καὶ τὰ δρέπανα ὑμῶν εἰς σειρομάστας· ὁ ἀδύνατος λεγέτω, ὅτι ἰσχύω ἐγώ. Συναθροίζεσθε, καὶ εἰσπορεύεσθε πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν, καὶ συνάχθητε ἐκεῖ· ὁ πρᾢΰς ἔστω μαχητής. Ἐξεγειρέσθωσαν, ἀναβαινέτωσαν πάντα τὰ ἔθνη εἰς τὴν κοιλάδα Ἰωσαφὰτ, διότι ἐκεῖ καθιῶ τοῦ διακρῖναι πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν. Ἐξαποστείλατε

δρέπανα, ὅτι παρέστηκεν ὁ τρυγητός· εἰσπορεύεσθε, πατεῖτε, διότι πλήρης ἡ ληνός· ὑπερεκχεῖτε τὰ ὑπολήνια, ὅτι πεπλήθυνται τὰ κακὰ αὐτῶν. Ἦχοι ἐξήχησαν ἐν τῇ κοιλάδι τῆς δίκης, ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα Κυρίου ἐν τῇ κοιλάδι τῆς δίκης. Ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη συσκοτάσουσι, καὶ οἱ ἀστέρες δύσουσι φέγγος αὐτῶν. Ὁ δὲ Κύριος ἐκ Σιὼν ἀνακεκράξεται, καὶ ἐξ Ἰερουσαλὴμ δώσει φωνὴν αὐτοῦ, καὶ σεισθήσεται ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ· ὁ δὲ Κύριος φείσεται τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐνισχύσει τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, ὁ κατασκηνῶν ἐν Σιὼν ὄρει ἁγίῳ μου· καὶ ἔσται Ἰερουσαλὴμ ἁγία, καὶ ἀλλογενεῖς οὐ διελεύσονται δι᾽ αὐτῆς οὐκέτι. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀποσταλάξει τὰ ὄρη γλυκασμὸν, καὶ οἱ βουνοὶ ῥυήσονται γάλα, καὶ πᾶσαι αἱ ἀφέσεις Ἰούδα ῥυήσονται ὕδατα, καὶ πηγὴ ἐξ οἴκου Κυρίου ἐξελεύσεται, καὶ ποτιεῖ τὸν χειμάῤῥουν τῶν σχοίνων. Αἴγυπτος εἰς ἀφανισμὸν ἔσται, καὶ ἡ Ἰδουμαία εἰς πεδίον ἀφανισμοῦ ἔσται, ἐξ ἀδικιῶν υἱῶν Ἰούδα, ἀνθ᾽ ὧν ἐξέχεαν αἷμα δίκαιον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν. Ἡ δὲ Ἰουδαία εἰς τὸν αἰῶνα κατοικηθήσεται, καὶ Ἰερουσαλὴμ εἰς γενεὰς γενεῶν. Καὶ ἐκζητήσω τὸ αἷμα αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ ἀθωώσω, καὶ Κύριος κατασκηνώσει ἐν Σιών.

# ΙΩΝΑΣ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν τὸν τοῦ Ἀμαθὶ, λέγων, ἀνάστηθι, καὶ πορεύθητι εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγάλην, καὶ κήρυξον ἐν αὐτῇ, ὅτι ἀνέβη ἡ κραυγὴ τῆς κακίας αὐτῆς πρὸς μέ. Καὶ ἀνέστη Ἰωνᾶς τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς ἐκ προσώπου Κυρίου· καὶ κατέβη εἰς Ἰόππην, καὶ εὗρε πλοῖον βαδίζον εἰς Θαρσὶς, καὶ ἔδωκε τὸ ναῦλον αὐτοῦ, καὶ ἀνέβη εἰς αὐτὸ, τοῦ πλεῦσαι μετ’ αὐτῶν εἰς Θαρσὶς ἐκ προσώπου Κυρίου. Καὶ Κύριος ἐξήγειρε πνεῦμα ἐπὶ τὴν θάλασσαν, καὶ ἐγένετο κλύδων μέγας ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ τὸ πλοῖον ἐκινδύνευε τοῦ συντριβῆναι. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ναυτικοὶ, καὶ ἀνεβόησαν ἕκαστος πρὸς τὸν θεὸν αὐτοῦ, καὶ ἐκβολὴν ἐποιήσαντο τῶν σκευῶν τῶν ἐν τῷ πλοίῳ εἰς τὴν θάλασσαν, τοῦ κουφισθῆναι ἀπ’ αὐτῶν· Ἰωνᾶς δὲ κατέβη εἰς τὴν κοίλην τοῦ πλοίου, καὶ ἐκάθευδε, καὶ ἔρεγχε. Καὶ προσῆλθε πρὸς αὐτὸν ὁ πρωρεὺς, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τί σὺ ῥέγχεις; ἀνάστα, καὶ ἐπικαλοῦ τὸν Θεόν σου, ὅπως διασώσῃ ὁ Θεὸς ἡμᾶς, καὶ οὐ μὴ ἀπολώμεθα. Καὶ εἶπεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, δεῦτε βάλωμεν κλήρους, καὶ ἐπιγνῶμεν, τίνος ἕνεκεν ἡ κακία αὕτη ἐστὶν ἐν ἡμῖν· καὶ ἔβαλον

κλήρους, καὶ ἔπεσεν ὁ κλῆρος ἐπὶ Ἰωνᾶν. Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, ἀπάγγειλον ἡμῖν, τίς σου ἡ ἐργασία ἐστὶ, καὶ πόθεν ἔρχῃ, καὶ ἐκ ποίας χώρας, καὶ ἐκ ποίου λαοῦ εἶ σύ; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, δοῦλος Κυρίου εἰμὶ ἐγὼ, καὶ τὸν Κύριον Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ ἐγὼ σέβομαι, ὃς ἐποίησε τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηράν. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβον μέγαν, καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, τί τοῦτο ἐποίησας; διότι ἔγνωσαν οἱ ἄνδρες ὅτι ἐκ προσώπου Κυρίου ἦν φεύγων, ὅτι ἀπήγγειλεν αὐτοῖς· καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, τί ποιήσομέν σοι, καὶ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ’ ἡμῶν; ὅτι ἡ θάλασσα ἐπορεύετο καὶ ἐξήγειρε μᾶλλον κλύδωνα. Καὶ εἶπεν Ἰωνᾶς πρὸς αὐτοὺς, ἄρατέ με, καὶ ἐμβάλετέ με εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ’ ὑμῶν· διότι ἔγνωκα ἐγὼ, ὅτι δι’ ἐμὲ ὁ κλύδων ὁ μέγας οὗτος ἐφ’ ὑμᾶς ἐστι. Καὶ παρεβιάζοντο οἱ ἄνδρες τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς τὴν γῆν, καὶ οὐκ ἠδύναντο, ὅτι ἡ θάλασσα ἐπορεύετο, καὶ ἐξηγείρετο μᾶλλον ἐπ’ αὐτούς. Καὶ ἀνεβόησαν πρὸς Κύριον, καὶ εἶπαν, μηδαμῶς Κύριε· μὴ ἀπολώμεθα ἕνεκεν τῆς ψυχῆς τοῦ ἀνθρώπου τούτου, καὶ μὴ δῷς ἐφ’ ἡμᾶς αἷμα δίκαιον, διότι σὺ Κύριε, ὃν τρόπον ἐβούλου, πεποίηκας. Καὶ ἔλαβον τὸν Ἰωνᾶν, καὶ ἐξέβαλον αὐτὸν εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἔστη ἡ θάλασσα ἐκ τοῦ σάλου αὐτῆς. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβῳ μεγάλῳ τὸν Κύριον, καὶ ἔθυσαν θυσίαν τῷ Κυρίῳ, καὶ ηὔξαντο τὰς εὐχάς.

# 2

Καὶ προσέταξε Κύριος κήτει μεγάλῳ καταπιεῖν τὸν Ἰωνᾶν· καὶ ἦν Ἰωνᾶς ἐν τῇ κοιλίᾳ τοῦ κήτους τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύκτας. Καὶ προσηύξατο Ἰωνᾶς πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν αὐτοῦ ἐκ τῆς κοιλίας τοῦ

κήτους, καὶ εἶπεν, Ἐβόησα ἐν θλίψει μου πρὸς Κύριον τὸν Θεόν μου, καὶ εἰσήκουσέ μου, ἐκ κοιλίας ᾅδου κραυγῆς μου, ἤκουσας φωνῆς μου, ἀπέῤῥιψάς με εἰς βάθη καρδίας θαλάσσης, καὶ ποταμοί ἐκύκλωσάν με, πάντες οἱ μετεωρισμοί σου καὶ τὰ κύματά σου ἐπ᾽ ἐμὲ διῆλθον. Καὶ ἐγὼ εἶπα, ἀπῶσμαι ἐξ ὀφθαλμῶν σου· ἆρα προσθήσω τοῦ ἐπιβλέψαι με πρὸς ναὸν τὸν ἅγιόν σου; Περιεχύθη μοι ὕδωρ ἕως ψυχῆς, ἄβυσσος ἐκύκλωσέ με ἐσχάτη, ἔδυ ἡ κεφαλή μου εἰς σχισμὰς ὀρέων, κατέβην εἰς γῆν, ἧς οἱ μοχλοὶ αὐτῆς κάτοχοι αἰώνιοι· καὶ ἀναβήτω φθορὰ ζωῆς μου Κύριε ὁ Θεός μου. Ἐν τῷ ἐκλείπειν ἀπ᾽ ἐμοῦ τὴν ψυχήν μου, τοῦ Κυρίου ἐμνήσθην, καὶ ἔλθοι πρὸς σὲ ἡ προσευχή μου εἰς ναὸν τὸν ἅγιόν σου. Φυλασσόμενοι μάταια καὶ ψευδῆ, ἔλεος αὐτῶν ἐγκατέλιπον. Ἐγὼ δὲ μετὰ φωνῆς αἰνέσεως καὶ ἐξομολογήσεως θύσω σοι, ὅσα ηὐξάμην ἀποδώσω σοι σωτηρίου τῷ Κυρίῳ. Καὶ προσετάγη ἀπὸ Κυρίου τῷ κήτει, καὶ ἐξέβαλε τὸν Ἰωνᾶν ἐπὶ τὴν ξηράν.

# 3

Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν ἐκ δευτέρου, λέγων, ἀνάστηθι, πορεύθητι εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγάλην; καὶ κήρυξον ἐν αὐτῇ κατὰ τὸ κήρυγμα τὸ ἔμπροσθεν, ὃ ἐγὼ ἐλάλησα πρὸς σέ. Καὶ ἀνέστη Ἰωνᾶς, καὶ ἐπορεύθη εἰς Νινευὴ, καθὰ ἐλάλησε Κύριος· ἡ δὲ Νινευὴ ἦν πόλις μεγάλη τῷ Θεῷ, ὡσεὶ πορείας ὁδοῦ τριῶν ἡμερῶν· καὶ ἤρξατο Ἰωνᾶς τοῦ εἰσελθεῖν εἰς τὴν πόλιν, ὡσεὶ πορείαν ἡμέρας μιᾶς· καὶ ἐκήρυξε, καὶ εἶπεν, ἔτι τρεῖς ἡμέραι, καὶ Νινευὴ καταστραφήσεται. Καὶ ἐπίστευσαν οἱ ἄνδρες Νινευὴ τῷ Θεῷ, καὶ ἐκήρυξαν νηστείαν, καὶ ἐνεδύσαντο

σάκκους ἀπὸ μεγάλου αὐτῶν ἕως μικροῦ αὐτῶν. Καὶ ἤγγισεν ὁ λόγος πρὸς τὸν βασιλέα τῆς Νινευὴ, καὶ ἐξανέστη ἀπὸ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ περιείλατο τὴν στολὴν αὐτοῦ ἀφ’ ἑαυτοῦ, καὶ περιεβάλετο σάκκον, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ σποδοῦ. Καὶ ἐκηρύχθη, καὶ ἐῤῥέθη ἐν τῇ Νινευὴ παρὰ τοῦ βασιλέως καὶ παρὰ τῶν μεγιστάνων αὐτοῦ, λέγων, οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰ κτήνη, καὶ οἱ βόες, καὶ τὰ πρόβατα μὴ γευσάσθωσαν, μηδὲ νεμέσθωσαν, μηδὲ ὕδωρ πιέτωσαν. Καὶ περιεβάλλοντο σάκκους οἱ ἄνθρωποι καὶ τὰ κτήνη, καὶ ἀνεβόησαν πρὸς τὸν Θεὸν ἐκτενῶς· καὶ ἀπέστρεψαν ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, καὶ ἀπὸ τῆς ἀδικίας τῆς ἐν χερσὶν αὐτῶν, λέγοντες, τίς οἶδεν εἰ μετανοήσει ὁ Θεὸς, καὶ ἀποστρέψει ἐξ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ ἀπολώμεθα; Καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς τὰ ἔργα αὐτῶν, ὅτι ἀπέστρεψαν ἀπὸ τῶν ὁδῶν αὐτῶν τῶν πονηρῶν, καὶ μετενόησεν ὁ Θεὸς ἐπὶ τῇ κακίᾳ, ᾗ ἐλάλησε τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐποίησε.

# 4

Καὶ ἐλυπήθη Ἰωνᾶς λύπην μεγάλην· καὶ συνεχύθη, καὶ προσεύξατο πρὸς Κύριον, καὶ εἶπεν, Κύριε, οὐχ οὗτοι οἱ λόγοι μου, ἔτι ὄντος μου ἐν τῇ γῇ μου; διατοῦτο προέφθασα τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς, διότι ἔγνων ὅτι σὺ ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, καὶ μετανοῶν ἐπὶ ταῖς κακίαις. Καὶ νῦν, δέσποτα Κύριε, λάβε τὴν ψυχήν μου ἀπ’ ἐμοῦ, ὅτι καλὸν τὸ ἀποθανεῖν με ἢ ζῆν με. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἰωνᾶν, εἰ σφόδρα λελύπησαι σύ; Καὶ ἐξῆλθεν Ἰωνᾶς ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐκάθισεν ἀπέναντι τῆς πόλεως· καὶ ἐποίησεν αὐτῷ ἐκεῖ σκηνὴν, καὶ ἐκάθητο ὑποκάτω αὐτῆς, ἕως οὗ ἀπίδῃ τί

ἔσται τῇ πόλει. Καὶ προσέταξε Κύριος ὁ Θεὸς κολοκύνθῃ, καὶ ἀνέβη ὑπὲρ κεφαλῆς τοῦ Ἰωνᾶ, τοῦ εἶναι σκιὰν ὑπεράνω τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, τοῦ σκιάζειν αὐτῷ ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτοῦ· καὶ ἐχάρη Ἰωνᾶς ἐπὶ τῇ κολοκύνθῃ χαρὰν μεγάλην. Καὶ προσέταξεν ὁ Θεὸς σκώληκι ἑωθινῇ τῇ ἐπαυρίον, καὶ ἐπάταξε τὴν κολόκυνθαν, καὶ ἀπεξηράνθη. Καὶ ἐγένετο ἅμα τῷ ἀνατεῖλαι τὸν ἥλιον, καὶ προσέταξεν ὁ Θεὸς πνεύματι καύσωνι συγκαίοντι, καὶ ἐπάταξεν ὁ ἥλιος ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ Ἰωνᾶ· καὶ ὠλιγοψύχησε, καὶ ἀπελέγετο τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ εἶπε, καλόν μοι ἀποθανεῖν με ἢ ζῆν. Καὶ εἶπεν ὁ Θεὸς πρὸς Ἰωνᾶν, εἰ σφόδρα λελύπησαι σὺ ἐπὶ τῇ κολοκύνθῃ; καὶ εἶπε, σφόδρα λελύπημαι ἐγὼ ἕως θανάτου. Καὶ εἶπε Κύριος, σὺ ἐφείσω ὑπὲρ τῆς κολοκύνθης, ὑπὲρ ἧς οὐκ ἐκακοπάθησας ἐπ’ αὐτὴν, καὶ οὐδὲ ἐξέθρεψας αὐτὴν, ἣ ἐγενήθη ὑπὸ νύκτα, καὶ ὑπὸ νύκτα ἀπώλετο· ἐγὼ δὲ οὐ φείσομαι ὑπὲρ Νινευὴ τῆς πόλεως τῆς μεγάλης, ἐν ᾗ κατοικοῦσι πλείους ἢ δώδεκα μυριάδες ἀνθρώπων, οἵτινες οὐκ ἔγνωσαν δεξιὰν αὐτῶν ἢ ἀριστερὰν αὐτῶν, καὶ κτήνη πολλά;

# ΩΣΗΕ

## 1

ΛΟΓΟΣ Κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Ὡσηὲ τὸν τοῦ Βεηρεὶ, ἐν ἡμέραις Ὀζίου, καὶ Ἰωάθαμ, καὶ Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου βασιλέων Ἰούδα, καὶ ἐν ἡμέραις Ἱεροβοὰμ υἱοῦ Ἰωὰς βασιλέως Ἰσραήλ. Ἀρχὴ λόγου Κυρίου ἐν Ὡσῆέ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ὡσηὲ, βάδιζε, λάβε σεαυτῷ γυναῖκα πορνείας, καὶ τέκνα πορνείας, διότι ἐκπορνεύουσα ἐκπορνεύσει ἡ γῆ ἀπὸ ὄπισθεν τοῦ Κυρίου. Καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἔλαβε τὴν Γόμερ, θυγατέρα Δεβηλαΐμ· καὶ συνέλαβε καὶ ἔτεκεν αὐτῷ υἱόν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς αὐτὸν, κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰεζραὲλ, διότι ἔτι μικρὸν, καὶ ἐκδικήσω τὸ αἷμα τοῦ Ἰεζραὲλ ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ καταπαύσω βασιλείαν οἴκου Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, συντρίψω τὸ τόξον τοῦ Ἰσραὴλ ἐν κοιλάδι τοῦ Ἰεζραέλ. Καὶ συνέλαβεν ἔτι, καὶ ἔτεκε θυγατέρα· καὶ εἶπεν αὐτῷ, κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτῆς, οὐκ ἠλεημένη· διότι οὐ μὴ προσθήσω ἔτι ἐλεῆσαι τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, ἀλλ’ ἢ ἀντιτασσόμενος ἀντιτάξομαι αὐτοῖς. Τοὺς δὲ υἱοὺς Ἰούδα ἐλεήσω, καὶ σώσω αὐτοὺς ἐν Κυρίῳ Θεῷ αὐτῶν, καὶ οὐ σώσω αὐτοὺς ἐν τόξῳ, οὐδὲ ἐν ῥομφαίᾳ, οὐδὲ ἐν πολέμῳ, οὐδὲ ἐν ἵπποις, οὐδὲ ἐν ἱππεῦσι. Καὶ

ἀπεγαλάκτισε τὴν οὐκ ἠλεημένην· καὶ συνέλαβεν ἔτι, καὶ ἔτεκεν υἱόν. Καὶ εἶπε, κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, οὐ λαός μου· διότι ὑμεῖς οὐ λαός μου, καὶ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ὑμῶν.

# 2

Καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς τ�ων υἱῶν Ἰσραὴλ, ὡς ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, ἣ οὐκ ἐκμετρηθήσεται, οὐδὲ ἐξαριθμηθήσεται· καὶ ἔσται, ἐν τῷ τόπῳ, οὗ ἐῤῥέθη αὐτοῖς, οὐ λαός μου ὑμεῖς, κληθήσονται καὶ αὐτοὶ υἱοὶ Θεοῦ ζῶντος. Καὶ συναχθήσονται υἱοὶ Ἰούδα, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐπιτοαυτὸ, καὶ θήσονται ἑαυτοῖς ἀρχὴν μίαν, καὶ ἀναβήσονται ἐκ τῆς γῆς, ὅτι μεγάλη ἡ ἡμέρα τοῦ Ἰεζραέλ. Εἴπατε τῷ ἀδελφῷ ὑμῶν, λαός μου, καὶ τῇ ἀδελφῇ ὑμῶν, ἠλεημένη. Κρίθητε πρὸς τὴν μητέρα ὑμῶν, κρίθητε, ὅτι αὕτη οὐ γυνή μου, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀνὴρ αὐτῆς· καὶ ἐξαρῶ τὴν πορνείαν αὐτῆς ἐκ προσώπου μου, καὶ τὴν μοιχείαν αὐτῆς ἐκ μέσου μαστῶν αὐτῆς, ὅπως ἂν ἐκδύσω αὐτὴν γυμνὴν, καὶ ἀποκαταστήσω αὐτὴν καθὼς ἡμέρα γενέσεως αὐτῆς· καὶ θήσω αὐτὴν ἔρημον, καὶ τάξω αὐτὴν ὡς γῆν ἄνυδρον, καὶ ἀποκτενῶ αὐτὴν ἐν δίψει. Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς οὐ μὴ ἐλεήσω, ὅτι τέκνα πορνείας ἐστίν. Ὅτι ἐξεπόρνευσεν ἡ μήτηρ αὐτῶν, κατῄσχυνεν ἡ τεκοῦσα αὐτά· ὅτι εἶπε, πορεύσομαι ὀπίσω τῶν ἐραστῶν μου, τῶν διδόντων μοι τοὺς ἄρτους μου, καὶ τὸ ὕδωρ μου, καὶ τὰ ἱμάτιά μου, καὶ τὰ ὀθόνιά μου, τὸ ἔλαιόν μου, καὶ πάντα ὅσα μοι καθήκει. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ φράσσω τὴν ὁδὸν αὐτῆς ἐν σκόλοψι, καὶ ἀνοικοδομήσω τὰς ὁδοὺς, καὶ τὴν τρίβον αὐτῆς οὐ μὴ εὕρῃ· Καὶ καταδιώξεται τοὺς ἐραστὰς αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτούς· καὶ ζητήσει αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ εὕρῃ αὐτούς·

καὶ ἐρεῖ, πορεύσομαι, καὶ ἐπιστρέψω πρὸς τὸν ἄνδρα μου τὸν πρότερον, ὅτι καλῶς μοι ἦν τότε, ἢ νῦν. Καὶ αὕτη οὐκ ἔγνω ὅτι ἐγὼ ἔδωκα αὐτῇ τὸν σῖτον, καὶ τὸν οἶνον, καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ἀργύριον ἐπλήθυνα αὐτῇ· αὕτη δὲ ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ ἐποίησεν τῇ Βάαλ. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψω, καὶ κομιοῦμαι τὸν σῖτόν μου καθ’ ὥραν αὐτοῦ, καὶ τὸν οἶνόν μου ἐν καιρῷ αὐτοῦ· καὶ ἀφελοῦμαι τὰ ἱμάτιά μου, καὶ τὰ ὀθόνιά μου, τοῦ μὴ καλύπτειν τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς· Καὶ νῦν ἀποκαλύψω τὴν ἀκαθαρσίαν αὐτῆς ἐνώπιον τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, καὶ οὐθεὶς οὐ μὴ ἐξέληται αὐτὴν ἐκ χειρός μου. Καὶ ἀποστρέψω πάσας τὰς εὐφροσύνας αὐτῆς, ἑορτὰς αὐτῆς, καὶ τὰς νουμηνίας αὐτῆς, καὶ τὰ σάββατα αὐτῆς, καὶ πάσας τὰς πανηγύρεις αὐτῆς. Καὶ ἀφανιῶ ἄμπελον αὐτῆς, καὶ τὰς συκᾶς αὐτῆς, ὅσα εἶπε, μισθώματά μου ταῦτά ἐστιν ἃ ἔδωκάν μοι οἱ ἐρασταί μου· καὶ θήσομαι αὐτὰ εἰς μαρτύριον, καὶ καταφάγεται αὐτὰ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανου, καὶ τὰ ἑρπετὰ τῆς γῆς. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ’ αὐτὴν τὰς ἡμέρας τῶν Βααλεὶμ, ἐν αἷς ἐπέθυεν αὐτοῖς· καὶ περιετίθετο τὰ ἐνώτια αὐτῆς, καὶ τὰ καθόρμια αὐτῆς, καὶ ἐπορεύετο ὀπίσω τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, ἐμοῦ δὲ ἐπελάθετο, λέγει Κύριος. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πλανῶ αὐτὴν, καὶ τάξω αὐτὴν ὡς ἔρημον, καὶ λαλήσω ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτῆς, καὶ δώσω αὐτῇ τὰ κτήματα αὐτῆς ἐκεῖθεν, καὶ τὴν κοιλάδα Ἀχὼρ διανοῖξαι σύνεσιν αὐτῆς· καὶ ταπεινωθήσεται ἐκεῖ κατὰ τὰς ἡμέρας νηπιότητος αὐτῆς, καὶ κατὰ τὰς ἡμέρας ἀναβάσεως αὐτῆς ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκεῖνῃ, λέγει Κύριος, καλέσει με ὁ ἀνήρ μου, καὶ οὐ καλέσει με ἔτι Βααλείμ. Καὶ ἐξαρῶ τὰ ὀνόματα τῶν Βααλεὶμ ἐκ στόματος αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσιν οὐκέτι τὰ ὀνόματα αὐτῶν. Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μετὰ τῶν θηρίων τοῦ ἀγροῦ, καὶ μετὰ τῶν πετεινῶν τοῦ

οὐρανοῦ, καὶ τῶν ἑρπετῶν τῆς γῆς· καὶ τόξον, καὶ ῥομφαίαν, καὶ πόλεμον συντρίψω ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ κατοικιῶ σε ἐπ’ ἐλπίδι. Καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ ἐν δικαιοσύνῃ καὶ ἐν κρίματι, καὶ ἐν ἐλέει, καὶ ἐν οἰκτιρμοῖς, καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ ἐν πίστει, καὶ ἐπιγνώσῃ τὸν Κύριον. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει Κύριος, ἐπακούσομαι τῷ οὐρανῷ, καὶ αὐτὸς ἐπακούσεται τῇ γῇ, καὶ ἡ γῆ ἐπακούσεται τὸν σῖτον, καὶ τὸν οἶνον, καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ αὐτὰ ἐπακούσεται τῷ Ἰεζραέλ. Καὶ σπερῶ αὐτὴν ἐμαυτῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἀγαπήσω τὴν οὐκ ἠγαπημένην, καὶ ἐρῶ τῷ οὐ λαῷ μου, λαός μου εἶ σύ· καὶ αὐτος ἐρεὶ, Κύριος ὁ Θεός μου εἶ σύ.

# 3

Καὶ εἶπε, Κύριος πρὸς μὲ, ἔτι πορεύθητι, καὶ ἀγάπησον γυναῖκα ἀγαπῶσαν πονηρὰ, καὶ μοιχαλὶν, καθὼς ἀγαπᾷ ὁ Θεὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ αὐτοὶ ἐπιβλέπουσιν ἐπὶ θεοὺς αλλοτρίους, καὶ φιλοῦσι πέμματα μετὰ σταφίδος. Καὶ ἐμισθωσάμην ἐμαυτῷ πεντεκαίδεκα ἀργυρίου, καὶ γομὸρ κριθῶν, καὶ νέβελ οἴνου. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτὴν, ἡμέρας πολλὰς καθήσῃ ἐπ’ ἐμοὶ, καὶ οὐ μὴ πορνεύσῃς, οὐδὲ μὴ γένῃ ἀνδρὶ, καὶ ἐγὼ ἐπὶ σοί. Διότι ἡμέρας πολλὰς καθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οὐκ ὄντος βασιλέως, οὐδὲ ὄντος ἄρχοντος, οὐδὲ οὔσης θυσίας, οὐδὲ ὄντος θυσιαστηρ ίου, οὐδὲ ἱερατείας, οὐδὲ δήλων. Καὶ μετὰ ταῦτα ἐπιστρέψουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπιζητήσουσι Κύριον τὸν Θεὸν αὐτῶν, καὶ Δαυὶδ τὸν βασιλέα αὐτῶν, καὶ ἐκστήσονται ἐπὶ τῷ Κυρίῳ, καὶ ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς αὐτοῦ ἐπ’ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν.

# 4

Ἀκούσατε λόγον Κυρίου υἱοὶ Ἰσραὴλ, ὅτι κρίσις τῷ Κυρίῳ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, διότι οὐκ ἔστιν ἀλήθεια, οὐδὲ ἔλεος, οὐδὲ ἐπίγνωσις Θεοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. Ἀρὰ, καὶ ψεῦδος, καὶ φόνος καὶ κλοπὴ, καὶ μοιχεία κέχυται ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ αἵματα ἐφ’ αἵμασι μίσγουσι. Διὰ τοῦτο πενθήσει ἡ γῆ, καὶ σμικρυνθήσεται σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτὴν, σὺν τοῖς θηρίοις τοῦ ἀγροῦ, καὶ σὺν τοῖς ἑρπετοῖς τῆς γῆς, καὶ σὺν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης ἐκλείψουσιν, ὅπως μηδεὶς μήτε δικάζηται, μήτε ἐλέγχῃ μηδείς· ὁ δὲ λαός μου ὡς ἀντιλεγόμενος ἱερεύς. Καὶ ἀσθενήσει ἡμέρας, καὶ ἀσθενήσει ὁ προφήτης μετὰ σοῦ· νυκτὶ ὡμοίωσα τὴν μητέρα σου. Ὡμοιώθη ὁ λαός μου, ὡς οὐκ ἔχων γνῶσιν· ὅτι σὺ ἐπίγνωσιν ἀπώσω, κἀγὼ ἀπώσομαί σε, τοῦμὴ ἱερατεύειν μοι· καὶ ἐπελάθου νόμον Θεοῦ σου, κἀγὼ ἐπιλήσομαι τέκνων σου. Κατὰ τὸ πλῆθος αὐτῶν, οὕτως ἥμαρτόν μοι· τὴν δόξαν αὐτῶν εἰς ἀτιμίαν θήσομαι. Ἁμαρτίας λαοῦ μου φάγονται· καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν λήψονται τὰς ψυχὰς αὐτῶν. Καὶ ἔσται καθὼς ὁ λαὸς, οὕτως καὶ ὁ ἱερεύς· καὶ ἐκδικήσω ἐπ’ αὐτὸν τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰ διαβούλια αὐτοῦ ἀνταποδώσω αὐτῷ. Καὶ φάγονται, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσιν· ἐπόρνευσαν, καὶ οὐ μὴ κατευθύνωσι· διότι τὸν Κύριον ἐγκατέλιπον τοῦ φυλάξαι. Πορνείαν καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα ἐδέξατο καρδία λαοῦ μου· ἐν συμβόλοις ἐπηρώτων, καὶ ἐν ῥάβδοις αὐτοῦ ἀπήγγελλον αὐτῷ· πνεύματι πορνείας ἐπλανήθησαν, καὶ ἐξεπόρνευσαν ἀπὸ τοῦ Θεοῦ αὐτῶν. Ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων ἐθυσίαζον, καὶ ἐπὶ τοὺς βουνοὺς ἔθυον ὑποκάτω δρυὸς, καὶ λεύκης, καὶ δένδρου συσκιάζοντος, ὅτι καλὸν

σκέπη. διὰ τοῦτο ἐκπορνεύσουσιν αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ αἱ νύμφαι ὑμῶν μοιχεύσουσι. Καὶ οὐ μὴ ἐπισκέψωμαι ἐπὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν ὅταν πορνεύσωσι, καὶ ἐπὶ τὰς νύμφας ὑμῶν ὅταν μοιχεύωσιν· ὅτι αὐτοὶ μετὰ τῶν πορνῶν συνεφύροντο, καὶ μετὰ τῶν τετελεσμένων ἔθυον, καὶ ὁ λαὸς ὁ μὴ συνιὼν συνεπλέκετο μετὰ πόρνης. Σὺ δὲ Ἰσραὴλ μὴ ἀγνόει, καὶ Ἰούδα μὴ εἰσπορεύεσθε εἰς Γάλγαλα, καὶ μὴ ἀναβαίνετε εἰς τὸν οἶκον Ὼν, καὶ μὴ ὀμνύετε ζῶντα Κύριον. Διότι ὡς δάμαλις παροιστρῶσα παροίστρησεν Ἰσραήλ· νῦν νεμήσει αὐτοὺς Κύριος ὡς ἀμνὸν ἐν εὐρυχώρῳ. Μέτοχος εἰδώλων Ἐφραὶμ ἔθηκεν ἑαυτῷ σκάνδαλα, ἠρέτισε Χαναναίους· πορνεύοντες ἐξεπόρνευσαν, ἠγάπησαν ἀτιμίαν ἐκ φρυάγματος αὐτῆς. Συστροφὴ πνεύματος σὺ εἶ ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτῆς, καὶ καταισχυνθήσονται ἐκ τῶν θυσιαστηρίων αὐτῶν.

# 5

Ἀκούσατε ταῦτα οἱ ἱερεῖς, καὶ προσέχετε οἶκος Ἰσραήλ, καὶ ὁ οἶκος τοῦ βασιλέως ἐνωτίζεσθε, διότι πρὸς ὑμᾶς ἐστι τὸ κρίμα, ὅτι παγὶς ἐγενήθητε τῇ Σκοπιᾷ, καὶ ὡς δίκτυον ἐκτεταμένον ἐπὶ τὸ Ἰταβύριον, ὃ οἱ ἀγρεύοντες τὴν θήραν κατέπηξαν· ἐγὼ δὲ παιδευτὴς ὑμῶν, ἐγὼ ἔγνων τὸν Ἐφραὶμ, καὶ Ἰσραὴλ οὐκ ἀπέστη ἀπ’ ἐμοῦ· διότι νῦν ἐξεπόρνευσεν Ἐφραὶμ, ἐμιάνθη Ἰσραήλ. Οὐκ ἔδωκαν τὰ διαβούλια αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς τὸν Θεὸν αὐτῶν, ὅτι πνεῦμα πορνίας ἐν αὐτοῖς ἐστίν· τὸν δὲ Κύριον οὐκ ἐπέγνωσαν. Καὶ ταπεινωθήσεται ἡ ὕβρις τοῦ Ἰσραὴλ εἰς πρόσωπον αὐτοῦ· καὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἐφραὶμ ἀσθενήσουσιν ἐν ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν· καὶ ἀσθενήσει καὶ Ἰούδας μετ’ αὐτῶν. Μετὰ προβάτων καὶ μόσχων

πορεύσονται τοῦ ἐκζητῆσαι τὸν Κύριον, καὶ οὐ μὴ εὕρωσιν αὐτόν· ὅτι ἐκκέκλικεν ἀπ᾽ αὐτῶν, ὅτι τὸν Κύριον ἐγκατέλιπον, ὅτι τέκνα ἀλλότρια ἐγεννήθησαν αὐτοῖς· νῦν καταφάγεται αὐτοὺς ἡ ἐρυσίβη, καὶ τοὺς κλήρους αὐτῶν. Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐπὶ τοὺς βουνοὺς, ἠχήσατε ἐπὶ τῶν ὑψηλῶν, κηρύξατε ἐν τῷ οἴκῳ Ὧν, ἐξέστη Βενιαμὶν, Ἐφραὶμ εἰς ἀφανισμὸν ἐγένετο ἐν ἡμέραις ἐλέγχου· ἐν ταῖς φυλαῖς τοῦ Ἰσραὴλ ἔδειξα πιστά. Ἐγένοντο οἱ ἄρχοντες Ἰούδα ὡς μετατιθέντες ὅρια, ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐκχεῶ ὡς ὕδωρ τὸ ὅρμημά μου. Κατεδυνάστευσεν Ἐφραὶμ τὸν ἀντίδικον αὐτοῦ, κατεπάτησε τὸ κρίμα, ὅτι ἤρξατο πορεύεσθαι ὀπίσω τῶν ματαίων. Καὶ ἐγὼ ὡς ταραχὴ τῷ Ἐφραὶμ, καὶ ὡς κέντρον τῷ οἴκῳ Ἰούδα. Καὶ εἶδεν Ἐφραὶμ τὴν νόσον αὐτοῦ, καὶ Ἰούδας τὴν ὀδύνην αὐτοῦ· καὶ ἐπορεύθη Ἐφραὶμ πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ ἀπέστειλε πρέσβεις πρὸς βασιλέα Ἰαρείμ· καὶ οὗτος οὐκ ἠδυνάσθη ἰάσασθαι ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ διαπαύσῃ ἐξ ὑμῶν ὀδύνη. Διότι ἐγώ εἰμι ὡς πανθὴρ τῷ Ἐφραὶμ, καὶ ὡς λέων τῷ οἴκῳ Ἰούδα· καὶ ἐγὼ ἁρπῶμαι καὶ πορεύσομαι, καὶ λήψομαι, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐξαιρούμενος. Πορεύσομαι καὶ ἐπιστρέψω εἰς τὸν τόπον μου, ἕως οὗ ἀφανισθῶσι, καὶ ζητήσουσι τὸ πρόσωπόν μου. Ἐν θλίψει αὐτῶν ὀρθριοῦσι πρὸς μὲ, λέγοντες,

# 6

πορευθῶμεν, καὶ ἐπιστρέψωμεν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, ὅτι αὐτὸς ἥρπακε, καὶ ἰάσεται ἡμᾶς· πατάξει, καὶ μοτώσει ἡμᾶς, ὑγιάσει ἡμᾶς μετὰ δύο ἡμέρας· ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἐξαναστησόμεθα, καὶ ζησόμεθα ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ γνωσόμεθα·

διώξωμεν τοῦ γνῶναι τὸν Κύριον· ὡς ὄρθρον ἕτοιμον εὑρήσομεν αὐτὸν, καὶ ἥξει ὡς ὑετὸς ἡμῖν πρώϊμος καὶ ὄψιμος γῇ. Τί σοι ποιήσω Ἐφραίμ; τί σοι ποιήσω Ἰούδα; τὸ δὲ ἔλεος ὑμῶν ὡς νεφέλη πρωϊνὴ, καὶ ὡς δρόσος ὀρθρινὴ πορευομένη. Διὰ τοῦτο ἀπεθέρισα τοὺς προφήτας ὑμῶν· ἀπέκτεινα αὐτοὺς ἐν ῥήματι στόματός μου· καὶ τὸ κρίμα μου ὡς φῶς ἐξελεύσεται. Διότι ἔλεος θέλω ἢ θυσίαν, καὶ ἐπίγνωσιν Θεοῦ ἢ ὁλοκαυτώματα. Αὐτοὶ δέ εἰσιν ὡς ἄνθρωπος παραβαίνων διαθήκην· ἐκεῖ κατεφρόνησέ μου Γαλαὰδ πόλις, ἐργαζομένη μάταια, ταράσσουσα ὕδωρ, καὶ ἡ ἰσχύς σου ἀνδρὸς πειρατοῦ· ἔκρυψαν ἱερεῖς ὁδόν, ἐφόνευσαν Σίκιμα, ὅτι ἀνομίαν ἐποίησαν ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Ἰσραήλ· εἶδον φρικώδη ἐκεῖ, πορνείαν τοῦ Ἐφραίμ· ἐμιάνθη Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα· ἄρχου τρυγᾷν σεαυτῷ, ἐν τῷ ἐπιστρέφειν με τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου.

# 7

Ἐν τῷ ἰάσασθαί με τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἀποκαλυφθήσεται ἡ ἀδικία Ἐφραὶμ, καὶ ἡ κακία Σαμαρείας, ὅτι εἰργάσαντο ψευδῆ· καὶ κλέπτης πρὸς αὐτὸν εἰσελεύσεται, ἐκδιδύσκων λῃστὴς ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, ὅπως συνᾴδωσιν ὡς ᾄοντες τῇ καρδίᾳ αὐτῶν· πάσας τὰς κακίας αὐτῶν ἐμνήσθην· νῦν ἐκύκλωσαν αὐτοὺς τὰ διαβούλια αὐτῶν, ἀπέναντι τοῦ προσώπου μου ἐγένοντο. Ἐν ταῖς κακίαις αὐτῶν εὔφραναν βασιλεῖς, καὶ ἐν τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν ἄρχοντας. Πάντες μοιχεύοντες ὡς κλίβανος καιόμενος εἰς πέψιν κατακαύματος ἀπὸ τῆς φλογὸς, ἀπὸ φυράσεως στέατος, ἕως τοῦ ζυμωθῆναι αὐτό. Ἡμέραι τῶν βασιλέων ὑμῶν, ἤρξαντο οἱ ἄρχοντες θυμοῦσθαι ἐξ οἴνου, ἐξέτεινε τὴν χεῖρα αὐτοῦ μετὰ

λοιμῶν. Διότι ἀνεκαύθησαν ὡς κλίβανος αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἐν τῷ καταράσσειν αὐτοὺς ὅλην τὴν νύκτα· ὕπνου Ἐφραὶμ ἐνεπλήσθη, πρωῒ ἐνεγενήθη, ἀνεκαύθη ὡς πυρὸς φέγγος. Πάντες ἐθερμάνθησαν ὡς κλίβανος, καὶ κατέφαγον τοὺς κριτὰς αὐτῶν· πάντες οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἔπεσαν, οὐκ ἦν ἐν αὐτοῖς ὁ ἐπικαλούμενος πρὸς μέ. Ἐφραὶμ ἐν τοῖς λαοῖς αὐτοῦ συνεμίγνυτο, Ἐφραὶμ ἐγένετο ἐγκρυφίας, οὐ μεταστρεφόμενος. Κατέφαγον ἀλλότριοι τὴν ἰσχὺν αὐτοῦ, αὐτὸς δὲ οὐκ ἔγνω· καὶ πολιαὶ ἐξήνθησαν αὐτῷ, καὶ αὐτὸς οὐκ ἔγνω. Καὶ ταπεινωθήσεται ἡ ὕβρις Ἰσραὴλ εἰς πρόσωπον αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἐπέστρεψαν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐξεζήτησαν αὐτὸν ἐν πᾶσι τούτοις. Καὶ ἦν Ἐφραὶμ ὡς περιστερὰ ἄνους, οὐκ ἔχουσα καρδίαν· Αἴγυπτον ἐπεκαλεῖτο, καὶ εἰς Ἀσσυρίους ἐπορεύθησαν· Καθὼς ἂν πορεύωνται, ἐπιβαλῶ ἐπ’ αὐτοὺς τὸ δίκτυόν μου, καθὼς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατάξω αὐτοὺς, παιδεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ ἀκοῇ τῆς θλίψεως αὐτῶν. Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι ἀπεπήδησαν ἀπ’ ἐμοῦ· δείλαιοί εἰσιν, ὅτι ἠσέβησαν εἰς ἐμέ· ἐγὼ δὲ ἐλυτρωσάμην αὐτοὺς, αὐτοὶ δὲ κατελάλησαν κατ’ ἐμοῦ ψευδῆ. Καὶ οὐκ ἐβόησαν πρὸς μὲ αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἀλλ’ ἢ ὠλόλυζον ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν· ἐπὶ σίτῳ καὶ οἴνῳ κατετέμνοντο. Ἐπαιδεύθησαν ἐν ἐμοὶ, κἀγὼ κατίσχυσα τοὺς βραχίονας αὐτῶν, καὶ εἰς ἐμὲ ἐλογίσαντο πονηρά. Ἀπεστράφησαν εἰς οὐδὲν, ἐγένοντο ὡς τόξον ἐντεταμένον· πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν δι’ ἀπαιδευσίαν γλώσσης αὐτῶν· οὗτος ὁ φαυλισμὸς αὐτῶν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ.

# 8

Εἰς κόλπον αὐτῶν, ὡς γῆ, ὡς ἀετὸς ἐπ᾽ οἶκον Κυρίου, ἀνθ᾽ ὧν παρέβησαν τὴν διαθήκην μου, καὶ κατὰ τοῦ νόμου μου ἠσέβησαν. Ἐμὲ κεκράξονται, ὁ Θεὸς, ἐγνώκαμέν σε· Ὅτι Ἰσραὴλ ἀπεστρέψατο ἀγαθὰ, ἐχθρὸν κατεδίωξαν. Ἑαυτοῖς ἐβασίλευσαν, καὶ οὐ δι᾽ ἐμοῦ, ἦρξαν, καὶ οὐκ ἐγνώρισάν μοι· τὸ ἀργύριον αὐτῶν καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν ἐποίησαν ἑαυτοῖς εἴδωλα, ὅπως ἐξολοθρευθῶσιν. Ἀπότριψαι τὸν μόσχον σου Σαμάρεια, παρωξύνθη ὁ θυμός μου ἐπ᾽ αὐτούς· ἕως τίνος οὐ μὴ δύνωνται καθαρισθῆναι ἐν τῷ Ἰσραήλ; καὶ αὐτὸ τέκτων ἐποίησε, καὶ οὐ Θεός ἐστι· διότι πλανῶν ἦν ὁ μόσχος σου, Σαμάρεια. Ὅτι ἀνεμόφθορα ἔσπειραν, καὶ ἡ καταστροφὴ αὐτῶν ἐκδέξεται αὐτά· δράγμα οὐκ ἔχον ἰσχὺν τοῦ ποιῆσαι ἄλευρον· ἐὰν δὲ καὶ ποιήσῃ, ἀλλότριοι καταφάγονται αὐτό. Κατεπόθη Ἰσραὴλ, νῦν ἐγένετο ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὡς σκεῦος ἄχρηστον, ὅτι αὐτοὶ ἀνέβησαν εἰς Ἀσσυρίους· ἀνέθαλε καθ᾽ ἑαυτὸν Ἐφραίμ· δῶρα ἠγάπησαν, διὰ τοῦτο παραδοθήσονται ἐν τοῖς ἔθνεσι· νῦν εἰσδέξομαι αὐτοὺς, καὶ κοπάσουσι μικρὸν τοῦ χρίειν βασιλέα καὶ ἄρχοντας. Ὅτι ἐπλήθυνεν Ἐφραὶμ θυσιαστήρια, εἰς ἁμαρτίας ἐγένοντο αὐτῷ θυσιαστήρια ἠγαπημένα. Καταγράψω αὐτῷ πλῆθος, καὶ τὰ νόμιμα αὐτοῦ εἰς ἀλλότρια ἐλογίσθησαν, θυσιαστήρια τὰ ἠγαπημένα. Διότι ἐὰν θύσωσι θυσίαν, καὶ φάγωσι κρέα, Κύριος οὐ προσδέξεται αὐτά· νῦν μνησθήσεται τὰς ἀδικίας αὐτῶν, καὶ ἐκδικήσει τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· αὐτοὶ εἰς Αἴγυπτον ἀπέστρεψαν, καὶ ἐν Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φάγονται. Καὶ ἐπελάθετο Ἰσραὴλ τοῦ ποιήσαντος αὐτόν, καὶ ᾠκοδόμησαν τεμένη· καὶ Ἰούδας ἐπλήθυνε πόλεις τετειχισμένας· καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς τὰς πόλεις αὐτοῦ, καὶ καταφάγεται τὰ θεμέλια αὐτῶν.

# 9

Μὴ χαῖρε Ἰσραήλ, μηδὲ εὐφραίνου καθὼς οἱ λαοὶ, διότι ἐπόρνευσας ἀπὸ τοῦ Θεοῦ σου· ἠγάπησας δόματα ἐπὶ πάντα ἅλωνα σίτου. Ἅλων καὶ ληνὸς οὐκ ἔγνω αὐτούς, καὶ ὁ οἶνος ἐψεύσατο αὐτούς. Οὐ κατῴκησαν ἐν τῇ γῇ τοῦ Κυρίου· κατῴκησεν Ἐφραὶμ Αἴγυπτον, καὶ ἐν Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φάγονται. Οὐκ ἔσπεισαν τῷ Κυρίῳ οἶνον, καὶ οὐχ ἥδυναν αὐτῷ αἱ θυσίαι αὐτῶν, ὡς ἄρτος πένθους αὐτοῖς· πάντες οἱ ἐσθίοντες αὐτὰ μιανθήσονται, διότι οἱ ἄρτοι αὐτῶν ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν οὐκ εἰσελεύσονται εἰς τὸν οἶκον Κυρίου. Τί ποιήσετε ἐν ἡμέραις πανηγύρεως, καὶ ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς τοῦ Κυρίου; Διὰ τοῦτο ἰδοὺ πορεύονται ἐκ ταλαιπωρίας Αἰγύπτου, καὶ ἐκδέξεται αὐτοὺς Μέμφις, καὶ θάψει αὐτοὺς Μαχμάς· τὸ ἀργύριον αὐτῶν ὅλεθρος κληρονομήσει αὐτὸ, ἄκανθαι ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν. Ἤκασιν αἱ ἡμέραι τῆς ἐκδικήσεως, ἤκασιν αἱ ἡμέραι τῆς ἀνταποδόσεώς σου, καὶ κακωθήσεται Ἰσραὴλ ὥσπερ ὁ προφήτης ὁ παρεξεστηκώς, ἄνθρωπος ὁ πνευματοφόρος· ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθη μανία σου. Σκοπὸς Ἐφραὶμ μετὰ Θεοῦ· προφήτης παγὶς σκολιὰ ἐπὶ πάσας τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, μανίαν ἐν οἴκῳ Θεοῦ κατέπηξαν. Ἐφθάρησαν κατὰ τὰς ἡμέρας τοῦ βουνοῦ, μνησθήσεται ἀδικίας αὐτῶν, ἐκδικήσει ἁμαρτίας αὐτῶν. Ὡς σταφυλὴν ἐν ἐρήμῳ εὗρον τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ὡς σκοπὸν ἐν συκῇ πρώϊμον πατέρας αὐτῶν εἶδον· αὐτοὶ εἰσῆλθον πρὸς τὸν Βεελφεγὼρ, καὶ ἀπηλλοτριώθησαν εἰς αἰσχύνην, καὶ ἐγένοντο οἱ ἐβδελυγμένοι ὡς οἱ ἠγαπημένοι. Ἐφραὶμ ὡς ὄρνεον ἐξεπετάσθη, αἱ δόξαι αὐτῶν ἐκ τόκων καὶ ὠδίνων καὶ συλλήψεων· Διότι καὶ ἐὰν ἐκθρέψωσι τὰ τέκνα αὐτῶν,

ἀτεκνωθήσονται ἐξ ἀνθρώπων· διότι καὶ οὐαὶ αὐτοῖς ἐστι· σάρξ μου ἐξ αὐτῶν. Ἐφραὶμ, ὃν τρόπον εἶδον, εἰς θήραν παρέστησαν τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ Ἐφραὶμ, τοῦ ἐξαγαγεῖν εἰς ἀποκέντησιν τὰ τέκνα αὐτοῦ. Δὸς αὐτοῖς Κύριε, τί δώσεις αὐτοῖς; μήτραν ἀτεκνοῦσαν, καὶ μαστοὺς ξηρούς. Πᾶσαι αἱ κακίαι αὐτῶν ἐν Γαλγάλ, ὅτι ἐκεῖ ἐμίσησα αὐτούς· διὰ τὰς κακίας τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν, ἐκ τοῦ οἴκου μου ἐκβαλῶ αὐτοὺς, οὐ μὴ προσθήσω τοῦ ἀγαπῆσαι αὐτούς· πάντες οἱ ἄρχοντες αὐτῶν ἀπειθοῦντες. Ἐπόνεσεν Ἐφραίμ· τὰς ῥίζας αὐτοῦ ἐξηράνθη, καρπὸν οὐκ ἔτι μὴ ἐνέγκῃ· διότι καὶ ἐὰν γεννήσωσιν, ἀποκτενῶ τὰ ἐπιθυμήματα κοιλίας αὐτῶν. Ἀπώσεται αὐτοὺς ὁ Θεός, ὅτι οὐκ εἰσήκουσαν αὐτοῦ, καὶ ἔσονται πλανῆται ἐν τοῖς ἔθνεσιν.

# 10

Ἄμπελος εὐκηματοῦσα Ἰσραὴλ, ὁ καρπὸς εὐθηνῶν αὐτῆς· κατὰ τὸ πλῆθος τῶν καρπῶν αὐτῆς, ἐπλήθυνε τὰ θυσιαστήρια· κατὰ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς αὐτοῦ, ᾠκοδόμησε στήλας. Ἐμέρισαν καρδίας αὐτῶν, νῦν ἀφανισθήσονται· αὐτὸς κατασκάψει τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν, ταλαιπωρήσουσιν αἱ στῆλαι αὐτῶν. Διότι νῦν ἐροῦσιν, οὐκ ἔστι βασιλεὺς ἡμῖν, ὅτι οὐκ ἐφοβήθημεν τὸν Κύριον· ὁ δὲ βασιλεὺς τί ποιήσει ἡμῖν, λαλῶν ῥήματα προφάσεις ψευδεῖς; διαθήσεται διαθήκην, ἀνατελεῖ ὡς ἄγρωστις κρίμα ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ. Τῷ μόσχῳ τοῦ οἴκου Ὧν παροικήσουσιν οἱ κατοικοῦντες Σαμάρειαν, ὅτι ἐπένθησε λαὸς αὐτοῦ ἐπ’ αὐτόν· καὶ καθὼς παρεπίκραναν αὐτὸν, ἐπιχαροῦνται ἐπὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ, ὅτι μετῳκίσθη ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ αὐτὸν εἰς Ἀσσυρίους δήσαντες, ἀπήνεγκαν ξένια τῷ

βασιλεῖ Ἰαρείμ· ἐν δόματι Ἐφραὶμ δέξεται, καὶ αἰσχυνθήσεται Ἰσραὴλ ἐν τῇ βουλῇ αὐτοῦ. Ἀπέῤῥιψεν Σαμάρεια βασιλέα αὐτῆς ὡς φρύγανον ἐπὶ προσώπου ὕδατος· Καὶ ἐξαρθήσονται βωμοὶ Ὧν ἁμαρτήματα τοῦ Ἰσραὴλ, ἄκανθαι καὶ τρίβολοι ἀναβήσονται ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν· καὶ ἐροῦσι τοῖς ὄρεσι, καλύψατε ἡμᾶς, καὶ τοῖς βουνοῖς, πέσατε ἐφ’ ἡμᾶς. Ἀφ’ οὗ οἱ βουνοὶ, ἥμαρτεν Ἰσραήλ, ἐκεῖ ἔστησαν· οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς ἐν τῷ βουνῷ πόλεμος ἐπὶ τὰ τέκνα ἀδικίας παιδεῦσαι αὐτούς· καὶ συναχθήσονται ἐπ’ αὐτοὺς λαοὶ, ἐν τῷ παιδεύεσθαι αὐτοὺς ἐν ταῖς δυσὶν ἀδικίαις αὐτῶν. Ἐφραὶμ δάμαλις δεδιδαγμένη ἀγαπᾷν νῖκος, ἐγὼ δὲ ἐπελεύσομαι ἐπὶ τὸ κάλλιστον τοῦ τραχήλου αὐτῆς· ἐπιβιβῶ Ἐφραὶμ, παρασιωπήσομαι Ἰούδαν, ἐνισχύσει αὐτῷ Ἰακώβ. Σπείρατε ἑαυτοῖς εἰς δικαιοσύνην, τρυγήσατε εἰς καρπὸν ζωῆς, φωτίσατε ἑαυτοῖς φῶς γνώσεως, ἐκζητήσατε τὸν Κύριον ἕως τοῦ ἐλθεῖν γεννήματα δικαιοσύνης ὑμῖν. Ἱνατί παρεσιωπήσατε ἀσέβειαν, καὶ τὰς ἀδικίας αὐτῆς ἐτρυγήσατε; ἐφάγετε καρπὸν ψευδῆ, ὅτι ἤλπισας ἐν τοῖς ἁμαρτήμασί σου, ἐν πλήθει δυνάμεώς σου. Καὶ ἐξαναστήσεται ἀπώλεια ἐν τῷ λαῷ σου, καὶ πάντα τὰ περιτετειχισμένα σου οἰχήσεται· ὡς ἄρχεν Σαλαμὰν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ Ἱεροβοὰμ, ἐν ἡμέραις πολέμου μητέρα ἐπὶ τέκνοις ἠδάφισαν, οὕτως ποιήσω ὑμῖν οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου ἀδικίας κακιῶν ὑμῶν.

# 11

Ὄρθρου ἀπεῤῥίφησαν, ἀπεῤῥίφη βασιλεὺς Ἰσραήλ· ὅτι νήπιος Ἰσραὴλ, καὶ ἐγὼ ἠγάπησα αὐτόν, καὶ ἐξ Αἰγύπτου μετεκάλεσα τὰ

τέκνα αὐτοῦ. Καθὼς μετεκάλεσα αὐτούς, οὕτως ἀπῴχοντο ἐκ προσώπου μου· αὐτοὶ τοῖς Βααλεὶμ ἔθυον, καὶ τοῖς γλυπτοῖς ἐθυμίων. Καὶ ἐγὼ συνεπόδισα τὸν Ἐφραὶμ, ἀνέλαβον αὐτὸν ἐπὶ τὸν βραχίονά μου, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ὅτι ἴαμαι αὐτούς. Ἐν διαφθορᾷ ἀνθρώπων ἐξέτεινα αὐτοὺς ἐν δεσμοῖς ἀγαπήσεώς μου, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς ὡς ῥαπίζων ἄνθρωπος ἐπὶ τὰς σιαγόνας αὐτοῦ· καὶ ἐπιβλέψομαι πρὸς αὐτόν, δυνήσομαι αὐτῷ. Κατῴκησεν Ἐφραὶμ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ Ἀσσοὺρ αὐτὸς βασιλεὺς αὐτοῦ· ὅτι οὐκ ἠθέλησεν ἐπιστρέψαι, καὶ ἠσθένησεν ἐν ῥομφαίᾳ ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ· καὶ κατέπαυσεν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, καὶ φάγονται ἐκ τῶν διαβουλίων αὐτῶν, καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐπικρεμάμενος ἐκ τῆς κατοικίας αὐτοῦ· καὶ ὁ Θεὸς ἐπὶ τὰ τίμια αὐτοῦ θυμωθήσεται, καὶ οὐ μὴ ὑψώσῃ αὐτόν. Τί σε διαθῶμαι Ἐφραίμ; ὑπερασπιῶ σου Ἰσραήλ; τί σε διαθῶ; ὡς Ἀδάμα θήσομαί σε, καὶ ὡς Σεβοείμ· μετεστράφη ἡ καρδία μου ἐν τῷ αὐτῷ, συνεταράχθη ἡ μεταμέλειά μου· Οὐ μὴ ποιήσω κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ μου· οὐ μὴ ἐγκαταλίπω τοῦ ἐξαλειφθῆναι τὸν Ἐφραὶμ· διότι Θεὸς ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἄνθρωπος, ἐν σοὶ ἅγιος, καὶ οὐκ εἰσελεύσομαι εἰς πόλιν. Ὀπίσω Κυρίου πορεύσομαι· ὡς λέων ἐρεύξεται, ὅτι αὐτὸς ὠρύσεται, καὶ ἐκστήσονται τέκνα ὑδάτων. Ἐκστήσονται ὡς ὄρνεον ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ὡς περιστερὰ ἐκ γῆς Ἀσσυρίων· καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν, λέγει Κύριος.

# 12

Ἐκύκλωσέ με ἐν ψεύδει Ἐφραὶμ, καὶ ἐν ἀσεβείαις οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ Ἰούδα· νῦν ἔγνω αὐτοὺς ὁ Θεὸς, καὶ ὁ λαὸς ἅγιος κεκλήσεται Θεοῦ.

Ὁ δὲ Ἐφραὶμ πονηρὸν πνεῦμα, ἐδίωξε καύσωνα ὅλην τὴν ἡμέραν· κενὰ καὶ μάταια ἐπλήθυνε, καὶ διαθήκην μετὰ Ἀσσυρίων διέθετο, καὶ ἔλαιον εἰς Αἴγυπτον ἐνεπορεύετο. Καὶ κρίσις τῷ Κυρίῳ πρὸς Ἰούδαν, τοῦ ἐκδικῆσαι τὸν Ἰακώβ· κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἀποδώσει αὐτῷ. Ἐν τῇ κοιλίᾳ ἐπτέρνισε τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἐν κόποις αὐτοῦ ἐνίσχυσε πρὸς Θεόν. Καὶ ἐνίσχυσε μετὰ ἀγγέλου, καὶ ἠδυνάσθη· ἔκλαυσαν, καὶ ἐδεήθησάν μου· ἐν τῷ οἴκῳ Ὢν εὕροσάν με, καὶ ἐκεῖ ἐλαλήθη πρὸς αὐτούς. Ὁ δὲ Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ ἔσται μνημόσυνον αὐτοῦ. Καὶ σὺ ἐν Θεῷ σου ἐπιστρέψεις, ἔλεον καὶ κρίμα φυλάσσου, καὶ ἔγγιζε πρὸς τὸν Θεόν σου διαπαντός. Χαναὰν, ἐν χειρὶ αὐτοῦ ζυγὸς ἀδικίας, καταδυναστεύειν ἠγάπησε. Καὶ εἶπεν Ἐφραὶμ, πλὴν πεπλούτηκα, εὕρηκα ἀναψυχὴν ἐμαυτῷ· πάντες οἱ πόνοι αὐτοῦ οὐχ εὑρεθήσονται αὐτῷ, δι’ ἀδικίας ἃς ἥμαρτεν. Ἐγὼ δὲ Κύριος ὁ Θεός σου ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἔτι κατοικιῶ σε ἐν σκηναῖς, καθὼς ἡμέραι ἑορτῆς. Καὶ λαλήσω πρὸς προφήτας, καὶ ἐγὼ ὁράσεις ἐπλήθυνα, καὶ ἐν χερσὶ προφητῶν ὡμοιώθην. Εἰ μὴ Γαλαάδ ἐστιν, ἄρα ψευδεῖς ἦσαν ἐν Γαλαὰδ ἄρχοντες θυσιάζοντες, καὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν, ὡς χελῶναι ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ. Καὶ ἀνεχώρησεν Ἰακὼβ εἰς πεδίον Συρίας, καὶ ἐδούλευσεν Ἰσραὴλ ἐν γυναικὶ, καὶ γυναικὶ ἐφυλάξατο. Καὶ ἐν προφήτῃ ἀνήγαγεν Κύριος τὸν Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐν προφήτῃ διεφυλάχθη. Ἐθύμωσεν Ἐφραὶμ, καὶ παρώργισε, καὶ τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐπ’ αὐτὸν ἐκχυθήσεται, καὶ τὸν ὀνειδισμὸν αὐτοῦ ἀνταποδώσει Κύριος αὐτῷ.

# 13

Κατὰ τὸν λόγον Ἐφραὶμ δικαιώματα ἔλαβεν αὐτὸς ἐν τῷ Ἰσραήλ, καὶ ἔθετο αὐτὰ τῇ Βάαλ καὶ ἀπέθανε. Καὶ νῦν προσέθεντο τοῦ ἁμαρτάνειν, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς χώνευμα ἐκ τοῦ ἀργυρίου αὐτῶν, κατ᾽ εἰκόνα εἰδώλων, ἔργα τεκτόνων συντετελεσμένα αὐτοῖς· αὐτοὶ λέγουσι, θύσατε ἀνθρώπους, μόσχοι γὰρ ἐκλελοίπασι. Διὰ τοῦτο ἔσονται ὡς νεφέλη πρωϊνὴ καὶ ὡς δρόσος ὀρθρινὴ πορευομένη, ὡς χνοῦς ἀποφυσώμενος ἀφ᾽ ἅλωνος, καὶ ὡς ἀτμὶς ἀπὸ δακρύων. Ἐγὼ δὲ Κύριος ὁ Θεός σου ὁ στερεῶν τὸν οὐρανὸν, καὶ κτίζων γῆν, οὗ αἱ χεῖρες ἔκτισαν πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐ παρέδειξά σοι αὐτὰ τοῦ πορεύεσθαι ὀπίσω αὐτῶν· καὶ ἐγὼ ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ θεὸν πλὴν ἐμοῦ οὐ γνώσῃ, καὶ σώζων οὐκ ἔστι πάρεξ ἐμοῦ. Ἐγὼ ἐποίμαινόν σε ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἀοικήτῳ κατὰ τὰς νομὰς αὐτῶν, καὶ ἐνεπλήσθησαν εἰς πλησμονήν, καὶ ὑψώθησαν αἱ καρδίαι αὐτῶν· ἕνεκα τούτου ἐπελάθοντό μου. Καὶ ἔσομαι αὐτοῖς ὡς πανθὴρ, καὶ ὡς πάρδαλις· κατὰ τὴν ὁδὸν Ἀσσυρίων ἀπαντήσομαι αὐτοῖς ὡς ἄρκτος ἡ ἀπορουμένη, καὶ διαῤῥήξω συγκλεισμὸν καρδίας αὐτῶν, καὶ καταφάγονται αὐτοὺς ἐκεῖ σκύμνοι δρυμοῦ, θηρία ἀγροῦ διασπάσει αὐτούς. Τῇ διαφθορᾷ σου Ἰσραήλ τίς βοηθήσει; Ποῦ ὁ βασιλεύς σου οὗτος; καὶ διασωσάτω σε ἐν πάσαις ταῖς πόλεσί σου· κρινάτω σε ὃν εἶπας, δός μοι βασιλέα καὶ ἄρχοντα. Καὶ ἔδωκά σοι βασιλέα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἔσχον ἐν τῷ θυμῷ μου. Συστροφὴν ἀδικίας Ἐφραὶμ, ἐγκεκρυμμένη ἡ ἁμαρτία αὐτοῦ, ὠδῖνες ὡς τικτούσης ἤξουσιν αὐτῷ· οὗτος ὁ υἱός σου ὁ φρόνιμος, διότι οὐ μὴ ὑποστῇ ἐν συντριβῇ τέκνων. Ἐκ χειρὸς ᾅδου ῥύσομαι, καὶ ἐκ θανάτου λυτρώσομαι αὐτούς· ποῦ ἡ δίκη σου θάνατε; ποῦ τὸ κέντρον σου ᾅδη; παράκλησις κέκρυπται ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. Διότι οὗτος ἀναμέσον ἀδελφῶν διαστελεῖ, ἐπάξει καύσωνα ἄνεμον

Κύριος ἐκ τῆς ἐρήμου ἐπ᾽ αὐτόν, καὶ ἀναξηρανεῖ τὰς φλέβας αὐτοῦ, ἐξερημώσει τὰς πηγὰς αὐτοῦ· αὐτὸς καταξηρανεῖ τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητὰ αὐτοῦ.

# 14

Ἀφανισθήσεται Σαμάρεια, ὅτι ἀντέστη πρὸς τὸν Θεὸν αὐτῆς· ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται αὐτοὶ, καὶ τὰ ὑποτίθια αὐτῶν ἐδαφισθήσονται, καὶ αἱ ἐν γαστρὶ ἔχουσαι αὐτῶν διαῤῥαγήσονται. Ἐπιστράφηθι Ἰσραὴλ πρὸς Κύριον τὸν Θεόν σου, διότι ἠσθένησαν ἐν ταῖς ἀδικίαις σου. Λάβετε μεθ᾽ ἑαυτῶν λόγους, καὶ ἐπιστράφητε πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν· εἴπατε αὐτῷ, ὅπως μὴ λάβητε ἀδικίαν, καὶ λάβητε ἀγαθὰ, καὶ ἀνταποδώσομεν καρπὸν χειλέων ἡμῶν. Ἀσσοὺρ οὐ μὴ σώσῃ ἡμᾶς, ἐφ᾽ ἵππον οὐκ ἀναβησόμεθα· οὐκέτι μὴ εἴπωμεν, θεοὶ ἡμῶν, τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ἡμῶν· ὁ ἐν σοὶ ἐλεήσει ὀρφανόν. Ἰάσομαι τὰς κατοικίας αὐτῶν, ἀγαπήσω αὐτοὺς ὁμολόγως, ὅτι ἀπέστρεψε τὴν ὀργήν μου ἀπ᾽ αὐτοῦ. Ἔσομαι ὡς δρόσος τῷ Ἰσραὴλ, ἀνθήσει ὡς κρίνον, καὶ βαλεῖ τὰς ῥίζας αὐτοῦ ὡς ὁ Λίβανος· Πορεύσονται οἱ κλάδοι αὐτοῦ, καὶ ἔσται ὡς ἐλαία κατάκαρπος, καὶ ἡ ὀσφρασία αὐτοῦ ὡς Λιβάνου. ἐπιστρέψουσι καὶ καθιοῦνται ὑπὸ τὴν σκέπην αὐτοῦ, ζήσονται καὶ μεθυσθήσονται σίτῳ· καὶ ἐξανθήσει ὡς ἄμπελος· μνημόσυνον αὐτοῦ, ὡς οἶνος Λιβάνου τῷ Ἐφραίμ· τί αὐτῷ ἔτι καὶ εἰδώλοις; ἐγὼ ἐταπείνωσα αὐτὸν, καὶ κατισχύσω αὐτόν· ἐγὼ ὡς ἄρκευθος πυκάζουσα, ἐξ ἐμοῦ ὁ καρπός σου εὕρηται. Τίς σοφὸς καὶ συνήσει ταῦτα; ἢ συνετὸς καὶ ἐπιγνώσεται αὐτά; ὅτι εὐθεῖαι αἱ ὁδοὶ τοῦ Κυρίου, καὶ δίκαιοι πορεύσονται ἐν αὐταῖς, οἱ δὲ ἀσεβεῖς

ἀσθενήσουσιν ἐν αὐταῖς.

# ΑΜΩΣ

## 1

ΛΟΓΟΙ Αμὼς οἳ ἐγένοντο ἐν Ἀκκαρεὶμ ἐν Θεκουὲ, οὓς εἶδεν ὑπὲρ Ἰερουσαλὴμ, ἐν ἡμέραις Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐν ἡμέραις Ἱεροβοὰμ τοῦ Ἰωὰς βασιλέως Ἰσραὴλ, πρὸ δύο ἐτῶν τοῦ σεισμοῦ. Καὶ εἶπε, Κύριος ἐκ Σιὼν ἐφθέγξατο, καὶ ἐξ Ἰερουσαλὴμ ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ· καὶ ἐπένθησαν αἱ νομαὶ τῶν ποιμένων, καὶ ἐξηράνθη ἡ κορυφὴ τοῦ Καρμήλου. Καὶ εἶπε Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Δαμασκοῦ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ’ ὧν ἔπριζον πριοσι σιδηροῖς τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας τῶν ἐν Γαλαάδ. Καὶ ἀποστελῶ πῦρ εἰς τὸν οἶκον Ἀζαὴλ, καὶ καταφάγεται τὰ θεμέλια υἱοῦ Ἄδερ. Καὶ συντρίψω μοχλοὺς Δαμασκοῦ, καὶ ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐκ πεδίου Ὢν, καὶ κατακόψω φυλὴν ἐξ ἀνδρῶν Χαῤῥὰν, καὶ αἰχμαλωτευθήσεται λαὸς Συρίας ἐπίκλητος, λέγει Κύριος. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Γάζης, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτοὺς, ἕνεκεν τοῦ αἰχμαλωτεῦσαι αὐτοὺς αἰχμαλωσίαν τοῦ Σαλωμὼν, τοῦ συγκλεῖσαι εἰς τὴν Ἰδουμαίαν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Γάζης, καὶ καταφάγεται τὰ θεμέλια

αὐτῆς. Καὶ ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐξ Ἀζώτου, καὶ ἐξαρθήσεται φυλὴ ἐξ Ἀσκάλωνος, καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ Ἀκκάρων, καὶ ἀπολοῦνται οἱ κατάλοιποι τῶν ἀλλοφύλων, λέγει Κύριος. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Τύρου, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὴν, ἀνθ’ ὧν συνέκλεισαν αἰχμαλωσίαν τοῦ Σαλωμὼν εἰς τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν διαθήκης ἀδελφῶν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Τύρου, καὶ καταφάγεται τὰ θεμέλια αὐτῆς. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις τῆς Ἰδουμαίας, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτοὺς, ἕνεκα τοῦ διῶξαι αὐτοὺς ἐν ῥομφαίᾳ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἐλυμήνατο μητέρα ἐπὶ γῆς, καὶ ἥρπασεν εἰς μαρτύριον φρίκην αὐτοῦ, καὶ τὸ ὅρμημα αὐτοῦ ἐφύλαξεν εἰς νῖκος. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς Θαμὰν, καὶ καταφάγεται θεμέλια τειχέων αὐτῆς. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ’ ὧν ἀνέσχιζον τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας τῶν Γαλααδιτῶν, ὅπως ἐνπλατύνωσι τὰ ὅρια ἑαυτῶν. Καὶ ἀνάψω πῦρ ἐπὶ τεὶχη Ῥαββὰθ, καὶ καταφάγεται θεμέλια αὐτῆς μετὰ κραυγῆς ἐν ἡμέρᾳ πολέμου, καὶ σεισθήσεται ἐν ἡμέραις συντελείας αὐτῆς, καὶ πορεύσονται οἱ βασιλεῖς αὐτῆς ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ ἱερεῖς αὐτῶν καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν ἐπιτοαυτὸ, λέγει Κύριος.

# 2

Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Μωὰβ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ’ ὧν κατέκαυσαν τὰ ὀστᾶ βασιλέως τῆς Ἰδουμαίας εἰς κονίαν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς

Μωὰβ, καὶ καταφάγεται τὰ θεμέλια τῶν πόλεων αὐτῆς, καὶ ἀποθανεῖται ἐν ἀδυναμίᾳ Μωὰβ μετὰ κραυγῆς καὶ μετὰ φωνῆς σάλπιγγος. Καὶ ἐξολοθρεύσω κριτὴν ἐξ αὐτῆς, καὶ πάντας [ἄρχοντας] αὐτῆς ἀποκτενῶ μετ᾽ αὐτοῦ, λέγει Κύριος. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσουμαι αὐτὸν, ἕνεκα τοῦ ἀπώσασθαι αὐτοὺς τὸν νόμον τοῦ Κυρίου, καὶ τὰ προστάγματα αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο, καὶ ἐπλάνησεν αὐτοὺς τὰ μάταια αὐτῶν ἃ ἐποίησαν, οἷς ἐξηκολούθησαν οἱ πατέρες αὐτῶν ὀπίσω αὐτῶν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ Ἰούδαν, καὶ καταφάγεται θεμέλια Ἰερουσαλήμ. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Ἰσραὴλ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ᾽ ὧν ἀπέδοντο ἀργυρίου δίκαιον, καὶ πένητα ἕνεκεν ὑποδημάτων, τὰ πατοῦντα ἐπὶ τὸν χοῦν τῆς γῆς, καὶ ἐκονδύλιζον εἰς κεφαλὰς πτωχῶν, καὶ ὁδὸν ταπεινῶν ἐξέκλιναν, καὶ υἱὸς καὶ πατὴρ αὐτοῦ εἰσεπορεύοντο πρὸς τὴν αὐτὴν παιδίσκην, ὅπως βεβηλῶσι τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ αὐτῶν. Καὶ τὰ ἱμάτια αὐτῶν δεσμεύοντες σχοινίοις, παραπετάσματα ἐποίουν ἐχόμενα τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ οἶνον ἐκ συκοφαντιῶν ἔπινον ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Θεοῦ αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ ἐξῆρα τὸν Ἀμορῥαῖον ἐκ προσώπου αὐτῶν, οὗ ἦν, καθὼς ὕψος κέδρου, τὸ ὕψος αὐτοῦ, καὶ ἰσχυρὸς ἦν ὡς δρῦς, καὶ ἐξήρανα τὸν καρπὸν αὐτοῦ ἐπάνωθεν, καὶ τὰς ῥίζας αὐτοῦ ὑποκάτωθεν. Καὶ ἐγὼ ἀνήγαγον ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ περιήγαγον ὑμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ τεσσαράκοντα ἔτη, τοῦ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν τῶν Ἀμορῥαίων. Καὶ ἔλαβον ἐκ τῶν υἱῶν ὑμῶν εἰς προφήτας, καὶ ἐκ τῶν νεανίσκων ὑμῶν εἰς ἁγιασμόν· μὴ οὐκ ἔστι ταῦτα υἱοὶ Ἰσραήλ; λέγει Κύριος. Καὶ ἐποτίζετε τοὺς ἡγιασμένους οἶνον, καὶ τοῖς προφήταις ἐνετέλλεσθε λέγοντες, οὐ μὴ προφητεύσητε. Διατοῦτο

ἰδοὺ ἐγὼ κυλίω ὑποκάτω ὑμῶν, ὃν τρόπον κυλίεται ἡ ἅμαξα ἡ γέμουσα καλάμης. Καὶ ἀπολεῖται φυγὴ ἐκ δρομέως, καὶ ὁ κραταιὸς οὐ μὴ κρατήσῃ τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, καὶ ὁ μαχητὴς οὐ μὴ σώσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ. Καὶ ὁ τοξότης οὐ μὴ ὑποστῇ καὶ ὁ ὀξὺς τοῖς ποσὶν αὐτοῦ οὐ μὴ διασωθῇ, καὶ ὁ ἱππεὺς οὐ μὴ σώσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ ὁ κραταιὸς οὐ μὴ εὑρήσει τὴν καρδίαν αὐτοῦ ἐν δυναστείαις, ὁ γυμνὸς διώξεται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει Κύριος.

# 3

Ἀκούσατε τὸν λόγον τοῦτον, ὃν ἐλάλησε Κύριος ἐφ’ ὑμᾶς, οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ κατὰ πάσης φυλῆς, ἧς ἀνήγαγον ἐκ γῆς Αἰγύπτου, λέγων, πλὴν ὑμᾶς ἔγνων ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν τῆς γῆς, διατοῦτο ἐκδικήσω ἐφ’ ὑμᾶς πάσας τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Εἰ πορεύσονται δύο ἐπιτοαυτὸ καθόλου, ἐὰν μὴ γνωρίσωσιν ἑαυτούς; Εἰ ἐρεύξεται λέων ἐκ τοῦ δρυμοῦ αὐτοῦ θήραν οὐκ ἔχων; εἰ δώσει σκύμνος φωνὴν αὐτοῦ ἐκ τῆς μάνδρας αὐτοῦ καθόλου, ἐὰν μὴ ἁρπάσῃ τί; Εἰ πεσεῖται ὄρνεον ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ ἰξευτοῦ; εἰ σχασθήσεται παγὶς ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ τοῦ συλλαβεῖν τί; Εἰ φωνήσει σάλπιγξ ἐν πόλει, καὶ λαὸς οὐ πτοηθήσεται; εἰ ἔσται κακία ἐν πόλει ἣν Κύριος οὐκ ἐποίησε; Διότι οὐ μὴ ποιήσῃ Κύριος ὁ Θεὸς πρᾶγμα ἐὰν μὴ ἀποκαλύψῃ παιδείαν πρὸς τοὺς δούλους αὐτοῦ τοὺς προφήτας. Λέων ἐρεύξεται, καὶ τίς οὐ φοβηθήσεται; Κύριος ὁ Θεὸς ἐλάλησε, καὶ τίς οὐ προφητεύσει; Ἀναγγείλατε χώραις ἐν Ἀσσυρίοις, καὶ ἐπὶ τὰς χώρας τῆς Αἰγύπτου, καὶ εἴπατε, συνάχθητε ἐπὶ τὸ ὄρος Σαμαρείας, καὶ ἴδετε θαυμαστὰ πολλὰ ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ καταδυναστείαν τὴν ἐν αὐτῇ. Καὶ οὐκ ἔγνω ἃ ἔσται ἐναντίον

αὐτῆς, λέγει Κύριος, οἱ θησαυρίζοντες ἀδικίαν καὶ ταλαιπωρίαν ἐν ταῖς χώραις αὐτῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς, Τύρος κυκλόθεν ἡ γῆ σου ἐρημωθήσεται, καὶ κατάξει ἐκ σοῦ ἰσχύν σου, καὶ διαρπαγήσονται αἱ χῶραί σου. Τάδε λέγει Κύριος, ὃν τρόπον ὅταν ἐκσπάσῃ ὁ ποιμὴν ἐκ στόματος τοῦ λέοντος δύο σκέλη ἢ λοβὸν ὠτίου, οὕτως ἐκσπασθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ οἱ κατοικοῦντες ἐν Σαμαρείᾳ κατέναντι τῆς φυλῆς, καὶ ἐν Δαμασκῷ. Ἱερεῖς ἀκούσατε, καὶ ἐπιμαρτύρασθε τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ. Διότι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὅταν ἐκδικῶ ἀσεβείας τοῦ Ἰσραὴλ ἐπ’ αὐτὸν, καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια Βαιθήλ· καὶ κατασκαφήσεται τὰ κέρατα τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ πεσοῦνται ἐπὶ τὴν γῆν· Συγχεῶ καὶ πατάξω τὸν οἶκον τὸν περίπτερον ἐπὶ τὸν οἶκον τὸν θερινὸν, καὶ ἀπολοῦνται οἶκοι ἐλεφάντινοι, καὶ προστεθήσονται ἕτεροι οἶκοι πολλοὶ, λέγει Κύριος.

# 4

Ἀκούσατε τὸν λόγον τοῦτον δαμάλεις τῆς Βασανίτιδος, αἱ ἐν τῷ ὄρει τῆς Σαμαρείας, αἱ καταδυναστεύουσαι πτωχοὺς, καὶ καταπατοῦσαι πένητας, αἱ λέγουσαι τοῖς κυρίοις αὐτῶν, ἐπίδοτε ἡμῖν ὅπως πίωμεν. Ομνύει Κύριος κατὰ τῶν ἁγίων αὐτοῦ, διότι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται ἐφ’ ὑμᾶς, καὶ λήψονται ὑμᾶς ἐν ὅπλοις, καὶ τοὺς μεθ’ ὑμῶν εἰς λέβητας ὑποκαιομένους ἐμβαλοῦσιν ἔμπυροι λοιμοὶ, καὶ ἐξενεχθήσεσθε γυμναὶ κατέναντι ἀλλήλων, καὶ ἀπορῥιφήσεσθε εἰς τὸ ὄρος τὸ Ῥομμὰν, λέγει Κύριος. Εἰσήλθατε εἰς Βαιθὴλ, καὶ ἠσεβήσατε, καὶ εἰς Γάλγαλα ἐπληθύνατε τοῦ ἀσεβῆσαι· καὶ ἠνέγκατε εἰς τοπρωῒ θυσίας ὑμῶν, εἰς τὴν τριημερίαν τὰ

ἐπιδέκατα ὑμῶν. Καὶ ἀνέγνωσαν ἔξω νόμον, καὶ ἐπεκαλέσαντο ὁμολογίας· ἀναγγείλατε ὅτι ταῦτα ἠγάπησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος. Καὶ ἐγὼ δώσω ὑμῖν γομφιασμὸν ὀδόντων ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, καὶ ἔνδειαν ἄρτων ἐν πᾶσι τοῖς τόποις ὑμῶν· καὶ οὐκ ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Καὶ ἐγὼ ἀνέσχον ἐξ ὑμῶν τὸν ὑετὸν πρὸ τριῶν μηνῶν τοῦ τρυγητοῦ, καὶ βρέξω ἐπὶ πόλιν μίαν, ἐπὶ δὲ πόλιν μίαν οὐ βρέξω· μερὶς μία βραχήσεται, καὶ μερὶς, ἐφ’ ἣν οὐ βρέξω, ξηρανθήσεται. Καὶ συναθροισθήσονται δύο καὶ τρεῖς πόλεις εἰς πόλιν μίαν τοῦ πιεῖν ὕδωρ, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσι· καὶ οὐκ ἐπεστράφητε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Ἐπάταξα ὑμᾶς ἐν πυρώσει, καὶ ἐν ἰκτέρῳ· ἐπληθύνατε κήπους ὑμῶν, ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ συκεῶνας ὑμῶν· καὶ ἐλαιῶνας ὑμῶν κατέφαγεν ἡ κάμπη· καὶ οὐδ’ ὡς ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Ἐξαπέστειλα εἰς ὑμᾶς θάνατον ἐν ὁδῷ Αἰγύπτου, καὶ ἀπέκτεινα ἐν ῥομφαίᾳ τοὺς νεανίσκους ὑμῶν, μετὰ αἰχμαλωσίας ἵππων σου, καὶ ἀνήγαγον ἐν πυρὶ τὰς παρεμβολὰς ἐν τῇ ὀργῇ ὑμῶν· καὶ οὐδ’ ὡς ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Κατέστρεψα ὑμᾶς, καθὼς κατέστρεψεν ὁ Θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορῥα, καὶ ἐγένεσθε ὡς δαλὸς ἐξέσπασμένος ἐκ πυρός· καὶ οὐδ’ ὡς ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Διατοῦτο οὕτως ποιήσω σοι Ἰσραήλ· πλὴν ὅτι οὕτως ποιήσω σοι, ἑτοιμάζου τοῦ ἐπικαλεῖσθαι τὸν Θεόν σου Ἰσραήλ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ στερεῶν βροντὴν, καὶ κτίζων πνεῦμα, καὶ ἀπαγγέλλων εἰς ἀνθρώπους τὸν χριστὸν αὐτοῦ, ποιῶν ὄρθρον καὶ ὁμίχλην, καὶ ἐπιβαίνων ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ τῆς γῆς· Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ.

# 5

Ἀκούσατε τὸν λόγον Κυρίου τοῦτον, ὃν ἐγὼ λαμβάνω ἐφ᾽ ὑμᾶς, θρῆνον. Οἶκος Ἰσραὴλ ἔπεσεν, οὐκέτι μὴ προσθήσει τοῦ ἀναστῆναι. Παρθένος τοῦ Ἰσραὴλ ἔσφαλεν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτοῦ, οὐκ ἔστιν ὁ ἀναστήσων αὐτήν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος Κύριος, ἡ πόλις ἐξ ἧς ἐξεπορεύοντο χίλιοι, ὑπολειφθήσονται ἑκατόν· καὶ ἐξ ἧς ἐξεπορεύοντο ἑκατὸν, ὑπολειφθήσονται δέκα τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ. Διότι τάδε λέγει Κύριος πρὸς τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, ἐκζητήσατέ με, καὶ ζήσεσθε. Καὶ μὴ ἐκζητεῖτε Βαιθὴλ, καὶ εἰς Γάλγαλα μὴ εἰσπορεύεσθε, καὶ ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου μὴ διαβαίνετε, ὅτι Γάλγαλα αἰχμαλωτευομένη αἰχμαλωτευθήσεται, καὶ Βαιθὴλ ἔσται ὡς οὐχ ὑπάρχουσα. Ἐκζητήσατε τὸν Κύριον, καὶ ζήσατε, ὅπως μὴ ἀναλάμψῃ ὡς πῦρ ὁ οἶκος Ἰωσὴφ, καὶ καταφάγῃ αὐτὸν, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ. Ὁ ποιῶν εἰς ὕψος κρίμα, καὶ δικαιοσύνην εἰς γῆν ἔθηκεν· ὁ ποιῶν πάντα καὶ μετασκευάζων, καὶ ἐκτρέπων εἰς τοπρωῒ σκιάν, καὶ ἡμέραν εἰς νύκτα συσκοτάζων, ὁ προσκαλούμενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, καὶ ἐκχέων αὐτὸ ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος ὄνομα αὐτῷ· ὁ διαιρῶν συντριμμὸν ἐπὶ ἰσχὺν, καὶ ταλαιπωρίαν ἐπὶ ὀχύρωμα ἐπάγων. Ἐμίσησαν ἐν πύλαις ἐλέγχοντα, καὶ λόγον ὅσιον ἐβδελύξαντο. Διατοῦτο ἀνθ᾽ ὧν κατεκονδύλιζον πτωχοὺς, καὶ δῶρα ἐκλεκτὰ ἐδέξασθε παρ᾽ αὐτῶν, οἴκους ξεστοὺς ᾠκοδομήσατε, καὶ οὐ μὴ κατοικήσητε ἐν αὐτοῖς· ἀμπελῶνας ἐπιθυμητοὺς ἐφυτεύσατε, καὶ οὐ μὴ πίητε τὸν οἶνον αὐτῶν. Ὅτι ἔγνων πολλὰς ἀσεβείας ὑμῶν, καὶ ἰσχυραὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν, καταπατοῦντες δίκαιον, λαμβάνοντες ἀλλάγματα, καὶ πένητας ἐν πύλαις ἐκκλίνοντες. Διατοῦτο ὁ συνιὼν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ σιωπήσεται, ὅτι καιρὸς πονηρῶν ἐστιν. Ἐκζητήσατε τὸ καλὸν, καὶ μὴ πονηρὸν, ὅπως ζήσητε, καὶ ἔσται οὕτως μεθ᾽ ὑμῶν Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὃν τρόπον εἴπατε, μεμισήκαμεν τὰ

πονηρὰ, καὶ ἠγαπήσαμεν τὰ καλά· καὶ ἀποκαταστήσατε ἐν πύλαις κρίμα, ὅπως ἐλεήσῃ Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ τοὺς περιλοίπους τοῦ Ἰωσήφ. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ἐν πάσαις ταῖς πλατείαις κοπετὸς, καὶ ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς ῥηθήσεται οὐαὶ, οὐαί· κληθήσεται γεωργὸς εἰς πένθος καὶ κοπετὸν, καὶ εἰς εἰδότας θρῆνον. Καὶ ἐν πάσαις ὁδοῖς κοπετὸς, διότι ἐλεύσομαι διὰ μέσου σου, εἶπε Κύριος. Οὐαὶ οἱ ἐπιθυμοῦντες τὴν ἡμέραν Κυρίου· ἱνατί αὕτη ὑμῖν ἡ ἡμέρα τοῦ Κυρίου; καὶ αὕτη ἐστὶ σκότος καὶ οὐ φῶς. Ὃν τρόπον ἐὰν φύγῃ ἄνθρωπος ἐκ προσώπου τοῦ λέοντος, καὶ ἐμπέσῃ αὐτῷ ἡ ἄρκος, καὶ εἰσπηδήσῃ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἀπερείσηται τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἐπὶ τὸν τοῖχον, καὶ δάκῃ αὐτὸν ὄφις. Οὐχὶ σκότος ἡ ἡμέρα τοῦ Κυρίου, καὶ οὐ φῶς, καὶ γνόφος οὐκ ἔχων φέγγος αὕτη; Μεμίσηκα, ἀπῶσμαι ἑορτὰς ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ ὀσφρανθῶ θυσίας ἐν ταῖς πανηγύρεσιν ὑμῶν. Διότι ἐὰν ἐνέγκητέ μοι ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας ὑμῶν, οὐ προσδέξομαι, καὶ σωτηρίους ἐπιφανείας ὑμῶν οὐκ ἐπιβλέψομαι. Μετάστησον ἀπ’ ἐμοῦ ἦχον ᾠδῶν σου, καὶ ψαλμὸν ὀργάνων σου οὐκ ἀκούσομαι. Καὶ κυλισθήσεται ὡς ὕδωρ κρίμα, καὶ δικαιοσύνη ὡς χειμάῤῥους ἄβατος. Μὴ σφάγια καὶ θυσίας προσηνέγκατέ μοι οἶκος Ἰσραὴλ τεσσαράκοντα ἔτη ἐν τῇ ἐρήμῳ; Καὶ ἀνελάβετε τὴν σκηνὴν τοῦ Μολὸχ, καὶ τὸ ἄστρον τοῦ θεοῦ ὑμῶν Ῥαιφὰν, τοὺς τύπους αὐτῶν οὓς ἐποιήσατε ἑαυτοῖς. Καὶ μετοικιῶ ὑμᾶς ἐπέκεινα Δαμασκοῦ, λέγει Κύριος· ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ.

# 6

Οὐαὶ τοῖς ἐξουθενοῦσι Σιὼν, καὶ τοῖς πεποιθόσιν ἐπὶ τὸ ὄρος

Σαμαρείας, ἀπετρύγησαν ἀρχὰς ἐθνῶν, καὶ εἰσῆλθον αὐτοί. οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ διάβητε πάντες καὶ ἴδετε, καὶ διέλθατε ἐκεῖθεν εἰς Ἐματραββὰ, καὶ κατάβητε ἐκεῖθεν εἰς Γὲθ ἀλλοφύλων, τὰς κρατίστας ἐκ πασῶν τῶν βασιλειῶν τούτων, εἰ πλείονα τὰ ὅρια αὐτῶν ἐστι τῶν ὑμετέρων ὁρίων. Οἱ ἐρχόμενοι εἰς ἡμέραν κακὴν, οἱ ἐγγίζοντες καὶ ἐφαπτόμενοι σαββάτων ψευδῶν, οἱ καθεύδοντες ἐπὶ κλινῶν ἐλεφαντίνων, καὶ κατασπαταλῶντες ἐπὶ ταῖς στρωμναῖς αὐτῶν, καὶ ἔσθοντες ἐρίφους ἐκ ποιμνίων, καὶ μοσχάρια ἐκ μέσου βουκολίων γαλαθηνὰ, οἱ ἐπικροτοῦντες πρὸς τὴν φωνὴν τῶν ὀργάνων, ὡς ἑστηκότα ἐλογίσαντο, καὶ οὐχ ὡς φεύγοντα, οἱ πίνοντες τὸν διυλισμένον οἶνον, καὶ τὰ πρῶτα μῦρα χριόμενοι, καὶ οὐκ ἔπασχον οὐδὲν ἐπὶ τῇ συντριβῇ Ἰωσήφ. Διὰ τοῦτο νῦν αἰχμάλωτοι ἔσονται ἀπ’ ἀρχῆς δυναστῶν, καὶ ἐξαρθήσεται χρεμετισμὸς ἵππων ἐξ Ἐφραίμ· Ὅτι ὤμοσε Κύριος καθ’ ἑαυτοῦ, διότι βδελύσσομαι ἐγὼ πᾶσαν τὴν ὕβριν Ἰακὼβ, καὶ τὰς χώρας αὐτοῦ μεμίσηκα, καὶ ἐξαρῶ πόλιν σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν. Καὶ ἔσται, ἐὰν ὑπολειφθῶσι δέκα ἄνδρες ἐν οἰκίᾳ μιᾷ, καὶ ἀποθανοῦνται, καὶ ὑπολειφθήσονται οἱ κατάλοιποι, καὶ λήψονται οἱ οἰκεῖοι αὐτῶν, καὶ παραβιῶνται τοῦ ἐξενέγκαι τὰ ὀστᾶ αὐτῶν ἐκ τοῦ οἴκου· καὶ ἐρεῖ τοῖς προεστηκόσι τῆς οἰκίας, εἰ ἔτι ὑπάρχει παρὰ σοί; Καὶ ἐρεῖ, οὐκ ἔτι· καὶ ἐρεῖ, σίγα ἕνεκα τοῦ μὴ ὀνομάσαι τὸ ὄνομα Κυρίου. Διότι ἰδοὺ Κύριος ἐντέλλεται, καὶ πατάξει τὸν οἶκον τὸν μέγαν θλάσμασι, καὶ τὸν οἶκον τὸν μικρὸν ῥάγμασιν. Εἰ διώξονται ἐν πέτραις ἵπποι; εἰ παρασιωπήσονται ἐν θηλείαις; ὅτι ἐξεστρέψατε εἰς θυμὸν κρίμα, καὶ καρπὸν δικαιοσύνης εἰς πικρίαν, οἱ εὐφραινόμενοι ἐπ’ οὐδενὶ λόγῳ, οἱ λέγοντες, οὐκ ἐν τῃ ἰσχύϊ ἡμῶν ἔσχομεν κέρατα; Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπεγερῶ ἐφ’ ὑμᾶς οἶκος Ἰσραὴλ ἔθνος, λέγει Κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐκθλίψουσιν

ὑμᾶς τοῦ μὴ εἰσελθεῖν εἰς Αἰμὰθ, καὶ ὡς τοῦ χειμάῤῥου τῶν δυσμῶν.

# 7

Οὕτως ἔδειξέ μοι Κύριος ὁ Θεός· καὶ ἰδοὺ ἐπιγονὴ ἀκρίδων ἐρχομένη ἐωθινὴ, καὶ ἰδοὺ βροῦχος εἷς, Γὼγ ὁ βασιλεύς. Καὶ ἔσται ἐὰν συντελέσῃ τοῦ καταφαγεῖν τὸν χόρτον τῆς γῆς, καὶ εἶπα, Κύριε Κύριε, ἵλεως γενοῦ· τίς ἀναστήσει τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. Μετανόησον Κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐκ ἔσται, λέγει Κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι Κύριος· καὶ ἰδοὺ ἐκάλεσε τὴν δίκην ἐν πυρὶ Κύριος, καὶ κατέφαγε τὴν ἄβυσσον τὴν πολλὴν, καὶ κατέφαγε τὴν μερίδα Κυρίου. Καὶ εἶπα, Κύριε κόπασον δὴ, τίς ἀναστήσει τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. Μετανόησον Κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐ μὴ γένηται, λέγει Κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι Κύριος· καὶ ἰδοὺ ἑστηκὼς ἐπὶ τείχους ἀδαμαντίνου, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἀδάμας. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, τί σὺ ὁρᾷς Ἀμώς; καὶ εἶπα, ἀδάμαντα· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐντάσσω ἀδάμαντα ἐν μέσῳ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, οὐκ ἔτι μὴ προσθῶ τοῦ παρελθεῖν αὐτόν. Καὶ ἀφανισθήσονται βωμοὶ τοῦ γέλωτος, καὶ αἱ τελεταὶ τοῦ Ἰσραὴλ ἐρημωθήσονται, καὶ ἀναστήσομαι ἐπὶ τὸν οἶκον Ἱεροβοὰμ ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἐξαπέστειλεν Ἀμασίας ὁ ἱερεὺς Βαιθὴλ πρὸς Ἱεροβοὰμ βασιλέα Ἰσραὴλ, λέγων, συστροφὰς ποιεῖται κατὰ σοῦ Ἀμὼς ἐν μέσῳ οἴκου Ἰσραὴλ, οὐ μὴ δύνηται ἡ γῆ ὑπενεγκεῖν πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ. Διότι τάδε λέγει Ἀμὼς, ἐν ῥομφαίᾳ τελευτήσει Ἱεροβοὰμ, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλωτος ἀχθήσεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν Ἀμασίας πρὸς Ἀμὼς ὁ ὁρῶν βάδιζε,

ἐκχῶρησον σὺ εἰς γῆν Ἰούδα, καὶ ἐκεῖ καταβίου, καὶ ἐκεῖ προφητεύσεις, εἰς δὲ Βαιθὴλ οὐκ ἔτι προσθήσεις τοῦ προφητεῦσαι, ὅτι ἁγίασμα βασιλέως ἐστὶ, καὶ οἶκος βασιλείας ἐστί. Καὶ ἀπεκρίθη Ἀμὼς καὶ εἶπε πρὸς Ἀμασίαν, οὐκ ἤμην προφήτης ἐγὼ, οὐδὲ υἱὸς προφήτου, ἀλλ’ ἢ αἰπόλος ἤμην, καὶ κνίζων συκάμινα· καὶ ἀνέλαβέ με Κύριος ἐκ τῶν προβάτων, καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, βάδιζε, καὶ προφήτευσον ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. Καὶ νῦν ἄκουε λόγον Κυρίου· σὺ λέγεις, μὴ προφήτευε ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ, καὶ οὐ μὴ ὀχλαγωγήσῃς ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακώβ. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἡ γυνή σου ἐν τῇ πόλει πορνεύσει, καὶ οἱ υἱοί σου καὶ αἱ θυγατέρες σου ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται, καὶ ἡ γῆ σου ἐν σχοινίῳ καταμετρηθήσεται, καὶ σὺ ἐν γῇ ἀκαθάρτῳ τελευτήσεις, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλωτος ἀχθήσεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ· οὕτως ἔδειξέ μοι Κύριος Κύριος.

# 8

Καὶ ἰδοὺ ἄγγος ἰξευτοῦ. Καὶ εἶπε, τί σὺ βλέπεις Ἀμώς; καὶ εἶπα, ἄγγος ἰξευτοῦ· καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἥκει τὸ πέρας ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραὴλ, οὐ προσθήσω ἔτι τοῦ παρελθεῖν αὐτόν. Καὶ ὀλολύξει τὰ φατνώματα τοῦ ναοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος Κύριος· πολὺς ὁ πεπτωκὼς ἐν παντὶ τόπῳ, ἐπιῤῥίψω σιωπήν. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα οἱ ἐκτρίβοντες εἰς τοπρωῒ πένητα, καὶ καταδυναστεύοντες πτωχοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, λέγοντες, πότε διελεύσεται ὁ μὴν, καὶ ἐμπολήσομεν, καὶ τὰ σάββατα, καὶ ἀνοίξομεν θησαυρὸν τοῦ ποιῆσαι μέτρον μικρὸν, καὶ τοῦ μεγαλῦναι στάθμιον, καὶ ποιῆσαι ζυγὸν ἄδικον, τοῦ κτᾶσθαι ἐν ἀργυρίῳ καὶ πτωχοὺς, καὶ πένητα

ἀντὶ ὑποδημάτων, καὶ ἀπὸ παντὸς γεννήματος ἐμπορευσόμεθα. Ὀμνύει Κύριος κατὰ τῆς ὑπερηφανίας Ἰακὼβ, εἰ ἐπιλησθήσεται εἰς νῖκος πάντα τὰ ἔργα ὑμῶν, Καὶ ἐπὶ τούτοις οὐ ταραχθήσεται ἡ γῆ, καὶ πενθήσει πᾶς ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ; καὶ ἀναβήσεται ὡς ποταμὸς συντέλεια, καὶ καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος Κύριος, δύσεται ὁ ἥλιος μεσημβρίας, καὶ συσκοτάσει ἐπὶ τῆς γῆς ἐν ἡμέρᾳ τὸ φῶς, καὶ μεταστρέψω τὰς ἑορτὰς ὑμῶν εἰς πένθος, καὶ πάσας τὰς ᾠδὰς ὑμῶν εἰς θρῆνον, καὶ ἀναβιβῶ ἐπὶ πᾶσαν ὀσφὺν σάκκον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν κεφαλὴν φαλάκρωμα· καὶ θήσομαι αὐτὸν ὡς πένθος ἀγαπητοῦ, καὶ τοὺς μετ᾽ αὐτοῦ ὡς ἡμέραν ὀδύνης. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ ἐξαποστελῶ λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, οὐ λιμὸν ἄρτων, οὐδὲ δίψαν ὕδατος, ἀλλὰ λιμὸν τοῦ ἀκοῦσαι τὸν λόγον Κυρίου. Καὶ σαλευθήσονται ὕδατα ἀπὸ τῆς θαλάσσης ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ Βορρᾶ ἕως ἀνατολῶν περιδραμοῦνται ζητοῦντες τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, καὶ οὐ μὴ εὕρωσιν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκλείψουσιν αἱ παρθένοι αἱ καλαὶ, καὶ οἱ νεανίσκοι ἐν δίψει, οἱ ὀμνύοντες κατὰ τοῦ ἱλασμοῦ Σαμαρείας, καὶ οἱ λέγοντες, ζῇ ὁ θεός σου Δὰν, καὶ ζῇ ὁ θεός σου Βηρσαβεέ· καὶ πεσοῦνται, καὶ οὐ μὴ ἀναστῶσιν ἔτι.

# 9

Εἶδον τὸν Κύριον ἐφεστῶτα ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ εἶπε, Πάταξον ἐπὶ τὸ ἱλαστήριον, καὶ σεισθήσεται τὰ πρόπυλα, καὶ διάκοψον εἰς κεφαλὰς πάντων· καὶ τοὺς καταλοίπους αὐτῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἀποκτενῶ, οὐ μὴ διαφύγῃ ἐξ αὐτῶν φεύγων, καὶ οὐ μὴ διασωθῇ ἐξ αὐτῶν ἀνασωζόμενος. Ἐὰν κατακρυβῶσιν εἰς ᾅδου,

ἐκεῖθεν ἡ χείρ μου ἀνασπάσει αὐτούς· καὶ ἐὰν ἀναβῶσιν εἰς τὸν οὐρανὸν, ἐκεῖθεν κατάξω αὐτούς. Ἐὰν ἐγκατακρυβῶσιν εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ Καρμήλου, ἐκεῖθεν ἐξερευνήσω, καὶ λήψομαι αὐτούς· καὶ ἐὰν καταδύσωσιν ἐξ ὀφθαλμῶν μου εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῷ δράκοντι, καὶ δήξεται αὐτούς. Καὶ ἐὰν πορευθῶσιν ἐν αἰχμαλωσίᾳ πρὸ προσώπου τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῇ ῥομφαίᾳ, καὶ ἀποκτενεῖ αὐτούς· καὶ στηριῶ τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπ’ αὐτοὺς εἰς κακὰ, καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά. Καὶ Κύριος Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ἐφαπτόμενος τῆς γῆς, καὶ σαλεύων αὐτὴν, καὶ πενθήσουσι πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν, καὶ ἀναβήσεται ὡς ποταμὸς συντέλεια αὐτῆς, καὶ καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου· Ὁ οἰκοδομῶν εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνάβασιν αὐτοῦ, καὶ τὴν ἐπαγγελίαν αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς θεμελιῶν, ὁ προσκαλούμενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, καὶ ἐκχέων αὐτὸ ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ. Οὐχ ὡς υἱοὶ Αἰθιόπων ὑμεῖς ἐστὲ ἐμοὶ, υἱοὶ Ἰσραὴλ; λέγει Κύριος· οὐ τὸν Ἰσραὴλ ἀνήγαγον ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ τοὺς ἀλλοφύλους ἐκ Καππαδοκίας, καὶ τοὺς Σύρους ἐκ βόθρου; Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τὴν βασιλείαν τῶν ἁμαρτωλῶν, καὶ ἐξαρῶ αὐτὴν ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς· πλὴν ὅτι οὐκ εἰς τέλος ἐξαρῶ τὸν οἶκον Ἰακὼβ, λέγει Κύριος. Διότι ἐγὼ ἐντέλλομαι, καὶ λικμήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, ὃν τρόπον λικμᾶται ἐν τῷ λικμῷ, καὶ οὐ μὴ πέσῃ σύντριμμα ἐπὶ τὴν γῆν. Ἐν ῥομφαίᾳ τελευτήσουσι πάντες ἁμαρτωλοὶ λαοῦ μου, οἱ λέγοντες, οὐ μὴ ἐγγίσῃ, οὐδὲ μὴ γένηται ἐφ’ ἡμᾶς τὰ κακά. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀναστήσω τὴν σκηνὴν Δαυὶδ τὴν πεπτωκυῖαν, καὶ ἀνοικοδομήσω τὰ πεπτωκότα αὐτῆς, καὶ τὰ κατεσκαμμένα αὐτῆς ἀναστήσω, καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτὴν καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος. Ὅπως

ἐκζητήσωσιν οἱ κατάλοιποι τῶν ἀνθρώπων καὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἐφ’ οὓς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτοὺς, λέγει Κύριος ὁ ποιῶν πάντα ταῦτα. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ καταλήψεται ὁ ἀμητὸς τὸν τρυγητὸν, καὶ περκάσει ἡ σταφυλὴ ἐν τῷ σπόρῳ, καὶ ἀποσταλάξει τὰ ὄρη γλυκασμὸν, καὶ πάντες οἱ βουνοὶ σύμφυτοι ἔσονται. Καὶ ἐπιστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ οἰκοδομήσουσι πόλεις τὰς ἠφανισμένας, καὶ κατοικήσουσι, καὶ φυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ πίονται τὸν οἶνον αὐτῶν, καὶ ποιήσουσι κήπους, καὶ φάγονται τὸν καρπὸν αὐτῶν· Καὶ καταφυτεύσω αὐτοὺς ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ ἐκσπασθῶσιν οὐκέτι ἀπὸ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα αὐτοῖς, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς παντοκράτωρ.

# ΗΣΑΪΑΣ

## 1

Ὅρασις ἣν εἶδεν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς, ἣν εἶδε κατὰ τῆς Ἰουδαίας καὶ κατὰ Ἰερουσαλὴμ, ἐν βασιλείᾳ Ὀζίου, καὶ Ἰωάθαμ, καὶ Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου οἳ ἐβασίλευσαν τῆς Ἰουδαίας. Ἄκουε οὐρανὲ, καὶ ἐνωτίζου γῆ, ὅτι Κύριος ἐλάλησεν, υἱοὺς ἐγέννησα καὶ ὕψωσα, αὐτοὶ δέ με ἠθέτησαν. Ἔγνω βοῦς τὸν κτησάμενον, καὶ ὄνος τὴν φάτνην τοῦ κυρίου αὐτοῦ· Ἰσραὴλ δέ με οὐκ ἔγνω, καὶ ὁ λαός με οὐ συνῆκεν. Οὐαὶ ἔθνος ἁμαρτωλὸν, λαὸς πλήρης ἁμαρτιῶν, σπέρμα πονηρὸν, υἱοὶ ἄνομοι· ἐγκατελίπατε τὸν Κύριον, καὶ παρωργίσατε τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Τί ἔτι πληγῆτε προστιθέντες ἀνομίαν; πᾶσα κεφαλὴ εἰς πόνον, καὶ πᾶσα καρδία εἰς λύπην· Ἀπὸ ποδῶν ἕως κεφαλῆς, οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ ὁλοκληρία, οὔτε τραῦμα, οὔτε μώλωψ, οὔτε πληγὴ φλεγμαίνουσα· οὐκ ἔστι μάλαγμα ἐπιθεῖναι, οὔτε ἔλαιον, οὔτε καταδέσμους. Ἡ γῆ ὑμῶν ἔρημος, αἱ πόλεις ὑμῶν πυρίκαυστοι· τὴν χώραν ὑμῶν ἐνώπιον ὑμῶν ἀλλότριοι κατεσθίουσιν αὐτὴν, καὶ ἠρήμωται κατεστραμμένη ὑπὸ λαῶν ἀλλοτρίων. Ἐγκαταλειφθήσεται ἡ θυγάτηρ Σιὼν, ὡς σκηνὴ, ἐν ἀμπελῶνι, καὶ ὡς ὀπωροφυλάκιον ἐν σικυηράτῳ, ὡς πόλις

πολιορκουμένη. Καὶ εἰ μὴ Κύριος σαβαὼθ ἐγκατέλιπεν ἡμῖν σπέρμα, ὡς Σόδομα ἂν ἐγενήθημεν, καὶ ὡς Γόμορῥα ἂν ὁμοίωθημεν. Ἀκούσατε λόγον Κυρίου, ἄρχοντες Σοδόμων· προσέχετε νόμον Θεοῦ, λαὸς Γομόρῥας. Τί μοι πλῆθος τῶν θυσιῶν ὑμῶν; λέγει Κύριος· πλήρης εἰμὶ ὁλοκαυτωμάτων κριῶν, καὶ στέαρ ἀρνῶν καὶ αἷμα ταύρων καὶ τράγων οὐ βούλομαι, οὐδ’ ἂν ἔρχησθε ὀφθῆναί μοι· τίς γὰρ ἐξεζήτησε ταῦτα ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; πατεῖν τὴν αὐλήν μου οὐ προσθήσεθε. Ἐὰν φέρητε σεμίδαλιν, μάταιον θυμίαμα, βδέλυγμά μοι ἐστι· τὰς νουμηνίας ὑμῶν, καὶ τὰ σάββατα, καὶ ἡμέραν μεγάλην οὐκ ἀνέχομαι· νηστείαν, καὶ ἀργίαν, καὶ τὰς νουμηνίας ὑμῶν, καὶ τὰς ἑορτὰς ὑμῶν μισεῖ ἡ ψυχή μου· ἐγενήθητέ μοι εἰς πλησμονὴν, οὐκέτι ἀνήσω τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Ὅταν ἐκτείνητε τὰς χεῖρας, ἀποστρέψω τοὺς ὀφθαλμούς μου ἀφ’ ὑμῶν· καὶ ἐὰν πληθύνητε τὴν δέησιν, οὐκ εἰσακούσομαι ὑμῶν· αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν αἵματος πλήρεις. Λούσασθε, καθαροὶ γένεσθε, ἀφέλετε τὰς πονηρίας ἀπὸ τῶν ψυχῶν ὑμῶν, ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν μου· παύσασθε ἀπὸ τῶν πονηριῶν ὑμῶν, μάθετε καλὸν ποιεῖν, ἐκζητήσατε κρίσιν, ῥύσασθε ἀδικούμενον, κρίνατε ὀρφανῷ, καὶ δικαιώσατε χήραν. Καὶ δεῦτε, διελεγχθῶμεν, λέγει Κύριος· καὶ ἐὰν ὦσιν αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν ὡς φοινικοῦν, ὡς χιόνα λευκανῶ· ἐὰν δὲ ὦσιν ὡς κόκκινον, ὡς ἔριον λευκανῶ. Καὶ ἐὰν θέλητε, καὶ εἰσακούσητέ μου, τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς φάγεσθε. Ἐὰν δὲ μὴ θέλητε, μηδὲ εἰσακούσητέ μου, μάχαιρα ὑμᾶς κατέδεται· τὸ γὰρ στόμα Κυρίου ἐλάλησε ταῦτα. Πῶς ἐγένετο πόρνη πόλις πιστὴ Σιὼν πλήρης κρίσεως; ἐν ᾗ δικαιοσύνη ἐκοιμήθη ἐν αὐτῇ, νῦν δὲ φονευταί. Τὸ ἀργύριον ὑμῶν ἀδόκιμον· οἱ κάπηλοί σου μίσγουσι τὸν οἶνον ὕδατι. Οἱ ἄρχοντές σου ἀπειθοῦσι, κοινωνοὶ κλεπτῶν, ἀγαπῶντες δῶρα, διώκοντες ἀνταπόδομα, ὀρφανοῖς οὐ κρίνοντες,

καὶ κρίσιν χηρῶν οὐ προσέχοντες. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ δεσπότης σαβαὼθ, οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες Ἰσραήλ· οὐ παύσεται γάρ μου ὁ θυμὸς ἐν τοῖς ὑπεναντίοις, καὶ κρίσιν ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου ποιήσω. Καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, καὶ πυρώσω εἰς καθαρόν, τοὺς δὲ ἀπειθοῦντας ἀπολέσω, καὶ ἀφελῶ πάντας ἀνόμους ἀπὸ σοῦ· Καὶ ἐπιστήσω τοὺς κριτάς σου ὡς τὸ πρότερον, καὶ τοὺς συμβούλους σου ὡς τὸ ἀπ’ ἀρχῆς· καὶ μετὰ ταῦτα κληθήσῃ πόλις δικαιοσύνης, μητρόπολις πιστὴ Σιών· μετὰ γὰρ κρίματος σωθήσεται ἡ αἰχμαλωσία αὐτῆς, καὶ μετὰ ἐλεημοσύνης. Καὶ συντριβήσονται οἱ ἄνομοι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οἱ ἐγκαταλιπόντες τὸν Κύριον συντελεσθήσονται. Διότι αἰσχυνθήσονται ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν ἃ αὐτοὶ ἠβούλοντο, καὶ ᾐσχύνθησαν ἐπὶ τοῖς κήποις, ἃ ἐπεθύμησαν. Ἔσονται γὰρ ὡς τερέβινθος ἀποβεβληκυῖα τὰ φύλλα, καὶ ὡς παράδεισος ὕδωρ μὴ ἔχων. Καὶ ἔσται ἡ ἰσχὺς αὐτῶν ὡς καλάμη στιππύου, καὶ αἱ ἐργασίαι αὐτῶν ὡς σπινθῆρες, καὶ κατακαυθήσονται οἱ ἄνομοι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων.

# 2

Ὁ λόγος ὁ γενόμενος πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς περὶ τῆς Ἰουδαίας, καὶ περὶ Ἰερουσαλήμ. Ὅτι ἔσται ἐν ταῖς ἐσχάταις ἡμέραις ἐμφανὲς τὸ ὄρος Κυρίου, καὶ ὁ οἶκος τοῦ Θεοῦ ἐπ’ ἄκρου τῶν ὀρέων, καὶ ὑψωθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν, καὶ ἥξουσιν ἐπ’ αὐτὸ πάντα τὰ ἔθνη. Καὶ πορεύσονται ἔθνη πολλὰ, καὶ ἐροῦσι, δεῦτε καὶ ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος Κυρίου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ Ἰακὼβ, καὶ ἀναγγελεῖ ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ· ἐκ

γὰρ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, καὶ λόγος Κυρίου ἐξ Ἰερουσαλήμ. Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον τῶν ἐθνῶν, καὶ ἐξελέγξει λαὸν πολύν· καὶ συγκόψουσι τὰς μαχαίρας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, καὶ τὰς ζιβύνας αὐτῶν εἰς δρέπανα· καὶ οὐ λήψεται ἔθνος ἐπ᾽ ἔθνος μάχαιραν, καὶ οὐ μὴ μάθωσιν ἔτι πολεμεῖν. Καὶ νῦν ὁ οἶκος Ἰακὼβ, δεῦτε πορευθῶμεν τῷ φωτὶ Κυρίου. Ἀνῆκεν γὰρ τὸν λαὸν αὐτοῦ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ· ὅτι ἐνεπλήσθη ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἡ χώρα αὐτῶν κληδονισμῶν, ὡς ἡ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ τέκνα πολλὰ ἀλλόφυλα ἐγενήθη αὐτοῖς. Ἐνεπλήσθη γὰρ ἡ χώρα αὐτῶν ἀργυρίου καὶ χρυσίου, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς τῶν θησαυρῶν αὐτῶν· καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ ἵππων, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς τῶν ἁρμάτων αὐτῶν. Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ βδελυγμάτων τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν οἷς ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι αὐτῶν. Καὶ ἔκυψεν ἄνθρωπος, καὶ ἐταπεινώθη ἀνήρ, καὶ οὐ μὴ ἀνήσω αὐτούς. Καὶ νῦν εἰσέλθετε εἰς τὰς πέτρας, καὶ κρύπτεσθε εἰς τὴν γῆν ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου Κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν. Οἱ γὰρ ὀφθαλμοὶ Κυρίου ὑψηλοί, ὁ δὲ ἄνθρωπος ταπεινός· καὶ ταπεινωθήσεται τὸ ὕψος τῶν ἀνθρώπων, καὶ ὑψωθήσεται Κύριος μόνος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Ἡμέρα γὰρ Κυρίου σαβαὼθ ἐπὶ πάντα ὑβριστὴν καὶ ὑπερήφανον καὶ ἐπὶ πάντα ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, καὶ ταπεινωθήσονται. Καὶ ἐπὶ πᾶσαν κέδρον τοῦ Λιβάνου τῶν ὑψηλῶν καὶ μετεώρων, καὶ ἐπὶ πᾶν δένδρον βαλάνου Βασάν, καὶ ἐπὶ πᾶν ὑψηλὸν ὄρος, καὶ ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλόν, καὶ ἐπὶ πάντα πύργον ὑψηλὸν, καὶ ἐπὶ πᾶν τεῖχος ὑψηλόν, καὶ ἐπὶ πᾶν πλοῖον θαλάσσης, καὶ ἐπὶ πᾶσαν θέαν πλοίων κάλλους. Καὶ ταπεινωθήσεται πᾶς ἄνθρωπος, καὶ πεσεῖται ὕβρις τῶν ἀνθρώπων, καὶ ὑψωθήσεται Κύριος μόνος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ τὰ χειροποίητα πάντα κατακρύψουσιν, εἰσενέγκαντες εἰς τὰ

σπήλαια, καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, καὶ εἰς τὰς τρώγλας τῆς γῆς, ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου Κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν. τῇ γὰρ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκβαλεῖ ἄνθρωπος τὰ βδελύγματα αὐτοῦ τὰ ἀργυρᾶ καὶ τὰ χρυσᾶ, ἃ ἐποίησαν προσκυνεῖν τοῖς ματαίοις καὶ ταῖς νυκτερίσι, τοῦ εἰσελθεῖν εἰς τὰς τρώγλας τῆς στερεᾶς πέτρας, καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου Κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν.

# 3

Ἰδοὺ δὴ ὁ δεσπότης Κύριος σαβαὼθ ἀφελεῖ ἀπὸ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας, ἰσχύοντα καὶ ἰσχύουσαν, ἰσχὺν ἄρτου καὶ ἰσχὺν ὕδατος, γίγαντα καὶ ἰσχύοντα, καὶ ἄνθρωπον πολεμιστὴν, καὶ δικαστὴν, καὶ προφήτην, καὶ στοχαστὴν, καὶ πρεσβύτερον, καὶ πεντηκόνταρχον, καὶ θαυμαστὸν σύμβουλον, καὶ σοφὸν ἀρχιτέκτονα, καὶ συνετὸν ἀκροατήν. Καὶ ἐπιστήσω νεανίσκους ἄρχοντας αὐτῶν, καὶ ἐμπαίκται κυριεύσουσιν αὐτῶν. Καὶ συμπεσεῖται ὁ λαὸς, ἄνθρωπος πρὸς ἄνθρωπον, καὶ ἄνθρωπος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· προσκόψει τὸ παιδίον πρὸς τὸν πρεσβύτην, ὁ ἄτιμος πρὸς τὸν ἔντιμον. Ὅτι ἐπιλήψεται ἄνθρωπος τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ἢ τοῦ οἰκείου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, λέγων, ἱμάτιον ἔχεις, ἀρχηγὸς γενοῦ ἡμῶν, καὶ τὸ βρῶμα τὸ ἐμὸν ὑπὸ σὲ ἔστω. Καὶ ἀποκριθεὶς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐρεῖ, οὐκ ἔσομαί σου ἀρχηγός· οὐ γάρ ἐστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ἄρτος, οὐδὲ ἱμάτιον· οὐκ ἔσομαι ἀρχηγὸς τοῦ λαοῦ τούτου. Ὅτι ἀνεῖται Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἡ Ἰουδαία συμπέπτωκε, καὶ αἱ γλῶσσαι αὐτῶν μετὰ ἀνομίας, τὰ

πρὸς Κύριον ἀπειθοῦντες. Διότι νῦν ἐταπεινώθη ἡ δόξα αὐτῶν, καὶ ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου αὐτῶν ἀντέστη αὐτοῖς· τὴν δὲ ἁμαρτίαν αὐτῶν ὡς Σοδόμων ἀνήγγειλαν καὶ ἐνεφάνισαν· οὐαὶ τῇ ψυχῇ αὐτῶν, διότι βεβούλευνται βουλὴν πονηρὰν, καθ’ ἑαυτῶν εἰπόντες, δήσωμεν τὸν δίκαιον, ὅτι δύσχρηστος ἡμῖν ἐστι· τοίνυν τὰ γεννήματα τῶν ἔργων αὐτῶν φάγονται. Οὐαὶ τῷ ἀνόμῳ, πονηρὰ κατὰ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ συμβήσεται αὐτῷ. Λαός μου, οἱ πράκτορες ὑμῶν καλαμῶνται ὑμᾶς, καὶ οἱ ἀπαιτοῦντες κυριεύουσιν ὑμῶν· λαός μου, οἱ μακαρίζοντες ὑμᾶς πλανῶσιν ὑμᾶς, καὶ τὸν τρίβον τῶν ποδῶν ὑμῶν ταράσσουσιν. Ἀλλὰ νῦν καταστήσεται εἰς κρίσιν Κύριος, καὶ στήσει εἰς κρίσιν τὸν λαὸν αὐτοῦ. Αὐτὸς Κύριος εἰς κρίσιν ἥξει μετὰ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ, καὶ μετὰ τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ· ὑμεῖς δὲ τί ἐνεπυρίσατε τὸν ἀμπελῶνά μου, καὶ ἡ ἁρπαγὴ τοῦ πτωχοῦ ἐν τοῖς οἴκοις ὑμῶν; Τί ὑμεῖς ἀδικεῖτε τὸν λαόν μου, καὶ τὸ πρόσωπον τῶν πτωχῶν καταισχύνετε; Τάδε λέγει Κύριος, ἀνθ’ ὧν ὑψώθησαν αἱ θυγατέρες Σιών, καὶ ἐπορεύθησαν ὑψηλῷ τραχήλῳ καὶ ἐν νεύμασιν ὀφθαλμῶν, καὶ τῇ πορείᾳ τῶν ποδῶν ἅμα σύρουσαι τοὺς χιτῶνας, καὶ τοῖς ποσὶν ἅμα παίζουσαι· Καὶ ταπεινώσει ὁ Θεὸς ἀρχούσας θυγατέρας Σιών· καὶ Κύριος ἀνακαλύψει τὸ σχῆμα αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἀφελεῖ Κύριος τὴν δόξαν τοῦ ἱματισμοῦ αὐτῶν, τὰ ἐμπλόκια, καὶ τοὺς κοσύμβους, καὶ τοὺς μηνίσκους, καὶ τὸ κάθεμα, καὶ τὸν κόσμον τοῦ προσώπου αὐτῶν, καὶ τὴν σύνθεσιν τοῦ κόσμου τῆς δόξης, καὶ τοὺς χλιδῶνας, καὶ τὰ ψέλλια, καὶ τὸ ἐμπλόκιον, καὶ τοὺς δακτυλίους, καὶ τὰ περιδέξια, καὶ τὰ ἐνώτια, καὶ τὰ περιπόρφυρα, καὶ τὰ μεσοπόρφυρα, καὶ τὰ ἐπιβλήματα τὰ κατὰ τὴν οἰκίαν, καὶ τὰ διαφανῆ Λακωνικά, καὶ τὰ βύσσινα, καὶ τὰ ὑακίνθινα, καὶ κόκκινα, καὶ τὴν βύσσον, σὺν χρυσῷ καὶ ὑακίνθῳ συγκαθυφασμένα, καὶ

θέριστρα κατάκλιτα. Καὶ ἔσται ἀντὶ ὀσμῆς ἡδείας, κονιορτός· καὶ ἀντὶ ζώνης, σχοινίῳ ζώσῃ· καὶ ἀντὶ τοῦ κόσμου τῆς κεφαλῆς τοῦ χρυσίου, φαλάκρωμα ἕξεις διὰ τὰ ἔργα σοῦ· καὶ ἀντὶ τοῦ χιτῶνος τοῦ μεσοπορφύρου, περιζώσῃ σάκκον. Καὶ ὁ υἱός σου ὁ κάλλιστος ὃν ἀγαπᾷς, μαχαίρᾳ πεσεῖται· καὶ οἱ ἰσχύοντες ὑμῶν, μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ ταπεινωθήσονται· Καὶ πενθήσουσιν αἱ θῆκαι τοῦ κόσμου ὑμῶν· καὶ καταλειφθήσῃ μόνη, καὶ εἰς τὴν γῆν ἐδαφισθήσῃ.

# 4

Καὶ ἐπιλήψονται ἑπτὰ γυναῖκες ἀνθρώπου ἑνὸς, λέγουσαι, τὸν ἄρτον ἡμῶν φαγόμεθα, καὶ τὰ ἱμάτια ἡμῶν περιβαλούμεθα, πλὴν τὸ ὄνομα τὸ σὸν κεκλήσθω ἐφ’ ἡμᾶς, ἄφελε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Τῇ δὲ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπιλάμψει ὁ Θεὸς ἐν βουλῇ μετὰ δόξης ἐπὶ τῆς γῆς, τοῦ ὑψῶσαι καὶ δοξάσαι τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται τὸ ὑπολειφθὲν ἐν Σιών, καὶ τὸ καταλειφθὲν ἐν Ἰερουσαλήμ, ἅγιοι κληθήσονται πάντες οἱ γραφέντες εἰς ζωὴν ἐν Ἰερουσαλὴμ. Ὅτι ἐκπλυνεῖ Κύριος τὸν ῥύπον τῶν υἱῶν καὶ τῶν θυγατέρων Σειών, καὶ τὸ αἷμα ἐκκαθαριεῖ ἐκ μέσου αὐτῶν, ἐν πνεύματι κρίσεως καὶ πνεύματι καύσεως. Καὶ ἥξει, καὶ ἔσται πᾶς τόπος τοῦ ὄρους Σιὼν καὶ πάντα τὰ περικύκλῳ αὐτῆς σκιάσει νεφέλη ἡμέρας, καὶ ὡς καπνοῦ καὶ φωτὸς πυρὸς καιομένου νυκτὸς, καὶ πάσῃ τῇ δόξῃ σκεπασθήσεται. Καὶ ἔσται εἰς σκιὰν ἀπὸ καύματος, καὶ ἐν σκέπῃ καὶ ἐν ἀποκρύφῳ ἀπὸ σκληρότητος καὶ ὑετοῦ.

# 5

Ἄσω δὴ τῷ ἠγαπημένῳ ᾆσμα τοῦ ἀγαπητοῦ μου τῷ ἀμπελῶνί μου. Ἀμπελὼν ἐγενήθη τῷ ἠγαπημένῳ, ἐν κέρατι, ἐν τόπῳ πίονι. Καὶ φραγμὸν περιέθηκα, καὶ ἐχαράκωσα, καὶ ἐφύτευσα ἄμπελον σωρὴκ, καὶ ᾠκοδόμησα πύργον ἐν μέσῳ αὐτοῦ, καὶ προλήνιον ὤρυξα ἐν αὐτῷ, καὶ ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι σταφυλὴν, καὶ ἐποίησεν ἀκάνθας. Καὶ νῦν οἱ ἐνοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα, κρίνατε ἐν ἐμοὶ καὶ ἀναμέσον τοῦ ἀμπελῶνός μου. Τί ποιήσω ἔτι τῷ ἀμπελῶνί μου, καὶ οὐκ ἐποίησα αὐτῷ; διότι ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι σταφυλὴν, ἐποίησε δὲ ἀκάνθας. Νῦν δὲ ἀναγγελῶ ὑμῖν τί ἐγὼ ποιήσω τῷ ἀμπελῶνί μου· ἀφελῶ τὸν φραγμὸν αὐτοῦ, καὶ ἔσται εἰς διαρπαγήν· καὶ καθελῶ τὸν τοῖχον αὐτοῦ, καὶ ἔσται εἰς καταπάτημα· Καὶ ἀνήσω τὸν ἀμπελῶνά μου, καὶ οὐ τμηθῇ, οὐδὲ μὴ σκαφῇ· καὶ ἀναβήσονται εἰς αὐτὸν, ὡς εἰς χέρσον ἄκανθαι· καὶ ταῖς νεφέλαις ἐντελοῦμαι, τοῦ μὴ βρέξαι εἰς αὐτὸν ὑετόν. Ὁ γὰρ ἀμπελὼν Κυρίου σαβαὼβ, οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα νεόφυτον ἠγαπημένον· ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι κρίσιν, ἐποίησε δὲ ἀνομίαν, καὶ οὐ δικαιοσύνην, ἀλλὰ κραυγήν. Οὐαὶ οἱ συνάπτοντες οἰκίαν πρὸς οἰκίαν, καὶ ἀγρὸν πρὸς ἀγρὸν ἐγγίζοντες, ἵνα τοῦ πλησίον ἀφέλωνταί τι· μὴ οἰκήσετε μόνοι ἐπὶ τῆς γῆς; Ἠκούσθη γὰρ εἰς τὰ ὦτα Κυρίου σαβαὼθ ταῦτα· ἐὰν γὰρ γένωνται οἰκίαι πολλαί, εἰς ἔρημον ἔσονται μεγάλαι καὶ καλαὶ, καὶ οὐκ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐταῖς. Οὖ γὰρ ἐργῶνται δέκα ζεύγη βοῶν, ποιήσει κεράμιον ἕν· καὶ ὁ σπείρων ἀρτάβας ἓξ, ποιήσει μέτρα τρία. Οὐαὶ οἱ ἐγειρόμενοι τοπρωΐ, καὶ τὸ σίκερα διώκοντες, οἱ μένοντες τὸ ὀψέ· ὁ γὰρ οἶνος αὐτοὺς συνκαύσει. Μετὰ γὰρ κιθάρας καὶ ψαλτηρίου καὶ τυμπάνων καὶ αὐλῶν τον οἶνον πίνουσι, τὰ δὲ ἔργα Κυρίου οὐκ ἐμβλέπουσι, καὶ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ οὐ κατανοοῦσι. Τοίνυν αἰχμάλωτος ὁ λαός μου ἐγενήθη, διὰ τὸ μὴ

εἰδέναι αὐτοὺς τὸν Κύριον· καὶ πλῆθος ἐγενήθη νεκρῶν, διὰ λιμὸν καὶ δίψος ὕδατος. Καὶ ἐπλάτυνεν ὁ ᾅδης τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ διήνοιξε τὸ στόμα αὐτοῦ, τοῦ μὴ διαλιπεῖν· καὶ καταβήσονται οἱ ἔνδοξοι καὶ οἱ μεγάλοι καὶ οἱ πλούσιοι καὶ οἱ λοιμοὶ αὐτῆς. Καὶ ταπεινωθήσεται ἄνθρωπος, καὶ ἀτιμασθήσεται ἀνήρ· καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ μετέωροι ταπεινωθήσονται. Καὶ ὑψωθήσεται Κύριος σαβαὼθ ἐν κρίματι, καὶ ὁ Θεὸς ὁ ἅγιος δοξασθήσεται ἐν δικαιοσύνῃ· Καὶ βοσκηθήσονται οἱ διηρπασμένοι ὡς ταῦροι, καὶ τὰς ἐρήμους τῶν ἀπειλημμένων ἄρνες φάγονται. Οὐαὶ οἱ ἐπισπώμενοι τὰς ἁμαρτίας ὡς σχοινίῳ μακρῷ, καὶ ὡς ζυγοῦ ἱμάντι δαμάλεως τὰς ἀνομίας· Οἱ λέγοντες, τὸ τάχος ἐγγισάτω ἃ ποιήσει, ἵνα ἴδωμεν· καὶ ἐλθάτω ἡ βουλὴ τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ, ἵνα γνῶμεν. Οὐαὶ οἱ λέγοντες τὸ πονηρὸν καλὸν, καὶ τὸ καλὸν πονηρὸν· οἱ τιθέντες τὸ σκότος φῶς, καὶ τὸ φῶς σκότος· οἱ τιθέντες τὸ πικρὸν γλυκὺ, καὶ τὸ γλυκὺ πικρόν. Οὐαὶ οἱ συνετοὶ ἐν ἑαυτοῖς, καὶ ἐνώπιον αὐτῶν ἐπιστήμονες. Οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες ὑμῶν, οἱ πίνοντες τὸν οἶνον, καὶ οἱ δυνάσται οἱ κεραννύντες τὸ σίκερα, οἱ δικαιοῦντες τὸν ἀσεβῆ ἕνεκεν δώρων, καὶ τὸ δίκαιον τοῦ δικαίου αἴροντες. Διατοῦτο ὃν τρόπον καυθήσεται καλάμη ὑπὸ ἄνθρακος πυρός, καὶ συγκαυθήσεται ὑπὸ φλογὸς ἀνειμένης, ἡ ῥίζα αὐτῶν ὡς χνοῦς ἔσται, καὶ τὸ ἄνθος αὐτῶν ὡς κονιορτὸς ἀναβήσεται· οὐ γὰρ ἠθέλησαν τὸν νόμον Κυρίου σαβαὼθ, ἀλλὰ τὸ λόγιον τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ παρώξυναν. Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ Κύριος σαβαὼθ ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐπέβαλε τὴν χεῖρα ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἐπάταξεν αὐτούς· καὶ παρωξύνθη τὰ ὄρη, καὶ ἐγενήθη τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν ὡς κοπρία ἐν μέσῳ ὁδοῦ· καὶ ἐν πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς αὐτοῦ, ἀλλὰ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Τοιγαροῦν ἀρεῖ σύσσημον ἐν τοῖς ἔθνεσι τοῖς μακρὰν, καὶ συριεῖ αὐτοὺς ἀπ’ ἄκρου τῆς γῆς· καὶ

ἰδοὺ ταχὺ κούφως ἔρχονται. Οὐ πεινάσουσιν, οὐδὲ κοπιάσουσιν, οὐδὲ νυστάξουσιν, οὐδὲ κοιμηθήσονται, οὐδὲ λύσουσι τὰς ζώνας αὐτῶν ἀπο τῆς ὀσφύος αὐτῶν, οὐδὲ μὴ ῥαγῶσιν οἱ ἱμάντες τῶν ὑποδημάτων αὐτῶν· Ὧν τὰ βέλη ὀξέα ἐστί, καὶ τὰ τόξα αὐτῶν ἐντεταμένα· οἱ πόδες τῶν ἵππων αὐτῶν ὡς στερεὰ πέτρα ἐλογίσθησαν· οἱ τροχοὶ τῶν ἁρμάτων αὐτῶν ὡς καταιγίς. Ὀργιῶσιν ὡς λέοντες, καὶ παρέστηκαν ὡς σκύμνοι λέοντος· καὶ ἐπιλήψεται, καὶ βοήσει ὡς θηρίον, καὶ ἐκβαλεῖ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ῥυόμενος αὐτούς. Καὶ βοήσει δι’ αὐτοὺς τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς φωνὴ θαλάσσης κυμαινούσης· καὶ ἐμβλέψονται εἰς τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ σκότος σκληρὸν ἐν τῇ ἀπορίᾳ αὐτῶν.

# 6

Καὶ ἐγένετο τοῦ ἐνιαυτοῦ οὗ ἀπέθανεν Ὀζίας ὁ βασιλεὺς, εἶδον τὸν Κύριον καθήμενον ἐπὶ θρόνου ὑψηλοῦ καὶ ἐπῃρμένου· καὶ πλήρης ὁ οἶκος τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ σεραφὶμ εἱστήκεισαν κύκλῳ αὐτοῦ, ἓξ πτέρυγες τῷ ἑνὶ, καὶ ἓξ πτέρυγες τῷ ἑνί· καὶ ταῖς μὲν δυσὶ, κατεκάλυπτον τὸ πρόσωπον· ταῖς δὲ δυσὶ κατεκάλυπτον τοὺς πόδας· καὶ ταῖς δυσὶν ἐπέταντο. Καὶ ἐκέκραγεν ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, καὶ ἔλεγον, ἅγιος ἅγιος ἅγιος Κύριος σαβαὼθ, πλήρης πᾶσα ἡ γῆ τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ ἐπῄρθη τὸ ὑπέρθυρον ἀπὸ τῆς φωνῆς ἧς ἐκέκραγον, καὶ ὁ οἶκος ἐνεπλήσθη καπνοῦ. Καὶ εἶπον, ὢ τάλας ἐγώ, ὅτι κατανένυγμαι, ὅτι ἄνθρωπος ὢν, καὶ ἀκάθαρτα χείλη ἔχων, ἐν μέσῳ λαοῦ ἀκάθαρτα χείλη ἔχοντος ἐγὼ οἰκῶ, καὶ τὸν βασιλέα Κύριον σαβαὼθ εἶδον τοῖς ὀφθαλμοῖς μου. Καὶ ἀπεστάλη πρὸς μὲ ἓν τῶν σεραφὶμ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ εἶχεν ἄνθρακα,

ὃν τῇ λαβίδι ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἥψατο τοῦ στόματός μου, καὶ εἶπεν, ἰδοὺ ἥψατο τοῦτο τῶν χειλέων σου, καὶ ἀφελεῖ τὰς ἀνομίας σου, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου περικαθαριεῖ. Καὶ ἤκουσα τῆς φωνῆς Κυρίου λέγοντος, τίνα ἀποστείλω, καὶ τίς πορεύσεται πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον; καὶ εἶπα, ἰδοὺ ἐγώ εἰμι· ἀπόστειλόν με. Καὶ εἶπε, πορεύθητι, καὶ εἰπὸν τῷ λαῷ τούτῳ, ἀκοῇ ἀκούσετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε, καὶ βλέποντες βλέψετε, καὶ οὐ μὴ ἴδητε. Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ τοῖς ὠσὶν αὐτῶν βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἐκάμμυσαν· μήποτε ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶν ἀκούσωσι, καὶ τῇ καρδίᾳ συνῶσι καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσομαι αὐτούς. Καὶ εἶπα, ἕως πότε Κύριε; καὶ εἶπεν, ἕως ἂν ἐρημωθῶσι πόλεις παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι, καὶ οἶκοι παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώπους, καὶ ἡ γῆ καταλειφθήσεται ἔρημος. Καὶ μετὰ ταῦτα μακρυνεῖ ὁ Θεὸς τοὺς ἀνθρώπους, καὶ πληθυνθήσονται οἱ ἐγκαταλειφθέντες ἐπὶ τῆς γῆς· καὶ ἔτι ἐπ’ αὐτῆς ἐστι τὸ ἐπιδέκατον, καὶ πάλιν ἔσται εἰς προνομὴν ὡς τερέβινθος, καὶ ὡς βάλανος ὅταν ἐκπέσῃ ἐκ τῆς θήκης αὐτῆς.

# 7

Καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἄχαζ τοῦ Ἰωάθαμ τοῦ υἱοῦ Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, ἀνέβη Ῥασὶν βασιλεὺς Ἀραμ, καὶ Φακεὲ υἱὸς Ῥομελίου βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ πολεμῆσαι αὐτὴν, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν πολιορκῆσαι αὐτήν. Καὶ ἀνηγγέλη εἰς τὸν οἶκον Δαυὶδ, λέγων, συνεφώνησεν Ἀρὰμ πρὸς τὸν Ἐφραίμ· καὶ ἐξέστη ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἡ ψυχὴ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ὃν τρόπον ἐν δρυμῷ ξύλον ὑπὸ πνεύματος σαλευθῇ· Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς Ἡσαΐαν,

ἔξελθε εἰς συνάντησιν Ἄχαζ σὺ, καὶ ὁ καταλειφθεὶς Ἰασοὺβ ὁ υἱός σου, πρὸς τὴν κολυμβήθραν τῆς ἄνω ὁδοῦ ἀγροῦ τοῦ κναφέως. Καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, φύλαξαι τοῦ ἡσυχάσαι, καὶ μὴ φοβοῦ, μηδὲ ἡ ψυχή σου ἀσθενείτω ἀπὸ τῶν δύο ξύλων τῶν δαλῶν τῶν καπνιζομένων τούτων· ὅταν γὰρ ὀργὴ τοῦ θυμοῦ μου γένηται, πάλιν ἰάσομαι. Καὶ ὁ υἱὸς τοῦ Ἀρὰμ, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ Ῥομελίου, ὅτι ἐβουλεύσαντο βουλὴν πονηράν· Ἀναβησόμεθα εἰς τὴν Ἰουδαίαν, καὶ συλλαλήσαντες αὐτοῖς, ἀποστρέψομεν αὐτοὺς πρὸς ἡμᾶς, καὶ βασιλεύσομεν αὐτῆς τὸν υἱὸν Ταβεήλ· Τάδε λέγει Κύριος σαβαὼθ, οὐ μὴ μείνῃ ἡ βουλὴ αὕτη, οὐδὲ ἔσται, ἀλλ’ ἡ κεφαλὴ Ἀρὰμ, Δαμασκὸς, καὶ ἡ κεφαλὴ Δαμασκοῦ, Ῥασίμ· ἀλλ’ ἔτι ἐξήκοντα καὶ πέντε ἐτῶν ἐκλείψει ἡ βασιλεία Ἐφραίμ ἀπὸ λαοῦ, καὶ ἡ κεφαλὴ Ἐφραὶμ Σομόρων, καὶ ἡ κεφαλὴ Σομορων, υἱὸς τοῦ Ῥομελίου, καὶ ἐὰν μὴ πιστεύσητε, οὐδὲ μὴ συνῆτε. Καὶ προσέθετο Κύριος λαλῆσαι τῷ Ἄχαζ, λέγων, αἴτησαι σεαυτῷ σημεῖον παρὰ Κυρίου Θεοῦ σου εἰς βάθος, ἢ εἰς ὕψος. Καὶ εἶπεν Ἄχαζ, οὐ μὴ αἰτήσω, οὐδὲ μὴ πειράσω Κύριον. Καὶ εἶπεν, ἀκούσατε δὴ οἶκος Δαυίδ· μὴ μικρὸν ὑμῖν ἀγῶνα παρέχειν ἀνθρώποις, καὶ πῶς Κυρίῳ παρέχετε ἀγῶνα; Διατοῦτο δώσει Κύριος αὐτὸς ὑμῖν σημεῖον· ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ λήψεται, καὶ τέξεται υἱὸν, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἐμμανουήλ. Βούτυρον καὶ μέλι φάγεται πρινὴ γνῶναι αὐτὸν ἢ προελέσθαι πονηρὰ, ἐκλέξασθαι τὸ ἀγαθόν· Διότι πρινὴ γνῶναι τὸ παιδίον ἀγαθὸν ἢ κακὸν, ἀπειθεῖ πονηρίᾳ, ἐκλέξασθαι τὸ ἀγαθόν· καὶ καταλειφθήσεται ἡ γῆ ἣν σὺ φοβῇ, ἀπὸ προσώπου τῶν δύο βασιλέων. Ἀλλὰ ἐπάξει ὁ Θεὸς ἐπὶ σὲ καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου ἡμέρας, αἳ οὔπω ἤκασιν ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἀφεῖλεν Ἐφραὶμ ἀπὸ Ἰούδα τὸν βασιλέα τῶν Ἀσσυρίων. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ συριεῖ Κύριος μυίαις, ὃ κυριεύσει μέρος

ποταμοῦ Αἰγύπτου, καὶ τῇ μελίσσῃ, ἥ ἐστιν ἐν χώρᾳ Ἀσσυρίων· Καὶ ἐλεύσονται πάντες ἐν ταῖς φάραγξι τῆς χώρας, καὶ ἐν ταῖς τρώγλαις τῶν πετρῶν, καὶ εἰς τὰ σπήλαια, καὶ εἰς πᾶσαν ῥαγάδα. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ξυρήσει Κύριος ἐν τῷ ξυρῷ τῷ μεμισθωμένῳ πέραν τοῦ ποταμοῦ βασιλέως Ἀσσυρίων τὴν κεφαλὴν, καὶ τὰς τρίχας τῶν ποδῶν, καὶ τὸν πώγωνα ἀφελεῖ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θρέψει ἄνθρωπος δάμαλιν βοῶν, καὶ δύο πρόβατα· Καὶ ἔσται ἀπὸ τοῦ πλεῖστον πιεῖν γάλα, βούτυρον καὶ μέλι φάγεται πᾶς ὁ καταλειφθεὶς ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, πᾶς τόπος οὗ ἐὰν ὦσι χίλιαι ἄμπελοι χιλίων σίκλων, εἰς χέρσον ἔσονται, καὶ εἰς ἄκανθαν. Μετὰ βέλους καὶ τοξεύματος εἰσελεύσονται ἐκεῖ· ὅτι χέρσος καὶ ἄκανθα ἔσται πᾶσα ἡ γῆ, καὶ πᾶν ὄρος ἠροτριωμένον ἀροτριωθήσεται· οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐκεῖ φόβος· ἔσται γὰρ ἀπὸ τῆς χέρσου καὶ ἀκάνθης εἰς βόσκημα προβάτου, καὶ καταπάτημα βοός.

# 8

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, λάβε σεαυτῷ τόμον καινοῦ μεγαλοῦ, καὶ γράψον εἰς αὐτὸν γραφίδι ἀνθρώπου, τοῦ ὀξέως προνομὴν ποιῆσαι σκύλων· Πάρεστι γάρ· καὶ μάρτυράς μοι ποίησον πιστοὺς ἀνθρώπους, τὸν Οὐρίαν καὶ Ζαχαρίαν υἱὸν Βαραχίου. Καὶ προσῆλθον πρὸς τὴν προφῆτιν, καὶ ἐν γαστρὶ ἔλαβε, καὶ ἔτεκεν υἱόν· καὶ εἶπε Κύριός μοι, κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ταχέως σκύλευσον, ὀξέως προνόμευσον· Διότι πρινὴ γνῶναι τὸ παιδίον καλεῖν πατέρα ἢ μητέρα, λήψεται δύναμιν Δαμασκοῦ, καὶ τὰ σκῦλα Σαμαρείας ἔναντι βασιλέως Ἀσσυρίων. Καὶ προσέθετο Κύριος

λαλῆσαί μοι ἔτι· Διὰ τὸ μὴ βούλεσθαι τὸν λαὸν τοῦτον τὸ ὕδωρ τοῦ Σιλωὰμ τὸ πορευόμενον ἡσυχῇ, ἀλλὰ βούλεσθαι ἔχειν τὸν Ῥασσὶν καὶ τὸν υἱὸν Ῥομελίου βασιλέα ἐφ’ ὑμῶν, διατοῦτο ἰδοὺ Κύριος ἀνάγει ἐφ’ ὑμᾶς τὸ ὕδωρ τοῦ ποταμοῦ, τὸ ἰσχυρὸν καὶ τὸ πολὺ, τὸν βασιλέα τῶν Ἀσσυρίων, καὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ· καὶ ἀναβήσεται ἐπὶ πᾶσαν φάραγγα ὑμῶν, καὶ περιπατήσει ἐπὶ πᾶν τεῖχος ὑμῶν, καὶ ἀφελεῖ ἀπὸ τῆς Ιουδαίας ἄνθρωπον, ὃς δυνήσεται κεφαλὴν ἆραι, ἢ δυνατὸν συντελέσασθαί τι· καὶ ἔσται ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ὥστε πληρῶσαι τὸ πλάτος τῆς χώρας σου, μεθ’ ἡμῶν ὁ Θεός. Γνῶτε ἔθνη καὶ ἡττᾶσθε, ἐπακούσατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· ἰσχυκότες ἡττᾶσθε· ἐὰν γὰρ πάλιν ἰσχύσητε, πάλιν ἡττηθήσεσθε. Καὶ ἢν ἂν βουλεύσησθε βουλὴν, διασκεδάσει Κύριος· καὶ λόγον ὃν ἐὰν λαλήσητε, οὐ μὴ ἐμμείνῃ ἐν ὑμῖν, ὅτι μεθ’ ἡμῶν ὁ Θεός. Οὕτω λέγει Κύριος, Τῇ ἰσχυρᾷ χειρὶ ἀπειθοῦσι τῇ πορείᾳ τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ τούτου, λέγοντες, μήποτε εἴπωσι, σκληρόν· πᾶν γὰρ ὃ ἐὰν εἴπῃ ὁ λαὸς οὗτος, σκληρόν ἐστι· τὸν δὲ φόβον αὐτοῦ οὐ μὴ φοβηθῆτε οὐδὲ μὴ ταραχθῆτε. Κύριον αὐτὸν ἁγιάσατε, καὶ αὐτὸς ἔσται σου φόβος. κᾷν ἐπ’ αὐτῷ πεποιθὼς ᾖς, ἔσται σοι εἰς ἁγίασμα, καὶ οὐχ ὡς λίθου προσκόμματι συναντήσεσθε, οὐδὲ ὡς πέτρας πτώματι· οἱ δὲ οἶκοι Ἰακὼβ ἐν παγίδι, καὶ ἐν κοιλάσματι ἐγκαθήμενοι ἐν Ἰερουσαλήμ. Διατοῦτο ἀδυνατήσουσιν ἐν αὐτοῖς πολλοὶ, καὶ πεσοῦνται καὶ συντριβήσονται, καὶ ἐγγιοῦσι, καὶ ἁλώσονται ἄνθρωποι ἐν ἀσφαλείᾳ. Τότε φανεροὶ ἔσονται οἱ σφραγιζόμενοι τὸν νόμον τοῦ μὴ μαθεῖν. Καὶ ἐρεῖ, μενῶ τὸν Θεὸν τὸν ἀποστρέψαντα τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ οἴκου Ἰακὼβ, καὶ πεποιθὼς ἔσομαι ἐπ’ αὐτῷ. Ἰδοὺ ἐγὼ καὶ τὰ παιδία ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός· καὶ ἔσται σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ παρὰ Κυρίου σαβαὼθ, ὃς κατοικεῖ ἐν τῷ ὄρει Σιών. Καὶ ἐὰν εἴπωσι πρὸς

ὑμᾶς, ζητήσατε τοὺς ἐγγαστριμύθους, καὶ τοὺς ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας, τοὺς κενολογοῦντας, οἳ ἐκ τῆς κοιλίας φωνοῦσιν· οὐκ ἔθνος πρὸς Θεὸν αὐτοῦ ἐκζητήσουσι; τί ἐκζητοῦσι περὶ τῶν ζώντων τοὺς νεκρούς; Νόμον γὰρ εἰς βοήθειαν ἔδωκεν, ἵνα εἴπωσιν οὐχ ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο, περὶ οὗ οὐκ ἔστι δῶρα δοῦναι περὶ αὐτοῦ. Καὶ ἥξει ἐφ’ ὑμᾶς σκληρὰ λιμὸς, καὶ ἔσται ὡς ἂν πεινάσητε, λυπηθήσεσθε. καὶ κακῶς ἐρεῖτε τὸν ἄρχοντα καὶ τὰ πάτρια· καὶ ἀναβλέψονται εἰς τὸν οὐρανὸν ἄνω, καὶ εἰς τὴν γῆν κάτω ἐμβλέψονται· καὶ ἰδοὺ ἀπορία στενὴ, καὶ σκότος, θλίψις, καὶ στενοχωρία, καὶ σκότος ὥστε μὴ βλέπειν· καὶ οὐκ ἀπορηθήσεται ὁ ἐν στενοχωρίᾳ ὢν ἕως καιροῦ. Τοῦτο πρῶτον πίε· ταχὺ ποίει χώρα Ζαβυλὼν, ἡ γῆ Νεφθαλεὶμ, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ τὴν παραλίαν, καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου Γαλιλαία τῶν ἐθνῶν.

# 9

Ὁ λαὸς ὁ πορευόμενος ἐν σκότει, ἴδετε φῶς μέγα· οἱ κατοικοῦντες ἐν χώρᾳ σκιᾷ θανάτου, φῶς λάμψει ἐφ’ ὑμᾶς. Τὸ πλεῖστον τοῦ λαοῦ, ὃ κατήγαγες ἐν εὐφροσύνῃ σου· καὶ εὐφρανθήσονται ἐνώπιόν σου, ὡς οἱ εὐφραινόμενοι ἐν ἀμήτῳ, καὶ ὃν τρόπον οἱ διαιρούμενοι σκῦλα. Διότι ἀφῄρηται ὁ ζυγὸς ὁ ἐπ’ αὐτῶν κείμενος, καὶ ἡ ῥάβδος ἡ ἐπὶ τοῦ τραχήλου αὐτῶν· τὴν γὰρ ῥάβδον τῶν ἀπαιτούντων διεσκέδασεν, ὡς τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐπὶ Μαδιάμ. Ὅτι πᾶσαν στολὴν ἐπισυνήγμένην δόλῳ, καὶ ἱμάτιον μετὰ καταλλαγῆς ἀποτίσουσι· καὶ θελήσουσιν, εἰ ἐγένοντο πυρίκαυστοι. Ὅτι παιδίον ἐγεννήθη ἡμῖν, υἱὸς καὶ ἐδόθη ἡμῖν, οὗ ἡ ἀρχὴ ἐγενήθη ἐπὶ τοῦ ὤμου αὐτοῦ, καὶ καλεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Μεγάλης βουλῆς

ἄγγελος· ἄξω γὰρ εἰρήνην ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ ὑγίειαν αὐτῷ. Μεγάλη ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, καὶ τῆς εἰρήνης αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ὅριον· ἐπὶ τὸν θρόνον Δαυεὶδ, καὶ τὴν βασιλείαν αὐτοῦ, κατορθῶσαι αὐτὴν, καὶ ἀντιλαβέσθαι ἐν κρίματι καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν αἰῶνα· ὁ ζῆλος Κυρίου σαβαὼθ ποιήσει ταῦτα. Θάνατον ἀπέστειλε Κύριος ἐπὶ Ἰακώβ, καὶ ἦλθεν ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ γνώσονται πᾶς ὁ λαὸς τοῦ Ἐφραὶμ, καὶ οἱ καθήμενοι ἐν Σαμαρείᾳ, ἐφ’ ὕβρει καὶ ὑψηλῇ καρδίᾳ λέγοντες, πλίνθοι πεπτώκασιν, ἀλλὰ δεῦτε λαξεύσωμεν λίθους, καὶ κόψωμεν συκαμίνους καὶ κέδρους, καὶ οἰκοδομήσωμεν ἑαυτοῖς πύργον. Καὶ ῥάξει ὁ Θεὸς τοὺς ἐπανισταμένους ἐπὶ ὄρος Σιὼν ἐπὶ αὐτὸν, καὶ τοὺς ἐχθροὺς διασκεδάσει· Συρίαν ἀφ’ ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ τοὺς Ἕλληνας ἀφ’ ἡλίου δυσμῶν, τοὺς κατεσθίοντας τὸν Ἰσραὴλ ὅλῳ τῷ στόματι· ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, ἀλλ’ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ ὁ λαὸς οὐκ ἀπεστράφη, ἕως ἐπλήγη, καὶ τὸν κύριον οὐκ ἐζήτησαν. Καὶ ἀφεῖλε Κύριος ἀπὸ Ἰσραὴλ κεφαλὴν καὶ οὐρὰν, μέγαν καὶ μικρὸν, ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, πρεσβύτην, καὶ τοὺς τὰ πρόσωπα θαυμάζοντας, αὕτη ἡ ἀρχή· καὶ προφήτην διδάσκοντα ἄνομα, οὗτος ἡ οὐρά. Καὶ ἔσονται οἱ μακαρίζοντες τὸν λαὸν τοῦτον πλανῶντες, καὶ πλανῶσιν, ὅπως καταπίνωσιν αὐτούς. Διατοῦτο ἐπὶ τοὺς νεανίσκους αὐτῶν οὐκ εὐφρανθήσεται ὁ Κύριος, καὶ τοὺς ὀρφανοὺς αὐτῶν καὶ τὰς χήρας αὐτῶν οὐκ ἐλεήσει· ὅτι πάντε ἄνομοι καὶ πονηροί, καὶ πᾶν στόμα λαλεῖ ἄδικα· ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμός, ἀλλ’ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ καυθήσεται ὡς πῦρ ἡ ἀνομία, καὶ ὡς ἄγρωστις ξηρὰ βρωθήσεται ὑπὸ πυρός· καὶ καυθήσεται ἐν τοῖς δάσεσι τοῦ δρυμοῦ, καὶ συγκαταφάγεται τὰ κύκλῳ τῶν βουνῶν πάντα. Διὰ θυμὸν ὀργῆς Κυρίου συγκέκαυται ἡ γῆ ὅλη· καὶ ἔσται ὁ λαὸς ὡς κατακεκαυμένος ὑπὸ πυρὸς·

ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ οὐκ ἐλεήσει. Ἀλλὰ ἐκκλινεῖ εἰς τὰ δεξιά, ὅτι πεινάσει, καὶ φάγεται ἐκ τῶν ἀριστερῶν, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῇ ἄνθρωπος ἔσθων τὰς σάρκας τοῦ βραχίονος αὐτοῦ. Φάγεται γὰρ Μανασσῆς τοῦ Ἐφραὶμ, καὶ Ἐφραὶμ τοῦ Μανασσῆ, ὅτι ἅμα πολιορκήσουσι τὸν Ἰούδαν. ἐπὶ τούτοις πᾶσιν οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμός, ἀλλ’ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή.

# 10

Οὐαὶ τοῖς γράφουσι πονηρίαν, γράφοντες γὰρ, πονηρίαν γράφουσιν· Ἐκκλίνοντες κρίσιν πτωχῶν, ἁρπάζοντες κρίμα πενήτων τοῦ λαοῦ μου, ὥστε εἶναι αὐτοῖς χήραν εἰς διαρπαγὴν, καὶ ὀρφανὸν εἰς προνομήν. Καὶ τί ποιήσουσιν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς ἐπισκοπῆς; ἡ γὰρ θλίψις ὑμῖν πόῤῥωθεν ἥξει· καὶ πρὸς τίνα καταφεύξεσθε τοῦ βοηθηθῆναι; καὶ ποῦ καταλείψετε τὴν δόξαν ὑμῶν, τοῦ μὴ ἐμπεσεῖν εἰς ἀπαγωγήν; Ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ἡ ὀργή, ἀλλ’ ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Οὐαὶ Ἀσσυρίοις, ἡ ῥάβδος τοῦ θυμοῦ μου, καὶ ὀργή ἐστιν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Τὴν ὀργήν μου εἰς ἔθνος ἄνομον ἀποστελῶ, καὶ τῷ ἐμῷ λαῷ συντάξω ποιῆσαι σκῦλα καὶ προνομήν, καὶ καταπατεῖν τὰς πόλεις, καὶ θεῖναι αὐτὰς εἰς κονιορτόν. Αὐτὸς δὲ οὐχ οὕτως ἐνεθυμήθη, καὶ τῇ ψυχῇ οὐχ οὕτως λελόγισται, ἀλλὰ ἀπαλλάξει ὁ νοῦς αὐτοῦ, καὶ τοῦ ἔθνη ἐξολοθρεῦσαι οὐκ ὀλίγα. Καὶ ἐὰν εἴπωσιν αὐτῷ, σὺ μόνος εἶ ἄρχων· Καὶ ἐρεῖ, οὐκ ἔλαβον τὴν χώραν τὴν ἐπάνω Βαβυλῶνος καὶ Χαλάνης, οὗ ὁ πύργος ᾠκοδομήθη, καὶ ἔλαβον Ἀραβίαν καὶ Δαμασκὸν καὶ Σαμάρειαν; Ὃν τρόπον ταύτας ἔλαβον, καὶ πάσας τὰς ἀρχὰς λήψομαι· ὀλολύξατε τὰ γλυπτὰ ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐν

Σαμαρείᾳ. Ὃν τρόπον γὰρ ἐποίησα Σαμαρείᾳ, καὶ τοῖς χειροποιήτοις αὐτῆς, οὕτω ποιήσω καὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ τοῖς εἰδώλοις αὐτῆς. Καὶ ἔσται ὅταν συντελέσῃ Κύριος πάντα ποιῶν ἐν τῷ ὄρει Σιὼν καὶ Ἰερουσαλήμ, ἐπισκέψομαι ἐπὶ τὸν νοῦν τὸν μέγαν ἐπὶ τὸν ἄρχοντα τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ἐπὶ τὸ ὕψος τῆς δόξης τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. Εἶπε γὰρ, ἐν τῇ ἰσχύϊ ποιήσω, καὶ ἐν τῇ σοφίᾳ τῆς συνέσεως ἀφελῶ ὅρια ἐθνῶν, καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν προνομεύσω· Καὶ σείσω πόλεις κατοικουμένας, καὶ τὴν οἰκουμένην ὅλην καταλήψομαι τῇ χειρὶ ὡς νοσσιὰν, καὶ ὡς καταλελειμμένα ὠὰ ἀρῶ· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς διαφεύξεταί με, ἢ ἀντείπῃ μοι. Μὴ δοξασθήσεται ἀξίνη ἄνευ τοῦ κόπτοντος ἐν αὐτῇ; ἢ ὑψωθήσεται πριὼν ἄνευ τοῦ ἕλκοντος αὐτόν; ὡς ἄν τις ἄρῃ ῥάβδον ἢ ξύλον· καὶ οὐχ οὕτως, ἀλλὰ ἀποστελεῖ Κύριος σαβαὼθ εἰς τὴν σὴν τιμὴν ἀτιμίαν, καὶ εἰς τὴν σὴν δόξαν πῦρ καιόμενον καυθήσεται. Καὶ ἔσται τὸ φῶς τοῦ Ἰσρὴλ εἰς πῦρ, καὶ ἁγιάσει αὐτὸν ἐν πυρὶ καιομένῳ, καὶ φάγεται ὡσεὶ χόρτον τὴν ὕλην· τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀποσβεσθήσεται τὰ ὄρη, καὶ οἱ βουνοὶ, καὶ οἱ δρυμοὶ, καὶ καταφάγεται ἀπὸ ψυχὴς ἕως σαρκῶν· καὶ ἔσται ὁ φεύγων, ὡς ὁ φεύγων ἀπὸ φλογὸς καιομένης. Καὶ οἱ καταλειφθέντες ἀπ’ αὐτῶν ἀριθμὸς ἔσονται, καὶ παιδίον γράψει αὐτούς. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, οὐκέτι προστεθήσεται τὸ καταλειφθὲν Ἰσραὴλ, καὶ οἱ σωθέντες τοῦ Ἰακὼβ οὐκέτι μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοὺς ἀδικήσαντας αὐτοὺς, ἀλλὰ ἔσονται πεποιθότες ἐπὶ τὸν Θεὸν τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ τῇ ἀληθείᾳ. Καὶ ἔσται τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰακὼβ ἐπὶ Θεὸν ἰσχύοντα. Καὶ ἐὰν γένηται ὁ λαὸς Ἰσραὴλ ὡς ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, τὸ κατάλειμμα αὐτῶν σωθήσεται. Λόγον συντελῶν καὶ συντέμνων ἐν δικαιοσύνῃ, ὅτι λόγον συντετμημένον Κύριος ποιήσει ἐν τῇ οἰκουμένῃ ὅλῃ. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος

σαβαὼθ, μὴ φοβοῦ ὁ λαός μου, οἱ κατοικοῦντες ἐν Σιὼν, ἀπὸ Ἀσσυρίων, ὅτι ἐν ῥάβδῳ πατάξει σε· πληγὴν γὰρ ἐπάγω ἐπὶ σὲ, τοῦ ἰδεῖν ὁδὸν Αἰγύπτου. Ἔτι γὰρ μικρὸν, καὶ παύσεται ἡ ὀργὴ, ὁ δὲ θυμός μου ἐπὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν. Καὶ ἐγερεῖ ὁ Θεὸς ἐπ᾽ αὐτοὺς, κατὰ τὴν πληγὴν Μαδιὰμ ἐν τόπῳ θλίψεως· καὶ ὁ θυμὸς αὐτοῦ τῇ ὁδῷ τῇ κατὰ θάλασσαν, εἰς τὴν ὁδὸν τὴν κατ᾽ Αἴγυπτον. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀφαιρεθήσεται ὁ ζυγὸς αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὤμου σου, καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ ἀπό σου, καὶ καταφθαρήσεται ὁ ζυγὸς ἀπὸ τῶν ὤμων ὑμῶν. Ἥξει γὰρ εἰς τὴν πόλιν Ἀγγαί, καὶ παρελεύσεται εἰς Μαγεδὼ, καὶ ἐν Μαχμὰς θήσει τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ παρελεύσεται φάραγγα, καὶ ἤξει εἰς Ἀγγαί, φόβος λήψεται Ῥαμᾶ, πόλιν Σαοὺλ, φεύξεται ἡ θυγάτηρ Γαλλεὶμ, ἐπακούσεται Λαϊσα, ἐπακούσεται ἐν Ἀναθώθ. Καὶ ἐξέστη Μαδεβηνὰ, καὶ οἱ κατοικοῦντες Γιββείρ. Παρακαλεῖτε σήμερον ἐν ὁδῷ τοῦ μεῖναι, τῇ χειρὶ παρακαλεῖτε τὸ ὄρος τὴν θυγατέρα Σιὼν, καὶ οἱ βουνοὶ οἱ ἐν Ἰερουσαλήμ. Ἰδοὺ ὁ δεσπότης Κύριος σαβαὼθ συνταράσσει τοὺς ἐνδόξους μετὰ ἰσχύος, καὶ οἱ ὑψηλοὶ τῇ ὕβρει συντριβήσονται, καὶ οἱ ὑψηλοὶ ταπεινωθήσονται, καὶ πεσοῦνται ὑψηλοὶ μαχαίρᾳ, ὁ δὲ Λίβανος σὺν τοῖς ὑψηλοῖς πεσεῖται.

# 11

Καὶ ἐξελεύσεται ῥάβδος ἐκ τῆς ῥίζης Ἰεσσαί, καὶ ἄνθος ἐκ τῆς ῥίζης ἀναβήσεται, καὶ ἀναπαύσεται ἐπ᾽ αὐτὸν πνεῦμα τοῦ Θεοῦ, πνεῦμα σοφίας καὶ συνέσεως, πνεῦμα βουλῆς καὶ ἰσχύος, πνεύμα γνώσεως καὶ εὐσεβείας ἐμπλήσει αὐτὸν, πνεῦμα φόβου Θεοῦ· οὐ κατὰ τὴν δόξαν κρινεῖ, οὐδὲ κατὰ τὴν λαλιὰν ἐλέγξει, ἀλλὰ κρινεῖ

ταπεινῷ κρίσιν, καὶ ἐλέγξει τοὺς ταπεινοὺς τῆς γῆς, καὶ πατάξει γῆν τῷ λόγῳ τοῦ στόματος αὐτοῦ, καὶ ἐν πνεύματι διὰ χειλέων ἀνελεῖ ἀσεβῆ. Καὶ ἔσται δικαιοσύνῃ ἐζωσμένος τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἀληθείᾳ εἰλημένος τὰς πλευράς. Καὶ συμβοσκηθήσεται λύκος μετὰ ἀρνός, καὶ πάρδαλις συναναπαύσεται ἐρίφῳ, καὶ μοσχάριον καὶ ταῦρος καὶ λέων ἅμα βοσκηθήσονται, καὶ παιδίον μικρὸν ἄξει αὐτούς. Καὶ βοῦς καὶ ἄρκος ἅμα βοσκηθήσονται, καὶ ἅμα τὰ παιδία αὐτῶν ἔσονται· καὶ λέων ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα. Καὶ παιδίον νήπιον ἐπὶ τρωγλῶν ἀσπίδων, καὶ ἐπὶ κοίτην ἐκγόνων ἀσπίδων τὴν χεῖρα ἐπιβαλεῖ. καὶ οὐ μὴ κακοποιήσουσιν, οὐδὲ μὴ δύνωνται ἀπολέσαι οὐδένα ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου· ὅτι ἐνεπλήσθη ἡ σύμπασα τοῦ γνῶναι τὸν Κύριον, ὡς ὕδωρ πολὺ κατακαλύψαι θαλάσσας. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἡ ῥίζα τοῦ Ἰεσσαὶ, καὶ ὁ ἀνιστάμενος ἄρχειν ἐθνῶν· ἐπ’ αὐτῷ ἔθνη ἐλπιοῦσι, καὶ ἔσται ἡ ἀνάπαυσις αὐτοῦ τιμή. Καὶ ἔσται τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, προσθήσει ὁ Κύριος τοῦ δεῖξαι τὴν χεῖρα αὐτοῦ, τοῦ ζηλῶσαι τὸ καταλειφθὲν ὑπόλοιπον τοῦ λαοῦ, ὃ ἂν καταλειφθῇ ὑπὸ τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ἀπὸ Αἰγύπτου, καὶ ἀπὸ Βαβυλωνίας, καὶ ἀπὸ Αἰθιοπίας, καὶ ἀπὸ Ἐλαμιτῶν, καὶ ἀπὸ ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ ἐξ Ἀραβίας. Καὶ ἀρεῖ σημεῖον εἰς τὰ ἔθνη, καὶ συνάξει τοὺς ἀπολομένους Ἰσραήλ, καὶ τοὺς διεσπαρμένους Ἰούδα συνάξει ἐκ τῶν τεσσάρων πτερύγων τῆς γῆς. Καὶ ἀφαιρεθήσεται ὁ ζῆλος Ἐφράιμ, καὶ οἱ ἐχθροὶ Ἰούδα ἀπολοῦνται. Ἐφραὶμ οὐ ζηλώσει Ἰούδαν, καὶ Ἰούδας οὐ θλίψει Ἐφραὶμ. Καὶ πετασθήσονται ἐν πλοίοις ἀλλοφύλων· θάλασσαν ἅμα προνομεύσουσι, καὶ τοὺς ἀφ’ ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Μωὰβ πρῶτον τὰς χεῖρας ἐπιβαλοῦσιν· οἱ δὲ υἱοὶ Ἀμμὼν πρῶτοι ὑπακούσονται. Καὶ ἐρημώσει Κύριος τὴν θάλασσαν Αἰγύπτου, καὶ ἐπιβαλεῖ τὴν χεῖρα

αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ποταμὸν πνεύματι βιαίῳ· καὶ πατάξει ἑπτὰ φάραγγας, ὥστε διαπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν ὑποδήμασι. Καὶ ἔσται δίοδος τῷ καταλειφθέντι μου λαῷ ἐν Αἰγύπτῳ· καὶ ἔσται τῷ Ἰσραὴλ, ὡς ἡ ἡμέρα ὅτε ἐξῆλθεν ἐκ γῆς Αἰγύπτου.

# 12

Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Εὐλογῶ σε, Κύριε, διότι ὠργίσθης μοι, καὶ ἀπέστρεψας τὸν θυμόν σου, καὶ ἠλέησάς με. Ἰδοὺ ὁ Θεός μου σωτήρ μου, πεποιθὼς ἔσομαι ἐπ’ αὐτῷ, καὶ οὐ φοβηθήσομαι· διότι ἡ δόξα μου καὶ ἡ αἴνεσίς μου Κύριος, καὶ ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν. Καὶ ἀντλήσατε ὕδωρ μετ’ εὐφροσύνης ἐκ τῶν πηγῶν τοῦ σωτηρίου. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὑμνεῖτε Κύριον, βοᾶτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔνδοξα αὐτοῦ· μιμνήσκεσθε, ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Ὑμνήσατε τὸ ὄνομα Κυρίου, ὅτι ὑψηλὰ ἐποίησεν· ἀναγγείλατε ταῦτα ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Ἀγαλλιᾶσθε, καὶ εὐφραίνεσθε οἱ κατοικοῦντες Σιών, ὅτι ὑψώθη ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ ἐν μέσῳ αὐτῆς.

# 13

ΌΡΑΣΙΣ Ἣν ΕΙΔΕΝ Ἡσαιας ΥΙΟΣ ΆΜΩΣ ΚΑΤΑ ΒΑΒΥΛΩΝΟΣ. Ἐπ’ ὄρους πεδινοῦ ἄρατε σημεῖον, ὑψώσατε τὴν φωνὴν αὐτοῖς, παρακαλεῖτε τῇ χειρί, ἀνοίξατε οἱ ἄρχοντες. Ἐγὼ συντάσσω, καὶ ἐγώ αὐτούς· γίγαντες ἔρχονται πληρῶσαι τὸν θυμόν μου χαίροντες ἅμα καὶ ὑβρίζοντες. Φωνὴ ἐθνῶν πολλῶν ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὁμοία

ἐθνῶν πολλῶν, φωνὴ βασιλέων καὶ ἐθνῶν συνηγμένων· Κύριος σαβαὼθ ἐντέταλται ἔθνει ὁπλομάχῳ, ἔρχεσθαι ἐκ γῆς πόῤῥωθεν ἀπ᾽ ἄκρου θεμελίου τοῦ οὐρανοῦ, Κύριος καὶ οἱ ὁπλομάχοι αὐτοῦ, καταφθεῖραι πᾶσαν τὴν οἰκουμένην. Ὀλολύζετε, ἐγγὺς γὰρ ἡμέρα Κυρίου, καὶ συντριβὴ παρὰ τοῦ Θεοῦ ἥξει. Διάτοῦτο πᾶσα χεὶρ ἐκλυθήσεται, καὶ πᾶσα ψυχὴ ἀνθρώπου δειλιάσει. Ταραχθήσονται οἱ πρέσβεις, καὶ ὠδῖνες αὐτοὺς ἕξουσιν, ὡς γυναικὸς τικτούσης· καὶ συμφοράσουσιν ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, καὶ ἐκστήσονται, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτῶν ὡς φλὸξ μεταβαλοῦσιν. Ἰδοὺ γὰρ ἡμέρα Κυρίου ἔρχεται ἀνίατος, θυμοῦ καὶ ὀργῆς, θεῖναι τὴν οἰκουμένην ἔρημον, καὶ τοὺς ἁμαρτωλοὺς ἀπολέσαι ἐξ αὐτῆς. Οἱ γὰρ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ καὶ ὁ Ὡρίων καὶ πᾶς ὁ κόσμος τοῦ οὐρανοῦ, τὸ φῶς οὐ δώσουσι· καὶ σκοτισθήσεται τοῦ ἡλίου ἀνατέλλοντος, καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φῶς αὐτῆς. Καὶ ἐντελοῦμαι τῇ οἰκουμένῃ ὅλῃ κακὰ, καὶ τοῖς ἀσεβέσι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· καὶ ἀπολῶ ὕβριν ἀνόμων, καὶ ὕβριν ὑπερηφάνων ταπεινώσω. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι ἔντιμοι μᾶλλον ἢ τὸ χρυσίον τὸ ἄπυρον· καὶ ἄνθρωπος μᾶλλον ἔντιμος ἔσται ἢ ὁ λίθος ὁ ἐν Σουφείρ. Ὁ γὰρ οὐρανὸς θυμωθήσεται, καὶ ἡ γῆ σεισθήσεται ἐκ τῶν θεμελίων αὐτῆς, διὰ θυμὸν ὀργῆς Κυρίου σαβαὼθ, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἐπέλθῃ ὁ θυμὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι ὡς δορκάδιον φεῦγον, καὶ ὡς πρόβατον πλανώμενον, καὶ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων, ὥστε ἄνθρωπον εἰς τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀποστραφῆναι, καὶ ἄνθρωπος εἰς τὴν χώραν ἑαυτοῦ διώξεται. Ὃς γὰρ ἂν ἁλῷ, ἠττηθήσεται, καὶ οἵτινες συνηγμένοι εἰσὶ, πεσοῦνται μαχαίρᾳ. Καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ῥάξουσιν ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν προνομεύσουσιν, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν ἕξουσιν. Ἰδοὺ ἐπεγείρω ὑμῖν τοὺς Μήδους, οἳ ἀργύριον οὐ λογίζονται, οὐδὲ χρυσίου χρείαν ἔχουσι. Τοξεύματα

νεανίσκων συντρίψουσι, καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν οὐ μὴ ἐλεήσωσιν, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς τέκνοις σου φείσονται οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν. Καὶ ἔσται Βαβυλὼν ἣ καλεῖται ἔνδοξος ἀπὸ βασιλέως Χαλδαίων, ὃν τρόπον κατέστρεψεν ὁ Θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορῥα· Οὐ κατοικηθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, οὐδὲ μὴ εἰσέλθωσιν εἰς αὐτὴν διὰ πολλῶν γενεῶν, οὐδὲ μὴ διέλθωσιν αὐτὴν Ἄραβες, οὐδὲ ποιμένες οὐ μὴ ἀναπαύσονται ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀναπαύσονται ἐκεῖ θηρία, καὶ ἐμπλησθήσονται αἱ οἰκίαι ἤχου· καὶ ἀναπαύσονται ἐκεῖ σειρῆνες, καὶ δαιμόνια ἐκεῖ ὀρχήσονται, καὶ ὀνοκένταυροι ἐκεῖ κατοικήσουσι, καὶ νοσσοποιήσουσιν ἐχῖνοι ἐν τοῖς οἴκοις αὐτῶν. Ταχὺ ἔρχεται καὶ οὐ χρονιεῖ.

# 14

Καὶ ἐλεήσει Κύριος τὸν Ἰακὼβ, καὶ ἐκλέξεται ἔτι τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἀναπαύσονται ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ ὁ γειώρας προστεθήσεται πρὸς αὐτοὺς, καὶ προστεθήσεται πρὸς τὸν οἶκον Ἰακώβ· Καὶ λήψονται αὐτοὺς ἔθνη, καὶ εἰσάξουσιν εἰς τὸν τόπον αὐτῶν, καὶ κατακληρονομήσουσι, καὶ πληθυνθήσονται ἐπὶ τῆς γῆς εἰς δούλους καὶ δούλας· καὶ ἔσονται αἰχμάλωτοι οἱ αἰχμαλωτεύσαντες αὐτοὺς, καὶ κυριευθήσονται οἱ κυριεύσαντες αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀναπαύσει σε Κύριος ἀπὸ τῆς ὀδύνης καὶ τοῦ θυμοῦ σου, τῆς δουλείας σου τῆς σκληρᾶς, ἧς ἐδούλευσας αὐτοῖς. Καὶ λήψῃ τὸν θρῆνον τοῦτον ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, Πῶς ἀναπέπαυται ὁ ἀπαιτῶν, καὶ ἀναπέπαυται ὁ ἐπισπουδαστής; Συνέτριψε Κύριος τὸν ζυγὸν τῶν ἁμαρτωλῶν, τὸν ζυγὸν τῶν ἀρχόντων. Πατάξας ἔθνος θυμῷ, πληγῇ ἀνιάτῳ, παίων ἔθνος πληγὴν θυμοῦ, ἣ οὐκ

ἐφείσατο, ἀνεπαύσατο πεποιθώς. Πᾶσα ἡ γῆ βοᾷ μετ’ εὐφροσύνης, καὶ τὰ ξύλα τοῦ Λιβάνου εὐφράνθησαν ἐπὶ σοὶ, καὶ ἡ κέδρος τοῦ Λιβάνου, ἀφ’ οὗ σὺ κεκοίμησαι, οὐκ ἀνέβη ὁ κόπτων ἡμᾶς. Ὁ ᾅδης κάτωθεν ἐπικράνθη συναντήσας σοι· συνηγέρθησάν σοι πάντες οἱ γίγαντες οἱ ἄρξαντες τῆς γῆς, οἱ ἐγείραντες ἐκ τῶν θρόνων αὐτῶν πάντας βασιλεῖς ἐθνῶ. Πάντες ἀποκριθήσονται, καὶ ἐροῦσί σοι, Καὶ σὺ ἐάλως, ὥσπερ καὶ ἡμεῖς· ἐν ἡμῖν δὲ κατελογίσθης. Κατέβη εἰς ᾅδου ἡ δόξα σου, ἡ πολλὴ εὐφροσύνη σου· ὑποκάτω σου στρώσουσι σῆψιν, καὶ τὸ κατακάλυμμά σου σκώληξ. Πῶς ἐξέπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ὁ Ἑωσφόρος ὁ πρωὶ ἀνατέλλων; συνετρίβη εἰς τὴν γῆν ὁ ἀποστέλλων πρὸς πάντα τὰ ἔθνη. Σὺ δὲ εἶπας ἐν τῇ διανοίᾳ σου, εἰς τὸν οὐρανὸν ἀναβήσομαι, ἐπάνω τῶν ἀστέρων τοῦ οὐρανοῦ θήσω τὸν θρόνον μου, καθιῶ ἐν ὄρει ὑψηλῷ, ἐπὶ τὰ ὄρη τὰ ὑψηλὰ τὰ πρὸς Βορρᾶν, ἀναβήσομαι ἐπάνω τῶν νεφῶν, ἔσομαι ὅμοιος τῷ ὑψίστῳ. Νῦν δὲ εἰς ᾅδην καταβήσῃ, καὶ εἰς τὰ θεμέλια τῆς γῆς. Οἱ ἰδόντες σε θαυμάσονται ἐπὶ σοὶ, καὶ ἐροῦσιν, οὗτος ὁ ἄνθρωπος ὁ παροξύνων τὴν γῆν, ὁ σείων βασιλεῖς, ὁ θεὶς τὴν οἰκουμένην ὅλην ἔρημον, καὶ τὰς πόλεις αὐτοῦ καθεῖλε, τοὺς ἐν ἐπαγωγῇ οὐκ ἔλυσε. Πάντες οἱ βασιλεῖς τῶν ἐθνῶν ἐκοιμήθησαν ἐν τιμῇ, ἄνθρωπος ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Σὺ δὲ ῥιφήσῃ ἐν τοῖς ὄρεσιν, ὡς νεκρὸς ἐβδελυγμένος, μετὰ πολλῶν τεθνηκότων ἐκκεκεντημένων μαχαίραις, καταβαινόντων εἰς ᾅδου. Ὃν τρόπον ἱμάτιον ἐν αἵματι πεφυρμένον οὐκ ἔσται καθαρὸν, οὕτως οὐδὲ σὺ ἔσῃ καθαρός· διότι τὴν γῆν μου ἀπώλεσας, καὶ τὸν λαόν μου ἐπέκτεινας· οὐ μὴ μείνῃς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, σπέρμα πονηρόν. Ἑτοίμασον τὰ τέκνα σου σφαγῆναι ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ πατρὸς αὐτῶν, ἵνα μὴ ἀναστῶσι καὶ κληρονομήσωσι τὴν γῆν, καὶ ἐμπλήσωσι τὴν γῆν πολέμων. Καὶ ἐπαναστήσομαι αὐτοῖς, λέγει

Κύριος σαβαὼθ, καὶ ἀπολῶ αὐτῶν ὄνομα, καὶ κατάλειμμα, καὶ σπέρμα· τάδε λέγει Κύριος. Καὶ θήσω τὴν Βαβυλωνίαν ἔρημον, ὥστε κατοικεῖν ἐχίνους, καὶ ἔσται εἰς οὐδέν· καὶ θήσω αὐτὴν πηλοῦ βάραθρον εἰς ἀπώλειαν. Τάδε λέγει Κύριος σαβαὼθ, ὃν τρόπον εἴρηκα, οὕτως ἔσται, καὶ ὃν τρόπον βεβούλευμαι, οὕτως μενεῖ, τοῦ ἀπολέσαι τοὺς Ἀσσυρίους ἐπὶ τῆς γῆς τῆς ἐμῆς, καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων μου· καὶ ἔσονται εἰς καταπάτημα, καὶ ἀφαιρεθήσεται ἀπ᾽ αὐτῶν ὁ ζυγὸς αὐτῶν, καὶ τὸ κῦδος αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὤμων ἀφαιρεθήσεται. Αὕτη ἡ βουλὴ ἣν βεβούλευται Κύριος ἐπὶ τὴν ὅλην οἰκουμένην, καὶ αὕτη ἡ χεὶρ ἡ ὑψηλὴ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη. Ἃ γὰρ ὁ Θεὸς ὁ ἅγιος βεβούλευται, τίς διασκεδάσει; καὶ τὴν χεῖρα αὐτοῦ τὴν ὑψηλὴν τίς ἀποστρέψει; Τοῦ ἔτους οὗ ἀπέθανεν ὁ βασιλεὺς Ἄχαζ, ἐγενήθη τὸ ῥῆμα τοῦτο. Μὴ εὐφρανθείητε οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, συνετρίβη γὰρ ὁ ζυγὸς τοῦ παίοντος ὑμᾶς· ἐκ γὰρ σπέρματος ὄφεως ἐξελεύσεται ἔκγονα ἀσπίδων, καὶ τὰ ἔκγονα αὐτῶν ἐξελεύσονται ὄφεις πετάμενοι. Καὶ βοσκηθήσονται πτωχοὶ δι᾽ αὐτοῦ· πτωχοὶ δὲ ἄνθρωποι ἐπὶ εἰρήνης ἀναπαύσονται· ἀνελεῖ δὲ ἐν λιμῷ τὸ σπέρμα σου, καὶ τὸ κατάλειμμά σου ἀνελεῖ. Ὀλολύξατε πύλαι πόλεων, κεκραγέτωσαν πόλεις τεταραγμέναι, οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, ὅτι ἀπὸ βορρᾶ καπνὸς ἔρχεται, καὶ οὐκ ἔστι τοῦ εἶναι. Καὶ τί ἀποκριθήσονται βασιλεῖς ἐθνῶν; ὅτι Κύριος ἐθεμελίωσε Σιων, καὶ δι᾽ αὐτοῦ σωθήσονται οἱ ταπεινοὶ τοῦ λαοῦ. ΤΟ ΡΗΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΤΗΣ ΜΩΑΒΙΤΙΔΟΣ.

# 15

Νυκτὸς ἀπολεῖται ἡ Μωαβῖτις, νυκτὸς γὰρ ἀπολεῖται τὸ τεῖχος τῆς

Μωαβίτιδος. Λυπεῖσθε ἐφ’ ἑαυτοὺς, ἀπολεῖται γὰρ καὶ Δηβὼν, οὗ ὁ βωμὸς ὑμῶν· ἐκεῖ ἀναβήσεσθε κλαίειν, ἐπὶ Ναβαῦ τῆς Μωαβίτιδος· ὀλολύξατε, ἐπὶ πάσης κεφαλῆς φαλάκρωμα, πάντες βραχίονες κατατετμημένοι. Ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐτῆς, καὶ ἐν ταῖς ῥύμαις αὐτῆς, πάντες ὀλολύζετε μετὰ κλαυθμοῦ. Ὅτι κέκραγεν Ἐσεβὼν καὶ Ἐλεαλὴ, ἕως Ἰασσὰ ἠκούσθη ἡ φωνὴ αὐτῶν· διατοῦτο ἡ ὀσφὺς τῆς Μωαβίτιδος βοᾷ, ἡ ψυχὴ αὐτῆς γνώσεται. Ἡ καρδία τῆς Μωαβείτιδος βοᾷ ἐν αὐτῇ ἕως Σηγώρ· δάμαλις γάρ ἐστι τριετής· ἐπὶ δὲ τῆς ἀναβάσεως Λουεὶθ, πρὸς σὲ κλαίοντες ἀναβήσονται τῇ ὁδῷ Ἀρωνιείμ· βοᾷ, σύντριμμα καὶ σεισμός. Τὸ ὕδωρ τῆς Νεμηρεὶμ ἔρημον ἔσται, καὶ ὁ χόρτος αὐτῆς ἐκλείψει· χόρτος γὰρ χλωρὸς οὐκ ἔσται. Μὴ καὶ οὕτως μέλλει σωθῆναι; ἐπάξω γὰρ ἐπὶ τὴν φάραγγα Ἄραβας, καὶ λήψονται αὐτήν. Συνῆψε γὰρ ἡ βοὴ τὸ ὅριον τῆς Μωαβίτιδος τῆς Ἀγαλεὶμ, καὶ ὀλολυγμὸς αὐτῆς ἕως τοῦ φρέατος τοῦ Αἰλείμ. Τὸ δὲ ὕδωρ τὸ Δειμὼν πλησθήσεται αἵματος, ἐπάξω γὰρ ἐπὶ Δειμὼν Ἄραβας, καὶ ἀρῶ τὸ σπέρμα Μωὰβ, καὶ Ἀριὴλ, καὶ τὸ κατάλοιπον Ἄδαμὰ.

# 16

Ἀποστέλω ὡς ἑρπετὰ ἐπὶ τὴν γῆν· μὴ πέτρα ἔρημός ἐστι τὸ ὄρος θυγατρὸς Σιών; Ἔσῃ γὰρ ὡς πετεινοῦ ἀνιπταμένου νοσσὸς ἀφῃρημένος, ἔσῃ θυγάτηρ Μωὰβ, ἔπειτα δέ Ἀρνῶν πλείονα βουλεύου, ποίει τε σκέπην πένθους αὕτη διαπαντὸς, ἐν μεσημβρινῇ σκοτίᾳ φεύγουσιν, ἐξέστησαν· μὴ ἀχθῇς, παροικήσουσί σοι οἱ φυγάδες Μωάβ· ἔσονται σκέπη ὑμῖν ἀπὸ

προσώπου διώκοντος, ὅτι ἤρθη ἡ συμμαχία σου, καὶ ὁ ἄρχων ἀπώλετο ὁ καταπατῶν ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ διορθωθήσεται μετ’ ἐλέους θρόνος, καὶ καθιεῖται ἐπ’ αὐτοῦ μετὰ ἀληθείας ἐν σκηνῇ Δαυὶδ, κρίνων καὶ ἐκζητῶν κρίμα καὶ σπεύδων δικαιοσύνην. Ἠκούσαμεν τὴν ὕβριν Μωὰβ, ὑβριστὴς σφόδρα τὴν ὑπερηφανίαν ἐξῆρα· οὐχ οὕτως ἡ μαντεία σου, οὐχ οὕτως. Ὀλολύξει Μωὰβ, ἐν γὰρ τῇ Μωαβίτιδι πάντες ὀλολύξουσι τοῖς κατοικοῦσι δέ Σεθ μελετήσεις, καὶ οὐκ ἐντραπήσῃ. Τὰ πεδία Ἐσεβὼν πενθήσει, ἄμπελος Σεβαμά· καταπίνοντες τὰ ἔθνη, καταπατήστε τὰς ἀμπέλους αὐτῆς, ἕως Ἰαζήρ· οὐ μὴ συνάψητε, πλανήθητε τὴν ἔρημον, οἱ ἀπεσταλμένοι ἐνκατελείφθησαν, διέβησαν γὰρ πρὸς τὴν θάλασσαν. Διατοῦτο κλαύσομαι ὡς τὸν κλαυθμὸν Ἰαζὴρ ἄμπελον Σεβαμά· τὰ δένδρα σου κατέβαλεν Ἐσεβὼν καὶ Ἐλεαλὴ, ὅτι ἐπὶ τῷ θερισμῷ καὶ ἐπὶ τῷ τρυγητῷ σου καταπατήσω, καὶ πάντα πεσοῦνται. Καὶ ἀρθήσεται εὐφροσύνη καὶ ἀγαλλίαμα ἐκ τῶν ἀμπελώνων, καὶ ἐν τοῖς ἀμπελῶσί σου οὐ μὴ εὐφρανθήσονται, καὶ οὐ μὴ πατήσουσιν οἶνον εἰς τὰ ὑπολήνια, πέπαυται γάρ. Διατοῦτο ἡ κοιλία μου ἐπὶ Μωὰβ ὡς κιθάρα ἠχήσει, καὶ τὰ ἐντός μου ὡς τεῖχος ἐνεκαίνισας. Καὶ ἔσται εἰς τὸ ἐντραπῆναί σε, ὅτι ἐκοπίασε Μωὰβ ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὰ χειροποίητα αὐτῆς, ὥστε προσεύξασθαι, καὶ οὐ μὴ δύνηται ἐξελέσθαι αὐτόν. Τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησε Κύριος ἐπὶ Μωὰβ, ὁπότε ἐλάλησε. Καὶ νῦν λέγῳ, ἐν τρισὶν ἔτεσιν ἐτῶν μισθωτοῦ ἀτιμασθήσεται ἡ δόξα Μωὰβ παντὶ τῷ πλούτῳ τῷ πολλῷ, καὶ καταλειφθήσεται ὀλιγοστὸς, καὶ οὐκ ἔντιμος. ΤΟ ῬΗΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΔΑΜΑΣΚΟΥ.

# 17

Ἰδοὺ Δαμασκὸς ἀρθήσεται ἀπὸ πόλεων, καὶ ἔσται εἰς πτῶσιν, καταλελειμμένη εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς κοίτην ποιμνίων καὶ ἀνάπαυσιν, καὶ οὐκ ἔσται ὁ διώκων. Καὶ οὐκέτι ἔσται ὀχυρὰ τοῦ καταφυγεῖν Ἐφραίμ· καὶ οὐκέτι βασιλεία ἐν Δαμασκῷ, καὶ τὸ λοιπὸν τῶν Σύρων οὐ γὰρ σὺ βελτίων εἶ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, τῆς δόξης αὐτῶν· τάδε λέγει Κύριος σαβαώθ. Ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκλειψις δόξης Ἰακὼβ, καὶ τὰ πίονα τῆς δόξης αὐτοῦ σεισθήσεται. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ ἀμητὸν ἑστηκότα, καὶ σπέρμα σταχύων ἀμήσῃ· καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ στάχυν ἐν φάραγγι στερεᾷ. Καὶ καταλειφθῇ ἐν αὐτῇ καλάμη, ἢ ὡς ῥῶγες ἐλαίας δύο ἢ τρεῖς ἐπ’ ἄκρου μετεώρου, ἢ τέσσαρες ἢ πέντε ἀπὶ τῶν κλάδων αὐτῶν καταλειφθῇ· τὰδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ πεποιθὼς ἔσται ὁ ἄνθρωπος ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτὸν, οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἐμβλέψονται, καὶ οὐ μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν, ἃ ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι αὐτῶν, καὶ οὐκ ὄψονται τὰ δένδρα, οὐδὲ τὰ βδελύγματα αὐτῶν. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται αἱ πόλεις σου ἐγκαταλελειμμέναι, ὃν τρόπον κατέλιπον οἱ Ἀμορῥαῖοι καὶ οἱ Εὐαῖοι ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραήλ· καὶ ἔσονται ἔρημοι, διότι κατέλιπες τὸν Θεὸν τὸν σωτῆρά σου, καὶ Κυρίου τοῦ βοηθοῦ σου οὐκ ἐμνήσθης· διὰτοῦτο φυτεύσεις φύτευμα ἄπιστον, καὶ σπέρμα ἄπιστον. Τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἂν φυτεύσῃς, πλανηθήσῃ· τὸ δὲ πρωῒ ἐὰν σπείρῃς, ἀνθήσει εἰς ἀμητὸν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ κληρώσῃ, καὶ ὡς πατὴρ ἀνθρώπου κληρώσῃ τοῖς υἱοῖς σου. Οὐαὶ πλῆθος ἐθνῶν πολλῶν· ὡς θάλασσα κυμαίνουσα, οὕτω ταραχθήσεσθε· καὶ νῶτος ἐθνῶν

πολλῶν, ὡς ὕδωρ ἠχήσει. Ὡς ὕδωρ πολὺ ἔθνη πολλὰ, ὡς ὕδατος πολλοῦ βίᾳ φερομένου· καὶ ἀποσκορακιεῖ αὐτὸν, καὶ πόῤῥω αὐτὸν διώξεται, ὡς χνοῦν ἀχύρου λικμώντων ἀπέναντι ἀνέμου, καὶ ὡς κονιορτὸν τροχοῦ καταιγὶς φέρουσα, Πρὸς ἑσπέραν καὶ ἔσται πένθος, πριν ἢ πρωΐ, καὶ οὐκ ἔσται· αὕτη ἡ μερὶς τῶν προνομευσάντων ὑμᾶς, καὶ κληρονομία τοῖς ὑμᾶς κληρονομήσασιν.

# 18

Οὐαὶ γῆς πλοίων πτέρυγες, ἐπέκεινα ποταμῶν Αἰθιοπίας· Ὁ ἀποστέλλων ἐν θαλάσσῃ ὅμηρα, καὶ ἐπιστολὰς βιβλίνας ἐπάνω τοῦ ὕδατος· πορεύσονται γὰρ ἄγγελοι κοῦφοι πρὸς ἔθνος μετέωρον, καὶ ξένον λαὸν καὶ χαλεπόν· τίς αὐτοῦ ἐπέκεινα; ἔθνος ἀνέλπιστον καὶ καταπεπατημένον· νῦν οἱ ποταμοὶ τῆς γῆς πάντες, ὡς χώρα κατοικουμένη κατοικηθήσεται· ἡ χώρα αὐτῶν ὡσεὶ σημεῖον ἀπὸ ὄρους ἀρθῇ, ὡς σάλπιγγος φωνὴ ἀκουστὸν ἔσται. Διότι οὕτως εἶπε Κύριός μοι, ἀσφάλεια ἔσται ἐν τῇ ἐμῇ πόλει, ὡς φῶς καύματος μεσημβρίας, καὶ ὡς νεφέλη δρόσου ἡμέρας ἀμητο ἔσται πρὸ τοῦ θερισμοῦ, ὅταν συντελεσθῇ ἄνθος, καὶ ὄμφαξ ἐξανθήσῃ ἄνθος ὀμφακίζουσα· καὶ ἀφελεῖ τὰ βοτρύδια τὰ μικρὰ τοῖς δρεπάνοις, καὶ τὰς κληματίδας ἀφελεῖ, καὶ ἀποκόψει, καὶ καταλείψει ἅμα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· καὶ συναχθήσεται ἐπ’ αὐτοὺς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πάντα τὰ θηρία τῆς γῆς ἐπ’ αὐτὸν ἥξει. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀνενεχθήσεται δῶρα Κυρίῳ σαβαὼθ ἐκ λαοῦ τεθλιμμένου καὶ τετιλμένου, καὶ ἀπὸ λαοῦ μεγάλου ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν αἰῶνα

χρόνον· ἔθνος ἐλπίζον καὶ καταπεπατημένον, ὅ ἐστιν ἐν μέρει ποταμοῦ τῆς χώρας αὐτοῦ, εἰς τὸν τόπον οὗ τὸ ὄνομα Κυρίου σαβαὼθ, ὄρος Σιών. ΌΡΑΣΙΣ ΑΙΓΥΠΤΟΥ.

# 19

Ἰδοὺ Κύριος κάθηται ἐπὶ νεφέλης κούφης, καὶ ἥξει εἰς Αἴγυπτον, καὶ σεισθήσεται τὰ χειροποίητα Αἰγύπτου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· καὶ ἡ καρδία αὐτῶν ἠττηθήσεται ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἐπεγερθήσονται Αἰγύπτιοι ἐπ’ Αἰγυπτίους, καὶ πολεμήσει ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἄνθρωπος τὸν πλησίον αὐτοῦ, πόλις ἐπὶ πόλιν, καὶ νὸμος ἐπὶ νὸμον. Καὶ ταραχθήσεται τὸ πνεῦμα τῶν Αἰγυπτίων ἐν αὐτοῖς, καὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν διασκεδάσω, καὶ ἐπερωτήσουσι τοὺς θεοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ ἀγάλματα αὐτῶν, καὶ τοὺς ἐκ τῆς γῆς φωνοῦντας, καὶ τοὺς ἐγγαστριμύθους. Καὶ παραδώσω τὴν Αἴγυπτον εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, κυρίων σκληρῶν, καὶ βασιλεῖς σκληροὶ κυριεύσουσιν αὐτῶν. τάδε λέγει Κύριος σαβαώθ. Καὶ πίονται οἱ Αἰγύπτιοι ὕδωρ τὸ παρὰ θάλασσαν, ὁ δὲ ποταμὸς ἐκλείψει, καὶ ξηρανθήσεται. Καὶ ἐκλείψουσιν οἱ ποταμοὶ, καὶ αἱ διώρυχες τοῦ ποταμοῦ· καὶ ξηρανθήσεται πᾶσα συναγωγὴ ὕδατος, καὶ ἐν παντὶ ἕλει καλάμου καὶ παπύρου, καὶ τὸ ἄχι τὸ χλωρὸν πᾶν τὸ κύκλῳ τοῦ ποταμοῦ, καὶ πᾶν τὸ σπειρόμενον διὰ τοῦ ποταμοῦ ξηρανθήσεται ἀνεμόφθορον. Καὶ στενάξουσιν οἱ ἁλιεῖς, καὶ στενάξουσι πάντες οἱ βάλλοντες ἄγκιστρον εἰς τὸν ποταμὸν, καὶ οἱ βάλλοντες σαγήνας, καὶ οἱ ἀμφιβολεῖς πενθήσουσι· Καὶ αἰσχύνη λήψεται τοὺς ἐργαζομένους τὸ λίνον τὸ σχιστὸν, καὶ τοὺς ἐργαζομένους τὴν βύσσον. Καὶ ἔσονται οἱ ἐργαζόμενοι αὐτὰ ἐν

ὀδύνῃ, καὶ πάντες οἱ ποιοῦντες τὸν ζῦθον λυπηθήσονται, καὶ τὰς ψυχὰς πονέσουσι. Καὶ μωροὶ ἔσονται οἱ ἄρχοντες Τάνεως, οἱ σοφοὶ σύμβουλοι τοῦ βασιλέως, ἡ βουλὴ σὺτῶν μωρανθήσεται· πῶς ἐρεῖτε τῷ βασιλεῖ, υἱοὶ συνετῶν ἡμεῖς, υἱοὶ βασιλέων τῶν ἐξ ἀρχῆς; Ποῦ εἰσι νῦν οἱ σοφοί σου; καὶ ἀναγγειλάτωσάν σοι, καὶ εἰπάτωσαν, τί βεβούλευται Κύριος σαβαὼθ ἐπ’ Αἴγυπτον; Ἐξέλιπον οἱ ἄρχοντες Τάνεως, καὶ ὑψώθησαν οἱ ἄρχοντες Μέμφεως, καὶ πλανήσουσιν Αἴγυπτον κατὰ φυλάς. Κύριος γὰρ ἐκέρασεν αὐτοῖς πνεῦμα πλανήσεως, καὶ ἐπλάνησαν Αἴγυπτον ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτῶν, ὡς πλανᾶται ὁ μεθύων, καὶ ὁ ἐμῶν ἅμα, καὶ οὐκ ἔσται τοῖς Αἰγυπτίοις ἔργον ὃ ποιήσει κεφαλὴν καὶ οὐρὰν, καὶ ἀρχὴν καὶ τέλος. Τῇ δὲ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται οἱ Αἰγύπτιοι, ὡς γυναῖκες, ἐν φόβῳ καὶ ἐν τρόμῳ ἀπὸ προσώπου τῆς χειρὸς Κυρίου σαβαὼθ, ἣν αὐτὸς ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς. Καὶ ἔσται ἡ χώρα τῶν Ἰουδαίων τοῖς Αἰγυπτίοις εἰς φόβητρον· πᾶς ὃς ἐὰν ὀνομάσῃ αὐτὴν αὐτοῖς, φοβηθήσονται διὰ τὴν βουλὴν ἣν βεβούλευται Κύριος σαβαὼθ ἐπ’ αὐτήν. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται πέντε πόλεις ἐν Αἰγύπτῳ λαλοῦσαι τῇ γλώσσῃ τῇ Χαναανίτιδι, καὶ ὀμνῦντες τῷ ὀνόματι Κυρίου σαβαώθ· πόλις ἀσεδὲκ κληθήσεται ἡ μία πόλις. Τῇ ἡμερᾳ ἐκείνῃ ἔσται θυσιαστήριον τῷ Κυρίῳ ἐν χώρᾳ Αἰγυπτίων, καὶ στήλη πρὸς τὸ ὅριον αὐτῆς τῷ Κυρίῳ. καὶ ἔσται εἰς σημεῖον εἰς τὸν αἰῶνα Κυρίῳ ἐν χώρᾳ Αἰγύπτου· ὅτι κεκράξονται πρὸς Κύριον διὰ τοὺς θλίβοντας αὐτούς, καὶ ἀποστελεῖ αὐτοῖς ἄνθρωπον ὃς σώσει αὐτοὺς, κρίνων σώσει αὐτούς. Καὶ γνωστὸς ἔσται Κύριος τοῖς Αἰγυπτίοις· καὶ γνώσονται οἱ Αἰγύπτιοι τὸν Κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ποιήσουσι θυσίας, καὶ εὔξονται εὐχὰς τῷ Κυρίῳ, καὶ ἀποδώσουσι. Καὶ πατάξει Κύριος τοὺς Αἰγυπτίους πληγῇ, καὶ ἰάσεται αὐτοὺς ἰάσει, καὶ ἐπιστραφήσονται πρὸς Κύριον, καὶ

εἰσακούσεται αὐτῶν, καὶ ἰάσεται αὐτοὺς ἰάσει. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται ἡ ὁδὸς ἀπὸ Αἰγύπτου πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ εἰσελεύσονται Ἀσσύριοι εἰς Αἴγυπτον, καὶ Αἰγύπτιοι πορεύσονται πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ δουλεύσουσιν Αἰγύπτιοι τοῖς Ἀσσυρίοις. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται Ἰσραὴλ τρίτος ἐν τοῖς Αἰγυπτίοις, καὶ ἐν τοῖς Ἀσσυρίοις εὐλογημένος ἐν τῇ γῇ ἣν εὐλόγησε Κύριος σαβαὼθ, λέγων, εὐλογημένος ὁ λαός μου ὁ ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ὁ ἐν Ἀσσυρίοις, καὶ ἡ κληρονομία μου Ἰσραήλ.

# 20

Τοῦ ἔτους ὅτε εἰσῆλθε Τανὰθαν εἰς Ἄζωτον, ἡνίκα ἀπεστάλη ὑπὸ Ἀρνᾶ βασιλέως Ἀσσυρίων, καὶ ἐπολέμησε τὴν Ἄζωτον, καὶ ἔλαβεν αὐτὴν, τότε ἐλάλησε Κύριος πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς, λέγων, πορεύου καὶ ἄφελε τὸν σάκκον ἀπὸ τῆς ὀσφύος σου, καὶ τὰ σανδάλιά σου ὑπόλυσαι ἀπὸ τῶν ποδῶν σου, καὶ ποίησον οὕτως, πορευόμενος γυμνὸς καὶ ἀνυπόδετος. Καὶ εἶπε Κύριος, ὃν τρόπον πεπόρευται ὁ παῖς μου Ἡσαΐας γυμνὸς καὶ ἀνυπόδετος τρία ἔτη, τρία ἔτη ἔσται εἰς σημεῖα καὶ τέρατα τοῖς Αἰγυπτίοις καὶ Αἰθίοψιν· Ὅτι οὕτως ἄξει βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὴν αἰχμαλωσίαν Αἰγύπτου καὶ Αἰθιόπων, νεανίσκους καὶ πρεσβύτας, γυμνοὺς καὶ ἀνυποδέτους, ἀνακεκαλυμμένους τὴν αἰσχύνην Αἰγύπτου. Καὶ αἰσχυνθήσονται ἠττηθέντες ἐπὶ τοῖς Αἰθίοψιν, ἐφ’ οἷς ἦσαν πεποιθότες οἱ Αἰγύπτιοι, ἦσαν γὰρ αὐτοῖς δόξα. Καὶ ἐροῦσιν οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ ταύτῃ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἰδοὺ ἡμεῖς ἦμεν πεποιθότες τοῦ φυγεῖν εἰς αὐτοὺς εἰς βοήθειαν, οἳ οὐκ ἠδύναντο σωθῆναι ἀπὸ βασιλέως Ἀσσυρίων, καὶ πῶς ἡμεῖς σωθησόμεθα; ΤΟ ΌΡΑΜΑ ΤΗΣ

# 21

Ὡς καταιγὶς δι’ ἐρήμου διέλθοι, ἐξ ἐρήμου ἐρχομένη ἐκ γῆς φοβερὸν τὸ ὅραμα, καὶ σκληρὸν ἀνηγγέλη μοι· ὁ ἀθετῶν ἀθετεῖ, ὁ ἀνομῶν ἀνομεῖ· ἐπ’ ἐμοὶ οἱ Ἐλαμῖται, καὶ οἱ πρέσβεις τῶν Περσῶν ἐπ’ ἐμὲ ἔρχονται· νῦν στενάξω καὶ παρακαλέσω ἐμαυτόν. Διατοῦτο ἐνεπλήσθη ἡ ὀσφύς μου ἐκλύσεως, καὶ ὠδῖνες ἔλαβόν με ὡς τὴν τίκτουσαν· ἠδίκησα τοῦ μὴ ἀκοῦσαι, ἐσπούδασα τοῦ μὴ βλέπειν. Ἡ καρδία μου πλανᾶται, καὶ ἡ ἀνομία με βαπτίζει, ἡ ψυχή μου ἐφέστηκεν εἰς φόβον. Ἑτοίμασον τὴν τράπεζαν, φάγετε, πίετε· ἀναστάντες οἱ ἄρχοντες, ἑτοιμάσατε θυρεοὺς, ὅτι οὕτως εἶπε πρὸς μὲ Κύριος, Βαδίσας σεαυτῷ στῆσον σκοπὸν, καὶ ὃ ἂν ἴδῃς ἀνάγγειλον. Καὶ εἶδον ἀναβάτας ἱππεῖς δύο, καὶ ἀναβάτη ὄνου, καὶ ἀναβάτην καμήλου· ἀκρόασαι ἀκρόασιν πολλήν, καὶ κάλεσον Οὐρίαν εἰς τὴν σκοπιάν· Κύριος εἶπεν, ἔστην διαπαντὸς ἡμέρας, καὶ ἐπὶ τῆς παρεμβολῆς ἐγὼ ἔστην ὅλην τὴν νύκτα, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἔρχεται ἀναβάτης ξυνωρίδος· καὶ ἀποκριθεὶς εἶπε, πέπτωκε πέπτωκε Βαβυλὼν, καὶ πάντα τὰ ἀγάλματα αὐτῆς, καὶ τὰ χειροποίητα αὐτῆς συνετρίβησαν εἰς τὴν γῆν. Ἀκούσατε οἱ καταλελειμμένοι, καὶ οἱ ὀδυνώμενοι ἀκούσατε ἃ ἤκουσα παρὰ Κυρίου σαβαὼθ, ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ ἀνήγγειλεν ἡμῖν. ΤΟ ΌΡΑΜΑ ΤΗΣ ΙΔΟΥΜΑΙΑΣ. Πρὸς ἐμὲ κάλει παρὰ τοῦ Σηεὶρ, φυλάσσετε ἐπάλξεις. Φυλάσσω τοπρωῒ καὶ τὴν νύκτα· ἐὰν ζητῇς ζήτει, καὶ παρ’ ἐμοὶ οἴκει, ἐν τῷ δρυμῷ ἐσπέρας κοιμηθῇς, ἢ ἐν τῇ ὁδῷ Δαιδάν. Εἰς συνάντησιν διψῶντι ὕδωρ φέρετε οἱ ἐνοικοῦντες ἐν

χώρᾳ Θαιμὰν, ἄρτοις συναντᾶτε τοῖς φεύγουσι διὰ τὸ πλῆθος τῶν πεφονευμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν πλανωμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῆς μαχαίρας, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν τοξευμάτων τῶν διατεταμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν πεπτωκότων ἐν τῷ πολέμῳ. Διότι οὕτως εἶπέ μοι Κύριος, ἔτι ἐνιαυτὸς ὡς ἐνιαυτὸς μισθωτοῦ, ἐκλείψει ἡ δόξα τῶν υἱῶν Κηδὰρ, καὶ τὸ κατάλοιπον τῶν τοξευμάτων τῶν ἰσχυρῶν υἱῶν Κηδὰρ ἔσται ὀλίγον, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ἐλάλησε. ΤΟ ῬΗΜΑ ΤΗΣ ΦΑΡΑΓΓΟΣ ΣΙΩΝ.

# 22

Τί ἐγένετό σοι, ὅτι νῦν ἀνέβητε πάντες εἰς δώματα μάταια; Ἐνεπλήσθη ἡ πόλις βοώντων, οἱ τραυματίαι σου οὐ τραυματίαι ἐν μαχαίραις, οὐδὲ οἱ νεκροί σου νεκροὶ πολέμων. Πάντες οἱ ἄρχοντές σου πεφεύγασι, καὶ οἱ ἁλόντες σκληρῶς δεδεμένοι εἰσί, καὶ οἱ ἰσχύοντες ἐν σοὶ πόῤῥω πεφεύγασι. Διὰ τοῦτο εἶπα, ἄφετέ με, πικρῶς κλαύσομαι· μὴ κατισχύσητε παρακαλεῖν με ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ γένους μου, ὅτι ἡμέρα ταραχῆς καὶ ἀπωλείας καὶ καταπατήματος, καὶ πλάνησις παρὰ Κυρίου σαβαώθ· ἐν φάραγγι Σιὼν πλανῶνται, ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου πλανῶνται ἐπὶ τὰ ὄρη. Οἱ δὲ Ἐλαμεῖται ἔλαβον φαρέτρας, καὶ ἀναβάται ἄνθρωποι ἐφ’ ἵππους, καὶ συναγωγὴ παρατάξεως. Καὶ ἔσονται αἱ ἐκλεκταὶ φάραγγές σου, πλησθήσονται ἁρμάτων, οἱ δὲ ἱππεῖς ἐμφράξουσι τὰς πύλας σου, καὶ ἀνακαλύψουσι τὰς πύλας Ἰούδα· καὶ ἐμβλέψονται τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τοὺς ἐκλεκτοὺς οἴκους τῆς πόλεως· Καὶ ἀνακαλύψουσι τὰ κρυπτὰ τῶν οἴκων τῆς ἄκρας Δαυείδ· καὶ εἴδοσαν, ὅτι πλείους εἰσί, καὶ ὅτι ἀπέστρεψε τὸ ὕδωρ

τῆς ἀρχαίας κολυμβήθρας εἰς τὴν πόλιν, καὶ ὅτι καθείλοσαν τοὺς οἴκους Ἰερουσαλὴμ εἰς ὀχυρώματα τείχους τῇ πόλει. Καὶ ἐποιήσατε ἑαυτοῖς ὕδωρ ἀναμέσον τῶν δύο τειχῶν ἐσώτερον τῆς κολυμβήθρας τῆς ἀρχαίας, καὶ οὐκ ἐνεβλέψατε εἰς τὸν ἀπ᾽ ἀρχῆς ποιήσαντα αὐτὴν, καὶ τὸν κτίσαντα αὐτὴν οὐκ εἴδετε. Καὶ ἐκάλεσε Κύριος Κύριος σαβαὼθ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κλαυθμὸν καὶ κοπετὸν, καὶ ξύρησιν καὶ ζῶσιν σάκκων, αὐτοὶ δὲ ἐποιήσαντο εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα, σφάζοντες μόσχους, καὶ θύοντες πρόβατα, ὥστε φαγεῖν κρέατα, καὶ πιεῖν οἶνον, λέγονες, φάγωμεν καὶ πίωμεν, αὔριον γὰρ ἀποθνήσκομεν. Καὶ ἀνακεκαλυμμένα ταῦτά ἐστιν ἐν τοῖς ὠσὶ Κυρίου σαβαὼθ, ὅτι οὐκ ἀφεθήσεται ὑμῖν αὕτη ἡ ἁμαρτία, ἕως ἂν ἀποθάνητε. Τάδε λέγει Κύριος σαβαὼθ, πορεύου εἰς τὸ παστοφόριον, πρὸς Σομνᾶν τὸν ταμίαν, καὶ εἰπὸν αὐτῷ, τί σὺ ὧδε καὶ τί σοί ἐστιν ὧδε; ὅτι ἐλατόμησας σεαυτῷ ὧδε μνημεῖον, καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ἐν ὑψηλῷ μνημεῖον, καὶ ἔγραψας σεαυτῷ ἐν πέτρᾳ σκηνήν; Ἰδοὺ δὴ Κύριος σαβαὼθ ἐκβάλλει καὶ ἐκτρίψει ἄνδρα, καὶ ἀφελεῖ τὴν στολήν σου καὶ τὸν στέφανόν σου τὸν ἔνδοξον, καὶ ῥίψει σε εἰς χώραν μεγάλην καὶ ἀμέτρητον, καὶ ἐκεῖ ἀποθανῇ· καὶ θήσει τὸ ἅρμα σου τὸ καλὸν εἰς ἀτιμίαν, καὶ τὸν οἶκον τοῦ ἄρχοντός σου εἰς καταπάτημα. Καὶ ἀφαιρεθήσῃ ἐκ τῆς οἰκονομίας σου καὶ ἐκ τῆς στάσεώς σου. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καὶ καλέσω τὸν παῖδά μου Ἐλιακεὶμ τὸν τοῦ Χελκίου, καὶ ἐνδύσω αὐτὸν τὴν στολήν σου, καὶ τὸν στέφανόν σου δώσω αὐτῷ κατὰ κράτος, καὶ τὴν οἰκονομίαν σου δώσω εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ· καὶ ἔσται ὡς πατὴρ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν Ἰούδᾳ. Καὶ δώσω τὴν δόξαν Δαυεὶδ αὐτῷ, καὶ ἄρξει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀντιλέγων· καὶ δώσω αὐψῷ τὴν κλεῖδα οἴκου Δαυὶδ ἐπὶ τῷ ὤμῳ αὐτοῦ· καὶ ἀνοίξει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀποκλείων· καὶ

κλείσει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀνοίγων. Καὶ στήλω αὐτὸν ἄρχοντα ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ ἔσται εἰς θρόνον δόξης τοῦ οἴκου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσται πεποιθὼς ἐπ’ αὐτὸν πᾶς ἔνδοξος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἔσονται ἐπικρεμάμενοι αὐτῷ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ· τάδε λέγει Κύριος σαβαὼθ, κινηθήσεται ὁ ἄνθρωπος ὁ ἐστηριγμένος ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ ἀφαιρεθήσεται, καὶ πεσεῖται, καὶ ἐξολεθρευθήσεται ἡ δόξα ἡ ἐπ’ αὐτόν, ὅτι Κύριος ἐλάλησεν. ΤΟ ῬΗΜΑ ΤΥΡΟΥ.

# 23

Ὀλολύξατε, πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι ἀπώλετο, καὶ οὐκέτι ἔρχονται ἐκ γῆς Κιτιαίων, ἦκται αἰχμάλωτος. Τίνι ὅμοιοι γεγόνασιν οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ, μετάβολοι Φοινίκης, διαπερῶντες τὴν θάλασσαν ἐν ὕδατι πολλῷ, σπέρμα μετάβολων; ὡς ἀμητοῦ εἰσφερομένου, οἱ μεταβόλοι τῶν ἐθνῶν. αἰσχύνθητι Σιδὼν, εἶπεν ἡ θάλασσα· ἡ δὲ ἰσχὺς τῆς θαλάσσης εἶπεν, οὐκ ὠδινον, οὐδὲ ἔτεκον, οὐδὲ ἐξέθρεψα νεανίσκους, οὐδὲ ὕψωσα παρθένους. Ὅταν δὲ ἀκουστὸν γένηται Αἰγύπτῳ, λήμψεται αὐτοὺς ὀδύνη περὶ Τύρου. Ἀπέλθατε εἰς Καρχηδόνα, ὀλολύξατε οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ ταύτῃ. Οὐχ αὕτη ἦν ὑμῶν ἡ ὕβρις ἀπ’ ἀρχῆς, πρινὴ παραδοθῆναι αὐτήν; Τίς ταῦτα ἐβούλευσεν ἐπὶ Τύρον; μὴ ἥσσων ἐστίν, ἢ οὐκ ἰσχύει; οἱ ἔμποροι αὐτῆς ἔνδοξοι ἄρχοντες τῆς γῆς. Κύριος σαβαὼθ ἐβουλεύσατο παραλῦσαι πᾶσαν τὴν ὕβριν τῶν ἐνδόξων, καὶ ἀτιμάσαι πᾶν ἔνδοξον ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐργάζου τὴν γῆν σου, καὶ γὰρ πλοῖα οὐκέτι ἔρχεται ἐκ Καρχηδόνος. Ἡ δὲ χείρ σου οὐκέτι ἰσχύει κατὰ θάλασσαν, ἡ παροξύνουσα βασιλεῖς· Κύριος σαβαὼθ

ἐνετείλατο περὶ Χαναὰν ἀπολέσαι αὐτῆς τὴν ἰσχύν. Καὶ ἐροῦσιν, οὐκέτι οὐ μὴ προστεθῆτε τοῦ ὑβρίζειν καὶ ἀδικεῖν τὴν θυγατέρα Σιδῶνος· καὶ ἐὰν ἀπέλθῃς εἰς Κιτιεῖς, οὐδὲ ἐκεῖ ἀνάπαυσις ἔσται σοι· Καὶ εἰς γῆν Χαλδαίων, καὶ αὕτη ἠρήμωται ἀπὸ τῶν Ἀσσυρίων, ὅτι ὁ τοῖχος αὐτῆς πέπτωκεν. Ὀλολύξατε πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι ἀπόλωλε τὸ ὀχύρωμα ὑμῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καταλειφθήσεται Τύρος ἔτη ἑβδομήκοντα, ὡς χρόνος βασιλέως, ὡς χρόνος ἀνθρώπου· καὶ ἔσται μετὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἔσται Τύρος ὡς ᾆσμα πόρνης. Λάβε κιθάραν, ῥέμβευσον πόλις πόρνη ἐπιλελησμένη, καλῶς κιθάρισον, πολλὰ ᾆσον, ἵνα σου μνεία γένηται. Καὶ ἔσται μετὰ τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐπισκοπὴν ποιήσει ὁ Θεὸς Τύρου, καὶ πάλιν ἀποκαταστήσεται εἰς τὸ ἀρχαῖον, καὶ ἔσται ἐμπόριον πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς οἰκουμένης ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ ἐμπορία καὶ ὁ μισθὸς ἅγιον Κυρίῳ· οὐκ αὐτοῖς συναχθήσεται, ἀλλὰ τοῖς κατοικοῦσιν ἔναντι Κυρίου, πᾶσα ἡ ἐμπορία αὐτῆς, φαγεῖν καὶ πιεῖν καὶ ἐμπλησθῆναι, καὶ εἰς συμβολὴν μνημόσυνον ἔναντι Κυρίου.

# 24

Ἰδοὺ Κύριος καταφθείρει τὴν οἰκουμένην, καὶ ἐρημώσει αὐτὴν, καὶ ἀνακαλύψει τὸ πρόσωπον αὐτῆς, καὶ διασπερεῖ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Καὶ ἔσται ὁ λαὸς ὡς ἱερεύς, καὶ ὁ παῖς ὡς ὁ κύριος, καὶ ἡ θεράπαινα ὡς ἡ κυρία· ἔσται ὁ ἀγοράζων ὡς ὁ πωλῶν, ὁ δανείζων ὡς ὁ δανειζόμενος, καὶ ὁ ὀφείλων ὡς ᾧ ὀφείλει. Φθορᾷ φθαρήσεται ἡ γῆ, καὶ προνομῇ προνομευθήσεται ἡ γῆ· τὸ γὰρ στόμα Κυρίου ἐλάλησε ταῦτα. Ἐπένθησεν ἡ γῆ, καὶ ἐφθάρη ἡ

οἰκουμένη, ἐπένθησαν οἱ ὑψηλοὶ τῆς γῆς. Ἡ δὲ ἠνόμησε διὰ τοὺς κατοικοῦντας αὐτήν, διότι παρήλθοσαν τὸν νόμον, καὶ ἤλλαξαν τὰ προστάγματα διαθήκην αἰώνιον. Διατοῦτο ἀρὰ ἔδεται τὴν γῆν, ὅτι ἡμάρτοσαν οἱ κατοικοῦντες αὐτήν· διατοῦτο πτωχοὶ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τῇ γῇ, καὶ καταλειφθήσονται ἄνθρωποι ὀλίγοι. Πενθήσει οἶνος, πενθήσει ἄμπελος, στενάξουσιν πάντες οἱ εὐφραινόμενοι τὴν ψυχήν. Πέπαυται εὐφροσύνη τυμπάνων, πέπαυται φωνὴ κιθάρας. Ἠσχύνθησαν, οὐκ ἔπιον οἶνον, πικρὸν ἐγένετο τὸ σίκερα τοῖς πίνουσιν. Ἠρημώθη πᾶσα πόλις, κλείσει οἰκίαν τοῦ μὴ εἰσελθεῖν. Ὀλολύζεται περὶ τοῦ οἴνου πανταχῇ, πέπαυται πᾶσα εὐφροσύνη τῆς γῆς, ἀπῆλθε πᾶσα εὐφροσύνη τῆς γῆς. Καὶ καταλειφθήσονται πόλεις ἔρημοι, καὶ οἶκοι ἐγκαταλελειμμένοι ἀπολοῦνται. Ταῦτα πάντα ἔσονται ἐν τῇ γῇ ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν· ὃν τρόπον ἐάν τις καλαμήσηται ἐλαίαν, οὕτως καλαμήσονται αὐτούς· καὶ ἐὰν παύσηται ὁ τρυγητὸς, οὗτοι βοῇ φωνήσουσιν. οἱ δὲ καταλειφθέντες ἐπὶ τῆς γῆς εὐφρανθήσονται ἅμα τῇ δόξῃ Κυρίου, ταραχθήσεται τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης. Διατοῦτο ἡ δόξα Κυρίου ἐν ταῖς νήσοις ἔσται τῆς θαλάσσης, τὸ ὄνομα Κυρίου ἔνδοξον ἔσται. Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἀπὸ τῶν πτερύγων τῆς γῆς τέρατα ἠκούσαμεν, ἐλπὶς τῷ εὐσεβεῖ· καὶ ἐροῦσιν, οὐαὶ τοῖς ἀθετοῦσιν, οἱ ἀθετοῦντες τὸν νόμον. Φόβος καὶ βόθυνος καὶ παγὶς ἐφ’ ὑμᾶς τοὺς ἐνοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ὁ φεύγων τὸν φόβον, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· καὶ ὁ ἐκβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, ἁλώσεται ὑπὸ τῆς παγίδος· ὅτι θυρίδες ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἀνεῴχθησαν, καὶ σεισθήσεται τὰ θεμέλια τῆς γῆς. Ταραχῇ ταραχθήσεται ἡ γῆ, καὶ ἀπορίᾳ ἀπορηθήσεται ἡ γῆ. Ἔκλινεν ὡς ὁ μεθύων καὶ κραιπαλῶν, καὶ σεισθήσεται ὡς ὀπωροφυλάκιον ἡ γῆ· κατίσχυσεν γὰρ ἐπ’ αὐτῆς ἡ ἀνομία, καὶ

πεσεῖται, καὶ οὐ μὴ δύνηται ἀναστῆναι. Καὶ ἐπάξει ὁ Θεὸς ἐπὶ τὸν κόσμον τοῦ οὐρανοῦ τὴν χεῖρα, καὶ ἐπὶ τοὺς βασιλεῖς τῆς γῆς. Καὶ συνάξουσι συναγωγὴν αὐτῆς εἰς δεσμωτήριον, καὶ ἀποκλείσουσιν εἰς ὀχύρωμα· διὰ πολλῶν γενεῶν ἐπισκοπὴ ἔσται αὐτῶν. Καὶ τακήσεται ἡ πλίνθος, καὶ πεσεῖται τὸ τεῖχος· ὅτι βασιλεύσει Κύριος ἐκ Σιὼν, καὶ ἐξ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐνώπιον τῶν πρεσβυτέρων δοξασθήσεται.

# 25

Κύριε ὁ Θεὸς δοξάσω σε, ὑμνήσω τὸ ὄνομά σου, ὅτι ἐποίησας θαυμαστὰ πράγματα, βουλὴν ἀρχαίαν ἀληθινήν· γένοιτο. Ὅτι ἔθηκας πόλεις εἰς χῶμα, πόλεις ὀχυρὰς τοῦ μὴ πεσεῖν αὐτῶν τὰ θεμέλια· τῶν ἀσεβῶν πόλις τὸν αἰῶνα οὐ μὴ οἰκοδομηθῇ. Διατοῦτο εὐλογήσει σε ὁ λαὸς ὁ πτωχὸς, καὶ πόλεις ἀνθρώπων ἀδικουμένων εὐλογήσουσί σε. Ἐγένου γὰρ πάσῃ πόλει ταπεινῇ βοηθὸς, καὶ τοῖς ἀθυμήσασιν δι’ ἔνδειαν σκέπη, ἀπὸ ἀνθρώπων πονηρῶν ῥύσῃ αὐτούς· σκέπη διψώντων, καὶ πνεῦμα ἀνθρώπων ἀδικουμένων. Ὡς ἄνθρωποι ὀλιγόψυχοι διψῶντες ἐν Σιὼν, ἀπὸ ἀνθρώπων ἀσεβῶν, οἷς ἡμᾶς παρέδωκας. Καὶ ποιήσει Κύριος σαβαὼθ πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν· ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο πίονται εὐφροσύνην, πίονται οἶνον· Χρίσονται μύρον ἐν τῷ ὄρει τούτῳ· παράδος ταῦτα πάντα τοῖς ἔθνεσιν· ἡ γὰρ βουλὴ αὕτη ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη. Κατέπιεν ὁ θάνατος ἰσχύσας, καὶ πάλιν ἀφεῖλε Κύριος ὁ Θεὸς πᾶν δάκρυον ἀπὸ παντὸς προσώπου· τὸ ὄνειδος τοῦ λαοῦ ἀφεῖλεν ἀπὸ πάσης τῆς γῆς, τὸ γὰρ στόμα Κυρίου ἐλάλησε. Καὶ ἐροῦσι τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἰδοὺ ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐφ’ ᾧ ἠλπίζομεν, καὶ σώσει ἡμᾶς·

οὗτος Κύριος, ὑπεμείναμεν αὐτῷ, καὶ ἠγαλλιώμεθα καὶ εὐφρανθησόμεθα ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ ἡμῶν. Ἀνάπαυσιν δώσει ὁ Θεὸς ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο, καὶ καταπατηθήσεται ἡ Μωαβίτις, ὃν τρόπον πατοῦσιν ἅλωνα ἐν ἀμάξαις. Καὶ ἀνήσει τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ὃν τρόπον καὶ αὐτὸς ἐταπείνωσε τοῦ ἀπολέσαι· καὶ ταπεινώσει τὴν ὕβριν αὐτοῦ, ἐφ’ ἃ τὰς χεῖρας ἐπέβαλε. Καὶ τὸ ὕψος τῆς καταφυγῆς τοῦ τοίχου ταπεινώσει, καὶ καταβήσεται ἕως τοῦ ἐδάφους.

# 26

Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ᾄσονται τὸ ᾆσμα τοῦτο ἐπὶ γῆς τῆς Ἰουδαίας· ἰδοὺ πόλις ἰσχυρά, καὶ σωτήριον θήσει τὸ τεῖχος, καὶ περίτειχος. Ἀνοίξατε πύλας, εἰσελθέτω λαὸς φυλάσσων δικαιοσύνην, καὶ φυλάσσων ἀλήθειαν, ἀντιλαμβανόμενος ἀληθείας, καὶ φυλάσσων εἰρήνην· ὅτι ἐπὶ σοὶ ἐλπίδι ἤλπισαν Κύριε ἕως τοῦ αἰῶνος, ὁ Θεὸς ὁ μέγας, ὁ αἰώνιος, ὃς ταπεινώσας κατήγαγες τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν ὑψηλοῖς· πόλεις ὀχυρὰς καταβαλεῖς, καὶ κατάξεις ἕως ἐδάφους. Καὶ πατήσουσιν αὐτοὺς πόδες πραέων καὶ ταπεινῶν. Ὁδὸς εὐσεβῶν εὐθεῖα ἐγένετο, ἡ ὁδὸς τῶν εὐσεβῶν καὶ παρεσκευασμένη. Ἡ γὰρ ὁδὸς Κυρίου κρίσις· ἠλπίσαμεν ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου, καὶ ἐπὶ τῇ μνείᾳ ᾗ ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχὴ ἡμῶν· ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζει τὸ πνεῦμά μου πρὸς σὲ ὁ Θεὸς, διότι φῶς τὰ προστάγματά σου ἐπὶ τῆς γῆς· δικαιοσύνην μάθετε οἱ ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς. Πέπαυται γὰρ ὁ ἀσεβής· πᾶς ὃς οὐ μὴ μάθῃ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ἀλήθειαν οὐ μὴ ποιήσει· ἀρθήτω ὁ ἀσεβὴς, ἵνα μὴ ἴδῃ τὴν δόξαν Κυρίου. Κύριε ὑψηλός σου ὁ βραχίων, καὶ οὐκ ᾔδεισαν, γνόντες δὲ αἰσχυνθήσονται· ζῆλος

λήψεται λαὸν ἀπαίδευτον, καὶ νῦν πῦρ τοὺς ὑπεναντίους ἔδεται. Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, εἰρήνην δὸς ἡμῖν, πάντα γὰρ ἀπέδωκας ἡμῖν. Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, κτῆσαι ἡμᾶς· Κύριε ἐκτός σου ἄλλον οὐκ οἴδαμεν· τὸ ὄνομά σου ὀνομάζομεν. Οἱ δὲ νεκροὶ ζωὴν οὐ μὴ ἴδωσιν, οὐδὲ ἰατροὶ οὐ μὴ ἀναστήσουσι· διατοῦτο ἐπήγαγες, καὶ ἀπώλεσας, καὶ ᾔρας πᾶν ἄρσεν αὐτῶν. Πρόσθες αὐτοῖς κακὰ Κύριε, πρόσθες κακὰ τοῖς ἐνδόξοις τῆς γῆς. Κύριε, ἐν θλίψει ἐμνήσθην σου, ἐν θλίψει μικρᾷ ἡ παιδεία σου ἡμῖν. Καὶ ὡς ἡ ὠδίνουσα ἐγγίζει τεκεῖν, ἐπὶ τῇ ὠδῖνι αὐτῆς ἐκέκραξεν, οὕτως ἐγενήθημεν τῷ ἀγαπητῷ σου. Διὰ τὸν φόβον σου Κύριε ἐν γαστρὶ ἐλάβομεν, καὶ ὠδινήσαμεν, καὶ ἐτέκομεν πνεῦμα σωτηρίας σου, ὃ ἐποιήσαμεν ἐπὶ τῆς γῆς· οὐ πεσούμεθα, ἀλλὰ πεσοῦνται πάντες οἱ ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς. Ἀναστήσονται οἱ νεκροὶ, καὶ ἐγερθήσονται οἱ ἐν τοῖς μνημείοις, καὶ εὐφρανθήσονται οἱ ἐν τῇ γῇ· ἡ γὰρ δρόσος ἡ παρὰ σοῦ ἴαμα αὐτοῖς ἐστιν, ἡ δὲ γῆ τῶν ἀσεβῶν πεσεῖται. Βάδιζε λαός μου, εἴσελθε εἰς τὰ ταμεῖά σου, ἀπόκλεισον τὴν θύραν σου, ἀποκρύβηθι μικρὸν ὅσον ὅσον, ἕως ἂν παρέλθῃ ἡ ὀργὴ Κυρίου. Ἰδοὺ γὰρ Κύριος ἀπὸ τοῦ ἁγίου ἐπάγει τὴν ὀργὴν ἐπὶ τοὺς ἐνοικοῦντασέ πὶ τῆς γῆς· καὶ ἀνακαλύψει ἡ γῆ τὸ αἷμα αὐτῆς, καὶ οὐ κατακαλύψει τοὺς ἀνῃρημένους.

# 27

Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπάξει ὁ Θεὸς τὴν μάχαιραν τὴν ἁγίαν, καὶ τὴν μεγάλην, καὶ τὴν ἰσχυρὰν ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν φεύγοντα, ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν σκολιόν· ἀνελεῖ τὸν δράκοντα. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀμπελὼν καλός, ἐπιθύμημα ἐξάρχειν κατ’ αὐτῆς. Ἐγὼ πόλις ὀχυρά,

πόλις πολιορκουμένη, μάτην ποτιῶ αὐτήν· ἁλώσεται γὰρ νυκτὸς, ἡμέρας δὲ πεσεῖται τεῖχος. Οὐκ ἔστιν, ἢ οὐκ ἐπελάβετο αὐτῆς· τίς με θήσει φυλάσσειν καλάμην ἐν ἀγρῷ; διὰ τὴν πολεμίαν ταύτην ἠθέτηκα αὐτήν· τοίνυν διατοῦτο ἐποίησε Κύριος πάντα, ὅσα συνέταξε· κατακέκαυμαι Βοήσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, ποιήσωμεν εἰρήνην αὐτῷ, ποιήσωμεν εἰρήνην, οἱ ἐρχόμενοι τέκνα Ἰακώβ· βλαστήσει καὶ ἐξανθήσει Ἰσραὴλ, καὶ ἐμπλησθήσεται ἡ οἰκουμένη τοῦ καρποῦ αὐτοῦ. Μὴ ὡς αὐτὸς ἐπάταξε, καὶ αὐτὸς οὕτως πληγήσεται; καὶ ὡς αὐτὸς ἀνεῖλεν, οὕτως ἀναιρεθήσεται; Μαχόμενος καὶ ὀνειδίζων ἐξαποστελεῖ αὐτούς· οὐ σὺ ἦσθα μελετῶν τῷ πνεύματι τῷ σκληρῷ, ἀνελεῖν αὐτοὺς πνεύματι θυμοῦ; Διατοῦτο ἀφαιρεθήσεται ἀνομία Ἰακὼβ, καὶ τοῦτό ἐστιν ἡ εὐλογία αὐτοῦ, ὅταν ἀφέλωμαι τὴν ἁμαρτίαν αὐτοῦ, ὅταν θῶσι πάντας τοὺς λίθους τῶν βωμῶν κατακεκομμένους, ὡς κονίαν λεπτήν· καὶ οὐ μὴ μείνῃ τὰ δένδρα αὐτῶν, καὶ τὰ εἴδωλα αὐτῶν ἐκκεκομμένα, ὥσπερ δρυμὸς μακράν. Τὸ κατοικούμενον ποίμνιον ἀνειμένον ἔσται, ὡς ποίμνιον καταλελειμμένον· καὶ ἔσται πολὺν χρόνον εἰς βόσκημα, καὶ ἐκεῖ ἀναπαύσονται ποίμνια. Καὶ μετὰ χρόνον οὐκ ἔσται ἐν αὐτῇ πᾶν χλωρὸν διὰ τὸ ξηρανθῆναι· γυναῖκες ἐρχόμεναι ἀπὸ θέας δεῦτε· οὐ γὰρ λαός ἐστιν ἔχων σύνεσιν, διατοῦτο οὐ μὴ οἰκτειρήσῃ ὁ ποιήσας αὐτοὺς, οὐδὲ ὁ πλάσας αὐτοὺς οὐ μὴ ἐλεήσῃ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, συμφράξει ὁ Θεὸς ἀπὸ τῆς διώρυχος τοῦ ποταμοῦ ἕως Ῥινοκορούρων· ὑμεῖς δὲ συναγάγετε κατὰ ἕνα τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, σαλπιοῦσι τῇ σάλπιγγι τῇ μεγάλῃ, καὶ ἥξουσιν οἱ ἀπολόμενοι ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀσσυρίων, καὶ οἱ ἀπολόμενοι ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ προσκυνήσουσι τῷ κυρίῳ ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιον ἐν Ἰερουσαλήμ.

# 28

Οὐαὶ τῷ στεφάνῳ τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ Ἐφραΐμ, τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν ἐκ τῆς δόξης ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους τοῦ παχέος, οἱ μεθύοντες ἄνευ οἴνου. Ἰδοὺ ἰσχυρὸν καὶ σκληρὸν ὁ θυμὸς Κυρίου, ὡς χάλαζα καταφερομένη οὐκ ἔχουσα σκέπην, βίᾳ καταφερομένη· ὡς ὕδατος πολὺ πλῆθος σῦρον χώραν, τῇ γῇ ποιήσει ἀνάπαυμα· ταῖς χερσὶ, καὶ τοῖς ποσὶ καταπατηθήσεται ὁ στέφανος τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ τοῦ Ἐφραΐμ. Καὶ ἔσται τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν τῆς ἐλπίδος τῆς δόζῆς, ἐπ᾽ ἄκρου τοῦ ὄρους τοῦ ὑψηλοῦ· ὡς πρόδρομος σύκου, ὁ ἰδὼν αὐτό, πρὶν εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ λαβεῖν αὐτό, θελήσει αὐτὸ καταπιεῖν. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται Κύριος σαβαὼθ ὁ στέφανος τῆς ἐλπίδος, ὁ πλεκεὶς τῆς δόξης, τῷ καταλειφθέντι τοῦ λαοῦ. Καταλειφθήσονται ἐπὶ πνεύματι κρίσεως ἐπὶ κρίσιν, καὶ ἰσχὺν κωλύων ἀνελεῖν. Οὗτοι γὰρ οἴνῳ πεπλημμεμελημένοι εἰσίν· ἐπλανήθησαν διὰ τὸ σίκερα, ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐξέστησαν διὰ τὸ σίκερα, κατεπόθησαν διὰ τὸν οἶνον, ἐσείσθησαν ἀπὸ τῆς μέθης, ἐπλανήθησαν· τοῦτέστι φάσμα. Ἀρὰ ἔδεται ταύτην τὴν βουλήν, αὕτη γὰρ ἡ βουλὴ ἕνεκα πλεονεξίας. Τίνι ἀνηγγείλαμεν κακά, καὶ τίνι ἀνηγγείλαμεν ἀγγελίαν; οἱ ἀπογεγαλακτισμένοι ἀπὸ γάλακτος, οἱ ἀπεσπασμένοι ἀπὸ μαστοῦ. Θλίψιν ἐπὶ θλίψιν προσδέχου, ἐλπίδα ἐπ᾽ ἐλπίδι, ἐτι μικρὸν ἔτι μικρόν, διὰ φαυλισμὸν χειλέων, διὰ γλώσσης ἑτέρας, ὅτι λαλήσουσι τῷ λαῷ τούτῳ, λέγοντες αὐτοῖς, τοῦτο τὸ ἀνάπαυμα τῷ πεινῶντι, καὶ τοῦτο τὸ σύντριμμα· καὶ οὐκ ἠθέλησαν ἀκούειν. Καὶ ἔσται αὐτοῖς τὸ λόγιον τοῦ Θεοῦ, θλίψις ἐπὶ θλίψιν, ἐλπὶς ἐπ᾽ ἐλπίδι, ἔτι μικρὸν ἔτι μικρὸν, ἵνα πορεύσωσι καὶ πέσωσιν ὀπίσω·

καὶ συντριβήσονται, καὶ κινδυνεύσουσι, καὶ ἁλώσονται. Διατοῦτο ἀκούσατε λόγον Κυρίου ἄνδρες τεθλιμμένοι, καὶ οἱ ἄρχοντες τοῦ λαοῦ τούτου τοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ· Ὅτι εἴπατε, ἐποιήσαμεν διαθήκην μετὰ τοῦ ᾅδου, καὶ μετὰ τοῦ θανάτου συνθήκας· καταιγὶς φερομένη ἐὰν παρέλθῃ, οὐ μὴ ἔλθῃ ἐφ’ ἡμᾶς· ἐθήκαμεν ψεῦδος τὴν ἐλπίδα ἡμῶν, καὶ τῷ ψεύδει σκεπασθησόμεθα. Διατοῦτο οὕτω λέγει κύριος Κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβάλλω εἰς τὰ θεμέλια Σιὼν λίθον πολυτελῆ, ἐκλεκτὸν, ἀκρογωνιαῖον, ἔντιμον, εἰς τὰ θεμέλια αὐτῆς, καὶ ὁ πιστεύων οὐ μὴ καταισχυνθῇ. Καὶ θήσω κρίσιν εἰς ἐλπίδα, ἡ δὲ ἐλεημοσύνη μου εἰς σταθμούς, καὶ οἱ πεποιθότες μάτην ψεύδει· ὅτι οὐ μὴ παρέλθῃ ὑμᾶς καταιγίς, μὴ καὶ ἀφέλῃ ὑμῶν τὴν διαθήκην τοῦ θανάτου, καὶ ἡ ἐλπὶς ὑμῶν ἡ πρὸς τὸν ᾅδην οὐ μὴ ἐμμείνῃ· καταιγὶς φερομένη ἐὰν ἐπέλθῃ, ἔσεσθε αὐτῇ εἰς καταπάτημα. Ὅταν παρέλθῃ, λήμψεταί ὑμᾶς, πρωῒ πρωῒ παρελεύσεται ἡμέρας, καὶ ἐν νυκτὶ ἔσται ἐλπὶς πονηρά. Μάθετε ἀκούειν στενοχωρούμενοι· Οὐ δυνάμεθα μάχεσθαι, αὐτοὶ δὲ ἀσθενοῦμεν τοῦ ὑμᾶς συναχθῆναι. Ὥσπερ ὄρος ἀσεβῶν ἀναστήσεται Κύριος, καὶ ἔσται ἐν τῇ φάραγγι Γαβαὼν, μετὰ θυμοῦ ποιήσει τὰ ἔργα αὐτοῦ, πικρίας ἔργον· ὁ δὲ θυμὸς αὐτοῦ ἀλλοτρίως χρήσεται, καὶ ἡ σαπρία αὐτοῦ ἀλλοτρία. Καὶ ὑμεῖς μὴ εὐφρανθείητε, μηδὲ ἰσχυσάτωσαν ὑμῶν οἱ δεσμοί· διότι συντετελεσμένα καὶ συντετμημένα πράγματα ἤκουσα παρὰ Κυρίου σαβαὼθ, ἃ ποιήσει ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Ἐνωτίζεσθε καὶ ἀκούετε τῆς φωνῆς μου, προσέχετε καὶ ἀκούετε τοὺς λόγους μου. Μὴ ὅλην τὴν ἡμέραν ἀροτριάσει ὁ ἀροτριῶν; ἢ σπόρον προετοιμάσει, πρὶν ἐργάσασθαι τὴν γῆν; Οὐχ ὅταν ὁμαλίσῃ τὸ πρόσωπον αὐτῆς, τότε σπείρει μικρὸν μελάνθιον ἢ κύμινον, καὶ πάλιν σπείρει πυρὸν, καὶ κριθὴν, καὶ κέγχρον καὶ ζέαν ἐν τοῖς ὁρίοις σου; Καὶ παιδευθήσῃ

κρίματι Θεοῦ σου, καὶ εὐφρανθήσῃ. Οὐ γὰρ μετὰ σκληρότητος καθαίρεται τὸ μελάνθιον, οὐδὲ τροχὸς ἁμάξης περιάξει ἐπὶ τὸ κύμινον· ἀλλὰ ῥάβδῳ τινάσσεται τὸ μελάνθιον, τὸ δὲ κύμινον μετὰ ἄρτου βρωθήσεται· οὐ γὰρ εἰς τὸν αἰῶνα ἐγώ εἰμι ὑμῖν ὀργισθήσομαι, οὐδὲ φωνὴ τῆς πικρίας μου καταπατήσει ὑμᾶς. Καὶ ταῦτα παρὰ Κυρίου σαβαὼθ ἐξῆλθε τὰ τέρατα· βουλεύσασθε, ὑψώσατε ματαίαν παράκλησιν.

# 29

Οὐαὶ Ἀριὴλ πόλις, ἣν ἐπολέμησε Δαυείδ· συναγάγετε γενήματα ἐνιαυτὸν ἐπὶ ἐνιαυτὸν, φάγεσθε, φάγεσθε γὰρ σὺν Μωάβ, ἐκθλίψω γὰρ Ἀριήλ· καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ ἰσχὺς καὶ ὁ πλοῦτος ἐμοί. Καὶ κυκλώσω ὡς Δαυὶδ ἐπὶ σὲ, καὶ βαλῶ περὶ σὲ χάρακα, καὶ θήσω περὶ σὲ πύργους, καὶ ταπεινωθήσονται εἰς τὴν γῆν οἱ λόγοι σου, καὶ εἰς τὴν γῆν οἱ λόγοι σου δύσονται· καὶ ἔσονται ὡς οἱ φωνοῦντες ἐκ τῆς γῆς ἡ φωνή σου, καὶ πρὸς τὸ ἔδαφος ἡ φωνή σου ἀσθενήσει. Καὶ ἔσται ὡς κονιορτὸς ἀπὸ τροχοῦ ὁ πλοῦτος τῶν ἀσεβῶν, καὶ ὡς χνοῦς φερόμενος τὸ πλῆθος τῶν καταδυναστευόντων σε, καὶ ἔσται ὡς στιγμὴ παραχρῆμα παρὰ Κυρίου σαβαώθ· ἐπισκοπὴ γὰρ ἔσται μετὰ βροντῆς καὶ σεισμοῦ καὶ φωνὴς μεγάλης, καταιγὶς φερομένη, καὶ φλὸξ πυρὸς κατεσθίουσα. Καὶ ἔσται ὡς ἐνυπνιαζόμενος καθ’ ὕπνους νυκτὸς, ὁ πλοῦτος ἁπάντων τῶν ἐθνῶν, ὅσοι ἐπεστράτευσαν ἐπὶ Ἀριὴλ, καὶ πάντες οἱ στρατευόμενοι ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ πάντες οἱ συνηγμένοι ἐπ’ αὐτὴν, καὶ οἱ θλίβοντες αὐτήν. Καὶ ὡς οἱ ἐν τῷ ὕπνῳ πίνοντες καὶ ἔσθοντες, καὶ ἐξαναστάντων, μάταιον τὸ ἐνύπνιον· καὶ ὃν τρόπον

ἐνυπνιάζεται ὁ διψῶν ὡς ὁ πίνων, καὶ ἐξαναστὰς ἔτι διψᾷ, ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς κενὸν ἤλπισεν· οὕτως ἔσται ὁ πλοῦτος τῶν ἐθνῶν πάντων, ὅσοι ἐπεστράτευσαν ἐπὶ τὸ ὄρος Σιών. Ἐκλύθητε καὶ ἔκστητε, καὶ κραιπαλήσατε οὐκ ἀπὸ σίκερα οὐδὲ ἀπὸ οἴνου. ὅτι πεπότικεν ὑμᾶς Κύριος πνεύματι κατανύξεως, καὶ καμμύσει τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ τῶν προφητῶν αὐτῶν, καὶ τῶν ἀρχόντων αὐτῶν, οἱ ὁρῶντες τὰ κρυπτά. Καὶ ἔσται ὑμῖν τὰ ῥήματα πάντα ταῦτα, ὡς οἱ λόγοι τοῦ βιβλίου τοῦ ἐσφραγισμένου τσύτου, ὃ ἐὰν δῶσιν αὐτὸ ἀνθρώπῳ ἐπισταμένῳ γράμματα, λέγοντες, ἀνάγνωθι ταῦτα· καὶ ἐρεῖ, οὐ δύναμαι ἀναγνῶναι, ἐσφράγισται γάρ. καὶ δοθήσεται τὸ βιβλίον τοῦτο εἰς χεῖρας ἀνθρώπου μὴ ἐπισταμένου γράμματα, καὶ ἐρεῖ αὐτῷ, ἀνάγνωθι τοῦτο· καὶ ἐρεῖ, οὐκ ἐπίσταμαι γράμματα. Καὶ εἶπε Κύριος, ἐγγίζει μοι ὁ λαὸς οὗτος ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν τιμῶσί με, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόῤῥω ἀπέχει ἀπ’ ἐμοῦ· μάτην δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες ἐντάλματα ἀνθρώπων καὶ διδασκαλίας. Διατοῦτο ἰδοὺ προσθήσω τοῦ μεταθεῖναι τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ μεταθήσω αὐτούς, καὶ ἀπολῶ τὴν σοφίαν τῶν σοφῶν, καὶ τὴν σύνεσιν τῶν συνετῶν κρύψω. Οὐαὶ οἱ βαθέως βουλὴν ποιοῦντες, καὶ οὐ διὰ Κυπίυο· οὐαὶ οἱ ἐν κρυφῇ βουλὴν ποιοῦντες, καὶ ἔσται ἐν σκότει τὰ ἔργα αὐτῶν· καὶ ἐροῦσι, τίς ἑόρακεν ἡμᾶς; καὶ τίς ἡμᾶς γνώσεται, ἢ ἃ ἡμεῖς ποιοῦμεν; Οὐχ ὡς πηλὸς τοῦ κεραμέως λογισθήσεσθε; μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα τῷ πλάσαντι αὐτό, οὐ σύ με ἔπλασας; ἢ τὸ ποίημα τῷ ποιήσαντι, οὐ συνετῶς με ἐποίησας; Οὐκέτι μικρὸν καὶ μετατεθήσεται ὁ Λίβανος, ὡς τὸ ὄρος τὸ Χέρμελ, καὶ τὸ Χέρμελ εἰς δρυμὸν λογισθήσεται; Καὶ ἀκούσονται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κωφοὶ λόγους βιβλίου, καὶ οἱ ἐν τῷ σκότει, καὶ οἱ ἐν τῇ ὁμίχλῃ· ὀφθαλμοὶ τυφλῶν ὄψονται, καὶ ἀγαλλιάσονται πτωχοὶ διὰ Κύριον ἐν εὐφροσύνῃ, καὶ οἱ

ἀπηλπισμένοι τῶν ἀνθρώπων ἐμπλησθήσονται εὐφροσύνης. Ἐξέλιπεν ἄνομος, καὶ ἀπώλετο ὑπερήφανος, καὶ ἐξωλοθρεύθησαν οἱ ἀνομοῦντες ἐπὶ κακίᾳ, καὶ οἱ ποιοῦντες ἁμαρτεῖν ἀνθρώπους ἐν λόγῳ· πάντας δὲ τοὺς ἐλέγχοντας ἐν πύλαις πρόσκομμα θήσουσιν, ὅτι ἐπλαγίασαν ἐπ᾽ ἀδίκοις δίκαιον. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακώβ, ὃν ἀφώρισεν ἐξ Ἀβραὰμ, οὐ νῦν αἰσχυνθήσεται Ἰακώβ, οὐδὲ νῦν τὸ πρόσωπον μεταβαλεῖ. Ἀλλ᾽ ὅταν ἴδωσιν τὰ τέκνα αὐτῶν τὰ ἔργα μου, δι᾽ ἐμὲ ἁγιάσουσι τὸ ὄνομά μου, καὶ ἁγιάσουσι τὸν ἅγιον Ἰακὼβ, καὶ τὸν Θεὸν τοῦ Ἰσραὴλ φοβηθήσονται. Καὶ γνώσονται οἱ πλανώμενοι τῷ πνεύματι σύνεσιν, οἱ δὲ γογγύζοντες μαθήσονται ὑπακούειν, καὶ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι μαθήσονται λαλεῖν εἰρήνην.

# 30

Οὐαὶ τέκνα ἀποστάται, λέγει Κύριος· ἐποιήσατε βουλὴν οὐ δι᾽ ἐμοῦ, καὶ συνθήκας οὐ διὰ τοῦ πνεύματός μου, προσθεῖναι ἁμαρτίας ἐφ᾽ ἁμαρτίας, οἱ πορευόμενοι καταβῆναι εἰς Αἴγυπτον, ἐμὲ δὲ οὐκ ἐπερώτησαν τοῦ βοηθηθῆναι ὑπὸ Φαραὼ, καὶ σκεπασθῆναι ὑπὸ Αἰγυπτίων. Ἔσται γὰρ ὑμῖν σκέπη Φαραὼ εἰς αἰσχύνην, καὶ τοῖς πεποιθόσιν ἐπ᾽ Αἴγυπτον ὄνειδος. Ὅτι εἰσὶν ἐν Τάνει ἀρχηγοὶ ἄγγελοι πονηροί. Μάτην κοπιάσουσι πρὸς λαὸν, ὃς οὐκ ὠφελήσει αὐτοὺς εἰς βοήθειαν, ἀλλὰ εἰς αἰσχύνην καὶ ὄνειδος. Ἡ Ὅρασις τῶν τετραπόδων τῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ. Ἐν τῇ θλίψει καὶ τῇ στενοχωρίᾳ, λέων καὶ σκύμνος λέοντος, ἐκεῖθεν καὶ ἀσπίδες, καὶ ἔκγονα ἀσπίδων πετομένων, οἳ ἔφερον ἐπὶ ὄνων καὶ καμήλων τὸν πλοῦτον αὐτῶν πρὸς ἔθνος, ὃ οὐκ ὠφελήσει αὐτούς. Αἰγύπτιοι

μάταια καὶ κενὰ ὠφελήσουσιν ὑμᾶς· ἀπάγγειλον αὐτοῖς, ὅτι ματαία ἡ παράκλησις ὑμῶν αὕτη. Νῦν οὖν καθίσας γράψον ἐπὶ πυξίου ταῦτα καὶ εἰς βιβλίον, ὅτι ἔσται εἰς ἡμέρας ταῦτα καιρῷ, καὶ ἕως εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι ὁ λαὸς ἀπειθής ἐστιν, υἱοὶ ψευδεῖς, οἳ οὐκ ἠβούλοντο ἀκούειν τὸν νόμον τοῦ Θεοῦ· Οἱ λέγοντες τοῖς προφήταις, μὴ ἀναγγέλλετε ἡμῖν, καὶ τοῖς τὰ ὁράματα ὁρῶσι, μὴ λαλεῖτε ἡμῖν, ἀλλὰ ἡμῖν λαλεῖτε καὶ ἀναγγέλλετε ἡμῖν ἑτέραν πλάνησιν, καὶ ἀποστρέψατε ἡμᾶς ἀπὸ τῆς ὁδοῦ ταύτης· ἀφέλετε ἀφ’ ἡμῶν τὸν τρίβον τοῦτον, καὶ ἀφέλετε ἀφ’ ἡμῶν τὸ λόγιον τοῦ Ἰσραήλ. Διατοῦτο τάδε λέγει ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ, ὅτι ἠπειθήσατε τοῖς λόγοις τούτοις, καὶ ἠλπίσατε ἐπὶ ψεύδει, καὶ ὅτι ἐγόγγυσας, καὶ πεποιθὼς ἐγένου ἐπὶ τῷ λόγῳ τούτῳ, διατοῦτο ἔσται ὑμῖν ἡ ἁμαρτία αὕτη, ὡς τεῖχος πίπτον παραχρῆμα πόλεως ὀχυρᾶς ἐαλωκυίας, ἧς παραχρῆμα πάρεστι τὸ πτῶμα· Καὶ τὸ πτῶμα αὐτῆς ἔσται ὡς σύντριμμα ἀγγείου ὀστρακίνου, ἐκ κεραμίου λεπτὰ, ὥστε μὴ εὑρεῖν ἐν αὐτοῖς ὄστρακον, ἐν ᾧ πῦρ ἀρεῖς, καὶ ἐν ᾧ ἀποσυριεῖς ὕδωρ μικρόν. Οὕτω λέγει Κύριος, Κύριος ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ, ὅταν ἀποστραφεὶς στενάξῃς, τότε σωθήσῃ, καὶ γνώσῃ ποῦ ἦσθα, ὅτε ἐπεποίθεις ἐπὶ τοῖς ματαίοις, ματαία ἡ ἰσχὺς ὑμῶν ἐγενήθη· καὶ οὐκ ἠβούλεσθε ἀκούειν, ἀλλ’ εἴπατε, ἐφ’ ἵππων φευξόμεθα· διατοῦτο φεύξεσθε· καὶ ἐπὶ κούφοις ἀναβάταις ἐσόμεθα· διατοῦτο κοῦφοι ἔσονται οἱ διώκοντες ὑμᾶς. Χίλιοι διὰ φωνὴν ἑνὸς φεύξονται, καὶ διὰ φωνὴν πέντε φεύξονται πολλοί, ἕως ἂν καταλειφθῆτε ὡς ἱστὸς ἐπ’ ὄρους, καὶ ὡς σημαῖαν φέρων ἐπὶ βουνοῦ. Καὶ πάλιν μενεῖ ὁ Θεὸς τοῦ οἰκτειρῆσαι ὑμᾶς, καὶ διατοῦτο ὑψωθήσεται τοῦ ἐλεῆσαι ὑμᾶς· διότι κριτὴς Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν· μακάριοι οἱ ἐμμένοντες ἐπ’ αὐτῷ. Διότι λαὸς ἅγιος ἐν Σιὼν οἰκήσει· καὶ Ἰερουσαλὴμ κλαυθμῷ ἔκλαυσεν, ἐλέησόν με·

ἐλεήσει σε, τὴν φωνὴν τῆς κραυγῆς σου ἡνίκα εἶδεν, ἐπήκουσέ σου. Καὶ δώσει Κύριος ὑμῖν ἄρτον θλίψεως, καὶ ὕδωρ στενὸν, καὶ οὐκ ἔτι μὴ ἐγγίσωσί σοι οἱ πλανῶντές σε· ὅτι οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται τοὺς πλανῶντάς σε, καὶ τὰ ὦτά σου ἀκούσονται τοὺς λόγους τῶν ὀπίσω σε πλανησάντων, οἱ λέγοντες, αὕτη ἡ ὁδὸς, πορευθῶμεν ἐν αὐτῇ, εἴτε δεξιὰ εἴτε ἀριστερά. Καὶ μιανεῖς τὰ εἴδωλα τὰ περιηργυρωμένα, καὶ περικεχρυσωμένα λεπτὰ ποιήσῃς, καὶ λικμήσῃς ὡς ὕδωρ ἀποκαθημένης, καὶ ὡς κόπρον ὥσεις αὐτά. Τότε ἔσται ὁ ὑετὸς τῷ σπέρματι τῆς γῆς σου, καὶ ὁ ἄρτος τοῦ γενήματος τῆς γῆς σου ἔσται πλησμονὴ καὶ λιπαρός· καὶ βοσκηθήσεταί σου τὰ κτήνη τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τόπον πίονα καὶ εὐρύχωρον. Οἱ ταῦροι ὑμῶν καὶ οἱ βόες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν γῆν, φάγονται ἄχυρα ἀναπεποιημένα ἐν κριθῇ λελικμημένῃ. Καὶ ἔσται ἐπὶ παντὸς ὄρους ὑψηλοῦ, καὶ ἐπὶ παντὸς βουνοῦ μετεώρου ὕδωρ διαπορευόμενον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅταν ἀπόλωνται πολλοὶ, καὶ ὅταν πέσωσι πύργοι. Καὶ ἔσται τὸ φῶς τῆς σελήνης ὡς τὸ φῶς τοῦ ἡλίου, καὶ τὸ φῶς τοῦ ἡλίου ἔσται ἑπταπλάσιον ἐν τῇ ἡμέρα, ὅταν ἰάσηται Κύριος τὸ σύντριμμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ τὴν ὀδύνην τῆς πληγῆς σου ἰάσεται. Ἰδοὺ τὸ ὄνομα Κυρίου ἔρχεται διὰ χρόνου, καιόμενος θυμός· μετὰ δόξης τὸ λόγιον τῶν χειλέων αὐτοῦ, λόγιον ὀργῆς πλῆρες, καὶ ἡ ὀργὴ τοῦ θυμοῦ ὡς πῦρ ἔδεται. Καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ὡς ὕδωρ ἐν φάραγγι σὺρον, ἥξει ἕως τοῦ τραχήλου, καὶ διαιρεθήσεται, τοῦ ταράξαι ἔθνη ἐπὶ πλανήσει ματαίᾳ, καὶ διώξεται αὐτοὺς πλάνησις, καὶ λήψεται αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον αὐτῶν. Μὴ διαπαντὸς δεῖ ὑμᾶς εὐφραίνεσθαι, καὶ εἰσπορεύεσθαι εἰς τὰ ἅγιά μου διαπαντὸς, ὡσεὶ ἑορτάζοντας, καὶ ὡσεὶ εὐφραινομένους εἰσελθεῖν μετὰ αὐλοῦ εἰς τὸ ὄρος Κυρίου πρὸς τὸν Θεὸν τοῦ Ἰσραήλ; Καὶ ἀκουστὴν ποιήσει Κύριος τὴν δόξαν τῆς

φωνῆς αὐτοῦ, καὶ τὸν θυμὸν τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, δεῖξαι μετὰ θυμοῦ καὶ ὀργῆς, καὶ φλογὸς κατεσθιούσης, κεραυνώσει βιαίως, καὶ ὡς ὕδωρ καὶ χάλαζα συγκαταφερομένη βίᾳ. Διὰ γὰρ τῆς φωνῆς Κυρίου ἠττηθήσονται Ἀσσύριοι, τῇ πληγῇ ᾗ ἂν πατάξῃ αὐτούς. Καὶ ἔσται αὐτῷ κυκλόθεν, ὅθεν ἦν αὐτῶν ἡ ἐλπὶς τῆς βοηθείας, ἐφ’ ᾗ αὐτὸς ἐπεποίθει, αὐτοὶ μετὰ τυμπάνων καὶ κιθάρας πολεμήσουσιν αὐτὸν ἐκ μεταβολῆς. Σὺ γὰρ πρὸ ἡμερῶν ἀπαιτηθήσῃ· μὴ καί σοὶ ἡτοιμάσθη βασιλεύειν; φάραγγα βαθείαν, ξύλα κείμενα, πῦρ καὶ ξύλα πολλὰ, ὁ θυμὸς Κυρίου ὡς φάραγξ ὑπὸ θείου καιομένη.

# 31

Οὐαὶ οἱ καταβαίνοντες εἰς Αἴγυπτον ἐπὶ βοήθειαν, οἱ ἐφ’ ἵπποις πεποιθότες καὶ ἐφ’ ἅρμασιν, ἔστι γὰρ πολλὰ, καὶ ἐφ’ ἵπποις πλῆθος σφόδρα· καὶ οὐκ ἦσαν πεποιθότες ἐπὶ τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ τὸν κύριον οὐκ ἐζήτησαν· Καὶ αὐτὸς σοφῶς ἦγεν ἐπ’ αὐτοὺς κακά, καὶ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐ μὴ ἀθετηθῇ, καὶ ἐπαναστήσεται ἐπ’ οἴκους ἀνθρώπων πονηρῶν, καὶ ἐπὶ τὴν ἐλπίδα αὐτῶν τὴν ματαίαν, Αἰγύπτιον, ἄνθρωπον καὶ οὐ Θεὸν, ἵππων σάρκας, καὶ οὐκ ἔστι βοήθεια· ὁ δὲ Κύριος ἐπάξει τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ’ αὐτούς· καὶ κοπιάσουσιν οἱ βοηθοῦντες, καὶ ἅμα πάντες ἀπολοῦνται. Ὅτι οὕτως εἶπέ μοι Κύριος, ὃν τρόπον βοήσῃ ὁ λέων, ἢ ὁ σκύμνος ἐπὶ τῇ θήρᾳ ᾗ ἔλαβε, καὶ κεκράξῃ ἐπ’ αὐτῇ, ἕως ἂν ἐμπλησθῇ τὰ ὄρη τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ ἠττήθησαν, καὶ τὸ πλῆθος τοῦ θυμοῦ ἐπτοήθησαν, οὕτως καταβήσεται Κύριος σαβαὼθ ἐπιστρατεῦσαι ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σιὼν, ἐπὶ τὰ ὄρη αὐτῆς. Ὡς ὄρνεα πετόμενα, οὕτως ὑπερασπιεῖ Κύριος σαβαὼθ, ὑπὲρ Ἰερουσαλὴμ ὑπερασπιεῖ, καὶ

ἐξελεῖται, καὶ περιποιήσεται, καὶ σώσει. Ἐπιστράφητε οἱ τὴν βαθείαν βουλὴν βουλευόμενοι καὶ ἄνομον, υἱοὶ Ἰσραήλ. Ὅτι τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀπαρνήσονται οἱ ἄνθρωποι τὰ χειροποίητα αὐτῶν τὰ ἀργυρᾶ, καὶ τὰ χειροποίητα τὰ χρυσᾶ, ἃ ἐποίησαν αἱ χεῖρες αὐτῶν. Καὶ πεσεῖται Ασσούρ· οὐ μάχαιρα ἀνδρὸς, οὐδὲ μάχαιρα ἀνθρώπου καταφάγεται αὐτὸν, καὶ φεύξεται οὐκ ἀπὸ προσώπου μαχαίρας· οἱ δὲ νεανίσκοι ἔσονται εἰς ἥττημα, πέτρᾳ γὰρ περιληφθήσονται ὡς χάρακι, καὶ ἡττηθήσονται, ὁ δὲ φεύγων ἁλώσεται· τάδε λέγει Κύριος, μακάριος ὃς ἔχει ἐν Σιὼν σπέρμα, καὶ οἰκείους ἐν Ἰερουσαλήμ.

# 32

Ἰδοὺ γὰρ βασιλεὺς δίκαιος βασιλεύσει, καὶ ἄρχοντες μετὰ κρίσεως ἄρξουσι. Καὶ ἔσται ὁ ἄνθρωπος κρύπτων τοὺς λόγους αὐτοῦ, καὶ κρυβήσεται, ὡς ἀφ' ὕδατος φερομένου· καὶ φανήσεται ἐν Σειὼν ὡς ποταμὸς φερόμενος ἔνδοξος ἐν γῇ διψώσῃ. Καὶ οὐκέτι ἔσονται πεποιθότες ἐπ' ἀνθρώποις, ἀλλὰ τὰ ὦτα ἀκούειν δώσουσι. Καὶ ἡ καρδία τῶν ἀσθενούντων προσέξει τῷ ἀκούειν, καὶ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι ταχὺ μαθήσονται λαλεῖν εἰρήνην. Καὶ οὐκέτι μὴ εἴπωσι τῷ μωρῷ ἄρχειν, καὶ οὐκέτι μὴ εἴπωσιν οἱ ὑπηρέται σου, σίγα. Ὁ γὰρ μωρὸς μωρὰ λαλήσει, καὶ ἡ καρδία αὐτοῦ μάταια νοήσει, τοῦ συντελεῖν ἄνομα, καὶ λαλεῖν πρὸς Κύριον πλάνησιν, τοῦ διασπεῖραι ψυχὰς πεινώσας, καὶ τὰς ψυχὰς τὰς διψώσας κενὰς ποιήσει. Ἡ γὰρ βουλὴ τῶν πονηρῶν ἄνομα βουλεύσεται, καταφθεῖραι ταπεινοὺς ἐν λόγοις ἀδίκοις, καὶ διασκεδάσαι λόγους ταπεινῶν ἐν κρίσει. Οἱ δὲ εὐσεβεῖς συνετὰ ἐβουλεύσαντο, καὶ αὕτη

ἡ βουλὴ μενεῖ. Γυναῖκες πλούσιαι ἀνάστητε, καὶ ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου· θυγατέρες ἐν ἐλπίδι εἰσακούσατε λόγους μου. Ἡμέρας ἐνιαυτοῦ μνείαν ποιήσασθε ἐν ὀδύνῃ μετ’ ἐλπίδος· ἀνήλωται ὁ τρυγητὸς, πέπαυται, οὐκέτι μὴ ἔλθῃ. Ἔκστητε, λυπήθητε αἱ πεποιθυῖαι, ἐκδύσασθε, γυμναὶ γένεσθε, περιζώσασθε τὰς ὀσφῦας, καὶ ἐπὶ τῶν μαστῶν κόπτεσθε, ἀπὸ ἀγροῦ ἐπιθυμήματος, καὶ ἀμπέλου γεννήματος. Ἡ γῆ τοῦ λαοῦ μου, ἄκανθα καὶ χόρτος ἀναβήσεται, καὶ ἐκ πάσης οἰκίας εὐφροσύνη ἀρθήσεται. Πόλις πλουσία, οἶκοι ἐγκαταλελειμμένοι πλοῦτον πόλεως ἀφήσουσιν, οἴκους ἐπιθυμήματος· καὶ ἔσονται αἱ κῶμαι σπήλαια ἕως τοῦ αἰῶνος, εὐφροσύνη ὄνων ἀγρίων, βοσκήματα ποιμένων, ἕως ἂν ἔλθῃ ἐφ’ ὑμᾶς πνεῦμα ἀφ’ ὑψηλοῦ· καὶ ἔσται ἔρημος ὁ Χέρμελ, καὶ ὁ Χέρμελ εἰς δρυμὸν λογισθήσεται. Καὶ ἀναπαύσεται ἐν τῇ ἐρήμῳ κρίμα, καὶ δικαιοσύνη ἐν τῷ Καρμήλῳ κατοικήσει. Καὶ ἔσται τὰ ἔργα τῆς δικαιοσύνης, εἰρήνη· καὶ κρατήσει ἡ δικαιοσύνη ἀνάπαυσιν, καὶ πεποιθότες ἕως τοῦ αἰῶνος. Καὶ κατοικήσει ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐν πόλει εἰρήνης, καὶ ἐνοικήσει πεποιθὼς, καὶ ἀναπαύσονται μετὰ πλούτου. Ἡ δὲ χάλαζα ἐὰν καταβῇ, οὐκ ἐφ’ ὑμᾶς ἥξει· καὶ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τοῖς δρυμοῖς πεποιθότες, ὡς οἱ ἐν τῷ πεδινῇ. Μακάριοι οἱ σπείροντες ἐπὶ πᾶν ὕδωρ, οὗ βοῦς καὶ ὄνος πατεῖ.

# 33

Οὐαὶ τοῖς ταλαιπωροῦσιν ὑμᾶς, ὑμᾶς δὲ οὐδεὶς ποιεῖ ταλαιπώρους, καὶ ὁ ἀθετῶν ὑμᾶς οὐκ ἀθετεῖ· ἁλώσονται οἱ ἀθετοῦντες, καὶ παραδοθήσονται, καὶ ὡς σὴς ἐφ’ ἱματίου, οὕτως ἠττηθήσονται.

Κύριε ἐλέησον ἡμᾶς, ἐπὶ σοὶ γὰρ πεποίθαμεν· ἐγενήθη τὸ σπέρμα τῶν ἀπειθούντων εἰς ἀπώλειαν, ἡ δὲ σωτηρία ἡμῶν ἐν καιρῷ θλίψεως. Διὰ φωνὴν τοῦ φόβου ἐξέστησαν λαοὶ ἀπὸ τοῦ φόβου σου, καὶ διεσπάρησαν τὰ ἔθνη. Νῦν δὲ συναχθήσεται τὰ σκῦλα ὑμῶν μικροῦ καὶ μεγάλου· ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ ἀκρίδας, οὕτως ἐμπαίξουσιν ὑμῖν. Ἅγιος ὁ Θεὸς ὁ κατοικῶν ἐν ὑψηλῷ, ἔνεπλήσθη Σιὼν κρίσεως καὶ δικαιοσύνης. Ἐν νόμῳ παραδοθήσονται, ἐν θησαυροῖς ἡ σωτηρία ἡμῶν, ἐκεῖ σοφία καὶ ἐπιστήμη καὶ εὐσέβεια πρὸς τὸν κύριον· οὗτοί εἰσι θησαυροὶ δικαιοσύνης. Ἰδοὺ δὴ ἐν τῷ φόβῳ ὑμῶν οὗτοι φοβηθήσονται· οὓς ἐφοβεῖσθε, βοήσονται ἀφ’ ὑμῶν· ἄγγελοι ἀποσταλήσονται, πικρῶς κλαίοντες, παρακαλοῦντες εἰρήνην. Ἐρημωθήσονται γὰρ αἱ τούτων ὁδοί· πέπαυται ὁ φόβος τῶν ἐθνῶν, καὶ ἡ πρὸς τούτους διαθήκη αἴρεται, καὶ οὐ μὴ λογίσησθε αὐτοὺς ἀνθρώπους. Ἐπένθησεν ἡ γῆ, ᾐσχύνθη ὁ Λίβανος, ἔλη ἐγένετο ὁ Σάρων· φανερὰ ἔσται ἡ Γαλιλαία, καὶ ὁ Χέρμελ. Νῦν ἀναστήσομαι, λέγει Κύριος, νῦν δοξασθήσομαι, νῦν ὑψωθήσομαι. Νῦν ὄψεσθε, νῦν αἰσθηθήσεσθε, ματαία ἔσται ἡ ἰσχὺς τοῦ πνεύματος ὑμῶν· πῦρ κατέδεται ὑμᾶς. Καὶ ἔσονται ἔθνη κατακεκαυμένα, ὡς ἄκανθα ἐν ἀγρῷ ἐῤῥιμμένη καὶ κατακεκαυμένη. Ἀκούσονται οἱ πόῤῥωθεν ἃ ἐποίησα, γνώσονται οἱ ἐγγίζοντες τὴν ἰσχύν μου. Ἀπέστησαν οἱ ἐν Σιὼν ἄνομοι, λήψεται τρόμος τοὺς ἀσεβεῖς· τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν, ὅτι πῦρ καίεται; τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν τὸν τόπον τὸν αἰώνιον; Πορευόμενος ἐν δικαιοσύνῃ, λαλῶν εὐθεῖαν ὁδόν, μισῶν ἀνομίαν καὶ ἀδικίαν, καὶ τὰς χεῖρας ἀποσειόμενος ἀπὸ δώρων· βαρύνων τὰ ὦτα, ἵνα μὴ ἀκούσῃ κρίσιν αἵματος· καμμύων τοὺς ὀφθαλμοὺς, ἵνα μὴ ἴδῃ ἀδικίαν, οὗτος οἰκήσει ἐν ὑψηλῷ σπηλαίῳ πέτρας ἰσχυρᾶς· ἄρτος αὐτῷ δοθήσεται, καὶ τὸ ὕδωρ αὐτοῦ πιστόν. Βασιλέα μετὰ

δόξης ὄψεσθε, οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ὄψονται γῆν πόῤῥωθεν, ἡ ψυχὴ ἡμῶν μελετήσει φόβον· ποῦ εἰσιν οἱ γραμματικοί; ποῦ εἰσιν οἱ συμβουλεύοντες; ποῦ ἐστιν ὁ ἀριθμῶν τοὺς τρεφομένους μικρὸν καὶ μέγαν λαόν; ᾧ οὐ συνεβουλεύσατο, οὐσὲ ᾔδει βαθύφωνον, ὥστε μὴ ἀκοῦσαι λαὸς πεφαυλισμένος, καὶ οὐκ ἔστι τῷ ἀκούοντι σύνεσις. Ἰδοὺ Σιὼν ἡ πόλις, τὸ σωτήριον ἡμῶν, οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται Ἰερουσαλὴμ, πόλις πλουσία, σκηναὶ αἳ οὐ μὴ σεισθῶσιν, οὐδὲ μὴ κινηθῶσιν οἱ πάσσαλοι τῆς σκηνῆς αὐτῆς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, οὐδὲ τὰ σχοινία αὐτῆς οὐ μὴ διαῤῥαγῶσιν· ὅτι τὸ ὄνομα Κυρίου μέγα ὑμῖν· τόπος ὑμῖν ἔσται, ποταμοὶ καὶ διώρυχες πλατεῖς καὶ εὐρύχωροι· οὐ πορεύσῃ ταύτην τὴν ὁδὸν, οὐδὲ πορεύσεται πλοῖον ἐλαύνον. Ὁ γὰρ Θεός μου μέγας ἐστίν· οὐ παρελεύσεταί με Κύριος κριτὴς ἡμῶν, Κύριος ἄρχων ἡμῶν, Κύριος βασιλεὺς ἡμῶν, Κύριος οὗτος ἡμᾶς σώσει. Ἐῤῥάγησαν τὰ σχοινία σου, ὅτι οὐκ ἐνίσχυσαν· ὁ ἱστός σου ἔκλινεν, οὐ χαλάσει τὰ ἱστία, οὐκ ἀρεῖ σημεῖον, ἕως οὗ παραδοθῇ εἰς προνομήν· τοίνυν πολλοὶ χωλοὶ προνομὴν ποιήσουσι, καὶ οὐ μὴ εἴπωσι, Κοπιῶ ὁ λαὸς ἐνοικῶν ἐν αὐτοῖς· ἀφεθῆ γὰρ αὐτοῖς ἡ ἁμαρτία.

# 34

Προσαγάγετε ἔθνη, καὶ ἀκούσατε ἄρχοντες· ἀκουσάτω ἡ γῆ, καὶ οἱ ἐν αὐτῇ, ἡ οἰκουμένη, καὶ ὁ λαὸς ὁ ἐν αὐτῇ. Διότι θυμὸς Κυρίου ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη καὶ ὀργὴ ἐπὶ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν, τοῦ ἀπολέσαι αὐτοὺς, καὶ παραδοῦναι αὐτοὺς εἰς σφαγήν. Οἱ δὲ τραυματίαι αὐτῶν ῥιφήσονται, καὶ οἱ νεκροί, καὶ ἀναβήσεται αὐτῶν ἡ ὀσμή, καὶ βραχήσεται τὰ ὄρη ἀπὸ τοῦ αἵματος αὐτῶν. Καὶ τακήσονται

πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν, καὶ ἑλιγήσεται ὁ οὐρανός ὡς βιβλίον, καὶ πάντα τὰ ἄστρα πεσεῖται ὡς φύλλα ἐξ ἀμπέλου, καὶ ὡς πίπτει φύλλα ἀπὸ συκῆς. Ἐμεθύσθη ἡ μάχαιρὰ μου ἐν τῷ οὐρανῷ· ἰδοὺ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν καταβήσεται, καὶ ἐπὶ τὸν λαὸν τῆς ἀπωλείας μετὰ κρίσεως. Ἡ μάχαιρα τοῦ Κυρίου ἐνεπλήσθη αἵματος, ἐπαχύνθη ἀπὸ στέατος, ἀπὸ αἵματος τράγων καὶ ἀμνῶν, καὶ ἀπὸ στέατος τράγων καὶ κριῶν· ὅτι θυσία τῷ κυρίῳ ἐν Βοσὸρ, καὶ σφαγὴ μεγάλη ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ. Καὶ συνπεσοῦνται οἱ ἀδροὶ μετ’ αὐτῶν, καὶ οἱ κριοὶ καὶ οἱ ταῦροι, καὶ μεθυσθήσεται ἡ γῆ ἀπὸ τοῦ αἵματος, καὶ ἀπὸ τοῦ στέατος αὐτῶν ἐμπλησθήσεται. Ἡμέρα γὰρ κρίσεως Κυρίου, καὶ ἐνιαυτὸς ἀνταποδόσεως κρίσεως Σιών. Καὶ στραφήσονται αἱ φάραγγες αὐτῆς εἰς πίσσαν, καὶ ἡ γῆ αὐτῆς εἰς θεῖον· καὶ ἔσται ἡ γῆ αὐτῆς ὡς πίσσα καιομένη νυκτὸς καὶ ἡμέρας, καὶ οὐ σβεσθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, καὶ ἀναβήσεται ὁ καπνὸς αὐτῆς ἄνω, εἰς γενεὰς αὐτῆς ἐρημωθήσεται, καὶ εἰς χρόνον πολὺν ὄρνεα καὶ ἐχῖνοι, καὶ ἴβεις καὶ κόρακες κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ· καὶ ἐπιβληθήσεται ἐπ’ αὐτὴν σπαρτίον γεωμετρίας ἐρήμου, καὶ ὀνοκένταυροι οἰκήσουσιν ἐν αὐτῇ. Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς οὐκ ἔσονται· οἱ γὰρ βασιλεῖς καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἔσονται εἰς ἀπώλειαν. Καὶ ἀναφυὴσει εἰς τὰς πόλεις αὐτῶν ἀκάνθινα ξύλα, καὶ εἰς τὰ ὀχυρώματα αὐτῆς· καὶ ἔσται ἐπαύλεις σειρήνων, καὶ αὐλὴ στρουθῶν. Καὶ συναντήσουσι δαιμόνια ὀνοκενταύροις, καὶ βοήσονται ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, ἐκεῖ ἀναπαύσονται ὀνοκένταυροι, εὑρόντες αὐτοῖς ἀνάπαυσιν. Ἐκεῖ ἐνόσσευσεν ἐχῖνος, καὶ ἔσωσεν ἡ γῆ τὰ παιδία αὐτῆς μετὰ ἀσφαλείας· ἐκεῖ συνήντησαν ἔλαφοι καὶ εἶδον τὰ πρόσωπα ἀλλήλων. Ἀριθμῷ παρῆλθον, καὶ μία αὐτῶν οὐκ ἀπώλετο· ἑτέρα τὴν ἑτέραν οὐκ ἐζήτησαν, ὅτι ὁ Κύριος αὐτοῖς ἐνετείλατο, καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ

συνήγαγεν αὐτά. Καὶ αὐτὸς ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς κλήρους, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ διεμέρισε βόσκεσθαι· εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον κληρονομήσετε, γενεὰς γενεῶν ἀναπαύσονται ἐπ’ αὐτῆς.

# 35

Εὐφράνθητι ἔρημος διψῶσα, ἀγαλλιάσθω ἔρημος, καὶ ἀνθείτω ὡς κρίνον. Καὶ ἐξανθήσει καὶ ἀγαλλιάσεται τὰ ἔρημα τοῦ Ἰορδανου, ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου ἐδόθη αὐτῇ, καὶ ἡ τιμὴ τοῦ Καρμήλου, καὶ ὁ λαός μου ὄψεται τὴν δόξαν Κυρίου, καὶ τὸ ὕψος τοῦ Θεοῦ. Ἰσχύσατε χεῖρες ἀνειμέναι, καὶ γόνατα παραλελυμένα. Παρακαλέσατε οἱ ὀλιγόψυχοι τῇ διανοίᾳ· ἰσχύσατε, μὴ φοβεῖσθε· ἰδοὺ ὁ Θεὸς ἡμῶν κρίσιν ἀνταποδίδωσι, καὶ ἀνταποδώσει, αὐτὸς ἥξει καὶ σώσει ἡμᾶς. Τότε ἀνοιχθήσονται ὀφθαλμοὶ τυφλῶν, καὶ ὦτα κωφῶν ἀκούσονται. Τότε ἀλεῖται ὡς ἔλαφος ὁ χωλὸς, τρανὴ δὲ ἔσται γλῶσσα μογιλάλων, ὅτι ἐῤῥάγη ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ φάραγξ ἐν γῇ διψώσῃ. Καὶ ἔσται ἡ ἄνυδρος εἰς ἕλη, καὶ εἰς τὴν διψῶσαν γῆν πηγὴ ὕδατος ἔσται· ἐκεῖ εὐφροσύνη ὀρνέων, ἐπαύλεις καλάμου καὶ ἕλη. Ἔσται ἐκεῖ ὁδὸς καθαρά, καὶ ὁδὸς ἁγία κληθήσεται, καὶ οὐ μὴ παρέλθῃ ἐκεῖ ἀκάθαρτος, οὐδὲ ἔσται ἐκεῖ ὁδὸς ἀκάθαρτος· οἱ δὲ διεσπαρμένοι πορεύσονται ἐπ’ αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσι. Καὶ οὐκ ἔσται ἐκεῖ λέων, οὐδὲ τῶν πονηρῶν θηρίων οὐ μὴ ἀναβῇ εἰς αὐτὴν, οὐδὲ μὴ εὑρεθῇ ἐκεῖ, ἀλλὰ πορεύσονται ἐν αὐτῇ λελυτρωμένοι, Καὶ συνηγμένοι διὰ Κύριον, καὶ ἀποστραφήσονται, καὶ ἥξουσιν εἰς Σιὼν μετ’ εὐφροσύνης, καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν· ἐπὶ γὰρ τῆς κεφαλῆς αὐτῶν αἴνεσις καὶ ἀγαλλίαμα, καὶ εὐφροσύνη καταλήμψεται

αὐτοὺς, ἀπέδρα ὀδύμη καὶ λύπη καὶ στεναγμός.

# 36

Καὶ ἐγένετο τοῦ τεσσαρεσκαιδεκάτου ἔτους βασιλεύοντος Ἐζεκίου, ἀνέβη Σενναχηρεὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ τὰς πόλεις τῆς Ἰουδαίας τὰς ὀχυρὰς, καὶ ἔλαβεν αὐτάς. Καὶ ἀπέστειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὸν Ῥαβσάκην ἐκ Λάχης εἰς Ἰερουσαλὴμ πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν μετὰ δυνάμεως πολλῆς· καὶ ἔστη ἐν τῷ ὑδραγωγῷ τῆς κολυμβήθρας τῆς ἄνω ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἀγροῦ τοῦ κναφέως. Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου ὁ οἰκονόμος, καὶ Σόμνᾶς ὁ γραμματεὺς, καὶ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνηματογράφος. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ῥαβσάκης, εἴπατε Ἐζεκίᾳ, Τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς ὁ μέγας, βασιλεὺς Ἀσσυρίων, τί πεποιθὼς εἶ; Μὴ ἐν βουλῇ καὶ λόγοις χειλέων παράταξις γίνεται; καὶ νῦν ἐπὶ τίνα πέποιθας, ὅτι ἀπειθεῖς μοι; Ἰδοὺ πεποιθὼς εἶ ἐπὶ τὴν ῥάβδον τὴν καλαμίνην τὴν τεθλασμένην ταύτην, ἐπ’ Αἴγυπτον· ὡς ἂν ἐπιστηρισθῇ ἀνὴρ ἐπ’ αὐτὴν, εἰσελεύσεται εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ τρήσει αὐτὴν. οὕτως ἐστὶ Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ’ αὐτῷ. Εἰ δὲ λέγετε, ἐπὶ Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν πεποίθαμεν, νῦν μίχθητε τῷ κυρίῳ μου τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων, καὶ δώσω ὑμῖν δισχιλίαν ἵππον, εἰ δυνήσεσθε δοῦναι ἀναβάτας ἐπ’ αὐτούς. Καὶ πῶς δύνασθε ἀποστρέψαι εἰς πρόσωπον τῶν τοπαρχῶν· οἰκέται εἰσὶν, οἱ πεποιθότες ἐπ’ Αἴγυπτίοις, εἰς ἵππον καὶ ἀναβάτην. Καὶ νῦν μὴ ἄνευ Κυρίου ἀνέβημεν ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην πολεμῆσαι αὐτήν; Κύριος εἶπε πρὸς μὲ, ἀνάβηθι ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, καὶ διάφθειρον αὐτήν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ,

καὶ Σομνᾶς, καὶ Ἰωὰχ, λάλησον πρὸς τοὺς παῖδάς σου Συριστί· ἀκούομεν γὰρ ἡμεῖς· καὶ μὴ λάλει πρὸς ἡμᾶς Ἰουδαϊστί· καὶ ἱνατί λαλεῖς εἰς τὰ ὦτα τῶν ἀνθρώπων ἐπὶ τῷ τείχει; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ῥαβσάκης, μὴ πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν ἢ πρὸς ὑμᾶς ἀπέσταλκέ με ὁ κύριός μου, λαλῆσαι τοὺς λόγους τούτους; οὐχὶ πρὸς τοὺς ἀνθρώπους τοὺς καθημένους ἐπὶ τῷ τείχει, ἵνα φάγωσι κόπρον, καὶ πίωσιν οὖρον μεθ' ὑμῶν ἅμα; Καὶ ἔστη Ῥαβσάκης, καὶ ἀνεβόησε φωνῇ μεγάλῃ Ἰουδαϊστὶ, καὶ εἶπεν, ἀκούσατε τοὺς λόγους τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου, βασιλέως Ἀσσυρίων. Τάδε λέγει ὁ βασιλεύς, μὴ ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας λόγοις, οὐ δύνηται ῥύσασθαι ὑμᾶς. Καὶ μὴ λεγέτω ὑμῖν Ἐζεκίας, ὅτι ῥύσεται ὑμᾶς ὁ Θεὸς, καὶ οὐ μὴ παραδοθῇ ἡ πόλις αὕτη ἐν χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. Μὴ ἀκούετε Ἐζεκίου· τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, εἰ βούλεσθε εὐλογηθῆναι, ἐκπορεύεσθε πρὸς μέ, καὶ φάγεσθε ἕκαστος τὴν ἄμπελον αὐτοῦ καὶ τὰς συκὰς, καὶ πίεσθε ὕδωρ ἐκ τοῦ λάκκου ὑμῶν, ἕως ἂν ἔλθω, καὶ λάβω ὑμᾶς εἰς γῆν, ὡς ἡ γῆ ὑμῶν, γῆ σίτου καὶ οἴνου καὶ ἄρτων καὶ ἀμπελώνων. Μὴ ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας, λέγων, ὁ Θεὸς ῥύσεται ὑμᾶς· μὴ ἐῤῥύσαντο οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, ἕκαστος τὴν ἑαῦτοῦ χώραν ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων; Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς Ἐμὰθ καὶ Ἀρφάθ; καὶ ποῦ ὁ θεὸς τῆς πόλεως Ἐπφαρουαίμ; μὴ ἐδύναντο ῥύσασθαι Σαμάρειαν ἐκ χειρός μου; Τίς τῶν θεῶν πάντων τῶν ἐθνῶν τούτων, ὅστις ἐῤῥύσατο τὴν γῆν αὐτοῦ ἐκ χειρός μου, ὅτι ῥύσεται ὁ Θεὸς τὴν Ἱερουσαλὴμ ἐκ χειρός μου; Καὶ ἐσιώπησαν, καὶ οὐδεὶς ἀπεκρίθη αὐτῷ λόγον, διὰ τὸ προστάξαι τὸν βασιλέα μηδένα ἀποκριθῆναι. Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου, οἰκονόμος, καὶ Σομνᾶς ὁ γραμματεὺς τῆς δυνάμεως, καὶ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνηματογράφος, πρὸς Ἐζεκίαν, ἐσχισμένοι τοὺς χιτῶνας, καὶ ἀνήγγειλαν αὐτῷ τοὺς

λόγους Ῥαβσάκου.

# 37

Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀκοῦσαι τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, ἔσχισε τὰ ἱμάτια, καὶ περιεβάλετο σάκκον, καὶ ἀνέβη εἰς τὸν οἶκον Κυρίου. Καὶ ἀπέστειλεν Ἑλιακεὶμ τὸν οἰκονόμον, καὶ Σόμνᾶν τὸν γραμματέα, καὶ τοὺς πρεσβυτέρους τῶν ἱερέων περιβεβλημένους σάκκους, πρὸς Ἠσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς τὸν προφήτην. Καὶ εἶπαν αὐτῷ, τάδε λέγει Ἐζεκίας, ἡμέρα, θλίψεως καὶ ὀνειδισμοῦ καὶ ἐλεγμοῦ καὶ ὀργῆς ἡ σήμερον ἡμέρα, ὅτι ἥκει ἡ ὠδὶν τῇ τικτούσῃ, ἰσχὺν δὲ οὐκ ἔχει τοῦ τεκεῖν. Εἰσακούσαι Κύριος ὁ Θεός σου τοὺς λόγους Ῥαβσάκου, οὓς ἀπέστειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ὀνειδίζειν Θεὸν ζῶντα, καὶ ὀνειδίζειν λόγους οὓς ἤκουσε Κύριος ὁ Θεός σου, καὶ δεηθήσῃ πρὸς Κύριόν σου περὶ τῶν καταλελειμμένων τούτων. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως Ἐζεκίου πρὸς Ἠσαΐαν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἠσαΐας, οὕτως ἐρεῖτε πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν, τάδε λέγει Κύριος, μὴ φοβηθῇς ἀπὸ τῶν λόγων ὧν ἤκουσας, οὓς ὠνείδισάν με οἱ πρέσβεις βασιλέως Ἀσσυρίων. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβάλλω εἰς αὐτὸν πνεῦμα, καὶ ἀκούσας ἀγγελίαν, ἀποστραφήσεται εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ, καὶ πεσεῖται μαχαίρᾳ ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστρεψε Ῥαβσάκης, καὶ κατέλαβε τὸν βασιλέα Ἀσσυρίων πολιορκοῦντα Λοβνάν· καὶ ἤκουσεν ὅτι ἀπῆρεν ἀπὸ Λαχίς. Καὶ ἐξῆλθε Θαρακὰ βασιλεὺς Αἰθιόπων πολιορκῆσαι αὐτόν· καὶ ἀκούσας ἀπέστρεψε, καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἐζεκίαν, λέγων, οὕτως ἐρεῖτε Ἐζεκίᾳ βασιλεῖ τῆς Ἰουδαίας, μή σε ἀπατάτω ὁ Θεός σου, ἐφ’ ᾧ πέποιθας ἐπ’ αὐτῷ, λέγων, οὐ μὴ παραδοθῇ Ἰερουσαλὴμ ἐν χειρὶ

βασιλέως Ἀσσυρίων. Σὺ οὐκ ἤκουσας ἃ ἐποίησαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων, πᾶσαν τὴν γῆν ὡς ἀπώλεσαν; καὶ σὺ ῥυσθήσῃ; Μὴ ἐῤῥύσαντο αὐτοὺς οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, οὓς ἀπώλεσαν οἱ πατέρες μου, τήν τε Γωζᾶν, καὶ Χαῤῥὰν, καὶ Ῥαφὲθ, αἵ εἰσιν ἐν χώρᾳ Θεεμάθ; Ποῦ εἰσι βασιλεῖς Ἐμάθ; καὶ ποῦ Ἀρφάθ; καὶ ποῦ πόλεως Ἐπφαρουαὶμ, Ἀναγονγάυα; Καὶ ἔλαβεν Ἐζεκίας τὸ βιβλίον παρὰ τῶν ἀγγέλων, καὶ ἀνέγνω αὐτὸ, καὶ ἀνέβη εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ ἤνοιξεν αὐτὸ ἐναντίον Κυρίου. Καὶ προσηύξατο Ἐζεκίας πρὸς Κύριον, λέγων, Κύριος σαβαὼθ ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ, σὺ εἶ ὁ Θεὸς μόνος πάσης βασιλείας τῆς οἰκουμένης, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν· Κλῖνον Κύριε τὸ οὖς σου, εἰσάκουσον Κύριε, ἄνοιξον Κύριε τοὺς ὀφθαλμούς σου, εἴσβλεψον Κύριε, καὶ ἴδε τοὺς λόγους Σενναχηρεὶμ, οὓς ἀπέστειλεν ὀνειδίζειν Θεὸν ζῶντα. Ἐπ’ ἀληθείας γὰρ Κύριε ἠρήμωσαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων τὴν οἰκουμένην ὅλην, καὶ τὴν χώραν αὐτῶν, καὶ ἀνέβαλον τὰ εἴδωλα αὐτῶν εἰς τὸ πῦρ· οὐ γὰρ θεοὶ ἦσαν, ἀλλὰ ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων, ξύλα καὶ λίθοι· καὶ ἀπώσαντο αὐτούς. Νῦν δὲ Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν σῶσον ἡμᾶς ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, ἵνα γνῷ πᾶσα βασιλεία τῆς γῆς, ὅτι σῦ εἶ ὁ Θεὸς μόνος. Καὶ ἀπεστάλη Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς πρὸς Ἐζεκίαν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἤκουσα ἃ προσηύξω πρὸς μὲ περὶ Σενναχηρεὶμ βασιλέως Ἀσσυρίων. Οὗτος ὁ λόγος ὃν ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ ὁ Θεὸς, ἐφαύλισέ σε, καὶ ἐμυκτήρισέ σε παρθένος θυγάτηρ Σιὼν, ἐπὶ σοὶ κεφαλὴν ἐκίνησε θυγάτηρ Ἰερουσαλήμ. Τίνα ὠνείδισας καὶ παρώξυνας; ἢ πρὸς τίνα ὕψωσας τὴν φωνήν σου; καὶ οὐκ ᾖρας εἰς ὕψος τοὺς ὀφθαλμούς σου πρὸς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ; Ὅτι δι’ ἀγγέλων ὠνείδισας Κύριον· σὺ γὰρ εἶπας, τῷ πλήθει τῶν ἁρμάτων ἐγὼ ἀνέβην εἰς ὕψος ὀρέων, καὶ εἰς τὰ ἔσχατα τοῦ Λιβάνου, καὶ ἔκοψα

τὸ ὕψος τῆς κέδρου αὐτοῦ, καὶ τὸ κάλλος τῆς κυπαρίσσου, καὶ εἰσῆλθον εἰς ὕψος μέρους τοῦ δρυμοῦ, καὶ ἔθηκα γέφυραν, καὶ ἠρήμωσα ὕδατα καὶ πᾶσαν συναγωγὴν ὕδατος. Οὐ ταῦτα ἤκουσας πάλαι ἃ ἐγὼ ἐποίησα; ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων συνέταξα, νῦν δὲ ἐπέδειξα ἐξερημῶσαι ἔθνη ἐν ὀχυροῖς, καὶ οἰκοῦντας ἐν πόλεσιν ὀχυραῖς. Ἀνῆκα τὰς χεῖρας, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ ἐγένοντο ὡς χόρτος ξηρὸς ἐπὶ δωμάτων, καὶ ὡς ἄγρωστις. Νῦν δὲ τὴν ἀνάπαυσίν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν σου, καὶ τὴν εἴσοδόν σου ἐγὼ ἐπίσταμαι. Ὁ δὲ θυμός σου ὃν ἐθυμώθης, καὶ ἡ πικρία σου ἀνέβη πρὸς μὲ, καὶ ἐμβαλῶ φιμὸν εἰς τὴν ῥῖνά σου, καὶ χαλινὸν εἰς τὰ χείλη σου, καὶ ἀποστρέψω σε τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθες ἐν αὐτῇ. Τοῦτο δέ σοι τὸ σημεῖον· φάγε τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ἃ ἔσπαρκας, τῷ δὲ ἐνιαὐτῷ τῷ δευτέρῳ τὸ κατάλειμμα, τῷ δὲ τρίτῳ σπείραντες ἀμήσατε, καὶ φυτεύσατε ἀμπελῶνας, καὶ φάγεσθε τὸν καρπὸν αὐτῶν. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελιμμένοι ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φυήσουσι ῥίζαν κάτω, καὶ ποιήσουσι σπέρμα ἄνω· Ὅτι ἐξ Ἰερουσαλὴμ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι, καὶ οἱ σωζόμενοι ἐξ ὄρους Σιών· ὁ ζῆλος Κυρίου σαβαὼθ ποιήσει ταῦτα. Διατοῦτο οὕτως λέγει Κύριος ἐπὶ βασιλέα Ἀσσυρίων, οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς τὴν πόλιν ταύτην, οὐδὲ μὴ βάλῃ ἐπ’ αὐτὴν βέλος, οὐδὲ μὴ ἐπιβάλῃ ἐπ’ αὐτὴν θυρεὸν, οὐδὲ μὴ κυκλώσῃ ἐπ’ αὐτὴν χάρακα· Ἀλλὰ τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθεν, ἐν αὐτῇ ἀποστραφήσεται, καὶ εἰς τὴν πόλιν ταύτην οὐ μὴ εἰσέλθῃ· τάδε λέγει Κύριος. Ὑπερασπιῶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης τοῦ σῶσαι αὐτὴν δι’ ἐμὲ, καὶ διὰ Δαυὶδ τὸν παῖδά μου. Καὶ ἐξῆλθεν ἄγγελος Κυρίου, καὶ ἀνεῖλεν ἐκ τῆς παρεμβολῆς τῶν Ἀσσυρίων ἑκατὸν ὀγδοηκονταπέντε χιλιάδας· καὶ ἀναστάντες τοπρωΐ, εὗρον πάντα τὰ σώματα νεκρά. Καὶ ἀπῆλθεν ἀποστραφεὶς Σενναχηρεὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, καὶ ᾤκησεν ἐν Νινευῇ. Καὶ ἐν τῷ αὐτὸν

προσκυνεῖν ἐν τῷ οἴκῳ Νασαρὰχ τὸν πάτραρχον αὐτοῦ, Ἀδραμέλεχ καὶ Σαρασὰρ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπάταξαν αὐτὸν μαχαίραις, αὐτοὶ δὲ διεσώθησαν εἰς Ἀρμενίαν, καὶ ἐβασίλευσεν Ἀσορδὰν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ.

# 38

Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἐμαλακίσθη Ἐζεκίας ἕως θανάτου· καὶ ἦλθε πρὸς αὐτὸν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς ὁ προφήτης, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος, τάξαι περὶ τοῦ οἴκου σου, ἀποθνήσκεις γὰρ σὺ, καὶ οὐ ζήσῃ. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἐζεκίας τὸ πρόσωπον αὐτοῦ πρὸς τὸν τεῖχον, καὶ προσηύξατο πρὸς Κύριον, λέγων, μνήσθητι Κύριε, ὡς ἐπορεύθην ἐνώπιόν σου μετὰ ἀληθείας, ἐν καρδίᾳ ἀληθινῇ, καὶ τὰ ἀρεστὰ ἐνώπιόν σου ἐποίησα· καὶ ἔκλαυσεν Ἐζεκίας κλαυθμῷ μεγάλῳ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἡσαΐαν, λέγων, πορεύθητι, καὶ εἰπὸν Ἐζεκίᾳ, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Δαυὶδ τοῦ πατρός σου, ἤκουσα τῆς προσευχῆς σου, καὶ εἶδον τὰ δάκρυά σου· ἰδοὺ προστίθημι πρὸς τὸν χρόνον σου δεκαπέντε ἔτη, καὶ ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων ῥύσομαί σε καὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ ὑπερασπιῶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης. Τοῦτο δέ σοι τὸ σημεῖον παρὰ Κυρίου, ὅτι ποιήσει ὁ Θεὸς τὸ ῥῆμα τοῦτο· Ἰδοὺ ἐγὼ στρέφω τὴν σκιὰν τῶν ἀναβαθμῶν οὓς κατέβη τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου ὁ ἥλιος, ἀποστρέψω τὸν ἥλιον τοὺς δέκα ἀναβαθμούς· καὶ ἀνέβη ὁ ἥλιος τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς, οὓς κατέβη ἡ σκιά. ΠΡΟΣΕΥΧΗ ΕΖΕΚΙΟΥ ΒΑΣΙΛΕΩΣ ΤΗΣ ΙΟΥΔΑΙΑΣ, ΗΝΙΚΑ ΕΜΑΛΑΚΙΣΘΗ, ΚΑΙ ΑΝΕΣΤΗ ΕΚ ΤΗΣ ΜΑΛΑΚΙΑΣ ΑΥΤΟΥ. Ἐγὼ εἶπα ἐν τῷ ὕψει τῶν ἡμερῶν μου,

πορεύσομαι ἐν πύλαις ἅδου, καταλείψω τὰ ἔτη τὰ ἐπίλοιπα. Εἶπα, οὐκέτι οὐ μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ Θεοῦ ἐπὶ γῆς ζώντων, οὐκέτι μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ γῆς, οὐκέτι μὴ ἴδω ἄνθρωπον. Ἐξέλιπεν ἐκ τῆς συγγενείας μου, κατέλιπον τὸ ἐπίλοιπον τῆς ζωῆς μου, ἐξῆλθε καὶ ἀπῆλθεν ἀπ᾽ ἐμοῦ ὥσπερ ὁ σκηνὴν καταλύων πήξας· ὡς ἱστὸς τὸ πνεῦμά μου παρ᾽ ἐμοὶ ἐγένετο, ἐρίθου ἐγγιζούσης ἐκτεμεῖν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ παρεδόθην ἕως πρωΐ ὡς λέοντι, οὕτως συνέτριψε πάντα τὰ ὀστᾶ μου· ἀπὸ γὰρ τῆς ἡμέρας ἕως νυκτὸς παρεδόθην. Ὡς χελιδὼν, οὕτω φωνήσω, καὶ ὡς περιστερὰ, οὕτω μελετῶ· ἐξέλιπον γάρ μου οἱ ὀφθαλμοὶ τοῦ βλέπειν εἰς τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ πρὸς τὸν Κύριον, ὃς ἐξείλατό με, καὶ ἀφείλατό μου τὴν ὀδύνην τῆς ψυχῆς. Κύριε, περὶ αὐτῆς γὰρ ἀνηγγέλη σοι, καὶ ἐξήγειράς μου τὴν πνοὴν, καὶ παρακληθεὶς ἔζησα. Εἵλου γάρ μου τὴν ψυχὴν, ἵνα μὴ ἀπόληται, καὶ ἀπέῤῥιψας ὀπίσω μου πάσας τὰς ἁμαρτίας. Οὐ γὰρ οἱ ἐν ᾅδου αἰνέσουσί σε, οὐδὲ οἱ ἀποθανόντες εὐλογήσουσί σε, οὐδὲ ἐλπιοῦσιν οἱ ἐν ᾅδου τὴν ἐλεημοσύνην σου. Οἱ ζῶντες εὐλογήσουσί σε ὃν τρόπον κἀγώ· ἀπὸ γὰρ τῆς σήμερον παιδία ποιήσω, ἃ ἀναγγελοῦσι τὴν δικαιοσύνην σου Θεὲ τῆς σωτηρίας μου, καὶ οὐ παύσομαι εὐλογῶν σε μετὰ ψαλτηρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, κατέναντι τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας πρὸς Ἐζεκίαν, λάβε παλάθην ἐκ σύκων, καὶ τρίψον, καὶ κατάπλασαι, καὶ ὑγιὴς ἔσῃ. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, τοῦτο σημεῖον πρὸς Ἐζεκίαν, ὅτι ἀναβήσομαι εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ.

# 39

Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπέστειλε Μαρωδὰχ Βαλαδὰν ὁ υἱὸς τοῦ Βαλαδὰν, ὁ βασιλεὺς τῆς Βαβυλωνίας, ἐπιστολὰς καὶ πρέσβεις καὶ δῶρα Ἐζεκίᾳ· ἤκουσε γὰρ, ὅτι ἐμαλακίσθῃ ἕως θανάτου, καὶ ἀνέστη. Καὶ ἐχάρη ἐπ᾽ αὐτοῖς Ἐξεκίας, καὶ ἔδειξεν αὐτοῖς τὸν οἶκον τοῦ νεχωθᾶ, καὶ τοῦ ἀργυρίου, καὶ τοῦ χρυσίου, καὶ τῆς στακτῆς, καὶ τῶν θυμιαμάτων, καὶ τοῦ μύρου, καὶ πάντας τοὺς οἴκους τῶν σκευῶν τῆς γάζης, καὶ πάντα ὅσα ἦν ἐν τοῖς θησαυροῖς αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἦν οὐθὲν ὃ οὐκ ἔδειξεν Ἐζεκίας ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ ἐξουσίᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, τί λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι οὗτοι; καὶ πόθεν ἥκασι πρὸς σέ; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, ἐκ γῆς πόῤῥωθεν ἥκασι πρὸς μέ, ἐκ Βαβυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας, τί εἴδοσαν ἐν τῷ οἴκῳ σου; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ μου εἴδοσαν, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ὃ οὐκ εἴδοσαν, ἀλλὰ καὶ τὰ ἐν τοῖς θησαυροῖς μου. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας αὐτῷ, ἄκουσον τὸν λόγον Κυρίου σαβαώθ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, καὶ λήψονται πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ ὅσα συνήγαγον οἱ πατέρες σου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, εἰς Βαβυλῶνα ἤξει, καὶ οὐδὲν οὐ μὴ καταλείπωσιν· εἶπε δὲ ὁ Θεὸς, ὅτι καὶ ἀπὸ τῶν τέκνων σου ὧν γεννήσεις, λήψονται, καὶ ποιήσουσι σπάδοντας ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ βασιλέως τῶν Βαβυλωνίων. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας Ἡσαΐᾳ, ἀγαθὸς ὁ λόγος Κυρίου, ὃν ἐλάλησε· γενέσθω δὴ εἰρήνη καὶ δικαιοσύνη ἐν ταῖς ἡμέραις μου.

# 40

Παρακαλεῖτε παρακαλεῖτε τὸν λαόν μου, λέγει ὁ Θεός. Ἱερεῖς λαλήσατε εἰς τὴν καρδίαν Ἱερουσαλὴμ, παρακαλέσατε αὐτὴν, ὅτι

ἐπλήσθη ἡ ταπείνωσις αὐτῆς, λέλυται αὐτῆς ἡ ἁμαρτία, ὅτι ἐδέξατο ἐκ χειρὸς Κυρίου διπλᾶ τὰ ἁμαρτήματα αὐτῆς. Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Πᾶσα φάραγξ πληρωθήσεται, καὶ πᾶν ὄρος καὶ βουνὸς ταπεινωθήσεται· καὶ ἔσται πάντα τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν, καὶ ἡ τραχεῖα εἰς πεδία. Καὶ ὀφθήσεται ἡ δόξα Κυρίου, καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ σωτήριον τοῦ Θεοῦ, ὅτι Κύριος ἐλάλησε. Φωνὴ λέγοντος, βόησον· καὶ εἶπα, τί βοήσω; πᾶσα σὰρξ χορτὸς, καὶ πᾶσα δόξα ἀνθρώπου ὡς ἄνθος χόρτου· Ἐξηράνθη ὁ χόρτος, καὶ τὸ ἄνθος ἐξέπεσε· τὸ δὲ ῥῆμα τοῦ Θεοῦ ἡμῶν μένει εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐπ’ ὄρος ὑψηλὸν ἀνάβηθι ὁ εὐαγγελιζόμενος Σιὼν, ὕψωσον τῇ ἰσχύϊ τὴν φωνήν σου ὁ εὐαγγελιζόμενος Ἰερουσαλήμ· ὑψώσατε, μὴ φοβεῖσθε· εἰπὸν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, ἰδοὺ ὁ Θεὸς ὑμῶν, ἰδοὺ Κύριος· Κύριος μετὰ ἰσχύος ἔρχεται, καὶ ὁ βραχίων μετὰ κυρίας· ἰδοὺ ὁ μισθὸς αὐτοῦ μετ’ αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔργον ἐναντίον αὐτοῦ. Ὡς ποιμὴν ποιμανεῖ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, καὶ τῷ βραχίονι αὐτοῦ συνάξει ἄρνας, καὶ ἐν γαστρὶ ἐχούσας παρακαλέσει. Τίς ἐμέτρησε τῇ χειρὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸν οὐρανὸν σπιθαμῇ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν δρακί; τίς ἔστησε τὰ ὄρη σταθμῷ, καὶ τὰς νάπας ζυγῷ; Τίς ἔγνω νοῦν Κυρίου; καὶ τίς αὐτοῦ σύμβουλος ἐγένετο, ὃς συμβιβᾷ αὐτόν; Ἢ πρὸς τίνα συνεβουλεύσατο, καὶ συνεβίβασεν αὐτόν; ἢ τίς ἔδειξεν αὐτῷ κρίσιν; ἢ ὁδὸν συνέσεως τίς ἔδειξεν αὐτῷ; Εἰ πάντα τὰ ἔθνη ὡς σταγὼν ἀπὸ κάδου, καὶ ὡς ῥοπὴ ζυγοῦ ἐλογίσθησαν, ὡς σίελος λογισθήσονται; Ὁ δὲ Λίβανος οὐχ ἱκανὸς εἰς καῦσιν, καὶ πάντα τὰ τετράποδα οὐχ ἱκανὰ εἰς ὁλοκάρπωσιν, καὶ πάντα τὰ ἔθνη ὡς οὐδέν εἰσι, καὶ εἰς οὐθὲν ἐλογίσθησαν. Τίνι ὡμοιώσατε Κύριον; καὶ τίνι ὁμοιώματι ὡμοιώσατε αὐτόν; Μὴ εἰκόνα ἐποίησε τέκτων, ἢ χρυσοχόος χωνεύσας χρυσίον περιεχρύσωσεν αὐτὸν,

ὁμοίωμα κατεσκεύασεν αὐτόν; Ξύλον γὰρ ἄσηπτον ἐκλέγεται τέκτων, καὶ σοφῶς ζητήσει πῶς στήσει εἰκόνα αὐτοῦ, καὶ ἵνα μὴ σαλεύηται. Οὐ γνώσεσθε; οὐκ ἀκούσεσθε; οὐκ ἀνηγγέλη ἐξ ἀρχῆς ὑμῖν; οὐκ ἔγνωτε τὰ θεμέλια τῆς γῆς; Ὁ κατέχων τὸν γῦρον τῆς γῆς, καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ ὡς ἀκρίδες· ὁ στήσας ὡς καμάραν τὸν οὐρανὸν, καὶ διατείνας ὡς σκηνὴν κατοικεῖν· Ὁ διδοὺς ἄρχοντας ὡς οὐδὲν ἄρχειν, τὴν δὲ γῆν ὡς οὐδὲν ἐποίησεν. Οὐ γὰρ μὴ φυτεύσωσιν, οὐδὲ μὴ σπείρωσιν, οὐδὲ μὴ ῥιζωθῇ εἰς τὴν γῆν ἡ ῥίζα αὐτῶν· ἔπνευσεν ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ καταιγὶς ὡς φρύγανα λήψεται αὐτούς. Νῦν οὖν τίνι με ὡμοιώσατε, καὶ ὑψωθήσομαι; εἶπεν ὁ ἅγιος. Ἀναβλέψατε εἰς ὕψος τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ ἴδετε, τίς κατέδειξε ταῦτα πάντα; ὁ ἐκφέρων κατ’ ἀριθμὸν τὸν κόσμον αὐτοῦ, πάντας ἐπ’ ὀνόματι καλέσει ἀπὸ πολλῆς δόξης, καὶ ἐν κράτει ἰσχύος αὐτοῦ· οὐδέν σε ἔλαθε. Μὴ γὰρ εἴπῃς Ἰακὼβ, καὶ τί ἐλάλησας Ἰσραήλ; ἀπεκρύβη ἡ ὁδός μου ἀπὸ τοῦ Θεοῦ, καὶ ὁ Θεός μου τὴν κρίσιν ἀφεῖλε, καὶ ἀπέστη. Καὶ νῦν οὐκ ἔγνως; εἰ μὴ ἤκουσας; Θεὸς αἰώνιος, ὁ Θεὸς ὁ κατασκευάσας τὰ ἄκρα τῆς γῆς· οὐ πεινάσει, οὐδὲ κοπιάσει, οὐδὲ ἔστιν ἐξεύρεσις τῆς φρονήσεως αὐτοῦ, διδοὺς τοῖς πεινῶσιν ἰσχὺν, καὶ τοῖς μὴ ὀδυνωμένοις λύπην. Πεινάσουσι γὰρ νεώτεροι, καὶ κοπιάσουσι νεανίσκοι, καὶ ἐκλεκτοὶ ἀνίσχυες ἔσονται. Οἱ δὲ ὑπομένοντες τὸν Θεὸν, ἀλλάξουσιν ἰσχὺν, πτεροφυήσουσιν ὡς ἀετοὶ, δραμοῦνται καὶ οὐ κοπιάσουσι, βαδιοῦνται καὶ οὐ πεινάσουσιν.

# 41

Ἐγκαινίζεσθε πρὸς μὲ νῆσοι, οἱ γὰρ ἄρχοντες ἀλλάξουσιν ἰσχύν·

ἐγγισάτωσαν καὶ λαλησάτωσαν ἅμα, τότε κρίσιν ἀναγγειλάτωσαν. Τίς ἐξήγειρεν ἀπὸ ἀνατολῶν δικαιοσύνην, ἐκάλεσεν αὐτὴν κατὰ πόδας αὐτοῦ, καὶ πορεύσεται; δώσει ἐναντίον ἐθνῶν, καὶ βασιλεῖς ἐκστήσει· καὶ δώσει εἰς γῆν τὰς μαχαίρας αὐτῶν, καὶ ὡς φρύγανα ἐξωσμένα τὰ τόξα αὐτῶν. Καὶ διώξεται αὐτοὺς, διελεύσεται ἐν εἰρήνῃ ἡ ὁδὸς τῶν ποδῶν αὐτοῦ. Τίς ἐνήργησε, καὶ ἐποίησε ταῦτα; ἐκάλεσεν αὐτὴν ὁ καλῶν αὐτὴν ἀπὸ γενεῶν ἀρχῆς· ἐγὼ Θεὸς πρῶτος, καὶ εἰς τὰ ἐπερχόμενα ἐγώ εἰμι. Εἴδοσαν ἔθνη καὶ ἐφοβηθήσαν, τὰ ἄκρα τῆς γῆς ἤγγισαν, καὶ ἦλθον ἅμα, κρίνων ἕκαστος τῷ πλησίον, καὶ τῷ ἀδελφῷ βοηθῆσαι· καὶ ἐρεῖ, ἴσχυσεν ἀνὴρ τέκτων, καὶ χαλκεὺς τύπτων σφύρῃ, ἅμα ἐλαύνων· πότε μὲν ἐρεῖ, σύμβλημα καλόν ἐστιν, ἰσχύρωσαν αὐτὰ ἐν ἥλοις, θήσουσιν αὐτὰ, καὶ οὐ κινηθήσονται. Σὺ δὲ, Ἰσραὴλ παῖς μου Ἰακὼβ, καὶ ὃν ἐξελεξάμην, σπέρμα Ἀβραὰμ, ὃν ἠγάπησα· Οὗ ἀντελαβόμην ἀπ’ ἄκρων τῆς γῆς, καὶ ἐκ τῶν σκοπιῶν αὐτῆς ἐκάλεσά σε, καὶ εἶπά σοι, παῖς μου εἶ, ἐξελεξάμην σε, καὶ οὐκ ἐγκατέλιπόν σε. Μὴ φοβοῦ, μετὰ σοῦ γάρ εἰμι, μὴ πλανῶ· ἐγὼ γάρ εἰμι ὁ Θεός σου, ὁ ἐνισχύσας σε, καὶ ἐβοήθησά σοι, καὶ ἠσφαλισάμην σε τῇ δεξιᾷ τῇ δικαίᾳ μου. Ἰδοὺ αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται πάντες οἱ ἀντικείμενοί σοι· ἔσονται γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ ἀπολοῦνται πάντες οἱ ἀντίδικοί σου. Ζητήσεις αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ εὕρῃς τοὺς ἀνθρώπους οἳ παροινήσουσιν εἰς σέ· ἔσονται γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ οὐκ ἔσονται οἱ ἀντιπολεμοῦντές σε· Ὅτι ἐγὼ ὁ Θεός σου, ὁ κρατῶν τῆς δεξιᾶς σου, ὁ λέγων σοι, μὴ φοβοῦ Ἰακὼβ ὀλιγοστὸς Ἰσραὴλ· ἐγὼ ἐβοήθησά σοι, λέγει ὁ Θεὸς σου, ὁ λυτρούμενὸσσε Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐποίησά σε ὡς τροχοὺς ἁμάξης ἀλοῶντας καινοὺς πριστηροειδεῖς, καὶ ἀλοήσεις ὄρη, καὶ λεπτυνεῖς βουνοὺς, καὶ ὡς χνοῦν θήσεις, καὶ λικήσεις, καὶ ἄνεμος λήμψεται αὐτοὺς, καὶ καταιγὶς διασπερεῖ

αὐτούς· σὺ δὲ εὐφρανθήσῃ ἐν τοῖς ἁγίοις Ἰσραήλ. Καὶ ἀγαλλιάσονται οἱ πτωχοὶ καὶ οἱ ἐνδεεῖς· ζητήσουσι γὰρ ὕδωρ, καὶ οὐκ ἔσται, ἡ γλῶσσα αὐτῶν ἀπὸ τῆς δίψης ἐξηράνθη· ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς, ἐγὼ ἐπακούσομαι ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω αὐτοὺς, ἀλλὰ ἀνοίξω ἐπὶ τῶν ὀρέων ποταμοὺς, καὶ ἐν μέσῳ πεδίων πηγάς· ποιήσω τὴν ἔρημον εἰς ἕλη ὑδάτων, καὶ τὴν διψῶσαν γῆν ἐν ὑδραγωγοῖς. Θήσω εἰς τὴν ἄνυδρον γῆν, κέδρον καὶ πύξον, μυρσίνην καὶ κυπάρισσον, καὶ λεύκην· Ἵνα ἴδωσι καὶ γνῶσι, καὶ ἐννοηθῶσι καὶ ἐπιστῶνται ἅμα, ὅτι χεὶρ Κυρίου ἐποίησε ταῦτα, καὶ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ κατέδειξεν. Ἐγγίζει ἡ κρίσις ὑμῶν, λέγει Κύριος ὁ Θεός· ἤγγισαν αἱ βουλαὶ ὑμῶν, λέγει ὁ βασιλεὺς Ἰακώβ. Ἐγγισάτωσαν, καὶ ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν ἃ συμβήσεται, ἢ τὰ πρότερον τίνα ἦν, εἴπατε, καὶ ἐπιστήσομεν τὸν νοῦν, καὶ γνωσόμεθα τί τὰ ἔσχατα καὶ τὰ ἐπερχόμενα· εἴπατε ἡμῖν, ἀναγγείλατε ἡμῖν τὰ ἐπερχόμενα ἐπ’ ἐσχάτου, καὶ γνωσόμεθα ὅτι θεοί ἐστε· εὐποιήσατε καὶ κακώσατε, καὶ θαυμασόμεθα, καὶ ὀψόμεθα ἅμα ὅτι πόθεν ἐστὲ ὑμεῖς, καὶ πόθεν ἡ ἐργασία ὑμῶν· ἐκ γῆς βδέλυγμα ἐξελέξαντο ὑμᾶς. Ἐγὼ δὲ ἤγειρα τὸν ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ τὸν ἀφ’ ἡλίου ἀνατολῶν· κληθήσονται τῷ ὀνόματί μου· ἐρχέσθωσαν ἄρχοντες, καὶ ὡς πηλὸς κεραμέως, καὶ ὡς κεραμεὺς καταπατῶν τὸν πηλὸν, οὕτω καταπατηθήσεσθε. Τίς γὰρ ἀναγγελεῖ τὰ ἐξ ἀρχῆς, ἵνα γνῶμεν καὶ τὰ ἔμπροσθεν, καὶ ἐροῦμεν ὅτι ἀληθῆ ἐστιν; οὐκ ἔστιν ὁ προλέγων, οὐδὲ ὁ ἀκούων ὑμῶν τοὺς λόγους. Ἀρχὴν Σιὼν δώσω, καὶ Ἱερουσαλὴμ παρακαλέσω εἰς ὁδόν. Ἀπὸ γὰρ τῶν ἐθνῶν, ἰδοὺ οὐδείς· καὶ ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν οὐκ ἦν ὁ ἀναγγέλλων· καὶ ἐὰν ἐρωτήσω αὐτοὺς, πόθεν ἐστέ; οὐ μὴ ἀποκριθῶσί μοι. Εἰσὶ γὰρ οἱ ποιοῦντες ὑμᾶς, καὶ μάτην οἱ πλανῶντες ὑμᾶς.

# 42

Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, ἀντιλήψομαι αὐτοῦ· Ἰσραὴλ ὁ ἐκλεκτός μου, προσεδέξατο αὐτὸν ἡ ψυχή μου· ἔδωκα τὸ πνεῦμά μου ἐπ᾽ αὐτὸν, κρίσιν τοῖς ἔθνεσιν ἐξοίσει. Οὐ κεκράξεται, οὐδὲ ἀνήσει, οὐδὲ ἀκουσθήσεται ἔξω ἡ φωνὴ αὐτοῦ. Κάλαμον τεθλασμένον οὐ συντρίψει, καὶ λίνον καπνιζόμενον οὐ σβέσει, ἀλλὰ εἰς ἀλήθειαν ἐξοίσει κρίσιν. Ἀναλάμψει, καὶ οὐ θραυσθήσεται, ἕως ἂν θῇ ἐπὶ τῆς γῆς κρίσιν, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἔθνη ἐλπιοῦσιν. Οὕτω λέγει Κύριος ὁ Θεὸς, ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν, καὶ πήξας αὐτὸν, ὁ στερεώσας τὴν γῆν, καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ διδοὺς πνοὴν τῷ λαῷ τῷ ἐπ᾽ αὐτῆς, καὶ πνεῦμα τοῖς πατοῦσιν αὐτήν· Ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ἐκάλεσά σε ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ κρατήσω τῆς χειρός σου, καὶ ἐνισχύσω σε, καὶ ἔδωκά σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν, ἀνοῖξαι ὀφθαλμοὺς τυφλῶν, ἐξαγαγεῖν ἐκ δεσμῶν δεδεμένους καὶ ἐξ οἴκου φυλακῆς, καὶ καθημένους ἐν σκότει. Ἐγὼ Κύριος ὁ Θεός, τοῦτό μου ἐστὶ τὸ ὄνομα, τὴν δόξαν μου ἑτέρῳ οὐ δώσω, οὐδὲ τὰς ἀρετάς μου τοῖς γλυπτοῖς. Τὰ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἰδοὺ ἥκασι, καὶ καινὰ ἃ ἐγὼ ἀναγγέλλω, καὶ πρὸ τοῦ ἀναγγεῖλαι ἐδηλώθη ὑμῖν. Ὑμνήσατε τῷ Κυρίῳ ὕμνον καινόν· ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, δοξάζετε τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἀπ᾽ ἄκρου τῆς γῆς, οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ πλέοντες αὐτὴν, αἱ νῆσοι καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτάς. Εὐφράνθητι ἔρημος, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῆς, ἐπαύλεις, καὶ οἱ κατοικοῦντες Κηδάρ· εὐφρανθήσονται οἱ κατοικοῦντες πέτραν, ἀπ᾽ ἄκρου τῶν ὀρέων βοήσουσι, δώσουσι τῷ Θεῷ δόξαν, τὰς ἀρετὰς αὐτοῦ ἐν ταῖς νήσοις ἀναγγελοῦσι. Κύριος ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων ἐξελεύσεται, καὶ συντρίψει πόλεμον, ἐπεγερεῖ ζῆλον, καὶ βοήσεται ἐπὶ τοὺς

ἐχθροὺς αὐτοῦ μετὰ ἰσχύος. Ἐσιώπησα, μὴ καὶ ἀεὶ σιωπήσομαι καὶ ἀνέξομαι; ὡς ἡ τίκτουσα ἐκαρτέρησα, ἐκστήσω καὶ ξηρανῶ ἅμα· Ἐρημώσω ὄρη καὶ βουνοὺς, καὶ πάντα χόρτον αὐτῶν ξηρανῶ· καὶ θήσω ποταμοὺς εἰς νήσους, καὶ ἕλη ξηρανῶ. Καὶ ἄξω τυφλοὺς ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ἔγνωσαν, καὶ τρίβους ἃς οὐκ ᾔδεισαν, πατῆσαι ποιήσω αὐτούς· ποιήσω αὐτοῖς τὸ σκότος εἰς φῶς, καὶ τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν· ταῦτα τὰ ῥήματα ποιήσω, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω αὐτούς· Αὐτοὶ δὲ ἀπεστράφησαν εἰς τὰ ὀπίσω· αἰσχύνθητε αἰσχύνην οἱ πεποιθότες ἐπὶ τοῖς γλυπτοῖς, οἱ λέγοντες τοῖς χωνευτοῖς, ὑμεῖς ἐστε θεοὶ ἡμῶν. Οἱ κωφοὶ ἀκούσατε, καὶ οἱ τυφλοὶ ἀναβλέψατε ἰδεῖν. Καὶ τίς τυφλὸς ἀλλ’ ἢ οἱ παῖδές μου, καὶ κωφοὶ ἀλλ’ ἢ οἱ κυριεύοντες αὐτῶν; καὶ ἐτυφλώθησαν οἱ δοῦλοι τοῦ Θεοῦ. Εἴδετε πλεονάκις, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε· ἠνοιγμένα τὰ ὦτα. καὶ οὐκ ἠκούσατε. Κύριος ὁ Θεὸς ἐβουλεύσατο ἵνα δικαιωθῇ, καὶ μεγαλύνῃ αἴνεσιν. Καὶ εἶδον, καὶ ἐγένετο ὁ λαὸς πεπρονομευμένος, καὶ διηρπασμένος· ἡ γὰρ παγὶς ἐν τοῖς ταμείοις πανταχοῦ, καὶ ἐν οἴκοις ἅμα, ὅπου ἔκρυψαν αὐτούς· ἐγένοντο εἰς προνομὴν, καὶ οὐκ ἦν ἐξαιρούμενος ἅρπαγμα, καὶ οὐκ ἦν ὁ λέγων, ἀπόδος. Τίς ἐν ὑμῖν ὃς ἐνωτιεῖται ταῦτα; εἰσακούσατε εἰς τὰ ἐπερχόμενα. Οἷς ἔδωκεν εἰς διαρπαγὴν Ἰακὼβ καὶ Ἰσραὴλ τοῖς προνομεύουσιν αὐτόν; οὐχὶ ὁ Θεὸς ᾧ ἡμάρτοσαν αὐτῷ, καὶ οὐκ ἠβούλοντο ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ πορεύεσθαι, οὐδὲ ἀκούειν τοῦ νόμου αὐτοῦ; Καὶ ἐπήγαγεν ἐπ’ αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, καὶ κατίσχυσεν αὐτοὺς πόλεμος, καὶ οἱ συμφλέγοντες αὐτοὺς κύκλῳ, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ἕκαστος αὐτῶν, οὐδὲ ἔθεντο ἐπὶ ψυχήν.

# 43

Καὶ νῦν οὕτως λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας σε Ἰακὼβ, καὶ ὁ πλάσας σε Ἰσραὴλ, μὴ φοβοῦ, ὅτι ἐλυτρωσάμην σε, ἐκάλεσά σε τὸ ὄνομά σου· ἐμὸς εἶ σύ. Καὶ ἐὰν διαβαίνῃς δι’ ὕδατος, μετὰ σοῦ εἰμι, καὶ ποταμοὶ οὐ συνκλύσουσί σε· καὶ ἐὰν διέλθῃς διὰ πυρὸς, οὐ μὴ κατακαυθῇς, φλὸξ οὐ κατακαύσει σε. Ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεός σου ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ σώζων σε· ἐποίησα ἄλλαγμά σου Αἴγυπτον καὶ Αἰθιοπίαν, καὶ Σοήνην ὑπὲρ σοῦ. Αφ’ οὗ ἔντιμος ἐγένου ἐναντίον ἐμοῦ, ἐδοξάσθης, καὶ ἐγώ σε ἠγάπησα, καὶ δώσω ἀνθρώπους ὑπὲρ σοῦ, καὶ ἄρχοντας ὑπὲρ τῆς κεφαλῆς σου. Μὴ φοβοῦ, ὅτι μετὰ σοῦ εἰμι· ἀπὸ ἀνατολῶν ἄξω τὸ σπέρμα σου, καὶ ἀπὸ δυσμῶν συνάξω σε. Ἐρῶ τῷ Βορρᾷ, ἄγε, καὶ τῷ Λιβὶ, μὴ κώλυε· ἄγε τοὺς υἱούς μου ἀπὸ τῆς πόῤῥωθεν, καὶ τὰς θυγατέρας μου ἀπ’ ἄκρων τῆς γῆς, πάντας ὅσοι ἐπικέκληνται τῷ ὀνόματί μου· ἐν γὰρ τῇ δόξῃ μου κατεσκεύασα αὐτὸν, καὶ ἔπλασα αὐτὸν, καὶ ἐποίησα αὐτὸν, καὶ ἐξήγαγον λαὸν τυφλὸν, καὶ ὀφθαλμοί εἰσιν ὡσαύτως τυφλοὶ, καὶ κωφοὶ τὰ ὦτα ἔχοντες. Πάντα τὰ ἔθνη συνήχθησαν ἅμα, καὶ συναχθήσονται ἄρχοντες ἐξ αὐτῶν· τίς ἀναγγελεῖ ταῦτα; ἢ τὰ ἐξ ἀρχῆς τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν; ἀγαγέτωσαν τοῦς μάρτυρας αὐτῶν καὶ δικαιωθήτωσαν, καὶ ἀκουσάτωσαν, καὶ εἰπάτωσαν ἀληθῆ. Γένεσθέ μοι μάρτυρες, καὶ ἐγὼ μάρτυς, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς, καὶ ὁ παῖς μου ὃν ἐξελεξάμην, ἵνα γνῶτε καὶ πιστεύσητε, καὶ συνῆτε ὅτι ἐγώ εἰμι· ἔμπροσθέν μου οὐκ ἐγένετο ἄλλος Θεὸς, καὶ μετ’ ἐμὲ οὐκ ἔσται. Ἐγὼ ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστι πάρεξ ἐμοῦ σώζων. Ἐγὼ ἀνήγγειλα καὶ ἔσωσα, ὠνείδισα καὶ οὐκ ἦν ἐν ὑμῖν ἀλλότριος· ὑμεῖς ἐμοὶ μάρτυρες, καὶ ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ἔτι ἀπ’ ἀρχῆς, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν μου ὁ ἐξαιρούμενος· ποιήσω, καὶ τίς ἀποστρέψει αὐτό; Οὕτως λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ λυτρούμενος ὑμᾶς, ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ, ἕνεκεν ὑμῶν ἀποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ἐπεγερῶ

φεύγοντας πάντας, καὶ Χαλδαῖοι ἐν πλοίοις δεθήσονται. Ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὁ ἅγιος ὑμῶν, ὁ καταδείξας Ἰσραὴλ βασιλέα ὑμῶν. Οὕτως λέγει Κύριος, ὁ διδοὺς ἐν θαλάσσῃ ὁδὸν, καὶ ἐν ὕδατι ἰσχυρῷ τρίβον, ὁ ἐξαγαγὼν ἅρματα καὶ ἵππον καὶ ὄχλον ἰσχυρον· ἀλλ’ ἐκοιμήθησαν, καὶ οὐκ ἀναστήσονται, ἐσβέσθησαν ὡς λῖνον ἐσβεσμένον. Μὴ μνημονεύετε τὰ πρῶτα, καὶ τὰ ἀρχαῖα μὴ συλλογίζεσθε. Ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ καινὰ, ἃ νῦν ἀνατελεῖ, καὶ γνώσεσθε αὐτά· καὶ ποιήσω ἐν τῇ ἐρήμῳ ὁδὸν, καὶ ἐν τῇ ἀνύδρῳ ποταμούς. Εὐλογήσουσί με τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, σειρῆνες, καὶ θυγατέρες στρουθῶν, ὅτι ἔδωκα ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ ποταμοὺς ἐν τῇ ἀνύδρῳ, ποτίσαι τὸ γένος μου τὸ ἐκλεκτὸν, λαόν μου ὃν περιεποιησάμην τὰς ἀρετάς μου διηγεῖσθαι. Οὐ νῦν ἐκάλεσά σε Ἰακὼβ, οὐδὲ κοπιάσαι σε ἐποίησα Ἰσραήλ. Οὐκ ἤνεγκάς μοι πρόβατά σου τῆς ὁλοκαρπώσεώς σου, οὐδὲ ἐν ταῖς θυσίαις σου ἐδόξασάς με· οὐκ ἐδούλωσά σε ἐν θυσίαις, οὐδὲ ἔγκοπον ἐποίησά σε ἐν λιβάνῳ, οὐδὲ ἐκτήσω μοι ἀργυρίου θυσίασμα, οὐδὲ τὸ στέαρ τῶν θυσιῶν σου ἐπεθύμησα· ἀλλὰ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου προέστης μου, καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου. Ἐγώ εἰμι ἐγώ εἰμι ὁ ἐξαλείφων τὰς ἀνομίας σου ἕνεκεν ἐμοῦ, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου, καὶ οὐ μὴ μνησθήσομαι. Σὺ δὲ μνήσθητι, καὶ κριθῶμεν· λέγε σὺ τὰς ἀνομίας σου πρῶτος, ἵνα δικαιωθῇς. Οἱ πατέρες ὑμῶν πρῶτοι, καὶ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν ἠνόμησαν εἰς ἐμέ. Καὶ ἐμίαναν οἱ ἄρχοντες τὰ ἅγιά μου· καὶ ἔδωκα ἀπωλέσαι Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ εἰς ὀνειδισμόν.

# 44

Νῦν δὲ ἄκουσον Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, καὶ Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην.

Οὕτω λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας σε, καὶ ὁ πλάσας σε ἐκ κοιλίας, ἔτι βοηθηθήσῃ· μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, καὶ ἠγαπημένος Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην. Ὅτι ἐγὼ δώσω ὕδωρ ἐν δίψει τοῖς πορευομένοις ἐν ἀνύδρῳ, ἐπιθήσω τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τὸ σπέρμα σου, καὶ τὰς εὐλογίας μου ἐπὶ τὰ τέκνα σου, καὶ ἀνατελοῦσιν ὡς ἀναμέσον ὕδατος χόρτος, καὶ ὡς ἰτέα ἐπὶ παραῤῥέον ὕδωρ. Οὗτος ἐρεῖ, τοῦ Θεοῦ εἰμι, καὶ οὗτος βοήσεται ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰακώβ· καὶ ἕτερος ἐπιγράψει χειρὶ αὐτοῦ, τοῦ Θεοῦ εἰμι, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραὴλ βοήσεται. Οὕτως λέγει ὁ Θεὸς ὁ βασιλεὺς Ἰσραὴλ, καὶ ῥυσάμενος αὐτὸν Θεὸς σαβαὼθ, ἐγὼ πρῶτος, καὶ ἐγὼ μετὰ ταῦτα· πλὴν ἐμοῦ οὐκ ἔστι Θεός. Τίς ὥσπερ ἐγὼ; στήτω, καὶ καλεσάτω, καὶ ἀναγγειλάτω, καὶ ἑτοιμασάτω μοι ἀφ’ οὗ ἐποίησα ἄνθρωπον εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ τὰ ἐπερχόμενα πρὸ τοῦ ἐλθεῖν ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν. Μὴ παρακαλύπτεσθε, μηδὲ πλανᾶσθε· οὐκ ἀπ’ ἀρχῆς ἠνωτίσασθε, καὶ ἀπήγγειλα ὑμῖν; μάρτυρες ὑμεῖς ἐστε, εἰ ἔστι Θεὸς πλὴν ἐμοῦ. Καὶ οὐκ ἤκουσαν τότε οἱ πλάσσοντες· καὶ οἱ γλύφοντες, πάντες μάταιοι, ποιοῦντες τὰ καταθύμια αὐτῶν, ἃ οὐκ ὠφελήσει αὐτούς· ἀλλὰ αἰσχυνθήσονται οἱ πλάσσοντες θεὸν, καὶ γλύφοντες πάντες ἀνωφελῆ, καὶ πάντες ὅθεν ἐγένοντο ἐξηράνθησαν· καὶ κωφοὶ ἀπὸ ἀνθρώπων συναχθήτωσαν πάντες, καὶ στησάτωσαν ἅμα· καὶ ἐντραπήτωσαν, καὶ αἰσχυνθήτωσαν ἅμα· Ὅτι ὤξυνε τέκτων σίδηρον· σκεπάρνῳ εἰργάσατο αὐτὸ, καὶ ἐν τερέτρῳ ἔστησεν αὐτὸ, καὶ εἰργάσατο αὐτὸ ἐν τῷ βραχίονι τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, καὶ πεινάσει, καὶ ἀσθενήσει, καὶ οὐ μὴ πίῃ ὕδωρ. Ἐκλεξάμενος τέκτων ξύλον, ἔστησεν αὐτὸ ἐν μέτρῳ, καὶ ἐν κόλλῃ ἐῤῥύθμισεν αὐτὸ, καὶ ἐποίησεν αὐτὸ ὡς μορφὴν ἀνδρὸς, καὶ ὡς ὡραιότητα ἀνθρώπου, στῆσαι αὐτὸ ἐν οἴκῳ. Ἔκοψε ξύλον ἐκ τοῦ δρυμοῦ, ὃ ἐφύτευσε Κύριος, πίτυν, καὶ

ὑετὸς ἐμήκυνεν, ἵνα ᾖ ἀνθρώποις εἰς καῦσιν· καὶ λαβῶν ἀπ᾽ αὐτοῦ, ἐθερμάνθη, καὶ καύσαντες ἔπεψαν ἄρτους ἐπ᾽ αὐτῶν· τὸ δὲ λοιπὸν εἰργάσαντο θεοὺς, καὶ προσκυνοῦσιν αὐτοῖς· Οὗ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ κατέκαυσεν ἐν πυρὶ, καὶ ἐπὶ τοῦ ἡμίσους αὐτοῦ ἔπεψεν ἐν τοῖς ἄνθραξιν ἄρτους, καὶ ἐπ᾽ αὐτοῦ κρέας ὀπτήσας ἔφαγε, καὶ ἐνεπλήσθη, καὶ θερμανθεὶς εἶπεν, ἡδύ μοι, ὅτι ἐθερμάνθην, καὶ εἶδον πῦρ. Τὸ δὲ λοιπὸν ἐποίησεν εἰς θεὸν γλυπτὸν, καὶ προσκυνεῖ, καὶ προσεύχεται λέγων, ἐξελοῦ με, ὅτι θεός μου εἶ σύ. Οὐκ ἔγνωσαν φρονῆσαι, ὅτι ἀπημαυρώθησαν τοῦ βλέπειν τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν, καὶ τοῦ νοῆσαι τῇ καρδίᾳ αὐτῶν. Καὶ οὐκ ἐλογίσατο τῇ ψυχῇ αὐτοῦ, οὐδὲ ἔγνω τῇ φρονήσει, ὅτι τὸ ἥμισυ αὐτοῦ κατέκαυσεν ἐν πυρὶ, καὶ ἔπεψεν ἐπὶ τῶν ἀνθράκων αὐτοῦ ἄρτους, καὶ ὀπτήσας κρέα ἔφαγε, καὶ τὸ λοιπὸν αὐτοῦ εἰς βδέλυγμα ἐποίησε, καὶ προσκυνοῦσιν αὐτῷ. Γνῶθι ὅτι σποδὸς ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ πλανῶνται, καὶ οὐδεὶς δύναται ἐξελέσθαι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ· ἴδετε, οὐκ ἐρεῖτε, ὅτι ψεῦδος ἐν τῇ δεξιᾷ μου. Μνήσθητι ταῦτα Ἰακὼβ καὶ Ἰσραὴλ, ὅτι παῖς μου εἶ σὺ, ἔπλασά σε παῖδά μου, καὶ σὺ Ἰσραὴλ μὴ ἐπιλανθάνου μοῦ. Ἰδοὺ γὰρ ἀπήλειψα ὡς νεφέλην τὰς ἀνομίας σου, καὶ ὡς γνόφον τὴν ἁμαρτίαν σου· ἐπιστράφηθι πρὸς μὲ, καὶ λυτρώσομαί σε. Εὐφράνθητε οὐρανοὶ, ὅτι ἠλέησεν ὁ Θεὸς τὸν Ἰσραήλ· σαλπίσατε τὰ θεμέλια τῆς γῆς, βοήσατε ὄρη εὐφροσύνην, οἱ βουνοὶ καὶ πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἐλυτρώσατο ὁ Θεὸς τὸν Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ δοξασθήσεται. Οὕτω λέγει Κύριος ὁ λυτρούμενός σε, καὶ πλάσσων σε ἐκ κοιλίας, ἐγὼ Κύριος ὁ συντελῶν πάντα, ἐξέτεινα τὸν οὐρανὸν μόνος, καὶ ἐστερέωσα τὴν γῆν. Τίς ἕτερος διασκεδάσει σημεῖα ἐγγαστριμύθων, καὶ μαντείας ἀπὸ καρδίας; ἀποστρέφων φρονίμους εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν

μωραίνων, καὶ ἱστῶν ῥῆμα παιδὸς αὐτοῦ, καὶ τὴν βουλὴν τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ ἀληθεύων· ὁ λέγων τῇ Ἱερουσαλὴμ, κατοικηθήσῃ, καὶ ταῖς πόλεσι τῆς Ἰδουμαίας, οἰκοδομηθήσεσθε, καὶ τὰ ἔρημα αὐτῆς ἀνατελεῖ· Ὁ λέγων τῇ ἀβύσσῳ, ἐρημωθήσῃ, καὶ τοὺς ποταμούς σου ξηρανῶ· Ὁ λέγων Κύρῳ φρονεῖν, καὶ πάντα τὰ θελήματά μου ποιήσει· ὁ λέγων Ἱερουσαλὴμ, οἰκοδομηθήσῃ, καὶ τὸν οἶκον τὸν ἅγιόν μου θεμελιώσω.

# 45

Οὕτῳ λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τῷ χριστῷ μου Κύρῳ, οὗ ἐκράτησα τῆς δεξιᾶς, ἐπακοῦσαι ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἔθνη, καὶ ἰσχὺν βασιλέων διαῤῥήξω, ἀνοίξω ἔμπροσθεν αὐτοῦ θύρας, καὶ πόλεις οὐ συγκλεισθήσονται. Ἐγὼ ἔμπροσθέν σου πορεύσομαι, καὶ ὄρη ὁμαλιῶ, θύρας χαλκᾶς συντρίψω, καὶ μοχλοὺς σιδηροῦς συνκλάσω. Καὶ δώσω σοι θησαυροὺς σκοτεινοὺς, ἀποκρύφους, ἀοράτους ἀνοίξω σοι, ἵνα γνῷς ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεός σου ὁ καλῶν τὸ ὄνομά σουὁ, Θεὸς Ἰσραήλ. Ἕνεκεν τοῦ παιδός μου Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ τοῦ ἐκλεκτοῦ μου, ἐγὼ καλέσω σε τῷ ὀνόματί σου, καὶ προσδέξομαί σε· σὺ δὲ οὐκ ἔγνως με, ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ Θεός· ἐνίσχυσά σε, καὶ οὐκ ᾔδεις με, ἵνα γνῶσιν οἱ ἀπ’ ἀνατολῶν ἡλίου καὶ οἱ ἀπὸ δυσμῶν, ὅτι οὐκ ἔστι Θεὸς πλὴν ἐμοῦ· ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι. Ἐγὼ ἡ κατασκευάσας φῶς, καὶ ποιήσας σκότος, ὁ ποιῶν εἰρήνην, καὶ κτίζων κακά· ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς, ὁ ποιῶν πάντα ταῦτα. Εὐφρανθήτω ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν, καὶ αἱ νεφέλαι ῥανάτωσαν δικαιοσύνην· ἀνατειλάτω ἡ γῆ, καὶ βλαστησάτω ἔλεος, καὶ δικαιοσύνην ἀνατειλάτω ἅμα· ἐγώ εἰμι

Κύριος ὁ κτίσας σε. Ποῖον βέλτιον κατεσκεύασα ὡς πηλὸν κεραμέως; μὴ ὁ ἀροτριῶν ἀροτριάσει τὴν γῆν ὅλην τὴν ἡμέραν; μὴ ἐρεῖ ὁ πηλὸς τῷ κεραμεῖ, τί ποιεῖς ὅτι οὐκ ἐργάζῃ, οὐδὲ ἔχεις χεῖρας; μὴ ἀποκριθήσεται τὸ πλάσμα πρὸς τὸν πλάσαντα αὐτό; Ὁ λέγων τῷ πατρὶ, τί γεννήσεις; καὶ τῇ μητρί, τί ὠδίνεις; Ὅτι οὕτω λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ ποιήσας τὰ ἐπερχόμενα, ἐρωτήσατέ με περὶ τῶν υἱῶν μου, καὶ περὶ τῶν ἔργων τῶν χειρῶν μου ἐντείλασθέ μοι. Ἐγὼ ἐποίησα γῆν, καὶ ἄνθρωπον ἐπ’ αὐτῆς, ἐγὼ τῇ χειρί μου ἐστερέωσα τὸν οὐρανὸν, ἐγὼ πᾶσι τοῖς ἄστροις ἐνετειλάμην. Ἐγὼ ἤγειρα αὐτὸν μετὰ δικαιοσύνης βασιλέα, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ εὐθεῖαι· οὗτος οἰκοδομήσει τὴν πόλιν μου, καὶ τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου ἐπιστρέψει, οὐ μετὰ λύτρων, οὐδὲ μετὰ δώρων, εἶπε Κύριος σαβαώθ. Οὕτω λέγει Κύριος σαβαὼθ, ἐκοπίασεν Αἴγυπτος, καὶ ἐμπορία Αἰθιόπων, καὶ οἱ Σαβαεὶμ ἄνδρες ὑψηλοὶ ἐπὶ σὲ διαβήσονται, καὶ σοὶ ἔσονται δοῦλοι, καὶ ὀπίσω σου ἀκολουθήσουσι δεδεμένοι χειροπέδαις, καὶ διαβήσονται πρὸς σὲ, καὶ προσκυνήσουσί σοι, καὶ ἐν σοὶ προσεύξονται· ὅτι ἐν σοὶ ὁ Θεός ἐστι, καὶ οὐκ ἔστι Θεὸς πλήν σου. Σὺ γὰρ εἶ Θεὸς, καὶ οὐκ ᾔδειμεν, ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ σωτήρ. Αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῷ, καὶ πορεύσονται ἐν αἰσχύνῃ· ἐγκαινίζεσθε πρὸς μὲ νῆσοι. Ἰσραὴλ σώζεται ὑπὸ Κυρίου σωτηρίαν αἰώνιον· οὐκ αἰσχυνθήσονται, οὐδὲ μὴ ἐντραπῶσιν ἕως τοῦ αἰῶνος ἔτι. Οὕτως λέγει Κύριος ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν, οὗτος ὁ Θεὸς ὁ καταδείξας τὴν γῆν, καὶ ποιήσας αὐτὴν, αὐτὸς διώρισεν αὐτὴν, οὐκ εἰς κενὸν ἐποίησεν αὐτὴν, ἀλλὰ κατοικεῖσθαι ἔπλασεν αὐτὴν, ἐγώ εἰμι Κύριος, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι. Οὐκ ἐν κρυφῇ λελάληκα, οὐδὲ ἐν τόπῳ γῆς σκοτεινῷ· οὐκ εἶπα τῷ σπέρματι Ἰακὼβ, μάταιον ζητήσατε· ἐγώ εἰμι ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ λαλῶν δικαιοσύνην, καὶ

ἀναγγέλλων ἀλήθειαν. Συνάχθητε, καὶ ἥκετε, βουλεύσασθε ἅμα οἱ σωζόμενοι ἀπὸ τῶν ἐθνῶν· οὐκ ἔγνωσαν οἱ αἴροντες τὸ ξύλον γλύμμα αὐτῶν, καὶ οἱ προσευχόμενοι πρὸς θεοὺς, οἳ οὐ σώζουσιν. Εἰ ἀναγγελοῦσιν, ἐγγισάτωσαν, ἵνα γνῶσιν ἅμα, τίς ἀκουστὰ ἐποίησε ταῦτα ἀπ᾽ ἀρχῆς· τότε ἀνηγγέλη ὑμῖν· ἐγὼ ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν ἐμοῦ· δίκαιος καὶ σωτὴρ, οὐκ ἔστι πάρεξ ἐμοῦ. Ἐπιστράφητε ἐπ᾽ ἐμὲ, καὶ σωθήσεσθε, οἱ ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς· ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος. Κατ᾽ ἐμαυτοῦ ὀμνύω, εἰ μὴ ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στόματός μου δικαιοσύνη, οἱ λόγοι μου οὐκ ἀποστραφήσονται· Ὅτι ἐμοὶ κάμψει πᾶν γόνυ, καὶ ὀμεῖται πᾶσα γλῶσσα τὸν Θεὸν, λέγων, δικαιοσύνη καὶ δόξα πρὸς αὐτὸν ἥξει, καὶ αἰσχυνθήσονται πάντες οἱ διορίζοντες αὐτούς. Ἀπὸ Κυρίου δικαιωθήσονται, καὶ ἐν τῷ Θεῷ ἐνδοξασθήσεται πᾶν τὸ σπέρμα τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.

# 46

Ἔπεσε Βὴλ, συνετρίβη Ναβὼ, ἐγένετο τὰ γλυπτὰ αὐτῶν εἰς θηρία, καὶ τὰ κτήνη· αἴρετε αὐτὰ καταδεδεμένα ὡς φορτίον κοπιῶντι ἐκλευμένῳ, καὶ πεινῶντι, οὐκ ἰσχύοντι, ἅμα, οἳ οὐ δυνήσονται σωθῆναι ἀπὸ πολέμου, αὐτοὶ δὲ αἰχμάλωτοι ἦχθησαν. Ἀκούετέ μου οἶκος τοῦ Ἰακὼβ, καὶ πᾶν τὸ κατάλοιπον τοῦ Ἰσραὴλ, οἱ αἰρόμενοι ἐκ κοιλίας, καὶ παιδευόμενοι ἐκ παιδίου ἕως γήρως· ἐγώ εἰμι, καὶ ἕως ἂν καταγηράσητε, ἐγώ εἰμι, ἐγὼ ἀνέχομαι ὑμῶν, ἐγὼ ἐποίησα, καὶ ἐγὼ ἀνήσω, ἐγὼ ἀναλήμψομαι, καὶ σώσω ὑμᾶς. Τίνι με ὡμοιώσατε; ἴδετε, τεχνάσασθε, οἱ πλανώμενοι. Οἱ συμβαλλόμενοι χρυσίον ἐκ μαρσυππίου, καὶ ἀργύριον ἐν ζυγῷ,

στήσουσιν ἐν σταθμῷ, καὶ μισθωσάμενοι χρυσοχόον ἐποίησαν χειροποίητα, καὶ κύψαντες προσκυνοῦσιν αὐτοῖς. Αἴρουσιν αὐτὸ ἐπὶ τοῦ ὤμου, καὶ πορεύονται· ἐὰν δὲ θῶσιν αὐτό ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ, μένει, οὐ μὴ κινηθῇ· καὶ ὃς ἐὰν βοήσῃ πρὸς αὐτὸν, οὐ μὴ εἰσακούσῃ, ἀπὸ κακῶν οὐ μὴ σώσῃ αὐτόν. Μνήσθητε ταῦτα, καὶ στενάξατε, μετανοήσατε οἱ πεπλανημένοι, ἐπιστρέψατε τῇ καρδίᾳ, καὶ μνήσθητε τὰ πρότερα ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ, ἀναγγέλλων πρότερον τὰ ἔσχατα πρὶν γενέσθαι, καὶ ἅμα συνετελέσθη· καὶ εἶπα, πᾶσα ἡ βουλή μου στήσεται, καὶ πάντα ὅσα βεβούλευμαι, ποιήσω· Καλῶν ἀπὸ ἀνατολῶν πετεινὸν, καὶ ἀπὸ γῆς πόῤῥωθεν περὶ ὧν βεβούλευμαι, ἐλάλησα, καὶ ἤγαγον, ἔκτισα καὶ ἐποίησα, ἤγαγον αὐτὸν, καὶ εὐώδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Ἀκούσατέ μου οἱ ἀπολωλεκότες τὴν καρδίαν, οἱ μακρὰν ἀπὸ τῆς δικαιοσύνης. Ἤγγισα τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ τὴν σωτηρίαν τὴν παρ’ ἐμοῦ οὐ βραδυνῶ· δέδωκα ἐν Σιὼν σωτηρίαν τῷ Ἰσραὴλ εἰς δόξασμα.

# 47

Κατάβηθι, κάθισον ἐπὶ τὴν γῆν παρθένος θυγάτηρ Βαβυλῶνος, κάθισον εἰς τὴν γῆν θυγάτηρ Χαλδαίων, ὅτι οὐκέτι προστεθήσῃ κληθῆναι ἁπαλὴ καὶ τρυφερά. Λάβε μύλον, ἄλεσον ἄλευρον, ἀποκὸλυψαι τὸ κατακάλυμμά σου, ἀνακάλυψαι τὰς πολιὰς, ἀνάσυρε τὰς κνήμας, διάβηθι ποταμούς. Ἀνακαλυφθήσεται ἡ αἰσχύνη σου, φανήσονται οἱ ὀνειδισμοί σου· τὸ δίκαιον ἐκ σοῦ λήμψομαι, οὐκέτι μὴ παραδῶ ἀνθρώποις. Ὁ ῥυσάμενός σε Κύριος σαβαὼθ, ὄνομα αὐτῷ Ἅγιος Ἰσραήλ. Κάθισον κατανενυγμένη,

εἴσελθε εἰς τὸ σκότος θύγατερ Χαλδαίων, οὐκέτι μὴ κληθήσῃ ἰσχὺς βασιλείας. Παρωξύνθην ἐπὶ τῷ λαῷ μου, ἐμίανας τὴν κληρονομίαν μου· ἐγὼ ἔδωκα αὐτοὺς εἰς τὴν χεῖρά σου, σὺ δὲ οὐκ ἔδωκας αὐτοῖς ἔλεος, τοῦ πρεσβυτέρου ἐβάρυνας τὸν ζυγὸν σφόδρα, καὶ εἶπας, εἰς τὸν αἰῶνα ἔσομαι ἄρχουσα· οὐκ ἐνόησας ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ σου, οὐδὲ ἐμνήσθης τὰ ἔσχατα. Νῦν δὲ ἄκουε ταῦτα τρυφερὰ, ἡ καθημένη, ἡ πεποιθυῖα, ἡ λέγουσα ἐν καρδίᾳ αὐτῆς, ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα, οὐ καθιῶ χήρα, οὐδὲ γνώσομαι ὀρφανίαν. Νῦν δὲ ἥξει ἐπὶ σὲ τὰ δύο ταῦτα ἐξαίφνης ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, ἀτεκνία καὶ χηρεία ἥξει ἐξαίφνης ἐπὶ σὲ, ἐν τῇ φαρμακείᾳ σου, ἐν τῇ ἰσχύϊ τῶν ἐπαοιδῶν σου σφόδρα, τῇ ἐλπίδι τῆς πονηρίας σου· σὺ γὰρ εἶπας, ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα· γνῶθι, ἡ σύνεσις τούτων ἔσται, καὶ ἡ πορνεία σου σοὶ αἰσχύνη· καὶ εἶπας τῇ καρδίᾳ σου, ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα. Καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ἀπώλεια, καὶ οὐ μὴ γνῷς· βόθυνος, καὶ ἐμπεσῇ εἰς αὐτόν· καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ταλαιπωρία, καὶ οὐ μὴ δυνήσῃ καθαρὰ γενέσθαι· καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ἐξαπίνης ἀπώλεια, καὶ οὐ μὴ γνώσῃ. Στῆθι νῦν ἐν ταῖς ἐπαοιδαῖς σου, καὶ ἐν τῇ πολλῇ φαρμακείᾳ σου, ἃ ἐμάνθανες ἐκ νεότητός σου, εἰ δυνήσῃ ὠφεληθῆναι. Κεκοπίακας ἐν ταῖς βουλαῖς σου· στήτωσαν δὴ καὶ σωσάτωσάν σε οἱ ἀστρολόγοι τοῦ οὐρανοῦ, οἱ ὁρῶντες τοὺς ἀστέρας ἀναγγειλάτωσάν σοι, τί μέλλει ἐπὶ σὲ ἔρχεσθαι. Ἰδοὺ πάντες ὡς φρύγανα ἐπὶ πυρὶ κατακαυθήσονται, καὶ οὐ μὴ ἐξέλωνται τὴν ψυχὴν αὐτῶν ἐκ φλογός· ὅτι ἔχεις ἄνθρακας πυρός· κάθισαι ἐπ’ αὐτοὺς, οὗτοι ἔσονταί σοι βοήθεια· ἐκοπίασας ἐν τῇ μεταβολῇ ἐκ νεότητος, ἄνθρωπος καθ’ ἑαυτὸν ἐπλανήθη, σοὶ δὲ οὐκ ἔσται σωτηρία.

# 48

Ἀκούσατε ταῦτα οἶκος Ἰακὼβ, οἱ κεκλημένοι ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραὴλ, καὶ ἐκ Ἰούδα ἐξελθόντες, οἱ ὀμνύοντες τῷ ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ, μιμνησκόμενοι οὐ μετὰ ἀληθείας, οὐδὲ μετὰ δικαιοσύνης, καὶ ἀντεχόμενοι τῷ ὀνόματι τῆς πόλεως τῆς ἁγίας, καὶ ἐπὶ τῷ Θεῷ Ἰσραὴλ ἀντιστηριζόμενοι· Κύριος σαβαὼθ ὄνομα αὐτῷ. Τὰ πρότερα ἔτι ἀνήγγειλα, καὶ ἐκ τοῦ στόματός μου ἐξῆλθε, καὶ ἀκουστὸν ἐγένετο· ἐξάπινα ἐποίησα, καὶ ἐπῆλθε. Γινώσκω ὅτι σκληρὸς εἶ, καὶ νεῦρον σιδηροῦν ὁ τράχηλός σου, καὶ τὸ μέτωπόν σου χαλκοῦν. Καὶ ἀνήγγειλά σοι πάλαι ἃ πρὶν ἐλθεῖν ἐπὶ σέ· ἀκουστόν σοι ἐποίησα, μή ποτε εἴπῃς, ὅτι τὰ εἴδωλά μοι ἐποίησε, καὶ εἴπῃς, ὅτι τὰ γλυπτὰ καὶ τὰ χωνευτὰ ἐνετείλατό μοι. Ἠκούσατε πάντα, καὶ ὑμεῖς οὐκ ἔγνωτε· ἀλλὰ ἀκουστά σοι ἐποίησα τὰ καινὰ ἀπὸ τοῦ νῦν, ἃ μέλλει γίνεσθαι· καὶ οὐκ εἶπας, νῦν γίνεται, καὶ οὐ πάλαι, καὶ οὐ προτέραις ἡμέραις ἤκουσας αὐτά· μὴ εἴπῃς, ναὶ, γινώσκω αὐτά. Οὔτε ἔγνως, οὔτε ἠπίστω, οὔτε ἀπ᾽ ἀρχῆς ἤνοιξά σου τὰ ὦτα· ἔγνων γὰρ, ὅτι ἀθετῶν ἀθετήσεις, καὶ ἄνομος ἔτι ἐκ κοιλίας κληθήσῃ. Ἕνεκεν τοῦ ἐμοῦ ὀνόματος δείξω σοι τὸν θυμόν μου, καὶ τὰ ἔνδοξά μου ἐπάξω ἐπὶ σὲ, ἵνα μὴ ἐξολοθρεύσω σε. Ἰδοὺ πέπρακά σε, οὐχ ἕνεκεν ἀργυρίου· ἐξειλάμην δέ σε ἐκ καμίνου πτωχείας· Ἕνεκεν ἐμοῦ ποιήσω σοι, ὅτι τὸ ἐμὸν ὄνομα βεβηλοῦται, καὶ τὴν δόξαν μου ἑτέρῳ οὐ δώσω. Ἄκουέ μου Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ ὃν ἐγὼ καλῶ· ἐγώ εἰμι πρῶτος, καὶ ἐγώ εἰμι εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἡ χείρ μου ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιά μου ἐστερέωσε τὸν οὐρανόν· καλέσω αὐτοὺς, καὶ στήσονται ἅμα, καὶ συναχθήσονται πάντες, καὶ ἀκούσονται· τίς αὐτοῖς ἀνήγγειλε ταῦτα; ἀγαπῶν σε

ἐποίησα τὸ θέλημά σου ἐπὶ Βαβυλῶνα, τοῦ ἆραι σπέρμα Χαλδαίων. Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκάλεσα, ἤγαγον αὐτὸν, καὶ εὐώδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Προσαγάγετε πρὸς μὲ, καὶ ἀκούσατε ταῦτα· οὐκ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἐν κρυφῇ λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο, ἐκεῖ ἤμην, καὶ νῦν Κύριος Κύριος ἀπέστειλέ με, καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ. Οὕτω λέγει Κύριος; ὁ ῥυσάμενος σε, ἅγιος Ἰσραὴλ, ἐγώ εἰμι ὁ Θεός σου, δέδειχά σοι τοῦ εὑρεῖν σε τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσῃ ἐν αὐτῇ. Καὶ εἰ ἤκουσας τῶν ἐντολῶν μου, ἐγένετο ἂν ὡσεὶ ποταμὸς ἡ εἰρήνη σου, καὶ ἡ δικαιοσύνη σου ὡς κῦμα θαλάσσης· Καὶ ἐγένετο ἂν ὡς ἡ ἄμμος τὸ σπέρμα σου, καὶ τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου ὡς ὁ χοῦς τῆς γῆς· οὐδὲ νῦν οὐ μὴ ἐξολοθρευθῇς, οὐδὲ ἀπολεῖται τὸ ὄνομά σου ἐνώπιον ἐμοῦ. Ἔξελθε ἐκ Βαβυλῶνος φεύγων ἀπὸ τῶν Χαλδαίων, φωνὴν εὐφροσύνης ἀναγγειλατε, καὶ ἀκουστὸν γενέσθω τοῦτο, ἀναγγείλατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· λέγετε, Ἐῤῥύσατο Κύριος τὸν δοῦλον αὐτοῦ Ἰακώβ· Καὶ ἐὰν διψήσωσι, δι᾽ ἐρήμου ἄξει αὐτοὺς, ὕδωρ ἐκ πέτρας ἐξάξει αὐτοῖς· σχισθήσεται πέτρα, καὶ ῥυήσεται ὕδωρ, καὶ πίεται ὁ λαός μου. Οὐκ ἔστι χαίρειν, λέγει Κύριος, τοῖς ἀσεβέσιν.

# 49

Ἀκούσατε μου νῆσοι, καὶ προσέχετε ἔθνη, διὰ χρόνου πολλοῦ στήσεται, λέγει Κύριος, ἐκ κοιλίας μητρός μου ἐκάλεσε τὸ ὄνομά μου. Καὶ ἔθηκε τὸ στόμα μου ὡς μάχαιραν ὀξεῖαν, καὶ ὑπὸ τὴν σκέπην τῆς χειρὸς αὐτοῦ ἔκρυψέ με· ἔθηκέ με ὡς βέλος ἐκλεκτὸν, καὶ ἐν τῇ φαρέτρᾳ αὐτοῦ ἔκρυψέ με, καὶ εἶπέ μοι, δοῦλός μου εἶ σὺ Ἰσραὴλ, καὶ ἐν σοὶ ἐνδοξασθήσομαι. Καὶ ἐγὼ εἶπα, κενῶς

ἐκοπίασα, εἰς μάταιον καὶ εἰς οὐδὲν ἔδωκα τὴν ἰσχύν μου· διατοῦτο ἡ κρίσις μου παρὰ· Κυρίῳ, καὶ ὁ πόνος μου ἐναντίον τοῦ Θεοῦ μου. Καὶ νῦν οὕτω λέγει Κύριος, ὁ πλάσας με ἐκ κοιλίας δοῦλον ἑαυτῷ, τοῦ συναγαγεῖν τὸν Ἰακὼβ πρὸς αὐτὸν καὶ Ἰσραήλ· συναχθήσομαι καὶ δοξασθήσομαι ἐναντίον Κυρίου, καὶ ὁ Θεὸς μου ἔσται μοι ἰσχύς. Καὶ εἶπέ μοι, μέγα σοι ἐστὶ τοῦ κληθῆναί σε παῖδά μου, τοῦ στῆσαι τὰς φυλὰς Ἰακὼβ, καὶ τὴν διασπορὰν τοῦ Ἰσραὴλ ἐπιστρέψαι· ἰδοὺ δέδωκά σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν, τοῦ εἶναί σε εἰς σωτηρίαν ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς. Οὕτως λέγει Κύριος, ὁ ῥυσάμενός σε, ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἁγιάσατε τὸν φαυλίζοντα τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, τὸν βδελυσσόμενον ὑπὸ τῶν ἐθνῶν τῶν δούλων τῶν ἀρχόντων· βασιλεῖς ὄψονται αὐτὸν, καὶ ἀναστήσονται ἄρχοντες, καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ, ἕνεκεν Κυρίου· ὅτι πιστός ἐστιν ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, καὶ ἐξελεξάμην σε. Οὕτως λέγει Κύριος, καιρῷ δεκτῷ ἐπήκουσά σου, καὶ ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας ἐβοήθησά σοι, καὶ ἔπλασά σε, καὶ ἔδωκά σε εἰς διαθήκην ἐθνῶν τοῦ καταστῆσαι τὴν γῆν, καὶ κληρονομῆσαι κληρονομίας ἐρήμους, λέγοντα τοῖς ἐν δεσμοῖς, ἐξέλθατε, καὶ τοῖς ἐν τῷ σκότει, ἀνακαλυφθῆναι· ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς βοσκηθήσονται, καὶ ἐν πάσαις ταῖς τρίβοις ἡ νομὴ αὐτῶν· Οὐ πεινάσουσιν, οὐδὲ διψήσουσιν, οὐδὲ πατάξει αὐτοὺς ὁ καύσων, οὐδὲ ὁ ἥλιος, ἀλλ’ ὁ ἐλεῶν αὐτοὺς παρακαλέσει, καὶ διὰ πηγῶν ὑδάτων ἄξει αὐτούς· Καὶ θήσω πᾶν ὄρος εἰς ὁδὸν, καὶ πᾶσαν τρίβον εἰς βόσκημα αὐτοῖς. Ἰδοὺ οὗτοι πόῤῥωθεν ἥξουσιν, οὗτοι ἀπὸ Βοῤῥᾶ καὶ θαλάσσης, ἄλλοι δὲ ἐκ γῆς Περσῶν. Εὐφραίνεσθε οὐρανοί, καὶ ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, ῥηξάτωσαν τὰ ὄρη εὐφροσύνην, ὅτι ἠλέησεν ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς ταπεινοὺς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ παρεκάλεσεν. Εἶπεν δὲ Σιὼν, ἐγκατέλιπέ με Κύριος, καὶ ὅτι Κύριος ἐπελάθετό μου. Μὴ ἐπιλήσεται γυνὴ τοῦ

παιδίου αὐτῆς, ἢ τοῦ μὴ ἐλεῆσαι τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας αὐτῆς; εἰ δὲ καὶ ταῦτα ἐπιλάθοιτο γυνὴ, ἀλλ’ ἐγὼ οὐκ ἐπιλήσομαί σου, εἶπεν Κύριος. Ἰδοὺ ἐπὶ τῶν χειρῶν μου ἐζωγράφηκά σου τὰ τείχη, καὶ ἐνώπιόν μου εἶ διαπαντὸς, καὶ ταχὺ οἰκοδομηθήσῃ ὑφ’ ὧν καθῃρέθης, καὶ οἱ ἐρημώσαντές σε ἐξελεύσονται ἐκ σοῦ. Ἆρον κύκλῳ τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε πάντας, ἰδοὺ συνήχθησαν καὶ ἦλθοσαν πρὸς σέ. Ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος, ὅτι πάντας αὐτοὺς ὡς κόσμον ἐνδύσῃ, καὶ περιθήσεις αὐτοὺς ὡς κόσμον νύμφη. Ὅτι τὰ ἔρημά σου καὶ τὰ κατεφθαρμένα καὶ πεπτωκότα, ὅτι νῦν στενοχωρήσει ἀπὸ τῶν κατοικούντων, καὶ μακρυνθήσονται ἀπὸ σοῦ οἱ καταπίνοντές σε. Ἐροῦσι γὰρ εἰς τὰ ὦτά σου οἱ υἱοί σου, οὓς ἀπολώλεκας, στενός μοι ὁ τόπος, ποίησόν μοι τόπον ἵνα κατοικήσω. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, τίς ἐγέννησέ μοι τούτους; ἐγὼ δὲ ἄτεκνος καὶ χήρα, τούτους δὲ τίς ἐξέθρεψέ μοι; ἐγὼ δὲ κατελείφθην μόνη, οὗτοι δέ μοι ποῦ ἦσαν; Οὕτως λέγει Κύριος Κύριος, ἰδοὺ αἴρω εἰς τὰ ἔθνη τὴν χεῖρά μου, καὶ εἰς τὰς νήσους ἀρῶ σύσσημόν μου, καὶ ἄξουσι τοὺς υἱούς σου ἐν κόλπῳ, τὰς δὲ θυγατέρας σου ἐπ’ ὤμων ἀροῦσι. Καὶ ἔσονται βασιλεῖς τιθηνοί σου, αἱ δὲ ἄρχουσαι αὐτῶν τροφοί σου· ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς προσκυνήσουσί σε, καὶ τὸν χοῦν τῶν ποδῶν σου λείξουσι, καὶ γνώσῃ, ὅτι ἐγὼ Κύριος, καὶ οὐκ αἰσχυνθήσονται οἱ ὑπομένοντές με. Μὴ λήμψεταί τις παρὰ γίγαντος σκῦλα; καὶ ἐὰν αἰχμαλωτεύσῃ τις ἀδίκως, σωθήσεται; Ὅτι οὕτω λέγει Κύριος, ἐάν τις αἰχμαλωτεύσῃ γίγαντα, λήψεται σκῦλα· λαμβάνων δὲ παρὰ ἰσχύοντος σωθήσεται· ἐγὼ δὲ τὴν κρίσιν σου κρινῶ, καὶ ἐγὼ τοὺς υἱούς σου ῥύσομαι· Καὶ φάγονται οἱ θλίψαντές σε τὰς σάρκας αὐτῶν, καὶ πίονται ὡς οἶνον νέον τὸ αἷμα αὐτῶν, καὶ μεθυσθήσονται· καὶ αἰσθανθήσεται πᾶσα σὰρξ, ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ ῥυσάμενός σε, καὶ

ἀντιλαμβανόμενος ἰσχύος Ἰακώβ.

# 50

Οὕτως λέγει Κύριος, ποῖον τὸ βιβλίον τοῦ ἀποστασίου τῆς μητρὸς ὑμῶν, ᾧ ἐξαπέστειλα αὐτήν; ἢ τίνι ὑπόχρεῳ πέπρακα ὑμᾶς; ἰδοὺ ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν ἐπράθητε, καὶ ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν ἐξαπέστειλα τὴν μητέρα ὑμῶν. Τί ὅτι ἦλθον, καὶ οὐκ ἦν ἄνθρωπος; ἐκάλεσα, καὶ οὐκ ἦν ὁ ὑπακούων; μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χείρ μου τοῦ ῥύσασθαι; ἢ οὐκ ἰσχύω τοῦ ἐξελέσθαι; ἰδοὺ τῷ ἐλεγμῷ μου ἐξερημώσω τὴν θάλασσαν, καὶ θήσω ποταμοὺς ἐρήμους, καὶ ξηρανθήσονται οἱ ἰχθύες αὐτῶν ἀπὸ τοῦ μὴ εἶναι ὕδωρ, καὶ ἀποθανοῦνται ἐν δίψει. Ἐνδύσω τὸν οὐρανὸν σκότος, καὶ ὡς σάκκον θήσω τὸ περιβόλαιον αὐτοῦ. Κύριος Κύριος δίδωσί μοι γλῶσσαν παιδείας, τοῦ γνῶναι ἡνίκα δεῖ εἰπεῖν λόγον· ἔθηκέ μοι πρωΐ, προσέθηκέ μοι ὠτίον ἀκούειν, καὶ ἡ παιδεία Κυρίου Κυρίου ἀνοίγει μου τὰ ὦτα· ἐγὼ δὲ οὐκ ἀπειθῶ, οὐδὲ ἀντιλέγω. Τὸν νῶτόν μου ἔδωκα εἰς μάστιγας, τὰς δὲ σιαγόνας μου εἰς ῥαπίσματα, τὸ δὲ πρόσωπόν μου οὐκ ἀπέστρεψα ἀπὸ αἰσχύνης ἐμπτυσμάτων, καὶ Κύριος Κύριος βοηθός μοι ἐγενήθη· διατοῦτο οὐκ ἐνετράπην, ἀλλὰ ἔθηκα τὸ πρόσωπόν μου ὡς στερεὰν πέτραν, καὶ ἔγνων ὅτι οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, ὅτι ἐγγίζει ὁ δικαιώσας με· τίς ὁ κρινόμενός μοι; ἀντιστήτω μοι ἅμα· καὶ τις ὁ κρινόμενός μοι; ἐγγισάτω μοι. Ἰδοὺ Κύριος Κύριος βοηθήσει μοι· τίς κακώσει με; ἰδοὺ πάντες ὑμεῖς ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσεσθε, καὶ σὴς καταφάγεται ὑμᾶς. Τίς ἐν ὑμῖν ὁ φοβούμενος τὸν Κύριον; ὑπακουσάτω τῆς φωνῆς τοῦ παιδὸς αὐτοῦ· οἱ πορευόμενοι ἐν σκότει, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς φῶς,

πεποίθατε ἐπὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου, καὶ ἀντιστηρίσασθε ἐπὶ τῷ Θεῷ. Ἰδοὺ πάντες ὑμεῖς πῦρ καίετε, καὶ κατισχύετε φλόγα· πορεύεσθε τῷ φωτὶ τοῦ πυρὸς ὑμῶν, καὶ τῇ φλογὶ ᾗ ἐξεκαύσατε· δι' ἐμὲ ἐγένετο ταῦτα ὑμῖν, ἐν λύπῃ κοιμηθήσεσθε.

# 51

Ἀκούσατε μου οἱ διώκοντες τὸ δίκαιον, καὶ ζητοῦντες τὸν Κύριον, ἐμβλέψατε εἰς τὴν στερεὰν πέτραν, ἣν ἐλατομήσατε, καὶ εἰς τὸν βόθυνον τοῦ λάκκου, ὃν ὠρύξατε. Ἐμβλέψατε εἰς Ἀβραὰμ τὸν πατέρα ὑμῶν, καὶ εἰς Σάῤῥαν τὴν ὠδίνουσαν ὑμᾶς· ὅτι εἷς ἦν, καὶ ἐκάλεσα αὐτὸν, καὶ εὐλόγησα αὐτὸν, καὶ ἠγάπησα αὐτὸν, καὶ ἐπλήθυνα αὐτόν. Καὶ σὲ νῦν παρακαλέσω, Σιὼν, καὶ παρεκάλεσα πάντα τὰ ἔρημα αὐτῆς, καὶ θήσω τὰ ἔρημα αὐτῆς ὡς παράδεισον, καὶ τὰ πρὸς δυσμὰς αὐτῆς ὡς παράδεισον Κυρίου· εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ, ἐξομολόγησιν καὶ φωνὴν αἰνέσεως. Ἀκούσατέ μου, ἀκούσατέ μου λαός μου, καὶ οἱ βασιλεῖς πρὸς μὲ ἐνωτίσασθε, ὅτι νόμος παρ' ἐμοῦ ἐξελεύσεται, καὶ ἡ κρίσις μου εἰς φῶς ἐθνῶν. Ἐγγίζει ταχὺ ἡ δικαιοσύνη μου, καὶ ἐξελεύσεται ὡς φῶς τὸ σωτήριόν μου, καὶ εἰς τὸν βραχίονά μου ἔθνη ἐλπιοῦσιν· ἐμὲ νῆσοι ὑπομενοῦσι, καὶ εἰς τὸν βραχίονά μου ἐλπιοῦσιν. Ἄρατε εἰς τὸν οὐρανὸν τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ ἐμβλέψατε εἰς τὴν γῆν κάτω· ὅτι ὁ οὐρανὸς ὡς καπνὸς ἐστερεώθη, ἡ δὲ γῆ ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσεται, οἱ δὲ κατοικοῦντες ὥσπερ ταῦτα ἀποθανοῦνται, τὸ δὲ σωτήριόν μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται, ἡ δὲ δικαιοσύνη μου οὐ μὴ ἐκλίπῃ. Ἀκούσατέ μου οἱ εἰδότες κρίσιν, λαὸς οὗ ὁ νόμος μου ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν· μὴ φοβεῖσθε ὀνειδισμὸν ἀνθρώπων, καὶ τῷ

φαυλισμῷ αὐτῶν μὴ ἠττᾶσθε· Ὡς γὰρ ἱμάτιον βρωθήσεται ὑπὸ χρόνου, καὶ ὡς ἔρια βρωθήσεται ὑπὸ σητός· ἡ δὲ δικαιοσύνη μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται, τὸ δὲ σωτήριόν μου εἰς γενεὰς γενεῶν. Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔνδυσαι τὴν ἰσχὺν τοῦ βραχίονός σου, ἐξεγείρου ὡς ἐν ἀρχῇ ἡμέρας, ὡς γενεὰ αἰῶνος. Οὐ σὺ εἶ ἡ ἐρημοῦσα θάλασσαν, ὕδωρ ἀβύσσου πλῆθος; ἡ θεῖσα τὰ βάθη τῆς θαλάσσης ὁδὸν διαβάσεως ῥυομένοις καὶ λελυτρωμένοις; ὑπὸ γὰρ Κυρίου ἀποστραφήσονται, καὶ ἥξουσιν εἰς Σιὼν μετ᾽ εὐφροσύνης καὶ ἀγαλλιάματος αἰωνίου· ἐπὶ κεφαλῆς γὰρ αὐτῶν αἴνεσις καὶ εὐφροσύνη καταλήμψεται αὐτούς· ἀπέδρα ὀδύνη καὶ λύπη καὶ στεναγμός. Ἐγώ εἰμι, ἐγώ εἰμι ὁ παρακαλῶν σε· γνῶθι τίς οὖσα ἐφοβήθης ἀπὸ ἀνθρώπου θνητοῦ, καὶ ἀπὸ υἱοῦ ἀνθρώπου, οἳ ὡσεὶ χόρτος ἐξηράνθησαν. Καὶ ἐπελάθου Θεὸν τὸν ποιήσαντά σε, τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ θεμελιώσαντα τὴν γῆν· καὶ ἐφόβου ἀεὶ πάσας τὰς ἡμέρας τὸ πρόσωπον τοῦ θυμοῦ τοῦ θλίβοντός σε· ὃν τρόπον γὰρ ἐβουλεύσατο τοῦ ἆραί σε, καὶ νῦν ποῦ ὁ θυμὸς τοῦ θλίβοντός σε; Ἐν γὰρ τῷ σώζεσθαί σε οὐ στήσεται, οὐδὲ χρονιεῖ, ὅτι ἐγὼ ὁ Θεός σου, ὁ ταράσσων τὴν θάλασσαν, καὶ ἠχῶν τὰ κύματα αὐτῆς· Κύριος σαβαὼθ ὄνομά μοι. Θήσω τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου, καὶ ὑπὸ τὴν σκιὰν τῆς χειρός μου σκεπάσω σε, ἐν ᾗ ἔστησα τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐθεμελίωσα τὴν γῆν· καὶ ἐρεῖ Σιὼν, λαός μου εἶ σύ. Ἐξεγείρου ἐξεγείρου, ἀνάστηθι Ἰερουσαλὴμ, ἡ πιοῦσα ἐκ χειρὸς Κυρίου τὸ ποτήριον τοῦ θυμοῦ αὐτοῦ· τὸ ποτήριον γὰρ τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ ἐξέπιες καὶ ἐξεκένωσας, καὶ οὐκ ἦν ὁ παρακαλῶν σε ἀπὸ πάντων τῶν τέκνων σου ὧν ἔτεκες, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιλαμβανόμενος τῆς χειρός σου, οὐδὲ ἀπὸ πάντων τῶν υἱῶν σου ὧν ὕψωσας. Διὸ ταῦτα ἀντικείμενά σοι, τίς συλλυπηθήσεταί σοι; πτῶμα καὶ σύντριμμα,

λιμὸς καὶ μάχαιρα, τίς παρακαλέσει σε; Οἱ υἱοί σου οἱ ἀπορούμενοι, οἱ καθεύδοντες ἐπ᾽ ἄκρου πάσης ἐξόδου ὡς σευτλίον ἡμίεφθον, οἱ πλήρεις θυμοῦ Κυρίου, ἐκλελυμένοι διὰ Κυρίου τοῦ Θεοῦ. Διατοῦτο ἄκουε τεταπεινωμένη, καὶ μεθύουσα οὐκ ἀπὸ οἴνου. Οὕτως λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ὁ κρίνων τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἰδοὺ εἴληφα ἐκ τῆς χειρός σου τὸ ποτήριον τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ μου, καὶ οὐ προσθήσῃ ἔτι πιεῖν αὐτό· καὶ δώσω αὐτὸ εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἀδικησάντων σε καὶ τῶν ταπεινωσάντων σε, οἳ εἶπαν τῇ ψυχῇ σου, κύψον, ἵνα παρέλθωμεν· καὶ ἔθηκας ἴσα τῇ γῇ τὰ μέσα σου ἔξω τοῖς παραπορευομένοις.

# 52

Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Σιὼν, ἔνδυσαι τὴν ἰσχύν σου Σιὼν, καὶ σὺ ἔνδυσαι τὴν δόξαν σου Ἱερουσαλὴμ πόλις ἡ ἁγία· οὐκέτι προστεθήσεταί διελθεῖν διὰ σοῦ ἀπερίτμητος καὶ ἀκάθαρτος. Ἐκτίναξαι τὸν χοῦν καὶ ἀνάστηθι, κάθισον Ἱερουσαλὴμ, ἔκδυσαι τὸν δεσμὸν τοῦ τραχήλου σου ἡ αἰχμάλωτος θυγάτηρ Σιών. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, δωρεὰν ἐπράθητε, καὶ οὐ μετὰ ἀργυρίου λυτρωθήσεσθε. Οὕτως λέγει Κύριος, εἰς Αἴγυπτον κατέβη ὁ λαός μου τὸ πρότερον παροικῆσαι ἐκεῖ, καὶ εἰς Ἀσσυρίους βίᾳ ἤχθησαν. Καὶ νῦν τί ἐστὲ ὧδε; τάδε λέγει Κύριος, ὅτι ἐλήφθη ὁ λαός μου δωρεὰν, θαυμάζετε καὶ ὀλολύζετε· τάδε λέγει Κύριος, δι᾽ ὑμᾶς διαπαντὸς τὸ ὄνομά μου βλασφημεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι. Διατοῦτο γνώσεται ὁ λαός μου τὸ ὄνομά μου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι ἐγώ εἰμι αὐτὸς ὁ λαλῶν, πάρειμι ὡς ὥρα ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὡς πόδες εὐαγγελιζομένου ἀκοὴν εἰρήνης, ὡς εὐαγγελιζόμενος ἀγαθὰ, ὅτι

ἀκουστὴν ποιήσω τὴν σωτηρίαν σου, λέγων, Σιὼν βασιλεύσει σου ὁ Θεός. Ὅτι φωνὴ τῶν φυλασσόντων σε ὑψώθη, καὶ τῇ φωνῇ ἅμα εὐφρανθήσονται· ὅτι ὀφθαλμοὶ πρὸς ὀφθαλμοὺς ὄψονται, ἡνίκα ἂν ἐλεήσῃ Κύριος τὴν Σιών. Ῥηξάτω εὐφροσύνην ἅμα τὰ ἔρημα Ἰερουσαλὴμ, ὅτι ἠλέησε Κύριος αὐτὴν, καὶ ἐῤῥύσατο Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἀποκαλύψει Κύριος τὸν βραχίονα τὸν ἅγιον αὐτοῦ ἐνώπιον πάντων τῶν ἐθνῶν, καὶ ὄψονται πάντα ἄκρα τῆς γῆς τὴν σωτηρίαν τὴν παρὰ τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Ἀπόστητε, ἀπόστητε, ἐξέλθατε ἐκεῖθεν, καὶ ἀκαθάρτου μὴ ἅψησθε, ἐξέλθατε ἐκ μέσου αὐτῆς, ἀφορίσθητε οἱ φέροντες τὰ σκεύη Κυρίου· Ὅτι οὐ μετὰ ταραχῆς ἐξελεύσεσθε, οὐδὲ φυγῇ πορεύσεσθε· προπορεύσεται γὰρ πρότερος ὑμῶν Κύριος, καὶ ὁ ἐπισυνάγων ὑμᾶς Θεὸς Ἰσραήλ. Ἰδοὺ, συνήσει ὁ παῖς μου, καὶ ὑψωθήσεται, καὶ δοξασθήσεται σφόδρα. Ὃν τρόπον ἐκστήσονται ἐπὶ σὲ πολλοὶ, οὕτως ἀδοξήσει ἀπὸ τῶς ἀνθρώπων τὸ εἶδός σου, καὶ ἡ δόξα σου ἀπὸ υἱῶν ἀνθρώπων. Οὕτω θαυμάσονται ἔθνη πολλὰ ἐπ᾽ αὐτῷ, καὶ συνέξουσι βασιλεῖς τὸ στόμα αὐτῶν· ὅτι οἷς οὐκ ἀνηγγέλη περὶ αὐτοῦ, ὄψονται, καὶ οἳ οὐκ ἀκηκόασι, συνήσουσι.

# 53

Κύριε τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; καὶ ὁ βραχίων Κυρίου τίνι ἀπεκαλύφθη; Ἀνηγγείλαμεν ὡς παιδίον ἐναντίον αὐτοῦ, ὡς ῥίζα ἐν γῇ διψώσῃ· οὐκ ἔστιν εἶδος αὐτῷ, οὐδὲ δόξα· καὶ εἴδομεν αὐτὸν, καὶ οὐκ εἶχεν εἶδος οὐδὲ κάλλος· Ἀλλὰ τὸ εἶδος αὐτοῦ ἄτιμον, καὶ ἐκλεῖπον παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων· ἄνθρωπος ἐν πληγῇ ὢν, καὶ εἰδὼς φέρειν μαλακίαν, ὅτι ἀπέστραπται τὸ πρόσωπον αὐτοῦ,

ἠτιμάσθη, καὶ οὐκ ἐλογίσθη. Οὗτος τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν φέρει, καὶ περὶ ἡμῶν ὀδυνᾶται, καὶ ἡμεῖς ἐλογισάμεθα αὐτὸν εἶναι ἐν πόνῳ, καὶ ἐν πληγῇ, καὶ ἐν κακώσει. Αὐτὸς δὲ ἐτραυματίσθη διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, καὶ μεμαλάκισται διὰ τὰς ἀνομίας ἡμῶν· παιδεία εἰρήνης ἡμῶν ἐπ’ αὐτὸν, τῷ μώλωπι αὐτοῦ ἡμεῖς ἰάθημεν. Πάντες ὡς πρόβατα ἐπλανήθημεν· ἄνθρωπος τῇ ὁδῷ αὐτοῦ ἐπλανήθη· καὶ Κύριος παρέδωκεν αὐτὸν ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν. Καὶ αὐτὸς διὰ τὸ κεκακῶσθαι οὐκ ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ· ὡς πρόβατον ἐπὶ σφαγὴν ἤχθη, καὶ ὡς ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ κείροντος ἄφωνος, οὕτως οὐκ ἀνοίγει τὸ στόμα. Ἐν τῇ ταπεινώσει ἡ κρίσις αὐτοῦ ἤρθη, τὴν γενεὰν αὐτοῦ τίς διηγήσεται; ὅτι αἴρεται ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ἀνομιῶν τοῦ λαοῦ μου ἤχθη εἰς θάνατον. Καὶ δώσω τοὺς πονηροὺς ἀντὶ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, καὶ τοὺς πλουσίους ἀντὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ὅτι ἀνομίαν οὐκ ἐποίησεν, οὐδὲ δόλον ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ. Καὶ Κύριος βούλεται καθαρίσαι αὐτὸν τῆς πληγῆς· ἐὰν δῶτε περὶ ἁμαρτίας, ἡ ψυχὴ ὑμῶν ὄψεται σπέρμα μακρόβιον· καὶ βούλεται Κύριος ἀφελεῖν ἀπὸ τοῦ πόνου τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, δεῖξαι αὐτῷ φῶς, καὶ πλάσαι τῇ συνέσει, δικαιῶσαι δίκαιον εὖ δουλεύοντα πολλοῖς, καὶ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν αὐτὸς ἀνοίσει. Διατοῦτο αὐτὸς κληρονομήσει πολλοὺς, καὶ τῶν ἰσχυρῶν μεριεῖ σκῦλα· ἀνθ’ ὧν παρεδόθη εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς ἀνόμοις ἐλογίσθη, καὶ αὐτὸς ἁμαρτίας πολλῶν ἀνήνεγκε, καὶ διὰ τὰς ἀνομίας αὐτῶν παρεδόθη.

# 54

Εὐφράνθητι στεῖρα ἡ οὐ τίκτουσα, ῥῆξον καὶ βόησον ἡ οὐκ

ὠδίνουσα, ὅτι πολλὰ τὰ τέκνα τῆς ἐρήμου, μᾶλλον ἢ τῆς ἐχούσης τὸν ἄνδρα· εἶπε γὰρ Κύριος, πλάτυνον τὸν τόπον τῆς σκηνῆς σου, καὶ τῶν αὐλαιῶν σου, πῆξον, μὴ φείσῃ, μάκρυνον τὰ σχοινίσματά σου, καὶ τοὺς πασσάλους σου κατίσχυσον, ἔτι εἰς τὰ δεξιὰ καὶ τὰ ἀριστερὰ ἐκπέτασον· καὶ τὸ σπέρμα σου ἔθνη κληρονομήσει, καὶ πόλεις ἠρημωμένας κατοικιεῖς. Μὴ φοβοῦ, ὅτι κατῃσχύνθης, μηδὲ ἐντραπῇς, ὅτι ὠνειδίσθης, ὅτι αἰσχύνην αἰώνιον ἐπιλήσῃ, καὶ ὄνειδος τῆς χηρείας σου οὐ μὴ μνησθήσῃ ἔτι. Ὅτι Κύριος ὁ ποιῶν σε, Κύριος σαβαὼθ ὄνομα αὐτῷ· καὶ ὁ ῥυσάμενός σε, αὐτὸς Θεὸς Ἰσραὴλ, πάσῃ τῇ γῇ κληθήσεται. Οὐχ ὡς γυναῖκα καταλελειμμένην καὶ ὀλιγόψυχον κέκληκέ σε ὁ Κύριος, οὐδ’ ὡς γυναῖκα ἐκ νεότητος μεμισημένην, εἶπεν ὁ Θεός σου. Χρόνον μικρὸν κατέλιπόν σε, καὶ μετ’ ἐλέους μεγάλου ἐλεήσω σε. Ἐν θυμῷ μικρῷ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐν ἐλέει αἰωνίῳ ἐλεήσω σε, εἶπεν ὁ ῥυσάμενός σε Κύριος· Ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐπὶ Νῶε τοῦτό μοι ἐστί· καθότι ὤμοσα αὐτῷ ἐν τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, τῇ γῇ μὴ θυμωθήσεσθαι ἐπὶ σοὶ ἔτι, μηδὲ ἐν ἀπειλῇ σου τὰ ὄρη μεταστήσεσθαι, οὐδ’ οἱ βουνοί σου μετακινηθήσονται· οὕτως οὐδὲ τὸ παρ’ ἐμοῦ σοι ἔλεος ἐκλείψει, οὐδὲ ἡ διαθήκη τῆς εἰρήνης σου οὐ μὴ μεταστῇ· εἶπε γὰρ ἵλεώς σοι Κύριε. Ταπεινὴ καὶ ἀκατάστατος οὐ παρεκλήθης· ἰδοὺ, ἐγὼ ἑτοιμάζω σοι ἄνθρακα τὸν λίθον σου, καὶ τὰ θεμέλιά σου σάπφειρον, καὶ θήσω τὰς ἐπάλξεις σου ἴασπιν, καὶ τὰς πύλας σου λίθους κρυστάλλου, καὶ τὸν περίβολόν σου λίθους ἐκλεκτούς· καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς σου διδακτοὺς Θεοῦ, καὶ ἐν πολλῇ εἰρήνῃ τὰ τέκνα σου. Καὶ ἐν δικαιοσύνῃ οἰκοδομηθήσῃ· ἀπέχου ἀπὸ ἀδίκου, καὶ οὐ φοβηθήσῃ, καὶ τρόμος οὐκ ἐγγιεῖ σοι. Ἰδοὺ προσήλυτοι προσελεύσονταί σοι δι’ ἐμοῦ, καὶ παροικήσουσί σοι, καὶ ἐπὶ σὲ καταφεύξονται. Ἰδοὺ ἐγὼ ἔκτισά σε, οὐχ ὡς χαλκεὺς φυσῶν

ἄνθρακας, καὶ ἐκφέρων σκεῦος εἰς ἔργον· ἐγὼ δὲ ἔκτισά σε, οὐκ εἰς ἀπώλειαν φθεῖραι. Πᾶν σκεῦος σκευαστὸν ἐπὶ σὲ, οὐκ εὐοδώσω· καὶ πᾶσα φωνὴ ἀναστήσεται ἐπὶ σὲ εἰς κρίσιν, πάντας αὐτοὺς ἡττήσεις, οἱ δὲ ἔνοχοί σου ἔσονται ἐν αὐτῇ. Ἔστι κληρονομία τοῖς θεραπεύουσι Κύριον· καὶ ὑμεῖς ἔσεσθέ μοι δίκαιοι, λέγει Κύριος.

# 55

Οἱ διψῶντες πορεύεσθε ἐφ’ ὕδωρ, καὶ ὅσοι μὴ ἔχετε ἀργύριον, βαδίσαντες ἀγοράσατε, καὶ φάγετε ἄνευ ἀργυρίου καὶ τιμῆς οἶνον καὶ στέαρ. Ἱνατί τιμᾶσθε ἀργυρίου, καὶ τὸν μόχθον ὑμῶν οὐκ εἰς πλησμονήν; ἀκούσατέ μου, καὶ φάγεσθε ἀγαθὰ, καὶ ἐντρυφήσει ἐν ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ ὑμῶν. Προσέχετε τοῖς ὠσὶν ὑμῶν, καὶ ἐπακολουθήσατε ταῖς ὁδοῖς μου· εἰσακούσατέ μου, καὶ ζήσεται ἐν ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ ὑμῶν, καὶ διαθήσομαι ὑμῖν διαθήκην αἰώνιον, τὰ ὅσια Δαυὶδ τὰ πιστά. Ἰδοὺ, μαρτύριον ἐν ἔθνεσιν ἔδωκα αὐτὸν, ἄρχοντα καὶ προστάσσοντα ἔθνεσιν. Ἔθνη ἃ οὐκ οἴδασί σε, ἐπικαλέσονταί σε, καὶ λαοὶ οἳ οὐκ ἐπίστανταί σε, ἐπὶ σὲ καταφεύξονται, ἕνεκεν Κυρίου τοῦ Θεοῦ σου τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ, ὅτι ἐδόξασέν σε. Ζητήσατε τὸν Κύριον, καὶ ἐν τῷ εὑρίσκειν αὐτὸν, ἐπικαλέσασθε· ἡνίκα δ’ ἂν ἐγγίζῃ ὑμῖν, ἀπολιπέτω ὁ ἀσεβὴς τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ ἀνὴρ ἄνομος τὰς βουλὰς αὐτοῦ, καὶ ἐπιστραφήτω ἐπὶ Κύριον, καὶ ἐλεηθήσεται, ὅτι ἐπὶ πολὺ ἀφήσει τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Οὐ γάρ εἰσιν αἱ βουλαί μου ὥσπερ αἱ βουλαὶ ὑμῶν, οὐδ’ ὥσπερ αἱ ὁδοὶ ὑμῶν αἱ ὁδοί μου, λέγει Κύριος. Ἀλλ’ ὡς ἀπέχει ὁ οὐρανὸς ἀπὸ τῆς γῆς, οὕτως ἀπέχει ἡ ὁδός μου ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν, καὶ τὰ διανοήματα ὑμῶν ἀπὸ τῆς διανοίας μου. Ὡς γὰρ

ἂν καταβῇ ὁ ὑετὸς ἢ χιὼν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐ μὴ ἀποστραφῇ ἕως ἂν μεθύσῃ τὴν γῆν, καὶ ἐκτέκῃ, καὶ ἐκβλαστήσῃ, καὶ δῷ σπέρμα τῷ σπείροντι, καὶ ἄρτον εἰς βρῶσιν· οὕτως ἔσται τὸ ῥῆμά μου, ὃ ἐὰν ἐξέλθῃ ἐκ τοῦ στόματός μου, οὐ μὴ ἀποστραφῇ, ἕως ἂν τελεσθῇ ὅσα ἂν ἠθέλησα, καὶ εὐοδώσω τὰς ὁδούς σου, καὶ τὰ ἐντάλματά μου. Ἐν γὰρ εὐφροσύνῃ ἐξελεύσεσθε, καὶ ἐν χαρᾷ διδαχθήσεσθε· τὰ γὰρ ὄρη καὶ οἱ βουνοὶ ἐξαλοῦνται προσδεχόμενοι ὑμᾶς ἐν χαρᾷ, καὶ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ ἐπικροτήσει τοῖς κλάδοις. Καὶ ἀντὶ τῆς στοιβῆς ἀναβήσεται κυπάρισσος, ἀντὶ δὲ τῆς κονύζης ἀναβήσεται μυρσίνη· καὶ ἔσται Κύριος εἰς ὄνομα, καὶ εἰς σημεῖον αἰώνιον, καὶ οὐκ ἐκλείψει.

# 56

Τάδε λέγει Κύριος, φυλάσσεσθε κρίσιν, καὶ ποιήσατε δικαιοσύνην· ἤγγικε γὰρ τὸ σωτήριόν μου παραγίνεσθαι, καὶ τὸ ἔλεός μου ἀποκαλυφθῆναι. Μακάριος ἀνὴρ ὁ ποιῶν ταῦτα, καὶ ἄνθρωπος ὁ ἀντεχόμενος αὐτῶν, καὶ φυλάσσων τὰ σάββατα μὴ βεβηλοῦν, καὶ διατηρῶν τὰς χεῖρας αὐτοῦ μὴ ποιεῖν ἄδικα. Μὴ λεγέτω ὁ ἀλλογενὴς ὁ προσκείμενος πρὸς Κύριον, ἀφοριεῖ με ἄρα Κύριος ἀπὸ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ· καὶ μὴ λεγέτω ὁ εὐνοῦχος, ὅτι ξύλον ἐγώ εἰμι ξηρόν. Τάδε λέγει Κύριος τοῖς εὐνούχοις, ὅσοι ἂν φυλάξωνται τὰ σάββατά μου, καὶ ἐκλέξωνται ἃ ἐγὼ θέλω, καὶ ἀντέχωνται τῆς διαθήκης μου, δώσω αὐτοῖς ἐν τῷ οἴκῳ μου καὶ ἐν τῷ τείχει μου τόπον ὀνομαστὸν, κρείττω υἱῶν καὶ θυγατέρων· ὄνομα αἰώνιον δώσω αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐκλείψει· καὶ τοῖς ἀλλογενέσι τοῖς προσκειμένοις Κυρίῳ δουλεύειν αὐτῷ, καὶ ἀγαπᾷν τὸ ὄνομα

Κυρίου, τοῦ εἶναι αὐτῷ εἰς δούλους καὶ δούλας· καὶ πάντας τοὺς φυλασσομένους τὰ σάββατά μου μὴ βεβηλοῦν, καὶ ἀντεχομένους τῆς διαθήκης μου, εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ εὐφρανῶ αὐτοὺς ἐν τῷ οἴκῳ τῆς προσευχῆς μου· τὰ ὁλοκαυτώματα αὐτῶν, καὶ αἱ θυσίαι αὐτῶν ἔσονται δεκταὶ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν μου· ὁ γάρ οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, εἶπε Κύριος ὁ συνάγων τοὺς διεσπαρμένους Ἰσραὴλ, ὅτι συνάξω ἐπ’ αὐτὸν συναγωγήν. Πάντα τὰ θηρία τὰ ἄγρια, δεῦτε, φάγετε, πάντα τὰ θηρία τοῦ δρυμοῦ. Ἴδετε, ὅτι ἐκτετύφλωνται πάντες, οὐκ ἔγνωσαν, κύνες ἐνεοί οὐ δυνήσονται ὑλακτεῖν, ἐνυπνιαζόμενοι κοίτην, φιλοῦντες νυστάξαι. Καὶ οἱ κύνες ἀναιδεῖς τῇ ψυχῇ, οὐκ εἰδότες πλησμονήν· καί εἰσι πονηροὶ οὐκ εἰδότες σύνεσιν, πάντες ταῖς ὁδοῖς αὐτων ἐξηκολούθησαν, ἕκαστος κατὰ τὸ ἑαυτοῦ.

# 57

Ἴδετε ὡς ὁ δίκαιος ἀπώλετο, καὶ οὐδεὶς ἐκδέχεται τῇ καρδίᾳ, καὶ ἄνδρες δίκαιοι αἴρονται, καὶ οὐδεὶς κατανοεῖ· ἀπὸ γὰρ προσώπου ἀδικίας ᾖρται ὁ δίκαιος. Ἔσται ἐν εἰρήνῃ ἡ ταφὴ αὐτοῦ, ᾖρται ἐκ τοῦ μέσου. Ὑμεῖς δὲ προσαγάγετε ὧδε υἱοὶ ἄνομοι, σπέρμα μοιχῶν καὶ πόρνης. Ἐν τίνι ἐνετρυφήσατε; καὶ ἐπὶ τίνα ἠνοίξατε τὸ στόμα ὑμῶν; καὶ ἐπὶ τίνα ἐχαλάσατε τὴν γλῶσσαν ὑμῶν; οὐχ ὑμεῖς ἐστέ τέκνα ἀπωλείας; σπέρμα ἄνομον; Οἱ παρακαλοῦντες εἴδωλα ὑπὸ δένδρα δασέα, σφάζοντες τὰ τέκνα αὐτῶν ἐν ταῖς φάραγξιν ἀναμέσον τῶν πετρῶν; Ἐκείνη σου ἡ μερίς, οὗτός σου ὁ κλῆρος, κἀκείνοις ἐξέχεας σπονδὰς, καὶ τούτοις ἀνήνεγκας θυσίας· ἐπὶ

τούτοις οὖν οὐκ ὀργισθήσομαι; Ἐπ’ ὄρος ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, ἐκεῖ σου ἡ κοίτη, καὶ ἐκεῖ ἀνεβίβασας θυσίας σου, καὶ ὀπίσω τῶν σταθμῶν τῆς θύρας σου ἔθηκας μνημόσυνά σου· ᾧου, ὅτι ἐὰν ἀπ’ ἐμοῦ ἀποστῇς, πλεῖόν τι ἕξεις; ἠγάπησας τοὺς κοιμωμένους μετὰ σοῦ, καὶ ἐπλήθυνας τὴν πορνείαν σου μετ’ αὐτῶν, καὶ πολλοὺς ἐποίησας τοὺς μακρὰν ἀπὸ σοῦ, καὶ ἀπέστειλας πρέσβεις ὑπὲρ τὰ ὅριά σου, καὶ ἐταπεινώθης ἕως ᾅδου. Ταῖς πολυοδίαις σου ἐκοπίασας, καὶ οὐκ εἶπας παύσομαι ἐνισχύουσα· ὅτι ἔπραξας ταῦτα, διατοῦτο οὐ κατεδεήθης μου σύ. Τίνα εὐλαβηθεῖσα ἐφοβήθης, καὶ ἐψεύσω με, καὶ οὐκ ἐμνήσθης, οὐδὲ ἔλαβές με εἰς τὴν διάνοιαν, οὐδὲ εἰς τὴν καρδίαν σου; καὶ ἐγώ σε ἰδὼν παρορῶ, καὶ ἐμὲ οὐκ ἐφοβήθης. Καὶ ἐγὼ ἀπαγγελῶ τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ τὰ κακά σου, ἃ οὐκ ὠφελήσει σε, ὅταν ἀναβοήσῃς ἐξελέσθωσάν σε ἐν τή θλίψει σου· τούτους γὰρ πάντας ἄνεμος λήψεται, καὶ ἀποίσει καταιγίς· οἱ δὲ ἀντεχόμενοί μου κτήσονται γῆν, καὶ κληρονομήσουσι τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου· Καὶ ἐροῦσι, καθαρίσατε ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ ὁδοὺς, καὶ ἄρατε σκῶλα ἀπὸ τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ μου. Τάδε λέγει ὁ ὕψιστος, ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν τὸν αἰῶνα, ἅγιος ἐν ἁγίοις, ὄνομα αὐτῷ, ὕψιστος ἐν ἁγίοις ἀναπαυόμενος, καὶ ὀλιγοψύχοις διδοὺς μακροθυμίαν, καὶ διδοὺς ζωὴν τοῖς συντετριμμένοις τὴν καρδίαν. Οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἐκδικήσω ὑμᾶς, οὐδὲ διαπαντὸς ὀργισθήσομαι ὑμῖν· πνεῦμα γὰρ παρ’ ἐμοῦ ἐξελεύσεται, καὶ πνοὴν πᾶσαν ἐγὼ ἐποίησα. Δι’ ἁμαρτίαν βραχύ τι ἐλύπησα αὐτὸν, καὶ ἐπάταξα αὐτὸν, καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ’ αὐτοῦ, καὶ ἐλυπήθη, καὶ ἐπορεύθη στυγνὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ. Τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ ἑώρακα, καὶ ἰασάμην αὐτὸν, καὶ παρεκάλεσα αὐτὸν, καὶ ἔδωκα αὐτῷ παράκλησιν ἀληθινὴν, εἰρήνην ἐπ’ εἰρήνῃ τοῖς μακρὰν καὶ τοῖς

ἐγγὺς οὖσι· καὶ εἶπε Κύριος, ἰάσομαι αὐτοὺς. Οἱ δὲ ἄδικοι κλυδωνισθήσονται, καὶ ἀναπαύσασθαι οὐ δυνήσονται. Οὐκ ἔστι χαίρειν τοῖς ἀσεβέσιν, εἶπεν ὁ Θεός.

# 58

Ἀναβοήσον ἐν ἰσχύϊ, καὶ μὴ φείσῃ, ὡς σάλπιγγι ὕψωσον τὴν φωνήν σου καὶ ἀνάγγειλον τῷ λαῷ μου τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν, καὶ τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ τὰς ἀνομίας αὐτῶν. Ἐμὲ ἡμέραν ἐξ ἡμέρας ζητοῦσι, καὶ γνῶναί μου τὰς ὁδοὺς ἐπιθυμοῦσιν, ὡς λαὸς δικαιοσύνην πεποιηκὼς καὶ κρίσιν Θεοῦ αὐτοῦ μὴ ἐγκαταλελοιπώς· αἰτοῦσί με νῦν κρίσιν δικαίαν, καὶ ἐγγίζειν Θεῷ ἐπιθυμοῦσι, λέγοντες, τί ὅτι ἐνηστεύσαμεν, καὶ οὐκ εἶδες; ἐταπεινώσαμεν τὰς ψυχὰς ἡμῶν, καὶ οὐκ ἔγνως; Ἐν γὰρ ταῖς ἡμέραις τῶν νηστειῶν ὑμῶν εὑρίσκετε τὰ θελήματα ὑμῶν, καὶ πάντας τοὺς ὑποχειρίους ὑμῶν ὑπονύσσετε. Εἰ εἰς κρίσεις καὶ μάχας νηστεύετε, καὶ τύπτετε πυγμαῖς ταπεινὸν, ἵνατί μοι νηστεύετε ὡς σήμερον, ἀκουσθῆναι ἐν κραυγῇ τὴν φωνὴν ὑμῶν; Οὐ ταύτην τὴν νηστείαν ἐξελεξάμην, καὶ ἡμέραν ταπεινοῦν ἄνθρωπον τὴν ψυχὴν αὐτοῦ· οὐδ’ ἂν κάμψῃς ὡς κρίκον τὸν τράχηλόν σου, καὶ σάκκον καὶ σποδὸν ὑποστρώσῃ, οὐδ’ οὕτω καλέσετε νηστείαν δεκτήν. Οὐχὶ τοιαύτην νηστείαν ἐξελεξάμην, λέγει Κύριος· ἀλλὰ λύε πάντα σύνδεσμον ἀδικίας, διάλυε στραγγαλιὰς βιαίων συναλλαγμάτων, ἀπόστελλε τεθραυσμένους ἐν ἀφέσει, καὶ πᾶσαν συγγραφὴν ἄδικον διάσπα. Διάθρυπτε πεινῶντι τὸν ἄρτον σου, καὶ πτωχοὺς ἀστέγους εἴσαγε εἰς τὸν οἶκόν σου· ἐὰν ἴδῃς γυμνὸν, περίβαλε, καὶ ἀπὸ τῶν οἰκείων τοῦ σπέρματός σου οὐχ ὑπερόψει. Τότε ῥαγήσεται πρώϊμον τὸ φῶς

σου, καὶ τὰ ἰάματά σου ταχὺ ἀνατελεῖ· καὶ προπορεύσεται ἔμπροσθέν σου ἡ δικαιοσύνη σου, καὶ ἡ δόξα τοῦ Θεοῦ περιστελεῖ σε. Τότε βοήσῃ, καὶ ὁ Θεὸς εἰσακούσεταί σου, ἔτι λαλοῦντός σου ἐρεῖ, ἰδοὺ, πάρειμι· ἐὰν ἀφέλῃς ἀπὸ σοῦ σύνδεσμον, καὶ χειροτονίαν, καὶ ῥῆμα γογγυσμοῦ, καὶ δῷς πεινῶντι τὸν ἄρτον ἐκ ψυχῆς σου, καὶ ψυχὴν τεταπεινωμένην ἐμπλήσῃς, τότε ἀνατελεῖ ἐν τῷ σκότει τὸ φῶς σου, καὶ τὸ σκότος σου ὡς μεσημβρία, καὶ ἔσται ὁ Θεός σου μετὰ σοῦ διαπαντός· καὶ ἐμπλησθήσῃ καθάπερ ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχή σου, καὶ τὰ ὀστᾶ σου πιανθήσεται· καὶ ἔσται ὡς κῆπος μεθύων, καὶ ὡς πηγὴ ἣν μὴ ἐξέλιπεν ὕδωρ· Καὶ οἰκοδομηθήσονταί σου αἱ ἔρημοι αἰώνιοι, καὶ ἔσται τὰ θεμέλιά σου αἰώνια γενεῶν γενεαῖς, καὶ κληθήσῃ οἰκοδόμος φραγμῶν, καὶ τὰς τρίβους σου ἀναμέσον παύσεις. Ἐὰν ἀποστρέψῃς τὸν πόδα σου ἀπὸ τῶν σαββάτων τοῦ μὴ ποιεῖν τὰ θελήματά σου ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἁγίᾳ, καὶ καλέσεις τὰ σάββατα τρυφερὰ, ἅγια τῷ Θεῷ· οὐκ ἀρεῖς τὸν πόδα σου ἐπ’ ἔργῳ, οὐδὲ λαλήσεις λόγον ἐν ὀργῇ ἐκ τοῦ στόματός σου, καὶ ἔσῃ πεποιθὼς ἐπὶ Κύριον, καὶ ἀναβιβάσει σε ἐπὶ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς, καὶ ψωμιεῖ σε τὴν κληρονομίαν Ἰακὼβ τοῦ πατρός σου· τὸ γὰρ στόμα Κυρίου ἐλάλησε ταῦτα.

# 59

Μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χεὶρ Κυρίου τοῦ σῶσαι; ἢ ἐβάρυνε τὸ οὖς αὐτοῦ τοῦ μὴ εἰσακοῦσαι; Ἀλλὰ τὰ ἁμαρτήματα ὑμῶν διϊστῶσιν ἀναμέσον ὑμῶν καὶ ἀναμέσον τοῦ Θεοῦ, καὶ διὰ τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν ἀπέστρεψεν τὸ πρόσωπον ἀφ’ ὑμῶν τοῦ μὴ ἐλεῆσαι. Αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν μεμολυσμέναι αἵματι, καὶ οἱ δάκτυλοι ὑμῶν ἐν

ἁμαρτίαις, τὰ δὲ χείλη ὑμῶν ἐλάλησεν ἀνομίαν, καὶ ἡ γλῶσσα ὑμῶν ἀδικίαν μελετᾷ. Οὐθεὶς λαλεῖ δίκαια, οὐδὲ ἐστι κρίσις ἀληθινή· πεποίθασιν ἐπὶ ματαίοις, καὶ λαλοῦσι κενὰ, ὅτι κύουσι πόνον, καὶ τίκτουσιν ἀνομίαν. Ὠὰ ἀσπίδων ἔῤῥηξαν, καὶ ἱστὸν ἀράχνης ὑφαίνουσι, καὶ ὁ μέλλων τῶν ὠῶν αὐτῶν φαγεῖν, συντρίψας οὔριον, εὗρε καὶ ἐν αὐτῷ βασιλίσκου. Ὁ ἱστὸς αὐτῶν οὐκ ἔσται εἰς ἱμάτιον, οὐδὲ μὴ περιβάλωνται ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτῶν· τὰ γὰρ ἔργα αὐτῶν, ἔργα ἀνομίας. Οἱ δὲ πόδες αὐτῶν ἐπὶ πονηρίαν τρέχουσι, ταχινοὶ ἐκχέαι αἷμα, καὶ οἱ διαλογισμοὶ αὐτὼν, διαλογισμοὶ ἀπὸ φόνων· σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, καὶ ὁδὸν εἰρήνης οὐκ οἴδασι, καὶ οὐκ ἔστι κρίσις ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν· αἱ γὰρ τρίβοι αὐτῶν διεστραμμέναι ἂς διοδεύουσι, καὶ οὐκ οἴδασιν εἰρήνην. Διατοῦτο ἀπέστη ἡ κρίσις ἀπ’ αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς δικαιοσύνη· ὑπομεινάντων αὐτῶν φῶς ἐγένετο αὐτοῖς σκότος, μείναντες αὐγὴν ἐν ἀωρίᾳ περιεπάτησαν. Ψηλαφήσουσιν ὡς τυφλοὶ τοῖχον, καὶ ὡς οὐχ ὑπαρχόντων ὀφθαλμῶν ψηλαφήσουσι· καὶ πεσοῦνται ἐν μεσημβρίᾳ ὡς ἐν μεσονυκτίῳ, ὡς ἀποθνήσκοντες στενάξουσιν· Ὡς ἄρκος καὶ ὡς περιστερὰ ἅμα πορεύσονται· ἀνεμείναμεν κρίσιν, καὶ οὐκ ἔστι σωτηρία, μακρὰν ἀφέστηκεν ἀφ’ ἡμῶν. Πολλὴ γὰρ ἡμῶν ἡ ἀνομία ἐναντίον σου, καὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· αἱ γὰρ ἀνομίαι ἡμῶν ἐν ἡμῖν, καὶ τὰ ἀδικήματα ἡμῶν ἔγνωμεν. Ἠσεβήσαμεν καὶ ἐψευσάμεθα, καὶ ἀπέστημεν ὄπισθεν τοῦ Θεοῦ ἡμῶν· ἐλαλήσαμεν ἄδικα, καὶ ἠπειθήσαμεν· ἐκύομεν, καὶ ἐμελετήσαμεν ἀπὸ καρδίας ἡμῶν λόγους ἀδίκους· Καὶ ἀπεστήσαμεν ὀπίσω τὴν κρίσιν, καὶ ἡ δικαιοσύνη μακρὰν ἀφέστηκεν· ὅτι κατηναλώθη ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἡ ἀλήθεια, καὶ δι’ εὐθείας οὐκ ἐδύναντο διελθεῖν. Καὶ ἡ ἀλήθεια ᾔρται, καὶ

μετέστησαν τὴν διάνοιαν τοῦ συνιέναι. Καὶ εἶδε Κύριος, καὶ οὐκ ἤρεσεν αὐτῷ, ὅτι οὐκ ἦν κρίσις. Καὶ εἶδε, καὶ οὐκ ἦν ἀνήρ, καὶ κατενοήσε, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιληψόμενος· καὶ ἠμύνατο αὐτοὺς τῷ βραχίονι αὐτοῦ, καὶ τῇ ἐλεημοσύνῃ ἐστηρίσατο. Καὶ ἐνεδύσατο δικαιοσύνην ὡς θώρακα, καὶ περιέθετο περικεφαλαίαν σωτηρίου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, καὶ περιεβάλετο ἱμάτιον ἐκδικήσεως, καὶ τὸ περιβόλαιον αὐτοῦ, ὡς ἀνταποδώσων ἀνταπόδοσιν ὄνειδος τοῖς ὑπεναντίοις. Καὶ φοβηθήσονται οἱ ἀπὸ δυσμῶν τὸ ὄνομα Κυρίου, καὶ οἱ ἀπ᾽ ἀνατολῶν ἡλίου τὸ ὄνομα τὸ ἔνδοξον· ἥξει γὰρ ὡς ποταμὸς βίαιος ἡ ὀργὴ παρὰ Κυρίου, ἥξει μετὰ θυμοῦ. Καὶ ἥξει ἕνεκεν Σιὼν ὁ ῥυόμενος, καὶ ἀποστρέψει ἀσεβείας ἀπὸ Ἰακώβ. Καὶ αὕτη αὐτοῖς ἡ παρ᾽ ἐμοῦ διαθήκη, εἶπε Κύριος· τὸ πνεῦμα τὸ ἐμὸν, ὅ ἐστιν ἐπὶ σοί, καὶ τὰ ῥήματα, ἃ ἔδωκα εἰς τὸ στόμα σου, οὐ μὴ ἐκλίπῃ ἐκ τοῦ στόματός σου, καὶ ἐκ τοῦ στόματος τοῦ σπέρματός σου· εἶπε γὰρ Κύριος ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν αἰῶνα.

# 60

Φωτίζου φωτίζου Ἰερουσαλὴμ, ἥκει γάρ σου τὸ φῶς, καὶ ἡ δόξα Κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνατέταλκεν. Ἰδοὺ, σκότος καλύψει γῆν, καὶ γνόφος ἐπ᾽ ἔθνη, ἐπὶ δὲ σὲ φανήσεται Κύριος, καὶ ἡ δόξα αὐτοῦ ἐπὶ σὲ ὀφθήσεται. Καὶ πορεύσονται βασιλεῖς τῷ φωτί σου, καὶ ἔθνη τῇ λαμπρότητί σου. Ἆρον κύκλῳ τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε συνηγμένα τὰ τέκνα σου· ἥκασι πάντες οἱ υἱοί σου μακρόθεν, καὶ αἱ θυγατέρες σου ἐπ᾽ ὤμων ἀρθήσονται. Τότε ὄψῃ, καὶ φοβηθήσῃ, καὶ ἐκστήσῃ τῇ καρδίᾳ, ὅτι μεταβαλεῖ εἰς σὲ πλοῦτος θαλάσσης, καὶ ἐθνῶν καὶ λαῶν, καὶ ἥξουσί σοι ἀγέλαι καμήλων, καὶ

καλύψουσί σε κάμηλοι Μαδιὰμ καὶ Γαιφά· πάντες ἐκ Σαβὰ ἥξουσι φέροντες χρυσίον καὶ λίβανον οἴσουσιν, καὶ τὸ σωτήριον Κυρίου εὐαγγελιοῦνται. Καὶ πάντα τὰ πρόβατα Κηδὰρ συναχθήσονται, καὶ κριοὶ Ναβαιὼθ ἥξουσι, καὶ ἀνενεχθήσεται δεκτὰ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν μου, καὶ ὁ οἶκος τῆς προσευχῆς μου δοξασθήσεται. Τίνες οἵδε, ὡς νεφέλαι πέτονται, καὶ ὡσεὶ περιστεραὶ σὺν νοσσοῖς ἐπ᾽ ἐμέ; Ἐμὲ αἱ νῆσοι ὑπέμειναν, καὶ πλοῖα Θαρσεὶς ἐν πρώτοις, ἀγαγεῖν τὰ τέκνα σου μακρόθεν, καὶ τὸν ἄργυρον καὶ τὸν χρυσὸν αὐτῶν μετ᾽ αὐτῶν, καὶ διὰ τὸ ὄνομα Κυρίου τὸ ἅγιον, καὶ διὰ τὸ τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἔνδοξον εἶναι. Καὶ οἰκοδομήσουσιν ἀλλογενεῖς τὰ τείχη σου, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν παραστήσονταί σοι· διὰ γὰρ ὀργήν μου ἐπάταξά σε, καὶ διὰ ἔλεον ἠγάπησά σε. Καὶ ἀνοιχθήσονται αἱ πύλαι σου διαπαντὸς, ἡμέρας καὶ νυκτὸς οὐ κλεισθήσονται, εἰσαγαγεῖν πρὸς σὲ δύναμιν ἐθνῶν, καὶ βασιλεῖς αὐτῶν ἀγομένους. Τὰ γὰρ ἔθνη καὶ οἱ βασιλεῖς, οἵτινες οὐ δουλεύσουσί σοι, ἀπολοῦνται, καὶ τὰ ἔθνη ἐρημίᾳ ἐρημωθήσεται. Καὶ ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου πρὸς σὲ ἥξει, ἐν κυπαρίσσῳ καὶ πεύκῃ καὶ κέδρῳ ἅμα, δοξάσαι τὸν τόπον τὸν ἁγιόν μου. Καὶ πορεύσονται πρὸς σὲ δεδοικότες υἱοὶ ταπεινωσάντων σε, καὶ παροξυνάντων σε, καὶ κληθήσῃ Πόλις Σιὼν ἁγίου Ἰσραήλ. Διὰ τὸ γεγενῆσθαί σε ἐνκαταλελειμμένην καὶ μεμισημένην, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν· καὶ θήσω σε ἀγαλλίαμα αἰώνιον, εὐφροσύνην γενεῶν γενεαῖς. Καὶ θηλάσεις γάλα ἐθνῶν, καὶ πλοῦτον βασιλέων φάγεσαι, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ Κύριος ὁ σώζων σε, καὶ ἐξαιρούμενός σε Θεὸς Ἰσραήλ. Καὶ ἀντὶ χαλκοῦ οἴσω σοι χρυσίον, ἀντὶ δὲ σιδήρου οἴσω σοι ἀργύριον, ἀντὶ δὲ ξύλων οἴσω σοι χαλκόν, ἀντὶ δὲ λίθων, σιδήρον· καὶ δώσω τοὺς ἄρχοντάς σου ἐν εἰρήνῃ, καὶ τοὺς ἐπισκόπους σου ἐν δικαιοσύνῃ· Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται ἔτι ἀδικία ἐν τῇ γῇ σου, οὐδὲ

σύντριμμα, οὐδὲ ταλαιπωρία ἐν τοῖς ὁρίοις σου, ἀλλὰ κληθήσεται Σωτήριον τὰ τείχη σου, καὶ αἱ πύλαι σου Γλύμμα. Καὶ οὐκ ἔσται σοι ἔτι ὁ ἥλιος εἰς φῶς ἡμέρας, οὐδὲ ἀνατολὴ σελήνης φωτιεῖ σοι τὴν νύκτα, ἀλλ’ ἔσται σοι Κύριος φῶς αἰώνιον, καὶ ὁ Θεὸς δόξα σου. Οὐ γὰρ δύσεται ὁ ἥλιος σοι, καὶ ἡ σελήνη σοι οὐκ ἐκλείψει· ἔσται γὰρ σοι Κύριός φῶς αἰώνιον, καὶ ἀναπληρωθήσονται αἱ ἡμέραι τοῦ πένθους σου. Καὶ ὁ λαός σου πᾶς δίκαιος, δι’ αἰῶνος κληρονομήσουσι τὴν γῆν, φυλάσσων τὸ φύτευμα, ἔργα χειρῶν αὐτοῦ, εἰς δόξαν. Ὁ ὀλιγοστὸς ἔσται εἰς χιλιάδας, καὶ ὁ ἐλάχιστος εἰς ἔθνος μέγα· ἐγὼ Κύριος κατὰ καιρὸν συνάξω αὐτούς.

# 61

Πνεῦμα Κυρίου ἐπ’ ἐμὲ, οὗ εἵνεκε ἔχρισέν με, εὐαγγελίσασθαι πτωχοῖς ἀπέσταλκέ με, ἰάσασθαι τοὺς συντετριμμένους τὴν καρδίαν, κηρῦξαι αἰχμαλώτοις ἄφεσιν, καὶ τυφλοῖς ἀνάβλεψιν, καλέσαι ἐνιαυτὸν Κυρίου δεκτὸν, καὶ ἡμέραν ἀνταποδόσεως, παρακαλέσαι πάντας τοὺς πενθοῦντας, δοθῆναι τοῖς πενθοῦσι Σιὼν αὐτοῖς δόξαν ἀντὶ σποδοῦ, ἄλειμμα εὐφροσύνης τοῖς πενθοῦσι, κατὰ στολὴν δόξης ἀντὶ πνεύματος ἀκηδίας· καὶ κληθήσονται γενεαὶ δικαιοσύνης, φύτευμα Κυρίου εἰς δόξαν. Καὶ οἰκοδομήσουσιν ἐρήμους αἰωνίας, ἐξηρημωμένας πρότερον ἐξαναστήσουσι, καὶ καινιοῦσι πόλεις ἐρήμους, ἐξηρημωμένας εἰς γενεάς. Καὶ ἥξουσιν ἀλλογενεῖς ποιμαίνοντες τὰ πρόβατά σου, καὶ ἀλλόφυλοι ἀροτῆρες, καὶ ἀμπελουργοί. Ὑμεῖς δὲ ἱερεῖς Κυρίου κληθήσεσθε, λειτουργοὶ Θεοῦ, ἰσχὺν ἐθνῶν κατέδεσθε, καὶ ἐν τῷ πλούτῳ αὐτῶν θαυμασθήσεσθε. Οὕτως ἐκ δευτέρας

κληρονομήσουσι τὴν γῆν, καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν. Ἐγὼ γάρ εἰμι Κύριος ὁ ἀγαπῶν δικαιοσύνην, καὶ μισῶν ἁρπάγματα ἐξ ἀδικίας· καὶ δώσω τὸν μόχθον αὐτῶν δικαίοις, καὶ διαθήκην αἰώνιον διαθήσομαι αὐτοῖς. Καὶ γνωσθήσεται ἐν τοῖς ἔθνεσι τὸ σπέρμα αὐτῶν, καὶ τὰ ἔκγονα αὐτῶν ἐν μέσῳ τῶν λαῶν· πᾶς ὁ ὁρῶν αὐτοὺς ἐπιγνώσεται αὐτοὺς, ὅτι οὗτοί εἰσι σπέρμα ηὐλογημένον ὑπὸ Θεοῦ, καὶ εὐφροσύνῃ εὐφρανθήσονται ἐπὶ Κύριον. Ἀγαλλιάσθω ἡ ψυχή μου ἐπὶ τῷ Κυρίῳ, ἐνέδυσε γάρ με ἱμάτιον σωτηρίου, καὶ χιτῶνα εὐφροσύνης, ὡς νυμφίῳ περιέθηκέ μοι μίτραν, καὶ ὡς νύμφην κατεκόσμησέ με κόσμῳ. Καὶ ὡς γῆν αὔξουσαν τὸ ἄνθος αὐτῆς, καὶ ὡς κῆπος τὰ σπέρματα αὐτοῦ, οὕτως ἀνατελεῖ Κύριος Κύριος δικαιοσύνην, καὶ ἀγαλλίαμα ἐναντίον πάντων τῶν ἐθνῶν.

# 62

Διὰ Σιὼν οὐ σιωπήσομαι, καὶ διὰ Ἰερουσαλὴμ οὐκ ἀνήσω, ἕως ἂν ἐξέλθῃ ὡς φῶς ἡ δικαιοσύνη αὐτῆς, τὸ δὲ σωτήριόν μου ὡς λαμπὰς καυθήσεται. Καὶ ὄψονται ἔθνη τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ βασιλεῖς τὴν δόξαν σου, καὶ καλέσει σε τὸ ὄνομα τὸ καινὸν, ὃ ὁ Κύριος ὀνομάσει αὐτό. Καὶ ἔσῃ στέφανος κάλλους ἐν χειρὶ Κυρίου, καὶ διάδημα βασιλείας ἐν χειρὶ Θεοῦ σου. Καὶ οὐκέτι κληθήσῃ Καταλελειμμένη, καὶ ἡ γῆ σου οὐ κληθήσεται ἔτι Ἔρημος· σοὶ γὰρ κληθήσεται, Θέλημα ἐμὸν, καὶ τῇ γῇ σου, Οἰκουμένη, ὅτι εὐδόκησε Κύριος ἐν σοὶ, καὶ ἡ γῆ σου συνοικισθήσεται. Καὶ ὡς συνοικῶν νεανίσκος παρθένῳ, οὕτω κατοικήσουσιν οἱ υἱοί σου· καὶ ἔσται ὃν τρόπον εὐφρανθήσεται νυμφίος ἐπὶ νύμφῃ, οὕτως εὐφρανθήσεται

Κύριος ἐπὶ σοί. Καὶ ἐπὶ τῶν τειχῶν σου Ἰερουσαλὴμ κατέστησα φύλακας ὅλην τὴν ἡμέραν καὶ ὅλην τὴν νύκτα, οἳ διὰ τέλους οὐ σιωπήσονται μιμνησκόμενοι Κυρίου. Οὐκ ἔστι γὰρ ὑμῖν ὅμοιος· ἐὰν διορθώσῃ, καὶ ποιήσῃ Ἰερουσαλὴμ γαυρίαμα ἐπὶ τῆς γῆς. Ὤμοσε Κύριος κατὰ τῆς δόξης αὐτοῦ, καὶ κατὰ τῆς ἰσχύος τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, εἰ ἔτι δώσω τὸν σῖτόν σου, καὶ τὰ βρώματα σου τοῖς ἐχθροῖς σου, καὶ εἰ ἔτι πίονται υἱοὶ ἀλλότριοι τὸν οἶνόν σου, ἐφ᾽ ᾧ ἐμόχθησας. Ἀλλ᾽ οἱ συναγαγόντες φάγονται αὐτὰ, καὶ αἰνέσουσι Κύριον, καὶ οἱ συναγαγόντες πίονται αὐτὰ ἐν ταῖς ἐπαύλεσι ταῖς ἁγίαις μου. Πορεύεσθε διὰ τῶν πυλῶν μοῦ, καὶ ὁδοποιήσατε τῷ λαῷ μου, καὶ τοὺς λίθους ἐκ τῆς ὁδοῦ διαῤῥίψατε, ἐξάρατε σύσσημον εἰς τὰ ἔθνη. Ἰδοὺ γὰρ Κύριος ἐποίησεν ἀκουστὸν ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· εἴπατε τῇ θυγατρὶ Σιὼν, ἰδοὺ ὁ σωτήρ σοι παραγέγονεν ἔχων τὸν ἑαυτοῦ μισθὸν, καὶ τὸ ἔργον αὐτοῦ πρὸ προσώπου αὐτοῦ. Καὶ καλέσει αὐτὸν Λαὸν ἅγιον, λελυτρωμένον ὑπὸ Κυρίου· σὺ δὲ κληθήσῃ Ἐπιζητουμένη πόλις, καὶ οὐκ ἐγκαταλελιμμένη.

# 63

Τίς οὗτος ὁ παραγνόμενος ἐξ Ἐδὼμ, ἐρύθημα ἱματίων ἐκ Βοσόρ; οὕτως ὡραῖος ἐν στολῇ, βίᾳ μετὰ ἰσχύος; ἐγὼ διαλέγομαι δικαιοσύνην καὶ κρίσιν σωτηρίου. Διατί σου ἐρυθρὰ τὰ ἱμάτια, καὶ τὰ ἐνδύματά σου ὡς ἀπὸ πατητοῦ ληνοῦ; Πλήρης καταπεπατημένης, καὶ τῶν ἐθνῶν οὐκ ἔστιν ἀνὴρ μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ κατεπάτησα αὐτοὺς ἐν θυμῷ μου, καὶ κατέθλασα αὐτοὺς ὡς γῆν, καὶ κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Ἡμέρα γὰρ ἀνταποδόσεως

ἐπῆλθεν αὐτοῖς, καὶ ἐνιαυτὸς λυτρώσεως πάρεστι. Καὶ ἐπέβλεψα, καὶ οὐκ ἦν βοηθός· καὶ προσενόησα, καὶ οὐθεὶς ἀντελαμβάνετο· καὶ ἐῤῥύσατο αὐτοὺς ὁ βραχίων μου, καὶ ὁ θυμός μου ἐπέστη. Καὶ κατεπάτησα αὐτοὺς τῇ ὀργῇ μου, καὶ κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Τὸν ἔλεον Κυρίου ἐμνήσθην, τὰς ἀρετὰς Κυρίου ἐν πᾶσιν οἷς ἡμῖν ἀνταποδίδωσι· Κύριος κριτὴν ἀγαθὸς τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, ἐπάγει ἡμῖν κατὰ τὸ ἔλεος αὐτοῦ, καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, οὐχ ὁ λαός μου; τέκνα οὐ μὴ ἀθετήσωσι· καὶ ἐγένετο αὐτοῖς εἰς σωτηρίαν ἐκ πάσης θλίψεως αὐτῶν· οὐ πρέσβυς, οὐδὲ ἄγγελος, ἀλλ’ αὐτὸς ἔσωσεν αὐτοὺς, διὰ τὸ ἀγαπᾷν αὐτοὺς καὶ φείδεσθαι αὐτῶν· αὐτὸς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς, καὶ ἀνέλαβεν αὐτοὺς, καὶ ὕψωσεν αὐτοὺς πάσας τὰς ἡμέρας τοῦ αἰῶνος· Αὐτοὶ δὲ ἠπείθησαν, καὶ παρώξυναν τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον αὐτοῦ· καὶ ἐστράφη αὐτοῖς εἰς ἔχθραν, αὐτὸς ἐπολέμησεν αὐτούς. Καὶ ἐμνήσθη ἡμερῶν αἰωνίων· ποῦ ὁ ἀναβιβάσας ἐκ τῆς θαλάσσης τὸν ποιμένα τῶν προβάτων; ποῦ ἐστιν ὁ θεὶς ἐν αὐτοῖς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον; ὁ ἀγαγὼν τῇ δεξιᾷ Μωσῆν, ὁ βραχίων τῆς δόξης αὐτοῦ; κατίσχυσεν ὕδωρ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, ποιῆσαι ἑαυτῷ ὄνομα αἰώνιον. Ἤγαγεν αὐτοὺς δι’ ἀβύσσου, ὡς ἵππον δι’ ἐρήμου, καὶ οὐκ ἐκοπίασαν, καὶ ὡς κτήνη διὰ πεδίου· κατέβη πνεῦμα παρὰ Κυρίου, καὶ ὡδήγησεν αὐτούς· οὕτως ἤγαγες τὸν λαόν σου ποιῆσαι σεαυτῷ ὄνομα δόξης. Ἐπίστρεψον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἴδε ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ ἁγίου σου, καὶ δόξης σου· ποῦ ἐστιν ὁ ζῆλός σου καὶ ἡ ἰσχύς σου; ποῦ ἐστι τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους σου, καὶ οἰκτιρμῶν σου, ὅτι ἀνέσχου ἡμῶν; Σὺ γὰρ εἶ πατὴρ ἡμῶν, ὅτι Ἀβραὰμ οὐκ ἔγνω ἡμᾶς, καὶ Ἰσραὴλ οὐκ ἐπέγνω ἡμᾶς, ἀλλὰ σὺ Κύριε πατὴρ ἡμῶν ῥῦσαι ἡμᾶς, ἀπ’ ἀρχῆς τὸ ὄνομά σου ἐφ’ ἡμᾶς ἐστι. Τί ἐπλάνησας ἡμᾶς, Κύριε, ἀπὸ τῆς ὁδοῦ σου; ἐσκλήρυνας τὰς καρδίας ἡμῶν, τοῦ μὴ

φοβεῖσθαί σε; ἐπίστρεψον διὰ τοὺς δούλους σου, διὰ τὰς φυλὰς τῆς κληρονομίας σου, ἵνα μικρὸν κληρονομήσωμεν τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου σου. Ἐγενόμεθα ὡς τὸ ἀπ’ ἀρχῆς ὅτε οὐκ ἦρξας ἡμῶν, οὐδὲ ἐκλήθη τὸ ὄνομά σου ἐφ’ ἡμᾶς. Ἐὰν ἀνοίξῃς τὸν οὐρανὸν, τρόμος λήψεται ἀπὸ σοῦ ὄρη, καὶ τακήσονται,

# 64

ὡς κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς τήκεται, καὶ κατακαύσει πῦρ τοὺς ὑπεναντίους, καὶ φανερὸν ἔσται τὸ ὄνομά σου ἐν τοῖς ὑπεναντίοις· ἀπὸ προσώπου σου ἔθνη ταραχθήσονται, ὅταν ποιῇς τὰ ἔνδοξα· τρόμος λήψεται ἀπὸ σοῦ ὄρη. Ἀπὸ τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκούσαμεν, οὐδὲ οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν εἶδον Θεὸν πλήν σου, καὶ τὰ ἔργα σου, ἃ ποιήσεις τοῖς ὑπομένουσιν ἔλεον. Συναντήσεται γὰρ τοῖς ποιοῦσι τὸ δίκαιον, καὶ τῶν ὁδῶν σου μνησθήσονται· ἰδοὺ σὺ ὠργίσθης, καὶ ἡμεῖς ἡμάρτομεν· διατοῦτο ἐπλανήθημεν, καὶ ἐγενήθημεν ὡς ἀκάθαρτοι πάντες ἡμεῖς, ὡς ῥάκος ἀποκαθημένης πᾶσα ἡ δικαιοσύνη ἡμῶν· καὶ ἐξερῥύημεν ὡς φύλλα διὰ τὰς ἀνομίας ἡμῶν· οὕτως ἄνεμος οἴσει ἡμᾶς. Καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐπικαλούμενος τὸ ὄνομά σου, καὶ ὁ μνησθεὶς ἀντιλαβέσθαι σου· ὅτι ἀπέστρεψας τὸ πρόσωπόν σου ἀφ’ ἡμῶν, καὶ παρέδωκας ἡμᾶς διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν. Καὶ νῦν Κύριε, πατὴρ ἡμῶν σὺ, ἡμεῖς δὲ πηλός, ἔργα τῶν χειρῶν σου πάντες. Μὴ ὀργίζου ἡμῖν σφόδρα, καὶ μὴ ἐν καιρῷ μνησθῇς ἁμαρτιῶν ἡμῶν· καὶ νῦν ἐπίβλεψον, ὅτι λαός σου πάντες ἡμεῖς. Πόλις τοῦ ἁγίου σου ἐγενήθη ἔρημος, Σιὼν ὡς ἔρημος ἐγενήθη, Ἱερουσαλὴμ εἰς κατάραν. Ὁ οἶκος τὸ ἅγιον ἡμῶν, καὶ ἡ δόξα ἣν εὐλόγησαν οἱ πατέρες ἡμῶν, ἐγενήθη πυρίκαυστος, καὶ

πάντα ἔνδοξα ἡμῶν συνέπεσε. Καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις ἀνέσχου Κύριε, καὶ ἐσιώπησας, καὶ ἐταπείνωσας ἡμᾶς σφόδρα.

# 65

Ἐμφανῆς ἐγενήθην τοῖς ἐμὲ μὴ ἐπερωτῶσιν, εὑρέθην τοῖς ἐμὲ μὴ ζητοῦσιν· εἶπα, ἰδοὺ εἰμὶ τῷ ἔθνει, οἳ οὐκ ἐκάλεσάν μου τὸ ὄνομα. Ἐξεπέτασα τὰς χεῖράς μου ὅλην τὴν ἡμέραν πρὸς λαὸν ἀπειθοῦντα καὶ ἀντιλέγοντα, τοῖς πορευομένοις ὁδῷ οὐ καλῇ, ἀλλ’ ὀπίσω τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν. Ὁ λαὸς οὗτος ὁ παροξύνων με ἐναντίον ἐμοῦ διαπαντός· αὐτοὶ θυσιάζουσιν ἐν τοῖς κήποις, καὶ θυμιῶσιν ἐπὶ ταῖς πλίνθοις τοῖς δαιμονίοις, ἃ οὐκ ἔστιν· Ἐν τοῖς μνήμασι, καὶ ἐν τοῖς σπηλαίοις κοιμῶνται διὰ ἐνὐπνια, οἱ ἔσθοντες κρέας ὕειον, καὶ ζωμὸν θυσιῶν, μεμολυμμένα πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, οἱ λέγοντες, πόῤῥω ἀπ’ ἐμοῦ, μὴ ἐγγίσῃς μοι, ὅτι καθαρός εἰμι· Οὗτος καπνὸς τοῦ θυμοῦ μου, πῦρ καίεται ἐν αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας. Ἰδοὺ, γέγραπται ἐνώπιόν μου, οὐ σιωπήσω ἕως ἂν ἀποδώσω εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, καὶ τῶν πατέρων αὐτῶν, λέγει Κύριος· οἳ ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν ὀρέων, καὶ ἐπὶ τῶν βουνῶν ὠνείδισάν με, ἀποδώσω τὰ ἔργα αὐτῶν εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν. Οὕτως λέγει Κύριος, ὃν τρόπον εὑρεθήσεται ὁ ῥὼξ ἐν τῷ βότρυϊ, καὶ ἐροῦσι, μὴ λυμήνῃ αὐτὸν, ὅτι εὐλογία ἐστὶν ἐν αὐτῷ, οὕτως ποιήσω ἕνεκεν τοῦ δουλεύοντός μοι, τούτου ἕνεκεν οὐ μὴ ἀπολέσω πάντας. Καὶ ἐξάξω τὸ ἐξ Ἰακὼβ σπέρμα καὶ ἐξ Ἰούδα, καὶ κληρονομήσει τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ κληρονομήσουσιν οἱ ἐκλεκτοί μου, καὶ οἱ δοῦλοί μου, καὶ κατοικήσουσιν ἐκεῖ. Καὶ ἔσονται ἐν τῷ δρυμῷ ἐπαύλεις ποιμνίων,

καὶ φάραγξ Ἀχὼρ εἰς ἀνάπαυσιν βουκολίων τῷ λαῷ μου, οἳ ἐζήτησάν με. Ὑμεῖς δὲ οἱ ἐγκαταλιπόντες με, καὶ ἐπιλανθανόμενοι τὸ ὄρος τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ ἑτοιμάζοντες τῷ δαιμονίῳ τράπεζαν, καὶ πληροῦντες τῇ τύχῃ κέρασμα, ἐγὼ παραδώσω ὑμᾶς εἰς μάχαιραν, πάντες ἐν σφαγῇ πεσεῖσθε· ὅτι ἐκάλεσα ὑμᾶς, καὶ οὐχ ὑπηκούσατε· ἐλάλησα, καὶ παρηκούσατε, καὶ ἐποιήσατε τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, καὶ ἃ οὐκ ἐβουλόμην, ἐξελέξασθε. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ, οἱ δουλεύοντές μοι φάγονται, ὑμεῖς δὲ πεινάσετε· ἰδοὺ, οἱ δουλεύοντές μοι πίονται, ὑμεῖς δὲ διψήσετε· ἰδοὺ, οἱ δουλεύοντές μοι εὐφρανθήσονται, ὑμεῖς δὲ αἰσχυνθήσεσθε· ἰδοὺ, οἱ δουλεύοντές μοι ἀγαλλιάσονται ἐν εὐφροσύνῃ, ὑμεῖς δὲ κεκράξεσθε διὰ τὸν πόνον τῆς καρδίας ὑμῶν, καὶ ἀπὸ συντριβῆς πνεύματος ὑμῶν ὀλολύξετε. Καταλείψετε γὰρ τὸ ὄνομα ὑμῶν εἰς πλησμονὴν τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, ὑμᾶς δὲ ἀνελεῖ Κύριος, τοῖς δὲ δουλεύουσί μοι κληθήσεται ὄνομα καινὸν, ὃ εὐλογηθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς, εὐλογήσουσι γὰρ τὸν Θεὸν τὸν ἀληθινόν· καὶ οἱ ὀμνύοντες ἐπὶ τῆς γῆς, ὀμοῦνται τὸν Θεὸν τὸν ἀληθινόν· ἐπιλήσονται γὰρ τὴν θλίψιν τὴν πρώτην, καὶ οὐκ ἀναβήσεται αὐτῶν ἐπὶ τὴν καρδίαν. Ἔσται γὰρ ὁ οὐρανὸς καινὸς, καὶ ἡ γῆ καινὴ, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσι τῶν προτέρων, οὐδ’ οὐ μὴ ἐπέλθῃ αὐτῶν ἐπὶ τὴν καρδίαν, ἀλλ’ εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ· ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ ἀγαλλίαμα Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὸν λαόν μου εὐφροσύνην. Καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ λαῷ μου· καὶ οὐκέτι μὴ ἀκουσθῇ ἐν αὐτῇ φωνὴ κλαῦθμου, καὶ φωνὴ κραυγῆς, οὐδ’ οὐ μὴ γένηται ἔτι ἐκεῖ ἄωρος καὶ πρεσβύτης, ὃς οὐκ ἐμπλήσει τὸν χρόνον αὐτοῦ· ἔσται γὰρ ὁ νέος ἑκατὸν ἐτῶν, ὁ δὲ ἀποθνήσκων ἁμαρτωλὸς ἑκατὸν ἐτῶν, καὶ ἐπικατάρατος ἔσται. Καὶ οἰκοδομήσουσιν οἰκίας,

καὶ αὐτοὶ ἐνοικήσουσι· καὶ καταφυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ αὐτοὶ φάγονται τὰ γεννήματα αὐτῶν. Οὐ μὴ οἰκοδομήσουσι, καὶ ἄλλοι ἐνοικήσουσι, καὶ οὐ μὴ φυτεύσουσι, καὶ ἄλλοι φάγονται· κατὰ γὰρ τὰς ἡμέρας τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς ἔσονται αἱ ἡμέραι τοῦ λαοῦ μου· τὰ γὰρ ἔργα τῶν πόνων αὐτῶν παλαιώσουσιν. Οἱ ἐκλεκτοί μου οὐ κοπιάσουσιν εἰς κενὸν, οὐδὲ τεκνοποιήσουσιν εἰς κατάραν, ὅτι σπέρμα εὐλογημένον ὑπὸ Θεοῦ ἐστι, καὶ τὰ ἔκγονα αὐτῶν μετ’ αὐτῶν. Καὶ ἔσται πρὶν ἢ κεκράξαι αὐτοὺς, ἐγὼ ὑπακούσομαι αὐτῶν· ἔτι λαλούντων αὐτῶν, ἐρῶ, τί ἐστι; Τότε λύκοι καὶ ἄρνες βοσκηθήσονται ἅμα, καὶ λέων ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα, ὄφις δὲ γῆν ὡς ἄρτον· οὐκ ἀδικήσουσιν, οὐδὲ λυμανοῦνται ἐπὶ τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ μου, λέγει Κύριος.

# 66

Οὕτως λέγει Κύριος, ὁ οὐρανός μου θρόνος, καὶ ἡ γῆ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν μου· ποῖον οἶκον οἰκοδομήσετέ μοι; καὶ ποῖος τόπος τῆς καταπαύσεώς μου; Πάντα γὰρ ταῦτα ἐποίησεν ἡ χείρ μου, καὶ ἔστιν ἐμὰ πάντα ταῦτα, λέγει Κύριος· καὶ ἐπὶ τίνα ἐπιβλέψω, ἀλλ’ ἢ ἐπὶ τὸν ταπεινὸν καὶ ἡσύχιον, καὶ τρέμοντα τοὺς λόγους μου; Ὁ δὲ ἄνομος ὁ θύων μοι μόσχον, ὡς ὁ ἀποκτέννων κύνα· ὁ δὲ ἀναφέρων σεμίδαλιν, ὡς αἷμα ὕειον· ὁ διδοὺς λίβανον εἰς μνημόσυνον, ὡς βλάσφημος. Καὶ αὐτοὶ ἐξελέξαντο τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἠθέλησε. Καὶ ἐγὼ ἐκλέξομαι τὰ ἐμπαίγματα αὐτῶν, καὶ τὰς ἁμαρτίας ἀνταποδώσω αὐτοῖς· ὅτι ἐκάλεσα αὐτοὺς, καὶ οὐχ ὑπήκουσάν μου· ἐλάλησα καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ ἐποίησαν τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, καὶ ἃ οὐκ

ἐβουλόμην, ἐξελέξαντο. Ἀκούσατε ῥήματα Κυρίου οἱ τρέμοντες τὸν λόγον αὐτοῦ· εἴπατε ἀδελφοὶ ὑμῶν τοῖς μισοῦσιν ὑμᾶς καὶ βδελυσσομένοις, ἵνα τὸ ὄνομα Κυρίου δοξασθῇ, καὶ ὀφθῇ ἐν τῇ εὐφροσύνῃ αὐτῶν, καὶ ἐκεῖνοι αἰσχυνθήσονται. Φωνὴ κραυγῆς ἐκ πόλεως, φωνὴ ἐκ ναοῦ, φωνὴ Κυρίου ἀνταποδιδόντος ἀνταπόδοσιν τοῖς ἀντικειμένοις. Πρὶν τὴν ὠδίνουσαν τεκεῖν, πρὶν ἐλθεῖν τὸν πόνον τῶν ὠδίνων, ἐξέφυγε καὶ ἔτεκεν ἄρσεν. Τίς ἤκουσε τοιοῦτο, καὶ τίς ἑώρακεν οὕτως; εἰ ὤδινε γῆ ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, ἢ καὶ ἐτέχθη ἔθνος εἰς ἅπαξ, ὅτι ὤδινε καὶ ἔτεκε Σιὼν τὰ παιδία αὐτῆς; Ἐγὼ δὲ ἔδωκα τὴν προσδοκίαν ταύτην, καὶ οὐκ ἐμνήσθης μου, εἶπε Κύριος· οὐκ ἰδοὺ ἐγὼ γεννῶσαν καὶ στεῖραν ἐποίησα; εἶπεν ὁ Θεός σου. Εὐφράνθητι Ἰερουσαλὴμ, καὶ πανηγυρίσατε ἐν αὐτῇ πάντες οἱ ἀγαπῶντες αὐτὴν, χάρητε ἅμα αὐτῇ χαρᾷ πάντες ὅσοι πενθεῖτε ἐπ’ αὐτῇ, ἵνα θηλάσητε, καὶ ἐμπλησθῆτε ἀπὸ μαστοῦ παρακλήσεως αὐτῆς, ἵνα ἐκθηλάσαντες τρυφήσητε ἀπὸ εἰσόδου δόξης αὐτῆς. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐκκλίνω εἰς αὐτοὺς ὡς ποταμὸς εἰρήνης, καὶ ὡς χειμάῤῥους ἐπικλύζων δόξαν ἐθνῶν· τὰ παιδία αὐτῶν ἐπ’ ὤμων ἀρθήσονται, καὶ ἐπὶ γονάτων παρακληθήσονται. Ὡς εἴ τινα μήτηρ παρακαλέσει, οὕτω κᾀγὼ παρακαλέσω ὑμᾶς, καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ παρακληθήσεσθε. Καὶ ὄψεσθε, καὶ χαρήσεται ἡ καρδία ὑμῶν, καὶ τὰ ὀστᾶ ὑμῶν ὡς βοτάνη ἀνατελεῖ· καὶ γνωσθήσεται ἡ χεὶρ Κυρίου τοῖς φοβουμένοις αὐτὸν, καὶ ἀπειλήσει τοῖς ἀπειθοῦσιν. Ἰδοὺ γὰρ Κύριος ὡς πῦρ ἥξει, καὶ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα αὐτοῦ, ἀποδοῦναι ἐν θυμῷ ἐκδίκησιν αὐτοῦ, καὶ ἀποσκορακισμὸν αὐτοῦ ἐν φλογὶ πυρός. Ἐν γὰρ τῷ πυρὶ Κυρίου κριθήσεται πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτοῦ πᾶσα σάρξ· πολλοὶ τραυματίαι ἔσονται ὑπὸ Κυρίου. Οἱ ἁγνιζόμενοι καὶ καθαριζόμενοι εἰς τοὺς κήπους, καὶ ἐν τοῖς

προθύροις ἔσθοντες κρέας ὕειον, καὶ τὰ βδελύγματα, καὶ τὸν μῦν, ἐπιτοαυτὸ ἀναλωθήσονται, εἶπε Κύριος. Κᾀγὼ τὰ ἔργα αὐτῶν καὶ τὸν λογισμὸν αὐτῶν· ἔρχομαι συναγαγεῖν πάντα τὰ ἔθνη καὶ τὰς γλώσσας, καὶ ἥξουσι καὶ ὄψονται τὴν δόξαν μου. Καὶ καταλείψω ἐπ’ αὐτῶν σημεῖον, καὶ ἐξαποστελῶ ἐξ αὐτῶν σεσωσμένους εἰς τὰ ἔθνη, εἰς Θαρσὶς, καὶ Φοὺδ, καὶ Λοὺδ, καὶ Μοσόχ, καὶ εἰς Θοβὲλ, καὶ εἰς τὴν Ἑλλάδα, καὶ εἰς τὰς νήσους τὰς πόῤῥω, οἳ οὐκ ἀκηκόασί μου τὸ ὄνομα, οὔτε ἑωράκασί μου τὴν δόξαν· καὶ ἀναγγελοῦσι τὴν δόξαν μου ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἄξουσι τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν δῶρον Κυρίῳ, μεθ’ ἵππων καὶ ἁρματων ἐν λαμπήναις ἡμιόνων μετὰ σκιαδίων εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν Ἱερουσαλήμ, εἶπε Κύριος, ὡς ἀνενέγκαισαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ τὰς θυσίας αὐτῶν ἐμοὶ μετὰ ψαλμῶν εἰς τὸν οἶκον Κυρίου. Καὶ ἀπ’ αὐτῶν λήμψομαι ἱερεῖς καὶ Λευίτας, εἶπε Κύριος. Ὃν τρόπον γὰρ ὁ οὐρανὸς καινὸς καὶ ἡ γῆ καινὴ, ἃ ἐγὼ ποιῶ, μένει ἐνώπιον ἐμοῦ, λέγει Κύριος, οὕτω στήσεται τὸ σπέρμα ὑμῶν, καὶ τὸ ὄνομα ὑμῶν. Καὶ ἔσται μὴν ἐκ μηνὸς, καὶ σάββατον ἐκ σαββάτου, ἥξει πᾶσα σὰρξ τοῦ προσκυνῆσαι ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν Ἱερουσαλὴμ, εἶπεν Κύριος. Καὶ ἐξελεύσονται καὶ ὄψονται τὰ κῶλα τῶν ἀνθρώπων τῶν παραβεβηκότων ἐν ἐμοί· ὁ γὰρ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτήσει, καὶ τὸ πῦρ αὐτῶν οὐ σβεσθήσεται, καὶ ἔσονται εἰς ὅρασιν πάσῃ σαρκί.

# ΜΙΧΑΣ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Μιχαίαν τὸν τοῦ Μωρασθεὶ, ἐν ἡμέραις Ἰωάθαμ, καὶ Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου βασιλέων Ἰούδα, ὑπὲρ ὧν εἶδε περὶ Σαμαρείας καὶ περὶ Ἰερουσαλήμ. Ἀκούσατε λαοὶ λόγους, καὶ προσεχέτω ἡ γῆ, καὶ πάντες οἱ ἐν αὐτῇ· καὶ ἔσται Κύριος Κύριος ἐν ὑμῖν εἰς μαρτύριον, Κύριος ἐξ οἴκου ἁγίου αὐτοῦ. Διότι ἰδοὺ Κύριος ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, καὶ καταβήσεται, καὶ ἐπιβήσεται ἐπὶ τὰ ὕψη τῆς γῆς, καὶ σαλευθήσεται τὰ ὄρη ὑποκάτωθεν αὐτοῦ, καὶ αἱ κοιλάδες τακήσονται ὡσεὶ κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς, καὶ ὡς ὕδωρ καταφερόμενον ἐν καταβάσει. Δι’ ἀσέβειαν Ἰακὼβ πάντα ταῦτα, καὶ δι’ ἁμαρτίαν οἴκου Ἰσραήλ· τίς ἡ ἀσέβεια τοῦ Ἰακώβ; οὐχ ἡ Σαμάρεια; καὶ τίς ἡ ἁμαρτία οἴκου Ἰούδα; οὐχὶ Ἰερουσαλήμ; Καὶ θήσομαι Σαμάρειαν εἰς ὀπωροφυλάκιον ἀγροῦ, καὶ εἰς φυτείαν ἀμπελῶνος, καὶ κατασπάσω εἰς χάος τοὺς λίθους αὐτῆς, καὶ τὰ θεμέλια αὐτῆς ἀποκαλύψω. Καὶ πάντα τὰ γλυπτὰ αὐτῆς κατακόψουσι, καὶ πάντα τὰ μισθώματα αὐτῆς ἐμπρήσουσιν ἐν πυρὶ, καὶ πάντα τὰ εἴδωλα αὐτῆς θήσομαι εἰς ἀφανισμόν· διότι ἐκ μισθωμάτων πορνείας

συνήγαγε, καὶ ἐκ μισθωμάτων πορνείας συνέστρεψεν. Ἕνεκεν τούτου κόψεται, καὶ θρηνήσει, πορεύσεται ἀνυπόδετος, καὶ γυμνὴ ποιήσεται κοπετὸν ὡς δρακόντων, καὶ πένθος ὡς θυγατέρων σειρήνων. Ὅτι κατεκράτησεν ἡ πληγὴ αὐτῆς, διότι ἦλθεν ἕως Ἰούδα, καὶ ἥψατο ἕως πύλης λαοῦ μου, ἕως Ἰερουσαλήμ. Οἱ ἐν Γὲθ μὴ μεγαλύνεσθε, καὶ οἱ Ἐνακεὶμ μὴ ἀνοικοδομεῖτε ἐξ οἴκου κατὰ γέλωτα, γῆν καταπάσασθε καταγέλωτα ὑμῶν, κατοικοῦσα καλῶς τὰς πόλεις αὐτῆς, οὐκ ἐξῆλθε κατοικοῦσα Σενναὰρ, κόψασθαι οἶκον ἐχόμενον αὐτῆς, λήψεται ἐξ ὑμῶν πληγὴν ὀδύνης. Τίς ἤρξατο εἰς ἀγαθὰ κατοικούσῃ ὀδύνας; ὅτι κατέβη κακὰ παρὰ Κυρίου ἐπὶ πύλας Ἰερουσαλὴμ, ψόφος ἁρμάτων καὶ ἱππευόντων· κατοικοῦσα Λαχεὶς, ἀρχηγὸς ἁμαρτίας αὕτη ἐστὶ τῇ θυγατρὶ Σιὼν, ὅτι ἐν σοὶ εὑρέθησαν ἀσέβειαι τοῦ Ἰσραήλ. Διατοῦτο δώσει ἐξαποστελλομένους ἕως κληρονομίας Γὲθ, οἴκους ματαίους, εἰς κενὸν ἐγένοντο τοῖς βασιλεῦσι τοῦ Ἰσραὴλ, ἕως τοὺς κληρονόμους ἀγάγωσι, κατοικοῦσα Λαχείς· κληρονομία ἕως Ὀδολλὰμ ἥξει, ἡ δόξα τὴς θυγατρὸς Ἰσραήλ. Ξύρησαι, καὶ κεῖραι ἐπὶ τὰ τέκνα τὰ τρυφερά σου, ἐμπλάτυνον τὴν χηρείαν σου ὡς ἀετὸς, ὅτι ᾐχμαλωτεύθησαν ἀπὸ σοῦ.

# 2

Ἐγένοντο λογιζόμενοι κόπους, καὶ ἐργαζόμενοι κακὰ ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν, καὶ ἅμα τῇ ἡμέρᾳ συνετέλουν αὐτὰ, διότι οὐκ ᾖραν πρὸς τὸν Θεὸν χεῖρας αὐτῶν. Καὶ ἐπεθύμουν ἀγρούς, καὶ διήρπαζον ὀρφανούς, καὶ οἴκους κατεδυνάστευον, καὶ διήρπαζον ἄνδρα καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἄνδρα καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ.

Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ἰδοὺ ἐγὼ λογίζομαι ἐπὶ τὴν φυλὴν ταύτην κακὰ, ἐξ ὧν οὐ μὴ ἄρητε τοὺς τραχήλους ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ πορευθῆτε ὀρθοὶ ἐξαίφνης, ὅτι καιρὸς πονηρός ἐστιν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ληφθήσεται ἐφ’ ὑμᾶς παραβολὴ, καὶ θρηνηθήσεται θρῆνος ἐν μέλει, λέγων, ταλαιπωρίᾳ ἐταλαιπωρήσαμεν· μερὶς λαοῦ μου κατεμετρήθη ἐν σχοινίῳ, καὶ οὐκ ἦν ὁ κωλύων αὐτὸν τοῦ ἀποστρέψαι· οἱ ἀγροὶ ὑμῶν διεμερίσθησαν. Διατοῦτο οὐκ ἔσται σοι βάλλων σχοινίον ἐν κλήρῳ· ἐν ἐκκλησίᾳ Κυρίου μὴ κλαίετε δάκρυσι, μηδὲ δακρυέτωσαν ἐπὶ τούτοις· οὐδὲ γὰρ ἀπώσεται ὀνείδη, ὁ λέγων, οἶκος Ἰακὼβ παρώργισε πνεῦμα Κυρίου. οὐ ταῦτα τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἐστιν; οὐχ οἱ λόγοι αὐτοῦ εἰσι καλοὶ μετ’ αὐτοῦ; καὶ ὀρθοὶ πεπόρευνται; Καὶ ἔμπροσθεν ὁ λαός μου εἰς ἔχθραν ἀντέστη, κατέναντι τῆς εἰρήνης αὐτοῦ· τὴν δορὰν αὐτοῦ ἐξέδειραν, τοῦ ἀφελέσθαι ἐλπίδας συντριμμὸν πολέμου. Ἡγούμενοι λαοῦ μου ἀποῤῥιφήσονται ἐκ τῶν οἰκιῶν τρυφῆς αὐτῶν, διὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν ἐξώσθησαν· ἐγγίσατε ὄρεσιν αἰωνίοις. Ἀνάστηθι καὶ πορεύου, ὅτι οὐκ ἔστι σοι αὕτη ἀνάπαυσις ἕνεκεν ἀκαθαρσίας· διεφθάρητε φθορᾷ, κατεδιώχθητε οὐδενὸς διώκοντος· πνεῦμα ἔστησε ψεῦδος, ἐστάλαξέ σοι εἰς οἶνον καὶ μέθυσμα· καὶ ἔσται, ἐκ τῆς σταγόνος τοῦ λαοῦ τούτου συναγόμενος συναχθήσεται Ἰακὼβ σὺν πᾶσιν· ἐκδεχόμενος ἐκδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ Ἰσραὴλ, ἐπιτοαυτὸ θήσομαι τὴν ἀποστροφὴν αὐτοῦ· ὡς πρόβατα ἐν θλίψει, ὡς ποίμνιον ἐν μέσῳ κοίτης αὐτῶν· ἐξαλοῦνται ἐξ ἀνθρώπων διὰ τῆς διακοπῆς πρὸ προσώπου αὐτῶν· διέκοψαν, καὶ διῆλθον πύλην, καὶ ἐξῆλθον δι’ αὐτῆς, καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς αὐτῶν πρὸ προσώπου αὐτῶν, ὁ δὲ Κύριος ἡγήσεται αὐτῶν.

# 3

Καὶ ἐρεῖ, ἀκούσατε δὴ ταῦτα αἱ ἀρχαὶ οἴκου Ἰακὼβ, καὶ οἱ κατάλοιποι οἴκου Ἰσραήλ· οὐχ ὑμῖν ἐστι τοῦ γνῶναι τὸ κρίμα; μισοῦντες τὰ καλὰ, καὶ ζητοῦντες τὰ πονηρὰ, ἁρπάζοντες τὰ δέρματα αὐτῶν ἀπ’ αὐτῶν, καὶ τὰς σάρκας αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὀστέων αὐτῶν. Ὃν τρόπον κατέφαγον τὰς σάρκας τοῦ λαοῦ μου, καὶ τὰ δέρματα αὐτῶν ἀπ’ αὐτῶν ἐξέδειραν, καὶ τὰ ὀστέα αὐτῶν συνέθλασαν, καὶ ἐμέλισαν ὡς σάρκας εἰς λέβητα, καὶ ὡς κρέα εἰς χύτραν, οὕτως κεκράξονται πρὸς τὸν Κύριον, καὶ οὐκ εἰσακούσεται αὐτῶν· καὶ ἀποστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπ’ αὐτῶν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἀνθ’ ὧν ἐπονηρεύσαντο ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν ἐπ’ αὐτούς. Τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ τοὺς προφήτας τοὺς πλανῶντας τὸν λαόν μου, τοὺς δάκνοντας ἐν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν, καὶ κηρύσσοντας εἰρήνην ἐπ’ αὐτὸν, καὶ οὐκ ἐδόθη εἰς τὸ στόμα αὐτῶν, ἤγειραν ἐπ’ αὐτὸν πόλεμον· διατοῦτο νὺξ ὑμῖν ἔσται ἐξ ὁράσεως, καὶ σκοτία ἔσται ὑμῖν ἐκ μαντείας, καὶ δύσεται ὁ ἥλιος ἐπὶ τοὺς προφήτας, καὶ συσκοτάσει ἐπ’ αὐτοὺς ἡ ἡμέρα· Καὶ καταισχυνθήσονται οἱ ὁρῶντες τὰ ἐνύπνια, καὶ καταγελασθήσονται οἱ μάντεις, καὶ καταλαλήσουσι κατ’ αὐτῶν πάντες αὐτοὶ, διότι οὐκ ἔσται ὁ ἐπακούων αὐτῶν. ἐὰν μὴ ἐγὼ ἐμπλήσω ἰσχὺν ἐν πνεύματι Κυρίου καὶ κρίματος καὶ δυναστείας, τοῦ ἀπαγγεῖλαι τῷ Ἰακὼβ ἀσεβείας αὐτοῦ, καὶ τῷ Ἰσραὴλ ἁμαρτίας αὐτοῦ. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα οἱ ἡγούμενοι οἴκου Ἰακὼβ, καὶ οἱ κατάλοιποι οἴκου Ἰσραὴλ, οἱ βδελυσσόμενοι κρίμα, καὶ πάντα τὰ ὀρθὰ διαστρέφοντες, οἱ οἰκοδομοῦντες Σιὼν ἐν αἵμασι, καὶ Ἰερουσαλὴμ ἐν ἀδικίαις, οἱ ἡγούμενοι αὐτῆς μετὰ δώρων ἔκρινον,

καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῆς μετὰ μισθοῦ ἀπεκρίνοντο, καὶ οἱ προφῆται αὐτῆς μετὰ ἀργυρίου ἐμαντεύοντο, καὶ ἐπὶ τὸν Κύριον ἐπανεπαύοντο, λέγοντες, οὐχὶ ὁ Κύριος ἐν ἡμῖν ἐστιν; οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐφ' ἡμᾶς κακά. Διατοῦτο δι' ὑμᾶς Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται, καὶ Ἰερουσαλὴμ ὡς ὀπωροφυλάκιον ἔσται, καὶ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου εἰς ἄλσος δρυμοῦ.

# 4

Καὶ ἔσται ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἐμφανὲς τὸ ὄρος Κυρίου, ἕτοιμον ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων, καὶ μετεωρισθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν· καὶ σπεύσουσι πρὸς αὐτὸ λαοί, καὶ πορεύσονται ἔθνη πολλὰ καὶ ἐροῦσι, δεῦτε, ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος Κυρίου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ Ἰακώβ· καὶ δείξουσιν ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ πορευσόμεθα ἐν ταῖς τρίβοις αὐτοῦ· ὅτι ἐκ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, καὶ λόγος Κυρίου ἐξ Ἰερουσαλήμ. Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον λαῶν πολλῶν, καὶ ἐξελέγξει ἔθνη ἰσχυρὰ ἕως εἰς μακράν· καὶ κατακόψουσι τὰς ῥομφαίας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, καὶ τὰ δόρατα αὐτῶν εἰς δρέπανα, καὶ οὐκέτι μὴ ἀντάρῃ ἔθνος ἐπ' ἔθνος ῥομφαίαν, καὶ οὐκέτι μὴ μάθωσι πολεμεῖν· Καὶ ἀναπαύσεται ἕκαστος ὑποκάτω ἀμπέλου αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος ὑποκάτω συκῆς αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν, διότι τὸ στόμα Κυρίου παντοκράτορος ἐλάλησε ταῦτα· Ὅτι πάντες οἱ λαοὶ πορεύσονται ἕκαστος τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, ἡμεῖς δὲ πορευσόμεθα ἐν ὀνόματι Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἐπέκεινα. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος, συνάξω τὴν συντετριμμένην, καὶ τὴν ἐξωσμένην εἰσδέξομαι, καὶ οὓς ἀπωσάμην. Καὶ θήσομαι τὴν συντετριμμένην

εἰς ὑπόλειμμα, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰς ἔθνος δυνατόν· καὶ βασιλεύσει Κύριος ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐν ὄρει Σιὼν ἀπὸ τοῦ νῦν ἕως εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ σὺ πύργος ποιμνίου αὐχμώδης, θυγάτηρ Σιὼν, ἐπὶ σὲ ἥξει, καὶ εἰσελεύσεται ἡ ἀρχὴ, ἡ πρώτη βασιλεία ἐκ Βαβυλῶνος τῇ θυγατρὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ νῦν ἱνατί ἔγνως κακά; μὴ βασιλεὺς οὐκ ἦν σοι; ἢ ἡ βουλή σου ἀπώλετο, ὅτι κατεκράτησάν σου ὠδῖνες ὡς τικτούσης; Ὤδινε καὶ ἀνδρίζου, καὶ ἔγγιζε θυγάτηρ Σιὼν ὡς τίκτουσα· διότι νῦν ἐξελεύσῃ ἐκ πόλεως, καὶ κατασκηνώσεις ἐν πεδίῳ, καὶ ἥξεις ἕως Βαβυλῶνος· ἐκεῖθεν ῥύσεταί σε, καὶ ἐκεῖθεν λυτρώσεταί σε Κύριος ὁ Θεός σου ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν σου. Καὶ νῦν ἐπισυνήχθησαν ἐπὶ σὲ ἔθνη πολλὰ, λέγοντες, ἐπιχαρούμεθα, καὶ ἐπόψονται ἐπὶ Σιὼν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. Αὐτοὶ δὲ οὐκ ἔγνωσαν τὸν λογισμὸν Κυρίου, καὶ οὐ συνῆκαν τὴν βουλὴν αὐτοῦ, ὅτι συνήγαγεν αὐτοὺς ὡς δράγματα ἅλωνος. Ἀνάστηθι, καὶ ἀλόα αὐτοὺς θυγάτηρ Σιὼν, ὅτι τὰ κέρατά σου θήσομαι σιδηρᾶ, καὶ τὰς ὁπλάς σου θήσομαι χαλκᾶς· καὶ κατατήξεις λαοὺς πολλοὺς, καὶ ἀναθήσεις τῷ Κυρίῳ τὸ πλῆθος αὐτῶν, καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν τῷ Κυρίῳ πάσης τῆς γῆς. Νῦν ἐμφραχθήσεται θυγάτηρ ἐμφραγμῷ, συνοχὴν ἔταξεν ἐφ᾽ ἡμᾶς, ἐν ῥάβδῳ πατάξουσιν ἐπὶ σιαγόνα τὰς φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ.

# 5

Καὶ σὺ Βηθλεὲμ οἶκος Ἐφραθὰ, ὀλιγοστὸς εἶ τοῦ εἶναι ἐν χιλιάσιν Ἰούδα· ἐκ σοῦ μοι ἐξελεύσεται, τοῦ εἶναι εἰς ἄρχοντα τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἔξοδοι αὐτοῦ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἐξ ἡμερῶν αἰῶνος. Διατοῦτο δώσει αὐτοὺς ἕως καιροῦ τικτούσης, τέξεται, καὶ οἱ ἐπίλοιποι τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ. Καὶ

στήσεται καὶ ὄψεται, καὶ ποιμανεῖ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ ἐν ἰσχύϊ Κύριος, καὶ ἐν τῇ δόξῃ ὀνόματος Κυρίου Θεοῦ αὐτῶν ὑπάρξουσι, διότι νῦν μεγαλυνθήσονται ἕως ἄκρων τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὐτῇ εἰρήνη, Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὴν χώραν ὑμῶν, καὶ ἐπεγερθήσονται ἐπ’ αὐτὸν ἑπτὰ ποιμένες, καὶ ὀκτὼ δήγματα ἀνθρώπων, καὶ ποιμανοῦσι τὸν Ἀσσοὺρ ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ τὴν γῆν τοῦ Νεβρὼδ ἐν τῇ τάφρῳ αὐτῆς· καὶ ῥύσεται ἐκ τοῦ Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὰ ὅρια ὑμῶν. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα τοῦ Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς δρόσος παρὰ Κυρίου πίπτουσα, καὶ ὡς ἄρνες ἐπὶ ἄγρωστιν, ὅπως μὴ συναχθῇ μηδεὶς, μηδὲ ὑποστῇ ἐν υἱοῖς ἀνθρώπων. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς λέων ἐν κτήνεσιν ἐν τῷ δρυμῷ, καὶ ὡς σκύμνος ἐν ποιμνίοις προβάτων, ὃν τρόπον ὅταν διέλθῃ, καὶ διαστείλας ἁρπάσῃ, καὶ μὴ ᾖ ὁ ἐξαιρούμενος. Ὑψωθήσεται ἡ χείρ σου ἐπὶ τοὺς θλίβοντάς σε, καὶ πάντες οἱ ἐχθροί σου ἐξολοθρευθήσονται. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος, ἐξολοθρεύσω τοὺς ἵππους ἐκ μέσου σου, καὶ ἀπολῶ τὰ ἅρματά σου, καὶ ἐξολεθρεύσω τὰς πόλεις τῆς γῆς σου, καὶ ἐξαρῶ πάντα τὰ ὀχυρώματά σου· καὶ ἐξολοθρεύσω τὰ φάρμακά σου ἐκ τῶν χειρῶν σου, καὶ ἀποφθεγγόμενοι οὐκ ἔσονται ἐν σοί· καὶ ἐξολοθρεύσω τὰ γλυπτά σου, καὶ τὰς στηλὰς σου ἐκ μέσου σου, καὶ οὐκ ἔτι μὴ προσκυνήσεις τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν σου. Καὶ ἐκκόψω τὰ ἄλση ἐκ μέσου σου, καὶ ἀφανιῶ τὰς πόλεις σου. Καὶ ποιήσω ἐν ὀργῇ καὶ ἐν θυμῷ ἐκδίκησιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἀνθ’ ὧν οὐκ εἰσήκουσαν.

# 6

Ἀκούσατε δὴ λόγον· Κύριος Κύριος εἶπεν, ἀνάστηθι, κρίθητι πρὸς τὰ ὄρη, καὶ ἀκουσάτωσαν βουνοὶ φωνήν σου. Ἀκούσατε ὄρη τὴν κρίσιν τοῦ Κυρίου, καὶ αἱ φάραγγες θεμέλια τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ Κυρίῳ πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ μετὰ τοῦ Ἰσραὴλ διελεγχθήσεται. Λαός μου, τί ἐποίησά σοι, ἢ τί ἐλύπησά σε, ἢ τί παρηνώχλησά σοι; ἀποκρίθητί μοι. Διότι ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ οἴκου δουλείας ἐλυτρωσάμην σε, καὶ ἐξαπέστειλα πρὸ προσώπου σου τὸν Μωυσῆν, καὶ Ἀαρὼν, καὶ Μαριάμ. Λαός μου μνήσθητι δὴ, τί ἐβουλεύσατο κατὰ σοῦ Βαλὰκ βασιλεὺς Μωὰβ, καὶ τί ἀπεκρίθη αὐτῷ Βαλαὰμ, υἱὸς τοῦ Βεὼρ ἀπὸ τῶν σχοίνων ἕως τοῦ Γαλγὰλ, ὅπως γνωσθῇ ἡ δικαιοσύνη τοῦ Κυρίου. Ἐν τίνι καταλάβω τὸν Κύριον, ἀντιλήψομαι Θεοῦ μου ὑψίστου; εἰ καταλήψομαι αὐτὸν ἐν ὁλοκαυτώμασιν, ἐν μόσχοις ἐνιαυσίοις; Εἰ προσδέξεται Κύριος ἐν χιλιάσι κριῶν; ἢ ἐν μυριάσι χιμάρων πιόνων; εἰ δῶ πρωτότοκά μου ὑπὲρ ἀσεβείας, καρπὸν κοιλίας μου ὑπὲρ ἁμαρτίας ψυχῆς μου; Εἰ ἀνηγγέλη σοι ἄνθρωπε τί καλόν; ἢ τί Κύριος ἐκζητεῖ παρὰ σοῦ, ἀλλ’ ἢ τοῦ ποιεῖν κρίμα, καὶ ἀγαπᾷν ἔλεον, καὶ ἕτοιμον εἶναι τοῦ πορεύεσθαι μετὰ Κυρίου Θεοῦ σου; Φωνὴ Κυρίου τῇ πόλει ἐπικληθήσεται, καὶ σώσει φοβουμένους τὸ ὄνομα αὐτοῦ· ἄκουε φυλὴ, καὶ τίς κοσμήσει πόλιν; Μὴ πῦρ καὶ οἶκος ἀνόμου θησαυρίζων θησαυροὺς ἀνόμους, καὶ μετὰ ὕβρεως ἀδικίας; Εἰ δικαιωθήσεται ἐν ζυγῷ ἄνομος, καὶ ἐν μαρσίππῳ στάθμια δόλου, ἐξ ὧν τὸν πλοῦτον αὐτῶν ἀσεβείας ἔπλησαν, καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν ἐλάλουν ψεύδη, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν ὑψώθη ἐν τῷ στόματι αὐτῶν; Καὶ ἐγὼ ἄρξομαι τοῦ πατάξαι σε, ἀφανιῶ σε ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου. Σὺ φάγεσαι, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῇς, καὶ συσκοτάσει ἐν σοὶ καὶ ἐκνεύσει, καὶ οὐ μὴ διασωθῇς, καὶ ὅσοι ἂν διασωθῶσιν, εἰς ῥομφαίαν παραδοθήσονται· Σὺ σπερεῖς, καὶ οὐ μὴ ἀμήσῃς, σὺ

πιέσεις ἐλαίαν, καὶ οὐ μὴ ἀλείψῃ ἔλαιον, καὶ οἶνον, καὶ οὐ μὴ πίητε, καὶ ἀφανισθήσεται νόμιμα λαοῦ μου. Καὶ ἐφύλαξας τὰ δικαιώματα Ζαμβρὶ, καὶ πάντα τὰ ἔργα οἴκου Ἀχαὰβ, καὶ ἐπορεύθητε ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, ὅπως παραδῶ σε εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν εἰς συρισμὸν, καὶ ὀνείδη λαῶν λήψεσθε.

# 7

Οἴμοι, ὅτι ἐγενήθην ὡς συνάγων καλάμην ἐν ἀμητῷ, καὶ ὡς ἐπιφυλλίδα ἐν τρυγητῷ, οὐχ ὑπάρχοντος βότρυος τοῦ φαγεῖν τὰ πρωτόγονα. οἴμοι ψυχὴ, ὅτι ἀπόλωλεν εὐσεβὴς ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ κατορθῶν ἐν ἀνθρώποις οὐχ ὑπάρχει· πάντες εἰς αἵματα δικάζονται, ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ ἐκθλίβουσιν ἐκθλιβῇ, ἐπὶ τὸ κακὸν τὰς χεῖρας αὐτῶν ἑτοιμάζουσιν· ὁ ἄρχων αἰτεῖ, καὶ ὁ κριτὴς εἰρηνικοὺς λόγους ἐλάλησε, καταθύμιον ψυχῆς αὐτοῦ ἐστιν· καὶ ἐξελοῦμαι τὰ ἀγαθὰ αὐτῶν ὡς σὴς ἐκτρώγων, καὶ βαδίζων ἐπὶ κανόνος ἐν ἡμέρᾳ σκοπιᾶς· οὐαὶ οὐαὶ, αἱ ἐκδικήσεις σου ἥκασι, νῦν ἔσονται κλαυθμοὶ αὐτῶν. Μὴ καταπιστεύετε ἐν φίλοις, καὶ μὴ ἐλπίζετε ἐπὶ ἡγουμένοις· ἀπὸ τῆς συγκοίτου σου φύλαξαι, τοῦ ἀναθέσθαι τι αὐτῇ. Διότι υἱὸς ἀτιμάζει πατέρα, θυγάτηρ ἐπαναστήσεται ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτῆς, νύμφη ἐπὶ τὴν πενθερὰν αὐτῆς, ἐχθροὶ πάντες ἀνδρὸς οἱ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ τὸν Κύριον ἐπιβλέψομαι, ὑπομενῶ ἐπὶ τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρί μου, εἰσακούσεταί μου ὁ Θεός μου. Μὴ ἐπίχαιρέ μοι ἡ ἐχθρά μου, ὅτι πέπτωκα, καὶ ἀναστήσομαι· διότι ἐὰν καθίσω ἐν τῷ σκότει, Κύριος φωτιεῖ μοι. Ὀργὴν Κυρίου ὑποίσω, ὅτι ἥμαρτον αὐτῷ, ἕως τοῦ δικαιῶσαι αὐτὸν τὴν δίκην μου· καὶ ποιήσει τὸ κρίμα μου, καὶ

ἐξάξει με εἰς τὸ φῶς· ὄψομαι τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, καὶ ὄψεται ἡ ἐχθρά μου καὶ περιβαλεῖται αἰσχύνην, ἡ λέγουσα, ροῦ Κύριος ὁ Θεός σου; οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπόψονται αὐτὴν, νῦν ἔσται εἰς καταπάτημα ὡς πηλὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς. Ἡμέρα ἀλοιφῆς πλίνθου, ἐξάλειψίς σου ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ ἀποτρίψεται νόμιμά σου ἡ ἡμέρα ἐκείνη. Καὶ αἱ πόλεις σου ἥξουσιν εἰς ὁμαλισμὸν, καὶ εἰς διαμερισμὸν Ἀσσυρίων, καὶ αἱ πόλεις σου αἱ ὀχυραὶ εἰς διαμερισμὸν ἀπὸ Τύρου ἕως τοῦ ποταμοῦ, καὶ ἀπὸ θαλάσσης ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ ὄρους ἕως τοῦ ὄρους. Καὶ ἔσται ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν σὺν τοῖς κατοικοῦσιν αὐτὴν, ἀπὸ καρπῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. Ποίμαινε λαόν σου ἐν ῥάβδῳ σου, πρόβατα κληρονομίας σου, κατασκηνοῦντας καθ’ ἑαυτοὺς δρυμὸν ἐν μέσῳ τοῦ Καρμήλου· νεμήσονται τὴν Βασανίτιν, καὶ τὴν Γαλααδίτιν καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος. Καὶ κατὰ τὰς ἡμέρας ἐξοδίας σου ἐξ Αἰγύπτου, ὄψεσθε θαυμαστά. Ὄψονται ἔθνη καὶ καταισχυνθήσονται, καὶ ἐκ πάσης τῆς ἰσχύος αὐτῶν, ἐπιθήσουσι χεῖρας ἐπὶ τὸ στόμα αὐτῶν, τὰ ὦτα αὐτῶν ἀποκωφωθήσεται, λείξουσι χοῦν ὡς ὄφεις σύροντες γῆν, συγχυθήσονται ἐν συγκλεισμῷ αὐτῶν· ἐπὶ τῷ Κυρίῳ Θεῷ ἡμῶν ἐκστήσονται, καὶ φοβηθήσονται ἀπὸ σοῦ. Τίς Θεὸς ὥσπερ σὺ; ἐξαίρων ἀνομίας, καὶ ὑπερβαίνων ἀσεβείας τοῖς καταλοίποις τῆς κληρονομίας αὐτοῦ; καὶ οὐ συνέσχεν εἰς μαρτύριον ὀργὴν αὐτοῦ, ὅτι θελητὴς ἐλέους ἐστίν. Ἐπιστρέψει καὶ οἰκτειρήσει ἡμᾶς, καταδύσει τὰς ἀδικίας ἡμῶν, καὶ ἀποῤῥιφήσονται εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης πάσας τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν. Δώσει εἰς ἀλήθειαν τῷ Ἰακὼβ, ἔλεον τῷ Ἀβραάμ, καθότι ὤμοσας τοῖς πατράσιν ἡμῶν, κατὰ τὰς ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν.

# ΙΕΡΕΜΙΑΣ

## 1

ΤΟ ῥῆμα τοῦ Θεοῦ ὃ ἐγένετο ἐπὶ Ἱερεμίαν τὸν του Χελκίου, ἐκ τῶν ἱερέων, ὃς κατῴκει ἐν Ἀναθὼθ ἐν γῇ Βενιαμὶν, ὡς ἐγενήθη λόγος τοῦ Θεοῦ πρὸς αὐτὸν, ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωσία υἱοῦ Ἀμὼς βασιλέως Ἰούδα, ἔτους τρισκαιδεκάτου ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἕως ἑνδεκάτου ἔτους τοῦ Σεδεκία υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἕως τῆς αἰχμαλωσίας Ἱερουσαλὴμ ἐν τῷ πέμπτῳ μηνί. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς αὐτόν· Πρὸ τοῦ με πλάσαι σε ἐν κοιλίᾳ, ἐπίσταμαί σε, καὶ πρὸ τοῦ σε ἐξελθεῖν ἐκ μήτρας, ἡγίακά σε, προφήτην εἰς ἔθνη τέθεικά σε. Καὶ εἶπα, ὁ ὢν δέσποτα, Κύριε, ἰδοὺ οὐκ ἐπίσταμαι λαλεῖν, ὅτι νεώτερος ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, μὴ λέγε, ὅτι νεώτερος ἐγώ εἰμι, ὅτι πρὸς πάντας οὓς ἐὰν ἐξαποστείλω σε, πορεύσῃ, καὶ κατὰ πάντα ὅσα ἐὰν ἐντείλωμαί σοι, λαλήσεις. Μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, λέγει Κύριος. Καὶ ἐξέτεινε Κύριος τὴν χεῖρα αὐτοῦ πρὸς μὲ, καὶ ἥψατο τοῦ στόματός μου, καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἰδοὺ δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου. Ἰδοὺ καθέστακά

σε σήμερον ἐπὶ ἔθνη καὶ ἐπὶ βασιλείας, ἐκριζοῦν, καὶ κατασκάπτειν, καὶ ἀπολύειν, καὶ ἀνοικοδομεῖν, καὶ καταφυτεύειν. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, τί σὺ ὁρᾷς; καὶ εἶπα, βακτηρίαν καρυΐνην. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, καλῶς ἑώρακας, διότι ἐγρήγορα ἐγὼ ἐπὶ τοὺς λόγους μου τοῦ ποιῆσαι αὐτούς. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου ἐκ δευτέρου πρὸς μὲ, λέγων, τί σὺ ὁρᾷς; καὶ εἶπα, λέβητα ὑποκαιόμενον, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου Βοῤῥᾶ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἀπὸ προσώπου Βοῤῥᾶ ἐκκαυθήσεται τὰ κακὰ ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ συγκαλῶ πάσας τὰς βασιλείας τῆς γῆς ἀπὸ Βοῤῥᾶ, λέγει Κύριος· καὶ ἥξουσι καὶ θήσουσιν ἕκαστος τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῶν πυλῶν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ τείχη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Ἰούδα. Καὶ λαλήσω πρὸς αὐτοὺς μετὰ κρίσεως, περὶ πάσης τῆς κακίας αὐτῶν, ὡς ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἔθυσαν θεοῖς ἀλλοτρίοις, καὶ προσεκύνησαν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν. Καὶ σὺ περίζωσαι τὴν ὀσφύν σου, καὶ ἀνάστηθι, καὶ εἰπὸ πάντα ὅσα ἄν ἐντείλωμαί σοι· μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, μηδὲ πτοηθῇς ἐναντίον αὐτῶν, ὅτι μετὰ σοῦ εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, λέγει Κύριος. Ἰδοὺ τέθεικά σε ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ ὡς πόλιν ὀχυρὰν καὶ ὡς τεῖχος χαλκοῦν, ὀχυρὸν πᾶσι τοῖς βασιλεύσιν Ἰούδα, καὶ τοῖς ἄρχουσιν αὐτοῦ, καὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς. Καὶ πολεμήσουσί σε, καὶ οὐ μὴ δύνωνται πρὸς σὲ διότι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, εἶπε Κύριος.

# 2

Καὶ εἶπε, τάδε λέγει Κύριος, ἐμνήσθην ἐλέους νεότητός σου, καὶ

ἀγάπης τελειώσεώς σου, τοῦ ἐξακολουθῆσαί σε τῷ ἁγίῳ Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος. Ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ τῷ Κυρίῳ, ἀρχὴ γεννημάτων αὐτοῦ· πάντες οἱ ἔσθοντες αὐτὸν πλημμελήσουσι, κακὰ ἥξει ἐπ᾽ αὐτοὺς, φησὶ Κύριος. Ἀκούσατε λόγον Κυρίου οἶκος Ἰακὼβ, καὶ πᾶσα πατριὰ οἴκου Ἰσραήλ. Τάδε λέγει Κύριος, τί εὗροσαν οἱ πατέρες ὑμῶν ἐν ἐμοὶ πλημμέλημα, ὅτι ἀπέστησαν μακρὰν ἀπ᾽ ἐμοῦ, καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν ματαίων, καὶ ἐματαιώθησαν; Καὶ οὐκ εἶπαν, ποῦ ἐστι Κύριος, ὁ ἀναγαγὼν ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὁ καθοδηγήσας ἡμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν γῇ ἀπείρῳ καὶ ἀβάτῳ, ἐν γῇ ἀνύδρῳ καὶ ἀκάρπῳ, ἐν γῇ ᾗ οὐ διώδευσεν ἐν αὐτῇ ἀνὴρ εὐθὲν, καὶ οὐ κατῴκησεν ἄνθρωπος ἐκεῖ; Καὶ ἤγαγον ὑμᾶς εἰς τὸν Κάρμηλον, τοῦ φαγεῖν ὑμᾶς τοὺς καρποὺς αὐτοῦ, καὶ τὰ ἀγαθὰ αὐτοῦ· καὶ εἰσήλθετε, καὶ ἐμιάνατε τὴν γῆν μου, καὶ τὴν κληρονομίαν μου ἔθεσθε εἰς βδέλυγμα. Οἱ ἱερεῖς οὐκ εἶπαν, ποῦ ἐστι Κύριος; καὶ οἱ ἀντεχόμενοι τοῦ νόμου, οὐκ ἠπίσταντό με, καὶ οἱ ποιμένες ἠσέβουν εἰς ἐμὲ, καὶ οἱ προφῆται ἐπροφήτευον τῇ Βάαλ, καὶ ὀπίσω ἀνωφελοῦς ἐπορεύθησαν. Διατοῦτο ἔτι κριθήσομαι πρὸς ὑμᾶς, καὶ πρὸς τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν ὑμῶν κριθήσομαι. Διότι ἔλθετε εἰς νήσους Χεττιεὶμ, καὶ ἴδετε, καὶ εἰς Κηδὰρ ἀποστείλατε, καὶ νοήσατε σφόδρα, καὶ ἴδετε εἰ γέγονε τοιαῦτα· εἰ ἀλλάξωνται ἔθνη θεοὺς αὐτῶν, καὶ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί· ὁ δὲ λαός μου ἠλλάξατο τὴν δόξαν αὐτοῦ, ἐξ ἧς οὐκ ὠφεληθήσονται. Ἐξέστη ὁ οὐρανὸς ἐπὶ τούτῳ, καὶ ἔφριξεν ἐπὶ πλεῖον σφόδρα, λέγει Κύριος. Ὅτι δύο καὶ πονηρὰ ἐποίησεν ὁ λαός μου· ἐμὲ ἐγκατέλιπον πηγὴν ὕδατος ζωῆς, καὶ ὤρυξαν ἑαυτοῖς λάκκους συντετριμμένους, οἳ οὐ δυνήσονται ὕδωρ συνέχειν. Μὴ δοῦλός ἐστιν Ἰσραὴλ, ἢ οἰκογενής ἐστι; διατί εἰς προνομὴν ἐγένετο; Ἐπ᾽ αὐτὸν ὠρύοντο λέοντες, καὶ ἔδωκαν τὴν φωνὴν

αὐτῶν, οἳ ἔταξαν τὴν γῆν αὐτοῦ εἰς ἔρημον, καὶ αἱ πόλεις αὐτοῦ κατεσκάφησαν, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι. Καὶ υἱοὶ Μέμφεως καὶ Τάφνας ἔγνωσάν σε, καὶ κατέπαιζόν σου. Οὐχὶ ταῦτα ἐποίησέ σοι τὸ καταλιπεῖν σε ἐμέ; λέγει Κύριος ὁ Θεός σου. Καὶ νῦν τί σοι καὶ τῇ ὁδῷ Αἰγύπτου τοῦ πιεῖν ὕδωρ Γηῶν; καὶ τί σοι καὶ τῇ ὁδῷ Ἀσσυρίων τοῦ πιεῖν ὕδωρ ποταμῶν; Παιδεύσει σε ἡ ἀποστασία σου, καὶ ἡ κακία σου ἐλέγξει σε· καὶ γνῶθι, καὶ ἴδε, ὅτι πικρόν σοι τὸ καταλιπεῖν σε ἐμὲ, λέγει Κύριος ὁ Θεός σου· καὶ οὐκ εὐδόκησα ἐπὶ σοὶ, λέγει Κύριος ὁ Θεός σου. Ὅτι ἀπ᾽ αἰῶνος συνέτριψας τὸν ζυγόν σου, καὶ διέσπασας τοὺς δεσμούς σου, καὶ εἶπας, οὐ δουλεύσω σοι ἀλλὰ πορεύσομαι ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου κατασκίου, ἐκεῖ διαχυθήσομαι ἐν τῇ πορνείᾳ μου. Ἐγὼ δὲ ἐφύτευσά σε ἄμπελον καρποφόρον πᾶσαν ἀληθινήν· πῶς ἐστράφης εἰς πικρίαν ἡ ἄμπελος ἡ ἀλλοτρία; Ἐὰν ἀποπλύνῃ ἐν νίτρῳ, καὶ πληθυνῇς σεαυτῇ ποίαν, κεκηλίδωσαι ἐν ταῖς ἀδικίαις σου ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει Κύριος. Πῶς ἐρεῖς, οὐκ ἐμιάνθην, καὶ ὀπίσω τῆς Βάαλ οὐκ ἐπορεύθην; ἴδε τὰς ὁδούς σου ἐν τῷ πολυανδρίῳ, καὶ γνῶθι τί ἐποίησας· ὀψὲ φωνὴ αὐτῆς ὠλόλυξε· Τὰς ὁδοὺς αὐτῆς ἐπλάτυνεν ἐφ᾽ ὕδατα ἐρήμου, ἐν ἐπιθυμίαις ψυχῆς αὐτῆς ἐπνευματοφορεῖτο, παρεδόθη, τίς ἐπιστρέψει αὐτήν; πάντες οἱ ζητοῦντες αὐτὴν οὐ κοπιάσουσιν, ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτῆς εὑρήσουσιν αὐτήν. Ἀπόστρεψον τὸν πόδα σου ἀπὸ ὁδοῦ τραχείας, καὶ τὸν φάρυγγά σου ἀπὸ δίψους· ἡ δὲ εἶπεν ἀνδριοῦμαι, ὅτι ἠγαπήκει ἀλλοτρίους, καὶ ὀπίσω αὐτῶν ἐπορεύετο. Ὡς αἰσχύνη κλέπτου ὅταν ἁλῷ, οὕτως αἰσχυνθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν. Τῷ ξύλῳ εἶπαν, ὅτι πατήρ μου εἶ σὺ, καὶ τῷ λίθῳ, σὺ ἐγέννησάς με· καὶ ἔστρεψαν ἐπ᾽

ἐμὲ νῶτα, καὶ οὐ πρόσωπα αὐτῶν· καὶ ἐν τῷ καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν ἐροῦσιν, ἀνάστα καὶ σῶσον ἡμᾶς. Καὶ ποῦ εἰσὶν οἱ θεοί σου, οὓς ἐποίησας σεαυτῷ; εἰ ἀναστήσονται καὶ σώσουσιν ἐν καιρῷ τῆς κακώσεώς σου; ὅτι κατ᾽ ἀριθμὸν τῶν πόλεών σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ κατ᾽ ἀριθμὸν διόδων τῆς Ἱερουσαλὴμ ἔθυον τῇ Βάαλ. Ἱνατί λαλεῖτε πρὸς μέ; πάντες ὑμεῖς ἠσεβήσατε, καὶ πάντες ὑμεῖς ἠνομήσατε εἰς ἐμὲ, λέγει Κύριος. Μάτην ἐπάταξα τὰ τέκνα ὑμῶν, παιδείαν οὐκ ἐδέξασθε, μάχαιρα κατέφαγε τοὺς προφήτας ὑμῶν ὡς λέων ὀλοθρεύων, καὶ οὐκ ἐφοβήθητε. Ἀκούσατε λόγον Κυρίου· τάδε λέγει Κύριος, μὴ ἔρημος ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ ἢ γῆ κεχερσωμένη; διατί εἶπεν ὁ λαός μου, οὐ κυριευθησόμεθα, καὶ οὐχ ἥξομεν πρὸς σὲ ἔτι; Μὴ ἐπιλήσεται νύμφη τὸν κόσμον αὐτῆς, καὶ παρθένος τὴν στηθοδεσμίδα αὐτῆς; ὁ δὲ λαός μου ἐπελάθετό μου ἡμέρας ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. Τί ἔτι καλὸν ἐπιτηδεύσεις ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, τοῦ ζητῆσαι ἀγάπησιν; οὐχ οὕτως· ἀλλὰ καὶ σὺ ἐπονηρεύσω τοῦ μιάναι τὰς ὁδούς σου, καὶ ἐν ταῖς χερσί σου εὑρέθησαν αἵματα ψυχῶν ἀθώων· οὐκ ἐν διορύγμασιν εὗρον αὐτοὺς, ἀλλ᾽ ἐπὶ πάσῃ δρυΐ. Καὶ εἶπας, ἀθῶός εἰμι, ἀλλὰ ἀποστραφήτω ὁ θυμὸς αὐτοῦ ἀπ᾽ ἐμοῦ. Ἰδοὺ ἐγὼ κρίνομαι πρὸς σὲ, ἐν τῷ λέγειν σε, οὐχ ἥμαρτον· Ὅτι κατεφρόνησας σφόδρα τοῦ δευτερῶσαι τὰς ὁδούς σου· καὶ ἀπὸ Αἰγύπτου καταισχυνθήσῃ, καθὼς κατῃσχύνθης ἀπὸ Ἀσσούρ· ὅτι καὶ ἐντεῦθεν ἐξελεύσῃ, καὶ αἱ χεῖρές σου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς σου· ὅτι ἀπώσατο Κύριος τὴν ἐλπίδα σου, καὶ οὐκ εὐοδωθήσῃ ἐν αὐτῇ.

# 3

Ἐὰν ἐξαποστείλῃ ἀνὴρ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἀπέλθῃ ἀπ᾽ αὐτοῦ, καὶ γένηται ἀνδρὶ ἑτέρῳ, μὴ ἀνακάμπτουσα ἀνακάμψει πρὸς αὐτὸν ἔτι; οὐ μιαινομένη μιανθήσεται ἡ γυνὴ ἐκείνη; καὶ σὺ ἐξεπόρνευσας ἐν ποιμέσι πολλοῖς, καὶ ἀνέκαμπτες πρὸς μὲ, λέγει Κύριος. Ἆρον τοὺς ὀφθαλμούς σου εἰς εὐθεῖαν, καὶ ἴδε, ποῦ οὐχὶ ἐξεφύρθης· ἐπὶ ταῖς ὁδοῖς ἐκάθισας αὐτοῖς ὡσεὶ κορώνη ἐρημουμένη, καὶ ἐμίανας τὴν γῆν ἐν ταῖς πορνείαις σου καὶ ἐν ταῖς κακίαις σου, καὶ ἔσχες ποιμένας πολλοὺς εἰς πρόσκομμα σεαυτῇ· ὄψις πόρνης ἐγένετό σου, ἀπηναισχύντησας πρὸς πάντας. Οὐχ ὡς οἰκόν με ἐκαλέσας, καὶ πατέρα καὶ ἀρχηγὸν τῆς παρθενίας σου; Μὴ διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα, ἢ φυλαχθήσεται εἰς νῖκος; ἰδοὺ ἐλάλησας, καὶ ἐποίησας τὰ πονηρὰ ταῦτα, καὶ ἠδυνάσθης. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωσείου τοῦ βασιλέως, εἶδες ἃ ἐποίησέ μοι ἡ κατοικία τοῦ Ἰσραήλ; ἐπορεύθησαν ἐπὶ πᾶν ὄρος ὑψηλὸν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους, καὶ ἐπόρνευσαν ἐκεῖ. Καὶ εἶπα, μετὰ τὸ πορνεῦσαι αὐτὴν ταῦτα πάντα, πρὸς μὲ ἀνάστρεψον· καὶ οὐκ ἀνέστρεψε· καὶ εἶδε τὴν ἀσυνθεσίαν αὐτῆς ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα. Καὶ εἶδον, ὅτι περὶ πάντων ὧν κατελήφθη ἐν οἷς ἐμοιχᾶτο ἡ κατοικία Ἰσραὴλ, καὶ ἐξαπέστειλα αὐτὴν, καὶ ἔδωκα αὐτῇ βιβλίον ἀποστασίου εἰς τὰς χεῖρας αὐτῆς· καὶ οὐκ ἐφοβήθη ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα, καὶ ἐπορεύθη, καὶ ἐπόρνευσε καὶ αὐτὴ, και ἐγένετο εἰς οὐθὲν ἡ πορνεία αὐτῆς, καὶ ἐμοίχευσε τὸ ξύλον καὶ τὸν λίθον. Καὶ ἐν πᾶσι τούτοις οὐκ ἐπεστράφη πρὸς μὲ ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα ἐξ ὅλης τῆς καρδίας αὐτῆς, ἀλλ᾽ ἐπὶ ψεύδει. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἐδικαίωσε τὴν ψυχὴν αὐτοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ τῆς ἀσυνθέτου Ἰούδα. Πορεύου καὶ ἀνάγνωθι τοὺς λόγους τούτους πρὸς Βορρᾶν, καὶ ἐρεῖς, ἐπιστράφηθι πρὸς μὲ ἡ κατοικία τοῦ Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος· καὶ μὴ στηριῶ τὸ πρόσωπόν μου ἐφ᾽ ὑμᾶς, ὅτι ἐλεήμων

ἐγώ εἰμι, λέγει Κύριος, καὶ οὐ μηνιῶ ὑμῖν εἰς τὸν αἰῶνα. Πλὴν, γνῶθι τὴν ἀδικίαν σου, ὅτι εἰς Κύριον τὸν Θεόν σου ἠσέβησας, καὶ διέχεας τὰς ὁδούς σου εἰς ἀλλοτρίους ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους, τῆς δὲ φωνῆς μου οὐχ ὑπήκουσας, λέγει Κύριος. Ἐπιστράφητε υἱοὶ ἀφεστηκότες, λέγει Κύριος, διότι ἐγὼ κατακυριεύσω ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς ἕνα ἐκ πόλεως καὶ δύο ἐκ πατριᾶς, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς Σιὼν, καὶ δώσω ὑμῖν ποιμένας κατὰ τὴν καρδίαν μου, καὶ ποιμανοῦσιν ὑμᾶς ποιμαίνοντες μετ' ἐπιστήμης. Καὶ ἔσται ἐὰν πληθυνθῆτε, καὶ αὐξηθῆτε ἐπὶ τῆς γῆς, λέγει Κύριος, ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, κιβωτὸς διαθήκης ἁγίου Ἰσραὴλ, οὐκ ἀναβήσεται ἐπὶ καρδίαν, οὐκ ὀνομασθήσεται, οὐδὲ ἐπισκεφθήσεται, καὶ οὐ ποιηθήσεται ἔτι. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ καλέσουσι τὴν Ἱερουσαλὴμ, Θρόνον Κυρίου· καὶ συναχθήσονται πάντα τὰ ἔθνη εἰς αὐτὴν, καὶ οὐ πορεύσονται ἔτι ὀπίσω τῶν ἐνθυμημάτων τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς πονηρᾶς. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις συνελεύσονται ὁ οἶκος Ἰούδα ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἥξουσιν ἐπιτοαυτὸ ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν ἐπὶ τὴν γῆν, ἣν κατεκληρονόμησα τοὺς πατέρας αὐτῶν. Καὶ ἐγὼ εἶπα, γένοιτο Κύριε· ὅτι τάξω σε εἰς τέκνα, καὶ δώσω σοι γῆν ἐκλεκτὴν, κληρονομίαν Θεοῦ παντοκράτορος ἐθνῶν· καὶ εἶπα, πατέρα καλέσετέ με, καὶ ἀπ' ἐμοῦ οὐκ ἀποστραφήσεσθε. Πλὴν ὡς ἀθετεῖ γυνὴ εἰς τὸν συνόντα αὐτῇ, οὕτως ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ ὁ οἶκος Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος. Φωνὴ ἐκ χειλέων ἠκούσθη κλαυθμοῦ καὶ δεήσεως υἱῶν Ἰσραὴλ, ὅτι ἠδίκησαν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, ἐπελάθοντο Θεοῦ ἁγίου αὐτῶν. Ἐπιστράφητε υἱοὶ ἐπιστρέφοντες, καὶ ἰάσομαι τὰ συντρίμματα ὑμῶν. Ἰδοὺ δοῦλοι ἡμεῖς ἐσόμεθά σοι· ὅτι σὺ Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν εἶ. Ὄντως εἰς ψεῦδος ἦσαν οἱ βουνοὶ,

καὶ ἡ δύναμις τῶν ὀρέων, πλὴν διὰ Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν ἡ σωτηρία τοῦ Ἰσραήλ. Ἡ δὲ αἰσχύνη κατηνάλωσε τοὺς μόχθους τῶν πατέρων ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος ἡμῶν, τὰ πρόβατα αὐτῶν καὶ τοὺς μόσχους αὐτῶν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν. Ἐκοιμήθημεν ἐν τῇ αἰσχύνῃ ἡμῶν, καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς ἡ ἀτιμία ἡμῶν, διότι ἔναντι τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἡμάρτομεν ἡμεῖς, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος ἡμῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ οὐχ ὑπηκούσαμεν τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν.

# 4

Ἐὰν ἐπιστραφῇ Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος, πρὸς μὲ, ἐπιστραφήσεται· καὶ ἐὰν περιέλῃ τὰ βδελύγματα αὐτοῦ ἐκ στόματος αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ τοῦ προσώπου μου εὐλαβηθῇ, καὶ ὀμόσῃ, ζῇ Κύριος, μετὰ ἀληθείας ἐν κρίσει καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ εὐλογήσουσιν ἐν αὐτῷ ἔθνη, καὶ ἐν αὐτῷ αἰνέσουσι τῷ Θεῷ ἐν Ἰερουσαλήμ. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος τοῖς ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἰερουσαλὴμ, νεώσατε ἑαυτοῖς νεώματα, καὶ μὴ σπείρητε ἐπ’ ἀκάνθαις. Περιτμήθητε τῷ Θεῷ ὑμῶν, καὶ περιτέμεσθε τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἰερουσαλὴμ, μὴ ἐξέλθῃ ὡς πῦρ ὁ θυμός μου, καὶ ἐκκαυθήσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων, ἀπὸ προσώπου πονηρίας ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ἐν τῷ Ἰούδᾳ, καὶ ἀκουσθήτω ἐν Ἰερουσαλήμ· εἴπατε, σημάνατε ἐπὶ τῆς γῆς σάλπιγγι, κεκράξατε μέγα· εἴπατε, συνάχθητε, καὶ εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς τειχήρεις. Ἀναλαβόντες φεύγετε εἰς Σιών· σπεύσατε, μὴ στῆτε, ὅτι κακὰ ἐγὼ ἐπάγω ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ συντριβὴν μεγάλην. Ἀνέβη λέων ἐκ τῆς

μάνδρας αὐτοῦ, ἐξολοθρεύων ἔθνη ἐξῇρε, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι τὴν γῆν εἰς ἐρήμωσιν· καὶ αἱ πόλεις καθαιρεθήσονται, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτάς. Ἐπὶ τούτοις περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε, καὶ ἀλαλάξατε, διότι οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς Κυρίου ἀφ’ ὑμῶν. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει Κύριος, ἀπολεῖται ἡ καρδία τοῦ βασιλέως, καὶ ἡ καρδία τῶν ἀρχόντων, καὶ οἱ ἱερεῖς ἐκστήσονται, καὶ οἱ προφῆται θαυμάσονται. Καὶ εἶπα, ὦ δέσποτα Κύριε, ἆρά γε ἀπατῶν ἠπάτησας τὸν λαὸν τοῦτον καὶ τὴν Ἰερουσαλὴμ, λέγων, εἰρήνη ἔσται, καὶ ἰδοὺ ἥψατο ἡ μάχαιρα ἕως τῆς ψυχῆς αὐτῶν. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἐροῦσι τῷ λαῷ τούτῳ καὶ τῇ Ἰερουσαλὴμ, πνεῦμα πλανήσεως ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὁδὸς τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου, οὐκ εἰς καθαρὸν, οὐδ’ εἰς ἅγιον. Πνεῦμα πληρώσεως ἥξει μοι· νῦν δὲ ἐγὼ λαλῶ κρίματά μου πρὸς αὐτούς. Ἰδοὺ ὡς νεφέλη ἀναβήσεται, καὶ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα αὐτοῦ, κουφότεροι ἀετῶν οἱ ἵπποι αὐτοῦ· οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι ταλαιπωροῦμεν. Ἀπόπλυνε ἀπὸ κακίας τὴν καρδίαν σου Ἰερουσαλὴμ, ἵνα σωθῇς· ἕως πότε ὑπάρχουσιν ἐν σοὶ διαλογισμοὶ πόνων σου; Διότι φωνὴ ἀγγέλλοντος ἐκ Δὰν ἥξει, καὶ ἀκουσθήσεται πόνος ἐξ ὄρους Ἐφραίμ. Ἀναμνήσατε ἔθνη, ἰδοὺ ἤκασιν· ἀναγγείλατε ἐν Ἰερουσαλὴμ, συστροφαὶ ἔρχονται ἐκ γῆς μακρόθεν, καὶ ἔδωκαν ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα φωνὴν αὐτῶν. Ὡς φυλάσσοντες ἀγρὸν, ἐγένοντο ἐπ’ αὐτὴν κύκλῳ, ὅτι ἐμοῦ ἠμέλησας, λέγει Κύριος. Αἱ ὁδοί σου καὶ τὰ ἐπιτηδεύματά σου ἐποίησαν ταῦτά σοι· αὕτη ἡ κακία σου, ὅτι πικρὰ, ὅτι ἥψατο ἕως τῆς καρδίας σου. Τὴν κοιλίαν μου, τὴν κοιλίαν μου ἀλγῶ, καὶ τὰ αἰσθητήρια τῆς καρδίας μου, μαιμάσσει ἡ ψυχή μου, σπαράσσεται ἡ καρδία μου· οὐ σιωπήσομαι, ὅτι φωνὴν σάλπιγγος ἤκουσεν ἡ ψυχή μου, κραυγὴν πολέμου καὶ ταλαιπωρίας συντριμμὸν

ἐπικαλεῖται, ὅτι τεταλαιπώρηκε πᾶσα ἡ γῆ, ἄφνω τεταλαιπώρηκεν ἡ σκηνὴ, διεσπάσθησαν αἱ δέῤῥεις μου. Ἕως πότε ὄψομαι φεύγοντας ἀκούων φωνὴν σαλπίγγων; Διότι οἱ ἡγούμενοι τοῦ λαοῦ μου ἐμὲ οὐκ ᾔδεισαν· υἱοὶ ἄφρονές εἰσι καὶ οὐ συνετοὶ, σοφοί εἰσι τοῦ κακοποιῆσαι, τὸ δὲ καλῶς ποιῆσαι οὐκ ἐπέγνωσαν. Ἐπέβλεψα ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ οὐθὲν, καὶ εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ οὐκ ἦν τὰ φῶτα αὐτοῦ. Εἶδον τὰ ὄρη, καὶ ἦν τρέμοντα, καὶ πάντας τοὺς βουνοὺς ταρασσομένους. Ἐπέβλεψα, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν ἄνθρωπος, καὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ ἐπτοεῖτο. Εἶδον, καὶ ἰδοὺ ὁ Κάρμηλος ἔρημος, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις ἐμπεπυρισμέναι πυρὶ ἀπὸ προσώπου Κυρίου, καὶ ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ ἠφανίσθησαν. Τάδε λέγει Κύριος, ἔρημος ἔσται πᾶσα ἡ γῆ, συντέλειαν δὲ οὐ μὴ ποιήσω. Ἐπὶ τούτοις πενθείτω ἡ γῆ, καὶ συσκοτασάτω ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν· διότι ἐλάλησα, καὶ οὐ μετανοήσω, ὥρμησα, καὶ οὐκ ἀποστρέψω ἀπ’ αὐτῆς. Ἀπὸ φωνῆς ἱππέως, καὶ ἐντεταμένου τόξου ἀνεχώρησε πᾶσα ἡ χώρα· εἰσέδυσαν εἴς τὰ σπήλαια, καὶ εἰς τὰ ἄλση ἐκρύβησαν, καὶ ἐπὶ τὰς πέτρας ἀνέβησαν· πᾶσα πόλις ἐγκατελείφθη, οὐ κατῴκει ἐν αὐταῖς ἄνθρωπος. Καὶ σὺ τί ποιήσεις; ἐὰν περιβάλῃ κόκκινον, καὶ κοσμήσῃ κόσμῳ χρυσῷ· ἐὰν ἐγχρίσῃ στίβι τοὺς ὀφθαλμούς σου, εἰς μάταιον ὡραϊσμός σου· ἀπώσαντό σε οἱ ἐρασταί σου, τὴν ψυχήν σου ζητοῦσιν. Ὅτι φωνὴν ὡς ὠδινούσης ἤκουσα τοῦ στεναγμοῦ σου, ὡς πρωτοτοκούσης· φωνὴ θυγατρὸς Σιὼν ἐκλυθήσεται, καὶ παρήσει τὰς χεῖρας αὐτῆς· οἴμοι ἐγὼ, ὅτι ἐκλείπει ἡ ψυχή μου ἐπὶ τοῖς ἀνῃρημένοις.

# 5

Περιδράμετε ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἴδετε, καὶ γνῶτε, καὶ ζητήσατε ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, ἐὰν εὕρητε, εἰ ἔστι ποιῶν κρίμα, καὶ ζητῶν πίστιν· καὶ ἵλεως ἔσομαι αὐτοῖς, λέγει Κύριος. Ζῇ Κύριος, λέγουσι, διατοῦτο οὐκ ἐν ψεύδεσιν ὀμνύουσι; Κύριε, οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς πίστιν· ἐμαστίγωσας αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐπόνεσαν, συνετέλεσας αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἠθέλησαν δέξασθαι παιδείαν· ἐστερέωσαν τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὑπὲρ πέτραν, καὶ οὐκ ἠθέλησαν ἐπιστραφῆναι. Καὶ ἐγὼ εἶπα, ἴσως πτωχοί εἰσι, διότι οὐκ ἐδυνάσθησαν, ὅτι οὐκ ἔγνωσαν ὁδὸν Κυρίου, καὶ κρίσιν Θεοῦ. Πορεύσομαι πρὸς τοὺς ἀδροὺς, καὶ λαλήσω αὐτοῖς, ὅτι αὐτοὶ ἐπέγνωσαν ὁδὸν Κυρίου, καὶ κρίσιν Θεοῦ· καὶ ἰδοὺ ὁμοθυμαδὸν συνέτριψαν ζυγὸν, διέῤῥηξαν δεσμούς. Διατοῦτο ἔπαισεν αὐτοὺς λέων ἐκ τοῦ δρυμοῦ, καὶ λύκος ἔως τῶν οἰκιῶν ὠλόθρευσεν αὐτοὺς, καὶ πάρδαλις ἐγρηγόρησεν ἐπὶ τὰς πόλεις αὐτῶν· πάντες οἱ ἐκπορευόμενοι ἀπ’ αὐτῶν θηρευθήσονται, ὅτι ἐπλήθυναν ἀσεβείας αὐτῶν, ἴσχυσαν ἐν ταῖς ἀποστροφαῖς αὐτῶν. Ποίᾳ τούτων ἵλεως γένωμαί σοι; οἱ υἱοί σου ἐγκατέλιπόν με, καὶ ὤμνυον ἐν τοῖς οὐκ οὖσι θεοῖς· καὶ ἐχόρτασα αὐτοὺς, καὶ ἐμοιχῶντο, καὶ ἐν οἴκοις πορνῶν κατέλυον. Ἵπποι θηλυμανεῖς ἐγενήθησαν, ἕκαστος ἐπὶ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἐχρεμέτιζον. Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει Κύριος· ἢ ἐν ἔθνει τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ ψυχή μου; Ἀνάβητε ἐπὶ τοὺς προμαχῶνας αὐτῆς, καὶ κατασκάψατε, συντέλειαν δὲ μὴ ποιήσητε· ὑπολίπεσθε τὰ ὑποστηρίγματα αὐτῆς, ὅτι τοῦ Κυρίου εἰσίν. Ὅτι ἀθετῶν ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ, λέγει Κύριος, οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ οἶκος Ἰούδα ἐψεύσατο τῷ Κυρίῳ αὐτῶν, καὶ εἶπαν, οὐκ ἔστι ταῦτα· οὐχ ἥξει ἐφ’ ἡμᾶς κακὰ, καὶ μάχαιραν καὶ λιμὸν οὐκ ὀψόμεθα. Οἱ προφῆται ἡμῶν ἦσαν εἰς ἄνεμον, καὶ λόγος Κυρίου οὐχ ὑπῆρχεν ἐν αὐτοῖς. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος

παντοκράτωρ, ἀνθ’ ὧν ἐλαλήσατε τὸ ῥῆμα τοῦτο, ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου πῦρ, καὶ τὸν λαὸν τοῦτον ξύλα, καὶ καταφάγεται αὐτούς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐφ’ ὑμᾶς ἔθνος πόῤῥωθεν, οἶκος Ἰσραὴλ, λέγει Κύριος, ἔθνος οὗ οὐκ ἀκούσει τῆς φωνῆς τῆς γλώσσης αὐτοῦ. Πάντες ἰσχυροὶ, καὶ κατέδονται τὸν θερισμὸν ὑμῶν, καὶ τοὺς ἄρτους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς υἱοὺς ὑμῶν, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν, καὶ κατέδονται τὰ πρόβατα ὑμῶν, καὶ τοὺς μόσχους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς συκῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς ἐλαιῶνας ὑμῶν· καὶ ἀλοήσουσι τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς ὑμῶν, ἐφ’ αἷς ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ’ αὐταῖς, ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, λέγει Κύριος ὁ Θεός σου, οὐ μὴ ποιήσω ὑμᾶς εἰς συντέλειαν. Καὶ ἔσται ὅταν εἴπητε, τίνος ἕνεκεν ἐποίησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἡμῖν πάντα ταῦτα; καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, ἀνθ’ ὧν ἐδουλεύσατε θεοῖς ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ ὑμῶν, οὕτως δουλεύσετε ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ οὐχ ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ταῦτα εἰς τὸν οἶκον Ἰακὼβ, καὶ ἀκουσθήτω ἐν τῷ οἴκῳ Ἰούδα. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα λαὸς μωρὸς καὶ ἀκάρδιος, ὀφθαλμοὶ αὐτοῖς καὶ οὐ βλέπουσιν, ὦτα αὐτοῖς καὶ οὐκ ἀκούουσι. Μὴ ἐμὲ οὐ φοβηθήσεσθε; λέγει Κύριος· ἢ ἀπὸ προσώπου μου οὐκ εὐλαβηθήσεσθε; τὸν τάξαντα ἄμμον ὅριον τῇ θαλάσσῃ, πρόσταγμα αἰώνιον, καὶ οὐχ ὑπερβήσεται αὐτὸ, καὶ ταραχθήσεται, καὶ οὐ δυνήσεται· καὶ ἠχήσουσι τὰ κύματα αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπερβήσεται αὐτό. Τῷ δὲ λαῷ τούτῳ ἐγενήθη καρδία ἀνήκοος καὶ ἀπειθὴς, καὶ ἐξέκλιναν καὶ ἀπήλθοσαν, καὶ οὐκ εἶπον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, φοβηθῶμεν δὴ Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, τὸν διδόντα ἡμῖν ὑετὸν πρώϊμον καὶ ὄψιμον, κατὰ καιρὸν πληρώσεως προστάγματος θερισμοῦ, καὶ ἐφύλαξεν ἡμῖν. Αἱ ἀνομίαι ὑμῶν ἐξέκλιναν ταῦτα, καὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν ἀπέστησαν τὰ ἀγαθὰ ἀφ’

ὑμῶν. Ὅτι εὑρέθησαν ἐν τῷ λαῷ μου ἀσεβεῖς, καὶ παγίδας ἔστησαν τοῦ διαφθεῖραι ἄνδρας, καὶ συνελαμβάνοσαν. Ὡς παγὶς ἐφεσταμένη πλήρης πετεινῶν, οὕτως οἱ οἶκοι αὐτῶν πλήρεις δόλου· διατοῦτο ἐμεγαλύνθησαν, καὶ ἐπλούτησαν, καὶ παρέβησαν κρίσιν, οὐκ ἔκριναν κρίσιν ὀρφανοῦ, καὶ κρίσιν χήρας οὐκ ἐκρίνοσαν. Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει Κύριος· ἢ ἐν ἔθνει τῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ ψυχή μου; Ἔκστασις καὶ φρικτὰ ἐγενήθη ἐπὶ τῆς γῆς. Οἱ προφῆται προφητεύουσιν ἄδικα, καὶ οἱ ἱερεῖς ἐπεκρότησαν ταῖς χερσὶν αὐτῶν, καὶ ὁ λαός μου ἠγάπησεν οὕτως· καὶ τί ποιήσετε εἰς τὰ μετὰ ταῦτα;

# 6

Ἐνισχύσατε υἱοὶ Βενιαμὶν ἐκ μέσου τῆς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐν Θεκουὲ σημάνατε σάλπιγγι, καὶ ὑπὲρ Βαιθαχαρμὰ ἄρατε σημεῖον, ὅτι κακὰ ἐκκέκυφεν ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ συντριβὴ μεγάλη γίνεται· καὶ ἀφαιρεθήσεται τὸ ὕψος θύγατερ Σιών. Εἰς αὐτὴν ἥξουσι ποιμένες, καὶ τὰ ποίμνια αὐτῶν· καὶ πήξουσιν ἐπ’ αὐτὴν σκηνὰς κύκλῳ, καὶ ποιμανοῦσιν ἕκαστος τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Παρασκευάσασθε ἐπ’ αὐτὴν εἰς πόλεμον, ἀνάστητε, καὶ ἀναβῶμεν ἐπ’ αὐτὴν μεσημβρίας· οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι κέκλικεν ἡ ἡμέρα, ὅτι ἐκλείπουσιν αἱ σκιαὶ τῆς ἡμέρας. Ἀνάστητε, καὶ ἀναβῶμεν ἐπ’ αὐτὴν νυκτὶ, καὶ διαφθείρωμεν τὰ θεμέλια αὐτῆς. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, ἔκκοψον τὰ ξύλα αὐτῆς, ἔκχεον ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ δύναμιν· ὦ πόλις ψευδὴς, ὅλη καταδυναστεία ἐν αὐτῇ. Ὡς ψύχει λάκκος ὕδωρ, οὕτω ψύχει κακία αὐτῆς· ἀσέβεια καὶ ταλαιπωρία ἀκουσθήσεται ἐν αὐτῇ ἐπὶ πρόσωπον αὐτῆς διαπαντός. Πόνῳ καὶ μάστιγι παιδευθήσῃ

Ἰερουσαλὴμ, μὴ ἀποστῇ ἡ ψυχή μου ἀπὸ σοῦ, μὴ ποιήσω σε ἄβατον γῆν, ἥτις οὐ κατοικισθῇ. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, καλαμᾶσθε, καλαμᾶσθε ὡς ἄμπελον τὰ κατάλοιπα τοῦ Ἰσραὴλ, ἐπιστρέψατε ὡς ὁ τρυγῶν ἐπὶ τὸν κάρταλλον αὐτοῦ. Πρὸς τίνα λαλήσω, καὶ διαμαρτύρωμαι, καὶ εἰσακούσεται; ἰδοὺ ἀπερίτμητα τὰ ὦτα αὐτῶν, καὶ οὐ δυνήσονται ἀκούειν· ἰδοὺ τὸ ῥῆμα Κυρίου ἐγένετο αὐτοῖς εἰς ὀνειδισμὸν, οὐ μὴ βουληθῶσιν αὐτό. Καὶ τὸν θυμόν μου ἔπλησα, καὶ ἐπέσχον, καὶ οὐ συνετέλεσα αὐτούς· ἐκχεῶ ἐπὶ νήπια ἔξωθεν, καὶ ἐπὶ συναγωγὴν νεανίσκων ἅμα, ὅτι ἀνὴρ καὶ γυνὴ συλληφθήσονται, πρεσβύτερος μετὰ πλήρους ἡμερῶν. Καὶ μεταστραφήσονται αἱ οἰκίαι αὐτῶν εἰς ἑτέρους, ἀγροὶ καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν ἐπιτοαυτό· ὅτι ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην, λέγει Κύριος. Ὅτι ἀπὸ μικροῦ αὐτῶν καὶ ἕως μεγάλου πάντες συνετελέσαντο ἄνομα, ἀπὸ ἱερέως καὶ ἕως ψευδοπροφήτου πάντες ἐποίησαν ψευδῆ. Καὶ ἰῶντο σύντριμμα τοῦ λαοῦ μου, ἐξουθενοῦντες καὶ λέγοντες, εἰρήνη εἰρήνη· καὶ ποῦ ἐστιν εἰρήνη; Κατῃσχύνθησαν, ὅτι ἐξελίποσαν· καὶ οὐδ’ ὡς καταισχυνόμενοι κατῃσχύνθησαν, καὶ τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν οὐκ ἔγνωσαν· διατοῦτο πεσοῦνται ἐν τῇ πτώσει αὐτῶν, καὶ ἐν καιρῷ ἐπισκοπῆς ἀπολοῦνται, εἶπε Κύριος. Τάδε λέγει Κύριος, στῆτε ἐπὶ ταῖς ὁδοῖς, καὶ ἴδετε, καὶ ἐρωτήσατε τρίβους Κυρίου αἰωνίους· καὶ ἴδετε ποία ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἡ ἀγαθὴ, καὶ βαδίζετε ἐν αὐτῇ, καὶ εὑρήσετε ἁγνισμὸν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν· Καὶ εἶπαν, οὐ πορευσόμεθα. Καθέστακα ἐφ’ ὑμᾶς σκοπούς· ἀκούσατε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος· καὶ εἶπαν, οὐκ ἀκουσόμεθα. Διὰ τοῦτο ἤκουσαν τὰ ἔθνη, καὶ οἱ ποιμαίνοντες τὰ ποίμνια αὐτῶν. Ἄκουε γῆ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον κακὰ, τὸν καρπὸν ἀποστροφῆς αὐτῶν, ὅτι τῶν λόγων μου οὐ προσέσχον, καὶ τὸν νόμον μου ἀπώσαντο.

Ἱνατί μοι λίβανον ἐκ Σαβὰ φέρετε, καὶ κινάμωμον ἐκ γῆς μακρόθεν; τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν οὐκ εἰσὶ δεκτὰ, καὶ αἱ θυσίαι ὑμῶν οὐχ ἥδυνάν μοι. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον ἀσθένειαν, καὶ ἀσθενήσουσι πατέρες καὶ υἱοὶ ἅμα, γείτων καὶ ὁ πλησίον αὐτοῦ ἀπολοῦνται. Τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ ἔθνη ἐξεγερθήσονται ἀπ’ ἐσχάτου τῆς γῆς. Τόξον καὶ ζιβύνην κρατήσουσιν· ἰταμός ἐστι, καὶ οὐκ ἐλεήσει· φωνὴ αὐτοῦ, ὡς θάλασσα κυμαίνουσα· ἐφ’ ἵπποις καὶ ἅρμασι παρατάξεται ὡς πῦρ εἰς πόλεμον πρὸς σὲ, θύγατερ Σιών. Ἠκούσαμεν τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, παρελύθησαν αἱ χεῖρες ἡμῶν, θλῖψις κατέσχεν ἡμᾶς, ὠδῖνες ὡς τικτούσης. Μὴ ἐκπορεύεσθε εἰς ἀγρὸν, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς μὴ βαδίζετε, ὅτι ῥομφαία τῶν ἐχθρῶν παροικεῖ κυκλόθεν. Θύγατερ λαοῦ μου περίζωσαι σάκκον, κατάπασσε ἐν σποδῷ, πένθος ἀγαπητοῦ ποιήσαι σεαυτῇ κοπετὸν οἰκτρὸν, ὅτι ἐξαίφνης ἥξει ταλαιπωρία ἐφ’ ὑμᾶς. Δοκιμαστὴν δέδωκά σε ἐν λαοῖς δεδοκιμασμένοις, καὶ γνώσῃ με ἐν τῷ δοκιμάσαι με τὴν ὁδὸν αὐτῶν, πάντες ἀνήκοοι πορεύομενοι σκολιῶς· χαλκὸς καὶ σίδηρος, πάντες διεφθαρμένοι εἰσίν. Ἐξέλιπε φυσητὴρ ἀπὸ πυρὸς, ἐξέλιπε μόλιβος· εἰς κενὸν ἀργυροκόπος ἀργυροκοπεῖ, πονηρία αὐτῶν οὐκ ἐτάκη. Ἀργύριον ἀποδεδοκιμασμένον καλέσατε αὐτοὺς, ὅτι ἀπεδοκίμασεν αὐτοὺς Κύριος.

# 7

Ἀκούσατε λόγον Κυρίου πᾶσα Ἰουδαία. Τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, διορθώσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν,

καὶ κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Μὴ πεποίθατε ἐφ’ ἑαυτοῖς ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅτι τὸ παράπαν οὐκ ὠφελήσουσιν ὑμᾶς, λέγοντες, ναὸς Κυρίου, ναὸς Κυρίου ἐστίν. Ὅτι ἐὰν διορθοῦντες διορθώσητε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν, καὶ ποιοῦντες ποιήσητε κρίσιν ἀναμέσον ἀνδρὸς, καὶ ἀναμέσον τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ προσήλυτον καὶ ὀρφανὸν καὶ χήραν μὴ καταδυναστεύσητε, καὶ αἷμα ἀθῶον μὴ ἐκχέητε ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων μὴ πορεύησθε εἰς κακὸν ὑμῖν, καὶ κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ ἐν γῇ ᾗ ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑμῶν ἐξ αἰῶνος καὶ ἕως αἰῶνος. Εἰ δὲ ὑμεῖς πεποίθατε ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅθεν οὐκ ὠφεληθήσεσθε, καὶ φονεύετε, καὶ μοιχᾶσθε, καὶ κλέπτετε, καὶ ὀμνύετε ἐπ’ ἀδίκῳ, καὶ θυμιᾶτε τῇ Βάαλ, καὶ ἐπορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, ὧν οὐκ οἴδατε, τοῦ κακῶς εἶναι ὑμῖν, καὶ ἤλθετε καὶ ἔστητε ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν τῷ οἴκῳ οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτῷ, καὶ εἴπατε, ἀπεσχήμεθα τοῦ μὴ ποιεῖν πάντα τὰ βδελύγματα ταῦτα. Μὴ σπήλαιον λῃστῶν ὁ οἶκός μου, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτῷ ἐκεῖ ἐνώπιον ὑμῶν; καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἑώρακα, λέγει Κύριος. Ὅτι πορεύθητε εἰς τὸν τόπον μου τὸν ἐν Σηλὼ, οὗ κατεσκήνωσα τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ ἔμπροσθεν, καὶ ἴδετε ἃ ἐποίησα αὐτῷ ἀπὸ προσώπου κακίας λαοῦ μου Ἰσραήλ. Καὶ νῦν ἀνθ’ ὧν ἐποιήσατε πάντα τὰ ἔργα ταῦτα, καὶ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς καὶ οὐκ ἠκούσατέ μου, καὶ ἐκάλεσα ὑμᾶς καὶ οὐκ ἀπεκρίθητε, τοίνυν κἀγὼ ποιήσω τῷ οἴκῳ ᾧ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτῷ, ἐφ’ ᾧ ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ’ αὐτῷ, καὶ τῷ τόπῳ ᾧ ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν, καθὼς ἐποίησα τῇ Σηλώ. Καὶ ἀποῤῥίψω ὑμᾶς ἀπὸ προσώπου μου, καθὼς ἀπέῤῥιψα τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, πᾶν τὸ σπέρμα Ἐφραΐμ. Καὶ σὺ μὴ προσεύχου περὶ τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ μὴ ἀξιοῦ τοῦ ἐλεηθῆναι αὐτοὺς, καὶ μὴ

εὔχου, καὶ μὴ προσέλθῃς μοι περὶ αὐτῶν, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι. Ἢ οὐχ ὁρᾷς, τί αὐτοὶ ποιοῦσιν ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἰερουσαλήμ; Οἱ υἱοὶ αὐτῶν συλλέγουσι ξύλα, καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν καίουσι πῦρ, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν τρίβουσι σταῖς, τοῦ ποιῆσαι καυῶνας τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἔσπεισαν σπονδὰς θεοῖς ἀλλοτρίοις, ἵνα παροργίσωσί με. Μὴ ἐμὲ αὐτοὶ παροργίζουσι; λέγει Κύριος· οὐχὶ ἑαυτοὺς, ὅπως καταισχυνθῇ τὰ πρόσωπα αὐτῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ὀργὴ καὶ θυμός μου χεῖται ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπὶ τὰ κτήνη, καὶ ἐπὶ πᾶν ξύλου τοῦ ἀγροῦ αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ γεννήματα τῆς γῆς, καὶ καυθήσεται καὶ οὐ σβεσθήσεται. Τάδε λέγει Κύριος, τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν συναγάγετε μετὰ τῶν θυσιῶν ὑμῶν, καὶ φάγετε κρέα. Ὅτι οὐκ ἐλάλησα πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἀνήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, περὶ ὁλοκαυτωμάτων καὶ θυσίας. Ἀλλ’ ἢ τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐνετειλάμην αὐτοῖς, λέγων, ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου, καὶ ἔσομαι ὑμῖν εἰς Θεὸν, καὶ ὑμεῖς ἔσεσθέ μοι εἰς λαὸν, καὶ πορεύεσθε ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς μου, αἷς ἂν ἐντείλωμαι ὑμῖν, ὅπως ἂν εὖ ᾖ ὑμῖν. Καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, καὶ οὐ προσέσχε τὸ οὖς αὐτῶν, ἀλλ’ ἐπορεύθησαν ἐν τοῖς ἐνθυμήμασι τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ ἐγενήθησαν εἰς τὰ ὄπισθεν· καὶ οὐκ εἰς τὰ ἔμπροσθεν, ἀφ’ ἧς ἡμέρας ἐξῆλθοσαν οἱ πατέρες αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ ἐξαπέστειλα πρὸς ὑμᾶς πάντας τοὺς δούλους μου, τοὺς προφήτας, ἡμέρας καὶ ὄρθρου, καὶ ἀπέστειλα, καὶ οὐκ εἰσήκουσάν μου, καὶ οὐ προσέσχε τὸ οὖς αὐτῶν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς τοῦτον τὸν λόγον, τοῦτο τὸ ἔθνος ὃ οὐκ ἤκουσε τῆς φωνῆς Κυρίου, οὐδὲ ἐδέξατο παιδείαν, ἐξέλιπεν ἡ πίστις ἐκ στόματος αὐτῶν.

Κεῖρε τὴν κεφαλήν σου, καὶ ἀπόῤῥιπτε, καὶ ἀνάλαβε ἐπὶ χειλέων θρῆνον, ὅτι ἀπεδοκίμασε Κύριος, καὶ ἀπώσατο τὴν γενεὰν τὴν ποιοῦσαν ταῦτα. Ὅτι ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰούδα τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει Κύριος· ἔταξαν τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἐν τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ᾽ αὐτὸν, τοῦ μιάναι αὐτόν. Καὶ ᾠκοδόμησαν τὸν βωμὸν τοῦ Ταφὲθ, ὅς ἐστιν ἐν φάραγγι υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἐν πυρὶ, ὃ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, καὶ οὐ διενοήθην ἐν τῇ καρδίᾳ μου. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Βωμὸς τοῦ Ταφὲθ καὶ φάραγξ υἱοῦ Ἐννὸμ, ἀλλ᾽ ἡ φάραγξ τῶν ἀνῃρημένων· καὶ θάψουσιν ἐν τῷ Ταφὲθ, διὰ τὸ μὴ ὑπάρχειν τόπον. Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τοῦ λαοῦ τούτου εἰς βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀποσοβῶν. Καὶ καταλύσω ἐκ πόλεων Ἰούδα καὶ ἐκ διόδων Ἱερουσαλὴμ φωνὴν εὐφραινομένων, καὶ φωνὴν χαιρόντων, φωνὴν νυμφίου, καὶ φωνὴν νύμφης, ὅτι εἰς ἐρήμωσιν ἔσται πᾶσα ἡ γῆ.

# 8

Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγει Κύριος, ἐξοίσουσι τὰ ὀστᾶ τῶν βασιλέων Ἰούδα, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν ἱερέων, καὶ τὰ ὀστᾶ προφητῶν, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν κατοικούντων ἐν Ἱερουσαλὴμ ἐκ τῶν τάφων αὐτῶν, καὶ ψύξουσιν αὐτὰ πρὸς τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνην, καὶ πρὸς πάντας τοὺς ἀστέρας, καὶ πρὸς πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, ἃ ἠγάπησαν, καὶ οἷς ἐδούλευσαν, καὶ ὧν ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ ὧν ἀντείχοντο, καὶ οἷς προσεκύνησαν αὐτοῖς· οὐ κοπήσονται, καὶ οὐ

ταφήσονται, καὶ ἔσονται εἰς παράδειγμα ἐπὶ πρόσωπου τῆς γῆς, ὅτι εἵλοντο τὸν θάνατον ἢ τὴν ζωὴν, καὶ πᾶσι τοῖς καταλοίποις τοῖς καταλειφθεῖσιν ἀπὸ τῆς γενεᾶς ἐκείνης, ἐν παντὶ τόπῳ οὗ ἐὰν ἐξώσω αὐτοὺς ἐκεῖ. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, μὴ ὁ πίπτων οὐκ ἀνίσταται; ἢ ὁ ἀποστρέφων οὐκ ἀναστρέφει; Διατί ἀπέστρεψεν ὁ λαός μου οὗτος ἀποστροφὴν ἀναιδῆ, καὶ κατεκρατήθησαν ἐν τῇ προαιρέσει αὐτῶν, καὶ οὐκ ἠθέλησαν τοῦ ἐπιστρέψαι; ἐνωτίσασθε δὴ, καὶ ἀκούσατε· οὐχ οὕτω λαλήσουσιν, οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος ὁ μετανοῶν ἀπὸ τῆς κακίας αὐτοῦ, λέγων, τί ἐποίησα; διέλιπεν ὁ τρέχων ἀπὸ τοῦ δρόμου αὐτοῦ, ὡς ἵππος κάθιδρος ἐν χρεμετισμῷ αὐτοῦ. Καὶ ἡ ἀσίδα ἐν τῷ οὐρανῷ ἔγνω τὸν καιρὸν αὐτῆς, τρυγὼν καὶ χελιδὼν ἀγροῦ, στρουθία ἐφύλαξαν καιροὺς εἰσόδων ἑαυτῶν, ὁ δὲ λαός μου οὗτος οὐκ ἔγνω τὰ κρίματα Κυρίου. Πῶς ἐρεῖτε, ὅτι σοφοί ἐσμεν ἡμεῖς, καὶ νόμος Κυρίου μεθ’ ἡμῶν ἐστιν; εἰς μάτην ἐγενήθη σχοῖνος ψευδὴς γραμματεῦσιν. Ἠσχύνθησαν σοφοὶ, καὶ ἐπτοήθησαν καὶ ἑάλωσαν, ὅτι τὸν νόμον Κυρίου ἀπεδοκίμασαν· σοφία τίς ἐστιν ἐν αὐτοῖς; Διατοῦτο δώσω τὰς γυναῖκας αὐτῶν ἑτέροις, καὶ τοὺς ἀγροὺς αὐτῶν τοῖς κληρονόμοις, καὶ συνάξουσι τὰ γεννήματα αὐτῶν, λέγει Κύριος. Οὐκ ἔστι σταφυλὴ ἐν ταῖς ἀμπέλοις, καὶ οὐκ ἐστι σῦκα ἐν ταῖς συκαῖς, καὶ τὰ φύλλα κατερῤύηκεν. Ἐπὶ τί ἡμεῖς καθήμεθα; συνάχθητε, καὶ εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς, καὶ ἀποῤῥιφῶμεν ἐκεῖ, ὅτι ὁ Θεὸς ἀπέῤῥιψεν ἡμᾶς, καὶ ἐπότισεν ἡμᾶς ὕδωρ χολῆς, ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον αὐτοῦ. Συνήχθημεν εἰς εἰρήνην, καὶ οὐκ ἦν ἀγαθὰ, εἰς καιρὸν ἰάσεως, καὶ ἰδοὺ σπουδή. Ἐκ Δὰν ἀκουσόμεθα φωνὴν ὀξύτητος ἵππων αὐτοῦ· ἀπὸ φωνῆς χρεμετισμοῦ ἱππασίας ἵππων αὐτοῦ ἐσείσθη πᾶσα ἡ γῆ. καὶ ἥξει καὶ καταφάγεται τὴν γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, πόλιν καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Διότι ἰδοὺ

ἐγὼ ἐξαποστέλλω εἰς ὑμᾶς ὄφεις θανατοῦντας, οἷς οὐκ ἔστιν ἐπᾴσαι, καὶ δήξονται ὑμᾶς ἀνίατα μετ᾽ ὀδύνης καρδίας ὑμῶν ἀπορουμένης. Ἰδοὺ φωνὴ κραυγῆς θυγατρὸς λαοῦ μου ἀπὸ γῆς μακρόθεν· μὴ Κύριος οὐκ ἔστιν ἐν Σιών; ἢ βασιλεὺς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ; διότι παρώργισάν με ἐν τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν, καὶ ἐν ματαίοις ἀλλοτρίοις. Διῆλθε θέρος, παρῆλθεν ἀμητὸς, καὶ ἡμεῖς οὐ διεσώθημεν. Ἐπὶ συντρίμματι θυγατρὸς λαοῦ μου ἐσκοτώθην· ἐν ἀπορίᾳ κατίσχυσάν με ὠδῖνες ὡς τικτούσης. Καὶ μὴ ῥητίνη οὐκ ἔστιν ἐν Γαλαὰδ, ἢ ἰατρὸς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ; διατί οὐκ ἀνέβη ἴασις θυγατρὸς λαοῦ μου; Τίς δώσει κεφαλῇ μου ὕδωρ, καὶ ὀφθαλμοῖς μου πηγὴν δακρύων; καὶ κλαύσομαι τὸν λαόν μου τοῦτον ἡμέρας καὶ νυκτὸς, τοὺς τετραυματισμένους θυγατρὸς λαοῦ μου.

# 9

Τίς δώῃ μοι ἐν τῇ ἐρήμῳ σταθμὸν ἔσχατον, καὶ καταλείψω τὸν λαόν μου, καὶ ἀπελεύσομαι ἀπ᾽ αὐτῶν; ὅτι πάντες μοιχῶνται, σύνοδος ἀθετούντων, καὶ ἐνέτειναν τὴν γλῶσσαν αὐτῶν ὡς τόξον· ψεῦδος, καὶ οὐ πίστις ἐνίσχυσεν ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐκ κακῶν εἰς κακὰ ἐξήλθοσαν, καὶ ἐμὲ οὐκ ἔγνωσαν, φησὶ Κύριος. Ἕκαστος ἀπὸ τοῦ πλησίον αὐτοῦ φυλάξασθε, καὶ ἐπ᾽ ἀδελφοῖς αὐτῶν μὴ πεποίθατε, ὅτι πᾶς ἀδελφὸς πτέρνῃ πτερνιεῖ, καὶ πᾶς φίλος δολίως πορεύσεται. Ἕκαστος κατὰ τοῦ φίλου αὐτοῦ καταπαίξεται, ἀλήθειαν οὐ μὴ λαλήσωσι· μεμάθηκεν ἡ γλῶσσα αὐτῶν λαλεῖν ψευδῆ, ἠδίκησαν, καὶ οὐ διέλιπον τοῦ ἐπιστρέψαι. Τόκος ἐπὶ τόκῳ, καὶ δόλος ἐπὶ δόλῳ· οὐκ ἤθελον εἰδέναι με, φησὶ Κύριος. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ πυρώσω αὐτοὺς, καὶ δοκιμῶ αὐτούς·

ὅτι ποιήσω ἀπὸ προσώπου πονηρίας θυγατρὸς λαοῦ μου. Βολὶς τιτρώσκουσα ἡ γλῶσσα αὐτῶν, δόλια τὰ ῥήματα τοῦ στόματος αὐτῶν· τῷ πλησίον αὐτοῦ λαλεῖ εἰρηνικὰ, καὶ ἐν ἑαυτῷ ἔχει τὴν ἔχθραν. Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει Κύριος· ἢ ἐν λαῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ ψυχή μου; Ἐπὶ τὰ ὄρη λάβετε κοπετὸν, καὶ ἐπὶ τὰς τρίβους τῆς ἐρήμου θρῆνον, ὅτι ἐξέλιπον παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώπους· οὐκ ἤκουσαν φωνὴν ὑπάρξεως ἀπὸ πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἕως κτηνῶν, ἐξέστησαν, ᾤχοντο. Καὶ δώσω τὴν Ἱερουσαλὴμ εἰς μετοικίαν, καὶ εἰς κατοικητήριον δρακόντων, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα εἰς ἀφανισμὸν θήσομαι, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι. Τίς ὁ ἄνθρωπος ὁ συνετὸς, καὶ συνέτω τοῦτο; καὶ ᾧ λόγος στόματος Κυρίου πρὸς αὐτὸν, ἀναγγειλάτω ὑμῖν, ἕνεκεν τίνος ἀπώλετο ἡ γῆ, ἀνήφθη, ὡς ἔρημος, παρὰ τὸ μὴ διοδεύεσθαι αὐτήν; Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, διὰ τὸ ἐγκαταλιπεῖν αὐτοὺς τὸν νόμον μου, ὃν ἔδωκα πρὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς μου, ἀλλ’ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν ἀρεστῶν τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ ὀπίσω τῶν εἰδώλων ἃ ἐδίδαξαν αὐτοὺς οἱ πατέρες αὐτῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ ψωμιῶ αὐτοὺς ἀνάγκας, καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ χολῆς, καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσιν, εἰς οὓς οὐκ ἐγίνωσκον αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν, καὶ ἐπαποστελῶ ἐπ’ αὐτοὺς τὴν μάχαιραν, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς ἐν αὐτῇ. Τάδε λέγει Κύριος, καλέσατε τὰς θρηνούσας, καὶ ἐλθέτωσαν, καὶ πρὸς τὰς σοφὰς ἀποστείλατε, καὶ φθεγξάσθωσαν, καὶ λαβέτωσαν ἐφ’ ὑμᾶς θρῆνον, καὶ καταγαγέτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, καὶ τὰ βλέφαρα ὑμῶν ῥείτω ὕδωρ, ὅτι φωνὴ οἰκτροῦ ἠκούσθη ἐν Σιών· πῶς ἐταλαιπωρήσαμεν, κατῃσχύνθημεν σφόδρα, ὅτι ἐγκατελίπομεν τὴν γῆν, καὶ ἀπερῤῥίψαμεν τὰ σκηνώματα ἡμῶν; Ἀκούσατε δὴ

γυναῖκες λόγον Θεοῦ, καὶ δεξάσθω τὰ ὦτα ὑμῶν λόγους στόματος αὐτοῦ, καὶ διδάξατε τὰς θυγατέρας ὑμῶν οἶκτον, καὶ γυνὴ τὴν πλησίον αὐτῆς θρῆνον. Ὅτι ἀνέβη θάνατος διὰ τῶν θυρίδων ὑμῶν, εἰσῆλθεν εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, τοῦ ἐκτρίψαι νήπια ἔξωθεν, καὶ νεανίσκους ἀπὸ τῶν πλατειῶν. Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τῶν ἀνθρώπων εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου τῆς γῆς ὑμῶν, ὡς χόρτος ὀπίσω θερίζοντος, καὶ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων. Τάδε λέγει Κύριος, μὴ καυχάσθω ὁ σοφὸς ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ πλούσιος ἐν τῷ πλούτῳ αὐτοῦ, ἀλλ’ ἢ ἐν τούτῳ καυχάσθω ὁ καυχώμενος, συνιεῖν καὶ γινώσκειν, ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος ὁ ποιῶν ἔλεος καὶ κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐν τούτοις τὸ θέλημά μου, λέγει Κύριος. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ ἐπισκέψομαι ἐπὶ πάντας περιτετμημένους ἀκροβυστίας αὐτῶν. Ἐπ’ Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Ἐδὼμ, καὶ ἐπὶ υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ υἱοὺς Μωὰβ, καὶ ἐπὶ πάντα περικειρόμενον τὰ κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ, τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι πάντα τὰ ἔθνη ἀπερίτμητα σαρκὶ, καὶ πᾶς οἶκος Ἰσραὴλ ἀπερίτμητοι καρδίας αὐτῶν.

# 10

Ἀκούσατε τὸν λόγον Κυρίου, ὃν ἐλάλησεν ἐφ’ ὑμᾶς, οἶκος Ἰσραήλ. Τάδε λέγει Κύριος, κατὰ τὰς ὁδοὺς τῶν ἐθνῶν μὴ μανθάνετε, καὶ ἀπὸ τῶν σημείων τοῦ οὐρανοῦ μὴ φοβεῖσθε, ὅτι φοβοῦνται αὐτὰ τοῖς προσώποις αὐτῶν. Ὅτι τὰ νόμιμα τῶν ἐθνῶν μάταια· ξύλον ἐστὶν ἐκ τοῦ δρυμοῦ ἐκκεκομμένον, ἔργον τέκτονος, καὶ χώνευμα,

ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ κεκαλλωπισμένα, ἐν σφύραις καὶ ἥλοις ἐστερέωσαν αὐτά· Θήσουσιν αὐτὰ, καὶ οὐ κινηθήσονται· ἀργύριον τορευτόν ἐστιν, οὐ πορεύσονται, ἀργύριον προσβλητόν ἐστιν. Ἀπὸ Θαρσεὶς ἤξει χρυσίον Μωφὰζ, καὶ χεὶρ χρυσοχόων, ἔργα τεχνιτῶν πάντα, ὑάκινθον καὶ πορφύραν ἐνδύσουσιν αὐτά. Οὕτως ἐρεῖτε αὐτοῖς, θεοὶ οἳ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν οὐκ ἐποίησαν, ἀπολέσθωσαν ἐκ τῆς γῆς, καὶ ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ τούτου. Κύριος ὁ ποιήσας τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ὁ ἀνορθώσας τὴν οἰκουμένην ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ τῇ φρονήσει αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν οὐρανὸν, καὶ πλῆθος ὕδατος ἐν οὐρανῷ· καὶ ἀνήγαγε νεφέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξήγαγε φῶς ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. Ἐμωράνθη πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατῃσχύνθη πᾶς χρυσοχόος ἐπὶ τοῖς γλυπτοῖς αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ ἐχώνευσεν, οὐκ ἔστι πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. Μάταιά ἐστιν ἔργα ἐμπεπαιγμένα, ἐν καιρῷ ἐπισκοπῆς αὐτῶν ἀπολοῦνται. Οὐκ ἔστι τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰακὼβ, ὅτι ὁ πλάσας τὰ πάντα, αὐτὸς κληρονομία αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα αὐτῷ. Συνήγαγεν ἔξωθεν τὴν ὑπόστασίν σου, κατοικοῦσαν ἐν ἐκλεκτοῖς. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ σκελίζω τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην ἐν θλίψει, ὅπως εὑρεθῇ ἡ πληγή σου. Οὐαὶ ἐπὶ συντρίμματί σου, ἀλγηρὰ ἡ πληγή σου· κἀγὼ εἶπα, ὄντως τοῦτο τὸ τραῦμά σου, καὶ κατέλαβέ σε. Ἡ σκηνή σου ἐταλαιπώρησεν, ὤλετο· καὶ πᾶσαι αἱ δέῤῥεις σου διεσπάσθησαν· οἱ υἱοί μου καὶ τὰ πρόβατά μου οὐκ εἰσὶν, οὐκ ἔστιν ἔτι τόπος τῆς σκηνῆς μου, τόπος τῶν δέῤῥεών μου. Ὅτι οἱ ποιμένες ἠφρονεύσαντο, καὶ τὸν Κύριον οὐκ ἐζήτησαν· διατοῦτο οὐκ ἐνόησε πᾶσα ἡ νομὴ, καὶ διεσκορπίσθησαν, φωνὴ ἀκοῆς ἰδοὺ ἔρχεται καὶ σειαμὸς μέγας ἐκ γῆς Βοῤῥᾶ, τοῦ τάξαι τὰς πόλεις Ἰούδα εἰς ἀφανισμὸν, καὶ κοίτην στρουθῶν. Οἶδα, Κύριε, ὅτι οὐχὶ

τοῦ ἀνθρώπου ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, οὐδὲ ἀνὴρ πορεύσεται καὶ κατορθώσει πορείαν αὐτοῦ. Παίδευσον ἡμᾶς Κύριε, πλὴν ἐν κρίσει καὶ μὴ ἐν θυμῷ, ἵνα μὴ ὀλίγους ἡμᾶς ποιήσῃς. Ἔκχεον τὸν θυμόν σου ἐπὶ ἔθνη τὰ μὴ εἰδότα σε, καὶ ἐπὶ γενεὰς αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο, ὅτι κατέφαγον τὸν Ἰακὼβ καὶ ἐξανήλωσαν αὐτὸν, καὶ τὴν νομὴν αὐτοῦ ἠρήμωσαν.

# 11

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΑΡΑ ΚΥΡΙΟΥ ΠΡΟΣ ἸΕΡΕΜΙΑΝ, ΛΕΓΩΝ, Ἀκούσατε τοὺς λόγους τῆς διαθήκης ταύτης, καὶ λαλήσεις πρὸς ἄνδρας Ἰούδα, καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος, ὃς οὐκ ἀκούσεται τῶν λόγων τῆς διαθήκης ταύτης, ἧς ἐνετειλάμην τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἀνήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐκ καμίνου τῆς σιδηρᾶς, λέγων, ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου, καὶ ποιήσατε πάντα ὅσα ἐὰν ἐντείλωμαι ὑμῖν, καὶ ἔσεσθέ μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς Θεόν· Ὅπως στήσω τὸν ὅρκον μου, ὃν ὤμοσα τοῖς πατράσιν ὑμῶν, τοῦ δοῦναι αὐτοῖς γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι, καθὼς ἡ ἡμέρα αὕτη· καὶ ἀπεκρίθην καὶ εἶπα, γένοιτο Κύριε. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἀνάγνωθι τοὺς λόγους τούτους ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἰερουσαλὴμ, λέγων, ἀκούσατε τοὺς λόγους τῆς διαθήκης ταύτης, καὶ ποιήσατε αὐτούς. Καὶ οὐκ ἐποίησαν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, εὑρέθη σύνδεσμος ἐν ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ ἐν τοῖς κατοικοῦσιν ἐν Ἰερουσαλήμ· Ἐπεστράφησαν ἐπὶ τὰς ἀδικίας τῶν πατέρων αὐτῶν τῶν πρότερον, οἳ οὐκ ἠθέλησαν εἰσακοῦσαι τῶν λόγων μου, καὶ

ἰδοὺ αὐτοὶ πορεύονται ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς· καὶ διεσκέδασεν οἶκος Ἰσραὴλ καὶ οἶκος Ἰούδα τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην πρὸς τοὺς πατέρας αὐτῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον κακὰ, ἐξ ὧν οὐ δυνήσονται ἐξελθεῖν ἐξ αὐτῶν· καὶ κεκράξονται πρὸς μὲ, καὶ οὐκ εἰσακούσομαι αὐτῶν. Καὶ πορεύσονται πόλεις Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλὴμ, καὶ κεκράξονται πρὸς τοὺς θεοὺς, οἷς αὐτοὶ θυμιῶσιν αὐτοῖς, οἳ μὴ σώσουσιν αὐτοὺς ἐν τῷ καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν. Ὅτι κατ᾽ ἀριθμὸν τῶν πόλεών σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ κατ᾽ ἀριθμὸν ἐξόδων τῆς Ἱερουσαλὴμ ἐτάξατε βωμοὺς θυμιᾶν τῇ Βάαλ. Καὶ σὺ μὴ προσεύχου περὶ τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ μὴ ἀξίου περὶ αὐτῶν ἐν δεήσει καὶ προσευχῇ, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι ἐν τῷ καιρῷ ἐν ᾧ ἐπικαλοῦνταί με, ἐν καιρῷ κακώσεως αὐτῶν. Τί ἡ ἠγαπημένη ἐν τῷ οἴκῳ μου ἐποίησε βδέλυγμα; μὴ εὐχαὶ καὶ κρέα ἅγια ἀφελοῦσιν ἀπὸ σοῦ τὰς κακίας σου, ἢ τούτοις διαφεύξῃ; Ἐλαίαν ὡραίαν εὔσκιον τῷ εἴδει ἐκάλεσε Κύριος τὸ ὄνομά σου, εἰς φωνὴν περιτομῆς αὐτῆς· ἀνήφθη πῦρ ἐπ᾽ αὐτὴν, μεγάλη ἡ θλίψις ἐπὶ σὲ, ἠχρειώθησαν οἱ κλάδοι αὐτῆς· Καὶ Κύριος ὁ καταφυτεύσας σε, ἐλάλησεν ἐπὶ σὲ κακὰ ἀντὶ τῆς κακίας οἴκου Ἰσραὴλ καὶ οἴκου Ἰούδα, ὅ, τι ἐποίησαν ἑαυτοῖς τοῦ παροργίσαι με ἐν τῷ θυμιᾶν αὐτοὺς τῇ Βάαλ. Κύριε γνώρισόν μοι, καὶ γνώσομαι· τότε εἶδον τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ ὡς ἀρνίον ἄκακον ἀγόμενον τοῦ θύεσθαι, οὐκ ἔγνων· ἐπ᾽ ἐμὲ ἐλογίσαντο λογισμὸν πονηρὸν, λέγοντες, δεῦτε καὶ ἐμβάλωμεν ξύλον εἰς τὸν ἄρτον αὐτοῦ, καὶ ἐκτρίψωμεν αὐτὸν ἀπὸ γῆς ζώντων, καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ οὐ μὴ μνησθῇ οὐκέτι. Κύριε κρίνων δίκαια, δοκιμάζων νεφροὺς καὶ καρδίας, ἴδοιμι τῆν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐξ αὐτῶν, ὅτι πρὸς σὲ ἀπεκάλυψα τὸ δικαίωμά μου. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ τοὺς

ἄνδρας Ἀναθὼθ τοὺς ζητοῦντας τὴν ψυχήν μου, τοὺς λέγοντας, οὐ μὴ προφητεύσεις ἐπὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου, εἰ δὲ μὴ, ἀποθάνῃ ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν· Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπ’ αὐτούς· οἱ νεανίσκοι αὐτῶν ἐν μαχαίρᾳ ἀποθανοῦνται, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν τελευτήσουσιν ἐν λιμῷ, καὶ ἐγκατάλειμμα οὐκ ἔσται αὐτῶν, ὅτι ἐπάξω κακὰ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἀναθὼθ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν.

# 12

Δίκαιος εἶ Κύριε, ὅτι ἀπολογήσομαι πρὸς σέ· πλὴν κρίματα λαλήσω πρὸς σέ· τί ὅτι ὁδὸς ἀσεβῶν εὐοδοῦται; εὐθήνησαν πάντες οἱ ἀθετοῦντες ἀθετήματα; Ἐφύτευσας αὐτοὺς, καὶ ἐῤῥιζώθησαν· ἐτεκνοποιήσαντο, καὶ ἐποίησαν καρπόν· ἐγγὺς εἶ σὺ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ πόῤῥω ἀπὸ τῶν νεφρῶν αὐτῶν. Καὶ σύ Κύριε γινώσκεις με, δεδοκίμακας τὴν καρδίαν μου ἐναντίον σου· ἅγνισον αὐτοὺς εἰς ἡμέραν σφαγῆς αὐτῶν. Ἕως πότε πενθήσει ἡ γῆ, καὶ πᾶς ὁ χόρτος τοῦ ἀγροῦ ξηρανθήσεται ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούντων ἐν αὐτῇ; ἠφανίσθησαν κτήνη καὶ πετεινὰ, ὅτι εἶπαν, οὐκ ὄψεται ὁ Θεὸς ὁδοὺς ἡμῶν. Σοῦ οἱ πόδες τρέχουσι, καὶ ἐκλύουσί σε· πῶς παρασκευάσῃ ἐφ’ ἵπποις; καὶ ἐν γῇ εἰρήνης σου πέποιθας· πῶς ποιήσεις ἐν φρυάγματι τοῦ Ἰορδάνου; Ὅτι καὶ οἱ ἀδελφοί σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου, καὶ οὗτοι ἠθέτησάν σε, καὶ αὐτοὶ ἐβόησαν, ἐκ τῶν ὀπίσω σου ἐπισυνήχθησαν· μὴ πιστεύσῃς ἐν αὐτοῖς, ὅτι λαλήσουσι πρὸς σὲ καλά. Ἐγκαταλέλοιπα τὸν οἶκόν μου, ἀφῆκα τὴν κληρονομίαν μου, ἔδωκα τὴν ἠγαπημένην ψυχήν μου εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῆς. Ἐγενήθη ἡ κληρονομία μου ἐμοὶ ὡς λέων ἐν

δρυμῷ, ἔδωκεν ἐπ’ ἐμὲ τὴν φωνὴν αὐτῆς, διατοῦτο ἐμίσησα αὐτήν. Μὴ σπήλαιον ὑαίνης ἡ κληρονομία μου ἐμοὶ, ἢ σπήλαιον κύκλῳ αὐτῆς; βαδίσατε, συναγάγετε πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ ἐλθέτωσαν τοῦ φαγεῖν αὐτήν. Ποιμένες πολλοὶ διέφθειραν τὸν ἀμπελῶνά μου, ἐμόλυναν τὴν μερίδα μου, ἔδωκαν τὴν μερίδα τὴν ἐπιθυμητήν μου εἰς ἔρημον ἄβατον, ἐτέθη εἰς ἀφανισμὸν ἀπωλείας· δι’ ἐμὲ ἀφανισμῷ ἠφανίσθη πᾶσα ἡ γῆ, ὅτι οὐκ ἔστιν ἀνὴρ τιθέμενος ἐν καρδίᾳ. Ἐπὶ πᾶσαν διεκβολὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ ἦλθον ταλαιπωροῦντες, ὅτι μάχαιρα τοῦ Κυρίου καταφάγεται ἀπ’ ἄκρου τῆς γῆς ἕως ἄκρου τῆς γῆς· οὐκ ἔστιν εἰρήνη πάσῃ σαρκί. Σπείρατε πυροὺς, καὶ ἀκάνθας θερίζετε· οἱ κλῆροι αὐτῶν οὐκ ὠφελήσουσιν αὐτούς· αἰσχύνθητε ἀπὸ καυχήσεως ὑμῶν, ἀπὸ ὀνειδισμοῦ ἔναντι Κυρίου. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος περὶ πάντων τῶν γειτόνων τῶν πονηρῶν, τῶν ἁπτομένων τῆς κληρονομίας μου, ἧς ἐμέρισα τῷ λαῷ μου Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποσπῶ αὐτοὺς ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ τὸν Ἰούδαν ἐκβαλῶ ἐκ μέσου αὐτῶν. Καὶ ἔσται μετὰ τὸ ἐκβαλεῖν με αὐτοὺς, ἐπιστρέψω καὶ ἐλεήσω αὐτοὺς, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς, ἕκαστον εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ἐὰν μαθόντες μάθωσι τὴν ὁδὸν τοῦ λαοῦ μου, τοῦ ὀμνύειν τῷ ὀνόματί μου, ζῇ Κύριος, καθὼς ἐδίδαξαν τὸν λαόν μου ὀμνύειν τῇ Βάαλ, καὶ οἰκοδομηθήσεται ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ μου. Ἐὰν δὲ μὴ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἐξαρῶ τὸ ἔθνος ἐκεῖνο ἐξάρσει καὶ ἀπωλείᾳ.

# 13

Τάδε λέγει Κύριος, βάδισον καὶ κτῆσαι σεαυτῷ περίζωμα λινοῦν,

καὶ περίθου περὶ τὴν ὀσφύν σου, καὶ ἐν ὕδατι οὐ διελεύσεται. Καὶ ἐκτησάμην τὸ περίζωμα κατὰ τὸν λόγον Κυρίου, καὶ περιέθηκα περὶ τὴν ὀσφύν μου. Καὶ ἐγενήθη λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, λάβε τὸ περίζωμα τὸ περὶ τὴν ὀσφύν σου, καὶ ἀνάστηθι, καὶ βάδισον ἐπὶ τὸν Εὐφράτην, καὶ κατάκρυψον αὐτὸ ἐκεῖ ἐν τῇ τρυμαλιᾷ τῆς πέτρας. Καὶ ἐπορεύθην, καὶ ἔκρυψα αὐτὸ ἐν τῷ Εὐφράτῃ, καθὼς ἐνετείλατό μοι Κύριος. Καὶ ἐγένετο μεθ' ἡμέρας πολλὰς, καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἀνάστηθι, βάδισον ἐπὶ τὸν Εὐφράτην, καὶ λάβε ἐκεῖθεν τὸ περίζωμα, ὃ ἐνετειλάμην σοι τοῦ κατακρύψαι ἐκεῖ. Καὶ ἐπορεύθην ἐπὶ τὸν Εὐφράτην ποταμὸν, καὶ ὤρυξα, καὶ ἔλαβον τὸ περίζωμα ἐκ τοῦ τόπου οὗ κατώρυξα αὐτὸ ἐκεῖ, καὶ ἰδοὺ διεφθαρμένον ἦν, ὃ οὐ μὴ χρησθῇ εἰς οὐθέν. Καὶ ἐγενήθη λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε λέγει Κύριος, οὕτω φθερῶ τὴν ὕβριν Ἰούδα καὶ τὴν ὕβριν Ἰερουσαλὴμ, τὴν πολλὴν ταύτην ὕβριν, τοὺς μὴ βουλομένους ὑπακούειν τῶν λόγων μου, καὶ πορευθέντας ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς· καὶ ἔσονται ὥσπερ τὸ περίζωμα τοῦτο, ὃ οὐ χρησθήσεται εἰς οὐθέν. Ὅτι καθάπερ κολλᾶται τὸ περίζωμα περὶ τὴν ὀσφὺν τοῦ ἀνθρώπου, οὕτως ἐκόλλησα πρὸς ἐμαυτὸν τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ πάντα οἶκον Ἰούδα, τοῦ γενέσθαι μοι εἰς λαὸν ὀνομαστὸν, καὶ εἰς καύχημα, καὶ εἰς δόξαν, καὶ οὐκ εἰσήκουσάν μου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον, πᾶς ἀσκὸς πληρωθήσεται οἴνου· καὶ ἔσται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, μὴ γνόντες οὐ γνωσόμεθα, ὅτι πᾶς ἀσκὸς πληρωθήσεται οἴνου; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ πληρῶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην, καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν τοὺς καθημένους υἱοὺς τοῦ Δαυὶδ ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτῶν, καὶ τοὺς ἱερεῖς καὶ τοὺς προφήτας, καὶ τὸν Ἰούδαν καὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἰερουσαλὴμ,

μεθύσματι· Καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἄνδρα καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς πατέρας αὐτῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν τῷ αὐτῷ· οὐκ ἐπιποθήσω, λέγει Κύριος, καὶ οὐ φείσομαι, καὶ οὐκ οἰκτειρήσω ἀπὸ διαφθορᾶς αὐτῶν. Ἀκούσατε, καὶ ἐνωτίσασθε, καὶ μὴ ἐπαίρεσθε, ὅτι Κύριος ἐλάλησε. Δότε τῷ Κυρίῳ Θεῷ ὑμῶν δόξαν πρὸ τοῦ συσκοτάσαι, καὶ πρὸ τοῦ προσκόψαι πόδας ὑμῶν ἐπ᾽ ὄρη σκοτεινά· καὶ ἀναμενεῖτε εἰς φῶς, καὶ ἐκεῖ σκιὰ θανάτου καὶ τεθήσονται εἰς σκότος. Ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσητε, κεκρυμμένως κλαύσεται ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀπὸ προσώπου ὕβρεως, καὶ κατάξουσιν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, ὅτι συνετρίβη τὸ ποίμνιον Κυρίου. Εἴπατε τῷ βασιλεῖ καὶ τοῖς δυναστεύουσι, ταπεινώθητε καὶ καθίσατε, ὅτι καθῃρέθη ἀπὸ κεφαλῆς ὑμῶν στέφανος δόξης ὑμῶν. Πόλεις αἱ πρὸς Νότον, συνεκλείσθησαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀνοίγων· ἀποικίσθη Ἰούδας, συνετέλεσαν ἀποικίαν τελείαν. Ἀνάλαβε ὀφθαλμούς σου Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἴδε τοὺς ἐρχομένους ἀπὸ Βορῤᾶ· ποῦ ἐστι τὸ ποίμνιον ὃ ἐδόθη σοι, πρόβατα δόξης σου; Τί ἐρεῖς ὅταν ἐπισκέπτωνταί σε; καὶ σὺ ἐδίδαξας αὐτοὺς ἐπὶ σὲ μαθήματα εἰς ἀρχήν· οὐκ ὠδῖνες καθέξουσί σε καθὼς γυναῖκα τίκτουσαν; Καὶ ἐὰν εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, διατί ἀπήντησέ μοι ταῦτα; διὰ τὸ πλῆθος τῆς ἀδικίας σου ἀνεκαλύφθη τὰ ὀπίσθιά σου, παραδειγματισθῆναι τὰς πτέρνας σου. Εἰ ἀλλάξεται Αἰθίοψ τὸ δέρμα αὐτοῦ, καὶ πάρδαλις τὰ ποικίλματα αὐτῆς, καὶ ὑμεῖς δυνήσεσθε εὐποιῆσαι μεμαθηκότες τὰ κακά. Καὶ διέσπειρα αὐτοὺς, ὡς φρύγανα φερόμενα ὑπὸ ἀνέμου εἰς ἔρημον. Οὕτως ὁ κλῆρός σου, καὶ μερὶς τοῦ ἀπειθεῖν ὑμᾶς ἐμοὶ, λέγει Κύριος· ὡς ἐπελάθου μου, καὶ ἤλπισας ἐπὶ ψεύδεσι, κἀγὼ ἀποκαλύψω τὰ ὀπίσω σου ἐπὶ τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ὀφθήσεται ἡ ἀτιμία σου, καὶ ἡ μοιχεία σου, καὶ χρεμετισμός σου, καὶ ἡ ἀπαλλοτρίωσις τῆς πορνείας σου· ἐπὶ

τῶν βουνῶν, καὶ ἐν τοῖς ἀγροῖς ἑώρακα τὰ βδελύγματά σου· οὐαί σοι Ἰερουσαλὴμ, ὅτι οὐκ ἐκαθαρίσθης ὀπίσω μου· ἕως τίνος ἔτι;

# 14

ΚΑΙ ἘΓΕΝΕΤΟ ΛΟΓΟΣ ΚΥΡΙΟΥ ΠΡΟΣ ἸΕΡΕΜΙΑΝ ΠΕΡΙ ΤΗΣ ἈΒΡΟΧΙΑΣ. Ἐπένθησεν ἡ Ἰουδαία, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς ἐκενώθησαν, καὶ ἐσκοτώθησαν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἡ κραυγὴ τῆς Ἰερουσαλὴμ ἀνέβη· Καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἀπέστειλαν τοὺς νεωτέρους αὐτῶν ἐφ’ ὕδωρ· ἦλθοσαν ἐπὶ τὰ φρέατα, καὶ οὐχ εὕροσαν ὕδωρ, καὶ ἀπέστρεψαν τὰ ἀγγεῖα αὐτῶν κενά. Καὶ τὰ ἔργα τῆς γῆς ἐξέλιπεν, ὅτι οὐκ ἦν ὑετός· ᾐσχύνθησαν οἱ γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. Καὶ ἔλαφοι ἐν ἀγρῷ ἔτεκον, καὶ ἐγκατέλιπον, ὅτι οὐκ ἦν βοτάνη. Ὄνοι ἄγριοι ἔστησαν ἐπὶ νάπας, καὶ εἵλκυσαν ἄνεμον, ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν, ὅτι οὐκ ἦν χόρτος. Αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· Κύριε ποίησον ἡμῖν ἕνεκέν σου, ὅτι πολλαὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἐναντίον σου, ὅτι σοι ἡμάρτομεν. Ὑπομονὴ Ἰσραὴλ Κύριε, καὶ σώζεις ἐν καιρῷ κακῶν· ἱνατί ἐγενήθης ὡσεὶ πάροικος ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὡς αὐτόχθων ἐκκλίνων εἰς κατάλυμα; Μὴ ἔσῃ ὥσπερ ἄνθρωπος ὑπνῶν, ἢ ὡς ἀνὴρ οὐ δυνάμενος σώζειν; καὶ σὺ ἐν ἡμῖν εἶ Κύριε, καὶ τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐφ’ ἡμᾶς· μὴ ἐπιλάθῃ ἡμῶν. Οὕτως λέγει Κύριος τῷ λαῷ τούτῳ, ἠγάπησαν κινεῖν πόδας αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐφείσαντο, καὶ ὁ Θεὸς οὐκ εὐώδωσεν ἐν αὐτοῖς· νῦν μνησθήσεται τῆς ἀδικίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, μὴ προσεύχου περὶ τοῦ λαοῦ τούτου εἰς ἀγαθὰ, ὅτι ἐὰν νηστεύσωσιν, οὐκ εἰσακούσομαι τῆς δεήσεως αὐτῶν· καὶ ἐὰν προσενέγκωσιν ὁλοκαυτώματα καὶ

θυσίας, οὐκ εὐδοκήσω ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ καὶ ἐν θανάτῳ ἐγὼ συντελέσω αὐτούς. Καὶ εἶπα, ὁ ὢν Κύριε, ἰδοὺ οἱ προφῆται αὐτῶν προφητεύουσι, καὶ λέγουσιν, οὐκ ὄψεσθε μάχαιραν, οὐδὲ λιμὸς ἔσται ἐν ὑμῖν, ὅτι ἀλήθειαν καὶ εἰρήνην δώσω ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ψευδῆ οἱ προφῆται προφητεύουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐλάλησα πρὸς αὐτούς· ὅτι ὁράσεις ψευδεῖς, καὶ μαντείας, καὶ οἰωνίσματα, καὶ προαιρέσεις καρδίας αὐτῶν αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος περὶ τῶν προφητῶν τῶν προφητευόντων ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου ψευδῆ, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, οἳ λέγουσι, μάχαιρα καὶ λιμὸς οὐκ ἔσται ἐπὶ τῆς γῆς ταύτης· ἐν θανάτῳ νοσερῷ ἀποθανοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ συντελεσθήσονται οἱ προφῆται, καὶ ὁ λαὸς, οἷς αὐτοὶ προφητεύουσιν αὐτοῖς, καὶ ἔσονται ἐῤῥιμμένοι ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἰερουσαλὴμ, ἀπὸ προσώπου μαχαίρας καὶ τοῦ λιμοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ θάπτων αὐτοὺς, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν, καὶ ἐκχεῶ ἐπ’ αὐτοὺς τὰ κακὰ αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς τὸν λόγον τοῦτον, καταγάγετε ἐπ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν δάκρυα ἡμερας καὶ νυκτὸς, καὶ μὴ διαλιπέτωσαν, ὅτι συντρίμματι συνετρίβη θυγάτηρ λαοῦ μου, καὶ πληγὴ ὀδυνηρὰ σφόδρα. Ἐὰν ἐξέλθω εἰς τὸ πεδίον, καὶ ἰδοὺ τραυματίαι μαχαίρας· καὶ ἐὰν εἰσέλθω εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἰδοὺ πόνος λιμοῦ· ὅτι ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐπορεύθησαν εἰς γῆν, ἣν οὐκ ᾔδεισαν. Μὴ ἀποδοκιμάζων ἀπεδοκίμασας τὸν Ἰούδαν, καὶ ἀπὸ Σιὼν ἀπέστη ἡ ψυχή σου; ἱνατί ἔπαισας ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἴασις; ὑπεμείναμεν εἰς εἰρήνην, καὶ οὐκ ἦν ἀγαθὰ, εἰς καιρὸν ἰάσεως, καὶ ἰδοὺ ταραχή. Ἔγνωμεν Κύριε ἁμαρτήματα ἡμῶν, ἀδικίας πατέρων

ἡμῶν, ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον σου. Κόπασον διὰ τὸ ὄνομά σου, μὴ ἀπολέσῃς θρόνον δόξης σου· μνήσθητι, μὴ διασκεδάσῃς τὴν διαθήκην σου τὴν μεθ’ ἡμῶν. Μὴ ἔστιν ἐν εἰδώλοις τῶν ἐθνῶν ὑετίζων; καὶ εἰ ὁ οὐρανὸς δώσει πλησμονὴν αὐτοῦ, οὐχὶ σὺ εἶ αὐτός; καὶ ὑπομενοῦμέν σε Κύριε, ὅτι σὺ ἐποίησας πάντα ταῦτα.

# 15

Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἐὰν στῇ Μωυσῆς καὶ Σαμουὴλ πρὸ προσώπου μου, οὐκ ἔστιν ἡ ψυχή μου πρὸς αὐτούς· ἐξαπόστειλον τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ ἐξελθέτωσαν. Καὶ ἔσται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, ποῦ ἐξελευσόμεθα; καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, τάδε λέγει Κύριος, ὅσοι εἰς θάνατον, εἰς θάνατον· καὶ ὅσοι εἰς μάχαιραν, εἰς μάχαιραν· καὶ ὅσοι εἰς λιμὸν, εἰς λιμόν· καὶ ὅσοι εἰς αἰχμαλωσίαν, εἰς αἰχμαλωσίαν. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ’ αὐτοὺς τέσσαρα εἴδη, λέγει Κύριος· τὴν μάχαιραν εἰς σφαγὴν, καὶ τοὺς κύνας εἰς διασπασμὸν, καὶ τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ εἰς βρῶσιν καὶ διαφθοράν. Καὶ παραδώσω αὐτοὺς εἰς ἀνάγκας πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς, διὰ Μανασσῆ υἱὸν Ἐζεκίου βασιλέως Ἰούδα, περὶ πάντων ὧν ἐποίησεν ἐν Ἰερουσαλήμ. Τίς φείσεται ἐπὶ σοὶ Ἰερουσαλήμ; καὶ τίς δειλιάσει ἐπὶ σοί; ἢ τίς ἀνακάμψει εἰς εἰρήνην σοι; Σὺ ἀπεστράφης με, λέγει Κύριος, ὀπίσω πορεύσῃ· καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου, καὶ διαφθερῶ σε, καὶ οὐκέτι ἀνήσω αὐτούς· Καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν διασπορᾷ ἐν πύλαις λαοῦ μου ἠτεκνώθησαν, ἀπώλεσαν τὸν λαόν μου διὰ τὰς κακίας αὐτῶν. Ἐπληθύνθησαν αἱ χῆραι αὐτῶν ὑπὲρ τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης· ἐπήγαγον ἐπὶ μητέρα νεανίσκους, ταλαιπωρίαν ἐν μεσημβρίᾳ, ἐπέῤῥιψα ἐπ’ αὐτὴν

ἐξαίφνης τρόμον καὶ σπουδήν. Ἐκενώθη ἡ τίκτουσα ἑπτὰ, ἀπεκάκησεν ἡ ψυχὴ αὐτῆς, ἐπέδυ ὁ ἥλιος αὐτῇ ἔτι μεσούσης τῆς ἡμέρας, κατῃσχύνθη καὶ ὠνειδίσθη· τοὺς καταλοίπους αὐτῶν εἰς μάχαιραν δώσω ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν. Οἴμοι ἐγὼ, μῆτερ, ὡς τινά με ἔτεκες ἄνδρα δικαζόμενον, καὶ διακρινόμενον πάσῃ τῇ γῇ· οὔτε ὠφέλησα, οὔτε ὠφέλησέ με οὐδείς· ἡ ἰσχύς μου ἐξέλιπεν ἐν τοῖς καταρωμένοις με. Γένοιτο δέσποτα κατευθυνόντων αὐτῶν· εἰ μὴ παρέστην σοι ἐν καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν, καὶ ἐν καιρῷ θλίψεως αὐτῶν, εἰς ἀγαθὰ πρὸς τὸν ἐχθρόν. Εἰ γνωσθήσεται σίδηρος; καὶ περιβόλαιον χαλκοῦν ἡ ἰσχύς σου. Καὶ τοὺς θησαυρούς σου εἰς προνομὴν δώσω ἀντάλλαγμα, διὰ πάσας τὰς ἁμαρτίας σου, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις σου. Καὶ καταδουλώσω σε κύκλῳ τοῖς ἐχθροῖς σου, ἐν τῇ γῇ ᾗ οὐκ ᾔδεις· ὅτι πῦρ ἐκκέκαυται ἐκ τοῦ θυμοῦ μου, ἐφ’ ὑμᾶς καυθήσεται. Κύριε μνήσθητί μου, καὶ ἐπίσκεψαί με, καὶ ἀθώωσόν με ἀπὸ τῶν καταδιωκόντων με, μὴ εἰς μακροθυμίαν· γνῶθι, ὡς ἔλαβον περὶ σοῦ ὀνειδισμὸν ὑπὸ τῶν ἀθετούντων τοὺς λόγους σου· συντέλεσον αὐτούς· καὶ ἔσται ὁ λόγος σου ἐμοὶ εἰς εὐφροσύνην καὶ χαρὰν καρδίας μου, ὅτι ἐπικέκληται τὸ ὄνομά σου ἐπ’ ἐμοὶ, Κύριε παντοκράτωρ. Οὐκ ἐκάθισα ἐν συνεδρίῳ αὐτῶν παιζόντων, ἀλλὰ εὐλαβούμην ἀπὸ προσώπου χειρός σου· καταμόνας ἐκαθήμην, ὅτι πικρίας ἐνεπλήσθην. Ἱνατί οἱ λυποῦντές με κατισχύουσί μου; ἡ πληγή μου στερεὰ, πόθεν ἰαθήσομαι; γινομένη ἐγενήθη μοι ὡς ὕδωρ ψευδὲς, οὐκ ἔχον πίστιν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἐὰν ἐπιστρέψῃς, καὶ ἀποκαταστήσω σε, καὶ πρὸ προσώπου μου στήσῃ· καὶ ἐὰν ἐξαγάγῃς τίμιον ἀπὸ ἀναξίου, ὡς τὸ στόμα μου ἔσῃ· καὶ ἀναστρέψουσιν αὐτοὶ πρὸς σὲ, καὶ σὺ οὐκ ἀναστρέψεις πρὸς αὐτούς. Καὶ δώσω σε τῷ λαῷ τούτῳ, ὡς τεῖχος ὀχυρὸν, χαλκοῦν·

καὶ πολεμήσουσι πρὸς σὲ, καὶ οὐ μὴ δύνωνται πρὸς σὲ, διότι μετὰ σοῦ εἰμι τοῦ σώζειν σε, καὶ τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε ἐκ χειρὸς πονηρῶν, καὶ λυτρώσομαί σε ἐκ χειρὸς λοιμῶν.

# 16

Καὶ σὺ μὴ λάβῃς γυναῖκα, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, καὶ οὐ γεννηθήσεταί σοι υἱὸς, οὐδὲ θυγάτηρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος περὶ τῶν υἱῶν καὶ περὶ τῶν θυγατέρων τῶν γεννωμένων ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ περὶ τῶν μητέρων αὐτῶν τῶν τετοκυιῶν αὐτοὺς, καὶ περὶ τῶν πατέρων αὐτῶν τῶν γεγεννηκότων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, ἐν θανάτῳ νοσερῷ ἀποθανοῦνται, οὐ κοπήσονται, καὶ οὐ ταφήσονται· εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς ἔσονται· καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς ἔσονται καὶ τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ· ἐν μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ συντελεσθήσονται. Τάδε λέγει Κύριος, μὴ εἰσέλθῃς εἰς θίασον αὐτῶν, καὶ μὴ πορευθῇς τοῦ κόψασθαι, καὶ μὴ πενθήσῃς αὐτοὺς, ὅτι ἀφέστακα τὴν εἰρήνην μου ἀπὸ τοῦ λαοῦ τούτου· Οὐ μὴ κόψονται αὐτοὺς, οὐδὲ ἐντομίδας οὐ μὴ ποιήσουσι, καὶ οὐ ξυρηθήσονται, καὶ οὐ μὴ κλασθῇ ἄρτος ἐν πένθει αὐτῶν εἰς παράκλησιν ἐπὶ τεθνηκότι· οὐ ποτιοῦσιν αὐτὸν ποτήριον εἰς παράκλησιν ἐπὶ πατρὶ καὶ μητρὶ αὐτοῦ. Εἰς οἰκίαν πότου οὐκ εἰσελεύσῃ σὺ, συγκαθίσαι μετ’ αὐτῶν τοῦ φαγεῖν καὶ πιεῖν. Διότι τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ καταλύω ἐκ τοῦ τόπου τούτου ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν, καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, φωνὴν χαρᾶς, καὶ φωνὴν εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου, καὶ φωνὴν νύμφης. Καὶ ἔσται ὅταν ἀναγγείλῃς τῷ λαῷ τούτῳ ἅπαντα τὰ

ῥήματα ταῦτα, καὶ εἴπωσι πρὸς σὲ, διατί ἐλάλησε Κύριος ἐφ’ ἡμᾶς πάντα τὰ κακὰ ταῦτα; τίς ἡ ἀδικία ἡμῶν; καὶ τίς ἡ ἁμαρτία ἡμῶν, ἣν ἡμάρτομεν ἔναντι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, ἀνθ’ ὧν ἐγκατέλιπόν με οἱ πατέρες ὑμῶν, λέγει Κύριος, καὶ ᾤχοντο ὀπισω θεῶν ἀλλοτρίων, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς, καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς, καὶ ἐμὲ ἐγκατέλιπον, καὶ τὸν νόμον μου οὐκ ἐφυλάξαντο· Καὶ ὑμεῖς ἐπονηρεύσασθε ὑπὲρ τοὺς πατέρας ὑμῶν· καὶ ἰδοὺ ὑμεῖς πορεύεσθε ἕκαστος ὀπίσω τῶν ἀρεστῶν τῆς καρδίας ὑμῶν τῆς πονηρᾶς, τοῦ μὴ ὑπακούειν μου. Καὶ ἀποῤῥίψω ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ταύτης εἰς τὴν γῆν, ἣν οὐκ ᾔδειτε ὑμεῖς καὶ οἱ πατέρες ὑμῶν, καὶ δουλεύσετε ἐκεῖ θεοῖς ἑτέροις, οἳ οὐ δώσουσιν ὑμῖν ἔλεος. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, ζῇ Κύριος ὁ ἀναγαγὼν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἀλλὰ, ζῇ Κύριος, ὃς ἀνήγαγε τὸν οἶκον Ἰσραὴλ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν οὗ ἐξώσθησαν ἐκεῖ· καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν, ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω τοὺς ἁλιεῖς τοὺς πολλοὺς, λέγει Κύριος, καὶ ἁλιευσουσιν αὐτούς· καὶ μετὰ ταῦτα ἀποστέλλω τοὺς πολλοὺς θηρευτὰς, καὶ θηρεύσουσιν αὐτοὺς ἐπάνω παντὸς ὄρους, καὶ ἐπάνω παντὸς βουνοῦ, καὶ ἐκ τῶν τρυμαλιῶν τῶν πετρῶν. Ὅτι οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπὶ πάσας τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐκρύβη τὰ ἀδικήματα αὐτῶν ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν μου. Καὶ ἀνταποδώσω διπλὰς τὰς κακίας αὐτῶν, καὶ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, ἐφ’ αἷς ἐβεβήλωσαν τὴν γῆν μου ἐν τοῖς θνησιμαίοις τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν, ἐν αἷς ἐπλημμέλησαν τὴν κληρονομίαν μου. Κύριε σὺ ἰσχύς μου, καὶ βοήθειά μου, καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέραις κακῶν· πρὸς σὲ ἔθνη ἥξουσιν ἀπ’ ἐσχάτου τῆς γῆς, καὶ ἐροῦσιν, ὡς ψευδῆ ἐκτήσαντο οἱ

πατέρες ἡμῶν εἴδωλα, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς ὠφέλημα; Εἰ ποιήσει ἑαυτῷ ἄνθρωπος θεοὺς, καὶ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί. Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ δηλώσω αὐτοῖς ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ τὴν χεῖρά μου, καὶ γνωριῶ αὐτοῖς τὴν δύναμίν μου, καὶ γνώσονται, ὅτι ὄνομά μοι Κύριος.

# 17

Ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος, ὃς τὴν ἐλπίδα ἔχει ἐπ᾽ ἄνθρωπον, καὶ στηρίσει σάρκα βραχίονος αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ ἀπὸ Κυρίου ἀποστῇ ἡ καρδία αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ὡς ἡ ἀγριομυρίκη ἡ ἐν τῇ ἐρήμῳ, οὐκ ὄψεται ὅταν ἔλθῃ τὰ ἀγαθὰ, καὶ κατασκηνώσει ἐν ἁλίμοις, καὶ ἐν ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἁλμυρᾷ ἥτις οὐ κατοικεῖται. Καὶ εὐλογημένος ὁ ἄνθρωπος, ὃς πέποιθεν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ, καὶ ἔσται Κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ· Καὶ ἔσται ὡς ξύλον εὐθηνοῦν παρ᾽ ὕδατα, καὶ ἐπὶ ἰκμάδα βαλεῖ ῥίζαν αὐτοῦ· οὐ φοβηθήσεται ὅταν ἔλθῃ καῦμα, καὶ ἔσται ἐπ᾽ αὐτῷ στελέχη ἁλσώδη, ἐν ἐνιαυτῷ ἀβροχίας οὐ φοβηθήσεται, καὶ οὐ διαλείψει ποιῶν καρπόν. Βαθεία ἡ καρδία παρὰ πάντα, καὶ ἄνθρωπός ἐστι, καὶ τίς γνώσεται αὐτόν; Ἐγὼ Κύριος ἐτάζων καρδίας, καὶ δοκιμάζων νεφροὺς, τοῦ δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ κατὰ τοὺς καρποὺς τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτοῦ. Ἐφώνησε πέρδιξ, συνήγαγεν ἃ οὐκ ἔτεκε, ποιῶν πλοῦτον αὐτοῦ οὐ μετὰ κρίσεως· ἐν ἡμίσει ἡμερῶν αὐτοῦ ἐγκαταλείψουσιν αὐτὸν, καὶ ἐπ᾽ ἐσχάτων αὐτοῦ ἔσται ἄφρων. Θρόνος δόξης ὑψωμένος, ἁγίασμα ἡμῶν, ὑπομονὴ Ἰσραήλ· Κύριε, πάντες οἱ καταλιπόντες σε καταισχυνθήτωσαν, ἀφεστηκότες ἐπὶ τῆς γῆς γραφήτωσαν, ὅτι ἐγκατέλιπον πηγὴν ζωῆς, τὸν Κύριον.

Ἴασαί με Κύριε, καὶ ἰαθήσομαι· σῶσόν με, καὶ σωθήσομαι, ὅτι καύχημά μου σὺ εἶ. Ἰδοὺ αὐτοὶ λέγουσι πρὸς μὲ, ποῦ ἐστιν ὁ λόγος Κυρίου; ἐλθέτω. Ἐγὼ δὲ οὐκ ἐκοπίασα κατακολουθῶν ὀπίσω σου, καὶ ἡμέραν ἀνθρώπου οὐκ ἐπεθύμησα· σὺ ἐπίστῃ· τὰ ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων μου, πρὸ προσώπου σου ἐστί. Μὴ γενηθῇς μοι εἰς ἀλλοτρίωσιν, φειδόμενός μου ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ. Καταισχυνθήτωσαν οἱ διώκοντές με, καὶ μὴ καταισχυνθείην ἐγώ· πτοηθείησαν αὐτοὶ, καὶ μὴ πτοηθείην ἐγώ· ἐπάγαγε ἐπ’ αὐτοὺς ἡμέραν πονηρὰν, δισσὸν σύντριμμα σύντριψον αὐτούς. Τάδε λέγει Κύριος, βάδισον, καὶ στῆθι ἐν ταῖς πύλαις υἱῶν λαοῦ σου, ἐν αἷς εἰσπορεύονται ἐν αὐταῖς βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἐν αἷς ἐκπορεύονται ἐν αὐταῖς, καὶ ἐν πάσαις ταῖς πύλαις Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, ἀκούσατε τὸν λόγον Κυρίου βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ πᾶσα Ἰουδαία, καὶ πᾶσα Ἰερουσαλὴμ, οἱ εἰσπορευόμενοι ἐν ταῖς πύλαις ταύταις· Τάδε λέγει Κύριος, φυλάσσεσθε τὰς ψυχὰς ὑμῶν, καὶ μὴ αἴρετε βαστάγματα ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ μὴ ἐκπορεύεσθε ταῖς πύλαις Ἰερουσαλὴμ, καὶ μὴ ἐκφέρετε βαστάγματα ἐξ οἰκιῶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ πᾶν ἔργον οὐ ποιήσετε· ἁγιάσατε τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, καθὼς ἐνετειλάμην τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν, τοῦ μὴ ἀκοῦσαί μου, καὶ τοῦ μὴ δέξασθαι παιδείαν. Καὶ ἔσται, ἐὰν εἰσακούσητέ μου, λέγει Κύριος, τοῦ μὴ εἰσφέρειν βαστάγματα διὰ τῶν πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων καὶ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, τοῦ μὴ ποιεῖν πᾶν ἔργον, καὶ εἰσελεύσονται διὰ τῶν πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης βασιλεῖς καὶ ἄρχοντες καθήμενοι ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, καὶ ἐπιβεβηκότες ἐφ’ ἅρμασι καὶ ἵπποις αὐτῶν, αὐτοὶ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, ἄνδρες

Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ κατοικισθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἥξουσιν ἐκ τῶν πόλεων Ἰούδα, καὶ κυκλόθεν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐκ γῆς Βενιαμὶν, καὶ ἐκ γῆς πεδινῆς, καὶ ἐκ τοῦ ὄρους, καὶ ἐκ τῆς πρὸς Νότον, φέροντες ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας καὶ θυμιάματα καὶ μάννα καὶ λίβανον, φέροντες αἴνεσιν εἰς οἶκον Κυρίου. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ ἀκούσητέ μου τοῦ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, τοῦ μὴ αἴρειν βαστάγματα, καὶ μὴ εἰσπορεύεσθαι ταῖς πύλαις Ἰερουσαλὴμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν ταῖς πύλαις αὐτῆς, καὶ καταφάγεται ἄμφοδα Ἰερουσαλὴμ, καὶ οὐ σβεσθήσεται.

# 18

Ὁ λόγος ὁ γενόμενος παρὰ Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, ἀνάστηθι, καὶ κατάβηθι εἰς οἶκον τοῦ κεραμέως, καὶ ἐκεῖ ἀκούσῃ τοὺς λόγους μου. Καὶ κατέβην εἰς τὸν οἶκον τοῦ κεραμέως, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐποίει ἔργον ἐπὶ τῶν λίθων. Καὶ ἔπεσε τὸ ἀγγεῖον, ὃ αὐτὸς ἐποίει ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ· καὶ πάλιν αὐτὸς ἐποίησεν αὐτὸ ἀγγεῖον ἕτερον, καθὼς ἤρεσεν ἐνώπιον αὐτοῦ ποιῆσαι. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Εἰ καθὼς ὁ κεραμεὺς οὗτος οὐ δυνήσομαι τοῦ ποιῆσαι ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ; ἰδοὺ, ὡς ὁ πηλὸς τοῦ κεραμέως, ὑμεῖς ἐστε ἐν χερσί μου. Πέρας λαλήσω ἐπὶ ἔθνος, ἢ ἐπὶ βασιλείαν τοῦ ἐξᾶραι αὐτοὺς, καὶ τοῦ ἀπολλύειν, καὶ ἐπιστραφῇ τὸ ἔθνος ἐκεῖνο ἀπὸ πάντων τῶν κακῶν αὐτῶν, καὶ μετανοήσω περὶ τῶν κακῶν, ὧν ἐλογισάμην, τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. Καὶ πέρας λαλήσω ἐπὶ ἔθνος καὶ βασιλείαν, τοῦ ἀνοικοδομεῖσθαι καὶ τοῦ καταφυτεύεσθαι, καὶ ποιήσωσι τὰ πονηρὰ ἐναντίον μου,

τοῦ μὴ ἀκούειν τῆς φωνῆς μου, καὶ μετανοήσω περὶ τῶν ἀγαθῶν ὧν ἐλάλησα, τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. Καὶ νῦν εἰπὸν πρὸς ἄνδρας Ἰούδα, καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ, ἰδοὺ ἐγὼ πλάσσω ἐφ' ὑμᾶς κακὰ, καὶ λογίζομαι ἐφ' ὑμᾶς λογισμόν· ἀποστραφήτω δὴ ἕκαστος ἀπὸ ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ καλλίονα ποιήσατε τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν. Καὶ εἶπαν, ἀνδριούμεθα, ὅτι ὀπίσω τῶν ἀποστροφῶν ἡμῶν πορευσόμεθα, καὶ ἕκαστος τὰ ἀρεστὰ τῆς καρδίας αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς ποιήσομεν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἐρωτήσατε δὴ ἐν ἔθνεσι, τίς ἤκουσε τοιαῦτα φρικτὰ ἃ ἐποίησε σφόδρα παρθένος Ἰσραήλ; Μὴ ἐκλείψουσιν ἀπὸ πέτρας μαστοὶ, ἢ χιὼν ἀπὸ τοῦ Λιβάνου; μὴ ἐκκλίνῃ ὕδωρ βιαίως ἀνέμῳ φερόμενον; Ὅτι ἐπελάθοντό μου λαός μου, εἰς κενὸν ἐθυμίασαν καὶ ἀσθενήσουσιν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν σχοίνους αἰωνίους, τοῦ ἐπιβῆναι τρίβους οὐκ ἔχοντας ὁδὸν εἰς πορείαν, τοῦ τάξαι τὴν γῆν αὐτῶν εἰς ἀφανισμὸν, καὶ σύριγμα αἰώνιον· πάντες οἱ διαπορευόμενοι δι' αὐτῆς ἐκστήσονται, καὶ κινήσουσι τὴν κεφαλὴν αὐτῶν. Ὡς ἄνεμον καύσωνα διασπερῶ αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον ἐχθρῶν αὐτῶν, δείξω αὐτοῖς ἡμέραν ἀπωλείας αὐτῶν. Καὶ εἶπεν, δεῦτε καὶ λογισώμεθα ἐπὶ Ἱερεμίαν λογισμὸν, ὅτι οὐκ ἀπολεῖται νόμος ἀπὸ ἱερέως, καὶ βουλὴ ἀπὸ συνετοῦ, καὶ λόγος ἀπὸ προφήτου· δεῦτε καὶ πατάξωμεν αὐτὸν ἐν γλώσσῃ, καὶ ἀκουσόμεθα πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου Κύριε, καὶ εἰσάκουσον τῆς φωνῆς τοῦ δικαιώματός μου. Εἰ ἀνταποδίδοται ἀντὶ ἀγαθῶν κακὰ, ὅτι συνελάλησαν ῥήματα κατὰ τῆς ψυχῆς μου, καὶ τὴν κόλασιν αὐτῶν ἔκρυψάν μοι· μνήσθητι ἑστηκότος μου κατὰ πρόσωπόν σου, τοῦ λαλῆσαι ὑπὲρ αὐτῶν ἀγαθὰ, τοῦ ἀποστρέψαι τὸν θυμόν σου ἀπ' αὐτῶν. Διατοῦτο δὸς τοὺς υἱοὺς αὐτῶν εἰς λιμὸν, καὶ ἄθροισον αὐτοὺς εἰς χεῖρας μαχαίρας· γενέσθωσαν αἱ

γυναῖκες αὐτῶν ἄτεκνοι καὶ χῆραι, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν γενέσθωσαν ἀνῃρημένοι θανάτῳ, καὶ οἱ νεανίσκοι αὐτῶν πεπτωκότες μαχαίρᾳ ἐν πολέμῳ. Γενηθήτω κραυγὴ ἐν ταῖς οἰκίαις αὐτῶν· ἐπάξεις ἐπ᾽ αὐτοὺς λῃστὰς ἄφνω, ὅτι ἐνεχείρησαν λόγον εἰς σύλληψίν μου, καὶ παγίδας ἔκρυψαν ἐπ᾽ ἐμέ. Καὶ σὺ, Κύριε, ἔγνως ἅπασαν τὴν βουλὴν αὐτῶν ἐπ᾽ ἐμὲ εἰς θάνατον· μὴ ἀθωώσῃς τὰς ἀδικίας αὐτῶν, καὶ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν ἀπὸ προσώπου σου μὴ ἐξαλείψῃς· γενέσθω ἡ ἀσθένεια αὐτῶν ἐναντίον σου, ἐν καιρῷ θυμοῦ σου ποίησον ἐν αὐτοῖς.

# 19

Τότε εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, βάδισον, καὶ κτῆσαι βικὸν πεπλασμένον ὀστράκινον, καὶ ἄξεις ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ καὶ ἀπὸ τῶν ἱερέων, καὶ ἐξελεύσῃ εἰς τὸ πολυάνδριον υἱῶν τῶν τέκνων αὐτῶν, ὅ ἐστιν ἐπὶ τῶν προθύρων πύλης τῆς Χαρσείθ· καὶ ἀνάγνωθι ἐκεῖ πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς ἂν λαλήσω πρὸς σὲ, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ἀκούσατε τὸν λόγον Κυρίου, βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ οἱ εἰσπορευόμενοι ἐν ταῖς πύλαις ταύταις· τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον κακὰ, ὥστε παντὸς ἀκούοντος αὐτὰ ἠχήσει τὰ ὦτα αὐτοῦ· Ἀνθ᾽ ὧν ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἀπηλλοτρίωσαν τὸν τόπον τοῦτον, καὶ ἐθυμίασαν ἐν αὐτῷ θεοῖς ἀλλοτρίοις, οἷς οὐκ ᾔδεισαν αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν· καὶ οἱ βασιλεῖς Ἰούδα ἔπλησαν τὸν τόπον τοῦτον αἱμάτων ἀθώων, καὶ ᾠκοδόμησαν ὑψηλὰ τῇ Βάαλ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν πυρὶ, ἃ οὐκ ἐνετειλάμην, οὐδὲ διενοήθην ἐν τῇ καρδίᾳ μου. Διατοῦτο ἰδοὺ

ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ οὐ κληθήσεται τῷ τόπῳ τούτῳ ἔτι Διάπτωσις καὶ Πολυάνδριον υἱοῦ Ἐννὼμ, ἀλλ᾽ ἢ Πολυάνδριον τῆς σφαγῆς. Καὶ σφάξω τὴν βουλὴν Ἰούδα, καὶ τὴν βουλὴν Ἰερουσαλὴμ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ καταβαλῶ αὐτοὺς ἐν μαχαίρᾳ ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ ἐν χερσὶ τῶν ζητούντων τὰς ψυχὰς αὐτῶν· καὶ δώσω τοὺς νεκροὺς αὐτῶν εἰς βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· Καὶ κατάξω τὴν πόλιν ταύτην εἰς ἀφανισμὸν, καὶ εἰς συρισμόν· πᾶς ὁ παραπορευόμενος ἐπ᾽ αὐτῆς σκυθρωπάσει, καὶ συριεῖ ὑπὲρ πάσης τῆς πληγῆς αὐτῆς. Καὶ ἔδονται τὰς σάρκας τῶν υἱῶν αὐτῶν, καὶ τὰς σάρκας τῶν θυγατέρων αὐτῶν· καὶ ἕκαστος τὰς σάρκας τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἔδονται ἐν τῇ περιοχῇ, καὶ ἐν τῇ πολιορκίᾳ ᾗ πολιορκήσουσιν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν. Καὶ συντρίψεις τὸν βικὸν κατ᾽ ὀφθαλμοὺς τῶν ἀνδρῶν τῶν ἐκπορευομένων μετὰ σοῦ, καὶ ἐρεῖς, τάδε λέγει Κύριος, οὕτως συντρίψω τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ τὴν πόλιν ταύτην, καθὼς συντρίβεται ἄγγος ὀστράκινον, ὃ οὐ δυνήσεται ἰαθῆναι ἔτι. Οὕτως ποιήσω, λέγει Κύριος, τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν ἐν αὐτῷ, τοῦ δοθῆναι τὴν πόλιν ταύτην, ὡς τὴν διαπίπτουσαν. Καὶ οἶκοι Ἰερουσαλὴμ, καὶ οἶκοι βασιλέων Ἰούδα ἔσονται καθὼς ὁ τόπος ὁ διαπίπτων, ἀπὸ τῶν ἀκαθαρσιῶν αὐτῶν ἐν πάσαις ταῖς οἰκίαις, ἐν αἷς ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐτῶν πάσῃ τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἔσπεισαν σπονδὰς θεοῖς ἀλλοτρίοις. Καὶ ἦλθεν Ἱερεμίας ἀπὸ τῆς διαπτώσεως, οὗ ἀπέστειλεν αὐτὸν Κύριος ἐκεῖ, τοῦ προφητεῦσαι· καὶ ἔστη ἐν τῇ αὐλῇ οἴκου Κυρίου, καὶ εἶπε πρὸς πάντα τὸν λαὸν, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τὰς κώμας αὐτῆς, ἅπαντα τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα ἐπ᾽ αὐτὴν, ὅτι ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν,

τοῦ μὴ εἰσακούειν τῶν ἐντολῶν μου.

# 20

Καὶ ἤκουσε Πασχὼρ ὁ υἱὸς Ἐμμὴρ ὁ ἱερεὺς, καὶ οὗτος ἦν καθεσταμένος ἡγούμενος οἴκου Κυρίου, τοῦ Ἱερεμίου προφητεύοντος τοὺς λόγους τούτους. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν, καὶ ἐνέβαλεν αὐτὸν εἰς τὸν καταράκτην, ὃς ἦν ἐν πύλῃ οἴκου ἀποτεταγμένου τοῦ ὑπερῴου, ὃς ἦν ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἐξήγαγε Πασχὼρ τὸν Ἱερεμίαν ἐκ τοῦ καταράκτου· καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἱερεμίας, οὐχὶ Πασχὼρ ἐκάλεσε τὸ ὄνομά σου, ἀλλ’ ἢ Μέτοικον. Διότι τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμί σε εἰς μετοικίαν σὺν πᾶσι τοῖς φίλοις σου· καὶ πεσοῦνται ἐν μαχαίρᾳ ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται· καὶ σὲ καὶ πάντα Ἰούδα δώσω εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ μετοικιοῦσιν αὐτοὺς, καὶ κατακόψουσιν ἐν μαχαίραις. Καὶ δώσω τὴν πᾶσαν ἰσχὺν τῆς πόλεως ταύτης, καὶ πάντας τοὺς πόνους αὐτῆς, καὶ πάντας τοὺς θησαυροὺς τοῦ βασιλέως Ἰούδα εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ ἄξουσιν αὐτοὺς εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ σὺ καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, πορεύσεσθε ἐν αἰχμαλωσίᾳ, καὶ ἐν Βαβυλῶνι ἀποθανῇ, καὶ ἐκεῖ ταφήσῃ σὺ καὶ πάντες οἱ φίλοι σου, οἷς ἐπροφήτευσας αὐτοῖς ψευδῆ. Ἠπάτησάς με Κύριε, καὶ ἠπατήθην, ἐκράτησας, καὶ ἠδυνάσθης· ἐγενόμην εἰς γέλωτα, πᾶσαν ἡμέραν διετέλεσα μυκτηριζόμενος· Ὅτι πικρῷ λόγῳ μου γελάσομαι, ἀθεσίαν καὶ ταλαιπωρίαν ἐπικαλέσομαι, ὅτι ἐγενήθη λόγος Κυρίου εἰς ὀνειδισμὸν ἐμοὶ καὶ εἰς χλευασμὸν πᾶσαν ἡμέραν μου. Καὶ εἶπα, οὐ μὴ ὀνομάσω τὸ ὄνομα Κυρίου, καὶ οὐ μὴ λαλήσω ἔτι ἐπὶ τῷ

ὀνόματι αὐτοῦ· καὶ ἐγένετο ὡς πῦρ καιόμενον φλέγον ἐν τοῖς ὀστοῖς μου, καὶ παρεῖμαι πάντοθεν, καὶ οὐ δύναμαι φέρειν, ὅτι ἤκουσα ψόγον πολλῶν συναθροιζομένων κυκλόθεν, ἐπισύστητε, καὶ ἐπισυστῶμεν ἐπ᾽ αὐτῷ πάντες ἄνδρες φιλοι αὐτοῦ· τηρήσατε τὴν ἐπίνοιαν αὐτοῦ, εἰ ἀπατηθήσεται, καὶ δυνησόμεθα αὐτῷ, καὶ ληψόμεθα τὴν ἐκδίκησιν ἡμῶν ἐξ αὐτοῦ. Ὁ δὲ κύριος μετ᾽ ἐμοῦ καθὼς μαχητὴς ἰσχύων· διατοῦτο ἐδίωξαν, καὶ νοῆσαι οὐκ ἠδύναντο· ᾐσχύνθησαν σφόδρα, ὅτι οὐκ ἐνόησαν ἀτιμίας αὐτῶν, αἳ δι᾽ αἰῶνος οὐκ ἐπιλησθήσονται. Κύριε δοκιμάζων δίκαια, συνιῶν νεφροὺς καὶ καρδίας, ἴδοιμι τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐν αὐτοῖς, ὅτι πρὸς σὲ ἀπεκάλυψα τὰ ἀπολογήματά μου. Ἄσατε τῷ Κυρίῳ, αἰνέσατε αὐτῷ, ὅτι ἐξείλατο τὴν ψυχὴν πένητος ἐκ χειρὸς πονηρευομένων. Ἐπικατάρατος ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἐτέχθην ἐν αὐτῇ· ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἔτεκέν με ἡ μήτηρ μου, μὴ ἔστω ἐπευκτή. Ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος ὁ εὐαγγελισάμενος τῷ πατρί μου λέγων, ἐτέχθη σοι ἄρσην· εὐφραινόμενος ἔστω ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, ὡς αἱ πόλεις ἃς κατέστρεψε Κύριος ἐν θυμῷ καὶ οὐ μετεμελήθη· ἀκουσάτω κραυγῆς τῷ πρωὶ, καὶ ἀλαλαγμοῦ μεσημβρίας, ὅτι οὐκ ἀπέκτεινέ με ἐν μήτρᾳ, καὶ ἐγένετό μοι ἡ μήτηρ μου τάφος μου, καὶ ἡ μήτρα συλλήψεως αἰωνίας. Ἱνατί τοῦτο ἐξῆλθον ἐκ μήτρας, τοῦ βλέπειν κόπους καὶ πόνους, καὶ διετέλεσαν ἐν αἰσχύνῃ αἱ ἡμέραι μου;

# 21

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΑΡΑ ΚΥΡΙΟΥ ΠΡΟΣ ἸΕΡΕΜΙΑΝ, ΌΤΕ ἈΠΕΣΤΕΙΛΕ ΠΡΟΣ ΑΥΤΟΝ Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΣΕΔΕΚΙΑΣ ΤΟΝ ΠΑΣΧΩΡ

ΥΙΟΝ ΜΕΓΧΙΟΥ, ΚΑΙ ΣΟΦΟΝΙΑΝ ΥΙΟΝ ΒΑΣΑΙΟΥ ΤΟΝ ἹΕΡΕΑ, ΛΕΓΩΝ, ἐπερώτησον περὶ ἡμῶν τὸν Κύριον· ὅτι βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐφέστηκεν ἐφ᾽ ἡμᾶς· εἰ ποιήσει Κύριος κατὰ πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ, καὶ ἀπελεύσεται ἀφ᾽ ἡμῶν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ἱερεμίας, οὕτως ἐρεῖτε πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ μεταστρέφω τὰ ὅπλα τὰ πολεμικὰ, ἐν οἷς ὑμεῖς πολεμεῖτε ἐν αὐτοῖς πρὸς τοὺς Χαλδαίους τοὺς συγκεκλεικότας ὑμᾶς ἔξωθεν τοῦ τείχους· καὶ συνάξω αὐτοὺς εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως ταύτης, καὶ πολεμήσω ἐγὼ ὑμᾶς ἐν χειρὶ ἐκτεταμένῃ καὶ ἐν βραχίονι κραταιῷ μετὰ θυμοῦ καὶ ὀργῆς μεγάλης. Καὶ πατάξω πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, τοὺς ἀνθρώπους καὶ τὰ κτήνη ἐν θανάτῳ μεγάλῳ, καὶ ἀποθανοῦνται. Καὶ μετὰ ταῦτα οὕτως λέγει Κύριος, δώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τὸν λαὸν καταλειφθέντα ἐν τῇ πόλει ταύτῃ ἀπὸ τοῦ θανάτου καὶ ἀπὸ τοῦ λιμοῦ καὶ ἀπὸ τῆς μαχαίρας, εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, τῶν ζητούντων τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ κατακόψουσιν αὐτοὺς ἐν στόματι μαχαίρας· οὐ φείσομαι ἐπ᾽ αὐτοῖς, καὶ οὐ μὴ οἰκτειρήσω αὐτούς. Καὶ πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον ἐρεῖς, τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα πρὸ προσώπου ὑμῶν τὴν ὁδὸν τῆς ζωῆς, καὶ τὴν ὁδὸν τοῦ θανάτου. Ὁ καθήμενος ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ· καὶ ὁ ἐκπορευόμενος προσχωρῆσαι πρὸς τοὺς Χαλδαίους τοὺς συγκεκλεικότας ὑμᾶς, ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς σκῦλα, καὶ ζήσεται. Διότι ἐστήρικα τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην εἰς κακὰ, καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος παραδοθήσεται, καὶ κατακαύσει αὐτὴν ἐν πυρί. Ὁ οἶκος βασιλέως Ἰούδα, ἀκούσατε λόγον Κυρίου. Οἶκος Δαυὶδ, τάδε λέγει Κύριος, κρίνατε πρωΐ κρίμα, καὶ κατευθύνατε, καὶ ἐξέλεσθε

διηρπασμένον ἐκ χειρὸς ἀδικοῦντος αὐτὸν, ὅπως μὴ ἀναφθῇ ὡς πῦρ ἡ ὀργή μου, καὶ καυθήσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὸν κατοικοῦντα τὴν κοιλάδα σὸρ, τὴν πεδεινὴν, τοὺς λέγοντας, τίς πτοήσει ἡμᾶς; ἢ τίς εἰσελεύσεται πρὸς τὸ κατοικητήριον ἡμῶν; Καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ δρυμῷ αὐτῆς, καὶ ἔδεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς.

# 22

Τάδε λέγει Κύριος, πορεύου καὶ κατάβηθι εἰς τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως Ἰούδα, καὶ λαλήσεις ἐκεῖ τὸν λόγον τοῦτον, καὶ ἐρεῖς, Ἄκουε λόγον Κυρίου βασιλεῦ Ἰούδα, ὁ καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, σὺ καὶ ὁ οἶκός σου καὶ ὁ λαός σου, καὶ οἱ εἰσπορευόμενοι ταῖς πύλαις ταύταις· Τάδε λέγει Κύριος, ποιεῖτε κρίσιν καὶ δικαιοσύνην, καὶ ἐξαιρεῖσθε διηρπασμένον ἐκ χειρὸς ἀδικοῦντος αὐτὸν, καὶ προσήλυτον καὶ ὀρφανὸν καὶ χήραν μὴ καταδυναστεύετε, καὶ μὴ ἀσεβεῖτε, καὶ αἷμα ἀθῶον μὴ ἐκχέητε ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. Διότι ἐὰν ποιοῦντες ποιήσητε τὸν λόγον τοῦτον, καὶ εἰσελεύσονται ἐν ταῖς πύλαις τοῦ οἴκου τούτου βασιλεῖς καθήμενοι ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, καὶ ἐπιβεβηκότες ἐφ’ ἁρμάτων καὶ ἵππων, αὐτοὶ καὶ οἱ παῖδες αὐτῶν, καὶ ὁ λαὸς αὐτῶν. Ἐὰν δὲ μὴ ποιήσητε τοὺς λόγους τούτους, κατ’ ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει Κύριος, ὅτι εἰς ἐρήμωσιν ἔσται ὁ οἶκος οὗτος. Ὅτι τάδε λέγει Κύριος κατὰ τοῦ οἴκου βασιλέως Ἰούδα, Γαλαὰδ σύ μοι ἀρχὴ τοῦ Λιβάνου, ἐὰν μὴ θῶ σε εἰς ἔρημον, πόλεις μὴ κατοικηθησομένας, καὶ ἐπάξω ἐπὶ σὲ ὀλοθρεύοντα ἄνδρα, καὶ τὸν πέλεκυν αὐτοῦ, καὶ ἐκκόψουσι τὰς ἐκλεκτὰς κέδρους σου, καὶ ἐμβαλοῦσιν εἰς τὸ πῦρ. Καὶ

διελεύσονται ἔθνη διὰ τῆς πόλεως ταύτης, καὶ ἐρεῖ ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, διατί ἐποίησε Κύριος οὕτως τῇ πόλει ταύτῃ τῇ μεγάλῃ; Καὶ ἐροῦσιν, ἀνθ' ὧν ἐγκατέλιπον τὴν διαθήκην Κυρίου Θεοῦ αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν θεοῖς ἀλλοτρίοις, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς. Μὴ κλαίετε τὸν τεθνηκότα, μηδὲ θρηνεῖτε αὐτόν· κλαύσατε κλαυθμῷ τὸν ἐκπορευόμενον, ὅτι οὐκ ἐπιστρέψει ἔτι, οὐδὲ ὄψεται τὴν γῆν πατρίδος αὐτοῦ. Διότι τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ Σελλὴμ υἱὸν Ἰωσία τὸν βασιλεύοντα ἀντὶ Ἰωσίου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ὃς ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου τούτου· οὐκ ἀναστρέψει ἐκεῖ ἔτι, ἀλλ' ἢ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ οὗ μετῴκισα αὐτὸν, ἐκεῖ ἀποθανεῖται, καὶ τὴν γῆν ταύτην οὐκ ὄψεται ἔτι. Ὁ οἰκοδομῶν οἰκίαν αὐτοῦ οὐ μετὰ δικαιοσύνης, καὶ τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ οὐκ ἐν κρίματι, παρὰ τῷ πλησίον αὐτοῦ ἐργᾶται δωρεὰν, καὶ τὸν μισθὸν αὐτοῦ οὐ μὴ ἀποδώσει αὐτῷ. Ὠκοδόμησας σεαυτῷ οἶκον σύμμετρον, ὑπερῷα ῥιπιστὰ διεσταλμένα θυρίσι, καὶ ἐξυλωμένα ἐν κέδρῳ, καὶ κεχρισμένα ἐν μίλτῳ. Μὴ βασιλεύσῃς, ὅτι σὺ παροξυνῇ ἐν Ἄχαζ τῷ πατρί σου; οὐ φάγονται, καὶ οὐ πίονται· βέλτιόν σε ποιεῖν κρίμα καὶ δικαιοσύνην. Οὐκ ἔγνωσαν, οὐκ ἔκριναν κρίσιν ταπεινῷ, οὐδὲ κρίσιν πένητος· οὐ τοῦτό ἐστι τὸ μὴ γνῶναί σε ἐμὲ; λέγει Κύριος. Ἰδοὺ οὐκ εἰσὶν οἱ ὀφθαλμοί σου, οὐδὲ ἡ καρδία σου καλὴ, ἀλλὰ εἰς τὴν πλεονεξίαν σου, καὶ εἰς τὸ αἷμα τὸ ἀθῷον τοῦ ἐκχέαι αὐτὸ, καὶ εἰς ἀδικήματα καὶ εἰς φόνον, τοῦ ποιεῖν αὐτά. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ υἱὸν Ἰωσία βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἐπὶ τὸν ἄνδρα τοῦτον, οὐ κόψονται αὐτὸν, ὦ ἀδελφὲ, οὐδὲ μὴ κλαύσονται αὐτὸν, οἴμοι Κύριε. Ταφὴν ὄνου ταφήσεται, συμψησθεὶς ῥιφήσεται ἐπέκεινα τῆς πύλης Ἱερουσαλήμ. Ἀνάβηθι εἰς τὸν Λίβανον, καὶ κράξον, καὶ εἰς τὴν Βασὰν δὸς τὴν φωνήν σου, καὶ βόησον εἰς τὸ πέρας τῆς θαλάσσης, ὅτι συνετρίβησαν πάντες οἱ ἐρασταί σου. Ἐλάλησα

πρὸς σὲ ἐν τῇ παραπτώσει σου, καὶ εἶπας, οὐκ ἀκούσομαι· αὕτη ἡ ὁδός σου ἐκ νεότητός σου, οὐκ ἤκουσας τῆς φωνῆς μου. Πάντας τοὺς ποιμένας σου ποιμανεῖ ἄνεμος, καὶ οἱ ἐρασταί σου ἐν αἰχμαλωσίᾳ ἐξελεύσονται, ὅτι τότε αἰσχυνθήσῃ καὶ ἀτιμωθήσῃ ἀπὸ πάντων τῶν φιλούντων σε. Κατοικοῦσα ἐν τῷ Λιβάνῳ, ἐννοσσεύουσα ἐν ταῖς κέδροις, καταστενάξεις ἐν τῷ ἐλθεῖν σοι ὀδύνας ὡς τικτούσης. Ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος, ἐὰν γενόμενος γένηται Ἰεχονίας υἱὸς Ἰωακεὶμ βασιλεὺς Ἰούδα ἀποσφράγισμα ἐπὶ τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐκεῖθεν ἐκσπάσω σε, καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ζητούντων τὴν ψυχήν σου, ὧν σὺ εὐλαβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων, καὶ ἀπορῥίψω σε καὶ τὴν μητέρα σου τὴν τεκοῦσάν σε εἰς γῆν, οὗ οὐκ ἐτέχθης ἐκεῖ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε· Εἰς δὲ τὴν γῆν ἣν αὐτοὶ εὔχονται ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν, οὐ μὴ ἀποστρέψωσιν. Ἠτιμώθη Ἰεχονίας ὡς σκεῦος οὗ οὐκ ἔστι χρεία αὐτοῦ, ὅτι ἐξερῥίφη, καὶ ἐξεβλήθη εἰς γῆν ἣν οὐκ ᾔδει. Γῆ, γῆ ἄκουε λόγον Κυρίου, γράψον τὸν ἄνδρα τοῦτον ἐκκήρυκτον ἄνθρωπον, ὅτι οὐ μὴ αὐξηθῇ ἐκ τοῦ σπέρματος αὐτοῦ καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, ἄρχων ἔτι ἐν τῷ Ἰούδα.

# 23

Ὢ ποιμένες οἱ ἀπολλύοντες καὶ διασκορπίζοντες τὰ πρόβατα τῆς νομῆς αὐτῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ἐπὶ τοὺς ποιμαίνοντας τὸν λαόν μου, ὑμεῖς διεσκορπίσατε τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐξώσατε αὐτὰ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθε αὐτὰ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐκδικῶ ἐφ’ ὑμᾶς κατὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν. Καὶ ἐγὼ εἰσδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ μου ἐπὶ πάσης τῆς γῆς, οὗ ἔξωσα αὐτοὺς

ἐκεῖ, καὶ καταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν νομὴν αὐτῶν, καὶ αὐξηθήσονται, καὶ πληθυνθήσονται. Καὶ ἀναστήσω αὐτοῖς ποιμένας, οἳ ποιμανοῦσιν αὐτοὺς, καὶ οὐ φοβηθήσονται ἔτι, οὐδὲ πτοηθήσονται, λέγει Κύριος. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ ἀναστήσω τῷ Δαυὶδ ἀνατολὴν δικαίαν, καὶ βασιλεύσει βασιλεὺς, καὶ συνήσει, καὶ ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς. Ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ καὶ σωθήσεται Ἰούδας, καὶ Ἰσραὴλ κατασκηνώσει πεποιθὼς, καὶ τοῦτο τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ὃ καλέσει αὐτὸν Κύριος, Ἰωσεδὲκ ἐν τοῖς προφήταις. Συνετρίβη ἡ καρδία μου ἐν ἐμοὶ, ἐσαλεύθη πάντα τὰ ὀστᾶ μου, ἐγενήθην ὡς ἀνὴρ συντετριμμένος, καὶ ὡς ἄνθρωπος συνεχόμενος ἀπὸ οἴνου ἀπὸ προσώπου Κυρίου καὶ ἀπὸ προσώπου εὐπρεπείας δόξης αὐτοῦ. Ὅτι ἀπὸ προσώπου τούτων ἐπένθησεν ἡ γῆ, ἐξηράνθησαν αἱ νομαὶ τῆς ἐρήμου· καὶ ἐγένετο ὁ δρόμος αὐτῶν πονηρὸς, καὶ ἡ ἰσχὺς αὐτῶν οὕτως. Ὅτι ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐμολύνθησαν, καὶ ἐν τῷ οἴκῳ μου εἶδον πονηρίας αὐτῶν. Διατοῦτο γενέσθω ἡ ὁδὸς αὐτῶν αὐτοῖς εἰς ὀλίσθημα ἐν γνόφῳ, καὶ ὑποσκελισθήσονται, καὶ πεσοῦνται ἐν αὐτῇ· διότι ἐπάξω ἐπ’ αὐτοὺς κακὰ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν. Καὶ ἐν τοῖς προφήταις Σαμαρείας εἶδον ἀνομήματα· ἐπροφήτευσαν διὰ τῆς Βάαλ, καὶ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. Καὶ ἐν τοῖς προφήταις Ἱερουσαλὴμ ἑώρακα φρικτὰ, μοιχωμένους, καὶ πορευομένους ἐν ψεύδεσι, καὶ ἀντιλαμβανομένους χειρῶν πολλῶν, τοῦ μὴ ἀποστραφῆναι ἕκαστον ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς· ἐγενήθησάν μοι πάντες ὡς Σόδομα, καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν ὥσπερ Γόμορρα. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ψωμιῶ αὐτοὺς ὀδύνην, καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ πικρὸν, ὅτι ἀπὸ τῶν προφητῶν Ἱερουσαλὴμ ἐξῆλθε μολυσμὸς πάσῃ τῇ γῇ. Οὕτως λέγει Κύριος παντοκράτωρ, μὴ

ἀκούετε τοὺς λόγους τῶν προφητῶν, ὅτι ματαιοῦσιν ἑαυτοῖς ὅρασιν, ἀπὸ καρδίας αὐτῶν λαλοῦσι, καὶ οὐκ ἀπὸ στόματος Κυρίου. Λέγουσι τοῖς ἀπωθουμένοις τὸν λόγον Κυρίου, εἰρήνη ἔσται ὑμῖν, καὶ πᾶσι τοῖς πορευομένοις τοῖς θελήμασιν αὐτῶν, καὶ παντὶ τῷ πορευομένῳ πλάνῃ καρδίας αὐτοῦ, εἶπαν, οὐχ ἥξει ἐπὶ σὲ κακά. Ὅτι τίς ἔστη ἐν ὑποστήματι Κυρίου, καὶ εἶδε τὸν λόγον αὐτοῦ; τίς ἠνωτίσατο, καὶ ἤκουσεν; Ἰδοὺ σεισμὸς παρὰ Κυρίου, καὶ ὀργὴ ἐκπορεύεται εἰς συσσεισμὸν, συστρεφομένη ἐπὶ τοὺς ἀσεβεῖς ἥξει. Καὶ οὐκ ἔτι ἀποστρέψει ὁ θυμὸς Κυρίου, ἕως ποιήσῃ αὐτὸ, καὶ ἕως ἂν στήσῃ αὐτὸ, ἀπὸ ἐγχειρήματος καρδίας αὐτοῦ· ἐπ’ ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν νοήσουσιν αὐτό. Οὐκ ἀπέστελλον τοὺς προφήτας, καὶ αὐτοὶ ἔτρεχον· οὐδὲ ἐλάλησα πρὸς αὐτοὺς, καὶ αὐτοὶ ἐπροφήτευον. Καὶ εἰ ἔστησαν ἐν τῇ ὑποστάσει μου, καὶ εἰ ἤκουσαν τῶν λόγων μου, καὶ τὸν λαόν μου ἂν ἀπέστρεφον αὐτοὺς ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. Θεὸς ἐγγίζων ἐγώ εἰμι, λέγει Κύριος, καὶ οὐχὶ Θεὸς πόῤῥωθεν. Εἰ κρυβήσεταί τις ἐν κρυφαίοις, καὶ ἐγὼ οὐκ ὄψομαι αὐτόν; μὴ οὐχὶ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν ἐγὼ πληρῶ; λέγει Κύριος. Ἤκουσα ἃ λαλοῦσιν οἱ προφῆται, ἃ προφητεύουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ψευδῆ λέγοντες, ἐνυπνιασάμην ἐνύπνιον. Ἕως πότε ἔσται ἐν καρδίᾳ τῶν προφητῶν τῶν προφητευόντων ψευδῆ, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτοὺς τὰ θελήματα τῆς καρδίας αὐτῶν, τῶν λογιζομένων τοῦ ἐπιλαθέσθαι τοῦ νόμου μου ἐν τοῖς ἐνυπνίοις αὐτῶν, ἃ διηγοῦντο ἕκαστος τῷ πλησίον αὐτοῦ, καθάπερ ἐπελάθοντο οἱ πατέρες αὐτῶν τοῦ ὀνόματός μου ἐν τῇ Βάαλ; Ὁ προφήτης ἐν ᾧ τὸ ἐνύπνιόν ἐστι, διηγησάσθω τὸ ἐνύπνιον αὐτοῦ, καὶ ἐν ᾧ ὁ λόγος μου πρὸς αὐτὸν, διηγησάσθω τὸν λόγον μου ἐπ’ ἀληθείας· τί τὸ ἄχυρον πρὸς τὸν σῖτον; οὕτως οἱ λόγοι μου, λέγει Κύριος. Οὐκ ἰδοὺ

οἱ λόγοι μου, ὥσπερ πῦρ, λέγει Κύριος, καὶ ὡς πέλυξ κόπτων πέτραν; Ἰδοὺ ἐγὼ διατοῦτο πρὸς τοὺς προφήτας, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς, τοὺς κλέπτοντας τοὺς λόγους μου ἕκαστον παρὰ τοῦ πλησίον αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς ἐκβάλλοντας προφητείας γλώσσης, καὶ νυστάζοντας νυσταγμὸν αὐτῶν. Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς προφητεύοντας ἐνύπνια ψευδῆ, καὶ οὐ διηγοῦντο αὐτὰ, καὶ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου ἐν τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς πλάνοις αὐτῶν, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, καὶ ὠφέλειαν οὐκ ὠφελήσουσι τὸν λαὸν τοῦτον. Καὶ ἐὰν ἐρωτήσωσιν ὁ λαὸς οὗτος, ἢ ἱερεὺς, ἢ προφήτης, τί τὸ λῆμμα Κυρίου; καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, ὑμεῖς ἐστε τὸ λῆμμα, καὶ ῥάξω ὑμᾶς, λέγει Κύριος. Ὁ προφήτης, καὶ οἱ ἱερεῖς, καὶ ὁ λαὸς, οἳ ἂν εἴπωσι, λῆμμα Κυρίου, καὶ ἐκδικήσω τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ. Οὕτως ἐρεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, τί ἀπεκρίθη Κύριος, καὶ τί ἐλάλησε Κύριος; Καὶ λῆμμα Κυρίου μὴ ὀνομάζετε ἔτι, ὅτι τὸ λῆμμα τῷ ἀνθρώπῳ ἔσται ὁ λόγος αὐτοῦ. Καὶ διατί ἐλάλησε Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἄνθ’ ὧν εἴπατε τὸν λόγον τοῦτον, λῆμμα Κυρίου, καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς, λέγων, οὐκ ἐρεῖτε, λῆμμα Κυρίου· διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω, καὶ ῥάσσω ὑμᾶς, καὶ τὴν πόλιν ἣν ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ δώσω ἐφ’ ὑμᾶς ὀνειδισμὸν αἰώνιον, καὶ ἀτιμίαν αἰώνιον, ἥτις οὐκ ἐπιλησθήσεται.

# 24

Ἔδειξέ μοι Κύριος δύο καλάθους σύκων, κειμένους κατὰ

πρόσωπον ναοῦ Κυρίου, μετὰ τὸ ἀποικίσαι Ναβουχοδονόσορ βασιλέα Βαβυλῶνος τὸν Ἰεχονίαν υἱὸν Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, καὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ τοὺς τεχνίτας, καὶ τοὺς δεσμώτας, καὶ τοὺς πλουσίους ἐξ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς εἰς Βαβυλῶνα. Ὁ κάλαθος ὁ εἷς σύκων χρηστῶν σφόδρα, ὡς τὰ σύκα τὰ πρώϊμα· καὶ ὁ κάλαθος ὁ ἕτερος σύκων πονηρῶν σφόδρα, ἃ οὐ βρωθήσεται ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, τί σὺ ὁρᾷς Ἰερεμία; καὶ εἶπα, σύκα· σύκα τὰ χρηστὰ, χρηστὰ λίαν· καὶ τὰ πονηρὰ, πονηρὰ λίαν, ἃ οὐ βρωθήσεται ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε λέγει Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὡς τὰ σύκα τὰ χρηστὰ ταῦτα, οὕτως ἐπιγνώσομαι τοὺς ἀποικισθέντας Ἰουδαίους, οὓς ἐξαπέσταλκα ἐκ τοῦ τόπου τούτου εἰς γῆν Χαλδαίων εἰς ἀγαθά. Καὶ στηριῶ τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπ’ αὐτοὺς εἰς ἀγαθὰ, καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ταύτην εἰς ἀγαθά· καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ καθελῶ αὐτοὺς, καὶ καταφυτεύσω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ἐκτίλω. Καὶ δώσω αὐτοῖς καρδίαν τοῦ εἰδέναι αὐτοὺς ἐμὲ, ὅτι ἐγώ εἰμι Κύριος, καὶ ἔσονταί μου εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεὸν, ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐπ’ ἐμὲ ἐξ ὅλης τῆς καρδίας αὐτῶν. Καὶ ὡς τὰ σύκα τὰ πονηρὰ, ἃ οὐ βρωθήσονται ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν, τάδε λέγει Κύριος, οὕτως παραδώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, καὶ τὸ κατάλοιπον Ἰερουσαλὴμ τοὺς ὑπολελειμμένους ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν Αἰγύπτῳ. Καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς διασκορπισμὸν εἰς πάσας τὰς βασιλείας τῆς γῆς, καὶ ἔσονται εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ εἰς παραβολὴν, καὶ εἰς μῖσος, καὶ εἰς κατάραν ἐν παντὶ τόπῳ οὗ ἔξωσα αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ ἀποστελῶ εἰς αὐτοὺς τὸν λιμὸν, καὶ τὸν θάνατον, καὶ τὴν μάχαιραν, ἕως ἂν ἐκλείπωσιν ἀπὸ τῆς γῆς ἧς ἔδωκα αὐτοῖς.

# 25

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ ἐπὶ πάντα τὸν λαὸν Ἰούδα ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ τοῦ Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ὃν ἐλάλησε πρὸς πάντα τὸν λαὸν Ἰούδα, καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ, λέγων, Ἐν τρισκαιδεκάτῳ ἔτει Ἰωσία υἱοῦ Ἀμὼς βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης εἴκοσι καὶ τρία ἔτη, καὶ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς ὀρθρίζων, καὶ λέγων, καὶ ἀπέστελλον πρὸς ὑμᾶς τοὺς δούλους μου τοὺς προφήτας, ὄρθρου ἀποστέλλων, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε, καὶ οὐ προσέσχετε τοῖς ὠσὶν ὑμῶν, λέγων, ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν, καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς ἧς ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἀπ’ αἰῶνος καὶ ἕως αἰῶνος. Μὴ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς, ὅπως μὴ παροργίζητέ με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ὑμῶν, τοῦ κακῶσαι ὑμᾶς. Καὶ οὐκ ἠκούσατέ μου. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἐπειδὴ οὐκ ἐπιστεύσατε τοῖς λόγοις μου, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, καὶ λήψομαι πατριὰν ἀπὸ Βορῤᾶ, καὶ ἄξω αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, καὶ ἐξερημώσω αὐτοὺς, καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν, καὶ εἰς συριγμὸν, καὶ εἰς ὀνειδισμὸν αἰώνιον. Καὶ ἀπολῶ ἀπ’ αὐτῶν φωνὴν χαρᾶς, καὶ φωνὴν εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου καὶ φωνὴν νύμφης, ὀσμὴν μύρου, καὶ φῶς λύχνου. Καὶ ἔσται πᾶσα ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν, καὶ δουλεύσουσιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἑβδομήκοντα ἔτη. Καὶ ἐν τῷ πληρωθῆναι τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐκδικήσω τὸ ἔθνος ἐκεῖνο, καὶ θήσομαι αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν αἰώνιον, καὶ ἐπάξω ἐπὶ

τὴν γῆν ἐκείνην πάντας τοὺς λόγους μου, οὓς ἐλάλησα κατ᾽ αὐτῆς, πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ· Ἃ ἘΠΡΟΦΗΤΕΥΣΕΝ ἸΕΡΕΜΙΑΣ ἘΠΙ ΤΑ ΎΕΘΝΗ ΤΑ ΑΙΛΑΜ. Τάδε λέγει Κύριος, συνετρίβη τὸ τόξον Αἰλὰμ, ἀρχὴ δυναστείας αὐτῶν. Καὶ ἐπάξω ἐπὶ Αἰλὰμ τέσσαρας ἀνέμους ἐκ τῶν τεσσάρων ἄκρων τοῦ οὐρανοῦ, καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν πᾶσι τοῖς ἀνέμοις τούτοις, καὶ οὐκ ἔσται ἔθνος ὃ οὐχ ἥξει ἐκεῖ, οἱ ἐξωσμένοι Αἰλάμ. Καὶ πτοήσω αὐτοὺς ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, τῶν ζητούντων τὴν ψυχὴν αὐτῶν, καὶ ἐπάξω ἐπ᾽ αὐτοὺς κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ μου, καὶ ἐπαποστελῶ ὀπίσω αὐτῶν τὴν μάχαιράν μου, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτούς. Καὶ θήσω τὸν θρόνον μου ἐν Αἰλὰμ, καὶ ἐξαποστελῶ ἐκεῖθεν βασιλέα καὶ μεγιστᾶνας. Καὶ ἔσται ἐπ᾽ ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν, καὶ ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν Αἰλὰμ, λέγει Κύριος. Ἐν ἀρχῇ βασιλεύοντος Σεδεκίου βασιλέως, ἐγένετο ὁ λόγος οὗτος περὶ Αἰλάμ·

# 26

ΤΗ ΑΙΓΥΠΤΩ ἘΠΙ ΔΥΝΑΜΙΝ ΦΑΡΑΩ ΝΕΧΑΩ ΒΑΣΙΛΕΩΣ ΑΙΓΥΠΤΟΥ, ὃς ἦν ἐπὶ τῷ ποταμῷ Εὐφράτῃ ἐν Χαρμεὶς, ὃν ἐπάταξε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα. Ἀναλάβετε ὅπλα καὶ ἀσπίδας, καὶ προσαγάγετε εἰς πόλεμον, καὶ ἐπισάξατε τοὺς ἵππους, ἐπίβητε οἱ ἱππεῖς, καὶ κατάστητε ἐν ταῖς περικεφαλαίαις ὑμῶν, προσβάλετε τὰ δόρατα, καὶ ἐνδύσασθε τοὺς θώρακας ὑμῶν. Τί ὅτι αὐτοὶ πτοοῦνται, καὶ ἀποχωροῦσιν εἰς τὸ ὀπίσω; διότι οἱ ἰσχυροὶ αὐτῶν κοπήσονται, φυγῇ ἔφυγον, καὶ οὐκ ἀνέστρεψαν περιεχόμενοι

κυκλόθεν, λέγει Κύριος. Μὴ φευγέτω ὁ κοῦφος, καὶ μὴ ἀνασωζέσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐπὶ Βοῤῥᾶν· τὰ παρὰ τὸν Εὐφράτην ἠσθένησε, καὶ πεπτώκασι. Τίς οὗτος ὡς ποταμὸς ἀναβήσεται, καὶ ὡς ποταμοὶ κυμαίνουσιν ὕδωρ; Ὕδατα Αἰγύπτου ὡς ποταμὸς ἀναβήσεται· καὶ εἶπεν, ἀναβήσομαι, καὶ κατακαλύψω τὴν γῆν, καὶ ἀπολῶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Ἐπίβητε ἐπὶ τοὺς ἵππους, παρασκευάσατε τὰ ἅρματα, ἐξέλθατε οἱ μαχηταὶ Αἰθιόπων, καὶ Λίβυες καθωπλισμένοι ὅπλοις, καὶ Λυδοὶ ἀνάβητε, ἐντείνατε τόξον. Καὶ ἡ ἡμέρα ἐκείνη Κυρίῳ τῷ Θεῷ ἡμῶν ἡμέρα ἐκδικήσεως, τοῦ ἐκδικῆσαι τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ· καὶ καταφάγεται ἡ μάχαιρα Κυρίου, καὶ ἐμπλησθήσεται, καὶ μεθυσθήσεται ἀπὸ τοῦ αἵματος αὐτῶν, ὅτι θυσία τῷ Κυρίῳ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ ἐπὶ ποταμῷ Εὐφράτῃ. Ἀνάβηθι Γαλαὰδ, καὶ λάβε ῥητίνην τῇ παρθένῳ θυγατρὶ Αἰγύπτου· εἰς τὸ κενὸν ἐπλήθυνας ἰάματά σου, ὠφέλεια οὐκ ἔστιν ἐν σοί. Ἤκουσαν ἔθνη φωνήν σου, καὶ τῆς κραυγῆς σου ἐπλήσθη ἡ γῆ, ὅτι μαχητὴς πρὸς μαχητὴν ἠσθένησαν, ἐπιτοαυτὸ ἔπεσαν ἀμφότεροι. Ἃ ἐΕΛΑΛΗΣΕ ΚΥΡΙΟΣ ἐν χειρὶ Ἱερεμίου, τοῦ ἐλθεῖν τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος τοῦ κόψαι γῆν Αἰγύπτου. Ἀναγγείλατε εἰς Μαγδωλὸν, καὶ παραγγείλατε εἰς Μέμφιν· εἴπατε, ἐπίστηθι, καὶ ἑτοίμασον, ὅτι κατέφαγε μάχαιρα τὴν σμίλακά σου. Διατί ἔφυγεν ἀπὸ σοῦ ὁ Ἄπις; ὁ μόσχος ὁ ἐκλεκτός σου οὐκ ἔμεινεν· ὅτι Κύριος παρέλυσεν αὐτόν. Καὶ τὸ πλῆθός σου ἠσθένησε, καὶ ἔπεσε· καὶ ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ ἐλάλει, ἀναστῶμεν, καὶ ἀναστρέψωμεν πρὸς τὸν λαὸν ἡμῶν εἰς τὴν πατρίδα ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου μαχαίρας Ἑλληνικῆς. Καλέσατε τὸ ὄνομα Φαραὼ Νεχαὼ βασιλέως Αἰγύπτου, Σαὼν ἐσβειὲ μωήδ. Ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς, ὅτι ὡς τὸ Ἰταβύριον ἐν τοῖς ὄρεσι, καὶ ὡς ὁ Κάρμηλος ὁ ἐν τῇ θαλάσσῃ, ἥξει. Σκεύη ἀποικισμοῦ ποίησον σεαυτῇ κατοικοῦσα θύγατερ

Αἰγύπτου, ὅτι Μέμφις εἰς ἀφανισμὸν ἔσται, καὶ κληθήσεται Οὐαὶ, διὰ τὸ μὴ ὑπάρχειν κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Δάμαλις κεκαλλωπισμένη Αἴγυπτος, ἀπόσπασμα ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἦλθεν ἐπ’ αὐτὴν, καὶ οἱ μισθωτοὶ αὐτῆς ἐν αὐτῇ, ὥσπερ μόσχοι σιτευτοὶ τρεφόμενοι ἐν αὐτῇ· διότι καὶ αὐτοὶ ἐπεστράφησαν, καὶ ἔφυγον ὁμοθυμαδόν· οὐκ ἔστησαν, ὅτι ἡμέρα ἀπωλείας ἦλθεν ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ καιρὸς ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ αὐτῶν ὡς ὄφεως συρίζοντος, ὅτι ἐν ἄμμῳ πορεύονται, ἐν ἀξίναις ἥξουσιν ἐπ’ αὐτήν· ὡς κόπτοντες ξύλα ἐκκόψουσι τὸν δρυμὸν αὐτῆς, λέγει Κύριος, ὅτι οὐ μὴ εἰκασθῇ, ὅτι πληθύνει ὑπὲρ ἀκρίδα, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἀριθμός. Κατῃσχύνθη ἡ θυγάτηρ Αἰγύπτου, παρεδόθη εἰς χεῖρας λαοῦ ἀπὸ Βοῤῥᾶ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκδικῶ τὸν Ἀμμὼν τὸν υἱὸν αὐτῆς ἐπὶ Φαραὼ, καὶ ἐπὶ τοὺς πεποιθότας ἐπ’ αὐτῷ. Σὺ δὲ μὴ φοβηθῇς δοῦλός μου Ἰακὼβ, μηδὲ πτοηθῇς Ἰσραήλ· διότι ἐγὼ ἰδοὺ σώζων σε μακρόθεν, καὶ τὸ σπέρμα σου ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας αὐτῶν· καὶ ἀναστρέψει Ἰακὼβ, καὶ ἡσυχάσει καὶ ὑπνώσει, καὶ οὐκ ἔσται ὁ παρενοχλῶν αὐτόν. Μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, λέγει Κύριος, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι· ἡ ἀπτόητος καὶ τρυφερὰ παρεδόθη· ὅτι ποιήσω ἔθνει συντέλειαν ἐν παντὶ ἔθνει εἰς οὓς ἔξωσά σε ἐκεῖ, σὲ δὲ οὐ μὴ ποιήσω ἐκλιπεῖν, καὶ παιδεύσω σε εἰς κρίμα, καὶ ἀθῶον οὐκ ἀθωώσω σε.

# 27

ΛΟΓΟΣ ΚΥΡΙΟΥ Ὃν ἘΛΑΛΗΣΕΝ ἘΠΙ ΒΑΒΥΛΩΝΑ. Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἀκουστὰ ποιήσατε, καὶ μὴ κρύψητε· εἴπατε, ἑάλωκε Βαβυλὼν, κατῃσχύνθη Βῆλος, ἡ ἀπτόητος, ἡ τρυφερὰ παρεδόθη

Μαιρωδὰχ, ὅτι ἀνέβη ἐπ’ αὐτὴν ἔθνος ἀπὸ Βορῥᾶ, οὗτος θήσει τὴν γῆν αὐτῆς εἰς ἀφανισμὸν, καὶ οὐκ ἔσται ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ ἀπὸ ἀνθρώπου καὶ ἕως κτήνους. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἥξουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ αὐτοὶ, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα ἐπὶ τὸ αὐτὸ, βαδίζοντες καὶ κλαίοντες πορεύσονται, τὸν Κύριον Θεὸν αὐτῶν ζητοῦντες. Ἔως Σιὼν ἐρωτήσουσι τὴν ὁδὸν, ὧδε γὰρ τὸ πρόσωπον αὐτῶν δώσουσι, καὶ ἥξουσι, καὶ καταφεύξονται πρὸς Κύριον τὸν Θεόν· διαθήκη γὰρ αἰώνιος οὐκ ἐπιλησθήσεται. Πρόβατα ἀπολωλότα ἐγενήθη ὁ λαός μου, οἱ ποιμένες αὐτῶν ἔξωσαν αὐτοὺς, ἐπὶ τὰ ὄρη ἀπεπλάνησαν αὐτοὺς, ἐξ ὄρους ἐπὶ βουνὸν ᾤχοντο, ἐπελάθοντο κοίτης αὐτῶν. Πάντες οἱ εὑρίσκοντες αὐτοὺς, ἀνήλισκον αὐτούς· οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν εἶπαν, Μὴ ἀνῶμεν αὐτοὺς, ἀνθ’ ὧν ἥμαρτον τῷ Κυρίῳ· νομὴ δικαιοσύνης τῷ συναγαγόντι τοὺς πατέρας αὐτῶν. Ἀπαλλοτριώθητε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος καὶ ἀπὸ γῆς Χαλδαίων, καὶ ἐξέλθατε, καὶ γένεσθε ὥσπερ δράκοντες κατὰ πρόσωπον προβάτων. Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα συναγωγὰς ἐθνῶν ἐκ γῆς Βορῥᾶ, καὶ παρατάξονται αὐτῇ· ἐκεῖθεν ἁλώσεται, ὡς βολὶς μαχητοῦ συνετοῦ οὐκ ἐπιστρέψει κενή. Καὶ ἔσται ἡ Χαλδαία εἰς προνομὴν, πάντες οἱ προνομεύοντες αὐτὴν ἐμπλησθήσονται. Ὅτι ηὐφραίνεσθε, καὶ κατεκαυχᾶσθε, διαρπάζοντες τὴν κληρονομίαν μου, διότι ἐσκιρτᾶτε, ὡς βοΐδια ἐν βοτάνῃ, καὶ ἐκερατίζετε ὡς ταῦροι. Ἠσχύνθη ἡ μήτηρ ὑμῶν σφόδρα, ἐνετράπη ἡ τεκοῦσα ὑμᾶς μήτηρ ἐπ’ ἀγαθὰ, ἐσχάτη ἐθνῶν, ἔρημος ἀπὸ ὀργῆς Κυρίου, οὐ κατοικηθήσεται καὶ ἔσται εἰς ἀφανισμὸν πᾶσα· καὶ πᾶς ὁ διοδεύων διὰ Βαβυλῶνος σκυθρωπάσει, καὶ συριοῦσιν ἐπὶ πᾶσαν τὴν πληγὴν αὐτῆς. Παρατάξασθε ἐπὶ Βαβυλῶνα κύκλῳ πάντες τείνοντες τόξον, τοξεύσατε ἐπ’ αὐτὴν, μὴ φείσησθε ἐπὶ τοῖς τοξεύμασιν

ὑμῶν, καὶ κατακρατήσατε αὐτήν· παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτῆς, ἔπεσαν αἱ ἐπάλξεις αὐτῆς, καὶ κατεσκάφη τὸ τεῖχος αὐτῆς, ὅτι ἐκδίκησις παρὰ Θεοῦ ἐστιν· ἐκδικεῖτε ἐπ᾽ αὐτὴν, καθὼς ἐποίησε, ποιήσατε αὐτῇ. Ἐξολοθρεύσασθε σπέρμα ἐκ Βαβυλῶνος, κατέχοντα δρέπανον ἐν καιρῷ θερισμοῦ· ἀπὸ προσώπου μαχαίρας Ἑλληνικῆς, ἕκαστος εἰς τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀποστρέψουσι, καὶ ἕκαστος εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ φεύξεται. Πρόβατον πλανώμενον Ἰσραὴλ, λέοντες ἔξωσαν αὐτόν· ὁ πρῶτος ἔφαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Ἀσσοὺρ, καὶ οὗτος ὕστερον τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ βασιλεὺς Βαβυλῶνος. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐκδικῶ ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ ἐπὶ τὴν γῆν αὐτοῦ, καθὼς ἐξεδίκησα ἐπὶ τὸν βασιλέα Ἀσσούρ. Καὶ ἀποκαταστήσω τὸν Ἰσραὴλ εἰς τὴν νομὴν αὐτοῦ, καὶ νεμήσεται ἐν τῷ Καρμήλῳ, καὶ ἐν ὄρει Ἐφραΐμ, καὶ ἐν τῷ Γαλαὰδ, καὶ πλησθήσεται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ζητήσουσι τὴν ἀδικίαν Ἰσραὴλ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, καὶ τὰς ἁμαρτίας Ἰούδα, καὶ οὐ μὴ εὑρεθῶσιν, ὅτι ἵλεως ἔσομαι τοῖς ὑπολελειμμένοις ἐπὶ τῆς γῆς, λέγει Κύριος. Πικρῶς ἐπίβηθι ἐπ᾽ αὐτὴν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐπ᾽ αὐτήν· ἐκδίκησον μάχαιρα, καὶ ἀφάνισον, λέγει Κύριος, καὶ ποίει κατὰ πάντα ὅσα ἐντέλλομαί σοι. Φωνὴ πολέμου καὶ συντριβὴ μεγάλη ἐν γῇ Χαλδαίων. Πῶς ἐκλάσθη καὶ συνετρίβη ἡ σφυρὰ πάσης τῆς γῆς; πῶς ἐγενήθη εἰς ἀφανισμὸν Βαβυλὼν ἐν ἔθνεσιν; Ἐπιβήσονταί σοι, καὶ οὐ γνώσῃ, ὡς Βαβυλὼν καὶ ἁλώσῃ· εὑρέθης, καὶ ἐλήφθης, ὅτι τῷ Κυρίῳ ἀντέστης. Ἤνοιξε Κύριος τὸν θησαυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἐξήνεγκε τὰ σκεύη ὀργῆς αὐτοῦ, ὅτι ἔργον τῷ Κυρίῳ Θεῷ ἐν γῇ Χαλδαίων, ὅτι ἐληλύθασιν οἱ καιροὶ αὐτῆς· ἀνοίξατε τὰς ἀποθήκας αὐτῆς, ἐρευνήσατε αὐτὴν ὡς σπήλαιον, καὶ ἐξολοθρεύσατε αὐτήν· μὴ γενέσθω αὐτῆς κατάλειμμα·

Ἀναξηράνατε αὐτῆς πάντας τοὺς καρποὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς σφαγήν· οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα αὐτῶν, καὶ καιρὸς ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ φευγόντων, καὶ ἀνασωζομένων ἐκ γῆς Βαβυλῶνος, τοῦ ἀναγγεῖλαι εἰς Σιὼν τὴν ἐκδίκησιν παρὰ Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν. Παραγγείλατε ἐπὶ Βαβυλῶνα πολλοῖς, παντὶ ἐντείνοντι τόξον, παρεμβάλλετε ἐπ’ αὐτὴν κυκλόθεν· μὴ ἔστω αὐτῆς ἀνασωζόμενος· ἀνταπόδοτε αὐτῇ κατὰ τὰ ἔργα αὐτῆς, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε, ποιήσατε αὐτῇ, ὅτι πρὸς Κύριον ἀντέστη Θεὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Διατοῦτο πεσοῦνται οἱ νεανίσκοι αὐτῆς ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ αὐτῆς ῥιφήσονται, εἶπε Κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ τὴν ὑβρίστριαν, λέγει Κύριος· ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα σου, καὶ ὁ καιρὸς ἐκδικήσεως σου. Καὶ ἀσθενήσει ἡ ὕβρις σου, καὶ πεσεῖται· καὶ οὐδεὶς ἔσται ὁ ἀνιστῶν αὐτήν· καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ δρυμῷ αὐτῆς, καὶ καταφάγεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς. Τάδε λέγει Κύριος, καταδεδυνάστευνται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα, ἅμα πάντες οἱ αἰχμαλωτεύσαντες αὐτοὺς, κατεδυνάστευσαν αὐτοὺς, ὅτι οὐκ ἠθέλησαν ἐξαποστεῖλαι αὐτούς. Καὶ ὁ λυτρούμενος αὐτοὺς ἰσχυρὸς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ· κρίσιν κρινεῖ πρὸς τοὺς ἀντιδίκους αὐτοῦ, ὅπως ἐξάρῃ τὴν γῆν· καὶ παροξυνεῖ τοῖς κατοικοῦσι Βαβυλῶνα, μάχαιραν ἐπὶ τοὺς Χαλδαίους, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Βαβυλῶνα, καὶ ἐπὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τοὺς συνετοὺς αὐτῆς· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῆς, καὶ παραλυθήσονται· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς ἵππους αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὸν σύμμικτον τὸν ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ ἔσονται ὡσεὶ γυναῖκες· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς θησαυροὺς, καὶ διασκορπισθήσονται ἐπὶ τῷ ὕδατι αὐτῆς, καὶ καταισχυνθήσονται, ὅτι γῆ τῶν γλυπτῶν ἐστι, καὶ ἐν ταῖς νήσοις,

οὗ κατεκαυχῶντο. Διατοῦτο κατοικήσουσιν ἰνδάλματα ἐν ταῖς νήσοις, καὶ κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ θυγατέρες σειρήνων, οὐ μὴ κατοικηθῇ οὐκέτι εἰς τὸν αἰῶνα. Καθὼς κατέστρεψεν ὁ Θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ τὰς ὁμορούσας αὐταῖς, εἶπε Κύριος, οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ παροικήσει ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. Ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ ἔθνος μέγα, καὶ βασιλεῖς πολλοὶ ἐξεγερθήσονται ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς, τόξον καὶ ἐγχειρίδιον ἔχοντες, ἰταμός ἐστι, καὶ οὐ μὴ ἐλεήσῃ· ἡ φωνὴ αὐτῶν ὡς θάλασσα ἠχήσει, ἐφ᾽ ἵπποις ἱππάσονται, παρεσκευασμένοι, ὥσπερ πῦρ, εἰς πόλεμον, πρὸς σὲ, θύγατερ Βαβυλῶνος. Ἤκουσε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτοῦ· θλῖψις κατεκράτησεν αὐτοῦ, ὠδῖνες ὡς τικτούσης. Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου εἰς Γαιθὰν, ὅτι ταχέως ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, καὶ πάντα νεανίσκον ἐπ᾽ αὐτὴν ἐπιστήσω· ὅτι τίς ὥσπερ ἐγώ; καὶ τίς ἀντιστήσεταί μοι; καὶ τίς οὗτος ποιμὴν, ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν μου; Διατοῦτο ἀκούσατε τὴν βουλὴν Κυρίου ἣν βεβούλευται ἐπὶ Βαβυλῶνα, καὶ λογισμοὺς αὐτοῦ οὓς ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους· ἐὰν μὴ διαφθαρῇ τὰ ἀρνία τῶν προβάτων αὐτῶν, ἐὰν μὴ ἀφανισθῇ νομὴ ἀπ᾽ αὐτῶν. Ὅτι ἀπὸ φωνῆς ἁλώσεως Βαβυλῶνος σεισθήσεται ἡ γῆ, καὶ κραυγὴ ἐν ἔθνεσιν ἀκουσθήσεται.

# 28

Τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους ἄνεμον καύσωνα διαφθείροντα. Καὶ ἐξαποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα ὑβριστὰς, καὶ καθυβρίσουσιν αὐτὴν, καὶ

λυμανοῦνται τὴν γῆν αὐτῆς· οὐαὶ ἐπὶ Βαβυλῶνα κυκλόθεν ἐν ἡμέρᾳ κακώσεως αὐτῆς. Τεινέτω ὁ τείνων τὸ τόξον αὐτοῦ, καὶ περιθέσθω ᾧ ἐστιν ὅπλα αὐτοῦ, καὶ μὴ φείσησθε ἐπὶ τοὺς νεανίσκους αὐτῆς, καὶ ἀφανίσατε πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτῆς. Καὶ πεσοῦνται τραυματίαι ἐν γῇ Χαλδαίων, καὶ κατακεκεντημένοι ἔξωθεν αὐτῆς. Διότι οὐκ ἐχήρευσεν Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδας ἀπὸ Θεοῦ αὐτῶν, ἀπὸ Κυρίου παντοκράτορος, ὅτι ἡ γῆ αὐτῶν ἐπλήσθη ἀδικίας ἀπὸ τῶν ἁγίων Ἰσραήλ. Φεύγετε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος, καὶ ἀνασώζετε ἕκαστος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ μὴ ἀπορῥιφῆτε ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτῆς, ὅτι καιρὸς ἐκδικήσεως αὐτῆς ἐστι παρὰ Κυρίου, ἀνταπόδομα αὐτὸς ἀνταποδίδωσιν αὐτῇ. Ποτήριον χρυσοῦν Βαβυλὼν ἐν χειρὶ Κυρίου, μεθύσκον πᾶσαν τὴν γῆν, ἀπὸ τοῦ οἴνου αὐτῆς ἐπίοσαν ἔθνη, διατοῦτο ἐσαλεύθησαν. Καὶ ἄφνω ἔπεσε Βαβυλὼν, καὶ συνετρίβη· θρηνεῖτε αὐτὴν, λάβετε ῥητίνην τῇ διαφθορᾷ αὐτῆς, εἴπως ἰαθήσεται. Ἰατρεύσαμεν τὴν Βαβυλῶνα, καὶ οὐκ ἰάθη· ἐγκαταλίπωμεν αὐτὴν, καὶ ἀπέλθωμεν ἕκαστος εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, ὅτι ἤγγικεν εἰς οὐρανὸν τὸ κρίμα αὐτῆς, ἐξῆρεν ἕως τῶν ἄστρων. Ἐξήνεγκε Κύριος τὸ κρίμα αὐτοῦ· δεῦτε, καὶ ἀναγγείλωμεν ἐν Σιὼν τὰ ἔργα Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Παρασκευάζετε τὰ τοξεύματα, πληροῦτε τὰς φαρέτρας· ἤγειρε Κύριος τὸ πνεῦμα βασιλέως Μήδων, ὅτι εἰς Βαβυλῶνα ἡ ὀργὴ αὐτοῦ, τοῦ ἐξολοθρεῦσαι αὐτὴν, ὅτι ἐκδίκησις Κυρίου ἐστὶν, ἐκδίκησις λαοῦ αὐτοῦ ἐστιν. Ἐπὶ τειχέων Βαβυλῶνος ἄρατε σημεῖον, ἐπιστήσατε φαρέτρας, ἐγείρατε φυλακὰς, ἑτοιμάσατε ὅπλα, ὅτι ἐνεχείρισε, καὶ ποιήσει Κύριος ἃ ἐλάλησεν ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Βαβυλῶνα, κατασκηνοῦντας ἐφ’ ὕδασι πολλοῖς, καὶ ἐπὶ πλήθει θησαυρῶν αὐτῆς· ἥκει τὸ πέρας σου ἀληθῶς εἰς τὰ σπλάγχνα σου. Ὅτι ὤμοσε Κύριος κατὰ τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, διότι

πληρώσω σε ἀνθρώπων ὡσεὶ ἀκρίδων, καὶ φθέγξονται ἐπὶ σὲ οἱ καταβαίνοντες. Κύριος ποιῶν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ἑτοιμάζων οἰκουμένην ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, ἐν τῇ συνέσει αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν ουρανὸν, εἰς φωνὴν ἔθετο ἦχος ὕδατος ἐν οὐρανῷ, καὶ ἀνήγαγε νεφέλας ἀπ’ ἐσχάτου τῆς γῆς· ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξήγαγε φῶς ἐκ τῶν θησαυρῶν αὐτοῦ. Ἐματαιώθη πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατῃσχύνθη πᾶς χρυσοχόος ἀπὸ τῶν γλυπτῶν αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ ἐχώνευσαν, οὐκ ἔστι πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. Μάταιά ἐστιν ἔργα μεμωκημένα, ἐν καιρῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν ἀπολοῦνται. Οὐ τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰακὼβ, ὅτι ὁ πλάσας τὰ πάντα, αὐτός ἐστι κληρονομία αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα αὐτῷ. Διασκορπίζεις σύ μοι σκεύη πολέμου, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἔθνη, καὶ ἐξαρῶ ἐκ σοῦ βασιλεῖς. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἵππον καὶ ἐπιβάτην αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἅρματα καὶ ἀναβάτας αὐτῶν. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ νεανίσκον καὶ παρθένον, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἄνδρα καὶ γυναῖκα. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ποιμένα καὶ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ γεωργὸν καὶ τὸ γεώργιον αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἡγεμόνας καὶ στρατηγούς σου. Καὶ ἀνταποδώσω τῇ Βαβυλῶνι καὶ πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι Χαλδαίοις πάσας τὰς κακίας αὐτῶν, ἃς ἐποίησαν ἐπὶ Σιὼν κατ’ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, λέγει Κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὸ ὄρος τὸ διεφθαρμένον, τὸ διαφθεῖρον πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, καὶ κατακυλιῶ σε ἐπὶ τῶν πετρῶν, καὶ δώσω σε ὡς ὄρος ἐμπεπυρισμένον· Καὶ οὐ μὴ λάβωσιν ἀπὸ σοῦ λίθον εἰς γωνίαν, καὶ λίθον εἰς θεμέλιον, ὅτι εἰς ἀφανισμὸν ἔσῃ εἰς τὸν αἰῶνα, λέγει Κύριος. Ἄρατε σημεῖον ἐπὶ τῆς γῆς, σαλπίσατε ἐν ἔθνεσι σάλπιγγι, ἁγιάσατε ἐπ’ αὐτὴν ἔθνη, παραγγείλατε ἐπ’ αὐτὴν, βασιλεῖς ἄρατε παρ’ ἐμοῦ, καὶ τοῖς Ἀχαναζέοις· ἐπιστήσατε ἐπ’ αὐτὴν βελοστάσεις, ἀναβιβάσατε ἐπ’

αὐτὴν ἵππον ὡς ἀκρίδων πλῆθος. Ἀναβιβάσατε ἐπ᾽ αὐτὴν ἔθνη, τὸν βασιλέα τῶν Μήδων καὶ πάσης τῆς γῆς, τοὺς ἡγουμένους αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς στρατηγοὺς αὐτοῦ. Ἐσείσθη ἡ γῆ, καὶ ἐπόνεσε, διότα ἐξανέστη ἐπὶ Βαβυλῶνα λογισμὸς Κυρίου, τοῦ θεῖναι τὴν γῆν Βαβυλῶνος εἰς ἀφανισμὸν, καὶ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτήν. Ἐξέλιπε μαχητὴς Βαβυλῶνος τοῦ πολεμεῖν, καθήσονται ἐκεῖ ἐν περιοχῇ, ἐθραύσθη ἡ δυναστεία αὐτῶν, ἐγενήθησαν ὡσεὶ γυναῖκες· ἐνεπυρίσθη τὰ σκηνώματα αὐτῆς, συνετρίβησαν οἱ μοχλοὶ αὐτῆς. Διώκων εἰς ἀπάντησιν διώκοντος διώξεται, καὶ ἀναγγέλλων εἰς ἀπάντησιν ἀναγγέλλοντος, τοῦ ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, ὅτι ἑάλωκεν ἡ πόλις αὐτοῦ. Ἀπ᾽ ἐσχάτου τῶν διαβάσεων αὐτοῦ ἐλήφθησαν, καὶ τὰ συστήματα αὐτῶν ἐνέπρησαν ἐν πυρὶ, καὶ ἄνδρες αὐτοῦ οἱ πολεμισταὶ ἐξέρχονται. Διότι τάδε λέγει Κύριος, οἶκοι βασιλέως Βαβυλῶνος, ὡς ἅλων ὥριμος ἀλοηθήσονται· ἔτι μικρὸν, καὶ ἥξει ὁ ἀμητὸς αὐτῆς. Κατέφαγέ με, ἐμερίσατό με, κατέλαβέ με σκότος λεπτὸν, Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος κατέπιέ με, ὡς δράκων ἔπλησε τὴν κοιλίαν αὐτοῦ ἀπὸ τῆς τρυφῆς μου· Ἔξωσάν με οἱ μόχθοι μου καὶ αἱ ταλαιπωρίαι μου εἰς Βαβυλῶνα, ἐρεῖ κατοικοῦσα Σιὼν, καὶ τὸ αἷμά μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους, ἐρεῖ Ἱερουσαλήμ. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ κρινῶ τὴν ἀντίδικόν σου, καὶ ἐκδικήσω τὴν ἐκδίκησίν σου, καὶ ἐρημώσω τὴν θάλασσαν αὐτῆς, καὶ ξηρανῶ τὴν πηγὴν αὐτῆς. Καὶ ἔσται Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν, καὶ οὐ κατοικηθήσεται. Ὅτι ἅμα ὡς λέοντες ἐξηγέρθησαν, καὶ ὡς σκύμνοι λεόντων. Ἐν τῇ θερμασίᾳ αὐτῶν δώσω πότημα αὐτοῖς, καὶ μεθύσω αὐτοὺς, ὅπως καρωθῶσι, καὶ ὑπνώσωσιν ὕπνον αἰώνιον, καὶ οὐ μὴ ἐξεγερθῶσι, λέγει Κύριος. Καὶ καταβίβασον αὐτοὺς ὡς ἄρνας εἰς σφαγὴν, καὶ ὡς κριοὺς μετ᾽ ἐρίφων. Πῶς ἑάλω καὶ ἐθηρεύθη τὸ

καύχημα πάσης τῆς γῆς; πῶς ἐγένετο Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν ἐν τοῖς ἔθνεσιν; Ἀνέβη ἐπὶ Βαβυλῶνα ἡ θάλασσα ἐν ἤχῳ κυμάτων αὐτῆς, καὶ κατεκαλύφθη, ἐγενήθησαν αἱ πόλεις αὐτῆς ὡς γῆ ἄνυδρος καὶ ἄβατος, οὐ κατοικήσει ἐν αὐτῇ οὐδὲ εἷς, οὐδὲ μὴ καταλύσει ἐν αὐτῇ υἱὸς ἀνθρώπου. Καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ Βαβυλῶνα, καὶ ἐξοίσω ἃ κατέπιεν ἐκ τοῦ στόματος αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ συναχθῶσι πρὸς αὐτὴν ἔτι τὰ ἔθνη, καὶ ἐν Βαβυλῶνι πεσοῦνται τραυματίαι πάσης τῆς γῆς. Ἀνασωζόμενοι ἐκ γῆς πορεύεσθε, καὶ μὴ ἵστασθε· οἱ μακρόθεν μνήσθητε τοῦ Κυρίου, καὶ Ἰερουσαλὴμ ἀναβήτω ἐπὶ τὴν καρδίαν ὑμῶν. Ἠσχύνθημεν ὅτι ἠκούσαμεν ὀνειδισμὸν ἡμῶν, κατεκάλυψεν ἀτιμία τὸ πρόσωπον ἡμῶν, εἰσῆλθον ἀλλογενεῖς εἰς τὰ ἅγια ἡμῶν, εἰς οἶκον Κυρίου. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει Κύριος, καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ γλυπτὰ αὐτῆς, καὶ ἐν πάσῃ τῇ γῇ αὐτῆς πεσοῦνται τραυματίαι. Ὅτι ἐὰν ἀναβῇ Βαβυλὼν ὡς ὁ οὐρανὸς, καὶ ὅτι ἐὰν ὀχυρώσῃ τὰ τείχη ἰσχύϊ αὐτῆς, παρ’ ἐμοῦ ἥξουσιν ἐξολοθρεύοντες αὐτὴν, λέγει Κύριος. Φωνὴ κραυγῆς ἐν Βαβυλῶνι, καὶ συντριβὴ μεγάλη ἐν γῇ Χαλδαίων, ὅτι ἐξωλόθρευσε Κύριος τὴν Βαβυλῶνα, καὶ ἀπώλεσεν ἀπ’ αὐτῆς φωνὴν μεγάλην ἠχοῦσαν ὡς ὕδατα πολλά· ἔδωκεν εἰς ὄλεθρον φωνὴν αὐτῆς. Ὅτι ἦλθεν ἐπὶ Βαβυλῶνα ταλαιπωρία, ἐάλωσαν οἱ μαχηταὶ αὐτῆς, ἐπτόηται τὸ τόξον αὐτῶν, ὅτι ὁ Θεὸς ἀνταποδίδωσιν αὐτοῖς. Κύριος ἀνταποδίδωσι, καὶ μεθύσει μέθῃ τοὺς ἡγεμόνας αὐτῆς, καὶ τοὺς σοφοὺς αὐτῆς, καὶ τοὺς στρατηγοὺς αὐτῆς, λέγει ὁ βασιλεὺς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ. Τάδε λέγει Κύριος, τεῖχος Βαβυλῶνος ἐπλατύνθη, κατασκαπτόμενον κατασκαφήσεται, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς αἱ ὑψηλαὶ ἐμπυρισθήσονται, καὶ οὐ κοπιάσουσι λαοὶ εἰς κενὸν, καὶ ἔθνη ἐν ἀρχῇ ἐκλείψουσιν. Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὃν ἘΝΕΤΕΙΛΑΤΟ ΚΥΡΙΟΣ ἸΕΡΕΜΙΑ ΤΩ ΠΡΟΦΗΤΗ εἰπεῖν

τῷ Σαραίᾳ υἱῷ Νηρείου, υἱοῦ Μαασαίου, ὅτε ἐπορεύετο παρὰ Σεδεκίου βασιλέως Ἰούδα εἰς Βαβυλῶνα, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ· καὶ Σαραίας ἄρχων δώρων. Καὶ ἔγραψεν Ἱερεμίας πάντα τὰ κακὰ ἃ ἥξει ἐπὶ Βαβυλῶνα ἐν βιβλίῳ, πάντας τοὺς λόγους τούτους τοὺς γεγραμμένους ἐπὶ Βαβυλῶνα. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Σαραίαν, ὅταν ἔλθῃς εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ὄψῃ καὶ ἀναγνώσῃ πάντας τοὺς λόγους τούτους, καὶ ἐρεῖς, Κύριε Κύριε, σὺ ἐλάλησας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, τοῦ ἐξολοθρεῦσαι αὐτὸν, καὶ τοῦ μὴ εἶναι ἐν αὐτῷ κατοικοῦντας ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, ὅτι ἀφανισμὸς εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται. Καὶ ἔσται ὅταν παύσῃ τοῦ ἀναγινώσκειν τὸ βιβλίον τοῦτο, καὶ ἐπιδήσεις ἐπ᾽ αὐτὸ λίθον, καὶ ῥίψεις αὐτὸ εἰς μέσον τοῦ Εὐφράτου, καὶ ἐρεῖς, οὕτως καταδύσεται Βαβυλὼν, καὶ οὐ μὴ ἀναστῇ ἀπὸ προσώπου τῶν κακῶν, ὧν ἐγὼ ἐπάγω ἐπ᾽ αὐτήν.

# 29

ἘΠΙ ΤΟΥΣ ἈΛΛΟΦΥΛΟΥΣ ΤΑΔΕ ΛΕΓΕΙ ΚΥΡΙΟΣ. Ἰδοὺ ὕδατα ἀναβαίνει ἀπὸ Βορῥᾶ, καὶ ἔσται εἰς χειμάῤῥουν κατακλύζοντα, καὶ κατακλύσει γῆν καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, πόλιν καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ· καὶ κεκράξονται οἱ ἄνθρωποι, καὶ ἀλαλάξουσιν ἅπαντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, ἀπὸ φωνῆς ὁρμῆς αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ὅπλων τῶν ποδῶν αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ σεισμοῦ τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ, ἤχου τροχῶν αὐτοῦ· οὐκ ἐπέστρεψαν πατέρες ἐφ᾽ υἱοὺς αὐτῶν ἀπὸ ἐκλύσεως χειρῶν αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐπερχομένῃ τοῦ ἀπολέσαι πάντας τοὺς ἀλλοφύλους· καὶ ἀφανιῶ τὴν Τύρον, καὶ τὴν Σιδῶνα, καὶ πάντας τοὺς καταλοίπους τῆς

βοηθείας αὐτῶν, ὅτι ἐξολοθρεύσει Κύριος τοὺς καταλοίπους τῶν νήσων. Ἥκει φαλάκρωμα ἐπὶ Γάζαν, ἀπερρίφη Ἀσκάλων, καὶ οἱ κατάλοιποι Ἐνακίμ. Ἕως τίνος κόψεις ἡ μάχαιρα τοῦ Κυρίου; ἕως τίνος οὐχ ἡσυχάσεις; ἀποκατάστηθι εἰς τὸν κολεόν σου, ἀνάπαυσαι, καὶ ἐπάρθητι. Πῶς ἡσυχάσει, καὶ Κύριος ἐνετείλατο αὐτῇ ἐπὶ τὴν Ἀσκάλωνα, καὶ ἐπὶ τὰς παραθαλασσίους, ἐπὶ τὰς καταλοίπους ἐπεγερθῆναι;

# 30

ΤΗ ἸΔΟΥΜΑΙΑ, τάδε λέγει Κύριος, οὐκ ἔστιν ἔτι σοφία ἐν Θαιμὰν, ἀπώλετο βουλὴ ἐκ συνετῶν, ᾤχετο σοφία αὐτῶν, ἠπατήθη ὁ τόπος αὐτῶν· βαθύνατε εἰς κάθισιν οἱ κατοικοῦντες ἐν Δαιδὰμ, ὅτι δύσκολα ἐποίησεν· ἤγαγον ἐπ᾽ αὐτὸν ἐν χρόνῳ ᾧ ἐπεσκεψάμην ἐπ᾽ αὐτόν. Ὅτι τρυγηταὶ ἦλθον, οἳ οὐ καταλείψουσί σοι κατάλειμμα· ὡς κλέπται ἐν νυκτὶ, ἐπιθήσουσι χεῖρα αὐτῶν. Ὅτι ἐγὼ κατέσυρα τὸν Ἡσαῦ, ἀνεκάλυψα τὰ κρυπτὰ αὐτῶν, κρυβῆναι οὐ μὴ δύνωνται, ὤλοντο διὰ χεῖρα ἀδελφοῦ αὐτοῦ, γείτονός μου, καὶ οὐκ ἔστιν ὑπολείπεσθαι ὀρφανόν σου, ἵνα ζήσηταί· καὶ ἐγὼ ζήσομαι, καὶ αἱ χῆραι ἐπ᾽ ἐμὲ πεποίθασιν· Ὅτι τάδε εἶπε Κύριος, οἷς οὐκ ἦν νόμος πιεῖν τὸ ποτήριον, ἔπιον· καὶ σὺ ἀθωωμένη οὐ μὴ ἀθωωθῇς, ὅτι κατ᾽ ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει Κύριος, ὅτι εἰς ἄβατον καὶ εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ εἰς κατάρασιν ἔσῃ ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς ἔσονται ἔρημοι εἰς αἰῶνα. Ἀκοὴν ἤκουσα παρὰ Κυρίου, καὶ ἀγγέλους εἰς ἔθνη ἀπέστειλε, συνάχθητε, καὶ παραγένεσθε εἰς αὐτὴν, ἀνάστητε εἰς πόλεμον. Μικρὸν ἔδωκά σε ἐν ἔθνεσιν, εὐκαταφρόνητον ἐν ἀνθρώποις. Ἡ παιγνία σου

ἐνεχείρησέ σοι, ἰταμία καρδίας σου κατέλυσε τρυμαλιὰς πετρῶν, συνέλαβεν ἰσχὺν βουνοῦ ὑψηλοῦ· ὅτι ὕψωσεν ὥσπερ ἀετὸς νοσσιὰν αὐτοῦ, ἐκεῖθεν καθελῶ σε. Καὶ ἔσται ἡ Ἰδουμαία εἰς ἄβατον, πᾶς ὁ παραπορευόμενος ἐπ᾽ αὐτὴν συριεῖ. Ὥσπερ κατεστράφη Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ αἱ πάροικοι αὐτῆς, εἶπε Κύριος παντοκράτωρ, οὐ μὴ καθίσει ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται ἐκ μέσου τοῦ Ἰορδάνου εἰς τόπον Αἰθὰμ, ὅτι ταχὺ ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, καὶ τοὺς νεανίσκους ἐπ᾽ αὐτὴν ἐπιστήσατε· ὅτι τίς ὥσπερ ἐγώ; καὶ τίς ἀντιστήσεταί μοι; καὶ τίς οὗτος ποιμὴν, ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν μου; Διατοῦτο ἀκούσατε βουλὴν Κυρίου, ἣν ἐβουλεύσατο ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ λογισμὸν αὐτοῦ, ὃν ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Θαιμὰν, ἐὰν μὴ συμψησθῶσι τὰ ἐλάχιστα τῶν προβάτων, ἐὰν μὴ ἀβατωθῇ ἐπ᾽ αὐτοὺς κατάλυσις αὐτῶν, ὅτι ἀπὸ φωνῆς πτώσεως αὐτῶν ἐφοβήθη ἡ γῆ, καὶ κραυγὴ θαλάσσης οὐκ ἠκούσθη. Ἰδοὺ ὥσπερ ἀετὸς ὄψεται, καὶ ἐκτενεῖ τὰς πτέρυγας ἐπ᾽ ὀχυρώματα αὐτῆς· καὶ ἔσται ἡ καρδία τῶν ἰσχυρῶν τῆς Ἰδουμαίας ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς καρδία γυναικὸς ὠδινούσης. ΤΟΙΣ ΥΙΟΙΣ ΑΜΜΩΝ οὕτως εἶπε Κύριος, μὴ υἱοὶ οὐκ εἰσὶν ἐν Ἰσραὴλ, ἢ παραληψόμενος οὐκ ἔστιν αὐτοῖς; διατί παρέλαβε Μελχὸλ τὴν Γαλαὰδ, καὶ ὁ λαὸς αὐτῶν ἐν πόλεσιν αὐτῶν ἐνοικήσει; Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ ἀκουτιῶ ἐπὶ Ῥαββὰθ θόρυβον πολέμων, καὶ ἔσονται εἰς ἄβατον καὶ εἰς ἀπώλειαν, καὶ βωμοὶ αὐτῆς ἐν πυρὶ κατακαυθήσονται, καὶ παραλήψεται Ἰσραὴλ τὴν ἀρχὴν αὐτοῦ. Ἀλάλαξον Ἐσεβὼν, ὅτι ὤλετο Γαΐ· κεκράξατε θυγατέρες Ῥαββὰθ, περιζώσασθε σάκκους καὶ κόψασθε, ὅτι Μελχὸλ βαδιεῖται ἐν ἀποικίᾳ, οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. Τί ἀγαλλιᾶσθε ἐν τοῖς πεδίοις Ἐνακεὶμ,

θύγατερ ἰταμίας, ἡ πεποιθυῖα ἐπὶ θησαυροῖς, ἡ λέγουσα, τίς εἰσελεύσεται ἐπ’ ἐμέ; Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω φόβον ἐπὶ σὲ, εἶπε Κύριος, ἀπὸ πάσης τῆς περιοίκου σου, καὶ διασπαρήσεσθε ἕκαστος εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ συνάγων. ΤΗ ΚΗΔΑΡ ΤΗ ΒΑΣΙΛΙΣΣΗ ΤΗΣ ΑΥΛΗΣ, Ἣν ἘΠΑΤΑΞΕ ΝΑΒΟΥΧΟΔΟΝΟΣΟΡ ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΒΑΒΥΛΩΝΟΣ, οὕτως εἶπε Κύριος, Ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε ἐπὶ Κηδὰρ, καὶ πλήσατε τοὺς υἱοὺς Κεδέμ. Σκηνὰς αὐτῶν, καὶ τὰ πρόβατα αὐτῶν λήψονται· ἱμάτια αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ καμήλους αὐτῶν λήψονται ἑαυτοῖς· καὶ καλέσατε ἐπ’ αὐτοὺς ἀπώλειαν κυκλόθεν. Φεύγετε, λίαν ἐμβαθύνατε εἰς κάθισιν, καθήμενοι ἐν τῇ αὐλῇ, ὅτι ἐβουλεύσατο ἐφ’ ὑμᾶς βασιλεὺς Βαβυλῶνος βουλὴν, καὶ ἐλογίσατο λογισμόν. Ἀνάστηθι, καὶ ἀνάβηθι ἐπ’ ἔθνος εὐσταθοῦν, καθήμενον εἰς ἀναψυχὴν, οἷς οὐκ εἰσὶ θύραι, οὐ βάλανοι, οὐ μοχλοὶ, μόνοι καταλύουσι. Καὶ ἔσονται κάμηλοι αὐτῶν εἰς προνομὴν, καὶ πλῆθος κτηνῶν αὐτῶν εἰς ἀπώλειαν, καὶ λικμήσω αὐτοὺς παντὶ πνεύματι κεκαρμένους πρὸ προσώπου αὐτῶν, ἐκ παντὸς πέραν αὐτῶν οἴσω τὴν τροπὴν αὐτῶν, εἶπε Κύριος. Καὶ ἔσται ἡ αὐλὴ διατριβὴ στρουθῶν, καὶ ἄβατος ἕως αἰῶνος, οὐ μὴ καθίσῃ ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. ΤΗ ΔΑΜΑΣΚΩ. Κατῃσχύνθη Ἠμὰθ, καὶ Ἀρφὰθ, ὅτι ἤκουσαν ἀκοὴν πονηρὰν, ἐξέστησαν, ἐθυμώθησαν, ἀναπαύσασθαι οὐ μὴ δύνωνται. Ἐξελύθη Δαμασκὸς, ἀπεστράφη εἰς φυγὴν, τρόμος ἐπελάβετο αὐτῆς. Πῶς οὐχὶ ἐγκατέλιπε πόλιν ἐμὴν, κώμην ἠγάπησαν; Διατοῦτο πεσοῦνται νεανίσκοι ἐν πλατείαις σου, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταί σου πεσοῦνται, φησὶ Κύριος· Καὶ καύσω πῦρ ἐν τείχει Δαμασκοῦ, καὶ καταφάγεται ἄμφοδα υἱοῦ Ἄδερ.

# 31

ΤΗ ΜΩΑΒ οὕτως εἶπε Κύριος, οὐαὶ ἐπὶ Ναβαῦ, ὅτι ὤλετο, ἐλήφθη Καριαθαὶμ, ᾐσχύνθη Ἀμὰθ καὶ Ἀγάθ. Οὐκ ἔστιν ἔτι ἰατρεία Μωὰβ, γαυρίαμα ἐν Ἐσεβὼν, ἐλογίσατο ἐπ᾽ αὐτὴν κακά· ἐκόψαμεν αὐτὴν ἀπὸ ἔθνους, καὶ παῦσιν παύσεται· ὄπισθέν σου βαδιεῖται μάχαιρα, ὅτι φωνὴ κεκραγότων ἐξ Ὠρωναὶμ, ὄλεθρον καὶ σύντριμμα μέγα· Συνετρίβη Μωὰβ, ἀναγγείλατε εἰς Ζογόρα, ὅτι ἐπλήσθη Ἀλὼθ ἐν κλαυθμῷ· ἀναβήσεται κλαίων ἐν ὁδῷ Ὠρωναὶμ, κραυγὴν συντρίμματος ἠκούσατε. Φεύγετε καὶ σώσατε τὰς ψυχὰς ὑμῶν, καὶ ἔσεσθε ὥσπερ ὄνος ἄγριος ἐν ἐρήμῳ. Ἐπειδὴ ἐπεποίθεις ἐν ὀχυρώματί σου, καὶ σὺ συλληφθήσῃ· καὶ ἐξελεύσεται Χαμὼς ἐν ἀποικίᾳ, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. Καὶ ἥξει ὄλεθρος ἐπὶ πᾶσαν πόλιν, οὐ μὴ σωθῇ, καὶ ἀπολεῖται ὁ αὐλῶν, καὶ ἐξολοθρευθήσεται ἡ πεδινὴ, καθὼς εἶπε Κύριος. Δότε σημεῖα τῇ Μωὰβ, ὅτι ἀφῇ ἀφθήσεται, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς εἰς ἄβατον ἔσονται· πόθεν ἔνοικος αὐτῇ; Ἐπικατάρατος ὁ ποιῶν τὰ ἔργα Κυρίου ἀμελῶς, ἐξαίρων μάχαιραν αὐτοῦ ἀφ᾽ αἵματος. Ἀνεπαύσατο Μωὰβ ἐκ παιδαρίου, καὶ πεποιθὼς ἦν ἐπὶ τῇ δόξῃ αὐτοῦ, οὐκ ἐνέχεεν ἐξ ἀγγείου εἰς ἀγγεῖον, καὶ εἰς ἀποικισμὸν οὐκ ᾤχετο· διατοῦτο ἔστη γεῦμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ, καὶ ὀσμὴ αὐτοῦ οὐκ ἐξέλιπε. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι αὐτοῦ ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ ἀποστελῶ αὐτῷ κλίνοντας, καὶ κλινοῦσιν αὐτὸν, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ λεπτυνοῦσι, καὶ τὰ κέρατα αὐτοῦ συγκόψουσι. Καὶ καταισχυνθήσεται Μωὰβ ἀπὸ Χαμὼς, ὥσπερ κατῃσχύνθη οἶκος Ἰσραὴλ ἀπὸ Βαιθὴλ ἐλπίδος αὐτῶν πεποιθότες ἐπ᾽ αὐτοῖς. Πῶς ἐρεῖτε, ἰσχυροί ἐσμεν, καὶ ἄνθρωπος ἰσχύων εἰς τὰ πολεμικά;

Ὤλετο Μωὰβ πόλις αὐτοῦ, καὶ ἐκλεκτοὶ νεανίσκοι αὐτοῦ κατέβησαν εἰς σφαγήν. Ἐγγὺς ἡμέρα Μωὰβ ἐλθεῖν, καὶ πονηρία αὐτοῦ ταχεῖα σφόδρα. Κινήσατε αὐτῷ πάντες κυκλόθεν αὐτοῦ, πάντες ἔκδοτε ὄνομα αὐτοῦ· εἴπατε, πῶς συνετρίβη βακτηρία εὐκλεὴς, ῥάβδος μεγαλώματος; Κατάβηθι ἀπὸ δόξης, καὶ κάθισον ἐν ὑγρασίᾳ καθημένη· Δαιβὼν ἐκτριβήσεται, ὅτι ὤλετο Μωὰβ, ἀνέβη εἰς σὲ λυμαινόμενος ὀχύρωμά σου. Ἐφ’ ὁδοῦ στῆθι, καὶ ἔπιδε καθημένη ἐν Ἀρὴρ, καὶ ἐρώτησον φεύγοντα, καὶ σωζόμενον, καὶ εἰπὸν, τί ἐγένετο; Κατῃσχύνθη Μωὰβ, ὅτι συνετρίβη· ὀλόλυξον καὶ κέκραξον, ἀνάγγειλον ἐν Ἀρνὼν, ὅτι ὤλετο Μωὰβ, καὶ κρίσις ἔρχεται εἰς τὴν γῆν Μεισὼρ ἐπὶ Χελὼν, καὶ Ῥεφὰς, καὶ Μωφὰς, καὶ ἐπὶ Δαιβὼν, καὶ ἐπὶ Ναβαῦ, καὶ ἐπ’ οἶκον Δαιθλαθαὶμ, καὶ ἐπὶ Καριαθαὶμ, καὶ ἐπ’ οἶκον Γαιμὼλ, καὶ ἐπ’ οἶκον Μαὼν, καὶ ἐπὶ Καριὼθ, καὶ ἐπὶ Βοσὸρ, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Μωὰβ τὰς πόῤῥω καὶ τὰς ἐγγύς. Κατεάχθη κέρας Μωὰβ, καὶ τὸ ἐπίχειρον αὐτοῦ συνετρίβη. Μεθύσατε αὐτὸν, ὅτι ἐπὶ Κύριον ἐμεγαλύνθη· καὶ ἐπικρούσει Μωὰβ ἐν χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἔσται εἰς γέλωτα καὶ αὐτός. Καὶ εἰ μὴ εἰς γελοιασμὸν ἦν σοι Ἰσραὴλ, καὶ ἐν κλοπαῖς σου εὑρέθη, ὅτι ἐπολέμεις αὐτόν. Κατέλιπον τὰς πόλεις, καὶ ᾤκησαν ἐν πέτραις οἱ κατοικοῦντες Μωάβ· ἐγενήθησαν ὥσπερ περιστεραὶ νοσσεύουσαι ἐν πέτραις, στόματι βοθύνου. Καὶ ἤκουσα ὕβριν Μωὰβ, ὕβρισε λίαν ὕβριν αὐτοῦ, καὶ ὑπερηφανίαν αὐτοῦ· καὶ ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ἔγνων ἔργα αὐτοῦ· οὐχὶ τὸ ἱκανὸν αὐτῷ οὐχ οὕτως ἐποίησε; Διατοῦτο ἐπὶ Μωὰβ ὀλολύζετε πάντοθεν· βοήσατε ἐπ’ ἄνδρας κειράδας αὐχμοῦ. Ὡς κλαυθμὸν Ἰαζὴρ ἀποκλαύσομαί σοι ἄμπελος Ἀσερημὰ, κλήματά σου διῆλθε θάλασσαν, πόλεις Ἰαζὴρ ἥψαντο, ἐπὶ ὀπώραν σου, ἐπὶ τρυγηταῖς σου ὄλεθρος ἐπέπεσε. Συνεψήσθη χαρμοσύνη καὶ εὐφροσύνη ἐκ

τῆς Μωαβίτιδος· καὶ οἶνος ἦν ἐπὶ ληνοῖς σου, πρωῒ οὐκ ἐπάτησαν, οὐδὲ δείλης οὐκ ἐποίησαν, αἱ δὲ ἀπὸ κραυγῆς Ἐσεβὼν ἕως Αἰτὰμ αἱ πόλεις αὐτῶν ἔδωκαν φωνὴν αὐτῶν, ἀπὸ Ζογὸρ ἕως Ὡρωναὶμ, καὶ ἀγγελίαν σαλασία, ὅτι καὶ τὸ ὕδωρ Νεβρεὶν εἰς κατάκαυμα ἔσται. Καὶ ἀπολῶ τὸν Μωὰβ, φησὶ Κύριος, ἀναβαίνοντα ἐπὶ τὸν βωμὸν, καὶ θυμιῶντα θεοῖς αὐτοῦ. Διατοῦτο καρδία τοῦ Μωὰβ, ὥσπερ αὐλοὶ βουβήσουσι, καρδία μου ἐπ’ ἀνθρώπους κειράδας ὥσπερ αὐλὸς βομβήσει· διατοῦτο ἃ περιεποιήσατο, ἀπώλετο ἀπὸ ἀνθρώπου. Πᾶσαν κεφαλὴν ἐν παντὶ τόπῳ ξυρηθήσονται, καὶ πᾶς πώγων ξυρηθήσεται, καὶ πᾶσαι χεῖρες κόψονται, καὶ ἐπὶ πάσης ὀσφύος σάκκος. Καὶ ἐπὶ πάντων τῶν δωμάτων Μωὰβ, καὶ ἐπὶ ταῖς πλατείαις αὐτῆς, ὅτι συνέτριψα, φησὶ Κύριος, ὡς ἀγγεῖον, οὗ οὐκ ἔστι χρεία αὐτοῦ. Πῶς κατήλλαξε; πῶς ἔστρεψε νῶτον Μωάβ; ᾐσχύνθη, καὶ ἐγένετο Μωὰβ εἰς γέλωτα, καὶ ἐγκότημα πᾶσι τοῖς κύκλῳ αὐτῆς. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, Ἐλήφθη Καριὼθ, καὶ τὰ ὀχυρώματα συνελήφθη, καὶ ἀπολεῖται Μωὰβ ἀπὸ ὄχλου, ὅτι ἐπὶ τὸν Κύριον ἐμεγαλύνθη. Παγὶς καὶ φόβος καὶ βόθυνος ἐπὶ σὲ καθήμενος Μωάβ. Ὁ φεύγων ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· καὶ ὁ ἀναβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, καὶ συλληφθήσεται ἐν τῇ παγίδι· ὅτι ἐπάξω ταῦτα ἐπὶ Μωὰβ ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν.

# 32

Οὕτως εἶπεν Κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ Λάβε τὸ ποτήριον τοῦ οἴνου τοῦ ἀκράτου τούτου ἐκ χειρός μου, καὶ ποτιεῖς πάντα τὰ ἔθνη πρὸς ἃ ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς, καὶ ἐξεμοῦνται, καὶ μανήσονται

ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀνὰ μέσον αὐτῶν. καὶ ἔλαβον τὸ ποτήριον ἐκ χειρὸς Κυρίου, καὶ ἐπότισα τὰ ἔθνη πρὸς ἃ ἀπέστειλέν με Κύριος πρὸς αὐτά, τὴν Ἰερουσαλὴμ καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα καὶ βασιλεῖς Ἰούδα καὶ ἄρχοντας αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι αὐτὰς εἰς ἐρήμωσιν καὶ εἰς ἄβατον καὶ εἰς συριγμόν, καὶ τὸν Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ καὶ πάντας τοὺς συμμίκτους, καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς ἀλλοφύλων, τὴν Ἀσκάλωνα καὶ τὴν Γάζαν καὶ τὴν Ἀκκαρών, καὶ τὸ ἐπί λοιπον Ἀζώτου, καὶ τὴν Ἰδουμαίαν καὶ τὴν Μωαβεῖτιν καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμών, καὶ βασιλεῖς Γύρου καὶ βασιλεῖς Σειδῶνος καὶ βασιλεῖς τοὺς ἐν τῷ πέραν τῆς θαλάσσης, καὶ τὴν Δαιδὰν καὶ τὴν Θαιμὰν καὶ τὴν Ῥὼς καὶ πᾶν περικεκαρμένον κατὰ πρόσαωπον αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς συμμίκτους τοὺς καταλύοντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ πάντας βασιλεῖς Αἰλὰμ καὶ πάντας βασιλεῖς Περσῶν, καὶ πάντας βασιλεῖς ἀπὸ ἀπηλιώτου τοὺς πόρρω καὶ τοὺς ἐγγύς, ἕκαστον πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ πάσας βασιλείας τὰς ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς Οὕτως εἶπεν Κύριος Παντοκράτωρ Πίετε, μεθύσθητε, καὶ ἐξεμέσετε καὶ πεσεῖσθε, καὶ οὐ μὴ ἀναστῆτε ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀνὰ μέσον ὑμῶν. καὶ ἔσται ὅταν μὴ βούλωνται δέξασθαι τὸ ποτήριον ἐκ τῆς χειρός σου ὥστε πιεῖν, καὶ ἐρεῖς Οὕτως εἶπεν Κύριος Πιόντες πίεσθε, Οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, λάβε τὸ ποτήριον τοῦ οἴνου τοῦ ἀκράτου τούτου ἐκ χειρός μου, καὶ ποτιεῖς πάντα τὰ ἔθνη, πρὸς ἃ ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς. Καὶ πίονται, καὶ ἐξεμοῦνται, καὶ ἐκμανήσονται ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀναμέσον αὐτῶν. Καὶ ἔλαβον τὸ ποτήριον ἐκ χειρὸς Κυρίου, καὶ ἐπότισα τὰ ἔθνη, πρὸς ἃ ἀπέστειλέ με Κύριος πρὸς αὐτὰ, τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὰς πόλεις

Ἰούδα, καὶ βασιλεῖς Ἰούδα καὶ ἄρχοντας αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι αὐτὰς εἰς ἐρήμωσιν, καὶ εἰς ἄβατον, καὶ εἰς συριγμὸν, καὶ τὸν Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς συμμίκτους, καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς ἀλλοφύλων, καὶ τὴν Ἀσκάλωνα, καὶ τὴν Γάζαν, καὶ τὴν Ἀκκάρων, καὶ τὸ ἐπίλοιπον Ἀζώτου, καὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ τὴν Μωαβῖτιν, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ βασιλεῖς Τύρου, καὶ βασιλεῖς Σιδῶνος, καὶ βασιλεῖς τοὺς ἐν τῷ πέραν τῆς θαλάσσης, καὶ τὴν Δαιδὰν, καὶ τὴν Θαιμὰν, καὶ τὴν Ῥῶς, καὶ πᾶν περικεκαρμένον κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς συμμίκτους τοὺς καταλύοντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ πάντας βασιλεῖς Αἰλὰμ, καὶ πάντας βασιλεῖς Περσῶν, καὶ πάντας βασιλεῖς ἀπὸ ἀπηλιώτου τοὺς πόῤῥω καὶ τοὺς ἐγγὺς, ἕκαστον πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ πάσας βασιλείας τὰς ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, οὕτως εἶπε Κύριος παντοκράτωρ, πίετε, μεθύσθητε, καὶ ἐξεμέσετε, καὶ πεσεῖσθε, καὶ οὐ μὴ ἀναστῆτε ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀναμέσον ὑμῶν. Καὶ ἔσται ὅταν μὴ βούλωνται δέξασθαι τὸ ποτήριον ἐκ τῆς χειρός σου, ὥστε πιεῖν, καὶ ἐρεῖς, οὕτως εἶπε Κύριος, πιόντες πίεσθε, ὅτι ἐν πόλει ἐν ᾗ ὠνομάσθη τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτὴν, ἐγὼ ἄρχομαι κακῶσαι, καὶ ὑμεῖς καθάρσει οὐ μὴ καθαρισθῆτε, ὅτι μάχαιραν ἐγὼ καλῶ ἐπὶ πάντας τοὺς καθημένους ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ σὺ προφητεύσεις ἐπ’ αὐτοὺς τοὺς λόγους τούτους, καὶ ἐρεῖς, Κύριος ἀφ’ ὑψηλοῦ χρηματιεῖ, ἀπὸ τοῦ ἁγίου αὐτοῦ δώσει φωνὴν αὐτοῦ, λόγον χρηματιεῖ ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ· καὶ οἵδε ὥσπερ τρυγῶντες ἀποκριθήσονται· καὶ ἐπὶ καθημένους ἐπὶ τὴν γῆν ἥκει ὄλεθρος ἐπὶ μέρος τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ Κυρίῳ ἐν τοῖς ἔθνεσι· κρίνεται αὐτὸς πρὸς πᾶσαν σάρκα, οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἐδόθησαν εἰς μάχαιραν, λέγει

Κύριος. Οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ κακὰ ἔρχεται ἀπὸ ἔθνους ἐπὶ ἔθνος, καὶ λαίλαψ μεγάλη ἐκπορεύεται ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς. Καὶ ἔσονται τραυματίαι ὑπὸ Κυρίου ἐν ἡμέρᾳ Κυρίου, ἐκ μέρους τῆς γῆς, καὶ ἕως εἰς μέρος τῆς γῆς· οὐ μὴ κατορυγῶσιν, εἰς κόπρια ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς ἔσονται. Ἀλαλάξατε ποιμένες, καὶ κεκράξατε, καὶ κόπτεσθε οἱ κριοὶ τῶν προβάτων, ὅτι ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι ὑμῶν εἰς σφαγὴν, καὶ πεσεῖσθε ὥσπερ οἱ κριοὶ οἱ ἐκλεκτοὶ, καὶ ἀπολεῖται φυγὴ ἀπὸ τῶν ποιμένων, καὶ σωτηρία ἀπὸ τῶν κριῶν τῶν προβάτων. Φωνὴ κραυγῆς τῶν ποιμένων, καὶ ἀλαλαγμὸς τῶν προβάτων καὶ τῶν κριῶν, ὅτι ὠλόθρευσε Κύριος τὰ βοσκήματα αὐτῶν· Καὶ παύσεται τὰ κατάλοιπα τῆς εἰρήνης ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ μου. Ἐγκατέλιπεν ὥσπερ λέων κατάλυμα αὐτοῦ, ὅτι ἐγενήθη ἡ γῆ αὐτῶν εἰς ἄβατον ἀπὸ προσώπου τῆς μαχαίρας τῆς μεγάλης.

# 33

ἘΝ ἈΡΧΗ ΒΑΣΙΛΕΩΣ ἸΩΑΚΕΙΜ ΥΙΟΥ ἸΩΣΙΑ, ἘΓΕΝΗΘΗ Ὁ ΛΟΓΟΣ ΟΥΤΟΣ ΠΑΡΑ ΚΥΡΙΟΥ· Οὕτως εἶπε Κύριος, στῆθι ἐν αὐλῇ οἴκου Κυρίου, καὶ χρηματιεῖς ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις, καὶ πᾶσι τοῖς ἐρχομένοις προσκυνεῖν ἐν οἴκῳ Κυρίου, ἅπαντας τοὺς λόγους οὓς συνέταξά σοι χρηματίσαι αὐτοῖς, μὴ ἀφέλῃς ῥῆμα. Ἴσως ἀκούσονται, καὶ ἀποστραφήσονται ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ παύσομαι ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐγὼ λογίζομαι τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς ἕνεκεν τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς, οὕτως εἶπε Κύριος, ἐὰν μὴ ἀκούσητέ μου, τοῦ πορεύεσθαι ἐν τοῖς νομίμοις μου οἷς ἔδωκα κατὰ πρόσωπον ὑμῶν, εἰσακούειν τῶν

λόγων τῶν παίδων μου τῶν προφητῶν, οὓς ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς ὄρθρου, καὶ ἀπέστειλα, καὶ οὐκ ἠκούσατέ μου, καὶ δώσω τὸν οἶκον τοῦτον ὥσπερ Σηλὼ, καὶ τὴν πόλιν δώσω εἰς κατάραν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι πάσης τῆς γῆς. Καὶ ἤκουσαν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαὸς τοῦ Ἰερεμίου λαλοῦντος τοὺς λόγους τούτους ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἐγένετο Ἰερεμίου παυσαμένου λαλοῦντος πάντα ἃ συνέταξε Κύριος αὐτῷ λαλῆσαι παντὶ τῷ λαῷ, καὶ συνελάβοσαν αὐτὸν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαὸς, λέγων, θανάτῳ ἀποθανῇ, ὅτι ἐπροφήτευσας τῷ ὀνόματι Κυρίου, λέγων, ὥσπερ Σηλὼ ἔσται ὁ οἶκος οὗτος, καὶ ἡ πόλις αὕτη ἐρημωθήσεται ἀπὸ κατοικούντων· Καὶ ἐξεκκλησιάσθη πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ Ἰερεμίαν ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἤκουσαν οἱ ἄρχοντες Ἰούδα τὸν λόγον τοῦτον, καὶ ἀνέβησαν ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ ἐκάθισαν ἐν προθύροις πύλης τῆς καινῆς. Καὶ εἶπαν οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ ψευδοπροφῆται πρὸς τοὺς ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, κρίσις θανάτου τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ, ὅτι ἐπροφήτευσε κατὰ τῆς πόλεως ταύτης, καθὼς ἠκούσατε ἐν τοῖς ὠσὶν ὑμῶν. Καὶ εἶπεν Ἰερεμίας πρὸς τοὺς ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, λέγων, Κύριος ἀπέστειλέ με προφητεῦσαι ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, πάντας τοὺς λόγους οὓς ἠκούσατε. Καὶ νῦν βελτίους ποιήσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἔργα ὑμῶν, καὶ ἀκούσατε τῆς φωνῆς Κυρίου, καὶ παύσεται Κύριος ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐφ’ ὑμᾶς. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἐν χερσὶν ὑμῶν, ποιήσατέ μοι ὡς συμφέρει, καὶ ὡς βέλτιον ὑμῖν. Ἀλλ’ ἢ γνόντες γνώσεσθε, ὅτι εἰ ἀναιρεῖτέ με, αἷμα ἀθῶον δίδοτε ἐφ’ ὑμᾶς, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ· ὅτι ἐν ἀληθείᾳ ἀπέσταλκέ με Κύριος πρὸς ὑμᾶς λαλῆσαι εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν πάντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ εἶπον οἱ ἄρχοντες καὶ πᾶς ὁ λαὸς πρὸς τοὺς ἱερεῖς καὶ πρὸς τοὺς

ψευδοπροφήτας, οὐκ ἔστι τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ κρίσις θανάτου, ὅτι ἐπὶ τῷ ὀνόματι Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐλάλησε πρὸς ἡμᾶς. Καὶ ἀνέστησαν ἄνδρες τῶν πρεσβυτέρων τῆς γῆς, καὶ εἶπαν πάσῃ τῇ συναγωγῇ τοῦ λαοῦ, Μιχαίας ὁ Μωραθίτης ἦν ἐν ταῖς ἡμέραις Ἐζεκίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ εἶπε παντὶ τῷ λαῷ Ἰούδα, οὕτως εἶπε Κύριος, Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται, καὶ Ἱερουσαλὴμ εἰς ἄβατον ἔσται, καὶ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου εἰς ἄλσος δρυμοῦ. Μὴ ἀνελὼν ἀνεῖλεν αὐτὸν Ἐζεκίας καὶ πᾶς Ἰούδα; οὐχ ὅτι ἐφοβήθησαν τὸν Κύριον, καὶ ὅτι ἐδεήθησαν τοῦ προσώπου Κυρίου, καὶ ἐπαύσατο Κύριος ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐπ’ αὐτούς; καὶ ἡμεῖς ἐποιήσαμεν κακὰ μεγάλα ἐπὶ ψυχὰς ἡμῶν. Καὶ ἄνθρωπος ἦν προφητεύων τῷ ὀνόματι Κυρίου, Οὐρίας υἱὸς Σαμαίου ἐκ Καριαθιαρὶμ, καὶ ἐπροφήτευσε περὶ τῆς γῆς ταύτης κατὰ πάντας τοὺς λόγους Ἱερεμίου. Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἰωακεὶμ καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ, καὶ ἐζήτουν ἀποκτεῖναι αὐτόν· καὶ ἤκουσεν Οὐρίας, καὶ εἰσῆλθεν εἰς Αἴγυπτον. Καὶ ἐξαπέστειλεν ὁ βασιλεὺς ἄνδρας εἰς Αἴγυπτον, καὶ ἐξηγάγοσαν αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ εἰσηγάγοσαν αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ἐν μαχαίρᾳ, καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὸν εἰς τὸ μνῆμα υἱῶν λαοῦ αὐτοῦ. Πλὴν χεὶρ Ἀχεικὰμ υἱοῦ Σαφὰν ἦν μετὰ Ἱερεμίου, τοῦ μὴ παραδοῦναι αὐτὸν εἰς χεῖρας τοῦ λαοῦ, μὴ ἀνελεῖν αὐτόν.

# 34

Οὕτως εἶπε Κύριος, ποίησον σεαυτῷ δεσμοὺς καὶ κλοιοὺς, καὶ περίθου περὶ τὸν τράχηλόν σου. Καὶ ἀποστελεῖς αὐτοὺς πρὸς βασιλέα Ἰδουμαίας, καὶ πρὸς βασιλέα Μωὰβ, καὶ πρὸς βασιλέα

υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ πρὸς τὸν βασιλέα Τύρου, καὶ πρὸς βασιλέα Σιδῶνος, ἐν χερσὶν ἀγγέλων αὐτῶν τῶν ἐρχομένων εἰς ἀπάντησιν αὐτῶν εἰς Ἰερουσαλὴμ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα. Καὶ συντάξεις αὐτοῖς πρὸς τοὺς κυρίους αὐτῶν εἰπεῖν, οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, οὕτως ἐρεῖτε πρὸς τοὺς κυρίους ὑμῶν, ὅτι ἐγὼ ἐποίησα τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ μου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῷ ἐπιχείρῳ μου τῷ ὑψηλῷ, καὶ δώσω αὐτὴν ᾧ ἐὰν δόξῃ ἐν ὀφθαλμοῖς μου· Ἔδωκα τὴν γῆν τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος δουλεύειν αὐτῷ, καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ ἐργάζεσθαι αὐτῷ. Καὶ τὸ ἔθνος καὶ ἡ βασιλεία, ὅσοι ἐὰν μὴ ἐμβάλωσι τὸν τράχηλον αὐτῶν ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐπισκέψομαι αὐτοὺς, εἶπε Κύριος, ἕως ἐκλίπωσιν ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ὑμεῖς μὴ ἀκούετε τῶν ψευδοπροφητῶν ὑμῶν, καὶ τῶν μαντευομένων ὑμῖν, καὶ τῶν ἐνυπνιαζομένων ὑμῖν, καὶ τῶν οἰωνισμάτων ὑμῶν, καὶ τῶν φαρμακῶν ὑμῶν, τῶν λεγόντων, οὐ μὴ ἐργάσησθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος· Ὅτι ψευδῆ αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, πρὸς τὸ μακρῦναι ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ὑμῶν. Καὶ τὸ ἔθνος ὃ ἐὰν εἰσαγάγῃ τὸν τράχηλον αὐτοῦ ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐργάσηται αὐτῷ, καὶ καταλείψω αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτοῦ, καὶ ἐργᾶται αὐτῷ, καὶ ἐνοικήσει ἐν αὐτῇ. Καὶ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα ἐλάλησα κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, λέγων, εἰσαγάγετε τὸν τράχηλον ὑμῶν, καὶ ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, ὅτι οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, φησὶ Κύριος, καὶ προφητεύουσι τῷ ὀνόματί μου ἐπ ἀδίκῳ, πρὸς τὸ ἀπολέσαι ὑμᾶς, καὶ ἀπολεῖσθε ὑμεῖς, καὶ οἱ προφῆται ὑμῶν, οἱ προφητεύοντες ὑμῖν ἐπ’ ἀδίκῳ ψευδῆ. Ὑμῖν, καὶ παντὶ τῷ λαῷ τούτῳ, καὶ τοῖς ἱερεῦσιν ἐλάλησα, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος, μὴ ἀκούετε τῶν λόγων τῶν προφητῶν, τῶν

προφητευόντων ὑμῖν, λεγόντων, ἰδοὺ σκεύη οἴκου Κυρίου ἐπιστρέψει ἐκ Βαβυλῶνος· ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν. Οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. Εἰ προφῆταί εἰσι, καὶ εἰ ἔστι λόγος Κυρίου ἐν αὐτοῖς, ἀπαντησάτωσάν μοι, ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος. Καὶ τῶν ἐπιλοίπων σκευῶν, ὧν οὐκ ἔλαβε βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ὅτε ἀπῴκισε τὸν Ἰεχονίαν ἐξ Ἰερουσαλὴμ, εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσεται, λέγει Κύριος.

# 35

Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα ἐν μηνὶ τῷ πέμπτῳ, εἶπέ μοι Ἀνανίας υἱὸς Ἀζὼρ ὁ ψευδοπροφήτης ἀπὸ Γαβαὼν ἐν οἴκῳ Κυρίου, κατ᾽ ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων, καὶ παντὸς τοῦ λαοῦ, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος, συνέτριψα τὸν ζυγὸν τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος. Ἔτι δύο ἔτη ἡμερῶν, καὶ ἐγὼ ἀποστρέψω εἰς τὸν τόπον τοῦτον τὰ σκεύη οἴκου Κυρίου, καὶ Ἰεχονίαν, καὶ τὴν ἀποικίαν Ἰούδα, ὅτι συντρίψω τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Ἀνανίαν κατ᾽ ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ καὶ κατ᾽ ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων τῶν ἑστηκότων ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ εἶπεν Ἱερεμίας, ἀληθῶς οὕτω ποιήσαι Κύριος, στήσαι τὸν λόγον σου ὃν σὺ προφητεύεις, τοῦ ἐπιστρέψαι τὰ σκεύη οἴκου Κυρίου καὶ πᾶσαν τὴν ἀποικίαν ἐκ Βαβυλῶνος εἰς τὸν τόπον τοῦτον. Πλὴν ἀκούσατε τὸν λόγον Κυρίου, ὃν ἐγὼ λέγω εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν καὶ εἰς τὰ ὦτα παντὸς τοῦ λαοῦ. Οἱ προφῆται οἱ γεγονότες πρότεροί μου καὶ πρότεροι ὑμῶν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, καὶ ἐπροφήτευσαν ἐπὶ γῆς πολλῆς, καὶ ἐπὶ βασιλείας μεγάλας εἰς πόλεμον. Ὁ προφήτης ὁ προφητεύσας εἰς εἰρήνην, ἐλθόντος τοῦ λόγου, γνώσονται τὸν

προφήτην ὃν ἀπέστειλεν αὐτοῖς Κύριος ἐν πίστει. Καὶ ἔλαβεν Ἀνανίας ἐν ὀφθαλμοῖς παντὸς τοῦ λαοῦ τοὺς κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου Ἱερεμίου, καὶ συνέτριψεν αὐτούς. Καὶ εἶπεν Ἀνανίας κατ᾽ ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος, οὕτως συντρίψω τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος ἀπὸ τραχήλων πάντων τῶν ἐθνῶν· καὶ ᾤχετο Ἱερεμίας εἰς τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ συντρίψαι Ἀνανίαν τοὺς κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου αὐτοῦ, λέγων, Βάδιζε, καὶ εἰπὸν πρὸς Ἀνανίαν, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος, κλοιοὺς ξυλίνους συνέτριψας, καὶ ποιήσω ἀντ᾽ αὐτῶν κλοιοὺς σιδηροῦς· Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, ζυγὸν σιδηροῦν ἔθηκα ἐπὶ τὸν τράχηλον πάντων τῶν ἐθνῶν, ἐργάζεσθαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ Ἀνανίᾳ, οὐκ ἀπέσταλκέ σε Κύριος, καὶ πεποιθέναι ἐποίησας τὸν λαὸν τοῦτον ἐπ᾽ ἀδίκῳ. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω σε ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, τούτῳ τῷ ἐνιαυτῷ ἀποθανῇ. Καὶ ἀπέθανεν ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ.

# 36

Καὶ οὗτοι οἱ λόγοι τῆς βίβλου οὓς ἀπέστειλεν Ἱερεμίας ἐξ Ἱερουσαλὴμ πρὸς τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἀποικίας, καὶ πρὸς τοὺς ἱερεῖς, καὶ πρὸς τοὺς ψευδοπροφήτας, ἐπιστολὴν εἰς Βαβυλῶνα τῇ ἀποικίᾳ, καὶ πρὸς ἅπαντα τὸν λαὸν, ὕστερον ἐξελθόντος Ἰεχονίου τοῦ βασιλέως, καὶ τῆς βασιλίσσης, καὶ τῶν εὐνούχων, καὶ παντὸς ἐλευθέρου, καὶ δεσμώτου, καὶ τεχνίτου ἐξ Ἱερουσαλὴμ, ἐν χειρὶ Ἐλεασὰν υἱοῦ Σαφὰν, καὶ Γαμαρίου υἱοῦ Χελκίου, ὃν ἀπέστειλε Σεδεκίας βασιλεὺς Ἰούδα, πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα,

λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν ἀποικίαν ἣν ἀπῴκισα ἀπὸ Ἰερουσαλὴμ, οἰκοδομήσατε οἴκους, καὶ κατοικήσατε, καὶ φυτεύσατε παραδείσους, καὶ φάγετε τοὺς καρποὺς αὐτῶν, καὶ λάβετε γυναῖκας, καὶ τεκνοποιήσατε υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ λάβετε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν γυναῖκας, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν δότε ἀνδράσι, καὶ πληθύνεσθε, καὶ μὴ σμικρυνθῆτε· Καὶ ζητήσατε εἰς εἰρήνην τῆς γῆς, εἰς ἣν ἀπῴκισα ὑμᾶς ἐκεῖ· καὶ προσεύξεσθε περὶ αὐτῶν πρὸς Κύριον, ὅτι ἐν εἰρήνῃ αὐτῆς εἰρήνη ὑμῖν. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ ψευδοπροφῆται οἱ ἐν ὑμῖν, καὶ μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ μάντεις ὑμῶν, καὶ μὴ ἀκούετε εἰς τὰ ἐνύπνια ὑμῶν, ἃ ὑμεῖς ἐνυπνιάζεσθε, ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, καὶ οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, ὅταν μέλλῃ πληροῦσθαι Βαβυλῶνι ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐπισκέψομαι ὑμᾶς, καὶ ἐπιστήσω τοὺς λόγους μου ἐφ’ ὑμᾶς, τοῦ ἀποστρέψαι τὸν λαὸν ὑμῶν εἰς τὸν τόπον τοῦτον. Καὶ λογιοῦμαι ἐφ’ ὑμᾶς λογισμὸν εἰρήνης, καὶ οὐ κακὰ, τοῦ δοῦναι ὑμῖν ταῦτα. Καὶ προσεύξασθε πρὸς μὲ, καὶ εἰσακούσομαι ὑμῶν. Καὶ ἐκζητήσατέ με, καὶ εὑρήσετέ με· ὅτι ζητήσετέ με ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ὑμῶν, καὶ ἐπιφανοῦμαι ὑμῖν· Ὅτι εἴπατε, κατέστησεν ἡμῖν Κύριος προφήτας ἐν Βαβυλῶνι· Οὕτως εἶπε Κύριος ἐπὶ Ἀχιὰβ, καὶ ἐπὶ Σεδεκίαν, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι αὐτοὺς εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ πατάξει αὐτοὺς κατ’ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν. Καὶ λήψονται ἀπ’ αὐτῶν κατάραν ἐν πάσῃ τῇ ἀποικίᾳ Ἰούδα ἐν Βαβυλῶνι, λέγοντες, ποιήσαι σε Κύριος, ὡς Σεδεκίαν ἐποίησε, καὶ ὡς Ἀχιὰβ, οὓς ἀπετηγάνισε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν πυρὶ, δι’ ἣν ἐποίησαν ἀνομίαν ἐν Ἰσραὴλ, καὶ ἐμοιχῶντο τὰς γυναῖκας τῶν πολιτῶν αὐτῶν, καὶ λόγον ἐχρημάτισαν ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὃν οὐ συνέταξα αὐτοῖς· καὶ ἐγὼ μάρτυς, φησὶ Κύριος. Καὶ πρὸς Σαμαίαν

τὸν Αἰλαμίτην ἐρεῖς, οὐκ ἀπέστειλά σε τῷ ὀνόματί μου· καὶ πρὸς Σοφονίαν υἱὸν Μαασαίου τὸν ἱερέα εἰπὲ, Κύριος ἔδωκέ σε ἱερέα ἀντὶ Ἰωδαὲ τοῦ ἱερέως, γενέσθαι ἐπιστάτην ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου παντὶ ἀνθρώπῳ προφητεύοντι, καὶ παντὶ ἀνθρώπῳ μαινομένῳ, καὶ δώσεις αὐτὸν εἰς τὸ ἀπόκλεισμα, καὶ εἰς τὸν καταράκτην. Καὶ νῦν διατί συνελοιδορήσατε Ἱερεμίαν τὸν ἐξ Ἀναθὼθ, τὸν προφητεύσαντα ὑμῖν; Οὐ διατοῦτο ἀπέστειλεν; ὅτι διὰ τοῦ μηνὸς τούτου ἀπέστειλε πρὸς ὑμᾶς εἰς Βαβυλῶνα, λέγων, μακράν ἐστιν, οἰκοδομήσατε οἰκίας, καὶ κατοικήσατε, καὶ φυτεύσατε κήπους, καὶ φάγεσθε τὸν καρπὸν αὐτῶν. Καὶ ἀνέγνω Σοφονίας τὸ βιβλίον εἰς τὰ ὦτα Ἱερεμίου. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, ἀπόστειλον πρὸς τὴν ἀποικίαν, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος ἐπὶ Σαμαίαν τὸν Αἰλαμίτην, ἐπειδὴ ἐπροφήτευσεν ὑμῖν Σαμαίας, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτὸν, καὶ πεποιθέναι ἐποίησεν ὑμᾶς ἐπ’ ἀδίκοις, διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπὶ Σαμαίαν, καὶ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται αὐτῶν ἄνθρωπος ἐν μέσῳ ὑμῶν, τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐγὼ ποιήσω ὑμῖν, οὐκ ὄψονται.

# 37

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ἸΕΡΕΜΙΑΝ ΠΑΡΑ ΚΥΡΙΟΥ, ΕΙΠΕΙΝ, Οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, λέγων, Γράψον πάντας τοὺς λόγους οὓς ἐχρημάτισα πρὸς σὲ ἐπὶ βιβλίου. Ὅτι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν λαοῦ μου Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, εἶπε Κύριος, καὶ ἀποστρέψω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ κυριεύσουσιν αὐτῆς. ΚΑΙ

ΟΥΤΟΙ ΟΙ ΛΟΓΟΙ ΟΥΣ ἘΛΑΛΗΣΕ ΚΥΡΙΟΣ ἘΠΙ ἸΣΡΑΗΛ ΚΑΙ ἸΟΥΔΑ. Οὕτως εἶπε Κύριος, φωνὴν φόβου ἀκούσεσθε· φόβος, καὶ οὐκ ἔστιν εἰρήνη. Ἐρωτήσατε, καὶ ἴδετε, εἰ ἔτεκεν ἄρσεν; καὶ περὶ φόβου, ἐν ᾧ καθέξουσιν ὀσφὺν καὶ σωτηρίαν; διότι ἐώρακα πάντα ἄνθρωπον, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ· ἐστράφησαν πρόσωπα εἰς ἴκτερον. Ὅτι ἐγενήθη μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ οὐκ ἔστι τοιαύτη· καὶ χρόνος στενός ἐστι τῷ Ἰακὼβ, καὶ ἀπὸ τούτου σωθήσεται. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, εἶπε Κύριος, συντρίψω τὸν ζυγὸν ἀπὸ τοῦ τραχήλου αὐτῶν, καὶ τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν διαῤῥήξω· καὶ οὐκ ἐργῶνται αὐτοὶ ἔτι ἀλλοτρίοις, καὶ ἐργῶνται τῷ Κυρίῳ Θεῷ αὐτῶν· καὶ τὸν Δαυὶδ βασιλέα αὐτῶν ἀναστήσω αὐτοῖς. Οὕτως εἶπε Κύριος, ἀνέστησα σύντριμμα, ἀλγηρὰ ἡ πληγή σου, οὐκ ἔστι κρίνων κρίσιν σου, εἰς ἀλγηρὸν ἰατρεύθης, ὠφέλειά σοι οὐκ ἔστι. Πάντες οἱ φίλοι σου ἐπελάθοντό σου, οὐ μὴ ἐπερωτήσωσιν· ὅτι πληγὴν ἐχθροῦ ἔπαισά σε, παιδείαν στερεάν· ἐπὶ πᾶσαν ἀδικίαν σου ἐπλήθυναν αἱ ἁμαρτίαι σου. Διατοῦτο πάντες οἱ ἔσθοντές σε βρωθήσονται, καὶ πάντες οἱ ἐχθροί σου κρέας αὐτῶν πᾶν ἔδονται. Ἐπὶ πλῆθος ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθησαν αἱ ἁμαρτίαι σου· ἐποίησαν ταῦτά σοι· Καὶ ἔσονται οἱ διαφοροῦντές σε εἰς διαφόρημα, καὶ πάντας τοὺς προνομεύσαντάς σε δώσω εἰς προνομήν. Ὅτι ἀνάξω τὸ ἴαμά σου, ἀπὸ πληγῆς ὀδυνηρᾶς ἰατρεύσω σε, φησὶ Κύριος· ὅτι Ἐσπαρμένη ἐκλήθης, θήρευμα ὑμῶν ἐστιν, ὅτι ζητῶν οὐκ ἔστιν αὐτήν. Οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστρέψω τὴν ἀποικιαν Ἰακὼβ, καὶ τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτοῦ ἐλεήσω· καὶ οἰκοδομηθήσεται πόλις ἐπὶ τὸ ὕψος αὐτῆς, καὶ ὁ λαὸς κατὰ τὸ κρίμα αὐτοῦ καθεδεῖται, καὶ ἐξελεύσονται ἀπ’ αὐτῶν ᾄδοντες, φωνὴ παιζόντων· καὶ πλεονάσω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ἐλαττωθῶσι. Καὶ εἰσελεύσονται οἱ υἱοὶ αὐτῶν ὡς τὸ πρότερον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτῶν κατὰ

πρόσωπόν μου ὀρθωθήσεται· καὶ ἐπισκέψομαι τοὺς θλίβοντας αὐτούς. Καὶ ἔσονται ἰσχυρότεροι αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτούς, καὶ ὁ ἄρχων αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ ἐξελεύσεται· καὶ συνάξω αὐτούς, καὶ ἀποστρέψουσι πρὸς μέ· ὅτι τίς ἐστιν οὗτος ὃς ἔδωκε τὴν καρδίαν αὐτοῦ, ἀποστρέψαι πρὸς μέ; φησὶ Κύριος· Ὅτι ὀργὴ Κυρίου ἐξῆλθε θυμώδης, ἐξῆλθεν ὀργὴ στρεφομένη, ἐπ᾽ ἀσεβεῖς ἥξει. Οὐ μὴ ἀποστραφῇ ὀργὴ θυμοῦ Κυρίου, ἕως ποιήσει, καὶ ἕως καταστήσῃ ἐγχείρημα καρδίας αὐτοῦ· ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν γνώσεσθε αὐτά.

# 38

Ἐν τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, εἶπε Κύριος, ἔσομαι εἰς Θεὸν τῷ γένει Ἰσραὴλ, καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν. Οὕτως εἶπε Κύριος, εὗρον θερμὸν ἐν ἐρήμῳ μετὰ ὀλωλότων ἐν μαχαίρᾳ· βαδίσατε, καὶ μὴ ὀλέσητε τὸν Ἰσραὴλ. Κύριος πόῤῥωθεν ὤφθη αὐτῷ· ἀγάπησιν αἰώνιον ἠγάπησά σε· διατοῦτο εἵλκυσά σε εἰς οἰκτείρημα. Ὅτι οἰκοδομήσω σε, καὶ οἰκοδομηθήσῃ παρθένος Ἰσραήλ· ἔπι λήψῃ τύμπανόν σου, καὶ ἐξελεύσῃ μετὰ συναγωγῆς παιζόντων. Ὅτι ἐφυτεύσατε ἀμπελῶνας ἐν ὄρεσι Σαμαρείας, φυτεύσατε καὶ αἰνέσατε, ὅτι ἐστὶν ἡμέρα κλήσεως ἀπολογουμένων ἐν ὄρεσιν Ἐφραὶμ, ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε εἰς Σιὼν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ὑμῶν. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος τῷ Ἰακὼβ, εὐφράνθητε, καὶ χρεμετίσατε ἐπὶ κεφαλὴν ἐθνῶν· ἀκουστὰ ποιήσατε, καὶ αἰνέσατε· εἴπατε, ἔσωσε Κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, τὸ κατάλοιπον τοῦ Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἄγω αὐτοὺς ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ συνάξω αὐτοὺς ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς ἐν ἑορτῇ φασέκ· καὶ τεκνοποιήσει ὄχλον πολὺν, καὶ

ἀποστρέψουσιν ὧδε. Ἐν κλαυθμῷ ἐξῆλθον, καὶ ἐν παρακλήσει ἀνάξω αὐτοὺς, αὐλίζων ἐπὶ διώρυγας ὑδάτων ἐν ὁδῷ ὀρθῇ, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσιν ἐν αὐτῇ· ὅτι ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ εἰς πατέρα, καὶ Ἐφραὶμ πρωτότοκός μου ἐστίν. Ἀκούσατε λόγους Κυρίου ἔθνη, καὶ ἀναγγείλατε εἰς νήσους τὰς μακρόθεν· εἴπατε, ὁ λικμήσας τὸν Ἰσραὴλ καὶ συνάξει αὐτὸν, καὶ φυλάξει αὐτὸν, ὡς ὁ βόσκων ποίμνιον αὐτοῦ. Ὅτι ἐλυτρώσατο Κύριος τὸν Ἰακὼβ, ἐξείλατο αὐτὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ. Καὶ ἥξουσι, καὶ εὐφρανθήσονται ἐν τῷ ὄρει Σιὼν, καὶ ἥξουσιν ἐπ’ ἀγαθὰ Κυρίου, ἐπὶ γῆν σίτου καὶ οἴνου, καὶ καρπῶν, καὶ κτηνῶν, καὶ προβάτων· καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτῶν ὥσπερ ξύλον ἔγκαρπον, καὶ οὐ πεινάσουσιν ἔτι. Τότε χαρήσονται παρθένοι ἐν συναγωγῇ νεανίσκων, καὶ πρεσβύται χαρήσονται, καὶ στρέψω τὸ πένθος αὐτῶν εἰς χαρμονὴν, καὶ ποιήσω αὐτοὺς εὐφραινομένους. Μεγαλυνῶ καὶ μεθύσω τὴν ψυχὴν τῶν ἱερεων υἱῶν Λευὶ, καὶ ὁ λαός μου τῶν ἀγαθῶν μου ἐμπλησθήσεται· οὕτως εἶπε Κύριος. Φωνὴ ἐν Ῥαμᾷ ἠκούσθη θρήνου, καὶ κλαυθμοῦ, καὶ ὀδυρμοῦ· Ῥαχὴλ ἀποκλαιομένη οὐκ ἤθελε παύσασθαι ἐπὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῆς, ὅτι οὐκ εἰσίν. Οὕτως εἶπε Κύριος, διαλειπέτω ἡ φωνή σου ἀπὸ κλαυθμοῦ, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου ἀπὸ δακρύων σου, ὅτι ἔστι μισθὸς τοῖς σοῖς ἔργοις, καὶ ἐπιστρέψουσιν ἐκ γῆς ἐχθρῶν, μόνιμον τοῖς σοῖς τέκνοις. Ἀκοὴν ἤκουσα Ἐφραὶμ ὀδυρομένου, ἐπαίδευσάς με, καὶ ἐπαιδεύθην· ἐγὼ ὥσπερ μόσχος οὐκ ἐδιδάχθην· ἐπίστρεψόν με, καὶ ἐπιστρέψω, ὅτι σὺ Κύριος ὁ Θεός μου. Ὅτι ὕστερον αἰχμαλωσίας μου μετενόησα, καὶ ὕστερον τοῦ γνῶναί με, ἐστέναξα ἐφ’ ἡμέρας αἰσχύνης, καὶ ὑπέδειξά σοι, ὅτι ἔλαβον ὀνειδισμὸν ἐκ νεότητός μου. Υἱὸς ἀγαπητὸς Ἐφραὶμ, ἐμοὶ παιδίον ἐντρυφῶν, ὅτι ἀνθ’ ὧν οἱ λόγοι μου ἐν αὐτῷ, μνείᾳ μνησθήσομαι αὐτοῦ· διατοῦτο

ἔσπευσα ἐπ᾽ αὐτῷ, ἐλεῶν ἐλεήσω αὐτὸν, φησὶ Κύριος. Στῆσον σεαυτὴν Σιὼν, ποίησον τιμωρίαν, δὸς καρδίαν σου εἰς τοὺς ὤμους· ὁδὸν ᾗ ἐπορεύθης, ἀποστράφηθι παρθένος Ἰσραὴλ, ἀποστράφητι εἰς τὰς πόλεις σου πενθοῦσα. Ἕως πότε ἀποστρέψεις θυγάτηρ ἠτιμωμένη; ὅτι ἔκτισε Κύριος σωτηρίαν εἰς καταφύτευσιν καινὴν, ἐν σωτηρίᾳ περιελεύσονται ἄνθρωποι. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, ἔτι ἐροῦσι τὸν λόγον τοῦτον ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ ἐν πόλεσιν αὐτοῦ, ὅταν ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτοῦ, εὐλογημένος Κύριος ἐπὶ δίκαιον ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ· Καὶ ἐνοικοῦντες ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ, ἅμα γεωργῷ, καὶ ἀρθήσεται ἐν ποιμνίῳ. Ὅτι ἐμέθυσα πᾶσαν ψυχὴν διψῶσαν, καὶ πᾶσαν ψυχὴν πεινῶσαν ἐνέπλησα. Διατοῦτο ἐξηγέρθην, καὶ εἶδον, καὶ ὁ ὕπνος μου ἡδύς μοι ἐγενήθη. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ σπερῶ τὸν Ἰσραὴλ καὶ τὸν Ἰούδαν, σπέρμα ἀνθρώπου καὶ σπέρμα κτήνους. Καὶ ἔσται ὥσπερ ἐγρηγόρουν ἐπ᾽ αὐτοὺς καθαιρεῖν καὶ κακοῦν, οὕτως γρηγορήσω ἐπ᾽ αὐτοὺς τοῦ οἰκοδομεῖν καὶ καταφυτεύειν, φησὶ Κύριος. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐ μὴ εἴπωσιν, οἱ πατέρες ἔφαγον ὄμφακα, καὶ οἱ ὀδόντες τῶν τέκνων ἠμωδίασαν. Ἀλλ᾽ ἢ ἕκαστος ἐν τῇ ἑαυτοῦ ἁμαρτίᾳ ἀποθανεῖται, καὶ τοῦ φαγόντος τὸν ὄμφακα αἱμωδιάσουσιν οἱ ὀδόντες αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ διαθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ καὶ τῷ οἴκῳ Ἰούδα διαθήκην καινὴν, οὐ κατὰ τὴν διαθήκην ἣν διεθέμην τοῖς πατράσιν αὐτῶν, ἐν ἡμέρᾳ ἐπιλαβομένου μου τῆς χειρὸς αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὅτι αὐτοὶ οὐκ ἐνέμειναν ἐν τῇ διαθήκῃ μου, καὶ ἐγὼ ἠμέλησα αὐτῶν, φησὶ Κύριος. Ὅτι αὕτη ἡ διαθήκη μου, ἣν διαθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας, φησὶ Κύριος, διδοὺς δώσω νόμους μου εἰς τὴν διάνοιαν αὐτῶν, καὶ ἐπὶ

καρδίας αὐτῶν γράψω αὐτοὺς, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεὸν, καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν. Καὶ οὐ μὴ διδάξωσιν ἕκαστος τὸν πολίτην αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, λέγων, γνῶθι τὸν Κύριον· ὅτι πάντες εἰδήσουσί με ἀπὸ μικροῦ αὐτῶν ἕως μεγάλου αὐτῶν, ὅτι ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν, καὶ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἔτι. Ἐὰν ὑψωθῇ ὁ οὐρανὸς εἰς τὸ μετέωρον, φησὶ Κύριος, καὶ ἐὰν ταπεινωθῇ τὸ ἔδαφος τῆς γῆς κάτω, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀποδοκιμῶ τὸ γένος Ἰσραὴλ, φησὶ Κύριος, περὶ πάντων ὧν ἐποίησαν. Οὕτως εἶπε Κύριος, ὁ δοὺς τὸν ἥλιον εἰς φῶς τῆς ἡμέρας, σελήνην καὶ ἀστέρας εἰς φῶς τῆς νυκτὸς, καὶ κραυγὴν ἐν θαλάσσῃ, καὶ ἐβόμβησε τὰ κύματα αὐτῆς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ· Ἐὰν παύσωναι οἱ νόμοι οὗτοι ἀπὸ προσώπου μου, φησὶ Κύριος, καὶ τὸ γένος Ἰσραὴλ παύσεται γενέσθαι ἔθνος κατὰ πρόσωπόν μου πάσας τὰς ἡμέρας. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ Κύριος, καὶ οἰκοδομηθήσεται πόλις τῷ Κυρίῳ ἀπὸ πύργου Ἀναμεὴλ, ἕως πύλης τῆς γωνίας. Καὶ ἐξελεύσεται ἡ διαμέτρησις αὐτῆς ἀπέναντι αὐτῶν ἕως βουνῶν Γαρὴβ, καὶ περικυκλωθήσεται κύκλῳ ἐξ ἐκλεκτῶν λίθων, καὶ πάντες Ἀσαρημὼθ ἕως Νάχαλ Κέδρων, ἕως γωνίας πύλης ἵππων ἀνατολῆς, ἁγίασμα τῷ Κυρίῳ, καὶ οὐκέτι οὐ μὴ ἐκλίπῃ, καὶ οὐ μὴ καθαιρεθῇ ἕως τοῦ αἰῶνος.

# 39

Ὁ ΛΟΓΟΣ ὁ γενόμενος παρὰ Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν ἐν τῷ ἐνιαυτῷ δεκάτῳ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, οὗτος ἐνιαυτὸς ὀκτωκαιδέκατος τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος. Καὶ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐχαράκωσεν ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ Ἱερεμίας

ἐφυλάσσετο ἐν αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἥ ἐστιν ἐν οἴκῳ βασιλέως, ἐν ᾗ κατέκλεισεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας, λέγων, διατί σὺ προφητεύεις, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι τὴν πόλιν ταύτην ἐν χερσὶ βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ λήψεται αὐτὴν, καὶ Σεδεκίας οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς τῶν Χαλδαίων, ὅτι παραδόσει παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ λαλήσει στόμα αὐτοῦ πρὸς στόμα αὐτοῦ, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὄψονται· Καὶ εἰσελεύσεται Σεδεκίας εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ἐκεῖ καθίεται; ΚΑΙ Ὁ ΛΟΓΟΣ ΚΥΡΙΟΥ ΕΓΕΝΗΘΗ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ, ΛΕΓΩΝ, Ἰδοὺ Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλῶμ ἀδελφοῦ πατρός σου ἔρχεται πρὸς σὲ, λέγων, κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν Ἀναθὼθ, ὅτι σοὶ κρίσις παραλαβεῖν εἰς κτῆσιν. Καὶ ἦλθε πρὸς μὲ Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλὼμ, ἀδελφοῦ πατρός μου, εἰς τὴν αὐλὴν τῆς φυλακῆς, καὶ εἶπε, κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν γῇ Βενιαμὶν τὸν ἐν Ἀναθὼθ, ὅτι σοὶ κρίμα κτήσασθαι αὐτὸν, καὶ σὺ πρεσβύτερος. καὶ ἔγνων, ὅτι λόγος Κυρίου ἐστὶ, καὶ ἐκτησάμην τὸν ἀγρὸν Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, καὶ ἔστησα αὐτῷ ἑπτὰ σίκλους καὶ δέκα ἀργυρίου, καὶ ἔγραψα εἰς βιβλίον, καὶ ἐσφραγισάμην, καὶ διεμαρτυράμην μάρτυρας, καὶ ἔστησα τὸ ἀργύριον ἐν ζυγῷ. Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τὸ ἐσφραγισμένον, καὶ ἔδωκα αὐτὸ τῷ Βαροὺχ υἱῷ Νηρίου υἱῷ Μαασαίου, κατ’ ὀφθαλμοὺς Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, καὶ κατ’ ὀφθαλμοὺς τῶν ἀνδρῶν τῶν παρεστηκότων καὶ γραφόντων ἐν τῷ βιβλίῳ τῆς κτήσεως, καὶ κατ’ ὀφθαλμοὺς τῶν Ἰουδαίων τῶν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς. Καὶ συνέταξα τῷ Βαροὺχ κατ’ ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος παντοκράτωρ, λάβε τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τοῦτο, καὶ τὸ βιβλίον τὸ ἀνεγνωσμένον, καὶ θήσεις αὐτὸ εἰς ἀγγεῖον ὀστράκινον, ἵνα

διαμείνῃ ἡμέρας πλείους. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, ἔτι κτιηθήσονται ἀγροὶ, καὶ οἰκίαι, καὶ ἀμπελῶνες ἐν τῇ γῇ ταύτῃ. Καὶ προσευξάμην πρὸς Κύριον μετὰ τὸ δοῦναί με τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, λέγων, Ὁ ὢν Κύριε, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν τῇ ἰσχύϊ σου τῇ μεγάλῃ, καὶ τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ καὶ τῷ μετεώρῳ, οὐ μὴ ἀποκρυβῇ ἀπὸ σοῦ οὐθὲν, ποιῶν ἔλεος εἰς χιλιάδας, καὶ ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας πατέρων εἰς κόλπους τέκνων αὐτῶν μετ' αὐτούς· ὁ Θεὸς ὁ μέγας, ὁ ἰσχυρὸς, Κύριος μεγάλης βουλῆς, καὶ δυνατὸς τοῖς ἔργοις, ὁ Θεὸς ὁ μέγας ὁ παντοκράτωρ, καὶ μεγαλώνυμος Κύριος· οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς τὰς ὁδοὺς τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων, δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ· Ὃς ἐποίησας σημεῖα καὶ τέρατα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ ἐν Ἰσραὴλ, καὶ ἐν τοῖς γηγενέσι· καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ὄνομα, ὡς ἡμέρα αὕτη, καὶ ἐξήγαγες τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν σημείοις καὶ ἐν τέρασιν, ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, καὶ ἐν ὁράμασι μεγάλοις, καὶ ἔδωκας αὐτοῖς τὴν γῆν ταύτην, ἣν ὤμοσας τοῖς πατράσιν αὐτῶν, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. Καὶ εἰσήλθοσαν καὶ ἔλαβον αὐτὴν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς σου, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί σου οὐκ ἐπορεύθησαν· ἅπαντα ἃ ἐνετείλω αὐτοῖς οὐκ ἐποίησαν, καὶ ἐποὶησαν συμβῆναι αὐτοῖς πάντα τὰ κακὰ ταῦτα. Ἰδοὺ ὄχλος ἥκει εἰς τὴν πόλιν συλλαβεῖν αὐτὴν, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς χεῖρας Χαλδαίων τῶν πολεμούντων αὐτὴν ἀπὸ προσώπου μαχαίρας, καὶ τοῦ λιμοῦ ὡς ἐλάλησας, οὕτως ἐγένετο. Καὶ σὺ λέγεις πρὸς μέ κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρὸν ἀργυρίου· καὶ ἔγραψα βιβλίον, καὶ ἐσφραγισάμην, καὶ ἐπεμαρτυράμην μάρτυρας, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς χεῖρας Χαλδαίων. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς πάσης σαρκός, μὴ ἀπ' ἐμοῦ κρυβήσεταί τι; Διατοῦτο οὕτως εἶπε

Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, δοθεῖσα παραδοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ λήψεται αὐτὴν, καὶ ἥξουσιν οἱ Χαλδαῖοι πολεμοῦντες ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ καύσουσι τὴν πόλιν ταύτην ἐν πυρί, καὶ κατακαύσουσι τὰς οἰκίας ἐν αἷς ἐθυμιῶσαν ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐτῶν τῇ Βάαλ, καὶ ἔσπενδον σπονδὰς θεοῖς ἑτέροις, πρὸς τὸ παραπικράναι με· Ὅτι ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα μόνοι ποιοῦντες τὸ πονηρὸν κατ’ ὀφθαλμούς μου ἐκ νεότητος αὐτῶν· Ὅτι ἐπὶ τὴν ὀργήν μου, καὶ ἐπὶ τὸν θυμόν μου ἦν ἡ πόλις αὕτη, ἀφ’ ἧς ἡμέρας ᾠκοδόμησαν αὐτὴν καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀπαλλάξαι αὐτὴν ἀπὸ προσώπου μου, διὰ πάσας τὰς πονηρίας τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, ὧν ἐποίησαν πικράναι με, αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν, ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἀπέστρεψαν πρὸς μὲ νῶτον, καὶ οὐ πρόσωπον· καὶ ἐδίδαξα αὐτοὺς ὄρθρου, καὶ οὐκ ἤκουσαν ἔτι λαβεῖν παιδείαν. Καὶ ἔθηκαν τὰ μιάσματα αὐτῶν ἐν τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτῷ, ἐν ἀκαθαρσίαις αὐτῶν. Καὶ ᾠκοδόμησαν τοὺς βωμοὺς τῇ Βάαλ τοὺς ἐν φάραγγι υἱοὺ Ἐννὸμ, τοῦ ἀναφέρειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν τῷ Μολὸχ βασιλεῖ, ἃ οὐ συνέταξα αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἀνέβη ἐπὶ καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὸ βδέλυγμα τοῦτο, πρὸς τὸ ἐφαμαρτεῖν τὸν Ἰούδαν. Καὶ νῦν οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν πόλιν, ἣν σὺ λέγεις, παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος ἐν μαχαίρᾳ, καὶ ἐν λιμῷ καὶ ἐν ἀποστολῇ· Ἰδοὺ ἐγὼ συνάγω αὐτοὺς ἐκ πάσης τῆς γῆς, οὗ διέσπειρα αὐτοὺς ἐκεῖ ἐν ὀργῇ μου, καὶ τῷ θυμῷ μου, καὶ ἐν παροξυσμῷ μεγάλῳ· καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ καθιῶ αὐτοὺς πεποιθότας· Καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεόν. Καὶ δώσω αὐτοῖς ὁδὸν

ἑτέραν καὶ καρδίαν ἑτέραν, φοβηθῆναί με πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ εἰς ἀγαθὸν αὐτοῖς καὶ τοῖς τέκνοις αὐτῶν μετ’ αὐτούς. Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην αἰωνίαν, ἣν οὐ μὴ ἀποστρέψω ὄπισθεν αὐτῶν· καὶ τὸν φόβον μου δώσω εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ ἀποστῆναι αὐτοὺς ἀπ’ ἐμοῦ. Καὶ ἐπισκέψομαι τοῦ ἀγαθῶσαι αὐτοὺς, καὶ φυτεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύτῃ ἐν πίστει, καὶ ἐν πάσῃ καρδίᾳ μου, καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, καθὰ ἐπήγαγον ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον πάντα τὰ κακὰ τὰ μεγάλα ταῦτα, οὕτως ἐγὼ ἐπάξω ἐπ’ αὐτοὺς πάντα τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐλάλησα ἐπ’ αὐτούς. Καὶ κτηθήσονται ἔτι ἀγροὶ ἐν τῇ γῇ, ᾗ σὺ λέγεις, ἄβατος ἔσται ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ κτήνους, καὶ παρεδόθησαν εἰς χεῖρας Χαλδαίων. Καὶ κτήσονται ἀγροὺς ἐν ἀργυρίῳ· καὶ γράψεις βιβλίον καὶ σφραγιῇ, καὶ διαμαρτύρῃ μάρτυρας ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ κύκλῳ τῆς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν πόλεσι τοῦ ὄρους, καὶ ἐν πόλεσι τῆς σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ, ὅτι ἀποστρέψω τὰς ἀποικίας αὐτῶν.

# 40

Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν δεύτερον, καὶ αὐτὸς ἦν ἔτι δεδεμένος ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος, ποιῶν γῆν, καὶ πλάσσων αὐτὴν, τοῦ ἀνορθῶσαι αὐτὴν, Κύριος ὄνομα αὐτῷ· Κέκραξον πρὸς μὲ, καὶ ἀποκριθήσομαί σοι, καὶ ἀπαγγελῶ σοι μεγάλα καὶ ἰσχυρὰ, ἃ οὐκ ἔγνως αὐτά. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος περὶ οἴκων τῆς πόλεως ταύτης, καὶ περὶ οἴκων βασιλεως Ἰούδα τῶν καθῃρημένων εἰς χάρακας καὶ προμαχῶνας, τοῦ μάχεσθαι πρὸς τοὺς Χαλδαίους, καὶ πληρῶσαι αὐτὴν τῶν

νεκρῶν τῶν ἀνθρώπων, οὓς ἐπάταξα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἐν θυμῷ μου· καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ᾽ αὐτῶν, περὶ πασῶν τῶν πονηριῶν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνάγω αὐτῇ συνούλωσιν καὶ ἴαμα, καὶ φανερώσω αὐτοῖς, καὶ ἰατρεύσω αὐτὴν, καὶ ποιήσω καὶ εἰρήνην καὶ πίστιν. Καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν Ἰούδα, καὶ ἀποικίαν Ἰσραὴλ, καὶ οἰκοδομήσω αὐτοὺς καθὼς καὶ τοπρότερον. Καὶ καθαριῶ αὐτοὺς ἀπὸ πασῶν τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν, ὧν ἡμάρτοσάν μοι, καὶ οὐ μὴ μνησθήσομαι ἁμαρτιῶν αὐτῶν, ὧν ἥμαρτόν μοι, καὶ ἀπέστησαν ἀπ᾽ ἐμοῦ. Καὶ ἔσται εἰς εὐφροσύνην καὶ αἴνεσιν, καὶ εἰς μεγαλειότητα παντὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς, οἵτινες ἀκούσονται πάντα τὰ ἀγαθὰ ἃ ἐγὼ ποιήσω, καὶ φοβηθήσονται καὶ πικρανθήσονται περὶ πάντων τῶν ἀγαθῶν, καὶ περὶ πάσης τῆς εἰρήνης ἧς ἐγὼ ποιήσω αὐτοῖς. Οὕτως εἶπε Κύριος, ἔτι ἀκουσθήσεται ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, ᾧ ὑμεῖς λέγετε, ἔρημός ἐστιν ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ κτηνῶν, ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλὴμ, ταῖς ἠρημωμέναις, παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ κτήνη· Φωνὴ εὐφροσύνης, καὶ φωνὴ χαρμοσύνης, φωνὴ νυμφίου, καὶ φωνὴ νύμφης, φωνὴ λεγόντων, ἐξομολογεῖσθε Κυρίῳ παντοκράτορι, ὅτι χρηστὸς Κύριος, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· καὶ εἰσοίσουσι δῶρα εἰς οἶκον Κυρίου, ὅτι ἀποστρέψω πᾶσαν τὴν ἀποικίαν τῆς γῆς ἐκείνης κατὰ τοπρότερον, εἶπε Κύριος. Οὕτως εἶπε Κύριος τῶν δυνάμεων, ἔτι ἔσται ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ τῷ ἐρήμῳ, παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ κτῆνος, ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ καταλύματα ποιμένων κοιταζόντων πρόβατα, ἐν πόλεσι τῆς ὀρεινῆς, καὶ ἐν πόλεσι τῆς σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ, καὶ ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ ἐν ταῖς κύκλῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα· ἔτι παρελεύσεται πρόβατα ἐπὶ χεῖρα ἀριθμοῦντος, εἶπε Κύριος.

# 41

Ὁ ΛΟΓΟΣ ὁ γενόμενος πρὸς Ἱερεμίαν παρὰ Κυρίου, καὶ Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶν τὸ στρατόπεδον αὐτοῦ, καὶ πᾶσα ἡ γῆ ἀρχῆς αὐτοῦ ἐπολέμουν ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Ἰούδα, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος, βάδισον πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, οὕτως εἶπε Κύριος, παραδόσει παραδοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ συλλήψεται αὐτὴν, καὶ καύσει αὐτὴν ἐν πυρὶ, καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, καὶ συλλήψει συλληφθήσῃ, καὶ εἰς χεῖρας αὐτοῦ δοθήσῃ, καὶ ὀφθαλμοί σου τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὄψονται, καὶ εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσῃ. Ἀλλ’ ἄκουσον τὸν λόγον Κυρίου, Σεδεκία βασιλεῦ Ἰούδα· οὕτως λέγει Κύριος, ἐν εἰρήνῃ ἀποθανῇ· καὶ ὡς ἔκλαυσαν τοὺς πατέρας σου τοὺς βασιλεύσαντας πρότερόν σου, κλαύσονται καὶ σὲ, οὐαὶ Κύριε, καὶ ἕως ᾅδου κόψονταί σε, ὅτι λόγον ἐγὼ ἐλάλησα, εἶπε Κύριος. Καὶ ἐλάλησεν Ἱερεμίας πρὸς τὸν βασιλέα Σεδεκίαν πάντας τοὺς λόγους τούτους ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἡ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐπολέμει ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, καὶ ἐπὶ Λαχὶς, καὶ ἐπὶ Ἄζηκα, ὅτι αὗται κατελείφθησαν ἐν πόλεσιν Ἰούδα πόλεις ὀχυραί. Ὁ λόγος ὁ γενόμενος πρὸς Ἱερεμίαν παρὰ Κυρίου, μετὰ τὸ συντελέσαι τὸν βασιλέα Σεδεκίαν διαθήκην πρὸς τὸν λαὸν, τοῦ καλέσαι ἄφεσιν, τοῦ ἐξαποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, τὸν Ἑβραῖον καὶ τὴν Ἑβραίαν ἐλευθέρους, πρὸς τὸ μὴ δουλεύειν ἄνδρα ἐξ Ἰούδα. Καὶ ἐπεστράφησαν πάντες οἱ μεγιστᾶνες, καὶ πᾶς ὁ λαὸς οἱ εἰσελθόντες ἐν τῇ διαθήκῃ, τοῦ ἀποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα

αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, καὶ ἐῶσαν αὐτοὺς εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. Καὶ ἐγενήθη λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος, ἐγὼ διεθέμην διαθήκην πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐξειλάμην αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἐκ οἴκου δουλείας, λέγων, ὅταν πληρωθῇ ἓξ ἔτη, ἀποστελεῖς τὸν ἀδελφόν σου τὸν Ἑβραῖον, ὃς πραθήσεταί σοι, καὶ ἐργᾶταί σοι ἓξ ἔτη, καὶ ἐξαποστελεῖς αὐτὸν ἐλεύθερον· καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν. Καὶ ἐπέστρεψαν σήμερον ποιῆσαι τὸ εὐθὲς πρὸ ὀφθαλμῶν μου, τοῦ καλέσαι ἄφεσιν ἕκαστον τοῦ πλησίον αὐτοῦ· καὶ συνετέλεσαν διαθήκην κατὰ πρόσωπόν μου, ἐν τῷ οἴκῳ οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ’ αὐτῷ. Καὶ ἐπεστρέψατε, καὶ ἐβεβηλώσατε τὸ ὄνομά μου, τοῦ ἐπιστρέψαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, οὓς ἐξαπεστείλατε ἐλευθέρους τῇ ψυχῇ αὐτῶν, τοῦ εἶναι ὑμῖν εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ὑμεῖς οὐκ ἠκούσατέ μου, τοῦ καλέσαι ἄφεσιν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· ἰδοὺ ἐγὼ καλῶ ἄφεσιν ὑμῖν εἰς μάχαιραν, καὶ εἰς τὸν θάνατον, καὶ εἰς τὸν λιμὸν, καὶ δώσω ὑμᾶς εἰς διασπορὰν πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς· Καὶ δώσω τοὺς ἄνδρας τοὺς παρεληλυθότας τὴν διαθήκην μου, τοὺς μὴ στήσαντας τὴν διαθήκην μου, ἣν ἐποίησαν κατὰ πρόσωπόν μου, τὸν μόσχον ὃν ἐποίησαν ἐργάζεσθαι αὐτῷ, τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα, καὶ τοὺς δυνάστας, καὶ τοὺς ἱερεῖς, καὶ τὸν λαόν· Καὶ δώσω αὐτοὺς τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν, καὶ ἔσται τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν βρῶσις τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς. Καὶ τὸν Σεδεκίαν βασιλέα τῆς Ἰουδαίας, καὶ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν δώσω εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος τοῖς ἀποτρέχουσιν ἀπ’ αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ συντάσσω, φησὶ Κύριος, καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ταύτην, καὶ πολεμήσουσιν ἐπ’

αὐτὴν, καὶ λήψονται αὐτὴν, καὶ κατακαύσουσιν αὐτὴν ἐν πυρὶ, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, καὶ δώσω αὐτὰς ἐρήμους ἀπὸ τῶν κατοικούντων.

# 42

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ παρὰ Κυρίου ἐν ἡμέραις Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, λέγων, Βάδισον εἰς οἶκον Ἀρχαβεὶν, καὶ ἄξεις αὐτοὺς εἰς οἶκον Κυρίου, εἰς μίαν τῶν αὐλῶν, καὶ ποτιεῖς αὐτοὺς οἶνον. Καὶ ἐξήγαγον τὸν Ἰεχονιαν υἱὸν Ἱερεμὶν υἱοῦ Χαβασὶν, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ πᾶσαν τὴν οἰκίαν Ἀρχαβεὶν, καὶ εἰσήγαγον αὐτοὺς εἰς οἶκον Κυρίου εἰς τὸ παστοφόριον υἱῶν Ἰωνὰν, υἱοῦ Ἀνανίου, υἱοῦ Γοδολίου ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ, ὅς ἐστιν ἐγγὺς τοῦ οἴκου τῶν ἀρχόντων τῶν ἐπάνω τοῦ οἴκου Μαασαίου υἱοῦ Σελὼμ, τοῦ φυλάσσοντος τὴν αὐλήν. Καὶ ἔδωκα κατὰ πρόσωπον αὐτῶν κεράμιον οἴνου, καὶ ποτήρια, καὶ εἶπα, πίετε οἶνον. Καὶ εἶπον, οὐ μὴ πίωμεν οἶνον, ὅτι Ἰωναδὰβ υἱὸς Ῥηχὰβ ὁ πατὴρ ἡμῶν ἐνετείλατο ἡμῖν, λέγων, οὐ μὴ πίητε οἶνον ὑμεῖς καὶ οἱ υἱοὶ υμῶν ἕως αἰῶνος, καὶ οἰκίας οὐ μὴ οἰκοδομήσητε, καὶ σπέρμα οὐ μὴ σπείρητε, καὶ ἀμπελὼν οὐκ ἔσται ὑμῖν, ὅτι ἐν σκηναῖς οἰκήσετε πάσας τὰς ἡμέρας ὑμῶν, ὅπως ἂν ζήσητε ἡμέρας πολλὰς ἐπὶ τῆς γῆς, ἐφ’ ἧς διατρίβετε ὑμεῖς ἐπ’ αὐτῆς. Καὶ ἠκούσαμεν τῆς φωνῆς Ἰωναδὰβ τοῦ πατρὸς ἡμῶν, πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον πάσας τὰς ἡμέρας ἡμῶν, ἡμεῖς καὶ αἱ γυναῖκες ἡμῶν, καὶ οἱ υἱοὶ ἡμῶν, καὶ αἱ θυγατέρες ἡμῶν, καὶ πρὸς τὸ μὴ οἰκοδομεῖν οἰκίας τοῦ κατοικεῖν ἐκεῖ, καὶ ἀμπελὼν καὶ ἀγρὸς καὶ σπέρμα οὐκ ἐγένετο ἡμῖν. Καὶ ᾠκήσαμεν ἐν σκηναῖς, καὶ

ἠκούσαμεν, καὶ ἐποιήσαμεν κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο ἡμῖν Ἰωναδὰβ ὁ πατὴρ ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη ὅτε ἀνέβη Ναβουχοδονόσορ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εἴπαμεν εἰσελθεῖν, καὶ εἰσήλθομεν εἰς Ἰερουσαλὴμ, ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως τῶν Χαλδαίων, καὶ ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ᾠκοῦμεν ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, οὕτως λέγει Κύριος, πορεύου, καὶ εἰπὸν ἀνθρώπῳ Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἰερουσαλὴμ, οὐ μὴ λάβητε παιδείαν τοῦ ἀκούειν τοὺς λόγους μου; Ἔστησαν ῥῆμα υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ, ὃ ἐνετείλατο τοῖς τέκνοις αὐτοῦ πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον, καὶ οὐκ ἐπίοσαν· καὶ ἐγὼ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς ὄρθρου, καὶ οὐκ ἠκούσατε. Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς τοὺς παῖδάς μου τοὺς προφήτας, λέγων, ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ βελτίω ποιήσατε τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν, καὶ οὐ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἑτέρων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ οἰκήσετε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα ὑμῖν, καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν· καὶ οὐκ ἐκλίνατε τὰ ὦτα ὑμῶν, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε. Καὶ ἔστησαν υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ τὴν ἐντολὴν τοῦ πατρὸς αὐτῶν, ὁ δὲ λαὸς οὗτος οὐκ ἤκουσέ μου. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ φέρω ἐπὶ Ἰούδαν καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα ἐπ’ αὐτούς. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ἐπειδὴ ἤκουσαν υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ τὴν ἐντολὴν τοῦ πατρὸς αὐτῶν ποιεῖν καθότι ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ πατὴρ αὐτῶν, οὐ μὴ ἐκλείπῃ ἀνὴρ τῶν υἱῶν Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ παρεστηκὼς κατὰ πρόσωπόν μου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς γῆς.

# 43

ἘΝ ΤΩ ἘΝΙΑΥΤΩ ΤΩ ΤΕΤΑΡΤΩ ἸΩΑΚΕΙΜ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἐγενήθη λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Λάβε σεαυτῷ χαρτίον βιβλίου, καὶ γράψον ἐπ’ αὐτοῦ πάντας τοὺς λόγους οὓς ἐλάλησα πρὸς σὲ ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ Ἰούδα, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἀφ’ ἧς ἡμέρας λαλήσαντός μου πρὸς σὲ ἀφ’ ἡμερῶν Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Ἴσως ἀκούσεται ὁ οἶκος Ἰούδα πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐγὼ λογίζομαι ποιῆσαι αὐτοῖς, ἵνα ἀποστρέψωσιν ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, καὶ ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν καὶ ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῶν. Καὶ ἐκάλεσεν Ἱερεμίας τὸν Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου· καὶ ἔγραψεν ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου πάντας τοὺς λόγους Κυρίου, οὓς ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, εἰς χαρτίον βιβλίου. Καὶ ἐνετείλατο Ἱερεμίας τῷ Βαροὺχ, λέγων, ἐγὼ φυλάσσομαι, οὐ μὴ δύνωμαι εἰσελθεῖν εἰς οἶκον Κυρίου· Καὶ ἀναγνώσῃ ἐν τῷ χαρτίῳ τούτῳ εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ ἐν οἴκῳ Κυρίου, ἐν ἡμέρᾳ νηστείας, καὶ ἐν ὡσὶ παντὸς Ἰούδα τῶν ἐρχομένων ἐκ πόλεων αὐτῶν, ἀναγνώσῃ αὐτοῖς. Ἴσως πεσεῖται ἔλεος αὐτῶν κατὰ πρόσωπον Κυρίου, καὶ ἀποστρέψουσιν ἐκ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, ὅτι μέγας ὁ θυμὸς καὶ ἡ ὀργὴ Κυρίου, ἣν ἐλάλησεν ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον. Καὶ ἐποίησε Βαροὺχ κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο αὐτῷ Ἱερεμίας, τοῦ ἀναγνῶναι ἐν τῷ βιβλίῳ τοὺς λόγους Κυρίου ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἔτει τῷ ὀγδόῳ τῷ βασιλεῖ Ἰωακεὶμ ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἐννάτῳ, ἐξεκκλησίασαν νηστείαν κατὰ πρόσωπον Κυρίου πᾶς ὁ λαὸς ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ οἶκος Ἰούδα. Καὶ ἀνεγίνωσκε Βαροὺχ ἐν τῷ βιβλίῳ τοὺς λόγους Ἱερεμίου ἐν οἴκῳ Κυρίου, ἐν οἴκῳ Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν τοῦ γραμματέως, ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐπάνω ἐν προθύροις πύλης τοῦ οἴκου Κυρίου τῆς καινῆς, καὶ ἐν ὡσὶ παντὸς τοῦ λαοῦ. Καὶ ἤκουσε Μιχαίας υἱὸς Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν ἅπαντας τοὺς λόγους Κυρίου,

ἐκ τοῦ βιβλίου· Καὶ κατέβη εἰς οἰκίαν τοῦ βασιλέως, εἰς τὸν οἶκον τοῦ γραμματέως, καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ πάντες οἱ ἄρχοντες ἐκάθηντο, Ἐλισαμὰ ὁ γραμματεὺς, καὶ Δαλαίας υἱὸς Σελεμίου, καὶ Ἰωνάθαν υἱὸς Ἀκχοβὼρ, καὶ Γαμαρίας υἱὸς Σαφὰν, καὶ Σεδεκίας υἱὸς Ἀνανίου, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες· Καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς Μιχαίας πάντας τοὺς λόγους οὓς ἤκουσεν ἀναγινώσκοντος Βαροὺχ εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ. Καὶ ἀπέστειλαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, τὸν Ἰουδὶν υἱὸν Ναθανίου, υἱοῦ Σελεμίου, υἱοῦ Χουσὶ, λέγοντες, τὸ χαρτίον ἐν ᾧ σὺ ἀναγινώσκεις ἐν αὐτῷ ἐν ὠσὶ τοῦ λαοῦ, λάβε αὐτὸ εἰς τὴν χεῖρά σου, καὶ ἧκε· καὶ ἔλαβε Βαροὺχ τὸ χαρτίον, καὶ κατέβη πρὸς αὐτούς. Καὶ εἶπον αὐτῷ, πάλιν ἀνάγνωθι εἰς τὰ ὦτα ἡμῶν· καὶ ἀνέγνω Βαρούχ. Καὶ ἐγενήθη ὡς ἤκουσαν πάντας τοὺς λόγους, συνεβουλεύσαντο ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ εἶπον, ἀναγγέλλοντες ἀναγγείλωμεν τῷ βασιλεῖ ἅπαντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ τὸν Βαροὺχ ἠρώτησαν, λέγοντες, ποῦ ἔγραψας πάντας τοὺς λόγους τούτους; Καὶ εἶπε Βαροὺχ, ἀπὸ στόματος αὐτοῦ ἀνήγγειλέ μοι Ἱερεμίας πάντας τοὺς λόγους τούτους, καὶ ἔγραφον ἐν βιβλίῳ. Καὶ εἶπον τῷ Βαροὺχ, βάδισον, καὶ κατακρύβηθι σὺ καὶ Ἱερεμίας, ἄνθρωπος μὴ γνώτω ποῦ ὑμεῖς. Καὶ εἰσῆλθον πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὴν αὐλὴν, καὶ τὸ χαρτίον ἔδωκαν φυλάσσειν ἐν οἴκῳ Ἐλισαμά· καὶ ἀνήγγειλαν τῷ βασιλεῖ πάντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς τὸν Ἰουδὶν, λαβεῖν τὸ χαρτίον· καὶ ἔλαβεν αὐτὸ ἐξ οἴκου Ἐλισαμά· καὶ ἀνέγνω Ἰουδὶν εἰς τὰ ὦτα τοῦ βασιλέως, καὶ εἰς τὰ ὦτα πάντων τῶν ἀρχόντων, τῶν ἑστηκότων περὶ τὸν βασιλέα. Καὶ ὁ βασιλεὺς ἐκάθητο ἐν οἴκῳ χειμερινῷ, καὶ ἐσχάρα πυρὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἀναγινώσκοντος Ἰουδὶν τρεῖς σελίδας καὶ τέσσαρας, ἀπέτεμεν αὐτὰς τῷ ξυρῷ τοῦ γραμματέως,

καὶ ἔῤῥιπτεν εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας, ἕως ἐξέλιπε πᾶς ὁ χάρτης εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας. Καὶ οὐκ ἐζήτησαν, καὶ οὐ διέῤῥηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ οἱ ἀκούοντες πάντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ Ἐλνάθαν καὶ Γοδολίας ὑπέθεντο τῷ βασιλεῖ, πρὸς τὸ κατακαῦσαι τὸ χαρτίον. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Ἱερεμεὴλ υἱῷ τοῦ βασιλέως, καὶ τῷ Σαραίᾳ υἱῷ Ἐσριὴλ, συλλαβεῖν τὸν Βαροὺχ, καὶ τὸν Ἱερεμίαν, καὶ κατεκρύβησαν. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ κατακαῦσαι τὸν βασιλέα τὸ χαρτίον, πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἔγραψε Βαροὺχ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου, λέγων, πάλιν λάβε σὺ χαρτίον ἕτερον, καὶ γράψον πάντας τοὺς λόγους, τοὺς ὄντας ἐπὶ τοῦ χαρτίου, οὓς κατέκαυσεν ὁ βασιλεὺς Ἰωακεὶμ, καὶ ἐρεῖς, οὕτως εἶπε Κύριος, σὺ κατέκαυσας τὸ χαρτίον τοῦτο, λέγων, διατί ἔγραψας ἐπ’ αὐτῷ, λέγων, εἰσπορευόμενος εἰσπορεύσεται βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ ἐξολοθρεύσει τὴν γῆν ταύτην, καὶ ἐκλείψει ἐπ’ αὐτῆς ἄνθρωπος καὶ κτήνη; Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, οὐκ ἔσται αὐτῷ καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, καὶ τὸ θνησιμαῖον αὐτοῦ ἔσται ἐῤῥιμμένον ἐν τῷ καύματι τῆς ἡμέρας, καὶ ἐν τῷ παγετῷ τῆς νυκτός· Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπ’ αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ ἐπάξω ἐπ’ αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ γῆν Ἰούδα, πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα πρὸς αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἤκουσαν. Καὶ ἔλαβε Βαροὺχ χαρτίον ἕτερον, καὶ ἔγραψεν ἐπ’ αὐτῷ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου ἅπαντας τοὺς λόγους τοῦ βιβλίου, οὓς κατέκαυσεν Ἰωακείμ· καὶ ἔτι προσετέθησαν αὐτῷ λόγοι πλείονες, ὡς οὗτοι.

# 44

Καὶ ἐβασίλευσε Σεδεκίας υἱὸς Ἰωσεία ἀντὶ Ἰωακείμ, ὃν ἐβασίλευσε Ναβουχοδονόσορ βασιλεύειν τοῦ Ἰούδα. Καὶ οὐκ ἤκουσαν αὐτὸς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ καὶ ὁ λαὸς τῆς γῆς τοῦς λόγους Κυρίου, οὓς ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἱερεμίου. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας τὸν Ἰωάχαλ υἱὸν Σελεμίου, καὶ τὸν Σοφονίαν υἱὸν Μαασαίου τὸν ἱερέα πρὸς Ἱερεμίαν λέγων, πρόσευξαι δὴ περὶ ἡμῶν πρὸς Κύριον. Καὶ Ἱερεμίας ἦλθε καὶ διῆλθε διὰ μέσου τῆς πόλεως, καὶ οὐκ ἔδωκαν αὐτὸν εἰς τὸν οἶκον τῆς φυλακῆς. Καὶ δύναμις Φαραὼ ἐξῆλθεν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἤκουσαν οἱ Χαλδαῖοι τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ ἀνέβησαν ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, οὕτως εἶπε Κύριος, οὕτως ἐρεῖς πρὸς βασιλέα Ἰούδα τὸν ἀποστείλαντα πρὸς σὲ, τοῦ ἐκζητῆσαί με, ἰδοὺ δύναμις· Φαραὼ ἡ ἐξελθοῦσα ὑμῖν εἰς βοήθειαν· ἀποστρέψουσιν εἰς γῆν Αἰγύπτου, καὶ ἀναστρέψουσιν αὐτοὶ οἱ Χαλδαῖοι, καὶ πολεμήσουσιν ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ συλλήψονται αὐτὴν, καὶ καύσουσιν αὐτὴν ἐν πυρί. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, μὴ ὑπολάβητε ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν, λέγοντες, ἀποτρέχοντες ἀπελεύσονται ἀφ’ ἡμῶν οἱ Χαλδαῖοι· ὅτι οὐ μὴ ἀπέλθωσι. Καὶ ἐὰν πατάξητε πᾶσαν δύναμιν τῶν Χαλδαίων τοὺς πολεμοῦντας ὑμᾶς, καὶ καταλειφθῶσί τινες ἐκκεκεντημένοι, ἕκαστος ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ οὗτοι ἀναστήσονται, καὶ καύσουσι τὴν πόλιν ταύτην ἐν πυρί. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἀνέβη ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως Φαραὼ, ἐξῆλθεν Ἱερεμίας ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ τοῦ πορευθῆναι εἰς γῆν Βενιαμεὶν, τοῦ ἀγοράσαι ἐκεῖθεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ· Καὶ ἐγένετο αὐτὸς ἐν πύλῃ Βενιαμὶν, καὶ ἐκεῖ ἄνθρωπος παρ’

ᾧ κατέλυε, Σαρουΐα υἱὸς Σελεμίου, υἱοῦ Ἀνανίου, καὶ συνέλαβε τὸν Ἱερεμίαν, λέγων, πρὸς τοὺς Χαλδαίους σὺ φεύγεις. Καὶ εἶπε, ψεῦδος, οὐκ εἰς τοὺς Χαλδαίους ἐγὼ φεύγω· καὶ οὐκ εἰσήκουσεν αὐτοῦ· καὶ συνέλαβε Σαρουΐα τὸν Ἱερεμίαν, καὶ εἰσήγαγεν αὐτὸν πρὸς τοὺς ἄρχοντας. Καὶ ἐπικράνθησαν οἱ ἄρχοντες ἐπὶ Ἱερεμίαν, καὶ ἐπάταξαν αὐτὸν, καὶ ἀπέστειλαν αὐτὸν εἰς τὴν οἰκίαν Ἰωνάθαν τοῦ γραμματέως, ὅτι ταύτην ἐποίησαν εἰς οἰκίαν φυλακῆς. Καὶ ἦλθεν Ἱερεμίας εἰς οἰκίαν τοῦ λάκκου, καὶ εἰς τὴν χερὲθ, καὶ ἐκάθισεν ἐκεῖ ἡμέρας πολλάς. Καὶ ἀπέστειλε Σεδεκίας, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν, καὶ ἠρώτα αὐτὸν ὁ βασιλεὺς κρυφαίως εἰπεῖν, εἰ ἔστιν ὁ λόγος παρὰ Κυρίου; καὶ εἶπεν, ἔστιν· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος παραδοθήσῃ. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ βασιλεῖ, τί ἠδίκησά σε, καὶ τοὺς παῖδάς σου, καὶ τὸν λαὸν τοῦτον, ὅτι σὺ δίδως με εἰς οἰκίαν φυλακῆς; Καὶ ποῦ εἰσιν οἱ προφῆται ὑμῶν οἱ προφητεύσαντες ὑμῖν, λέγοντες, ὅτι οὐ μὴ ἔλθῃ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην; Καὶ νῦν, Κύριε βασιλεῦ, πεσέτω τὸ ἔλεός μου κατὰ πρόσωπόν σου· καὶ τί ἀποστρέφεις με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν τοῦ γραμματέως; καὶ οὐ μὴ ἀποθάνω ἐκεῖ. Καὶ συνέταξεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐνεβάλοσαν αὐτὸν εἰς οἰκίαν τῆς φυλακῆς, καὶ ἐδίδοσαν αὐτῷ ἄρτον ἕνα τῆς ἡμέρας, ἕξωθεν οὗ πέσσουσιν, ἕως ἐξέλιπον οἱ ἄρτοι ἐκ τῆς πόλεως· καὶ ἐκάθισεν Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς.

# 45

Καὶ ἤκουσε Σαφανίας υἱὸς Νάθαν, καὶ Γοδολίας υἱὸς Πασχὼρ, καὶ Ἰωάχαλ υἱὸς Σεμελίου, τοὺς λόγους οὓς Ἱερεμίας ἐλάλει ἐπὶ τὸν

λαὸν, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος, ὁ κατοικῶν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐν λιμῷ· καὶ ὁ ἐκπορευόμενος πρὸς τοὺς Χαλδαίους, ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς εὕρημα, καὶ ζήσεται. Ὅτι οὕτως εἶπε Κύριος, παραδιδομένη παραδοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας δυνάμεως βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ συλλήψεται αὐτήν. Καὶ εἶπον τῷ βασιλεῖ, ἀναιρεθήτω δὴ ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, ὅτι αὐτὸς ἐκλύει τὰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων τῶν πολεμούντων τῶν καταλειπομένων ἐν τῇ πόλει, καὶ τὰς χεῖρας παντὸς τοῦ λαοῦ, λαλῶν πρὸς αὐτοὺς κατὰ τοὺς λόγους τούτους· ὅτι ὁ ἄνθρωπος οὗτος οὐ χρησμολογεῖ εἰρήνην τῷ λαῷ τούτῳ ἀλλ’ ἢ πονηρά. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, ἰδοὺ αὐτὸς ἐν χερσὶν ὑμῶν· ὅτι οὐκ ἠδύνατο ὁ βασιλεὺς πρὸς αὐτούς. Καὶ ἔῤῥιψαν αὐτὸν εἰς λάκκον Μελχίου υἱοῦ τοῦ βασιλέως, ὃς ἦν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, καὶ ἐχάλασαν αὐτὸν εἰς τὸν λάκκον, καὶ ἐν τῷ λάκκῳ οὐκ ἦν ὕδωρ, ἀλλ’ ἢ βόρβορος, καὶ ἦν ἐν τῷ βορβόρῳ. Καὶ ἤκουσεν Ἀβδεμέλεχ ὁ Αἰθίοψ, καὶ αὐτὸς ἐν οἰκίᾳ τοῦ βασιλέως, ὅτι ἔδωκαν Ἱερεμίαν εἰς τὸν λάκκον· καὶ ὁ βασιλεὺς ἦν ἐν τῇ πύλῃ Βενιαμὶν, καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν, καὶ ἐλάλησε πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπεν, ἐπονηρεύσω, ἃ ἐποίησας τοῦ ἀποκτεῖναι τὸν ἄνθρωπον τοῦτον, ἀπὸ προσώπου τοῦ λιμοῦ, ὅτι οὐκ εἰσὶν ἔτι ἄρτοι ἐν τῇ πόλει. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Ἀβδεμέλεχ, λέγων, λάβε εἰς τὰς χεῖράς σου ἐντεῦθεν τριάκοντα ἀνθρώπους, καὶ ἀνάγαγε αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου, ἵνα μὴ ἀποθάνῃ. Καὶ ἔλαβεν Ἀβδεμέλεχ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ βασιλέως τὴν ὑπόγαιον, καὶ ἔλαβεν ἐκεῖθεν παλαιὰ ῥάκη καὶ παλαιὰ σχοινία, καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὰ πρὸς Ἱερεμίαν εἰς τὸν λάκκον, καὶ εἶπε, ταῦτα θὲς ὑποκάτω τῶν σχοινίων· καὶ ἐποίησεν Ἱερεμίας οὕτως. Καὶ εἵλκυσαν αὐτὸν τοῖς σχοινίοις, καὶ ἀνήγαγον αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου· καὶ ἐκάθισεν

Ἰερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν προς ἑαυτὸν εἰς οἰκίαν Ἀσελεισὴλ, τὴν ἐν οἴκῳ Κυρίου· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ἐρωτήσω σε λόγον, καὶ μὴ δὴ κρύψῃς ἀπ’ ἐμοῦ ῥῆμα. Καὶ εἶπεν Ἰερεμίας τῷ βασιλεῖ, ἐὰν ἀναγγείλω σοι, οὐχὶ θανάτῳ με θανατώσεις; καὶ ἐὰν συμβουλεύσω σοι, οὐ μὴ ἀκούσῃς μου. Καὶ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, λέγων, ζῇ Κύριος ὃς ἐποίησεν ἡμῖν τὴν ψυχὴν ταύτην, εἰ ἀποκτενῶ σε, καὶ εἰ δώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων τούτων. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἰερεμίας, οὕτως εἶπε Κύριος, ἐὰν ἐξελθὼν ἐξέλθῃς πρὸς ἡγεμόνας βασιλέως Βαβυλῶνος, ζήσεται ἡ ψυχή σου, καὶ ἡ πόλις αὕτη οὐ μὴ κατακαυθῇ ἐν πυρὶ, καὶ ζήσῃ σὺ καὶ ἡ οἰκία σου. Καὶ ἐὰν μὴ ἐξέλθῃς, δοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων, καὶ καύσουσιν αὐτὴν ἐν πυρὶ καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Ἱερεμίᾳ, ἐγὼ λόγον ἔχω τῶν Ἰουδαίων τῶν πεφευγότων πρὸς τοὺς Χαλδαίους, μὴ δώσειν με εἰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ καταμωκήσονταί μου. Καὶ εἶπεν Ἰερεμίας, οὐ μὴ παραδῶσί σε· ἄκουσον τὸν λόγον Κυρίου, ὃν ἐγὼ λέγω πρὸς σὲ, καὶ βέλτιον ἔσται σοι, καὶ ζήσεται ἡ ψυχή σου. Καὶ εἰ μὴ θέλῃς σὺ ἐξελθεῖν, οὗτος ὁ λόγος ὃν ἔδειξέ μοι Κύριος· Καὶ ἰδοὺ πᾶσαι αἱ γυναῖκες αἱ καταλειφθεῖσαι ἐν οἰκίᾳ βασιλέως Ἰούδα, ἐξήγοντο πρὸς ἄρχοντας βασιλέως Βαβυλῶνος· καὶ αὗται ἔλεγον, ἠπάτησάν σε, καὶ δυνήσονταί σοι ἄνδρες εἰρηνικοί σου· καὶ καταλύσουσιν ἐν ὀλισθήμασι πόδα σου, ἀπέστρεψαν ἀπὸ σοῦ, καὶ τᾶς γυναῖκάς σου καὶ τὰ τέκνα σου ἐξάξουσι πρὸς τοὺς Χαλδαίους· καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς, ὅτι ἐν χειρὶ βασιλέως Βαβυλῶνος συλληφθήσῃ, καὶ ἡ πόλις αὕτη κατακαυθήσεται. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ἄνθρωπος μὴ γνώτω ἐκ τῶν λόγων τούτων, καὶ σὺ οὐ μὴ ἀποθάνῃς. Καὶ ἐὰν οἱ ἄρχοντες ἀκούσωσιν ὅτι ἐλάλησά σοι, καὶ ἔλθωσι πρὸς σὲ, καὶ

εἴπωσί σοι, ἀνάγγειλον ἡμῖν, τί ἐλάλησέ σοι ὁ βασιλεύς; μὴ κρύψῃς ἀφ’ ἡμῶν, καὶ οὐ μὴ ἀνέλωμέν σε· καὶ τί ἐλάλησε πρὸς σὲ ὁ βασιλεύς; Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, ῥίπτω ἐγὼ τὸ ἔλεός μου κατ’ ὀφθαλμοὺς τοῦ βασιλέως, πρὸς τὸ μὴ ἀποστρέψαι με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν, ἀποθανεῖν με ἐκεῖ. Καὶ ἦλθοσαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Ἰερεμίαν, καὶ ἠρώτησαν αὐτόν· καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ βασιλεύς· καὶ ἀπεσιώπησαν, ὅτι οὐκ ἠκούσθη ὁ λόγος Κυρίου. Καὶ ἐκάθισεν Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἕως χρόνου οὗ συνελήφθη Ἱερουσαλήμ.

# 46

Καὶ ἐγένετο τῷ μηνὶ τῷ ἐννάτῳ τοῦ Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα, παρεγένετο Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπολιόρκουν αὐτήν. Καὶ ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει τοῦ Σεδεκία, ἐν τῷ μηνὶ τῷ τετάρτῳ, ἐννάτῃ τοῦ μηνὸς, ἐῤῥάγη ἡ πόλις, καὶ εἰσῆλθον πάντες οἱ ἡγούμενοι βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐκάθισαν ἐν πύλῃ τῇ μέσῃ Μαργανασὰρ, καὶ Σαμαγὼθ, καὶ Ναβουσάχαρ, καὶ Ναβουσαρεὶς, Ναγαργᾶς, Νασεῤῥαβαμὰθ, καὶ οἱ κατάλοιποι ἡγεμόνες βασιλέως Βαβυλῶνος. Καὶ ἀπέστειλαν, καὶ ἔλαβον τὸν Ἱερεμίαν ἐξ αὐλῆς τῆς φυλακῆς, καὶ ἔδωκαν αὐτὸν πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχεικὰμ, υἱοῦ Σαφὰν, καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν, καὶ ἐκάθισεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ. Καὶ πρὸς Ἱερεμίαν ἐγένετο λόγος Κυρίου ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, λέγων, πορεύου καὶ εἰπὲ πρὸς Ἀβδεμέλεχ τὸν Αἰθίοπα, οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ἰδοὺ ἐγὼ φέρω τοὺς λόγους μου ἐπὶ τὴν

πόλιν ταύτην εἰς κακὰ καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά. Καὶ σώσω σε ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ οὐ μὴ δώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων ὧν σὺ φοβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι σώζων σώσω σε, καὶ ἐν ῥομφαίᾳ οὐ μὴ πέσῃς· καὶ ἔσται ἡ ψυχή σου εἰς εὕρημα, ὅτι ἐπεποίθεις ἐπ᾽ ἐμοὶ, φησὶ Κύριος.

# 47

Ὁ λόγος ὁ γενόμενος παρὰ Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ ἀποστεῖλαι αὐτὸν Ναβουζαρδὰν τὸν ἀρχιμάγειρον τὸν ἐκ Ῥαμὰ, ἐν τῷ λαβεῖν αὐτὸν ἐν χειροπέδαις, ἐν μέσῳ ἀποικίας Ἰούδα τῶν ἠγμένων εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἔλαβεν αὐτὸν ὁ ἀρχιμάγειρος, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Κύριος ὁ Θεός σου ἐλάλησε τὰ κακὰ ταῦτα ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον· Καὶ ἐποίησε Κύριος, ὅτι ἡμάρτετε αὐτῷ, καὶ οὐκ ἠκούσατε τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἔλυσά σε ἀπὸ τῶν χειροπέδων τῶν ἐπὶ τὰς χεῖράς σου· εἰ καλὸν ἐναντίον σου ἐλθεῖν μετ᾽ ἐμοῦ εἰς Βαβυλῶνα, καὶ θήσω τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπὶ σέ. Εἰ δὲ μὴ, ἀπότρεχε, ἀνάστρεψον πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχεικὰμ, υἱοῦ Σαφὰν, ὃν κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ οἴκησον μετ᾽ αὐτοῦ ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ ἐν γῇ Ἰούδα, εἰς ἅπαντα τὰ ἀγαθὰ ἐν ὀφθαλμοῖς σου τοῦ πορευθῆναι ἐκεῖ, καὶ πορεύου· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ ἀρχιμάγειρος δῶρα, καὶ ἀπέστειλεν αὐτόν. Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ ἐκάθισεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, τοῦ καταλειφθέντος ἐν τῇ γῇ. Καὶ ἤκουσαν πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως τῆς ἐν ἀγρῷ, αὐτοὶ καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν, ὅτι κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὸν Γοδολίαν ἐν τῇ γῇ, καὶ παρακατέθεντο αὐτῷ ἄνδρας καὶ γυναῖκας αὐτῶν, οὓς οὐ

κατῴκισεν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ Ἰσραὴλ υἱὸς Ναθανίου, καὶ Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ Σαραίας υἱὸς Θαναεμὲθ, καὶ υἱοὶ Ἰωφὲ τοῦ Νετωφαθὶ, καὶ Ἐζονίας υἱὸς τοῦ Μωχαθὶ, αὐτοὶ, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν. Καὶ ὤμοσεν αὐτοῖς Γοδολίας, καὶ τοῖς ἀνδράσιν αὐτῶν, λέγων, μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου τῶν παίδων τῶν Χαλδαίων· κατοικήσατε ἐν τῇ γῇ, καὶ ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, καὶ βέλτιον ἔσται ὑμῖν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ κάθημαι ἐναντίον ὑμῶν εἰς Μασσηφὰ, στῆναι κατὰ πρόσωπον τῶν Χαλδαίων, οἳ ἂν ἔλθωσιν ἐφ’ ὑμᾶς· καὶ ὑμεῖς συνάγετε οἶνον καὶ ὀπώραν καὶ ἔλαιον, καὶ βάλετε εἰς τὰ ἀγγεῖα ὑμῶν, καὶ οἰκήσατε ἐν ταῖς πόλεσιν αἷς κατεκρατήσατε. Καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι οἱ ἐν Μωὰβ, καὶ ἐν υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ οἱ ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ, καὶ οἱ ἐν πάσῃ τῇ γῇ, ἤκουσαν ὅτι ἔδωκε βασιλεὺς Βαβυλῶνος κατάλειμμα τῷ Ἰούδᾳ, καὶ ὅτι κατέστησεν ἐπ’ αὐτοὺς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχεικάμ. Καὶ ἦλθον πρὸς Γοδολίαν εἰς γῆν Ἰούδα εἰς Μασσηφὰ, καὶ συνήγαγον οἶνον, καὶ ὀπώραν πολλὴν σφόδρα, καὶ ἔλαιον. Καὶ Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, οἱ ἐν τοῖς ἀγροῖς, ἦλθον πρὸς τὸν Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ εἶπον αὐτῷ, εἰ γνώσει γινώσκεις, ὅτι Βελεισσὰ βασιλεὺς υἱὸς Ἀμμὼν ἀπέστειλε πρὸς σὲ τὸν Ἰσμαὴλ πατάξαι σου ψυχήν; καὶ οὐκ ἐπίστευσεν αὐτοῖς Γοδολίας. Καὶ εἶπεν Ἰωάναν τῷ Γοδολίᾳ κρυφαίως ἐν Μασσηφᾷ, πορεύσομαι δὴ καὶ πατάξω τὸν Ἰσμαὴλ, καὶ μηδεὶς γνώτω, μὴ πατάξῃ σου ψυχὴν, καὶ διασπαρῇ πᾶς Ἰούδα οἱ συνηγμένοι πρὸς σὲ, καὶ ἀπολοῦνται οἱ κατάλοιποι Ἰούδα. Καὶ εἶπε Γοδολίας πρὸς Ἰωάναν, Μὴ ποιήσῃς τὸ πρᾶγμα, ὅτι ψευδῆ σὺ λέγεις ὑπὲρ Ἰσμαήλ.

# 48

Καὶ ἐγένετο τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, ἦλθεν Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου υἱοῦ Ἐλεασὰ, ἀπὸ γένους τοῦ βασιλέως, καὶ δέκα ἄνδρες μετ᾽ αὐτοῦ πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ ἔφαγον ἐκεῖ ἄρτον ἅμα. Καὶ ἀνέστη Ἰσμαὴλ, καὶ οἱ δέκα ἄνδρες οἳ ἦσαν μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξαν τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πάντας τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ὄντας μετ᾽ αὐτοῦ ἐν Μασσηφὰ, καὶ πάντας τοὺς Χαλδαίους τοὺς εὑρεθέντας ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ πατάξαντος αὐτοῦ τὸν Γοδολίαν, καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἔγνω. Καὶ ἦλθοσαν ἄνδρες ἀπὸ Συχὲμ, καὶ ἀπὸ Σαλὴμ, καὶ ἀπὸ Σαμαρίας, ὀγδοήκοντα ἄνδρες, ἐξυρημένοι πώγωνας, καὶ διερῥηγμένοι τὰ ἱμάτια, καὶ κοπτόμενοι, καὶ μάννα, καὶ λίβανος ἐν χερσὶν αὐτῶν, τοῦ εἰσενεγκεῖν εἰς οἶκον Κυρίου. Καὶ ἐξῆλθεν εἰς ἀπάντησιν αὐτοῖς Ἰσμαήλ· αὐτοὶ ἐπορεύοντο, καὶ ἔκλαιον· καὶ εἶπεν αὐτοῖς, εἰσέλθετε πρὸς Γοδολίαν. Καὶ ἐγένετο, εἰσελθόντων αὐτῶν εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως, ἔσφαξεν αὐτοὺς εἰς τὸ φρέαρ. Καὶ δέκα ἄνδρες εὑρέθησαν ἐκεῖ, καὶ εἶπον τῷ Ἰσμαὴλ, μὴ ἀνέλῃς ἡμᾶς, ὅτι εἰσὶν ἡμῖν θησαυροὶ ἐν ἀγρῷ, πυροὶ καὶ κριθαὶ, μέλι καὶ ἔλαιον· καὶ παρῆλθε, καὶ οὐκ ἀνεῖλεν αὐτοὺς ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. Καὶ τὸ φρέαρ εἰς ὃ ἔῤῥιψεν ἐκεῖ Ἰσμαὴλ πάντας οὓς ἐπάταξε, φρέαρ μέγα τοῦτό ἐστιν, ὃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ ἀπὸ προσώπου Βαασὰ βασιλέως Ἰσραὴλ, τοῦτο ἐνέπλησεν Ἰσμαὴλ τραυματιῶν. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἰσμαὴλ πάντα τὸν λαὸν τὸν καταλειφθέντα εἰς Μασσηφὰ, καὶ τὰς θυγατέρας τοῦ βασιλέως, ἃς παρκατέθετο ὁ ἀρχιμάγειρος τῷ Γοδολίᾳ υἱῷ Ἀχεικὰμ, καὶ ᾤχετο εἰς τὸ πέραν υἱῶν Ἀμμών. Καὶ ἤκουσεν Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ᾽ αὐτοῦ, πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐποίησεν Ἰσμαὴλ, καὶ ἤγαγον ἅπαν τὸ στρατόπεδον αὐτῶν, καὶ ᾤχοντο πολεμεῖν αὐτὸν, καὶ εὗρον αὐτὸν ἐπὶ ὕδατος πολλοῦ ἐν

Γαβαών. Καὶ ἐγένετο, ὅτε εἶδε πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετὰ Ἰσμαὴλ τὸν Ἰωάναν καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως τῆς μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἀνέστρεψαν πρὸς Ἰωάναν. Καὶ Ἰσμαὴλ ἐσώθη σὺν ὀκτὼ ἀνθρώποις, καὶ ᾤχετο πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἀμμών. Καὶ ἔλαβεν Ἰωάναν, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ᾽ αὐτοῦ, πάντας τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ, οὓς ἀπέστρέψεν ἀπὸ Ἰσμαὴλ, δυνατοὺς ἄνδρας ἐν πολέμῳ, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ λοιπὰ, καὶ τοὺς εὐνούχους, οὓς ἀπέστρεψαν ἀπὸ Γαβαὼν, καὶ ᾤχοντο, καὶ ἐκάθισαν ἐν Γαβηρωχαμάα, τῇ πρὸς Βηθλεὲμ, τοῦ πορευθῆναι εἰς Αἴγυπτον ἀπὸ προσώπου τῶν Χαλδαίων· ὅτι ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι ἐπάταξεν Ἰσμαὴλ τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησεν ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν τῇ γῇ.

# 49

Καὶ προσῆλθον πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, καὶ Ἰωάναν, καὶ Ἀζαρίας υἱὸς Μαασαίου, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀπὸ μικροῦ καὶ ἕως μεγάλου, πρὸς Ἱερεμίαν τὸν προφήτην, καὶ εἶπαν αὐτῷ, πεσέτω δὴ τὸ ἔλεος ἡμῶν κατὰ πρόσωπόν σου, καὶ πρόσευξαι πρὸς Κύριον τὸν Θεόν σου περὶ τῶν καταλοίπων τούτων· ὅτι κατελείφθημεν ὀλίγοι ἀπὸ πολλῶν, καθὼς οἱ ὀφθαλμοί σου βλέπουσι. Καὶ ἀναγγειλάτω ἡμῖν Κύριος ὁ Θεός σου τὴν ὁδὸν ᾗ πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ, καὶ λόγον ὃν ποιήσομεν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἱερεμίας, ἤκουσα, ἰδοὺ ἐγὼ προσεύξομαι ὑπὲρ ὑμῶν πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν, κατὰ τοὺς λόγους ὑμῶν· καὶ ἔσται, ὁ λόγος ὃν ἂν ἀποκριθήσεται Κύριος ὁ Θεὸς, ἀναγγελῶ ὑμῖν, οὐ μὴ κρύψω ἀφ᾽ ὑμῶν ῥῆμα. Καὶ αὐτοὶ εἶπαν τῷ Ἱερεμίᾳ, ἔστω Κύριος ἐν ἡμῖν εἰς μάρτυρα δίκαιον

καὶ πιστὸν, εἰ μὴ κατὰ πάντα τὸν λόγον, ὃν ἐὰν ἀποστείλῃ Κύριος πρὸς ἡμᾶς, οὕτως ποιήσωμεν. Καὶ ἐὰν ἀγαθὸν καὶ ἐὰν κακὸν, τὴν φωνὴν Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, οὗ ἡμεῖς ἀποστέλλομέν σε πρὸς αὐτὸν, ἀκουσόμεθα, ἵνα βέλτιον ἡμῖν γένηται, ὅτι ἀκουσόμεθα τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη μεθ' ἡμέρας δέκα, ἐγενήθη λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν. Καὶ ἐκάλεσε τὸν Ἰωάναν, καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως, καὶ πάντα τὸν λαὸν ἀπὸ μικροῦ καὶ ἕως μεγάλου, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, οὕτως εἶπε Κύριος, ἐὰν καθίσαντες καθίσητε ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, οἰκοδομήσω ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ καθελῶ, καὶ φυτεύσω ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ ἐκτιλῶ, ὅτι ἀναπέπαυμαι ἐπὶ τοῖς κακοῖς οἷς ἐποίησα ὑμῖν. Μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου βασιλέως Βαβυλῶνος, οὗ ὑμεῖς φοβεῖσθε· ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ μὴ φοβηθῆτε, φησὶ Κύριος, ὅτι μεθ' ὑμῶν ἐγὼ, ἐξαιρεῖσθαι ὑμᾶς, καὶ σώζειν ὑμᾶς ἐκ χειρὸς αὐτῶν. Καὶ δώσω ὑμῖν ἔλεος, καὶ ἐλεήσω ὑμᾶς, καὶ ἐπιστρέψω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν ὑμῶν. Καὶ εἰ λέγετε ὑμεῖς, οὐ μὴ καθίσωμεν ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, πρὸς τὸ μὴ ἀκοῦσαι φωνῆς Κυρίου, ὅτι εἰς γῆν Αἰγύπτου εἰσελευσόμεθα, καὶ οὐ μὴ ἴδωμεν πόλεμον, καὶ φωνὴν σάλπιγγος οὐ μὴ ἀκούσωμεν, καὶ ἐν ἄρτοις οὐ μὴ πεινάσωμεν, καὶ ἐκεῖ οἰκήσομεν· διατοῦτο ἀκούσατε λόγον Κυρίου· οὕτως εἶπε Κύριος, ἐὰν ὑμεῖς δῶτε τὸ πρόσωπον ὑμῶν εἰς Αἴγυπτον, καὶ εἰσέλθητε ἐκεῖ κατοικεῖν, καὶ ἔσται, ἡ ῥομφαία ἣν ὑμεῖς φοβεῖσθε ἀπὸ προσώπου αὐτῆς εὑρήσει ὑμᾶς ἐν γῇ Αἰγύπτου, καὶ ὁ λιμὸς οὗ ὑμεῖς λόγον ἔχετε ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ καταλήψεται ὑμᾶς ὀπίσω ὑμῶν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε. Καὶ ἔσονται πάντες οἱ ἄνθρωποι, καὶ πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, οἱ θέντες τὸ πρόσωπον αὐτῶν εἰς γῆν Αἰγύπτου ἐνοικεῖν ἐκεῖ, ἐκλείψουσιν ἐν τῇ ῥομφαίᾳ, καὶ ἐν τῷ λιμῷ, καὶ οὐκ ἔσται αὐτῶν οὐδεὶς σωζόμενος ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐγὼ ἐπάγω ἐπ' αὐτούς. Ὅτι

οὕτως εἶπε Κύριος, καθὼς ἔσταξεν ὁ θυμός μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ, οὕτως στάξει ὁ θυμός μου ἐφ’ ὑμᾶς, εἰσελθόντων ὑμῶν εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἔσεσθε εἰς ἄβατον, καὶ ὑποχείριοι, καὶ εἰς ἀρὰν, καὶ εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ οὐ μὴ ἴδητε οὐκέτι τὸν τόπον τοῦτον. Ἃ ἐλάλησε Κύριος ἐφ’ ὑμᾶς τοὺς καταλοίπους Ἰούδα· μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυπτον· καὶ νῦν γνόντες γνώσεσθε, ὅτι ἐπονηρεύσασθε ἐν ψυχαῖς ὑμῶν, ἀποστείλαντές με, λέγοντες, πρόσευξαι περὶ ἡμῶν πρὸς Κύριον, καὶ κατὰ πάντα ἃ ἐὰν λαλήσει σοι Κύριος ποιήσομεν. Καὶ οὐκ ἠκούσατε τῆς φωνῆς Κυρίου, ἧς ἀπέστειλέ με πρὸς ὑμᾶς. Καὶ νῦν ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐκλείψετε ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ὑμεῖς βούλεσθε εἰσελθεῖν κατοικεῖν ἐκεῖ.

# 50

Καὶ ἐγενήθη, ὡς ἐπαύσατο Ἱερεμίας λέγων πρὸς τὸν λαὸν πάντας τοὺς λόγους Κυρίου, οὓς ἀπέστειλεν αὐτὸν Κύριος πρὸς αὐτοὺς, πάντας τοὺς λόγους τούτους, καὶ εἶπεν Ἀζαρίας υἱὸς Μαασαίου, καὶ Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες, οἱ εἰπόντες τῷ Ἱερεμίᾳ, λέγοντες, ψεύδη, οὐκ ἀπέστειλέ σε Κύριος πρὸς ἡμᾶς, λέγων, μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυπτον οἰκεῖν ἐκεῖ, ἀλλ’ ἢ Βαροὺχ υἱὸς Νηρίου συμβάλλει σε πρὸς ἡμᾶς, ἵνα δῷς ἡμᾶς εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων, τοῦ θανατῶσαι ἡμᾶς, καὶ ἀποικισθῆναι ἡμᾶς εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ οὐκ ἤκουσεν Ἰωάναν, καὶ πάντες ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, καὶ πᾶς ὁ λαὸς τῆς φωνῆς Κυρίου, κατοικῆσαι ἐν γῇ Ἰούδα. Καὶ ἔλαβεν Ἰωάναν, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως πάντας τοὺς καταλοίπους Ἰούδα, τοὺς ἀποστρέψαντας κατοικεῖν ἐν τῇ γῇ, τοὺς δυνατοὺς ἄνδρας, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ νήπια τὰ λοιπὰ, καὶ τὰς

θυγατέρας τοῦ βασιλέως, καὶ τὰς ψυχὰς ἃς κατέλιπε Ναβουζαρδὰν μετὰ Γοδολίου υἱοῦ Ἀχεικὰμ, καὶ Ἱερεμίαν τὸν προφήτην, καὶ Βαροὺχ, υἱὸν Νηρίου, καὶ εἰσῆλθον εἰς Αἴγυπτον, ὅτι οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς Κυρίου, καὶ εἰσῆλθον εἰς Τάφνας. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν ἐν Τάφνας, λέγων, λάβε σεαυτῷ λίθους μεγάλους, καὶ κατάκρυψον αὐτοὺς ἐν προθύροις, ἐν πύλῃ τῆς οἰκίας Φαραὼ ἐν Τάφνας, κατ᾽ ὀφθαλμοὺς ἀνδρῶν Ἰούδα, καὶ ἐρεῖς, οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, καὶ ἄξω Ναβουχοδονόσορ βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ θήσει αὐτοῦ τὸν θρόνον ἐπάνω τῶν λίθων τούτων ὧν κατέκρυψας, καὶ ἀρεῖ τὰ ὅπλα ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ εἰσελεύσεται, καὶ πατάξει γῆν Αἰγύπτου, οὓς εἰς θάνατον εἰς θάνατον, καὶ οὓς εἰς ἀποικισμὸν εἰς ἀποικισμὸν, καὶ οὓς εἰς ῥομφαίαν εἰς ῥομφαίαν. Καὶ καύσει πῦρ ἐν οἰκίαις τῶν θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐμπυριεῖ αὐτὰς, καὶ ἀποικιεῖ αὐτοὺς, καὶ φθειριεῖ γῆν Αἰγύπτου, ὥσπερ φθειρίζει ποιμὴν τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ· καὶ ἐξελεύσεται ἐν εἰρήνῃ, καὶ συντρίψει τοὺς στύλους Ἡλιουπόλεως τοὺς ἐν Ὼν, καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν κατακαύσει ἐν πυρί.

# 51

Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς κατοικοῦσιν ἐν γῇ Αἰγύπτου, καὶ τοῖς καθημένοις ἐν Μαγδωλῷ, καὶ ἐν Τάφνας, καὶ ἐν γῇ Παθούρης, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, ὑμεῖς ἑωράκατε πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐπήγαγον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα· καὶ ἰδού εἰσιν ἔρημοι ἀπὸ ἐνοίκων ἀπὸ προσώπου πονηρίας αὐτῶν, ἧς ἐποίησαν παραπικράναι με, πορευθέντες θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις, οἷς οὐκ

ἔγνωτε. Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς τοὺς παῖδάς μου τοὺς προφήτας ὄρθρου, καὶ ἀπέστειλα, λέγων, μὴ ποιήσητε τὸ πρᾶγμα τῆς μολύνσεως ταύτης, ἧς ἐμίσησα. Καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις. Καὶ ἔσταξεν ἡ ὀργή μου, καὶ ὁ θυμός μου, καὶ ἐξεκαύθη ἐν πύλαις Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ· καὶ ἐγενήθησαν εἰς ἐρήμωσιν καὶ εἰς ἄβατον ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ νῦν οὕτως εἶπε Κύριος παντοκράτωρ, ἱνατί ὑμεῖς ποιεῖτε κακὰ μεγάλα ἐπὶ ψυχαῖς ὑμῶν; ἐκκόψαι ὑμῶν ἄνθρωπον καὶ γυναῖκα, νήπιον καὶ θηλάζοντα ἐκ μέσου Ἰούδα, πρὸς τὸ μὴ καταλειφθῆναι ὑμῶν μηδένα, παραπικράναι με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ὑμῶν, θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, εἰς ἣν ἤλθετε κατοικεῖν ἐκεῖ, ἵνα κοπῆτε, καὶ ἵνα γένησθε εἰς κατάραν καὶ εἰς ὀνειδισμὸν ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τῆς γῆς; Μὴ ἐπιλέλησθε ὑμεῖς τῶν κακῶν τῶν πατέρων ὑμῶν, καὶ τῶν κακῶν τῶν βασιλέων Ἰούδα, καὶ τῶν κακῶν τῶν ἀρχόντων ὑμῶν, καὶ τῶν κακῶν τῶν γυναικῶν ὑμῶν, ὧν ἐποίησαν ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ; Καὶ οὐκ ἐπαύσαντο ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ οὐκ ἀντείχοντο τῶν προσταγμάτων μου, ὧν ἔδωκα κατὰ πρόσωπον τῶν πατέρων αὐτῶν. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ ἐφίστημι τὸ πρόσωπόν μου, τοῦ ἀπολέσαι πάντας τοὺς καταλοίπους τοὺς ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ, καὶ ἐκλείψουσιν ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἔσονται εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ εἰς ἀπώλειαν, καὶ εἰς κατάραν. Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπὶ τοὺς καθημένους ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ὡς ἐπεσκεψάμην ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ, καὶ οὐκ ἔσται σεσωσμένος οὐδεὶς τῶν ἐπιλοίπων Ἰούδα τῶν παροικούντων ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, τοῦ ἐπιστρέψαι εἰς γῆν Ἰούδα, ἐφ’ ἣν αὐτοὶ ἐλπίζουσι ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι ἐκεῖ· οὐ μὴ ἐπιστρέψωσιν, ἀλλ’ ἢ οἱ

ἀνασεσωσμένοι. Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ Ἰερεμίᾳ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ γνόντες ὅτι θυμιῶσιν αἱ γυναῖκες αὐτῶν, καὶ πᾶσαι αἱ γυναῖκες, συναγωγὴ μεγάλη, καὶ πᾶς ὁ λαὸς οἱ καθήμενοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν Παθουρῇ, λέγοντες, Ὁ λόγος ὃν ἐλάλησας πρὸς ἡμᾶς τῷ ὀνόματι Κυρίου, οὐκ ἀκούσομέν σου, ὅτι ποιοῦντες ποιήσομεν πάντα τὸν λόγον ὃς ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στόματος ἡμῶν, θυμιᾶν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ σπένδειν αὐτῇ σπονδὰς, καθὰ ἐποιήσαμεν ἡμεῖς καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν, καὶ οἱ βασιλεῖς ἡμῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν, ἐν πόλεσιν Ἰούδα καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ· καὶ ἐπλήσθημεν ἄρτων, καὶ ἐγενόμεθα χρηστοὶ, καὶ κακὰ οὐκ εἴδομεν. Καὶ ὡς διελίπομεν θυμιῶντες τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, ἠλαττώθημεν πάντες, καὶ ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐξελίπομεν. Καὶ ὅτι ἡμεῖς ἐθυμιῶμεν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδὰς, μὴ ἄνευ τῶν ἀνδρῶν ἡμῶν ἐποιήσαμεν αὐτῇ χαυῶνας, καὶ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδάς; Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας παντὶ τῷ λαῷ, τοῖς δυνατοῖς καὶ ταῖς γυναιξὶ καὶ παντὶ τῷ λαῷ τοῖς ἀποκριθεῖσιν αὐτῷ λόγους, λέγων, οὐχὶ τοῦ θυμιάματος οὗ ἐθυμιάσατε ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλὴμ, ὑμεῖς καὶ οἱ πατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ βασιλεῖς ὑμῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, καὶ ὁ λαὸς τῆς γῆς, ἐμνήσθη Κύριος; καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ; Καὶ οὐκ ἠδύνατο Κύριος ἔτι φέρειν ἀπὸ προσώπου πονηρίας πραγμάτων ὑμῶν, καὶ ἀπὸ τῶν βδελυγμάτων ὑμῶν ὧν ἐποιήσατε· καὶ ἐγενήθη ἡ γῆ ὑμῶν εἰς ἐρήμωσιν, καὶ εἰς ἄβατον, καὶ εἰς ἀρὰν, ὡς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ, ἀπὸ προσώπου ὧν ἐθυμιᾶτε, καὶ ὧν ἡμάρτετε τῷ Κύριῳ· καὶ οὐκ ἠκούσατε τῆς φωνῆς Κυρίου, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασιν αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ νόμῳ καὶ ἐν τοῖς μαρτυρίοις αὐτοῦ οὐκ ἐπορεύθητε, καὶ ἐπελάβετο ὑμῶν τὰ κακὰ ταῦτα. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ λαῷ, καὶ ταῖς γυναιξὶν, ἀκουσατε λόγον Κυρίου. Οὕτως εἶπε Κύριος ὁ Θεὸς

Ἰσραὴλ, ὑμεῖς γυναῖκες τῷ στόματι ὑμῶν ἐλαλήσατε, καὶ ταῖς χερσὶν ὑμῶν ἐπληρώσατε, λέγουσαι, ποιοῦσαι ποιήσομεν τὰς ὁμολογίας ἡμῶν ἃς ὡμολογήκαμεν, θυμιᾷν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ καὶ σπένδειν αὐτῇ σπονδάς· ἐμμείνασαι ἐνεμείνατε ταῖς ὁμολογίαις ὑμῶν, καὶ ποιοῦσαι ἐποιήσατε. Διατοῦτο ἀκούσατε λόγον Κυρίου, πᾶς Ἰούδα οἱ καθήμενοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἰδοὺ ὤμοσα τῷ ὀνόματί μου τῷ μεγάλῳ, εἶπε Κύριος, ἐὰν γένηται ἔτι ὄνομά μου ἐν τῷ στόματι παντὸς Ἰούδα εἰπεῖν, ζῇ Κύριος, ἐπὶ πάση γῇ Αἰγύπτῳ. Ὅτι ἐγὼ ἐγρήγορα ἐπ’ αὐτοὺς, τοῦ κακῶσαι αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἀγαθῶσαι· καὶ ἐκλείψουσι πᾶς Ἰούδα, οἱ κατοικοῦντες ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ, ἕως ἂν ἐκλείπωσι. Καὶ οἱ σεσωσμένοι ἀπὸ ῥομφαίας ἐπιστρέψουσιν εἰς γῆν Ἰούδα ὀλίγοι ἀριθμῷ, καὶ γνώσονται οἱ κατάλοιποι Ἰούδα οἱ καταστάντες ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, κατοικῆσαι ἐκεῖ, λόγος τίνος ἐμμενεῖ. Καὶ τοῦτο τὸ σημεῖον ὑμῖν, ὅτι ἐπισκέψομαι ἐγὼ ἐφ’ ὑμᾶς εἰς πονηρά. Οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι τὸν Οὐαφρῆ βασιλέα Αἰγύπτου εἰς χεῖρας ἐχθροῦ αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρας ζητοῦντος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καθὰ ἔδωκα τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα εἰς χεῖρας Ναβουχοδονόσορ βασιλέως Βαβυλῶνος ἐχθροῦ αὐτοῦ, καὶ ζητοῦντος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ. Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὃν ἘΛΑΛΗΣΕΝ ἸΕΡΕΜΙΑΣ Ὁ ΠΡΟΦΗΤΗΣ πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, ὅτε ἔγραφε τοὺς λόγους τούτους ἐν τῷ βιβλίῳ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ τετάρτῳ Ἰωακεὶμ υἱῷ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα. Οὕτως εἶπε Κύριος ἐπὶ σοὶ Βαροὺχ, ὅτι εἶπας, οἴμοι οἴμοι, ὅτι προσέθηκε Κύριος κόπον ἐπίπονόν μοι, ἐκοιμήθην ἐν στεναγμοῖς, ἀνάπαυσιν οὐχ εὗρον· Εἰπὸν αὐτῷ, οὕτως εἶπε Κύριος, ἰδοὺ οὓς ἐγὼ ᾠκοδόμησα, ἐγὼ καθαιρῶ· καὶ οὓς ἐγὼ ἐφύτευσα, ἐγὼ ἐκτίλλω. Καὶ σὺ ζητήσεις σεαυτῷ μεγάλα; μὴ ζητήσῃς, ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω κακὰ ἐπὶ πᾶσαν

σάρκα, λέγει Κύριος· καὶ δώσω τὴν ψυχήν σου εἰς εὕρημα ἐν παντὶ τόπῳ οὗ ἐὰν βαδίσῃς ἐκεῖ.

# 52

Ὄντος εἰκοστοῦ καὶ ἑνὸς ἔτους Σεδεκίου, ἐν τῷ βασιλεύειν αὐτὸν, καὶ ἕνδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐτοῦ Ἀμειτάαλ, θυγάτηρ Ἱερεμίου, ἐκ Λοβενά. Καὶ ἐγένετο τῷ ἔτει τῷ ἐννάτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, ἐν μηνὶ τῷ ἐννάτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ περιεχαράκωσαν αὐτὴν, καὶ περιῳκοδόμησαν αὐτὴν τετραπέδοις λίθοις κύκλῳ. Καὶ ἦλθεν ἡ πόλις εἰς συνοχὴν, ἕως ἑνδεκάτου ἔτους τῷ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, ἐν τῇ ἐννάτῃ τοῦ μηνὸς, καὶ ἐστερεώθη ὁ λιμὸς ἐν τῇ πόλει, καὶ οὐκ ἦσαν ἄρτοι τῷ λαῷ τῆς γῆς. Καὶ διεκόπη ἡ πόλις, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ ἐξῆλθον νυκτὸς κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης, ἀναμέσον τοῦ τείχους, καὶ τοῦ προτειχίσματος, ὃ ἦν κατὰ τὸν κῆπον τοῦ βασιλέως, καὶ οἱ Χαλδαῖοι ἐπὶ τῆς πόλεως κύκλῳ, καὶ ἐπορεύθησαν ὁδὸν τὴν εἰς ἄραβα, Καὶ κατεδίωξεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων ὀπίσω τοῦ βασιλέως, καὶ κατέλαβον αὐτὸν ἐν τῷ πέραν Ἱερειχὼ, καὶ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ διεσπάρησαν ἀπ’ αὐτοῦ. Καὶ συνέλαβον τὸν βασιλέα, καὶ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθὰ, καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ μετὰ κρίσεως. Καὶ ἔσφαξε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τοὺς υἱοὺς Σεδεκίου κατ’ ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα ἔσφαξεν ἐν Δεβλαθά. Καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς Σεδεκίου ἐξετύφλωσε, καὶ ἔδησεν αὐτὸν ἐν πέδαις· καὶ ἤγαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα, καὶ

ἔδωκεν αὐτὸν εἰς οἰκίαν μύλωνος, ἕως ἡμέρας ἧς ἀπέθανε. Καὶ ἐν μηνὶ πέμπτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθε Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος, ἑστηκὼς κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος, εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐνέπρησε τὸν οἶκον Κυρίου, καὶ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, καὶ πάσας τὰς οἰκίας τῆς πόλεως, καὶ πᾶσαν οἰκίαν μεγάλην ἐνέπρησεν ἐν πυρί· Καὶ πᾶν τεῖχος Ἰερουσαλὴμ κύκλῳ καθεῖλεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων, ἡ μετὰ τοῦ ἀρχιμαγείρου. Καὶ τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ κατέλιπεν ὁ ἀρχιμάγειρος εἰς ἀμπελουργοὺς καὶ εἰς γεωργούς. Καὶ τοὺς στύλους τοὺς χαλκοῦς τοὺς ἐν οἴκῳ Κυρίου, καὶ τὰς βάσεις, καὶ τὴν θάλασσαν τὴν χαλκῆν τὴν ἐν οἴκῳ Κυρίου συνέτριψαν οἱ Χαλδαῖοι, καὶ ἔλαβον τὸν χαλκὸν αὐτῶν, καὶ ἀπήνεγκαν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ τὴν στεφάνην, καὶ τὰς φιάλας, καὶ τὰς κρεάγρας, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ χαλκᾶ, ἐν οἷς ἐλειτούργουν ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰς ἀπφὼθ, καὶ τὰς μασμαρὼθ, καὶ τοὺς ὑποχυτῆρας, καὶ τὰς λυχνίας, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ τοὺς κυάθους, ἃ ἦν χρυσᾶ χρυσᾶ, καὶ ἃ ἦν ἀργυρᾶ ἀργυρᾶ, ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος. Καὶ οἱ στύλοι δύο, καὶ ἡ θάλασσα μία, καὶ οἱ μόσχοι δώδεκα χαλκοῖ ὑποκάτω τῆς θαλάσσης, ἃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν εἰς οἶκον Κυρίου, οὗ οὐκ ἦν σταθμὸς τοῦ χαλκοῦ αὐτῶν. Καὶ οἱ στύλοι τριακονταπέντε πηχῶν ὕψος τοῦ στύλου τοῦ ἑνὸς, καὶ σπαρτίον δώδεκα πήχεων περιεκύκλου αὐτὸν, καὶ τὸ πάχος αὐτοῦ δακτύλων τεσσάρων κύκλῳ, καὶ γεῖσος ἐπ’ αὐτοῖς χαλκοῦν, καὶ πέντε πήχεων τὸ μῆκος, ὑμεροχὴ τοῦ γείσους τοῦ ἑνός, καὶ δίκτυον καὶ ῥοαὶ ἐπὶ τοῦ γείσους κύκλῳ τὰ πάντα χαλκᾶ, καὶ κατὰ ταῦτα τῷ στύλῳ τῷ δευτέρῳ ὀκτὼ ῥοαὶ τῷ πήχει τοῖς δώδεκα πήχεσι. Καὶ ἦσαν αἱ ῥοαὶ ἐννενηκονταὲξ τὸ ἓν μέρος, καὶ ἦσαν αἱ πᾶσαι ῥοαὶ ἑκατὸν ἐπὶ τοῦ δικτύου κύκλῳ. Καὶ ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος τὸν ἱερέα τὸν πρῶτον, καὶ τὸν ἱερέα τὸν

δευτεροῦντα, καὶ τοὺς φυλάττοντας τὴν ὁδὸν, καὶ εὐνοῦχον ἕνα ὃς ἦν ἐπιστάτης τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν, καὶ εὐνοῦχον ἕνα ὃς ἦν ἐπιστάτης ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν, καὶ ἑπτὰ ἄνδρας ὀνομαστοὺς, τοὺς ἐν προσώπῳ τοῦ βασιλέως, τοὺς εὑρεθέντας ἐν τῇ πόλει, καὶ τὸν γραμματέα τῶν δυνάμεων, τὸν γραμματεύοντα τῷ λαῷ τῆς γῆς, καὶ ἐξήκοντα ἀνθρώπους ἐκ τοῦ λαοῦ τῆς γῆς, τοὺς εὑρεθέντας ἐν μέσῳ τῆς πόλεως· Καὶ ἔλαβεν αὐτοὺς Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος τοῦ βασιλέως, καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθά. Καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν Δεβλαθὰ, ἐν γῇ Αἰμάθ. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τριακοστῷ καὶ ἑβδόμῳ ἔτει, ἀποικισθέντος τοῦ Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνὶ, ἐν τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἔλαβεν Οὐλαιμαδάχὰρ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ᾧ ἐβασίλευσε, τὴν κεφαλὴν Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἔκειρεν αὐτὸν, καὶ ἐξήγαγεν αὐτὸν ἐξ οἰκίας ἧς ἐφυλάσσετο, καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ χρηστὰ, καὶ ἔδωκε τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπάνω τῶν βασιλέων τῶν μετ’ αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι, καὶ ἤλλαξε τὴν στολὴν τῆς φυλακῆς αὐτοῦ, καὶ ἤσθιεν ἄρτον διαπαντὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας ἃς ἔζησε. Καὶ ἡ σύνταξις αὐτῷ ἐδίδοτο διαπαντὸς παρὰ τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος ἐξ ἡμέρας εἰς ἡμέραν, ἕως ἡμέρας ἧς ἀπέθανε.

# ΘΡΗΝΟΙ

## 1

ΑΛΕΦ. Πῶς ἐκάθισε μόνη ἡ πόλις ἡ πεπληθυμμένη λαῶν; ἐγενήθη ὡς χήρα, πεπληθυμμένη ἐν ἔθνεσιν, ἄρχουσα ἐν χώραις ἐγενήθη εἰς φόρον. ΒΗΘ. Κλαίουσα ἔκλαυσεν ἐν νυκτὶ, καὶ τὰ δάκρυα αὐτῆς ἐπὶ τῶν σιαγόνων αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπάρχει ὁ παρακαλῶν αὐτὴν ἀπὸ πάντων τῶν ἀγαπώντων αὐτήν· πάντες οἱ φιλοῦντες αὐτὴν ἠθέτησαν ἐν αὐτῇ, ἐγένοντο αὐτῇ εἰς ἐχθρούς. ΓΙΜΕΛ. Μετῳκίσθη Ἰουδαία ἀπὸ ταπεινώσεως αὐτῆς, καὶ ἀπὸ πλήθους δουλείας αὐτῆς· ἐκάθισεν ἐν ἔθνεσιν, οὐχ εὗρεν ἀνάπαυσιν· πάντες οἱ καταδιώκοντες αὐτὴν, κατέλαβον αὐτὴν ἀναμέσον τῶν θλιβόντων. ΔΑΛΕΘ. Ὁδοὶ Σιὼν πενθοῦσι παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἐρχομένους ἐν ἑορτῇ· πᾶσαι αἱ πύλαι αὐτῆς ἠφανισμέναι, οἱ ἱερεῖς αὐτῆς ἀναστενάζουσιν, αἱ παρθένοι αὐτῆς ἀγόμεναι, καὶ αὐτὴ πικραινομένη ἐν ἑαυτῇ. Η. Ἐγένοντο οἱ θλίβοντες αὐτὴν εἰς κεφαλὴν, καὶ οἱ ἐχθροὶ αὐτῆς εὐθηνοῦσαν, ὅτι Κύριος ἐταπείνωσεν αὐτὴν ἐπὶ τὸ πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν αὐτῆς· τὰ νήπια αὐτῆς ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ κατὰ πρόσωπον θλίβοντος. ΟΥΑΥ. Καὶ ἐξῄρθη ἐκ θυγατρὸς Σιὼν πᾶσα ἡ εὐπρέπεια αὐτῆς· ἐγένοντο

οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ὡς κριοὶ οὐχ εὑρίσκοντες νομὴν, καὶ ἐπορεύοντο ἐν οὐκ ἰσχύϊ κατὰ πρόσωπον διώκοντος. ΖΑΙΝ. Ἐμνήσθη Ἰερουσαλὴμ ἡμερῶν ταπεινώσεως αὐτῆς, καὶ ἀπωσμῶν αὐτῆς· πάντα τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς ὅσα ἦν ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων, ἐν τῷ πεσεῖν τὸν λαὸν αὐτῆς εἰς χεῖρας θλίβοντος, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν αὐτῇ. ἰδόντες οἱ ἐχθροὶ αὐτῆς, ἐγέλασαν ἐπὶ κατοικεσίᾳ αὐτῆς. ΗΘ. Ἁμαρτίαν ἥμαρτεν Ἰερουσαλὴμ, διατοῦτο εἰς σάλον ἐγένετο· πάντες οἱ δοξάζοντες αὐτὴν, ἐταπείνωσαν αὐτήν· εἶδον γὰρ τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς, καί γε αὐτὴ στενάζουσα καὶ ἀπεστράφη ὀπίσω. ΤΗΘ. Ἀκαθαρσία αὐτῆς πρὸ ποδῶν αὐτῆς· οὐκ ἐμνήσθη ἔσχατα αὐτῆς, καὶ κατεβίβασεν ὑπέρογκα· οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν. ἴδε Κύριε τὴν ταπείνωσίν μου, ὅτι ἐμεγαλύνθη ὁ ἐχθρός. ΙΩΔ. Χεῖρα αὐτοῦ ἐξεπέτασε θλίβων ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς· εἶδε γὰρ ἔθνη εἰσελθόντα εἰς τὸ ἁγίασμα αὐτῆς, ἃ ἐνετείλω μὴ εἰσελθεῖν αὐτὰ εἰς ἐκκλησίαν σου. ΧΑΦ. Πᾶς ὁ λαὸς αὐτῆς καταστενάζοντες, ζητοῦντες ἄρτον· ἔδωκαν τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς ἐν βρώσει, τοῦ ἐπιστρέψαι ψυχήν· ἴδε Κύριε καὶ ἐπίβλεψον, ὅτι ἐγενήθη ἠτιμωμένη. ΛΑΜΕΔ. Οἱ πρὸς ὑμᾶς πάντες παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐπιστρέψατε καὶ ἴδετε εἰ ἔστιν ἄλγος κατὰ τὸ ἄλγος μου, ὃ ἐγενήθη· φθεγξάμενος ἐν ἐμοὶ ἐταπείνωσέ με Κύριος ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ. ΜΗΜ. Ἐξ ὕψους αὐτοῦ ἀπέστειλε πῦρ, ἐν τοῖς ὀστέοις μου κατήγαγεν αὐτό· διεπέτασε δίκτυον τοῖς ποσί μου, ἀπέστρεψέ με εἰς τὰ ὀπίσω· ἔδωκέ με ἠφανισμένην, ὅλην τὴν ἡμέραν ὠδυνωμένην. ΝΟΥΝ. Ἐγρηγορήθη ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά μου, ἐν χερσί μου συνεπλάκησαν· ἀνέβησαν ἐπὶ τὸν τράχηλόν μου· ἠσθένησεν ἡ ἰσχύς μου· ὅτι ἔδωκε Κύριος ἐν χερσί μου ὀδύνας, οὐ δυνήσομαι στῆναι. ΣΑΜΕΧ. Ἐξῆρε πάντας τοὺς ἰσχυρούς μου ὁ Κύριος ἐκ μέσου μου, ἐκάλεσεν

ἐπ’ ἐμὲ καιρὸν τοῦ συντρίψαι ἐκλεκτούς μου· ληνὸν ἐπάτησε Κύριος παρθένῳ θυγατρὶ Ἰούδα· ἐπὶ τούτοις ἐγὼ κλαίω. ΑΙΝ. Ὁ ὀφθαλμός μου κατήγαγεν ὕδωρ, ὅτι ἐμακρύνθη ἀπ’ ἐμοῦ ὁ παρακαλῶν με, ὁ ἐπιστρέφων ψυχήν μου· ἐγένοντο οἱ υἱοί μου ἠφανισμένοι, ὅτι ἐκραταιώθη ὁ ἐχθρός. ΦΗ. Διεπέτασε Σιὼν χεῖρα αὐτῆς, οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν· ἐνετείλατο Κύριος τῷ Ἰακὼβ, κύκλῳ αὐτοῦ οἱ θλίβοντες αὐτόν· ἐγενήθη Ἰερουσαλὴμ εἰς ἀποκαθημένην ἀναμέσον αὐτῶν. ΤΣΑΔΗ. Δίκαιός ἐστι Κύριος, ὅτι στόμα αὐτοῦ παρεπίκρανα· ἀκούσατε δὴ πάντες οἱ λαοὶ, καὶ ἴδετε τὸ ἄλγος μου· παρθένοι μου καὶ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ. ΚΩΦ. Ἐκάλεσα τοὺς ἐραστάς μου, αὐτοὶ δὲ παρελογίσαντό με· οἱ ἱερεῖς μου καὶ οἱ πρεσβύτεροί μου ἐν τῇ πόλει ἐξέλιπον, ὅτι ἐζήτησαν βρῶσιν αὐτοῖς ἵνα ἐπιστρέψωσι ψυχὰς αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον. ΡΗΧΣ. Ἴδε, Κύριε, ὅτι θλίβομαι, ἡ κοιλία μου ἐταράχθη, καὶ ἡ καρδία μου ἐστράφη ἐν ἐμοὶ, ὅτι παραπικραίνουσα παρεπικράνθην, ἔξωθεν ἠτέκνωσέ με μάχαιρα, ὥσπερ θάνατος ἐν οἴκῳ. ΧΣΕΝ. Ακούσατε δὴ, ὅτι στενάζω ἐγὼ, οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν με· πάντες οἱ ἐχθροί μου ἤκουσαν τὰ κακά μου, καὶ ἐχάρησαν, ὅτι σὺ ἐποίησας· ἐπήγαγες ἡμέραν, ἐκάλεσας καιρὸν, ἐγένοντο ὅμοιοι ἐμοί. ΘΑΥ. Εἰσέλθοι πᾶσα ἡ κακία αὐτῶν κακὰ πρόσωπόν σου, καὶ ἐπιφύλλισον αὐτοῖς, ὃν τρόπον ἐποίησαν ἐπιφυλλίδα περὶ πάντων τῶν ἁμαρτημάτων μου, ὅτι πολλοὶ οἱ στεναγμοί μου, καὶ ἡ καρδία μου λυπεῖται.

# 2

ΑΛΕΦ. Πῶς ἐγνόφωσεν ἐν ὀργῇ αὐτοῦ Κύριος τὴν θυγατέρα Σιών;

κατέῤῥιψεν ἐξ οὐρανοῦ εἰς γῆν δόξασμα Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἐμνήσθη ὑποποδίου ποδῶν αὐτοῦ. ΒΗΘ. Ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ κατεπόντισε Κύριος, οὐ φεισάμενος· πάντα τὰ ὡραῖα Ἰακὼβ καθεῖλεν ἐν θυμῷ αὐτοῦ, τὰ ὀχυρώματα τῆς θυγατρὸς Ἰούδα ἐκόλλησεν εἰς τὴν γῆν, ἐβεβήλωσε βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἄρχοντας αὐτῆς. ΓΙΜΕΛ. Συνέκλασεν ἐν ὀργῇ θυμοῦ αὐτοῦ πᾶν κέρας Ἰσραὴλ, ἀπέστρεψεν ὀπίσω δεξιὰν αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ, καὶ ἀνῆψεν ἐν Ἰακὼβ ὡς πῦρ φλόγα, καὶ κατέφαγε πάντα τὰ κύκλῳ. ΔΑΛΕΘ. Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ ὡς ἐχθρὸς ὑπεναντίος, ἐστερέωσε δεξιὰν αὐτοῦ ὡς ὑπεναντίος, καὶ ἀπέκτεινε πάντα τὰ ἐπιθυμήματα τῶν ὀφθαλμῶν μου ἐν σκηνῇ θυγατρὸς Σιὼν, ἐξέχεεν ὡς πῦρ τὸν θυμὸν αὐτοῦ. Η. Ἐγενήθη Κύριος ὡς ἐχθρὸς, κατεπόντισεν Ἰσραὴλ, κατεπόντισε τὰς βάρεις αὐτῆς, διέφθειρε τὰ ὀχυρώματα αὐτοῦ, καὶ ἐπλήθυνε τῇ θυγατρὶ Ἰούδα ταπεινουμένην καὶ τεταπεινωμένην. ΟΥΑΥ. Καὶ διεπέτασεν ὡς ἄμπελον τὸ σκήνωμα αὐτοῦ, διέφθειρεν ἑορτὴν αὐτοῦ· ἐπελάθετο Κύριος ἃ ἐποίησεν ἐν Σιὼν ἑορτῆς καὶ σαββάτου, καὶ παρώξυνεν ἐμβριμήματι ὀργῆς αὐτοῦ βασιλέα καὶ ἱερέα καὶ ἄρχοντα. ΖΑΙΝ. Ἀπώσατο Κύριος θυσιαστήριον αὐτοῦ, ἀπετίναξεν ἁγίασμα αὐτοῦ, συνέτριψεν ἐν χειρὶ ἐχθροῦ τεῖχος βάρεων αὐτῆς· φωνὴν ἔδωκαν ἐν οἴκῳ Κυρίου ὡς ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς. ΗΘ. Καὶ ἐπέστρεψε διαφθεῖραι τείχος θυγατρὸς Σιών· ἐξέτεινε μέτρον, οὐκ ἀπέστρεψε χεῖρα αὐτοῦ ἀπὸ καταπατήματος, καὶ ἐπένθησε τὸ προτείχισμα, καὶ τεῖχος ὁμοθυμαδὸν ἠσθένησεν. ΤΗΘ. Ἐνεπάγησαν εἰς γῆν πύλαι αὐτῆς, ἀπώλεσε καὶ συνέτριψε μοχλοὺς αὐτῆς, βασιλέα αὐτῆς καὶ ἄρχοντα αὐτῆς ἐν τοῖς ἔθνεσιν· οὐκ ἔστι νόμος, καί γε προφῆται αὐτῆς οὐκ εἶδον ὅρασιν παρὰ Κυρίου. ΙΩΔ. Ἐκάθισαν εἰς τὴν γῆν, ἐσιώπησαν πρεσβύτεροι θυγατρὸς Σιὼν, ἀνεβίβασαν χοῦν

ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν, περιεζώσαντο σάκκους, κατήγαγον εἰς γῆν ἀρχηγοὺς παρθένους ἐν Ἰερουσαλήμ. ΧΑΦ. Ἐξέλιπον ἐν δάκρυσιν οἱ ὀφθαλμοί μου, ἐταράχθη ἡ καρδία μου, ἐξεχύθη εἰς τὴν γῆν ἡ δόξα μου, ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς λαοῦ μου, ἐν τῷ ἐκλείπειν νήπιον καὶ θηλάζοντα ἐν πλατείαις πόλεως. ΛΑΜΕΔ. Ταῖς μητράσιν αὐτῶν εἶπαν, ποῦ σῖτος, καὶ οἶνος; ἐν τῷ ἐκλύεσθαι αὐτοὺς ὡς τραυματίας ἐν πλατείαις πόλεως, ἐν τῷ ἐκχεῖσθαι ψυχὰς αὐτῶν εἰς κόλπον μητέρων αὐτῶν. ΜΗΜ. Τί μαρτυρήσω σοι, ἢ τί ὁμοιώσω σοι, θύγατερ Ἰερουσαλήμ; τίς σώσει καὶ παρακαλέσει σε, παρθένος θύγατερ Σιών; ὅτι ἐμεγαλύνθη ποτήριον συντριβῆς σου, τίς ἰάσεταί σε; ΝΟΥΝ. Προφῆταί σου εἴδοσάν σοι μάταια καὶ ἀφροσύνην, καὶ οὐκ ἀπεκάλυψαν ἐπὶ τὴν ἀδικίαν σου, τοῦ ἐπιστρέψαι αἰχμαλωσίαν σου, καὶ εἴδοσάν σοι λήμματα μάταια καὶ ἐξώσματα. ΣΑΜΕΧ. Ἐκρότησαν ἐπὶ σὲ χεῖρας πάντες οἱ παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐσύρισαν καὶ ἐκίνησαν τὴν κεφαλὴν αὐτῶν ἐπὶ τὴν θυγατέρα Ἰερουσαλήμ. Αὕτη ἡ πόλις, ἐροῦσι, στέφανος εὐφροσύνης πάσης τῆς γῆς; ΑΙΝ. Διήνοιξαν ἐπὶ σὲ στόμα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροί σου, ἐσυρίσαν καὶ ἔβρυξαν ὀδόντας, καὶ εἶπαν, κατεπίομεν αὐτήν· πλὴν αὕτη ἡ ἡμέρα ἣν προσεδοκῶμεν, εὕρομεν αὐτὴν, εἴδομεν. ΦΗ. Ἐποίησε Κύριος ἃ ἐνεθυμήθη, συνετέλεσε ῥῆμα αὐτοῦ, ἃ ἐνετείλατο ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων· καθεῖλε, καὶ οὐκ ἐφείσατο, καὶ ηὔφρανεν ἐπὶ σὲ ἐχθρὸν, ὕψωσε κέρας θλίβοντός σε. ΤΣΑΔΗ. Ἐβόησε καρδία αὐτῶν πρὸς Κύριον, τείχη Σιὼν καταγάγετε ὡς χειμάῤῥους δάκρυα ἡμέρας καὶ νυκτός· μὴ δῷς ἔκνηψιν σεαυτῇ, μὴ σιωπήσαιτο θυγάτηρ ὀφθαλμῶν σου. ΚΩΦ. Ἀνάστα, ἀγαλλίασαι ἐν νυκτὶ εἰς ἀρχὰς φυλακῆς σου, ἔκχεον ὡς ὕδωρ καρδίαν σου ἀπέναντι προσώπου Κυρίου, ἆρον πρὸς αὐτὸν χεῖράς σου περὶ ψυχῆς νηπίων σου, τῶν

ἐκλυομένων λιμῷ ἐπ’ ἀρχῆς πασῶν ἐξόδων. ΡΗΧΣ. Ἴδε Κύριε καὶ ἐπίβλεψον τίνι ἐπεφύλλισας οὕτως· εἰ φάγονται γυναῖκες καρπὸν κοιλίας αὐτῶν; ἐπιφυλλίδα ἐποίησε μάγειρος, φονευθήσονται νήπια θηλάζοντα μαστούς; ἀποκτενεῖς ἐν ἁγιάσματι Κυρίου ἱερέα καὶ προφήτην; ΧΣΕΝ. Ἐκοιμήθησαν εἰς τὴν ἔξοδον παιδάριον καὶ πρεσβύτης· παρθένοι μου καὶ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἀπέκτεινας, ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς σου ἐμαγείρευσας, οὐκ ἐφείσω. ΘΑΥ. Ἐκάλεσεν ἡμέραν ἑορτῆς παροικίας μου κυκλόθεν, καὶ οὐκ ἐγένοντο ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς Κυρίου ἀνασωζόμενος καὶ καταλελειμμένος, ὡς ἐπεκράτησα, καὶ ἐπλήθυνα ἐχθρούς μου πάντας.

# 3

ΑΛΕΦ. Ἐγὼ ἀνὴρ ὁ βλέπων πτωχείαν, ἐν ῥάβδῳ θυμοῦ αὐτοῦ ἐπ’ ἐμέ. Παρέλαβέ με καὶ ἀπήγαγέ με εἰς σκότος, καὶ οὐ φῶς. Πλὴν ἐν ἐμοὶ ἐπέστρεψε χεῖρα αὐτοῦ ὅλην τὴν ἡμέραν, ἐπαλαίωσε σάρκα μου καὶ δέρμα μου, ὀστέα μου συνέτριψεν. ΒΗΘ. Ἀνῳκοδόμησε κατ’ ἐμοῦ, καὶ ἐκύκλωσε κεφαλήν μου, καὶ ἐμόχθησεν· ἐν σκοτεινοῖς ἐκάθισέ με ὡς νεκροὺς αἰῶνος. Ἀνῳκοδόμησε κατ’ ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἐξελεύσομαι, ἐβάρυνε χαλκόν μου. ΓΙΜΕΛ. Καί γε κεκράξομαι καὶ βοήσω, ἀπέφραξε προσευχήν μου. ΔΑΛΕΘ. Ἀνῳκοδόμησεν ὁδούς μου, ἐνέφραξε τρίβους μου, ἐτάραξεν ἄρκος ἐνεδρεύουσα, αὐτός μοι λέων ἐν κρυφαίοις, κατεδίωξεν ἀφεστηκότα, καὶ κατέπαυσέ με, ἔθετό με ἠφανισμένην. Η. Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ, καὶ ἐστήλωσέ με ὡς σκοπὸν εἰς βέλος. Εἰσήγαγεν ἐν τοῖς νεφροῖς μου ἰοὺς φαρέτρας αὐτοῦ. Ἐγενήθην

γέλως παντὶ λαῷ μου, ψαλμὸς αὐτῶν ὅλην τὴν ἡμέραν. ΟΥΑΥ. Ἐχόρτασέ με πικρίας, ἐμέθυσέ με χολῆς, καὶ ἐξέβαλε ψήφῳ ὀδόντας μου· ἐψώμισέ με σποδὸν, καὶ ἀπώσατο ἐξ εἰρήνης ψυχήν μου· ἐπελαθόμην ἀγαθά. Καὶ ἀπώλετο νῖκός μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ Κυρίου. ΖΑΙΝ. Ἐμνήσθην ἀπὸ πτωχείας μου, καὶ ἐκ διωγμοῦ πικρία καὶ χολή μου μνησθήσεται, καὶ καταδολεσχήσει ἐπ’ ἐμὲ ἡ ψυχή μου. Ταύτην τάξω εἰς τὴν καρδίαν μου, διατοῦτο ὑπομενῶ. ΤΗΘ. Ἀγαθὸς Κύριος τοῖς ὑπομένουσιν αὐτὸν, ψυχὴ ἣ ζητήσει αὐτὸν, ἀγαθόν· καὶ ὑπομενεῖ, καὶ ἡσυχάσει εἰς τὸ σωτήριον Κυρίου. ΤΗΘ. Ἀγαθὸν ἀνδρὶ, ὅταν ἄρῃ ζυγὸν ἐν νεότητι αὐτοῦ, καθήσεται κατὰ μόνας, καὶ σιωπήσεται, ὅτι ᾖρεν ἐφ’ ἑαυτῷ. ΙΩΔ. Δώσει τῷ παίοντι αὐτὸν σιαγόνα, χορτασθήσεται ὀνειδισμῶν· Ὅτι οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἀπώσεται Κύριος. ΧΑΦ. Ὅτι ὁ ταπεινώσας οἰκτειρήσει, καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ, οὐκ ἀπεκριθη ἀπὸ καρδίας αὐτοῦ, καὶ ἐταπείνωσεν υἱοὺς ἀνδρός. ΛΑΜΕΔ. Τοῦ ταπεινῶσαι ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ πάντας δεσμίους γῆς, τοῦ ἐκκλίναι κρίσιν ἀνδρὸς κατέναντι προσώπου ὑψίστου, καταδικάσαι ἄνθρωπον ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτὸν, Κύριος οὐκ εἶπε. Τίς οὕτως εἶπε, καὶ ἐγενήθη; Κύριος οὐκ ἐνετείλατο. Ἐκ στόματος ὑψίστου οὐκ ἐξελεύσεται τὰ κακὰ καὶ τὸ ἀγαθόν. ΜΗΜ. Τί γογγύσει ἄνθρωπος ζῶν, ἀνὴρ περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτοῦ; ΝΟΥΝ. Ἐξηρευνήθη ἡ ὁδὸς ἡμῶν καὶ ἠτάσθη, καὶ ἐπιστρέψομεν ἕως Κυρίου. Ἀναλάβωμεν καρδίας ἡμῶν ἐπὶ χειρῶν πρὸς ὑψηλὸν ἐν οὐρανῷ. Ἡμαρτήσαμεν, ἠσεβήσαμεν, καὶ οὐχ ἱλάσθης. ΣΑΜΕΧ. Ἐπεσκέπασας ἐν ’θυμῷ, καὶ ἀπεδίωξας ἡμᾶς, ἀπέκτεινας, οὐκ ἐφείσω. Ἐπεσκέπασας νεφέλην σεαυτῷ ἵνεκεν προσευχῆς, καμμύσαι με καὶ ἀπωσθῆναι. ΑΙΝ. Ἔθηκας ἡμᾶς ἐν μέσῳ τῶν λαῶν. ΑΙΝ. Διήνοιξαν ἐφ’ ἡμᾶς τὸ στόμα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν. Φόβος καὶ θυμὸς ἐγενήθη ἡμῖν, ἔπαρσις καὶ

συντριβή. Ἀφέσεις ὑδάτων κατάξει ὁ ὀφθαλμός μου ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου. ΦΗ. Ὁ ὀφθαλμός μου κατεπόθη, καὶ οὐ σιγήσομαι τοῦ μὴ εἶναι ἔκνηψιν, ἕως οὗ διακύψῃ καὶ ἴδῃ Κύριος ἐξ οὐρανοῦ. Ὁ ὀφθαλμός μου ἐπιφυλλιεῖ ἐπὶ τὴν ψυχήν μου παρὰ πάσας θυγατέρας πόλεως. ΤΣΑΔΗ. Θηρεύοντες ἐθήρευσάν με ὡς στρουθίον· πάντες οἱ ἐχθροί μου δωρεὰν ἐθανάτωσαν ἐν λάκκῳ ζωήν μου, καὶ ἐπέθηκαν λίθον ἐπ’ ἐμοί. Ὑπερεχύθη ὕδωρ ἐπὶ τὴν κεφαλήν μου· εἶπα, ἄπωσμαι. ΚΩΦ. Ἐπεκαλεσάμην τὸ ὄνομά σου, Κύριε, ἐκ λάκκου κατωτάτου· Φωνήν μου ἤκουσας· μὴ κρύψῃς τὰ ὦτά σου εἰς τὴν δέησίν μου· Εἰς τὴν βοήθειάν μου ἤγγισας· ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐπεκαλεσάμην σε εἶπάς μοι, μὴ φοβοῦ. ΡΗΧΣ. Ἐδίκασας, Κύριε, τὰς δίκας τῆς ψυχῆς μου, ἐλυτρώσω τὴν ζωήν μου. Ἴδες, Κύριε, τὰς ταραχάς μου, ἔκρινας τὴν κρίσιν μου. Εἶδες πᾶσαν τὴν ἐκδίκησιν αὐτῶν, εἰς πάντας διαλογισμοὺς αὐτῶν ἐν ἐμοί. ΧΣΕΝ. Ἤκουσας τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν, πάντας τοὺς διαλογισμοὺς αὐτῶν κατ’ ἐμοῦ, χείλη ἐπανισταμένων μοι, καὶ μελέτας αὐτῶν κατ’ ἐμοῦ ὅλην τὴν ἡμέραν, καθέδραν αὐτῶν, καὶ ἀνάστασιν αὐτῶν· ἐπίβλεψον ἐπὶ ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. Ἀποδώσεις αὐτοῖς ἀνταπόδομα, Κύριε, κατὰ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν. ΘΑΥ. Ἀποδώσεις αὐτοῖς ὑπερασπισμὸν, καρδίας μου μόχθον. Σὺ αὐτοὺς καταδιώξεις ἐν ὀργῇ, καὶ ἐξαναλώσεις αὐτοὺς ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ, Κύριε.

# 4

ΑΛΕΦ. Πῶς ἀμαυρωθήσεται χρυσίον, ἀλλοιωθήσεται τὸ ἀργύριον τὸ ἀγαθόν; ἐξεχύθησαν λίθοι ἅγιοι ἐπ’ ἀρχῆς πασῶν ἐξόδων. ΒΗΘ.

Οἱ υἱοὶ Σιὼν οἱ τίμιοι, οἱ ἐπῃρμένοι ἐν χρυσίῳ, πῶς ἐλογίσθησαν εἰς ἀγγεῖα ὀστράκινα, ἔργα χειρῶν κεραμέως; ΓΙΜΕΛ. Καί γε δράκοντες ἐξέδυσαν μαστοὺς, ἐθήλασαν σκύμνοι αὐτῶν θυγατέρας λαοῦ μου εἰς ἀνίατον, ὡς στρουθίον ἐν ἐρήμῳ. ΔΑΛΕΘ. Ἐκολλήθη ἡ γλῶσσα θηλάζοντος πρὸς τὸν φάρυγγα αὐτοῦ ἐν δίψει, νήπια ᾔτησαν ἄρτον, ὁ διακλῶν οὐκ ἔστιν αὐτοῖς. Η. Οἱ ἔσθοντες τὰς τρυφὰς ἠφανίσθησαν ἐν ταῖς ἐξόδοις, οἱ τιθηνούμενοι ἐπὶ κόκκων περιεβάλλοντο κοπρίας. ΟΥΑΥ. Καὶ ἐμεγαλύνθη ἀνομία θυγατρὸς λαοῦ μου ὑπὲρ ἀνομίας Σοδόμων τῆς κατεστραμμένης ὥσπερ σπουδὴ, καὶ οὐκ ἐπόνεσαν ἐν αὐτῇ χεῖρας. ΖΑΙΝ. Ἐκαθαριώθησαν Ναζιραῖοι αὐτῆς ὑπὲρ χιόνα, ἔλαμψαν ὑπὲρ γάλα, ἐπυρώθησαν, ὑπὲρ λίθου σαπφείρου τὸ ἀπόσπασμα αὐτῶν. ΗΘ. Ἐσκότασεν ὑπὲρ ἀσβόλην τὸ εἶδος αὐτῶν, οὐκ ἐπεγνώσθησαν ἐν ταῖς ἐξόδοις· ἐπάγη δέρμα αὐτῶν ἐπὶ τὰ ὀστέα αὐτῶν, ἐξηράνθησαν, ἐγενήθησαν ὥσπερ ξύλον. ΤΗΘ. Καλοὶ ἦσαν οἱ τραυματίαι ῥομφαίας, ἢ οἱ τραυματίαι λιμοῦ· ἐπορεύθησαν ἐκκεκεντημένοι ἀπὸ γεννημάτων ἀγρῶν. ΙΩΔ. Χεῖρες γυναικῶν οἰκτιρμόνων ἥψησαν τὰ παιδία αὐτῶν, ἐγενήθησαν εἰς βρῶσιν αὐταῖς, ἐν τῷ συντρίμματι τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου. ΧΑΦ. Συνετέλεσε Κύριος θυμὸν αὐτοῦ, ἐξέχεε θυμὸν ὀργῆς αὐτοῦ, καὶ ἀνῆψε πῦρ ἐν Σιὼν, καὶ κατέφαγε τὰ θεμέλια αὐτῆς. ΛΑΜΕΔ. Οὐκ ἐπίστευσαν βασιλεῖς γῆς, πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην, ὅτι εἰσελεύσεται ἐχθρὸς καὶ ἐκθλίβων διὰ τῶν πυλῶν Ἰερουσαλήμ. ΜΗΜ. Ἐξ ἁμαρτιῶν προφητῶν αὐτῆς, ἀδικιῶν ἱερέων αὐτῆς, τῶν ἐκχεόντων αἷμα δίκαιον ἐν μέσῳ αὐτῆς. ΝΟΥΝ. Ἐσαλεύθησαν ἐγρήγοροι αὐτῆς ἐν ταῖς ἐξόδοις, ἐμολύνθησαν ἐν αἵματι ἐν τῷ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς, ἥψαντο ἐνδυμάτων αὐτῶν. ΣΑΜΕΧ. Ἀπόστητε ἀκαθάρτων, καλέσατε αὐτοὺς, ἀπόστητε, ἀπόστητε, μὴ ἅπτεσθε,

ὅτι ἀνήφθησαν, καί γε ἐσαλεύθησαν· εἴπατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὐ μὴ προσθῶσι τοῦ παροικεῖν. ΑΙΝ. Πρόσωπον Κυρίου μερὶς αὐτῶν, οὐ προσθήσει ἐπιβλέψαι αὐτοῖς· πρόσωπον ἱερέων οὐκ ἔλαβον, προφήτας οὐκ ἠλέησαν. ΦΗ. Ἔτι ὄντων ἡμῶν ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν, εἰς τὴν βοήθειαν ἡμῶν μάταια ἀποσκοπευόντων ἡμῶν. ΤΣΑΔΗ. Ἀπεσκοπεύσαμεν εἰς ἔθνος οὐ σῶζον, ἐθηρεύσαμεν μικροὺς ἡμῶν, τοῦ μὴ πορεύεσθαι ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν. ΚΩΦ. Ἤγγικεν ὁ καιρὸς ἡμῶν, ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι ἡμῶν, πάρεστιν ὁ καιρὸς ἡμῶν. Κοῦφοι ἐγένοντο οἱ διώκοντες ἡμᾶς ὑπὲρ ἀετοὺς οὐρανοῦ, ἐπὶ τῶν ὀρέων ἐξέπτησαν, ἐν ἐρήμῳ ἐνήδρευσαν ἡμᾶς. ΡΗΧΣ. Πνεῦμα προσώπου ἡμῶν χριστὸς Κύριος συνελήφθη ἐν ταῖς διαφθοραῖς αὐτῶν, οὗ εἴπαμεν, ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ ζησόμεθα ἐν τοῖς ἔθνεσι. ΧΣΕΝ. Χαῖρε καὶ εὐφραίνου θύγατερ Ἰδουμαίας ἡ κατοικοῦσα ἐπὶ γῆς, καί γε ἐπὶ σὲ διελεύσεται τὸ ποτήριον Κυρίου, μεθυσθήσῃ καὶ ἀποχεεῖς. ΘΑΥ. Ἐξέλιπεν ἡ ἀνομία σου θύγατερ Σιὼν, οὐ προσθήσει τοῦ ἀποικίσαι σε· ἐπεσκέψατο ἀνομίας σου θύγατερ Ἐδὼμ, ἀπεκάλυψεν ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά σου.

# 5

Μνήσθητι Κύριε, ὅ, τι ἐγενήθη ἡμῖν· ἐπίβλεψον, καὶ ἴδε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Κληρονομία ἡμῶν μετεστράθη ἀλλοτρίοις, οἱ οἶκοι ἡμῶν ξένοις. Ὀρφανοὶ ἐγενήθημεν, οὐχ ὑπάρχει πατὴρ, μητέρες ἡμῶν ὡς αἱ χῆραι. Ὕδωρ ἡμῶν ἐν ἀργυρίῳ ἐπίομεν, ξύλα ἡμῶν ἐν ἀλλάγματι ἦλθεν ἐπὶ τὸν τράχηλον ἡμῶν· ἐδιώχθημεν, ἐκοπιάσαμεν, οὐκ ἀνεπαύθημεν. Αἴγυπτος ἔδωκε χεῖρα, Ἀσσοὺρ εἰς πλησμονὴν αὐτῶν. Οἱ πατέρες ἡμῶν ἥμαρτον, οὐχ ὑπάρχουσιν,

ἡμεῖς τὰ ἀνομήματα αὐτῶν ὑπέσχομεν. Δοῦλοι ἐκυρίευσαν ἡμῶν, λυτρούμενος οὐκ ἔστιν ἐκ τῆς χειρὸς αὐτῶν. Ἐν ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν εἰσοίσομεν ἄρτον ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου ῥομφαίας τῆς ἐρήμου. Τὸ δέρμα ἡμῶν ὡς κλίβανος ἐπελιώθη, συνεσπάσθησαν ἀπὸ προσώπου καταιγίδων λιμοῦ. Γυναῖκας ἐν Σιὼν ἐταπείνωσαν, παρθένους ἐν πόλεσιν Ἰούδα. Ἄρχοντες ἐν χερσὶν αὐτῶν ἐκρεμάσθησαν, πρεσβύτεροι οὐκ ἐδοξάσθησαν. Ἐκλεκτοὶ κλαυθμὸν ἀνέλαβον, καὶ νεανίσκοι ἐν ξύλῳ ἠσθένησαν. Καὶ πρεσβύται ἀπὸ πύλης κατέπαυσαν, ἐκλεκτοὶ ἐκ ψαλμῶν αὐτῶν κατέπαυσαν. Κατέλυσε χαρὰ καρδίας ἡμῶν, ἐστράφη εἰς πένθος ὁ χορὸς ἡμῶν· Ἔπεσεν ὁ στέφανος ἡμῶν τῆς κεφαλῆς· οὐαὶ δὲ ἡμῖν, ὅτι ἡμάρτομεν. Περὶ τούτου ἐγενήθη ὀδύνη, ὀδυνηρὰ ἡ καρδία ἡμῶν, περὶ τούτου ἐσκότασαν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. Ἐπ᾽ ὄρος Σιὼν, ὅτι ἠφανίσθη, ἀλώπεκες διῆλθον ἐν αὐτῇ. Σὺ δὲ Κύριε εἰς τὸν αἰῶνα κατοικήσεις, ὁ θρόνος σου εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. Ἱνατί εἰς νῖκος ἐπιλήσῃ ἡμῶν, καταλείψεις ἡμᾶς εἰς μακρότητα ἡμερῶν; Ἐπίστρεψον ἡμᾶς Κύριε πρὸς σὲ, καὶ ἐπιστραφησόμεθα· καὶ ἀνακαίνισον ἡμέρας ἡμῶν καθὼς ἔμπροσθεν. Ὅτι ἀπωθούμενος ἀπώσω ἡμᾶς, ὠργίσθης ἐφ᾽ ἡμᾶς ἕως σθόδρα.

# ΙΩΒ

## 1

ΆΝΘΡΩΠΟΣ τις ἦν ἐν χώρᾳ τῇ Αὐσίτιδι, ᾧ ὄνομα Ἰὼβ, καὶ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος ἀληθινὸς, ἄμεμπτος, δίκαιος, θεοσεβὴς, ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς πονηροῦ πράγματος. Ἐγένοντο δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ καὶ θυγατέρες τρεῖς. Καὶ ἦν τὰ κτήνη αὐτοῦ πρόβατα ἑπτακισχίλια, κάμηλοι τρισχίλιαι, ζεύγη βοῶν πεντακόσια, θήλειαι ὄνοι νομάδες πεντακόσιαι, καὶ ὑπηρεσία πολλὴ σφόδρα, καὶ ἔργα μεγάλα ἦν αὐτῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος εὐγενὴς τῶν ἀφ’ ἡλίου ἀνατολῶν. Συμπορευόμενοι δὲ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ πρὸς ἀλλήλους, ἐποιοῦσαν πότον καθ’ ἑκάστην ἡμέραν, συμπαραλαμβάνοντες ἅμα καὶ τὰς τρεῖς ἀδελφὰς αὐτῶν, ἐσθίειν καὶ πίνειν μετ’ αὐτῶν. Καὶ ὡς ἂν συνετελέσθησαν αἱ ἡμέραι τοῦ πότου, ἀπέστελλεν Ἰὼβ καὶ ἐκαθάριζεν αὐτοὺς ἀνιστάμενος τοπρωΐ, καὶ προσέφερε περὶ αὐτῶν θυσίας, κατὰ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν, καὶ μόσχον ἕνα περὶ ἁμαρτίας περὶ τῶν ψυχῶν αὐτῶν· ἔλεγε γὰρ Ἰὼβ, μή ποτε οἱ υἱοί μου ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτῶν κακὰ ἐνενόησαν πρὸς Θεόν· οὕτως οὖν ἐποίει Ἰὼβ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἐγένετο ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, καὶ ἰδοὺ ἦλθον οἱ ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ

παραστῆναι ἐνώπιον τοῦ Κυρίου, καὶ ὁ διάβολος ἦλθε μετ᾽ αὐτῶν. Καὶ εἶπεν ὁ Κύριος τῷ διαβόλῳ, πόθεν παραγέγονας; καὶ ἀποκριθεὶς ὁ διάβολος τῷ Κυρίῳ, εἶπε, περιελθὼν τὴν γῆν καὶ ἐμπεριπατήσας τὴν ὑπ᾽ οὐρανὸν πάρειμι. Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Κύριος, προσέσχες τῇ διανοίᾳ σου κατὰ τοῦ παιδός μου Ἰώβ; ὅτι οὐκ ἔστι κατ᾽ αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς; ἄνθρωπος ἄμεμπτος, ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς πονηροῦ πράγματος; Ἀπεκρίθη δὲ ὁ διάβολος, καὶ εἶπεν ἐναντίον τοῦ Κυρίου, μὴ δωρεὰν Ἰὼβ σέβεται τὸν Κύριον; Οὐ σὺ περιέφραξας τὰ ἔξω αὐτοῦ, καὶ τὰ ἔσω τῆς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ τὰ ἔξω πάντων τῶν ὄντων αὐτοῦ κύκλῳ; τὰ δὲ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ εὐλόγησας; καὶ τὰ κτήνη αὐτοῦ πολλὰ ἐποίησας ἐπὶ τῆς γῆς; Ἀλλὰ ἀπόστειλον τὴν χεῖρά σου, καὶ ἄψαι πάντων ὧν ἔχει· ἢ μὴν εἰς πρόσωπόν σε εὐλογήσει. Τότε εἶπεν ὁ Κύριος τῷ διαβόλῳ, ἰδοὺ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτῷ, δίδωμι ἐν τῇ χειρί σου, ἀλλ᾽ αὐτοῦ μὴ ἅψῃ· καὶ ἐξῆλθεν ὁ διάβολος παρὰ τοῦ Κυρίου. Καὶ ἦν ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, οἱ υἱοὶ Ἰὼβ καὶ αἱ θυγατέρες αὐτοῦ ἔπινον οἶνον ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν τοῦ πρεσβυτέρου. Καὶ ἰδοὺ ἄγγελος ἦλθε πρὸς Ἰὼβ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, τὰ ζεύγη τῶν βοῶν ἠροτρία, καὶ αἱ θήλειαι ὄνοι ἐβόσκοντο ἐχόμεναι αὐτῶν, καὶ ἐλθόντες οἱ αἰχμαλωτεύοντες ᾐχμαλώτευσαν αὐτὰς, καὶ τοὺς παῖδας ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· σωθεὶς δὲ ἐγὼ μόνος ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος, καὶ εἶπε πρὸς Ἰὼβ, πῦρ ἔπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ κατέκαυσε τὰ πρόβατα, καὶ τοὺς ποιμένας κατέφαγεν ὁμοίως· σωθεὶς δέ ἐγὼ μόνος ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος, καὶ εἶπεν πρὸς Ἰὼβ, οἱ ἱππεῖς ἐποίησαν ἡμῖν κεφαλᾶς τρεῖς, καὶ ἐκύκλωσαν τὰς καμήλους, καὶ ᾐχμαλώτευσαν αὐτὰς, καὶ τοὺς παῖδας ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· ἐσώθην δὲ ἐγὼ

μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἄλλος ἄγγελος ἔρχεται λέγων τῷ Ἰὼβ, τῶν υἱῶν σου καὶ τῶν θυγατέρων σου ἐσθίοντων καὶ πινόντων παρὰ τῷ ἀδελφῷ αὐτῶν τῷ πρεσβυτέρῳ, ἐξαίφνης πνεῦμα μέγα ἐπῆλθεν ἐκ τῆς ἐρήμου, καὶ ἥψατο τῶν τεσσάρων γωνιῶν τῆς οἰκίας, καὶ ἔπεσεν ἡ οἰκία ἐπὶ τὰ παιδία σου, καὶ ἐτελεύτησαν· ἐσώθην δὲ ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. Οὕτως ἀναστὰς Ἰὼβ ἔῤῥῆξε τὰ ἱμάτια ἑαυτοῦ, καὶ ἐκείρατο τὴν κόμην τῆς κεφαλῆς, καὶ πεσὼν χαμαὶ, προσεκύνησε, καὶ εἶπεν, αὐτὸς γυμνὸς ἐξῆλθον ἐκ κοιλίας μητρός μου, γυμνὸς καὶ ἀπελεύσομαι ἐκεῖ· ὁ Κύριος ἔδωκεν, ὁ Κύριος ἀφείλατο· ὡς τῷ Κυρίῳ ἔδοξεν, οὕτως ἐγένετο· εἴη τὸ ὄνομα Κυρίου εὐλογημένον. Ἐν τούτοις πᾶσι τοῖς συμβεβηκόσιν αὐτῷ οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ ἐναντίον τοῦ Κυρίου· καὶ οὐκ ἔδωκεν ἀφροσύνην τῷ Θεῷ.

# 2

Ἐγένετο δὲ ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, καὶ ἦλθον οἱ ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ παραστῆναι ἔναντι Κυρίου, καὶ ὁ διάβολος ἦλθεν ἐν μέσῳ αὐτῶν παραστῆναι ἐναντίον τοῦ Κυρίου. Καὶ εἶπεν ὁ Κύριος τῷ διαβόλῳ, πόθεν σὺ ἔρχῃ; τότε εἶπεν ὁ διάβολος ἐνώπιον τοῦ Κυρίου, διαπορευθεὶς τὴν ὑπ’ οὐρανὸν, καὶ ἐμπεριπατήσας τὴν σύμπασαν, πάρειμι. Εἶπε δὲ ὁ Κύριος πρὸς τὸν διάβολον, προσέσχες οὖν τῷ θεράποντί μου Ἰὼβ, ὅτι οὐκ ἔστι κατ’ αὐτὸν τῶν ἐπὶ τῆς γῆς; ἄνθρωπος ἄκακος, ἀληθινὸς, ἄμεμπτος, θεοσεβὴς, ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς κακοῦ, ἔτι δὲ ἔχεται ἀκακίας· σὺ δὲ εἶπας ὑπάρχοντα αὐτοῦ διακενῆς ἀπολέσαι. Ὑπολαβὼν δὲ ὁ διάβολος εἶπε τῷ

Κυρίῳ, δέρμα ὑπὲρ δέρματος, ὅσα ὑπάρχει ἀνθρώπῳ ὑπέρ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἐκτίσει. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἀποστείλας τὴν χεῖρά σου, ἅψαι τῶν ὀστῶν αὐτοῦ καὶ τῶν σαρκῶν αὐτοῦ· ἦ μὴν εἰς πρόσωπόν σε εὐλογήσει. Εἶπε δὲ ὁ Κύριος τῷ διαβόλῳ, ἰδοὺ παραδίδωμί σοι αὐτόν· μόνον τὴν ψυχὴν αὐτοῦ διαφύλαξον. Ἐξῆλθε δὲ ὁ διάβολος ἀπὸ τοῦ Κυρίου· καὶ ἔπαισε τὸν Ἰὼβ ἕλκει πονηρῷ ἀπὸ ποδῶν ἕως κεφαλῆς. Καὶ ἔλαβεν ὄστρακον, ἵνα τὸν ἰχῶρα ξύῃ, καὶ ἐκάθητο ἐπὶ τῆς κοπρίας ἔξω τῆς πόλεως. Χρόνου δὲ πολλοῦ προβεβηκότος, εἶπεν αὐτῷ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, μέχρι τίνος καρτερήσεις, λέγων, Ὁ δὲ ἐμβλέψας, εἶπεν αὐτῇ, ὥσπερ μία τῶν ἀφρόνων γυναικῶν ἐλάλησας· εἰ τὰ ἀγαθὰ ἐδεξάμεθα ἐκ χειρὸς Κυρίου, τὰ κακὰ οὐχ ὑποίσομεν; Ἐν πᾶσι τούτοις τοῖς συμβεβηκόσιν αὐτῷ οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ τοῖς χείλεσιν ἐναντίον τοῦ Θεοῦ. Ἀκούσαντες δὲ οἱ τρεῖς φίλοι αὐτοῦ τὰ κακὰ πάντα τὰ ἐπελθόντα αὐτῷ, παρεγένοντο ἕκαστος ἐκ τῆς ἰδίας χώρας πρὸς αὐτόν· Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανῶν βασιλεὺς, Βαλδὰδ ὁ Σαυχέων τύραννος, Σωφὰρ Μιναίων βασιλεύς· καὶ παρεγένοντο πρὸς αὐτὸν ὁμοθυμαδὸν, τοῦ παρακαλέσαι καὶ ἐπισκέψασθαι αὐτόν. Ἰδόντες δὲ αὐτὸν πόῤῥωθεν, οὐκ ἐπέγνωσαν· καὶ βοήσαντες φωνῇ μεγάλῃ ἔκλαυσαν, ῥήξαντες ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ στολὴν, καὶ καταπασάμενοι γῆν. παρεκάθισαν αὐτῷ ἑπτὰ ἡμέρας καὶ ἑπτὰ νύκτας, καὶ οὐδεὶς αὐτῶν ἐλάλησεν· ἑώρων γὰρ τὴν πληγὴν δεινὴν οὖσαν καὶ μεγάλην σφόδρα.

# 3

Μετὰ τοῦτο ἤνοιξεν Ἰὼβ τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ κατηράσατο τὴν

ἡμέραν αὐτοῦ, λέγων, Ἀπόλοιτο ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἐγεννήθην, καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη ᾗ εἶπαν, Ἰδοὺ ἄρσεν. Ἡ νὺξ ἐκείνη εἴη σκότος, καὶ μὴ ἀναζητήσαι αὐτὴν ὁ Κύριος ἄνωθεν, μηδὲ ἔλθοι εἰς αὐτὴν φέγγος· Ἐκλάβοι δὲ αὐτὴν σκότος καὶ σκιὰ θανάτου, ἐπέλθοι ἐπ’ αὐτὴν γνόφος· καταραθείη ἡ ἡμέρα καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη, ἀπενέγκοιτο αὐτὴν σκότος· μὴ εἴη εἰς ἡμέρας ἐνιαυτοῦ, μηδὲ ἀριθμηθείη εἰς ἡμέρας μηνῶν. Ἀλλὰ ἡ νὺξ ἐκείνη εἴη ὀδύνη, καὶ μὴ ἔλθοι ἐπ’ αὐτὴν εὐφροσύνη, μηδὲ χαρμονή· Ἀλλὰ καταράσαιτο αὐτὴν ὁ καταρώμενος τὴν ἡμέραν ἐκείνην, ὁ μέλλων τὸ μέγα κῆτος χειρώσασθαι. Σκοτωθείη τὰ ἄστρα τῆς νυκτὸς ἐκείνης· ὑπομείναι, καὶ εἰς φωτισμὸν μὴ ἔλθοι, καὶ μὴ ἴδοι Ἑωσφόρον ἀνατέλλοντα. Ὅτι οὐ συνέκλεισε πύλας γαστρὸς μητρός μου, ἀπήλλαξε γὰρ ἂν πόνον ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. Διατί γὰρ ἐν κοιλίᾳ οὐκ ἐτελεύτησα; ἐκ γαστρὸς δὲ ἐξῆλθον, καὶ οὐκ εὐθὺς ἀπωλόμην; Ἵνατί δὲ συνήντησάν μοι τὰ γόνατα; ἱνατί δὲ μαστοὺς ἐθήλασα; νῦν ἂν κοιμηθεὶς ἡσύχασα, ὑπνώσας δὲ ἀνεπαυσάμην Νῦν ἂν κοιμηθεὶς ἡσύχασα, ὑπνώσας δὲ ἀνεπαυσάμην μετὰ βασιλέων βουλευτῶν γῆς οἳ ἐγαυριῶντο ἐπὶ ξίφεσιν, ἢ μετὰ ἀρχόντων, ὧν πολὺς ὁ χρυσός, οἳ ἔπλησαν τοὺς οἴκους αὐτῶν ἀργυρίου· Ἢ ὥσπερ ἔκτρωμα ἐκπορευόμενον ἐκ μήτρας μητρὸς, ἢ ὥσπερ νήπιοι, οἳ οὐκ εἶδον φῶς· Ἐκεῖ ἀσεβεῖς ἐξέκαυσαν θυμὸν ὀργῆς, ἐκεῖ ἀνεπαύσαντο κατάκοποι τῷ σώματι. Ὁμοθυμαδὸν δὲ οἱ αἰώνιοι οὐκ ἤκουσαν φωνὴν φορολόγου. Μικρὸς καὶ μέγας ἐκεῖ ἐστι, καὶ θεράπων δεδοικὼς τὸν κύριον αὐτοῦ. Ἱνατί γὰρ δέδοται τοῖς ἐν πικρίᾳ φῶς; ζωὴ δὲ ταῖς ἐν ὀδύναις ψυχαῖς, οἳ ἱμείρονται τοῦ θανάτου, καὶ οὐ τυγχάνουσιν ἀνορύσσοντες ὥσπερ θησαυροὺς, περιχαρεῖς δὲ ἐγένοντο ἐὰν κατατύχωσι; Θάνατος ἀνδρὶ ἀνάπαυμα, συνέκλεισεν γὰρ ὁ Θεὸς κατ’ αὐτοῦ. Πρὸ γὰρ τῶν σίτων

μου στεναγμὸς ἥκει, δακρύω δὲ ἐγὼ συνεχόμενος φόβῳ. Φόβος γὰρ ὃν ἐφρόντισα ἦλθέ μοι, καὶ ὃν ἐδεδοίκειν, συνήντησέν μοι. Οὔτε εἰρήνευσα, οὔτε ἡσύχασα, οὔτε ἀνεπαυσάμην, ἦλθε δέ μοι ὀργή·

# 4

Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιφὰς ὁ Θαιμανίτης, λέγει, Μὴ πολλάκις σοι λελάληται ἐν κόπῳ; ἰσχὺν δὲ ῥημάτων σου τίς ὑποίσει; Εἰ γὰρ σὺ ἐνουθέτησας πολλοὺς, καὶ χεῖρας ἀσθενοῦς παρεκάλεσας, ἀσθενοῦντάς τε ἐξανέστησας ῥήμασι, γόνασί τε ἀδυνατοῦσι θάρσος περιέθηκας. Νῦν δὲ ἥκει ἐπὶ σὲ πόνος καὶ ἥψατό σου, σὺ ἐσπούδασας. Πότερον οὐχ ὁ φόβος σου ἐστὶν ἐν ἀφροσύνῃ, καὶ ἡ ἐλπίς σου καὶ ἡ κακία τῆς ὁδοῦ σου; Μνήσθητι οὖν, τίς καθαρὸς ὢν ἀπώλετο, ἢ πότε ἀληθινοὶ ὁλόῤῥιζοι ἀπώλοντο; Καθ’ ὃν τρόπον εἶδον τοὺς ἀροτριῶντας τὰ ἄτοπα, οἱ δὲ σπείροντες αὐτὰ ὀδύνας θεριοῦσιν ἑαυτοῖς. Ἀπὸ προστάγματος Κυρίου ἀπολοῦνται, ἀπὸ δὲ πνεύματος ὀργῆς αὐτοῦ ἀφανισθήσονται. Σθένος λέοντος, φωνὴ δὲ λεαίνης, γαυρίαμα δὲ δρακόντων ἐσβέσθη. Μυρμηκολέων ὤλετο παρὰ τὸ μὴ ἔχειν βορὰν, σκύμνοι δὲ λεόντων ἔλιπον ἀλλήλους. Εἰ δέ τι ῥῆμα ἀληθινὸν ἐγεγόνει ἐν λόγοις σου, οὐθὲν ἄν σοι τούτων κακὸν ἀπήντησε· πότερον οὐ δέξεταί μου τὸ οὖς ἐξαίσια παρ’ αὐτοῦ; Φόβῳ δὲ καὶ ἤχῳ νυκτερινῇ ἐπιπίπτων φόβος ἐπ’ ἀνθρώπους, φρίκη μοι συνήντησεν καὶ τρόμος, καὶ μεγάλως μου τὰ ὀστᾶ διέσεισε, καὶ πνεῦμα ἐπὶ πρόσωπόν μου ἐπῆλθεν, ἔφριξαν δέ μου τρίχες καὶ σάρκες. Ἀνέστην καὶ οὐκ ἐπέγνων, εἶδον καὶ οὐκ ἦν μορφὴ πρὸ ὀφθαλμῶν μου, ἀλλ’ ἢ αὖραν καὶ φωνὴν

ἤκουον. Τί γάρ; μὴ καθαρὸς ἔσται βροτὸς ἐναντίον τοῦ Κυρίου; ἢ ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτοῦ ἄμεμπτος ἀνήρ; Εἰ κατὰ παίδων αὐτοῦ οὐ πιστεύει, κατὰ δὲ ἀγγέλων αὐτοῦ σκολιόν τι ἐπενόησε. Τοὺς δὲ κατοικοῦντας οἰκίας πηλίνας, ἐξ ὧν καὶ αὐτοὶ ἐκ τοῦ αὐτοῦ πηλοῦ ἐσμεν, ἔπαισεν αὐτοὺς σητὸς τρόπον, καὶ ἀπὸ πρωΐθεν μέχρι ἑσπέρας οὐκ ἔτι εἰσὶ, παρὰ τὸ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς ἑαυτοῖς βοηθῆσαι, ἀπώλοντο. Ἐνεφύσησε γὰρ αὐτοῖς καὶ ἐξηράνθησαν, ἀπώλοντο παρὰ τὸ μὴ ἔχειν αὐτοὺς σοφίαν.

# 5

Ἐπικαλέσαι δὲ εἴ τις σοι ὑπακούσεται, ἢ εἴ τινα ἀγγέλων ἁγίων ὄψῃ· Καὶ γὰρ ἄφρονα ἀναιρεῖ ὀργὴ, πεπλανημένον δὲ θανατοῖ ζῆλος. Ἐγὼ δὲ ἑώρακα ἄφρονας ῥίζαν βάλλοντας, ἀλλ’ εὐθέως ἐβρώθη αὐτῶν ἡ δίαιτα. Πόῤῥω γένοιντο οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἀπὸ σωτηρίας, κολαβρισθείησαν δὲ ἐπὶ θύραις ἡσσόνων, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐξαιρούμενος. Ἃ γὰρ ἐκεῖνοι συνήγαγον, δίκαιοι ἔδονται, αὐτοὶ δὲ ἐκ κακῶν οὐκ ἐξαίρετοι ἔσονται· ἐκσιφωνισθείη αὐτῶν ἡ ἰσχύς. Οὐ γὰρ μὴ ἐξέλθῃ ἐκ τῆς γῆς κόπος, οὐδὲ ἐξ ὀρέων ἀναβλαστήσει πόνος. Ἀλλὰ ἄνθρωπος γεννᾶται κόπῳ, νεοσσοὶ δὲ γυπὸς τὰ ὑψηλὰ πέτονται. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἐγὼ δεηθήσομαι Κυρίου, Κύριον δὲ τὸν πάντων δεσπότην ἐπικαλέσομαι, τὸν ποιοῦντα μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμὸς, τὸν διδόντα ὑετὸν ἐπὶ τὴν γῆν, ἀποστέλλοντα ὕδωρ ἐπὶ τὴν ὑπ’ οὐρανὸν, τὸν ποιοῦντα ταπεινοὺς εἰς ὕψος, καὶ ἀπολωλότας ἐξεγείροντα, διαλλάσσοντα βουλὰς πανούργων, καὶ οὐ μὴ ποιήσουσιν αἱ χεῖρες αὐτῶν ἀληθές· ὁ καταλαμβάνων σοφοὺς ἐν

τῇ φρονήσει, βουλὴν δὲ πολυπλόκων ἐξέστησεν. Ἡμέρας συναντήσεται αὐτοῖς σκότος, τὸ δὲ μεσημβρινὸν ψηλαφήσαισαν ἴσα νυκτὶ, ἀπόλοιντο δὲ ἐν πολέμῳ· ἀδύνατος δὲ ἐξέλθοι ἐκ χειρὸς δυνάστου. Εἴη δὲ ἀδυνάτῳ ἐλπὶς, ἀδίκου δὲ στόμα ἐμφραχθείη. Μακάριος δὲ ἄνθρωπος ὃν ἤλεγξεν ὁ Κύριος, νουθέτημα δὲ παντοκράτορος μὴ ἀπαναίνου. Αὐτὸς γὰρ ἀλγεῖν ποιεῖ, καὶ πάλιν ἀποκαθίστησιν· ἔπαισε, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἰάσαντο. Ἐξάκις ἐξ ἀναγκῶν σε ἐξελεῖται, ἐν δὲ τῷ ἑβδόμῳ οὐ μὴ ἅψηταί σου κακόν. Ἐν λιμῷ ῥύσεταί σε ἐκ θανάτου, ἐν πολέμῳ δὲ ἐκ χειρὸς σιδήρου λύσει σε. Ἀπὸ μάστιγος γλώσσης σε κρύψει, καὶ οὐ μὴ φοβηθῇς ἀπὸ κακῶν ἐρχομένων. Ἀδίκων καὶ ἀνόμων καταγελάσῃ· ἀπὸ δὲ θηρίων ἀγρίων οὐ μὴ φοβηθῇς· Θῆρες γὰρ ἄγριοι εἰρηνεύσουσί σοι. Εἶτα γνώσῃ ὅτι εἰρηνεύσει σου ὁ οἶκος· ἡ δὲ δίαιτα τῆς σκηνῆς σου οὐ μὴ ἁμάρτῃ. Γνώσῃ δὲ ὅτι πολὺ τὸ σπέρμα σου, τὰ δὲ τέκνα σου ἔσται ὥσπερ τὸ παμβότανον τοῦ ἀγροῦ. Ἐλεύσῃ δὲ ἐν τάφῳ ὥσπερ σῖτος ὥριμος κατὰ καιρὸν θεριζόμενος, ἢ ὥσπερ θιμωνία ἅλωνος καθ’ ὥραν συγκομισθεῖσα. Ἰδοὺ ταῦτα οὕτως ἐξιχνιάσαμεν· ταῦτά ἐστιν ἃ ἀκηκόαμεν· σὺ δὲ γνῶθι σεαυτῷ, εἴ τι ἔπραξας.

# 6

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Εἰ γάρ τις ἱστῶν στήσαι μου τὴν ὀργὴν, τὰς δὲ ὀδύνας μου ἄραι ἐν ζυγῷ ὁμοθυμαδὸν, καὶ δὴ ἄμμου παραλίας βαρυτέρα ἔσται· ἀλλ’ ὡς ἔοικε τὰ ῥήματά μου ἐστὶ φαῦλα. Βέλη γὰρ Κυρίου ἐν τῷ σώματί μου ἐστὶν, ὧν ὁ θυμὸς αὐτῶν ἐκπίνει μου τὸ αἷμα· ὅταν ἄρξωμαι λαλεῖν, κεντοῦσί με. Τί

γάρ; μὴ διακενῆς κεκράξεται ὄνος ἄγριος, ἀλλ᾽ ἢ τὰ σῖτα ζητῶν; εἰ δὲ καὶ ῥήξει φωνὴν βοῦς ἐπὶ φάτνης ἔχων τὰ βρώματα; Εἰ βρωθήσεται ἄρτος ἄνευ ἁλός; εἰ δὲ καὶ ἔστι γεῦμα ἐν ῥήμασι κενοῖς; Οὐ δύναται γὰρ παύσασθαί μου ἡ ὀργή· βρόμον γὰρ ὁρῶ τὰ σῖτά μου ὥσπερ ὀσμὴν λέοντος. Εἰ γὰρ δώῃ καὶ ἔλθοι μου ἡ αἴτησις, καὶ τὴν ἐλπίδα μου δώῃ ὁ Κύριος. Ἀρξάμενος ὁ Κύριος τρωσάτω με, εἰς τέλος δὲ μή με ἀνελέτω. Εἴη δέ μου πόλις τάφος, ἐφ᾽ ἧς ἐπὶ τειχέων ἠλλόμην, ἐπ᾽ αὐτῆς οὐ φείσομαι· οὐ γὰρ ἐψευσάμην ῥήματα ἅγια Θεοῦ μου. Τίς γάρ μου ἡ ἰσχύς, ὅτι ὑπομένω; τίς μου ὁ χρόνος, ὅτι ἀνέχεταί μου ἡ ψυχή; Μὴ ἰσχὺς λίθων ἡ ἰσχύς μου; ἢ αἱ σάρκες μου εἰσὶ χάλκεαι; Ἢ οὐκ ἐπ᾽ αὐτῷ ἐπεποίθειν; βοήθεια δὲ ἀπ᾽ ἐμοῦ ἄπεστιν. Ἀπείπατό με ἔλεος, ἐπισκοπὴ δὲ Κυρίου ὑπερεῖδέ με. Οὐ προσεῖδόν με οἱ ἐγγύτατοί μου, ὥσπερ χειμάῤῥους ἐκλείπων, ἢ ὥσπερ κῦμα παρῆλθόν με Οἵτινές με διευλαβοῦντο, νῦν ἐπιπεπτώκασί μοι ὥσπερ χιὼν ἢ κρύσταλλος πεπηγώς· Καθὼς τακεῖσα θέρμης γενομένης, οὐκ ἐπεγνώσθη ὅπερ ἦν, οὕτω κἀγὼ κατελείφηθν ὑπὸ πάντων, ἀπωλόμην δὲ καὶ ἔξοικος ἐγενόμην. Ἴδετε ὁδοὺς Θαιμανῶν, ἀτραποὺς, Σαβῶν οἱ διορῶντες. Καὶ αἰσχύνην ὀφειλήσουσιν, οἱ ἐπὶ πόλεσι καὶ χρήμασι πεποιθότες. Ἀτὰρ δὲ καὶ ὑμεῖς ἐπέβητέ μοι ἀνελεημόνως, ὥστε ἰδόντες τὸ ἐμὸν τραῦμα φοβήθητε. Τί γάρ; μήτι ὑμᾶς ἤτησα, ἢ τῆς παρ᾽ ὑμῶν ἰσχύος ἐπιδέομαι, ὥστε σῶσαί με ἐξ ἐχθρῶν, ἢ ἐκ χειρὸς δυναστῶν ῥύσασθαί με; Διδάξατέ με, ἐγὼ δὲ κωφεύσω· εἴ τι πεπλάνημαι, φράσατέ μοι. Ἀλλ᾽ ὡς ἔοικε φαῦλα ἀληθινοῦ ῥήματα, οὐ γὰρ παρ᾽ ὑμῶν ἰσχὺν αἰτοῦμαι. Οὐδὲ ἔλεγχος ὑμῶν ῥήμασί με παύσει, οὐδὲ γὰρ ὑμῶν φθέγμα ῥήματος ἀνέξομαι. Πλὴν ὅτι ἐπ᾽ ὀρφανῷ ἐπιπίπτετε, ἐνάλλεσθε δὲ ἐπὶ φίλῳ ὑμῶν. Νυνὶ δὲ εἰσβλέψας εἰς πρόσωπα ὑμῶν, οὐ ψεύσομαι.

Καθίσατε δὴ καὶ μὴ εἴη ἄδικον, καὶ πάλιν τῷ δικαίῳ συνέρχεσθε. Οὐ γάρ ἐστιν ἐν γλώσσῃ μουἄδικον, ἢ ὁ λάρυγξ μου οὐχὶ σύνεσιν μελετᾷ.

# 7

Πότερον οὐχὶ πειρατήριόν ἐστιν ὁ βίος ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς; καὶ ὥσπερ μισθίου αὐθημερινοῦ ἡ ζωὴ αὐτοῦ; Ἢ ὥσπερ θεράπων δεδοικὼς τὸν Κύριον αὐτοῦ, καὶ τετευχὼς σκιᾶς; ἢ ὥσπερ μισθωτὸς ἀναμένων τὸν μισθὸν αὐτοῦ; Οὕτως κἀγὼ ὑπέμεινα μῆνας κενοὺς, νύκτες δὲ ὀδυνῶν δεδομέναι μοι εἰσίν. Ἐὰν κοιμηθῶ, λέγω, πότε ἡμέρα; ὡς δ' ἂν ἀναστῶ, πάλιν, πότε ἑσπέρα; πλήρης δὲ γίνομαι ὀδυνῶν ἀπὸ ἑσπέρας ἕως πρωΐ. Φύρεται δέ μου τὸ σῶμα ἐν σαπρίᾳ σκωλήκων, τήκω δὲ βώλακας γῆς ἀπὸ ἰχῶρος ξύων. Ὁ δὲ βίος μου ἔστιν ἐλαφρότερος λαλιᾶς, ἀπόλωλε δὲ ἐν κενῇ ἐλπίδι. Μνήσθητι οὖν ὅτι πνεῦμά μου ἡ ζωὴ, καὶ οὐκ ἔτι ἐπανελεύσεται ὀφθαλμός μου ἰδεῖν ἀγαθόν. Οὐ περιβλέψεταί με ὀφθαλμὸς ὁρῶντός με, οἱ ὀφθαλμοί σου ἐν ἐμοί, καὶ οὐκ ἔτι εἰμί· Ὥσπερ νέφος ἀποκαθαρθὲν ἀπ' οὐρανοῦ· ἐὰν γὰρ ἄνθρωπος καταβῇ εἰς ᾅδην, οὐκ ἔτι μὴ ἀναβῇ, οὐδ' οὐ μὴ ἐπιστρέψῃ εἰς τὸν ἴδιον οἶκον, οὐδ' οὐ μὴ ἐπιγνῶ αὐτὸν ἔτι ὁ τόπος αὐτοῦ. Ἀτὰρ οὖν οὐδὲ ἐγὼ φείσομαι τῷ στόματί μου, λαλήσω ἐν ἀνάγκῃ ὤν, ἀνοίξω πικρίαν ψυχῆς μου συνεχόμενος. Πότερον θάλασσα εἰμὶ ἢ δράκων, ὅτι κατέταξας ἐπ' ἐμὲ φυλακήν; Εἶπα ὅτι παρακαλέσει με ἡ κλίνη μου, ἀνοίσω δὲ πρὸς ἐμαυτὸν ἰδίᾳ λόγον τῇ κοίτῃ μου. Ἐκφοβεῖς με ἐνυπνίοις, καὶ ὁράμασί με καταπλήσσεις. Ἀπαλλάξεις ἀπὸ πνεύματός μου τὴν ψυχήν μου, ἀπὸ δὲ θανάτου τὰ ὀστᾶ μου. Οὐ

γὰρ εἰς τὸν αἰῶνα ζήσομαι, ἵνα μακροθυμήσω· ἀπόστα ἀπ’ ἐμοῦ, κενὸς γάρ μου ὁ βίος. Τί γάρ ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι ἐμεγάλυνας αὐτόν; ἢ ὅτι προσέχεις τὸν νοῦν εἰς αὐτόν; Ἢ ἐπισκοπὴν αὐτοῦ ποιήσῃ ἕως τὸ πρωΐ; καὶ εἰς ἀνάπαυσιν αὐτὸν κρινεῖς; Ἕως τίνος οὐκ ἐᾷς με, οὐδὲ προΐῃ με, ἕως ἂν καταπίω τὸν πτύελόν μου; Εἰ ἐγὼ ἥμαρτον, τί δυνήσομαι πρᾶξαι, ὁ ἐπιστάμενος τὸν νοῦν τῶν ἀνθρώπων; διατί ἔθου με κατεντευκτήν σου, εἰμὶ δὲ ἐπὶ σοὶ φορτίον; Διατί οὐκ ἐποιήσω τῆς ἀνομίας μου λήθην, καὶ καθαρισμὸν τῆς ἁμαρτίας μου; νυνὶ δὲ εἰς γῆν ἀπελεύσομαι, ὀρθρίζων δὲ οὐκ ἔτι εἰμί.

# 8

Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέγει, Μέχρι τίνος λαλήσεις ταῦτα, πνεῦμα πολυῤῥῆμον τοῦ στόματός σου; Μὴ ὁ Κύριος ἀδικήσει κρίνων; ἢ ὁ τὰ πάντα ποιήσας ταράξει τὸ δίκαιον; Εἰ οἱ υἱοί σου ἥμαρτον ἐναντίον αὐτοῦ, ἀπέστειλεν ἐν χειρὶ ἀνομίας αὐτῶν. Σὺ δὲ ὄρθριζε πρὸς Κύριον παντοκράτορα δεόμενος. Εἰ καθαρὸς εἶ καὶ ἀληθινὸς, δεήσεως ἐπακούσεταί σου, ἀποκαταστήσει δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης. Ἔσται οὖν τὰ μὲν πρῶτά σου ὀλίγα, τὰ δὲ ἔσχατά σου ἀμύθητα. Ἐπερώτησον γὰρ γενεὰν πρώτην, ἐξιχνίασον δὲ κατὰ γένος πατέρων· Χθιζοὶ γάρ ἐσμεν, καὶ οὐκ οἴδαμεν· σκιὰ γάρ ἐστιν ἡμῶν ἐπὶ τῆς γῆς ὁ βίος· Ἢ οὐχ οὗτοί σε διδάξουσιν καὶ ἀναγγελοῦσι, καὶ ἐκ καρδίας ἐξάξουσι ῥήματα; Μὴ θάλλει πάπυρος ἄνευ ὕδατος, ἢ ὑψωθήσεται βούτομον ἄνευ πότου; Ἔτι ὂν ἐπὶ ῥίζης, καὶ οὐ μὴ θερισθῇ, πρὸ τοῦ πιεῖν πᾶσα βοτάνη οὐχὶ ξηραίνεται; Οὕτως τοίνυν ἔσται τὰ ἔσχατα

πάντων τῶν ἐπιλανθανομένων τοῦ Κυρίου· ἐλπὶς γὰρ ἀσεβοῦς ἀπολεῖται· Ἀοίκητος γὰρ αὐτοῦ ἔσται ὁ οἶκος· ἀράχνη δὲ αὐτοῦ ἀποβήσεται ἡ σκηνή. Ἐὰν ὑπερείσῃ τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, οὐ μὴ στῇ· ἐπιλαβομένου δὲ αὐτοῦ, οὐ μὴ ὑπομείνῃ· Ὑγρὸς γάρ ἐστιν ὑπὸ ἡλίου· καὶ ἐκ σαπρίας αὐτοῦ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ ἐξελεύσεται. Ἐπὶ συναγωγὴν λίθων κοιμᾶται· ἐν δὲ μέσῳ χαλίκων ζήσεται. Ἐὰν καταπίῃ, ὁ τόπος ψεύσεται αὐτόν· οὐχ ἑώρακας τοιαῦτα, ὅτι καταστροφὴ ἀσεβοῦς τοιαύτη, ἐκ δὲ γῆς ἄλλον ἀναβλαστήσει. Ὁ γὰρ Κύριος οὐ μὴ ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον· πᾶν δὲ δῶρον ἀσεβοῦς οὐ δέξεται. Ἀληθινῶν δὲ στόμα ἐμπλήσει γέλωτος, τὰ δὲ χείλη αὐτῶν ἐξομολογήσεως. Οἱ δὲ ἐχθροὶ αὐτῶν ἐνδύσονται αἰσχύνην, δίαιτα δὲ ἀσεβοῦς οὐκ ἔσται.

# 9

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Ἐπ’ ἀληθείας οἶδα, ὅτι οὕτως ἐστί· πῶς γὰρ ἔσται δίκαιος βροτὸς παρὰ Κυρίῳ; Ἐὰν γὰρ βούληται κριθῆναι αὐτῷ, οὐ μὴ ὑπακούσῃ αὐτῷ, ἵνα μὴ ἀντείπῃ πρὸς ἕνα λόγον αὐτοῦ ἐκ χιλίων. Σοφὸς γάρ ἐστι διανοίᾳ, κραταιός τε καὶ μέγας· τίς σκληρὸς γενόμενος ἐναντίον αὐτοῦ ὑπέμεινεν; Ὁ παλαιῶν ὄρη καὶ οὐκ οἴδασιν, ὁ καταστρέφων αὐτὰ ὀργῇ· Ὁ σείων τὴν ὑπ’ οὐρανὸν ἐκ θεμελίων, οἱ δὲ στύλοι αὐτῆς σαλεύονται· Ὁ λέγων τῷ ἡλίῳ καὶ οὐκ ἀνατέλλει, κατὰ δὲ ἄστρων κατασφραγίζει· Ὁ τανύσας τὸν οὐρανὸν μόνος, καὶ περιπατῶν ὡς ἐπ’ ἐδάφους ἐπὶ θαλάσσης· Ὁ ποιῶν Πλειάδα καὶ Ἕσπερον καὶ Ἀρκτοῦρον, καὶ ταμεῖα Νότου· Ὁ ποιῶν μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. Ἐὰν ὑπερβῇ με, οὐ μὴ ἴδω· ἐὰν

παρέλθῃ με, οὐδ’ ὡς ἔγνων. Ἐὰν ἀπαλλάξῃ, τίς ἀποστρέψει; ἢ τίς ἐρεῖ αὐτῷ, τί ἐποίησας; Αὐτὸς γὰρ ἀπέστραπται ὀργὴν, ὑπ’ αὐτοῦ ἐκάμφθησαν κήτη τὰ ὑπ’ οὐρανόν Ἐὰν δέ μου ὑπακούσεται, ἢ διακρίνει τὰ ῥήματά μου. Ἐὰν γὰρ ᾧ δίκαιος, οὐκ εἰσακούσεταί μου, τοῦ κρίματος αὐτοῦ δεηθήσομαι· Ἐάν τε καλέσω καὶ μὴ ὑπακούσῃ, οὐ πιστεύω ὅτι εἰσακήκοέ μου τῆς φωνῆς. Μὴ γνόφῳ με ἐκτρίψῃ· πολλὰ δέ μου τὰ συντρίμματα πεποίηκε διακενῆς. Οὐκ ἐᾷ γάρ με ἀναπνεῦσαι· ἐνέπλησε δέ με πικρίας, ὅτι μὲν γὰρ ἰσχύει κράτει· τίς οὖν κρίματι αὐτοῦ ἀντιστήσεται; Ἐὰν γὰρ ᾧ δίκαιος, τὸ στόμα μου ἀσεβήσει· ἐάν τε ᾧ ἄμεμπτος, σκολιὸς ἀποβήσομαι. Εἴτε γὰρ ἠσέβησα, οὐκ οἶδα τῇ ψυχῇ, πλὴν ἀφαιρεῖταί μου ἡ ζωή. Διὸ εἶπον, μέγαν καὶ δυνάστην ἀπολλύει ὀργή, ὅτι φαῦλοι ἐν θανάτῳ ἐξαισίῳ, ἀλλὰ δίκαιοι καταγελῶνται, παραδέδονται γὰρ εἰς χεῖρας ἀσεβοῦς, πρόσωπα κριτῶν αὐτῆς συγκαλύπτει· εἰ δὲ μὴ αὐτός ἐστι, τίς ἐστιν; Ὁ δὲ βίος μου ἐστὶν ἐλαφρότερος δρομέως· ἀπέδρασαν, καὶ οὐκ εἴδοσαν. Ἢ καὶ ἐστι ναυσὶν ἴχνος ὁδοῦ, ἢ ἀετοῦ πετομένου ζητοῦντος βοράν; Ἐάν τε γὰρ εἶπω, ἐπιλήσομαι λαλῶν, συγκύψας τῷ προσώπῳ στενάξω· Σείομαι πᾶσι τοῖς μέλεσιν, οἶδα γὰρ ὅτι οὐκ ἀθῶόν με ἐάσεις. Ἐπειδὴ δέ εἰμι ἀσεβὴς, διὰ τί οὐκ ἀπέθανον; Ἐὰν γὰρ ἀπολούσωμαι χιόνι, καὶ ἀποκαθάρωμαι χερσὶ καθαραῖς, ἱκανῶς ἐν ῥύπῳ με ἔβαψας, ἐβδελύξατο δέ με ἡ στολή. Οὐ γὰρ εἰ ἄνθρωπος κατ’ ἐμὲ, ᾧ ἀντικρινοῦμαι, ἵνα ἔλθωμεν ὁμοθυμαδὸν εἰς κρίσιν. Εἴθε ἦν ὁ μεσίτης ἡμῶν, καὶ ἐλέγχων, καὶ διακούων ἀναμέσον ἀμφοτέρων. Ἀπαλλαξάτω ἀπ’ ἐμοῦ τὴν ῥάβδον, ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ μή με στροβείτω, καὶ οὐ μὴ φοβηθῶ, ἀλλὰ λαλήσω· οὐ γὰρ οὕτω συνεπίσταμαι.

# 10

Καμνὼν τῇ ψυχῇ μου, στένων ἐπαφήσω ἐπ’ αὐτὸν τὰ ῥήματα μου· λαλήσω πικρίᾳ ψυχῆς μου συνεχόμενος, καὶ ἐρῶ πρὸς Κύριον, μή με ἀσεβεῖν δίδασκε· καὶ διατί με οὕτως ἔκρινας; Ἢ καλόν σοι ἐὰν ἀδικήσω; ὅτι ἀπείπω ἔργα χειρῶν σου, βουλῇ δὲ ἀσεβῶν προσέσχες. Ἢ ὥσπερ βροτὸς ὁρᾷ, καθορᾷς; ἢ καθὼς ὁρᾷ ἄνθρωπος, βλέψῃ; Ἢ ὁ βίος σου ἀνθρώπινός ἐστιν, ἢ τὰ ἔτη σου ἀνδρὸς, ὅτι ἀνεζήτησας τὴν ἀνομίαν μου, καὶ τὰς ἁμαρτίας μου ἐξιχνίασας; Οἶδας γὰρ ὅτι οὐκ ἠσέβησα· ἀλλὰ τίς ἐστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν σου ἐξαιρούμενος; Αἱ χεῖρές σου ἔπλασάν με καὶ ἐποίησάν με, μετὰ ταῦτα μεταβαλών με ἔπαισας. Μνήσθητι, ὅτι πηλόν με ἔπλασας, εἰς δὲ γῆν με πάλιν ἀποστρέφεις. Ἢ οὐχ ὥσπερ γάλα με ἤμελξας, ἐτύρωσας δέ με ἶσα τυρῷ; Δέρμα δὲ καὶ κρέας με ἐνέδυσας, ὀστέοις δὲ καὶ νεύροις με ἔνειρας. Ζωὴν δὲ καὶ ἔλεος ἔθου παρ’ ἐμοὶ, ἡ δὲ ἐπισκοπή σου ἐφυλαξέ μου τὸ πνεῦμα. Ταῦτα ἔχων ἐν σεαυτῷ, οἶδα ὅτι πάντα δύνασαι· ἀδυνατεῖ δέ σοι οὐθέν. Ἐάν τε γὰρ ἁμάρτω, φυλάσσεις με, ἀπὸ δὲ ἀνομίας οὐκ ἀθῷόν με πεποίηκας. Ἐάν τε γὰρ ἀσεβήσω, οἴμοι· ἐὰν δὲ ὦ δίκαιος, οὐ δύναμαι ἀνακύψαι, πλήρης γὰρ ἀτιμίας εἰμί. Ἀγρεύομαι γὰρ ὥσπερ λέων εἰς σφαγήν· πάλιν γὰρ μεταβαλὼν δεινῶς με ὀλέκεις, ἐπανακαινίζων ἐπ’ ἐμὲ τὴν ἔτασίν μου· ὀργῇ δὲ μεγάλῃ μοι ἐχρήσω, ἐπήγαγες δὲ ἐπ’ ἐμὲ πειρατήρια. Ἱνατί οὖν ἐκ κοιλίας με ἐξήγαγες, καὶ οὐκ ἀπέθανον, ὀφθαλμὸς δέ με οὐκ εἶδε, καὶ ὥσπερ οὐκ ὢν ἐγενόμην; διατί γὰρ ἐκ γαστρὸς εἰς μνῆμα οὐκ ἀπηλλάγην; Ἢ οὐκ ὀλίγος ἐστὶν ὁ βίος τοῦ χρόνου μου; ἔασόν με ἀναπαύσασθαι μικρὸν, πρὸ τοῦ με πορευθῆναι ὅθεν οὐκ

ἀναστρέψω, εἰς γῆν σκοτεινὴν καὶ γνοφερὰν, εἰς γῆν σκότους αἰωνίου, οὗ οὐκ ἔστι φέγγος, οὐδὲ ὁρᾷν ζωὴν βροτῶν.

# 11

Ὑπολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέγει, Ὁ τὰ πολλὰ λέγων, καὶ ἀντακούσεται· ἢ καὶ ὁ εὔλαλος οἴεται εἶναι δίκαιος; εὐλογημένος γεννητὸς γυναικὸς ὀλιγόβιος. Μὴ πολὺς ἐν ῥήμασι γίνου, οὐ γάρ ἐστιν ὁ ἀντικρινόμενός σοι; Μὴ γὰρ λέγε, ὅτι καθαρός εἰμι τοῖς ἔργοις καὶ ἄμεμπτος ἐναντίον αὐτοῦ. Ἀλλὰ πῶς ἂν ὁ Κύριος λαλήσαι πρὸς σὲ, καὶ ἀνοίξει χείλη αὐτοῦ μετὰ σοῦ; Εἶτα ἀναγγελεῖ σοι δύναμιν σοφίας· ὅτι διπλοῦς ἔσται τῶν κατὰ σέ· καὶ τότε γνώσῃ, ὅτι ἄξιά σοι ἀπέβη ἀπὸ Κυρίου ὧν ἡμάρτηκας. Ἢ ἴχνος Κυρίου εὑρήσεις, ἢ εἰς τὰ ἔσχατα ἀφίκου ἃ ἐποίησεν ὁ παντοκράτωρ; Ὑψηλὸς ὁ οὐρανὸς, καὶ τί ποιήσεις; βαθύτερα δὲ τῶν ἐν ᾅδου, τί οἶδας; ἢ μακρότερα μέτρου γῆς, ἢ εὔρους θαλάσσης; Ἐὰν δὲ καταστρέψῃ τὰ πάντα, τίς ἐρεῖ αὐτῷ, τί ἐποίησας; Αὐτὸς γὰρ οἶδεν ἔργα ἀνόμων, ἰδὼν δὲ ἄτοπα οὐ παρόψεται. Ἄνθρωπος δὲ ἄλλως νήχεται λόγοις· βροτὸς δὲ γεννητὸς γυναικὸς, ἶσα ὄνῳ ἐρημίτῃ. Εἰ γὰρ σὺ καθαρὰν ἔθου τὴν καρδίαν σου, ὑπτιάζεις δὲ χεῖρας πρὸς αὐτὸν, εἰ ἄνομόν τί ἐστιν ἐν χερσί σου, πόῤῥω ποίησον αὐτὸ ἀπὸ σοῦ, ἀδικία δὲ ἐν διαίτῃ σου μὴ αὐλισθήτω· Οὕτως γὰρ ἀναλάμψει σου τὸ πρόσωπον, ὥσπερ ὕδωρ καθαρὸν, ἐκδύσῃ δὲ ῥύπον, καὶ οὐ μὴ φοβηθήσῃ· Καὶ τὸν κόπον ἐπιλήσῃ, ὥσπερ κῦμα παρελθὸν, καὶ οὐ πτοηθήσῃ· Ἡ δὲ εὐχή σου ὥσπερ Ἑωσφόρος, ἐκ δὲ μεσημβρίας ἀνατελεῖ σοι ζωή· Πεποιθώς τε ἔσῃ, ὅτι ἐστί σοι ἐλπὶς, ἐκ δὲ μερίμνης καὶ φροντίδος

ἀναφανεῖταί σοι εἰρήνη· Ἡσυχάσεις γὰρ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ πολεμῶν σε· μεταβαλόμενοι δὲ πολλοί σου δεηθήσονται. Σωτηρία δὲ αὐτοὺς ἀπολείψει· ἡ γὰρ ἐλπὶς αὐτῶν ἀπώλεια, ὀφθαλμοὶ δὲ ἀσεβῶν τακήσονται.

# 12

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Εἶτα ὑμεῖς ἐστε ἄνθρωποι, ἢ μεθ’ ὑμῶν τελευτήσει σοφία; Κᾀμοὶ μὲν καρδία καθ’ ὑμᾶς ἐστι. Δίκαιος γὰρ ἀνὴρ καὶ ἄμεμπτος ἐγεννήθη εἰς χλεύασμα· Εἰς χρόνον γὰρ τακτὸν ἡτοίμαστο πεσεῖν ὑπὸ ἄλλων, οἴκους τε αὐτοῦ ἐκπορθεῖσθαι ὑπὸ ἀνόμων· οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ μηδεὶς πεποιθέτω πονηρὸς ὢν ἀθῶος ἔσεσθαι, ὅσοι παροργίζουσι τὸν Κύριον, ὡς οὐχὶ καὶ ἔτασις αὐτῶν ἔσται. Ἀλλὰ δὴ ἐρώτησον τετράποδα ἐάν σοι εἴπωσι, πετεινὰ δὲ οὐρανοῦ ἐάν σοι ἀπαγγείλωσιν. Ἐκδιήγησαι γῇ, ἐάν σοι φράσῃ, καὶ ἐξηγήσονταί σοι οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης. Τίς οὖν οὐκ ἔγνω ἐν πᾶσι τούτοις, ὅτι χεὶρ Κυρίου ἐποίησε ταῦτα; Εἰ μὴ ἐν χειρὶ αὐτοῦ ψυχὴ πάντων ζώντων, καὶ πνεῦμα παντὸς ἀνθρώπου. Οὖς μὲν γὰρ ῥήματα διακρίνει, λάρυγξ δὲ σῖτα γεύεται. Ἐν πολλῷ χρόνῳ σοφία, ἐν δὲ πολλῷ βίῳ ἐπιστήμη. Παρ’ αὐτῷ σοφία καὶ δύναμις, αὐτῷ βουλὴ καὶ σύνεσις. Ἐὰν καταβάλῃ, τίς οἰκοδομήσει; ἐὰν κλείσῃ κατ’ ἀνθρώπων, τίς ἀνοίξει; Ἐὰν κωλύσῃ τὸ ὕδωρ, ξηρανεῖ τὴν γῆν· ἐὰν δὲ ἐπαφῇ, ἀπώλεσεν αὐτὴν καταστρέψας. Παρ’ αὐτῷ κράτος καὶ ἰσχὺς, αὐτῷ ἐπιστήμη καὶ σύνεσις. Διάγων βουλευτὰς αἰχμαλώτους, κριτὰς δὲ γῆς ἐξέστησε. Καθιζάνων βασιλεῖς ἐπὶ θρόνους, καὶ περιεδησε ζώνῃ ὀσφύας αὐτῶν. Ἐξαποστέλλων ἱερεῖς αἰχμαλώτους, δυνάστας δὲ γῆς κατέστρεψε. Διαλλάσσων χείλη

πιστῶν, σύνεσιν δὲ πρεσβυτέρων ἔγνω. Ἐκχέων ἀτιμίαν ἐπ’ ἄρχοντας, ταπεινοὺς δὲ ἰάσατο. Ἀνακαλύπτων βαθέα ἐκ σκότους, ἐξήγαγε δὲ εἰς φῶς σκιὰν θανάτου. Πλανῶν ἔθνη καὶ ἀπολλύων αὐτὰ, καταστρωννύων ἔθνη καὶ καθοδηγῶν αὐτά. Διαλλάσσων καρδίας ἀρχόντων γῆς· ἐπλάνησε δὲ αὐτοὺς ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ᾔδεισαν. Ψηλαφήσαισαν σκότος καὶ μὴ φῶς, πλανηθείησαν δὲ ὥσπερ ὁ μεθύων.

# 13

Ἰδοὺ ταῦτα ἑώρακέ μου ὁ ὀφθαλμὸς, καὶ ἀκήκοέ μου τὸ οὖς. Καὶ οἶδα ὅσα καὶ ὑμεῖς ἐπίστασθε, καὶ οὐκ ἀσυνετώτερός εἰμι ὑμῶν. Οὐ μὴν δὲ ἀλλ’ ἐγὼ πρὸς Κύριον λαλήσω, ἐλέγξω δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ἐὰν βούληται. Ὑμεῖς δὲ ἐστὲ ἰατροὶ ἄδικοι, καὶ ἰαταὶ κακῶν πάντες. Εἴη δὲ ὑμῖν κωφεῦσαι, καὶ ἀποβήσεται ὑμῖν σοφία. Ἀκούσατε δὲ ἔλεγχον τοῦ στόματός μου, κρίσιν δὲ χειλέων μου προσέχετε. Πότερον οὐκ ἔναντι Κυρίου λαλεῖτε, ἔναντι δὲ αὐτοῦ φθέγγεσθε δόλον; Ἢ ὑποστελεῖσθε; ὑμεῖς δὲ αὐτοὶ κριταὶ γίνεσθε. Καλὸν γὰρ ἐὰν ἐξιχνιάσῃ ὑμᾶς, εἰ γὰρ τὰ πάντα ποιοῦντες προστεθήσεσθε αὐτῷ, οὐθὲν ἧττον ἐλέγξει ὑμᾶς· εἰ δὲ καὶ κρυφῇ πρόσωπα θαυμάσεσθε, πότερον οὐχ ἡ δῖνα αὐτοῦ στροβήσει ὑμᾶς; ὁ φόβος δὲ παρ’ αὐτοῦ ἐπιπεσεῖται ὑμῖν, ἀποβήσεται δὲ ὑμῶν τὸ γαυρίαμα ἶσα σποδῷ, τὸ δὲ σῶμα πήλινον. Κωφεύσατε ἵνα λαλήσω, καὶ ἀναπαύσωμαι θυμοῦ, ἀναλαβὼν τὰς σάρκας μου τοῖς ὀδοῦσι, ψυχὴν δέ μου θήσω ἐν χειρί. Ἐάν με χειρώσηται ὁ δυνάστης, ἐπεὶ καὶ ἦρκται, ἦ μὴν λαλήσω καὶ ἐλέγξω ἐναντίον αὐτοῦ· Καὶ τοῦτό μοι ἀποβήσεται εἰς σωτηρίαν, οὐ γὰρ ἐναντίον αὐτοῦ δόλος

εἰσελεύσεται. Ἀκούσατε ἀκούσατε τὰ ῥήματά μου, ἀναγγελῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐγγύς εἰμι τοῦ κρίματός μου, οἶδα ἐγὼ ὅτι δίκαιος ἀναφανοῦμαι. Τίς γάρ ἐστιν ὁ κριθησόμενός μοι, ὅτι νῦν κωφεύσω καὶ ἐκλείψω; Δυεῖν δέ μοι χρήσῃ, τότε ἀπὸ τοῦ προσώπου σου οὐ κρυβήσομαι. Τὴν χεῖρα ἀπ᾽ ἐμοῦ ἀπέχου, καὶ ὁ φόβος σου μή με καταπλησσέτω. Εἶτα καλέσεις, ἐγὼ δέ σοι ὑπακούσομαι, ἢ λαλήσεις, ἐγὼ δέ σοι δώσω ἀνταπόκρισιν· Πόσαι εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι μου καὶ ἀνομίαι μου; δίδαξόν με τίνες εἰσί. Διατί ἀπ᾽ ἐμοῦ κρύπτῃ, ἡγησαι δέ με ὑπεναντίον σοι; Ἢ ὡς φῦλλον κινούμενον ὑπὸ ἀνέμου εὐλαβηθήσῃ, ἢ ὡς χόρτῳ φερομένῳ ὑπὸ πνεύματος ἀντίκεισαί μοι; Ὅτι κατέγραψας κατ᾽ ἐμοῦ κακὰ, περιέθηκας δέ μοι νεότητος ἁμαρτίας. Ἔθου δέ μου τὸν πόδα ἐν κωλύματι, ἐφύλαξας δέ μου πάντα τὰ ἔργα, εἰς δὲ ῥίζας τῶν ποδῶν μου ἀφίκου. Ὁ παλαιοῦται ἶσα ἀσκῷ, ἢ ὥσπερ ἱμάτιον σητόβρωτον.

# 14

Βρότος γὰρ γεννητὸς γυναικὸς, ὀλιγόβιος, καὶ πλήρης ὀργῆς· ἢ ὥσπερ ἄνθος ἀνθῆσαν ἐξέπεσεν, ἀπέδρα δὲ ὥσπερ σκιὰ, καὶ οὐ μὴ στῇ. Οὐχὶ καὶ τούτου λόγον ἐποιήσω, καὶ τοῦτον ἐποίησας εἰσελθεῖν ἐν κρίματι ἐνώπιόν σου; Τίς γὰρ καθαρὸς ἔσται ἀπὸ ῥύπου; ἀλλ᾽ οὐθεὶς, ἐὰν καὶ μία ἡμέρα ὁ βίος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς· ἀριθμητοὶ δὲ μῆνες αὐτοῦ παρ᾽ αὐτοῦ· εἰς χρόνον ἔθου, καὶ οὐ μὴ ὑπερβῇ. Ἀπόστα ἀπ᾽ αὐτοῦ, ἵνα ἡσυχάσῃ, καὶ εὐδοκήσῃ τὸν βίον, ὥσπερ ὁ μισθωτός. Ἔστι γὰρ δένδρῳ ἐλπὶς, ἐὰν γὰρ ἐκκοπῇ, ἔτι ἐπανθήσει, καὶ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ οὐ μὴ ἐκλείπῃ. Ἐὰν γὰρ γηράσῃ

ἐν γῇ ἡ ῥίζα αὐτοῦ, ἐν δὲ πέτρᾳ τελευτήσῃ, τὸ στέλεχος αὐτοῦ ἀπὸ ὀσμῆς ὕδατος ἀνθήσει, ποιήσει δὲ θερισμὸν, ὥσπερ νεόφυτον. Ἀνὴρ δὲ τελευτήσας ᾤχετο, πεσὼν δὲ βροτὸς οὐκ ἔτι ἐστί. Χρόνῳ γὰρ σπανίζεται θάλασσα, ποταμὸς δὲ ἐρημωθεὶς ἐξηράνθη. Ἄνθρωπος δὲ κοιμηθεὶς οὐ μὴν ἀναστῇ ἕως ἂν ὁ οὐρανὸς οὐ μὴ συῤῥαφῇ, καὶ οὐκ ἐξυπνισθήσονται ἐξ ὕπνου αὐτῶν. Εἰ γὰρ ὄφελον ἐν ᾅδῃ με ἐφύλαξας, ἔκρυψας δέ με ἕως ἂν παύσηταί σου ἡ ὀργὴ, καὶ τάξῃ μοι χρόνον ἐν ᾧ μνείαν μου ποιήσῃ. Ἐὰν γὰρ ἀποθάνῃ ἄνθρωπος, ζήσεται συντελέσας ἡμέρας τοῦ βίου αὐτοῦ· ὑπομενῶ ἕως πάλιν γένωμαι; Εἶτα καλέσεις, ἐγὼ δέ σοι ὑπακούσομαι, τὰ δὲ ἔργα τῶν χειρῶν σου μὴ ἀποποιοῦ. Ἠρίθμησας δέ μου τὰ ἐπιτηδεύματα, καὶ οὐ μὴ παρέλθῃ σε οὐδὲν τῶν ἁμαρτιῶν μου; Ἐσφράγισας δέ μου τὰς ἀνομίας ἐν βαλαντίῳ, ἐπεσημήνω δὲ εἴτι ἄκων παρέβην. Καὶ πλὴν ὄρος πίπτον διαπεσεῖται, καὶ πέτρα παλαιωθήσεται ἐκ τοῦ τόπου αὐτῆς. Λίθους ἐλέαναν ὕδατα, καὶ κατέκλυσεν ὕδατα ὕπτια τοῦ χώματος τῆς γῆς· καὶ ὑπομονὴν ἀνθρώπου ἀπώλεσας. Ὅσας αὐτὸν εἰς τέλος, καὶ ᾤχετο· ἐπέστησας αὐτῷ τὸ πρόσωπον, καὶ ἐξαπέστειλας, πολλὼν δὲ γενομένων τῶν υἱῶν αὐτοῦ, οὐκ οἶδεν· ἐὰν δὲ ὀλίγοι γένωνται, οὐκ ἐπέσταται. Ἀλλ’ ἢ αἱ σάρκες αὐτοῦ ἤλγησαν, ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ ἐπένθησεν.

# 15

Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, λέγει, Πότερον σοφὸς ἀπόκρισιν δώσει συνέσεως πνεῦμα, καὶ ἐνέπλησε πόνον γαστρὸς, ἐλέγχων ἐν ῥήμασιν οἷς οὐ δεῖ, καὶ ἐν λόγοις οἷς οὐδὲν ὄφελος; Οὐ

καὶ σὺ ἀπεποιήσω φόβον, συνετελέσω δὲ ῥήματα τοιαῦτα ἔναντι τοῦ Κυρίου; Ἔνοχος εἶ ῥήμασι στόματός σου, οὐδὲ διέκρινας ῥήματα δυναστῶν. Ἐλέγξαι σε τὸ σὸν στόμα καὶ μὴ ἐγὼ, τὰ δὲ χείλη σου καταμαρτυρήσουσι σου. Τί γάρ; μὴ πρῶτος ἀνθρώπων ἐγεννήθης; ἢ πρὸ θινῶν ἐπάγης; Ἢ σύνταγμα Κυρίου ἀκήκοας; ἢ συμβούλῳ σοι ἐχρήσατο ὁ Θεός; εἰς δέ σε ἀφίκετο σοφία; Τί γὰρ οἶδας, ὃ οὐκ οἴδαμεν; ἢ τί συνίεις σὺ, ὃ οὐ καὶ ἡμεῖς; Καί γε πρεσβύτης καί γε παλαιὸς ἐν ἡμῖν, βαρύτερος τοῦ πατρός σου ἡμέραις. Ὀλίγα ὧν ἡμάρτηκας μεμαστίγωσαι, μεγάλως ὑπερβαλλόντως λελάληκας. Τί ἐτόλμησεν ἡ καρδία σου; ἢ τί ἐπήνεγκαν οἱ ὀφθαλμοί σου, ὅτι θυμὸν ἔῤῥηξας ἔναντι Κυρίου, ἐξήγαγες δὲ ἐκ στόματος ῥήματα τοιαῦτα; Τίς γὰρ ὢν βροτὸς, ὅτι ἔσται ἄμεμπτος; ἢ ὡς ἐσόμενος δίκαιος γεννητὸς γυναικός; Εἰ κατὰ ἁγίων οὐ πιστεύει, οὐρανὸς δὲ οὐ καθαρὸς ἐναντίον αὐτοῦ. Ἔα δὲ ἐβδελυγμένος καὶ ἀκάθαρτος ἀνὴρ, πίνων ἀδικίας ἴσα ποτῷ. Ἀναγγελῶ δέ σοι, ἄκουέ μου, ἃ δὴ ἑώρακα, ἀναγγελῶ σοι, ἃ σοφοὶ ἐροῦσι, καὶ οὐκ ἔκρυψαν πατέρες αὐτῶν. Αὐτοῖς μόνοις ἐδόθη ἡ γῆ, καὶ οὐκ ἐπῆλθεν ἀλλογενὴς ἐπ’ αὐτούς. Πᾶς ὁ βίος ἀσεβοῦς ἐν φροντίδι, ἔτη δὲ ἀριθμητὰ δεδομένα δυνάστῃ. Ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ ἐν ὠσὶν αὐτοῦ· ὅταν δοκῇ ἤδη εἰρηνεύειν, ἥξει αὐτοῦ ἡ καταστροφή. Μὴ πιστευέτω ἀποστραφῆναι ἀπὸ σκότους, ἐντέταλται γὰρ ἤδη εἰς χεῖρας σιδήρου, κατατέτακται δὲ εἰς σῖτα γυψίν· οἶδε δὲ ἐν ἑαυτῷ ὅτι μένει εἰς πτῶμα· ἡμέρα δὲ σκοτεινὴ αὐτὸν στροβήσει, ἀνάγκη δὲ καὶ θλίψις αὐτὸν καθέξει, ὥσπερ στρατηγὸς πρωτοστάτης πίπτων· Ὅτι ἦρκε χεῖρας ἐναντίον τοῦ Κυρίου, ἔναντι δὲ Κυρίου παντοκράτορος ἐτραχηλίασεν. Ἔδραμε δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ὕβρει, ἐν πάχει νώτου ἀσπίδος αὐτοῦ. Ὅτι ἐκάλυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν στέατι αὐτοῦ, καὶ ἐποίησε

περιστόμιον ἐπὶ τῶν μηρίων. Αὐλισθείη δὲ πόλεις ἐρήμους, εἰσέλθοι δὲ εἰς οἴκους ἀοικήτους· ἃ δὲ ἐκεῖνοι ἡτοίμασαν, ἄλλοι ἀποίσονται. Οὔτε μὴ πλουτισθῇ, οὔτε μὴ μείνῃ αὐτοῦ τὰ ὑπάρχοντα· οὐ μὴ βάλῃ ἐπὶ τὴν γῆν σκιὰν, οὐδὲ μὴ ἐκφύγῃ τὸ σκότος· τὸν βλαστὸν αὐτοῦ μαράναι ἄνεμος, ἐκπέσοι δὲ αὐτοῦ τὸ ἄνθος. Μὴ πιστευέτω ὅτι ὑπομενεῖ, κενὰ γὰρ ἀποβήσεται αὐτῷ. Ἡ τομὴ αὐτοῦ πρὸ ὥρας φθαρήσεται, καὶ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ οὐ μὴ πυκάσῃ. Τρυγηθείη δὲ ὡς ὄμφαξ πρὸ ὥρας, ἐκπέσοι δὲ ὡς ἄνθος ἐλαίας. Μαρτύριον γὰρ ἀσεβοῦς θάνατος· πῦρ δὲ καύσει οἴκους δωροδεκτῶν· Ἐν γαστρὶ δὲ λήψεται ὀδύνας, ἀποβήσεται δὲ αὐτῷ κενὰ, ἡ δὲ κοιλία αὐτοῦ ὑποίσει δόλον.

# 16

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Ἀκήκοα τοιαῦτα πολλὰ, παρακλήτορες κακῶν πάντες. Τί γάρ; μὴ τάξις ἐστὶ ῥήμασι πνεύματος; ἢ τί παρενοχλήσει σοι ὅτι ἀποκρίνῃ; Κἀγὼ καθ’ ὑμᾶς λαλήσω· εἰ ὑπέκειτό γε ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀντὶ τῆς ἐμῆς, εἶτ’ ἐναλοῦμαι ὑμῖν ῥήμασι· κινήσω δὲ καθ’ ὑμῶν κεφαλήν. Εἴη δὲ ἰσχὺς ἐν τῷ στόματί μου, κίνησιν δὲ χειλέων οὐ φείσομαι. Ἐὰν γὰρ λαλήσω, οὐκ ἀλγήσω τὸ τραῦμα· ἐὰν δὲ καὶ σιωπήσω, τί ἔλαττον τρωθήσομαι; Νῦν δὲ κατάκοπόν με πεποίηκε μωρὸν σεσηπότα, καὶ ἐπελάβου μου. Εἰς μαρτύριον ἐγενήθη, καὶ ἀνέστη ἐν ἐμοὶ τὸ ψεῦδός μου, κατὰ πρόσωπόν μου ἀνταπεκρίθη. Ὀργῇ χρησάμενος κατέβαλέ με, ἔβρυξεν ἐπ’ ἐμὲ τοὺς ὀδόντας, βέλη πειρατῶν αὐτοῦ ἐπ’ ἐμοὶ ἔπεσαν. Ἀκίσιν ὀφθαλμῶν ἐνήλατο, ὀξεῖ ἔπαισέ με εἰς τὰ γόνατα, ὁμοθυμαδὸν δὲ κατέδραμον ἐπ’ ἐμοί. Παρέδωκε γάρ με ὁ Κύριος

εἰς χείρας ἀδίκων, ἐπὶ δὲ ἀσεβέσιν ἔῤῥιψέ με. Εἰρηνεύοντα διεσκέδασέ με· λαβών με τῆς κόμης διέτιλε, κατέστησέ με ὥσπερ σκοπόν. Ἐκύκλωσάν με λόγχαις βάλλοντες εἰς νεφρούς μου, οὐ φειδόμενοι ἐξέχεαν εἰς τὴν γῆν τὴν χολήν μου· Κατέβαλόν με πτῶμα ἐπὶ πτώματι, ἔδραμον πρὸς μὲ δυνάμενοι. Σάκκον ἔῤῥαψαν ἐπὶ βύρσης μου, τὸ δὲ σθένος μου ἐν γῇ ἐσβέσθη. Ἡ γαστήρ μου συγκέκαυται ἀπὸ κλαυθμοῦ, ἐπὶ δὲ βλεφάροις μου σκιά. Ἄδικον δὲ οὐδὲν ἦν ἐν χερσί μου, εὐχὴ δέ μου καθαρά. Γῆ μὴ ἐπικαλύψῃς ἐφ’ αἵματι τῆς σαρκός μου, μηδὲ εἴη τόπος τῇ κραυγῇ μου. Καὶ νῦν ἰδοὺ ἐν οὐρανοῖς ὁ μάρτυς μου, ὁ δὲ συνίστωρ μου ἐν ὑψίστοις. Ἀφίκοιτό μου ἡ δέησις πρὸς Κύριον, ἔναντι δὲ αὐτοῦ στάζοι μου ὁ ὀφθαλμός. Εἴη δὲ ἔλεγχος ἀνδρὶ ἔναντι Κυρίου, καὶ υἱῷ ἀνθρώπου τῷ πλησίον αὐτοῦ. Ἔτη δὲ ἀριθμητὰ ἥκασιν, ὁδῷ δὲ ᾗ οὐκ ἐπαναστραφήσομαι, πορεύσομαι.

# 17

Ὀλέκομαι πνεύματι φερόμενος, δέομαι δὲ ταφῆς, καὶ οὐ τυγχάνω. Λίσσομαι κάμνων, καὶ τί ποιήσας; ἔκλεψαν δέ μου τὰ ὑπάρχοντα ἀλλότριοι. Τίς ἐστιν οὗτος; τῇ χειρί μου συνδεθήτω. Ὅτι καρδίαν αὐτῶν ἔκρυψας ἀπὸ φρονήσεως, διὰ τοῦτο οὐ μὴ ὑψώσῃς αὐτούς. Τῇ μερίδι ἀναγγελεῖ κακίας· ὀφθαλμοὶ δὲ ἐφ’ υἱοῖς ἐτάκησαν. Ἔθου δέ με θρύλλημα ἐν ἔθνεσι, γέλως δὲ αὐτοῖς ἀπέβην. Πεπώρωνται γὰρ ἀπὸ ὀργῆς οἱ ὀφθαλμοί μου, πεπολιόρκημαι μεγάλως ὑπὸ πάντων. Θαῦμα ἔσχεν ἀληθινοὺς ἐπὶ τούτῳ, δίκαιος δὲ ἐπὶ παρανόμῳ ἐπανασταίη. Σχοίη δὲ πιστὸς τὴν ἑαυτοῦ ὁδὸν, καθαρὸς δὲ χεῖρας ἀναλάβοι θάρσος. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ πάντες

ἐρείδετε καὶ δεῦτε δὴ, οὐ γὰρ εὑρίσκω ἐν ὑμῖν ἀληθές. Αἱ ἡμέραι μου παρῆλθον ἐν βρόμῳ, ἐῤῥάγη δὲ τὰ ἄρθρα τῆς καρδίας μου. Νύκτα εἰς ἡμέραν ἔθηκα, φῶς ἐγγὺς ἀπὸ προσώπου σκότους. Ἐὰν γὰρ ὑπομείνω, ᾅδης μου ὁ οἶκος, ἐν δὲ γνοφῳ ἔστρωταί μου ἡ στρωμνή. Θάνατον ἐπεκαλεσάμην πατέρα μου εἶναι, μητέρα δέ μου καὶ ἀδελφὴν σαπρίαν. Ποῦ οὖν μου ἔτι ἐστὶν ἡ ἐλπὶς, ἢ τὰ ἀγαθά μου ὄψομαι; Ἢ μετ’ ἐμοῦ εἰς ᾅδην καταβήσονται; ἢ ὁμοθυμαδὸν ἐπὶ χώματος καταβησόμεθα;

# 18

Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέγει, Μέχρι τίνος οὐ παύσῃ; ἐπίσχες, ἵνα καὶ αὐτοὶ λαλήσωμεν. Διατί δὲ ὥσπερ τετράποδα σεσιωπήκαμεν ἐναντίον σου; Κέχρηταί σοι ὀργή· τί γὰρ ἐὰν σὺ ἀποθάνῃς, ἀοίκητος ἡ ὑπ’ οὐρανόν; ἢ καταστραφήσεται ὄρη ἐκ θεμελίων; Καὶ φῶς ἀσεβῶν σβεσθήσεται, καὶ οὐκ ἀποβήσεται αὐτῶν ἡ φλόξ. Τὸ φῶς αὐτοῦ σκότος ἐν διαίτῃ, ὁ δὲ λύχνος ἐπ’ αὐτῷ σβεσθήσεται. Θηρεύσαισαν ἐλάχιστοι τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· σφάλαι δὲ αὐτοῦ ἡ βουλή. Ἐμβέβληται δὲ ὁ ποῦς αὐτοῦ ἐν παγίδι, ἐν δικτύῳ ἑλιχθείη. Ἔλθοισαν δὲ ἐπ’ αὐτὸν παγίδες, κατισχύσει ἐπ’ αὐτὸν διψῶντας. Κέκρυπται ἐν τῇ γῇ σχοινίον αὐτοῦ, καὶ ἡ σύλληψις αὐτοῦ ἐπὶ τρίβον. Κύκλῳ ὀλέσαισαν αὐτὸν ὀδύναι· πολλοὶ δὲ περὶ πόδα αὐτοῦ ἔλθοισαν ἐν λιμῷ στενῷ· πτῶμα δὲ αὐτῷ ἡτοίμασται ἐξαίσιον. Βρωθείησαν αὐτοῦ κλῶνες ποδῶν, κατέδεται δὲ αὐτοῦ τὰ ὡραῖα θάνατος. Ἐκραγείη δέ ἐκ διαίτης αὐτοῦ ἴασις, σχοίη δὲ αὐτὸν ἀνάγκη αἰτίᾳ βασιλικῇ. Κατασκηνώσει ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ ἐν νυκτὶ αὐτοῦ, κατασπαρήσονται τὰ εὐπρεπῆ

αὐτοῦ θείῳ. Ὑποκάτωθεν αἱ ῥίζαι αὐτοῦ ξηρανθήσονται, καὶ ἐπάνωθεν ἐπιπεσεῖται θερισμὸς αὐτοῦ. Τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ ἀπόλοιτο ἐκ γῆς, καὶ ὑπάρξει ὄνομα αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον ἐξωτέρω. Ἀπώσειεν αὐτὸν ἐκ φωτὸς εἰς σκότος. Οὐκ ἔσται ἐπίγνωστος ἐν λαῷ αὐτοῦ, οὐδὲ σεσωσμένος ἐν τῇ ὑπ᾽ οὐρανὸν ὁ οἶκος αὐτοῦ. Ἀλλ᾽ ἐν τοῖς αὐτοῦ ζήσονται ἕτεροι· ἐπ᾽ αὐτῷ ἐστέναξαν ἔσχατοι, πρώτους δὲ ἔσχε θαῦμα. Οὗτοί εἰσιν οἱ οἶκοι ἀδίκων, οὗτος δὲ ὁ τόπος τῶν μὴ εἰδότων τὸν Κύριον.

# 19

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Ἕως τίνος ἔγκοπον ποιήσετε ψυχήν μου, καὶ καθαιρεῖτέ με λόγοις; γνῶτε μόνον ὅτι ὁ Κύριος ἐποίησέ με οὕτως. Καταλαλεῖτέ μου, οὐκ αἰσχυνόμενοί με ἐπίκεισθέ μοι. Ναὶ δὴ ἐπ᾽ ἀληθείας ἐγὼ ἐπλανήθην, παρ᾽ ἐμοὶ δὲ αὐλίζεται πλάνος· Ἔα δὲ, ὅτι ἐπ᾽ ἐμοὶ μεγαλύνεσθε, ἐνάλλεσθε δέ μοι ὀνείδει. Γνῶτε οὖν ὅτι Κύριός ἐστιν ὁ ταράξας, ὀχύρωμα δὲ αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐμὲ ὕψωσεν. Ἰδοὺ γελῶ ὀνείδει, οὐ λαλήσω· κεκράξομαι, καὶ οὐδαμοῦ κρίμα. Κύκλῳ περιῳκοδόμημαι, καὶ οὐ μὴ διαβῶ· ἐπὶ πρόσωπόν μου σκότος ἔθετο. Τὴν δὲ δόξαν ἀπ᾽ ἐμοῦ ἐξέδυσεν, ἀφεῖλε δὲ στέφανον ἀπὸ κεφαλῆς μου. Διέσπασέ με κύκλῳ καὶ ᾠχόμην, ἐξέκοψε δὲ ὥσπερ δένδρον τὴν ἐλπίδα μου. Δεινῶς δέ μοι ὀργῇ ἐχρήσατο, ἡγήσατο δέ με ὥσπερ ἐχθρόν. Ὁμοθυμαδὸν δὲ ἦλθον τὰ πειρατήρια αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐμοὶ, ταῖς ὁδοῖς μου ἐκύκλωσαν ἐγκάθετοι. Ἀπ᾽ ἐμοῦ ἀδελφοί μου ἀπέστησαν, ἔγνωσαν ἀλλοτρίους ἢ ἐμέ· φίλοι δέ μου ἀνελεήμονες γεγόνασιν· Οὐ προσεποιήσαντό με οἱ ἐγγύτατοί μου, καὶ οἱ εἰδότες μου τὸ ὄνομα ἐπελάθοντό μου.

Γείτονες οἰκίας, θεράπαιναί τε μοῦ, ἀλλογενὴς ἦμην ἐναντίον αὐτῶν. Θεράποντά μου ἐκάλεσα, καὶ οὐχ ὑπήκουσε· στόμα δέ μου ἐδέετο. Καὶ ἱκέτευον τὴν γυναῖκά μου, προσεκαλούμην δὲ καλακευων υἱοὺς παλλακίδων μου· Οἱ δὲ εἰς τὸν αἰῶνά με ἀπεποιήσαντο, ὅταν ἀναστῶ, κατ᾽ ἐμοῦ λαλοῦσιν. Ἐβδελύξαντό με οἱ ἰδόντες με· οὓς δὴ ἠγαπήκειν, ἐπανέστησάν μοι. Ἐν δέρματί μου ἐσάπησαν αἱ σάρκες μου, τὰ δὲ ὀστᾶ μου ἐν ὀδοῦσιν ἔχεται. Ἐλεήσατέ με, ἐλεήσατέ με, ὦ φίλοι, χεὶρ γὰρ Κυρίου ἡ ἁψαμένη μου ἐστί. Διατί με διώκετε ὥσπερ καὶ ὁ Κύριος; ἀπὸ δὲ σαρκῶν μου οὐκ ἐμπίπλασθε; Τίς γὰρ ἂν δοίη γραφῆναι τὰ ῥήματά μου, τεθῆναι δὲ αὐτὰ ἐν βιβλίῳ εἰς τὸν αἰῶνα, ἐν γραφείῳ σιδηρῷ καὶ μολίβῳ, ἢ ἐν πέτραις ἐγγλυφῆναι; Οἶδα γὰρ ὅτι ἀέννααός ἐστιν ὁ ἐκλύειν με μέλλων, ἐπὶ γῆς ἀναστῆσαι τὸ δέρμα μου τὸ ἀναντλοῦν ταῦτα· παρὰ γὰρ Κυρίου ταῦτά μοι συνετελέσθη, ἃ ἐγὼ ἐμαυτῷ συνεπίσταμαι, ἃ ὁ ὀφθαλμός μου ἑώρακε, καὶ οὐκ ἄλλος, πάντα δέ μοι συντετέλεσται ἐν κόλπῳ. Εἰ δὲ καὶ ἐρεῖτε, τί ἐροῦμεν ἔναντι αὐτοῦ, καὶ ῥίζαν λόγου εὑρήσομεν ἐν αὐτῷ; Εὐλαβήθητε δὴ καὶ ὑμεῖς ἀπὸ ἐπικαλύμματος, θυμὸς γὰρ ἐπ᾽ ἀνόμους ἐπελεύσεται· καὶ τότε γνώσονται, ποῦ ἐστιν αὐτῶν ἡ ὕλη

# 20

Ὑπολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέγει, Οὐχ οὕτως ὑπελάμβανον ἀντερεῖν σε ταῦτα, καὶ οὐχὶ συνίετε μᾶλλον ἢ καὶ ἐγώ. Παιδείαν ἐντροπῆς μου ἀκούσομαι, καὶ πνεῦμα ἐκ τῆς συνέσεως ἀποκρίνεταί μοι. Μὴ ταῦτα ἔγνως ἀπὸ τοῦ ἔτι, ἀφ᾽ οὗ ἐτέθη ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς; Εὐφροσύνη δὲ ἀσεβῶν πτῶμα ἐξαίσιον,

χαρμονὴ δὲ παρανόμων ἀπώλεια· ἐὰν ἀναβῇ εἰς οὐρανὸν αὐτοῦ τὰ δῶρα, ἡ δὲ θυσία αὐτοῦ νεφῶν ἅψηται. Ὅταν γὰρ δοκῇ ἤδη κατεστηρίχθαι, τότε εἰς τέλος ἀπολεῖται· οἱ δὲ εἰδότες αὐτὸν ἐροῦσι, ποῦ ἐστιν; Ὥσπερ ἐνύπνιον ἐκπετασθὲν οὐ μὴ εὑρεθῇ, ἔπτη δὲ ὥσπερ φάσμα νυκτερινόν. Ὀφθαλμὸς παρέβλεψε, καὶ οὐ προσθήσει, καὶ οὐκ ἔτι προσνοήσει αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ. Τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ ὀλέσαισαν ἥττονες, αἱ δὲ χεῖρες αὐτοῦ πυρσεύσαισαν ὀδύνας. Ὀστᾶ αὐτοῦ ἐνεπλήσθησαν νεότητος αὐτοῦ, καὶ μετ’ αὐτοῦ ἐπὶ χώματος κοιμηθήσεται. Ἐὰν γλυκανθῇ ἐν στόματι αὐτοῦ κακία, κρύψει αὐτὴν ὑπὸ τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ, οὐ φείσεται αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψει αὐτήν· καὶ συνάξει αὐτὴν ἐν μέσῳ τοῦ λάρυγγος αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ δυνηθῇ βοηθῆσαι ἑαυτῷ· χολὴ ἀσπίδος ἐν γαστρὶ αὐτοῦ. Πλοῦτος ἀδίκως συναγόμενος ἐξεμεθήσεται, ἐξ οἰκίας αὐτοῦ ἐξελκύσει αὐτὸν ἄγγελος. Θυμὸν δὲ δρακόντων θηλάσειεν, ἀνέλοι δὲ αὐτὸν γλῶσσα ὄφεως. Μὴ ἴδοι ἄμελξιν νομάδων, μηδὲ νομὰς μέλιτος καὶ βουτύρου. Εἰς κενὰ καὶ μάταια ἐκοπίασε, πλοῦτον ἐξ οὗ οὐ γεύσεται· ὥσπερ στρίφνος ἀμάσητος, ἀκατάποτος. Πολλῶν γὰρ δυνατῶν οἴκους ἔθλασε· δίαιταν δὲ ἥρπασε, καὶ οὐκ ἔστησεν. Οὐκ ἔστιν αὐτοῦ σωτηρία τοῖς ὑπάρχουσιν, ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτοῦ οὐ σωθήσεται. Οὐκ ἔστιν ὑπόλειμμα τοῖς βρώμασιν αὐτοῦ, διὰ τοῦτο οὐκ ἀνθήσει αὐτοῦ τὰ ἀγαθά. Ὅταν δὲ δοκῇ ἤδη πεπληρῶσθαι, θλιβήσεται, πᾶσα δὲ ἀνάγκη ἐπ’ αὐτὸν ἐπελεύσεται. Εἴ πῶς εἶ πληρῶσαι γαστέρα αὐτοῦ, ἐπαποστείλαι ἐπ’ αὐτὸν θυμὸν ὀργῆς, νίψαι ἐπ’ αὐτὸν ὀδύνας, καὶ οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς σιδήρου· τρώσαι αὐτὸν τόξον χάλκειον. Διεξέλθοι δὲ διὰ σώματος αὐτοῦ βέλος, ἄστρα δὲ ἐν διαίταις αὐτοῦ· περιπατήσαισαν ἐπ’ αὐτῷ φόβοι, πᾶν δὲ σκότος αὐτῷ ὑπομείναι· κατέδεται αὐτὸν πῦρ ἄκαυστον, κακώσαι δὲ

αὐτοῦ ἐπήλυτος τὸν οἶκον. Ἀνακάλυψαι δὲ αὐτοῦ ὁ οὐρανὸς τὰς ἀνομίας, γῆ δὲ ἐπαναστήσεται αὐτῷ. Ἑλκύσαι τὸν οἶκον αὐτοῦ ἀπώλεια εἰς τέλος, ἡμέρα ὀργῆς ἐπέλθοι αὐτῷ. Αὕτη ἡ μέρις ἀνθρώπου ἀσεβοῦς παρὰ Κυρίου, καὶ κτῆμα ὑπαρχόντων αὐτῷ παρὰ τοῦ ἐπισκόπου.

# 21

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Ἀκούσατε ἀκούσατέ μου τῶν λόγων, ἵνα μὴ ᾖ μοι παρ᾽ ὑμῶν αὕτη ἡ παράκλησις. Ἄρατέ με, ἐγὼ δὲ λαλήσω, εἶτ᾽ οὐ καταγελάσετέ μου. Τί γάρ; μὴ ἀνθρώπου μου ἡ ἔλεγξις; ἢ διὰ τί οὐ θυμωθήσομαι; Εἰσβλέψαντες εἰς ἐμὲ θαυμάσετε, χεῖρα θέντες ἐπὶ σιαγόνι. Ἐάν τε γὰρ μνησθῶ, ἐσπούδακα· ἔχουσι δέ μου τὰς σάρκας ὀδύναι. Διὰ τί ἀσεβεῖς ζῶσι, πεπαλαίωνται δὲ καὶ ἐν πλούτῳ; Ὁ σπόρος αὐτῶν κατὰ ψυχὴν, τὰ δὲ τέκνα αὐτῶν ἐν ὀφθαλμοῖς. Οἱ οἶκοι αὐτῶν εὐθηνοῦσι, φόβος δὲ οὐδαμοῦ, μάστιξ δὲ παρὰ Κυρίου οὐκ ἔστιν ἐπ᾽ αὐτοῖς. Ἡ βοῦς αὐτῶν οὐκ ὠμοτόκησε, διεσώθη δὲ αὐτῶν ἐν γαστρὶ ἔχουσα καὶ οὐκ ἔσφαλε. Μένουσι δὲ ὡς πρόβατα αἰώνια, τὰ δὲ παιδία αὐτῶν προσπαίζουσιν, ἀναλαβόντες ψαλτήριον καὶ κιθάραν, καὶ εὐφραίνονται φωνῇ ψαλμοῦ. Συνετέλεσαν δὲ ἐν ἀγαθοῖς τὸν βίον αὐτῶν, ἐν δὲ ἀναπαύσει ᾅδου ἐκοιμήθησαν. Λέγει δὲ Κυρίῳ, ἀπόστα ἀπ᾽ ἐμοῦ, ὁδούς σου εἰδέναι οὐ βούλομαι. Τί ἱκανὸς, ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ; καὶ τίς ὠφέλεια, ὅτι ἀπαντήσομεν αὐτῷ; Ἐν χερσὶ γὰρ ἦν αὐτῶν τὰ ἀγαθὰ, ἔργα δὲ ἀσεβῶν οὐκ ἐφορᾷ. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ καὶ ἀσεβῶν λύχνος σβεσθήσεται, ἐπελεύσεται δὲ αὐτοῖς ἡ καταστροφὴ, ὠδῖνες δὲ αὐτοὺς ἕξουσιν ἀπὸ ὀργῆς. Ἔσονται δὲ

ὥσπερ ἄχυρα ὑπ᾽ ἀνέμου, ἢ ὥσπερ κονιορτὸς ὃν ὑφείλετο λαίλαψ. Ἐκλείποι υἱοὺς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, ἀνταποδώσει πρὸς αὐτὸν καὶ γνώσεται. Ἴδοισαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τὴν ἑαυτοῦ σφαγὴν, ἀπὸ δὲ Κυρίου μὴ διασωθείη. Ὅτι τὸ θέλημα αὐτοῦ ἐν οἴκῳ αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἀριθμοὶ μηνῶν αὐτοῦ διῃρέθησαν. Πότερον οὐχὶ ὁ Κύριός ἐστιν ὁ διδάσκων σύνεσιν καὶ ἐπιστήμην; αὐτὸς δὲ φόνους διακρίνει; Οὗτος ἀποθανεῖται ἐν κράτει ἁπλοσύνης αὐτοῦ, ὅλος δὲ εὐπαθῶν καὶ εὐθηνῶν. Τὰ δὲ ἔγκατα αὐτοὺ πλήρη στέατος, μυελὸς δὲ αὐτοῦ διαχεῖται. Ὁ δὲ τελευτᾷ ὑπὸ πικρίας ψυχῆς, οὐ φαγὼν οὐδὲν ἀγαθόν. Ὁμοθυμαδὸν δὲ ἐπὶ γῆς κοιμῶνται, σαπρία δὲ αὐτοὺς ἐκάλυψεν. Ὥστε οἶδα ὑμᾶς, ὅτι τόλμῃ ἐπίκεισθέ μοι· Ὥστε ἐρεῖτε, ποῦ ἐστιν οἶκος ἄρχοντος; καὶ ποῦ ἐστιν ἡ σκέπη τῶν σκηνωμάτων τῶν ἀσεβῶν; Ἐρωτήσατε παραπορευομένους ὁδὸν, καὶ τὰ σημεῖα αὐτῶν οὐκ ἀπαλλοτριώσετε. Ὅτι εἰς ἡμέραν ἀπωλείας κουφίζεται ὁ πονηρὸς, εἰς ἡμέραν ὀργῆς αὐτοῦ ἀπαχθήσονται. Τίς ἀπαγγελεῖ ἐπὶ προσώπου αὐτοῦ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ἐποίησε; τίς ἀνταποδώσει αὐτῷ; Καὶ αὐτὸς εἰς τάφους ἀπηνέχθη, καὶ αὐτὸς ἐπὶ σωρῶν ἠγρύπνησεν. Ἐγλυκάνθησαν αὐτῷ χάλικες χειμάῤῥου, καὶ ὀπίσω αὐτοῦ πᾶς ἄνθρωπος ἀπελεύσεται, καὶ ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἀναρίθμητοι. Πῶς δὲ παρακαλεῖτέ με κενά; τὸ δὲ ἐμὲ καταπαύσασθαι ἀφ᾽ ὑμῶν οὐδέν.

# 22

Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, λέγει, Πότερον οὐχὶ ὁ Κύριός ἐστιν ὁ διδάσκων σύνεσιν καὶ ἐπιστήμην; Τί γὰρ μέλει τῷ Κυρίῳ,

ἐὰν σὺ ἦσθα τοῖς ἔργοις ἄμεμπτος; ἢ ὠφέλεια, ὅτι ἁπλώσῃς τὴν ὁδόν σου; Ἢ λόγον σου ποιοῦμενος ἐλέγξεις, καὶ συνεισελεύσεταί σοι εἰς κρίσιν; Πότερον οὐχ ἡ κακία σου ἐστὶ πολλὴ, ἀναρίθμητοι δέ σου εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι; Ἠνεχύραζες δὲ τοὺς ἀδελφούς σου διακενῆς, ἀμφίασιν δὲ γυμνῶν ἀφείλου. Οὐδὲ ὕδωρ διψῶντας ἐπότισας, ἀλλὰ πεινώντων ἐστέρησας ψωμόν· Ἐθαύμασας δέ τινων πρόσωπον, ᾤκισας δὲ τοὺς ἐπὶ τῆς γῆς. Χήρας δὲ ἐξαπέστειλας κενὰς, ὀρφανοὺς δὲ ἐκάκωσας. Τοιγαροῦν ἐκύκλωσάν σε παγίδες, καὶ ἐσπούδασέ σε πόλεμος ἐξαίσιος. Τὸ φῶς σοι σκότος ἀπέβη, κοιμηθέντα δὲ ὕδωρ σε ἐκάλυψε. Μὴ οὐχὶ ὁ τὰ ὑψηλὰ ναίων ἐφορᾷ; τοὺς δὲ ὕβρει φερομένους ἐταπείνωσε; Καὶ εἶπας, τί ἔγνω ὁ ἰσχυρός; ἢ κατὰ τοῦ γνόφου κρίνει; Νεφέλη ἀποκρυφὴ αὐτοῦ καὶ οὐχ ὁραθήσεται, καὶ γῦρον οὐρανοῦ διαπορεύεται. Μὴ τρίβον αἰώνιον φυλάξεις, ἣν ἐπάτησαν ἄνδρες δίκαιοι, οἳ συνελήφθησαν ἄωροι; ποταμὸς ἐπιῤῥέων οἱ θεμέλιοι αὐτῶν, οἱ λέγοντες, Κύριος τί ποιήσει ἡμῖν; ἢ τί ἐπάξεται ἡμῖν ὁ παντοκράτωρ; Ὃς δὲ ἐνέπλησε τοὺς οἴκους αὐτῶν ἀγαθῶν, βουλὴ δὲ ἀσεβῶν πόῤῥω ἀπ᾽ αὐτοῦ. Ἰδόντες δίκαιοι ἐγέλασαν, ἄμεμπτος δὲ ἐμυκτήρισεν. Εἰ μὴ ἠφανίσθη ἡ ὑπόστασις αὐτῶν, καὶ τὸ κατάλειμμα αὐτῶν καταφάγεται πῦρ. Γενοῦ δὴ σκληρὸς, ἐὰν ὑπομείνῃς, εἶτα ὁ καρπός σου ἔσται ἐν ἀγαθοῖς. Ἔκλαβε δὲ ἐκ στόματος αὐτοῦ ἐξηγορίαν, καὶ ἀνάλαβε τὰ ῥήματα αὐτοῦ ἐν καρδίᾳ σου. Ἐὰν δὲ ἐπιστραφῇς καὶ ταπεινώσῃς σεαυτὸν ἔναντι Κυρίου, πόῤῥω ἐποίησας ἀπὸ διαίτης σου ἄδικον. Θήσῃ ἐπὶ χώματι ἐν πέτρᾳ, καὶ ὡς πέτρα χειμάῤῥου Σωφίρ. Ἔσται οὖν σου ὁ παντοκράτωρ βοηθὸς ἀπὸ ἐχθρῶν, καθαρὸν δὲ ἀποδώσει σε ὥσπερ ἀργύριον πεπυρωμένον. Εἶτα παῤῥησιασθήσῃ ἐναντίον Κυρίου ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐρανὸν ἱλαρῶς. Εὐξαμένου δέ σου

πρὸς αὐτὸν εἰσακούσεταί σου· δώσει δέ σοι ἀποδοῦναι τὰς εὐχάς. Ἀποκαταστήσει δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης, ἐπὶ δὲ ὁδοῖς σου ἔσται φέγγος· Ὅτι ἐταπείνωσας σεαυτὸν, καὶ ἐρεῖς, ὑπερηφανεύσατο, καὶ κύφοντα ὀφθαλμοῖς σώσει. Ῥύσεται ἀθῷον, καὶ διασώθητι ἐν καθαραῖς χερσί σου.

# 23

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Καὶ δὴ οἶδα ὅτι ἐκ χειρός μου ἡ ἔλεγξίς ἐστι, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ βαρεῖα γέγονεν ἐπ’ ἐμῷ στεναγμῷ. Τίς δ’ ἄρα γνοίη, ὅτι εὕροιμι αὐτὸν, καὶ ἔλθοιμι εἰς τέλος; Εἴποιμι δὲ ἐμαυτοῦ κρίμα, τὸ δὲ στόμα μου ἐμπλήσαι ἐλέγχων. Γνοίην δὲ ἰάματα ἅ μοι ἐρεῖ, αἰσθοίμην δὲ τίνα μοι ἀπαγγελεῖ. Καὶ ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελεύσεταί μοι, εἶτα ἐν ἀπειλῇ μοι οὐ χρήσεται. Ἀλήθεια γὰρ καὶ ἔλεγχος παρ’ αὐτοῦ, ἐξαγάγοι δὲ εἰς τέλος τὸ κρίμα μου. Εἰ γὰρ πρῶτος πορεύσομαι, καὶ οὐκ ἔτι εἰμὶ, τὰ δὲ ἐπ’ ἐσχάτοις, τί οἶδα; Ἀριστερὰ ποιήσαντος αὐτοῦ καὶ οὐ κατέσχον, περιβαλεῖ δεξιὰ καὶ οὐκ ὄψομαι· Οἶδε γὰρ ἤδη ὁδόν μου· διέκρινε δέ με ὥσπερ τὸ χρυσίον. Ἐξελεύσομαι δὲ ἐν ἐντάλμασιν αὐτοῦ, ὁδοὺς γὰρ αὐτοῦ ἐφύλαξα, καὶ οὐ μὴ ἐκκλίνω ἀπὸ ἐνταλμάτων αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ παρέλθω, ἐν δὲ κόλπῳ μου ἔκρυψα ῥήματα αὐτοῦ. Εἰ δὲ καὶ αὐτὸς ἔκρινεν οὕτως, τίς ἐστιν ὁ ἀντειπὼν αὐτῷ; ὁ γὰρ αὐτὸς ἠθέλησε, καὶ ἐποίησε. Διὰ τοῦτο ἐπ’ αὐτῷ ἐσπούδακα· νουθετούμενος δὲ, ἐφρόντισα αὐτοῦ. Κύριος δὲ ἐμαλάκυνε τὴν καρδίαν μου· ὁ δὲ παντοκράτωρ ἐσπούδασέ με. Οὐ γὰρ ᾔδειν ὅτι ἐπελεύσεταί μοι σκότος, πρὸ προσώπου δέ μου ἐκάλυψε γνόφος.

# 24

Διατί δὲ Κύριον ἔλαθον ὦραι, ἀσεβεῖς δὲ ὅριον ὑπερέβησαν, ποίμνιον σὺν ποιμένι ἁρπάσαντες; Ὑποζύγιον ὀρφανῶν ἀπήγαγον, καὶ βοῦν χήρας ἠνεχύρασαν. Ἐξέκλιναν ἀδυνάτους ἐξ ὁδοῦ δικαίας, ὁμοθυμαδὸν δὲ ἐκρύβησαν πρᾳεῖς γῆς. Ἀπέβησαν δὲ ὥσπερ ὄνοι ἐν ἀγρῷ, ὑπὲρ ἐμοῦ ἐξελθόντες τὴν ἑαυτῶν τάξιν· ἠδύνθη αὐτῷ ἄρτος εἰς νεωτέρους. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας οὐκ αὐτῶν ὄντα ἐθέρισαν· ἀδύνατοι ἀμπελῶνας ἀσεβῶν ἀμισθὶ καὶ ἀσιτὶ εἰργάσαντο. Γυμνοὺς πολλοὺς ἐκοίμισαν ἄνευ ἱματίων, ἀμφίασιν δὲ ψυχῆς αὐτῶν ἀφείλαντο. Ἀπὸ ψεκάδων ὀρέων ὑγραίνονται· παρὰ τὸ μὴ ἔχειν ἑαυτοὺς σκέπην, πέτραν περιεβάλοντο. Ἥρπασαν ὀρφανὸν ἀπὸ μαστοῦ, ἐκπεπτωκότα δὲ ἐταπείνωσαν· Γυμνοὺς δὲ ἐκοίμισαν ἀδίκως, πεινώντων δὲ τὸν ψωμὸν ἀφείλαντο. Ἐν στενοῖς ἀδίκως ἐνήδρευσαν, ὁδὸν δὲ δικαίαν οὐκ ᾔδεισαν. Οἳ ἐκ πόλεως καὶ οἴκων ἰδίων ἐξεβάλοντο, ψυχὴ δὲ νηπίων ἐστέναξε μέγα. Αὐτὸς δὲ διατί τούτων ἐπισκοπὴν οὐ πεποίηται; ἐπὶ γῆς ὄντων αὐτῶν καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν, ὁδὸν δὲ δικαιοσύνης οὐκ ᾔδεισαν, οὐδὲ ἀτραποὺς αὐτῶν ἐπορεύθησαν. Γνοὺς δὲ αὐτῶν τὰ ἔργα, παρέδωκεν αὐτοὺς εἰς σκότος, καὶ νυκτὸς ἔσται ὡς κλέπτης. Καὶ ὀφθαλμὸς μοιχοῦ ἐφύλαξε σκότος, λέγων, οὐ προνοήσει με ὀφθαλμὸς, καὶ ἀποκρυβὴν προσώπου ἔθετο. Διώρυξεν ἐν σκότει οἰκίας, ἡμέρας ἐσφράγισαν ἑαυτοὺς, οὐκ ἐπέγνωσαν φῶς. Ὅτι ὁμοθυμαδὸν αὐτοῖς τὸ πρωΐ σκιὰ θανάτου, ὅτι ἐπιγνώσεται τάραχος σκιᾶς θανάτου. Ἐλαφρός ἐστιν ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, καταραθείη ἡ μερὶς αὐτῶν ἐπὶ γῆς, ἀναφανείη δὲ τὰ φυτὰ αὐτῶν ἐπὶ γῆς ξηρά· ἀγκαλίδα γὰρ ὀρφανῶν ἥρπασαν. Εἶτ’ ἀνεμνήσθη αὐτοῦ ἡ

ἁμαρτία· ὥσπερ δὲ ὁμίχλη δρόσου ἀφανὴς ἐγένετο· ἀποδοθείη δὲ αὐτῷ ἃ ἔπραξε, συντριβείη δὲ πᾶς ἄδικος ἴσα ξύλῳ ἀνιάτῳ. Στείραν δὲ οὐκ εὖ ἐποίησε, καὶ γύναιον οὐκ ἠλέησε. Θυμῷ δὲ κατέστρεψεν ἀδυνάτους· ἀναστὰς τοιγαροῦν, οὐ μὴ πιστεύσῃ κατὰ τῆς ἑαυτοῦ ζωῆς. Μαλακισθεὶς, μὴ ἐλπιζέτω ὑγιασθῆναι, ἀλλὰ πεσεῖται νόσῳ. Πολλοὺς γὰρ ἐκάκωσε τὸ ὕψωμα αὐτοῦ, ἐμαράνθη δὲ ὥσπερ μολόχη ἐν καύματι, ἢ ὥσπερ στάχυς ἀπὸ καλάμης αὐτόματος ἀποπεσών. Εἰ δὲ μὴ, τίς ἐστιν ὁ φάμενος ψευδῆ με λέγειν, καὶ θήσει εἰς οὐδὲν τὰ ῥήματά μου;

# 25

Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέγει, Τί γὰρ προοίμιον ἢ φόβος παρ’ αὐτοῦ ὁ ποιῶν τὴν σύμπασαν ἐν ὑψιστῳ; Μὴ γάρ τις ὑπολάβοι ὅτι ἐστὶ παρέλκυσις πειραταῖς· ἐπὶ τίνας δὲ οὐκ ἐπελεύσεται ἔνεδρα παρ’ αὐτοῦ; Πῶς γὰρ ἔσται δίκαιος βροτὸς ἔναντι Κυρίου; ἢ τίς ἂν ἀποκαθαρίσαι αὐτὸν γεννητὸς γυναικός; Εἰ σελήνῃ συντάσσει, καὶ οὐκ ἐπιφαύσκει, ἄστρα δὲ οὐ καθαρὰ ἐναντίον αὐτοῦ. Ἔα δὲ, ἄνθρωπος σαπρία, καὶ υἱὸς ἀνθρώπου σκώληξ.

# 26

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, Τίνι πρόσκεισαι, ἢ τίνι μέλλεις βοηθεῖν; πότερον οὐχ ᾧ πολλὴ ἰσχὺς, καὶ ᾧ βραχίων κραταιός ἐστι; Τίνι συμβεβούλευσαι; οὐχ ᾧ πᾶσα σοφία; τίνι ἐπακολουθήσεις; οὐχ ᾧ

μεγίστη δύναμις; Τίνι ἀνήγγειλας ῥήματα; πνοὴ δὲ τίνος ἐστὶν ἡ ἐξελθοῦσα ἐκ σοῦ; Μὴ γίγαντες μαιωθήσονται ὑποκάτωθεν ὕδατος καὶ τῶν γειτόνων αὐτοῦ; Γυμνὸς ὁ ᾅδης ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστι περιβόλαιον τῇ ἀπωλείᾳ. Ἐκτείνων βορέαν ἐπ᾽ οὐδὲν, κρεμάζων γῆν ἐπὶ οὐδενός. Δεσμεύων ὕδωρ ἐν νεφέλαις αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐῤῥάγη νέφος ὑποκάτω αὐτοῦ· Ὁ κρατῶν πρόσωπον θρόνου, ἐκπετάζων ἐπ᾽ αὐτὸν νέφος αὐτοῦ. Πρόσταγμα ἐγύρωσεν ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, μέχρι συντελείας φωτὸς μετὰ σκότους. Στύλοι οὐρανοῦ ἐπετάσθησαν, καὶ ἐξέστησαν ἀπὸ τῆς ἐπιτιμήσεως αὐτοῦ. Ἰσχύϊ κατέπαυσε τὴν θάλασσαν, ἐπιστήμῃ δὲ ἔστρωται τὸ κῆτος. Κλεῖθρα δὲ οὐρανοῦ δεδοίκασιν αὐτόν· προστάγματι δὲ ἐθανάτωσε δράκοντα ἀποστάτην. Ἰδοῦ ταῦτα μέρη ὁδοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ ἰκμάδα λόγου ἀκουσόμεθα ἐν αὐτῷ· σθενὸς δὲ βροντῆς αὐτοῦ, τίς οἶδεν ὁπότε ποιήσει;

# 27

Ἔτι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ εἶπεν τῷ προοιμίῳ, Ζῇ ὁ Θεὸς, ὃς οὕτω με κέκρικε, καὶ ὁ παντοκράτωρ ὁ πικράνας μου τὴν ψυχὴν, εἰ μὴν ἔτι τῆς πνοῆς μου ἐνούσης, πνεῦμα δὲ θεῖον τὸ περιόν μοι ἐν ῥινὶ, μὴ λαλήσειν τὰ χείλη μου ὄνομα, οὐδὲ ἡ ψυχή μου μελετήσει ἄδικα. Μή μοι εἴη δικαίους ὑμᾶς ἀποφῆναι ἕως ἂν ἀποθάνω, οὐ γὰρ ἀπαλλάξω μου τὴν ἀκακίαν μου. Δικαιοσύνῃ δὲ προσέχων οὐ μὴν προῶμαι, οὐ γὰρ σύνοιδα ἐμαυτῷ ἄτοπα πράξας. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ εἴησαν οἱ ἐχθροί μου ὥσπερ ἡ καταστροφὴ τῶν ἀσεβῶν, καὶ οἱ ἐπ᾽ ἐμὲ ἐπανιστάμενοι, ὥσπερ ἡ ἀπώλεια τῶν παρανόμων. Καὶ τίς γάρ ἐστιν ἐλπὶς ἀσεβεῖ, ὅτι ἐπέχει; πεποιθὼς ἐπὶ κύριον ἄρα

σωθήσεται; Ἢ τὴν δέησιν αὐτοῦ εἰσακούσεται ὁ Θεός; ἢ ἐπελθούσης αὐτῷ ἀνάγκης μὴ ἔχει τινὰ παῤῥησίαν ἔναντι αὐτοῦ; ἢ ὡς ἐπικαλεσαμένου αὐτοῦ εἰσακούσεται αὐτοῦ; Ἀλλὰ δὴ ἀναγγελῶ ὑμῖν τί ἐστιν ἐν χειρὶ Κυρίου, ἅ ἐστι παρὰ παντοκράτορι, οὐ ψεύσομαι. Ἰδοὺ πάντες οἴδατε, ὅτι κενὰ κενοῖς ἐπιβάλλετε. Αὕτη ἡ μερὶς ἀνθρώπου ἀσεβοῦς παρὰ Κυρίου, κτῆμα δὲ δυναστῶν ἐλεύσεται παρὰ παντοκράτορος ἐπ’ αὐτούς. Ἐὰν δὲ πολλοὶ γένωνται οἱ υἱοὶ αὐτῶν, εἰς σφαγὴν ἔσονται· ἐὰν δὲ καὶ ἀνδρωθῶσι, προσαιτήσουσιν. Οἱ δὲ περιόντες αὐτοῦ ἐν θανάτῳ τελευτήσουσι, χήρας δὲ αὐτῶν οὐδεὶς ἐλεήσει. Ἐὰν συναγάγῃ ὥσπερ γῆν ἀργύριον, ἶσα δὲ πηλῷ ἑτοιμάσῃ χρυσίον, ταῦτα πάντα δίκαιοι περιποιήσονται, τὰ δὲ χρήματα αὐτοῦ ἀληθινοὶ καθέξουσιν. Ἀπέβη δὲ ὁ οἶκος αὐτοῦ ὥσπερ σῆτες, καὶ ὥσπερ ἀράχνη. Πλούσιος κοιμηθήσεται καὶ οὐ προσθήσει, ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ διήνοιξε καὶ οὐκ ἔστι. Συνήντησαν αὐτῷ ὥσπερ ὕδωρ αἱ ὀδύναι, νυκτὶ δὲ ὑφείλατο αὐτὸν γνόφος. Ἀναλήψεται δὲ αὐτὸν καύσων καὶ ἀπελεύσεται, καὶ λικμήσει αὐτὸν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ. Καὶ ἐπιῤῥίψει ἐπ’ αὐτὸν καὶ οὐ φείσεται, ἐκ χειρὸς αὐτοῦ φυγῇ φεύξεται. Κροτήσει ἐπ’ αὐτοὺς χεῖρας αὐτῶν, καὶ συριεῖ αὐτὸν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ.

# 28

Ἔστι γὰρ ἀργυρίῳ τόπος ὅθεν γίνεται, τόπος δὲ χρυσίου ὅθεν διηθεῖται. Σίδηρος μὲν γὰρ ἐκ γῆς γίνεται, χαλκὸς δὲ ἶσα λίθῳ λατομεῖται. Τάξιν ἔθετο σκότει, καὶ πᾶν πέρας αὐτὸς ἐξακριβάζεται, λίθος σκοτία, καὶ σκιὰ θανάτου. Διακοπὴ χειμάῤῥου

ἀπὸ κονίας, οἱ δὲ ἐπιλανθανόμενοι ὁδὸν δικαίαν ἠσθένησαν, ἐκ βροτῶν ἐσαλεύθησαν. Γῆ, ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται ἄρτος, ὑποκάτω αὐτῆς ἐστράφη ὡσεὶ πῦρ. Τόπος σαπφείρου οἱ λίθοι αὐτῆς, καὶ χῶμα χρυσίον αὐτῷ. Τρίβος, οὐκ ἔγνω αὐτὴν πετεινὸν, καὶ οὐ παρέβλεψεν αὐτὴν ὀφθαλμὸς γυπός· Καὶ οὐκ ἐπάτησαν αὐτὸν υἱοὶ ἀλαζόνων, οὐ παρῆλθεν ἐπ’ αὐτῆς λέων. Ἐν ἀκροτόμῳ ἐξέτεινε χεῖρα αὐτοῦ, κατέστρεψε δὲ ἐκ ῥιζῶν ὄρη. Δίνας δὲ ποταμῶν διέῤῥηξε, πᾶν δὲ ἔντιμον εἶδέ μου ὁ ὀφθαλμός. Βάθη δὲ ποταμῶν ἀνεκάλυψεν, ἔδειξε δὲ αὐτοῦ δύναμιν εἰς φῶς. Ἡ δὲ σοφία πόθεν εὑρέθη; ποῖος δὲ τόπος ἐστὶ τῆς ἐπιστήμης; Οὐκ οἶδε βροτὸς ὁδὸν αὐτῆς, οὐδὲ μὴν εὑρέθη ἐν ἀνθρώποις. Ἄβυσσος εἶπεν, οὐκ ἔνεστιν ἐν ἐμοί· καὶ ἡ θάλασσα εἶπεν, οὐκ ἔνεστι μετ’ ἐμοῦ. Οὐ δώσει συνκλεισμὸν ἀντ’ αὐτῆς, καὶ οὐ σταθήσεται ἀργύριον ἀντάλλαγμα αὐτῆς. Καὶ οὐ συνβασταχθήσεται χρυσίῳ Σωφεὶρ, ἐν ὄνυχι τιμίῳ καὶ σαπφείρῳ. Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ χρυσίον καὶ ὕαλος, καὶ τὸ ἄλλαγμα αὐτῆς σκεύη χρυσᾶ. Μετέωρα καὶ γαβὶς οὐ μνησθήσεται, καὶ ἕλκυσον σοφίαν ὑπὲρ τὰ ἐσώτατα. Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ τοπάζιον Αἰθιοπίας, χρυσίῳ καθαρῷ οὐ συμβασταχθήσεται. Ἡ δὲ σοφία πόθεν εὑρέθη; ποῖος δὲ τόπος ἐστὶ τῆς συνέσεως; Λέληθε πάντα ἄνθρωπον, καὶ ἀπὸ πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ ἐκρύβη. Ἡ ἀπώλεια καὶ ὁ θάνατος εἶπαν, ἀκηκόαμεν δὲ αὐτῆς τὸ κλέος. Ὁ Θεὸς εὖ συνέστησεν αὐτῆς τὴν ὁδὸν, αὐτὸς δὲ οἶδε τὸν τόπον αὐτῆς. Αὐτὸς γὰρ τὴν ὑπ’ οὐρανὸν πᾶσαν ἐφορᾷ· εἰδὼς τὰ ἐν τῇ γῇ, πάντα ἃ ἐποίησεν, ἀνέμων σταθμὸν, ὕδατος μέτρα ὅτε ἐποίησεν· οὕτως ἰδὼν ἠρίθμησε, καὶ ὁδὸν ἐν τινάγματι φωνάς. Τότε εἶδεν αὐτὴν, καὶ ἐξηγήσατο αὐτὴν, ἑτοιμάσας ἐξιχνίασεν. Εἶπε δὲ ἀνθρώπῳ, Ἰδοὺ ἡ θεοσέβειά ἐστι σοφία, τὸ δὲ ἀπέχεσθαι ἀπὸ κακῶν ἐστὶν ἐπιστήμη.

# 29

Ἔτι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ εἶπε τῷ προοιμίῳ, Τίς ἄν με θείη κατὰ μῆνα ἔμπροσθεν ἡμερῶν, ὧν με ὁ Θεὸς ἐφύλαξεν; Ὡς ὅτε ηὔγει ὁ λύχνος αὐτοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς μου, ὅτε τῷ φωτὶ αὐτοῦ ἐπορευόμην ἐν σκότει· Ὅτε ἤμην ἐπιβρίθων ὁδοὺς, ὅτε ὁ Θεὸς ἐπισκοπὴν ἐποιεῖτο τοῦ οἴκου μου· Ὅτε ἤμην ὑλώδης λίαν, κύκλῳ δέ μου οἱ παῖδες· Ὅτε ἐχέοντο αἱ ὁδοί μου βουτύρῳ, τὰ δὲ ὄρη μου ἐχέοντο γάλακτι· Ὅτε ἐξεπορευόμην ὄρθριος ἐν πόλει, ἐν δὲ πλατείαις ἐτίθετό μου ὁ δίφρος. Ἰδόντες με νεανίσκοι ἐκρύβησαν, πρεσβῦται δὲ πάντες ἔστησαν. Ἄδροὶ δὲ ἐπαύσαντο λαλοῦντες, δάκτυλον ἐπιθέντες ἐπὶ στόματι. Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐμακάρισάν με, καὶ γλῶσσα αὐτῶν τῷ λάρυγγι αὐτῶν ἐκολλήθη. Ὅτι οὖς ἤκουσε καὶ ἐμακάρισέ με, ὀφθαλμὸς δὲ ἰδών με ἐξέκλινε. Διέσωσα γὰρ πτωχὸν ἐκ χειρὸς δυνάστου, καὶ ὀρφανῷ ᾧ οὐκ ἦν βοηθὸς, ἐβοήθησα. Εὐλογία ἀπολλυμένου ἐπ’ ἐμὲ ἔλθοι, στόμα δὲ χήρας με εὐλόγησε· Δικαιοσύνην δὲ ἐνδεδύκειν, ἠμφιασάμην δὲ κρίμα ἶσα διπλοΐδι. Ὀφθαλμὸς ἤμην τυφλῶν, ποὺς δὲ χωλῶν. Ἐγὼ ἤμην πατὴρ ἀδυνάτων, δίκην δὲ ἣν οὐκ ᾔδειν ἐξιχνίασα. Συνέτριψα δὲ μύλας ἀδίκων, ἐκ μέσου τῶν ὀδόντων αὐτῶν ἅρπαγμα ἐξήρπασα. Εἶπα δὲ, ἡ ἡλικία μου γηράσει ὥσπερ στέλεχος φοίνικος, πολὺν χρόνον βιώσω. Ἡ ῥίζα διήνοικται ἐπὶ ὕδατος, καὶ δρόσος αὐλισθήσεται ἐν τῷ θερισμῷ μου. Ἡ δόξα μου κενὴ μετ’ ἐμοῦ, καὶ τὸ τόξον μου ἐν χειρὶ αὐτοῦ πορεύεται. Ἐμοῦ ἀκούσαντες προσέσχον, ἐσιώπησαν δὲ ἐπὶ τῇ ἐμῇ βουλῇ. Ἐπὶ τῷ ἐμῷ ῥήματι οὐ προσέθεντο, περιχαρεῖς δὲ ἐγίνοντο ὁπόταν αὐτοῖς ἐλάλουν. Ὥσπερ γῆ διψῶσα προσδεχομένη τὸν ὑετὸν, οὕτως οὗτοι τὴν ἐμὴν λαλιάν. Ἐὰν

γελάσω πρὸς αὐτοὺς, οὐ μὴ πιστεύσωσι, καὶ φῶς τοῦ προσώπου μου οὐκ ἀπέπιπτεν. Ἐξελεξάμην ὁδὸν αὐτῶν, καὶ ἐκάθισα ἄρχων, καὶ κατεσκήνουν ὡσεὶ βασιλεὺς ἐν μονοζώνοις, ὃν τρόπον παθεινοὺς παρακαλῶν.

# 30

Νυνὶ δὲ κατεγέλασάν μου ἐλάχιστοι, νῦν νουθετοῦσί με ἐν μέρει, ὧν ἐξουδένουν τοὺς πατέρας αὐτῶν, οὓς οὐχ ἡγησάμην ἀξίους κυνῶν τῶν ἐμῶν νομάδων. Καί γε ἰσχὺς χειρῶν αὐτῶν ἰνατί μοι; ἐπ’ αὐτοὺς ἀπώλετο συντέλεια. Ἐν ἐνδείᾳ καὶ λιμῷ ἄγονος, οἱ φεύγοντες ἄνυδρον ἐχθὲς συνοχὴν καὶ ταλαιπωρίαν. Οἱ περικυκλοῦντες ἅλιμα ἐπὶ ἠχοῦντι, οἵτινες ἅλιμα ἦν αὐτῶν τὰ σῖτα, ἄτιμοι δὲ καὶ πεφαυλισμένοι, ἐνδεεῖς παντὸς ἀγαθοῦ, οἳ καὶ ῥίζας ξύλων ἐμασσῶντο ὑπὸ λιμοῦ μεγάλου. Ἐπανέστησάν μοι κλέπται, ὧν οἱ οἶκοι αὐτῶν ἦσαν τρῶγλαι πετρῶν· Ἀναμέσον εὐήχων βοήσονται οἳ ὑπὸ φρύγανα ἄγρια διῃτῶντο. Ἀφρόνων υἱοὶ καὶ ἀτίμων, ὄνομα καὶ κλέος ἐσβεσμένον ἀπὸ γῆς. Νυνὶ δὲ κιθάρα ἐγώ εἰμι αὐτῶν, καὶ ἐμὲ θρύλλημα ἔχουσιν. Ἐβδελύξαντο δέ με ἀποστάντες μακρὰν, ἀπὸ δὲ τοῦ προσώπου μου οὐκ ἐφείσαντο πτύελον. Ἀνοίξας γὰρ φαρέτραν αὐτοῦ ἐκάκωσέ με, καὶ χαλινὸν τοῦ προσώπου μου ἐξαπέστειλεν. Ἐπὶ δεξιῶν βλαστοῦ ἐπανέστησαν, πόδα αὐτῶν ἐξέτειναν, καὶ ὠδοποίησαν ἐπ’ ἐμὲ· τρίβους ἀπωλείας αὐτῶν. Ἐξετρίβησαν τρίβοι μου, ἐξέδυσαν γάρ μου τὴν στολήν· βέλεσιν αὐτοῦ κατηκόντισέ με. Κέκριται δέ μοι ὡς βούλεται, ἐν ὀδύναις πέφυρμαι. Ἐπιστρέφονταί μου αἱ ὀδύναι, ᾠχετό μου ἡ ἐλπὶς ὥσπερ πνεῦμα, καὶ ὥσπερ νέφος ἡ σωτηρία

μου. Καὶ νῦν ἐπ’ ἐμὲ ἐκχυθήσεται ἡ ψυχή μου, ἔχουσιν δέ με ἡμέραι ὀδυνῶν. Νυκτὶ δέ μου τὰ ὀστᾶ συγκέχυται, τὰ δὲ νεῦρά μου διαλέλυται. Ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελάβετό μου τῆς στολῆς, ὥσπερ τὸ περιστόμιον τοῦ χιτῶνός μου περιέσχε με. Ἤγησαι δέ με ἴσα πηλῷ, ἐν γῇ καὶ σποδῷ μου ἡ μερίς. Κέκραγα δὲ πρὸς σὲ καὶ οὐκ ἀκούεις μου, ἔστησαν δὲ καὶ κατενόησάν με. Ἐπέβησαν δέ μοι ἀνελεημόνως, χειρὶ κραταιᾷ με ἐμαστίγωσας. Ἔταξας δέ με ἐν ὀδύναις, καὶ ἀπέῤῥιψάς με ἀπὸ σωτηρίας. Οἶδα γὰρ ὅτι θάνατός με ἐκτρίψει, οἰκία γὰρ παντὶ θνητῷ γῆ. Εἰ γὰρ ὄφελον δυναίμην ἐμαυτὸν χειρώσασθαι, ἢ δεηθείς γε ἑτέρου, καὶ ποιήσει μοι τοῦτο. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ παντὶ ἀδυνάτῳ ἔκλαυσα, ἐστέναξα ἰδὼν ἄνδρα ἐν ἀνάγκαις· ἐγὼ δὲ ἐπέχων ἀγαθοῖς, ἰδοὺ συνήντησάν μοι μᾶλλον ἡμέραι κακῶν. Ἡ κοιλία μου ἐξέζεσε καὶ οὐ σιωπήσεται, προέφθασάν με ἡμέραι πτωχείας. Στένων πεπόρευμαι ἄνευ φιμοῦ, ἔστηκα δὲ ἐν ἐκκλησίᾳ κεκραγώς. Ἀδελφὸς γέγονα σειρήνων, ἑταῖρος δὲ στρουθῶν. Τὸ δὲ δέρμα μου ἐσκότωται μεγάλως, τὰ δὲ ὀστᾶ μου ἀπὸ καύματος. Ἀπέβη δὲ εἰς πένθος μου ἡ κιθάρα, ὁ δὲ ψαλμός μου εἰς κλαυθμὸν ἐμοί.

# 31

Διαθήκην ἐθέμην τοῖς ὀφθαλμοῖς μου, καὶ οὐ συνήσω ἐπὶ παρθένον. Καὶ τί ἐμέρισεν ὁ Θεὸς ἄνωθεν, καὶ κληρονομία ἱκανοῦ ἐξ ὑψίστων; Οὐαί, ἀπώλεια τῷ ἀδίκῳ, καὶ ἀπαλλοτρίωσις τοῖς ποιοῦσιν ἀνομίαν. Οὐχὶ αὐτὸς ὄψεται ὁδόν μου, καὶ πάντα τὰ διαβήματά μου ἐξαριθμήσεται; Εἰ δὲ ἤμην πεπορευμένος μετὰ γελοιαστῶν, εἰ δὲ καὶ ἐσπούδασεν ὁ πούς μου εἰς δόλον· Ἔσταμαι

γὰρ ἐν ζυγῷ δικαίῳ, οἶδε δὲ ὁ Κύριος τὴν ἀκακίαν μου· Εἰ ἐξέκλινεν ὁ πούς μου ἐκ τῆς ὁδοῦ, εἰ δὲ καὶ τῷ ὀφθαλμῷ ἐπηκολούθησεν ἡ καρδία μου, εἰ δὲ καὶ ταῖς χερσί μου ἡψάμην δώρων, σπείραιμι ἄρα καὶ ἄλλοι φάγοισαν, ἄῤῥιζος δὲ γενοίμην ἐπὶ γῆς. Εἰ ἐξηκολούθησεν ἡ καρδία μου γυναικὶ ἀνδρὸς ἑτέρου, εἰ καὶ ἐγκάθετος ἐγενόμην ἐπὶ θύραις αὐτῆς, ἀρέσαι ἄρα καὶ ἡ γυνή μου ἑτέρῳ, τὰ δὲ νήπιά μου ταπεινωθείη. Θυμὸς γὰρ ὀργῆς ἀκατάσχετος, τὸ μιᾶναι ἀνδρὸς γυναῖκα. Πῦρ γάρ ἐστι καιόμενον ἐπὶ πάντων τῶν μερῶν, οὗδ’ ἂν ἐπέλθῃ ἐκ ῥιζῶν ἀπώλεσεν. Εἰ δὲ καὶ ἐφαύλισα κρίμα θεράποντός μου ἢ θεραπαίνης, κρινομένων αὐτῶν πρὸς μὲ, τί γὰρ ποιήσω ἐὰν ἔτασίν μου ποιῆται ὁ Κύριος; ἐὰν δὲ καὶ ἐπισκοπήν τινα, ἀπόκρισιν ποιήσομαι; Πότερον οὐχ ὡς καὶ ἐγὼ ἐγενόμην ἐν γαστρὶ, καὶ ἐκεῖνοι γεγόνασι; γεγόναμεν δὲ ἐν τῇ αὐτῇ κοιλίᾳ. Ἀδύνατοι δὲ χρείαν ἦν ποτε εἶχον οὐκ ἀπέτυχον, χήρας δὲ τὸν ὀφθαλμὸν οὐκ ἐξέτηξα· Εἰ δὲ καὶ τὸν ψωμόν μου ἔφαγον μόνος, καὶ οὐχὶ ὀρφανῷ μετέδωκα· Ὅτι ἐκ νεότητός μου ἐξέτρεφον ὡς πατὴρ, καὶ ἐκ γαστρὸς μητρός μου ὡδήγησα· Εἰ δὲ καὶ ὑπερεῖδον γυμνὸν ἀπολλύμενον, καὶ οὐκ ἠμφίασα αὐτόν· Ἀδύνατοι δὲ εἰ μὴ εὐλόγησάν με, ἀπὸ δὲ κουρᾶς ἀμνῶν μοῦ ἐθερμάνθησαν οἱ ὦμοι αὐτῶν· Εἰ ἐπῆρα ὀρφανῷ χεῖρα, πεποιθὼς ὅτι πολλή μοι βοήθεια περίεστιν· Ἀποσταίη ἄρα ὁ ὦμός μου ἀπὸ τῆς κλειδός, ὁ δὲ βραχίων μου ἀπὸ τοῦ ἀγκῶνος συντριβείη. Φόβος γὰρ Κυρίου συνέσχε με, ἀπὸ τοῦ λήμματος αὐτοῦ οὐχ ὑποίσω. Εἰ ἔταξα χρυσίον εἰς χοῦν μου, εἰ δὲ καὶ λίθῳ πολυτελεῖ ἐπεποίθησα, εἰ δὲ καὶ εὐφράνθην πολλοῦ πλούτου μου γενομένου, εἰ δὲ καὶ ἐπ’ ἀναριθμήτοις ἐθέμην χεῖρά μου· Ἦ οὐχ ὁρῶμεν ἥλιον τὸν ἐπιθαύσκοντα ἐκλείποντα, σελήνην δὲ φθίνουσαν; οὐ γὰρ ἐπ’ αὐτοῖς ἐστί· Καὶ εἰ ἠπατήθη λάθρα ἡ καρδία μου, εἰ δὲ χεῖρά μου

ἐπιθεὶς ἐπὶ στόματί μου ἐφίλησα. Καὶ τοῦτό μοι ἄρα ἀνομία ἡ μεγίστη λογισθείη, ὅτι ἐψευσάμην ἐναντίον Κυρίου τοῦ ὑψίστου. Εἰ δὲ καὶ ἐπιχαρὴς ἐγενόμην πτώματι ἐχθρῶν μου, καὶ εἶπεν ἡ καρδία μου, εὖγε. Ἀκούσαι ἄρα τὸ οὖς μου τὴν κατάραν μου, θρυληθείην δὲ ἄρα ὑπὸ λαοῦ μου κακούμενος. Εἰ δὲ καὶ πολλάκις εἶπον αἱ θεράπαιναί μου, τίς ἄν δῴη ἡμῖν τῶν σαρκῶν αὐτοῦ πλησθῆναι; λίαν μου χρηστοῦ ὄντος· Ἔξω δὲ οὐκ ηὐλίζετο ξένος, ἡ δὲ θύρα μου παντὶ ἐλθόντι ἀνέῳκτο· Εἰ δὲ καὶ ἁμαρτὼν ἀκουσίως ἔκρυψα τὴν ἁμαρτίαν μου· Οὐ γὰρ διετράπην πολυοχλίαν πλήθους, τοῦ μὴ ἐξαγορεῦσαι ἐνώπιον αὐτῶν· εἰ δὲ καὶ εἴασα ἀδύνατον ἐξελθεῖν θύραν μου κόλπῳ κενῷ· Τίς δῴη ἀκούοντά μου; χεῖρα δὲ Κυρίου εἰ μὴ ἐδεδοίκειν· συγγραφὴν δὲ ἣν εἶχον κατά τινος, ἐπ᾽ ὤμοις ἂν περιθέμενος στέφανον ἀνεγίνωσκον, καὶ εἰ μὴ ῥῆξας αὐτὴν ἀπέδωκα, οὐθὲν λαβὼν παρὰ χρεωφειλέτου· Εἰ ἐπ᾽ ἐμοί ποτε ἡ γῆ ἐστέναξεν, εἰ δὲ καὶ οἱ αὔλακες αὐτῆς ἔκλαυσαν ὁμοθυμαδόν· Εἰ δὲ καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῆς ἔφαγον μόνος ἄνευ τιμῆς, εἰ δὲ καὶ ψυχὴν κυρίου τῆς γῆς ἐκλαβὼν ἐλύπησα· Ἀντὶ πυροῦ ἄρα ἐξέλθοι μοι κνίδη, ἀντὶ δὲ κριθῆς βάτος. Καὶ ἐπαύσατο Ἰὼβ ῥήμασιν.

# 32

Ἡσύχασαν δὲ καὶ οἱ τρεῖς φίλοι αὐτοῦ ἔτι ἀντειπεῖν Ἰὼβ, ἦν γὰρ Ἰὼβ δίκαιος ἐναντίον αὐτῶν. Ὠργίσθη δὲ Ἐλιοὺς ὁ τοῦ Βαραχιὴλ ὁ Βουζίτης ἐκ τῆς συγγενείας Ῥὰμ, τῆς Αὐσίτιδος χώρας· ὠργίσθη δὲ τῷ Ἰὼβ σφόδρα, διότι ἀπέφῃνεν ἑαυτὸν δίκαιον ἐναντίον Κυρίου· Καὶ κατὰ τῶν τριῶν δὲ φίλων ὠργίσθη σφόδρα, διότι οὐκ ἠδυνήθησαν ἀποκριθῆναι ἀντίθετα Ἰὼβ, καὶ ἔθεντο αὐτὸν εἶναι

ἀσεβῆ. Ἐλιοὺς δὲ ὑπέμεινε δοῦναι ἀπόκρισιν Ἰὼβ, ὅτι πρεσβύτεροι αὐτοῦ εἰσιν ἡμέραις. Καὶ εἶδεν Ἐλιοὺς, ὅτι οὐκ ἔστιν ἀπόκρισις ἐν στόματι τῶν τριῶν ἀνδρῶν, καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ αὐτοῦ. Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς ὁ τοῦ Βαραχιὴλ ὁ Βουζίτης, εἶπε, Νεώτερος μέν εἰμι τῷ χρόνῳ, ὑμεῖς δέ ἐστε πρεσβύτεροι, διὸ ἡσύχασα φοβηθεὶς τοῦ ὑμῖν ἀναγγεῖλαι τὴν ἐμαυτοῦ ἐπιστήμην. Εἶπα δὲ, ὅτι οὐχ ὁ χρόνος ἐστὶν ὁ λαλῶν, ἐν πολλοῖς δὲ ἔτεσιν οἴδασι σοφίαν. Ἀλλὰ πνεῦμά ἐστιν ἐν βροτοῖς· πνοὴ δὲ παντοκράτορός ἐστιν ἡ διδάσκουσα. Οὐχ οἱ πολυχρόνιοί εἰσι σοφοὶ, οὐδ’ οἱ γέροντες οἴδασι κρίμα. Διὸ εἶπα, ἀκούσατέ μου, καὶ ἀναγγελῶ ὑμῖν ἃ οἶδα. Ἐνωτίζεσθέ μου τὰ ῥήματα· ἐρῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων ἄχρις οὗ ἐτάσητε λόγους, καὶ μέχρι ὑμῶν συνήσω, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν τῷ Ἰὼβ ἐλέγχων ἀνταποκρινόμενος ῥήματα αὐτοῦ ἐξ ὑμῶν· ἵνα μὴ εἴπητε, εὕρομεν σοφίαν Κυρίῳ προσθέμενοι. Ἀνθρώπῳ δὲ ἐπετρέψατε λαλῆσαι τοιαῦτα ῥήματα. Ἐπτοήθησαν, οὐκ ἀπεκρίθησαν ἔτι, ἐπαλαίωσαν ἐξ αὐτῶν λόγους. Ὑπέμεινα, οὐ γὰρ ἐλάλησα, ὅτι ἔστησαν, οὐκ ἀπεκρίθησαν. Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοῦς, λέγει, πάλιν λαλήσω, πλήρης γάρ εἰμι ῥημάτων, ὀλέκει γάρ με τὸ πνεῦμα τῆς γαστρός. Ἡ δὲ γαστήρ μου ὥσπερ ἀσκὸς γλεύκους ζέων δεδεμένος, ἢ ὥσπερ φυσητὴρ χαλκέως ἐῤῥηγώς. Λαλήσω, ἵνα ἀναπαύσωμαι ἀνοίξας τὰ χείλη, ἄνθρωπον γὰρ οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, ἀλλὰ μὴν οὐδὲ βροτὸν οὐ μὴ ἐντραπῶ. Οὐ γὰρ ἐπίσταμαι θαυμάσαι πρόσωπα· εἰ δὲ μὴ, καὶ ἐμὲ σῆτες ἔδονται.

# 33

Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἄκουσου Ἰὼβ τὰ ῥήματά μου, καὶ λαλιὰν ἐνωτίζου

μου. γὰρ ἤνοιξα τὸ στόμα μου, καὶ ἐλάλησεν ἡ γλῶσσά μου. Καθαρά μου ἡ καρδία ῥήμασι, σύνεσις δὲ χειλέων μου καθαρὰ νοήσει. Πνεῦμα θεῖον τὸ ποιῆσάν με, πνοὴ δὲ παντοκράτορος ἡ διδάσκουσά με. Ἐὰν δύνῃ, δός μοι ἀπόκρισιν, πρὸς ταῦτα ὑπόμεινον, στῆθι κατ᾽ ἐμὲ, καὶ ἐγὼ κατὰ σέ. Ἐκ πηλοῦ διήρτισαι σὺ ὡς καὶ ἐγὼ, ἐκ τοῦ αὐτοῦ διηρτίσμεθα. Οὐχ ὁ φόβος μου σὲ στροβήσει, οὐδὲ ἡ χείρ μου βαρεῖα ἔσται ἐπὶ σοί. Πλὴν εἶπας ἐν ὠσί μου· φωνὴν ῥημάτων σου ἀκήκοα· διότι λέγεις, καθαρός εἰμι οὐχ ἁμαρτών, ἄμεμπτός εἰμι, οὐ γὰρ ἠνόμησα· Μέμψιν δὲ κατ᾽ ἐμοῦ εὗρεν· ἥγηται δέ με ὥσπερ ὑπεναντίον. Ἔθετο δὲ ἐν ξύλῳ τὸν πόδα μου, ἐφύλαξε δέ μου πάσας τὰς ὁδούς. Πῶς γὰρ λέγεις, δίκαιός εἰμι, καὶ οὐκ ἐπακήκοέ μου; αἰώνιος γάρ ἐστιν ὁ ἐπάνω βροτῶν. Λέγεις δέ, διατί τῆς δίκης μου οὐκ ἐπακήκοέ μου πᾶν ῥῆμα; Ἐν γὰρ τῷ ἅπαξ λαλήσαι ὁ Κύριος, ἐν δὲ τῷ δευτέρῳ. ἐνύπνιον ἢ ἐν μελέτῃ νυκτερινῇ, ὡς ὅταν ἐπιπίπτῃ δεινὸς φόβος ἐπ᾽ ἀνθρώπους, ἐπὶ νυσταγμάτων ἐπὶ κοίτης· Τότε ἀνακαλύπτει νοῦν ἀνθρώπων, ἐν εἴδεσι φόβου τοιούτοις αὐτοὺς ἐξεφόβησεν. Ἀποστρέψαι ἄνθρωπον ἀπὸ ἀδικίας, τὸ δὲ σῶμα αὐτοῦ ἀπὸ πτώματος ἐῤῥύσατο. Ἐφείσατο δὲ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἀπὸ θανάτου, καὶ μὴ πεσεῖν αὐτὸν ἐν πολέμῳ. Πάλιν δὲ ἤλεγξεν αὐτὸν ἐπὶ μαλακίᾳ ἐπὶ κοίτης, καὶ πλῆθος ὀστῶν αὐτοῦ ἐνάρκησε. Πᾶν δὲ βρωτὸν σίτου οὐ μὴ δύνηται προσδέξασθαι, καὶ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ βρῶσιν ἐπιθυμήσει· ἕως ἂν σαπῶσιν αὐτοῦ αἱ σάρκες, καὶ ἀποδείξῃ τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ κένα. Ἤγγισε δὲ εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, ἡ δὲ ζωὴ αὐτοῦ ἐν ᾅδῃ· Ἐὰν ᾖσι χιλιοι αγγελοι θανατηφόροι, εἷς αὐτῶν οὐ μὴ τρώσῃ αὐτόν· ἐὰν νοήσῃ τῇ καρδίᾳ ἐπιστραφῆναι πρὸς Κύριον, ἀναγγείλῃ δὲ ἀνθρώπῳ τὴν ἑαυτοῦ μέμψιν, τὴν δὲ ἄνοιαν αὐτοῦ δείξῃ, ἀνθέξεται τοῦ μὴ πεσεῖν εἰς

θάνατον· ἀνανεώσει δὲ αὐτοῦ τὸ σῶμα ὥσπερ ἀλοιφὴν ἐπὶ τοίχου, τὰ δὲ ὀστᾶ αὐτοῦ ἐμπλήσει μυελοῦ· Ἀπαλυνεῖ δὲ αὐτοῦ τὰς σάρκας ὥσπερ νηπίου, ἀποκαταστήσει δὲ αὐτὸν ἀνδρωθέντα ἐν ἀνθρώποις. Εὐξάμενος δὲ πρὸς Κύριον καὶ δεκτὰ αὐτῷ ἔσται, εἰσελεύσεται προσώπῳ ἱλαρῷ σὺν ἐξηγορίᾳ· ἀποδώσει δὲ ἀνθρώποις δικαιοσύνην. Εἶτα τότε ἀπομέμψεται ἄνθρωπος αὐτὸς ἑαυτῷ, λέγων, οἷα συνετέλουν; καὶ οὐκ ἄξια ἤτασέ με ὧν ἥμαρτον. Σῶσον ψυχήν μου τοῦ μὴ ἐλθεῖν εἰς διαφθοράν, καὶ ἡ ζωή μου φῶς ὄψεται. Ἰδοὺ ταῦτα πάντα ἐργᾶται ὁ ἰσχυρὸς ὁδοὺς τρεῖς μετὰ ἀνδρός. Καὶ ἐῤῥύσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, ἵνα ἡ ζωή μου ἐν φωτὶ αἰνῇ αὐτόν. Ἐνωτίζου Ἰὼβ καὶ ἄκουέ μου· κώφευσον, καὶ ἐγώ εἰμι λαλήσω. Εἰ εἰσί σοι λόγοι, ἀποκρίθητί μοι· λάλησον, θέλω γὰρ δικαιωθῆναί σε. Εἰ μὴ, σὺ ἄκουσόν μου, κώφευσον καὶ διδάξω σε.

# 34

Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, Ἀκούσατέ μου σοφοὶ, ἐπιστάμενοι ἐνωτίζεσθε. Ὅτι οὖς λόγους δοκιμάζει, καὶ λάρυγξ γεύεται βρῶσιν. Κρίσιν ἐλώμεθα ἑαυτοῖς, γνῶμεν ἀναμέσον ἑαυτῶν, ὅ, τι καλόν. Ὅτι εἴρηκεν Ἰὼβ, δίκαιός εἰμι· ὁ Κύριος ἀπήλλαξέ μου τὸ κρίμα. Ἐψεύσατο δὲ τῷ κρίματί μου, βίαιον τὸ βέλος μου ἄνευ ἀδικίας. Τίς ἀνὴρ ὥσπερ Ἰὼβ, πίνων μυκτηρισμὸν ὥσπερ ὕδωρ; Οὐχ ἁμαρτῶν οὐδὲ ἀσεβήσας, ἢ οὐδ’ οὐ κοινωνήσας μετὰ ποιούντων τὰ ἄνομα, τοῦ πορευθῆναι μετὰ ἀσεβῶν. Μὴ γὰρ εἴπῃς, ὅτι οὐκ ἔσται ἐπισκοπὴ ἀνδρός, καὶ ἐπισκοπὴ αὐτῷ παρὰ Κυρίου. Διὸ συνετοὶ καρδίας ἀκούσατέ μου, μή μοι εἴη ἔναντι Κυρίου ἀσεβῆσαι, καὶ ἔναντι παντοκράτορος ταράξαι τὸ δίκαιον. Ἀλλὰ ἀποδιδοῖ

ἀνθρώπῳ καθὰ ποιεῖ ἕκαστος αὐτῶν, καὶ ἐν τρίβῳ ἀνδρὸς εὑρήσει αὐτόν. Οἴει δὲ τὸν Κύριον ἄτοπα ποιήσειν, ἢ ὁ παντοκράτωρ ταράξει κρίσιν, ὃς ἐποίησε τὴν γῆν; Τίς δέ ἐστιν ὁ ποιῶν τὴν ὑπ' οὐρανὸν, καὶ τὰ ἐνόντα πάντα; Εἰ γὰρ βούλοιτο συνέχειν, καὶ τὸ σνεῦμα παρ' αὐτῷ κατασχεῖν, τελευτήσει πᾶσα σὰρξ ὁμοθυμαδὸν, πᾶς δὲ βροτὸς εἰς γῆν ἀπελεύσεται, ὅθεν καὶ ἐπλάσθη. Ἴδὲ μὴ νουθετῇ, ἄκουε ταῦτα, ἐνωτίζου φωνὴν ῥημάτων. Ἴδε σὺ τὸν μισοῦντα ἄνομα, καὶ τὸν ὀλλύντα τοὺς πονηροὺς, ὄντα αἰώνιον δίκαιον. Ἀσεβὴς ὁ λέγων βασιλεῖ, παρανομεῖς, ἀσεβέστατε τοῖς ἄρχουσιν. Ὃς οὐκ ἐπαισχυνθῇ πρόσωπον ἐντίμου, οὐδὲ οἶδε τιμὴν θέσθαι ἀδροῖς θαυμασθῆναι πρόσωπα αὐτῶν. Κενὰ δὲ αὐτοῖς ἀποβήσεται, τὸ κεκραγέναι καὶ δεῖσθαι ἀνδρός· ἐχρήσαντο γὰρ παρανόμως, ἐκκλινομένων ἀδυνάτων. Αὐτὸς γὰρ ὁρατής ἐστιν ἔργων ἀνθρώπων, λέληθε δὲ αὐτὸν οὐδὲν ὧν πράσσουσιν. Οὐδὲ ἔσται τόπος τοῦ κρυβῆναι τοὺς ποιοῦντας τὰ ἄνομα· Ὅτι οὐκ ἐπ' ἄνδρα θήσει ἔτι. Ὁ γὰρ Κύριος πάντας ἐφορᾷ· ὁ καταλαμβάνων ἀνεξιχνίαστα, ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. Ὁ γνωρίζων αὐτῶν τὰ ἔργα, καὶ στρέψει νύκτα καὶ ταπεινωθήσοται. Ἔσβεσε δὲ ἀσεβεῖς, ὁρατοὶ δὲ ἐναντίον αὐτοῦ. Ὅτι ἐξέκλιναν ἐκ νόμου Θεοῦ, δικαιώματα δὲ αὐτοῦ οὐκ ἐπέγνωσαν, τοῦ ἐπαγαγεῖν ἐπ' αὐτὸν κραυγὴν πενήτων, καὶ κραυγὴν πτωχῶν εἰσακούσεται. Καὶ αὐτὸς ἡσυχίαν παρέξει, καὶ τίς καταδικάσεται; καὶ κρύψει πρόσωπον, καὶ τίς ὄψεται αὐτόν; καὶ κατὰ ἔθνους, καὶ κατὰ ἀνθρώπου ὁμοῦ. Βασιλεύων ἀνθρωπον ὑποκριτὴν ἀπὸ δυσκολίας λαοῦ. Ὅτι πρὸς τὸν ἰσχυρὸν ὁ λέγων, εἴληφα, οὐκ ἐνεχυράσω· Ἄνευ ἐμαυτοῦ ὄψομαι· σὺ δεῖξόν μοι, εἰ ἀδικίαν εἰργασάμην, οὐ μὴ προσθήσω. Μὴ ἀπὸ σοῦ ἀποτίσει αὐτὴν, ὅτι σὺ ἀπώσῃ; ὅτι σὺ ἐκλέξῃ καὶ οὐκ ἐγώ; καὶ τί ἔγνως, λάλησον. Διὸ συνετοὶ καρδίας

ἐροῦσι ταῦτα, ἀνὴρ δὲ σοφὸς ἀκήκοέ μου τὸ ῥῆμα. Ἰὼβ δὲ οὐκ ἐν συνέσει ἐλάλησε, τὰ ῥήματα αὐτοῦ οὐκ ἐν ἐπιστήμῃ. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ μάθε Ἰώβ, μὴ δῷς ἔτι ἀνταπόκρισιν ὥσπερ οἱ ἄφρονες· Ἵνα μὴ προσθῶμεν ἐφ’ ἁμαρτίας ἡμῶν, ἀνομία δὲ ἐφ’ ἡμῖν λογισθήσεται, πολλὰ λαλούντων ῥήματα ἐναντίον τοῦ Κυρίου.

## 35

Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, Τί τοῦτο ἡγήσω ἐν κρίσει; σὺ τίς εἶ, ὅτι εἶπας, δίκαιός εἰμι ἔναντι Κυρίου; Ἐγώ σοι δώσω ἀπόκρισιν, καὶ τοῖς τρισὶ φίλοις σου. Ἀνάβλεψον εἰς τὸν οὐρανὸν, καὶ ἴδε· κατάμαθε δὲ νέφη, ὡς ὑψηλὰ ἀπὸ σοῦ. Εἰ ἥμαρτες, τί πράξεις; εἰ δὲ καὶ πολλὰ ἠνόμησας, τί δύνασαι ποιῆσαι; Ἐπεὶ δὲ οὖν δίκαιος εἶ, τί δώσεις αὐτῷ; ἢ τί ἐκ χειρός σου λήψεται; Ἀνδρὶ τῷ ὁμοίῳ σου ἡ ἀσέβειά σου, καὶ υἱῷ ἀνθρώπου ἡ δικαιοσύνη σου. Ἀπὸ πλήθους συκοφαντούμενοι κεκράξονται, βοήσονται ἀπὸ βραχίονος πολλῶν. Καὶ οὐκ εἶπε, ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας με, ὁ κατατάσσων φυλακὰς νυκτερινὰς, ὁ διορίζων με ἀπὸ τετραπόδων γῆς, ἀπὸ δὲ πετεινῶν οὐρανοῦ; Ἐκεῖ κεκράξονται, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσῃ, καὶ ἀπὸ ὕβρεως πονηρῶν. Ἄτοπα γὰρ οὐ βούλεται ἰδεῖν ὁ Κύριος, αὐτὸς γὰρ ὁ παντοκράτωρ. Ὁρατής ἐστι τῶν συντελούντων τὰ ἄνομα, καὶ σώσει με· κρίθητι δὲ ἐναντίον αὐτοῦ, εἰ δύνασαι αὐτὸν αἰνέσαι, ὡς ἔστι καὶ νῦν. “Ὅτι οὐκ ἔστιν ἐπισκεπτόμενος ὀργὴν αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔγνω παράπτωμά τι σφόδρα· καὶ Ἰὼβ ματαίως ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ, ἐν ἀγνωσίᾳ ῥήματα βαρύνει.

## 36

Προσθεὶς δὲ ἔτι Ἐλιοὺς, λέγει, Μεῖνόν με μικρὸν ἔτι, ἵνα διδάξω σε· ἔτι γὰρ ἐν ἐμοί ἐστι λέξις. Ἀναλαβὼν τὴν ἐπιστήμην μου μακράν, ἔργοις δέ μου δίκαια ἐρῶ ἐπ’ ἀληθείας, καὶ οὐκ ἄδικα ῥήματα ἀδίκως συνιεῖς. Γίνωσκε δὲ, ὅτι ὁ Κύριος οὐ μὴ ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον, δυνατὸς ἰσχύϊ καρδίας ἀσεβῆ οὐ μὴ ζωοποιήσῃ, καὶ κρίμα πτωχῶν δώσει. Οὐκ ἀφελεῖ ἀπὸ δικαίου ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, καὶ μετὰ βασιλέων εἰς θρόνον, καὶ καθιεῖ αὐτοὺς εἰς νῖκος, καὶ ὑψωθήσονται. Καὶ οἱ πεπεδημένοι ἐν χειροπέδαις, συσχεθήσονται ἐν σχοινίοις πενίας. Καὶ ἀναγγελεῖ αὐτοῖς τὰ ἔργα αὐτῶν, καὶ τὰ παραπτώματα αὐτῶν, ὅτι ἰσχύσουσιν. Ἀλλὰ τοῦ δικαίου εἰσακούσεται· καὶ εἶπεν ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐξ ἀδικίας. Ἐὰν ἀκούσωσι, καὶ δουλεύσωσι, συντελέσουσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν ἐν ἀγαθοῖς, καὶ τὰ ἔτη αὐτῶν ἐν εὐπρεπείαις. Ἀσεβεῖς δὲ οὐ διασώζει, παρὰ τὸ μὴ βούλεσθαι αὐτοὺς εἰδέναι τὸν Κύριον, καὶ διότι νουθετούμενοι ἀνήκοοι ἦσαν. Καὶ ὑποκριταὶ καρδίᾳ τάξουσι θυμόν, οὐ βοήσονται, ὅτι ἔδησεν αὐτούς. Ἀποθάνοι τοίνυν ἐν νεότητι ἡ ψυχὴ αὐτῶν, ἡ δὲ ζωὴ αὐτῶν τιτρωσκομένη ὑπὸ ἀγγέλων, ἀνθ’ ὧν ἔθλιψαν ἀσθενῆ καὶ ἀδύνατον, κρίμα δὲ πραέων ἐκθήσει. Καὶ προσεπιηπάτησέ σε ἐκ στόματος ἐχθροῦ, ἄβυσσος κατάχυσις ὑποκάτω αὐτῆς, καὶ κατέβη τράπεζά σου πλήρης πιότητος. Οὐχ ὑστερήσει δὲ ἀπὸ δικαίων κρίμα, θυμὸς δὲ ἐπ’ ἀσεβεῖς ἔσται, δι’ ἀσέβειαν δώρων ὧν ἐδέχοντο ἐπ’ ἀδικίαις. Μή σε ἐκκλινάτω ἐκὼν ὁ νοῦς δεήσεως ἐν ἀνάγκῃ ὄντων ἀδυνάτων, καὶ πάντας τοὺς κραταιοῦντας ἰσχὺν μὴ ἐξελκύσῃς τὴν νύκτα, τοῦ ἀναβῆναι λαοὺς ἀντ’ αὐτῶν, ἀλλὰ φύλαξαι μὴ πράξῃς ἄτοκα· ἐπὶ τοὺτων γὰρ ἐξείλω ἀπὸ πτωχείας. Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς κραταιώσει ἐν ἰσχύι αὐτοῦ· τίς γάρ ἐστι κατ’ αὐτὸν δυνάστης; Τίς δέ ἐστιν ὁ ἐτάζων αὐτοῦ τὰ ἔργα; ἢ τίς ὁ εἰπὼν, ἔπραξεν ἄδικα; Μνήσθητι,

ὅτι μεγάλα ἐστὶν αὐτοῦ τὰ ἔργα, ὧν ἦρξαν ἄνδρες. Πᾶς ἄνθρωπος εἶδεν ἐν ἑαυτῷ, ὅσοι τιτρωσκόμενοί εἰσι βροτοί. Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς πολύς, καὶ οὐ γνωσόμεθα· ἀριθμὸς ἐτῶν αὐτοῦ καὶ ἀπέραντος. Ἀριθμηταὶ δὲ αὐτῷ σταγόνες ὑετοῦ, καὶ ἐπιχυθήσονται ὑετῷ εἰς νεφέλην. Ῥυήσονται παλαιώματα, ἐσκίασε δὲ νέφη ἐπὶ ἀμυθήτῳ βροτῷ· Καὶ ἐὰν συνῇ ἐπεκτάσεις νεφέλης, ἰσότητα σκηνῆς αὐτοῦ, ἰδοὺ ἐκτενεῖ ἐπ’ αὐτὸν ἠδὼ, καὶ ῥιζώματα τῆς θαλάσσης ἐκάλυψεν. Ἐν γὰρ αὐτοῖς κρινεῖ λαούς, δώσει τροφὴν τῷ ἰσχύοντι. Ἐπὶ χειρῶν ἐκάλυψε φῶς, καὶ ἐνετείλατο περὶ αὐτῆς ἐν ἀπαντῶντι. Ἀναγγελεῖ περὶ αὐτοῦ φίλον αὐτοῦ Κύριος, κτῆσι καὶ περὶ ἀδικίας.

# 37

Καὶ ἀπὸ ταύτης ἐταράχθη ἡ καρδία μου, καὶ ἀπερρύη ἐκ τοῦ τόπου αὐτῆς. Ἄκουε ἀκοὴν ἐν ὀργῇ θυμοῦ Κυρίου, καὶ μελέτη ἐκ στόματος αὐτοῦ ἐξελεύσεται. Ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, καὶ τὸ φῶς αὐτοῦ ἐπὶ πτερύγων τῆς γῆς. Ὀπίσω αὐτοῦ βοήσεται φωνῇ, βροντήσει ἐν φωνῇ ὕβρεως αὐτοὺ· καὶ οὐκ ἀνταλλάξει αὐτούς, ὅτι ἀκούσει φωνὴν αὐτοῦ. Βροντήσει ὁ ἰσχυρὸς ἐν φωνῇ αὐτοῦ θαυμάσια· ἐποίησε γὰρ μεγάλα ἃ οὐκ ᾔδειμεν, συντάσσων χιόνι, γίνου ἐπὶ τῆς, γῆς, καὶ χειμὼν ὑετὸς, καὶ χειμὼν ὑετῶν δυναστείας αὐτοῦ. Ἐν χειρὶ παντὸς ἀνθρώπου κατασφραγίζει, ἵνα γνῷ πᾶς ἄνθρωπος τὴν ἑαυτοῦ ἀσθένειαν. Εἰσῆλθε δὲ θηρία ὑπὸ τὴν σκέπην, ἡσύχασαν δὲ ἐπὶ κοίτης. Ἐκ ταμιείων ἐπέρχονται ὀδύναι, ἀπὸ δὲ ἀκρωτηρίων ψῦχος· Καὶ ἀπὸ πνοῆς ἰσχυροῦ δώσει πάγος· οἰακίζει δὲ τὸ ὕδωρ ὡς ἐὰν βούληται, καὶ ἐκλεκτὸν καταπλάσσει νεφέλη· διασκορπιεῖ νέφος φῶς αὐτοῦ,

καὶ αὐτὸς κυκλώματα διαστρέψει, ἐν θεεβουλαθὼθ, εἰς ἔργα αὐτῶν· πάντα ὅσα ἂν ἐντείληται αὐτοῖς, ταῦτα συντέτακται παρ’ αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς, ἐάν τε εἰς παιδείαν, ἐὰν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, ἐὰν εἰς ἔλεος εὑρήσει αὐτόν. Ἐνωτίζου ταῦτα, Ἰώβ· στῆθι νουθετούμενος δύναμιν Κυρίου. Οἴδαμεν ὅτι ὁ Θεὸς ἔθετο ἔργα αὐτοῦ, φῶς ποιήσας ἐκ σκότους. Ἐπίσταται δὲ διάκρισιν νεφῶν, ἐξαίσια δὲ πτώματα πονηρῶν. Σοῦ δὲ ἡ στολὴ θερμὴ, ἡσυχάζεται δὲ ἐπὶ τῆς γῆς. Στερεώσεις μετ’ αὐτοῦ εἰς παλαιώματα, ἰσχυραὶ ὡς ὅρασις ἐπιχύσεως. Διατὶ δίδαξόν με, τί ἐροῦμεν αὐτῷ; καὶ παυσώμεθα πολλὰ λέγοντες. Μὴ βίβλος ἢ γραμματεύς μοι παρέστηκεν, ἵνα ἄνθρωπον ἑστηκὼς κατασιωπήσω; Πᾶσι δὲ οὐχ ὁρατὸν τὸ φῶς, τηλαυγές ἐστιν ἐν τοῖς παλαιώμασιν, ὥσπερ τὸ παρ’ αὐτοῦ ἐπὶ νεφῶν. Ἀπὸ Βορρᾶ νέφη χρυσαυγοῦντα, ἐπὶ τούτοις μεγάλη ἡ δόξα καὶ τιμὴ παντοκράτορος, καὶ οὐχ εὑρίσκομεν ἄλλον ὅμοιον τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ· ὁ τὰ δίκαια κρίνων, οὐκ οἴει ἐπακούειν αὐτόν; Διὸ φοβηθήσονται αὐτὸν οἱ ἄνθρωποι, φοβηθήσονται δὲ αὐτὸν καὶ οἱ σοφοὶ καρδίᾳ.

# 38

Μετὰ δὲ τὸ παύσασθαι Ἐλιοὺν τῆς λέξεως, εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Ἰὼβ διὰ λαίλαπος καὶ νεφῶν, Τίς οὗτος ὁ κρύπτων με βουλὴν, συνέχεν δὲ ῥήματα ἐν καρδίᾳ, ἐμὲ δὲ οἴεται κρύπτειν; Ζώσαι ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου· ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ μοι ἀποκρίθητι. Ποῦ ἦς ἐν τῷ θεμελιοῦν με τὴν γῆν; ἀπάγγειλον δέ μοι εἰ ἐπίστῃ σύνεσιν. Τίς ἔθετο τὰ μέτρα αὐτῆς, εἰ οἶδας; ἢ τίς ὁ ἐπαγαγὼν σπαρτίον ἐπ’ αὐτῆς; Ἐπὶ τίνος οἱ κρίκοι αὐτῆς πεπήγασι; τίς δέ ἐστιν ὁ βαλὼν

λίθον γωνιαῖον ἐπ’ αὐτῆς; Ὅτε ἐγενήθησαν ἄστρα, ᾔνεσάν με φωνῇ μεγάλῃ πάντες ἄγγελοί μου. Ἔφραξα δὲ θάλασσαν πύλαις, ὅτε ἐμαίμασσεν ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐγῆς ἐκπορευομένη· Ἐθέμην δὲ αὐτῇ νέφος ἀμφίασιν, ὁμίχλῃ δὲ αὐτὴν ἐσπαργάνωσα. Ἐθέμην δὲ αὐτῇ ὅρια, περιθεὶς κλεῖθρα καὶ πύλας. Εἶπα δὲ αὐτῇ, μέχρι τούτου ἐλεύσῃ, καὶ οὐχ ὑπερβήσῃ, ἀλλ’ ἐν σεαυτῇ συντριβήσεταί σου τὰ κύματα. Ἦ ἐπὶ σοῦ συντέταχα φέγγος πρωϊνόν; Ἐωσφόρος δὲ ἶδε τὴν ἑαυτοῦ τάξιν, ἐπιλαβέσθαι πτερύγων γῆς, ἐκτινάξαι ἀσεβεῖς ἐξ αὐτῆς; Ἦ σὺ λαβὼν γῆν πηλὸν, ἔπλασας ζῶον, καὶ λαλητὸν αὐτὸν ἔθου ἐπὶ γῆς; Ἀφεῖλες δὲ ἀπὸ ἀσεβῶν τὸ φῶς, βραχίονα δὲ ὑπερηφάνων συνέτριψας; Ἦλθες δὲ ἐπὶ πηγὴν θαλάσσης, ἐν δὲ ἴχνεσιν ἀβύσσου περιεπάτησας; Ἀνοίγονται δέ σοι φόβῳ πύλαι θανάτου, πυλωροὶ δὲ ᾅδου ἰδόντες σε ἔπτηξαν; Νενουθέτησαι δὲ τὸ εὖρος τῆς ὑπ’ οὐρανόν; ἀνάγγειλον δή μοι, πόση τίς ἐστι; Ποίᾳ δὲ γῇ αὐλίζεται τὸ φῶς; σκότους δὲ ποῖος ὁ τόπος; Εἰ ἀγάγοις με εἰς ὅρια αὐτῶν, εἰ δὲ καὶ ἐπίστασαι τρίβους αὐτῶν· Οἶδα ἄρα ὅτι τότε γεγέννησαι, ἀριθμὸς δὲ ἐτῶν σου πολύς; Ἦλθες δὲ ἐπὶ θησαυροὺς χιόνος, θησαυροὺς δὲ χαλάζης ἑώρακας; Ἀπόκειται δέ σοι εἰς ὥραν ἐχθρῶν, εἰς ἡμέραν πολέμων καὶ μάχης; Πόθεν δὲ ἐκπορεύεται πάχνη, ἢ διασκεδάννυται Νότος εἰς τὴν ὑπ’ οὐρανόν; Τίς δὲ ἡτοίμασεν ὑετῷ λάβρῳ ῥύσιν, ὁδὸν δὲ κυδοιμῶν, τοῦ ὑετίσαι ἐπὶ γῆν οὗ οὐκ ἀνήρ, ἔρημον οὗ οὐχ ὑπάρχει ἄνθρωπος ἐν αὐτῇ, τοῦ χορτάσαι ἄβατον καὶ ἀοίκητον, καὶ τοῦ ἐκβλαστῆσαι ἔξοδον χλόης; Τίς ἐστιν ὑετοῦ πατήρ; τίς δέ ἐστιν ὁ τετοκὼς βώλους δρόσου; Ἐκ γαστρὸς δὲ τίνος ἐκπορεύεται ὁ κρύσταλλος; πάχνην δὲ ἐν οὐρανῷ τίς τέτοκεν, ἢ καταβαίνει ὥσπερ ὕδωρ ῥέον; πρόσωπον ἀσεβοῦς τίς ἔπτηξε; Συνῆκας δὲ δεσμὸν Πλειάδος, καὶ φραγμὸν Ὠρίωνος ἤνοιξας; Ἦ διανοίξεις μαζουρὼθ ἐν καιρῷ

αὐτοῦ, καὶ ἔσπερον ἐπὶ κόμης αὐτοῦ ἄξεις αὐτά; Ἐπίστασαι δὲ τροπὰς οὐρανοῦ, ἢ τὰ ὑπ’ οὐρανὸν ὁμοθυμαδὸν γινόμενα; καλέσεις δὲ νέφος φωνῇ, καὶ τρόμῳ ὕδατος λάβρου ὑπακούσεταί σου; Ἀποστελεῖς δὲ κεραυνοὺς καὶ πορεύσονται; ἐροῦσι δέ σοι, τί ἐστι; Τίς δὲ ἔδωκε γυναιξὶν ὑφάσματος σοφίαν, ἢ ποικιλτικὴν ἐπιστήμην; Τίς δὲ ὁ ἀριθμῶν νέφη σοφίᾳ, οὐρανὸν δὲ εἰς γῆν ἔκλινε; Κέχυται δὲ ὥσπερ γῆ κονία, κεκόλληκα δὲ αὐτὸν ὥσπερ λίθῳ κύβον. Θηρεύσεις δὲ λέουσι βορὰν, ψυχὰς δὲ δρακόντων ἐμπλήσεις; Δεδοίκασι γὰρ ἐν κοίταις αὐτῶν, κάθηνται δὲ ἐν ὕλαις ἐνεδρεύοντες. Τίς δὲ ἡτοίμασε κόρακι βοράν; νεοσσοὶ γὰρ αὐτοῦ πρὸς Κύριον κεκράγασι πλανώμενοι, τὰ σῖτα ζητοῦντες.

# 39

Εἰ ἔγνως καιρὸν τοκετοῦ τραγελάφων πέτρας, ἐφύλαξας δὲ ὠδῖνας ἐλάφων, ἠρίθμησας δὲ μῆνας αὐτῶν πλήρεις τοκετοῦ αὐτῶν, ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἔλυσας, ἐξέθρεψας δὲ αὐτῶν τὰ παιδία ἔξω φόβου, ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἐξαποστελεῖς, ἀποῤῥήξουσι τὰ τέκνα αὐτῶν, πληθυνθήσονται ἐν γενγήματι· ἐξελεύσονται, καὶ οὐ μὴ ἀνακάμψουσιν αὐτοῖς. Τίς δέ ἐστιν ὁ ἀφεὶς ὄνον ἄγριον ἐλεύθερον; δεσμοὺς δὲ αὐτοῦ τίς ἔλυσεν; Ἐθέμην δὲ τὴν δίαιταν αὐτοῦ ἔρημον, καὶ τὰ σκηνώματα αὐτοῦ ἁλμυρίδα. Καταγελῶν πολυοχλίας πόλεως, μέμψιν δὲ φορολόγου οὐκ ἀκούων, κατασκέψεται ὄρη νομὴν αὐτοῦ, καὶ ὀπίσω παντὸς χλωροῦ ζητεῖ. Βουλήσεταί δέ σοι μονόκερως δουλεῦσαι, ἢ κοιμηθῆναι ἐπὶ φάτνης σου; Δήσεις δὲ ἐν ἰμᾶσι ζυγὸν αὐτοῦ, ἢ ἑλκύσει σου αὔλακας ἐν πεδίῳ; Πέποιθας δὲ ἐπ’ αὐτῷ, ὅτι πολλὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, ἐπαφήσεις

δὲ αὐτῷ τὰ ἔργα σου; Πιστεύσεις δὲ, ὅτι ἀποδώσει σοι τὸν σπόρον, εἰσοίσει δέ σου τὸν ἅλωνα; Πτέρυξ τερπομένων νεέλασσα, ἐὰν συλλάβῃ ἀσίδα καὶ νέσσα· Ὅτι ἀφήσει εἰς γῆν τὰ ὠὰ αὐτῆς, καὶ ἐπὶ χοῦν θάλψει, καὶ ἐπελάθετο, ὅτι ποῦς σκορπιεῖ, καὶ θηρία ἀγροῦ καταπατήσει. Ἀπεσκλήρυνε τὰ τέκνα ἑαυτῆς, ὥστε μὴ ἑαυτήν· εἰς κενὸν ἐκοπίασεν ἄνευ φόβου. Ὅτι κατεσιώπησεν αὐτῇ ὁ Θεὸς σοφίαν, καὶ οὐκ ἐπεμέρισεν αὐτῇ ἐν τῇ συνέσει. Κατὰ καιρὸν ἐν ὕψει ὑψώσει, καταγελάσεται ἵππου, καὶ τοῦ ἐπιβάτου αὐτοῦ. Ἦ σὺ περιέθηκας ἵππῳ δύναμιν, ἐνέδυσας δὲ τραχήλῳ αὐτοῦ φόβον; Περιέθηκας δὲ αὐτῷ πανοπλίαν; δόξαν δὲ στηθέων αὐτοῦ τόλμῃ. Ἀνορύσσων ἐν πεδίῳ γαυριᾷ, ἐκπορεύεται δὲ εἰς πεδίον ἐν ἰσχύϊ. Συναντῶν βασιλεῖ καταγελᾷ, καὶ οὐ μὴν ἀποστραφῇ ἀπὸ σιδήρου. Ἐπ’ αὐτῷ γαυριᾷ τόξον καὶ μάχαιρα, καὶ ὀργὴ ἀφανιεῖ τὴν γῆν· καὶ οὐ μὴ πιστεύσει, ἕως ἂν σημάνῃ σάλπιγξ. Σάλπιγγος δὲ σημαινούσης, λέγει, εὖγε· πόῤῥωθεν δὲ ὀσφραίνεται πολέμου σὺν ἅλματι καὶ κραυγῇ. Ἐκ δὲ τῆς σῆς ἐπιστήμης ἔστηκεν ἱέραξ, ἀναπετάσας τὰς πτέρυγας, ἀκίνητος, καθορῶν τὰ πρὸς Νότον; Ἐπὶ δὲ σῷ προστάγματι ὑψοῦται ἀετὸς, γὺψ δὲ ἐπὶ νοσσιᾶς αὐτοῦ καθεσθεὶς αὐλίζεται, ἐπ’ ἐξοχῇ πέτρας, καὶ ἀποκρύφῳ, ἐκεῖσε ὢν ζητεῖ τὰ σῖτα, πόῤῥωθεν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ σκοπεύουσι. Νεοσσοὶ δὲ αὐτοῦ φύρονται ἐν αἵματι, οὗ δ’ ἂν ὦσι τεθνεῶτες, παραχρῆμα εὑρίσκονται.

# 40

Καὶ ἀπεκρίθη Κύριος ὁ Θεὸς τῷ Ἰὼβ, καὶ εἶπε, μὴ κρίσιν μετὰ ἱκανοῦ ἐκκλίνει; ἐλέγχων δὲ Θεὸν, ἀποκριθήσεται αὐτήν.

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ λέγει τῷ Κυρίῳ, τί ἔτι ἐγὼ κρίνομαι, νουθετούμενος καὶ ἐλέγχων Κύριον, ἀκούων τοιαῦτα οὐθὲν ὤν; ἐγὼ δὲ τίνα ἀπόκρισιν δῶ πρὸς ταῦτα; χεῖρα θήσω ἐπὶ στόματί μου. Ἅπαξ λελάληκα, ἐπὶ δὲ τῷ δευτέρῳ οὐ προσθήσω. Ἔτι δὲ ὑπολαβὼν ὁ Κύριος, εἶπε τῷ Ἰὼβ ἐκ τοῦ νέφους, Μὴ, ἀλλὰ ζῶσαι ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου, ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ μοι ἀπόκριναι. Μὴ ἀποποιοῦ μου τὸ κρίμα· οἴει δέ με ἄλλως σοι κεχρηματικέναι, ἢ ἵνα ἀναφανῇς δίκαιος; Ἢ βραχίων σοί ἐστι κατὰ τοῦ Κυρίου, ἢ φωνῇ κατ' αὐτοῦ βροντᾷς; Ἀνάλαβε δὴ ὕψος καὶ δύναμιν, δόξαν δὲ καὶ τιμὴν ἀμφίασαι. Ἀπόστειλον δὲ ἀγγέλους ὀργῇ, πάντα δὲ ὑβριστὴν ταπείνωσον. Ὑπερήφανον δὲ σβέσον, σῆψον δὲ ἀσεβεῖς παραχρῆμα. Κρύψον δὲ εἰς γῆν ὁμοθυμαδόν, τὰ δὲ πρόσωπα αὐτῶν ἀτιμίας ἔμπλησον. Ὁμολογήσω ὅτι δύναται ἡ δεξιά σου σῶσαι. Ἀλλὰ δὴ ἰδοὺ θηρία παρὰ σοὶ, χόρτον ἴσα βουσὶν ἐσθίουσιν. Ἰδοὺ δὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ ἐπ' ὀσφύϊ, ἡ δὲ δύναμις αὐτοῦ ἐπ' ὀμφαλοῦ γαστρός· Ἔστησεν οὐρὰν ὡς κυπάρισσον, τὰ δὲ νεῦρα αὐτοῦ συμπέπλεκται. Αἱ πλευραὶ αὐτοῦ, πλευραὶ χάλκειαι, ἡ δὲ ῥάχις αὐτοῦ σίδηρος χυτός. Τουτέστιν ἀρχὴ πλάσματος Κυρίου· πεποιημένον ἐγκαταπαίζεσθαι ὑπὸ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ. Ἐπελθὼν δὲ ἐπ' ὄρος ἀκρότομον, ἐποίησε χαρμονὴν τετράποσιν ἐν τῷ ταρτάρῳ. Ὑπὸ παντοδαπὰ δένδρα κοιμᾶται, παρὰ πάπυρον καὶ κάλαμον καὶ βούτομον. Σκιάζονται δὲ ἐν αὐτῷ δένδρα μεγάλα σὺν ῥαδάμνοις, καὶ κλῶνες ἀγροῦ. Ἐὰν γένηται πλημμύρα, οὐ μὴ αἰσθηθῇ· πέποιθεν, ὅτι προσκρούσει ὁ Ἰορδάνης εἰς τὸ στόμα αὐτοῦ. Ἐν τῷ ὀφθαλμῷ αὐτοῦ δέξεται αὐτόν, ἐνσκολιευόμενος τρήσει ῥῖνα. Ἄξεις δὲ δράκοντα ἐν ἀγκίστρῳ, περιθήσεις δὲ φορβαίεαν περὶ ῥῖνα αὐτοῦ; Ἢ δήσεις κρίκον ἐν τῷ μυκτῆρι αὐτοῦ, ψελλίῳ δὲ τρυπήσεις τὸ χεῖλος αὐτοῦ; Λαλήσει δέ σοι δεήσει,

ἱκετηρίᾳ μαλακῶς; Θήσεται δὲ μετὰ σοῦ διαθήκην; λήψῃ δὲ αὐτὸν δοῦλον αἰώνιον; Παίξῃ δὲ ἐν αὐτῷ ὥσπερ ὀρνέῳ; ἢ δήσεις αὐτὸν ὥσπερ στρουθίον παιδίῳ; Ἐνσιτοῦνται δὲ ἐν αὐτῷ ἔθνη, μεριτεύονται δὲ αὐτὸν Φοινίκων ἔθνη; Πᾶν δὲ πλωτὸν συνελθὸν οὐ μὴ ἐνέγκωσι βύρσαν μίαν οὐρᾶς αὐτοῦ, καὶ ἐν πλοίοις ἁλιέων κεφαλὴν αὐτοῦ. Ἐπιθήσεις δὲ αὐτῷ χεῖρα, μνησθεὶς πόλεμον τὸν γινόμενον ἐν στόματι αὐτοῦ, καὶ μηκέτι γινέσθω.

# 41

Οὐχ ἑώρακας αὐτόν; οὐδὲ ἐπὶ τοῖς λεγομένοις τεθαύμακας; Οὐ δέδοικας, ὅτι ἡτοίμασταί μοι; τίς γάρ ἐστιν ὁ ἐμοὶ ἀντιστάς; Ἢ τίς ἀντιστήσεταί μοι, καὶ ὑπομενεῖ; εἰ πᾶσα ἡ ὑπ’ οὐρανὸν ἐμή ἐστιν, Οὐ σιωπήσομαι δι’ αὐτόν· καὶ λόγον δυνάμεως ἐλεήσει τὸν ἴσον αὐτῷ. Τίς ἀποκαλύψει πρόσωπον ἐνδύσεως αὐτοῦ, εἰς δὲ πτύξιν θώρακος αὐτοῦ τίς ἂν εἰσέλθοι; Πύλας προσώπου αὐτοῦ τίς ἀνοίξει; κύκλῳ ὀδόντων αὐτοῦ φόβος. Τὰ ἔγκατα αὐτοῦ ἀσπίδες χάλκεαι. σύνδεσμος δὲ αὐτοῦ, ὥσπερ σμυρίτης λίθος. Εἷς τοῦ ἑνὸς κολλῶνται, πνεῦμα δὲ οὐ μὴ διέλθῃ αὐτόν. Ἀνὴρ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ προσκολληθήσεται· συνέχονται καὶ οὐ μὴ ἀποσπασθῶσιν. Ἐν πταρμῷ αὐτοῦ ἐπιφαύσκεται φέγγος, οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἶδος Ἑωσφόρου. Ἐκ στόματος αὐτοῦ ἐκπορεύονται ὡς λαμπάδες καιόμεναι, καὶ διαῤῥιπτοῦνται ἐς ἐσχάραι πυρός. Ἐκ μυκτήρων αὐτοῦ ἐκπορεύεται καπνὸς καμίνου καιομένης πυρὶ ἀνθράκων. Ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἄνθρακες, φλὸξ δὲ ἐκ στόματος αὐτοῦ ἐκπορεύεται· Ἐν δὲ τραχήλῳ αὐτοῦ αὐλίζεται δύναμις, ἔμπροσθεν αὐτοῦ τρέχει ἀπώλεια. Σάρκες δὲ σώματος αὐτοῦ κεκόλληνται· καταχέει ἐπ’

αὐτὸν, οὐ σαλευθήσεται. Ἡ καρδία αὐτοῦ πέπηγεν ὡς λίθος, ἔστηκε δὲ ὥσπερ ἄκμων ἀνήλατος. Στραφέντος δὲ αὐτοῦ, φόβος θηρίοις τετράποσιν ἐπὶ γῆς ἀλλομένοις. Ἐὰν συναντήσωσιν αὐτῷ λόγχαι, οὐδὲν μὴ ποιήσωσι, δόρυ, καὶ θώρακα. Ἥγηται μὲν γὰρ σίδηρον ἄχυρα, χαλκὸν δὲ ὥσπερ ξύλον σαθρόν. Οὐ μὴ τρώσῃ αὐτὸν τόξον χάλκεον· ἥγηται μὲν πετροβόλον χόρτον. Ὡς καλάμη ἐλογίσθησαν σφυρά, καταγελᾷ δὲ σεισμοῦ πυρφόρου. Ἡ στρωμνὴ αὐτοῦ ὀβελίσκοι ὀξεῖς, πᾶς δὲ χρυσὸς θαλάσσης ὑπ’ αὐτὸν ὥσπερ πηλὸς ἀμύθητος. Ἀναζεῖ τὴν ἄβυσσον ὥσπερ χαλκεῖον· ἥγηται δὲ τὴν θάλασσαν ὥσπερ ἐξάλειπτρον, τὸν δὲ τάρταρον τῆς ἀβύσσου ὥσπερ αἰχμάλωτον· ἐλογίσατο ἄβυσσον εἰς περίπατον. Οὐκ ἔστιν οὐδὲν ἐπὶ τῆς γῆς ὅμοιον αὐτῷ, πεποιημένον ἐκαταπαίζεσθαι ὑπὸ τῶν ἀγγέλων μου. Πᾶν ὑψηλὸν ὁρᾷ· αὐτὸς δὲ βασιλεὺς πάντων τῶν ἐν τοῖς ὕδασιν.

# 42

Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει τῷ Κυρίῳ, Οἶδα ὅτι πάντα δύνασαι, ἀδυνατεῖ δέ σοι οὐδέν. Τίς γάρ ἐστιν ὁ κρύπτων σε βουλήν; φειδόμενος δὲ ῥημάτων, καὶ σὲ οἴεται κρύπτειν; τίς δὲ ἀναγγελεῖ μοι ἃ οὐκ ᾔδειν, μεγάλα καὶ θαυμαστὰ ἃ οὐκ ἐπιστάμην; Ἄκουσον δέ μου Κύριε, ἵνα κἀγὼ λαλήσω· ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ με δίδαξον. Ἀκοὴν μὲν ὠτὸς ἤκουόν σου τὸ πρότερον, νυνὶ δὲ ὁ ὀφθαλμός μου ἑώρακέ σε. Διὸ ἐφαύλισα ἐμαυτὸν, καὶ ἐτάκην· ἥγημαι δὲ ἐμαυτὸν γῆν καὶ σποδόν. Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ λαλῆσαι τὸν Κύριον πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα τῷ Ἰώβ, εἶπεν ὁ Κύριος Ἐλὺιφὰς τῷ Θαιμανὺίτῃ, ἥμαρτες σὺ, καὶ οἱ δὺο φίλοι σου· οὐ γὰρ ἐλαλήσατε ἐνώπιόν μου

ἀληθὲς οὐδὲν, ὥσπερ ὁ θεράπων μου Ἰώβ. Νῦν δὲ λάβετε ἑπτὰ μόσχους, καὶ ἑπτὰ κριοὺς, καὶ πορεύθητε πρὸς τὸν θεράποντά μου Ἰὼβ, καὶ ποιήσει κάρπωσιν ὑπὲρ ὑμῶν. Ἰὼβ δὲ ὁ θεράπων μου εὔξεται περὶ ὑμῶν, ὅτι εἰ μὴ πρόσωπον αὐτοῦ λήψομαι· εἰ μὴ γὰρ δι’ αὐτὸν, ἀπώλεσα ἂν ὑμᾶς· οὐ γὰρ ἐλαλήσατε ἀληθὲς κατὰ τοῦ θεράποντός μου Ἰώβ. Ἐπορεύθη δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, καὶ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, καὶ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, καὶ ἐποίησαν καθὼς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ Κύριος· καὶ ἔλυσε τὴν ἁμαρτίαν αὐτοῖς διὰ Ἰὼβ. Ὁ δὲ Κύριος ηὔξησε τὸν Ἰώβ· εὐξαμένου δὲ αὐτοῦ καὶ περὶ τῶν φίλων αὐτοῦ, ἀφῆκεν αὐτοῖς τὴν ἁμαρτίαν· ἔδωκε δὲ ὁ Κύριος διπλᾶ, ὅσα ἦν ἔμπροσθεν Ἰὼβ εἰς διπλασιασμόν. Ἤκουσαν δὲ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ πάντα τὰ συμβεβηκότα αὐτῷ, καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν, καὶ πάντες ὅσοι ᾔδεισαν αὐτὸν ἐκ πρώτου· φαγόντες δὲ καὶ πιόντες παρ’ αὐτῷ παρεκάλεσαν αὐτὸν, καὶ ἐθαύμασαν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐπήγαγεν ἐπ’ αὐτῷ ὁ Κύριος· ἔδωκε δὲ αὐτῷ ἕκαστος ἀμνάδα μίαν, καὶ τετράδραχμον χρυσοῦ καὶ ἀσήμου. Ὁ δὲ Κύριος εὐλόγησε τὰ ἔσχατα Ἰὼβ, ἢ τὰ ἔμπροσθεν· ἦν δὲ τὰ κτήνη αὐτοῦ, πρόβατα μύρια τετρακισχίλια, κάμηλοι ἐξακισχίλιαι, ζεύγη βοῶν χίλια, ὄνοι θήλειαι νομάδες χίλιαι. Γεννῶνται δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ, καὶ θυγατέρες τρεῖς. Καὶ ἐκάλεσε τὴν μὲν πρώτην, Ἡμέραν· τὴν δὲ δευτέραν, Κασίαν· τὴν δὲ τρίτην, Ἀμαλθαίας κέρας. Καὶ οὐχ εὑρέθησαν κατὰ τὰς θυγατέρας Ἰὼβ, βελτίους αὐτῶν ἐν τῇ ὑπ’ οὐρανόν· ἔδωκε δὲ αὐταῖς ὁ πατὴρ κληρονομίαν ἐν τοῖς ἀδελφοῖς. Ἔζησε δὲ Ἰὼβ μετὰ τὴν πληγὴν ἔτη ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· τὰ δὲ πάντα ἔτη ἔζησε, διακόσια τεσσράκοντα· καὶ Σἶδεν Ἰὼβ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν αὐτοῦ, τετάρτην γενεάν. Καὶ ἐτελεύτησεν Ἰὼβ πρεσβύτερος, καὶ πλήρης ἡμερῶν·

# ΔΑΝΙΗΛ

## 1

Ἐπὶ βασιλέως Ἰωακεὶμ τῆς Ἰουδαίας ἔτους τρίτου παραγενόμενος Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐπολιόρκει αὐτήν. καὶ παρέδωκεν αὐτὴν Κύριος εἰς χεῖρας αὐτοῦ καὶ Ἰωακεὶμ τὸν βασιλέα τῆς Ἰουδαίας καὶ μέρος τι τῶν ἱερῶν σκευῶν τοῦ κνρίου. καὶ ἀπήνεγκεν αὐτὰ εἰς Βαβυλῶνα εἴς γῆν Σεναὰρ εἰς οἶκον τοῦ θεοῦ αὐτοῦ, καὶ τὰ σκεύη· καὶ ἀπηρείσατο αὐτὰ ἐν τῷ εἰδωλείῳ αὐτοῦ. καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἀβιεσδρὶ τῷ ἑαυτοῦ ἀρχιευνούχῳ ἀγαγεῖν αὐτῷ ἐκ τῶν υἱῶν τῶν μεγιστάνων τοῦ Ἰσραὴλ καὶ ἐκ τοῦ βασιλικοῦ γένους καὶ ἐκ τῶν ἐπιλέκτων, νεανίσκους ἀμώμους καὶ εὐειδεῖς καὶ ἐπιστήμονας ἐν πάσῃ σοφίᾳ καὶ γραμματικοὺς καὶ συνετοὺς καὶ σοφούς, καὶ ἰσχύοντας ὥστε εἶναι ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ βασιλέως, καὶ διδάξαι αὐτοὺς γράμματα καὶ διάλεκτον Χαλδαικήν καὶ δίδοσθαι αὐτοῖς ἔκθεσιν ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως καθ’ ἑκάστην ἡμέραν καὶ ἀπὸ τῆς βασιλικῆς τραπέζης καὶ ἀπὸ τοῦ οἴνου οὗ πίνει ὁ βασιλεύς, καὶ ἐκπαιδεῦσαι αὐτοὺς ἔτη τρία, καὶ ἐκ τούτων στῆσαι ἔμπροσθεν τοῦ βασιλέως. καὶ ἦσαν ἐκ τοῦ γένους τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ τῶν ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας Δανιὴλ,

Ἀνανίας, Μισαήλ, Ἀζαρίας. καὶ ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὁ ἀρχιευνοῦχος ὀνόματα, τῷ μέν Δανιὴλ Βαλτασάρ, τῷ δὲ Ἀνανίᾳ Σεδράχ. καὶ τῷ Μισαὴλ Μισάχ, καὶ τῷ Ἀζαρίᾳ Ἀβδεναγώ. καὶ ἐνεθυμήθη Δανιὴλ ἐν τῇ καρδίᾳ ὅπως μὴ ἀλισγηθῇ ἐν τῷ δείπνῳ τοῦ βασιλέως καὶ ἐν ᾧ πίνει οἴνῳ, καὶ ἠξίωσεν τὸν ἀρχιευνοῦχον ἵνα μὴ συμμολυνθῇ. καὶ ἔδωκε Κύριος τῷ Δανιὴλ τιμὴν καὶ χάριν ἐναντίον τοῦ ἀρχιευνούχου. καὶ εἶπεν ὁ ἀρχιευνοῖχος τῷ Δανιὴλ Ἀγωνιῶ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα τὸν ἐκτάξαντα τὴν βρῶσιν ὑμῶν καὶ τὴν πόσιν ὑμῶν, ἵνα μὴ ἴδῃ τὰ πρόσωπα ὑμῶν διατετραμμένα καὶ ἀσθενῆ παρὰ τοὺς συντρεφομένους ὑμῖν νεανίας τῶν ἀλλογενῶν, καὶ κινδυνεύσω τῷ ἰδίῳ τραχήλῳ. καὶ εἶπεν Δανιὴλ Ἀβιεσδρὶ τῷ ἀναδειχθέντι ἀρχιευνούχῳ ἐπὶ τὸν Δανιήλ, Ἀνανίαν, Μισαήλ, Ἀζαρίαν Πείρασον δὴ τοὺς παῖδάς σου ἐφ’ ἡμέρας δέκα, καὶ δοθήτω ἡμῖν ἀπὸ τῶν ὀσπρίων τῆς γῆς, ὥστε κάπτειν καὶ ὑδροποτεῖν· καὶ ἐὰν φανῇ ἡ ὄψις ἡμῶν διατετραμμένη παρὰ τοὺς ἄλλους νεανίσκους τοὺς ἐσθίοντας ἀπὸ τοῦ βασιλικοῦ δείπνου, καθὼς ἐὰν θέλῃς οὕτω χρῆσαι τοῖς παισί σου. καὶ ἐχρήσατο αὐτοῖς τὸν τρόπον τοῦτον, καὶ ἐπείρασεν αὐτοὺς ἡμέρας δέκα. μετὰ δὲ τὰς δέκα ἡμέρας ἐφάνη ἡ ὄψις αὐτῶν καλὴ καὶ ἡ ἕξις τοῦ σώματος κρείσσων τῶν ἄλλων νεανίσκων τῶν ἐσθιόντων τὸ βασιλικὸν δεῖπνον. καὶ ἦν Ἀβιεσδρὶ ἀναιρούμενος τὸ δεῖπνον αὐτῶν καὶ τὸν οἶνον αὐτῶν, καὶ ἀντεδίδου αὐτοῖς ἀπὸ τῶν ὀσπρίων. καὶ τοῖς νεανίσκοις ἔδωκεν ὁ κύριος ἐπιστήμην καὶ σύνεσιν καὶ φρόνησιν ἐν πάσῃ γραμματικῇ τέχνῃ. καὶ τῷ Δανιὴλ ἔδωκε σύνεσιν ἐν παντὶ ῥήματι καὶ ὁράματι καὶ ἐνυπνίοις καὶ ἐν πάσῃ σοφίᾳ. μετὰ δὲ τὰς ἡμέρας ταύτας ἐπέταξεν ὁ βασιλεὺς εἰσαγαγεῖν αὐτούς, καὶ εἰσήχθησαν ἀπὸ τοῦ ἀρχιευνούχου πρὸς τὸν βασιλέα Ναβουχοδονοσόρ. καὶ ὡμίλησεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς, καὶ οὐχ εἱρέθη

ἐν τοῖς σοφοῖς ὅμοιος τῷ Δανιὴλ καὶ Ἀνανίᾳ καὶ Μισαὴλ καὶ Ἀζαρία· καὶ ἦσαν παρὰ τῷ βασιλεῖ, καὶ ἐν παντὶ λύγῳ καὶ συνέσει καὶ παιδεία, ὅσα ἐζήτησε παρ’ αὐτῶν ὁ βασιλεύς, κατέλαβεν αὐτοὺς σοφωτέρους δεκαπλασίως ὑπέρ τοὺς σοφιστὰς καὶ τοὺς φιλοσόφους τοὺς ἐν πάσῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ· καὶ ἐδόξασεν αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς καὶ κατέστησεν αὐτοὺς ἄρχοντας, καὶ ἀνέδειξεν αὐτοὺς σοφοὺς παρὰ πάντας τοὺς αὐτοῦ ἐν πράγμασιν ἐν πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ καὶ ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. καὶ ἦν Δανιὴλ ἕως τοῦ πρώτου ἔτους τῆς βασιλείας Κύρου βασιλέως Ιερσῶν.

# 2

Καὶ ἐν τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ τῆς βασιλείας Ναβουχοδονοσὸρ συνέβη εἰς ὁράματα καὶ ἐνύπνια ἐμπεσεῖν τὸν βασιλέα καὶ ταραχθῆναι ἐν τῷ ἐνυπνίῳ αὐτοῦ, καὶ ὁ ὕπνος αὐτοῦ ἐγένετο ἀπ’ αὐτοῦ. καὶ ἐπέταξεν ὁ βασιλεὺς εἰσενεχθῆναι τοὺς ἐπαοιδοὺς καὶ τοὺς μάγους καὶ τοὺς φαρμακοὺς τῶν Χαλδαίων ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ τὰ ἐνύπνια αὐτοῦ· καὶ παραγενόμενοι ἔστησαν παρὰ τῷ βασιλεῖ καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς Ἐνύπνιον ἑώρακα καὶ ἐκινήθη μου τὸ πνεῦμα· ἐπιγνῶναι οὖν θέλω τὸ ἐνύπνιον. καὶ ἐλάλησαν οἱ Χαλδαῖοι πρὸς τὸν βασιλέα Συριστί Κύριε βασιλεῦ, τὸν αἰῶνα ζῆθι· ἀνάγγειλον τὸ ἐνύπνιόν σου τοῖς παισί σου, καὶ ἡμεῖς σοι φράσομεν τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ βασιλεὺς εἶπε τοῖς Χαλδαίοις λόγος ἀπ’ ἐμοῦ ἀπέστη· διότι ἐὰν μὴ ἀπαγγείλητέ μοι ἐπ’ ἀληθείας τὸ ἐνύπνιον καὶ τὴν τούτου σύγκρισιν δηλώσητέ μοι, παραδειγματισθήσεσθε, καὶ ἀναληφθήσεται ὑμῶν τὰ ὑπάρχοντα εἰς τὸ βασιλικόν. ἐὰν δὲ τὸ ἐνύπνιον διασαφήσητέ μοι καὶ τὴν

τούτου σύγκρισιν ἀναγγείλητε, λήψεσθε δόματα παντοῖα καὶ δοξασθήσεσθε ὑπ᾽ ἐμοῦ· δηλώσατέ μοι τὸ ἐνύπνιον καὶ κρίνατε. ἀπεκρίθησαν δὲ ἐκ δευτέρου λέγοντες Βασιλεῦ, τὸ ὅραμα εἰπόν, καὶ οἱ παῖδές σου κρινοῦσι πρὸς ταῦτα. καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς Ἐπ ἀληθείας οἶδα ὅτι καιρὸν ὑμεῖς ἐξαγοράζετε, καθάπερ ἑωράκατε ὅτι ἀπέστη ἀπ᾽ ἐμοῦ τὸ πρᾶγμα· καθάπερ οὖν προστέταχα, οὕτως ἔσται. ἐὰν μὴ τὸ ἐνύπνιον ἀπαγγείλητέ μοι ἐπ᾽ ἀληθείας καὶ τὴν τούτου σύγκρισιν δηλώσητε, θανάτῳ περιπεσεῖσθε· συνείπασθε γὰρ λόγους ψευδεῖς ποιήσασθαι ἐπ᾽ ἐμοῦ, ἕως ἂν ὁ καιρὸς ἀλλοιωθῇ. νῦν οὖν ἐὰν τὸ δῆμα εἴπητέ μοι ὃ τὴν νύκτα ἑώρακα, γνώσομαι ὅτι καὶ τὴν τούτου κρίσιν δηλώσητε. καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ Χαλδαῖοι ἐπὶ τοῦ βασιλέως ὅτι Οὐδεὶς τῶν ἐπὶ τῆς γῆς δυνήσεται εἰπεῖν τῷ βασιλεῖ ὃ ἑώρακε, καθάπερ σὺ ἐρωτᾷς, καὶ πᾶς βασιλεὺς καὶ πᾶς δυνάστης τοιοῦτο πρᾶγμα οὐκ ἐπερωτᾷ πάντα σοφὸν καὶ μάγον καὶ Χαλδαῖον· καὶ ὁ λόγος ὃν ζητεῖς, βασιλεῦ, βαρύς ἐστι καὶ ἐπίδοξος, καὶ οὐδείς ἐστιν ὃς δηλώσει ταῦτα τῷ βασιλεῖ, εἰ μὴ τι ἄγγελος, οὗ οὐκ ἔστι κατοικητήριον μετὰ πάσης σαρκός· ὅθεν οὐκ ἐνδέχεται γενέσθαι καθάπερ οἴει. τότε ὁ βασιεὺς στυγνὸς γενόμενος καὶ περίλυπος προσέταξεν ἐξαγαγεῖν πάντας τοὺς σοφοὺς τῆς Βαβυλωνίας. καὶ ἐδογματίσθη πάντας ἀποκτεῖναι· ἐζητήθη δὲ ὁ Δανιὴλ καὶ πάντες οἱ μετ᾽ αὐτοῦ χάριν τοῦ συναπολέσθαι τότε Δανιὴλ εἶπε βουλὴν καὶ γνώμην ἣν εἶχεν Ἀριώχῃ τῷ ἀρχιμαγείρῳ τοῦ βασιλέως, ᾧ προσέταξεν ἐξαγαγεῖν τοὺς σοφιστὰς τῆς Βαβυλωνίας, καὶ ἐπυνθάνετο αὐτοῦ λέγων Ἄρχων τοῦ βασιλέως, περὶ τίνος δογματίζεται πικρῶς παρὰ τοῦ βασιλέως; τότε τὸ πρόσταγμα ἐσήμανεν ὁ Ἀριώχης τῷ Δανιήλ. ὁ δὲ Δανιὴλ εἰσῆλθε ταχέως πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἠξίωσεν ἵνα δοθῇ αὐτῷ χρονος παρὰ τοῦ

βασιλέως, καὶ δηλώσῃ πάντα ἐπὶ τοῦ βασιλέως. Τότε ἀπελθὼν Δανιὴλ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ τῷ Ἀνανίᾳ καὶ Μισαὴλ καὶ Ἀζαρία τοῖς συνεταίροις ὑπέδειξε πάντα, καὶ παρήγγειλε νηστείαν καὶ δέησιν καὶ τιμαωρίαν ζητῆσαι παρὰ τοῦ κυρίου τοῦ ὑψίστου περὶ τοῦ μυστηρίου τούτου, ὅπως μὴ ἐκδοθῶσι Δανιὴλ καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ εἰς ἀπώλειαν ἅμα τοῖς σοφισταῖς Βαβυλῶνος. τότε τῷ Δανιὴλ ἐν ὁράματι ἐν αὐτῇ τῇ νυκτὶ τὸ μυστήριον τοῦ βασιλέως ἐξεφάνθη εὐσήμως. τότε Δανιὴλ εὐλόγησε τὸν κύριον τὸν ὕψιστον, καὶ ἐκφωνήσας εἶπεν Ἔσται τὸ ὄνομα τοῦ κυρίου τοῦ μεγάλου εὐλογημένον εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι ἡ σοφία καὶ ἡ μεγαλωσύνη αὐτοῦ ἐστι καὶ αὐτὸς ἀλλοιοῖ καιροὺς καὶ χρόνους, μεθιστῶν βασιλεῖς καὶ καθιστῶν, διδοὺς σοφοῖς σοφίαν καὶ σύνεσιν τοῖς ἐν ἐπιστήμῃ οὖσιν· ἀνακαλύπτων τὰ βαθέα καὶ σκοτεινὰ καὶ γινώσκων τὰ ἐν τῷ σκότει καὶ τὰ ἐν τῷ φωτί, καὶ παρ’ αὐτῷ κατάλυσις. σοί, κύριε τῶν πατέρων μου, ἐξομολογοῦμαι καὶ αἰνῶ, ὅτι σοφίαν καὶ φρόνησιν ἔδωκάς μοι, καὶ νῦν ἐσήμανάς μοι ὅσα ἠξίωσα, τοῦ δηλῶσαι τῷ βασιλεῖ πρὸς ταῦτα. εἰσελθὼν δὲ Δανιὴλ πρὸς τὸν Ἀριὼχ τὸν κατασταθέντα ὑπὸ τοῦ βασιλέως ἀποκτεῖναι πάντας τοὺς σοφιστὰς τῆς Βαβυλωνίας εἶπεν αὐτῷ Τοὺς μὲν σοφιστὰς τῆς Βαβυλωνίας μὴ ἀπολέσῃς, εἰσάγαγε δέ με πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἕκαστα τῷ βασιλεῖ δηλώσω. Τότε Ἀριὼχ κατὰ σπουδὴν εἰσήγαγεν τὸν Δανιὴλ πρὸς τὸν βασιλέα καὶ εἶπεν αὐτῷ ὅτι Εὕρηκα ἄνθρωπον σοφὸν ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας τῶν υἱῶν τῆς Ἰουδαίας, ὃς τῷ βασιλεῖ δηλώσει ἕκαστα. ἀποκριθεὶς δὲ ὁ βασιλεὺς εἶπε τῷ Δανιήλ, ἐπικαλουμένῳ δὲ Χαλδαιστὶ Βαλτασάρ Δυνήσῃ δηλῶσαί μοι τὸ ὅραμα ὃ εἶδον καὶ τὴν τούτου σύγκρισιν; ἐκφωνήσας δὲ ὁ Δανιὴλ ἐπὶ βασιλέως εἶπεν Τὸ μυστήριον ὃ ἑώρακεν ὁ βασιλεύς, οὐκ ἔστι σοφῶν καὶ φαρμακῶν καὶ ἐπαοιδῶν καὶ γαζαρηνῶν ἡ

δήλωσις· ἀλλ’ ἔστι θεὸς ἐν οὐρανῷ ἀνακαλύπτων μυστήρια, ὃς ἐδήλωσε τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονοσὸρ ἃ δεῖ γενέσθαι ἐπ’ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν· καὶ ἀνακαλύπτων μυστήρια ἐδήλωσέ σοι ἃ δεῖ γενέσθαι. κἀμοὶ δέ οὐ παρὰ τὴν σοφίαν τὴν οὖσαν ἐν ἐμοὶ ὑπὲρ πάντας τοὺς ἀνθρώπους τὸ μυστήριον τοῦτο ἐξεφάνθη, ἀλλ᾽ ἕνεκεν τοῦ δηλωθῆναι τῷ βασιλεῖ ἐσημάνθη μοι ἃ ὑπέλαβες τῇ καρδίᾳ σου ἐν γνώσει. καὶ σύ, βασιλεῦ, ἑώρακας, καὶ ἰδοὺ εἰκὼν μία, καὶ ἦν ἡ εἰκὼν ἐκείνη μεγάλη σφόδρα, καὶ ἡ πρόσοψις αὐτῆς ὑπερφερὴς ἑστήκει ἐναντίον σου· καὶ ἡ πρόσοψις τῆς εἰκόνος φοβερά. καὶ ἦν ἡ κεφαλὴ αὐτῆς ἀπὸ χρυσίου χρηστοῦ, τὸ στῆθος καὶ οἱ βραχίονες ἀργυροῖ, ἡ κοιλία καὶ οἱ μηροὶ χαλκοῖ τὰ δὲ σκέλη σιδηρᾶ, οἱ πόδες μέρος μέν τι σιδήρου, μέρος δέ τι ὀστράκινον. ἑώρακας ἕως ὅτου ἐτμήθη λίθος ἐξ ὄρους ἄνευ χειρῶν, καὶ ἐπάταξε τὴν εἰκόνα ἐπὶ τοὺς πόδας τοὺς σιδηροῦς καὶ ὀστρακίνους καὶ κατήλεσεν αὐτά. τότε λεπτὰ ἐγένετο ἅμα ὁ σίδηρος καὶ τὸ ὄστρακον καὶ ὁ χαλκὸς καὶ ὁ ἄργυρος καὶ τὸ χρυσίον, καὶ ἐγένετο ὡσεὶ λεπτότερον ἀχύρου ἐν ἅλωνι, καὶ ἐρρίπισεν αὐτὰ ὁ ἄνεμος ὥστε μηδέν καταλειφθῆναι ἐξ αὐτῶν, καὶ ὁ λίθος ὁ πατάξας τὴν εἰκόνα ἐγένετο ὄρος μέγα, καὶ ἐπάταξε πᾶσαν τὴν γῆν. τοῦτο τὸ ὅραμα· καὶ τὴν κρίσιν δὲ ἐροῦμεν ἐπὶ τοῦ βασιλέως. σύ, βασιλεῦ, βασιλεὺς βασιλέων, καὶ σοὶ ὁ κύριος τοῦ οὐρανοῦ τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν βασιλείαν καὶ τὴν ἰσχὺν καὶ τὴν τιμὴν καὶ τὴν δόξαν ἔδωκεν· ἐν πάσῃ τῇ οἰκουμένῃ ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ θηρίων ἀγρίων καὶ πετεινῶν οὐρανοῦ καὶ τῶν ἰχθύων τῆς θαλάσσης παρέδωκεν ὑπὸ τὰς χεῖράς σου, κυριεύειν πάντων· σὺ εἶ ἡ κεφαλὴ ἡ χρυσῆ. καὶ μετὰ σέ ἀναστήσεται βασιλεία ἐλάττων σου, καὶ τρίτη βασιλεία ἄλλη χαλκῆ ἣ κυριεύσει πάσης τῆς γῆς· καὶ βασιλεία τετάρτη ἰσχυρὰ ὡς ὁ σίδηρος, ὥσπερ ὁ σίδηρος ὃ δαμάζων πάντα, καὶ ὡς ὁ

σίδηρος πᾶν δένδρον ἐκκόπτων· καὶ σεισθήσεται πᾶσα ἡ γῆ. καὶ ὡς ἑώρακας τοὺς πόδας αὐτῆς καὶ τοὺς δακτύλους μέρος μέν τι ὀστράκου κεραμικοῦ, μέρος δέ τι σιδήρου, βασιλεία ἄλλη διμερὴς ἔσται ἐν αὐτῇ, καθάπερ εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον ἅμα τῷ πηλίνῳ ὀστράκῳ. καὶ οἱ δάκτυλοι τῶν ποδῶν μέρος μέν τι σιδηροῦν, μέρος δέ τι ὀστράκινον· μέρος δέ τι τῆς βασιλείας ἔσται ἴσχυρόν, καὶ μέρος τι ἔσται συντετριμμένον. καὶ ὡς εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον ἅμα τῷ πηλίνῳ ὀστράκῳ, καὶ συμμιγεῖς ἔσονται εἰς γένεσιν ἀνθρώπων· οὐκ ἔσονται δὲ ὁμονοοῦντες οὔτε εὐνοοῦντες ἀλλήλοις, ὥσ περ οὐδὲ ὁ σίδηρος δύναται συγκραθῆναι τῷ ὀστράκῳ. καὶ ἐν τοῖς χρόνοις τῶν βασιλέων τούτων στήσει ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ βασιλείαν ἄλλην, ἥτις ἔσται εἰς τοὺς αἰῶνας καὶ οὐ φθαρήσεται· καὶ αὕτη ἡ βασιλεία ἄλλο ἔθνος οὐ μὴ ἐάσῃ, πατάξει δὲ καὶ ἀφανίσει τὰς βασιλείας ταύτας, καὶ αὐτὴ στήσεται εἰς τὸν αἰῶνα· καθάπερ ἑώρακας ἐξ ὄρους τμηθῆναι λίθον ἄνευ χειρῶν, καὶ συνηλόησε τὸ ὄστρακον τὸν σίδηρον καὶ τὸν χαλκὸν καὶ τὸν ἄργυρον καὶ τὸν χρυσόν. ὁ θεὸς ὁ μέγας ἐσήμανε τῷ βασιλεῖ τὰ ἐσόμενα ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν· καὶ ἀκριβές τὸ ὅραμα, καὶ πιστὴ ἡ τούτου κρίσις. Τότε Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεὺς πεσὼν ἐπὶ πρόσαωπον χαμαὶ προσεκύνησεν τῷ Δανιήλ, καὶ ἐπέταξε θυσίας καὶ σπονδὰς ποιῆσαι αὐτῷ. καὶ ἐκφωνήσας ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν Δανιὴλ εἶπεν Ἐπ᾽ ἀληθείας ἐστὶν ὁ θεὸς ὑμῶν θεὸς τῶν θεῶν καὶ κύριος τῶν βασιλέων, ὁ ἐκφαίνων μυστήρια κρυπτὰ μόνος· ὅτι ἐδυνάσθης δηλῶσαι τὸ μυστήριον τοῦτο. τότε ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονοσὸρ Δανιὴλ μεγαλύνας καὶ δοὺς δωρεὰς μεγάλας καὶ πολλὰς κατέστησεν ἐπὶ τῶν πραγμάτων τῆς Βαβυλωνίας, καὶ ἀπέδειξεν αὐτὸν ἄρχοντα καὶ ἡγούμενον πάντων τῶν σοφιστῶν Βαβυλωνίας. καὶ Δανιὴλ ἠξίωσε τὸν βασιλέα ἵνα

κατασταθῶσιν ἐπὶ τῶν πραγμάτων τῆς Βαβυλωνίας Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ· καὶ Δανιὴλ ἦν ἐν τῇ βασιλικῇ αὐλῇ.

# 3

Ἔτους ὀκτωκαιδεκάτου Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεὺς διοικῶν πόλεις καὶ χώρας καὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως Αἰθιοπίας ἐποίησεν εἰκόνα χρυσῆν, τὸ ὕψος αὐτῆς πηχῶν ἑξήκοντα, καὶ τὸ πλάτος αὐτῆς πηχῶν ἕξ καὶ ἔστησεν αὐτὴν ἐν πεδίῳ τοῦ περιβόλου χώρας Βαβυλωνίας. καὶ Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεὺς βασιλέων καὶ κυριεύων τῆς οἰκουμένης ὅλης ἀπέστειλεν ἐπισυναγαγεῖν πάντα τὰ ἔθνη καὶ φυλὰς καὶ γλώσσας, σατράπας, στρατηγούς, τοπάρχας καὶ ὑπάτους, ,διοικητὰς καὶ τοὺς ἐπ’ ἐξουσιῶν κατὰ χώραν, καὶ πάντας τοὺς κατὰ τὴν οἰκουμένην, ἐλθεῖν εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος τῆς χρυσῆς ἣν ἔστησεν Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεύς. τότε συνήχθησαν ὕπατοι, στρατηγοί, τοπάρχαι, ἡγούμενοι, τύραννοι μεγάλοι ἐπ’ ἐξουσιῶν, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῶν χωρῶν, τοῦ ἐλθεῖν εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος ἧς ἔστησε Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεύς. καὶ ἔστησαν οἱ προσγεγραμμένοι κατέναντι τῆς εἰκόνος ἧς ἔστησε Ναβουχοδονοσόρ. καὶ ὁ κήρυξ ἐκήρυξε τοῖς ὄχλοις Ὑμῖν παραγγέλλεται, ἔθνη καὶ χῶραι, λαοὶ καὶ γλῶσσαι, ὅταν ἀκούσητε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγος, καὶ κιθάρας, σαμβύκης καὶ ψαλτηρίου, συμφωνίας καὶ παντὸς γένους μουσικῶν, πεσόντες προσκυνήσατε τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣν ἔστησε Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεύς· καὶ πᾶς ὃς ἂν μὴ πεσὼν προσκυνήσῃ, αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐμβαλοῦσιν αὐτὸν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. καὶ ἐν

τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅτε ἤκουσαν πάντα τὰ ἔθνη τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε καὶ κιθάρας, σαμβύκης τε καὶ ψαλτηρίου καὶ παντὸς ἤχου μουσικῶν, πίπτοντα πάντα τὰ ἔθνη, φυλαί, καὶ γλῶσσαι προσεκύνησαν τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣν ἔστησε Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεύς, κατέναντι τούτου. ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ προσελθόντες ἄνδρες Χαλδαῖοι διέβαλον τοὺς Ἰουδαίους· καὶ ὑπολαβόντες εἶπον Ναβουχοδονοσὸρ τῷ βασιλεῖ Κύριε βασιλεῦ, εἰς τὸν αἰῶνα ζῆθι. σύ, βασιλεῦ, προσέταξας καὶ ἔκρινας, ἵνα πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἂν ἀκούσῃ τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος. σύριγγός τε καὶ σαμβύκης, κιθάρας καὶ ψαλτηρίου καὶ παντὸς ἤχου μουσικῶν, πεσὼν προσκυνήσῃ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ, καὶ ὃς ἂν μὴ πεσὼν προσκυνήσῃ, ἐμβληθήσεται εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. εἰσὶ δέ τινες ἄνδρες Ἰουδαῖοι, οὓς κατέστησας ἐπὶ τῆς χώρας τῆς Βαβυλωνίας. Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ· οἱ ἄνθρωποι ἐκεῖνοι οὐκ ἐφοβήθησάν σου τὴν ἐντολὴν καὶ τῷ εἰδώλῳ σου οὐκ ἐλάτρευσαν καὶ τῇ εἰκόνι σου τῇ χρυσῇ ᾗ ἔστησας οὐ προσεκύνησαν. τότε Ναβουχοδονοσὸρ θυμωθεὶς ὀργῇ προσέταξεν ἀγαγεῖν τὸν Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ· τότε οἱ ἄνθρωποι ἤχθησαν πρὸς τὸν βασιλέα. οὓς καὶ συνιδὼν Ναββουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεὺς εἶπεν αὐτοῖς Διὰ τί, Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ, τοῖς θεοῖς μου οὐ λατρεύετε καὶ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣν ἔστησα οὐ προσκυνεῖτε; καὶ νῦν εἰ μὲν ἔχετε ἑτοίμως ἅμα τῷ ἀκοῦσαι τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε καὶ κιθάρας, σαμβύκης τε καὶ ψαλτηρίου καὶ συμφωνίας καὶ παντὸς ἤχου μουσικῶν, πεσόντες προσκυνῆσαι τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ᾗ ἔστησα· εἰ δέ μή γε, γινώσκετε ὅτι μὴ προσκυνησάντων ὑμῶν αὐθωρὶ ἐαβληθήσεσθε εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην· καὶ ποῖος θεὸς ἐξελεῖται ὑμᾶς ἐκ τῶν χειρῶν μου; ἀποκριθέντες δὲ Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ, εἶπαν τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονοσόρ

Βασιλεῦ, οὐ χρείαν ἔχομεν ἡμεῖς ἐπὶ τῇ ἐπιταγῇ ταύτῃ ἀποκριθῆναί σοι ἔστι γὰρ θεὸς ἐν οὐρανοῖς εἷς κύριος ἡμῶν, ὃν φοβούμεθα, ὅς ἐστι δυνατὸς ἐξελέσθαι ἡμᾶς ἐκ τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης· καὶ ἐκ τῶν χειρῶν σου, βασιλεῦ, ἐξελεῖται ἡμᾶς. καὶ τότε φανερόν σοι ἔσται, βασιλεῦ, ὅτι οὔτε τῷ εἰδώλῳ σου λατρεύομεν οὔτε τῇ εἰκόνι σου τῇ χρυσῇ, ἣν ἔστησας, οὐ προσκυνοῦμεν. τότε Ναβουχοδονοσὸρ ἐπλήσθη θυμοῦ, καὶ ἡ μορφὴ τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἠλλοιώθη ἐπὶ Σεδράχ, Μισάχ. καὶ Ἀβδεναγώ, καὶ ἐπέταξε καῆναι τὴν κάμινον ἑπταπλασίως παρ’ ὃ ἔδει αὐτὴν καῆναι, καὶ ἄνδρας ἰσχυροτάτους τῶν ἐν τῇ δυνάμει ἐπέταξε συμποδίσαντας τὸν Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ, ἐμβαλεῖν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι συνεποδίσθησαν, ἔχοντες τὰ ὑποδήματα αὐτῶν καὶ τὰς τιάρας αὐτῶν ἐπὶ τῶν κεφαλῶν αὐτῶν, σὺν τῷ ἱματισμῷ αὐτῶν, καὶ ἐβλήθησαν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. ἐπειδὴ τὸ πρόσταγμα τοῦ βασιλέως ἤπειγεν καὶ ἡ κάμινος ἐξεκαύθη ὑπέρ τὸ πρότερον ἑπταπλασίως, καὶ οἱ ἄνδρες οἱ προχειρισθέντες συμποδίσαντες αὐτοὺς καὶ προσαγαγόντες τῇ καμίνῳ ἐνεβάλοσαν εἰς αὐτήν. τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας τοὺς συμποδίσαντας τοὺς περὶ τὸν Ἀζαρίαν ἐξελθοῦσα ἡ φλὸξ ἐκ τῆς καμίνου ἐνεπύρισε καὶ ἀπέκτεινεν, αὐτοὶ δὲ συνετηρήθησαν. Οὕτως οὖν προσηύξατο Ἀνανίας καὶ Ἀζαρίας καὶ Μισαήλ, καὶ ὕμνησαν τῷ κυρίῳ, ὅτε αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς προσέταξεν ἐμβληθῆναι εἰς τὴν κάμινον. στὰς δὲ Ἀζαρίας προσηύξατο οὕτως, καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτοῦ ἐξωμολογεῖτο τῷ κυρίῳ ἅμα τοῖς συνεταίροις αὐτοῦ ἐν μέσῳ τῷ πυρί, ὑποκαιομένης τῆς καμίνου ὑπὸ τῶν Χαλδαίων σφόδρα. καὶ εἶπαν Εὐλογητὸς εἶ, Κύριε ὁ θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν, καὶ αἰνετὸν καὶ δεδοξασμένον τὸ ὄνομά σου εἰς τοὺς αἰῶνας, ὅτι δίκαιος εἶ

πᾶσιν οἷς ἐποίησας ἡμῖν, καὶ πάντα τὰ ἔργα σου ἀληθινὰ καὶ αἱ ὁδοί σου εὐθεῖαι καὶ πᾶσαι αἱ κρίσεις σου ἀληθιναί. καὶ κρίματα ἀληθείας ἐποίησας κατὰ πάντα ἃ ἐπήγαγες ἡμῖν καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν σου τὴν ἁγίαν τὴν τῶν πατέρων ἡμῶν Ἰερουσαλήμ· διότι ἐν ἀληθείᾳ καὶ κρίσει ἐποίησας πάντα ταῦτα διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν. ὅτι ἡμάρτομεν ἐν πᾶσι καὶ ἠνομήσαμεν ἀποστῆναι ἀπὸ σοῦ καὶ ἐξημάρτομεν ἐν πᾶσι· καὶ τῶν ἐντολῶν τοῦ νόμου σου οὐχ ὑπηκούσαμεν οὐδὲ συνετηρήσαμεν, οὐδὲ ἐποιήσαμεν καθὼς ἐνετείλω ἡμῖν ἵνα εὖ ἡμῖν γένηται. καὶ νῦν πάντα ὅσα ἡμῖν ἐπήγαγες καὶ πάντα ὅσα ἐποίησας ἡμῖν, ἐν ἀληθινῇ κρίσει ἐποίησας, καὶ παρέδωκας ἡμᾶς εἰς χεῖρας ἐχθρῶν ἡμῶν ἀνόμων καὶ ἐχθίστων ἀποστατῶν, καὶ βασιλεῖ ἀδίκῳ καὶ πονηροτάτῳ παρὰ πᾶσαν τὴν γῆν. καὶ νῦν οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἀνοῖξαι τὸ στόμα· αἰσχύνη καὶ ὄνειδος ἐγενήθη τῶν δούλων σου καὶ τῶν σεβομένων σε. μὴ παραδῷς ἡμᾶς εἰς τέλος διὰ τὸ ὄνομά σου, καὶ μὴ διασκεδάσῃς σου τὴν διαθήκην. καὶ μὴ ἀποστήσῃς τὸ ἔλεός σου ἀφ’ ἡμῶν, διὰ Ἀβραὰμ τὸν ἠγαπημένον ὑπὸ σοῦ καὶ διὰ Ἰσαὰκ τὸν δοῦλόν σου καὶ Ἰσραὴλ τὸν ἅγιόν σου· ὡς ἐλάλησας πρὸς αὐτοὺς λέγων πολυπληθῦναι τὸ σπέρμα αὐτῶν ὡς τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ τῷ πλήθει καὶ ὡς τὴν ἄμμον τὴν παρὰ τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης. ὅτι, δέσποτα, ἐσμικρύνθημεν παρὰ πάντα τὰ ἔθνη, καί ἐσμεν ταπεινοὶ ἐν πάσῃ τῇ γῇ σήμερον διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν· καὶ οὐκ ἔστιν ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ ἄρχων καὶ προφήτης οὐδὲ ἡγούμενος, οὐδὲ ὁλοκαύτωσις οὐδὲ θυσία οὐδὲ προσφορὰ οὐδὲ θυμίαμα, οὐδὲ τόπος τοῦ καρπῶσαι ἐνώπιόν σου καὶ εὑρεῖν ἔλεος. ἀλλ’ ἐν ψυχῇ συντετριμμένῃ καὶ πνεύματι τεταπεινωμένῳ προσδεχθείημεν· ὡς ἐν ὁλοκαυτώμασι κριῶν καὶ ταύρων καὶ ὡς ἐν μυριάσιν ἀρνῶν πιόνων, οὕτω γενέσθω ἡμῶν ἡ θυσία ἐνώπιόν σου σήμερον καὶ

ἐξιλάσαι ὄπισθέν σου, ὅτι οὐκ ἔστιν αἰσχύνη τοῖς πεποιθόσιν ἐπὶ σοί, καὶ τελειῶσαι ὄπισθέν σου. καὶ νῦν ἐξακολουθοῦμεν ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ἡμῶν καὶ φοβούμεθά σε καὶ ζητοῦμεν τὸ πρόσωπόν σου. μὴ καταισχύνῃς ἡμᾶς, ἀλλὰ ποίησον μεθ’ ἡμῶν ἔλεος κατὰ τὴν ἐπιείκειάν σου καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους σου, καὶ ἐξελοῦ ἡμᾶς κατὰ τὰ θαυμάσιά σου καὶ δὸς δόξαν τῷ ὀνόματί σου, Κύριε· καὶ ἐντραπείησαν πάντες οἱ ἐνδεικνύμενοι τοῖς δούλοις σου κακά, καὶ καταισχυνθείησαν ἀπὸ πάσης δυναστείας, καὶ ἡ ἰσχὺς αὐτῶν συντριβείη· γνώτωσαν ὅτι σὺ εἶ μόνος Κύριος ὁ θεὸς καὶ ἔνδοξος ἐφ’ ὅλην τὴν οἰκουμένην. Καὶ οὐ διέλιπον οἱ ἐμβάλλοντες αὐτοὺς ὑπηρέται τοῦ βασιλέως καίοντες τὴν κάμινον. καὶ ἡνίκα ἐνεβάλοσαν τοὺς τρεῖς εἰς ἅπαξ εἰς τὴν κάμινον, καὶ ἡ κάμινος ἦν διάπυρος κατὰ τὴν θερμασίαν αὐτῆς ἐπταπλασίως· καὶ ὅτε αὐτοὺς ἐνεβάλοσαν, οἱ μὲν ἐμβάλλοντες αὐτοὺς ἦσαν ὑπεράνω αὐτῶν, οἱ δὲ ὑπέκαιον ὑποκάτωθεν αὐτῶν νάφθαν καὶ στιππύον καὶ πίσσαν καὶ κληματίδα. καὶ διεχεῖτο ἡ φλὸξ ἐπάνω τῆς καμίνου ἐπὶ πήχεις τεσσαράκοντα ἐννέα, καὶ διεξώδευσε καὶ ἐνεπύρισεν οὓς εὗρεν περὶ τὴν κάμινον τῶν Χαλδαίων. ἄγγελος δὲ Κυρίου συγκατέβη ἅμα τοῖς περὶ τὸν Ἀζαρίαν εἰς τὴν κάμινον καὶ ἐξετίναξε τὴν φλόγα τοῦ πυρὸς ἐκ τῆς καμίνου, καὶ ἐποίησε τὸ μέσον τῆς καμίνου ὡσεὶ πνεῦμα δρόσου διασυρίζον, καὶ οὐχ ἥψατο αὐτῶν καθόλου τὸ πῦρ, καὶ οὐκ ἐλύπησε καὶ οὐ παρηνώχλησεν αὐτούς. Ἀναλαβόντες δὲ οἱ τρεῖς ὡς ἐξ ἑνὸς στόματος ὕμνουν καὶ ἐδόξαζον καὶ εὐλόγουν καὶ ἐξύψουν τὸν θεὸν ἐν τῇ καμίνῳ λέγοντες Εὐλογητὸς εἶ, Κύριε ὁ θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν, καὶ αἰνετὸς καὶ ὑπερυψούμενος εἰς τοὺς αἰῶνας· καὶ εὐλογημένον τὸ ὄνομα τῆς δόξης σου τὸ ἅγιον, καὶ ὑπεραινετὸν καὶ ὑπερυψαωμένον εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας. εὐλογημένος εἶ ἐν τῷ ναῷ τῆς ἁγίας δόξης σου, καὶ ὑπερυμνητὸς

καὶ ὑπερένδοξος εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογητὸς εἶ ἐπὶ θρόνου δόξης τῆς βασιλείας σου, καὶ ὑμνητὸς καὶ ὑπερυψωμένος εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογητὸς εἶ ὁ βλέπων ἀβύσσους, καθήμενος ἐπὶ χερουβίμ, καὶ αἰνετὸς καὶ δεδοξασμένος εἰς τοὺς αἰῶνας. τὐλογητὸς εἶ ἐν τῷ στερεώματι τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ὑμνητὸς καὶ δεδοξασμένος εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, πάντα τὰ ἔργα τοῦ κυρίου, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ἄγγελοι Κυρίου, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, οὐρανοί, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ὕδατα καὶ πάντα τὰ ἐπάνω τοῦ οὐρανοῦ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, πᾶσαι αἱ δυνάμεις Κυρίου, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. τὐλογεῖτε, ἥλιος καὶ σελήνη, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. τὐλογεῖτε, ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. ὐλογεῖτε, πᾶς ὄμβρος καὶ δρόσος, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶ νας. εὐλογεῖτε, πάντα τὰ πνεύματα, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. τὐλογεῖτε, πῦρ καὶ καῦμα, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ῥῖγος καὶ ψῦχος, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, δρόσοι καὶ νιφετοί, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, πάγοι καὶ ψῦχος, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, πάχναι καὶ χιόνες, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, νύκτες καὶ ἡμέραι, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, φῶς καὶ σκότος, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε,

ἀστραπαὶ καὶ νεφέλαι, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογείτω ἡ γῆ τὸν κύριον· ὑμνείτω καὶ ὑπερυψούτω αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ὄρη καὶ βουνοί, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, πάντα τὰ φυόμενα ἐπὶ τῆς γῆς, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ὄμβροι καὶ αἱ πηγαί, τὸν κύριον, ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. κὐλογεῖτε, θάλασσαι καὶ ποταμοί, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, κήτη καὶ πάντα τὰ κινούμενα ἐν τοῖς ὕδασι, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. τὐλογεῖτε, πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, τετράποδα καὶ θηρία τῆς γῆς, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, Ἰσραήλ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, ἱερεῖς, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, δοῦλοι, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. τὸλογεῖτε, πνεύματα καὶ ψυχαὶ δικαίων, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. κὺλογεῖτε, ὅσιοι καὶ ταπεινοὶ καρδίᾳ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας. εὐλογεῖτε, Ἀνανία, Ἀζαρία, Μισαήλ, τὸν κύριον· ὑμνεῖτε καὶ ὑπερυψοῦτε αὐτὸν εἰς τοὺς αἰῶνας· ὅτι ἐξείλετο ἡμᾶς ἐξ ἅδοῦ, καὶ ἔσωσεν ἡμᾶς ἐκ χειρὸς θανάτου, καὶ ἐρρύσατο ἡμᾶς ἐκ μέσου καιομένης φλογός, καὶ ἐκ τοῦ πυρὸς ἐλυτρώσατο ἡμᾶς. ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι χρηστός. ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. εὐλογεῖτε, πάντες οἱ σεβόμενοι τὸν κύριον, τὸν θεὸν τῶν θεῶν· ὑμνεῖτε καὶ ἐξομολογεῖσθεὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ,

καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τῶν αἰώνων. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀκοῦσαι τὸν βασιλέα ὑμνούντων αὐτῶν καὶ ἐστὼς ἐθεώρει αὐτοὺς ζῶντας· τότε Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεὺς ἐθαύμασε, καὶ ἀνέστη σπεύσας καὶ εἶπεν τοῖς φίλοις αὐτοῦ Οὐχὶ ἄνδρας τρεῖς ἐβάλομεν εἰς μέσον τοῦ πυρὸς πεπεδημένους; καὶ εἶπον τῷ βασιλεῖ Ἀληθῶς, βασιλεῦ. καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς Ἰδοὺ ἐγὼ ὁρῶ ἄνδρας τέσσαρας λελυμένους περιπατοῦντας ἐν τῷ πυρί, καὶ φθορὰ οὐδεμία ἐγενήθη ἐν αὐτοῖς, καὶ ἡ ὅρασις τοῦ τετάρτου ὁμοίωμα ἀγγέλου θεοῦ. καὶ προσελθὼν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὴν θύραν τῆς καμίνου καιομένης τῷ πυρὶ ἐκάλεσεν αὐτοὺς ἐξ ὀνόματος Σεδράχ, Μισάχ. Ἀβδε. ναγώ, οἱ παῖδες τοῦ θεοῦ τῶν θεῶν τοῦ ὑψίστου, ἐξέλθετε ἐκ τοῦ πυρός. οὕτως οὖν ἐξῆλθον οἱ ἄνδρες ἐκ μέσου τοῦ πυρός. καὶ συνήχθησαν οἱ ὕπατοι, τοπάρχαι, καὶ ἀρχιπατριῶται, καὶ οἱ φίλοι τοῦ βασιλέως, καὶ ἐθεώρουν τοὺς ἀνθρώπους ἐκείνους, ὅτι οὐχ ἥψατο τὸ πῦρ τοῦ σώματος αὐτῶν, καὶ αἱ τρίχες αὐτῶν οὐ κατεκάησαν καὶ τὰ σαράβαρα αὐτῶν οὐκ ἠλλοιώθησαν, οὐδὲ ὀσμὴ τοῦ πυρὸς ἦν ἐν αὐτοῖς. ὑπολαβὼν δὲ Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεὺς εἶπεν Εὐλογητὸς Κύριος τοῦ Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδε. ναγώ, ὃς ἀπέστειλε τὸν ἄγγελον αὐτοῦ καὶ ἔσωσε τοὺς παῖδας αὐτοῦ τοὺς ἐλπίσαντας ἐπ’ αὐτόν· τὴν γὰρ προσταγὴν τοῦ βασιλέως ἠθέτησαν καὶ παρέδωκαν τὰ σώματα αὐτῶν εἰς ἐμπυρισμόν, ἵνα μὴ λατρεύσωσι μηδέ προσκυνήσωσι θεῷ ἑτέρῳ ἀλλ ἢ τῷ θεῷ αὐτῶν. καὶ νῦν ἐγὼ κρίνω ἵνα πᾶν ἔθνος καὶ πᾶσαι φυλαὶ καὶ πᾶσαι γλῶσσαι, ὃς ἂν βλασφημήσῃ εἰς τὸν κύριον τὸν θεὸν Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγώ, διαμελισθήσεται καὶ ἡ οἰκία αὐτοῦ δημευθήσεται· διότι οὐκ ἔστιν θεὸς ἕτερος ὃς δυνήσεται ἐξελέσθαι οὕτως. οὕτως οὖν ὁ βασιλεὺς τῷ Σεδράχ. Μισάχ, Ἀβδεναγώ, ἐξουσίαν δοὺς ἐφ’ ὅλης τῆς χώρας κατέστησεν αὐτοὺς ἄρχοντας. Ναβουχοδονοσὸρ ὁ βασιλεὺς πᾶσι

τοῖς λαοῖς, φυλαῖς, καὶ γλώσσαις τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ γῇ· εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη. τὰ σημεῖα καὶ τὰ τέρατα ἃ ἐποίησεν μετ᾽ ἐμοῦ ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος ἤρεσεν ἐναντίον μου ἀναγγεῖλαι ὑμῖν. ὡς μεγάλα καὶ ἰσχυρά· ἡ βασιλεία αὐτοῦ βασιλεία αἰώνιος, ἡ ἐξουσία αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεάν.

# 4

Ἔτους ὀκτωκαιδεκάτου τῆς βασιλείας Ναβουχοδονοσὸρ εἶπεν Εἰρηνεύων ἤμην ἐν τῷ οἴκῳ μου, καὶ εὐθηνῶν ἐπὶ τοῦ θρόνου μου. ἐνύπνιον εἶδον καὶ εὐλαβήθην, καὶ φόβος μοι ἐπέπεσεν. ἐπὶ τῆς κοίτης μου ἐκάθευδον, καὶ ἰδοὺ δένδρον ὑψηλὸν φυόμενον ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ μεγάλη, καὶ οὐκ ἦν ἄλλο ὅμοιον αὐτῷ. καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ μεγάλη, ἡ κορυφὴ αὐτοῦ ἤγγιζεν ἕως τοῦ οὐρανοῦ καὶ τὸ κύτος αὐτοῦ ἕως τῶν νεφελῶν, πληροῦν τὰ ὑποκάτω τοῦ οὐρανοῦ· ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη ἦν, ἐν αὐτῷ ᾤκουν καὶ ἐφώτιζον πᾶσαν τὴν γῆν. οἱ κλάδοι αὐτοῦ τῷ μήκει ὡς σταδίων τριάκοντα, καὶ ὑποκάταω αὐτοῦ ἐσκίαζον πάντα τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ ἐν αὐτῷ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ ἐνόσσευον· ὁ καρπὸς αὐτοῦ πολὺς καὶ ἀγαθός, καὶ ἐχορήγει πᾶσι τοῖς ζῴοις. ἐθεώρουν ἐν τῷ ὕπνῳ μου, καὶ ἰδοὺ ἄγγελος ἀπεστάλη ἐν ἰσχύι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐφώνησεν καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἐκκόψατε αὐτὸ καὶ καταφθείρατε αὐτό· προστέτακται γὰρ ἀπὸ τοῦ ὑψίστου ἐκριζῶσαι καὶ ἀχρειῶσαι αὐτό. καὶ οὕτως εἶπεν Ῥίζαν μίαν ἄφετε αὐτοῦ ἐν τῇ γῇ, ὅπως μετὰ τῶν θηρίων τῆς γῆς ἐν τοῖς ὄρεσι χόρτον ὡς βοῦς νέμηται, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἀλλοιωθῇ, καὶ ἑπτὰ ἔτη βοσκηθῇ σὺν αὐτοῖς, ἕως ἂν γνῷ τὸν κύριον τοῦ οὐρανοῦ ἐξουσίαν

ἔχειν πάντων τῶν ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὅσα ἂν θέλῃ ποιεῖν ποιεῖ ἐν αὐτοῖς. ἐνώπιόν μου ἐξεκόπη ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, καὶ ἡ καταφθορὰ αὐτοῦ ἐν ὥρᾳ μιᾷ τῆς ἡμέρας, καὶ οἱ κλάδοι αὐτοῦ ἐδόθησαν εἰς πάντα ἄνεμον, καὶ εἰλκύσθη καὶ ἐρρίφη· καὶ τὸν χόρτον τῆς γῆς ἤσθιε, καὶ εἰς φυλακὴν παρεδόθη, καὶ ἐν πέδαις καὶ ἐν χειροπέδαις χαλκαῖς ἐδέθη ὑπ’ αὐτῶν. σφόδρα ἐθαύμασα ἐπὶ τούτοις, καὶ ὁ ὕπνος μου ἀπέστη ἀπὸ ταῶν ὀφθαλμῶν μου. καὶ ἀναστὰς τὸ πρωὶ ἐκ τῆς κοίτης μου ἐκάλεσα τὸν Δανιὴλ τὸν ἄρχοντα τῶν σοφιστῶν καὶ τὸν ἡγούμενον τῶν κρινόντων τὰ ἐνύπνια, καὶ διηγησάμην αὐτῷ τὸ ἐνύπνιον, καὶ ὑπέδειξέ μοι πᾶσαν τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ. Μεγάλως δὲ ἐθαύμασεν ὁ Δανιὴλ καὶ ὑπόνοια κατέσπευδεν αὐτόν· καὶ φοβηθεὶς τρόμου λαβόντος αὐτὸν καὶ ἀλλοιωθείσης τῆς ὁράσεως αὐτοῦ, κινήσας τὴν κεφαλήν, ὥραν μίαν ἀποθαυμάσας ἀπεκρίθη μοι φωνῇ πραείᾳ Βασιλεῦ, τὸ ἐνύπνιον τοῦτο τοῖς μισοῦσί σε καὶ ἡ σύγκρισις αὐτοῦ τοῖς ἐχθροῖς σου ἐπέλθοι. τὸ δένδρον τὸ ἐν τῇ γῇ πεφυτευμένον, οὗ ἡ ὅρασις μεγάλη, σὺ εἶ, βασιλεῦ. καὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ τὰ νοσσεύοντα ἐν αὐτῷ· ἡ ἰσχὺς τῆς γῆς καὶ τῶν ἐθνῶν καὶ τῶν γλωσσῶν πασῶν ἕως τῶν περάτων τῆς γῆς καὶ πᾶσαι αἱ χῶραι σοὶ δουλεύουσι. τὸ δὲ ἀνυψωθῆναι τὸ δένδρον ἐκεῖνο καὶ ἐγγίσαι τῷ οὐρανῷ καὶ τὸ κύτος αὐτοῦ ἅἅψασθαι τῶν νεφελῶν· σύ, βασιλεῦ, ὑψώθης ὑπέρ πάντας τοὺς ἀνθρώπους τοὺς ὄντας ἐπὶ προσώπου πάσης τῆς γῆς, ὑψώθη σου ἡ καρδία ὑπερηφανίᾳ καὶ ἰσχύι τὰ πρὸς τὸν ἅγιον καὶ τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ· τὰ ἔργα σου ὤφθη, καθότι ἐξερήμωσας τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ τοῦ ζῶντος ἐπὶ ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ λαοῦ τοῦ ἡγιασμένου. καὶ ἡ ὅρασις ἣν εἶδες, ὅτι ἄγγελος ἐν ἰσχύι ἀπεστάλη παρὰ τοῦ κυρίου, καὶ ὅτι εἶπεν ἐξᾶραι τὸ δένδρον καὶ ἐκκόψαι ἡ κρίσις τοῦ θεοῦ τοῦ μεγάλου ἥξει ἐπὶ σέ, καὶ ὁ ὕψιστος

καὶ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ ἐπὶ σέ κατατρέχουσιν· εἰς φυλακὴν ἀπάξουσί σε, καὶ εἰς τόπον ἔρημον ἀποστελοῦσί σε. καὶ ἡ ῥίζα τοῦ δένδρου ἡ ἀφεθεῖσα, ἐπεὶ οὐκ ἐξεριζώθη· ὁ τόπος τοῦ θρόνου σού σοι συντηρηθήσεται εἰς καιρὸν καὶ ὥραν. ἰδοὺ ἐπὶ σέ ἑτοιμάζονται, καὶ μαστιγώσουσί σε καὶ ἐπάξουσι τὰ κεκριμένα ἐπὶ σέ. Κύριος ζῇ ἐν οὐρανῷ καὶ ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ἐπὶ πάσῃ τῇ γῇ. αὐτοῦ δεήθητι περὶ τῶν ἁμαρτιῶν σου καὶ πάσας τὰς ἀδικίας σου ἐλεημοσύναις λύτρωσαι, ἵνα ἐπιείκεια δοθῇ σοι καὶ πολυήμερος γένῃ ἐπὶ τοῦ θρόνου τῆς βασιλείας σου, καὶ μὴ καταφθείρῃ σε. τούτους τοὺς λόγους ἀγάπησον· ἀκριβὴς γάρ μου ὁ λόγος, καὶ πλήρης ὁ χρόνος σου. Καὶ ἐπὶ συντελείᾳ τῶν λόγων Ναβουχοδονοσὸρ ὡς ἤκουσε τὴν κρίσιν τοῦ ὁράματος, τοὺς λόγους ἐν τῇ καρδίᾳ συνετήρησε. Καὶ μετὰ μῆνας δώδεκα ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τῶν τειχῶν τῆς πόλεως μετὰ πάσης τῆς δόξης αὐτοῦ περιεπάτει καὶ ἐπὶ τῶν πύργων αὐτῆς διεπορεύετο, καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν Αὕτη ἐστὶ Βαβυλὼν ἡ μεγάλη, ἣν ἐγὼ ᾠκοδόμησα, καὶ οἶκος βασιλείας μου ἐν ἰσχύι κράτους μου κληθήσεται εἰς τιμὴν τῆς δόξης μου. ἔι τοῦ λόγου ἐν τῷ στόματι τοῦ βασιλέως ὄντος, καὶ ἐπὶ συντελείας τοῦ λόγου αὐτοῦ φωνὴν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἤκουσε Σοὶ λέγεται, Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεῦ, ἡ βασιλεία Βαβυλῶνος ἀφήρηταί σου καὶ ἑτέρῳ δίδοται, ἐξουθενημένῳ ἀνθρώπῳ ἐν τῷ οἴκῳ σου. ἰδοὺ ἐγὼ καθίστημι αὐτὸν ἐπὶ τῆς βασιλείας σου, καὶ τὴν ἐξουσίαν σου καὶ τὴν δόξαν σου καὶ τὴν τρυφὴν σου παραλήψεται, ὅπως ἐπιγνῷς ὅτι ἐξουσίαν ἔχει ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ ἐν τῇ βασιλείᾳ τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ ἐὰν βούληται δώσει αὐτὴν· ἕως δὲ ἡλίου ἀνατολῆς βασιλεὺς ἕτερος εὐφρανθήσεται ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ κρατήσει τῆς δόξης σου καὶ τῆς ἰσχύος σου καὶ τῆς ἐξουσίας σου. καὶ οἱ ἄγγελοι διώξονταί σε ἐπὶ ἔτη ἑπτά, καὶ οὐ μὴ ὀφθῇς οὐδ’ οὐ μὴ λαλήσῃς μετὰ παντὸς

ἀνθρώπου· χόρτον ὡς βοῦν σε ψωμίσουσι καὶ ἀπὸ τῆς χλόης τῆς γῆς ἔσται ἡ νομή σου· ἰδοὺ ἀντὶ τῆς δόξης σου δήσουσί σε, καὶ τὸν οἶκον τῆς τρυφῆς σου καὶ τῆς βασιλείας σου ἕτερος ἕξει ἕμς δὲ πρωὶ πάντα τελεσθήσεται ἐπὶ σέ, Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεῦ Βαβυλῶνος, καὶ οὐχ ὑστερήσει ἀπὸ πάντων τούτων οὐθέν. Ἐγὼ Ναβουχοδονοσόρ, βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἑπτὰ ἔτη ἐπεδήθην· χόρτον ὡς βοῦν ἐψώμισάν με καὶ ἀπὸ τῆς χλόης τῆς γῆς ἤσθιον. καὶ μετὰ ἔτη ἑπτὰ ἔδωκα τὴν ψυχήν μου εἰς δέησιν, καὶ ἠξίωσα περὶ τῶν ἁμαρτιῶν μου κατὰ πρόσωπον Κυρίου τοῦ θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ περὶ τῶν ἀγνοιῶν μου τοῦ θεοῦ τῶν θεῶν τοῦ μεγάλου ἐδεήθην. καὶ αἱ τρίχες μου ἐγένοντο ὡς πτέρυγες ἀετοῦ, οἱ ὄνυχές μου ὡσεὶ λέοντος· ἠλλοιώθη ἡ σάρξ μου καὶ ἡ καρδία μου, γυμνὸς περιεπάτουν μετὰ τῶν θηρίων τῆς γῆς. ἐνύπνιον εἶδον καὶ ὑπόνοιαί με εἰλήφασιν, καὶ διὰ χρόνου ὕπνος με ἔλαβε πολὺς καὶ νυσταγμὸς ἐπέπεσέ μοι. καὶ ἐπὶ συντελείᾳ τῶν ἑπτὰ ἐτῶν ὁ χρόνος μου τῆς ἀπολυτρώσεως ἦλθεν, καὶ αἱ ἁμαρτίαι μου καὶ αἱ ἄγνοιαί μου ἐπληρώθησαν ἐναντίον τοῦ θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐδεήθην περὶ τῶν ἀγνοιῶν μου τοῦ θεοῦ τῶν θεῶν τοῦ μεγάλου, καὶ ἰδοὺ ἄγγελος εἷς ἐκάλεσέν με ἐκ τοῦ οὐρανοῦ λέγων Ναβουχοδονοσόρ, δούλευσον τῷ θεῷ τοῦ οὐρανοῦ τῷ ἁγίῳ καὶ δὸς δόξαν τῷ ὑψίστῳ· τὸ βασίλειον τοῦ ἔθνους σού σοι ἀποδίδοται. ἐν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἀποκατεστάθη ἡ βασιλεία μου ἐμοὶ καὶ ἡ δόξα μου ἀπεδόθη μοι. τῷ ὑψίστῳ ἀνθομολογοῦμαι καὶ αἰνῶ, τῷ κτίσαντι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὰς θαλάσσας καὶ τοὺς ποταμοὺς καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς ἐξομολογοῦμαι καὶ αἰνῶ ὅτι αὐτός ἐστι θεὸς τῶν θεῶν καὶ κύριος τῶν κυρίων καὶ βασιλεὺς τῶν βασιλέων, ὅτι αὐτὸς ποιεῖ σημεῖα καὶ τέρατα καὶ ἀλλοιοῖ καιροὺς καὶ χρόνους, ἀφαιρῶν βασιλείαν βασιλέων καὶ καθιστῶν ἑτέρους

ἀντ’ αὐτῶν. ἀπὸ τοῦ νῦν αὐτῷ λατρεύσω, καὶ ἀπὸ τοῦ φόβου αὐτοῦ τρόμος εἴληφέ με, καὶ πάντας τοὺς ἁγίους αἰνῶ· οἱ γὰρ θεοὶ τῶν ἐθνῶν οὐκ ἔχουσιν ἐν ἑαυτοῖς ἰσχὺν ἀποστρέψαι βασιλείαν βασιλέως εἰς ἕτερον βασιλέα, καὶ ἀποκτεῖναι καὶ ζῆν ποιῆσαι, καὶ ποιῆσαι σημεῖα καὶ θαυμάσια μεγάλα καὶ φοβερὰ καὶ ἀλλοιῶσαι ὑπερμεγέθη πράγματα, καθὼς ἐποίησεν ἐν ἐμοὶ ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ καὶ ἠλλοίωσεν ἐπ’ ἐμοὶ μεγάλα πράγματα. ἐγὼ πάσας τὰς ἡμέρας τῆς βασιλείας μου περὶ τῆς ψυχῆς μου τῷ ὑψίστῳ θυσίας προσοίσω εἰς ὀσμὴν εὐωδίας τῷ κυρίῳ, καὶ τὸ ἀρεστὸν ἐνώπιον αὐτοῦ ποιήσαω ἐγὼ καὶ ὁ λαός μου, τὸ ἔθνος καὶ αἱ χῶραί μου αἱ ἐν τῇ ἐξουσίᾳ μου. καὶ ὅσοι ἐλάλησαν εἰς τὸν θεὸν τοῦ οὐρανοῦ καὶ ὅσοι ἂν καταληφθῶσι λαλοῦντές τι, τούτους κατακρινῶ θανάτῳ. Ἔγραψε δὲ ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονοσὸρ ἐπιστολὴν ἐγκύκλιον πᾶσι τοῖς κατὰ τόπου ἔθνεσι καὶ χώραις καὶ γλώσσαις πάσαις ταῖς οἰκούσαις ἐν πάσαις ταῖς χαραῖς, γενεαῖς καὶ γενεαῖς. Κυρίῳ τῷ θεῷ τοῦ οὐρανοῦ αἰνεῖτε, καὶ θυσίαν καὶ προσφορὰν προσφέρετε αὐτῷ ἐνδόξως. ἐγὼ βασιλεὺς βασιλέων ἀνθομολογοῦμαι αὐτῷ ἐνδόξως, ὅτι οὕτως ἐποίησε μετ’ ἐμοῦ· ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ ἐκάθισέ με ἐπὶ τοῦ θρόνου μου καὶ τῆς ἐξουσίας μου καὶ τῆς βασιλείας μου· ἐν τῷ λαῷ μου ἐκράτησα καὶ ἡ μεγαλωσύνη μου ἀποκατεστάθη μοι. Ναβουχοδονοσὸρ βασιλεὺς πᾶσι τοῖς ἔθνεσι καὶ πάσαις ταῖς χώραις καὶ πᾶσι τοῖς οἰκοῦσιν αὐταῖς· εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη ἐν παντὶ καιρῷ. καὶ νῦν ὑποδείξω ὑμῖν τὰς πράξεις ἃς ἐποίησεν μετ’ ἐμοῦ ὁ θεὸς ὁ μέγας· ἔδοξε δέ μοι ἀποδεῖξαι ὑμῖν καὶ τοῖς σοφισταῖς ὑμῶν ὅτι ἔστι θεός, καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ μεγάλα· τὸ βασίλειον αὐτοῦ βασίλειον εἰς τὸν αἰῶνα, ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ἀπὸ γενεῶν εἰς γενεάς. καὶ ἀπέστειλεν ἐπιστολὰς περὶ πάντων τῶν γενηθέντων αὐτῷ ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τοῖς οὖσιν

ὑπὸ τὴν βασιλείαν αὐτοῦ. Βαλτασὰρ ὁ βασιλεὺς ἐποίησεν δοχὴν μεγάλην ἐν ἡμέρᾳ ἐγκαινισμοῦ τῶν βασιλείων αὐτοῦ· ἐκάλεσεν ἄνδρας δισχιλίους. ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ δαλτασὰρ ἐννψ ούμενος ἀπὸ τοῦ οἴνου καὶ και καυχῦμενος ἐπήνεσεν πάντας τοὺς θεοὺς τῶν ἐθνῶν τοὺς χωνευτοὺς καὸ γλυπτοὺς ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ, καὶ τῷ θεῷ τῷ ὑφίστῳ οὐκ ἔδωκεν αἴνεσιν. ἐν αὐτῇ τῇ νυκτὶ ἐξῆλθον δάκτυλοι ὡσεὶ ἀνθρώπου καὶ ἐπέγραψαν ἐπὶ τοῦ τοίχου οἴκου αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ κονιάματος κατέναντι τοῦ λύχνους Μανή, φαρές, θεκέλ. ἔστι δὲ ἡ ἑρμηνεία αὐτῶν· μανή, ἠρίθμηται φαρές, ἐξῆρται· θεκέλ, ἔσταται.

# 5

Βαλτασὰρ ὁ βασιλεὺς ἐποίησεν ἑστιατορίαν μεγάλην τοῖς ροις αὐτοῦ. καὶ ἔπινεν οἶνον, καὶ ἀνυψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ εἶπεν ἐνέγκαι τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ τοῦ οἴκου τοῦ θεοῦ, ἃ ἤνεγκε Ναβουχοδονοσὸρ ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἀπὸ Ἰερουσαλήμ, καὶ οἰνοχοῆσαι ἐν αὐτοῖς τοῖς ἑταίροις αὐτοῦ. καὶ ἠνέχθη, καὶ ἔπινον ἐν αὐτοῖς· καὶ ηὐλόγουν τὰ εἴδωλα τὰ χειροποίητα αὐτῶν, καὶ τὸν θεὸν τοῦ αἰῶνος οὐκ εὐλόγησαν τὸν ἔχοντα τὴν ἐξουσίαν τοῦ πνεύματος αὐτῶν. ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐκείνῃ ἐξῆλθον δάκτυλοι ὡσεὶ χειρὸς ἀνθρώπου καὶ ἔγραψαν ἐπὶ τοῦ τοίχου τοῦ οἴκου αὐτοῦ ἐπὶ τοῦ κονιάματος κατέναντι τοῦ φωτὸς ἔναντι τοῦ βασιλέως Βαλτασάρ, καὶ εἶδε χεῖρα γράφουσαν. καὶ ἡ ὄρασις αὐτοῦ ἠλλοιώθη, καὶ φόβοι καὶ ὑπόνοιαι αὐτὸν κατέσπευδον. ἔσπευσεν οὖν ὁ βασιλεὺς καὶ ἐξανέστη, καὶ ἑώρα τὴν γραφὴν ἐκείνην, καὶ οἱ συνεταῖροι κύκλῳ αὐτοῦ ἐκαυχῶντο. καὶ ὁ βασιλεὺς ἐφώνησε

φωνῇ μεγάλῃ καλέσαι τοὺς ἐπαοιδοὺς καὶ φαρμακοὺς καὶ Χαλδαίους καὶ γαζαρηνούς, ἀπαγγεῖλαι τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς. καὶ εἰσεπορεύοντο ἐπὶ θεωρίαν ἰδεῖν τὴν γραφήν, καὶ τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς οὐκ ἐδύναντο συγκρῖναι τῷ βασιλεῖ τότε ὁ βασιλεὺς ἐξέθηκε πρόσταγμα λέγων Πᾶς ἀνὴρ ὃς ἂν ὑποδείξῃ τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς, στολιεῖ αὐτὸν πορφύραν, καὶ μανιάκην χρυσοῦν περιθήσει αὐτῷ, καὶ δοθήσεται αὐτῷ ἐξουσία τοῦ τρίτου μέρους τῆς βασιλείας. καὶ εἰσεπορεύοντο οἱ ἐπαοιδοὶ καὶ φαρμακοὶ καὶ γαζαρηνοί, καὶ οὐκ ἠδύνατο οὐδεὶς τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς ἀπαγγεῖλαι. τότε ὁ βασιλεὺς ἐκάλεσε τὴν βασίλισσαν περὶ τοῦ σημείου, καὶ ὑπέδειξεν αὐτῇ ὡς μέγα ἐστί, καὶ ὅτι πᾶς ἄνθρωπος οὐ δύναται ἀπαγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς. τότε ἡ βασίλισσα ἐμνήσθη πρὸς αὐτὸν περὶ τοῦ Δανιήλ, ὃς ἦν ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, καὶ εἶπεν τῷ βασιλεῖ ἄνθρωπος ἐπιστήμων ἦν καὶ σοφὸς καὶ ὑπερέχων πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος, καὶ πνεῦμα ἅγιον ἐν αὐτῷ ἐστι, καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ πατρός σου τοῦ βασιλέως συγκρίματα ὑπέρογκα ὑπέδειξε Ναβουχοδονοσὸρ τῷ πατρί σου. Τότε Δανιὴλ εἰσήχθη πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς εἶπεν αὐτῷ Ὦ Δανιήλ, δύνῃ μοι ὑποδεῖξαι τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς; καὶ στολιῶ σε πορφύραν καὶ μανιάκην χρυσοῦν περιθήσω σοι, καὶ ἔξεις ἐξουσίαν τοῦ τρίτου μέρους τῆς βασιλείας μου. τότε Δανιὴλ ἔστη κατέναντι τῆς γραφῆς καὶ ἀνέγνω, καὶ οὕτως ἀπεκρίθη τῷ βασιλεῖ Αὕτη ἡ γραφή Ἠρίθμηται, κατελογίσθη, ἐξῆρται καὶ ἔστη ἡ γράψασα χείρ. καὶ αὕτη ἡ σύγκρισις αὐτῶν. Βασιλεῦ, σὺ ἐποιήσω ἐστιατορίαν τοῖς φίλοις σου καὶ ἔπινες οἶνον, καὶ τὰ σκεύη τοῦ οἴκου τοῦ θεοῦ τοῦ ζῶντος ἠνέχθη σοι καὶ ἐπίνετε ἐν αὐτοῖς, σὺ καὶ οἱ μεγιστᾶνές σου, καὶ ἠνέσατε πάντα τὰ εἴδωλα τὰ χειροποίητα τῶν ἀνθρώπων, καὶ

τῷ θεῷ τῷ ζῶντι οὐκ εὐλογήσατε, καὶ τὸ πνεῦμά σου ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ τὸ βασίλειόν σου αὐτὸς ἔδωκέ σοι, καὶ οὐκ εὐλόγησας αὐτὸν οὐδὲ ᾔνεσας αὐτῷ. τοῦτο τὸ σύγκριμα τῆς γραφῆς Ἠρίθμηται ὁ χρόνος σου τῆς βασιλείας, ἀπολήγει ἡ βασιλεία σου· συντέτμηται καὶ συντετέλεσται ἡ βασιλεία σου τοῖς Μήδοις καὶ τοῖς Πέρσαις δίδοται. τότε Βαλτασὰρ ὁ βασιλεὺς ἐνέδυσε τὸν Δανιὴλ πορφύραν, καὶ μανιάκην χρυσοῦν περιέθηκεν αὐτῷ, καὶ ἔδωκεν ἐξουσίαν αὐτῷ τοῦ τρίτου μέρους τῆς βασιλείας αὐτοῦ. καὶ τὸ σύγκριμα ἐπῆλθε Βαλτασὰρ τῷ βασιλεῖ, καὶ τὸ βασίλειον ἐξῆρται ἀπὸ τῶν Χαλδαίων καὶ ἐδόθη τοῖς Μήδοις καὶ τοῖς Πέρσαις. καὶ Ἀρταξέρξης ὁ τῶν Μήδων παρέλαβε τὴν βασιλείαν.

# 6

Καὶ Δαρεῖος πλήρης τῶν ἡμερῶν καὶ ἔνδοξος ἐν γήρει. καὶ κατέστησε σατράπας ἑκατὸν εἴκοσι ἑπτὰ ἐπὶ πάσης τῆς βασιλείας αὐτοῦ, καὶ ἐπ᾽ αὐτῶν ἄνδρας τρεῖς ἡγουμένους αὐτῶν. καὶ Δανιὴλ εἷς ἦν τῶν τριῶν ἀνδρῶν, ὑπέρ πάντας ἔχων ἐξουσίαν ἐν τῇ βασιλείᾳ. καὶ Δανιὴλ ἦν ἐνδεδυμένος πορφύραν καὶ μέγας καὶ ἔνδοξος ἔναντι Δαρείου τοῦ βασιλέως, καθότι ἦν ἔνδοξος καὶ ἐπιστήμων καὶ συνετός, καὶ πνεῦμα ἅγιον ἐν αὐτῷ, καὶ εὐοδοὺμενος ἐν ταῖς πραγματείαις τοῦ βασιλέως αἷς ἔπρασσε. τότε ὁ βασιλεὺς ἐβουλεύσατο καταστῆσαι τὸν Δανιὴλ ἐπὶ πάσης τῆς βασιλείας αὐτοῦ καὶ τοὺς δύο ἄνδρας, οὓς κατέστησε μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ σατράπας ἑκατὸν εἴκοσι ἑπτά. ὅτκ δὲ φδουλεύσατο ὁ βασιλεὺς καταστῆσαι τὸν Δανιὴλ ἐπὶ πάσης τῆς βασιλείας αὐτοῦ, τότε βουλὴν καὶ γνώμην ἐβουλεύσαντο ἐν ἑαυτοῖς οἱ δύο νεανίσκοι

πρὸς ἀλλήλους λέγοντες, ἐπεὶ οὐδεμίαν ἁμαρτίαν οὐδὲ ἄγνοιαν ηὕρισκον κατὰ τοῦ Δανιὴλ περὶ ἧς κατηγορήσουσιν αὐτοῦ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπαν Δεῦτε στήσωμεν ὁρισμὸν καθ’ ἑαυτῶν, ὅτι πᾶς ἄνθρωπος οὐκ ἀξιώσει ἀξίωμα καὶ οὐ μὴ εὔξηται εὐχὴν ἀπὸ παντὸς θεοῦ ἕως ἡμερῶν τριάκοντα, ἀλλ’ ἢ παρὰ Δαρείου τοῦ βασιλέως· εἰ δὲ μή, ἀποθανεῖται· ἵνα ἡττήσωσι τὸν Δανιὴλ ἐναντίον τοῦ βασιλέως, καὶ ῥιφῇ εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. ᾔδεισαν γὰρ ὅτι Δανιὴλ προσεύχεται καὶ δεῖται Κυρίου τοῦ θεοῦ αὐτοῦ τρὶς τῆς ἡμέρας. τότε προσήλθοσαν οἱ ἄνθρωποι ἐκεῖνοι καὶ εἶπαν ἐναντίον τοῦ βασιλέως Ὁρισμὸν καὶ στάσιν ἐστήσαμεν, ὅτι πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἂν εὔξηται εὐχὴν ἢ ἀξιώσῃ ἀξίωμά τι παρὰ παντὸς θεοῦ ἕως ἡμερῶν τριάκοντα ἀλλ’ ἢ παρὰ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ῥιφήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. καὶ οὕτως ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος ἔστησε καὶ ἐκύρωσεν. ἐπιγνοὺς δὲ Δανιὴλ τὸν ὁρισμὸν ὃν ἔστησε κατ’ αὐτοῦ, θυρίδας ἤνοιξεν ἐν τῷ ὑπερῷῳ αὐτοῦ κατέναντι Ἰερουσαλήμ, καὶ ἔπιπτεν ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ τρὶς τῆς ἡμέρας, καθὼς ἐποίει ἔμπροσθεν, καὶ ἐδεῖτο. καὶ αὐτοὶ ἐτήρησαν τὸν Δανιὴλ, καὶ κατελάβοσαν αὐτὸν εὐχόμενον τρὶς τῆς ἡμέρας καθ’ ἑκάστην ἡμέραν. τότε οὗτοι οἱ ἄνθρωποι ἐνέτυχον τῷ βασιλεῖ καὶ εἶπαν Δαρεῖε βασιλεῦ, οὐχ ὁρισμὸν ὡρίσω ἵνα πᾶς ἄνθρωπος μὴ εὔξηται εὐχὴν μηδὲ ἀξιώσῃ ἀξίωμα παρὰ παντὸς θεοῦ ἕως ἡμερῶν τριάκοντα ἀλλὰ παρὰ σοῦ, βασιλεῦ· εἰ δέ μή, ῥιφήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων; ἀποκριθεὶς δὲ ὁ βασιλεὺς εἶπεν αὐτοῖς Ἀκριβὴς ὁ λόγος, καὶ μενεῖ ὁ ὁρισμός. καὶ εἶπον αὐτῷ Ὀρκίζομέν σε τοῖς Μήδων καὶ Περσῶν δόγμασιν, ἵνα μὴ ἀλλοιώσῃς τὸ πρόσταγμα μηδὲ θαυμάσῃς πρόσωπον, καὶ ἵνα μὴ ἐλαττώσῃς τι τῶν εἰρημένων, καὶ κολάσῃς τὸν ἄνθρωπον ὃς οὐκ ἐνέμεινε τῷ ὁρισμῷ τούτῳ. καὶ εἶπεν Οὕτως ποιήσω καθὼς λέγετε,

καὶ ἔστηκέ μοι τοῦτο. καὶ εἶπον Ἰδοὺ εὕρομεν Δανιὴλ τὸν φίλον σου εὐχόμενον καὶ δεόμενον τοῦ προσώπου τοῦ θεοῦ αὐτοῦ τρὶς τῆς ἡμέρας. καὶ λυπούμενος ὁ βασιλεὺς εἶπεν ῥιφῆναι τὸν Δανιὴλ εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων, κατὰ τὸν ὁρισμὸν ὃν ἔστησε κατ᾽ αὐτοῦ. τότε ὁ βασιλεὺς σφόδρα ἐλυπήθη ἐπὶ τῷ Δανιὴλ, καὶ ἐβοήθει τοῦ ἐξελέσθαι αὐτὸν ἕως δυσμῶν ἡλίου ἀπὸ τῶν χειρῶν τῶν σατραπῶν, καὶ οὐκ ἠδύνατο ἐξελέσθαι αὐτὸν ἀπ᾽ αὐτῶν. ἀναβοήσας δέ Δαρεῖος ὁ βασιλεὺς εἶπε τῷ Δανιήλ Ὁ θεός σου, ᾧ σὺ λατρεύεις ἐνδελεχῶς τρὶς τῆς ἡμέρας, αὐτὸς ἐξελεῖταί σε ἐκ χειρὸς τῶν λεόντων· ἕως πρωὶ θάρρει. τότε Δανιὴλ ἐρρίφη εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων, καὶ ἠνέχθη λίθος καὶ ἐτέθη εἰς τὸ στόμα τοῦ λάκκου, καὶ ἐσφραγίσατο ὁ βασιλεὺς ἐν τῷ δακτυλίῳ ἑαυτοῦ καὶ ἐν τοῖς δακτυλίοις τῶν μεγιστάνων αὐτοῦ, ὅπως μὴ ἀπ᾽ αὐτῶν ἀρθῇ ὁ Δανιὴλ ἢ ὁ βασιλεὺς αὐτὸν ἀνασπάσῃ ἐκ τοῦ λάκκου. τότε ὑπέστρεψεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὰ βασίλεια αὐτοῦ καὶ ηὐλίσθη νῆστις, καὶ ἦν λυπούμενος περὶ τοῦ Δανιήλ. τότε ὁ θεὸς τοῦ Δανιὴλ πρόνοιαν ποιούμενος αὐτοῦ ἀπέκλεισε τὰ στόματα τῶν λεόντων, καὶ οὐ παρηνώχλησαν τῷ Δανιήλ. καὶ ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος ὤρθρισε πρωὶ καὶ παρέλαβε μεθ᾽ ἑαυτοῦ τοὺς σατράπας, καὶ πορευθεὶς ἔστη ἐπὶ τοῦ στόματος τοῦ λάκκου τῶν λεόντων. τότε ὁ βασιλεὺς ἐκάλεσε τὸν Δανιὴλ φωνῇ μεγάλῃ μετὰ κλαυθμοῦ λέγων Ὦ Δανιὴλ, εἰ ἄρα ζῇς, καὶ ὁ θεός σου, ᾧ λατρεύεις ἐνδελεχῶς, σέσωκέ σε ἀπὸ τῶν λεόντων, καὶ οὐκ ἠχρείωκάν σε; τότε Δανιὴλ ἐπήκουσε φωνῇ μεγάλῃ καὶ εἶπεν Βασιλεῦ, ἔτι εἰμὶ ζῶν, καὶ σέσωκέ με ὁ θεὸς ἀπὸ τῶν λεόντων, καθότι δικαιοσύνη ἐν ἐμοὶ εὑρέθη ἐναντίον αὐτοῦ· καὶ ἐναντίον δὲ σοῦ, βασιλεῦ, οὔτε ἄγνοια οὔτε ἁμαρτία εὑρέθη ἐν ἐμοί· σὺ δὲ ἤκουσας ἀνθρώπων πλανώντων βασιλεῖς καὶ ἔρριψάς με εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων εἰς ἀπώλειαν. τότε

συνήχθησαν πᾶσαι αἱ δυνάμεις καὶ εἶδον τὸν Δανιὴλ, ὡς οὐ παρηνώχλησαν αὐτῷ οἱ λέοντες. τότε οἱ δύο ἄνθρωποι ἐκεῖνοι οἱ καταμαρτυρήσαντες τοῦ Δανιὴλ, αὐτοὶ καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν, ἐρρίφησαν τοῖς λέουσι, καὶ οἱ λέοντες ἀπέκτειναν αὐτοὺς καὶ ἔθλασαν τὰ ὀστᾶ αὐτῶν. Τότε Δαρεῖος ἔγραψε πᾶσι τοῖς ἔθνεσι καὶ γλώσσαις καὶ χώραις τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ λέγων Πάντες οἱ ἄνθρωποι οἱ ὄντες ἐν τῇ βασιλείᾳ μου ἔστωσαν προσκυνοῦντες καὶ λατρεύοντες τῷ θεῷ τοῦ Δανιήλ· αὐτὸς γάρ ἐστι θεὸς μένων καὶ ζῶν εἰς γενεὰς γενεῶν ἕως τοῦ αἰῶνος. ἐγὼ Δαρεῖος ἔσομαι αὐτῷ προσκυνῶν καὶ δουλεύων πάσας τὰς ἡμέρας μου· τὰ γὰρ κἴδωλα τὰ χειροποίητα οὐ δύνανται σῶσαι, ὡς ἐλυτρώσατο ὁ θεὸς τοῦ Δανιὴλ τὸν Δανιήλ. καὶ ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος προσετέθη πρὸς τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ Δανιὴλ κατεστάθη ἐπὶ τῆς βασιλείας Δαρείου· καὶ Κῦρος ὁ Πέρσης παρέλαβε τὴν βασιλείαν αὐτοῦ.

# 7

Ἔτους πρώτου βασιλεύοντος Βαλτασὰρ χώρας Βαβυλωνίας Δανιὴλ ὅραμα εἶδε παρὰ κεφαλὴν ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ. τότε Δανιὴλ τὸ ὅραμα, ὃ εἶδεν, ἔγραψεν εἰς κεφάλαια λόγων. Ἐπὶ τῆς κοίτης μου ἐθεώρουν καθ’ ὕπνους νυκτός, καὶ ἰδοὺ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρανοῦ ἐνέπεσον εἰς τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην. καὶ τέσσαρα θηρία ἀνέβαινον ἐκ τῆς θαλάσσης, διαφέροντα ἓν παρὰ τὸ ἕν. τὸ πρῶτον ὡσεὶ λέαινα ἔχουσα πτερὰ ὡσεὶ ἀετοῦ· ἐθεώρουν ἕως ὅτου ἐτίλη τὰ πτερὰ αὐτῆς, καὶ ἤρθη ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ ποδῶν ἀνθρωπίνων ἐστάθη καὶ ἀνθρωπίνη καρδία ἐδόθη αὐτῇ.

καὶ ἰδοὺ μετ’ οὐ τὴν ἄλλο θηρίον ὁμοίωσιν ἔχον ἄρκου, καὶ ἐπὶ τοῦ ἑνὸς πλευροῦ ἐστάθη, καὶ τρία πλευρὰ ἦν ἐν τῷ στόματι αὐτῆς ἐν μέσῳ ὀδόντων αὐτῆς, καὶ οὕτως εἶπεν Ἀνάστα, κατάφαγε σάρκας πολλάς. καὶ μετὰ ταῦτα ἐθεώρουν θηρίον ἄλλο ὡσεὶ πάρδαλιν· καὶ πτερὰ τέσσαρα ἐπέτεινον ἐπάνω αὐτοῦ, καὶ τέσσαρες κεφαλαὶ τῷ θηρίῳ. μετὰ δὲ ταῦτα ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς θηρίον τέταρτον φοβερόν, καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ ὑπερφέρων ἰσχύι, ἔχον ὀδόντας σιδηροῦς μεγάλους. ἐσθίον καὶ κοπανίζον, κύκλῳ τοῖς ποσὶ καταπατοῦν, διαφόρως χρώμενον παρὰ πάντα τὰ πρὸ αὐτοῦ θηρία· εἶχε δέ κέρατα δέκα, καὶ βουλαὶ πολλαὶ ἐν τοῖς κέρασιν αὐτοῦ. καὶ ἰδοὺ ἄλλο ἓν κέρας ἀνεφύη ἀνὰ μέσον αὐτῶν μικρὸν ἐν τοῖς κέρασιν αὐτοῦ, καὶ τρία τῶν κεράτων τῶν πρώτων ἐξηράνθησαν δι᾽ αὐτοῦ· καὶ ἰδοὺ ὀφθαλμοὶ ὥσπερ ὀφθαλμοὶ ἀνθρώπινοι ἐν τῷ κέρατι τούτῳ καὶ στόμα λαλοῦν μεγάλα, καὶ ἐποίει πόλεμον πρὸς τοὺς ἁγίους. ἐθεώρουν ἕως ὅτε θρόνοι ἐτέθησαν, καὶ παλαιὸς ἡμερῶν ἐκάθητο ἔχων περιβολὴν ὡσεὶ χιόνα, καὶ τὸ τρίχωμα τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ὡσεὶ ἔριον λευκὸν καθαρόν· ὁ θρόνος ὡσεὶ φλὸξ πυρός, τροχοὶ αὐτοῦ πῦρ καιόμενον. ποταμὸς πυρὸς ἕλκων, καὶ ἐξεπορεύετο κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ ποταμὸς πυρός· χίλιαι χιλιάδες ἐθεράπευον αὐτὸν καὶ μύριαι μυριάδες παρειστήκεισαν αὐτῷ· καὶ κριτήριον ἐκάθισε καὶ βίβλοι ἠνεῴχθησαν. ἐθεώρουν τότε τὴν φωνὴν τῶν λόγων τῶν μεγάλων ὧν τὸ κέρας ἐλάλει· θεωρῶν ἤμην, καὶ ἀπετυμπανίσθη τὸ θηρίον, καὶ ἀπώλετο τὸ σῶμα αὐτοῦ καὶ ἐδόθη εἰς καῦσιν πυρός. καὶ τοὺς κύκλῳ αὐτοῦ ἀπέστησε τῆς ἐξουσίας αὐτῶν, καὶ χρόνος ζωῆς ἐδόθη αὐτοῖς ἕως χρόνου καὶ καιροῦ. ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτός, καὶ ἰδοὺ ἐπὶ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ ὡς υἱὸς ἀνθρώπου ἤρχετο, καὶ ὡς παλαιὸς ἡμερῶν παρῆν· καὶ οἱ παρεστηκότες

παρῆσαν αὐτῷ. καὶ ἐδόθη αὐτῷ ἐξουσία καὶ τιμὴ βασιλική, καὶ πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς κατὰ γένη καὶ πᾶσα δόξα αὐτῷ λατρεύουσα· καὶ ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ἐξουσία αἰώνιος ἥτις οὐ μὴ ἀρθῇ, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ, ἥτις οὐ μὴ φθαρῇ. Καὶ ἀκηδιάσας ἐγὼ Δανιὴλ ἐν τούτοις ἐν τῷ ὁράματι τῆς νυκτός, ἐτάρασσόν με οἱ διαλογισμοί μου. προσῆλθον πρὸς ἕνα τῶν ἑστώτων καὶ τὴν ἀκρίβειαν ἐζήτουν παρ’ αὐτοῦ ὑπέρ πάντων τούτων. ἀποκριθεὶς δὲ λέγει μοι καὶ τὴν κρίσιν τῶν λόγων ἐδήλωσέ μοι Ταῦτα τὰ θηρία τὰ μεγάλα εἰσὶ τέσσαρες βασιλεῖαι, αἳ ἀπολοῦνται ἀπὸ τῆς γῆς· καὶ παραλήψονται τὴν βασιλείαν ἅγιοι Ὑψίστου, καὶ καθέξουσι τὴν βασιλείαν ἕως τοῦ αἰῶνος τῶν αἰώνων. τότε ἤθελον ἐξακριβάσασθαι περὶ τοῦ θηρίου τοῦ τετάρτου τοῦ διαφθείροντος πάντα καὶ ὑπερφόβου· καὶ ἰδοὺ οἱ ὀδόντες αὐτοῦ σιδηροῖ καὶ οἱ ὄνυχες αὐτοῦ χαλκοῖ, κατεσθίοντες πάντας κυκλόθεν καὶ περιπατοῦντες τοῖς ποσί. καὶ περὶ τῶν δέκα κεράτων αὐτοῦ τῶν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, καὶ τοῦ ἑνὸς τοῦ ἄλλου τοῦ προσφυέντος, καὶ ἐξέπεσαν δι᾽ αὐτοῦ τρία, καὶ τὸ κέρας ἐκεῖνο εἶχεν ὀφθαλμοὺς καὶ στόμα λαλοῦν μεγάλα, καὶ ἡ πρόσοψις αὐτοῦ ὑπερέφερε τὰ ἄλλα. καὶ κατενόουν τὸ κέρας ἐκεῖνο πόλεμον συνιστάμενον πρὸς τοὺς ἁγίους καὶ τροπούμενον αὐτοὺς, ἕως τοῦ ἐλθεῖν τὸν παλαιὸν ἡμερῶν, καὶ τὴν κρίσιν ἔδωκε τοῖς ἁγίοις τοῦ ὑψίστου, καὶ ὁ καιρὸς ἐδόθη καὶ τὸ βασίλειον κατέσχον οἱ ἅγιοι. καὶ ἐρρέθη μοι περὶ τοῦ θηρίου τοῦ τετάρτου, ὅτι βασιλεία τετάρτη ἔσται ἐπὶ τῆς γῆς, ἥτις διοίσει παρὰ πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ καταφάγεται πᾶσαν τὴν γῆν καὶ ἀναστατώσει αὐτὴν καὶ καταλεανεῖ αὐτήν. καὶ τὰ δέκα κέρατα βασιλείας δέκα βασιλεῖς στήσονται· καὶ ὁ ἄλλος βασιλεὺς μετα τούτους στήσεται, καὶ αὐτὸς διοίσει κακοῖς ὑπέρ τοὺς πρώτους καὶ τρεῖς βασιλεῖς ταπεινώσει, καὶ ῥήματα εἰς τὸν ὕψιστον λαλήσει καὶ

τοὺς ἁγίους τοῦ ὑψίστου κατατρίψει, καὶ προσδέξεται ἀλλοιῶσαι καιροὺς καὶ νόμον, καὶ παραδοθήσεται πάντα εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ ἕως καιροῦ καὶ καιρῶν καὶ ἕως ἡμίσους καιροῦ. καὶ ἡ κρίσις καθίσεται, καὶ τὴν ἐξουσίαν ἀπολοῦσι, καὶ βουλεύσονται μιᾶναι καὶ ἀπολέσαι ἕως τέλους. καὶ τὴν βασιλείαν καὶ τὴν ἐξουσίαν καὶ τὴν μεγαλειότητα αὐτῶν καὶ τὴν ἀρχὴν πασῶν τῶν ὑπὸ τὸν οὐρανὸν βασιλειῶν ἔδωκε λαῷ ἁγίῳ ὑψίστῳ βασιλεῦσαι βασιλείαν αἰώνιον, καὶ πᾶσαι ἐξουσίαι αὐτῷ ὑποταγήσονται καὶ πειθαρχήσουσιν αὐτῷ ἕως καταστροφῆς τοῦ λόγου. ἐγὼ Δανιὴλ σφόδρα ἐκστάσει περιειχόμην, καὶ ἡ ἔξις μου διήνεγκεν ἐμοί, καὶ τὸ δῆμα ἐν καρδίᾳ μου ἐστήριξα.

# 8

Ἔτους τρίτου βασιλεύοντος Βαλτασὰρ ὅρασις ἣν εἶδον ἐγὼ Δανιὴλ μετὰ τὸ ἰδεῖν με τὴν πρώτην. καὶ εἶδον ἐν τῷ ὁράματι τοῦ ἐνυπνίου μου, ἐμοῦ ὄντος ἐν Σούσοις τῇ πόλει, ἥτις ἐστιν ἐν Ἐλυμαίδι χώρα, καὶ εἶδον ἐν ὁράματι ἔτι ὄντος μου πρὸς τῇ πύλῃ Αἰλάμ· ἀναβλέψας εἶδον κριὸν ἕνα μέγαν ἑστῶτα ἀπέναντι τῆς πύλης, καὶ εἶχε κέρατα, καὶ τὰ κέρατα ὑψηλά· καὶ τὸ ἓν ὑψηλότερον τοῦ ἑτέρου, καὶ τὸ ὑψηλότερον ἀνέβαινε. μετὰ δὲ ταῦτα εἶδον τὸν κριὸν κερατίζοντα πρὸς ἀνατολὰς καὶ πρὸς βορρᾶν καὶ πρὸς δυσμὰς καὶ μεσημβρίαν· καὶ πάντα τὰ θηρία οὐκ ἔστησαν ὀπίσω αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἦν ὁ ῥυόμενος ἐκ τῶν χειρῶν αὐτοῦ, καὶ ἐποίει ὡς ἤθελε καὶ ὑψώθη. καὶ ἐγὼ διενοούμην, καὶ ἰδοὺ τράγος αἰγῶν ἤρχετο ἀπὸ δυσμῶν ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς, καὶ ἦν τοῦ τράγου κέρας ἕν θεωρητὸν ἀνὰ μέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. καὶ ἦλθεν

ἐπὶ τὸν κριὸν τὸν τὰ κέρατα ἔχοντα, ὃν εἶδον ἑστῶτα πρὸς τῇ πύλῃ, καὶ ἔδραμε πρὸς αὐτὸν ἐν θυμῷ ἀργῆς. καὶ εἶδον αὐτὸν προσάγοντα πρὸς τὸν κριόν, καὶ ἐθυμώθη ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ ἐπάταξε τὸν κριὸν καὶ συνέτριψε τὰ δύο κέρατα αὐτοῦ, καὶ οὐκέτι ἦν ἰσχὺς ἐν τῷ κριῷ στῆναι κατέναντι τοῦ τράγου· καὶ ἐσπάραξεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν γῆν καὶ συνέτριψεν αὐτόν, καὶ οὐκ ἦν ὁ ῥυόμενος τὸν κριὸν ἀπὸ τοῦ τράγου. καὶ ὁ τράγος τῶν αἰγῶν κατίσχυσε σφόδρα· καὶ ὅτε κατίσχυσε συνετρίβη αὐτοῦ τὸ κέρας τὸ μέγα, καὶ ἀνέβη ἕτερα τέσσαρα κέρατα κατόπισθεν αὐτοῦ εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ. καὶ ἐξ ἑνὸς αὐτῶν ἀνεφύη κέρας ἰσχυρὸν ἕν, καὶ κατίσχυσε καὶ ἐπάταξεν ἐπὶ μεσημβρίαν καὶ ἐπ᾽ ἀνατολὰς καὶ ἐπὶ βορρᾶν· καὶ ὑψώθη ἕως τῶν ἀστέρων τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐρράχθη ἐπὶ τὴν γῆν ἀπὸ τῶν ἀστέρων καὶ ἀπὸ αὐτῶν κατεπατήθη, ἕως ὁ ἀρχιστράτηγος ῥύσεται τὴν αἰχμαλωσίαν· καὶ δι᾽ αὐτὸν τὰ ὄρη τὰ ἀπ᾽ αἰῶνος ἐρράχθη, καὶ ἐξήρθη ὁ τόπος αὐτῶν καὶ θυσία, καὶ ἔθηκεν αὐτὴν ἕως χαμαὶ ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ εὐωδώθησαν καὶ ἐγενήθη· καὶ τὸ ἅγιον ἐρημωθήσεται. καὶ ἐγενήθησαν ἐπὶ τῇ θυσίᾳ αἱ ἁμαρτίαι, καὶ ἐρρίφη χαμαὶ ἡ δικαιοσύνη· καὶ ἐποίησε καὶ εὐωδώθη. καὶ ἤκουον ἑτέρου ἁγίου λαλοῦντος· καὶ εἶπεν ὁ ἕτερος ἅγιος τῷ φελμουνὶ τῷ λαλοῦντι Ἕως τίνος τὸ ὅραμα στήσεται καὶ ἡ θυσία ἡ ἀρθεῖσα καὶ ἡ ἁμαρτία ἐρημώσεως ἡ δοθεῖσα, καὶ τὰ ἅγια ἐρημωθήσεται εἰς καταπάτημα; καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἕως ἑσπέρας καὶ πρωί, ἡμέραι δισχίλιαι τριακόσιαι· καὶ καθαρισθήσεται τὸ ἅγιον. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ θεωρεῖν με, ἐγὼ Δανιὴλ τὸ ὅραμα ἐζήτουν διανοηθῆναι· καὶ ἰδοὺ ἕστη κατεναντίον μου ὡς ὅρασις ἀνθρώπου. καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀνθρώπου ἀνὰ μέσον τοῦ Οὐλαί, καὶ ἐκάλεσε καὶ εἶπεν Γαβριὴλ, συνέτισον ἐκεῖνον τὴν ὅρασιν. καὶ ἀναβοήσας εἶπεν ὁ ἄνθρωπος Ἐπὶ τὸ πρόσταγμα ἐκεῖνο ἡ ὅρασις.

καὶ ἦλθε καὶ ἔστη ἐχόμενός μου τῆς στάσεως· καὶ ἐν τῷ ἔρχεσθαι αὐτὸν ἐθορυβήθην καὶ ἔπεσα ἐπὶ πρόσωπόν μου· καὶ εἶπέν μοι Διανοήθητι, υἱὲ ἀνθρώπου· ἔτι γὰρ εἰς ὥραν καιροῦ τοῦτο τὸ ὅραμα. καὶ λαλοῦντος αὐτοῦ μετ’ ἐμοῦ ἐκοιμήθην ἐπὶ πρόσωπον χαμαί, καὶ ἁψάμενός μου ἤγειρέ με ἐπὶ τοῦ τόπου, καὶ εἶπέ μοι Ἰδοὺ ἐγὼ ἀπαγγέλλω σοι ἃ ἔσται ἐπ’ ἐσχάτου τῆς ὀργῆς τοῖς υἱοῖς τοῦ λαοῦ σου· ἔτι γὰρ εἰς ὥρας καιροῦ συντελείας μενεῖ. τὸν κριὸν ὃν εἶδες τὸν ἔχοντα τὰ κέρατα, βασιλεὺς Μήδων καὶ Περσῶν ἐστι καὶ ὁ τράγος τῶν αἰγῶν βασιλεὺς τῶν Ἑλλήνων ἐστί καὶ τὸ κέρας τὸ μέγα τὸ ἀνὰ μέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ, αὐτὸς ὁ βασιλεὺς ὁ πρῶτος. καὶ τὰ συντριβέντα καὶ ἀναβάντα ὀπίσω αὐτοῦ τέσσαρα κέρατα, τέσσαρες βασιλεῖς τοῦ ἔθνους αὐτοῦ ἀναστήσονται, οὐ κατὰ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν. καὶ ἐπ’ ἐσχάτου τῆς βασιλείας αὐτῶν, πληρουμένων τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν, ἀναστήσεται βασιλεὺς ἀναιδὴς προσώπῳ, διανοούμενος αἰνίγματα. καὶ στερεωθήσεται ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἐν τῇ ἰσχύι αὐτοῦ, καὶ θαυμαστῶς φθερεῖ, καὶ εὐοδωθήσεται καὶ ποιήσει, καὶ φθερεῖ δυνάστας καὶ δῆμον ἁγίων. καὶ ἐπὶ τοὺς ἁγίους τὸ διανόημα αὐτοῦ, καὶ εὐοδωθήσεται τὸ ψεῦδος ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, καὶ ἡ καρδία αὐτοῦ ὑψωθή. σεται, καὶ δόλῳ ἀφανιεῖ πολλούς, καὶ ἐπὶ ἀπωλείας ἀνδρῶν στήσεται καὶ ποιήσει συναγωγὴν χειρὸς καὶ ἀποδώσεται. τὸ ὅραμα τὸ ἐσπέρας καὶ πρωὶ ηὑρέθη ἐπ’ ἀληθείας· καὶ νῦν πεφραγμένον τὸ ὅραμα, ἔτι γὰρ εἰς ἡμέρας πολλάς. ἐγὼ Δανιὴλ ἀσθενήσας ἡμέρας πολλάς· καὶ ἀναστὰς ἐπραγματευόμην πάλιν βασιλικά, καὶ ἐξελυόμην ἐπὶ τῷ ὁράματι, καὶ οὐδεὶς ἦν ὁ διανοούμενος.

# 9

Ἔτους πρώτου ἐπὶ Δαρείου τοῦ Ξέρξου ἀπὸ τῆς γενεᾶς τῆς Μηδικῆς, οἱ ἐβασίλευσαν ἐπὶ τὴν βασιλείαν τῶν Χαλδαίων· τῷ πρώτῳ ἔτει τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἐγὼ Δανιὴλ διενοήθην ἐν ταῖς βίβλοις τὸν ἀριθμὸν τῶν ἐτῶν, ὅτε ἐγένετο πρόσταγμα τῇ γῇ ἐπὶ Ἱερεμίαν τὸν προφήτην ἐγεῖραι εἰς ἀναπλήρωσιν ὀνειδισμοῦ Ἰερουσαλήμ, ἑβδομήκοντα ἔτη. καὶ ἔδωκα τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ Κύριον τὸν θεὸν εὑρεῖν προσευχὴν καὶ ἔλεος ἐν νηστείαις καὶ σάκκῳ καὶ σποδῷ. καὶ προσηυξάμην πρὸς Κύριον τὸν θεόν· ἐξωμολογησάμην καὶ εἶπα Ἰδού, κύριε, σὺ εἶ ὁ θεὸς ὁ μέγας καὶ ὁ ἰσχυρὸς καὶ ὁ φοβερός, τηρῶν τὴν διαθήκην καὶ τὸ ἔλεος τοῖς ἀγαπῶσί σε καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰ προστάγματά σου· ἡμάρτομεν, ἠδικήσαμεν, ἠσεβήσαμεν, καὶ ἀπέστημεν καὶ παρέβημεν τὰς ἐντολάς σου καὶ τὰ κρίματά σου· καὶ οὐκ ἠκούσαμεν τῶν παίδων σου τῶν προφητῶν, ἃ ἐλάλησαν ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου ἐπὶ τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν καὶ δυνάστας ἡμῶν καὶ πατέρας ἡμῶν, καὶ παντὶ ἔθνει ἐπὶ τῆς γῆς. σοί, κύριε, ἡ δικαιοσύνη, καὶ ἡμῖν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου, κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην, ἀνθρώποις Ἰούδα καὶ καθημένοις ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ παντὶ τῷ λαῷ Ἰσραήλ, τῷ ἔγγιστα καὶ τῷ ἀπωτέρω ἐν πάσαις ταῖς χώραις εἰς ἃς διεσκόρπισας αὐτοὺς ἐκεῖ ἐν τῇ πλημμελείᾳ ᾗ ἐπλημμέλησαν ἐναντίον σου. δέστ ποτα, ἡμίν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου καὶ τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν καὶ δυνάσταις καὶ τοῖς πατράσιν ἡμῶν, ὅτι ἡμάρτομέν σοι. τῷ κυρίῳ ἡ δικαιοσύνη καὶ τὸ ἔλεος, ὅτι ἀπέστημεν ἀπὸ σοῦ, καὶ οὐκ ἠκούσαμεν τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν κατακολουθῆσαι τῷ νόμῳ σου ᾧ ἔδωκας ἐνώπιον Μωσῆ καὶ ἡμῶν διὰ τῶν παίδων σου τῶν προφητῶν. καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐγκατέλιπε τὸν νόμον σου καὶ ἀπέστησαν τοῦ μὴ ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς σου· καὶ ἐπῆλθεν ἐφ’ ἡμᾶς ἡ κατάρα καὶ ὁ ὅρκος ὁ γεγραμμένος ἐν τῷ νόμῳ Μωσῇ παιδὸς

τοῦ θεοῦ· ὅτι ἡμάρτομεν αὐτῷ. καὶ ἔστησεν ἡμῖν τὰ προστάγματα αὐτοῦ, ὅσα ἐλάλησεν ἐφ’ ἡμᾶς καὶ ἐπὶ τοὺς κριτὰς ἡμῶν, ὅσα ἔκρινας ἡμῖν ἐπαγαγεῖν ἐφ’ ἡμᾶς, κακὰ μεγάλα, οἷα οὐκ ἐγενήθη ὑπὸ τὸν οὐρανὸν καθότι ἐγενήθη ἐν Ἰερουσαλήμ. κατὰ τὰ γεγραμμένα ἐν διαθήκῃ Μωσῇ, πάντα τὰ κακὰ ἐπῆλθεν ἡμῖν· καὶ οὐκ ἐξεζητήσαμεν τὸ πρόσωπον Κυρίου θεοῦ ἡμῶν, ἀποστῆναι ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν καὶ διανοηθῆναι τὴν δικαιοσύνην σου, Κύριε. καὶ ἠγρύπνησε Κύριος ὁ θεὸς ἐπὶ τὰ κακὰ καὶ ἐπήγαγεν ἐφ’ ἡμᾶς, ὅτι δίκαιος Κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν ἐπὶ πάντα ὅσα ἂν ποιήσῃ, καὶ οὐκ ἠκούσαμεν τῆς φωνῆς αὐτοῦ. καὶ νῦν, δέσποτα κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν, ὁ ἐξαγαγὼν τὸν λαόν σου ἐξ Αἰγύπτου τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ, καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ὄνομα κατὰ τὴν ἡμέραν ταύτην· ἡμάρτομεν, ἠγνοήκαμεν. δέσποτα, κατὰ τὴν δικαιοσύνην σου ἀποστραφήτω ὁ θυμός σου καὶ ἡ ὀργὴ σου ἀπὸ τῆς πόλεως σου Ἰερουσαλήμ, ὄρους τοῦ ἁγίου σου· ὅτι ἐν ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν καὶ ἐν ταῖς ἀγνοίαις τῶν πατέρων ἡμῶν Ἰερουσαλὴμ καὶ ὁ δῆμός σου, κύριε, εἰς ὀνειδισμὸν ἐν πᾶσι τοῖς περικυκλῶ ἡμῶν. καὶ νῦν ἐπάκουσον, δέσποτα, τῆς προσευχῆς τοῦ παιδός σου καὶ ἐπὶ τὰς δεήσεις μου, καὶ ἐπιβλεψάτω τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν σου τὸ ἔρημον ἕνεκεν τῶν δούλων σου, δέ. σποτα. πρόσχες, κύριε, τὸ οὖς σου καὶ ἐπάκουσόν μου, ἄνοιξον τοὺς ὀφθαλμούς σου καὶ ἴδε τὴν ἐρήμωσιν ἡμῶν καὶ τῆς πόλεως σου, ἐφ’ ἧς ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά σου ἐπ’ αὐτῆς· οὐ γὰρ ἐπὶ ταῖς δικαιοσύναις ἡμῶν ἡμεῖς δεόμεθα ἐν ταῖς προσευχαῖς ἡμῶν ἐνώπιόν σου, ἀλλὰ διὰ τὸ σὸν ἔλεος, κύριε, σὺ ἱλάτευσον. κύριε, ἐπάκουσον καὶ ποίησον, καὶ μὴ χρονίσῃς ἕνεκα σεαυτοῦ, δέσποτα· ὅτι τὸ ὄνομά σου ἐπεκλήθη ἐπὶ τὴν πόλιν σου Σιὼν καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου Ἰσραήλ. Καὶ ἐγὼ ἐλάλουν προσευχόμενος καὶ ἐξομολογούμενος τὰς ἁμαρτίας μου καὶ τὰς

ἁμαρτίας τοῦ λαοῦ μου Ἰσραήλ, καὶ δεόμενος ἐν ταῖς προσευχαῖς ἐναντίον Κυρίου θεοῦ μου καὶ ὑπέρ τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν· καὶ ἔτι λαλοῦντός μου ἐν τῇ προσευχῇ μου, καὶ ἰδοὺ ὁ ἀνὴρ ὃν εἶδον ἐν τῷ ὕπνῳ μου τὴν ἀρχήν, Γαβριὴλ, τάχει φερόμενος προσήγγισέ μοι ἐν ὥρᾳ θυσίας ἑσπερινῆς. καὶ προσῆλθε καὶ ἐλάλησε μετ᾽ ἐμοῦ καὶ εἶπεν Δανιὴλ, ἄρτι ἐξῆλθον ὑποδεῖξαί σοι διάνοιαν. ἐν ἀρχῇ τῆς δεήσεως σου ἐξῆλθε πρόσταγμα παρὰ Κυρίου, καὶ ἐγὼ ἦλθον ὑποδεῖξαί σοι, ὅτι ἐλεεινὸς εἶ καὶ διανοήθητι τὸ πρόσταγμα. ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες ἐκρίθησαν ἐπὶ τὸν λαόν σου καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν Σιὼν συντελεσθῆναι τὴν ἁμαρτίαν καὶ τὰς ἀδικίας σπανίσαι καὶ ἀπαλεῖψαι τὰς ἀδικίας, καὶ διανοηθῆναι τὸ ὅραμα καὶ δοθῆναι δικαιοσύνην αἰώνιον καὶ συντελεσθῆναι τὰ ὁράματα καὶ προφήτην, καὶ εὐφρᾶναι ἅγιον ἁγίων. καὶ γνώσῃ καὶ διανοηθήσῃ καὶ εὐφρανθήσῃ καὶ εὑρήκεις προστάγματα ἀποκριθῆναι, καὶ οἰκοδομήσεις Ἰερουσαλὴμ πόλιν Κυρίῳ. καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα καὶ ἑξήκοντα δύο ἀποσταθήσεται χρίσμα καὶ οὐκ ἔσται, καὶ βασιλεία ἐθνῶν φθερεῖ τὴν πόλιν καὶ τὸ ἅγιον μετὰ τοῦ χριστοῦ, καὶ ἥξει ἡ συντέλεια αὐτοῦ μετ᾽ ὀργῆς καὶ καιροῦ συντελείας· ἀπὸ πολέμου πολεμηθήσεται. καὶ δυναστεύσει ἡ διαθήκη εἰς πολλούς· καὶ πάλιν ἐπιστρέψει, καὶ ἀνοικοδομηθήσεται εἰς πλάτος καὶ μῆκος καὶ κατὰ συντέλειαν καιρῶν, καὶ μετὰ ἑπτὰ καὶ ἑβδομήκοντα καιροὺς καὶ ξβ᾽ ἐτῶν ἕως καιροῦ συντελείας πολέμου, καὶ ἀφαιρεθήσεται ἡ ἐρήμωσις ἐν τῷ κατισχῦσαι τὴν διαθήκην ἐπὶ πολλὰς ἑβδομάδας· καὶ ἐν τῷ τέλει τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεται ἡ θυσία καὶ ἡ σπονδή, καὶ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων ἔσται ἕως συντελείας, καὶ συντέλεια δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν.

# 10

Ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ πρώτῳ Κύρου τοῦ βασιλέως Περσῶν πρόσταγμα ἐδείχθη τῷ Δανιὴλ, ὃς ἐπεκλήθη τὸ ὄνομα Βαλτασάρ· καὶ ἀληθὲς τὸ ὅραμα καὶ τὸ πρόσταγμα, καὶ τὸ πλῆθος τὸ ἰσχυρὸν διανοηθήσεται τὸ πρόσταγμα· καὶ διενοήθην αὐτὸ ἐν ὁράματι. ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐγὼ Δανιὴλ ἤμην πενθῶν τρεῖς ἑβδομάδας· ἄρτον ἐπιθυμιῶν οὐκ ἔφαγον, καὶ κρέας καὶ οἶνος οὐκ εἰσῆλθεν εἰς τὸ στόμα μου, ἔλαιον οὐκ ἠλειψάμην, ἕως τοῦ συντελέσαι με τὰς τρεῖς ἑβδομάδας τῶν ἡμερῶν. καὶ ἐγένετο τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου, καὶ ἐγὼ ἤμην ἐπὶ τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου, ὅς ἐστι Τίγρης. καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου καὶ εἶδον, καὶ ἰδοὺ ἄνθρωπος εἷς ἐνδεδυμένος βύσσινα καὶ τὴν ὀσφὺν περιεζωσμένος βυσσίνῳ, καὶ ἐκ μέσου αὐτοῦ φῶς· καὶ τὸ στόμα αὐτοῦ ὡσεὶ θαλάσσης, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡσεὶ ὅρασις ἀστραπῆς, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ὡσεὶ λαμπάδες πυρός, καὶ οἱ βραχίονες αὐτοῦ καὶ οἱ πόδες ὡσεὶ χαλκὸς ἐξαστράπτων, καὶ φωνὴ λαλιᾶς αὐτοῦ ὡσεὶ φωνὴ θορύβου. καὶ εἶδον ἐγὼ Δανιὴλ τὴν ὅρασιν τὴν μεγάλην ταύτην, καὶ οἱ ἄνθρωποι οἱ ὄντες μετ’ ἐμοῦ οὐκ εἴδοσαν τὴν ὅρασιν ταύτην, καὶ φόβος ἰσχυρὸς ἐπέπεσεν ἐπ’ αὐτούς, καὶ ἀπέδρασαν ἐν σπουδῇ. καὶ ἐγὼ κατελείφθην μόνος καὶ εἶδον τὴν ὅρασιν τὴν μεγάλην ταύτην, οὐκ ἐνκατελείφθη ἐν ἐμοὶ ἰσχύς, καὶ ἰδοὺ πνεῦμα ἐπεστράφη ἐπ’ ἐμὲ εἰς φθοράν, καὶ οὐ κατίσχυσα. καὶ οὐκ ἤκουσα τὴν φωνὴν λαλιᾶς αὐτοῦ· ἐγὼ ἤμην πεπτωκὼς ἐπὶ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν γῆν. καὶ ἰδοὺ χεῖρα προσήγαγέ μοι, καὶ ἤγειρέ με ἐπὶ τῶν γονάτων ἐπὶ τὰ ἴχνη τῶν ποδῶν μου. καὶ εἶπέ μοι Δανιὴλ, ἄνθρωπος ἐλεεινὸς εἶ διανοήθητι

τοῖς προστάγμασιν οἷς ἐγὼ λαλῶ ἐπὶ σέ, καὶ στῆθι ἐπὶ τοῦ τόπου σου, ἄρτι γὰρ ἀπεστάλην ἐπὶ σέ. καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν μετ᾽ ἐμοῦ τὸ πρόσταγμα τοῦτο ἔστην τρέμων. καὶ εἶπεν πρὸς μέ Μὴ φοβοῦ, Δανιὴλ ὅτι ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς πρώτης ἧς ἔδωκας τὸ πρόσωπόν σου διανοηθῆναι καὶ ταπεινωθῆναι ἐναντίον κυρίου τοῦ θεοῦ σου, εἰσηκούσθη τὸ ῥῆμά σου, καὶ ἐγὼ εἰσῆλθον τῷ ῥήματί σου. καὶ ὁ στρατηγὸς βασιλέως Περσῶν ἀνθειστήκει ἐναντίον μου εἴκοσι καὶ μίαν ἡμέραν· καὶ ἰδοὺ Μιχαὴλ εἷς τῶν ἀρχόντων τῶν πρώτων ἐπῆλθε βοηθῆσαί μοι, καὶ αὐτὸν ἐκεῖ κατέλιπον μετὰ τοῦ στρατηγοῦ τοῦ βασιλέως Περσῶν. καὶ εἶπέν μοι Ἦλθον ὑποδεῖξαί σοι τί ὑπαντήσεται τῷ λαῷ σου ἐπ᾽ ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν, ἔτι γαρ ὥρα εἰς ἡμέρας. καὶ ἐν τῷ αὐτὸν λαλῆσαι μετ᾽ ἐμοῦ τὰ προστάγματα ταῦτα ἔδωκα τὸ πρόσωπον μου ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ἐσιώπησα. καὶ ἰδοὺ ὡς ὁμοίωσις χειρὸς ἀνθρώπου ἥψατο μου τῶν χειλέων· καὶ ἤνοιξα τὸ στόμα μου καὶ ἐλάλησα, καὶ εἶπα τῷ ἑστηκότι ἀπέναντί μου Κύριε· καὶ ὡς ὅρασις ἀπεστράφη ἐπὶ τὸ πλευρόν μου ἐπ᾽ ἐμέ, καὶ οὐκ ἦν ἐπ᾽ ἐμοὶ ἰσχύς· καὶ πῶς δυνήσεται ὁ παῖς λαλῆσαι μετὰ τοῦ κυρίου αὐτοῦ; καὶ ἐγὼ ἠσθένησα, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν ἐμοὶ ἰσχὺς καὶ πνεῦμα οὐ κατελείφθη ἐν ἐμοί. καὶ προσέθηκε καὶ ἥψατό μου ὡς ὅρασις ἀνθρώπου, καὶ κἄτι σχυσέ με, καὶ εἶπέν μοι Ἄνθρωπος ἐλεεινὸς εἶ, μὴ φοβοῦ, ὑγίαινε· ἀνδρίζου καὶ ἴσχυσαι. καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν μετ᾽ ἐμοῦ ἴσχυσα καὶ εἶπα Λαλησάτω ὁ κύριός μου, ὅτι ἐνίσχυσέν με. καὶ εἶπεν πρὸς μέ Γινώσκεις τί ἦλθον πρὸς σέ; καὶ νῦν ἐπιστρέψω διαμάχεσθαι μετὰ τοῦ στρατηγοῦ βασιλέως τῶν Περσῶν· καὶ ἐγὼ ἐξεπορευόμην, καὶ ἰδοὺ στρατηγὸς Ἑλλήνων εἰσεπορεύετο. καὶ μάλα ὑποδείξω σοι τὰ πρῶτα ἐν ἀπογραφῇ ἀληθείας· καὶ οὐθεὶς ἦν ὁ βοηθῶν μετ᾽ ἐμοῦ ὑπέρ τούτων ἀλλ᾽ ἢ Μιχαὴλ ὁ ἄγγελος.

# 11

Καὶ ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ πρώτῳ Κύρου τοῦ βασιλέως εἶπέν μοι ἐνισχῦσαι καὶ ἀνδρίζεσθαι Καὶ νῦν ἦλθον τὴν ἀλήθειαν ὑποδεῖξαί σοι· ἰδοὺ τρεῖς βασιλεῖς ἀνθεστήκασιν ἐν τῇ Περσίδι, καὶ ο΄ τέταρτος πλουτήσει πλοῦτον μέγαν παρὰ πάντας· καὶ ἐν τῷ κατισχῦσαι αὐτὸν ἐν τῷ πλούτῳ αὐτοῦ ἐπαναστήσεται παντὶ βασιλεῖ Ἑλλήνων. καὶ στήσεται βασιλεὺς δυνατός, καὶ κυριεύσει κυρείας πολλῆς, καὶ ποιήσει καθὼς ἂν βούληται. καὶ ἐν τῷ ἀναστῆναι αὐτὸν συντριβήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ καὶ μερισθήσεται εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ, οὐ κατὰ τὴν ἀλκὴν αὐτοῦ οὐδὲ κατὰ τὴν κυρείαν αὐτοῦ ἣν ἐδυνάστευσε· ὅτι ἀποσταθήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ, καὶ ἑτέρους διδάξει ταῦτα. καὶ ἐνισχύσει βασιλείαν Αἰγύπτου, καὶ εἷς ἐκ τῶν δυναστῶν κατισχύσει αὐτὸν καὶ δυναστεύσει δυναστείᾳ μεγάλῃ ἡ δυναστεία αὐτοῦ. καὶ εἰς συντέλειαν ἐνιαυτῶν ἄξει αὐτούς, καὶ εἰσελεύσεται βασιλεὺς Αἰγύπτου εἰς τὴν βασιλείαν τὴν βορρᾶ ποιήσασθαι συνθήκας· καὶ οὐ μὴ κατισχύσῃ, ὅτι ὁ βραχίων αὐτοῦ οὐ στήσει ἰσχύν, καὶ ὁ βραχίων αὐτοῦ ναρκήσει καὶ τῶν συμπορευομένων μετ’ αὐτοῦ, καὶ μενεῖ εἰς ὥρας. καὶ ἀναστήσεται φυτὸν ἐκ τῆς ῥίζης αὐτοῦ καθ’ ἑαυτόν, καὶ ἥξει > ἐπὶ τὴν δύναμιν αὐτοῦ ἐν ἰσχύι αὐτοῦ βασιλεὺς βορρᾶ, καὶ ποιήσει ταραχὴν καὶ κατισχύσει. καὶ τοὺς θεοὺς αὐτῶν καταστρέψει μετὰ τῶν χωνευτῶν αὐτῶν, καὶ τοὺς ὄχλους αὐτῶν μετὰ τῶν σκευῶν τῶν ἐπιθυμημάτων αὐτῶν, τὸ ἀργύριον καὶ τὸ Χρυσίον, ἐν αἰχμαλωσίᾳ ἀποίσουσιν εἰς Αἴγυπτον· καὶ ἔσται ἔτος βασιλεῖ βορρᾶ. καὶ εἰσελεύσεται εἰς βασιλείαν βασιλεὺς Αἰγύπτου ἡμέρας, καὶ ἐπιστρέψει ἐπὶ τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ

ὁ υἱὸς αὐτοῦ· καὶ ἐρεθισθήσεται, καὶ συνάξει συναγωγὴν ὄχλου πολλοῦ, καὶ εἰσελεύσεται κατ’ αὐτὴν κατασύρων. παρελεύσεται καὶ ἐπιστρέψει· καὶ παροξυνθήσεται ἐπὶ πολύ. καὶ ὀργισθήσεται βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ ἐξελεύσεται καὶ πολεμήσει μετὰ βασιλέως βορρᾶ, καὶ στήσει ὄχλον πολύν, καὶ παραδοθήσεται ἡ συναγωγὴ εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ· καὶ λήψεται τὴν συναγωγήν, καὶ ὑψωθήσεται ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ ταράξει πολλοὺς καὶ οὐ μὴ φοβηθῇ. καὶ ἐπιστρέψει βασιλεὺς βορρᾶ καὶ συνάξει πόλεως συναγωγὴν μείζονα παρὰ τὴν πρώτην κατὰ συντέλειαν καιροῦ ἐνιαυτοῦ, καὶ εἰσελεύσεται εἰς αὐτὴν ἐπ’ αὐτὸν ἐν ὄχλῳ πολλῷ καὶ ἐν χρήμασι πολλοῖς. καὶ ἐν τοῖς καιροῖς ἐκείνοις διάνοιαι ἀναστήσονται ἐπὶ τὸν βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἀνοικοδομήσει τὰ πεπτωκότα τοῦ ἔθνους σου, καὶ ἀναστήσεται εἰς τὸ ἀναστῆσαι τὴν προφητείαν, καὶ προσκόψουσι. καὶ ἐπελεύσεται βασιλεὺς βορρᾶ, καὶ ἐπιστρέψει τὰ δόρατα αὐτοῦ καὶ λήψεται τὴν πόλιν τὴν ὀχυράν, καὶ οἱ βραχίονες βασιλέως Αἰγύπτου στήσονται μετὰ τῶν δυναστῶν αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται αὐτῷ ἰσχὺς εἰς τὸ ἀντιστῆναι αὐτῷ. καὶ ποιήσει ὁ εἰσπορευόμενος ἐπ’ αὐτὸν κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀνθεστηκὼς ἐναντίον αὐτοῦ· καὶ στήσεται ἐν τῇ χώρᾳ, καὶ ἐπιτελεσθήσεται πάντα τὰ ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ. καὶ δώσει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπελθεῖν βία τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ συνθήκας μετ’ αὐτοῦ ποιήσεται· καὶ θυγατέρα ἀνθρώπου δώσει αὐτῷ εἰς τὸ φθεῖραι αὐτήν, καὶ οὐ πείσεται καὶ οὐκ ἔσται. καὶ δώσει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπὶ τὴν θάλασσαν καὶ λήψεται πολλούς, καὶ ἐπιστρέψει ὀργὴν ὀνειδισμοῦ αὐτῶν ἐν ὅρκῳ κατὰ τὸν ὀνειδισμὸν αὐτοῦ. ἐπιστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὸ κατισχῦσαι τὴν χώραν αὐτοῦ, καὶ προσκόψει καὶ πεσεῖται, καὶ οὐχ εὑρεθήσεται. καὶ ἀναστήσεται ἐκ τῆς ῥίζης αὐτοῦ φυτὸν βασιλείας εἰς

ἀνάστασιν, ἀνὴρ τύπτων δόξαν βασιλέως· καὶ ἐν ἡμέραις ἐσχάταις συντριβήσεται, καὶ οὐκ ἐν ὀργῇ οὐδὲ ἐν πολέμῳ· καὶ ἀναστήσεται ἐπὶ τὸν τόπον αὐτοῦ εὐκαταφρόνητος, καὶ οὐ δοθήσεται ἐπ’ αὐτὸν δόξα βασιλέως· καὶ ἥξει ἐξάπινα, κατισχύσει βασιλεὺς ἐν κληροδοσίᾳ αὐτοῦ. καὶ τοὺς βραχίονας τοὺς συντριβέντας συντρίψει ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. καὶ μετὰ τῆς διαθήκης καὶ δήμου συνταγέντος μετ’ αὐτοῦ ποιήσει ψεῦδος, καὶ ἐπὶ ἔθνος ἰσχυρὸν ἐν ὀλιγοστῷ ἔθνει ἐξάπινα ἐρημώσει πόλιν, καὶ ποιήσει ὅσα οὐκ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ οὐδὲ οἱ πατέρες τῶν πατέρων αὐτοῦ· προνομὴν καὶ σκῦλα καὶ χρήματα αὐτοῖς δώσει, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν ἰσχυρὰν διανοηθήσεται, καὶ οἱ λογισμοὶ αὐτοῦ εἰς μάτην. καὶ ἐγερθήσεται ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ καὶ ἡ καρδία αὐτοῦ ἐπὶ τὸν βασιλέα Αἰγύπτου ἐν ὄχλῳ πολλῷ, καὶ ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου ἐρεθισθήσεται εἰς πόλεμον ἐν ὄχλῳ ἰσχυρῷ σφόδρα λίαν· καὶ οὐ στήσεται, ὅτι διανοηθήσεται ἐπ’ αὐτὸν διάνοια. καὶ καταναλώσουσιν αὐτὸν μέριμναι αὐτοῦ καὶ ἀποστρέψουσιν αὐτόν, καὶ παρελεύσονται, καὶ κατασυριεῖ, καὶ πεσοῦνται τραυματίαι πολλοί καὶ δύο βασιλεῖς μόνοι δειπνήσουσιν ἐπὶ τὸ αὐτὸ καὶ ἐπὶ μιᾶς τραπέζης φάγονται, καὶ ψευδολογήσουσι καὶ οὐκ εὐοδωθήσονται· ἔτι γὰρ συντέλεια εἰς καιρόν. καὶ ἐπιστρέψει ἐπὶ τὴν χώραν αὐτοῦ ἐν χρήμασι πολλοῖς, καὶ ἡ καρδία αὐτοῦ ἐπὶ τὴν διαθήκην τοῦ ἁγίου· ποιήσει καὶ ἐπιστρέψει ἐπὶ τὴν χώραν αὐτοῦ. εἰς καιρὸν ἐπιστρέψει καὶ εἰσελεύσεται εἰς Αἴγυπτον, καὶ οὐκ ἔσται ὡς ἡ πρώτη καὶ ἡ ἐσχάτη. καὶ ἥξουσι Ῥωμαῖοι καὶ ἐξώσουσιν αὐτὸν καὶ ἐμβριμήσονται αὐτῷ, καὶ ἐπιστρέψει, καὶ ὀργισθήσονται ἐπὶ τὴν διαθήκην τοῦ ἁγίου· καὶ ποιήσει καὶ ἐπιστρέψει, καὶ διανοηθήσεται ἐπ’ αὐτοὺς ἀνθ’ ὧν ἐγκατέλιπον τὴν διαθήκην τοῦ ἁγίου. καὶ βραχίονες παρ’ αὐτοῦ στήσονται καὶ μιανοῦσι τὸ ἅγιον τοῦ φόβου, καὶ ἀποστήσουσι τὴν

θυσίαν, καὶ δώσουσι βδέλυγμα ἐρημώσεως. καὶ ἐν ἁμαρτίαις διαθήκης μιανοῦσιν ἐν σκληρῷ λαῷ· καὶ ὁ δῆμος ὁ γινώσκων ταῦτα κατισχύσουσι καὶ ποιήσουσι, καὶ μενοι τοῦ ἔθνους συνήσουσιν εἰς πολλούς, καὶ προσκόψουσι ῥομφαίᾳ καὶ παλαιωθήσονται ἐν αὐτῇ, καὶ ἐν αἰχμαλωσίᾳ καὶ ἐν προνομῇ ἡμερῶν κηλιδωθήσονται. καὶ ὅταν συντρίβωνται, συνάξουσιν ἰσχὺν βραχεῖαν, καὶ ἐπισυναχθήσονται ἐπ’ αὐτοὺς πολλοὶ ἐπὶ πόλεως καὶ πολλοὶ ὡς ἐν κληροδοσίᾳ. καὶ ἐκ τῶν συνιέντων διανοηθήσονται εἰς τὸ καθαρίσαι ἑαυτοὺς καὶ εἰς τὸ ἐκλεγῆναι καὶ εἰς τὸ καθαρισθῆναι ἕως καιροῦ συντελείας· ἔτι γὰρ καιρὸς εἰς ὥρας. καὶ ποιήσει κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ ὁ βασιλεύς, καὶ παροργισθήσεται καὶ ὑψωθήσεται ἐπὶ πάντα θεόν, καὶ ἐπὶ τὸν θεὸν τῶν θεῶν ἔξαλλα λαλήσει, καὶ εὐοδωθήσεται ἕως ἂν συντελεσθῇ ἡ ὀργή· εἰς αὐτὸν γὰρ συντέλεια γίνεται. καὶ ἐπὶ τοὺς θεοὺς τῶν πατέρων αὐτοῦ οὐ μὴ προνοηθῇ, καὶ ἐν ἐπιθυμίᾳ γυναικὸς οὐ μὴ προνοηθῇ· ὅτι ἐν παντὶ ὑψωθήσεται, καὶ ὑποταγήσεται αὐτῷ ἔθνη ἰσχυρά. ἐπὶ τὸν τόπον αὐτοῦ κινήσει, καὶ θεὸν ὃν οὐκ ἔγνωσαν οἱ πατέρες αὐτοῦ τιμήσει ἐν χρυσίῳ καὶ ἀργυρίῳ καὶ λίθῳ πολυτελεῖ. καὶ ἐν ἐπιθυμήμασι ποιήσει πόλεων καὶ εἰς ὀχύρωμα ἰσχυρὸν ἥξει μετὰ θεοῦ ἀλλοτρίου· οὗ ἐὰν ἐπιγνῷ, πληθυνεῖ δόξαν καὶ κατακυριεύσει αὐτοῦ ἐπὶ πολύ, καὶ χώραν ἀπομεριεῖ εἰς δωρεάν. καὶ καθ’ ὥραν συντελείας συγκερατισθήσεται αὐτῷ ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ ἐποργισθήσεται αὐτῷ βασιλεὺς βορρᾶ ἐν ἅρμασι καὶ ἐν ἵπποις πολλοῖς καὶ ἐν πλοίοις πολλοῖς, καὶ εἰσελεύσεται εἰς χώραν Αἰγύπτου. καὶ ἐπελεύσεται εἰς τὴν χώραν μου, καὶ πολλαὶ σκανδαλισθήσονται· καὶ αὗται σωθήσονται ἀπὸ χειρὸς αὐτοῦ, Ἐδὼμ καὶ Μωὰβ καὶ κεφάλαιον υἱῶν Ἀμμών. καὶ ἀποστελεῖ χεῖρα

αὐτοῦ ἐν ταῖς γαίαις, καὶ ἐν χώρᾳ Αἰγύπτου οὐκ ἔσται ἐν αὐτῇ διασωζόμενος. καὶ κρατήσει τοῦ τόπου τοῦ χρυσίου καὶ τοῦ τόπου τοῦ ἀργυρίου καὶ πάσης τῆς ἐπιθυμίας Αἰγύπτου, καὶ Λίβυες καὶ Αἰθίοπες ἔσονται ἐν τῷ ὄχλῳ αὐτοῦ. καὶ ἀκοὴ ταράξει αὐτὸν ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ βορρᾶ, καὶ ἐξελεύσεται ἐν θυμῷ ἰσχυρῷ καὶ ῥομφαίᾳ ἀφανίσαι καὶ ἀποκτεῖναι πολλοὺς· καὶ στήσει αὐτοῦ τὴν σκηνὴν τότε ἀνὰ μέσον τῶν θαλασσῶν καὶ τοῦ ὄρους τῆς θελήσεως τοῦ ἁγίου· καὶ ἥξει ὥρα τῆς συντελείας αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται βοηθῶν αὐτῷ.

# 12

Καὶ κατὰ τὴν χώραν ἐκείνην παρελεύσεται Μιχαὴλ ὁ ἄγγελος ὁ μέγας, ὁ ἑστηκὼς ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου· ἐκείνη ἡ ἡμέρα θλίψεως, οἵα οὐκ ἐγενήθη ἀφ’ οὗ ἐγενήθησαν ἕως τῆς ἡμέρας ἐκείνης· καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὑψωθήσεται πᾶς ὁ λαὸς ὃς ἂν εὑρεθῇ ἐγγεγραμμένος ἐν τῷ βιβλίῳ. καὶ πολλοὶ τῶν καθευδόντων ἐν τῷ πλάτει τῆς γῆς ἀναστήσονται, οἱ μέν εἰς ζωὴν αἰώνιον, οἱ δὲ εἰς ὀνειδισμόν, οἱ δέ εἰς διασπορὰν καὶ αἰσχύνην αἰώνιον· καὶ οἱ συνιέντες φανοῦσιν ὡς φωστῆρες τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οἱ κατισχύοντες τοὺς λόγους μου ὡσεὶ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. καὶ σύ, Δανιὴλ, κάλυψον τὰ προστάγματα καὶ σφράγισαι τὸ βιβλίον ἕως καιροῦ συντελείας, ἕως ἂν ἀπομανῶσιν οἱ πολλοὶ καὶ πλησθῇ ἡ γῆ ἀδικίας. Καὶ εἶδον ἐγὼ Δανιὴλ, καὶ ἰδοὺ δύο ἕτεροι εἱστήκεισαν, εἰς ἔνθεν τοῦ ποταμοῦ καὶ εἰς ἔνθεν. καὶ εἶπα τῷ ἐνὶ τῷ περιβεβλημένῳ τὰ βύσσινα τῷ ἐπάνω Πότε οὖν συντέλεια ὧν εἴρηκάς μοι τῶν θαυμαστῶν καὶ ὁ καθαρισμὸς

τούτων; καὶ ἤκουσα τοῦ περιβεβλημένου τὰ βύσσινα, ὃς ἦν ἐπάνω τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ Ἕως καιροί συντελείας· καὶ ὕψωσε τὴν δεξιὰν καὶ τὴν ἀριστερὰν εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ ὤμοσε τὸν ζῶντα εἰς τὸν αἰῶνα θεὸν ὅτι εἰς καιρὸν καὶ καιροὺς καὶ ἥμισυ καιροῦ ἡ συντέλεια χειρῶν ἀφέσεως λαοῦ ἁγίου, καὶ συντελεσθήσεται πάντα ταῦτα. καὶ ἐγὼ ἤκουσα καὶ οὐ διενοήθην παρ’ αὐτὸν τὸν καιρόν, καὶ εἶπα Κύριε, τίς ἡ λύσις τοῦ λόγου τούτου, καὶ τίνος αἱ παραβολαὶ αὗται; καὶ εἶπέν μοι τρεχε, Δανιήλ, ὅτι κατακεκαλυμμένα καὶ ἐσφραγισμένα τὰ προστάγματα, ἕως ἂν πειρασθῶσι καὶ ἁγιασθῶσι πολλοί, καὶ ἁμάρτωσιν οἱ ἁμαρτωλοὶ καὶ οὐ μὴ διανοηθῶσι πάντες οἱ ἁμαρτωλοί, καὶ οἱ διανοούμενοι προσέξουσιν. ἀφ’ οὗ ἂν ἀποσταθῇ ἡ θυσία διὰ παντὸς καὶ ἑτοιμασθῇ δοθῆναι τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, ἡμέρας χιλίας διακοσίας ἐνενήκοντα. μακάριος ὁ ἐμμένων, καὶ συνάξει εἰς ἡμέρας χιλίας τριακοσίας τριάκοντα πέντε. καὶ σὺ βάδισον, ἀναπαύου· ἔτι γάρ εἰσιν ἡμέραι καὶ ὧραι εἰς ἀναπλήρωσιν συντελείας, καὶ ἀναπαύσῃ καὶ ἀναστήσῃ ἐπὶ τὴν δόξαν σου εἰς συντέλειαν ἡμερῶν.

# ΕΣΔΡΑΣ

## 1

ΚΑΙ ἐν τῷ πρώτῳ ἔτει Κύρου τοῦ βασιλέως Περσῶν, τοῦ τελεσθῆναι λόγον Κυρίου ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου, ἐξήγειρε Κύριος τὸ πνεῦμα Κύρου βασιλέως Περσῶν, καὶ παρήγγειλε φωνὴν ἐν πάσῃ βασιλείᾳ αὐτοῦ, καί γε ἐν γραπτῷ, λέγων, Οὕτως εἶπε Κύρος βασιλεὺς Περσῶν, πάσας τὰς βασιλείας τῆς γῆς ἔδωκέ μοι Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ αὐτὸς ἐπεσκέψατο ἐπ' ἐμὲ τοῦ οἰκοδομῆσαι οἶκον αὐτῷ ἐν Ἰερουσαλὴμ τῇ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ. Τίς ἐν ὑμῖν ἀπὸ παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ; καὶ ἔσται ὁ Θεὸς αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, καὶ ἀναβήσεται εἰς Ἰερουσαλὴμ τὴν ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, καὶ οἰκοδομησάτω τὸν οἶκον Θεοῦ Ἰσραὴλ· αὐτὸς ὁ Θεὸς ὁ ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ πᾶς ὁ καταλιπόμενος ἀπὸ πάντων τῶν τόπων οὗ αὐτὸς παροικεῖ ἐκεῖ, καὶ λήψονται αὐτὸν ἄνδρες τοῦ τόπου αὐτοῦ ἐν ἀργυρίῳ, καὶ χρυσίῳ, καὶ ἀποσκευῇ, καὶ κτήνεσι μετὰ τοῦ ἑκουσίου εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἀνέστησαν ἄρχοντες τῶν πατριῶν τῶν Ἰούδα καὶ Βενιαμεὶν, καὶ οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευεῖται, πάντων ὧν ἐξήγειρεν ὁ Θεὸς τὸ πνεῦμα αὐτῶν τοῦ ἀναβῆναι οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον Κυρίου τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ

πάντες οἱ κυκλόθεν ἐνίσχυσαν ἐν χερσὶν αὐτῶν ἐν σκεύεσιν ἀργυρίου, ἐν χρυσῷ, ἐν ἀποσκευῇ, καὶ ἐν κτήνεσι, καὶ ἐν ξενίοις, πάρεξ τῶν ἑκουσίων. Καὶ ὁ βασιλεὺς Κύρος ἐξήνεγκε τὰ σκεύη οἴκου Κυρίου, ἃ ἔλαβε Ναβουχοδονόσορ ἀπὸ Ἰερουσαλὴμ καὶ ἔδωκεν αὐτὰ ἐν οἴκῳ θεοῦ αὐτοῦ· Καὶ ἐξήνεγκεν αὐτὰ Κύρος ὁ βασιλεὺς Περσῶν ἐπὶ χεῖρα Μιθραδάτου γασβαρηνοῦ, καὶ ἠρίθμησεν αὐτὰ τῷ Σασαβασὰρ τῷ ἄρχοντι τοῦ Ἰούδα. Καὶ οὗτος ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν· ψυκτῆρες χρυσοῖ τριάκοντα, καὶ ψυκτῆρες ἀργυροῖ χίλιοι, παρηλλαγμένα ἐννέα καὶ εἴκοσι, κεφουρῆς χρυσοῖ τριάκοντα, καὶ ἀργυροῖ διπλοῖ τετρακόσια δέκα, καὶ σκεύη ἕτερα χίλια. Πάντα τὰ σκεύη τῷ χρυσῷ καὶ τῷ ἀργυρῷ πεντακισχίλια τετρακόσια, τὰ πάντα ἀναβαίνοντα μετὰ Σασαβασὰρ ἀπὸ τῆς ἀποικίας ἐκ Βαβυλῶνος εἰς Ἰερουσαλήμ.

# 2

Καὶ οὗτοι οἱ υἱοὶ τῆς χώρας οἱ ἀναβαίνοντες ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας τῆς ἀποικίας, ἧς ἀπῴκισε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ἐπέστρεψαν εἰς Ἰερουσαλὴμ καὶ Ἰούδα ἀνὴρ εἰς πόλιν αὐτοῦ· Οἳ ἦλθον μετὰ Ζοροβάβελ, Ἰησοῦς, Νεεμίας, Σαραΐας, Ῥεελίας, Μαρδοχαῖος, Βαλασὰν, Μασφὰρ, Βαγουαὶ, Ῥεοὺμ, Βαανά· ἀνδρῶν ἀριθμὸς λαοῦ Ἰσραήλ. Υἱοὶ Φαρὲς, δισχίλιοι ἑκατὸν ἑβδομηκονταδύο. Υἱοὶ Σαφατία, τριακόσιοι ἑβδομηκονταδύο. Υἱοὶ Ἄρες, ἑπτακόσιοι ἑβδομηκονταπέντε. Υἱοὶ Φαὰθ Μωὰβ τοῖς υἱοῖς Ἰησουὲ Ἰωὰβ, δισχίλιοι ὀκτακόσιοι δεκαδύο. Υἱοὶ Αἰλὰμ, χίλιοι διακόσιοι πεντηκοντατέσσαρες. Υἱοὶ Ζαθουὰ, ἐννακόσιοι τεσσαρακονταπέντε. Υἱοὶ Ζακχοὺ, ἑπτακόσιοι ἑξήκοντα. Υἱοὶ

Βανουὶ, ἑξακόσιοι τεσσαρακονταδύο. Υἱοὶ Βαβαΐ, ἑξακόσιοι εἰκοσιτρεῖς. Υἱοὶ Ἀσγὰδ, χίλιοι διακόσιοι εἰκοσιδύο. Υἱοὶ Ἀδωνικὰμ, ἑξακόσιοι ἑξηκονταέξ. Υἱοὶ Βαγουὲ, δισχίλιοι πεντηκονταέξ. Υἱοὶ Ἀδδὶν, τετρακόσιοι πεντηκοντατέσσαρες. Υἱοὶ Ἀτὴρ τῷ Ἐζεκίᾳ, ἐννενηκονταοκτώ. Υἱοὶ Βασσοῦ, τριακόσιοι εἰκοσιτρεῖς. Υἱοὶ Ἰωρὰ, ἑκατὸν δεκαδύο. Υἱοὶ Ἀσοὺμ, διακόσιοι εἰκοσιτρεῖς. Υἱοὶ Γαβὲρ, ἐννενηκονταπέντε. Υἱοὶ Βεθλαὲμ, ἑκατὸν εἰκοσιτρεῖς. Υἱοὶ Νετωφὰ, πεντηκονταέξ. Υἱοὶ Ἀναθὼθ, ἑκατὸν εἰκοσιοκτώ. Υἱοὶ Ἀζμὼθ, τεσσαρακοντατρεῖς. Υἱοὶ Καριαθιαρὶμ, Χαφιρὰ, καὶ Βηρὼθ, ἑπτακόσιοι τεσσαρακοντατρεῖς. Υἱοὶ τῆς Ῥαμὰ καὶ Γαβαὰ, ἑξακόσιοι εἰκοσιεῖς. Ἄνδρες Μαχμὰς, ἑκατὸν εἰκοσιδύο. Ἄνδρες Βαιθὴλ καὶ Ἀϊὰ, τετρακόσιοι εἰκοσιτρεῖς. Υἱοὶ Ναβοῦ, πεντηκονταδύο. Υἱοὶ Μαγεβὶς, ἑκατὸν πεντηκονταέξ. Υἱοὶ Ἠλαμὰρ, χίλιοι διακόσιοι πεντηκοντατέσσαρες. Υἱοὶ Ἠλὰμ, τριακόσιοι εἴκοσι. Υἱοὶ Λοδαδὶ καὶ Ὠνὼ, ἑπτακόσιοι εἰκοσιπέντε. Υἱοὶ Ἱεριχὼ, τριακόσιοι τεσσαρακονταπέντε. Υἱοὶ Σεναὰ, τρισχίλιοι ἑξακόσιοι τριάκοντα. Καὶ οἱ ἱερεῖς υἱοὶ Ἰεδουὰ τῷ οἴκῳ Ἰησοῖ, ἐννακόσιοι ἑβδομηκοντατρεῖς. Υἱοὶ Ἐμμὴρ, χίλιοι πεντηκονταδύο. Υἱοὶ Φασσοὺρ, χίλιοι διακόσιοι τεσσαρακονταεπτά. Υἱοὶ Ἠρὲμ, χίλιοι ἑπτά. Καὶ οἱ Λευῖται υἱοὶ Ἰησοῦ καὶ Καδμιὴλ τοῖς υἱοῖς Ὠδουΐα, ἑβδομηκοντατέσσαρες. Οἱ ᾄδοντες υἱοὶ Ἀσὰφ, ἑκατὸν εἰκοσιοκτώ. Υἱοὶ τῶν πυλωρῶν, υἱοὶ Σελλοὺμ, υἱοὶ Ἀτὴρ, υἱοὶ Τελμὼν, υἱοὶ Ἀκοὺβ, υἱοὶ Ἀτιτὰ, υἱοὶ Σωβαΐ, οἱ πάντες ἑκατὸν τριακονταεννέα. Οἱ Ναθινὶμ, υἱοὶ Σουθία, υἱοὶ Ἀσουφὰ, υἱοὶ Ταβαὼθ, υἱοὶ Κάδης, υἱοὶ Σιαὰ, υἱοὶ Φαδὼν, υἱοὶ Λαβανὼ, υἱοὶ Ἀγαβὰ, υἱοὶ Ἀκοὺβ, υἱοὶ Ἀγὰβ, υἱοὶ Σελαμὶ, υἱοὶ Ἀνὰν, υἱοὶ Γεδδὴλ, υἱοὶ Γαὰρ, υἱοὶ Ῥαϊὰ, υἱοὶ Ῥασὼν, υἱοὶ Νεκωδὰ, υἱοὶ Γαζὲμ, υἱοὶ Ἀζὼ, υἱοὶ Φασὴ, υἱοὶ Βασὶ, υἱοὶ Ἀσενὰ, υἱοὶ Μοουνὶμ, υἱοὶ Νεφουσὶμ, υἱοὶ Βακβοὺκ, υἱοὶ Ἀκουφὰ, υἱοὶ

Ἀροὺρ, υἱοὶ Βασαλὼθ, υἱοὶ Μαουδὰ, υἱοὶ Ἀρσὰ, υἱοὶ Βαρκὸς, υἱοὶ Σισάρα, υἱοὶ Θεμὰ, υἱοὶ Νασθιὲ, υἱοὶ Ἀτουφά· Υἱοὶ δούλων Σαλωμὼν, υἱοὶ Σωταΐ, υἱοὶ Σεφηρὰ, υἱοὶ Φαδουρὰ, υἱοὶ Ἰεηλὰ, υἱοὶ Δαρκὼν, υἱοὶ Γεδὴλ, υἱοὶ Σαφατία, υἱοὶ Ἀτὶλ, υἱοὶ Φαχερὰθ, υἱοὶ Ἀσεβωεὶμ, υἱοὶ Ἡμεΐ. Πάντες οἱ Ναθανὶμ, καὶ υἱοὶ Ἀβδησελμὰ, τριακόσιοι ἐννενηκονταδύο. Καὶ οὗτοι οἱ ἀναβάντες ἀπὸ Θελμελὲχ, Θελαρησὰ, Χεροὺβ, Ἠδὰν, Ἐμμὴρ· καὶ οὐκ ἐδυνάσθησαν τοῦ ἀναγγεῖλαι οἶκον πατριᾶς αὐτῶν καὶ σπέρμα αὐτῶν, εἰ ἐξ Ἰσραήλ εἰσιν· Υἱοὶ Δαλαΐα, υἱοὶ Βουὰ, υἱοὶ Τωβίου, υἱοὶ Νεκωδὰ, ἑξακόσιοι πεντηκονταδύο. Καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν ἱερέων υἱοὶ Λαβεία, υἱοὶ Ἀκκοὺς, υἱοὶ Βερζελλαΐ, ὃς ἔλαβεν ἀπὸ τῶν θυγατέρων Βερζελλαΐ τοῦ Γαλααδίτου γυναῖκα, καὶ ἐκλήθη ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτῶν. Οὗτοι ἐζήτησαν γραφὴν αὐτῶν οἱ μεθωεσὶμ, καὶ οὐχ εὑρέθησαν, καὶ ἠγχιστεύθησαν ἀπὸ τῆς ἱερατείας. Καὶ εἶπεν ἀθερσασθὰ αὐτοῖς τοῦ μὴ φαγεῖν ἀπὸ τοῦ ἁγίου τῶν ἁγίων, ἕως ἀναστῇ ἱερεὺς τοῖς φωτίζουσι καὶ τοῖς τελείοις. Πᾶσα δὲ ἡ ἐκκλησία ὁμοῦ ὡσεὶ τέσσαρες μυριάδες δισχίλιοι τριακόσιοι ἑξήκοντα, χωρὶς δούλων αὐτῶν καὶ παιδισκῶν αὐτῶν, οὗτοι ἑπτακισχίλιοι τριακόσιοι τριακονταεπτά· καὶ οὗτοι ᾄδοντες καὶ ᾄδουσαι διακόσιοι. Ἵπποι αὐτῶν, ἑπτακόσιοι τριακονταέξ· ἡμίονοι αὐτῶν, διακόσιοι τεσσαρακονταπέντε· Κάμηλοι αὐτῶν, τετρακόσιοι τριακονταπέντε· ὄνοι αὐτῶν, ἑξακισχίλιοι ἑπτακόσιοι εἴκοσι. Καὶ ἀπὸ ἀρχόντων πατριῶν ἐν τῷ εἰσελθεῖν αὐτοὺς εἰς οἶκον Κυρίου τὸν ἐν Ἰερουσαλὴμ, ἠκουσιάσαντο εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ, τοῦ στῆσαι αὐτὸν ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ· ὡς ἡ δύναμις αὐτῶν, ἔδωκαν εἰς θησαυρὸν τοῦ ἔργου χρυσίον καθαρὸν μναῖ ἓξ μυριάδες καὶ χίλιαι, καὶ ἀργυρίου μνὰς πεντακισχιλίας, καὶ κόθωνοι τῶν ἱερέων ἑκατόν. Καὶ ἐκάθισαν οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ Λευῖται,

καὶ οἱ ἀπὸ τοῦ λαοῦ, καὶ οἱ ᾄδοντες, καὶ οἱ πυλωροὶ, καὶ οἱ Ναθινὶμ ἐν πόλεσιν αὐτῶν, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐν πόλεσιν αὐτῶν.

# 3

Καὶ ἔφθασεν ὁ μὴν ὁ ἕβδομος, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν πόλεσιν αὐτῶν, καὶ συνήχθη ὁ λαὸς ὡς ἀνὴρ εἷς εἰς Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἀνέστη Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ἰωσεδὲκ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἱερεῖς, καὶ Ζοροβάβελ ὁ τοῦ Σαλαθιὴλ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ᾠκοδόμησαν τὸ θυσιαστήριον Θεοῦ Ἰσραὴλ, τοῦ ἀνενέγκαι ἐπ᾽ αὐτὸ ὁλοκαυτώσεις, κατὰ τὰ γεγραμμένα ἐν νόμῳ Μωυσῆ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἡτοίμασαν τὸ θυσιαστήριον ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ, ὅτι ἐν καταπλήξει ἐπ᾽ αὐτοὺς ἀπὸ τῶν λαῶν τῶν γαιῶν· καὶ ἀνέβη ἐπ᾽ αὐτὸ ὁλοκαύτωσις τῷ Κυρίῳ τοπρωΐ καὶ εἰς ἑσπέραν. Καὶ ἐποίησαν τὴν ἑορτὴν τῶν σκηνῶν κατὰ τὸ γεγραμμένον, καὶ ὁλοκαυτώσεις ἡμέραν ἐν ἡμέρᾳ ἐν ἀριθμῷ ὡς ἡ κρίσις, λόγον ἡμέρας ἐν ἡμέρᾳ αὐτοῦ· Καὶ μετὰ τοῦτο ὁλοκαυτώσεις ἐνδελεχισμοῦ, καὶ εἰς τὰς νουμηνίας καὶ εἰς πάσας ἑορτὰς τῷ Κυρίῳ τὰς ἡγιασμένας, καὶ παντὶ ἑκουσιαζομένῳ ἑκούσιον τῷ Κυρίῳ. Ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ ἑβδόμου ἤρξαντο ἀναφέρειν ὁλοκαυτώσεις τῷ Κυρίῳ, καὶ ὁ οἶκος τοῦ Κυρίου οὐκ ἐθεμελιώθη. Καὶ ἔδωκαν ἀργύριον τοῖς λατόμοις καὶ τοῖς τέκτοσι, καὶ βρώματα καὶ ποτὰ, καὶ ἔλαιον τοῖς Σιδωνίοις καὶ τοῖς Τυρίοις, ἐνέγκαι ξύλα κέδρινα ἀπὸ τοῦ Λιβάνου πρὸς θάλασσαν Ἰόππης, κατ᾽ ἐπιχώρησιν Κύρου βασιλέως Περσῶν ἐπ᾽ αὐτούς. Καὶ ἐν τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ τοῦ ἐλθεῖν αὐτοὺς εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ, ἐν μηνὶ τῷ δευτέρῳ ἤρξατο Ζοροβάβελ ὁ τοῦ Σαλαθιὴλ καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ

Ἰωσεδὲκ, καὶ οἱ κατάλοιποι τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται, καὶ πάντες οἱ ἐρχόμενοι ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔστησαν τοὺς Λευίτας ἀπὸ εἰκοσαετοῦς καὶ ἐπάνω ἐπὶ τοὺς ποιοῦντας τὰ ἔργα ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ ἔστη Ἰησοῦς καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, Καδμιὴλ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ υἱοὶ Ἰούδα ἐπὶ τοὺς ποιοῦντας τὰ ἔργα ἐν οἴκῳ τοῦ Θεοῦ· υἱοὶ Ἡναδὰδ, υἱοὶ αὐτῶν καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν οἱ Λευῖται. Καὶ ἐθεμελίωσαν τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον Κυρίου· καὶ ἔστησαν οἱ ἱερεῖς ἐστολισμένοι ἐν σάλπιγξι, καὶ οἱ Λευῖται υἱοὶ Ἀσὰφ ἐν κυμβάλοις τοῦ αἰνεῖν τὸν Κύριον ἐπὶ χεῖρας Δαυὶδ βασιλέως Ἰσραήλ. Καὶ ἀπεκρίθησαν ἐν αἴνῳ καὶ ἀνθομολογήσει τῷ Κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸν, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐπὶ Ἰσραήλ· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἐσήμαινε φωνῇ μεγάλῃ αἰνεῖν τῷ Κυρίῳ ἐπὶ τῇ θεμελιώσει τοῦ οἴκου Κυρίου. Καὶ πολλοὶ ἀπὸ τῶν ἱερέων καὶ τῶν Λευιτῶν καὶ ἄρχοντες τῶν πατριῶν οἱ πρεσβύτεροι οἳ εἴδοσαν τὸν οἶκον τὸν πρῶτον ἐν θεμελιώσει αὐτοῦ, καὶ τοῦτον τὸν οἶκον ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτῶν, ἔκλαιον φωνῇ μεγάλῃ· καὶ ὁ ὄχλος ἐν σημασίᾳ μετ᾽ εὐφροσύνης τοῦ ὑψῶσαι ᾠδήν. Καὶ οὐκ ἦν ὁ λαὸς ἐπιγινώσκων φωνὴν σημασίας τῆς εὐφροσύνης ἀπὸ τῆς φωνῆς τοῦ κλαυθμοῦ τοῦ λαοῦ, ὅτι ὁ λαὸς ἐκραύγασε φωνῇ μεγάλῃ, καὶ ἡ φωνὴ ἠκούετο ἕως ἀπὸ μακρόθεν.

# 4

Καὶ ἤκουσαν οἱ θλίβοντες Ἰούδα καὶ Βενιαμὶν, ὅτι υἱοὶ τῆς ἀποικίας οἰκοδομοῦσιν οἶκον τῷ Κυρίῳ Θεῷ Ἰσραὴλ, καὶ ἤγγισαν πρὸς Ζοροβάβελ καὶ πρὸς τοὺς ἄρχοντας τῶν πατριῶν, καὶ εἶπον αὐτοῖς,

οἰκοδομήσομεν μεθ’ ὑμῶν, ὅτι ὡς ὑμεῖς ἐκζητοῦμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, καὶ αὐτῷ ἡμεῖς θυσιάζομεν ἀπὸ ἡμερῶν Ἀσαραδὰν βασιλέως Ἀσσοὺρ τοῦ ἐνέγκαντος ἡμᾶς ὧδε. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς Ζοροβάβελ καὶ Ἰησοῦς καὶ οἱ κατάλοιποι τῶν ἀρχόντων τῶν πατριῶν τοῦ Ἰσραὴλ, οὐχ ἡμῖν καὶ ὑμῖν τοῦ οἰκοδομῆσαι οἶκον τῷ Θεῷ ἡμῶν, ὅτι ἡμεῖς ἐπὶ τοαυτὸ οἰκοδομήσομεν τῷ Κυρίῳ Θεῷ ἡμῶν, ὡς ἐνετείλατο ἡμῖν Κύρος ὁ βασιλεὺς Περσῶν. Καὶ ἦν ὁ λαὸς τῆς γῆς ἐκλύων τὰς χεῖρας τοῦ λαοῦ Ἰούδα, καὶ ἐνεπόδιζον αὐτοὺς οἰκοδομεῖν, καὶ μισθούμενοι ἐπ’ αὐτοὺς βουλευόμενοι τοῦ διασκεδάσαι βουλὴν αὐτῶν πάσας τὰς ἡμέρας Κύρου βασιλέως Περσῶν, καὶ ἕως βασιλείας Δαρείου βασιλείας Περσῶν. Καὶ ἐν βασιλείᾳ Ἀσσουήρου, καὶ ἐν ἀρχῇ βασιλείας αὐτοῦ ἔγραψαν ἐπιστολὴν ἐπὶ οἰκοῦντας Ἰούδα καὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐν ἡμέραις Ἀρθασασθὰ ἔγραψεν ἐν εἰρήνῃ Μιθραδάτῃ Ταβεὴλ καὶ τοῖς λοιποῖς συνδούλοις· πρὸς Ἀρθασασθὰ βασιλέα Περσῶν ἔγραψεν ὁ φορολόγος γραφὴν Συριστὶ καὶ ἡρμηνευμένην. Ῥεοὺμ βαλτὰμ καὶ Σαμψὰ ὁ γραμματεὺς ἔγραψαν ἐπιστολὴν μίαν κατὰ Ἱερουσαλὴμ τῷ Ἀρθασασθὰ βασιλεῖ. Τάδε ἔκρινε Ῥεοὺμ βαλτὰμ καὶ Σαμψὰ ὁ γραμματεὺς καὶ οἱ κατάλοιποι σύνδουλοι ἡμῶν, Δεινα῀οι, Ἀφαρσαθαχα῀οι, Ταρφαλα῀οι, Ἀφαρσα῀οι, Ἀρχυα῀οι, Βαβυλώνιοι, Σουσαναχα῀οι, Δαυα῀οι, καὶ οἱ κατάλοιποι ἐθνῶν ὧν ἀπῴκισεν Ἀσσεναφὰρ ὁ μέγας καὶ ὁ τίμιος, καὶ κατῴκισεν αὐτοὺς ἐν πόλεσι τῆς Σομόρων καὶ τὸ κατάλοιπον πέραν τοῦ ποταμοῦ. Αὕτη ἡ διαταγὴ τῆς ἐπιστολῆς, ἧς ἀπέστειλαν πρὸς αὐτόν· πρὸς Ἀρθασασθὰ βασιλέα παῖδές σου ἄνδρες πέραν τοῦ ποταμοῦ. Γνωστὸν ἔστω τῷ βασιλεῖ, ὅτι οἱ Ἰουδα῀οι οἱ ἀναβάντες ἀπὸ σοῦ πρὸς ἡμᾶς ἦλθοσαν εἰς Ἱερουσαλὴμ τὴν πόλιν τὴν ἀποστάτιν καὶ πονηρὰν, ἣν οἰκοδομοῦσι· καὶ τὰ τείχη αὐτῆς κατηρτισμένα εἰσὶ,

καὶ θεμελίους αὐτῆς ἀνύψωσαν. Νῦν οὖν γνωστὸν ἔστω τῷ βασιλεῖ, ὅτι ἐὰν ἡ πόλις ἐκείνη ἀνοικοδομηθῇ, καὶ τὰ τείχη αὐτῆς καταρτισθῶσι, φόροι οὐκ ἔσονταί σοι, οὐδὲ δώσουσι· καὶ τοῦτο βασιλεῖς κακοποιεῖ, καὶ ἀσχημοσύνην βασιλέως οὐκ ἔξεστιν ἡμῖν ἰδεῖν· διὰ τοῦτο ἐπέμψαμεν καὶ ἐγνωρίσαμεν τῷ βασιλεῖ, ἵνα ἐπισκέψηται ἐν βίβλῳ ὑπομνηματισμοῦ τῶν πατέρων σου, καὶ εὑρήσεις, καὶ γνώσῃ, ὅτι ἡ πόλις ἐκείνη πόλις ἀποστάτις, καὶ κακοποιοῦσα βασιλεῖς καὶ χώρας, καὶ φυγαδείαι δούλων γίνονται ἐν μέσῳ αὐτῆς ἀπὸ ἡμερῶν αἰῶνος, διὰ ταῦτα ἡ πόλις αὕτη ἠρημώθη. Γνωρίζομεν οὖν ἡμεῖς τῷ βασιλεῖ, ὅτι ἂν ἡ πόλις ἐκείνη οἰκοδομηθῇ, καὶ τὰ τείχη αὐτῆς καταρτισθῇ, οὐκ ἔστι σοι εἰρήνη. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς πρὸς Ῥεοὺμ βαλτὰμ καὶ Σαμψὰ γραμματέα καὶ τοὺς καταλοίπους συνδούλους αὐτῶν τοὺς οἰκοῦντας ἐν Σαμαρείᾳ καὶ τοὺς καταλοίπους πέραν τοῦ ποταμοῦ, εἰρήνην· καὶ φησὶν, ὁ φορολόγος ὃν ἀπεστείλατε πρὸς ἡμᾶς, ἐκλήθη ἔμπροσθεν ἐμοῦ· Καὶ παρ’ ἐμοῦ ἐτέθη γνώμη, καὶ ἐπεσκεψάμεθα καὶ εὕραμεν, ὅτι ἡ πόλις ἐκείνη ἀφ’ ἡμερῶν αἰῶνος ἐπὶ βασιλεῖς ἐπαίρεται, καὶ ἀποστάσεις καὶ φυγαδείαι γίνονται ἐν αὐτῇ· Καὶ βασιλεῖς ἰσχυροὶ ἐγένοντο ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπικρατοῦντες ὅλης τῆς πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ φόροι πλήρεις καὶ μέρος δίδονται αὐτοῖς. Καὶ νῦν θέτε γνώμην, καταργῆσαι τοὺς ἄνδρας ἐκείνους, καὶ ἡ πόλις ἐκείνη οὐκ οἰκοδομηθήσεται ἔτι· Ὅπως ἀπὸ τῆς γνώμης πεφυλαγμένοι ἦτε ἄνεσιν ποιῆσαι περὶ τούτου, μή ποτε πληθυνθῇ ἀφανισμὸς εἰς κακοποίησιν βασιλεῦσι. Τότε ὁ φορολόγος τοῦ Ἀρθασασθὰ βασιλέως ἀνέγνω ἐνώπιον Ῥεοὺμ βαλτὰμ καὶ Σαμψὰ γραμματέως καὶ συνδούλων αὐτοῦ· καὶ ἐπορεύθησαν σπουδῇ εἷς Ἰερουσαλὴμ καὶ ἐν Ἰούδα, καὶ κατήργησαν αὐτοὺς ἐν ἵπποις καὶ δυνάμει. Τότε ἤργησε τὸ ἔργον

οἴκου τοῦ Θεοῦ τὸ ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ ἦν ἀργοῦν ἕως δευτέρου ἔτους τῆς βασιλείας Δαρείου βασιλέως Περσῶν.

# 5

Καὶ προεφήτευσεν Ἀγγαῖος ὁ προφήτης καὶ Ζαχαρίας ὁ τοῦ Ἀδδὼ προφητείαν ἐπὶ τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ἐν Ἰούδα καὶ Ἰερουσαλὴμ ἐν ὀνόματι Θεοῦ Ἰσραὴλ ἐπ’ αὐτούς. Τότε ἀνέστησαν Ζοροβάβελ ὁ τοῦ Σαλαθιὴλ καὶ Ἰησοῦς υἱὸς Ἰωσεδὲκ, καὶ ἤρξαντο οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ μετ’ αὐτῶν οἱ προφῆται τοῦ Θεοῦ βοηθοῦντες αὐτοῖς. Ἐν αὐτῷ τῷ καιρῷ ἦλθεν ἐπ’ αὐτοὺς Θανθαναῒ ἔπαρχος πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ Σαθαρβουζαναῖ, καὶ οἱ σύνδουλοι αὐτῶν, καὶ τοιάδε εἶπαν αὐτοῖς, τίς ἔθηκεν ὑμῖν γνώμην τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ τὴν χορηγίαν ταύτην καταρτίσασθαι; Τότε ταῦτα εἴποσαν αὐτοῖς, τίνα ἐστὶ τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν τῶν οἰκοδομούντων τὴν πόλιν ταύτην; Καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τὴν αἰχμαλωσίαν Ἰούδα, καὶ οὐ κατήργησαν αὐτοὺς ἕως γνώμη τῷ Δαρείῳ ἀπηνέχθη· καὶ τότε ἀπεστάλη τῷ φορολόγῳ ὑπὲρ τούτου διασάφησις ἐπιστολῆς, ἧς ἀπέστειλε Θανθαναῒ, ὁ ἔπαρχος τοῦ πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ Σαθαρβουζαναῖ καὶ οἱ σύνδουλοι αὐτῶν Ἀφαρσαχαῖοι οἱ ἐν τῷ πέραν τοῦ ποταμοῦ, Δαρείῳ τῷ βασιλεῖ· Ῥήμασιν ἀπέστειλαν πρὸς αὐτόν· καὶ τάδε γέγραπται ἐν αὐτῷ· Δαρείῳ τῷ βασιλεῖ εἰρήνη πᾶσα. Γνωστὸν ἔστω τῷ βασιλεῖ, ὅτι ἐπορεύθημεν εἰς τὴν Ἰουδαίαν χώραν εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ τοῦ μεγάλου, καὶ αὐτὸς οἰκοδομεῖται λίθοις ἐκλεκτοῖς, καὶ ξύλα ἐντίθεται ἐν τοῖς τοίχοις, καὶ τὸ ἔργον ἐκεῖνο ἐπιδέξιον γίνεται, καὶ εὐοδοῦται ἐν ταῖς χερσὶν

αὐτῶν. Τότε ἠρωτήσαμεν τοὺς πρεσβυτέρους ἐκείνους, καὶ οὕτως εἴπαμεν αὐτοῖς, τίς ἔθηκεν ὑμῖν γνώμην τὸν οἶκον τοῦτον οἰκοδομῆσαι, καὶ τὴν χορηγίαν ταύτην καταρτίσασθαι; Καὶ τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἠρωτήσαμεν αὐτοὺς γνωρίσαι σοι, ὥστε γράψαι σοι τὰ ὀνόματα τῶν ἀνδρῶν τῶν ἀρχόντων αὐτῶν. Καὶ τοιοῦτο τὸ ῥῆμα ἀπεκρίθησαν ἡμῖν, λέγοντες, ἡμεῖς ἐσμὲν δοῦλοι τοῦ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς, καὶ οἰκοδομοῦμεν τὸν οἶκον ὃς ἦν ᾠκοδομημένος πρὸ τούτου ἔτη πολλὰ, καὶ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραὴλ μέγας ᾠκοδόμησεν αὐτὸν, καὶ κατηρτίσατο αὐτὸν αὐτοῖς. Ἀφότε δὲ παρώργισαν οἱ πατέρες ἡμῶν τὸν Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ, ἔδωκεν αὐτοὺς εἰς χεῖρας Ναβουχοδονόσορ βασιλέως Βαβυλῶνος τοῦ Χαλδαίου, καὶ τὸν οἶκον τοῦτον κατέλυσε, καὶ τὸν λαὸν ἀπῴκισεν εἰς Βαβυλῶνα. Αλλ’ ἐν ἔτει πρώτῳ Κύρου τοῦ βασιλέως, Κύρος ὁ βασιλεὺς ἔθετο γνώμην τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ τοῦτον οἰκοδομηθῆναι· Καὶ τὰ σκεύη τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ, ἃ Ναβουχοδονόσορ ἐξήνεγκεν ἀπὸ τοῦ οἴκου τοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἀπήνεγκεν αὐτὰ εἰς τὸν ναὸν του βασιλέως, ἐξήνεγκεν αὐτὰ Κύρος ὁ βασιλεὺς ἀπὸ τοῦ ναοῦ τοῦ βασιλέως, καὶ ἔδωκε τῷ Σαβανασὰρ τῷ θησαυροφύλακι, τῷ ἐπὶ τοῦ θησαυροῦ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, πάντα τὰ σκεύη λάβε καὶ πορεύου, θὲς αὐτὰ ἐν τῷ οἴκῳ τῷ ἐν Ἰερουσαλὴμ εἰς τὸν τόπον αὐτῶν. Τότε Σαβανασὰρ ἐκεῖνος ἦλθε καὶ ἔδωκε θεμελίους τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἀπὸ τότε ἕως τοῦ νῦν ᾠκοδομήθη, καὶ οὐκ ἐτελέσθη. Καὶ νῦν εἰ ἐπὶ τὸν βασιλέα ἀγαθὸν ἐπισκεπήτω ἐν τῷ οἴκῳ τῆς γάζης τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος, ὅπως γνῷς ὅτι ἀπὸ βασιλέως Κύρου ἐτέθη γνώμη οἰκοδομῆσαι τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐκεῖνον τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ γνοὺς ὁ βασιλεὺς περὶ τούτου, πεμψάτω πρὸς ἡμᾶς.

# 6

Τότε Δαρεῖος ὁ βασιλεὺς ἔθηκε γνώμην, καὶ ἐπεσκέψατο ἐν ταῖς βιβλιοθήκαις ὅπου ἡ γάζα κεῖται ἐν Βαβυλῶνι. Καὶ εὑρέθη ἐν πόλει ἐν τῇ βάρει κεφαλὶς μία, καὶ τοῦτο γεγραμμένον ἐν αὐτῇ ὑπόμνημα. Ἐν ἔτει πρώτῳ Κύρου βασιλέως, Κύρος ὁ βασιλεὺς ἔθηκε γνώμην περὶ οἴκου ἱεροῦ Θεοῦ τοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ· οἶκος οἰκοδομηθήτω, καὶ τόπος οὗ θυσιάζουσι τὰ θυσιάσματα· καὶ ἔθηκεν ἔπαρμα ὕψος πήχεις ἑξήκοντα, πλάτος αὐτοῦ πήχεων ἑξήκοντα· Καὶ δόμοι λίθινοι κραταιοὶ τρεῖς, καὶ δόμος ξύλινος εἷς, καὶ ἡ δαπάνη ἐξ οἴκου τοῦ βασιλέως δοθήσεται. Καὶ τὰ σκεύη οἴκου τοῦ Θεοῦ τὰ ἀργυρᾶ καὶ τὰ χρυσᾶ, ἃ Ναβουχοδονόσορ ἐξήνεγκεν ἀπὸ τοῦ οἴκου τοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐκόμισεν εἰς Βαβυλῶνα, καὶ δοθήτω καὶ ἀπελθέτω εἰς τὸν ναὸν τὸν ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐπὶ τόπου οὗ ἐτέθη ἐν οἴκῳ τοῦ Θεοῦ. Νῦν δώσετε ἔπαρχοι πέραν τοῦ ποταμοῦ Σαθαρβουζαναΐ, καὶ οἱ σύνδουλοι αὐτῶν Ἀφαρσαχαῖοι οἱ ἐν τῷ πέραν τοῦ ποταμοῦ μακρὰν ὄντες ἐκεῖθεν, νῦν ἄφετε τὸ ἔργον οἴκου τοῦ Θεοῦ· οἱ ἀφηγούμενοι τῶν Ἰουδαίων καὶ οἱ πρεσβύτεροι τῶν Ἰουδαίων οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐκεῖνον οἰκοδομείτωσαν ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ. Καὶ ἀπ’ ἐμοῦ γνώμη ἐτέθη, μή ποτε τὶ ποιήσητε μετὰ τῶν πρεσβυτέρων τῶν Ἰουδαίων τοῦ οἰκοδομηθῆναι οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐκεῖνον· καὶ ἀπὸ ὑπαρχόντων βασιλέως τῶν φόρων πέραν τοῦ ποταμοῦ ἐπιμελῶς δαπάνη ἔστω διδομένη τοῖς ἀνδράσιν ἐκείνοις τὸ μὴ καταργηθῆναι. Καὶ ὃ ἂν ὑστέρημα, καὶ υἱοὺς βοῶν καὶ κριῶν, καὶ ἀμνοὺς εἰς ὁλοκαυτώσεις τῷ Θεῷ τοῦ οὐρανοῦ, πυροὺς, ἅλας, οἶνον, ἔλαιον, κατὰ τὸ ῥῆμα ἱερέων τῶν ἐν Ἰερουσαλὴμ ἔστω διδόμενον αὐτοῖς, ἡμέραν ἐν

ἡμέρᾳ, ὃ ἐὰν αἰτήσωσιν, ἵνα ὦσιν εὐωδίας προσφέροντες τῷ Θεῷ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ προσεύχωνται εἰς ζωὴν τοῦ βασιλέως καὶ υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ ἀπ᾽ ἐμοῦ ἐτέθη γνώμη, ὅτι πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἀλλάξει τὸ ῥῆμα τοῦτο, καθαιρεθήσεται ξύλον ἐκ τῆς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ ὠρθωμένος πληγήσεται ἐπ᾽ αὐτοῦ, καὶ ὁ οἶκος αὐτοῦ τὸ κατ᾽ ἐμὲ ποιηθήσεται. Καὶ ὁ Θεὸς οὗ κατασκηνοῖ τὸ ὄνομα ἐκεῖ, καταστρέψαι πάντα βασιλέα καὶ λαὸν ὃς ἐκτενεῖ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἀλλάξαι ἢ ἀφανίσαι τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ· ἐγὼ Δαρεῖος ἔθηκα γνώμην, ἐπιμελῶς ἔσται. Τότε Θανθαναῒ ὁ ἔπαρχος πέραν τοῦ ποταμοῦ, Σαθαρβουζαναῖ, καὶ οἱ σύνδουλοι αὐτοῦ, πρὸς ὃ ἀπέστειλε Δαρεῖος βασιλεὺς, οὕτως ἐποίησαν ἐπιμελῶς. Καὶ οἱ πρεσβύτεροι τῶν Ἰουδαίων ᾠκοδομοῦσαν καὶ οἱ Λευῖται ἐν προφητείᾳ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, καὶ Ζαχαρίου υἱοῦ Ἀδδώ· καὶ ἀνῳκοδόμησαν καὶ κατηρτίσαντο ἀπὸ γνώμης Θεοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ἀπὸ γνώμης Κύρου, καὶ Δαρείου, καὶ Ἀρθασασθὰ βασιλέων Περσῶν. Καὶ ἐτέλεσαν τὸν οἶκον τοῦτον ἕως ἡμέρας τρίτης μηνὸς Ἀδὰρ, ὅ ἐστιν ἔτος ἕκτον τῆς βασιλείας Δαρείου τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται, καὶ οἱ κατάλοιποι υἱῶν ἀποικεσίας ἐγκαίνια τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ ἐν εὐφροσύνῃ. Καὶ προσήνεγκαν εἰς τὰ ἐγκαίνια τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ μόσχους ἑκατὸν, κριοὺς διακοσίους, ἀμνοὺς τετρακοσίους, χιμάῤῥους αἰγῶν ὑπὲρ ἁμαρτίας ὑπὲρ παντὸς Ἰσραὴλ δώδεκα εἰς ἀριθμὸν φυλῶν Ἰσραήλ. Καὶ ἔστησαν τοὺς ἱερεῖς ἐν διαιρέσεσιν αὐτῶν, καὶ τοὺς Λευίτας ἐν μερισμοῖς αὐτῶν, ἐπὶ δουλείας Θεοῦ ἐν Ἰερουσαλὴμ, κατὰ τὴν γραφὴν βίβλου Μωυσῆ. Καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ τῆς ἀποικεσίας τὸ πάσχα τῇ τεσσαρεσκαιδεκάτῃ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου. Ὅτι ἐκαθαρίσθησαν οἱ ἱερεῖς καὶ Λευῖται, ἕως εἷς πάντες καθαροί· καὶ ἔσφαξαν τὸ πάσχα τοῖς πᾶσιν υἱοῖς τῆς ἀποικεσίας καὶ τοῖς

ἀδελφοῖς αὐτῶν τοῖς ἱερεῦσι καὶ ἑαυτοῖς. Καὶ ἔφαγον υἱοὶ Ἰσραὴλ τὸ πάσχα, οἱ ἀπὸ τῆς ἀποικεσίας, καὶ πᾶς ὁ χωριζόμενος τῆς ἀκαθαρσίας ἐθνῶν τῆς γῆς πρὸς αὐτοῦς, τοῦ ἐκζητῆσαι Κύριον Θεὸν Ἰσραήλ. Καὶ ἐποίησαν τὴν ἑορτὴν τῶν ἀζύμων ἑπτὰ ἡμέρας ἐν εὐφροσύνῃ, ὅτι εὔφρανεν αὐτοὺς Κύριος, καὶ ἐπέστρεψε καρδίαν βασιλέως Ἀσσοὺρ ἐπ᾽ αὐτοὺς κραταιῶσαι τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐν ἔργοις οἴκου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ.

# 7

Καὶ μετὰ τὰ ῥήματα ταῦτα ἐν βασιλείᾳ Ἀρθασασθὰ βασιλέως Περσῶν, ἀνέβη Ἔσδρας υἱὸς Σαραίου, υἱοῦ Ἀζαρίου, υἱοῦ Χελκία, υἱοῦ Σελοὺμ, υἱοῦ Σαδδοὺκ, υἱοῦ Ἀχιτὼβ, υἱοῦ Σαμαρία, υἱοῦ Ἐσριὰ, υἱοῦ Μαρεὼθ, υἱοῦ Ζαραΐα, υἱοῦ Ὀζίου, υἱοῦ Βοκκὶ, υἱοῦ Ἀβισουὲ, υἱοῦ Φινεὲς, υἱοῦ Ἐλεάζαρ, υἱοῦ Ἀαρὼν τοῦ ἱερέως τοῦ πρώτου· Αὐτὸς Ἔσδρας ἀνέβη ἐκ Βαβυλῶνος, καὶ αὐτὸς γραμματεὺς ταχὺς ἐν νόμῳ Μωυσῆ, ὃν ἔδωκε Κύριος ὁ Θεὸς Ἰσραήλ· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, ὅτι χεὶρ Κυρίου Θεοῦ αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτὸν ἐν πᾶσιν οἷς ἐζήτει αὐτός. Καὶ ἀνέβησαν ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, καὶ ἀπὸ τῶν ἱερέων, καὶ ἀπὸ τῶν Λευιτῶν. καὶ οἱ ᾄδοντες, καὶ οἱ πυλωροὶ, καὶ οἱ Ναθινὶμ, εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐν ἔτει ἑβδόμῳ τῷ Ἀρθασασθὰ τῷ βασιλεῖ. Καὶ ἦλθοσαν εἰς Ἰερουσαλὴμ τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ, τοῦτο τὸ ἔτος ἕβδομον τῷ βασιλεῖ· Ὅτι ἐν μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου αὐτὸς ἐθεμελίωσε τὴν ἀνάβασιν τὴν ἀπὸ Βαβυλῶνος· ἐν δὲ τῇ πρώτῃ τοῦ μηνὸς τοῦ πέμπτου ἦλθοσαν εἰς Ἰερουσαλὴμ, ὅτι χεὶρ Θεοῦ αὐτοῦ ἦν ἀγαθὴ ἐπ᾽ αὐτόν. ὅτι Ἔσδρας ἔδωκεν ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ ζητῆσαι τὸν νόμον, καὶ ποιεῖν καὶ διδάσκειν ἐν Ἰσραὴλ

προστάγματα καὶ κρίματα. Καὶ αὕτη ἡ διασάφησις τοῦ διατάγματος, οὗ ἔδωκεν Ἀρθασασθὰ τῷ Ἔσδρα τῷ ἱερεῖ τῷ γραμματεῖ βιβλίου λόγων ἐντολῶν Κυρίου καὶ προσταγμάτων αὐτοῦ ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Ἀρθασασθὰ βασιλεὺς βασιλέων Ἔσδρᾳ γραμματεῖ νόμου Κυρίου τοῦ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ· τετελέσθω λόγος καὶ ἡ ἀπόκρισις. Ἀπ᾽ ἐμοῦ ἐτέθη γνώμη, ὅτι πᾶς ὁ ἐχουσιαζόμενος ἐν βασιλείᾳ μου ἀπὸ λαοῦ Ἰσραὴλ καὶ ἱερέων καὶ Λευιτῶν πορευθῆναι εἰς Ἰερουσαλὴμ, μετὰ σοῦ πορευθῆναι. Ἀπὸ προσώπου τοῦ βασιλέως καὶ τῶν ἑπτὰ συμβούλων ἀπεστάλη ἐπισκέψασθαι ἐπὶ τὴν Ἰουδαίαν καὶ εἰς Ἰερουσαλὴμ νόμῳ Θεοῦ αὐτῶν τῷ ἐν χειρί σου· Καὶ εἰς οἶκον Κυρίου, ἀργύριον καὶ χρυσίον, ὃ ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ σύμβουλοι ἐκουσιάσθησαν τῷ Θεῷ τοῦ Ἰσραὴλ τῷ ἐν Ἰερουσαλὴμ κατασκηνοῦντι. Καὶ πᾶν ἀργύριον καὶ χρυσίον, ὅ, τι ἐὰν εὕρῃς ἐν πάσῃ χώρᾳ Βαβυλῶνος μετὰ ἐκουσιασμοῦ τοῦ λαοῦ, καὶ ἱερέων τῶν ἐκουσιαζομένων εἰς οἶκον Θεοῦ τὸν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ πάντα προσπορευόμενον τοῦτον ἑτοίμως ἔνταξον ἐν βιβλίῳ τούτῳ, μόσχους, κριοὺς, ἀμνοὺς, καὶ θυσίας αὐτῶν, καὶ σπονδὰς αὐτῶν· καὶ προσοίσεις αὐτὰ ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν τοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἴ τι ἐπὶ σὲ καὶ τοὺς ἀδελφούς σου ἀγαθυνθῇ ἐν καταλοίπῳ τοῦ ἀργυρίου καὶ τοῦ χρυσίου ποιῆσαι, ὡς ἀρεστὸν τῷ Θεῷ ὑμῶν ποιήσατε. Καὶ τὰ σκεύη τὰ διδόμενά σοι εἰς λειτουργίαν οἴκου Θεοῦ, παράδος ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ κατάλοιπον χρείας οἴκου Θεοῦ σου, ὃ ἂν φανῇ σοι δοῦναι, δώσεις ἀπὸ οἴκων γάζης βασιλέως καὶ ἀπ᾽ ἐμοῦ. Ἐγὼ Ἀρθασασθὰ βασιλεὺς ἔθηκα γνώμην πάσαις ταῖς γάζαις ταῖς ἐν πέρα τοῦ ποταμοῦ, ὅτι πᾶν ὃ ἂν αἰτήσῃ ὑμᾶς Ἔσδρας ὁ ἱερεὺς καὶ γραμματεὺς τοῦ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ, ἑτοίμως γινέσθω· ἕως ἀργυρίου ταλάντων ἑκατὸν, καὶ ἕως πυροῦ κόρων ἑκατὸν, καὶ ἕως

οἴνου βατῶν ἑκατὸν, καὶ ἕως ἐλαίου βατῶν ἑκατὸν, καὶ ἅλας οὗ οὐκ ἔστι γραφή. Πᾶν ὅ ἐστιν ἐν γνώμῃ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ, γινέσθω· προσέχετε μήτις ἐπιχειρήσῃ εἰς τὸν οἶκον Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ, μή ποτε γένηται ὀργὴ ἐπὶ τὴν βασιλείαν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν υἱῶν αὐτοῦ. Καὶ ὑμῖν ἐγνώρισται ἐν πᾶσι τοῖς ἱερεῦσι, καὶ τοῖς Λευίταις, ᾄδουσι, πυλωροῖς, Ναθινὶμ, καὶ λειτουργοῖς οἴκου Θεοῦ τοῦτο, φόρος μὴ ἔστω σοι, οὐκ ἐξουσιάσεις καταδουλοῦσθαι αὐτούς. Καὶ σὺ Ἔσδρα, ὡς ἡ σοφία τοῦ Θεοῦ ἐν χειρί σου, κατάστησον γραμματεῖς καὶ κριτὰς, ἵνα ὦσι κρίνοντες παντὶ τῷ λαῷ τῷ ἐν πέρα τοῦ ποταμοῦ πᾶσι τοῖς εἰδόσι νόμον τοῦ Θεοῦ σου, καὶ τῷ μὴ εἰδότι γνωριεῖτε. Καὶ πὰς ὃς ἂν μὴ ᾖ ποιῶν νόμον τοῦ Θεοῦ καὶ νόμον τοῦ βασιλέως ἑτοίμως, τὸ κρίμα ἔσται γινόμενον ἐξ αὐτοῦ, ἐάν τε εἰς θάνατον, ἐάν τε εἰς παιδείαν, ἐάν τε εἰς ζημίαν τοῦ βίου. ἐάν τε εἰς παράδοσιν. Εὐλογητὸς Κύριος ὁ Θεὸς τῶν πατέρων ἡμῶν, ὃς ἔδωκεν ἐν καρδίᾳ τοῦ βασιλέως οὕτως, τοῦ δοξάσαι τὸν οἶκον Κυρίου τὸν ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐπ’ ἐμὲ ἔκλινεν ἔλεος ἐν ὀφθαλμοῖς τοῦ βασιλέως καὶ τῶν συμβούλων αὐτοῦ, καὶ πάντων τῶν ἀρχόντων τοῦ βασιλέως, τῶν ἐπῃρμένων· καὶ ἐγὼ ἐκραταιώθην ὡς χεὶρ Θεοῦ ἡ ἀγαθὴ ἐπ’ ἐμέ, καὶ συνῆξα ἀπὸ Ἰσραὴλ ἄρχοντας ἀναβῆναι μετ’ ἐμοῦ.

# 8

Καὶ οὗτοι οἱ ἄρχοντες πατριῶν αὐτῶν οἱ ὁδηγοὶ ἀναβαίνοντες μετ’ ἐμοῦ ἐν βασιλείᾳ Ἀρθασασθὰ τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος. Ἀπὸ υἱῶν Φινεὲς, Γηρσών· ἀπὸ υἱῶν Ἰθάμαρ, Δανιήλ· ἀπὸ υἱῶν Δαυὶδ, Ἀττούς. Ἀπὸ υἱῶν Σαχανία, καὶ ἀπὸ υἱῶν Φόρος, Ζαχαρίας, καὶ μετ

αὐτοῦ τὸ συστρεμμα ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα. Ἀπὸ υἱῶν Φαὰθ Μωὰβ, Ἐλιανὰ υἱὸς Σαραΐα, καὶ μετ’ αὐτοῦ διακόσιοι τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ζαθόης, Σεχενίας υἱὸς Ἀζιὴλ, καὶ μετ’ αὐτοῦ τριακόσια τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν Ἀδὶν, Ὠβὴθ υἱὸς Ἰωνάθαν, καὶ μετ’ αὐτοῦ πεντήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἠλὰμ, Ἰσαΐας υἱὸς Ἀθελία, καὶ μετ’ αὐτοῦ ἑβδομήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Σαφατία, Ζαβαδίας υἱὸς Μιχαὴλ, καὶ μετ’ αὐτοῦ ὀγδοήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἰωὰβ, Ἀβαδία υἱὸς Ἰεϊὴλ, καὶ μετ’ αὐτοῦ διακόσιοι δεκαοκτὼ τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν Βαανὶ, Σελιμοὺθ υἱὸς Ἰωσεφία, καὶ μετ’ αὐτοῦ ἑκατὸν ἑξήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Βαβὶ, Ζαχαρίας υἱὸς Βαβὶ, καὶ μετ’ αὐτοῦ εἰκοσιοκτὼ τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἀσγὰδ, Ἰωανὰν υἱὸς Ἀκκατὰν, καὶ μετ’ αὐτοῦ ἑκατὸν δέκα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἀδωνικὰμ ἔσχατοι, καὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα αὐτῶν, Ἐλιφαλὰτ, Ἰεὴλ, καὶ Σαμαΐα, καὶ μετ’ αὐτῶν ἑξήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Βαγουαΐ, Οὐθαΐ καὶ Ζαβοὺδ, καὶ μετ’ αὐτοῦ ἑβδομήκοντα τὰ ἀρσενικά. Καὶ συνῆξα αὐτοὺς πρὸς τὸν ποταμὸν τὸν ἐρχόμενον πρὸς τὸν Εὐὶ, καὶ παρενεβάλομεν ἐκεῖ ἡμέρας τρεῖς· καὶ συνῆκα ἐν τῷ λαῷ καὶ ἐν τοῖς ἱερεῦσι, καὶ ἀπὸ υἱῶν Λευὶ οὐχ εὗρον ἐκεῖ. Καὶ ἀπέστειλα τῷ Ἐλεάζαρ, τῷ Ἀριὴλ, τῷ Σεμεΐᾳ, καὶ τῷ Ἀλωνὰμ, καὶ τῷ Ἰαρὶβ, καὶ τῷ Ἐλνάθαμ, καὶ τῷ Νάθαν, καὶ τῷ Ζαχαρίᾳ, καὶ τῷ Μεσολλὰμ, καὶ τῷ Ἰωαρὶμ, καὶ τῷ Ἐλνάθαν, συνιέντας. Καὶ ἐξήνεγκα αὐτοὺς ἐπὶ ἄρχοντας ἐν ἀργυρίῳ τοῦ τόπου, καὶ ἔθηκα ἐν στόματι αὐτῶν λόγους λαλῆσαι πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῶν τῶν Ἀθινεὶμ ἐν ἀργυρίῳ τοῦ τόπου, τοῦ ἐνέγκαι ἡμῖν ᾄδοντας εἰς οἶκον Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ ἤλθοσαν ἡμῖν ὡς χεὶρ Θεοῦ ἡμῶν ἀγαθὴ ἐφ’ ἡμᾶς, ἀνὴρ σαχὼν ἀπὸ υἱῶν Μοολὶ, υἱοῦ Λευὶ, υἱοῦ Ἰσραήλ· καὶ ἀρχὴν ἦλθον οἱ υἱοὶ αὐτοῦ καὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ δεκαοκτώ· Καὶ τὸν Ἀσεβία,

καὶ τὸν Ἰσαΐα ἀπὸ τῶν υἱῶν Μεραρὶ, ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ υἱοὶ αὐτοῦ εἴκοσι. Καὶ ἀπὸ τῶν Ναθινὶμ, ὧν ἔδωκε Δαυὶδ καὶ οἱ ἄρχοντες εἰς δουλείαν τῶν Λευιτῶν, Ναθινὶμ διακόσιοι εἴκοσι, πάντες συνήχθησαν ἐν ὀνόμασι. Καὶ ἐκάλεσα ἐκεῖ νηστείαν ἐπὶ τὸν ποταμὸν Ἀουὲ, τοῦ ταπεινωθῆναι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, ζητῆσαι παρ’ αὐτοῦ ὁδὸν εὐθείαν ἡμῖν καὶ τοῖς τέκνοις ἡμῶν καὶ πάσῃ τῇ κτήσει ἡμῶν· Ὅτι ᾐσχύνθην αἰτήσασθαι παρὰ τοῦ βασιλέως δύναμιν καὶ ἱππεῖς σῶσαι ἡμᾶς ἀπὸ ἐχθροῦ ἐν τῇ ὁδῷ, ὅτι εἴπαμεν τῷ βασιλεῖ, λέγοντες, χεὶρ τοῦ Θεου ἡμῶν ἐπὶ πάντας τοὺς ζητοῦντας αὐτὸν εἰς ἀγαθόν· καὶ κράτος αὐτοῦ, καὶ θυμὸς αὐτοῦ, ἐπὶ πάντας τοὺς ἐγκαταλείποντας αὐτόν. Καὶ ἐνηστεύσαμεν, καὶ ἐζητήσαμεν παρὰ τοῦ Θεοῦ ἡμῶν περὶ τούτου, καὶ ἐπήκουσεν ἡμῖν. Καὶ διέστειλα ἀπὸ ἀρχόντων τῶν ἱερέων δώδεκα, τῷ Σαραΐα, τῷ Ἀσαβία, καὶ μετ’ αὐτῶν ἀπὸ ἀδελφῶν αὐτῶν δέκα. Καὶ ἔστησα αὐτοῖς τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον καὶ τὰ σκεύη ἀπαρχῆς οἴκου Θεοῦ ἡμῶν, ἃ ὕψωσεν ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ σύμβουλοι αὐτοῦ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ οἱ εὑρισκόμενοι. Καὶ ἔστησα ἐπὶ χεῖρας αὐτῶν ἀργυρίου τάλαντα ἐξακόσια πεντήκοντα, καὶ σκεύη ἀργυρᾶ ἑκατὸν, καὶ τάλαντα χρυσίου ἑκατὸν, καὶ χαφουρῆ χρυσοῖ εἴκοσι εἰς τὴν ὁδὸν χίλιοι, καὶ σκεύη χαλκοῦ στίλβοντος ἀγαθοῦ διάφορα ἐπιθυμητὰ ἐν χρυσίῳ. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς ἅγιοι τῷ Κυρίῳ, καὶ τὰ σκεύη ἅγια, καὶ τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον ἑκούσια τῷ Κυρίῳ Θεῷ πατέρων ἡμῶν. Ἀγρυπνεῖτε καὶ τηρεῖτε ἕως στῆτε ἐνώπιον ἀρχόντων τῶν ἱερέων καὶ τῶν Λευιτῶν καὶ τῶν ἀρχόντων τῶν πατριῶν ἐν Ἱερουσαλὴμ εἰς σκηνὰς οἴκου Κυρίου. Καὶ ἐδέξαντο οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται σταθμὸν τοῦ ἀργυρίου καὶ τοῦ χρυσίου καὶ τῶν σκευῶν, ἐνεγκεῖν εἰς Ἱερουσαλὴμ εἰς οἶκον Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ ἐξῆραμεν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἀουὲ ἐν τῇ δωδεκάτῃ

τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου τοῦ ἐλθεῖν εἰς Ἰερουσαλήμ· καὶ χεὶρ Θεοῦ ἡμῶν ἦν ἐφ’ ἡμῖν, καὶ ἐῤῥύσατο ἡμᾶς ἀπὸ χειρὸς ἐχθροῦ καὶ πολεμίου ἐν τῇ ὁδῷ. Καὶ ἤλθομεν εἰς Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐκαθίσαμεν ἐκεῖ ἡμέρας τρεῖς. Καὶ ἐγενήθη τῇ ἡμέρᾳ τῇ τετάρτῃ ἐστήσαμεν τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον καὶ τὰ σκεύη ἐν οἴκῳ Θεοῦ ἡμῶν ἐπὶ χεῖρα Μεριμὼθ υἱοῦ Οὐρία τοῦ ἱερέως, καὶ μετ’ αὐτοῦ Ἐλεάζαρ υἱὸς Φινεὲς, καὶ μετ’ αὐτῶν Ἰωζαβὰδ υἱὸς Ἰησοῦ, καὶ Νωαδία υἱὸς Βαναΐα οἱ Λευῖται. Ἐν ἀριθμῷ καὶ ἐν σταθμῷ τὰ πάντα, καὶ ἐγράφη πᾶς ὁ σταθμός. Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ οἱ ἐλθόντες ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας υἱοὶ τῆς παροικίας, προσήνεγκαν ὁλοκαυτώσεις τῷ Θεῷ Ἰσραὴλ, μόσχους δώδεκα περὶ παντὸς Ἰσραὴλ, κριοὺς ἐννενηκανταὲξ, ἀμνοὺς ἑβδομηκονταεπτὰ, χιμάρους περὶ ἁμαρτίας δώδεκα, τὰ πάντα ὁλοκαυτώματα τῷ Κυρίῳ· Καὶ ἔδωκαν τὸ νόμισμα τοῦ βασιλέως τοῖς διοικηταῖς τοῦ βασιλέως καὶ ἐπάρχοις πέραν τοῦ ποταμοῦ· καὶ ἐδόξασαν τὸν λαὸν καὶ τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ.

# 9

Καὶ ὡς ἐτελέσθη ταῦτα, ἤγγισαν πρὸς μὲ οἱ ἄρχοντες, λέγοντες, οὐκ ἐχωρίσθη ὁ λαὸς Ἰσραὴλ καὶ οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται ἀπὸ λαῶν τῶν γαιῶν ἐν μακρύμμασιν αὐτῶν, τῷ Χανανὶ ὁ Ἐθὶ, ὁ Φερεζὶ, ὁ Ἰεβουσὶ, ὁ Ἀμμωνὶ, ὁ Μωαβὶ, καὶ ὁ Μοσερὶ, καὶ ὁ Ἀμορῥὶ, ὅτι ἐλάβοσαν ἀπὸ θυγατέρων αὐτῶν ἑαυτοῖς καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῶν· καὶ παρήχθη σπέρμα τὸ ἅγιον ἐν λαοῖς τῶν γαιῶν, καὶ χεὶρ τῶν ἀρχόντων ἐν τῇ ἀσυνθεσίᾳ ταύτῃ ἐν ἀρχῇ. Καὶ ὡς ἤκουσα τὸν λόγον τοῦτον, διεῤῥηξα τὰ ἱμάτιά μου, καὶ ἐπαλλόμην, καὶ ἔτιλλον

ἀπὸ τῶν τριχῶν τῆς κεφαλῆς μου καὶ ἀπὸ τοῦ πώγωνός μου, καὶ ἐκαθήμην ἠρεμάζων. Καὶ συνήχθησαν πρὸς μὲ πᾶς ὁ διώκων λόγον Θεοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ ἀσυνθεσίᾳ τῆς ἀποικίας· κἀγὼ καθήμενος ἠρεμάζων ἕως τῆς θυσίας τῆς ἐσπερινῆς. Καὶ ἐν θυσίᾳ τῇ ἐσπερινῇ ἀνέστην ἀπὸ ταπεινώσεώς μου· καὶ ἐν τῷ διαῤῥήξαί με τὰ ἱμάτιά μου, καὶ ἐπαλλόμην, καὶ κλίνω ἐπὶ τὰ γόνατά μου, καὶ ἐκπετάζω τὰς χεῖράς μου πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν, καὶ εἶπα, Κύριε, ἠσχύνθην καὶ ἐνετράπην τοῦ ὑψῶσαι, Θεέ μου, τὸ πρόσωπόν μου πρὸς σὲ, ὅτι αἱ ἀνομίαι ἡμῶν ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ κεφαλῆς ἡμῶν, καὶ αἱ πλημμέλειαι ἡμῶν ἐμεγαλύνθησαν ἕως εἰς τὸν οὐρανόν. Ἀπὸ ἡμερῶν πατέρων ἡμῶν ἐσμὲν ἐν πλημμελείᾳ μεγάλῃ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ ἐν ταῖς ἀνομίαις ἡμῶν παρεδόθημεν ἡμεῖς καὶ οἱ βασιλεῖς ἡμῶν καὶ οἱ υἱοὶ ἡμῶν ἐν χειρὶ βασιλέων τῶν ἐθνῶν ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐν αἰχμαλωσίᾳ, καιὶ ἐν διαρπαγῇ, καὶ ἐν αἰσχύνῃ προσώπου ἡμῶν, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ νῦν ἐπιεικεύσατο ἡμῖν ὁ Θεὸς ἡμῶν τοῦ καταλιπεῖν ἡμῖν εἰς σωτηρίαν, καὶ δοῦναι ἡμῖν στήριγμα ἐν τόπῳ ἁγιάσματος αὐτοῦ, τοῦ φωτίσαι ὀφθαλμοὺς ἡμῶν, καὶ δοῦναι ζωοποίησιν μικρὰν ἐν τῇ δουλείᾳ ἡμῶν. Ὅτι δοῦλοι ἐσμὲν, καὶ ἐν τῇ δουλείᾳ ἡμῶν οὐκ ἐγκατέλιπεν ἡμᾶς Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν· καὶ ἔκλινεν ἐφ’ ἡμᾶς ἔλεος ἐνώπιον βασιλέων Περσῶν, δοῦναι ἡμῖν ζωοποίησιν τοῦ ὑψῶσαι αὐτοὺς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ ἀναστῆσαι τὰ ἔρημα αὐτῆς, καὶ τοῦ δοῦναι ἡμῖν φραγμὸν ἐν Ἰούδα καὶ Ἰερουσαλήμ. Τί εἴπωμεν ὁ Θεὸς ἡμῶν μετὰ τοῦτο; ὅτι ἐγκατελίπομεν ἐντολάς σου, ἃς ἔδωκας ἡμῖν ἐν χειρὶ δούλων σου τῶν προφητῶν, λέγων, ἡ γῆ εἰς ἣν εἰσπορεύεσθε κληρονομῆσαι αὐτὴν, γῆ μετακινουμένη ἐστὶν ἐν μετακινήσει λαῶν τῶν ἐθνῶν ἐν μακρύμμασιν αὐτῶν, ὧν ἔπλησαν αὐτὴν ἀπὸ στόματος ἐπὶ στόμα ἐν ἀκαθαρσίαις αὐτῶν. Καὶ νῦν τὰς θυγατέρας

ὑμῶν μὴ δότε τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, καὶ ἀπὸ τῶν θυγατέρων αὐτῶν μὴ λάβητε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν, καὶ οὐκ ἐκζητήσετε εἰρήνην αὐτῶν καὶ ἀγαθὸν αὐτῶν ἕως αἰῶνος, ὅπως ἐνισχύσητε, καὶ φάγητε τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς, καὶ κληροδοτήσητε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν ἕως αἰῶνος. Καὶ μετὰ πᾶν τὸ ἐρχόμενον ἐφ’ ἡμᾶς ἐν ποιήμασιν ἡμῶν τοῖς πονηροῖς καὶ ἐν πλημμελείᾳ ἡμῶν τῇ μεγάλῃ, ὅτι οὐκ ἔστιν ὡς ὁ Θεὸς ἡμῶν, ὅτι ἐκούφισας ἡμῶν τὰς ἀνομίας, καὶ ἔδωκας ἡμῖν σωτηρίαν· Ὅτι ἐπεστρέψαμεν διασκεδάσαι ἐντολάς σου, καὶ ἐπιγαμβρεῦσαι τοῖς λαοῖς τῶν γαιῶν· μὴ παροξυνθῇς ἐν ἡμῖν ἕως συντελείας, τοῦ μὴ εἶναι ἐγκατάλειμμα καὶ διασωζόμενον. Κύριε ὁ Θεὸς Ἰσραὴλ, δίκαιος σὺ, ὅτι κατελείφθημεν διασωζόμενοι, ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη· ἰδοὺ ἡμεις ἐναντίον σου ἐν πλημμελείαις ἡμῶν, ὅτι οὐκ ἔστι στῆναι ἐνώπιόν σου ἐπὶ τούτῳ.

# 10

Καὶ ὡς προσηύξατο Ἔσδρας, καὶ ὡς ἐξηγόρευσε κλαίων καὶ προσευχόμενος ἐνώπιον οἴκου τοῦ Θεοῦ, συνήχθησαν πρὸς αὐτὸν ἀπὸ Ἰσραὴλ ἐκκλησία πολλὴ σφόδρα, ἄνδρες καὶ γυναῖκες καὶ νεανίσκοι, ὅτι ἔκλαυσαν ὁ λαὸς, καὶ ὕψωσε κλαίων. Καὶ ἀπεκρίθη Σεχενίας υἱὸς Ἰεὴλ ἀπὸ υἱῶν Ἠλὰμ, καὶ εἶπε τῷ Ἔσδρᾳ, ἡμεῖς ἠσυνθετήσαμεν τῷ Θεῷ ἡμῶν, καὶ ἐκαθίσαμεν γυναῖκας ἀλλοτρίας ἀπὸ τῶν λαῶν τῆς γῆς· καὶ νῦν ἐστιν ὑπομονὴ τῷ Ἰσραὴλ ἐπὶ τούτῳ. Καὶ νῦν διαθώμεθα διαθήκην τῷ Θεῷ ἡμῶν ἐκβαλεῖν πάσας τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ γενόμενα ἐξ αὐτῶν, ὡς ἂν βούλῃ· ἀνάστηθι, καὶ φοβέρισον αὐτοὺς ἐν ἐντολαῖς Θεοῦ ἡμῶν, καὶ ὡς ὁ νόμος, γενηθήτω. Ἀνάστα, ὅτι ἐπὶ σὲ τὸ ῥῆμα, καὶ ἡμεῖς μετὰ σοῦ·

κραταιοῦ καὶ ποίησον. Καὶ ἀνέστη Ἔσδρας, καὶ ὥρκισε τοὺς ἄρχοντας, τοὺς ἱερεῖς, καὶ Λευείτας, καὶ πάντα Ἰσραὴλ, τοῦ ποιῆσαι κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ ὤμοσαν. Καὶ ἀνέστη Ἔσδρας ἀπὸ προσώπου οἴκου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπορεύθη εἰς γαζοφυλάκιον Ἰωανὰν υἱοῦ Ἐλισοὺβ, και ἐπορεύθη ἐκεῖ· ἄρτον οὐκ ἔφαγε, καὶ ὕδωρ οὐκ ἔπιεν, ὅτι ἐπένθει ἐπὶ τῇ ἀσυνθεσίᾳ τῆς ἀποικίας. Καὶ παρήνεγκαν φωνὴν ἐν Ἰούδα καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ πᾶσι τοῖς υἱοῖς τῆς ἀποικίας, τοῦ συναθροισθῆναι εἰς Ἰερουσαλήμ. Πᾶς ὃς ἂν μὴ ἔλθῃ εἰς τρεῖς ἡμέρας, ὡς ἡ βουλὴ τῶν ἀρχόντων καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ἀναθεματισθήσεται πᾶσα ἡ ὕπαρξις αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς διασταλήσεται ἀπὸ ἐκκλησίας τῆς ἀποικίας. Καὶ συνήχθησαν πάντες ἄνδρες Ἰούδα καὶ Βενιαμὶν εἰς Ἰερουσαλὴμ εἰς τὰς τρεῖς ἡμέρας· οὗτος ὁ μὴν ὁ ἔννατος· ἐν εἰκάδι τοῦ μηνὸς ἐκάθισε πᾶς ὁ λαὸς ἐν πλατείᾳ οἴκου τοῦ Θεοῦ ἀπὸ θορύβου αὐτῶν περὶ τοῦ ῥήματος, καὶ ἀπὸ τοῦ χειμῶνος. Καὶ ἀνέστη Ἔσδρας ὁ ἱερεὺς, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς ἠσυνθετήκατε, καὶ ἐκαθίσατε γυναῖκας ἀλλοτρίας τοῦ προσθεῖναι ἐπὶ πλημμέλειαν Ἰσραήλ. Καὶ νῦν δότε αἴνεσιν Κυρίῳ Θεῷ τῶν πατέρων ἡμῶν, καὶ ποιήσατε τὸ ἀρεστὸν ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ διαστάλητε ἀπὸ λαῶν τῆς γῆς καὶ ἀπὸ τῶν γυναικῶν τῶν ἀλλοτρίων. Καὶ ἀπεκρίθησαν πᾶσα ἡ ἐκκλησία, καὶ εἶπαν, μέγα τοῦτο τὸ ῥῆμά σου ἐφ’ ἡμᾶς ποιῆσαι. Ἀλλὰ ὁ λαὸς πολὺς, καὶ ὁ καιρὸς χειμερινὸς, καὶ οὐκ ἔστι δύναμις στῆναι ἔξω· καὶ τὸ ἔργον οὐκ εἰς ἡμέραν μίαν καὶ οὐκ εἰς δύο, ὅτι ἐπληθύναμεν τοῦ ἀδικῆσαι ἐν τῷ ῥῆματι τούτῳ· Στήτωσαν δὴ ἄρχοντες ἡμῶν, καὶ πᾶσι τοῖς ἐν πόλεσιν ἡμῶν ὃς ἐκάθισε γυναῖκας ἀλλοτρίας, ἐλθέτωσαν εἰς καιροὺς ἀπὸ συνταγῶν, καὶ μετ’ αὐτῶν πρεσβύτεροι πόλεως καὶ πόλεως, καὶ κριταὶ, τοῦ ἀποστρέψαι ὀργὴν θυμοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐξ ἡμῶν, περὶ τοῦ ῥήματος

τούτου. Πλὴν Ἰωνάθαν υἱὸς Ἀσὴλ, καὶ Ἰαζίας υἱὸς Θεκωὲ μετ᾽ ἐμοῦ περὶ τούτου· καὶ Μεσουλλὰμ, καὶ Σαββαθαῖ ὁ Λευίτης βοηθῶν αὐτοῖς. Καὶ ἐποίησαν οὕτως υἱοὶ τῆς ἀποικίας· Καὶ διεστάλησαν Ἔσρας ὁ ἱερεὺς, καὶ ἄνδρες ἄρχοντες πατριῶν τῷ οἴκῳ, καὶ πάντες ἐν ὀνόμασιν, ὅτι ἐπέστρεψαν ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ δεκάτου ἐκζητῆσαι τὸ ῥῆμα. Καὶ ἐτέλεσαν ἐν πᾶσιν ἀνδράσιν οἳ ἐκάθισαν γυναῖκας ἀλλοτρίας, ἕως ἡμέρας μιᾶς τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου. Καὶ εὑρέθη ἀπὸ υἱῶν τῶν ἱερέων οἳ ἐκάθισαν γυναῖκας ἀλλοτρίας, ἀπὸ υἱῶν Ἰησοῦ υἱοῦ Ἰωσεδὲκ, καὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ Μαασία, καὶ Ἐλιέζερ, καὶ Ἰαρὶβ, καὶ Γαδαλία. Καὶ ἔδωκαν χεῖρα αὐτῶν τοῦ ἐξενέγκαι γυναῖκας ἑαυτῶν, καὶ πλημμελείας κριὸν ἐκ προβάτων περὶ πλημμελήσεως αὐτῶν. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἐμμὴρ, Ἀνανὶ, καὶ Ζαβδία. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἠρὰμ, Μασαὴλ, καὶ Ἐλία, καὶ Σαμαΐα, καὶ Ἰεὴλ, καὶ Ὀζία. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Φασοὺρ, Ἐλιωναΐ, Μαασία, καὶ Ἰσμαὴλ, καὶ Ναθαναὴλ, καὶ Ἰωζαβὰδ, καὶ Ἠλασά. Καὶ ἀπὸ τῶν Λευιτῶν, Ἰωζαβὰδ, καὶ Σαμοὺ, καὶ Κωλία, αὐτὸς Κωλίτας, καὶ Φεθεΐα, καὶ Ἰούδας, καὶ Ἐλιέζερ. Καὶ ἀπὸ τῶν ᾀδόντων, Ἐλισάβ· καὶ ἀπὸ τῶν πυλωρῶν, Σολμὴν, καὶ Τελμὴν, καὶ Ὠδούθ. Καὶ ἀπὸ Ἰσραὴλ, ἀπὸ υἱῶν Φόρος, Ῥαμία, καὶ Ἀζία, καὶ Μελχία, καὶ Μεαμὶν, καὶ Ἐλεάζαρ, καὶ Ἀσαβία, καὶ Βαναία. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἠλὰμ, Ματθανία, καὶ Ζαχαρία, καὶ Ἰαϊὴλ, καὶ Ἀβδία, καὶ Ἰαριμὼθ, καὶ Ἠλία. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ζαθούα, Ἐλιωναΐ, Ἐλισοὺβ, Ματθαναΐ, καὶ Ἀρμὼθ, καὶ Ζαβὰδ, καὶ Ὀζιζά. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Βαβεΐ, Ἰωανὰν, Ἀνανία, καὶ Ζαβοὺ, καὶ Θαλί. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Βανουΐ, Μοσολλὰμ, Μαλοὺχ, Ἀδαΐας, Ἰασοὺβ, καὶ Σαλουΐα, καὶ Ῥημώθ. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Φαὰθ Μωὰβ, Ἐδνὲ, καὶ Χαλὴλ, καὶ Βαναία, Μαασία, Ματθανία, Βεσελεὴλ, καὶ Βανουΐ, καὶ Μανασσῆ· Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἠρὰμ, Ἐλιέζερ, Ἰεσία, Μελχία, Σαμαΐας, Σεμεὼν, Βενιαμὶν, Βαλοὺχ, Σαμαρία. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἀσὴμ,

Μετθανία, Ματθαθὰ, Ζαδὰβ, Ἐλιφαλὲτ, Ἰεραμὶ, Μανασσῆ, Σεμεΐ. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Βανὶ, Μοοδία, Ἀμρὰμ, Οὐὴλ, Βαναία, Βαδαία, Χελκία, Οὐουανία, Μαριμὼθ, Ἐλιασὶφ, Ματθανία, Ματθαναΐ· καὶ ἐποίησαν οἱ υἱοὶ Βανουὶ, καὶ οἱ υἱοὶ Σεμεΐ, καὶ Σελεμία, καὶ Νάθαν, καὶ Ἀδαΐα, Μαχαδναβοὺ, Σεσεΐ, Σαριοὺ, Ἐζριὴλ, καὶ Σελεμία, καὶ Σαμαρία, καὶ Σελλοὺμ, Ἀμαρεία, Ἰωσήφ. Ἀπὸ υἱῶν Ναβοὺ, Ἰαὴλ, Ματθανίας, Ζαβὰδ, Ζεβεννὰς, Ἰαδαὶ, καὶ Ἰωὴλ, καὶ Βαναία. Πάντες οὗτοι ἐλάβοσαν γυναῖκας ἀλλοτρίας, καὶ ἐγέννησαν ἐξ αὐτῶν υἱούς.

# 11

ΛΟΓΟΙ Νεεμία υἱοῦ Χελκία. Καὶ ἐγένετο ἐν μηνὶ Χασελεῦ ἔτους εἰκοστοῦ, καὶ ἐγὼ ἤμηνν ἐν Σουσὰν ἀβιρά· καὶ ἦλθεν Ἀνανὶ εἷς ἀπὸ ἀδελφῶν μου, αὐτὸς καὶ ἄνδρες Ἰούδα· καὶ ἠρώτησα αὐτοὺς περὶ τῶν σωθέντων, οἳ κατελείθησαν ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας, καὶ περὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ εἴποσαν πρὸς μέ, Οἱ καταλειπόμενοι οἱ καταλειφθέντες ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας ἐκεῖ ἐν τῇ χώρᾳ, ἐν πονηρίᾳ μεγάλῃ καὶ ἐν ὀνειδισμῷ, καὶ τείχη Ἰερουσαλὴμ καθῃρημένα, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς ἐνεπρήσθησαν ἐν πυρί. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀκοῦσαί με τοὺς λόγους τούτους, ἐκάθισα καὶ ἔκλαυσα καὶ ἐπένθησα ἡμέρας, καὶ ἤμην νηστεύων καὶ προσευχόμενος ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ εἶπα, μὴ δὴ Κύριε ὁ Θεὸς τοῦ οὐρανοῦ, ὁ ἰσχυρὸς, ὁ μέγας καὶ φοβερὸς, φυλάσσων τὴν διαθήκην καὶ τὸ ἔλεός σου τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτὸν καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ· Ἔστω δὴ τὸ οὖς σου προσέχον, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου ἀνεῳγμένοι, τοῦ ἀκοῦσαι προσευχὴν τοῦ δούλου σου, ἣν ἐγὼ προσεύχομαι

ἐνώπιόν σου σήμερον ἡμέραν καὶ νύκτα περὶ υἱῶν Ἰσραὴλ δούλων σου· καὶ ἐξαγορεύω ἐπὶ ἁμαρτίαις υἱῶν Ἰσραὴλ αἷς ἡμάρτομέν σοι· καὶ ἐγὼ καὶ ὁ οἶκος πατρός μου ἡμάρτομεν. Διαλύσει διελύσαμεν πρὸς σὲ, καὶ οὐκ ἐφυλάξαμεν τὰς ἐντολὰς καὶ τὰ προστάγματα καὶ τὰ κρίματα, ἃ ἐνετείλω τῷ Μωυσῇ παιδί σου. Μνήσθητι δὴ τὸν λόγον ὃν ἐνετείλω τῷ Μωυσῇ παιδί σου, λέγων, ὑμεῖς ἐὰν ἀσυνθετήσητε, ἐγὼ διασκορπιῶ ὑμᾶς ἐν τοῖς λαοῖς· καὶ ἐὰν ἐπιστρέψητε πρὸς μὲ, καὶ φυλάξητε τὰς ἐντολάς μου, καὶ ποιήσητε αὐτὰς, ἐὰν ᾖ ἡ διασπορὰ ὑμῶν ἀπ᾽ ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ, ἐκεῖθεν συνάξω αὐτοὺς, καὶ εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὸν τόπον, ὃν ἐξελεξάμην κατασκηνῶσαι τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ. Καὶ αὐτοὶ παῖδές σου καὶ λαός σου, οὓς ἐλυτρώσω ἐν τῇ δυνάμει σου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῇ χειρί σου τῇ κραταιᾷ. Μὴ δὴ Κύριε, ἀλλὰ ἔστω τὸ οὖς σου προσέχον εἰς τὴν προσευχὴν τοῦ δούλου σου, καὶ εἰς τὴν προσευχὴν παίδων σου τῶν θελόντων φοβεῖσθαι τὸ ὄνομά σου· καὶ εὐόδωσον δὴ τῷ παιδί σου σήμερον, καὶ δὸς αὐτὸν εἰς οἰκτιρμοὺς ἐνώπιον τοῦ ἀνδρὸς τούτου· καὶ ἐγὼ ἤμην οἰνοχόος τῷ βασιλεῖ.

# 12

Καὶ ἐγένετο ἐν μηνὶ Νισὰν ἔτους εἰκοστοῦ Ἀρθασασθὰ βασιλεῖ, καὶ ἦν ὁ οἶνος ἐνώπιον ἐμοῦ· καὶ ἔλαβον τὸν οἶνον, καὶ ἔδωκα τῷ βασιλεῖ· καὶ οὐκ ἦν ἕτερος ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ εἶπέ μοι ὁ βασιλεὺς, διὰ τί τὸ πρόσωπόν σου πονηρὸν, καὶ οὐκ εἶ μετριάζων; καὶ οὐκ ἔστι τοῦτο, εἰ μὴ πονηρία καρδίας· καὶ ἐφοβήθην πολὺ σφόδρα, καὶ εἶπα τῷ βασιλεῖ, ὁ βασιλεὺς εἰς τὸν αἰῶνα ζήτω· διὰ τί οὐ μὴ γένηται πονηρὸν τὸ πρόσωπόν μου, διότι ἡ πόλις οἶκος μνημείων

πατέρων μου ἠρημώθη, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς κατεβρώθησαν ἐν πυρί; Καὶ εἶπέ μοι ὁ βασιλεύς, περὶ τίνος τοῦτο σὺ ζητεῖς; καὶ προσηυξάμην πρὸς τὸν Θεὸν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εἶπα τῷ βασιλεῖ, εἰ ἐπὶ τὸν βασιλέα ἀγαθὸν, καὶ εἰ ἀγαθυνθήσεται ὁ παῖς σου ἐνώπιόν σοῦ, ὥστε πέμψαι αὐτὸν ἐν Ἰούδα εἰς πόλιν μνημείων πατέρων μου, καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτήν. Καὶ εἶπέ μοι ὁ βασιλεὺς, καὶ ἡ παλλακὴ ἡ καθημένη ἐχόμενα αὐτοῦ, ἕως πότε ἔσται ἡ πορεία σου, καὶ πότε ἐπιστρέψεις; καὶ ἠγαθύνθη ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπέστειλέ με, καὶ ἔδωκα αὐτῷ ὅρον. Καὶ εἶπα τῷ βασιλεῖ, εἰ ἐπὶ τὸν βασιλέα ἀγαθὸν, δότω μοι ἐπιστολὰς πρὸς τοὺς ἐπάρχους πέραν τοῦ ποταμοῦ, ὥστε παραγαγεῖν με ἕως ἔλθω ἐπὶ Ἰούδαν, καὶ ἐπιστολὴν ἐπὶ Ἀσὰφ φύλακα τοῦ παραδείσου ὅς ἐστι τῷ βασιλεῖ, ὥστε δοῦναί μοι ξύλα στεγάσαι τὰς πύλας, καὶ εἰς τὸ τεῖχος τῆς πόλεως, καὶ εἰς οἶκον ὃν εἰσελεύσομαι εἰς αὐτόν· καὶ ἔδωκέ μοι ὁ βασιλεὺς ὡς χεὶρ Θεοῦ ἡ ἀγαθή. Καὶ ἦλθον πρὸς τοὺς ἐπάρχους πέραν τοῦ ποταμοῦ, καὶ ἔδωκα αὐτοῖς τὰς ἐπιστολὰς τοῦ βασιλέως· καὶ ἀπέστειλε μετ’ ἐμοῦ ὁ βασιλεὺς ἀρχηγοὺς δυνάμεως καὶ ἱππεῖς. Καὶ ἤκουσε Σαναβαλλὰτ ὁ Ἀρωνὶ, καὶ Τωβία ὁ δοῦλος Ἀμμωνὶ, καὶ πονηρὸν αὐτοῖς ἐγένετο, ὅτι ἥκει ὁ ἄνθρωπος ζητῆσαι ἀγαθὸν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ ἦλθον εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἤμην ἐκεῖ ἡμέρας τρεῖς. Καὶ ἀνέστην νυκτὸς ἐγὼ καὶ ἄνδρες ὀλίγοι μετ’ ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἀπήγγειλα ἀνθρώπῳ τί ὁ Θεὸς δίδωσιν εἰς καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι μετὰ τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ κτῆνος οὐκ ἔστι μετ’ ἐμοῦ, εἰ μὴ τὸ κτῆνος ᾧ ἐγὼ ἐπιβαίνω ἐπ’ αὐτῷ. Καὶ ἐξῆλθον ἐν πύλῃ τοῦ γωληλὰ, καὶ πρὸς στόμα πηγῆς τῶν συκῶν, καὶ εἰς πύλην τῆς κοπρίας· καὶ ἤμην συντρίβων ἐν τῷ τείχει Ἱερουσαλὴμ ὃ αὐτοὶ καθαιροῦσι, καὶ πύλαι αὐτῆς κατεβρώθησαν πυρί. Καὶ παρῆλθον ἐπὶ πύλην τοῦ αἴν, καὶ εἰς κολυμβήθραν τοῦ βασιλέως, καὶ οὐκ ἦν

τόπος τῷ κτήνει παρελθεῖν ὑποκάτω μου. Καὶ ἤμην ἀναβαίνων ἐν τῷ τείχει χειμάῤῥου νυκτός, καὶ ἤμην συντρίβων ἐν τῷ τείχει, καὶ ἤμην ἐν πύλῃ τῆς φάραγγος, καὶ ἐπέστρεψα. Καὶ οἱ φυλάσσοντες οὐκ ἔγνωσαν τί ἐπορεύθην, καὶ τί ἐγὼ ποιῶ· καὶ τοῖς Ἰουδαίοις, καὶ τοῖς ἱερεῦσι, καὶ τοῖς ἐντίμοις, καὶ τοῖς στρατηγοῖς, καὶ τοῖς καταλοίποις τοῖς ποιοῦσι τὰ ἔργα, ἕως τότε οὐκ ἀπήγγειλα. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτοὺς, ὑμεῖς βλέπετε τὴν πονηρίαν ταύτην, ἐν ᾗ ἐσμὲν ἐν αὐτῇ, πῶς Ἰερουσαλὴμ ἔρημος, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς ἐδόθησαν πυρί· δεῦτε, καὶ διοικοδομήσωμεν τὸ τεῖχος Ἰερουσαλὴμ, καὶ οὐκ ἐσόμεθα ἔτι ὄνειδος. Καὶ ἀπήγγειλα αὐτοῖς τὴν χεῖρα τοῦ Θεοῦ ᾗ ἐστιν ἀγαθὴ ἐπ’ ἐμὲ, καὶ πρὸς τοὺς λόγους τοῦ βασιλέως οὓς εἶπέ μοι· καὶ εἶπα, ἀναστῶμεν, καὶ οἰκοδομήσωμεν· καὶ ἐκραταιώθησαν αἱ χεῖρες αὐτῶν εἰς τὸ ἀγαθόν. Καὶ ἤκουσε Σαναβαλλὰτ ὁ Ἀρωνὶ, καὶ Τωβία ὁ δοῦλος ὁ Ἀμμωνὶ, καὶ Γησὰμ ὁ Ἀραβί, καὶ ἐξεγέλασαν ἡμᾶς, καὶ ἦλθον ἐφ’ ἡμᾶς, καὶ εἶπον, τί τὸ ῥῆμα τοῦτο ὃ ὑμεῖς ποιεῖτε; ἢ ἐπὶ τὸν βασιλέα ὑμεῖς ἀποστατεῖτε; Καὶ ἐπέστρεψα αὐτοῖς λόγον, καὶ εἶπα αὐτοῖς, ὁ Θεὸς τοῦ οὐρανοῦ αὐτὸς εὐοδώσει ἡμῖν, καὶ ἡμεῖς δοῦλοι αὐτοῦ καθαροὶ, καὶ οἰκοδομήσομεν· καὶ ὑμῖν οὐκ ἔστι μερὶς καὶ δικαιοσύνη καὶ μνημόσυνον ἐν Ἰερουσαλήμ.

# 13

Καὶ ἀνέστη Ἐλιασοὺβ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ οἱ ἱερεῖς, καὶ ᾠκοδόμησαν τὴν πύλην τὴν προβατικήν· αὐτοὶ ἡγίασαν αὐτὴν, καὶ ἔστησαν θύρας αὐτῆς, καὶ ἕως πύργου τῶν ἑκατὸν ἡγίασαν ἕως πύργου Ἀναμεήλ. Καὶ ἐπὶ χεῖρας ἀνδρῶν υἱῶν Ἰεριχὼ, καὶ ἐπὶ χεῖρας υἱῶν Ζακχοὺρ, υἱοῦ Ἀμαρί. Καὶ τὴν πύλην τὴν

ἰχθυηρὰν ᾠκοδόμησαν υἱοὶ Ἀσανά· αὐτοὶ ἐστέγασαν αὐτὴν, καὶ ἐστέγασαν θύρας αὐτῆς καὶ κλεῖθρα αὐτῆς καὶ μοχλοὺς αὐτῆς. Καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν κατέσχεν ἐπὶ Ῥαμὼθ υἱοῦ Οὐρία, υἱοῦ Ἀκκώς· καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν κατέσχε Μοσολλὰμ υἱὸς Βαραχίου, υἱοῦ Μαζεβήλ· καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν κατέσχε Σαδὼκ υἱὸς Βαανά. Καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν κατέσχοσαν οἱ Θεκωΐμ, καὶ ἀδωρὶμ οὐκ εἰσήνεγκαν τράχηλον αὐτῶν εἰς δουλείαν αὐτῶν. Καὶ τὴν πύλην ἰασαναΐ ἐκράτησαν Ἰωϊδὰ υἱὸς Φασὲκ, καὶ Μεσουλὰμ υἱὸς Βασωδία· αὐτοὶ ἐστέγασαν αὐτὴν, καὶ ἔστησαν θύρας αὐτῆς καὶ κλεῖθρα αὐτῆς καὶ μοχλοὺς αὐτῆς. Καὶ παρ’ αὐτὸν παρησφαλίσατο Ὀζιὴλ υἱὸς Ἀραχίου πυρωτῶν· καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν ἐκράτησεν Ἀνανίας υἱὸς τοῦ ῥωκεΐμ, καὶ κατέλιπον Ἰερουσαλὴμ ἕως τοῦ τείχους τοῦ πλατέος. Καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν ἐκράτησε Ῥαφαΐα υἱὸς Σοὺρ, ἄρχων ἡμίσους περιχώρου Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν ἐκράτησεν Ἰεδαΐα υἱὸς Ἑρωμὰφ, καὶ κατέναντι οἰκίας αὐτοῦ· καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτοῦ ἐκράτησεν Ἀττοὺθ υἱὸς Ἀσαβανία. Καὶ δεύτερος ἐκράτησε Μελχίας υἱὸς Ἡρὰμ, καὶ Ἀσοὺβ υἱὸς Φαὰτ Μωὰβ, καὶ ἕως πύργου τῶν θανουρίμ. Καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτοῦ ἐκράτησε Σαλλοὺμ υἱὸς Ἀλλωῆς, ἄρχων ἡμίσους περιχώρου Ἰερουσαλὴμ, αὐτὸς καὶ αἱ θυγατέρες αὐτοῦ. Τὴν πύλην τῆς φάραγγος ἐκράτησαν Ἀνοὺν καὶ οἱ κατοικοῦντες Ζανώ· αὐτοὶ ᾠκοδόμησαν αὐτὴν, καὶ ἔστησαν θύρας αὐτῆς καὶ κλεῖθρα αὐτῆς καὶ μοχλοὺς αὐτῆς, καὶ χιλίους πήχεις ἐν τῷ τείχει ἕως τῆς πύλης τῆς κοπρίας. Καὶ τὴν πύλην τῆς κοπρίας ἐκράτησε Μελχία υἱὸς Ῥηχὰβ, ἄρχων περιχώρου Βηθακχαρὶμ, αὐτὸς καὶ υἱοὶ αὐτοῦ· καὶ ἐσκέπασαν αὐτὴν, καὶ ἔστησαν θύρας αὐτῆς καὶ κλεῖθρα αὐτῆς καὶ μοχλοὺς αὐτῆς. Τὴν δὲ πύλην τῆς πηγῆς ἠσφαλίσατο Σαλωμὼν υἱὸς Χολεζὲ, ἄρχων μέρους τῆς Μασφά· αὐτὸς ἐζῳκοδόμησεν αὐτὴν καὶ ἐστέγασεν

αὐτὴν, καὶ ἔστησε τὰς θύρας αὐτῆς καὶ μοχλοὺς αὐτῆς· καὶ τὸ τεῖχος κολυμβήθρας τῶν κωδίων τῇ κουρᾷ τοῦ βασιλέως, καὶ ἕως τῶν κλιμάκων τῶν καταβαινουσῶν ἀπὸ πόλεως Δαυίδ. Ὀπίσω αὐτοῦ ἐκράτησε Νεεμίας υἱὸς Ἀζαβοὺχ, ἄρχων ἡμίσους περιχώρου Βηθσοὺρ, ἕως κήπου τάφου Δαυὶδ, καὶ ἕως τῆς κολυμβήθρας τῆς γεγονυίας, καὶ ἕως βηθαγγαρίμ. Ὀπίσω αὐτοῦ ἐκράτησαν οἱ Λευῖται, Ῥαοὺμ υἱὸς Βανί· ἐπὶ χεῖρα αὐτοῦ ἐκράτησεν Ἀσαβία ἄρχων ἡμίσους περιχώρου Κεϊλὰ τῷ περιχώρῳ αὐτοῦ. Καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησαν ἀδελφοὶ αὐτῶν Βενεῒ υἱὸς Ἠναδὰδ, ἄρχων ἡμίσους περιχώρου Κεϊλά. Καὶ ἐκράτησεν ἐπὶ χεῖρα αὐτοῦ Ἀζοὺρ υἱὸς Ἰησοῦ, ἄρχων τοῦ Μασφαὶ, μέτρον δεύτερον πύργου ἀναβάσεως τῆς συναπτούσης τῆς γωνίας. Μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Βαροὺχ υἱὸς Ζαβοῦ, μέτρον δεύτερον ἀπὸ τῆς γωνίας ἕως θύρας Βηθελιασοὺβ τοῦ ἱερέως τοῦ μεγάλου. Μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Μεραμὼθ υἱὸς Οὐρία, υἱοῦ Ἀκκὼς, μέτρον δεύτερον ἀπὸ θύρας Βηθελιασοὺβ ἕως ἐκλείψεως Βηθελιασούβ. Καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησαν οἱ ἱερεῖς ἄνδρες Ἐκχεχάρ. Καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Βενιαμὶν καὶ Ἀσοὺβ κατέναντι οἴκου αὐτῶν· καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησεν Ἀζαρίας υἱὸς Μαασίου, υἱοῦ Ἀνανία ἐχόμενα οἴκου αὐτοῦ. Μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Βανὶ υἱὸς Ἀδὰδ, μέτρον δεύτερον ἀπὸ Βηθαζαρία ἕως τῆς γωνίας, καὶ ἕως τῆς καμπῆς Φαλὰχ υἱοῦ Εὐζαΐ ἐξεναντίας τῆς γωνίας, καὶ ὁ πύργος ὁ ἐξέχων ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως ὁ ἀνώτερος ὁ τῆς αὐλῆς τῆς φυλακῆς· καὶ μετ᾽ αὐτὸν Φαδαΐα υἱὸς Φόρος. Καὶ οἱ Ναθινὶμ ἦσαν οἰκοῦντες ἐν τῷ Ὠφὰλ, ἕως κήπου πύλης τοῦ ὕδατος εἰς ἀνατολὰς, καὶ ὁ πύργος ὁ ἐξέχων. Καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησαν οἱ Θεκωῖμ, μέτρον δεύτερον ἐξεναντίας τοῦ πύργου τοῦ μεγάλου τοῦ ἐξέχοντος, καὶ ἕως τοῦ τείχους τοῦ Ὀφλά. Ἀνώτερον πύλης τῶν ἵππων ἐκράτησαν οἱ ἱερεῖς, ἀνὴρ

ἐξεναντίας οἴκου ἑαυτοῦ. Καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Σαδδοὺκ υἱὸς Ἐμμὴρ ἐξεναντίας οἴκου ἑαυτοῦ· καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Σαμαΐα υἱὸς Σεχενία φύλαξ τῆς πύλης τῆς ἀνατολῆς. Μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησεν Ἀνανία υἱὸς Σελεμία, καὶ Ἀνὼμ υἱὸς Σελὲφ ὁ ἕκτος, μέτρον δεύτερον· μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Μεσουλὰμ υἱὸς Βαραχία ἐξεναντίας γαζοφυλακίου αὐτοῦ. Μετ᾽ αὐτὸν ἐκράτησε Μελχία υἱὸς τοῦ Σαρεφὶ ἕως Βηθὰν Ναθινὶμ, καὶ οἱ ῥωποποῶλαι ἀπέναντι πύλης τοῦ Μαφεκὰδ καὶ ἕως ἀναβάσεως τῆς καμπῆς. Καὶ ἀναμέσον τῆς πύλης τῆς προβατικῆς ἐκράτησαν οἱ χαλκεῖς καὶ οἱ ῥωποποῶλαι. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἤκουσε Σαναβαλλὰτ, ὅτι ἡμεῖς οἰκοδομοῦμεν τὸ τεῖχος, καὶ πονηρὸν αὐτῷ ἐφάνη, καὶ ὠργίσθη ἐπὶ πολὺ, καὶ ἐξεγέλα ἐπὶ τοῖς Ἰουδαίοις. Καὶ εἶπεν ἐνώπιον τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, αὕτη ἡ δύναμις Σομόρων, ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι οὗτοι οἰκοδομοῦσι τὴν ἑαυτῶν πόλιν; ἆρα θυσιάζουσιν; ἆρα δυνήσονται; καὶ σήμερον ἰάσονται τοὺς λίθους, μετὰ τὸ χῶμα γενέσθαι γῆς καυθέντας; Καὶ Τωβίας ὁ Ἀμμανίτης ἐχόμενα αὐτοῦ ἦλθε, καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, μὴ θυσιάζουσιν ἢ φάγονται ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτῶν; οὐχὶ ἀναβήσεται ἀλώπηξ καὶ καθελεῖ τὸ τεῖχος λιθων αὐτῶν; Ἄκουσον ὁ Θεὸς ἡμῶν, ὅτι ἐγενήθημεν εἰς μυκτηρισμὸν, καὶ ἐπίστρεψον ὀνειδισμὸν αὐτῶν εἰς κεφαλὴν αὐτῶν, καὶ δὸς αὐτοὺς εἰς μυκτηρισμὸν ἐν γῇ αἰχμαλωσίας, καὶ μὴ καλύψῃς ἐπὶ ἀνομίαν.

# 14

Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσε Σαναβαλλὰτ καὶ Τωβία καὶ οἱ Ἄραβες καὶ οἱ Ἀμμανίται, ὅτι ἀνέβη ἡ φυὴ τοῖς τείχεσιν Ἰερουσαλὴμ, ὅτι ἤρξαντο αἱ διασφαγαὶ ἀναφράσσεσθαι, καὶ πονηρὸν αὐτοῖς ἐφάνη

σφόδρα. Καὶ συνήχθησαν πάντες ἐπιτοαυτὸ, ἐλθεῖν παρατάξασθαι ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ ποιῆσαι αὐτὴν ἀφανῆ. Καὶ προσηυξάμεθα πρὸς τὸν Θεὸν ἡμῶν, καὶ ἐστήσαμεν προφύλακας ἐπ’ αὐτοὺς ἡμέρας καὶ νυκτὸς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν. Καὶ εἶπεν Ἰούδας, συνετρίβη ἡ ἰσχὺς τῶν ἐχθρῶν, καὶ ὁ χοῦς πολὺς, καὶ ἡμεῖς οὐ δυνησόμεθα οἰκοδομεῖν ἐν τῷ τείχει. Καὶ εἶπαν οἱ θλίβοντες ἡμᾶς, οὐ γνώσονται καὶ οὐκ ὄψονται, ἕως ὅτου ἔλθωμεν εἰς μέσον αὐτῶν, καὶ φονεύσωμεν αὐτοὺς καὶ καταπαύσωμεν τὸ ἔργον. Καὶ ἐγένετο ὡς ἦλθοσαν οἱ Ἰουδαῖοι οἱ οἰκοῦντες ἐχόμενα αὐτῶν, καὶ εἴποσαν ἡμῖν, ἀναβαίνουσιν ἐκ πάντων τῶν τόπων ἐφ’ ἡμᾶς. Καὶ ἔστησα εἰς τὰ κατώτατα τοῦ τόπου κατόπισθεν τοῦ τείχους ἐν τοῖς σκεπεινοῖς, καὶ ἔστησα τὸν λαὸν κατὰ δήμους μετὰ ῥομφαιῶν αὐτῶν, λόγχας αὐτῶν, καὶ τόξα αὐτῶν. Καὶ εἶδον καὶ ἀνέστην, καὶ εἶπα πρὸς τοὺς ἐντίμους καὶ πρὸς τοὺς στρατηγοὺς καὶ πρὸς τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ, μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, μνήσθητε τοῦ Θεοῦ ἡμῶν τοῦ μεγάλου καὶ φοβεροῦ, καὶ παρατάξασθε περὶ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν, υἱῶν ὑμῶν, θυγατέρων ὑμῶν, γυναικῶν ὑμῶν, καὶ οἴκων ὑμῶν. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἤκουσαν οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ὅτι ἐγνώσθη ἡμῖν, καὶ διεσκέδασεν ὁ Θεὸς τὴν βουλὴν αὐτῶν· καὶ ἐπεστρέψαμεν πάντες ἡμεῖς εἰς τὸ τεῖχος, ἀνὴρ εἰς τὸ ἔργον αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἥμισυ τῶν ἐκτετιναγμένων ἐποίουν τὸ ἔργον, καὶ ἥμισυ αὐτῶν ἀντείχοντο, καὶ λόγχαι καὶ θυρεοὶ καὶ τόξα καὶ θώρακες καὶ οἱ ἄρχοντες ὀπίσω παντὸς οἴκου Ἰούδα τῶν οἰκοδομούντων ἐν τῷ τείχει, καὶ οἱ αἴροντες ἐν τοῖς ἀρτῆρσιν ἐν ὅπλοις· ἐν μιᾷ χειρὶ ἐποίει αὐτοῦ τὸ ἔργον, καὶ ἐν μιᾷ ἐκράτει τὴν βολίδα. Καὶ οἱ οἰκοδόμοι ἀνὴρ ῥομφαίαν αὐτοῦ ἐζωσμένος ἐπὶ τὴν ὀσφῦν αὐτοῦ, καὶ ᾠκοδομοῦσαν· καὶ ὁ σαλπίζων ἐν τῇ κερατίνῃ ἐχόμενα αὐτοῦ. Καὶ

εἶπα πρὸς τοὺς ἐντίμους καὶ πρὸς τοὺς ἄρχοντας καὶ πρὸς τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ, τὸ ἔργον πλατὺ καὶ πολύ, καὶ ἡμεῖς σκορπιζόμεθα ἐπὶ τοῦ τείχους μακρὰν ἀνὴρ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Ἐν τόπῳ οὗ ἐὰν ἀκούσητε τὴν φωνὴν τῆς κερατίνης, ἐκεῖ συναχθήσεσθε πρὸς ἡμᾶς, καὶ ὁ Θεὸς ἡμῶν πολεμήσει περὶ ἡμῶν. Καὶ ἡμεῖς ποιοῦντες τὸ ἔργον, καὶ ἥμισυ αὐτῶν κρατοῦντες τὰς λόγχας ἀπὸ ἀναβάσεως τοῦ ὄρθρου ἕως ἐξόδου τῶν ἄστρων. Καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ εἶπα τῷ λαῷ, ἕκαστος μετὰ τοῦ νεανίσκου αὐτοῦ αὐλίσθητε ἐν μέσῳ Ἰερουσαλήμ· καὶ ἔστω ὑμῖν ἡ νὺξ προφυλακὴ, καὶ ἡ ἡμέρα ἔργον. Καὶ ἤμην ἐγὼ καὶ οἱ ἄνδρες τῆς προφυλακῆς ὀπίσω μου, καὶ οὐκ ἦν ἐξ ἡμῶν ἐκδιδυσκόμενος ἀνὴρ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ.

# 15

Καὶ ἡ κραυγὴ τοῦ λαοῦ καὶ γυναικῶν αὐτῶν μεγάλη πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῶν τοὺς Ἰουδαίους. Καὶ ἦσάν τινες λέγοντες, ἐν υἱοῖς ἡμῶν καὶ ἐν θυγατράσιν ἡμῶν ἡμεῖς πολλοί, καὶ λημψόμεθα σῖτον καὶ φαγόμεθα καὶ ζησόμεθα. Καὶ εἰσί τινες λέγοντες, ἀγροὶ ἡμῶν καὶ ἀμπελῶνες ἡμῶν καὶ οἰκίαι ἡμῶν, ἡμεῖς διεγγυῶμεν καὶ ληψόμεθα σῖτον καὶ φαγόμεθα. Καὶ εἰσί τινες λέγοντες, ἐδανεισάμεθα ἀργύριον εἰς φόρους τοῦ βασιλέως, ἀγροὶ ἡμῶν καὶ ἀμπελῶνες ἡμῶν καὶ οἰκίαι ἡμῶν. Καὶ νῦν ὡς σὰρξ ἀδελφῶν ἡμῶν, σὰρξ ἡμῶν· ὡς υἱοὶ αὐτῶν, υἱοὶ ἡμῶν· καὶ ἰδοὺ ἡμεῖς καταδυναστεύομεν τοὺς υἱοὺς ἡμῶν καὶ τὰς θυγατέρας ἡμῶν εἰς δούλους, καὶ εἰσὶν ἀπὸ θυγατέρων ἡμῶν καταδυναστευόμεναι, καὶ οὐκ ἔστι δύναμις χειρῶν ἡμῶν, καὶ ἀγροὶ ἡμῶν καὶ ἀμπελῶνες

ἡμῶν τοῖς ἐντίμοις. Καὶ ἐλυπήθην σφόδρα καθὼς ἤκουσα τὴν κραυγὴν αὐτῶν καὶ τοὺς λόγους τούτους. Καὶ ἐβουλεύσατο καρδία μου ἐπ᾽ ἐμέ· καὶ ἐμαχεσάμην πρὸς τους ἐντίμους καὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ εἶπα αὐτοῖς, ἀπαιτήσει ἀνὴρ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἃ ὑμεῖς ἀπαιτεῖτε; καὶ ἔδωκα ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐκκλησίαν μεγάλην, καὶ εἶπα αὐτοῖς, ἡμεῖς κεκτήμεθα τοὺς ἀδελφοὺς ἡμῶν τοὺς Ἰουδαίους τοὺς πωλουμένους τοῖς ἔθνεσιν ἐν ἐκουσίῳ ἡμῶν· καὶ ὑμεῖς πωλεῖτε τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, καὶ παραδοθήσονται ἡμῖν; καὶ ἡσύχασαν, καὶ οὐχ εὕροσαν λόγον. Καὶ εἶπα, οὐκ ἀγαθὸς ὁ λόγος ὃν ὑμεῖς ποιεῖτε· οὐχ οὕτως ἐν φόβῳ Θεοῦ ἡμῶν ἀπελεύσεσθε ἀπὸ ὀνειδισμοῦ τῶν ἐθνῶν τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν. Καὶ οἱ ἀδελφοί μου καὶ οἱ γνωστοί μου καὶ ἐγὼ ἐθήκαμεν αὐτοῖς ἀργύριον καὶ σῖτον· ἐγκατελίπωμεν δὴ τὴν ἀπαίτησιν ταύτην. Ἐπιστρέψατε δὴ αὐτοῖς ὡς σήμερον ἀγροὺς αὐτῶν καὶ ἀμπελῶνας αὐτῶν καὶ ἐλαιῶνας αὐτῶν καὶ οἰκίας αὐτῶν, καὶ ἀπὸ τοῦ ἀργυρίου τὸν σῖτον καὶ τὸν οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον ἐξενέγκατε ἑαυτοῖς. Καὶ εἶπαν, ἀποδώσομεν, καὶ παρ᾽ αὐτῶν οὐ ζητήσομεν, οὕτως ποιήσομεν καθὼς σὺ λέγεις· καὶ ἐκάλεσα τοὺς ἱερεῖς καὶ ὥρκισα αὐτοὺς ποιῆσαι ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο. Καὶ τὴν ἀναβολήν μου ἐξετίναξα, καὶ εἶπα, οὕτως ἐκτινάξαι ὁ Θεὸς πάντα ἄνδρα, ὃς οὐ στήσει τὸν λόγον τοῦτον, ἐκ τοῦ οἴκου αὐτοῦ καὶ ἐκ κόπου αὐτοῦ, καὶ ἔσται οὕτως ἐκτετιναγμένος καὶ κενός· καὶ εἶπε πᾶσα ἡ ἐκκλησία, ἀμην· καὶ ᾔνεσαν τὸν Κύριον· καὶ ἐποίησεν ὁ λαὸς τὸ ῥῆμα τοῦτο. Ἀπὸ ἡμέρας ἧς ἐνετείλατό μοι εἶναι εἰς ἄρχοντα αὐτῶν ἐν γῇ Ἰούδα, ἀπὸ ἔτους εἰκοστοῦ καὶ ἕως ἔτους τριακοστοῦ καὶ δευτέρου τῷ Ἀρθασασθὰ ἔτη δώδεκα, ἐγὼ καὶ οἱ ἀδελφοί μου βίαν αὐτῶν οὐκ ἔφαγον. Καὶ τὰς βίας τὰς πρώτας ἃς πρὸ ἐμοῦ ἐβάρυναν ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἐλάβοσαν παρ᾽ αὐτῶν ἐν ἄρτοις καὶ ἐν οἴνῳ ἔσχατον ἀργύριον δίδραχμα τεσσαράκοντα· καὶ

οἱ ἐκτετιναγμένοι αὐτῶν ἐξουσιάζονται ἐπὶ τὸν λαόν· κἀγὼ οὐκ ἐποίησα οὕτως ἀπὸ προσώπου φόβου Θεοῦ. Καὶ ἐν ἔργῳ τοῦ τείχους τούτων οὐκ ἐκράτησα, ἀγρὸν οὐκ ἐκτησάμην, καὶ πάντες οἱ συνηγμένοι ἐκεῖ ἐπὶ τὸ ἔργον. Καὶ οἱ Ἰουδαῖοι ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα ἄνδρες, καὶ ἐρχόμενοι πρὸς ἡμᾶς ἀπὸ τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ἡμῶν ἐπὶ τράπεζάν μου. Καὶ ἦν γινόμενον εἰς ἡμέραν μίαν μόσχος εἷς, καὶ πρόβατα ἓξ ἐκλεκτὰ καὶ χίμαρος ἐγίνοντό μοι· καὶ ἀναμέσον δέκα ἡμερῶν ἐν πᾶσιν οἶνος τῷ πλήθει· καὶ σὺν τούτοις ἄρτους τῆς βίας οὐκ ἐζήτησα, ὅτι βαρεῖα ἡ δουλεία ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον. Μνήσθητί μου ὁ Θεὸς εἰς ἀγαθὸν πάντα ὅσα ἐποίησα τῷ λαῷ τούτῳ.

# 16

Καὶ ἐγένετο καθὼς ἠκούσθη τῷ Σαναβαλλὰτ, καὶ Τωβίᾳ, καὶ τῷ Γησὰμ τῷ Ἀραβὶ, καὶ τοῖς καταλοίποις ἐχθρῶν ἡμῶν, ὅτι ᾠκοδόμησα τὸ τεῖχος, καὶ οὐ κατελείφθη ἐν αὐτοῖς πνοή· ἕως τοῦ καιροῦ ἐκείνου θύρας οὐκ ἐπέστησα ἐν ταῖς πύλαις. Καὶ ἀπέστειλε Σαναβαλλὰτ καὶ Γησὰμ πρὸς μὲ, λέγων, δεῦρο καὶ συναχθῶμεν ἐπιτοαυτὸ ἐν ταῖς κώμαις ἐν πεδίῳ Ὠνώ· καὶ αὐτοὶ λογιζόμενοι ποιῆσαί μοι πονηρίαν. Καὶ ἀπέστειλα ἐπ’ αὐτοὺς ἀγγέλους, λέγων, ἔργον μέγα ἐγὼ ποιῶ, καὶ οὐ δυνήσομαι καταβῆναι, μή ποτε καταπαύσῃ τὸ ἔργον· ὡς ἂν τελειώσω αὐτὸ, καταβήσομαι πρὸς ὑμᾶς. Καὶ ἀπέστειλαν πρὸς μὲ ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο· καὶ ἀπέστειλα αὐτοῖς κατὰ ταῦτα. Καὶ ἀπέστειλε πρὸς μὲ Σαναβαλλὰτ τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἐπιστολὴν ἀνεῳγμένην ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ἦν γεγραμμένον ἐν αὐτῇ, ἐν ἔθνεσιν ἠκούσθη ὅτι σὺ καὶ οἱ Ἰουδαῖοι

λογίζεσθε ἀποστατῆσαι, διὰ τοῦτο σὺ οἰκοδομεῖς τὸ τεῖχος, καὶ σὺ ἔσῃ αὐτοῖς εἰς βασιλέα. Καὶ πρὸς τούτοις προφήτας ἔστησας σεαυτῷ, ἵνα καθίσῃς ἐν Ἰερουσαλὴμ εἰς βασιλέα ἐπὶ Ἰούδα· καὶ νῦν ἀπαγγελήσονται τῷ βασιλεῖ οἱ λόγοι οὗτοι· καὶ νῦν δεῦρο βουλευσώμεθα ἐπιτοαυτό. Καὶ ἀπέστειλα πρὸς αὐτὸν, λέγων, οὐκ ἐγενήθη ὡς οἱ λόγοι οὗτοι ὧς σὺ λέγεις, ὅτι ἀπὸ καρδίας σου σὺ ψεύδῃ αὐτούς. Ὅτι πάντες φοβερίζουσιν ἡμᾶς, λέγοντες, ἐκλυθήσονται χεῖρες αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ἔργου τούτου, καὶ οὐ ποιηθήσεται· καὶ νῦν ἐκραταίωσα τὰς χεῖράς μου. Κἀγὼ εἰσῆλθον εἰς οἶκον Σεμεΐ υἱοῦ Δαλαΐα υἱοῦ Μεταβεὴλ, καὶ αὐτὸς συνεχόμενος· καὶ εἶπε, συναχθῶμεν εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ ἐν μέσῳ αὐτοῦ, καὶ κλείσωμεν τὰς θύρας αὐτοῦ, ὅτι ἔρχονται νυκτὸς φονεῦσαί σε. Καὶ εἶπα, τίς ἐστιν ὁ ἀνὴρ ὃς εἰσελεύσεται εἰς τὸν οἶκον, καὶ ζήσεται; Καὶ ἐπέγνων, καὶ ἰδοὺ ὁ Θεὸς οὐκ ἀπέστειλεν αὐτὸν, ὅτι ἡ προφητεία λόγος κατ’ ἐμοῦ· καὶ Τωβίας καὶ Σαναβαλλὰτ ἐμισθώσαντο ἐπ’ ἐμὲ ὄχλον ὅπως φοβηθῶ, καὶ ποιήσω οὕτως, καὶ ἁμάρτω, καὶ γένωμαι αὐτοῖς εἰς ὄνομα πονηρὸν, ὅπως ὀνειδίσωσί με. Μνήσθητι ὁ Θεὸς Τωβίᾳ καὶ Σαναβαλλάτ, ὡς τὰ ποιήματα αὐτοῦ ταῦτα, καὶ τῷ Νωαδίᾳ τῷ προφήτῃ, καὶ καταλοίποις τῶν προφητῶν οἳ ἦσαν φοβερίζοντές με. Καὶ ἐτελέσθη τὸ τεῖχος πέμπτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ Ἐλοὺλ μηνὸς εἰς πεντήκοντα καὶ δύο ἡμέρας. Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἤκουσαν πάντες οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν, καὶ ἐφοβήθησαν πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ ἡμῶν, καὶ ἐπέπεσε φόβος σφόδρα ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτῶν, καὶ ἔγνωσαν ὅτι παρὰ τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἐγενήθη τελειωθῆναι τὸ ἔργον τοῦτο. καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἀπὸ πολλῶν ἐντίμων Ἰούδα ἐπιστολαὶ ἐπορεύοντο πρὸς Τωβίαν, καὶ αἱ Τωβία ἤρχοντο πρὸς αὐτούς· Ὅτι πολλοὶ ἐν Ἰούδα ἔνορκοι ἦσαν αὐτῷ, ὅτι γαμβρὸς ἦν τοῦ Σεχενία

υἱοῦ Ἡραέ· καὶ Ἰωνὰν υἱὸς αὐτοῦ ἔλαβε τὴν θυγατέρα Μεσουλὰμ υἱοῦ Βαραχία εἰς γυναῖκα. Καὶ τοὺς λόγους αὐτοῦ ἦσαν λέγοντες πρὸς μὲ, καὶ λόγους μου ἦσαν ἐκφέροντες αὐτῷ· καὶ ἐπιστολὰς ἀπέστειλε Τωβίας φοβερίσαι με.

# 17

Καὶ ἐγένετο ἡνίκα ᾠκοδομήθη τὸ τεῖχος, καὶ ἔστησα τὰς θύρας, καὶ ἐπεσκέπησαν οἱ πυλωροὶ, καὶ οἱ ᾄδοντες, καὶ οἱ Λευῖται, καὶ ἐνετειλάμην τῷ Ἀνανίᾳ ἀδελφῷ μου, καὶ τῷ Ανανίᾳ ἄρχοντι τῆς βιρὰ ἐν Ἰερουσαλὴμ, ὅτι αὐτὸς ὡς ἀνὴρ ἀληθὴς καὶ φοβούμενος τὸν Θεὸν παρὰ πολλούς. Καὶ εἶπα αὐτοῖς, οὐκ ἀνοιγήσονται πύλαι Ἰερουσαλὴμ ἕως ἅμα τῷ ἡλίῳ· καὶ ἔτι αὐτῶν γρηγορούντων, κλειέσθωσαν αἱ θύραι, καὶ σφηνούσθωσαν· καὶ στῆσον προφύλακας οἰκούντων ἐν Ἰερουσαλὴμ, ἀνὴρ ἐν προφυλακῇ αὐτοῦ, καὶ ἀνὴρ ἀπέναντι οἰκίας αὐτοῦ. καὶ ἡ πόλις πλατεῖα καὶ μεγάλη, καὶ ὁ λαὸς ὀλίγος ἐν αὐτῇ, καὶ οὐκ ἦσαν οἰκίαι ᾠκοδομημέναι. Καὶ ἔδωκεν ὁ Θεὸς εἰς τὴν καρδίαν μου, καὶ συνῆξα τοὺς ἐντίμους καὶ τοὺς ἄρχοντας καὶ τὸν λαὸν εἰς συνοδίας· καὶ εὗρον βιβλίον τῆς συνοδίας οἳ ἀνέβησαν ἐν πρώτοις· καὶ εὗρον γεγραμμένον ἐν αὐτῷ, Καὶ οὗτοι υἱοὶ τῆς χώρας οἱ ἀναβάντες ἀπὸ αἰχμαλωσίας τῆς ἀποικίας ἧς ἀπῴκισε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Ἰερουσαλὴμ καὶ εἰς Ἰούδα ἀνὴρ εἰς τὴν πόλιν αὐτοῦ μετὰ Ζοροβάβελ, καὶ Ἰησοῦ, καὶ Νεεμία, Ἀζαρία, καὶ Ῥεελμὰ, Ναεμανὶ, Μαρδοχαῖος, Βαλσὰν, Μασφαρὰθ, Ἔσδρα, Βογουΐα, Ἰναοὺμ, Βαανὰ, Μασφὰρ, ἄνδρες λαοῦ Ἰσραήλ. γίοὶ Φόρος, δισχίλιοι ἑκατὸν ἑβδομηκονταδύο. γίοὶ Σαφατία, τριακόσιοι

ἑβδομηκονταδύο. γἱοὶ Ἠρὰ, ἑξακόσιοι πεντηκονταδύο. γἱοὶ Φαὰθ Μωὰβ τοῖς υἱοῖς Ἰησοῦ καὶ Ἰωὰβ, δισχίλιοι ἑξακόσιοι δεκαοκτώ. γἱοὶ Αἰλὰμ, χίλιοι διακόσιοι πεντηκοντατέσσαρες. γἱοὶ Ζαθουΐα, ὀκτακόσιοι τεσσαρακονταπέντε. γἱοὶ Ζακχού, ἑπτακόσιοι ἑξήκοντα. γἱοὶ Βανουΐ, ἑξακόσιοι τεσσαρακονταοκτώ. γἱοὶ Βηβὶ, ἑξακόσιοι εἰκοσιοκτώ. γἱοὶ Ἀσγὰδ, δισχίλιοι τριακόσιοι εἰκοσιδύο. γἱοὶ Ἀδωνικὰμ, ἑξακόσιοι ἑξηκονταεπτά. γἱοὶ Βαγοΐ, δισχίλιοι ἑξηκονταεπτά. γἱοὶ Ἠδὶν, ἑξακόσιοι πεντηκονταπέντε. γἱοὶ Ἀτὴρ τῷ Ἐζεκίᾳ, ἐννενηκονταοκτώ. γἱοὶ Ἠσὰμ, τριακόσιοι εἰκοσιοκτώ. γἱοὶ Βεσεΐ, τριακόσιοι εἰκοσιτέσσαρες. γἱοὶ Ἀρὶφ, ἑκατὸν δώδεκα· υἱοὶ Ἀσὲν, διακόσιοι εἰκοσιτρεῖς. γἱοὶ Γαβαὼν, ἐννενηκονταπέντε. γἱοὶ Βαιθαλὲμ, ἑκατὸν εἰκοσιτρεῖς· υἱοὶ Ἀτωφὰ, πεντηκονταέξ. γἱοὶ Ἀναθὼθ, ἑκατὸν εἰκοσιοκτώ. Ἄνδρες Βηθασμὼθ, τεσσαρακονταδύο. Ἄνδρες Καριαθαρὶμ, Καφιρὰ, καὶ Βηρὼθ, ἑπτακόσιοι τεσσαρακοντατρεῖς. Ἄνδρες Ἀραμὰ, καὶ Γαβαὰ, ἑξακόσιοι εἴκοσι. Ἄνδρες Μαχεμὰς, ἑκατὸν εἰκοσιδύο. Ἄνδρες Βαιθὴλ καὶ Ἀΐ, ἑκατὸν εἰκοσιτρεῖς. Ἄνδρες Ναβία, ἑκατὸν πεντηκονταδύο. Ἄνδρες Ἠλαμαὰρ, χίλιοι διακόσιοι πεντηκονταδύο. γἱοὶ Ἠρὰμ, τριακόσιοι εἴκοσι. γἱοὶ Ἰεριχὼ, τριακόσιοι τεσσαρακονταπέντε. γἱοὶ Λοδαδὶδ καὶ Ὠνὼ, ἑπτακόσιοι εἰκοσιεῖς. γἱοὶ Σανανὰ, τρισχίλιοι ἐννακόσιοι τριάκοντα. Οἱ ἱερεῖς υἱοὶ Ἰωδαὲ εἰς οἶκον Ἰησοῦ, ἐννακόσιοι ἑβδομηκοντατρεῖς. Υἱοὶ Ἐμμὴρ, χίλιοι πεντηκονταδύο. Υἱοὶ Φασεοὺρ, χίλιοι διακόσιοι τεσσαρακονταεπτά. γἱοὶ Ἠρὰμ, χίλιοι δεκαεπτά. Οἱ Λευῖται, υἱοὶ Ἰησοῦ τοῦ Καδμιὴλ τοῖς υἱοῖς τοῦ Οὐδουΐα, ἑβδομηκοντατέσσαρες. Οἱ ᾄδοντες, υἱοὶ Ἀσὰφ, ἑκατὸν τεσσαρακονταοκτώ. Οἱ πυλωροὶ, υἱοὶ Σαλοὺμ, υἱοὶ Ἀτὴρ, υἱοὶ Τελμὼν, υἱοὶ Ἀκοὺβ, υἱοὶ Ἀτιτὰ, υἱοὶ Σαβὶ, ἑκατὸν τριακονταοκτώ. Οἱ Ναθινὶμ, υἱοὶ Σηὰ, υἱοὶ Ἀσφὰ, υἱοὶ

Ταβαὼθ, υἱοὶ Κιρὰς, υἱοὶ Ἀσουΐα, υἱοὶ Φαδὼν, υἱοὶ Λαβανὰ, υἱοὶ Ἀγαβὰ, υἱοὶ Σελμεΐ, υἱοὶ Ἀνὰν, υἱοὶ Γαδὴλ, υἱοὶ Γαὰρ, υἱοὶ Ῥααΐα, υἱοὶ Ῥασσὼν, υἱοὶ Νεκωδὰ, υἱοὶ Γηζὰμ, υἱοὶ Ὀζὶ, υἱοὶ Φεσὴ, υἱοὶ Βησὶ, υἱοὶ Μεϊνὼν, υἱοὶ Νεφωσασὶ, υἱοὶ Βακβοὺκ, υἱοὶ Ἀχιφὰ, υἱοὶ Ἀροὺρ, υἱοὶ Βασαλὼθ, υἱοὶ Μιδὰ, υἱοὶ Ἀδασὰν, υἱοὶ Βαρκουὲ, υἱοὶ Σισαρὰθ, υἱοὶ Θημὰ, υἱοὶ Νισιὰ, υἱοὶ Ἀτιφά. γἱοὶ δούλων Σαλωμὼν, υἱοὶ Σουτεΐ, υἱοὶ Σαφαρὰτ, υἱοὶ Φεριδὰ, υἱοὶ Ἰελὴλ, υἱοὶ Δορκὼν, υἱοὶ Γαδαὴλ, υἱοὶ Σαφατία, υἱοὶ Ἐττὴλ, υἱοὶ Φακαρὰθ, υἱοὶ Σαβαΐμ, υἱοὶ Ἠμίμ. Πάντες οἱ Ναθινὶμ, καὶ υἱοὶ δούλων Σαλωμὼν, τριακόσιοι ἐννενηκονταδύο. Καὶ οὗτοι ἀνέβησαν ἀπὸ Θελμελὲθ, Θελαρησὰ, Χαροὺβ, Ἠρὼν, Ἰεμὴρ, καὶ οὐκ ἐδυνάσθησαν ἀπαγγεῖλαι οἴκους πατριῶν αὐτῶν καὶ σπέρμα αὐτῶν, εἰ ἀπὸ Ἰσραὴλ εἰσίν· γἱοὶ Δαλαία, υἱοὶ Τωβία, υἱοὶ Νεκωδὰ, ἑξακόσιοι τεσσαρακονταδύο. Καὶ ἀπὸ τῶν ἱερέων, υἱοὶ Ἐβία, υἱοὶ Ἀκὼς, υἱοὶ Βερζελλὶ, ὅτι ἔλαβον ἀπὸ θυγατέρων Βερζελλὶ τοῦ Γαλααδίτου γυναῖκας, καὶ ἐκλήθησαν ἐπ’ ὀνόματι αὐτῶν. Οὗτοι ἐζήτησαν γραφὴν αὐτῶν τῆς συνοδίας, καὶ οὐχ εὑρέθη· καὶ ἠγχιστεύθησαν ἀπὸ τῆς ἱερατείας. Καὶ εἶπεν ἀθερσασθὰ, ἵνα μὴ φάγωσιν ἀπὸ τοῦ ἁγίου τῶν ἁγίων, ἕως ἀναστῇ ἱερεὺς φωτίσων. Καὶ ἐγένετο πᾶσα ἡ ἐκκλησία ὡσεὶ τέσσαρες μυριάδες δισχίλιοι τριακόσιοι ἑξήκοντα, πάρεκ δούλων αὐτῶν καὶ παιδισκῶν αὐτῶν· οὗτοι ἑπτακισχίλιοι τριακόσιοι τριακονταεπτά· καὶ ᾄδοντες καὶ ᾄδουσαι, διακόσιοι τεσσαρακονταπέντε. Ὄνοι δισχίλιοι ἑπτακόσιοι. Καὶ ἀπὸ μέρους ἀρχηγῶν τῶν πατριῶν ἔδωκαν εἰς τὸ ἐργον τῷ Νεεμίᾳ εἰς θησαυρὸν χρυσοῦς χιλίους, φιάλας πεντήκοντα, καὶ χωθωνὼθ τῶν ἱερέων τριάκοντα. Καὶ ἀπὸ ἀρχηγῶν τῶν πατριῶν ἔδωκαν εἰς θησαυρούς τοῦ ἔργου χρυσοῦ νομίσματος δύο μυριάδας, καὶ ἀργυρίου μνᾶς δισχιλίας τριακοσίας. Καὶ ἔδωκαν οἱ κατάλοιποι τοῦ

λαοῦ χρυσίου δύο μυριάδας, καὶ ἀργυρίου μνᾶς δισχιλίας διακοσίας, καὶ χωθωνὼθ τῶν ἱερέων ἑξηκονταεπτά. Καὶ ἐκάθισαν οἱ ἱερεῖς, καὶ Λευῖται, καὶ οἱ πυλωροὶ, καὶ οἱ ᾄδοντες, καὶ οἱ ἀπὸ τοῦ λαοῦ, καὶ οἱ Ναθινὶμ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐν πόλεσιν αὐτῶν.

# 18

Καὶ ἔφθασεν ὁ μὴν ὁ ἕβδομος, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν πόλεσιν αὐτῶν· καὶ συνήχθησαν πᾶς ὁ λαὸς ὡς ἀνὴρ εἷς εἰς τὸ πλάτος τὸ ἔμπροσθεν πύλης τοῦ ὕδατος· καὶ εἶπαν τῷ Ἔσδρᾳ τῷ γραμματεῖ, ἐνέγκαι τὸ βιβλίον νόμου Μωυσῆ, ὃν ἐνετείλατο Κύριος τῷ Ἰσραήλ. Καὶ ἤνεγκεν Ἔσδρας ὁ ἱερεὺς τὸν νόμον ἐνώπιον τῆς ἐκκλησίας ἀπὸ ἀνδρὸς ἕως γυναικὸς, καὶ πᾶς ὁ συνιὼν, ἀκούειν ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ ἑβδόμου. Καὶ ἀνέγνω ἐν αὐτῷ ἀπὸ τῆς ὥρας τοῦ διαφωτίσαι τὸν ἥλιον ἕως ἡμίσους τῆς ἡμέρας, ἀπέναντι τῶν ἀνδρῶν καὶ τῶν γυναικῶν, καὶ αὐτοὶ συνιέντες· καὶ ὦτα παντὸς τοῦ λαοῦ εἰς τὸ βιβλίον τοῦ νόμου. Καὶ ἔστη Ἔσδρας ὁ γραμματεὺς ἐπὶ βήματος ξυλίνου, καὶ ἔστησαν ἐχόμενα αὐτοῦ Ματθαθίας, καὶ Σαμαΐας, καὶ Ἀνανίας, καὶ Οὐρίας, καὶ Χελκία, καὶ Μαασία ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, καὶ ἐξ ἀριστερῶν Φαδαΐας, καὶ Μισαὴλ, καὶ Μελχίας, καὶ Ἀσὼμ, καὶ Ἀσαβαδμὰ, καὶ Ζαχαρίας, καὶ Μεσολλάμ. Καὶ ἤνοιξεν Ἔσδρας τὸ βιβλίον ἐνώπιον παντὸς τοῦ λαοῦ, ὅτι αὐτὸς ἦν ἐπάνω τοῦ λαοῦ· καὶ ἐγένετο ἡνίκα ἤνοιξεν αὐτὸ, ἔστη πᾶς ὁ λαός. Καὶ ηὐλόγησεν Ἔσδρας Κύριον τὸν Θεὸν τὸν μέγαν· καὶ ἀπεκρίθη πᾶς ὁ λαὸς, καὶ εἶπαν, ἀμὴν, ἐπάραντες τὰς χεῖρας αὐτῶν· καὶ ἔκυψαν καὶ προσεκύνησαν τῷ Κυρίῳ ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν. Καὶ Ἰησοῦς, καὶ Βαναΐας, καὶ Σαραβίας

ἦσαν συνετίζοντες τὸν λαὸν εἰς τὸν νόμον· καὶ ὁ λαὸς ἐν τῇ στάσει αὐτοῦ. Καὶ ἀνέγνωσαν ἐν βιβλίῳ νόμου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐδίδασκεν Ἔσδρας, καὶ διέστελλεν ἐν ἐπιστήμῃ Κυρίου, καὶ συνῆκεν ὁ λαὸς ἐν τῇ ἀναγνώσει. Καὶ εἶπε Νεεμίας καὶ Ἔσδρας ὁ ἱερεὺς καὶ γραμματεὺς, καὶ οἱ Λευῖται, καὶ οἱ συνετίζοντες τὸν λαὸν, καὶ εἶπαν παντὶ τῷ λαῷ, ἡμέρα ἁγία ἐστὶ τῷ Κυρίῳ Θεῷ ἡμῶν, μὴ πενθεῖτε μηδὲ κλαίετε· ὅτι ἔκλαιε πᾶς ὁ λαὸς ὡς ἤκουσαν τοὺς λόγους τοῦ νόμου. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, πορεύεσθε, φάγετε λιπάσματα, καὶ πίετε γλυκάσματα, καὶ ἀποστείλατε μερίδας τοῖς μὴ ἔχουσιν, ὅτι ἁγία ἐστὶν ἡ ἡμέρα τῷ Κυρίῳ ἡμῶν· καὶ μὴ διαπέσητε, ὅτι ἐστὶ Κύριος ἰσχὺς ἡμῶν. Καὶ οἱ Λευῖται κατεσιώπων πάντα τὸν λαὸν, λέγοντες, σιωπᾶτε, ὅτι ἡμέρα ἁγία, καὶ μὴ καταπίπτετε. Καὶ ἀπῆλθε πᾶς ὁ λαὸς φαγεῖν καὶ πιεῖν, καὶ ἀποστέλλειν μερίδας, καὶ ποιῆσαι εὐφροσύνην μεγάλην, ὅτι συνῆκαν ἐν τοῖς λόγοις οἷς ἐγνώρισεν αὐτοῖς. Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ συνήχθησαν οἱ ἄρχοντες τῶν πατριῶν σὺν τῷ παντὶ λαῷ, οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται πρὸς Ἔσδραν τὸν γραμματέα, ἐπιστῆσαι πρὸς πάντας τοὺς λόγους τοῦ νόμου. Καὶ εὕροσαν γεγραμμένον ἐν τῷ νόμῳ, ᾧ ἐνετείλατο Κύριος τῷ Μωυσῇ, ὅπως κατοικήσωσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν σκῆναις ἐν ἑορτῇ ἐν μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, καὶ ὅπως σημάνωσι σάλπιγξιν ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτῶν καὶ ἐν Ἱερουσαλήμ· καὶ εἶπεν Ἔσδρας, ἐξέλθετε εἰς τὸ ὄρος, καὶ ἐνέγκατε φύλλα ἐλαίας, καὶ φύλλα ξύλων κυπαρισσίνων, καὶ φύλλα μυρσίνης, καὶ φύλλα φοινίκων, καὶ φύλλα ξύλου δασέος, ποιῆσαι σκηνὰς κατὰ τὸ γεγραμμένον. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ λαὸς, καὶ ἤνεγκαν, καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς σκηνὰς ἀνὴρ ἐπὶ τοῦ δώματος αὐτοῦ, καὶ ἐν ταῖς αὐλαῖς αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς αὐλαῖς οἴκου τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐν πλατείαις τῆς πόλεως, καὶ ἕως πύλης Ἐφραίμ. Καὶ ἐποίησαν πᾶσα ἡ ἐκκλησία, οἱ ἐπιστρέψαντες

ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας, σκηνὰς, καὶ ἐκάθισαν ἐν σκηναῖς· ὅτι οὐκ ἐποίησαν ἀπὸ ἡμερῶν Ἰησοῦ υἱοῦ Ναυῆ οὕτως οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἕως τῆς ἡμέρας ἐκείνης· καὶ ἐγένετο εὐφροσύνη μεγάλη. Καὶ ἀνέγνω ἐν βιβλίῳ νόμου τοῦ Θεοῦ ἡμέραν ἐν ἡμέρᾳ ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς πρώτης ἕως τῆς ἡμέρας τῆς ἐσχάτης· καὶ ἐποίησαν ἑορτὴν ἑπτὰ ἡμέρας, καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ ὀγδόῃ ἐξόδιον κατὰ τὸ κρίμα.

# 19

Καὶ ἐν ἡμέρᾳ εἰκοστῇ καὶ τετάρτῃ τοῦ μηνὸς τούτου συνήχθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἐν νηστείᾳ καὶ ἐν σάκκοις καὶ σποδῷ ἐπὶ κεφαλῆς αὐτῶν. Καὶ ἐχωρίσθησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ ἀπὸ παντὸς υἱοῦ ἀλλοτρίου, καὶ ἔστησαν καὶ ἐξηγόρευσαν τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, καὶ τὰς ἀνομίας τῶν πατέρων αὐτῶν. Καὶ ἔστησαν ἐπὶ τῇ στάσει αὐτῶν, καὶ ἀνέγνωσαν ἐν βιβλίῳ νόμου Κυρίου Θεοῦ αὐτῶν· καὶ ἦσαν ἐξαγορεύοντες τῷ Κυρίῳ καὶ προσκυνοῦντες τῷ Κυρίῳ Θεῷ αὐτῶν. Καὶ ἔστη ἐπὶ ἀναβάσει τῶν Λευιτῶν Ἰησοῦς, καὶ οἱ υἱοὶ Καδμιὴλ, Σεχενία υἱὸς Σαραβία, υἱοὶ Χωνενί· καὶ ἐβόησαν φωνῇ μεγάλῃ πρὸς Κύριον τὸν Θεὸν αὐτῶν. Καὶ εἶποσαν οἱ Λευῖται Ἰησοῦς καὶ Καδμιὴλ, ἀνάστητε, εὐλογεῖτε Κύριον τὸν Θεὸν ἡμῶν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος· καὶ εὐλογήσουσιν ὄνομα δόξης σου, καὶ ὑψώσουσιν ἐπὶ πάσῃ εὐλογίᾳ καὶ αἰνέσει. Καὶ εἶπεν Ἔσδρας, σὺ εἶ αὐτὸς Κύριος μόνος, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὸν οὐρανὸν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πᾶσαν τὴν στάσιν αὐτῶν, τὴν γῆν καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν ἐν αὐτῇ, τὰς θαλάσσας καὶ πάντα τὰ ἐν αὐταῖς· καὶ σὺ ζωοποιεῖς τὰ πάντα, καὶ σοὶ προσκυνοῦσιν αἱ στρατιαὶ τῶν οὐρανῶν· Σὺ εἶ Κύριος ὁ Θεὸς, σὺ ἐξελέξω ἐν Ἄβραμ

καὶ ἐξήγαγες αὐτὸν ἐκ τῆς χώρας τῶν Χαλδαίων, καὶ ἐπέθηκας αὐτῷ ὄνομα Ἀβραάμ· Καὶ εὗρες τὴν καρδίαν αὐτοῦ πιστὴν ἐνώπιόν σου, καὶ διέθου πρὸς αὐτὸν διαθήκην δοῦναι αὐτῷ τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, καὶ Χετταίων, καὶ Ἀμορῥαίων, καὶ Φερεζαίων, καὶ Ἰεβουσαίων, καὶ Γεργεσαίων, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ· καὶ ἔστησας τοὺς λόγους σου, ὅτι δίκαιος σύ. Καὶ εἶδες τὴν ταπείνωσιν τῶν πατέρων ἡμῶν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ τὴν κραυγὴν αὐτῶν ἤκουσας ἐπὶ θάλασσαν ἐρυθράν. Καὶ ἔδωκας σημεῖα καὶ τέρατα ἐν Αἰγύπτῳ ἐν Φαραῷ, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς παισὶν αὐτοῦ, καὶ ἐν παντὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς αὐτοῦ, ὅτς ἔγνως ὅτι ὑπερηφάνησαν ἐπ’ αὐτοὺς καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ὄνομα ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ τὴν θάλασσαν ἔῤῥηξας ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ παρήλθοσαν ἐν μέσῳ τῆς θαλάσσης ἐν ξηρασίᾳ, καὶ τοὺς καταδιώξοντας αὐτοὺς ἔῤῥιψας εἰς βυθὸν, ὡσεὶ λίθον ἐν ὕδατι σφοδρῶ. Καὶ ἐν στύλῳ νεφέλης ὡδήγησας αὐτοὺς ἡμέρας, καὶ ἐν στύλῳ πυρὸς τὴν νύκτα, τοῦ φωτίσαι αὐτοῖς τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσονται ἐν αὐτῇ. καὶ ἐπὶ ὄρος Σινὰ κατέβης, καὶ ἐλάλησας πρὸς αὐτοὺς ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἔδωκας αὐτοῖς κρίματα εὐθέα, καὶ νόμους ἀληθείας, προστάγματα, καὶ ἐντολὰς ἀγαθάς. Καὶ τὸ σάββατόν σου τὸ ἅγιον ἐγνώρισας αὐτοῖς, ἐντολὰς καὶ προστάγματα καὶ νόμον ἐνετείλω αὐτοῖς ἐν χειρὶ Μωυσῆ δούλου σου. Καὶ ἄρτον ἐξ οὐρανοῦ ἔδωκας αὐτοῖς εἰς σιτοδοτίαν αὐτῶν, καὶ ὕδωρ ἐκ πέτρας ἐξήνεγκας αὐτοῖς εἰς δίψαν αὐτῶν· καὶ εἶπας αὐτοῖς εἰσελθεῖν κληρονομῆσαι τὴν γῆν ἐφ’ ἣν ἐξέτεινας τὴν χεῖρά σου δοῦναι αὐτοῖς. Καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν ὑπερηφανεύσαντο, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῶν ἐντολῶν σου, καὶ ἀνένευσαν τοῦ εἰσακοῦσαι, καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν τῶν θαυμασίων σου ὧν ἐποίησας μετ’ αὐτῶν· καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν, καὶ ἔδωκαν ἀρχὴν ἐπιστρέψαι

εἰς δουλείαν αὐτῶν ἐν Αἰγύπτῳ· καὶ σὺ ὁ Θεὸς ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, καὶ οὐκ ἐγκατέλιπες αὐτούς. Ἔτι δὲ καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς μόσχον χωνευτὸν, καὶ εἶπαν, οὗτοι οἱ θεοὶ οἱ ἐξαγαγόντες ἡμᾶς ἐξ Αἰγύπτου· καὶ ἐποίησαν παροργισμοὺς μεγάλους. Καὶ σὺ ἐν οἰκτιρμοῖς σου τοῖς πολλοῖς οὐκ ἐγκατέλιπες αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, τὸν στύλον τῆς νεφέλης οὐκ ἐξέκλινας ἀπ' αὐτῶν ἡμέρας, ὁδηγῆσαι αὐτοὺς ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ τὸν στύλον τοῦ πυρὸς τὴν νύκτα, φωτίζειν αὐτοῖς τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσονται ἐν αὐτῇ. Καὶ τὸ πνεῦμά σου τὸ ἀγαθὸν ἔδωκας συνετίσαι αὐτούς· καὶ τὸ μάννα σου οὐκ ἀφυστέρησας ἀπὸ στόματος αὐτῶν, καὶ ὕδωρ ἔδωκας αὐτοῖς ἐν τῷ δίψει αὐτῶν. Καὶ τεσσαράκοντα ἔτη διέθρεψας αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, οὐχ ὑστέρησας αὐτοῖς οὐδέν· ἱμάτια αὐτῶν οὐκ ἐπαλαιώθησαν, καὶ πόδες αὐτῶν οὐ διερράγησαν. Καὶ ἔδωκας αὐτοῖς βασιλείας, καὶ λαοὺς ἐμέρισας αὐτοῖς· καὶ ἐκληρονόμησαν τὴν γῆν Σηὼν βασιλέως Ἐσεβὼν, καὶ τὴν γῆν Ὢγ βασιλέως τοῦ Βασάν. Καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐπλήθυνας ὡς τοὺς ἀστέρας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ εἰσήγαγες αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν εἶπας τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ ἐκληρονόμησαν αὐτήν· καὶ ἐξέτριψας ἐνώπιον αὐτῶν τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν τῶν Χαναναίων, καὶ ἔδωκας αὐτοὺς εἰς τὰς χεῖρας αὐτῶν καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν καὶ τοὺς λαοὺς τῆς γῆς, ποιῆσαι αὐτοῖς ὡς ἀρεστὸν ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ κατελάβοσαν πόλεις ὑψηλὰς, καὶ ἐκληρονόμησαν οἰκίας πλήρεις πάντων ἀγαθῶν, λάκκους λελατομημένους, ἀμπελῶνας καὶ ἐλαιῶνας, καὶ πᾶν ξύλον βρώσιμον εἰς πλῆθος· καὶ ἐφάγοσαν καὶ ἐνεπλήσθησαν καὶ ἐλιπάνθησαν, καὶ ἐτρύφησαν ἐν ἀγαθωσύνῃ σου τῇ μεγάλῃ. Καὶ ἤλλαξαν, καὶ ἀπέστησαν ἀπὸ σοῦ, καὶ ἔῤῥιψαν τὸν νόμον σου ὀπίσω σώματος αὐτῶν· καὶ τοὺς προφήτας σου ἀπέκτειναν, οἳ

διεμαρτύραντο ἐν αὐτοῖς ἐπιστρέψαι αὐτοὺς πρὸς σέ· καὶ ἐποίησαν παροργισμοὺς μεγάλους. Καὶ ἔδωκας αὐτοὺς ἐν χειρὶ θλιβόντων αὐτούς, καὶ ἔθλιψαν αὐτούς· καὶ ἀνεβόησαν πρὸς σὲ ἐν καιρῷ θλίψεως αὐτῶν, καὶ σὺ ἐξ οὐρανοῦ σου ἤκουσας, καὶ ἐν οἰκτιρμοῖς σου τοῖς μεγάλοις ἔδωκας αὐτοῖς σωτῆρας, καὶ ἔσωσας αὐτοὺς ἐκ χειρὸς θλιβόντων αὐτούς. Καὶ ὡς ἀνεπαύσαντο, ἐπέστρεψαν ποιῆσαι τὸ πονηρὸν ἐνώπιόν σου· καὶ ἐγκατέλιπες αὐτοὺς εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ κατῆρξαν ἐν αὐτοῖς· καὶ πάλιν ἀνεβόησαν πρὸς σὲ, καὶ σὺ ἐξ οὐρανοῦ εἰσήκουσας, καὶ ἐῤῥύσω αὐτοὺς ἐν οἰκτιρμοῖς σου πολλοῖς. Καὶ ἐπεμαρτύρω αὐτοῖς ἐπιστρέψαι αὐτοὺς εἰς τὸν νόμον σου· καὶ οὐκ ἤκουσαν, ἀλλ’ ἐν ταῖς ἐντολαῖς σου καὶ κρίμασί σου ἡμάρτοσαν, ἃ ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος ζήσεται ἐν αὐτοῖς· καὶ ἔδωκαν νῶτον ἀπειθοῦντα, καὶ τράχηλον αὐτῶν ἐσκλήρυναν καὶ οὐκ ἤκουσαν. Καὶ εἵλκυσας ἐπ’ αὐτοὺς ἔτη πολλὰ, καὶ ἐπεμαρτύρω αὐτοῖς ἐν πνεύματί σου ἐν χειρὶ προφητῶν σου, καὶ οὐκ ἐνωτίσαντο, καὶ ἔδωκας αὐτοὺς ἐν χειρὶ λαῶν τῆς γῆς. Καὶ σὺ ἐν οἰκτιρμοῖς σου τοῖς πολλοῖς οὐκ ἐποίησας αὐτοὺς εἰς συντέλειαν, καὶ οὐκ ἐγκατέλιπες αὐτοὺς, ὅτι ἰσχυρὸς εἶ καὶ ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων. Καὶ νῦν ὁ Θεὸς ἡμῶν ὁ ἰσχυρὸς ὁ μέγας ὁ κραταιὸς καὶ ὁ φοβερὸς, φυλάσσων τὴν διαθήκην σου καὶ τὸ ἔλεός σου, μὴ ὀλιγωθήτω ἐνώπιόν σου πᾶς ὁ μόχθος ὃς εὗρεν ἡμᾶς, καὶ τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν, καὶ τοὺς ἄρχοντας ἡμῶν, καὶ τοὺς ἱερεῖς ἡμῶν, καὶ τοὺς προφήτας ἡμῶν, καὶ τοὺς πατέρας ἡμῶν, καὶ ἐν παντὶ τῷ λαῷ σου ἀπὸ ἡμερῶν βασιλέων Ἀσσοὺρ καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Καὶ σὺ δίκαιος ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἐρχομένοις ἐφ’ ἡμᾶς, ὅτι ἀλήθειαν ἐποίησας· καὶ ἡμεῖς ἐξημάρτομεν, καὶ οἱ βασιλεῖς ἡμῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς ἡμῶν, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν οὐκ ἐποίησαν τὸν νόμον σου, καὶ

οὐ προσέσχον τῶν ἐντολῶν σου, καὶ τὰ μαρτύριά σου ἃ διεμαρτύρω αὐτοῖς. Καὶ αὐτοὶ ἐν βασιλείᾳ σου καὶ ἐν ἀγαθωσύνῃ σου τῇ πολλῇ ᾗ ἔδωκας αὐτοῖς, καὶ ἐν τῇ γῇ τῇ πλατείᾳ καὶ λιπαρᾷ ᾗ ἔδωκας ἐνώπιον αὐτῶν, οὐκ ἐδούλευσάν σοι, καὶ οὐκ ἀπέστρεψαν ἀπὸ ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν τῶν πονηρῶν. Ἰδοὺ σήμερον ἐσμὲν δοῦλοι, καὶ ἡ γῆ ἣν ἔδωκας τοῖς πατράσιν ἡμῶν φαγεῖν τὸν καρπὸν αὐτῆς καὶ τὰ ἀγαθὰ αὐτῆς, ἰδοὺ ἐσμὲν δοῦλοι ἐπ’ αὐτῆς, καὶ οἱ καρποὶ αὐτῆς πολλοὶ τοῖς βασιλεῦσιν οἷς ἔδωκας ἐφ’ ἡμᾶς ἐν ἁμαρτίαις ἡμῶν, καὶ ἐπὶ τὰ σώματα ἡμῶν ἐξουσιάζουσι, καὶ ἐν κτήνεσιν ἡμῶν, ὡς ἀρεστὸν αὐτοῖς, καὶ ἐν θλίψει μεγάλῃ ἐσμέν.

# 20

Καὶ ἐν πᾶσι τούτοις ἡμεῖς διατιθέμεθα πίστιν, καὶ γράφομεν, καὶ ἐπισφραγίζουσιν ἄρχοντες ἡμῶν, Λευῖται ἡμῶν, ἱερεῖς ἡμῶν. Καὶ ἐπὶ τῶν σφραγιζόντων Νεεμίας ἀρτασασθὰ υἱὸς Ἀχαλία, καὶ Σεδεκίας υἱὸς Ἀραία, καὶ Ἀζαρία, καὶ Ἱερεμία, Φασοὺρ, Ἀμαρία, Μελχία, Ἀττοὺς, Σεβανὶ, Μαλοὺχ, Ἰρὰμ, Μεραμὼθ, Ἀβδία, Δανιὴλ, Γανναθὼν, Βαρουχ, Μεσουλὰμ, Ἀβία, Μιαμὶν, Μααζία, Βελγαΐ, Σαμαΐα οὗτοι ἱερεῖς. Καὶ οἱ Λευῖται, Ἰησοῦς υἱὸς Ἀζανία, Βαναίου ἀπὸ υἱῶν Ἠναδὰδ, Καδμιὴλ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, Σαβανία, Ὠδουΐα, Καλιτὰν, Φελία, Ανὰν, Μιχὰ, Ῥοὼβ, Ἀσεβίας, Ζακχὼρ, Σαραβία, Σεβανία, Ὠδούμ· υἱοὶ Βανουαΐ Ἄρχοντες τοῦ λαοῦ Φόρος, Φαὰθ Μωὰβ, Ἠλὰμ, Ζαθουΐα· υἱοὶ Βανὶ, Ἀσγὰδ, Βηβαΐ, Ἀδανία, Βαγοΐ, Ἠδὶν, Ἀτὴρ, Ἐζεκία, Ἀζοὺρ, Ὠδουΐα, Ἠσὰμ, Βησὶ, Ἀρὶφ, Ἀναθὼθ, Νωβαΐ, Μεγαφὴς, Μεσουλλὰμ, Ἡζὶρ, Μεσωζεβὴλ,

Σαδοὺκ, Ἰσδδούα, Φαλτία, Ἀνὰν, Ἀναΐα, Ὡσηὲ, Ἀνανία, Ἀσοὺβ, Ἀλωὴς, Φαλαΐ, Σωβὴκ, Ῥεοὺμ, Ἐσσαβανὰ, Μαασία, καὶ Ἀΐα, Αἰνὰν, Ἠνὰμ, Μαλοὺχ, Ἠρὰμ, Βαανὰ, Καὶ οἱ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ, οἱ ἱερεῖς, οἱ Λευῖται, οἱ πυλωροὶ, οἱ ᾄδοντες, οἱ Ναθινὶμ, καὶ πᾶς ὁ προσπορευόμενος ἀπὸ λαῶν τῆς γῆς πρὸς νόμον τοῦ Θεοῦ, γυναῖκες αὐτῶν, υἱοὶ αὐτῶν, θυγατέρες αὐτῶν· πᾶς ὁ εἰδὼς καὶ συνιὼν, ἐνίσχυον ἐπὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῶν, καὶ κατηράσαντο αὐτοὺς, καὶ εἰσήλθοσαν ἐν ἀρᾷ καὶ ἐν ὅρκῳ τοῦ πορεύεσθαι ἐν νόμῳ τοῦ Θεοῦ, ὃς ἐδόθη ἐν χειρὶ Μωυσῆ δούλου τοῦ Θεοῦ, φυλάσσεσθαι καὶ ποιεῖν πάσας τὰς ἐντολὰς Κυρίου, καὶ τὰ κρίματα αὐτοῦ, καὶ τὰ προστάγματα αὐτοῦ· Καὶ τοῦ μὴ δοῦναι θυγατέρας ἡμῶν τοῖς λαοῖς τοῖς γῆς, καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν οὐ ληψόμεθα τοῖς υἱοῖς ἡμῶν· Καὶ λαοὶ τῆς γῆς οἱ φέροντες τοὺς ἀγορασμοὺς καὶ πᾶσαν πρᾶσιν ἐν ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου ἀποδόσθαι, οὐκ ἀγορῶμεν παρ’ αὐτῶν ἐν σαββάτῳ καὶ ἐν ἡμέρᾳ ἁγίᾳ· καὶ ἀνήσομεν τὸ ἔτος τὸ ἕβδομον, καὶ ἀπαίτησιν πάσης χειρός. Καὶ στήσομεν ἐφ’ ἡμᾶς ἐντολάς δοῦναι ἐφ’ ἡμᾶς τρίτον τοῦ διδράχμου κατ’ ἐνιαυτὸν εἰς δουλείαν οἴκου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, εἰς ἄρτους τοῦ προσώπου, καὶ θυσίαν τοῦ ἐνδελεχισμοῦ καὶ εἰς ὁλοκαύτωμα τοῦ ἐνδελεχισμοῦ τῶν σαββάτων, τῶν νουμηνιῶν, εἰς τὰς ἑορτὰς καὶ εἰς τὰ ἅγια, καὶ τὰ περὶ ἁμαρτίας, ἐξιλάσασθαι περὶ Ἰσραὴλ, καὶ εἰς ἔργα οἴκου τοῦ Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ κλήρους ἐβάλομεν περὶ κλήρου ξυλοφορίας, οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται καὶ ὁ λαὸς, ἐνέγκαι εἰς οἶκον Θεοῦ ἡμῶν, εἰς οἶκον πατριῶν ἡμῶν, εἰς καιροὺς ἀπὸ χρόνων, ἐνιαυτὸν κατ’ ἐνιαυτὸν, ἐκκαῦσαι ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον Κυρίου Θεοῦ ἡμῶν, ὡς γέγραπται ἐν τῷ νόμῳ· Καὶ ἐνέγκαι τὰ πρωτογενήματα τῆς γῆς ἡμῶν, καὶ πρωτογεννήματα καρποῦ παντὸς ξύλου ἐνιαυτὸν κατ’ ἐνιαυτὸν εἰς οἶκον Κυρίου, καὶ τὰ πρωτότοκα υἱῶν

ἡμῶν καὶ κτηνῶν ἡμῶν, ὡς γέγραπται ἐν τῷ νόμῳ, καὶ τὰ πρωτότοκα τῶν βοῶν ἡμῶν καὶ ποιμνίων ἡμῶν ἐνέγκαι εἰς οἶκον Θεοῦ ἡμῶν, τοῖς ἱερεῦσι τοῖς λειτουργοῦσιν ἐν οἴκῳ Θεοῦ ἡμῶν. Καὶ τὴν ἀπαρχὴν σίτων ἡμῶν, καὶ τὸν καρπὸν παντὸς ξύλου, οἴνου, καὶ ἐλαίου, οἴσομεν τοῖς ἱερεῦσιν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον οἴκου τοῦ Θεοῦ, καὶ δεκάτην γῆς ἡμῶν τοῖς Λευίταις· καὶ αὐτοὶ οἱ Λευῖται δεκατοῦντες ἐν πάσαις πόλεσι δουλείας ἡμῶν. Καὶ ἔσται ὁ ἱερεὺς υἱὸς Ἀαρὼν μετὰ τοῦ Λευίτου ἐν τῇ δεκάτῃ τοῦ Λευίτου, καὶ οἱ Λευῖται ἀνοίσουσι τὴν δεκάτην τῆς δεκάδος εἰς οἶκον Θεοῦ ἡμῶν εἰς τὰ γαζοφυλάκια εἰς οἶκον τοῦ Θεοῦ. Ὅτι εἰς τοὺς θησαυροὺς εἰσοίσουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Λευὶ τὰς ἀπαρχὰς τοῦ σίτου, καὶ τοῦ οἴνου, καὶ τοῦ ἐλαίου, καὶ ἐκεῖ σκεύη τὰ ἅγια, καὶ οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ λειτουργοὶ καὶ οἱ πυλωροὶ καὶ οἱ ᾄδοντες· καὶ οὐκ ἐγκαταλείψομεν τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν.

# 21

Καὶ ἐκάθισαν οἱ ἄρχοντες τοῦ λαοῦ ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ οἱ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ ἐβάλοσαν κλήρους ἐνέγκαι ἕνα ἀπὸ τῶν δέκα καθίσαι ἐν Ἰερουσαλὴμ πόλει τῇ ἁγίᾳ, καὶ ἐννέα μέρη ἐν ταῖς πόλεσι. Καὶ εὐλόγησεν ὁ λαὸς τοὺς πάντας ἄνδρας τοὺς ἑκουσιαζομένους καθίσαι ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ οὗτοι οἱ ἄρχοντες τῆς χώρας οἳ ἐκάθισαν ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα· ἐκάθισαν ἀνὴρ ἐν κατασχέσει αὐτοῦ ἐν πόλεσιν αὐτῶν Ἰσραὴλ, οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ Λευῖται, καὶ οἱ Ναθιναοι, καὶ οἱ υἱοὶ δούλων Σαλωμών· Καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐκάθισαν ἀπὸ υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἀπὸ υἱῶν Βενιαμίν· Ἀπὸ υἱῶν Ἰούδα, Ἀθαΐα υἱὸς Ἀζία, υἱὸς Ζαχαρία, υἱὸς

Σαμαρία, υἱὸς Σαφατία, υἱὸς Μαλελεήλ· καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν Φαρὲς, καὶ Μαασία υἱὸς Βαροὺχ, υἱὸς Χαλαζὰ, υἱὸς Ὀζία, υἱὸς Ἀδαΐα, υἱὸς Ἰωαρὶβ, υἱὸς Ζαχαρίου, υἱὸς τοῦ Σηλωνί. Πάντες υἱοὶ Φαρὲς οἱ καθήμενοι ἐν Ἰερουσαλὴμ, τετρακόσιοι ἑξηκονταοκτὼ ἄνδρες δυνάμεως. Καὶ οὗτοι υἱοὶ Βενιαμὶν, Σηλὼ υἱὸς Μεσουλὰμ, υἱὸς Ἰωὰδ, υἱὸς Φαδαΐα, υἱὸς Κωλεΐα, υἱὸς Μαασίου, υἱὸς Ἐθιὴλ, υἱὸς Ἰεσία, καὶ ὀπίσω αὐτοῦ Γηβὲ, Σηλὶ, ἐννακόσιοι εἰκοσιοκτώ. Καὶ Ἰωὴλ υἱὸς Ζεχρὶ ἐπίσκοπος ἐπ' αὐτούς· καὶ Ἰούδα υἱὸς Ἀσανὰ ἀπὸ τῆς πόλεως, δεύτερος. Ἀπὸ τῶν ἱερέων· καὶ Ἰαδία υἱὸς Ἰωαρὶβ, Ἰαχὶν. Σαραία υἱὸς Ἐλχία, υἱὸς Μεσουλὰμ, υἱὸς Σαδδοὺκ, υἱὸς Μαριὼθ, υἱὸς Αἰτὼθ, ἀπέναντι οἴκου τοῦ Θεοῦ. Καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν ποιοῦντες τὸ ἔργον τοῦ οἴκου, ὀκτακόσιοι εἰκοσιδύο· καὶ Ἀδαΐα υἱὸς Ἱεροὰμ, υἱοῦ Φαλαλία, υἱοῦ Ἀμασὶ, υἱὸς Ζαχαρία, υἱὸς Φασσοὺρ, υἱὸς Μελχία, καὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἄρχοντες πατριῶν, διακόσιοι τεσσαρακονταδύο· καὶ Ἀμασία υἱὸς Ἐσδριὴλ, υἱοῦ Μεσαριμὶθ, υἱοῦ Ἐμμὴρ, καὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ δυνατοὶ παρατάξεως, ἑκατὸν εἰκοσιοκτώ· καὶ ἐπίσκοπος Βαδιὴλ υἱὸς τῶν μεγάλων. Καὶ ἀπὸ τῶν Λευιτῶν, Σαμαΐα υἱὸς Ἐσρικὰμ, Ματθανίας υἱὸς Μιχὰ, καὶ Ἰωβὴβ υἱὸς Σαμουΐ, διακόσιοι ὀγδοηκοντατέσσαρες. Καὶ οἱ πυλωροὶ, Ἀκοὺβ, Τελαμὶν, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν, ἑκατὸν ἑβδομηκονταδύο. Καὶ ἐπίσκοπος Λευιτῶν υἱὸς Βανὶ, υἱὸς Οζὶ, υἱὸς Ἀσαβία, υἱὸς Μιχά· ἀπὸ υἱῶν Ἀσὰφ, τῶν ᾀδόντων ἀπέναντι ἔργου οἴκου τοῦ Θεοῦ· ὅτι ἐντολὴ τοῦ βασιλέως εἰς αὐτούς. Καὶ Φαθαΐα υἱὸς Βασηζὰ πρὸς χεῖρα τοῦ βασιλέως εἰς πᾶν χρῆμα τῷ λαῷ, καὶ πρὸς τὰς ἐπαύλεις ἐν ἀγρῷ αὐτῶν· καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἰούδα ἐκάθισαν ἐν Καριαθαρβὸκ, καὶ ἐν Ἰησοὺ, καὶ ἐν Βηρσαβεὲ, καὶ ἐπαύλεις αὐτῶν Λαχὶς καὶ ἀγροὶ αὐτῆς· καὶ παρενεβάλοσαν ἐν Βηρσαβεέ. Καὶ οἱ υἱοὶ Βενιαμὶν ἀπὸ Γαβαὰ Μαχμάς. Καὶ ἀπὸ τῶν Λευιτῶν

μερίδες Ἰούδα τῷ Βενιαμίν.

# 22

Καὶ οὗτοι οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται οἱ ἀναβάντες μετὰ Ζοροβάβελ υἱοῦ Σαλαθιὴλ καὶ Ἰησοῦ· Σαραΐα, Ἱερεμία, Ἔσδρα, Ἀμαρία, Μαλοὺχ, Σεχενία· Οὗτοι οἱ ἄρχοντες τῶν ἱερέων, καὶ ἀδελφοὶ αὐτῶν ἐν ἡμέραις Ἰησοί· Καὶ οἱ Λευῖται, Ἰησοῦ, Βανουὶ, Καδμιὴλ, Σαραβία, Ἰωδαὲ, Ματθανία, ἐπὶ τῶν χειρῶν αὐτὸς, καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν εἰς τὰς ἐφημερίας. Καὶ Ἰησοὺς ἐγέννησε τὸν Ἰωακὶμ, καὶ Ἰωακὶμ ἐγέννησε τὸν Ἐλιασὶβ, καὶ Ἐλιασὶβ τὸν Ἰωδαὲ, καὶ Ἰωδαὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωνάθαν, καὶ Ἰωνάθαν ἐγέννησε τὸν Ἰαδού. Καὶ ἐν ἡμέραις Ἰωακὶμ ἀδελφοὶ αὐτοῦ οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν πατριῶν, τῷ Σαραΐα, Ἀμαρία· τῷ Ἱερεμία, Ἀυανία· Τῷ Ἔσδρᾳ Μεσουλάμ· τῷ Ἀμαρία, Ἰωανάν· τῷ Ἀμαλοὺχ, Ἰωνάθαν· τῷ Σεχενία, Ἰωσήφ· Τῷ Ἀρὲ, Μαννάς· τῷ Μαριὼθ, Ἑλκαΐ· τῷ Ἀδαδαΐ, Ζαχαρία· τῷ Γαναθὼθ, Μεσολάμ· Τῷ Ἀβιὰ, Ζεχρί· τῷ Μιαμὶν, Μααδαί· τῷ Φελετὶ, τῷ βαλγὰς, Σαμουέ· τῷ Σεμία, Ἰωνάθαν· Τῷ Ἰωαρὶβ, Ματθαναΐ τῷ Ἐδίῳ, Ὀζί. Τῷ Σαλαΐ, καλλαΐ· τῷ Ἀμὲκ, Ἀβέδ· Τῷ Ἐλκίᾳ, Ἀσαβιας· τῷ Ἰσδεϊοὺ, Ναθαναήλ Οἱ Λευῖται ἐν ἡμέραις Ἐλιασὶβ, Ἰωαδὰ, καὶ Ἰωὰ, καὶ Ἰωανὰν, καὶ Ἰδούα, γεγραμμένοι ἄρχοντες τῶυ πατριῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς ἐν βασιλείᾳ Δαρείου τοῦ Πέρσου. Υἱοὶ δὲ Λυεὶ ἄρχοντες τῶν πατριῶν γεγραμμένοι ἐπὶ βιβλίῳ λόγων τῶν ἡμερῶν, καὶ ἕως ἡμερῶν Ἰωανὰν υἱοῦ Ἐλισουέ. Καὶ οἱ ἄρχοντες τῶν Λευιτῶν, Ἀσαβία, καὶ Σαραβία, καὶ Ἰησοῦ· καὶ υἱοὶ Καδμιὴλ καὶ ἀδελφοὶ αὐτῶν κατεναντίον αὐτῶν εἰς ὕμνον αἰνεῖν ἐν ἐντολῇ Δαυὶδ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ ἐφημερίαν πρὸς

ἐφημερίαν. Ἐν τῷ συναγαγεῖν με τοὺς πυλωροὺς ἐν ἡμέραις Ἰωακὶμ υἱοῦ Ἰησοῦ, υἱοῦ Ἰωσεδὲκ, καὶ ἐν ἡμέραις Νεεμία, καὶ Ἔσδρας ὁ ἱερεὺς γραμματεύς. Καὶ ἐν ἐγκαινίοις τείχους Ἱερουσαλὴμ ἐζήτησαν τοὺς Λευίτας ἐν τοῖς τόποις αὐτῶν τοῦ ἐνέγκαι αὐτοὺς εἰς Ἱερουσαλὴμ, ποιῆσαι ἐγκαίνια καὶ εὐφροσύνην ἐν θωδαθὰ, καὶ ἐν ᾠδαῖς κυμβαλίζοντες, καὶ ψαλτήρια, καὶ κινύραι. Καὶ συνήχθησαν οἱ υἱοὶ τῶν ᾀδόντων καὶ ἀπὸ τῆς περιχώρου κυκλόθεν εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἀπὸ ἐπαύλεων, καὶ ἀπὸ ἀγρῶν, ὅτι ἐπαύλεις ᾠκοδόμησαν ἑαυτοῖς οἱ ᾄδοντες ἐν Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐκαθαρίσθησαν οἱ ἱερεῖς καὶ οἱ Λευῖται, καὶ ἐκαθάρισαν τὸν λαὸν καὶ τοὺς πυλωροὺς καὶ τὸ τεῖχος. Καὶ ἀνήνεγκαν τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα ἐπάνω τοῦ τείχους· καὶ ἔστησαν δύο περὶ αἰνέσεως μεγάλους, καὶ διῆλθον ἐκ δεξιῶν ἐπάνω τοῦ τειχους τῆς κοπρίας. Καὶ ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτῶν Ὡσαΐα καὶ ἥμισυ ἀρχόντων Ἰούδα, καὶ Ἀζαρίας, καὶ Ἔσδρας, καὶ Μεσολλὰμ, καὶ Ἰούδα, καὶ Βενιαμὶν, καὶ Σαμαΐας, καὶ Ἱερεμία. Καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν ἱερέων ἐν σάλπιγξι, Ζαχαρίας υἱὸς Ἰωνὰθαν, υἱὸς Σαμαΐα, υἱὸς Ματθανία, υἱὸς Μιχαία, υἱὸς Ζακχοὺρ, υἱὸς Ἀσάφ· Καὶ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, Σαμαΐα, καὶ Ὀζιὴλ, Γελὼλ, Ἰαμὰ, Ἀΐα, Ναθαναὴλ, καὶ Ἰούδα, Ανανὶ, τοῦ αἰνεῖν ἐν ᾠδαῖς Δαυὶδ ἀνθρώπου τοῦ Θεοῦ· καὶ Ἔσδρας ὁ γραμματεὺς ἔμπροσθεν αὐτῶν ἐπὶ πύλης, τοῦ αἰνεῖν κατέναντι αὐτῶν· καὶ ἀνέβησαν ἐπὶ κλίμακας πόλεως Δαυὶδ ἐν ἀναβάσει τοῦ τείχους ἐπάνωθεν τοῦ οἴκου Δαυὶδ, καὶ ἕως τῆς πύλης τοῦ ὕδατος Ἐφραὶμ, καὶ ἐπὶ τὴν πύλην ἰχθυρὰν, καὶ πύργῳ Ἀναμεὴλ, καὶ ἕως πύλης τῆς προβατικῆς. Καὶ ἠκούσθησαν οἱ ᾄδοντες, καὶ ἐπεσκέπησαν. Καὶ ἔθυσαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θυσιάσματα μεγάλα, καὶ ηὐφράνθησαν, ὅτι ὁ Θεὸς ηὔφρανεν αὐτοὺς μεγάλως· καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ηὐφράνθησαν, καὶ ἠκούσθη ἡ

εὐφροσύνη ἐν Ἰερουσαλὴμ ἀπὸ μακρόθεν. Καὶ κατέστησαν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἄνδρας ἐπὶ τῶν γαζοφυλακίων, τοῖς θησαυροῖς, ταῖς ἀπαρχαῖς, καὶ ταῖς δεκάταις, καὶ τοῖς συνηγμένοις ἐν αὐτοῖς ἄρχουσι τῶν πόλεων, μερίδας τοῖς ἱερεῦσι καὶ τοῖς Λευίταις, ὅτι εὐφροσύνη ἐν Ἰούδα ἐπὶ τοὺς ἱερεῖς, καὶ ἐπὶ τοὺς Λευίτας τοὺς ἑστῶτας. Καὶ ἐφύλαξαν φυλακὰς Θεοῦ αὐτῶν, καὶ φυλακὰς τοῦ καθαρισμοῦ, καὶ τοὺς ᾄδοντας, καὶ τοὺς πυλωρούς, ὡς ἐντολαὶ Δαυὶδ καὶ Σαλωμὼν υἱοῦ αὐτοῦ. Ὅτι ἐν ἡμέραις Δαυὶδ Ἀσὰφ ἀπ’ ἀρχῆς πρῶτος τῶν ᾀδόντων, καὶ ὕμνον καὶ αἴνεσιν τῷ Θεῷ, καὶ πᾶς Ἰσραὴλ ἐν ἡμέραις Ζοροβάβελ καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις Νεεμίου, διδόντες μερίδας τῶν ᾀδόντων καὶ τῶν πυλωρῶν, λόγον ἡμέρας ἐν ἡμέρᾳ αὐτοῦ, καὶ ἁγιάζοντες τοῖς Λευίταις, καὶ οἱ Λευῖται ἁγιάζοντες τοῖς υἱοῖς Ἀαρών.

# 23

Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀνεγνώσθη ἐν βιβλίῳ Μωυσῆ ἐν ὠσὶ τοῦ λαοῦ· καὶ εὑρέθη γεγραμμένον ἐν αὐτῷ, ὅπως μὴ εἰσέλθωσιν Ἀμμανῖται καὶ Μωαβῖται ἐν ἐκκλησίᾳ Θεοῦ ἕως αἰῶνος, ὅτι οὐ συνήντησαν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ ἐν ἄρτῳ καὶ ὕδατι, καὶ ἐμισθώσαντο ἐπ’ αὐτὸν τὸν Βαλαὰμ καταράσασθαι· καὶ ἐπέστρεψεν ὁ Θεὸς ἡμῶν τὴν κατάραν εἰς εὐλογίαν. Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσαν τὸν νόμον, καὶ ἐχωρίσθησαν πᾶς ἐπίμικτος ἐν Ἰσραήλ. Καὶ πρὸ τούτου Ἐλιασὶβ ὁ ἱερεὺς οἰκῶν ἐν γαζοφυλακίῳ οἴκου Θεοῦ ἡμῶν, ἐγγιῶν Τωβίᾳ. Καὶ ἐποίησεν ἑαυτῷ γαζοφυλάκιον μέγα καὶ ἐκεῖ ἦσαν πρότερον διδόντες τὴν μαναὰ καὶ τὸν λίβανον καὶ τὰ σκεύη, καὶ τὴν δεκάτην τοῦ σίτου καὶ τοῦ οἴνου καὶ τοῦ ἐλαίου, ἐντολὴν τῶν Λευιτῶν καὶ

τῶν ᾀδόντων καὶ τῶν πυλωρῶν, καὶ ἀπαρχὰς τῶν ἱερέων. Καὶ ἐν παντὶ τούτῳ οὐκ ἤμην ἐν Ἰερουσαλήμ· ὅτι ἐν ἔτει τριακοστῷ καὶ δευτέρῳ τοῦ Ἀρθασασθὰ βασιλέως Βαβυλῶνος ἦλθον πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ μετὰ τὸ τέλος τῶν ἡμερῶν ᾐτησάμην παρὰ τοῦ βασιλέως, καὶ ἦλθον εἰς Ἰερουσαλήμ· καὶ συνῆκα ἐν τῇ πονηρίᾳ ᾗ ἐποίησεν Ἐλιασὶβ τῷ Τωβίᾳ, ποιῆσαι αὐτῷ γαζοφυλάκιον ἐν αὐλῇ οἴκου τοῦ Θεοῦ. Καὶ πονηρόν μοι ἐφάνη σφόδρα· καὶ ἔῤῥιψα πάντα τὰ σκεύη οἴκου Τωβία ἔξω ἀπὸ τοῦ γαζοφυλακίου. Καὶ εἶπα, καὶ ἐκαθάρισαν τὰ γαζοφυλάκια· καὶ ἐπέστρεψα ἐκεῖ σκεύη οἴκου τοῦ Θεοῦ, τὴν μαναὰ καὶ τὸν λίβανον. Καὶ ἔγνων ὅτι μερίδες τῶν Λευιτῶν οὐκ ἐδόθησαν· καὶ ἐφύγοσαν ἀνὴρ εἰς ἀγρὸν αὐτοῦ, οἱ Λευῖται καὶ οἱ ᾄδοντες ποιοῦντες τὸ ἔργον. Καὶ ἐμαχεσάμην τοῖς στρατηγοῖς, καὶ εἶπα, διὰ τί ἐγκατελείφθη ὁ οἶκος τοῦ Θεοῦ; καὶ συνήγαγον αὐτοὺς, καὶ ἔστησα αὐτοὺς ἐπὶ τῇ στάσει αὐτῶν. Καὶ πᾶς Ἰούδα ἤνεγκαν δεκάτην τοῦ πυροῦ καὶ τοῦ οἴνου καὶ τοῦ ἐλαίου εἰς τοὺς θησαυροὺς ἐπὶ χεῖρα Σελεμία τοῦ ἱερέως, καὶ Σαδὼκ τοῦ γραμματέως, καὶ Φαδαΐα ἀπὸ τῶν Λευιτῶν· καὶ ἐπὶ χεῖρα αὐτῶν Ἀνὰν υἱὸς Ζακχοὺρ, υἱὸς Ματθανίου, ὅτι πιστοὶ ἐλογίσθησαν, ἐπ᾽ αὐτοὺς μερίζειν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν. Μνήσθητί μου ὁ Θεὸς ἐν ταὐτῇ, καὶ μὴ ἐξαλειφθήτω ἔλεός μου ὃ ἐποίησα ἐν οἴκῳ Κυρίου τοῦ Θεοῦ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις εἶδον ἐν Ἰούδα πατοῦντας ληνοὺς ἐν τῷ σαββάτῳ, καὶ φέροντας δράγματα, καὶ ἐπιγεμίζοντας ἐπὶ τοὺς ὄνους καὶ οἶνον καὶ σταφυλὴν καὶ σῦκα καὶ πᾶν βάσταγμα, καὶ φέροντας εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐν ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου· καὶ ἐπεμαρτυράμην ἐν ἡμέρᾳ πράσεως αὐτῶν. Καὶ ἐκάθισαν ἐν αὐτῇ φέροντες ἰχθὺν, καὶ πᾶσαν πρᾶσιν πωλοῦντες τῷ σαββάτῳ τοῖς υἱοῖς Ἰούδα καὶ ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐμαχεσάμην τοῖς υἱοῖς Ἰούδα τοῖς ἐλευθέροις, καὶ εἶπα αὐτοῖς, τίς ὁ λόγος οὗτος

ὁ πονηρὸς, ὃν ὑμεῖς ποιεῖτε, καὶ βεβηλοῦτε τὴν ἡμέραν τοῦ σαββάτου; Οὐχὶ οὕτως ἐποίησαν οἱ πατέρες ὑμῶν, καὶ ἤνεγκεν ἐπ' αὐτοὺς ὁ Θεὸς ἡμῶν καὶ ἐφ' ἡμᾶς πάντα τὰ κακὰ ταῦτα καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην; καὶ ὑμεῖς προστίθετε ὀργὴν ἐπὶ Ἰσραὴλ βεβηλῶσαι τὸ σάββατον; Καὶ ἐγένετο ἡνίκα κατέστησαν πύλαι ἐν Ἰερουσαλὴμ πρὸ τοῦ σαββάτου, καὶ εἶπα, καὶ ἔκλεισαν τὰς πύλας· καὶ εἶπα, ὥστε μὴ ἀνοιγῆναι αὐτὰς ἕως ὀπίσω τοῦ σαββάτου· καὶ ἐκ τῶν παιδαρίων μου ἔστησα ἐπὶ τὰς πύλας, ὥστε μὴ αἴρειν βαστάγματα ἐν ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου. Καὶ ηὐλίσθησαν πάντες, καὶ ἐποίησαν πρᾶσιν ἔξω Ἰερουσαλὴμ ἅπαξ καὶ δίς. Καὶ ἐπεμαρτυράμην ἐν αὐτοῖς, καὶ εἶπα πρὸς αὐτοὺς, διὰ τί ὑμεῖς αὐλίζεσθε ἀπέναντι τοῦ τείχους; ἐὰν δευτερώσητε, ἐκτενῶ χεῖρά μου ἐν ὑμῖν· ἀπὸ τοῦ καιροῦ ἐκείνου οὐκ ἦλθοσαν ἐν σαββάτῳ. Καὶ εἶπα τοῖς Λευίταις, οἳ ἦσαν καθαριζόμενοι, καὶ ἐρχόμενοι φυλάσσοντες τὰς πύλας, ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τοῦ σαββάτου. Πρὸς ταῦτα μνήσθητί μου ὁ Θεὸς, καὶ φεῖσαί μου κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους σου. Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις εἶδον τοὺς Ἰουδαίους οἳ ἐκάθισαν γυναῖκας Ἀζωτίας, Ἀμμανίτιδας, Μωαβίτιδας· καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἥμισυ λαλοῦντες Ἀζωτιστὶ, καὶ οὐκ εἰσὶν ἐπιγινώσκοντες λαλεῖν Ἰουδαϊστί. Καὶ ἐμαχεσάμην μετ' αὐτῶν, καὶ καταρασάμην αὐτούς· καὶ ἐπάταξα ἐν αὐτοῖς ἄνδρας, καὶ ἐμαδάρωσα αὐτοὺς, καὶ ὤρκισα αὐτοὺς ἐν τῷ Θεῷ, ἐὰν δῶτε τὰς θυγατέρας ὑμῶν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, καὶ ἐὰν λάβητε ἀπὸ τῶν θυγατέρων αὐτῶν τοῖς υἱοῖς ὑμῶν. Οὐχ οὕτως ἥμαρτε Σαλωμὼν βασιλεὺς Ἰσραήλ; καὶ ἐν ἔθνεσι πολλοῖς οὐκ ἦν βασιλεὺς ὅμοιος αὐτῷ, καὶ ἀγαπώμενος τῷ Θεῷ ἦν, καὶ ἔδωκεν αὐτὸν ὁ Θεὸς εἰς βασιλέα ἐπὶ πάντα Ἰσραὴλ, καὶ τοῦτον ἐξέκλιναν αἱ γυναῖκες αἱ ἀλλότριαι. Καὶ ὑμῶν μὴ ἀκουσώμεθα ποιῆσαι πᾶσαν πονηρίαν ταύτην, ἀσυνθετῆσαι ἐν τῷ

Θεῷ ἡμῶν, καθίσαι γυναῖκας ἀλλοτρίας. Καὶ ἀπὸ υἱῶν Ἰωαδὰ τοῦ Ἐλισοὺβ τοῦ ἱερέως τοῦ μεγάλου νυμφίου τοῦ Σαναβαλλὰτ τοῦ Οὐρανίτου, καὶ ἐξέβρασα αὐτὸν ἀπ’ ἐμοῦ. Μνήσθητι αὐτοῖς ὁ Θεὸς ἐπὶ ἀλχιστείᾳ τῆς ἱερατείας, καὶ διαθήκῃ τῆς ἱερατείας, καὶ τοὺς Λευίτας. Καὶ ἐκαθάρισα αὐτοὺς ἀπὸ πάσης ἀλλοτριώσεως, καὶ ἔστησα ἐφημερίας τοῖς ἱερεῦσι καὶ τοῖς Λευίταις, ἀνὴρ ὡς τὸ ἔργον αὐτοῦ. Καὶ τὸ δῶρον τῶν ξυλοφόρων ἐν καιροῖς ἀπὸ χρόνων, καὶ ἐν τοῖς βακχουρίοις. Μνήσθητί μου ὁ Θεὸς ἡμῶν εἰς ἀγαθωσύνην.

# ΖΑΧΑΡΙΑΣ

## 1

Ἐν τῷ ὀγδόῳ μηνὶ, ἔτους δευτέρου ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδδὼ τὸν προφήτην, λέγων, Ὠργίσθη Κύριος ἐπὶ τοὺς πατέρας ὑμῶν ὀργὴν μεγάλην· καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοῦς, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἐπιστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει Κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει Κύριος τῶν δυνάμεων. Καὶ μὴ γίνεσθε καθὼς οἱ πατέρες ὑμῶν, οἷς ἐνεκάλεσαν αὐτοῖς οἱ προφῆται ἔμπροσθεν λέγοντες, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἀποστρέψατε ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν τῶν πονηρῶν· καὶ οὐκ εἰσήκουσαν, καὶ οὐ προσέσχον τοῦ εἰσακοῦσαί μου, λέγει Κύριος. Οἱ πατέρες ὑμῶν ποῦ εἰσι καὶ οἱ προφῆται; μὴ τὸν αἰῶνα ζήσονται; Πλὴν τοὺς λόγους μου καὶ τὰ νόμιμά μου δέχεσθε, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ἐν πνεύματί μου τοῖς δούλοις μου τοῖς προφήταις, οἳ κατελάβοσαν τοὺς πατέρας ὑμῶν· καὶ ἀπεκρίθησαν, καὶ εἶπαν, καθὼς παρατέτακται Κύριος παντοκράτωρ τοῦ ποιῆσαι ἡμῖν κατὰ τὰς ὁδοὺς ἡμῶν καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα ἡμῶν, οὕτως ἐποίησεν ἡμῖν. Τῇ τετράδι καὶ

εἰκάδι, τῷ ἑνδεκάτῳ μηνὶ, οὗτός ἐστιν ὁ μὴν Σαβὰτ, ἐν τῷ δευτέρῳ ἔτει, ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδδὼ τὸν προφήτην, λέγων, Ἑώρακα τὴν νύκτα, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ ἵππον πυῤῥὸν, καὶ οὗτος εἱστήκει ἀναμέσον τῶν ὀρέων τῶν κατασκίων, καὶ ὀπίσω αὐτοῦ ἵπποι πυῤῥοὶ, καὶ ψαροὶ, καὶ ποικίλοι, καὶ λευκοί. Καὶ εἶπα, τί οὗτοι κύριε; καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, ἐγὼ δείξω σοι τί ἐστι ταῦτα. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἀνὴρ ὁ ἐφεστηκὼς ἀναμέσον τῶν ὀρέων, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, οὗτοί εἰσιν οὓς ἐξαπέστειλε Κύριος, περιοδεῦσαι τὴν γῆν· καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ ἀγγέλῳ Κυρίου τῷ ἐφεστῶτι ἀναμέσον τῶν ὀρέων, καὶ εἶπον, περιωδεύσαμεν πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ πᾶσα ἡ γῆ κατοικεῖται, καὶ ἡσυχάζει. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος Κυρίου, καὶ εἶπε, Κύριε παντοκράτωρ ἕως τίνος οὐ μὴ ἐλεήσῃς τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, ἃς ὑπερεῖδες, τοῦτο ἑβδομηκοστὸν ἔτος; Καὶ ἀπεκρίθη Κύριος παντοκράτωρ τῷ ἀγγέλῳ λαλοῦντι ἐν ἐμοὶ, ῥήματα καλὰ καὶ λόγους παρακλητικούς. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, ἀνάκραγε λέγων, Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἐζήλωκα τὴν Ἰερουσαλὴμ καὶ τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, καὶ ὀργὴν μεγάλην ἐγὼ ὀργίζομαι ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ συνεπιτιθέμενα, ἀνθ’ ὧν μὲν ἐγὼ ὠργίσθην ὀλίγα, αὐτοὶ δὲ συνεπέθεντο εἰς κακά. Διατοῦτο τάδε λέγει Κύριος, ἐπιστρέψω ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ ἐν οἰκτιρμῷ, καὶ ὁ οἶκός μου ἀνοικοδομηθήσεται ἐν αὐτῇ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ μέτρον ἐκταθήσεται ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ ἔτι· καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, ἔτι ἀνάκραγε λέγων, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἔτι διαχυθήσονται πόλεις ἐν ἀγαθοῖς, καὶ ἐλεήσει Κύριος ἔτι τὴν Σιὼν, καὶ αἱρετιεῖ τὴν Ἰερουσαλήμ.

# 2

Καὶ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τέσσαρα κέρατα. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, τί ἐστι ταῦτα κύριε; καὶ εἶπε πρὸς μὲ, ταῦτα τὰ κέρατα τὰ διασκορπίσαντα τὸν Ἰούδαν, καὶ τὸν Ἰσραὴλ, καὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἔδειξέ μοι Κύριος τέσσαρας τέκτονας. Καὶ εἶπα, τί οὗτοι ἔρχονται ποιῆσαι; καὶ εἶπε ταῦτα τὰ κέρατα τὰ διασκορπίσαντα τὸν Ἰούδα καὶ τὸν Ἰσραὴλ κατέαξαν, καὶ οὐδεὶς αὐτῶν ᾖρε κεφαλήν· καὶ ἐξήλθοσαν οὗτοι τοῦ ὀξῦναι αὐτὰ εἰς χεῖρας αὐτῶν, τὰ τέσσαρα κέρατα, τὰ ἔθνη τὰ ἐπαιρόμενα κέρας ἐπὶ τὴν γῆν Κυρίου, τοῦ διασκορπίσαι αὐτήν. Καὶ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ σχοινίον γεωμετρικόν. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτόν, ποῦ σὺ πορεύῃ; καὶ εἶπε πρὸς μὲ, διαμετρῆσαι τὴν Ἰερουσαλὴμ, τοῦ ἰδεῖν πηλίκον τὸ πλάτος αὐτῆς ἐστι, καὶ πηλίκον τὸ μῆκος. Καὶ ἰδοὺ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ εἱστήκει, καὶ ἄγγελος ἕτερος ἐξεπορεύετο εἰς συνάντησιν αὐτῷ, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, λέγων, δράμε, καὶ λάλησον πρὸς τὸν νεανίαν ἐκεῖνον, λέγων, Κατακάρπως κατοικηθήσεται Ἰερουσαλὴμ ἀπὸ πλήθους ἀνθρώπων καὶ κτηνῶν ἐν μέσῳ αὐτῆς· καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτῇ, λέγει Κύριος, τεῖχος πυρὸς κυκλόθεν, καὶ εἰς δόξαν ἔσομαι ἐν μέσῳ αὐτῆς. Ὢ ὢ φεύγετε ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, λέγει Κύριος· διότι ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων τοῦ οὐρανοῦ συνάξω ὑμᾶς, λέγει Κύριος, εἰς Σιὼν, ἀνασώζεσθε οἱ κατοικοῦντες θυγατέρα Βαβυλῶνος. Διότι τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ὀπίσω δόξης ἀπέσταλκέ με ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ σκυλεύσαντα ὑμᾶς, διότι ὁ ἁπτόμενος ὑμῶν ὡς ὁ ἁπτόμενος τῆς κόρης τοῦ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ

ἐπιφέρω τὴν χεῖρά μου ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἔσονται σκῦλα τοῖς δουλεύουσιν αὐτοῖς, καὶ γνώσεσθε ὅτι Κύριος παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με. Τέρπου καὶ εὐφραίνου θύγατερ Σιὼν, διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἔρχομαι, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ σου, λέγει Κύριος. Καὶ καταφεύξονται ἔθνη πολλὰ ἐπὶ τὸν Κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔσονται αὐτῷ εἰς λαὸν, καὶ κατασκηνώσουσιν ἐν μέσῳ σου, καὶ ἐπιγνώσῃ ὅτι Κύριος παντοκράτωρ ἐξαπέσταλκέ με πρὸς σέ. Καὶ κατακληρονομήσει Κύριος τὸν Ἰούδαν τὴν μερίδα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν ἁγίαν· καὶ αἱρετιεῖ ἔτι τὴν Ἱερουσαλήμ. Εὐλαβείσθω πᾶσα σὰρξ ἀπὸ προσώπου Κυρίου, ὅτι ἐξεγήγερται ἐκ νεφελῶν ἁγίων αὐτοῦ.

# 3

Καὶ ἔδειξέ μοι Κύριος τὸν Ἰησοῦν τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, ἑστῶτα πρὸ προσώπου ἀγγέλου Κυρίου, καὶ ὁ διάβολος εἱστήκει ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, τοῦ ἀντικεῖσθαι αὐτῷ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς τὸν διάβολον, Ἐπιτιμήσαι Κύριος ἐν σοὶ διάβολε, καὶ ἐπιτιμήσαι Κύριος ἐν σοὶ ὁ ἐκλεξάμενος τὴν Ἱερουσαλήμ· οὐκ ἰδοὺ τοῦτο ὡς δαλὸς ἐξεσπασμένος ἐκ πυρός; Καὶ Ἰησοῦς ἦν ἐνδεδυμένος ἱμάτια ῥυπαρὰ, καὶ εἱστήκει πρὸ προσώπου τοῦ ἀγγέλου. Καὶ ἀπεκρίθη καὶ εἶπε πρὸς τοὺς ἑστηκότας πρὸ προσώπου αὐτοῦ, λέγων, ἀφέλετε τὰ ἱμάτια τὰ ῥυπαρὰ ἀπ’ αὐτοῦ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, ἰδοὺ ἀφῄρηκα τὰς ἀνομίας σου· καὶ ἐνδύσατε αὐτὸν ποδήρη, καὶ ἐπίθετε κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ· καὶ ἐπέθηκαν κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ περιέβαλον αὐτὸν ἱμάτια· καὶ ὁ ἄγγελος Κυρίου εἱστήκει. Καὶ διεμαρτύρατο ὁ ἄγγελος Κυρίου πρὸς Ἰησοῦν, λέγων, τάδε λέγει Κύριος

παντοκράτωρ, Ἐὰν ταῖς ὁδοῖς μου πορεύῃ, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί μου φυλάξῃ, καὶ σὺ διακρινεῖς τὸν οἶκόν μου· καὶ ἐὰν διαφυλάσσῃς τὴν αὐλήν μου, καὶ δώσω σοι ἀναστρεφομένους ἐν μέσῳ τῶν ἑστηκότων τούτων. Ἄκουε δὴ Ἰησοῦ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, σὺ καὶ οἱ πλησίον σου οἱ καθήμενοι πρὸ προσώπου, διότι ἄνδρες τερατοσκόποι εἰσὶ, διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἄγω τὸν δοῦλόν μου Ἀνατολήν. Διότι ὁ λίθος ὃν ἔδωκα πρὸ προσώπου τοῦ Ἰησοῦ, ἐπὶ τὸν λίθον τὸν ἕνα ἑπτὰ ὀφθαλμοί εἰσιν· ἰδοὺ ἐγὼ ὀρύσσω βόθρον, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ ψηλαφήσω πᾶσαν τὴν ἀδικίαν τῆς γῆς ἐκείνης ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, συγκαλέσετε ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ ὑποκάτω ἀμπέλου, καὶ ὑποκάτω συκῆς.

# 4

Καὶ ἐπέστρεψεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ ἐξήγειρέ με ὃν τρόπον ὅταν ἐξεγερθῇ ἄνθρωπος ἐξ ὕπνου αὐτοῦ. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, τί σὺ βλέπεις; καὶ εἶπα, ἑώρακα, καὶ ἰδοὺ λυχνία χρυσῆ ὅλη, καὶ τὸ λαμπάδιον ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ λύχνοι ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ ἐπαρυστρίδες τοῖς λύχνοις τοῖς ἐπάνω αὐτῆς, καὶ δύο ἐλαῖαι ἐπάνω αὐτῆς, μία ἐκ δεξιῶν τοῦ λαμπαδίου αὐτῆς, καὶ μία ἐξ εὐωνύμων. Καὶ ἐπηρώτησα, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, λέγων, τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, λέγων, οὐ γινώσκεις τί ἐστι ταῦτα; καὶ εἶπα, οὐχὶ κύριε. Καὶ ἀπεκρίθη, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, λέγων, οὗτος ὁ λόγος Κυρίου πρὸς Ζοροβάβελ, λέγων, Οὐκ ἐν δυνάμει μεγάλῃ, οὐδὲ ἐν ἰσχύϊ, ἀλλὰ ἐν πνεύματί μου, λέγει Κύριος

παντοκράτωρ. Τίς εἶ σὺ τὸ ὄρος τὸ μέγα τὸ πρὸ προσώπου Ζοροβάβελ τοῦ κατορθῶσαι; καὶ ἐξοίσω τὸν λίθον τῆς κληρονομίας, ἰσότητα χάριτος χάριτα αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, αἱ χεῖρες Ζοροβάβελ ἐθεμελίωσαν τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἐπιτελέσουσιν αὐτόν· καὶ ἐπιγνώσῃ διότι Κύριος παντοκράτωρ ἐξαπέσταλκέ με πρὸς σέ. Διότι τίς ἐξουδένωσεν εἰς ἡμέρας μικράς; καὶ χαροῦνται, καὶ ὄψονται τὸν λίθον τὸν κασσιτέρινον ἐν χειρὶ Ζοροβάβελ· ἑπτὰ οὗτοι ὀφθαλμοί εἰσιν οἱ ἐπιβλέποντες ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀπεκρίθην, καὶ εἶπα πρὸς αὐτὸν, τί αἱ δύο ἐλαῖαι αὗται, αἱ ἐκ δεξιῶν τῆς λυχνίας καὶ ἐξ εὐωνύμων; Καὶ ἐπηρώτησα ἐκ δευτέρου, καὶ εἶπα πρὸς αὐτὸν, τί οἱ δύο κλάδοι τῶν ἐλαιῶν οἱ ἐν ταῖς χερσὶ τῶν δύο μυξωτήρων τῶν χρυσῶν τῶν ἐπιχεόντων, καὶ ἐπαναγόντων τὰς ἐπαρυστρίδας τὰς χρυσᾶς; Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, οὐκ οἶδας τί ἐστι ταῦτα; καὶ εἶπα, οὐχὶ κύριε. Καὶ εἶπεν, οὗτοι οἱ δύο υἱοὶ τῆς πιότητος παρεστήκασι Κυρίῳ πάσης τῆς γῆς.

# 5

Καὶ ἐπέστρεψα, καὶ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ δρέπανον πετόμενον. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, τί σὺ βλέπεις; καὶ εἶπα, ἐγὼ ὁρῶ δρέπανον πετόμενον μήκους πήχεων εἴκοσι, καὶ πλάτους πήχεων δέκα. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Αὕτη ἡ ἀρὰ ἡ ἐκπορευομένη ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς· διότι πᾶς ὁ κλέπτης ἐκ τούτου ἕως θανάτου ἐκδικηθήσεται, καὶ πᾶς ὁ ἐπίορκος ἐκ τούτου ἐκδικηθήσεται. Καὶ ἐξοίσω αὐτὸ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὸν οἶκον τοῦ κλέπτου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ

ὀμνύοντος τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, καὶ καταλύσει ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ συντελέσει αὐτὸν, καὶ τὰ ξύλα αὐτοῦ, καὶ τοὺς λίθους αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ ἴδε τὸ ἐκπορευόμενον τοῦτο. Καὶ εἶπα, τί ἐστι; καὶ εἶπε, τοῦτο τὸ μέτρον τὸ ἐκπορευόμενον· καὶ εἶπεν, αὕτη ἡ ἀδικία αὐτῶν ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Καὶ ἰδοὺ τάλαντον μολίβδου ἐξαιρόμενον· καὶ ἰδοὺ γυνὴ μία ἐκάθητο ἐν μέσῳ τοῦ μέτρου. Καὶ εἶπεν, αὕτη ἐστὶν ἡ ἀνομία· καὶ ἔῤῥιψεν αὐτὴν εἰς μέσον τοῦ μέτρου, καὶ ἔῤῥιψε τὸν λίθον τοῦ μολίβδου εἰς τὸ στόμα αὐτῆς. Καὶ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ δύο γυναῖκες ἐκπορευόμεναι, καὶ πνεῦμα ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτῶν, καὶ αὗται εἶχον πτέρυγας ἔποπος· καὶ ἀνέλαβον τὸ μέτρον ἀναμέσον τῆς γῆς, καὶ ἀναμέσον τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, ποῦ αὗται ἀποφέρουσι τὸ μέτρον; Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, οἰκοδομῆσαι αὐτῷ οἰκίαν ἐν γῇ Βαβυλῶνος, καὶ ἑτοιμάσαι, καὶ θήσουσιν αὐτὸ ἐκεῖ ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ.

# 6

Καὶ ἐπέστρεψα, καὶ ᾖρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τέσσαρα ἅρματα ἐκπορευόμενα ἐκ μέσου δύο ὀρέων, καὶ τὰ ὄρη ἦν ὄρη χαλκᾶ. Ἐν τῷ ἅρματι τῷ πρώτῳ ἵπποι πυῤῥοὶ, καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ δευτέρῳ ἵπποι μέλανες, καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τρίτῳ ἵπποι λευκοὶ, καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τετάρτῳ ἵπποι ποικίλοι ψαροί. Καὶ ἀπεκρίθην, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ εἶπε, ταῦτά ἐστιν οἱ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρανοῦ, ἐκπορεύονται

παραστῆναι τῷ Κυρίῳ πάσης τῆς γῆς. Ἐν ᾧ ἦσαν ἵπποι οἱ μέλανες, ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Βοῤῥᾶ, καὶ οἱ λευκοὶ ἐξεπορεύοντο κατόπισθεν αὐτῶν, καὶ οἱ ποικίλοι ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Νότου, καὶ οἱ ψαροὶ ἐξεπορεύοντο, καὶ ἐπέβλεπον τοῦ πορεύεσθαι τοῦ περιοδεῦσαι τὴν γῆν, καὶ εἶπε, πορεύεσθε, καὶ περιοδεύσατε τὴν γῆν· καὶ περιώδευσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀνεβόησε, καὶ ἐλάλησε πρὸς μὲ, λέγων, ἰδοὺ οἱ ἐκπορευόμενοι ἐπὶ γῆν Βοῤῥᾶ, καὶ ἀνέπαυσαν τὸν θυμόν μου ἐν γῇ βοῤῥᾶ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, λάβε τὰ ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας παρὰ τῶν ἀρχόντων, καὶ παρὰ τῶν χρησίμων αὐτῆς, καὶ παρὰ τῶν ἐπεγνωκότων αὐτὴν, καὶ εἰσελεύσῃ σὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τὸν οἶκον Ἰωσίου τοῦ Σοφονίου τοῦ ἥκοντος ἐκ Βαβυλῶνος, καὶ λήψῃ ἀργύριον καὶ χρυσίον, καὶ ποιήσεις στεφάνους, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὴν κεφαλὴν Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ τοῦ ἱερέως τοῦ μεγάλου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, Ἰδοὺ ἀνὴρ, Ἀνατολὴ ὄνομα αὐτῷ· καὶ ὑποκάτωθεν αὐτοῦ ἀνατελεῖ, καὶ οἰκοδομήσει τὸν οἶκον Κυρίου, καὶ αὐτὸς λήψεται ἀρετὴν, καὶ καθιεῖται, καὶ κατάρξει ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ ἔσται ἱερεὺς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, καὶ βουλὴ εἰρηνικὴ ἔσται ἀναμέσον ἀμφοτέρων· Ὁ δὲ στέφανος ἔσται τοῖς ὑπομένουσι, καὶ τοῖς χρησίμοις αὐτῆς, καὶ τοῖς ἐπεγνωκόσιν αὐτὴν, καὶ εἰς χάριτα υἱοῦ Σοφονίου, καὶ εἰς ψαλμὸν ἐν οἴκῳ Κυρίου. Καὶ οἱ μακρὰν ἀπ’ αὐτῶν ἥξουσι, καὶ οἰκοδομήσουσιν ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου, καὶ γνώσεσθε διότι Κύριος παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς· καὶ ἔσται, ἐὰν εἰσακούοντες εἰσακούσητε τῆς φωνῆς Κυρίου τοῦ Θεοῦ ὑμῶν.

# 7

Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν τετράδι τοῦ μηνὸς τοῦ ἐννάτου, ὅς ἐστι Χασελεύ. Καὶ ἐξαπέστειλεν εἰς Βαιθὴλ, Σαρασὰρ καὶ Ἀρβεσεὲρ ὁ βασιλεὺς, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ, καὶ ἐξιλάσασθαι τὸν Κύριον, λέγων πρὸς τοὺς ἱερεῖς τοὺς ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου παντοκράτορος, καὶ πρὸς τοὺς προφήτας, λέγων, εἰσελήλυθεν ὧδε ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ τὸ ἁγίασμα, καθότι ἐποίησεν ἤδη ἱκανὰ ἔτη. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου τῶν δυνάμεων πρὸς ἐμὲ, λέγων, εἰπὸν πρὸς ἅπαντα τὸν λαὸν τῆς γῆς, καὶ πρὸς τοὺς ἱερεῖς, λέγων, ἐὰν νηστεύσητε ἢ κόψησθε ἐν ταῖς πέμπταις ἢ ἐν ταῖς ἑβδόμαις, καὶ ἰδοὺ ἑβδομήκοντα ἔτη, μὴ νηστείαν νενηστεύκατέ μοι; Καὶ ἐὰν φάγητε ἢ πίητε, οὐκ ὑμεῖς ἔσθετε καὶ πίνετε; Οὐχ οὗτοι οἱ λόγοι, οὓς ἐλάλησε Κύριος ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν, ὅτε ἦν Ἰερουσαλὴμ κατοικουμένη, καὶ εὐθηνοῦσα, καὶ αἱ πόλεις κυκλόθεν αὐτῆς, καὶ ἡ ὀρεινὴ καὶ ἡ πεδινὴ κατῳκεῖτο; Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν, λέγων, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, Κρίμα δίκαιον κρίνετε, καὶ ἔλεος καὶ οἰκτιρμὸν ποιεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ χήραν, καὶ ὀρφανὸν, καὶ προσήλυτον, καὶ πένητα μὴ καταδυναστεύετε, καὶ κακίαν ἕκαστος τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ μὴ μνησικακείτω ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν. Καὶ ἠπείθησαν τοῦ προσέχειν, καὶ ἔδωκαν νῶτον παραφρονοῦντα, καὶ τὰ ὦτα αὐτῶν ἐβάρυναν τοῦ μὴ εἰσακούειν. Καὶ τὴν καρδίαν αὐτῶν ἔταξαν ἀπειθῆ τοῦ μὴ εἰσακούειν τοῦ νόμου μου, καὶ τοὺς λόγους, οὓς ἐξαπέστειλε Κύριος παντοκράτωρ ἐν πνεύματι αὐτοῦ ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν· καὶ ἐγένετο ὀργὴ μεγάλη παρὰ Κυρίου παντοκράτορος. Καὶ ἔσται, ὃν τρόπον εἶπε, καὶ οὐκ εἰσήκουσαν, οὕτως κεκράξονται, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσω, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἐκβαλῶ αὐτοὺς εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἃ

οὐκ ἔγνωσαν· καὶ ἡ γῆ ἀφανισθήσεται κατόπισθεν αὐτῶν ἐκ διοδεύοντος καὶ ἐξ ἀναστρέφοντος· καὶ ἔταξαν γῆν ἐκλεκτὴν εἰς ἀφανισμόν.

# 8

Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου παντοκράτορος, λέγων, τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἐζήλωκα τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, καὶ θυμῷ μεγάλῳ ἐζήλωκα αὐτήν. Τάδε λέγει Κύριος, ἐπιστρέψω ἐπὶ Σιὼν, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἰερουσαλὴμ, καὶ κληθήσεται ἡ Ἰερουσαλὴμ πόλις ἀληθινὴ, καὶ τὸ ὄρος Κυρίου παντοκράτορος, ὄρος ἅγιον. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἔτι καθήσονται πρεσβύτεροι καὶ πρεσβύτεραι ἐν ταῖς πλατείαις Ἰερουσαλὴμ, ἕκαστος τὴν ῥάβδον αὐτοῦ ἔχων ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, ἀπὸ πλήθους ἡμερῶν. Καὶ αἱ πλατεῖαι τῆς πόλεως πλησθήσονται παιδαρίων καὶ κορασίων παιζόντων ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, εἰ ἀδυνατήσει ἐνώπιον τῶν καταλοίπων τοῦ λαοῦ τούτου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, μὴ καὶ ἐνώπιόν μου ἀδυνατήσει; λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἰδοὺ ἐγὼ σώζω τὸν λαόν μου ἀπὸ γῆς ἀνατολῶν καὶ ἀπὸ γῆς δυσμῶν, καὶ εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔσονται ἐμοὶ εἰς λαὸν, κἀγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς Θεὸν ἐν ἀληθείᾳ καὶ ἐν δικαιοσύνῃ. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, κατισχυέτωσαν αἱ χεῖρες ὑμῶν τῶν ἀκουόντων ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις τοὺς λόγους τούτους ἐκ στόματος τῶν προφητῶν, ἀφ’ ἧς ἡμέρας τεθεμελίωται ὁ οἶκος Κυρίου παντοκράτορος, καὶ ὁ ναὸς ἀφ’ οὗ ᾠκοδόμηται. Διότι πρὸ

τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ὁ μισθὸς τῶν ἀνθρώπων οὐκ ἔσται εἰς ὄνησιν, καὶ ὁ μισθὸς τῶν κτηνῶν οὐχ ὑπάρξει, καὶ τῷ ἐκπορευομένῳ καὶ τῷ εἰσπορευομένῳ οὐκ ἔσται εἰρήνη ἀπὸ τῆς θλίψεως· καὶ ἐξαποστελῶ πάντας τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον ἐπὶ τὸν πλησίον αὐτοῦ. Καὶ νῦν, οὐ κατὰ τὰς ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν ἐγὼ ποιῶ τοῖς καταλοίποις τοῦ λαοῦ τούτου, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἀλλ’ ἢ δείξω εἰρήνην· ἡ ἄμπελος δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς, καὶ ἡ γῆ δώσει τὰ γεννήματα αὐτῆς, καὶ ὁ οὐρανὸς δώσει τὴν δρόσον αὐτοῦ, καὶ κατακληρονομήσω τοῖς καταλοίποις τοῦ λαοῦ μου τούτου ταῦτα πάντα. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἦτε ἐν κατάρᾳ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὁ οἶκος Ἰούδα καὶ οἶκος Ἰσραὴλ, οὕτως διασώσω ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε ἐν εὐλογίᾳ· θαρσεῖτε, καὶ κατισχύετε ἐν ταῖς χερσὶν ὑμῶν. Διότι τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ὃν τρόπον διενοήθην τοῦ κακῶσαι ὑμᾶς ἐν τῷ παροργίσαι με τοὺς πατέρας ὑμῶν, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ οὐ μετενόησα· οὕτως παρατέταγμαι, καὶ διανενόημαι ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, τοῦ καλῶς ποιῆσαι τὴν Ἰερουσαλὴμ, καὶ τὸν οἶκον Ἰούδα· θαρσεῖτε. Οὗτοι οἱ λόγοι οὓς ποιήσετε· λαλεῖτε ἀλήθειαν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, ἀλήθειαν καὶ κρίμα εἰρηνικὸν κρίνατε ἐν ταῖς πύλαις ὑμῶν, καὶ ἕκαστος τὴν κακίαν τοῦ πλησίον αὐτοῦ μὴ λογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, καὶ ὅρκον ψευδῆ μὴ ἀγαπᾶτε· διότι ταῦτα πάντα ἐμίσησα, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἐγένετο λόγος Κυρίου παντοκράτορος πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, νηστεία ἡ τετρὰς, καὶ νηστεία ἡ πέμπτη, καὶ νηστεία ἡ ἑβδόμη, καὶ νηστεία ἡ δεκάτη ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰούδα εἰς χαρὰν καὶ εὐφροσύνην, καὶ εἰς ἑορτὰς ἀγαθάς· καὶ εὐφρανθήσεσθε, καὶ τὴν ἀλήθειαν καὶ τὴν εἰρήνην ἀγαπήσατε. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἔτι ἥξουσι λαοὶ πολλοὶ, καὶ

κατοικοῦντες πόλεις πολλὰς, καὶ συνελεύσονται κατοικοῦντες πέντε πόλεις εἰς μίαν πόλιν, λέγοντες, πορευθῶμεν δεηθῆναι τοῦ προσώπου Κυρίου, καὶ ἐκζητῆσαι τὸ πρόσωπον Κυρίου παντοκράτορος· πορεύσομαι κἀγώ· Καὶ ἥξουσι λαοὶ πολλοὶ καὶ ἔθνη πολλὰ ἐκζητῆσαι τὸ πρόσωπον Κυρίου παντοκράτορος ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐξιλάσασθαι τὸ πρόσωπον Κυρίου. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ἐὰν ἐπιλάβωνται δέκα ἄνδρες ἐκ πασῶν τῶν γλωσσων τῶν ἐθνῶν, καὶ ἐπιλάβωνται τοῦ κρασπέδου ἀνδρὸς Ἰουδαίου, λέγοντες, πορευσόμεθα μετὰ σοῦ, διότι ἀκηκόαμεν ὅτι ὁ Θεὸς μεθ’ ὑμῶν ἐστι.

# 9

Λῆμμα λόγου Κυρίου ἐν γῇ Σεδρὰχ, καὶ Δαμασκοῦ θυσία αὐτοῦ, διότι Κύριος ἐφορᾷ ἀνθρώπους, καὶ πάσας φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἐν Ἡμὰθ ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς Τύρος καὶ Σιδὼν, διότι ἐφρόνησαν σφόδρα. Καὶ ᾠκοδόμησε Τύρος ὀχυρώματα αὐτῇ, καὶ ἐθησαύρισεν ἀργύριον ὡς χοῦν, καὶ συνήγαγε χρυσίον ὡς πηλὸν ὁδῶν. Καὶ διατοῦτο Κύριος κληρονομήσει αὐτοὺς, καὶ πατάξει εἰς θάλασσαν δύναμιν αὐτῆς, καὶ αὕτη ἐν πυρὶ καταναλωθήσεται. Ὄψεται Ἀσκάλων, καὶ φοβηθήσεται, καὶ Γάζα, καὶ ὀδυνηθήσεται σφόδρα, καὶ Ἀκκάρων, ὅτι ᾐσχύνθη ἐπὶ τῷ παραπτώματι αὐτῆς· καὶ ἀπολεῖται βασιλεὺς ἐκ Γάζης, καὶ Ἀσκάλων οὐ μὴ κατοικηθῇ. Καὶ κατοικήσουσιν ἀλλογενεῖς ἐν Ἀζώτῳ, καὶ καθελῶ ὕβριν ἀλλοφύλων, καὶ ἐξαρῶ τὸ αἷμα αὐτῶν ἐκ στόματος αὐτῶν, καὶ τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἐκ μέσου ὀδόντων αὐτῶν· καὶ ὑπολειφθήσονται καὶ οὗτοι τῷ Θεῷ ἡμῶν, καὶ ἔσονται ὡς

χιλίαρχος ἐν Ἰούδᾳ, καὶ Ἀκκάρων ὡς ὁ Ἰεβουσαῖος. Καὶ ὑποστήσομαι τῷ οἴκῳ μου ἀνάστημα, τοῦ μὴ διαπορεύεσθαι, μηδὲ ἀνακάμπτειν, καὶ οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐπ’ αὐτοὺς οὐκέτι ἐξελαύνων, διότι νῦν ἑώρακα ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς μου. Χαῖρε σφόδρα θύγατερ Σιὼν, κήρυσσε θύγατερ Ἰερουσαλήμ· ἰδοὺ ὁ βασιλεὺς ἔρχεταί σοι δίκαιος καὶ σώζων, αὐτὸς πραΰς, καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ ὑποζύγιον καὶ πῶλον νέον. Καὶ ἐξολοθρεύσει ἅρματα ἐξ Ἐφραὶμ, καὶ ἵππον ἐξ Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἐξολοθρεύσεται τόξον πολεμικὸν, καὶ πλῆθος καὶ εἰρήνη ἐξ ἐθνῶν, καὶ κατάρξει ὑδάτων ἕως θαλάσσης, καὶ ποταμῶν διεκβολὰς γῆς. Καὶ σὺ ἐν αἵματι διαθήκης σου ἐξαπέστειλας δεσμίους σου ἐκ λάκκου οὐκ ἔχοντος ὕδωρ. Καθήσεσθε ἐν ὀχυρώμασι δέσμιοι τῆς συναγωγῆς, καὶ ἀντὶ μιᾶς ἡμέρας παροικεσίας σου διπλᾶ ἀνταποδώσω σοι, διότι ἐνέτεινά σε Ἰούδα ἐμαυτῷ τόξον, ἔπλησα τὸν Ἐφραὶμ, καὶ ἐξεγερῶ τὰ τέκνα σου Σιὼν ἐπὶ τὰ τέκνα τῶν Ἑλλήνων, καὶ ψηλαφήσω σε ὡς ῥομφαίαν μαχητοῦ, καὶ Κύριος ἔσται ἐπ’ αὐτοὺς, καὶ ἐξελεύσεται ὡς ἀστραπὴ βολὶς, καὶ Κύριος παντοκράτωρ ἐν σάλπιγγι σαλπιεῖ, καὶ πορεύσεται ἐν σάλῳ ἀπειλῆς αὐτοῦ. Κύριος παντοκράτωρ ὑπερασπιεῖ αὐτούς· καὶ καταναλώσουσιν αὐτοὺς, καὶ καταχώσουσιν αὐτοὺς ἐν λίθοις σφενδόνης, καὶ ἐκπίονται αὐτοὺς ὡς οἶνον, καὶ πλήσουσι τὰς φιάλας ὡς θυσιαστήριον. Καὶ σώσει αὐτοὺς Κύριος ὁ Θεὸς αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς πρόβατα λαὸν αὐτοῦ, διότι λίθοι ἅγιοι κυλίονται ἐπὶ γῆς αὐτοῦ. Ὅτι εἴ τι ἀγαθὸν αὐτοῦ, καὶ εἴ τι καλὸν αὐτοῦ, σῖτος νεανίσκοις, καὶ οἶνος εὐωδιάζων εἰς παρθένους.

# 10

Αἰτεῖσθε παρὰ Κυρίου ὑετὸν καθ’ ὥραν, πρώϊμον καὶ ὄψιμον· Κύριος ἐποίησε φαντασίας, καὶ ὑετὸν χειμερινὸν δώσει αὐτοῖς, ἑκάστῳ βοτάνην ἐν ἀγρῷ. Διότι οἱ ἀποφθεγγόμενοι ἐλάλησαν κόπους, καὶ οἱ μάντεις ὁράσεις ψευδεῖς, καὶ τὰ ἐνύπνια ψευδῆ ἐλάλουν, μάταια παρεκάλουν· διατοῦτο ἐξηράνθησαν ὡς πρόβατα, καὶ ἐκακώθησαν, διότι οὐκ ἦν ἴασις. Ἐπὶ τοὺς ποιμένας παρωξύνθη ὁ θυμός μου, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀμνοὺς ἐπισκέψομαι· καὶ ἐπισκέψεται Κύριος ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ τάξει αὐτοὺς ὡς ἵππον εὐπρεπῆ αὐτοῦ ἐν πολέμῳ, καὶ ἀπ’ αὐτοῦ ἐπέβλεψε, καὶ ἀπ’ αὐτοῦ ἔταξε, καὶ ἀπ’ αὐτοῦ τόξον ἐν θυμῷ, ἀπ’ αὐτοῦ ἐξελεύσεται πᾶς ὁ ἐξελαύνων ἐν τῷ αὐτῷ. Καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ πατοῦντες πηλὸν ἐν ταῖς ὁδοῖς ἐν πολέμῳ, καὶ παρατάξονται, διότι Κύριος μετ’ αὐτῶν· καὶ καταισχυνθήσονται ἀναβάται ἵππων. Καὶ κατισχύσω τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ τὸν οἶκον Ἰωσὴφ σώσω, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς, ὅτι ἠγάπησα αὐτοὺς, καὶ ἔσονται, ὃν τρόπον οὐκ ἀπεστρεψάμην αὐτούς· διότι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς αὐτῶν· καὶ ἐπακούσομαι αὐτοῖς, καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ τοῦ Ἐφραὶμ, καὶ χαρήσεται ἡ καρδία αὐτῶν ὡς ἐν οἴνῳ· καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν ὄψονται, καὶ εὐφρανθήσονται, καὶ χαρεῖται ἡ καρδία αὐτῶν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ. Σημανῶ αὐτοῖς, καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς, διότι λυτρώσομαι αὐτοὺς, καὶ πληθυνθήσονται καθότι ἦσαν πολλοί. Καὶ σπερῶ αὐτοὺς ἐν λαοῖς, καὶ οἱ μακρὰν μνησθήσονταί μου, ἐκθρέψουσι τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ ἐπιστρέψουσι. Καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ Ἀσσυρίων εἰσδέξομαι αὐτοὺς, καὶ εἰς τὴν Γαλααδίτιν, καὶ εἰς τὸν Λίβανον εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ὑπολειφθῇ ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. Καὶ διελεύσονται ἐν θαλάσσῃ στενῇ, πατάξουσιν ἐν θαλάσσῃ κύματα, καὶ ξηρανθήσεται πάντα τὰ βάθη ποταμῶν, καὶ ἀφαιρεθήσεται πᾶσα ὕβρις Ἀσσυρίων, καὶ σκῆπτρον

Αἰγύπτου περιαιρεθήσεται. Καὶ κατισχύσω αὐτοὺς ἐν Κυρίῳ Θεῷ αὐτῶν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι αὐτοῦ κατακαυχήσονται, λέγει Κύριος.

# 11

Διάνοιξον ὁ Λίβανος τὰς θύρας σου, καὶ καταφαγέτω πῦρ τὰς κέδρους σου. Ὀλολυξάτω πίτυς, διότι πέπτωκε κέδρος, ὅτι μεγάλως μεγιστᾶνες ἐταλαιπώρησαν· ὀλολύξατε δρύες τῆς Βασανίτιδος, ὅτι κατεσπάσθη ὁ δρυμὸς ὁ σύμφυτος. Φωνὴ θρηνούντων ποιμένων, ὅτι τεταλαιπώρηκεν ἡ μεγαλωσύνη αὐτῶν· φωνὴ ὠρυομένων λεόντων, ὅτι τεταλαιπώρηκε τὸ φρύαγμα τοῦ Ἰορδάνου. Τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, ποιμαίνετε τὰ πρόβατα τῆς σφαγῆς, ἃ οἱ κτησάμενοι κατέσφαζον, καὶ οὐ μετεμέλοντο, καὶ οἱ πωλοῦντες αὐτὰ ἔλεγον, εὐλογητὸς Κύριος, καὶ πεπλουτήκαμεν· καὶ οἱ ποιμένες αὐτῶν οὐκ ἔπασχον οὐδὲν ἐπ’ αὐτοῖς. Διατοῦτο οὐ φείσομαι οὐκέτι ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, λέγει Κύριος· καὶ ἰδοὺ ἐγὼ παραδίδωμι τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον εἰς χεῖρα τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρα βασιλέως αὐτοῦ, καὶ κατακόψουσι τὴν γῆν, καὶ οὐ μὴ ἐξέλωμαι ἐκ χειρὸς αὐτῶν. Καὶ ποιμανῶ τὰ πρόβατα τῆς σφαγῆς εἰς τὴν Χαναανίτιν· καὶ λήψομαι ἐμαυτῷ δύο ῥάβδους, τὴν μὲν μίαν ἐκάλεσα Κάλλος, καὶ τὴν ἑτέραν ἐκάλεσα Σχοίνισμα, καὶ ποιμανῶ τὰ πρόβατα. Καὶ ἐξαρῶ τοὺς τρεῖς ποιμένας ἐν μηνὶ ἑνὶ, καὶ βαρυνθήσεται ἡ ψυχή μου ἐπ’ αὐτούς, καὶ γὰρ αἱ ψυχαὶ αὐτῶν ἐπωρύοντο ἐπ’ ἐμέ. Καὶ εἶπα, οὐ ποιμανῶ ὑμᾶς· τὸ ἀποθνῆσκον ἀποθνησκέτω, καὶ τὸ ἐκλεῖπον ἐκλιπέτω, καὶ τὰ κατάλοιπα κατεσθιέτωσαν ἕκαστος τὰς σάρκας τοῦ πλησίον αὐτοῦ. Καὶ λήψομαι τὴν ῥάβδον μου τὴν καλὴν, καὶ ἀποῤῥίψω

αὐτὴν, τοῦ διασκεδάσαι τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην πρὸς πάντας τοὺς λαοὺς, καὶ διασκεδασθήσεται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ γνώσονται οἱ Χαναναῖοι τὰ πρόβατα τὰ φυλασσόμενά μοι, διότι λόγος Κυρίου ἐστί. Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτοὺς, εἰ καλὸν ἐνώπιον ὑμῶν ἐστι, δότε τὸν μισθόν μου, ἢ ἀπείπασθε· καὶ ἔστησαν τὸν μισθόν μου τριακοντα ἀργυροῦς. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, κάθες αὐτοὺς εἰς τὸ χωνευτήριον, καὶ σκέψομαι εἰ δόκιμόν ἐστιν, ὃν τρόπον ἐδοκιμάσθην ὑπὲρ αὐτῶν, καὶ ἔλαβον τοὺς τριάκοντα ἀργυροῦς, καὶ ἐνέβαλον αὐτοὺς εἰς τὸν οἶκον Κυρίου εἰς τὸ χωνευτήριον. Καὶ ἀπέῤῥιψα τὴν ῥάβδον τὴν δευτέραν τὸ Σχοίνισμα, τοῦ διασκεδάσαι τὴν κατάσχεσιν ἀναμέσον Ἰούδα, καὶ ἀναμέσον Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε Κύριος πρὸς μὲ, ἔτι λάβε σεαυτῷ σκεύη ποιμενικὰ ποιμένος ἀπείρου· διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ποιμένα ἐπὶ τὴν γῆν, τὸ ἐκλιμπάνον οὐ μὴ ἐπισκέψηται, καὶ τὸ ἐσκορπισμένον οὐ μὴ ζητήσῃ, καὶ τὸ συντετριμμένον οὐ μὴ ἰάσηται, καὶ τὸ ὁλόκληρον οὐ μὴ κατευθύνῃ, καὶ τὰ κρέα τῶν ἐκλεκτῶν καταφάγεται, καὶ τοὺς ἀστραγάλους αὐτῶν ἐκστρέψει. Ὢ οἱ ποιμαίνοντες τὰ μάταια, καταλελοιπότες τὰ πρόβατα, μάχαιρα ἐπὶ τοὺς βραχίονας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὸν ὀφθαλμὸν τὸν δεξιὸν αὐτοῦ, ὁ βραχίων αὐτοῦ ξηραινόμενος ξηρανθήσεται, καὶ ὁ ὀφθαλμὸς ὁ δεξιὸς αὐτοῦ ἐκτυφλούμενος ἐκτυφλωθήσεται.

# 12

Λῆμμα λόγου Κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ· λέγει Κύριος, ἐκτείνων οὐρανὸν, καὶ θεμελιῶν γῆν, καὶ πλάσσων πνεῦμα ἀνθρώπου ἐν αὐτῷ, ἰδοὺ ἐγὼ τίθημι τὴν Ἱερουσαλὴμ ὡς πρόθυρα σαλευόμενα

πᾶσι τοῖς λαοῖς κύκλῳ, καὶ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ἔσται περιοχὴ ἐπὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι τὴν Ἰερουσαλὴμ λίθον καταπατούμενον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· πᾶς ὁ καταπατῶν αὐτὴν ἐμπαίζων ἐμπαίξεται, καὶ ἐπισυναχθήσονται ἐπ᾽ αὐτὴν πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, πατάξω πάντα ἵππον ἐν ἐκστάσει, καὶ τὸν ἀναβάτην αὐτοῦ ἐν παραφρονήσει, ἐπὶ δὲ τὸν οἶκον Ἰούδα διανοίξω τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ πάντας τοὺς ἵππους τῶν λαῶν πατάξω ἐν ἀποτυφλώσει. Καὶ ἐροῦσιν οἱ χιλίαρχοι Ἰούδα ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, εὑρήσομεν ἑαυτοῖς τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ ἐν Κυρίῳ παντοκράτορι Θεῷ αὐτῶν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι τοὺς χιλιάρχους Ἰούδα ὡς δαλὸν πυρὸς ἐν ξύλοις, καὶ ὡς λαμπάδα πυρὸς ἐν καλάμῃ, καὶ καταφάγονται ἐκ δεξιῶν, καὶ ἐξ εὐωνύμων πάντας τοὺς λαοὺς κυκλόθεν, καὶ κατοικήσει Ἰερουσαλὴμ ἔτι καθ᾽ ἑαυτὴν ἐν Ἰερουσαλήμ. Καὶ σώσει Κύριος τὰ σκηνώματα Ἰούδα, καθὼς ἀπ᾽ ἀρχῆς, ὅπως μὴ μεγαλύνηται καύχημα οἴκου Δαυὶδ, καὶ ἔπαρσις τῶν κατοικούντων Ἰερουσαλὴμ ἐπὶ τὸν Ἰούδα. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ὑπερασπιεῖ Κύριος ὑπὲρ τῶν κατοικούντων Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἔσται ὁ ἀσθενῶν ἐν αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὡς Δαυὶδ, ὁ δὲ οἶκος Δαυὶδ ὡς οἶκος Θεοῦ, ὡς ἄγγελος Κυρίου ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ζητήσω ἐξᾶραι πάντα τὰ ἔθνη τὰ ἐρχόμενα ἐπὶ Ἰερουσαλήμ. Καὶ ἐκχεῶ ἐπὶ τὸν οἶκον Δαυὶδ, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἰερουσαλὴμ πνεῦμα χάριτος καὶ οἰκτιρμοῦ· καὶ ἐπιβλέψονται πρὸς μὲ, ἀνθ᾽ ὧν κατωρχήσαντο· καὶ κόψονται ἐπ᾽ αὐτὸν κοπετὸν, ὡς ἐπ᾽ ἀγαπητῷ, καὶ ὀδυνηθήσονται ὀδύνην, ὡς ἐπὶ τῷ πρωτοτόκῳ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μεγαλυνθήσεται ὁ κοπετὸς ἐν Ἰερουσαλὴμ, ὡς κοπετὸς ῥοῶνος ἐν πεδίῳ ἐκκοπτομένου. Καὶ

κόψεται ἡ γῆ κατὰ φυλὰς φυλάς· φυλὴ οἴκου Δαυὶδ καθ’ ἑαυτὴν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ’ ἑαυτάς· φυλὴ οἴκου Νάθαν καθ’ ἑαυτὴν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ’ ἑαυτάς· φυλὴ οἴκου Λευὶ καθ’ ἑαυτὴν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ’ ἑαυτάς· φυλὴ τοῦ Συμεὼν καθ’ ἑαυτὴν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ’ ἑαυτάς. Πᾶσαι αἱ ὑπολελειμμέναι φυλαὶ, φυλὴ καθ’ ἑαυτὴν, καὶ γυναῖκες αὐτῶν καθ’ ἑαυτάς.

# 13

Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται πᾶς τόπος διανοιγόμενος τῷ οἴκῳ Δαυὶδ, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἰερουσαλὴμ εἰς τὴν μετακίνησιν, καὶ εἰς τὸν χωρισμόν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει Κύριος σαβαὼθ, ἐξολοθρεύσω τὰ ὀνόματα τῶν εἰδώλων ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔτι αὐτῶν ἔσται μνεία· καὶ τοὺς ψευδοπροφήτας, καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἀκάθαρτον ἐξαρῶ ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ἐὰν προφητεύσῃ ἄνθρωπος ἔτι, καὶ ἐρεῖ πρὸς αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες αὐτὸν, οὐ ζήσῃ, ὅτι ψευδῆ ἐλάλησας ἐπ’ ὀνόματι Κυρίου· καὶ συμποδιοῦσιν αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες αὐτὸν, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτόν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καταισχυνθήσονται οἱ προφῆται, ἕκαστος ἐκ τῆς ὁράσεως αὐτοῦ, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτὸν, καὶ ἐνδύσονται δέῤῥιν τριχίνην, ἀνθ’ ὧν ἐψεύσαντο. Καὶ ἐρεῖ, οὐκ εἰμὶ προφήτης ἐγὼ, διότι ἄνθρωπος ἐργαζόμενος τὴν γῆν ἐγώ εἰμι, ὅτι ἄνθρωπος ἐγέννησέ με ἐκ νεότητός μου. Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτὸν, τί αἱ πληγαὶ αὗται ἀναμέσον τῶν χειρῶν σου; καὶ ἐρεῖ, ἃς ἐπλήγην ἐν τῷ οἴκῳ τῷ ἀγαπητῷ μου. Ῥομφαία ἐξεγέρθητι ἐπὶ τοὺς ποιμένας

μου, καὶ ἐπὶ ἄνδρα πολίτην μου, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, πατάξατε τοὺς ποιμένας, καὶ ἐκσπάσατε τὰ πρόβατα· καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς μικρούς. Καὶ ἔσται ἐν πάσῃ τῇ γῇ, λέγει Κύριος, τὰ δύο μέρη αὐτῆς ἐξολοθρευθήσεται, καὶ ἐκλείψει, τὸ δὲ τρίτον ὑπολειφθήσεται ἐν αὐτῇ. Καὶ διάξω τὸ τρίτον διὰ πυρὸς, καὶ πυρώσω αὐτοὺς, ὡς πυροῦται τὸ ἀργύριον, καὶ δοκιμῶ αὐτοὺς, ὡς δοκιμάζεται τὸ χρυσίον· αὐτὸς ἐπικαλέσεται τὸ ὄνομά μου, κἀγὼ ἐπακούσομαι αὐτῷ, καὶ ἐρῶ, λαός μου οὗτός ἐστι· καὶ αὐτὸς ἐρεῖ, Κύριος ὁ Θεός μου.

# 14

Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται Κυρίου, καὶ διαμερισθήσονται τὰ σκῦλά σου ἐν σοί· καὶ ἐπισυνάξω πάντα τὰ ἔθνη ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ εἰς πόλεμον, καὶ ἁλώσεται ἡ πόλις, καὶ διαρπαγήσονται αἱ οἰκίαι, καὶ αἱ γυναῖκες μολυνθήσονται, καὶ ἐξελεύσεται τὸ ἥμισυ τῆς πόλεως ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ δὲ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ μου οὐ μὴ ἐξολοθρευθῶσιν ἐκ τῆς πόλεως. Καὶ ἐξελεύσεται Κύριος, καὶ παρατάξεται ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις, καθὼς ἡμέρα παρατάξεως αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Καὶ στήσονται οἱ πόδες αὐτοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπὶ τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τὸ κατέναντι Ἰερουσαλὴμ ἐξ ἀνατολῶν· καὶ σχισθήσεται τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς ἀνατολὰς καὶ θάλασσαν, χάος μέγα σφόδρα· καὶ κλινεῖ τὸ ἥμισυ τοῦ ὄρους πρὸς τὸν βορρᾶν, καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς Νότον. Καὶ φραχθήσεται ἡ φάραγξ τῶν ὀρέων μου, καὶ ἐγκολληθήσεται φάραγξ ὀρέων ἕως Ἰασὸδ, καὶ ἐνφραχθήσεται καθὼς ἐνεφράγη ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ συσσεισμοῦ, ἐν ἡμέραις Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα·

καὶ ἥξει Κύριος ὁ Θεός μου, καὶ πάντες οἱ ἅγιοι μετ’ αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ οὐκ ἔσται φῶς, καὶ ψύχη καὶ πάγος ἔσται μίαν ἡμέραν, καὶ ἡ ἡμέρα ἐκείνη γνωστὴ τῷ Κυρίῳ, καὶ οὐκ ἡμέρα, καὶ οὐ νὺξ, καὶ πρὸς ἑσπέραν ἔσται φῶς. Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελεύσεται ὕδωρ ζῶν ἐξ Ἰερουσαλὴμ, τὸ ἥμισυ αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην, καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην· καὶ ἐν θέρει καὶ ἐν ἔαρι ἔσται οὕτως. Καὶ ἔσται Κύριος εἰς βασιλέα ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν· ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται Κύριος εἷς, καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἓν, κυκλῶν πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ τὴν ἔρημον ἀπὸ Γαβὲ ἕως Ῥεμμὼν κατὰ Νότον Ἰερουσαλήμ. Ῥαμὰ δὲ ἐπὶ τόπου μενεῖ· ἀπὸ τῆς πύλης Βενιαμὶν ἕως τοῦ τόπου τῆς πύλης τῆς πρώτης, ἕως τῆς πύλης τῶν γωνιῶν, καὶ ἕως τοῦ πύργου Ἀναμεὴλ, ἕως τῶν ὑπολῃνίων τοῦ βασιλέως κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ, καὶ ἀνάθεμα οὐκ ἔσται ἔτι, καὶ κατοικήσει Ἰερουσαλὴμ πεποιθότως. Καὶ αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις ἣν κόψει Κύριος πάντας τοὺς λαοὺς, ὅσοι ἐπεστράτευσαν ἐπὶ Ἰερουσαλήμ· τακήσονται αἱ σάρκες αὐτῶν, ἑστηκότων ἐπὶ τοὺς πόδας αὐτῶν, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ῥυήσονται ἐκ τῶν ὀπῶν αὐτῶν, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν τακήσεται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκστασις Κυρίου μεγάλη ἐπ’ αὐτούς· καὶ ἐπιλήψονται ἕκαστος τῆς χειρὸς τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ συμπλακήσεται ἡ χεὶρ αὐτοῦ πρὸς τὴν χεῖρα τοῦ πλησίον αὐτοῦ. Καὶ Ἰούδας παρατάξεται ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ συνάξει τὴν ἰσχὺν πάντων τῶν λαῶν κυκλόθεν, χρυσίον καὶ ἀργύριον καὶ ἱματισμὸν εἰς πλῆθος σφόδρα. Καὶ αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις τῶν ἵππων, καὶ τῶν ἡμιόνων, καὶ τῶν καμήλων, καὶ τῶν ὄνων, καὶ πάντων τῶν κτηνῶν τῶν ὄντων ἐν ταῖς παρεμβολαῖς ἐκείναις, κατὰ τὴν πτῶσιν ταύτην. Καὶ ἔσται, ὅσοι ἐὰν καταλειφθῶσιν ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν τῶν ἐλθόντων ἐπ’

Ἰερουσαλὴμ, καὶ ἀναβήσονται κατ’ ἐνιαυτὸν, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ Κυρίῳ παντοκράτορι, καὶ τοῦ ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας. Καὶ ἔσται, ὅσοι ἐὰν μὴ ἀναβῶσιν ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν τῆς γῆς εἰς Ἰερουσαλὴμ, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ Κυρίῳ παντοκράτορι, καὶ οὗτοι ἐκείνοις προστεθήσονται. Ἐὰν δὲ φυλὴ Αἰγύπτου μὴ ἀναβῇ, μηδὲ ἔλθῃ, καὶ ἐπὶ τούτους ἔσται ἡ πτῶσις, ἣν πατάξει Κύριος πάντα τὰ ἔθνη, ὅσα ἂν μὴ ἀναβῇ, τοῦ ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας. Αὕτη ἔσται ἡ ἁμαρτία Αἰγύπτου, καὶ ἡ ἁμαρτία πάντων τῶν ἐθνῶν, ὃς ἂν μὴ ἀναβῇ ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται τὸ ἐπὶ τὸν χαλινὸν τοῦ ἵππου ἅγιον τῷ Κυρίῳ παντοκράτορι· καὶ ἔσονται οἱ λέβητες ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου ὡς φιάλαι πρὸ προσώπου τοῦ θυσιαστηρίου. Καὶ ἔσται πᾶς λέβης ἐν Ἰερουσαλὴμ καὶ ἐν τῷ Ἰούδᾳ ἅγιος τῷ Κυρίῳ παντοκράτορι· καὶ ἥξουσι πάντες οἱ θυσιάζοντες, καὶ λήψονται ἐξ αὐτῶν, καὶ ἑψήσουσιν ἐν αὐτοῖς· καὶ οὐκ ἔσται Χαναναῖος ἔτι ἐν τῷ οἴκῳ Κυρίου παντοκράτορος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.

# ΜΑΛΑΧΙΑΣ

## 1

ΛΗΜΜΑ λόγου Κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἐν χειρὶ ἀγγέλου αὐτοῦ, θέσθε δὴ ἐπὶ τὰς καρδίας ὑμῶν. Ἠγάπησα ὑμᾶς, λέγει Κύριος· καὶ εἴπατε, ἐν τίνι ἠγάπησας ἡμᾶς; οὐκ ἀδελφὸς ἦν Ἠσαῦ τοῦ Ἰακὼβ, λέγει Κύριος, καὶ ἠγάπησα τὸν Ἰακὼβ, τὸν δὲ Ἠσαῦ ἐμίσησα, καὶ ἔταξα τὰ ὅρια αὐτοῦ εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ εἰς δώματα ἐρήμου; Διότι ἐρεῖ, ἡ Ἰδουμαία κατέστραπται, καὶ ἐπιστρέψωμεν, καὶ ἀνοικοδομήσωμεν τὰς ἐρήμους· τάδε λέγει Κύριος παντοκράτωρ, αὐτοὶ οἰκοδομήσουσι, καὶ ἐγὼ καταστρέψω· καὶ ἐπικληθήσεται αὐτοῖς ὅρια ἀνομίας, καὶ λαὸς ἐφ’ ὃν παρατέτακται Κύριος ἕως αἰῶνος. Καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ὄψονται, καὶ ὑμεῖς ἐρεῖτε, ἐμεγαλύνθη Κύριος ὑπεράνω τῶν ὁρίων τοῦ Ἰσραήλ. Υἱὸς δοξάζει πατέρα, καὶ δοῦλος τὸν κύριον ἑαυτοῦ. καὶ εἰ πατήρ εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ἡ δόξα μου; καὶ εἰ Κύριός εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ὁ φόβος μου; λέγει Κύριος παντοκράτωρ· ὑμεῖς οἱ ἱερεῖς οἱ φαυλίζοντες τὸ ὄνομά μου, καὶ εἴπατε, ἐν τίνι ἐφαυλίσαμεν τὸ ὄνομά σου; Προσάγοντες πρὸς τὸ θυσιαστήριόν μου ἄρτους ἠλισγημένους, καὶ εἴπατε, ἐν τίνι ἠλισγήσαμεν αὐτούς; ἐν τῷ

λέγειν ὑμᾶς, τράπεζα Κυρίου ἠλισγημένη ἐστί, καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα ἐξουδενώσατε. Διότι ἐὰν προσαγάγητε τυφλὸν εἰς θυσίας, οὐ κακόν; καὶ ἐὰν προσαγάγητε χωλὸν ἢ ἀῤῥωστον, οὐ κακόν; προσάγαγε δὴ αὐτὸ τῷ ἡγουμένῳ σου, εἰ προσδέξεταί σε, εἰ λήψεται πρόσωπόν σου, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ νῦν ἐξιλάσκεσθε τὸ πρόσωπον τοῦ Θεοῦ ὑμῶν, καὶ δεήθητε αὐτοῦ. Ἐν χερσὶν ὑμῶν γέγονε ταῦτα, εἰ λήψομαι ἐξ ὑμῶν πρόσωπα ὑμῶν; λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Διότι καὶ ἐν ὑμῖν συγκλεισθήσονται θύραι, καὶ οὐκ ἀνάψεται τὸ θυσιαστήριόν μου δωρεάν· οὐκ ἔστι μου θέλημα ἐν ὑμῖν, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ θυσίαν οὐ προσδέξομαι ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν. Διότι ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου καὶ ἕως δυσμῶν τὸ ὄνομά μου δεδόξασται ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐν παντὶ τόπῳ θυμίαμα προσάγεται τῷ ὀνόματὶ μου, καὶ θυσία καθαρά· διότι μέγα τὸ ὄνομά μου ἐν τοῖς ἔθνεσι, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Ὑμεῖς δὲ βεβηλοῦτε αὐτὸ ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, τράπεζα Κυρίου ἠλισγημένη ἐστὶ, καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα ἐξουδένωται βρώματα αὐτοῦ· Καὶ εἴπατε, ταῦτα ἐν κακοπαθείας ἐστί. καὶ ἐξεφύσησα αὐτὰ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ· καὶ εἰσεφέρετε ἁρπάγματα, καὶ τὰ χωλὰ, καὶ τὰ ἐνοχλούμενα· καὶ ἐὰν φέρητε τὴν θυσίαν, εἰ προσδέξομαι αὐτὰ ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἐπικατάρατος, ὃς ἦν δυνατὸς, καὶ ὑπῆρχεν ἐν τῷ ποιμνίῳ αὐτοῦ ἄρσεν, καὶ εὐχὴ αὐτοῦ ἐπ’ αὐτῷ, καὶ θύει διεφθαρμένον τῷ Κυρίῳ· διότι βασιλεὺς μέγας ἐγώ εἰμι, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ τὸ ὄνομά μου ἐπιφανὲς ἐν τοῖς ἔθνεσι.

# 2

Καὶ νῦν ἡ ἐντολὴ αὕτη πρὸς ὑμᾶς οἱ ἱερεῖς. Ἐὰν μὴ ἀκούσητε, καὶ ἐὰν μὴ θῆσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν, τοῦ δοῦναι δόξαν τῷ ὀνόματί μου, λέγει Κύριος παντοκράτωρ· καὶ ἐξαποστελῶ ἐφ' ὑμᾶς τὴν κατάραν, καὶ ἐπικαταράσομαι τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ καταράσομαι αὐτήν· καὶ διασκεδάσω τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ οὐκ ἔσται ἐν ὑμῖν, ὅτι ὑμεῖς οὐ τίθεσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ ἀφορίζω ὑμῖν τὸν ὦμον, καὶ σκορπιῶ ἔνυστρον ἐπὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν, ἔνυστρον ἑορτῶν, ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς εἰς τὸ αὐτό· Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ ἐξαπέσταλκα πρὸς ὑμᾶς τὴν ἐντολὴν ταύτην, τοῦ εἶναι τὴν διαθήκην μου πρὸς τοὺς Λευίτας, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Ἡ διαθήκη μου ἦν μετ' αὐτοῦ τῆς ζωῆς καὶ τῆς εἰρήνης, καὶ ἔδωκα αὐτῷ ἐν φόβῳ φοβεῖσθαί με, καὶ ἀπὸ προσώπου ὀνόματός μου στέλλεσθαι αὐτόν· νόμος ἀληθείας ἦν ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ, καὶ ἀδικία οὐχ εὑρέθη ἐν χείλεσιν αὐτοῦ· ἐν εἰρήνῃ κατευθύνων ἐπορεύθη μετ' ἐμοῦ, καὶ πολλοὺς ἐπέστρεψεν ἀπὸ ἀδικίας. Ὅτι χείλη ἱερέως φυλάξεται γνῶσιν, καὶ νόμον ἐκζητήσουσιν ἐκ στόματος αὐτοῦ, διότι ἄγγελος Κυρίου παντοκράτορός ἐστιν. Ὑμεῖς δὲ ἐξεκλίνατε ἐκ τῆς ὁδοῦ, καὶ ἠσθενήσατε πολλοὺς ἐν νόμῳ, διεφθείρατε τὴν διαθήκην τοῦ Λευὶ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Κἀγὼ δέδωκα ὑμᾶς ἐξουδενωμένους καὶ ἀπερῥιμμένους εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἀνθ' ὧν ὑμεῖς οὐκ ἐφυλάξασθε τὰς ὁδούς μου, ἀλλὰ ἐλαμβάνετε πρόσωπα ἐν νόμῳ. Οὐχὶ πατὴρ εἷς πάντων ὑμῶν; οὐχὶ Θεὸς εἷς ἔκτισεν ὑμᾶς; τί ὅτι ἐγκατελίπετε ἕκαστος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, τοῦ βεβηλῶσαι τὴν διαθήκην τῶν πατέρων ὑμῶν; Ἐνκατελείφθη Ἰούδας, καὶ βδέλυγμα ἐγένετο ἐν τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἐν Ἰερουσαλὴμ, διότι ἐβεβήλωσεν Ἰούδας τὰ ἅγια Κυρίου, ἐν οἷς ἠγάπησε, καὶ ἐπετήδευσεν εἰς θεοὺς ἀλλοτρίους. Ἐξολοθρεύσει Κύριος τὸν ἄνθρωπον τὸν ποιοῦντα

ταῦτα, ἕως καὶ ταπεινωθῇ ἐκ σκηνωμάτων Ἰακὼβ, καὶ ἐκ προσαγόντων θυσίαν τῷ κυρίῳ παντοκράτορι. Καὶ ταῦτα, ἃ ἔμισουν, ἐποιεῖτε· ἐκαλύπτετε δάκρυσι τὸ θυσιαστήριον Κυρίου, καὶ κλαυθμῷ καὶ στεναγμῷ ἐκ κόπων· ἔτι ἄξιον ἐπιβλέψαι εἰς θυσίαν, ἢ λαβεῖν δεκτὸν ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; Καὶ εἴπατε, ἕνεκεν τίνος; ὅτι Κύριος διεμαρτύρατο ἀναμέσον σου, καὶ ἀναμέσον γυναικὸς νεότητός σου, ἣν ἐγκατέλιπες, καὶ αὕτη κοινωνός σου, καὶ γυνὴ διαθήκης σου. Καὶ οὐ καλὸν ἐποίησε; καὶ ὑπόλειμμα πνεύματος αὐτοῦ· καὶ εἴπατε, τί ἄλλο ἢ σπέρμα ζητεῖ ὁ Θεός; καὶ φυλάξασθε ἐν τῷ πνεύματι ὑμῶν, καὶ γυναῖκα νεότητός σου μὴ ἐγκαταλίπῃς. Ἀλλὰ ἐὰν μισήσας ἐξαποστείλῃς, λέγει Κύριος ὁ Θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ καλύψει ἀσέβεια ἐπὶ τὰ ἐνθυμήματά σου, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. καὶ φυλάξασθε ἐν τῷ πνεύματι ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ ἐγκαταλίπητε οἱ παροξύναντες τὸν Θεὸν ἐν τοῖς λόγοις ὑμῶν· καὶ εἴπατε, ἐν τίνι παρωξύναμεν αὐτόν; ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, πᾶς ποιῶν πονηρὸν, καλὸν ἐνώπιον Κυρίου, καὶ ἐν αὐτοῖς αὐτὸς εὐδόκησε, καί ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς τῆς δικαιοσύνης;

# 3

Ἰδοὺ ἐξαποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου, καὶ ἐπιβλέψεται ὁδὸν πρὸ προσώπου μου, καὶ ἐξαίφνης ἥξει εἰς τὸν ναὸν ἑαυτοῦ Κύριος, ὃν ὑμεῖς ζητεῖτε, καὶ ὁ ἄγγελος τῆς διαθήκης, ὃν ὑμεῖς θέλετε· ἰδοὺ ἔρχεται, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ τίς ὑπομενεῖ ἡμέραν εἰσόδου αὐτοῦ; ἢ τίς ὑποστήσεται ἐν τῇ ὀπτασίᾳ αὐτοῦ; διότι αὐτὸς εἰσπορεύεται ὡς πῦρ χωνευτηρίου, καὶ ὡς ποὶα πλυνόντων. Καθιεῖται χωνεύων καὶ καθαρίζων ὡς τὸ ἀργύριον, καὶ ὡς τὸ

χρυσίον, καὶ καθαρίσει τοὺς υἱοὺς Λευὶ, καὶ χεεῖ αὐτοὺς ὥσπερ τὸ χρυσίον καὶ τὸ ἀργύριον· καὶ ἔσονται τῷ Κυρίῳ προσάγοντες θυσίαν ἐν δικαιοσύνῃ. Καὶ ἀρέσει τῷ Κυρίῳ θυσία Ἰούδα καὶ Ἰερουσαλὴμ, καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος, καὶ καθὼς τὰ ἔτη τὰ ἔμπροσθεν. Καὶ προσάξω πρὸς ὑμᾶς ἐν κρίσει, καὶ ἔσομαι μάρτυς ταχὺς ἐπὶ τὰς φαρμακοὺς, καὶ ἐπὶ τὰς μοιχαλίδας, καὶ ἐπὶ τοὺς ὀμνύοντας τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀποστεροῦντας μισθὸν μισθωτοῦ, καὶ τοὺς καταδυναστεύοντας χήραν, καὶ τοὺς κονδυλίζοντας ὀρφανοὺς, καὶ τοὺς ἐκκλίνοντας κρίσιν προσηλύτου, καὶ τοὺς μὴ φοβουμένους με, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Διότι ἐγὼ Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν, καὶ οὐκ ἠλλοίωμαι· καὶ ὑμεῖς οἱ υἱοὶ Ἰακὼβ οὐκ ἀπέχεσθε ἀπὸ τῶν ἀδικιῶν τῶν πατέρων ὑμῶν, ἐξεκλίνατε νόμιμά μου, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε. Ἐπιστρέψατε πρὸς μὲ, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει Κύριος παντοκράτωρ· καὶ εἴπατε, ἐν τίνι ἐπιστρέψομεν; Μήτι πτερνιεῖ ἄνθρωπος Θεόν; διότι ὑμεῖς πτερνίζετέ με· καὶ ἐρεῖτε, ἐν τίνι ἐπτερνίσαμέν σε; ὅτι τὰ ἐπιδέκατα, καὶ αἱ ἀπαρχαὶ μεθ’ ὑμῶν εἰσι. Καὶ ἀποβλέποντες ὑμεῖς ἀποβλέπετε, καὶ ἐμὲ ὑμεῖς πτερνίζετε. Τὸ ἔτος συνετελέσθη, καὶ εἰσηνέγκατε πάντα τὰ ἐκφόρια εἰς τοὺς θησαυροὺς, καὶ ἔσται ἡ διαρπαγὴ αὐτοῦ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ· ἐπιστρέψατε δὴ ἐν τούτῳ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ· ἐὰν μὴ ἀνοίξω ὑμῖν τοὺς καταῤῥάκτας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐκχεῶ τὴν εὐλογίαν μου ὑμῖν, ἕως τοῦ ἱκανωθῆναι· Καὶ διαστελῶ ὑμῖν εἰς βρῶσιν, καὶ οὐ μὴ διαφθείρω ὑμῶν τὸν καρπὸν τῆς γῆς, καὶ οὐ μὴ ἀσθενήσῃ ὑμῶν ἡ ἄμπελος ἡ ἐν τῷ ἀγρῷ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ μακαριοῦσιν ὑμᾶς πάντα τὰ ἔθνη, διότι ἔσεσθε ὑμεῖς γῆ θελητὴ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Ἐβαρύνατε ἐπ’ ἐμὲ τοὺς λόγους ὑμῶν, λέγει Κύριος· καὶ εἴπατε, ἐν τίνι κατελαλήσαμεν κατὰ σοῦ; Εἴπατε, μάταιος ὁ δουλεύων Θεῷ,

καὶ τί πλέον, ὅτι ἐφυλάξαμεν τὰ φυλάγματα αὐτοῦ, καὶ διότι ἐπορεύθημεν ἱκέται πρὸ προσώπου Κυρίου παντοκράτορος; Καὶ νῦν ἡμεῖς μακαρίζομεν ἀλλοτρίους, καὶ ἀνοικοδομοῦνται πάντες ποιοῦντες ἄνομα, καὶ ἀντέστησαν τῷ Θεῷ, καὶ ἐσώθησαν. Ταῦτα κατελάλησαν οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον, ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· καὶ προσέσχε Κύριος, καὶ εἰσήκουσε, καὶ ἔγραψε βιβλίον μνημοσύνου ἐνώπιον αὐτοῦ τοῖς φοβουμένοις τὸν Κύριον, καὶ εὐλαβουμένοις τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἔσονταί μοι, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, εἰς ἡμέραν, ἣν ἐγὼ ποιῶ, εἰς περιποίησιν, καὶ αἱρετιῶ αὐτοὺς, ὃν τρόπον αἱρετίζει ἄνθρωπος τὸν υἱὸν αὐτοῦ, τὸν δουλεύοντα αὐτῷ. Καὶ ἐπιστραφήσεσθε, καὶ ὄψεσθε ἀναμέσον δικαίου, καὶ ἀναμέσον ἀνόμου, καὶ ἀναμέσον τοῦ δουλεύοντος Θεῷ, καὶ τοῦ μὴ δουλεύοντος. Διότι ἰδοὺ ἡμέρα ἔρχεται καιομένη ὡς κλίβανος καὶ φλέξει αὐτοὺς, καὶ ἔσονται πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, καὶ πάντες οἱ ποιοῦντες ἄνομα, καλάμη, καὶ ἀνάψει αὐτοὺς ἡ ἡμέρα ἡ ἐρχομένη, λέγει Κύριος παντοκράτωρ, καὶ οὐ μὴ ὑπολειφθῇ ἐξ αὐτῶν ῥίζα οὐδὲ κλῆμα. Καὶ ἀνατελεῖ ὑμῖν τοῖς φοβουμένοις τὸ ὄνομά μου ἥλιος δικαιοσύνης, καὶ ἴασις ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτοῦ· καὶ ἐξελεύσεσθε, καὶ σκιρτήσετε ὡς μοσχάρια ἐκ δεσμῶν ἀνειμένα. Καὶ καταπατήσετε ἀνόμους, διότι ἔσονται σποδὸς ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἐγὼ ποιῶ, λέγει Κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστελῶ ὑμῖν Ἠλίαν τὸν Θεσβίτην, πρὶν ἐλθεῖν τὴν ἡμέραν Κυρίου τὴν μεγάλην καὶ ἐπιφανῆ, ὃς ἀποκαταστήσει καρδίαν πατρὸς πρὸς υἱὸν, καὶ καρδίαν ἀνθρώπου πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, μὴ ἔλθω καὶ πατάξω τὴν γῆν ἄρδην. Μνήσθητε νόμου Μωυσῆ τοῦ δούλου μου, καθότι ἐνετειλάμην αὐτῷ ἐν Χωρὴβ πρὸς πάντα τὸν Ἰσραὴλ, προστάγματα καὶ δικαιώματα.

# Α΄ ΜΑΚΚΑΒΑΙΩΝ

## 1

ΚΑΙ ἐγένετο μετὰ τὸ πατάξαι Ἀλέξανδρον τὸν Φιλίππου τὸν Μακεδόνα, ὃς ἐξῆλθεν ἐκ τῆς γῆς Χεττιείμ, καὶ ἐπάταξεν τὸν Δαρεῖον βασιλέα Περσῶν καὶ Μήδων, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ᾽ αὐτοῦ πρότερον ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα. καὶ συνεστήσατο πολέμους πολλούς, καὶ ἐκράτησεν ὀχυρωμάτων, καὶ ἔσφαξεν βασιλεῖς, καὶ διῆλθεν ἕως ἄκρων τῆς γῆς. καὶ ἔλαβεν σκῦλα πλήθους ἐθνῶν· καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ ὑψώθη, καὶ ἐπήρθη ἡ καρδία αὐτοῦ· καὶ συνῆξεν δυνάμιν ἰσχυρὰν σφόδρα, καὶ ἦρξεν χωρῶν καὶ ἐθνῶν καὶ τυραννιῶν, καὶ ἐγένοντο αὐτῷ εἰς φόρον. καὶ μετὰ ταῦτα ἔπεσεν ἐπὶ τὴν κοίτην, καὶ ἔγνω ὅτι ἀποθνήσκει. καὶ ἐκάλεσεν τοὺς παῖδας αὐτοῦ τοὺς ἐνδόξους τοὺς συνεκτρόφους αὐτοῦ ἀπὸ νεότητος, καὶ διεῖλεν αὐτοῖς τὴν βασιλείαν αὐτοῦ ἔτι ζῶντος αὐτοῦ. καὶ ἐβασίλευσεν Ἀλέξανδρος ἔτη δώδεκα, καὶ ἀπέθανεν. καὶ ἐπεκράτησαν οἱ παῖδες αὐτοῦ, ἕκαστος ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ· καὶ ἐπέθεντο πάντες διαδήματα μετὰ τὸ ἀποθανεῖν αὐτόν, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν ὀπίσω αὐτῶν ἔτη πολλά· καὶ ἐπλήθυναν κακὰ ἐν τῇ γῇ. Καὶ ἐξῆλθεν ἐξ αὐτῶν ῥίζα ἁμαρτωλὸς Ἀντίοχος Ἐπιφανής,

υἱὸς Ἀντιόχου τοῦ βασιλέως, ὃς ἦν ὅμηρα ἐν τῇ Ῥώμῃ. καὶ ἐθασίλευσεν ἔτει ἑκατοστῷ καὶ ἑβδόμῳ καὶ τριακοστῷ βασιλείας Ἑλλήνων. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐξῆλθεν ἐξ Ἰσραὴλ υἱὸς παράνομος, καὶ ἀνέπεισαν πολλοὺς λέγοντες Πορευθῶμεν καὶ διαθώμεθα διαθήκην μετὰ τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ἡμῶν· ὅτι ἀφ’ ἧς ἐχωρίσθημεν ὑπ’ αὐτῶν, εὗρεν ἡμᾶς κακὰ πολλά. καὶ ἠγαθύνθη ὁ λόγος ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτῶν· καὶ προεθυμήθησάν τινες ἀπὸ τοῦ λαοῦ, καὶ ἐπορεύθησαν πρὸς τὸν βασιλέα· καὶ ἔδωκαν αὐτοῖς ἐξουσίαν ποιῆσαι τὰ δικαιώματα τῶν ἐθνῶν. καὶ ᾠκοδόμησαν γυμνάσιον ἐν Ἰεροσολύμοις κατὰ τὰ νόμιμα τῶν ἐθνῶν. καὶ ἐποίησαν ἑαυτοῖς ἀκροβυστίαν, καὶ ἀπέστησαν ἀπὸ διαθήκης ἁγίας· καὶ ἐζευγίσθησαν τοῖς ἔθνεσιν, καὶ ἐπράθησαν ποιῆσαι πονηρόν. Καὶ ἡτοιμάσθη ἡ βασιλεία ἐνώπιον Ἀντιόχου· καὶ ὑπέλαβεν βασιλεῦσαι γῆς Αἰγύπτου, ὅπως βασιλεύσῃ ἐπὶ τὰς δύο βασιλείας. καὶ εἰσῆλθεν εἰς Αἴγυπτον ὄχλῳ βαρεῖ, ἐν ἅρμασιν καὶ ἐλέφανσιν καὶ ἐν ἱππεῦσιν καὶ ἐν στόλῳ μεγάλῳ. καὶ συνεστήσατο πόλεμον πρὸς Πτολεμαῖον τὸν βασιλέα Αἰγύπτου· καὶ ἐνετράπη Πτολεμαῖος ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ καὶ ἔφυγεν, καὶ ἔπεσαν τραυματίαι πολλοί. καὶ κατελάβοντο τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς ἐν γῇ Αἰγύπτῳ· καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἀντίοχος μετὰ τὸ πατάξαι Αἴγυπτον ἐν τῷ ἑκατοστῷ καὶ τεσσερακοστῷ καὶ τρίτῳ ἔτει· καὶ ἀνέβη ἐπὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἰεροσόλυμα ἐν ὄχλῳ βαρεῖ καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἁγίασμα ἐν ὑπερηφανίᾳ, καὶ ἔλαβεν τὸ θυσιαστήριον τὸ χρυσοῦν, καὶ τὴν λυχνίαν τοῦ φωτὸς καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῆς, καὶ τὴν τράπεζαν τῆς προθέσεως καὶ τὰ σπόνδια καὶ τὰς φιάλας καὶ τὰς θυίσκας τὰς χρυσᾶς καὶ τὸ καταπέτασμα καὶ τοὺς στεφάνους καὶ τὸν κόσμον τὸν χρυσοῦν τὸν κατὰ πρόσωπον τοῦ ναοῦ, καὶ ἐλέπισεν πάντα·

καὶ ἔλαβεν τὸ ἀργύριον καὶ τὸ χρυσίον, καὶ τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητά· καὶ ἔλαβεν τοὺς θησαυροὺς τοὺς ἀποκρύφους οὓς εὗρεν. καὶ λαβὼν πάντα ἀπῆλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. καὶ ἐποίησαν φονοκτονίαν, καὶ ἐλάλησαν ὑπερηφανίαν μεγάλην. καὶ ἐγένετο πένθος μέγα ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν παντὶ τόπῳ αὐτῶν· καὶ ἐστέναξαν ἄρχοντες καὶ πρεσβύτεροι, παρθένοι καὶ νεανίσκοι ἠσθένησαν, καὶ τὸ κάλλος τῶν γυναικῶν ἠλλοιώθη. πᾶς νυμφίος ἀνέλαβεν θρῆνον· καθημένη ἐν παστῷ ἐγένετο ἐν πένθει. καὶ ἐσείσθη ἡ γῆ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτήν· καὶ πᾶς ὁ οἶκος Ἰακὼβ ἐνεδύσατο αἰσχύνην. Μετὰ δύο ἔτη ἡμερῶν ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς ἄρχοντα φορολογίας εἰς τὰς πόλεις Ἰούδα· καὶ ἦλθεν εἰς Ἰερουσαλὴμ ἐν ὄχλῳ βαρεῖ. καὶ ἐλάλησεν αὐτοῖς λόγους εἰρηνικοὺς ἐν δόλῳ, καὶ ἐπίστευσαν αὐτῷ, καὶ ἐπέπεσεν ἐπὶ τὴν πόλιν ἐξάπινα, καὶ ἐπάταξεν αὐτὴν πληγὴν μεγάλην, καὶ ἀπώλεσεν λαὸν πολὺν ἐξ Ἰσραήλ. καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα τῆς πόλεως καὶ ἐνεπύρισεν αὐτὴν πυρί, καὶ καθεῖλεν τοὺς οἴκους αὐτῆς καὶ τὰ τείχη αὐτῆς κύκλῳ, καὶ ᾐχμαλώτευσεν τὰς γυναῖκας καὶ τὰ τέκνα· καὶ τὰ κτήνη ἐκληρονόμησαν. καὶ ᾠκοδόμησαν τὴν πόλιν Δαυεὶδ τείχει μεγάλῳ καὶ ὀχυρῷ, πύργοις ὀχυροῖς, καὶ ἐγένετο αὐτοῖς εἰς ἄκραν. καὶ ἔθηκαν ἐκεῖ ἔθνος ἁμαρτωλόν, ἄνδρας παρανόμους· καὶ ἐνίσχυσαν ἐν αὐτῇ. καὶ παρέθεντο ὅπλα καὶ τροφήν, καὶ συναγαγόντες τὰ σκῦλα Ἰερουσαλὴμ ἀπέθεντο ἐκεῖ καὶ ἐγένετο εἰς μεγάλην παγίδα, καὶ ἐγένετο εἰς ἔνεδρον τῷ ἁγιάσματι, καὶ εἰς διάβολον πονηρὸν τῷ Ἰσραὴλ διὰ παντός. καὶ ἐξέχεαν αἷμα ἀθῷον κύκλῳ τοῦ ἁγιάσματος. καὶ ἐμόλυναν τὸ ἁγίασμα. καὶ ἔφυγον οἱ κάτοικοι Ἰερουσαλὴμ δι᾽ αὐτούς, καὶ ἐγένετο κατοικία ἀλλοτρίων· καὶ ἐγένετο ἀλλοτρία τοῖς γενήμασιν αὐτῆς, καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς ἐγκατέλειπον αὐτήν. τὸ ἁγίασμα αὐτῆς ἠρημώθη ὡς ἔρημος· αἱ

ἑορταὶ αὐτῆς ἐστράφησαν εἰς πένθος, τὰ σάββατα αὐτῆς εἰς ὀνειδισμόν, τιμὴ αὐτῆς εἰς ἐξουθένωσιν, κατὰ τὴν δόξαν αὐτῆς ἐπληθύνθη ἀτιμασμὸς αὐτῆς, καὶ τὸ ὕψος αὐτῆς ἐστράφη εἰς πένθος. Καὶ ἔγραψεν ὁ βασιλεὺς πάσῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ εἶναι πάντας εἰς λαὸν ἕνα, καὶ ἐγκαταλείπειν ἕκαστον τὰ νόμιμα αὐτοῦ· καὶ ἐπεδέξαντο πάντα τὰ ἔθνη κατὰ τὸν λόγον τοῦ βασιλέως. καὶ πολλοὶ ἀπὸ Ἰσραὴλ ηὐδόκησαν τῇ λατρίᾳ αὐτοῦ, καὶ ἔθυσαν τοῖς εἰδώλοις, καὶ ἐβεβήλωσαν τὸ σάββατον. καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς βιβλία ἐν χειρὶ ἀγγέλων εἰς Ἰερουσαλὴμ καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, πορευθῆναι ὀπίσω νομίμων ἀλλοτρίων τῆς γῆς, καὶ κωλῦσαι ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας καὶ σπονδὴν ἐκ τοῦ ἁγιάσματος, καὶ βεβηλῶσαι σάββατα καὶ ἑορτάς, καὶ μιᾶναι ἁγίασμα καὶ ἁγίους· οἰκοδομῆσαι βωμοὺς καὶ τεμένη καὶ εἴδωλα, καὶ θύειν ὕεια καὶ κτήνη κοινά, καὶ ἀφιέναι τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἀπεριτμήτους, βδελύξαι τὰς ψυχὰς αὐτῶν ἐν παντὶ ἀκαθάρτῳ καὶ βεβηλῶσαι. ὥστε ἐπιλαθέσθαι τοῦ νόμου, καὶ ἀλλάξαι πάντα τὰ δικαιώματα., καὶ ὃς ἂν μὴ ποιήσῃ κατὰ τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως ἀποθανεῖται. κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους ἔγραψεν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ, καὶ ἐποίησεν ἐπισκόπους ἐπὶ πάντα τὸν λαόν· καὶ ἐνετείλατο ταῖς πόλεσιν Ἰούδα θυσιάζειν κατὰ πόλιν καὶ πόλιν. καὶ συνηθροίσθησαν ἀπὸ τοῦ λαοῦ πρὸς αὐτοὺς πολλοί, πᾶς ὁ ἐνκαταλείπων τὸν νόμον· καὶ ἐποίησαν κακὰ ἐν τῇ γῇ, καὶ ἔθεντο τὸν Ἰσραὴλ ἐν κρυφίοις ἐν παντὶ φυγαδευτηρίῳ αὐτῶν. Καὶ πεντεκαιδεκάτῃ ἡμέρᾳ Χασελεὺ τῷ πέμπτῳ καὶ τεσσερακοστῷ ἔτει ᾠκοδόμησαν βδέλυγμα ἐρημώσεως ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον· καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα κύκλῳ ᾠκοδόμησαν βωμούς, καὶ ἐπὶ τῶν θυρίδων τῶν οἰκιῶν καὶ ἐν ταῖς πλατείαις ἐθυμίων. καὶ τὰ βιβλία τοῦ νόμου ἃ εὗρον, ἐνεπύρισαν πυρὶ κατασχίσαντες. καὶ ὅπου

εὑρίσκετο παρά τινι βιβλίον διαθήκης, καὶ εἴ τις συνευδόκει τῷ νόμῳ, τὸ σύγκριμα τοῦ βασιλέως ἐθανάτου αὐτόν. ἐν ἰσχύι αὐτῶν ἐποίουν οὕτω τῷ Ἰσραήλ, τοῖς εὑρισκομένοις ἐν παντὶ μηνὶ καὶ μηνὶ ἐν ταῖς πόλεσιν. καὶ πέμπτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς θυσιάζοντες ἐπὶ τὸν βωμὸν ὃς ἦν ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου. καὶ τὰς γυναῖκας τὰς περιτετμηκυίας τὰ τέκνα αὐτῶν ἐθανάτωσαν κατὰ τὸ πρόσταγμα, καὶ ἐκρέμασαν τὰ βρέφη ἐκ τῶν τραχήλων αὐτῶν, καὶ τοὺς οἰκείους αὐτῶν, καὶ τοὺς περιτετμηκότας αὐτούς· καὶ πολλοὶ ἐν Ἰσραὴλ ἐκρεμάσθησαν. καὶ ὀχυρώθησαν ἐν αὐτοῖς τοῦ μὴ φαγεῖν κοινά· καὶ ἐπεδέξαντο ἀποθανεῖν, ἵνα μὴ μιανθῶσιν τοῖς βρώμασιν, καὶ μὴ βεβηλώσουσιν διαθήκην ἁγίαν· καὶ ἀπέθανον. καὶ ἐγένετο ὀργὴ μεγάλη ἐπὶ Ἰσραὴλ σφόδρα.

# 2

Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἀνέστη Ματταθίας Ἰωάννου τοῦ Συμεών, ἱερεὺς τῶν υἱῶν Ἰωαρείμ, ἀπὸ Ἰερουσαλήμ, καὶ ἐκάθισεν ἐν Μωδεείν. καὶ αὐτῷ υἱοὶ πέντε· Ἰωάννης ὁ ἐπικαλούμενος Γαδδίς, Σίμων ὁ καλούμενος Θασσίς, Ἰούδας ὁ καλούμενος Μακκαβαῖος, Ἐλεαὰρ ὁ καλούμενος Αὐαράν, Ἰωνάθας ὁ καλούμενος Σαφφούς. Καὶ δεν τὰς βλασφημίας τὰς γινομένας ἐν Ἰούδα καὶ ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ εἶπεν Οἴμοι, ἵνα τί τοῦτο ἐγενήθην ἰδεῖν τὰ συντρίμματα τοῦ λαοῦ μου καὶ τὸ σύντριμμα τῆς πόλεως τῆς ἁγίας, καὶ καθίσαι ἐκεῖ ἐν τῷ δοθῆναι αὐτὴν ἐν χειρὶ ἐχθρῶν, τὸ ἁγίασμα ἐν χειρὶ ἀλλοτρίων ἐγένετο ὁ ναὸς αὐτῆς ὡς ἀνὴρ ἔνδοξος· τὰ σκεύη τῆς δόξης αἰχμάλωτα ἀπήχθη· ἀπεκτάνθη τὰ νήπια αὐτῆς ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, οἱ νεανίσκοι αὐτῆς ἐν ῥομφαίᾳ ἐχθροῦ.

ποῖον ἔθνος οὐκ ἐκληρονόμησεν βασίλεια καὶ οὐκ ἐκράτησεν τῶν σκύλων αὐτῆς; πᾶς ὁ κόσμος αὐτῆς ἀφῃρέθη· ἀντὶ ἐλευθέρας ἐγενήθη εἰς δούλην. καὶ ἰδοὺ τὰ ἅγια ἡμῶν καὶ ἡ καλλονὴ ἡμῶν καὶ ἡ δόξα ἡμῶν ἠρημώθη. καὶ ἐβεβήλωσαν αὐτὰ ἔθνη· ἵνα τί ἡμῖν ἔτι ζῆν καὶ διέρρηξεν Ματταθίας καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ περιεβάλοντο σάκκους, καὶ ἐπένθησαν σφόδρα. Καὶ ἦλθον οἱ παρὰ τοῦ βασιλέως οἱ καταναγκάζοντες τὴν ἀποστασίαν εἰς Μωδεεὶν τὴν πόλιν, ἵνα θυσιάσωσιν. καὶ πολλοὶ ἀπὸ Ἰσραὴλ πρὸς αὐτοὺς προσῆλθαν· καὶ Ματταθίας καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ συνήχθησαν. καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ παρὰ τοῦ βασιλέως καὶ εἶπαν τῷ Ματταθίᾳ λέγοντες Ἄρχων καὶ ἔνδοξος καὶ μέγας εἶ ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, καὶ ἐστηριγμένος ἐν υἱοῖς καὶ ἀδελφοῖς. νῦν πρόσελθε πρῶτος, καὶ ποίησον τὸ πρόσταγμα τοῦ βασιλέως, ὡς ἐποίησαν πάντα τὰ ἔθνη, καὶ οἱ ἄρχοντες Ἰούδα, καὶ οἱ καταλειφθέντες ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ ἔσῃ σὺ καὶ ὁ οἶκός σου τῶν φίλων τοῦ βασιλέως· καὶ σὺ καὶ οἱ υἱοί σου δοξασθήσεσθε ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ καὶ ἀποστολαῖς πολλαῖς. καὶ ἀπεκρίθη Ματταθίας καὶ εἶπεν φωνῇ μεγάλῃ Εἰ πάντα τὰ ἔθνη τὰ ἐν οἴκῳ τῆς βασιλείας τοῦ βασιλέως ἀκούουσιν αὐτοῦ, ἀποστῆναι ἕκαστος ἀπὸ λατρίας πατέρων αὐτοῦ, καὶ ἠρετίσαντο ἐν ταῖς ἐντολαῖς αὐτοῦ· κἀγὼ καὶ οἱ υἱοί μου καὶ οἱ ἀδελφοί μου πορευσώμεθα ἐν διαθήκῃ πατέρων ἡμῶν. ἵλεως ἡμῖν καταλείπειν νόμον καὶ δικαιώματα. τὸν νόμον τοῦ βασιλέως οὐκ ἀκουσόμεθα, παρελθεῖν τὴν λατρίαν ἡμῶν δεξιὰν ἡ ἀριστεράν. Καὶ ὡς ἐπαύσατο λαλῶν τοὺς λόγους τούτους, προσῆλθεν ἀνήρ Ἰουδαῖος ἐν ὀφθαλμοῖς πάντων, θυμιᾶσαι ἐπὶ τοῦ βωμοῦ ἐν Μωδεεὶμ κατὰ τὸ πρόσταγμα τοῦ βασιλέως. καὶ ὅιν Ματταθίας καὶ ἐζήλωσεν, καὶ ἐτρόμησαν οἱ νεφροὶ αὐτοῦ, καὶ ἀνήνεγκεν θυμὸν κατὰ τὸ κρίμα, καὶ δραμὼν ἔσφαξεν αὐτὸν ἐπὶ τὸν βωμόν. καὶ τὸν ἄνδρα τοῦ

βασιλέως τὸν ἀναγκάζοντα θύειν ἀπέκτεινεν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, καὶ τὸν βωμὸν καθεῖλεν, καὶ ἐζήλωσεν τῷ νόμῳ, καθὼς ἐποίησεν Φινεὼς τῷ Ζαμβρὶ υἱῷ Σαλώμ. καὶ ἀνέκραξεν Ματταθίας ἐν τῇ πόλει φωνῇ μεγάλῃ, λέγων Πᾶς ὁ ζηλῶν τῷ νόμῳ καὶ ἱστῶν διαθήκην, ἐξελθέτω ὀπίσω μου. καὶ ἔφυγον αὐτὸς καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ εἰς τὰ ὄρη, καὶ ἐνκατέλειπον ὅσα εἶχον ἐν τῇ πόλει. Τότε κατέβησαν πολλοὶ ζητοῦντες δικαιοσύνην καὶ κρίμα εἰς τὴν ἔρημον καθίσαι ἐκεῖ, αὐτοὶ καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν· ὅτι ἐσκληρύνθη ἐπ᾽ αὐτοὺς τὰ κακά. καὶ ἀνηγγέλη τοῖς ἀνδράσιν τοῦ βασιλέως καὶ ταῖς δυνάμεσιν αἳ ἦσαν ἐν Ἰερουσαλὴμ πόλει Δαυείδ, ὅτι κατέβησαν ἄνδρες, οἵτινες διεσκέδασαν τὴν ἐντολὴν τοῦ βασιλέως, εἰς τοὺς κρυφοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ. καὶ ἔδραμον ὀπίσω αὐτῶν πολλοί, καὶ καταλαβόντες αὐτοὺς παρενέβαλον ἐπ᾽ αὐτηύς, καὶ συνεστείλαντο πρὸς αὐτοὺς πόλεμον ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων· καὶ εἶπαν πρὸς αὐτοὺς Ἕως τοῦ νῦν· ἐξελθόντες ποιήσατε κατὰ τὸν λόγον τοῦ βασιλέως, καὶ ζήσεοθε. καὶ εἶπαν Οὐκ ἐξελευσόμεθα, οὐδὲ ποιήσομεν τὸν λόγον τοῦ βασιλέως, βεβηλῶσαι τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων. καὶ ἐτάχυναν ἐπ᾽ αὐτοὺς πόλεμον. καὶ οὐκ ἀπεκρίθησαν αὐτοῖς, οὐδὲ λίθον ἐνετίναξον αὐτοῖς, οὐδὲ ἐνέφραξαν τοὺς κρυφούς, λέγοντες Ἀποθάνωμεν οἱ πάντες ἐν τῇ ἁπλότητι ἡμῶν· μαρτυρεῖ ἐφ᾽ ἡμᾶς ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ ὅτι ἀκρίτως ἀπόλλυτε ἡμᾶς. καὶ ἀνέστησαν ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐν τῷ πολέμῳ τοῖς σάββασιν· καὶ ἀπέθανον αὐτοὶ καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν καὶ τὰ κτήνη αὐτῶν, ἕως χιλίων ψυχῶν ἀνθράπων. Καὶ ἔγνω Ματταθίας καὶ οἱ φίλοι αὐτοῦ, καὶ ἐπένθησαν ἐπ᾽ αὐτοὺς ἕως σφόδρα. καὶ εἶπεν ἀνὴρ πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ Ἐὰν πάντες ποιήσωμεν ὡς οἱ ἀδελφοὶ ἡμῶν ἐποίησαν, καὶ μὴ πολεμήσωμεν εἰς τὰ ἔθνη ὑπὲρ τῆς ψυχῆς ἡμῶν

καὶ τῶν δικαιωμάτων ἡμῶν, νῦν τάχιον ἡμᾶς ὀλεθρεύσουσιν ἀπὸ τῆς γῆς. καὶ ἐβουλεύσαντο τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγοντες Πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἐὰν ἔλθῃ πρὸς ἡμᾶς εἰς πόλεμον τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, πολεμήσωμεν κατέναντι αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ ἀποθάνωμεν πάντες καθὼς ἀπέθανον οἱ ἀδελφοὶ ἡμῶν ἐν τοῖς κρυφοῖς. τότε συνήχθησαν πρὸς αὐτοὺς συναγωγὴ Ἀσιδαίων, ἰσχυρᾷ δυνάμει ἀπὸ Ἰσραήλ, πᾶς ὁ ἑκουσιαζόμενος τῷ νόμῳ. καὶ πάντες οἱ φυγαδεύοντες ἀπὸ τῶν κακῶν προσετέθησαν αὐτοῖς, καὶ ἐγένοντο αὐτοῖς εἰς στήριγμα. καὶ συνεστήσαντο δύναμιν, καὶ ἐπάταξαν ἁμαρτωλοὺς ἐν ὀργῇ αὐτῶν, καὶ ἄνδρας ἀνόμους ἐν θυμῷ αὐτῶν· καὶ οἱ λοιποὶ ἔφυγον εἰς τὰ ἔθνη σωθῆναι. καὶ ἐκύκλωσεν Ματταθίας καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ καθεῖλον τοὺς βωμοὺς αὐτῶν, καὶ περιέτεμον τὰ παιδάρια τὰ ἀπερίτμητα ὅσα εὗρεν ἐν ὁρίοις Ἰσραὴλ ἐν ἰσχύι. καὶ ἐδίωξαν τοὺς υἱοὺς τῆς ὑπερηφανίας, καὶ κατευοδώθη τὸ ἔργον ἐν χειρὶ αὐτῶν. καὶ ἀντελάβοντο τοῦ νόμου ἐκ χειρὸς τῶν ἐθνῶν καὶ ἐκ χειρὸς τῶν βασιλέων, καὶ οὐκ ἔδωκαν κέρας τῷ ἁμαρτωλῷ. Καὶ ἤγγισαν αἱ ἡμέραι τοῦ Ματταθίου ἀποθανεῖν, καὶ εἶπεν τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ Νῦν ἐστηρίχθη ὑπερηφανία καὶ ἐλέγμὸς καὶ καιρὸς καταστροφῆς καὶ ὀργὴ θυμοῦ. καὶ νῦν, τέκνα, ζηλώσατε τῷ νόμῳ, καὶ δότε τὰς ψυχὰς ὑμῶν ὑπὲρ διαθήκης πατέρων ἡμῶν. μνήσθητε τῶν πατέρων ἡμῶν τὰ ἔργα ἃ ἐποίησαν ταῖς γενεαῖς αὐτῶν, καὶ δέξασθε δόξαν μεγάλην καὶ δόξαν αἰώνιον. Ἀβραὰμ οὐκ ἐν πειρασμῷ εὑρέθη πιστός, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ δικαιοσύνη; Ἰωσὴφ ἐν καιρῷ στενοχωρίας αὐτοῦ ἐφύλαξεν ἐντολήν, καὶ ἐγένετο κύριος Αἰγύπτου. Φινεὲς ὁ πατὴρ ἡμῶν ἐν τῷ ζηλῶσαι ζῆλον ἔλαβεν διαθήκην ἱερωσύνης ἁγίας. Ἰησοῦς ἐν τῷ πληρῶσαι λόγον ἐγένετο κριτὴς ἐν Ἰσραήλ. Χαλὲβ ἐν τῷ ἐπιμαρτύρασθαι τῇ ἐκκλησίᾳ ἔλαβεν γῆν κληρονομίαν. Δαυεὶδ

ἐν τῷ ἐλέει αὐτοῦ ἐκληρονόμησεν θρόνον βασιλείας αἰωνίας. Ἠλίας ἐν τῷ ζηλῶσαι ζῆλον νόμου ἀνελήμφθη ὡς εἰς τὸν οὐρανόν. Ἀνανίας, Ἀζαρίας. Μισαήλ, πιστεύσαντες ἐσώθησαν ἐκ φλογός. Δανιὴλ ἐν τῇ ἁπλότητι αὐτοῦ ἐρύσθη ἐκ στόματος λεόντων. καὶ οὕτως ἐννοήθητε κατὰ γενεάν, ὅτι πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπ’ αὐτὸν οὐκ ἀσθενήσουσιν. καὶ ἀπὸ λόγων ἀνδρὸς ἁμαρτωλοῦ μὴ φοβηθῆτε, ὅτι ἡ δόξα αὐτοῦ εἰς κόπρια καὶ εἰς σκώληκας. σήμερον ἐπαρθήσεται, καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ, ὅτι ἐπέστρεψεν εἰς τὸν χοῦν αὐτοῦ, καὶ ὁ διαλογισμὸς αὐτοῦ ἀπώλετο. καὶ ὑμεῖς, τέκνα, ἰσχύετε καὶ ἀνδρίζεσθε ἐν τῷ νόμῳ ὑμῶν, ὅτι ἐν αὐτῷ δοξασθήσεσθε. καὶ ἰδοὺ Συμεὼν ὁ ἀδελφὸς ὑμῶν, οἶδα ὅτι ἀνὴρ βουλῆς ἐστιν· αὐτοῦ ἀκούετε πάσας τὰς ἡμέρας, αὐτὸς ὑμῖν ἔσται εἰς πατέρα. καὶ Ἰούδας ὁ Μακκαβαῖος αὐτός, ἰσχυρὸς ἐν δυνάμει αὐτὸς ἐκ νεότητος αὐτοῦ, οὗτος ὑμῖν ἔσται εἰς ἄρχοντα στρατιᾶς· καὶ πολεμήσετε πόλεμον λαῶν. καὶ ὑμεῖς προσάξετε πρὸς ὑμᾶς πάντας τοὺς ποιητὰς τοῦ νόμου, καὶ ἐκδικησατε ἐκδίκησιν τοῦ λαοῦ ὑμῶν. ἀνταποδίδοτε ἀνταπόδομα τοῖς ἔθνεσιν, καὶ προσέχετε εἰς προστάγματα τοῦ νόμου. Καὶ ηὐλόγησεν αὐτούς· καὶ προσετέθη πρὸς τοὺς πατέρας αὐτοῦ. καὶ ἀπέθανεν ἐν τῷ ἕκτῳ καὶ τεσσερακοστῷ καὶ ἑκατοστῷ ἔτει· καὶ ἔθαψαν αὐτὸν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐν τάφοις πατέρων αὐτοῦ ἐν Μωδεείν, καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν πᾶς Ἰσραὴλ κοπετὸν μέγαν.

# 3

Καὶ ἀνέστη Ἰούδας ὁ καλούμενος Μακκαβαῖος υἱὸς αὐτοῦ ἀντ’ αὐτοῦ. καὶ ἐβοήθουν αὐτῷ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ πάντες

ὅσοι ἐκολλήθησαν τῷ πατρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπολέμουν τὸν πόλεμον Ἰσραὴλ μετ’ εὐφροσύνης. καὶ ἐπλάτυνεν δόξαν τῷ λαῷ αὐτοῦ· καὶ ἐνεδύσατο θώρακα ὡς γίγας, καὶ συνεζώσατο τὰ σκεύη τὰ πολεμικὰ αὐτοῦ· πολέμους συνεστήσατο, σκεπάζων παρεμβολὴν ἐν ῥομφαίᾳ. καὶ ὡμοιώθη λέοντι ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, καὶ ὡς σκύμνος ἐρευγόμενος εἰς θήραν. καὶ ἐδίωξεν ἀνόμους ἐξερευνῶν, καὶ τοὺς ταράσσοντας τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐφλόγισεν· καὶ συνεστάλησαν οἱ ἄνομοι ἀπὸ τοῦ φόβου αὐτοῦ, καὶ πάντες οἱ ἐργάται τῆς ἀνομίας συνεταράχθησαν, καὶ εὐοδώθη σωτηρία ἐν χειρὶ αὐτοῦ. καὶ ἐπίκρανεν βασιλεῖς πολλούς, καὶ ηὔφρανεν τὸν Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ εἰς εὐλογίαν. καὶ διῆλθεν ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐξωλέθρευσεν ἀσεβεῖς ἐπ’ αὐτῆς, καὶ ἀπέστρεψεν ὀργὴν ἀπὸ Ἰσραήλ· καὶ ὠνομάσθη ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς, καὶ συνήγαγεν ἀπολλυμένους. Καὶ συνήγαγεν Ἀπολλώνιος ἔθνη, καὶ ἀπὸ Σαμαρίας δύναμιν μεγάλην τοῦ πολεμῆσαι πρὸς Ἰσραήλ. καὶ ἔγνω Ἰούδας, καὶ ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν αὐτῷ καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν καὶ ἀπέκτεινεν· καὶ ἔπεσον τραυματίαι πολλοί, καὶ οἱ ἐπίλοιποι ἔφυγον. καὶ ἔλαβον τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ τὴν μάχαιραν Ἀπολλωνίου ἔλαβεν Ἰούδας, καὶ ἦν πολεμῶν ἐν αὐτῇ πάσας τὰς ἡμέρας. Καὶ ἤκουσεν Σήρων, ὁ ἄρχων τῆς δυνάμεως Συρίας, ὅτι ἤθροισεν Ἰούδας ἄθροισμα καὶ ἐκκλησίαν πιστῶν μεθ’ αὐτοῦ καὶ ἐκπορευομένων εἰς πόλεμον. καὶ εἶπεν Ποιήσω ἐμαυτῷ ὄνομα, καὶ δοξασθήσομαι ἐν τῇ βασιλείᾳ, καὶ πολεμήσω τὸν Ἰούδαν καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ καὶ τοὺς ἐξουδενοῦντας τὸν λόγον τοῦ βασιλέως. καὶ προσέθετο καὶ ἀνέβη μετ’ αὐτοῦ παρεμβολὴ ἀσεβῶν ἰσχυρὰ βοηθῆσαι αὐτῷ, ποιῆσαι τὴν ἐκδίκησιν ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ. καὶ ἤγγισεν ἕως ἀναβάσεως Μεθωρών· καὶ ἐξῆλθεν Ἰούδας εἰς συνάντησιν αὐτῷ ὀλιγοστός. ὡς

δὲ ἴδαν τὴν παρεμβολὴν ἐρχομένην εἰς συνάντησιν αὐτῷ, εἶπαν τῷ Ἰούδᾳ Τί δυνησόμεθα ὀλιγοστοὶ ὄντες πολεμῆσαι πρὸς πλῆθος τοσοῦτο; καὶ ἡμεῖς ἐκλελύμεθα ἀσιτοῦντες σήμερον. καὶ εἶπεν Ἰούδας Εὔκοπόν ἐστιν συνκλεισθῆναι πολλοὺς ἐν χερσὶν ὀλίγων· καὶ οὐκ ἔστιν διαφορὰ ἐναντίον τοῦ οὐρανοῦ σώζειν ἐν πολλοῖς ἢ ἐν ὀλίγοις. ὅτι οὐκ ἐν πλήθει δυνάμεως νίκη πολέμου ἐστίν, ἀλλ᾽ ἢ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἰσχύς. αὐτοὶ ἔρχονται πρὸς ἡμᾶς πλήθει ὕβρεως καὶ ἀνομίας, τοῦ ἐξᾶραι ἡμᾶς καὶ τὰς γυναῖκας ἡμῶν καὶ τὰ τέκνα ἡμῶν, τοῦ σκυλεῦσαι ἡμᾶς. ἡμεῖς δὲ πολεμοῦμεν περὶ τῶν ψυχῶν ἡμῶν καὶ τῶν νομίμων ἡμῶν. καὶ αὐτὸς συντρίψει αὐτοὺς πρὸ προσώπου ἡμῶν· ὑμεῖς δέ μὴ φοβηθῆτε ἀπ᾽ αὐτῶν. ὡς δὲ ἐπαύσατο λαλῶν, ἐνήλατο ἐπ᾽ αὐτοὺς ἄφνω, καὶ συνετρίβη Σήρων καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ἐνώπιον αὐτοῦ. καὶ ἐδίωκον αὐτοὺς ἐν τῇ καταβάσει Βαιθωρὼν ἕως τοῦ πεδίου· καὶ ἔπεσον ἀπ᾽ αὐτῶν εἰς ἄνδρας ὀκτακοσίους· οἱ δὲ λοιποὶ ἔφυγον εἰς γῆν Φυλιστείμ. καὶ ἤρξατο ὁ φόβος Ἰούδα καὶ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ ἡ πτόη ἔπιπτεν ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ αὐτῶν. καὶ ἤγγισεν ἕως τοῦ βασιλέως τὸ ὄνομα αὐτοῦ, καὶ ὑπὲρ τῶν παρατάξεων Ἰούδα ἐξηγεῖτο πᾶν ἔθνος. Ὡς δὲ ἤκουσεν Ἀντίοχος ὁ βασιλεὺς τοὺς λόγους τούτους, ὠργίσθη θμμῷ· καὶ ἀπέστειλεν καὶ συνήγαγεν τὰς δυνάμεις πάσας τῆς βασιλείας αὐτοῦ, παρεμβολὴν ἰσχυρὰν σφόδρα· καὶ ἤνοιξεν τὸ γαζοφυλάκιον αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν ὀψώνια ταῖς δυνάμεσιν αὐτοῦ εἰς τὸν ἐνιαυτόν· καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς εἰς ἐνιαυτὸν εἶναι ἑτοίμους εἰς πᾶσαν χρείαν. καὶ ἴδεν ὅτι ἐξέλειπεν τὸ ἀργύριον ἀπὸ τῶν θησαυρῶν· καὶ οἱ φόροι τῆς χώρας ὀλίγοι χάριν τῆς διχοστασίας καὶ πληγῆς ἧς κατεσκεύασεν ἐν τῇ γῇ. τοῦ ἆραι τὰ νόμιμα ἃ ἦσαν ἀφ᾽ ἡνερῶν τῶν πρώτων. καὶ εὐλαβήθη μὴ οὐκ ἔχει ὡς ἅπαξ καὶ δὶς εἰς τὰς δαπάνας καὶ τὰ δόματα ἃ ἐδίδου

ἔμπροσθεν δαψιλῃ χειρί, καὶ ἠπορεῖτο τῇ ψυχῇ αὐτοῦ σφόδρα· καὶ ἐβουλεύσατο τοῦ πορευθῆναι εἰς τὴν Περσίδα, καὶ λαβεῖν τοὺς φόρους τῶν χωρῶν, καὶ συναγαγεῖν ἀργύριον πολύ. καὶ κατέλειπεν Λυσίαν ἄνθρωπον ἔνδοξον καὶ ἀπὸ γένους τῆς βασιλείας ἐπὶ τῶν πραγμάτων τοῦ βασιλέως, ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ Εὐφράτου ἕως τῶν ὁρίων Αἰγύπτου, καὶ τρέφειν Ἀντίοχον τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἕως τοῦ ἐπιστρέψαι αὐτόν. καὶ παρέδωκεν αὐτῷ τὰς ἡμίσεις τῶν δυνάμεων καὶ τοὺς ἐλέφαντας, καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ περὶ πάντων ὧν ἐβούλετο, καὶ περὶ πάντων τῶν κατοικούντων τὴν Ἰουδαίαν καὶ Ἱερουσαλήμ, ἀποστεῖλαι ἐπ’ αὐτοὺς δύναμιν, τοῦ ἐκρίψαι καὶ ἐξᾶραι τὴν ἰσχὺν Ἰσραὴλ καὶ τὸ κατάλιμμα Ἱερουσαλήμ, καὶ ἆραι τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ τόπου, καὶ κατοικῆσαι υἱοὺς ἀλλοτρίους ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῶν, καὶ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν αὐτῶν. καὶ ὁ βασιλεὺς παρέλαβεν τὰς ἡμίσεις τῶν δυνάμεων τὰς καταλειφθείσας· καὶ ἀπῆρεν ἀπὸ Ἀντιοχίας, ἀπὸ πόλεως βασιλείας αὐτοῦ, ἔτους ἑβδόμου καὶ τεσσερακοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ· καὶ διεπέρασεν τὸν Εὐφράτην ποταμόν, καὶ διεπορεύετο τὰς ἐπάνω χώρας. Καὶ ἐπέλεξεν Λυσίας Πτολεμαῖον τὸν Δορυμένους, Νικάνορα καὶ Γοργίαν, ἄνδρας δυνατοὺς τῶν φίλων τοῦ βασιλέως. καὶ ἀπέστειλεν μετ’ αὐτῶν τεσσεράκοντα χιλιάδας ἀνδρῶν καὶ ἑπτακισχίλιον ἵππον, τοῦ ἐλθεῖν εἰς γῆν Ἰούδα καὶ καταφθεῖραι αὐτὴν κατὰ τὸν λόγον τοῦ βασιλέως. καὶ ἀπῆραν σὺν πάσῃ τῇ δυνάμει αὐτῶν καὶ ἦλθον· καὶ παρέβαλον· πλησίον Ἀμμαοὺν ἐν τῇ γῇ τῇ πεδινῇ. καὶ ἤκουσαν οἱ ἔμποροι τῆς χώρας τὸ ὄνομα αὐτῶν, καὶ ἔλαβον ἀργύριον καὶ χρυσίον πολὺ σφόδρα καὶ παῖδας· καὶ ἦλθον εἰς τὴν παρεμβολὴν τοῦ λαβεῖν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ εἰς πταῖδας· καὶ προσεγενήθησαν πρὸς αὐτοὺς δυνάμεις Συρίας καὶ γῆς ἀλλοφύλων. Καὶ ἴδεν Ἰούδας καὶ οἱ

ἀδελφοὶ αὐτοῦ ὅτι ἐπληθύνθη τὰ κακά, καὶ αἱ δυνάμεις παρεμβαλοῦσιν ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῶν· καὶ ἐπέγναωσαν τοὺς λόγους τῆς βασιλείας οὓς ἐνετείλατο ποιῆσαι τῷ λαῷ εἰς ἀπώλειαν καὶ συντέλειαν. καὶ εἶπαν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ Ἀναστήσωμεν τὴν καθαίρεσιν τοῦ λαοῦ ἡμῶν καὶ τῶν ἁγίων. καὶ ἠθροίσθησαν ἡ συναγωγὴ τοῦ εἶναι ἑτοίμους εἰς πόλεμον, καὶ τοῦ προσεύξασθαι καὶ αἰτῆσαι ἔλεον καὶ οἰκτειρμούς. καὶ Ἰερουσαλὴμ ἦν ἀοίκητος ὡς ἔρημος· οὐκ ἦν ὁ εἰσπορευόμενος καὶ ἐκπορευόμενος ἐκ τῶν γενημάτων αὐτῆς· καὶ τὸ ἁγίασμα καταπατούμενον, καὶ υἱοὶ ἀλλογενῶν ἐν τῇ ἄκρᾳ, κατάλυμα ἐν τοῖε ἔθνεσιν· καὶ ἐξήρθη τέρψις ἐξ Ἰακώβ, καὶ ἐξέλειπεν αὐλὸς καὶ κινύρα. καὶ συνήχθησαν καὶ ἦλθοσαν εἰς Μασσηφὰ κατέναντι Ἰερουσαλήμ, ὅτι τόπος προσευχῆς εἰς Μασσηφὰ τὸ πρότερον τῷ Ἰσραήλ. καὶ ἐνήστευσαν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ περιεβάλλοντο σάκκους καὶ σποδὸν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ διέρρηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν. καὶ ἐξεπέτασαν τὸ βιβλίον τοῦ νόμου, περὶ ὧν ἐξηρεύνων τὰ ἔθνη τὰ ὁμοιώματὰ τῶν εἰδώλων αὐτῶν. καὶ ἤνεγκαν τὰ ἱμάτια τῆς ἱερωσύνης καὶ τὰ πρωτογενήματα καὶ τὰς δεκάτας· καὶ ἤγειραν τοὺς Ναζιραίους, οἳ ἐπλήρωσαν τὰς ἡμέρας· καὶ ἐβόησαν φωνῇ εἰς τὸν οὐρανὸν λέγοντες Τί ποιήσαρμεν τούτοις, καὶ ποῦ αὐτοὺς ἀπαγάγωμεν ; καὶ τὰ ἅγιά σου καταπεπάτηται καὶ βεβήλωται, καὶ οἱ ἱερεῖς σου ἐν πένθει καὶ ταπεινώσει. καὶ ἰδοὺ τὰ ἔθνη συνῆκται ἐφ’ ἡμᾶς τοῦ ἐξᾶραι ἡμᾶς· σὺ οἶδας ἃ λογίζονται ἐφ’ ἡμᾶς. πῶς δυνησόμεθα ὑποστῆναι κατὰ πρόσωπον αὐτῶν, ἐὰν μὴ σὺ βοηθήσῃς ἡμῖν ; καὶ ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξιν, καὶ ἐβόησαν φωνῇ μεγάλῃ. Καὶ μετὰ τοῦτο κατέστησεν Ἰούδας ἡγουμένους τοῦ λαοῦ, χιλιάρχους καὶ ἑκατοντάρχους καὶ πεντηκοντάρχους καὶ δεκαδάρχους. καὶ εἶπεν τοῖς οἰκοδομοῦσιν

οἰκίαν καὶ μνηστευομένοις γυναῖκας καὶ φυτεύουσιν ἀμπελῶνας καὶ δειλοῖς, ἀποστρέφειν ἕκαστον εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ κατὰ τὸν νόμον. καὶ ἀπῆρεν ἡ παρεμβολή, καὶ παρενεβάλοσαν κατὰ νότου Ἀμμαούμ. καὶ εἶπεν Ἰούδας Περιζώσασθε, καὶ γενέσθε εἰς υἱοὺς δυνατούς· καὶ γίνεσθε ἕτοιμοι εἰς τὸ πρωὶ τοῦ πολεμῆσαι ἐν τοῖς ἔθνεσιν τούτοις τοῖς ἐπισυνηγμένοις ἐφ’ ἡμᾶς ἐξᾶραι ἡμᾶς καὶ τὰ ἅγια ἡμῶν. ὅτι κρεῖσσον ἡμᾶς ἀποθανεῖν ἐν πολέμῳ, ἢ ἐφιδεῖν ἐπὶ τὰ κακὰ τοῦ ἔθνους ἡμῶν καὶ τῶν ἁγίων. ὡς δ’ ἂν ᾖ θέλημα ἐν οὐρανῷ, οὕτως ποιήσει.

# 4

Καὶ παρέλαβεν Γοργίας πεντακισχιλίους ἄνδρας καὶ χιλίαν ἵππον ἐκλεκτήν, καὶ ἀπῆρεν ἡ παρεμβολὴ νυκτός, ὥστε ἐπιβαλεῖν ἐπὶ τὴν παρεμβολὴν τῶν Ἰουδαίων καὶ πατάξαι αὐτοὺς ἄφνω· καὶ οἱ υἱοὶ τῆς ἄκρας ἦσαν αὐτῷ ὁδηγοί. καὶ ἤκουσεν Ἰούδας, καὶ ἀπῆρεν αὐτὸς καὶ οἱ δυνατοὶ πατάξαι τὴν δύναμιν τοῦ βασιλέως τὴν ἐν Ἐμμαούμ, ἕως ἔτι αἱ δυνάμεις ἐσκορπισμέναι ἦσαν ἀπὸ τῆς παρεμβολῆς. καὶ ἦλθεν Γοργίας εἰς τὴν παρεμβολὴν Ἰούδα νυκτός, καὶ οὐδένα εὗρεν· καὶ ἐζήει αὐτοὺς ἐν τοῖς ὄρεσιν, ὅτι εἶπεν Φεύγουσιν οὗτοι ἀφ’ ἡμῶν. καὶ ἅμα ἡμέρᾳ ὤφθη Ἰούδας ἐν τῷ πεδίῳ ἐν τρισχιλίοις ἀνδράσιν· πλὴν καλύμματα καὶ μάχαιραν οὐκ εἶχόν καθὼς ἠββούλοντο. καὶ ἴδον παρεμβολὴν ἐθνῶν ἰσχυρὰν τεθωρακισμένην, καὶ ἵππον κυκλοῦσαν αὐτήν, καὶ οὗτοι διδακτοὶ πολέμου. καὶ εἶπεν Ἰούδας τοῖς ἀνδράσιν τοῖς μετ’ αὐτοῦ Μὴ φοβεῖσθε τὸ πλῆθος αὐτῶν, καὶ τὸ ὅρμημα αὐτῶν μὴ δειλωθῆτε. μνήσθητε ὡς ἐσώθησαν οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν θαλάσσῃ ἐρυθρᾷ, ὅτε

ἐδίωξεν αὐτοὺς Φαραὼ ἐν δυνάμει. καὶ νῦν βοήσωμεν εἰς οὐρανόν, εἰ θελήσει ἡμᾶς. καὶ μνησθήσεται διαθήκης πατέρων, καὶ συντρίψει τὴν παρεμβολὴν ταύτην κατὰ πρόσωπον ἡμῶν σήμερον. καὶ γνώσονται πάντα τὰ ἔθνη, ὅτι ἔστιν ὁ λυτρούμενος καὶ σώζων τὸν Ἰσραήλ. καὶ ἦραν οἱ ἀλλόφυλοι τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ ἴδαν αὐτοὺς ἐχομένους ἐξ ἐναντίας, καὶ ἐξῆλθαν ἐκ τῆς παρεμβολῆς εἰς πόλεμον, καὶ ἐσάλπισαν οἱ παρὰ Ἰούδου. καὶ συνῆψαν, καὶ συνετρίβησαν τὰ ἔθνη καὶ ἔφυγον εἰς τὸ πεδίον. οἱ δὲ ἔσχατοι πάντες ἔπεσαν ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐδίωξαν αὐτοὺς ἕως Γασήρων καὶ ἕως τῶν πεδίων τῆς Ἰουδαίας καὶ Ἀζώτου καὶ Ἰαννείας, καὶ ἔπεσαν ἐξ αὐτῶν εἰς ἄνδρας τρισχιλίους. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἰούδας καὶ ἡ δύναμις ἀπὸ τοῦ διώκειν ὄπισθεν αὐτῶν, καὶ εἶπεν πρὸς τὸν λαόν Μὴ ἐπιθυμήσητε τῶν σκύλων, ὅτι πόλεμος ἐξ ἐναντίας ἡμῶν, καὶ Γοργίας καὶ ἡ δύναμις ἐν τῷ ὄρει ἐγγὺς ἡμῶν· ἀλλὰ στῆτε νῦν ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν καὶ πολεμήσατε αὐτούς, καὶ μετὰ ταῦτα λάβετε σκῦλα καὶ μετὰ παρρησίας. ἔτι πληροῦντος Ἰούδου ταῦτα, ὤφθη μέρος τι ἐκκύπτον ἐκ τοῦ ὄρους. καὶ ἴδεν ὅτι τετρόπωται, καὶ ἐνπυρίζουσιν τὴν παρεμβολήν· ὁ γὰρ καπνὸς ὁ θεωρούμενος ἐνεφάνιζε τὸ γεγονός. οἱ δὲ ταῦτα συνειδότες ἐδειλώθησαν σφόδρα· συνιδόντες δὲ καὶ τὴν Ἰούδα παρεμβολὴν ἐν τῷ πεδίῳ ἑτοίμην εἰς παράταξιν, ἔφυγον πάντες εἰς γῆν ἀλλοφύλων. καὶ Ἰούδας ἀνέστρεψεν ἐπὶ τὴν σκυλίαν τῆς παρεμβολῆς· καὶ ἔλαβεν χρυσίον καὶ ἀργύριον πολὺ καὶ ὑάκινθον καὶ πορφύραν καὶ θαλασσίαν καὶ πλοῦτον μέγαν. καὶ ἐπιστρέψαντες ὕμνουν καὶ ηὐλόγουν εἰς οὐρανόν Ὅτι καλὸν εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ, καὶ ἐγενήθη σωτηρία μεγάλη τῷ Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Ὅσοι δὲ τῶν ἀλλοφύλων διεσώθησαν, παραγενηθέντες ἀπήγγειλαν τῷ Λυσίᾳ πάντα τὰ συμβεβηκότα. ὁ

δὲ ἀκούσας πάντα συνεχύθη καὶ ἠθύμει, ὅτι οὐχ οἷα ἤθελεν τοιαῦτα γέγονεν τῷ Ἰσραήλ, καὶ οὐχ οἷα ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ βασιλεὺς ἐξέβη. Καὶ ἐν τῷ ἐρχομένῳ ἐνιαυτῷ συνελόχησεν ἀνδρῶν ἐπιλέκτων ἑξήκοντα χιλιάδας καὶ πεντακισχιλίαν ἵππονο, ὥστε ἐκπολεμῆσαι αὐτούς. καὶ ἦλθον εἰς τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ παρενέβαλον ἐν Βεθσούροις, καὶ συνήντησεν αὐτοῖς Ἰούδας ἐν δέκα χιλιάσιν ἀνδρῶν. καὶ ἴδεν τὴν παρεμβολὴν ἰσχυράν, καὶ προσηύξατο καὶ εἶπεν Εὐλογητὸς εἶ ὁ σωτὴρ Ἰσραήλ, ὁ συντρίψας τὸ ὅρμημα τοῦ δυνατοῦ ἐν χειρὶ τοῦ δούλου σου Δαυείδ, καὶ παρέδωκας τὴν παρεμβολὴν τῶν ἀλλοφύλων εἰς χεῖρας Ἰωνάθου υἱοῦ Σαοὺλ καὶ τοῦ αἴροντος τὰ σκεύη αὐτοῦ. σύνκλεισον τὴν παρεμβολὴν ταύτην εἰς χεῖρας λαοῦ σου Ἰσραήλ, καὶ αἰσχυνθήτωσαν ἐπὶ τῇ δυνάμει καὶ τῇ ἵππῳ αὐτῶν. δὸς αὐτοῖς δειλίαν, καὶ τῆξον θράσος ἰσχύος αὐτῶν, καὶ σαλευθήτωσαν τῇ συντριβῇ αὐτῶν. κατάβαλε αὐτοὺς ῥομφαίᾳ ἀγαπώνταων σε, καὶ αἰνεσάτωσάν σε πάντες οἱ ἰδόντες τὸ ὄνομά σου ἐν ὕμνοις. καὶ συνέβαλλον ἀλλήλοις, καὶ ἔπεσον ἐκ τῆς παρεμβολῆς Λυσίου εἰς πεντακισχιλίους ἄνδρας, καὶ ἔπεσαν ἐξ ἐναντίας αὐτῶν. ἰδὼν δὲ Λυσίας τὴν γενομένην τροπὴν τῆς αὐτοῦ συντάξεως, τῆς δὲ Ἰούδα τὸ γεγενημένον θάρσος, καὶ ὡς ἕτοιμοί εἰσιν ἢ ζῆν ἢ τεθνηκέναι γενναίως, ἀπῆρεν εἰς Ἀντιοχίαν· καὶ ἐξενολόγει, καὶ πλεοναστὸν πάλιν γενηθέντα παραγενέσθαι εἰς τὴν Ἰουδαίαν. Εἶπεν δὲ Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ Ἰδοὺ συνετρίβησαν οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν· ἀναβῶμεν καθαρίσαι τὰ ἅγια καὶ ἐνκαινίσαι. καὶ συνήχθη ἡ παρεμβολὴ πᾶσα, καὶ ἀνέβησαν εἰς ὄρος Σιών. καὶ ἴδον τὸ ἁγίασμα ἡμῶν ἠρημωμένον, καὶ τὸ θυσιαστήριον βεβηλωμένον, καὶ τὰς πύλας κατακεκαυμένας, καὶ ἐν ταῖς αὐλαῖς φυτὰ πεφυκότα ὡς ἐν δρυμῷ ἢ ὡς ἐν ἑνὶ τῶν ἀρέων, καὶ τὰ παστοφόρια καθῃρημένα.

καὶ διέρρηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐκόψαντο κοπετὸν μέγαν, καὶ ἐπέθεντο σποδὸν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν. καὶ ἔπεσον ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξιν τῶν σημασιῶν, καὶ ἐβόησαν εἰς οὐρανόν. τότε ἐπέταξεν Ἰούδας ἀνδράσιν πολεμεῖν τοὺς ἐν τῇ ἄκρα, ἕως καθαρίσῃ τὰ ἅγια. Καὶ ἐπέλεξεν ἱερεῖς ἀμώμους θελητὰς νόμου· καὶ ἐκαθάρισαν τὰ ἅγια, καὶ ἦραν τοὺς λίθους τοῦ μιασμοῦ εἰς τόπον ἀκάθαρτον. καὶ ἐβουλεύσαντο περὶ τοῦ θυσιαστηρίου τῆς ὁλοκαυτώσεως τοῦ βεβηλωμένου, τί αὐτῷ ποιήσωσιν. καὶ ἔπεσεν αὐτοῖς βουλὴ ἀγαθή, καθελεῖν αὐτό, μή ποτε γένηται αὐτοῖς εἰς ὄνειδος, ὅτι ἐμίαναν τὰ ἔθνη αὐτό· καὶ καθεῖλον τὸ θυσιαστήριον. καὶ ἀπέθεντο τοὺς λίθους ἐν τῷ ὄρει τοῦ οἴκου ἐν τόπῳ ἐπιτηδείῳ, μέχρι τοῦ παραγενηθῆναι προφήτην τοῦ ἀποκριθῆναι περὶ αὐτῶν. καὶ ἔλαβον λίθους ὁλοκλήρους κατὰ τὸν νόμον, καὶ ᾠκοδόμησαν θυσιαστήριον καινὸν κατὰ τὸ πρότερον. καὶ ᾠκοδόμησαν τὰ ἅγιὰ καὶ τὰ ἐντὸς τοῦ οἴκου, καὶ τὰς αὐλὰς ἡγίασεν. καὶ ἐποίησαν τὰ σκεύη τὰ ἅγια καινά, καὶ εἰσήνεγκαν τὴν λυχνίαν καὶ τὸ θυσιαστήριον τῶν ὁλοκαυτωμάτων καὶ θυμιαμάτων καὶ τὴν τράπεζαν εἰς τὸν ναόν. καὶ ἐθυμίασαν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐξῆψαν τοὺς λύχνους τοὺς ἐπὶ τῆς λυχνίας· καὶ ἐφαίνοσαν ἐν τῷ ναῷ. καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὴν τράπεζαν ἄρτους, καὶ ἐξεπέτασαν τὰ καταπετάσματα· καὶ ἐτέλεσαν πάντα τὰ ἔργα ἃ ἐποίησαν. Καὶ ὤρθρισαν τὸ πρωὶ τῇ πέμπτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς τοῦ ἐνάτου· οὗτος ὁ μὴν Χασελεὺ τοῦ ὀγδόου καὶ τεσσερακοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ ἔτους. καὶ ἀνήνεγκαν θυσίαν κατὰ τὸν νόμον ἐπὶ τὸ θυήιαγνήριον τῶν ὁλοκαυτωμάτων τὸ καινὸν ὃ ἐποίησαυ· κατὰ τὸν καιρὸν κατὰ τὴν ἡμέραν ἐν ᾗ ἐβεβήλωσαν αὐτὸ τὰ ἔθνη, ἐν ἐκείνῃ ἐνεκαινίσθη ἐν ᾠδαῖς καὶ κιθάραις καὶ κινύραις καὶ ἐν

κυμβάλοις. καὶ ἔπεσον πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ πρόσωπον, καὶ προσεκύνησαν καὶ ηὐλόγησαν εἰς οὐρανὸν τὸν εὐοδώσαντα αὐτούς. καὶ ἐποίησαν τὸν ἐγκαινιασμον τοῦ θυσιαστηρίου ἡμέρας ὀκτώ, καὶ προσήνεγκαν ὁλοκαυτώματα μετ᾽ εὐφροσύνης, καὶ ἔθυσαν θυσίαν σωτηρίου καὶ αἰνέσεως. καὶ κατεκόσμησαν τὸ κατὰ πρόσωτπον τοῦ ναοῦ στεφάνοις χρυσοῖς καὶ ἀσπιδίσκαις, καὶ ἐνεκαίνισεν τὰς πύλας καὶ τὰ παστοφόρια, καὶ ἐθύρωσαν αὐτά. καὶ ἐγενήθη εὐφροσύνη μεγάλη ἐν τῷ λαῷ σφόδρα, καὶ ἀπεστράφη ὄνειδος ἐθνῶν. καὶ ἔστησεν Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ πᾶσα ἐκκλησία Ἰσραήλ, ἵνα ἄγωνται ἡμέραι ἐγκαινισμοῦ τοῦ θυσιαστηρίου ἐν τοῖς καιροῖς αὐτῶν ἐνιαυτὸν κατ᾽ ἐνιαυτὸν ἡμέρας ὀκτώ, ἀπὸ τῆς πέμπτης καὶ εἰκάδος τοῦ μηνὸς Χασελεύ, μετ᾽ εὐφροσύνης καὶ χαρᾶς. καὶ ᾠκοδόμησαν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ τὸ ὄρος Σιών, κυκλόθεν τείχη ὑψηλὰ καὶ πύργους ἰσχυρούς, μή ποτε παραγενηθέντα τὰ ἔθνη καταπατήσωσιν αὐτά, ὡς ἐποίησαν τὸ πρότερον. καὶ ἀπέταξαν ἐκεῖ δύναμιν τηρεῖν αὐτό, καὶ ὠχύρωσαν αὐτὸ τηρεῖν τὴν Βεθσουρά, τοῦ ἔχειν τὸν λαὸν ὀχύρωμα κατὰ πρόσωπον τῆς Ἰδουμαίας.

# 5

Καὶ ἐγένετο ὅτε ἤκουσαν τὰ ἔθνη κυκλόθεν ὅτι ᾠκοδομήθη τὸ θυσιαστήριον καὶ ἐνεκαινίσθη τὸ ἁγίασμα ὡς τὸ πρότερον, καὶ ὠργίσθη σφόδρα. καὶ ἐβουλεύσαντο τοῦ ἆραι τὸ γένος Ἰακὼβ τοὺς ὄντας ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ ἤρξαντο τοῦ θανατοῦν ἐν τῷ λαῷ καὶ ἐξαίρειν. καὶ ἐπολέμει Ἰούδας πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἠσαὺ ἐν τῇ Ἰοδαίᾳ τὴν Ἀκραβαττήνην, ὅτι περιεκάθηντο τὸν Ἰσραήλ· καὶ ἐπάταξεν

αὐτοὺς πληγὴν μεγάλην, καὶ συνέστειλεν αὐτούς, καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα αὐτῶν. καὶ ἐμνήσθη τῆς κακίας υἱῶν Βαιάν, οἳ ἦσαν τῷ λαῷ εἰς παγίδα καὶ εἰς σκάνδαλον ἐν τῷ ἐνεδρεύειν αὐτοὺς ἐν ταῖς ὁδοῖς. καὶ διεκλείσθησαν ὑπ᾽ αὐτοῦ εἰς τοὺς πύργους, καὶ παρέβαλεν ἐπ᾽ αὐτούς, καὶ ἀνεθεμάτισεν αὐτούς, καὶ ἐνεπύρισεν τοὺς πύργους αὐτῆς ἐν πυρὶ σὺν πᾶσιν τοῖς ἐνοῦσιν. καὶ διεπέρασεν. ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμών, καὶ εὗρεν χεῖρα κραταιὰν καὶ λαὸν πολύν, καὶ Τιμόθεον ἡγούμενον αὐτῶν. καὶ συνῆψεν πρὸς αὐτοὺς πολέμους πολλούς, καὶ συνετρίβησαν πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς. καὶ προκατέλαβε τὴν Ἰάζην καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῆς, καὶ ἀνέστρεψεν εἰς τὴν Ἰουδαίαν. Καὶ ἐπισυνήχθησαν τὰ ἔθνη τὰ ἐν τῇ Γαλααδίτιδι ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ τοὺς ὄντας ἐπὶ τοῖς ὁρίοις αὐτῶν τοῦ ἐξᾶραι αὐτούς· καὶ ἔφυγον εἰς Δάθεμα τὸ ὀχύρωμα. καὶ ἀπέστειλαν γράμματα πρὸς Ἰούδαν καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ, λέγοντες Ἐπισυνηγμένα ἐστὶν ἐφ᾽ ἡμᾶς τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ ἡμῶν τοῦ ἐξᾶραι ἡμᾶς, καὶ ἑτοιμάζοντες ἐλθεῖν καὶ προκαταλαβέσθαι τὸ ὀχύρωμα εἰς ὃ κατεφύγομεν· καὶ Τιμόθεος ἡγεῖται τῆς παρεμβολῆς αὐτῶν. νῦν οὖν ἐλθὼν ἐξελοῦ ἡμᾶς ἐκ χειρὸς αὐτῶν, ὅτι πέπτωκεν ἐξ ἡμῶν πλῆθος. καὶ πάντες οἱ ἀδελφοὶ ἡμῶν οἱ ὄντες ἐν τοῖς Τονβίου τεθανάτωνται, καὶ αἰχμαλωτίκασι τὰς γυναῖκας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν καὶ τὴν ἀποσκευήν, καὶ ἀπώλεσαν ἐκεῖ ὡς μίαν χιλιάδα ἀνδρῶν. Ἔτι αἱ ἐπιστολαὶ ἀνεγινώσκοντο, καὶ ἰδοὺ ἄγγελοι ἕτεροι παρεγένοντο ἐκ τῆς Γαλιλαίας διερρηχότες τὰ ἱμάτια, ἀπαγγέλλοντες κατὰ τὰ ῥήματα ταῦτα, λέγοντες Ἐπισυνήχθη ἐπ᾽ αὐτοὺς ἐκ Πτολεμαίδος καὶ Τύρου καὶ Σιδῶνος καὶ πᾶσα Γαλιλαίᾳ ἀλλοφύλων, τοῦ ἐξαναλῶσαι ἡμᾶς. Ὡς δὲ ἤκουσεν Ἰούδας καὶ ὁ λαὸς τοὺς λόγους τούτους, ἐπισυνήχθη ἐκκλησία μεγάλη βουλεύεσθαι τί ποιήσωσιν

τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν τοῖς οὖσιν ἐν θλίψει καὶ πολεμουμένοις ὑπ’ αὐτοῦ. καὶ εἶπεν Ἰούδας Σίμωνι τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ Ἐπίλεξον σεαυτῷ ἄνδρας. καὶ πορεύου καὶ ῥῦσαι τοὺς ἀδελφούς σου ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ· ἐγὼ δὲ καὶ Ἰωναθὰν ὁ ἀδελφός μου πορευσόμεθα εἰς τὴν Γαλααδῖτιν. καὶ κατέλειπεν Ἰώσηφον τὸν τοῦ Ζαχαρίου καὶ Ἀζαρίαν ἡγούμενον τοῦ λαοῦ μετὰ τῶν ἐπιλοίπων τῆς δυνάμεως ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ εἰς τήρησιν· καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς λέγων ΙΙρόστητε τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ μὴ συνάψητε πόλεμον πρὸς τὰ ἔθνη ἕως τοῦ ἐπιστρέψαι ἡμᾶς. καὶ ἐμερίσθησαν Σίμωνι ἄνδρες τρισχίλιοι τοῦ πορευθῆναι εἰς τὴν Γαλιλαίαν, Ἰούδᾳ δὲ ἄνδρες ὀκτακισχίλιοι εἰς τὴν Γαλααδῖτιν. Καὶ ἐπορεύθη Σίμων εἰς τὴν Γαλιλαίαν, καὶ συνῆψεν πολέμους πολλοὺς πρὸς τὰ ἔθνη· καὶ συνετρίβη τὰ ἔθνη ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. καὶ ἐδίωξεν αὐτοὺς ἕως τῶν πόλεων Πτολεμαίδος· καὶ ἔπεσον ἐκ τῶν ἐθνῶν εἰς τρισχιλίους ἄνδρας, καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα αὐτῶν. καὶ παρέλαβεν αὐτοὺς ἐκ τῆς Γαλιλαίας καὶ ἐν Ἀρβάκτοις σὺν ταῖς γυναιξὶν καὶ τοῖς τέκνοις, καὶ πάντα ὅσα ἦν αὐτοῖς, καὶ ἤγαγον εἰς τὴν Ἰουδαίαν μετ’ εὐφροσύνης μεγάλης. Καὶ Ἰούδας ὁ Μακκαβαῖος καὶ Ἰωναθὰν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ διέβησαν τὸν Ἰορδάνην, καὶ ἐπορεύθησαν ὁδὸν τριῶν ἡμερῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ. καὶ συνήντησαν τοῖς Ναβαταίοις, καὶ ἀπήντησαν αὐτοῖς εἰρηνικῶς, καὶ διηγήσαντο αὐτοῖς ἅπαντα τὰ συμβεβηκότα τοῖς ἀδελφοῖς αὐτῶν ἐν τῇ Γαλααδίτιδι· καὶ ὅτι πολλοὶ ἐξ αὐτῶν συνειλημμένοι εἰσὶν εἰς Βοσσορὰ καὶ Βοσσόρ, ἐν Ἀλάμοις, Κασφώρ, Μακέβ, καὶ Καρνέιν· πᾶσαι αἱ πόλεις αὗται ὀχυραὶ καὶ μεγάλαι. καὶ ἐν ταῖς λοιπαῖς πόλεσιν τῆς Γαλααδίτιδος εἰσὶν συνειλημμένοι· εἰς αὔριον τάσσονται παρεμβαλεῖν ἐπὶ τὰ ὀχυρώματα, καὶ καταλαβέσθαι καὶ ἐξᾶραι πάντας αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ. καὶ ἀπέστρεψεν Ἰούδας καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ὁδὸν εἰς τὴν ἔρημον

εἰς Βοσὸρ ἄφνω· καὶ κατελάβετο τὴν πόλιν, καὶ ἀπέκτεινεν πᾶν ἀρσενικὸν ἐν στόματι ῥομφαίας, καὶ ἔλαβεν πάντα τὰ σκῦλα αὐτῶν, καὶ ἐνέπρησεν αὐτὴν πυρί καὶ ἀπῆρεν ἐκεῖθεν νυκτός, καὶ ἐπορεύετο ἕως ἐπὶ τὸ ὀχύρωμα. καὶ ἐγένετο ἐωθινή, καὶ ἦραν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν καὶ ἰδοὺ λαὸς πολὺς οὗ οὐκ ἦν ἀριθμός, αἴροντες κλίμακας καὶ μηχανὰς καταλαβέσθαι τὸ ὀχύρωμα· καὶ ἐπολέμουν αὐτούς. καὶ ἴδεν Ἰούδας ὅτι ἦρκται ὁ πόλεμος, καὶ ἡ κραυγὴ τῆς πόλεως ἀνέβη ἕως οὐρανοῦ σάλπιγξιν καὶ κραυγῇ μεγάλῃ· καὶ εἶπεν τοῖς ἀνδράσιν τῆς δυνάμεως Πολεμήσατε σήμερον ὑπὲρ τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν. καὶ ἐξῆλθεν ἐν τρισὶν ἀρχαῖς ἐξόπισθεν αὐτῶν· καὶ ἐσάλπισεν ταῖς σάλπιγξιν, καὶ ἐβόησαν ἐν προσευχῇ. καὶ ἐπέγνω ἡ παρεμβολὴ Τιμοθέου ὅτι ὁ Μακκαβαός ἐστιν, καὶ ἔφυγον ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς πληγῇ μεγάλῃ· καὶ ἔπεσον ἐξ αὐτῶν ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ εἰς ὀκτακισχιλίους ἄνδρας. καὶ ἀπέκλινεν εἰς Μααφὰ καὶ ἐπολέμησεν αὐτήν, καὶ κατελάβετο αὐτὴν καὶ ἀπέκτεινεν πᾶν ἀρσενικὸν αὐτῆς, καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα αὐτῆς, καὶ ἐνέπρησει αὐτὴν ἐν πυρί. ἐκεῖθεν ἀπῆρεν καὶ προκατελάβετο τὴν Χασφώθ, Μακέδ, Βοσόρ, καὶ τὰς λοιπὰς πόλεις τῆς Γαλααδίτιδος. δὲ τὰ ῥήματα ταῦτα συνήγαγεν Τιμόθεος παρεμβολὴν ἄλλην, καὶ παρενέβαλεν κατὰ πρόσωπον Ῥαφὼν ἐκ πέραν τοῦ χειμάρρου. καὶ ἀπέστειλεν Ἰούδας κατασκοπῆσαι τὴν παρεμβολήν· καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ λέγοντες Ἐπισυνηγμένοι εἰσὶν πρὸς αὐτοὺς πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ ὑμῶν, δύναμις πολλὴ σφόδρα. καὶ Ἄραβες μεμίσθωνται εἰς βοήθειαν αὐτοῖς, καὶ παρεμβάλλουσιν πέραν τοῦ χειμάρρου, ἕτοιμοι τοῦ ἐλθεῖν ἐπὶ σέ εἰς πόλεμον. καὶ ἐπορεύθη Ἰούδας εἰς συνάντησιν αὐτῶν. καὶ εἶπεν Τιμόθεος τοῖς ἄρχουσιν τῆς δυνάμεως αὐτοῦ ἐν τῷ ἐγγίζειν Ἰούδαν καὶ τὴν παρεμβυλὴν αὐτοῦ ἐπὶ τὸν χειμάρρουν

τοῦ ὕδατος Ἐὰν διαβῇ πρὸς ἡμᾶς πρότερος, οὐ δυνησόμεθα ὑποστῆναι αὐτόν, ὅτι δυνάμενος δυνήσεται πρὸς ἡμᾶς. ἐὰν δὲ δειλωθῇ καὶ παρεμβάλῃ πέραν τοῦ ποταμοῦ, διαπεράσομεν πρὸς αὐτόν. ὡς δὲ ἤγγισεν Ἰούδας ἐπὶ τὸν χειμάρρουν τοῦ ὕδατος, ἔστησεν τοὺς γραμματεῖς τοῦ λαοῦ ἐπὶ τοῦ χειμάρρου, καὶ ἐνετείλατο αὐτοῖς, λέγων Μὴ ἀφῆτε ἄνθρωπον παρεμβαλεῖν, ἀλλὰ ἐρχέσθωσαν πάντες εἰς τὸν πόλεμον. καὶ διεπέρασεν πρὸς αὐτοὺς πρότερον, καὶ πᾶς ὁ λαὸς αὐτοῦ ἔμπροσθεν αὐτοῦ· καὶ συνετρίβησαν πρὸ προσώπου αὐτοῦ πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἔριψαν πάντα τὰ ὅπλα αὐτῶν, καὶ ἔφυγον εἰς τὸ τέμενος ἐν Καρνάιν. καὶ προκατελάβοντο τὴν πόλιν, καὶ τὸ τέμενος ἐνεπύρισαν ἐν πυρὶ σὺν πᾶσιν τοῖς οὖσιν ἐν αὐτῷ· καὶ ἐτροπώθη ἡ Καρνάιν, καὶ οὐκ ἐδύνατο ἔτι ὑποστῆναι κατὰ πρόσωπον Ἰούδα. Καὶ συνήγαγεν Ἰούδας πάντα Ἰσραὴλ τοὺς ἐν τῇ Γαλααδίτιδι ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ τὰς γυναῖκας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν καὶ τὴν ἀποσκευὴν, παρεμβολὴν μεγάλην σφόδρα, ἐλθεῖν εἰς γῆν Ἰούδα. καὶ ἦλθον ἕως Ἐφρών, καὶ αὕτη ἡ πόλις μεγάλη ἡ τῆς εἰσόδου, ἰσχυρὰ σφόδρα· οὐκ ἦν ἐκκλῖναι ἀπ’ αὐτῆς δεξιὰν ἢ ἀριστεράν, ἀλλ’ ἢ διὰ μέσου αὐτῆς πορεύεσθαι. καὶ ἀπέκλεισαν αὐτοὺς οἱ ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐνέφραξαν τὰς πύλας λίθοις. καὶ ἀπέστειλεν πρὸς αὐτοὺς Ἰούδας λόγοις εἰρηνικοῖς λέγων Διελεύσομαι εἰς τὴν γῆν σου, τοῦ ἀπελθεῖν εἰς τὴν γῆν ἡμῶν· καὶ οὐδεὶς κακοποιήσει ὑμᾶς, πλὴν τοῖς ποσὶν παρελευσόμεθα. καὶ οὐκ ἠβούλοντο ἀνοῖξαι αὐτῷ. καὶ ἐπέταξεν Ἰούδας κηρῦξαι ἐν τῇ παρεμβολῇ τοῦ παρεμβαλεῖν ἕκαστον ἐν ᾧ ἐστιν τόπῳ. καὶ παρενέβαλον οἱ ἄνδρες τῆς πόλεως. καὶ ἐπολέμησαν τὴν πόλιν ὅλην τὴν ἡμέραν ἐκείνην καὶ ὅλην τὴν νύκτα, καὶ παρεδόθη ἡ πόλις ἐν χερσὶν αὐτοῦ. καὶ ἀπώλεσεν πᾶν ἀρσενικὸν ἐν στόματι ῥομφαίας, καὶ ἐξεφίζωσεν αὐτήν, καὶ ἔλαβεν

τὰ σκῦλα τῆς πόλεως, καὶ διῆλθεν διὰ τῆς πόλεως ἐπάνω τῶν ἀπεκταμμένων. καὶ διέβησαν τὸν Ἰορδάνην εἰς τὸ πεδίον τὸ μέγα κατὰ πρώσωπον Βαιθσάν. καὶ ἦν Ἰούδας ἐπισυνάγων τοὺς ἐσχατίζοντας καὶ παρακαλῶν τὸν λαὸν κατὰ πᾶσαν τὴν ὁδόν, ἕως ἦλθεν εἰς γῆν Ἰούδα. καὶ ἀνέβησαν εἰς τὸ ὄρος Σιὼν ἐν εὐφροσύνῃ καὶ χαρᾷ· καὶ προσήγαγον ὁλοκαυτώματα, ὅτι οὐκ ἔπεσεν ἐξ αὐτῶν οὐθεὶς ἕως τοῦ ἐπιστρέψαι ἐν εἰρήνῃ. Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις αἷς ἦν Ἰούδας καὶ Ἰωναθὰν ἐν τῇ Γαλαάδ, καὶ Σίμων ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ κατὰ πρόσωπον Πτολεμαίδος, ἤκουσεν Ἰωσὴφ ὁ τοῦ Ζαχαρία καὶ Ζαχαρίας ἄρχοντες τῶν δυνάμεων τῶν ἀνδραγαθέσεων καὶ τοῦ πολέμου οἷα ἐποίησαν· καὶ εἶπαν Ποιήσομεν καὶ αὐτοὶ ἑαυτοῖς ὄνομα, καὶ πορευθῶμεν πολεμῆσαι πρὸς τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ ἡμῶν. καὶ παρήγγειλαν τοῖς ἀπὸ τῆς δυνάμεως τῆς μετ’ αὐτῶν, καὶ ἐπορεύθησαν ἐπὶ Ἰαμνίαν. καὶ ἐξῆλθεν Γοργίας ἐκ τῆς πόλεως, καὶ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ εἰς συνάντησιν αὐτοῖς εἰς πόλεμον. καὶ ἐτροπώθη Ἰώσηφος καὶ Ἀζαρίας. καὶ ἐδιώχθησαν ἕως τῶν ὁρίων τῆς Ἰουδαίας καὶ ἔπεσον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκ τοῦ λαοῦ τοῦ Ἰσραὴλ εἰς δισχιλίους ἄνδρας· καὶ ἐγενήθη τροπὴ μεγάλη ἐν τῷ λαῷ, ὅτι οὐκ ἤκουσαν Ἰούδου καὶ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, οἰόμενοι ἀνδραγαθῆσαι αὐτόν. αὐτοὶ δὲ οὐκ ἦσαν ἐκ τοῦ σπέρματος τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων, οἷς ἐδόθη σωτηρία Ἰσραὴλ διὰ χειρὸς αὐτῶν. καὶ ὁ ἀνὴρ Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐδοξάσθησαν σφόδρα ἐναντίον παντὸς Ἰσραὴλ καὶ τῶν ἐθνῶν πάντων, οὗ ἠκούετο τὸ ὄνομα αὐτῶν· καὶ ἐπισυνήγοντο πρὸς αὐτοὺς εὐφημοῦντες. Καὶ ἐξῆλθεν Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ἐπολέμουν τοὺς υἱοὺς Ἡσοὺ ἐν τῇ γῇ τῇ πρὸς νότον, καὶ ἐπάταξεν τὴν Χεβρὼν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῆς· καὶ καθεῖλεν τὸ ὀχύρωμα αὐτῆς, καὶ τοὺς πύργους αὐτῆς ἐνεπύρισεν κυκλόθεν. καὶ

ἀπῆρεν τοῦ πορευθῆναι εἰς γῆν ἀλλοφύλων, καὶ διεπορεύετο τὴν Σαμαρίαν. ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔπεσαν ἱερεῖς πολέμῳ βουλομένου αὐτοῦ ἀνδραγαθῆσαι, ἐν τῷ αὐτὸν ἐξελθεῖν εἰς τὸν πόλεμον ἀβουλεύτως. καὶ ἐξέκλινεν Ἰούδας εἰς Ἄζωτον γῆν ἀλλοφύλων, καὶ καθεῖλεν τοὺς βωμοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ γλυπτὰ τῶν θεῶν αὐτῶν κοτέκαυσεν, καὶ ἐσκύλευσεν τὰ σκῦλα τῶν πόλεων, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς τὴν Ἰουδαίαν.

# 6

Καὶ ὁ βασιλεὺς Ἀντίοχος διεπορεύετο τὰς ἐπάνω χώρας, καὶ ἤκουσεν ὅτι ἐστὶν ἐν Ἐλύμοις ἐν τῇ Περσίδι πόλις ἔνδοξος πλούτῳ, ἀργυρίῳ, καὶ χρυσίῳ· καὶ τὸ ἱερὸν τὸ ἐν αὐτῇ πλούσιον σφόδρα, καὶ ἐκεῖ καλύμματα χρυσᾶ, καὶ θώρακες καὶ ὅπλα, ἃ κατέλειπεν ἐκεῖ Ἀλέξανδρος ὁ τοῦ Φιλίππου ὁ βασιλεὺς ὁ Μακεδών, ὃς ἐβασίλευσεν τοῖς Ἕλλησι πρῶτος. καὶ ἦλθεν καὶ ἐζήτει καταλαβεῖν τὴν πόλιν καὶ προνομεῦσαι αὐτήν, καὶ οὐκ ἠδυνάσθη, ὅτι ἐγνώσθη ὁ λόγος τοῖς ἐκ τῆς πόλεως. καὶ ἀνέστησαν αὐτῷ εἰς πόλεμον, καὶ ἔφυγεν καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν μετὰ λύπης μεγάλης ἀποστρέψαι εἰς Βαβυλῶνα. καὶ ἦλθεν ἀπαγγέλλων τις αὐτῷ εἰς τὴν Περσίδα, ὅτι τετρόπωνται αἱ παρεμβολαὶ αἱ πορευθεῖσαι εἰς γῆν Ἰούδα· καὶ ἐπορεύθη Λυσίας δυνάμει ἰσχυρᾷ ἐν πρώτοις καὶ ἀνετράπη ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, καὶ ἐπίσχυσαν ὅπλοις οἷς ἔλαβον ἀπὸ τῶν παρεμβολῶν ὧν ἐξέκοψαν·. καὶ καθεῖλαν τὸ βδέλυγμα ᾠκοδόμησεν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ τὸ ἁγίασμ καθὼς τὸ πρότερον ἐκύκλωσαν τείχεσιν ὑψηλοῖς, καὶ τὴν Βεθσουρὰ πόλιν αὐτοῦ. καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς τοὺς

λόγους τούτους, ἐθαμβήθη καὶ ἐσαλεύθη σφόδρα· καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν κοίτην. καὶ ἐνέπεσεν εἰς ἀρρωστίαν ἀπὸ τῆς λύπης, ὅτι οὐκ ἐγένετο αὐτῷ καθὼς ἐνεθυμεῖτο. καὶ ἦν ἐκεῖ ἡμέρας πλείους, ὅτι ἀνεκαινίσθη ἐπ᾽ αὐτὸν λύπη μεγάλη, καὶ ἐλογίσατο ὅτι ἀποθνήσκει. καὶ ἐκάλεσεν πάντας τοὺς φίλους αὐτοῦ, καὶ εἶπεν πρὸς αὐτοὺς Ἀφίσταται ἀπὸ τῶν ὀφθαλμῶν μου ὁ ὕπνος, καὶ συνπέπτωκα τῇ καρδίᾳ ἀπὸ τῆς μερίμνης. καὶ εἶπα τῇ καρδίᾳ Ἕως τίνος θλίψεως ἦλθον καὶ κλύδωνος μεγάλου, ἐν ᾧ νῦν εἰμι ; ὅτι χρηστὸς καὶ ἀγαπώμενος ἤμην ἐν τῇ ἐξουσίᾳ μου. νῦν δέ μνήσκομαι τῶν κακῶν ὧν ἐποίησα ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ ἔλαβον πάντα τὰ σκεύη τὰ ἀργυρᾶ καὶ τὰ χρυσᾶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ ἐξαπέστειλα τοῦ ἐξᾶραι τοὺς κατοικοῦντας Ἰούδα διὰ κενῆς. ἔγνων ὅτι χάριν τούτων εὗρόν με τὰ κακὰ ταῦτα καὶ ἰδοὺ ἀπόλλυμαι λύπῃ μεγάλῃ ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ. καὶ ἐκάλεσεν Φίλιππον ἕνα τῶν φίλων αὐτοῦ, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἐπὶ πάσης τῆς βασιλείας αὐτοῦ. καὶ ἔδωκεν αὐτῷ τὸ διάδημα καὶ τὴν στολὴν αὐτοῦ καὶ τὸν δακτύλιον, τοῦ ἀγαγεῖν Ἀντίοχον τὸν υἱὸν αὐτοῦ καὶ ἐκθρέψαι αὐτὸν τοῦ βασιλεύειν. καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ Ἀντίοχος ὁ βασιλεύς, ἔτους ἐνάτου καὶ τεσσερακοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ. καὶ ἐπέγνω Λυσίας ὅτι τέθνηκεν ὁ βασιλεύς, καὶ κατέστησεν βασιλεύειν Ἀντίοχον τὸν υἱὸν αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ ὃν ἐξέθρεψεν νεώτερον, καὶ ἐκάλεσεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Εὐπάτωρ. Καὶ οἱ ἐκ τῆς ἄκρας ἦσαν συγκλείοντες τὸν Ἰσραὴλ κύκλῳ τῶν ἁγίων, καὶ ζητοῦντες κακὰ δι᾽ ὅλου καὶ στήρισμα τοῖς ἔθνεσιν. καὶ ἐλογίσατο Ἰούδας ἐξᾶραι αὐτούς· καὶ ἐξεκκλησίασεν πάντα τὸν λαὸν τοῦ περικαθίσαι ἐπ᾽ αὐτοὺς ἔτους πεντηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ· καὶ ἐποίησεν ἐπ᾽ αὐτοὺς βελοστασίας καὶ μηχανάς. καὶ ἐξῆλθον ἐξ αὐτοῦ ἐκ τοῦ συνκλεισμοῦ, καὶ ἐκολλήθησαν αὐτοῖς τινὲς τῶν ἀσεβῶν ἐξ

Ἰσραήλ. καὶ ἐπορεύθησαν πρὸς τὸν βασιλέα καὶ εἶπαν Ἕως πότε οὐ ποιήσεις κρίσιν, καὶ ἐκδικήσεις τοὺς ἀδελφοὺς ἡμῶν ; ἡμεῖς εὐδοκοῦμεν δουλεύειν τῷ πατρί σου, καὶ πορεύεσθαι τοῖς ὑπ’ αὐτοῦ λεγομένοις, καὶ κατακολουθεῖν τοῖς προστάγμασιν αὐτοῦ· ὅτι οἱ τοῦ λαοῦ ἡμῶν χάριν τούτου ἠλλοτριοῦντο ἀφ’ ἡμῶν· πλὴν ὅσοι εὑρίσκοντο ἀφ’ ἡμῶν ἐθανατοῦντο, καὶ αἱ κληρονομίαι ἡμῶν διηρπάζοντο. καὶ οὐκ ἐφ’ ἡμᾶς μόνον ἐξέτειναν χεῖρα, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ὅρια αὐτῶν. καὶ ἰδοὺ παρεμβεβλήκασι σήμερον ἐπὶ τὴν ἄκραν ἐν Ἰερουσαλήμ, τοῦ καταλαβέσθαι αὐτὴν καὶ τὸ ἁγίασμα, καὶ τὴν Βεθσούραν ὀχύρωσαν. καὶ ἐὰν μὴ προκαταλάβῃ αὐτοὺς διὰ τάχους, μείζονα τούτων ποιήσουσιν, καὶ οὐ δυνήσει τοῦ κατασχεῖν αὐτῶν. Καὶ ὠργίσθη ὁ βασιλεύς, ὅτε ἤκουσεν· καὶ συνήγαγεν πάντας τοὺς φίλους αὐτοῦ, ἄρχοντας δυνάμεως αὐτοῦ, καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν ἡνιῶν· καὶ ἀπὸ βασιλέων ἑτέρων καὶ ἀπὸ νήσων θαλασσῶν ἦλθον πρὸς αὐτὸν δυνάμεις μισθωταί. καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς τῶν δυνάμεων αὐτοῦ ἑκατὸν χιλιάδες πεζῶν, καὶ εἴκοσι χιλιάδες τῶν ἵππων, καὶ ἐλέφαντες δύο καὶ τριάκοντα εἰδότες πόλεμον. καὶ ἦλθοσαν διὰ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ παρενεβάλοσαν ἐπὶ Βεθσουρά, καὶ ἐπολέμησαν ἐπὶ ἡμέρας πολλάς, καὶ ἐποίησαν μηχανάς· καὶ ἐξῆλθαν καὶ ἐνεπύρισαν αὐτοὺς ἐν πυρί, καὶ ἐπολέμησαν ἀνδρωδῶς. καὶ ἀπῆρεν Ἰούδας ἀπὸ τῆς ἄκρας. καὶ παρενέβαλεν εἰς Βεθζαχαριά, ἀπέναντι τῆς παρεμβολῆς τοῦ βασιλέως. καὶ ὤρθρισεν ὁ βασιλεὺς τὸ πρωί, καὶ ἀπῆρεν τὴν παρεμβολὴν ἐν ὁρμήματι αὐτῆς κατὰ τὴν ὁδὸν Βεθζαχαριά, καὶ διεσκευάσθησαν αἱ δυνάμεις εἰς τὸν πόλεμον, καὶ ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξιν. καὶ τοῖς ἐλέφανσιν ἔδειξαν αἷμα σταφυλῆς καὶ μόρων, τοῦ παραστῆσαι αὐτοὺς εἰς τὸν πόλεμον. καὶ διεῖλον τὰ θηρία εἰς τὰς φάραγγας. καὶ παρέστησαν ἐφ’ ἑκάστῳ ἐλέφαντι χιλίους ἄνδρας

τεθωρακισμένους ἐν ἁλυσιδαωτοῖς, καὶ περικεφαλαῖαι χαλκαῖ ἐπὶ τῶν κεφαλῶν αὐτῶν, καὶ πεντακοσία ἵππος διατεταγμένη ἑκάστῳ θηρίῳ ἐκλελεγμένη. οὗτοι πρὸ καιροῦ, οὗ ἂν ᾖ τὸ θηρίον, ἦσαν· καὶ οὗ ἂν ἐπορεύετο, ἐπορεύοντο ἅμα, οὐκ ἀφίσταντο ἐπ’ αὐτοῦ. καὶ πύργοι ξύλινοι ἐπ’ αὐτοὺς ὀχυροὶ σκεπαζόμενοι, ἐφ’ ἑκάστου θηρίου, ἐζωσμένοι ἐπ’ αὐτοὺς μηχαναῖς· καὶ ἐφ’ ἑκάστου ἄνδρες δύο καὶ τριάκοντα οἱ πολεμοῦντες ἐπ’ αὐτούς, καὶ ὁ Ἰνδὸς αὐτοῦ. καὶ τὴν ἐπίλοιπον ἵππον ἔνθεν καὶ ἔνθεν ἔστησεν ἐπὶ τὰ δύο μέρη τῆς παρεμβολῆς, κατασείοντες καὶ καταφρασσόμενοι ἐν ταῖς φάλαγξιν. ὡς δὲ ἔστιλβεν ὁ ἥλιος ἐπὶ τὰς χρυσᾶς ἀσπίδας, ἔστιλβεν τὰ ὄρη ἀπ’ αὐτῶν, καὶ κατηύγαζεν ὡς λαμπάδες πυρός. καὶ ἐξετάθη μέρος τι τῆς παρεμβολῆς τοῦ βασιλέως ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ὄρη, καί τινες ἐπὶ τὰ ταπεινά· καὶ ἤρχοντο ἀσφαλῶς καὶ τεταγμένως. καὶ ἐσαλεύοντο πάντες οἱ ἀκούοντες φωνῆς πλήθους αὐτῶν καὶ ὀδοιπορίας τοῦ πλήθους καὶ συνκρουσμοὺς τῶν ὅπλων· ἦν γὰρ ἡ παρεμβολὴ μεγάλη σφόδρα καὶ ἰσχυρά. καὶ ἤγγισεν Ἰούδας καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ εἰς παράταξιν, καὶ ἔπεσαν ἀπὸ τῆς παρεμβολῆς τοῦ βασιλέως ἑξακόσιοι ἄνδρες. καὶ εἶδεν Ἐλεαζὰρ ὁ Σαυαρὰν ἓν τῶν θηρίων τεθωρακισμένον θώραξιν βασιλικοῖς, καὶ ἦν ὑπεράγον πάντα τὰ θηρία, καὶ ὤφθη ὅτι ἐν αὐτῷ ἐστιν ὁ βασιλεύς. καὶ ἔδωκεν ἑαυτὸν τοῦ σῶσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ περιποιῆσαι αὐτῷ ὄνομα αἰώνιον. καὶ ἐπέδραμεν αὐτῷ θράσει εἰς μέσον τῆς φάλαγγος, καὶ ἐθανάτου δεξιὰ καὶ εὐώνυμα, καὶ ἐσχίζοντο ἀπ’ αὐτοῦ ἔνθα καὶ ἔνθα. καὶ εἰσέδυ ὑπὸ τὸν ἐλέφαντα, καὶ ὑπέθηκεν αὐτῷ καὶ ἀνεῖλεν αὐτόν· καὶ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν ἐπάνω αὐτοῦ, καὶ ἀπέθανεν ἐκεῖ καὶ εἶδον τὴν ἰσχὺν τῆς βασιλείας καὶ τὰ ὁρμήματα τῶν δυνάμεων, καὶ ἐξέκλιναν ἀπ’ αὐτῶν. Καὶ ἐκ τῆς παρεμβολῆς τοῦ βασιλέως ἀνέβεννον εἰς

συνάντησιν αὐτῶν εἰς Ἰερουσαλήμ, καὶ παρενέβαλεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὴν Ἰουδαίαν καὶ εἰς τὸ ὄρος Σιών. καὶ ἐποίησεν μετὰ τῶν ἐκ Βεθσούρων· καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τῆς πόλεως, ὅτι οὐκ ἦν αὐτοῖς ἐκεῖ διατροφὴ τοῦ συνκεκλεῖσθαι ἐν αὐτῇ, ὅτι σάββατον ἦν τῇ γῆ. καὶ κατελάβετο ὁ βασιλεὺς τὴν Βεθσούραν, καὶ ἐπέταξεν ἐκεῖ φρουρὰν τηρεῖν αὐτήν. καὶ παρενέβαλεν ἐπὶ τὸ ἁγίασμα ἡμέρας πολλάς, καὶ ἔστησεν ἐκεῖ βελοστάσεις καὶ μηχανὰς καὶ πυροβόλα καὶ λιθοβόλα καὶ σκορπίδια εἰς τὸ βάλλεσθαι βέλη καὶ σφενδόνας. καὶ ἐποίησαν καὶ αὐτοὶ μηχανὰς πρὸς τὰς μηχανὰς αὐτῶν, καὶ ἐπολέμησαν ἡμέρας πολλάς. βρώματα δὲ οὐκ ἦν ἐν τοῖς ἁγίοις, διὰ τὸ ἔβδομον ἔτος εἶναι, καὶ οἱ ἀνασωζόμενοι εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἀπὸ τῶν ἐθνῶν κατέφαγον τὸ ὑπόλιμμα τῆς παραθέσεως· καὶ ὑπελείφθησαν ἐν τοῖς ἁγίοις ἄνδρες ὀλίγοι, ὅτι κατεκράτησεν αὐτῶν ὁ λιμός· καὶ ἐσκορπίσθησαν ἕκαστος εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ. Καὶ ἤκουσεν Λυσίας ὅτι Φίλιππος, ὃν κατέστησεν ὁ βασιλεὺς Ἀντίοχος ἔτι ζῶντος αὐτοῦ ἐκθρέψαι Ἀντίοχον τὸν υἱὸν αὐτοῦ εἰς τὸ βασιλεῦσαι αὐτόν, ἀπέστρεψεν ἀπὸ τῆς Περσίδος καὶ Μηδίας, καὶ αἱ δυνάμεις αἱ πορευθεῖσαι τοῦ βασιλέως μετ’ αὐτοῦ, καὶ ὅτι ζητεῖ παραλαβεῖν τὰ τῶν πραγμάτων. καὶ κατέσπευδον καὶ ἐπενύσσοντο τοῦ ἀπελθεῖν· καὶ εἶπεν πρὸς τὸν βασιλέα καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως καὶ τοὺς ἄνδρας Ἐκλείπομεν καθ’ ἡμέραν, καὶ ἡ τροφὴ ἡμῖν ὀλίγη, καὶ ὁ τόπος, οὗ παρεμβάλλομεν, ἐστὶν ὀχυρός, καὶ ἐπίκειται ἡμῖν τὰ τῆς βασιλείας. νῦν οὖν δῶμεν δεξιὰν τοῖς ἀνθρώποις τούτοις, καὶ ποιήσωμεν μετ’ αὐτῶν εἰρήνην, καὶ μετὰ παντὸς ἔθνους αὐτῶν· καὶ στήσωμεν αὐτοῖς τοῦ πορεύεσθαι τοῖς νομίμοις αὐτῶν, ὡς τὸ πρότερον· χάριν γὰρ τῶν νομίμων αὐτῶν, ὧν διεσκεδάσαμεν, ὠργίσθησαν καὶ ἐποίησαν ταῦτα πάντα. καὶ ἤρεσεν ὁ λόγος ἐναντίον τοῦ βασιλέως καὶ τῶν ἀρχόντων, καὶ ἀπέστειλεν πρὸς

αὐτοὺς εἰρηνεῦσαι, καὶ ἐπεδέξαντο. καὶ ὤμοσεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ ἄρχοντες ἐπὶ τούτοις· ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ ὀχυρώματος, καὶ εἰσῆλθεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὸ ὄρος Σιών, καὶ ἴδεν τὸ ὀχύρωμα τοῦ τόπου· καὶ ἠθέτησεν τὸν ὁρκισμὸν ὃν ὤμοσεν, καὶ ἐνετείλατο καὶ καθεῖλεν τὸ τεῖχος κυκλόθεν. καὶ ἀπῆραν κατὰ σπουδὴν καὶ ἀπέστρεψεν εἰς Ἀντιοχίαν, καὶ εὗρεν Φίλιππον κυριεύοντα τῆς πόλεως, καὶ ἐπολέμησεν πρὸς αὐτόν, καὶ κατελάβετο τὴν πόλιν βίᾳ.

# 7

Ἔτους ἑνὸς καὶ πεντηκοστοῦ ἐξῆλθεν Δημήτριος ὁ τοῦ Σελεύκου ἐκ Ῥώμης, καὶ ἀνέβη σὺν ἀνδράσιν ὀλίγοις εἰς πόλιν παραθαλασσίαν, καὶ ἐβασίλευσεν ἐκεῖ. καὶ ἐγένετο ὡς εἰσεπορεύετο εἰς οἶκον βασιλείας πατέρων αὐτοῦ, συνέλαβον αἱ δυνάμεις τὸν Ἀντίοχον καὶ τὸν Λυσίαν ἀγαγεῖν αὐτοὺς αὐτῷ. καὶ ἐγνώσθη αὐτῷ τὸ πρᾶγμα καὶ εἶπεν Μή μοι δείξητε τὰ πρόσαωπα αὐτῶν. καὶ ἀπέκτειναν αὐτοὺς αἱ δυνάμεις, καὶ ἐκάθισεν Δημήτριος ἐπὶ θρόνου βασιλείας αὐτοῦ. καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν πάντες ἄνδρες ἄνομοι καὶ ἀσεβεῖς ἐξ Ἰσραήλ, καὶ Ἄλκιμος ἡγεῖται αὐτῶν βουλόμενος ἱερατεύειν. καὶ κατηγόρησαν τοῦ λαοῦ πρὸς τὸν βασιλέα, λέγοντες Ἀπώλεσεν Ἰούδας καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ πάντας τοὺς φίλους σου, καὶ ἡμᾶς ἐσκόρπισεν ἀπὸ τῆς γῆς ἡμῶν. νῦν οὖν ἀπόστειλον ἄνδρα ᾧ πιστεύεις, καὶ πορευθεὶς ἰδέτω τὴν ἐξολέθρευσιν ἅπασαν ἣν ἐποίησεν ἡμῖν καὶ τῇ χώρᾳ τοῦ βασιλέως, καὶ ἐκολάσατο αὐτοὺς καὶ πάντας τοὺς ἐπιβοηθοῦντας αὐτοῖς. Καὶ ἐπέλεξεν ὁ βασιλεὺς τὸν Βακχίδην τῶν φίλων τοῦ βασιλέως κυριεύοντα ἐν τῷ πέραν

τοῦ ποταμοῦ καὶ μέγαν ἐν τῇ βασιλείᾳ καὶ πιστὸν τῷ βασιλεῖ· καὶ ἀπέστειλεν αὐτὸν καὶ Ἄλκιμον τὸν ἀσεβῆ, καὶ ἔστησαν αὐτῷ τὴν ἱερωσύνην, καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ ποιῆσαι τὴν ἐκδίκησιν ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. καὶ ἀπῆλθεν καὶ ἦλθεν μετὰ δυνάμεως πολλῆς εἰς γῆν Ἰούδα· καὶ ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς Ἰούδαν καὶ πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ λόγοις εἰρηνικοῖς μετὰ δόλου. καὶ οὐ προσεῖχον τοῖς λόγοις αὐτῶν· ἴδον γὰρ ὅτι ἦλθον μετὰ δυνάμεως πολλῆς. καὶ ἐπισυνήχθησαν πρὸς Ἄλκιμον καὶ Βακχίδην συναγωγὴ γραμματέων, ἐκζητῆσαι δίκαια. καὶ πρῶτοι οἱ Ἀσιδαῖοι ἦσαν ἐν υἱοῖς Ἰσραήλ, καὶ ἐπεζήτουν παρ’ αὐτῶν εἰρήνην· εἶπαν γάρ Ἄνθρωπος ἱερεὺς ἐκ τοῦ σπέρματος Ἀαρὼν ἦλθεν ἐν ταῖς δυνάμεσιν, καὶ οὐκ ἀδικήσει ἡμᾶς. καὶ ἐλάλησεν μετ’ αὐτῶν εἰρηνικοὺς λόγους, καὶ ὤμοσεν αὐτοῖς λέγων Οὐκ ἐκζητήσομεν ὑμῖν κακόν, καὶ τοῖς φίλοις ὑμῶν. καὶ ἐνεπίστευσαν αὐτῷ, καὶ συνέλαβεν ἐξ αὐτῶν ἑξήκοντα ἄνδρας, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ κατὰ τοὺς λόγους οὓς ἔγραψεν Σάρκας ὁσίων σου καὶ αἵματα αὐτῶν ἐξέχεαν κύκλῳ Ἰερουσαλήμ, καὶ οὐκ ἦν αὐτοῖς ὁ θάπτων. Καὶ ἐπέπεσεν αὐτῶν ὁ φόβος καὶ ὁ τρόμος εἰς πάντα τὸν λαόν, ὅτι εἶπαν Οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς ἀλήθεια καὶ κρίσις· παρέβησαν γὰρ τὴν στάσιν καὶ τὸν ὅρκον ὃν ὤμοσαν. καὶ ἀπῆρεν Βακχίδης ἀπὸ Ἰερουσαλήμ, καὶ παρενέβαλεν ἐν Βηζέθ, καὶ ἀπέστειλεν καὶ συνέλαβεν πολλοὺς ἀπὸ τῶν μετ’ αὐτοῦ αὐτομολησάντων ἀνδρῶν καί τινας τοῦ λαοῦ, καὶ ἔθυσεν αὐτοὺς εἰς τὸ φρέαρ τὸ μέγα. καὶ κατέστησεν τὴν χώραν τῷ Ἀλκίμῳ, καὶ ἀφῆκεν μετ’ αὐτοῦ δύναμιν τοῦ βοηθεῖν αὐτῷ· καὶ ἀπῆλθεν Βακχίδης πρὸς τὸν βασιλέα. καὶ ἠγωνίσατο Ἄλκιμος περὶ τῆς ἀρχιερωσύνης. καὶ συνήχθησαν πρὸς αὐτὸν πάντες οἱ ταράσσοντες τὸν λαὸν αὐτῶν, καὶ κατεκράτησαν γῆν Ἰούδα, καὶ ἐποίησαν πληγὴν μεγάλην ἐν Ἰσραήλ. καὶ ἴδεν

Ἰούδας πᾶσαν τὴν κακίαν ἣν ἐποίησεν Ἄλκιμος καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ ἐν υἱοῖς Ἰσραὴλ ὑπὲρ τὰ ἔθνη· καὶ ἐξῆλθεν εἰς πάντα τὰ ὅρια τῆς Ἰουδαίας καὶ κυκλόθεν, καὶ ἐποίησεν ἐκδίκησιν ἐν τοῖς ἀνδράσιν καὶ τοῖς αὐτομολήσασιν, καὶ ἀνεστάλησαν τοῦ πορευθῆναι εἰς χώραν. ὡς δὲ ἴδεν Ἄλκιμος ὅτι ἐνίσχυσεν Ἰούδας καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἔγνω ὅτι δύναται ὑποστῆναι αὐτούς, καὶ ἐπέστρεψεν πρὸς τὸν βασιλέα καὶ κατηγόρησεν αὐτῶν πονηρά. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Νικάνορα ἕνα τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ τῶν ἐνδόξων, καὶ μισοῦντα καὶ ἐχθραίνοντα τῷ Ἰσραήλ, καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ ἐξᾶραι τὸν λαόν. καὶ ἦλθεν Νικάνωρ εἰς Ἰερουσαλὴμ δυνάμει πολλῇ, καὶ ἀπέστειλεν πρὸς Ἰούδαν καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ μετὰ δόλου λόγοις εἰρηνικοῖς λέγων Μὴ ἔστω μάχη ἀνὰ μέσον ἐμοῦ καὶ ὑμῶν· ἥξω ἐν ἀνδράσιν ὀλίγοις, ἵνα ἴδω ὑμῶν τὰ πρόσωπα μετ’ εἰρήνης. καὶ ἦλθεν πρὸς Ἰούδαν, καὶ ἠσπάσαντο ἀλλήλους εἰρηνικῶς· καὶ οἱ πολέμιοι ἦσαν ἕτοιμοι ἐξαρπάσαι τὸν Ἰούδαν. καὶ ἐγνώσθη ὁ λόγος τῷ Ἰούδᾳ, ὅτι μετὰ δόλου ἦλθεν ἐπ’ αὐτόν· καὶ ἐπτοήθη ἀπ’ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠβουλήθη ἔτι ἰδεῖν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ. καὶ ἔγνω Νικάνωρ ὅτι ἀπεκαλύφθη ἡ βουλὴ αὐτοῦ, καὶ ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν τῷ Ἰούδα κατὰ Χαρφαρσαραμά. καὶ ἔπεσαν τῶν παρὰ Νικάνορος ὡς πεντακισχίλιοι ἄνδρες, καὶ ἔφυγον εἰς τὴν πόλιν Δαυείδ. Καὶ μετὰ τοὺς λόγους τούτους ἀνέβη Νικάνωρ εἰς τὸ ὄρος Σιών· καὶ ἐξῆλθαν ἀπὸ τῶν ἱερέων ἐκ τῶν ἁγίων καὶ ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ ἀσπάσασθαι αὐτὸν εἰρηνικῶς, καὶ δεῖξαι αὐτῷ τὴν ὁλοκαύτωσιν τὴν προσφερομένην ὑπὲρ τοῦ βασιλέως. καὶ ἐμυκτήρισεν αὐτούς, καὶ κατεγέλασεν αὐτῶν καὶ ἐμίανεν αὐτούς, καὶ ἐλάλησεν ὑπερηφάνως. καὶ ὤμοσεν μετὰ θυμοῦ λέγων Ἐὰν μὴ παραδοθῇ Ἰούδας καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ τὸ νῦν εἰς χεῖράς μου, καὶ ἔσται ἐὰν ἐπιστρέψω ἐν εἰρήνῃ, ἐνπυριῶ τὸν οἶκον

τοῦτον. καὶ ἐξῆλθεν μετὰ θυμοῦ. καὶ εἰσῆλθον οἱ ἱερεῖς καὶ ἔστησαν κατὰ πρόσωπον τοῦ θυσιαστηρίου καὶ τοῦ ναοῦ, καὶ ἔκλαυσαν καὶ εἶπαν Σὺ ἐξελέξω τὸν οἶκον τοῦτον ἐπικληθῆναι τὸ ὄνομά σου ἐπ᾽ αὐτόν, εἶναι οἶκον προσευχῆς καὶ δεήσεως τῷ λαῷ σου. ποίησον ἐκδίκησιν ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ καὶ ἐν τῇ παρεμβολῇ αὐτοῦ, καὶ πεσάτωσαν ἐν ῥομφαίᾳ· μνήσθητι τῶν δυσφημιῶν αὐτῶν, καὶ μὴ δῷς αὐτοῖς μονὴν. Καὶ ἐξῆλθεν Νικάνωρ ἐξ Ἰερουσαλὴμ καὶ παρενέβαλον ἐν Βεθώρων, καὶ συνῆντησεν αὐτῷ δύναμις Συρίας. καὶ Ἰούδας παρενέβαλεν ἐν Ἀδασὰ ἐν τρισχιλίοις ἀνδράσιν· καὶ προσηύξατο Ἰούδας καὶ εἶπεν Οἱ παρὰ τοῦ βασιλέως ὅτε ἐδυσφήμησαν, ἐξῆλθεν ἄγγελός σου καὶ ἐπάταξεν ἐν αὐτοῖς ἑκατὸν ὀγδοήκοντα πέντε χιλιάδας. οὕτως σύντριψον τὴν παρεμβολὴν ταύτην ἐνώπιον ἡμῶν σήμερον· καὶ γνώτωσαν οἱ ἐπίλοιποι ὅτι κακῶς ἐλάλησεν ἐπὶ τὰ ἅγιά σου, καὶ κρῖνον αὐτὸν κατὰ τὴν κακίαν αὐτοῦ. καὶ συνῆψαν αἱ παρεμβολαὶ εἰς πόλεμον τῇ τρισκαιδεκάτῃ τοῦ μηνὸς Ἀδάρ, καὶ συνετρίβη ἡ παρεμβολὴ Νικάνορος· καὶ ἔπεσεν αὐτὸς πρῶτος ἐν τῷ πολέμῳ. ὡς δὲ ἴδεν ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ὅτι ἔπεσεν Νικάνωρ, ῥίψαντες τὰ ὅπλα αὐτῶν ἔφυγον. καὶ κατεδίωκον αὐτοὺς ὁδὸν ἡμέρας μιᾶς ἀπὸ Ἀδασὰ ἕως τοῦ ἐλθεῖν εἰς Γαζηρά, καὶ ἐσάλπισαν ὀπίσω αὐτῶν ταῖς σάλπιγξιν τῶν σημασιῶν. καὶ ἐξῆλθον ἐκ πασῶν τῶν κωμῶν τῆς Ἰουδαίας κυκλόθεν, καὶ ὑπερεκέρων αὐτοὺς· καὶ ἀνέστρεφον οὗτοι πρὸς τούτους, καὶ ἔπεσαν πάντες ῥομφαίᾳ, καὶ οὐ κατελείφθη ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. καὶ ἔλαβον τὰ σκῦλα καὶ τὴν προνομήν, καὶ τὴν κεφαλὴν Νικάνορος ἀφεῖλαν καὶ τὴν δεξιὰν αὐτοῦ, ἣν ἐξέτεινεν ὑπερηφάνως. καὶ ἤνεγκαν καὶ ἐξέτειναν παρὰ τὴν Ἰερουσαλήμ. καὶ ηὐφράνθη ὁ λαὸς σφόδρα, καὶ ἤγαγον τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἡμέραν εὐφροσύνης μεγάλην. καὶ ἔστησαν τοῦ

ἀγαγεῖν κατ’ ἐνιαυτὸν τὴν ἡμέραν ταύτην τῇ τρισκαιδεκάτῃ τοῦ Ἀδάρ. καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ Ἰούδα ἡμέρας ὀλίγας.

# 8

Καὶ ἤκουσεν Ἰούδας τὸ ὄνομα τῶν Ῥωμαίων, ὅτι εἰσὶν δυνατοὶ ἐν ἰσχύι, καὶ αὐτοὶ εὐδοκοῦσιν ἐν πᾶσιν τοῖς προστεθειμένοις αὐτοῖς, καὶ ὅσοι ἐὰν προστεθῶσιν αὐτοῖς, καὶ ὅσοι ἐὰν προσέλθωσιν αὐτοῖς, ἱστῶσιν αὐτοῖς φιλίαν, καὶ ὅτι εἰσὶν δυνατοὶ ἰσχύι· καὶ διηγήσαντο αὐτῷ τοὺς πολέμοις αὐτῶν καὶ τὰς ἀνδραγαθίας ἃς ποιοῦσιν ἐν τοῖς Γαλάταις, καὶ ὅτι κατεκράτησαν αὐτῶν, καὶ ἤγαγον αὐτοὺς ὑπὸ φόρον· καὶ ὅσα ἐποίησαν ἐν χώρᾳ Σπανίας, τοῦ κατακρατῆσαι τῶν μετάλλων τοῦ ἀργυρίου καὶ τοῦ χρυσίου τοῦ ἐκεῖ, καὶ κατεκράτησαν τοῦ τόπου παντὸς τῇ βουλῇ αὐτῶν καὶ τῇ μακροθυμίᾳ—καὶ ὁ τόπος ἦν μακρὰν ἀπέχων ἀπ’ αὐτῶν σφόδρα—καὶ τῶν βασιλέων τῶν ἐπελθόντων ἐπ’ αὐτοὺς ἀπ’ ἄκρου τῆς γῆς, ἕως συνέτριψαν αὐτοὺς καὶ ἐπάταξαν ἐν αὐτοῖς πληγὴν μεγάλην, καὶ οἱ ἐπίλοιποι διδόασιν αὐτοῖς φόρον κατ’ ἐνιαυτόν· καὶ τὸν Φίλιππον καὶ τὸν Περσέα Κιτιέων βασιλέα καὶ τοὺς ἐπηρμένους ἐπ’ αὐτούς, συνέτριψαν αὐτοὺς πολέμῳ καὶ κατεκράτησαν αὐτῶν· καὶ Ἀντίοχον τὸν μέγαν βασιλέα τῆς Ἀσίας τὸν πορευθέντα ἐπ’ αὐτοὺς εἰς πόλεμον ἔχοντα ἑκατὸν εἴκοσι ἐλέφαντας καὶ ἵππον καὶ ἅρματα καὶ δύναμιν πολλὴν σφόδρα, καὶ συνετρίβη ἀπ’ αὐτῶν· καὶ ἔλαβον αὐτὸν ζῶντα, καὶ ἔστησαν αὐτοῖς διδόναι αὐτόν τε καὶ τοὺς βασιλεύοντας μετ’ αὐτὸν φόρον μέγαν. καὶ διδόναι ὅμηρα καὶ διαστολήν, καὶ χώραν τὴν Ἰνδικὴν καὶ Μηδίαν καὶ Λυδίαν, καὶ ἀπὸ τῶν καλλίστων χωρῶν αὐτῶν, καὶ

λαβόντες αὐτὰς παρ’ αὐτοῦ ἔδωκαν αὐτὰς Εὐμενεῖ τῷ βασιλεῖ· καὶ ὅτι οἱ ἐκ τῆς Ἑλλάδος ἐβουλεύσαντο ἐλθεῖν καὶ ἐξᾶραι αὐτούς, καὶ ἐγνώσθη ὁ λόγος αὐτοῖς, καὶ ἀπέστειλαν ἐπ’ αὐτοὺς στρατηγὸν ἕνα, καὶ ἐπολέμησαν πρὸς αὐτούς, καὶ ἔπεσαν ἐξ αὐτῶν τραυματίαι πολλοί, καὶ ᾐχμαλώτισαν τὰς γυναῖκας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ ἐπρονόμενσαν αὐτούς, καὶ κατεκράτησαν τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ καθεῖλον τὰ ἀχυρώματα αὐτῶν, καὶ ἐπρονόμευσαν αὐτούς καὶ κατεδουλώσαντο αὐτοὺς ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. καὶ τὰς ἐπιλοίπους βασιλείας, καὶ τὰς νήσους, ὅσοι ποτὲ ἀνέστησαν αὐτοῖς, κατεφθειραν καὶ ἐδούλωσαν αὐτοῖς· μετὰ δέ τῶν φίλων αὐτῶν καὶ τῶν ἐπαναπαυομένων αὐτοῖς συνετήρησαν αὐτοῖς φιλίαν, καὶ κατεκράτησαν τῶν βασιλειῶν τῶν ἐγγὺς καὶ τῶν μακράν· καὶ ὅσοι ἤκουσαν τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐφοβοῦντο ἀπ’ αὐτῶν· οἷς δ’ ἂν βούλωνται βοηθεῖν καὶ βασιλεύειν, βασιλεύσουσιν· οὓς δ’ ἂν βούλωνται, μεθιστῶσιν, καὶ ὑψώθησαν σφόδρα. καὶ ἐν ἅποσιν τούτοις οὐκ ἐπέθεντο οὐδεὶς αὐτῶν διάδημα, καὶ οὐ περιεβάλοντο πορφύραν, ὥστε ἁδρυνθῆναι ἐν αὐτῇ. καὶ βουλευτήριον ἐποίησαν ἑαυτοῖς, καὶ καθ’ ἡμέραν ἐβουλεύοντο τριακόσιοι καὶ εἴκοσι, βουλευόμενοι διὰ παντὸς περὶ τοῦ πλήθους, τοῦ εὐκοσμεῖν ἑαυτούς. καὶ πιστεύουσιν ἑνὶ ἀνθρώπῳ ἄρχειν αὐτῶν κατ’ ἐνιαυτὸν καὶ κυριεύειν πάσης τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ πάντες ἀκούουσιν τοῦ ἑνός, καὶ οὐκ ἔστιν φθόνος οὔτε ζῆλος ἐν αὐτοῖς. Καὶ ἐπέλεξεν Ἰούδας τὸν Εὐπόλεμον υἱὸν Ἰωάννου τοῦ Ἀκχὼς καὶ Ἰάσονα υἱὸν Ἐλεαζάρου, καὶ ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς Ῥώμην, στῆσαι αὐτοῖς φιλίαν καὶ συμμαχίαν, καὶ τοῦ ἆραι τὸν ζυγὸν αὐτῶν, ὅτι ἴδον τὴν βασιλείαν τῶν Ἑλλήνων καταδουλουμένους τὸν Ἰσραὴλ δουλίαν. καὶ ἐπορεύθησαν εἰς Ῥώμην, καὶ ἡ ὁδὸς πολλὴ σφόδρα· καὶ εἰσῆλθον εἰς τὸ βουλευτήριον, καὶ ἀπεκρίθησαν Ἰούδας ὁ καὶ

Μακκαβαῖος καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ τὸ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων
απέστειλαν ἡμᾶς πρὸς ὑμᾶς, στῆσαι μεθ’ ὑμῶν συμμαχίαν καὶ
εἰρήνην, καὶ γραφῆναι ἡμᾶς συμμάχους καὶ φίλους ὑμῶν. καὶ
ἤρεσεν ὁ λόγος ἐνώπιον αὐτῶν. καὶ τοῦτο τὸ ἀντίγραφον τῆς
γραφῆς ἧς ἀντέγραψαν ἐπὶ δέλτοις χαλκαῖς καὶ ἀπέστειλαν εἰς
Ἰερουσαλὴμ εἶναι παρ’ αὐτοῖς ἐκεῖ μνημόσυνον εἰρήνης καὶ
συμμαχίας Καλῶς γένοιτο Ῥωμαίοις καὶ τῷ ἔθνει τῶν Ἰουδαίων ἐν
τῇ θαλάσσῃ καὶ ἐπὶ τῆς ξηρᾶς εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ῥομφαία καὶ
ἐχθρὸς μακρυχθείη ἀπ’ αὐτῶν. ἐὰν δὲ ἐνστῇ πόλεμος Ῥώμῃ
προτέρᾳ ἢ πᾶσι τοῖς συμμάχοις αὐτῶν ἐν πάσῃ κυρίᾳ αὐτῶν·
συμμαχήσει τὸ ἔθνος τῶν Ἰουδαίων, ὡς ἂν ὁ καιρὸς ὑπογραφῇ
αὐτοῖς, καρδίᾳ πλήρει. καὶ τοῖς πολεμοῦσιν οὐ δώσουσιν οὐδὲ
ἐπαρκέσουσιν σῖτον, ὅπλα, ἀργύριον, πλοῖα, ὡς ἔδοξεν Ῥώμῃ· καὶ
φυλάξονται τὰ φυλάγματα αὐτῶν οὐθὲν λαβόντες. κατὰ τὰ αὐτὰ
δέ, ἐὰν ἔθνει Ἰουδαίων συμβῇ προτέροις πόλεμος, συμμαχήσουσιν
οἱ Ῥωμαῖοι ἐκ ψυχῆς, ὡς ἂν αὐτοῖς ὁ καιρὸς ὑπογράφῃ. καὶ τοῖς
συμμαχοῖσιν οὐ δοθήσεται σῖτος, ὅπλα, ἀργύριον, ὡς ἔδοξεν Ῥώμῃ·
καὶ φυλάξονται τὰ φυλάγματα ταῦτα, καὶ οὐ μετὰ δόλου. κατὰ
τοὺς λόγους τούτους οὕτως ἔστησαν Ῥωμαῖοι τῷ δήμῳ τῶν
Ἰουδαίων. ἐὰν δὲ μετὰ τοὺς λόγους τούτους βουλεύσωνται οὗτοι
καὶ οὗτοι προσθεῖναι ἢ ἀφελεῖν, ποιήσονται ἐξ αἱρέσεως αὐτῶν,
καὶ ὃ ἐὰν προσθῶσιν ἢ ἀφέλωσιν ἔσται κύρια. καὶ περὶ τῶν κακῶν
ὧν ὁ βασιλεὺς Δημήτριος συντελεῖται εἰς αὐτούς, ἐγράψαμεν αὐτῷ
λέγοντες Διὰ τί ἐβάρυνας τὸν ζυγόν σου ἐπὶ τοὺς φίλους ἡμῶν τοὺς
συμμάχους Ἰουδαίους; ἐὰν οὖν ἔτι ἐντύχωσιν κατὰ σοῦ, ποιήσομεν
αὐτοῖς τὴν κρίσιν, καὶ πολεμήσομέν σε διὰ τῆς θαλάσσης καὶ διὰ
τῆς ξηρᾶς.

# 9

Καὶ ἤκουσεν Δημήτριος ὅτι ἐποίησεν Νικάνωρ καὶ αἱ δυνάμεις αὐτοῦ πόλεμον, καὶ προσέθετο τὸν Βακχίδην καὶ τὸν Ἄλκιμον ἐκ δευτέρου ἀποστεῖλαι εἰς γῆν Ἰούδα, καὶ τὸ δεξιὸν κέρας μετ’ αὐτῶν. καὶ ἐπορεύθησαν ὁδὸν τὴν εἰς Γάλγαλα, καὶ παρενεβάλοσαν ἐπὶ Μεσσαλὼθ τὴν ἐν Ἀρβήλοις, καὶ προκατελάβοντο αὐτήν. καὶ ἀπῶλεσεν ψυχας ἀνθρώπων πολλάς. καὶ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου ἔτους δευτέρου καὶ πεντηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ παρενέβαλλον εἰς Ἰερουσαλήμ. καὶ ἀπῆραν καὶ ἐπορεύθησαν εἰς Βερέαν ἐν εἴκοσι χιλιασιν ἀνδρῶν καὶ δισχιλιάσιν ἵππων. καὶ Ἰούδας ἦν παρεμβεβληκὼς ἐν Ἀλασά, καὶ τρισχίλιοι ἄνδρες ἐκλεκτοὶ μετ’ αὐτοῦ. καὶ ἴδον τὸ πλῆθος τῶν δυνάμεων, ὅτι πολλοί εἰσιν, καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα· καὶ ἐξερύησαν πολλοὶ ἀπὸ τῆς παρεμβολῆς, οὐ κατελείφθησαν ἐξ αὐτῶν ἀλλ᾽ ἢ ὀκτακόσιοι ἄνδρες. καὶ ἴδεν Ἰούδας ὅτι ἀπερρύη ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ. καὶ ὁ πόλεμος ἔθλιβεν αὐτόν· καὶ συνετρίβη τῇ καρδίᾳ, ὅτι οὐκ εἶχεν καιρὸν συναγαγεῖν αὐτούς. καὶ ἐξελύθη καὶ εἶπεν τοῖς καταλειφθεῖσιν Ἀναστῶμεν καὶ ἀναβῶμεν ἐπὶ τοὺς ὑπεναντίους ἡμῖν, ἐὰν ἄρα δυνώμεθα πολεμῆσαι αὐτούς. καὶ ἀπέστρεψαν αὐτόν, λέγοντες Οὐ μὴ δυνησώμεθα, ἀλλ’ ἢ σώζωμεν τὰς ἑαυτῶν ψυχάς τὸ νῦν· ἐπιστρέψωμεν μετὰ τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, καὶ πολεμήσωμεν πρὸς αὐτούς· ἡμεῖς δὲ ὀλίγοι. καὶ εἶπεν Ἰούδας Μή μοι γένοιτο ποιῆσαι τὸ πράγμα τοῦτο, φυγεῖν ἀπ’ αὐτῶν· καὶ ἤγγικεν ὁ καιρὸς ἡμῶν, καὶ ἀποθάνωμεν ἀνδρίᾳ χάριν τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, καὶ μὴ καταλείπωμεν αἰτίαν τῇ δόξῃ ἡμῶν. καὶ ἀπῆρεν ἡ δύναμις ἀπὸ τῆς παρεμβολῆς, καὶ ἔστησαν εἰς

συνάντησιν αὐτοῖς, καὶ ἐμερίσθη ἡ ἵππος εἰς δύο μέρη, καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ οἱ τοξόται προεπορεύοντο τῆς δυνάμεως, καὶ οἱ πρωταγωνισταὶ πάντες οἱ δυντοί. Βακχίδης δὲ ἦν ἐν τῷ δεξιῷ κέρατι, καὶ ἤγγισεν ἡ φάλαγξ ἐκ τῶν δύο μερῶν, καὶ ἐφώνουν ταῖς σάλπιγξιν, καὶ ἐσάλπισαν καὶ οἱ παρὰ Ἰούδου καὶ αὐτοὶ ταῖς σάλπιγξιν· καὶ ἐσείσθη ἡ γῆ ἀπὸ τῶν παρεμβολῶν αὐτῶν· καὶ ἐγένετο ὁ πόλεμος συνηγμένος ἀπὸ πρωίθεν ἕως ἑσπέρας. καὶ ἴδεν Ἰούδας ὅτι Βακχίδης καὶ τὸ στερέωμα τῆς παρεμβολῆς ἐν τοῖς δεξιοῖς, καὶ συυῆλθον αὐτο πάντες οἱ εὔψυχοι τῃ καρδίᾳ. καὶ συνετρίβη τὸ δεξιον κέρας ἀπ’ αὐτῶν, καὶ ἐδίωκεν ὀπίσω αὐτῶν ἕως Ἀζώτου ὄρους. καὶ οἱ εἰς τὸ ἀριστερον κέρας ἴδον ὅτι συνετρίβη τὸ δεξιὸν κέρας, καὶ ἐπέστρεψαν κατὰ πόδας Ἰούδα καὶ τῶν μετ’ αὐτοῦ ἐκ τῶν ὄπισθεν. καὶ ὁ πόλεμος, καὶ ἔπεσαν τραυματίαι πολλοὶ ἐκ τούτων καὶ ἐκ τούτων. καὶ Ἰούδας ἔπεσεν καὶ οἱ λοιποὶ ἔφυγον. καὶ ἦραν Ἰωναθὰν καὶ Σίμων Ἰούδαν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ καὶ ἔθαψαν αὐτὸν ἐν τῷ τάφῳ τῶν πατέρων αὐτοῦ ἐν Μωδεείμ. καὶ ἔκλαυσαν αὐτὸν ἐκεῖ, καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν πᾶς Ισραὴλ κοπετὸν μέγαν, καὶ ἐπένθουν ἡμέρας πολλὰς καὶ εἶπαν Πῶς ἔπεσεν δυνατός, σώζων τὸν Ἰσραήλ. Καὶ τὰ περισσὰ τῶν λόγων Ἰούδου καὶ τῶν πολέμων καὶ τῶν ἀνδραγαθιῶν ὧν ἐποίησεν καὶ τῆς μεγαλωσύνης αὐτοῦ οὐ κατεγράφη· πολλὰ γὰρ ἦν σφόδρα. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὴν τελευτὴν Ἰούδου, ἐξέκυψαν οἱ ἄνομοι ἐν πᾶσιν τοῖς ὁρίοις Ἰσραήλ, καὶ ἀνέτειλαν πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀδικίαν. ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐγενήθη λιμὸς μεγάλη σφόδρα, καὶ αὐτομόλησεν ἡ χώρα μετ’ αὐτῶν. καὶ ἐξέλεξεν Βακχίδης τοὺς ἀσεβεῖς ἄνδρας, καὶ κατέστησεν αὐτοὺς κυρίους τῆς χώρας. καὶ ἐξεζήτουν καὶ ἐξηραύνων τοὺς φίλους Ἰούδου, καὶ ἦγον αὐτοὺς πρὸς Βακχίδην· καὶ ἐξεδίκα αὐτούς, καὶ ἐνέπαιζον αὐτοῖς.

καὶ ἐγένετο θλίψις μεγάλη ἐν τῷ Ἰσραήλ, ἥτις οὐκ ἐγένετο ἀφ’ ἧς ἡμέρας οὐκ ὤφθη προφήτης αὐτοῖς. καὶ ἠθροίσθησαν πάντες οἱ φίλοι Ἰούδου καὶ εἶπον τῷ Ἰωναθάν Ἀφ’ οὗ ὁ ἀδελφός σου Ἰούδας τετελεύτηκεν, καὶ ἀνὴρ ὅμοιος αὐτῷ οὐκ ἔστιν ἐξελθεῖν πρὸς τοὺς ἐχθροὺς καὶ Βακχίδην, καὶ ἐν τοῖς ἐχθραίνουσιν τοῦ ἔθνους ἡμῶν. νῦν οὖν σε ᾑρετισάμεθα σήμερον τοῦ εἶναι ἀντ’ αὐτοῦ ἡμῖυ εἰς ἄρχοντα καὶ ἡγούμενον, τοῦ πολεμῆσαι τὸν πόλεμον ἡμῶν. καὶ ἐπεδέξατο Ἰωναθὰν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ τὴν ἡγησιν· καὶ ἀνέστη ἀντὶ Ἰούδου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ. Καὶ ἔγνω Βακχίδης, καὶ ἐζήτει αὐτὸν ἀποκτεῖναι. καὶ ἔγνω Ἰωναθὰν καὶ Σίμων ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ καὶ πάντες οἱ μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἔφυγον εἰς τὴν ἔρημον Θεκῶε, καὶ παρενέβαλον ἐπὶ τὸ ὕδωρ λάκκου Ἀσφάλ. καὶ ἔγνω Βακχίδης τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ ἦλθεν αὐτὸς καὶ πᾶν τὸ στράτευμα αὐτοῦ πέραν τοῦ Ἰορδάνη. καὶ ἀπέστειλεν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἡγούμενον τοῦ ὄχλου· καὶ παρεκάλεσεν τοὺς Ναβαταίους φίλους αὐτοῦ παραθέσθαι αὐτοῖς τὴν ἀποσκευὴν αὐτῶν τὴν πολλήν. καὶ ἐξῆλθον οἱ υἱοὶ Ἰαμβρεὶν ἐκ Μηδαβά, καὶ συνέλαβον Ἰωάννην καὶ πάντα ὅσα εἶχεν, καὶ ἀπῆλθον ἔχοντες. μετὰ δὲ τοὺς λόγους τούτους ἀπήγγειλαν Ἰωναθὰν καὶ Σίμωνι τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ὅτι Υἱοὶ Ἰαμβρὶν ποιοῦσιν γάμον μέγαν, καὶ ἄγουσιν τὴν νύμφην ἀπὸ Ναδαβάθ, θυγατέρα ἑνὸς τῶν μεγάλων μεγιστάνων Χανάαν, μετὰ παραπομτπῆς μεγάλης. καὶ ἐμνήσθησαν Ἰωάννου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν, καὶ ἀνέβησαν καὶ ἐκρύβησαν ὑπὸ τὴν σκέπην τοῦ ὄρους. καὶ ἦραν τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν καὶ ἴδαν, καὶ ἰδοὺ θροῦς καὶ ἀποσκευὴ πολλή, καὶ ὁ νυμφίος ἐξῆλθεν καὶ οἱ φίλοι αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ εἰς συνάντησιν αὐτῶν μετὰ τυμπάνων καὶ μουσικῶν καὶ ὅπλων πολλῶν. καὶ ἐξανέστησαν ἐπ’ αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ ἐνέδρου καὶ ἀπέκτειναν αὐτοὺς· καὶ ἔπεσαν τραυματίαι πολλοί, καὶ

οἱ ἐπίλοιποι ἔφυγον εἰς τὸ ὄρος, καὶ ἔλαβον πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν. καὶ μετεστράφη ὁ γάμος εἰς πένθος, καὶ φωνὴ μουσικῶν αὐτῶν εἰς θρῆνον. καὶ ἐξεδίκησαν τὴν ἐκδίκησιν αἵματος ἀδελφοῦ αὐτῶν, καὶ ἀπέστρεψαν εἰς τὸ ὄρος τοῦ Ἰορδάνου. Καὶ ἤκουσεν Βακχίδης, καὶ ἦλθεν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαβββάτων ἕως τῶ, κρηπίδων τοῦ Ἰορδάνου ἐν δυνάμει πολλῇ. καὶ εἶπεν Ἰωναθὰν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ Ἀναστῶμεν νῦν καὶ πολεμήσωμεν ὑπὲρ τῶν ψυχῶν ἡμῶν· οὐ γάρ ἐστιν σήμερον ὡς ἐχθὲς καὶ τρίτην ἡμέραν. ἰδοὺ γὰρ ὁ πόλεμος ἐξ ἐναντίας ἡμῶν καὶ ἐξόπισθεν ἡμῶν· τὸ δὲ ὕδωρ τοῦ Ἰορδάνου ἔνθεν καὶ ἔνθεν καὶ ἕλος καὶ δρυμός. καὶ οὐκ ἔστιν τόπος τοῦ ἐκκλῖναι. νῦν οὖν κεκράξατε εἰς οὐρανόν, ὅπως διασωθῆτε ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν ἡμῶν. καὶ συνῆψεν ὁ πόλεμος· καὶ ἐξέτεινεν Ἰωναθὰν τὴν χεῖρα αὐτοῦ πατάξαι τὸν Βακχίδην, καὶ ἐξέκλινεν ἀπ’ αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω. καὶ ἐνεπήδησεν Ἰωναθὰν καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ εἰς τὸν Ἰορδάνην, καὶ διεκολύμβησαν εἰς τὸ πέραν· καὶ οὐ διέβησαν ἐπ’ αὐτοὺς τὸν Ἰορδάνην. καὶ διέπεσαν παρὰ Βακχίδα τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς χιλίους ἄνδρας. Καὶ ἀπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλήμ, καὶ ᾠκοδόμησαν πόλεις ἀχυρὰς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, τὸ ὀχύρωμα τὸ ἐν Ἰεριχὼ καὶ τὴν Ἐμμαοὺμ καὶ τὴν Βεθωρὼν καὶ τὴν Βεθὴλ καὶ τὴν Θαμνάθα Φαραθὼν καὶ τὴν Τεφών, ἐν τείχεσιν ὑψηλοῖς καὶ πύλαις καὶ μοχλοῖς. καὶ ἔθεντο φρουρὰν ἐν αὐτοῖς τοῦ ἐχθραίνειν τῷ Ἰσραήλ. καὶ ὠχύρωσαν τὴν πόλιν καὶ Βεθσούραν καὶ Γαζάραν καὶ τὴν ἄκραν, καὶ ἔθεντο ἐν αὐταῖς δυνάμεις καὶ παραθέσεις βραωμάτων. καὶ ἔλαβον τοὺς υἱοὺς τῶν ἡγουμένων τῆς χώρας ὅμηρα, καὶ ἔθεντο αὐτοὺς ἐν τῇ ἄκρᾳ ἐν Ἱερουσαλὴμ ἐν φυλακῇ. Καὶ ἐν ἔτει τρίτῳ καὶ πεντηκοστῷ καὶ ἑκατοστῷ, τῷ μηνὶ τῷ δευτέρῳ, ἐπέταξεν Ἄλκιμος καθαιρεῖν τὸ τεῖχος τῆς αὐλῆς τῶν ἁγίων τῆς ἐσωτέρας, καὶ καθεῖλεν τὰ ἔργα τῶν προφητῶν, καὶ

ἐνήρξατο τοῦ καθαιρεῖν. ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἐπλήγη Ἄλκιμος, καὶ ἐνεποδίσθη τὰ ἔργα αὐτοῦ, καὶ ἀπεφράγη τὸ στόμα αὐτοῦ, καὶ παρελύθη, καὶ οὐκ ἠδύνατο ἔτι λαλῆσαι λόγον καὶ ἐντείλασθαι περὶ τοῦ οἴκου αὐτοῦ. καὶ ἀπέθανεν Ἄλκιμος ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῃ μετὰ βασάνου μεγάλης. καὶ ἴδεν Βακχίδης ὅτι ἀπέθανεν Ἄλκιμος, καὶ ἀπέστρεψεν πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ Ἰούδα ἔτη δύο. Καὶ ἐβουλεύσαντο οἱ ἄνομοι πάντες λύγοντες Ἰδοὺ Ἰωναθὰν καὶ οἱ παρ’ αὐτοῦ ἐν ἡσυχίᾳ κατοικοῦσιν πεποιθότες· νῦν οὖν ἄξομεν τὸν Βακχίδην, καὶ συλλήμψεται αὐτοὺς πάντας ἐν νυκτὶ μιᾷ. καὶ πορευθέντες συνεβουλεύσαντο αὐτῷ. καὶ ἀπῆρεν τοῦ ἐλθεῖν μετὰ δυνάμεως πολλῆς, καὶ ἀπέστειλεν ἐπιστολὰς λάθρα πᾶσι τοῖς συμμάχοις αὐτοῦ τοῖς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, ὅπως συλλάββωσιν τὸν Ἰωναθὰν καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ· καὶ οὐκ ἠδύνατο, ὅτι ἐγνώσθη αὐτοῖς ἡ βουλὴ αὐτῶν. καὶ συνέλαβον ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν τῆς χώρας τῶν ἀρχηγῶν τῆς κακίας εἰς πεντήκοντα ἄνδρας, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτούς. καὶ ἐξεχώρησεν Ἰωναθὰν καὶ Σίμων καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ εἰς Βεθβασὶ τὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ᾠκοδόμησεν τὰ καθῃρημένα αὐτῆς, καὶ ἐστερέωσεν αὐτήν. καὶ ἔγνω Βακχίδης καὶ συνήγαγεν πᾶν τὸ πλῆθος αὐτοῦ, καὶ τοῖς ἐκ τῆς Ἰουδαίας παρήγγειλεν. καὶ ἐλθὼν παρενέβαλεν ἐπὶ Βεθβασί, καὶ ἐπολέμησεν αὐτὴν ἡμέρας πολλὰς καὶ ἐποίησεν μηχανάς. καὶ ἀπέλειπεν Ἰωναθὰν Σίμωνα τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἐν τῇ πόλει, καὶ ἐξῆλθεν εἰς τὴν χώραν. καὶ ἦλθεν ἀριθμῷ. καὶ ἐπάταξεν Ὀδομηρὰ καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ καὶ τοὺς υἱοὺς Φασιρὼν ἐν τῷ σκηνώματι αὐτῶν, καὶ ἐξήρξατο τύπτειν καὶ ἀναβαίνειν ἐν ταῖς δυνάμεσιν. καὶ Σίμων καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ ἐξῆλθον ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐνεπύρισαν τὰς μηχανάς. καὶ ἐπολέμησαν πρὸς τὸν Βακχίδην, καὶ συνετρίβη ὑπ’ αὐτῶν, καὶ ἔθλιββον αὐτὸν σφόδρα, ὅτι ἦν ἡ βουλὴ αὐτοῦ καὶ ἡ ἔφοδος αὐτοῦ κενή. καὶ

ὠργίσθησαν θυμῷ τοῖς ἀνδράσιν τοῖς ἀνόμοις τοῖς συμβουλεύσασιν αὐτῷ ἐλθεῖν εἰς τὴν χώραν, καὶ ἀπέκτειναν ἐξ αὐτῶν πολλούς, καὶ ἐβουλεύσατο τοῦ ἀπελθεῖν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. καὶ ἐπέγνω Ἰωναθάν, καὶ ἀπέστειλεν πρὸς αὐτὸν πρέσβεις, τοῦ συνθέσθαι πρὸς αὐτὸν εἰρήνην καὶ ἀποδοῦναι αὐτοῖς τὴν αἰχμαλωσίαν. καὶ ἀπεδέξατο, καὶ ἐποίησεν κατὰ τοὺς λόγους αὐτοῦ, καὶ ὤμοσεν αὐτῷ μὴ ἐκζητῆσαι αὐτῷ κακὸν πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ. καὶ ἀπέδωκεν αὐτῷ τὴν αἰχμαλωσίαν ἣν ᾐχμαλώτευσεν τὸ πρότερον ἐκ γῆς Ἰούδα· καὶ ἀποστρέψας ἀπῆλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ οὐ προσέθετο ἔτι ἐλθεῖν εἰς τὰ ὅρια αὐτῶν. καὶ κατέπαυσεν ῥομφαία ἐξ Ἰσραήλ, καὶ ᾤκησεν Ἰωναθὰν ἐν Μαχμάς· καὶ ἤρξατο Ἰωναθὰν κρίνειν τὸν λαὸν καὶ ἠφάνισεν τοὺς ἀσεβεῖς ἐξ Ἰσραήλ.

# 10

Καὶ ἐν ἔτει ἑξηκοστῷ καὶ ἑκατοστῷ ἀνέβη Ἀλέξανδρος ὁ τοῦ Ἀντιόχου ὁ Ἐπιφανής, καὶ κατελάβετο Πτολεμαίδα, καὶ ἐπεδέξαντο αὐτὸν καὶ ἐβασίλευσεν ἐκεῖ καὶ ἤκουσεν Δημήτριος ὁ βασιλεύς, καὶ συνήγαγεν δυνάμεις πολλὰς σφόδρα, καὶ ἐξῆλθεν εἰς συνάντησιν αὐτῷ εἰς πόλεμον. καὶ ἀπέστειλεν πρὸς Ἰωναθὰν ἐπιστολὰς Δημήτριος λόγοις εἰρηνικοῖς, ὥστε μεγαλῦναι αὐτόν, εἶπεν γάρ Προφθάσωμεν τοῦ εἰρήνην θεῖναι μετ’ αὐτῶν, πρὶν ἢ θεῖναι αὐτὸν μετὰ Ἀλεξάνδρου καθ’ ἡμῶν. μνησθήσεται γὰρ πάντων τῶν κακῶν ὧν συνετελέσαμεν πρὸς αὐτόν, καὶ εἰς τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ καὶ εἰς τὸ ἔθνος αὐτοῦ. καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ἐξουσίαν συναγαγεῖν δυνάμεις, καὶ κατασκευάζειν ὅπλα, καὶ εἶναι αὐτὸν

σύμμαχον αὐτοῦ, καὶ τὰ ὅμηρα τὰ ἐν τῇ ἄκρᾳ εἶπεν παραδοῦναι αὐτῷ. Καὶ ἦλθεν Ἰωναθὰν ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ ἀνέγνω τὰς ἐπιστολὰς εἰς τὰ ὦτα παντὸς τοῦ λαοῦ καὶ τῶν ἐκ τῆς ἄκρας. καὶ ἐφοβήθησαν φόβον μέγαν, ὅτε ἤκουσαν ὅτι ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς ἐξουσίαν συναγαγεῖν δυνάμεις. καὶ παρέδωκαν οἱ ἐκ τῆς ἄκρας Ἰωναθὰν τὰ ὅμηρα, καὶ ἀπέδωκαν αὐτοὺς τοῖς γονεῦσιν αὐτῶν. καὶ ᾤκησεν Ἰωναθὰν ἐν Ἰερουσαλήμ, καὶ ἤρξατο οἰκοδομεῖν καὶ καινίζειν τὴν πόλιν. καὶ εἶπεν πρὸς τοὺς ποιοῦντας τὰ ἔργα οἰκοδομεῖν τὰ τείχη καὶ τὸ ὄρος Σιὼν κυκλόθεν ἐκ λίθων τετραγώνων εἰς ὀχύρωσιν, καὶ ἐποίησαν οὕτως. καὶ ἔφυγον οἱ ἀλλογενεῖς οἱ ὄντες ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν οἷς οἰκοδόμησεν ὁ Βακχίδης. καὶ κατέλειπεν ἕκαστος τὸν τόπον αὐτοῦ, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. πλὴν ἐν Βεθσούροις ὑπελείφθησάν τινες τῶν καταλειπόντων τὸν νόμον καὶ τὰ προστάγματα· ἦν γὰρ αὐτοῖς φυγαδευτήριον. Καὶ ἤκουσεν ὁ βασιλεὺς Ἀλέξανδρος τὰς ἐπαγγελίας ὅσας ἀπέστειλεν Δημήτριος τῷ Ἰωναθάν, καὶ διηγήσαντο αὐτῷ τοὺς πολέμους καὶ τὰς ἀνδραγαθίας ἃς ἐποίησεν αὐτὸς καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ τοὺς κόπους οὓς ἔσχοσαν. καὶ εἶπεν Μὴ εὑρήσομεν ἄνδρα τοιοῦτον ἕνα; καὶ νῦν ποιήσαωμεν αὐτὸν φίλον καὶ σύμμαχον ἡμῶν. καὶ ἔγραψεν ἐπιστολὰς καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ κατὰ τοὺς λόγους τούτους λέγων Βασιλεὺς Ἀλέξανδρος τῷ ἀδελφῷ Ἰωναθὰν χαίρειν. ἀκηκόαμεν περὶ σοῦ, ὅτι ἀνὴρ ἀγαθὸς ἰσχύι καὶ ἐπιτήδειος εἶ τοῦ εἶναι ἡμῶν φίλος. καὶ νῦν καθεστάκαμέν σε σήμερον ἀρχιερέα τοῦ ἔθνους σου, καὶ φίλον βασιλέως καλεῖσθαι— καὶ ἀπέστειλαν αὐτῷ πορφύραν καὶ στέφανον χρυσοῦν—καὶ φρονεῖν τὰ ἡμῶν καὶ συντηρεῖν φιλίαν πρὸς ἡμᾶς. καὶ ἐνεδύσατο Ἰωναθὰν τὴν ἁγίαν στολὴν τῷ ἑβδόμῳ μηνὶ ἔτους ἑξηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ ἐν ἑορτῇ σκηνοπηγίας, καὶ

συνήγαγεν δυνάμεις, καὶ κατεσκεύασεν ὅπλα πολλά. Καὶ ἤκουσεν Δημήτριος τοὺς λόγους τούτους, καὶ. ἐλυπήθη, καὶ εἶπεν Τί τοῦτο ἐποιήσαμεν, ὅτι προέφθακεν ἡμᾶς ὁ Ἀλέξανδρος τοῦ φιλίαν καταλαβέσθαι τοῖς Ἰουδαίοις εἰς στήριύμας γράψω κἀγὼ αὐτοῖς λόγους παρακλήσεως καὶ ὕψους καὶ δομάτων, ὅπως ὦσιν σὺν ἐμοὶ εἰς βοήθειαν. καὶ ἀπέστειλεν αὐτοῖς κατὰ τοὺς λόγους τούτους Βασιλεὺς Δημήτριος τῷ ἔθνει τῶν Ἰουδαίων χαίρειν. ἐπεὶ συνετηρήσατε τὰς πρὸς ἡμᾶς συνθήκας καὶ ἐνεμείνατε τῇ φιλίᾳ ἡμῶν καὶ οὐ προσεχωρήσατε τοῖς ἐχθροῖς ἡμῶν, ἠκούσαμεν καὶ ἐχάρημεν. καὶ νῦν ἐνμείνατε ἔτι τοῦ συντηρῆσαι πρὸς ἡμᾶς πίστιν, καὶ ἀνταποδώσομεν ὑμῖν ἀγαθὰ ἀνθ’ ὧν ποιεῖτε μεθ’ ἡμῶν. καὶ ἀφήσομεν ὑμῖν ἀφέματα πολλά, καὶ δώσομεν ὑμῖν δόματα. καὶ νῦν ἀπολύω ὑμᾶς καὶ ἀφίημι πάντας τοὺς Ἰουδαίους ἀπὸ τῶν φόρων καὶ τῆς τιμῆς τοῦ ἁλός, καὶ ἀπὸ τῶν στεφάνων· καὶ ἀντὶ τοῦ τρίτου τῆς σπορᾶς, καὶ ἀντὶ τοῦ ἡμίσους τοῦ καρποῦ τοῦ ξυλίνου τοῦ ἐπιβάλλοντός μοι λαβεῖν, ἀφίημι ἀπὸ τῆς σήμερον καὶ ἐπέκεινα, τοῦ λαβεῖν ἀπὸ τῆς γῆς Ἰούδα, καὶ ἀπὸ τῶν τριῶν νομῶν τῶν προστιθεμένων αὐτῇ ἀπὸ τῆς Σαμαρίτιδος καὶ Γαλιλαίας, ἀπὸ τῆς σήμερον ἡμέρας καὶ εἰς τὸν ἅπαντα χρόνον. καὶ Ἱερουσαλὴμ ἤτω ἁγία καὶ ἀφιεμένη καὶ τὰ ὅρία αὐτῆς, αἱ δεκάται καὶ τὰ τέλη. ἀφίημι καὶ τὴν ἐξουσίαν τῆς ἄκρας τῆς ἐν Ἱερουσαλήμ, καὶ δίδωμι τῷ ἀρχιερεῖ ὅπως ἂν καταστῇ ἐν αὐτῇ ἄνδρας, οὓς ἂν ἐκλέξηται αὐτός, τοῦ φυλάσσειν αὐτήν. καὶ πᾶσαν ψυχὴν Ἰουδαίων τὴν αἰχμαλωτισθεῖσαν ἀπὸ γῆς Ἰούδα εἰς πᾶσαν βασιλείαν μου ἀφίημι ἐλευθέραν δωρεάν· καὶ πάντες ἀφιέτωσαν τοὺς φόρους καὶ κτηνῶν αὐτῶν. καὶ πᾶσαι αἱ ἑορταὶ καὶ τὰ σάββατα καὶ νουμηνίαι καὶ ἡμέραι ἀποδεδιγμέναι, καὶ τρεῖς ἡμέραι πρὸ ἑορτῆς καὶ τρεῖς ἡμέραι μετὰ ἑορτήν, ἔστωσαν πᾶσαι αἱ ἡμέραι ἀτελείας καὶ

ἀφέσεως πᾶσι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς οὖσιν ἐν πάσῃ τῇ βασιλείᾳ μου. καὶ οὐχ ἕξει ἐξουσίαν οὐδεὶς πράσσειν καὶ παρενοχλεῖν τινα αὐτῶν περὶ παντὸς πράγματος. καὶ προγραφήτωσαν τῶν Ἰουδαίων εἰς τὰς δυνάμεις τοῦ βασιλέως εἰς τριάκοντα χιλιάδας ἀνδρῶν, καὶ δοθήσεται αὐτοῖς ξένιά, ὡς καθήκει πάσαις ταῖς δυνάμεσιν τοῦ βασιλέως. καὶ κατασταθήσεται ἐξ αὐτῶν ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν τοῦ βασιλέως τοῖς μεγάλοις, καὶ ἐκ τούτων κατασταθήσεται ἐπὶ χρειῶν τῆς βασιλείας τῶν οὐσῶν εἰς πίστιν· καὶ οἱ ἐπ’ αὐτῶν καὶ οἱ ἄρχοντες ἐξ αὐτῶν ἔστωσαν, καὶ πορευέσθωσαν τοῖς νόμοις αὐτῶν, καθὰ καὶ προσέταξεν ὁ βασιλεὺς ἐν γῇ Ἰούδα. καὶ τοὺς τρεῖς νομοὺς τοὺς προστεθέντας τῇ Ἰουδαίᾳ ἀπὸ τῆς χώρας Σαμαρίας, προστεθήτω τῇ Ἰουδαίᾳ πρὸς τὸ λογισθῆναι τοῦ γενέσθαι ὑφ’ ἕνα, τοῦ μὴ ὑπακοῦσαι ἄλλης ἐξουσίας ἀλλ᾽ ἢ τοῦ ἀρχιερέως. Πτολεμαίδα καὶ τὴν προσκυροῦσαν αὐτῇ δέδωκα δόμα τοῖς ἁγίοις τοῖς ἐν Ἱερουσαλὴμ εἰς τὴν προκαθήκουσαν δαπάνην τοῖς ἁγίοις. κἀγὼ δίδωμι κατ’ ἐνιαυτὸν δέκα πέντε χιλιάδας σίκλων ἀργυρίου ἀπὸ τῶν λόγων τοῦ βασιλέως, ἀπὸ τῶν τόπων τῶν ἀνηκόντων. καὶ πᾶν τὸ πλεονάζον ὃ οὐκ ἀπεδίδοσαν ἀπὸ τῶν χρειῶν, ὡς ἐν τοῖς πρώτοις ἔτεσιν, ἀπὸ τοῦ νῦν δώσωσιν εἰς τὰ ἔργα τοῦ οἴκου. καὶ ἐπὶ τούτοις πεντακισχιλίους σίκλους ἀργυρίου οὓς ἐλάμβανον ἀπὸ τῶν χρειῶν, ὡς ἐν τοῖς πρώτοις ἔτεσιν, τοῦ ἁγίου ἀπὸ τοῦ λόγου κατ’ ἐνιαυτόν, καὶ ταῦτα ἀφίεται, διὰ τὸ ἀνήκειν αὐτὰ τοῖς ἱερεῦσιν τοῖς λειτουργοῦσιν. καὶ ὅσοι ἐὰν φύγωσιν εἰς τὸ ἱερὸν τὸ ἐν Ἱεροσολύμοις καὶ ἐν πᾶσιν τοῖς ὁρίοις αὐτοῦ, ὀφίλων βασιλικὰ καὶ πᾶν πρᾶγμα, ἀπολελύσθωσαν, καὶ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτοῖς ἐν τῇ βασιλείᾳ μου. καὶ τοῦ οἰκοδομηθῆναι καὶ τοῦ ἐπικαινισθῆναι τὰ ἔργα τῶν ἁγίων, καὶ ἡ δαπάνη δοθήσεται ἐκ τοῦ λόγου τοῦ βασιλέως. καὶ τοῦ οἰκοδομηθῆναι τὰ

τείχη Ἰερουσαλήμ, καὶ ὀχυρῶσαι κυκλόθεν, καὶ ἡ δαπάνη δοθήσεται ἐκ τοῦ λόγου τοῦ βασιλέως, καὶ τοῦ οἰκοδομῆσαι τὰ τείχη ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ. Ὡς δὲ ἤκουσεν Ἰωναθὰν καὶ ὁ λαὸς τοὺς λόγους τούτους, οὐκ ἐπίστευσεν αὐτοῖς οὐδὲ ἐπεδέξαντο, ὅτι ἐπεμνήσθησαν τῆς κακίας τῆς μεγάλης ἧς ἐποίησεν ἐν Ἰσραήλ, καὶ ἔθλιψεν αὐτοὺς σφόδρα. καὶ εὐδόκησαν ἐν Ἀλεξάνδρῳ, ὅτι αὐτὸς ἐγένετο αὐτοῖς ἀρχηγὸς λόγων εἰρηνικῶν, καὶ συνεμάχουν αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας. καὶ συνήγαγεν Ἀλέξανδρος ὁ βασιλεὺς δυνάμεις μεγάλας, καὶ παρενέβαλεν ἐξ ἐναντίας Δημητρίου. καὶ συνῆψαν πόλεμον οἱ δύο βασιλεῖς, καὶ ἔφυγεν ἡ παρεμβολὴ Δημητρίου, καὶ ἐδίωξεν αὐτὸν ὁ Ἀλέξανδρος, καὶ ἴσχυσεν ἐπ᾽ αὐτούς. καὶ ἐστερέωσεν πόλεμον σφόδρα ἕως ἔδυ ὁ ἥλιος, καὶ ἔπεσεν ὁ Δημήτριος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Καὶ ἀπέστειλεν Ἀλέξανδρος πρὸς Πτολεμαῖον βασιλέα Αἰγύπτου πρέσβεις κατὰ τοὺς λόγους τούτους λέγων Ἐπεὶ ἀνέστρεψα εἰς τὴν βασιλείαν μου καὶ ἐκάθισα ἐπὶ θρόνου πατέρων μου καὶ ἐκράτησα τῆς ἀρχῆς, καὶ συνέτριψα τὸν Δημήτριον καὶ ἐπεκράτησα τῆς χώρας ἡμῶν· καὶ συνῆψα πρὸς αὐτὸν μάχην, καὶ συνετρίβη αὐτὸς καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ὑφ᾽ ἡμῶν, καὶ ἐκαθίσαμεν ἐπὶ θρόνου βασιλείας αὐτοῦ· καὶ συνστήσωμεν πρὸς αὐτὸν φιλίαν· καὶ νῦν δός μοι τὴν θυγατέρα σου εἰς γυναῖκα, καὶ ἐπιγαμβρεύσω σοι, καὶ δώσω σοι δόματα καὶ αὐτῇ ἄξιά σου. καὶ ἀπεκρίθη Πτολεμαῖος ὁ βασιλεὺς λέγων Ἀγαθὴ ἡμέρα, ἐν ᾗ ἀνέστρεψας εἰς γῆν πατέρων σου, καὶ ἐκάθισας ἐπὶ θρόνου βασιλείας αὐτῶν. καὶ νῦν ποιήσω σοι ἃ ἔγραψας· ἀλλὰ ἀπάντησον εἰς Πτολεμαίδα, ὅπως ἴδωμεν ἀλλήλους, καὶ ἐπιγαμβρεύσω σοι καθὼς εἴρηκας. καὶ ἐξῆλθεν Πτολεμαῖος ἐξ Αἰγύπτου αὐτὸς καὶ Κλεοπάτρα ἡ θυγάτηρ αὐτοῦ, καὶ ἦλθεν εἰς Πτολεμαίδα ἔτους δευτέρου καὶ ἑξηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ. καὶ

ἀπήντησεν αὐτῷ Ἀλέξανδρος ὁ βασιλεύς, καὶ ἐξέδετο αὐτῷ Κλεοπάτραν τὴν θυγατέρα αὐτοῦ, καὶ ἐποίησεν τὸν γάμον αὐτῆς ἐν Πτολεμαίδι, καθὼς οἱ βασιλεῖς, ἐν δόξῃ μεγάλῃ. Καὶ ἔγραψεν ὁ βασιλεὺς Ἀλέξανδρος Ἰωνάθῃ ἐλθεῖν εἰς συνάντησιν αὐτῷ. καὶ ἐπορεύθη μετὰ δόξης εἰς Πτολεμαίδα, καὶ ἀπήντησεν τοῖς δυσὶν βασιλεῦσιν· καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ἀργύριον καὶ χρυσίον καὶ τοῖς φίλοις αὐτῶν καὶ δόματα πολλά, καὶ εὗρεν χάριν ἐναντίον αὐτῶν. καὶ συνήχθησαν ἐπ’ αὐτὸν ἄνδρες λοιμοὶ ἐξ Ἰσραήλ, ἄνδρες παράνομοι, ἐντυχεῖν κατ’ αὐτοῦ· καὶ οὐ προσέσχεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς καὶ προσέταξεν αὐτοῖς ὁ βασιλεύς, καὶ ἐξέδυσεν Ἰωναθὰν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἐνέδυσεν αὐτὸν πορφύραν· καὶ ἐποίησαν οὕτως. καὶ ἐκάθισεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς μετ’ αὐτοῦ, καὶ εἶπεν τοῖς ἄρχουσιν αὐτοῦ Ἐξέλθατε μετ’ αὐτοῦ εἰς μέσον τῆς πόλεως, καὶ κηρύξατε τοῦ μηδένα ἐντυγχάνειν κατὰ τούτου περὶ μηδενὸς πράγματος. καὶ μηδεὶς αὐτῷ ἐνοχλείτω περὶ παντὸς λόγου. καὶ ἐγένετο ὡς εἶδον οἱ ἐντυγχάνοντες τὴν δόξαν αὐτοῦ καθὼς ἐκήρυξεν, καὶ περιβεβλημένον αὐτὸν σινδόνα, καὶ ἔφυγον πάντες. καὶ ἐδόξασεν αὐτὸν ὁ βασιλεύς, καὶ ἔγραψεν αὐτὸν τῶν πρώτων φίλων, καὶ ἔθετο αὐτὸν στρατηγὸν καὶ μεριδάρχην. καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωναθὰν εἰς Ἰερουσαλὴμ μετ εἰρήνης καὶ εὐφροσύνης. Καὶ ἐν ἔτει πέμπτῳ καὶ ἑξηκοστῷ καὶ ἑκατοστῷ ἦλθεν Δημήτριος ὁ υἱὸς Δημητρίου ἐκ Κρήτης εἰς τὴν γῆν τῶν πατέρων αὐτοῦ. καὶ ἤκουσεν Ἀλέξανδρος ὁ βασιλεύς, καὶ ἐλυπήθη σφόδρα, καὶ ἀπέστρεψεν εἰς Ἀντιοχίαν. καὶ κατέστησεν Δημήτριος Ἀπολλώνιον τὸν ὄντα ἐπὶ Κοίλης Συρίας, καὶ συνήγαγεν δύναμιν μεγάλην, καὶ παρενέβαλεν ἐν Ἰάμνειᾳ· καὶ ἀπέστειλεν πρὸς Ἰωναθὰν τὸν ἀρχιερέα, λέγων Σὺ μονώτατος ἐπαίρῃ ἐφ’ ἡμᾶς, ἐγὼ δὲ ἐγενήθην εἰς καταγέλωτα καὶ ὀνειδισμὸν διὰ σέ· καὶ διὰ τί ἐξουσιάζῃ ἐφ’

ἡμᾶς ἐν τοῖς ὄρεσιν νῦν οὖν εἰ πέποιθας ἐπὶ ταῖς δυνάμεσίν σου, κατάβηθι πρὸς ἡμᾶς εἰς τὸ πεδίον, καὶ συνκριθώμεν ἑαυτοῖς ἐκεῖ, ὅτι μετ᾽ ἐμοῦ ἐστιν δύναμις τῶν πόλεων. ἐρώτησον καὶ μάθε τίς εἰμι καὶ οἱ λοιποὶ οἱ βοηθοῦντες ἡμῖν· καὶ λέγουσιν Οὐκ ἔστιν ὑμῖν στάσις ποδὸς κατὰ πρόσωπον ημῶν, ὅτι δὶς ἐτροπώθησαν οἱ πατέρες σου ἐν τῇ γῇ αὐτῶν. καὶ νῦν οὐ δυνήσῃ ὑποστῆναι τὴν ἵππον καὶ δύναμιν τοιαύτην ἐν τῷ πεδίῳ, ὅπου οὐκ ἔστιν λίθος οὐδὲ κόχλαξ οὐδὲ τόπος τοῦ φυγεῖν. Ὡς δε ἤκουσεν Ἰωναθὰν τῶν λόγων Ἀπολλωνίου, ἐκινήθη τῇ διανοίᾳ. καὶ ἐπέλεξεν δέκα χιλιάδας ἀνδρῶν, καὶ ἐξῆλθεν ἐξ Ἰερουσαήμ, καὶ συνήντησεν αὐτῷ Σίμων ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἐπὶ βοήθειαν αὐτου. καὶ παρενέβαλεν ἐπὶ Ἰόππην, καὶ ἀπέκλεισαν αὐτὸν οἱ ἐκ τῆς πόλεως, ὅτι φρουρὰ Ἀπολλωνίου ἐν Ἰόππης. καὶ ἐπολέμησαν αὐτήν. καὶ φοβηθέντες ἤνοιξαν οἱ ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐκυρίευσεν Ἰωναθὰν Ἰόππης. καὶ ἤκουσεν Ἀπολλώνιος, καὶ παρενέβαλεν τρισχιλίαν ἵππον καὶ δύναμιν πολλήν, καὶ ἐπορεύθη εἰς Ἄζωτον ὡς διοδεύων, καὶ ἅμα προσῆγεν εἰς τὸ πεδίον, καὶ διὰ τὸ ἔχειν αὐτὸν πλῆθος ἵππου καὶ πεποιθέναι ἐπ᾽ αὐτήν. καὶ κατεδίωξεν ὀπίσω αὐτοῦ εἰς Ἄζωτον, καὶ συνῆψαν αἱ παρεμβολαὶ ὀπίσω αὐτοῦ εἰς πόλεμον. καὶ ἀπέλειπεν Ἀπολλώνιος χιλίαν ἵππον κρυπτῶς κατόπισθεν αὐτῶυ· καὶ ἔγνω Ἰωναθὰν ὅτι ἔστιν ἔνεδρον κατόπισθεν αὐτοῦ. καὶ ἐκύκλωσαν αὐτοῦ τὴν παρεμβολήν, καὶ ἐξετίναξον τὰς σχίζας εἰς τὸν λαὸν ἐκ πρωίθεν ἕως δείλης. ὁ δὲ λαὸς ἱστήκει καθὼς ἐπέταξεν Ἰωναθάν, καὶ ἐκοπίασαν οἱ ἵπποι αὐτῶν. καὶ εἵλκυσεν Σίμων τὴν δύναμιν αὐτοῦ, καὶ συνῆψεν πρὸς τὴν φάλαγγα, ἡ γὰρ ἵππος ἐξελύθη· καὶ συνετρίβησαν ἀπ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἔφυγαν. καὶ ἡ ἵππος ἐσκορπίσθη ἐν τῷ πεδίῳ, καὶ ἔφυγον εἰς Ἄζωτον, καὶ εἰσῆλθον εἰς Βηθδαγὼν τὸ εἰδώλιον αὐτῶν τοῦ σωθῆναι. καὶ ἐνεπύρισεν Ἰωναθὰν τὴν

Ἄζωτον καὶ τὰς πόλεις τὰς κύκλῳ αὐτῆς, καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα αὐτῶν, καὶ τὸ ἱερὸν Δαγὼν καὶ τὸ ἱερὸν αὐτῆς ἐνεπύρισεν ἐν πυρί. καὶ ἐγένοντο οἱ πεπτωκότες μαχαίρᾳ σὺν τοῖς ἐνπυρισθεῖσιν εἰς ἄνδρας ὀκτακισχιλίους. καὶ ἀπῆρεν ἐκεῖθεν Ἰωναθάν, καὶ παρενέβαλεν εἰς Ἀσκάλωνα, καὶ ἐξῆλθον οἱ ἐκ τῆς πόλεως εἰς συνάντησιν αὐτῷ ἐν δόξῃ μεγάλῃ. καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωναθὰν σὺν τοῖς παρ᾽ αὐτοῦ ἔχοντες σκῦλα πολλά. καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουσεν Ἀλέξανδρος ὁ βασιλεὺς τοὺς λόγους τούτους, καὶ προσέθετο δοξάσαι τὸν Ἰωναθάν. καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ πόρπην χρυσῆν, ὡς ἔθος ἐστὶν δίδοσθαι τοῖς συγγενεῦσιν τῶν βασιλέων· καὶ ἔδωκεν αὐτῷ τὴν Ἀκκαρὼν καὶ πάντα τὰ ὅρια αὐτῆς εἰς κληροδοσίαν.

# 11

Καὶ ὁ βασιλεὺς Αἰγύπτου ἤθροισεν δυνάμεις πολλὰς ὡς ἡ ἄμμος ἡ παρὰ τὸ χεῖλος τῆς θαλάσσης, καὶ πλοῖα πολλά· καὶ ἐζήτησεν κατακρατῆσαι τῆς βασιλείας Ἀλεξάνδρου δόλῳ, καὶ προσθεῖναι αὐτὴν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. καὶ ἐξῆλθεν εἰς Συρίαν λόγοις εἰρηνικοῖς. καὶ ἤνοιγον αὐτῷ οἱ ἀπὸ τῶν πόλεων, καὶ συνήντων αὐτῷ, ὅτι ἐντολή ἦν Ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως συναντᾷν αὐτῷ διὰ τὸ πενθερὸν αὐτοῦ εἶναι. ὡς δὲ εἰσεπορεύετο εἰς τὰς πόλεις Πτολεμαίδος, ἀπέτασσε τὰς δυνάμεις φρουρὰν ἐν ἑκάστῃ πόλει. ὡς δὲ ἤγγισεν Ἀζώτου,. ἔδειξαν αὐτῷ τὸ ἱερὸν Δαγὼν ἐνεπυρισμένον καὶ Ἄζωτον καὶ τὰ περιπόλια αὐτῆς καθῃρημένα καὶ τὰ σώματα ἐρριμμένα, καὶ τοὺς ἐνπεπυρισμένους οὓς ἐνεπύρισεν ἐν τῷ πολέμῳ, ἐποίησαν γὰρ θιμωνιὰς. αὐτῶν ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ. καὶ διηγήσαντο τῷ βασιλεῖ ἃ ἐποίησεν Ἰωναθάν, εἰς τὸ

ψογίσαι αὐτόν· καὶ ἐσίγησεν ὁ βασιλεύς. καὶ συνήντησεν Ἰωναθὰν τῷ βασιλεῖ εἰς Ἰόππην μετὰ δόξης, καὶ ἠσπάσαντο ἀλλήλους, καὶ ἐκοιμήθησαν ἐκεῖ. καὶ ἐπορεύθη Ἰωναθὰν μετὰ τοῦ βασιλέως ἕως τοῦ ποταμοῦ τοῦ καλουμένου Ἐλευθέρου, καὶ ἐπέστρεψεν εἰς Ἰερουσαλήμ. ὁ δὲ βασιλεὺς Πτολεμαῖος ἐκυρίευσεν τῶν πόλεων τῆς παραλίας ἕως Σελευκίας τῆς παραθαλασσίας, καὶ διελογίζετο περὶ Ἀλεξάνδρου λογισμοὺς πονηρούς. καὶ ἀπέστειλεν πρέσβεις πρὸς Δημήτριον βασιλέα, λέγων Δεῦρο συνθώμεθα πρὸς ἑαυτοὺς διαθήκην, καὶ δώσω σοι τὴν θυγατέρα μου ἣν ἔχει Ἀλέξανδρος, καὶ βασιλεύσεις τῆς βασιλείας τοῦ πατρός σου· μεταμεμέλημαι γὰρ δοὺς αὐτῷ τὴν θυγατέρα μου, ἐζήτησεν γὰρ ἀποκτεῖναί με. καὶ ἐψόγισεν αὐτὸν χάριν τοῦ ἐπιθυμῆσαι αὐτὸν τῆς βασιλείας αὐτοῦ. καὶ ἀφελόμενος αὐτοῦ τὴν θυγατέρα, ἔδωκεν αὐτὴν τῷ Δημητρίῳ, καὶ ἠλλοιώθη τὸ πρόσωπον Ἀλεξάνδρου, καὶ ἐφάνη ἔχθρα αὐτῶν. Καὶ εἰσῆλθεν Πτολεμαῖος εἰς Ἀντιοχίαν, καὶ περιέθετο τὸ διάδημα τῆς Ἀσίας, καὶ περιέθετο δύο διαδήματα περὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, τὸ τῆς Ἀσίας καὶ Αἰγύπτου. Ἀλέξανδρος δὲ ὁ βασιλεὺς ἦν εἰς Κιλικίαν κατὰ τοὺς καιροὺς ἐκείνους, ὅτι ἀπεστάτουν οἱ ἀπὸ τῶν τόπων ἐκείνων. καὶ ἤκουσεν Ἀλέξανδρος, καὶ ἦλθεν ἐπ’ αὐτὸν ἐν πολέμῳ· καὶ ἐξήγαγεν Πτολεμαῖος καὶ ἀπήντησεν αὐτῷ ἐν χειρὶ ἰσχυρῷ, καὶ ἐτροπώσατο αὐτόν. καὶ ἔφυγεν Ἀλέξανδρος εἰς τὴν Ἀραβίαν, τοῦ σκεπασθῆναι αὐτὸν ἐκεῖ· ὁ δὲ βασιλεὺς Πτολεμαῖος ὑψώθη. καὶ ἀφεῖλεν Ζαβδιὴλ ὁ Ἄραψ τὴν κεφαλὴν Ἀλεξάνδρου, καὶ ἀπέστειλεν τῷ Πτολεμαίῳ. καὶ ὁ βασιλεὺς Πτολεμαῖος ἀπέθανεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ, καὶ οἱ ὄντες ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν αὐτοῦ ἀπώλοντο ὑπὸ τῶν ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν. καὶ ἐβασίλευσεν Δημήτριος ἔτους ἑβδόμου καὶ ἑξηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις συνήγαγεν Ἰωναθὰν τοὺς ἐκ τῆς Ἰουδαίας, τοῦ

ἐκπολεμῆσαι τὴν ἄκραν τὴν ἐν Ἰερουσαλήμ· καὶ ἐποίησαν ἐπ’ αὐτὴν μηχανὰς πολλάς. καὶ ἐπορεύθησάν τινες μισοῦντες τὸ ἔθνος αὐτῶν, ἄνδρες παράνομοι, πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ ὅτι Ἰωναθὰν περικάθηται τὴν ἄκραν. καὶ ἀκούσας ὠργίσθη· ὡς δὲ ἤκουσεν, εὐθέως ἀναζεύξας ἦλθεν εἰς Πτολεμαίδα, καὶ ἔγραψεν Ἰωναθὰν τοῦ μὴ περικαθῆσθαι καὶ τοῦ ἀπαντῆσαι αὐτὸν αὐτῷ συνμίσγειν εἰς Πτολεμαίδα τὴν ταχίστην. ὡς δὲ ἤκουσεν Ἰωναθάν, ἐκέλευσεν περικαθῆσθαι· καὶ ἐπέλεξεν τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραὴλ καὶ τῶν ἱερέων, καὶ ἔδωκεν αὐτὸν τῷ κινδύνῳ. καὶ λαβὼν ἀργύριον καὶ χρυσίον καὶ ἱματισμὸν καὶ ἕτερα ξένια πλείονα, καὶ ἐπορεύθη πρὸς τὸν βασιλέα εἰς Πτολεμαίδα, καὶ εὗρεν χάριν ἐναντίον αὐτοῦ. καὶ ἐνετύγχανον κατ’ αὐτοῦ τινες ἄνομοι τῶν ἐκ τοῦ ἔθνους. καὶ ἐποίησεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς καθὼς ἐποίησαν αὐτῷ οἱ πρὸ αὐτοῦ, καὶ ὕψωσεν αὐτὸν ἐναντίον πάντων τῶν φίλων αὐτοῦ. καὶ ἔστησεν αὐτῷ τὴν ἀρχιερωσύνην, καὶ ὅσα ἄλλα εἶχεν τίμια τὸ πρότερον, καὶ ἐποίησεν αὐτὸν τῶν πρώτων φίλων ἡγεῖσθαι. καὶ ἠξίωσεν Ἰωναθὰν τὸν βασιλέα ποιῆσαι τὴν Ἰουδαίαν ἀφορολόγητον καὶ τὰς τρεῖς τοπαρχίας καὶ τὴν Σαμαρῖτιν, καὶ ἐπηγγείλαντο αὐτῷ τάλαντα τριακόσια. καὶ εὐδόκησεν ὁ βασιλεύς, καὶ ἔγραψεν τῷ Ἰωναθὰν ἐπιστολὰς περὶ πάντων τούτων ἐχούσας τὸν τρόπον τοῦτον Βασιλεὺς Δημήτριος Ἰωναθὰν τῷ ἀδελφῷ χαίρειν, καὶ ἔθνει Ἰουδαίῳ. τὸ ἀντίγραφον τῆς ἐπιστολῆς, ἧς ἐγράψαμεν Λασθένει τῷ συγγενεῖ ἡμῶν περὶ ὑμῶν, γεγράφαμεν καὶ πρὸς ὑμᾶς, ὅπως ἴδητε Βασιλεὺς Δημήτριος Λασθένει τῷ πατρὶ χαίρειν. τῷ ἔθνει τῶν Ἰουδαίων φίλοις ἡμῶν καὶ συντηροῦσι τὰ πρὸς ἡμᾶς δίκαια ἐκρίναμεν ἀγαθοποιῆσαι, χάριν τῆς ἐαυτῶν εὐνοίας πρὸς ἡμᾶς. θστάκαμεν οὖν αὐτοῖς τὰ ὅρια τῆς Ἰουδαίας καὶ τοὺς τρεῖς νομούς, Ἀφαίρεμα καὶ Λύδδα καὶ

Ῥαθαμείν· προσετέθησαν τῇ Ἰουδαίᾳ ἀπὸ τῆς Σαμαρίτιδος· καὶ πάντα τὰ συγκυροῦντα αὐτοῖς πᾶσιν τοῖς θυσιάζουσιν εἰς Ἰεροσόλυμα, ἀντὶ τῶν βασιλικῶν ὧν ἐλάμβανεν ὁ βασιλεὺς παρ᾽ αὐτῶν τὸ πρότερον κατ᾽ ἐνιαυτὸν ἀπὸ τῶν γενημάτων τῆς γῆς καὶ τῶν ἀκροδρύων. καὶ τὰ ἄλλα τὰ ἀνήκοντα ἡμῖν ἀπὸ τοῦ νῦν τῶν δεκατῶν καὶ τῶν τελῶν τῶν ἀνηκόντων ἡμίν, καὶ τὰς τοῦ ἁλὸς λίμνας, καὶ τοὺς ἀνήκοντας ἡμῖν στεφάνους, πάντα ἐπαρκέσομεν αὐτοῖς. καὶ οὐκ ἀθετήσεται οὐδέν τούτων ἀπὸ τοῦ νῦν ἐπὶ τὸν ἅπαντα χρόνον. νῦν οὖν ἐπιμελεῖσθε τοῦ ποιῆσαι τούτων ἀντίγραφον, καὶ δοθήτω Ἰωναθάν, καὶ, τεθήτω ἐν ὄρει τῷ ἁγίῳ ἐν τόπῳ ἐπιτηδείῳ ἐπισήμῳ. Καὶ ἴδεν Δημήτριος ὁ βασιλεὺς ὅτι ἡσύχασεν ἡ γῆ ἐνώπιον αὐτοῦ καὶ οὐθὲν αὐτῷ ἀνθεστήκει, καὶ ἀπέλυσεν πάσας τὰς δυνάμεις αὐτοῦ, ἕκαστον εἰς τὸν ἴδιον τόπον, πλὴν τῶν ξένων δυνάμεων ὧν ἐξενολόγησεν ἀπὸ τῶν νήσων τῶν ἐθνῶν· καὶ ἤχθρασαν αὐτῶν πᾶσαι αἱ δυνάμεις αἱ ἀπὸ τῶν πατέρων. Γρύφαων δὲ ἦν τῶν παρὰ Ἀλεξάνδρου τὸ πρότερον, καὶ ἴδεν ὅτι πᾶσαι αἱ δυνάμεις καταγογγύζουσιν κατὰ τοῦ Δημητρίου, καὶ ἐπορεύθη πρὸς Σινμαλκουὴ τὸν Ἄραβα, ὃς ἔτρεφεν τὸν Ἀντίοχον τὸ παιδάριον τὸ τοῦ Ἀλεξάνδρου· καὶ προσήδρευεν αὐτῷ, ὅπως παραδοῖ αὐτὸν αἰτῷ, ὅπως βασιλεύσῃ ἀντὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ· καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ ὅσα συνετέλεσεν Δημήτριος, καὶ τὴν ἔχθραν ἣν ἐχθραίνουσιν αὐτῷ αἱ δυνάμεις αὐτοῦ· καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ ἡμέρας πολλάς. Καὶ ἀπέστειλεν Ἰωναθὰν πρὸς Δημήτριον τὸν βασιλέα, ἵνα ἐκβάλῃ τοὺς ἐκ τῆς ἄκρας ἐξ Ἰερουσαλὴμ καὶ τοὺς ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν· ἦσαν γὰρ πολεμοῦντες τὸν Ἰσραήλ. καὶ ἀπέστειλεν Δημήτριος πρὸς Ἰωναθὰν λέγων Οὐ μόνον ταῦτα ποιήσω σοι καὶ τῷ ἔθνει σου, ἀλλ᾽ ἢ δόξῃ δοξάσω σε καὶ τὸ ἔθνος σου, ἐὰν εὐκαιρίας τύχω. νῦν οὖν ὀρθῶς ποιήσεις ἀποστείλας ἡμῖν

ἄνδρας οἳ συμμαχήσουσίν μοι, ὅτι ἀπέστησαν πᾶσαι αἱ δυνάμεις μου. καὶ ἀπέστειλεν Ἰωναθὰν ἄνδρας τρισχιλίους δυνατοὺς ἰσχύι αὐτῶν εἰς Ἀντιοχίαν, καὶ ἦλθοσαν πρὸς τὸν βασιλέι, καὶ ηὐφράνθη ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τῇ ἐφόδῳ αὐτῶν. καὶ ἐπισυνήχθησαν οἱ ἐκ τῆς πόλεως εἰς μέσον τῆς πόλεως εἰς ἄνδρας δώδεκα μυριάδας, καὶ ἠβούλοντο ἀνελεῖν τὸν βασιλέα. καὶ ἔφυγεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὴν αὐλήν, καὶ κατελάβοντο οἱ ἐκ τῆς πόλεως τὰς διόδους δῆς πόλεως, καὶ ἤρξαντο ἐκπολεμεῖν. καὶ ἐκάλεσεν ὁ βασιλεὺς τοὺς Ἰουδαίους ἐπὶ βοήθειαν, καὶ ἐπισυνήχθησαν πρὸς αὐτὸν πάντες ἅμα· καὶ διεσπάρησαν ἐν τῇ πόλει· καὶ ἀπέκτειναν ἐν τῇ πόλει ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς μυριάδας δέκα. καὶ ἐνεπύρισαν τὴν πόλιν, καὶ ἐλάβοσαν σκῦλα πολλὰ ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, καὶ ἔσωσαν τὸν βασιλέα. καὶ ἴδον οἱ ἀπὸ τῆς πόλεως ὅτι κατεκράτησαν οἱ Ἰουδαῖοι τῆς πόλεως ὡς ἠβούλοντο, καὶ ἠσθένησαν ταῖς διανοίαις αὐτῶν, καὶ ἐκέκραξαν πρὸς τὸν βασιλέα μετὰ δεήσεως, λέγοντες Δὸς ἡμῖν δεξιάς, καὶ παυσάσθωσαν οἱ Ἰουδαῖοι πολεμοῦντες ἡμᾶς καὶ τὴν πόλιν. καὶ ἔριψαν τὰ ὅπλα, καὶ ἐποίησαν εἰρήνην· καὶ ἐδοξάσθησαν οἱ Ἰουδαῖοι ἐναντίον τοῦ βασιλέως καὶ ἐνώπιον πάντων τῶν ἐν τῇ βασιλειᾳ αὐτοῦ· καὶ ἐπέστρεψαν εἰς Ἰερουσαλὴμ ἔχοντες σκῦλα πολλά. καὶ ἐκάθισεν ὁ βασιλεὺς Δημήτριος ἐπὶ θρόνου τῆς βασιλείας αὐτοῦ, καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ ἐνώπιον αὐτοῦ· καὶ ἐψεύσατο πάντα ὅσα εἶπεν, καὶ ἠλλοτριώθη τῷ Ἰωναθὰν καὶ οὐκ ἀνταπέδωκεν τὰς εὐνοίας ἃς ἀνταπέδωκεν αὐτῷ, καὶ ἔθλιψεν αὐτὸν σφόδρα. Μετὰ δὲ ταῦτα ἀπέστρεψεν Τρύφων καὶ Ἀντίοχος μετ’ αὐτοῦ, παιδάριον νεώτερον· καὶ ἐβασίλευσεν, καὶ ἐπέθετο διάδημα. καὶ ἐπισυνήχθησαν πρὸς αὐτὸν πᾶσαι αἱ δυνάμεις ἃς ἀπεσκοράκισεν Δημήτριος, καὶ ἐπολέμησαν πρὸς αὐτόν, καὶ ἔφυγεν καὶ ἐτροπώθη· καὶ ἔλαβεν Τρύφων τὰ θηρία, καὶ

κατεκράτησεν Ἀντιοχίας. καὶ ἔγραψεν Ἀντίοχος ὁ νεώτερος Ἰωνάθα λέγων Ἴστημί σοι τὴν ἀρχιερωσύνην, καὶ καθίστημί σε ἐπὶ τῶν τεσσάρων νομῶον, καὶ εἶναί σε τῶν φίλων τοῦ βασιλέως. καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ χρυσώματα καὶ διακονίαν, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ἐξουσίαν πίνειν ἐν χρυσώμασιν καὶ εἶναι ἐν πορφύρᾳ καὶ ἔχειν πόρπην χρυσῆν. καὶ Σίμωνα τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ κατέστησεν στρατηγὸν ἀπὸ τῆς κλίμακος Ἰύρου ἕως τῶν ὁρίων Αἰγύπτου. καὶ ἐξῆλθεν Ἰωναθάν, καὶ διεπορεύετο πέραν τοῦ ποταμοῦ καὶ ἐν ταῖς πόλεσιν, καὶ ἠθροίσθησαν πρὸς αὐτὸν πᾶσαι αἱ δυνάμεις Συρίας εἰς συμμαχίαν· καὶ ἦλθεν εἰς Ἀσκάλωνα, καὶ ἀπήντησαν αὐτῷ οἱ ἐκ τῆς πόλεως ἐνδόξως. καὶ ἀπῆλθεν ἐκεῖθεν εἰς Γάζαν, καὶ ἀπέκλεισαν οἱ ἀπὸ Γάζης· καὶ περιεκάθισεν περὶ αὐτήν, καὶ ἐνεπύρισεν τὰ περιπόλια αὐτῆς ἐν πυρί, καὶ ἐσκύλευσεν αὐτάς· καὶ ἠξίωσαν οἱ ἀπὸ Γάζης Ἰωναθάν, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς δεξιάς· καὶ ἔλαβεν τοὺς υἱοὺς τῶν ἀρχόντων αὐτῶν εἰς ὅμηρα, καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτοὺς εἰς Ἰερουσαλήμ, καὶ διῆλθεν τὴν χώραν ἕως Δαμασκοῦ. Καὶ ἤκουσεν Ἰωναθὰν ὅτι παρῆσαν οἱ ἄρχοντες Δημητρίου εἰς Κῆδες τὴν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ μετὰ δυνάμεως πολλῆς, βουλόμενοι μεταστῆσαι αὐτὸν τῆς χρείας. καὶ συνήντησεν αὐτοῖς, τὸν δὲ ἀδελφὸν αὐτοῦ Σίμωνα κατέλειπεν ἐν τῇ χώρᾳ. καὶ παρενέβαλεν Σίμων ἐν Βεθσούρᾳ, καὶ ἐπολέμει αὐτὴν ἡμέρας πολλὰς καὶ συνέκλεισεν αὐτήν. καὶ ἠξίωσαν αὐτὸν τοῦ δεξιὰς λαβεῖν, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς· καὶ ἐξέβαλεν αὐτοὺς ἐκεῖθεν καὶ κατελάβετο τὴν πόλιν, καὶ ἔθετο ἐπ’ αὐτὴν φρουράν. καὶ Ἰωναθὰν καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ παρενέβαλον ἐπὶ τὸ ὕδωρ τοῦ Γεννησάρ· καὶ ὤρθρισαν τὸ πρωὶ εἰς τὸ πεδίον Νασώρ· καὶ ἰδοὺ παρεμβολὴ ἀλλοφύλων ἀπήντα αὐτῷ ἐν τῷ πεδίῳ, καὶ ἐξέβαλον ἔνεδρον ἐπ’ αὐτὸν ἐν τοῖς ὄρεσιν, αὐτοὶ δὲ ἀπήντησαν ἐξ ἐναντίας. τὰ δὲ

ἔνεδρα ἐξανέστησαν ἐκ τῶν τόπων ἑαυτῶν, καὶ συνῆψαν πόλεμον· καὶ ἔφυγον οἱ παρὰ Ἰωνάθου πάντες· οὐδὲ εἷς κατελείφθη ἀπ᾽ αὐτῶν, πλὴν Ματταθίας ὁ τοῦ Ἀψαλώμου καὶ Ἰούδας ὁ τοῦ Χαλφεί, ἄρχοντες τῆς στρατιᾶς τῶν δυνάμεων. καὶ διέρρηξεν Ἰωναθὰν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, καὶ ἐπέθετο γῆν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ προσηύξατο. καὶ ἐπέστρεψεν πρὸς αὐτοὺς πολέμῳ, καὶ ἐτροπώσατο αὐτούς, καὶ ἔφυγον. καὶ ἴδον οἱ φυγόντες παρ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἐπέστρεψαν πρὸς αὐτόν, καὶ ἐδίωκον μετ᾽ αὐτοῦ ἕως Κάδης ἕως τῆς παρεμβολῆς αὐτῶν, καὶ παρενέβαλον ἐκεῖ καὶ ἔπεσον ἐκ τῶν ἀλλοφύλων ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς ἄνδρας τρισχιλίους· καὶ ἐπέστρέψεν Ἰωναθὰν εἰς Ἰερουσαλήμ.

# 12

Καὶ ἴδεν Ἰωναθὰν ὅτι ὁ καιρὸς αὐτῷ συνεργεῖ, καὶ ἐπέλεξεν ἄνδρας, καὶ ἀπέστειλεν εἰς Ῥώμην στῆσαι καὶ ἀνανεῶσαι τὴν πρὸς αὐτοὺς φιλίαν· καὶ πρὸς Σπαρτιάτας καὶ τόπους ἑτέρους ἀπέστειλεν ἐπιστολὰς κατὰ ταὐτά. καὶ ἐπορεύθησαν εἰς Ρώμην, καὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὸ βουλευτήριον, καὶ εἶπαν Ἰωναθὰν ὁ ἀρχιερεὺς καὶ τὸ ἔθνος τῶν Ἰουδαίων ἀπέστειλαν ἡμᾶς ἀνανεώσασθαι τὴν φιλίαν αὐτοῖς καὶ τὴν συμμαχίαν κατὰ τὸ πρότερον. καὶ ἔδωκαν ἐπιστολὰς αὐτοῖς πρὸς αὐτοὺς κατὰ τόπον, ὅπως προπέμπωσιν αὐτοὺς εἰς γῆν Ἰούδα μετ᾽ εἰρήνης. καὶ τοῦτο ἀντίγραφον τῶν ἐπιστολῶν ὧν ἔγραψεν Ἰωναθὰν τοῖς Σπαρτιάταις Ἰωναθὰν ἀρχιερεὺς τοῦ ἔθνους καὶ ἡ γερουσία καὶ οἱ ἱερεῖς καὶ ὁ λοιπὸς δῆμος τῶν Ἰουδαίων Σπαρτιάταις τοῖς ἀδελφοῖς χαίρειν. ἔτι πρότερον ἀπεστάλησαν ἐπιστολαὶ πρὸς Ὀνίαν τὸν

ἀρχιερέα, παρὰ δ’ Ἀρείου τοῦ βασιλεύοντος ἐν ὑμῖν, ὅτι ἐστὲ ἀδελφοὶ ἡμῶν, ὡς τὸ ἀντίγραφον ὑπόκειται. καὶ ἐπεδέξατο Ὀνίας τὸν ἄνδρα τὸν ἀπεσταλμένον ἐνδόξως, καὶ ἔλαβεν τὰς ἐπιστολάς, ἐν αἷς διεσαφεῖτο περὶ συμμαχίας καὶ φιλίας. καὶ ἡμεῖς οὖν ἀπροσδεεῖς τούτων ὄντες, παράκλησιν ἔχοντες τὰ βιβλία τὰ ἅγια τὰ ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν, ἐπειράθημεν ἀποστεῖλαι τὴν πρὸς ὑμᾶς ἀδελφότητα καὶ φιλίαν ἀνανεώσασθαι, πρὸς τὸ μὴ ἐξαλλοτριωθῆναι ὑμῶν· πολλοὶ γὰρ καιροὶ διῆλθον ἀφ’ οὗ ἀπεστείλατε πρὸς ἡμᾶς. ἡμεῖς οὖν ἐν παντὶ καιρῷ ἀδιαλείπτως ἐν ταῖς ἑορταῖς καὶ ἐν ταῖς λοιπαῖς καθηκούσαις ἡμέραις μιμνησκόμεθα ὑμῶν, ἐφ’ ὧν προσφέρομεν θυσιῶν καὶ ἐν ταῖς προσευχαῖς, ὡς δέον ἐστὶν καὶ πρέπον μνημονεύειν ἀδελφῶν. εὐφραινόμεθα δὲ ἐπὶ τῇ δόξῃ ὑμῶν. ἡμᾶς δὲ ἐκύκλωσαν πολλαὶ θλίψεις καὶ πόλεμοι πολλοί, καὶ ἐπολέμησαν ἡμᾶς οἱ βασιλεῖς οἱ κύκλῳ ἡμῶν. οὐκ ἠβουλόμεθα οὖν παρενοχλεῖν ὑμῖν καὶ τοὺς λοιποὺς συμμάχους καὶ φίλους ἡμῶν ἐν τοῖς πολέμοις τούτοις. ἔχομεν γὰρ τὴν ἐξ οὐρανῶν βοηθίαν βοηθοῦσαν ἡμῖν, καὶ ἐρύσθημεν ἀπὸ τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν, καὶ ἐταπεινώθησαν οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν. ἐπελέξαμεν οὖν Νουμήνιον Ἀντιόχου καὶ Ἀντίπατρον Ἰάσονος, καὶ ἀπεστάλκαμεν πρὸς Ῥωμαίους ἀνανεώσασθαι τὴν πρὸς αὐτοὺς φιλίαν καὶ συμμαχίαν τὴν πρότερον. ἐνετειλάμεθα οὖν αὐτοῖς καὶ πρὸς ὑμᾶς πορευθῆναι καὶ ἀσπάσασθαι ὑμᾶς, καὶ ἀποδοῦναι ὑμῖν τὰς παρ’ ἡμῶν ἐπιστολὰς περὶ τῆς ἀνανεώσεως καὶ τῆς ἀδελφότητος ἡμῶν. καὶ νῦν καλῶς ποιήσετε ἀντιφωνήσαντες ἡμῖν πρὸς ταῦτα. Καὶ τοῦτο τὸ ἀντίγραφον τῶν ἐπιστολῶν ὧν ἀπέστειλαν Ὀνείᾳ Ἄρης βασιλεὺς Σπαρτιατῶν Ὀνείᾳ ἱερεῖ μεγάλῳ χαίρειν. εὑρέθη ἐν γραφῇ περί τε τῶν Σπαρτιατῶν καὶ Ἰουδαίων, ὅτι ἀδελφοὶ εἰσίν, καὶ ὅτι εἰσὶν ἐκ

γένους Ἀβραάμ. καὶ νῦν ἀφ’ οὐ ἔγνωμεν ταῦτα, καλῶς ποιήσετε γράφοντες ἡμῖν περὶ τῆς εἰρήνης ὑμῶν. καὶ ἡμεῖς δὲ ἀντιγράφομεν ὑμῖν Τὰ κτήνη ὑμῶν καὶ ἡ ὕπαρξις ὑμῶν ἡμῖν ἐστιν, καὶ τὰ ἡμῶν ὑμῖν ἐστιν· ἐντελλόμεθα οὖν ὅπως ἀπαγγείλωσιν ὑμῖν κατὰ τὰ αὐτά. Καὶ ἤκουσεν Ἰωναθὰν ὅτι ἐπέστρεψαν οἱ ἄρχοντες Δημητρίου μετὰ δυνάμεως πολλῆς ὑπέρ τὸ πρότερον τοῦ πολεμῆσαι πρὸς αὐτόν. καὶ ἀπῆρεν ἐξ Ἰερουσαλήμ, καὶ ἀπήντησεν αὐτοῖς εἰς τὴν Ἀμαθειτιν χώραν· οὐ γὰρ ἔδωκεν αὐτοῖς ἀνοχὴν τοῦ ἐμβατεῦσαι εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ. καὶ ἀπέστειλεν κατασκόπους εἰς τὴν παρεμβολὴν αὐτοῦ· καὶ ἐπέστρεψαν, καὶ ἀπήγγειλαν αὐτῷ ὅτι Οὕτως τάσσονται ἐπιπεσεῖν ἐπ’ αὐτοὺς τὴν νύκτα. ὡς δὲ ἔδυ ὁ ἥλιος, ἐπέταξεν Ἰωναθὰν τοῖς παρ’ αὐτοῦ γρηγορεῖν καὶ εἶναι ἐπὶ τοῖς ὅπλαις, ἑτοιμάζεσθαι εἰς πόλεμον δι’ ὅλης τῆς νυκτός· καὶ ἐξέβαλεν προφύλακας κύκλῳ τῆς παρεμβολῆς. καὶ ἤκουσαν οἱ ὑπεναντίοι ὅτι ἡτοίμασται Ἰωναθὰν καὶ οἱ παρ’ αὐτοῦ εἰς πόλεμον, καὶ ἐφοβήθησαν καὶ ἔπτηξαν τὴν καρδίαν αὐτῶν, καὶ ἀνέκαυσαν πυρὰς ἐν τῇ παρεμβολῇ αὐτῶν. Ἰωναθὰν δὲ καὶ οἱ παρ’ αὐτοῦ οὐκ ἔγνωσαν ἕως πρωί ἔβλεπον γὰρ τὰ φῶτα καιόμενα. καὶ κατεδίωξεν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐκατελαβεν αὐτούς, διέβησαν γὰρ τὸν Ἐλεύθερον ποταμόν. καὶ ἐξέκλινεν Ἰωναθὰν ἐπὶ τοὺς Ἄραβας τοὺς καλουμένους Ζαβαδαίους, καὶ ἐπάταξεν αὐτούς, καὶ ἔλαβεν τὰ σκῦλα αὐτῶν. καὶ ἀναζεύξας ᾖλθεν εἰς Δαμασκόν, καὶ διώδευσεν ἐν πάσῃ τῇ χώρᾳ. καὶ Σίμων ἐξῆλθεν καὶ διώδευσεν ἕως Ἀσκάλωνος, καὶ τὰ πλησίον ὀχυρώματα, καὶ ἐξέκλινεν εἰς Ἰόππην καὶ προκατελάβετο αὐτήν. ἤκουσεν γὰρ ὅτι βούλονται τὸ ὀχύρωμα παραδοῦναι τοῖς παρὰ Δημητρίου, καὶ ἔθετο ἐκεῖ φρουράν, ὅπως φυλάσσωσιν αὐτήν. Καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωναθὰν καὶ ἐξεκκλησίασεν τοὺς πρεσβυτέρους τοῦ λαοῦ, καὶ ἐβουλεύσατο μετ’ αὐτῶν τοῦ

οἰκοδομῆσαι ὀχυρώματα ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, καὶ προσυψῶσαι τὰ τείχη Ἱερουσαλήμ, καὶ ὑψῶσαι ὕψος μέγα ἀνὰ μέσον τῆς ἄκρας καὶ τῆς πόλεως εἰς τὸ διαχωρίσαι αὐτὴν τῆς πόλεως, ἵνα ἡ αὕτη κατὰ μόνας, ὅπως μήτε ἀγοράζωσιν μήτε πωλῶσιν. καὶ συνήχθησαν τοῦ οἰκοδομεῖν, καὶ ἔπεσεν τοῦ τείχους τοῦ χειμάρρου τοῦ ἐξ ἀπηλιώτου, καὶ ἐπεσκεύασεν τὸ καλούμενον Χαφεναθά. καὶ Σίμων ᾠκοδόμησεν τὴν Ἀδιδὰ ἐν τῇ σεφηλά, καὶ ὠχύρωσεν θύρας καὶ μοχλούς. Καὶ ἐζήτησεν Τρύφων βασιλεῦσαι τῆς Ἀσίας καὶ περιθέσθαι τὸ διάδημα καὶ ἐκτεῖναι χεῖρας ἐπὶ Ἀντίοχον τὸν βασιλέα. καὶ ηὐλαβήθη μή ποτε οὐκ ἐάσῃ αὐτὸν Ἰωναθὰν καὶ μὴ ποτε πολεμήσῃ πρὸς αὐτόν, καὶ ἐζήτει πόρον τοῦ συλλαββεῖν αὐτὸν τοῦ ἀποκτεῖναι· καὶ ἀπάρας ἦλθεν εἰς Βεθσά. καὶ ἐξῆλθεν Ἰωναθὰν εἰς ἀπάντησιν αὐτῷ ἐν τεσσεράκοντα χιλιάσιν ἀνδρῶν ἐπιλελεγμέναις εἰς παράταξιν, καὶ ἦλθεν εἰς Βεθσά. καὶ εἶδεν Τρύφων ὅτι πάρεστιν μετὰ δυνάμεως πολλῆς, καὶ ἐκτεῖναι χεῖρας ἐπ’ αὐτὸν ηὐλαβήθη. καὶ ἐπεδέξατο αὐτὸν ἐνδόξως, καὶ συνέστησεν αὐτὸν πᾶσιν τοῖς φίλοις αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτῷ δόματα, καὶ ἐπέταξεν τοῖς φίλοις αὐτοῦ καὶ ταῖς δυνάμεσιν αὐτοῦ ὑπακούειν αὐτῷ ὡσαύτως. καὶ εἶπεν τῷ Ἰωναθάν Ἵνα τί ἔκοψας πάντα τὸν λαὸν τοῦτον πολέμου μὴ ἐνεστηκότος ἡμῖν; καὶ νῦν ἀπόστειλον αὐτοὺς εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν, ἐπίλεξον δέ σεαυτῷ ἄνδρας ὀλίγους οἵτιωες ἔσονται μετὰ σοῦ· καὶ δεῦρο μετ’ ἐμοῦ εἰς Πτολεμαίδα, καὶ παραδώσω σοι αὐτὴν καὶ τὰ λοιπὰ ὀχυρώματα καὶ τὰς δυνάμεις τὰς πολλὰς καὶ πάντας τοὺς ἐπὶ τῶν χρειῶν, καὶ ἐπιστρέψας ἀπελεύσομαι· τούτου γὰρ χάριν πάρειμι. καὶ ἐμπιστεύσας αὐτῷ ἐποίησεν καθὼς εἶπεν, καὶ ἐξαπέστειλεν τὰς δυνάμεις, καὶ ἀπῆλθον εἰς γῆν Ἰούδα. κατέλειπεν δὲ μεθ’ ἑαυτοῦ ἄνδρας τρισχιλίους· ὡς δισχιλίους ἀφῆκεν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, χίλιοι δὲ

συνῆλθον αὐτῷ. Ὡς δὲ εἰσῆλθεν Ἰωναθὰν εἰς Πτολεμαίδα, ἀπέκλεισαν οἱ Πτολεμαῖται τὰς πύλας, καὶ συνέλαβον αὐτόν, καὶ πάντας τοὺς συνελθόντας μετ’ αὐτοῦ ἀπέκτειναν ἐν ῥομφαίᾳ. καὶ ἀπέστειλεν Τρύφων δυνάμεις καὶ ἵππον εἰς Γαλιλαίαν εἰς τὸ πεδίον τὸ μέγα, τοῦ ἀπολέσαι πάντας τοὺς παρὰ Ἰωνάθου. καὶ ἐπέγνωσαν ὅτι συνελήμφθη καὶ ἀπόλωλεν, καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ· καὶ παρεκάλεσαν ἑαυτούς, καὶ ἐπορεύοντο συνεστραμμένοι ἕτοιμοι εἰς πόλεμον. καὶ ἴδον οἱ διώκοντες ὅτι περὶ ψυχῆς ἐστιν αὐτοῖς· καὶ ἐπέστρεψαν. καὶ ἦλθον πάντες μετ᾽ εἰρήνης εἰς γῆν Ἰούδα, καὶ ἐπένθησαν τὸν Ἰωναθὰν καὶ τοὺς μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐφοβήθησαν σφόδρα· καὶ ἐπένθησεν Ἰσραὴλ πένθος μέγα. καὶ ἐζήτησαν πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ αὐτῶν ἐκτρίψαι αὐτοὺς· εἶπαν γάρ Οὐκ ἔχουσιν ἄνδρα ἄρχοντα καὶ βοηθοῦντα· νῦν οὖν πολεμήσωμεν αὐτούς, καὶ ἐξαροῦμεν ἐξ ἀνθρόπων τὸ μνημόσυνον αὐτῶν.

# 13

Καὶ ἤκουσεν Σίμων ὅτι συνήγαγεν Τρύφων δύναμιν πολλὴν τοῦ ἐλθεῖν εἰς γῆν Ἰούδα τοῦ ἐκτρίψαι αὐτὴν. καὶ εἶδεν τὸν λαὸν ὅτι ἐστὶν ἔντρομος καὶ ἔκφοβος, καὶ ἀνέβη εἰς Ἰερουσαλὴμ καὶ ἤθροισεν τὸν λαόν· καὶ παρεκάλεσεν αὐτούς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς Αὐτοὶ οἴδατε ὅσα ἐγὼ καὶ οἱ ἀδελφοί μου καὶ οἶκος τοῦ πατρός μου ἐποιήσαμεν περὶ τῶν νόμων καὶ τῶν ἁγίων, καὶ τοὺς πολέμους καὶ τὰς στενοχαωρίας. τούτου χάριν ἀπώλοντο οἱ ἀδελφοί μου πάντες χάριν τοῦ Ἰσραήλ, καὶ κατελείφθην ἐγὼ μόνος. καὶ νῦν μὴ μοι γένοιτο φείσασθαί μου τῆς ψυχῆς ἐν παντὶ καιρῷ θλίψεως· οὐ γάρ εἰμι κρείσσων τῶν ἀδελφῶν μου. πλὴν ἐκδικήσω περὶ τοῦ ἔθνους

μου καὶ περὶ τῶν ἁγίων καὶ περὶ τῶν γυναικῶν καὶ τῶν τέκνων ἡμῶν, ὅτι συνήχθησαν πάντα τὰ ἔθνη ἐκτρίψαι ἡμᾶς ἔχθρας χάριν. καὶ ἀνεζωπύρισεν τὸ πνεῦμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ ἀκοῦσαι τῶν λόγων τούτων· καὶ ἀπεκρίθησαν φωνῇ μεγάλῃ λέγοντες Σὺ εἶ ἡμῶν ἡγούμενος ἀντὶ Ἰούδου καὶ Ἰωνάθου τοῦ ἀδελφοῦ σου· πολέμησον τὸν πόλεμον ἡμῶν, καὶ πάντα ὅσα ἐὰν εἴπῃς ἡμῖν ποιήσομεν. καὶ συνήγαγεν πάντας τοὺς ἄνδρας τοὺς πολεμιστάς, καὶ ἐτάχυνεν τοῦ τελέσαι τὰ τείχη Ἰερουσαλήμ, καὶ ὀχύρωσεν αὐτὴν κυκλόθεν. καὶ ἀπέστειλεν Ἰωναθὰν τὸν τοῦ Ἀψαλώμου καὶ μετ’ αὐτοῦ δύναμιν ἱκανὴν εἰς Ἰόππην, καὶ ἐξέβαλεν τοὺς ἐν αὐτῇ ὄντας, καὶ ἔμεινεν ἐκεῖ ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀπῆρεν Τρύφων ἀπὸ Πτολεμαίδος μετὰ δυνάμεως πολλῆς εἰσελθεῖν εἰς γῆν Ἰούδα, καὶ Ἰωναθὰν μετ’ αὐτοῦ ἐν φυλακῇ· Σίμων δὲ παρενέβαλεν ἐν Ἀδίδοις κατὰ προσώπου τοῦ πεδίου. καὶ ἐπέγνω Τρύφων ὅτι ἀνέστη Σίμων ἀντὶ Ἰωνάθου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ ὅτι συνάπτειν αὐτῷ μέλλει εἰς πόλεμον· καὶ ἀπέστειλεν πρὸς αὐτὸν πρέσβεις, λέγων Περὶ ἀργυρίου οὗ ὤφειλεν Ἰωναθὰν ἀδελφός σου εἰς τὸ βασιλικόν, διʼ ἃς εἶχεν χρείας. συνέχομεν αὐτόν. καὶ νῦν ἀπόστειλον ἀργυρίου ἑκατὸν τάλαντα καὶ δύο τῶν υἱῶν αὐτοῦ ὅμηρα, ὅπως μὴ ἀφεθεὶς ἀποστατήσει ἀφ’ ἡμῶν, καὶ ἀφήσομεν αὐτόν. καὶ ἔγνω Σίμων ὅτι δόλῳ λαλοῦσιν πρὸς αὐτόν, καὶ πέμπει τὸ ἀργύριον καὶ τὰ παιδάρια, καὶ μὴ ποτε ἔχθραν ἄρῃ μεγάλην πρὸς τὸν λαόν, λέγοντες Ὅτι οὐκ ἀπέστειλα αὐτῷ τὸ ἀργύριον καὶ τὰ παιδάρια, ἀπώλετο· καὶ ἀπέστειλεν τὰ παιδάρια καὶ τὰ ἑκατὸν τάλαντα· καὶ διεψεύσατο, καὶ οὐκ ἀφῆκεν τὸν Ἰωναθάν. καὶ μετὰ ταῦτα ἦλθεν Τρύφων τοῦ ἐμβατεῦσαι εἰς τὴν πόλιν καὶ ἐκτρίψαι αὐτήν, καὶ ἐκύλωσεν ὁδὸν τὴν εἰς Ἀδωρά· καὶ Σίμων καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ ἀντιπαρῆγεν αὐτῷ εἰς πάντα τόπον οὗ ἐπορεύετο. οἱ δὲ ἐκ τῆς

ἄκρας ἀπέστελλον πρεσβευτὰς καὶ κατασπεύδοντας αὐτὸν τοῦ ἐλθεῖν πρὸς αὐτὸν διὰ τῆς ἐρήμου καὶ ἀποστεῖλαι αὐτοῖς τροφάς. καὶ ἡτοίμασεν Τρύφων πᾶσαν τὴν ἵππον αὐτοῦ ἐλθεῖν· καὶ ἐν τῇ νυκτὶ ἐκείνῃ ἦν χιὼν πολλὴ σφόδρα, καὶ οὐκ ἦλθεν διὰ τὴν χιόνα· καὶ ἀπῆρεν καὶ ἦλθεν εἰς τὴν Γαλααδῖτιν. ὡς δὲ ἤγγισεν τῆς Βασκαμά, ἀπέκτεινεν τὸν Ἰωναθάν, καὶ ἐτάφη ἐκεῖ καὶ ἐπέστρεψεν Τρύφων καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστειλεν Σίμων, καὶ ἔλαβεν τὰ ὀστᾶ Ἰωναθὰν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ ἔθαψεν αὐτὸν ἐν Μωδεείμ πόλει τῶν πατέρων αὐτοῦ. καὶ ἐκόψαντο αὐτὸν πᾶς Ἰσραὴλ κοπετὸν μέγαν, καὶ ἐπένθησαν αὐτὸν ἡμέρας πολλάς. καὶ ᾠκοδόμησεν Σίμων ἐπὶ τὸν τάφον τοῦ πατρὸς αὐτοῦ καὶ τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ, καὶ ὕψωσεν αὐτὸν τῇ ὁράσει λίθῳ ξυστῷ ἐκ τῶν ὄπισθεν καὶ ἐκ τῶν ἔμπροσθεν. καὶ ἔστησεν ἑπτὰ πυραμίδας, μίαν κατέναντι τῆς μιᾶς, τῷ πατρὶ καὶ τῇ μητρὶ καὶ τέσσαρσιν ἀδελφοῖς. καὶ ταύταις ἐποίησεν μηχανήματα περιθεὶς στύλους μεγάλους, καὶ ἐποίησεν ἐπὶ τοῖς στύλοις πανοπλίας εἰς ὄνομα αἰώνιον, καὶ παρὰ ὁ ταῖς πανοπλίαις πλοῖα ἐπιγεγλυμμένα, εἰς τὸ θεωρεῖσθαι ὑπὸ πάντων τῶν πλεόντων τὴν θάλασσαν. οὗτος ὁ τάφος ὃν ἐποίησεν ἐν Μωδεεὶμ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. Ὁ δὲ Τρύφων ἐπορεύετο δόλῳ μετὰ Ἀντιόχου τοῦ βασιλέως τοῦ νεωτέρου, καὶ ἀπέκτεινεν αὐτόν, καὶ ἐβασίλευσεν ἀντ’ αὐτοῦ, καὶ περιέθετο τὸ διάδημα τῆς Ἀσίας, καὶ ἐποίησεν πληγὴν μεγάλην ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ᾠκοδόμησεν Σίμων τὸ ὀχύρωμα τῆς Ἰουδαίας, καὶ περιετείχισεν πύργοις ὑψηλοῖς καὶ τείχεσιν μεγάλοις καὶ πύργοις καὶ πύλαις καὶ μοχλοῖς, καὶ ἔθετο βρώματα ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν. καὶ ἐπελέξατο Σίμων ἄνδρας, καὶ ἀπέστειλεν πρὸς Δημήτριον τὸν βασιλέα τοῦ ποιῆσαι ἄφεσιν τῇ χώρᾳ, ὅτι πᾶσαι αἱ πράξεις Τρύφωνος ἦσαν ἁρπάσαι. καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ Δημήτριος ὁ βασιλεὺς κατὰ τοὺς λόγους

τούτους, καὶ ἀπεκρίθη αὐτῷ, καὶ ἔγραψεν αὐτῷ ἐπιστολὴν τοιαύτην Βασιλεὺς Δημήτριος Σίμωνι ἀρχιερεῖ καὶ φίλῳ βασιλέων καὶ πρεσβυτέροις καὶ ἔθνει Ἰουδαίων χαίρειν. τὸν στέφανον τὸν χρυσοῦν, καὶ τὴν βάιν ἣν ἀπεστείλατε, κεκομίσμεθα, καὶ ἕτοιμοί ἐσμεν τοῦ ποιεῖν ὑμῖν εἰρήνην μεγάλην, καὶ γράφειν τοῖς ἐπὶ τῶν χρειῶν τοῦ ἀφεῖναι ὑμῖν ἀφέματα. καὶ ὅσα ἐστήσαμεν πρὸς ὑμᾶς ἔστηκεν, καὶ τὰ ὀχυρώματα, ἃ ᾠκοδομήσατε, ὑπαρχέτω ὑμῖν. ἀφίεμεν δέ ὑμῖν ἀγνοήματα καὶ τὰ ἁμαρτήματα ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ τὸν στέφανον ὃν ὠφείλετε· καὶ εἴ τι ἄλλο ἐτελωνεῖτο ἐν Ἰερουσαλήμ, μηκέτι τελωνείσθω· καὶ εἴ τινες ἐπιτήδειοι ὑμῶν γραφῆναι εἰς τοὺς περὶ ἡμᾶς, ἐνγραφέσθωσαν, καὶ γινέσθω ἀνὰ μέσον ἡμῶν εἰρήνη. Ἔτους ἑκατοστοῦ ἑβδομηκοστοῦ ἤρθη ὁ ζυγὸς τῶν ἐθνῶν ἀπὸ τοῦ Ἰσραήλ. καὶ ἤρξατο ὁ λαὸς Ἰσραὴλ γράφειν ἐν ταῖς συνγραφαῖς καὶ συναλλάγμασιν Ἔτους πρώτου ἐπὶ Σίμωνος ἀρχιερέως μεγάλου καὶ στρατηγοῦ καὶ ἡγουμένου Ἰουδαίων. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις παρενέβαλεν ἐπὶ Γάζαν, καὶ ἐκύκλωσεν αὐτὴν παρεμβολαῖς, καὶ ἐποίησεν ἑλέπολιν καὶ προσήγαγεν τῇ πόλει, καὶ ἐπάταξεν πύργον ἕνα, καὶ κατελάβετο. καὶ ἐξήλλοντο οἱ ἐν τῇ ἐλεπόλει εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἐγένετο κίνημα μέγα ἐν τῇ πόλει. καὶ ἀνέβησαν οἱ ἐν τῇ πόλει σὺν ταῖς γυναιξὶ καὶ τοῖς τέκνοις ἐπὶ τὸ τεῖχος διερρηχότες τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐβόησαν φωνῇ μεγάλῃ ἀξιοῦντες Σίμωνα δεξιὰς αὐτοῖς δοῦναι. καὶ εἶπαν Μὴ ἡμῖν χρήσῃ κατὰ τὰς πονηρίας ἡμῶν, ἀλλὰ κατὰ τὸ ἔλεός σου. καὶ συνελύθη αὐτοῖς Σίμων, καὶ οὐκ ἐπολέμησεν αὐτούς· καὶ ἐξέβαλεν αὐτοὺς ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐκαθέρισεν τὰς οἰκίας ἐν αἷς ἦν τὰ εἴδωλα, καὶ οὕτως εἰσῆλθεν εἰς αὐτὴν ὑμνῶν καὶ εὐλογῶν. καὶ ἐξέβαλεν ἐξ αὐτῆς πᾶσαν ἀκαθαρσίαν, καὶ κατοίκισεν ἐν αὐτῇ ἄνδρας οἵτινες τὸν νόμον ποιοῦσιν· καὶ προσοχύρωσεν αὐτήν, καὶ ᾠκοδόμησεν

ἑαυτῷ ἐν αὐτῇ οἴκησιν. Οἱ δὲ ἐκ τῆς ἄκρας ἐν Ἰερουσαλὴμ ἐκωλύοντο ἐκπορεύεσθαι εἰς τὴν χώραν καὶ ἀγοράζειν καὶ πωλεῖν· καὶ ἐπείνασαν σφόδρα, καὶ ἀπώλοντο ἐξ αὐτῶν ἱκανοὶ τῇ λιμῷ. καὶ ἐβόησαν πρὸς Σίμωνα δεξιὰς λαβεῖν, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς, καὶ ἐξέβαλεν αὐτοὺς ἐκεῖθεν, καὶ ἐκαθέρισεν τὴν ἄκραν ἀπὸ τῶν μιασμάτων. καὶ εἰσῆλθεν εἰς αὐτὴν τῇ τρίτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ δευτέρου μηνὸς ἔτους ἑνὸς καὶ ἑβδομηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ μετὰ αἰνέσεως καὶ βαίων καὶ ἐν κινύραις καὶ ἐν κυμβάλοις καὶ ἐν νάβλαις καὶ ἐν ὕμνοις καὶ ἐν ᾠδαῖς, ὅτι συνετρίβη ἐχθρὸς μέγας ἐξ Ἰσραήλ· καὶ ἔστησεν κατ’ ἐνιαυτὸν τοῦ ἄγειν τὴν ἡμέραν ταύτην. καὶ προσωχύρωσεν τὸ ὄρος τοῦ ἱεροῦ τὸ παρὰ τὴν ἄκραν, καὶ ᾤκει ἐκεῖ αὐτὸς καὶ οἱ παρ’ αὐτοῦ. καὶ ἴδεν Σίμων τὸν Ἰωάννην τὸν υἱὸν αὐτοῦ, ὅτι ἀνήρ ἐστιν, καὶ ἔθετο αὐτὸν ἡγούμενον τῶν δυνάμεων πασῶν· καὶ ᾤκει ἐν Γαζάροις.

# 14

Καὶ ἐν ἔτει δευτέρῳ καὶ ἑβδομηκοστῷ καὶ ἑκατοστῷ συνήγαγεν Δημήτριος ὁ βασιλεὺς τὰς δυνάμεις αὐτοῦ, καὶ ἐπορεύθη εἰς Μηδίαν, τοῦ ἐπισπᾶσθαι βοήθειαν ἑαυτῷ, ὅπως πολεμήσῃ τὸν Τρύφωνα. καὶ ἤκουσεν Ἀρσάκης ὁ βασιλεὺς Περσίδος καὶ Μηδίας ὅτι ἦλθεν Δημήτριος εἰς τὰ ὅρια αὐτοῦ, καὶ ἀπέστειλεν ἕνα τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ συλλαβεῖν αὐτὸν ζῶντα. καὶ ἐπορεύθη καὶ ἐπάταξεν τὴν παρεμβολὴν Δημητρίου καὶ συνέλαβεν αὐτόν, καὶ ἤγαγεν αὐτὸν πρὸς Ἀρσάκην, καὶ ἔθετο αὐτὸν ἐν φυλακῇ. Καὶ ἡσύχασεν ἡ γῆ πάσας τὰς ἡμέρας Σίμωνος, καὶ ἐζήτησεν ἀγαθὰ τῷ ἔθνει αὐτοῦ· καὶ ἤρεσεν αὐτοῖς ἡ ἐξουσία αὐτοῦ καὶ ἡ δόξα αὐτοῦ

πάσας τὰς ἡμέρας καὶ μετὰ πάσης τῆς δόξης αὐτοῦ ἔλαβεν τὴν Ἰόππην εἰς λιμένα, καὶ ἐποίησεν εἴσοδον ταῖς νήσοις τῆς θαλάσσης. καὶ ἐπλάτυνεν τὰ ὅρια τῷ ἔθνει αὐτοῦ, καὶ ἐκράτησεν τῆς χώρας. καὶ συνήγαγεν αἰχμαλωσίαν πολλήν, καὶ ἐκυρίευσεν Γαζάρων καὶ Βεθσούρων καὶ τῆς ἄκρας· καὶ ἐξῆρεν τὰς ἀκαθαρσίας ἐξ αὐτῆς, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντικείμενος αὐτῷ. καὶ ἦσαν γεωργοῦντες τὴν γῆν αὐτῶν μετ’ εἰρήνης, καὶ ἡ γῆ ἐδίδου τὰ γενήματα αὐτῆς, καὶ τὰ ξύλα τῶν πεδίων τὸν καρπὸν αὐτῶν. πρεσβύτεροι ἐν ταῖς πλατείαις ἐκάθηντο, πάντες περὶ ἀγαθῶν ἐκοινολόγουν, καὶ οἱ νεανίσκοι ἐνεδύσαντο δόξας καὶ στολὰς πολέμου. ταῖς πόλεσιν ἐχορήγησεν βρώματα, καὶ ἔταξεν αὐτὰς ἐν σκεύεσιν ὀχυρώσεως, ἕως ὅτου ὀνομάσθη τὸ ὄνομα τῆς δόξης αὐτοῦ ἕως ἄκρου γῆς· ἐποίησεν τὴν εἰρήνην ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ηὐφράνθη Ἰσραὴλ εὐφροσύνην μεγάλην. καὶ ἐκάθισεν ἕκαστος ὑπὸ τὴν ἄμπελον αὐτοῦ καὶ τὴν συκῆν αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐκφοβῶν αὐτούς· καὶ ἐξέλειπεν πολεμῶν αὐτοὺς ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν συνε τρίβησαν ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις. καὶ ἐστήρισεν πάντας τοὺς ταπεινοὺς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ· τὸν νόμον ἐξεζήτησεν, καὶ ἐξῆρεν πάντα ἄνομον καὶ πονηρόν· τὰ ἅγια ἐδόξασεν, καὶ ἐπλήθυνεν τὰ σκεύη τῶν ἁγίων. Καὶ ἤκουσεν ἐν Ῥώμῃ ὅτι ἀπέθανεν Ἰωναθάν, καὶ ἕως Σπάρτης. καὶ ἐλυπήθησαν σφόδρα. ὡς δὲ ἤκουσαν ὅτι Σίμων ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ γέγονεν ἀντ’ αὐτοῦ ἀρχιερεὺς καὶ ἐπικρατεῖ τῆς χώρας καὶ τῶν πόλεων τῶν ἐν αὐτῇ, καὶ ἔγραψαν πρὸς αὐτὸν δέλτοις χαλκαῖς τοῦ ἀνανεώσασθαι πρὸς αὐτὸν φιλίαν καὶ τὴν συμμαχίαν ἣν ἔστησαν πρὸς Ἰούδαν καὶ Ἰωναθὰν τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ. καὶ ἀνεγνώσθησαν ἐνώπιον ἐκκλησίας ἐν Ἰερουσαλήμ. καὶ τοῦτο τὸ ἀντίγραφον τῶν ἐπιστολῶν ὧν ἀπέστειλαν οἱ Σπαρτιᾶται Σπαρτιατῶν ἄρχοντες καὶ

ἡ πόλις Σίμωνι ἱερεῖ μεγάλῳ καὶ τοῖς πρεσβυτέροις καὶ τοῖς ἱερεῦσι καὶ τῷ λοιπῷ δήμῳ τῶν Ἰουδαίων ἀδελφοῖς χαίρειν. οἱ πρεσβευταὶ οἱ ἀποσταλέντες πρὸς τὸν δῆμον ἡμῶν ἀπήγγειλαν ἡμῖν περὶ τῆς δόξης ὑμῶν καὶ τιμῆς, καὶ ηὐφράνθημεν ἐπὶ τῇ ἐφόδῳ αὐτῶν. καὶ ἀναγραψάμενοι τὰ ὑπ’ αὐτῶν εἰρημένα ἐν ταῖς βουλαῖς τοῦ δήμου οὕτως Νουμήνιος Ἀντιόχου καὶ Ἀντίπατρος Ἰάσονος πρεσβευταὶ Ἰουδαίων ἦλθοσαν πρὸς ἡμᾶς ἀνανεούμενοι τὴν πρὸς ἡμᾶς φιλίαν· καὶ ἤρεσεν τῷ δήμῳ ἐπιδέξασθαι τοὺς ἄνδρας ἐνδόξως, καὶ τοῦ θέσθαι τὸ ἀντίγραφον τῶν λόγων αὐτῶν ἐν τοῖς ἀποδεδιγμένοις τῷ δήμῳ βιβλίοις, τοῦ μνημόσυνον ἔχειν τὸν δῆμον τῶν Σπαρτιατῶν· τὸ δὲ ἀντίγραφον τούτων ἔγραψαν Σίμωνι τῷ ἀρχιερεῖ. Μετὰ ταῦτα ἀπέστειλεν Σίμων τὸν Νουμήνιον εἰς Ῥώμην ἔχοντα ἀσπίδα χρυσῆν μεγάλην ὁλκὴν μνῶν χιλίων, εἰς τὸ στῆσαι πρὸς αὐτοὺς τὴν συμμαχίαν. Ὡς δὲ ἤκουσεν ὁ δῆμος τῶν λόγων τούτων, εἶπαν Τίνα χάριν ἀποδώσομεν Σίμωνι καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ; ἐστήρισεν γὰρ αὐτὸς καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐπολέμησαν τοὺς ἐχθροὺς Ἰσραὴλ ἀπ’ αὐτῶν. καὶ ἔστησαν αὐτῷ ἐλευθερίαν, καὶ κατέγραψεν ἐν δέλτοις χαλκαῖς, καὶ ἔθεντο ἐν στήλῃ ἐν ὄρει Σιών. καὶ τοῦτο τὸ ἀντίγραφον τῆς γραφῆς Ὀκτωκαιδεκάτῃ Ἐλούλ, ἔτους δευτέρου ἑβδομηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ, καὶ τοῦτο τρίτον ἔτος ἐπὶ Σίμωνος τοῦ ἀρχιερέως, ἐν Σαραμέλ, ἐπὶ συναγωγῆς μεγάλης τῶν ἱερέων καὶ λαοῦ καὶ ἀρχόντων ἔθνους καὶ τῶν πρεσβυτέρων τῆς χώρας ἐγνώρισεν ἡμῖν. ἐπεὶ πολλάκις ἐγενήθησαν πόλεμοι ἐν τῇ χώρᾳ, Σίμων δὲ ὁ υἱὸς Ματταθίου ὁ υἱὸς τῶν υἱῶν Ἰωαρίβ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἔδωκαν ἑαυτοὺς τῷ κινδύνῳ, καὶ ἀντέστησαν τοῖς ὑπεναντίοις τοῦ ἔθνους αὐτῶν, ὅπως σταθῇ τὰ ἅγια αὐτῶν καὶ ὁ νόμος, καὶ δόξῃ μεγάλῃ ἐδόξασαν τὸ ἔθνος αὐτῶν· καὶ ἤθροισεν Ἰωναθὰν τὸ ἔθνος

αὐτῶν, καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς ἀρχιερεύς, καὶ προσετέθη πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ· καὶ ἐβουλήθησαν οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν ἐμβατεῦσαι εἰς τὴν χώραν αὐτῶν τοῦ ἐκτρίψαι τὴν χώραν αὐτῶν, καὶ ἐκτεῖναι τὰς χεῖρας ἐπὶ τὰ ἅγια αὐτῶν· τότε ἀνέστη Σίμων, καὶ ἐπολέμησεν περὶ τοῦ ἔθνους αὐτοῦ, καὶ ἐδαπάνησεν χρήματα πολλὰ τῶν ἑαυτοῦ, καὶ ὁπλοδότησεν τοὺς ἄνδρας τῆς δυνάμεως τοῦ ἔθνους αὐτοῦ, καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ὀψώνια· καὶ ὠχύρωσεν τὰς πόλεις τῆς Ἰουδαίας καὶ τὴν Βεθσούραν τὴν ἐπὶ τῶν ὁρίων τῆς Ἰουδαίας, οὗ ἦν τὰ ὅπλα τῶν πολεμίων τὸ πρότερον, καὶ ἔθετο ἐκεῖ φρουρὰν ἄνδρας Ἰουδαίους· καὶ Ἰόππην ὠχύρωσεν τὴν ἐπὶ τῆς θαλάσσης, καὶ τὴν Γαζάραν τὴν ἐπὶ τῶν ὁρίων Ἀζώτου, ἐν ᾗ ᾠκοῦσαν οἱ πολέμιοι τὸ πρότερον ἐκεῖ, καὶ κατῴκισεν ἐκεῖ Ἰουδαίους, καὶ ὅσα ἐπιτήδεια πρὸς τῇ τούτων ἐπανορθώσει ἔθετο ἐν αὐτοῖς. καὶ εἶδεν ὁ λαὸς τὴν πίστιν τοῦ Σίμωνος καὶ τὴν δόξαν ἣν ἐβουλεύσατο ποιῆσαι τῷ ἔθνει αὐτοῦ, καὶ ἔθεντο αὐτὸν ἡγούμενον αὐτῶν καὶ ἀρχιερέα, διὰ τὸ πεποιηκέναι αὐτὸν ταῦτα πάντα, καὶ τὴν δικαιοσύνην καὶ τὴν πίστιν ἣν συνετήρησεν τῷ ἔθνει αὐτοῦ, καὶ ἐξεζήτησεν παντὶ τρόπῳ ὑψῶσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ. καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ εὐοδώθη ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ, τοῦ ἐξαρθῆναι τὰ ἔθνη ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν, καὶ τοὺς ἐν τῇ πόλει Δαυεὶδ τοὺς ἐν Ἰερουσαλὴμ οἳ ἐποίησαν ἑαυτοῖς ἄκραν ἐξ ἧς ἐξεπορεύοντο, καὶ ἐμίαινον κύκλῳ τῶν ἁγίων, καὶ ἐποιοῦσαν πληγὴν μεγάλην ἐν τῇ ἁγνείᾳ· καὶ κατῴκισεν ἐν αὐτῇ ἄνδρας Ἰουδαίους, καὶ ὠχύρωσεν αὐτὴν πρὸς ἀσφάλειαν τῆς χώρας καὶ τῆς πόλεως, καὶ ὕψωσεν τὰ τείχη Ἰερουσαλήμ. καὶ ὁ βασιλεὺς Δημήτριος ἔστησεν αὐτῷ τὴν ἀρχιερωσύνην κατὰ ταῦτα, καὶ ἐποίησεν αὐτὸν τῶν φίλων αὐτοῦ, καὶ ἐδόξασεν αὐτὸν δόξῃ μεγάλῃ· ἠκούσθη γὰρ ὅτι προσαγορεύονται Ἰουδαῖοι ὑπὸ Ῥωμαίων φίλοι καὶ σύμμαχοι καὶ οἱ

ἀδελφοί, καὶ ὅτι ἀπήντησαν τοῖς πρεσβευταῖς Σίμωνος ἐνδόξως· καὶ ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι καὶ οἱ ἱερεῖς εὐδόκησαν τοῦ εἶναι αὐτῶν Σίμωνα ἡγούμενον καὶ ἀρχιερέα εἰς τὸν αἰῶνα, ἕως τοῦ ἀναστῆναι προφήτην πιστόν· καὶ τοῦ εἶναι ἐπ᾽ αὐτῶν στρατηγόν, καὶ ὅπως μέλῃ αὐτῷ περὶ τῶν ἁγίων, καθιστάναι δι᾽ αὐτοῦ ἐπὶ τῶν ἔργων αὐτῶν καὶ ἐπὶ τῆς χώρας καὶ ἐπὶ τῶν ὅπλων καὶ ἐπὶ τῶν ὀχυρωμάτων· καὶ ὅπως μέλη αὐτῷ περὶ τῶν ἁγίων, καὶ ὅπως ἀκούηται ὑπὸ πάντων, καὶ ὅπως γράφωνται ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ πᾶσαι συγγραφαὶ ἐν τῇ χώρᾳ, καὶ ὅπως περιβάλληται πορφύραν καὶ χρυσοφορῇ. καὶ οὐκ ἔξεστιν οὐδενὶ τοῦ λαοῦ καὶ τῶν ἱερέων ἀθετῆσαί τι τούτων καὶ ἀντειπεῖν τοῖς ὑπ᾽ αὐτοῦ ῥηθησομένοις, καὶ ἐπισυστρέψαι συστροφὴν ἐν τῇ χώρᾳ ἄνευ αὐτοῦ, καὶ περιβαλέσθαι πορφύραν καὶ ἐνπορποῦσθαι πόρπην χρυσῆν· ὃ δ᾽ ἂν παρὰ ταῦτα ποιήσῃ ἡ ἀθετήσῃ τι τούτων, ἔνοχος ἔσται. καὶ εὐδόκησεν πᾶς ὁ λαὸς θέσθαι Σίμωνι ποιῆσαι κατὰ τοὺς λόγους τούτους. καὶ ἐπεδέξατο Σίμων, καὶ εὐδόκησεν ἀρχιερατεῦσαι καὶ εἶναι στρατηγὸς καὶ ἐθνάρχης τῶν Ἰουδαίων καὶ ἱερέων καὶ τοῦ προστατῆσαι πάντων. Καὶ τὴν γραφὴν ταύτην εἶπαν θέσθαι ἐν δέλτοις χαλκαῖς, καὶ στῆσαι αὐτὰς ἐν περιβόλῳ τῶν ἁγίων ἐν τόπῳ πιστῷ· τὰ δὲ ἀντίγραφα αὐτῶν θέσθαι ἐν τῷ γαζοφυλακίῳ, ὅπως ἔχῃ Σίμων καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ.

# 15

Καὶ ἀπέστειλεν Ἀντίοχος υἱὸς Δημητρίου τοῦ βασιλέως ἐπιστολὰς ἀπὸ τῶν νήσων τῆς θαλάσσης Σίμωνι ἱερεῖ καὶ ἐθνάρχῃ τῶν Ἰουδαίων καὶ παντὶ τῷ ἔθνει. καὶ ἦσαν περιέχουσαι τὸν τρόπον

τοῦτον Βασιλεὺς Ἀντίοχος Σίμωνι ἱερεῖ μεγάλῳ καὶ ἐθνάρχῃ καὶ ἔθνει Ἰουδαίων χαίρειν. ἐπειδή τινες λοιμοὶ κατεκράτησαν τῆς βασιλείας τῶν πατέρων ἡμῶν, βουλεύομαι δὲ ἀντιποιήσασθαι τῆς βασιλείας, ὅπαως ἀποκαταστήσω αὐτὴν ὡς ἦν τὸ πρότερον· ἐξενολόγησα δὲ πλῆθος δυνάμεων καὶ κατεσκεύασα πλοῖα πολεμικά· βούλομαι δὲ ἐκβῆναι κατὰ τὴν χώραν, ὅπως μετέλθω τοὺς κατεφθαρκότας τὴν χώραν ἡμῶν καὶ τοὺς ἠρημωκότας πόλεις πολλὰς ἐν τῇ βασιλείᾳ· νῦν οὖν ἵστημί σοι πάντα τὰ ἀφαιρέματα ἃ ἀφῆκάν σοι οἱ πρὸ ἐμοῦ βασιλεῖς, καὶ ὅσα ἄλλα ἀφαιρέματα ἀφῆκάν σοι ποιῆσαι κόμμα ἴδιον νόμισμα τῆς χώρας σου· Ἱερουσαλὴμ δέ καὶ τὰ ἅγια εἶναι ἐλεύθερα· καὶ πάντα τὰ ὅπλα ὅσα κατεσκεύασας, καὶ τὰ ὀχυρώματα ἃ ᾠκοδόμησας, ὃν κρατεῖς, μενέτω σοι. καὶ πᾶν ὀφείλημα βασιλικὸν καὶ τὰ ἐσόμενα βασιλικά, ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν ἅπαντα χρόνον, ἀφιέσθω σοι. ὡς δ’ ἂν καταστήσωμεν τὴν βασιλείαν ἡμῶν, δοξάσωμέν σε καὶ τὸ ἔθνος σου καὶ τὸ ἱερὸν δόξῃ μεγάλῃ, ὥστε φανερὰν γενέσθαι τὴν δόξαν ὑμῶν ἐν πάσῃ τῇ ῆ. Ἔτους τετάρτου καὶ ἑβδομηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ ἐξῆλθεν Ἀντίοχος εἰς τὴν γῆν τῶν πατέρων αὐτοῦ, καὶ συνῆλθον πρὸς αὐτὸν πᾶσαι αἱ δυνάμεις, ὥστε ὀλίγους εἶναι σὺν Τρύφωνι. καὶ ἐδίωξεν αὐτὸν Ἀντίοχος ὁ βασιλεύς, καὶ ἦλθεν εἰς Δωρὰ φεύγων τὴν ἐπὶ τὴν θάλασσαν. ᾔδει γὰρ ὅτι ἐπισυνῆκται ἐπ’ αὐτὸν κακά, καὶ ἀφῆκαν αὐτὸν αἱ δυνάμεις. καὶ παρενέβαλεν Ἀντίοχος ἐπὶ Δωρά, καὶ σὺν αὐτῷ δώδεκα μυριάδες ἀνδρῶν πολεμιστῶν καὶ ὀκτακισχιλία ἵππος. καὶ ἐκύκλωσεν τὴν πόλιν, καὶ τὰ πλοῖα ἀπὸ θαλάσσης συνῆψαν· καὶ συνέθλιβεν τὴν πόλιν ἀπὸ τῆς γῆς καὶ ἀπὸ τῆς θαλάσσης, καὶ οὐκ εἴασεν οὐδένα ἐκπορεύεσθαι καὶ εἰσπορεύεσθαι. Καὶ ἦλθεν Νουμήνιος καὶ οἱ παρ’ αὐτοῦ ἐκ Ῥώμης ἔχοντες ἐπιστολὰς τοῖς βασιλεῦσι καὶ ταῖς χώραις,

ἐν αἷς ἐγέγραπτο τάδε Λεύκιος ὕπατος Ῥωμαίων Πτολεμαίῳ βασιλεῖ χαίρειν. οἱ πρεσβευταὶ τῶν Ἰουδαίων ἦλθαν πρὸς ἡμᾶς φίλοι ἡμῶν καὶ σύμμαχοι, ἀνανεούμενοι τὴν ἐξ ἀρχῆς φιλίαν ακὶ συμμαχίαν, ἀπεσταλμένοι ἀπὸ Σίμωνος τοῦ ἀρχιερέως καὶ τοῦ δήμου τῶν Ἰουδαίων· ἤνεγκαν δὲ ἀσπίδα χρυσῆν ἀπὸ μνῶν πεντακισχιλίων. ἤρεσεν οὖν ἡμῖν γράψαι τοῖς βασιλεῦσιν καὶ ταῖς χώραις, ὅπως μὴ ἐκζητήσωσιν αὐτοῖς κακά, καὶ μὴ πολεμήσωσιν αὐτοὺς καὶ τὰς πόλεις αὐτῶν καὶ τὰς χώρας αὐτῶν, καὶ ἵνα μὴ συμμαχῶσιν τοῖς πολεμοῦσιν αὐτοὺς. ἔδοξεν δὲ ἡμῖν δέξασθαι τὴν ἀσπίδα παρ’ αὐτῶν. εἴ τινες οὖν λοιμοὶ διαπεφεύγασιν ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν πρὸς ὑμᾶς, παράδοτε αὐτοὺς τῷ Σίμωνι τῷ ἀρχιερεῖ, ὅπως ἐκδικήσει αὐτοὺς κατὰ τὸν νόμον αὐτῶν. καὶ ταὐτὰ ἔγραψεν Δημητρίῳ τῷ βασιλεῖ καὶ Ἀττάλῳ καὶ Ἀράθῃ καὶ Ἀρσάκῃ, καὶ εἰς πάσας τὰς χώρας, καὶ Σαμψάκῃ, καὶ Σπαρτιάταις, καὶ εἰς Δῆλον καὶ εἰς Μύνδον καὶ εἰς Σικυῶνα καὶ εἰς τὴν Καρίδα καὶ εἰς Σάμον καὶ εἰς τὴν Παμφυλίαν καὶ Λυκίαν καὶ εἰς Ἁλικαρνασσὸν καὶ εἰς Κῶ καὶ εἰς Σίδην καὶ εἰς Ἄραδον καὶ εἰς Ῥόδον καὶ εἰς τὴν Φασήλιδα καὶ Γόρτυναν καὶ Κνίδον καὶ Κύπρον καὶ Κυρήνην. τὸ δὲ ἀντίγραφον αὐτῶν ἔγραψεν Σίμωνι τῷ ἀρχιερεῖ. Ἀντίοχος δὲ ὁ βασιλεὺς παρενέβαλεν ἐπὶ Δωρὰ ἐν τῇ δευτέρᾳ, προσάγων διὰ παντὸς αὐτῇ τὰς χεῖρας καὶ μηχανὰς ποιούμενος, καὶ συνέκλεισεν τὸν Τρύφωνα τοῦ εἰσπορεύεσθαι καὶ ἐκπορεύεσθαι καὶ ἀπέστειλεν αὐτῷ Σίμων δισχιλίους ἄνδρας ἐκλεκτοὺς συμμαχῆσαι αὐτῷ καὶ ἀργύριον καὶ χρυσίον καὶ σκεύη ἱκανά. καὶ οὐκ ἠβούλετο αὐτὰ δέξασθαι, ἀλλὰ ἠθέτησεν πάντα ὅσα ἐσυνέθετο αὐτῷ τὸ πρότερον, καὶ ἠλλοτριοῦτο αὐτῷ. καὶ ἀπέστειλεν πρὸς αὐτὸν Ἀθηνόβιον ἕνα τῶν φίλων αὐτοῦ κοινολογησόμενον αὐτῷ, λέγων Ὑμεῖς κατακρατεῖτε τῆς Ἰόππης καὶ Γαζαρηνῶν καὶ τῆς ἄκρας ἐν Ἰερουσαλήμ, πόλεις

τῆς βασιλείας μου. τὰ ὅρια αὐτῶν ἠρημώσατε, καὶ ἐποιήσατε πληγὴν μεγάλην ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐκυριεύσατε τόπων πολλῶν ἐν τῇ βασιλείᾳ μου. νῦν οὖν παράδοτε τὰς πόλεις ἃς κατελάβεσθε, καὶ τοὺς φόρους τῶν τόπων ὧν κατεκυριεύσατε, τῶν ὁρίων τῶν ἐκ τῆς Ἰουδαίας. εἰ δὲ μή, δότε ἀντ’ αὐτῶν πεντακόσια τάλαντα ἀργυρίου, καὶ τῆς καταφθορᾶς ἧς κατεφθάρκατε καὶ τῶν φόρων τῶν πόλεων ἄλλα τάλαντα πεντακόσια· εἰ δέ μή, παραγενόμενοι ἐκπολεμήσουσιν ὑμᾶς. Καὶ ἦλθεν Ἀθηνόβιος φίλος τοῦ βασιλέως εἰς Ἰερουσαλήμ, καὶ εἶδεν τὴν δόξαν Σίμωνος καὶ κυλίκιον μετὰ χρυσωμάτων καὶ ἀργυρωμάτων καὶ παράστασιν ἱκανὴν· καὶ ἐξιστάτο, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτοῖς τοὺς λόγους τοῦ βασιλέως. καὶ ἀποκριθεὶς Σίμων εἶπεν αὐτῷ Οὔτε γῆν ἀλλοτρίαν εἰλήφαμεν, οὔτε ἀλλοτρίων κεκρατήκαμεν, ἀλλὰ τῆς κληρονομίας τῶν πατέρων ἡμῶν· ὑπὸ δέ ἐχθρῶν ἡμῶν ἀκρίτως ἔν τινι καιρῷ κατεκρατήθη. ἡμεῖς δέ καιρὸν ἔχοντες ἀντεχόμεθα τῆς κληρονομίας ἡμῶν καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν. περὶ δὲ Ἰόππης καὶ Γαζαρηνῶν αἰτεῖς· αὗται ἐποίουν ἐν τῷ λαῷ πληγὴν μεγάλην καὶ τῇ γῇ ἡμῶν· τούτων δώσομεν τάλαντα ἑκατόν. καὶ υὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ λόγον. ἀπέστρεψεν δὲ μετὰ θυμοῦ πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ ἀπήγγειλεν αὐτῷ τοὺς λόγους τούτους καὶ τὴν δόξαν Σίμωνος καὶ πάντα ὅσα εἶδεν· καὶ ὠργίσθη ὁ βασιλεὺς ὀργὴν μεγάλην. Τρύφων δὲ ἐμβὰς εἰς πλοῖον ἔφυγεν εἰς Ὀρθωσίαν. καὶ κατέστησεν ὁ βασιλεὺς τὸν Κενδεβαῖον ἐπιστράτηγον τῆς παραλίας, καὶ δυνάμεις πεζικὰς καὶ ἱππικὰς ἔδωκεν αὐτῷ. καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ παρεμβάλλειν κατὰ πρόσωπον τῆς Ἰουδαίας· καὶ ἐνετείλατο αὐτῷ οἰκοδομῆσαι τὴν Κεδρὼν καὶ ὀχυρῶσαι τὰς πόλεις, καὶ ὅπως πολεμῇ τὸν λαόν· ὁ δὲ βασιλεὺς ἐδίωκε τὸν Τρύφωνα. καὶ παρεγενήθη Κεωδεβαῖος εἰς Ἰαμνείαν, καὶ ἤρξατο τοῦ ἐρεθίζειν τὸν λαὸν καὶ ἐμβατεύειν εἰς τὴν

Ἰουδαίαν καὶ αἰχμαλωτίζειν τὸν λαὸν καὶ φονεύειν. καὶ ᾠκοδόμησεν τὴν Κεδρὼν· καὶ ἔταξεν ἐκεῖ ἱππεῖς καὶ δυνάμεις ὅπως ἐκπορευόμενοι ἐξοδεύωσιν τὰς ὁδοὺς τῆς Ἰουδαίας, καθὰ συνέταξεν αὐτῷ ὁ βασιλεύς.

# 16

Καὶ ἀνέβη Ἰωάννης ἐκ Γαζάρων, καὶ ἀπήγγειλεν Σίμωνι τῷ πατρὶ αὐτοῦ ἃ συνετέλει Κενδεβαῖος. καὶ ἐκάλεσεν Σίμων τοὺς δύο υἱοὺς αὐτοῦ τοὺς πρεσβυτέρους Ἰούδαν καὶ Ἰωάννην, καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἐγὼ καὶ οἱ ἀδελφοί μου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός μου ἐπολεμήσαμεν τοὺς πολέμους Ἰσραὴλ ἀπὸ νεότητος ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ εὐοδώθη ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν ῥύσασθαι τὸν Ἰσραὴλ πλεονάκις. νῦν δὲ γεγήρακα, καὶ ὑμεῖς δὲ ἐν τῷ ἐλέει ἱκανοί ἐστε ἐν τοῖς ἔτεσιν· γίνεσθε ἀντ’ ἐμοῦ καὶ τοῦ ἀδελφοῦ μου, καὶ ἐξελθόντες ὑπερμαχεῖτε ὑπέρ τοῦ ἔθνους ἡμῶν, ἡ δὲ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ βοήθεια ἦτω μεθ’ ὑμῶν. καὶ ἐπέλεξεν ἐκ τῆς χώρας εἴκοσι χιλιάδας ἀνδρῶν πολεμιστῶν καὶ ἱππεῖς, καὶ ἐπορεύθησαν ἐπὶ τὸν Κενδεβαῖον, καὶ ἐκοιμήθησαν ἐν Μωδαείμ. καὶ ἀναστάντες τὸ πρωὶ ἐπορεύοντο εἰς τὸ πεδίον· καὶ ἰδοὺ δύναμις πολλὴ εἰς συνάντησιν αὐτοῖς, πεζικοὶ καὶ ἱππεῖς, καὶ χειμάρρους ἦν ἀνὰ μέσον αὐτῶν. καὶ παρενέβαλεν κατὰ πρόσωπον αὐτῶν αὐτὸς καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ· καὶ εἶδεν τὸν λαὸν δειλούμενον διαπερᾶσαι τὸν χειμάρρουν, καὶ διεπέρασεν πρῶτος· καὶ εἶδον αὐτὸν οἱ ἄνδρες, καὶ διεπέρασαν κατόπισθεν αὐτοῦ. καὶ διεῖλεν τὸν λαὸν καὶ τοὺς ἱππεῖς ἐν μέσῳ τῶν πεζῶν· ἡ δὲ ἵππος τῶν ὑπεναντίων πολλὴ σφόδρα. καὶ ἐσάλπισαν ταῖς σάλπιγξιν, καὶ ἐτροπώθη Κενδεβαῖος καὶ ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, καὶ ἔπεσον ἐξ

αὐτοῦ τραυματίαι πολλοί οἱ δὲ καταλειφθέντες ἔφυγον εἰς τὸ ὀχύρωμα. τότε ἐτραυματίσθη Ἰούδας ὁ ἀδελφὸς Ἰωάννου· Ἰωάννης δέ κατεδίωξεν αὐτοὺς ἕως ἐλθεῖν εἰς Κεδρών, ἣν οἰκοδόμησεν. καὶ ἔφυγον εἰς τοὺς πύργους τοὺς ἐν τῷ ἀγρῷ Ἀζώτου, καὶ ἐνεπύρισεν αὐτὴν ἐν πυρί καὶ ἔπεσαν ἐξ αὐτῶν εἰς ἄνδρας χιλίους, καὶ ἀπέστρεψεν εἰς τὴν Ἰουδαίαν μετ’ εἰρήνης. Καὶ Πτολεμαῖος ὁ τοῦ Ἀβούβου ἦν καθεσταμένος στρατηγὸς εἰς τὸ πεδίον Ἰεριχώ, καὶ ἔσχεν ἀργύριον καὶ χρυσίον πολύ· ᾖν γὰρ γαμβρὸς τοῦ ἀρχιερέως. καὶ ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ ἠβουλήθη κατακρατῆσαι τῆς χώρας. καὶ ἐβουλεύετο δόλῳ κατὰ Σίμωνος καὶ κατὰ τῶν υἱῶν αὐτοῦ ἄραι αὐτούς. Σίμων δὲ ἦν ἐφοδεύων τὰς πόλεις τὰς ἐν τῇ χώρᾳ καὶ φροντίζων τὰς ἐπιμελίας αὐτῶν, καὶ κατέβη εἰς Ἰεριχῶ αὐτὸς καὶ Ματταθίας καὶ Ἰούδας καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἔτους ἑβδόμου καὶ ἑβδομηκοστοῦ καὶ ἑκατοστοῦ ἐν μηνὶ ἑνδεκάτῳ· οὗτος ὁ μὴν Σαβάτ. καὶ ὑπεδέξατο αὐτοὺς ὁ τοῦ Ἀβούβου εἰς τὸ ὀχυρωμάτιον τὸ καλούμενον Δὼκ μετὰ δόλου, ὃ ᾠκοδόμησεν, καὶ ἐποίησεν αὐτοῖς πότον μέγαν· καὶ ἐνέκρυψεν ἐκεῖ ἄνδρας. καὶ ὅτε ἐμεθύσθη Σίμων καὶ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, ἐξανέστη Πτολεμαῖος καὶ οἱ μετ’ αὐτοῦ, καὶ ἐλάβοσαν τὰ ὅπλα αὐτῶν, καὶ ἐπεισήλθοσαν τῷ Σίμωνι εἰς τὸ συμπόσιον, καὶ ἀπέκτειναν αὐτὸν καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, καί τινας τῶν παιδαρίων αὐτοῦ. καὶ ἐποίησεν ἀθείαν μεγάλην, καὶ ἀνταπέδωκεν κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν. καὶ ἔγραψεν ταῦτα Πτολεμαῖος. καὶ ἀπέστειλεν τῷ βασιλεῖ ὅπως ἀποστείλῃ αὐτῷ δυνάμεις εἰς βοήθειαν, καὶ παραδῷ τὴν Χώραν αὐτῶν καὶ τὰς πόλεις. καὶ ἀπέστειλεν ἑτέρους εἰς Γάζαρα ἆραι τὸν Ἰωάννην, καὶ τοῖς χιλιάρχοις ἀπέστειλεν ἐπιστολὰς παραγενέσθαι πρὸς αὐτόν, ὅπως δῷ αὐτοῖς ἀργύριον καὶ χρυσίον καὶ δόματα. καὶ ἑτέρους ἀπέστειλεν καταλαβέσθαι τὴν Ἱερουσαλὴμ καὶ τὸ ὄρος

τοῦ ἱεροῦ. καὶ προδραμὼν ἀπήγγειλεν Ἰωάννῃ εἰς Γάζαρα, ὅτι ἀπώλετο ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ὅτι Ἀπέσταλκε καὶ σέ ἀποκτεῖναι. καὶ ἀκούσας ἐξέστη σφόδρα, καὶ συνέλαβεν τοὺς ἄνδρας τοὺς ἐλθόντας ἀπολέσαι αὐτόν· καὶ ἀπέκτεινεν αὐτούς, ἔγνω γὰρ ὅτι ἐζητοῦσαν αὐτὸν ἀπολέσαι. Καὶ τὰ λοιπὰ τῶν λόγων Ἰωάννου καὶ τῶν πολέμων αὐτοῦ καὶ τῶν ἀνδραγαθιῶν αὐτοῦ ὧν ἠνδραγάθησεν καὶ τῆς οἰκοδομῆς τῶν τειχέων ὧν ᾠκοδόμησεν καὶ τῶν πράξεων αὐτοῦ, ἰδοὺ ταῦτα γέγραπται ἐπὶ βιβλίου ἡμερῶν ἀρχιερωσύνης αὐτοῦ, ἀφ’ οὗ ἐγενήθη ἀρχιερεὺς μετὰ τὸν πατέρα αὐτοῦ.